महाभारत भाषा

भीष्मपर्व्व

जिसमें

भूगोल खगोलादि सृष्टिविस्तार और नदी पर्व्वतादि संख्या कथन व मनोहर रोचक पदों से षट्ऋतु वर्णन तथा अर्जुन व श्रीकृष्ण संबाद और भगवद्गीता वर्णन जिसके द्वारा श्रीकृष्णजी ने ज्ञान वैराग्यादि दिखलाके अर्जुनको युद्धके निमित्त बोधित किया और प्रबोध पूर्वक अर्जुन व भीष्मजी का युद्ध व युद्धान्तर्गत भीष्म प्रतिज्ञा से श्रीकृष्णचन्द्रजी को शस्त्रहाथमें लेके भीष्मजी के सन्मुख दौड़ना व भीष्मजी का स्तुति करना तथा अर्जुन के समझाने से श्रीकृष्णचन्द्रजी का लौटआना इत्यादि कथा वर्णित हैं ॥

प्रतोदपाणिस्तेजस्वीसिंहवद्विनदन्मुहुः ॥ दारयन्निवपद्भ्यांसजगतींजगदीश्वरः ५७
क्रोधताम्रेक्षणःकृष्णोजिघांसुरमितद्युतिः ॥ ग्रसन्निवचेतांसितावकानांमहाहवे ५८
दृष्ट्वामाधवमाक्रंदेभीष्मायोद्यतमंतिके हतोभीष्मोहतोभीष्मस्तत्रतत्रवचोमहत्५६

जिसको

भार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुन्शीनवलकिशोरजी ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडी निवासि चौरासियागौड़वंशावतंस श्रीपण्डित गोकुलचंद्र सूनु श्रीपण्डित कालीचरणजी से संस्कृत महाभारतका यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापागया
अक्टूबर सन् १८९५ ई० ॥

सूचना

अनेक प्रकार की पुस्तकें इस यन्त्रालय में मुद्रितहुई हैं उन में से जितने पुराण हैं उनसे चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखीजाती हैं जिनमहाशयों को इसमें से किसी पुस्तककी आवश्यकता हो वे इस प्रेसकेमेनेजरको पत्रलिखकर मँगालें तथा पुस्तकों का जो सूचीपत्र छपाहै वह भी मँगाकर देखलें ॥

देवी भागवत भाषा ॥

इसका उल्था पंडित महेशदत्त सुकुलने कियाहै--इसमें मुख्य करके श्री देवीजीके पाठ आदिक का विस्तार और सर्व प्रकार की शक्तियों का कथन और उनके अवतार, मंत्र, तंत्र, यंत्र, कवच, कीलक, अर्गला, पूजा, स्तोत्र, माहात्म्य, सदाचार, प्रातकृत्य, रुद्राक्ष महिमा, गायत्री और देवियों के पुरश्चरण का वर्णन, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि असंख्य तंत्र मंत्र रूप विषयहैं भाषा ऐसी स्पष्ट है कि साधारण लोग भी समझ सक्ते हैं ॥

लिंगपुराण ॥

इसका उल्था छापेखाने के बहुत खर्च से जयपुर निवासि पंडित दुर्गाप्रसादजी ने भाषा में किया है--जिसमें अनेक प्रकार के इतिहास, सूर्यवंश, चन्द्रवंश का वर्णन, ग्रह नक्षत्र, भूगोल और खगोलका कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायेंहैं ॥

विष्णुपुराणभाषा वार्त्तिक ॥

इसका पंडित महेशदत्त सुकुलने भाषान्तर कियाहै जिसमें जगदुत्पत्ति, स्थिति, पालन, ध्रुव, पृथु आदि राजाओं की कथा, भूगोल, खगोल वर्णन धर्मशास्त्र, मन्वन्तर कथा, सूर्य और सोमवंशी राजाओं का कथन इत्यादि बहुतसी कथायें संयुक्त हैं ॥

विष्णुपुराण भाषा श्रीराजा अजीतसिंह बैकुण्ठवासीकृत ॥

जिसको श्रीराजा प्रतापबहादुरसिंह ताल्लुकदार व आनरेरी मजिस्ट्रेट व प्रेसीडेंट प्रतापगढ़ने छपवाया है इसमें सम्पूर्ण विष्णुपुराण दोहा चौपाई इत्यादि अनेक प्रकार के ललित छन्दों में वर्णितहै कागज़ सफ़ेद है ॥

महाभारत भाषा भीष्मपर्व्व का सूचीपत्र ॥

इति भीष्मपर्व्व सूचीपत्रम्॥

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारत भाषा भीष्म पर्व ॥

मङ्गलाचरण ॥

श्लोक

वाणींबोधविधायिनींगजमुखं श्रीशङ्कराद्धींशिवाम् नत्वाभारतभीष्मपर्व तिलकं मूलार्थमुत्थामयम् ॥ पूर्वेषांमतमाकलय्यतुकलौ सन्मानवीभाषयाश्री कालीचरणश्चकारचतुरो विज्ञःसतांसिद्धये ॥ १ ॥ उत्थास्त्वनेकविधबुद्धि सुबोधदाःस्युःनैतद्वयंममददामिनतेषुदोषम् ॥ किंचाऽवलोक्यमतिरंकमनुष्य मौढ्यम् तद्बुद्धिबोधविभवायकरोमिभाषाम् ॥ २ ॥ नाशंकनीयंपूर्वेषां मत मेतेनदूष्यते ॥ किन्तुचक्षुर्मृगाक्षीणां कज्जलेनैवभूष्यते ॥ ३ ॥

दो० सुमति सुजन परभणित को मन दृग दै सुनलेत ।
यथा कनककी कालिमा अनल विमल कर देत ॥ १ ॥
भाषा तिलक प्रबोधयुत कीन्हो कलिजन हेत ।
विविध ग्रन्थ संस्कृत गिरा तदपि न ते सुखदेत ॥ २ ॥

सो० रक्ताम्बर विघ्नेश एक दन्त सुन्दर परम ।
ऋद्धि सिद्धि सर्वेश करौं प्रणाम सप्रेम तेहि ॥ १ ॥
तदनु विनययुत नौम्य पादाम्बुज श्रीशारदा ।
बन्दौं गुरुपद सौम्य ज्ञान प्रद अज्ञान हर ॥ २ ॥
भारतेश जगदीश माधव श्रीरुक्मिणि रमण ।
बन्दौं धरि महि शीश पार्थ रथस्थ स्वरूपको ॥ ३ ॥

दो० भारत कवि श्रीव्यासके चरण कमलको ध्याय ।
भाषा में भारत करत कालीचरण सचाय ॥

भीष्म पर्व्व प्रारम्भः ॥

पहला अध्याय ॥

जनमेजय उवाच ॥

राजा जनमेजय बोले कि महावीर योद्धा कौरव पाण्डव सोमक और अनेक देशोंसे आयेहुये बड़े २ महात्मा राजालोग कैसे २ युद्ध करते हुए उसको वर्णन कीजिये वैशम्पायन बोले कि हे राजा जनमेजय बड़े वीर शूर प्रतापी कौरव पांडव सोमक आदि अनेक राजालोगों समेत महा उत्तम तीर्थ कुरुक्षेत्र में जैसे युद्ध करते हुये उसको मैं कहताहूं तुम चित्तलगाकर सुनो कि वह महाबली युद्ध में प्रशंसनीय विजय के चाहनेवाले वेदपाठी पाण्डव सोमकों समेत कुरुक्षेत्र में उतर कर कौरवों के सन्मुख वर्त्तमान हुए, और पराक्रम के द्वारा विजयकी आशा रखनेवाले युद्धभूमिमें वर्त्तमान दुर्योधन के उसदुःखसे महाखेदित सेनाके सन्मुख पहुंचकर कुरुक्षेत्र के पश्चिम भाग में सेनाओंके मनुष्यों समेत पूर्व्वाभिमुख हो स्थिरता से नियतहुए फिर कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर ने स्यमन्तपंचक से बाहर अपनी बुद्धिके अनुसार हज़ारों शिविर अर्थात् खेमेडेरे तंबू तैयार किये और वृद्ध बालक स्त्री इनको छोड़कर सब पृथ्वी के मनुष्य मात्र हाथी घोड़े रथ इत्यादि समेत यहांतक इकट्ठे हुए कि पृथ्वी के प्रदेश निर्जन से होगये, हे राजेन्द्र जनमेजय जहांतक कि सूर्य जम्बूद्वीप में प्रकाश करता हुआ सन्तप्त करता है उस पृथ्वी मंडल के सबराजा लोग अपनी २ सेनाओंसमेत आकर इकट्ठे हुये सब वर्णोंने देशनदी पर्व्वतों को और बहुत योजन के उस पृथ्वी मंडलको उल्लंघन करके एक स्थानमें निवास किया, तब महाबुद्धिमान् राजायुधिष्ठिर

ने उनश्रेष्ठक्षत्री राजाओंसे लेकरम्लेच्छपर्य्यन्त लोगोंके निमित्त बहुत उत्तम२ प्रकारके भोजनों के बनवानेकी आज्ञादी और भोजनके अनन्तर रात्रिके समय सब लोगों को उत्तम स्वच्छ बिस्तरों समेत शय्या सोनेकोदीं इस प्रकारसे इसबुद्धिमान् पांडवोंके बड़ेभाई युधिष्ठिरने सबका यथोचित मान सन्मान करके युद्ध वर्त्तमान होनेके समयपर अपनी सेनाके मनुष्यों की पहचान के लिये सबके चिह्ननाम और आभूषण रथआदि में लगवादिये, तब तो महासाहसी दुर्य्योधनने अर्ज्जुनकी ध्वजा पताकाको देखकर सब राजाओं समेत अपनी सेनाको पाण्डवोंसे लड़नेके लिये युद्धमें सन्नद्ध किया और आपभी अपने श्वेत छत्रको धारण करके भाइयों समेत हजारों हाथी घोड़ों समेत उपस्थितहुआ दुर्य्योधनकी इस धूमधाम और तैयारी को देखकर युद्धाभिलाषी प्रसन्नचित्त बिजय के चाहने वाले पांचालने बड़े शब्दायमान शंख और मधुरबाणी वाली दुन्दुभी को बजाया तदनन्तर पांडव और श्री कृष्णजी उस अपनी सेनाको प्रसन्नचित्त देखकर महा आनन्दित हुये फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों बीरपुरुषोंनेरथमें सवार होकर अपने दिव्य शंखों की ध्वनिकरी इनदोनों पुरुष सिंहबीरोंके पांचजन्य और देवदत्त नाम शंखोंकी ध्वनिको सुनतेही कौरवी सेनाके बीरोंने मारे भयके मूत्र और बिष्ठा करदी जैसे कि सिंहकी गर्जनाको सुनकर अन्य मृगादि पशु भयभीत होकर मूत्र पुरीषादि करडालते हैं वैसेही कौरवी सेनाभी शंखोंके शब्दोंको सुनकर व्याकुलहोगई और पृथ्वीकी धूलि आकाशको ऐसी उड़ी जिसके कारण सूर्य अस्तंगतसा होगया और कुछनहीं जानागया और सूर्य्यको अस्तकी समान जानकर मांसरुधिरके बरसाने वाले बादलने उससमय सेनाके चारों तरफ के मनुष्यों पर मांस और रुधिरकीबर्षाकरी यहबड़ा आश्चर्य्यसा हुआ तदनन्तर नीचेकी ओरसे पृथ्वीके कंकड़ोंका खींचनेवाला बायु बड़े वेगसे ऐसा प्रचण्डहुआ कि जिसने संपूर्णसेना के मनुष्यों को घायल कर दिया हे राजेन्द्र इस प्रकारसे पीड़ित होकर दोनों ओरकी सेनाओं के मनुष्य युद्धकरनेके लिये अत्यन्त प्रसन्नचित्त कुरुक्षेत्रके मैदानमें नियत हो सावधान और व्याकुल होकर शोभित सागरकी समानताको प्राप्तहुए अर्थात् उन दोनों सेनारूपी समुद्रों का ऐसा अपूर्व योग हुआ जैसा कि प्रलयके समय दोनों समुद्रों का सम्पात होता है, और सब पृथ्वी जिसमें केवल बालक और वृद्ध ही शेषरहगयेथे वह कौरवोंके बुलायेहुए उनसेनाओंके समूहोंके कारणघोड़े मनुष्य रथ और हाथियों से भी शून्य होगई तदनन्तर उन कौरव पांडव और सोमकोंने नियम करके युद्धके इन धर्म्मों को नियतकिया कि इसनियत कियेहुये युद्ध के समाप्त होनेपर हम सबकी प्रीति परस्परमें होवे, इस निमित्त

कि फिर किसीके एक से मिलाप में भिन्नभाव न होनेपावे वचन रूप शस्त्रों से सन्मुख होने वालोंको वचनोंहीसे लड़ना योग्य है सेना से बाहर होजाने वालेको कभी न मारना चाहिये रथीरथीसे हाथीका सवार हाथी के सवारसे अश्वारूढ़ अश्वारूढ़से पैदल पैदल से लड़ने को योग्य हैं अर्थात् जैसा कि उचित युद्ध होताहै वैसाही अपने बलपराक्रम के साथ करना योग्य है और मुख से बोल कर शस्त्र प्रहार करना चाहिये परन्तु विश्वासित और व्याकुलमनुष्य पर शस्त्र प्रहार करना अयोग्य है और एक के साथ भिड़ेहुएशरणमें आयेहुए वा ऐसे व्याकुल लोग जो टूटे शस्त्र और विना बख्तरके हों उनको कभी न मारना चाहिये इनके सिवाय सोतेहुयों को शस्त्रों के लाने वाले वा बनाने वालोंकोभी न मारे और भेरी शंख नगाड़े आदि बाजोंपर किसी दशा में भी शस्त्र न चलाना चाहिये इसप्रकार उनसब परस्परदेखने वाले कौरव पांडव और सोमकोंने नियम करके बड़ाआश्चर्य्य किया इसके पीछे वह सब महात्मा वीर युद्ध भूमिमें प्रवेश करके, अपने पराक्रमी सेना के प्रसन्नचित्त मनुष्यों समेत मनमें प्रसन्नहुए ३५ ॥

इतिश्री महाभारतेभीष्मपर्व्वणि युद्धनियमवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशम्पायनबोले कि युद्धके नियम होनेके पीछे सब वेदयज्ञों में श्रेष्ठ सत्यवती के पुत्र भरतवंशियों के पितामह आगे होनेवाले युद्धके वृत्तान्त के प्रत्यक्षदर्शी भूत भविष्य वर्त्तमान के ज्ञाता समर्थ भगवान् वेदव्यास ऋषि कौरव पाण्डवों की सेनाको दोनों ओर तैयार देखकर उस शोचग्रस्त अपने पुत्रोंके अन्याय के ध्यान करनेवाले राजाधृतराष्ट्र से गुप्त प्रयोजन के साथ यहवचन बोले कि हे राजन् तुम्हारे पुत्र और अन्य तुम्हारे सहायक राजा लोग मृत्यु के वशीभूत हैं वह युद्धभूमि में एक २ दूसरेसे सन्मुख लड़कर नाशको पावेंगे, हे भरतवंशी उन मृत्यु के वशीभूत और नाश होनेवालों में समय की विपरीतताको जानकर शोकग्रस्त मनको मतकर हे राजा जो तू इनको युद्ध में देखा चाहता है तो मैं हे पुत्र तुझको नेत्र देताहूं तू उनके युद्धोंको देख, धृतराष्ट्र बोले कि हे ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ मैं अपने ज्ञाति बन्धु और पुत्रोंका मरना नहीं देखना चाहताहूं केवल यही चाहताहूं कि आपके तेज से युद्धका सब वृत्तान्त सुनाकरूं, वैशम्पायन बोले कि जब व्यासजी ने धृतराष्ट्रको जाना कि यह युद्ध देखना नहीं चाहता किन्तु पूरा पूरा वृत्तान्त युद्ध का सुनना चाहता है तब महावरदायी होकर उन्होंने संजयको वरदिया और राजा से कहा कि हे राजा यह संजय तुमसे सब लड़ाई का वृत्तान्त कहैगा

दिनमें या रात्रिमें गुप्त प्रकट कैसाही वृत्तान्त हो सब तुमसे वर्णन करेगा और यह संजय दूसरे के मनकी शोची हुई बातको भी जानेगा शस्त्रों से इसका घात नहीं होगा और यह परिश्रम से कभी खेदित भी नहीं होगा हे पुत्र धृतराष्ट्र यह गोलगनका बेटा इस युद्ध से अलग रहैगा और हे भरतर्षभ मैं इन कौरव पाण्डव और सब राजाओं की कीर्त्तिको कथाओं के द्वारा विख्यात करूंगा हे नरोत्तम ऐसाही होनेवाला है इसमें तुमको शोच करना अवश्य नहीं है, वह होनहार बात रोकने में नहीं आसक्ती जिधर धर्म है उधरही विजय है बैशम्पायन बोले कि वह कुरुवंशियों के पितामह महाभाग भगवान् व्यासजी ऐसा कहकर फिर धृतराष्ट्र से बोले कि हे महाराज यहां इस युद्धमें बड़ी हानिहोगी क्योंकि मैं यहां भयकारी कारण को देखताहूं बाज गिद्ध कौवे और कंकनाम पक्षी बगलों समेत वृक्षों की डालियों पर एक साथही गिरते हैं और इकट्ठे होजाते हैं यह सबपक्षी बड़ेप्रसन्न होकर युद्धको सन्मुख देखते हैं और कच्चामांस खानेवाले जीव हाथी घोड़ों के मांस को खायँगे, भयानक और भय उत्पन्न करनेवाले कंकनाम पक्षी निर्दयता के शब्द करतेहुये मध्यमें से दक्षिणदिशा की ओर चलेजाते हैं हे भरतवंशी मैं पहली और पिछली दोनों संध्याओं में उदय और अस्त होनेवाले सूर्य्यनारायण को सदैव प्रतिदिन राहुसे घिरा हुआ देखताहूं श्वेत लोहित रक्त इत्यादि अनेक रंग धारण करनेवाली विद्युतने संध्या के समय सूर्य्य को घेर लिया है यह मैं रात्रि दिन देखताहूं यह भयंकर उत्पात के सूचक लक्षण हैं और सूर्य्य चन्द्रमा नक्षत्रादिमें से अग्नि के कण निकलते मालूम होते हैं यह भी महा अशुभ शूचक उत्पात हैं, कार्त्तिकमास की पूर्णिमासी के दिन आकाश में लालरंग चन्द्रमा प्रभारहित अपने कृष्ण चिह्नके विना अग्नि के समान वर्णवाला दिखाई दिया, इसका फल यह दिखाई देरहा है कि परिघ के समान प्रलम्ब भुजवाले शूरबीर और मृतक राजालोग वा राजकुमार पृथ्वीको आच्छादित करके सोवेंगे और अन्तरिक्ष में उछल २ कर लड़ते हुये बराहनाम सूकर और वृषदंश दोनों के भयकारी महाशब्दों को रात्रि के समय नित्य २ देखता और सुनताहूं और देवताओं की मूर्त्तियां कांपती हँसतीहुई मुखोंसे रुधिर उगलती हैं और पसीनों में तरहो होकर पृथ्वीपर गिरती हैं और हे राजन् दुन्दुभियां बिनाबजाये आप अच्छेप्रकार से बजती हैं और क्षत्रीलोगों के बृहत् और उत्तम दिव्य रथ घोड़ों के बिनाही चलते हैं कोकिल शतपत्र नीलकण्ठ भास और तोते सारस मोर यहसबपक्षी भयानक शब्दोंको करते हैं और घोड़ोंकी पीठोंपर बैठेहुये बाज अपने जिह्वा रूपी शस्त्रों से शब्द रूपी आघातों को करते हैं और सूर्य्य के उदय होने पर टीड़ियों के ह-

जारों समूह दृष्ट पड़ते हैं हे भरतवंशी दिग्दाह युक्त दोनों संध्या प्रकाशमान् होती हैं और बादलों से मांस और धूलि की वर्षा होती है और यह जो साधुओं की मानी हुई अरुन्धती तीनों लोकोंमें प्रसिद्धहै उसने भी वशिष्ठजीकी ओर पीठकी है और यह शनिश्चर रोहिणी नक्षत्रको पीड़ित करताहुआ वर्त्तमानहै चन्द्रमाका रूप ढक गया इन सब उत्पातोंसे महाभय उत्पन्न होगा और बिना बादलोंके आकाश में बड़ी भारी भयानक गर्जना सुनी जातीहै और रोती हुई सवारियों के अश्रुपातों की वृष्टि पृथ्वी पर होतीहै ३१ ॥

इतिश्री महाभारतेभीष्मपर्व्वणिभयानकउत्पातवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि हे राजा गधे गौओं के साथ विषय करते हैं और पुत्र माताओं के साथ रमण करते हैं और वनके अनेक वृक्ष बिना ऋतु के फल फूलोंको दिखलाते हैं गर्भवती पुत्र उत्पन्न करने वाली स्त्रियां भयकारी बालकोंको उत्पन्न करती हैं गधेआदि पशु कच्चे मांस खाने वाले पक्षियों के साथ मिलकर परस्पर भोजन करते हैं, तीन सींग चार नेत्र पांच पैर दोलिंगेन्द्री दो शिर दो पूंछ वाले असभ्य अशुभ रूप मांसाहारी और निर्मांसाहारी पशु उत्पन्न होते हैं और तीन पंजे चोटी चार डाढ़ सींग धारण किये गरुड़ नाम पक्षी अशुभ और भयानक शब्दों को बोलते हुये उत्पन्न होते हैं ४ इसी प्रकार ब्रह्मवादियों की स्त्रियां भी विपरीत दृष्ट आती हैं तेरे पुरमें गरुड़ पक्षी मोरों को उत्पन्न करते हैं हे राजा घोड़ी गौ के बछड़े को और कुतियां शृगाल को और तोते अशुभ बोलने वाले कुक्कुट और करभोंको उत्पन्न करतेहैं कोई २ स्त्रियां चार २ पांच २ कन्याओंको एक समय में उत्पन्न करती हैं आश्चर्य्य यह कि वह कन्या पैदा होतेही नाचती गाती और हँसती हैं और सब नीच मनुष्यों के नातेदार भाई बन्धु काने कुबड़े आदि भी होकर हास्य करते भय को दिखलाते हुये नाचते और गाते हैं यह शस्त्रधारी मूर्तियां काल के विपरीत होने से गिरती हैं और बालक लोग हाथों में दण्ड लियेहुए परस्पर में एक दूसरे के सन्मुख दौड़ते हैं और युद्धाभिलाषी होकर अपने बनाये हुये नगरों को परस्पर विध्वंस करते और स्थानोंको ढाते हैं, पद्म, उत्पल कुमुद और सूर्य्य के उदय में खिलने वाले कमल वृक्षों पर पैदा होतेहैं और संसार में चलने वाले वायु भयानक चलते हैं और धूलोंका उड़ना शान्त नहीं होता है, पृथ्वी अत्यन्त प्रकाशित होती है और राहु सूर्य्य से मिलता है इसी प्रकार केतु भी चित्रा नक्षत्र को घेरेहुये नियत है यह अधिकतर कौरवों के नाशको देखता है और बड़ाघोर धूम्रकेतु पुष्य नक्षत्र

को दबाये हुए उपस्थितहै यह महाउग्र ग्रह दोनों सेनाओंकेघोर अकल्याण को करेगा मंगल तिरछा होकर मघानक्षत्र में और वृहस्पति श्रवण नक्षत्र मेंहै और सूर्य्य के पुत्रशनैश्चर से पूर्वाफाल्गुनी वा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र दबकर पीड़ित किये जाते हैं और शुक्र पूर्व्वाभाद्रपद नक्षत्रमें चढ़करउसको दबाये हुये प्रकाश करता है और परिघ नाम उपग्रह के संग होकर उत्तराभाद्रपद नक्षत्रकी ओर देखता है और केतुग्रह सधूम अग्नि के समान जल रहा है और महाप्रज्वलित भयकारी राहुइन्द्र से संबंधरखनेवाले तेजस्वी ज्येष्ठा नक्षत्र को व्याप्त करके बर्त्तमान है और अपसव्य होकर बर्त्तमान है वह कठिन ग्रह चित्रा और स्वाती के मध्य में बर्त्तमान रोहिणी नक्षत्र और दोनों सूर्य्य और चन्द्रमा को पीड़ा देता है और अग्नि के समान प्रकाशवान् मंगल बारम्बार तिरछा होकर वृहस्पति जीसे दबायेहुये श्रवण नक्षत्रको पूर्णदृष्टी से बेधे हुये वर्त्तमान हैं, खेतीसे प्रशंसा पानेवाली पृथ्वी सबप्रकार के खेतोंसे आच्छादित होकर पांचशिर वाले जौ और सौ शिरवालेधानों को उत्पन्न करतीहै, संसारमें पूज्य और जिनमें यह सबजगत् वर्त्तमान है ऐसी गौएं अपने बछड़ों के समीप होकर रुधिरको छोड़ती हैं, इस का यहफलहै कि धनुषों से अग्नि निकले और खड्ग अत्यन्त अग्नि रूपहों और शस्त्र व्यक्त होकर संग्राममें युद्धको प्रकट देखें और शस्त्रोंकी चमक का रंग अग्निके समान है कवच और ध्वजाओंका बड़ा नाशहोगा, हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र पांडवोंके साथ कौरवों की शत्रुता होनेपर पृथ्वीपर रुधिर की नदियां बहेंगी और ध्वजारूप नौकाओं से व्याप्तहोकर व्याकुल होंगी और अत्यन्त क्रोध रूप मुखसे पशुपक्षी बड़ेभयको सूचितकरते और अशुभको प्रकाश करते हुए दिशाओंमें बोलते हैं, रात्रि के समय एक पक्ष एकनेत्र और एकही चरणका रखनेवाला अत्यन्त क्रोधी आकाशचारी पक्षी रुधिरको उगिलता हुआसा भयकारी शब्दोंको करताहै, हेराजेन्द्र शस्त्रअग्नि के समान बर्त्तमानहैं जिनसे महातेजस्वीसप्तऋषियोंके प्रकाश मंदहोकर ढकेहुएसे बिदित होतेहैं, और अत्यन्त तेजस्वी वृहस्पति और शनैश्चर दोनोंग्रह बार्षिक गति में नियत होकर बिशाखा के सन्मुख नियत दीखते हैं एकही दिन तेरस तिथिको दोनों सूर्य्य और चन्द्रमा ग्रसेगये और बिनापर्वकेराहु ग्रह से मिले हुये प्रजाके नाशको चाहते हैं, चारोंओर धूलिकी बर्षासे सबदिशाअशोभितहोगईं और रात्रिके समय बड़े भयानक उत्पात और रुधिर को मेघ बरसाते हैं, और हेराजन् राहुकृत्तिका को पीड़ा देता हुआ अपने कठिनकर्मों से भरा हुआ देखागया है, धूमकेतु नाम उत्पात में नियत होकर बायुचलते हैं यह बायु महा युद्धकारी शत्रुता को उत्पन्न करतेहैं, और हे राजा सब नक्षत्रों

मध्य रक्षा न करने वाला पापग्रह बड़े भयको पैदा करताहुआ तीनों छत्रों में सबके शिरोंके छत्रों कलशों पर गृद्ध्र पक्षी होकर गिरता है, एक मासकी तेरस तिथिको विना पर्वके चन्द्रमा और सूर्य्य दोनों राहु ग्रहसे ग्रसेगये हैं यह दोनों प्रजाका नाशकरेंगे इसलिये मैं चौदशपूर्णमासी और व्यतीतप्रतिपदा को जानताहूं परन्तु अमावास्या और तेरस के योगको नहीं जानता हूं वहां रुधिर से भरे हुए मुखवाले राक्षस लोगोंकी तृष्णा अधिक शोणित पीनेकी होगी और नदियों में बड़ी नदियां तो विरुद्ध प्रवाह युक्त होगईऔर छोटी नदियां रुधिर समान जलको बहने लगीं कुएं फेनोंसे भरेहुए बैलों के समान क्रीड़ा करते हैं और इन्द्र के वज्र के समान प्रकाशमान महाशब्दायमान उल्कापात होतेहैं अब तुम प्रातःकाल अन्याय के फल को पाओगे और महर्षियों ने भी सब दिशाओंमें अंधेरा देख मसालें बाल घरसे बाहर निकलकर परस्पर में एकत्र होकर कहाहै कि पृथ्वी हजारों राजाओं के रुधिर को पीवेगी और हे समर्थ इसी प्रकार कैलास मन्दराचल और हिमाचल पर्व्वतों से हजारों बड़े घोर शब्द शिखरों पर गिरते हैं, और पृथ्वीके कम्प से चारों समुद्र पृथक् २ अपनी २ मर्य्यादाओं को उल्लंघन और सब संसारको व्याकुल करतेहुए बड़ी वृद्धियुक्त हुए हैं और कंकड़ों से भराहुआ भयानक वायु ऐसा चलता है कि जिसके वेगसे बिजली से सताये हुए अनेक वृक्ष टूट २ कर गांवोंकी सीमाओं और नगरोंके भीतर जाकर गिरते हैं और ब्राह्मणोंसे होमीहुई अग्नि नील रक्त और पीतरंग की होतीहै वह दुष्टगंधा वामार्ची भयानक शब्दकोकरती विदित होतीहै हेराजा स्पर्श गंध और रससबविपरीत हैं, वारंवार कंपायमान होकर ध्वजायें धूमको छोड़ती हैं और चारोंदिशाओंमें अच्छे फूले फले वृक्षोंके ऊपर अग्नि मंडल में बैठेहुए काक भयकारी रोदन करते हैं और पक्षी पक्का पक्का अर्थात् नाशहोने वालोंका परस्पर युद्ध है ऐसे अत्यन्त शब्द करते हैं और राजाओं के नाश सूचन करने को ध्वजाओं की नोकोंमें छिपजाते हैं दुष्ट हाथी ध्यान करते हुए मूत्र विष्ठाको करते कंपायमानहैं और गरीबहाथी और घोड़े पसीनोंमें चूर हैं अब तुमयहां यह बातें सुनकर समय के अनुसार निश्चय करो जिस्से कि हे भरतवंशी यह संसारनाश न होवे वैशंपायन बोले कि पिताके इन वचनों को सुनकर धृतराष्ट्र यह बोला कि हे पिता व्यासजी मैं इसको समीपही होनहार मानताहूं और मनुष्यों का नाश होगा, जो राजा लोग क्षत्रीधर्मसे युद्धमें मरेंगे वह सब वीरोंके लोकों को पाकर मोक्षरूप सुख को पावेंगे, हेपुरुषोत्तम भारीयुद्ध में प्राणोंको त्यागकर यहां तोकीर्ति और परलोक में बहुत काल तक महा सुखको पावेंगे वैशंपायन बोले कि हे राजेन्द्र जनमेजय वह कवीन्द्र व्यासदेव

मुनि ऐसाही है यह कहकर अपने पुत्र धृतराष्ट्र के साथ चिन्तामें ग्रसितहुये और एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त ध्यानावस्थित होकर यह वचन बोले कि हे राजा निस्सन्देह काल जगत् को नाश करताहै और फिर उत्पन्न भी करताहै यहां किसीको सदैवता नहीं प्राप्त है, तुम जातवाले, कौरव, नातेदार और मित्रों के धर्मरूप मार्गों को उपदेश करो और तुम्हीं उनके रोकनेमेंभी समर्थहो ज्ञातिवालों का मारना नीचकर्म कहाजाता है इससे इसमेरी अप्रियबातको मत कर हे राजन् यह काल तेरे बेटेदुर्योधन के रूपसे प्रकट हुआहै, मारने वाले को वेदमें अच्छानहीं कहते हैं और किसीदशा में भी वह प्रियकारी नहीं है जो धर्मको मारताहै वह धर्म उसीको मारताहै कुलका धर्म अपना देहहै,समर्थहोनेपर इसकुलके और इसीप्रकार अन्य राजाओं के नाश के लिये काल से प्रेरित होकर तू आपत्तिकाल के समान कुमार्ग में चलताहै, हे राजा तेरा अनर्थ राजरूप से उत्पन्न हुआहै तू अत्यन्त अधर्मी है अपने पुत्रोंको धर्म का उपदेशकर, हे दुर्धर्ष तुझको राज्य से क्या लाभहै जिसके लिये तैंनेपाप को बिसाया है अपने यश और धर्मका पालन कर जिससे कि तू स्वर्ग को पावेगा पाण्डवोंको राज्य दो और कौरवों को शान्ती दो यह पिताके वचन सुनकर अम्बिकाका पुत्र वचन का जाननेवाला धृतराष्ट्र पिताके इनशिक्षारूपी वचनों को तिरस्कार करके फिर यहवचन बोला कि जैसा आपजानते हैं वैसाही मैं भी जानताहूं और मुझको अपना और दूसरोंका जीवन वा नाश ठीक २ विदित है हे तात यहलोक अपने प्रयोजन में बड़े २ मोहोंको पाता है आप मुझकोभी लोकरूपही जानो, हे महाप्रभाव वाले मैं आपको प्रसन्न करताहूं आप पण्डित होकर हमारी गति और उपदेश के करनेवाले हो परन्तु हे महर्षी वह पुत्रमेरे स्वाधीन नहीं हैं और मैं बुद्धिसे अधर्म करने को नहीं चाहताहूं आप भरतवंशियोंके यश और कीर्तिके कारणरूपहोऔर कौरव पाण्डव दोनों के पितामह भीहो, व्यासजी बोले हे राजा धृतराष्ट्र जो तेरेमन में वर्त्तमानहै उसको तू इच्छा पूर्व्वक कहमैं तेरेसब सन्देह दूरकरूंगा धृतराष्ट्र ने कहा कि युद्ध के बीचमें विजयपाने वालोंके जो चिह्न होते हैं उनसबको हे भगवन् मैं आपसे मूलसमेत सुना चाहताहूं, व्यासजी बोले कि स्वच्छ अग्नि प्रकाशमान ऊंचीज्वालायुक्त प्रदक्षिणावर्त्ती निर्धूमहोऔर जिसमें आहुतियों की पवित्र सुगंध उठती होय तो विजयहोवे वाले पुरुषका शुभलक्षणहै, और जहां शंखमृदंगों की बड़ी गम्भीर ध्वनिहो और बड़ेशब्द से बजतेहों और सूर्य्य चन्द्रमा की स्वच्छ किरणें पड़तीहों उसको विजयहोने का लक्षण जानो ६६ चलते हुये वा जाना चाहते काकों के बोलेहुये चित्तरोचक ऐसे बचन विदितहों जोकि पीठकी ओरसे तेरीयात्राको जल्दी करते हैं

और आगे से तुझको निषेध करते हैं, जिस स्थानपर युद्धभूमि में राजहंस तोते क्रौंच और शतपत्र नामपक्षी शुभवचन बोलते हुए दक्षिणओरको होंय उस स्थानपर विजयका होना ब्राह्मण वर्णन करते हैं जिन क्षत्रियोंकी सेना अलंकारादि और कवच ध्वजा वा घोड़ों के हींसने के सुखदायी शब्दों से शोभायमान कष्टसे देखने के योग्यहो वह क्षत्री अवश्य शत्रुओं को विजय करतेहैं, हे भरतवंशी जहां शूरवीरों के वचन प्रसन्नता से भरे हुए पराक्रम में तुलेहुये होते हैं और जिनकी माला कुँभलाती नहीं है वह पुरुषरणरूपी समुद्रको तरजाते हैं, शत्रुकी सेना में प्रवेश करके देखनेकी इच्छाकरने वाले योद्धाओं के प्रसन्न मन सावधानी से संयुक्त हों उनके वचन विजयको धारण करते हैं और जो सन्मुख निषेध करनेवाले हैं वहभी मृत्युसे विदित करने वाले हैं, रूप, रस, शब्द, गन्ध, स्पर्श यह शुभऔर रूपान्तर दशासे रहितहों अर्थात् अपने मुख्य रूपमें ही नियतहों और योद्धाओं में सदैव प्रसन्नताहोय यहभी विजय,पानेवालोंके उत्तमचिह्नहैं,अनुकूलवायुहो इसीप्रकार बादल वा पक्षीभी हों अथवा बादल पीछे चलतेहों और इन्द्रधनुषभी इसीप्रकार हो, हे राजा यह सब विजयीलोगोंके लक्षणहैं और यही सब लक्षण मरने वालोंके लिये विपरीत,होते हैं थोड़ी वा बहुत सेना में योद्धा लोगों की केवल एक प्रसन्नताही विजयकी देनेवाली है एकभी भागाहुआ योद्धा बहुतबड़ी सेना को भी भागी हुईसी कर देताहै उस भागे हुएके पीछे बड़े शूरवीर योद्धा भी भाग जातेहैं भागी हुई सेना बड़ी कठिनता से फिर लौट सक्ती है जैसे कि जलोंके बड़े वेग और डर हुये मृगों के समूह कठिनतासे नहीं लौट सक्ते इसी प्रकार भागीहुई सेना कोभी जानो, हे भरतवंशी बड़ी सेना को सन्मुख नियत करना असम्भव है क्योंकि भागे हुओं में बड़े बुद्धिमान् भी भाग जाते हैं, भयभीत और अलग २ होजाने वाले शूरवीरों को देखकर और भी भय बढ़जाता है हे राजा अत्यन्त व्याकुल सेना अकस्मात् चारों ओरों को भागती है ऐसी बड़ी सेना शूरवीरों से भी नियत करनी कठिन है राजा अपनी चतुरंगिणी सेनाको अच्छे प्रकार से ध्यान करके युद्ध करे युक्तियों से अर्थात् शत्रु के चाहने से वा कुछ धन देने से जो विजय होती है वह उत्तम विजय कही जातीहै और शत्रु के मनुष्यों के मध्यमें विरोधता डलवाने से जो विजय होती है वह मध्यम विजय कहाती है और जो विजय युद्ध के द्वारा होती है उसको निकृष्ट विजय जानो क्योंकि युद्ध में बड़े २ दोष होते हैं उसका प्रथम फलतो नाशहै, परस्पर में ज्ञाता प्रसन्न चित्त स्त्री आदि में मोह से रहित दृढ़ निश्चयरखने वाले पचास शूरवीरपुरुष भी बड़ी भारी सेना को विध्वंस करते हैं अर्थात् ऐसे लड़ते हैं कि सबको मार

कर विजय पाते हैं और मुख न फेरने वाले पांचछः वा सात शूरवीरभी पूरी बिजय को करते हैं, हे भरतबंशी उत्तम पक्षधारी बिनता के पुत्र गरुड़ जी बड़ी सेना से भी हानिको देखकर बड़े भारी समूह को अच्छा नहीं कहते हैं सेनाकी आधिक्यतासे बहुधानित्य विजय नहीं होतीहै निश्चयकरके विजय नाशवान् है इसमें प्रारब्धभी मुख्य है क्योंकि प्रारब्ध वालेही पुरुष युद्ध में विजय प्राप्त करके अपने अभीष्टको सिद्ध करते हैं ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि तृतीयेऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि हे राजा जनमेजय व्यासजी इस प्रकार की अनेक बातें बुद्धिमान् धृतराष्ट्र से कहकर चलेगये और उनकी बातोंको ध्यानकरके धृतराष्ट्रभी चिन्तायुक्तहुआ और हे भरतर्षभ उसने एक मुहूर्त्त पर्यन्त ध्यानावस्थितहो,बारम्बार श्वासलेकर उस बुद्धिमान् संजयसे पूछा कि हे संजय इस स्थानपर यह युद्ध में प्रशंसनीय शूरवीर राजा लोग छोटे बड़े शस्त्रों के द्वारा परस्पर में मारते हैं, यह सब जीवनकी आशाको त्यागे हुये बुद्धिमान् राजा लोग पृथ्वी के कारण मारतेहुये शान्ती को नहीं पाते हैं और यमलोक को बढ़ातेहैं पृथ्वीसंबंधी ऐश्वर्योंको चाहतहुये परस्परमें क्षमा संतोष इत्यादि नहीं करते हैं मैं जानता और मानताहूं कि पृथ्वी बहुत गुण धारण करने वाली है हेसंजय इसको मुझसे कहो, कुरु और जांगल देशमें संसार के कोट्यवधि क्षत्री इकट्ठे हुये सो हेसंजय मैं उनके देश नगर ग्रामोंकी संख्यामूलसमेत सुनना चाहताहूं जहां जहां से यह आये हैं, तुम उनमहातेजस्वी ब्रह्मऋषि व्यासजी के प्रभावसे दिव्य बुद्धिरूप दीपक और ज्ञानरूप नेत्रों से संयुक्तहो, संजय बोले कि हे भरतर्षभ महाज्ञानी धृतराष्ट्र मैं अपनी बुद्धि के अनुसार पृथ्वी के गुणोंका बर्णन करूंगा तुमभी शास्त्ररूपी नेत्रों को धारण किये बिचार करो मैं आपको नमस्कार करताहूं, यहां दो प्रकारके जीवधारी हैं एकस्थावर दूसरे जंगम अर्थात् नहीं चलने वाले और चलने वाले और सब जीवमात्रका उत्पत्ति स्थान तीन प्रकारसे है अर्थात अंडज स्वेदज जरायुजसे है और जंगम जीवों में जरायुज उत्तम हैं और जरायुजों में मनुष्य वा पशु हैं वह दोनों अत्यन्त उत्तम हैं वही अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाले हैं उनके प्रकार जो वेद में कहेगये हैं वह संख्या में चौदह हैं उन्हीं में यज्ञादि धर्म नियत हैं और ग्राम वा नगर के बासियों में मनुष्य श्रेष्ठ हैं और बनबासियों में सिंह उत्तम हैं सबजीवों का जीवन निर्बाह परस्पर में है पृथ्वी को फोड़कर उत्पन्न होनेवाले वृक्षादिक स्थावर कहे

जाते हैं उनके पांच भेद हैं वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली त्वचासार और तृणजाति, पंच महा भूतों में उनके उन्नीस प्रकार हैं अर्थात् स्थावर जीव ५ और जंगम १४ और लोक में गायत्री भी चौबीस अक्षरों को उपदेश कीजाती है सो हे राजा जो जीवधारियों में से उस सर्वगुणसम्पन्न गायत्री को मूल समेत जानता है वह इस संसार में नाश नहीं होता है, सब पृथ्वी में ही उत्पन्न होते हैं और पृथ्वीपर ही नाश होजाते हैं पृथ्वी सब जीवों का निवास स्थान होकर बहुत प्राचीन है, इन जीवों में सात ग्रामवासी वा सात नगर निवासी हैं सिंह, व्याघ्र, वराह, भैंसा, हाथी, रीछ, वानर यह सात वनवासी कहे जाते हैं गौ बकरी भेड़ मनुष्य घोड़ा खिच्चरगधा इन सातोंको साधूलोग ग्रामवासी कहते हैं और यही ग्रामवासी और वनवासी चौदह पशु हैं इन्हीं चौदह पशुओं में मनुष्यभी गिनाजाता है जिसकी पृथ्वी है उसीका यह सब स्थावर जंगम जगत् है उसमें लोभी राजा लोग परस्पर में मारते हैं २१॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसंजयधृतराष्ट्रसंवादेचतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय नदी पर्व्वत देश और अन्य अन्य जो पृथ्वी पर नियत हैं उन सबके नामोंको वर्णन करो, हे प्रमाण के भी ज्ञाता संजय पृथ्वी का प्रमाण जैसा कि सब ओर से है उस सबको मूल समेत मुझ से वर्णन करो, संजय बोले कि हे महाराज पण्डितलोगों ने इन सब पञ्च महाभूतों को एकत्र होजाने से ब्रह्माण्डरूप और ब्रह्मरूप वर्णन किया है, पृथ्वी जल, वायु, अग्नि, आकाश यह पाँचो क्रम से एक से दूसरा एक एक गुण अधिक रखनेवाले हैं, मूल जाननेवाले ऋषियों ने पृथ्वी के शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध यह पांच गुण कहे जल में चार गुण हैं एक गन्ध गुण नहीं है अग्नि के तीन गुण शब्द स्पर्श और रूप वायु में शब्द वा स्पर्श है आकाश में केवल एक शब्दही गुण है, हे राजा पञ्च महाभूत रूप सब लोकोंमें यही पांच गुण वर्त्तमान हैं, उन्हीं में जीवधारी नियत हैं, निश्चय करके जब प्रलय सुषुप्ति, समाधि, मोक्ष इन चारोंमें ब्रह्मभाव होता है तब वह भक्ष्य भक्षक परस्पर में सन्मुख नहीं होते और जब वह ब्रह्मभावसे गिरकर परस्पर भिन्न २ रूपों में प्रवेश करते हैं तब निश्चय करके जीव जीवों पर गिरते हैं क्रम से ही उत्पन्न होते हैं और क्रम क्रम से ही नाश होजाते हैं और वह सब असंख्यहैं इस कारण इन सबका ब्रह्मरूप है फिर प्रलय के पीछे पञ्चभूत सम्बन्धी भूगोल आदि धातु जहां तहां दृष्टिगोचर होते हैं उनके प्रमाणों को मनुष्य बुद्धिकी तर्कणाओं से कहते हैं अर्थात् सिद्धलोग ब्रह्माण्ड को भेदकर जाते

हैं वहां भी वासनारूप धातु और पंचभूत सम्बन्धी प्रकटरूप धातु दिखाईदेती हैं इस कारण वह असंख्य हैं, निश्चयकरके जो ध्यान से भी बाहर हैं उनको तर्कणाओं से कैसे सिद्ध करसक्तेहैं, जो तीनों गुण और पञ्चभूतादि से पृथक् हैं वह ध्यान भी अगम्य ब्रह्म का लक्षणहै, हे कौरवनन्दन अब मैं सुदर्शन नाम जम्बूद्वीप का वर्णन करता हूं कि यह परिमण्डल नाम द्वीप चारों ओर से देशरूप अथवा चक्र के समान नियत है, नदियों के जल से और बादलों के रूप पर्व्वतों से अथवा नानाप्रकार के रूपवाले पुर वा देशों से ढकाहुआ है और फूले फले वृक्ष धन धान्य आदि से संयुक्त खारी समुद्र से घिराहुआ है, जैसे कि मनुष्य दर्पण में अपने मुख को देखता है उसी प्रकार सुदर्शन द्वीप ब्रह्माण्ड स्वरूप चन्द्रमण्डल रूपी मन में दिखाई देता है, उस मनरूप चन्द्रमंडल के एक सूक्ष्म बृत्तीनाम भागमें स्थूल सूक्ष्मनाम दो रूप धारी संसाररूपी पीपलका वृक्षहै और मनके एकभागमें ईश्वर जीवनाम दोरूप रखनेवाला परमात्माब्रह्महै अर्थात् स्थूलसूक्ष्म संसार और जीव ईश्वर यहचारों ब्रह्मके बीचमें कहना केवल मनकासंकल्पहै वह सुदर्शन द्वीप सबऔषध समूहों का रखनेवाला सबओरसे समुद्र और देशों से घिरा है उस परमात्मा से जल आदितत्त्व अर्थात् संपूर्ण संसार अन्य हैं और सब संसार की प्रलय होनेपर शेष रहनेवाला ईश्वर उस सब सृष्टिका सिद्धान्त कहाजाता है अर्थात् ऊपर लिखीहुई प्रलय के क्रमानुसार सब ब्रह्माण्ड ईश्वरमें लय होजाता है इसी कारण वह सब संसारका सिद्धान्त अर्थात् परिणाम रूप है यह परमात्मा उस ईश्वरसे भी अन्य शुद्ध ब्रह्म कहाजाता है इसको संक्षेपसे सुनो तात्पर्य्य यहहै कि यह जंबूद्वीपही स्थूल भूगोलहै प्रथम इन्द्रादिक सब देवताओंने इस पृथ्वीपर तप यज्ञादिक करके अपने स्थूल शरीरोंको त्याग सूक्ष्म शरीरोंको पाकर अपने तपोंके फलसे स्वर्गादिक के राज्योंकोपाया इसीप्रकार इस जंबूद्वीप में शुभकर्म करने वालोंके कर्म फलोंसे शेष छःसूक्ष्मद्वीप ब्रह्माण्डके बीचमें प्रकट हुये इससे यह जंबूद्वीप मानो क्षेत्रालयहै इसमेंबस्तुओं को उत्पन्न करके बाकीके छःद्वीपों और स्वर्गादिकों में उनबस्तुओं को भोगतेहैं इसविषयका कुछ सिद्धान्त छठे अध्यायके ५५।५६ और बारहवें अध्यायके श्लोक इक्कीस में देखनेमें आवेगा १८॥

इतिश्री महाभारतेभीष्मपर्व्वणिजंबूखण्डवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे बुद्धिमान् संजय तुमनेअपनी बुद्धि के अनुसार जंबूद्वीप का आशय वर्णन किया और तुम मुख्यताके भी जानने वालेहो

इससे इसको मूलसमेत ब्योरेवार वर्णनकरो, शुद्ध ब्रह्मकी जतलानेवाली माया प्रपंच से कल्पित व्यवहार में सच्चा जो सबलब्रह्म उसके भीतर पृथ्वीके धरातलसी दृष्टि पड़तीहै उसका प्रमाण मुझसे कहो तदनन्तर स्थूल भगवत्रूप वर्णन करने के पीछे संसाररूपी पीपलके वृक्षका बर्णन करना योग्य है संजय बोले हेराजा अब जंबूद्वीप का संपूर्ण ब्योरेवार वृत्तान्त सुनो कि पूर्व पश्चिम के समुद्रको स्पर्श करने वाले यहछःखंडों के पर्ब्बत हैं जो दोनों ओरको पूर्व और पश्चिम समुद्रसे मिलेहुयेहैं, हिमवान्, हेमकूट, निषध, बैडूर्यनील, शशिप्रभश्वेत, सर्वधातुमय शृंगवान् पर्ब्बत इनछःओंपर्व्वतोंपरसिद्ध चारण लोग निवास करतेहैं,हेभरतबंशी इनपर्व्वतों के मध्य स्थलका बिस्तार हजारों योजन है और इन में अनेक पवित्र २ देशहैं उन्हींका खण्डनाम है उनखंडों में नानाप्रकारके जातिवाले लोग निवास करतेहैं यहभारत बर्ष है इससे दूसरा हेमवंत नामखण्ड है, और हेमकूट पर्वत से परे हरिबर्षनामखंड है, नील पर्व्वतके दक्षिण और निषधके उत्तर ओरसे पूर्व और पश्चिम समुद्र को स्पर्श करनेवाला माल्यवान् पर्व्वत है उस माल्यवान् ने आगे गन्धमादन पर्वतहै और उनदोनों के मध्यमें सुनहरी और चारोंओरसे मण्डलवर्त्ती मेरु पर्व्वतहै, वहतरुण सूर्य्य के समान प्रकाशमान और निर्धूम अग्निके समान है और चौरासी हजार योजन ऊंचाहै और नीचेकी ओरभी उतनाही है वह ऊंचानीचा तिरछा लोकोंको व्याप्त करके वर्त्तमान है, हे समर्थ भरतबंशी धृतराष्ट्र उस मेरुके अन्तर्गत यह चारद्वीप नियतहैं एकमुख्य जंबूद्वीप और तीनउपद्वीप भद्राश्व,केतुमाल, कौरव नामसे पुण्यवान् पुरुषों के रचेहुये आश्रम हैं निश्चय करके जो सुमुखनाम गरुड़पक्षी है उसने सुनहरी कौवोंको देखकर विचार कियाहै जोकि मेरुपर्वत उत्तम और विस्तृत वा छोटे २ पक्षियों की भी मुख्यताको नहीं करनेवालाहै इसकारणसे मैं इसको त्याग करताहूं, प्रकाशोंका स्वामी सूर्य्य सदैव उसकी परिक्रमा करता है और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा और वायुभी उसकी परिक्रमा करते हैं, और वह दिव्यफल फूलमूलोंसे संयुक्तहै और सबस्वर्णमय स्थानोंसे व्याप्त है जिसपर देवताओंकेसमूह गंधर्व असुर राक्षस अप्सराओंके समुहों समेत क्रीड़ा करतेहैं, और उसपर ब्रह्मा रुद्र और देवेन्द्र आदि देवता मिलकर बड़े २ यज्ञादिक करते हैं और तुम्बुरुनाम विश्वावसु हाहाहूहू नाम गन्धर्व उन देवताओं के सन्मुख जाके उनको अनेक स्तोत्रादिकों से प्रसन्न करते हैं, आपका कल्याणहो उस पर्व्वत पर महात्मा सप्तऋषि काश्यप प्रजापति सदैव पर्व पर्वमें जाते हैं, और उसी पर्व्वतके मस्तक पर शुक्रजीभी राक्षसों समेत विहार करते हैं उनशुक्रजी के यह हेमरत्नहैं उन्हींरत्नोंके पहाड़भी अनेकहैं और कुबेरजी उनके चौथेभागको

भोगतेहैं उसधनके सोलहवें भागको मनुष्योंके निमित्तदेतेहैं, उसमेरुके उत्तरभाग में कार्णिकार राजवृक्षों का बनहै जोकि दिव्यरूप सब ओरसे प्रफुल्लित मनोहर शिला जालोंसे अत्यन्त ऊंचाहै उसमेरुके ऊपर जीवोंके उत्पन्नकर्त्ता कर्णिकार फूलोंकी चरण पर्य्यन्त मालाको पहनेहुये सूर्य्यके समान प्रकाशित तीननेत्रधारी साक्षात् शिवजी महाराज अपनी उमादेवी समेत दिव्य जीवधारियों से व्याप्त रहते हैं, उग्रतपी सुन्दरव्रती सत्यवक्ता शुद्धलोग उनका दर्शन करसक्ते हैं वह महेश्वरजी कुचाली पुरुषों से देखनेके योग्य नहीं हैं हे राजा उसीमेरुपर्व्वतके शिखरसे दूध के समान धारा रखने वाली विष्णुरूपा भयानक गम्भीरशब्दवाली वायुसे टक्कर खातीहुई श्रीगंगाजी प्रकट हुई, वह पवित्र और पवित्र मनुष्यों से सेवित शुभ भागीरथी गंगा बड़ीशीघ्रता और तीव्रतासमेत चन्द्रमाके शुभ हृदमें बिलासकरती हुई प्रकटहुई है उसीने वह समुद्रोपम पवित्र हृद अपनी तीव्रधारासे उत्पन्न कियाहै जो पहाड़ों से भी धारणनहीं कीजातीथी ऐसी गंगाको शिवजीने एक लाख वर्ष पर्य्यन्त अपने शिर में धारण किया और मेरुके पश्चिमी कोणमें जंबूद्वीप के मध्य केतुमाल नाम खण्डही उसमें बड़ादेशहै उसमें मनुष्यों की अवस्था सतयुगादिमें दश हजार वर्षकीहै वहां के मनुष्यों का सुवर्णके समान वर्ण होताहै और स्त्रियां अप्सराओं के समान होती हैं वहांके मनुष्य नीरोग आनन्दी सन्देह रहित स्वर्ण के समान वर्ण रखनेवाले सुन्दर रूपवान् उत्पन्न होतेहैं और गुह्यक्षों के राजा कुबेरजी राक्षसोंसमेत अप्सराओंके समूहोंसे संयुक्त गन्धमादनके झुके हुए शिखरोंपर आनन्द करते हैं, गन्धमादन के दूसरेभागके समीप अपरगंडिका नामछोटे २ पहाड़ हैं वहां के जीव ग्यारह हजार वर्षकी उमरके होते हैं, वहां के मनुष्य तेजस्वी और महाबली हैं और स्त्रियां उत्पल नाम कमल के समान सुन्दर अत्यन्त दर्शनीय हैं, नील पर्व्वतके आगे श्वेतपर्व्वत है और श्वेतसे आगे हैरण्यकनामखंड है और शृंगवान् पर्व्वतके आगे अनेक देशों से व्याप्तऐरावत खण्डहै और दक्षिणोत्तर में भरतखण्ड और ऐरावतखण्ड यह दोनोंधनुष समान अर्थात् त्रिकोणरूप हैं और बीचमें इलावर्त्तादि पांचखण्ड वर्त्तमानहैं, उनसे आगे के खण्ड गुणों में अधिकहैं और अवस्था बानी रोगताभी एकसे दूसरे में उत्तरोत्तरहै उनखण्डों में सब जीवधारी धर्म काम अर्थसे संयुक्तहैं हे राजा इसप्रकारसे यह पृथ्वी पर्व्वतों से व्याप्त है, और बड़ापर्व्वत हेमकूटनाम कैलास है जिसपर कुबेरजी गुह्य यक्षों समेत बिलास करतेहैं कैलास पर्व्वत के उत्तर मैनाक पर्व्वत के सन्मुख दिव्य मुनिलोगोंसे भरा हुआ हिरण्य शृंग नाम बड़ा पर्व्वत है, उसके समीप स्वर्णरज युक्त मनोहर और दिव्य बिन्दुसर नामतड़ाग है जिसपर राजाभगीरथने भागिरथीगंगाको देख

कर बहुत वर्षोंतक निवास कियाथा वहांमणि जटितयज्ञस्तंभ और सुवर्णजटि-
तवृत्तहीं यज्ञकी सीमा हैं वहीं बड़े यशस्वीइन्द्रने भी यज्ञको करके महान्सिद्धी
को पाया, वहांही सबसंसार के स्वामी सबसे प्रथम महातेजस्वी शिवजी
चारोंओर से पवित्रात्मापुरुषों से सेवाकिये जातेहैं और नरनारायण ब्रह्मामनु
पांचवें स्थाणुनामरुद्रजी भी वर्त्तमानहैं वहांही प्रथम पृथ्वी पाताल और स्वर्ग
के मार्गमें बहने वाली दिव्यनदी श्रीगंगाजी नियत होकर ब्रह्मलोकसे चली
हुई सातप्रकारसे वस्वौक, सारा, नलिनी, पावनी, सरस्वती, जंबूनदी, शीता
नदी, सातवीं गंगासिंधुनाम ध्यानसे अगम्य और दिव्य रूपसे बहती है यह
प्रभु ईश्वरकीरचना है जहां २ हजार यज्ञोंके चक्रमें इन्द्र उपासना करते हैं
वहां २ सरस्वती गुप्त और प्रकट होती हैं, यह सातों गंगा दिव्य रूपोंसे तीनों
लोकों में वर्त्तमानहैं, हिमाचल में राक्षस, हेमकूट में गुह्यक, निषधमें सर्प, गो-
कर्ण में तपोधन ऋषि लोगहैं, श्वेतपर्व्वत सब देवता और असुरों का कहा-
जाताहै निषध में गंधर्व और नील पर्व्वत पर ब्रह्मऋषिलोग सदैव निवास
करते हैं, हेमहाराज शृंगवान् नामपर्व्वत देवताओंका विहार स्थानहै और यह
सातोंखण्ड विभाग किये गयेहैं उनसबमें स्थावर और जंगम जीव रहते हैं
उनका देवसंबंधी और मनुष्य संबंधी धन बहुत प्रकार का देखने में आताहै
हे राजा तुम जिस दिव्य विराट् स्वरूप को मुझसे पूछतेहो उसकी संख्याका
प्रमाण करना मुझसे असंभव है परन्तु उसका सुननाही श्रद्धाके योग्यहै
अर्थात् श्रद्धावान् पुरुषही अदृष्ट पदार्थों के मिलने के लिये कर्मों को करता
है अश्रद्धावान् नहीं करसक्ता है, विराट् पुरुषके दोनों ओर दोखण्ड कहे हैं
दाहिने में भरतखण्ड अर्थात् कर्मभूमि और बायेंमें ऐरावत खण्ड अर्थात्
योग भूमि और दोनों कानों में नागद्वीप अर्थात् सत्यलोक और काश्यप
द्वीप अर्थात् यज्ञ में अमृतपान करनेवाले कर्म योगियों का निवासस्थान
स्वर्गलोकहैं परमेश्वर के स्थूल और सूक्ष्म दोदिव्यरूप हैं उन में से यह सब
कहा हुआ स्थूल रूप है और आगे के श्लोक में ईश्वर के वासनारूप
सूक्ष्मरूपको कहते हैं, हे राजा मनरूप उत्तमबाग शोभा और लक्ष्मी से भरा
हुआ रक्तवर्ण अन्नवस्त्रादि जिसके फलफूल और पत्ते हैं उसमें नानाप्रकार
के महल युक्त यह जंबूद्वीप अर्थात् परमेश्वरका स्थूल रूप दूसरा वासनारूप
दृष्टपड़ता है ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिजंबूद्वीपरूपस्थूलसूक्ष्मवर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ॥

सातवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोलेकिहेबुद्धिमान् संजय प्रथम मेरु पर्व्वत के उत्तरीय भाग के

मालवन्त पहाड़ के मूल समेत वृत्तान्तों को वर्णन करो, संजय बोले कि हे राजा नील पर्व्वत के दक्षिण और मेरु के उत्तर भाग में उत्तर कुरुदेश हैं जोकि पवित्र और सिद्धियों से शोभित हैं वहांपर वृक्ष मधुर फल फूलों से सदैव शोभित रहते हैं और पुष्प अत्यन्त सुगन्धित और फल महा रसीले होतेहैं, हे राजा वहां कोई कोई वृक्षतो सब अभिलाषाओं के पूर्ण करनेवाले हैं और अन्य बहुत से वृक्ष अमृत समान स्वादुयुक्त छः रस से युक्त दूधों के देनेवाले हैं और फलोंमें वस्त्राभरणों को उत्पन्न करते हैं वहदिव्य वृक्ष केवल महात्मा ऋषियोंकोही दृष्ट पड़ते हैं संसारी लोगों को नहीं दिखाईदेते हे राजा सब पृथ्वी मणियों की बनीहुई और दिव्य सुवर्ण की बालू रखनेवाली और सब ऋतुओंमें सुखसे स्पर्श होनेवाली कीच आदि से रहित है यद्यपि पृथ्वी ऐसी भीहै परन्तु प्रारब्धहीनों को वैसी दृष्ट नहीं आती, वहां पर देवलोक से पतित लोग उत्पन्न होतेहैं वह सब विष्णुभक्तोंसे संगकरनेवाले और अत्यन्त स्वरूपवान् होतेहैं और अप्सराओं के समान स्त्रियां वहां जोड़ों को उत्पन्नकरती हैं वह जोड़े उन दूध देनेवाले वृक्षों के अमृतरूपी दूधों को पीते हैं समयपर जोड़े उत्पन्न होतेहैं और सदैव बढ़ते हैं और रूपगुणसंयुक्त सदैव एकसी पोशाकवान् होतेहैं हे समर्थ वह जोड़े चक्रवाकों के समान एकसे रूपवाले भी होते हैं और नीरोगतापूर्वक सदैव प्रसन्नमन रहते हैं उनकी अवस्था ग्यारह हजार वर्षकी होतीहै और समान अवस्था होनेके कारण कोई किसी को नहीं मारताहै अर्थात् एकही समय में देहोंको त्यागते हैं (यह बातउसी समय में थी अबनहीं है) यहां बड़ेपराक्रमी और तीक्ष्ण दंष्ट्रवाले भारंड नामपक्षी उन पुरुषों को पकड़कर गुफाओं में डाल देते हैं, हे राजा यह मैंने उत्तर कौरव देशका संक्षेप से वर्णन किया अब उस मेरुके पूर्वीभागके वृत्तान्त को यथावस्थित कहताहूं हे राजा उस भद्राश्वखंडका मूर्द्धाभिषेक नाम महाराज और भद्रशाल नाम वन और कालाम्र नाम वृक्ष है वह कालाम्र नाम शुभ वृक्ष फूल फलयुक्त सिद्ध चारणों से सेवित एक योजन ऊंचा है, जिस स्थानपर श्वेतवर्ण पुरुष तेजसे भरेहुये महाबली और स्त्रियां कुमुद कमल के समान सुंदर स्वरूपवान् चन्द्रमा के समान प्रभाव और पूर्ण चन्द्रमा सा प्रकाशवान् मुखवाली और चन्द्रमा के ही समान शीतल देह नृत्य गान में प्रवीण वर्त्तमान हैं और वहां अवस्था दश हजार वर्षकी होती है वह कालाम्र कारस पीने से सदैव तरुण रूपही रहते हैं, नीलपर्व्वत के दक्षिण और निषध पर्व्वत के उत्तर सुदर्शन नाम बड़ाजंबूवृक्ष सनातन है वह सबअभीष्टों का दाता पवित्र सिद्ध चारणोंसे सेवित है अर्थात् मनुष्य उसको नहीं पासक्ते इसलिये कि वहभी दिव्य है इसी के नाम से यह सनातन

से जंबूद्वीप प्रसिद्ध हुआहै हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र उस वृक्ष-राज जंबूवृक्ष की उंचाई आकाश की छूनेवाली ग्यारह सौ योजन है उस वृक्षके पकेहुये फटनेवाले फलों का विस्तार ढाईहजार अरत्नी है अर्थात् कोई संख्या विशेष है वह फल जब पृथ्वीपर गिरते हैं तो बड़ेभारी शब्द को करते हैं और जहां जहां गिरते हैं वहां वहां चांदीके समान श्वेत रसको छोड़तेहैं हे राजा उसी जंबूफल के रसकी नदी होकर मेरुको प्रोक्षण करके उत्तर कुरु देशों को आती है हे राजा वहां पिपासा लगने के कारण उन्होंके चित्तकी शान्ती नहीं है परन्तु उस फलके रस पीनेसे उनको जरावस्था दुखदायीनहीं होती है वहांही जांबूनद नाम कनक देवताओं का भूषण वीरबधूजंव के समान रक्तवर्ण उत्पन्न होता है उसमें बड़ातेज होताहै वहां मनुष्य तरुण और सूर्य्यवर्ण उत्पन्न होते हैं इसीप्रकार माल्यवत के शिखर पर संवर्त्तक नाम अग्नि सदैव दिखाई देती है हे भरतर्षभ वह संवर्त्तक नाम कालाग्नि है और वैसेही माल्यवान् के शिखरपर चारोंओर को छोटे २ पर्व्वत हैं और माल्यवान् पर्व्वत ग्यारहहजार योजन है वहां ब्रह्मलोक से गिरेहुये चांदीकेसमान श्वेतवर्ण सब के सब साधू मनुष्य उत्पन्न होते हैं वह मनुष्य कठिन तपस्याओं को करतेहुये ऊर्ध्वरेता अर्थात ब्रह्मचारी होते हैं और जीवोंकी रक्षा के निमित्त सूर्य्य में प्रवेश करते हैं वह संख्या में साठ हजार वाल्यखिल्यऋषि सूर्य्य को घेरेहुये अरुण नाम सूर्य्य के सारथी के आगे २ चलतेहैं वहसब छयासठ हजार वर्षतक सूर्य्यकी ऊष्मासे तपेहुये होकर चंद्र मंडल में प्रवेश करते हैं अर्थात् सूर्य्यलोकमें विराट पुरुषकी उपासना करके मनके स्वामी चन्द्रमा में प्रवेशकरते हैं और सूत्रात्म भावको पाते हैं ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तुमने खण्डों और पर्व्वतोंका वर्णन किया अब उन पहाड़ों में जोवास करतेहैं उनका मूलसमेत वर्णनकरो, श्वेतपर्व्वतके दक्षिण और निषधके उत्तर रमणकनाम खण्ड एक पृथ्वीका भागहै वहां ऐसेमनुष्य उत्पन्न होते हैं जोकि विष्णुभक्तों के साथ स्नेहरखनेवाले अत्यन्त स्वरूपवान् हैं उनमें कोई परस्पर में शत्रुनहीं होताहै, नीलपर्व्वतके दक्षिण और निषध के उत्तरभाग में हिरण्मय नामखण्ड है वहां हिरण्वती नामनदी है वहांहीं पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड़जी हैं उस स्थानके धनवान् स्वरूपवान मनुष्य यक्षोंके सेवक महाबली और प्रसन्नचित्त होतेहैं और सदैव प्रसन्नता पूर्व्वक रहकर साढ़े ग्यारह हजार वर्ष पर्य्यन्त अवस्था को भोगते हैं और कोई उनमें से साढ़े

बारहहजार वर्षतक भी जीतेहैं उस पर्व्वतके तीन बड़े विचित्र शिखरहैं उनमें एकतो मणियोंका शिखर है दूसरा अत्यन्त सुन्दर सुवर्ण का अपूर्व शिखरहै और तीसरा शिखर सबरत्नोंसे मिश्रित अनेक स्थानों से शोभितहै वहां स्वयं प्रकाशवान् शांडिली देवी निवास करती है, हे राजा शिखरके उत्तर समुद्र के समीप ऐरावत नामखण्ड है इसकारण यह शृंगवान् पर्व्वत से घिराहुआ उत्तमखण्ड कहाताहै उसमें सूर्य्य किसीको संतप्त नहीं करते हैं मनुष्य वृद्ध नहीं होते और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा ज्योति रूपके समान घिरा रहताहै वहां के मनुष्य कमल के समान कोमल वा सुन्दर रंगनेत्र और सुगन्ध युक्त उत्पन्न होतेहैं हे राजा वहसब देवलोक से गिरेहुये प्रस्वेद से रहित अर्थात् देवताओंके समान इष्ट गन्धधारी निराहारी जितेन्द्री और रजोगुण से रहित हैं और उनकी अवस्था तेरहहजार बर्षतककी होतीहै इसीप्रकार दूध के समुद्रकी उत्तरदिशा में अनेक मायाओं के स्वामी ज्योतिरूप श्रीहरि नारायणजी सुवर्णके शकटपर निवास करतेहैं वह सवारी आठ पहियोंकी है जिसमें एक पहिया तो पंचकर्मेन्द्रिय समूह दूसरा पंचज्ञानेन्द्रिय समूह तीसरा मन बुद्धि चित्त अहंकारकासमूह चौथा पंचप्राण पांचवां पांचों सूक्ष्म तत्त्व छठां अविद्या सातवां काम आठवां कर्मधारी शुद्ध ब्रह्मयुक्त मनके समान शीघ्रगामी अग्निवर्ण तेजस्वी जांबूनद नाम सुवर्ण से शोभायमानहै, हे भरतर्षभ वह सब संसारमात्रका स्वामी व्यापक सबको अपनेमें लय करनेवाला और प्रकटकरनेवाला जीवरूपसे कर्त्ता और ईश्वररूपसे कर्मकरनेवाला है हे राजा वही पंचतत्त्ववही सबका यज्ञ और मुख उसका अग्निहै, वैशंपायन बोले कि हेजनमेजय यह सब बातें संजयसे सुनकर बड़े साहसी राजा धृतराष्ट्रने अपने पुत्रोंकी चिन्ताकरी और फिर भी बहुतसा बिचारकरके बोला कि हे संजय निस्सन्देह काल जगत्को भक्षणकरता है, और फिर सबको उत्पन्न करताहै यहां कोई भी बिनाश रहित नहीं है नरनारायण अर्थात् जीव ईश्वर भी दोनों रूपोंसे अविनाशी नहीं हैं अर्थात् दोनों एकरूपहोकर अकेलाही सर्वज्ञ और सर्वजीवोंका मित्रहै उसीसमर्थ पुरुषको देवता और मनुष्योंने मायाधीश और सर्वव्यापी बर्णन कियाहै २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि यह भरतखण्ड जिसमें यह सबसेना भूली हुईहै उस में यह मेरा पुत्र दुर्योधन अत्यन्त लोभी होरहाहै और जिसमें पाण्डव लोभी हैं और मेरा भी मन लगरहा है उसका मुख्य वृत्तान्त मुझसे कहो मैंने तुमको

बुद्धिमान् मानाहै, संजय बोले हेराजा मेरेवचनको सुनो उसमें पाण्डव लोभी नहींहैं इसमें केवल दुर्योधन और सौवलकापुत्र शकुनीहीलोभीहैं, नानाप्रकार के देशोंके स्वामी अन्य क्षत्री लोग जो भरतखण्डमें लोभी होकर परस्परमें ईर्षा करतेहैं इसस्थानपर मैं भरतखण्डका वर्णन तुमसे वर्णन करताहूं कि यह भरतखण्ड इन्द्र देवता और सूर्यकेपुत्र वैवस्वत मनुका अभीष्टहै हेराजा धृतराष्ट्र इनके विशेष यह भरतखण्ड पृथु,वैन्य तथा महात्मा इक्ष्वाकु, ययाति, अंबरीष, औशीनरके पुत्र शिवि, ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक, महात्मा गाधि, सोमक दिलीपआदि बहुतसे महापराक्रम क्षत्रियोंकाप्यारा है, हेशत्रुहन्ता यहभरतख- ण्ड कर्मभूमिहोनेके कारणसबकाही प्याराहै और महातेजस्वी खण्डहै इसको मैं कहताहूं महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिवान्, पारियात्र ऋक्षवान्, विन्ध्याचल यह सातोंपर्व्वत बड़ेकुलवान् और प्रतिष्ठितहैं और इन्हींसातोंकेसमीप हजारों पर्व्वत उत्तम पदार्थोंके रखनेवाले विस्तृत और पर्व्वतके निवासियोंके निवास स्थान रूप गुप्त हैं, इनसे अन्य छोटे २ पर्व्वत छोटी २ वस्तुओं के रक्षा स्थान रूप सबके जानेहुयेहैं हेकौरव्य धृतराष्ट्र जो आर्य मनुष्य अर्थात् वर्णा- श्रमी धर्मवालेहैं वह म्लेच्छ अर्थात् वेदसे विरुद्ध मतवाले हैं वह मनुष्य उन में निवास करतेहैं और गंगा सिंधु सरस्वती इत्यादि बड़ी २ नदियोंके जलको पीते हैं और गोदावरी, नर्मदा और बाहुदानाम महानदी शतद्रु, चन्द्रभागा और महानदी, यमुना, दृषद्वती, विपाशा, विपापा, स्थूलवालुका, वेत्रवती, कृष्णवेणी जो नीचे को चलतीहै, इरावती, वितस्ता, पयोष्णी, देविका, वे- दस्मृता, वेदवती, त्रिदिवा, इक्षुला, कृमी, करीषिणी, चित्रवाहा नीचे चलने वाली चित्रसेना, गोमती, धूतपापा, महानदी, गंडकी, कौशिकी, त्रिदिवा कृत्या, निचिता, लोहतारणी, रहस्या, शतकुम्भा, सरयू, चर्मण्वती, वेत्रवती, हस्तिसोमा, दिशनदी, शरावती, पयोष्णी, वेणा, भीमरथी, कावेरी, चुलुका, वाणी, शतबली, नीवारा, महिता, सुप्रयोगा, अंजना, पवित्रा, कुंडली, सिन्धु, राजनी, पुरमालिनी, पूर्व्वाभिरामा, अमोघवतीभीमा, पालाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, करीषिणी, असिक्नी, कुशचीरा, महानदी, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, घृतवती, पुरावती, अनुष्णा, शैव्या, कापी, सदानीरा, अधृष्या, महानदी कुशधारा, सदाकान्ता, शिवा, वीरवती, वस्त्रा, सुवस्त्रा, गौरी, कंपना, हिरण्वती, वरा, वीरकरा, महानदी पंचमी, रथचित्रा, ज्योतिरथा, विश्वामित्रा, कपिंजला, उपेन्द्रा, बहुला, कुवीरा, अंबुवाहिनी, विनदी, पिंजला, वेणा, महानदी, तुंगवेणा, विदिशा, कृष्ण वेणा, ताम्रा, कपिला, खलु, सुवामा, वेदाश्वा, हरिश्रावा, महोपमा, शीघ्रा, पिच्छला, भारद्वाजी, निम्नगा, निम्नगाकौशिकी, शोणा, बाहुदा,

चन्द्रमा, दुर्गा, मंत्रशिला, ब्रह्मबोध्या, वृहद्धती, यवज्ञा, अथरोही, जांबूनदी, सुनसा, तमसा, दासी, वसा, वरुणा, असमसी, नीला, धृतिमती, महानदी पर्णाशा, मानवी, वृषभा, ब्रह्ममेध्या, वृहद्वती इत्यादि सब नदियों का जल पान करते हैं और हे राजा इनके सिवाय और भी बहुत प्रकारकी महानदी हैं जैसे कि सदानीरा, अया, कृष्णा, मन्दगा, मन्दवाहिनी, ब्राह्मणी, महागौरी, दुर्गा, चित्रोपला, चित्ररथा, मंजुला, बाहिनी, मन्दाकिनी, वैतरिणी, महानदी, कोशा, मुक्तिमती, अनिगा, पुष्पवेणी, उत्पलावती, लोहित्या, करतोया, वृषकानामनदी, कुमारी, ऋषिकूल्या, मारिषा, सरस्वती, सुपुरया, मन्दाकिनी, सर्वा, गंगा, यह सम्पूर्ण नदी विश्वकी माता और महाफलकी देनेवाली हैं इसी प्रकार हजारों नदी और भी गुप्त हैं हे राजा यह नदियां मैंने स्मरण के अनुसार वर्णन कीं अब मैं देशोंका वर्णन करताहूं वहां यह कुरुदेश, पांचालदेश, शाल्व, माद्रेयजांगल, शूरसेनदेश, पुलिन्द, बोधा, माला, मत्स्यदेश, कुशाद्दिदेश, सौशल्य, कुन्तीदेश, कान्ति कोशलदेश, चेदि, मत्स्य, करूष, भोज, सिन्धु, पुलिन्दक, उत्तमदशार्णदेश, मेकल, उत्कल, पांचाल, कोशल, नैकपृष्ठ, धुरंधर, बोधा, मद्र, कलिन्द, काशय, परकाशय, जठरा, कुकुरा, दशार्ण देशयुक्त, कुंत्य, अवन्त्य, अपरकुन्त्य, गोमन्त, मन्दक, खंड, विदर्भ, रूपवाहिक, अश्वक, उत्तर, गोपराष्ट्र, करीत, अधिराज्य, कुशाद्य, मल्लराष्ट्र, केवल, वारवास्य, अपवाह, वक्रवक्रात, शक, विदेह, मगध, स्वद्य, मलय, बिजय, अंग, वंग, कलिंग, यकृल्लोम, मल्ल, सुदेष्ण, प्रल्हाद, माहिक, शशिक, वाह्लीक, वाटधान, आभीर, कालतोयक, अपरान्त, परान्त, पांचाल, चर्ममंडल, अटवी, शिखर, मेरुभूत, मारिष, अपावृत, अनुपावृत, सौराष्ट्र, केकय, कुट्ट, परान्त, माहेय, कच्छ, सामुद्रनिष्कुट, अन्ध और हे राजा इनके विशेष पर्वतों में अनेक देश और पहाड़ोंकेबाहर अंग, मलज, मगध, मानवर्जक, मह्युत्तर, प्राविषेय, भार्गव, पौण्ड्र, लार्ग, किरात, सुदेष्ठ, यामुन, शक, निषाद, निषध, आनर्त्त, नैऋत, दुर्गाल, प्रतिमत्स्य, कुंतल, कुशल, तीरग्रह, शूरसेन, ईजक, कन्यकागण, तिलभार, समीर, मधुमत्ता, सुकन्दक, काश्मीर, सिन्धु, सौवीर, गांधार, दर्शक, अभिसार, उलूत, शैवल, वाह्लीक, दर्वी, नवांदर्वी, बातज, मर्थोरग, वाहवाद्य, कौरव्य, सुदामान, समुल्लिक, वध्ना, करीषक, कुलिन्द, उपत्यक, वानायु, दशार्ण, रूम, कुशविन्द, कच्छ, गोपालकच्छ, जांगल, कुरुवर्णक, किरात, बर्बर, सिद्धा, वैदेह, ताम्रलिप्तक, ओड्र, पौंड्र, सैसिकत, पार्वतीय, मारिष इसके विशेष दक्षिणमें द्रविण, केरल, प्राच्य, भूषिक, बनवासिक, कर्णाटक, माहिषक, अविकल्प, मूषक, जिल्लिक, कुन्तल, सौहृद, नभकानन, कौकुट्टक, चोल,

कोंकण, मालवानक, समंग, कारक, कुरर, अंगार, मारिष, ध्वजन्युत्सवसंकेत, त्रिगर्त्त, शाल्वसेन, वक, कोकवक, प्रोष्ठ, समवेगवश, विन्ध्य, चुलिक, कल्कलसहित पुलिन्द, मालव, मल्लव, परवल्लभ, कुलिन्द, कालद, कुंडल, करट, मूषक, तनवाल, सनीय, घटसृंजय, अलिदाप, शिवाट, तनय, सुनय, ऋषिक, विदर्भ, काक, तंगण, परतंगण हे भरतर्षभ इसीप्रकार अन्य उत्तर देश वासी कठोरचित्त और म्लेच्छनामसे प्रसिद्ध हैं, यवन, अर्थात् मुसमानआदिकी जातें चीनी, कांबोज, सकृद्ग्राह, कुलत्थ, आहूण, पारसियों समेत हूण यह सब म्लेच्छजातिके लोगभयकारी हैं रमण, चीन, दशमालिक जो कि क्षत्रीयोनिसे उत्पन्न वैश्य और शूद्रों के कुलहैं शूद्र, आभीर, दरद पशुओं समेत काश्मीर, खाशीर अर्थात् (खुरासानी) अन्तचार, पल्हव (जिनकीभाषा पहलवी प्रसिद्ध है) गिरिगह्वर, आत्रेय, भरद्वाज, स्तनपोषिक, प्रोषक, कालिंग, किरातों की जातें, तोमर, हंसमार्ग, करभंजक यह और अन्य पूर्व्वीय और उत्तरीय देशहैं, हेसमर्थ धृतराष्ट्र यह मैंने सब देश उद्देशमात्रसे कहे मनोरथों के पूर्णकरनेवाले कामधेनु रूपी पृथ्वी श्रेष्ठपोषित गुण और बलके समान त्रिवर्ग अर्थात् (धर्म अर्थ काम) हिरण्यगर्भरूपी फलके भी देनेवाले धर्म और अर्थ में कुशल बुद्धि शूरवीर राजालोग उस पृथ्वीकी इच्छापूर्व्वक लालसाकरते हैं वह शीघ्रता करनेवाले धनके लोभी युद्धभूमि में अपने प्राणों को त्यागकरते हैं, यह पृथ्वी इच्छानुसार देवता और मनुष्यों की देहोंकी रक्षाका स्थान है हे भरतवंशी पृथ्वी के भोगने की इच्छा रखनेवाले क्षत्रीलोग परस्पर में एक एक को मारते हैं जैसे कि कुत्ते मांसके टुकड़े २ करतेहैं इसीप्रकारसे अबतकभी किसीकी तृष्णा न्यून नहीं होतीहै हे राजा इसीकारण से कौरव पाण्डव भी साम, दाम, भेद, दण्ड इन चारों नीतों के द्वारा पृथ्वी के विजय करनेमें अनेक उद्योग करतेहैं, जिसको अच्छे प्रकार से पूरा छिद्र दर्शन है उसीकी पृथ्वी पिताभाई पुत्री आकाश और स्वर्गरूप भी होती है ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिनदीदेशादिनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत संजय इस भरतखण्ड और हेमवतखण्डकी अवस्थाओंकी संख्या बल शुभाशुभ भूत भविष्य वर्त्तमानको भी ब्योरेवार कहिये इसीप्रकार हरिखण्डको भी कहिये संजयबोले कि हे भरतर्षभ और कौरवोंकी वृद्धि चाहनेवाले धृतराष्ट्र भरतखण्ड में चार युग हैं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग प्रथम सतयुग फिर त्रेता फिर द्वापर और द्वापरकेअन्त से कलियुग

जारी होताहै हे कौरवोत्तम राजेन्द्र सतयुगमें चारहजारबर्षकी अवस्था होती है त्रेतामें तीन हजार की द्वापर में दोहजार वर्षकी और हे राजन् कलियुगमें अवस्था की संख्यानहींहै इस कलियुग में उत्पन्नहुये बालक और गर्भमें वर्त्तमान बालक भी मरतेहैं और सतयुगमें बड़े बलिष्ठ पराक्रमी और बुद्धिआदि गुणयुक्त सैकड़ों वा हजारों मनुष्य उत्पन्नहोकर सन्तानोंको उत्पन्न करते थे और धनी प्रियदर्शन तपोधन मुनि उत्पन्नहोकर सन्ततियों के उत्पन्नकर्त्ता हुये बड़े उत्साह मन धार्मिक सत्यबादी प्रियदर्शन उत्तम बर्ण महापराक्रमी धनुषधारी बरके योग्य शूरोंमें श्रेष्ठक्षत्री उत्पन्न होते हैं और त्रेतामें सब क्षत्री चक्रवर्त्ती होतेहैं और बड़े अवस्थावान् शूरवीर युद्धमें धनुषधारियों में उत्तम राजाओंके आज्ञावर्त्ती उत्पन्न होते हैं द्वापर युगमें सब वर्ण सदैव उत्साह चित्त पराक्रमी परस्परमें विजयाभिलाषी उत्पन्न होतेहैं और कलियुगमें थोड़े पराक्रमी क्रोधी लालची मिथ्यावादी मनुष्य उत्पन्न होतेहैं और कलियुग में जीवधारियों में अहंकार क्रोध ईर्षा छल दूसरे की निन्दा और विषयोंमें प्रीति करनेवाले लालची उत्पन्न होते हैं और हे राजन् इस द्वापर में गौओं की न्यूनता वर्त्तमानहै परन्तु हेमवतखण्ड और हरिखण्ड गौओंके विषयों में सर्व्वोत्तम है १६॥

इतिश्री महाभारतेभीष्मपर्व्वणिजम्बूखण्डवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय तुमने जम्बूखण्ड अर्थात् जम्बूद्वीपका वर्णन यथार्थ कहा अब इसके केन्द्र और परिधिकी संख्याको मूलसमेत बर्णनकरो और समुद्रकी संख्याको भी कहो और सब दृष्टगोचर शाकद्वीप दक्षद्वीप, शाल्मलद्वीप, क्रौंचद्वीप इन सबको राहु चन्द्रमा और सूर्य्यसमेत बर्णनकरो, संजय बोले कि हे राजा बहुतसे ऐसे २ द्वीप हैं जिनसे यह युग बड़ाबिस्तार युक्त है अब मैं सूर्य्य चन्द्रमा और राहुसमेत सातोंद्वीपोंका बर्णन करताहूं कि जम्बूद्वीपका केन्द्र और वृत्तफल अठारह हजार छःसौ योजन है इसका आशय यहहै कि (अठारह हजार छःसौ योजनमेंसे पांचहजार नौसौअठारह योजन व्यास और बारह हजार छःसौ बयासीपरिधिहै और बनपर्वमें हनुमान् जीके कहे हुये के अनुसार पृथ्वी बनपर्व्वत समुद्रन समेत की संख्यायुगों के अनुसार होती है तथाच शास्त्रके अनुसार हरएक युग में प्रत्येक वस्तुका चतुर्थांश क्रमसे न्यून होताजाताहै अर्थात् सतयुग में पृथ्वी मंडलकी संख्या ऊपर लिखेहुये के अनुसार थी त्रेतामें नौहजार पांचसौ ग्यारह द्वितीयांश २ यानेडेढ़ योजन रहा और द्वापर में छः हजार तीनसौ इकतालीस रहा और

कलियुगमें तीनहजार एकसौ सत्तर द्वितीयांश एक याने आध योजन रहा जो कि एक योजन चारकोसका होताहै इसकारणचारसे गुणा करनेसे बारह हजार छः सौ बयासी कोसहुआ इसके मील पच्चीस हजार तीनसौ चौसठहुये और इंगलिस्तान के वासी भी अपने गणितकी माप से इस पृथ्वीको पच्चीस हजार वर्गात्मक मील बताते हैं और खारी समुद्र का विस्तार इससे दूना कहा है वह समुद्र नानादेशों से युक्त मणि मूंगेआदि से शोभित नानाप्रकार की धातुओं से विचित्र पर्व्वतों से शोभायमान शुद्धचारणों से सेवित चारोंओर से मंडलाकार है हे राजा अब मैं शाकद्वीपको यथार्थ वर्णन करताहूं हे कौरवनन्दन तुम भी न्यायपूर्व्वक मुझसे सुनो वह द्वीप जंबूद्वीप के विस्तारसे दूना है और समुद्र भी विभाग के अनुसार क्षीरोदनामी है हे राजन् जिस समुद्र से वह द्वीप चारों ओर को घिराहुआ है उसमें पवित्र देश हैं वहां मनुष्य नहीं मरते हैं तो वहां दुर्भिक्ष कैसे होसक्ता है वह क्षमावान् तेजधारी हैं यह तो शाकद्वीप का संक्षेप ठीक२ वर्णन किया अब दूसरी बात क्या सुनना चाहते हो, धृतराष्ट्र बोले कि हे महाज्ञानी तुमने इस शाकद्वीप का संक्षेप तो ठीक कहा परंतु उसको व्योरेवार मूल समेत वर्णन करो संजयबोले कि हे महाराज इसीप्रकार के सातपर्व्वत इसमें मणियों से भूषित वर्त्तमान हैं और नदियां भी अनेक रत्नोंकी आकरहैं इन के नाम मैं कहताहूं, वहां सब लोग पवित्र और गुणवान् हैं देवता गंधर्व और ऋषिलोगों से संयुक्त प्रथम पर्व्वत मेरु कहाजाता है और पूर्व्व पश्चिमका स्पर्श करनेवाला दूसरा मलय पर्व्वत है उस पर्व्वतसे सब बादल प्रकटहोकर कर्म में प्रवृत्त होते हैं हे कौरव्य उससे पूर्व की ओर एक जलधारा नाम बड़ा पर्व्वत है जहांपर इन्द्र देवता उत्तम जलको ग्रहणकरता है उसी जल से वर्षाऋतु में पृथ्वीपर वर्षा होती है और उससे भी बड़ा पर्व्वत रैवतक है वहां स्वर्ग में निवास करनेवाला रेवती नक्षत्र सदैव वर्त्तमान रहताहै यह ब्रह्माजी की उत्पन्न की हुई रीति है और उत्तर ओर को श्याम नाम बड़ा पर्व्वत है वह नवीन बादल के समान प्रकाशवान् ऊंचा शोभायमान उज्ज्वलस्वरूपहै हे राजा उसी से मनुष्यों ने श्याम वर्ण को पाया है धृतराष्ट्र बोले हे संजय अब तुमने यह मुझसे बड़ा सन्देहयुक्त वचन कहा हे सूतपुत्र संसार ने कैसे श्यामवर्ण को पाया, संजयबोले कि हे राजा सब द्वीपोंमें गोरा नररूप जीव और काला नारायण रूप ईश्वर पक्षीहै उन दोनों वर्णों में जिस हेतु से नारायण की कलारूप श्यामवर्ण प्रकट हुआ इसी से उसका नाम श्यामगिरि विख्यात हुआ और उस में निवास करने व शाक भोजन करने से मनुष्यों ने भी श्यामवर्ण को पाया हे कौरवेन्द्र उससे आगे बढ़कर महोदय दुर्गशैलहै केशरी और केशरयुत पर्व्वत है

उसी से वायु उत्पन्न होती है उन दोनोंके बिस्तार की संख्या क्रम से एकसे दूसरे की दूनी है हे राजा इनके मध्यवर्ती ज्ञानियों ने यह सात खण्ड बर्णन किये हैं जिनके महामेरु, महाकाश, जलद, कुमुद, उत्तर, जलधार, सुकुमार यह सातनाम बर्णन किये हैं, रैवत पहाड़ का खंड कौमार और श्याम गिरि का खण्ड मणिकांचन है केदार पर्व्वत का खण्ड मोदाकी है उससे परे महापुमान् है जो छोटे बड़ोंको घेरेहुए है उसद्वीप में एक शाकनाम बड़ा बृक्ष जंबूद्वीप के कारण प्रसिद्ध है अर्थात् जंबूद्वीप के मनुष्य स्थूल शरीरको त्यागकर अपने कर्म फलों को भोगने के निमित्त सूक्ष्म शरीर के द्वारा शाकद्वीप में जाकर उस बृक्षको पूजते हैं तब उसकी प्रसिद्धी होती है और सब प्रजा उसकी सेवामें तत्परहैं इस द्वीपमें सूक्ष्म देहधारी होने के कारण सब बर्ण अपने२ धर्मों में प्रीति रखने वाले बड़ी अवस्था वाले जरा मरण से रहित हैं बड़ी अवस्था कही इस्से तो कभी मृत्युहोनी चाहिये इसका यह उत्तर है कि जब उनके कर्मों का फल समाप्त होता है तब वह जंबूद्वीप में आकर जन्म लेते हैं यही उनकी मृत्यु है जहां चोरनहीं दिखाई देते हैं वहां प्रजा लोगों की ऐसे बृद्धि होती है जैसे कि बर्षाऋतु में नदियों की बृद्धि होतीहै वहां नदियां पवित्र जलवालीहैं और बहुत रूपधारी गंगा भी बर्त्तमान हैं इनके सिवाय सुकुमारी, कुमारी, शीतासी, बेणिका, महानदी मणिजलानदी, चक्षुबर्धनका नदी इत्यादि लाखों नदियां पवित्र जलवाली हैं जहांसे इन्द्र जलको लेकर बर्षा करता है उनके नाम बिस्तार दैर्घ्य इत्यादि संख्याकरने के योग्यनहीं हैं वह उत्तम नदियां पवित्रता और पुण्यकी बढ़ानेवाली हैं वहां सबलोकों में प्रतिष्ठित पवित्र चारदेश हैं वह मृग, मशक मानस, मन्दग नाम से प्रसिद्धहैं मृगनाम देश में बहुतसे ऐसे ब्राह्मण हैं जो अपने कर्मों में सदैव प्रवृत्तहैं और मशक देश में ऐसे क्षत्री लोगहैं जो धर्मचारी और सब मनोरथों के देनेवाले हैं मानस देशवासी वैश्य धर्म से निर्वाह करने वालेहैं मन्दग देश के रहने वाले शूद्र लोग धर्म के अभ्यासी हैं हे राजेन्द्र उन देशों में न राजा है न दण्ड है न दण्डधारी हाकिम है वहां सब प्रजालोगही धर्मज्ञ होकर अपने २ धर्मों से परस्पर की रक्षा करतेहैं उस बड़े प्रकाशवान् शाकद्वीपमें इतनाहीकह सक्तेहैंऔरइतनाही सुननेकेयोग्यहै३८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिशाकद्वीपवर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज वहां पूर्वकहे हुये उत्तर द्वीपोंमें जिस प्रकारसे कथा सुनी जातीहै उसको तुम मुझसे सुनो, कि वहां एकता घृतका समुद्र है

दूसरा मदधि मण्डोदक नाम समुद्र तीसरा मदिरा रूप जलका समुद्र, चौथा मिष्टजलकासमुद्रहै हेराजाधृतराष्ट्र सबद्वीप और पहाड़परस्परमें दूनेदूनेसमुद्रों से घिरेहुयेहैं और मध्यवर्त्ती द्वीप में गौर शिलारूप पर्व्वतहै और पिछले द्वीपमें कृष्ण नाम पर्व्वत नारायणका सखारूपहै वहां आपकेशवमूर्त्ति दिव्यरत्नों की रक्षाकरतेहैं और प्रसन्नहोकर प्रजालोगों को सुख देतेहैं और कुशद्वीपमें कुशस्तंभ देशोंसेयुक्तहै और शाल्मलद्वीपमें शाल्मली वृक्ष पूजनकियाजाता है और क्रौञ्चद्वीपमें रत्न समूहोंका भंडारमहाक्रौंच पर्व्वतको सदैव सबवर्ण पूजतेहैं हेराजन् उसमें सब धातुओंका रखनेवाला बहुत बड़ा पर्व्वत गोमन्त नामहै जिसके ऊपर श्रीमान् कमललोचन विष्णु भगवान् सदैव निवास करतेहैं वह प्रभु नारायण हरि सदैव मुक्त पुरुषोंसे मिलेहुये रहते हैं औरकुशद्वीपहीमें एक पर्व्वत मुख्य २ वृक्षोंसे आच्छादितहै वह दुर्धर्ष पर्व्वत स्वनाम नामसे प्रसिद्धहै इससे दूसरा हेमपर्व्वतहै तीसरा द्युतिमान् कुमुद नाम गिरि है चौथा पुष्पवान् नामहै पांचवां कुशेशय नामहै छठा हरिगिरि नाम है यह छओं उत्तम पर्व्वतहैंइनकामध्यवर्ती विस्तार पूर्व्वक विभाग के अनुसारदूनाहै प्रथम खण्ड औद्भिद है दूसरा वेणु मण्डल है तीसरा रथाकारहै, चौथा कंबल है पांचवां धृतिमत् खंडहै छठवां प्रभाकर नाम खण्ड है सातवां कापिल खण्डहै यह सातों पर्व्वत खण्डों के विभाग करने वालेहैं इनखंडों में देवता गंधर्व और प्रजालोग विहार पूर्व्वक आनन्द करतेहैं उन में मनुष्य नहीं मरता न चोर म्लेच्छ जाति आदि के लोग रहतेहैं और सब प्रजा गौर वर्ण सुकुमार होतेहैं इनके सिवाय शेषद्वीपों काभी तुमसे वर्णन करताहूं इसको आप सावधानीसे सुनो कि क्रौञ्चद्वीपमें क्रौञ्चनाम बड़ा पर्व्वत है और क्रौञ्च से परे वामनहै वामनसे परे अन्धकारकहै अन्धकारकसे परे मैनाकनाम उत्तम पर्व्वतहै और मैनाकसे परे गोविन्दनाम उत्तम पर्व्वत है गोविन्दसेपरे निविड़ नामश्रेष्ठ पर्व्वतहै इनकाभी विस्तारद्विगुणितहै, इनके देशोंकाभी वर्णनकरता हूं उसको तुमसुनो कि क्रौञ्चद्वीपका देशकुशलहै वामनका देश मनोनुगहै, मनोनुगसे परे उष्णदेशहै उष्णसेपरेप्रावरक है प्रावरकसेपरे अन्धकारकदेशहै अन्धकारकसे परे मुनि देशहै मुनि देशसेपरे दुन्दुभी स्थान बोलाजाताहै, हे राजन् यह सिद्धचारणों कानिवासस्थानबहुतगौरवर्णवाले मनुष्यों से पूरितहै यह सब देश देवगंधर्वों के निवास और विहार स्थान हैं पुष्करद्वीपमें पुष्कर नाम पर्व्वत मणिरत्नों का रखनेवाला है उसमें आप देवदेव ब्रह्माजी निवास करतेहैं और हे राजन्उनब्रह्माजी को सबदेवता और महर्षि योगमनसे पूजन करते हुये सदैव चारों ओर से उपासना करते हैं उनसबद्वीपों में प्रजाओं के अनेकप्रकार के रत्न जंबूद्वीप से वर्त्तमान होतेहैं (तात्पर्य्य यहहै कि जंबूद्वीप

वासी जो जोकर्म करते हैं उनके फलसे नानाप्रकार के रत्न वहां वर्त्तमान होते हैं और अवस्था व्यतीत होने पर शरीर को त्यागकर अपने कर्म सम्बंधी द्वीपों में जाकर अपनेही कर्मों से प्रकट हुये उनरत्नों को भोगते हैं ब्रह्मचर्य्य सत्यता और प्रजाओं की शान्तचित्तीपतासे नीरोगता पूर्व्वकएक से एकद्वीपकी अवस्था दूनी २ है इन सब द्वीपों में केवल एकही देशहै उसी देश में सब देश कहे जाते हैं वह एकधर्मरूप देश दृष्ट पड़ता है अर्थात्धर्म फल भोगने के लिये छओंद्वीपहैं और जंबूद्वीप कर्म और योगकी भूमि है हेराजन् आप प्रजापति ईश्वर दण्ड धारण करके इनद्वीपों की रक्षाके लिये नियत रहताहै वही राजाहै वहीशिवहै वहीपितापितामहआदिहै वहीसबजड़ चैतन्य प्रजाओं की रक्षा करता है हे कौरव यहां के प्रजालोग स्वतःसिद्ध प्राप्तहुये भोजनको खाते हैं, इसकेपीछे समानाम लोकों की निवास भूमि दृष्टपड़तीहै हेराजन् वह चतुर्मुख कमलरूपहै और उसका मंडल तेंतीस हजार योजन है (ऊपर अठारह हज़ार छःसौछ्यासपरिधि बर्णनकी है और केवल वृत्ततेंतीस हजारही कहा इसका हेतु यह है कि जो पर्व्वत गोलसे ऊंचे हैं उनको वृत्तके भीतरलेकर मंडल गणनाकी है हे राजेन्द्र वहां लोकोंके प्रधान चारदिग्गजबामन और ऐरावत नाम आदिसे नियतहैं और इसीप्रकार तीसरा प्रतीकहै चौथा प्रभिन्नकरट नाम सुखहै उसका प्रमाण मैं बर्णन नहीं करसक्ता वह गजसमूह सदैव तिरछा ऊंचानीचाहै इससे गणनासे बाहर है वहां पर सब ओरकी बायु चलती है जो हाथी पृथक् और अन्य २ होतेहैं वही गज उनको बड़ीप्रकाशवान् खिलेकमलों की समान अपनी सूंड़ों से पकड़ते हैं और पकड़कर शीघ्रही सौ भागकरके छोड़तेहैं वही गजोंकेश्वासोंकी छोड़ीहुई वायु यहां आतीहै उसीसे सब प्रजालोग जीवतेरहतेहैं धृतराष्ट्रबोले हे संजय यह तुम ने बहुत बड़ा बिस्तार बर्णन किया और द्वीपों काभी रूप दिखाया अब हे संजय इनके बिशेष और २ जो भाग हैं उनका बर्णन करो संजय बोले हेराजन् मैंने द्वीपोंका बर्णन किया अब ग्रहोंका बर्णनमूलसमेत सुनो हे कौरवेन्द्र राहुग्रह गोल सुना जाता है उसका व्यास निश्चयकरके बारह हजार योजन है और मंडलछत्तीसहजार योजनहै और बुद्धिमान् पौराणिकोंने उसको मुटाई में छःहजार योजन से अधिक कहाहै और चन्द्रमाकाव्यास ग्यारहहजार योजन कहाहै उसका मंडल तेंतीसहजार योजनहै और मुटाई उंसठ योजनसे अधिक है और हे राजन् सूर्य्यका व्यास दशहजार योजन है परन्तु मुटाई में तेरहसौ योजन से अधिकहै इसी हेतुसे इकतीस हजार तीन सौ योजनका मण्डलहै यह शीघ्रगामी सूर्य्य बड़े उदार सुने जातेहैं हे राजन् यह सूर्य्यका प्रमाण कहा और वहराहु अपनेबड़े देहसे

समय पाकरदोनों सूर्य्य चन्द्रमाओंको ढक लेताहै यही संक्षेपसे वर्णन किया हे महाराज धृतराष्ट्र मैंने शास्त्ररूप दृष्टिसे यह सब वृत्तान्त यथावस्थित कहा यह जगत् समेत मैंने जैसा गुरुसे सुनाहै उसीके अनुसार तुमसे बर्णन किया इससे आपशान्तीको पाओ इन अनेक कारणों से हे राजन् तुम अपने पुत्र दुर्योधनमें शान्तीको पाओ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इसचित्तरोचक भूमिपर्व को जो राजा सुनताहै वह धनवान्हो अभीष्टको प्राप्तकरके साधुओं में प्रतिष्ठाको पाताहै और उसकी आयु बलकीर्त्ति तेज बृद्धि बढ़ती है और श्रद्धापूर्वक नियम से जो राजा सुनेगा उसके पितापितामहादि तृप्तहोतेहैं यह भरतखंड जिसमें हम सब वर्त्तमानहैं यह पूर्वजोंसे बड़ा पुण्यका बढ़ाने वाला नियत कियागयाहै इस सबको तुमने सुनाहै ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिजंबूखण्डवर्णनेनामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी बोले हे भरतवंशी इसके पीछे सबका वृत्तान्त प्रत्यक्षदेखने वाले भूतभविष्य वर्त्तमान के ज्ञाता बुद्धिमान् संजय ने युद्ध भूमि से आकर आकस्मिक ध्यान करनेवाले धृतराष्ट्र के समीप जाकर भरतवंशियों के पितामह का महाघायल होना वर्णन किया अर्थात् आकर कहा कि हे महाराज में संजय हूं आपको नमस्कार करताहूं अब इसवृत्तान्त को कहताहूं कि वह भरतवंशियोंके पितामह शान्तनव भीष्मजी शस्त्रोंके घातसे बड़े घायलहोगये जो सब युद्धकर्त्ताओं में ध्वजारूप और, धनुर्धारियों में महातीव्र हैं अब वह कौरवों के पितामह शर शय्यापर सोरहे हैं जिनके पराक्रम के आश्रय को पाकर तेरेपुत्र ने पांडवोंसे जुवाखेला वहीभीष्मजी शिखण्डीसे विदीर्ण घायल होकर शरशय्यापर बिराजे हैं जिसमहारथी ने काशीपुरी में एकही रथ से महाभारी युद्धमें सबमिलेहुये राजाओंको बिजय कियाथा और वहीमहाभयकारी युद्धमें जमदग्नि जी के पुत्र परशुरामजीसे लड़े और उनके हाथसेनहीं मारेगये अबवही भीष्मजी शिखंडी के हाथ से मारेगये हैं जो शूरतामें महा इन्द्र के समान और स्थिरचित्तता में हिमाचल पर्वत के समान और गंभीरता में समुद्र के सदृश और क्षमामें पृथ्वी के तुल्य हैं अबवह बाणरूप दंष्ट्रा और धनुष रूप मुख खड्गरूप जिह्वा दुर्धर्ष नरोत्तम सिंहरूप तेरापिता पांचाल देशी शिखण्डी के हाथसे पृथ्वीपर मारागया पांडवोंकी सेना जिसको युद्धमें शस्त्र लिये उद्यत देखकर भयसे व्याकुल होकर ऐसे कांपतीथी जैसे कि सिंहको देखकर गौओंका समूह व्याकुल होकर थरथराता है वह वीरों का मारनेवाला उसनेर पुत्रकी सेना को दशदिन रात्रि रक्षाकरके बड़े कठिनयुद्धों को करता

हुआ घायलों के समान अस्त होगया, जोकि हजारों बाणोंको बरसाता हु-आ इन्द्रके समान महाब्याकुलता से पृथक् है उसने अपने दशदिनके युद्धों में एकअर्बुद सेनाको मारडाला, हे भरतबंशी वहतेरी बुरीसलाह के होने से वायु से गेरेहुये वृक्ष के समान पृथ्वीपर ऐसे सोताहै जैसे कि कभी वह सोने के योग्य न था १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीष्ममृत्युश्रवणेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि मेरापिता भीष्म कैसे २ शिखण्डीके हाथसे घायलहुआ और कैसे रथसे गिरा हे संजय उसपराक्रमी देवता के समान अपने पिता शंतनुके लिये ब्रह्मचारी होनेवाले गुरुरूप भीष्मजीके बिना मेरेपुत्रों कीकौन दशाहुई और ऐसे महाबली धनुर्धारी महाज्ञानी शस्त्रवेत्ता नरोत्तम भीष्म के मारेजानेपर तेरा चित्त कैसा होगया जिस निर्भय कंपरहित कौरवेन्द्र पुरुषो-त्तमबीर भीष्मजी को मृतक सुनकर मेराचित्त महापीड़ा से ब्याकुल होता है हे संजय कौन २ क्षत्री इसके आगे और कौन इनके पीछे चलनेवाले हुये कौनास्थिर हुये और कौनलौट आये और कौन से क्षत्री सन्मुख बर्त्तमान हुये और कौनसे शूर उसमहारथी क्षत्रियोत्तम युद्धमें सेनाके दबानेवाले भीष्मजी के पीछे की ओरको चले जिसबड़े प्रबल सेनाके स्वामी सूर्य्य के समान ते-जस्वी शत्रुहंताने शत्रुओं की सेनाके मनुष्योंको मार हटाया और शत्रुओंमें महाभयको उपजाया और युद्धमें पाण्डवोंकेऊपर महाकठिन कर्म किया और हे संजय तुमने उसके सन्मुखहोने वाले युद्धमें कुशल दुष्प्रधर्ष महाबली को भीदेखा है जिसने कि इससेना के निगलने वाले महावीर धनुर्धारी भीष्म को मारकर हटाया हे संजय पाण्डवों ने युद्धके बीचमें उनभीष्मजी को कैसे प्रकारसे रोका और सेनाओंके काटनेवाले बाणरूप दंष्ट्रा रखनेवाले वेगवान् चापरूपी मुखफट्टलानेवाले खड्गरूप जिह्वाधारी दुर्धर्षइस दशाके अयोग्य पुरुषोत्तम लज्जावान् अजित जितेन्द्री भीष्मजी को अर्जुनने किसप्रकार से गिराया जो भीष्म कि भयानक धनुष बाणयुक्त उत्तमरथमें आरूढ़ बाणोंसे शत्रुओं के शिरों के छेदने वाले होते थे उसकाल अग्नि के समान दुर्धर्ष शस्त्र धारण किये सन्नद्ध भीष्मजी को देखकर पांडवोंकी सेना सदैव मृतक-प्रायके सदृश चेष्टा करती थी वह शत्रुहन्ता दशरात्रि सेना को खैंचकर महा कठिन युद्ध कर्म को करके सूर्य्य के समान अस्तहोगया जिसने दशदिन तक इन्द्रके समान अखण्ड बाणों को छोड़कर युद्ध में एक अर्बुद संख्याके शूरबीरों को मारडाला वहभरतर्षभ मेरेदुर्मंत्रों से युद्ध में पराजय होकर पृथ्वी

में वृक्ष के समान गिरकर ऐसा घायल होकर सोता है जैसा कि वह कभी होनहीं सक्ता ऐसे प्रतापी महाबली भीष्मजी को युद्ध में सन्नद्ध देखकर पांचाल देशियों की सेना किसप्रकारसे उनके ऊपर प्रहारकरने को समर्थ हुई और पाण्डवोंने भीष्मजी के सन्मुख कैसे लड़ाई की और हे संजय द्रोणाचार्य्यजी के जीतेहुये होनेपर भीष्मजी ने कैसे विजय को नहीं पाया और प्रहार कर्त्ताओंमें श्रेष्ठ भीष्मजी ने भारद्वाज के पुत्र कृपाचार्य्य और द्रोणाचार्य्य के वर्त्त मान होने पर कैसे मृत्यु को पाया और देवताओंसे भी महादुर्धर्ष अति रथी भीष्मजी युद्ध में उस पांचाल देशी शिखण्डी के हाथसे कैसे मारेगये जिन्होंने महाबली परशुरामजी को युद्धमें प्रसन्नकिया अर्थात् उन से ईर्षापूर्व्वक लड़ाई होनेपर भी उनके हाथसे नहीं मारागया इन्द्र के समान प्रबल महारथियों में सूर्य्य रूप महावीर भीष्मजी युद्धमें जैसे मृतक हुए वह सब मुझसे वर्णनकरो और हे संजय मेरे कौन कौनसे बड़े धनुर्धारी बाण फेकने वाले पुत्रों ने उस दुराधर्षको त्याग नहीं किया और दुर्योधन के आज्ञावर्ती कौन२ से वीरोंने शत्रुओंको न रोका जिससे कि वह सब पाण्डव जिनमें सब का अग्रगामी शिखण्डीथा भीष्मजी के सम्मुख आये हे संजय उस अजित वीर को सब कौरवों ने तो त्याग नहीं किया मेरा निश्चयकरके वज्र के समान हृदय है जो ऐसे पिता भीष्म पराक्रमी के मरनेपर भी नहीं फटता है वह भरतर्षभ दुराधर्ष सत्यवादी बुद्धि स्मरण में सावधान शास्त्रों का ज्ञाता होकर युद्ध में कैसे मरा है जिसका धनुषरूप बादल बाणरूप जल कण और धनुषकी टंकारही गर्जना युक्त घोरशब्दवाले बड़े बादलही के समान ऊंचा है और जैसे इन्द्र दैत्यों को मारताहै उसी प्रकार शत्रुके रथियों को मारतेहुये जिस वीरने पाण्डव और पांचाल देशीय वा संजय लोगोंके पद वर्षाकी उस बाणआदि अनेक भयानक अस्त्रों के समुद्र बाणरूपी ग्राह धारीदुराधर्ष धनुष रूप तरंगवाले अविनाशी निराधार नौकाओं से रहित गदाखड्ग रूप मकर जीवों से व्याप्त घोड़े रूपी आवर्तों समेत हाथियों से व्याकुल पदातीरूपमीनों से भराहुआ शंख दुन्दुभियों से शब्दायमानयुद्ध में अपने वेगसे बहुतसे हाथीघोड़े पैदलोंको डुबोने वाले शत्रुओं के वीरोंके हटानेवाले क्रोधसे अग्नि रूपतेज से शत्रुओं के संतप्त करने वालेको कौन२ से वीरोंने ऐसे रोकलिया जैसे कि समुद्र को उसकी किनारा रूप मर्य्यादा रोकलेती है, हे संजय शत्रुहन्ता भीष्मजी ने युद्धमें दुर्य्योधन के अभीष्ट के लिये जो२ कर्म किये उस समय उनके सन्मुख कौन २ हुए और कौन २ से वीरोंने भीष्मजी के दाहिने पक्षकी रक्षाकरी और पीछेकी ओरसे कौन से सावधान वीरोंने शत्रुके वीरों को हटाया और कौन २ वीर भीष्म जी के

समीप में जाकर रक्षा करतेहुए आगे हुए और किन २ वीरों ने भीष्मजी के लड़ते समय उत्तरीय भागकी रक्षाकरी और बाम पार्श्व में होकर किस २ ने संजय देशियों को मारा और किस २ वीरने उस दुर्धर्ष भीष्मजी की आगे से रक्षाकी और चलते समय में किस २ ने चारों ओर से उन की रक्षाकरी हे संजय उस समूह में से शत्रुओं के वीरोंसे युद्धकरनेवाले कौन २ बीर थे वीरों से रक्षित भीष्म जी ने और भीष्म जी से रक्षित उन वीरोंने युद्ध के बीच वेगसे वा दुःख से विजय होनेवाली राजाओं की सेनाओं को क्यों नहीं विजय किया हे संजय जो सब लोकों के ईश्वर प्रजापति के परमपदके मार्ग में नियत होता है उसके मारने के लिये वह पाण्डवलोग कैसे समर्थ हुए, कौरवलोग जिस रक्षा के स्थानपर भरोसा करके शत्रुओं से युद्ध करते हैं उस नरोत्तम भीष्मजी को हे संजय तुम डूबाहुआ कहते हो, जिसके बलका आश्रयलेकरबड़ी सेना रखने वाला मेरा पुत्र पाण्डवों को कुछ नहीं समझता था वह ऐसा प्रतापी भीष्म पांडवों के हाथसे कैसे मारागया, युद्ध में दुर्मद महाव्रती जिसमेरे पिता भीष्म को सहायता में करके देवता लोग दैत्योंके मारनेके लिये उपस्थितहुये और संसार में विदित राजा शन्तनु ने पुत्रोंमें उत्तम बड़ेपराक्रमी जिसभीष्मके उत्पन्नहोनेपर शोकभय और दुःखों को अत्यन्त दूरकिया और उसी पुत्रको रक्षाका स्थान बड़ाज्ञानी और अपने धर्म्मों में अति प्रवृत्त वेद वेदांग के मूलों का ज्ञाता महापवित्रात्मा वर्णन किया हे संजय ऐसे पुरुष को मराहुआ कैसे कहता है उन सब अस्त्रों से शिक्षायुक्त शन्तनु जितेन्द्री उदार बुद्धि भीष्मजी को मृतकसुनकर मैं शेष बचीहुई सेना कोभी मृतकही मानताहूं कि जिसस्थानपर पांडव अपने वृद्ध गुरुकोभी मारकर राज्यको चाहतेहैं इससे यह मेरा मतहै कि अधर्म धर्मसे प्रबलतर होता है, पूर्व समय में सब अस्त्र शस्त्रों के ज्ञाता अनुपम युद्ध में सन्नद्ध जमदग्निजी के पुत्र परशुराम जी को युद्ध में भीष्मजी ने विजय किया उसइन्द्र के समान कर्मकर्त्ता सब धनुषधारियों के ध्वजारूपभीष्म जीको मृतक कहता है इससे अधिक कौनसा दुःख होगा जिन परशुराम जीने अनेक समय क्षत्रियों के समूहों को बारम्बार विजय किया परन्तु बड़ा बुद्धिमान् मेरापितानहीं मारागया सो अब वह शिखण्डी के हाथ से मारागया इसहेतु से निश्चय करके द्रुपदका पुत्र शिखंडी बड़ापराक्रमी युद्ध में परशुरामजीसे भी अधिक तेजस्वी बल पराक्रममें भी अधिकहै जिसने शूरबीर पंडित महाशास्त्रज्ञ धर्मअस्त्र के ज्ञाताभरतवंशियों के उत्तम प्रतापी बीरको मारा युद्धभूमि में उस शत्रुहन्ता भीष्मजीके पीछे कौन २ वीर चले और जैसे पाण्डओं से और भीष्मजी से लड़ाई हुई यह सब मुझसे विस्तार

समेत वर्णन करो हे संजय मेरे पुत्रकी वह सेनास्त्री के समान मृतक वीरवा-
लीहै और वही मेरी सेना इस प्रकार व्याकुल है जैसे कि बिनागोपके गौओं
का कुल होता है जिसभारी युद्ध में सबलोगोंकी बड़ी बीरता है अब उस
भीष्मजीके मरने के पीछे सबका मन कैसाहोगया, हे संजय अबलोक में
धर्मवान्बड़े पिताको मरवाके हमारे पुत्रोंमें जीवनकी क्या सामर्थ्य है, भीष्म
जीके मरनेपर मेरेबेटेसदैव दुःखसे ऐसे शोचतेहैं जैसे कि पारपर खड़े हुए
मनुष्य गहरेजल में डूबीहुई नौका को देखकर शोचतेहैं हे संजय निश्चय
करके मेरा वज्रसेभी अधिक कठोर हृदयहै जोऐसे पुरुषोत्तम भीष्मजीके मर-
नेपरभी नहींफटताहै जिसपुरुषोत्तम दुराधर्ष में अस्त्रबुद्धि और नीतिअत्यन्त
थी वह युद्धमें कैसे मारागया कोई भी मनुष्यअस्त्रशूरता तपबुद्धि धैर्य्य और
तपस्या इत्यादिके द्वारा मृत्युसे नहींछूटताहै इससे निश्चय करके सबलोकों
को दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्यकाल महाबलीहै उसकोभी उन्होंने बशी-
भूत किया हेसंजय उन शंतनुके पुत्रभीष्मजी को मृतक कहताहै उनशंतनुः
नन्दन भीष्मजीसे मैं पुत्रोंके शोकसे दुःखीबड़े दुःखोंको स्मरण करताहुआ
रक्षाकी आशा करताथा हे संजय जब सूर्य्यके समान अस्त हुए भीष्मजी
को दुर्य्योधनने देखा तब मन में क्या विचाराकिया और मैं बुद्धिसे चिन्ता
करताहुआ सेनाके मध्यमें अपने पुत्रोंको और अन्यराजाओंको कुछभीनहीं
समझताहूं यह वह भयका कारण क्षत्री धर्म ऋषिलोगोंने दिखायाहै जहां
पांडव लोग भीष्मजीको मारकर राज्यको चाहतेहैं अथवा हमकौरव लोग
महाब्रत वाले भीष्मजीको मरवाकर राज्यको चाहते हैं, क्षत्रीधर्ममें प्रवृत्तमेरे
पुत्र पांडवभी कुछ अपराध नहीं करते हैं क्योंकि दुःख और आपत्तियों में
उत्तम पुरुष को यह पराक्रम और महासामर्थ्यप्रकटकरनेके योग्यहै उसमेंही
वह सबपांडव नियतहैं हेतात उनपांडवोंने उन लज्जावान् दुराधर्ष सेना के
मर्दनकरनेवाले भीष्मजीको कैसे रोका और जैसे २ सेनातैयारहुईं और सब
महात्माओं का युद्धकैसे हुआ और मेरापिता भीष्म दूसरों के हाथसे कैसे
मारागया, भीष्मजी के मरनेपर दुर्य्योधन कर्ण और सौबलकेपुत्रशकुनीऔर
छली दुश्शासन ने क्या कहा, जिन देहों के बिछौनों से संयुक्त मनुष्यहाथी
घोड़ोंसमेत बाण बरछी और बड़े खड्ग तोमर रूप पाशेवाले महा भयकारी
सभा में प्रविष्ट हुये और वह युद्धमें कुशल नरोत्तम उस भयकारी प्राणदैवत
अर्थात् द्यूतरूपमेंखेले उनमेंसे कौनसा विजयी जीवताहै और जोभीष्मजीसे
युद्धमें मारेगये इनसबको हेसंजय मुझसे कहो, यहांपर भयकारी कर्म और
युद्धमें शोभा पानेवाले महाब्रत पिता भीष्मजीको मृतक सुनकर मेरेहृदय
में शान्ती नहीं होती हेसंजय तुम पुत्रकी हानिसे उत्पन्न महा पीड़ाको मेरे

हृदयमें ऐसे बढ़ातेहो जैसे घृतसे अग्निको बढ़ातेहैं, और संबंधीलोग प्रसिद्ध महाभारको उठाकर और भीष्मजी को मृतक जानकर शोचते हैं और मैं दुर्योधनके उत्पन्न कियेहुए उन दुःखोंको सुनूंगा इस कारण हेसंजय वहांका सब वृत्तान्त मुझसे कहो और जो युद्ध में अल्पबुद्धियों की निर्बुद्धिता से उत्पन्न वृत्तान्त न्याय वा अन्याय संबंधी कैसाहीहो वह सब मुझसे कहो और युद्ध भूमिमें शस्त्रज्ञ और शास्त्रज्ञ विजयाभिलाषी भीष्मजीने जो अपने तेजसे कर्मकिया वह भी विस्तारपूर्वक संपूर्ण कहो और जब जिस क्रमसे समय पाकर कौरव और पाण्डवों की सेना से परस्पर युद्धहुआ उसमें जैसा जैसा जो काम जिस २ का हुआ वह सब मुझसे कहो ७८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिधृतराष्ट्रप्रश्नेचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पंद्रहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज यह सब प्रश्न जो तुम पूछतेहो सब ठीकहैं परन्तु आप इन दोषोंको जो लगातेहो सो योग्य नहीं है जो मनुष्य अपने बुरे कर्मसे दुःखादि को पावे वह उसपापकी शंका दूसरेपर करनेके योग्यनहीं है, हे महाराज जो मनुष्यों के मध्यमें निन्दाके योग्य कर्मको करताहै वह निन्दित कर्म करनेवाला सबलोकोंसे मारनेके योग्यहै, छल संयुक्त दुर्योधन आदिने निरादर किया और पाण्डवोंने मंत्रियोंके द्वारा तेरीओर को ध्यान करके बहुत कालतक बनके बीच बैठकर उस अपमानको क्षमाकिया और मैंने प्रत्यक्षमें घोड़ेहाथी और बड़ेतेजस्वी राजाओंकीजो दशादेखी और योगबलसे भीजोनिश्चयाकिया हेराजा उसकोतुममुझसेसुनो और शोकसेचित्तकोहटाओ यहीहोनहार प्राचीनहै मैंआपके बुद्धिमान् पिताउनव्यासजीको नमस्कारकर-केकहताहूं जिनकी कृपासे मैंने दिव्यदृष्टि और अनुपम प्रज्ञाको प्राप्तकिया,हे राजा ध्यानसे पृथक् देखना वा दूरसे बातका सुनना अथवा दूसरे के मनका अच्छे प्रकारसे जानना और भूत भविष्यका ज्ञानहोना, उठेहुए अस्त्रकी उ-त्पत्तिका जानना, आकाश में शुभगवन, लड़ाइयों में अस्त्रों से बचजाना इत्यादि सब बातें महात्माके बरदानसे प्राप्तहैं इस अपूर्व विचित्र वृत्तान्त को ब्योरेवार तुम मुझसे सुनो जैसे कि वह भरतवंशियोंका रोमहर्षण करनेवाला युद्धहुआ, हेमहाराज जब व्यूह रचनाकी रीतिसे उस सेनाकी तैयारियांहुईं तब दुर्योधनने दुश्शासनसे कहा कि हेदुश्शासन भीष्मजीके रक्षाकरनेवाले रथ शीघ्रही तैयारहों और तुम इस बातका सबसेनाको शीघ्र उपदेशदो कि सेना के मनुष्यों से पाण्डव और कौरवोंका वह मिलाप वर्त्तमान हुआहै जो कि बहुत बर्षोंसे बिचारागयाहै, मैं युद्धकेबीच इनभीष्मजीकी रक्षासे अधिक

कोई बड़ा काम नहीं समझताहूं क्योंकि जो भीष्मजीकी रक्षाहोगी तो यह अकेलेही पाण्डव सोमक और संजय लोगों समेत सबको मारेंगे और इन सत्यवक्ता भीष्मजीने कहाहै कि मैं शिखण्डीपर बाण और शस्त्रप्रहार नहीं करूंगा इसकायहहेतु सुनाजाताहै कि यह पूर्वमें स्त्रीथा इसकारणयुद्धमें इसके ऊपर शस्त्र छोड़ना क्षत्रियोंको निषेधहै इस गुप्त कारणसे भीष्मजी अधिक करके रक्षा करने के योग्यहैं इस मेरेमतसे हमारी सब सेनाके मनुष्य शिखंडी के मारने में सावधानी से उद्युक्त होजांय और इसीप्रकारसे पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण इन चारों दिशाओं के सब शस्त्रधारी युद्धमें कुशल राजा लोगोंको भी योग्यहै कि सब मिलकर भीष्मजीकी रक्षाकरें, महाबली रक्षासेरहित सिंह को जैसे शृगाल मारे इसी प्रकार शृगाल के समान शिखंडी के हाथसे हम लोगोंको योग्य है कि सिंहरूप भीष्मजीको नहीं मरवावें, रथके वामभागका रक्षक युधामन्यु और दक्षिण भागका उत्तमौजा यह दोनों अर्जुनके रक्षकहैं और अर्जुन शिखंडीका रक्षक हुआहै वह अर्जुनसे रक्षित शिखंडी गंगाके पुत्र भीष्मजीको जिस रीतिसे मारनेको समर्थ नहो हे दुश्शासन वहीउपाय अवश्य करना चाहिये २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिदुर्य्योधनदुश्शासनसंवादेपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि तदनन्तर रात्रि व्यतीत होनेपर जोड़ो जोड़ो ऐसे राजा लोगोंके कहेहुए महान् शब्द होतेहुए और हे भरतर्षभ शंख और दुन्दुभियों के बड़े २ शब्द और बड़े २ वीर पुरुषोंके सिंहनाद और घोड़ोंके हींसने के शब्द और रथके पहियों के महान् शब्दों से और हाथियोंकी चिघाड़ोंसे वा मल्लोंके क्रीड़ापूर्व्वक हाथके और मुखके अनेक प्रकारके शब्दों के कारण चारों ओरसे महातुमुल भयकारी शब्दहुए ३ हे महाराज सूर्य्यके उदयहोने पर सब ओरसे तैयार कौरव और पांडवोंकी महाभारी सेना आन आनकर खड़ीहुई और तुम्हारे पुत्रोंके और पांडवोंके दुःप्रधर्षशस्त्र अस्त्र और कवचभी बड़ी तीव्रता से तैयारहुए तिसके पीछे जब बड़ा प्रकाश हुआ उस समयतेरे पुत्रोंकी और पांडवोंकी सेनाके वह मनुष्य दिखाई दिये जो बड़े महात्माऔर शस्त्रोंको धारण कियेहुये थे, इसके विशेष वहांपर जंबूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ भी ऐसे दृष्टपड़े जैसे कि बिजली समेत बादल दिखाई देते हैं, रथपर सवार बहुतसी सेना नगरोंके समान दिखाईदीं उनसब प्रकारकी सेनाओं में आपके पिता भीष्मजी पूर्ण चन्द्रमासे प्रकाशमान दिखाई देतेथे और संपूर्ण सेना भर में युद्धकर्त्ता लोग धनुष यष्टी खड्ग गदा बरछी

और तोमर आदि श्वेतशस्त्रों सहित नियत हुए, और हाथी पैदल रथ घोड़े इत्यादि हजारों पशु चारोंओरसे जालके समान घेरेहुए दृष्ट पड़ते थे, और अपने दूसरे लोगोंकी हजारों ध्वजा नानाप्रकारके चिह्नोंकी दिखाईदीं, वह सबध्वजा सुनहरी अग्नि के समान देदीप्यमान मणियोंसे जटित ऐसी दृष्ट पड़ती थीं जैसे कि महाइन्द्र के भवनों में उसी महेन्द्रकी श्वेत ध्वजा होतीहैं उन युद्धाभिलाषी शस्त्रोंसे अलंकृत महाबलवानोंने परस्पर में एक एकको देखा आयुधोंको उठाये हुये शस्त्रोंसे शोभित नलको बांधने वाले धनुषधारी शुभ्र नेत्रोंसे प्रकाशमान राजा लोग सेनाके मुखपर आकर सुशोभित हुए, सौबलका पुत्र शकुनी, शल्य, अवन्तीका राजा, जयद्रथ, बिन्द, अनुबिन्द, केकय देशी राजा, काम्बोज सुदक्षिण, श्रुतायुध, कालिन्द, राजा जयत्सेन यह दशों महा शूरवीर पुरुषोत्तम परिघसमान भुजाधारी बृहद्दक्षिणा के यज्ञ करनेवाले अक्षौहिणियों के स्वामी, यहसब और अन्य बहुतसे नीतिज्ञ महारथी राजा और राजकुमार जो कि दुर्योधनकी स्वाधीनतामें वर्त्तमान थे सब अपनी २ सेना में सावधानी से नियत भूषण शस्त्रादिकोंसे अलंकृत काले मृगचर्मधारी अर्थात् युद्ध में मरण दीक्षा करनेवाले महाबली युद्ध में कुशल प्रसन्न और दुर्योधनके निमित्त ब्रह्मलोक के अर्थ दीक्षित और समर्थ दश संख्याकी सेनाको लेकर स्थिर हुये और ग्यारहवीं कौरवी महाभारी दुर्योधनी नाम विख्यात सेना जिसके स्वामी भीष्मजी थे वह सेना सब सेनाओंके आगे वर्त्तमानथी हे राजा ऐसी महा तेजस्वी असंख्य सेनामें हमने श्वेत पगड़ी श्वेतछत्र और कवचको धारणकिये दुराधर्ष चन्द्रमा के समान उदय रूप कौरवेन्द्र भीष्म जी को देखा बड़े धनुर्धारी बाण विद्यामें कुशल छोटे मृगों के समान वह संजयदेश बासी जिनका अधिपति धृष्टद्युम्न था जंभाई लेतेहुए इस महा सिंहरूपी भीष्मको देखकर धृष्टद्युम्न आदि सबके सब महाभयभीत हुए हेराजा यह तेरी ग्यारहअक्षौहिणी सेना शोभायमानहुई और इसीप्रकार पाण्डवोंकी सात अक्षौहिणी महा पुरुष से रक्षित होकर तैयार हुई और दोनों सेना ऐसी दिखाई देतीथीं जैसे कि युग के अन्त वाली प्रलयमें दोनों ओर से तरंग उठते हुए महा भयानक मदोन्मत्त मकरग्राहआदि जीवोंसे भरेहुए दो समुद्र व्याकुल होतेहैं हे राजा हमने कौरवों की इकट्ठी हुई सेनाका ऐसा युद्ध प्रथम कभी न देखा था न सुना था २७॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सैन्य वर्णने षोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि जिसप्रकार उन भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यासजीने कहा है उसीप्रकार सब राजालोग युद्धभूमिमें आ पहुंचे उसदिन मघानक्षत्रके देशमें नियत होकर चन्द्रमा प्राप्त हुआ और आकाश के मध्यमें सात महाग्रह राहुकेतु आदि महा तेजधारी प्राप्तहुए और सूर्य्य देवता उदयहोने के समय दोरूपसे दिखाई दिये फिर वह प्रकाशवान् सूर्य्य अग्निकी ज्वाला के समान उदय हुआ और मांस रुधिर भोजन करनेवाले लोथों के चाहनेवाले काक और शृगालों के चारों दिशाओं में शब्दहोने लगे शत्रुओं के विजयकर्त्ता सावधान चित्त सेनाओं के स्वामी कौरवों के पितामह वृद्ध भीष्मजी और भारद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य जीने बारंबार यहकहा कि कुन्ती के पुत्र पांडव लोगोंकी विजय हो और तेरे निमित्त युद्धकरेंगे इसप्रकारसे वचनकहकर निश्चय किया, तब सब धर्मोंके जाननेवाले देवव्रत नाम आपके पिता सबराजाओंको बुलाकर यह वचन बोले कि हे क्षत्री लोगो तुम्हारे स्वर्ग के निमित्त यह युद्धरूपी बहुत बड़ा द्वारखुलाहै उस द्वारके द्वारा तुम सब इन्द्र और ब्रह्मा जी की सन्निकटताको पावो, यह सनातन मार्ग प्राचीन वृद्धोंने तुम सबलोगों के निमित्त नियत किया है तुम युद्ध में प्रवृत्तचित्त होकर अपनी बड़ीसावधानी से लड़ो, राजा नाभाग, ययाति, मान्धाता आदि बहुतसे महात्मा ऐसेही युद्धरूप कर्मों के द्वारा सिद्धरूपहोकर उत्तम २ स्थानों को गये, घरमें रोगादि से जो क्षत्रियों का मरना है यह अधर्म है और जो युद्ध में शस्त्रके द्वारा मरता है वही इस क्षत्री का सनातन धर्म है हे भरतर्षभ इसीप्रकार से भीष्मजी के समझाये हुए राजालोग अपनी २ सेना उत्तम २ रथोंसे शोभित और शस्त्रोंसे अलंकृत कर करके प्रस्थित हुए और वह सूर्यका पुत्र कर्ण अपने मन्त्री और भाईबन्धुओं समेत युद्धमें भीष्मजीके कारण शस्त्रोंकात्यागकरने वाला किया गया और आप के पुत्र और सब राजा लोग कर्ण से पृथक् होकर सिंहनाद करतेहुए दशों दिशाओंको चले वह सब सेना श्वेत छत्र और ध्वजा पताका हाथी घोड़े रथ और पदातियोंसे शोभायमान थी उस समय भेरी पणव दुन्दुभियों के शब्द और रथ का चक्रधाराओं की ध्वनि से पृथ्वी महाव्याकुल थी और महारथीलोग सुवर्ण के बाजूबंद केयूर और धनुषों से प्रकाशित होकर ऐसे शोभायमान थे मानो ज्वालामुखी पर्वतहीहैं और कौरवों की सेनाके रक्षक पंचतारा धारी ताल वृक्षके समान ऊंचे बड़ी ध्वजा समेत निर्मल सूर्यके समान नियत हुए हे राजा जो बड़े धनुर्धारी शस्त्रके वेत्ता राजालो-

ग तेरी सहायता में आयेहैं वहसबभी अपने २ योग्य स्थानोंपर भीष्मजी के समीप वर्त्तमानहुए तदनन्तर गोवाशन शैब्य राजाओंके योग्य गजेन्द्र आदि चिह्नधारी ध्वजाओं से शोभित सब राजाओं समेत चला और राजा कमलवर्ण सब सेनाके आगे चला और महा सावधान शस्त्रधारी अश्वत्थामा सिंह लांगूलवाली ध्वजा से संयुक्त होकर गया और श्रुतायुध, चित्रसेन, पुरुमित्र, विविंशति, शल्य, भूरिश्रवा, और महारथी विकर्ण यह सातों महारथी बाण प्रहारी उत्तम कवच धारी हैं जिनमें मुख्य अश्वत्थामा रथमें सवार होकर भीष्मजी के आगे २ चलने वालेहुए उन सबको भी जांबूनद नाम सुवर्ण की प्रकाशित ध्वजाएं शोभायमान हुईं और आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य की ध्वजा जांबूनद सुवर्णकी वेदी और कमण्डलुसे शोभित धनुष समेत प्रकाशित हुई और बहुतसी लाखों अनीकों समेत दुर्य्योधनकी बड़ी भारी ध्वजानाग चिह्न युक्त मणियों से जटित भी शोभित हुई और उसके आगे पौरव कालिंग, कांबोज, सुदक्षिण, क्षेमधन्वा, शल्य, यह सब महारथी नियतहुए और मगध के राजा वा कृपाचार्य्यजी बड़े मूल्य के रथ और बृषभ चिह्न वाली ध्वजा समेत सेना मुखको खेंचते हुए से चले और पूर्वी राजाओं की बड़ी भारी सेना राजा अंग और महा उदार कृपाचार्य्य से रक्षित शरद ऋतु के बादलों की समान शोभायमान हुई और बड़ा यशस्वी बाराह के चिह्न वाली श्रेष्ठ ध्वजा का रखनेवाला महा प्रकाशवान सेना के मुखपर शोभित जिस के आज्ञावर्त्ती एक लाख रथीथे वह राजा जयद्रथ आठ हजार हाथी और छः अयुत रथों से युक्त होकर सेनाको शोभा देता था और सब कलिंग देशों का ध्वजाधारी राजा साठि हजार रथ और दश हजार हाथियों समेत चला उस के बड़े २ रथ पहाड़ के समान शोभायमान हुए और वह अपने यन्त्र तोमर तूणीर पताका आदि से भी महाशोभितथा और राजा कलिंगक अग्निका चिह्न रखनेवाली-उत्तम ध्वजा और श्वेत छत्र माला व्यजन चंवर समेत शोभित था और हे राजेन्द्र युद्ध में राजा केतुमान भी बिचित्र और महा उत्तम अंकुशवान हाथी पर सवार ऐसा विदित हुआ जैसे कि बादल पर चढ़ाहुआ सूर्य्य दृष्ट पड़ताहै और तेजसे प्रकाशमान् उत्तम हाथीपर चढ़ाहुआ राजा भगदत्त भी ऐसा जाता था जैसे ऐरावत पर इन्द्र जाताहो और राजा बिन्द, अनबिन्द और अवन्ती के राजा लोग भी हाथियों पर सवार होकर उस ध्वजाधारी भगदत्त के समीपवर्त्ती और आज्ञाकारी हुए वह रथोंकी अनीक रखने वाला भयानक व्यूह जिसके अंग रूप हाथी राजा रूप शिर और घोड़े रूपी पक्ष हैं सबओर को मुख किये हुए हँसताहुआ उग्ररूप होकर जो गिरता है उसको द्रोणाचार्य्य,

राजा भीष्म, अश्वत्थामा, वाह्लीक और कृपाचार्य्य इनपांचोंने रचाहै ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिसैन्यवर्णनेसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज इस के पीछे युद्धाभिलाषी महा शूरवीरों के कठिन भयंकर शब्द हृदय के कंपाने वाले सुने गये, शंख दुन्दुभियों के शब्द और हाथियों की चिंघाड़ वा रथों पहियों के महा शब्दों से पृथ्वी कंपायमान सी होगई तबतो घोड़ोंके हिनहिनाट और गर्जना करते हुए महा मल्ल शूर बीरों के शब्दों से पृथ्वी और आकाश एक क्षणमात्र में शब्दों से भरगये और वह महा दुर्धर्ष आपके पुत्र और पांडवों की सेना के मनुष्य परस्पर में सन्मुख होकर कंपाय मानहुए वहां जांबूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ ऐसे दिखाई दिये जैसे बिजली समेत बादल दिखाई देतेहैं और सुवर्ण के बाजूबन्दपहरे हुए आपके पुत्रों की ध्वजाओं में नाना प्रकारके रूपवाली अग्नि की ज्वाला अग्नि के समान प्रकाशमान हुई इसी प्रकार सब अपने और दूसरे लोगों की भी ध्वजा ऐसी दिखाई देतीथी जैसी कि महा इन्द्र के भवनों में उसकी तेजस्वी ध्वजा वर्त्तमान हो, अग्नि और सूर्य्य के समान प्रकाशमान और सुवर्ण के कवचों से अलंकृत बीर लोग भी सूर्य्य और अग्नि के ही समान प्रकाशित दृष्टपड़े, हेराजा कौरवों की सेना में श्रेष्ठ विचित्र आयुध वा धनुष धारी आयुधों समेत उठाये हुए छत्र ताल और पिनाक नाम धनुषों के बांधने वाले सुन्दर नेत्रधारी बाण विद्यामें कुशल सेना के मुख पर वर्त्तमान होकर शोभायमान हुए और हे राजा आगे कहे हुए आपके पुत्रभीष्मजी के रक्षक पीठ के पीछे की ओरहुए अर्थात् दुश्शासन, दुर्विषह, दुर्मुख, दुःसह, विविंशति, चित्रसेन, महारथी, विकर्ण, सत्यव्रत, पुरुमित्र, जय, भूरिश्रवा, शल, और इसी प्रकार बीस हजार रथ इन के पीछे चलनेवाले हुए, अभीषाह, शूरसेन, शिबय, बसातय, शाल्व, मत्स्य, अंबष्ठ, त्रैगर्त्त, कैकय, सौबीर, कैतव, और पूर्वी पश्चिमी और उत्तरीय राजाओं के समूह इन बारह देशों के नाम से विख्यात सब शूरवीर देहों के त्यागने वाले राजाओं ने बहुत से रथों समेत पितामह की रक्षाकी, और शीघ्रगामी हाथियों की एकलाख अनीक थी उसरथों की अनीक के साथ मगध का राजा चला और सेनाके मध्यवर्त्ती रथों के पहियों की और हाथियों के पैरों की रक्षा करने वाले साठलाख धनुष खड्ग ढाल धारणकियेहुए नख और प्रासनाम आयुधोंसेलड़ने वाले लाखों पदाती आगे को चले, हे महाराज धृतराष्ट्र इस प्रकार से आपके

पुत्र की ग्यारह अक्षौहिणी सेना ऐसी दृष्टि पड़ी जैसे कि गंगा में यमुना अन्तर्गत होकर दीखती है १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिसैन्यवर्णनेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि पाण्डव युधिष्ठिर ने व्यूहरची हुई ग्यारह अक्षौहिणी सेना को देखकर किस प्रकार से अपनी थोड़ी सी सेना से व्यूह की रचना की हे संजय जो युधिष्ठिर कि मनुष्य, देवता, गन्धर्व और असुर सम्बन्धी व्यूहों को जानता है उस कुन्ती के पुत्र ने किस प्रकार से अपने व्यूह को रचा, संजय बोले कि धर्मात्मा धर्मराज पाण्डव युधिष्ठिर दुर्य्योधन की व्यूह रचीहुई सेना को देखकर अर्जुन से बोला कि हे तात अर्जुन बृहस्पति महर्षी के बचनों से हम जानते हैं कि थोड़ी सेना को मिलाकर लड़ावे और बहुतसी सेना को इच्छापूर्व्वक फहलावे बहुत से मनुष्यों से लड़ने में थोड़े मनुष्यों की सेना का सूचीमुख होय इसी प्रकार हमारी सेना थोड़ी है और शत्रुओं की अधिक है सो हे अर्जुन महर्षीके इस बचन को जानकर सेना का ब्यूह रच यहसुनकर अर्जुन युधिष्ठिरसे बोला कि हे राजेन्द्र मैं इस तेरीसेना के ब्यूह की वह रचना करता हूं जो इन्द्रकी नियत करी हुई बज्ररूप अचल नाम है जो वह लड़ाई में वायु के समान उठा हुआ शत्रुओं से असह्यप्रहार करनेवालों में मुख्य और युद्ध के बिचारों में कुशल पुरुषोत्तम भीमसेन सम्पूर्ण सेना के पञ्जों को विदीर्ण करताहुआ हमारे आगे आगे चलेगा और सब कौरव लोग जिनका अग्रवर्त्ती दुर्य्योधन है वह सब कौरवी सेना भीमसेन को देखकर ऐसे लौटेगी जैसे कि सिंह को देखकर छोटे छोटे मृगों के यूथ भागते हैं हम सब निर्भय होकर उस प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ पर कोटारूप भीमसेन के समीपी होकर ऐसे रक्षालेंगे जिस प्रकार से देवता इन्द्रकी रक्षा में होते हैं ऐसा मनुष्य इस लोक में कोई नहीं है जो इस क्रोधरूप भयकारी भीमसेन को देख सके ऐसा कहकर उस महाबाहु अर्जुन ने इसी प्रकार से किया और बड़ी शीघ्रता से अर्जुन ब्यूहकी रचना करके चला गया तिस पीछे गंगाजी के समान पूर्ण और अचल पाण्डवों की सेना कौरवों को देखकर कुछ चलायमान हुई इस सेना के अधिपति भीमसेन, पराक्रमी धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और राजा धृष्टकेतु थे उसके पीछे राजा बिराट एक अक्षौहिणी सेना और भाई बन्धु पुत्रों समेत भीमसेन की रक्षा के निमित्त पीछे की ओर हुए और भीमसेन के रथ की रक्षा करने को नकुल और सहदेव दोनों भाई नियत हुए और उनके पीछे द्रौपदी के पुत्र अभिमन्यु, रक्षा

करने को उपस्थित हुए और पाञ्चाल देशी महारथी धृष्टद्युम्न शूरों की सेनाका और प्रभद्रक नाम रथों का रक्षक हुआ और हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इन सबके पीछे अर्जुन से रक्षित भीष्म जी के मारने में कुशल शिखंडी चला और अर्जुन के पीछे रक्षा के लिये महाबली युयुधान हुआ और रथ के पहियों की रक्षा के लिये पाञ्चाल देशी युधामन्यु और उत्तमौजा यह दोनों हुए, केकयदेशवासी धृष्टकेतु और पराक्रमी चेकितान भी साथ हुए और भीमसेन वज्रसारमयी दृढ़ गदाको धारण किये बड़े वेग से चलता हुआ समुद्र को भी शोषणकरनेवाला था, हे राजा उसके पीछे अर्जुन भीमसेन से यह वचन बोला कि हे भाई भीमसेन तुम्हारे देखने को मंत्रियों समेत धृतराष्ट्रके पुत्र वर्त्तमान होकर नियतहैं तुमइनको अपना अतुलपराक्रम दिखाओ ऐसेवचनोंकेकहनेवाले अर्जुनको युद्धभूमिमेंदेखकर सबसेनानेअपने अनुकूल वचनोंसे उसको पूजा और कुन्तीका पुत्र राजा युधिष्ठिर सेनाकेमध्य में चलायमान पर्व्वतके समान मतवाले हाथियों से संयुक्तथा इन सबके पीछे पाञ्चालदेशी बड़ासाहसी पराक्रमी यज्ञसेन राजा एकअक्षौहिणीसेना समेत राजा विराट के पीछे चला जिसके रथों पर सूर्य्य चन्द्रमा के समान प्रकाशित उत्तम सुवर्ण के आभूषणों से अलंकृत अनेक प्रकार की चिह्नवाली बड़ी २ ध्वजा वर्त्तमानथीं तदनन्तर महारथी धृष्टद्युम्नने सेनाको हटाकर भाई बेटों समेत युधिष्ठिर को रक्षामें किया और हे धृतराष्ट्र तेरेपुत्रोंके और अन्य राजाओंके रथोंपर जो बड़ी २ ध्वजाथीं उन सबको तिरस्कार करके अर्जुन की ध्वजा पर श्रीहनुमान् जी अपने अनेक भाईयोंको लिये वर्त्तमान हुए बरछी यष्टी आदिके रखनेवाले लाखों पदाती रक्षाकरनेके लिये भीमसेनके आगे आगे चले २६ और गंडस्थलोंसे मद डालनेवाले बली महाबली सुनहरीजालोंसे शोभित अकंपी बादलसे मद बरसानेवाले बहुमूल्य वाले वर्षाकालीनमेघोंके रूपकमल कीसी गन्धवाले दशहजारमदोन्मत्तहाथी राजाके पीछे चले उसकाल महा साहसी दुराधर्ष परिघ के समान भयानक गदाको धारणकिये हुये बड़े प्रबल भीमसेन ने बड़ी भारी सेनाकोखैंचा तब उससूर्य्य के समान दुःख से देखने योग्य सेनाके तपानेवाले भीमसेनके सन्मुख आकर यह सब सेना समीपसे उसकेदेखने में असमर्थ हुई और वह वज्र नाम निर्भय सब ओरको मुख रखनेवाला भयंकर व्यूह बड़ीभारी ध्वजा रूप बिजली से संयुक्त गाण्डीव धनुषधारी अर्जुनसे रक्षित हुआ हे राजा तेरीसेनाके सन्मुख पाण्डवलोग जिसव्यूह को रचकर वर्त्तमान हैं वह व्यूह चारोंओर पाण्डवोंसे रक्षित होकर नरलोक में महादुर्द्धर्ष है अर्थात् उसका विजयकरने वाला कोई नहींदिखाई देताहै, सूर्योदयी संध्या के समय सबसेना के नियतहोनेपर बिना

बादल आकाशीय जल कण रखनेवाला महाप्रचण्ड वायुका वेग चला कंकड़ों कीखैंचनेवाली पृथ्वीसंबंधी महावायुचली उसके कारण बड़ीभारीधूल ऐसीउड़ी कि जिससे सम्पूर्ण संसार आच्छादित होगया उस समय महाशब्दवाले पूर्व को मुखकिये उग्रउल्कापात हुये और उदय होनेवाले सूर्य्यको घातकरके फैल गये इसके पीछे फिर सबसेना के तैयारहोने के समय सूर्य्यका उदय प्रकाश से रहित हुआ और शब्दोंके कारण पृथ्वी कंपायमान हुई और अनेकप्रकार से हिलभुल कर जहां तहां फट भी गई और सब दिशाओं में हवाओंके परस्पर टक्करखाने से बड़े२ भयानक शब्द हुये ऐसी भारि कठिनधूल उड़ीकि कुछ भी नहीं जानपड़ता था फिर अकस्मात् बायुसे कम्पायमान सुनहरी माला वा उत्तम बस्त्रों समेत क्षुद्रघंटिकावाले जालों से मंडित प्रकाशमान ध्वजाओं का ऐसा झंझणी शब्द हुआ जैसा कि ताल वृक्षके बन में होता है हे भरतर्षभ इस प्रकार से वह युद्धको शोभा देनेवाले पुरुषोत्तम हाथ में गदा लिये हुए भीमसेनको आगे नियत देखकर आपके पुत्रकीसेना सन्मुखमें व्यूहको रचकर हमारे बीरोंकी मज्जाको निगल जानेवालोंके समान नियतहुई ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय सूर्य्योदय होनेपर भीष्मजी के आज्ञावर्त्ती मेरे पुत्र अथवा भीमसेनसे रक्षित पाण्डव लोगोंमेंसे युद्धाभिलाषी सेनाके सन्मुख लड़नेको कौन२ प्रसन्नमन हुए किसके पीछेतो वायुसमेत सूर्य्य और चन्द्रमा हुये और किनकी सेनाको फाड़नेवाले श्वान आदि पशुओंने भूंसा और कौन से बीरोंका प्रसन्न मुख था यह सब यथातथ्य संपूर्णताके साथ मुझ से कहो, संजयबोले हे महाराज भरतवंशी बराबर सन्मुख जानेवाली दोनोंव्यूहित सेना प्रसन्नरूप चित्रित बनकी पंक्तिके समान प्रकाशित हाथी घोड़े रथों से युक्त महाभयानक और क्षमारहित क्रोधाग्निरूप स्वर्गके विजयकेलिये उत्पन्न सत्पुरुषोंसे सेवित अर्थात् सत्पुरुषों के निवास स्थान थीं उससमय धृतराष्ट्रकेपुत्र कौरव तो पश्चिमाभिमुख और युद्धाभिलाषी पाण्डवलोग पूर्व्वाभिमुख नियत हुएइनदोनोंमें कौरवोंकी सेनातो दैत्येन्द्रकी सेनाकेसमान थी और पाण्डवों कीसेना देवेन्द्रकी सेनाकेसमानथी ५ उससमयमेंपाण्डवोंकेतो पीछेकी अनुकूल वायुचली और धृतराष्ट्रकेबेटोंकी सेनाकोकुत्तेभोंकतथे और हे धृतराष्ट्र तुम्हारे पुत्रोंके हाथीगजेन्द्रोंकी उत्कटमदवाली गंधको न सहसके, औरकौरवोंकेमध्य में बन्दीमागधों से स्तुतिमान कमलवर्ण रूप सुनहरी अंबारी और जालवाले मदोन्मत्त हाथीपर दुर्योधन सवारहुआ, जिसके शिरपर चन्द्रमाके समानप्रका-

शित छत्र और सुवर्णकी माला प्रकाशमानथी और गन्धारकाराजा शकुनी सब गन्धारियों और पहाड़ियोंसमेत उसको सबओरसे घेरेहुए जाताथा, और श्वेत छत्र श्वेत धनुष श्वेतखड्ग और श्वेतही पगड़ी पहरेहुये श्वेतपर्व्वत के समान श्वेतही घोड़ों समेत पांडुवर्ण की ध्वजायुक्त होकर वृद्ध पितामह भीष्म जी सब सेना के आगे जाते थे उनकी सेनामें आप के सबबेटे बाह्लीकों का एक देश, शल, अम्बष्ट, सिन्धु के राजा लोग, सौ वीर, और पञ्चनदके सब शूर वीर थे और महाबली धनुष हाथ में लिये महात्मा गुरू द्रोणाचार्य्यजी लाल घोड़े के लालही रथपर सवार पर्व्वतकेसमान अचलकौरव पांडव और अन्य बहुधा राजाओं के गुरू पीछे २ जाते थे और सब सेनाके मध्य में वार्धक्षत्री, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, शाल्व, मत्स्य, और केकयदेश वासी सबभाई और युद्धाभिलाषी सेना हाथियोंसमेत चली, तब महात्मा धनुर्धारी चित्रयोधी गौतम कृपाचार्य्यजी शकजाति किरात, यवन अर्थात् यूनानी राजालोगों समेत सेनाके उत्तर ओरको रक्षाकरतेहुए जातेथे और संसप्तकनाम दशहजार रथी जो कि अर्जुनकी मृत्युवा बिजय करने के लिये उत्पन्न किये थे वह त्रिगर्त्त देशी अस्त्रज्ञ शूरबीर लोग जिधर की ओर अर्जुन था उस दिशा की ओर जाते हुए, हे भरतवंशी आपके हाथी भी एकलाख से ऊपर थे और हर एक हाथी के साथ सौ रथ और प्रत्येक रथके साथ सौ २ घोड़े और हर घोड़े के पीछे दश दश धनुषधारी और हर एक धनुष धारी के साथ दश दश मनुष्य थे, हे भरतवंशी इस प्रकार से भीष्म जीने आपकी सेना को तैयार किया, शन्तनु के बेटे प्रभु भीष्मजी ने प्रतिदिनकी विद्यमानता में मानुष, दैव, गान्धर्व, आसुर नाम चारों प्रकार के व्यूहों को अच्छीरीति से रचकर युद्धके बीच धृतराष्ट्र के पुत्रोंका व्यूह बड़े २ रथों के समूहों से समुद्र के समान विस्तृत और शब्दायमान पूर्व्व की ओर को रचा, हे महाराज आपकी सेना बहुत रूप और ध्वजा संयुक्त होने से ऐसी महाभयानकहै जिसको मैं केशवजी और अर्जुनकी सहायतावाली पाण्डवों की सेना से भी बड़ी कठिनतासे धर्षणा के योग्य समझताहूं १९॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणिसेनावर्णनेविंशोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि कुंती के बड़े बेटे राजा युधिष्ठिर ने दुर्य्योधन की बड़ी सेना को अत्यन्त उद्यत जानकर बड़ी व्याकुलताको पाया, और भीष्मजी के रचे हुये अभेद्य व्यूह को यत्न जानकर कि यह अभेद्य है महाभय भीतरु पान्तर दशा में होकर अर्जुन से कहा कि हे महाबाहु अर्जुन युद्धमें धृतराष्ट्र

के पुत्रोंके साथ हम लोग युद्ध करने को कैसे समर्थ हो सक्ते हैं जिनकी ओर से युद्ध करने वाले भीष्मपितामह हैं इन महातेजस्वी शत्रुहन्ता भीष्मजीने शास्त्रोक्त देखीहुई विधिके अनुसार बड़ी सावधानी से इस अभेद्य व्यूहको रचाहै हे शत्रुहन्ता अर्जुन हम सब सेना समेत व्याकुल होते हैं इस महाभारी व्यूह से हमारी कैसे विजय होगी हे राजा धृतराष्ट्र आपकी सेना के देखनेसे व्याकुल हुए युधिष्ठिर की इस बात को सुनकर अर्जुन बोला कि हे राजा युधिष्ठिरथोड़े से भी बुद्धिमान् शूरवीर गुणीपुरुष बहुतभारी सेनाको विजयकरते हैं ऐसा निश्चय जानो हे राजा वहां एक एक के छिद्रों को देखता है इसका भेद मैं तुमसे कहूंगा इस कारणको नारद ऋषि, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य्य जी यह तीनों जानते हैं हे निष्पाप युधिष्ठिर पूर्व समय में देवता और असुरोंके युद्ध में ब्रह्माजीने इस प्रयोजन को मानकर महाइन्द्रआदि देवताओं से कहा है कि विजय के चाहने वाले पराक्रमी पुरुष बल पराक्रम से ऐसी विजय नहीं करसक्ते जैसी कि सत्यता दया और एक धर्म से बिजय करते हैं, धर्म अधर्म और लोभ को जानकर उत्तम धर्मयुक्त अहंकार रहित होकर युद्धको करो जहां धर्म है वहांही विजयहै हे राजा जैसा कि नारदजीने कहाहै उसीप्रकार चित्तमें सदैव जानो कि हमारीही विजयहोगी अर्थात् नारदजीने कहाहै कि जिधर श्रीकृष्णजी हैं उधरही विजय होगी क्योंकि बिजय श्रीकृष्णजीके पास दास रूपहोकर पीठकी ओरसे सन्मुख होकर स्तुति करती है जिसरीति से इनकी विजय है उसीप्रकार नम्रता आदि उसके दूसरे गुण हैं श्री गोविन्दजी अत्यन्त तेजस्वी शत्रुओं के समूहों से अधर्ष संपूर्ण ब्रह्माण्ड में व्यापक सनातन सच्चिदानन्द रूप हैं इससे जिधर श्रीकृष्ण हैं उधरही विजय निश्चय है कि पूर्व समय में यह माया से पृथक् अच्छेद्यआयुध रखनेवाला हरिरूप प्रकट होकर देवता और असुरोंको अपनी बज्रसमान वाणीसे चेताकर यह बचन बोला था कि कौन विजय करता है उसके उत्तरमें जिन्हों ने यह कहा कि श्रीकृष्ण जी की सहायता से विजय करते हैं वहां उन्हीं लोगों ने विजयकी और इन्द्रादि देवताओंने उसकी कृपा से तीनोंलोकों को पाया, हे भरतवंशी वैसीपीड़ामैं तुममें नहीं देखताहूं जिसकी विजय को विश्वका भोक्ता और स्वर्ग का ईश्वर चाहता है ॥ १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणियुधिष्ठिरअर्जुनसम्वादेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्मजीके सन्मुखराजा युधिष्ठिर ने अपनी व्यूहितसेना को उपस्थित किया, फिर धर्मयुद्ध से उत्तम स्वर्ग के चाहनेवाले कौरवोंके पोषण करनेवाले पाण्डवोंने गुरुकी आज्ञा के अनुसार सेना को यथायोग्य स्थान पर नियत किया मध्यमें अर्जुन से रक्षित शिखंडीकी सेनाहुई और आगे चलताहुआ धृष्टद्युम्न भीमसेन से रक्षितहुआ और इन्द्रके समान धनुषधारी श्रीमान् युयुधान से दक्षिण की सेना रक्षित हुई और राजायुधिष्ठिर हाथियोंकी सेनामें महेन्द्रकी सवारीके स्वरूप सुन्दर सामग्री वाले सुवर्ण और रत्नोंसे जटित सुनहरी कलशयुक्त रथपर नियतहुआ इसका श्वेतछत्र हाथीदांत की यष्टीपै शोभित अत्यन्त ऊंचा देदीप्यमान था महर्षीलोग स्तुति को करतेहुये इसमहाराज के दक्षिण चलनेवाले हुये पुरोहित लोग और शास्त्रज्ञ ब्रह्मऋषि अथवा सिद्ध पुरुष मन्त्र जप और बड़ीबड़ीऔषधियों समेत इसका स्वस्त्ययन पढ़तेहुये शत्रुके मरणको उच्चारण करतेहैं तदनन्तर वह कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर सुन्दर वस्त्र, गौ, फल, फूल और सुवर्ण मुद्राको ब्राह्मणोंके अर्थ दान और भेटोंको करताहुआ देवेश्वर इन्द्रके समान चला, और अर्जुन का रथ मणियों के जटित होने से हजारों सूर्य्य के समान प्रकाशमान और सैकड़ों घंटालियोंसे चिह्नित उत्तम जांबूनद नाम सुवर्णसे मढ़ा अग्निकेसमान किरणोंसे युक्त श्वेत घोड़े और सुन्दर पहियों से शोभित है वह गांडीव धनुषधारी हाथ में बाण रखनेवाला कपिध्वज जिसकी समान धनुषधारी पृथ्वीमें न कोई है न होगा वह अर्जुन केशवजी को पकड़ेहुये रथ पर विराजमान है वह तेरेपुत्र की सेनाको मर्दन करताहुआ बड़े भयकारि रूपको धारण करताहै, और जो कि अशस्त्र भी सुन्दर भुजदण्ड युक्त युद्धके मध्य में अपनी महाभुजाओं सेही मनुष्य और हाथियों को मर्दन करता है वह वृकोदर भीमसेन अपने छोटेभाई नकुल सहदेव समेत शूरवीर अर्जुन के रथका रक्षक है, उस महासिंहरूप चाल चलनेवाले लोकमें महाइन्द्रकेसमान दुराधर्ष सेनाके आगे वर्तमान महाबली भीमसेन को देखकर तुम्हारी सेना के मनुष्य ऐसे कम्पायमान हुये जैसे कि कीचमें फँसे हुये हाथीभयभीतहोते हैं उस गजेन्द्र के समान गर्व से भरेहुये भीमसेन को देखकर आप के शूरवीर लोग चित्तसे भयभीत होकर मनसे हारगये, और हे राजा तब सेना में वर्तमान दुराधर्ष अजेय राजकुमार अर्जुन से जनार्दन श्रीकृष्णजी यह वचन बोले, कि हे अर्जुन जिस भीष्म ने अपने क्रोध से सेना को संतप्त किये हुये सर्प में निरत सिंह रूप होकर हमसे बचायाहै वहभी भीष्म कौरव

कुलकी ध्वजाहै जिसने कि तीनसौ अश्वमेध यज्ञ किये, यह सब सेना इस को ऐसे घेरे हुएहै जैसे कि सहस्र किरण वाले सूर्य्यको बादल घेर लेते हैं हे पुरुषोंमें बड़े बीर अर्जुन तुम इन सेनाओं को मारकर भरतवंशियों में श्रेष्ठ भीष्मजीके साथ युद्ध करने की इच्छा करो १७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिकृष्णार्जुनसंवादेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हेराजा युद्धके निमित्त सन्मुख वर्त्तमान दुर्योधनकी सेना को देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुन के अभीष्ट सिद्ध करनेकेलिये यह बचन बोले कि हे महाबाहु अर्जुन तुम युद्ध के सन्मुख बर्त्तमान होकर बड़ी पवित्रतासे शत्रुओंकी पराजय के लिये श्रीदुर्गाजीके स्तोत्रका पाठकरो, संजय बोले कि इस प्रकार बासुदेवजीकी आज्ञा को सुनकर पाण्डव अर्जुनने रथसे उतरकर हाथ जोड़कर युद्धभूमिमें आगेलिखे हुए दुर्गाजीके स्तोत्रको पढ़ा, ॥

स्तोत्र ॥

अर्जुनउवाच ॐनमस्तेसिद्धसेनानि आर्य्येमन्दारवासिनि ॥ कुमारिकालिकापालि कपिलेकृष्णपिंगले ॥ १ ॥ भद्रकालिनमस्तुभ्यं महाकालिनमोस्तुते । चंडिचंडेनमस्तुभ्यंतारिणिवरवर्णिनि ॥ २ कात्यायनिमहाभागे करालिविजयेजये । शिखिपिच्छध्वजधरेनानाभरणभूषिते ॥ ३ ॥ अट्टशूलप्रहरणेखड्गखेटकधारिणि ॥ गोपेन्द्रस्यानुजेज्येष्ठेनन्दगोपकुलोद्भवे ॥४॥ महिषासृक्प्रियेनित्यंकौशिकिपीतवासिनि ॥ अट्टहासेकोकमुखेनमस्तेस्तुरणप्रिये ॥ ५ ॥ उमेशाकंभरिश्वेतेकृष्णेकैटभनाशिनि ॥ हिरण्याक्षिविरूपाक्षि सुधूम्राक्षिनमोस्तुते ॥ ६ ॥ वेदश्रुतिमहापुण्येब्रह्मण्येजातवेदसि ॥ जंबूकटकचैत्येषुनित्यंसन्निहितालये ॥ ७ ॥ त्वंब्रह्मविद्याविद्यानां महानिद्राचदेहिनाम् ॥ स्कन्दमातर्भगवति दुर्गेकान्तारवासिनि ॥ ८ ॥ स्वाहाकारःस्वधा चैवकलाकाष्ठासरस्वती ॥ सावित्रीवेदमाताच तथावेदान्तउच्यते ॥ ९ ॥ स्तुतासित्वंमहादेवि विशुद्धेनान्तरात्मना ॥ जयोभवतुमेनित्यंत्वत्प्रसादाद्रणाजिरे १० कान्तारभयदुर्गेषुभक्तानांपालनेषुच ॥ नित्यंवससिपाताले युद्धेजयसिदानवान् ११ त्वंजंभनीमोहिनीचमायाह्रीश्रीतथैवच ॥ संध्याप्रभावतीचैव सावित्रीजननीतथा १२ तुष्टिःपुष्टिधृतिर्दीप्तिश्चंद्रादित्यविवर्द्धिनी ॥ भूतिर्भूतिमतांसंख्ये वीक्ष्यसेसिद्धचारणैः १३ ॥ संजयउवाच ॥ ततःपार्थस्यविज्ञाय भक्तिंमानववत्सला ॥ अन्तरिक्षगतोवाचगोविन्दस्याग्रतःस्थिता १४ देव्युवाच ॥ स्वल्पेनैवतुकालेनशत्रूनजेष्यासिपाण्डव ॥ नरस्त्वमसिदुर्धर्षनारायणसहायवान् १५ अजेयस्त्वंरणेऽरीणामपिवज्रभृतःस्वयं ॥ इत्येवमुक्त्वावरदाच

णनान्तरधीयत १६ लब्ध्वावरंतुकौंतेयोमेनेविजयमात्मनः॥ आरुरोहततःपा- र्थोरथंपरमसंगतं॥ कृष्णार्जुनावेकरथौदिव्यौशंखौप्रदध्मतुः १७ यइदंपठते स्तोत्रंकल्यउत्थायमानवः॥ यक्षरक्षःपिशाचेभ्योनभयंविद्यतेसदा १८ नचापि रिपवस्तेभ्यःसर्पाद्यायेचदंष्ट्रिणः॥नभयंविद्यतेतस्यसदाराजकुलादपि १९ विवा देजयमाप्नोतिबद्धोमुच्येतबंधनात्॥ दुर्गंतरतिचावश्यंतथाचौरैर्विमुच्यते २० संग्रामेविजयोनित्यंलक्ष्मींप्राप्नोतिकेवलम् ॥ आरोग्यबलसंपन्नोजीवेद्वर्षशतं तथा इति॥२१॥ एतद्दृष्टंप्रसादात्तुमयाव्यासस्यधीमतः मोहादेतौनजानन्ति नरनारायणावृषी २२ मैंने बुद्धिमान् व्यासजीकी कृपासे यह देखा है लोग अपने मोह से इन दोनों नर नारायण ऋषियोंको नहीं जानतेहैं आपके सब पुत्र दुरात्मा और अभिमानी हैं यह वचन समयके अनुसारहैं कि वह सब काल के फन्देमें फँसेहुए हैं, व्यासजी, नारद, कण्व, परशुराम, नभ इनसब ऋषियोंने आपके पुत्रको बहुत निषेधकिया परन्तु इसने उसबातको स्वीकार नहीं किया जहां धर्म है वहीं तेजकी कान्तिहै और जहां कामहै वहां लक्ष्मी है इसीप्रकार जिधर मुनिलोगहैं उधरही धर्म है और जिधर श्रीकृष्णहैं उधरही विजय है २८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिदुर्गास्तोत्रनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३॥

चौबीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय उस युद्धभूमि में किधरके शूरवीर अतिप्रसन्न मनहोकर लड़ते हुये स्थिर चित्तहैं और किधर के दुःखी मनहोकर उद्विग्न चित हैं और युद्ध के बीच मेरेपुत्रों में से अथवा पाण्डवों में से प्रथम किसने हृदय का कंपानेवाला प्रहार किया हे संजय इसको मुझ से वर्णन करो- और किसकी सेनाओं में सुगन्ध युक्त पुष्प मालाओं के उदय में अत्यन्त गर्जना करने वाले शूरोंके वचन उत्तम साहस प्रकट करनेवाले हैं संजय बोले कि वहां दोनों सेनाओं के शूरवीर प्रसन्न हैं और बराबर माला हैं और दोनों सेनाओं में सुगन्धता फैल रहीहै हे भरतर्षभ व्यूह रचित परस्पर मिलीहुई मिलाप से बड़ारूप धारण करने वाली सेनाओं का रंग रूप बदलगया और शंख और भेरियों से मिलेहुये परस्परके शब्द और युद्ध भूमिके बीच परस्पर गर्जने वाले शूरवीर पुरुषों के भी शब्द सब स्थान में फैल गये, हे धृतराष्ट्र दोनों सेनाओं के बीच परस्पर देखने वाले शूरवीर और गर्जने वाले हाथी और प्रसन्न चित्त सेना के चित्तों में बड़ा खेद हुआ ७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिधृतराष्ट्रसंजयसंवादेचतुर्विंशोऽध्यायः२४॥

पचीसवां अध्याय ॥

श्रीमद्भगवद् गीता प्रारंभः ॥

श्रीगणेशजी को नमस्कार करते, ब्रह्मादि देवताओं को प्रणाम करके अपने सद्गुरूके चरणों को नमस्कार करताहूं जिनकी कृपा वा अनुग्रह से इस भगवद् गीताका अपनी बुद्धिके अनुसार भाषानुवाद करताहूं ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में मिलेहुए युद्धाभिलाषी मेरेपुत्रों ने और पांडवोंने क्या २ काम किये, संजय बोले कि हे राजा धृतराष्ट्र उस समय राजा दुर्य्योधन पांडवों की व्यूहरची हुई सेनाको देखकर द्रोणाचार्य्यजी से यह बचन बोला कि हे आचार्य्यजी द्रुपदके बेटे आप के शिष्य धृष्टद्युम्न से व्यूह रचीहुई पांडवोंकी बड़ी सेनाको देखो, इस सेनामें बड़े धनुषधारी युद्ध में कुशल भीमसेन और अर्जुन के समान जो २ बीर हैं उनके नामयह हैं युयुधान, बिराट, महारथी द्रुपद, धृष्टकेत, चेकितान पराक्रमी काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज, नरोत्तम शैब्य पराक्रमी युधामन्यु विक्रान्त तथा उत्तमौजा सुभद्राकापुत्र अभिमन्यु द्रौपदी के पांचोपुत्र यहसब महारथी हैं (टीका) जो शस्त्र बिद्या में कुशल धनुष धारी अकेलाही ग्यारह हजार शूरबीरों से युद्धकरे वह महारथी कहाता है और जो अकेला असंख्य बीरों से युद्धकरे वह अति रथी है और जो एकही से लड़े वह रथी कहाता है इस्से कमको अर्धरथी कहा है) धृतराष्ट्र बोले हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ हमारे जो बिशिष्ट लोगहैं उनकेभी नामोंको सुनो आप, भीष्म, कर्ण युद्धके बिजय करने वाले कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, बिकर्ण, सोमदत्तका पुत्र भूरिश्रवा, जयद्रथ आदि अनेक शूरहैं वह सबमेरे निमित्त जीवनके त्यागने वाले नानाप्रकार के शस्त्रों के धारण करने वाले सबके सब युद्धमें बड़ेकुशल हैं और चारों ओर से भीष्मजी से रक्षित हमारी सेना अधिक होनेके कारण दुराधर्षहै और भीमसेन से रक्षित पांडवोंकीसेना न्यून होने के हेतुसे धर्षणा के योग्यहै अपने आपही सब लोग अपने २ सब मोरचों पर यथा बिभाग स्थितहोकर भीष्मजीकीही चारों ओर से रक्षा करते हैं और कौरवों में वृद्ध प्रतापवान् भीष्मजी ने सिंहनाद के समान शंखध्वनि को किया, तदनन्तर शंखभेरी ढोल, आनक, गोमुख इत्यादिबाजे चारों ओर को बजे और महा शब्दहुए उसके पीछे श्वेत घोड़ोंसे जुतेहुए बड़े रथ पर सवारहोकर माधवजी और पांडव अर्जुन ने दिब्यशंखों को बजाया अर्थात् हृषीकेश श्रीकृष्णजी ने पांचजन्य नाम शंख और अर्जुन ने देवदत्त नाम शंखको बजाया और कुन्ती पुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्तबिजयनाम शंखको और नकुल सहदेव

इनदोनोंने सुघोष और मणिपुष्पक नामशंखोंको बजाया और बड़े धनुष धारी काशिराज, महारथी शिखंडी, और धृष्टद्युम्न, विराट, और बिजयी सात्यकी, १७ द्रुपद और द्रौपदी के पांचों पुत्र, महाबाहु अभिमन्यु इन सबोंने सब ओर से पृथक् २ शंखों को बजाया इन सब शंखोंके महा शब्दों से धृतराष्ट्र के पुत्रों के हृदय विदीर्ण से होगये और पृथ्वी से आकाश पर्य्यन्त शब्द व्याप्त होगया तदन्तर वानरध्वज अर्जुन धृतराष्ट्र के पुत्रों को व्याकुल और अच्छे प्रकार से नियत देख कर शस्त्रों के प्रहार जारी होने के समय धनुष को उठाकर सब जगत्के स्वामी हृषीकेश श्रीकृष्णजी से यह बचन कहने लगा कि हे अविनाशी कृष्ण मेरेरथको दोनों सेनाओं के मध्य में नियत करो प्रथम में इन युद्ध में स्थिरशूरवीरों को देखूं कि इस युद्ध के आरंभमें मुझको किस से वा किस को मुझ से लड़ना उचित है जो यह राजा लोग इस दुर्बुद्धी दुर्य्योधन की सहायता करने को यहां आये हैं इन सब युद्धाभिलाषियों को मैं देखूं संजय बोले कि इस प्रकार से अर्जुन के बचनों को सुन कर श्रीकृष्णजी अर्जुन के रथको दोनों सेनाओंके मध्य में नियतकर भीष्म द्रोणाचार्य आदि सब राजाओं के सन्मुख यह बचन बोले कि हे अर्जुन इन मिले हुए कौरवों को देखो वहां पर अर्जुन भूरिश्रवा आदि पिता रूप और भीष्म पितामहादिक पितामह स्वरूप और आचार्य्य और शल्य आदि मामा आदि और दुर्य्योधन आदि भाई और लक्ष्मण आदि पुत्र और लक्ष्मण के पुत्र आदि प्रपौत्रों को और अश्वत्थामा आदि मित्रों को और कृतवर्मा आदिश्वशुर और सुहृदोंको दोनों सेनाओं के मध्यवर्त्ती इन सब बांधवादिको अपने नेत्रों से देखकर बड़ी करुणासे यह बचन बोला कि हे श्रीकृष्णजी इन युद्धाभिलाषी सुजन सुहृद पिता पितामह गुरू भाई बन्धु और पुत्र पौत्रादिकों को अपने सन्मुख युद्ध करनेके निमित्त नियत देखकर मेरे अंग शिथिल होते हुए मुख में शुष्कताहोकर शरीर में कंप और रोमांचखड़े होतेहैं हाथ से गांडीव धनुष गिरा पड़ता है और शरीर की त्वचा भस्म हुई जाती है यहां खड़े होनेको भी असमर्थ होकर मेरा चित्त चलायमान होता है और हे कृष्ण मैं विपरीत शकुनों को भी देखता हूं युद्ध में अपने सुजन लोगों को मार कर पीछे से अपना कल्याण नहीं देखताहूं हे श्रीकृष्ण मैं बिजय करके राज्य संबंधी सुखों को नहीं चाहताहूं राज्य से हमकोक्या लाभहै और जीवनकरके भोगों से क्याफल होगा हम जिन लोगों के लिये राज्य सुख और भोगों को चाहतेहैं वही सब लोग अपने प्राणधन आदि सुखों को त्याग करके इस युद्धमें वर्त्तमानहैं अर्थात् आचार्य्य, पिता, पितामह, मामा, श्वशुर, पोते साले बहनोई इत्यादि अनेक नातेदार लोग युद्ध में जीवन की आशा छोड़े हुए

बर्त्तमानहैं हे मधु सूदन जी मैं त्रिलोकी के भी राज्य के लिये इन मारने वालों को भी नहीं मारना चाहता हूं तो क्या पृथ्वी के लिये इनको मारूंगा, हे जनार्दन जी धृतराष्ट्र के भी पुत्रों को मारकर हमको क्या सुख होगा इन आततायियों काभी मारने से हमको पापही होगा (अग्निलगाने वाला, विष देने वाला, धनका चुरानेवाला, छत्रका हरने वाला, स्त्रीका हरनेवाला, यह सब आततायी होतेहैं इन के बिषयमें लिखा है कि इन आततायियों को बिना ही बिचार के मार डालना योग्य है इन आततायियों के मारने में कुछ पाप नहीं होता है परन्तु अर्जुन कहते हैं कि ऐसों के भी मारने में हमको पापही होगा सो यह अर्थ शास्त्रका बचन है और धर्म शास्त्रका यह बचन है कि किसी जीवमात्र को न मारे और अर्थ शास्त्र से धर्म शास्त्र अधिक बलवान है) इस कारण हम अपने बांधव धृतराष्ट्र के पुत्रों के मारने को योग्य नहींहैं हे माधव जी हम सुजनोंको मारकर कैसे सुखी होंगे यद्यपि लोभा कर्षित चित्त होकर यह लोग कुल के नाश रूप दोषको और मित्रों के साथ शत्रुता करने के पातक को नहीं देखतेहैं, हे जनार्दनजी कुल के नाश होने से उत्पन्न दोषो देखने वाले हम लोगों को इस पाप से अलग रहना क्यों नहीं चाहिये, कुल के नाश में कुल के परम्परा सम्बन्धी कुल धर्म भी नष्ट होतेहैं और धर्म के नष्ट होने से सम्पूर्ण कुल अधर्मी होजाता है और अधर्म अधिक होनेसे कुलकी स्त्रियां दोष युक्त होजातीहैं, हे बृष्णिबंशी श्रीकृष्णजी दुष्ट स्त्रियों में बर्णसंकर उत्पन्न होताहै कुल के नाश करनेवालों के घराने का वर्णसंकर नरकही के लिये है उनके पितृ लोगपिंड जल आदि क्रिया के गुप्त होजाने से स्वर्ग से गिरते हैं तात्पर्य यह है कि वेद के अनुसार दूसरेका उत्पन्न हुआ पुत्र कभी मनसे भी अपना न मानना चाहिये कुलके नाश करने वाले पुरुषों के इन बर्णसंकर करनेवाले दोषोंके कारण प्राचीन कुलधर्म जाते रहतेहैं हे श्रीकृष्ण जी जिनके कुल धर्म लोप होगये हैं उनमनुष्यों को सदैव नरक का निवास होता है यह बड़े लोग कहते आये हैं बड़े दुःख और पश्चात्ताप की बातहै कि हम उनबड़े पाप करने के निश्चय करनेवाले हुये जो राजसुखके निमित्त अपने सुजनोंको लोभसे मारने को उद्यत हुये जो धृतराष्ट्रके पुत्र शस्त्रधारी होकर मुझअशस्त्रधारी सन्मुखता से रहित को मारें तो मेरा बड़ा कल्याण होवे. संजय बोले कि इसप्रकार शोकग्रस्त चित्त अर्जुन युद्ध में ऐसे करुणा पूर्व्वक बचनोंको कहके धनुष बाणको रखकर रथके पृष्ठ भागमें बैठगया ॥

इतिश्रीभीष्मपर्व्वणिभगवद्गीताश्रीकृष्णार्जुनसंवादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

भगवद्गीता

दूसरा अध्याय ॥

संजय बोले कि स्नेहयुक्त कृपासे भरेहुये अश्रुपात समेत व्याकुल और दुखी अर्जुन को जानकर मधुसूदन श्रीकृष्णजी यह बचन अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन इस युद्धमें ऐसा मोह तुझको काहेसे उत्पन्न हुआ यह मोहस्वर्ग रोकनेवाला और अपकीर्त्तिका प्रकट करनेवाला है ऐसे मोहको नपुंसकलोग करते हैं इससे हे अर्जुन तू नपुंसक मतहो यह तुझको उचित नहीं है हे शत्रुहन्ता अर्जुन हृदयकी इस क्षुद्र दुर्बलताको त्यागकरके खड़ाहोजा यहसुनकर अर्जुन बोले कि हे मधुसूदनजी मैं युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मपितामह के सन्मुख उनसे शस्त्रोंके द्वारा कैसे लडूं हे शत्रुघ्न कृष्ण वह दोनोंमेरे पूज्यतम हैं बड़े प्रभाव वाले गुरुओं को न मारकर इसलोक में भिक्षाकाही अन्न खाना उत्तम है और अर्थ के चाहने वाले गुरुओंको मारकर इस लोक में रुधिरसे भरे हुए भोगोंको भोगेंगे और यह भी हम नहीं जानते कि हम गुरुओंको विजय करेंगे वा गुरु हमको विजय करेंगे और हम जिनकोमारकर जीवन के इच्छावान् नहीं हैं वह धृतराष्ट्र के बेटे सन्मुख वर्त्तमान हैं हे कृष्ण मैं दीनता युक्त दूषित प्रकृतिवाला धर्म में असावधान चित्त होकर आपसे पूंछताहूं कि जो आपने मेरे निमित्त कल्याण निश्चय किया है उसको कृपाकरके मुझसे कहिये क्योंकि मैं आपका शिष्यहूं आप अपनी शरणागतनामें मुझको उपदेश कीजिये, पृथ्वीपर वृद्धियुक्त निर्विभाग शत्रुता रहित अथवा धन आदि से परिपूर्ण राज्यको और देवताओं की प्रभुता को भी पाकर इन्द्रियोंका सुखाने वाला जो मेरा शोकहै उसके दूरहोने कामैं कोई भी उपाय नहीं देखता हूं, शत्रुओं का संतप्त करने वाला अर्जुन श्री कृष्ण जी से यह वचन कहकर कि युद्ध नहीं करूंगा मौन होगया यहदशा देखकर दोनों सेनाओं के मध्य में हंसतेहुए श्रीकृष्णजी अर्जुनको अत्यन्त दुखी जानकर यह वचन बोले कि अर्जुन जो शोक के योग्य ही नहीं हैं उनको तू शोचताहै और पंडितोंके वचनों को कहताहै परन्तु पंडित लोग उन पुरुषोंको जिनके कि शरीर छूटगये अथवा शरीर में प्राण नियत हैं अर्थात् आत्मा के अविनाशी होने से नहीं शोचते हैं मैं कभी नहीं हुआ और तुझसमेत यह सब राजा लोग भी कभी नहीं हुए न इसके पीछे हम सब उत्पन्न होंगे यह बात नहीं है क्योंकि हम सब अविनाशी आत्मारूप तीनों कालों में वर्त्तमान हैं जैसे कि शरीरवान् चैतन्य आत्माके स्थूल शरीर में बाल्यावस्था, तरुणावस्था और वृद्धावस्था यह तीनों दशाहोती हैं इसी

प्रकार से स्थूल शरीर के सिवाय सूक्ष्म और कारण रूप अन्य शरीर की प्राप्ति है वहां ज्ञानी पंडित मोहको नहीं पाता है अर्थात् आत्मा को शरीर से पृथक् अविनाशी और आदि अन्त से रहित जानता है, हे कुन्तीपुत्र अर्जुन इन्द्रियों की वृत्तियों के शब्दादि विषय देखना खाना सूंघना और शीतोष्णता आदि सुख दुःख के देने वाले उत्पत्ति नाशयुक्त सब विनाशवान् हैं इससे हे भरतर्षभ तू इनको क्षमाकर हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ जिस सुख दुःखमें एकसे रहनेवाले ध्यानी और योगी पुरुषको यह पीड़ा नहींदेते हैं वह मोक्षकेयोग्य समझाजाता है, अभावरूपी जड़ चैतन्य जगत् का संभवहोना भी नहींहै और सतरूप ब्रह्मका अभाव वर्त्तमान नहीं है तत्त्वदर्शी अर्थात् मूल वस्तुके ज्ञाताओंने इन दोनोंका तत्त्व अर्थात् असली सिद्धान्त यही देखाहै कि सिवाय आत्माके और कुछ भी नहीं वर्त्तमानहै और यह जो जगत् दृष्टपड़ता है वह स्वप्न के समान मिथ्या है, उस सत अर्थात् सत्यको जिससे कि यह जगत् व्याप्तहोरहा है अविनाशीजानो इस न्यूनता रहित आत्माके नाशकरनेको कोई भी समर्थ नहीं है, यद्यपि इस लोकमें असत अर्थात् मिथ्यारूप जगत्को विनाशवान् वर्णनकिया परन्तु अब व्यवहारमें अर्जुनको कर्ममें प्रवृत्तहोनेके लिये एक को अविनाशी और दूसरे को विनाशवान् कहतेहैं अति प्राचीन निरवधि अविनाशी आत्मा के यह सब शरीर नाशवान् कहेहैं इस कारणसे हे अर्जुन तुम युद्ध में प्रवृत्तहोजाओ अर्थात् अपने धर्मको मतत्यागो, जो पुरुष इसआत्माको मारनेवाला समझताहै और जो इसको मराहुआ मानताहै वहदोनों अज्ञानीहैं यह कभी न मरता है न कोई इसका मारनेवाला है अर्थात् जब कि श्लोक १६ वें के अनुसार केवल एकही अकेला आत्माहै तब द्वैतता न होनेके कारण कर्त्तापन और कर्मपन उसमें कैसे सम्भवहोसक्ताहै, यह आत्मा न कभी उत्पन्न होताहै न मरताहै और न पहले उत्पन्नहुआहै न पीछे उत्पन्न होगा अर्थात् वारम्बार जन्म मरणादि से रहितहै यह अजन्मा आत्मा नित्य और प्राचीनता के कारण सदैव एक रूपहै अर्थात् रूपान्तररहित नाशवान् आकाशादिकों से प्रथम पुराण पुरुष है यह अनित्य देहों के मरनेमें नहीं मरताहै, जो इस आत्माको अविनाशी और नित्य अजन्मा और न्यूनतासे रहित जानता है वह सब शरीरोंमें पूर्ण आत्मारूप पुरुष कैसे किसीको मरवावेगा और किस को वरवावेगा अर्थात् जब पूर्व्व कहेहुए विशेषणोंके अनुसार एकही आत्मा वर्त्तमानहै तब मारनेवाला और मरनेवालाकहांसे होसक्तेहैं, जैसे कि मनुष्य पुराने वस्त्रोंको त्यागकरके नवीन वस्त्रोंको धारण करताहै इसीप्रकार आत्मा भी पुराने देहोंको त्यागकरके दूसर नवीन शरीरोंको प्राप्त करलेताहै जैसे कि

वस्त्र देहसे पृथक् होते हैं इसी प्रकार आत्मा सब मिथ्यारूप शरीरोंसे अलग है, इस आत्माको न शस्त्र छेद सक्ते न अग्नि जलासक्ती न जलगलासक्ता न वायु सुखा सक्ती है, क्योंकि यह आत्मा न छेदनेके योग्य न जलाने के योग्य न गलानेके न सुखाने के योग्यहै यह नित्यरूप सर्वत्र वर्त्तमान सदैव एक दशामें अचलरूप प्राचीन सनातन और अखंडहै, यह गुप्तरूप ध्यानसे अगम्य और रूपान्तर दशासे पृथक् कहा जाताहै इन हेतुओंसे इसको ऐसा जानकर तुम शोचकरने के योग्य नहींहो अर्थात् भीष्म आदि तुम्हारे गुरू और अन्य सबलोग आत्मा रूपहैं और उनके शरीर देह के वस्त्रों के समान आत्मासे पृथक् नाशवान् हैं इससे तू शोच मतकर तू इसको सदैव मरने वाला और मारनेवाला मानताहै हे महाबाहु जन्म लेनेवालेकी मृत्यु भी अवश्यहै और मरनेवालेका जन्म भी निश्चयहै इस कारण अब भावी है इस का कोई भी उपाय नहीं है इसमें तेरा शोच करना वृथाहै हे भरतवंशी आकाशादि तत्त्व और उनकी रूपान्तर दशा जरायुज आदि अज्ञानरूपहैं अथवा आत्मा रूपहैं और बीचहीमें दृष्ट आकर आत्मामेंही लयहोने वाले हैं अर्थात् उनका आदि अन्त आत्माहै केवल बीचमेंही स्वप्नके समान मिथ्या रूप दृष्ट पड़ते हैं ऐसे स्थानमें विलाप क्यों करना चाहिये, कोई तो उसको आश्चर्यरूप से मानताहै और कोई आश्चर्यके समान देखता और कहता है और कोई उसको आश्चर्यकेही समान सुनकर नहीं जानताहै अर्थात् वह आत्मा देखने सुनने और कहनेमें नहीं आता है वह अपने को अक्षय मानता है हे अर्जुन यह आत्मा सबके शरीरोंमेंनित्य और अवध्यहै अर्थात् मर नहीं सक्ताहै इसकारण हेतातसुमसब जीवधारियोंके शोचनेके योग्य नहींहो, अपने धर्म को देखकर कांपना छोड़दो क्योंकि धर्मयुद्ध के सिवाय क्षत्रीका दूसरा कल्याण कारी नहींहै, हे अर्जुन बिना इच्छा किये स्वर्गका द्वार खुला हुआ वर्त्तमान है स्वर्ग का सुख पानेवाले क्षत्री ऐसे युद्ध को पाते हैं, जो तू इस धर्मरूप युद्ध को नहीं करेगा तो अपने धर्म और कीर्त्तिको त्यागकर पाप का भागी होगा, बहुत समय तक नियत रहनेवाले सब जीव तेरी अपकीर्त्ति को कहेंगे और प्रतिष्ठावान् पुरुष की अपकीर्त्ति मरणसे भी अधिकदुखदायी होती है और सब महारथी लोग तुझको भयके कारण युद्ध से हटाहुआ मानेंगे उन सब लोगों के आगे तू महानस्तुतिमान होकर निन्दा युक्त छुटाई और तुच्छता को पावेगा, और तेरे शत्रु तेरे पराक्रमकी निन्दा करते हुए कहने के अयोग्य अनेक अनुचित बातों को कहेंगे लज्जावान् को इससे अधिक और क्या दुःख होगा इसमें दोनों हाथ लड्डूहैं कि मरकर तो स्वर्ग को और विजय करके पृथ्वी के भोगों को भोगेगा हे अर्जुन इस कारण

से तू युद्ध के निमित्त निश्चय करके उठ खड़ा हो, हानि लाभ जय विजय समानकरके युद्धके निमित्त तैयारीकर इसरीतिके युद्धमें तू कभीपापका भागी नहीं होगा हे अर्जुन यह मैंने उपनिषद् और सांख्य सम्बन्धी ब्रह्मज्ञान तुझ से कहा अब इसी ज्ञान को कर्म योग में वर्णन करता हूं इस ज्ञान में प्रवृत्त होकर हे अर्जुन तू कर्म बन्धन को त्याग करेगा, इस कर्म योग में प्रारम्भ कर्म का नाश नहीं है और पाप भी नहीं है इस फल की इच्छा रहित कर्म-रूपी धर्म का थोड़ा भी करना बड़े भारी संसारी भयसे रक्षा करता है, हे कौरव नन्दन इस कर्म योग में तत्त्व के निश्चय करनेवाली बुद्धि एकही है और जिनको तत्त्व का निश्चय नहीं है उनकी बहुत शाखा रखनेवाली अनेक बुद्धियां हैं हे अर्जुन वह तत्त्व निश्चयसे रहित वेद वाद में प्रीति रखने वाले इच्छा से जीते हुए चित्त से स्वर्ग को उत्तम जाननेवाले अज्ञानीलोग पुष्पित बचनों के समान चित्तरोचक भोग ऐश्वर्य्य की प्राप्ति में साधन रूप जन्म कर्म और फल के देनेवाले अथवा अग्निहोत्रादि की मूल क्रियाको अधिक रखनेवाले वेद के वचनों को कहते हैं और यह भी कहनेवाले हैं कि कर्म से उत्तम दूसरा मोक्ष और ज्ञान नहीं है, भोग और ऐश्वर्य्य में प्रवृत्त चित्त और उस बचन से हरे हुये चित्त उन पुरुषों की समाधि में तत्त्व की निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती है अर्थात् जो विरक्त हैं उन्हीं की बुद्धि समाधि में चिन्मात्राकार होती हैं, तीनों गुणों का कार्य्य जो उत्तम, मध्यम, और निकृष्ट गति हैं वही हैं विषय जिनके ऐसे कर्म काण्ड को कहनेवाले वेदहैं हे अर्जुन तू तीनों गतियों से विरक्त है सुख दुःख मित्र शत्रु शीतोष्णता आदि द्वन्द गुणों से पृथक् सर्वत्र सम बुद्धिवाला होकर सदैव धैर्य्यवान वा शुद्ध सतोगुण वृत्ती हो और मनोरथों की प्राप्ति और रक्षा से जुदा आत्मवान् हो जैसा कि बड़ी नदी वा सरोवर आदि में जितना जिसका प्रयोजन होता है उतना ही प्रयोजन विज्ञानी ब्राह्मण का सब वेदों में होता है अर्थात् वेद में कर्मकाण्ड उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड हैं, ब्रह्मज्ञानी को केवल ज्ञानकाण्ड से प्रयोजन होता है, ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिये कर्म में ही तेरा अधिकार है कर्म के फलों में कभी तेरा अधिकार न हो और तू कर्मफल का कारण भी मतहो और कर्म न करने में तेरा संग मतहो, कर्मों की सिद्धी और असिद्धी में समान बुद्धि होकर तू योग में नियत हो और और अकर्मियों के संगों को छोड़कर कर्म को कर ऐसी समता को योग कहते हैं हे अर्जुन फल की इच्छासे कियाहुआ कर्मज्ञान योग से अत्यन्त लघु है, बुद्धि में रक्षा वा शरण को चाहो जिनके जन्म मरण का कारण कर्मों का फल है वह दीन अर्थात् दुखी होते हैं, इस लोक में बुद्धि से संयुक्तहोकर

पुण्य और पाप को त्याग करना है इस हेतु से समतारूप बुद्धि योग में उपाय कर क्योंकि ज्ञान योग ही कर्मों में चातुर्य्यता है समता नाम बुद्धि से संयुक्त मन का निग्रह करनेवाला पुरुष कर्म जन्य फलों का त्यागकरके जन्म बं-धन से छूटता है और निरुपाधि मोक्षपद को पाता है, जब तेरी मोहरूपी बुद्धि शुद्ध होगी तब तू सुनेहुए और सुनने के योग्य शास्त्रों मे वैराग्य पावेगा और नानाप्रकार के शास्त्रों को सुनकर संदेहों से भरी हुई तेरी बुद्धि अन्तःस्थ ब्रह्म में नियत होकर निर्विकल्प समाधि में अचल वर्त्त-मान होगी तब विवेकरूप योग को पावेगा, अर्जुन बोले कि हे केशवजी जिसकी बुद्धि शुद्ध ब्रह्म में नियत है और समाधि में वर्त्तमान है उसको लोग क्या कहते हैं यह प्रथम प्रश्न है और वह बुद्धि में नियत होकर कैसे बो-लता है यह दूसरा प्रश्न है और कहां बैठता है यह तीसरा प्रश्न है और कैसे विषयों को भोगता है यह चौथा प्रश्न है, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन जब यह योग मन में वर्त्तमान होता है और सब इच्छाओं को त्याग करता है और आत्मा करके आपनेही में तृप्त होता है तब स्थिर बुद्धि कहा जाता है, दुःखों में व्याकुलता रहित मन और सुखों में अनिच्छावान् राग भय क्रोध से पृ-थक् स्थिर बुद्धि मुनि कहा जाता है अब दूसरे प्रश्न का उत्तर कहते हैं जो सर्वत्र धन, स्त्री, देह आदि में प्रीति न रखने वाला शुभ पदार्थ को पाकर उस शुभ भाग करने वाले की हर्ष से प्रशंसा नहीं करता है और उस अशुभको पाकर दुःखी होकर अशुभ प्राप्त करने वाले की निन्दा नहीं करता है उस की बुद्धि स्थिर अर्थात् निश्चल है अब तीसरे प्रश्न का उत्तर कहते हैं जब यह पुरुष सब प्रकार से इन्द्रियों को इनके शब्दादि विषयों से कछुएके अंगों के समान खेंचता है तब उसकी बुद्धि स्थिर समझी जाती है, निराहार अर्थात् इन्द्रियों से विषयों को न ग्रहण करने वाले देहाभिमान से तो अत्यन्त दूर होजाते हैं परन्तु उन के विषयों का अनुराग निवृत्त नहीं होता इस निराहार अर्थात् विषयों के ग्रहण न करने वाले की वह विषय संबंधी प्रीति भी पर ब्रह्म को देखकर अर्थात् अपरोक्ष ज्ञान के द्वारा दूर होजाती है, हे अर्जुन शास्त्र और आचार्य्य लोगों से शिक्षित समाधि में उपाय करने वाले पुरुष अर्थात् ज्ञानी मनुष्य की इन्द्रियां भी लुटेरों के समान चित्तको अत्यन्त चुराती हैं उन सब को अपने वशीभूत करके सावधान मन से मुझ जगत् के आत्मा को अत्यन्त प्रियतम माने और इन्द्रियों को आधीन करे उसकी बुद्धि स्थिर है, विषय वासना वालों के विषय ध्यान करने का संग इन्द्रियों पर होता है उसी संग से काम उत्पन्न होता है काम से क्रोध क्रोध से संमोह संमोह से वि-भ्रम, स्मृति के भ्रंश से बुद्धि का नाश और बुद्धि के नाश से मरण होजात

है, मनको स्वाधीन रखने वाला योगी उन राग द्वेषों से पृथक् मनके स्वाधीन होने वाली इन्द्रियों से विषयों के समीप घूमता है वह अपने संकल्प विकल्परूपी कीचड़ के धोने से चित्तकी शुद्धी को पाता है उस शुद्धी के होने से उसके सबदुःखोंका नाश होता है और उस शुद्ध चित्तवाली बुद्धि से वह ब्रह्म और आत्मा को एक जानता है तब उसकी बुद्धि अत्यन्त दृढ़ होकर स्थिर नियत होजाती है, संशय और बिचार से रहित पुरुषकी बुद्धि ब्रह्म और आत्माकी ऐक्यता जानने वाली नहीं है अथवा जिसका चित्त सावधान नहीं है उसकी ब्रह्माकार अन्तःकरण वृत्ती प्रभाव रूप भावना नहीं है और जिस के सब दुःख दूर नहीं हुये उसको ब्रह्मानन्द रूपी सुख कैसे होसक्ताहै जिसकारण से मन उन विषयों में जाने वाली इन्द्रियों के पीछे २ चलकर कर्म में प्रवृत्त होता है उसी कारण से उसकी ब्रह्म संबंधी बुद्धिको ऐसेहर लेताहै जैसे कि जलमें नौकाको वायु देवता हर लेता है ६७ हे महाबाहु इस कारण से जिस की इन्द्रियां सब प्रकार करके विषयों से पृथक् होतीहैं उसकी बुद्धि स्थिर कहाती है, सब जीवोंकी जो ज्ञान निष्ठा रूप रात्रि है उसमें जितेन्द्री ज्ञानी जागता है और जिस रात्रि में सब अज्ञानी जीव जागतेहैं वह ब्रह्मतत्त्व के देखने वाले मुनि लोगों की रात्रि है अर्थात् ब्रह्मज्ञानी सदैव समाधि का अनुष्ठान करता हुआ परम गतिको पाता है, पूर्व्व में विषयों का त्याग और इन्द्रियों को विषयों से अलग करना बर्णन किया उससे तो उसकी आत्मा से पृथक्ता सिद्ध हुई परन्तु वेद में लिखा है कि यहां नाना प्रकार का कुछ नहींहै केवल एक हैउसीको अब सिद्ध करतेहैं जैसे कि चारों ओर जल से न्यूनाधिकतासे रहित होने से अचल रहने वाले समुद्र में उसीसे उत्पन्न होनेवाले जल प्रवेश करते हैं इसीप्रकार सब प्रकारकी इच्छा जिस ब्रह्मज्ञानीमें प्रवेश करती हैं वह शान्तीको पाकर ब्रह्मानन्दको पाताहै परन्तु विषयोंका चाहने वाला नहीं पासक्ताहै, अबचौथे प्रश्नका उत्तर कहतेहैं—जो ज्ञानी पुरुष सब इच्छाओं को त्यागकर ममता और अहंकारसे रहित होकर विषयोंको भोगता है अर्थात् केवल देहके निर्वाहके निमित्त खान पान करताहै वह ब्रह्मानन्द रूपीशान्ती को पाताहै, हे अर्जुन यह ब्रह्मज्ञानियोंकी निष्ठाहै इसको प्राप्तकरके कभीनहीं भूलताहै इसमें नियत होकर अन्तसमयमें ब्रह्मको प्राप्त होताहै, और जिसमें देवयान पितृयान रूप गति नहीं होती है वह ब्रह्मज्ञानीभी ब्रह्मरूप होकर ब्रह्मपदको पाताहै अर्थात् ऐक्यताके भावको पाताहै ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुश्रीकृष्णार्जुन संवादेसांख्ययोगोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

अबसोलह अध्यायोंमें इस अध्याय की टीका करते हैं॥

अर्जुनबोले हे जनार्दनजी जो निष्काम कर्म से बुद्धिकी उत्तमता आप मानतेहैं तो मुझ भिक्षावृत्तीमें प्रसन्न होने वालेको भाई बन्धु आदिके मारने वाले कर्ममें क्यों लगातेहो, आपकभी तोकहतेहो कर्मकर और कभी कहतेहो कि कर्मोंको त्यागकरके ज्ञानी और त्यागीहो इन मिलेहुये वचनोंसे आपमेरी बुद्धिको मोहमें डालतेहो सो आप इनदोनोंमेंसे एकको निश्चयकरो जिसके द्वारा मेरा कल्याणहो, श्रीभगवान् बोले हेनिष्पाप मैंनेप्रथम अध्यायमें एकही निष्ठाकहीहै वह ब्रह्मनिष्ठा इसलोकमें दोप्रकारकी है माया और ब्रह्मविवेक के जानने वाले अथवा आत्मा और अनात्माके विवेकको जानने वालोंकी निष्ठा ज्ञानयोग नाम के सहित है और सिद्धी वा असिद्धी समबुद्धिवाले योगियोंकी निष्ठा कर्म योगनाम प्रकारके साथ है अर्थात् कर्मयोग नाम निष्ठाका फल ज्ञान योगहै, क्योंकि यज्ञादि कर्मोंका प्रारंभकरनेसे पुरुष ज्ञान निष्ठाको नहीं पाताहै और कर्मयोग से उत्पन्न चित्त शुद्धी के बिना केवल त्याग अर्थात् सन्याससेही मोक्षरूप सिद्धीको नहीं पाताहै, कर्मजनित सिद्धी के बिना मनका न जीतनेवाला कोईपुरुष समाधिमें भी बुरीवासनाको करके एक क्षणमात्र भी नियत नहीं रहसक्ताहै निश्चयकरके सबलोग योग प्रकृतिके सत्वादि गुणों से अर्थात् स्वभावजन्य राग द्वेषके कारण देहमन वचन संबंधी कर्म करतेहैं, जो रागादि भरेहुये चित्त से कर्मेन्द्रियोंको स्वाधीन करके मनसे इन्द्रियोंके विषयोंको स्मरण करता हुआ ध्यानके बहाने से एकान्तमें बैठाहै वह मिथ्या आचारवाला कहाजाताहै अर्थात् कर्म करने बिना संन्यास युक्त ध्यानसे भी चित्तकी शुद्धीनहीं होती है, हे अर्जुन जोपुरुष मनसे ज्ञानेन्द्रियोंको स्वाधीन करके निष्काम कर्मीहो कर्मेन्द्रियोंसे कर्मयोग का आरंभ करताहै वह पूर्वसेभी श्रेष्ठनरहै, तू नियम करके संध्योपासनादि कर्मोंको कर सबकर्मेन्द्रियोंके रोकने और कर्मके बिना चित्त शुद्धी न होनेसे कर्महीश्रेष्ठहै और चित्त शुद्धी होनेपर भी तुझकर्म न करने वाले क्षत्रीकी शरीर यात्राभी सिद्धनहीं होसक्ती क्योंकि भिक्षामांगने में क्षत्रीका अधिकार नहीं है और स्मृतियोंमें लिखाहै कि ब्राह्मण के चार आश्रमहैं क्षत्रीकेवानप्रस्थ तक तीन आश्रम हैं और वैश्यके गृहस्थतक दोआश्रमहैं, एकपरमेश्वरके पूजनकेलिये जो कर्म किया जाता है उससे स्वर्गादिकी इच्छारूपी अन्यकर्मों में प्रवृत्त होकर यह लोक कर्म बंधनमें फँसनेवाला है हे अर्जुन उस ईश्वर के आराधन केलिये तू निष्काम कर्मोंको करके वर्णाश्रम के योग्य बातोंको अच्छी रीति

लेकर, पूर्व समय में ब्रह्माजीने सब सृष्टिको यज्ञों समेत उत्पन्न करके कहा कि इस यज्ञकर्म के द्वारा देवताओंको तृप्तकरो और वह देवतालोग तुम्हारी वृद्धि करें और तुम परस्पर में वृद्धि पाते हुए परम कल्याण को पाओगे, निश्चय करके यज्ञों से पूजित और तृप्त किये हुए देवता तुमको तुम्हारी रुचिके योग्य भोजन वस्त्रादि भोग देंगे, जो पुरुष उन देवताओं के दियेहुए भोगोंको उन देवताओंके अर्पण नकरके अर्थात् पंचयज्ञादिककर्मोंको न करके भोगताहै वह निश्चय चोर है, वैश्वदेव आदियज्ञोंमें शेषबचेहुए अन्नादिको भोजनकरतेहुए उन सब हत्यारूपपापोंसे छूटजातेहैं जोकि स्मृतियोंके अनुसार प्रतिदिन ओखली, चक्की, चूल्हा, जल रखनेकी पलहंडी और घरकी बुहारी आदिसेहोतेहैं और जो केवल अपनेहीनिमित्तसे भोजनको बनातेहैं वहपापी अपनेपापोंको भोजन करतेहैं वीर्यरूप अन्नसे जीव उत्पन्नहोतेहैं अथवा और अन्नकी उत्पत्ति वर्षासेहै और वर्षा यज्ञोंसे होतीहै और मनुस्मृतिमेंभी लिखा है कि अग्नि में होमीहुई आहुति सूर्यके समीपजातीहै और सूर्य्यसे वर्षाहोतीहै बर्षासेअन्न और अन्नसे सृष्टि उत्पन्नहोतीहै और यज्ञ कर्मोंसे पैदा होनेवालाहै, कर्मवेदसे और वेद अविनाशी ईश्वरसे उत्पन्न जानो इसहेतुसे सबदेश कालमें बर्त्तमानरूप ईश्वर में सब नियमों समेत वेद और यज्ञ नियतहैं अर्थात् गुणों का आलय ईश्वरहै, सबजीवोंके प्रारंभमें वेदकी प्रकटता उससे कर्म ज्ञानऔर कर्मोंके ज्ञान से कर्मोंका अनुष्ठान और अनुष्ठानोंसे देवताओंकी तृप्ती उससे वर्षा उससे अन्न अन्नसेजीवोंकी उत्पत्ति और उनको वेदोंकी प्राप्ति इसप्रकारसे सदैव जारी रहनेवाले चक्र में जो नियत नहीं होता अर्थात् यज्ञादि कर्म नहीं करता है हेअर्जुन वह पापरूप जीवनसे इन्द्रियों में क्रीड़ा करनेवाला निरर्थक जीवता है, परन्तु जो मनुष्य आत्मा में प्रीति रखनेवाला आत्मा में तृप्त और आत्मा ही में संतुष्ट है उसको निष्कामता के सिवाय कोई दूसरा कर्म करने के योग्य नहीं है, उस आत्मामें प्रीति रखनेवाले ज्ञानीका प्रयोजन कियेहुए कर्मों से कुछ भी नहीं है क्योंकि उसको स्वर्ग आदि की इच्छा नहीं है और इसके विपरीत कर्म सेभी उसको नरक आदि भीकुछ नहीं है अर्थात् उसको न पुण्य से कुछ फलकी इच्छाहै न पापसे नरकका भय रहताहै और उसके सुखभोग रूप प्रयोजनका कोई सम्बन्ध किसी जीवमात्र से नहींहै इसी हेतुसे तू कर्म फलों से पृथक् होकर सदैव करने के योग्य कर्मोंको कर, फलकी इच्छा रहित कर्म करनेवाला पुरुष अन्तःकरण की शुद्धता से मोक्षपदार्थको पाताहै, युद्ध आदि कर्म करकेही लोग ज्ञाननिष्ठाको प्राप्त हुए कर्मकेही द्वारा जनकादि ने सिद्धीको पाया अर्थात् धर्म में लोककी संग्रहको देखता हुआ कर्म करनेको योग्यहै क्योंकि उत्तम पुरुष जो जो कर्म करतेहैं उसी उसी कर्मको दूसरे

मनुष्यभी करतेहैं और वह श्रेष्ठ पुरुष जिस २ बातको प्रमाण करतेहैं उसीको संसार करताहै, हे अर्जुन तीनों लोक में मुझको कोई बात करने के योग्य नहींहै अथवा प्राप्त और अप्राप्त होनेके भी योग्य नहीं है परन्तु तौभी मैं कर्महीको करताहूं, जो कदाचित्मैं आलस्यसे कर्मोंको न करूं तो हे अर्जुन सब मनुष्य सब रीति से मेरेही अनुसार चलनेलगें अर्थात् कर्मकरना छोड़दें, जो मैं कर्मोंको नहीं करूंतो यह सब लोक भ्रष्टहोजायँ और मैंभी वर्णसंकरोंका ईश्वर कहलाऊं और इन सब प्रजाओंका नाश करदूं, हे भरतवंशी जैसे कि कर्मफल के चाहने वाले अज्ञानी लोग कर्मको करते हैं उसी प्रकार कर्म फलके न चाहने वाले ज्ञानीलोग लोक संग्रह अर्थात् संसार को धर्म में नियत करनेके लिये कर्म को करें, विद्वान् लोग कर्ममेंप्रवृत्त पुरुषोंकी बुद्धि को कर्म से पृथक् न करें अर्थात् कर्म करने से न हटावे योगी होकर अच्छी रीतिसे आचरण करता हुआ सब कर्मों को करे और दूसरेसे करावे सब प्रकार से प्रकृतिके सतोगुण रजोगुण तमोगुण से किये हुए कर्म होते हैं जो अहंकारसे अज्ञान बुद्धीहै अर्थात् आत्माको असंग और रूपज्ञनहीं देखताहै और अपनेकोही कर्त्ता मानताहै हे महाबाहु वह पुरुष गुण और कर्मके विभागकी मुख्यताकाजाननेवालाहै अर्थात् आत्माको इनसबसे पृथक्वाअसंग वा ज्ञान रूप जानता है और यह मानकर कि इन्द्रियां विषयोंमें वर्त्तिनी हैं इससे वह अपनेको कर्मका कर्त्ता नहीं मानताहै, प्रकृतिके अहंकारादि गुणोंसे अज्ञानी पुरुष शरीरादिक गुण और कर्मों में आसक्तहैं उन आत्मज्ञानसे रहित अल्पज्ञ शास्त्रार्थ ज्ञान में असमर्थ पुरुषों को आत्मज्ञानी कर्म निष्ठा से न हटावे तो अज्ञानी वा मोक्षका चाहनेवाला विवेक बुद्धि से सब कर्मोंको मुझ सब के अन्तर्य्यामी में अर्पणकरै इस से हे अर्जुन तू कर्मफल में आशारहित और प्राप्तवस्तुको अपनी न माननेवाला होकर शोकसे विगत होके युद्धकर, जो मनुष्य मेरेइस मतपर काम करतेहैं और श्रद्धावान् होकर उस में दोष दृष्टी नहीं करते वह भी धर्म अधर्मरूप कर्मों से छूटजाते हैं, जो दोषलगाने वाले इसमेरे मतपर कर्म नहीं करते हैं उनको ब्रह्मज्ञान में अत्यन्त अज्ञानी विवेक रहित स्वर्ग और मोक्षसे भ्रष्टहुए जानो, ज्ञानवान् भी अपने पूर्वजन्मके धर्म अधर्मरूप संस्कार जन्य प्रकृतिके अनुसार चेष्टाकरते हैं सब जीवमात्र अपने स्वभाव के अनुसार कर्म कर्त्ता होते हैं और मैंभी पूर्वकर्म के अनुसार उन से कर्म कराताहूं परन्तु यह बात संभव है कि जो दोनों प्रकार की इन्द्रियोंके विषयों में राग द्वेष अधिकता से नियतहैं तो उन दोनोंके स्वाधीन न होवे निश्चय है कि वह दोनों राग द्वेष इस मोक्ष चाहने वाले के शत्रु हैं अपने धर्माश्रम के अनुसार अपना धर्म और गुणभी अच्छीरीति से कियेहुए दूस-

रों के धर्मसे श्रेष्ठ है अपने युद्धादि कर्मोंमें मरना बहुत उत्तम है और दूसरेका भिक्षावृत्ती आदिधर्म महाभयकारी है दूसरा अभिप्राय यहभी है कि सत्वादि गुणों से रहित अपनाधर्म अच्छे प्रकारसे कियेहुए परधर्मसे अर्थात् इन्द्रियोंके धर्म से श्रेष्ठतरहै अपने ज्ञाननिष्ठारूप धर्म में मरना उत्तमहै और इन्द्रियों का धर्म भयका देनेवालाहै, अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी फिर किससे संयुक्त कियाहुआ यह पुरुष पापोंको करता है और अनिच्छावान् होकर अपने बलसे कर्म में प्रवृत्तहुआ मालूमहोता है, श्री भगवान् बोले कि यह इच्छा रजोगुणसे उत्पन्नहै यही क्रोधरूप होजाती है और यही इच्छारूप काम महाभोक्ता वा उग्ररूप भयकारी है इसको इसदेह में महाशत्रुरूपही जानो ३७ जैसे कि अग्नि धुएं से और दर्पण मैल से ढकजाते हैं और गर्भ जेर से ढका रहता है इसीप्रकार इस इच्छारूप कामसे यह ज्ञान भी ढकाहुआ है, हे अर्जुन इस ज्ञानियों के पुरानेशत्रु और अग्निके समान पूर्णहोने के अयोग्य इच्छारूप काम से ज्ञान ढकाहुआ है, इस इच्छाका निवास स्थान इन्द्री मन बुद्धि हैं और यह इच्छारूपी काम उन सबके साथ ज्ञानको ढककर देहाभिमानी पुरुष को अत्यन्त मोह और भ्रान्ति में डालता है इसकारण हे अर्जुन तुमप्रथम इन्द्रियोंको स्वाधीनकरके इस अत्यन्त भयकारीज्ञान विज्ञानके नाश करनेवाले कामको मूलसे नाशकरो, इन्द्रियोंको उत्तम कहाहै इन्द्रियों से उत्तम मन मनसे उत्तमबुद्धि और जो बुद्धिसे भी उत्तम है वह आत्मा कहाजाता है इसप्रकार परमात्माको बुद्धिसे श्रेष्ठजानकेबुद्धिके द्वारा मनको नियतकरके कठिनतासेभी नाश न होनेवाले कामरूप शत्रुकोमारडाल४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिश्रीभगवद्गीता श्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगोनाम तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

श्री भगवान् बोले हे अर्जुन यह दो प्रकारवाला अविनाशी ज्ञान मैंने सूर्य्यदेवता से कहाथा और सूर्य्यने मनुजी से कहा और मनुने इक्ष्वाकुसे कहा, इसप्रकार से परंपरापूर्व्वक प्राप्तहुए इस योग को राजऋषियों ने जाना है हे शत्रुहन्ता वह योग इसलोक में बहुत कालसे गुप्तहै उसी प्राचीन योग को अब मैंने तुझसे कहा है क्योंकि तू मेरा भक्त और सखा है निश्चयकर के यह उत्तम योग गुप्तकरनेके योग्यहै अर्थात् अपने पुत्र को अथवा प्रीति से आकांक्षी साधक को बताना और पढ़ाना चाहिये, अर्जुन बोले कि हे कृष्णजी आपका जन्म तो पीछेहुआ है और सूर्य्यका जन्म बहुत पहले हुआ है तो मैं यह कैसे जानूं कि आपने सृष्टिकी उत्पत्ति के प्रारंभ में कह

है, श्री भगवान् बोले कि हे अर्जुन मेरे और तेरे अनेक जन्म हुए हैं उन सब को मैं जानता हूं तू नहीं जानता है, मैं अजन्मा अविनाशी सबजीवमात्रों का आत्मा और ईश्वर भी होकर अपनी प्रकृतिको स्वाधीन करके अपनीही मायाके साथ प्रकटहोताहूं अर्थात् जिस प्रकारसे जीव अपने कर्मोंके अनुसार अविद्या और त्रिगुणात्मक रूप प्रकृति के स्वाधीन होकर जन्म धारण करते हैं इस प्रकारसे मेराजन्म नहीं है क्योंकि मैं कर्म बंधनसे छुटाहुआ त्रिगुणात्मिका माया से पृथक्हूं, हे भरतवंशी जब जब धर्मकी न्यूनता और अधर्म की वृद्धिहोती है तब मैं निराकार ज्योतिरूप अपनेको प्रकट करके साधुओंकी रक्षा और कुकर्मी पापात्माओंका नाश और धर्मके नियतकरने को प्रत्येक युगमें प्रकट होताहूं, मेराजन्म और कर्म दिव्यहै अर्थात् बनावट का नहीं है जो इस प्रकारसे मूल समेत जानताहै हे अर्जुन वह पुरुष शरीर को त्यागकर फिर जन्म नहीं लेताहै अर्थात् मुझको प्राप्त होकर मुझीमें लय होताहै, और जिनलोगोंकी विषयोंमें प्रीति वा अपने मरणका भय, अपने पराये दुःखसे क्रोध इत्यादिबातें दूर होगई हैं और मुझीको श्रेष्ठमानकर मेरी शरणागत होकर ज्ञानरूप तपसे पवित्रहैं ऐसे अनेक योगी मेरेभावको प्राप्त हुएहैं अर्थात् मुझमें लयहोगयेहैं, जो पुरुष मुझ सर्वव्यापीको मित्रता वा शत्रुताके भावसे प्राप्तहोतेहैं मैं भी उनको उसीरीति से सन्मुख होताहूं हे अर्जुन सब मनुष्य मेरीभक्ती और ध्यानआदि पर चलते हैं उन अपने रूपों को मैं सबरीतिसे प्राप्त होताहूं दूसरा आशय यहहै कि जो जैसे भावसे जिस जिसदशा में मुझको भजतेहैं मैं उसी उसी प्रकारसे उनपर अनुग्रह करताहूं क्योंकि वह सब प्रकारसे मेरेही मार्ग पर चलतेहैं अर्थात् अन्यदेवताओंके भी भक्त मेरेही भक्तहैं, इस नरलोकमें कर्मोंसे उत्पन्न लक्ष्मी धन पुत्रादि सिद्धी शीघ्रहोती है इस निमित्त यहां कर्मोंकी सिद्धिजाननेवाले पुरुष जो देवताओंको पूजतेहैं वह भी मेरेही भक्तहैं, मैंने चारोंवर्णों के अभीष्ट देनेवाले शम दमादि कर्म और शूरता आदि धर्म और खेती वा सेवा पालनादि कर्म और सत्वादि तीनोंगुणोंमें सतोगुण प्रधान ब्राह्मण, सतोगुणके भाग संयुक्त और रजोगुण प्रधानक्षत्री तमोगुणके भागसे संयुक्त और रजोगुण प्रधान वैश्य रजोगुण के भागसे युक्त और तमोगुण प्रधान शूद्र इन चारोंवर्णों को उन के गुण विभागों समेत उत्पन्न किया माया के योगसे मुझको उनकाभी स्वामीजानो और वास्तवमें अविनाशी और अकर्त्ताजानो, क्योंकि कर्म मुझको स्पर्श नहीं करते हैं और न मेरी कर्मफल में इच्छाहै जो पुरुष मुझको इस प्रकारसे जानता है वह कर्म बंधनको नहीं पाताहै, पूर्व्व समय के मोक्षचाहने वाले ज्ञानियोंने इसीप्रकार से जानकर कर्मोंको किया है इस कारण हे

अर्जुन तूभी इस प्राचीन वृद्धों के कियेहुए कर्मको कर, कर्म क्याहै और अ-
कर्म क्याहै इसके जानने में पंडितलोग भी मोहको प्राप्त होते हैं उनदोनों
कर्म और अकर्मोंको मैं तुझसे कहताहूं जिनके जानने से तू इस अशुभ सं-
सार से छूटजायगा, शास्त्रोक्त कर्म की गति भी जानने के योग्य है और शास्त्र
से बिरुद्ध कर्म भी जानने उचित हैं और अकर्म अर्थात् न करने की भी गति
जाननी चाहिये क्योंकि कर्म की गति कठिन है, कर्म विकर्मरूप शरीर और
इन्द्रियों का कर्म अविद्यासे चैतन्य आत्मा में नियतकरने पर जो पुरुष इस
आत्मा में अकर्त्तापनको देखे वा सदैव कर्म करनेवाले त्रिगुणात्मकदेह और
इन्द्रियों में आत्माके अकर्त्ता होनेपर जो पुरुष कर्मनाम प्रपंचको देखताहै
वह मनुष्योंमें बुद्धिमान् महायोगी और सबकर्मों का करनेवाला है अर्थात्
उसको कोई करना बाक़ी नहींहै और ज्ञानयोगका भी अधिकारी है, जिसके
सबप्रारंभ कर्म इच्छा और संकल्पसे रहितहैं और ज्ञानरूप अग्निसे कर्मोंको
भस्म करदिया है उसको ज्ञानीलोग पंडित कहतेहैं कर्मफल को त्याग करके
सदैव आत्मलाभ से संतुष्ट अहंकारादि से रहितहै वहकर्ममें अत्यन्त प्रवृत्तभी
कुछ नहीं करता है, जो स्त्री आदि परिग्रहों से पृथक् योग ऐश्वर्यों का नहीं
चाहता देह मन बुद्धि और सबइन्द्रियोंका जीतनेवाला है वह केवल शरीर
संबन्धी भिक्षाआदि कर्मोंको करताहुआ पापसेरहितहोताहै, बिना याचनाके
मिलेहुए शिलोंछसे संतुष्ट हर्षशोकसेरहित दूसरेकेलाभमें प्रसन्नहोनेवाला और
सिद्धी असिद्धी में रूपान्तर दशाके बिना कर्म करके भी बंधन को नहीं प्राप्त
होता है, असंग अर्थात् अपनेको अकर्त्ता मानने वाले कर्म फल की इच्छासे
रहित यज्ञादिक कर्मों को ईश्वरार्पण करनेवाले ज्ञान निष्ठ लोगों के संपूर्णकर्म
नष्ट होजाते हैं, जिसमें सबकर्म लयहोतेहैं उसको बिकल्प समाधिसमेत बर्णन
करते हैं, अर्पणके साधनमंत्रादिक ब्रह्मरूपही हैं और अर्पणके हव्य घृतादिक
भी ब्रह्म हैं जो होम कियागया है वह ब्रह्म मेंही है जो अग्नि में होमा है वह
ब्रह्म में है होम करनेवाला और करानेवाला दोनों ब्रह्महैं जो यजमानने हवन
किया वह ब्रह्मनेही कियाहै, जो ब्रह्म कर्म रूप समाधिकेद्वारा उस कर्मका फल
मिलनेवालाहै वह भी ब्रह्मही है, कोई योगीदर्श वा पूर्णमास आदिदेव यज्ञकी
उपासना करतेहैं १ कोई जीव यज्ञ को निरुपाधि रूप के द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि
में हवन करते हैं यह उत्तम ज्ञान यज्ञ है २ कोई योगी श्रोत्रादि इन्द्रियों को
संयम रूप अग्नियों में हवन करते हैं ३ कोई शब्दादि विषयों को इन्द्रीरूप
अग्नियों में हवन करते हैं ४ कोई योगी इन्द्रियों के सबकर्मों को वा प्राणों
के सब कर्मों को मन और बुद्धिकी उस संयमरूप अग्नि में जो ब्रह्मज्ञान से
प्रकाशमान है हवन करते हैं अर्थात् लयकरते हैं ५ इसीप्रकार पापी क्रूर

तड़ाग बाग मन्दिर आदि बनवाने यह द्रव्य यज्ञहैं ६ और कृच्छ्रचान्द्रायण व्रतादि तपयज्ञ है और कर्म फलकी इच्छानकरके संध्या आदिक कर्मकरना निर्विकल्प समाधितक ७ अथवा यम नियम आसन प्राणायाम धारणा ध्यान समाधिरूप अष्टांगयोग यह योगयज्ञहैं ८ और सदैव वेद पाठन पठनमें प्रीति रखना स्वाध्याय यज्ञहै ६ और वेद के अर्थको अच्छी रीति से समझकर ब्रह्म में तदाकार रहना यह ज्ञान है इन यज्ञोंके करनेवाले अथवा उपाय करनेवाले तेजव्रत हैं, १० इसी प्रकार कोई कोई योगी अपान में प्राण को हवन करते हैं अर्थात् रेचक करतेहैं और प्राण अपानकी गति को रोक कर प्राणायाम में प्रवृत्त हैं ११ विषयों को स्वाधीन करने वाले अर्थात् विषयों के आधीन न होने वाले कोई कोई योगी मन इन्द्री को मन चित्त अहंकार में क्रम पूर्व्वक हवन करते हैं १२ तब इनकी समाधि सिद्धी होतीहै इन सब यज्ञोंके प्राप्त करने वाले भी अपने २ यज्ञों के द्वारा पापों से निवृत्त होतेहैं अर्थात् इन यज्ञों का फल पापों से पृथक् होना है पंचमहायज्ञ में शेष बचेहुये अमृत नाम अन्न के भोजन करने वाले चित्त शुद्धी के द्वारा सनातन ब्रह्म को पाते हैं, हे कौरवोंमें श्रेष्ठ अर्जुन यज्ञ न करनेवाले पुरुषका जब यहीलोक नहींहै तो दूसरे परलोक आत्मलोक कहांसे होसक्ते हैं, इस प्रकार करके वेदके मुख से फैले हुये अनेक यज्ञहैं उनसब कर्मों को देह मन और वाणी से उत्पन्न हुआ जानकर तत्त्व ज्ञानके द्वारा तू मुक्तिको पावेगा, हे शत्रुतापी जो द्रव्य मय यज्ञ देह इन्द्री आदिसे होतेहैं उनसे ज्ञानयज्ञ बड़ा श्रेष्ठहै क्योंकि सबकर्म अपने फलोंसमेत संपूर्णता पूर्व्वक ज्ञानमेंही समाप्त होजातेहैं, उस ब्रह्मज्ञान को जानकर शास्त्र जानने वाले वा अनुभव करनेवाले ज्ञानी तेरी दण्डवत् वा सेवा और प्रश्न के द्वारा उपदेश करेंगे, हे पाण्डव उस ब्रह्मज्ञान को जानकर फिर इसप्रकार मोहको नहीं पावेगा तदनन्तर उसब्रह्मज्ञान के द्वारा ब्रह्मासे लेकर तृणपर्य्यंत जीव मात्रको अपने में और फिर मुझ में देखेगा, मोक्ष के चाहने वाले का धर्म भी फल की इच्छा से पापही कहाजाता है जो सब पापों से भी अधिक पाप का करनेवाला है तौ भी ज्ञानरूपी नौका के द्वारा पापरूपी सब समुद्रों को तर जायगा, जैसे महाप्रबल अग्नि इंधन को भस्मकरदेतीहै उसीप्रकार ज्ञानरूपी अग्नि सब प्रारब्धादि कर्मोंको मूल समेत भस्म करडालती है, इस लोक में ज्ञान के सिवाय कोई पवित्रता वर्त्तमान नहीं है संध्या आदि निष्काम यज्ञों से पूरी शुद्धता पाकर उस ज्ञानको बहुत समय में अपने में पाताहै, श्रद्धावान् वा उसमें प्रवृत्तबुद्धि अच्छा जितेन्द्री उस ज्ञानको पाता है और ज्ञानको पाकर प्रारब्धादि कर्मों के समाप्त होने में कैवल्य मोक्षरूप परा शान्ती को पाता है अज्ञानी श्रद्धासे

रहित मन में सन्देह रखने वाले नाशको पाते हैं चित्त में सन्देह रखने वालों का न यह लोक है न परलोक है और न सुख है, हे अर्जुन योग से कर्मफल के त्यागने वाले अथवा कर्मकोही त्यागने वाले ज्ञान संशय से रहित शम दमादि के करने वाले आत्मवान् को कर्म बंधन नहीं करसक्तेहैं, हेभरतबंशी इसीकारण इस अज्ञान से उत्पन्न हृदय में नियत अपने संशयको ज्ञानरूपी खड्ग से काटकर निष्कास कर्म योग में नियतहो अर्थात् युद्ध के निमित्त खड़ाहोजा ४२ ॥

इतिश्रीभीष्मपर्वणिभगवद्गीताब्रह्मार्पणयोगोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

अर्जुन बोले कि हेश्रीकृष्णजी आप सबकर्मोंके त्यागको कहकर फिर योगकर्म करने को कहतेहो इनदोनों में से कौनसा आपने श्रेष्ठतम निश्चय कियाहै उसको मुझे समुझाइये, श्रीभगवान् बोले कि कर्मों का त्याग और कर्मों का करना यह दोनों ज्ञानकी उत्पत्ति के कारण हैं परन्तु इनदोनों में कर्म करने से कर्म का त्याग करना श्रेष्ठ है क्योंकि इसके द्वारा चित्त शुद्धी और वैराग्य दोनों प्राप्तहोते हैं हे महाबाहु वह सदैव नियत रहने वाला संन्यासी जानने के योग्यहै जो न इच्छा करताहै न अलग होताहै और सत्य मिथ्या आत्मा अनात्मा के विभाग वा स्त्री आदि द्वन्दों से पृथक्है वह सुख पूर्व्वक मायाके बंधनसे छूटताहै, अज्ञानी पुरुष ब्रह्मज्ञानरूप सांख्य और कर्म के अनुष्ठानरूप योगको पृथक् २ कहतेहैं पंडित नहीं कहतेहैं क्योंकि एकमेंभी नियत दोनोंके फलोंको अच्छी रीतिसे पाताहै अर्थात् कर्म के द्वारा चित्त शुद्धी होनेपर ब्रह्मकी प्राप्ती है और जब शुद्धहोनेपर विनाकर्म योगके ब्रह्मज्ञानमें नियत होनाभी मोक्षकाही कारणहै, जोमोक्षरूप स्थान ज्ञानियोंको प्राप्त होताहै वह ज्ञानके द्वारा कर्म योगियोंकोभी प्राप्त होताहै ब्रह्मज्ञान और कर्मयोग यह दोनों एकहीहैं जो देखताहै वही अच्छी रीतिसे समझताहै इससे हे अर्जुन बिना कर्मयोगके संन्यास अर्थात् त्याग होना बड़ा कठिनहै और कर्म योगमें प्रवृत्त हुआ मुनि थोड़े ही समयमें ब्रह्मको पाता है, जो निर्विकल्प समाधि नाम योग से संयुक्त है और जिसकी चैतन्य आत्मा बृत्ति सारूप्य दोष से रहित है और जिसने मनको जीतकर इन्द्रियोंको जीताहै और सब जड़चैतन्य जीव मात्रोंका आत्मारूपहै वह कर्मोंको करता हुआभी उनसे असंग औरनिर्लेप रहताहै, तत्त्वज्ञ योगी देखता, सुनता, स्पर्श करता सूंघता खाता चलता सोता श्वासलेता बोलता त्याग करता ग्रहण करता आंखोंको खोलता मीचताभी यही मानताहै किमैं

कुछनहीं करताहूं यह सब इन्द्रियां अपने २ विषयोंमें प्रवृत्त हैं और जो ज्ञानी कर्मों को ब्रह्ममें धारण करके अथवा फलों को त्यागकर कर्मोंको करता है वहभी पापोंसे संयुक्त ऐसे नहीं होताहै जैसे कि कमलका पत्ता पानीसे नहीं भीजता, योगी कर्मफलको त्याग करके चित्त शुद्धीके निमित्त ममतासे रहितमन वाणीदेह और इन्द्रियोंके द्वाराभी कर्म को करतेहैं, योगी कर्म फलको छोड़कर अर्थात् ईश्वरार्पण करके कैवल्य मोक्षरूप शान्तीको पाताहै और अयोगी चित्तकी इच्छाके अनुसार कर्मफलमें प्रवृत्तचित्त होकर वारंवार बंधन में पड़ताहै, चित्तका जीतनेवाला देहाधीश आत्मा नवद्वारवती पुरीमें नकरता न कराता हुआ सबकर्मों को मनसे त्यागकर सुखपूर्वक बैठाहै, चैतन्यात्मा प्रभु जड़रूप लोक के कर्तृत्व वा कर्मत्व और कर्म फलके संगको उत्पन्न नहीं करताहै किन्तु जिस का जैसास्वभावहै वह उसी प्रकार से कर्मोंको करताहै, वह व्यापक ईश्वर किसीके पाप पुण्यको नहींलेता है अज्ञानसे ज्ञान ढका हुआहै इसी कारण जीव मोहको पातेहैं अर्थात् भूलेहुएहैं, जिन लोगों के आत्माका वह अज्ञान ज्ञानकेद्वारा दूरहोगयाहै उनका ज्ञान सूर्य्यके समान प्रकाशमानहोकर परम आत्म तत्त्वको प्रकाशित करताहै अर्थात् दिखलाताहै, उस परम तत्त्वमें बुद्धि वा आत्माको लगानेवाले उसीमें निष्ठावान् और आश्रय करनेवाले योगी जिनके कि पाप ज्ञानसे नाशहुए वहमोक्ष को पातेहैं, जो ब्रह्मज्ञानी पंडितहैं वह विद्या और नम्रतासेभरे हुए ब्राह्मण गौहाथीश्वान और चांडाल में समान ब्रह्मके देखने वाले हैं, जिनका मन सब जीवमात्रों में ब्रह्मभाव रूपी समता से नियतहै वह इसी लोकमें अपने जन्म को सुफल करतेहैं वह निश्चय करके ब्रह्म दोष से रहित सम बुद्धी हैं इस समता बुद्धि से वह ब्रह्म मेंही नियतहैं इस कारण से अपने अभीष्ट पुत्रादिकों को पाकर भी प्रसन्न न होय और दुखदायी शत्रु को पाकर व्याकुल न होजाय ब्रह्ममें नियत बुद्धि और ध्यानके द्वारा उत्पन्न होनेवाले साक्षात्कारके मोहसे रहित ब्रह्मज्ञ और ब्रह्ममें नियत अर्थात् ब्रह्म भावका प्राप्त करनेवाला होजाय, बाहर उत्पन्न होने वाले स्पर्श अर्थात् विषय और इन्द्रियोंके संगमें चित्तनलगाने वाला पुरुष जो सुख आत्मा में पाताहै वह ब्रह्म योग में प्रवृत्त बुद्धि अर्थात् ब्रह्म ज्ञानी मोक्ष रूपअविनाशी सुखको पाता है, हे अर्जुन विषयों के योग से उत्पन्न होनेवाले जो भोगहैं वह दुःखके उत्पत्ति स्थान हैं क्योंकि आदि अन्त अर्थात् उत्पत्ति नाश रखने वालेहैं उनमें ज्ञानी पुरुष नहीं रमताहै, जो मनुष्य इसलोकमें देह त्याग से प्रथमही इच्छासे वा क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले वेगको सहताहै वही योगीहै और सुखी है, जो आत्मामें सुख माननेवाला विषयोंसे वैराग्यवानहै अथवा आत्माही में क्रीड़ा करनेवाला स्त्री आदि से

रहितहै और उसकी क्रीड़ाके सामानभी आत्मारूप हैं वह जीवन्मुक्त योगी देवयान पितृयान संबंधी ब्रह्मको पाता है, जो पापोंसे और संशयों से रहित सब जीवोंके हितकारी हैं वह ब्रह्मज्ञानी ऋषि ब्रह्मनिर्वाण अर्थात् कैवल्य मोक्षकोपातेहैं और काम क्रोधसे रहित चित्तके जीतनेवाले ब्रह्मज्ञानी संन्यासीसबदशाओं में मोक्षको बरतते हैं ऊपर ब्रह्मनिष्ठा से शीघ्रहोनेवाली मुक्ति कही अब ब्रह्मनिष्ठा के अन्तरंग साधनको कहते हैं, आत्मासे बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयोंको बाहर करके अर्थात् धारण करके और नासिकाके भीतर रहनेवाले प्राण और अपानको समान करके अर्थात् प्राणायाम करके, जो मुनि इन्द्रीमन और बुद्धिका जीतनेवाला वा मोक्षको उत्तमस्थान जाननेवाला इच्छाभय क्रोधसे रहितहै वह सदैव मुक्तहै-इसप्रकार सावधान चित्तज्ञानी को क्या जानना चाहिये उसको कहतेहैं—उपाधि युक्त स्वामीदेवरूप से यज्ञ और तपोंके भोक्ता सबलोकों के पितामह मुझअन्तर्यामी को जान कर अर्थात् साक्षात्कार करके मेरेभावको पाकर कैवल्य मोक्षरूप शान्ती को पाताहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिभगवद्गीताश्रीकृष्णार्जुनसंवादेसंन्यास योगोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले कि जो कर्म फलका आश्रय न करने वाला करने के योग्य कर्मको करताहै वही संन्यासी है वही योगी है यद्यपि वह वेद और स्मृति संबंधी अग्निको और मनवाणी देहकी क्रियाओंको त्याग करनेवाला नहीं है जिसको कि संन्यास कहते हैं हे पांडव उसको योगजान संकल्प को त्यागन करने वाला कोई योगी नहीं होताहै, ज्ञान योगपर चढ़ने की इच्छा रखने वाले मुनिका साधन कर्म कहाहै अर्थात् फल रहित कर्म करनेसे ईश्वर का ज्ञान होताहै और उसीज्ञान योगपर चढ़ेहुएका साधन कर्मोंका त्यागरूप संन्यास कहाहै, जब सब संकल्पोंका अच्छी रीतिसे त्याग करनेवाला कर्म योगी इन्द्रियोंके विषय और कर्मोंमें तदाकार नहीं होताहै तब ज्ञान योगपर चढ़ाहुआ कहाजाताहै, आत्माके द्वारा आत्माको उद्धारकरे कभी आत्माका विनाश न करे अर्थात् मोक्ष के अधिकार से न गिरावे क्योंकि आत्माही आत्मा का बन्धु है पुत्रआदि आत्मा के बन्धु नहीं हैं और आत्माही आत्माका शत्रुहै और कोई दूसरा शत्रुनहीं है, आत्माका बंधुमन है जिस मन के द्वारा चित्तको जीता है और जिसने चित्तको नहीं जीता उसकामन शत्रु के समान शत्रुता में नियत होता है, शीतोष्णता सुख दुःख मानाप-

मानमें निर्विकार चित्त महाशान्त योगी का मन बड़ी समाधिको पाता है, वह शास्त्रोपदेश से उत्पन्न बुद्धिरूपज्ञान और विज्ञानसे तृप्तचित्त मोक्ष के अधिकारसे डिगाय मान न होनेवाला अर्थात् निर्विकारहोकर इन्द्रियों का जीतनेवाला सब लोहा सोना पत्थर आदि को समान जानने वाला योग सिद्ध पुरुषयोगी कहा जाता है प्रतीकार बुद्धि बिना उपकार करने वाला शत्रु मित्र में समभाव प्रिय अप्रिय और साधु असाधु इन सब में समान बुद्धि रखने वाला एकाकी इन्द्रियों समेत देह मनका जीतनेवाला निरपेक्ष कथा पुस्तक आदि परिग्रहों से रहित योगाभ्यासी एकान्तमें बैठा हुआ सदैव बुद्धीको आत्मामें लगावे, पवित्र स्थानमें अपना ऐसा अचल आसन बिछाकर जो न बहुत ऊंचा न नीचा कुशाका बनाहुआ अथवा कुशाके ऊपर मृगचर्म उसके ऊपर सूत्रवस्त्र बिछाहो विषयोंको स्मरण करना आदि चित्त की क्रिया और इन्द्रियोंकी क्रियाओं को विजय करनेवाला योगी उस आसन पर बैठकर मनको एकाग्र करके अन्तःकरण की अत्यन्त पवित्रता के लिये योग का अभ्यास करे अर्थात् अपनी वृत्तिकी तरंगों को बन्द करे और मूलाधारसे मस्तक तक सीधा और निश्चल नियत होकर अपने नासाग्र को देखता हुआ दिशाओं को न देखतावैठे और उस आसन पर बैठकर यह करे किजो ब्रह्मचर्य्य व्रत में नियत योगी संन्यासी मुझ परमेश्वर में चित्त लगानेवाला अपने मनको स्वाधीन करके मुझको सर्वोत्तम जानने वाला होवे, वह अत्यन्त शान्त चित्त अर्थात् सब भीतरी बाहिरी विषयों का त्याग करने वाला निर्भय होताहै, सदैव मनको जीतने वाला योगी इस रीतिसे आत्मा को परमात्मा में एकता को करता हुआ मोक्ष निष्ठावाली शान्ती जोकि मुझ में वर्त्तमानहै उसको पाता है, हे अर्जुन बहुत भोजन करने वाले का भी योग नहींहोता और बहुत कम खाने वाले का भी नहीं होता और अत्यन्त सोनेवाले का भी नहीं होता और जागने वाले का भी नहीं होता, जिसका कि आहार विहार योग रीति से है और कर्मों में भी चेष्टा योग्यहै सोना जागना भी योग्यहै उसका योग दुःखों का दूर करनेवाला होताहै, जिस ने निर्वाण रूप परम शान्ती को पायाहै उसके सुन्दर लक्षण आगे के छः श्लोकों में वर्णन करतेहैं अर्थात जब अच्छी रीति से जीता हुआ चित्त आत्मा मेंही नियत होता है और सब कामनाओं से इच्छा रहित होताहै वह योगी निर्विकल्प कहाजाता है, जैसे कि दीपक निर्वात स्थानमें रक्खाहुआ नहीं हिलता है वह चित्त जीतनेवाले और समाधि का अनुष्ठान करनेवाले योगी को कही हुई योग सेवासे, रुकाहुआ एकाग्र चित्त जिस दशामें लय होताहै अथवा जहां चित्त से आत्मा को निर्विकल्प देखताहुआ आत्माही

में तृप्त होताहै बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयोंमें नहीं होता जो बड़ा ब्रह्मानन्द रूप सुख इन्द्रियों से बाहर ब्रह्म ज्ञानरूपी बुद्धि के द्वारा प्राप्त करने के योग्य है और इस सुख में नियतहै वह ब्रह्म के सिवाय दूसरी वस्तु को नहीं जानता है और तत्त्व से पृथक् नहीं होताहै, इस बड़े लाभ को पाकर उससे अधिक लाभ को नहीं मानता है और इस में प्रवृत्त चित्त होकर पुरुष बड़े दुःखों के कारण से भी पृथक् नहीं किया जाता है, उसको दुःखों के संगका जुदा करने वाला योग नाम जाने जिसका चित्त वैराग्य के द्वारा दुख सुखादिका सहनेवालाहै उससे वह योग शास्त्र आचार्य्यसे प्राप्तहुए निश्चय समेत अनुष्ठान करने के योग्य है, संकल्प से उत्पन्नहुई सब इच्छाओं का सब बासनाओं समेत त्याग करके और चित्त के द्वारा इन्द्रियों के समूह को चारों ओर से रोककर अर्थात् सब विषयों से पृथक् करके अथवा धृति से स्वाधीन कीहुई बुद्धिके द्वारा धीरे २ निवृत्त करे और उस मनको आत्मा में नियत करके अर्थात् आत्मारूप करके कुछ भी चिन्तवन न करे, यह चंचल और अस्थिर मन जहां जहां विषयों में जावे वहां वहां से रोककर उसको आत्मा के स्वाधीन करे, इस अत्यन्त शान्तचित्त रजोगुण रहित धर्माधर्म से पृथक् ब्रह्मरूप योगी को ही उत्तम सुखकी प्राप्ती होती है, अविद्या आदि क्लेशों से रहित योगी इस रीति से मनको स्वाधीन करताहुआ सुख पूर्व्वक ब्रह्मानन्द रूप अनन्त सुखको पाताहै, अब दोप्रकारके योग फलको कहते हैं योग से सावधान चित्त सब स्थावर जंगम जीवोंमें ब्रह्मका देखनेवाला योगी सब जीवों में वर्त्तमान अखण्ड ब्रह्मरूप आत्माको और सब जीव मात्रों को आत्मा में देखता है, जो मुझको सब जीवमात्र में देखता है और सबको मुझमें देखता है मैं उससे कभी परोक्ष नहीं होताहूं और वह भी मेरा परोक्ष नहीं है अर्थात् मुझमें उसमें पृथक्ता नहीं है जो योगी जीव ब्रह्मकी एकता में नियतहोके सब जीवों में वर्त्तमान मुझको निर्विकल्प समाधि के द्वारा भजता है वह योगी सबप्रकार के व्यवहारों को करता हुआ भी मुझ में वर्त्तमान है अर्थात् मुझसे कभी पृथक् नहीं होता है, जो योगी आत्मा की समता के कारण सबजीवों में सुख और दुखको समान देखता है वह योगी उत्तम कहाता है, अर्जुन बोले हे मधुसूदनजी आपने जो यह समतायुक्त योग वर्णन किया सो मैं मनकी चंचलता से उसकी बड़ी स्थिरताको नहीं देखताहूं, हे श्रीकृष्णजी यह चंचल मन बड़ापराक्रमी और दृढ़ है उस मनका रोकना मैं वायुके समान महाकठिन मानताहूं, श्रीभगवान् बोले कि हे महाबाहु अर्जुन निस्सन्देह यहमन बड़ाचंचल है इसका स्वाधीन होना बड़े कष्टसे भी नहीं होताहै हे अर्जुन इस मनको अभ्यास और वैराग्य के द्वारा स्वाधीन

करना योग्य है; जिसने चित्तको अच्छी रीति से न जीता उसको योगका मिलना बड़ाकठिन है यह मेरा मत है और मनको स्वाधीन करनेवाले वा उपाय करनेवाले को अभ्यास वैराग्यादिक उपायों से उसका प्राप्तकरना सम्भव है, अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी कर्म योग से मनको हटाकर श्रद्धायुक्त योगमार्ग में प्रवृत्त थोड़ा उपायकरनेवाला योग सिद्धी को न पाकर मृतक होके कौनसी गतिको पाताहै और हे महाबाहु वासुदेवजी वह कर्मयोग और ज्ञानयोगका आश्रय न करनेवाला अज्ञानी ब्रह्मप्राप्ती में नियत कर्मयोग ज्ञानयोग इन दोनोंसे गिराहुआ टूटेहुये बादल के समान नाशदशाको तो नहीं पाता है, हे श्रीकृष्णजी अब इन मेरे सम्पूर्ण सन्देहोंको आप दूरकरिये क्योंकि आपके सिवाय इस संशयका दूर करनेवाला कोई नहीं विदितहोता है, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन इसलोक परलोक में उसका किसीप्रकार से नाशनहीं है और हे तात कोई शुभकर्मी मनुष्य दुर्गती को नहीं पाताहै योग से भ्रष्टहुये अपने पुण्य से उत्पन्न लोकोंको पाकर बहुत वर्षतक निवास करके धनी लोगों के यहां उत्पन्न होता है अथवा वह पुरुष बुद्धिमान् योगियों के घराने में पैदाहोता है, लोक में ऐसा जन्महोना भी दुर्लभ है, हे कौरवनन्दन वहां पूर्व देह सम्बन्धी उस बुद्धि संयोगको पाता है उसके पीछे वह बड़ी शुद्धीके निमित्त अनेक उपाय करता है, फिर वह स्वाधीनता रहित होनेपर भी पिछले अभ्यास के कारण से खैंचाजाता है क्योंकि योग जाननेका इच्छावान् शब्द ब्रह्मको उल्लंघन करके कर्म कर्त्ता होता है फिर माता पिता का रोकना कौन बात है, जो विषयों में बंधाहुआ बड़े उपायसे योगाभ्यास करने में प्रवृत्त होता है--अब उसकी गतिको कहते हैं—बड़े २ प्राणायामादि उपाय करनेसे पापों से छूटाहुआ योगी बहुतसे जन्मों में मोक्षके योग्य होकर परम कल्याणरूप मोक्षको पाताहै; अब योगीकी प्रशंसा करते हैं—कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रतोंसे वह योगी बड़े२ तपस्वियोंसे भी अधिक है क्योंकि वह शास्त्रज्ञ ज्ञानियोंसे और अग्निहोत्र आदि कर्म करनेवालोंसे भी अधिक मानागया है हे अर्जुन इसीकारण से तू योगीहो, सब कर्मयोगियों में भी जो श्रद्धावान् मुझ वासुदेव में लगेहुये मनके द्वारा मुझको भजता है उसको मैं बड़ायोगी मानताहूं ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुयोगशास्त्रे श्रीकृष्णाऽर्जुनसम्वादे अध्यात्मयोगोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मुझ में मनलगानेवाला और योगसमाधिका

करनेवाला मेरे आश्रित होकर मुझपूर्ण ब्रह्मको जैसे जानेगाउसको श्रवण करो मैं इसज्ञान विज्ञानको सम्पूर्णतासमेत तुझसे कहताहूं जिसको जानकर जानने के योग्य दूसरा कोई विज्ञान शेष नहीं रहता है, हजारों मनुष्यों में कोई मोक्षरूप सिद्धियों के लिये उपाय करता है और उनउपाय करनेवाले सिद्धों में कोई २ पुरुष मुझको मूलसमेत जानता है--अब ज्ञानसिद्धी के लिये सब चराचर प्रपंच के ज्ञानात्मकब्रह्म प्रभुत्व का बर्णन करते हैं---प्रकृति शब्द से पृथ्वी आदि शब्द और उन के कारण से गंध और रस इत्यादि जाननेयोग्य हैं क्योंकि प्रकृतिके पृथ्वी आदि आठप्रकारके बिकार रूपान्तर हैं अर्थात् पृथ्वी में गंध, जल में रस, अग्निमें रूप, वायु में स्पर्श, आकाश में शब्द, मन में अहंकार, बुद्धि में महत्तत्त्व यह आठों प्रकार की प्रकृति मुझ से जुदीनहीं है अर्थात् उसकी उत्पत्ति मुझही से है और वहमुझही में ऐसे लय होती हैं जैसे कि रस्सीमें सर्प की भ्रान्ति रस्सीहीमें लय होजाती है, क्षेत्रात्मक प्रकृति को कहकर क्षेत्रज्ञात्मक पराप्रकृतिको कहते हैं—जो ऊपर कही है वह प्रकृति जड़रूपता से अनुत्तम होकर अपर कहाती है और इससे दूसरी चैतन्यता से श्रेष्ठ होकर पर प्रकृति कहाती है, क्षेत्रज्ञ नामजीव रूप उस मुझसे संबन्ध रखनेवाले को जानो जिस्से कि यह जगत् धारण किया जाताहै, यहप्रकृति सब जीवोंकी उत्पत्तिस्थान और नाशकरनेवालीहै इसीसे मैं संसार की उत्पत्ति स्थान और लय होनेका स्थानहूं इसकारण हे अर्जुन वह प्रकृति मुझ से पृथक् नहीं है हे कुन्ती पुत्र मुझ से उत्तम दूसरा कोई नहीं है यह सब प्रपंच मुझही में ऐसे पुहा हुआ है जैसे कि-सूत्रमें मणि पुही होती हैं अर्थात् इस मिथ्यारूप प्रपंचसे पृथक् हूं मेरीरूपा-न्तर दशा नहीं है, अगले बर्णन से सिद्धहोता है कि यह सब संसार ब्रह्म में इसरीति से कल्पित किया जाता है जिसप्रकार रस्सी में सर्पकी भ्रान्ति हो-ती है हेअर्जुन मैंहीं जल में मैंहीं रसमें अर्थात् मुझ रस रूप में जल पुरोहे हुएहैं और सूर्य्य चन्द्रमा दोनों में प्रकाश रूप मैं हूं अर्थात् मुझ प्रकाश रूप में सूर्य्य चन्द्रमा पुरोहेहुए हैं और सब बेदों में प्रणव मैंहूं अर्थात् बीज रूप प्रणवहूं अर्थात् बीजरूपी प्रणव में सब बेद पुहेहुयेहैं आकाश में शब्द मैंहूं अर्थात् मुझ शब्दरूप में आकाश पुरोहा हुआ है सब पुरुषों में शूरता धैर्य्यता आदि पुरुषार्थ मैं हूं अर्थात् पौरुष रूप में मनुष्य पुरोहे हुये हैं, पृथ्वी में पवित्र गंध मैं हूं अर्थात् मुझ गन्धरूप में पृथ्वी पुहीहुई है अग्नि में तेज मैंहूं सबजीवों में जीवनरूप मैंहूं अर्थात् मुझ जीवन रूप में सब जीव पुरोहेहुएहैं तपस्वियोंमें धर्मरूपमें तप मैंहूं अर्थात् मुझ तपरूपमें तपस्वी पुरोहेहुए हैं, हे अर्जुन मुझको सब जीवों का प्राचीन बीजरूप जान मुझ

बीज रूप में सब ब्रह्माण्ड इसप्रकार पुरोहा हुआ है जैसा कि सुवर्ण में कुण्ड-
ल होताहै बुद्धिमानोंमें बुद्धि मैं हूं तेजस्वियोंमें तेज, वलवानों में काम राग
विवर्जित वल मैंहूं हे भरतर्षभ जीवों में धर्म से अविरुद्ध काम मैंहूं, जोसा-
त्विक राजस तामस भाव हैं उन सब को भी मुझसेही हुआ जान वह सब
मुझ में ऐसे हैं जैसे कि रस्सी में सर्प की भ्रान्ति परन्तु मैं उनमें नहीं हूं
अर्थात् जैसे कि वह मिथ्या रूप हैं उस प्रकार का मैं नहीं हूं, सत्व रज तम
इन तीनों गुणों की तीन रूपान्तर दशाओं के भावोंसे यह सब जड़ चैतन्य
संसार भूलाहुआ इन गुणोंसे उत्तम मुझको नहीं जानता है क्योंकि मैं अवि-
नाशी रूपान्तर दशा से रहितहूं यह मेरी माया मुझ जीव ईश्वर रूप क्री-
ड़ावान् के संबंधी और ब्रह्माण्डरूपसे प्रथम उत्पन्न होनेवाले दुःखसे उल्लं-
घन करनेके योग्य है, जो मुझ को अच्छी रीतिसे जानते हैं अर्थात् मुझको
और अपने को एकही जानते हैं वह पुरुष इसमाया को तरते हैं, परन्तु जो
पापात्मा आत्मा अनात्मा के विवेक से रहित मनुष्योंमें नीच मायाके कारण
ब्रह्मज्ञान से शून्य आसुरी ज्ञान में आश्रित हैं वह मुझको न श्रेष्ठ रीति
से जानते हैं न प्राप्त होते हैं, हे भरतवंशी दुखी, ब्रह्मज्ञानके आकांक्षी,
धनाकांक्षी, ज्ञानाकांक्षी यह चारों प्रकारके शुभकर्मी पुरुष मुझको भजते
हैं, इन चारों में ज्ञानी उत्तम है वह सदैव मुझमें अनुरक्तहोकर एक भक्तिसे
भजन करनेवालाहै क्योंकि मैं ज्ञानी का अत्यन्तप्याराहूं और वह मेराप्यारा है
यह सबउत्तमहैं परन्तुज्ञानी मेरा आत्माहै क्योंकि वह मुझजगदात्मा में मन
को लगानेवाला होकर मुझ उत्तमगति रूपमेंही नियतहै वह पुरुष बहुतजन्मों
के पीछे सब संसारको वासुदेवरूप जानकर मुझको पाताहै, जो कामनाओंसे
ज्ञानभ्रष्टहोकर अपने स्वभावके द्वारा नियमोंमें नियतहोके अन्य २ देवताओं
को भजतेहैं, वह सात्विकी राजसी तामसी तीनों भक्त जिस २ देवताकी मूर्त्ति
को श्रद्धा पूर्वक पूजते हैं मैं सबका ईश्वर उन २ भक्तोंकी अचल श्रद्धाको
नियत करताहूं, फिर वह उस श्रद्धामें भरेहुये उस २ मूर्त्तिका आराधन कर-
तेहैं और उसी देवतासे उन अभीष्टोंको पाते हैं जो कि मेरेही उत्पन्न कियेहुये
अथवा अनुमति दियेगये हैं तात्पर्य्य यहहै कि सब देवतामेरे आज्ञावर्त्ती हैं उन
निर्बुद्धियोंका फल विनाशवान् होताहै देवताओं के पूजने वाले देवताओंको
पाते हैं और मेरेभक्त मुझ अनन्त को पाते हैं अर्थात् एकत्वभावको पाते हैं,
निर्बुद्धी लोग मुझ अविनाशी अनूपम अव्यक्त पुरुषको संसारी जीवों के
समान देहधारी मानते हैं, क्योंकि योग माया से ढकाहुआ मैं सब को नहीं
देखाई देताहूं यह अज्ञानी लोक मुझ अज अविनाशी को नहीं जानता
है, जबकि जगत् ईश्वर से जुदा नहीं है तो ईश्वर को मोह क्यों नहीं होता

इस शंका को कहते हैं उपाधि से रहित होने के कारण मैं भूत भविष्य बर्त्तमान इन तीनोंकालके जीवधारियों को जानताहूं परन्तु उपाधि धर्मका अभिमानी होनेसे कोईभी मुझको नहीं जानता है अब इसशंकाकोभी कहताहूं कि लोक किसकारण से तीनोंकालके जीवोंको नहीं जानता है हे शत्रुहन्ता अर्जुन सब जीवधारी इच्छा और अनिच्छासे उठे हुये बुरे भले सत्य मिथ्या और आत्मा अनात्मा इत्यादि मोह द्वन्दों से अर्थात् उनको उलटा जाननेसे इस संसारके बिषयमें अविवेक को पातेहैं अर्थात् उसके मूल को नहीं जानते हैं फिर किसको सर्वज्ञता होतीहै इसशंकाकोभी सुनो कि जिन पवित्रकर्मी पुरुषोंका पापनाश हुआहै वह मोहके द्वन्दोंसे छूटे हुये ये शम दमादि ब्रतोंमें दृढ़होकर मुझको भजते हैं, जो मुझमें समाहित चित्त होकर जरा मृत्युसे छूटने के निमित्त उपाय करतेहैं, वह पूर्णब्रह्म अध्यात्म और संपूर्ण कर्म्मों के ज्ञाता हैं, जिन पुरुषों ने अधिभूत अधिदैव अधियज्ञ समेत मुझको जानाहै अर्थात् उपासनाकी है वह मुझमें चित्त लगानेवाले पुरुष शरीर त्याग के समय में भी मुझको ही जानते और देखते हैं इन अधियज्ञादि शब्दों का अभिप्राय आगे के अध्याय में आप श्री भगवान् वर्णन करेंगे ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु
विज्ञानयोगोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

अर्जुन बोले हे पुरुषोत्तम वह ब्रह्म क्याहै अध्यात्म क्या है कर्म क्या है और अधिभूत अधिदैव और इस शरीरमें अधियज्ञ कौन कहाताहै और किस रीतिसे इसशरीर में नियत है और आपसमाधानचित्त पुरुषोंको शरीर त्यागके समय कैसे जाने जाते हो, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन जोपरम अक्षर १ है अर्थात् उपाधि संबंध से जुदा है वह तत्त्वपदार्थरूप ब्रह्म है और जो शुद्धतमपदार्थ है वह अध्यात्म २ है और देवता के निमित्त जो द्रव्य त्यागरूपयज्ञ है वहजीवोंके सात्विक राजस तामस स्वभावों का उत्पन्नकरने वाला कर्म नाम ३ है, जोकर्म फलरूप साधनेका हेतु विनाशवान् कर्महै वह अधिभूतहै ४ सब देहोंमें निवास करने वाला सब देवताओंका आत्माहिरण्यगर्भ है वह अधिदैव ५ है हे देहधारियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन इस शरीर में अधियज्ञहूं ६ अर्थात् युगाभिमानी अन्तर्यामी विष्णुरूपहूं, इनछओं उत्तरोंके प्रथम उत्तरमें जीवका ब्रह्मभाव वर्णन किया वह पुरुष सत्य लोक आदि में नहीं जातेहैं क्योंकि उनके प्राण अपने मूलमें लयहोजाते हैं तब वह ब्रह्म

रूपहोकर ब्रह्मकोही पाते हैं दूसरे उत्तरमें शुद्धतम पदार्थ कहाहै उस तमप-
दार्थकी तत्पदार्थ में अर्थात् ब्रह्ममें ऐक्यता होने से अन्तकाल में मुझीको
स्मरण करता हुआ शरीरको त्यागकर निस्सन्देह मेरेही भावको पाता है
अर्थात् मोक्ष पदार्थ को पाताहै, हे अर्जुन जिस २ भावको स्मरण करताहु-
आ अन्तमें शरीरको त्याग करताहै वह सदैव उस भावसे भावित होकर
उसी उसीभावको पाता है, इसकारण सब समय पर मुझी को स्मरण करके
तू युद्धमें प्रवृत्तहो मुझजगदात्मा में मन और बुद्धिका लगाने वाला अ-
थवा लय करने वाला तू मुझीको पावेगा इसमें कुछभी सन्देह नहींहै, उ-
सकी व्याख्या तीनश्लोकों में करते हैं हे अर्जुन अभ्यास और अभ्यासज-
न्य योग समाधि इनदोनों से संयुक्त अनन्य वृत्ती चित्तके द्वारा अन्तर्यामी
परम पुरुषको पाताहै, अब उपासनाके स्वरूपको कहकर जिसकी उपासना
की जाती है उसका वर्णन करते हैं, अर्थात् सबके जानने वाले पूर्णरूप ज-
गत्के अन्तर्य्यामी सूक्ष्मसेभी सूक्ष्मसबकर्म फलोंके विभाग करनेवालेध्यान
से अगम्य सूर्य्य के समान प्रकाशमान अर्थात् सब जगत्के प्रकाशक अ-
विद्या से रहित को स्मरण करै, अब उपासना के फलको कहते हैं—शरीर
त्यागने के समय मनकी दृढ़ता पूर्वक योगबल से अथवा वासुदेव भगवा-
न्की भक्तिमें प्रवृत्तहोके दोनों भृकुटियों में प्राणको चढ़ाकर उस हिरण्यगर्भ-
नाम दिव्य परमपुरुषको पाताहै अर्थात् उसके सन्मुख पहुँचता है जिस-
प्रणव अक्षर को वेदज्ञ लोग कहते हैंऔर जिसमें वैरागी यतीलोग प्रवेशक-
रते हैं अर्थात् उसकी शरण लेतेहैं अथवा जैसे कि समुद्र में नदियां प्रवेश
करती हैं उसी प्रकार यह सब लोग इसमें प्रवेश करते हैं और जिसको इ-
च्छा करते हुए ब्रह्मचर्य्य को कहतेहैं उसपदको तुझसे ब्योरे समेत कहताहूं
सब इन्द्री रूपद्वारों को अपने स्वाधीन करके मनको हृदयमें रोक कर अपने
प्राण को सुषुम्ना नदीके मार्ग से मस्तक में धारण करके योग शास्त्र की
लिखीहुई धारणामें अच्छी रीतिसे नियत होकर, ओम् इस एकअक्षरब्रह्मको
कहता और मुझको स्मरण करता हुआ देहको त्यागकर जो जाता है वह
ब्रह्म लोक की प्राप्तिके द्वारा मोक्ष रूप परमगतिको पाता है जो अनन्य बुद्धि
है वह सदैव मेराही स्मरण और कीर्त्तन करताहै हे अर्जुन उस योग्य अहार
विहार और यम नियम आदि में प्रवृत्त योगीको मैं बड़ा सुलभहूं अर्थात्
शीघ्रहीप्राप्त होताहूं मुझको पाकर दुःखके आलय विनाशवान् पुनर्जन्मको
नहीं पाता है क्योंकि वह महात्मा मोक्षरूप महासिद्धीको प्राप्तहै, हे अर्जुन
ब्रह्मलोक से लेकर सब संसारी लोक इस पृथ्वीपर फिर लौटकर आने वाले
हैं और मुझको प्राप्तहोकर पुनर्जन्म नहीं होताहै अर्थात् जो योगी परमेश्वर

की उपासनाके द्वारा ब्रह्मलोक को गये वह ब्रह्माजी के साथ मुक्त होते हैं और जो पंचयज्ञ आदि विद्याके द्वारा ब्रह्मलोक को गये वह लौट आते हैं अबलौटने के समयको प्रकट करते हैं जिन लोगोंने चारों युगोंकी हजार चौकड़ीका ब्रह्मा जीका एकदिन जाना है और इतनीही रात्रिभी मानी है वह दिनरात्रिके जाननेवाले प्रसिद्धहैं दिनके होतेही सब प्रत्यक्ष पदार्थस्वप्न दशारूप अव्यक्त से बिदित होते हैं औररात्रिआनेपर उसी अव्यक्त नाम में सब अत्यन्त लयहोजाते हैं, हे अर्जुन वही यह सृष्टि समूह बारंबार प्रकट होकर रात्रिके आवने पर अविद्या और कर्म फलके स्वाधीन होकर लयहोजाता है और दिनके आवने पर प्रकट होजाता है, अब उस परब्रह्मको कहतेहैं जिसको पाकर फिर आवागमन से छूटताहै उस अव्यक्त से अन्य सत्तावान् अरूप उपाधि रहित नित्य एकरूप जो सब संसारके नाशहोने पर नाशनहीं होताहै अर्थात् तीनोंकाल में अविनाशी होकर नियत है वहगुप्त अविनाशी कहाजाताहै और कैवल्य मोक्षरूप परमगतिभी कहाताहै जिसको कि पाकर फिर नहीं लौटकर आतेहैं वही मेरी ब्रह्मज्योति है, इस प्रकार शुद्ध ब्रह्म को कहकर अब उत्पत्तिके हेतु और उपासना के योग्य सगुण ब्रह्म को कहतेहैं,हे अर्जुन अनन्य भक्तीसे जो पानेके योग्यहै वह शुद्ध ब्रह्मसे दूसरा पुरुष है उसमेंभी सब जीवमात्र ऐसे नियत हैं जैसे बीज में वृक्षनियतहोताहै इसी प्रकार इसमें सब जगत् व्याप्तहै २२ हे भरतर्षभ कर्मयोगी जिससमय शरीरको त्याग करके चले हुये अनावृत्ति अर्थात् लौटकर न आना और आवृत्ति अर्थात् आवागमन को पातेहैं उस समयको बर्णन करताहूं किरणों का अभिमानी देवता अग्नि ज्योति और दिनका अभिमानी देवता दिन शुक्ल पक्षका देवता और छःमहीने तक उत्तरायणका देवता इन चारों के उदय प्रताप में ब्रह्मकी उपासना करनेवाले पुरुष शरीरको त्यागकरके ऊपर को जाकर ब्रह्मलोक को पाते हैं अर्थात् ब्रह्मलोकमें पहुँचकर ब्रह्माजी के साथ मुक्तहोतेहैं, जिनकर्म योगियोंका योगपक्का नहींहुआ उनकेमार्ग को कहतेहैं अर्थात् जब धूमरात्रि कृष्णपक्ष छः महीने दक्षिणायन इनचारों के देवताओं के उदय में योगी चान्द्रमासि ज्योति अर्थात् स्वर्गको पाकर फिर लौट आताहै, संसारकी यह शुक्ल और कृष्ण नामगति प्राचीन मानी गई हैं एकसे तो अनावृत्ति अर्थात् लौटकर न आना और दूसरी से आवृत्ति अर्थात लौट आताहै, हे अर्जुन इन दोनों मार्गों को जानता हुआ कोई ज्ञान योगी नहीं भूलताहै अर्थात् योगमें थोड़ा उपाय नहीं करता किन्तु अत्यन्त उपाय करताहै, इस कारण हे अर्जुन सदैव योग में प्रवृत्तहो, फिर श्रद्धा बढ़ाने के लिये योगकी प्रशंसा करताहूं--वेदोंमें यज्ञोंमें दानोंमें शास्त्रा-

नुसार जो पुण्य फल कहागयाहै उस सब पुण्यफलको योगी उल्लंघन करके इस विषयका ज्ञाताहोकर ब्रह्मलोकको जाकर स्वयंसिद्ध श्रेष्ठस्थानकोपाताहै २८

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवत्अर्जुनसंवादेअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले कि मैं इस अत्यन्त गुप्त रखने के योग्य ज्ञान को अपने विज्ञानके द्वारा तुझ अनसूया रहित से वर्णन करता हूं जिसके जानने से तू इस अशुभ संसार से मुक्त होगा, यह विद्याओंका और गुप्त देवताओं का राजा महाउत्तम पवित्र कर्त्ता अपरोक्ष ब्रह्मका प्राप्त करनेवाला धर्म में हितकारी अनुष्ठान करने में सुखरूप और अविनाशी है, हे शत्रुओं के संतप्त करने वाले अर्जुन इस ज्ञानधर्म के श्रद्धा न रखनेवाले पुरुष मुझको अप्राप्त होकर जन्म मृत्युरूपी संसार मार्ग में घूमाकरतेहैं, इस प्रकार से सन्मुखकरके कहने के योग्य वचनों को कहते हैं —मुझबुद्धि से परे सच्चिदानंद रूप सगुण रूपधारी से भिन्न परमात्मा से यह सब जगत् व्याप्तहै जैसे कि रस्सी में सर्पकी भ्रान्ति होतीहै उसीप्रकार मुझ परमात्मा में यह सब स्थावर जंगम जीव नियत हैं परन्तु मैं उनमें नियत नहींहूं जैसे कि घटादिकों में मृत्तिका नियत नहीं है किन्तु घटादि रूप मृत्तिकामें नियतहैं, जीवमुझ एकाकी में नियत नहीं है जीवोंके साथमेरे योगको अथवा ईश्वरता संबन्ध रखनेवाले को देख कि जो मेरा परमानन्द रूप आत्मा अपने आनन्द से जीवों की वृद्धि करने वाला और धारण करनेवालाहै परन्तु आप उनजीवों में नियत नहींहै,--ऊपरके दो श्लोकों में ब्रह्मको उपाधि से रहित वर्णन किया अब जीव ब्रह्मकी एकताको कहतेहैं जैसे कि सूत्रात्मा महान् वायु सर्वत्र वर्त्तमान होकर अपने उत्पत्तिस्थान आकाश में सदैव नियतहै इसी प्रकार चैतन्यरूप सब प्राणी मुझमें नियतहैं अर्थात् मुझसे पृथक् नहींहैं ऐसा तू समझ, जो उपाधि रहित ब्रह्ममें लय होनेका भावहै तो उपाधिकी कौनदशाहै इसशंकाको निवृत्तकरतेहैं--कल्पके अन्तमें सब जड़ चैतन्य शरीर मुझ मायोपहित ईश्वर की प्रकृति में प्रवेश करतेहैं मैं मायादि का कारणरूप आत्माकल्प के प्रारंभ में फिर उनको अनेक प्रकारके रूपों से उत्पन्न करताहूं माया के विनाकर्तृत्व भान न होनेसे अविद्या लक्षण वाली अपनी प्रकृति के आश्रय में होकरमैं इस सम्पूर्ण देह समूहों को बारम्बार नानाप्रकारका बनाकर उत्पन्न करताहूं वह देह समूह स्वभावके आधीन होनेसे अस्वतन्त्रहै अर्थात् अवशहै, हे अर्जुन वह कर्म मुझ उदासीन रूप कर्मफल की इच्छा न रखने वाले को बंधन में नहीं डालसक्ते हैं जैसे कि बादलको किसी बीजसे प्रीति किसी से

शत्रुताआदि नहीं है सबके ऊपर समान बृष्टिकरताहै उनमें कोई फलवान्होता है कोई नहीं भी होताहै यही संबंध जीवोंको ईश्वरसेहै, हे अर्जुन मुझअध्यक्ष रूप के कारणसे प्रकृति सबजड़ चैतन्यों समेत जगत्को उत्पन्न करतीहै इसी कारणसे जगत् जन्मादि दशाओंमें भ्रमताहै अर्थात् चुम्बकीयशक्तिके समान मैं इस संसार को चेष्टादेनेवाला होताहूं, अज्ञानीलोग मेरेउत्तम तत्त्व पदार्थको न जानकर मुझ मनुष्य देहमें नियत होनेवाले का अपमान करतेहैं और मैं जीवधारियोंका महेश्वरहूं, मेरा अपमान करने से वह अज्ञानी निरर्थक आशा और निष्फल ज्ञानी विवेकसे रहित राक्षसी आसुरी चित्त अर्थात् रजोगुण तमोगुण प्रधान स्वभावों में आश्रय लेनेवाले हैं १२ परन्तु जो बड़े उदारचित्त दैवी स्वभाव सतोगुण में आश्रय लगानेवाले हैं वह पुरुष मुझको सब संसार का आदि अविनाशी जानकर एकाग्र चित्तसे मेरा भजन करते हैं, अब भजन के स्वरूप को बर्णन करते हैं, वह शान्तचित्त दृढ़व्रत जितेन्द्री शम दम आदि में उपाय करनेवाले सदैव मुझी में बुद्धिसे तदाकार होकर मेरा कीर्त्तन करनेवाले नमस्कार पूर्व्वक बड़ी भक्ति से मेरी उपासना करते हैं, और कोई२ निर्विकल्प समाधिरूप ज्ञान यज्ञ करने से भी मुझको पूजतेहुए उपासना करते हैं कोई मुझको अपने शरीर से एकही जानकर कोई पृथक् मानकर अर्थात् अपना स्वामी मानकर और कोई मुझको अनेक रूपवाला विश्वतोमुख अर्थात् जो दीखा सो भगवत् रूप जो सुना वह उसी का नाम जो दिया अथवा भोजन किया वह उसी के अर्पण है इस रीतिसे उपासना करतेहैं, उसका यह ब्योराहै–मैंहीं संकल्प देवता ध्यान रूप क्रतुहूं मैंहीं सबप्रकार का यज्ञहूं मैंहीं स्वधारूप पितरों का अन्नहूं मैंहीं औषधीहूं और जिसके द्वारा दानादिक दियेजाते हैं वह मन्त्र भी मैंहीं हूं मैंहीं हव्य मैंहीं अग्नि मैंहीं हवनकरने की क्रियाहूं इन कारणों से मेरी विश्वतोमुख उपासना अत्यन्त योग्य है, मैंहीं जगत् का पिता माता धाता अर्थात् कर्म फल का उत्पन्न करनेवाला पितामह ज्ञेय और पवित्र करने वाला तप इत्यादि हूं मैंहीं ओंकार और चारों वेदहूं मैंहीं गतिहूं, मैंहीं कर्म फल का देनेवाला पोषण करनेवाला अन्तर्य्यामी साक्षी निवास स्थानरूप प्रभु यजमान आदि रक्षक प्रतीकार रहित परोपकारी (उत्पत्ति और लय का स्थान) कर्म फल अर्पण करनेका स्थान संसार का बीजरूप अविनाशीहूं, मैंहीं सूर्य्य रूप होकर संसारको तपाताहूं और आठ महीने तक अपनी किरणोंसे वर्षाको ग्रहणकरताहूं और वर्षाऋतुमें अपनी किरणों सेही जलबरसाताहूं, हे अर्जुन मैंहीं जीवन मरण और साधु असाधु हूं, परन्तु जो पुरुष किसी प्रकारकी उपासना नहीं करते केवल कर्मोंही को करते हैं उनका यह वृत्तान्त है–ऋग् यजु सामवेद रूप विद्यावाले यज्ञोंमें सोम-

पान करनेवाले निष्पाप पुरुष यज्ञों से मेरा पूजन करतेहुए स्वर्गगतिको चाहते हैं वह पवित्रात्मा इन्द्रलोकमें जाकर स्वर्गमें देवताओं के दिव्य भोगोंको भोगते हैं, उस बड़ेभारी स्वर्ग के भोगोंको भोगकर कर्म फल समाप्त होजाने पर वह फिर इसी मर्त्यलोकमें आते हैं इस प्रकारसे वेदोक्त सफल कर्मों के द्वारा विषयों के चाहनेवाले पुरुष आवागमनको पाते हैं, कर्म फल की दशा को कहकर अब भजन के फल को कहते हैं–जो पुरुष इस रीति से चिंतवन करते हैं कि मैंहीं भगवान् वासुदेवजी की उपासना के योग्यहूं दूसरा नहीं है ऐसी एकत्वता के द्वारा मेरी उपासना करते हैं उन सदैव योग की उपासना करनेवाले भक्तों के स्थान भोजनाच्छादन की मैं आप रक्षा करताहूं, और जो अन्य देवताओं के भक्त हैं और उनका पूजन करते हैं हे अर्जुन वह पुरुष भी बुद्धि के विपरीत मुझीको पूजते हैं, क्योंकि मैंहीं सब देवताओं के रूप से सब यज्ञों का भोक्ता फल का देनेवाला प्रभु हूं परन्तु मुझको मुख्यता के साथ अच्छी रीति से नहीं जानते हैं इस हेतुसे वह फिर गिरते हैं अर्थात् ज्ञान निष्ठा को न पाकर संसाररूपी कूप में गिरते हैं, देवताओं के उपासक देवताओंको और पितरों के उपासक पितरोंको पाते हैं और भूत प्रेतादि के उपासक भूत प्रेतोंको प्राप्त होते हैं, और एक अविनाशी के पूजनेवाले मुझीको पाते हैं, मेरी भक्ति बड़ी सुगम है और अन्य देवताओं की भक्ती में बहुतसा धन खर्च होता है इस शंकाको कहते हैं–जो भक्तिपूर्व्वक पत्र फूल फल और जल भी मुझको देता है उस शुद्ध अन्तःकरणके दिये हुएको मैं भोजन करता हूं, इस कारण जो कुछ काम करे उसको मेरे अर्पण कर अर्थात् मन वाणी देहसे जो कुछ कियाजाय उसमें यही ध्यानकरे कि उसीका नाम लेता हूं जो कुछ खाता है वा हवन करता है वा दान करता है वा तप करता है हे अर्जुन उसको मेरे ही अर्पण करे----अब उस कर्म्म के फल को कहते हैं---- इसप्रकार से शुभाशुभ कर्म फलों के बंधनों से छूटेगा उसकर्म फलकेत्याग रूप संन्यास योगसे सावधान चित्त कर्म बंधनोंसे अत्यन्त छुटाहुआ वह पुरुष मुझपरमात्मा को पावेगा, मैं सबजीवोंमें बराबर हूं न मेराकोई मित्र है न शत्रुहै परन्तु जो भक्तीके साथ मुझको भजतेहैं वह मुझीमें हैं--और मैं उनमेंहूं अर्थात् मुझमें और उनमें कोई भेद नहीं है क्योंकि ज्ञानीतो मेरा ही आत्माहै जैसे कि अग्नि शत्रुता और मित्रतासे रहितहै परन्तु जोउसके पास नियत होताहै उसीका शीतनिवृत्त होता है दूसरे का नहीं निवृत्तहोताहै इसी प्रकार भगवत् की शरण में जानेवाले भक्तोंका कर्म बंधन नाश होजाता है- अब भक्ती के माहात्म्यको कहतेहैं--जो अत्यन्त दुराचारी भी है और मेरे सिवाय दूसरे में मनका नहीं लगाने वाला है और मुझीको भज-

ता है उसको साधु समझना चाहिये क्योंकि वह दृढ़ निश्चय करने वाला है, वह पुरुष शीघ्रही धर्मात्मा होताहै और सदैव मोक्ष रूपगति को पाता है हे अर्जुन तू मेरी आज्ञासे प्रण करके इस बातको दृढ़जानले कि मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता हेतात यह बात प्रकट है कि जो स्त्री वैश्य शूद्र भी पापात्मा होयं वह भी मेरी शरण को लेकर मोक्ष रूप परमगतिको पाते हैं तो क्या पवित्र ब्राह्मण और राजर्षिलोग मेरे भक्त होकर मोक्षरूप परम गतिको नहीं पावेंगे अर्थात् अवश्य पावेंगे हे अर्जुन इसनाशवान् सुखसे रहित लोकको पाकर तू मुझ को भज क्योंकि अन्य लोकों में भजन नहींहोता है, अब भजन की रीतें बतलातेहैं--अर्थात् मुझमें मनका लगाने वालाहो स्त्रीआदिमें लगाने वाला न हो मेराभक्तहो और मेरेही निमित्त यज्ञ करनेवाला हो स्वर्गादिके लिये न हो मुझीको नमस्कार इत्यादि रीति से योग को करके मुझी उत्पत्ति के स्थानमें भक्ति रखने वाला मुझजगदात्मा परमात्मामेंही ऐसे लय होगा जैसे कि नदियां अपने नाम और स्वरूपों को त्यागकर समुद्रमें लयहोजाती हैं ३४ ॥

इतिश्री महाभारतेभीष्मपर्वणिकृष्णार्जुनसंवादेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले हे महाबाहु तू फिर मेरे इस उत्तम वचन को सुन जो तेरे भलाईके लिये तुझप्रीति मान्‌से कहताहूं कि देवताओंने और महर्षियोंने भी मेरे आकाशादि के उत्पन्न करने के बड़े ऐश्वर्य्य को नहीं जाना है इसकारणसे कि मैं सब देवता और महर्षियोंसे भी प्रथम हूं अर्थात् शरीर की उत्पत्ति के पीछे देवता आदिकोंकी बुद्धि उत्पन्न हुई तो पीछे उत्पन्नहोनेवाली बुद्धिसे पूर्व समय का वृत्तान्त जानना असंभव है, फिर कौन इसको जानता है इसको कहते हैं--जो अज्ञानी नहीं है अर्थात् ज्ञान विज्ञान से पूर्णहै वहमुझ अनादि रूप अजन्मा और सब लोकों के स्वामी को जानता है और वही मरनेवालों में सब पापों से मुक्त होताहै, मेरे महेश्वर होनेसेही मुझसे बुद्धि आदि उत्पन्न होती हैं, इसकोबताते हैं-अन्तःकरणके सूक्ष्म प्रयोजनोंकी जानने वाली [बुद्धि] और आत्मा अनात्मा का जानने वाला [ज्ञान] और जाननेके योग्य प्रयोजन वर्त्तमान होनेपर स्थिर चित्त-और विवेक पूर्वक करनेके योग्य विषय का जाननेवाला [असम्मोह] और घायल आदि होने में चित्त में बिपर्य्यय न होनेवाली [क्षमा] और प्रमाण संयुक्त जानेहुए प्रयोजनको निश्चय कहनेवाला [सत्य] और इन्द्रियोंकाजीतनेवाला [दम] और मन का जीतने वाला [शम] [सुख][दुःख][उत्पत्ति]

[अस्ति] [नास्ति] [भय] [निर्भयता] और जीवोंको दुःख न देना [अहिंसा] और शत्रुमित्र में एक भाव होना [समता] [सन्तोष] [तपस्या] [दान] [यश] [अयश] यह जीवधारियों के बीसोंभाव नाना प्रकारोंके द्वारा मुझही से उत्पन्न होतेहैं इसीकारण हे अर्जुन उत्तम गुणोंकी प्राप्तीकेअर्थ मेरी शरण लेनी योग्य है, सब सृष्टिसे प्रथम भृगु मरीच्यादि महर्षा और सनकादिक ऋषि वा चौदह मनु मुझ हिरण्यगर्भ रूपके मनसे उत्पन्नहुए हैं जिनसे कि यह सब प्रजा और लोक उत्पन्नहुए हैं वह मुझी में मन लगानेवाले हैं, अब उपासना के अधिकारी को कहते हैं--जो वक्ष्यमाण मेरी विभूति और योग को मूल समेत जानते हैं वह निर्विकल्प योग समाधि के द्वारा अचलहोकर निस्संदेह तदाकार होता है, अब दो श्लोकों में उपासना के स्वरूप को वर्णन करते हैं मैं सब संसार की उत्पत्तिका कारण हूं बुद्धि आदि के द्वारा जो कुछ कर्म होता है वह मुझसेही संबंध रखनेवाला होता है ऐसा मानकर ज्ञानीलोग भक्तिसे मुझको भजते हैं, जिनके मनमें मैंहीं वर्त्तमान हूं और जिनकी इन्द्रियां भी मुझी में मग्न हैं वह परस्पर में श्रुतियों और युक्तियों के द्वारा मुझको प्रकट करते हैं और सदैव मुझी को रटते हुए तृप्तीको पाकर मुझी में रमण करते हैं अब उपासना के फलको कहते हैं--उन सदैव उत्साह युक्त प्रीति से भजन करनेवाले महात्माओं को मैं उस बुद्धि योग को देता हूं जिसके द्वारा वह मुझको इसप्रकार से पातेहैं जैसे कि नदियां अपनेनाम और रूपों को त्यागकर समुद्र में प्राप्त होती हैं, उनके ऊपर दया दृष्टि करने के लिये मैं अन्तःकरणवर्त्ती होकर प्रकाशरूप ज्ञानदीपकके द्वारा उनके अज्ञानसे उत्पन्न हुए मोहरूपी अंधकार को दूर करता हूं, अर्जुन बोले हे परब्रह्म परमज्योति पवित्रात्मा शरीररूप पुरियों में वर्त्तमान हृदयाकाश में प्रकट होनेवाले सबके आदिरूप व्यापक अजन्मा श्रीकृष्णजी, आपको सब [ऋषि] [देवर्षि] [नारद] [असित] [देवल] [व्यासजी] इनसब ऋषियों ने तुमको उत्तम २ गुणों से संयुक्त किया और आप अपने श्रीमुख से भी वर्णन करतेहो सो हे केशवजी आपके ऐश्वर्य्य को देवता और दानवों में से कोई नहीं जानता है इसबातको मैं सत्यही मानता हूं, हे जीवों के उत्पन्न करनेवाले ईश्वर देवदेव जगतपति पुरुषोत्तम तुम अपने को आपही जानतेहो, हे भगवन् आप अपनी उन दिव्य विभूतियों को मूल समेत वर्णन कीजिये जिनसे कि आप इन लोकों को व्याप्तकरके नियत रहते हो, हे षड़ैश्वर्य्य के स्वामी मैं अपने चर्म चक्षु से ध्यान करताहुआ आपको कैसे जानूं, अर्थात् नहीं जानसक्ता हेभगवन् आप विश्वरूप के दर्शनका अधिकार होने के लिये आप कौन २ से भावों में मेरे देखने के योग्य हैं, हे जना-

देन आप अपने विश्वरूप योग और ध्यान के योग्य विभूतियों को फिर बिस्तार युक्त बर्णन कीजिये क्योंकि इन मोक्ष साधन युक्त अमृतसे सनेहुए आपके बचनों से मेरी तृप्ति नहीं होती है, श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन बहुत श्रेष्ठ है मैं अपनी उत्तम दिव्य विभूतियों को तुझसे कहताहूं मेरी विभूतियों के बिस्तार का अन्त नहीं है हे निद्राजीतनेवाले अर्जुन मैं व्यापक आत्मा सब जीवों का आश्रय रूप अचलहूं मैं सबका आदि मध्य अन्त अर्थात् उत्पत्ति पालन लयरूप हूं, योग को कहकर अब विभूतियों को कहता हूं अर्थात् अदिती के पुत्रों में बारहवां सूर्य्य अथवा विष्णुका अवतार बामन रूप मैं हूं, अग्नि आदि ज्योतिरूपों में अत्यन्त संतप्त करनेवाली किरणों समेत सूर्य्य मैं हूं, उनचास मरुद्गणों में मरीचि नाम मरुत् मैं हूं, नक्षत्र और तारागणों में चन्द्रमा मैं हूं, मनोहर गानयुक्त वेदों में सामवेद मैं हूं, देवताओं में इन्द्र मैं हूं, इन्द्रियों में मन मैं हूं, जीवों की बुद्धिकी वृत्ति मैं हूं, ग्यारह रुद्रों में शंकर नाम रुद्र मैं हूं, यक्ष राक्षसों में धनाधिप कुवेर मैं हूं, अष्ट वसुओं में अग्नि मैं हूं, शिखर और रत्नधारी पर्व्वतों में सुमेरु नाम उत्तम पर्व्वत मैं हूं और हे अर्जुन पुरोधसों में बृहस्पति मैं हूं, सेनापतियों में स्वामिकार्त्तिक मैं हूं, नदी आदि जलाशयों में समुद्र मैं हूं, महर्षियों में भृगु मैं हूं, बर्णन करनेवाली बाणियों में एक प्रणव नाम ओंकार अक्षर मैं हूं, यज्ञों में जप यज्ञ मैं हूं, हिंसा रहित नियत स्थानों में हिमालय पर्व्वत मैं हूं, सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष मैं हूं, देवर्षियोंमें नारदऋषिमैंहूं, गन्धर्वोंमें चित्ररथ गन्धर्वमैंहूं, सिद्धों में कपिल मुनि मैंहूं, घोड़ोंमें उच्चैश्श्रवामैंहूं, गजेन्द्रोंमें ऐरावतनाम हाथीमैंहूं, मनुष्यों में राजा मैंहूं, आयुधों में वज्र मैंहूं, गौओं में कामधेनुमैंहूं, सन्ततिका उत्पन्नकरने वाला कामदेवमैंहूं, सर्पों में वासुकी सर्प मैंहूं, नागोंमें अनन्त शेषनाग मैंहूं जलजीवों में और जलके स्वामियों में बरुण मैं हूं, पितृगणोंमें अर्य्यमा पितर मैंहूं, दंड देनेवालोंमें यम मैंहूं, दैत्योंमें प्रह्लाद मैंहूं, संख्या करनेवालों में काल मैंहूं, मृगों में मृगेन्द्र अर्थात् सिंहमैं हूं, पक्षियों में गरुड़ मैंहूं, पवित्र करने वालोंमें अथवा शीघ्र गतिवालों में बायु मैंहूं, शस्त्रधारियों में रामचन्द्र वा परशुराम मैं हूं, मत्स्यादिकों में मगर मैं हूं, नदियों में श्रीगंगाजी मैं हूं, हे अर्जुन संपूर्ण संसार का आदि मध्य अन्त मैं हूं, विद्याओं में अध्यात्म विद्या मैंहूं, जल्प वितंडा इत्यादि में सिद्धान्त रूप मैंहूं, सब अक्षरों में अकार अक्षर मैंहूं, गुरू शिष्य अथवा ज्ञानियों के एकत्र बैठनेसे जो प्रयोजन सिद्ध होताहै उसकागुप्त आशय मैंहूं, मैंअविनाशी कालहूं, मैंहीं कर्म फलका देनेवालाहूं, मैं बिश्वतोमुख हूं, अर्थात् सब जीवमात्रों के तृप्तहोने से प्रसन्न और संतुष्ट होताहूं, मैंहीं सबका मारनेवाला मृत्युहूं, प्राप्त होनेवाले कल्याणों में

ऐश्वर्य्य की महत्त्वता और कीर्त्ति मैंहूं, [स्वभाव] [मृदुभाषण] शास्त्र की याद रखनेवाली [मेधा] धैर्यता सन्तोष मैंहूं, सामवेदकी ऋचाओंमें बृहत् नाम ऋचामैंहूं, छन्दों में गायत्री मैंहूं, महीनोंमें मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन में हूं, ऋतुओंमें वसन्त ऋतु मैंहूं, छल करने वालोंमें जुवा मैंहूं, तेजस्वियोंमें तेज मैंहूं, विजय में हूं, निश्चय वा उपाय मैंहूं, सतोगुणी पुरुषों में सतोगुण मैंहूं, यादवों में वासुदेव मैं हूं, पांडवों में अर्जुन मैंहूं, मुनियोंमें व्यासमुनिमैं हूं, कवियों में शुक्र कवि मैंहूं, राजाओं में दण्ड रूप मैं हूं, विजयाभिलाषी पुरुषों में नीति रूपमैंहूं, गुप्त वस्तुओं में मौनता मैंहूं, ज्ञानियों में ज्ञान मैं हूं, हे अर्जुन जो सब जीवधारियों का तेजहै वह मैंहूं, अर्थात् सबमेरीही विभूति हैं हे शत्रुहन्ता अर्जुन मेरी दिव्य विभूतियोंका अन्त नहीं है यह मैंने अपनी असंख्य विभूतियोंका संक्षेप तुमसे वर्णन किया, जो जो प्राणी ऐश्वर्य्यमान् लक्ष्मीवान् शोभावान् और पराक्रम आदिसे भी अत्यन्त युक्त है उसउसको तुम मेरी चैतन्य शक्तिकी अग्निसे उत्पन्न हुआ जानो अब उत्तम अधिकारी के विषय में वर्णन करते हैं—हे अर्जुन इसबहुतसे ज्ञानसे तुम को क्या प्रयोजन है मैं इस संपूर्ण जगत्को अपने एक अंशसे व्याप्त करके नियतहूं अर्थात् मेरेएक अंशमें यह सबसंसारहै ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिभगवत्कृष्णार्जुनसंवादे विभूतिवर्णनोनाम दशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

अर्जुनबोले कि जो आपने मेरेऊपर अनुग्रह करनेकी दृष्टि से अत्यन्त गुप्तरूप और गुप्तही करने योग्य आत्मज्ञानको अर्थात् आत्माअनात्माके विवेकरूप वचनको वर्णन किया उसके द्वारा यह मेरा अविवेकरूपी मोह अत्यन्त दूरहोगया इसके विशेष हे कमलदललोचन मैंने जीवों की उत्पत्ति नाश और आपका महाअविनाशी माहात्म्य भी आपके मुखारविन्दसे सुना, हे ईश्वर जैसा आपने अपनेको कहा आप यथार्थ में वैसेही हैं परन्तु हे भगवन् आपके विराट्रूप देखनेकी मुझको बड़ी अभिलाषा है, हे प्रभु योगेश्वर जो आप ऐसा समझे होयँ कि उस रूपको मैं देखने योग्यहूं तो आप उसअपने अविनाशी आत्माकोमुझे दिखलाइये, श्रीभगवान्बोले हे अर्जुन मेरे सैकड़ों हजारों दिव्य रूप जो नानाप्रकारों से अनेकरंग रूप केहैं उनकोदेख हेभरतवंशी उसीस्वरूपमें [बारहसूर्य्य] [आठवसु] [ग्यारहरुद्र] [दोनोंअश्विनीकुमार [उनचासवायु] इसीप्रकारकी अन्य बहुतसी अद्भुत बातोंको जोतैंने प्रथमकभी नहीं देखीहैं उनको भी देख, हे निद्राजीतनेवाले

अबयहां मेरे शरीरके एकअंशमें वर्त्तमान सब स्थावर जंगमसहित जगत्को और जो २ भूत भविष्य स्थूल सूक्ष्म देखनाचाहताहै उनकोभी देख, परन्तु तू इन चर्म नेत्रोंसे मेरे देखनेकोसमर्थनहीं है तुझे दिव्यनेत्र देताहूं इननेत्रों से ईश्वरता संबंधी मेरे योगकोदेख, संजय बोले कि हे राजा धृतराष्ट्र बड़े योगेश्वर हरिने इस प्रकारसे प्रश्न करनेवाले अर्जुनको अपने ऐश्वर्य्य संबंधी उन दिव्य उत्तम रूपोंको दिखाया जो अनेक मुख नेत्र और अद्भुत दर्शन समेत बहुतसे दिव्याभरण वस्त्र और उत्तम शस्त्रों से अलंकृत सुगन्धित पुष्पमालाओं से शोभित सब ओरको हजारों सूर्य्य के समान देदीप्यमान थे, तदनन्तर अर्जुनने उस देवदेव वासुदेव श्रीकृष्णजी के उस शरीरके भीतर एक अंशमें नियत नानाप्रकारके रूपों समेत संपूर्ण जगत्को देखा, यह देखकर अर्जुन आश्चर्य्य युक्तहुआ और शरीरमें रोमांच खड़े होगये तब उसने हाथ जोड़कर उनको प्रणाम करके यह बचन कहा कि हे प्रकाशमान आपके शरीरमें देवता और चारों प्रकार के सबजीवोंको और कमलासनपर बिराजमान ईश्वर ब्रह्माजीको आदिले सबऋषि मुनि यक्ष राक्षस गन्धर्व किन्नर उरगराजों को भी देखताहूं, हे विश्वरूप अखिलेश्वर आपको सब ओर अनेकरूप भुजा उदर मुखनेत्र कान नाकोंसे शोभित देखताहूं फिर आपका आदिमध्य अन्तभी नहीं देखताहूं और आपको मुकुट गदा चक्र धारण किये तेज समूहों से कठिनतापूर्वक देखने के योग्य चारों ओरसे प्रकाशित अग्नि सूर्य्य के समान देदीप्यमान अप्रमेय देखताहूं, आप अविनाशी शुद्ध ब्रह्मवेदान्त सेही जानने के योग्यहैं आपही इससंसारके कारण ब्रह्महो अर्थात् उत्पत्तिलयकेस्थान हो और प्राचीन धर्मों के रक्षकहो अर्थात् हिरण्यगर्भ रूपहो तुम्हीं को सबने सनातन ब्रह्म पुरुष मानाहै, मैं आपको आदि मध्य अन्तरहित महा पराक्रमी बहुत भुजाधारी चन्द्र सूर्य्य रूपनेत्र युक्तप्रकाशमान अग्निरूप मुख अपने तेजसे इस बिश्वका संतप्त करनेवाला देखताहूं, हे महात्मा स्वर्ग पृथ्वी और इन दोनों के मध्यवर्ती आकाश दिशा बिदिशाओंकोभी मैं तुम्ही अकेले से व्याप्त रूप देखताहूं इस तेरेअद्भुत भयकारी रूपको देखकर तीनों लोक भयभीतहोतेहैं, यह दुर्य्योधनादि असुरवत्समूह मरनेकेनिमित्त आपके भीतर ऐसे प्रवेश करतेहैं जैसे कि पतंगोंके समूह दीपकमें भस्महोनेको प्रवेश करतेहैं, आपको कोई तो भयभीत होकर स्तुति करते हैं और महर्षि सिद्ध गणलोग कल्याण शब्दकहकर स्तोत्रादिकोंसे आपकी स्तुतिकरतेहैं, ग्यारहरुद्र बारहसूर्य्य आठबसु और साध्यविश्वेदेवा दोनों अश्विनीकुमार उनचासमरुत और उष्णभोजी पितरादि यक्षगंधर्व असुरसिद्धगण यहसब आश्चर्यित होकर आपको देखतेहैं, हे महाबाहु बहुभुज जंघा चरण पीठकराल

दंष्ट्रायुक्त महारूपधारी आपकेरूपकोदेखकर सबलोक पीड़ामानहैं और मैंभी पीड़ामानहूं, हे सर्वव्यापी आपको आकाश में व्यापक प्रकाशमान अनेक वर्णोंसे शोभित दिशाओंमें विस्तृत प्रकाशमान नेत्रवालादेखकर अन्तःकरणसे अत्यन्तपीड़ामान होकरमुझे धैर्य्यता नहीं होती है हे देवेश्वर कालाग्निके समान आपके मुख और कठिन दंष्ट्राओं को देखकर मारे भयके किसी दिशाकोभी नहीं पहिंचानता महादुःखीहूं, हे विश्वरूप प्रसन्नहोकर सुख दीजिये, यहसब धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि पुत्र सबसाथी राजाओंसमेत आपके शरीरमें प्रवेशकरतेहैं और इसीप्रकारभीष्म द्रोणाचार्य्य सूतकापुत्रकर्णभी हमारे उत्तम २ योधाओं समेत इत्यादि अनेक शीघ्रता करने वाले आप के मुखोंमें प्रवेश करतेहैं जो मुख तीक्ष्ण दंष्ट्रा और भयानक रूपकेहैं उनमेंकोई तो दांतोंमें चिपटे हुये ऐसे दिखाई देतेहैं जिनके शिर चूर्ण होगये हैं तात्पर्य्य यहहै कि जिस मुखसे अग्नि ब्राह्मण और वेद निकलेहैं उस मुखमें भीष्मादि भगवद्भक्तोंका प्रवेश होना कहाहै और दुर्योधनादि पापियोंका दूसरेअंगोंमें प्रविष्ट होना कहाहै जैसे कि नदियोंके जलोंके अनेक समूह वेगसे समुद्रकी ओर दौड़तेहैं इसीप्रकार यह नरलोकके वीर पुरुष सब ओरसे आपके अग्नि मुखोंकीकिरणोंमें प्रवेशकरतेहैं, जैसे कि अत्यन्त शीघ्रगामी पतंग अपनेनाशके लिये बड़ी प्रकाशमान अग्नियोंमेंदौड़कर गिरतेहैं इसीप्रकार बड़े वेगवाले लोक अपनेनाशके निमित्त आपके मुखोंमें प्रवेश करतेहैं, आप सबलोकोंको अपने अग्नियुक्त मुखोंमें निगलतेहुये अत्यन्त स्वादुकोलेतेहो हे विष्णु व्यापक आपका भयानक प्रकाश अपने तेजोंसे सब संसारकोचारों ओर पूर्णकरके अत्यन्त संतप्तकरताहै ऐसे भयानक रूपवाले आपकौनहैं यह मुझे समझाइये हे देव आपको नमस्कार है आप प्रसन्न हूजिये मैं आपको सबका आदि कर्त्ता जानता हूं और आपकी चेष्टाओंको नहीं जानताहूं, श्रीभगवान बोले हे अर्जुन मैं लोकोंका नाश करने वाला महाकाल नाम परमेश्वर हूं इस युद्धमें लोगों के भक्षण करने को प्रवृत्तहूं जो योधा लोग कि शत्रु की सेना में नियत हैं वहतेरे सिवाय नहीं रहैंगे अर्थात् मारेजायँगे, इसकारण तू युद्धमें खड़ा होकर यशका भागी हो और शत्रुओंको मार धन और राज्य से पूर्ण होकर वृद्धि युक्त राज्य को भोग हे सव्यसाची अर्थात् बायें हाथ से भी बाण प्रहार करने वाले अर्जुन यह सब जो तू देखरहा है वह प्रथमही मुझसे मारे गये हैं तू केवल इनके मारने में कारणही रूप होगा, तू मुझसे मारेहुये द्रोणाचार्य भीष्म जयद्रथ कर्ण को और इसीप्रकार अन्य२ उत्तमवीरों को भी मारडाल दुखी मतहो युद्धको कर तू युद्ध में शत्रुओं को विजय करेगा, संजय बोले कि हे धृतराष्ट्र मुकुटधारी अर्जुन

केशवजीके इनबचनोंको सुनकर कांपताहुआ हाथजोड़ अत्यन्त भयभीतहुआ और अत्यन्तझुककर नमस्कारपूर्व्वक फिर गद्गदकण्ठसे श्रीकृष्णजीसेबोला, हे हृषीकेश अन्तर्यामी तुम्हारा नामलेनेसे सबसंसार अत्यन्तप्रसन्नहोता है और प्रीतिकरताहै और तुम्हारी कीर्ति होनेसे राक्षसलोग महाभयभीत होकर इधर उधरको भागतेहैं और सबसिद्धलोगोंके समूह नमस्कार करतेहैं, आशय यहहै किआठ अक्षरके सुदर्शनअस्त्र मंत्रसे सम्पुटमन्त्रराक्षसोंसेभी अभयका देनेवाला है हे महात्मा ब्रह्माजीके भी पितारूप आपको वह लोग क्यों नहीं नमस्कार करें हैं अर्थात् अवश्य करें हैं क्योंकि हे अनन्त देवेश्वर हे जगत् के उत्पत्ति स्थान अविनाशी कार्य्यकारण से रहित आदि देव सर्व शरीर वर्ती पुराण पुरुष संसार के लय स्थान ज्ञानगम्य ज्योतिस्वरूप अनन्ततुम्हीं से सब जगत् व्याप्तहै, आपही वायु, यम, अग्नि, बरुण, चन्द्रमा, प्रजापति, ब्रह्मादि देवताओं के पिताहो आपके अर्थ बारम्बार नमस्कार है हे सर्वरूप हे महापराक्रमी आप अतुल बलहो और अपनी ऐक्यता से सब को व्याप्तकरते हो इस कारण तुम्हीं सर्वरूप होकर कर्मों के प्रारंभ और अन्त हो आप सब प्रकार से नमस्कार करनेके योग्य हैं,आप की महिमाको न जानकर अज्ञान से वा प्रीति से मैंने अपना भाई और मित्र मानकर आपकी महिमा जाननेके निमित्त हे कृष्ण हे यादव हे मित्र इत्यादि शब्दों को जो कहाहै और बिहार शय्या भोजन के समय अकेले में वा मित्रों के सन्मुख भी हास्यके निमित्त असत्कारी जो बचन कहा है हे अविनाशी उन अपराधों को मैं आप से क्षमाकराना चाहताहूं क्योंकि आप अचिन्तमात्र अर्थात् दयावान्‌हैं, तुमइस स्थावर जंगम लोकके स्वामी पूजनीय और गुरूहो आपके समान अप्रमेय प्रभाववाला कोई नहीं है तो तीनोंलोकों में आपसे अधिक कहां से होगा, इस हेतुसे मैं आपको साष्टांग प्रणामकरके स्तुतिके योग्य आपको प्रसन्न करताहूं जैसे कि पिता पुत्रकाअपराधऔर मित्रमित्रका अपराधऔर पति अपनीस्त्रीका अपराध क्षमाकरताहै इसीप्रकार हे देवदेवेश्वर आपमेरे अपराधोंको क्षमाकर ने के योग्यहैं, मैं पूर्वमें नहीं देखेहुए इसरूपको देखकर प्रसन्नहूं परन्तु मेराचित्त मारेभयके पीड़ामानहै हे परमेश्वर आप अपने उसीरूपको मुझेदिखलाइये हे देवदेवजगत्‌के उत्पत्तिस्थान आप बारंबार प्रसन्नहो, हेसहस्रभुजधारी विश्व रूप मैं तुमको मुकुटगदा चक्रहाथों में धारण कियेहुये दर्शन करना चाहता हूं इससे आप अपने चतुर्भुजी रूपका दर्शन दीजिये श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मुझ प्रसन्न रूपने अपनी सामर्थ से यह उत्तम चैतन्य तेजोमय आदि अन्तरहित विश्वरूप दर्शन तुझको दिखलाया इसस्वरूपको तेरे सिवाय किसी दूसरेने कभी न देखाया हे कौरवोंमें बड़े वीर नरलोक में तेरे

सिवाय इस रूपके देखनेको वेद यज्ञ जप दान क्रिया तप व्रतादिकोंसे भी कोई दूसरा पुरुष योग्य नहीं है, मेरेइसप्रकार इस भयानक रूपको देखकर तुझको न पीड़ा होगी न कोई प्रकारका मोह होगा निर्भय और प्रसन्न चित्त होकर फिर उसी पूर्वरूप को देख, संजयबोले हे राजा वासुदेवजी ने इस प्रकार अर्जुनको समझाकर फिर अपने रूपको दिखाया अर्थात् सर्वव्यापी कृष्ण ने सौम्य नररूप होकर इस भयभीत अर्जुनको आश्वासन अर्थात् शान्ती को दिया, अर्जुनबोले हे जनार्दन आपके इस सौम्य नररूपको देखकर अब मैं सचेतहुआ और प्रकृति में स्वस्थताहुई, श्रीभगवान् बोले जो तुमने इसमेरे रूपको देखाहै वह बड़ी कठिनता से दृष्टि आनेवाला है इस रूपके देखने को देवतालोग भी सदैव इच्छा करते हैं, जैसे तुमने मुझको देखा है उस रीतिसे वेद यज्ञ तप दान व्रत आदिके द्वाराभी कोई पुरुष मेरेदर्शन करने को समर्थ नहीं है हे अज्ञानरूप शत्रुओं को संताप देनेवाले अर्जुन इसप्रकारके रूपसे मैं अखण्ड भक्ती के द्वारा दर्शन के योग्यहूं अथवा ध्यानसे देखने और एकयता से प्रवेश करने के योग्यहूं जो मेरे निमित्त कर्म करनेवाला और मुझी को सर्वोत्तम माननेवाला मेरा भक्त सब संग्रहों से पृथक् शरीरी मात्रों में आत्मभाव माननेवाला है वह मुझ शुद्ध ब्रह्मको पाता है, ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवद्विश्वरूपदर्शनंनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

अर्जुनबोले इसप्रकार सदैव सावधान चित्त भक्तलोग सगुणब्रह्मरूप आप को उपासना करते हैं और अक्षर अर्थात् अविनाशी अव्यक्त शुद्ध ब्रह्मको उपासना करते हैं उन दोनों में योगके जाननेवाले कौन हैं, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन जो मुझ सगुण ब्रह्ममें मनको प्रवेशकरके सदैव उपाय करने वाले मेरेभक्त मेरी उपासना करते हैं और श्रद्धावान्हैं उनको मैं युक्ततम मानताहूं, और जो इन्द्रियों को मन समेत स्वाधीन करके अर्थात् आत्मामें लय करके अविनाशी मन बुद्धिसे परे सर्वव्यापी निर्विकार अचलरूपकी उपासना करतेहैं वह दृढ़ बुद्धि सबजीवों के प्यारे हैं और इच्छावान् होकर मुझ निर्गुण ब्रह्मको प्राप्तहोते हैं अर्थात् मुझी में हैं मुझसे जुदेनहीं हैं फिर उनके विषयमें सोपाधित् यह शब्द कब नियत होसक्ताहै, उन निर्गुण ब्रह्ममें चित्तलगानेवालों को अधिकतर दुःखहै क्योंकि निर्गुण पदकी प्राप्ति अभिमानी पुरुषों को कठिनतासे मिलती है और जो सब कर्मोंको मेरेअर्पण करके मुझी को लय स्थान समझके अद्वैत बुद्धिसे मेरेही ध्यानमें प्रवृत्त मन होकर मुझको ध्यानकरते हुए उपासना करते हैं, हे अर्जुन मैं उनमनसे उपासना करने-

वालों को थोड़ेही काल में जन्ममरणरूपी समुद्र से उद्धार करताहूं, मुझ बिश्वरूप ईश्वर में संकल्प बिकल्पात्मक मनको नियत करके मुझी में बुद्धि को लगायेहुए जो पुरुष मेरेही रूपमें निवास करेगा वह निस्संदेह मुझी में ऐक्यता पावेगा, जो तू मुझ बिश्वरूप में मन लगाने को समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन मेरे किसी अवतार की उपासना से मनको दृढ़करके मुझको प्राप्त हो, और जो उस मेरेअवतार की भी उपासना में असमर्थ है तो मेरे श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, चरणसेवन, बंदन, दास्य, सख्यभाव, आत्म निवेदन, इस नवधाभक्ति में प्रवृत्तहो मेरेनिमित्त कर्मोंको करताहुआ चित्तशुद्धीको पावेगा और जो तू मेरी श्रवणादि निष्ठाके भी करने में असमर्थ है तो सब कर्मों के फलों को त्याग कर दे, विचार के अभ्यास से श्रवण मनन इत्यादि ज्ञान श्रेष्ठ है और ज्ञान से श्रवण कीर्त्तनादि ध्यान उत्तम है और ध्यान से कर्म फलों का त्याग करना शुभ है और कर्म फल के त्यागसे पीछे मोक्षरूप शान्ती वा श्रवणादि अभ्यास है उस अभ्यास से उत्पन्न ब्रह्मज्ञान उत्तम है और उस ज्ञान से साक्षात्कार रूपध्यान उत्तम है और उस से कर्म फल त्यागना श्रेष्ठ है,--अब भगवान् निर्गुण ब्रह्मकी उपासना की प्रशंसाकरते हैं जिस से कि साधुओं को उनके गुणों में प्रीति हो शत्रुता रहित सबजीवों का मित्र, दयावान् शरीरादि में निरभिमानी अहंबुद्धिसेरहित अर्थात् अपने को शुद्ध ब्रह्म से ऐक्यता करनेवाला रागद्वेष में समभाव क्षमावान्, यथा लाभ संतोषी, श्रवणादि में सदैव मन लगानेवाला इन्द्रियों समेत देहको स्वाधीन करनेवाला आत्मतत्त्व में दृढ़निश्चय रखनेवाला और मुझ शुद्ध ब्रह्म में मन बुद्धिको लयकरनेवाला जो मेरा भक्त है वह मेराप्याराहै क्योंकि ज्ञानी मेरा आत्मा है, ज्ञानी की दो दशा हैं समाधि और व्युत्थान इनमें से प्रथमदशा में तो उससे लोक नहीं डरताहै और दूसरी दशामें लोक से वह नहीं डरताहै इसीहेतु से प्रसन्नमन असन्तोषता, भय और व्याकुलतासे रहित है वह मेरा प्यारा है, अब दूसरी दशाका वर्णन करते हैं--सुखकी प्राप्तीऔर दुःखके निवृत्तहोने में अनिच्छावान् बाहर भीतर से पवित्र भगवत् भजन आदि में आलस्य रहित (उदासीन) अर्थात् प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा को समान जानने वाला क्लेशरहित सब कर्मों के प्रारम्भों का त्यागनेवाला जो मेराभक्त है वह मेराप्यारा है, जो प्रिय प्राप्तीमें प्रसन्न नहींहोता और अप्रियता में दुखीनहीं होता और प्रियबस्तु के वियोगमें शोचनहीं करता और शुभाशुभ को भी नहीं चाहता हुआ भक्तिमान है वह मेराप्यारा है,जो शत्रुमित्र में औरमाना पमान में अथवा शीतोष्ण सुख दुःखोंमें समानहोकर संगोंका त्यागनेवाला है और निन्दास्तुतिमें तुल्यभाव मौनी संतोषी त्यागी स्थान से रहितहै और

दृढ़बुद्धि से भक्तिमान है वह पुरुष मेराप्यारा है, जो श्रद्धावान् मुझ वासुदेव निर्गुण परमानन्दरूप को अपना लयस्थान जानते हैं और इस अविनाशी मोक्षसाधन को अत्यन्त अनुष्ठान करतेहैं वह मुझको अतिशयप्यारे हैं २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

इस अध्याय में जीव और ब्रह्मकी ऐक्यता वर्णन है ॥

अर्जुन बोले हे केशवजी प्रकृति और पुरुष और क्षेत्र वा क्षेत्रज्ञ औरज्ञान वा ज्ञेय इन सबको मैं जानना चाहताहूं, श्री भगवान् बोले हे अर्जुन यह शरीररूपी क्षेत्रआत्माको अविद्या से आच्छादन करनेवाला विद्या से पारउतारनेवाला कर्मबीज की उत्पत्ति स्थान कहाजाताहै जो इसक्षेत्रको जानताहै क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के जाननेवालोंने आत्मारूप क्षेत्रज्ञ कहाहै हे भरतर्षभ सबक्षेत्रों में मुझीको क्षेत्रज्ञ और रूपजानों अर्थात् मैं परमेश्वरही दोरूप युक्त होगया हूं क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का जो ज्ञान है वह मुझसेही सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञानहै इसको ब्रह्मज्ञानियों ने निश्चय कियाहै, वह क्षेत्र जैसेरूपका है और जैसे प्रकारका है और जिन जिन विकारों से युक्तहै और जिस जिस विकार से जो जो उत्पन्न होता है और जो वह क्षेत्रज्ञ है अथवा जैसे प्रभाववाला है उसको मूलसमेत मैं कहताहूं, जिसको ऋषियों ने अनेकरीतों से गाया और जो अनेक प्रकार के छन्द वेद और मन्त्रोंसे प्रत्येक शाखाओंमें सिद्धकिया गया बहुत निश्चय युक्त हेतुवान् ब्रह्मके जतलानेवाले वेदके भागरूप ब्राह्मणों के वचनों से निश्चय किया हुआ पंचमहाभूत और शब्दादि पंच तन्मात्रा अहंकार महत्तत्त्व बुद्धि यह क्षेत्रका स्वरूप है, और (श्रोत्र) त्वक् चक्षु रसना घ्राण यह पांचज्ञानेन्द्री और वाकपाणि पादलिंग गुदा यह पांच कर्मेन्द्रीमन और आकाशादि पांचस्थूल विषय इन सबको विकारजानों ६ और विकार से उत्पन्न होनेवाली यह वस्तु हैं (इच्छा) (द्वेष सुख दुख)(संघात) अर्थात् आत्मा इन्द्री मनसेप्रवृत्त भोक्ता (चेतना) (धैर्य) यह विकारों सहित क्षेत्रका मिलाहुआ वर्णन हुआ--अब ज्ञानके साधनोंको कहते हैं--अपनी प्रतिष्ठा न चाहना अर्थात् अपनी प्रतिष्ठा के लिये धर्मरूप पाखंड न करना (देह) मन वाणीसे किसीजीव को दुःख न देना (दूसरे की) ओर से अपकार होनेपर चित्तको न बिगाड़ना, (सरल) प्रकृतिहोना (आचारी) की उपासना (भीतर) बाहर से पवित्रता (मोक्ष) साधन की प्रवृत्ती में विघ्नहोने पर भी नियतबुद्धि रहना (देह) इन्द्री और इन्द्रियों के विषय में वैराग्य होना (निरहंकारता) जरा जन्म रोग के दुख

और दोषों को अच्छेप्रकार देखना, (पुत्र) स्त्री और घरोंमें ममता न रखना और उनके (सुख) दुखों में सुखी और दुखी न होना (प्रिय) अप्रियके मिलनेमें सदैव एकभाव रहना, (इष्ट) अनिष्टकी उपपत्तिमें सदैव समचित्त रहना (एकान्त) स्थानमें बैठना (मनुष्योंकी) सभामें प्रीति न करना, (अध्यात्म) शास्त्रजन्य ज्ञान में सदैवनियत रहना (तत्त्वज्ञान) के प्रयोजन को देखना यह ज्ञान अर्थात् ज्ञानका साधन कहा जो इसके विपरीत है वही अज्ञान है, अब क्षेत्रज्ञ को कहते हैं- जो इसज्ञानसे जानने के योग्यहै उसको कहताहूं जिसको जानकर मोक्ष को पाता है आदि रखने वाला जो कार्य्य कारण है उससे श्रेष्ठ जो ब्रह्म है वह न सत् कहाजाता है न असत् कहाजाता है-अब उसके प्रभाव अर्थात् बिश्वरूप लक्षण को कहते हैं—वह सब दिशाओंमें बाहयाभ्यन्तर हाथ पैर नेत्र मुख शिर कान रखनेवाला है और लोकमें सबको व्याप्तकरके नियत है,सब इन्द्री और उन के शब्दादि विषयोंसे पकड़ाहुआ और पकड़नेवालासा विदित होता है परन्तु वास्तव में वह सब इन्द्री और इन्द्रियोंके बिषयों से स्पर्शभी नहीं होता है अर्थात् पवित्ररूप होकर सबसे पृथक्है परन्तु सबका धारण करनेवाला है पकड़े हुये और पकड़नेवालेसे पृथक् होनेके कारण निर्गुण है परन्तु बुद्धि आदिके प्रकाशक होनेसे गुणोंका भोगनेवालासा मालूमहोता है, जीवों के बाहर भीतर आठ प्रकृति और सोलहविकारों का प्रकाशक होनेसे चलायमान सा दिखाईदेता है परन्तु वास्तवमें वह अचलहै और सब उपाधियों के पृथक् होनेसे वह जाननेके योग्य नहींहै क्योंकि अज्ञानियों से परे नियतहै और ज्ञानियोंके सन्मुख वर्त्तमान है, प्राणियों में बहुत रूपवालासा दिखाई देता है परन्तु अनेकरूपतासे रहित ऐसे अनेक दीखता है जैसे कि जल में एक चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब बहुतरूपयुक्त दिखाई देताहै भूतों का धारण करनेवाला है अर्थात जैसे कि चन्द्रमा घट और घटके जलसे दूर है इस रीति से वह दूर नहीं है क्योंकि वह सब भूत उस्से पृथक् नहीं हैं ग्रसित करने वाला वा प्रकट करनेवाला वह क्षेत्रज्ञ जानने के योग्य है अर्थात् जैसे कि अज्ञान दशा में रस्सीही सर्प के भ्रमको उत्पन्न करती है और विज्ञान दशा में सर्प को ग्रसजाती है अर्थात् सर्प का अभाव दिखाती है और उस रस्सी से पृथक् भी नहीं है इसी प्रकार यह सब दृष्ट पदार्थ उस क्षेत्रज्ञ आत्मामें कल्पितहैं,निर्बिकारलक्षणको कहकर अब स्वरूप लक्षणको कहते हैं— वह प्रकाशमानोंमेंभी ज्योतिरूप है, और अज्ञानसे पृथक् कहाजाता है और सब के हृदय में नियत ज्ञानरूप जाननेके योग्य विज्ञान से प्राप्त होनेके योग्यहै यह क्षेत्रज्ञ और ज्ञान अर्थात् ज्ञान का साधन विज्ञान से जानने के

योग्य मिला हुआ क्षेत्रज्ञ वर्णन हुआ इनको जान कर मेरा भक्त मेरेभाव अर्थात् ब्रह्मभाव के योग्य होता है, आठ प्रकार की परा नाम प्रकृति और जीवनाम अपरा प्रकृति रूप पुरुष इन दोनों को आदि अन्त रहित जानों और इच्छा आदि विकार और बुद्धिइन्द्री आदि गुणों को प्रकृति से उत्पन्न जानों, कार्य्य और कारण और इनके सम्बन्धी सुख दुख और मोहरूप गुण इन दोनों कार्य्य कारण के कर्तृत्व में परा नाम प्रकृतिही कारण रूप हैं, और सुख दुःख के भोगने में परा प्रकृति नाम पुरुष कारण कहा जाताहै परा प्रकृति में नियत पुरुषही प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले गुणों को भोगता है उत्तम अनुत्तम योनियों के जन्मों में इस के गुणोंका संगही कारण है, गुण के चारों प्रकारों का वर्णन करते हैं क्षेत्रज्ञ उत्तम पुरुषही इस शरीरके वाहर भीतर का द्रष्टा है अर्थात् आत्मामें उन गुणों के आजानेको न देखताहुआ भी अपने उदासीनरूप से गुणके प्रचार का अद्रष्टा है इसी प्रकार यह हमारा साक्षी और अनुमन्ता है अर्थात् गुणों के भोक्ताहोने और आत्मा के असङ्गहोने पर गुणों को आत्मा में संयुक्त मानता है यह सांख्यवालों का मत है और भर्त्ता है अर्थात् आत्मामें कर्त्तव्य कर्म प्रवेशित करनेसे कर्म फलों का संचय करनेवाला है जैसे कि नैयायिक आदि और भोक्ताहै अर्थात् देह इन्द्री मन आदि रूप गुणोंके समूह को आत्मा रूप देखता हुआ भी भोक्ता होता है जैसे कि चारवाक मतवाले आदि अब चारोंगुणोंका वर्णनहोचुका वा महेश्वर है अर्थात् जब गुणों को स्वाधीन करके क्रीड़ा करताहै तब उसकोमहेश्वर कहतेहैं और जो उत्पत्ति पालन नाश का करने वाला प्रभु जगत् का अन्तर्य्यामी है वही गुणों को छोड़कर नियत परमात्मा कहा जाता है आशय यह है कि अनुमन्ता भर्त्ताभोक्ता इनतीन रूपोंसे बंधनको पाता है और आप द्रष्टा महेश्वर परमात्मा इन तीनों रूपों से सदैव मुक्त है, जो इस रीति से पुरुष को और गुणयुक्त प्रकृतिको जानता है वह कर्मों में कैसाही प्रवृत्त होय तौभी फिर जन्मनहीं लेताहै अर्थात् मुक्तहो जाताहै, कोईकोईतो शरीर में बुद्धि और ध्यानके द्वारा परमात्माको देखतेहैं और कोई सांख्य मतवाले योग अर्थात् ब्रह्मज्ञानसे और कोई कर्मयोगीपुरुषकर्म फलको ईश्वरके अर्पण करनेसे परमेश्वरको देखते हैं और कितनेही पुरुष इस प्रकारको न जानकर दूसरे आचार्य्योंसेसुनकर अथवा ब्रह्मको अपरोक्ष करके उपासना करतेहैं वह गुरुसे सुनेहुयेउपदेशमें पूर्ण विश्वास रखनेवालेभी संसारको अवश्यतरतेहैं, जितनेजड़ चैतन्यजीव उत्पन्नहोते हैं हे भरतर्षभ उनका पैदाहोना क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के योगसे जानो अर्थात् जो क्षेत्रज्ञ आत्मा अपनेको क्षेत्रसे इसप्रकार पृथक् जाने जैसे कि रस्सीसे पृथक् सर्पके भ्रमकी फिर उत्पत्ति नहीं होती,

जो सब सृष्टिमें सदैव नियत और रस्सीमें सर्पकी भ्रान्तिके समान नाशहोने वालोंमें नाश न होने वाले परमेश्वरको देखताहै वही देखने वाला है, अब दर्शनके फलको कहतेहैं-अपने शरीरके समान सब शरीरोंमें अच्छे प्रकारसे नियत ईश्वरको समानता पूर्व्वक देखता हुआ शरीरादिक के सम्बंध हेतुसे आत्मारूप ईश्वरको पीड़ानहीं देताहै वहभी अन्तमें मोक्षको पाता है अथवा आत्माको अद्वितीय देखने से अपनी आत्माके सदृश दूसरे को भी दयालु होकर आश्रय देताहै वह पुरुषभी मोक्षको पाताहै, जो मन बाणी देह से प्रारंभहुये कर्मोंको प्रकृति से अर्थात् मायासे किया हुआ देखता है और इसी प्रकार आत्माको अकर्ता देखताहै वह आत्माको सब स्थानोंमें समान देखताहै ३० किसरीति से प्रकृतिको कर्तृत्व है और आत्माको नहीं है इस शंकाको कहते हैं जब आकाशादि पंचभूतोंको और चारोंखानके अनेक प्रकार वाले जीवोंको रस्सी में सर्प और सुवर्ण में कुंडल आदिके समान एक आत्मामें लयहोता हुआ देखता है और उसी एक आत्मासे विस्तार को देखता है तब ब्रह्मको प्राप्तहोताहै अर्थात् ब्रह्मही होजाता है तात्पर्य्य यह है कि द्वैतमें कर्त्तापनहै और एकतामें नहीं है, हे अर्जुन यह अविनाशी परमात्मा आदि रहित और गुणोंसे पृथक् होनेसे शरीरमें बर्त्तमान होकरभी कर्मनहीं करताहै और न लिप्त होताहै, जैसे कि सर्वव्यापी आकाश असंग स्वभावसे लिप्त नहीं होताहै इसी प्रकार देहके भीतर सर्वत्र नियत आत्माभी लिप्तनहीं होताहै, हे भरतबंशी जैसे कि सूर्य्य इस संपूर्ण लोकको प्रकाशित करताहै उसी प्रकार क्षेत्रज्ञ आत्मा नानाप्रकारका रूप धारण करने वाले क्षेत्ररूपशरीरको प्रकाशित करताहै, जिन्होंने इसप्रकारसे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके भेदको जानकर ज्ञानरूप नेत्रकेद्वारा अथवा आकाशादि भूतोंकी मूलरूप जो त्रिगुणात्मिका अविद्या है उसके विद्यारूपसे मोक्ष को जाना है वह मोक्ष कोपाते हैं ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सुक्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागो नामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन अब मैं आकाशादि भूत और अंडजादि चारों प्रकारके जीवोंकी उत्पन्न करने वाली प्रकृति क्या है वह प्रकृति किसके आश्रय से भूतोंको उत्पन्न करती है और कैसे बंधन होता वा कैसे उस बंधनसे मोक्ष होतीहै और मुक्त लोगोंका कौन लक्षणहै इनसब बातों को प्रकट करता हूं इसके पीछे महाउत्तम ज्ञानको कहूंगा जिसको जानकर सबमुक्त लोगों ने इस संसार से पृथक् होकर मोक्षरूपा महासिद्धी को पाया है

जिन्होंने इसज्ञानको आश्रयकरके मुझ ईश्वरकीसाधर्मी अर्थात् सर्वात्मा सर्व-यन्तासर्वभाव में नियतता आदि भावोंको पायाहै वह सृष्टिके उत्पत्ति काल में भी उत्पन्न नहीं होते हैं और प्रलय में भी कालाग्नि से पीड़ित नहीं होते हैं, वह भूतप्रकृति कौन है और किसके आश्रयसे उत्पत्ति को करतीहै इसको सुनो कि मुझशुद्ध चिन्मात्र की योनि अर्थात् प्रवेश होनेका स्थान महत्तत्त्व की आदिभूतामाया है उसमें अपने प्रतिबिम्ब रूप गर्भको मैं धारण करता हूं हे भरतवंशी उसीसे सब महत्तत्त्वादि और हिरण्यगर्भादि भूतों की उत्पत्ति होती है, हे अर्जुन सब योनियों में जो देव मनुष्य पशु पक्षी आदिके शरीर उत्पन्न होते हैं उनकी योनिरूपमाता मायाहै और मैं प्रतिबिम्ब रूप वीर्य्य का देनेवाला पिताहूं इसप्रकार माया ईश्वर के आश्रय से सृष्टि को उत्पन्न करती है, हे महाबाहु यह सत्त्व रज तम तीनोंगुण उसमाया से उत्पन्न हुयेहैं वह गुण रूपान्तर दशा रहित आत्मा कोभी देहमें बन्धन करते हैं,यहां कौन गुण किससंग से बन्धन करता है इसको सुनो कि हे निष्पाप अर्जुन उनगुणों में सतोगुणकी निर्मलता होनेसे तो सबका प्रकाश करनेवाला होता है और रजोगुण तमोगुण में लिप्तनहीं होता वह सतोगुण सुख और ज्ञानके संगसे बन्धन करताहै अर्थात् जब यह कहै कि मैं सुखीहूं व ज्ञानीहूं तबबंधन है, और तृष्णा और संगसे उत्पन्न रजोगुण को राग स्वरूप जानो हे अर्जुन वह रजोगुण अभिमानी शरीर को कर्मोंके कर्म फलकी इच्छा से बन्धन करता है, और सब अभिमानी शरीरोंको मोह करने वाले तमोगुण को अज्ञान रूपमाया की आवरण शक्ति से उत्पन्न जानो हे भरतवंशी वह तमोगुण (प्रमाद) (आलस्य) (निद्रा) इत्यादि बातोंसे बन्धन करता है यहप्रमाद सतोगुण के कर्म करने को बाधाकरता है और आलस्य रजोगुण के कर्मको निषेध करता है और निद्रा निर्भयताके कर्मों को निषेधकरती है, हे अर्जुन सतोगुण सुख में प्रवृत्त करताहै रजोगुण कर्म में और तमोगुण ज्ञानको ढककर प्रमाद में लगाताहै, यह सतोगुण आदि तीनों गुण कब अपने २ कामों में प्रवृत्त होते हैं हे भरतवंशी रजोगुण और तमोगुण को स्वाधीन करने से सतोगुण की वृद्धि होती है और सतोगुण तमोगुण को शांत करने से रजोगुण की वृद्धि होतीहै और सतोगुण रजोगुण को आधीन करनेसे तमोगुण वृद्धि पाता है, अब गुणोंके प्रकट होने से चिह्नों को कहते हैं-जब इस देह के भीतर बाह्याभ्यन्तरकी इन्द्रियरूपद्वारों में प्रकाशरूपज्ञान और सुख उत्पन्न होता है तब सतोगुण की वृद्धि जानो और हे अर्जुन जब रजोगुणकी वृद्धि होनेपर (लोभ) कर्म्म फलकी इच्छासे अग्निहोत्रादि करनेमें (प्रवृत्ति) और स्थान के बनाने आदि का (प्रारम्भ) अच्छे बुरे कर्मोंमें (अशान्ती)

दूसरे के धनमें इच्छा करना इत्यादि सबबातें उत्पन्न होतीहैं और तमोगुण की अतिशय वृद्धि होनेपर सतोगुणी कर्मकी अप्रकाशता और परमेश्वर के निमित्त अग्निहोत्रादि कर्मोंका न करना योग्यायोग्य विचार रहित (प्रमाद) मोह इत्यादि सब बस्तु उत्पन्न होती हैं, जब सतोगुण की अतिशय वृद्धि होनेपर किसी का मरना होजाता है तब हिरण्यगर्भ के उपासकों के अथवा देवताओं के निर्मल क्लेशरहित लोकों को पाताहै, रजोगुण में शरीर त्याग होनेपर कर्म फल चाहने वाले पुरुषों में उत्पन्न होता है इसीप्रकार तमोगुण में मरनेवाला चांडाल आदि में वा पशु पक्षियों में उत्पन्न होता है, अच्छी रीति से किये हुये सतोगुणी कर्म का फल दुःख और अज्ञानसे रहित निर्मल और ज्ञान वैराग्य आदि युक्त सात्त्विक धर्म हैं रजोगुणी कर्म का फल दुःख है और तमोगुणी कर्म का फल अज्ञान है १६ सतोगुण से ज्ञान उत्पन्नहोता है रजोगुण से लोभ पैदा होता है और तमोगुण से प्रमाद मोह औरअज्ञान पैदा होते हैं, सतोगुणी पुरुष ऊपर जाते हैं अर्थात् देवभाव को पाते हैं रजोगुणी मध्यमें नियत होते हैं अर्थात् मनुष्य शरीर को पाते हैं और नीचगुणों की बृत्ती में नियत तामसी पुरुष नरक को जाते हैं अर्थात पशु पक्षी आदि में उत्पन्न होते हैं, जैसे कि प्रकृति पुरुष को बन्धन करती है इसबात को कहकर अब उस प्रकृति से अलग होने को कहते हैं--जब दृष्टारूप जीव सिवाय गुणों के किसी दूसरे को नहीं देखता है और जो गुणों से परे मुझको जानता है वह मेरेब्रह्मभावको पाता है, जीवात्मा इनते ईस रूपांतर होनेवाले गुणों को जिनसे कि स्थूल शरीर की उत्पत्ति है उल्लंघन करके अर्थात् निर्विकल्प समाधि के अभ्यास से निर्मूल करके जरा जन्म मरण के दुःखों से रहित होकर मोक्षको पाता है, अर्जुन बोले कि हे प्रभु कौनसे चिह्नों से इन तीनों गुणों को उल्लंघन करनेवाला होता है उसका कैसा आचार है और किस रीति से इन तीनों गुणों को उल्लंघनकरके बर्ताव करता है, श्रीभगवान् बोले हे पाण्डव (प्रकाश) (प्रवृत्ति) (मोह) यह तीनों सत्त्वादि गुणों के कार्यरूप हैं जो वह अन्तःकरण आदि में वर्त्तमान होयँ तो उनसे शत्रुता नहीं करता है, जो उदासीन के समान नियत होकर गुणों से चलायमान नहीं होता है अर्थात् ऐसा जानता है कि यह गुणों का वर्त्ताव है इस बुद्धि में नियत होकर जो स्थिरता से नियत है वह चलायमान नहीं होता है अर्थात् बासनाओं से रहित होकर समाधि में वर्त्तमान बनारहता है २३ समाधि में सुख दुःखको समान जाननेवाला वा अपनी इच्छा से नियत लोह पत्थर सुवर्ण को बराबर समझनेवाला अथवा प्रिय अप्रिय वा निन्दा स्तुति में सम बुद्धि धैर्य्यमान मानापमान रहित शत्रु मित्रमें समभावहोकर जो प्रारंभ

कर्मों का त्याग करनेवाला है वह गुणातीत कहाजाता है, जो मुझको अव्य-भिचारिणी भक्तिसे सेवन करता है अर्थात् ध्यान करताहै वह इन गुणों को उल्लंघन करके ब्रह्मभाव के योग्य होताहै, मैं वेदका वा अविनाशी मोक्ष साधन का अथवा भगवत् अर्पणरूप प्राचीन धर्म का और मोक्षरूपी सुख का अन्त स्थान हूं २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सु प्रकृतिगुणभेदो नामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पंद्रहवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले कि ऊपर के अध्याय में कहाहै कि मैं मोक्ष सुख का अन्तस्थानहूं उसमें कौन लक्षण है और वह सुख किससे ढकाहुआहै और कौन से साधन से उसका आवरण दूर होगा और किस अधिकारी से वह प्राप्त करनेके योग्य है इनसब बातों को अब मैं कहताहूं वेद में निश्चयकरके यही लिखाहै कि आनन्दही से सब सृष्टि की उत्पत्ति होती है और आनन्दों में सबसे उत्तम ब्रह्मानन्द है वही इस संसाररूपी वृक्षका मूल कारणहै ऊपर को परमानन्दरूप मूल रखनेवाला और नीचे की ओर शाखा रखनेवाला वृक्ष है जो कि मिथ्या होनेसे एक दिन भी रहने के योग्य नहीं है परन्तु वेदों ने अज्ञानियों के लिये उसको अविनाशी वर्णन किया जिसवृक्ष के पत्ते वेद और यज्ञ हैं उससंसाररूपी वृक्षको जो जानता है वह वेदका जाननेवाला है उसकी शाखा नीचेको तो मृत्युलोक पाताललोकतक और ऊपरको सत्य-लोक पर्यन्त फैलरही हैं और वही शाखा सतोगुणआदि गुणों से महावृद्धि युक्त विषयरूपी पत्तों से व्याप्त हैं और नीचे नरलोकमें उस वृक्षकी जड़ें जिनसे कि धर्म अधर्म नाम कर्म बँधेहुये हैं फैलीहुई हैं और जैसे रस्सी में सर्पकारूप नहीं होता उसीप्रकार वहां उसका भी रूप नहीं पायाजाता है इसके हेतुरूप मूल अज्ञान के आदि अन्त रहित होनेसे यह संसाररूपी वृक्ष भी आदि अन्त से रहित है और उसके लय होनेका भी स्थान नहीं है क्योंकि यह ब्रह्मका विकार नहीं है जो उसमें लयहोय ऐसे अत्यन्त दृढ़ मूलवाले वृक्षको जिसका कि एक दिनका भी विश्वास नहीं देह आदि के असंगरूप दृढ़शस्त्र से काटकर श्रुति और युक्ति बलके द्वारा वह ब्रह्मपद निश्चय करने के योग्य है जिस निर्विकल्प पद में प्राप्त होनेके पीछे प्राप्तहोनेवाले पुरुष फिर नहीं लौटते हैं उस सबके आदिरूप और घटघटवासीकी शरण होताहूं ऐसीभावना करे कि आदिरहित संसारी प्रत्यक्षता रूपी प्रवृत्ति निकले इसरीति से मोक्ष सुख के ढकने वाले संसारी वृक्षको और उसके काटने वाले असंगरूपी शस्त्र

को कहकर उस सुखकी प्राप्ति में अधिकारी के स्वरूप को कहतेहैं मोह मान और कर्मों के संगों समेत रागादि दोषोंको जीतनेवाले आत्मनिष्ठ सर्वइन्द्री-जित् हर्षशोक रहित और विद्या के द्वारा अविद्या दूर करनेवाले पुरुष उस अविनाशी पदको पाते हैं, उस पदमें न सूर्य्य प्रकाश करता है न चन्द्रमा प्रकाशित होता है अर्थात्रूपादि रहित नेत्रों से देखने के अयोग्य बुद्धि से परे होने से वहां सूर्य्य चन्द्रमा प्रकाश नहीं करसक्ते हैं और वाणी का विषय न होने से अग्नि प्रकाश नहीं करसक्ता है जिसको जानकर अर्थात् अज्ञान के मूल न होने से नहीं लौटते हैं वहीमेरी परमज्योति है, उस केही कारण जगत् का ईश्वर देहको प्राप्तकरता है अर्थात् शरीर को उत्पन्न करके उसी में आपभी प्रवेश करता है इसीहेतु से इस जीव लोकमें जीवरूप मेराही अंश और सनातनहै वह सुषुप्ती अर्थात् प्रलय समाधिके समय अपने विषय रूप स्वभाव में नियत होकर छठेमन समेत पांचों इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षण करताहै अर्थात् अपने स्वरूपमें लय करता है और जाग्रत् उत्पत्ति और पालनके समय इन इन्द्रियों को अपने लय स्थानसे विषयके स्थानपर लेजाकर ऐसे प्राप्तहोताहै जैसे कि गंधको लेकर वायुप्राप्त होती है ७७ यह श्रोत्र, चक्षु, स्पर्श, रसना, घ्राण, इन पांचों ज्ञानइन्द्रियोंको और मनको व्यापार-वान करके विषयोंको प्रकाश करताहै अर्थात् व्यापारकाभोग इन्द्रियोंमेंही है और आत्मा केवल प्रकाशकमात्र है, उनमनसंयुक्त इंद्रियोंकी देहान्तर करने वाली इन्द्रियों के नियत होनेपर आपभी नियतहोकर इन्द्रियों के भोक्ताहोने पर भोगनेवाले और उन इन्द्रियों के सतोगुण आदि होने में गुणोंसे संयुक्त होनेवालेको अज्ञानी लोगनहीं देखतेहैं परन्तु ज्ञानरूप नेत्ररखनेवाले उनको देखतेहैं तात्पर्य्य यहहै कि जैसे घटाकाशकी गति घटकेहिलानेसे विदितहोती है परन्तु वास्तवमें नहीं है इसी प्रकार आत्मा वास्तवमें गति और विषयों के भोग और गुणोंके संयोगसे पृथक्है, १० उपाय करनेवाले योगी इस असंग आत्माको बुद्धिमेंनियत देखतेहैं और जिन्होंने यज्ञादिकर्मोंके करनेसे मनको शुद्ध करके अपने आधीन नहीं किया वह उपाय करते हुएभी इस परमात्मा को नहीं देखते हैं, फिर सूर्य्यादिक कैसे प्रकाशित हैं इसको कहतेहैं—जो तेज सूर्य्य और सूर्य्यसंबंधी चक्षुरिन्द्री में वर्त्तमानहोकर संपूर्ण संसारको प्रकाशित करता है और जो तेज चन्द्रमा और चन्द्रमा संबंधी मनमें वर्त्तमानहै और जो अग्नि और अग्निसंबंधी इन्द्रीमें है उसको तुममेराही तेज जानो, मैं पृथ्वी में प्रवेश करके अपने अपने तेजसे संसार को धारण करता हूं और जल रूप चन्द्रमा होकर सब औषधियों को रससंयुक्त करके पुष्टकरता हूं, मैंहीं वैश्वानर नाम अग्निहोकर सब जीवोंके शरीरमें नियतहोकर प्राण अपान से संयुक्त

भक्ष्य भोज्य चूष्य लेह्य इनचारों प्रकारके पदार्थोंको पचाताहूं मैं सबके हृदयमें वर्त्तमान आत्माहूं मुझ आत्मा रूपसे स्मृतिज्ञान है और पापियोंके निमित्त वही अज्ञान है और मैंही सबवेद कर्म उपासना और ज्ञान कांडरूपके द्वारा जानने के योग्यहूं औरवेदान्तका कर्त्ता और वेदार्थ का ज्ञाताहूं अर्थात् जिस में यह सब गुणहोंय वह मेरीही विभूतिहै, लोकमें यहक्षर अक्षर नाम दोही पुरुषहैं सब संसार क्षर नामहै और रूपान्तर दशारहित परमात्माका प्रतिबिम्ब रूप जीवात्मा अक्षर नामसे प्रसिद्धहै, कार्य्य कारण और उपाधि से रहित यहदोनों उत्तम पुरुष परमात्मानाम मायासे ईश्वररूप होकर तीनों लोक वालोंके शरीरों में प्रवेश करके रूपान्तर दशासे रहित सबका पोषण करताहै, जोकि मैं क्षरसे पृथक् और उपाधियुक्त जीवसेभी उत्तमहूं इसी कारणसे लोक और वेदमें पुरुषोत्तम कहाजाताहूं, जो मुझको संशय आदि रहित होकर पुरुषोत्तम जानताहै वहसर्वज्ञहै और हे अर्जुन वही मुझको सब भाव और रीति से भजता है भगवत् के तत्त्व ज्ञानको मोक्षफल कहकर अब उस की प्रशंसा करते हैं हे निष्पाप भरतवंशी अर्जुन मैंने यह अत्यन्त गुप्त शास्त्र तेरे आगे वर्णनकिया इसको जानकर बुद्धिमान् ब्रह्मज्ञानी कर्मों से निवृत्त होकर मोक्षको पाता है २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिश्रीभगवत्गीतासूपनिषत्सुश्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगोनामपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

श्रीभगवान बोले कि अपने नाश से भय न करना, चित्तकी निर्मलता, श्रद्धा आदिसे उत्पन्न होनेवाला ज्ञान, जाने हुए अर्थमें मनके लगानेवाला योग, इसके निष्ठावान, जितेन्द्री श्रौतस्मार्त्तयज्ञ, वेद पढ़ना, तप सरल भाव, अहिंसा, सत्य, अन्यसे दुःखपाने पर भी क्रोध न करना, सब कर्मों का त्याग, शान्ती, चित्तकी शान्ती, पराये दोषों को न कहना, दुखी जीवों पर दया करना, इन्द्रियों के विषयों के सन्मुख होनेपर भी विपरीत दशासे रहित होना, मृदुता, लज्जा, नीच कर्मों में किसी अंगको प्रवृत्त न करना, तेजसे प्रगल्भता, घायल होकर भी क्रोधयुक्त न होना अथवा क्रोध आजाय तो उसको रोकना, धैर्य्यता, वाह्याभ्यन्तरीय पवित्रता, शत्रुता रहित होना, अभिमान न करना, अपनेको बहुत बड़ा न मानना, दूसरों से अभ्युत्थान की आशा न रखना, हे भरतर्षभ दैवी सम्पत्तिके आगे जन्मलेने वालोंको यह गुण होते हैं अर्थात् इन गुणों को दैवी सम्पत्ति कहते हैं, अब रजोगुण तमोगुण रूप आसुरी सम्पत्ति का वर्णन करते हैं धर्म्म में, पाखण्ड, धनका

गर्व, इत्यादि अपनी महत्त्वता चाहना, क्रोध, कठोर बचन सत्य मिथ्या से अनभिज्ञ अज्ञान, यह गुण आसुरी सम्पत्ति के उदय होने वाले के हैं, दैवी सम्पत्ति मोक्षके निमित्त है और आसुरी सम्पत्ति सदैव बन्धन करनेवाली कही जाती है सो हे अर्जुन तू दैवी सम्पत्तिके सन्मुख उत्पन्न हुआहै इससे शोकमत कर, हे अर्जुन इस लोकमें जीवों के स्वभाव दो प्रकारके हैं एक दैव अर्थात देव सम्बन्धी दूसरा आसुर अर्थात् असुर सम्बन्धी इन दोनों में दैव स्वभाव को तो ब्यौरेवार कहा अब आसुर स्वभाव को कहता हूं आसुर मनुष्य प्रवृत्ति निवृत्ति को नहीं जानकर बाहर भीतर से अपवित्रहोते हैं और आचार सत्यता आदिसे रहित होकर वह पुरुष संसारको भी यथार्थ रहित धर्माधर्म और प्रतिष्ठासे खाली कहते हैं और यह भी कहते हैं कि इस का कोई ईश्वर नहीं है यह पुरुष स्त्री के संग से उत्पन्न हुआ है इसका हेतु कामदेव है, ऐसे निर्बुद्धी भयानक कर्मी दुष्ट लोग जिनके धैर्यादि नष्ट हो गये हैं वह ऐसे प्रमाण को आश्रय करके जगत्के नाशके लिये उत्पन्न होते हैं, वह कपटी मानी भ्रष्टब्रती कठिनता से पूर्ण होने वाली कामनाओं को आश्रय करके अज्ञानतासे बशीकरण मारणादि नीच कर्मों को अंगीकार करके संसार के नाशके लिये कर्मकर्त्ता होते हैं, वह लोग मृत्युकारी महा चिन्ताओंमें डूबे हुएहैं और कामादि भोगोंको जीवन का फल मानने वाले हैं और जो कुछ दृश्यमानहै उसको निश्चय करके वही मानते हैं और आ-शारूपी हजारों बन्धनों से बँधे हुए काम क्रोधही को मुख्य स्थान समझने वाले कामभोग के लिये अनर्थों के द्वारा धन समूहों को चाहते हैं, यह प्राप्त हुआ इस मनोरथ को पाऊंगा यह है और फिर यह सब मेरा धन होगा,यह शत्रु मैंने मारा और उन शत्रुओंको भी मारूंगा मैं समर्थहूं भोगीहूं शुद्धा-त्माहूं बलीहूं और सुखीहूं, धनी हूं कुलवान्हूं मेरे समानकौनहै यज्ञादि करूं-गा दान करूंगा आनन्द करूंगा ऐसे अज्ञानों में भूला हुआ है, बहुत से विषयोंमें प्रवृत्त होने से चित्तसे ब्याकुल मोहरूपी बन्धन में बंधा हुआ काम और भोगों में प्रवृत्त चित्त पुरुष महाघोर नरकों में गिरतेहैं, अपने को बड़ा मानने वाले स्तब्ध अहंकारी धनके मदमें भरेहुए मनुष्य पाखण्ड करके बुद्धिके विपरीत नाममात्र यज्ञों से पूजन करते हैं. अहंकार बल दर्प काम क्रोध इत्यादि को आश्रय करके वा घातादिक कर्मों से अपने शरीरसे दूसरे शरीरों में मुझ जगदात्मा से शत्रुता करते हैं और शम दम आदि सब वेदोक्त गुणोंकी निन्दा करते हैं, हे अर्जुन मैं अन्तरात्मा उन शत्रुता करनेवाले निर्दयी सबसे अधम पापात्माओं को सदैव आसुरी योनियों में डालताहूं, फिर वह अज्ञानी आसुरी योनियों में पड़े हुए जन्म जन्मान्तर में

भी मुझको न पाकर अधम पशु पक्षी वृक्ष आदि के शरीरों को पाते हैं, यह काम क्रोध लोभरूपी नरकके तीनों द्वार आत्माके नाश करने वाले हैं इसकारण इनतीनोंको त्यागकरे, हे अर्जुन इनतीनों नरकके द्वारोंसे अत्यन्त अलगहोकर भगवत्भजन आदि कल्याणों को कर्त्ता है तब परममोक्ष रूप गति को पाताहै, जो मनुष्य शास्त्रबुद्धि को त्यागकर मनके इच्छारूपी कर्मों में प्रवृत्त होता है वह मनकी शुद्धी को और सुखपूर्व्वक मोक्ष को नहीं पाता है, इसहेतु से कर्त्तव्य अकर्त्तव्य व्यवस्थाओं में तू शास्त्र को प्रमाणकर अर्थात् जिसकी जैसी विधिशास्त्र में कही हुई है उसको ठीकही जानकर कर्मों को करना योग्य है २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुदेवासुरसंपद्विभागो नामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी जो श्रद्धावान् पुरुष शास्त्रबुद्धिको त्यागकरके ईश्वरका भजन पूजन करते हैं उनकी कौन निष्ठा है सतोगुणी वा रजोगुणी अथवा तमोगुणी है, श्रीभगवान् बोले कि अभिमानी पुरुषों की स्वभाव से उत्पन्न होने वाली श्रद्धा पूर्व्व जन्म के धर्माधर्म से उत्पन्नहै वह सतोगुणी रजोगुणी और तामसी इनतीनप्रकारकीहै इनतीनों प्रकारकी श्रद्धाको कहता हूं, हे भरतवंशी पूर्वकर्म संस्कारके अनुसार जो बुद्धिबलहै उसीके अनुरूपसब की श्रद्धा बनीहुई रहतीहै यह श्रद्धा रूपहै जो जैसी श्रद्धावाला है वह उसी श्रद्धा के गुणोंसे प्रसिद्ध होताहै, सतोगुणी पुरुष देवताओंको पूजते हैं रजोगुणी मनुष्य यक्ष राक्षसों को और तमोगुणी लोग प्रेत भूतादिकों को सेवन करतेहैं, वेदादि शास्त्रोंके विरुद्ध जो कौललोगोंके शास्त्र हैं उनमें अपने मांससे हवन और ब्राह्मण के रुधिरसे तर्पण करना लिखा है उन विरुद्ध शास्त्रों के लिखेहुए घोरतपोंको जो मनुष्य करते हैं और पाखंडपूर्व्वक अहंकारमें भरे हुए बिना विचार किये विषयकी इच्छा से बुरी वासना करके विषय साधन में संयुक्त हैं, वह अज्ञानी शरीरकी इन्द्रियों को निर्बल करने वाले मुझ शरीरवर्त्ती को भी अप्रसन्न करनेवाले हैं उनको आसुरों में निश्चय करनेवाला जानो, अबसात्विकी लोगों के भोजन यज्ञ, तप, दान को प्राप्त करने और राजसी तामसी को त्यागने के अर्थ प्रत्येक को तीन को तीन तीन प्रकारका वर्णन करते हैं--अन्नादि भोजन भी सबको तीन प्रकार का प्याराहै इसी प्रकार यज्ञ तप दान भी तीनही प्रकार का प्यारा है इनका विभाग सुनो, जीवन, उत्साह, सामर्थ्य, नीरोगता, सुख, प्रीतिदायक

बस्तु, रसीले कोमल स्थिर अर्थात् शरीर में रसके द्वारा बिलम्बतकरहनेवाले, देखने में सुन्दर हृदयको प्रसन्नकरनेवाले, ऐसे गुणयुक्त भोजन सात्विकी पुरुषोंको प्यारे होते हैं, कडुए नोनके खट्टे अति उष्णचर्परे रूखे अत्यन्त जलन करनेवाले, दुःख शोक और रोगोंके उत्पन्नकरनेवाले ऐसेप्रकारके भोजन रजोगुणीको प्यारे हैं, जिसके बनाने में बिलम्ब लगे वा (कच्चावारसहीन) दुर्गन्ध युक्त हो बासीहो उच्छिष्ट हो अभक्ष्यहो वह भोजन तामसी लोगोंको प्याराहै, अब तीन प्रकार के यज्ञों को कहते हैं--यज्ञही करनेके योग्य है, अर्थात् उसका फल चाहनेके योग्य नहींहै इसप्रकार अपने मनको समाधान करके फल के न चाहनेवाले पुरुषोंसे जो आवश्यकताके लिये रचाहुआ यज्ञ कियाजाताहै वह सात्विकी कहाजाताहै, ११ हेभरतर्षभ फलकी इच्छामनमें धारणकरपाखण्ड और कपट के निमित्त जो यज्ञ कियाजाताहै उस यज्ञको राक्षसी जानो शास्त्रकी रीति अन्नदान और मन्त्र दक्षिणा रहित श्रद्धा से बिहीन यज्ञको तामसी यज्ञ जानो, बिष्णु आदि देवता ब्राह्मण और माता पिता आचार्य्य इत्यादि गुरू वा ब्रह्मज्ञानियोंका पूजन बाहर भीतरसे पवित्रता सरलता सत्यता ब्रह्मचर्य्य अहिंसा यहसब देहके तप कहे जातेहैं, जो बचन दूसरेका सुखदाई सत्यता स्नेहता सहित सबका हितकारी है वह और बेदका अभ्यास यह तपस्या कही जातीहै, प्रसन्नता चित्तशुद्धी सौम्यता बचनको आधीन रखना मनका रोकना ब्यवहार में औरोंके साथ निश्छलता यह मानसीतप कहाता है, फलकी इच्छा न करनेवाले सावधान चित्तपुरुष देह मनबाणी से जो तीन प्रकारकी तपस्या श्रद्धा पूर्व्वक करते हैं वह सात्विकी कहाजाताहै, जो तपस्या अपनेमान सत्कार और पूजनके निमित्त कपटसे कीजाती है वहतपस्या इसलोकमें फलसे रहित नाशवान् रजोगुणी कही जाती है, अविवेक से उत्पन्न दुराग्रहसे अपने शरीर की पीड़ा अथवा दूसरेके नाशके निमित्त जो तप किया जाताहै वहतामसी कहाताहै यह दानके योग्य है इस बुद्धि से फलकी इच्छा रहित जो दान अनुपकारी पात्रको देशकालके बिचारसे पुण्य क्षेत्रादिमें दिया जाता है वह सात्विकी दान कहा जाताहै, जो दान बदले के लिये अथवा फलको ध्यान करके धन के ब्ययहोने की चिन्ता समेत कियाजाता है, वह राजसी कहाताहै, जो दान देशकालके विपरीत अपात्रों को ऐसे प्रकारसे दिया जाताहै कि जिसमें मधुर भाषण और चरण प्रक्षालनादि न होकर पात्रका अनादरहो उसको तामसी कहते हैं, अबयज्ञ (दान तप) आदि की पूरी सिद्धीकेलिये प्रायश्चित्तको कहते हैं (ओंतत्सत्) यह ब्रह्मकानाम तीन प्रकारका होताहै पूर्व्वकालमें उसीब्रह्मके नामसे ब्राह्मण वा चारोंवेद और यज्ञ प्रकट किये इस कारण ओंका उच्चारण करके ब्रह्मवादी अ-

र्थात् वैदिक लोगों के यज्ञ दान तप आदि सत्क्रिया जो कि वेदबुद्धी में कही हैं सदैव होती रहतीहै, ऊपरके श्लोकमें ॐके भीतर सफलकर्म वा निष्फल कर्मका कोई विभाग नहीं कहाहै अब फलरहित कर्म बुद्धीको कहते हैं-कर्मफल को अंगीकार न करके तत् ब्रह्मका नामकहकर मोक्षके चाहने वाले नानाप्रकारके यज्ञ तप दान आदिकी क्रियाओंको करते हैं, हे अर्जुन यहसत् नाम वेद भाव जैसे श्रेष्ठहै और साधुओं के भावमें संयुक्त कियाजाता है इसी प्रकार उत्तमकर्ममेंभी सत्शब्द संयुक्त कियाजाता है, यज्ञ तप और दान में जो निष्ठा है वह सत् नाम कही जाती है और ईश्वरकी प्राप्ती के निमित्त जो कर्म हैं वहभी सत् नाम कहाजाता है, श्रद्धासे रहित होकर दान तप यज्ञादिक किये जातेहैं हे अर्जुन वह असत् हैं अर्थात् सत् के विपरीत होनेसे मिथ्या कहे जाते हैं वह न इसलोकमें न परलोक में दोनों में नहीं गिने जाते हैं२८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुश्रद्धावर्णनोनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

अर्जुनबोले हे महाबाहु हृषीकेश केशी दैत्यको मारनेवाले मैं त्याग से पृथक् संन्यास और संन्याससे रहित त्यागको मूलसमेत जानना चाहताहूं, श्री भगवान् बोले कि जिनमें किसी प्रकार की इच्छा है ऐसे कर्मों के त्याग को सूक्ष्म पदार्थदर्शी पुरुषोंने संन्यास कहा है और पंडित लोगों ने सब कर्म फलों के त्यागको त्याग कहा है, और परमात्माको अपरोक्ष करनेवाले चित्तके जीतने वालों ने केवल कर्मोंहीका त्याग दोषयुक्त रागादिके समान त्याज्य कहा है और परमात्मा के चाहने की इच्छा करने वालों ने यज्ञ दान और तपको नहीं त्यागने के योग्य कहा है, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन उस कर्म के त्याग ने में मेरेभी निश्चयको तू सुन हे पुरुषोत्तम त्यागतीन प्रकारका कहा है, यज्ञ दान तप और कर्म यह चारों त्यागके योग्य नहीं हैं वह अवश्य करनेकेही योग्य हैं क्योंकि यज्ञ दान तप बुद्धिमानों के मनको पवित्र करनेवाले हैं, अपने में कर्त्ताभाव लानेवाले संगको और कर्म फलों को त्यागकरके यज्ञ दान तपादिक कर्म करनेके योग्य हैं यह मेरा संमत अत्यन्त निश्चय किया हुआ उत्तम है, मोक्षकी इच्छावालोंको करने के योग्य कर्मोंका त्याग उचित नहीं है मोह से उसका त्याग करना तामसी कहागया है, यह कर्म्म दुःख रूपहै ऐसा मानकर शरीरके क्लेशकेभयसे जो त्यागकरता है वह इस राजसीत्यागके चित्त शुद्धीरूपफलको नहींपाताहै, हे अर्जुनकर्मको करने केही योग्यमानकर संगफलको त्यागके जो संध्या वंदनादि नित्य

कर्म कियेजाते हैं उसको सात्विकी त्यागमाना है, साधारण सात्त्विकी त्याग को कहकर उत्तम सात्विकीत्यागको वर्णन करते हैं स्नान शौच और भिक्षा आदिदुखदाई कर्म को बुरानहीं कहता और मीठअन्न भिक्षाआदि सुखदायी कर्ममें प्रीति नहीं करताहै अथवा जो शिष्यलोग सेवाकर्मोंमें कुशलहैं उनमें अत्यन्त प्रवृत्त नहीं होताहै अर्थात् राग द्वेष से रहित है वह सतोगुण से भरा हुआ त्यागी अर्थात् संन्यासी है क्योंकि शास्त्रों की स्मरणकरनेवाली बुद्धिका स्वामी होनेसे वह आत्मा और अनात्माके बिबेकका रखनेवाला होकरछिन्न संशय कहाजाता है, देहाभिमानी से सर्व कर्म त्यागकरने महा कठिन और असंभव हैं अर्थात् शरीरके अभिमानसे रहित बड़ाही परमार्थदर्शी औरउत्तम त्यागी कर्मों को त्यागकरसक्ताहै इसहेतु से जो कर्मोंकेफलोंका त्यागीहै वही त्यागी कहाजाताहै, ११ जो त्यागी नहीं है उनके कर्मोंकाफल मरनेके पीछे तीनप्रकारका होताहै नरक वा पशु पक्षी आदिकाजन्म यहतो अप्रियहैऔर देवताकारूप आदि मिलाहुआ और नररूप यहप्रिय कहाताहै परन्तु संन्यासियोंका कुछ नहीं होताहै अपने में कर्त्ताभाव नियत न करने से हेमहाबाहु सब कर्मों के सिद्धी के लिये यह पांचकारण सांख्य और वेदान्त शास्त्रों में कहे हैं सांख्यमें सब कर्मोंका अन्त होजाता है, उनपांचोंकी संख्या करते हैं (अधिष्ठान) अर्थात् स्थूल शरीर परमात्माका प्रतिबिम्बजीव रूप कर्त्ताऔर दशोइन्द्री मन बुद्धि चित्त अहंकार और नानाप्रकारकी पृथक २ प्राणअपान आदि चेष्टा और इनमें पांचवें पुण्य पाप और सूर्यादि इन्द्रियोंके देवतायह दैवहैं, मनुष्य जिसकर्म धर्मरूप वा अधर्मरूप मनवाणी औरदेहके द्वाराप्रारंभ करता है उसी के यह पांचों हेतु हैं, उनकर्मों के मध्य में ऐसी दशाहोनेपरजो बुद्धि की म्लानता से केवल आत्माको कर्त्ता देखताहै वहपाप रूप बुद्धिरखने वाला नहीं देखता है,अर्थात्अन्धाहै, मैं कर्मकाकर्त्ताहूं जिसको कि यह अहंकारनहींहै अर्थात् आत्मा से पृथक् १४ श्लोकके लिखे हुये पांचकर्त्ताओं को जानताहै और जिसकी बुद्धिउस में लिप्तनहीं होती है अर्थात्सदैव ब्रह्माकार रहतीहै कर्त्तानहोनेके हेतुसे वह धर्मयुद्ध वा ब्रह्मज्ञानसे इनलोकोंकोभी जीतकर नहीं मारताहै और न बन्धनमें होताहै, मुख्यवस्तुका प्रकट करनेवाला(ज्ञान) और जानने के योग्य (ज्ञेय) (परिज्ञाता) अर्थात् विषय आभास बुद्धि रूप भोक्ता यहतीन प्रकारवाले कर्मों की चेष्टा होती हैं इन्द्रियां करण और जो इन्द्रियों से कियाजाय सो कर्म करनेवाला कर्त्ता यह तीन प्रकार के कर्मों के निवास स्थानहैं अर्थात् यह तीनों भोक्ताहैं आत्मा नहीं हैं वही ज्ञान कर्म कर्त्ता गुणों के बिभागसे सांख्य शास्त्रमें तीन प्रकारके कहे जातेहैं इनकोभी व्यवस्थाको सुन, तीन प्रकार का ज्ञान कहताहूं जिस ज्ञान से बहुतनाम और

रूपों के कारण पृथक् २ रूपवाली सृष्टिमें न्यूनाधिकता रहित विना भेदएक चिन्मात्र रूपको देखताहै अर्थात् सबकोब्रह्मही जानताहै उस ज्ञानकोसात्विकी जानो, जो ज्ञान द्वैततासे युक्तहै और जिसज्ञान से सब सृष्टि में देवतामनुष्य पशुपक्षी आदि अनेक भाव भिन्न२प्रकार के हैं ऐसाजानताहै अर्थात् उनको एकआत्मारूप नहीं देखताहै पृथक् २ जानताहै वहज्ञानराजसीहै२१और जो ज्ञान एक कार्य्यमें परिपूर्ण के समान प्रवृत्तहै अर्थात् केवल शरीरहीकोआत्मा मानताहै अथवा परमात्मा कोही परम ईश्वर मानताहै वह हेतु से रहित है परमार्थ सिद्धान्त नहींहै वह ज्ञानतामसीहै अबतीन प्रकारवाले कर्मकोकहते हैं कर्म फल न चाहने वाले पुरुषसे जो कर्म सदैव संग और राग द्वेषसे रहित किया जाताहै वह सात्विकी कहाजाताहै, फिर फलकी इच्छा रखनेवाले जो अत्यन्त परिश्रम का कर्म अहंकार युक्त होकर करतेहैं वह राजसी कहाताहै, जो परिणाम फल और धनकाखर्च वा दूसरे काकष्ट वा अपनी सामर्थके बल का विचार न करके मोहसे कर्म किया जाताहै वह तामसीहै,अबतीन प्रकार के कर्त्ता को कहतेहैं संग रहित अपने को कर्त्ता न मानने वाला धैर्य्य और उत्साहसे पूर्ण कर्मों की सिद्धी वा असिद्धी में विपरीत दशासे रहितहै ऐसा कर्त्तासात्विकी कहाताहै,विषयोंमेंप्रीति रखनेवालाफल चाहनेवाला दूसरेकेधन लोलुपपर पीड़ादेनेवाला बाहर भीतरसे अपवित्र प्रिय अप्रियमिलनेमें प्रसन्न और सुख दुखसे संयुक्त कर्त्ता राजसी कहाजाता है २७ (असावधान) (प्राकृत) किसी का आदर न करनेवाला (शठ) (छली) दूसरे का अपमान करनेवाला कार्य्यासक्त आलसी विषादी दीर्घसूत्री ऐसा कर्त्ता तामसी कहा जाता है, हे अर्जुन गुणों से बुद्धि और धैर्य्य के तीन प्रकारके भेद मैं तुमसे पृथक् २ करके कहताहूं उन सबों को सुनो, जो बुद्धिमान प्रवृत्ति निवृत्ति कार्य्य अकार्य्य भय निर्भयता कर्म संबंध बंधन और मोक्षको जानते हैं वह सात्विकी होते हैं, जिस बुद्धिसे धर्माधर्म और कार्य्याकार्य्य को खंडित और संदिग्ध जानता है उसकी राजसी बुद्धि कहाती है, हे अर्जुन जो अज्ञान से ढकीहुई बुद्धिसे अधर्म को धर्म और सब अर्थों को उलटा मानते हैं उनकी बुद्धि तामसी कहाती है, जो चित्तवृत्ती के रोकने के द्वारा जिस समाधि में प्रवृत्तहोकर धैर्य्यता से मन प्राण और इन्द्रियों की क्रियाओं को देरतक नियत करताहै अर्थात् विषयोंकी ओर जाने नहीं देताहै वह धैर्य्य सात्विकी है, हे अर्जुन जिस धैर्य्य से धर्म अर्थ कामों को धारण करताहै, अर्थात् करता है, अथवा धर्मादि के संबंध से फल का आकांक्षी है वह राजसी धैर्य्य है, जिसकी मंद बुद्धि बिगड़ी हुई है वह जिस धीरज से (स्वप्न) (भय) (दुःख) व्याकुलता और शास्त्र से विरुद्ध विषयों के सेवन से चित्तकी अस्वाधीनता

को धारण करता है वह धैर्य्यता भली कहाजाता है, हे भरतबंशी अर्जुन अब उन तीन प्रकारके सुखों को कहताहूं जिन सुख समाधियों में अभ्यास करके रमता है और दुःखको अन्त होने पर मोक्षको पाताहै, जोकि वह सुख प्रथम अर्थात् समाधि के आदि में विष के समान अन्तमें अमृत के समान होता है अर्थात् जीवनमुक्त करनेवाला है, वह बुद्धि की निर्मलता से उत्पन्न हुआ सात्विकी सुख कहलाता है, जो विषय इन्द्रियों के योग से आदि में भोग के समय अमृत के समान है और अन्त में वियोग के समय विष के तुल्य है उस सुखको राजसी कहते हैं जो स्वप्न आलस्य और भूल से उत्पन्न हुआ सुख है वह आदि में और अन्त में बुद्धिको भुलानेवालाहै वह तामसी है, वह पृथ्वी के जड़ चैतन्य जीवों में और स्वर्ग के देवताओं में भी नहीं है जोकि दूसरे जन्मों के धर्म संस्कारों से उत्पन्न होनेवाले तीनों गुणों से रहित प्रकृतिवाले होंय, हे शत्रुहन्ता अर्जुन स्वभाव जन्य गुणों के कारण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रों के पृथक् २ कर्म होते हैं प्रथम ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के कर्मों को कहताहूं ब्राह्मणमात्रकी जाति के नहीं कहता हूं (शम) (दम) (तप) (शौच) (क्षांति) (आर्जव) (ज्ञान) (विज्ञान) (श्रद्धा) यह पूर्व जन्म के संस्कारसे उत्पन्न हुये ब्राह्मण के कर्म हैं, (पराक्रम) (तेज) (धैर्य्य) (चतुर्य्यता) युद्धके सन्मुख होकर न (भागना) ईश्वरभाव अर्थात् अपराधियों को दण्डदेना यह क्षत्रियों क पूर्वजन्म संस्कार और स्वभावज कर्म हैं (खेती) (गौकी रक्षा पोषण) (वनज) यह वैश्यके स्वाभाविक कर्म हैं, और सेवा करना आदिक शूद्रके स्वाभाविक कर्म कहेजाते हैं, अपने अपने कर्म में प्रीति करनेवाला मनुष्य समसिद्धी को अर्थात् ज्ञानकी योग्यता को पाताहै और जैसे अपने कर्म में प्रीति रखनेवाला मुख्य संन्यास लक्षणवाली सिद्धी को पाता है उसको भी मैं कहताहूं, जिस अन्तर्यामी से जीवों की प्रवृत्तिहै और जिससे यह सब जगत् भी व्याप्त है उसको मनुष्य अपने कर्मों से पूजन करके मोक्षरूपी सिद्धी को पाता है, दूसरे के उत्तम धर्म्म से अपना धर्म किसी अंगसे हीन भी श्रेष्ठतमहै स्वभाव जन्य कर्मों के करने से पापका भागी नहीं होता है आशय यह है कि हे अर्जुन इन कारणों से हिंसारहित भिक्षाधर्म तुझको करना योग्य नहीं है किन्तु हिंसायुक्त युद्धरूपही तेरा मुख्य और श्रेष्ठ धर्म है, हे अर्जुन अपने शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाले अर्थात् स्वाभाविक दोषों से युक्त कर्मको भी त्यागनकरे क्योंकि सब कर्मों के प्रारंभ हिंसा आदि दोषों से ऐसे आच्छादित है जैसे कि अग्नि धुयें से आच्छादित होती है, अपने कर्मों को ईश्वरार्पण और अपने अवश्य कर्मोंको करना योग्य है यह सब कहकर परमेश्वरमें अर्पण करनेसे जो फल

होताहै उसको अबकहते हैं-पुत्रादि सब पदार्थों में बुद्धि न लगाने वाला शान्त चित्त अत्यन्त लोभ और इच्छासे रहित संन्यास के द्वारा उस परम सिद्धीको पाताहै जो कर्म के त्याग और ब्रह्मज्ञान से सम्बन्ध रखने वालीहै हे अर्जुन जैसे कि वैराग्य सिद्धी को पाने वाला ब्रह्मको पाताहै उसका बृत्तान्त मुझसे सुनो वह वृत्तान्त ज्ञानकी परानिष्ठा है ५० उसी ब्रह्ममें मिलजानेको तीन श्लोकोंमें कहते हैं अत्यन्त शुद्ध बुद्धीके द्वारा धैर्य्यतासे शरीर और इन्द्रियों के समूह को प्राणों समेत स्वाधीन करके अर्थात् दृढ़ आसन से शब्दादि विषयोंको त्यागकरे रागद्वेष रहितहो और अहंभावको दूर करके सदैव एकान्त वासी अल्पाहारी शरीरमें बोलने वाले मनको जीतने वाला वैराग्य युक्त सदैव ध्यान योग में प्रवृत्त, अहंकार बलक्रोध इच्छा और शिष्यादि में आत्म भावरूपी परिग्रहको छोड़कर शान्तरूप होकर ब्रह्मभाव के योग्य होताहै, इस योगकी अयोग दशाकी समाधि को कहते हैं ब्रह्मरूप योगी प्रसन्न चित्त होकर न शोच करता है न इच्छा करता है और सबजीव मात्रों में समदर्शी होताहै अर्थात् यह सब ब्रह्मरूपहै इसबुद्धि में द्वैतता रहित होजाताहै वह मेरी पराभक्तिको पाता है, अब इस अद्वैत आत्मज्ञान लक्षण वाली भक्तिको कहते हैं-उस भक्ति के द्वारा ज्ञानी पुरुष जैसा मैं वास्तवमें हूं वैसाही ठीक २ जानता है तदनन्तर मुझको मूलसमेत जानकर अभेद बुद्धि से मुझ में ही समाताहै अर्थात् ब्रह्म भावको पाताहै, उसप्रकारका ज्ञानी मुझ में निवास करने वाला सदैव सब कर्मों को भी करता हुआ मेरी कृपा से अविनाशी सनातन मोक्ष पदको पाताहै, इस प्रकारसे वर्णाश्रम के धर्मको मुख्य करके साधन और फलसे युक्त ब्रह्मविद्याका वर्णन किया उसके प्राप्त होने के लिये फिर भक्तिको वर्णन करते हैं विवेक बुद्धी से सब कर्मोंको मुझ भगवत् वासुदेव में अर्पण करके मुझको उत्तमलय स्थान जानने वाला बुद्धि योगमें प्रवृत्त होकर सदैव मुझी में चित्तका लगानेवालाहो इसभक्ति योगके करने न करने के गुणदोषों को कहते हैं-मुझ में चित्त लगाकर तू सब कठिनताओं से तरेगा और जो तू अहंकारसे मेरे वचनको नहीं सुनेगा तो नाश पावेगा अर्थात् पुरुषार्थ से हीन होजायगा, जो अहंकारमें प्रवृत्त होकर तू मानता है कि मैं नहीं लड़ूंगा यह तेरा निश्चय करना मिथ्याहै तेरा क्षत्री स्वभाव तुझको युद्धमें प्रवृत्त करेगा, हे अर्जुन स्वभाव से उत्पन्न होने वाले अपने कर्मों से बंधाहुआ तू जो अज्ञानसे युद्ध नहीं करना चाहता है तो तू पराधीन होने के समान होकर अवश्य उसको करेगा, वह परमेश्वर कौनहै जिसके स्वाधीन मैं हूं यह शंका करके कहते हैं हे अर्जुन ईश्वर सब सृष्टिके हृदयस्थानमें लिंगदेहनाम यन्त्रपर आरूढ़ होनेवाला अपनी मायासे

सबजीवों को ऐसे घुमाता हुआ नियत है जैसे बाजीगर काठकी मूर्त्तियों को हे भरतबंशी सब भावसे उसी ईश्वर की शरणमें जाओ उसकी कृपा से तू अबिनाशी पराशान्ती नाम स्थान अर्थात् मोक्षको पावेगा, मैंने यह गुह्य से गुह्य ज्ञान तुमसे कहा इस सबको अच्छी रीतिसे विचारकर जैसा चाहो वैसा करो, फिर सब से गुह्यतम मेरे उत्तम बचनोंको सुनो तू मेरा बड़ाप्यारा है इसकारण मैं तेरेपरमहित को कहूंगा, मुझ आनन्दरूप परिपूर्ण ब्रह्ममेंही चित्तसे लगाहुआ तू मेरा भक्तहोकर मुझ भगवनकेही निमित्त कर्मका करने वालाहोके मुझको नमस्कारकर मुझमेंही लयहोगा यह मैं सत्यही प्रतिज्ञा करताहूं क्योंकि तू मेरा बड़ाप्यारा है, इस श्लोकमें भक्ति और कर्म के द्वारा ज्ञाननिष्ठाको दिखाया अब योगनाम उपासनाको दिखाते हैं-सबबर्णाश्रम देह इन्द्री और बुद्धिके धर्म और अग्निहोत्रादि कर्म और सुख दुःखादि को अत्यन्त त्यागकर मुझ अकेले अर्थात् सबके ईश्वर एकरस अखण्ड परमात्माकी अविद्या आदि नाश करनेवाली शरणको प्राप्तकर अब शरणागत के फलको सुनो मैं तुझको सब पापों से संचित क्रियमाणादि रहित करूंगा किसी बातका शोक मतकर, जो तपसे रहित और भक्तिसे शून्य है अथवा गुरूकी सेवासे वहिर्मुख होकर मेरी निन्दा करतेहैं उनसे कभी यह मेरा गुप्त ज्ञान कहनेके योग्य नहीं है, अब विद्यावान के—फलको कहतेहैं जो अभक्त भी इसमेरे गुप्तज्ञान को मेरेभक्तों में प्रचार करके उनको धारण करावेगा अर्थात् सुनावेगा वह मुझमें पराभक्ति को अर्थात् अद्वैत लक्षणा और उपासनाको करके मुझी को प्राप्तहोकर निश्चय मुक्ति को पावेगा, मनुष्यों में इसगीता पढ़ानेवालेसे अधिक मेराकोई प्यारा नहीं है और उससे अधिक मुझको प्यारा पृथ्वीपर कोई नहीं होगा, जो हम दोनों के इस धर्मरूप उपाख्यान को पढ़ैगा मैं उस ज्ञानयज्ञ निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजित हूंगा कहने और पढ़नेवालों के फलको कह कर अबसुननेवाले के फलको कहताहूं—श्रद्धावान् अन्य के गुणोंमें दोष न लगानेवालाजो मनुष्य इस गीता के श्लोकों को सुनेगा वह भी मुक्तहोकर पवित्रात्मा पुरुषों के शुभ लोकोंको पावेगा, हे अर्जुन तैंने एकाग्र चित्त होकर इस गीता शास्त्रको सुना और हे संसारी धनके विजय करने वाले तेरा मोह जनित सब अज्ञान अब नष्ट होगया, अर्जुन बोले हे अविनाशी आपकी कृपासे मेरा मोह दूर हुआ और स्मृति प्राप्त हुई अब मैं सन्देह से रहितहूं इससे आप के वचनोंको करूंगा, संजय बोले कि मैंने महात्मा बासुदेवजी और अर्जुन के इस अपूर्व रोम हर्षण करनेवाले संवाद को सुना, मैंने व्यासजी की कृपासे अर्थात् दिव्यनेत्रों के देने से यह अत्यन्त गुप्त योग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजी के मुख से

सुना, हे अर्जुन केशवजी और अर्जुन ने इस अपूर्व्व पुण्यकारी संवाद को बारम्बार प्रसन्नता पूर्व्वक स्मरणकर आनन्दमें मग्न होताहूं, हे अर्जुन हरि के उस अपूर्व्व रूपको बारम्बार स्मरण करके मुझको बड़ा आश्चर्य है और बारम्बार प्रसन्न होता हूं, जिधर योगेश्वर श्रीकृष्णजी और जिधर धनुषधारी अर्जुन है उधरही (लक्ष्मी) (जय) ऐश्वर्य और नीतिहै यह मेरा निश्चय मत है ॥ ७८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्ण अर्जुनसंवादेसंन्यासादितत्त्वनिर्णययोगोनाम अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

वैशम्पायन बोले कि जो गीता कमलनाभ के मुख पंकज से निकली है वह गीता अच्छे प्रकारसे गान करनी चाहिये अन्य शास्त्रोंके विस्तार से कुछ प्रयोजन नहींहै, यह गीता सब शास्त्ररूप है और सब देवतारूप भगवान् हरि हैं और सब तीर्थरूप गंगा है और सर्वदेवमय मनुजी हैं गीता गंगा गायत्री और गोविन्दजी के हृदय में नियतहोने और चार गकार से संयुक्तहोने पर फिर जन्म नहीं होता है, केशवजी ने ६२० श्लोक कहे अर्जुन ने सत्तावन और संजयने सरसठ ६७ कहे, धृतराष्ट्र ने एकही श्लोक कहा इतनाही गीता का मान है हे भरतवंशी सब अमृतसे मथीहुई गीताके सारको श्रीकृष्णजी ने लेकर अर्जुनके मुख में होम किया यह सबकी सुखदायी गीता समाप्तहुई सबको लाभकारीहो, ॥

अब श्रीमहाभारत भीष्मपर्व्वका अध्याय तैंतालीसवां प्रारम्भ हुआ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि तदनन्तर महारथियों ने बाणों समेत गांडीव धनुषधारी अर्जुनको देखकर महाशब्द करना प्रारम्भ किया, पांडव वा संजय अथवा जो इनके पीछे चलनेवाले महाबली वीर लोग थे उनसबों ने भी बड़े प्रसन्न चित्तहोकर समुद्रोत्पन्न उत्तम २ शंखोंकी ध्वनिकरी, और इसीप्रकार भेरी क्रकच गोविषाणक नाम सब बाजे एक समय परही बजनेलगे और महातुमुल शब्द हुआ, तदनन्तर हे राजा धृतराष्ट्र देवता पितर सिद्ध चारण आदि गन्धर्वों समेत सब देवता युद्ध देखनेकी इच्छासे आपहुंचे, और महाभाग ऋषिलोग भी इन्द्रको अग्रभाग में करके उस महाभारी नाश के देखने को वर्त्तमानहुये तदनन्तर हे राजन् वीर राजा धर्मराज युधिष्ठिर इन युद्धों के लिये अच्छे प्रकार सन्नद्ध होकर सागर के समान बारम्बार चलायमान दोनों सेनाओं को देखकर, कवचको उतार उत्तम धनुष को त्याग शीघ्रही रथसे उतरकर पैदल ही हाथजोड़ेहुए पितामहकी ओर देखकर मौनता साधेहुये पूर्व्वाभिमुखहोकर

शत्रुकी सेना में घुसाहुआ चला उन धर्मराज को जाते हुए देखकर कुन्ती का पुत्र अर्जुन शीघ्रही रथसे उतरकर भाइयों समेत उसके पीछे चला और हे राजा बासुदेव जी उसके पीछे की ओर से चले तिस पीछे सब पृथ्वी के राजा अपने २ मनोरथ सिद्ध करने की इच्छा से उसके पीछे चले, अर्जुन बोले हे युधिष्ठिर आपका क्या निश्चय है जो हम लोगों को त्याग करके पैदल होकर पूर्व्वाभिमुख शत्रुओं की सेना में जाते हो, भीमसेन बोले हे राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर आप कवच और शस्त्रों को त्यागकर भाइयों को छोड़ के शस्त्रों से सन्नद्ध शत्रुओं की सेना के मनुष्यों में कहां को जाओगे, नकुल बोले हे भरतबंशी आप सरीके मेरे बड़ेभाई को इसप्रकार से जानेपर बड़ा भारी भय मेरे हृदय को पीड़ित करता है कहिये आप अब कहां जाओगे सहदेव बोले हे राजा इस महाभयकारी युद्ध करने के योग्य शत्रु के सेनाके समूह के सम्मुख होकर कहां जातेहो, संजय बोले कि हे कौरवनन्दन धृतराष्ट्र भाइयों के इस प्रकार से कहने पर भी मौन हुए अवाक् होकर चला जाता था, तब तो बड़े साहसी बासुदेवजी ने बड़े प्रसन्न होकर कहा कि मैंने इस के चित्तकी इच्छा को जाना, यह युधिष्ठिर भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपा चार्य्य और शल्य नाम आदि सब गुरुओं की प्रतिष्ठा पूर्व्वक परिक्रमा करके उनसे आज्ञाको मांगकर युद्ध में शत्रुओं से लड़ेंगे प्राचीन शास्त्रमें सुना जाता है कि जो बांधवों समेत गुरू वृद्धोंको शास्त्रके अनुसार प्रतिष्ठा देकर अपने से बड़ों के साथ युद्ध करे निश्चय करके युद्धमें उसकी विजय होती है यह मेरामत है, श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहनेपर शत्रुओं की सेना में बड़ा हाहाकार शब्द हुआ और पाण्डव लोगों के पक्षी राजा लोग चुप होगये, दुर्य्योधन की सेना के बीरों ने युधिष्ठिर को देखकर परस्पर में बार्त्तालाप करी कि यह कुलका कलंक है, प्रकट है कि यह राजा युधिष्ठिर भाइयों और शकुनी समेत भयभीत होने के समान भीष्मजी आदि की शरण लेने के निमित्त आताहै, पाण्डव युधिष्ठिर अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव चारों भाइयों समेत किस प्रकार से भयभीतसा होकर सन्मुख आता है निश्चय है कि यह पृथ्वीपर प्रसिद्ध क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न नहीं हुआ काहेसे कि इस अल्प बलरखने वाले का हृदय युद्ध से भयाकुल है, तदनन्तर उन प्रतिपक्षी मनुष्यों ने बड़े प्रसन्न हृदय से कौरवों की प्रशंसा की और पृथक् २ चैलों को अर्थात् रूमालों को फिराया, हे राजा तिसके पीछे वहां सब के बीर उनकेशव जी और सगे भाइयों समेत युधिष्ठिर की ओर को गर्जे हे राजा फिर वह कौरवों की सेना युधिष्ठिर को तुच्छ करके शीघ्रही अवाक् होगई, कि और सब विचारने लगे कि यह राजा क्या कहैगा और भीमसेन क्या कहैगा और युद्ध में प्रशं-

सनीय भीष्मजी क्या कहेंगे और श्रीकृष्णवा अर्जुन क्या कहेंगे हे धृतराष्ट्र इन विचारोंके कारण युधिष्ठिर के जानेसे दोनों ओरकी सेनामें बड़ाभारी संशय उत्पन्न हुआ कि राजा युधिष्ठिरको क्या कहने की इच्छा है, वहराजा युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेना के वाण बरछियों से व्याकुल सेना के पारहोकर भीष्म जीके सन्मुख आया, तदनन्तर शंतनुके पुत्र युद्धोत्सुकपितामह भीष्मजीके दोनों चरणों को युधिष्ठिर ने हाथों से दाबकर कहा, हे दुर्जय पितामह मैं आप से पूछताहूं कि इस युद्ध में हम आप के साथ लड़ेंगे सो आज्ञादो और आशीर्वाद भीदो, भीष्मजी बोले हे भरतवंशी महाराज राजा युधिष्ठिर जो तुम इस युद्धमें इसरीतिसे मेरेपास नहींआतेतो मैं तुमको पराजय करने का शाप देता- हे पुत्र मैं प्रसन्नहूं हे पाण्डव युद्धको करके विजयको प्राप्तकरो और युद्धमें जो तेरी दूसरी इच्छा है उसकोभी तुम पाओगे, हे राजा युधिष्ठिर वरमांग तू मुझ से क्या चाहता है हे राजा इस प्रकारके तेरे आचरणों से तेरी पराजय नहीं है, पुरुष धनरूपादि अर्थोंका दास है परन्तु अर्थ किसीका दास नहीं है हे महाराज यह सत्य है मैं कौरवों की ओर से अर्थद्वारावशीभूत कियागया हूं, हे कौरवनंन्दन मैं इस कारण से निर्मल के समान तुझसे वचन कहताहूं कि मुझको कौरवों ने धनके द्वारा पोषण किया है सो इनके लिये युद्ध तो अवश्य करूंगा तू युद्ध के सिवाय क्या चाहता है, युधिष्ठिर बोले हे महाज्ञानी मेरा हित चाहनेवाले तुम सदैव मेरे अन्तको विचारो और दुर्य्योधनादि कौरवों के निमित्त युद्धकरो और आप का दियाहुआ वर सदैव नियत रहै, भीष्म जी बोले हे कौरवनंदन युधिष्ठिर इस स्थान पर मैं तेरी कौनसी सहायता करूं दूसरे के लिये अपनी इच्छाके समान लड़ूंगा और जो तेरी इच्छा है उसको भी कह, युधिष्ठिर बोले हे तात पितामह आपको नमस्कार है मैं आपसे पूछताहूं हे अजेय मैं युद्ध में आप को कैसे विजय करसक्ताहूं इस विषयमें मेरे लिये श्रेष्ठ हितकारी शिक्षा दो, भीष्म जी बोले कि हे कुन्ती के पुत्र मैं ऐसा किसी को नहीं देखताहूं जो कोई पुरुष वा साक्षात् देवता इन्द्रभी मुझ युद्धमें लड़ते हुए को विजय करे, युधिष्ठिर बोले हे पितामह तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मैं आपसे यहहेतु पूछता हूं कि आप युद्ध में अपने विजय करने के उपाय को कहो भीष्मजी बोले हे तात जबतक मेरी मृत्युका समय न होय तबतक कोई मुझको युद्ध में जीतने वाला नहीं दिखाई देता है, संजय बोले इसके पीछे कौरवनंदन युधिष्ठिर ने भीष्मजी के वचन को शिरसे अंगीकार किया और फिरभी नमस्कार करके वह महाबाहु युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेना के सब मनुष्यों के देखते हुए सेना के मध्य में से निकलकर गुरु आचार्य्य द्रोणाचार्य्य जी के रथ के

पास गया, वहां कठिनतासे विजय होनेवाले द्रोणाचार्य्यजी को परिक्रमा पूर्व्वक नमस्कार करके वाणी से अपने कल्याणकारी बचन को बोला, हे भगवन् गुरुदेव मैं आपका पूजन करताहूं और पूछताहूं कि मैं पाप से युद्ध करूंगा या पाप से रहित युद्ध करूंगा इसको आप कहिये हेबिप्रेन्द्र आपकी आज्ञा से मैं किस प्रकारसे सब शत्रुओं को विजय करूंगा, द्रोणाचार्य्य बोले कि जो युद्धके निश्चय करने के लिये तू मुझको नहीं मिलता तो हे महाराज सब प्रकार से पराजय होनेके लिये तुमको शापदेदेता हे निष्पाप युधिष्ठिर मैं तुम से पूजित होकर प्रसन्नहूं मैं आज्ञा देताहूं कि युद्धकरो और विजय को पाओ, तेरेमनोरथ को सिद्ध करूंगा जो तेरी इच्छा होय सो कहो हे महाराज तुम ऐसी दशा में युद्ध के विशेष अन्य कौनसी बात चाहतेहो, पुरुषअर्थका दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे युधिष्ठिर यह सत्यही बातहै कि मैं कौरवों की ओर से अर्थ से स्वाधीन कियागया हूं, इस हेतुसे असमर्थों के समान मैं तुझ से कहताहूं कि युद्धतो इनके अर्थ हम करेंगे इसके सिवाय दूसरी बात क्या चाहता है मैं कौरवों के निमित्त लडूंगा परन्तु तुम्हारी विजय होनेका आशीर्बाद देताहूं युधिष्ठिर बोले हे गुरुदेव मेरी विजय होनेका आशीर्बाद हो और मेरे हितकारी सलाह को दो और आप कौरवों के निमित्त युद्ध करिये मुझे बरदो द्रोणाचार्य्य बोले हे राजा तेरी अवश्य विजयहै क्योंकि तेरेमन्त्री हरि हैं मैं तुझको अच्छी रीति से जानताहूं कि तू युद्ध में शत्रुओं को जीवनसे मुक्त करेगा जहां धर्म है वहीं श्रीकृष्णजी हैं जहां धर्म है वहीं विजयहै इससे हे कुन्तीनन्दन जाओ युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी अब मुझ से तू क्या पूछता है, युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य मैं अपनी इच्छाके अनुसार आपसे पूछताहूं हे अजेय मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करूंगा, द्रोणाचार्य्य बोले कि हे राजा जबतक मैं युद्ध भूमिमें लडूंगा तबतक तेरी विजय नहीं होगी मेरे मरने के पीछे तुम अपने भाइयों समेत शीघ्र उपायकरो, युधिष्ठिर बोले हे महाबाहु बड़े कष्टकी बातहै कि मैं आपको नमस्कार करके प्रार्थना करताहूं कि आपअपने मरनेके उपायकोबताइये, द्रोणाचार्य्यबोले हेतातमैं उस अपने शत्रु को संसारमें नहीं देखताहूं जो मुझ क्रोधाग्नि में भरेहुए बाणोंकी बर्षा करतेहुए को युद्धमें मारे, हे राजा इसके विशेष मरनेके निमित्त निश्चय करनेवाले योग बलसे देह त्याग करनेवाले मुझको युद्ध में कोई बीर मारने वाला नहीं दीखताहै यह मैं निश्चय करकेकहताहूं, मैं युद्धमें विश्वासित पुरुष से बहुतबड़े अप्रिय और असत्य वचनको सुनकर शस्त्रोंका त्याग करूंगा यह तुमसे मैं सत्य २ कहताहूं, संजयबोले हेधृतराष्ट्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य्यके इस बचनको सुनकर उन आचार्य्यजी की प्रतिष्ठाकरके नमस्कारकर

कृपाचार्य्यजीके पास आया और वह वक्ताओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उस बड़े दु-
र्जय कृपाचार्य्यजी को प्रणाम और प्रदक्षिणा करके यह वचन बोला कि मैं
गुरुजी को प्रणामादिक करके पापसे पृथक् हुआ लडूंगा या पापसे हे नि-
ष्पाप मैं आपसे आज्ञापाकर सब शत्रुओंको विजयकरूं कृपाचार्य्य बोले हे
महाराज जो युद्धके निमित्त निश्चय करने वाला तू मुझसे नहीं मिलतातो
मैं तेरे पराजयके निमित्त कठिन शाप देता, पुरुषही अर्थ का दास है परन्तु
अर्थ किसी का दास नहीं है हे महाराज यह सत्यही है कि मैं कौरवों की
ओरसे अर्थकेद्वारा आधीन किया गयाहूं उनके निमित्त युद्ध करना योग्य
है हे महाराज मेरा यह मत है इसी हेतुसे मैं असमर्थ के समान तुझसे
कहताहूं कि युद्ध के विशेष दूसरी जो बात चाहै वह मुझ से कह, युधि-
ष्ठिर बोले हे आचार्य्यजी बड़े कष्टकी बात है मैं भी इसी हेतुसे आप से
पूछताहूं आप मेरे वचन को सुनो यह कहकर पीड़ावान् और व्याकुल
चित्तहोकर कुछ न बोला, संजयबोले कि गौतम कृपाचार्य्यजी उसके अभि
प्राय को अच्छी तरह जानकर यह वचन बोले हे महाराज मैं तो अवध्यहीहूं
आपयुद्ध करो और विजयको पाओ मैं तेरेआनेसे प्रसन्नहूं हे राजामैं सदैव
प्रातःकाल उठकर तेरे विजयहोनेका आशीर्वाद दूंगा यहतुझसे सत्य २ क-
हताहूं, यह गौतम कृपाचार्य्य जीके वचनोंको सुनकर उनको प्रदक्षिण पूर्व्व-
क नमस्कार करके वहांको चले जहां मद्रदेशके राजाशल्य वर्त्तमानथे, उस
दुर्जय राजा शल्यकी नमस्कार पूर्व्वक परिक्रमा करके अपने कल्याण कारी
वचन को बोला, हे कठिनता से विजय होनेवाले राजा शल्य मैं आपकी प्र-
तिष्ठा करता हुआ प्रणाम करता हूं कि मैं निष्पाप होकर युद्धकरूंगा हेराजा
आपकी आज्ञा से मैं बड़े बलवान शत्रुओं को विजय करूंगा शल्य बोले हे
महाराज युधिष्ठिर जो युद्धके निश्चय करने को आपमेरे पासनहीं आते तो
मैं तुम्हारे पराजय के निमित्त महाशाप देता, मैं तुमसे पूजित होकर बड़ा
प्रसन्न हुआहूं जो इच्छा में होय वह मुझसे मांगो और जो तूचाहता है वही
तेरा मनोरथ सिद्धहोगा और मैंतुमको आज्ञा देताहूं कि युद्धकरो औरविजय
प्राप्तकरो हे वीर इसके सिवाय अपने अभीष्ट को कहो जिसकोमैंदूं हे युधिष्ठिर
ऐसी दशामें युद्ध के भिन्न दूसरी बात क्या चाहता है, पुरुष अर्थ का दास
है और अर्थ किसी का दास नहीं है यह वचन सत्य २ कहता हूं कि मैं
कौरवों की ओरसे अर्थ के आधीन कियागयाहूं, हे इच्छावान् मैं तेरी अ-
भीष्ट इच्छा को पूर्ण करूंगा इसहेतु से मैं असमर्थों के समान कहता हूं कि
तुम युद्धके विशेष कौनसी बात चाहतेहो युधिष्ठिर बोले हे महाराज सदैव
सुखदायी मेरे अभीष्ट के विषय में सलाहदो और कौरवों के निमित्तआ-

प युद्धकरो यही मैं बरमांगताहूं, शल्य बोले हे राजेन्द्र यहां मैं तेरी कौनसी सहायताकरूं मैं तेरे प्रतिपक्षी कौरवलोगोंकी ओरसे युद्धके लिये बचन बद्ध होगयाहूं इससे उनकेही निमित्तलडूंगा, युधिष्ठिरबोले कि हेशल्य मुझे वहीबर आपका दियाहुआ उचितहै जो आपने युद्धके उपाय में मुझसे प्रणकिया है आपको युद्धमें कर्णके तेजका नाश करना चाहिये, शल्य बोले हे कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर यह तेरा मनोरथ सिद्धहोगा तुम इच्छा पूर्व्वक युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी संजयबोले कि इसप्रकार उक्त महाबीरों से ऐसे २ बरदान लेकर भाइयों समेत युधिष्ठिर अपने मामाशल्यको नमस्कार करकेबड़ी सेना में से बाहर को निकले इसके पीछे गदके बड़े भाई वासुदेवजी युद्धभूमि में कर्ण के पासगये और पांडवोंके निमित्त उससे यह बचन बोले, हे कर्ण मैंने सुना है कि तुम निश्चय करके भीष्मकी विरुद्धता से युद्ध नहीं करोगे हे कर्ण हम को यह बरदानदो कि जबतक भीष्मजी नहीं मारेजायँ तबतक आपयुद्ध न करोगे भीष्मजीके मरनेपर क्यातुम युद्धके निमित्त संग्राम भूमिमें आओगे, हेराधाके पुत्र जो तमदुर्य्योधनकी सहायताको देखतेहो,कर्णबोले हे केशवजी मैं दुर्य्योधनका अनिष्ट नहीं करूंगा मुझको आपदुर्य्योधनका अभीष्टचाहने वाला और उसके निमित्त अपने प्राणोंकाभी त्यागनेवाला जानो,हेभरतबंशी धृतराष्ट्र श्रीकृष्णजी उसके वचनको सुनकर युधिष्ठिरादि पांडवोंसमेत वहांसे लौटे, तदनन्तर राजा युधिष्ठिर सेना में आकर बड़े उच्चस्वर से पुकारे कि जो हमको बरताहै मैं उसको सहायताके कारण बरताहूं, तदनन्तर धृतराष्ट्र के पुत्र युयुत्सुने इनको अच्छे प्रकारसे सच्चा देखकर बड़े प्रसन्न चित्त होकर कुन्ती के पुत्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह बचन कहा कि हे महाराज मैं आपके निमित्त युद्धभूमि में धृतराष्ट्र के पुत्रों से लडूंगा हे निष्पाप जो तुम मुझको बरतेहो युधिष्ठिर बोले हे युयुत्सु आओ २ हम सब तेरेअज्ञानी भाइयों से लड़ेंगे वासुदेव जी समेत हमसबप्रकार से कहते हैं, हे महाबाहु मैं तुझको बरताहूं मेरेकारणसे युद्धकर तूही धृतराष्ट्र के पुत्रोंके पिण्डों का सूत्र दिखाई देता है अर्थात् तूही जीवतारहैगा और बाकी सब मारेजायंगे, हेबड़े तेजस्वी राजकुमार तुमहम सब चाहने वालोंको चाहो तू निश्चय करके नि-र्बुद्धी दुर्य्योधनका ईर्षा करनेवाला नहीं होगा, संजय बोले तबतो युयुत्सु कौरवों और तेरेपुत्रोंको त्यागकरके नगाड़ा बजाकर पांडवोंकी सेनामें गया तदनन्तर बड़े प्रसन्न चित्त उत्साह युक्त राजा युधिष्ठिरने अपने स्वर्णमय प्र-काशमान महातेजस्वी रूप कवचको धारणकिया, और वह सब उसकेसाथी पुरुषोत्तमभी अपने २ रथोंपर सवार होकर उसके रथकेपीछे हुये और सबों ने पूर्व्वके समान अपने व्यूहको सन्नद्ध अर्थात् तैयार किया, और सैकड़ों

दुन्दुभी वा पुष्करनाम अनेक बाजोंको बजाया और नानाप्रकार के सिंह नादभी उन पुरुषोत्तमों ने किये, तब धृष्टद्युम्न आदि सब राजालोग पुरुषो त्तम पांडवोंको रथोंपर सवार देखकर फिर प्रसन्न हुये, और उन प्रतिष्ठा के योग्य पुरुषोंको प्रतिष्ठा देनेवाले पाण्डवों के समूह को देखकर राजालोगों ने बड़ी प्रशंसा की, और समयके अनुसार उन महात्माओंकी जात वालों पर बड़ी सुहृदता और कृपालुता को बर्णन किया, उन कीर्त्तिमानों की प्रशंसा से युक्त पवित्र चित्तों के हृदय आकर्षण करनेवाले बहुतअच्छा बहुत अच्छा यह श्रेष्ठ बचन चारोंओर को फैलगये, जिन म्लेच्छ और आर्य्य पुरुषोंने पाण्डवों के उस चलनको देखा और सुना वह गद्गद कण्ठों से रुदन करनेलगे तदनन्तर प्रसन्नचित्त साहसी सेना के मनुष्यों ने सैकड़ों भेरी और पुष्करादि अनेक बाजे और दुग्ध समान महाश्वेत उत्तम २ शंखों को बजाया १०२ ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणि भीष्माद्याभिगवनेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रों की और पाण्डवों की सेना के इस रीति पर तैयार होने पर पहले किन लोगों ने अर्थात् कौरव पाण्डवों में से पहले किस ने प्रहार किया, संजय बोले कि आप का पुत्र दुश्शासन भाई के उस बचन को सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेनाके साथ चला, इसीप्रकार भीम सेन आदि सब प्रसन्न चित्त पाण्डव लोग भी भीष्म जीसे युद्ध करने की इच्छा करके चले, शंखध्वनि और कलकला शब्द पूर्वक (क्रकच) (गोविपाक) (भेरी) (मृदंग) (मुरज) इत्यादि बाजों के और घोड़े हाथियों के अनेक प्रकारके शब्द होने लगे, हे राजा तदनन्तर वह दोनों सेनाओं के वीर लोग परस्पर में एक दूसरे पर प्रहार करने को महा गर्जनाओं को करके ऐसे दौड़े कि जिनके शब्दों से महातुमुलशब्द होगया, पाण्डवों का और दुर्योधनादि कौरवों की महायुद्धकरनेवाली सेना समागम के समय शंख और मृदंगों के शब्दों से ऐसे महा कम्पायमान हुई जैसे कि बायु से सब वन कम्पायमान होते हैं, फिर राजा लोगों से और हाथियों से समाकुल और अशुभ मुहूर्त्त में आनेवाली सेनाओं के ऐसे कठोरशब्द हुए जैसे कि बायुसे चलायमान समुद्रोंके शब्द होते हैं, शरीर के रोमहर्षण करनेवाले उसतुमुल शब्दके उठनेपर महाबाहु भीमसेन ऐसा अत्यन्ततासेगर्जा कि जिसकी गर्जना के कारण शंख दुन्दुभियोंके शब्द और हाथियोंकी चिंघाड़ वा सेनाके मनुष्यों से सिंह नादभी तिरस्कार होगये, इसभीमसेनके शब्द ने सेना के मध्यवर्त्ती

हजारों घोड़ों के हिन हिनाहट आदि अनेक शब्दों को दबादिया उसके उस महावज्र के समान शब्द को सुन कर तेरी सेना के मनुष्य अत्यन्त भयभीत हुए उस बीर के शब्द से सब सवारियों के बाहनों ने ऐसे मूत्र बिष्ठा को डाला जैसे कि सिंह के शब्द को सुनकर अन्य जंगल के पशु विष्ठा मूत्रको डालते हैं, वहां भीमसेन अपने शरीर को महाभयानक दिखाता और बड़े घनके समान गर्जता तेरेपुत्रों को डराता हुआ फिर उन्होंके सन्मुख आया, तब तो उस आते हुए बड़े धनुषधारी भीमसेन को दुर्य्योधन के सहोदर भाइयों ने चारोंओर से बाणों की बर्षा से ऐसा ढकदिया जैसे कि सूर्य्य को बादल ढकदेता है, हे राजा आपके पुत्र (दुर्य्योधन)(दुर्मुख)(अतिरथी)(दुश्शासन)(दुस्सह)(युयुत्सु)(दुर्मर्षण)(विविन्शति) (चित्रसेन) (महारथी विकर्ण)(पुरुमित्र)(जय) (भोज) पराक्रमी (सोमदत्त) यह सब वीर जैसे बादल बिजली को धारण किये हुए होते हैं उसी प्रकार धनुषों को चढ़ाये हुए कांचली रहित सर्पों के समान नाराच नाम बाणों को हाथों में लियेहुए सन्मुख आये तदनन्तर (द्रौपदीके पुत्र) और सुभद्राका पुत्रमहारथी (अभिमन्यु) (नकुल) (सहदेव) पार्षदका पुत्र (धृष्टद्युम्न) यह सब बड़े तीक्ष्णशरोंसे ऐसेपीड़ित करते हुए शत्रुओंके सन्मुख गये जैसे बड़े बेगवान्वज्रोंसे शिखरों को पीड़ित करते हुए इन्द्र पर्वतों के सन्मुख जाय, उस पहले युद्धमें तेरेपुत्रोंके और पांडवों के धनुषों की ज्या प्रत्यंचाओं के भयानक शब्दों से दोनों पक्षवालों मेंसे कोईभी परांमुखनहीं हुआ अर्थात् किसीने मुखन फेरा, हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र मैंने बाणोंको बराबर छोड़ते और लक्षों को बेधतेहुए द्रोणाचार्य्यके शिष्यों की हस्तलाघवता को देखा, उस समय शब्दायमान धनुषों के शब्द बन्दनहीं होते थे और प्रकाशित बाणभी बराबर ऐसे चले जैसे कि आकाश से नक्षत्रों के पतन बराबर होते हैं, हे भरतबंशी अन्य सब राजाओं ने कुतूहल देखनेवालों के समान उस दर्शनीय और भय उत्पन्न करनेवाले ज्ञात भाइयों के युद्धको देखा, तदनन्तर हे राजा उन क्रोधोंमें भरेहुए परस्पर में अपराधी महारथियोंने अन्योन्य की ईर्षासे परस्पर वीरताकरी, कौरव और पांडवोंकी वह दोनों सेना हाथी घोड़े और रथोंसे व्याप्तहोकर युद्धमें ऐसी शोभायमान हुई जैसे चित्र पटों से चित्रित दो बस्त्रहोतेहैं तदनन्तर धनुषबाण हाथमें लिये सब राजा लोग आपके पुत्रकी आज्ञासे सेनाके मनुष्यों समेत चारों ओरसे आटूटे उनचारों ओरसे दौड़ने वालों के ब्याकुल शब्द उस समुद्रकी गर्जना से सुनाईदिये जिस समुद्रमें हाथी घोड़ोंके समान रूप वाले बड़े कलिल थे वह समुद्र सिंह नाद से मिश्रित शंख भेरीसे ब्याकुल शब्दायमान बाणरूप ग्राहवाला धनुष

हाथी और खड्गरूप कछुए रखनेवाला और चारों ओरसे घोड़ों की ज्वाल रूपवायु को आगे रखनेवाला था, और युधिष्ठिर की आज्ञा पायेहुए हजारों राजालोग अपनी सेनाके मनुष्यों समेत आपके पुत्रकी सेनापर पड़े, उस समय दोनोंओर के वीरों में परस्पर ऐसा कठिन युद्धहुआ जिसकी धूलीसे सूर्य्य भी आच्छादित होगया, इसी से दोनोंओर के वीरों का अत्यन्त लड़-ना वा मुखफेरना अथवा लौटना वा किसी की मुख्यता दिखाई नहीं दी, इस बड़े भयकारी तुमुल युद्धके वर्त्तमान होने पर आप के पिताभीष्म जी सब सेना को उल्लंघन करके अत्यन्त शोभायमान हुए २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोलेकि हेराजा उनभयकारियोंके प्रथमभागमें राजाओंके शरीरोंको काटनेवाला महाभारी घोरयुद्ध प्रारंभहुआ, युद्धमें विजयाकांक्षी कौरवोंके और सृंजियोंके सिंहनादरूपी शब्दोंने पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान कर दिया, और धनुषधारियोंके धनुषोंकीटंकारोंसमेत शंखोंकी महाध्वनियोंसे अत्य-न्त कलकला शब्द उत्पन्न हुआ और परस्पर में सन्मुख गर्जनेवाले मनुष्यों के सिंहनाद उत्पन्न हुये, हे भरतर्षभ हस्तत्राण से टकरखाई हुई प्रत्यंचाओंके शब्द और पदातियों आदि घोड़ोंके चरणोंके शब्दोंसे और गिरेहुये अंकुश वा अस्त्रोंके शब्दोंसे अथवा परस्पर में सन्मुख दौड़ने वाले हाथियों के घंटों के शब्दों से, इस युद्ध में शरीर के रोमहर्षण करने वाले तुमुल शब्द उत्पन्न हुये और रथोंके शब्द बादलों की गर्जना के समान हुये, वह सबलोग जिनकी ध्वजा उन्नतथीं और जो जीवनकी आशाको अत्यन्त त्यागकरके कठोर चित्त निर्दय और दूसरों से शत्रुता करनेवाले बनकर पाण्डवों के स-म्मुख लड़ने को उपस्थितहुये हे राजा आप भीष्मपितामहजी कालदण्ड के समान भयानक रूप धारण किये अपूर्व्व भयकारी धनुष को हाथ में लेकर अर्जुनके सन्मुख दौड़े और संसारमें विदित धनुषधारी महाहस्त लाघव जा-नने वाला तेजस्वी अर्जुन भी अपने गांडीव धनुषको लेकर भीष्मजी के सन्मुख दौड़ा, कौरवोंमें महाश्रेष्ठ वह दोनों परस्परमें मारनेकी इच्छासे प्रवृत्त हुये तबमहाबली भीष्मजी ने अर्जुनको बाणोंसे भेदकर कंपायमान नहीं किया इसी प्रकार अर्जुनने भी भीष्मजी को बाणोंसे भेदकर कंपायमान नहीं किया और धनुषधारी सात्यिकी कृतवर्म्माके सन्मुख गया, इनदोनोंका भी रोम हर्षण महातुमुल युद्धहुआ सात्यिकीने कृतवर्म्माको और कृतवर्म्माने सात्यिकी को घायल किया, दोनों ने बड़े २ शब्दोंको कहकर परस्परमें घायल किया, तद-

नन्तर वहदोनों यादवबाणोंसे भरेहुये अंगोंसमेत ऐसेशोभायमान विदित हुये जैसे कि बसन्त ऋतुमें फूलोंसे आच्छादित विचित्र किंशुक होते हैं उससमय बड़ाधनुर्धारी अभिमन्यु बृहद्बलसे युद्धकरनेलगा,हेराजा तिसपीछे युद्धमेंराजा कौल्कने अभिमन्युकी ध्वजाकोगिराकर उसकेसारथीकोगिराया ध्वजाकेकाट-ने और रथसारथीके गिरानेसेअभिमन्युने महाक्रोधाग्नि रूपहोकर बृहद्बलको नौबाणोंसे घायल किया, अर्थात् एक बाणसे तो ध्वजाको और एक बाणसे पीछे के रक्षक और सारथी को मारा, शत्रुओंके विजय करने वाले दोनोंने परस्पर में तीक्ष्ण बाणों से घायल किया और महामानी युद्ध में प्रकाशित शत्रुता करनेवाले महारथी आप के पुत्र दुर्य्योधनसे भीमसेन युद्ध करने लगा, उन दोनों नरोत्तम और कौरवोत्तम महारथियोंने, युद्धभूमिमें अपने२ बाणों की बर्षासे परस्पर में एकने दूसरेको ढकादिया, हे भरतवंशी उन युद्धमें कुशल दोनों महात्मा चित्रयोधियोंको देखकर सब जीवोंको आश्च-र्य्य उत्पन्न हुआ, और दुश्शासन ने महारथी नकुल के सन्मुख जाकर बड़ी प्रसन्नता से तीक्ष्णबाणों करके नकुल को घायल किया और इसी प्रकार हे राजा हँसतेही हुये नकुल नेभी अपने तीव्र बाणों से दुश्शासन की ध्वजा और धनुषबाण को काट डाला और पच्चीस क्षुद्रकनाम बाण उसपर छोड़े, फिरतेरेपुत्र दुश्शासन ने नकुल के घोड़ों को मारकर उसकी ध्वजा को गि-राया, और दुर्मुख ने महाबली सहदेव के सन्मुख जाकर उपाय करने वाले सहदेव को अपने बाणोंकी बर्षासे पीड़ामान किया, तिसपीछे बड़ेवीर सह-देव ने उसी युद्ध के बीच बड़े तीक्ष्ण तीरों से दुर्मुख के सारथी को गिराया उनदोनों दुर्मद घात के बदले घातकरने के इच्छावान् वीरों ने अपने भय-कारी बाणों से युद्धमें भय उत्पन्न करदिया, और आप राजा युधिष्ठिर मद्र देश के राजा के सन्मुख गये उसको देखतेही मद्रदेश के राजाने युधिष्ठिर के धनुष को काट डाला, तब कुन्ती के पुत्र वेगवान् युधिष्ठिर ने उस कटे हुए धनुष को डालकर दूसरे दृढ़धनुषको धारण किया,तिस पीछे अत्यन्तक्रोधयुक्त होकर राजा युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण तने हुये बाणोंसे मद्रदेशाधिपति को आच्छा-दित किया और तिष्ठतिष्ठ करके अनेक बचनोंको कहा, हेभरतबंशी इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके सन्मुख दौड़ाउससमय महाक्रोधमेंभरे हुएद्रोणाचार्य्य ने युद्ध में उस महात्मा पांचाल के दृढ़ धनुष को जोकि मारनेका साधनथा काटडाला और महा भयानक काल दण्ड के समान अपने बाणको युद्धमें फेंका वह उस के शरीर में घुसगया तिसपीछे द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष में शायक नाम चौदह बाणों को धारण करके युद्ध में द्रोणाचार्य्य को घायल किया और दोनों क्रोधरूपोंने परस्परमें बड़ा युद्ध किया, हे महाराज

युद्ध में शीघ्रता करनेवाला शंख अपने समान गुणवाले सोमदत्तके सन्मुख गया और तिष्ठतिष्ठ शब्दको बोला तबबड़ेवीर सोमदत्तने युद्धमें उसके दक्षिण भुजा को घायल करके अत्यन्तही व्याकुल किया, हे राजा उन दोनों अहंकारियों का भी युद्ध ऐसा महा भयकारी हुआ जैसा देव दानवों का युद्ध होता है तिस पीछे बड़ा साहसी महारथी युद्ध में क्रोध रूप धृष्टकेतु वाह्लीक राजा के सन्मुख गया, तब वाह्लीक ने उस क्षमा से रहित धृष्टकेतु को बहुत से बाणों से आच्छादित करके महा सिंहनाद किया फिर उस महाक्रोधरूप चेदिराज धृष्टकेतु ने भी युद्ध में बड़ी शीघ्रता से नौ बाणों करके वाह्लीक को घायल किया और ऐसा युद्ध किया जैसे मत्त और उन्मत्त हाथी लड़ते हैं ४० और युद्धमें महा क्रोधाग्निरूप दोनों बारंबार शब्दों को करते हुये मंगल और बुधके समान बड़े पराक्रम से लड़े, महा कठिन कर्मी घटोत्कच उसी के समान कठिनकर्मी अलंबुषनाम राक्षसके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि युद्ध में बलिके सन्मुख इन्द्र जाता है, हे भरतवंशी फिर घटोत्कच ने उस महाक्रोध रूप महाबली राक्षस को तीक्ष्ण नौ तीरों से घायल किया, और अलंबुष ने भी युद्ध में भीमसेन के पुत्र घटोत्कच को गुप्त ग्रन्थि वाले बाणों से अनेक रीतिसे घायल किया, तदनन्तर वह दोनों बाणों से भिदेहुए युद्ध में अत्यन्त शोभायमान हुए हे राजा महा पराक्रमी शिखण्डी उस युद्ध में अश्वत्थामा से युद्ध करने के लिये उनके सन्मुख गया तब तो क्रोधाग्निरूप अश्वत्थामा ने सन्मुख वर्त्तमान होनेवाले शिखण्डी को बड़े तीक्ष्ण नाराच नाम बाणों से अत्यन्त घायल करके महा कंपायमान किया, तिस पीछे हे राजा शिखण्डी ने भी बड़े तीक्ष्ण पुंखवाले पीतरंगके शायकों से अश्वत्थामा को घायल किया, और युद्धभूमि में परस्पर बहुत प्रकार के बाणों से संग्राम किया और सेनापति राजा विराट संग्रामभूमि में राजा भगदत्त के सन्मुख गया तिसपीछे युद्ध होना प्रारम्भहुआ और राजा विराटने महा क्रोधित होकर भगदत्त के ऊपर बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे बादल अपने जल से पर्व्वतपर वर्षा करता है फिर भगदत्त ने भी बड़ी शीघ्रता से उस राजा विराट को संग्रामभूमि में बाणों के मारे ऐसा आच्छादित करदिया जैसे बादल सूर्य्य को आच्छादित करते हैं, और केकयदेशीय शरद्वत कृपाचार्य्य जी बृहत्क्षत्र के सन्मुखगये, हे भरतवंशी कृपाचार्य जी ने बाणों की वृष्टि से उसको ढक दिया और बृहत्क्षत्र ने भी महा क्रोध युक्त होकर गौतम कृपाचार्य्य जी को बाणों की वर्षासे व्याप्तकरदिया तदनन्तर हे राजा वह दोनों परस्पर में धनुष को काट घोड़ों को मारके विरथ होकर महा क्रोधों में भरेहुए खड्ग युद्ध करनेलगे, उन दोनों का वह युद्ध भयानक

रूप देखनेवालों को भी भयकारी विदित होता था, तिसपीछे शत्रु संतापी महा क्रोधाग्नि रूप राजाद्रुपद सिंधु के राजा जयद्रथ के सन्मुखगया तब जयद्रथ ने द्रुपद को तीन विशिखों से युद्ध भूमि में घायल किया और इसी प्रकार द्रुपद ने भी जयद्रथ को फिर उन दोनों का युद्ध भयानक दुःख से प्राप्तहोने के योग्य देखनेवालों को प्रसन्नता देनेवाला ऐसाहुआ जैसा कि मंगल और शुक्र का युद्ध होताथा तिसपीछे आपका पुत्र विकर्ण बड़ेशीघ्र-गामी घोड़ों के द्वारा भीमसेन के पुत्र महा पराक्रमी सुतसोमके सन्मुखगया और युद्ध होनेलगा विकर्ण ने सुतसोम को और सुतसोम ने विकर्ण को बाणों से वेधित करके कंपायमान नहीं किया इसमें बड़ा आश्चर्य्य साहुआ, नरोत्तम महारथी पराक्रमी पाण्डवों पर अत्यन्त क्रोधरूप चेकिता-नसुशर्मा के सन्मुख गया, हे महाराज युद्ध होनेलगा और सुशर्मा ने युद्ध में चेकितान को बाणों की बड़ी बर्षा करके रोका तब तो चेकितान ने भी महाक्रोधरूप होकर बाणों की बर्षा से सुशर्मा को ऐसा आच्छादित कर दिया जैसे कि बड़ा बादल पहाड़को आच्छादित कर लेता है, हे राजा इसके पीछे पराक्रमी शकुनि महाबली प्रतिबिन्ध के सन्मुख इस तीव्रता से गया जैसे कि सिंह मतवाले हाथी के सन्मुख जाता है, युधिष्ठिर के पुत्र प्रतिबिन्ध ने महा क्रोधित होकर सुबल के पुत्र शकुनि को तीव्र बाणों से ऐसा अत्यन्त घायल किया जैसे कि इन्द्र दैत्यों को करता है और शकुनि ने भी बड़े ज्ञानी महाबली प्रतिबिन्ध को अत्यन्त सपत्त्रबाणों से विदीर्ण करदिया, और श्रुतकर्म्मा कांबोज के महारथी पराक्रमी राजा सुद-क्षिण के सन्मुख गया, हे राजा तिसपीछे सुदक्षिण ने सहदेव के पुत्र को घायल करके मैनाक पर्व्वतके समान कंपायमान नहीं किया, इसके पीछे श्रुतिकर्मा ने भी कांबोजके महारथी सुदक्षिण को बाणोंसे अनेक रीति करके आच्छादित करदिया, तदनन्तर शत्रुसंतापी युद्ध में कुशल अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुनका पुत्र इरावान श्रुतायुषके सन्मुख गया, और महारथी बलवान् इरावान ने युद्ध में उसके घोड़ों को मारकर बड़े वेगसे शब्द किया जिससे कि संपूर्ण सेना में शब्द भरगया, और अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायुष ने भी अर्जुनके पुत्र इरावान के घोड़ोंको गदाओं से मारडाला फिर युद्धहोनेलगा, फिर आवंत्य देशके राजाविन्द अनुविन्द दोनों महाबीर कुन्तभोजके संमुख युद्ध में उपस्थित हुये, हे राजा वहां हमने उन दोनों के अपूर्व भयानकपरा-क्रमों को देखा अर्थात् वह दोनों बड़ी सेना समेत युद्ध करने में प्रवृत्त हुये अनुविन्द ने गदासे कुन्तभोज को घायल किया और कुन्तभोज ने शीघ्रही अपने बाण समूहोंसे उसको ढकदिया, फिर कुन्तभोजके पुत्रने भी शायकोंसे

विन्द को पीड़ामान किया और उसनेउसको पीड़ित किया यह भीआश्चर्य्य सा हुआ, हे धृतराष्ट्र केकयदेशी पांचों भाइयोंने सेनाओं समेत संग्रामभूमिमें नियतहोकर गंधारियोंके सन्मुखहोकर महायुद्धकिया, फिर आपकापुत्र वीरबाहु रथियों में श्रेष्ठ विराट के पुत्र उत्तरसे युद्ध करनेलगा और नौ बाणों से उसको घायल किया, उत्तरनेभी अपने तीव्र बाणों से उस वीरको विदीर्ण करदिया, और चंदेरीके राजाने उलूकके सन्मुख जाकर बाणोंसे उलूकको घायल किया और उलूक ने भी बड़ी तीव्रता से शीघ्र गति वाले बाणों से उसको विदीर्ण किया, हे राजा उन दोनों का युद्धभी महाघोर भयकारी हुआ और क्रोधित होकर दोनों ने परस्पर एकने दूसरे को घायल किया, इस प्रकार तेरेपुत्रऔर पाण्डवों के रथ गज अश्वों से संकुलित युद्धमें हजारों योधा लोगों के द्वन्द्व युद्ध हुए हे राजा एक मुहूर्त्ततक तो उनका युद्ध अच्छा देखने के योग्यहुआ फिर उन्मत्तोंके समान हुआ उस समय वहां कुछभी नहीं जाना गया अर्थात् ध्यानकरके देखा तो युद्धभूमि में गजारूढ़ गजारूढ़ के साथ रथी रथी के साथ अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के और पदाती पदातियों के साथ सन्मुख हुए तिसपीछे परस्पर युद्ध में सन्मुख होकर शूरवीरों का महा कठिन युद्ध हुआ और सब महा व्याकुल होगये वहां युद्धदेखने को आये हुए देव ऋषियों ने और सिद्ध चारणों ने देवता और असुरों के युद्ध के समान महा भयकारी युद्ध को देखा, हे धृतराष्ट्र तिसपीछे हजारों हाथी रथ और घोड़ों के सवारोंके समूह और पुरुषोंके समूह मर्य्यादा रहितहोकर परस्परमें युद्ध करनेलगे और जहां तहां रथ हाथी और घोड़ों के सवार बारम्बार लड़ते हुए दृष्टपड़े ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा जहां तहां लाखों पदाती मर्य्यादा से विरुद्ध लड़ने में प्रवृत्त हुए उसका वृत्तान्त मैं तुमसे कहता हूं, उस युद्ध में पुत्र ने अपने पिता को न जाना और पिताने पुत्र ही को नहीं जाना और भाईने भाई को न जाना और भानजेने मामाको और मामा ने भानजे को और मित्र ने मित्रको नहीं जाना कि तू भूतादि के आवेश युक्त पुरुषों के समान वह सबलोग कौरव और पांडवों के पक्ष में एक एकसे लड़ते हैं, हे भरतर्षभ कोई२नरोत्तम शूरवीर रथों में सवारहो होकर सेनाके और भागोंपर जा टूटे और रथोंहीसे रथों के जुओंको तोड़डाला, रथाधीश रथाधीशोंसेऔरकूवररथकूवरों से खंडित हुए और कोई २ परस्पर में मारने की इच्छासे सन्मुख आने वालों से युद्ध करनेलगे कोई भयतो रथोंसेहीटकरें खाकर चलनेके योग्य नहीं रहे

और बड़े डीलडौल के रथ आदि बड़े २ हाथियों से मिल कर टुकड़े २ होगये, हे महाराज वहां बहुत से क्रोधभरे हाथी अपने दांतोंसे घायल करतेहुए अंबारी और पताकावाले युद्धके महागजेन्द्र हाथियों से मिलकर अत्यन्त पीड़ा से पुकारते थे, शिक्षाओं से सीखेहुए चाबुक और अंकुशों से घायल बिना मदवाले हाथी मदों के चूनेवाले उन्मत्त हाथियों के सन्मुखहुए, और कोई २ मदचूने वाले बड़े २ हाथी हाथियों से भिड़े हुए क्रौंचके समानशब्दों को करते हुए जहां तहां भागे, इसी प्रकार अच्छे हमला करने वाले गंडस्थलोंसे मदझारनेवाले उत्तम हाथी लाठी तोमर और नाराचों से रुकगये, मर्म स्थलों से भिंदे हुए चिकारे मारतेहुए पृथ्वीपर गिरकर मृत्यु बशहुए और कोई २ हाथी महाभयानक शब्दोंको करते हुए चारों ओर को दौड़े हे महाराज हाथियों के चरण रक्षक शूरबीर लोग जो कि बड़े २ वक्षस्थल युक्त मिले हुए और प्रहार करने वाले थे वह हाथकी यष्ठी धनुष और निर्मल फरसे गदामूसल गोफन तोमर परिघ और स्वच्छ तीक्ष्ण खड्ग, इनसब शस्त्रोंको अच्छे प्रकार से धारण किये हुए अत्यन्त क्रोधमें भरे परस्परमें एक दूसरे के मारने की इच्छा करते हुए जहां तहां दौड़ते दृष्टपड़े, परस्परमें एक एक के सन्मुख दौड़ते हुए शूरबीरों के खंड मनुष्योंके रुधिरों से भरेहुए शोभायमान दृष्टि में आये, बीरोंकी भुजाओंसे अधोमुख और ऊर्ध्व मुख गिराये हुए शत्रुओं के मर्मों पर पड़ेहुए खड्गों का तुमुल शब्द उत्पन्न हुआ, गदा और मूसलों से टूटे हुएअंग और उत्तम खड्गों से कटेहुए हाथियों के दांतों से घायल हाथियों सेही खुदे हुए मनुष्यों के जहां तहां परस्पर पुकारेहुए भयकारी ऐसे बचन सुनेगये जैसे कि प्रेतों के शब्द सुनने में आते हैं, अश्वारूढ़ मनुष्यों से और अन्य तीब्रगामी अश्वों की सवारी से परस्पर में सन्मुखताहुई, उनके छोड़ेहुए शीघ्रगामी निर्मलसर्पों के समान जांबूनद सुवर्ण से अलंकृत भाले उनके अंगोंपर परस्पर में पड़े कितनेही बीरोंने उत्तम गतिवाले घोड़ोंसे बड़े रथोंको संयुक्त करके घोड़ा समेत रथोंको और सवारोंके शिरोंको काटा, और रथके सवारने बहुतसे अश्वारूढ़ों को पाकर बड़े झुकेहुए पर्ववाले भालों से उन बाणों से भिंदेहुओं को मारा, मदोन्मत्त सुनहरी भूषण वाले हाथियोंने नवीन बादल के समान रंगीनघोड़ों को तिरस्कार करके अपने पैरों से मर्दन किया, बड़े भयानक कितनेही हाथी मस्तक और देह में कवच आदि से भी अलंकृत भालों से मारेहुए बड़े पीड़ामान शब्दों को करते थे फिर वहां महा युद्ध होनेपर कितनेही उत्तम हाथियों ने सवारों समेत घोड़ों को मथकर वा उठाकर फेंक दिया हाथी अपने दांतों की नोकसे सवारोंसमेत घोड़ों को ऊंचेको उठाये ध्वजाधारी रथ समूहों को मर्दन करतेहुए चारों

ओर घूमनेलगे और कितनेही बड़े हाथियोंने बड़ी वीरता और मदोन्मत्ततासे अपनी सूंड और चरणोंकेद्वारा सवारोंसमेत घोड़ोंको मारा, यह अनर्थ देखकर चारों ओर से हाथियों के मस्तक वा अंग वा पसली और जंघाओं पर बड़े शीघ्रगामी सर्पोंके समान तीक्ष्ण बाण गिरे, और हे राजा जहां तहां वीरोंकी भुजाओं से मारीहुई बरछियां लोहे के कवचों को काटकर मनुष्य और घोड़ों के शरीरों पर पड़ीं वह बरछियां महाभयानक उल्काओं के रूप थीं, और इसी संग्राम में चित्र व्याघ्र चर्मसे बंधेहुए और व्याघ्रकेही चर्म में रहनेवाले मियान से बाहर स्वच्छ खड्गों से शत्रुओं को मारा, निर्भय मनुष्य के सन्मुख जाना और काटना आदिक सब कर्मोंको करना और बाईं ओर को सवारी करना इत्यादि चेष्टाओंको दिखलाते खड्ग ढाल और परशु नाम शस्त्रों समेत गिरे, कितनेही हाथी सूंड़ोंसे घोड़ोंसमेत रथोंकोखैंचतेथे और खैंचनेवाले हाथियों के शब्दों को सुनकर सबके सब चारों ओर को गये, कितनेही मनुष्य डंडोंकी कीलोंसे कटेहुए और परशुओं से मारे हुए थे और बहुत से हाथियोंसे मर्दित हुए और कितनेही घोड़ों से अत्यन्त घायलहुए हे महाराज जहां तहां कितनेही मनुष्य बांधवों को पुकारते हुए रथों के पहियों से दबकर परशुओं से कटगये, और कहीं संग्राममें अपने पुत्रोंको कोई भाइयों को और मामा वा भानजों को अथवा अन्य लोगों को पुकारतेहुए घायल होकर मारेगये, हे भरतवंशी जिनकी आंतें फैलगईं और जंघा टूटगईं ऐसे सब मनुष्य होगये और बहुतसे कटीहुई भुजाओं समेत अंगों से रहित हुए, और अनेक मनुष्य जीवनकी इच्छा करते हुए अत्यन्त रोदन करते तड़पड़े बहुतेरे प्यासे और धैर्य्य को छोड़हुए जल को खोजते थे, हे राजा उन रुधिरों से भरेहुए दुखियों ने आप समेत आपके पुत्रों की निन्दाकरी, हे धृतराष्ट्र अच्छे शूरवीर क्षत्रिय न तो शस्त्रको छोड़ते हैं न रोते और पुकारते हैं, हे राजा जहां तहां अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरलोग क्रोधसे अपने दांतों के द्वारा ओठोंको काटकर निंदा युक्त वचनों को कहते हैं, कोई २ धैर्य्यवान् महाबली बाणों से महा व्याकुल और घावों से पीड़ित होकर महा कष्टसे मौन होगये, कितनेही शूरवीर युद्ध में रथ से विहीन और उत्तम हाथियों से अत्यन्त घायल दूसरे के रथों की इच्छा करतेहुए मार्ग में गिरपड़े, हे महाराज वह फूलेहुए किंशुक वृक्ष के समान शोभायमान हुए और इसके विशेष सेना में भयकारी अनेक शब्द प्रकटहुए, इस बड़े भयानक और उत्तम वीरों के नाश करनेवाले युद्धके होने पर संग्राम भूमि में पिता ने पुत्रको और पुत्र ने पिताको मारा, मामा ने भानजे को और भानजे ने मामा को मित्रने मित्र को इसी प्रकार बांधवों ने बांधव आदि संबंधियों को भी मारा, इस रीति से पाण्डवों से और कौरवों से

उस भयानक रूप मर्य्यादासे रहित बड़े भयकारी युद्ध के होनेपर यह सर्व संहार जारीहुआ, हे भरतर्षभ पांच नक्षत्रवाले तालध्वजा समेत भीष्मजी को पाकर अर्थात् सन्मुख होकर पाण्डवों की सेना अत्यन्त कंपायमान हुई उससमय वह महाबाहु भीष्मजी सुवर्ण निर्मित उत्तम ध्वजा समेत विस्तृत रथ में बैठेहुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि मेरु पर्व्वतपर चन्द्रमा शोभित होता है ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले हे राजा उस महाभयानक दिन के मध्याह्न ब्यतीतहोने और इस रीति से उत्तम लोगों के नाश वर्त्तमान होनेपर, आप के पुत्रकी आज्ञा लेकर (दुर्मुख) (कृतबर्मा) (कृपाचार्य्य) (शल्य) और विविन्शति ने भीष्मजी के पास आकर उनकी रक्षाकरी, हे भरतर्षभ इनपांच अतिरथी बीरों से रक्षित महारथी भीष्मजी ने पाण्डवों की सेना में प्रवेश किया, और हे धृतराष्ट्र (चेदि) (काशि) (कुरुष) और पांचाल देशकी सेना के मध्य में भीष्मजी की तालरूप ध्वजा बहुत सुन्दर दृष्ट पड़ी, उस बैरिणी युद्ध में बड़े बेगवान् अतिशय झुके हुए भल्ल नाम बाणों से भीष्मजी ने शिर और ध्वजा युक्त रथों को रथ के जुए से आदि अंगों समेत काटा, हे भरतर्षभ नक्षत्र के समान भीष्मजी के घूमने पर मर्मस्थलों से घायल कितनेही हाथियों ने पीड़ा के शब्द किये, उस समय अभिमन्यु अत्यन्त क्रोधमें भराहुआ पिंगल वर्ण उत्तम घोड़ों के रथ में बैठकर भीष्मजी के रथ के सन्मुख आया, और जांबूनद सुवर्ण से रचित कर्णिकार वृक्षके चित्रकी रखनेवाली ध्वजा समेत भीष्मजी को आदिले उन उत्तम पांचों रथियों के सन्मुख हुआ, फिर वह वीर भीष्मजी की ताल ध्वजा को तीक्ष्ण बाणों से छेदकर उनके पीछे चलनेवाले पांचों रथियों से युद्ध करनेलगा, एक बाणसे कृतबर्मा को और पांच बाणों से शल्य को और नौ उत्तम बाणों से पितामह को घायल किया, और जांबूनद सुवर्ण से शोभित एक उत्तम शायक से उनकी ध्वजाको काटा, और सब पर्दों के भेदन करनेवाले झुकेहुए पर्ववाले एक भल्ल नाम बाण से दुर्मुख के सारथी का शिर देह से जुदा करदिया, सुवर्ण से बनेहुए महा शोभायमान कृपाचार्य्य जी के उत्तम धनुष को तीक्ष्ण नोकवाले भल्ल से काटा और महा क्रोधरूप होकर उस महारथीने अपने तीव्र बाणों से उनसब को भी घायल किया देवता लोग भी आकाश से उस शीघ्र हस्तलाघवता को देखकर प्रसन्नहुए, और भीष्मआदि सब रथियों ने उस अर्जुन के पुत्र

अभिमन्यु के लक्षभेदनसे उसको साक्षात् अर्जुन के समान पराक्रमी माना, और घुमाये उल्मुक के समान प्रकाशित निर्विघ्न मार्ग में नियत उसका मण्डल दिशाओं में गिरा और गांडीव धनुषके समान उसको शब्दायमान किया, तब शत्रुओं के मारनेवाले भीष्मजी ने शीघ्रता पूर्व्वक उससे आगे होकर युद्धभूमि में शीघ्र गतिवाले नौवाणों से तत्कालही उस अर्जुन के पुत्रको घायल किया, और बड़े पराक्रमी दृढ़व्रत सावधान भीष्मजीने इसकी ध्वजा को तीन भल्लोंसे काटा और उसके सारथी को तीन वाणों से मारा, हे राजा इसीप्रकार कृतवर्म्मा कृपाचार्य्य और शल्यनेभी अर्जुनके पुत्र को घायलकरके ऐसे कंपायमानही किया जैसे मैनाक पर्व्वतको कंपायमान नहीं करसके, फिर उन महारथियों से घिराहुआ अर्जुन कापुत्र अभिमन्यु पांचों रथियों के ऊपर वाणों की वर्षा करके पांचों के अस्त्रोंको अपने वाणों से रोककर भीष्मजीके ऊपर वाणों को छोड़ताहुआ बड़ेवेग से गर्जा उससमय हे राजा वहां उस युद्धमें उपाय करने वाले और वाणों से भीष्मको मारने वाले अभिमन्युका बड़ाभारी भुजबल विदित हुआ, तब भीष्मजी नेभी उस पराक्रम कर्त्ता के ऊपर वाणों को छोड़ा फिर उसने युद्ध में भीष्मजीके धनुष से छूटेहुए वाणोंको काटा, तिसपीछे उस सफल वाणवाले वीरने भीष्मजी की ध्वजाको फिर नौतीरों से काटा इस कारण सबलोग बड़े शब्द से पुकारे हे भरतवंशी वह बड़ी शाखा युक्त सुवर्ण से शोभित सुवर्णित ताल वृक्ष अभिमन्यु के विशिखनाम वाणों से कटा हुआ पृथ्वीपर गिरा, हे भरतर्षभ अभिमन्यु के विशिखों से घिरीहुई ध्वजाको देखकर भीमसेन से महाप्रसन्न होकर उस अभिमन्यु को प्रसन्न करके बड़ी गर्जनाकी, इसके पीछे महाबली भीष्मजीने उस महाभयकारी युद्ध में बहुत से दिव्यमहा अस्त्रों को प्रकट करके सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु को हजार वाणों से ढकदिया यह आश्चर्य्य सा होगया, यह देखकर हे राजा आगे लिखे हुये पाण्डवों के महारथी बड़े धनुषधारी रथों में सवार होकर शीघ्रही अभिमन्युकी रक्षा के लिये दौड़े उनके नाम यह हैं कि उत्तरनाम अपने पुत्र समेत राजा (विराट) पर्षतका पुत्र (धृष्टद्युम्न) (भीमसेन) (केकय) सात्यकी, शंतनुके पुत्र भीष्मजी ने युद्धमें उनतीव्र आनेवालों के मध्य में धृष्टद्युम्न को तीन वाणों से और सात्यकी को नौवाणों से घायल किया, और कर्ण पर्य्यन्त खैंचकर छोड़हुये तीक्ष्णधार वाले एक वाण से भीमसेन की ध्वजाको काटा, हे नरोत्तम भीमसेन की ध्वजा सिंह के चित्रकी स्वर्णमयी भीष्म से गेरी हुई पृथ्वीपर गिरी तदनन्तर भीमसेनने शंतनुके पुत्र भीष्मजी को वाणों से घायल करके एक वाण से कृपाचार्य्य को और आठवाणों से कृतवर्म्मा को घायल किया, और

उत्तरनाम विराट्का पुत्र अग्रभाग में सूंड़की कुंडली बनाने वाले हाथी पर सवार होकर मद्रदेश के राजा शल्य के सन्मुख दौड़ा, शल्य ने बड़ी तीव्रता से रथपर गिरने वाले उसगजेन्द्र के महावेगको रोका, फिर उस क्रोधित गजेन्द्र ने चरणों से रथके जुयेको दबाकर उसके चारों उत्तम सवारी के घोड़ों को मारा, ३७ मृतक घोड़े वाले रथपर नियत राजा मद्रने सर्पके समान और उत्तरके नाश करने वाली लोहेकी बरछी को फेंका, उसबरछीसे जिसका कवच कटगया ऐसा वह उत्तर बिस्मरणता में आकर हाथी के ऊपरसे नीचे गिरपड़ा और गिरतेही उसके हाथ से अंकुश और तोमर छूटपड़े, फिर शल्य ने अपने रथ से उतर खड्ग हाथ में लेकर बड़े पराक्रम से उसके गजेन्द्र की बड़ीभारी सूंड़को काटडाला, वह हाथी बाण समूहों से भिंदाहुआ कवचटूटा कटीहुई सूंड़ से भयानक शब्द करता हुआ महादुःखों से पृथ्वीपर गिरकर मरगया, हे राजाशल्य ऐसाकर्म करके शीघ्रही कृतवर्म्मा के प्रकाशवान् रथ पर चढ़गया, तब विराट्के पुत्र श्वेत ने भाई उत्तरको मृतक देखकर और साथ में बड़े वीरलोगों को जानकर क्रोधयुक्त होके गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से उनके धनुषोंको काटा, हे भरतवंशी वह धनुष कटेहुये दीखपड़े तदनन्तर उन्होंने अर्द्ध निमेषमेंही अपने सब धनुषों को तैयार करके सातबाण श्वेत को मारे तदनन्तर अपार बुद्धि श्वेत ने सात भल्लों से उन धनुषधारियों के धनुषोंको काटा, वह धनुष कटे हुये महारथी दिव्यबरछोंको हाथमें लेकर भयकारी शब्दोंको करने लगे और सातोंबरछोंको उन्होंने श्वेतके रथपर छोड़ा तिसपीछे परम अस्त्रों के जानने वाले श्वेतने उन ज्वालारूप प्रकाशित उल्का और बज्रके समान शब्दायमान सातों बरछोंको अपने सातभल्लोंसे बीचही में काटडाला, तदनन्तर हेभरतबंशियोंमें श्रेष्ठ श्वेतने सब शरीर के छेदने वाले बाणको रुक्मकेरथपर चलाया, वहबाण उसके मुखको उल्लंघन करके बड़ीतीव्रता से उसके शरीरमें प्रवेशकरगया इसकेपीछे हे राजा रुक्मरथी शायक नाम बाणसे घायल होकर रथके बैठने के स्थानमें बैठ गया और बड़ी अचेततामें प्रवृत्तहुआ परन्तु शीघ्रता करने वाला उसका सावधान सारथी उसको अचेत जानकर सबको देखतेहुये बहुत दूरलेगया तदनन्तर महाबाहु श्वेतने सुवर्णसे शोभित दूसरे घोड़ोंको लेकर, उनछओंकी ध्वजाओंकी नोकोंको गिराया फिर हेराजा वहश्वेत शेषबचेहुये घोड़ोंको बाणों से आच्छादित करकेशल्य के रथपर गया, हेभरतबंशी इसके अनन्तर शल्यके रथपर जातेहुये सेनापति श्वेतको देखकर आपकी सेनाके मनुष्यों में बड़ा हलचल का शब्द हुआ फिर आपका पुत्र महाबली भीष्मजीको आगेकरके सबसेना के मनुष्यों समेत शल्यके रथपर गया और मृत्यु के मुखमें फँसे हुये

मद्रके राजा शल्यको बचाया, इसके पीछे आपके पुत्र और प्रतिपक्षियों में महा रोमहर्षण करनेवाला तुमुल युद्ध हुआ जिसमें रथ और हाथी संयुक्त थे, कौरवोंके पितामह वृद्धने (अभिमन्यु) (भीमसेन) महारथी (सात्यि की) (केकय) (विराट्)(धृष्टद्युम्न)(पर्वतकापुत्र) इननरोत्तमोंपर और राजाचंदेली की सेनाके पुरुषोंपर बाणोंकी वृष्टिकी ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिश्वेतयुद्धेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इस प्रकार शल्यके रथके पास बड़े धनुषधारी श्वेत के वर्त्तमान होनेपर कौरव और पाण्डवों ने क्या २ कर्म किये और शन्तनु भीष्मजीने क्या किया उसको मेरेआगे वर्णन करो, संजय बोले हेराजा इसके पीछे लाखों उत्तम शूरवीर और महारथी क्षत्री उस सेनापति श्वेतको आगे करके आपके पुत्र राजा दुर्य्योधनको अपना पराक्रम दिखलातेहुये शिखण्डी को आगे कर रक्षा करनेकी इच्छा करके, युद्धकर्त्ताओंमें उत्तम भीष्मजी को मारनेकी अभिलाषा करते हुये उनके सुवर्ण जटित रथके समीप उनकी सन्मुखतामें आकर वर्त्तमान हुये उस समय बड़ा भारी युद्ध हुआ, अबमैं उस युद्धको कहताहूं जिसरीतिसे तुम्हारेपुत्र और दूसरे लोगोंकायुद्धप्रचलितहुआ उस युद्धमें भीष्मजीने रथीलोगों के स्थानोंको खाली करके उनके शिरोंको काटा, सूर्य्यके समान प्रतापी युद्ध में चारों ओरसे पीड़ित करतेहुये भीष्मजी ने बाणोंसे सूर्य्यको ऐसेढकदिया जैसे उदय होकर सूर्य्य अंधेरेकोढक देताहै हेराजा उन्होंने युद्धके बीच क्षत्रियोंके नाश करने वाले बड़े शीघ्र गामी लाखोंतीव्र बाणोंकी वर्षा करी, युद्धमें अनेकशूरोंके शिरोंको गिराया हेराजा भल्ल और बाणोंसे युक्त शिरसे रहित बहुतसे रथी रथमें बैठेहुये दिखाई दिये रथी रथीकेऊपर अश्वपति अश्वपतिके ऊपर वर्त्तमानहुये, और सेनाके साथ मरे हुये धनुषों समेत रथमें पड़ेहुये वीरोंको उनके रथोंके घोड़े इधर उधर लेजाते हुए टूटपड़े, खड्ग और तूणीर के बांधनेवाले कटेहुए शिरोंसे वर्त्तमान हुए और सैकड़ों पृथ्वीपर पड़ेहुए वीरोंकी शय्याओंपर सोते हैं, और परस्पर में दौड़ते गिरतेहुए फिर उठखड़े हुए और उठकर अत्यन्त दौड़नेवालोंने द्वन्द्वयुद्ध को मचाया, फिर परस्पर में पीड़ित होकर युद्धभूमिमें फिरनेलगे मतवाले हाथी चारों ओर से गिरे और जिनके सारथी मारेगये वह भी हाथी घोड़े गिरपड़े, रथों के साथ रथीलोग चारों ओर से मर्दन करनेलगे और कोई किसी के बाण से मराहुआ रथसे गिरा, और जिसका सारथी मारा गया वह बड़ा रथ भी काठ के समान गिरा और द्वन्द्व युद्ध में धूलके

उठने पर, लड़नेवाले का विज्ञान और सन्मुख युद्ध करने वालों केशब्द ध्वंसहुये युद्ध करनेवालों का शरीर छूने से शत्रुका ज्ञानहोता था, हे राजा विजय करनेवाली सेना बाणोंसे लड़नेवालों को उल्लंघन करगई और वीरों के कहे हुये वीर शब्द परस्परमें सुनाई नहीं दिये, युद्धके शब्दायमान होने और कर्ण फाड़नेवाले पटहशब्द होने पर युद्ध करते हुये अपनी शूर वीरता करने का परस्परमें पिछली शूरताओं का वर्णन करना भी नहीं सुनागया भीष्मजी के धनुषसे निकले हुये बाणों से पीड़ामान और युद्धमें लड़नेवालों का भी वर्णन नहीं सुनाई दिया,एकने दूसरे वीरोंके मनोंकोकंपितकिया उस बराबर व्याकुल करनेवाले रोमहर्षण तुमुलयुद्धमें,कोई पिता अपने निजपुत्र को नहीं जानताथा रथके पहिये और जुए टूटगये और एक भारवाहक घोड़ा मारागया, जुए के और पहिये के टूटने और रथको स्वाधीन रहित होने पर सारथी समेत वीर लोग सूधे चलनेवाले बाणों के द्वारा रथों से गिराये गये, और परस्परमें लड़ते हुये हृष्टपड़े जो मारागया वह शिरसे रहित हुआ यह मर्मस्थलों में घायल होकर मरा, भीष्मजी के हाथ से शत्रुओं के मनुष्यों को मरतेहुये कोई भी बिना घायल के नहीं बचा कौरवोंके उसबड़े युद्धमें आप श्वेतने, राजकुमारों को और सैकड़ों समूहवाले बड़े २ पुरुषों को मारा और हजारों समूह युक्त रथियों के शिरोंको काटा, हे भरतवंशी उस युद्ध भूमि में चारों ओर से बाज़ू बन्दों समेत भुजा वा धनुष औररथी पदाती रथवारथों में सवार छोटी बड़ी पताका अथवा घोड़ोंके और रथों के समूह वा मनुष्योंके समूह सैकड़ों हाथियों समेत श्वेत शूरवीरके हाथों से मारेगये उसके पीछे हमभी श्वेत के भयसे भयभीत होकर अपने उत्तम रथ को छोड़कर दूर चलेगये, और यहांपर आपकी चिन्ताको देखते हैं सोहे कौरवनन्दन हमसब कौरव लोग बाणोंकी झड़ीको बिचारकर वहां पर नियत, शन्तनु भीष्मजी को देखनेलगे वह नरोत्तम बड़े उदार प्रतापी हमारे वृद्ध पितामह भीष्मजी भयके समय बड़े भारी युद्धमें,,निश्चलमेरुपर्व्वतके समान अकेले ही नियत हुए और जैसे चैत्र बैशाख में सूर्य्य अपनी किरणोंसे पृथ्वीकेरसा दिकों को आकर्षण करताहुआ नियत होताहै उसीप्रकार वह शीतल किरणों वाला भीष्मभी शत्रुओंके प्राणोंको खैंचता हुआ नियत हुआ युद्धमें शत्रुओं को मारते हुए उसधनुष धारीने बहुत प्रकार से बाणों के समूहोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि चक्रधारी बिष्णु असुरों पर छोड़ते हैं तब भीष्मजी से घायल हुए वीर लोगों ने भीष्म को त्याग किया और अपने सब समूहों को भी काष्ठसे छुटीहुई अग्नि के समान शत्रुओंके समूहों से पृथक् किया प्रसन्न चित्तदेहसे प्रफुल्लित शत्रु संतापी दुर्य्योधनके प्रयोजनकरनेमें प्रवृत्त चित्तअकेले भीष्मजी

ने उसअकेले श्वेतको अपने सन्मुख देखकर पांडवोंको बहुत शोषण किया हे राजा जीवनको और उससे उत्पन्न हुए भयको त्यागकर उस महा युद्ध में पांडवों की सेना के मनुष्यों को मारकर गर्दमर्द किया फिर आपके पितादेव-व्रत भीष्मजी उस सेनाओं के मारनेवाले सेनापति को देखकर बड़ी शीघ्रग-तिसे सन्मुख हुआ उस समय उस श्वेतने बाणोंके महाजालोंसे भीष्मजीको आच्छादित करदिया, इसी प्रकार भीष्मजी ने भी बाणों के समूहों से श्वेत को ढकदिया और फिर वह दोनों बैलोंके समान गर्जतेहुए बड़े मतवालेहाथी और व्याघ्रके समान अत्यन्त क्रोध मेंभरे परस्परमें आघातकरने लगे,तदन-न्तर वहदोनों पुरुषोत्तम अस्त्रों से अस्त्रों को रोककर, परस्पर मारनेके इच्छा-वान् युद्धमें प्रवृत्त हुए अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजी पांडवों की सेनाकोएकही दिनमें भस्मकर डालते जो श्वेत रक्षा न करता तिस पीछे श्वेतसे मुख फेरेहुए पितामह को देखकर पांडवोंने बड़ाहर्ष मनाया, और आपका पुत्र उदास हुआ तदनन्तर क्रोधमें भराहुआदुर्य्योधन अपनेसाथी राजाओं समेत सेनाके मनुष्यों को साथ लिये युद्धमेंआकर पांडवों की सेना के सन्मुख दौड़ातब श्वेतने गंगाके पुत्र भीष्मजीको छोड़कर बड़ी तीव्रतासे आपके पुत्रकी सेना का ऐसे नाशकिया जैसेवायु अपने बलसे वृक्षों का नाश करती है, वह क्रोध से भराहुआ विराट् का श्वेतनाम बड़ा पुत्र दुर्य्योधनकी सेनाका नाशकर-के वहां से लौट कर फिर वहीं आपहुंचा जहांपर भीष्मजी नियतथे, हेराजन् वह दोनों प्रकाशवान् महाबली महात्मा परस्पर में फिर ऐसे युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्र लड़तेथे और परस्पर मारने की इच्छा करतेथे श्वेतने अपने धनुषको हाथमें लेकर भीष्मजी को सात बाणों से विदीर्ण किया इसके पीछे इस पराक्रमी ने उस पराक्रमी को बड़े पराक्रम से ऐसेहटा दिया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी को हटादेता है फिर क्षत्रियों के प्रसन्न करने वाले विराट्के पुत्र श्वेत ने क्रोध करके युद्ध में धनुषको खैंच कर भीष्मजी को घायल किया, इसी प्रकार शंतनु भीष्मजी ने भी उसको दश बाणों से विह्वल करदिया, वह पराक्रमी भीष्मजी से घायल होकर भी पर्व्वत के समान कम्पायमान नहीं हुआ तदनन्तर फिर श्वेतने गुप्त ग्रन्थि वाले पचीस बाणों से भीष्मजी को घायल किया, यह आश्चर्यसा हुआ और युद्धमें होठ को चाबने वाले श्वेतने अत्यन्त हँसकर, दश बाणोंसे भीष्म के धनुषको दश खण्ड कर दिये तिस पीछे बाणोंकेभी छेदने वाले विशिखों को चढ़ाकर, उन महात्मा भीष्मजी की तालध्वजा के शिर को मथन किया फिर आप के पुत्रों ने भीष्मजी की ध्वजा को गिरा हुआ देखकर भीष्मजी को श्वेतके आधीन वर्त्तमान मृतक रूप माना और प्रसन्न चित्त

पाण्डवोंने भी चारों ओर शंखोंको बजाया, महात्मा भीष्मजी की तालध्वजा को गिरा हुआ देखकर दुर्य्योधन ने बड़े क्रोध से अपनी सेनाको जतायाकि उन देखनेवालोंको भी श्वेत मारेगा तब शान्तनु भीष्मजी भी मारे जायँगे इसलिये मैं तुम लोगों से कहताहूं कि बड़े उपाय से भीष्मजी के जीवनकी इच्छा से तुम चारोंओर से उनकी रक्षा करो यहबात मैंसत्य सत्यही कहताहूं राजा दुर्योधनके बचनको सुनतेही शीघ्रता करनेवाले महारथियोंने चार अंग वाली सेना समेत गंगा के पुत्र भीष्मकी रक्षा करी, (बाह्लीक) (कृतवर्म्मा) (कृपाचार्य) शल्य (जरासन्धकापुत्र) (बिकर्ण) (चित्रसेन) (विविंशति) हे भरतबंशी उन सब शीघ्रता में शीघ्रता करने वालोंने चारों ओर से भीष्मजी को मध्यमें करके श्वेतके ऊपर अस्त्रों की बर्षाकरी, हस्त लाघवताके दिखानेवाले और शीघ्रता करनेवाले महाबली बड़े बुद्धिमान श्वेतने उन क्रोध भरे हुओंको अपने तीव्रबाणों से रोका,जैसे कि सिंह हाथियोंको रोकता है उसी प्रकार श्वेतने उन सबोंको रोककर बाणों की बड़ी बर्षा से भीष्मजीके धनुषको काटा, तदनन्तर हे राजन् युद्ध भूमिमें शांतनु भीष्मजी ने दूसरे धनुषको लेकर कंकपक्ष युक्त शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणों से श्वेतको घायल किया, तिस पीछे हे राजन् लड़ाईमें सबलोगों के देखते बड़े क्रोधयुक्त श्वेतने भीष्मजी को बड़े २ लोहेके बाणोंसे विदीर्ण किया, इसके अनन्तर राजा दुर्योधन उन सब लोगों के आगे बड़े बीर भीष्मजी को युद्ध में श्वेत से रुका हुआ देखकर बड़ा दुःखी हुआ, आपकी सेनाका बहुत देर तक निवासरहा और श्वेतके बाणोंसे विदीर्ण उस बीर भीष्मको देखकर श्वेत के आधीन बर्त्तमान होकर उसकेहाथसे मृतकरूप माना इसपीछे आप के पिता देवब्रत भीष्मजी क्रोधके बशीभूत हुए, हे महाराज ध्वजाको मथित करके उस सेनाको रोके हुए देखकर श्वेतके ऊपर अनेक शायकों की वर्षा करी, फिर रथियोंमें श्रेष्ठ श्वेतने उन बाणोंको रोककर फिरभी आपके पिता भीष्मके धनुषको भल्लोंसे काटडाला, हे राजन् क्रोधमें भरेहुए भीष्मजी ने धनुष को त्यागकर दूसरे अत्यन्त दृढ़ धनुषको लेकर शिलाके तीक्ष्ण किये हुए सात भल्लों को चढ़ाकर चार बाणोंसे तो श्वेतके चारों घोड़ोंको मारा और दो बाणोंसे ध्वजाको काटा और सातवें भल्लसे सारथीके शिरकोकाटा फिर वह महारथी श्वेत जिसके सारथी और घोड़े मरगयेथे रथसे कूदकर क्रोधसे व्याकुलहुआ पितामहने रथियों में श्रेष्ठश्वेतको रथसे बिहीन देखकर बड़े तीक्ष्ण बाणोंसे उसको चारोंओरसे घायलकिया,युद्धमें भीष्मजीकेबाणों से घायलहुए श्वेतने अपने रथपर धनुषको छोड़कर दिव्य सुवर्णित बरछीको धारणकिया,तदनन्तर युद्धमें घोर भयानक उग्र कालदण्डके समाननाशकरने

में महा समर्थ अपनी बरछी को लेकर, महा क्रोधरूप बुद्धिमान् श्वेत ने भीष्म भीष्म ऐसा कहकर सर्पके समान बरछी को फेंका, हे राजन् उससमय आपके पुत्रोंने बड़ा हाहाकार किया कि पाण्डवों के निमित्त पराक्रम करने वाला श्वेत आपका अनर्थ करना चाहताहै ऐसी सर्पाकार रूप वाली नाश द्योतक श्वेत की छोड़ी हुई बरछी को देखकर आपके पुत्रों में बड़ा हाहाकार हुआ हेराजन् उसकी फेंकीहुई बरछी एकाएकी उल्कापातके समान आकाश से गिरी तब भ्रांती से युक्त आपके पिता देवव्रतने उस पृथ्वी और आकाश के बीच, प्रकाशवान् किरणों से युक्त बरछीको आठ बाणों से काटकर नौ टुकड़े किये, वह उत्तम सुवर्णवाली बरछी तीक्ष्ण बाणोंसे कटगई इसके पीछे हे भरतर्षभ आपके सब पुत्र बड़े शब्दों को करके पुकारे, तब क्रोधसे भरे काल से विदीर्ण चित्त श्वेत ने उस बरछी को खंडितहुई जानकर करने के योग्य कर्म को नहीं जाना, फिर क्रोधयुक्त और प्रसन्न मूर्त्ति श्वेत ने भीष्म जी के मारनेकेलिये गदा को हाथ में लिया, और क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र दूसरे काल के समान भीष्मजी के ऊपर ऐसा दौड़ा जैसे कि बादल पर्व्वत पर दौड़ताहै, प्रभाव के जानने वाले भीष्मजी उसके वेग को न रोकने के योग्य मानकर अपने बचाव के लिये शीघ्रही पृथ्वी पर उतर पड़े, क्रोध के आधीन होकर श्वेतने अपनी उसगदा को घुमाकर भीष्मजी के रथपर ऐसा फेंका जैसे कि धनेश कुबेर अपनी गदा को फेंकता है, उस भयानक घात करने वाली गदाने घोड़ों समेत रथ सारथी और ध्वजाको अत्यन्त भस्मकर दिया फिर महारथी भीष्मजीको रथसे विहीनदेखकर रथियोंमें श्रेष्ठ शल्य आदिक महारथी एकसाथ दौड़े, तदनन्तर महादुःखी भीष्मजी दूसरेरथमें बैठकर धनुषको टंकार करके हँसतेहुए धीरेपनेसे श्वेतके निकट आये, इसी अन्तर में भीष्मजीने आकाशसे उत्पन्न वा अपनाभला करनेवाली इस दिव्य बाणीको सुना, कि हे भीष्म हे भीष्म हेमहाबाहु इसके विजय करने में शीघ्र उपाय कर यह समय ईश्वर से कहाहुआ है, देवदूत के कहेहुए आकाश से उस वचन को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न चित्तहो भीष्मजी ने उसके मारने में मनको लगाया, (सात्यिकी) (भीमसेन) पार्षतकापोता (धृष्टद्युम्न) (केकय) (धृष्टकेतु) पराक्रमी (अभिमन्यु) यहसब महारथी उसरथियोंमें श्रेष्ठ श्वेतको रथसे विहीन देखकर एकसाथही चारोंओरको देखतेहुए लौटे उनको चारोंओर सेआतेहुये देखकरबड़े बुद्धिमान् भीष्मजीने (द्रोणाचार्य्य) (शल्य) और कृपाचार्य्यको साथ लेकर उनकोऐसेरोका जैसे कि वायुके वेगोंको पर्व्वतरोके, महात्मा पाण्डव और सबकेरुकजाने परश्वेतने खड्गकोखैंचकरभीष्मकेधनुषको काटा, फिर शीघ्रता करने वाले पितामहने उस टूटेहुए धनुषको छोड़कर और

देव दूतके वचनको याद करके उसके मारने में मनको प्रवृत्त किया, इसके पीछे आपके पिता महारथी शीघ्रता करने वाले देवव्रत भीष्मने दूसरे धनुष को लेकर उस इन्द्रायुध के समान प्रकाशित धनुष को क्षणमात्र मेंही तैयार किया फिर हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठफिरआपके पिताभीष्मजी उन भीमसेन आदि पुरुषोत्तमोंसे चाहाहुआ उस महारथी श्वेतकोदेखकर उसके मारनेमें प्रवृत्तहुए, इसके पीछे प्रतापवान महारथी भीमसेन ने उसगिरते हुए सेनापति भीष्मको देखकर साठ बाणों से घायल किया फिर तोआपके पिता देवव्रत ने भी युद्ध के बीच अपने घोरबाणोंसे अभिमन्यु आदि सबमहारथियोंको रोककर, उसी युद्धमें गुप्त ग्रन्थी वालेतीन बाणोंसे श्वेतको घायल किया और एकसौतीन बाणोंसे सात्विकीको और बीस बाणोंसे धृष्टद्युम्नको और पांच बाणों से केकयको और बहुतसे बाण समूहों से शेष सब राजाओंको घायल करके रोक दिया जब सब रुकगये तब श्वेत के सम्मुख दौड़े तिसपीछे भीष्मजीने मृत्यु के समान कठिनतासे आधर्षहोनेवाले बाणको तरकससे खेंचकर चढ़ाया, उस ब्रह्मअस्त्रसे युक्त बज्रको भी काटनेवाले बाणको (देवता) (गन्धर्ब) (पिशाच) (सर्प) और राक्षसोंने देखा वह बाण अग्नि के समान प्रकाशित और महाबज्रके समान ज्वलित श्वेतके कवच को काटकर उसकी नाभि में ऐसे समागया जैसे अस्तगत होता हुआ सूर्य्य शीघ्रही अपने प्रकाश को लेकर चलाजाताहै, इस रीतिसे वह बाण श्वेत के जीवन को लेकरगया हम ने इस प्रकारसे युद्धमें उस नरोत्तम को भीष्मके हाथसे मरा हुआ पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसादेखा जैसे पर्व्वतसे गिरता हुआ शिखर होताहै उस स्थान में पाण्डवों को आदिले जो महारथी थे वह सब उसे देखकर युद्ध करने से बंदहुए और आपके पुत्रों समेत सब कौरव प्रसन्न हुए, तदनन्तर हे राजा दुश्शासन श्वेतको गिराहुआ देखकर, बड़े २ बाजों के घोर शब्दों को करके चारों ओरको घूमने लगा युद्धमें शोभा पाने वाले भीष्मजी के हाथसे उस बड़े धनुषधारी के मरनेपर शिखण्डी आदि रथी अत्यन्त कम्पायमान हुए हे राजा इस सेनापतिके मरनेपर अर्जुन और श्रीकृष्णजी ने भी सब रीतियों से धीरे २ युद्धका विश्रामकिया, तदनन्तर आपके पुत्रोंके और पांडवों के गर्जने और प्रसन्न होनेपर दोनों सेनाओंका विश्रामहुआ, हेशत्रुसन्तापी धृतराष्ट्र महारथीपांडव कौरवों के घोर मरणको शोचते उदासमन होकर स्थितहुए ११७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिश्वेतवधेअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे तात युद्धमें दूसरों के हाथसे श्वेत सेनापतिके मरने पर पांचालों ने पांडवों के साथ क्या किया, हे संजय युद्ध में गिरायेहुए सेनापति श्वेत को और उसके लिये उपाय करनेवाले वा अहंकार करनेवाले दूसरों को भी विजय करने के वचनों को सुनकर मेरा चित्त प्रसन्न होता है और मानसी पापों को भी विचारता हुआ मेरामन लज्जा युक्त नहीं होताहै हे संजय पाण्डव लोग विराट के घरमें जाके बड़े सुखपूर्वक रहेथे उस बिराट के दोनों पुत्रों को युद्धमें मरवाडाला इससे उनको कुछ लज्जा भी आई या नहीं आई अब हमारे विचार को तुमसत्य २ सुनो कि अब महा अनर्थ का मूल उत्पन्न हुआ कि इसी श्वेतकेमरने के हेतु से पारथ और भीमसेन महा क्रोधमें होकर अनेक वीरों को मारकर इस पृथ्वी को रुधिर से भरदेंगे देखो इस दुर्योधनको हमने गांधारी ने श्रीकृष्णजी ने और कृपाचार्य्य भीष्मजी द्रोण बलिराम विदुर व्यास इत्यादि अनेक गुरुइष्टमित्रों ने समझाया परन्तु इस निर्बुद्धीने किसीकाभी कहना नहींमाना और सबपांडवों के भी मनमें परस्पर स्नेह रखने कीही इच्छाथी तौभी दुर्य्योधनने हठकर के इस संग्रामको रचा देखिये अब ईश्वर क्या करताहै हे संजय वह पापकर्मी दुर्य्योधन कर्ण और शकुनिके मतमें नियत होकर दुश्शासन का साथी वनके पांडवों की निन्दा करने लगा मैं उसका फल उसके घोर दुःखका होना अवश्य वर्त्तमान देखताहूं श्वेत के नाश होने से महा क्रोध रूप होकर अर्जुनने भीष्मजी के विजय करने का हेतुश्रीकृष्णजी से क्या विचार किया अर्जुनही से मुझको बड़ा भयहै हे तात वह मेराभय दूरनहीं होताहै, वह संसार के सबपदार्थोंका विजय करने वाला कुन्ती का पुत्र अर्जुन अत्यन्त हस्तलाघवकरनेवाला प्रतापी शूरहै मैं निश्चय जानताहूं कि वह बाणों से शत्रुओं के शरीरों को मर्दन करेगा, उस इन्द्रके पुत्र और इन्द्र के छोटे भाईके बराबर युद्धमें विष्णु के समान क्रोध और संकल्प में सफल वाले अर्जुनको देखकर तुमसब लोगोंका कैसा चित्त होताहै, वह शूरवीर वेदज्ञ और प्रतापमें सूर्य्य और अग्निके समान इन्द्रके अस्त्रों का ज्ञाता बड़ाबुद्धिमान्युद्धमें कुशल महाविजयी युद्ध करने को उपस्थित, जोवह कुन्तीका पुत्रमहारथी वज्रके समान स्पर्श वाला रूपवाले अस्त्रोंको शत्रुओंके ऊपर चलाने वालाहै, हे संजय उसद्रुपद के पुत्र बड़े ज्ञानीबलवान् धृष्टद्युम्नने युद्धमें श्वेतके मरनेपर क्या किया, पूर्व्व समयके अपराधोंसे और श्वेतके मारेजाने से मैं मानताहूं कि महात्मा पांडवों का हृदयक्रोधसे अग्निरूप होगया मैं रात्रिदिन उनके क्रोधों को शोचता हुआ दुर्य्योधनके कारण शान्ती को नहीं पाताहूं,इसके सिवाय यह बड़ाभारी युद्ध

कैसे हुआ हे संजय उस सबको मुझ से कहो, संजय बोले हे राजा स्थिर चित्त होकर सुनो कि इसमें आपकाही बड़ाभारी अन्याय है यह दोष आपको दुर्योधन में लगाना योग्य नहीं है जैसे बिना जल के नदी में पुल और अग्निसे जलते हुए घरमें पानी के निमित्त कुएंका खोदना निरर्थकहै, उसी प्रकारकी आपकी बुद्धिहै, हे भरतवंशी दिनमें तीसरी लड़ाई के प्रारम्भ में भीष्मजी के हाथ से श्वेत सेनापति के मरजाने पर, कृतवर्म्मा के साथ शल्य को नियत देखकर शत्रुकी सेनाको मारनेवाला युद्ध में विजयरूपी कीर्त्ति वाला बिराटका पुत्र शंखनाम शीघ्रही ऐसा क्रोधरूप होगया जैसे कि हव्य से अग्निकी प्रचण्डता होती है वह बलवान् शंख इन्द्रधनुष के समान बड़े धनुष को टंकारकर मद्रदेश के राजा के मारने की इच्छा से चारों ओर को बड़े २ रथों से रक्षित होकर सन्मुख दौड़ा और बड़े बाणों की बर्षा करता हुआ शल्य के रथ के समीप आया उस मतवाले हाथी के समान पराक्रमी शंखको आताहुआ देखकर मृत्युके मुख में फंसेहुए राजा मद्रकी रक्षाकरने के लिये तुम्हारे पुत्रों के साथ इन रथियों ने उसको चारोंओरसे रोका, (कौशल) (वृहद्बल) (जयत्सेन) (मागध) उसी प्रकार शल्यका पुत्र (रुक्म) (रथविन्द) (अनुविन्द) और आवन्तिका के (राजालोग) (सुदक्षिण) (कांबोज) (वृहच्छत्रका पुत्र जयद्रथ) (सिंधुका राजा) इन सब लोगों के धनुष नानाप्रकार की धातुओं से जटित ऐसे दृष्टि पड़े जैसेकि बादलों में बिजली दिखाई देती है, उन बीरों ने बाणरूप बर्षा शंख के मस्तक पर ऐसी करी जैसे कि बर्षाऋतु में वायुसे प्रकट बादल आकाशी जलको बरसाते हैं, इसकेपीछे बड़ा धनुषधारी सेनापति शंख महाक्रोधित होकर उन लोगों के धनुषों को अपने सातभल्लों से काटकर महा ध्वनि से गर्जा, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी बादल के समान गर्जते तालवृक्ष के समान धनुष को लेकर उसयुद्ध में शंखके सन्मुख दौड़े, उस बड़े धनुषधारी महाबली को उदयरूप देखकर पांडवों की सेना ऐसी भयभीतहुई जैसेकि वायु के वेग से टक्कर खाईहुई नौका डामाडोल होती है, उसयुद्ध में अर्जुनभी यह शोचकर शंख के आगे चलने वाला हुआ कि अब यह भीष्मजी से रक्षा करने के योग्य है युद्ध में लड़ने वाले युद्धकर्त्ताओं का बड़ा हाहाकार हुआ तदनन्तर गदाधारी शल्य ने बड़े रथसे उतरकर शंख के चारों घोड़ोंको मारा वह मृतक घोड़ोंके रथसे शीघ्रही उतरकर खड्ग लेकर दौड़ा और अर्जुनके रथ को पाकर फिर शान्त होगया इसके अनन्तर भीष्मजी के रथ से शीघ्रही बाण ऐसे उछलनेलगे जिनसे पृथ्वी और आकाश व्याप्त होगये, प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने बाणों से पांचाल मत्स्यकेरल और प्रभद्रक नाम अनेक बीरों को गिराया, हे राजा

भीष्मजी युद्ध में अर्जुन को छोड़कर सेना समेत बहुत बाणों को फेंकतेहुए अपने प्यारे समधी पांचाल द्रुपद के सन्मुख ऐसे दौड़े जैसेकि चैत्र बैशाख के महीने में वनका जलानेवाला अग्नि दौड़ता है द्रुपदकी सेना बाणों से भस्महुई दृष्टपड़ी और भीष्मजी अग्निके समान दिखाई दिये, जैसे कि मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले महाप्रचण्ड सूर्य्य के देखने को लोग असमर्थ होते हैं उसी प्रकार पाण्डवों के युद्ध में भीष्मजी के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ, पाण्डव लोगों की सेना भयसे पीड़ित होकर चारोंओर को अपना कोई रक्षक ऐसे नहीं देखती थी जैसे कि जाड़े से दुःखी गौएं अपना कहीं रक्षक नहीं देखतीं, हे राजा फिर वह युधिष्ठिरकी सेना भीष्मजी के बाणों से ऐसी पीड़ामानहुई जैसे कि सिंहसे भयभीतहुई श्वेत गौएं, हे भरतवंशी सेना के मरने भागजाने साहस छोड़ने और मर्दन होने पर पांडवों की सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, फिर सदैव मण्डलरूपी धनुषधारी भीष्मजीने विषमें बुझेहुये सर्प के समान तीक्ष्णबाणों को छोड़कर अपने बाणों से सब ओर की सफ़ाई करके रथियों को तिष्ठनिष्ठ शब्द करके मारा, जब सेना के इधर उधर भगने और मर्दन होने वा सूर्यके अस्त होने पर कुछ नहीं जाना गया तब तो पांडवों ने उस महायुद्ध में भीष्मजीको अग्नि बरसाताहुआ देखकर सेनाका विश्राम किया ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिप्रथमदिवसयुद्धनामएकोनपंचाशत्तमोऽध्याय. ४९ ॥

पञ्चासवां अध्याय ॥

संजय बोले हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ उस प्रथम दिन में सेना के मनुष्यों के विश्राम करने और युद्ध में भीष्मजी के क्रोध रूप होने अथवा दुर्य्योधन के प्रसन्न होने पर, धर्मराज युधिष्ठिर ने सब भाइयों और राजाओं समेत जनार्दनजी के पास जाकर, बड़े शोक युक्त होकर अपनी पराजय को शोच भीष्मजी के पराक्रमको देख कर श्रीकृष्णजी से कहा कि हे श्रीकृष्णजी इस बड़े धनुषधारी भयानक पराक्रमी भीष्मजी को देखिये कि यह बाणों के मारे मेरी सेना को ऐसे भस्म किये डालते हैं जैसे कि ऊष्मऋतु में अग्नि बन और बन की सूखी घास को, हव्य भोजन करने वाली अग्नि के समान मेरी सेना को चाटने वाले इस महात्मा की ओर देखने को भी हम कैसे समर्थ होसक्ते हैं, इसी धनुषधारी महाबली पुरुषोत्तम को देखकर बाणों से महाव्याकुल हमारी सब सेना इधरउधर को भाग गई, युद्ध में क्रोधाग्नि रूप यमराज वा वज्रधारी इन्द्र वा पाशधारी वरुण वा गदाधारी कुबेरको भी चाहैं विजय करना संभव है परन्तु महाबाहु अति पराक्रमी भीष्मजी को विजय करना

असंभव है सो मैं ऐसी दशा में भीष्मरूपी अथाह जल में बिना नौका के डूबा जाताहूं, हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धिकी निर्बलता से भीष्मजी के सन्मुख होकर बनको चला जाऊंगा अथवा हेवृष्णिबंशी मेरे जीवन में कल्याण नहीं है, परन्तु इन राजाओं को भीष्मरूपी मृत्यु के बश करने को मैं योग्य नहीं हूं, हेश्रीकृष्णजी महाबलीभीष्मजी मेरीसेनाको नाश करडालेंगे जैसे कि पतंग ज्वलित अग्नि की ओर दौड़तेहुए अपने नाश के निमित्त जाते हैं इसी प्रकार मेरी सेना के मनुष्य भीष्मजी की ओर को जाने वाले हैं, राज के निमित्त मैं पराक्रम करने वाला नाश होता हूं और मेरे बीरभाई लोग भी बाणों से पीड़ित होकर महा दुर्बलांग हैं, वह मेरे कारण अथवा भाई बिरादरी की शुभचिन्तकता के कारण अपने राज्य सुखों को त्यागने वालेहुए मैं जीवनको बहुतमानताहूं अबजीवनहोना कठिन मालूम होता है, शेष जीवन से तपस्या करूंगा हे केशवजी मैं युद्ध में इन मित्रों को नहीं मरवाऊंगा, महाबली भीष्मजी अपने दिव्य अस्त्रोंसे मेरेहजारों उत्तम शूरबीर रथियों को बराबर मारते हैं, सो आप शीघ्रता से कृपाकरके बतलाइये किं कैसे मेरा कल्याणहो मैं इस युद्धमें अर्जुनको भी उदासीनके समान देखता हूं, यह महाबाहु अकेला भीमसेन क्षत्री धर्म को स्मरण करता केवल भुजा बलके द्वारा बड़ी सामर्थ्य से लड़ता है, यह बड़ा साहसी अपने साहस के अनुसार बीरों की मारने वाली गदासे रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों के मध्य में कठिन कर्म को करताहै, हे श्रेष्ठ वह बीर सत्ययुद्धके द्वारा वर्षोंमें भी शत्रु की सेना के नाशकरने को समर्थ नहीं है, यह आपका एक मित्र अस्त्रों का जानने वाला है वहभी महात्मा द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी के हाथ से बराबर भस्मीभूतहोताहुआ हमलोगोंको कुछनहीं समझताहै महात्माभीष्मजी और द्रोणाचार्य्यके बारम्बार चलायेहुए दिव्यअस्त्र सबक्षत्रियोंकोजलातेहैं, हेकृष्णजी निश्चयकरके क्रोधरूप भीष्मजी सब राजाओं समेत हमको मारेंगे ऐसा इनकापराक्रमहै, हे योगेश्वर तुम उसमहाभाग महारथीकोदेखो और बिचारो जो युद्ध में भीष्मजी को ऐसे शान्त करे जैसे बादल दावानल अग्नि को, हे गोविन्दजी आपकी कृपा से नाशवान् पाण्डव शत्रुओं से और अपने राज्य से मिलेहुए बांधवोंसमेत आनन्द करेंगे, तदनन्तर बड़ा साहसी युधिष्ठिर इस प्रकार की बातें कहकर शोक से पीड़ित चित्त देरतक मनको हृदय में नियत करके ध्यान करता हुआ बैठा, फिर गोविन्दजी पाण्डवों को दुःख शोक से पीड़ित और उदास रूप देखकर सब पाण्डवों को प्रसन्न करते हुये यह बचन बोले, हे भरतबंशियों में उत्तम तू शोच मतकर और तू शोचकरने के योग्य नहीं है क्योंकि तेरेभाई तो महा शूरबीर

हैं और वह सब संसार में विख्यात हैं, हे राजा धर्म में और महारथी सात्विकी (विराट्) (द्रुपद) धृष्टद्युम्न आपके मनोरथ पूर्ण करनेवाले हैं, हे राजेन्द्र युधिष्ठिर इसी प्रकार सब राजा लोग भी अपनी २ सेना समेत तेरी प्रसन्नता कीही बाटदेखते हैं और आपके परमभक्तहैं, सदैव भलाई चाहनेवाले आपके प्यारे प्रीतिमान् महारथी धृष्टद्युम्न ने सेनाध्यक्षी के अधिकार को पाया, निश्चयकरके यह महाबाहु शिखण्डी भीष्मका नाशकरनेवाला है राजा युधिष्ठिर यह कृष्ण के वचन को सुनकर उसी सभा में वासुदेवजी के आगे धृष्टद्युम्न से बोला कि हे धृष्टद्युम्न जो मैं आपसे कहताहूं उसको अच्छी रीति से समझो वह मेरा वचन उल्लंघन करने के योग्य नहीं है आप वासुदेवजी के विचार से मेरी सेना के सेनापतिहो, पूर्वसमयमें जैसे कार्त्तिकेय अर्थात् स्वामिकार्त्तिक देवताओं की सेना के सेनापति हुये इसी प्रकार से आप पाण्डवोंके सेनापति हूजिये, हे पुरुषोत्तम तुम अपने पराक्रमको करके कौरवों को मारो और बड़भागी मैं वा भीमसेन और श्रीकृष्णजी तेरे पीछे चलेंगे, एक साथ दोनों नकुल और सहदेव और द्रौपदी के शस्त्रधारी पुत्र और अन्य सब राजा लोग भी तुम्हारे साथ पीछे२ चलेंगे यह सुनकर धृष्टद्युम्न सबको प्रसन्नकरके बोला कि हे राजा पहले समय में शिवजीकी ओर से मैं द्रोणाचार्य्य के नाश करनेवाला नियत हुआ था इसी हेतु से हे राजा अब मैं इस युद्ध में भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य शल्य और जयद्रथ आदि सब अहंकारियोंसे अवश्य लड़ूंगा तदनन्तर शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न के अच्छी रीति से सन्नद्ध होने पर युद्ध में आकर महादुर्म्मद और धनुषधारी पाण्डवों ने उच्चस्वर से शब्द किया. फिर युधिष्ठिरने सेनापति धृष्टद्युम्न से कहा कि सब शत्रुओं का नाश करने वाला क्रौंचारुण नाम व्यूह जिसको देव दानवों के युद्ध में बृहस्पति जीने देवेन्द्र से कहा था उसी शत्रुहन्ता व्यूहको आप विधि के अनुसार रचो, उस अपूर्व व्यूहको राजाओं समेत कौरव लोग देखें धृष्टद्युम्न से राजा धर्मराज ने इस प्रकार से यह वचन कहा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र ने विष्णुजी से कहाथा, प्रातःकाल के होतेही सब सेना के आगे अर्जुनको किया उस समय प्रकाशित और मनको प्रसन्न करने वाली अपूर्व ध्वजा सूर्य के मार्ग में वर्तमान थी उस ध्वजा को इन्द्रकी आज्ञा से विश्वकर्मा ने बनाया इन्द्र वज्र के समान पताकाओं से अलंकृत, आकाश में गन्धर्व नगर के समान नियत थी हे राजा वह ध्वजा रथके भ्रमण करने में नाचती हुई प्रकाशमान थी और वह युधिष्ठिर उस रत्नदान गांडीव धनुषधारी श्रेष्ठ पुरुष के कारण ऐसा शोभित हुआ जैसे कि सुमेरु पर्वत सूर्य से सुशोभित होता है: हे राजा बड़ी सेना संयुक्त राजा द्रुपद तो शिर

हुआ और कुन्तभोज और चन्देल राजा आँखैं हुईं हे भरतर्षभ (प्रभद्रक) (शार्नक) अशीरक नाम समूहों के साथ अनूपक किरात ग्रीवा में वर्त्तमान हुआ, और राजा युधिष्ठिर पटश्चर पौंडर नाम कौरवों के निषादों के साथ पीछे को हुआ, और भीमसेन पर्षत का पौत्र (धृष्टद्युम्न) द्रौपदी के पुत्र वा अभिमन्यु और महारथी सात्विकी पक्षबने, और कुण्डी व ऋषियों समेत (पिशाच) (दारद) (पौंड्र) (यवन) (धेनुक) (तंगण) (परतंगण) (वाल्हीक) (तित्तिर) (चोल) (पाण्ड्य) इन देशों के निवासी दक्षिण पक्ष में नियत हुए, (अग्निवेश्य) (गजतुण्ड) (मलद) (आश्कारव) (शबर) (कुम्भस) मालुकों समेत (वत्स) (नकुल) (सहदेव) यह सब बायें पक्ष में नियत हुए, रथोंका एक अर्बुद पक्ष हुआ और इसी प्रकार रथोंका एक नियुत शिर हुआ और एक अर्बुद और बीस हजार की पृष्ठहुई और नियुत सत्तर हजार ग्रीवा में हुये, हे राजा ऐसे पक्षी रूपी व्यूह के आगे वा पक्ष और पूंछ के स्थानों पर चलने वाले पर्वतों के समान चारों ओर से रक्षा करते हुएहाथी चले, राजा विराट् ने केकय लोगों के साथ और काशीराज शैवीने तीन अयुत रथोंके साथ जघन स्थानकी रक्षा करी हे राजा वह सब पाण्डव इस प्रकार से इस बड़े उत्तम व्यूह को रचकर बड़ी सज धज के साथ शस्त्रों को धारण किये सूर्य्योदयको चाहतेहुए युद्धके निमित्त नियत हुए, उन लोगों के छत्र जो सूर्य्य वर्ण निर्मल और अत्यन्त श्वेतरूप थे वह हाथी और रथोंके ऊपर दिखाईदिये ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि क्रौंचव्यूहनिर्माणेपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

संजय बोले हे श्रेष्ठभरतबंशी राजा धृतराष्ट्र इसकेअनन्तर आपका बड़ा बेटा बड़े तेजस्वी पाण्डवों के रचेहुये घोर और अभेद्यमहाव्यूह को देखकर आचार्य द्रोणाचार्यजी के पास जाकर कृपाचार्य्य राजाशल्य सोमदत्त विकर्ण अश्वत्थामा, दुश्शासनआदि सब भाइयों और युद्ध के निमित्त समीप आयेहुए अन्य बहुतसे राजाओंको, समयपर प्रसन्नकरताहुआ यह बचनबोला कि तुम सब नानाप्रकार के शस्त्रधारी और अस्त्रों के अर्थ में पंडितहो, आप सब महारथी एकाही युद्ध में पांडवों के मारने में समर्थ हो तो साथियों के मिलेहुए होनेसे क्योंनहीं समर्थहोगे, हमारी सबसेना भीष्मआदि की रक्षासे अजेय है और वह उनकी सेना भीमआदि से रक्षित पराजय होने के योग्य है, (संस्थान) (विकर्ण) (शूरसेन) (कुकुट) (रेचक) (त्रिगर्त्त) (मद्रक) (यवन) (शत्रुंजय) दुश्शासन बड़े बीर (विकर्ण) नन्द (उपनन्द) (म-

णिभद्रको) समेत चित्रसेन सेनाके मनुष्यों समेत सन्मुख होकर भीष्मकी रक्षाकरो. हे श्रेष्ठ इसकेपीछे आपके पुत्रोंने पांडवों के रोकनेके लिये बड़ेभारी व्यूहको रचा, भीष्मजी तो चारों ओरको सेनासे रक्षित देवराज के समान बड़ीसेना समेतचले, और बड़े धनुषधारी प्रतापी भारद्वाज द्रोणाचार्यजी कुन्तल मागध और दशार्णके साथभीष्मजीके साथचले और विदर्भ मेकलकर्ण प्रावरणभी सबसेनासमेत भीष्मजीकेहीसाथचले. गान्धार सिंधु सौवीर (शैव्य) (विशातय) और शकुनीने सेनासमेत भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजीकोरक्षितकिया, तदनन्तर राजादुर्य्योधन और सब सगेभाई अश्वातक (विकर्ण) (वामन) (कोसल) (दरद) (वृक) और बालवलोगों के साथ क्षुद्रक पांडवलोगों की सेनाके सन्मुख, दौड़ा हे राजा (भूरिश्रवा) (शैल) (शल्य) (भगदन्त) और (विन्द) (अनविन्द) और अवन्तिदेशके राजालोगों ने बायें भाग को रक्षितकिया, सोमदत्ति (सुशर्मा) (कांबोज) (सुदक्षिण) (शतायुष) (श्रुतायु) यहसब दक्षिणओर नियतहुए, (अश्वत्थामा) (कृपाचार्य्य) (कृतवर्मा) यादव यह सब बड़ीसेना समेत पीछेकी ओर को नियतहुए, उसके पीछे से रक्षक अनेक देशोंके राजा केतुमान बसुदान और काशीके राजाकापुत्र इत्यादिहुए, हे भरतवंशी इसके अनन्तर आपके उन सब पुत्रों ने जोकि युद्ध के लिये बहुत प्रसन्न चित्तथे शंखोंको बजाकर सिंहनादों को किया, कौरवों के वृद्धपितामह प्रतापवान् भीष्मजीने उन प्रसन्नचित्तों के सिंहनादोंको सुनकर बड़े शब्दसे सिंहनाद करके अपने शंखको बजाया तदनन्तर दूसरी ओर के शंख भेरी आदि अनेकबाजे चारोंओरसे बजे और तुमुलशब्द हुआ तिसपीछे श्वेत घोड़ों से युक्त बड़े रथपर वर्त्तमान श्रीकृष्ण जी और अर्जुनने, सुवर्ण और रत्नों से जटित उत्तम शंखों को बजाया फिर इन्द्रियोंके स्वामी जगदात्मा श्रीकृष्णजी ने तो पांचजन्य नाम शंखको और अर्जुन ने देवदत्त नाम अपने शंख को बजाया, और भयकारी भीमसेन ने पौण्ड्रनाम महाशंखको बजाया और कुन्तीकेपुत्र राजायुधिष्ठिरने अनन्तविजयनाम शंखको बजाया और नकुल सहदेवने सुघोष और मणिपुष्पकनाम शंखको बजाया और (शैव्यकाशिराज) और महारथी (शिखंडी) (धृष्टद्युम्न) (विराट) महारथी (सात्विकी) बड़ाधनुर्धर पांचाल (द्रुपद) और द्रौपदीके पांचोंपुत्रोंने सिंहनादकोकरके अपने महाशंखोंको बजाया सबवीरों ने अनेकप्रकार उत्तम शब्दकिये, तुमुलशब्द से आकाश और पृथ्वी शब्दायमान होगई हे महाराज इसरीति से यह कौरव और पांडव परस्पर में संतप्त करते हुए फिर युद्ध के निमित्त गये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय इस रीति से मेरेपुत्र और पांडवों की सेनाके व्यूह रचनेपर प्रहार करने वालों में उत्तम शूरों ने परस्परमें कैसे कैसे प्रहार किये, संजयबोले कि इसरीति से सेनाके व्यूहित होनेपर समुद्ररूप सेनाको अपार देखते हुए उनवीरों के कवच तैयार हुए जिनकी ध्वजामहासुन्दर और मनोहरथीं, हेराजा उनसब में नियतहोकर आपका पुत्र दुर्योधन आपके सब पुत्रों को बुला के कहनेलगा कि तुमसब शस्त्रधारण करके युद्धको करो वहजीवन को त्यागे हुए ध्वजाको ऊंचीकरने वाले सब मनसे निर्दयरूप होकर पांडवों के सन्मुख लड़ने को उपस्थित हुए तदनन्तर आपके पुत्र और दूसरोंकायुद्ध जिसमें रथ और हाथी संयुक्तथे रोमहर्षण और तुमुल शब्दों से व्याप्तहुआ, सुवर्णपंख और अत्यन्त प्रकाशित और तीक्ष्ण बाण रथीलोगों के हाथों से छूटे हुए हाथी और घोड़ों पर गिरे इसीप्रकार युद्ध प्रारंभ होने पर भयकारी पराक्रमी शस्त्रधारी पितामह भीष्मजी ने धनुषको उठाये हुए सन्मुख आकर, महारथी अभिमन्यु भीमसेन अर्जुन केकय बिराटधृष्टद्युम्न (चेदि)मत्स्य विभु इन नौबीरों पर बाणों की बर्षाकरी, उस बड़े बीर के सन्मुख बड़ी सेना अत्यन्त कंपायमान हुई और सब सेना के लोगों को बड़ा खेद उत्पन्न हुआ, और वह अत्यन्त उत्तम घोड़ों के रथों के सवार मारे गये जिन की सेना हट गई थी ऐसे अकेले पांडव बर्त्तमान हुए नरों में उत्तम क्रोधरूप अर्जुन महारथी भीष्मको देखकर श्रीकृष्णजीसे बोले कि वहांचलो जहां पितामहहैं, हे बृष्णिबंशी यह निश्चय है कि यह अत्यन्त क्रोधरूप भीष्म दुर्य्योधन के अभीष्ट में प्रवृत्त मेरी सेनाको अवश्य मारेंगे, हे जनार्दनजी यह द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य शल्य विकर्ण और सब धृतराष्ट्रके पुत्र जिनमें अग्रगामी दुर्य्योधनहै, वह सब धनुषधारियों से रक्षितहोकर पांचाल देशियों को मारेंगे सो हे जनार्दनजी मैं भी सेना समेत भीष्मजीको मारूंगा, बासुदेवजी बोले कि हेअर्जुन सावधान हो मैं तुझको अभी पितामह के रथके पास पहुंचाताहूं, हे राजा ऐसा कहकर बासुदेवजी ने उसको शीघ्रही भीष्मजी के रथके पास पहुंचाया, वह पाण्डव अर्जुन बगले के समान श्वेत घोड़ों के रथ पर सवार बड़ी ऊंची प्रकाशमान ध्वजा को फहराता बड़े बादल के समान गरजता हुआ सूर्य्य के समान प्रकाशित रथके द्वारा कौरवों की सेना और शूरसेनों को संहार करता हुआ, मित्रों के उत्साहों का बढ़ाने वाला शीघ्रही युद्ध भूमि में आया उस मदोन्मत्त हाथी के समान महा वेग युक्त आते हुए युद्ध में शूरों को कंपाते और अपने बाणों से प्रहार कर के गिराते हुए अर्जुन को देखकर पूर्वी सौ वेर केकयजय-

द्रथ और सिन्धु आदि के राजाओं से रक्षित, भीष्मजी एकाएकी सन्मुख व-
र्त्तमान हुए कौरवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य और कर्ण के सिवाय दूसरा
कौनरथीहै जो गांडीवधनुषधारी अर्जुन के सन्मुख जासके तदनन्तर हेमहा-
राज कौरवों के पितामह भीष्मजी ने तो सतत्तर बाणोंसे अर्जुनको खूबपीड़ा-
मान किया और द्रोणाचार्य्य व कृपाचार्य ने पच्चीस २ बाणों से दुर्योधनने
चौंसठ बाणोंसे शल्यने नौबाणोंसे और नरोत्तम अश्वत्थामाने साठ बाणों
से विकर्ण ने तीनबाणों से और आर्त्तायनिने तीनभल्लबाणों से पांडव अ-
र्जुन को खूब घायल किया वह महाबाहु अर्जुन उनके चारोंओर की बाण-
वृष्टि से पर्वत के समान आच्छादित और घायल भी होकर पीड़ामान नहीं
हुआ फिर उस नरोत्तम अर्जुनने भीष्मजी को पच्चीस बाणों से कृपाचार्य्य
को नौबाणों से द्रोणाचार्य्य को साठ बाणों से विकर्ण को तीन बाणों से
आर्तायनि को भी तीनबाणों से और राजादुर्योधन को भी पांच बाणों से
घायल किया, जो कि अर्जुनबड़ा साहसी और मुकुटधारी था तो भी हे
भरतर्षभ सात्विकी विराट धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पांचो पुत्र और अभिमन्यु इन
सबने आन कर अर्जुन को चारोंओर से रक्षितकिया तदनन्तर राजाद्रुपद
भीष्म के अनभीष्ट में प्रवृत्त द्रोणाचार्य के सन्मुख उपस्थित हुआ फिर
रथियोंमें श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्रही पाण्डव अर्जुन को, तीक्ष्ण अस्सी बाणों
से घायलकिया उससे आपके पुत्र प्रसन्न हुए तदनन्तर रथियों में उत्तम
प्रतापी अर्जुन उन प्रसन्न चित्तों की गर्जनाको सुनकर बड़े प्रसन्न चित्तके
समान सेनामें घुसा हे राजा वह अर्जुन उन उत्तम रथियों के मध्यको
पाकर महारथियों को चिह्नितकर के धनुषलिये हुए घूमने लगा तद-
नन्तर राजा दुर्योधन युद्ध में अपनी सेना को अर्जुन के हाथसे पीड़ामान
देखकर भीष्मसे बोला हेतात यहबलवान् पांडव श्रीकृष्णजी के साथ सब
सेनाओं कोमारता गिराताहुआ रथियों में श्रेष्ठ गांगेय और द्रोणाचार्य के
जीवते होने पर हमारे मूलको काटे डालताहै हेराजा आपहीके कारण सदैव
मेरा हित चाहने वाला यह कर्ण भी वेसलाह होकर युद्धमें पांडवों से नहीं
लड़ता है २७ हे भीष्मजी सो तुम ऐसाही करो जिससे अर्जुन नाश को
पावे तदनन्तर हे राजा इसप्रकार कहेहुए आपके पिता देवव्रत भीष्मजी क्षत्री
धर्म को धिक्कार है ऐसा शब्द कह कर अर्जुन के रथके समीप आये हे श्रेष्ठ
राजा धृतराष्ट्र राजाओंने उनदोनों महाबली श्वेत घोड़े वालोंको मिलाहुआ
देखकर, अत्यन्त सिंहनादकर शंखों को बजाया अश्वत्थामा और आपका
पुत्र दुर्योधन और विकर्ण यहसब युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से
रक्षित करके युद्धके निमित्त नियत हुए और हेराजा इसी प्रकारसे सबपाण्डव

लोग अर्जुन को चारों ओर से घेरकर बड़े युद्धकरनेके निमित्त नियतहुए इसके पीछे युद्ध प्रारंभ हुआ फिर गंगापुत्र भीष्मजी ने युद्धमें नवबाणों से अर्जुन को घायल किया, फिर अर्जुनने मर्मभेदी दशबाणों से उनको घायल किया, तदनन्तर युद्धमें प्रशंसनीय पाण्डव अर्जुनने अच्छेप्रकार से चलाये हुए हजार बाणों से भीष्मजी की दिशाओंको रोका, तदनन्तर भीष्मजी ने अपने बाणोंसे अर्जुनके उनबाणोंके जालोंको रोका, दोनोंयुद्धमें प्रसन्न चित्त और उत्साह माननेवाले प्रहार के बदले प्रहारकरनेकी इच्छावाले युद्ध में अतिशयता पूर्वकप्रवृत्त हुए, भीष्मजी के धनुष से छूटेहुए बाण जालों के समूह अर्जुनके बाणोंसकटे हुए हटपड़े, इसीप्रकार अर्जुन के छोड़े हुए बाणजाल भीष्मजी के बाणों से टूट २ कर पृथ्वी पर गिरपड़े फिर अर्जुन ने पच्चीस तीक्ष्ण शरोंसे भीष्मजीको व्यथित किया, भीष्मजीने भी नवबाणों से अर्जुन को घायल किया वह दोनों महाबली शत्रुओंके जीतनेवाले युद्ध में घोड़ों को और रथोंको परस्पर घायल करके, क्रीड़ा करनेवाले होगये तदनन्तर हे राजा महाक्रोध रूप महाप्रहारी भीष्मजी ने, तीन बाणों से वासुदेवजी को स्तनान्तर में घायल किया, उन भीष्मजीके धनुषसे निकले हुये बाणों से घायलमधुसूदनजी, युद्धमें फूले हुये किंशुक वृक्षके समान शोभायमान हुए तदनन्तर माधवजीको घायल देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अर्जुन ने भी भीष्म के सारथी को तीन बाणोंसे घायल किया तब युद्धमें एक दूसरे के रथपर उपाय करने वाले दोनों वीर, परस्पर में गिरानेको समर्थ नहीं हुए फिर उन्हों ने सूतके बलकी तीव्रता से बारंबार बिचित्र मंडलोंको दिखलाकर, अवकाश के मार्ग देखने में नियत दोनों वीरों ने वारंवार प्रहारों के बीचमें अवकाश को तकते हुए सिंहनाद पूर्वक शंखों के शब्दों को किया-और इसीप्रकार दोनों महारथियों ने धनुषों के भी शब्दों को किया, उन दोनों के शब्दोंसे और रथोंके शब्दोंसे अकस्मात् पृथ्वी फटगई और कंपायमान होकर शब्दायमानभी हुई हे भरतबंशियों में श्रेष्ठउनदोनोंके अन्तरको किसीनेभी नहीं देखा, दोनों युद्धमें बलवान् शूरवीर परस्पर में समानथे वहां कौरव लोगकेवल चिह्नोंको देखकर भीष्मजी केपासगये, इसीप्रकार पाण्डवोंनेभी केवल चिह्नही मात्रसे अर्जुनको पाया हेराजाधृतराष्ट्र उनदोनों नरोत्तमों के उस महापराक्रमको देखकर युद्धमें सब जीवमात्रोंने आश्चर्यकिया और कोई भी उनदोनों के अन्तरको ऐसेनहीं देखसकाथा जैसेकि धर्मवान् पुरुषका कोई पापकहीं दिखाईनहींदेता वह दोनों बाणजालोंसे गुप्तहोगये इसके पीछेदोनों शीघ्रही प्रकटहोगये वहां गंधर्वोंसमेत देवताओंने और महर्षियों समेत चारण लोगोंने इनदोनोंके पराक्रमको देखकर परस्पर में वार्तालाप करी

कि यह युद्धमें क्रोध रूप दोनों महाबली देवता असुर औरगंधर्वोंसेभी किसी दशा में लोकमें जीतने के योग्य नहीं है यह बड़ाभारी अपूर्व्वयुद्ध इसलोक में होरहाहै ऐसायुद्धकभी नहीं होगा, धनुषरथ और घोड़ों समेत युद्ध भूमि में शायकों को छोड़ते हुए भीष्मजी युद्धमें बुद्धिमान् अर्जुन को विजय करनेके योग्यनहीं हैं इसीप्रकार युद्धमें देवताओंसे भी अजेय धनुषधारी पाण्डवोंकी विजय करने को भीष्मजी भी उत्साह नहीं करते देखने से भी यह युद्धबराबर का होगा, हे राजा भीष्म और अर्जुन की प्रशंसा के यह बचन जहांतहां फैलेहुए सुनेगये, तदनन्तर उनदोनों के पराक्रम होने पर आपके शूरबीर और पाण्डवों ने परस्परमें युद्धकिया इसीप्रकार तीव्रधार खड्ग और निर्मल परशे बाण और अन्य २ प्रकार के अनेक शस्त्रों से दोनोंओर के शूरबीरों ने परस्पर में एकने दूसरे को प्रहार किया हे राजा इसी रीति से उस घोर और महाभयानक युद्धहोनेपर द्रोणाचार्य्य और द्रुपदकीबड़ीभारी लड़ाईहुई ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न दोनों बुद्धिमान् कैसे युद्धमें परस्पर सन्मुख हुए उसका वृत्तान्त मुझसे कहो, हे संजय मैं उद्योग से प्रारब्धको बड़ा मानताहूं जहां युद्धमें शन्तनव भीष्मजी ने पाण्डव अर्जुनको विजय नहींकिया जो भीष्मरणमें क्रुद्धहोकर सबस्थावर जंगमजीवोंकोभी मारसक्ता है उस महावीरने किसहेतुसे युद्धमें पराक्रमकरके पाण्डव अर्जुन को नहीं मारा, संजय बोले किहेराजा तुमस्थिरचित्त होकर इस बड़े भारी भयानक युद्धको सुनो कि पाण्डव अर्जुन इन्द्रादि देवताओं सेभी विजय करने के योग्य नहीं है द्रोणाचार्य्य ने नाना प्रकार के बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल किया और भल्लों से उसके सारथी को रथके नीड़से नीचे गिराके महाक्रोधित होकर उस धृष्टद्युम्न के घोड़ोंकोभी चार शायकों से महापीड़ित किया, तौभी बड़े बीर धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्य को नब्बे तीक्ष्ण शरों से घायल किया और तिष्ठतिष्ठ शब्दों को भी किया तदनन्तरबड़े प्रतापी द्रोणाचार्य्य जीने उस धृष्टद्युम्नको सारे बाणों के आच्छादित करदिया, और उसके मारने के लिये इन्द्रवज्र के समान स्पर्श वाले मृत्युदंडके समान घोर बाणको हाथ में लिया, हे राजा उस युद्धमें द्रोणाचार्य्यके चढ़ाये हुए उसबाणको देखकर सब सेनामें हाहाकार हुआ, उसस्थानमें हमने धृष्टद्युम्न के अपूर्व्व पराक्रमको देखा कि अकेलाही शूरवीर युद्धमें पर्व्वतके समान अचल होकर नियत खड़ारहा, और उस प्रकाशित घोर मृत्युरूप आयेहुए

बाणको अपने बाणोंसे काटडाला और द्रोणाचार्य्य के ऊपर बाणोंको बरसा या तदनन्तर धृष्टद्युम्नके कियेहुए उस कठिन कर्मको देखकर पाण्डवों समेत पांचालदेशी लोग उच्चशब्द को पुकारे, तदनन्तर द्रोणाचार्य के मारने की इच्छा करनेवाले उस पराक्रमी ने बड़ी बेगवान् सुवर्ण वैडूर्य जटित महाघोर बरछी को मारा इस बरछी को आता देखकर प्रसन्नचित्त द्रोणाचार्य्य ने शीघ्रही अपने बाणों से मार्ग में काटकर गिरा दिया, हे राजा तब उस धृष्टद्युम्न प्रतापी ने अपनी उग्रबरछीको कटा हुआ जान के द्रोणाचार्य के ऊपर अनेक बाणोंको बरसाया, फिर महायशस्वी द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्नकी बाणोंकी बरसाको रोककर उसके धनुष को मध्य मेंसे काटडाला, फिर उस कटे हुए धनुष वाले महाप्रतापी ने अपनीएक भारीलोहे की गदाको फिराकर द्रोणाचार्य्य के ऊपर फेंका, उसके हाथकी छूटी गदा द्रोणाचार्य्यके मारनेको शीघ्रही आई तो वहांहमने द्रोणाचार्य्यके अपूर्व्वपराक्रमको देखा, कि उससुबर्णित घोरगदाको खण्ड २ करके अत्यन्त तीक्ष्ण पीतरंग सुनहरी शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणको धृष्टद्युम्नके ऊपर फेंका उसबाण ने उसके कवचको काटकर उसके रुधिर को पिया, तदनन्तर बड़ेवीर धृष्टद्युम्नने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें महा पराक्रम करके पांचबाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल किया,तदनन्तर वहदोनोंरुधिरसे भरेहुयेवीर ऐसेशोभायमानहुये जैसेकिबसंत-ऋतुमें लालफूलवाले किंशुक वृक्षशोभादेते हैं, हेराजा तदनन्तर युद्धभूमि में महाक्रोधरूप द्रोणाचार्य्य ने बड़े पराक्रम से धृष्टद्युम्नके धनुष को काटकर उस को मारे बाणों के ऐसे ढक दिया जैसे बादल बरसा करके पर्व्वत को ढक दे-ता है, फिर भल्लों से इसके सारथी को रथके नीढ़ से गिरादिया और चारों घोड़ोंको भी चार तीक्ष्ण बाणों से पृथ्वी पर गिरादिया, और सिंहनाद कर के दूसरे बाणसे इसके दूसरे धनुषको भी गिराया वह धनुष रथ और घोड़े सा-रथी मृतकवाला धृष्टद्युम्न गदाको हाथ में लेकर अपनी वीरताको प्रकटकर-ता हुआ रथसे उतरा उससमय द्रोणाचार्य्य ने बड़ी शीघ्रता से रथसे उतरने भी नहीं पाया था कि उसकी गदाको एक विशिख बाणसे काटकर गिरा-दिया यह बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ तदनन्तर वह सुन्दर भुजाधारी महाबली सुवर्णकी सूर्य्य चन्द्रमा वाली बड़ी ढाल और दिव्य खड्ग को लेकर द्रोणा-चार्य्य के मारने की इच्छासे बड़े वेग युक्त होकर सन्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि मांसका चाहने वाला सिंह बनमें मतवाले हाथी के ऊपर दौड़ताहै हे राजा वहां हमने द्रोणाचार्य्य की बीरता और अस्त्रयोग से हस्तलाघवता अपूर्व्व प्रकारकी देखी कि अकेलेनेही बाणोंकी बरसा करके धृष्टद्युम्न को रोकदिया तदनन्तर उस महायुद्ध में कोई महाबली भी जानेको समर्थ नहीं हुआ,वह

हमने बड़े रथके समीप नियत और बाण विद्यामें कुशलके समान बाणसमूहों को ढालसे रोकते हुये धृष्टद्युम्न को देखा, तदनन्तर महाबाहु पराक्रमी भीमसेन युद्धमें महात्मा धृष्टद्युम्न की सहायता करने वाला अकस्मात् आकूदा, हे राजा उसने आतेही अकस्मात् सात बाणों से द्रोणाचार्य्य को घायल किया और शीघ्रही धृष्टद्युम्न को दूसरे रथ पर सवार किया, इसके पीछे राजा दुर्य्योधन ने बड़ी सेना समेत राजा कलिंगको द्रोणाचार्य्यजी की रक्षा के निमित्त भेजा, तदनन्तर हे राजा आपके पुत्रकी आज्ञासे कलिंग देशियों की बड़ी भारी भयानक सेना भीमसेन के सम्मुख आई, रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य भी धृष्टद्युम्न को छोड़कर मिले हुए बृद्ध विराट् और राजा द्रुपद से युद्ध करने लगे और धृष्टद्युम्नभी युद्धमें धर्मराज युधिष्ठिरके पास गया तिस पीछे उस युद्धभूमि में कलिंग देशियों से और महात्मा भीमसेन से महाघोर रोमहर्षण संसारका मृत्युकारी घोररूप भयानक युद्ध जारी हुआ ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्रोणधृष्टद्युम्नयुद्धवर्णनोनामत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि उस आज्ञा पानेवाले कलिंगके राजा ने अपनी सेना समेत युद्ध भूमि में आकर उस अपूर्वकर्मी महा बलिष्ठ मृत्यु दण्ड समान गदा हाथ में लिये बीर भीमसेन से युद्ध करने को मन किया, संजय बोले हे राजेन्द्र इस रीति से आपके पुत्र से आज्ञा पाकर वह कलिंग देशका राजा भीमसेन के रथ के पास आया, हे भरतवंशी भीमसेन ने घोड़े हाथी और रथों से युक्त उत्तम शस्त्रधारी कलिंगों की बड़ी सेनाको चेदिदेशीय लोगों के साथ आते हुए देखकर केतुधारी निषादों के राजा को घायल किया, तदनन्तर व्यूहित सेना समेत शस्त्रोंको धारण किये अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायु केतुमान नाम निषादों के राजा के साथ उस युद्ध में भीमसेन के सम्मुख आया, हे महाराज कलिंग देशोंके राजा केतुमानने बहुत हजार रथ और दश हजार हाथियों और निषादों को साथमें लेकर चारों ओर से भीमसेन को घेर लिया, और भीमसेन के आगे चलने वाले चेदिमत्स्य और कोप देशों के वासी वीर राजाओं समेत एकाएकी निषादों के सम्मुख आकर वर्त्तमान हुए तिस पीछे घोर रूप भयानक युद्ध जारी हुआ, फिर एकाएकी परस्परमें एक दूसरे को मारने की इच्छासे दौड़ते हुए वीरों का और शत्रुओं के साथ भीमसेन का घोर युद्ध जारी हुआ, हे राजा जैसे कि इन्द्र का युद्ध दैत्यों की सेनाके साथ होता है इसी प्रकार हे भरतवंशी युद्ध में लड़ने वाले बहुत बड़े शब्दों से गर्जना करते हुए सागरके समान हुए, हे

राजा इसके पीछे परस्परमें प्रहार और घात करने वाले युद्ध कर्त्ताओं ने सब पृथ्वी को मांस और रुधिर से पूरित करके शोभित किय। और मारने की इच्छासे अपने और पराये युद्धकर्त्ताओं को नहीं पहिचाना, फिर युद्ध में दुर्जय शूरवीरों ने अपनी सेना के लोगों को भी शस्त्रों से मारा घोड़ों का बहुतों के साथ बड़ाभारी युद्ध हुआ, हे राजा चेदि देशवाले शूरवीरोंका युद्ध कलिङ्ग और निषादों के संग हुआ तब चेदिदेशी अपनी सामर्थ्य के अनुसार बीरता को करके, उस भीमसेन को त्यागकर अलग होगये चेदिदेशियों के अलग होजाने पर सब कलिंगदेशियों के सन्मुख होकर पाण्डव भीमसेन अपने भुजाबल में स्थिर होकर खड़ारहा अर्थात् वह महाबली भीमसेन अपने रथ से नहीं हटा, और कलिंगदेशवासियों को भी अपने तीव्रबाणों से ढक दिया तब बड़े धनुषधारी कलिंग के राजा और उसके पुत्र महारथी, शक्रदेवने बाणों से भीमसेन को घायल किया तदनन्तर अपने भुजबल से रक्षित सुन्दर धनुष को हिलाते हुए महाबाहु भीमसेन ने राजा कलिंग को लड़ाया और युद्ध में अनेकबाण छोड़तेहुए शक्रदेवने भीमसेन के चारों घोड़ों को मारा फिर शक्रदेव उस शत्रुहन्ता भीमसेनको विरथदेखकर अपने तीक्ष्ण बाणों से ढकता हुआ उसके सन्मुख दौड़ा फिर महाबली शक्रदेवने भीमसेन के ऊपर बाणों की ऐसी बरसाकरी जैसे बर्षाऋतु में जल को बरसाता है मृतक घोड़ों के रथपर चढ़ेहुए महाबली भीमसेनने, अपनी लोहे की शैक्य गदाको शक्रदेव के ऊपर फेंका हे राजा कलिंग के राजा का पुत्र उस गदासे मरकर ध्वजा और सारथी समेत रथसे पृथ्वी में गिरा कलिंग देशके महारथी ने अपने पुत्रको मराहुआ देखकर, हजारों रथों समेत भीमसेनकी दिशाओं को रोका तदनन्तर हे राजा पुरुषोत्तम भीमसेन ने गदाको छोड़कर अनूपम खड्ग और ढालको हाथ में लिया वह ढाल सुनहरी नक्षत्र और अर्द्धचन्द्रों से जटितथी तदनन्तर क्रोधमें आकर राजा कलिंग ने धनुष की ज्याको चढ़ाकर सर्प के विषके समान एकमहाघोर बाणको लेकर मारने की इच्छाकरके भीमसेनके ऊपर फेंका, हे राजा उस गिरतेहुए विष संयुक्त बाणको भीमसेन ने अपने खड्गसे दो खण्ड करदिये और आपकी सेनाको भयभीत करता हुआ बड़ा प्रसन्नचित्त बड़े शब्द से पुकारा तदनन्तर राजा कलिंग ने महाक्रोधित होकर शीघ्रही भीमसेनके ऊपर शिलासे तीक्ष्णकिये हुए चौदह तोमरोंको फेंका तब भीमसेन ने अपने उत्तम खड्ग से समीप में न पहुंचने वाले उन तोमरों को बीचही में काटा हे पुरुषोत्तम वह भीमसेन उस युद्धमें चौदह तोमरों को काटकर समीप आये हुए भानुमन्त के सन्मुख दौड़ा तदनन्तर भानुमन्त तीरों की बर्षासे भीमसेन को ढककर आकाश

और पृथ्वी को शब्दायमान करके महाशब्द का करनेवाला हुआ तब भीमसेन उस सिंहनादको न सहकर अपनी महागर्जना करके गर्जा कलिंग देशों की सेना उस शब्द से भयभीत हुई, हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र युद्ध में सबोंने भीमसेन को मनुष्य नहीं माना इसके पीछे भीमसेन बड़े उच्चशब्द को करके, खड्ग समेत महावेगसे दौड़कर हाथी के दांतों के द्वारा उत्तम हाथीपर चढ़गया और शीघ्रही हाथीकी पीठपरहोगया, फिर बड़ेखड्गसे भानुमन्तकी कमरको काटकर उस शत्रुहन्ताने युद्धभूमि में उस राजकुमार को मारकर बड़ेभारी खड्ग को हाथीके कंधेपर गिराया उसके प्रहारसे वह गजराज हाथी पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रत्नों से प्रकाशित पहाड़ सिंह के वेग से टूटकर गिरपड़ता है हे भरतवंशी वह महाबली भीमसेन गिरते हुए हाथीसे कूदकर हाथमें खड्ग लिये महा अलंकृत शस्त्रयुक्त प्रसन्न मन होकर पृथ्वी पर नियत हुआ और निर्भय होकर अनेक हाथियों को गिराताहुआ बहुतसे मार्गों में घूमा फिर वह समर्थ घोड़ोंके हाथियोंके और रथोंके समूहों में सब ओर से गोल अग्निके समान दिखाई दिया, महाबली भीमसेन उस युद्धभूमि में पक्षीरूप पदातियों के समूहों में बाज पक्षी के समान सबको मारता और घूमता दृष्ट पड़ा, फिर वह बड़ा वेगवान् भीमसेन तीक्ष्ण धार वाले खड्ग से उन युद्धकर्त्ता हाथियों के सवारों के शिर और देहोंको काटता हुआ देखनेमें आया, शत्रुओंके भय उत्पन्न करनेवाले अत्यन्त क्रोधरूप मृत्युके समान पदाती अकेले भीमसेनने उन सब शूरवीरोंको मोहित किया, उस महाभारी युद्ध में हाथ में तीक्ष्ण खड्ग को लिये बड़े बेगवान् भीमसेन को घूमताहुआ देखकर सबलोग अत्यन्त व्याकुल औरअचेत होकर पुकारते हुए भागे, फिर शत्रुहन्तापराक्रमी भीमसेन ने युद्ध में रथियों के रथ जुए आदि को काटकर रथियों को भी मारा, और बहुत मार्गोंमें घूमताहुआ दिखाई दिया हे भरतवंशी फिर भ्रांत उद्भ्रांत आविद्ध (आप्लुत)(प्रस)(तेस्टत) संपात समुद्धरण अर्थात (घुमाना)(ऊंचाघुमाना) (टेढ़ाघुमाना) शरीर में लयकरना झुकेपर (झुकाना) सब खड्ग का (प्रहार) बड़े बलसे (मारना) क्रम से इन सब दशाओं को दिखाया हे राजा कितनेही शूरवीर भीमसेन के खड्ग के अग्रभाग से कटगये और टूटे कवचवाले गर्ज २ कर मरगये इसीप्रकार से हे राजा दांत और सूंडों की नोक टूटे मस्तक फटे चोट खायेहुए शूरवीरोंसे रहित हाथियों ने भी अपनीही सेना को मारा और बड़े भारी शब्दोंको करके वह सब पृथ्वीपर गिरपड़े, और हे राजा कटेहुए तोमर वा बड़े भारी शिर वा सुवर्ण से जटित परशे वा सुवर्ण से जटित स्वच्छझूलें वा ग्रीवाके भूषण हाथियों की भूषणों समेत पताका वा (तूणीर) (यन्त्र)

विचित्र (धनुष) वा श्वेत वर्ण के (अग्निदण्ड) वा अंकुशों से युक्त चाव-कोंको वा नानाप्रकारके घंटे और सुनहरी खड्गों की मूठोंको भी, सवारों समेत गिरेहुए और जहां तहां पड़ेहुओं को देखताहूं जिनके अंग और आगे की सूंड़ के भाग कटगये और जो मर भी गये उन हाथियों से वह पृथ्वी ऐसी होगई जैसी किगिरेहुए पहाड़ोंसे होजाती है,उस नरोत्तम ने इसप्रकार बड़े२ हाथियों को मारकर घोड़ोंको भी मर्दन किया, और घोड़ों के उत्तम२ सवारों को भी मारकर गिराया हे भरतर्षभ तेरे पुत्रों का और पाण्डव लोगों का वह महा घोर युद्ध हुआ, विचित्र लगाम और उत्तम सुवर्ण से मंडित झूलें (परशे) (तोमर) (प्रास) (दुधारेखड्ग) (कवच) ढालें और अनेक रत्नवाले बिस्तर यह सब उस महायुद्ध में जहां तहां कटेहुए बहुमूल्य के दिखाई दिये, इसके विशेष उसने विचित्र पोथयन्त्र और स्वच्छ खड्गोंसे भी पृथ्वी को ऐसा व्याप्त करदिया कि कमलों से शवल व्याप्त होताहै, महा बली पांडव भीमसेन ने सेनामेंजाके कितनेही रथियोंको मर्दनकरके खड्ग से ध्वजाधारियों कोभी गिराया, युद्ध में उस उग्र रूपके बारम्बार इधर उधर दिशाओं में गिरते दौड़ते और चित्रमार्गोंमें घूमते हुयेको देखके मनुष्य बड़े आश्चर्यमें हुये, कितनोंको तोचरणोंहीसे मारा किसीको खैंचकर मारा किसीको खड्गसे मारा किसीको शब्दसे भयभीत किया, किसीको जंघाओंके वेगसे पृथ्वीपर गिराया इनसबबातों को देखतेहुये अन्य लोग बड़े भयातुर होकर भागगये, इसरीतिसे मरीकुटीवेगवानकलिंग देशियोंकी बड़ीसेना युद्धमें भीष्मजीको मध्यवर्त्ती करके भीमसेन के सन्मुख दौड़ी, तदनन्तर भीमसेन कलिंगकी सेनाके आगे श्रुतायुषको देखकर उसके सन्मुख गया उस बड़े बुद्धिमान् कलिंगदेशीने भीमसेनको आताहुआ देखकर नवतीरोंसे हृदयके मध्यमें घायल किया, अंकुशसे पीड़ित हाथीके समान बाणोंसे घायल भीमसेन क्रोधसे ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि इंधनसे अग्नि प्रज्वलित होतीहै, तदनन्तर रथियोंमें श्रेष्ठ अशोकने सुनहरी अंगवाले रथको साथले कर भीमसेनको सवार करवाया, शत्रुहन्ता भीमसेन बड़ी शीघ्रतासे उस रथ पर चढ़कर श्रुतायुषके सन्मुख दौड़ा और तिष्ठतिष्ठ शब्दको कहा, तदनन्तर अपनी हस्त लाघवताको दिखाते हुये महाक्रोध रूप बलवान् श्रुतायुषने बड़े तीक्ष्ण बाणोंको भीमसेनकेऊपर फेंका, हेराजा श्रुतायुषके उत्तम धनुषसेछुटे हुये तीव्र नवबाणोंसेघायल महाबली भीमसेन ऐसा महाक्रोधित हुआजैसे कि लकड़ीसेघायल सर्पक्रोधित होताहै, पराक्रमियोंमें श्रेष्ठ क्रोधित भीमसेन नेबड़ेभारी धनुषको चढ़ाकर,सातलोहेके बाणोंसे श्रुतायुषको मारा औरबाणों सेही श्रुतायुके दोनों महाबलीपार्योंके रक्षकसत्यदेव और सत्यको यमलोक

भजा इसकेपीछे महा साहसी भीमसेन ने तीव्रनाराचोंसे, केतुमन्तको यमलोकमें पहुंचाया फिर कलिंगदेशी क्षत्रियोंने अत्यन्त क्रोधित होकर हजारों सेनाओं सेउस क्रोधित भीमसेनको लड़ाया तदनन्तर हे राजा सैकड़ों कलिंग देशियों ने बरछी गदा खड्ग तोमर दुधाराखड्ग और परशोंकेद्वारा भीमसेनकोरोका,,तब भीमसेन ने उनको और उनकेबाण समूहों को बहुत अच्छी रीतिसे रोककर, गदाहाथमें लिये बड़ी तीव्रतासे दौड़कर सात सौवीरोंको यमलोकमें पहुंचाया, फिर उसी शत्रुहन्ताने कलिंगदेशियों के दोहजार वीरों को कालवश किया यह बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ, इसप्रकार उसभयानक पराक्रमी महावीर भीमसेनने कलिंगदेशियोंकी उन सेनाओंको युद्धमें बारंबार भगाया, और असंख्य हाथियों को सवारों से रहित किया फिर वह हाथीभी बाणोंसे पीड़ित होकर अपनी सेना को मारते खूंदते अत्यन्त गर्जतेहुए सेना के मध्य में से ऐसे भाग गये जैसे कि वायुसे टक्कर खाये हुए बादल इधर उधर होजाते हैं तदनन्तर खड्गहाथ में लिये महाबली,, अत्यन्त प्रसन्नचित्त भीमसेन ने बड़े घोर शंखको बजाकर सब कलिंगदेशी सेना के हृदयको कंपाया, हे परन्तप धृतराष्ट्र कलिंगदेशियों में मोह पैदाहुआ और सवारियों समेत सब सेनाके लोग अत्यन्त भयभीतहुए, युद्धमें सब ओर से गजेन्द्र के समान मार्गोंमें घूमते और जहां तहां दौड़ते अथवा बारम्बार उछलते भीमसेन के देखने से बड़ा मोह अर्थात् विह्वलता प्राप्तहुई, वह सेना भीमसेन के भयसे ऐसी अत्यन्त कम्पायमान हुई जैसेबड़े ग्राहसे पीड़ित सरोवरहोता है, भीमसेन से कौरवोंको भयभीत होनेसे और चारों ओरसे उनकलिंग देशियों के लौटने और भागजाने पर पाण्डव के सेना पति ने आज्ञादी कि तुमभी लड़ो, हे भरतवंशी शिखण्डी जिनमें उत्तमहै वहसेना सेनापतिके बचनको सुनकर, प्रहारकर्त्ता रथियों समेत भीमसेनके पास वर्त्तमान हुई, और धर्मराज युधिष्ठिर ने मेघवर्ण हाथियों की बड़ी सेना समेत पीछे की ओर से उन सबको रक्षित किया इस रीतिसे धृष्टद्युम्न सेनापति ने अपनी सब सेनाको चलाकर अच्छे पुरुषों समेत भीमसेनके पृष्ठभाग को रक्षित किया इस लोक में भीमसेन और सात्यकी के सिवाय पांचालेश राजाधृष्टद्युम्नको कोई अन्य प्राणों से प्यारा नहीं है वह शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न कलिंगोंके मध्यमें घूमतेहुए महाबाहु भीमको देखकर सबओर को गर्ज करके महा प्रसन्न हुआ,,फिर उसने युद्धमें शंखको बजाकर महा सिंहनाद को किया तब वह भीमसेन उस कपोत के समान घोड़ों से युक्त सुवर्णसे मंडित रथपर कचनार वृक्षकीध्वजा धारी को बैठा हुआ देखकर विश्वास युक्त हुआ और वह साहसी धृष्टद्युम्न उस कलिंग देशियों की ओर दौड़नेवाले भीमसेनको देखकर, उसकीरक्षा

के लिये युद्धमें घुसकर उसके पास आया तबउन महासाहसी धृष्टद्युम्न और भीमसेन दोनों वीरों को कलिंग देशकी सेना दूरसे युद्धमें वर्त्तमान देखकर महा भयभीत हुई फिर उस शीघ्रगामियों में श्रेष्ठ सात्विकी ने वहां जाकर भीमसेन और धृष्टद्युम्नके पृष्ठकोरक्षित किया और बड़ी धनुषधारी सेना को मारकर भयानक रूपमें नियतहुआ और भीमसेनने कलिंगदेशियोंसे उत्पन्न रुधिररूपकीचसे भरीहुई, रुधिरकेबहनेवाली नदीको जारीकिया इसीअन्तरमें महाबली भीमसेन कलिंग देशीय और पांडवोंकी महादुर्गम सेनाको अच्छे प्रकारसे तरगया हे राजा तब तुम्हारी सेनाके लोग भीमसेन को देखकर पुकारे, कि यह कालपुरुष भीमरूपसे कलिंग देशियों के साथ लड़ता है तदनन्तर शान्तनु भीष्मजी युद्धमें उस शब्दको सुन कर सेनाको चारोंओर से तैयारकरके बड़ी शीघ्रतासे सेनाके सन्मुख आये उनको आतेहुए देखकर सात्यकी वा भीमसेन और धृष्टद्युम्न भीष्मजी के रथ के सन्मुख दौड़े और सबोंने बड़ी शीघ्रता से गंगापुत्र भीष्मजी को चारों ओर से घेरकर तीन २ शीघ्रगामी बाणों से घायल किया फिर आपके पिता देवब्रत भीष्मजी ने उन सब उपाय करनेवाले बड़े धनुषधारियोंको सीधे चलनेवाले तीन २ बाणों से घायल किया तिसके पीछे हजार बाणों से उन महारथियोंको रोककर सुनहरी कवचरूप वस्त्रों से अलंकृत भीमसेन के घोड़ों को बाणोंसे मारा फिर मृतक घोड़े वाले रथपर नियत प्रतापवान् भीमसेन ने बड़ी तीव्रतासे भीष्मजीके रथपर उग्रबरछीको फेंका फिर आपके पिता देवब्रतने उस न पहुंची हुई बरछीको बीचहीमें दोखंड करके पृथ्वी में गेरदिया तदनन्तर पुरुषोत्तम भीमसेन बड़ी शीघ्रतासे शक्या यशी बड़ीगदा को लेकर रथसे कूदा और महारथी धृष्टद्युम्न उसको अपने रथपर सवार करके सबसेनाके देखते हुए दूर लेगया तदनन्तर सात्विकीनेभी भीमसेनके अभीष्टके लिये शीघ्रही शायकों से कौरवोंके पितामह भीष्मजीके सारथीको रथ से गिराया उस सारथीके मरने पर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजीभी उनवायुके समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि से दूर चले गये तदनन्तर हे राजा उस महाभारथी भीष्मके दूरचलेजाने पर भीमसेनको ऐसा महाक्रोप उत्पन्न हुआ जैसे कि बनको जलानेवाली अग्नि प्रचंडहोती है और सब कलिंग देशियोंको मारकर सेना में आगया, हे भरतवंशी आपका कोई वीर इसके सन्मुख होने को समर्थ नहीं हुआ फिर वह भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ भीमसेन पांचाल और मत्स्यदेशियों से अच्छी रीतिसे प्रशंसित धृष्टद्युम्न को छोड़कर सात्विकीसे मिला, तदनन्तर यादवोंमें श्रेष्ठ सत्यपराक्रमी सात्विकी धृष्टद्युम्न के देखते हुए भीमसेनकी प्रशंसाकरके यह वचन बोला कि प्रारब्धसे राजा

कलिंग और राजकुमार केतुमान् और कालिंगदेशी शक्रदेव और अन्य सब कलिंगदेशी लोग युद्धमें मारेगये सो तुम अकेलेने ही अपने भुजबलके पराक्रम से कलिंग देशियों के घोड़े हाथी और रथों से संकुल महाबली शूरबीरों से सेवित महाव्यूहको मर्दनकिया, शत्रुओं का जीतनेवाला और लम्बीभुजावाला सात्यिकी इस प्रकारसे कह कर उस रथपर नियत पांडवों के पास जाकर मिला, तदनन्तर उस क्रोधसे भरे सात्त्विकी ने भी आपकी सेनाके मनुष्यों को मारा और भीमसेनकी सेनाको रक्षित किया १२४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिकालिंगवधेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

संजयबोले हे भरतवंशी उस मध्याह्नके अन्तहोनेपर रथघोड़े हाथी और सवार पैदलों के बड़े नाशहोने पर धृष्टद्युम्न अकेलाही अश्वत्थामा शल्य और महात्मा कृपाचार्य इन तीनों महाबलियों के सम्मुख हुआ, और बड़ी शीघ्रतासेतीव्र और शीघ्रगामी बाणों से अश्वत्थामा के प्रसिद्ध घोड़ोंको मारा तदनन्तर मृतकघोड़ेवाला अश्वत्थामा बहुतशीघ्र शल्यके रथपरचढ़कर उसीरीतिसे बाणसंयुक्त होकर धृष्टद्युम्न के सन्मुखहुआ, हे भरतबंशी सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु अश्वत्थामा से भिड़ेहुए धृष्टद्युम्न को देखकर बड़े तीव्र बाणोंको फेंकताहुआ शीघ्रही सन्मुख दौड़ा, और वहां जाकर उस अभिमन्युने शल्यको पचीसबाणोंसे कृपाचार्य्यको नौबाणों से और अश्वत्थामा को आठबाणोंसे घायलकिया, इसके पीछे अर्जुनकेपुत्र अभिमन्युको अश्वत्थामाने एकबाणसे शल्यने बारहबाणोंसे और कृपाचार्य्यने तीन तीक्ष्णबाणोंसे घायलकिया, फिर आपकापोता लक्ष्मण उससन्मुख आये हुए अभिमन्युको देखकर महा कोपितहोकर उसके आगे वर्त्तमान हुआ और उन दोनोंका युद्ध जारीहुआ, हेराजा इसकेपीछे महाक्रोधी दुर्य्योधनके पुत्रने युद्धमें उस सुभद्राके पुत्र को तीव्रबाणों से घायलकिया यह आश्चर्य्यसा हुआ हे भरतवंशियोंमेंश्रेष्ठ फिर उसक्रोधरूप अभिमन्युने अपनी हस्तलाघवता से शीघ्रही पांचसौबाणोंसे भाई लक्ष्मणकोघायलकिया फिर लक्ष्मणनेभी एक बाणसे उसके धनुषको मुष्टदेशसे काटा इसकारणसे मनुष्यों ने बड़ा शब्द किया, फिर वीर शत्रुहन्ता अभिमन्युने उस टूटेहुए धनुषको छोड़कर बड़े वेगवान् जड़ाऊ धनुषको हाथमें लिया, फिर युद्धकर्ममें प्रवृत्त द्वन्द्वयुद्ध करने वाले दोनों पुरुषोत्तमोंने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसेपरस्पर एकको एकने घायल किया, इसके पीछे महाराजा दुर्य्योधन अपने महाबली पुत्रको आपके पोते से पीड़ामान् देखकरवहां आया फिर आपके पुत्रके अलग होजानेपर सबराजा

लोगों ने रथों के समूहों समेत अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को रोका, हे राजा युद्धमें अजेय श्रीकृष्णजी के समान पराक्रमी शूरवीर अभिमन्यु उन शूरोंसे घिराहुआ भी व्याकुल नहीं हुआ, तदनन्तर अर्जुन वहां अभिमन्युको भिड़ाहुआ देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अपने पुत्रकी रक्षाकरने को सन्मुख दौड़ा तदनन्तर रथ घोड़े और हाथियों समेत वह राजा लोग जिनमें अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य्य थे अकस्मात् आकर अर्जुन के सन्मुख वर्त्तमान हुए, मनुष्य घोड़े और रथोंकेचलनेसे एकाएकी पृथ्वीसे धूलउड़ी और सूर्य्य के मार्ग को पाकर तेज दिखाई दी, वह हजारों हाथी और राजालोग उस अर्जुन के बाणोंके मार्गको पाकर सबरीतोंसे सन्मुख वर्त्तमान नहीं रहे, सब जीव जन्तु पुकारे और दिशाओं में अन्धकार हुआ और कौरवों का अन्यायरूप भयानक फल उत्पन्नहुआ, हेनरोत्तम मुकुटधारी अर्जुनके बाणों से अन्तरिक्ष अर्थात् पृथ्वी और आकाश के मध्य में दिशा पृथ्वी और सूर्य्य नहीं दिखाई दिये, हाथी ध्वजाओंसे रहित हुए और असंख्यों रथी मृतक घोड़े वाले हुए और कोई महारथी ऐसे दृष्ट पड़े कि जिनके रथी भागगये, कहीं रथी लोग अपने रथों से रहित शस्त्र और बाजूबन्दों समेत इधरउधरदौड़ते हुए जहां तहां दिखाई देते थे, हे राजा अर्जुनके भयसे घोड़े के सवार घोड़ोंको और हाथीके सवार हाथियोंको त्यागकरके चारों ओरसे भागे, और बहुत से राजा लोग अर्जुन के बाणों से रथ हाथी और घोड़ों से गिराये वा गिरते हुए दृष्ट पड़ते थे, हे राजा अर्जुन ने जहां तहां गदा समेत उठाये हुए और खड्ग पराश तूणीर बाण धनुष इत्यादिको उठायेहुए अथवाअंकुश और पताकाओं समेत उठाये हुए मनुष्यों की भुजाओं को अपने कराल बाणों से काटकर रुद्ररूप धारणकिया, हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र युद्धमें कटेहुए परिघ मुद्गर प्राशभिन्दिपाल खड्ग, तीक्ष्ण परसे तोमर और धनुष से काटे हुए सुनहरी कवचभी हजारों पृथ्वीपर पड़ेहुए दृष्टआये, और सब प्रकारकी ध्वजा ढाल पंखे औरसुनहरीदण्डवालेछत्र तोमर, चाँबुक कोड़ और रस्सियोंके ढेरोंके ढेर युद्धभूमिमें फैलेहुए दिखाई दिये हे श्रेष्ठआपकीसेनाका कोई मनुष्य भी ऐसा न हुआ जो युद्धमें उसशूरबीर अर्जुनकेसम्मुख जाय, हेराजा युद्धमें जो जो अर्जुनके सम्मुखजाताहै वह बाणोंकेद्वारा यमपुरको भेजाजाताहै सब रीति से आपके शूरोंके भागजानेपर अर्जुन और बासुदेवजी ने उत्तम शंखों को बजाया फिर आपके पिता देवव्रतउस सेनाको भागाहुआ देखकर, बड़ा आश्चर्य्य करके युद्ध में महाशूरबीर द्रोणाचार्य्यजी से बोले कि यह पांडुका बेटा बीर बलवान् श्रीकृष्णजी के साथ में होकर उसी प्रकार सेनाओं को मारकर काटे डालता है जैसे कि संसारी धनका विजय करने वाला करताहै,

अब यह किसी प्रकारसे भी युद्धमें जीतनेके योग्य नहीं है, इसका रूपकालवा अन्तक वा यमनाम मृत्युके समान दृष्ट आता है और यह बड़ी सेना भी नाश करवाने के योग्य नहीं है देखो यह सेना परस्पर की सहायता से निर्बल है यह सूर्य्य सब रीतिसे सब लोकों की दृष्टि को हरता हुआ पर्वतों में श्रेष्ठ अस्ताचल को प्राप्त होता है हे पुरुषोत्तम ऐसी दशामें मैं सेनाके विश्रामको चाहताहूं, जो युद्धकर्त्ता भयभीतहुए थकगये हैं वह कभी नहीं लड़ेंगे महारथी भीष्मजीने आचार्य्योंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यसे इसरीतिसे कहकर आपकी सेनाओंका विश्रामकिया हे श्रेष्ठ सूर्य्यके अस्तंगत होनेपर आपकी और पांडवोंकी सेनाका विश्राम हुआ और सन्ध्यावर्त्तमानहुई ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय

संजय बोले कि इसके पीछे शत्रुसंतापी भीष्मजी ने प्रातःकालके समय चढ़ाई करनेके निमित्त सेनाओंकोआज्ञाकरीतब आपके पुत्रोंकी विजय चाहनेवाले कौरवों के पितामह वृद्ध भीष्मजीने गारुड़नाम महाव्यूहको रचा, उसमें आपकेपिता देवव्रत तो गरुड़की चोंचपरहुए और भारद्वाज द्रोणाचार्य्य वा कृतवर्मा यादव यहदोनों नेत्रोंके स्थानमें हुए और यशस्वी अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य शिरके स्थानमेंहुए और जो त्रिगर्त्तमत्स्य वा केकय यह सब वारधानोंसे युक्तथे, और (भूरिश्रवा) (शल) शल्य भगदत्त मद्रक सिंधु सौवीर और पंचनदवासी लोग यह सब जयद्रथकेसाथ ग्रीवामें नियतहुए और राजा दुर्य्योधन अपने सगे भाइयों समेत अपने पीछे चलनेवाले शूरवीरों से युक्त पीछेकी ओर नियतहुए और विन्द अनुविन्द और अवन्तिके राजालोग और कांबोज यहसब शकलोगों वा शूरसेनदेशी वीरलोगोंके युक्त गरुड़कीपूंछकी ओर नियत हुए, और मगधदेशी वा कलिंगदेशीवा असुर लोगों के समूह यह सब उस गरुड़के दक्षिणपक्षपर नियतहुए, और (कारुष)(विकुंज) (मुंड) (कौंडी) (वृप) यह सब बृहद्बलसमेत बायें पक्षपर उपस्थितहुए, उस युद्धभूमिमें शत्रुहन्ता परन्तप अर्जुनने उस व्यूहित सेनाको देखकर धृष्टद्युम्नकी सलाहसे उसकी समानताका अपनी सेनाका भी व्यूह रचा अर्थात् सब पाण्डवों ने आपके उस व्यूहको देखकर अर्द्धचन्द्रनाम व्यूहसे अपनी भयानक सेनाको सुशोभित किया, और नानाप्रकारके शस्त्रों के समूह और अनेक देशी राजालोगों से युक्त भीमसेन दाहिने शृंगपर नियतहोकर शोभायमान हुआ, उसीके पीछे महारथी विराट और द्रुपद नियतहुए फिर उनके पीछे अपने नीले आयुधोंसमेत राजा नील और नीलके पीछे चंदेरी वा काशी

वा करूषदेशी वा पौरवदेशी इन सबको साथलिये राजा धृष्टकेतु वर्त्तमान हुए और हे भरतर्षभ धृष्टद्युम्न शिखण्डी पांचालदेशी और प्रभद्रक यह सब अत्यन्त सेना समेत युद्ध करने के लिये बीचमें नियतहुए और उसीस्थान में हाथियोंकी सेना समेत राजा धर्मराज युधिष्ठिर भी वर्त्तमान हुए और उसके पीछे सात्विकी वा द्रौपदी के पांचोंपुत्र थे उनसे पीछे अभिमन्यु अभिमन्यु के पीछे इरावान और उसके पीछे भीमसेन का पुत्र घटोत्कच और महारथी केकय देशी उसके पीछे नरोत्तम सब जगत् का रक्षक जिसके रक्षकजनार्दन थे वह अर्जुन हुआ, इसरीतिसे पाण्डवोंने आपके पुत्रों के और उनके सहायकों के मारने के निमित्त इस बड़े भारी व्यूहको रचा, तदनन्तर आपके पुत्र और पाण्डवों में परस्पर वह युद्ध जिसमें हाथी घोड़े और रथ संयुक्त थे जारीहुआ, हे राजा जहां तहां वह हाथी और रथों के समूह परस्पर में मारते और गिरतेहुए दृष्टपड़ते थे, और दौड़ते वा पृथक् २ लड़ने वाले रथ के समूहों के महा कठिन शब्द दुन्दुभियों के शब्दों से मिलेहुए सुनेजातेथे, हे भरतबंशी उसतुमुलयुद्ध में परस्पर में मारतेहुए आपके और दूसरों के शूरबीरों के शब्द आकाश तक व्याप्तहुए, २३॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिगारुड़ार्द्धचन्द्रव्यूहनिर्माणेषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवां अध्याय॥

संजय बोले हे भरतबंशी इसके अनन्तर आपके पुत्रों की और पाण्डवों की सेना व्यूहित होनेपर बाणोंसेमहारथियोंको गिरातेहुए अतिरथी अर्जुनने रथके यूथपों को इस रीति से मारा जैसे कि युगके अन्तमें कालसबका नाशकरताहै, इसरीतिसे अर्जुनसे घायल और पीड़ित उनधृतराष्ट्रके पुत्रोंने युद्ध में महाकुशल पांडवलोगों से युद्धकिया हे राजा अपनी कीर्ति के चाहने वाले उन कौरवों ने मृत्युको न लौटने वाली मानकर चित्तको स्थिरकरके पांडवों की सेनाको अनेक रीतों से छिन्न भिन्नकरके आपभी युद्धसे छिन्नभिन्न होगये, फिर भागते और छिन्न भिन्नहोते अथवा लौटते समय में कौरव पांडवोंकी धूमधाम में कुछ नहीं जाना गया और धूल ऐसी उड़ी कि जिससे पृथ्वी और सूर्य्य ढकगये और अन्धकार ऐसा मचगया जिसमें दिशा विदिशा का कुछ भी ज्ञान न रहा, हे राजा उस समय जहां संग्राम भूमि में ध्यान और नाम गोत्रों के द्वारा युद्धजारी रहा, हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र वहां भारद्वाज द्रोणाचार्य्य से रक्षित वह कौरवों का व्यूह छिन्न भिन्न नहीं होताथा और इसी प्रकार अर्जुन से रक्षित पांडवोंका बड़ा व्यूहभी भीमसेन से आश्रितहोकर पराजय नहीं होताथा फिर वहां रथ हाथियों से संयुक्त

दोनों सेनाओं के मनुष्य सेना के आगे से निकल कर युद्ध करने लगे, तब उस महायुद्ध के बीच तीक्ष्ण धार वाले दुधारा खड्ग और परशों के द्वारा घोड़ों के सवारों के हाथ से घोड़ों के सवार गिराये गये, फिर उस अत्यन्त भयकारी सेना में सुनहरी बाणों से रथीने रथी को सन्मुख होकर गिराया, फिर आप के और उन के हाथियों के सवारों के समूहों ने नाराच शर और तोमरों के द्वारा सन्मुख होकर हाथियों के सवारों को गिराया और उस रण में पत्ति सिंह नाम सेना के भागने भिण्डिपाल और परशों के द्वारा पत्तियोंको गिराया और रथी ने हाथी के सवार को सन्मुख होकर मारा और हाथी के सवार ने इसी प्रकार से रथी को जा गिराया, हे भरतर्षभ घोड़ों के सवारों ने परासों के द्वारा रथी को और रथी ने घोड़े के सवार का, और दोनों सेनाओं के हाथी के सवारों ने तीक्ष्ण शस्त्रों से घोड़ों के सवारों को और घोड़ों के सवारों ने हाथी के सवारों को विध्वंस किया यह भी आश्चर्य्य सा हुआ और जहां तहां अच्छे २ हाथी के सवारों के हाथ से पदाती भी मारे हुए दृष्ट पड़े और उन पदातियों के हाथ से हाथियों के सवार मरेहुए देखने में आये घोड़ों के सवारों से पतियों के समूह और पतियों से सवारों के समूह गिराये हुए दिखाई दिये, हजारों गिरते हुए हजारों कटे हुए हजारों ध्वजा और धनुषों समेत और हजारों तोमर परिस्तोम और कुथों समेत और बहुतेरे बहुमूल्य कंबलों को ओढ़े हुए प्राश गदा परिघ कंपन शक्ति और बिचित्र कवचों को धारण किये भूमि में गतप्राण दीखे हे भरतर्षभ हजारों (कुणप) (अंकुश) और सुवर्ण पुंखवाले बाणों से भूमि ऐसी शोभायमान थी जैसे कि मालाओं से पूरित होकर शोभित होती है और उस महायुद्ध में मनुष्य घोड़े और हाथियों के गिरे हुए शरीरों से ढकी हुई पृथ्वी मांस रुधिर रूपी कीच से महा दुर्गम और देखने के योग्य न थी और मनुष्यों के रुधिरों से छिड़की हुई पृथ्वी की धूल अत्यन्त शान्त होगई हे राजा सब दिशा शुद्धहुई और कबन्ध अर्थात् बिना शिर के रुण्ड चारों ओर से असंख्य उत्पन्न होकर सब संसार के नाशकारक हुए फिर उस बड़े भारी भयानक युद्ध जारी होने पर चारों ओर से दौड़ते हुए अनेक रथी दृष्ट पड़े इसके पीछे (भीष्म) (द्रोणाचार्य्य) (जयद्रथ) (राजासिंधु) (पुरुमित्र) (विकर्ण) (शकुनि) (सौबल) यह सब युद्ध में दुर्धर्ष सिंह के समान पराक्रमी पांडवों की सेना के मारनेको उपस्थित हुए, इसी प्रकार हे भरतवंशी (भीमसेन) (घटोत्कच राक्षस) (सात्यिकी) (चेकितान) द्रौपदी के पांचों पुत्र इन बीरों ने भी सब राजाओं समेत युद्धभूमि में नियत होकर आपके शूरवीरों समेत सब पुत्रों को ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि देवता लोग दानवों को करदेते हैं इसीप्रकार

से वह सब क्षत्री परस्पर में युद्धप्रहार करते हुए, रुधिर भरे हुए शरीरों से घोर रूप किंशुक वृक्षों के समान शोभायमान दिखाई देने लगे हे राजा दोनों ओर की सेना के शूरबीर अपने २ शत्रुओं को बिजय करके ऐसे देखने में आते थे जैसे कि आकाशमंडल में सूर्य्यादि बड़े ग्रह दिखाई देते हैं इस के उपरान्त आपका पुत्र दुर्य्योधन हजार रथों के साथ, उस युद्ध में पांडव और घटोत्कच राक्षस के सन्मुख आया वैसेही सब पांडवभी अपनी बड़ी सेना समेत भीष्म और द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गये यह सब पांडव आदि युद्ध में शूरबीर शत्रुओं के बिजय करने वाले हैं इसके पीछे दिव्य मुकुटधारी क्रोध में भरा अर्जुन सब ओरके राजाओं के सम्मुख गया और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु वा सात्विकी यहदोनों शकुनी की सेनाके सन्मुख गये तिसके पीछे परस्पर में बिजय की इच्छारखने वाले आपके पुत्रों का और दूसरोंका रोमहर्षण करने वाला महायुद्ध फिर जारी हुआ ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर उन क्रोधरूप राजाओं ने अर्जुन को युद्ध में देखकर हजारों रथ समेत उसको आनकर घेरलिया, तदनन्तर हे भरतबंशी उसको रथ समूहों से घेरकर चारों ओर से हजारों बाणों से भी रोका, फिर युद्ध में क्रोधरूप उनलोगों ने स्वच्छ बरछी तीक्ष्ण गदा प्राश परश्वध मुद्गर और मूशलों को परिघों समेत अर्जुन के रथपर छोड़ा और अर्जुन ने भी अपने सुनहरी बाणों से उस टीड़ी के समूह के समान राजाओं की शस्त्र और बाणों की बर्षा को चारों ओर से रोका हे राजा उस युद्ध में अर्जुनकी हस्तलाघवता जोकि दृष्टिसे बाहर थी, उसको देव दानव गन्धर्व पिशाच उरग और राक्षसों ने देखकर अर्जुनकी बड़ी प्रशंसा धन्य २ शब्दों से करी और सात्विकी और अभिमन्यु ने बड़ी सेना वालेयुद्ध में शूरबीर गांधारियों को सौबलके पुत्रों समेत युद्धमें रोक दिया, इसके पीछे क्रोध में भरे हुए सौबलके पुत्रों ने वृष्णिबंशी सात्विकी के उत्तम रथको नाना प्रकारके शस्त्रों से तिलके समान टुकड़े २ करडाला, हे शत्रुसन्तापी धृतराष्ट्र फिर तो सात्विकी उस महाभारी युद्धके होनेपर उस रथको त्याग शीघ्रही अभिमन्युके रथपर चढ़ा फिर एकही रथपर सवार होकर उन दोनों ने बड़ी शीघ्रता से गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से शकुनी की सेनाको मारा, और युद्धमें कुशल द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी ने कंकपत्त्र वाले तीक्ष्ण बाणों से धर्मराज युधिष्ठिर की सेनाका बिध्वंस किया इसके अनन्तर धर्म्मराज युधिष्ठिर माद्रीनन्दन

नकुल सहदेव आदि पाण्डवोंकी सबसेनाके देखते हुए द्रोणाचार्य्यकी सेना के सन्मुख दौड़े, फिर वहां रोमहर्षण करनेवाला बहुतभारी ऐसा तुमुल युद्ध हुआ जैसे कि पूर्व्व समयमें देवता और असुरों का महा भयानक युद्ध हुआ था फिर भीमसेन और घटोत्कच ने बड़ा कर्म्म किया तब तो दुर्य्योधन ने संमुख आकर उन दोनोंको भी रोका, हे भरतवंशी वहां हमने हिडम्बा के पुत्र घटोत्कचका अपूर्व पराक्रम देखा कि युद्धमें पिता को भी उल्लंघन करगया फिर अत्यन्त क्रोधभरे अशान्तरूप भीमसेन ने हँसकरके प्रशतनामबाण से दुर्य्योधनके हृदयमें प्रहार किया तब तो उस महाभारी बज्ररूप प्रहारसे पीड़ामान राजा दुर्य्योधन रथके बैठनेके स्थान में बैठगया, हेराजा फिर इसका सारथी इसको अचेत जानकर बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक युद्धभूमिसे दूर लेगया इसके पीछे सेना इधर उधर बिखरगई, फिर भीमसेन जहां तहां से भागने वाली उस कौरवी सेनाको तीक्ष्ण बाणों से मारता हुआ पीछे की ओर से चला, हे भरतवंशी युद्धमें कुशल धृष्टद्युम्न और धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी के देखते हुए शत्रुहनने वाले विशिखों से उस सब सेनाको मारा और सेना ऐसी भगी कि जिसके रोकनेको भीष्म और द्रोणाचार्य्यभी समर्थ नहीं हुए आशय यहहै कि वह सेना महात्माभीष्म और द्रोणाचार्य्य से रोकी हुई भी इनको देखकर भागती थी और हेपरंतप जहां तहां हजारों रथके टूटने पर उन एकरथ पर बैठनेवाले अभिमन्यु और सात्यिकीने भी शकुनी की सेना का नाशकर दिया, इसके पीछे वह दोनों अभिमन्यु और सात्विकी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि अमावास्याके दिन आकाशमण्डल में वर्त्तमान सूर्य्य और चन्द्रमा शोभित होते हैं, हे राजा इसके अनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुन आपकी सेनापर ऐसी बाणों की वर्षाकरी जैसे कि धारों से बादल जलको बरसाताहै, फिर इसके पीछे युद्धके बीच अर्जुनकेबाणोंसे घायल और भयसे विह्वल और कम्पायमान होकर वह कौरवी सेना युद्धसे भागगई, फिर दुर्य्योधनके अभीष्ट चाहनेवालेमहाबली भीष्म औरद्रोणाचार्य्यने उसभागीहुई कौरवी सेनाको बड़ेक्रोधसे रोका,हे राजाइसकेपीछे राजादुर्य्योधननेभी अच्छी रीतिसे विश्वास देकर उस भागीहुई अपनी सेनाको चारोंओरसे लौटाया, हे भरतवंशी जहां जहां जिस जिसने आपके पुत्रकोदेखा वहांवहांसे वहक्षत्रियों के महारथी लौटे इसके पीछे हेराजा उनलौटेहुओंको देखकर अन्य मनुष्यभी परस्परकी ईर्षा से वा लज्जासे लौटकरनियत हुए फिर उन लौटनेवालों का ऐसा वेगहुआ जैसे कि चन्द्रमाके उदय में पूर्णहोते हुए समुद्रका वेग होताहै इसके पीछे राजा दुर्य्योधन उनलौटेहुओंको देख कर बहुत शीघ्रही शान्तनु भीष्मजीके पास जाकरयहवचन बोला हेभरतवंशी पितामह आपमेरे इसवचन

को समझिये हे कौरवों में श्रेष्ठ मैं यह उचित नहीं समझता हूं कि आप के और सकल शस्त्र विद्या के ज्ञाता द्रोणाचार्य्य जी और उन के पुत्र अश्वत्थामा और महाधनुर्धर कृपाचार्य्य वा उन के मित्रों के विद्यमान रहतेहुए सेना भागती है, मैं किसी दशा में भी किसी को आप के समान पराक्रमी नहीं जानताहूं इसी प्रकार द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा के भी समान युद्ध में पाण्डव लोग नहीं हैं, हे पितामह निश्चय करके पाण्डव लोग आपकी कृपा के योग्य हैं हे वीर इसीसे इस घायल और मारी कूटी हुई सेना पर आप क्षमा करतेहो सो हे राजा आपको प्रथमही सन्मुखता में कहने को योग्य था, कि मैं इस युद्ध में पाण्डव लोगों से वा सात्विकी और धृष्टद्युम्नसे नहीं लडूंगा हे भरतवंशी जो मैं आप के और आचार्य्यजी के बचनों को सुनता तो उसी समय कर्णसे कर्म करवाने के बिचार को करता आप दोनों को इस युद्ध में मेरा त्यागना योग्य नहीं है, आप दोनों पुरुषोत्तम अपने योग्य पराक्रम के द्वारा युद्ध करो, भीष्मजी इस की बातों को सुनकर बारम्बार हँसते हुए क्रोध से दोनों नेत्रों को अच्छी रीति से खोलकर आप के पुत्र से बोले कि हे राजा मैंने बहुत बार तुम से तुम्हारा हितकारी बचन कहा है, कि पांडव लोग युद्ध में इन्द्र समेत देवताओं से भी अजेय हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ जो मुझ वृद्ध से करने के योग्य है, उसको मैं अपनी सामर्थ्यके अनुसार करूंगा तू अब बांधवों समेत देख कि मैं सेना समेत पांडवों को तेरे और सब लोकों के देखते हुए हटाऊंगा हे राजा भीष्म से कहे हुए ऐसे बचनों को सुनकर आप के आनन्दभरे पुत्र ने शंख और भेरीको बजाया इस के पीछे पांडवों ने भी इस बड़े शब्दको सुनकर शंखों को बजाकर भेरी मुरजादिकों को अच्छी रीति से बजाया ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसके अनन्तर उस भयानक युद्धमें मेरे पुत्रके कहने से भीष्मजी के कोपयुक्त होकर प्रण करने पर, भीष्म जीने पांडवों के ऊपर और पांचाल देशियों के पितामह के ऊपर क्या २ काम किये वह मुझ से आप वर्णन कीजिये, संजय बोले कि हे भरतवंशी उस दिन के मध्याह्न समय के व्यतीत होने पर सूर्य्य के पश्चिम ओर होने के काल में और महात्मा पाण्डवों के विजयी होकर प्रसन्न होनेपर सब धर्म्मों के ज्ञाता आपके पिता देवव्रत भीष्मजी सब रीति से आप के पुत्र और सेनाओं से रक्षितहोकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा पाण्डवों की सेना के सन्मुख गये, हे भरतवंशी

इसके पीछे आप के अन्याय के कारण पाण्डवों से हमारा रोम हर्षण करने वाला महातुमुल युद्ध हुआ, अर्थात् धनुषों के शब्दों से और तालों के बजने से ऐसा तुमुल शब्द हुआ जैसे कि पर्व्वतों के फटनेका हुआ करता है, तिष्ठ तिष्ठ खड़ाहूं खड़ाहूं इसको देख २ लौट २ नियतहो २ नियतहूं २ प्रहार कर २ इत्यादि अनेकप्रकार के शब्द सुनाईदिये, सुनहरी कवच कण्ठ और ध्वजाओं पर ऐसे महा शब्द हुए जैसे कि पर्व्वतों पर शिलाओं के गिरने से शब्द होते हैं, हजारों भूषणोंसे अलंकृत शिर और भुजा पृथ्वीपर गिरकर नानाचेष्टा करनेलगे, कितनेहीं शिर कटहुए पुरुषोत्तम धनुष उठाये हुए वा शस्त्रों को धारण किये हुए उसी दशामें नियत हुए तब रुधिरसे जारी होने वाली घोर नदी हाथियों के अंगरूप शिला और मांस रुधिररूप कीचड़ से भरीहुई बड़े वेगवान् उत्तम घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीर से प्रकट गिद्ध शृगालोंकी प्रसन्नता देनेवाली परलोक समुद्ररूपा घोरनदी बड़े प्रवाहसे बही हे राजा जैसा कि आपके पुत्रोंका और पांडवों का युद्ध हुआ वैसा आजतक देखागया न सुनागया, उस युद्धमें गिरायेहुए शूर वीरोंके कारण कहींसे रथों के जानेका मार्ग नहींरहा और नीले २ हाथियों के गिरेहुए होनेसे वह पृथ्वी पहाड़ों के शिखरों के समान दिखाई दी, हे श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मितकवचों के और शिर त्राणों के फैलेहुए होने से वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरद ऋतुमें आकाश मण्डल शोभित होताहै, कोई मनुष्य अत्यंत घायल आंत वा पैरोंसे भी कटेहुए मनसे अदीन और अहंकारी होकर उस युद्धमें शत्रुओं के सन्मुख दौड़े, और कोई २ हे पिता हे भाई हे मित्र हेबांधव हे समान अवस्थावाले हे मामा हे काका मुझको मतसताओ मतसताओ ऐसा २ कहकर पुकारे, और कोई सन्मुख वर्त्तमानहो तुम आओ क्यों भयभीत है कहां जायगा मैं युद्धमें नियतहूं भय न कर इत्यादि बातें कहकह कर पुकारते थे, उस युद्धमें शान्तनव भीष्मजी ने जिनका धनुष मण्डल के समान था विषके बुझेहुए तीव्रनोक के सर्पाकार बाणों को छोड़ा, हे भरत वंशी बाणोंसे सब दिशाओं को बराबर करने वाले सावधान व्रत भीष्मजी ने पाण्डवों के रथियों को कह कहकर मारा, वह भीष्मजी रथके मार्गों में नृत्य करते और हस्तलाघवता को दिखाते हुए उल्काके समान जहां तहां फिरते और चमकते हुए दृष्टिपड़े, पाण्डवों ने संजयों समेत युद्ध भूमि में उस अकेले शूर वीर की हस्तलाघवता के कारण लाखों के समान जानकर भीष्मजी को महा मायावी के सदृश माना, क्योंकि उनको अभी पूर्व में देखकर फिर पश्चिम दिशा में देखा, इसी प्रकार उत्तर में देखकर दक्षिण दिशामें भी देखा, इस रीतिसे वह गांगेय भीष्मजी युद्ध में महायुद्ध करते

हुए दृष्टिआये, पाण्डवों का कोई शूरवीर उनके युद्धके देखनेको समर्थ नहीं हुआ इन भीष्मजी के धनुषसे गिरेहुए अनेक विशिख नाम बाणही दिखाई पड़ते थे, उस संग्राममें उस कर्म करनेवाले सेनाको मारते देवरूप घूमते हुए आपके देवव्रत पिताको देखकर युद्धमें लोग अनेक रीतों से पुकारते थे, और अत्यन्त मोहित हजारों राजा लोग उसभीष्मरूप अग्निमें सलभाओं के समान गिरकर काल बशहुए, युद्धभूमि में उस हस्तलाघवतासे लड़नेवाले भीष्मजी का कोई भी बाण मनुष्य हाथी घोड़े आदि के शरीरमें लगकर निष्फल नहीं गया, वह भीष्म युद्धमें झुकेहुए पर्ववाले एकही बाणसे दन्तमण्डलधारी हाथी को ऐसे मारडालते थे जैसे कि बज्रसे पर्व्वतको इन्द्रमारताहै आप के पिताने अत्यन्त तीव्र नाराच नाम बाणसे मिलेहुए पर्व्वतोंके समान दो वा तीन हाथियोंके सवारों को भी मारा, जो कोई युद्धमेंइसनरोत्तम भीष्मके सन्मुख आता था वह भयसे एक मुहूर्त्ततक पृथ्वीपर गिराहुआ दृष्टपड़ता था, इस रीतिसे अतुल बल भीष्मजी से घायल हुई युधिष्ठिर की सेना हजारों प्रकारसे दुखी और भय भीतहुई, वह पाण्डवों की बड़ी सेना भीष्मजी के बाण समूहों से पीड़ित होकर वासुदेवजी और महात्मा अर्जुन के देखते हुए बड़ी कम्पायमान हुई, उपाय करनेवाले बीरलोग भी भीष्मजी के बाणों से अत्यन्त पीड़ामान भागतेहुए महारथियों के लौटानेको समर्थ नहीं हुए हे महाराज महाइन्द्र के समान पराक्रमी भीष्मसे उद्विग्न पाण्डवों की बड़ीभारी सेना पराजय को प्राप्त हाहाकार रूप होकर अचेत होगई और रथ हाथी घोड़े भी घायल होकर ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर पड़ेहुए थे, उस युद्धमें दैवीबलसे विजयपाने वाले पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको वा मित्रने प्रियमित्रको मारा हे भरतबंशी पाण्डवोंकी सेनाके मनुष्य कवचोंको त्याग शिर के बालों को फैलाकर दौड़े हुए दृष्टपड़े, तब पाण्डवों की वह सेना जिसके महारथी भ्रान्ति से युक्त थे व्याकुल दुखी और भयकारी शब्दों को करते हुये दिखाई दिये फिर यादवों के प्रसन्न करनेवाले श्रीकृष्ण जी सेनाको पराजय में प्राप्त देखकर अपने उत्तम रथको रोककर अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन अब वह समय आगया है जो तेरा अभीष्ट है हे नरोत्तम जो तू मोहसे अज्ञान नहीं है तो इनके ऊपर प्रहार कर, हे महावीर पूर्व्व समयमें राजाओं के मिलाप में जो तुमने कहा है, कि दुर्योधनकी सेना के भीष्म द्रोणाचार्य्य आदि लोगों को उनके उन सहायकों समेत मारूंगा जो कि मुझ से युद्धको करेंगे, हे शत्रुंजय अर्जुन तू अपने उस बचनको सत्यकर तू इधर उधर छिन्न भिन्न हुई अपनी सेनाको देख, युधिष्ठिर की सेना में युद्ध कुशल मृत्यु के समान भीष्मको देखकर इनभागते हुए राजाओं

को देखो, यहसब भयसे पीड़ित होकर ऐसे नाश हुए जाते हैं जैसे कि छोटे २ मृगसिंहको देखकर भय से मरजाते हैं यह कृष्ण के वचन सुनकर अर्जुनने वासु देवजीको उत्तर दिया, कि आप घोड़ोंको उधर चलाओ जहां भीष्मजी हैं मैं अबइस सेना रूपी समुद्र को उतरकर इस अजेय और वृद्ध कौरवोंके पितामहको गिराऊंगा हेराजा तबतो माधवजीने चांदी के समान श्वेत रंगके घोड़ोंको उधरहीको चलाया जिधर सूर्य्य के समान कठिनता से देखनेके योग्य भीष्मजीथे,इसके अनन्तर भीष्मके निमित्त युद्धमें प्रवृत्त महा-बाहु अर्जुनको देखके युधिष्ठिरकी वहबड़ी भारीसेना फिर लौटआई, ५० तद-नन्तर सिंहसमान गर्जते कौरवोंमें श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्रही बाणोंकी बर्षासे अर्जुनको ऐसा ढकदिया, कि जिसकारथ ध्वजा सारथी समेत क्षणभर में बाणोंसे आच्छादित होकर दिखाई नहीं दिया, फिरतो भ्रान्तिसे रहित बुद्धि मान वासुदेवजी ने धैर्य्यता में नियत होकर भीष्महीके शायकोंसे उन्हीं के धनुषको काटकर पृथ्वीपर गिरादिया, फिर उसटूटे हुए धनुष वाले पितामह भीष्मने शीघ्रही दूसरे बड़ेभारी धनुषको लेकर एक निमिषमेंही तैयार कर लिया, तदनन्तर उसबादलके सामान गर्जने वाले धनुषको भीष्मने दोनों हाथोंसे खेंचा फिर क्रोधयुक्त अर्जुनने उनके उसधनुषकोभी काटा, अर्जुनकी इस हस्तलाघवताको देखकर भीष्मजीने प्रशंसाकी कि हे महाबाहु अर्जुन धन्यहै हे पाण्डुनन्दन तुमको धन्यहै, हे संसारके धनोंके विजय करने वाले यह बड़ाकर्म तुम्हीमें है योग्यहै योग्य है हे पुत्र मैं तेरे इसकर्मसे अत्यन्त प्रसन्नहूं तू मेरेसंग युद्धकर इसरीतिसे इसवीरने अर्जुनकी प्रशंसाकरके फि दूसरे बड़े धनुषको लेकर अर्जुनके रथपर बाणोंकी बर्षा करी, फिरबासुदेवजीने भीष्मके बाणोंको निष्फल करके तेजमंडलोंमें घूमते हुये घोड़ोंके चलाने में बड़ापराक्रम दिखाया, इसके पीछे भीष्मजीने अपने तीक्ष्ण बाणों से बासुदे-वजी को और अर्जुन को बहुत घायल किया, उनबाणों से अत्यन्त घायल वह दोनो पुरुषोत्तम ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि गर्जते और शाखाओं के घातसे चिह्नित दो उत्तम बैलहोते हैं, इसके पीछे अत्यन्त क्रोध में भरे हुए भीष्मजीने लाखों बाणों से इनदोनों कृष्ण अर्जुन की दिशाओं को रोक दिया, फिर बारंबार अत्यन्त अहंकार और क्रोधयुक्त भीष्मजीने बड़े ऊंचे शब्दसे हँसकर तीव्र बाणों से वृष्णिबंशी श्री कृष्णजी को कंपायमानकर दिया,इसके अनन्तर महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्धमें भीष्मजीके महापराक्रमको देखकर और अर्जुनके मृदु युद्धको अच्छी रीति से बिचार और युद्धमें बारं-बार बाणोंको छोड़ते हुए दोनों सेनाओंके बीचको पाकर पांडवोंकी उत्तम सेनाको और सेनाके उत्तम २ शूरवीर पुरुषों को सूर्य्य के समान संतप्त करते

वा मारते, युधिष्ठिर की सेनामें प्रलय मचातेहुए भीष्मको देखकर उस बड़े ज्ञानी शत्रुओंके मारने वाले क्षमाशील भगवान् केशवजीने, यह चिन्ताकरी कि युधिष्ठिरकी सेनानहीं रहैगी क्योंकि भीष्मजी एकही बाणमें युद्धके बीच दैत्य दानवों कोभी नाशकरने वालेहैं तो सेना और सहायकों समेत पांडवों का मारडालना उनको कितनी बड़ी बातहै और इन महात्मापांडवोंकी सेना भागीभी जातीहै, और यह कौरवलोग सोमकों को युद्धसे भागेहुए देखकर बड़े प्रसन्न चित्त पितामहको आनन्ददेते हुए चारोंओर से दौड़ेचले आते हैं सो अबमैंभी शस्त्र धारण करके पांडवों के निमित्त भीष्मको मारके महात्मा पांडवोंके इस महाभारको दूर करूंगा, और अर्जुनभी युद्धमें तीव्र बाणों से पीड़ामान है वहइस युद्धमें भीष्मजीकी महत्त्वता से करनेके योग्य कर्मको नहीं जानताहै, इसप्रकार उन श्रीकृष्णजी के विचार करतेहीमें फिर अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजीने अर्जुन के रथपर बाणोंको फेंका, उनबाणोंकी अत्यन्त आधिक्यतासे सब दिशाढकगईं उससमयआकाश औरदिशाकुछभी दिखाई नहीं देतेथे और न किरणसमूह धारी सूर्य्य दिखाई देताथा वायुमहा तुमुल हुआसब दिशाओंमेंधुआंसाव्याप्त होकरमहाव्याकुलतामचगईऔर (द्रोणाचार्य) विकर्ण) (जयद्रथ) (भूरिश्रवा) (कृतवर्मा) (कृपाचार्य्य) (श्रुतायु) (अंबष्टपति) (विन्द) (अनुविन्द) (सुदक्षिण) (पूर्वाराजा) (सौवेरोंकेगण) (सर्वविशातगण) (क्षुद्रकमालव) यह सबराजालोग शीघ्रही भीष्मजी के अज्ञावर्त्ती होकर अर्जुन की ओरको दौड़े जब सात्त्विकी ने उसअर्जुनको घोड़े हाथी रथ और पदातियों के लाखों जालों से और हाथियों के स्वामियों से घिराहुआ देखा अर्थात् शूरबीरोंमें श्रेष्ठ शस्त्रधारियों में उत्तम सात्विकी उन अर्जुन और वासु देवजी को रथघोड़े हाथी और सन्मुख दौड़नेवाले पदातियों से घिरेहुए देखकर शीघ्रही उनके समीप गया वहांजाकर उसशूरवीर धनुषधारी सात्त्विकीने उन सेनाओंके सन्मुख पहुंचकर, अर्जुनकी ऐसीसहायता करी जैसी कि विष्णु भगवान् इन्द्रकी सहायता करते हैं फिर उस महाबली सात्विकी युधिष्ठिर की रथहाथी घोड़े और पदातियों समेत उस भागने वाली सेनाको जिसकी सबध्वजागिरी हुईं और शूरबीर भीष्मजी से भयभीत हुए देखकर यह वचन बोला कि हे क्षत्रियो कहां जातेहो पुराणों ने यहधर्म श्रेष्ठपुरुषोंका नहीं कहा है,हे श्रेष्ठवीर लोगो अपने प्रणों को मतत्यागो अपने वीरधर्मों से पुरुषार्थ करो तुमअर्जुन को मृदु युद्धकर्त्ता और भीष्म को भयंकरयुद्ध कर्त्ता और चारों ओरसे गिरते हुए कौरवोंको देखकरभागे जातेहोयह वचन सुनकर सब यादवों के भर्त्ता महात्मा श्रीकृष्णजी बड़ी प्रशंसा करके उस यशस्वी सात्त्विकी से बोले कि हे सेनापतियों में बड़े वीरजो जातेहैं वह

चले जायँ और जो नियत हैं वहभी चाहे चले जायँ, अब युद्धके बीच रथ हाथी घोड़े और सब सेना समेत भीष्म को और द्रोणाचार्य्य को मेरेहाथ से गिरे हुए देखो हे यादव सात्विकी कौरवों की सेनामें कोई ऐसा नहीं है जो अब युद्धमें मुझ क्रोधयुक्तकेसाथ युद्धकरने को समर्थहो, इस कारण अब मैं रथके भयकारी चक्रको अर्थात् पहिये को लेकर इस महाव्रतभीष्म के प्राणों को हरूंगा हे सात्विकी रथियों में बड़ेबीर भीष्म और द्रोणाचार्य्य को सेना के समूहों समेत इस युद्धभूमि में मारकर, राजा युधिष्ठिर अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेवकी प्रसन्नता को करूंगा अबमैं प्रसन्न मनहोकर धृतराष्ट्रके सब पुत्रोंको और जो २ उनके सहायक राजाहैं उनको मारकर, अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर को राज्यसे युक्त करूंगा, यह कहकर वासुदेव श्रीकृष्णजी सुन्दर रूपसूर्य्यके समान प्रकाशित हजारवज्र के सदृश कठोर छुरेके समान तीक्ष्ण घेराखने वाले चक्रकोऊंचा घुमाकर और घोड़ोंको छोड़ रथसे उतर चरणोंसे पृथ्वी को अत्यन्त कंपायमान करते हुए महात्मा भीष्मकी ओरको ऐसे चले जैसे कि युद्धभूमि में महामदोन्मत्त अहंकारी गजेन्द्र के मारने को सिंह दौड़े अर्थात् इन्द्रके छोटे भाई शत्रुहन्ताकृष्णजी महाक्रोधित होकर सेनाकेबीच भीष्मजी के सन्मुख दौड़े, उससमयशरीर में वर्त्तमान उत्तम पीताम्बर कैसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि आकाश में सुन्दर अलंकारों से युक्त बादल बिलम्बितकठहरा हुआ हो, और इन श्रीकृष्णजी का वह सुदर्शनचक्र रूप कमल जिसकी बड़ी नालही सुन्दर भुजा थीं ऐसा शोभायमान विदित हुआ जैसे कि नारायणकी नाभिसे उत्पन्न तरुण सूर्य्यके समान वर्णवाला नवीन कमल शोभायमान हुआ था वह कमल श्रीकृष्णजी के क्रोधरूप सूर्य्य के उदय से खिलाहुआ और छुराओं से युक्ततीव्रनोकरूपपत्तेवाला उनके शरीररूपीबड़े तड़ागमें नियत नारायणकी भुजारूपीनाल रखने वाला शोभायमान हुआ ऐसे चक्रधारी उच्चस्वरसे गर्जना करनेवाले महाइन्द्रके छोटे भाई श्रीकृष्णजीको देखकर सबजीव यह चिन्ता करके अत्यन्त पुकारे कियह कौरवों की प्रलय वर्त्तमानहुई फिरयह चक्रधारी लोकों के स्वामी जीवलोक के नाश करने को सन्मुख गिरते हुए ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि सबजीवमात्रों का भस्म करनेवाला अग्नि देदीप्यहोता है ऐसे पुरुषोत्तम देव देव चक्रधारी को आता देखकर, धनुष बाण हाथ में रखनेवाले रथारूढ़ भीष्मजी निर्भयतासे बोले कि हे देवेश्वर हे जगन्निवास हे शार्ङ्गधन्वा गदा खड्गधारी आवो मैं तुमको नमस्कार करताहूं हेलोकनाथ हेजीवोंके आश्रय औररक्षा के स्थान तुम युद्ध में हठकरके मुझको इसउत्तम रथसे गिराओ हे श्रीकृष्णजी अब तुम्हारे हाथसे मुझमरे हुएका इसलोक और परलोकमें कल्याण है,

हे अन्धक वृष्णी क्षत्रियोंके नाथ मैंतीनोंलोकोंमें प्रसिद्ध प्रभाववाला होकर अंगीकारहुआहूं बड़ेबेगसे दौड़ते हुए श्रीकृष्णजी भीष्मकेइस बचन को सुन कर उनसेबोले कि अब तुम्हीं इस संसारकेनाश के मूलहो सो तुम अबदुर्य्योधन का नाशकरो क्योंकि दुष्टद्यूतका खेलने वाला राजा धर्ममार्ग में नियत मन्त्री से निवारण करनेके योग्य है अथवा जो काल से बिपरीत बुद्धी होकर धर्मको उल्लंघन करके चले वह कुलका कलंकीहै वह त्यागही करनेके योग्य है इसबातको सुनकर वह राजा देवव्रत भीष्मजी यादवों में बड़ेबीर परम देवदेव श्रीकृष्णजीसे यह बचनबोले कि यादवों ने अपनेप्रयोजनके सिद्धकरने के लिये कंसकोमारा वह राजाभी समझानेसे नहीं समझा प्रारब्ध से दुःख के लिये जिसकी विपरीत बुद्धिहै उसकाअभीष्ट सुनने वाला कोई नहीं है, इसके पीछे लम्बे और मोटे भुजावाले शीघ्रता करने वाले अर्जुनने रथसे कूदकर पैदल चलके मोटे ऊंचे और लम्बेभुजा वाले यादवों में बड़ेबीर हरिको दोनोंभुजाओं से पकड़लिया, तबआदिदेव आत्मयोगी और अत्यन्तक्रोध रूप पकड़ेहुए बिष्णुजी अर्जुन को लेकर ऐसी शीघ्रतासे चले जैसे कि बड़ा बायु अकेले वृक्षकोलेकर चलता है हे राजा फिरमहात्मा अर्जुन ने बलसे दोनों चरणोंको पकड़कर बड़ीशीघ्रतासे भीष्मजीकी ओर दौड़ते हुएको दशवेंपाद चिह्नपर बड़ी सुगमता पूर्व्वकबलसे पकड़लिया,सुनहरीजड़ाऊमाला धारी प्रसन्नचित्त अर्जुन उन ठहरेहुए श्रीकृष्णजीको दण्डवत् करके बोले कि आपक्रोधकोदूरकरिये हे कृष्ण आपहीपाण्डवोंकी गतिहो आप अपने प्रण के अनुसार कर्म को मत छोड़ो, हे केशवजी मैं पुत्र और भाइयोंकी शपथ खाताहूं हेइन्द्रके छोटे भाई मैं अवश्यआप के साथमें होकर कौरवोंका नाश करूंगा तदनन्तर उसकेप्रण और नियमको सुनकर जनार्दनजी महाप्रसन्न होकर उस कौरवोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके अभीष्ट सिद्धकरने में प्रवृत्तहुए और चक्र समेत रथपर सवार हुए फिर उन लगामोंको हाथमेंलेनेवाले शत्रुओं के मारने वाले उन श्रीकृष्णजी ने हाथमें पांचजन्य शंखको लेकर ऐसी ध्वनिकरी कि जिसके कारण सब दिशाओं समेत आकाश शब्दायमान होगया उस निष्कबाजूबंद और कुंडलों से अलंकृत रजसे भरे पद्मनेत्रविशुद्ध दंष्ट्रायुक्त शंख को धारण कियेश्री केशवमूर्तिको देखकर महाबली कौरवलोग पुकारे तदनन्तर मृदंग भेरी पटहाओंके वा रथकेचक्रोंके और दुन्दुभियों केभयकारी शब्द शंखध्वनियों समेत कौरवों कीसेना मेंभी होने लगे और अर्जुनके गांडीव धनुष काशब्द बादलकी गर्जना के समान आकाश और दिशाओं में व्याप्तहुआ, तदनन्तर पांडव अर्जुन के धनुष से निकले हुए बहुत निर्मल और प्रकाशित बाण सब दिशाओं में चले तब कौरवों का राजादुर्य्योधन

जिसनेबाण हाथमें ऊंचाकररक्खाथा वह अपनी सेना वा भीष्म भूरिश्रवाको साथमें लेकर अर्जुन के सन्मुख ऐसे गया जैसे कि बनको जलाताहुआ अग्निजाता है इसकेपीछे भूरिश्रवाने सुवर्ण पुंखवाले सातभल्ल अर्जुनके ऊपरफेंके, और दुर्य्योधनने बड़े शीघ्रगामी भयकारी तोमरको और शल्यने गदा को और भीष्मजी ने बरछीको मारा फिर अर्जुन ने अपनेसात बाणोंसे भूरिश्रवाके चलायेतीव्र सातों बाणों को काटकर क्षुरप्र नाम बाणसे दुर्य्योधन के छोड़े हुए तोमरको काटा तिस पीछेभीष्मजी की बिजय के समान तीव्र बरछी को, और शल्यकी फेंकी हुई गदा को अपने दोबाणों से काट कर महा कठिन और अतुल प्रभाव वाले अपने गांडीव धनुष को दोनों भुजाओं से खैंचकर, बुद्धि के अनुसार महाघोर अपूर्व माहेन्द्र अस्त्रको अन्तरिक्षमें प्रकट किया इसके पीछे बड़े धनुषधारी महात्मा मुकुटमालाधारी ने उस उत्तम धनुष के द्वारा निकले हुए बड़े स्वच्छ और तीव्र बाणों के समूहों से सब सेना को हटाया फिर उसके गांडीव से निकले हुए शिलीमुख बाण रथ हाथी घोड़े और ध्वजाओं के शिरोंको वा धनुषोंको और भुजाओं को काटकर शत्रुपक्ष के गजगजेन्द्र और राजाओं के शरीर में प्रवेश करगये फिर उस मुकुट मालाधारी अर्जुन ने उत्तमधारवाले तीव्रबाणों से दिशा और विदिशाओं को पूर्णकरके गांडीव धनुषके शब्दों से उन सबके हृदयों को महापीड़ित किया इस प्रकार उस बड़े भयानक अस्त्रों के युद्ध में शंख दुन्दुभियों के शब्द, गांडीवधनुष के शब्दों से छुपगए और रथों के भी महाभयानक शब्द मन्दहो गये इसके पीछे उस गांडीव के शब्दों को जानकर नरोंमें वीर राजा विराट् आदि और पांचाल और द्रुपद यह महापराक्रमी उसस्थानपर आये और आपके पुत्रोंकी भी सब सेना वहां आई जहां कि गांडीवके बड़े शब्द होरहे थे और सबों ने अपने को न्यूनही समझा कोई प्रतिपक्षी उसके सन्मुख नहीं गया हे राजा उसबड़े भयानक युद्ध में रथ वा सूतों समेत बड़े २ शूरबीर मारे गये और सुनहरी जड़ाऊ झूलों से अलंकृत बड़ी २ पताका रखने वाले हाथी भी नाराचोंके आघात से भूल हुए से होकर अर्जुनके हाथ से कटे हुए शरीर से निर्जीव होकर अकस्मात् गिरपड़े, सेनाओं के मुखों पर राजा लोगों की ध्वजायें अर्जुन के भयानक वेग और तीक्ष्ण धार युक्त निशित फलवाले बाणों से अत्यन्त विध्वंस होगईं और यन्त्र कटेहुये हजारों इन्द्रजालभी बारंबार नाशको प्राप्तहुए और युद्धमें रथ हाथी घोड़े और पदातियोंके समूहभी उस अर्जुन के बाणों से घायल और असामर्थ अंगोंको बिना साधे शीघ्रही पृथ्वीपर गिरपड़े, हे राजा ऐसे बड़े युद्धमें उसऐन्द्र नाम उत्तम अस्त्रसे कवच टूटे और शरीर जर्जरी भूतहोगये तदनन्तर अर्जुन के तीव्रबाण समूहों से

मनुष्यों के देहमें शस्त्रों से निकलेहुए रुधिररूपी जलवाली नदी वहां वह नि- कली उस नदी में मनुष्यों की बसा तो जलका फेनथा वह नदी तीव्रता से बड़ी प्रवाहवाली और मृतक हाथी और घोड़ों के शरीरों के किनारे वाली मनुष्यों के आंत भेजे से उत्पन्न मांस रूप कीचकोधारण किये हुएथी और बहुत से राक्षसों के अवतार रूप राजाही उसके वृक्षथे, और शिरों के कपालों से व्याकुल मृतक बालरूप घाससे शोभित देशोंसे युक्त शरीरों के समूहों से हजारों माला रखनेवाली हजारों प्रकारकी कवच रूपी लहरों से व्याकुल और मरेहुए मनुष्य हाथी घोड़े और मनुष्यों के हाड़रूप उसमें कंकड़ और रेतवर्त्त- मान थे १२८ मनुष्यों ने उस शृगालकंक गिद्ध और कच्चेमांस खानेवाले रा- क्षस पशुपक्षी आदिके समूह वा छोटे व्याघ्रों से संयुक्त किनारेवाली कठिन वैतरणीरूपीनदी को देखा, अर्जुन के बाण समूहोंके द्वारा कटेहुए कपालबसा रुधिर से बहनेवाली अत्यन्त भयानक नदीको देखकर अथवा इसीप्रकार अ- र्जुन के हाथसे मृतक शूरवीर वाली कौरवी सेनाकोदेखकर वह चंदेरी पांचा- ल और मत्स्यादिक देशीवीर और सब शूरवीरपाण्डव विजय में बुद्धिरखने और पुरुषों में बड़ेवीर उनकौरवी सेनाके बड़ेशूरवीरोंको डराते हुए सब एक साथही महागर्जना करते हुए, शत्रुओं को भय उत्पन्न करने वाले मुकुटधारी अर्जुन के हाथसे मृतक वीरोंवाली सेनाको देखकर औरजैसे कि मृगों के यू- थों को सिंह भयभीत करे उसी प्रकार सेनापतियों की सेनाको भयभीत कर- के वह अति प्रसन्नमन गांडीवधनुषधारी और जनार्दनजी अत्यन्तता से गर्जे तदनन्तर शस्त्रों से अत्यन्त घायल अंगभीष्म वा द्रोणाचार्य्य वा दुर्यो- धन बाह्लीक आदि कौरवों ने निशा की सन्धिको देखकर और उस प्रलय के समान असह्य और घोर फैले हुए ऐन्द्रास्त्र को देखकर अथवा सूर्य्य की- अरुणता से युक्त संधिगतरात्रिको देखकर युद्ध से निवृत्ती करी और नरोंका इन्द्र अर्जुन भी लोकमें यशी और कीर्त्तिमान् होकर शत्रुओं का मर्द्दन कर के युद्ध कर्मको समाप्त करनेवालाअपने निज भाइयोंसमेत रात्रिकेसमय अ- पने डेरेको गया इसके पीछे रात्रिके प्रारंभमें कौरवों के बड़े घोर शब्द उत्पन्न हुए, अर्जुन ने दश हजार रथियों को मारकर सातसौ हाथी मारे और सब पूर्वदेशी शूरवीर सौवीरगणों समेत क्षुद्रक मालवों को मारा, यह अर्जुन ने ऐसा बड़ाभारी कर्म किया जैसा कि दूसरा कोई भी नहीं करसक्ता हे राजा श्रुतायु और अंबष्टपति दुर्मर्षण चित्रसेन द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य सैंधव बाह्लीक भूरिश्रवा शल्य शल और भीष्मजी समेत सैकड़ों योद्धाओं को युद्ध में उस हस्तलाघवी महाबली लोक महारथी कोपित अर्जुन ने विजय किया हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र आपके सब शूरवीर हजारों मशालें

बलवा के इस बातको कहते हुए कि किरीटी अर्जुन से सब शूरबीर भयभीत हुए हैं कौरवों की सेना के डेरों में गये ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणितृतीयदिवसयुद्धेनामएकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

चौथेदिनकेयुद्ध का प्रारम्भ ॥

संजय बोले हे भरतबंशी इसके अनन्तर प्रातःकाल के समय महात्मा भीष्मजी जिनका क्रोध शत्रुओं के ऊपर उत्पन्न हुआ वह सब सेना समेत भरतबंशियों की सेना के आगे गये (द्रोणाचार्य्य)(दुर्य्योधन) (बाह्लीक) (दुर्मर्षण) (चित्रसेन) (महाबली) (जयद्रथ) और अन्य राजा लोग सेनाओं के समूहों समेत चारों ओर से भीष्मजी के पास आये, हे राजेन्द्र धृतराष्ट्र वह भीष्मजी उन महापुरुषमहारथी तेजस्वी पराक्रमी राजाओं के बीच में कैसे शोभायमान हुए जैसे कि देवताओं के मध्य में देवराज इन्द्रशोभित होता है, उस सेना के आगेलगी हुई बड़े २ हाथियों के कंधों पर वर्त्तमान लाले पीले काली श्वेत कम्पायमान पताकाभी शोभितहुई और वह सेना राजा भीष्म वा महारथी वा हाथी घोड़ों से विद्युद्धारी बादल के समान ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि जल के आगमन में बादलों से भरा हुआ आकाश होताहै इसके पीछे भीष्मजी से रक्षित राजा लोग युद्ध के निमित्त अर्जुन के सन्मुख गये और कौरवी सेनाभी अकस्मात् ऐसे चलती हुई जैसे कि गंगाजी का भयानक वेग चलताहै, फिर कपिध्वज महात्मा अर्जुन ने दूरही से उस हाथी घोड़े रथ रथी और पदातियों समेत बड़े बेग से भरे हुए बादलके समान नानाप्रकार के पत्तों समेत व्यूह को देखा, और सेनाओं के आगे खड़ा हुआ दोनों सेनाओंसे संयुक्त महात्मा वीर अर्जुन श्वेत घोड़े और ध्वजाधारी रथकी सवारी में सुशोभित होकर सब शत्रुओं की सेना के ओर चला तब आप के पुत्रों समेत सब कौरव लोग उस सब सामान से शोभित कपिध्वज अर्जुन को और यादवपति श्रीकृष्ण सारथी से ऊंचे की ओर बांधेहुए पत्रवाले रथको युद्धभूमि में देखकर महा व्याकुल हुए आपके पुत्र और सबशूरवीरों ने लोक महारथी शस्त्रधारी सेना को विध्वंस करने वाले मुकुटधारी अर्जुन से रक्षितचार २ मत्त हाथियों से संयुक्त उस व्यूहराजको देखा, जैसे कि प्रथम दिन में कौरवों में श्रेष्ठ धर्मराज ने व्यूह को बनायाथा उस प्रकार का व्यूह इसलोक में मनुष्यों ने प्रथम कभी न देखाथा न सुना था, इसके पीछे सब सेना के बीच युद्धभूमि में बड़े बलसे बजाई हुई हजारों भेरी शब्दायमान हुई और शंखों के वा हजारों तूर्यों के शब्दभी बड़े बेग

से हुए, इसके पीछे वीरों के छोड़े हुए बाणों के शब्दों से संयुक्त चलाये हुए धनुषों के और शंखों के बड़े शब्दों ने क्षणमात्र मेंही भेरी और ढोलों के कठिन शब्दों को गुप्त करदिया, शंखों के उन शब्दों से सब अन्तरिक्ष व्याप्त होगया और शीघ्रही पृथ्वी से धूलोंके समूह आकाशकी ओर उड़े तदनन्तर बड़े वितानों से प्रकाश को देखकर वीरलोग अकस्मात् दौड़उठे, रथीरथी से भिड़कर घोड़े समेत रथी ध्वजा को भी लेकर गिरा और हाथी से माराहुआ हाथी गिरा इसी प्रकार पदाती से माराहुआ पदाती गिरा, और घोड़े के सवार परस्पर में परशे और खड्गोंसे लड़कर पृथ्वी पर मारे गये, और सुनहरी ताराओं के समूहों से शोभायमान सूर्य्यकी समान प्रकाशित ढालें परश्वध प्रास और खड्गों से खण्ड २ होकर पृथ्वी पर गिरीं, और कितनेही हाथी हाथियों के दांतों से चबाये हुए पृथ्वीपर गिरे और रथी के बाण से रथी पदाती के बाण से पदाती पृथ्वीपर गिरे, हाथियों के समूहों के वेग से कंपायमान वा सवारों और हाथियों के दांत वा अंग वा जंघाओं से घायल सवार और पदातियों के आक्रंदित शब्दों को सुनकर मनुष्य अनेक प्रकार से व्याकुल हुए जिस में हाथी घोड़े और रथों की व्याकुलता और सवार पदाती वीरोंकी विध्वंसताथी ऐसे मुहूर्त्तमें महारथियों से घिरेहुए भीष्मजी ने हनुमान्‌जीकी ध्वजा धारण करने वाले अर्जुन को देखा।२०पांचतालकी उन्नत ध्वजाधारण करनेवालेभीष्मजी उनउत्तमघोड़ोंकी तीव्रतासेबड़ेभारी अस्त्रकोलिये बिजली से चमकपर अर्जुन के सन्मुख दौड़े और इसीप्रकार कृपाचार्य्य शल्य विविंशति दुर्य्योधन सोमदत्त यहसबभी द्रोणाचार्य्यजी को आगे करके इन्द्रके समान महाबली इन्द्र पुत्र अर्जुन के सन्मुख गये, इसके पीछे सर्व अस्त्रोंका ज्ञाता सुवर्णका जड़ाऊ कवच पहरने वाला महाशूर अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु रथके सेनामुखसे निकल कर बड़े वेगसे उन सबके सन्मुख चला, फिर वह असहिष्णु शील कर्मी अभिमन्यु उनमहाबलवानों के बड़े २ अस्त्रोंको काटकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि महामन्त्रआहुति से संयुक्तमहा ज्वालामान सभा में वर्त्तमान अग्नि देवता होता है तदनन्तर वह महापराक्रमी भीष्मशीघ्रही युद्धमें शत्रुओंके रुधिर रूपी जलसेउसनदी को पूर्णकरके महारथी अर्जुन और अभिमन्यु कोभी उल्लंघन कर गया, फिरसुकुटमालाधारी अर्जुनने बड़े हठकोकरके गांडीवधनुषकेशब्दसे महा शब्दायमान विपाठनाम बाणोंके जालसे उन प्रबल शत्रुओं के जालों का नाशकिया, फिर कर्म फलके चाहनेवाले हनुमान्‌जी की ध्वजारखने वाले महात्मा अर्जुन ने बड़े तीव्रधारवाले स्वच्छ भल्लोंसे उस सर्व धनुर्धारियों में श्रेष्ठभीष्म जीके ऊपर वर्षाकरी, इसी प्रकार आपके पुत्रों ने भी अन्तरिक्ष में अर्जुनके

बड़े अस्त्र जालों को भीष्मजीके हाथसे ऐसे टूटे और व्यर्थहुए देखा जैसे कि सूर्य्यसे तिरस्कार किया हुआ अंधकार होताहै,इस रीतिसे प्रसन्नचित्त कौरव संजय आदि सबलोगोंने उन सत्पुरुषोंमें श्रेष्ठ भीष्म और अर्जुन दोनोंके इस प्रकारके द्वैरथयुद्धको जो कि भयकारी धनुषोंके शब्दोंसेसंयुक्तथा देखा२६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीष्मार्जुनद्वैरथेषष्टितमोऽध्यायः ६०॥

इकसठवां अध्याय ॥

संजयबोले हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र उन अश्वत्थामा वा भूरिश्रवा शल्य चित्रसेन और सायमन के पुत्र इन सबने अभिमन्यु से युद्ध किया, मनुष्यों ने उस अकेले अभिमन्युको इनपांचों व्याघ्ररूपों से लड़ता हुआ ऐसा देखा जैसे हाथियों से लड़ता हुआ एकसिंह का बच्चा होता है, बड़ी लक्ष भेदन पूर्वक शूरता और अस्त्रों के कारण पराक्रम और हस्तलाघवता में अभिमन्यु के समान कोई भी नहीं हुआ, इसके पीछे युद्धमें सावधान अर्जुन ने अभिमन्युको पराक्रम करने वाले शत्रुओंका ऐसामर्दन करने वाला देखकर बड़े वेगसे सिंहनाद किया, हे राजेन्द्र आपके पुत्रोंने इसरीति से सेनाको पीड़ामान करता आपके पोते अभिमन्युको देखकर चारों ओरसे आकर रोकलिया, फिर शत्रुसंतापी अर्जुन बहुत हर्षित मन के समान अभिमन्यु समेत बलपराक्रम युक्त आपके पुत्रोंकी सेना के सन्मुख गया, युद्धमें शत्रुओं से संग्राम करने वाले उस अर्जुन का बड़ा धनुष हस्त लाघवता के मार्ग में नियतहो के सूर्य्य के समान प्रकाशमान दिखाईदिया, उसने एकबाण से अश्वत्थामाको और पांचबाणों से शल्यको घायल करके आठबाणों से सायमनके पुत्रकीध्वजाको गिराया, और सोमदत्तकी फेंकीहुई सुनहरी दंड वाली सर्पाकृति शक्तिको तीव्रबाणों से काटा, फिर अर्जुन के पुत्रनेबाण के फेंकनेवाले शल्यके महाघोर सैकड़ों बाणोंको रोककर उसके चारों घोड़ों को मारा फिरतो अत्यन्त क्रोध में भरेहुए भूरिश्रवा शल्य अश्वत्थामा सायमनका पुत्र और शल उस अभिमन्यु के महाप्रबलपराक्रम के आगेठहर न सके, इसके पीछे हेराजा आपके पुत्रके कहनेसे धनुर्वेदके ज्ञाता युद्धमें अजेय पच्चीस हजार त्रिगर्त्तदेशी और मद्रदेशियों ने केकय देशियों समेत उस पुत्र समेत अर्जुनके मारनेकी इच्छा से चारों ओर से उनको घेरलिया,, हे राजा वहां शत्रुंजयी सेनापति धृष्टद्युम्न ने उनपिता पुत्रोंकोरथोंसे चारों ओरको घिराहुआ देखा तदनन्तरवह शत्रुसंतापी सेनापति महाक्रोधित होकर हजारों घोड़े रथ हाथियोंके पतियों से युक्त अपने धनुषको चढ़ाय सेनाको आज्ञा देकर उसमद्र और केकय देशियों के सन्मुख गया,, उस

कीर्त्तिमान् दृढ़धनुषधारी से रक्षित रथहाथी घोड़े से युक्तवह युद्ध करनेवाली सेना शोभायमान हुई पांचालकुलावतंस उस धृष्टद्युम्न ने तीन बाण से अर्जुन के सन्मुख जानेवाले कृपाचार्य्य को घायल किया, फिर दश तीक्ष्ण बाणोंसे मद्रकोंको घायल करके शीघ्रही एक भल्लसे कृपाचार्य्य के सारथी को मारा, फिर उस शत्रु संतापी ने बड़े तीक्ष्ण नाराचोंसे पौरके पुत्र दमन को मारा इसके पीछे चित्रसेनने दुर्मद धृष्टद्युम्न को दश बाणों से और उसके सारथीको भी दश बाणों से घायल किया फिर उस महा घायल धृष्टद्युम्न ने होठोंको चबाकर बड़े तीक्ष्ण भल्लसे इसके धनुषको काटा, हे राजा इसी प्रकार इसको भी पच्चीस बाणों से पीड़ामान करके उसके घोड़ों को दोनों सारथियों समेत मारडाला, हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ फिर उस मृतक घोड़ेवाले रथमें बैठेहुए चित्रसेन ने उस द्रुपद के यशस्वी पुत्रको देखा, और देखतेही रथसे उतर पैदल होकर शीघ्रही महाघोर खड्गको धारण करके रथपर बैठे हुए धृष्टद्युम्न की ओर को चला, उस महा भयानक खड्गधारी को आता हुआ देखकर वहां पाण्डव और धृष्टद्युम्न ने उसको सूर्यके समान प्रकाशित और मतवाले हाथीके समान महाबली रूप देखा, फिर शीघ्रता करने वाले सेनापति धृष्टद्युम्न ने उस महा कालरूप सन्मुख आनेवाले घोर खड्गधारी के शिरको गदा से तोड़ा, हे राजा वह अपने खड्ग और ढाल समेत मरकर पृथ्वी पर गिरा,, राजा धृष्टद्युम्न ने उसको गदा की नोकसे मारकर बड़े यश को पाया, हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र उस बड़े धनुषधारी महारथी राजकुमार के मरने पर आपकी सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, इसके अनन्तर क्रोध में भरा हुआ सायमनी अपने पुत्रको मृतक देखकर बड़े वेगसे धृष्टद्युम्न के संमुख दौड़ा तब सब राजा वा कौरव और पाण्डवोंने युद्धमें जुटेहुए उत्तम रथों समेत दोनों शूरवीरों को देखा, इसके पीछे शत्रु विजयी सायमनी ने महा क्रोधित होकर तीन बाणों से धृष्टद्युम्न को ऐसा घायल किया जैसे कि अंकुश आदि से बड़े हाथीको करते हैं इसी प्रकार युद्धभूमिको शोभित करने वाले क्रोधरूप शल्य ने उस शूरवीर धृष्टद्युम्नको छातीमें घायलकिया इस पीछे युद्ध होना जारी हुआ ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं प्रारब्ध को उपायसे भी बड़ा मानताहूं जो मेरे पुत्रकी सेना पाण्डवों की सेनासे मारी जाती है हे सूत तू सदैव हमारे शूरवीरों को मृतक कहता है और पाण्डवोंको सदैव अत्यन्त प्रसन्न और अक्षत

कहा करता है, हे संजय अब हमारे शूरवीरों को गिरते गिराते दोनों प्रकारसे पराक्रम से रहित कहता है इसी से पाण्डव लोग सामर्थ्य के अनुसार लड़ते विजय में उपाय करते हुए जयको पाते हैं और मेरे बेटेपराजय को पाते हैं, हे तात सो मैंने दुर्य्योधन से उत्पन्न हुए दुःखके सहनेके योग्य अनेक दुःखों को वारम्बार सुना, हे संजय मैं उस उपाय को नहीं देखता हूं जिसके द्वारा पाण्डवों की हार होय और मेरेपुत्रों की विजय होय, संजय बोले कि हेराजा तुम सावधानी से सुनो कि यह मनुष्यों का और रथ घोड़े हाथी आदि का नाश होना तुम्हारेही अन्यायका फल है, शल्य के नौ बाणों से पीड़ित अत्यन्त क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने लोहे के तीरसे मद्रदेश के राजाको पीड़ामान किया, वहां हम ने धृष्टद्युम्न के अपूर्व्व पराक्रम को देखा जो युद्ध में शोभा पानेवाले शल्य को शीघ्रही हटादिया। किसीने इसयुद्ध में इनदोनों क्रोध युक्तों के अन्तर को नहीं देखा दोनों का युद्ध एक मुहूर्त्त तक अच्छा हुआ इसके पीछे हेमहाराज शल्यने युद्धभूमिमें पीले तीव्रधार वाले भल्लसे धृष्टद्युम्न के धनुषको काटकर इसको बाणों की वर्षासे ऐसे ढक दिया जैसे कि वर्षाऋतु में जल भरेहुए बादल पर्व्वत को ढकदेते हैं, फिर धृष्टद्युम्न के पीड़ामानहोने पर अत्यन्त क्रोधरूप अभिमन्यु बड़े बेगसे राजामद्र के रथकी ओर दौड़ा, तदनन्तर महासाहसी क्रोधमें भरेहुए अभिमन्युने राजा मद्रके रथको पाकर आर्त्तायनि को तीन पैने तीरों से घायल किया हे राजा फिर तो अभिमन्युके दबानेकी इच्छासे आपके पुत्र शीघ्रही राजामद्रके रथके चारों ओर आकर नियत हुए, (दुर्य्योधन) (विकर्ण) (दुश्शासन) (विविंशति) (दुर्मर्षण) दुस्सह चित्रसेन (सुदुर्मुख) (सत्यव्रत) (पुरोमित्र) महारथी विकर्ण यह सब राजामद्रके रथकी रक्षा करतेहुए युद्धमें नियत हुए, इनको देखकर हे राजा महाक्रोधित (भीमसेन) (धृष्टद्युम्न) द्रौपदीके (पांचोंपुत्र) (अभिमन्यु) और माद्रीके पुत्र (नकुल) और (सहदेव) इननाना प्रकारके शस्त्रोंके प्रहार करनेवाले दशों शूरवीर धृतराष्ट्रके महारथी दशोंपुत्रोंको रोककर परस्परमें मारनेके इच्छवान् अत्यन्त क्रोधरूप सन्मुख वर्त्तमानहुए हेराजा निश्चय करके आपकी बुरीसलाह करनेपर वह लोग युद्ध करने में अत्यन्त प्रवृत्त हुए, उन दशोंरथियों के और बड़े भयके वर्त्तमान होनेपर आपकेपुत्र और पाण्डवों के रथीयुद्ध क्रीड़ा देखनेवाले हुए, वह सब नानाप्रकारके शस्त्रोंको चलातेहुए परस्परमें एक एकके सन्मुख गर्जतेहुए महारथी लोगों ने अच्छे प्रकारसे युद्धकिया, तबतो वह सब अत्यन्त क्रोधमें भरे हुए परस्पर मारनेके इच्छावान् सन्मुखहोकर गर्जना करतेहुए एकएकसे ईर्षा करने लगे, हेराजा ज्ञातिके लोग अपने ज्ञातिवालोंसे परस्परकी ईर्षाके द्वारा

युद्ध करतेहुए क्रोध से पूर्ण बड़े २ अस्त्रोंको त्यागतेहुए सन्मुख दौड़े, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधनने चार तीक्ष्ण बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायलकिया, दुर्मर्षणने बीसबाणसे चित्रसेनने पांच बाणसे दुर्मुखने नौबाणसे दुस्सहने सात बाणोंसे विविंशतिने पांचबाणोंसे दुश्शासनने तीन बाणोंसे घायल किया हे राजा उसशत्रुसंतापी हस्तलाघव दिखानेवाले धृष्टद्युम्नने उन प्रत्येकों को पच्चीस २ बाणोंसे घायल किया, हेभरतबंशी फिर अभिमन्युने सत्यव्रत और पुरोमित्रको दश २ बाणों से घायल किया फिर माताको प्रसन्न करनेवाले माद्रीनंदन नकुल और सहदेव ने युद्धमें अपने मामा शल्यको तीव्र बाणों से ढक दिया यह आश्चर्य्यसाहुआ इसके पीछे हे राजा शल्यने भी उन रथियोंमें श्रेष्ठ प्रहारकों पर प्रहार कर्म्म करनेके इच्छावान् दोनोंभानजों को बहुत से बाणोंसे ढकदिया, इसके पीछे बाणोंसे आच्छादित होकरभी वह दोनों नकुल सहदेव व्याकुल नहींहुए फिरमहाबली भीमसेनने दुर्योधनको देखकर युद्धके अन्त करनेकी इच्छासे अपनी गदाको हाथमें लिया कैलाश पर्व्वत की समान उस गदाके उठानेवाले भीमसेनको देखकर आपके पुत्र भयभीत होकर भागे, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने राजा मगधको चेताया और बेगमान हाथियों की दश हजार सेनाकेलिये आज्ञाकरी राजा दुर्योधन उस हाथियोंकी सेना समेत राजा मगधको आगेकरके भीमसेन के सन्मुख गया भीमसेन उसहाथियोंकी सेनाको चारोंओरसे गिराताहुआ देख कर, सिंहके समान उच्चस्वरसे गर्जताहुआ हाथमें गदा लिये रथसे उतरा और उस महाभारी लोहे की गदाको पकड़कर, उस सेनाको अपना भक्ष पदार्थ समझकर हाथियोंकी सेनाके सन्मुख दौड़ा और वहां जाकर अपनी गदासे हाथियों को मारता हुआ ऐसा घूमा जैसे दानवोंके बीच बज्रधारी इन्द्र गर्जताहुआ दौड़ताहै हृदयके कंपानेवाले भीमसेन के बड़े शब्दसे सब मिलेहुए हाथी अत्यन्त चलायमानहुए फिर द्रौपदीके पांचोंपुत्र और महारथी अभिमन्यु,, (नकुल) (सहदेव) (धृष्टद्युम्न) यह सब भीमसेन के पृष्ठभाग की रक्षा करतेहुये बाणोंकी वर्षाको करकर हाथियोंके सन्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि पर्व्वतोंपर बादल दौड़तेहैं तीव्र बिजली के समान भल्लों से पाण्डवोंने युद्धमें हाथीवानोंके और हाथीके सवारोंके शिरोंको काटा फिर तो हाथियों से गिरनेवाले मृतकों की शोभापाषाण वृष्टीसी मालूम होती थी और हाथियों के कन्धों पर बिना शिरके हाथी सवार ऐसे दृष्टिपड़े जैसे कि चलतेहुए पर्व्वतोंपर चोटी कटे हुए वृक्षहोते हैं इनके सिवाय हमने धृष्टद्युम्नके मारेहुये वा गिरायेहुए पड़ेहुए दूसरे बड़े हाथियोंको देखा, इसके पीछे मगधके राजाने ऐरावतके समान हाथीकोयुद्ध में अभिमन्यु के रथपर

भेजा उसहाथी को आताहुआ देखके शत्रुओं के विजयी अभिमन्युने उस-
को बाणों से मारकर सुवर्ण के पुंखवाले भल्लसे उस हाथी के न रोकने
वाले राजा के शिरको भी काटा, फिर भीमसेन भी उसहाथियों की सेना
को मथन करता हुआ ऐसा घूमा जैसे कि इन्द्र पर्व्वतों को मथन करता
घूमताहै, हमने उस युद्ध में भीमसेन के एकही प्रहार से मरे हुए हाथियोंको
ऐसा देखा जैसे कि वज्र से प्रहारित पर्व्वतदीखते हैं आंख दांत गंडस्थल जं-
घा पीठ और कमर टूटकर मरेहुए पर्व्वताकार हाथियों को और कितनेही
झागडालकर मरेहुए हाथियों को भी हमने देखा, कितनेही बड़े हाथी कुंभ
टूटे रुधिरको वमन करते भयसे बिकल पृथ्वीपरऐसे गिरेजैसे कि पर्व्वतपृथ्वी
पर गिरते हैं, रुधिर मज्जासे लिसेहुए अंग और कपालोंकी मज्जासे छिड़-
का हुआ भीमसेन दंडधारी मृत्यु के समान युद्धमें घूमा हाथियों के रुधिर से
भीजा हुआ गदाकोधारण कियेहुए भीमसेन पिनाकधारी शिवजीके समान
घोर और भयानक रूपहुआ ५४ क्रोधयुक्त भीमसेन के हाथसे मथेहुए क-
ष्टित हाथी अकस्मात् आपकी सेना को दबातेहुए भागे ५५ अभिमन्यु को
आदि लेके बड़े२ धनुषधारी रथियों ने उस युद्ध करनेवाले बीर भीमसेन की
चारों ओर से ऐसी रक्षाकरी जैसे इन्द्रकी रक्षादेवता करते हैं, रक्तसे भरेहुए
और हाथियों के रुधिर से छिड़कीहुई गदाको धारण किये भीमसेन मृत्यु के
समान रुद्रात्माही दृष्टिपड़ा, हे भरतबंशी हमने गदायुक्त भीमसेन को सब
दिशाओंमें नाचताहुआ शंकरजी के समान देखा, फिर हम ने यमराज के
दण्डकी समान और इन्द्र के वज्र की समान शब्दायमान नाशकी करने
वाली रौद्रीरूप महाभारी गदाको देखा वह गदा केशोंसे युक्त कपाल और
रुधिरसे ऐसी भरी हुईथी जैसेकि क्रोध युक्त शिवजी के हाथमें पशुओं का
मारने वाला पिनाक धनुष होताहै, और जैसे गाय चराने वाला अपनी यष्टी
से पशुओं के समूहों को हटाताहै इसीप्रकार भीमसेन ने भी अपनी गदासे
हाथियोंको हटाया,इसके पीछे गदा औरबाणोंसे घायल वहहाथी अपनेरथों
कोदबाते तोड़तेहुए इधरउधरकोभागे, जैसे कि बायु बादलों को इधर उधर
तिर्रबिर्रकरदेता है उसीप्रकार युद्धसे भिन्न २ हाथियोंको करके भीमसेन युद्ध
भूमिमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि श्मशान भूमिमें रुद्रजी नियतहोते हैं६३॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीमयुद्धेद्विषष्टितमोऽध्यायः॥ ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उस हाथियों की सेना के मारे जाने पर आपके पुत्रदु-
र्योधनने सब सेनाको चैतन्यकिया और आज्ञा दी कि भीमसेन को मारो,

तदनन्तर आपके पुत्रकी आज्ञा से सब सेना महाभयकारी शब्दों को करती हुई भीमसेन के सन्मुख दौड़ी, फिर उस अत्यन्त देवताओं सेभी कठिनतासे सहने योग्य समुद्र के समान अत्यन्त दुस्तर रथ हाथी घोड़ों समेत कवचधारी शंख भेरियोंसे शब्दायमान असंख्य रथ हाथी पदाती लोगों से भरीहुई सब ओर से धूल उड़ाती हुई भारी समुद्र के समान अव्याकुल सेना को भीमसेन ने रोकदिया, हे राजा हमने उस महात्मा भीमसेन के उस अद्भुतकर्मको देखा, अर्थात् भीमसेन ने बड़ी निर्भयता से घोड़े हाथी और रथों समेत उन सब राजाओं को अपनी गदासे ही हटादिया, वह पराक्रमियों में श्रेष्ठ भीमसेन तुमुल युद्धमें उन सेनाओंके समूहों को गदासे हटाकर मेरुपर्व्वत के समान निश्चलहोकर नियतहुआ, उस घोर और महा भयानक युद्धमें भय के उत्पन्न होनेपर भाई बेटे धृष्टद्युम्न द्रौपदीके पांचोंपुत्र अभिमन्यु और महा विजयी शिखण्डी ने उस महाबली भीमसेन को त्याग नहीं किया अर्थात् यह सब उसके साथहीमें बने रहे,, इसके पीछे दंडधारी मृत्यु के समान उस लोहेकी गदाको लेकर महाबली भीमसेन आपके शूरवीरों पर दौड़ा, और रथ घोड़े हाथियों के समूहों को मारता हुआ ऐसा घूमा जैसे युगके अन्त में अर्थात् प्रलय काल में अग्नि देवता दौड़ता है, जैसे कि प्रलय के समयमें काल सबको मारता है उसी प्रकार युद्धभूमिमें कालरूप भीमसेन शूरवीरोंको मारताहुआ अपनी जंघाओंके वेगसे रथके जालोंको खैंचता, शीघ्रहीसेनाको ऐसे मर्द्दन करने लगा जैसे कि हाथी नलोंके जंगलोंको मर्द्दन करताहै रथों को रथों से वा युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारोंको हाथियोंसे मर्दन करता हुआ, सवारों को घोड़ों की पीठसे पदातियों को पृथ्वीपर मर्दन करताहुआ घूमनेलगा,फिरउस महाबाहु भीमसेनने आपके पुत्रकीसेनामें जाकर गदासे सबको ऐसामारा जैसे किवायु देवता अपने बलसे वृक्षोंको गिराताहै फिरवह भीमसेनी कराल भयंकर गदा मांस रुधिरसे भरीहुई हाथीघोड़ोंकी मारनेवाली रौद्री रूप से दृष्टि पड़ी और स्थान स्थानमें मरे हुए हाथी घोड़े और सवारों से वहयुद्धभूमि संहारभूमि के समान होगई, चारों ओरसे वर्णाश्रम रहित पशुओं के समान मनुष्यों को मारने वाले क्रोधरूप रुद्रजी के पिनाक धनुष के समान यमदण्ड के सदृश भयानक और इन्द्र वज्र के समान प्रकाशित नाश करने वाली रौद्री भीमसेन की गदा को हमने देखा, गदाको मारते हुए उस महात्मा भीमसेन का रूप महा प्रकाशित और घोररूप ऐसा होगया जैसे कि संसार के नाश में महाकालका रूप होता है, इसरीति से उस बड़ी सेना को बारम्बार भगातेहुए मृत्युके समान भीमसेन को आता हुआ देखकर सबलोग चित्त से महा व्याकुलहुए हे भरतवंशी उस भीमसेनने गदा

को उठाकर जिधर जिधर को देखा उधरउधर की सेना व्याकुल होकर छिन्न भिन्न होगई जैसे कि सेनाओं को छिन्न भिन्न करते हुए सेना समूहों से अजेय अत्यन्त भक्षण करने वाली मृत्यु के समान सेनाओं को निगलते भयकारी कर्म करते बड़ी गदाके उठानेवाले उस भीमसेन को देखकर सूर्य्य के समान प्रकाशमान बादल से शब्दायमान रथपर सवार होकर भीष्मजी बाणोंकी वर्षा करतेहुये अकस्मात् उसकेसन्मुख आये इस रीतिसे उस मृत्युरूप के समान भीष्मजी को आता देखकर महाबाहु भीमसेन बड़ा क्रोधरूप अग्निके समान होकर उनके सन्मुख गया, उस समय महावीर सत्यसंकल्प सात्विकी बड़े दृढ़ धनुष से शत्रुओं को मारता हुआ आपके पुत्रकी सेनाको कंपाता पितामह के सन्मुख जाभिड़ा, हे भरतवंशी आपके सब मनुष्य उस चांदी के समान श्वेतघोड़ों के रथपर चढ़ेहुए सुन्दर पंखवाले बाणोंके प्रहार करनेवाले सात्विकी के रोकने को समर्थ नहींहुए, तब अलंबुष नाम राक्षस ने प्रयक्त नाम दश बाणों से उसको घायल किया फिर सात्विकी भी उसको चार बाणों से घायल करके रथकेद्वारा सन्मुख दौड़ा, फिर वृष्णी वीर सात्विकी को समीप आया हुआ और शत्रुओं में घूमने वाला उत्तम कौरवों का नाशकर्त्ता युद्ध में बारम्बार गर्जता हुआ देखकर, आपके शूरवीर लोग उस पर ऐसी बाणोंकी वर्षा करने लगे जैसे कि बादल जलोंके वेगसे पहाड़पर वर्षा करते हैं, मध्याह्न के समय सूर्य्य के समान तपानेवाले पितामह भी उस सात्विकीके रोकने को समर्थ नहींहुए, हे राजा वहां सोमदत्तके लड़के के सिवाय कोईभी स्थिर चित्त नहीं हुआ, हे भरतर्षभ वह सोमदत्त का पुत्र भूरिश्रवा अपने रथी लोगोंको दूरहटा हुआ देखकर महा भयानक वेग युक्त धनुष को हाथ में लिये युद्ध की इच्छासे सात्विकी के सन्मुख गया २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणित्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे अत्यन्त कोपयुक्त भूरिश्रवाने नौ बाणों से सात्विकीको इस रीतिसे घायल किया जैसेकी चावक से बड़े हाथी को घायल करते हैं, फिर उस महा साहसी सात्विकी नेभी सबके देखते हुए गुप्त ग्रन्थी वाले बाणोंसे भूरिश्रवाको रोका, फिरअपने निज भाइयों समेत दुर्य्योधन ने युद्धमें उपाय करने वाले भूरिश्रवाकी चारों ओरसे रक्षाकरी, इसी प्रकारसे महा पराक्रमी सब पांडवलोग भी युद्धभूमिमें चारोंओर से सात्विकी को रक्षितकर के नियत हुए, हे भरतवंशी भीमसेन को गदाउठाये कोप संदेखकर आपके सब क्रोधी और असन्तोषी दुर्य्योधनादिक पुत्रोंने बहुत

से असंख्य रथोंको साथ लेकर उसको चारों ओरसे रोका फिर आपके पुत्रनन्दकने उसमहाबली भीमसेनको, शिलापर तीक्ष्ण किये हुए तीव्र और तेजनोक वाले बाणोंसे घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने उस बड़े युद्धमें बड़ेतीक्ष्ण बाणोंसे छातीपर घायल किया इसकेपीछे महाबली महाबाहु भीमसेन बड़े उत्तम रथपर सवार होकर विशोकसे बोला कि यह धृतराष्ट्र के पुत्र बड़े शूर और महाबली अत्यन्त कोपित युद्धमें मेरे मारने को तैयार हुए हैं इनको निस्सन्देह मैं तेरेदेखतेही में मारूंगा, इस हेतु से हे सारथी तू इसयुद्धमें बड़ी सावधानी से मेरेघोड़ों को सम्हाल ऐसा कह कर हे राजा भीमसेन ने तेरे पुत्रको बड़े तीक्ष्ण सुनहरी भूषित दश बाणों से अत्यन्त घायल किया और नन्दकको तीन बाणों से स्तनों के मध्य में विदीर्ण किया फिर दुर्योधन ने सातबाणों से उस महाबली भीमसेन को घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से विशोक सारथी को घायल किया फिर युद्ध भूमिमें हँसतेहुए दुर्योधन ने तीन महा पैने बाणोंसे भीमसेन के उस धनुष को मूठ के स्थानपर से काट डाला, हे महाराज तब भीमसेन ने आपके धनुषधारी पुत्र के विशिखों से महापीड़ामान अपने विशोक सारथी को देखकर, असहनशील और महा क्रोधित होकर आपके पुत्रके मारने के लिये दिव्य धनुषको धारणकिया और क्रोधमें भरकर बाणोंके काटनेवाले क्षुरप्र बाणको धनुषमें चढ़ाकर उससे दुर्योधनके उत्तम धनुषको पीछेकी ओर को काटा, फिर महाक्रोध में भरे हुए तुम्हारे पुत्रने उस कटेहुए धनुषको डाल कर शीघ्रही बड़े बेगवान् दूसरे धनुषको लेके काल मृत्युके समान प्रकाशित बड़े भयानक विशिख बाणको चढ़ाकर बड़े कोप से भीमसेन के स्तनों के मध्यस्थान को घायल किया, फिर वह महा घायल और पीड़ामान रथके बैठने के स्थान में बैठकर महा अचेत होगया, फिर पांडवों के उन महारथियोंने जिनका अग्रगामी अभिमन्यु था उस पीड़ामान भीमसेनको देखकर महा क्रोधित होकर आप के बेटेके मस्तकपर महाउग्र तीक्ष्ण बाणोंकी तुमुल वर्षा करी, इसके पीछे महाबली भीमसेन ने सचेतहोकर दुर्य्योधन को तीन बाणों से घायल करके फिर पांच बाणोंसे व्यथित किया और पच्चीस बाणों से शल्यको घायल किया इन बाणोंसे घायलहोकर वह महाधनुषधारी शल्य युद्ध से हटगया, इसके पीछे आपके यह चौदह १४ पुत्र इस वीरके सन्मुख गये (सेनापतिसुषेण) (जलसन्ध) (सुलोचन) (उग्र) (भीमरथ) (भीम) (वीरबाहु) (अलोलुप) (दुर्मुख) (दुष्प्रधर्ष) (विवित्सु) (विकट) (सम) इन सब क्रोधमें भरेहुए बाणोंके बरसाने वालोंने, एक साथही भीमसेन को सन्मुख जाकर अत्यन्त घायल किया फिर महाबली महाबाहु भीमसेन ने

आपके पुत्रों को अच्छी रीतिसे देखकर भेड़िये के समान होठोंको चाटकर गरुड़ के समान वेग से सन्मुख दौड़कर अपने क्षुरप्र बाणसे सेनापतिके शिर को काटा फिर उस महाबाहु प्रसन्न चित्त ने अत्यन्त आनन्दित होकर तीन बाणोंसे जलासिन्ध को विदीर्ण करके यमलोकको पठाया फिर सुषेणको मार कर मृत्यु के पास पहुंचाया, फिर एक भल्लसे उग्रके मुकुट समेत चन्द्रमा के समान कुंडलों से शोभित शिर को पृथ्वीपर गिराया,फिर सत्तर बाणोंसे घोड़े ध्वजा और सारथी समेत वीरबाहु को मारा, फिर हँसते हुए भीमसेनने भीम और भीमरथ दोनों वेगवान् भाइयोंको भी यमपुरको पठाया, इसके अनन्तर सब सेनाके देखते हुए सुलोचन को चुरप्रबाण से मारा, हे राजा तब वहांजो आपके शेषबचे हुए पुत्र थे वह भीमसेन के बलको देखकर उससे घायल और भयभीत होकर युद्ध से भागे इसके पीछे भीष्मजी सब महारथियों से बोले, कि यह युद्धमें क्रोधरूप भयानक धनुष धारी भीमसेन जो धृतराष्ट्र के महा शूरवीर बुद्धिमान् पुत्रोंको गिराता और मारता है उसको पकड़ो, इसके पीछे दुर्योधन की सेनाके सबलोग इस आज्ञाको पाकर अत्यन्त क्रोध में भरकर उस महाबली भीमसेन के सन्मुख दौड़े,हेराजा राजाभगदत्त मतवाले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहां आटूटा जहां भीमसेन नियतथा, और युद्धभूमि में गिरतेही शिलाके घिसेहुए बाणोंसे भीमसेनको दृष्टिसे ऐसा गुप्त करदिया जैसे कि बादल सूर्यको करताहै वहां अपने भुजबलमें नियत और रक्षित अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेनके ढकजाने को न सहसके, और क्रोधित होकर उन्होंने चारों ओरसे उसको अपने बाणोंकी वर्षासे रोककर चारों दिशाओं से मारे बाणों के उसकेहाथीको घायल किया, हे धृतराष्ट्र वह राजा प्राग्ज्योतिषका हाथी उन सब महारथियों के नाना प्रकार के चिह्न-धारी प्रकाशित तीव्र बाणों से घायल रुधिर के श्रोतों से युद्धमें ऐसा देखने के योग्यहुआ जैसे कि सूर्यकी किरणों से व्याप्त अर्थात् घिराहुआ बड़ाबा-दल होताहै ४४ फिर वह मदोन्मत्त कालरूप मृत्यु के समान राजा भगदत्तका पेला हुआ हाथी अत्यन्ततीव्र होकर पृथ्वी को अपने चरणों से कँपाता हुआ उन सब वीरों के सन्मुख दौड़ा उसके उस बड़े रूपको देखकर वह सब महा-रथी, उसको सहने के योग्य न समझकर भयभीत हुए हे नरोत्तम फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्तने महा क्रोधित होकर गुप्तग्रन्थी के बाणों से भीमसेन के वक्षस्थलको व्यथित किया उस राजा से अत्यन्त घायल किया हुआ वह बड़ा धनुषधारी, महारथी मूर्च्छा युक्त होकर ध्वजाकी यष्टी के सहारेसे नियत हुआ फिर उनको भयभीतऔर भीमसेनको मूर्च्छा युक्त देखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़े शब्दको करता हुआ गर्जा हे राजा इसके पीछे घटोत्कच उस

मूर्च्छावान् भीमसेन को देख कर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसीस्थानमें गुप्त होगया और फिर घोररूपमहाभयकारी मायाको रचिके घोरहीरूप में नियत होकर के अपने रचे हुए मायारूपी ऐरावतपरचढ़कर आधेही निमेष में दृष्टिगोचर हुआ, और महा सुन्दर प्रभावी (अंजन) (वामन) महा पद्मनाम दूसरे दिग्गज उसके पीछे चलने वाले हुए, हेराजा वह बड़े शरीर वाले सब अंगों से मद चूने वाले तीनों महा गजराज राक्षसों समेत नियतहुए,जोकि तेजी से पराक्रम युक्त बड़े बेगवाले थे फिर घटोत्कच ने अपने हाथीको युद्ध में भेजा, हे शत्रुसन्तापी धृतराष्ट्र वह हाथी भगदत्त के मारनेको उपस्थित हुआ और वह दूसरे महाबली हाथी भी राक्षसों के प्रेरित अत्यन्त क्रोधित चार २ दांतों से महा भयानकरूप दिशाओं में पहुंचे और भगदत्त के हाथी को अपने दांतों से महापीड़ामान किया तबतो इन हाथियों से महापीड़ित दुःखोंसे व्याकुल और बाणों से घायल उस हाथीने इन्द्रके बज्रके समानमहाघोर शब्द किया उसके महाघोर शब्दको सुनकर, भीष्मजी द्रोणाचार्य्य और राजा दुर्य्योधनसे बोले कि यह बड़ा धनुषधारी भगदत्त युद्ध में दुरात्मा घटोत्कचके साथ लड़ता है और आपत्ति में फँसा है यहराक्षस बड़े शरीरवालाहै और राजा भी बड़ाक्रोधकरनेवाला है निश्चय करके कालमृत्युके समान दोनों युद्धमें जुटे हुए हैं और पाण्डवों के प्रसन्नताके बड़े शब्द सुनेजाते हैं, और उसभयभीत हाथीके व्याकुलता के भी बहुतसे शब्दसुने जाते हैं आप लोगों की भलाईके लिये हमराजाकी रक्षाके लिये वहांपरचलें, नहीं तो युद्ध में अरक्षितहोकर वहशीघ्रही प्राणोंको त्यागेगा हे बड़े पराक्रमियो इसहेतुसे शीघ्रताकरो बिलम्ब मतिकरो, यह रोमहर्षण करने वाला महारुद्र रूप युद्ध बर्तमान है यहसेनापति भगदत्त भक्तकुलपुत्र होकर बड़ाशूर है हे बिजयी लोगो हमलोगोंको उसकी रक्षा करनेयोग्यहै भीष्मजीके इसबचनको सुनकर सबराजा लोग द्रोणाचार्य्य को आगे करके भगदत्त पर प्रीति करके बड़ी तीव्रतासे उसके समीपगये,, उन जातेहुए शत्रुओंको देखकर पांडवों समेत पांचालदेशी अपनेआगे राजायुधिष्ठिरकोकरके पीछेकी ओरसेचले,फिरराक्षसों का राजा प्रतापी घटोत्कचउनसेनाओं को देखकर आकाशको शब्दायमान करताहुआ बड़ेशब्दसे गर्जा, उसके शब्दको सुनकर और लड़ते हुए हाथियों को देखकर भीष्मजी द्रोणाचार्य्य से बोले, कि मुझको इस महासाहसी घटोत्कचके साथमेंयुद्धकरना अच्छानहीं विदित होताहै क्योंकि वहइस समय बल पराक्रमसे भराहुआ महामद वाला है, यह इन्द्रसे भी बिजय करने के योग्यनहीं है और लक्षभेदी होकर प्रहार करने वाला है और हमथलकी सवारीवाले हैं, पांचाल और पांडवोंसे सबदिन घायल हुए इसीहेतुसे बिजय

से शोभा पानेवाले पांडवोंके साथ युद्ध करना अच्छा नहीं ज्ञात होताहै, अब विश्राम करो प्रातःकाल शत्रुओंसे लड़ेंगे अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरबीरोंने इस पितामहके वचनको सुनकर वैसाही किया, फिर वह घटोत्कचके भयसे महापीड़ित युक्तिके द्वारा युद्धसेहटगये कौरवोंके हटजाने पर विजयसे शोभापाने वाले पांडवों ने, शंख और वंशियों के शब्दों समेत सिंहनाद किये हे राजा इस रीति से कौरव और पांडवोंका वह युद्ध घटोत्कच को आगे करके दिन भर हुआ तदनन्तर शीघ्रही कौरव लोग पांडवों से पराजितबाणों से घायल लज्जा में भरे रात्रि के समय अपने २ डेरों को गये हे महाराज धृतराष्ट्र फिर महारथी पांडव भी युद्ध में प्रसन्न चित्त भीमसेन और घटोत्कच को आगे करके अपने डेरों में गये, और वहां जाकर वह शत्रुसंतापी महात्मा बड़ी प्रसन्नता से युक्त प्रशंसा करते हुए तुरीय बाजे बजाते शोभा युक्त होकरनाना-प्रकार के शब्दों से गर्जे और सिंहनाद युक्त शंखों को बजाते गर्जनाओं से पृथ्वी को कंपायमान करते, और आपके पुत्रों के मर्मों को चलायमान करते हुए सायंकाल के समय डेरों में गये, फिर अश्रुपात युक्त चिन्ता और शोक से व्याकुल भाई बिरादरियों के मरण से दुःखित राजा दुर्य्योधन एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त चिन्ता में मग्न हुआ, तदनन्तर बुद्धि के अनुसार डेरों के सब प्रबन्ध को करके शोक से खिन्न भाइयों के शोक से निर्बल होकर बड़े विचार में प्रवृत्त हुआ ८२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिचतुर्थदिवसयुद्धेचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय देवताओं से भी कठिनता से करने के योग्य पांडवों के कर्मको सुनकर मुझको बड़ाभय और आश्चर्य्य उत्पन्न होता है हे संजय सब प्रकार से अपने पुत्रोंकीही पराजय को सुनकर मुझको यही चिन्ता है कि परिणाम कैसा होगा, निश्चय विदुरजीके वचन मेरेहृदय को जलाते हैं हे संजय दैवयोग से उन्हीं का कहना सत्यहोता दिखाई देता है जहां कि पांडवों की सेना के वह शूरवीर उन युद्धकर्त्ताओं से जिनमें शस्त्रवेत्ता महाप्रतापी भीष्म जी मुख्यहैं युद्ध करतेहैं, उन महाबली महात्मा पांडवों ने कौनसी तपस्या करी है वा किससे कौनसा वरदान पाया है अथवा वह किस ज्ञान को जानते हैं, जिस कारण से कि वह नाशको नहीं पातेहैं हे संजय पांडवों से बारम्बार मारे हुए सेना के मनुष्यों को मैं नहीं सह सकताहूं, दैवमुझ को ऐसा कठिन दंड देता है कि पांडव निर्विघ्न हैं और मेरे पुत्र घायल हैं, हेसंजय इसका हेतुमुझसे मूल समेत वर्णनकरो मैं किसी दशामें भी

इस दुःखका अन्त ऐसे नहीं देखताहूं जैसे कि भुजाओं से तिरता हुआ मनुष्य समुद्रका अन्तनहीं पाता है मैं निश्चय करके मानताहूं कि मेरेपुत्रों को महाभयानक दुःख वर्त्तमान हुआ मैं निस्सन्देह जानताहूं कि भीमसेन मेरे सब पुत्रोंको मारेगा, मैं ऐसावीर किसीको नहीं देखताहूं जो युद्धसे मेरे पुत्रोंको बचावे, हे संजय युद्ध में मेरेपुत्रोंका नाश निश्चय होता दीखता है हे सूत इस हेतुसे तुमसब हेतु पूर्व्वक वृत्तान्त मुझ से वर्णन करो और दुर्य्योधन ने युद्ध में अपने युद्धकर्त्ताओं को बिमुख देखकर जो २ किया अथवा (भीष्म) (द्रोणाचार्य्य) (कृपाचार्य्य) (शकुनि) (जयद्रथ) महाधनुषधारी (अश्वत्थामा) और महापराक्रमी बिकर्ण ने जो २ किया, उसको और हे महाज्ञानी मेरेपुत्रों के उदासीन होनेपर इन महात्माओं ने जो निश्चय किया उन सब बातोंको ब्योरे समेत यथार्थ मुझ से बर्णन करो १४ संजय बोला कि हेराजा सावधान होकर सुनो और सुनकरके बिश्वास करो कि पाण्डवों का न तो कुछ अनुष्ठान है न किसी प्रकारकी मायाहै, नवह किसी प्रकारकी भयानकता करते हैं वह केवल युद्ध में समर्थ होकर न्याय के अनुसार लड़तेहैं, हे भरतबंशी बड़े यशको चाहने वाले पाण्डव जीवन आदिसब कर्मों को सदैव धर्मयुक्त होकर प्रारंभ करते हैं वह धर्मवान् महाबली बड़ीशोभा पूर्व्वक युद्धसे मुख नहींमोड़तेहैं जिधरधर्महै उधरहीबिजय होतीहै, इस हेतुसे पाण्डवलोग युद्धमें निर्विघ्न होकर बिजयको पातेहैं और आपके निर्बुद्धी पुत्र सदैव पापों में प्रीतिकरने वाले, कठोरवक्ता और दुष्कर्म्मी इसी हेतुसे युद्धमें पराजयको पातेहैं हेराजन् आपके पुत्रों ने पाण्डवोंके ऊपर हिंसायुक्त ऐसे अनेक दुष्कर्म किये जैसे कि नीच मनुष्य करतेहैं हे पाण्डुके बड़ेभ्राता धृतराष्ट्र पाण्डव आपके पुत्रों के उनसब आप अपराधोंको क्षमा करके वैसेही निश्छल बनेरहे आपके पुत्र इनको अच्छे प्रकारसे नहीं मानतेहैं, उसबारंबार किये हुये पाप कर्मोंका बड़ाघोर फल किंपाक वृक्षफलके समान वर्त्तमान हुआहै, हे महाराज आपने अपने सुहृदों के निषेध करने से भी नहींमाना इस हेतुसे आप अपनेपुत्र सहायकों समेत उसफलको भोगोगे, विदुरजी भीष्मजी द्रोणाचार्यजी और अन्य श्रेष्ठलोगों समेत मैंने भी बारंबार आपको समझाया परन्तु आपनमाने न अबसावधानहोतेहो, और परिणाममें आनन्द देने वाले बचनोंको भी ऐसे नहीं सुनते हो जैसे कि निर्बुद्धी मनुष्य पथ्य और गुणदायी औषधी को नहीं पाता तुम अपने पुत्रों के मतमें नियत होकर पाण्डवोंको विजयी देखतेहो, और हे भरतर्षभ जो पाण्डवोंकी विजयका हेतु तुम पूछतेहो, उसकोभी मैं कहताहूं हे राजन् जैसाकि मैंनेसुना है और उसी को दुर्य्योधनने भीष्मजी से पूछा है,अर्थात् युद्धमें पराजित सब महारथी भा-

इयोंको देखकर शोक से व्याकुल मन आपका पुत्र दुर्य्योधन रात्रि के समय बड़ी नम्रतासे महाज्ञानी भीष्म पितामह के पास जाकर जो बचन बोला वह सब मैं तुमसे कहताहूं, तात्पर्य्ययहहै कि दुर्य्योधनने कहाकि द्रोणाचार्य और तुम वा शल्य वा कृपाचार्य्य अश्वत्थामा वा कृतवर्मा वा हार्दिक्य वा काम्बोज सुदक्षिण वा भूरिश्रवा वा विकर्ण वा पराक्रमी भगदत्त यहसब महारथी और सब कौरव लोग शरीरके त्यागने वाले, तीनों लोकोंमें सामर्थ्यवान् प्रसिद्धहैं. मेरीबुद्धि से यहसब लोग पाण्डवों के पराक्रम में नियत नहीं होतेहैं यह मुझको बड़ा सन्देहहै कि ऐसे हमारे सहायकोंके होनेपरभी पाण्डव लोग हमको पदपदपर विजय करते हैं भीष्मजी बोले हे कौरवों के राजा मेरे कहनेको सुन मैंने तुझको बहुतबार समझाया परन्तु तैंने न माना भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ पाण्डवों से तुमसन्धि करलो हे दुर्य्योधन इसी में तेरी और सब संसारकी कुशल है, हेतात भाइयों समेत सबमित्रों को प्रसन्न करके अपने बांधवों समेत आनन्दपूर्वक इस पृथ्वी को भोगो और पहलेभी हमने बारंबार कहा उसको तुमने नहीं सुना सुनोजो कोई पांडवोंका अपमान करता है उसका यहीफल वर्त्तमान होता है वही अब तुमकोभी वर्त्तमानहै, हे समर्थ महाराजउन सुगमकर्म्मी पांडवों के अवध्य होनेका जो हेतु है उसको मुझसे सुन, लोकोंमें ऐसाकोई बलीनहीं है नकभीकोईहोगा जो शार्ङ्गधनुषधारी के शरणमें रक्षित सबपांडवोंको विजयकरे ४० हे धर्मज्ञ जो तुमने कहा और जो शुद्धअन्तःकरण वाले मुनियों ने पुराणों में कहा है उसको तुम ठीकठीक पूर्णता से सुनो, निश्चय है कि प्राचीन समयमें सब देवता और ऋषियों ने इकट्ठेहोकर गन्धमादन पर्व्वत पर पितामहजी की उपासना करी,फिरउन सबोंमें बैठेहुए प्रजापति ब्रह्माजीने तेज से प्रकाशित अत्यन्त सुन्दर आकाशमें वर्त्तमान उत्तमविमान को देखा, ब्रह्माजीने ध्यानकेद्वारा जानकर हाथजोड़के उस घटघटवासी को नमस्कार किया, फिरसब देवता और ऋषिलोगभी वहांसे उठे हुए ब्रह्माजीको और उसअपूर्व्व अद्भुतरूपको देखकर हाथजोड़कर नियत हुए, फिर ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ धर्मज्ञ संसारकेस्वामी ब्रह्माजीने बुद्धि के अनुसार उसका पूजन करकेइस परम उत्तम और पवित्र स्तोत्रकोपढ़ा ॥ स्तोत्र ॥ विश्वावसुर्विश्वमूर्त्तिर्विश्वेशोविष्वक्सेनोविश्वकर्मावशीच ॥ विश्वेश्वरो वासुदेवो सितस्माद्योगात्मानंदैवतंत्वामुपैमि ४७ जयविश्वमहादेव जय लोकहितेरत ॥ जययोगीश्वरविभोजययोगपरावर ४८पद्मनाभविशालाक्ष जयलोकेश्वरेश्वर ॥ भूतभव्यभवन्नाथजयसौम्यात्मजात्मज ४९ असंख्येयगुणाधार जयसर्वपरायण ॥ जयकृष्णसुदुष्पार जयशार्ङ्गधनुर्धर ५० जयसर्वगुणोपेतविश्वमूर्त्तेनिरामय ॥ विश्वेश्वरमहाबाहो जयलोकार्थ तत्पर ५१

महोरगवराहाद्यहरिकेशविभोजय ॥ हरिवासादिशामीशविश्ववासामिताव्य य ५२ व्यक्ताव्यक्तमितस्थान नियतेन्द्रियसत्क्रिय ॥ असंख्येयात्मे भावज्ञ ज थगंभीरकामद ५३ अनन्तविदितब्रह्मनित्यंभूतविभावन ॥ कृतकार्यकृतप्रज्ञ धर्मज्ञविजयावह ५४ गुह्यात्मन्सर्व्वयोगात्मन्स्फुटसंभूतसंभव ॥ भूतात्मतत्त्व लोकेश जयभूतिविभावन ५५ आत्मयोनेमहाभागकल्पसंख्येयतत्परं ॥ उद्भा वनमनोभावजयब्रह्मजनप्रिय ५६ निसर्गसर्गनिरतकामेशपरमेश्वर ॥ अमृतो द्भवसद्भावमुक्तात्मविजयप्रद ५७ प्रजापतिपतेदेव पद्मनाभमहाबल ॥ आत्म भूतमहाभूतकर्म्मात्मन्जयसर्वदा ५८ पादौतवधरादेवी दिशोबाहुर्दिवःशिरः मूर्त्तिस्तेहंसुराकायश्चन्द्रादित्यौचचाक्षुषी ५९ बलंतपश्चसत्यंचधर्मकर्मात्मजं तव॥तेजोग्निःपवनश्वासःआपस्तेस्वेदसंभवाः६०अश्विनौश्रवणौनित्यौदेवी जिह्वासरस्वती ॥ वेदाःसंस्कारनिष्ठाहित्वदीयंजगदाश्रितं६१ नसंख्यांनपरीमाणं नतोजनपराक्रमं॥ नबलंयोगयोगीशजानीमस्तेनसंभवं ६२ त्वद्भक्तिनिरतादेव नियमैस्त्वांसमाश्रिताः॥ अर्चयामांसदाविष्णोपरमेशंमहेश्वरं ६३ ऋषयोदेव गंधर्व्वयक्षराक्षसपन्नगाः॥ पिशाचामानुषाश्चैव मृगपक्षिसरीसृपा ६४ एवमा दिमयासृष्टं पृथिव्यांत्वत्प्रसादजं ॥ पद्मनाभविशालाक्ष कृष्णदुःस्वप्ननाशनं ६५ त्वंगतिःसर्वभूतानां त्वंनेतात्वंजगन्मुखं ॥ त्वत्प्रसादेनदेवेश सुखिनो वि- बुधाःसदा ६६ पृथिवीनिर्भयादेवत्वत्प्रसादात्सदाभवत्॥ तस्माद्भवविशालाक्ष यदुवंशविवर्द्धनः ६७ धर्मसंस्थापनार्थाय दैतेयानांबधायच ॥ जगतोधारणा र्थाय विज्ञाप्यंकुरुमेविभो ६८ यत्तत्परमकंगुह्यंत्वत्प्रसादादिदंप्रभो ॥ वासुदेवत देतत्तेमयोद्गीतंयथातथम् ६९ सृष्ट्वासंकर्षणंदेवस्वयमात्मानमात्मना ॥ कृष्ण त्वमात्मनासाक्षीः प्रद्युम्नोस्वात्मसंभवम् ७० प्रद्युम्नोच्चानिरुद्धन्तुवयंविद्धुवि ष्णुमव्ययं ॥ अनिरुद्धोसृजन्मांवैब्राह्मणंलोकधारिणं ७१ वासुदेवमयःसोऽहं त्वयैवास्मिविनिर्मितः॥ विसृज्यभागशोल्लोकांस्त्वंब्रजमानुषतांविभो ७२ तत्रासुरवधं कृत्वासर्वलोकहितायवै ॥ धर्मस्थाप्ययशःप्राप्य योगंप्राप्स्यसितत्त्वतः ७३ त्वां हिब्रह्मर्षयोलोकेदेवाश्चामितविक्रम ॥ तैस्तैःस्वनामभियुक्तागायन्तिपरमाद्भुतं ७४ स्थितश्चसर्वेत्वयिभूतसंघाःकृत्वाश्रयंत्वांवरदंसुबाहो॥ अनादिमध्यान्तम पारयोगं लोकस्यसेतुंप्रवदन्तिविप्राः ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छयासठवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे वहयोगेश्वरोंके ईश्वर भगवान् स्निग्ध गं- भीर बाणीकेद्वारा ब्रह्माजी से बोले, हे तात यहतेरे मनकी इच्छा मुझको यो- गसे विदित है वह उसी प्रकार से होगा यहकह कर वह उसी स्थानमें गुप्त

होगये, इसके अनन्तर देवर्षी और गंधर्वोंने बड़ा आश्चर्य किया और सब ने मिलकर ब्रह्माजी से कहा, किहेसमर्थ यह कौनथा जिसको आपने बड़ी नम्रतासे नमस्कार पूर्व्वक उत्तम वाणियों से स्तुतिको किया हम उसको जानना चाहतेहैं इसरीतिसे देवर्षिगन्धर्वोंके पूछनेपर बड़ीमधुर वाणी से ब्रह्मा जीबोले, जो सर्वोत्तमरूप आगे प्रकट होनेवालाहै वहीश्रेष्ठ सबजीवमात्रोंका आत्मारूप प्रभुहै उसीको ब्रह्म और ज्योतिस्स्वरूप कहतेहैं, हेश्रेष्ठ पुरुषो मैंने उसी प्रसन्न मूर्त्तिपरमेश्वर से वार्त्तालाप करीहै और जगत् के अनुग्रह के लिये वह जगतपति मेरी प्रार्थना से,वासुदेवनामसे प्रसिद्धहोगा तुमसब लोग मर्त्यलोक में नियत होकर असुरोंके मारनेके लिये पृथ्वीपर प्रकटहोजाओ, जो दैत्य दानव और राक्षस युद्ध में मारेगये हैं वही आकर इनघोररूपमहा-बली मनुष्योंमें उत्पन्न हुये हैं, इन्हों के मारने के निमित्त अतुल पराक्रमी भगवान् नर संयुक्त मनुष्य योनि में नियत होकर पृथ्वीपरविचरेंगे, वही दो-नों पुराण पुरुष ऋषियों में श्रेष्ठनरनारायण रूप मिलेहुए सावधान युद्ध में देवताओं से भी विजय करने के योग्य नहीं हैं वही महा तेजस्वी एकसाथ नर लोक में प्रकटहुए इन दोनों नरनारायण ऋषियों को अज्ञानी लोगनहीं जानते हैं मैं जिसके आत्मासे उत्पन्न होनेवाला पुत्र सब जगत्का पति हूं और सब लोकोंका महेश्वर वासुदेव तुम्हारा पूज्य है, हे उत्तम देवताओ इसी प्रकार का वह महापराक्रमी शंखचक्र गदाधारी ऐसाजानकर कि यह मनुष्यहै कभी अपमान करने के योग्य नहीं है, यह अत्यन्त गुप्तरूप और परम ज्योतिहै यहीपरब्रह्म है यहीयश है यही अविनाशी सनातन और यज्ञ पुरुष है यही दृश्यअदृश्य नामसे गायाजाता है और जानाजाता है सब यहीहै, यह परमतेज सुख और सतविश्वकर्त्ता कहाजाताहै इस कारणसे बड़ा पराक्रमी प्रभुवासुदेव इन्द्रादिक देवता और सब असुरोंसे भी मनुष्य जानकर अपमानके योग्य नहींहै, जो इस वासुदेवको केवल मनुष्य समझे वह इन्हीं हृषीकेशजी के अपमान से निर्बुद्धी नीचपुरुष है जो इसयोगी महात्मा मा-नुषी शरीरवर्त्ती वासुदेवजी को अपमान करता है उसको महापुरुष लोग तामसी कहते हैं जो इस जड़ चैतन्यके आत्मा श्रीवत्सचिह्न धारी तेजस्वी पद्मनाभजी को नहीं जानताहै वहभी तामसी बोला जाताहै, जोमुकुटकुंडल औरकौस्तुभधारी शत्रुभयवर्द्धन महात्मापुरुषको अपमान करता है वहघोर तामिश्र नामनरक में गिरताहै, हेश्रेष्ठदेवर्षियो इसरीति से तत्त्वार्थको जानकर लोकेश्वरों का ईश्वरवासुदेव सबलोकों से नमस्कार करनेकेयोग्य है, भीष्म जी बोलेकि पूर्व समय में भगवान् ब्रह्माजी देवता और ऋषियों के समूहों से इस प्रकार कहकर सबप्राणियों को विदा करके अपने भवन को गये, इसके

पीछे देवता गन्धर्व ऋषिमुनि और अप्सरादिकभी ब्रह्माजी की कही हुई इसकथा को प्रीति संयुक्त सुनकर स्वर्ग को गये, हेतात इसरीति से मैंने शुद्ध अन्तःकरण वाले देवता ऋषिआदि की सभा में यह प्राचीन वृत्तान्त सुनाहै हे शास्त्रमें कुशल दुर्य्योधन जमदग्न्यजी के पुत्र परशुरामजी औरबुद्धिमान् मार्कण्डेय व्यास और नारदजी सेभी सुना है, इसअर्थ को अच्छी रीति से सुन और जानकर न्यूनता रहित लोकेश्वर प्रभु वासुदेवजी को ध्यान करो, जिसकी आत्मा से उत्पन्न होने वाला ब्रह्मा सबजगत्का पिता है वह वासुदेव परमात्मा रूप किस प्रकार से मनुष्यों से पूज्यनहींहै अर्थात् सबका पूज्यतम है, हेतात प्राचीन समय में तो शुद्धअन्तःकरण वाले मुनियों ने सदैव निषेध किया है कि उस धनुष धारी वासुदेवजी से कभीयुद्ध मतकरो ३० और न कभी पांडवोंसे लड़ो परन्तु तू अपने मोह से सावधाननहीं होताहै इसकारण मैं तुझको राक्षस और निर्दय जानता हूं जो कि तू अज्ञान में डूबाहुआ है इसी कारण से तू गोबिन्दजी समेत पांडव अर्जुन से शत्रुता करताहै कौनसा ऐसामनुष्य है जो इनदोनों नर नारायण देवताओंसे शत्रुता करे, हे राजन् इस हेतुसे मैं तुझ से कहताहूं कि यह सनातन अबिनाशी विश्वरूप पृथ्वी का धारण करने वाला अचल है, और जो चराचरकागुरू प्रभुतीनोंलोकों को धारण करता वह युद्धकर्त्ता विजयरूप बिजयी सबकी प्रकृति और ईश्वरहै,हेराजन्यह सतोगुण रजोगुण तमोगुणसे जुदाहै जिधर श्रीकृष्ण हैं उधर धर्म्म है जिधरधर्म है उधरही बिजय है, हेराजन् पांडवलोग उन श्रीकृष्णजी के माहात्म्य योग वा उत्तमरूप योगसे धारण किये हुएहैं, इन्होंकीही बिजयहोगी वही श्रीकृष्ण पांडवोंकी कल्याण मिश्रित बुद्धिको और युद्धमें पराक्रम कोभी सदैव धारण करताहै और भयों से रक्षाकरताहै वहीसनातन ब्राह्मणरूप शिव और बासुदेव कहा जाता है हे भरतवंशी लक्षण युक्त स्वकर्मों से नित्य मुक्तब्राह्मण क्षत्रीवैश्यशूद्रों करके वह सदैव सेवाकिया जाता है उसी को द्वापर के अन्त पर कलियुग के प्रारंभमें सतोगुणी बुद्धि में नियत होकर संकर्षणजी ने गाया है, वही युग युगमें देवलोक मृत्यु लोक और समुद्रान्तर वर्त्तीपुरी और मनुष्योंके विश्राम स्थानों को बारंबार उत्पन्न कर ता है॥ ४१॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषट्षष्ठितमोऽध्यायः ६६॥

सरसठवां अध्याय॥

दुर्य्योधन बोले कि सबलोकों के मध्यमें वासुदेव जीही महद्भूत कहे जातेहैं हे पितामह जी मैं उनके आगम और प्रतिष्ठाको जाना चाहताहूं

भीष्मजी बोले हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ वासुदेव जी ही महद्भूत और सब देवताओं के देवता हैं इन पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णजी से परे कोई नहीं देखाई देता है, मार्कण्डेय ऋषि भी गोबिन्द जी को अत्यन्त अपूर्व और बड़ा कहते हैं इसी पुरुषोत्तम महात्मा जीवात्मा ने पृथिवी आदि पांचो तत्त्वोंको उत्पन्न किया है इसी परमेश्वरने पृथ्वीको न देखकर जलमें शयन किया अर्थात् उस महात्मा पुरुषोत्तम सर्वतेजोमय ने अपने योगबल से जलमें शयन किया फिर उस बड़े साहसी वासुदेवजी ने मुखसे अग्निको प्राणसे वायुको उत्पन्न करके वेदों को प्रकट किया इसनेही प्रारंभमें लोकों समेत देवता और ऋषियों के समूहको उत्पन्न किया और जन्म मरण नाश सहित मृत्युको भी इसीने उत्पन्न किया, यहधर्म और धर्मात्मा बरका देने वाला अथवा सब अभीष्टों का देनेवाला यही आदिदेव प्रभुकर्त्ता और कर्म रूपहै इसीने भूतवर्त्तमान भविष्य इनतीनोंकालों को उत्पन्न किया यही प्रभु अविनाशी जगत्का कर्त्ता और बरदाताहै इसीने सबके आदि भूत संकर्षणजीको उत्पन्न किया उसी को शेषकल्पना करके अनन्त नामसे प्रसिद्ध किया वही शेषजी पर्व्वत और समुद्रों समेत इसपृथ्वी को धारण करते हैं उसको महातेजस्वीकहतेहैं, पुरुषोत्तमजीने ब्रह्माजीके उपकारकेलिये कर्ण से उत्पन्न महा तेजस्वी पराक्रमी दैत्य को मारा, हे तात इसी के मारनेसे इनको सब संसार मधुसूदन कहते हैं यही बराह नृसिंह अवतार धारण करने वाला तीन चरणोंसे सब जगत्को मारने वालाहै, यहीहरि सबजीवोंका पिता और माताहै इनसे बढ़कर न कोईहै न था न होगा, हे राजन् इसने ब्राह्मणों को मुखसे क्षत्रियोंको भुजाओंसे वैश्योंको ऊरूसे और शूद्रोंको चरणों से उत्पन्न किया है, इस सावधानने तपके द्वारा जीवोंको हव्य कव्यादिक विधियों को ब्रह्मरूपी अमावास्या वा पूर्णमासी में उत्पन्न किया, जो इन योगरूप केशव जीकी सेवाकरता है वह महा ऐश्वर्य्य को पाता है, हे राजा इनकेशवजीको मुनियोंने ऐसा कहा है इसी को आचार्य्य पिता और गुरू जानना योग्यहै जिसके ऊपर श्रीकृष्णजी प्रसन्न होयं वह अविनाशी लोकोंका विजय करने वालाहै, जो प्राणों के भयके स्थान में इनकी शरणमें जाता है वह मनुष्य उसको स्मरण करता हुआ आनन्द पूर्व्वक निर्विघ्न होताहै और जो इनको प्राप्तहोतेहैं वह मनुष्य मोहमें नहीं फँसते हैं, यह जनार्द्दनजी बड़े भारी भयमें डूबे हुये अपने भक्तोंकी सदैव रक्षा करते हैं हे महाभाग राजा दुर्य्योधन वह युधिष्ठिर इस प्रकारसे ठीक २ जानकर सर्वात्मारूपसे उस योगीश्वर जगदीश केशव मूर्त्तिकी शरणमें आश्रित है २४॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अड़सठवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले हे महाराज इसमेरे कहेहुये ब्रह्मरूप स्तोत्रको सुनो जो कि पूर्व समयमें पृथ्वीपर देवऋषि और देवताओंने वर्णन कियाहै १ भीष्मउवाच ॥ शृणुचेदंमहाराजब्रह्मभूतंस्तवम्मम ॥महर्षिभिश्चदेवैश्चयःपुराकथितोभुवि १ साध्यानामपिदेवानांदेवदेवेश्वरःप्रभुः ॥ लोकभावनभावज्ञइतित्वांनारदोऽब्रवीत् २ भूतभव्यंभविष्यञ्चमार्कण्डेयोभ्युवाचह ॥ यज्ञंत्वांचैवदेवानांतपश्चतपसामपि ३ देवानामपिदेवंचत्वामाहभगवान्प्रभुः ॥पुराणंचैवपरमंविष्णोरूपंनवेनिच ४ वासुदेवोवसूनांत्वंशक्रस्थापयतांतथा ॥ देवदेवोऽसिदेवानामितिद्वैपायनोऽब्रवीत् ५ पूर्वेप्रजापतेःसर्गेदक्षमाहुःप्रजापतिम् ॥ सृष्टारंसर्वभूतानामंगिरास्त्वांतथाब्रवीत् ६ अव्यक्तं तेशरीरोत्थंव्यक्तंतेमनसिस्थितम् ॥ देववाक्यंभवाश्चेतिदेवलस्त्वांतथाब्रवीत् ७ शिरसातदिवंव्याप्तंबाहुभ्यांपृथिवीधृता॥जठरंतेत्रयोलोकाःपुरुषोसिसनातनः ८ एवंत्वामभिजानन्तितपसाभावितानराः॥ आत्मदर्शनतृप्तानामृषीणांचापिसत्तमः ९ राजर्षीणामुदाराणामाहवेष्वनिवर्त्तिनाम्॥सर्वधर्म्मप्रधानानांत्वंगतिर्म्मधुसूदन १० इतिनित्यंयोगविद्भिर्भगवान्पुरुषोत्तमः ॥ सनत्कुमारप्रमुखै स्स्तूयतेऽभ्यर्च्यतेहरिः ११ एषतेविस्तरस्तातसंक्षेपश्चप्रकीर्त्तितः ॥ केशवस्ययथातत्त्वंसुप्रीतोभवकेशवे १२॥ संजयउवाच ॥ पुण्यंश्रुत्वैतदाख्यानं महाराजसुतस्तव ॥ केशवंबहुमेनेशपाण्डवांश्चमहारथान् १३ तमब्रवीन्महाराज भीष्मःशान्तनवःपुनः ॥ माहात्म्यंतेश्रुतंराजन्केशवस्यमहात्मनः १४ नरस्यचयथातत्त्वं यन्मांत्वंपरिपृच्छसि यदर्थंनृषुसंभूतौ नरनारायणावुभौ १५ अबुध्योचयथावीरौ संयुगेष्वपराजितौ यथाचपाण्डवाराजन्नवध्यायुधिकस्यचित् १६ प्रीतिमान्हिदृढंकृष्णःपाण्डवेषुयशस्विषु ॥तस्मान्ब्रवीमिराजेन्द्रसमोभवतुपाण्डवैः १७ पृथिवींभुङ्क्ष्वराजेन्द्रसहितोभ्रातृभिर्ब्बली॥ नरनारायणौदेवाववज्ञायाविनंक्ष्यति १८एवमुक्त्वातत्रपितातूष्णीमासीद्विशांपते॥ व्यसर्जयच्चराजानंशिविरंचाविवेशह १९ राजाचशिविरंप्रायात्प्रणिपत्यमहात्मनेशिश्येचशयनेशुभ्रेतांरात्रिंभरतर्षभ२०॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिब्रह्मस्तववर्णनोअष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज रात्रिव्यतीत होने और सूर्य्य के उदय होनेपर फिर दोनों सेना सन्मुख वर्त्तमान हुईं, वह सब एकसाथ युद्धमें परस्पर देखकर अत्यन्त क्रोधित होके परस्परमें विजय की इच्छा से सन्मुख दौड़े, हे राजा आपकी बुरी सलाहों के होने से आपके पुत्र और पांडव व्यूहों को

रचकर अत्यन्त प्रसन्न और अलंकृत होके प्रहारोंको करनेलगे, फिर भीष्मजीने चारों ओर से अपने मकर नाम व्यूहकी रक्षाकरी, इसी प्रकार पांडवोंने अपने व्यूहकी रक्षाकरी हे महाराज बड़े रथसमूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ आपके पिता भीष्मजी चले, और दूसरी ओरके भी रथी हाथीपति और घोड़ों के सवार इत्यादि सब अपने २ स्थान और अधिकार में नियत होकर पीछे २ चले, यशस्वी पाण्डव कौरवोंको युद्धमें सन्नद्ध देखकर उस युद्धमें अजेय राजश्येन नामव्यूह से युद्ध होकर सन्मुखता में वर्त्तमान हुए उसव्यूह के मुखपर महाबली भीमसेन शोभायमान हुआ और नेत्रों पर दुर्जय शिखण्डी और धृष्टद्युम्न नियतहुआ, सत्य पराक्रमी महाबली सात्यिकी उसके शिरपर बिराजमान हुआ और अर्जुन अपने गांडीव धनुषको चलायमान करता हुआ ग्रीवामें वर्त्तमान हुआ, और श्रीमान् महात्मा द्रुपद अपने पुत्रों समेत एक अक्षौहिणी सेना समेत व्यूह के बायें पक्ष में हुआ और दाहिने पक्षमें एक अक्षौहिणी को लिये केकय नियत हुआ और द्रौपदी के पांचो पुत्र और महाबली अभिमन्यु पीछे की ओर हुए और उत्तम पराक्रमी श्रीमान् राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव भाइयों समेत व्यूहके पृष्ठभाग में शोभितहुए, तबभीमसेन ने मुखके मार्ग से उस कौरवों के मकर व्यूह में प्रवेश करके भीष्मजी को पाकर उस युद्ध में शायकों से ढकदिया, फिर पराक्रमी भीष्मजी ने भी बड़े अस्त्रोंको फेंका और बड़ायुद्ध करके पांडवों के व्यूहको मोहित करदिया, फिर सेनाके मोहित होजानेपर बड़ी शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने उस युद्ध भूमिमें आकर हजार बाणोंसे भीष्मजी को घायल किया, युद्ध में भीष्मजी के छोड़ेहुए बाणों के प्रहारको सहकर अपनी प्रसन्न सेना के साथ युद्धकरने को उपस्थित हुआ, इसके पीछे पराक्रमी राजादुर्य्योधन पूर्व्व दिनमें सेना समेत भाइयोंके मरणको देखकर द्रोणाचार्य्यजीसे बोला कि हे पापोंसे रहित आचार्य्यजी आप सदैव मेरा हित चाहने वालेहो, हमसब आपकी और भीष्मजी की रक्षामें होकर देवताओं कोभी निस्सन्देह युद्धमें विजय करसक्ते हैं, युद्धमें बल पराक्रम रहित पांडवोंको विजय करना कितनी बातहै आपका कल्याण हो आपवही कामकरो जिसमें पांडव मारे जायँ तदनन्तर आपके पुत्र के इसरीतिपर कहने से द्रोणाचार्य्य जीने सात्यिकीके देखते हुए पांडवों की सेनाको बाणों से भेदा, इसके पीछे हे भरतवंशी सात्यिकी ने द्रोणाचार्य्य को रोका फिरतो महाघोररूप युद्धहोनेलगा, फिर महाप्रतापी द्रोणाचार्य्य ने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर सात्यिकी को दश बाणों से शत्रुस्थानमें घायल किया इसके पीछे सात्यिकीकी रक्षाके निमित्त उसक्रोधरूप भीमसेनने द्रोणाचार्य्य जीको बाणों से वेधा फिर द्रोणाचार्य्य भीष्म और शल्य ने बड़े बाणोंसे

भीमसेन को ढक दिया, इसके पीछे महाक्रोध भरे अभिमन्यु और द्रुपद के पुत्रोंने उन सब शस्त्रधारियों को बड़े तीक्ष्ण बाणों से बेधा फिरमहाधनुषधारी शिखण्डी उनमहा क्रोधरूप अतुलपराक्रमी भीष्म और द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया, वहवीर शीघ्रही बादलके समान गर्जना करताबड़े भारी धनुषको लिये बाणोंसे सूर्य्यको ढककर तीव्रबाणोंकी बर्षाकरनेलगा, फिरभरतबंशियोंके पितामह भीष्मजी ने इसरीति से शिखण्डीको सन्मुख पाकर उसके स्त्रीभावको स्मरण करके उससे युद्ध करना त्याग किया, हे महाराज इसके पीछे आपके पुत्रके कहनेसे भीष्मजीकी रक्षाकरते हुए द्रोणाचार्य्यजी संग्रामभूमिमें उसके सन्मुख दौड़े ३० फिर भयभीत शिखण्डी ने उनमहाशस्त्रवेत्ता प्रलयकी अग्निके समान प्रकाशमान द्रोणाचार्य्य को अच्छीरीतिसे सन्मुखहोकर रोका, हे राजा इसके पीछे युद्धाभिलाषी आपके पुत्र ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी की रक्षाकरी, और इसी रीति से पांडव अर्जुन को आगे करके और बिजयमें दृढ़ बुद्धि होकर भीष्मजी के सन्मुख हुए, वह ऐसा महाघोर युद्ध हुआ जैसा कि देव और दानवोंका संग्राम होता है उस युद्ध में बिजयाभिलाषी शूरबीरों की बड़ी अपूर्व कीर्ति विख्यात हुई ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि आप के पुत्रों की रक्षा चाहनेवाले शांतनु भीष्मजी ने बड़ा कठिन युद्धकिया, वह बड़ा भारी युद्ध दिनके पूर्व्व भाग में पांडव और कौरवों के राजाओं का नाश करने वाला जारीहुआ, उस बड़े भयानक सब को ब्याकुल करनेवाले महा घोर युद्ध के जारी होनेपर आकाश को व्याप्त करने वाला महाघोर शब्द हुआ, और हाथियों की चिंहाड़ और घोड़ों के हिनहिनाटों से वह शब्द अत्यन्त कठोर होगया, फिर वह पराक्रमी शूरबीर विजयाभिलाषीहोकर परस्परमें युद्ध करतेहुए, ऐसे गर्जे जैसे कि गौओं की शालाओंमें बली बर्द गर्जना करतेहैं, हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ उस युद्धमें तीक्ष्ण बाणों से कटे हुए शिरों की ऐसी बृष्टि हुई जैसी कि आकाश से पाषाणों की बर्षा होती है और बड़े सुन्दर सुनहरी कुण्डल और मंडीलें पहरे हुए शिर पृथ्वीपर गिरे हुए दृष्टि गोचर हुए, विशिखों से भिंदे हुए अंग और कुण्डलधारी शिर और अनेक हाथों के भूषणों से पृथ्वी व्याप्त होकर गुप्तसी होगई, हे राजा अंगों में कवच विभूषित भुजाचन्द्रमा के समान मुख और लाल २ नेत्रों से, और हाथी घोड़े और मनुष्यों के सब अंगों से सब युद्धभूमि एक मुहूर्तमें ही भरकर पूर्ण होगई, धूलके कठिन बादलों में शस्त्ररूप बिजली

प्रकाशित थी और उन्हीं शस्त्रों के शब्द बादलकी गर्जना सी होती थी, हे राजा कौरव और पांडवों के वह शस्त्रोंका परस्पर प्रहार महा कठिन सहने के अयोग्य जारी हुआ जिसमें रुधिरकी नदी बह निकली, उस महा भयानक घोर तुमुलवाले रोमहर्षण युद्धमें दुर्मद क्षत्रियों ने बाणों के जालों को वरसाया, यहां वाणोंकी वर्षा से अत्यन्त पीड़ामान हाथी पुकारे और पाण्डवों के शूरवीर शस्त्रों से शोभित होकर चारों ओर से दौड़े, अत्यन्त कोपयुक्तपराक्रमी शूरवीरों के धनुषों के टंकार शब्दोंसे कुछभी नहीं जान पड़ता था, सब ओरसे जलरूप रुधिरके मध्यमें बिन शिर घोड़ोंके उड़ने पर शत्रुओं के मारने को उपस्थित दूसरे राजालोग चारोंओरको दौड़े, बड़ेतेजस्वी परिघ के समान भुजाधारी वीरोंने युद्ध में बाणबरछी गदा और खड्गों से परस्पर में एक को एकने मारा, और बाणोंसे घायल हाथी अंकुश के बिनाही इधर उधर घूमनेलगे और जिनके सवार मारेगये ऐसे घोड़ेभी दशों दिशाओं में दौड़ते फिरतेथे, और कोई वाणोंसे पीड़ित होकर उठ २ कर गिरते थे और आप के वा पांडवों के शूरवीर भ्रमण करने लगे १६ पृथ्वी पर गिरेहुए बाण बरछी गदा खड्ग और परिघ जांघ और हाथों से युक्त चरण भूषण समेत कपड़ोंकेतोदे भीमसेन और भीष्मजीके सन्मुख पड़ेहुए दृष्टिपड़ते हैं, हेराजा जहां तहां दौड़ते हुए घोड़े और लौटतेहुए हाथियोंके समूह दृष्टिगोचरहुए, वहां कालके प्रेरित क्षत्रियोंने गदा खड्ग प्रास और झुकेहुए पर्ववालेबाणोंसे एकने एक को परस्परमें मारडाला युद्धमें भुज बलकरने में कुशल शूरवीर लोहेके परिघ समान अपनी भुजाओं के द्वारा बहुत प्रकारसे बढ़े, हे राजा पांडवोंके साथ आपके शूरवीरोंने मुष्टिका जानुतल और कीलोंसे भीपरस्परमें घातकिया, और जहां तहां गिरे और गिराये हुए पृथ्वीपर चेष्टाकरने वाले शूरवीरोंसे युद्धभूमि महा भयकारी दीखने लगी, और रथी रथसे पृथक् अथवा उत्तम खड्गके धारणकरने वाले परस्पर घातके आकांक्षी एकएक के सन्मुख दौड़े, तदनन्तर बहुत से कलिङ्ग देशियों से युक्त राजा दुर्य्योधन युद्धमें भीष्मजीको आगे करके पाण्डवोंके सन्मुख वर्त्तमान हुआ, और इसी प्रकार युद्धमें क्रोधयुक्त शीघ्रगामी सवारियों वाले सब पाण्डव भीमसेन को मध्यमें करके भीष्मजी के सन्मुख दौड़े २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि भीष्मजी से युक्त भाइयों और अन्य बांधवों को देखकर अस्त्रधारी अर्जुन गांगेय भीष्म के सन्मुख दौड़ा फिर पांच जन्यशंख और

गांडीव धनुषका शब्द सुनकर और अर्जुनकी ध्वजा को देखकर हम सब लोगों में भय उत्पन्न हुआ, हे महाराज हमने गांडीव धनुषधारीकी उस ध्वजाको आकाशमें देखा जो सिंहलांगूलनाम आकाशमें प्रकाशित पर्व्वत समान वृक्षों में न रुकनेवाली ऊंचीउठी हुई अनेक रंगों से युक्त श्री हनुमान् जीके चिह्नसे अलंकृत थी, जैसे कि आकाशके बादलोंमें नियत शोभायमान बिजली दिखाई देतीहै उसी प्रकार शूरवीरों ने भारी युद्धमें उससुनहरी पृष्ठवाले गांडीवधनुष को देखा, फिर हमने इन्द्र के समान सन्मुख गर्जना करते और आपकी सेनाको मारतेहुए अर्जुनके तलोंके महाघोर शब्दों को बारंबारसुना, जैसे कठिन वायुयुक्त बादल बिजली और अभ्रकेसाथ होता है उसी प्रकार अर्जुन ने चारों ओर से बाणों की वर्षासे दिशाओं को चलायमानकर दिया, भयानक अस्त्रवाला अर्जुन भीष्मजी के सन्मुख दौड़ा उस समय हमने अस्त्रोंसे व्याकुलहोकर पूर्व्वादि दिशाओं कोभी नहीं पहचाना, हे भरतर्षभ आपके अचेत होने वाले शूरवीर जिनकी सवारी थकी और घोड़े मरे वा किसी दशामें नियत थे, वह सब परस्परमें मिलकर आपके पुत्रों समेत भीष्मजी केही आश्रयमेंहोतेथे और भीष्मजी उनकी रक्षा करते थे, भयभीत रथी अपने रथोंसे और सवार घोड़े की पीठसे और पदाती पृथ्वीसे अत्यन्त उछलते थे, हे भरतबंशी गांडीव धनुष के बज्रके समान शब्दों को सुनकर सेना के सब मनुष्यमारे भयके भागे, इसके पीछे राजा कलिंग बड़े शीघ्र गामी कांबोजदेशी वा उत्तमघोड़ों के द्वारा गोपायन नाम गोपों की असंख्य सेना युक्त (मद्र)(सौवीर) (गान्धार) त्रिगर्तदेशी और कलिंगों की उत्तमसेनाके शूरवीरों समेत,, नानाप्रकार की सेनाओंके समूहोंको साथ लिये जिनमें मुख्य दुश्शासन था और सबराजाओं समेत राजा जयद्रथ और आपके पुत्रके भेजे हुए चौदह हजार उत्तम अश्व सवार इन सबोंने चारोंओर से सौबल के पुत्रको मध्यमें करलिया, इसके पीछे उन सब पांडवोंने जिनके रथ और सवारियां बुद्धिके अनुसार विभाग युक्त थीं एक साथही आकर आप के शूरबीरों को मारा, रथी हाथी घोड़े और पदातियों से अच्छे प्रकार से चलायमान युद्ध भूमि बड़े बादलों के समान धूलि से महा भयकारी विदित हुई, भीष्मजी (तोमर) (प्रास) नाराच और हाथी घोड़े रथों से युद्ध करनेवाली शूर वीरों की सेना समेत अर्जुन से अत्यन्त लड़े राजा अवन्ती काशी के राजा के साथ और भीमसेन जयद्रथ के साथ और राजा युधिष्ठिर पुत्र और प्रधानों समेत मद्रदेश के राजा शल्य के साथ अत्यन्त शूरतासे लड़े और विकर्ण सहदेवसे चित्रसेन शिखंडीसे लड़नेलगा,, हे राजा मत्स्यदेशी शूरवीर दुर्योधन और शकुनी के साथ बड़े पराक्रमकरनेवाले हुए

और महारथी द्रुपद चेकितान और सात्यकी महात्मा द्रोणाचार्य्य और उनके पुत्रसे युद्ध करनेवाले हुए कृपाचार्य्य और कृतबर्मा दोनों धृष्टद्युम्नके सन्मुख दौड़े इसरीति से स्थान २ पर चारों ओर से ऐसे युद्ध होनेलगे कि जिन के घोड़े प्राणगत और हाथी रथ भ्रान्ति से युक्तहोगये हे राजा उस समय आकाशमें विनाही बादलोंके महातीव्र विद्युत्पात होनेलगा और दिशा धूल से आच्छादित होगई और महाउल्कापात होकर परस्पर में बड़े घोर शब्द प्रकट हुए,, महावायु चलनेलगा और धूलकी ऐसी अत्यन्त बर्षा हुई जिसके कारण सूर्य्य ढककर आकाशमें गुप्त होगया, धूलसे छुपा हुआ और अस्त्रों के जालों से लड़नेवाले सब जीवों को बड़ी अचेतता प्राप्तहुई, बीरों की भुजाओंसे छुटे सब पर्दोंके भेदन करनेवाले बाणोंके जालोंसे महाकठोर शब्द उत्पन्न हुए हे भरतर्षभ उत्तम भुजाओं से उठाये हुए निर्मल नक्षत्रों के समान प्रकाशमान शस्त्रों ने आकाश को प्रकाशित करदिया, और सब दिशाओं में उत्तम जड़ाऊ सुनहरी ढालें पृथ्वी पर गिरीं, सब रीतों से सूर्य्य रूप खड्गों से गिराये हुए शरीर और शिर सब ओर को पड़े हुए दिखाई दिये, जिनके पहिये अक्ष और नीढ़ें टूटगये थे और बड़ी २ ध्वजायें गिरपड़ी थीं वाघोड़े भी मर गये थे ऐसे बड़े २ रथ स्थान स्थान पर गिरे पड़े थे और कितनेही घोड़े शस्त्रों से घायल हुए पृथ्वी में चारों ओर घूमते थे हे भरतबंशी बाणों से घायल देहवाले उत्तम घोड़े जिन के अंगोंपर ईषा दण्ड बँधाथा उन्हों ने जुओंको स्थान स्थान पर खैंचा, उस युद्ध में कोई २ एकही बाण से सारथी घोड़े और रथ समेत मारे हुए शूरबीर दिखाई पड़े, सेना के समूहों के चढ़ाई होने पर बहुत से हाथियों ने हाथी के मद से निकली हुई गन्ध को सूंघकर वायु को भक्षण किया, और नाराचों से मारे हुए बड़े डील डौल वाले तोरनों समेत गिरे हुए मृतक हाथियों से युद्ध भूमि गुप्त होगई, फिर सेना के चलायमान होनेपर भगे हुए हाथियों से घायल हुए दूसरे हाथी अपने शूरबीर सवारों समेत सबओरसे पृथ्वीपर गिरे, हेमहाराज उसयुद्धमें गजराजके समान हाथियोंकी सूंड़ोंसे खिंचकररथोंके कूबर अत्यन्तटूटेहुए दिखाईपड़े, जिनकेरथों के जाल टूटे ऐसेरथी युद्धमें वृक्षकी डालीके समान शिरके बालोंमें हाथियों से खिंचकर और घायल होके फँसगये, और युद्धमें उत्तम हाथी रथोंमें चिपटे हुए रथोंको खैंचते सब हाथियों के शब्दोंपर चलतेहुए सब दिशाओंकोदौड़े, उन खैंचने वाले हाथियोंका रूप ऐसा शोभित हुआ जैसे कि तड़ागोंमें लगे हुएसुन्दर कमलों के खैंचने वाले हाथियोंका रूप शोभायमान होता है, वह युद्ध भूमि सवार पदाती और बड़े ध्वजावाले रथों से पूरित होगई, ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा शिखंडी ने मद्र के राजा विराट समेत बड़ी शीघ्रता से महारथी दुःप्रधर्ष भीष्मजी से सन्मुखताकरी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और राजा दुर्य्योधन के बहुतसे बड़े २ धनुषधारी महाबली शूरबीरों को मोहित किया, हे राजेन्द्र प्रधान और भाइयोंके साथ बड़े धनुषधारी राजा सिन्ध और पूर्वी पश्चिमीय वा आपके क्रोधीपुत्र और बड़े धनुषधारी दुर्य्योधन आदि अन्य अनेक राजओं के सन्मुख उस युद्धमें भीमसेन वर्त्तमान हुए, और महारथी सहदेव शकुनी और उलूक के सन्मुख हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रधर्ष पिता पुत्र भी सन्मुख वर्तमान हुए, और आपके पुत्र से ठगा हुआ महारथी युधिष्ठिर युद्धमें हाथियों की सेनाके सन्मुख वर्त्तमान हुआ, और युद्धमें गर्जने वाला माद्रीनन्दन बीर नकुल त्रिगर्त्त देशियों के बड़े रथों से युद्ध करने वाला हुआ, और अजेय महाबली सात्यकी वा चेकितान और अभिमन्यु यह तीनों शाल्व और केकय लोगोंसे युद्ध करने के लिये उपस्थित हुए और धृष्टकेतु वा घटोत्कच राक्षस युद्ध में आप के पुत्रों की रथवाली सेना के सन्मुख गये, हे राजा महारथी साहसी सेनापति धृष्टद्युम्न महाभयकारी कर्मकरता द्रोणाचार्य्यकेसन्मुख जाभिड़ा, इस प्रकार से आप के इतने धनुषधारी पराक्रमी शूरों ने पांडवोंके सन्मुख होकर प्रहारों को किया, दिवस में सूर्य्य के वर्त्तमान होने और आकाश में व्याकुलता होने पर कौरव और पांडवों ने परस्पर में मारना प्रारम्भ किया, और सुवर्ण जटित ध्वजा उस युद्ध में घूमने लगी और व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुए रथ और पताकाओं समेत महा शोभायुक्त हुए, युद्धमें भिड़ेहुए परस्पर विजयाभिलाषी सिंह के समान गर्जना करनेवाले शूरवीरों के महाकठोर शब्द होने लगे, वहां हमने बड़े भयानक उस अपूर्व प्रहार को देखा जिसको बड़े शूर वीर संजय लोगों ने कौरवों के साथ किया हे शत्रुहन्ता हम ने चारों ओरसे छोड़ेहुए बाणों के कारण आकाश सूर्य्य दिशा विदिशा आदि किसीको नहीं देखा, तीक्ष्णधार बरछी और छोड़ेहुए तोमर और विषयुक्त नीले कमल के समान खड्गों के और जड़ाऊ कवचोंके वा आभूषणों के प्रकाश ने आकाश दिशा विदिशाओं को प्रकाशित कर दिया हे राजा उस समय वह रणभूमि चंद्रमा सूर्य से प्रकाशमान मुखवाले राजाओं के शरीरों से शोभायमान हुई, हे राजा रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम युद्ध में जुटे हुए उस युद्ध में ऐसे शोभायमान विदित होते थे जैसे कि आकाश में ग्रहों समेत सूर्य चंद्रमा शोभा देते हैं, २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त महारथी भीष्मजी ने सब सेनाके

देखते उस महाबली भीमसेन को रोका और अपने तीक्ष्ण शिलापर घिसे हुए सुंदर प्रकाशित सुवर्ण पुंखवाले बाणोंसे उसके शरीर को घायल किया-हे भरतवंशी फिर उस महाबली भीमसेन ने शीघ्रगामी सूर्य्य के समान तीव्र बरछी को बड़े क्रोध करके भीष्म के ऊपर फेंका, फिर भीष्म ने उस सुनहरी दण्डवाली महा असह्य आकस्मात गिरनेवाली बरछी को अपने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से काटा, तदनन्तर अपने तीक्ष्ण पीतरंगवाले भल्ल से भीमसेन के धनुष को काटा इसके पीछे सात्यकी ने भीष्मजी के सन्मुख आकर बड़े वेग से कानोंतक खैंचे हुए तीक्ष्ण प्रकाशित बाणों से आप के पिता को मोहित कर दिया फिर भीष्मजी ने बड़े भयानक तीक्ष्ण बाणको चढ़ाकर सात्यकी के सारथी को रथ से गिराया, हे राजा सारथी के मरनेपर उसके घोड़े मन और वायुकी गति के समान इधर उधर दौड़ने लगे, इसके पीछे सम्पूर्ण सेना में कठिन शब्द प्रकटहुआ और महात्मा पाण्डवोंका हा हाकार उत्पन्न हुआ, चलो दौड़ो २ घोड़ों को थांमो २ यह कठोर शब्द केवल सात्यकी के रथ के विषय में हुआ फिर उसी समय शंतनु के पुत्र भीष्मजी ने पाण्डवों की सेनाको ऐसे मारा जैसे कि असुरों की सेनाको इंद्र मारता है, वह पांचाल देशी सोमकों समेत भीष्म के हाथ से घायल युद्ध में उत्तम बुद्धिको करके भीष्म के सन्मुख दौड़े और अग्रगामी धृष्टद्युम्न समेत पाण्डव भी आप के पुत्रकी सेना के मारने की इच्छासे उस भीष्म के संमुख दौड़े, हे राजा इसी प्रकार आपके भीष्म आदिक वीर भी पाण्डवों के सन्मुख बड़े वेगसे दौड़े और युद्ध होने लगा ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे राजा विराट ने तीन बाणों से महारथी भीष्म को मोहित किया और भीष्म ने अपने तीन बाणों से उसके घोड़ों को घायल करके अपने तीक्ष्ण दश बाणों से उसको घायल किया और बड़े धनुषधारी महारथी दृढ़हस्त अश्वत्थामा ने छः बाणों से अर्जुन की छाती को घायल किया फिर शत्रुओं के मारनेवाले और बलसे हीन करनेवाले अर्जुनने उसके धनुष को काटकर बड़े तीव्र बाणों से उसको घायल किया ३ हे राजा उस वेगवान् क्रोध से मूर्च्छित युद्ध में अर्जुन के हाथ से टूटेहुये धनुष को असह्य मानकर अश्वत्थामा ने दूसरे धनुष को लेकर, नौ तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को घायल किया और सत्तर तेज बाणों से वासुदेवजी को घायल किया, इसके पीछे श्रीकृष्णजी समेत क्रोध से लाल नेत्र अर्जुन

ने बड़ी लम्बी उष्ण श्वासें लेकर बारम्बार बड़ी चिन्ता युक्त होकर बाम हाथ से गांडीव धनुष को बहुतसा दबाकर गुप्तग्रन्थी युक्त जीवनके नाश करने वाले भयानक शिलीमुख नाम बाणों को धनुष पर चढ़ाया और बड़ी शीघ्रता से उन बाणों के द्वारा अश्वत्थामा को घायल किया, उन बाणों ने युद्ध में उसके कवच को काटकर उसके रुधिर को पान किया फिर अर्जुनसे घायल किया हुआ पीड़ामान अश्वत्थामाभी उसी रीतिके अर्जुन को बाण मारताहुआ और महाव्रत भीष्मजीकी रक्षाकरता हुआ बड़े धैर्य्यसे युद्धमें नियतरहा, उसके उसमहाकर्मको देखकर कौरवों ने बड़ी प्रशंसाकरी जो युद्धमें श्रीकृष्ण के सन्मुख दौड़ा, और द्रोणाचार्य्य से अतिदुःप्राप्य संहार समेत अस्त्र समूहों को पाकर भयभीत सेना में युद्ध करने वाले शत्रुसंतापी वीर अर्जुन ने इसबात को बिचार करके कि यहमेरे गुरूका पुत्र गुरूको अत्यन्त प्यारा और मुख्यकर ब्राह्मण होकर मेरापूजनीयहै उसको अबध्यजानकर नहीं मारा, इसके पीछेश्वेत अश्ववाला शीघ्रकर्मी अर्जुन युद्धमें अश्वत्थामा को छोड़कर आपके शूरबीरों को मारताहुआ युद्धमें प्रवृत्तहुआ, फिर दुर्य्योधन ने गृध्रपक्ष युक्त सुनहरी पुंखशिलापर तीक्ष्ण कियेहुए दश बाणोंसे बड़े बली धनुष धारी भीमसेन को घायल किया, तब अत्यन्त कोपित भीमसेनने मृत्यु कारक रत्नोंसे जटित बड़े दृढ़ धनुष को हाथ में लिया और दश तीक्ष्णबाणों को चढ़ाकर बड़ी शीघ्रतासे अधिक खैंच कर राजा दुर्य्योधनको छाती में घायल किया, उसकी सुवर्णित सूत्र से बँधी हुई छाती की मणि बाणों से संयुक्त होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाशमें ग्रहोंसे व्याप्त सूर्य्य होताहै, २० फिर भीमसेन से घायल आपके तेजस्वी पुत्रने ऐसे नहीं सहा जैसे कि हाथ की हथेली के शब्द से जागाहुआ सर्प शान्तनहीं होता है, हे महाराज सेनाकी रक्षा करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधन ने सुनहरी पुंखके पैनेकिये हुए बाणों से भीमसेन को घायल किया, फिर आपके वह दोनों महाबली पुत्र युद्धमें लड़ते और परस्परघायल करते देवताओंके समान शोभायमान हुए, और नरोत्तम शत्रुहन्ता अभिमन्युने सात तीक्ष्णबाणों से चित्रसेन और पुरुमित्रको घायलकिया फिर युद्धमें नृत्यकरते इन्द्रकेसमान पराक्रमी अभिमन्युने सत्तरबाणों से सत्यव्रतको घायल करके हम लोगोंको पीड़ित किया, चित्रसेनने शिलीमुख नाम दशबाणोंसे और सत्यव्रतने नव बाणों से पुत्र मित्रने सातबाणों से उसको घायल किया, उस घायल और रुधिर को डालने वाले अभिमन्युने चित्रसेनके उस जड़ाऊ शत्रुओंके हटाने वाले बड़े धनुषको काटा, और बाणही से उसके कवचको काटकर छाती में घायल किया फिर आपके उन महाबली राजकुमारोंने और महारथियोंनेभी

अपने तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया फिर उस महाअस्त्रज्ञने उन सबकोभी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया, फिर युद्धमें महाक्रुद्धके समान आपके वीरोंके जलाने वाले उस अभिमन्यु के उस कर्मको आपके पुत्रों ने देखकर उसको चारों ओर से घेरलिया, ३० चैत्र बैशाखकी तीव्र अग्नि के समान अभिमन्यु आपकी सेना को नाश करता बड़ा शोभित हुआ, हे राजा आपका पौत्र लक्ष्मण उस चरित्र को देखकर शीघ्रही अभिमन्यु के सन्मुख आनभिड़ा, फिर अत्यन्त कोपित अभिमन्युने शुभ लक्षण वाले लक्ष्मणको छः विशिखोंसे और सारथी को तीनबाणों से पीड़ामान किया, ३३ हे महाराज धृतराष्ट्र उसी प्रकारसे लक्ष्मणने भी अपने बाणोंसे अभिमन्यु को ऐसा घायल किया जिसके देखने से आश्चर्य्यसा होताहै, फिर महारथी अभिमन्यु उस के चारों घोड़ों को सारथी समेत मार कर लक्ष्मण के सन्मुख दौड़ा, फिर वह मृतक घोड़ों के रथपर नियत शत्रु के वीरों के मारनेवाले अत्यन्त क्रोधित लक्ष्मणने अभिमन्यु के रथपर बरछीको फेंका, अभिमन्युने उसभयानक रूप असह्यसर्पाकृति आनेवाली बरछी को अपने तीव्रबाणों से काटा, फिर कृपाचार्य्य जी लक्ष्मण को अपने रथपर बैठाकर सबसेना के देखते हुए उसको रथके द्वारा दूर लेगये, फिर बड़े भयकारी तुमुल युद्धके वर्त्तमान होनेपर परस्पर विजयाभिलाषी शूरवीर एक एकको मारतेहुए सन्मुख दौड़े, आपके बड़े धनुषधारी महारथी पांडव युद्धमें प्राणोंको होमते हुए परस्पर में मारने लगे फिर छुटे बालकवचरहित टूटे धनुष सृंजी लोग अपनी भुजाओं से कौरवों से अत्यन्त युद्ध करने वाले हुए, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी ने बड़े क्रोध युक्त होकर अपने दिव्यअस्त्रों से महात्मा पांडवोंकी सेनाको मारा, उस समय बिनास्वामी के हाथी मनुष्य घोड़ों के वा रथी और अश्वारूढ़ों के गिरने से युद्धभूमि अत्यन्त व्याप्त होगई ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणित्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा फिर युद्धमें दुर्मद महाबाहु सात्यकी ने अपने उग्र धनुषको खेंचकर, अपनी हस्तलाघवता को दिखाते सपुंख सर्पाकृति तीक्ष्ण बाणों को छोड़ा और बड़ी शीघ्रता से अनेक बाणों को फेंकते शत्रुओं को मारते हुए सात्यकी का ऐसा रूप दिखाई दिया जैसे कि अत्यन्त बरसते हुए बादलका रूप दिखाई देता है, फिर राजा दुर्य्योधन ने उस गर्जने वाले सात्यकीको देखकर उसके ऊपर दशहजार रथियोंको भेजा, फिरसत्य विक्रम महाबली उग्रधनुषधारी सात्यकी ने अपने दिव्यास्त्रों से उन बड़े २

धनुष धारियों को मारा, फिर इसवीर धनुषधारी ने महा कठिन कर्मको कर के भूरिश्रवा को सन्मुख पाया, वह कौरवों की कीर्त्ति का बढ़ाने वाला भूरिश्रवा उस सेनाको सात्यकी के हाथ से पीड़ित देखकर बड़ाक्रोध युक्तहो के सन्मुख दौड़ा, हे राजा उसनेभी अपनी हस्तलाघवता को दिखाकरइन्द्र बज्रके समान धनुष को टंकारकर सर्पों के समान बज्रके सदृश हजारों बाणों को छोड़ा, और सात्यकी के साथी शूर वीर उनमृत्यु के समान स्पर्शवाले बाणों को नहींसहसके और सब उसदुर्मद सात्यकी को युद्ध में अकेलाही छोड़कर चारों ओर को भागे फिर सात्यकी बड़े धनुष धारी महारथी कवचों से शोभित दश पुत्रों ने उस सेना को भागता देखकर महाक्रोधित होके उस यूपध्वज बड़े धनुषधारी भूरिश्रवाके सन्मुखहोकर बोले, हे कौरवों के प्यारे पुत्र महाबली आओ और युद्धमें हमसबों के साथ अथवा जुदे २ के साथ युद्ध को करो, तुमसंग्राममें हमको बिजय करके कीर्त्तिवान्होगे अथवा हम तुमको बिजय करके पिताको आनन्ददेंगे, तबउन शूरवीरों से ऐसा कहा हुआ अपने बलसे प्रशंसा पाने वाला नरोत्तम महाबली भूरिश्रवा उनको सन्मुख नियत देखकर बोला, १६ हे वीरलोगो यह बहुत उत्तम है जो अब तुम्हारी ऐसीही इच्छा है तो तुम सब इकट्ठे होकर लड़ो मैं युद्ध में तुम सब उपाय करने वालों को मारूंगा, ऐसे परस्पर कहकर बड़े धनुषधारी शीघ्रता करने वाले शत्रुओं के पराजय करने वाले उन वीरों ने बाणों की बर्षाचारों ओर से मचादी, हे महाराज तीसरे पहर तक एक का बहुतों के साथ महा युद्ध हुआ, फिर इन सबोंने उस रथियों में श्रेष्ठ अकेले को बाणों से ढककर ऐसा सींचा जैसा कि बर्षा ऋतु में सुमेरु पर्ब्बत को बादल सींचते हैं, उस भ्रान्ति रहित महारथी ने उन सबों के छोड़े हुए यमदण्ड वा इन्द्र बज्र के समान प्रकाशित बाणसमूहों को बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक मार्ग में ही काटा, हे राजा हमने वहां पर सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा के अद्भुत पराक्रम को देखा कि जो अकेलाही निर्भयके समान अनेकों से लड़ा, दश महारथियों ने बाणों की बर्षा को छोड़ कर उस महाबाहुको चारों ओर से घेरकर मारने का बिचार किया, हे भरतर्षभ तब तो महारथी भूरिश्रवा ने अत्यन्त कोपयुक्त होकर एक निमिषही में अपने दश बाणों से उनके दशों धनुषों को काटा, तदनन्तर इन टूटे धनुषवाले वीरोंके शिरों को अपने गुप्तग्रन्थी वाले भल्लों से काटडाला, वह मरकर पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे कि बज्रसे टूटे हुएवृक्ष पृथ्वी पर गिरते हैं, हे राजा युद्धमें मरेहुए महाबली वीर पुत्रों को देखकर, बड़ी गर्जना करताहुआ सात्यकी भूरिश्रवा के सन्मुख गया और दोनों महाबली युद्धमें रथसे रथको टक्कर देकर रथोंके घोड़ोंको परस्पर मार बिरथ

होके सन्मुख गर्जतेहुए द्वन्द्व युद्ध करने लगे, फिर वह बड़े २ खड्ग और ढालोंको धारण किये हुए युद्ध में प्रवृत्त महा शोभायमान हुए, हे राजाइस के पीछे भीमसेन ने उत्तम खड्ग धारी सात्यकी के पास आकर उसको रथपर सवार किया, फिर आप के पुत्र ने भी सब धनुष धारियों के देखते हुए शीघ्रही भूरिश्रवाको रथपर सवार किया, हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इस प्रकार से उस युद्ध के प्रवृत्त होनेपर महा क्रोधित पांडव और भीष्म जी भी युद्ध में प्रवृत्तहुए, सूर्य्य के अरुणहोने पर बड़ी शीघ्रता करने वाले अर्जुन ने पच्चीस हजार महारथियों को मारा, फिर वह दुर्योधन की आज्ञा से अर्जुन के मारने की इच्छा में अर्जुन को नपाकरही ऐसे नष्ट होगये जैसे कि अग्नि में टीड़ी भस्म होजाती हैं, इस पीछे धनुर्वेद में पंडित मत्स्य और केकयों ने आकर पुत्रसमेत अर्जुनकी चारों ओर से रक्षाकरी फिर अच्छे प्रकारसे उठीहुई धूल के बादलों से सूर्य्यास्तसा होगया उससमय सूर्यास्तके कारण सेना में बड़ा मोह उत्पन्न हुआ, इस के पीछे हे महाराज, आपके पिता देवव्रत जिनके घोड़े थकेहुए थे उन भीष्मजी ने सायंकाल के समय सेनाको विश्राम दिया, पांडव और कौरवों के परस्पर युद्ध से अत्यंत व्याकुल वह दोनों ओर की सेना अपने २ निवासस्थान को गईं, इस के पीछे सृंजयों समेत पांडव और कौरव बुद्धिके अनुसार अपने२ डेरोंमें जाकर स्थित हुए २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पिछहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा फिर वह कौरव पांडव रात्रि को व्यतीत करके प्रातः कालही युद्ध करने को चले, इसके पीछे उन पांडवों के और आप के पुत्रों के उत्तम रथों के जुड़ते हुए घोड़ों के महा शब्द होने लगे और सब ओरसे शंख वा दुन्दुभियों के कठिन शब्द भी सुनाई दिये तब राजा युधिष्ठिरने धृष्ट द्युम्न से कहा कि हेमहाबाहु तुम मकरव्यूहको तैयार करो वह व्यूह शत्रुओं का संतप्त करनेवाला है, युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही उस महारथी धृष्टद्युम्न ने रथी शूरवीरों को आज्ञा करी, उस व्यूहका शिर तो राजा द्रुपद और अर्जुन हुआ और नेत्रमें महारथी नकुल और सहदेव हुए, ६ और मुखमें महा बली भीमसेन हुआ और व्यूहकी ग्रीवा में (अभिमन्यु) (द्रौपदी के पांचो पुत्र) (घटोत्कच राक्षस) (सात्यकी) और (धर्मराज) हुए, और पीठ पर बड़ी सेना युक्त सेनापति धृष्टद्युम्न और विराट उपस्थित हुए और बाम भागमें पांचो भाई केकयवर्त्तमान हुए, और नरोत्तम धृष्टकेतु और पराक्रमी

चेकितान दक्षिण पक्षमें नियत होकर व्यूहके दक्षिण ओर नियत हुए और हे राजा बड़ी सेना समेत श्रीमान् महारथी कुन्तभोज और सतानीक व्यूहके चरणों पर स्थिर हुए, फिर बड़ा धनुषधारी बलवान् शिखंडीसोमकों समेत और राजा इरावान् उस मकर व्यूहकी पूंछपर नियत हुए, इस रीति से मकर व्यूहको रचकर सूर्य्य के उदय होनेपर सब पांडव फिर युद्ध करने को शस्त्र-धारी होकर उपस्थित हुए और रथ हाथी घोड़ और बड़ी ऊंची ध्वजा वाले क्षत्रियों से युक्त सब प्रकार के स्वच्छ अस्त्रों समेत कौरवों के सन्मुख गये,हे धृतराष्ट्र आपके पिता भीष्मजी ने उस अलंकृत सेनाको देखकर अपनी सेनाको भी क्रौंच नाम बड़े व्यूहमें बड़ी रचनासे बनाया, उसके मुखपर बड़े धनुर्द्धर द्रोणाचार्य और नेत्रोंपर अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य हुए और शिर की ओर (कृतबर्मा) (बाल्हीक) और (काम्बोज) वाले हुए, और ग्रीवा में सब राजाओं समेत आपका पुत्र दुर्योधन और शूरसेन नियत हुए, और बड़ी सेनासमेत राजा प्राग्ज्योतिष भद्र और केकयोंसमेत सौबीर छातीपर नियतहुआ और प्रस्थल देशका राजा सुशर्मा अपनी सेनासमेत बायें भाग में शस्त्रों को धारण करके नियत हुआ। २० और तुषारयवन और शक चोल्कों समेत व्यूहके दाहिने भाग में बड़ी सावधानी से वर्त्तमान हुए, और श्रुतायु शतायु (सोमदत्त) मारिष यह सब व्यूहकी जंघापर रक्षा करनेवाले हुए इस के पीछे हे राजा सूर्य्यके उदय होने पर पाण्डव कौरवोंके समूह युद्धके निमित्त चले फिर युद्धहोना प्रारम्भ हुआ, हाथी रथियों के सन्मुख गये और रथी हाथियों के सन्मुख हुए अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के और रथी अश्वारूढ़ों के और अश्वारूढ़ घोड़ों के सन्मुख पहुँचे और हाथी हाथी के सवारों से और रथी रथियों के सन्मुख उपस्थित हुए हे राजा रथी और अश्वारूढ़ पत्तियों से युद्ध करने लगे और युद्धमें महा क्रोधित होकर परस्पर सन्मुख दौड़े, और भीमसेन अर्जुन और नकुल वा सहदेव यहसब अन्य महारथियोंसेरक्षित होकर ऐसी बड़ी शोभा को प्राप्तहुए जैसी कि नक्षत्रों से रात्रिकी शोभा होती है, इसी प्रकार आपकी सेना भी (भीष्म) (कृपाचार्य्य) (द्रोणाचार्य्य) (शल्य) और दुर्य्योधन से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि ग्रहों से भराहुआ आकाश शोभित होता है, फिर कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन द्रोणाचार्य्य को देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से उनकी सेना के सन्मुख गया, फिर युद्ध में क्रोधित पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने मर्म स्थलों को ताककर नौ लोहे के बाणों से भीमसेन को घायल किया ३० तदनन्तर उस युद्ध में द्रोणाचार्य्य से बहुत घायल हुए भीमसेन ने उनके सारथी को मारा, फिर उस प्रतापी द्रोणाचार्य्यजी ने आप घोड़ों को पकड़कर पांडवों की सेना

का ऐसा विध्वंस किया जैसे कि अग्नि रुई को भस्म करता है, हे नरोत्तम द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी से घायल होकर वह संजय केकयों समेत भाग गये, इसी प्रकार भीमसेन और अर्जुन से भयभीत आपकी भी घायल सेना जहां तहां ऐसे भागी जैसे कि मतवाली श्रेष्ठ स्त्री जहां तहां भागती है, हे भरतवंशी इसके पीछे उस उत्तम वीरों के नाश में दोनों व्यूह भिन्न भिन्न होगये और आपके पुत्रों को और पांडवोंको महाघोर दुःख हुआ हे राजा हमने आपके पुत्रों का शत्रुओं के साथ वह आश्चर्य्य देखा जो एक स्थान पर वर्त्तमान होकर सब युद्ध में प्रवृत्तहुए वह कौरव पांडव उस महायुद्ध में परस्पर अस्त्रोंको प्रहार करके युद्ध करतेहुए ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥

छहत्तरवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय यह सेनाबहुगुण संपन्न अनेक प्रकार के शास्त्रके अनुसार अलंकृत और युद्ध में सफल है, और हमारी सेना भी सदैवप्रसन्न सफल रूप और उदारहै जिसका कि पराक्रम प्रारंभसेही देखाजाता है, न बहुत वृद्धा न बालक न दुर्बल न पुष्ट है किन्तु हस्तलाघवता आदि उपायों में कुशल अत्यन्त दृढ़अंग वाली और नीरोगहै, कवच और शस्त्रोंकी धारण करनेवाली अनेक शस्त्र समूहों से पूर्ण भुजा खड्ग गदा इत्यादि से युक्त लड़ाई में बड़ी तीव्रहै, (प्रास)(दुधाराखड्ग)(तोमर) (परिघ)(लोहेके भिन्दपाल)(बरछी) (मूसल) (कंपनधनुष) (कनप) इत्यादि शस्त्रोंमें और उनके चलाने आदिकी अनेक अद्भुततामें वा मदोन्मत्तता के युद्धोंमें संग्रामभूमिपर नियतहोकर सबप्रकारसे योग्य, विद्याओंमें पूर्ण अथवामल्ल युद्धमें प्रबल शस्त्र विद्याके ज्ञाता सब विद्याओंमें पंडित, सवारहोने वा डेरेमें रहने वा चलने वा दोनोंके अन्तरसे चलने वा शस्त्र चलाने वा चढ़ाईकरने वा समय देखकर हटजानेमें बड़े कुशल बुद्धि, हाथी घोड़े और रथोंकी सवारियों में बहुधा परीक्षा कियेहुए और परीक्षालेकर न्यायकेअनुसार मासिक आदि वेतन के योग्य हैं, और सभाउपकार नातेदारी और मित्रोंके और कुटुम्बियों के बल और सामानों के कारण अधिकार नहीं पाने वाले हैं,, बुद्धियुक्त वा उत्तम मनुष्य जिन में बांधव प्रसन्न और प्रतिष्ठा वान हैंऔर बहुत उपकारी यशस्वी साहसी वेगवान उत्तम कर्मी लोकपालों के समान संसार में प्रसिद्ध मनुष्यों से पोषित अपनी इच्छा से सेना समेत पीछे चलनेवाले बहुत से क्षत्रियों को लेकर हमारे समीप आने वाले चारों ओर से समुद्रके समान उमगते हाथी रथघोड़ों समेत अनेक शूरवीरों से शोभित बड़े भयानक क्षेप

खड्ग गदाबरछी बाणपरशु इत्यादि अनेक शस्त्रों से अलंकृत रत्नजटित रेशमी वस्त्रों से मंडित अनेक ध्वजाओं समेत चारों ओरको दौड़नेवाली सवारियों में बैठे समुद्र के समान गर्जनेवाले द्रोणाचार्य्य और भीष्म से रक्षित कृतवर्मा, कृपाचार्य्य, दुश्शासन जयद्रथ भगदत्त बिकर्ण अश्वत्थामा शकुनि बाह्लीक इनबड़े २ वीरों से और महात्माओं से रक्षित जो सेनायुद्ध में मारी गई इसमें होनहारही प्रबलहै, हे संजय पृथ्वीपर ऐसे युद्धको बड़े २ ऋषिमुनि और महात्मा मनुष्यों ने भी कभी नहीं देखा २० शास्त्रधन लक्ष्मी से युक्त ऐसा सेनाका समूहभी जिस युद्धमें मारा जाता है वहां प्रारब्ध के सिवाय क्या समझना चाहिये, हे संजय यहसब विपरीत दृष्टपड़ता है कि जहां ऐसीभयानक सेनाने युद्ध में पांडवोंको नहीं जीता, हे संजय वहां पांडवों के निमित्त देवतातो आनकर हमारी सेना से नहीं लड़ते हैं कि इतनी प्रबल सेना घायलहो जातीहै, इसस्थान पर सदैव हितकारी फल दा-यक बचन विदुरजीने कहा है परन्तु मेरा अभागा बेटा दुर्योधन उस बचन को नहीं मानता है मैं मानता हूं क्योंकि उस सर्वज्ञ महात्मा विदुरका पह-ला कहा हुआ अबसत्य हुआ हे तात उसने पूर्वही ऐसा देखाथा, हेसंज-य इस प्रकार की होनहार को उसने पूर्वही देख लिया कि ईश्वरको अब ऐसा करना है इसके विपरीत कभी नहीं होसक्ता २६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

संजयबोले हे राजा तुम ने अपने दोषसे ऐसे दुःखों को पाया हे भरत-र्षभ इसको दुर्योधन नहीं देखता है, हेराजा जिनको तुम ने देखा है वह सब धर्म को अधर्म से मिलानेवाले हैं हे राजा पूर्व समय में आपही के दोष से यहजुवां जारी हुआ, आपके ही दोष से पांडवों से युद्ध प्रारंभ हुआ, और अब तुमहीं अपने पापको करके उसके फलको भोगो, आपने ही कर्म कि-या है इसका फल इसलोक में वा परलोक में आपही को भोगना पड़ेगा हे राजा जैसा तुमने कियाथा वैसाही फलभी ठीकपाया, इस से हे धृतराष्ट्र तुम चित्त को समाधान करके इसमहादुःख को पाकर इसयुद्ध होने का कारण मुझसे सुनो, तदनन्तर वीर भीमसेनने बड़े तीक्ष्ण बाणों से आप की बड़ी सेनाको चलायमान करके दुर्योधन के इनसब भाइयों को सन्मुख पाया, (दुश्शासन) (दुर्विषह)(दुःसह) दुर्मद जयसेन विकर्ण चित्रसेन सुदर्शन चारुमित्र सुवर्माण दुष्कर्ण कर्ण इनके सिवाय और बहुत से रथ में चढ़े समीपी महारथी इनसबको महाक्रोध रूप महाबली भीमसेन देखकर

युद्धमें भीष्मजीसे रक्षित बड़ीउग्र सेनामें घुसगया,, इससेनामें घुसेहुए भीम-
सेनको देखकर वहसब बोले कि हेराजाओ हमसब इसको जीताही पकड़ें, जै-
से कि संसारके नाश करने में सूर्य्य बड़े २ क्रूर ग्रहों से घिराहुआ होता है
इसी प्रकार यह भीमसेन इन निश्चय करनेवाले भाइयों से घिराहुआ वर्त्त-
मान हुआ, सेना के मध्यमें भी जाकर इसको ऐसे भय नहीं हुआ जैसे कि
महाइन्द्र देवता असुरोंके युद्ध में दानवोंको पाकर भयभीत नहीं होता है,
तदनन्तरघोर बाणोंके समूहोंको फेंकतेहुए एकलाख शस्त्रधारी रथियोंने इस
अकेलेको घेरलिया,धृतराष्ट्रके पुत्रोंको ध्याननकरके उसमहाबलीने उससेना
के बड़े जंगी हाथी घोड़े रथऔरसवारोंको मारा, हेराजा पकड़नेके इच्छावान
उनलोगों को जानकर उस पराक्रमी भीमसेनने सबके मारने को मनोरथ
किया, और रथ को त्यागकर गदाहाथ में लेके उन आपके पुत्रों समेत
सेनाके महा समूहको मारा, फिरसेनामें भीमसेन के प्रवेश करनेपर पर्षतका
पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य को छोड़कर बड़ीशीघ्रता से वहां गया जहां श-
कुनी वर्त्तमान था, उसनरोत्तम ने युद्ध में आपके पुत्रकी बड़ी सेनाको हटा
कर भीमसेनके रथको पाया, हे महाराज वहां भीमसेन के विशोकनाम
सारथी को देखकर बड़ाखिन्न चित्त अचेतहो अश्रुपात युक्त गदग-
द कण्ठसे महादुःखित श्वासालेकर धृष्टद्युम्न बोला औरपूछा कि मेरे प्राणों
से भी प्रियतम भीमसेन कहां है,, यहसुनकर हाथजोड़कर विशोक धृष्टद्युम्न
से बोला कि महाबली भीमसेन मुझको यहां नियत करके, अकेलाही धृत-
राष्ट्र के पुत्रों की असंख्य समुद्र रूपी सेना में घुसाहै और मुझसे ऐसे प्रीति
पूर्व्वक वचन कहकर गये हैं कि हे सूत तुम घोड़ों को एक मुहूर्त्त तक थां-
भ के मेरी बाट देख मैं इन के मारने को जाता हूं जो कि मेरे मारने की
इच्छा कररहे हैं, सो गदाहाथ में लिये उसमहाबली को दौड़ता देखकरसब
सेना में बड़ी प्रसन्नता हुई, हे राजा उसबड़े भयकारी तुमुल युद्धके वर्त्तमा-
न होने पर आपका मित्र बड़ी सेनाके व्यूहको हटाकर प्रवेश करगया
है यह विशोक के वचन सुनकर वह महाबली धृष्टद्युम्न जी उससूत से यह
वचन बोला, कि पाण्डवों के साथ प्रीति करके और भीमसेन को
युद्धमें छोड़कर अबजीवनसे मुझको कुछ प्रयोजन नहींहै मैंभी बिना भीम-
सेनके कभी न जाऊंगा क्योंकि भीमसेन के बिना जाऊंगा तो मुझको
सबक्षत्री क्या कहैंगे युद्ध में भीमसेन के एक ओर जाने और मेरेनियतहोने
पर इन्द्रसमेत सब देवता उनके अकल्याणको करतेहैं जो सहायकोंको त्याग
कर जीतघरको जातेहैं, हे शत्रुहन्ता वह महाबली भीमसेन मेरामित्र नातेदार
और परमभक्तहै और मैंभी उसमेंभक्ति रखनेवालाहूं, सो हे सूत मैंभी वहीं

जाऊंगा जहां भीमसेन गया है मुझकोभी तू देखकिमैं शत्रुओंको कैसामार ता हूं जैसे कि इन्द्रदानवोंको मारताहै, हे राजा ऐसाकहकर वह महाबलीभी मसेन के मध्यमें गदासे मारेहुए हाथियों से उत्पन्न भीमसेन के मार्गों में होकर चला वहां उसने शत्रुओंको भस्म करते और जैसे कि वायु वृक्षोंको काटताहै उसी प्रकार युद्धमें राजाओं को छिन्न भिन्न करते हुए भीमसेन को देखा,युद्ध में भीमसेनसे घायल और पीड़ितरथी सवार पदाती और हाथियोंने महाभय-भीत और पीड़ामान होकर घोर शब्द किया, हे राजा आपकी सेनामें बड़ा हाहाकार उत्पन्नहुआ और यह शब्द पुकारने लगे कि सावधानहो अपूर्व युद्ध करने वाले भीमसेन के हाथसे सेना नाशहुई जातीहै, इसके पीछे बड़े निर्भय अस्त्रों के ज्ञाता उनवीरों ने भीमसेन को चारों ओर से घेरकर सब ओर से अस्त्रों की वर्षाकरी,फिर बलवान धृष्टद्युम्न बड़ी मिलीहुई घोरसेना से सन्मुख हुए महाबली लोकमें प्रसिद्ध भीमसेन को देखकर, उसके पासगया और बाणों से छिदे हुए क्रोधरूप विषको उगलते प्रलयके काल पुरुषकी समान गदा लिये हुए भीमसेन को बिश्वास कराया, फिर उस महात्मा ने बहुत शीघ्रही उसको बाणों से छुटाया और अपने रथपर सवार किया और शत्रुओं के मध्यमेंही अच्छे प्रकार मिलकर विश्वास कराया, इस के पीछे आपका बेटाभी उस युद्धमें अकस्मात भाइयोंसे मिलकर बोला कि यहद्रुपद का बेटा निर्बुद्धी भीमसेन के साथमें सन्मुख आया है इस के मारने को हम सब एक साथही चलें क्यों कि हमारा शत्रु होके हमारी सेना में न मिले इसके पीछे वह क्रोधी पुत्र अपने भाई दुर्योधन के इस बचन को सुनकर और आज्ञामान कर शस्त्रों को लेकर उसके मारने को ऐसे दौड़े जैसे कि प्रलयकालमें पूंछलतारे अर्थात् वह वीर रत्नजटित धनुषधारी कवच पहरे रथ के पहियों की ध्वनि से सबको कम्पायमान करते हुए, बाणों से द्रुपद के पुत्रपर ऐसी बर्षा करने लगे जैसे कि बादल पानी की झड़ियों से पर्वतपर बर्षा करते हैं उस समय वह अपूर्व युद्ध करने वाला धृष्टद्युम्न अपने तीक्ष्ण बाणों से उनको पीड़ामान करने पर भी आप पीडा युक्त नहीं हुआ, और बड़े साहसी आपके शूरवीर पुत्रों को देखकर युद्धमें नियत हुआ फिर उस द्रुपदपुत्रके महारथी मारने की इच्छा करने वालेने प्रमोहननाम बड़े भया-नक अस्त्रको प्रयोग किया और आपके पुत्रों पर ऐसा अत्यन्त क्रोधित हुआ जैसे कि इन्द्रयुद्ध में दैत्योंपर क्रोधित होताहै फिर वह सब आप के वीर युद्धमें परशुओं और अस्त्रों से घायल होकर बड़े अचेत होगये फिर आपके पुत्रों को कालफांस में फँसेहुए अचेतरूप देखकर सब कौरव घोड़े और रथों के साथ घोर शब्द करते हुए चारों ओर से भागे उस समय शस्त्र

धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजी ने धृष्टद्युम्न को पाकर तीन उग्रबाणों से पीड़ित किया, हे राजा तब वह राजा द्रुपद द्रोणाचार्य्य से अत्यन्त घायल पूर्व की शत्रुता को स्मरण करके हटगया, ४७ प्रतापवान द्रोणाचार्य्य ने द्रुपद को जीतकर शंखको बजाया उनके शंखके शब्दको सुनकर सब भयभीत हुए, इसकेपीछे महाशस्त्रवेत्ता द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें आपके पुत्रोंको प्रमोहन अस्त्रसे अचेतहोना सुना और बड़ी शीघ्रतासे संग्राम भूमिसे उनके पासआये वहां प्रबल युद्धमें संग्राम करते हुए धृष्टद्युम्न और भीष्मजी को देखा और आपके पुत्रोंकोभी मोहसे महा अचेतदेखा,, फिर उन्हों ने प्रज्ञा अस्त्रको लेकर मोहन अस्त्रको काटा, इस के पीछे आप के महारथी पुत्रों के प्राण फिर लौट आये, फिर युद्धमें लड़नेके लिये भीमसेन और धृष्टद्युम्नके संमुख गये इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनीसेनाके मनुष्योंसे बोले कि तुम अपनीसामर्थ्य से संग्राम भूमि में भीमसेन और धृष्टद्युम्नके मार्गमें जाओ तुम अभिमन्युको मुख्य करके बारह वीर वहां जाकर निज वृत्तान्तको देखो मेरा चित्त सन्देह से निवृत्त नहीं होता है वह सब शूरवीर सिंहके समान युद्ध करनेवाले युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही मध्याह्नके समय युद्धकीओर गये, पांचो केकय और पांचो द्रौपदी के पुत्र धृष्टकेतु यह सब अपनी भारी सेना समेत अभिमन्यु को आगे करके प्रस्थित हुए, और वहां युद्ध में व्यूहको शूची मुख बना के धृतराष्ट्र के पुत्रों की रथवाली सेना को छिन्न भिन्न कर दिया, भीमसेन के भयसे भरे हुए और धृष्टद्युम्न के हाथ से अति अचेत आपकी सेना उन अभिमन्यु आदि बड़े धनुषधारियों के सन्मुख होने को समर्थ नहींहुई, और मूर्छा में भरेहुये स्त्री के समान मार्ग में नियतहुए, वह महा धनुर्धर सुवर्णित ध्वजा युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेन के देखने को सन्मुख दौड़े उन अभिमन्यु आदि वीरों को देखकर वह दोनों भीमसेन और धृष्टद्युम्न बड़े आनन्दित हुए, फिर शूर वीर धृष्टद्युम्न ने अकस्मात आये हुए अपने गुरुको देखकर आपके पुत्रों को नहीं मारा, तदनन्तर भीमसेन को केकय के रथपर सवार करके अत्यन्त कोप में भराहुआ धृष्टद्युम्न बाण और अस्त्रों के परांगत द्रोणाचार्य्य के सन्मुख दौड़ा, शत्रुहन्ता प्रतापी द्रोणाचार्य्य ने बहुत क्रोधित होकर बड़ी शीघ्रतासे उस सन्मुख आनेवाले धनुष को भल्ल से काटा, और स्वामी के हित के निमित्त अन्य सैकड़ों बाणोंसे धृष्टद्युम्न को घायल किया, फिर शत्रु के मारनेवाले धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर शिला पर घिसे सुनहरी पुंखवाले, बाणों से द्रोणाचार्य्य को घायल किया, फिर शत्रुहन्ता द्रोण ने उसके दूसरे धनुष को भी काटा और बड़े तीव्र चारशायकों से चारों घोड़ों को यमके लोक को भेजा फिर इसके सारथी को भी एकही भल्ल से

मारडाला, फिर वह महाबाहु महारथी शीघ्रही मृतक घोड़ों के रथ से उतर कर अभिमन्यु के महारथ पर सवार हुआ, इसके अनन्तर भीमसेन और धृष्टद्युम्न के देखते हुए रथ हाथी घोड़े आदि समेत सेना भयसे कम्पितहुई, फिर द्रोणाचार्य्यजी से व्याकुल सेना को देखकर वह सब महारथी उसके रोकने को समर्थ नहीं हुए, द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्ण बाणों से घायल वह सेना समुद्र के समान महा व्याकुल होकर जहां तहां भागने लगी, फिर आपकी सेना उस सेना को भागती देखकर बड़ी प्रसन्न हुई, हे भरतर्षभ इस रीति से शत्रुकी सेना को मारताहुआ क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य को देखकर शूर वीर लोग चारों ओरसे धन्य २ करके पुकारने लगे ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

इसके पीछे राजा दुर्य्योधन ने व्यूह से पृथक् होकर अपने बाणों की वर्षा से दुर्जय भीमसेन को रोका, फिर आपके महारथी पुत्रभी इकट्ठे होगये और सब मिलकर भीमसेन से लड़ने लगे फिर महाबाहु भीमसेन भी युद्ध में अपने रथ को पाकर उसपर चढ़के वहां को गया जहां आपका पुत्र था, वहां उस बेगवान ने जीव निकालनेवाले दृढ़ और जड़ाऊ धनुष को चढ़ाकर बाणों से आप के पुत्रको पीड़ित किया, इसके पीछे हे राजा दुर्य्योधन ने भी अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से महाबली भीमसेन को मर्म स्थलों में घायल किया, फिर उस महाक्रोध रूप धनुषधारी भीमसेन ने आपके पुत्र से घायल होकर बड़े लाल नेत्र करके उत्तम प्रबल धनुषको खैंचकर अपने तीन बाणों से दुर्य्योधन की भुजा और छाती को घायल किया, हे राजा इस रीति से घायल होकर भी वह दुर्य्योधन पर्व्वत के समान चला यमान नहीं हुआ फिर दुर्य्योधन के शूर वीर युद्ध में देह के त्यागने वाले भाइयों ने दोनों वीरों को परस्पर मारने में प्रवृत्त देखकर भयकारी भीमसेन के पकड़ने का पूर्व्व कर्म स्मरण करके बड़े निश्चय पूर्व्वक उसके पकड़नेका उपाय किया, हे महाराज महाबली भीमसेनभी उन युद्धमें प्रवृत्त बीरों के सन्मुख ऐसा चला जैसे कि हाथी हाथियों के सन्मुख जाता है हे महाराज बड़े यशस्वी तेजवान् अत्यन्त क्रोधित भीमसेन ने आप के पुत्र चित्रसेनको नाराचसे घायल किया, और इसी प्रकारसे अनेक उत्तम बाणों से आपके अन्य पुत्रों को भी घायल किया, तदनन्तर धर्मराजके भेजे हुए भीमसेन के पीछे चलने वाले वह अभिमन्यु आदि बारह महारथी युद्ध में अपनी सेनाओं को सब ओर से नियत करके उन महारथी राज पुत्रों के

सन्मुख गये,उनशूर रथोंपरसवारसूर्य्यअग्निके समान प्रकाशितशोभायमान लक्ष्मी से युक्त भूमि में तेजस्वी सुवर्ण भूषणों से अलंकृत सब बड़े धनुषधारियों को देखकर आपके महाबली पुत्रों ने युद्धमें भीमसेन को त्याग दिया परन्तु भीमसेन उन जीवते जानेवालों को देखकर सह न सका १६ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥७८॥

उन्नासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इस के पीछे भीमसेन समेत अभिमन्यु ने पीछा करके आपके सब बेटों को घायल किया, फिर धनुषधारी महारथी दुर्य्योधनादिक आपकी सेनाको धृष्टद्युम्न के हाथसे महा व्याकुल देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा वहां पहुंचे जहां कि वह रथीवर्त्तमानथे तदनन्तर मध्याह्नके पीछे आपके और दूसरों के शूर बीरोंका महायुद्ध प्रारम्भ हुआ हे भरतबंशी अभिमन्युने विकर्णके घोड़ोंको मारकर२५ क्षुरकबाणोंसे उसको आच्छादित कर दिया फिर महारथी विकर्ण मृतक घोड़ों के रथको त्यागकर चित्रसेन के प्रकाशमान रथपर सवार हुआ फिर उन एक रथपर चढ़े हुए दोनों भाइयों को अभिमन्युने बाणों से ढक दिया तब दुर्जय और विकर्ण ने पांचलोहेके बाणों से अभिमन्युको पीड़ित किया परन्तु मेरु पर्व्वतके समान दृढ़ अभिमन्यु उस चोटसे कंपित नहीं हुआ फिर हे राजेन्द्र दुश्शासन ने पांचो के कयों को लड़ाया यह एक आश्चर्य्यसा हुआ और युद्धमें कोपित द्रौपदीके पुत्रोंने दुर्य्योधनको रोंका फिर प्रत्येकने तीन २ बाणों से आपके बेटेको पीड़ामान किया और उसने भी दुर्जय द्रौपदी के सब पुत्रों को बड़े तीक्ष्ण शायकों से जुदा२ घायल किया और फिरवह दुर्य्योधन उन पांचोंसे घायल रुधिर चूता हुआ ऐसाशोभायुक्तहुआ जैसेकि पहाड़ी धातु मिश्रितझिरनों सेपर्व्वत शोभायमान होता है और हे राजा महाबली भीष्मजीने भी पाण्डवों की सेनाको ऐसाघायलकिया जैसे कि ग्वाल अपनेपशुओंकेसमूहों को ताड़ितकरताहै १२ इसकेपीछे सेनाके दक्षिण ओर अर्जुनके शत्रु हन्तागांडीव धनुषकाशब्द सुनाईदिया, वहांभी कौरव और पांडवों कीसेनाओंमेंहजारों रुंडखड़े होहोकर युद्धकरनेवाले हुए, उसयुद्धमेंभी नरोत्तमों ने रुधिररूप जल और बाणरूप भवँर हाथीरूप टापू घोड़े रूप लहरें ऐसेसेनारूपी सागर को रथरूप अपनी नौकाओं के द्वारा तरणकिया उस संग्राममें हाथ कवच टूटे देहके अहंकारसे रहित हजारों नरोत्तम पृथ्वीपर गिरे हुए दृष्टिगोचरहुए, हे भरतर्षभ मृतकहुए रुधिरोंसे भरे मतवाले हाथियोंसे पृथ्वी ऐसी दिखाई दी मानों पर्व्वतोंसे भरी है, वहां हमने आपके पुत्रोंका और पांडवों का अपूर्व

वृत्तान्त देखा अर्थात् कोई ऐसा वहां पुरुष नहीं था जो युद्धकरना न चाहता हो, इसरीतिसे बड़े यशके चाहनेवाले युद्धमें विजयाभिलाषी आपके वीरपुत्रपाण्डवों के साथयुद्धकरनेवालेहुए १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

संजय बोले फिर सूर्य्यके अरुण होनेपर युद्धमें वेगवान् राजा दुर्य्योधन भीमसेनके मारनेको इच्छावान् सन्मुख दौड़ा, तब अत्यन्त कोपयुक्त भीमसेन उस आतेहुए नर वीर बड़ी शत्रुतारखनेवाले को अपने सन्मुख देखकर यह बचन बोला, कि बहुत बर्षों से चाहाहुआ वह समय आया है अब मैं अवश्य तुझको मारूंगा जो तू युद्धसे न भागेगा, अब तेरे मारनेसे मैं कुन्ती के और द्रौपदीके बनबासके दुःखोंको दूरकरूंगा, जिस हेतुसे कि पूर्व्वसमय में तैंने ईर्षा करके पाण्डवों का अपमान कियाथा हे गांधारी के पुत्र तू उस पापके फल को देख, और जिसकारण से कि तैंने कर्ण और शकुनी के मतमें नियत होकर पांडवोंको साधारण समझकर अपनी इच्छासे वह कर्म कियाहै, और जिस दशामें कि भूलसे तैंने श्रीकृष्णजीका अपमान कियाहै इन सब हेतुओं से मैं बांधवों समेत तुझको मारूंगा और उस पाप को शात करूंगा जो पूर्व्व समय में किया है, उस क्रोध रूप भीमसेन ने इस प्रकार से कहकर अपने घोर धनुष को खैंचकर बारम्बार ऊंचा घुमाकर घोर महावज्र के समान प्रकाशमान अग्नि शिखाके समान ज्वलित बज्रके समान सीधे चलनेवाले छब्बीस बाणों को बड़े बेग से शीघ्रता पूर्व्वक दुर्य्योधन पर फेंका और दो बाणों से उसके धनुष को काटा और दोही बाणों से उसके सूत को घायल करके चार तीक्ष्ण बाणों से उसके घोड़ों को मारडाला, फिर उस शत्रुहन्ता ने अच्छे प्रकार खैंचेहुए दो बाणोंसे उस राजा के छत्र को भी उत्तम रथ से काट गिराया, फिर तीन बाणों से उसकी उत्तम ध्वजा को पृथ्वी पर काटकर दुर्य्योधनके देखतेहुए बड़े शब्द से गर्जा वह नानाप्रकार के रथों से शोभित उत्तम ध्वजा अकस्मात रथ से ऐसी गिरी जैसे कि बादल में बिजली गिरती है, सब राजाओं ने कुरुपति दुर्य्योधन की प्रकाशमान अग्निके समान ज्वलित मणियोंसे जटित ध्वजा को कटाहुआ देखा, तब अहंकार युक्त महारथी भीमसेन ने उसको दश बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि दण्ड से महागजेन्द्र को घायल करते हैं, इसके अनन्तर सिंधदेशियों के राजा रथियों में श्रेष्ठ महाबली ने हाथ में परशों को धारण करके दुर्य्योधन की पीठ को पकड़ा, और रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य ने बड़े

तेजस्वी क्रोध युक्त कौरवी दुर्य्योधन को रथपर सवार किया, फिर वह राजा दुर्य्योधन भीमसेन के हाथ से अत्यन्त घायल और पीड़ामान् रथ में बैठ गया, तब मारने की इच्छा करनेवाले जयद्रथ ने भीमसेन को चारों ओर से घेरकर हजारों रथियों से उसकी सब दिशाओं को रोंका इसके पीछे हे राजा धृष्टकेतु वा पराक्रमी अभिमन्यु वा पांचों केकय वा पांचों द्रौपदी के पुत्र आपके पुत्रों से युद्ध करने लगे, (चित्रसेन) (सुचित्र) (चित्रांग) (चित्रदर्शन) (सुचारु) (चारुचित्र) इसी प्रकार (नन्द) उपनन्दक, इन बड़े २ धनुषधारी सुकुमार यशस्वी आठों ने अभिमन्यु के रथको चारों ओर से घेरा, फिर बड़े साहसी अभिमन्यु ने शीघ्रही गुप्तग्रन्थीवाले पांच २ बाणों से प्रत्येक को घायल किया, वह बाण जड़ाऊ धनुष से निकले हुए वज्ररूप मृत्युके समान थे वह सब भी क्रोधयुक्त होकर रथियों में श्रेष्ठ अभिमन्युपर, अपने तीक्ष्ण बाणों की ऐसे बर्षा करने लगे जैसे कि मेरु पर्व्वत पर बादल वर्षा करते हैं हे महाराज उस अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद, पीड़ामान अभिमन्यु ने आप के पुत्रों को ऐसा अत्यन्त कंपित किया जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में वज्रधारी इन्द्र बड़े २ असुरों को कंपायमान करताहै हे राजा इसी प्रकार उस अभिमन्यु ने बिष भरेहुए घोर चौदह भल्लों को विकर्ण के निमित्त भेजा, फिर उस पराक्रमी ने युद्ध में नृत्य करने वाले के समान उन बाणों से विकर्ण की ध्वजा घोड़े रथ सूत और धनुष को भी रथ से गिराया, और पीतरंग के प्रकाशित नोक और सीधे चलनेवाले अन्य बाणोंको विकर्णपर फेंका ३० वह कंक और मोरके परोंसे संयुक्तबाण विकर्ण को पाकर उसके शरीर को घायल कर सर्पोंके समान श्वासलेतेहुए पृथ्वी पर गिरे, फिर वह सुनहरी पुंख नोकवाले बाण विकर्णके रुधिरसे भरेरुधिर को उगलते हुए पृथ्वी पर पड़ हृष्टआये, बिकर्ण को घायल देखकर उसके दूसरे सगे भाई युद्ध में अभिमन्यु आदि रथियों के सन्मुख दौड़े, और इसी प्रकार उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्मद रथियों ने उनके सन्मुख जाकर उन सूर्य्य के समान तेजस्वी रथियों को परस्पर में घायल किया, फिर दुर्मुखने शीघ्रगामी सात बाणों से श्रुतकर्मा को घायल करके एक बाण से उसकी ध्वजा को काटा और सात बाणों से उसके सारथीको घायल किया, फिर सुनहरी जालों से ढकेहुए वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों को छः बाणों से मारकर उसके सारथीको भी गिराया उसमृतक घोड़ों के रथपर नियत उस महाबली श्रुतकर्मा ने बड़े क्रोधयुक्त होकर महाज्वलित उल्काके समान बरछी को उस के ऊपर फेंका, वह बरछी उस यशस्वी दुर्मुख के बड़े कवचको काटकर अपने तेज से उसको फाड़के बड़ी प्रकाशमान होके पृथ्वी में प्रविष्टहोगई वहां

महाबली सुतसोमने उसको विरथ देखकर सब सेनाके देखते हुए अपने रथ पर सवार किया इस के पीछे हे राजा महाबली श्रुतकीर्त्ति आपके यशस्वी जयसेन पुत्र के मारने की इच्छासे उसके सन्मुख गया, तब आप के पुत्र जयसेन ने उस धनुष खैंचने वाले श्रुतकीर्त्ति के धनुषको अपने क्षुरप्रबाणों से बड़े हास्यपूर्वक काटा फिर तेजस्वी शतानीक उस धनुषटूटे हुए अपने निज भाई को देख कर, सिंहके समान बारंबार गर्जता हुआ सन्मुख आया और युद्धमें अपने दृढ़ धनुषको खैंचकर बड़ी शीघ्रता से दश शिलीमुख बाणों से जयसेनको घायल किया और मदोन्मत्त हाथीके समान महाशब्द करके गर्जा, तदनन्तर इसने बड़े २ तीक्ष्ण ढाल खड्गों के काटने वाले अन्य बाणों से जयसेनको अत्यन्त घायल किया, इसी प्रकार युद्ध के वर्तमान होने पर भाई के समीप नियतक्रोधमें व्याकुल दुष्कर्ण ने सतानीकके बाण समेत धनुषको काटा, फिर महाबली शतानीकने बड़े बोझ के साधने वाले अन्य दृढ़ धनुषको लेकर बड़े घोरबाणों को हाथमें लिया ४७ और भाई के सन्मुखहोकर दुष्कर्ण से तिष्ठ तिष्ठ शब्द कहके उसके ऊपर बड़े तीक्ष्ण और ज्वलित सर्प के समान बाणों को छोड़कर एक बाणसे उसके धनुषको और दो बाणों से उसके सारथी को काट मारकर बड़ी शीघ्रतासे सात बाणों से उसको घायल किया, फिर प्रसन्नमूर्त्ति सात्यकी ने बड़ी शीघ्रतासे बारह तीक्ष्ण बाणों से उसके उन सब घोड़ोंको जो कि बलके अनुसार शीघ्रगामी और कल्माषी रंगथे मारडाला, फिर हे राजा उस क्रोधरूपने शत्रुहन्ता और महा भयकारी भल्लनाम बाण से दुष्कर्ण को व्यथित किया और वह उस के आघात से बज्रसे टूटे हुए वृक्षकी समान पृथ्वीपर गिरा हे राजा पांचमहारथियों ने दुष्कर्ण को मराहुआ देखकर, मारने की इच्छाकरके शतानीक को चारों ओरसे घेर लिया, फिर बाणों से ढके हुए यशस्वी शतानीकको देखकर, अत्यन्त क्रोध में भरे पांचों निजभाई केकय उनके सन्मुख दौड़े, हे राजा उन पांचों महारथियों को आता देखकर आपके पुत्र ऐसे सन्मुख गये जैसे कि हाथी महागजेन्द्रों के सन्मुख जाय (दुर्मुख) (दुर्जय) (दुर्धर्षण) (शत्रुंजय) शत्रुसह यहसब यशस्वी महाक्रोध युक्तहोकर केकय लोगों के सन्मुख गये, मन के अनुसार शीघ्रगामी घोड़ों से संयुक्त नाना प्रकारके विचित्ररथों और पताकाओं समेत रथों में बैठे उत्तम धनुषधारी चित्र विचित्र कवच पहिरे वह बीरशत्रुओं की सेनामें आकर ऐसे वर्तमान हुये जैसे कि सिंह एक वनसे दूसरे बनमें बर्तमान होते हैं, हे राजा परस्पर मारते और एक एकका अपराध करने वाले लोगों का वह युद्ध हाथी घोड़ों समेत महातुमुल और घोर जारी हुआ, वह सब यमलोक की वृद्धि करने वाला

सूर्यास्त के समय बड़े घोरयुद्धकरने वाले हुए, हजारों रथी और घुड़चढ़ेव्या कुल हुए इस के पीछे शंतनु के बेटे क्रोध युक्त भीष्मजी ने गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से, उन महात्माओं की उस सेनाको नष्ट करदिया और पांचालों की सेना को भी यमलोक में पहुंचाया, इसरीति से वह बड़े धनुष धारी पांडवों की सेनाको घायल करके सब सेनाओं का बिश्राम करके अपने डेरे को गये, धर्मराजभी धृष्टद्युम्न और भीमसेनको देखकर दोनोंके मस्तकको सूंघकर अपने डेरों को गये ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिअशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे परस्पर अपराधकरनेवाले शूररुधिर से भरे देह अपने २ डेरोंको गये, फिरन्यायके अनुसार बिश्रामकर परस्परपूजन को करके युद्ध करनेकी इच्छासे कवच और अस्त्र शस्त्रोंसे, अलंकृत दृष्टपड़े, हे राजा इसके अनन्तर चिन्तायुक्त आपके पुत्रने गिरतेहुये रुधिरसे भरेहुये शरीरवाले भीष्मपितामहसे पूंछा कि पांडवोंके वहशूर महारथीघोर भयानक और शस्त्रोंसे अलंकृत बहुत ध्वजायुक्त सेनाओंको मार और पीड़ित करके कीर्ति वानहो युद्धमें प्रवृत्त हुयेऔर उसबज्रके समान मकरव्यूहमें प्रवेश करके मृत्युदण्ड के समान प्रकाशित और घोर भीमसेनके बाणोंसे मैं महाव्याकुल और घायल होगयाहूं, हे राजा उस क्रोधरूप भीम को देखके भय से मूर्च्छावान होकर अबतक मैं शान्ती को नहीं पाता हूं हे सत्यसंकल्प मैं आपही की कृपा से पाण्डवों को मारकर विजय पाना चाहताहूं इतनी बात के सुनतेही दुर्य्योधन को व्याकुल और क्रोध युक्त देखकर भीष्मजी हँसकर बोले, हे राजपुत्र मैं सर्वांग पूर्वक बड़े उपायों से सेना को मझाकर विजय और सुखको देना चाहताहूं और मैं अपने शरीर को तेरेप्रयोजन के लिये किसी प्रकार से बचाता हूं, बहुतसे महारथी शूर और रुद्ररूप अस्त्रज्ञ परिश्रम से अखिन्न क्रोधरूप विष के उगलने वाले जो पांडवों के युद्ध में सहायक हैं वह बल में बड़े हैं उन्हीं के साथ तुम ने शत्रुताकरी है वह युद्ध में एकाएकी विजय करने के योग्य नहीं-हैं हे वीर राजा दुर्य्योधन मैं इस जीवनको त्याग करके सब प्रकार से उन के साथ लड़ोंगा हे महानुभाव अब युद्ध में तेरेप्रयोजन के लिये मैं अपने प्राणों की रक्षा करना योग्य नहीं समझताहूं अर्थात् अपने प्राणों की रक्षा नहीं करसक्ताहूं मैंतेरे निमित्त देवता और दैत्यों समेत सबलोकोंको भी जीत सक्ताहूं तो इस स्थानपर तेरे शत्रुओंका जीतना कितनी बड़ी बात है हे दुर्य्योधन मैं पांडवों से लड़कर तेरे सब अभीष्टों को

करूंगा इस बातको सुनकर दुर्योधन भीष्म जी से बहुत प्रसन्न हुआ, इसके अनन्तर उस प्रसन्न चित्तने सब सेनाओं समेत राजाओं से कहा कि चलो चलो हे धृतराष्ट्र उसकी आज्ञा पातेही रथ घोड़े हाथी और पैदलों की सब सेना शीघ्रही चलदी, हे तात फिर आपकी बड़ी सेना अति प्रसन्न होकर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र धारण करके हाथी घोड़े पैदलों समेत संग्राम भूमि में नियत होकर शोभायमान हुई, और हाथियों के समूह अच्छे प्रकार उचित स्थानोंमें नियत होकर चारों ओरसे प्रकाशित हुए, और आपके अस्त्र शस्त्र वेत्ताओं के समूह नरदेव शूरबीरों से संयुक्त होकर अपने २ कर्म को करने लगे, फिर उन रथ घोड़े हाथी और पैदलों से उठी हुई धूल भी वड़ी उठी कि सूर्य भी ढकगये, हे राजा युद्ध में चारों ओर से घूमते नाना रंगधारी रथ हाथी घोड़े और पदाती और इनके चढ़ने वाले अपनी २ सवारियों समेत ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों से संयुक्त और बायु से पृथक् हुई बिजलियां आकाश में प्रकाशित होती हैं, फिर धनुष चढ़ाने वाले राजाओं के शब्द ऐसे बड़े कठोर और घोर हुए जैसे कि युगकी आदि में देवासुरों के हाथ से मथे हुए समुद्र के शब्द हुए थे, तब वह आप के पुत्रों की सेना भयकारी शब्दों से और शत्रुओं के मारने वाले अनेक रूपोंसे प्रलय काल के बादलों के समान होगई १९॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीष्मदुर्य्योधनसंवादेएकाशीतितमोऽध्यायः॥ ८१॥

बयासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे भरतबांशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्म जी ध्यान में नियत होकर फिर आपके पुत्रकी प्रसन्नता के बचन बोले कि मैं [द्रोणाचार्य] [शल्य] [कृतबर्मा] [अश्वत्थामा] [सोमदत्त] और सिन्धु देशियों समेत बिन्द अनुबिन्द अवन्ति देश के राजा [बाह्लीकदेशी] और बलवान् राजा त्रिगर्त और महादुर्जय राजा [मगध] [बृहद्बल] [कौशल्य] [चित्रसेन] [विविंशति] और बड़ी ध्वजा वाले शोभायमान हजारों रथ, और घुड़चढ़े समेत देशी घोड़े और मद से लाल नेत्र वाले मदोन्मत्त गजेन्द्र पदाती और नाना प्रकारके शस्त्रधारी शूरलोग भी नाना प्रकार के देशों में उत्पन्न होने वाले सब लोग तेरेही निमित्त युद्ध करने को तैयार हैं, ६ इन के सिवाय और बहुत से लोग तेरेलिये जीवन के त्यागने वाले हैं बहुत से इन में देवताओं को भी युद्ध में विजय करने वाले हैं यह मेरा मत है परन्तु हे राजा मुझ को तेरेप्रियकारी वचन अवश्य कहने के योग्य हैं उनको भी सुनो कि इन्द्र समेत देवताओं से भी पांडवों का बिजय करना असंभव है, क्योंकि वह

वासुदेवजी को सहायक रखनेवाले होकर महाइन्द्र के समान पराक्रमी हैं हे राजेन्द्र मैं सबप्रकारसे तेरे वचनको करूंगा, मैं पांडवोंको युद्धमें विजयकरूंगा अथवा पांडव मुझको विजय करेंगे इस प्रकारकी बातें करके उसके निमित्त वह औषधियां जो घावको आनन्द करनेवाली और सामर्थ्य की बढ़ाने वाली थीं दीं उनके लगातेही वह घावोंसे रहित हुआ तदनन्तर बड़े प्रातःकाल उठकर शुद्धहो व्यूहकी रचनामें बड़ेकुशल भीष्मजीने अपनीसेनाके व्यूहको आप तैयारकिया फिर उसनरोत्तम ने अपनी सेनाके मंडलको शस्त्रोंसे अलंकृत किया,, और उत्तमशूरवीर हाथी और पैदलोंसे भराहुआ हजारों रथों से चारोंओर को घिराहुआ दुधारेखड्ग तोमर धारण करने वाले सवारोंसे व्याप्त एक २ हाथी के साथ सात २ रथी और प्रत्येक रथके साथ सात २ घोड़े और घोड़े २ के पीछे दश २ धनुषधारी और हरएक धनुष धारी के पीछे सात २ पदाती हुए हे महाराज आपकी सेना इस रीतिसे महारथियोंसे शोभायमान हुई युद्धमें भीष्मजी से रक्षित बड़े संग्रामकेलिये नियतकिये हुए दशहजार घोड़े और दशहजार हाथियों के समूहोंके साथ आपके चित्रसेन आदि शूर वीरोंने पितामहको चारोंओरसे रक्षित किया वह भीष्मजी उनशूरोंसे रक्षित और शूर उनसे रक्षित हुए और महाबली राजालोगभी शस्त्रधारण कियेयुद्ध को तैयारहदृष्टपड़े, फिरशस्त्रों से अलंकृत रथपर बैठाहुआ दुर्य्योधन भी शोभा से युक्त ऐसाप्रकाशमान हुआ जैसा कि स्वर्ग में इन्द्रप्रकाशमानहोता है इस के पीछे हे भरतर्षभ आपके पुत्रों के महाशब्द हुए और रथ और रथांगों के भी घोर शब्दहुए, फिर वह धृतराष्ट्र के पुत्रोंका व्यूहभीष्मजीका रचा हुआ अतिदुर्जय मंडलरूपबना हुआ पश्चिम की ओरको चला, हे राजा शत्रुओं से दुर्जय होनेवाला वह व्यूह सबओरसे शोभित हुआ फिर उस मंडलवाले भयानक व्यूहको देखकर राजा युधिष्ठिरने अपने हाथों से अपनी सेना को वज्रव्यूहको तैयार किया इस रीतिसे सेनाओंके तैयार होनेपर सबरथी पदाती आदि अपने २ स्थानों पर नियत होकर सिंहनाद करने लगे इसके पीछे व्यूहके तोड़ने को युद्धाभिलाषी पराक्रमी शूरवीर लोग एक दूसरे के सन्मुख गये, द्रोणाचार्य्य जी राजा मत्स्यके सन्मुख गये अश्वत्थामा शिखण्डी के सन्मुख हुआ,, राजादुर्य्योधन आप धृष्टद्युम्नके सन्मुख दौड़ा और नकुल सहदेव राजा मद्रके सन्मुख गये, (विन्द) (अनुविन्द) अवन्ति के राजा लोगोंके और युधामन्युके सन्मुख दौड़े और सब राजालोग इकट्ठे होकर अर्जुन से लड़नेको उपस्थितहुए, फिर सावधान और समर्थ सात्यिकी ने युद्ध में भीमसेन को रोका, हे राजा अर्जुन का समर्थ पुत्र अभिमन्यु चित्रसेन विकर्ण और दुर्मर्षण नाम आपके तीनों पुत्रों से युद्ध करनेलगा फिर हिड़म्बा

का पुत्र राक्षसोत्तम घटोत्कच बड़े बेगसे राजा प्राग्ज्योतिषके सन्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि मदोन्मत्त हाथी मदोन्मत्त हाथीपर दौड़ता है हे राजा युद्ध में महा क्रोधरूप अलंबुष राक्षस सेनासमेत युद्धमें महादुर्मद सात्यकी के सन्मुख दौड़ा और युद्धमें कुशल भूरिश्रवा धृष्टकेतु से लड़ने लगा, फिर धर्म पुत्र युधिष्ठिर ने राजा श्रुतायुष से और चेकितानने कृपाचार्य्य से युद्धकरना प्रारंभ किया, शेषबचेहुए राजालोग महारथी भीमसेनके सन्मुख हुए, इसके पीछे हजारों राजाओं ने अर्जुनको घेरलिया उन सब राजाओंके हाथोंमेंबरछी तोमर नाराचगदाओर परिघइत्यादि अनेक अस्त्रशस्त्रशोभायमान थे उससमय अर्जुन अत्यन्त कोपित होकर श्रीकृष्णजीसे बोला कि, हे माधवजी व्यूहविद्या में कुशल महात्मा भीष्मजी से व्यूहितकरीहुई दुर्य्योधन की सेना को संग्राम भूमिमें देखो और युद्धाभिलाषी शूरोंको कवच और शस्त्र धारण किये हुए देखो और भाइयों समेत राजात्रिगर्त्त कोभी देखो हे जनार्दनजी अब आपके देखते हुए इन सबको मैं मारूंगा हे यादवेन्द्र जो यहसंग्राम भूमि में मेरेमारने के लिये इच्छा कर रहेहैं, इतना कहकर अर्जुनने अपने धनुषकी प्रत्यंचा को ठीककरके राजाओंके समूहों पर बाणोंकी बर्षाकोबरसाया फिर उन बड़े २ धनुषधारियों नेभी उस अर्जुनको बाणोंकी बर्षासे ऐसा भरदिया जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल तड़ागों को जलसे भरदेते हैं, हे राजा उसबड़े संग्राम में दोनों कृष्ण अर्जुन को अत्यन्त बाणोंसे ढकाहुआ देखकरआपकी सेनामें बड़ा हाहाकारहुआ (देवताऋषि) (गंधर्व)और महाउरगों ने इस प्रकार बाणों से ढकेहुए दोनों कृष्ण अर्जुन को देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया, इसके पीछे हेराजा महाकोपयुक्त अर्जुन ने इन्द्रास्त्रको प्रकट किया उस समय हमने अर्जुन के अपूर्व्व पराक्रम को देखा, कि अपने बाणों के समूहों से शत्रुओं के छोड़हुए अस्त्रसमूहों को रोकदिया कोई मनुष्यभी शस्त्रों से घायल हुए बिना नहीं रहा और हे धृतराष्ट्र हजारों राजा घोड़े हाथी और शूरवीर लोगों को अर्जुनने दो २ तीन २ बाणों से पीड़ामान किया इसके पीछे वह अर्जुनसे घायलहुए शन्तनु के पुत्र भीष्मजी के पास आये तब भीष्मजी इन अथाह जलमें डूबे हुओं के रक्षकहुए, हे महाराज वहांपर उनआनेवालों से आपकी सेना तिर्र बिर्र होकर ऐसेमहा व्याकुल हुई जैसे कि बायुसे महासमुद्र उथल पुथल होता है ४६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२॥

तिरासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसरीति से युद्ध जारीहोने वा राजा सुशर्मा के लौट ने

वा महात्मा अर्जुन के हाथसे वीरों के अस्तव्यस्त होनेपर, और बड़ीशी-घ्रता से समुद्र के समान आपकी सेना के व्याकुलहोने वा शीघ्रही अर्जुन के ऊपर भीष्मजी के चढ़ाई करनेपर राजादुर्य्योधन युद्धमें अर्जुन के पराक्रम को देखकर बड़ी शीघ्रता से सबराजाओं से मिलकर और इन्हीं लोगों के सन्मुख सब सेना के मध्यमें महाबली सुशर्मा को अत्यन्त प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला, कि यह कौरवों में श्रेष्ठ शन्तनु के पुत्र भीष्मजी अपने जीवनको त्यागकरके सर्वभावसे अर्जुन से युद्ध करना चाहते हैं, तुमसब सावधान होकर सेनासमेत उनशत्रुओंपर चढ़ाई करनेवाले भरतबंशी पितामहकी रक्षाकरो, फिर राजाओं की वह सब सेना उसके वचनको अंगीकार करके पितामहके पीछेचली, इसके पीछे शन्तनुके पुत्र भीष्मजी अकस्मात् अर्जुन की ओरको चले और बड़ेश्वेत घोड़ों के कपिध्वजवाले घनके समान शब्दायमान महाउत्तम रथपरचढ़े सब सेनाके सन्मुख जातेहुए महाबली अर्जुनको पाया और अर्जुन को देखतेही भयसे कठोर शब्दहुए,, दिवसही में सूर्य्य के वर्तमान होनेपर द्वितीय सूर्य्य के समान बागडोर हाथमें रखनेवाले श्रीकृष्णजी को देखकर उनके सन्मुख देखने को भी समर्थ नहींहुए,इसी प्रकार पाण्डव भी श्वेतघोड़े और श्वेत धनुषधारी श्वेतग्रहके उदय समान शन्तनु के पुत्रभीष्मजी के देखने को समर्थ नहीं हुए, इसरीति से वह महात्मा भीष्म त्रिगर्त्त देशी भाइयों वा आपके पुत्रों अथवाअन्यबड़े २ महारथियों से रक्षितहुए, फिर द्रोणाचार्य्य ने युद्ध में बाणों से राजामत्स्यको पीड़ित किया और एक २ बाणसे उसकी ध्वजाको और धनुष को काटा, फिर वाहिनीपति विराटने उसटूटे धनुष को डालकर भारसहनेवाले दूसरे दृढ़ धनुष को बड़ी तीव्रता से हाथमें लिया और सर्पाकृति पन्नग नाम सर्पों के समान ज्वलित बाणों को लेकरतीनबाणसे द्रोणाचार्य्य को और चारबाणों से उनके घोड़ों को घायलकिया, एकसे ध्वजाको काटा और पांच से उनके सारथी को व्यथित करके एक बाणसे धनुषको तोड़ा उसस्थानपर ब्राह्मणों मेंश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य जीनेबड़े क्रोधयुक्त होकर गुप्तग्रन्थी के आठबाणों से उसके घोड़ों को और बाणसे उसके सारथी को मारा, वह रथियों में श्रेष्ठ सारथी को मरा देख मृतकघोड़ों के रथ से कूदकर शीघ्रही पुत्रके रथपर सवारहुआ फिर उसके पीछे रथपर नियत उनदोनों पितापुत्रों ने बलसे मारे बाणों के द्रोणाचार्य्य को रोका, हे राजा इसके पीछे क्रोधरूप द्रोणाचार्य ने सर्प के समान बाणको बड़ी शीघ्रतासे शंख के ऊपर छोड़ा, वह बाण उसके हृदय में घुस उसके रुधिरको पानकर लालरंग लोहूमें भराहुआ पृथ्वी में गिरा, वह शंख द्रोणाचार्य के बाण से घायल पिताकेही सन्मुख धनुषबाणको त्याग

कर गिरपड़ा फिर राजा विराट अपने पुत्रको मृतक देखकर और द्रोणाचार्य को मृत्युके समान समझकर बड़े भयसे उनको छोड़कर भागा, इसके पीछे द्रोणाचार्यने शीघ्रही पांडवोंकी हजारों बड़ी२ सेनाओं को हटाया, हे महाराज शिखण्डी ने भी बड़ी शीघ्रतासे अश्वत्थामा को पाकर तीव्रगामीतीन नाराचों से दोनों भृकुटी के मध्यभाग मस्तक को घायल किया, फिर वह नरोत्तम ललाटपर नियत हुए तीनों बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे ऊंचे सुवर्ण के तीनि शिखरों से मेरु पर्व्वत शोभित होताहै, फिर क्रोध भरे अश्वत्थामा ने आधेही निमेष में शिखण्डी के सारथीरथ घोड़े शस्त्र और ध्वजा को अनेक बाणोंसे काटकर गिराया, फिर रथियोंमें श्रेष्ठ मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढालकोलेकर बड़ा क्रोध में भरा हुआ सब सेना में बाजपक्षी के समान घूमा हेराजा युद्ध में खड्ग लिये हुये उसशिखण्डीका अश्वत्थामाने कोई अवकाश नहीं देखा यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ, इसके पीछे महाक्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने हजारों बाणों की वर्षाकरी परन्तु उसमहापराक्रमी ने अपने खड्गसेही उन सब बाणों को काटडाला, फिर अश्वत्थामा ने इसकी सूर्य चन्द्रमावाली स्वच्छ ढालको काटकर खड्ग के भी खण्ड खण्ड करडाले और बहुत से बाणों से उसको घायल किया फिर शिखण्डी ने उसके बाणों से कटेहुए खड्गको देखकर शीघ्रही सर्प के समान महाज्वलित खड्गको छोड़ा तब हस्तलाघवता दिखातेहुए अश्वत्थामाने उस बज्र और बिजली के समान शब्दायमान अकस्मात् गिरतेहुए खड्गको युद्धमेंही काटडाला और बहुतसे लोहे के बाणों से शिखण्डी को घायल किया, फिर तीव्र बाणोंसे अत्यन्त घायल शिखण्डी शीघ्रही महात्मा सात्विकी के रथपर सवार हुआ, फिर महाबली सात्विकी ने भी बड़ा क्रोध करके अपने घोर बाणों से उस पराक्रमी अलम्बुष राक्षस को घायल किया फिर राक्षसाधिप अलम्बुष ने अपने अर्द्धचन्द्र नाम बाणों से उसके धनुषको काटकर बहुत से शायकों से उसको घायल किया ४० और राक्षसी मायाको करके बाणोंकी वर्षा से ढकदिया वहां हमने सात्विकी के अपूर्व्व पराक्रम को देखा, कि वह युद्ध में बड़े तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर भी व्याकुल नहीं हुआ, हे भरतबंशी सात्विकी ने उस ऐन्द्र अस्त्र का प्रयोग किया, जो कि महात्मा माधवजी और अर्जुन से मिलाथा उस अस्त्रसे सब राक्षसीमायाको अत्यन्त नाश करके अपने घोर बाणों से अलम्बुष को इसरीति से ढकदिया जैसे कि बर्षाऋतु में बलाहक नाम बादल अपने जलों से पर्वत को ढकते हैं, उस यशस्वी सात्विकी से पीड़ित होकर वह राक्षस महाभयभीत होकर सात्विकी को त्यागकर भागगया, सात्विकी आपके शूरवीरों के देखतेहुए उस

राक्षसाधिपको जो कि इन्द्रसेभी बिजयहोना कठिनथा जीतकर सिंहके समान गर्जा, फिर सत्य पराक्रमी सात्यिकीने अपने पुत्रोंको भी बड़े तीक्ष्णबाणों से घायल किया वह भी भयसे पीड़ित होकर भागे हे महाराज उसीसमय द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्नने आपके पुत्र दुर्योधनको, वहां गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे आच्छादित करदिया, हे राजेन्द्र धृष्टद्युम्नके बाणोंसे ढकाहुआभी दुर्योधनपीड़ामान नहींहुआ और बड़ी शीघ्रतासे अपने बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायलकिया, यह एक आश्चर्यसाहुआ हेराजा फिर उस क्रोधयुक्त सेनापतिने उसके धनुष को काटकर, शीघ्रही चारों घोड़ों को मारा और सात तीक्ष्ण बाणों से उस को तत्क्षण घायल किया, वहमहाबाहु मृतक घोड़ोंके रथसे कूदकर पैदलहोखड्ग को उठाकर धृष्टद्युम्नके ऊपर दौड़ा, राज्यके लोभी महाबली शकुनीने समीप आकर राजा दुर्योधन को अपने रथपर सवार किया, इस के पीछे शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न ने राजा को बिजय करके उसकी सेना को ऐसा मारा जैसे कि बज्रधारी इन्द्र असुरों के समूहों को मारता है, कृतवर्मा ने महारथी भीमको युद्ध में मोहित कर के बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बड़ा बादल सूर्य को ढक देताहै, इसके पीछे शत्रु सन्तापी भीमसेन ने महाक्रोधित होकर अच्छे प्रकार हंसकर कृतवर्मा के ऊपर शायकों की वर्षाकरी हे महाराज अति रथी कृतवर्मा उन भीमसेन के बाणों से घायल होकर कम्पायमान नहीं हुआ और फिर भीमसेन को तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, इसके पीछे महाबली भीमसेनने उसके चारों घोड़ों को मारकर सारथी और ध्वजायुक्त उसके उत्तम रथको भी गिराया, शत्रुहन्ताने फिर उस कृतबर्माको भी अनेक बाणों से ढक दिया फिर वह महाघायल सब अंगों से शिथिल दृष्ट पड़ा, हे महाराज फिर वह शीघ्रही आप के पुत्रको देखकर मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर आपके वृषकनाम साले के रथपरगया, फिर महाक्रोधरूप होकर भीमसेन भी आपकी सेना के ऊपर दौड़ा और मृत्यु के समान हाथ में दण्ड लेकर बड़े क्रोध से उसको मारा ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणित्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

हे संजय मैंने तेरेकहने से अपने पुत्रों के साथ पांडवों के विचित्र २ युद्ध सुने, हे सूतपुत्रतू मेरी सेनाको कुछ प्रसन्न नहीं कहता है सदैव पांडवों को प्रसन्न चित्त और अजय कहा करता है, और मेरेपुत्रों को युद्ध में पराजित वा अनुत्साह युक्त और घायल कहताहै निश्चय कर के यही होनहारहै, संजय बोले आपके पुरुषोत्तमबेटे युद्धमें बड़े पराक्रम से बीरता और पुरुषार्थ

को दिखलाते बल साहस्य के अनुसार ऐसे युद्ध करते हैं जैसे कि देवनदी गंगाजीका जल महास्वादिष्ट महा समुद्र के मिलजाने के प्रभाव से लवणताको प्राप्तहोताहै, हे राजा इसी प्रकारसे आप के पुत्र भी महात्मा और वीर पांडवों के पुरुषार्थको पाकर निष्फल होते हैं, हे कौरवोत्तम सामर्थ्य के अनुसार उपाय कर्त्ता और कठिन साध्यकर्मों के करनेवाले आप अपने शूरवीरों को दोषके भागी करने को योग्य नहीं हो, हे राजा बेटेसमेत आपके अपराध से पृथ्वीभर का नाश अत्यन्ततासे यमराज के देशका वृद्धि कारक है, आप अपने दोष जन्य फल के शोचने के योग्य नहीं हो, यहां सब राजालोग अपने जीवनकी रक्षा नहीं करतेहैं, राजालोग युद्ध के द्वारा उत्तम औरपवित्र लोकों को चाहतेहैं और सदैव स्वर्गकोही उत्तम स्थान समझनेवाली सेनामें घुसकर युद्धको करतेहैं, हे राजा प्रातःकाल के समय मनुष्योंका नाश होना प्रारंभहुआ, उस देवता और असुरों के युद्ध समान महा संग्रामको आप एकचित्त होकर मुझ से सुनो, बड़े धनुषधारी महात्मा और तेजस्वी लाल नेत्रवाले अवन्ति देश के राजा लोग इरावानको सन्मुख देखकर युद्धाभिलाषी हुए, और उनका रोमहर्षण महातुमुल युद्ध जारी हुआ फिर अत्यन्त क्रोधित होकर इरावानने देवतारूप दोनों भाइयों को, बड़ी शीघ्रता से गुप्त ग्रंथी वाले बाणों से घायल किया और उन दोनों ने भी अपूर्व युद्धकरके उसको घायल किया, इस के पीछे शत्रु के नाश के करने में उपाय करने वाले प्रहारपर प्रहार करने की इच्छा से युद्ध करनेवालों की मुख्यता देखने में नहीं आई, फिर इरावानने अपने चारशायकों से राजा अनुबिन्दके चारों घोड़ों को मारकर अत्यन्त तीक्ष्ण भल्लों से धनुष और ध्वजाको काटा यह भी आश्चर्यसा हुआ, फिर अनुबिन्द बड़े दृढ़ और उत्तम धनुष को लेकर अपने रथको छोड़कर बिन्द के रथपर नियत हुआ, वे दोनों महारथी एक रथपर बैठेहुए बिन्द अनुबिन्द ने बड़ी शीघ्रता से इरावान के ऊपर बाणों की बर्षाकरी, इन दोनों के सुवर्ण से शोभित छोड़े हुए तीक्ष्ण बाणोंने सूर्य्य के रथको पाकर आकाशको आच्छादित करदिया, फिर महारथी इरावान ने भी क्रोधयुक्त होकर उन दोनों भाई महारथियोंपर बाणों की बर्षाकरके उन के सारथी को गिराया, हे राजा उस सारथी के गिरने और मरनेपर वह रथ जिस के घोड़े भ्रान्ति में संयुक्तथे इधर उधरको भागा, हे महाराज उस नागराज के पौत्र ने उन दोनों को बिजय करके पुरुषार्थ को प्रसिद्ध करतेहुए आपकी सेना को भी बड़ी शीघ्रता से भस्मीभूत करदिया, दुर्य्योधनकी युद्ध में प्रवृत्त उस बड़ी सेनाने बहुतप्रकारके ऐसे २ वेगों को किया जैसे कि विषपान करके मनुष्य किया करतेहैं, फिर राक्षसों का राजा महाबली घटोत्कच सूर्य्यवर्ण

ध्वजाधारी रथ में चढ़कर भगदत्त के सन्मुख दौड़ा, इसके पीछे राजा प्राग्ज्योतिष गजेन्द्र पर ऐसे सवारहुआ जैसे कि पूर्वसमयमें दानवों के युद्ध में वज्रधारी इन्द्र ऐरावत हाथी पर सवार होताहै, उस स्थान में गंधर्वों समेत देवता और ऋषिलोग आये घटोत्कच ने भगदत्त की मुख्यता को नहीं जाना, जैसे कि देवेन्द्र ने दानवों को भयभीत किया उसी प्रकार युद्ध में उस राजा ने पांडवोंको भगाया, हे भरतवंशी उस से भगाये हुए उनपांडवोंने अपनी सेना में जाकर सब दिशों में कोई अपना रक्षक नहीं पाया, हे भरतवंशी वहां मैंने अकेले भीमसेन के पुत्र घटोत्कचकोही रथपर नियत देखा और शेष महारथी अपने मनसे हार २ कर इधर उधरको भागे, फिर पांडवों की सेनाके लौटने पर युद्ध में आपकी सेनाका बड़ाघोर निष्ठानक हुआ, इस के पीछे घटोत्कचने बाणों से भगदत्तको ऐसा ढकदिया जैसे कि बादल मेरु पर्वतको ढकदेते हैं राजा भगदत्तने भी घटोत्कच के फेंके हुए बाणों को काट कर अपने बाणोंसे उसके मर्मस्थलों को घायलकिया, वह घटोत्कच उन गुप्त ग्रन्थी वाले बाणोंसे ऐसे पीड़ामान नहींहुआ जैसे कि घायल पर्व्वतपीड़ित नहींहोता, फिर उसक्रोध भरे राजाप्राग्ज्योतिष ने युद्धमें चौदह तोमर उसके ऊपर फेंके उनको घटोत्कचने काटा, फिर तोमरों को काटकर उस महाबाहु राक्षसाधिपने कंकपक्षवाले सत्रह बाणों से भगदत्त को घायल किया फिरहे भरतर्षभ राजा भगदत्त ने भी शायकों से उसके चारों घोड़ोंको गिराया, तद नन्तर उस मृतक घोड़ोंके रथपर नियत प्रतापी घटोत्कचने बड़े वेगसे भगदत्त के हाथी पर बरछी को छोड़ा, राजाने भी उससुनहरी अकस्मात् गिरती हुई तीक्ष्ण बरछीके तीन टुकड़े करदिये, घटोत्कचअपनी बरछीको टूटाहुआ देखकर भयसे ऐसा भागा जैसे कि पूर्व्वकाल में युद्ध भूमि से दैत्येन्द्र नमुचि इन्द्रके भयसे भागाथा, हेराजा उसने युद्ध में उस प्रसिद्ध पराक्रमी यमराजके समान अजेय शत्रुको विजय करके, हाथी समेत उसी युद्ध के भीतर पांडवों की सेनाको भी ऐसे मर्दन किया जैसे कि जंगली हाथी कुमुदिनियों को मर्दन करता हुआ चलता है, और युद्धमें नकुल और सहदेवके साथ भिड़तेहुए मद्रदेश के राजा ने बाणों के समूहों से दोनों पांडुनन्दन अपने भानजों को आच्छादित करदिया, फिर सहदेव ने युद्ध में सन्मुखहुए अपने मामाको देखकर बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल सूर्य्यको ढकदेते हैं, वह बाणों से ढकाहुआ अत्यन्त प्रसन्नरूप हुआ और माता के कारण से उन दोनोंकी अत्यन्त प्रीति हुई, हेराजा इसके पीछे उसमहारथी ने बहुत हंसकर युद्धमें चार उत्तम शायकोंसे नकुल के चारों घोड़ोंको मारा, फिर वहमहारथी भी शीघ्रही मृतक घोड़ेवाले रथसे कूदकर,अपने यशस्वी भाई केरथपर सवार

हुआ फिर एकरथपर सवार दोनों क्रोधयुक्त शूरभाइयोंने दृढ़धनुषोंको खैंचकर क्षणमात्रमेंही राजामद्र के रथको बाणों से ढकदिया वह बाणों से आच्छादित होकर भी पर्व्वत के समान कंपायमान नहीं हुआ और हंसतेही उसने उन बाणों की वर्षाको नाश किया, तदनन्तर पराक्रमी सहदेवने बड़ेक्रोध से बाणको खैंचकर राजामद्र के ऊपर फेंका, उसका फेंका हुआ वह गरुड़समान बाण राजा मद्र को घायल करके पृथ्वीपर गिरा, फिर वह महा घायल पीड़ा मान महारथी बड़ी दृढ़ता से रथ में बैठकर अचेत होगया उसका सूत उसको अचेत हुआ देखकर उस संग्राम भूमि से रथके द्वारा दूर लेगया, धृतराष्ट्र के सबपुत्रोंने राजा मद्रके रथको फिराहुआ देखकर बड़ी व्याकुलतासे चिन्ताकरी और जाना कि वह नहीं है, माद्रीके दोनों महारथी पुत्रों ने युद्ध में अपने मामाको जीतकर शंखों को बजाके बड़े सिंहनादसे गर्जनाओं को किया और हेराजा वह दोनों बड़े प्रसन्न हो कर आपकी सेना पर ऐसे दौड़े जैसे कि इन्द्र और विष्णु दोनों देवता दैत्यों की सेनापर दौड़े ५७॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिइन्द्रयुद्धेचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पचासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे आकाश के मध्यगत सूर्य्य के आजाने पर राजा युधिष्ठिर ने श्रुतायुषको सन्मुख देखकर घोड़ों को चैतन्य किया, और गुप्तग्रन्थी वाले नौशायकों से शत्रुजित श्रुतायुषको घायल करके उसके सन्मुख दौड़ा, फिर उस बड़े धनुषधारी ने कोपित होकर युद्ध में बाणों को रोककर सातबाण युधिष्ठिर पर चलाये, वह बाण उस महात्मा के प्राणों को खोजकरते हुए उसके कवच को काटकर रुधिर को पीने लगे फिर उससे अत्यन्त घायलहुए युधिष्ठिर ने बराह कर्ण नाम बाणसे राजा के हृदय को घायल किया, फिर रथियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ने दूसरे भल्ल से उस महात्मा की ध्वजाको शीघ्रही काटकर रथ से नीचे गिराया, उसके पीछे उसराजा श्रुतायुषने अपनी ध्वजाको गिराहुआ देखकर सातविशिखों से धर्मराजको घायल किया, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ऐसा अत्यन्त क्रोध में ज्वलित हुआ जैसे कि प्रलयकालकी अग्निदेदीप्त होतीहै, हेराजा देवतागंधर्व राक्षस युधिष्ठिर को क्रोधयुक्त देखकर पीड़ामान हुए और सब संसार कोभी व्याकुलता हुई और सब जीवों के चित्त में यह बात वर्त्तमान हुई कि अब यह राजा अत्यन्त क्रोध युक्त होकर तीनों लोकों को भस्म करदेगा, हे राजा तबतो युधिष्ठिर के अत्यन्त क्रोधित होनेपर ऋषियों और देवताओं ने लोकों की शान्ती के निमित्त बड़ी २ ईश्वरसे प्रार्थना करी, उस क्रोधमें भरे होठों को

चावते हुए युधिष्ठिर ने प्रलयकाल के सूर्य के समान अपने भयानक रूपको धारण किया, तदनन्तर हे राजा वहां आपकी सब सेनाजीवनके विषय में निराशा हुई, तब उस राजाने धैर्यता से उसक्रोधको अच्छी रीति से रोककर श्रुतायुपके बड़े धनुष को मूठपर से काटा, फिर राजा ने भी सब सेना के देखते हुए इस टूटे धनुष वालेको अपने नाराच बाणसे छातीपर घायल किया और इसी महात्मा ने शीघ्रता से उस महात्मा के घोड़ों को बाणोंसे मार कर सारथी को तत्क्षणही मारडाला, तब श्रुतायुष मृतकघोड़ों के रथ को त्याग कर राजा के पराक्रम को देखके बड़ी तीव्रता से संग्रामभूमि से भागा हे राजा उस युद्ध में धर्मपुत्र युधिष्ठिर से उस धनुषधारी के विजयहोने पर दुर्योधनकी सब सेना मुख मोड़गई, फिर धर्मराज ने यह कर्म कर के अत्यन्तकाल मृत्यु के समानहोकर आपकी सब सेना को मारा, फिर वृष्णिबंशी चेकिताननें सब सेना के देखते रथियों में श्रेष्ठगौतम कृपाचार्य्यको शायकों से ढक दिया और कृपाचार्य्य ने उन बाणों को रोककर युद्ध में कुशलचेकितानको बाणों से घायल किया फिर उसशीघ्रताकरने वाले कृपाचार्य्यने दूसरे भल्लसे उसके धनुष को काट कर उसके सारथी को भी गिराया, इसके पीछे घोड़ोंको मार के सारथी और पीछे के रक्षक को मारा फिर उसगदा में कुशलयादव ने शीघ्रही रथसे कूदकर गदाको हाथमें लिया, और उस वीरोंकी मारने वाली गदासे कृपाचार्य्य के घोड़ों को और सारथी को मारा, फिर पृथ्वी पर वर्त्त-मान कृपाचार्य्य ने सोलह बाणों को उसके ऊपर फेंका वह सब बाण उस यादव को घायलकरके पृथ्वीपर गिरे, फिर कृपाचार्य्य को मारने की इच्छा से महाक्रोधित चेकितान ने उस गदाको ऐसे फेंका जैसेकि इन्द्र ने वृत्रासुर के ऊपर फेंकाथा फिर कृपाचार्य्य ने उस लोहेकी महा स्थूल गिरती हुई गदाको हजारों बाणों से रोका, इसके पीछे चेकितान खड्ग को मियानसे निकालकर बड़ी तीव्रतासे कृपाचार्य्य के समीप गया, फिरबड़े सावधान कृपा-चार्य्य भी धनुषको छोड़कर बड़ी तीव्रतासे चेकितानके पासगये, वहां उन दोनों महा पराक्रमी खड्ग धारियों ने तीक्ष्ण धारवाले खड्गों से परस्पर में घायल किया ३० फिर वह दोनों पुरुषोत्तम खड्गों के आघातों से घायल सबजीवों के निवासस्थान पृथ्वीपर गिरपड़े, और मूर्च्छा से महा व्याकुल देह होकर बड़े परिश्रम से अचेत होगये इसके पीछे करिकर्ष उस दशा में युक्त युद्ध में दुर्मद चेकितान को देखकर प्रीति के कारण बड़ी तीव्रता से सन्मुख दौड़ा और सेनाके देखतेहुए उसको रथपर सवार किया, इसी प्रकार हे राजा आप के साले शूरशकुनी ने उस रथियों में श्रेष्ठकृपाचार्य्य को भी शीघ्ररथपर सवारकिया, इसी प्रकारसे महाबली क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने नब्बे तीक्ष्ण बाणों

से भूरिश्रवा को हृदय में घायल किया, हे राजा भूरिश्रवा उन हृदयपर नियत बाणों से ऐसा अत्यन्त शोभित हुआ जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य्य अपनी किरणों से शोभित होता है, फिर भूरिश्रवा ने उत्तम शायकों से महारथी धृष्टकेतुके सारथी रथ घोड़ों को मार रथसे विरथकर दिया, फिर इसको युद्ध में रथहीन देखकर बाणों से ढक दिया, हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर वह बड़ा साहसी धृष्टकेतु उस रथको छोड़कर शतानीक के रथपर सवार हुआ, इसके पीछे सुनहरी कवच धारण करने वाले (चित्रसेन) (विकर्ण) (दुर्मर्षण) नाम तीनों रथी अभिमन्यु के सन्मुख दौड़े, इस के पीछे अभिमन्यु से और उन रथियों से ऐसा घोरयुद्ध मचा जैसे कि देह से और बात पित्त कफ इन तीनों से युद्ध होताहै, हे राजा फिर भीमसेनके बचन को स्मरण करते हुए उस नरोत्तमने आपके पुत्रों को विरथ करके मारा नहीं तदनन्तर देवताओं से भी अजेय भीष्मजी बहुत से हाथी घोड़े और रथोंपर सवार हजारों राजाओं से आनकर संयुक्त हुए इसप्रकार आपके पुत्रों की रक्षा के लिये बड़ी शीघ्रतासे आते हुए भीष्मजी को देखके और महारथी अभिमन्यु को अकेला देखकर श्वेत घोड़े के रथपर सवार अर्जुन बासुदेव जी से यह बचन बोला कि हे हृषीकेश घोड़ोंको तेज करिये और जहां यह बहुत से रथ हैं वहां चलिये, यह अस्त्रों के जानने वाले युद्धमें दुर्मद बड़े शूरबीर जैसे कि हमारी सेनाको नहीं मारें हे माधवजी उसी प्रकारसे आप घोड़ों को चलाइये, बड़े तेजस्वी अर्जुनके कहेहुए ऐसे बचनों को सुनकर श्रीकृष्ण जी ने उन्हीं श्वेत घोड़ों के द्वारा रथको संग्राम भूमि में पहुंचाया, हे राजा यह आपकी सेना का बड़ा निष्ठानक हुआ जो युद्ध में क्रुद्ध अर्जुन आपके पुत्रों पर चढ़ाई करनेवाला हुआ, हे राजेन्द्र अर्जुन उन भीष्मजी के रक्षक राजाओं को प्राप्तहोकर राजा सुशर्मा से यह बचन बोला, कि मैं तुझ को शूरबीरों में अत्यन्त श्रेष्ठ और पहला शत्रु जानताहूं अब इस अन्याय से प्राप्तहुए भयानक फलको देखो, अब मैं तेरेमरेहुए पूर्व्वजों से तुझे मिलाऊंगा यह अर्जुन के बचन सुनकर महारथी सुशर्मा ने उसको अच्छा बुरा कोई उत्तर नहीं दिया, फिर बहुत राजाओं समेत आपके महारथी पुत्रों ने महा पराक्रमी अर्जुन के सन्मुख जाकर अर्जुनको चारोंओरसे घेरकर बाणोंकी बर्षा से ऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि बादल सूर्य्य को ढकलेतेहैं हेभरतर्षभ इस के पीछे आपके पुत्रों से और अर्जुन से ऐसा महा भयानक युद्ध प्रारंभ हुआ कि जिसमें रुधिरों की नदी बह निकली ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि बाणों से घायल सर्पके समान श्वास लेने वाले महा पीड़ित बलवान् अर्जुनने युद्धमें महा हठकरके एक२ बाणसे सब महारथियों के बाणोंको और धनुषों को एक क्षणमें काटकर उस नाशकर्त्ता महात्मा अर्जुनने बाणोंसे सब को एकही समयमें घायल किया, हे राजा इन्द्रके पुत्र अर्जुनके हाथ से घायल वह राजालोग रुधिर में भरे अत्यन्त टूटे अंग शिर कटे मृतकहोके कवच पहरेहुए संग्राम भूमि में गिरपड़े, अर्जुन के पराक्रम से विचित्ररूप होकर सब महारथी एक साथही नाशको प्राप्तहुए, युद्धमें उन राजकुमारों को मृतक देखकर राजा त्रिगर्त्त रथकी सवारीमें चला, फिर उन रथियों के पति भी पीछे की रक्षाकरने वाले वीर अर्जुनके सन्मुख आये और अर्जुनको चारों ओर से घेरकर बड़े शब्दायमान धनुषों को चढ़ाके, हजारों बाणोंकी ऐसी बर्षा करने लगे जैसे कि जल समूहसे बादल पहाड़पर बर्षाकरते हैं, फिर बाणोंकी बर्षा से पीड़ित अर्जुनने बड़े क्रोधयुक्त होकर उन पृष्ठ रक्षकोंको भी युद्ध के भीतर तेलसे सफा किये हुए बाणोंसे मारा फिर उस यशस्वी प्रसन्न चित्त अर्जुनने युद्ध में उन साठ रथियों को विजयकर युद्ध में राजाओं की सेनाओं को मार भीष्मजीके मारने के लिये शीघ्रताकरी, फिर राजा त्रिगर्त्त अर्जुन के हाथसे मरेहुए बांधवों के उन समूहों को देखकर राजाओं के आगे करके अर्जुनके मारने के लिये बहुत शीघ्रगया, फिर शिखण्डी आदि उस अस्त्रज्ञ अर्जुनको सन्मुख गया हुआ जानकर बड़े तीब्र अस्त्रों को हाथमें लिये बड़ी शीघ्रतासे अर्जुनकी रक्षा के निमित्त उसकेपास गये फिर उस बड़े धनुषधारी अर्जुननेभी राजा त्रिगर्त्तके साथ आतेहुए उन नरोत्तम वीरोंको देखकर, गांडीव धनुष से छोड़े हुए तीक्ष्ण पृषत्क बाणों से मारकर भीष्मजी की ओर जाते हुए मार्ग में दुर्योधन और जयद्रथ आदि राजाओं को देखा, फिर वह वीरउन रोकने के इच्छावानों के सन्मुख होकर और एक मुहूर्त्त युद्ध करके बड़े पराक्रमी राजा जयद्रथ आदि को छोड़कर, हाथ में भयकारी धनुष लेकर भीष्मजीके सन्मुखगया फिर भयकारी पराक्रम वाला युधिष्ठिर भी बड़े क्रोध में भरके उन के सन्मुखगया, फिर वहअत्यन्त कीर्त्तिवान् अपने भाग में मिले हुए उस राजा मद्रको त्यागकरके नकुल सहदेव और भीमसेन को साथलिये भीष्मजी के सन्मुखगया युद्धमें अपूर्व्व पराक्रम दिखाने वाले गंगापुत्र शंतनुके पुत्र भीष्मजी उनउत्तम महारथियों से संयुक्त होकर सब पांडवों से भिड़े हुए भी पीड़ामान नहीं हुए, इसके पीछे भयानक बल साहसी सत्य संकल्प राजा जयद्रथने युद्धमें आकर उत्तम धनुष

से उन महारथियों के धनुषों को काटा, और क्रोध युक्त शत्रुता रखनेवाले दुर्य्योधन ने अग्नि के समान प्रकाशमान बाणों से युधिष्ठिर भीमसेन नकुल और सहदेव समेत श्रीकृष्ण और अर्जुन को घायल किया हे समर्थ वह पाण्डव युद्धभूमि में उन महाक्रोध में भरेहुए कृपाचार्य्य शल और शल्य वा चित्रसेन के बाणों से ऐसे घायल किये जैसे कि दैत्यों के समूह से मिले हुए देवता घायल होते हैं, फिर क्रोधयुक्त महात्मा युधिष्ठिर भीष्मजी के हाथसे टूटे अस्त्रवाले शिखण्डी को देखकर महाक्रोधयुक्त शिखण्डी से यह बचन बोला, कि तुम ने अपने पिता के सन्मुख प्रतिज्ञा करके यहमुझ से कहाथा कि मैं निर्म्मल सूर्य्य रूपी बाणों के समूहों से महाव्रत भीष्मजी को मारूंगा, तुम अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करके क्यों नहीं भीष्मजी को मारते हो, हे नरोत्तम तुम असत्य प्रतिज्ञावाले मत हो धर्म्म यश और कुल की रक्षा करो, तुम अत्यन्त तीव्र प्रकाशित बाणों के समूहों से मेरी सेना के सब यूथों के संतप्त करनेवाले और युद्ध में भयकारी रूप भीष्मको ऐसा देखो जैसे कि काल पुरुष क्षणभर में सबको मारे, युद्ध में राजालोग भीष्म के हाथ से टूटे धनुष वाले हुए तुमको ऐसा उचित नहीं है कि अपने सगे भाई और बान्धवों को छोड़कर जाते हो, यह बात तुम्हारे योग्य नहीं है हे द्रुपद के पुत्र तू उस अतुल पराक्रमी भीष्म को और इस छिन्न भिन्न भागी हुई सेना को देखकर अवश्य भयभीत है और तेरे मुखकी शोभा बिगड़ी हुई है, बड़े भारी युद्ध में चारों ओर से जाते हुए अर्जुन के साथ भिड़े हुए नरबीर भीष्मको देखो हे बीर तू पृथ्वी पर विख्यात होकर क्यों भीष्मजी से शत्रुता करता है, हेराजा उस महात्माने धर्मराज के रूखे २ अनेक मर्म स्पर्श करने वाले बचनों को सुनकर आज्ञाको मानकर भीष्म के मारने की शीघ्रता करी, उस समय बड़े बेगसे भीष्मके सन्मुख आतेहुए शिखण्डीको शल्यने बड़े दुर्जयघोर अस्त्रोंसे रोका, हे राजा महाइन्द्रके समान प्रभाववाला वह द्रुपदका पुत्र उस प्रलया-ग्निके समान प्रकाशित अस्त्रको देखकर मोहित नहीं हुआ, और बड़े धनुष के बाणोंसे उस अस्त्रको नाशकरके उसीस्थानमें नियतहुआ फिर शिखण्डी ने इस के नाश करनेवाले दूसरे बरुणास्त्रको लिया उस अस्त्रसे अस्त्रको रुके हुए को स्वर्गबासी देवता और राजाओं ने देखा, फिर उस महात्मा बीर भी-ष्मजी ने युद्ध में अजमीढ़ बंशी पाण्डव युधिष्ठिर के धनुषको जड़ाऊ ध्वजा समेत काटकर बड़ा शब्द किया इसके पीछे भीमसेन युधिष्ठिर को भयभीत देखकर बाणों समेत धनुषको छोड़कर, गदा को हाथ में लिये पैदल ही संग्राम में जयद्रथ के सन्मुख आया, जयद्रथ ने गदाधारी भीमसेन को बड़े वेग से आता हुआ देखकर यमराज के दण्ड के समान घोर नौ बाणों से

चारोंओर घायल किया फिर क्रोध में पूर्ण भीमसेनने बाणों को कुछ न मानकर, राजा सिंधु के पारावत नाम सब घोड़ों को मारा, फिर अतुल प्रभाव इन्द्र के समान अस्त्रधारी आपका पुत्र चित्रसेन बड़ी शीघ्रता से अपने रथ के द्वारा भीमसेन के मारनेको सन्मुखगया तब भीमसेन भी खूब गर्जकर गदासे उसको रोकता हुआ सन्मुख गया,, फिर वह कौरवलोग चहुंओरको यमदण्ड के समान गदा उठाये भीमसेन को देखकर सब आपके पुत्रों को छोड़कर उस भयकारी गदासे बचने के लिये इच्छा करनेवाले हुए और उस बड़े भारी तुमुल युद्ध से दूर हटगये फिर चित्रसेन आतीहुई महाघोर गदा को देखकर, रथको त्यागकर युद्ध भूमिमें पैदलही निर्मल खड्ग और ढाल को लेकर रथ से पृथ्वीपर ऐसे कूदा जैसे कि पर्व्वत के कोणसे सिंहकूदताहै, वह गदा भी बड़े जड़ाऊ रथों को पाकर घोड़े और सारथी समेत रथको विध्वंसनकरके पृथ्वीपर ऐसे गिरी जैसे कि आकाशसे गिरीहुई बड़ी ज्वलित उल्का पृथ्वी को जाती है, आपके पुत्र और सब भाई अत्यन्त प्रसन्न उस बड़े आश्चर्य्य को देखकर एक साथही गर्जे और चारों ओर से सेनासमेत सबों ने उसकी प्रशंसा करी ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इस के अनन्तर आपके पुत्र विकर्ण ने उस बिरथ और प्रसन्न चित्त चित्रसेन को पाकर रथपर सवार किया, इसरीति से उस अत्यन्त कठिन तुमुल युद्धके वर्त्तमान होने पर शांतनु के पुत्र भीष्मजी ने बड़ी शीघ्रता से युधिष्ठिर के सन्मुख दौड़े, उसके पीछे संजयनाम बड़े बलवान् क्षत्रियोंने रथहाथी और घोड़ों समेत अत्यन्त कोपित होकर युधिष्ठिर को काल के मुख में गया जाना फिर समर्थ धर्मराज युधिष्ठिर भी नकुल सहदेव दोनों अपने भाइयों समेत उस बड़े धनुषधारी नरोत्तम भीष्मजी के सन्मुख गया, इस के पीछे पांडवों ने हज़ारों बाणों से भीष्मको ऐसा ढक दिया जैसे कि सूर्य्य को बादल ढकदेताहै फिर गांगेय भीष्मजी ने उस युधिष्ठिर को अच्छी रीति से छोड़े हुये हज़ारों बाणों को अपने बाणों से रोक दिया हे राजा फिर इसी रीतिसे भीष्म केभी छोड़े हुए बाण आकाशमें ऐसे दिखाईदिये जैसे कि पक्षियों के समूह उड़तेहैं इन भीष्मजी ने क्षणमात्र में ही युधिष्ठिर समेत उनके सब बाण समूहों को गुप्त कर दिया, फिर युधिष्ठिर ने महा क्रोधित होकर सर्प के समान नाराच भीष्मजी के ऊपर फेंके, फिर वहां महारथी भीष्मजी ने अपने क्षुरप्रनाम बाण से उस के छोड़े हुए बाणों को बीचही

में काटा, उसकाल समान नाराचको काटकर भीष्मजी ने सुवर्ण भूषित युधिष्ठिर के घोड़ों को मारा, फिर युधिष्ठिर उस मृतक घोड़ों के रथका त्याग कर शीघ्रही महात्मा नकुल के रथपर सवार हुआ, फिर शत्रुपुर के विजयी भीष्म ने क्रोध युक्त दोनों नकुल सहदेव कोभी बाणों से आच्छादित कर दिया, फिर राजा युधिष्ठिर भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित उनदोनों भाइयों को देखकर भीष्मजी के मारने की इच्छा से बड़े चिन्ता युक्त हुए, इस के पीछे युधिष्ठिर ने उन अपने आज्ञावर्ती राजाओं को और मित्र समूहों को सावधान किया और कहा कि इस युद्ध में भीष्मजी को मारो, फिर सब राजाओं में युधिष्ठिर के बचन को सुनकर बड़े रथ समूहों समेत पितामह को घेर लिया, हे राजा चारों ओर से घिरे हुये आपके पिता देवव्रत भीष्म बाणों से महारथियों को गिराते हुए धनुषक्रीड़ा करनेवाले होगये, संग्राम भूमि में घूमतेहुए भीष्मजी को पांडवों ने ऐसा देखा जैसे कि बड़े बन के मध्यमृगों में प्रवेश करके सिंह घूमता है, फिर युद्ध में शूरों को घुड़कते और बाणों से उड़ाते हुए भीष्मको देखकर सब पांडवी सेना ऐसी भयभीतहुई जैसे कि सिंह को देखकर मृगोंके यूथ कंपित होते हैं, उस समय सब क्षत्रियों ने भीष्मजी की गतिको उस युद्धभूमि में ऐसा देखा मानों बायुका सखा अग्नि सूखेबन को जलारहा है, वहां भीष्म ने रथियों के शिरों को ऐसे गिराया जैसे कि बुद्धिमान् मनुष्य ताल वृक्षके पक्वफलों को गिराताहै, हे राजा पृथ्वी पर गिरते हुए शिरोंके ऐसे बड़े कठिन शब्दहुए जैसे कि गिरतेहुए पत्थरों के शब्द होतेहैं, उसमहा भयानक घोर युद्धके होनेपर सबसेना में बड़ा खेदउत्पन्न हुआ, फिर उनव्यूहों के टूटने पर क्षत्री लोग परस्पर में एकएक को बुलाकर युद्धके निमित्त सन्मुख नियत हुए, फिर शिखण्डी भरतबंशियोंके पितामहको पाकर बड़े बेग से तिष्ठ २ बचनों को कहता हुआ सन्मुख दौड़ा, इसके पीछे भीष्मजी उस शिखण्डी को तिरस्कार करके उसके स्त्रीपने को बिचारते हुए संजयों के सन्मुख गये, फिर प्रसन्न चित्त संजय लोगों ने महारथी भीष्म को देखकर शंखके शब्दोंसमेत बड़े सिंहनादको किया, तदनन्तर भीष्मकी दिशा में नियत होकर सूर्य्य के बर्त्तमान होनेपर रथहाथियों समेत युद्ध जारीहुआ, हे राजा फिर बरछी तोमरों की बर्षा से सेनाको अत्यन्त पीड़ित करते हुए पांचालदेशी धृष्टद्युम्न और महारथी सात्विकी ने, अनेक प्रकारके बाणों से आपके शूरबीरों को घायल किया परन्तु आपके उन घायल शूरोंने, बड़ी बुद्धिमानी से युद्धभूमिको नहीं त्यागा और बड़े उत्साहसे लोगोंको मारा, हे राजा वहां महात्मा धृष्टद्युम्न के हाथसे घायल हुए आपके पुत्रों के बड़े शब्द हुए, फिर आपके पुत्रों के घोरशब्दों को सुनकर महारथी विन्द अनु-

विन्द और अवन्ति देशके राजा लोग सबमिलकर धृष्टद्युम्न के सन्मुख हुए, फिर उन शीघ्रता युक्तदोनों महारथियों ने उसके घोड़ोंको मारकर बाणोंकी वर्षा से धृष्टद्युम्न को ढकदिया, तब महाबली धृष्टद्युम्न शीघ्रही रथसे कूदकर बड़े महात्मा सात्यिकी के रथपर चढ़गया, फिर बड़ी सेना समेत राजा युधि- ष्ठिर उन क्रोधयुक्त अवन्ति देशके राजाओं की ओर दौड़ा, और इसीप्रकार आपका पुत्रभी विन्द और अनुविन्द को रक्षित करके नियत हुआ ३७ हे क्षत्रियोत्तम धृतराष्ट्र युद्धमें अर्जुन ने भी अत्यन्त कोपयुक्त होकर क्षत्रियों से ऐसा युद्ध किया जैसे कि असुरों से बज्रधारी इन्द्रने कियाथा, फिर युद्ध में क्रुद्धआपके पुत्रों के शुभचिन्तक द्रोणाचार्य्य ने सबपांचाल देशियों को ऐसे नष्टकिया जैसे कि तूलराशिको अग्नि भस्म करदेता है, फिर आप के दुर्य्योधनादि पुत्र भीष्मजी को रक्षित करके पांडवोंसे युद्धकरने लगे, ४० इस के पीछे सूर्य्य के अरुण होने पर राजा दुर्य्योधन आपके सब शूरवीरोंसे बो- ला कि शीघ्रता करो, फिर इसी प्रकार इनके लड़ते और कठिन कर्म करते हुए सूर्य्यके अस्तंगत होने पर, रात्रि के प्रारंभमें भयानक रुधिरकी नदीबही जिसमें हजारों शृगाल वर्त्तमानथे और भूत समूहों से व्याप्त संग्राम भूमि चारों ओर को घूमते हुए अशुभ शृगालों से महाभयानक होगई, और हजारों राक्षस पिशाच और अनेक मांसाहारी जीवभी चारों ओर के टूटपड़े इसके पीछे अर्जुन भी सुशर्मा आदि राजाओं को उनके साथियों समेत विजय करके सेना में जाकर अपने डेरों कोगये, फिर युधिष्ठिर भी सेना स- मेत भाइयों को साथलिये रात्रि के समय अपने डेरोंको गये, और भीमसेन भी दुर्य्योधनादि महारथी राजाओं को विजय करके अपने डेरे को गये, दुर्य्योधन भी भीष्मजी को मध्यमें करके डेरेकोगया, और द्रोणाचार्य्य कृपा- चार्य्य अश्वत्थामा शल्य कृतवर्मा यादव यह सबसेनाको मध्यमें करकेडेरों कोगये, इसी प्रकार सात्विकी धृष्टद्युम्न वीरों को मथनकरके डेरों कोगये हे महाराज इस रीतिसे यह शत्रु सन्तापी आपके सबशूरवीर रात्रि के समान पाण्डवों सहित लौटे, हे राजा इसरीतिसे पांडव और कौरव परस्पर प्रशंसा करते अपने २ डेरोंमें स्थितहुए, वह सब वीर अपनी रक्षाकरके और गुल्मना- म सेनाको वृद्धिके अनुसार देखकर और भालों समेत सफाई से स्नान कर ब्राह्मणों से आशीर्वादमांग वंदीजनोंसे प्रशंसितहो गीतबाद्यों समेत आन- न्दसे क्रीड़ा करनेलगे फिरएक मुहूर्त्तमेंही वह सब क्रीड़ास्थान स्वर्गके तुल्य होगया वहांकिसी महारथीने भी युद्धकी कथाका वर्णन नहीं किया,फिरवह दोनों सेनाओं के वीर हाथी घोड़ों समेत बड़े आनन्दपूर्व्वक सोये, ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि सप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

संजयबोले कि सुख पूर्व्वक सोये हुए कौरव और पांडवों समेत राजा लोग रात्रिको व्यतीत करके फिर युद्ध के निमित्तगये, और संग्राम भूमि में जाने वाले बीरों के बड़े २ शब्द समुद्र के समान हुए, तब राजा दुर्य्योधन चित्रसेन बिविंशति भीष्मजी द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण इनसब बड़े सावधान और एक मन कौरवोंके महारथी कवच शस्त्र धारियों ने पांडवोंके सन्मुख व्यूहोंको अलंकृत किया फिर शांतनुके पुत्र आपके पितामह भीष्मजी सागरके समान भयानक सवारी रूपी लहरों से लहरातेहुए महाव्यूहको शोभित करके,मालव देशी दक्षिण देशी और अवन्ति देशियों से संयुक्त सब सेनाओं के अग्रगामी होकर चले, इसके पीछे प्रतापवान् द्रोणाचार्य्य जी पुलिन्दपारद क्षुद्रक और मालवीलोगों के साथहुए हे राजा फिर प्रतापी सावधान राजा भगदत्त मागध कलिंग और पिशाचों समेत द्रोणाचार्य्यके पीछे हुआ और राजा वृहद्बल कौशल्य मेकल त्रैपुर और चिबुकों समेत प्राग्ज्योतिषकेराजा भगदत्त के पीछे चला, उसके पीछे त्रिगर्त्त देशी महाशूर पराक्रमी राजा प्रस्थल बहुत से काम्बोजों से युक्त होकर नियतहुआ इसके पीछे महावेगवान् शूर-बीर अश्वत्थामा त्रिगर्त्तदेशियोंके पीछे अपने सिंहनाद से पृथ्वीको शब्दाय मान करताहुआ चला, इसी प्रकार से इसके पीछे राजा दुर्य्योधन सब भाइयों समेत सब सेना के साथ अश्वत्थामा के पीछे चला इसके पीछे शारद्वत कृपा चार्य्य जी दुर्य्योधन के पीछे चले इसरीति से सागर के समान वह बड़ाव्यूह चला, उस व्यूहकी पताका श्वेत छत्र जड़ाऊ बाजूबन्दतोमर धनुषों समेत महा शोभायमान हुई, फिर महारथी युधिष्ठिर आपके बेटों केउस बड़े व्यूहको देखकर बहुत जल्दी से अपने सेनापति धृष्टद्युम्न से बोला कि हे बड़े धनुष-धारी धृष्टद्युम्न इस समुद्र के समान रचेहुए व्यूहको देखो और तुमभी उसके समान शीघ्रही हमारे व्यूहको अलंकृत करो, इसके पीछे उसशूर धृष्टद्युम्नने बड़े भयानक शत्रुओं के व्यूहके नाश करने वाले शृंगाटक नाम व्यूहको बड़ी उत्तमता से बनाया, उस व्यूहमें महारथी भीमसेन और सात्विकी तो हज़ारों हाथी घोड़े रथ पदातियों समेत शिखररूप हुए, और नरोत्तम श्वेत घोड़े वाला श्रीकृष्णको सारथी रखनेवाला अर्जुन नाभि के ऊपर वर्त्तमान हुआ और मध्यमें राजा युधिष्ठिर और नकुल सहदेव दोनों भाईहुए, इसी प्रकार व्यूहशास्त्र में कुशल बुद्धि बड़े धनुषधारी अन्य महारथियों ने सेन समेत उसव्यूहको पूर्ण किया, और महारथी (अभिमन्यु) विराट् द्रौपदी के पुत्र और घटोत्कच राक्षस उसके पीछे हुए, हे राजा इसरीति वह व्यूहवीर

पांडव अपने व्यूहको रचकर युद्धाभिलाषी विजय के चाहनेवाले संग्रामभूमि में आकर नियतहुए, शंखध्वनि से युक्त भेरियों के कठोर शब्द वा सिंहनाद और भुजाओं के शब्दों से शब्दायमान सब दिशायें अत्यन्त भयानक विदित हुईं, इसके पीछे उन शूरवीरों ने परस्पर सन्मुख होकर एकने एकको टकटके नेत्रों से देखा, हे राजा वह शूरवीर पूर्व्वनामों के द्वारा परस्पर में बुला बुलाकर युद्ध के निमित्त वर्त्तमान हुए, इसके अनन्तर परस्पर मारने वाले आप के पुत्र और पांडवी सेना का महा घोर और भयानक रूप युद्ध जारी हुआ, हे भरतर्पभ उस युद्ध में बड़े तीक्ष्ण नाराचों की ऐसी वर्षाहुई जैसे कि महाभयानक दंशकरनेवाले सर्प चारों ओरसे गिरते होयँ, और तेलसे शुद्ध तीक्ष्ण वरछियां भी चारों ओरसे ऐसी गिरीं जैसे कि बादलों से प्रकाशमान बिजली गिरतीहै और रेशमी वस्त्रों से मढ़ेहुए, सुवर्णसे जटितपर्व्वत के शिखर के समान बड़ी२ गदा और निर्मल आकाश के समान खड्ग और सूर्य चंद्रमाओं से चिह्नित उत्तम ढालें यह सब गिरती हुई बड़ी शोभायमान हुईं हे राजा वह खड्ग ढालें पृथ्वीपर गिरीहुई सब ओर से शोभायमान हुईं फिर वह परस्पर युद्ध करनेवाली दोनों सेना ऐसी शोभित हुईं जैसे कि देव दानवों की सेना होतीहैं उस समय एकएकके सन्मुख दौड़े, रथी रथियों के साथ बहुत जल्दी से भेजे गये और उत्तम राजा लोग रथके जुओं को जुओं से मिलाकर युद्ध करनेलगे, हे राजा सबओर लड़तेहुए हाथियों की गसावट से दांतों के ऊपर सधूम अग्नि उत्पन्न होगये कोई हाथी के सवार तो जंगी फरसों से घायल हुए सब ओरसे गिरते हुए ऐसे दृष्टपड़े जैसे कि पर्व्वतके शिखर से वृक्ष गिरतेहैं और विचित्र रूपधारी शूर वीर पदाती नख और फरसों से युद्ध करनेवाले पदाती परस्पर में मारते हुए दृष्ट पड़े, फिर उन कौरव और पाण्डवों की सेनाके मनुष्यों ने परस्पर सन्मुख होकर युद्ध में नाना प्रकारके बाणों से एकने दूसरे को यमपुरको भेजा और रथ वा धनुष के शब्दों से गर्जना करते हुए भीष्मजी पाण्डवों के सन्मुख गये, और पांडवोंने भी सावधान रथी धृष्टद्युम्न को आगे किये हुये बड़े भयानक घोर शब्दों को करतेहुए कौरवों के सन्मुख दौड़े, इस के पीछे आपके शूरवीरोंका और पाण्डवोंके वीरोंका युद्ध जारी हुआ और मनुष्य हाथी घोड़े और रथोंका परस्पर मेल न हुआ ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि पाण्डव लोग युद्धमें क्रोधित चारों ओरसे संतप्त करने-

वाले भीष्मजीके देखनेको भी ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि अत्यन्त प्रचंड सूर्य्य को कोई नहीं देखसक्ता है, इसके पीछे धर्म्म पुत्र युधिष्ठरकी आज्ञासे पाण्डवों की सब सेना भीष्मजी के सन्मुख दौड़ीं, फिर उस प्रतापी भीष्मने (संजय लोगों को) सोमकों समेत और बड़े धनुषधारी पांचालदेशियों को शायकों से आच्छादित किया तब भीष्मसे घायल हुए सोमकों समेत पांचाल देशी भयको त्यागकर शीघ्र भीष्मजी के सन्मुख जापहुंचे, तब उस शांतनुके पुत्र बलवान् भीष्मने उन रथियोंकी भुजाओंको अस्त्रों समेत काट कर रथोंसे बिरथ कर दिया फिर खड्गों से सवारोंके शिर गिराये हेमहाराज हम ने भीष्मजीके अस्त्रसे अत्यन्त मोहित बिना शिरके हाथियों को ऐसा देखा जैसे कि बिना वृक्षके पर्व्वत होते हैं, उस काल वहाँ रथियों में श्रेष्ठ महाबली भीमसेन के सिवाय पाण्डवों का कोई भी मनुष्य नियत नहीं हुआ, उसने युद्धमें भीष्मजीको पाकर रोक दिया फिर भीम और भीष्मकी सन्मुखतामें सब सेनाओं को निष्ठानक महा घोर और भयानक हुआ और पाण्डवों ने प्रसन्न होकर वह सिंहनाद किया, इस के पीछे बड़े घोरनाश के बर्तमान होनेपर अपने निज भाइयों समेत दुर्य्योधनने आकर भीष्मजी की रक्षाकरी, फिर रथियों में श्रेष्ठ भीमसेनने भीष्मजी के सारथी को मारकर बड़े बेगवान् घोड़ेवाले रथपर बैठकर धनुषको तान बड़ी शीघ्रतासे अपने क्षुरप्रबाण से सुनाभ के शिरको काटा वह शिरके कटतेही पृथ्वीपर गिरपड़ा, हे महाराज उस महारथी आपके पुत्रके मरने पर उसके (आदित्यकेतु) (बह्वाशी) (कुण्डधार) (महोदर) (अपराजित) (पंडितक) (विशालाक्ष) (दुर्जय) नाम शूरबीर सगेभाई जड़ाऊ कवच अस्त्रादिकोंसे अलंकृत होकर उस भीमसेनके सन्मुख दौड़े, उस समय महोदरने बज्रके समान नौबाणोंसे भीमसेनको ऐसा घायल किया जैसे इन्द्रने नमुचिको कियाथा, फिर आदित्यकेतु ने सत्तर बाणोंसे बह्वाशीने पांच बाणों से कुण्डधार ने नौ बाणसे बिशालाक्ष ने सात बाणसे और महारथी अपराजित अनेक बाणों से महाबली भीमसेनको व्याकुल करदिया, फिर पंडितकने तीनबाणसे घायल किया, इसके पीछे इन सबके बाणों से पीडित शत्रुसंतापी महाबली भीमसेनने क्रोधयुक्त हो बायें हाथसे दृढ़ धनुषको खैंचकर गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे आपके पुत्र अपराजित के शिरको काटा फिर वह शिर पृथ्वी पर गिरा, इसके पीछे सब सेनाके देखते हुए दूसरे भल्लसे महारथी कुण्डधारको कालबश किया, हे भरतर्षभ फिर बड़े साहसी भीमसेनने धनुष में शिलीमुख बाणको चढ़ाकर पंडितक को मारा, वह बाण पंडितकको मारकर पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि कालका भेजा सर्प मनुष्य को काटकर पृथ्वी

में घुसजाताहै, फिर पूर्व्व समय के दुःखोंको स्मरण करके प्रसन्नचित्त भीमसेनने तीनबाण से विशालाक्ष को मारकर पृथ्वी पर गिराया, हेराजा बड़ेधनुषधारी महोदर को नाराचसे छाती के ऊपर घायल किया वहभी मृतक होकर भूमिमें गिरा, फिर एक बाणसे आदित्यकेतुके छत्रको काटकर बड़ेतीक्ष्ण भल्ल से उसके भी शिरको काटा, फिर अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेन ने गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से बह्वाशीको भी यमलोकको भेजा, इसके पीछे आपके और सबबेटे सभाके मध्यमें कहेहुए भीमके वचनोंको सत्य २ जानकर युद्धभूमि से भागे, तदनन्तर भाइयों के दुःखसे पीड़ामान् राजा दुर्य्योधन आपके सब पुत्रों को बुलाकर यह बोलाकि हेभाइयो इस भीमसेनको मारो, इस रीति से इन धनुषधारी आपके पुत्रोंने भाइयोंको माराहुआ देखकर उस बचनको याद किया जो बड़े शुभ चिन्तक विदुरजी ने हितकारी समझ कर कहाथा वही उन महात्मा का वचन अब सत्य २ बर्त्तमान हुआ है हे राजा तुम लोभ मोह में भरे हुए पुत्रकी प्रीति से नहीं जानतेहो पूर्व्व समयमें सत्याहितकारी वचन कहागयाथा निश्चय करके महाबाहु बलवान् भीमसेन तेरेपुत्रोंके मारने के लिये ऐसाही उत्पन्न हुआ है जैसा कि कौरवों को माररहा है, इसके पीछे राजा दुर्योधन भीष्म के पास जाकर महा खेद युक्त होकर रोदन करने लगा कि मेरे शूरवीर भाई युद्ध में भीमसेन के हाथ से मारेगये, इसीप्रकार और सब सेना के मनुष्य भी मारेजाते हैं, आप सदैव हमको उदासीनपने से त्याग करतेहो मैं कुमार्ग में बर्त्तमानहूं मेरी अभाग्यता देखिये, संजय बोले कि इस वचन को सुनकर आपके पिता भीष्मजी उस अश्रुपात करनेवाले दुर्य्योधन से यह वचन बोले कि मैंने और द्रोणाचार्य्य विदुर गांधारी आदि ने प्रथमही कहाथा परन्तु हेतात तुमने उसको नहीं समझा, मैंने प्रथम तुम्हारे साथ नियम किया है सो मैं और आचार्य्यजी दोनों किसी रीति से तुम को छोड़ने को योग्य नहीं, धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्ध में जिस २ को भीमसेन देखेगा उसको सत्य २ हीमारे बिना नहीं छोड़ेगा, सो स्वर्ग को अपना स्थान समझ कर मनको स्थिर करके पांडवों से युद्धकरो हेभरतर्षभ इन्द्रादिक देवता भी पांडवों के जीतनेको समर्थ नहीं हैं इस हेतुसे युद्ध में स्थिरबुद्धी होकर संग्रामकरो ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र ने कहा हेसंजय एक भीमसेन के हाथसे मेरेबहुत से पुत्रों को माराहुआ देखकर भीष्म द्रोण कृपाचार्य्य आदिने क्या २ किया और मेरेपुत्र

प्रतिदिन युद्धमें नाशहोतेहैं इससे हेसूत मैं मानताहूं कि सबरीति से प्रारब्ध सेहीनहूं, कि मेरे पुत्रनाश होतेहैं और बिजय नहीं पातेहैं भीष्म, द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य, भूरिश्रवा, भगदत्त, अश्वत्थामा आदिबड़े २ प्रतापीलोगों के मध्य में मेरे पुत्र बर्त्तमान होकर भी मारेजाते हैं यहां प्रारब्धसे दूसरी कौनसी बातहै, हे तातमेरे और भीष्म बिदुरआदि अनेक सुहृदों के समझाने और निषेध करने से भी निर्बुद्धी दुर्य्योधननेपहले बचनों को नहीं समझा और हितकारिणी अपनी माता गांधारी केभी बचनको उसदुर्बुद्धीने नहीं समझा उसीका यहफल पारहा है, वहमहाक्रोधी भीमसेन युद्ध में प्रतिदिन मेरेपुत्रों कोही अधिकतासे मारकर यमलोकमें पहुंचाताहै, संजयबोले कि हे समर्थ बिदुरजीका वहउत्तमबचन बर्त्तमानहुआ है जो बिदुरने कहाथा कि पुत्रों को जुवा खेलनेसे निषेध करो और पांडवों से शत्रुतामतकरो सो उनशुभचिंतक मित्रोंके बचनों को तुमने ऐसे नहीं माना जैसे कि रोगी अपनीनीरोगकरने वाली औषधीको नहींखाता है वही साधुओं काकहाहुआ बचन आपके आगे बर्त्तमानहुआहै, यह सब कौरवलोग अपने शुभचिन्तक बिदुर द्रोणाचार्य्य भीष्म और अन्य बहुत से हितकारियों के बचनों को न मानकर नाशहोते जातेहैं, इसके पीछे हे राजामध्याह्न के समय संसारका नाशकारी बड़ा भारी भयानक युद्ध जो प्रारंभ हुआ उसको मुझसे सुनो, कि धर्मपुत्र युधिष्ठिर की आज्ञासे पांडवों की सबसेना महाक्रोधित होकर भीष्मके मारनेकेलिये सन्मुखदौड़ी हे महाराज धृष्टद्युम्न शिखण्डी सात्विकी यहतीनों अपनी २ सेना समेतभीष्म के सन्मुख गये, बिराट् द्रुपद आदि महारथी भी सबसोमकों समेत भीष्म के सन्मुखगये और पांचों भाई केकय धृष्टकेतु कुन्तिभोज आदि भी सबकवचधारी होकर सेना समेत भीष्म के सन्मुखगये, अर्जुन और द्रौपदी के पांचों पुत्र और पराक्रमी चेकितान उनसबराजाओं के सन्मुखगये जिन को कि दुर्य्योधनने आज्ञादीथी, इसीप्रकारबीर अभिमन्यु और महारथी घटोत्कच और क्रोधित भीमसेन भी कौरवों के सन्मुख दौड़ा हे राजा पांडवों के दायूथोंसेतो कौरव मारेगये और कौरवोंसेभी उधरके लोग मारेगये फिर महारथी द्रोणाचार्य्य बड़े क्रोधयुक्त होकर संजियोंसहित सोमकोंको मारतेहुए पांडवों के सन्मुखगये उसयुद्धमें द्रोणाचार्य्यके हाथसे मरतेहुए महात्मासंजियों के बड़े२शब्दहुए उसस्थानमें द्रोणाचार्य्यके हाथसे मरेहुए बहुत से क्षत्री ऐसे तड़फड़ाते दिखाई दिये जैसे कि रोगयुक्त मनुष्य बिकलहोकर तड़फड़ाते हैं युद्धमेंबोलते गर्जते पुकारतेहुए शूरवीरोंके ऐसे शब्दसुनेगये जैसे कि भूखसे व्याकुलमनुष्योंके शब्द निकलाकरतेहैं इसीप्रकार द्वितीयकालकेसमान क्रोध रूप महाबली भीमसेन ने कौरवों के महाघोर नाशको किया, उस महाघोर

युद्ध में परस्पर सब सेनाओं के मरने से रुधिर की घोर भयानक नदी जारी हुई हे महाराज कौरव और पाण्डवों की वह महायुद्ध घोर लड़ाई यमराज के पुरकी वृद्धि करने वाली हुई, इसके पीछे क्रोधमें भरे निरभिमानी भीमसेनने हाथियों की सेनाको मारकर यमपुर भेजा, वहां भीमसेनके नाराचोंसे मरेहुए हाथी अचेत होकर शब्द करते दिशाओं में घूमते हुए पृथ्वीपर गिरे, हे राजा धृतराष्ट्र वह सूंड़ और अंगों से रहित हाथी क्रौंच पक्षी के समान शब्द करते हुए पृथ्वीपर मरकर सोये, और नकुल सहदेव दोनों भाई घोड़ों की सेनाके सन्मुख गये वहां सुवर्ण भूषणों से अलंकृत सैकड़ों और हज़ारों घोड़े मरे कटे दृष्ट पड़े उस समय वह पृथ्वी गिरे हुए घोड़ों से पूर्ण हुई, और बहुतसे जिह्वा से रहित श्वास लेते हुए शब्दायमान मृतकरूप अनेक रंग वाले घोड़ों से पृथ्वीबड़ी शोभायमान हुई, हे भरतर्षभ इसी प्रकारसे अर्जुन के हाथसे मरे हुए राजाओं से भी भयानक पृथ्वी महाशोभा को प्राप्त हुई बड़े शस्त्रों से टूटे रथ ध्वजा और प्रकाशित छत्रों से वा टूटेहुए चामर और व्यजनों से अथवा हार केयूरादिक आभूषणों से युक्त कुंडलधारी शिर अनेक प्रकारकी पताकाओं से और रथोंकी अनेक रंगवाली डोरियों से युक्त रथों से ढकीहुई पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि बसन्त ऋतु में फूलोंसे शोभित होती है, जिसप्रकार से भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और कृतवर्मा इन सबके क्रोधरूप होने से पाण्डवों के शूरवीरों का नाश हुआ उसी प्रकार पाण्डवों के कोपित होने से आपके भी वीरों का नाशहुआ,, ४० ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

इक्यानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इस प्रकार उनउत्तम वीरों के नाशहोने पर सुबलका पुत्र श्रीमान् शकुनि और शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला यादव कृतबर्मा पाण्डवों की सेना के सन्मुख गया, फिर काम्बोज देशी उत्तम घोड़े व नदी के समीप उत्पन्न होनेवाले अरट्ट देशी व सिन्ध देशी आदि सब प्रकार के घोड़े और वनायुज देशी श्वेतरूप पहाड़ी घोड़े इन सब प्रकार के अनेक घोड़ों के द्वारा युद्ध के चारों ओर को नियत करके दूसरे प्रकारके तित्तिरिज वायुके समान वेगवान् सुवर्ण भूषणों से अलंकृत श्रेष्ठ रचना किये हुए कवचों को धारण करने वाले वायुके समान शीघ्रगामी उत्तम घोड़ों समेत बलवान् रूपवान् श्रीमान् पराक्रमी अर्जुन का पुत्र इरावान् उससेना के सन्मुख हुआ यह इरावान् अर्जुन का पुत्र नाग कन्या में इस रीति से उत्पन्न

हुआ था कि ऐरावत नाम नागों के राजाने गरुड़जी से महा दुःखित होकर अर्जुन को अपनी कामवती कन्यादी तब अर्जुनने उसकामासक्तको अपनी स्त्री बनाने के लिये ग्रहण किया इसरीतिसे यह अर्जुन का पुत्र दूसरे के क्षेत्र में उत्पन्न हुआ, वह माता से रक्षित होकर नागलोक में बड़ा हुआ और अर्जुन की शत्रुता से उसके चाचाने उसको पृथक् किया फिर वह रूपवान् पराक्रमी गुणों से संपन्न सत्य पराक्रमी अर्जुन को स्वर्ग में वर्त्तमान सुनकर शीघ्रही इन्द्र लोकको गया, वहां उस सावधान सत्य पराक्रमी ने हाथजोड़ कर पिता के पास जाकर दण्डवत् की, और अपने को अर्जुन के सन्मुख वर्णन किया कि हे प्रभु आप का कल्याण हो मैं इरावान् नाम आपका पुत्रहूं और जैसे माता का मिलाप हुआ था वह सब वर्णन किया तब अर्जुन ने उसका यथार्थ वृत्तान्त जैसा हुआ था सब स्मरण किया वह अर्जुन देवराज के भवन के भीतर गुणों में अपने समान पुत्रको देखकर बहुत स्नेह से मिलकर प्रसन्नहुआ, हे भरतवंशी धृतराष्ट्र तब इन्द्रलोक में वह महाबाहु इरावान् अर्जुनसे बोला कि हे पिताआप मुझेकोई कामकरने की आज्ञादीजिये, अर्जुनने कहा कि हे पुत्र युद्ध के समय तुमको हमारी सहायता करनी उचित है उसकी आज्ञा को स्वीकार करके युद्धके समय वह उन पूर्वोक्त उत्तम घोड़ों समेत वहां आया जो अकस्मात् ऐसे ऊंचे होकर चलनेलगे जैसे कि महा समुद्रमें हंस चलते हैं वह शीघ्रगामी घोड़े आपके घोड़ों के समूहों को पाकर, अपनी तीव्रता से पृथ्वी पर छाती से छाती को नाकों से नाकों को परस्पर घायल करतेहुये दौड़े, इस रीति से उस परस्पर दौडते हुये घोड़ोंके समूहोंसे ऐसे भयकारी शब्द सुनेगये जैसे कि गरुड़ के गिरने में होते हैं, इसी प्रकार घोड़े के सवारों ने भी परस्पर में मिलकर एक ने एक का नाश किया, इस रीतिके कठिन और तुमुल युद्धके होनेपर दोनों ओर के घोड़ों के समूह भी चारों ओर से भ्रमण करने लगे, जिनके कि बाण अत्यन्त निबट गये और घोड़े भी मारेगये उन शूरवीरों ने नाशको पाया, फिर घोड़ों की सेना के नाश होने और कुछ शेष रहजाने पर शकुनी के छोटे भाई महाशूरवीर युद्ध भूमि में वायुके समान तीव्र स्पर्श युक्त और शीघ्रगामीपने में तीव्र वायुके समान प्रसन्न रूप तरुण घोड़ों पर चढ़कर आये, गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवान, आर्जव, शुक यह छओं महावीर गान्धार कुनाद युद्ध में दुर्मद बड़ीसेना समेत महा प्रवीण भयानकरूप अतिबली कवच आदि से अलंकृत शकुनि और अपने बड़े २ वीरों से निषेधित होकरभी विजयाभिलाषी हो उस बड़ी कठिन सेनाको चीरकर स्वर्ग के निमित्त युद्ध में आये उस समय पराक्रमी इरावान् भी उन राजकुमारों को आया हुआ

देखकर अपने शस्त्र आभूषणों से अलंकृत बीर पुरुषों से बोला कि जिस प्रकार से दुर्योधन के यह सब शूरबीर मारेजायँ वही काम तुमको करना उचित है यह सुनकर इरावान् के शूरों ने अंगीकार करके, उन्होंकी दुर्जय सेनाको मारा युद्ध में इस सेना से मारीहुई अपनी सेनाको देखकर, महा असहिष्णु सुबलके पुत्रों ने इरावान को चारों ओरसे घेरलिया और बड़े परशों से और परिघोंसे प्रहार करते हुए उसके ऊपर दौड़े, इरावान् भी उन बीरों से घायल रुधिर में डूबाहुआ ऐसा विदित हुआ जैसे कि दण्डों से घायल हाथी होता है, हे राजा वह अकेला उन सबसे हाथ छाती पीठ और कुक्षिपर घायल होने पर भी पीड़ित नहीं हुआ, फिर शत्रु के पुरको विजय करने वाले अत्यन्त क्रोधयुक्त इरावान् ने भी उन सबको अपने तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, फिर उस शत्रुहन्ताने अपने शरीरमें से सब परशों को उखाड़कर उन्हीं परशों से सुबलके पुत्रों को घायल किया, इसके पीछे अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढालको धारण करके बड़ी शीघ्रता से उन सुबलके पुत्रों के मारने को पैदलही गया, फिर चैतन्य होकर क्रोधमें भरेहुए वह सब सुबलके पुत्रभी इरावान् के सन्मुख गये तब तो इरावान् अपने खड्गकी हस्तलाघवता को दिखलाता हुआ उन सबके सन्मुख दौड़ा, उस समय उन सब पुत्रोंने अपनी शीघ्रगामी सवारियों से भी उसकी तीव्रताको नहीं पाया, फिर उसको घेरकर सबने पकड़ना चाहा, परन्तु उस अकेले महाबली नेही पासजाकर उनसब खड्गधनुष धारियों के अंगोंको काटा और अंगों के कटतेही वह सब मृतक होकर पृथ्वी परगिरे, हेमहाराज इनमें से एक वृषभही इस घोर रुद्र युद्धमें से बड़ी सहायताओं से बचा फिर आपका पुत्रइन शूरबीरोंको मराहुआ देखकर महाक्रोध में भराहुआ महाबली शत्रुहन्ता मायावी आर्ष्यशृंग राक्षस जो कि बकासुर के वधमें भीमसेनका शत्रुथाउससे बोला, हेबीर देखो जैसे कि इसपराक्रमी और मायावी अर्जुन के पुत्र ने मेरे विजयकर्म से सेना के नाश को किया है सो हे तात तुभी इच्छानुचारी मायावी अस्त्र विद्या में कुशल है और पांडवों से शत्रुता करनेवाला है इस हेतु से इस इरावान् को युद्ध में तुम मारो, उसकी आज्ञापाते ही वह घोररूप राक्षस बड़ा सिंहनाद करता हुआ अर्जुन के पुत्र के पास गया और दोसहस्र युद्धसे शेष बचेहुए घोड़ों से महाबली इरावान् के मारने का अभिलाषी हुआ, फिर अत्यन्त पराक्रमी शत्रुहन्ता शीघ्रता करनेवाले इरावान्ने अपने मारने के इच्छावान् उस राक्षसको रोका, इसके अनन्तर शीघ्रता से बड़े महाबली राक्षस ने उस आते हुए को देखकर मायाको प्रकट किया, अर्थात् उसने उतनेही मायारूपी घोड़े जिनपर शूल पट्टिश धारण किये हुए घोर राक्षस सवार थे प्रकट किये, फिर उन दोहजार

क्रोधरूप प्रहार करनेवालों ने सन्मुख होकर थोड़ेही समय में परस्पर युद्ध करके एकने एकको प्रेतलोकमें भेजा, उस सेनाके मरने पर वह युद्ध में दुर्मद दोनों ऐसे युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रने युद्धकिया था, उस युद्ध में दुर्मद राक्षस को सन्मुख आया हुआ देखकर महाबली इरावान् बड़े क्रोधसे उसके ऊपर दौड़ा, और उस निर्बुद्धी के धनुषको अपने खड्गसे काट कर पांच प्रकार के पांच बाणों से व्याकुल किया, फिर वह अपने धनुषको टूटा जानकर बड़े क्रोधसे इरावान् को अपनी मायासे मोहित करके बड़ी तीव्रतासे आकाश में पहुंचा, इसके पीछे इरावान्ने भी अपनी मायासे अन्तरिक्ष में जाकर उसके अंगोंको काटा, हे राजा जैसा कि यह इरावान् सब धर्मोंका ज्ञाता कामरूप और अजेय था वैसाही वह राक्षसों में श्रेष्ठ बारंबार घायल होकरभी नीरोगता पूर्व्वक तरुणरूपथा क्योंकि उन्होंकी देहसेउत्पन्न होने वाली माया तरुणता पूर्व्वक स्वेच्छारूप धारण करनेवाली होती है, इस रीति से उसराक्षस का शरीर कटकर भी फिर उत्पन्न हुआ हे राजेन्द्र जब इरावान्ने उस महाबली राक्षसको बाण और परशों से बारंबार काटा तब वह राक्षस वृक्ष के समान होकर बारंबार महाभयकारी शब्दों से गर्जना करके परशोंसे कटेहुये शरीरसे रुधिर बहाने लगा इसके अनन्तर वह राक्षस इरावान्को पराक्रमी देखकर बड़ा क्रोधित हुआ और युद्ध में ऐसी तीव्रता करने लगा, कि अपना घोररूप बनाकर अर्जुन के पुत्र महावीर इरावान् को युद्ध में सबके देखते हुये इसने पकड़ना चाहा फिर उस निर्बुद्धी की उसमायाको देखकर अत्यन्त क्रोधभरे इरावान्ने भी मायाको रचा अर्थात् अपने नानाके बंशरूप सर्प्पों को उत्पन्न किया, हे राजा बहुतसे सर्पोंसे युक्त उस इरावान् ने शेषनाग के समान अपने महान् रूपको धारण किया और अनेक नागों से उसराक्षसकोघेरा, फिर उस राक्षसों में श्रेष्ठने अपना गरुड़रूप धारण करके उन घिरेहुये सर्पोंको खाया, मायासे उसके ननसारी सर्पोंके भक्षणहोजानेपर वह इरावान् अचेत हुआ फिर उस अत्यन्त मोहित इरावान् को राक्षसने खड्ग से मारकर उसके कुंडल मुकुटधारी चन्द्रमाके समान प्रकाशमान शिर को पृथ्वीपर गिराया उसराक्षसके हाथसे उस इरावान्के मरने पर धृतराष्ट्र के सब पुत्र शोकसे निवृत्त होकर बड़े प्रसन्नहुये, फिर उस भयकारी महायुद्ध में दोनों सेनाओं का घोर नाश होना प्रारंभहुआ रथ हाथी घोड़े पदाती सवार वह सब परस्पर में युद्ध कर करके और पत्तियों के हाथों से नाशको प्राप्तहुये, इसी प्रकार उसतुमुल युद्धमें आपके और उन्होंके अनेक घोड़े पति और रथियों के समूह रथियों के हाथोंसे मारे गये, औ उस पुत्रको मृतक न जाननेवाले अर्जुन ने भी भीष्मजी के रक्षक उन शूरवीरराजाओं को मारा

इसी रीति से उसयुद्धमें प्राणोंको होमकर शूरजी लोगों ने आपके शूरवीरों को परस्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुष परस्पर में भिड़ेहुये शूरवीर भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्धमें पांडवों की सेनाको कंपाते हुये परन्तप भीष्मजीने मर्मभेदी बाणोंसे महारथियोंको मारा, उनभीष्मजी के हाथसे युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरतवंशी वहां हमने भीष्म के पराक्रम को देखकर इन्द्र के समान उसके अपूर्व्व बलको जाना और इसीप्रकारसे युद्धमें (भीमसेन) (धृष्टद्युम्न) और धनुर्द्धार सात्विकीकाभी युद्धमहा भयानकहुआ,फिर द्रोणाचार्य्य के पराक्रमको देखकर पांडवोंमें इस प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सब सेनाओं के मारने को समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेकप्रकारके घोरयुद्ध करते हैं हमने उस देव दानवों के युद्धकी समान संग्राममें किसीको ऐसा न देखा जो अपनेप्राणोंकी रक्षाकरताहो ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें इरावान् को मरा देखकर पांडवों ने क्या किया उसको मुझ से कहो, संजयबोले कि भीमसेन का पुत्र घटोत्कच राक्षस उस इरावान्को युद्ध में मराहुआ देखकर महाध्वनि से गर्जा, उसकी गर्जना से पर्व्वत और समुद्रों समेत पृथ्वी चलायमान हुई, और दिशा विदिशाओं समेत आकाश भी शब्दायमान हुआ और उस महाघोर शब्दको सुनकर आपकी सेना में भी सबको प्रस्वेद हुआ और सब वीर महाखेदित होकर सब ओरसे ऐसे भयभीत हुए जैसे कि सिंहसे भयभीत हाथी होते हैं, उस राक्षसने इसघोर शब्दको करके , महाज्वलित रूप शूलको धारण कर उग्ररूप होके नाना प्रकारके रूप और शस्त्रधारी राक्षसों को साथलिये काल मृत्यु के समान क्रोधी होकर मारना प्रारंभकिया इसक्रोधयुक्त भयानक रूप राक्षसको आता देखकर, और उसके भयसे अपनी सेना का मुख फेरना देखकर राजा दुर्य्योधन बड़े भारी धनुषको लेकर सिंह के समान गर्जना करता हुआ घटोत्कचके सन्मुख गया इसके पीछे वंगदेशियोंका राजा चलते हुए पर्व्वताकार दशहजार हाथियों को साथलेकर गया उस हाथियों की सेना समेत आपके पुत्रको देखकर वह राक्षस महाक्रोधाग्निरूप होगया फिर रोमहर्षण

महातुमुल युद्ध जारीहुआ, उस समय राक्षसों से और आपकी सेनासे युद्ध होने लगा फिर बादलों के समूहों के समान युद्ध में प्रवृत्त हाथियों की सेना को देखकर, बिजली से अनेक शस्त्रों को धारण किये हुए बादलों के समान गर्जनाकरते हजारों राक्षस सन्मुखदौड़े, (बाण) (बर्छी) (दुधाराखड्ग) (नाराच) (भिन्दिपाल) (शूल) (मुद्गर) और परशे इत्यादि शस्त्रोंसे हाथियों के सवारों को मारकर उन राक्षसों ने पर्व्वत और वृक्षों से हाथियों को मारा हे राजा हमने राक्षसों के हाथसे टूटेहुए मस्तकों समेत हाथियोंको रुधिर से रहित होकर मरा हुआ देखा उन हाथी और हाथीवानों के पराजित होने पर, महाक्रोधरूप होके दुर्य्योधन अपने जीवनकी आशाको त्याग कर उन राक्षसों के सन्मुखगया हे शत्रुसंतापी उस बड़े धनुषधारी दुर्य्योधन ने वहां जाकर अपने तीक्ष्ण बाणों की बर्षासे बड़े २ राक्षसोंको मारकर अपने महातीव्र चारबाणों से उसमहाभयंकर घोररूपवाले घटोत्कच को घायल किया, फिर वह राक्षस इन्द्रधनुषके समान अपने धनुषको खैंचकर, बड़ेवेगसे दुर्य्योधन के सन्मुख गया उस मृत्यु समान राक्षस को आता हुआ देखकर आपका पुत्र दुर्य्योधन पीड़ामान् नहीं हुआ तबअत्यन्त रक्तनेत्र कोपसे युक्त वह राक्षस इससे कहने लगा कि अबमैं उन अपने माता पितासे अऋण होजाऊंगा जिनको कि तुझनिर्दयी ने वनवासी किया, और छलसे द्यूतमें जीता और पापात्मा निर्बुद्धी एकवस्त्रा रजस्वला कृष्णाद्रौपदी को जो तुमने सभा में लाकर महादुःखित किया और तेरे अर्थ चाहनेवाले दुर्बुद्धी जयद्रथ ने मेरे पितालोगों को निरादर करके आश्रम में नियत द्रौपदी को पकड़कर हरण किया हे कुलध्वंसी महानीच उन अपराधों का फल मैं अब तुझको देकर उसका प्रतीकार पाऊंगा, फिर ओठों को चबाकर घटोत्कच ने धनुष को खैंचकर मारे बाणों के दुर्य्योधन को ऐसे ढकदिया जैसे कि बर्षा ऋतु में बादल जलकी धाराओं से पर्व्वत को ढक देते हैं, २९ ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन ने दानवोंसे भी असह्य उन बाणों की वर्षा को ऐसे सहा जैसे कि बड़ाहाथी पानी की वर्षा को सह लेता है हे भरतबंशी इसके पीछे क्रोधमें पूर्ण सर्प की समान श्वासलेते हुए आपके पुत्रने बड़े सन्देहसे युक्तहोकर पच्चीस नाराचोंको छोड़ा वह नाराच बाण उस राक्षस पर ऐसे जाकर गिरे, जैसे कि गन्धमादन पर्व्वतपर क्रोध युक्त सर्पगिरतेहैं उन बाणोंसे घायलमदवाले हाथीके समान रुधिरगिरते,उस

मांसाहारी राक्षस ने राजा के मारने का बिचार किया और पर्व्वतों के चीरने वाली बड़ी बरछी को लिया, फिर आपके पुत्र के मारने के लिये उस महाबाहु ने उस महाघोर उल्काके समान प्रकाशमान बरछी को उठाया उस समय महाशीघ्रता करने वाले बंगदेशी राजाने उस उठाई हुई बरछी को देखकर पर्व्वताकार अपने हाथी को उस राक्षस के ऊपर चलाया और उस शीघ्र चलनेवाले हाथी के द्वारा आप उस मार्ग में वर्त्तमान हुआ जिधर दुर्य्योधन का रथथा अर्थात् उस हाथी से आपके पुत्र के रथको गुप्तकरदिया उस बंगदेशके राजा करके मार्गको बन्द देखकर घटोत्कच ने महा क्रोधित होकर उस उठाई हुई बरछी को हाथीपर फेंका उस बरछी के प्रहार से वह हाथी महा पीड़ित होकर गिरकर मर गया फिर वह बंगदेशी बलवान् राजाभी बहुत शीघ्र हाथी से उछलकर पृथ्वी पर बड़ी तीव्रता से गया, दुर्य्योधनने उसगिरे हुये बड़े हाथी को और सेना के हटजाने को देखकर बड़े खेदको पाया, और राजा दुर्य्योधन क्षत्री धर्म को बिचार अपने अहंकारको करके सेनाके भाग जाने पर भी पर्व्वत के समान अचल होकर युद्धमें खड़ारहा, फिर महाक्रोधित होकर बड़े धनुषको खैंचकर एकबड़े तीक्ष्णबाणको उस राक्षस पर छोड़ा उस इन्द्र बज्रके समान आतेहुये बाणको देखकर घटोत्कचने बड़ी हस्तलाघवतासे निष्फल कर दिया और लालनेत्र करके बड़े क्रोध पूर्व्वक भयानक शब्द से गर्जना को करके सेना को ऐसा भयभीत कर दिया जैसे कि प्रलय काल में बादल सबको भयसे पीड़ित करतेहैं, उस राक्षस के उसघोर शब्दको सुनकर शांतनुके पुत्र भीष्मजी द्रोणाचार्य्य के पास जाकर बोले कि यह राक्षसका घोर और भयानक शब्द सुनाजाता है निश्चय करके यह घटोत्कचही राजादुर्य्योधन से लड़ताहै युद्धमें इसराक्षस को कोई जीव बिजय नहीं कर सक्ता है आपका श्रेयहो आप वहीं जाकर राजाकी सब ओर से रक्षा करो, वह महाभाग दुर्योधन बड़े साहसी राक्षससे लड़ताहै हे शत्रु संतापियो तुम्हारा और हम सब का भी उत्तमकर्म है पितामहके इसवचन को सुनकर शीघ्रता करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य्य सोमदत्त बाह्लीक जयद्रथ कृपाचार्य भूरिश्रवा शल्य अवन्ति का राजा बृहद्बल अश्वत्थामा विकर्ण चित्रसेन विविंशति और हजारों उनके पीछे चलनेवाले रथ वह सब मिलेहुये आपकेपुत्र दुर्य्योधन की रक्षाके लिये वहां गये जहां राजादुर्य्योधन था फिर वह राक्षसोत्तम महाबाहु घटोत्कच उस दुर्जय महारथियोंसे रक्षित मारनेकी इच्छा रखने वाली सेनाको आता हुआ देखकर मैनाक पर्व्वत के समान भयभीत नहीं हुआ, और (शूल) (मुद्गर) आदि अनेकप्रकार के शस्त्रधारी राक्षसों से युक्त घटोत्कच बड़े धनुषको खैंचकर खड़ाहुआ, फिर घटोत्कच और दुर्य्योधन

की सेना का महारोमहर्षण युद्ध जारी हुआ उस समय हे राजा धनुष की टंकारों के महाकठिन शब्द चारोंओर से ऐसे सुनाई दिये जैसे कि जलतेहुये बांसों के शब्द होतेहैं, और शरीर के कवचों पर लगनेवाले अस्त्र शस्त्रों के भी ऐसे शब्द होतेथे जैसे कि फटेहुये पहाड़ों के महाशब्द होतेहैं, हे राजा बीरोंकी भुजाओंसे फेंकेहुये तोमरोंके ऐसे रूप दिखाई दिये जैसे कि आकाश में चलतेहुये सर्पों के आकार दिखाई देतेहैं, इसके पीछे अत्यन्त क्रोधरूप भयकारी गर्जना करतेहुये उस राक्षसों के राजा ने बहुतबड़े धनुष को लेकर, अर्द्धचन्द्र नाम बाणसे द्रोणाचार्य्य के धनुषको काटके भल्ल से सोमदत्त की ध्वजाको तोड़ता हुआ महा गर्जना करके बाह्लीक को तीन बाणसे छाती पर घायल किया और एक बाणसे कृपाचार्य्य को तीन बाणसे चित्रसेनको, घायल करके कानतक खैंचेहुए बाणसे विकर्ण को घायल किया, फिर वह विकर्ण रुधिर भरे देहसे रथमें बैठा इसके पीछे उस पराक्रमी ने पन्द्रह नाराच भूरिश्रवा पर फेंके वह नाराच उसके कवचको काटकर पृथ्वी पर गिरे, फिर विविंशति और अश्वत्थामा के सारथियों को घायल किया जिसके मारे वह घोड़ों की रस्सियों को छोड़कर पृथ्वी पर गिरपड़े और अर्द्धचन्द्र बाणसे राजा सिन्धुके सुनहरी बाराहको और दूसरेबाणसे उसके धनुषको काटा, फिर क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र ने अपने चार नाराचों से महात्मा राजा अवन्तिके चारों घोड़ों को मारा हे महाराज फिर बड़े तीक्ष्ण बाणसे राजा बृहद्बलको घायल किया वह भी महा घायल होकर रथमें बैठगया फिर राक्षसाधिप घटोत्कचने सर्पाकृति अनेक बाणों से राजाशल्यको व्यथित किया ४३॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि त्रिनवतितमोऽध्यायः ९३॥

चौरानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि फिर वह राक्षस आपके सब योद्धाओं को युद्ध में भगाकर मारने की इच्छा से दुर्य्योधनके सन्मुख दौड़ा, उस राक्षस को राजा के ऊपर आता देखकर मारने के इच्छावाले युद्ध में दुर्मद आपके भी शूरवीर उसके सन्मुख दौड़े, यह सब बीर ताल वृक्षके समान धनुषोंको खैंचेहुए सिंहोंके समान गर्जना करते हुए उस अकेले के ऊपर दौड़े, और बाणों की वर्षा से उसको चारों ओरसे ऐसे ढकदिया जैसे कि शरद ऋतु में बलाहक नाम बादल अपनी जल धाराओं से पर्व्वत को ढक देते हैं, दण्डसे घायल हाथी के समान वह अत्यन्त घायल घटोत्कच गरुड़के समान चारोंओर से आकाश को उछला, और भयानक शब्द करता हुआ दिशा विदिशा समेत आकाशको शब्दायमान करके शरदऋतु के बादलों के समान महा घोर

गर्जना करने लगा, इसके पीछे हे भरतर्षभ उस राक्षसके शब्द को सुनकर राजा युधिष्ठिर शत्रु विजयी भीमसेन से बोले, कि निश्चय वह घटोत्कच राक्षस धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों से लड़रहा है क्योंकि यह महाघोर शब्दकी गर्जना उसी की सुनी जाती है इस समय उस राक्षसके ऊपर मुझको बड़ी भारी विपत्ति जान पड़ती है और अत्यन्त कोपयुक्त भीष्म जी पांचाल देशियों के मारनेको युद्धमें प्रवृत्त हैं, उन पांचालों की रक्षाके निमित्त अर्जुन ही शत्रुओं से लड़ता है हे महाबाहु इसबातको जानकर दोकाम वर्त्तमान हुए, अब चलकर बड़ी विपत्तिसे घटोत्कचकी रक्षाकरो यह भाई के बचन सुनतेही शीघ्रता करनेवाला भीमसेन अपने सिंहनाद से सब राजाओं को डराता हुआ ऐसे महावेग से वहां पहुंचा जैसे कि पर्व्वकालमें समुद्र जाता है, और इस के पीछेही सत्यधृति युद्ध में दुर्मद (सुचित्ती) (श्रेणिमान) (वसुदान) और महासमर्थ काशिराजकापुत्र यह सब गये, और अग्रवर्ती अभिमन्यु के साथ द्रौपदी के महारथी पुत्र (क्षत्रदेव) (विक्रान्त) (क्षत्र-धर्मा) और नील नाम अनूपदेश का राजा अपनी सेना में नियत होकर चला यह सब शूर रथों के समूहों समेत घटोत्कच की रक्षा के लिये उसके चारों ओर को नियतहुए, इन सब वीरोंके साथ महादुर्मद मतवाले छःसहस्र हाथी थे इन सबहाथियोंकी और रथोंकी गर्जना और ध्वनियों से पृथ्वी शब्दायमान होगई, उन आतेहुओं के शब्दको सुनकर आपकी सेना भी-मसेन के भयसे महा व्याकुलहोकर रूपान्तर दशाको प्राप्तहुई, हे महाराज वह सेना घटोत्कचको छोड़कर चारों ओर को घूमने लगी फिर सन्मुखलड़ने वाले आपके और दूसरों के शूरबीरों का नानाप्रकार के अस्त्र शस्त्रों समेत युद्ध होना प्रारम्भ हुआ और परस्पर सन्मुख दौड़ते हुए महारथियों ने बड़े प्रहार किये और अत्यन्त भयकारी घोरयुद्ध होनेलगा, घोड़े हाथियोंके साथ और पदातीरथियों के साथ युद्ध करने लगे उस युद्धमें परस्पर एक दूसरेको चाहतेहुए सन्मुख गये उससमय अनेक हाथी घोड़े रथ पैदलोंके समूहों से उठीहुई बहुत भारी धूल उड़ी फिर उस काली और लाल रंगवाली उग्र धूलिसे संग्रामभूमि ऐसी आच्छादित होगई कि जिस में अपने पराये की कुछ पहचान न होसकी, इसप्रकार के रोमहर्षण करनेवाले महाप्रलयकाल में पिताने पुत्रको और पुत्र ने पिताको भी नहीं पहचाना, हे भरतर्षभ उसयुद्ध में शस्त्रों के और गर्जना करनेवालों के प्रेतों केसे महाघोर शब्दहुए, फिर वहां हाथी घोड़े रथ पैदलोंके रुधिरसे नदी वह निकली उसमें शिरोंके बालही कुमुदिनी समेत शाड्वलथे उससंग्राम में मनुष्यों के गिरते हुए शिरोंके ऐसे महा शब्द सुनाई दिये जैसे कि गिरतेहुए पत्थरों के शब्दहोते हैं फिर बिना

शिरके मनुष्य और अंगभंग हाथी घोड़ों के शरीरों से पृथ्वी व्याप्त होगई और बड़े २ महारथी परस्परमें नानाप्रकारके शस्त्रोंको प्रहारकरतेहुए एक एकके सन्मुख मारनेको प्रवृत्तहुए, ३० फिर सवारों से शोभित घोड़े घोड़ों से लड़ते २ मरकर पृथ्वीपरगिरे, और क्रोधसे रक्तनेत्र मनुष्योंने दूसरे मनुष्योंको पाकर एकने दूसरेको छातीसेछाती मिलाकर मारा, फिर पीछेके हाथियोंने बड़े २ शरीर मुखवाले शत्रुके हाथियों के सन्मुख होकर दांतोंकी नोकों से हाथियोंको मारा, वह पताकाओं से शोभित हाथी रुधिरसे पीड़ितहोकर ऐसे संसक्त दिखाई देतेथे जैसे कि बादलोंमें बिजली दीखतीहै, कोई हाथी दांतों की नोकों से घायल और तोमरों से फूटेहुए कुंभ बादलोंके समान गर्जतेहुए सन्मुखदौड़े, कोई टूटी सूंड़वाले वा टूटे अंगवाले हाथी युद्धमें ऐसे गिरे जैसे कि टूटे पर्व्वत और कितनेही कुत्तोंमें घायल हाथियोंने बहुतसा रुधिर ऐसा डाला जैसे कि पर्व्वत धातुओंको गेरते हैं, और बहुतेरे तोमरोंसे और नाराचोंसे घायल और पीड़ितहोकर शब्द करतेहुए ऐसे दौड़े जैसे कि बिना शिखरके पहाड़ होतेहैं, और अनेक क्रोधयुक्त मदान्ध हाथियोंने क्रोधितहोकर हजारों रथ घोड़े और पदातियों को मर्द्दन किया, इसीप्रकार अश्वसवारोंके प्रास और तोमरोंसे घायल घोड़े दिशाओंको व्याकुल करतेहुए प्रत्येक मार्गमें सन्मुख हुए, कुलीन और शरीर त्यागनेवाले रथियोंने बड़ी सामर्थसे निर्भयता पूर्व्वक रथियोंसे युद्धकिया, हे राजा युद्धमें कुशल यश और स्वर्गके अभिलाषीवीरोंने उस स्वयंबरके समान युद्धमें एकने एकको परस्परमें हरण किया, इसीप्रकारसे इस रोमहर्षण युद्धके प्रारंभहोने पर दुर्य्योधनकी प्रबल सेना बहुधा भगाई गई ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिचतुर्णवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेका अध्याय ॥

संजय बोले किराजादुर्य्योधन अपनी सेनाका नाशहुआ देखकर अत्यन्त क्रोधितहोकर आपभी उस शत्रुजेता भीमसेनके सन्मुख दौड़ा, और इन्द्र धनुषके समान शब्दायमान धनुषसे बाणों की बर्षाकरके भीमसेनको ढकदिया, और क्रोधमेंभरकर अत्यन्त तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाणसे भीमसेनके धनुष को काटकर बड़ीशीघ्रतासे समयको पाकर उसने पर्व्वतोंके भी तोड़नेवाले तीक्ष्णबाणको धनुष पर चढ़ाया, हे राजा उस बाणसे भीमसेन को छाती पर घायल किया, फिर उस तेजस्वी भीम ने होठों को चाटकर अपनी सुनहरी ध्वजा को पकड़ लिया उस समय घटोत्कच भीमसेन को व्याकुल देखकर, क्रोधरूपी अग्नि से ज्वलितहुआ और महाक्रोधयुक्त अभिमन्यु आदि महा-

रथी राजा को पुकारते हुए सन्मुख दौड़े अत्यन्त क्रोधयुक्त उन लोगों को आता हुआ देखकर, भारद्वाज द्रोणाचार्य्य जी आप के महारथियों से बोले कि तुम्हारा कल्याणहो तुम शीघ्रजाओ और बड़े दुःख समुद्रमें पड़ेहुए राजा को चारों ओर से रक्षाकरो, यह महाकोपयुक्त पाण्डवों के धनुषधारी महारथी अनेक प्रकार के शस्त्रों को चलाते और शब्दों की गर्जनाओं से राजाओं को भयभीत करते सब भीमसेन को आगे करके दुर्य्योधनके सन्मुख गये हैं, द्रोणाचार्य्य के इस वचन को सुनकर सोमदत्त को अग्रगामी करके वह सब आप के शूरवीर पाण्डवों के सन्मुख पहुंचे (कृपाचार्य्य) (भूरिश्रवा) (शल्य) (अश्वत्थामा) (विविंशति) (चित्रसेन) (विकर्ण) (जयद्रथ) (बृहद्वल) और बड़े धनुषधारी राजा अवन्ती ने चारों ओरसे दुर्य्योधन को रक्षित किया, और परस्पर मारने की इच्छा से उन पाण्डव और धृतराष्ट्र के पुत्रों ने वीस २ चरण चलकर प्रहारोंकोकिया, फिरभारद्वाज द्रोणाचार्य्यने बड़धनुषको लेकर छब्बीस बाणोंसे भीमसेनको पीड़ित करके अनेक अन्य बाणोंसे ऐसे शीघ्र ढक दिया जैसे कि जलकी धारोंसे बलाहक नाम बादल पर्व्वतको ढक देते हैं, बड़े धनुषधारी महाबली शीघ्रतायुक्त भीमसेनने शिलीमुख नाम दश बाणों से उनको घायल किया फिरवह वृद्ध द्रोणाचार्य्य अत्यन्त घायल और पीड़ित होकर अकस्मात रथमें बैठगये गुरू को पीड़ामान देखकर आप राजा दुर्य्योधन और अश्वत्थामा बड़े क्रोधितहो के भीमसेन के सन्मुखगये, फिर महाबली भीमसेन उन काल और मृत्युके समान दोनों को आताहुआ देखकर, शीघ्रही रथ से कूद यमदण्डके समान अपनी भारी गदाको लेकर युद्धमें पर्व्वताकार निश्चल होकर खड़ाहुआ फिर शिखरधारी पर्व्वतके समान उस उठीहुई गदाको देखकर दुर्य्योधन और अश्वत्थामा दोनों एक साथही उसके सन्मुख दौड़े, भीमसेन भी उन तीव्र दौड़नेवालों को सन्मुख आता देखकर बड़ी शीघ्रता से उनपर दौड़ा, फिर उस क्रोधयुक्त भयानक भीमसेन को आता हुआ देखकर कौरवों के महारथी यह दोनों भी शीघ्रता से दौड़े और सबों ने आकर अनेक प्रकार के शस्त्रों की वर्षा से भीमसेन की छाती को घायल किया, और सब चारोंओर से पीड़ित करनेलगे उस पीड़ित और घिरेहुए महारथी को देखकर, पांडवों के महारथी अभिमन्यु आदि अपने दुस्त्यज प्राणों को त्याग करतेहुए भीमसेन को चाहते उनके सन्मुख दौड़े, और भीमसेन का परममित्र शूरवीर नीले बादल के समान क्रोधरूप अनूप देशका नीलनामराजा अश्वत्थामा के सन्मुखगया, वह बड़ा धनुषधारी सदैव द्रोणपुत्र अश्वत्थामासे ईर्षा करता था इसलिये उसने बड़े धनुषको चढ़ाके बाणोंकी वर्षा से अश्वत्थामाको घायल किया, हे महाराज पूर्व्व समय में

जैसे इन्द्र ने दुर्जय देवसन्तापी तीनोंलोकों को भयकारी विप्रचित्ती नाम दैत्यको घायल किया उसी प्रकार राजा नीलने अपने अच्छे छोड़ेहुए बाणों से अश्वत्थामाको घायल किया, फिर जारीहुए रुधिर से पीड़ित महाक्रोध युक्त अश्वत्थामा ने इन्द्र धनुषके समान धनुषको चढ़ाके बड़ी बुद्धिमानीसे राजा नीलके मारने की इच्छाकी और बड़े तीक्ष्ण भल्लों से चारों घोड़ों को मारकर ध्वजाको गिराया और एक भल्लसे राजा नीलको छातीपर घायल किया, वह फिर अत्यन्त घायल और पीड़ित होकर रथके भीतर बैठगया उस बादलोंके समान राजा नीलको अचेत देखकर, अपनी जाति के राक्षसोंसे युक्त महाक्रोधित होकर घटोत्कच बड़े वेगसे युद्धमें शोभायमान अश्वत्थामा के सन्मुख गया, और इसी प्रकार युद्धमें दुर्मद उसके साथी राक्षस भी उसके सन्मुख दौड़े उस भयकारी रूप राक्षस को आता हुआ देखकर, द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने भी बड़ी शीघ्रता से सन्मुख दौड़कर बड़े क्रोधसे उन राक्षसों को मारा, राक्षस के आगे चलने वाले जो राक्षस सन्मुख हुए थे उनको अश्वत्थामाके बाणों से भागताहुआ देखकर, भीमसेन का पुत्र बड़ा शरीर घटोत्कच अत्यन्त क्रोधितहुआ और युद्ध में अश्वत्थामाको अचेतकरके अपनी मायाको प्रकट करताहुआ, उस मायासे भागेहुए आपके शूरबीर परस्पर में देखकर, महा दुखी रुधिरयुक्त शरीरों से पृथ्वीपर चेष्टा करने लगे, द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधन शल्य और अश्वत्थामा आदि जो बड़े धनुष धारी (कौरवीय) (शूरबीर) थे उन सबको राजालोगों भी रथ सारथी हाथी घोड़ों समेत उसने पृथ्वीपर गिराया, हे राजा उस आपकी सेना के डेरोंकी ओर भागताहुआ देखकर मैंने और देवव्रत भीष्मजीने बहुत२ पुकारा कि डरोमत यह राक्षसी माया घटोत्कच की पैदा कीहुई है इसको सुनकर भी वह महा अचेत होकर नियत नहीं हुए उन भयभीतोंने हम दोनोंके कहनेपर भी विश्वास नहीं किया उस सेना को भागाहुआ देखकर विजय पानेवाले पांडवों ने घटोत्कच समेत मिलकर बड़े सिंहनादोंको किया और शंखदुन्दुभी भी चारों ओर से अच्छी रीति से बजाईं, इस रीतिसे सायंकाल को सूर्य्यास्त के समय दुष्टात्मा घटोत्कच की मायासे आप की सब सेना चारोंओर को भागी ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छानबे का अध्याय ॥

संजय बोले हेमहाराज उसबड़े शब्दके होनेपर राजा दुर्य्योधनने भीष्मजी के समीप जाके बड़ी नम्रता पूर्वक दण्डवत करके, घटोत्कचकी विजय और अपनी पराजय होनेके मुख्य वृत्तान्तको बड़ी २ श्वासालेकरवर्णनकिया और

पितामह से कहने लगा, कि हेप्रभु मैंने बासुदेवजी के समान आपको अपना रक्षक समझकरबड़ी भयकारी शत्रुतापांडवोंसेकरीहै हे शत्रुहन्ताजोमेरीग्यारह अक्षौहिणी प्रसिद्धहैं वह सब मुझसमेत आपकी आज्ञामें नियतहैं,हे भरतर्षभ ऐसा योगहोने पर भी मैं भीमसेन आदि पांडव जिनका कि घटोत्कच रक्षक है उनसे पराजय हुआ, वह भीमसेन मेरेअंगों कोऐसा जलारहाहै जैसे सूखे वृक्षको अग्निजलाताहै, हे शत्रुहन्ता पितामह आपसरीके दुर्जय पुरुषकी रक्षामें होकर आपकी कृपासे उस नीच राक्षसको मैं अपने हाथसे माराचाहता हूं आपमेरे मनोरथको पूराकरनेको योग्यहो, दुर्य्योधन के इस बचनको सुन कर शांतनु भीष्मजी यह बचन बोले, हे कौरवेन्द्र जो मैं बचन कहताहूं उस को सुनकर उसीके अनुसार तुमको भी करना योग्यहै, हे शत्रुहन्ता पुत्र युद्ध में सब प्रकारसे अपना शरीर रक्षा के योग्य है हे निष्पाप तुमको सदैव धर्मराज से युद्ध करना उचित है, और (अर्जुन) (नकुल) सहदेव अथवा भीमसेन के साथ युद्ध करना उचित है राजा राजधर्म को आगे करके किसी राजा के सन्मुख होता है, मैं और (द्रोणाचार्य्य) (कृपाचार्य्य) (अश्वत्थामा) कृतवर्मा, यादव (शल्य) (भूरिश्रवा) महारथी विकर्ण और तेरे वह सब भाई जिनमें अग्रगण्य दुश्शासन है, यह सब तेरे निमित्त उस महाबली रा-क्षस से लड़ेंगे उस रुद्ररूप राक्षसों के राजा से जो तेरी बड़ी शत्रुताहै तो उस दुर्बुद्धी राक्षसके युद्ध के लिये भगदत्त को भेजो यह कहकर राजा भगदत्त से बोले कि हे महाराज तुम बड़ी शीघ्रतासे उस दुर्मद घटोत्कच के सन्मुख जाओ और सब राजाओंके देखतेहुए उस कठिनकर्मी राक्षसको ऐसे हटाओ जैसे कि पूर्व्व समयमें इन्द्र ने तारकको हटायाथा, हे शत्रुहन्ता तुम्हारे पास दिव्य अस्त्रहैं और महापराक्रमीहो और पूर्व्वसमय में भी तुमने बहुत से अ-सुरों से सन्मुखता करी है, हे राजेन्द्र तुम इस युद्धमें उस राक्षस से युद्ध करने के योग्यहो, इससे हे राजा तुम अपनी बढ़ी सेना के बलसे राक्षसको मारो, यह भीष्मजी के बचनों को सुनकर भगदत्त बड़े सिंहनाद पूर्व्वक शत्रुओंके सन्मुख गया और पांडवों के भी आगे लिखेहुए महाबली शूरमा उस क्रोध युक्त बादल के समान गर्जते भगदत्तको देखकर सन्मुख आकर वर्त्तमानहुये (भीमसेन) (अभिमन्यु) (घटोत्कच) (द्रौपदी के पुत्र) (सत्यधृति) (क्षत्रदेव)(चेदिकाराजा)(वसुदान) दशार्णाधिपति सुप्रतीक समेतभगद त्तके सन्मुखगये,और भगदत्तकेसाथ पांडवोंका खूबयुद्धहुआ। वहयुद्ध बड़ाभया-नक और यमराज के पुरका वृद्धिकारक था, रथियों ने बड़े २ भयानक बाणों से रथी और हाथियों को मारा और बड़े २ मदोन्मत्त हाथियों को हाथीवानों ने संग्राम भूमिमें लेजाकर बड़ी निर्भयतासे एक एक के पीछे दौड़ाया फिर

हाथियों ने परस्परमें अपने २ तीक्ष्ण दांतोंसे घायल किया, चमर अपीड़ और प्रासधारी घोड़ों के सवार नियत हुये और बड़ी शीघ्रतासे एकदूसरे पर दौड़े, तब हजारों पदाती शत्रुओं के बरछी आदि शस्त्रों से मरेहुये पृथ्वी पर गिरे, और रथियों के शायकों से अन्य रथी घायल होकर गिरे फिर युद्धमें गिराने वाले बीरों ने सिंहनाद किये, इस प्रकार के रोमहर्षण युद्धके जारी होने पर बड़ा धनुषधारी भगदत्त बड़ेभारी सप्तांग मदश्रावी गजेन्द्रकी सवारी के द्वारा भीमसेन के सन्मुख ऐसे गया जैसे कि जलके छिरनेवाले बड़े पर्व्वतके साथ कोई जातीहो, फिर उसने उस सुप्रतीक हाथी के शिरपर सवार होकर हजारों बाणों को ऐसे बर्षाया जैसे कि ऐरावत हाथी पर चढ़ाहुआ इन्द्रजलकी धाराओं को बर्षाता है, उस राजा ने बाणों से भीमसेनको ऐसा घायल किया जैसे कि बर्षाऋतु में बादल जलकी धाराओं से पर्व्वत को घायल करता है, फिर बड़े धनुषधारी भीमसेन ने अत्यन्त क्रोधित होकर बाणों की बर्षा से हजारों पादरक्षकों को मारा फिर बड़े प्रतापवान् भगदत्तने उन पादरक्षकों को मराहुआ देखकर बड़े क्रोधसे अपने गजेन्द्रको भीमसेनके रथ पर पेला, जैसे कि तीरसे चलाया हुआ बाण जाताहै उसीप्रकार उसकापेला हुआ हाथी भी शत्रुजित भीमसेनके ऊपर बड़ी शीघ्रगतिसे दौड़ा, उसआतेहुये हाथी को देख कर, भीमसेनके आगे चलनेवाले (अभिमन्यु) (पांचोंकेकय) (द्रौपदीके पांचों पुत्र) (राजादुश्शार्ण) (क्षत्रदेव) (चेदिका राजा) (चित्रकेतु) इन सबने क्रोध युक्त होकर दिव्य अस्त्रोंके द्वारा, उस अकेले हाथीको चारों ओर से घेर लिया वह महागजेन्द्र दशबाणोंसे घायल होकर रुधिरको डालता हुआ ऐसा महाशोभायमान हुआ, जैसे कि धातुओंसे चित्रित गिरिराज पर्व्वत शोभितहोता है, फिर पर्व्वतके समान हाथी पर सवार राजा दुश्शार्ण भी भगदत्त के हाथी पर दौड़ा, तब उस हाथियों के राजा सुप्रतीक ने उस आते हुये हाथी को ऐसे रोका जैसे कि किनारा समुद्र को रोकता है, महात्मा राजा दुश्शार्ण के हाथी को रुकाहुआ देखकर, पाण्डवों की सेना ने साधुसाधु करके प्रशंसा करी इस के पीछे बड़े क्रोधयुक्त राजा प्राग्ज्योतिष ने चौदह तोमर उसहाथी के ऊपर फेंके वह सब तोमर स्वर्णमयी कवचको भेदन करके उसके शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे सर्प बामी में प्रवेश करता है, फिर वह महा घायल और पीड़ामान मदोन्मत्तहाथी बड़े भयानक शब्द को करके प्रथम तो सन्मुख हुआ फिर बड़ी शीघ्रता से अपनी सेना को दबाता कुचलताहुआ महाव्याकुल होकर ऐसा दौड़ा जैसे कि वायु अपने बलसे वृक्षों को गेरता हुआ जाता है, उस हाथी के पराजय होने पर पाण्डवों के महारथियों ने, बड़े उच्च स्वर से सिंहनाद किया और सब युद्ध के निमित्त सन्मुख नियत हुये इस

के पीछे भीमसेन को आगे करके नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों को फेंकते मारते भगदत्तके सन्मुख गये हे राजा उनअत्यन्त क्रोधयुक्त आतेहुये असह्य लोगों के भयानक शब्दों को सुनकर क्रोध से निर्भय बड़े धनुषधारी भगदत्त ने अपने हाथीको चलायमान किया,फिर अंकुशरूपी उंगली से पीड़ामान हाथी उस युद्ध में संवर्त्तक अग्नि के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर हजारों रथ समूहोंको हाथी घोड़े सवार और पदातियों समेत मारता तोड़ता कुचलताहुआ इधर उधर को दौड़ा उस हाथी से घायल प्रलयाग्नि में नियत होने के समान क्रोधयुक्त भगदत्त के हाथ से पीड़ित अपनी सेना को देखकर, बड़े क्रोध में भराहुआ घटोत्कच भगदत्तके सन्मुखगया हेराजा उसविकटरूप क्रोधसे लाल नेत्र पराक्रमी घटोत्कचने अपने रूपको भयानक करके पर्व्वतोंके भी तोड़ने वाले बड़ेउग्र शूलको हाथमें लिया, और हाथीके मारने की इच्छासे अकस्मात घुमाकर फेंका वहशूल चारों ओरसे अग्निकणों करके व्याप्तथा उस अकस्मात गिरते हुये शूलको देखकर राजा प्राग्ज्योतिष भगदत्तने बड़ेसुन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्र नाम बाणको फेंककर उसशूल को काटा,तब वह सुनहरी शूल दोखण्ड होकर पृथ्वीपर ऐसेगिरा जैसे कि इन्द्रकाबज्र आकाश से गिरता है हे राजा शूलको टूटा और गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण सुनहरी बरछीको लेकर राक्षसपर फेंककर और तिष्ठतिष्ठ इस बचनको कहने लगा, उस आकाशसे गिरतीहुई बज्रके समान बरछीको देखकर उसराक्षसने बड़ी शीघ्रता से उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया और शीघ्रही उस बरछी को घोटूपर रखकर राजा के देखतेही देखते तोड़डाला यह सबको आश्चर्य्यसा हुआ ६६ पराक्रमी राक्षस से किये हुये उस कर्म को देखकर आकाशमें गन्धर्वों समेत देवता और मुनि भी आश्चर्य्य करनेलगे, हेमहाराज जिनमें भीमसेन अग्र गणनीयहै उनपाण्डव लोगोंने धन्यधन्य शब्दों से पृथ्वी को शब्दायमान किया, फिर बड़ा धनुषधारी प्रतापवान भगदत्त पाण्डवों के उस अत्यन्त आनन्दकारी शब्द को सुनकर न सहसका, और इन्द्र के बज्रके समान बड़े धनुष को चढ़ाकर उस ने पाण्डवों के महारथियों का घुड़का,, फिर निर्मल स्वच्छ प्रकाशमान नाराचों को छोड़ते हुये भगदत्त ने एक बाणसे भीमसेन को और नौ बाणों से राक्षस को घायल करके तीन बाणसे अभिमन्यु को पांच से केकय लोगों को व्याकुल किया और फिर अच्छे प्रकारसे खेंचे और झुके ग्रन्थीवाले बाणसे, क्षत्र देवकी दक्षिण भुजा को ऐसा घायल किया कि वह भुजा धनुष समेत अकस्मात पृथ्वी पर गिरपड़ी, फिर पांच बाणों से द्रौपदी के पुत्रों को घायल करके बड़े क्रोधसे भीमसेन के घोड़ों को मारा, फिर विशिखनाम तीन बाणों से सिंह के चिह्न

रखनेवाली उसकी ध्वजा को काटा और दूसरे तीन बाणों से उसके सारथी को घायल किया, हे भरतर्षभ युद्ध में भगदत्त से अत्यन्त घायल और पीड़ित वह विशोक सारथी रथके भीतर बैठगया, इसके अनन्तर रथियों में श्रेष्ठ महाबाहु भीमसेन बिरथहोकर बड़ी शीघ्रतासे गदाको हाथमें लेकर उस रथ से कूदा, हे राजा उस पर्व्वतके समान उठाई हुई गदाको देखकर आपके शूरों में बड़ाभय उत्पन्न हुआ, इसके पीछे श्रीकृष्ण भगवान्‌को सारथी रखने वाला पांडव अर्जुन चारोंओर से शत्रुओंको मारताहुआ वहां आपहुंचा जहां कि वह महाबली पुरुषोत्तम पिता पुत्र भीमसेन और घटोत्कच प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्त से युद्ध कररहे थे, हे भरतर्षभ वह अर्जुन युद्धकरते हुए महारथी भाइयों को देखकर अत्यन्त क्रोधसे बाणों की बर्षा करके युद्ध में प्रवृत्तहुआ, उसके पीछे महारथी राजा दुर्योधन ने बड़ी शीघ्रता से रथ हाथी घोड़ों से संयुक्त सेना को भेजा, फिर श्वेत घोड़े रखनेवाला पांडव अर्जुन बड़े बेग से उस अकस्मात् आनेवाली कौरवी महासेना के सन्मुख गया, और राजा भगदत्त उस अपने हाथी के द्वारा पांडवों की सेना को मर्दन करता हुआ युधिष्ठिर के सन्मुख गया, इसके पीछे हे राजा धृतराष्ट्र वहां भगदत्त का और पांडवोंका युद्ध पांचालदेशी और केकयदेशी लोगों समेत बड़े २ अस्त्र शस्त्रों के द्वारा महा भयानक हुआ, फिर भीमसेन ने भी उसी युद्ध में उन केशव और अर्जुन दोनों महात्माओं से इरावानके मारेजानेका जैसा वृत्तान्त हुआ सब यथार्थ बर्णन किया ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानबे का अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा उस इरावान नाम पुत्र को मरा हुआ सुनकर बड़े खेद और शोक से भरा, सर्प की समान श्वासा लेता हुआ अर्जुन बासुदेवजी से यह बचन बोला कि परम चतुर बुद्धिमान् सत्यवक्ता बिदुरजी ने पूर्व्वसमय में बड़े निश्चय से इस कौरव और पांडवों के महाघोर नाशको देखाथा इसी कारण उन्हों ने राजाधृतराष्ट्र से निषेध किया था,, हे मधुसूदनजी इस के बिशेष बहुतसे बीर लोग युद्ध में जैसे कौरवों के हाथ से मारेगये उसी प्रकार युद्ध में मेरे हाथ से भी अनेक कौरव मारेगये, हे नरोत्तम यह सब युद्ध कर्म केवल धनही के निमित्त कियेजातेहैं ऐसे धन आदि को धिक्कार है जिस के कारण ऐसा जातिवालों का नाश किया जाताहै, इस जाति के मरने से तो निर्धनही मरना श्रेष्ठ है हे श्रीकृष्णजी हम जात वालों को मारकर क्या फल पावेंगे, दुर्योधन और सौबल के पुत्र शकुनी के अपराध अथवा करण की

बुरी सलाहोंसे क्षत्री लोगों का नाश हुआ जाताहै, हे महाबाहु श्रीकृष्णजी अब मैं अच्छीरीति से जानताहूं कि राजा युधिष्ठिर ने बड़ा अच्छा काम किया कि दुर्य्योधन से आधेराज्य वा पांचही गांवोंकी अभिलाषा चाही और उस निर्बुद्धी ने वह भी उनकी अभिलाषा पूरी नहीं की मैं इस युद्ध भूमि में सोते हुए बड़े २ शूरवीर क्षत्रियों को देखकर, अपने को अत्यन्त बुराकहकर क्षत्री की जीविका को अत्यन्त धिक्कारी देताहूं, हे मधुसूदन जो मैं ज्ञातिवालों से युद्ध करना न चाहूं तो सब क्षत्री लोग मुझको युद्ध में असमर्थ समझेंगे इस कारण हे मधुसूदन आप घोड़ों को शीघ्रही दुर्य्योधन की सेना में ले चलो, अब मैं भी अपनी भुजाओं से इस युद्ध रूपी महासमुद्रको शीघ्रही तरूंगा क्योंकि यह समय किसी स्थान पर भी असामर्थ होने का वर्त्तमान नहीं है, इस प्रकार के अर्ज्जुन के वचनों को सुनकर शत्रु संहारी केशव जी ने उन श्वेतरूप वायुके समान तीव्रगामी घोड़ों को हांका, इसके पीछे हे राजा आप की सेना में ऐसा महा शब्द हुआ जैसे कि पर्वत के समय वायुसे उठे हुए वेगवान् समुद्रका घोर शब्द होताहै, हे महाराज अपराह्णके समय भीष्मजी के और पांडवलोगों के युद्धमें बादल के समान शब्द हुए इसके पीछे हे राजा आपकेपुत्र युद्धमें द्रोणाचार्य्यको रक्षितकरके भीमसेनके सन्मुख ऐसे गये जैसे इन्द्रको रक्षित करके अष्टवसुजाते हैं, फिर शान्तनुकेपुत्र भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ (कृपाचार्य्य) (भगदत्त) (सुशर्मा) यह सब अर्जुनके सन्मुख गये और (कृतवर्मा) वा (वाह्लीक) सात्विकी के सन्मुख हुए और राजा अंबष्टक अभिमन्यु के सन्मुख वर्त्तमान हुआ, इन के विशेष शेष बचेहुए शूरबीर बचेहुए महारथियों के सन्मुख गये फिर महा भयानक युद्ध प्रारम्भ हुआ, हे राजा फिर भीमसेन आपके पुत्रोंको देखकर ऐसा क्रोधित होकर अग्नि रूप हुआ जैसे कि हव्य को पाकर अग्नि प्रचण्ड होते हैं, फिर आपके पुत्रों ने बाणों से भीमसेन को ऐसा ढक दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल पर्व्वतको ढक देते हैं, २१ हे राजा आपके पुत्रों से बहुत ढके हुए होठों को चाबते शार्दूलके समान गर्वित महाबली भीमसेनने,अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र बाणसे व्यूढोरस्क को ऐसा गिराया कि वह मरगया, फिर दूसरे पीले तीक्ष्ण भल्ल से कुंडली को भी ऐसे गिराया जैसे कि छोटे मृगको सिंह गिराता है, इसके पीछे हे राजा बड़ी शीघ्रतासे भीमसेन ने अत्यन्त तीक्ष्ण शिलीमुख बाणों को हाथों में लिया और आपके पुत्रोंपर छोड़े उन भीमसेनके चलाये हुए बाणों ने आपके महारथी (अनाधृष्ट) (कुण्डभेद) (वैराट) (दीर्घलोचन) (दीर्घबाहु) (सुबाहु) कनक ध्वज पुत्रोंको पृथ्वीपर गिराया और सब वीर गिर कर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि वसन्त ऋतुमें गिरे और पड़े हुए लाल २

फूल होतेहैं, २८ इसके पीछे आपके शेष बचेहुए पुत्र भीमसेन को काल के समान जानकर युद्ध से भाग गये, फिर द्रोणाचार्य्य ने आपके पुत्रोंके जलाने वाले भीमसेन को बाणों की बर्षा करके चारों ओरसे ऐसा ढक दिया जैसे कि बादल जलकी धाराओं से पर्वतको ढकताहै, ३० वहां हमने कुन्ती के पुत्र भीमसेन के पराक्रम को देखा कि जिसने द्रोणाचार्य्यके रोंकने पै भी आपके पुत्रोंको मारा, हे राजा जैसे कि आकाशसे गिरेहुए जलको गो बृषभ जंगल में सहते हैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य के बाणोंको भीमसेन ने सहा, फिर वहां भीमसेन ने दूसरा अद्भुत कर्म किया कि आपके बेटोंको मारकर द्रोणाचार्य्य को भी रोंका, अर्जुन का बड़ाभाई आपके वीरपुत्रोंका महापीड़ा देनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि मृगों के मध्यमें महाबली व्याघ्र पीड़ा देनेवाला होताहै जैसे कि भेड़िया पशुओं के बीचमें नियत होकर पशुओं को व्याकुल और चलायमान करताहै इसीप्रकार भीमसेनने युद्धमें आपके पुत्रोंको भगादिया, फिर भीष्मजी भगदत्त और महारथी कृपाचार्य्यने युद्ध में वेगवान् अर्जुनको धारण किया अर्थात् उसके बाणों को सहा, उस अति रथी ने युद्धमें उन सब के अस्त्रोंको अपने अस्त्रों से रोंककर आपकी सेना के बड़े २ बीरोंको मारा, और अभिमन्यु ने भी रथियों में श्रेष्ठ संसारमें विख्यात राजा अंबष्ट को शायकों से विरथ कर दिया, फिर उस यशस्वी अभिमन्यु से विरथ हुए राजा अंबष्ट ने शीघ्रही रथ से कूद महात्मा अभिमन्यु के ऊपर अपने खड्ग को फेंका और बड़ी शीघ्रता से महाबली कृतबर्मा के रथ पर सवार हुआ, ४० फिर युद्ध में महाकुशल शत्रुहन्ता अभिमन्यु ने उस गिरतेहुए खड्गको अपनी तीव्रता से निष्फल किया, तब अभिमन्यु से निष्फल कियेहुए खड्ग को देखकर सेना के लोगोंने साधु साधु शब्द उच्चारण किया, और जैसे कि धृष्टद्युम्न आदि बीर लोग आपकी सेनासे लड़े उसी प्रकार आप के सब बीर पुरुष भी पांडवों की सेना से लड़े, हे भरतर्षभ वहां परस्पर में मारोंको मारते और कठिन कर्मोंको करतेहुए आपके और पांडवोंके बीरों के महाशब्द हुए, युद्ध में प्रशंसनीय बीर लोग परस्पर में बालों को खैंचकर नख दांत और मुष्टिका और जांघों से भी युद्ध करनेवाले हुए और अवकाश पाकर तमाचों तलवारों और अच्छे नियत भुजों से बहुतों ने बहुतों को यमपुरी में भेजा, उस युद्धमें पिताने पुत्रको भी मारा अर्थात् सब मनुष्य सर्वांगरहित व्याकुल हो होकर भी युद्धको करतेहुए, हे राजा धृतराष्ट्र युद्ध में मरेहुए वा घायल शूरबीरों के सुनहरी पृष्ठवाले सुन्दर धनुष और तूणीर अथवा सुनहरी रुपहरी पुंखवाले छोड़ेहुए तीक्ष्णधार बाणतेलसे शुद्ध कियेहुए सर्पों के समान शोभायमान हुए, हाथीदांत की मूठवाले सुवर्ण से जटित खड्ग धनुष ढाल

(पराश) (दुधारे) (खड्ग) (शक्ति) कवच (भारीमुशल) (परिघ) (पट्टिश) भिण्डिपाल अनेक प्रकारके गिरेहुए धनुष और अनेक प्रकार की झूल चमर पंखे वा अनेक प्रकार के शस्त्रधारी महारथी और मरे मनुष्य भी जीवते से दिखाई देते हैं, हे राजा गदाओं से मथे हुए अंगों समेत मुशलों से टूटे शिर घायल हाथी घोड़े और रथ पृथ्वी पर शयन कर रहे हैं अर्थात् बिछे हुए हैं, उन हाथी घोड़े रथ और मनुष्यों से ढकी हुई पृथ्वी सब ओर से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि पर्व्वतों से शोभित होती है, युद्धभूमि में गिरी हुई बरछी और दुधारे खड्ग बाण तोमर पट्टिश पराश भल्ल लोहे के फरसे परिघ भिण्डिपाल शतघ्नी और शस्त्रों से कटे हुए शरीरों से पृथ्वी सविस्तर विदित होती है अल्प शब्द के वा दीर्घ शब्द के मृतक मनुष्यों के समूहों से व्याप्त हुई पृथ्वी महाशोभित विदितहुई, (तलत्र) (केयूररक्षक) और चन्दन चर्चित भुजा हाथियों की शूंड़ के समान कटी हुई जंघा और चूड़ामणि बंधे हुए उत्तम शूरों के कुंडलधारी शिरों से पृथ्वी अपूर्वही शोभा देरहीहै, और हे भरतवंशी सुवर्णके फैलहुए रुधिरसे भरेकवचों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि निर्धूम अग्नियों से शोभित होती है, टूटे धनुष तरकस और फैलेहुए सुनहरी पुंखवाले बाणों से और चारों ओर से घण्टों से युक्त टूटेहुए रथों से वा बाणों से मारे हुए रुधिर में भरे जिनकी जिह्वा मुख से बाहर निकलीथी उनघोड़ोंसे वा खेंचीहुई पताकाओं से और उपासंगिक ध्वजाओंसे और बीरोंकी खोपड़ियोंसे वा बिखरी हुई चोटियोंसे और शूंड़टूटेहुए हाथियों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसेकि नानाप्रकार के आभूषणों से अलंकृतस्त्री शोभित होतीहै, वहां बहुत पीड़ित शूंड़ोंसे शब्दकरतेहुए पराशों समेत अन्यहाथियों से वह युद्धभूमि ऐसी शोभित हुई जैसे कि चलते हुए पहाड़ों से शोभायमान होती है, नानाप्रकार के रंगवाले हाथियों के कम्बलों से वा परश तोमरों से और वैडूर्य्यमणिवाले शुभ अंकुशों से वा चारों ओर से गिरेहुए गजेन्द्रों के घंटों से और चित्रविचित्र झूल और ग्रीवाओंके भूषणों से वा हाथीके बांधने वाली सुवर्ण की रस्सियों से जंत्रों से बाजूबन्दों समेत गिरीहुई भुजाओं से वा शुद्ध तीक्ष्ण परशों से और निर्मल दुधारा खड्गों से विचित्र बाणोंकी वर्षासे जोकि शंकु नामसृगके रोमोंसे बनेहुए अत्यन्तमृदुथे वा राजाओंकी अमूल्य चूड़ामणियोंसे वा टूटे छत्र चामरव्यजन और चन्द्रकमल के समान मुखों के प्रकाशों से और हे महाराज बीरों की अच्छे प्रकार से रची हुई डाढ़ी मूछसे पृथ्वी ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्र समूहों से प्रकाशमान आकाश होताहै, हे भरतर्षभ इसप्रकार आप की और उन्होंकी यह दोनों सेना युद्ध में परस्पर सन्मुखहोकर गर्द मर्द होगईं, उन सेनाओं के

थकने और तितिरबितिर होने और मर्दन होनेपर, रात्रिहोगई इसके पीछे हमने चलने वालों को नहीं देखा फिर कौरव पांडवोंने सेनाओं का विश्रामकिया, रात्रि के प्रारंभ होजानेपर कौरव और पाण्डव एकसाथही सदैव के समान अपने २ डेरों में नियतहुए ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७॥

अट्ठानबेका अध्याय ॥

सातवें दिनके युद्धकाप्रारंभ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे राजा दुर्य्योधन और सुबलकापुत्र शकुनि (दुश्शासन) और दुर्जयकर्ण इनसबने मिलकर सलाहकरी कि पाण्डवों को सेना समेत कैसे विजय करनाचाहिये, यह सुनकर राजा दुर्य्योधन महाबली शकुनि और कर्ण को सन्मुख करके उनसब मन्त्रियों से बोला, कि (द्रोणाचार्य्य) (भीष्म) (कृपाचार्य्य) (शल्य) (भूरिश्रवा) यह सब मिलेहुये से पाण्डवों को युद्ध में पीड़ानहीं देते हैं इसका कारण मैंनहीं जानताहूं, वहसब बिना घायल हुएही मेरीसेनाका नाशकरे डालतेहैं,हे कर्ण मैं युद्ध में अपनी सेना और शस्त्रों से नाशयुक्तहोकर देवताओंसे भी अजेय शूरवीर पांडवोंसे निरादर कियागयाहूं इस सन्देहमें पड़ा हुआ मैं युद्धको कैसे करूंगा हे राजा यह सुनकर कर्णने कहा,कि हे भरतर्षभ चिन्तामतकरो मैं तुम्हारे हितको करूंगा, शंतनुके पुत्र भीष्मजी शीघ्रही युद्धसेनिवृत्त होजायँ, युद्धसे भीष्मजीके हटजाने और शस्त्रोंसे रहित होजानेपर मैं सब सोमकों समेत पाण्डवों को भीष्मजी के देखतेहुएही मारूंगा हे राजा यहमैं तेरेसन्मुख सत्य संकल्प पूर्व्वक प्रतिज्ञाको करता हूं और शपथ से कहताहूं कि वह भीष्म निश्चय करके पांडवों पर दया करता है, इससे भीष्मजी युद्ध में उन महारथियों के विजय करने को असमर्थ हैं, यह भीष्म युद्ध में महाअहंकारी और युद्धही को सदैव प्रिय मानता है, हे तात वह सन्मुख आये हुए पांडवों को युद्ध में कैसे विजय करेगा सो तुम शीघ्रही यहां से भीष्म के डेरे में जाकर, उन वृद्ध गुरूको नमस्कार करके शस्त्रों के त्यागने के लिये कहो हे राजा भीष्मजी के शस्त्र त्यागने पर युद्धमें सेना और मित्रों समेत पांडवों को मुझ अकेले केही हाथ से मराहुआ देखोगे कर्ण के ऐसे वचन सुनकर आप का पुत्र दुर्य्योधन, अपने भाई दुश्शासन से बोला कि यात्रा का सब सामान सब प्रकारसे तैयार हो, ऐसा दुश्शासन को कह दुर्य्योधन कर्ण से बोला, कि हे शत्रुओं के विजय करनेवाले मैं पुरुषोत्तम भीष्म को युद्धके लिये समझाकर और प्रणाम करके शीघ्रही तेरे सन्मुख आऊंगा, उसके पीछे भीष्मजी के हट

जाने पर तुम युद्धमें प्रहार करोगे, हे राजा ऐसा कहकर आपका पुत्र अपने भाइयों समेत ऐसी शीघ्रतासे चला जैसे कि देवताओं समेत इन्द्र जाता है, इस के पीछे राजाओं में श्रेष्ठ सिंह समान पराक्रमी दुर्योधनको, भाई दुश्शासन ने शीघ्रही घोड़ पर सवार किया हे धृतराष्ट्र बाजूबन्द और मुकुट हस्त भूषणादि से अलंकृत, वह दुर्योधन मार्ग में चलता हुआ फिरडी के फूल और सुवर्ण के समान प्रकाशमान उत्तम चन्दनादि से सुगंधित देह निर्मल वस्त्रादिकों को पहरे सिंह समान गति से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में निर्मल किरण युक्त सूर्य्य प्रकाशमान होता है, भीष्म के डेरे में जाते हुये उस नरोत्तम के, पीछे सब लोकों के बड़े धनुषधारी शूरवीर और महाधनुर्द्धर भाई लोग ऐसे चले जैसे कि इन्द्र के पीछे देवता चलते हैं, हे नरोत्तम इसी प्रकार कोई हाथी पर कोई रथ पर कोई घोड़े पर सवार होकर उसके साथ हुये, राजा की रक्षा के निमित्त वह सुहृदजन जिन्होंने शस्त्रोंको त्यागकर दिये थे एक साथही ऐसे प्रकट हुये जैसे कि इन्द्र की रक्षा के निमित्त देवता स्वर्ग में प्रकट होते हैं, कौरवों का राजा अपने सब कौरवलोगों से सेवित उन यशस्वी भीष्मजी के डेरेको गया, उस समय उसके पीछे तो बीर लोग और ओर पास सब भाई बन्धु अपने सुन्दर भुजदण्डों में अंजुली साधे हुये और देशनिवासियों से मीठे वचनों को सुनता हुआ वह महायशस्वी सूत मागधों से प्रशंसित होकर उनसब अपनी प्रजाओं को प्रसन्न करने लगा वहां महात्मा पुरुषों ने सुगन्धित वस्तुओं से पूर्ण सुवर्ण के दीपकों के द्वारा उसको चारों ओरसे प्रकाशित किया, फिर उन सुवर्ण के बड़े२ दीपकों के प्रकाश से महाप्रकाशमान, वह राजा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बड़े २ ग्रहों से संयुक्त चन्द्रमा प्रकाशमान होता है उस स्थान पर सुनहरी सितार आदि बाजे हाथों में रखनेवाले मनुष्य सबओर से उन मनुष्यों को मीठे वचनों से हटानेवाले हुए फिर राजा भीष्म के शुभ डेरे को पाकर घोड़े से उतर भीष्म के सन्मुख उनको नमस्कार करके उत्तम आसन पर बैठगया, वह डेरा सुनहरी उत्तम बिछौनों से सब दिशा में कल्याण रूप था उसमें बैठेहुए भीष्मजी से राजा दुर्योधन हाथ जोड़ेहुए गद्गदवाणी से बोला कि हे शत्रुहंता हमलोग युद्ध में आपसे रक्षित होकर इन्द्र समेत देव दानवों के भी विजय करने की अभिलाषा रखते हैं तो इन पाण्डवोंको उनके सहायकों समेत विजय करना कितनी बात है हे गांगेय भीष्मजी आप मुझपर कृपा करने को योग्य हो, आप उनवीर पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानव लोगों को मारता है हे महाराज मैं सब सोमकों को मारूंगा फिर करुषों को और पांचालों समेत केकय लोगों को भी मारूंगा आप अ-

पने बचन को सत्यकरके सन्मुख आये हुए पांडवों को मारो और बड़े धनुष-धारी सोमकों को भी मारकर अपने बचन को सत्यकरो, हे भरतबंशी भीष्म-पितामह दयासे या मेरे वैरभावसे अथवा मेरी प्रारब्ध हीनतासे जो आप पांडवों की रक्षा करते हो तो युद्ध में शोभा पानेवाले कर्ण को आज्ञादो, वह कर्ण युद्धमें सब सेना और सुहृदों समेत पांडवों को मारेगा, आपका पुत्र इस प्रकारके बचन कहकर फिर उस सत्य पराक्रमी भीष्मजी से कुछ नहींबोला ४२॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिअष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

निन्नानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि आपके पुत्रके वचनरूपी भालों से अत्यन्त घायल और वचन रूपी सलाका से भिदे हुए सर्पकी समान श्वासलेते बड़ेसाहसी महा-कष्टमेंपड़ेहुए भीष्मजी बड़ी बिलम्ब तक शोचरूपी ध्यानमें मग्न होकरअप-ने क्रोधसे देव दनुज मनुष्योंको भस्म करनेवाले बड़े क्रोधसे दोनों नेत्रोंको खोलकर, बड़ी मधुरबाणी द्वारा आपके पुत्र से वचन बोले, कि हे दुर्य्योधन इस प्रकार से अपनी सामर्थ्यके अनुसार उपाय करके तेरेहितके लिये अपने प्राणों को होमतेहुए मुझको तू अपने वचनरूपी भालोंसे क्यों घायलकरता है, जिस दशामें कि शूरवीर पांडवों ने युद्ध में इन्द्र को विजय करके खांडव बनमें अग्निको तृप्त किया और हे महाबाहु जब गन्धर्वों के पराक्रम से तुझ पकड़े हुएको तेरेभाई बन्धु और कर्ण आदि बड़े २ शूरोंके भागजाने पर अ-केले पांडव अर्जुन ने छुटाया यही दृष्टान्त तुमको शोचने के योग्य हैं, और विराटनगर में हम सबके सन्मुख अकेला अर्जुनही हुआ वह भी दृष्टांतयोग्य है हे समर्थ युद्धमें तेरे शूरभाइयोंके भागजानेपर युद्ध दुर्मद द्रोणाचार्य्य और मुझको संग्राम में विजय करके वस्त्र उतार लिये वहभी दृष्टान्त योग्यहै, इसी प्रकार गौ हरण में भी बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य को भी विजय किया वह भी दृष्टान्त ठीक है, जब कि सब पुरुषों में बड़े धनुर्द्धर कर्णको विजय करके उत्तराके लिये वस्त्र दिये वह दृष्टान्त भी बहुत है, अ-र्जुन ने इन्द्रसे भी कठिनता पूर्व्वक विजय होने वाले निवात कवच नाम राक्षसोंको संग्राममें विजय किया वहभी दृष्टान्त बहुतहै, तब ऐसा कौनसा पुरुषहै जो उन वेगवान पांडवों को युद्धमें विजय करने को समर्थ होय और दुर्य्योधन जिसकी रक्षा करने वाला जगत् का स्वामी शंख चक्र गदा पद्म धारण करने वाला, महा शक्तिमान् बासुदेव सृष्टि संहार का करने वाला सर्वेश्वर देव देव परमात्मा सनातनहै जिसको कि नारदादि महर्षियों ने भी तुझको समझायाहै ऐसा जानकर भी हेदुर्बुद्धी तू मोहसे कहने और न कह-

ने की बात को भी नहीं जानता है मरने की इच्छा रखने वाला पुरुष जैसे कि सब वृक्षोंको स्वर्णमयी देखता है उसी प्रकार हे गान्धारी के पुत्र तू भी विपरीत बातों को देखता है, तैंने आप पाण्डव और सृंजियों से बड़ी भारी शत्रुता करी है इससे युद्धभूमि में उनसे तू संग्राम करियो हम भी देखेंगे, हे नरोत्तम मैं शिखण्डी को छोड़कर सन्मुख आयेहुए सब सोमकोंको और पांचालों को मारूंगा, मैं युद्ध में उनके हाथसे माराहुआ यमलोकको जाऊंगा या मैंही उनको मारकर तुझको प्रसन्नकरूंगा, क्योंकि प्रथम राजमहलमें शिखण्डी स्त्री होकर उत्पन्न हुआ था फिर बरदानसे पुरुष हुआ है निश्चय करके यह शिखण्डी स्त्री है इससे हे दुर्य्योधन मैं अपने प्राण जाते हुए भी उसको कभी न मारूंगा जो इस को ईश्वर ने प्रथम स्त्री उत्पन्न किया था इसीसे यह शिखण्डी अब भी निश्चय स्त्री है हे गान्धारीके पुत्र आनन्द से शयनकर मैं प्रातःकालही ऐसा महाभारी युद्ध करूंगा जिसको मनुष्य जब तक पृथ्वी नियतरहैगी तब तक कहाकरेंगे, हे राजा भीष्मजी से ऐसे बचनों को सुनकर आपका पुत्र मस्तकसे उनको दण्डवत् करके डेरेसे बाहर निकल अपने निवास स्थान को गया, और सब साथके लोगों को बिदाकरके शीघ्रही अपने डेरे में प्रवेश कर गया, वहां रात्रिभर सोया, फिर प्रातःकाल उठ कर उसने राजाओं को आज्ञा करी कि सेनाको तैयारकरो अब युद्धमें क्रोध होकर भीष्मजी सोमकों को मारेंगे, हे राजा रात्रि में दुर्य्योधन के उस बड़े भारी विलाप को सुन और अपना निरादर समझ बड़े बैराग्य रूप होकर दूसरे का दोष वर्णन करने की निन्दा करके युद्ध में अर्ज्जुन से संग्राम करने के अभिलाषी भीष्मजी ने बड़ा ध्यान किया और दुर्य्योधन ने शरीर की चेष्टा से भीष्मजी की बड़ी चिन्ता को जानकर दुश्शासन से कहा कि हे दुश्शासन भीष्मजी के रक्षा करनेवाले रथ बहुत शीघ्र तैयार हों और बाईस अनीक सेना को भी प्रेरणा कर दो, कि बहुत काल से विचार किया हुआ सम्पूर्ण सेना समेत पाण्डव लोगों का मरण अब अच्छी तरह से प्राप्त हुआ उस स्थान में भीष्मजी की रक्षा को ही मैं बड़ा काम जानता हूं वह रक्षित कियाहुआ भीष्म हमारा सहायक होकर पाण्डवोंको मारेगा, क्योंकि इसने बड़े शुद्ध अन्तःकरणसे कहाहै कि मैं शिखण्डीको नहीं मारूंगा इस निमित्त कि वह पहले स्त्रीथा वह युद्धमें मुझसे त्याज्यहै, और सब संसार इस बातको जानताहै कि मैंने पिताकी प्रीति के निमित्त राज्य करनेको और स्त्री संग्रह को त्याग किया है इस निमित्त हे नरोत्तम मैं किसी दशा में भी युद्ध में इस जन्म की स्त्री को वा पूर्व्व जन्मकी स्त्री को कभी न मारूंगा यह मैं सत्य २ तुम से वर्णन करताहूं, हे राजा यह शिखण्डी जिसको कि आपने सुना है

वह स्त्री था फिर उद्योग करनेसे यह शिखण्डनी नामसे उत्पन्नहुई जो कन्या होकर मुझसे युद्ध करेगा उस पर मैं कभी अपना शस्त्र न चलाऊंगा, हे तात मैं पाण्डवों की विजय चाहनेवाले क्षत्रियों को या युद्धमें सन्मुख आये हुए अन्य क्षत्रियों को भी संग्राम करके मारूंगा, यह भरतर्षभ गांगेय भीष्मजी ने मुझसे कहाहै इस से मैं सर्वात्मभाव से ही भीष्मजी की रक्षाको चाहताहूं क्योंकि विना रक्षा कियेहुए सिंह को भेड़िया भी मारसका है तात्पर्य यह है कि भेड़िया रूप शिखण्डीके हाथसे सिंहरूप भीष्मजी को कभी न मरवाना चाहिये, मेरा मामा (शकुनि) (शल्य) (कृपाचार्य्य) (द्रोणाचार्य) (विविंशति) यह सब मिलकर बड़ी सावधानी से भीष्मजी की रक्षाकरें उसके रक्षित होने से अवश्य विजय होगी, तब तो सब लोगों ने दुर्योधन के इस वचनको सुनकर सब ओर से रथों के समूहों से भीष्मजी की रक्षाकरी, फिर भीष्मजी की रक्षा करके आपके बेटे पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करके, पाण्डवों को भयभीत करातेहुए बड़े प्रसन्न होकर चले, वह सब महारथी बड़ी रीतिसे नियत कियेहुए रथियों वा हाथियों से भीष्मजी को मध्यमें रक्षित करके कवच और अस्त्र शस्त्रों को धारण कियेहुए ऐसे सब इकट्ठे हुए जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में देवता और वज्रधारी इन्द्रकूदे यह सब इसप्रकार से उस महारथीको रक्षित करके नियतहुए तदनन्तर राजा दुर्योधन ने फिर अपने भाई से कहा, कि अर्जुन के बामओर का रक्षक युधामन्यु और दक्षिणभाग का उत्तमौजा यह दोनों हैं और अर्जुन भी शिखण्डी का रक्षक है, वह अर्जुन से रक्षित और हम से त्यागाहुआ शिखण्डी जैसे भीष्म को और हमको नहीं मारे हे दुश्शासन तुम वही उपाय करो, फिर आपका पुत्र दुश्शासन भाई के इस बचनको सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेना के साथ में चला, और रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन रथियों के समूहों से भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित देखकर धृष्टद्युम्न से बोला कि हे राजा धृष्टद्युम्न अब नरोत्तम शिखंडीको भीष्म के सन्मुख नियतकरो मैं उसका रक्षकहूं ५१ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि नवनवतितमोऽध्यायः ९९ ॥

सौका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शंतनुके पुत्र भीष्मजी अपनी सेना को साथ लेकर चले और अपनी बुद्धिसे सर्वतोभद्र नाम व्यूह को तैयार किया, और (कृपाचार्य्य) (कृतबर्मा) (महारथी शैब्य) (शकुनि) सैंधव (कांबोज) (सुदक्षिण) यह सब भीष्मजी और आप के पुत्रों समेत सेना के अग्रगामी होकर व्यूह के मुखपर नियतहुए और (द्रोणाचार्य) (भूरिश्रवा) (शल्य)

(भगदत्त) यह सब शस्त्र और कवचोंको धारणकरके व्यूह के दक्षिण भाग में रक्षकहोकर नियत हुए, और अश्वत्थामा (सोमदत्त) और दोनों अवन्ति देश के महारथी राजा यह सब बड़ीसेना समेत व्यूह के बामभाग में रक्षक हुए, और हे भरतवंशी धृतराष्ट्र राजा दुर्योधन सब ओर से त्रिगर्त्त देशियों से संयुक्त व्यूह के मध्यमें पांडवों के सन्मुख नियतहुआ, रथियों में श्रेष्ठ अलंबुष और महारथी श्रुतायु यहदोनों कवच शस्त्रधारी व्यूहकी सब सेनाओं के पीछे नियतहुए, हे भरतर्षभ उससमय आपके शूरबीर शस्त्र कवचों से अलंकृत ऐसे दृष्टपड़े जैसे कि अत्यन्त संतप्त करनेवाली अग्नियां होतीहैं, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर भीमसेन और माद्री के दोनों पुत्र नकुल और सहदेव भी शस्त्र और कवच धारण कियेहुए बहुत शोभा युक्त अपने व्यूहकी सब सेनाओं के आगे नियत हुए और (धृष्टद्युम्न) (बिराट) (महारथी सात्विकी) यह सब शत्रुहन्ता बीर बहुतसी सेना समेत नियत हुए (शिखंडी) (घटोत्कच) राक्षस, महाबाहु चेकितान, कुन्तिभोज यह सब भी बहुतसी सेना समेत युद्धमें उपस्थित हुए, और महा धनुषधारी अभिमन्यु और महाबली द्रुपद और केकयलोग शस्त्रादिसे अलंकृत होकर युद्धके निमित्त नियत हुए इसरीति से वह शूरबीर पांडवलोग भी दुर्जय व्यूहको रचकर शत्रुओं के सन्मुख संग्राम भूमि में युद्धके निमित्त बर्त्तमान हुए, हेराजा फिर युद्ध में कुशल आपके पुत्र और सेना समेत सब राजा लोग भीष्मजी को आगे करके संग्रामभूमि में पांडवों के सन्मुख गये, इसी प्रकार पांडव लोगभी भीमसेन को आगे करके भीष्मसे लड़ने की इच्छा से विजयाभिलाषी होकर सिंहनाद पूर्व्वक किलकिला शब्दों को करते और भेरी मृदंगादि बाजों से और दुन्दुभियों से शत्रुओं को भय उत्पन्न करते हुए बड़े प्रसन्न चित्त कौरवों के सन्मुख वर्त्तमान हुए, पृथक् २ रीति से प्रत्येक से मंझायेहुए सिंहनादोंसेगर्जना करतेहुए हम सबलोग बड़ी शीघ्रता से उनकेसन्मुख गए, और अकस्मात् अत्यन्त क्रोधित होकर बड़े कठोर शब्दों को करते हुए परस्पर में सन्मुख दौड़कर बड़े २ प्रहार करने लगे इसके होतेही पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई, और बड़े भारी कठोर शब्दों को करतेहुए पक्षी घूमने लगे, और बड़ा प्रकाशमान सूर्य्य उस समय प्रभा से रहित हुआ और बड़ी भयानक कठोर शब्दवाली तीक्ष्ण वायु चली, हे महाराज वहां घोरनाश के सूचक नाना रूपधारी भयानक शृगालों के समूह भी कठोर शब्दों को करने लगे, और सब दिशाओं में दिग्दाह हुआ और धूलकी वर्षाहुई और रुधिर से संयुक्त हाड़ों की वर्षाहुई, और रोते हुए वाहनों ने बड़े ध्यान में प्रवृत्तहोकर मूत्र और विष्ठाको करदिया, और हे राजा मांसभक्षी राक्षसों के भी बड़े २ अशुभ

शब्द वहां गुप्त सुने गये और गोमायु वा कौवों के झुंड भी गिरते हुए दृष्ट पड़े और नाना शब्दों से कुत्ते घूंसने और रोने लगे, और सूर्य्य को आच्छादित करके बड़े भारी उल्का पात भी पृथ्वी पर हुए इसके पीछे पांडवों की और दुर्योधन की बड़ी सेना शंख और मृदंगों के शब्दों से ऐसी कम्पायमान हुई जैसे कि वायुके वेग से बन कम्पायमान होतेहैं, राजा हाथी घोड़े और रथों से पूर्ण अशुभ मुहूर्त में आई हुई सेनाओं के ऐसे कठोर शब्द हुए जैसे कि वायु से उठे हुए समुद्र के शब्द होतेहैं ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिशततमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौएकका अध्याय ॥

संजय बोले कि बड़ा रथी और तेजस्वी अभिमन्यु पिंगल बर्ण के उत्तम२ घोड़ों के द्वारा बादल की जलधाराओं के समान बाणों की बर्षा करता हुआ दुर्य्योधन की सेनाके सन्मुख गया उस के हटाने को आपके महाबली शत्रुहन्ता महा उत्तम २ शस्त्रधारी शूरबीर लोगभी समर्थ नहीं हुए,, हेराजा उस के छोड़े हुए शत्रु संहारी बाणों ने युद्ध में अनेक क्षत्रियों को मारकर यम पुर को भेजा, फिर युद्ध में क्रोधित अभिमन्युने यमदण्ड और ज्वलित सर्पाकार घोरबाणों को छोड़कर बड़ी शीघ्रता से रथीसमेत रथियों को और सवारों के साथ घोड़ों को और हाथियों समेत हाथीवानों को चूर्णकर डाला, युद्ध में ऐसे महाकर्म करनेवाले अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की सब राजाओं ने बड़ी प्रसन्न चित्तता से धन्य २ करके प्रशंसा करी हे राजा उस सुभद्रा के पुत्र ने उन सेनाओं को ऐसे घायल किया जैसे कि बायु आकाश में रुईको चारों ओर को बखेरदेताहै, और हे राजा उस अभिमन्युसे भगीहुई तुम्हारीसेनाको कोई रक्षक ऐसेनहीं मिला जैसे कि कीचमें फंसे हुए हाथीको कोई रक्षकनहीं मिलसक्ता, फिरवह अभिमन्यु आपकी सब सेना को भगाकर निर्धूम अग्नि के समान क्रोधमें भराहुआ स्थिर होगया १० हे राजा इसको देखकर आपके शूरबीर लोग ऐसेनहीं सहसके जैसे कि कालके प्रेरित पतंग अत्यन्त प्रकाशमान अग्निको, फिर वहपांडवों का महारथी उग्रधनुषधारी सबशत्रुओं को घायल करता हुआ बज्रधारी इन्द्रके समान दृष्टपड़ा, और उसका सुबर्ण की पृष्ठवाला धनुष दिशाओं में घूमता हुआ ऐसा दिखाई दिया जैसे कि बादलों में प्रकाशमान बिजली होती है, अत्यन्त तीक्ष्ण नोक पीतरंग विष के भरेहुए बाण युद्ध में घूमने लगे हे राजा जैसे कि फूले वृक्षवाले बन से भँवरों के समूह निकलते हुए दृष्ट नहीं आते उसी प्रकार मनुष्यों ने सुनहरी अंगवाले रथों से घूमते उस महात्मा अभिमन्युका अन्तर अर्थात् अवकाश

नहीं देखा, कि वह बड़ा धनुषधारी उत्तमहस्तलाघव करनेवाला उन (कृपाचार्य्य) (द्रोणाचार्य्य) (अश्वत्थामा) (बृहद्बल) और जयद्रथको मोहित करके अत्यन्तता से घूमा, हे धृतराष्ट्र आपकी सेना भस्म करनेवाला उस अभिमन्यु का धनुष सूर्यमंडल के समान मंडली करनेवाला हमने देखा, बड़े २ शूरवीर क्षत्रियों ने उस वेगवान् शीघ्रगामी कठिन दौड़नेवाले अभिमन्युको देखकर उसके कर्मों से इस लोकको दो अर्जुन का रखनेवाला माना, हे महाराज उस अभिमन्यु से पीड़ामान् आपकी सेना स्थान २ पर ऐसी अत्यन्तता से घूमी जैसे कि तरुणताके मद में भरी हुई स्त्री इधर उधर घूमती है, फिर सेना समेत महारथियों को घायल और कम्पायमान करके उस अभिमन्यु ने अपने सुहृदों को ऐसा प्रबल किया जैसे कि इन्द्र ने मय दैत्यको जीतकर सबको प्रसन्न किया था २० और युद्ध में अभिमन्यु से भगाई हुई आपकी सेनाओंने ऐसी पीड़ाके भयानक शब्दकिये जैसे कि भयकारीबादल की गर्जना के शब्द होते हैं, इसरीति के आपकी सेनाके शब्दों को सुनकर राजा दुर्य्योधन आर्य्यशृङ्ग नाम राक्षस से बोला कि हे महाबाहो यह दूसरे अर्जुन के समान अभिमन्यु क्रोध से सेनाको ऐसे भगाये देता है जैसे कि देवताओं की सेना को वृत्रासुर भगाता था तुझ सर्व विद्या और शस्त्र सम्पन्न के सिवाय इस युद्ध में इसका मारनेवाला मुझको कोई नहीं दिखाई देता सो तुम शीघ्रही जाकर इस अभिमन्यु को मारो, और हम सब भीष्म और द्रोणाचार्य्य को आगे करके अर्जुन को मारेंगे, इस प्रकार से वह आज्ञादिया हुआ प्रतापी बलवान् राक्षसाधिप वर्षा ऋतु के बादल के समान बड़े शब्दों को करता हुआ आपके पुत्रकी आज्ञासे शीघ्रही युद्ध भूमि में गया, हे राजा उसके भयंकर शब्द से पांडवों की बड़ी सेना सब ओर से ऐसी चलायमान हुई जैसे कि वायु से उठायाहुआ समुद्र चलायमान होता है, २८ बहुत से मनुष्य तो उसके भयकारी शब्दही से अपने प्यारे जीवनको त्यागकर पृथ्वी पर गिरपड़े २६ परन्तु शूरवीर अभिमन्यु बड़ी प्रसन्नता से युक्त बाणों समेत धनुष को हाथों में लेकर नाचता हुआ सारथ में बैठकर उस राक्षस के सन्मुख पहुंचा ३० इस के पीछे उस क्रोधयुक्त राक्षस ने युद्ध में अभिमन्यु को पाकर उसकी समीपी सेना को घायल किया इस रीति से उस पांडवकी घायल और भागी हुई बड़ी सेना को देखकर वह राक्षस युद्ध में उसके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि देवताओं की सेना के सन्मुख दैत्योंका राजा बलिगयाथा, हे धृतराष्ट्र युद्ध में उस घोर राक्षस ने सेना का बड़ा मर्दन किया, और अपने पराक्रम को दिखाकर हजारों बाणों को फेंका तब तो वह पाण्डवी सेना भय से महाव्याकुल होकर भाग निकली, जैसे कि हाथी कमलनियों को मर्दन

करता है उसी प्रकार सेना को मर्दन करके युद्ध भूमि में द्रौपदी के पुत्रों के सन्मुख गया तब वह बड़े धनुषधारी प्रहार करनेवाले महाबली द्रौपदी के पुत्र भी महा क्रोधरूप होकर उसके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि पांच ग्रह सूर्य्य को सन्मुख से घेरते हैं, फिर उन पांचों महाबली शूरों ने उसको ऐसा घायल किया जैसे कि युगके अन्त में अर्थात् प्रलय होने के समय में पांच भयकारी ग्रह चन्द्रमा को पीड़ा देते हैं, इस के अनन्तर महाबली प्रतबंध ने अत्यन्त शीघ्रतासे तीक्ष्ण धारवाले लोहे के बाणों से उस राक्षस को अत्यन्त घायल किया, उन बाणों से कटेहुए कवचवाला वह राक्षस ऐसा अत्यन्त शोभायमानहुआ जैसे कि सूर्य्य की किरणों से गर्भित बड़ाबादल होताहै ४० हेराजा वह आर्यशृंग राक्षस सुवर्ण जटित बाणों से भिदाहुआ ऐसा शोभित विदित होताहै जैसे कि प्रकाशित शिखरवाला पर्व्वत शोभायमान होताहै, फिर उन पांचों भाइयों ने उस राक्षसको बड़े तीक्ष्ण स्वर्णमयी बाणों से घायल किया ४२ तब तो महाविष भरे सर्पों के समान बाणों से विदीर्ण वह गजेन्द्र रूप राक्षस बड़ा क्रोधयुक्त होकर एक मुहूर्त्तमात्र तो अचेत होगया, फिर उस क्रोध से द्विगुणित पराक्रमवाले ने उनके बाण धनुष और ध्वजाओंको काटा और रथमें बैठेहुए नाचते और आश्चर्य्य करते महारथी अलम्बुष ने प्रत्येक को पांच २ बाणों से घायल करके बड़ी शीघ्रतासे उन महात्माओं के घोड़े और सारथियों को मारा, और बहुत प्रकार के अनेक रूपके हजारों बाणों से उनके शरीरों को घायल किया इन सब कर्मों को करके उन सबके मारने की इच्छा करके वह राक्षस बड़ी तीव्रता से उनके पास गया, अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु उस दुष्टात्मा से अपने भाइयों को पीड़ित देखकर शीघ्रही उसके सन्मुख गया, वहां उन दोनों का ऐसा महायुद्ध हुआ जैसा कि इन्द्र और वृत्रासुर का हुआ था इस युद्धको आपके सब पुत्रों ने और महारथी पाण्डवों ने देखा कि दोनों परस्पर में महाक्रोध युक्त और लाल२ नेत्र करके अत्यन्त लड़े, और युद्ध में कालाग्निके समान दोनों बीरों ने अपने को देखा फिर दोनोंका भयकारी युद्ध ऐसा अप्रिय जानपड़ा जैसा कि पूर्व्व समयमें देवता और असुरों के युद्ध में इन्द्र और सम्बरका हुआथा ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकाधिकशततमोऽध्यायः १०१ ॥

एकसौदो का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्ध में अलम्बुष राक्षस किस रीति से पांचों महारथियों को मारता हुआ शूरबीर अभिमन्यु के सन्मुख हुआ और शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु कैसे २ उस अलम्बुष से लड़ा इसको

यथार्थतासे मुझ से वर्णन करो, रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन (घटोत्कच राक्षस) (नकुल) (सहदेव) और महारथी सात्विकी यह सब कैसे २ लड़े और अर्जुनके युद्ध में मेरी सेना में क्या २ हुआ इन सब बातों को मेरे आगे पूरा२ वर्णन करो, संजय बोले कि हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र मैं उस रोमहर्षण युद्धको तुमसे कहताहूं जो उस राक्षस और अभिमन्यु ने किया है और जैसे कि पाण्डव अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और सात्विकी ने युद्ध में पराक्रम किया है, और जो २ कठिनकर्म आपके उन शूरोंने किया जिनके कि अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य्य थे उसको और जैसे २ फिर अलम्बुष युद्धमें बड़े शब्द से गर्जकर वा थड़ककर महारथी अभिमन्यु के सन्मुख गया और बड़ी तीव्रता से तिष्ठ २ शब्द करके सिंहके समान गर्जना करता हुआ अभिमन्यु पिताके महाशत्रु अलम्बुष के सन्मुख जैसे गया तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले नर और राक्षस युद्धमें रथों के द्वारा देवदानव के समान सन्मुख हुए मायाका जाननेवाला राक्षस और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु यह दोनों दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले थे, फिर अभिमन्यु ने तीन तीक्ष्ण बाणों से अलम्बुष को घायल करके पांचबाणों से विदीर्ण किया, और अत्यन्त क्रोधयुक्त अलम्बुष ने भी नौ बाणों से अभिमन्युके हृदयको ऐसा घायल किया जैसे कि चांकसे बड़े हाथी को करतेहैं १३ हे भरतर्षभ इसके पीछे शीघ्रता करने वाले अलम्बुष ने अपने हजार बाणों से अभिमन्युको पीड़ामान् किया, फिर महाक्रोध भरे अभिमन्यु ने भी ग्रन्थीवाले नौबाणों से राक्षसों के राजा को बड़ी छाती पर घायल किया, वह बाण मर्मों में प्रवेश करके शीघ्रही उसकी देह में घुसगये उन बाणोंसे वह राक्षस सब शरीर में घायल होकर ऐसा शोभायमान हुआ, जैसे कि फूलेहुए किंशुक वृक्षों से पर्व्वत शोभित होताहै और सुनहरी पुंखवाले बाणों से उसकी ऐसी अद्भुत शोभाहुई जैसे अग्नि वाले पहाड़ की होतीहै इसके पीछे महाक्रोध युक्त असह्य अलम्बुषने बाणों से महाइन्द्र के समान अभिमन्यु को ढकदिया फिर उसके बाण अभिमन्यु को घायलकरके पृथ्वी में घुसगये इसीप्रकार अभिमन्यु के छोड़ेहुए सुवर्ण जटित बाण भी अलम्बुष को घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगये फिर अभिमन्युने युद्धमें अच्छे झुकेहुए ग्रन्थीके बाण अलम्बुषके ऐसे मारे जिनके मारे उसने ऐसे मुख फेर लिया जैसे कि इन्द्रके मारे हुए बाणों से मयदैत्यने मुखफेर लियाथा फिर राक्षसाधिपने अपनी तामसी बड़ी मायासे अन्धकार को प्रकटकिया उसअन्धकारसे वह सब गुप्तहोगये, तब न राक्षसको न अपने शूरवीरों को न शत्रुओंको अभिमन्युने देखा, इसमहाभयकारी प्रबल माया को देखकर अभिमन्युने प्रकाशमान सौरनाम अस्त्रको प्रकटकिया तब सब

संसार दीखने लगा २५ और प्रकाशके होतेही उसनिर्बुद्धी दुरात्मा राक्षसकी प्रबल मायाको दूरकरके बड़े बीर पराक्रमी नरोत्तम अभिमन्युने उस राक्षसाधिपको युद्धमें गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से ढकदिया फिरउस राक्षस ने अनेक २ मायाकरी परन्तु सब मायाओंको उस महाअस्त्रज्ञ अभिमन्युने दूरकिया फिर मायाके नाशहोतेही सायकों से घायल होकर वह राक्षस बड़ाभयभीत होके रथको उसी स्थान में छोड़कर भागगया फिर उस कठिन युद्ध कर्त्ता राक्षस के शीघ्र बिजय होनेपर युद्धमें प्रवृत्तहोकर अभिमन्युने आपकी सेनाका ऐसा बिध्वंसनकिया जैसे कि मदोन्मत्त बनबासी गजेन्द्र निर्बल कुमुदिनियों के बनको बिध्वंसकरताहै३० इसके पीछे शन्तनु के पुत्र भीष्मजीने अपनी सेना को भगाहुआ देखकर बाणोंकी तीव्रवर्षासे अभिमन्युको ढकदिया, फिर धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों ने उसबीर को चारों ओर से घेरकर युद्धमें अनेकों ने अकेले को बहुतसे बाणों से अत्यन्त घायल किया, उस पिता के समानबली वा बल पराक्रम में बासुदेवजीके तुल्यसब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठबीर अभिमन्युने उन रथियों के सन्मुख पिता और मामा के समान अनेक प्रकारके कर्मोंको किया,, उसके पीछे पुत्रको चाहते और आपकी सेनाको मारते क्रोधयुक्त बीर अर्जुनने युद्ध में अपने पुत्रको पाया, इसी प्रकार अन्य अपने बीरों को भी सन्मुख लड़ते हुए पाया और आप के पिता देवव्रतने लड़ाई में अर्जुन को ऐसे सन्मुख पाया जैसे कि राहु सूर्य्य को सन्मुख पाता है, इसके पीछे रथ हाथी और घोड़ों समेत आपकी पुत्रों ने युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित किया, हे राजा धृतराष्ट्र इसी प्रकारसे अलंकृत पांडव अर्जुनको घेर कर बड़े युद्धके लिये प्रवृत्तहुए, इसके पीछे कृपाचार्य्य ने पच्चीस बाणों से भीष्मके आगे बर्त्तमान अर्जुनको ढकदिया, फिर सात्विकीने अर्जुनके प्रियकरनेकी इच्छासे सन्मुख जाकर उनको तीक्ष्णबाणों से ऐसा घायल किया जैसे कि शार्दूल हाथी को घायल करताहै ४० और अत्यन्त कोपयुक्त शीघ्रता करने वाले कृपाचार्य्यजीने भी कंकपक्ष युक्त नौ बाणों से सात्विकी को हृदयमें घायल किया फिर बेगवान् क्रोधभरे सात्विकीने अपने धनुषको लचाकर कृपाचार्य्यके नाश करनेवाले शिलीमुखनाम बाणको धनुषपर चढ़ाया उस समय अत्यन्त क्रोधसे भरेहुए अश्वत्थामाने उस तीव्रतासे गिरते हुए इन्द्र बज्रके समान बाणको दोस्थानों में काटा, इसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ सात्विकी कृपाचार्य्य को त्यागकर युद्ध में अश्वत्थामाके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि आकाश में चन्द्रमा के सन्मुख राहुजाताहै, हे भरतबंशी द्रोणकेपुत्र अश्वत्थामा ने उसके धनुषके दो खण्ड करके उसको मारे बाणों के आच्छादित करदिया फिर सात्विकी ने शत्रुओंके मारनेवाले दूसरे धनुष को

खैंचकर साठ बाणों से अश्वत्थामाकी छाती और दोनों भुजाओं को घायल किया उन बाणोंसे घायल और पीड़ित होकर अश्वत्थामा महाव्याकुल वा अचेत होकरकई मुहूर्त्ततक ध्वजाके आश्रयसे रथमें बैठगया, थोड़ेही समयमें अश्वत्थामाने सचेतहो बड़े क्रोधसे सात्विकीको नाराच बाणसे घायलकिया, वहबाण सात्विकी को घायल करताहुआ पृथ्वीमें ऐसेघुसगया जैसे किवसन्त ऋतुमें सर्पका बलवान् बच्चा बिलमें प्रवेश करताहै, फिर अश्वत्थामाने दूसरे भल्ल से सात्विकी की उत्तम ध्वजाको काटकर बड़े सिंहनाद पूर्व्वक उसको महाघोर बाणोंसे ऐसा ढकदिया जैसे कि वर्षाऋतुमें बादलसूर्यको ढकदेताहै हे महाराज फिर सात्विकीने भी बड़ी शीघ्रतासे उस बाणोंके जालको काटकर अपने बाणसमूहोंसे अश्वत्थामाको आच्छादित करदिया फिर उसशत्रुहन्ता सात्विकीने अश्वत्थामाको ऐसा संतप्त किया जैसे कि स्वच्छ आकाशवाला सूर्य सबको अत्यन्त तपाता है, इसके पीछे बड़े उपाय करनेवाले सात्विकी ने बड़ी गर्जनाओंको करके हजारों बाणोंसे अश्वत्थामाको व्याप्त करदिया, तब राहुसे ग्रसेहुए सूर्य्य के समान अपने पुत्रको देखकर प्रतापवान् द्रोणाचार्य्य जी उस सात्विकी के सन्मुख गये, हे राजा सात्विकी के हाथसे पीड़ामान् अपने पुत्रको चाहतेहुए द्रोणाचार्य्यने उसको युद्धमें बड़े तीव्र पृषत्कबाणसे घायल किया फिर सात्विकी ने युद्धमें गुरुके पुत्र महारथी को छोड़कर लोहमयी बाणों से द्रोणाचार्य्यजी को महा व्याकुल किया, उसी अन्तर में बड़ा साहसी शत्रुसंतापी महारथी क्रोधभरा अर्जुन युद्धमें द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया फिर द्रोणाचार्य्य और अर्जुन ने उस घोर युद्धमें ऐसी बड़ी सन्मुखता करी जैसी कि आकाशमें बुध और शुक्रने करीथी ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिद्विअधिकशततमोऽध्यायः १०२ ॥

एकसौतीनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्धमें कुशल दोनों पुरुषोत्तम अर्थात् बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य और पांडव अर्जुन परस्पर कैसे सन्मुख हुए, हे संजय वह अर्जुन उस बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्य का सदैव प्याराहै और आचार्य्यजी भी अर्जुनको सदैव प्यारे हैं, वह दोनों महारथी युद्धमें प्रसन्न चित्त सिंहकी समान मदोन्मत्त और सावधान होके किस रीति से युद्धकरने को प्रवृत्तहुए, संजय बोले कि द्रोणाचार्य्यजी युद्ध में अर्जुनको अपना प्यारा नहीं जानतेहैं इसी प्रकार अर्जुन भीक्षत्री धर्मको आगे करके गुरुको युद्धमें प्यारा नहीं मानताहै, हे राजा क्षत्रीलोग परस्पर में एक दूसरेको त्याग नहीं करतेहैं किन्तु पिता माता भाई के साथमें भी अमर्यादासे लड़ते हैं, हे राजा युद्ध में अर्जुन के तीन बाणों से

घायल द्रोणाचार्य्यजीने अर्जुन के धनुष से गिरेहुए बाणों को विचार नहीं किया, फिर अर्जुन युद्धभूमि में बाणों की वर्षा करताहुआ ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि बड़े बन में वृद्धि पानेवाला अग्नि प्रचण्ड होजाताहै, फिर द्रोणाचार्य्य ने भी शीघ्रही गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से अर्जुन को ढकदिया, तदनन्तर राजा दुर्य्योधन ने युद्धमें द्रोणाचार्य्य की समीपता के कारण राजा सुशर्मा को आज्ञाकरी, उस त्रिगर्त्त के क्रोधयुक्त राजाने भी अपने धनुषको अच्छे प्रकार खैंचकर लोहे की पुंखवाले बाणों से अर्जुन को आच्छादित करदिया १० हे राजा उन दोनों के छोड़े हुए बाण अन्तरिक्ष में ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि शरदऋतु के आकाश में हंसशोभितहोतेहैं, वह बाण चारों ओरसे अर्जुन को पाकर ऐसे प्रविष्ट हुए जैसे कि फलों के बोझे से झुकेहुए वृक्षों में पक्षी प्रवेश करतेहैं, फिर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुनने बड़ी गर्जना करके मार बाणों के पुत्र समेत त्रिगर्त्त के राजा को घायल करदिया, जैसे कि युग के अन्त में काल से घायल होतेहैं उसीप्रकार अर्जुन से घायल और मरने में निश्चय करनेवाले वह लोग अर्जुन केही सन्मुख आकर बर्त्तमान हुए और युद्धमें उन लोगोंने अर्जुन के रथ पर बाणोंकी वर्षाकरी और अर्जुनने अपने बाणों से उनके बाण जालों को ऐसे रोका जैसे कि जलकी वर्षा को पर्व्वत रोकता है हे राजा वहां हमने अर्जुनकी हस्तलाघवता को भी अपूर्व्व देखा कि जो अकेलेने बहुत से बीरोंकी छोड़ी हुई असह्य बाणों की वर्षाको और शस्त्रों को ऐसे रोका जैसे कि बायु बादलोंके समूहोंको रोकदेताहै, अर्जुनके उस कर्म से देवता और दानव भी महाप्रसन्न हुए हेराजा अर्जुनने महाक्रोधित होकर सेना के मुखरूप त्रिगर्त्त देशियों के ऊपर बायव्य अस्त्रको छोड़ा उसमें से आकाशको व्याकुल करते वा देवताओंके समूहोंको गिराते और सेनाओं को मारते हुए वायु प्रकटहुए फिर द्रोणाचार्य जी ने बड़े भयकारी वायव्य अस्त्रको देखकर,, दूसरे शैल्य नाम घोर अस्त्रको छोड़ा उसद्रोणाचार्य के उस अस्त्रके छोड़तेही वहबायु शान्त होगई और दशोंदिशा प्रसन्नहुईं इसके पीछे उसबीर अर्जुनने त्रिगर्त्त राजाके रथोंके समूहोंको, बेउत्साह व निर्बल व मुख फेरनेवाला किया, इसके पीछे दुर्य्योधन व रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य अश्वत्थामा (शल्य) (कांबोज) (सुदक्षिण) (बिन्द) अनुबिन्द अवन्तिके राजा लोग बाह्लीक देशियों समेत राजा बाह्लीक इन सब बीरों ने रथों के समूहों से अर्जुन की दिशाको रोकदिया, उसीप्रकार भगदत्त व महाबली श्रुतायु इन दोनों ने हाथियों की सेना समेत भीमसेन की दिशाओं को रोका और भूरिश्रवा शल्य शकुनी इस सबने बड़े तीव्र बाणों से माद्रीके दोनोंपुत्र नकुल सहदेव को घेरलिया और सेना वा धृतराष्ट्र के सब पुत्रों समेत भीष्मजी ने

युधिष्ठिरको पाकर सब ओरसे घेरलिया, फिर भीमसेन ने उस गिरती हुई हाथियों की सेना को देखकर, बनके सिंहके समान होठोंको चाटते हुए अपनी बड़ी गदाको लेकर शीघ्रही रथसे कूदके आपकी सेनाओं को भयभीत किया इसके पीछे युद्धमें कुशल उन हाथियों के सवारों ने भीमसेन को गदा धारण किये देखकर,३० चारोंओरसे घेरलिया तब वह भीमसेन हाथियों के मध्यवर्त्ती होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बादलोंके बड़े जालमें वर्त्तमान होकर सूर्य्य शोभित होताहै और वीर भीमसेनने अपनी गदासेहाथियोंकी सेना को ऐसे पृथक्२करदिया जैसे कि वायु बड़े और असंख्य फैले हुए बादलों के जालोंको पृथक् २ करताहै उस महाबली भीमसेन से घायल बादलों के समान गर्जनेवाले हाथियोंने पीड़ायुक्त शब्द किये और हाथियों के दांतोंसे बहुत घायल हुआ भीमसेन रणभूमिमें फूलेहुए अशोकके समान शोभित हुआ फिर हाथीको दांतपर से पकड़कर बिना दांत करदिया और उसी दांतसे हाथी के मुखको घायल करके रणभूमि में गिराया उस समय मृत्यु समान दण्ड हाथमें लिये मस्तकों की चरबी से शोभित रुधिर भरे देह से रुधिर में डूबीहुई गदाका धारण करनेवाला भीमसेन रुद्र के समान दृष्ट पड़ा इस रीति से सब हाथी मारेगये और मरने से बचेबचाये बड़े हाथी अपनीही सेना को दबाते मर्दन करते इधर उधरको भागगये उन चारोंओर को भागतेहुए उनबड़े२ हाथियोंके कारणसे दुर्य्योधनकी सबसेना मुख फेरगई३६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणित्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३ ॥

एकसौचारका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा मध्याह्न के समय सोमकों से भीष्मजी का युद्ध वर्त्तमान हुआ वह महाघोर युद्ध लोकों के नाशका करनेवाला भयंकर रूप था, रथियों में श्रेष्ठ गंगापुत्र भीष्मजी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से पांडवों की हजारों सेनाओं को तितिरबितिर कर दिया और ऐसा मर्दन किया जैसे कि बैलों का समूह बहुत से कटेहुए नाज के ढेरको करदेताहै, (धृष्टद्युम्न) (शिखण्डी) (विराट्) और द्रुपद ने युद्ध में महारथी भीष्मको पाकर बाणों से घायल कर दिया इसके पीछे भीष्मने धृष्टद्युम्नको घायल कर तीन बाणों से विराट्को व्यथित करतेहुए द्रुपद के ऊपर नाराचको चलाया, तब तो उस भीष्मसे घायल शत्रुहन्ता बड़े धनुषधारी चरण से छुये हुए सर्परूप क्रोधयुक्त शिखण्डी ने उस भरतवंशियों के पितामह भीष्मजी को घायल किया और उस अजेयने उसको स्त्रीरूप ध्यान करके इसपर प्रहार नहीं किया, फिर क्रोधरूप धृष्टद्युम्न ने अपने तीन बाणों से पितामहकी छाती और भुजाओं पर

घायल किया द्रुपद ने पच्चीस बाणसे बिराट् ने दश बाणों से और शिखण्डी ने पच्चीस शायकों से भीष्मजी को घायल किया, फिर अत्यन्त घायल रुधिर भरे शरीरसे वह पितामह ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बसन्तऋतु में फूला हुआ लाल अशोक होताहै १० इसके पीछे गंगापुत्र भीष्मजीने सीधे चलने वाले तीन २ बाणों से उन सबको घायल किया और भल्ल से द्रुपद के धनुष को काटा, फिर द्रुपद ने दूसरे धनुष को लेकर पांच बाणों से उनके शिर को घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से सारथी को व्यथित किया, इसी प्रकार से भीमसेन वा द्रौपदी के पांचों पुत्र वा पांचों भाई केकय वा यादव सात्विकी जिन में अग्रगामी युधिष्ठिर थे और पांचाल जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न था रक्षा पूर्व्वक यह सब लोग भीष्मजी के सन्मुख दौड़े, हे राजा इसी प्रकार से आप के सब शूरवीर भीष्मजी की रक्षा के लिये उपाय करने वाली सेनाओं समेत पांडवी सेनाके सन्मुख गये वहां आपके और पांडवोंके मनुष्य घोड़े हाथी सवार और रथोंका बड़ा भारी युद्ध हुआ वह युद्ध भी यमराजके पुरकी बृद्धिका करने वाला था वहां रथीने रथी को यमलोकमें भेजा और अन्य २ मनुष्योंने हाथी घोड़े और रथों को सन्मुख पाकर, गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से परलोक को पहुंचाया हे राजा जहां तहां नाना प्रकारके घोरबाणोंसे रथी रथोंसे हीन हुएजब सारथी भी मारेगये तब चारों ओर को भागगये हे राजा युद्धमें गंधर्व नगरके समान बहुतसे घोड़े मनुष्योंको खूंदते मर्द्दनकरते भागते हुए दृष्टपड़े २० और रथी रथियों से हीन कवचधारी और तेजयुक्त कुंडल मंडीलबाण और बाजूबन्द आदि भूषणधारी, सब देवकुमारों के समान और युद्धमें बलसे इन्द्रके समान धनसे कुबेर को और चित्तसे बृहस्पति को भी उल्लंघन करने वाले, सबसंसारके शूरवीर राजा जहां तहां ऐसे भागे हुए दृष्टपड़े जैसे कि साधारण मनुष्य होते हैं, हे नरोत्तम हाथी अपने श्रेष्ठ सवारों से हीन अपनी सेनाओं को मर्द्दन करते हुए सब शब्दों के पीछे चलने वाले दौड़े, हे श्रेष्ठ ढाल चमर पताका सुन्दर सुनहरी दण्डवाले छत्रादिक, चारों ओर भागे हुवों के साथ दशों दिशाओं को दौड़तेहुए दृष्टपड़े बादलके रूप हाथी घन कीसी गर्जना करने वाले विदितहुए, हेराजा इसी प्रकार उस तुमुल युद्धमें आपके और पांडवों के हाथियों के सवार हाथियों से रहित दौड़ते दृष्टिगोचर हुए, नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होने वाले सुवर्णित भूषणों से अलंकृत हजारों घोड़ों को भी भागता हुआ देखा, घोड़ों के मरने से चारोंओर को हाथ में खड्ग लिये भागतेहुए घोड़ोंके सवारों को देखा, उसी बड़े युद्धमें भागतेहुए हाथी को पाकर हाथीबड़ी तीव्रता युक्त पदातियों को और घोड़ों को मर्द्दन करता

हुआ गया ३० इसी प्रकार हाथीने रथियों को और पृथ्वी परपड़े हुए रथी और घोड़ोंको पाकर घोड़ों ने मनुष्यों को मर्दन किया और बहुतसोंने परस्पर में मर्द्दन किया इस प्रकार उस भयानक युद्धमें रुधिर की महा भयंकर नदीभी वर्त्तमान देखी, खड्ग समूहों से गसेहुए केशरूप शैवाल रथरूपह्रद बाणरूप चक्र घोड़े रूप मछलियां रखने वाली दुष्प्राप्य शिररूप पत्थरों से व्याप्त हाथी रूप ग्राहोंसे व्याकुल और कवच मंडील रूपके फेनोंसे भरी धनुष रूप वेग खड्ग रूपी कछुए रखने वाली, पताका ध्वजा रूप वृक्षों से संयुक्त मृत्युरूपी किनारे रखनेवाली नाशकारी मांस भक्षी राक्षस रूप हंसों से युक्त नदी यमराज के देशकी अत्यन्त बढ़ाने वालीथी, हे राजा बड़े २ शूरवीर महारथी क्षत्रियों ने भय को त्यागकर रथहाथी घोड़े रूपनौकाओंके द्वारा उसनदी को तरा, युद्धमें भयभीत मूर्च्छावान् मनुष्यों को ऐसे दूर पहुंचाया जैसे कि वैतरणी नदीके प्रेतराजके पुरमेंप्रेतोंको पहुंचाती है, वहां क्षत्रीलोग उसबड़ी प्रलयको देखकर पुकारे कि दुर्य्योधन के अपराधसे क्षत्री लोगोंका नाश होताहै, पापात्मा लोभी राजा धृतराष्ट्रने गुणवान् पांडवों से कैसे शत्रुता करी ४० इस प्रकार पांडवों की प्रशंसा से भरेहुए आपके पुत्रों समेत सेनाके अनेक प्रकारके भयानक शब्द परस्पर में सुनेगये, इसके पीछे सब संसारका अपराधी आपकापुत्र दुर्य्योधन उन शूरवीरों के कहेहुए वचनोंको सुनकर, भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य शल्य इत्यादि से बोलाकि आपलोग अहंकार को त्यागकर युद्ध करो विलम्बक्यों करतेहो, इसके पीछे पांडवोंका और कौरवों का महाघोर भयानक युद्धजारी हुआ, हे विचित्र वीर्य के पुत्र जो पूर्व समय में महात्माओं के कहने को तुमने नहीं माना उसी का यह महाभयकारी फल तुम देखो हे राजा पांडव लोग सेना और साथके चलने वालों समेत अपने प्राणों की रक्षा नहीं करतेहैं और कौरव लोगभी अपने प्राणों की रक्षा नहीं करतेहैं, हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र इसहेतु से यही सूचित होता है कि कैतो दैव की इच्छा से अथवा आपके अन्याय से मनुष्यों का भयकारी और प्रलय रूपी नाश वर्त्तमानहै ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणि चतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

संजय बोले कि पुरुषोत्तम अर्जुन ने सुशर्मा के पीछे चलनेवाले उन राजाओं को तीक्ष्ण बाणों से प्रेतराज के पुरको पहुंचाया, इस के पीछे सुशर्मा ने अर्जुन को बाणों से घायल करके वासुदेव जी को सत्तर बाणों से और अर्जुन को नौ बाणों से घायल किया तब इन्द्र के पुत्र महारथी अर्जुन

ने अपने बाणों से उनको रोककर सुशर्मा के शूरवीरों को यमलोक में भेजा, हे राजा जैसे कि युगके अन्त में काल से प्रेरित लोग होते हैं इसी प्रकार अर्जुन से घायल हुए वह महारथी युद्ध में भयभीत होकर कोई तो घोड़ों को त्यागकर कोई रथ कोई हाथियों को त्यागकर दशों दिशाओं में भागे, और कोई २ शूर रथ घोड़े और हाथीकोही लेकर बड़ी शीघ्रतासेभागे, और पदाती लोग भी उस युद्ध में शस्त्रों को त्यागकर अनिच्छावान् होकर जहां तहां से भागे, उससमय सुशर्मा मनसे हारकर त्रिगर्त्त के राजा और अन्य बहुत से उत्तम २ राजाओं के रोकने से नहीं रुकसका, तब आपका पुत्र दुर्योधन सेना समेत उन शूरवीरों को भागता हुआ देखकर युद्ध में भीष्मजी को आगे करके सब सेना के आगे बड़े २ उपायों समेत राजा त्रिगर्त्त के जीवन के लिये अर्जुन के सन्मुख गया १० हे राजा वह युद्धमें अनेक प्रकारके बाणों की बर्षा करता हुआ सब भाइयों समेत युद्ध में वर्त्तमान रहा और शेष सब मनुष्य भागगये, हे राजा इसी प्रकारसे पाण्डव लोग भी सब उपायों समेत अर्जुन के लिये कवच शस्त्र धारण किये वहां गये जहां पर कि भीष्मजी नियत थे, यह सब वीर गांडीव धनुषधारी के युद्ध में पराक्रम को जानते और हाहाकार से उत्पन्न उत्साह को न रखनेवाले चारों ओर से भीष्मजी के सन्मुख गये, फिर तालध्वज भीष्मजी ने गुप्तग्रन्थी के बाणों से पांडवों की सेना को ढक दिया, हे राजा इस के पीछे आकाश के मध्यवर्त्ती सूर्य्य के होने पर सब कौरव और पांडवों में एकत्र होकर युद्ध प्रारम्भ हुआ, सात्विकी वीर कृतवर्मा को पांच बाणों से घायल करके हजारों बाण छोड़ता हुआ युद्ध में नियत हुआ इसी प्रकार राजा द्रुपद ने द्रोणाचार्य्य जी को तीक्ष्ण बाणों से घायल करके फिर सत्तर बाणों से घायल किया और पांच बाणों से उनके सारथी को व्यथित किया, फिर भीमसेन राजा बाह्लीक और पितामह को घायल करके ऐसी महागर्जना से गर्जा जैसे कि बन में सिंह गर्जता है, चित्रसेन के बहुत बाणों से घायल अभिमन्यु ने युद्ध में चित्रसेन को तीन बाणों अत्यन्त घायल फिर युद्ध में भिड़े हुए वह दोनों बड़े शरीरवाले ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाश में बड़े घोर बुध और शनैश्चर शोभित होते हैं २० शत्रुहन्ता अभिमन्यु नौ बाणों से सूत समेत उसके चारों घोड़ों को मारकर बड़े वेग से गर्जा, इस के पीछे वह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ोंको मारकर बड़े बेग से गर्जा इसके पीछे वह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्रही कूदकर दुर्मुख के रथ पर सवार हुआ, फिर शीघ्रताकरनेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने द्रुपद को गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से घायल करके उसके सारथी को भी घायल किया, फिर सेना मुख पर पीड़ामान् राजा द्रुपद पूर्व

शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर भीमसेन ने एक मुहूर्त्त में सब सेना के देखते हुए राजा बाह्लीक को घोड़े रथ और सारथी से रहित कर दिया, तदनन्तर पुरुषोत्तम बाह्लीक सवारी से उतरकर व्याकुल होके महा सन्देह युक्त हुआ, और शीघ्रही लक्ष्मण के रथ पर सवार होगया और सात्विकी ने कृतवर्मा को हटाकर बहुतसे बाणों के द्वारा पितामह को पाया और तीक्ष्ण साठ बाणों से उनको घायल कर बड़े धनुष को कंपाता हुआ रथ में बैठाहुआ नाचता सा दृष्ट पड़ा फिर पितामह ने सुन-हरी बड़ी विचित्र वेगवान नागकन्याके समान शुभ लोहे की बड़ीभारी शक्ति को उसके ऊपरफेंका उस मृत्यु के समान अकस्मात् गिरती हुई शक्ति को अपने तेजसे सात्विकी ने निष्फल कर दिया फिर वह शक्ती सात्विकी को न पाकर पृथ्वी पर गिरपड़ी इस के पीछे सुवर्ण के समान अपनी बरछी को सात्विकी ने बड़ी तीव्रता से पितामहके रथपर फेंका उससात्विकीकी भुजाके वेग से वह शक्ती बड़ी तीव्रतासे उनके पास ऐसी गई जैसे कि मनुष्य के पास कालरात्रि आती है हे राजा उस अकस्मात् गिरती हुई तीव्र शक्ती को भीष्म जीने तीक्ष्ण क्षुरप्रबाणों से दो खण्ड करके पृथ्वी पर गेर दिया फिर शत्रु सन्तापी गंगापुत्र भीष्म ने उस शक्ती को तोड़ नौ बाणों से बहुत हंसते हुए उसको छाती पर घायल किया तदनन्तर रथ हाथी और घोड़ों समेत सात्विकी की रक्षा के लिये पाण्डवों ने भीष्मजी को घेर लिया फिर युद्धाभिलाषी पाण्डव लोगोंका और कौरवोंका रोमहर्षणकरनेवाला महाघोर युद्ध हुआ ३७॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिपंचाधिकशततमोऽध्यायः १०५॥

एकसौछःका अध्याय॥

संजय बोले कि हे महाराज जैसे कि वर्षा ऋतुके आकाश में बादलोंसे ढके हुए सूर्य्यको देखते हैं इसी प्रकार युद्धमें क्रुद्धरूप पांडवों से घिरे हुए भीष्मको देखकर दुर्योधन उस दुश्शासन से बोला कि यह बड़ा धनुषधारी शूरों का मारने वाला भीष्म चारों ओर से बड़े वीर पांडवों से घिराहुआ है उसकी रक्षा तुमलोगों को करनी अवश्य है, क्योंकि वह हमारा पितामह भीष्म युद्ध में पांडवोंसमेत पांचालों को मारेगा इस स्थानपर भीष्म जीकी रक्षा करना ही मैं बड़ा काम मानता हूं यह बड़ा धनुषधारी महाव्रत भीष्म हमारा बड़ा भारी रक्षक है सो तुम अपनी सबसेना समेत उस कठिन युद्ध कर्मी भीष्मकी प्रीति से रक्षा करो इस प्रकारसे बड़े भाई की आज्ञा को सुन कर आप के पुत्र दुश्शासन ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी को चारों ओर से मध्य में करके रक्षित किया, फिर सौबलके पुत्र शकुनीने बड़े स्वच्छ प्रास

खड्ग तोमर धारी शुभ्रवस्त्रोंसे शोभित अहंकार में भरे बड़े बलवान् ध्वजा धारी शिक्षित युद्ध में कुशल अनेक नरोत्तम वीरों के और लाखों घोड़े रथ हाथियों के सवारों समेत मिलकर, नकुल सहदेव और धर्मराज नरोत्तम युधिष्ठिर को चारों ओर से घेरकर रोक लिया १० और राजा दुर्य्योधन दश सहस्र घोड़े के सवारोंका यूथ पांडवों के बड़े युद्ध में भेजा हे राजा वह युद्ध में गरुड़के समान शीघ्रगामी उन पहुंचने वाले घुड़चढ़ों से घायल पृथ्वीके कंपाने वाले शब्दों को करते हुए वर्त्तमान हुए, उस समय घोड़ों के खुरों के ऐसे महा शब्द सुनेगये जैसे कि पर्व्वत में जलते हुए बांसों के बड़े वनमें शब्द होतेहैं, उस भूमि में घोड़ों के उछलने से ऐसी धूल उड़ी जिससे कि सूर्य्य का रथ ढक गया, फिर उन शीघ्रगामी घोड़ों की सेनासे पांडवों की सेना ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि गिरते हुए बड़े शीघ्रगामी हंसों से तड़ाग व्यथित होताहै, वहां घोड़ोंके हींसनेके शब्दसे कुछ नहीं जाना गया, इसके पीछे नकुल सहदेवने युद्धमें अपनेवेगसे सवारों के बड़ेभारी वेगोंको ऐसेरोका जैसे कि वर्षाऋतुमें पूर्णमासीकेदिन अत्यन्त उमगेहुए पूर्ण समुद्रके जल वेग को समुद्रका किनारा रोकताहै इसके पीछे इन रथियों ने गुप्तग्रन्थीवालेबाणोंसे घोड़ोंके सवारोंको काटा और इनके काटतेही वह सब मरमर कर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े, १६ जैसे कि पहाड़ी बन में हाथियों से हाथी गिरपड़ते हैं, फिर इन्होंने दशों दिशाओं में घूमते हुए अत्यन्त तीक्ष्ण प्रास और गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से शिरोंको काटा, और दुधारा खड्गों से मरेहुएघोड़ों के सवारों ने शिरोंको ऐसे त्यागकरदिया जैसे कि बड़ावृक्ष फलों को अलग करदेताहै उसयुद्धमें सवारोंसमेत घोड़ोंका नाशहोगया अर्थात् सब ओर को इधर उधर गिरे और गिराये हुए दृष्टआये फिर घायल घोड़े भयभीत और पीड़ित होकर ऐसे भागे, जैसे कि प्राणोंको प्रियसमझनेवालेमृग सिंहकोदेखकर महाव्याकुलता से भागते हैं, हेराजा इसरीतिसे पांडव लोगोंने सब शत्रुओं को विजय करके शंखोंको बजाया और भेरी दुन्दुभियोंको भी बजवाया इसके पीछे राजा दुर्य्योधन अपनीसेनाको पराजित देखकर महादुःखीहो राजामद्र से कहनेलगा कि हे महाबाहो यहनकुल सहदेव समेतपांडुका बड़ापुत्र राजायुधिष्ठिरयुद्धमें तुम्हारे देखतेहुए हमारी बड़ी सेनाको घायल करके भगाताहै, उसको तुम ऐसेरोको जैसेकि समुद्रको किनारा रोकताहै, सदैव आप असह्य और महाबली सुने जातेहो इसआपके पुत्रके बचनको सुनकर वह प्रतापवान् शल्य बहुतसे रथों समेत वहां गया जहां कि राजा युधिष्ठिरथा वहांजाकर शल्यकी सेना अकस्मात् जाकर गिरी, तब महारथी पांडव धर्मराजने उसबड़ी सेना समेत राजा मद्रके महावेगको रोककर बड़ी शीघ्रतापूर्वक सातबाणों से घायल किया,

इसी प्रकार से सातहीसात बाणों से नकुल सहदेवने भी घायल किया, फिर शल्यने भी उन सबको तीन २ बाणोंसे घायल करके बड़े तीक्ष्ण साठबाणों से राजा युधिष्ठिरको घायल किया, और भ्रान्तियुक्तहोकर उन दोनों नकुल सहदेवको भी दो २ बाणोंसे व्यथितकिया इसके अनन्तर शत्रुहन्ता महाबली भीमसेन राजाको युद्ध में देखकर और कालके मुखमें वर्त्तमान के समान राजामद्र के आयेहुए रथको देखकर बड़ेवेग से उस युद्धमें राजा युधिष्ठिर के पास जापहुंचा, उसके पीछे पश्चिमओर में नियतहोकर सूर्य के चलने पर बड़ा घोर भयानक युद्ध जारी हुआ ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषडधिकशततमोऽध्यायः १०६ ॥

एकसौसातका अध्याय ॥

संजयबोले कि आपके पिता भीष्मजीने बड़े कोपसे तीक्ष्णधार के उत्तम बाणों करके सेना समेत पांडवोंको ऐसे घायल किया कि भीमसेनको बारह बाणोंसे सात्विकी को नौबाणों से नकुलको तीनबाणों से और सहदेव को सातबाणों से युधिष्ठिरको बारहबाणों से भुजा और छातीपर घायलकर धृष्टद्युम्नको व्यथितकरके बड़ेवेग से गर्जनाकरी, फिर नकुलने बारहबाणों से सात्विकीने तीनबाणोंसे धृष्टद्युम्नने सत्तरबाणोंसे भीमसेनने सातबाणोंसे, युधिष्ठिरने बारहबाणोंसे पितामहको घायल किया, फिर द्रोणने सात्विकी को और भीमसेनको घायलकरके प्रत्येकको पांच २ तीक्ष्ण बाणों से व्यथित किया और दोनोंने तीन २ बाणोंसे उन ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य्य को ऐसा घायल किया जैसे कि चाबकोंसे बड़े हाथीको घायल करते हैं सौवीर कि तब पूर्वी पश्चिमी और उत्तरी मालवी, (अभिषाह) (शूरसेन) (शिवय) और (वशातपने) युद्धमें भीमसेनको त्याग नहीं किया, इसीप्रकार नानाप्रकारके शस्त्रों को हाथ में रखनेवाले अनेक देशोंसे आये हुए दूसरे राजालोग पाण्डवों के सन्मुख वर्त्तमानहुए, इस रीतिसे पांडवोंने चारोंओर से पितामहको घेरलिया फिर अनेकरथोंसे घिरेहुए उन अजेय शत्रुओंके वनोंको अग्निके समानजलानेवाले पितामहने बड़े २ शूरवीर क्षत्रियोंको भस्म करदिया, और गृध्रपक्षयुक्त सुन्दर सुनहरी पुंखवाले अनेक प्रकारके नाराच नाम बाणों से उससेना को भी ढककर बड़े असिधारवाले बाणोंसे रथियोंके समूहोंको गिराया, और रथों के समूहों को भी मुण्ड तालवनों के समान करदिया फिर उस महाबाहु ने रथ हाथी घोड़ोंको भी सवारों से रहित करदिया उसकेधनुषकी प्रत्यंचाका शब्द इन्द्र वज्रके समान शब्दायमानथा उसके सुननेसे सब जीवमात्र कंपायमानहोतेथे और हे राजा उन आपके पितामहके बाण निष्फल नहीं गिरते

थे अर्थात् भीष्मके धनुषसे निकलेहुए बाण कवचको काटकर देहमेंप्रवेशकर जाते थे, हमने शीघ्रगामी घोड़ोंके मृतक शूरवीरवाले रथों को और चंदेरीकाशी और क्रोश देशियों के चौदहहजार महारथी शूरवीर कुलीन युद्ध में देहके त्यागनेवालोंको मुखफेरनेवालादेखा और हजारों वीरोंको सुनहरी ध्वजायुक्त हाथीरथ घोड़ों समेत भीष्मजी के हाथसे मरे हुए परलोक के निमित्त देखा २० इनके सिवाय हज़ारों रथोंको ऐसा देखा कि जिनके पहिये आदि अनेकरथों के अंगटूटगयेथे, और कवचों समेत गिरायेहुए रथोंसमेत सवार जिन के कि बाण कवच टूटेहुयेथे उनको भी देखा इस युद्ध में पिताने पुत्रको पुत्रने पिता को भी मारडाला,, और प्रारब्धके बलसे प्रेरित मित्रने प्रिय मित्रको भी मारा फिरपांडवोंकी दूसरीसेनाके मनुष्य कवचको उतारशिरके बालोंको फैलातेहुए सबओरको दृष्टपड़े तबपाण्डवोंकीगौओं के समान पृथक् २ चलायमान सेना को रथकूबरके समान पीड़ामान् देखकर श्रीकृष्णजी रथको रोककर अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन यह वह समय वर्त्तमान हुआहै जो तेरा अभीष्टहै, हेनरोत्तम जो तू मोहसे अज्ञान नहीं है तो अब प्रहारकर हे बीर भाई अर्जुन पूर्व समय में बिराट् नगरके मध्यमें उन राजाओं के मिलने में जो तुमने संजय के सन्मुख कहाथा कि मैं दुर्योधनकी सब सेनासमेत उन भीष्म द्रोणाचार्यको सब साथियों समेत मारूंगा जो मुझसे लड़ेंगे, हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले अर्जुन तू अपने उस बचन को सत्यकर, क्षत्रीधर्म को स्मरण करके दुःखको दूरकरके युद्धकर इसप्रकार बासुदेवजी के बचनों को सुनकर अर्जुन बहुत नम्र और अधोमुखहोकर निस्पृहके समान यह बचन बोला कि अबध्यवृद्ध गुरू लोगों को मारकर अन्त में नरकका देने वाला राज्यहो वा बनबासमें दुःखहो अथवा अन्य मेरा कोईसा प्रयोजन सिद्धहो आपघोड़ोंको तीव्रकरके जहां भीष्म हैं वहां रथको लेचलिये मैं आपके बचनको करूंगा, वहां कौरवों के दुर्जय पितामह भीष्मजी को गिराऊंगा यह सुनतेही माधवजीने चांदी के समान श्वेत घोड़ोंको अच्छे प्रकारसे चलायमान किया ४० और जिस ओर को सूर्य्य के समान दुःखसे देखने के योग्य बड़े प्रतापवान् भीष्मजीथे वहां पहुंचे उसके पीछे युधिष्ठिर की वह बड़ी सेना भी जो उस युद्ध में भीष्म के लिये तैयारथी अर्जुन को देखकर फिर लौटआई तदनन्तर सिंहके समान बारंबार गर्जना करते कौरवों में श्रेष्ठ भीष्मजीने,, अपने बाणोंकी वर्षा से शीघ्रही अर्जुनके रथको ढकदिया तब क्षणभरमेंही उसका घोड़े और सारथी समेत रथ, भीष्मके बाणों की वर्षा से दिखाई नहीं दियाइसके अनन्तर भ्रान्तीमें भरेहुए शीघ्रता करनेवाले वासुदेवजीने धैर्य्यता में नियतहोकर, उन घोड़ोंको जो कि भीष्मके बाणों से व्यथितथे अत्यन्त तीव्र किया और अ-

र्जुन ने बादल के समान दिव्य धनुष को लेकर अपने तीक्ष्णबाणों से भी-
ष्मजी के धनुषको काटकर पृथ्वीपर गेरा फिर धनुष टूटहुए आपके पिताने
निमिषमात्रमेंही दूसरे धनुषको तैयार किया और उस बादल के समान श-
ब्दायमान धनुषको अपनी दोनों भुजाओं से खैंचा,, फिर अर्जुनने उन के
उस धनुषको भी काटा शन्तनु के पुत्र भीष्मने उसकी उस हस्तलाघवता की
बड़ी प्रशंसा करी कि हे महाबाहु कुन्ती के पुत्र बहुत अच्छा बहुत अच्छा
इस प्रकार की वार्त्ता करके दूसरे उत्तम धनुष को लेकर बाणों को अर्जुन के
रथपर फेंका वहां वासुदेवजीने घोड़ोंके चलाने में अपने बड़े बलको दिखा-
या ५० फिर भीष्मके बाणों से घायल वह दोनों नरोत्तम उनके बाणों को
निष्फल करते मंडलोंको दिखाते हुए ऐसे शोभायमानहुए, जैसे कि सींगों
के प्रहारोंसे छिन्नभिन्न चिह्नित कियेहुए गोवृषभ अर्थात् बली बर्द्ध होते हैं,
फिर वासुदेवजीने अर्जुनके मृदु युद्धको और पांडवोंकी सेनापर बड़ी तीव्रता
से बाणों की वर्षा करते और दोनों सेनाओं के मध्य वर्त्ती सूर्य्य के समान
तपाते और पांडवों के बड़े २ शूरवीरों को मारतेहुए युधिष्ठिर की सेनामेंप्रलय
मचाते भीष्मको देखकर, क्षमा न करने वाले शत्रुहन्ता माधव वासुदेवजी
अर्जुन के श्वेत घोड़ों को छोड़कर बड़े रथसे उतर हाथ में चाबुक लिये सिं-
हके समान बारंबार गर्जते चरणों से पृथ्वी को विदीर्ण करते क्रोधसे रक्तनेत्र
किये मारने के उत्सुक आपके शूरवीरों को भयभीत करते बड़े तेजस्वी जग-
त्कर्त्ता बड़े वेगसे भीष्मके सन्मुख गये,,, हेराजा भीष्मजी के सन्मुख वर्त्तमान
माधवजी को देखकर उस युद्ध में जहां तहां भयभीत लोग ऐसी २ वार्त्ता
करनेलगे कि भीष्म मारागया मारागया पीताम्बरधारी नीलमणि के समान
रंगवाले जनार्दनजी भीष्मकी ओर दौड़ते हुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे
कि विद्युतरूप मालाधारी बादल होता है और जैसे कि समूहका स्वामीसिंह
उत्तमहाथीकी ओर दौड़ताहै,उसीप्रकार यादवोंमेंश्रेष्ठ श्रीकृष्णजी गर्जनाकरते
तीव्रता से भीष्मके सन्मुखगये, युद्धमें आतेहुएउन कमलदललोचन को दे-
खकरभीष्मने सावधान चित्त होकर बड़े धनुषको खैंचकर बड़ीस्थिर चित्तता
से उनको हाथ जोड़कर कहा हे पुंडरीकाक्षजीआपआइये२हेदेवदेव आपको
नमस्कारहै हे यादवेन्द्र अब मुझको आपइस महायुद्ध में गिराओ, हे नि-
ष्पाप श्रीकृष्णजी युद्धमें आपके हाथसे मुझमारेहुए का भी सब ओरसे बड़ा
कल्याण होता है, हे गोविन्दजी अबमें युद्ध में तीनों लोक से प्रतिष्ठा पाया
गयाहूं हे निष्पाप में आपका निस्सन्देह दासहूं आप इच्छाके समान प्रहार
करो, इसके अनन्तर पीछे २ जाने वाले अर्जुन ने केशवजी के पासजाकर
अपनी दोनों भुजाओं से उन महाबाहुको दाबकर पकड़ लिया, अर्जुन से

पकड़े हुए कमल लोचन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी इसको लेकर बड़ी शीघ्रतासे चले, फिर शत्रुओं के बीरों के मारने वाले अर्जुन ने बड़े बलसे किसी प्रकार करके दशवेंही चरण पर दोनों चरणोंको पकड़ लिया, तदनन्तर पीड़ामान सखा अर्जुन उन क्रोधसे व्याकुल सर्पके समान श्वास लेने वाले श्रीकृष्ण जीसे यह वचन बोला ७० हे महाबाहु श्रीकृष्णजी आपलौटिये और अपने उस बचनको और सत्यको न छोड़िये जो आपने कहाथा कि हमनहीं लड़ेंगे क्योंकि हे माधव जो तुम ऐसा करोगे तो संसार आपको मिथ्याबादी कहेगा यह सब काम मेरा है मैं पितामह को मारूंगा, हे केशव मैं शस्त्र सत्यता और अपने उत्तम कर्मकी शपथ खाताहूं कि मैं शत्रुओं को मारकर जीतूंगा आप इसी समय इस महादुर्जय भीष्मको गिराहुआ ऐसे देखोगे जैसे कि युग के अन्त प्रलयमें दैवइच्छा से चन्द्रमा गिरताहै यह सुनकर क्रोधभरे माधवजी अर्जुन से कुछ न बोलकर रथपर सवारहुए ७५ फिर शन्तनुके पुत्र भीष्मने उनदोनों रथपर सवार नरोत्तमों पर ऐसे बाणों की बर्षाकरी जैसे कि पर्व्वत पर बादल जलको बरसातेहैं, उन आपके पिता देवब्रत ने शूरबीर लोगों के प्राणों को ऐसे लिया जैसे कि शिशिरऋतु अर्थात् माघफाल्गुन में सूर्य्य तेजोंको आकर्षण करताहै, और जैसे कि पाण्डवों ने कौरवोंकी सेना को छिन्नभिन्न किया उसी प्रकार आप के पिता ने भी पांडवों की सेना को अस्तव्यस्तकरदिया ; मृतक और भागेहुए असाहसी वा अचेत पांडवों की सेना युद्धमें अद्वितीय भीष्मके देखने को भी ऐसे समर्थ नहीं हुई जैसे कि मध्याह्नवर्ती अपने तेजसे तपाने वाले सूर्य्यको नहीं देखसके अर्थात् वह पांडवोंके हजारों मनुष्य भीष्मसे घायल होगये ८० हेमहाराज भयसे दुःखीहुए पांडवोंने दृष्टिकी वीक्षाकरी हे भरतवंशी इस प्रकार से भगीहुई पांडवों की सेना ने ऐसे अपनारक्षक कोई नहीं पाया जैसे कि कीचमें फंसीहुई गौका कोई रक्षक नहीं होताहै और युद्धमें वह निर्बलसेना बड़े बलीके हाथसे चेंटियों के समान घायल हुई ८२ उस महारथी दुर्जय बाणरूपी किरणरखनेवाले राजाओं के तपाने वाले सूर्य्य की समान भीष्म के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ फिर सूर्य अस्ताचलको प्राप्तहुए तदनन्तर परिश्रमसे थकीहुई सेनाओं के मनका बिश्राम हुआ अर्थात् युद्ध समाप्त हुआ ८४॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि सप्ताधिकशततमोऽध्यायः १०७॥

एकसौ आठका अध्याय॥

दशवेंदिनके युद्धका प्रारम्भ॥

संजयबोले कि युद्ध करते हुए सूर्य के अस्त होने के समय भयकारी

संध्यावर्त्तमान् हुई और युद्ध करना सब ओरसे बन्द हुआ, इसके पीछे राजा युधिष्ठिरने संध्याको देखकर और भीष्मके हाथसे घायल शस्त्रत्यागने वाली भयसे महाव्याकुल वा शत्रुओं से घिरी भागने की इच्छा करनेवाली अपनी सेना को जान और युद्ध में क्रोधित पीड़ादेनेवाले महारथी भीष्म को देख सोमकों को साहसरहित पराजय रूप जानकर बड़ी चिन्तापूर्वक विश्रामको चाहा, अर्थात् अपनी सेनाको विश्रामकराया इसीप्रकार आपकीभी सेनाका विश्राम हुआ, हेकौरवोत्तम धृतराष्ट्र फिरयुद्धमें घायल शरीरवाले महारथीवहां पर सेनाओंका विश्रामकरके स्थितहुए ६ और युद्धमेंभीष्मकेकर्म कोशोचते उनके बाणों से अत्यन्त पीड़ामान पांडवों ने शान्ती को नहीं पाया और चिन्ता से व्याकुलहीरहे फिरभीष्मभी पांडवों समेत सृंजियोंको विजयकरके आपके पुत्रों से पूज्य और स्तुति मान होकर,, चारोंओर से प्रसन्न रूपकौरवों समेत निवास स्थानमें वर्त्तमान हुए तिसपीछे सबजीवमात्रोंको प्रसन्नकरने वाली रात्रि वर्त्तमान हुई,, उस घोर रात्रि के प्रारंभमें दुर्जय पाण्डव सृंजय और वृष्णीलोग सलाहकरनेके लिये बैठे १० उन सावधान मंत्रके निश्चयमें पंडित सब महाबलियोंने अपनेकल्याणको बिचारकिया, इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने बहुत विलम्बतक विचारांशकरके वासुदेवजीको देखकर यह बचन कहा, कि हे श्रीकृष्णजी जैसे कि हाथी कमल के बनों को मर्दन करता है इसी प्रकारसे मेरी सेना के मर्दन करनेवाले भयके उत्पन्नकर्त्ता महात्मा भीष्म को देखो, कि इस अत्यन्त प्रबल अग्नि के समान सेनाओं के चाटनेवाले महात्मा के देखने को हम सब समर्थ नहीं होते हैं, जैसे कि बड़ा विष भरा तक्षक नाग होता है इसी प्रकारके यह युद्धमें क्रोधित महातेजस्वी शस्त्रधारी भीष्म हैं, युद्ध में धनुष हाथमें लिये तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते क्रोधरूप यम-राज और बज्रधारी इन्द्रको वा पाशधारी बरुण और गदाधारी कुबेर को भी विजय करना संभव है परन्तु महा युद्ध में क्रोध संयुक्त भीष्मजी का विजय करना महा कठिन और असंभव है, हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धिकी अल्प-ज्ञता से युद्धमें ऐसी दशा के द्वारा भीष्म को पाकर शोक समुद्र में डूबाहुआ हूं १८ हे अजेय मैं बनको जाऊंगा निश्चयकरके मेरा कल्याण बनही में व-र्त्तमान है हे माधव मैं युद्ध को अच्छा नहीं समझताहूं क्योंकि भीष्मजी सदैव हमारे शूरवीरों को मारते हैं, जैसे कि पतंगपक्षी बड़ी देदीप्ति अग्निकी ओर को दौड़ताहुआ एक साथ भस्म होता है इसी प्रकार हम अग्नि के समान भीष्म को भी देखते हैं कि जो इसकी ओर को गया वही भस्महुआ २० हे श्रीकृष्णजी राज्य के निमित्त पराक्रम करनेवाला मैं नाश होने में ही हूं और मेरेशूरवीर भाई भी शायकों से अत्यन्त पीड़ामान हैं, हे मधुसूदनजी

वह मेरेभाई भायपपने की प्रीति से मेरेही कारण राज्य से भ्रष्टहोकर बन को गये और मेरेही कारण से द्रौपदी भी महा दुःख में पड़ी, मैं जीवनको बहुत मानता हूं वह जीवन अब दुःख से प्राप्त होने के योग्य है अब मैं बाकी रही हुई अवस्थासे उत्तम धर्मको करूंगा, हे केशवजी जो मैं भाइयों समेत आप का कृपापात्रहूं तो अपने धर्म की अविरोधतासे मेरे हितको करो, इसप्रकारके उसके विस्तार युक्त बचनों को सुनकर बड़ी करुणासे श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर को विश्वासित करके यह बचन बोले, हे धर्म पुत्र सत्यसंकल्प तुम व्याकुलता को मतकरो तेरे शूरबीर दुर्जयभाई शत्रुओं के मारनेवाले हैं, अर्जुन और भीमसेन वायु और अग्नि के समान तेजस्वी हैं और दोनों नकुल और सहदेव देवताओं के ईश्वर भगवान इन्द्रके समान पराक्रमी हैं, हे पांडव तुम मुझको आज्ञा दो कि मैं भी तुम भाइयों की प्रीति से भीष्म के साथ लड़ूंगा हेराजा युधिष्ठिर जो तुम मुझको भी युद्ध में प्रवृत्त करोगे तो मैं भी उस महा युद्ध में सब कुछ करसक्ताहूं, जो अर्जुन नहीं चाहता है तो मैं पुरुषोत्तम भीष्म को बुलाकर धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते हुएही मारूंगा, हे पांडव जो तू बीर भीष्म के मरनेपरही विजय देखता है तो मैं एकही रथके द्वारा कौरवों के वृद्ध पितामह को मारूंगा ३० हे राजा तुम युद्ध में महाइन्द्र के समान मेरे पराक्रम को देखो मैं बड़े २ अस्त्रोंको छोड़कर उसको रथसे गिराऊंगा, क्योंकि जो पांडवों का शत्रु है वह मेरा भी शत्रु है जो तुम्हारे निमित्त धनआदि हैं वह मेरे हैं और जो मेरे हैं वह तुम्हारे हैं ३२ आपका भाई मेरा मित्र और सम्बन्धी होकर शिष्य भी है हे युधिष्ठिर मैं अर्जुन के निमित्त अपने मांसको भी काटकर देसक्ताहूं, और वह नरोत्तम अर्जुन भी मेरे निमित्त जीवनको त्यागकरसक्ता है हे तात हमारा यह नियम है कि हम परस्पर के दुःखसे छूटें, सो तुम मुझको युद्ध करने की आज्ञा दो पूर्व्व में जो अर्जुनने प्रतिज्ञा करी है उसको पहले से चाहरहे हैं कि मैं सब लोक के सन्मुख गांगेय भीष्म को मारूंगा उसबुद्धिमान अर्जुन का यह बचन रक्षाकरने के योग्य है, मुझको अर्जुनका प्रण पूराकरना योग्य है यह निस्सन्देह है कि वह शत्रुओं का विजय करनेवाला अर्जुन युद्ध में अवश्य भीष्म को मारेगा अथवा युद्ध में अच्छी रीति से प्रवृत्त होकर असंभव कठिन कर्मों को भी करेगा, यह अर्जुन युद्ध में क्रोधित होकर देवता और दैत्यों को भी मारसक्ता है तो हे राजा भीष्म का मारना इसको कितनी बड़ी बात है, निश्चय करके महा पराक्रमी शंतनु का पुत्र भीष्म बिपरीतता और निर्बलता से थोड़ी आयुर्दा रखनेवाला होकर करने के योग्य कर्म को नहीं जानता है ४० युधिष्ठिर बोले हे महाराज महाबाहु आपका यह सब कथन यथार्थही है निश्चयकरके आपका बेग किसी

के सहने के योग्य नहीं है, इसको अपने मन की इच्छा के अनुसार मैं अवश्य प्राप्त करूंगा जब कि आप सरीके कृपानिधि हमारे पक्षपर खड़े हैं हे महावि-जयस्वरूप गोविन्दजी तुम सरीके अपने नाथ के साथ होकर युद्ध में सब दे-वताओं समेत इन्द्र कोभी हम विजय करसक्ते हैं तो इन महारथी भीष्मजी का विजय करना कितनी बातहै मैं आपको मिथ्यावादी करना योग्य नहीं सम-झताहूं हे माधवजी आप युद्ध किये विनाही अपने स्वाभाविक बल पुरुषार्थ से अपने वचन के अनुसार हमारी सहायता करो, भीष्म ने मुझसे प्रणकिया है कि युद्ध में सलाह करूंगा परन्तुतेरे अर्थ कभी न लडूंगा, मैं दुर्य्योधन केही लिये लडूंगा इसमें सन्देह नहीं है कि वह भीष्मजी मुझको राज्य की सलाह के देनेवालेहैं इस कारण से हम सब मिलकर आपको साथ लेकर उनके श-रीर के मारने के निमित्त उस देवव्रत के पास चलें, हे जनार्दनजी वह हमसे हमारे अभीष्ट सत्य सत्य वचनोंको कहेंगे और जैसा वह कहेंगे वैसाही हम युद्धमें करेंगे, वह दृढ़ व्रत भीष्म हमारी विजय और कीर्ति का देनेवाला होगा क्योंकि पिताकर के विहीन हमबालकों को उन्हीं ने सबप्रकार से भरण पोषण करके इतना बड़ा कियाहै ५० हे माधवजी जो मैं अपने पिताके भी पितावृद्ध भीष्म पितामह को मारना चाहताहूं ऐसे क्षत्री धर्म को और क्षत्रियों की जीविकाको धिक्कार है, संजय बोले हे महाराज फिर श्रीकृष्णजी कौरवनन्दन युधिष्ठिर से कहने लगे कि हे बड़ेज्ञानी राजेन्द्र तेरा कहना मुझको अच्छा लगताहै: शुभकर्मी देवताओं के बराबर व्रतरखनेवाला जो दृष्टि से भी दूसरे को भस्म करसक्ता है उस भीष्म के पास उसी से उसके मारने का उपाय पू-छने के निमित्त जाओ, वह तेरेपूछने पर तुझसे सत्यही सत्य कहैगा इससेहम सबमिलकर उन कौरवों के पितामह के पास पूछने के हेतु से चलें, हे भरत वंशी हम वृद्ध भीष्म से मिलकर सलाह को पूंछे वह हमको जो सलाह देगा उसी के अनुसार हम शत्रुओं से युद्ध करेंगे, हे पांडुके बड़े भाई धृतराष्ट्र वह वीर पांडव इस रीतिसे सलाह करके सब मिलेहुए वासुदेवजी समेत शस्त्रों से रहित होकर उस भीष्म के डेरेमें प्रवेश करके उनको बड़ी नम्रता पूर्व्वक प्र-णाम किया, हे राजा इसरीति से श्रीकृष्ण समेत पांडवलोगशिर से प्रणाम करते हुए भीष्मजीके समीप बैठने के स्थानों में पहुंचे, तब कौरवों के पितामह महाबाहु भीष्मजी श्रीकृष्ण जीसे बोले कि हे कृष्ण आपका आना शुभ दा-यकहो और हे अर्जुन तेराभी आना सफलहो, और युधिष्ठिर भीमसेननकुल सहदेव काभी आना मंगलकारीहो यह कहकर कहा कि अबमैं तुम्हारी प्रीति का बढ़ाने वाला कौनसातुम्हारा शिष्टाचारकरूं ६० मैं तुम्हारे दुःखसेभी करने के योग्य हितको आत्मा से करने को उपस्थित हूं इस प्रकार से प्रीति पूर्व्वक

बारंबार बचन कहनेवाले गांगेय भीष्मजी से महादुःखीचित्त युधिष्ठिर बड़ी प्रीति में डूबकर यह बचन बोलाकि हे सर्वज्ञ हम कैसे सब को विजय करें और कैसे राज्यको पावें, और किसरीति से प्रजालोगों का नाशनहो हे प्रभु इस को हमसे कहिये और अपने भी मरण का उपाय हमको बताइये हे महावीर हम युद्धमें कैसे आपको सहसकें हे हमसब के पितामह आपके किसीसूक्ष्म दोषको भी हमनहीं जानते, तुमसदैव युद्ध में धनुष मंडल के साथहीदृष्ट पड़तेहो हे महाबाहु हमलोग आपको धनुष चढ़ाते बाणलेते संधानते और द्वितीय सूर्य्यके समान रथपर सवारहोते हुएभीनहीं देखसक्तेहैं हेशत्रुओं के बीरलोगों के मारने वाले हे रथघोड़े मनुष्यों के मारने वाले, हे भरतर्षभ अबकिसपुरुषकी सामर्थ्य है जो आपको युद्धमें विजय करसके आपने अपनेबाणों की बर्षाकरके युद्धमें प्रलयमचाकरमेरीबड़ी सेनाकानाशकियाहै अबजैसी रीतिसे हमतुमको युद्धमें विजयकरके राज्यकोपावें और मेरी सेनाबचे हे पितामह वही आपको कहना योग्यहै इसकेअनन्तर पाण्डुके पिताभीष्मजी सब पाण्डवोंसे बोले, कि हे सर्वज्ञ युधिष्ठिर मेरे जीवते हुए युद्धमें जैसे कि विजय नहीं होतीहैउसको मैं तुझ से कहता हूं ७० हे पाण्डव लोगो युद्ध में मेरे विजय होने पर युद्धकेही द्वारा तुम शत्रुओं को विजय करोगे जो युद्ध में विजय चाहतेहो तो शीघ्रही मुझपर प्रहार करो, हे कुन्ती के पुत्र लोगो मैं तुमको आज्ञा देताहूं तुम आनन्द से मेरेऊपर प्रहार करोमैं इसरीति के कर्म को बहुत उत्तम मानताहूंऔर मुझको तुम अच्छी रीति से जानतेहो कि मेरेही मरने पर शत्रुओं की सब सेना अल्पही काल में मारी जायगा इसहेतु से तुम ऐसा कर्मकरो, युधिष्ठिर बोले कि वह उपाय बतलाइये जिस से कि दंडहाथ में लिये मृत्यु के समान युद्धमें क्रुद्धरूप आपको विजयकरें, बज्रधारी इन्द्र बरुण कुबेर और यमराज भी विजय करने को योग्य हैं परन्तु आपयुद्धमें देवेन्द्र समेत देवता और असुरों से भी विजय करने के योग्य नहीं हैं, भीष्मजी बोले हे महाबाहु पांडव जो तू कहता है वह सत्यही है यथार्थ में मुझको इन्द्रसमेत देवता और असुर भी विजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते, जोकि शस्त्रोंकाधारण करने वाला युद्धमें कुशल उत्तम धनुषका खैंचने वाला मैंहूं इसहेतु से यह सब महारथी मुझशस्त्रों के त्यागने वालेको मारें, शस्त्र त्यागने वाले पृथ्वी पर पड़े कवच और ध्वजासे रहित भगेहुए भयभीत और शरणमें आयेहुए वा स्त्रीके समान नाम रखने वाले व्याकुल वा एक पुत्र वाले से अथवा नीच मनुष्य के साथ युद्ध करना मैं उत्तम नहीं समझताहूं, हे राजेन्द्र पूर्व विचार किये हुए मेरेइस संकल्पको सुनो कि मैं अमंगल रूप ध्वजाको देखकर कभी नहीं लड़ता, हे राजा तेरी सेनामें यह द्रुपदकाबेटा महारथी युद्ध में क्रोधरूप शूर

वीर युद्धको जीतने वाला शिखण्डी नामहै ८० यह जैसे कि स्त्री हुआ और पीछे से पुरुषके चिह्न पाये इसका जैसाकि वृत्तान्तहै उसकोतुमभी जानतेहो, शूरवीर युद्धमें शस्त्रोंसे अलंकृत अर्जुन शिखण्डी को आगे करके विशिख नाम तीक्ष्ण बाणोंसे मेरे सन्मुख जो आवेतो धनुषबाण हाथमेंलिये हुएभी उसअमंगली ध्वजावाले वा पूर्व्व में स्त्रीरूप रखने वाले परमैं किसी दशामें भी प्रहार करना नहीं चाहताहूं, हेराजेन्द्र युधिष्ठिर उस सेनाको पाकरशीघ्रही पांडव अर्जुनमुझे चारोंओर को बाणों से मारे, मैं सब लोकों में महानुभाव श्रीकृष्णजी और पांडव अर्जुनके सिवाय किसीको नहीं देखताहूं जो मुझ युद्ध में प्रवृत्तको विजय करसके, इसकारण यह शस्त्रधारण करनेवाला और उत्तम धनुषधारी अर्जुन किसी दूसरे को मेरेआगे नियत करके, मुझको मारे निश्चय करके इसरीति से तेरी विजयहै हे सुन्दरव्रत युधिष्ठिर तुम इसमेरे वचनको प्रतिपालन करो और युद्धमें सन्मुख होने वाले सब धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारो, संजय बोले कि इन वार्त्तालापोंके पीछे वह पांडव लोग सब बातों को जानकर भीष्मजीको दण्डवत्करके अपनेडेरों को गये, परलोक जानेको उत्सुकदीक्षा किये हुए गांगेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर दुःख से शोच ग्रस्त अर्जुन बड़ी लज्जा से यह वचन बोला, हे माधवजी मैं युद्ध में कुलके वृद्ध महाज्ञानी बुद्धिमान् कौरवों के पितामह भीष्मजी के साथ कैसे युद्धकरूंगा ९० हे वासुदेव जी बाल्यावस्था में खेलते हुए धूलभरे देहसे मैंने बड़े साहसी पितामह को धूलमें मिलाया, निश्चय करके हे श्रीकृष्णजी मुझ बालकने जिसकी बगलमें चढ़कर अपने पितामहात्मापांडु के पिताको तात कहाहै, हेमाधवजी जिसने बाल्यावस्थामें मुझको कहाथा कि मैं तेरे पिताका तातहूं तेरातात नहींहूं उस को मैं किसप्रकारसे मारने के योग्यहूं, वह अपनी इच्छाके अनुसार मेरी सेनाको मारे परन्तु उस महात्मा के साथनहीं लड़ूंगा मेरी विजय होयवा मृत्युहो हे श्रीकृष्ण जी चाहो आप मुझे किसी प्रकार से जानो, वासुदेव जी बोले कि हे विजय करने वाले अर्जुन तुम पूर्व्वसमय में युद्धके बीच भीष्मके मारने का प्रण करके क्षत्री धर्ममें नियतहुएहो सो तुमकैसे उसको नहीं मारोगे, हे अर्जुन इस युद्ध में दुर्मद क्षत्री को रथसे गिराओ तुमयुद्धमें गंगापुत्रको विनामारे संसारमें विजय और कीर्ति को नहीं पाओगे, आगे के समय में देवताओं ने देखा था कि तुम यमलोक को जावोगे सो हे अर्जुन वह यह बात है मिथ्या नहीं है, तेरे सिवाय आप वज्र-धारी इन्द्रभी इस महाबली मृत्यु के समान अजय भीष्म से लड़ने के लिये कोई समर्थ नहीं है, इससे तू स्थिरहोकर भीष्मको मार और इस मेरेवचनको सुनकर जैसे कि पूर्वकाल में बड़े बुद्धिमान् बृहस्पतिजीने इन्द्रसे कहाथा कि

अपने मारनेवाले उस आततायी आनेवालेको मारेचाहे बहुगुणोंसे भराहुआ कुलका वृद्धभीहो १०० हे अर्जुन युद्धकरना रक्षाकरना दूसरेके गुणोंमें दोषलगानेवालेका पूजन करना यहक्षत्रियोंका सनातन धर्मचलाआयाहै, अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी शिखण्डी भीष्मजीका अवश्य कालहोगा क्योंकि भीष्मजी उस पांचालदेशी शिखण्डीको युद्धमें देखकर सदैव लौटजातेहैं, इससे हम शिखण्डी को उसके सन्मुख करके युक्तियों से उस गांगेय भीष्मको युद्धमें अवश्य मारेंगे यह मेरा मतहै, मैं अपने शायकोंसे अन्य बड़े२ धनुषधारियों को रोकूंगा और शिखंडीबड़े युद्धकर्त्ता भीष्मकेही आगे युद्धकोकरे, मैंने उन कौरवेन्द्र भीष्मजी केही मुखसे सुना है कि मैं शिखंडी को नहीं मारूंगा निश्चय यह पूर्व्व समय में कन्या होकर पुरुष बनाहै, इस प्रकार से पांडव लोग अपने बांधवों समेत निश्चयको करके और महात्माओंका प्रतिष्ठापूर्व्वक स्तुति पूजन करके प्रसन्न चित्त अपने २ डेरोंको गये १०६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिअष्टोत्तरशततमोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनौका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि शिखंडी युद्धमें किसरीति से गांगेयजीको उल्लंघन करके कर्मको करता हुआ और भीष्मजी किसरीति से पांडवोंको उल्लंघन करते भये हे संजय इसको मुझे समझाकर कहो, संजय बोले कि प्रातःकाल सूर्य्योदयके समय भेरी मृदंग ढोल आदिबाजोंके बजने और चारों ओर से दधिबर्ण शंखों के बजने पर वह सब पांडव शिखंडी को आगे करके युद्ध भूमि में गये,, हे महाराज राजा धृतराष्ट्र सब शत्रुओं के नाश करनेवाले व्यूहको करके सब सेनाओं के आगे शिखण्डी हुआ, इसके पीछे भीमसेन और अर्जुन उसके चक्रके रक्षकहुए और द्रौपदीके बेटे और पराक्रमी अभिमन्यु पीछेकी ओर हुए, फिर सात्यकी चेकितान और उनके पीछे पांचाल देशियोंसे रक्षित महारथी धृष्टद्युम्न उनका रक्षक हुआ इसके अनन्तर नकुल सहदेव समेत सबका प्रभु राजा युधिष्ठिर सिंहनादों को करता हुआ चला, उसके पीछे राजा विराट अपनी सेनाको साथ लेकर चला हेमहाबाहु उसके पीछे राजाद्रुपदचला, फिर पांचोंभाई केकय और पराक्रमी धृष्टकेतुनेपांडवी सेनाके जंघास्थान को रक्षित किया, इस रीति से पांडव लोग अपने बड़ेव्यूहको रचकर और अपने जीवनकी आशाको त्यागकर युद्धभूमि में आपकी सेनाके सन्मुखआये १० हेमहाराज इसीप्रकारसे कौरव लोगभी सब सेनाओं के आगे महारथी भीष्मको करके पाण्डवों के सन्मुख गये, वहअजेय भीष्म आपके शूरवीर पुत्रोंसे रक्षित थे उनके पीछे बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य और

उनका महाबली पुत्र था, इसके पीछे हाथियोंकी सेना समेत राजा भगदत्त और इसकी रक्षामें कृपाचार्य्य और कृतवर्माथे, इसकेपीछे राजा काम्बोज सुदक्षिण जयत्सेन राजा मगध शकुनि और बृहद्बल थे, हे राजाइसीप्रकारसुशर्मा आदि अन्य बड़े धनुषधारी राजाओंने आपकी सेना के जघनस्थान को रक्षित किया, प्रत्येक दिनके वर्तमान होनेपर शन्तनुके पुत्र भीष्मने युद्धके भीतर आसुर पैशाच और राक्षस व्यूहों को अलंकृत किया, हे भरतवंशी उसके पीछे परस्परमें मारतेहुए आप के पुत्रोंका और पाण्डवोंका यमराजके देशकी वृद्धि करनेवाला महाघोर युद्ध जारीहुआ अर्जुन आदि पांडव शिखंडीको आगेकरके नानाप्रकारके बाणोंकी वर्षाकरतेहुए युद्धमें भीष्म के सन्मुख वर्त्तमानहुए,वहां आपके शूरवीर भीमसेनके बाणोंसे घायल रुधिर में डूबे हुए परलोकको सिधारे, और महारथी सात्यकी और नकुलसहदेवने आपकी सेना को पाकर अपने पराक्रमसे पीड़ामान्किया २० हेराजा युद्धमेंघायल वह आप के शूरवीर पांडवों की बड़ी सेनाके रोकने को समर्थ नहीं हुए, फिर आपकी सेना चारों ओर से घायल दशो दिशाओं में पृथक् २ होकर महारथियों के हाथसे अधिक व्याकुल होकर भागी, हे भरतर्षभ पांडवों के तीक्ष्ण बाणों से घायल संजियों समेत आपके शूरवीरों ने कोई अपना रक्षक नहीं पाया, धृतराष्ट्र बोले हे संजय पराक्रमी भीष्मने पांडवों के हाथ से पीड़ामान् सेना को देखकर युद्धमें क्रोधरूप होकर जो २ किया उसको मुझसे कहो, वहशत्रु सन्तापीवीर सोमकों को मारता हुआ युद्ध में कैसे पांडवों के सन्मुख गया उसको भी हे निष्पाप मुझसे वर्णनकर, संजय बोले कि हे महाराज जो पांडवोंसे और संजियोंसे पीड़ित आपकी सेनाको देखकर जो२ आपके पिताने किया उसको मैं कहताहूं, हे पांडुके बड़े भाई वह अत्यन्त प्रसन्नचित्त शूर पांडव आपके पुत्रकी सेनाको मारते हुए सन्मुख वर्त्तमान हुए, तब भीष्मजीने शत्रुओंके हाथसे पीड़ित मनुष्य हाथी घोड़ों के नाशको देखकर नहीं सहा, और उस बड़े धनुषधारी अजेयने अपने जीवनको त्याग करके वत्सदन्त अंजलिक सत नाम बाणों से पांडवों के ऊपर वर्षा करी हे राजा उस शस्त्र उठानेवालेने युक्ति से पाण्डवोंके अत्यन्त प्रबल पांच महारथियों को शायक नाम बाणों से वा नानाप्रकार के क्रोधसे छोड़े हुए अस्त्रों से रोका, २९, ३०, ३१, हे पुरुषोत्तम इसके विशेष उन्होंने असंख्य हाथी घोड़े और रथसे रथियों को भी गिराया, शत्रुओंके विजय करनेवाले घोड़े के सवारों को घोड़ों की पीठसे और हाथी के सवारों को हाथीकी पीठसे और सन्मुख आनेवाले पदातियोंको भी गिराया, फिर युद्धमें शीघ्रता करनेवाले महारथी अकेले भीष्म के सन्मुख पांडव लोग ऐसेहुए जैसे कि असुर लोग वज्रधारी इन्द्रके सन्मुख

हुए थे, वहां इन्द्र बज्र के समान बाणों को छोड़तेहुए भीष्मजी सब दिशाओं में महा भयानक रूप को करते हुए दृष्ट पड़े और इनका धनुष भी इन्द्र धनुष के समान मंडल रूप दृष्टगोचर हुआ, हे राजा आपके पुत्रों ने युद्धमें उस कर्म को देखकर बड़े आश्चर्य्य में होके पितामह की प्रशंसा करी, और पाण्डवों ने उदास होकर युद्धमें लड़ने हुए आपके शूर पिता को ऐसा देखा जैसे असुर लोगों ने विप्रचित्ती को देखा था, दशवें दिन के वर्त्तमान होने पर इस मृत्युके समान भीष्मको शिखंडीकी रथवाली सेनाने नहीं रोका, जैसे कि अग्नि बनको जलाता है उसी प्रकार शिखंडी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से सेना को भस्म करके अपने तीन बाणोंसे उसकी छातीको घायल किया ४० जो कि कालपुरुषकी उत्पन्न की हुई मृत्यु और डाढ़में बिष धारण करने वाले सर्पकी समान क्रोधी महाबली भीष्मथे वह महाधनुर्धारी अपनेको शिखंडीसे घायल देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धको न चाहकर हँसते हुए यह वचनबोले कि तू इच्छाके समान युद्धकरचाहै न कर परन्तु मैं किसी प्रकारसे भी तुझसे नहीं लडूंगा, क्योंकि निश्चय करके ईश्वरसे उत्पन्न कीहुई तूवहीशिखंडिनीहै भीष्मके इस वचनकोसुनकर क्रोधमेंभराहुआ शिखण्डी होठोंको चबाताहुआ भीष्मजीसे बोला कि हेमहाबाहु क्षत्रियोंके नाशकरनेवालेमें तुझकोजानताहूं, और तेरापरशुरामजीके साथ युद्धकरनाभी सुना और बहुतसा तेरादिव्यप्रभाव सुना, हेनरोत्तम अबमैं तेरेप्रभावको जानताहुआभी पाण्डवोंकेऔरअपनेप्रयोजनको सिद्ध करनेके निमित्त तुझसे लडूंगा, और युद्धमेंसंग्राम करके अवश्य तुझको मारूंगा यहतेरे आगे सत्य २ शपथ करताहूं, मेरे इस वचन को सुन कर जो तुझे करना उचितहो उसे अवश्यकर इच्छाके अनुसार चाहे युद्धकर या न कर तू मेरे हाथसे जीवता न छूटेगा, हे युद्धमें विजयकरने वाले भीष्म तुम इसलोकको अच्छी रीति से प्रसन्नकरो, संजय बोले कि ऐसे २ बचनरूपी बाणोंसे अत्यन्त विदीर्ण हृदय करके झुकी हुई गांठवाले पांच बाणों से युद्ध भूमि में भीष्मजीको घायल किया, फिर महारथी अर्जुनने उसके इनबचनों को सुनकर यहविचार किया कि अब यही समयहै ऐसाजानकर शिखंडीको प्रेरणाकरी ५० और कहा कि मैं शत्रुओंको बाणोंसे हटाताहुआ तेरेपीछेलडूंगा तुमअत्यंत क्रोधित होकर उसभयानक बलरूपवाले भीष्म के सन्मुखजाओ, यहमहाबली युद्धमें तेरे पीड़ा देनेको समर्थ नहींहै इसहेतुसे हे महाबाहो अब युक्ति पूर्व्वक भीष्मके सन्मुखजाओ हे शिखंडी जो तू भीष्मको बिनामारेहुए युद्धसे जायगा तौमेरी और तेरीदोनों की इसलोकमें हँसीहोगी, हे वीरजैसे इस लोकमें हमारी तुम्हारी हँसी न होय वही तुमको युद्धमें उपायकरना योग्यहै, हेमहाबलीमैं सब रथियोंको रोकताहुआ युद्धमेंतेरी सहायता करूंगा तुमअव-

रथ पितामहको विजयकरो, मैं (द्रोणाचार्य्य) (अश्वत्थामा) (कृपाचार्य्य) (दुर्य्योधन) (चित्रसेन) (विकर्ण) (जयद्रथ सिन्धका राजा) बिन्द अनुविन्द और (अवन्ति देशके राजा) (काम्बोज) (सुदक्षिण) (शूरभगदत्त) (महाबली राजामगध) (सोमदत्ति) राक्षसोंके राजा आर्ष्यशृङ्ग और त्रिगर्त इनसबको सब महारथियों समेत युद्धमें ऐसे रोकूंगा जैसे कि किनारा या समुद्रकी मर्य्यादा समुद्रको रोकतेहैं मैं सब सेना से लड़ताहुआ महाबली कौरवोंको हटाऊंगा तुम पितामहको विजयकरो ५६ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि नवोत्तर शततमोऽध्यायः १०९ ॥

एकसौदशका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें क्रोधयुक्त पांचालदेशी शिखंडी किसरीति से उसधर्मात्मा सावधानव्रत गांगेय भीष्मपितामह के सन्मुखदौड़ा, १ पांडवों की सेनामें युद्धके समय कौनकौनसे शस्त्रधारी विजयाभिलाषी शीघ्रता करनेवाले महारथियोंने शिखंडीकी रक्षाकरी, और वहशन्तनुके पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्म उस दशवें दिनमें पांडव और संजियों से कैसे २ युद्ध करनेवाले हुए, मैं युद्धमें शिखंडी को भीष्मजी के सन्मुख जातेहुए शान्ती को नहीं पाताहूं अर्थात् सहनहींसक्ताहूं चाहे इन भीष्मजीका रथ टूटगया वा खैंचते २ धनुषके खण्ड भी होगयेहों परन्तु तौभी शिखण्डीकीसामर्थ्य न थी जो उनके सन्मुख जासके, संजयबोले कि हे भरतर्षभ युद्ध में लड़ते और गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे शत्रुओंको मारने में इस भीष्मका न धनुष टूटा न रथ खंडितहुआ हे राजा आपके पुत्रोंकेलाखों महारथी, और हजारोंही अलंकृतहाथी घोड़ पितामहको आगेकरके युद्धकरनेकेलिये सन्मुख वर्त्तमानहुए, उसयुद्धमेंभी सत्यप्रतिज्ञ भीष्मजी ने अपने प्रणके अनुसार पांडवों की सेनाका वारंवार नाश किया, फिर पांडवोंसमेत उनसब पांचालदेशियों ने बाणोंसेबड़े २ शत्रुओंके मारनेवाले युद्धमें प्रवृत्त धनुषधारी भीष्मको क्षमा न किया, फिर दशवें दिनके वर्त्तमान होनेपर शिखंडी आदि हजारों शत्रुओंको सेनासमेत बाणोंसे पृथक्२ करादिया १० हे राजा युद्धमें पांडवलोग बड़े धनुषधारी भीष्मजी के विजय करनेको ऐसे नहीं समर्थहुए जैसे कि पाशधारी यमराजके विजयकरनेको कोई समर्थ नहो, इसके पीछे सव्यसाची बाण फेंकनेवाला अर्थात् बायेंहाथसे भी बाण चलानेवाला सर्वप्रसारी धनका जीतनेवाला अजेय अर्जुन सब रथियोंको भयभीत करताहुआ सन्मुख आया, वह अर्जुन सिंहकेसमान ऊंचे स्वरसे गर्जना करके प्रत्यंचाको वारंवार खैंचता और बाणोंकी वर्षा करताहुआ, युद्धमें काल के समान धाकर विचरताहुआ, हे राजा आपके शूरवीर उसके

शब्दसेही भयभीत होकर बड़ी भयातुरतासे ऐसेभागे जैसे कि सिंहके शब्द से मृगभागते हैं, फिर विजय करनेवाले पाण्डवों को और आपकी पीड़ामान् सेनाको देखकर अत्यन्त दुखी दुर्योधन भीष्मजीसे बोला, हे तात यह श्वेत घोड़ेवाला श्रीकृष्णजीको सारथीरखनेवाला पांडव अर्जुन मेरे सब शूरबीरों को ऐसे भस्मकिये डालताहै जैसे अग्नि बनको भस्मकरता है, हे गांगेयभीष्मजी पांडवके हाथसे सबप्रकारसे छिन्न भिन्न युद्धसे भागीहुई सेनाओंको देखो, जैसे कि बनमें गाय चराने वाला सब पशुओंके समूहोंको पृथक् २ करके हांकता है इसी प्रकार यह शत्रुसंतापी मेरी सेनाको हांक २ कर छिन्नभिन्न करता है, अर्जुनके बाणोंसे विदीर्ण जहां तहां से भागीहुई मेरी सेनाको महादुर्जय भीमसेन भी वैसेही भगाता है, और सात्यकी चेकितान वा माद्री के पुत्र दोनों नकुल सहदेव और बड़ाबली अभिमन्यु यहसब मेरी सेनाको भगारहेहैं २० इसी प्रकार शूरबीर धृष्टद्युम्न और घटोत्कच राक्षसने भी मेरी सेनाकोभगाया है, हे भरतर्षभ देवताओं के समान बल रखनेवाले आपके सिवाय इन महारथियों से घायल हुई सेनाका कहीं कोई आश्रय नहीं दिखाई देता है हे पुरुषोत्तम आप समर्थ हैं इससे शीघ्रही इन महादुखियों के आश्रय हूजिये,हे राजा इस प्रकारसे कहेहुए आपके पिता देवव्रत भीष्मजी एक मुहूर्त्त तक शोचमें मग्नहो अपने निश्चयको करके, आपके पुत्र से मिलकर बोले कि हे राजा दुर्योधन तुम स्थिर बुद्धी से समझो, हे महाबली मैंने पूर्व्व समय में तुझसे वचन पूर्व्वक प्रण कियाथा कि दश हजार महात्मा क्षत्रियों को मार कर, युद्धसे पृथक् हूंगा, यह मेरा प्रति दिनका कर्म है सो हे दुर्य्योधन मैंने अपने वचनके अनुसार उसको पूरा किया, और अब भी बड़े कर्मको करूंगा अर्थात् मैं मृतक होकर शयन करूंगा अथवा पाण्डवों को मारूंगा हे राजा अब मैं स्वामी के ऋणसे निवृत्त होकर सेनाके मुखपर मृतक होकर तेरेऋण को चुकाऊंगा, यह कहकर क्षत्रियोंको बाणों से आच्छादित करते हुए अजेय भीष्म ने पाण्डवों की सेनाको सन्मुख पाया ३० हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस सेना में नियत सर्पके समान क्रोधरूप गांगेय भीष्मजी को पाण्डवों ने युद्धभूमि में आकर रोका, हे धृतराष्ट्र दशवें दिन अपनी सामर्थ्यको दिखाते हुये उस भीष्म पितामह ने लाखों कोही मारडाला, पांचाल देशियों में जो श्रेष्ठ और महारथी राजकुमार थे उनके पंजों को ऐसे ऐंचलिया जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से जलको खैंचता है, हे महाराज दश हजार शीघ्रगामी हाथियों को और इतनेही सवारों समेत घोड़ोंको मारा पूरे एक लाख पदातियों के मरने पर भीष्मजी युद्धमें ऐसे क्रोधयुक्त हुए जैसे निर्धूम अग्नि होताहै, पाण्डवों के शूरवीरों में से कोई भी इस सूर्य्य समान संतप्त करनेवाले

भीष्म के सन्मुख देखने को समर्थ नहीं हुआ, तब उस युद्ध में बड़े धनुषधारी से पीड़ामान् पाण्डवों के वह शूरवीर महारथी संजय भीष्म के मारने के निमित्त सन्मुख गये, और जैसे कि बड़ा मेरु पर्वत बादलों समेत जाताहै वैसे ही शंतनु के पुत्र भीष्म भी अच्छे २ शूरवीरों समेत रक्षित होकर चले, फिर आपके पुत्रों ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित किया और युद्ध जारी हुआ ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिदुर्य्योधनभीष्मसम्वादेदशोत्तरशततमोऽध्यायः ११०॥

एकसौग्यारहका अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा फिर अर्जुन युद्धमें भीष्मके पराक्रमको देखकर शिखण्डी से बोला कि तुम पितामह के सन्मुख होजाओ, अब तुम भीष्मजी से किसी प्रकारका भय मत करो मैं इन भीष्मजी को अपने उत्तम बाणों के द्वारा रथसे गिराऊंगा हे राजा अर्जुन के ऐसे वचनको सुनकर वह शिखण्डी भीष्म के सन्मुख गया, और इसी प्रकार धृष्टद्युम्न और महारथी अभिमन्यु यह दोनों भी अर्जुन के वचनोंसे प्रसन्न चित्त होकर भीष्मजी के सन्मुख गये, विराट और द्रुपद यह दोनोंवृद्ध और शस्त्रोंसे अलंकृत राजा कुन्तभोज यह तीनों आपके पुत्रके देखते हुए भीष्मके सन्मुख गये, और नकुल सहदेव और पराक्रमी धर्मराज युधिष्ठिर और अन्य सब सेनाके लोग भी उनके सन्मुख गये, उससमय नकुल और सहदेव दोनों अर्जुनके वचनोंको सुनकर आपके पुत्रके देखते हुए भीष्मके सन्मुख दौड़े, फिर आपके शूरवीर भी अपनीसामर्थ्य और साहस के द्वारा उन इकट्ठे हुए महाभारथियों के सन्मुख गये उनका वृत्तान्त मुझसे सुनो, हेमहाराज भीष्मकी रक्षाके निमित्त चित्रसेन तो चेकितानके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि व्याघ्रका बच्चा बैलके सन्मुखजाताहै,हे राजा भीष्म के समीप आयेहुए शीघ्रताकरने वाले युद्धमें कुशल धृष्टद्युम्नको कृतवर्माने रोका १० और शीघ्रता करने वाले सोमदत्त ने भीष्मजी के मारने की इच्छा रखनेवाले महाक्रोधित भीमसेनको रोका, इसीप्रकार भीष्मजीके जीवनके चाहनेवाले विकर्ण ने बहुत शायकोंके फेंकने वाले शूर नकुलको रोका, ऐसेही युद्ध में अत्यन्त क्रोधी शारद्वत कृपाचार्य्यने भीष्म के रथपर जाते हुए सहदेव को रोका १२ और बलवान् दुर्मुख उसभीष्मके मारने में प्रवृत्त भीमसेनके पुत्र घटोत्कच राक्षस के सन्मुख हुआ, और युद्ध में जाते हुए सात्यकी को आपके पुत्रने रोका और भीष्मके रथपर जाते हुए अभिमन्युको, राजा कांबोज सुदक्षिणने रोका और शत्रुओं के मारनेवाले विराट् और द्रुपद दोनों वृद्धों को क्रोध युक्त अश्वत्थामाने रोका हे राजा भीष्म के मारने को उत्सुक

पाडुके बड़े पुत्र धर्मराज युधिष्ठिरको द्रोणाचार्य्यने और शिखण्डी को आगे करके युद्धमें वेगवान् भीष्मको चाहते दशों दिशाओं के प्रकाश करनेवाले अर्जुनको बड़े धनुषधारी दुश्शासनने रोका और आपके अन्य शूरबीरों ने भीष्मके सन्मुख जातेहुए पांडवों के महारथियों को युद्धमें रोका २० इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी धृष्टद्युम्न अकेलाही बारंबार अपनी सेनाओं को इस रीतिसे पुकारताहुआ भीष्मके सन्मुखगया, कि यह कौरवनन्दन अर्जुन युद्ध में भीष्मके सन्मुख जाताहै समीप आजाओ डरोमत भीष्मही का नाशहोगा तुम्हारा नहीं होगा, युद्धमें अर्जुन से लड़ने को इन्द्रभी साहस नहीं करसक्ता है हे बीरलोगो फिर वह निर्बल थोड़ेजीवनवाला भीष्म युद्धमें क्याकरसक्ता है, पांडवों के महारथी सेनापति के इस बचनको सुनकर वह सब अत्यन्त प्रसन्न मन होकर अर्जुनकेरथके समीप गये, पुरुषोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त प्रसन्न चित्त आपके शूरबीरों ने बहुतसी सामर्थ्योंसे युक्त बड़े पराक्रमियोंके समान युद्ध में आनेवालों को रोका, फिर भीष्म के जीवनका चाहनेवाला महारथी दुश्शासन भयको त्यागकर अर्जुन के सन्मुख गया, इसीप्रकार शूरबीर पांडवलोग भी भीष्मजी के रथकेपास आपके महारथी पुत्रोंके सन्मुखगये, हे राजा वहां हमने अपूर्व्वरूपके आश्चर्य्यको देखा कि अर्जुनने दुश्शासन के रथको पाकर उल्लंघन नहीं किया, जैसे कि मर्य्यादा वा किनारा जलसे व्याकुल समुद्रको रोकता है उसी प्रकार आपके पुत्रने क्रोधयुक्त पांडव अर्जुन को रोका, वह दोनों रथियों में श्रेष्ठ दुर्जय पुरुष शोभा और प्रकाश से चन्द्रमा और सूर्य्य के समान विदित होतेथे ३० इसीप्रकार वह दोनों क्रोधभरे परस्पर मारने के इच्छावान् युद्धमें ऐसे बढ़े जैसे कि पूर्व्व समय में यमराज और इन्द्र बढ़ेथे, फिर दुश्शासन ने विशिखनाम तीन बाणोंसे अर्जुनको और बीसबाणसे वासुदेवजीको घायल किया, तदनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुनने श्रीकृष्णजी को पीड़ामान् देखकर युद्धभूमिमें नाराचनाम बाणोंके एक सैकड़ेसे दुश्शासनको घायल किया उन बाणोंने उसके कवचको काटकर उसके रुधिर को पिया फिर महाक्रोधी दुश्शासनने गुप्तग्रन्थी वाले तीन वा पांचबाणों से अर्जुन को ललाटपर घायल किया उन ललाटपर नियत बाणों से वह अर्जुन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि अत्यन्त ऊंचे २ शिखरोंसे मेरु पर्वत शोभित होता है फिर वह बड़ा धनुषधारी अर्जुन आपके धनुषधारी पुत्रसे अत्यन्त घायल होकर युद्धमें ऐसा शोभायुक्त हुआ जैसा कि फूलाहुआ किंशुक वृक्ष होता है इसके पीछे अर्जुनने उसक्रोधी दुश्शासन को ऐसा पीड़ित किया, जैसे कि पर्वके दिन अत्यन्त क्रोध युक्त राहु पूर्णचंद्रमाको दुःखित करता है हे राजा पराक्रमी अर्जुनसे पीड़ामान् आपके पुत्रने, कंकपक्षवालेशिलाप ती-

क्ष्ण कियेहुए बाणों से अर्जुनको फिर पीड़ामान् किया तबतो अर्जुनने उसके धनुषको काटकर तीन बाणोंसे उसके रथको खंडित किया, उसकेपीछे तीक्ष्ण बाणोंसे उसके शरीरको घायल किया फिर भीष्मके आगे नियत होकर उसने दूसरे धनुषको लेकर अर्जुनको पच्चीस२५बाणोंसे भुजा और छातीपर घायल किया हे राजा फिर शत्रु संतापी क्रोधयुक्त अर्जुन ने उसके ऊपर यमराज के दण्डके समान महाभयानक विशिख नाम बहुतसे बाणोंको चलाया तबआप केपुत्रने अर्जुनके उन बाणों को बीचमेंही काटा, ४२ वह आश्चर्य्यसा हुआ फिर आपके पुत्र ने तीक्ष्णधारवाले बाणों से अर्जुनको व्यथित किया, इसके पीछे युद्धमें क्रोधभरे अर्जुनने सुनहरी पुंखवाले वा शिलापर घिसेहुए बाणोंको धनुषपर चढ़ाकर युद्धमें फेंका, हे राजा वह बाण उसमहात्मा के शरीरमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि तड़ागको पाकर हंस प्रवेश करजातेहैं, महात्मा पांडव के हाथसे पीड़ित आपकापुत्र युद्ध में अर्जुनको छोड़कर शीघ्रही भीष्मजीके रथके पास गया तब भीष्मजी उस अगाध जलके डूबेहुएको आधाररूप द्वीप होगये इसकेपीछे हे राजा आपके शूरवीर पुत्रने चैतन्यहोकर फिर महा तीव्र बाणोंसे अर्जुनको ऐसा ढकदिया जैसे कि बड़े शरीरवाले इन्द्रने वृत्रासुरको आच्छादितकियाथा उसकेघायलकरनेपरभी अर्जुन पीड़ामान्नहींहुआ ४८॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिएकादशोत्तरशततमोऽध्यायः १११॥

एकसौबारहका अध्याय॥

संजय बोले कि युद्धमें शस्त्रोंसे अलंकृत भीष्म के सन्मुख जातेहुए सात्यकीको बड़े धनुषधारी आर्ष्यसृंगने युद्धभूमि में रोका, हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधित और हँसतेहुए सात्यकी ने नौ बाणों से राक्षस को घायल किया, इसीप्रकार अत्यन्त कोपयुक्त राक्षसने भी शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी को पीड़ित किया, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शत्रुहन्ता सात्यकी ने बाणों की वर्षा राक्षस परकरी, और राक्षसने तीक्ष्ण विशिखों से उस सत्यपराक्रमी महाबाहु सात्यकी को घायल करके बड़े सिंहनाद को किया, फिर राक्षसके हाथसे अत्यन्त घायल और रोकाहुआ महातेजस्वी सात्यकी भी हँस २ करगर्जा, इसपीछे क्रोधयुक्त भगदत्तने अपने तीक्ष्णबाणोंसे सात्यकी को ऐसा घायल किया जैसे कि चाबकों से बड़े हाथी को घायल करतेहैं, फिर रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने उस राक्षसको छोड़कर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे राजा प्राग्ज्योतिष को घायल किया, और बड़े हस्तलाघवी राजा प्राग्ज्योतिषने उस सात्यकी के बड़े धनुषको सौ धारवाले भल्लसे काटा, फिर उस शत्रुहन्ताने दूसरे वेगवान् धनुष को लेकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से भगदत्त को घायल किया १० फिर इस

अत्यन्त घायल होठोंको चाबते बड़े धनुषधारीने सुवर्ण और वैडूर्य्य मणि से अलंकृत यमराजके दण्ड के समान महा भयानक लोहेकी दृढ़शक्ती को फेंका हे राजा उसके हाथसे प्रेरित उस अकस्मात् गिरतीहुई शक्तीको सात्यकी ने अपने बाणोंसे दोखण्ड करके पृथ्वीपर गेरा फिर आपके पुत्र ने शक्ती को टूटाहुआ देखकर बड़े रथों के समूहों से सात्यकी को घेरा फिर उस सात्यकी को घिराहुआ देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन अपने भाइयों से बोला, कि हे कौरवो अब ऐसा करो जिससे कि सात्यकी हमारे इन रथसमूहों से जीवता न लौटे, उसके मरने पर मैं पांडवों की बड़ी सेनाको भी मृतकही मानताहूं तब महारथियों ने कहा कि ऐसाही होगा, यह कहकर भीष्म केही आगे सात्यकीसे युद्ध किया और महाबली राजा काम्बोजने भीष्मकी ओर जातेहुए युद्धमें प्रवृत्त अभिमन्युको रोका, अभिमन्युने गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से राजा को घायल करके चौंसठ बाणों से फिर व्यथित किया, इसके अनन्तर राजा सुदक्षिण ने पांच बाणों से घायल करके नौ बाणों से उसके सारथी को घायल किया २० वहां उन दोनों की सन्मुखता में बड़ाभारी युद्ध हुआ और शत्रुहन्ता शिखण्डी गांगेयजी की ओर दौड़ा, और युद्ध में क्रोधयुक्त, महारथी दोनों विराट् और द्रुपद उस सेना को हटातेहुए भीष्म की ओर को दौड़े, तब महाक्रोधित महारथी अश्वत्थामा उनके सन्मुख गया तदनन्तर उसके साथ उन दोनों का बड़ा युद्ध जारीहुआ, फिर राजा विराट् ने उस उपाय करनेवाले और युद्ध में शोभा पानेवाले बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा को दश भल्लों से घायल किया फिर द्रुपद ने तीक्ष्ण धारवाले तीन बाणों से घायल किया फिर वह दोनों गुरु के पुत्रको सन्मुख पाकर प्रहार करने लगे, तदनन्तर अश्वत्थामा ने उन भीष्मजी के ऊपर युद्ध में प्रवृत्त विराट् और द्रुपदको अनेक बाणों से घायल किया, २६ वहां हमने उन दोनों वृद्धों के बड़ेभारी कर्मको देखा कि युद्ध में अश्वत्थामा के महाघोर भयानक बाणों को रोका, और कृपाचार्य्यजी उस जातेहुए सहदेवके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि बन में मतवालाहाथी मतवाले हाथी के सन्मुख जाताहै, वहां शीघ्रही शूरवीर कृपाचार्य्य ने बड़े तीव्र सत्तर बाणोंसे सहदेव को घायल किया, फिर सहदेव ने उनके धनुष के खण्ड २ करके नौ बाणोंसे उनको घायल किया ३० भीष्मके जीवन को चाहते उस प्रसन्न चित्त और क्रोध में युक्त कृपाचार्य्य ने माद्रीनन्दन सहदेवको तीव्र दश बाणों से छाती के ऊपर घायल किया हे राजा इस प्रकार भीष्मके मारने की इच्छा से असह्य क्रोध भरे सहदेव ने कृपाचार्य्यको भी छातीपर घायल किया तब उन दोनों का महाघोर और भयानक युद्धहुआ,,, इसके पीछे शत्रुसंतापी युद्धमें क्रोधित

महाबली विकर्ण ने नकुलको सात बाणों से घायल किया तब आपके पुत्रसे अत्यन्त घायल नकुलने भी सतहत्तर शिलीमुख बाणोंसे विकर्णको घायल किया, फिर उन शत्रुसंतापी वीरों ने भीष्मके कारण परस्परमें ऐसे प्रहारकिये जैसे कि गोशालामें दोगौ और वृषभप्रहार करते हैं, भीष्म के कारण से पराक्रम करने वाला दुर्मुख युद्धमें आपकी सेनाको मारने वाले और घूमते हुए घटोत्कच के सन्मुख गया ३७ फिर क्रोधयुक्त घटोत्कच ने गुप्तग्रंथी वाले बाणों से उस शत्रुसंतापी दुर्मुख को छातीपर घायल किया, फिर गर्जना पूर्वक प्रसन्न चित्त दुर्मुखने भी सुन्दर मुखवाले साठ बाणों से भीमसेनके पुत्र घटोत्कचको घायलकिया, इसीप्रकार महारथी कृतवर्मा ने भीष्मके मारनेकी इच्छा रखनेवाले रथियों में श्रेष्ठ जातेहुए धृष्टद्युम्न को रोका ४० फिर कृतवर्माने भी पांच लोहेके तीक्ष्ण बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायलकरके पचास बाणोंसे शीघ्रही छाती में घायल किया, इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने तीक्ष्ण कंकपक्षवाले नौ बाणों से कृतवर्मा को घायल किया युद्धमें भीष्मके कारण उन दोनोंका ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रका हुआ था, इसी प्रकार भूरिश्रवा उस भीष्मकी ओर जाते महारथी भीमसेन के सन्मुख शीघ्रतासे गया और तिष्ठ२ शब्द बोला, उसके पीछे सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवाने युद्ध में तीक्ष्ण सुनहरी पुंखवाले नाराच बाणसे भीमसेनको छाती में घायल किया प्रतापवान् भीमसेन उस छाती पर नियत हुए बाणसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व समयमें स्वामिकार्त्तिकजी की शक्तीसे क्रौंचनाम पर्वत शोभायमान हुआ था, युद्धमें क्रोधयुक्त उन दोनों नरोत्तमों ने सूर्य्य के समान प्रकाशित और साफ़ किये हुए बाणों को परस्परमें फेंका, फिर भीष्म के मारने की इच्छारखने वाले भीमसेनने महारथी भूरिश्रवाको और भूरिश्रवाने भीमसेनको घायल किया, प्रहार पर प्रहार करने में कुशल वह दोनों युद्धमें संग्रामकर्त्ता हुए फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी ने बड़ी सेना समेत भीष्मके सन्मुख जाते हुए कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को रोका हेराजा द्रोणाचार्य्य के रथका शब्द बादलके समान था उसको सुनकर, ४९ । ५० प्रभद्रक नाम राजकुमार बड़े कम्पायमान हुए और पाण्डवों की वह बड़ी बुद्धिमान् सेना द्रोणाचार्य्य से रोकी हुई चरण से एक पदभी चलाने वाली नहीं हुई और युद्धमें कुशल भीष्म के ऊपर कोप युक्त चेकितान, को आपके पुत्र चित्रसेन ने रोका पराक्रमी चित्रसेन भीष्म जी के लिये पराक्रम करने वाला हुआ हे राजा उस चित्रसेनने बड़ी सामर्थ्य से चेकितानसे युद्ध किया इसी प्रकार चेकितान ने भी चित्रसेन को रोका, उस समय पर उन दोनों का युद्ध बहुत बड़ा हुआ और वहां पर रुके हुए अर्जुन ने बहुत प्रकार से, आपके पुत्र का मुख मोड़कर आपकी सेनाका मर्द्दन

किया और दुश्शासनने भी बड़ेपराक्रमसे यहनिश्चय करके अर्जुनको रोका कि यह किसी प्रकारसे हमारे पितामह भीष्मजीको नहीं मारे हेभरतर्षभयुद्ध में आपके पुत्रकी वह घायल हुई सेना उत्तम२रथियों समेत जहांतहां अचेत होकर गिरी और भागगई ५७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्वंद्वयुद्धेद्वादशोपरिशततमोऽध्यायः ११२॥

एकसौतेरहका अध्याय॥

सञ्जय बोले कि फिर बड़े धनुषधारी मतवाले हाथी के समान पराक्रमी नरोत्तम महाबली द्रोणाचार्य्य भी महागजेन्द्र के हटाने वाले बड़े धनुष को लेकर सबको कँपाते सेना को घायल करते हुए पाण्डवी सेना को मझाते संतप्त करते हुए सब ओर से चिह्नों को देखकर अपने पुत्र अश्वत्थामा से बोले,, ७२। ७३ हे पुत्र यहवह दिनहै जिसमें युद्धके बीच भीष्मको मारना चाहता महाबली अर्जुन बड़े २ उपायों को करेगा, क्योंकि मेरे बाणउछलते हैं और धनुष कंपायमान होता है और अस्त्रयोगको प्राप्त होते हैं और मेरी मति क्रूरवर्त्तमान है दिशाओंमें शान्तीसे रहित भयकारी पशुपक्षी बोलते हैं और भरतवंशियोंकी सेनामें गृध्र नीच पक्षियोंकेसाथबैठे हैं सूर्य्यप्रभा से रहित हैं और दिशा सब ओरसे लालहैं और पृथ्वी सब प्रकार से शब्दायमान और पीड़ित होकर कांपती है, कंक गृध्र और बलाक बारम्बार बोलते हैं अशुभ भयानक शृगाल बड़े भय को प्रकट करतेहुए बोलते हैं, सूर्य्यमण्डल मेंसे बड़े उल्कापात होते हैं और एक बंध परिघ सूर्य्य को ढककर नियत हैं इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य्य का भयकारी प्रदेश अर्थात् पारस नाम मण्डल राजाओं के शरीरों का नाश करने वाला महाभयको उत्पन्न करता हुआ वर्त्तमान हुआ है १० और राजा कुरुके मन्दिर में विराजमान देवता कांपते हँसते नाचते और रोवते हैं, ग्रहों ने सूर्य्य को दक्षिण होकर चिह्नसे रहित कर दिया और भगवान् चन्द्रमानीचे मुख होकर वर्त्तमान हुए, राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहेहैं वह शस्त्रधारी अलंकृत राजा लोग दुर्योधन की सेनामें शोभायमान नहीं हैं, दोनों सेनाओं में चारों ओरको उसी पांचजन्य शंख और गाण्डीवधनुष के शब्द सुने जाते हैं, निश्चय करके वीर अर्जुन युद्धमें दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करने वाले अन्य शूरवीरों को छोड़कर पितामह के सन्मुख जायगा, हे महाबाहु अश्वत्थामा भीष्म और अर्जुनकी सन्मुखता को शोचकर मेरेरोयें खड़े हुए जातेहैं और चित्त भी पीड़ामान् होताहै, वहां अर्जुन उस छली और पापात्मा शिखंडी को आगे करके भीष्म के मारने को गयाहै, पूर्व्व समय में भीष्मने कहा था कि मैं शि-

खंडी को नहीं मारूंगा क्योंकि इसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्रा-
रब्ध से पुरुष होगया है, यह यज्ञसेन का पुत्र महाबली अशुभ ध्वजावाला
है इस हेतु से गांगेय भीष्म जी उस असंगल रूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह
विचारकर मेरेचित्त में बड़ा खेद होता है युद्धमें प्रवृत्तचित्त क्रोधभरा शिखंडी
भी कौरवों के वृद्ध पितामह भीष्मजी के सन्मुख गया है २० युधिष्ठिर का क्रो-
ध और अर्जुन से सन्मुख हुआ भीष्म और यहांपरमेरा युद्धसम्बन्धी कर्मका
प्रारम्भ यह सब बातें निश्चय करके प्रजाओं के अकल्याण की करनेवाली
हैं, पाडव अर्जुन साहसी पराक्रमी शूरवीर अस्त्र शस्त्रों का ज्ञाता बड़े तीक्ष्ण
दूर गिरने वाले बाणोंका फेंकनेवाला और लक्ष्यभेदी अर्थात् लक्ष्य का जा-
ननेवाला है, यह अर्जुन इन्द्र समेत देवताओं से भी युद्धमें दुर्जय और अजेय
है और पराक्रमी बुद्धिमान् दुःख रोगादि का जीतने वाला शूरवीरोंमें श्रेष्ठ यु-
द्धमें सदैव विजयी और भयकारी अस्त्रोंका फेंकने वाला है हे सावधान व्रत
पुत्र तुम उस अर्जुनके मार्ग को रोकते हुए शीघ्र जाओ, अब इस महा भय-
कारी युद्धमें इस बड़े नाश को देखो, शूर लोगों के कवच जो सुवर्ण से जटित
और बड़े मंगल स्वरूप हैं वह सब गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से तोड़े जातेहैं और
ध्वजा तोमर धनुष भी खंड २ किये जाते हैं, और अत्यंत क्रोधयुक्त अर्जुन के
हाथसे साफ़ और तेजप्रास और सुवर्णके समान उज्ज्वल शक्तियां और हा-
थियोंकी वैजयन्ती अर्थात् पताका टूटरही हैं हे पुत्र दूसरेके आश्रयसे समय
व्यतीत करनेवालोंसे प्राणोंकी रक्षाकरनेका यह समय नहीं है स्वर्गको मुख्य
करके यश और विजयकेनिमित्ततुमजाओ, यह वानरध्वज अर्जुनकेरथकेद्वारा
हाथी घोड़े औररथोंसे लहराती बड़ीभयकारी अतिअगम्य युद्ध रूपी नदीको
तरता है, इसलोकमें युधिष्ठिरहीमें कियाहुआ बड़ाभारी तप दान वा चित्तकी
शान्ती और ब्राह्मणोंकी रक्षा करना दृष्ट पड़ता है जिसकेभाई अर्जुन ३० वा
महाबली भीमसेन वा माद्री के पुत्र नकुल सहदेव और सबके नाथ वासु-
देवजी वर्त्तमानहैं ३१ उस दुर्बुद्धी जल कुक्कुड़ दुर्य्योधनके अभिमान से उत्पन्न
यह तपरूप क्रोध भरतवंशियों की सेना को भस्मकरे डालताहै, यह वासुदेव
जी का आश्रय रखनेवाला अर्जुन दुर्य्योधन की सब सेनाओं को सब रीतिसे
छिन्न भिन्न करता विदित होरहा है, यह सब सेना अर्जुन के हाथ से व्याकुल
बड़े तरंगों से युक्त नानाप्रकारके जलजीवों से व्याकुल समुद्रकी समान देखने
में आती है, हाय हाय और कलकला शब्द सेना के मुखपर सुने जाते हैं तुम
राजा द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न के सन्मुख जाओ मैं युधिष्ठिर के सन्मुख जा-
ऊंगा २५ बड़े तेजस्वी राजा युधिष्ठिर के बड़े व्यूहका मध्य सब ओरको नियत
अति रथियों से समुद्रकी कुक्षिके समान कठिनतासे पार उतरने के योग्य है,

(सात्यकी) (अभिमन्यु) (धृष्टद्युम्न) भीमसेन नकुल सहदेव इन सब ने राजा युधिष्ठिर को चारों ओर से रक्षित किया है, विष्णु के समान श्याम बड़े शालि वृक्ष के समान उन्नत दूसरे अर्जुन के समान यह शूरवीर सेना के आगे जाता है, इससे तुम बड़े धनुषको ले उत्तम अस्त्रोंको धारणकर राजा धृष्टद्युम्न के सन्मुख जाकर भीमसेनसे लड़ो, कौनसामनुष्य अपने प्यारे पुत्रको सदैव चिरंजीवी नहीं चाहता है मैं क्षत्रीधर्म को देखकर उसके कारण से तुम को आज्ञा देताहूं कि ४० यह भीष्म महायुद्धमें बड़ी सेनाको नाश करता है हेपुत्र यह भीमसेन युद्ध में यमराज और बरुणके समान है ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणित्रयोदशोपरिशततमोऽध्यायः ११३ ॥

एकसौचौदहका अध्याय ॥

संजय बोले कि उस महात्मा द्रोणाचार्य्य के इस बचनको सुनकर (भगदत्त) (कृपाचार्य्य) (शल्य) (कृतवर्मा) (विन्द) (अनुविन्द) अवन्ति देश के राजालोग वा सिन्धुका राजा (जयद्रथ) चित्रसेन (विकर्ण) (दुर्मर्षण) आदि आपके इन दश शूरवीरों ने भीमसेन से युद्ध किया, वहराजा लोग नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले बड़ी सेना समेत थे और भीष्म के बड़े यशको चाहनेवाले थे, उनमें से शल्य ने नौ बाणों से कृतवर्मा ने तीन बाणों से कृपाचार्य्य ने नौ बाणों से भीमसेनको घायल किया और चित्रसेन भगदत्त और विकर्ण ने, दश २ बाणों से जयद्रथ ने तीन बाणों से व्यथित किया, ५ और अवन्ति देशके राजा विन्द अनुविन्द ने पांच २ बाणों से और दुर्मर्षणने तीक्ष्णधारके बीस बाणों से भीमसेन को घायल किया, हे महाराज फिर उन सब पृथक् शोभायमान महाभारती धृतराष्ट्र के पुत्रों को, युद्ध में घायलकरके शत्रुओं के मारनेवाले बीर पांडव भीमसेन ने सात बाणसे शल्य को आठ से कृतवर्मा को घायलकर, कृपाचार्य्य के बाण समेत धनुष को बीच में से काटकर फिर उस टूटे धनुषवाले को सात बाणों से घायल किया, वैसेही अवन्तिदेश के राजा विन्द अनुविन्द को तीन २ बाणों से और दुर्मर्षण को बीस बाणों से और चित्रसेन को पांच बाणसे घायल किया १० फिर विकर्ण को दश बाणों से जयद्रथ को पांच बाणसे घायलकर फिर उसी को तीन तीक्ष्ण बाणों से व्यथित करके बड़े प्रसन्न चित्त होकर भीमसेन गर्जना करने लगे, तब रथियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्त कृपाचार्य्य ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण धारवाले द्वादश बाणों से भीमसेनको घायल किया वह बारह बाणों से ऐसा घायल हुआ जैसे कि चाबकों से हाथी घायल होता है, इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने, युद्ध में अनेक बाणों से कृपाचार्य्य को घायल

करके तीन बाणों से जयद्रथ के घोड़े और सारथी को मृत्यु के लोक में भेजा फिर उस महारथी ने मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्रही कूदकर १४,१५, भीमसेनके ऊपर तीक्ष्णधारवाले बाणों को फेंका हे राजा धृतराष्ट्र भीमसेन ने दो भल्लों से उस महात्मा जयद्रथ के धनुष को मध्य में से काटा, वह टूटधनुष रथहीन शीघ्रता करनेवाला जयद्रथ जिसके घोड़े और सारथी मरगये थे १६ । १७ चित्रसेन के रथपर सवारहुआ वहां पांडव भीमसेन ने युद्ध में अपूर्व्व कर्म को किया १८ अर्थात् उसने सब लोगों के देखते बाणों से महारथियों को घायल करके जयद्रथ को विरथ किया, तब शल्यने भीमसेनके पराक्रम को नहीं सहा और बड़े तीक्ष्ण बाणों को धनुषपर चढ़ाकर २० भीमसेन को घायल किया और तिष्ठ २ वचनको उच्चारण किया इस को देखकर पराक्रमी (कृपाचार्य) (कृतवर्मा) (भगदत्त), २१ और अवन्तिदेश के राजा विन्द अनुविन्द (दुर्मर्षण) (विकर्ण) पराक्रमी जयद्रथ, इन सब शत्रु विजयी लोगोंने भी शल्यको देखकर शीघ्रही भीमसेनको घायल किया और उसने उन सबको पांच २ बाणोंसे घायल किया २३ शल्य को सत्तर बाणों से और दश भल्लोंसे घायल किया फिर शल्यने उसको नौ बाणोंसे घायलकरके पांच बाणों से फिर व्यथित करदिया २४ और एक भल्लसे उसके सारथीको मर्मस्थलमें घायल किया इसके पीछे उस प्रतापी भीमसेनने अपने विशोकनाम सारथीको घायल देखकर २५ तीन बाणोंसे मद्रके राजा शल्यको भुजा और छाती पर घायल किया. इसी प्रकार सीधे चलनेवाले तीन २ बाणोंसे अन्य२ बड़े २ धनुषधारियों को व्यथित करताहुआ सिंह के समान गर्जनाकरी, फिर उन सावधान बड़े २ धनुषधारियों ने युद्धमें कुशल भीमसेनको तीक्ष्ण नोक वाले तीन २ बाणोंसे मर्मस्थलोंमें अत्यन्त घायल किया परन्तु वह अत्यन्त घायल बड़ा धनुषधारी भीमसेन ऐसे पीड़ामान् नहींहुआ, २८ जैसेंकि जल धारा वर्षा करनेवाले बादलों से पर्व्वत पीड़ा नहीं पाताहै फिर उस बड़े यशस्वी महारथी पाण्डव भीमसेन ने क्रोधमें भरके शल्य राजा को तीन बाणों से अत्यन्त घायल करके युद्धभूमि में सौ शायकोंसे राजा प्राग्ज्योतिष को घायल किया २९,३० इसकेपीछे इसी यशस्वीने कृपाचार्यको बाणोंसे अत्यंत घायल करके अपनी हस्तलाघवता से महात्मा कृतवर्मा के बाण समेत धनुष को ३१ अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रों से काटा और इसी प्रकारसे कृतवर्मा ने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेन को ३२ दोनों भृकुटियों के मध्यमें नाराच बाणसे घायल किया फिर शत्रु संतापी भीमसेनने शल्य को नौ लोहेके बाणोंसे घायल करके ३३ तीन बाणोंसे भगदत्तको आठ बाणोंसे कृतवर्माको और दो२ बाणों से कृपाचार्य आदि रथियोंको घायल किया ३४ इन सबोंने भी इसको

तीक्ष्णधारके बाणोंसे घायल किया ३५ फिर महारथियोंके सब शस्त्रोंसे पीड़ामान् वह भीमसेन भी उनको तृणके समान कर दुःखसे रहित प्रसन्न मुखहोकर भ्रमण करने लगा ३६ उन सावधान रथियोंमें श्रेष्ठ लोगोंने भी भीमसेन के ऊपर हजारों तीक्ष्ण बाणोंको चलाया ३ महावीर भगदत्तने उस बुद्धिमान्के ऊपर बड़ी वेगवान् प्रकाशित सुनहरी दण्डवाली शक्तीको और राजा जयद्रथने तोमरको महाभुजने पट्टिशको कृपाचार्य ने शतघ्नी को शल्य ने बाणको ३९ और अन्य बड़े २ धनुषधारियोंने भीमसेनको लक्ष अर्थात् निशाना बनाकर पांच २ शिलीमुख बाणोंको बड़े पराक्रमसे चलाया ४० तब वायुपुत्र भीमसेनने तोमरको तो क्षुरप्रनाम बाणसे दो खण्डकिये और तीन बाणसे पट्टिशको तिलके कांडके समान काटा ४१ नौ बाणों से शतघ्नीको तोड़ राजामद्र के चलाये हुए बाणको काटकर भगदत्तकी चलाईहुई शक्ती को काटडाला इसीप्रकार युद्धमें प्रशंसनीय भीमसेनने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से अन्य भयानक बाणों को काटा अर्थात् प्रत्येक के खण्ड २ करदिये और उन सब धनुषधारियों को तीन २ बाणोंसे घायल किया ४३, ४४, इसकेपीछे वहां घोरयुद्ध के होनेपर अर्जुन उस युद्धमें शत्रुओं को मारता शायकों से लड़ता महारथी भीमसेन को देखकर रथपर बैठा हुआ युद्धभूमि में आया वहां उन दोनों महात्मा पाण्डवोंको युद्धमें प्रवृत्त देखकर ४५, ४६ आप के शूरवीर पुरुषोंने वहां अपने विजयकी आशा नहींकी फिर युद्धमें महारथियों से लड़ते हुए भीमसेन को देखकर भीष्म के मारने की इच्छाकरने वाले अर्जुन ने शिखंडी को आगे करके उस युद्धमें आपके उन दश शूरोंको पाया जो भीमसेनसे युद्धकरने में नियतथे उनको अर्जुनने भीमसेन की प्रसन्नता के लिये बाणोंसे घायल किया ४९ फिर राजा दुर्योधनने अर्जुन और भीमसेन इनदोनोंके मारनेके निमित्त राजासुशर्माको आज्ञाकरी ५० कि हेसुशर्मा तुमअपनी सेनासमेत शीघ्रही जाकर इनदोनों पांडव अर्जुन और भीमसेन को मारो ५१ फिर प्रस्थलाधिप राजा सुशर्माने उसके उस वचनको सुन युद्ध में जाके भीमसेन और अर्जुन दोनों धनुषधारियों को ५२ हजारों रथियों समेत चारों ओरसे घेरलिया फिर अर्जुन से और शत्रुओं से युद्ध होना प्रारंभ हुआ ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४ ॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर अर्जुन ने युद्ध में उपाय करनेवाले महारथी शल्य को गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से ढककर (सुशर्मा) (कृपाचार्य्य) (राजा प्रा-

ग्ज्योतिष) जयद्रथ राजा सिंध इनसबको तीन २ बाणों से घायल किया, और (चित्रसेन) (विकर्ण) (कृतवर्मा) (दुर्मर्षण) और अवन्तिदेशके महारथी राजालोग ३ इन सबको कंक और मोरपक्षवाले तीन २ बाणों से घायल किया और युद्धमें अतिरथी जयद्रथने आपकी सेनाको बाणों से पीड़ित करते हुए अर्जुन को शायकों से घायल करके चित्रसेनके रथपर बैठकर बड़ीतीव्रतासे भीमसेनको घायल किया ५ हे राजा रथियों में श्रेष्ठ शल्य और कृपाचार्य्य ने मर्मभेदी बाणों से अर्जुन को अनेक रीतिसे घायल किया ६ और चित्रसेन आदि आपके पुत्रों ने तीक्ष्ण धारवाले पांच २ बाणों से, अर्जुन और भीमसेनको घायल किया वहां उन भरतवंशियों में और रथियों में श्रेष्ठ दोनों पांडवोंने ८ त्रिगर्त देशियों की बड़ी सेनाको पीड़ामान् किया फिर सुशर्माभी तीव्रगामी नौ बाणों से अर्जुनको घायल करके बड़ी सेनाको भयभीत करता हुआ बड़े शब्द से गर्जा और अन्य शूरवीर रथियों ने भीमसेन और अर्जुनको सीधे चलनेवाले सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धारके बाणों से घायल किया उन रथियों के मध्यमें भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ कुन्तीके पुत्र महारथी क्रीड़ाकरतेहुए ऐसे अपूर्व्व रूपसे आये जैसे कि बैलोंके मध्य में मांसकी इच्छा रखनेवाले मतवाले दो सिंह आते हैं ११ । १२ उन दोनों वीरों ने युद्ध में शूरोंके धनुषों को बहुत प्रकार से काटकर सैकड़ों मनुष्योंके शिरोंको गिराया १३ बहुतसे रथटूटे सैकड़ों घोड़े मारेगये और सवारों समेत हाथी पृथ्वी पर गिरे १४ रथी और सवार भी जहां तहां नाशको प्राप्त चारों ओरसे कँपते हुए दृष्टिआये १५ मृतक हाथी घोड़े पदाती और अनेकप्रकारसे टूटेहुए रथों से पृथ्वी सविस्तरसी होगई, हे राजा अनेक प्रकार से टूटेहुए छत्र और गिराई हुई ध्वजा और खंडित (अंकुश) (परशे) (केयूर) (बाजूबन्द) (हार) (कोमल मृगचर्म) (मंडील) (दुधारेखड्ग) चामर वा व्यजनों से और जहांतहां कटीहुई राजाओं की चन्दनचर्चित भुजा और जंघाओं सेभी पृथ्वी आच्छादित दीखती थी, वहां हमने युद्धके बीच अर्जुन के अपूर्व्व पराक्रम को देखा कि उस महाबलीने उन सबशूरवीरों को बाणों से ढककर घायलकर दिया २० फिर आपका महाबली पुत्र भीमसेन और अर्जुन के उस पराक्रम को देखकर गांगेयभीष्मजीके रथके पास गया २१ तब (कृपाचार्य्य) (कृतवर्मा) (जयद्रथ) (राजासिंध) और अवन्ति देशके विन्द अनुविन्द नाम राजाओंने युद्धको नहीं त्यागा २२ इसके पीछे बड़े धनुषधारी भीमसेन और महारथी अर्जुन युद्धमें कौरवों की महाभयकारी सेनाकी ओर दौड़े २३ उसके पीछे राजाओं ने बड़ी शीघ्रतासे मोरके समान चित्रित हजारों लाखों किन्तु असंख्यों बाणों को अर्जुन के रथपर गिराया २४ तब अर्जुनने चारों ओर

से उन महारथियों को बाणोंके जालसे रोककर मृत्यु के लोकों को भेजा २५ फिर क्रोधयुक्त युद्धमें क्रीड़ा करते महारथी शल्यने गुप्त ग्रंथीवाले भल्लों से अर्जुनको छातीपर घायल किया २६ तब अर्जुनने उसके धनुष को तोड़ पांच बाणों से उसके हस्तत्राणको काटके तीक्ष्ण शायकों से उसके मर्मस्थलों को अत्यन्त घायल किया २७ फिर क्रोधयुक्त राजा मद्रने दूसरे बड़े दृढ़धनुष को लेकर बाणों से अर्जुन को व्यथित किया २८ तीन बाणों से अर्जुन को पांच बाणों से वासुदेव जी को नव बाणों से भीमसेन को भुजा और छाती पर घायल किया २६ इसके पीछे महारथी द्रोणाचार्य्य और राजा मगध यह दोनों दुर्य्योधन की आज्ञासे उस स्थानपर पहुंचे ३० जहां कि बड़े महारथी अर्जुन और भीमसेन ने कौरवी दुर्य्योधन की बड़ी सेनाको माराथा फिर जयसेन ने भयकारी शस्त्रवाले भीमसेनको तीव्र आठबाणों से घायल किया ३२ और भीमसेनने उसको दश बाणों से घायल करके पांच बाणों से फिर घायल किया और एक भल्ल से उसके सारथीको रथ के बैठने के स्थान से गिरादिया ३३ फिर वह राजा मगध सब सेना के देखतेहुए चारों ओर को बहकेहुए घोड़ों के कारणसे युद्ध से दूर चलागया ३४ द्रोणाचार्य्य ने समय पाकर तीक्ष्ण धारवाले लोहेके शिलीमुख नाम पैंसठ बाणों से भीमसेन को घायल किया ३५ हे भरतबंशी युद्धमें प्रशंसा पानेवाले भीमसेनने पिता के समान गुरूको भी पैंसठ भल्लों से घायल किया, ३६ फिर अर्जुन ने बहुत से लोहेके बाणों से सुशर्मा को घायल करके उसकी उस भुजाको ऐसे अलग कर दिया जैसे कि वायु बादलों को अलग करदेताहै ३७ उसके पीछे भीष्म और (राजा कौशल्य) (बृहद्बल) यह सब अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर भीमसेन और अर्जुनके सन्मुख गये ३८ इस रीतिसे शूर पांडव और पर्षतका पुत्र धृष्टद्युम्न उस मृत्युके समान भीष्मके सन्मुख गये ३६ और अत्यन्त प्रसन्न चित्त शिखण्डी भरतबंशियों के पितामहको पाकर और उस्से निर्भय होकर सन्मुख हुआ ४० और युधिष्ठिर आदि पांडव सब सृंजियों समेत शिखण्डीको आगे करके युद्ध में भीष्मजी से युद्ध करनेलगे ४१ इसी प्रकार आपके सब पुत्र भीष्मजीको आगे करके युद्ध में उन पांडवोंसे जिनका अग्रवर्ती शिखंडी था युद्ध करने में प्रवृत्तहुए ४२ उसके पीछे वहां पर भीष्मकी विजय के विषय में कौरवों का भयकारी युद्ध पांडवों के साथ जारीहुआ हे धृतराष्ट्र तब भीष्म जी आपके पुत्रोंकी विजयके ग्लह अर्थात् चौपड़के दांव हुए वहां पर विजय वा पराजय के निमित्त द्यूत प्रारम्भ हुआ, फिर धृष्टद्युम्नने सब सेनाको आज्ञाकरी कि हे श्रेष्ठ रथियो निर्भय होकर भीष्मके सन्मुख चलो मनमें किसी प्रकारका भी सन्देह मतकरो ४५ तब पांडवोंकी सेना अपने सेनापति के वचन

को सुनकर प्राणों के मोहको त्यागकर उस महायुद्ध में शीघ्रही भीष्म के सन्मुख गई ४६ हे महाराज रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजीने उस आईहुई बड़ी सेना को ऐसा रोका जैसे कि महासमुद्र को किनारा रोकताहै ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिपंचदशोपरिशततमोऽध्यायः ११५ ॥

एकसौसोलहका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय शंतनु के पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्मजी दशवें दिन पांडव और सृंजियों के साथ कैसे २ युद्ध करतेहुए और कौरवों ने युद्धमें पांडवोंको कैसे रोका हेसंजय तू युद्ध में शोभापानेवाले भीष्मजी के महाभारी युद्धको मुझ से वर्णन करके कह २ संजय बोले कि हे भरतवंशी कौरव लोगों ने पांडवों के साथ जैसे युद्ध को किया और जैसे युद्ध हुआ वह यथार्थ तुम से कहताहूं ३ अर्जुन के बड़े अस्त्रों से आपके महारथी अत्यन्त क्रोधपूर्वक प्रतिदिन परलोकमें भेजेगये ४ और युद्धको विजय करनेवाले उस कौरवी भीष्मने भी अपने किये हुए सत्यसंकल्पके अनुसार पांडवोंकी सेना का सदैव नाश किया ५ हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र कौरवों समेत भीष्म और धृष्टद्युम्नसमेत अर्जुन इनदोनों युद्धकरनेवालोंको अपने २ विजय करने में सन्देह हुआ ६ फिर उस दशवेंदिन के युद्धमें भीष्म और अर्जुन की सन्मुखता में बारम्बार बड़ी भयकारी प्रलय वर्त्तमानहुई, उसदिनमें शत्रुसंतापी उत्तम अस्त्रों के ज्ञाता भीष्मजीने हजारों बड़े २ शूरवीरों को मारा ८ उनलोगों के नाम और गोत्र अज्ञातकल्पके समान थे अर्थात् नहीं मालूम सेही थे वह युद्ध में पीठ न मोड़नेवाले महाशूर भीष्मजी के हाथ से मारेगये ९ इसके पीछे धर्मात्मा भीष्मजी ने दशदिन तक पांडवी सेनाको अच्छीरीति से संतप्त करके जीवन से वैराग्य पाया १० वह युद्ध में सन्मुख शीघ्रही अपने मरनेका इस रीति से विचार करनेवाला हुआ कि मैं युद्धमें बहुतसे श्रेष्ठ मनुष्यों को नहीं मारूंगा ११ हे महाराज आप के पिता देवव्रत महाबाहु भीष्मजी चिन्ता करके पांडवों के सन्मुख होकर यह वचनबोला १२ कि हे बड़े ज्ञानी सर्वशास्त्रज्ञ पुत्र युधिष्ठिर मेरे इस स्वर्ग के देनेवाले धर्मरूपी वचनों को सुन १३ हे भरतवंशी बेटा मैं इस शरीर से अत्यन्त प्रीति रहित हूं और युद्ध में अनेकों जीवधारियों को मारते हुए मेरा समय व्यतीत हुआ १४ इस हेतुसे जो तू मेरा भला चाहता है तो तू अर्जुन को और इसी प्रकार पांचालदेशियों को और सृंजियों को आगेकर के मेरे मारने का विचार पूर्व्वक उपायकर १५ सत्यदर्शी पांडव राजा युधिष्ठिर उनके इस अभिप्रायके मतकोजानकर सृंजियों समेत युद्ध में भीष्मजी के सन्मुख गया १६ हे राजा उसके पीछे धृष्टद्युम्न और पांडव युधिष्ठिरने भीष्म

जीके ऐसे वचनों को सुनकर सेना को आज्ञाकरी १७ कि चलकर युद्धकरो और युद्धमें सत्यसंकल्प एकही रथसे बिजय करने वाले अर्जुनसे रक्षित होकर तुम भीष्म जी को बिजयकरो १८ निश्चय करके यह बड़ा धनुषधारी सेनापति धृष्टद्युम्न और भीमसेनभी युद्धमें तुम्हारीरक्षाकरेंगे १९ हेसृंजियो अब युद्धमें तुमको भीष्मसे कोई प्रकार का भयनहींहोगा निश्चय करके हम शिखण्डी को आगेकरके भीष्मको बिजयकरेंगे २० वह क्रोधसे मूर्च्छित पांडव दशवें दिन उसी प्रकार का नियम करके ब्रह्मलोक को उत्तम मानते हुए सब मिलकर चले २१ और शिखण्डी को और पांडव अर्जुन को आगे करके भीष्मके गिराने के लिये बड़े उपायोंमें नियतहुए २२ उसके पीछे आपके पुत्रकी आज्ञा से नानादेशों के राजालोग द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा और सेना समेत महाबली धनुषधारी दुश्शासन सब अपने इष्ट मित्र और बिरादरी वालों से युक्त इन सबोंने आकर युद्धमें नियत भीष्मजी को चारोंओर से रक्षित किया २४ इसके पीछे आपके शूरवीर पुत्र भीष्मजी को आगेकरके उन पांडवों से लड़ने के लिये जिनका कि अग्रगामी शिखण्डी था युद्धमें प्रवृत्तहुए २५ फिर वह बानरध्वज अर्जुन चंदेरी देशके और पांचाल देशके लोगोंके साथ शिखण्डी को आगे करके शंतनुके पुत्र भीष्मजी के सन्मुख गया २६ सात्यकी ने अश्वत्थामा को और धृष्टकेतुने कौरवोंको और अभिमन्युने मंत्रियों समेत उसदुर्योधनको युद्धमें सन्मुखहोकर युद्धकिया २७ और सेनासमेत राजा विराटने वार्द्धक्षेमके पुत्र जयद्रथसे सेनासमेत सन्मुखता करी २८ और युधिष्ठिर ने बड़े धनुषधारी सेनासमेत राजा मद्रको सन्मुखपाया और चारों ओरसे रक्षित भीमसेन बड़ी सेनाकीओर चला २९ और मतवाला धृष्टद्युम्न अपने निज भाइयों और नातेदारों समेत उस अजेय सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ स्वाधीन न होनेवाले अश्वत्थामा के सन्मुखगया ३० शत्रुओंका विजयकरने वाला सिंह की ध्वजासेयुक्त राजकुमार बृहद्बल उस कर्णिकारवृक्षकी चिह्नधारी ध्वजावाले अभिमन्युके सन्मुखगया ३१ आपके सब राजा सेनाओंसमेत शिखण्डी और पांडव अर्जुन के मारनेके इच्छावान् युद्धमें अर्जुनके सन्मुख दौड़े ३२ उस समय उन भयानक सेनाओं समेत तुम्हारे पुत्रोंके दौड़ने से पृथ्वी अच्छेप्रकार से कंपायमान हुई ३३ हे भरतर्षभ भीष्मजी को युद्धमें देखकर आपके पुत्रों की और पांडवोंकी सेनापरस्परमें बड़े २ पराक्रमोंको कर करके लड़ीं ३४ इसके पीछे उन अत्यन्त पीड़ामान परस्पर दौड़नेवालों का बड़ा भारी महाशब्द सब ओरको जारीहुआ ३५ और शंख दुन्दुभियों के शब्द वा हाथियोंकी चिंघाड़ अथवा सेनाके मनुष्योंके सिंहनादोंसे महाभारी भय उत्पन्नहुआ ३६ सब राजाओंका चन्द्रमा और सूर्यकेसमान तेज वा शूर-

वीर लोगोंके बाजूबन्द और मुकुटप्रभा से रहित होगये, ३७ शस्त्ररूपी बिजलीसे युक्त धूलके बादल उत्पन्न हुए और धनुषों के भी भयकारी शब्दवर्त्तमान हुए, ३८ दोनों सेनाओंका आकाश शक्ति पाश और दुधारे खगड और बाणों केसमूहोंसे व्याप्त होकर प्रभासे रहित होगया ४० उस बड़े भारी युद्धमेंरथी घोड़े हाथी ऐसे परस्पर में लड़े कि हाथीको हाथीने पदाती को पदाती ने मारा, हे नरोत्तम वहां भीष्मके कारण पांडव और कौरवोंका ऐसा महा भारीयुद्ध हुआ जैसा कि पराये मांस के निमित्त दो बाज पक्षियोंका युद्ध होता है ४२ उन विजयाभिलाषी शूरवीरों का भयानक युद्ध परस्पर में एक एकके मारने के निमित्त वर्त्तमान हुआ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषोड्शोपरिशततमोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

एकसौसत्तरहका अध्याय ॥

संजय बोला हे महाराज पराक्रमी अभिमन्यु ने भीष्मके कारण बड़ी सेनासे संयुक्त आपके पुत्रसे युद्ध किया, १ तब क्रोधयुक्त दुर्य्योधन ने झुकी गांठवाले नव बाणों से अभिमन्यु को व्यथित करके तीन बाणों से फिर उस को घायल किया २ तब अत्यन्त कोपयुक्त अभिमन्यु ने मृत्यु के समान भयकारी शक्ती को दुर्य्योधनके रथपर चलाया ३ हे राजा आपके पुत्र महारथी ने उस अकस्मात् गिरती हुई भयकारी शक्ती को क्षुरप्र बाणों से दोखंड कर दिये ४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अभिमन्यु ने उसटूटकर गिरीहुई शक्ती को देखकर दुर्य्योधन की भुजा और छाती को तीन बाणों से घायल करदिया हे राजा वह भयकारी युद्ध अपूर्व्व रूप का चित्तका आनन्द देने वाला सब राजाओंसे पूजित हुआ, वह सुभद्राका पुत्र और कौरवोंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधन दोनों शूरवीर भीष्म के मारने वा अर्जुनके विजय के निमित्त युद्ध करने वाले हुए शत्रुओं के तपाने वाले युद्ध में बेगवान् ब्राह्मणों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ने सात्यकी को नाराचनाम बाण से छातीपर घायल किया ९ फिर बड़े बुद्धिमान् सात्यकी ने भी गुरू के पुत्रको नवबाणों से सब मर्मस्थलों में घायल किया १० तिस पीछे अश्वत्थामा ने सात्यकी को नव बाणों से छातीपर और तीस बाणों से भुजाओंपर घायल किया ११ द्रोणाचार्य्य के पुत्रसे अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी यशवान सात्यकी ने अश्वत्थामा को तीन बाणों से घायल किया १२ महारथी पौरवने बड़े धनुषधारी धृष्टकेतु को बाणों से ढककर अत्यंत घायल किया, इसी प्रकार महारथी धृष्टकेतु ने शीघ्रतासे तेजधार वाले बाणोंसे पौरव को घायल किया १४ फिर महारथी पौरव धृष्टकेतु के धनुष को काट कर महा घोर शब्द से गर्जा और तीव्र बाणों से घायल किया १५ हे

महाराज उसने दूसरे धनुष को लेकर शिलीमुख नाम तीक्ष्ण बाणों से पौरव को व्यथित किया १६ तब वहां उन दोनों बड़े धनुषधारी शोभायमान महारथियों ने बाणों की बड़ी वर्षासे परस्परमें घायल किया १७ वह दोनों क्रोध युक्त परस्परमें धनुष काटकर वा घोड़ों को मारकर विरथ हो खड्गप्रहारी युद्ध करने के लिये सन्मुख हुए १८ हे राजा वह दोनों शूरवीर अत्यन्त स्वच्छ सूर्य चन्द्रमा से प्रकाशित खड्ग और उत्तम चित्रों से चित्रितढालों को १९ लेकर परस्पर में ऐसे सन्मुख गये जैसे कि महा बनमें सिंहनी के मिलाप में उपाय करने वाले दो सिंह होतेहैं २० परस्पर दिखलाने और चाहते हुए दोनों वीरों ने विचित्र दाहेंबायें मंडलों को किया २१ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त पौरव बड़े खड्गसे धृष्टकेतु को शंखनाम अंगमें घायल करके अर्थात् बाणोंके नीचे छाती के ऊपर इधर उधरके हाड़ों में प्रहार करके तिष्ठ तिष्ठ यह शब्दबोल २२ राजा चन्देरीने भी युद्ध में पौरव को तीक्ष्ण धार वाले बड़े खड्ग से जत्रुदेश नाम अंगमें अर्थात् जावड़े में घायल किया २३ हे शत्रुहन्ता वह दोनों महा युद्धमें परस्पर भिड़े हुए तीव्रता से परस्पर घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े २४ उसके पीछे आपका पुत्र जितसेन युद्ध भूमिमें पौरवको अपने रथपर सवार करके उसी रथके द्वारा युद्धभूमि से दूर लेगया २५ फिर माद्रीका पुत्र प्रतापवान् शूर पराक्रमी सहदेव युद्धमें धृष्टकेतु को दूरलेगया २६ चित्रसेन ने सुशर्मा को बहुत से लोहे के बाणों से घायल करके फिर साठ बाण से और नव बाणों से घायल किया २८ तब उस क्रोधयुक्तने भी उस चित्रसेन को झुकी गांठ वाले ३० बाणों से घायल किया फिर उसने उसको घायल किया, २९ हे राजा भीष्मके युद्धमें यशकीर्त्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ातेहुए अभिमन्यु ने बृहद्बल नाम राजकुमार से युद्ध किया ३० और अर्जुन के कारण से भीष्म की युद्धभूमि में पराक्रम करने वाला हुआ और राजा कौशिल ने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को पांच लोहे के बाणों से बेध कर ३१ फिर गुप्तग्रन्थी वाले बीस २० बाणसे घायल किया और अभिमन्यु ने राजा कौशिलको आठलोहे के बाणों से घायल और कम्पायमान करके उसके धनुष को भी काटा ३३ और कंकपक्षवाले तीस बाणों से भी घायल किया उस युद्ध में क्रोधयुक्त राजकुमार बृहद्बलने दूसरेधनुषको लेकर ३४ अभिमन्यु को बहुत से बाणों से घायल किया हे शत्रुओं के संतप्त करनेवाले उन दोनों का युद्ध भीष्म के कारण ऐसा अच्छा हुआ जैसा कि देवता और असुरों के युद्ध में राजा बलि और इन्द्रका हुआथा ३५, ३६ भीमसेन रथों की सेनासे लड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बज्रको धारण करनेवाला इन्द्र उत्तम पर्वतों को फोड़ता हुआ शोभित होताहै ३७ भीमसेनके हाथ से घायल पर्वतों के

समान वह सब हाथी एक साथही पृथ्वी को शब्दायमान करतेहुए भूमि पर गिरे ३८ पर्वतके समान टूटेहुए अंजनके समान वह हाथी पृथ्वीपर वर्त्तमान ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि टूटेहुए पहाड़ होतेहैं ३९ बड़ी सेना से रक्षित बड़े धनुषधारी युधिष्ठिर ने युद्ध में सन्मुख आयेहुए राजा मद्रको पीड़ामान किया ४० फिर क्रोधयुक्त महारथी राजा मद्र ने भीष्म के कारणसे धर्मपुत्र युधिष्ठिरको पीड़ामान किया ४१ राजा सिन्धने गुप्तग्रन्थीवाले नव बाणों से विराट्को वेधकर तीस बाणों से घायल किया ४२ फिर बाहिनीपति विराट्ने राजा सिन्धको तीक्ष्ण धारवाले तीस बाणों से छाती में घायल किया ४३ वह दोनों जड़ाऊ धनुष खड्ग बर्म ध्वजा शस्त्रवाले अपूर्व रूप विराट् और जयद्रथ युद्धमें महाशोभायमान हुए ४४ द्रोणाचार्य्य ने अपूर्व युद्ध के बीच धृष्टद्युम्न के साथ बढ़कर गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से महाप्रबल युद्ध किया ४५ इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्न के बड़े धनुष को काटकर पचास बाणसे उसको वेधा ४६ फिर धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर द्रोणाचार्य्य के देखते हुए शायकों को चलाया ४७ उस महारथीने बाणों के प्रहारसेही उन बाणों को काटा फिर द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्न के लिये पांच शायकोंको चलाया ४८ इसके पीछे क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने यमदण्ड के समान गदाको द्रोणाचार्य्य के ऊपरफेंका ४९ और द्रोणाचार्य्य ने उस गिरनेवाली गदाको पचास बाणोंसे रोका ५० हे राजा द्रोणाचार्य्य के धनुष से निकलेहुए बाणों ने उस गदाको चूर्ण करके पृथ्वी पर गेरा ५१ शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न ने गदाको टूटीहुई देख कर सब लोहमयी दृढ़शक्ती को द्रोणाचार्य के ऊपरफेंका ५२ फिर द्रोणाचार्य ने भी उस बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्न को पीड़ित किया ५३ हे राजा इस प्रकार भीष्मके सन्मुख द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्नका महा भयानकरूप युद्ध हुआ५४ फिर तीक्ष्ण बाणों से सबको पीड़ित करता हुआ गांगेय भीष्मजी को पाकर उनके सन्मुख ऐसा गया जैसे कि बन में अत्यन्त मतवाला हाथी मदोन्मत्त गजेन्द्रके सन्मुख होवे ५५ प्रतापवान् महाबली राजा भगदत्त तीन अंगों से मदचूनेवाले महा मतवाले हाथी की सवारी से सन्मुख गया ५६ तब अर्जुन बड़े उपाय में नियत होकर उस गजेन्द्र ऐरावतके समान महाबली गिरतेहुए हाथी के सन्मुख हुआ ५७ उसके पीछे प्रतापवान भगदत्तने बाणों की वर्षा से ढक दिया ५८ फिर अर्जुनने चांदीके समान स्वच्छ लोहेके बाणों से उस आतेहुए हाथी को वेधा ५९ हे महाराज फिर अर्जुन ने शिखण्डी को भीष्म की ओर प्रेरित किया और कहा कि जाओ २ इसको मारो ६० हे पांडु के ज्येष्ठभ्राता धृतराष्ट्र फिर राजा प्राग्ज्योतिष अर्जुनको छोड़कर शीघ्रही द्रुपद के रथके समीपगया ६१ इसके पीछे अर्जुन शिखण्डीको आगेकरके शीघ्रही

भीष्मके सन्मुखगया और युद्ध जारी हुआ ६२ तदनन्तर आपके शूरवीर पुत्र पुकारते हुए बड़े बेगसे अर्जुन के सन्मुख दौड़े वह आश्चर्यसा हुआ ६३ वहां अर्जुन ने आपके पुत्रोंकी नानाप्रकार की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि बायु आकाशमें बादलोंको छिन्नभिन्न करदेताहै ६४ फिरउससावधान शिखण्डीने भरतबंशियोंकेपितामह भीष्मकोपाकर अनेकबाणोंसे ढकदिया ६५ उस रथरूप अग्निशाला और धनुषरूप ज्वाला वा खड्ग शक्तीरूप इन्धन वा बाण समूहरूप प्रज्वलितरूप वाले भीष्मने युद्धमें क्षत्रियोंको भस्म कर दिया ६६ जैसे कि बन में बृद्धियुक्त बड़ी अग्नि बायु के साथ घूमती है उसी प्रकार दिव्यअस्त्रोंको चलाते हुए भीष्मजी भी अग्निकी वर्षा करनेवाले हुये ६७ भीष्मजीने अर्जुन के पीछे चलने वाले सोमकों को मारकर सब सेना को भी रोका ६८ हे राजा भारी युद्धमें दिशा और विदिशाओंको शब्दाय मान करते और सुनहरी पुंखवाले वा गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे ६९ रथी घोड़े और सवारोंको गिराते हुए भीष्मने रथके समूहोंको मुण्ड ताल बनोंके समान कर दिया ७० सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ भीष्मने युद्धमें रथ हाथी और घोड़ों को सवारों से रहित किया ७१ हे राजा उसके धनुष प्रत्यंचा के बज्रके समान शब्दको सब ओर से सुनकर सब सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई ७२ इसके पीछे वह बाण बारम्बार सफल होकर गिरे और भीष्मके धनुषसे निकले हुए बाण शरीरों में लग २ कर पारही होगये ७३ हे राजा मैंने तीव्रगामी घोड़ों से युक्त और बायुके समान चलने वाले रथोंको बिना सवारोंके धरेहुए देखा ७४ चन्देरी काशी कोश देशियोंके कुलीन महारथी शरीरके मोहको त्याग-ने वाले महा प्रसिद्ध युद्धसे मुख न मोड़नेवाले अतिशूर सुनहरी ध्वजावाले घोड़े रथ हाथियों समेत उस मृत्युके समान भीष्मको युद्धमें पाकर परलोक को सिधारे हे राजा उसयुद्ध में सोमकों का ऐसा कोई महारथी नहीं हुआ ७६।७७ जो युद्धभूमिमें भीष्मकोपाकर जीवता हुआ जावे सबमनुष्योंने भी-ष्मजी के पराक्रम को देखकर उन सब शूरबीरोंको यमपुर को पहुंचा हुआही माना युद्धमें ७८, ७९ श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले बीर अर्जुन और बड़े तेजस्वी पांचालदेशी शिखण्डी के सिवाय कोई महारथी उनके सन्मुख नहीं गया ८० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७ ॥

एकसौअठारहका अध्याय ॥

संजय बोले हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र शिखण्डीने युद्धमें भीष्मजी को पाकर तीक्ष्ण धारवाले दश भल्लों से छाती में घायल किया १ फिर तिरछी दृष्टि

से भस्म करते हुए भीष्मजी ने क्रोधयुक्त नेत्रोंसे शिखण्डीको देखा२ हेराजा उसके स्त्रीपनको ध्यान करते हुए भीष्मजी ने सबके देखतेहुए प्रहार नहीं किया और उस शिखण्डीने उसको नहीं जाना ३ इसके पीछे अर्जुनने शिखण्डी से कहा कि शीघ्रही इन पितामह को सन्मुख चलकर मारो ४ हे वीर मैंने मारनेकीही इच्छा से तुझको आगे किया है कि तुम इस महारथी भीष्म को मारो मैं युधिष्ठिर की सेनाभर में किसी औरको ऐसा नहीं देखताहूं जो तेरे सिवाय इस प्रबल युद्धमें भीष्मजी के सन्मुख युद्ध करनेको समर्थ होवे हे पुरुषोत्तम मैं यह सत्यहीसत्य कहताहूं ५ । ६ फिर अर्जुनसे इसरीति से कहे हुए शिखण्डीने शीघ्रही नाना प्रकारके बाणोंसे पितामहको ढक दिया ७ इस के पीछे आपके पिता देवव्रत भीष्मजीने उन बाणों को तुच्छ समझकर क्रोधयुक्तहोके युद्धभूमिमें अर्जुनको शायकोंसेरोका८ इसी प्रकार उसमहारथी अर्जुनने सबसेनाको अपनेबाणोंसे परलोकमें भेजा९इसप्रकारबड़ीसेना समेत पाण्डवों ने भीष्मको ऐसे घेरलिया जैसे कि बादल सूर्यको घेरलेतेहैं १० फिर चारों ओर से घिरेहुए भीष्मजी ने शूरवीरोंको ऐसा भस्मीभूत किया जैसेकि कोपित अग्नि वनको भस्मकरदेताहै ११ वहांहमने आपकेपुत्रके पुरुषार्थको देखा जो अर्जुनसे युद्धकरके पितामह को रक्षित किया। १२आपके धनुषधारी पुत्र दुश्शासन के उस कर्मसे युद्धमें सब लोगों को विश्वासहुआ कि १३ इस अकेलनेही अर्जुन से उसके सब साथी पाण्डवों समेत युद्ध किया और प्रत्यक्ष में उसको पाण्डव लोग युद्धसे नहीं हटासके १४ उस युद्धमें दुश्शासन के हाथ से रथी विरथ हुए और बड़े धनुषधारी सवार और महाबली हाथी १५ तीक्ष्णबाणों से घायल होकर पृथ्वीपर गिरे और इसी प्रकार बाणों से पीड़ामान अन्य हाथी चारों दिशाओं में भागे १६ जैसे कि अग्नि इन्धन को पाकर प्रकाशित ज्वलित होकर प्रत्यक्ष कोपयुक्त होती है उसी प्रकार पाण्डवों की सेनाको जलाता हुआ आपका पुत्र भी ज्वलित अग्नि के समान होगया १७ हेभरतवंशीपाण्डवों के किसी महारथीने श्वेतघोड़े वाले श्रीकृष्ण महाराजको सारथी बनानेवाले महारथी इन्द्रके पुत्र अर्जुनके सिवाय उस बड़े शोभायमानके विजय करनेको साहस और उत्साह नहींकिया और न किसी रीतिसे सन्मुख जानेका विचार किया १९ हे राजा फिर वह विजयी अर्जुन युद्धमें उसको जीतकर सब सेनाके देखतेहुए भीष्मजी के सन्मुखगया और वह पराजय पानेवाला आपकापुत्र महामदोन्मत्त उन भीष्मजीकी भुजाओं का आश्रयलेकर २० बारंबार साहस्यको करके फिर युद्ध करनेलगा तब वह अर्जुन युद्धमें लड़ताहुआ महा शोभायमान हुआ २१ हे राजा फिर शिखंडी ने युद्धमें वज्रके समान स्पर्शवाले विषभरे सर्पके समान बाणोंसे पितामह को

घायल किया २२ उन बाणों से आपके पिताकुछ भी पीड़ित नहीं हुए उस समय आश्चर्य्य करते हुए भीष्मजीने उन बाणों को सह लिया २३ जैसे प्याससे दुःखी मनुष्य जलकी धाराओं को चाहताहै उसी प्रकार भीष्मजी ने शिखण्डीकी बाणधाराओं को सहजहीमें सहलिया २४ फिर क्षत्रियोंने महात्मा पांडवों की सेनाओं के भस्म करने वाले भीष्मजी को युद्धमें भयंकर देखा २५ इसके पीछे आपका पुत्र सब सेनाओं से बोला कि युद्ध में सब ओर से अर्जुनके सन्मुख जाओ २६ धर्म के जानने वाले भीष्मजी युद्धमें तुमसब की रक्षा करेंगे वह भयको अत्यन्त त्यागकरके पांडवों के सन्मुख युद्ध करते हैं युद्धमें धृतराष्ट्र के सब पुत्रों के सुखरूप चित्त की रक्षाकरते हुए भीष्मजी सुनहरी तालध्वजा समेत नियत हैं २८ बड़े २ उपाय करने वाले देवता लोग भी भीष्म के सन्मुख खड़े होने को समर्थ नहीं हैं तो मरण धर्मवाले पांडव उस महात्मा के सन्मुख होनेको कैसे समर्थ होसक्तेहैं २९ इस निमित्त मेरे सब शूरबीर लोग जाकर युद्ध में अर्जुन को पाकर संग्राम करो अब युद्ध में चैतन्य होकर मैं तुम सब राजाओं समेत पांडव युधिष्ठिरसे लडूंगा हे राजा आप के धनुषधारी पुत्रके इस बचन को सुनकर ३०, ३१ सब शूरबीर लोग अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबली विदेह (कलिंग) (दासैरक गण) (निषाद) (सौबीर) (बाल्हीक) दरद और (पश्चिमोत्तरीय राजा लोग) मालव ३३ (अभिषाह शूरसेन) (शिवय) (वशातय) शाल्वशक त्रिगर्त्त केकयों समेत (अम्बष्ट) ३४ यह सब उस महायुद्ध में अर्जुनके सन्मुख दौड़े हेराजा जैसे कि पतंग और शलभा अग्नि में गिरते हैं इसी प्रकार युद्धमें उस अद्वितीय अर्जुन की ओरको दौड़े ३५ फिर उसमहाबली अर्जुनने दिव्य अस्त्रोंको विचार पूर्व्वक प्रयोग करके उन बड़े उत्तम दिव्य अस्त्रों और बाणों के उष्ण तेजसे शीघ्रही इन सबसेना समेत महारथियों को ऐसे भस्म किया जैसे कि अग्नि पतंगोंको भस्म करदेताहै ३६, ३७ उसमहाबली अर्जुनका वह गांडीव धनुष हजारों बाणों को छोड़ताहुआ आकाश में प्रकाशमान दृष्टपड़ा, वह बाणोंसे पीड़ामान राजालोग जिनकी बड़ी २ ध्वजा टूटगईथीं एक साथ उस वानरध्वज अर्जुन के सन्मुख बर्त्तमान नहीं रहे ३९ अर्जुनके बाणोंसे घायल रथी लोग ध्वजाओं समेत और घोड़ों समेत अश्वारूढ़ वा हाथियों समेत हाथियोंके सवार पृथ्वीपर गिरे ४० इसके पीछे अर्जुन के हाथोंके छूटे हुएबाणों से और चारों ओरसे राजाओंकी भगीहुई सेनाओं से पृथ्वी व्याप्त होगई ४१फिर अर्जुनने सेनाको भगाकर दुश्शासनके ऊपर बहुतसे बाणोंकी वर्षाकरी ४२वह लोहेके सबबाण आपके पुत्र दुश्शासनको४३ बेधकर पृथ्वीमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि सर्पबामीमें प्रवेश करताहै तदनन्तर प्रभु अर्जुनने उसके घोड़ोंको

मारकर सारथीको गिराया और बीसबाणसे विविंशतिको रथसे विरथ करदिया ४४ और झुकी गांठवाले पांच बाणों से अत्यन्त घायल भी किया इसी रीति से उसश्वेत घोड़ेवाले अर्जुनने (कृपाचार्य्य) कर्ण और शल्यको बहुतसे लोहे के बाणोंसे बेधकर विरथकरदिया हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसप्रकार वह सबकृपाचार्य्य और शल्य विरथ हुए ४५, ४६ और युद्ध में अर्जुनसे पराजित दुश्शासन विकर्ण और विविंशति मुखको मोड़गये४७ हेभरतर्षभ मध्याह्नकालमेंअर्जुन महारथियों को विजय करके युद्धमें निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशमान हुआ ४८ इसीप्रकार बाणों की वर्षा से अन्य राजाओं को वा महारथियों के मुखों को फिरवा के युद्ध में रुधिर रूप जल रखनेवाली बड़ी नदी को जारी किया ५० फिर पांडव और कौरवोंकी सेनाओंमें बहुधाहाथी घोड़े और रथोंके समूह रथियों के हाथ से मारे गये ५१ हाथियों से रथ और पैदलोंसे घोड़ेमारे गये और बीचमेंसे कटेहुए हाथी घोड़े रथ और बीरसवारों के शरीर दिशाओं में गिरे हे राजाकुण्डल बाजूबन्द धारण करनेवालों से युद्धभूमि आच्छादित होगई ५२, ५३ और गिरे वा गिरतेहुए महारथी राजकुमारों से वा रथों की नेमियों से कटे और मरेहुए हाथियों से भी वह युद्धभूमि ढकगई ५४ पैदल भी दौड़े और अश्व सवार जंघी घोड़ों समेत दौड़े वा हाथी घोड़े और रथों के शूरवीर चारोंओर से गिरे ५५ और वह रथ जिनके पहिये जुए ध्वजा टूट गई थीं पृथ्वी पर पड़ेहुए हाथी घोड़े और रथ समूहों के रुधिर से छिड़कीहुई वा ढकीहुई वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि शरदऋतुका लाल बादल होताहै फिर कुत्ते कौवे गिद्ध भेड़िये शृगाल और विपरीत रूपके पशु पक्षी अपने भक्षको पाकर शब्द करने लगे और सब दिशाओं में अनेक प्रकार की वायु चली ५८ राक्षसों के देखने और जीवों के शब्द करने पर सुनहरी रस्सी वा माला वा बहुमूल्य की पताका ५९ अकस्मात् हवासे चलायमान होकर दृष्टिगोचर हुई हजारों श्वेतछत्र वा बड़े २ रथ ध्वजाओं समेत टूटेहुए दिखाईपड़े और बाणों से पीड़ामान हाथी पताकाओं समेत चारों दिशाओं को चलेगये ६०, ६१ हे महाराज गदाशक्ति और धनुष के धारण करनेवाले क्षत्रीलोग चारोंओर से पृथ्वी पर पड़ेहुए दृष्ट आये ६२ इस के पीछे भीष्मजी ने दिव्य अस्त्रों को प्रकट किया और सब धनुषधारियों के देखते हुए अर्जुन के सन्मुख दौड़े ६३ तब शस्त्रों से अलंकृत शिखण्डी उन भीष्मजी के सन्मुख पहुंचा इसको देखतेही भीष्मजीने उस अग्निके समान प्रकट कियेहुए अस्त्रको खैंचलिया ६४ हे राजा श्वेत घोड़े रखनेवाले मझले पाण्डव अर्जुनने शीघ्रही पितामहको मोहित करके आपकी सेनाको मारा६५॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिअष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८ ॥

एकसौउन्नीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरतबंशी इस रीति से उन बहुतसी सेनाओं के तैयार होने पर युद्ध में मुख न मोड़नेवाले सब शूरबीर ब्रह्मलोक को उत्तम मानने वाले वर्त्तमान् हुए, इस तुमुल युद्ध में सेना से सेना नहीं भिड़ी किन्तु इस रीति से लड़े कि रथी रथियों से पदाती पदातियों से घोड़े घोड़ों से हाथी हाथियों के सवारों से युद्ध करनेवाले हुए हे राजा उन्मत्तके समान युद्ध करने वाली दोनों सेनाओंको बड़ा भयकारी दुःख वर्त्तमान हुआ अर्थात् सबप्रकार से मनुष्य और हाथियों के मरनेपर उस भयकारी नाशरूप प्रलयमें अनीति जारीहुई इसके पीछे (शल्य) (कृपाचार्य्य) (चित्रसेन) (दुश्शासन) बिकर्ण इन सब शूरों ने प्रकाशित रथों पर सवार होकर पाण्डवों की सेनाको बहुत कम्पायमान किया हे राजा युद्ध में महात्माओं के हाथसे घायल पाण्डवोंकी सेना अनेक प्रकारसे ऐसे घूमी जैसे कि जलमें बायुके कारण नौका घूमती है, जैसे कि माघ फाल्गुन के समय में लोग गोभियों के मर्मों को करते हैं उसीप्रकार भीष्मजी पाण्डवों के मर्मों को काटते हैं ८ महात्मा अर्जुन के हाथ से तुम्हारी सेना के बहुत से हाथी जो कि नवीन बादल के समान थे युद्ध में गिराये गये ९ अर्जुनके हाथ से सेना के प्रधान लोग मर्द्दन कियेहुए दृष्ट आते हैं और वहां पर नाराच नाम बाणों से घायलहुए हज़ारों १० बड़े २ हाथी दुःखसे महाभयानक शब्दोंको करके गिरपड़े मृतक हुए महात्माओं के भूषणों से अलंकृत शरीरों से ११ और कुण्डलधारी शिरों से ढकीहुई युद्धभूमि बड़ी शोभायमान हुई हे राजा उत्तम बीरोंके बड़े नाश होने पर युद्धमें भीष्म और पाण्डव अर्जुनको परस्पर में चढ़ाइयां होनेपर वह आपके सब पुत्र जिनके कि आगे सेना चलतीथी युद्धमें पितामहको पराक्रम करने वाला देखकर स्वर्गकोही श्रेष्ठ स्थान मनाकर युद्धमें मरण को चाहते हुए १३ । १४ उस उत्तम बीरोंके नाशमें पाण्डवों के सन्मुख हुए हे महाराज ब्रह्मलोकके लिये युद्धमें प्रवृत्त शूर बीर पाण्डव पूर्ब समयमें पुत्र समेत आप के दिये हुए नाना प्रकारके कष्टोंको स्मरण करते युद्धमें भयको त्याग करके १५,१६ अत्यन्त प्रसन्नके समान आपके पुत्र और शूरबीरों से लड़ते हैं फिर महारथी सेनापति ने अपनी सेनासे कहा कि सब सृंजियों समेत सोमक लोग शीघ्र भीष्मके सन्मुख चलो वह सोमक और सृंजयनाम क्षत्री सेनापति के बचनको सुनकर १८ शस्त्रोंकी बर्षासे घायलहुए भीष्मजी के सन्मुख गये हे राजा इसके पीछे आपके पिता भीष्मजी महा घायल और क्रोध के बशीभूत होकर उन सृंजियों से युद्ध करनेलगे हे तात पूर्वसमय में बुद्धिमान्

परशुरामजी ने उस नेकनामको अच्छे प्रकारसे शिक्षाकरी जोकि शत्रुकी सेनाके नाश करनेवाले और कौरवोंके वृद्ध पितामह भीष्मने उस शिक्षाको काममें लाकर शत्रुओंकी सेना का नाशकरते हुए प्रतिदिन पाण्डवोंकी दश हजार सेनाको मारा २१। २२ हेभरतर्षभ उस दशवें दिनके वर्त्तमान होनेपर अकेले भीष्मने युद्धमें मत्स्य और पांचाल देशी सेनामें २३ दश हजार हाथियोंका यूथ मारकर सात महारथी मारे फिर पांच हजार रथियोंको मारकर प्रबल युद्धमें मनुष्यों के चौदह हजार समूहको मारके हाथियोंके बहुत हजार और घोड़ों के दश हजार यूथ पराक्रम के द्वारा आपके पिताके हाथ से मारे गये इसके पीछे सब राजाओंकी सेनाको इधर उधर करके २६ बिराटके प्यारे भाई शतानीकको रथसे गिराया हे राजा प्रतापवान् भीष्मने शतानीकको मार कर २७ हजारों राजाओंको भल्लोंसे मारडाला और जो कोई राजा पांडवों के वा अर्जुनके आगे पीछे चारों ओर को चलनेवाले थे २८ वह राजालोग भी भीष्मको पाकर यमलोकको सिधारे भीष्मजीने इस रीतिसे बाणों के जालों से चारों ओर की दशों दिशाओंको ढक दिया २६ और आप पाण्डवों की सेनाको उल्लंघन करके सेना मुखपर नियत हुआ वह उस दशवें दिन में बड़े कर्मको करके ३० धनुषको हाथमें पकड़नेवाला दोनों सेनाओंके मध्य में नियत हुआ कोई राजा लोग युद्धमें उसके देखनेको ऐसे समर्थ नहींहुए ३१ जैसे कि ग्रीष्म ऋतुमें आकाश स्थल संतप्त करते सूर्य्यको नहीं देखसक्ता और जैसे कि इन्द्रने युद्धमें दैत्योंकी सेनाको तपाया ३२ इसी प्रकार भीष्म जी ने पाण्डवों के शूरवीरों को भी संतप्त किया मधुदैत्य के मारनेवाले देवकी के पुत्र श्रीकृष्णजी इस प्रकार पराक्रम करनेवाले भीष्मको देखकर अपने मित्र अर्जुनसे बोले कि यह शांतनुका पुत्र भीष्म दोनों सेनाओंमें नियत है ३३,३४ बड़े बलसे इसको मारकर तेरी विजय होगी तू बलसे इसको वहां नियत कर जहां यह सेना घायल होती है ३५ हे समर्थ भीष्मके बाण सहने को कोई साहस नहीं करताहै इसके अनन्तर उस क्षणमें प्रेरित बानरध्वज अर्जुनने ३६ बाणोंसे भीष्मको ध्वजा रथ और घोड़ों समेत गुप्त करदिया फिर उस प्रतापी भीष्मने भी पाण्डवों के चलाये हुए बाण समूहोंको अपने बाणोंसे अनेक प्रकार करके छिन्न भिन्न करदिया ३८ इसके पीछे राजा द्रुपद और पराक्रमी धृष्टकेतु पाण्डव (भीमसेन) (धृष्टद्युम्न)(नकुल) (सहदेव) (चेकितान) पांचोभाई (केकय) ३६ महाबाहु(सात्यकी) (अभिमन्यु)(घटोकच) द्रौपदीके (पांचो पुत्र) (शिखण्डी) पराक्रमी राजा कुन्तभोज ४० (सुशर्मा) राजा विराट् यह सब और अन्य बहुतसे पाण्डवों के शूरवीर भीष्मजीके शायकोंसे पीड़ामानहुए ४१ अर्जुनके हाथसे पीड़ित शूरवीर शोक

समुद्रमें डूबगये इसके पीछे बड़ी तीव्रतासे शिखण्डी उत्तमधनुषको लेकर ४२ अर्जुन से रक्षाकियाहुआ भीष्मके सन्मुखचला युद्धके प्रकारोंकाज्ञाता अजेय अर्जुनके सब साथियों को मारकर उनके सन्मुख चला (सात्यकी) (चेकितान) (धृष्टद्युम्न) ४४ विराट् द्रुपद माद्री के दोनों पुत्र यहसब दृढ़ धनुषयुक्त अर्जुनसे रक्षित होकर युद्धभूमिमें भीष्मके सन्मुख गये ४५ और अभिमन्युवा द्रौपदीके पांचोपुत्र यह भी बड़े शस्त्रोंके धारणकरनेवाले युद्ध में भीष्मकी ओर चले ४६ और दृढ़धनुषधारी युद्धमें मुख न मोड़नेवाले बाणोंसे घायल उन सबने भी पितामह भीष्मको बाणोंकी बड़ीबर्षासे आच्छादित किया ४७ फिर प्रसन्नचित्त भीष्मने उन बाणसमूहोंको जिनको किउत्तम राजाओंने छोड़ा था काटकर पांडवोंकी सेनाको मझाया ४८ क्रीड़ा करतेहुए पितामहने बाणों को निष्फलकर बारंबार आश्चर्य्य युक्त होकर उसके स्त्रीपने को स्मरणकरके बाणोंको पांचालदेशी शिखंडीपर नहीं चलाया फिर उस महारथीने द्रुपदकी सेनामें सात रथियोंकोमारा ४९,५० इसके अनन्तर क्षणमात्रहीमें उसअकेले की ओर दौड़तेहुये (मत्स्य) (पांचाल) और चंदेरी देशके क्षत्रियों का कलकला शब्द उत्पन्नहुआ ५१ हे शत्रुसंतापी उन मनुष्यों ने रथके समूह और बाणों से उस युद्ध में शत्रुके तपानेवाले भागीरथी के पुत्र अकेले भीष्म को ऐसे ढक दिया जैसे कि बादल सूर्य्यको ढकदेते हैं इसके पीछे देव दानवोंके समान दोनोंके युद्धमें अर्जुनने शिखंडीको आगेकरके भीष्म को मोहित किया ५२, ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकोनविंशदधिकशततमोऽध्यायः ११९ ॥

एकसौबीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसप्रकारसे उन सब पांडवों ने शिखंडीको आगे करके और युद्धमें चारों ओरसे भीष्मजीको घेरकर घायल किया १ बड़े भयानक (शतघ्नी) (परिघ) (फरसे) (मुद्गल) मुशल प्रास क्षेपणी कनकपुंखवाले शरशक्ति तोमर कंपन नाराच वत्सदन्त भुशुंडी आदि अनेक शस्त्रोंके द्वारा युद्ध में सब सृंजियों ने एकसाथही भीष्म को बहुत प्रकार से घायल किया तब वह भीष्म टूटे कवच बहुतशस्त्रोंसे पीड़ामान ४ और मर्मस्थलोंके घायलहोने परभी दुःखी नहीं हुए जिसकेबाण और अस्त्रों से प्रकटहोनेवाली प्रकाशित अग्नि और रथकी चक्रधारा का शब्द वा पट्टिश आदि बड़े २ अस्त्रोंका प्रकाश और जड़ाऊ धनुषवाले बड़े२ शूरवीरोंकानाशही बड़ाईंधनथा ६ वह प्रलयाग्निके समान शत्रुओं के सन्मुखहुआ और अवकाश पाकर रथोंके समूहोंमें से बाहर निकलगया फिर राजाओंके मध्यमें वर्त्तमान होकर

घूमता दृष्टपड़ा इसके पीछे राजा पांचाल और धृष्टकेतुको ध्यान न करके पांडवोंकी सेनाके मध्यवर्त्तीहोकर भीष्मजी ने (सात्यकी) (भीमसेन) (अर्जुन) (द्रुपद) (विराट) (धृष्टद्युम्न) इन छःमहारथियोंको बड़े भयकारी युद्धमें घायलकरनेवाले उत्तम तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया फिर उन महारथियोंने उनके उन तीक्ष्णबाणों को दूरकरके बड़ेवेगसे दश दशबाणों के द्वारा भीष्मजीको पीड़ामान किया और महारथी शिखंडीने सुनहरीपुंखवाले शिला पर तीक्ष्णकिये बाणोंको मारा वह बाण शीघ्रही भीष्मजीके शरीरमें प्रवेश करगये इसके पीछे क्रोध युक्त अर्जुनने शिखंडीको आगेकरके भीष्मजी के सन्मुख दौड़कर उनके धनुषको काटा फिर (द्रोणाचार्य्य) (कृतवर्मा) महारथी (जयद्रथ) (भूरिश्रवा) (शल्य) और भगदत्त भीष्मके धनुषकोतोड़ना न सहकर बड़े क्रोधयुक्त होकर सातोंमिलकर अर्जुनके सन्मुखगये वहां दिव्य अस्त्रोंको दिखातेहुए १६ पांडवोंको शस्त्रोंसे ढकते उन सबक्रोधभरे महारथी पुरुषोंके ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि प्रलयकाल में उठेहुए समुद्र के शब्द होतेहैं और अर्जुनके रथपर ऐसे कठिन शब्दहुए कि लेचलो पकड़ो घायल करो मारो १८ हे राजा पांडवोंके महारथी उस कठिन कठोर शब्दको सुनकर अर्जुन को चाहते हुए उन महारथियों के सन्मुख दौड़े सात्यकी भीमसेन धृष्टद्युम्न विराट द्रुपद नकुल सहदेव घटोत्कच राक्षस और अत्यन्त क्रोधयुक्त अभिमन्यु यह सातों महाक्रोधमें ज्वलित होकर अपूर्व्व धनुषोंको लिये उन महारथियोंके सन्मुख दौड़े इनसबलोगोंका युद्ध ऐसा महाघोर रोमहर्षणहुआ २२ जैसा कि दैत्योंसे और देवताओंसे हुआथा फिर युद्धमें अर्जुनसे रक्षित शिखंडीने उन टूटे धनुषवाले भीष्मको दश बाणोंसे बेधा और दशही बाणोंसे सारथीको घायल किया और एकबाणसे उसकीध्वजा कोभी छेदडाला २४ गांगेय भीष्मजी बड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेकर युद्धकरनेलगे अर्जुनने उन के उस धनुषकोभी तीन तीक्ष्ण बाणोंसे काटा २५ इसरीति से उसशत्रुसंतापी क्रोधभरे अर्जुनने वारंवार लियेहुए भीष्मके धनुषोंको काटा २६ तब उन टूटे धनुष अत्यन्त क्रोधयुक्त होठोंको चाबतेहुए भीष्मजीने पर्व्वतोंकोभी फाड़ने वाली घोरशक्तीको हाथ में लिया २७ और बड़े क्रोधसे उस शक्तीको अर्जुन के रथपर फेंका उस वज्रके समान प्रकाशमान आतीहुई शक्तीको देखकर पांडुनन्दन अर्जुन ने पांच तीक्ष्ण भल्लोंको हाथमें लिया और उनकी उस शक्ती को पांचबाणोंसे टुकड़े टुकड़े करदिया२६हेराजा अर्जुनने भीष्मकी भुजासे फेंकीहुई शक्ती को काटा फिर अर्जुन से कटीहुई शक्ती रथसे ऐसे गिरपड़ी ३० जैसे कि बादलोंके समूहों से अलग होकर बिजली गिरती है-शत्रुओंके पुरोंके विजयकरनेवाले वीर भीष्मने उस टूटीहुई शक्तीको देखकर युद्ध

में चिन्ताकरी कि मैं अकेले धनुष से सब पांडवोंके मारनेको कैसे समर्थहूंगा ३१, ३२ दूसरे इन्हों के रक्षक महाबली श्रीकृष्णजी हैं इन दोनों कारणों से मैं पांडवों से नहीं लडूंगा प्रथम तो पांडवोंके अबध्यहोने से दूसरे शिखंडीके स्त्रीपनेसे पूर्व्वसमय में मेरे प्रसन्नचित्त पिताने काली नाम माताको बिवाहा ३४ उससमय मुझको बरदान दिया था कि तू अपनी इच्छा के अनुसार मरैगा और युद्धमें सबसे अबध्य होगा इसकारणसे मैं अपनी मृत्यु को समयपर बर्त्तमान मानताहूं ३५ बड़ेतेजस्वी भीष्मजीके इस प्रकारके निश्चयको जान कर आकाशमें नियत ऋषियों ने और अष्ट वसुओं ने भीष्मजी से कहा ३६ हे तात जो तुमने निश्चय किया वही हमको भी अभीष्ट है हे महाराज तुम इसीको करो और युद्धसे अपने चित्तको हटाओ ३७ इसबचन के समाप्तहोनेपर चारोंओर से वह वायु प्रकटहुई जो कि आनन्दरूप त्रिविध प्रकार से सुगन्ध युक्त थी ३८ उस समय देवताओं की भी दुन्दुभियां अच्छेप्रकार से बजीं और भीष्मजीके ऊपर पुष्पोंकीबर्षाहुई, हे राजा व्यासमुनिके तेजसे मेरे और महाबाहु भीष्म के सिवाय उन बार्त्तालाप करनेवालों के वचनको किसी ने भी नहीं सुना ४० तब सब लोकके प्यारे भीष्मजीको रथसे पृथक्होनेपर भीष्मकेचाहनेवाले सब देवताओं को बड़ा आश्चर्य्य हुआ ४१ इसके पीछे शंतनुका पुत्र तेजस्वी भीष्म देवगणोंके बचनको सुनकर अर्जुनके सन्मुख नहीं रहा ४२ जो कि सब पत्तोंके तोड़नेवाले तीक्ष्ण बाणों से भी घायल था तो भी क्रोधयुक्त शिखंडी ने भरतबंशियों के पितामहको ४३ तीक्ष्ण धारके नौ बाणोंसे छातीपर घायलकिया वह कौरवोंके पितामह भीष्मजी युद्धमें उस प्रहारसे घायलहोकर भी ऐसे कंपायमान नहीं हुए जैसे कि भूकम्प होनेपर पर्वत नहीं हिलता इसकेपीछे गांडीव धनुष को खैंचनेवाले अर्जुनने हँसकर गांगेय भीष्मजीको क्षुद्रक नामके पचीस बाणोंसे घायलकिया फिर शीघ्रता करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने जैसे भीष्मको सैकड़ों बाणोंसे सब अंग और मर्मस्थलों पर घायल किया इसीप्रकार दूसरे शत्रुओंने भी इनको अनेक प्रकारसे घायलकिया ४७ फिर महारथी भीष्मने शीघ्रही उनको अपने बाणोंसे घायलकिया और उनके छोड़ेहुए बाणोंको गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से जहांका तहां रोकदिया ४८ इसके पीछे महारथी शिखंडी ने युद्धमें जिन बाणोंको छोड़ा उन सुनहरीपुंखवाले तीक्ष्णधार युक्त बाणोंने उन भीष्मजी को पीड़ित नहीं किया ४९ इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन शिखण्डी को आगे करके भीष्म के सन्मुख बर्त्तमान हुआ और उनके धनुष को काटा ५० उसीप्रकार इनको दशबाणों से बेधकर एक बाणसे उन की ध्वजा को भी काटा और दश विशिखबाणों से उनके सारथी को अत्यन्त कंपाय

मान किया ५१ फिर भीष्मने दूसरे प्रबल धनुषको लेकर तैयार किया इस धनुषके भी अर्जुन ने तीन तीक्ष्ण भल्लों से तीन खंडकिये ५२ इसी प्रकार से अर्जुनने आधेही निमिषमें उसयुद्धभूमिमें हाथमें लियेहुए उनकेअनेक धनुषों को काटा ५३ फिर शंतनु के पुत्र भीष्म अर्जुन के सन्मुख वर्त्तमान नहीं हुए तब अर्जुन ने उनको क्षुद्रक नाम पचीस बाणों से घायलकिया ५४ फिर वह अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी भीष्मजी दुश्शासनसे बोले कि इस पांडवोंके महारथी युद्धमें क्रोधरूप अर्जुनने युद्धकेबीच हजारों बाणोंसे मुझकोघायल किया है यह अर्जुन युद्धमें वज्रधारी इन्द्रसे भी विजय करनेके योग्य नहीं है ५५ और वीर देवता दानव राक्षसभी सब मिलकर मेरे विजय करने को समर्थ नहीं हैं फिर पृथ्वी के नर महारथी क्या पदार्थ हैं ५६ इस रीति से इन दोनोंके वार्त्तालाप होनेपर अर्जुनने शिखंडीको आगे करके भीष्मजीको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे फिर घायलकिया ५७ तब तो उस गांडीवधनुषधारी के तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त घायल और आश्चर्य्य युक्त भीष्मजी दुश्शासन से कहनेलगे ५८ कि युद्धमें इन्द्रवज्रके समान अर्जुन के छोड़े हुए स्पर्श करने वाले बाणसब सफलहुएहैं इससे विदितहोताहै कि ये बाण शिखंडीके नहींहैं ५९ बड़ेदृढ़ और मर्मस्थलोंके काटनेवाले पर्वतोंको भेदनकरनेवाले बाणमुसलोंकेसमान मुझकोमारतेहैं यहबाण किसीप्रकारसे शिखंडीके नहींहैं ६० ब्रह्मदण्ड के समान स्पर्शवाले वा वज्रके समान तीक्ष्ण कष्ट से सहने के योग्य बाण मेरे प्राणोंको पीड़ा देते हैं इससे यह शिखण्डी के बाण नहीं हैं ६१ यमदूतों के समान अप्रिय गदा और परिघ के समान स्पर्शवाले बाण मेरे प्राणों को निकालते हैं यह बाण शिखण्डी के नहीं हैं ६२ सर्पों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त विषभरे चाटतेहुए मेरे मर्मों में प्रवेश करतेहैं इससे यहबाण शिखण्डी के नहीं हैं ६३ यह बाण अवश्य अर्जुन के हैं शिखंडी के नहीं हैं क्योंकि यह बाण मेरे अंगों को ऐसे चूर्ण किये डालते हैं जैसे कि भाद्रपदके महीने में प्रचण्ड सूर्य्य अंगों को संतप्त करके चूर्णीभूत करते हैं ६४ बिजयी गांडीव धनुषधारी वानरध्वज वीर अर्जुन के सिवाय अन्य पृथ्वी के सबराजा लोग भी मुझको व्यथित नहीं करसक्के ६५ हे भरतर्षभ इसप्रकार बोलते वा पांडवोंको भस्मकरना चाहते उन शंतनु के पुत्र भीष्मने अर्जुन के ऊपर शक्तीको छोड़ा ६६ इसको देखकर अर्जुन ने आपके सब कौरवी वीरोंके देखते हुए इनकी शक्तीको विशिखनाम तीनबाणों से काटकर गिराया ६७ फिर दोनातों में से एकको चाहते गांगेय भीष्मजी ने सुवर्णजटित ढाल और तलवारको मृत्यु के लिये वा बिजय के निमित्त हाथ में पकड़ा ६८ तबअर्जुनने उसरथ से नहीं उतरे हुएकी उस ढालको शायकनाम बाणों से सौ टुकड़े

किया यह बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ ६९ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने अपनी सेनाओं को आज्ञाकरी कि भीष्म के सन्मुख जाओ तुमको थोड़ासाभीभय न होगा ७० यह सुनकर वह सेना चारों ओरसे (तोमर) (प्राशबाणसमूह) (पट्टिश) सुन्दर खड्ग (तीक्ष्णनाराच) ७१ बत्सदन्त और भल्लों समेत उसअकेले के सन्मुख गये इसकेपीछे पांडवों के महाभयकारी सिंहनाद जारी हुए ७२ इसी प्रकार भीष्मकी बिजय चाहने वाले आपके पुत्रभी गर्जे और उस अकेले भीष्मके ओर पासबर्त्तमान होकर सिंहनाद करनेलगे ७३ हेराजेन्द्र वहां दशवें दिन भीष्म और अर्जुनकी सन्मुखतामें आपके पुत्रोंका युद्ध अन्य लोगोंसे महाघोर रूपहुआ ७४ परस्पर में मारती और लड़ती हुई सेनाकेभ्रमण चक्र एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त गंगा और समुद्रके गिर्दावके समानहुए ७५ तबपृथ्वी अशुभरूपी और रुधिरसे पूर्ण होगई उस समय अच्छा बुरा कुछनहीं मालूम हुआ ७६ वह भीष्म उस दशवें दिन में दश हजार बीरों को मारकर मर्म स्थलों में महाघायल होने पर भी युद्ध में नियतरहे ७७ इसके पीछे उससेना मुखपर नियत धनुषधारी अर्जुन ने कौरवी सेना के मध्यमें से सेना को भगाया ७८ तबहम उस श्वेत घोड़े रखनेवाले कुन्ती के पुत्र अर्जुनसे भयभीत वा तीक्ष्ण शस्त्रों से पीड़ामान होकर युद्ध से भगे ७९ (सौबीर) (कितव) वा पूर्व्वी पश्चिमी और उत्तरीय राजा वा (मालव देशी) (अभीषाह) (शूरसेन) (शिवय) (बशातय) (शाल्व) (आश्रय) (त्रिगर्त्त) (अंबष्ट) केकयों समेत इन सब बाणों से पीड़ित और घावों से दुःखी महात्माओं ने युद्ध में अर्जुनके साथ लड़तेहुए भीष्मको त्याग नहींकिया इसके पीछे बहुत से क्षत्रियों ने चारों ओर से उस अकेले को घेरकर ८२ और सब कौरवों को हटाकर बाणों की वर्षा से ढकदिया और गिराओ पकड़ो लड़ो काटो यह कठिन शब्द भीष्म के रथ के पासहुए और युद्ध में हजारों को मारकर ८४ उस के शरीर में दोऊ दलका भी अन्तर घावों से बाक़ी नहींरहा ऐसी दशावाले अर्जुन के तीक्ष्ण नोकवाले बाणों से अत्यन्त घायल कियेहुए आपके पिता भीष्मजी कुछ सूर्य्य के शेष रहनेपर आपके पुत्रों के देखतेहुए रथ परसे औंधे शिर होकर पृथ्वी पर गिरपड़े ८५, ८६ हे भरतबंशी रथ से भीष्मजी के गिरते ही राजाओं में और आकाशके देवताओं में हाय २ आदि बहुत से शब्द होनेलगे ८७ उस महात्मा पितामह को गिरतेहुए देखकर भीष्मके साथ हम सबके भी हृदय फटगये ८८ वह महाबाहु इन्द्र ध्वजा के समान ऊंचा और सब धनुषधारियों में ध्वजा रूप भीष्म पृथ्वी को अच्छी रीति से कंपायमान करता गिरा ८९ उन बाणसमूहों से बेधित होनेपर भी भीष्मजी ने पृथ्वी को स्पर्श नहीं किया अर्थात् बाण शय्याही के ऊपर रहे फिर उस बाणशय्या पर

सोते हुए बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तमरूप रथसे गिरेहुए भीष्मजी में दिव्यभाव प्रविष्ट हुआ बादल वर्षा करनेलगे पृथ्वी कंपायमान हुई ६१ उस गिरतेहुए ने भी दक्षिण दिशामें नियत सूर्य्य को देखा हे भरतर्षभ उसप्रतापी शूरबीर ने कालज्ञानको विचार कर सावधानी को पाया ९२ और अन्तरिक्षमें चारोंओर से यह दिव्य वचन सुने कि सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महात्मा पुरुषोत्तम भीष्म दक्षिणायन सूर्य्य वर्त्तमान रहने पर किसी प्रकारसे भी अपना शरीर नहीं त्यागेगा भीष्मजी इस वचनको सुनकर बोले कि मैं अभी नियत वर्त्तमान हूं ९३, ९४ पृथ्वी पर गिरेहुए उत्तरायणको चाहते उन कौरवों के पितामह भीष्मजी ने प्राणोंको धारण किया ९५ हिमाचलकी पुत्री श्रीगंगाजीने उन के अभिप्रायको जानकर महर्षि लोगोंको हंसरूप करके उनके समीपभेजा९६ इसके पीछे वह बहुत उड़नेवाले शीघ्रगामी हंस एक साथही उस कौरवों के पितामह भीष्मजी के देखनेको ९७ उस स्थानपर आये जहां नरोत्तम भीष्म पितामह शरशय्या पर सोतेथे वहां आकर उन हंसरूप महर्षियों ने उस शर-शय्यापर नियतहुए कौरव भीष्मजीको देखा और उनको दक्षिणायन सूर्य्य में पड़ाहुआ देखकर बड़ी परिक्रमाकर परस्पर में सलाह करके यह कहा ९८, ९९, १०० कि भीष्म सरीका महात्मा दक्षिणायन में कैसे जायगा ऐसा कह-कर वह हंस दक्षिणकी ओरको चलेगये १०१ हे भरतर्षभ बड़े बुद्धिमान् भीष्म जी अच्छी रीति से उनको देख विचारकर शोच पूर्व्वक बोले कि हे महर्षियो मैं किसी रीतिसे भी दक्षिणायन सूर्य में नहीं जाऊंगा यही मेरे मनमें दृढ़ता है उत्तरायण सूर्य होने पर मैं अवश्य अपने उस स्थान पर जाऊंगा जो कि मेरा प्राचीन स्थान है १०२, १०३ हे हंसरूप महात्मा लोगो मैं आप लोगोंसे कहताहूं कि मैं उत्तरायण की इच्छासे प्राणों को धारण करूंगा १०४ क्योंकि अपने प्राणोंका त्यागना मेरेही स्वाधीनहै इसहेतुसे उत्तरायण सूर्य्य में प्राण त्यागकरने की इच्छासे मैं तबतक अपने प्राणोंको धारण करूंगा १०५ उस महात्मा पिताने जो मुझको अपनी इच्छाके अनुसार जब चाहै तब मरैं यह जो वर प्रदान कियाहै उसको मैं वैसेही समझताहूं और वास्तव में भी वह यथार्थ है, १०६ इसकारण देहत्याग निश्चय होजाने पर भी अपने प्राणोंको धारण करूंगा उन हंसोंसे ऐसा कहकर शरशय्यापर शयन करगये १०७ इस प्रकार उसबड़े पराक्रमी कौरवोंके वृद्ध और प्रधान भीष्मजीके गिरने पर पां-डवोंने और सृंजियोंने सिंहनाद किया १०८ हे राजा उनबड़े बलिष्ठ प्रताप-वान कौरवों के वृद्ध पितामह के आसन्न मृत्युहोने पर आपके पुत्रोंने कुछ करनेके योग्य कर्म को नहींमाना १०९ उस समय कौरवोंको बड़ाभारी मोह उत्पन्नहुआ इसकेपीछे कृपाचार्य्य और दुर्य्योधनआदि सबलोग श्वासाओंको

लेलेकर बड़ारुदन करनेलगे और इसी व्याकुलतामें बहुत बिलम्ब तक अचेत नियत होकर महा शोचग्रस्ततासे युद्धमें चित्तनहीं लगाया ११०,१११ हृदयके ग्राहसे पकड़ेहुये अर्थात् शोचसे ग्रसितहोके पाण्डवों के सन्मुख भी नहीं दौड़े ११२ जिनके कि बड़े२शूरबीर मारेगये ऐसे हमलोगोंने दुर्य्योधनका नाशहोना चित्तसे बिचारकिया ११३ अर्जुनसे परास्तहोकर हमलोगोंने करनेके योग्यकर्म कोभी नहींजाना और परिघके समान भुजाधारी सबशूरबीर पांडवोंने इसलोक में तो विजयरूपी कीर्तिको और परलोक में उत्तम गतिको पाकर बड़े २ शंखों को बजाया हे राजा पांचालों समेत सोमकलोग अत्यन्त प्रसन्नहुए ११४,११५ फिर हजारों बाजों के बजने पर उस महाबली भीमसेन ने भुजदण्डों के कठिन शब्द किये अर्थात् दोनों खंभ ठोककर बड़ी गर्जनाकरी ११६ उससमर्थ गांगेय भीष्मजी के आसन्न मृत्युहोने पर दोनों सेनाओं के शूरबीरों ने शस्त्रोंको त्यागकरके चारों ओरसे बड़ा ध्यान किया ११७ कोई पुकारा कोई भागा कोई अचेत हुआ किसीने क्षत्रीकुलकी प्रशंसाकरी किसी ने भीष्मजी की प्रशंसा करी ११८ ऋषियों ने और पितरों ने भी महाव्रत भीष्मजी की प्रशंसा करी और भरतबंशियों के जो पूर्व्व के स्वर्गबासी पुरखालोग थे उन्हों ने भी उनकी बड़ी प्रशंसाकी ११९ पराक्रमी और बुद्धिमान् भीष्मजी महा उपनिषद्रूपी योग में बर्त्तमान होकर जपमें प्रवृत्त उत्तरायण सूर्य्य काल के इच्छावान् होकर नियत हुए १२० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः १२० ॥

एकसौइक्कीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय उन पराक्रमी देवता के समान गुरू पिता के निमित्त ब्रह्मचारी भीष्म से पृथक् होकर शूरबीर लोग किसदशामें होकर कौन काम करनेलगे १ जबकि भीष्मजी ने दयाकरके शिखण्डी के ऊपर किसी शस्त्रका प्रहार नहीं किया तभी से मैं कौरवों को पांडवों के हाथ से मृतकरूप मानता हूं २ हे संजय अब इससे अधिक दूसरा कौनसा दुःखहोगा कि पिता को भी मृतक सुनकर मैं निर्बुद्धी जीताहूं ३ हे तात निश्चयकरके मेरा हृदय लोहे से भी कठोर है जो अपने पिता भीष्मजी को भी सुनकर सौ टुकड़े नहीं होता हे सुन्दर व्रतधारी संजय यहां युद्ध भूमि में विजयाभिलाषी कौरवोत्तम आसन्न मृत्यु भीष्मजी ने जो काम किया वह मुझ से कहो ५ मैं युद्धमें मृतक देवव्रत भीष्मको बारम्बार स्मरण करके अधैर्य होता हूं कि जो भीष्म पूर्व्व समय में परशुरामजी के भी दिव्य अस्त्रों से नहीं मारागया वह द्रुपद के पुत्र पांचाल देशी शिखण्डी के हाथ से मारागया ६ संजय बोले कि सायंकाल के

समय धृतराष्ट्र के पुत्रों के व्याकुल करनेवाले पांचाल देशियों को कौरवों के पितामह भीष्म जी ने आनन्द किया, और बाणशय्यापर नियत पृथ्वी को विना स्पर्श किये शयन करनेवाले हुए रथसे भीष्मके गिरने और पृथ्वीतल से ऊपर पड़ने पर जीवोंका हाय हाय शब्द अत्यन्ततासे हुआ कौरवों के युद्ध की सीमाके वृक्षरूप महाविजयी भीष्म के गिरने पर ९ दोनों सेनाओं के क्षत्रियों में महाभय उत्पन्नहुआ हे राजा शंतनु के पुत्र भीष्मको टूटा कवच और ध्वजा से रहित देखकर चारों ओर से कौरव और पांडव वर्त्तमान हुए आकाश में अंधेरी लागई सूर्य्य में अप्रकाशता आगई ११ और पृथ्वी ऐसे शब्दों से शब्दायमान हुई कि यह ब्रह्मज्ञानियों में वा ब्रह्म के जाननेवालों में श्रेष्ठ है १२ जीवों ने उस सोतेहुए पुरुषोत्तमके विषय में यह वचन कहा कि पूर्व्व समय में इसी श्रेष्ठ पुरुषने अपने पिता शन्तनु को कामाग्नि से पीड़ित जानकर अपने को ब्रह्मचारी किया और चारणों समेत ऋषियों ने उनबाण-शय्यापर नियत कौरवों के पितामह भीष्मजी के आसन्न मृत्युहोने पर यह वचन कहा १४ । १५ कि आपके पुत्रों ने कुछ करने के योग्य कर्मको नहीं जाना हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उनशोभा से रहित खिन्नस्वरूप लज्जायुक्त ईर्षा से भरे युद्धमें प्रवृत्त पांडवों ने विजय को पाकर १७ सुवर्ण जालों से अलंकृत बड़े बड़े शंखों को बजाया हे निष्पाप बड़े आनन्द के हजारों बाजों के बजने पर हमने महाबली कुन्ती के पुत्र भीमसेन को बड़ी प्रसन्नतायुक्त क्रीड़ाकरता हुआ देखा १९ बड़े बली पांडव शत्रुको अपने वेग से मारकर महा प्रसन्नहुए तब कौरवों में महा कठिन मोह उत्पन्नहुआ२०इसीप्रकार भीष्म जी के मरने पर कर्ण और दुर्य्योधन ने भी बारम्बार श्वास लिये २१ सब हाय हाय रूप हुआ और अमर्य्यादा वर्त्तमान हुई आपका पुत्र दुश्शासन भीष्मजी को गिरा हुआ देखकर २२ बड़ी तीव्रतामें नियत होकर द्रोणाचार्य्य की सेना में गया वह भाई का भेजाहुआ अपनी सेना से अलंकृत वीर दु-श्शासन अपनी सेनाको विह्वल करता हुआ गया हे राजा कौरवों ने उस आयेहुए दुश्शासनको देखकर चारोंओरसे इस निमित्तघेर लिया कि देखिये यह क्या कहता है २४ इसके पीछे दुश्शासन ने भीष्मजी के मरनेका वृत्तान्त द्रोणाचार्य्यजी से कहा २५ तब द्रोणाचार्य्य उसके अप्रिय वचनको सुनकर शोकसे अचेतहोगये फिर उसप्रतापवान् द्रोणाचार्य्यने सचेतहोकर २६ अपनी सेनाओं को और कौरवोंने भी लौटेहुए अपने कौरवी लोगोंको देखकर अप-नी प्रबल सेनाको निषेधकरदिया २७ और शीघ्रगामी घोड़ोंपर सवार अपने दूतोंको इधर उधर भेजकर सब को निषेध करवादिया २८ फिर सबराजालोग अपने २ कवचोंको उतार २ कर भीष्मजीके पासगये तदनन्तर लाखों शूरवीर

युद्ध को विश्राम करके उसमहात्मा भीष्मके पास आकर ऐसे नियतहुएजैसे कि देवता लोग ब्रह्माजी के पास इकट्ठे होतेहैं हे राजा इसके पीछे सब पांडव लोग भी कौरवों समेत उस शयनकरते हुए भीष्मजी को पाकर ३० दोनों हाथोंसे दण्डवत्करके नियतहुए इसकेपीछे शंतनुके पुत्र भीष्मजी सबकीयथा योग्य शिष्टाचारी करके अपने सन्मुख बैठे हुए पांडव और कौरवोंसे बोले हे महाभागो तुम्हारा आगमन सफल हो और हेमहारथी लोगो तुम्हारा आगमन श्रेष्ठहो ३२ हे देवताओंके समान पुरुष लोगो मैं तुम्हारे देखनेसे बड़ा प्रसन्न होताहूं इन सबलोगों से ऐसा कहकर फिर शिरको लटकायेहुए कहने लगे ३३ कि मेराशिर अत्यन्त लटकताहै इससे मुझे तकिया दो यह सुनकर राजाओंने बड़े उत्तम मृदुस्पर्शवाले तकिये लाकर दिये ३४ उन तकियों को पितामहने नहीं चाहा और हँसकर राजाओं से कहा कि ३५ हे राजाओ यह तकिये बीरोंकी शय्याओं पर शोभित नहीं होते हैं फिर सब लोकके महारथी प्रतापी पांडव अर्जुनको देखकर बोले कि हेमहाबाहु अर्जुन मेरा शिर लटकता है तू मुझको उचित तकिये देदे ३६ । ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि एकविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः १२१ ॥

एकसौबाईसका अध्याय ॥

संजय बोले कि इस बचनको सुनतेही अर्जुन बड़े भारी धनुष को हाथ में लेके अश्रु पातयुक्तहो पितामहको दण्डवत्करके यहवचनबोला १ हेकौरवोंमें श्रेष्ठ सब शस्त्रधारियों के शिरोमणि महादुर्जय पितामह मैं आपकादासहूं आप मुझ को जो आज्ञादें वही मैं करूं २ भीष्मजीने कहा हे तात कौरवोंमें श्रेष्ठ अर्जुन मेरा शिरलटकताहै तू मुझको तकियादे ३ हे बीर बहुतशीघ्र मेरे शयनके योग्य तकियादेदे हेअर्जुन तूही समर्थहोगा तूही सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ होगा तूही क्षत्रीधर्मका जानने वाला बुद्धिमान् सतोगुणयुक्त होगा यह सुनकर अर्जुन ने भी बहुत श्रेष्ठ कहकर उपाय और परिश्रमको अंगीकार किया ५ और गांडीवधनुषको हाथमें लेकर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंको अभिमंत्रितकर भीष्मजीकी प्रतिष्ठाकरके तीक्ष्ण और वेग युक्त तीनबाणों से उनके शिरको सीधाकिया चित्तका प्रियज्ञातहोने पर धर्म्मात्मा और मुख्यता के जानने वाले भरतर्षभ भीष्मजी इस कर्मको देखकर अर्जुन पर अत्यन्त प्रसन्नहुये और इस तकिये के देनेसे अर्जुनकी बड़ी प्रशंसाकी ७,८ और सब भरतबंशियोंके मध्यमें इस श्रेष्ठ मित्रोंकी प्रीतिके बढ़ाने वाले कुन्तीके पुत्र अर्जुन से बोले कि ६ हे पांडव तुमने शयनके समान मुझको तकिया दिया और जो कदाचित् विपरीत कर्म करते तो मैं अवश्य तुमको शाप देता १०

हे महाबाहु धर्मोंमें नियत शरशय्यापर वर्त्तमान क्षत्रीको युद्धभूमिमें निश्चय करके इसीरीति से शयनकरना योग्यहै ११ इस रीति के बचन अर्जुनसे कह कर और पास बैठेहुए राजकुमारों से बोले १२ कि पांडवके लगायेहुए मेरे तकिये को देखो मैं इसशय्या पर तबतक शयन करूंगा जबतक कि सूर्य्य दक्षिण मार्ग से उत्तर मार्ग में अर्थात् दक्षिणायनसे उत्तरायण होजायँगे १३ जो राजा उस समय मुझको मिलेंगे वह मुझको देखेंगे तात्पर्य्य यह है कि जब सूर्य्य कुबेरकी दिशाको जायगा १४ तब मैं अवश्य सात घोड़ों के उत्तम प्रकाशवान रथपर चढ़कर अपने सुहृद् इष्टमित्रों समेत प्राणोंको त्यागूं-गा १५ हे राजालोगो यहां मेरे निवासस्थान पद तुम खाई को खुदवाओ क्योंकि मैं इसरीति से हजारों बाणों से छिदेहुए शरीरसे सूर्य्य की उपासना करूंगा और तुम सब लोग शत्रुताको त्यागकर युद्ध मतकरो १६ इसके अन-न्तर हे राजा वहां सब भूषण और चिकित्सा के यन्त्रों से अलंकृत पंडितोंसे स्तूयमान सर्ववैद्य लोग आनकर वर्त्तमानहुए १७ गांगेय भीष्मजी उनको देखकर आपके पुत्रसे बोले कि इन वैद्योंको सत्कार करके दक्षिणा पूर्व्वक तुम विदाकरदो १८ (अब यहां मेरी यह दशाहोनेपर मुझको बैद्योंसे क्या प्रयोजन है क्योंकि मैं क्षत्रीधर्म में श्रेष्ठ होकर परम गतिको प्राप्तहूं) १९ हे राजाओ मुझ बाणशय्यापर वर्त्तमानकायही धर्महै कि मैंइन्हीं बाणों समेत जलाया जाऊं २० उनके इस बचनको सुनकर आपके पुत्र दुर्योधनने अपनी योग्यता के अनु-सार उन बैद्योंको पारतोषिक देकर बिदाकिया २१ फिर नानादेश के राजा-ओंने बड़े तेजस्वी भीष्मजी को अपने धर्ममें दृढ़ देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया २२ इसके पीछे आपके पिताको तकिया देकर वहसब महारथी राजा वा पांडव और कौरव एकसाथही शुभशय्यापर सोतेहुए महात्मा भीष्मके पास जाकर दंडवत् पूर्व्वक तीनपरिक्रमाकर २४ सायंकाल के समय सबवीर चारों ओर से ध्यानकरते बड़े दुःखी रुधिर से भरेहुए अपने २ डेरोंमें विश्राम करनेके लियेगये और महाबली माधवजी उस प्रसन्न चित्तबैठेहुए महारथी भीष्मजी के गिरनेपर प्रसन्न हृदय पांडवों के पासजाकर समय पाकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर से कहनेलगे २५ । २६ । २७ हे कौरव तुमप्रारब्ध से विजय पातेहो और यह मनुष्यों से अवध्य सत्यप्रतिज्ञ महारथी भीष्म प्रारब्ध से गिरायागया २८ अथवा देवताओं समेत सबशस्त्रोंमें पूर्ण तुझनेत्रसे मारनेवाले को पाकर घोर नेत्र से भस्महोगया २९ यह सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजीको उत्तर दिया कि आपके प्रसन्नहोने से विजय है और आपकेही अप्रसन्न होने से पराजयहै ३० हे भक्तभयहारी श्रीकृष्णजी आपही हमारेरक्षाके स्थानहो और उन लोगोंको विजयकापाना कुछ आश्चर्य्य नहींहै जिनके हितकरनेमें सदैव

प्रवृत्त चित्त और युद्धमें सदैव रत्तकहो आपको सबप्रकार से प्राप्त होकर विजय का होना कुछ आश्चर्य्य नहीं है यहमेरा मतहै ३२ इस रीतिके युधिष्ठिर के बचनोंको सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी मन्दमुसकान समेत बोले कि हेराजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर यहकहना तुम्ही को योग्यहै ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्वाविन्शत्युपरिशततमोऽध्यायः १२२ ॥

एकसौतेईसका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज रात्रिके व्यतीत होने पर सबराजा वा पाण्डव और धृतराष्ट्र के पुत्र पितामहके पास वर्त्तमान हुए १ क्षत्रीलोग उन कौरवो त्तम क्षत्रियों में श्रेष्ठ बीरशय्या पर सोतेहुए बीर भीष्मजी को दण्डवत् करके उनके पास नियत हुए २ वहांपर हज़ारों कन्याओंने जाकर चन्दन चूराखील और सब प्रकारकी मालाओंसे भीष्मजी का पूजन किया ३ वृद्धास्त्री वा बाला स्त्री और देखने वाले अन्य सावधान लोगभी उनभीष्मजीके समीप ऐसेगये जैसे कि सूर्य्यकी उपासनाको मनुष्य और स्त्री जाते हैं ४ तालस्वर समेत ईश्वरका वर्णनकरने वाले बाजेगाजे समेत नाचनेवाले नट नागर और कारीगर लोग भी वृद्धपितामह भीष्मजीके पासगये ५ वह कौरव पांडवयुद्धों से निवृत्तहो शरीरके कवचादिकोंको उतार सब शस्त्रोंको त्याग एकसाथ मिले हुए ६ उनदुर्जय शत्रुंजय देवब्रत भीष्मजी के पासआकर बैठगये और सब लोग पूर्वके समान अवस्थाके क्रमसे परस्परमें प्रीतिमान्थे, वह सैकड़ों राजा ओं से व्याप्त भीष्मजी से शोभायमान भरतबंशियों की सभा ऐसी शोभाय मानहुई जैसे कि आकाश में सूर्य्य मंडल शोभित होताहै ८ गंगाजीके पुत्र की उपासना करनेवाले राजाओंकी वहसभा ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी की उपासना करनेवाली देवसभा होती है ९ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ बाणों से पीड़ामान सर्प के समान श्वास लेते बाणों से पीड़ित शरीर और शस्त्रोंके प्रहार से मूर्छावान् भीष्मजी उन राजाओंको देखकर धैर्य्य से पीड़ाको सहकर यह बचन बोले कि हमारे लियेजलको लाओ १०, ११ इसके पीछे उनक्षत्रियों ने चारों ओर से छोटे बड़े भोजन पात्र और शीतलजलके घटादिक पात्रों को मँगाया १२ भीष्मजी उसप्रकार से लायेहुए जलको देखकर बोले कि हे तात अबकोई मानुषी भोगमुझसे भोगानहीं जाता १३ मैं मनुष्योंसे पृथक् बाणशय्यापर वर्त्तमान चन्द्रमा और सूर्य्यके लौटने की बाट देखता हुआ नियतहूं १४ हे धृतराष्ट्र भीष्मजी इसप्रकार से कहकर अपने मुखसे राजाओं की निन्दा करते हुए फिर बोले कि मैं आज इनको देखा चाहताहूं १५ इसके पीछे महाबाहु अर्जुन पितामहके समीप द-

एडवत् पूर्व्वक आकर बड़ी नम्रतासे झुका हुआ नियत हुआ और हाथ जोड़ कर बोलाकि मुझेक्या आज्ञाहोती है १६ फिर धर्मात्मा भीष्मजी बहुत प्रसन्न होके उसविनीत हाथजोड़ हुए वर्त्तमान संसार के धनादि संपत्ति योंके विजय करने वाले अर्जुन को अपने सन्मुख खड़ा हुआ देखकर बोले १७ कि तेरे बाणोंसे भरा हुआ मेराशरीर जलरहा है और मर्मस्थलों में बड़ी पीड़ा है मुख सूखा जाताहै १८ हे अर्जुन मुझ दुःख से पीड़ावान् को जलपिलादे हे बड़े धनुषधारी तूही बुद्धि के अनुसार जलदेने को समर्थ है १९ इतनी बातके सुनतेही उस पराक्रमी अर्जुनने बहुत अच्छा ऐसा कहकर रथपर सवारहो बड़े पराक्रमी गांडीवधनुष को प्रत्यंचा युक्त करके बलसे खैंचा २० उसकी प्रत्यंचा का और धनुषकी टंकार का शब्द इन्द्रवज्रके समान था उस शब्दको सुनकर सब जीवधारी और राजालोग भयभीत होगये २१ तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने रथके द्वारा उसभरतर्षभ महाशस्त्रधारी सोतेहुए भीष्मजी की परिक्रमा करके धनुष पर प्रकाशवान अभिमंत्रित बाणको चढ़ाकर मेघ अस्त्रसे संयुक्त करके सब लोगों के देखते हुए २३ भीष्मजीके दक्षिण ओर में पृथ्वी को बेधा उसके बेधतेही पृथ्वी में से निर्मल महा शुभ पवित्र जलकीधारा ऊपरकी ओर फुव्वारेके समान निकली २४ वहजल महाशीतल अमृतके समान दिव्य सुगन्धित और रससे भरा हुआ था उसशीतल जलकी धारासे अर्जुनने कौरवों में श्रेष्ठदिव्य कर्म और बलवाले भीष्मजीको तृप्तकरदिया इसके पीछे इन्द्रके समान अर्जुनके उसकर्मसे २५, २६ उनसब राजाओंको बड़ा आश्चर्य हुआ अर्जुन के इस अमानुषी कर्म और बलको देखकर कौरवलोग ऐसे महाकंपायमान हुए जैसे कि शीतसे कंपायमान गौयें होतीहैं राजा लोगोंने बड़े आश्चर्य से सब ओरको अपने २ दुपट्टोंको हिलाया २८ और सब ओरसे शंख दुन्दुभियों के कठिनशब्द हुये हे राजा उस जलसे तृप्तहुए भीष्मजी सब शूरवीर राजाओं के सन्मुख बड़ी प्रशंसा करके अर्जुनसे यह वचन बोले कि हे महाबाहु हे कौरवनन्दन यह तुझमें आश्चर्य्य की बातनहीं है ३० हे बड़े तेजस्वी तुमको नारदजीने प्राचीन ऋषि वर्णनकिया है तुम वासुदेवजीके संगहोकर बड़े २ कर्म करोगे ३१ जिस कर्मके करनेको देवताओंसमेत इन्द्रभी असमर्थ है हे अर्जुन मुख्य वृत्तान्तके ज्ञातालोगोंने तुझको सब क्षत्रीकुलमात्रका धनुषजाना है ३२ तुम उत्तम धनुषधारियों में अद्वितीयहो और पृथ्वीके सब मनुष्योंमें तुम अत्यन्त श्रेष्ठहो इस संसारमें मनुष्य सब से उत्तम है पक्षियोंमें गरुड़ श्रेष्ठहै ३३ नदियोंमें समुद्र श्रेष्ठ है पशुओंमें गौ उत्कृष्टहै प्रकाशवानों में सूर्य्य श्रेष्ठ है पर्वतों में हिमालय जातियों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है इसीप्रकार तुम धनुषधारियों में श्रेष्ठहो धृतराष्ट्रके पुत्रने मेरा कहना वा

बिदुरजी द्रोणाचार्य्य परशुरामजी और श्रीकृष्णजी का जो कहना और बारं-
बार संजयका भी कहना नहीं सुना ३५ निश्चयकरके निर्बुद्धी और अचेतों
के समान दुर्य्योधन उस कहनेपर श्रद्धा नहीं करता है वह शास्त्रके विपरीत
कर्म कर्त्ता भीमसेनके बलसे हारा हुआ मरा हुआ बहुत काल तक सोवेगा
३६ कौरवोंका राजा दुर्य्योधन उनके इस बचनको सुनकर चित्तसे उदासहो-
गया इसको उदास देखकर भीष्मजी ने कहा कि हे राजा अबभी समझकर
निरहंकारी होजाओ ३७ हे दुर्य्योधन तुमने यहदेखा जैसे कि बुद्धिमान् अर्जुन
ने शीतलअमृतकेतुल्य सुगन्धियोंसे व्याप्त उत्तम जलकीधारा उत्पन्नकरी ३८
इसलोकमें इसकर्मकाकरनेवाला दूसरा कोईमनुष्य नहींहै (आग्नेय) (वारुण)
(सौम्य)(वायव्य) (वैष्णव) ऐन्द्र पाशुपति पारमेष्ठ्य (प्रजापत) (धाता)
(त्वष्टा)और सविताके अस्त्र और सौरि इनसबअस्त्रोंकोभी इसनरलोकमें अ-
केलाअर्जुनही जानताहै वा देवकीनन्दन श्रीकृष्णजीजानते हैं इनदोनोंमहा-
पुरुषोंके सिवाय इस लोकमें दूसरा कोई नहीं जानताहै ४१ हे तात युद्ध में
इन पाण्डवों को देवता और असुर भी जीतनेको समर्थ नहींहैं जिस महात्मा
के यह अमानुषी कर्महैं हे राजा उस युद्धमें पराक्रमी शूरबीर युद्धमें शोभापा-
ने वाले अर्जुनके साथ सन्धिकरने में बिलम्ब मतकरो ४२ हे कौरवोत्तम जब
तक महाबाहु श्रीकृष्णजी अपने स्वाधीन हैं तबतक शूरबीर अर्जुनके साथ
तुझको सन्धिकरलेना योग्य है ४४ हे तात जब तक अर्जुन गुप्तग्रन्थी वाले
बाणों से तेरी सब सेनाका नाश नहीं करे तबतक तुझको सन्धिकरलेना अ-
त्यन्तही योग्यहै ४५ हेराजा जब तक युद्धमें मरनेसे शेष बचेहुए अपने निज
बांधव लोग वा बहुतसे राजालोग नियतहैं तबतक सन्धिहोजाय और जबतक
कि क्रोध से अग्निरूप नेत्र युधिष्ठिर इस तेरी सेनाको भस्मनहीं करता है वा
पाण्डव नकुल सहदेव और भीमसेन सब ओर से सेनाका नाश नहीं करें४८
तब तक बीर पाण्डवों के साथ तेरी प्रीतिहोना मुझको अभीष्टहो हे तात मैं
चाहताहूं कि यह महाप्रबल युद्ध मेरेही मरण पर्य्यन्तरहै तू अवश्य पाण्डवों से
सन्धिकर ४९ इस बातको तू मनसे समझकर अंगीकारकर हे तात यह मैंने
तुझको समझाया है अगर तू समझैगा तो तेरी और कुलके लोगोंकी कुशल
अवश्य होगी ५० अहंकारको त्यागकरके पाण्डवोंसे सन्धिकर अर्जुनके इतने
ही करनेको तू बहुत समझ भीष्मकेही मरणान्तसे तुम्हारी और पाण्डवों की
प्रीतिहो यह बहुत श्रेष्ठ है इसी प्रीतिमें शेष बचेहुए क्षत्री बचजायँगे हे राजा
मेरे इस कहनेपर प्रसन्नहोके पाण्डवों के आधे राज्यको देदो और धर्मराज
राजा युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थको जाय हे कौरवेन्द्र तू मित्रों से शत्रुता करनेवाला
राजाओंमें नीच मतहो नहीं तो पापरूपी अपकीर्त्तिको पावेगा ५२ मेरेनाश

होने से प्रजाओं को सुखहो और प्रीति रखनेवाले राजालोग परस्पर में मिलें हे तात पिता पुत्र से मामा भानजे से भाई भाई से आनन्द पूर्वक मिलें जो मोहसे भरेहुए निर्बुद्धितासे समयके अनुसार मेरेकहे हुए वचनको नहीं मानेगा तो अन्तमें महादुःखों को पावेगा और सबकी एकसीही दशा है मैं इस बातको सत्यसत्यही कहताहूं ५४ गांगेय भीष्मजी राजाओंके मध्यमें बड़ी शुभचिन्तकता से कौरवों के राजा दुर्योधन को यह वचन सुनाकर भालों से पीड़ित अंगों के दुःखों को सहकर मनबुद्धिको आत्मामें लयकरके मौन हो गये ५५ संजय बोले कि आपके पुत्रने धर्म अर्थ से संयुक्त होकर प्रियकारी निर्दोष निरुपाधि वचनोंको सुनकर ऐसे स्वीकार नहीं किया जैसे कि सन्निकट मरनेवाला पुरुषवैद्यकी औषधीको नहीं अंगीकार करताहै ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीष्मोपदेशत्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

एकसौचौबीसका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज शंतनुके पुत्र भीष्मजीके मौनहोने पर वह सब राजा लोग फिर अपने २ डेरोंको गये १ पुरुषोत्तम कर्ण भीष्मजीको मृतक सुनकर कुछेक व्याकुलसाहोकर बड़ी शीघ्रतासे उनकेपासगया २ वहां उसने जब उस महात्मा समर्थ शूरवीर जन्मशय्या पर वर्त्तमान स्वामिकार्तिक के समान शरशय्या पर नियत भीष्मजी को देखा ३ तब अश्रुपातों से गद्गद कण्ठहोकर बड़ा तेजस्वी कर्ण उस निमीलिताक्ष से बोला हेमहाबाहु भीष्म हे कौरवोत्तम मैं राधा का पुत्र सदैव आपके नेत्रों के आगे रहने वालाहूं हे सर्वज्ञ मैं आपका द्वेषी हूं इन बातों को सुनकर बड़े बलसे नेत्रों को खोलकर गांगेय भीष्मजी ने अपने निवासस्थान को एकान्तरूप देखकर स्थान के रक्षकों को उठाकर जैसे कि पिता पुत्र पर स्नेह करता है उसी प्रकारसे कर्ण को एक हाथसे छाती के द्वारा मिलकर बड़े धीरे २ यह वचन बोले ७ कि हे मेरे द्वेषी आओ आओ तू मेरेसाथ ईर्षा करताहै जो तू मुझको नहीं मिलता तो निश्चयकरके तेराभला नहीं होता ८ तू राधाका पुत्रनहीं है किन्तु कुन्तीकाही पुत्रहै और पिता अधिरथी नहीं है तू सूर्य्यका पुत्रहै यह भेद मुझको नारदजी ने बताया है ९ और व्यासजी वा केशवजी से भी विदित हुआ इसमें किसी बात का भी सन्देह नहीं है और यहबात भी मैं सत्य२ कहता हूं कि तेरेसाथ मेरी किसी प्रकारकी भी द्वेषता नहीं है १० मैंनेतेरे तेज नष्टहोने के लिये कठोर वचनकहे थे हे सुन्दरव्रतवाले कर्ण तू अकस्मात् सब पांडवों को मारेगा ११ हे सूतनन्दन इसीकारणसे राजा दुर्योधन ने तुमको बारंबार कहकर उद्युक्त कियाहै तू धर्म के रूपसे उत्पन्न हुआहै इसहेतुसे तेरी

ऐसी बुद्धि है १२ गुणवान् मनुष्यों की बुद्धिभी नीचों के संगसे वा ईर्षा से द्वेष करनेवाली होजाती है इसी हेतुसे कौरवों की सभामें बहुधारूखे २ बचन सुनेगये १३ मैं युद्ध में तेरेपराक्रम को पृथ्वी भरके भी शत्रुओं से असह्य जानता हूं और वेद ब्राह्मण की रक्षाकरने में शूरतामें और दान में तेरी बड़ी दृढ़ता को जानता हूं १४ मनुष्यमात्रों में तेरेसमान देवताओं के समान पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुलकी द्वेषताके भयसे सदैव कठोर बचन कहे १५ बाण और अस्त्रों के चलाने में और हस्तलाघवता में वा अस्त्रबल में तू महात्मा श्रीकृष्णजी और अर्जुन के समान है १६ हे कर्ण तुझ अकेले धनुषधारी ने काशीपुरी में जाकर कुरुराजकी कन्याके निमित्त बड़े २ राजाओं का युद्ध में मर्द्दन किया १७ इसीप्रकार पराक्रमी और दुःखसे विजय होनेवाला कीर्तिमान् राजा जरासन्ध युद्ध में तेरेसमान नहीं हुआ १८ तुम वेद और ब्राह्मणों की रक्षाकरनेवाले अपने तेजबलसे युद्ध करनेवाले देवगर्भ के समान युद्धमें मनुष्यों से अधिक हो १९ अब वह मेरा क्रोध दूरहुआ जो पूर्व्व समय में मैंने तुझपर किया था दैवी बात को अर्थात् होनहारको कोई भी उपायों से उल्लंघन नहीं करसक्ता २० हे शत्रुहन्ता यह बीर पांडव तेरेसगे भाई हैं हे महाबाहु जो तू मेरा हित चाहता है तो उनसे मिलापकर २१ हे सूर्य्यनन्दन अब तू मेरेकहने से शत्रुताको त्यागकर जिससे कि पृथ्वी के सबराजालोग निर्विघ्नहों २२ कर्ण ने कहा हे महाबाहु भीष्मजी मैं यह निस्सन्देह सब प्रकार से जानता हूं कि मैं कुन्ती का पुत्रहूं सूतका पुत्र नहीं हूं परन्तु मुझे कुन्ती ने त्यागकरदिया तब सूतने मेरा पोषण किया इससे दुर्य्योधन के ऐश्वर्य्य को भोगकर उसको निष्फल करना मैं उचित नहीं समझता हूं जैसे कि बसुदेव जी के पुत्र श्रीकृष्णजी पांडवों के निमित्त दृढ़ व्रतवाले हैं उसी प्रकार मैंने भी २५ धन जन पुत्र स्त्री परिवार और कीर्त्ति दुर्य्योधन के निमित्त बिचारकर लिये हैं हे बड़ी दक्षिणावाले कौरव कुल क्षत्री में रोगादिकों से मरना योग्य नहीं समझताहूं २६ मैंने दुर्य्योधनके आश्रय में होकर पांडवों को सदैव क्रोधित किया है और होतव्यता है वह तो अवश्यही होगी उसका मिटाने वाला कोई भी नहीं है कौनसा मनुष्य होनहारको उपायों के द्वारा लौटा सक्ताहै हेपितामह संसारके मनुष्यों के नाशकारी चिह्न आपलोगों ने देखेहैं और सभामें वर्णन किये हुए पांडव और वासुदेवजी सब प्रकार से मेरे जाने हुए हैं २६ वह अन्य मनुष्य से अजेय हैं परन्तु उत्साह पूर्व्वक कहताहूं किमैं उन पांडवों को विजय करूंगा यह मेरे चित्तका निश्चय है ३० जो कि यह महा भयकारी शत्रुता त्यागकरने के योग्य नहीं है इस कारण अपने धर्म में प्रसन्न चित्त होकर मैं अर्जुन से लड़ूंगा ३१ हे तात युद्धके निमित्त तुम्हीं नि-

श्चय करके मुझको आज्ञादो आपकीही आज्ञा से मैं युद्ध करूं यही मैं चाहता हूं ३२ और जो मैंने निर्बुद्धिता व चपलता से अत्यन्त बुरी २ विपरीत वार्त्ता करी आप उन मेरे कठोर वचनों को क्षमा करने के योग्य हैं ३३ भीष्म जी बोले कि जो यह अत्यन्त भय उत्पन्न करनेवाली शत्रुता त्याग करने के योग्य नहीं है तो हे कर्ण मैं तुझको आज्ञा देताहूं कि स्वर्ग का इच्छासे तू युद्धकर ३४ क्रोध अहंकार से रहित बल और साहसके अनुसार युद्धमें क्षमा करने वाला शक्ति और उत्साह के समानसतलोगों की वृत्ती करे ३५ मैं तुझको आज्ञादेताहूं और जोतू चाहताहै उसको प्राप्तहो क्षत्रीधर्मसे पराजय पानेवाले निस्सन्देह उत्तम लोकोंको पातेहैं ३६ अहंकार रहित वलिष्ठ अपनी सामर्थ्य के आश्रय में रहने वाले को धर्म युद्ध के सिवाय क्षत्री का कल्याण करनेवाला दूसरा कोई भी धर्म नहीं है ३७ अर्थात् वहुत काल तक सन्धिमें वहुतसा उपाय किया परन्तु करने को समर्थ नहीं हुआ हे कर्ण यह तुझसे सत्यही सत्य कहता हूं ३८ संजय बोले कि गांगेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर राधाका पुत्र कर्ण दण्डवत् पूर्व्वक अत्यन्त स्तुतिकर रोता हुआसा अपने रथपर सवारहोकर आपके पुत्रके पास आया ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिचतुर्विन्शत्यधिकशततमोऽध्यायः १२४ ॥

वेदाऽब्धिनन्दविधुसम्मितवैक्रमेऽब्दे आषाढशुक्लदलकालतिथौचभौमे ।
किंचाऽर्गलाख्यनगरस्थबुधोग्रजन्माकालीपदोहिविदधेखलुभारतार्थम् १ ॥

समाप्तम् शुभम्भूयात् ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापखाने में छपी
सितंवर सन् १८९५ ई० ॥

भविष्यपुराण ॥

श्रीपंडित दुर्गाप्रसाद जयपुर निवासी कृत भाषा है--इसमें पौराणिक इतिहास, चारोंवर्णोंके धर्म, स्त्रीशिक्षा व परीक्षा, व्रतोंके उद्यापन, शाकद्वीपीय ब्राह्मणों की उत्पत्ति, होनेवाले राजाओं का राज्य समय, गर्भिणी के धर्म, धेनुदान विधान, जलाशय, देवालय बनाने और वृक्ष लगाने का फल और सब प्रकारके दानों का माहात्म्य आदि वर्णन किये गयेहैं ॥

शिवपुराण भाषा ॥

इसका पंडित प्यारेलालजी ने उर्दू से हिन्दी भाषा में भाषानुवाद किया है इसमें शिवजी के निर्गुण सगुण स्वरूप का वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजा चरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काश्युपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्ष व भस्ममाहात्म्य, व्रत विधि, भूगोल, खगोल व आदिमें छवों शास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त कीगई है ॥

स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्यखण्ड ॥

पंडित दुर्गाप्रसाद जयपुर निवासीका भाषाहै इसमें सेतुबन्धका माहात्म्य वहां के सब तीर्थों का वैभव, महालयश्राद्ध का माहात्म्य, नरकों व रामेश्वर महादेव का वर्णन इत्यादि बहुतसी कथायेंहैं ॥

ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा ॥

जिसको पंडित दुर्गाप्रसाद जयपुर निवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्ड से देशभाषा में रचा जिसमें अनेक प्रकार के इतिहास और सम्पूर्ण व्रतों के माहात्म्य आदि वर्णित हैं ॥

बारहोस्कन्ध श्रीमद्भागवत ॥

इसके भाषा टीका को श्रीअंगदशास्त्री जी ने अक्षर अक्षर के अर्थ को ललित ब्रज बोलीमें रचना कियाहै यह टीका ऐसा मनोहर हुआहै कि जिसकी सहायता से थोड़ा भी जाननेवाला भागवतको अच्छीतरहसे समझ सक्ताहै यह पुस्तक प्रत्येक विद्वान् के पास रहनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ी कठिन पुराण है बिना ऐसे सहज भाषा टीकाके सबको श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ता है इसका मूल बीच में और भाषा टीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धतासे पत्रेनुमा छपा है कागज़ हिनाई है और छापा पत्थर है ॥

वृहन्नारदीयपुराण ॥

पंडित देवीसहाय शर्मा नारनौल निवासीकृत भाषा है जिसमें श्रीनारद जी और सनत्कुमार सम्वाद द्वारा श्रद्धाभक्ति निरूपण, भगवद्भक्ति माहात्म्य वर्णन उत्तम तीर्थों का निरूपण सगरबंशी सौदास राजा की कथा, श्री गंगाजी की उत्पत्ति, राजा बलिका वृत्तान्त, दान विधि का निरूपण, व्रतों और श्राद्धों का विधान, तिथिनिर्णय, प्रायश्चित्त विधान, यममार्ग का निरूपण, संसारके दुःखों का कथन, मोक्षोपाय वर्णन, वेद माली और तिसके पुत्र यज्ञमाली वा सुमाली की कथा और विष्णुजी के चरणोदक का माहात्म्य इत्यादि कथा वर्णित हैं ॥

सुखसागर ॥

सुखसागरों का तर्जुमा पंजाबके रहनेवाले बाबू मक्खनलालजीने किया है इस सुखसागर में बहुतही मोटेहरूफ़ और अत्यन्तही उम्दा तसवीरें इत्यादि सब सामान है कि जिसकी तारीफ़ नहीं होसक्ती देखनेही से हाल मालूम होगा ॥

गणेशपुराण भाषा ॥

इसको मुंशी नवलकिशोरकी आज्ञानुसार नारनौल निवासी पंडित देवीसहायजी ने संस्कृतसे श्लोक २ का देशभाषा में उल्था कियाहै इस में गणेशजीका सम्पूर्ण चरित्र विस्तारपूर्वक तथा और भी अनेक विषय वर्णितहैं

श्रीवाराहपुराणपूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध ॥

जिसका जयपुर निवासि पंडित माधवप्रसादजी ने मुंशी नवलकिशोर जी के व्यय से संस्कृतसे देवनागरी में भाषा किया और पंडित दुर्गाप्रसाद और पंडित सरयूप्रसादजीने शुद्ध कियाहै इसमें श्रीभगवान् वाराह नारायण ने धरती से चौबीसहजार श्लोकों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होने के लिये इतिहास संयुक्त कथायें वर्णन की हैं ॥

गरुडपुराण ॥

इस में ३४ अध्याय प्रेतकल्प के बीच में मूल और नीचे ऊपर भाषा टीका रखकर छापेगये हैं जिसमें सम्पूर्ण प्रेतही का कर्म है और प्रेतही की सम्पूर्ण षोड़शी सापिंडन शांति वृषोत्सर्ग इत्यादि क्रिया भी विस्तार पूर्वक वर्णितहैं ॥

७

महाभारत भाषा॥

द्रोणपर्व

---*---

जिसमें

द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, दुश्शासन, दुर्य्योधनादिवीरों से अर्जुन, भीमसेन और अभिमन्युआदि वीरोंका घोरयुद्ध और दुश्शासनके पुत्रके हाथसे चक्रव्यूह में अभिमन्युकी मृत्यु और अर्जुन के हाथसे जयद्रथ, भगदत्तादि सहस्रोंवीरोंका बध और धृष्टद्युम्नके हाथसे गुरु द्रोणाचार्य्यका बध इत्यादि मनोहर कथा बर्णन कीगई है॥

जिसको

भार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशी नवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा
नवम्बर सन् १८८८ ई०

पहलीबार ६००

महाभारतोंकीफेहरिस्त।

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत॥

—※—

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै वरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदबताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससेछूट नहींगई मानोंयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० बर्षकेबीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ीथे परनहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेखानेमें छपी-थी और क़ीमत बहुत सस्ती यानेवाजिबी १२) थे जैसाकारख़ानेकादस्तूरहै॥

अब दूसरीवार डबलपैका बड़े हरफ़ों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसारअलग २ भीमिलतेहैं॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) बनपर्व्व

दूसरेभागमें (४)विराटपर्व्व(५)उद्योगपर्व्व(६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व

तीसरेभागमें (८)कर्णपर्व्व(९)शल्यपर्व्व(१०)सौप्तिकपर्व्व (११) ऐषिक व विशोकपर्व्व(१२)स्त्रीपर्व्व(१३)शान्तिपर्व्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म

चौथेभागमें (१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेध (१५) आश्रमवासिकपर्व्व(१६)मूसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्ग्गारोहण व हरिवंशपर्व्व

महाभारत द्रोणपर्व्व भाषा का सूचीपत्र ॥

द्रोणपर्व्व भाषा का सूचीपत्र ॥

इतिद्रोणपर्व्वसूचीपत्रंसमाप्तम् ॥

अथभाषामहाभारतेद्रोणपर्वणि

मङ्गलाचरणम्

—※—

श्लोक

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाशारमत्त क्रमालयलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववादयन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयःप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पाण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्म्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंवन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्धेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमंजुलद्रोणपर्व भाषानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथद्रोणपर्वणिभाषावार्तिकप्रारंभः ॥

श्रीनारायणजीको और नरोत्तम नररूप को और श्रीसरस्वती देवीको नमस्कार करके जयनाम इतिहासको बर्णन करताहूं जनमेजय बोले कि हे ब्रह्मऋषि उसबुद्धि बल तेजके निधान अतुल पराक्रमी देवव्रत भीष्मजीको पांचालदेशी शिखंडीके हाथसे मरा हुआ सुनकर १ महाशोकाकुल नेत्रवाले बड़े पराक्रमी राजा धृतराष्ट्रने उक्त प्रभाववाले अपने पिताके मरनेपर क्याकिया २ और हेतपो-

धन भगवन् उसका पुत्र दुर्योधन जोकि भीष्म द्रोणाचार्य्य आदि-
क रथियोंकी सहायतासे बड़े धनुर्द्धर पांडवोंको विजय करके राज्य
को चाहताथा ३ उसने सब धनुषधारियोंमें विजयरूप भीष्मजी के
मरनेपर सब कौरव लोगों समेत जो कुछ मनकिया वह सब आप
मुझसेवर्णनकीजिये४वैशंपायनजी बोलेकिपितामहको मृतकसुनकर
चिन्ता और शोकसे व्याकुल कौरवोंके राजा धृतराष्ट्रने शान्तीको
नहींपाया ५ तदनन्तर उसराजाके दुःख और शोचको बारंबार
शोचतेहुये अत्यंत शुद्ध अन्तष्करणवाले संजय युद्धभूमिसे लौटकर
आये ६ हे महाराज अम्बिका के पुत्र धृतराष्ट्र ने उस युद्धभूमि के
डेरोंमेंसे हस्तिनापुर में आयेहुये संजय से भी पूछा ७ जब संजयने
भी उन के मरने का सब वृत्तान्त कहा उसको सुनकर अत्यन्त अ-
प्रसन्न और व्याकुल चित्त धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंकी बिजयको चा-
हताहुआ महावेदना युक्त रोगी के समान रुदन करनेलगा ८ और
रोदनकरने कीही दशा में संजयसे यहवचन बोलाकि हेतात महा-
भयानक कर्म करनेवाले मेरेपिता महात्मा भीष्मजीके बड़े २ शोक
विचारोंको करके कालसे प्रेरित कौरव लोगोंने फिर क्या काम
किया ९ अर्थात् उस दुर्जय शूरवीर महात्मा भीष्मके मरनेपर शोक
समुद्रमें डूबेहुये कौरवोंने कौनसा काम किया १० और हे संजय
महात्मा पांडवोंकी उस तीनोंलोकों को भयभीत करने वाली ११
असंख्य सेनाके बड़े २ राजालोगोंने भी उसदेवव्रत भीष्जीके मरने
पर जो जो कामकिया उस सबकोभी मुझसे वर्णनकरो १२ संजय
बोले कि हेराजा देवव्रत भीष्मजीके इसरीतिसे मरनेपर आपकेपुत्रों
ने जो २ कामकिये उस सब वृत्तान्तको तुम अपने चित्तको साव-
धान करके मुझसे सुनो १३ हेराजा तब सत्यपराक्रमी भीष्मजीके
मरनेपर आपकेपुत्रोंने और पांडवोंने पृथक् २ बड़ा शोचकिया१४
वहसब लोग क्षत्रीधर्मको देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर आश्चर्य्य
युक्तहुये हे नरोत्तम फिर उन अपने धर्मकी निन्दा करनेवाले लोगों
ने महात्मा भीष्मजीको दंडवत् करके १५ गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे

उस अमितकर्मा भीष्मजीकेअर्थ उपधान समेत शयनकल्पितकिया अर्थात् उक्त असंख्य बाणोंसेही शरीरको आच्छादित करके तकिये समेत शयनके लिये शरशय्याको बनाया १६ फिर उनगांगेयभीष्म-जीकी रक्षा करके परस्पर में बार्तालाप करते हुये उनको प्रतिष्ठा पूर्वक परिक्रमा करके १७ क्रोधसे अत्यन्त रक्तनेत्र कालसे प्रेरित क्षत्रीलोग परस्परमें मिलकर फिर युद्ध करने के निमित्त उपस्थित हुये १८ तदनन्तर आपके पुत्रोंकी और पांडवोंकी सेना तूरी और भेरी आदि बाजों समेत चली १९ हे राजेन्द्र दिनके अन्तमें गंगा पुत्रके गिरने पर क्रोधके आधीन कालसे व्यथित चित्त २० भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ आपके पुत्रलोग महात्मा भीष्मजीके बड़ेशुभ और हितकारी बचनोंको तिरस्कार करके शस्त्रोंको उठा २ कर बड़ी शीघ्रतासे चले २१ आपके पुत्रके मोहसे और भीष्मजीके मरणसे सबराजाओंसमेत बहुत कौरवलोग कालसे प्रेरणा कियेगये २२ जैसे कि हिंस्रजीवों से ब्याप्त बन में ग्वालिये से रहित बकरी और भेड़ें ब्याकुल होतीहैं उसी प्रकारभीष्मजीके बिना अरक्षित और निराशायुक्त वह सबलोगभी अत्यत ब्याकुल चित्त हुये २३ उस भरतर्षभ के गिरजाने पर कौरव लोगोंकी सेना ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्रों से रहित औरबायु से खाली आकाश होता है २४ उस शरशय्याके ऊपरराजा भीष्मके शयनकरनेपर सेनाऐसेप्रकार की दिखाई पड़ी जैसे कि असुरोंकी सेना व खेती आदिसे रहित पृथ्वी अथवा असंस्कृतबाणी होतीहै २५ जैसेकि सुन्दररूपवाली स्त्री बिधवा होय व जलसे रहित नदीहोय अथवा जैसे कि बनमें व पर्बत की कन्दरामें सिंहसे मरेहुये शरभानाम यूथपके बिनाभेड़ियों से घिराहुआ पृषतीनाम मृगोंका यूथ ब्याकुल होताहै २६ इसी प्रकार भरतबंशियों में श्रेष्ठ गांगेय भीष्मजी के गिरने पर भरतबंशियों की सेना महाभयभीतहोगई २७ महाबली लक्षभेदी बीर पांडवों से अत्यन्त पीड़ामान सेना ऐसे स्वरूपवाली होगई जैसे कि संसारकी वायुसे ताड़ित टढ़ीहुई नौका महा समुद्रमेंहोती

है २८ अर्थात् वह सेना जिस के घोड़े हाथी रथ व्याकुल थे और असंख्य मनुष्यों का नाश होगयाथा वह महा दुःखी और मनसे उदास होरहीथी २६ आशय यह है कि देवव्रत भीष्मजीसे रहित होकर उस सेनामें राजालोग और भिन्न २ प्रकारके सेनाके पुरुष भयभीत होकर पातालमें डूबेहुये के समान होगये ३० उससमय कौरव लोगोंने सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठपराक्रम और युद्धमें भीष्म-जीके समान राजा कर्णको ऐसे स्मरण किया जैसे कि चित्तसेचाहे हुये अतिथिको ३१ स्मरण करतेहैं और उसी में सबका चित्तऐसा गया जैसेकि आपत्तियों में फंसेहुये पुरुष का मन बन्धुमें जाता है और हे भरतवंशी वहां उनराजाओंने हे कर्ण हेकर्ण३ २ हे राधा के और सूतके पुत्र कहकर पुकारा और कहा कि इस शरीर त्यागने वाले भीष्मको हमारा प्रियकर्त्ता और रक्षक समझकर वहकर्णअपने भाइयों समेत दश दिनतक निश्चय करके नहीं लड़ा उस कर्णको शीघ्रलाओ विलम्ब न करो वह महा बाहुकर्ण क्षत्रियोंके देखते बल और पराक्रमसे स्तुतिमान रथियोंकीगणनाओंमें भीष्मसेअर्द्ध रथी गिनागया परन्तु वह नरोत्तम अर्द्ध रथी नहींहै किन्तु भीष्मजी से द्विगुणितहै ३३ । ३५ जोशूरोंकामानाहुआ रथी और अति रथियों में श्रेष्ठहै और जो असुरों समेत देवताओंके साथयुद्धमें युद्धाभिलाषी होकर साहसकरे हेराजाउसने उसीक्रोधसे गांगेय भीष्मजीसेकहा थाकिहे कौरव्य मैं तेरेजीतेजी कभीनहींलडूंगा३६।३७ और हेकौ-रवोत्तमइस महायुद्धमें आपके हाथसे पांडवोंके मरनेपर दुर्योधन को पूछकरवनकोजाऊंगा ३८ अथवापांडवोंके हाथसे आपकेस्वर्गा भिलाषीहोनेपर आप जिनको रथीमानतेहो उनसब रथियोंको एक ही रथसेमारने वालाहूंगा ३६ वह महाबाहु यशस्वीकर्ण इस प्र-कारसेकहकर आपकेपुत्रके मतसे नहींलड़ा४० हेभरतवंशी अतुल बलयुद्धमें शूरवीर भीष्मने पांडवोंके बड़ेरयुद्धकर्त्ताओंको युद्धमेंमारा ४१ फिर उस सत्यसंकल्प बड़े तेजस्वी शूरभीष्मके मरनेपर आपके पुत्रोंने कर्णकोऐसे स्मरणकिया जैसेनदीकेपार उतरनेकेअभिलाषी

लोगनौकाको स्मरणकरतेहैं ४२आपके सबयुद्धबर्त्ती औरदुर्य्योधना-दिक पुत्रराजाओं समेत यहकहकर पुकारे किहायकर्णहायकर्णयही समयहै उसपरशुरामजीके आज्ञावर्त्ती शस्त्रविद्यामें अजेयकर्णकेपरा-क्रममेंहमारा चित्त ऐसेगया जैसेकि नाशहोनेवालोंका मन बन्धुओंमें जाताहै ४४ हेराजा वहकर्ण हमलोगोंको बड़ेभारी भयसे ऐसे रक्षा करनेकोसमर्थहै जैसे कि गोविन्दजीबड़े २ भयोंसे देवताओंकीरक्षा करनेको समर्थहैं ४५ वैशम्पायनजीबोले कि यहसुनकर राजाधृत-राष्ट्र सर्पके समानश्वासाओंको लेकर उस बारंबार कर्णकेबखानकर नेवालेसंजयसे यहबचन बोले४६ किजब तुम्हाराचित्त शरीरसे कवच त्याग करनेवाले सूर्य्यके पुत्र कर्णमेंगया तब उस कवचत्यागी राजा और सूतके पुत्रको देखाभीहै ४७ उससत्य पराक्रमी कर्णनेउनव्या-कुल दुखी भयभीत और रक्षाके अभिलाषी कौरवोंकी इस आशाको कहीं निष्फल तो नहींकिया ४८ उस श्रेष्ठधनुषधारीने युद्धमेंउनकी आशाको पूर्णकिया यानहीं अर्थात् भीष्मजीके मरनेके पीछे अपनेबल पराक्रमसे उसने उस खंडकोपूराकरके दूसरोंको भयभीत किया यानहीं क्योंकि हे संजय इसलोकमें वही अकेला कर्ण पुरुषोत्तम कहाजाताहै ४९ । ५० युद्धमें अपने प्राणोंको त्यागकर अधिकतर रुदनकर वे पीड़ा मान बांधवोंकी रक्षाके निमित्त उनके कल्याणको करके मेरेपुत्रोंको विजयरूपी आशाको भी सफल किया या नहीं५१

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिधृतराष्ट्रसंजयसम्बादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

संजय बोलेकि हेराजा तब धनुष धारियोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ शत्रुओं को जीतनेवाला वह सूतका पुत्रकर्ण उन पुरुषोंके इन्द्रअजेय शन्त-नुके पुत्र महारथी अथाह समुद्रमें डूबतेहुये कौरवोंके नौकारूप भीष्मको गिराया और माराहुआ सुनकर अपनेनिज सहोदरभाईके समान आपके पुत्रकीसेनाको कठिन दुःखोंसे छुटानेका अभिलाषी होकर अकस्मात् समीपआया १।२ शत्रुओंके हाथसे समुद्रमें डूब

जाने वाली नौकाके समान रथियोंमें श्रेष्ठ भीष्मके मरनेपर आपके पुत्रकीसेनाकोदुःखसमुद्रसे तारनेकी इच्छाकरताहुआ शीघ्रतापूर्वक कौरवोंकेपास ऐसेआयाजैसेकिपुत्रोंको डूबतेदेखकर उनकेनिकालने कीअभिलाषासे पिताआताहै ३ कौरवोंकेपासआकर कर्ण यहवचन बोला कि जिस भीष्ममें धैर्य्य बलबुद्धि प्रताप सत्यता स्मरणतावीरों केसंपूर्ण गुण अशेषदिव्य अस्त्रसन्नति लज्जाप्रियभाषणता औरदूसरोंके गुणोंमें दोष न लगाना आदि अनेकगुणहैं उस सदैव कृतज्ञ और ब्राह्मणोंके शत्रु संहारी में यह सब गुण इसरीति से प्राचीन हैं जैसे कि चन्द्रमामें लांछनरूप चिन्ह होताहै जोवही शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला शान्तहोगया तो मैंअन्य सबवीरोंकोभी मृतक केही समान समझताहूं४।५ यहांकोईभी अविनाशी नहीं है इसलोक में कर्मके विनाश मानहोनेसे इस महाव्रत भीष्मके मरनेपर सूर्य्योदयके समयअपनी वर्तमानताको कौननिस्सन्देह करसक्ताहै ६ अष्टवसुनाम देवताओंकेअंश और वसुओंकीही शक्तिसे प्रकट होनेवाले राजा भीष्मको वसुओंसे एकता होनेपर धनपुत्रों समेत पृथ्वीऔर कौरवोंको और इससेनाको शोचो अर्थात् इनकीचिन्ताकरो ७संजय बोले कि बड़े प्रभाववाले बरकेदाता लोकेश्वर शासनकर्ता प्रतापोंसे पूर्ण भीष्मके गिराने व भरत वंशियोंकेपराजय होनेपर उद्विग्नचित्त होकर अश्रुपातोंको डालतेहुये कर्णने अत्यन्त श्वासेंलीं ८ हे राजा आपकेपुत्र और सेनाके मनुष्योंने कर्णके इस वचनको सुनकर परस्परमें वारंवार मोहसे उत्पन्न होनेवाले शब्दकिये और सब लोगों ने शब्दोंको करतेहुये अश्रुपातोंकोभी डाला९ फिर राजाओंसेमझाई हुई सेनामें महायुद्धके वर्तमान होनेपर वहमहारथियोंमें श्रेष्ठअतुल पराक्रमीकर्णउत्तम रथियोंकीप्रसन्नताका बढ़ानेवालावचनबोला१० कि सदैव अहर्निशव्यतीत होनेवाले इसविनाशमान संसारके मध्य में अब अत्यन्त शोचताहुआ मैं किसीको अविनाशी नहीं देखताहूं यहां आप लोगोंके नियत होनेपर पर्व्वतके समान महातेजस्वी कौरवोंमें श्रेष्ठभीष्मजी युद्धके मध्यमें किस रीतिसे गिराये गये ११

पृथ्वीतलमें वर्तमान सूर्य्यकेसमान महारथी भीष्मजीके गिरने पर राजालोग अर्जुनके सहनेको ऐसे समर्थ नहींहैं जैसेकि पर्व्वत पर चलनेवाले बायुके वेगको वृक्षनहीं सहसक्ते १२ निश्चय करके यह कौरवोंकी सेना जिसका कि अधिपति मारागया वह शत्रुओंकेहाथ से साहसको त्याग महादुखी होकर अनाथ होरहीहै वहसबसेना युद्धके मध्यमें मुझसे उसीप्रकार रक्षाकेयोग्यहै जैसे कि उसमहात्मा भीष्मजीसे रक्षितथी १३ जोकि मैंने अपने ऊपर इसप्रकारकाभार अच्छे प्रकारसे नियतकियाहै इसहेतुसे इसजगत्‌को भी अविनाशी देखताहूं जो युद्धमें कुशल भीष्मके युद्धमें गिरनेसे भय उत्पन्नहुआ है वहभय मैं नहीं दिखाऊंगा मैं उन कौरवोंमें श्रेष्ठ पुरुषोंको युद्धके मध्यमें सीधे चलनेवाले बाणोंसे ढकता यमलोकमें पहुंचता हुआ संसारमें बड़े यशको उत्पन्न करके कर्मवर्त्ती हूंगा अथवा शत्रुओं के हाथसे मरकर पृथ्वीपर शयनकरूंगा १४।१५ संसारमें सत्य संकल्प युधिष्ठिर और दशहजारहाथीके समानपराक्रमी भीमसेन और बली तरुण अवस्थावाला अर्जुनभी इन्द्रका पुत्रहै इसलोकमें वह पांडवों की सेना देवताओं समेत इन्द्रसेभीसुगमता पूर्व्वक विजयहोने के योग्यनहींहै १६ जिस युद्धमें बलमें अश्विनी कुमारोंकोसमानतारख नेवाले नकुल और सहदेवहैं और जिसमेंसात्यिकी समेत श्रीकृष्ण जीहैं उसी सेनाके सन्मुखआनेवाला नपुंसक मृत्युके मुखसे जीवता नहीं लौटताहै १७ बड़ातपस्याहीसे शान्त औरविजय होताहै इसी प्रकार बड़े साहसी प्रतापी पुरुषों को सेना से सेनापीड़ा पातीहै निश्चय करके मेराचित शत्रुओंके पराजयकरने और अपनी रक्षामें चलायमान के समान नियतहै १८ हे सूतअब मैं जाकर उन सबके प्रभाव को इस प्रकार से मथन करके बिजय करताहूं यह मित्रके साथ शत्रुता मुझसे सहने के योग्य नहींहै क्योंकि सेना के आगे होकर सन्मुखताकरे वही मित्रहै १९ अबमैं सत्पुरुषों के इस कर्म को करना चाहताहूं और प्राणों को छोड़कर भीष्मजी केही साथ जाऊंगा मैं युद्धमें शत्रुओंके सब समूहों को मारूंगा अथवा उनके

हाथसे मरकर वीरोंके लोकोंको पाऊंगा २० दुर्योधन का पराक्रम न्यून और हतहोने वा अतिशय प्रत्युत्तरमें और स्त्री समेत कुमारोंके रोदन करनेपर मुझको युद्ध कर्मकरना योग्यता पूर्वक उचितहै हे-सूत में यह जानताहूं इसीहेतुसे अबमें राजा दुर्योधनके शत्रुओंको विजय करूंगा २१ मैं इस महाभयकारी युद्ध में कौरवों की रक्षा करता और पांडवोंको मारता अपने प्राणोंकी आशा छोड़ लड़ाई में शत्रुओंके सब समूहों को मारकर दुर्योधनके अर्थ राज्य को दूंगा २२ मेरेउस कवचको बांधो जोकि उज्ज्वल सुवर्णमयमहाअपूर्व होकर मणि रत्नादिकों से प्रकाशमानहै और सूर्य्य के समान प्रकाशित शिरस्त्राणको और अग्नि वा विषके समान धनुष बाणों को २३ सोलह उपासंगों समेत रथपर लगाओ और इसी प्रकार मेरेदिव्य धनुषोंको लाओ इसके विशेष खड्ग शक्ति वा भारी २ गदा और सुवर्णजटित प्रकाशमान शंखोंको लाओ २४ इसस्वर्ण मयी अपूर्व नागकक्षाको और कमलके समान शोभायमान ध्वजा को और अच्छी बंधीहुई अद्भुत मालाको शुद्धवस्त्रों से स्वच्छकरके जाल समेत लाओ २५ हे सूतपुत्र श्वेत बादल के समान प्रकाश मानहृष्ट पुष्ट शरीरवाले मन्त्रोंसे पवित्र कियेहुये जलों से स्नान कराये वा संतप्त कियेहुये सुवर्णपात्रोंसे युक्त शीघ्रगामी घोड़ोंको तुरन्तलाओ२६ स्वर्णमयी मालाओं से अलंकृत सूर्य्य चन्द्रमा के समान प्रकाशमान रत्नोंसे जटितयुद्धकेयोग्य घोड़ोंसेयुक्त आलस्य को दूर करने वाले द्रव्यों सहित उत्तम रथको शीघ्रवर्तमान करो २७ वेगवान् विचित्र धनुष वा अच्छे प्रकार बांधनेके योग्य प्रत्यंचाओंको और२ बाणोंसे भरेहुये बड़े २ तूणीरोंको वा कवचों को पाकर लाओ २८ यात्राका सब सामान शीघ्रलाओ और हेवीर दहीसेभरेहुये सुवर्ण और कांस्यपात्रलाओ मालाको लाकर अंगमें बांधकर शीघ्रतासे विजयके निमित्त भेरी को बजाओ २९ हे-सूत तू वहां पर बड़ी शीघ्रता से चल जहांपर अर्जुन भीमसेन युधिष्ठिर और नकुल सहदेवहैं मैं युद्धमें सन्मुख होकर उनको मारूंगा

अथवा शत्रुओंके हाथसे मरकर भीष्म जीके साथ जाऊंगा३० जिस सेनामें सत्य धैर्य्यवाला राजा युधिष्ठिर नियत है और भीमसेन, अर्जुन,सात्विकी,सबसृंजय,और बासुदेवजी नियत हैं वह सेना अन्य राजाओंसे अजेयहै ऐसामें मानताहूं३१ यद्यपियुद्धमें सबका मारनेवालाकाल बड़ी सावधानीसे उस अर्जुन की चारों ओर से रक्षा करताहै तौभी मैं संग्राममें सन्मुख होकर मारने वालाहूं वा यमराज के निमित्त भीष्मजीके साथजाऊंगा३२मैंउन शूर लोगोंके मध्यमें नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं कहताहूं कि उसमें मित्रसे शत्रुता करनाहै जो अल्पपराक्रमी और पापात्माहैं वेमेरे सहायक नहींहैं ३३संजयबोले किरत्नादिसेजटितदृढ़स्वर्णमयीशुभकारी कूबररखने वाली पताका धारणकिये बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त उत्तम रथपर बैठकरबिजयके निमित्त चला३४तब जैसेकि देवताओं के समूहोंसे इन्द्रपूजित होताहै उसी प्रकार कौरवोंसे अच्छे प्रकार पूजित महात्मा रथियोंमें श्रेष्ठ भयानक धनुषधारी कर्णबड़ी सेना समेत ध्वजाधारी सुवर्ण मोती और मणि रत्नोंकी मालाओंसे युक्त उत्तम घोड़ोंसहित बादलके समान शब्दायमान अग्निके समान प्रकाश मान शुभरूप और लक्षणोंसे शोभित रथपर नियत होकर उस युद्धभूमिमें शोभितहुआ जहांपर कि भरतर्षभ राजा दुर्य्योधन कानिवास स्थानथा अर्थात् उसस्थानपर ऐसे शोभितहुआ जैसे कि बिमानमें नियतहोकर सब देवताओंमें इन्द्रशोभितहोताहै ३६।३७

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

संजयबोले कि उसबड़े प्रतापी तेजस्वी महात्मा शर शय्यापर सोने वाले बड़े बायु समूहसे शुष्क समुद्रके समान १ सब क्षत्री कुलोंके नाश कर्त्ता बड़े धनुष धारी अर्जुनके दिव्य अस्त्रोंसे गिराये हुये गुरूरूप भीष्म पितामह को देखकर आपके पुत्रोंकी बिजय और सुखवा कल्याणकी आशा सबनष्ट होगई २ अतलस्पर्श समु-

द्रमें थाह चाहनेवाले और पार न पहुंचनेवाले द्वीपऔर यमुनाजी के सोतके समान बाणों के समूहों से भरे हुये ३ महाइन्द्र के हाथ से गिराये हुये असह्यताके योग्य मैनाक पर्व्वत के समान प्रकाशित और आकाश से गिरकर पृथ्वीतलमें पड़े हुये सूर्य्यके समान देदीप्यमान ४ और पूर्व्व समयमें वृत्तासुर से विजय किये हुये अचिन्त्य इन्द्रके समान भीष्मको जिसका कि युद्धमें गिराना-हो सबसेनाका मोहित करनाहै ५ सबसेनाके प्रधान और सब धनुष धारियोंके ध्वजारूप अथवा अर्जुनके उत्तम बाणोंसे विदीर्ण शरीर वीर शय्यापर शयन करनेवाले पुरुषोत्तम वीर उसमेरे और भरत वंशियोंकेपिताभीष्मकोइस बड़ेतेजस्वीअधिरथीकर्णनेदेखकर ६।७ महापीड़ा युक्त अश्रुपातों समेत गद्गद वाणीसे युक्त कर्ण रथसे उतर दण्डवतकरहाथ जोड़कर प्रशंसाकरताहुआयहवचनबोला८ हेभरतवंशी मैं कर्णहूं आपका शुभहोय अब आप पवित्रता और कल्याण संयुक्त वचनोंसे मेरे सन्मुख वार्तालापकरिये और नेत्रोंसे देखो ९ निश्चय करके इसलोकमें कोई पुरुष उत्तमकर्मके भोगको नहीं भोगताहै जिसस्थानपर कि धर्मको उत्तम जाननेवाले आप वृद्ध पृथ्वीपर सोतेहैं १० हेकौरवोंमें श्रेष्ठ मैं कौरवोंकी बाधनागार की सम्मतकी व्यूहको और शस्त्र चलानेकी वृद्धिमें किसीदूसरेको नहीं देखताहूं ११ अत्यन्त पवित्रबुद्धिसे युक्त जो भीष्म कौरवोंको भयसे तारनेवालाथा वह बहुतसे युद्धकर्त्ताओंको मारकर अबपितृ लोकको जायगा १२ अबसे लेकर अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडव लोग कौरवोंके कुलका ऐसे नाशकरेंगे हेभरतवंशी जैसेकि व्याघ्र मृगों कानाश करतेहैं १३ अब अर्जुनके गांडीव धनुषके पराक्रम और सामर्थ्यके जाननेवाले कौरव ऐसे भयभीत होंगे जैसेकि वज्रधारी इन्द्रसे असुर भयभीत होतेहैं १४ अब गांडीव धनुषसे छोड़ेहुयेवज्र के समान बाणोंके शब्द कौरवोंको और राजाओंको भयभीत करें-गे १५ हेवीर जैसेकि बड़ी वृद्धिमान और अत्यन्त प्रचंड अग्नि वृक्षोंको भस्मकर डालतीहै उसीप्रकार अर्जुनके बाणभी धृतराष्ट्र

के पुत्रोंको भस्मकरेंगे १६ वनके मध्यमें बायुऔर अग्नि एकसाथ जिस २ मार्गसे चलतेहैं उस २ गतिसे बहुतसे गुल्म तृण और वृक्षादिकोंको जलातेहैं १७ औरजिसप्रकारकी अग्नि है उसीप्रकार का अर्जुनभी निस्संदेह उत्पन्न हुआहै और हे नरोत्तम जैसाकि बायुहोताहै उसीप्रकारके निस्संदेह श्री कृष्णजी हैं १८ हे भरत बंशीपांच जन्य शंखके बजानेपर और गांडीव धनुषके शब्दायमान होतेही सब सेनाके लोग उसशब्दको सुनकर भयभीतहोंगे१६ हे वीर भीष्मजी शत्रुओंके जीतनेवाले बानरध्वज अर्जुनके रथकेदौड़नेपर आपके सिवाय अन्य राजालोग उसशब्दके सहनेको समर्थ नहींहोंगे २० आपके सिवाय दूसरा कौनसाराजा अर्जुनसे लड़नेके योग्यहै क्योंकि उस अर्जुनको सबबुद्धिमान लोग दिव्यकर्मी कहतेहैं २१ जिसका अमानुषी युद्धशिवजीके साथ ऐसाहुआ जोकि बुद्धिसेबाहरथा और उन शिवजीसे वह बरपाया जोकि अपवित्रात्मा पुरुषोंसे कठिनतासेभी प्राप्तकरना असंभवहै २२ उसको युद्धमें कौन पुरुष बिजय करनेको समर्थहै जिस आपके भुजबलके पराक्रमसे क्षत्रियोंके नाशकर्त्ता और देवता दानवोंकेभी अहंकारोंके दूर करनेवाले भयकारी परशुरामजी बिजयहुये २३ ऐसे महा पराक्रमी आपसेभी वहअर्जुननहीं बिजयहुआ अबमैं आपकीआज्ञानुसार युद्धमें महाप्रबल औरकुशल बुद्धिमान्पांडव अर्जुनको न सहकर अपने अस्त्रोंकेबलसे उससर्पके समान विषले दृष्टिकेआकर्षण करनेवाले बड़े भयकारी शूरबीरके मारनेको समर्थहूंगा २४

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

संजयबोलेकि कौरवोंके वृद्ध पितामह प्रसन्न चित्त भीष्मजीउस बिलापकोकरतेहुये कर्णसेदेशकालकेसमान बचनबोले१ जैसेकिनदियोंके समुद्र प्रकाश करनेवालोंकेसूर्य्य सत्यताकेसन्तलोग बीजोंकी पृथ्वी औरजीवोंका आश्रयस्थान और प्रतिष्ठारूप बादल हैं उसी

प्रकार मित्रोंमें तेरी प्रतिष्ठाहै औरबांधव लोग तेरेपास ऐसेजीविका सहित निर्वाह करतेहैंजैसेकि देवतालोग इन्द्रकेपास अपनानिर्बाह करतेहैं ३ शत्रुओंके मानका तोड़नेवाला औरमित्रों के आनन्दका वढ़ानेवाला होकर कौरवोंके वैसीगति रूपहो जैसेकि देवताओंकी गति विष्णुभगवान् होतेहैं ४ हेदुर्य्योधनकी बिजयचहनेवाले कर्ण तुमने राजपुरको जाकर अपनेभुजबल औरपराक्रमसे काम्बोजदेशी विजयकिये५ और गिरिब्रजमें बर्तमानहोकर नग्नजित आदिकराजा और अम्बष्टदेशी विदेहदेशी और गान्धारदेशी राजाओंको भी विजयकिया ६ हेकर्ण पूर्व्व समय में हिमालयपर्व्वतके दुर्गमस्थानों के रहनेवाले युद्धमें महानिर्दय किरातलोगों कोभी तुम्हींने दुर्य्योधनके आज्ञावर्ती किये ७ तुम्हींने उत्कलदेशी, मेकलदेशी,पौंड्र २ कलिंग,आन्ध्र,निषाद, त्रिगर्त्त, और बाल्हीक देशीभी युद्धमें बिजय किये ८ हेदुर्य्योधनके प्रिय चाहनेवाले वड़ेतेजस्वी कर्ण तुमने जहां तहां युद्धमें अन्य २ अनेक वीरोंकोभी विजयकिया ६ हेतात जैसे दुर्य्योधन ज्ञातिकुल और बांधवों समेतहैं उसीप्रकार तुमभी सब कौरवोंकीगतिहो१०मैंतुझको आनन्द पूर्व्वक कहताहूं कितुमजाओ औरशत्रुओंकेसाथ युद्धकरो और लड़ाईमें कौरवोंके शिक्षकहोकर दुर्योधनको बिजयदो ११ जिस प्रकार दुर्योधनहै उसी प्रकार तुम भी हमारे पौत्रकी समानहो और हमजिस प्रकार दुर्योधन के हैं उसी प्रकार से तुम्हारेभीहैं १२ हे नरोत्तम ज्ञानीलोगों का कथन है कि अच्छे लोगोंकी मित्रता जो सत्पुरुषोंके साथ होतीहै वह नातेदारी आदिसेभी अधिकहै १३ सोमेरा यहनिश्चय कियाहुआहैकि तुमसच्ची प्रीति करके कौरवोंकी सेनापर ऐसी प्रीति करो जैसे कि दुर्योधन करताहै १४ सूर्य्यका पुत्रकर्ण भीष्मजीके बचनों को सुन कर उनके चरणों को दंडवत करके सब धनुष धारियों के सन्मुख गया १५ और सेनाके समूहवर्ती पुरुषों को अनुपम उत्तम सभाको देखकर नियतहुआ तब उसको देखकर दुर्योधनादिक सब कौरव लोग प्रसन्न हुये १६ उस महात्मा युद्धोत्सुक सेना के अग्रवर्ती

महाबाहु कर्ण को समीपआयाहुआ देखकर १७ कौरवोंनेसिंहनाद वा भुजदंडोंकेशब्द और अनेक प्रकारके धनुषोंके शब्दोंके द्वाराउस कर्णकी अच्छीरीतिसे प्रतिष्ठाकरी १८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः४॥

पांचवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजाउस पुरुषोत्तम कर्ण को रथमें सवार और नियत देखकर प्रसन्न चित्त दुर्योधन इस बचन को बोले १ कि आपसेरक्षित और पोषित सेनाको सनाथजानताहूं यहां आपअपने चित्तसे जिस बातको श्रेष्ठ और प्रियकारी जानतेहो उसीको करो २ कर्णबोले हेपुरुषोत्तम राजादुर्योधन तुमबड़े बुद्धिमानहो जैसे किअर्थ पति अर्थात् प्रयोजन वाला पुरुष कहताहै उसी प्रकार तुम अपने प्रयोजन की बातको कहो ३ हे राजा हमसबलोग आपके बचनों के सुनने के अभिलाषी हैं आपन्याय के बिपरीत बचनों को नहीं कहोगे यह मेरासिद्धांतहै ४ दुर्योधन बोले कि जैसे आयुबल शास्त्र और ज्ञानसेपूर्णसब युद्धकर्ताओंके समूहोंसे युक्तभीष्मजी सेनापति हुये ५ हे कर्णउस वृद्ध और मेरेशत्रु समूहोंके मारनेवाले महात्मा ने अच्छीरीतिके युद्धोंको करके दशदिनतक हमलोगोंकी रक्षाकरी ६ उसकठिनकर्म करने वाले भीष्म के स्वर्गबासी होने पर अबकिस कोसेनापति करनेके योग्यमानतेहो ७ बिनास्वामीके सेनाएकमुहूर्त मात्रभीयुद्धमें ऐसे नियतनहीं रहसक्ती ८ जैसेकि मल्लाह से रहित नौका जलमें नहीं रहसक्ती ९ जैसे कि कर्णधारसे रहित नौकाऔर जैसे सारथी न रखने वालारथ इच्छा के अनुसार अर्थात् स्वेच्छा चारी होकर चलतेहैं इसी प्रकार के सेनापतिके बिना सेनाभी स्व-तन्त्र होकर स्वेच्छाचारी अपनेसे छिन्न भिन्नहोजातीहै १० जैसे कि परदेश को न जानेवाला ब्यापारी सब दुःखोंको पाताहै उसीप्रकार बिनासेना पतिके सब सेनाभी सब प्रकार के दोषोंको पातीहै सो आपयहां हमारे सब महात्मा शूरबीरों में से किसी महात्मा पुरुष

को भीष्मजीके पीछे सेनापतिके अधिकार के योग्यदेखो ११ आप जिसको युद्धमें सेनापतिके योग्यकहोगे उसीको हमसाथवाले सेना का स्वामी बनावेंगे १२ कर्णबोलेकि ये सब महात्मा शूरबीरलोग निस्सन्देह सेनापतिके योग्यहैं इसमें किसी प्रकार का भी विचार न करना चाहिये १३ येसब कुलीन शरीर ज्ञान बल पराक्रम बुद्धि और शास्त्रज्ञ होकरयुद्धमें मुखको न मोड़ने वालेहैं १४ परन्तु वेसब एक साथही अधिपति सेनाधीश करनेके योग्य नहीं हैं इन सबमें सेअनेक गुणवालाएकही सेनापति करना उचितहै १५ जो इनुपरस्पर ईर्षा करने वालोंमेंसे किसी एकको स्वामी बनाओगे तो प्रकट हैकि वाकीवचेहुये शेष शूरवीर प्रसन्नहोकर आपके अभीष्टकोनहीं करेंगे १६ ई सब युद्धकर्ताओं के गुरूवृद्ध द्रोणाचार्य्य जी सेनापति करनेके योग्यहैं १७ इसअजेय शस्त्र धारियों में श्रेष्ठशुक्र और वृहस्पति जीके दर्शन के समान द्रोणाचार्य्य जीके सिवाय दूसरा कौन सेना पतिहोनेके योग्यहै १८ हे भरतवंशी सबराजाओंमें ऐसाकोई तेरा शूरवीर भी नहींहै जो युद्ध भूमिमें लड़ाईके निमित्त जाने वाले द्रोणाचार्य्य के साथजाय १९ हे राजायह आपकेगुरू सबसेनापति योंमें श्रेष्ठहैं यहीसव शस्त्रधारियोंमें उत्तमहैं यही बुद्धिमानों मेंभी अधिकहैं २० हेदुर्योधनइसविचारसेआचार्य्यजीको शीघ्रहीसेनापति करना चाहिये जैसेकि असुरों के विजय करनेके लिये देवताओंने कार्तिकेय जीकोसेनापति किया उसीप्रकार तुम इन द्रोणाचार्य्यजी को सेनापतिकरो २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि राजा दुर्योधन कर्णके इस वचनकोसुनकर सेना के मध्यमें वर्तमान द्रोणाचार्य्य जीसे यहवचनवोले १ वर्णोंमें उत्तमता, कुलकी उत्पत्ति, शास्त्र, अवस्था, बुद्धि, पराक्रम, चतुराई, अजेयता, अर्थज्ञता, बुद्धित्व, तप, उपकारज्ञता, सर्वगुणविशिष्टता, इत्यादिगुणोंसे

युक्त आपके समान योग्य और सेनाकारक्षक राजाओं मेंकोई दूसरा वर्तमान नहींहै २।३ सो आपहमको ऐसेरक्षाकरो जैसेकि इन्द्रदेवताओंकी रक्षा करताहै हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ आपकीआज्ञाके अनुसारहम लोगशत्रुओंको बिजय करना चाहतेहैं ४ जैसेकि रुद्रोंका स्वामी कापाली, वसुओंका, अग्नि, यक्षोंका,कुवेर,मरुत,नामदेवताओंका इन्द्र ५ ब्राह्मणोंका बशिष्ट, प्रकाशमानोंका सूर्य्य, पितरों का धर्म, देवताओंका इन्द्र, जलके जीवोंका बरुण ६ नक्षत्रोंकाचन्द्रमा,और दितीके पुत्रोंका स्वामी शुक्रहै इसी प्रकार सेनापतियोंमें श्रेष्ठआप हमारे सेनापति हूजिये ७ हेपापोंसे रहित यह ग्यारह अक्षौहिणी आपकी आज्ञानुवर्ती होंगी इनसबसेनाओं के साथ व्यूहको रचकर शत्रुओंको ऐसेमारो जैसेकि इन्द्रदानवों को मारताहै ८ आपहम लोगोंके आगेऐसेचलो जैसेकि देवताओंके आगेअग्नि देवताचलते हैं और हम युद्धभूमिमेंआपके पीछे ऐसेचलेंगे जैसेकि गौओंकेसाथ उनके बच्चे बैल चलते हैं ९ अथवा जैसे पिताके साथपुत्र चलतेहैं हेशत्रुओंके भय भीत करनेवाले बड़ेउग्र धनुषधारी गुरूमहाराज आपदिव्य धनुषको टंकोरतेहुये आगे हूजिये आप को देख कर अर्जुन कभी प्रहार न करेगा १० हेपुरुषोत्तम जो आप सेना पति होंगे तो निश्चय करके युद्धमें उसकेबान्धव और सबसाथियों समेत युधिष्ठिरको बिजय करूंगा ११ संजय बोले कि उसके इस प्रकार कहने पर राजालोग बड़े सिंहनाद से आपके पुत्रको प्रसन्नकरते हुये द्रोणाचार्य्यजी से यह बचन बोलेकि बिजय कीजिये १२ और प्रसन्नता से युक्त बड़े यशकी अभिलाषा करते सेनाके मनुष्यों ने दुर्योधनकेआगे ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यकी बड़ीप्रशंसाकरी इसके पीछे द्रोणाचार्य्यजी दुर्योधनसे बोले १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषष्ठोऽध्याय: ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

द्रोणाचार्य्य बोले कि मैं छः अंग रखने वालेवेदको और मनुष्यों

के अर्थ विद्या अर्थात् देशप्रवन्धनी विद्याको और पाशुपति बाण अस्त्र और अन्य नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रोंको जानता हूं १ और विजयाभिलाषी आप लोगों ने भीजो २ गुण मुझमें वर्णन कियेहैं उन सवको करने का अभिलाषी होकर मैं पांडवों से लड़ूंगा २ परंतु हे राजामैं किसी दशामेंभी युद्धके मध्यमें धृष्टद्युम्नको नहीं मारसकूंगा क्योंकि वही पुरुषोत्तम मेरे मारनेकेनिमित्त उत्पन्नकियागयाहै ३ मैंसव सोमकोंका नाश करता हुआ सेनाओंसे लड़ूंगा और पांडव प्रसन्नता पूर्व्वक मुझसे नहीं लड़ेंगे ४ संजय बोले कि हेराजा इसके अनन्तर इसरीतिसे उनके आज्ञावर्ती होनेवाले आपके पुत्रने शास्त्रमें देखेहुये कर्मकेद्वारा द्रोणाचार्य्यको सेनापति बनाया ५ फिर उन सव राजाओंने जिनमें अग्रगामी दुर्योधन था द्रोणाचार्य्य जीको सेनाके सेनानीपद पर इसरीतिसे अभिशेष किया जैसे कि पूर्व्व समय में इन्द्रादिक देवताओंने स्कन्दजीको कियाथा ६ तव द्रोणाचार्य्य के सेनापति करने पर बड़े २ बाजे और शंखोंके शब्दों के द्वाराप्रसन्नता प्रकटकरी ७ इसकेपीछे पुण्याह वाचनकेघोष स्वस्ति वाचन के शब्द सूत मागध वंदियोंके स्तवगीत वाद्यके शब्द उत्तम ब्राह्मणोंके जय शब्द विजयशब्द और शुभांगनाओंके नृत्यसे बुद्धि के अनुसार द्रोणाचार्य्यजी का सत्कार करके पांडवों को पराजित माना ८।९ संजय वोले कि फिरमहारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजीसेनाकी अधिपताको पाकर युद्धाभिलाषी सेनाओंको अलंकृत करके आपके पुत्रों के साथचले १० सिन्धका राजा और कलिंग देशका राजा और आपका पुत्र विकर्ण दाहिने पक्षमें बर्तमान होकर शस्त्रों से अलंकृत अच्छी रीति से नियतहुआ ११ और उन सेनाओं का रक्षक परपक्ष वाला राजाशकुनी निर्मलशस्त्रोंसे लड़नेवाले गान्धार देशी और अत्यन्त उत्तम अश्वारूढ़ों समेतचला १२ और कृपा चार्य्य कृतवर्मा चित्रसेन विविन्शति और दुश्शासनादि सावधान लोगोंने वामपक्षको रक्षित किया १३ उन्होंके परपक्ष कांबोजदेशी यवनों समेत शकुनि जिनका कि अग्रगामी राजासुदक्षणथा वह बड़े

शीघ्रगामी घोड़ों समेत चले १४ मद्र, त्रिगर्त्त, अम्बष्ठ, पश्चिमीय उत्तरीय राजालोग मालवीय शिवय सूरसेन और मलयदों समेत सौवीर १५ कि तब सब पूर्वीय और दक्षिणीय राजा आपके पुत्र-को आगे करके कर्णकेपीछे १६ अपनी सेनाओंको प्रसन्न करते आप के पुत्रोंके साथचले सब शूरवीरोंमें शिरोमणि द्रोणाचार्य्यजीनेसेना ओंमें पराक्रम नियतकिया १७ और सूर्य्यके पुत्र कर्णने सबधनुष धारियों के आगे होकर बड़ी शीघ्रता पूर्वक अपने शरीरके प्रकाश से सब सेनाको प्रसन्नकिया १८ हाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवा-ली बड़ी उत्तम ध्वजा धारण करनेवाला सूर्य्यके समानतेजस्वीकर्ण बड़ा शोभायमान हुआ उसकर्णको देखकर किसीनेभी भीष्मके दुःख को नहीं माना १९ और कौरवों समेत सब राजालोगशोकसेरहित हुये उस समय प्रसन्न चित्त बहुत से शूरवीर बड़ी तीव्रतासे और दर्पसेबोले कि इसकर्णको देखकर पांडवलोग युद्धमें नियत नहीं होंगे यह कर्ण युद्धमें इन्द्र समेत सब देवताओंके विजय करने को समर्थहै २१ बल पराक्रमसे रहित पांडवोंको युद्धमें विजय करना क्या बातहै बाहुशाली भीष्मने पांडवोंको दयाकरके पोषण किया और रक्षाकरके नहीं मारा २२ परन्तु अब यह कर्ण उनको युद्धमें तीक्ष्ण बाणोंसे नष्ट करदेगा हे राजा इस रीतिसे वह सब राजा लोग परस्परमें कहते २३ और कर्णको पूजते उसकी प्रशंसा करते हुये चलदिये हमारी सेनाका यह शकटव्यूह द्रोणाचार्य्यनेरचा २४ हे भरतबंशीराजा धृतराष्ट्र दूसरे महात्मा अर्थात् पांडवोंका क्रौंच व्यूह प्रसन्नचित्त धर्मराज युधिष्ठिरनेरचा २५ उनके व्यूहकेमुखपर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी और अर्जुन अपनीवानर ध्वजाकोऊंचीकरके नियत हुये २६ उस अर्जुन की जो ध्वजाथी वह सब सेनाओं का राजचिह्न और सब धनुष धारियोंकी ज्योति रूपथी बड़े तेजस्वी महात्मा अर्जुनकीध्वजा जोकि सूर्य्यकेमार्गमें बर्त्तमानथीउसनेउस सेनाको ऐसे प्रकाश मानकिया जैसे कि प्रलयके समय बड़ी अग्नि की ज्वाला और सूर्य्यका तेज पृथ्वीको प्रकाशित करताहै २७।२८

उसी प्रकार से वह अर्जुन की प्रकाश करनेवाली ध्वजा सबस्थानोंपर प्रकाश करती हुई दिखाईपड़ी युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ अर्जुन है और धनुषोंमें महा उत्तम गांडीव धनुषहै २९ सब जीव धारियोंमें वासुदेवजी और चक्रोंमें सर्वोत्तम सुदर्शन चक्रहै इनचारों तेजोंका ले चलनेवाला श्वेतघोड़ेवाला रथ ३० कालचक्रके समान उदय होनेवाला शत्रुओंके आगे नियत हुआ इस रीतिसे वह दोनोंमहात्मा सेनाके आगे चलनेवालेहुये ३१ आपके पुत्रोंके आगेकर्ण और पांडवोंके आगे अर्जुनहुआ तब उसके पीछे विजयके निमित्त क्रोध से भरे परस्पर मारनेके अभिलाषी ३२ कर्ण और पांडव अर्जुनने युद्धमें जाकर परस्पर वाटदेखी अर्थात् एकने दूसरेका पैंड़ादेखा इसकेपीछे अकस्मात महारथी द्रोणाचार्य्य के चलनेपर ३३ दुःखों से भराहुआ महाशब्द हुआ पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई और बड़ी धूलने सूर्य्य समेत आकाशको ढकदिया ३४ तदनन्तर रेशमी वस्त्रोंके समूहोंके समान कठिन और असह्य धूलउठी और विना बादलोंकेही आकाश से मांस रुधिर और अस्थियोंकी वर्षा होने लगी ३५ और हे राजा उस समय हजारों गिद्ध बाज बगले कंक काक आदि अशुभ द्योतकपक्षी सेनाके ऊपर गिरे ३६ और शृगाल बड़े भयकारी अशुभ शूचक शब्दों को करनेलगे और बहुत से पक्षियोंने आपकी सेनाको दक्षिण किया ३७ वहपक्षी मांसके खाने और रुधिरके पान करने के अभिलाषी हुये और अग्निसे प्रज्वलित प्रकाशमान उल्काप्रहारोंके शब्दों समेत कंपायमानकरती पीठ की ओर से सबको घेरकर युद्धभूमिमें गिरी हे राजा सेनापतिके चलनेपर सूर्य्यका बड़ा मंडल बिजली और बादलकी गर्जना समेत बाहरको उदय हुआ यह सब और अन्य २ भी अनेक भयकारी उत्पात प्रकट हुये ३८।३९।४० यह सब उत्पात युद्धमें वीरलोगोंके नाश करने वालेथे इसके पीछे परस्पर मारने के इच्छावान वीरोंकेयुद्ध ४१ कौरव और पांडवोंकी सेनाओं के शब्दों से संसारको व्याप्त करते हुये जारीहुये और वह पांडव

कौरवोंके साथ परस्पर क्रोधमें भरे विजयके अभिलाषी तीक्ष्णश-
स्त्रोंसे प्रहारकरनेलगे फिर वह बड़ा तेजस्वी युद्धमें हजारों बाणोंसे
ढकता बड़ीतीव्रतासे महापुरुष पांडवोंके सन्मुखगया हेराजा जब
पांडवों ने सृंजियों समेत युद्धमें प्रवृत्तरूप द्रोणाचार्य्यको देखा४३
तब उनको देखकर पृथक् २ बाणोंकी बर्षाओंसे रोका द्रोणाचार्य्यके
हाथसे अत्यन्त व्याकुल और घायलहुई बड़ीसेना४५ पांचालोंसमेत
ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि हवासे बादल इधर उधर होजाते हैं
फिर युद्धमें बहुत से अस्त्रों को प्रकट करतेहुये द्रोणाचार्य्य जी ने
एक क्षणमात्रमेंही पांडव और सृंजियोंको ऐसे पीड़ामानकियाजैसे
कि इन्द्रके हाथसे दानव पीड़ित होतेहैं इसीप्रकार द्रोणाचार्य्यके
हाथसे घायल वह सब पांचाल ४७ जिनकाकि अग्रगामी धृष्टद्यु-
म्नथा अत्यन्त कंपायमानहुयेइसकेपीछे दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले
शूर महारथी धृष्टद्युम्न ने ४८ बाणोंकी बर्षासे द्रोणाचार्य्यकीसेना
को अनेक प्रकारसे घायलकिया अर्थात् उस पृषतके पौत्रपराक्रमी
धृष्टद्युम्नने अपने बाणोंकी बर्षासे द्रोणाचार्य्यके बाणोंको बर्षा को
४६ अच्छी रीतिसे रोककर सब कौरवोंकोभी घायल किया तदन-
न्तर बड़े धनुष धारी द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें अपनी सेनाको इकट्ठा
करके और अच्छे प्रकारसे नियत करके धृष्टद्युम्न के सन्मुख गये
और वहांजाकर उन्होंने धृष्टद्युम्नके ऊपर ऐसी बड़ीभारी बाणोंकी
बर्षाकरी ५१ जैसेकि अत्यन्त कोपयुक्त इन्द्र अकस्मात दानवों पर
करताहै द्रोणाचार्य्यके बाणोंसेकंपायमान वहपांडव औरसृंजय५२
बारंबार भयभीत होकर कांपनेलगे जैसेकि सिंहसेअन्य मृगादिक
कांपतेहैं उसी प्रकारवह बलवान द्रोणाचार्य्यजी पांडवोंकी सेनामें
अलातचक्र अर्थात् बनेठीके समान घूमनेलगे यहसबको बड़ाआ-
श्चर्य्यसाहुआ ५४ आकाशमें घूमनेवाला नगरके समान शास्त्रके
अनुसार बनायाहुआ अथवा सब शत्रुओंके डरानेवाले उस उत्तम
रथपर जोकि आनन्दरूप चलायमान घोड़ेवाला अथवा बायुसे
चलायमान पताका रखनेवालाथा और स्फटिकके समान जिसकी

स्वच्छ ध्वजाथी ऐसे रथपर सवार होकर द्रोणाचार्य्यजीने शत्रुओं की सेनाकोमारा ५५

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

संजयबोलेकि इसरीतिसेघोड़े औरसारथियों समेतरथ औरहाथियोंके मारनेवाले द्रोणाचार्य्यको देखकर पांडवलोग बड़े पीड़ामान हुये औरउनको न रोकसके १ इसकेपीछे राजायुधिष्ठिरने धृष्टद्युम्न और अर्जुनसे कहाकि सब ओरसे उपाय करनेवाले शूरवीरों समेत द्रोणाचार्य्यको हटाना चाहिये २ वहां अर्जुन और अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्नने उनको घेरलिया फिरतोसब महारथी चारोंओर सेदौड़े ३ पांचोकैकेय भीमसेनअभिमन्यु घटोत्कच युधिष्ठिर नकुल सहदेव मत्स्य देशीय और इसीप्रकार राजाद्रुपदके पुत्र ४ अत्यन्त प्रसन्नचित्त द्रौपदीकेपुत्र और सात्विकी समेत धृष्टकेतु और अत्यन्त क्रोधयुक्त चेकितान महारथी युयुत्सु और हे राजा पांडव केपीछे चलनेवाले जो अन्य २ राजाथे उनसबनेकुलऔर पराक्रमके अनुसार कर्मोंको बहुत प्रकार से किया ६ फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें पांडवोंसे अच्छी रीतिसे रक्षित उससेनाको देखकर बड़े क्रोध युक्तदोनोंनेत्रोंको निकालकर देखा ७ युद्धमें कठिनतासे बिजय होनेवाले उन द्रोणाचार्य्यजीने बड़े क्रोधयुक्त होकर पांडवों की सेनाको ऐसे घायल किया जैसेकि वायु बादलको करताहै ८ द्रोणाचार्य्य जहां तहां रथघोड़ेमनुष्य और हाथियोंके भी सन्मुख दौड़े और वृद्धहोकरभी तरुण और मदोन्मत्तकेसमान घूमनेलगे ९ हेराजा निश्चय करके उस के वह लालरंगकेसे घोड़े जोकि रुधिर से लिप्त शरीर वायुकेसमान शीघ्रगामी आजानेय जातवालेथे वह बिना विश्राम लेतेहुये घूमतेथे१०उसकालके समानक्रोधयुक्त सावधान व्रतको आताहुआदेखकर पांडवोंके शूरवीर जहां तहांभागे११ उनभागते फिर लौटते देखते और नियत होतेहुये युद्ध कर्त्ताओंके

शब्द महाभयकारी और कठिनहुये १२ वीरलोगोंकी प्रसन्नता उ-
त्पन्नकरनेवाले भयभीतोंके भयबढ़ानेवाले शब्दने पृथ्वी और आ-
काशके मध्यभागको सबओरसे भरदिया १३ इसके अनन्तर युद्धमें
नामकोसुनातेहुये सैकरोंबाणोंसेशत्रुओंको ढकते द्रोणाचार्य्यनेफिर
अपनेरूपको रुद्ररूपकिया १४ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र वह वृद्धद्रोणाचार्य्य
तरुण और महाबलवानके समान पांडवोंकी उन सेनाओंके मध्यमें
कालके समान भ्रमणकरनेलगे १५ भयकारी शिरोंको और भूषणों
से अलंकृत भुजाओंकोभी काटकर रथके ऊपर नियत होनेवालेशूर
बीर महारथियोंको पुकारे १६ हेसमर्थ उसकी प्रसन्नताके शब्दोंसे
और बाणोंके वेगसे शूरबीरलोग ऐसे अत्यन्त कंपायमानहुये जैसे
कि शरदोंसे पीड़ामान गौऐं कंपायमान होतीहैं १७ द्रोणाचार्य्य के
रथके व धनुष और प्रत्यंचाके खैंचनेके शब्दोंसेआकाशमें महाभय-
कारी शब्द उत्पन्नहुये १८ इन द्रोणाचार्य्यके धनुषसे निकलकर
घूमनेवाले हजारोंबाण सबदिशाओंको व्याप्तकरके हाथी घोड़ेरथ
और पदातियोंके ऊपरगिरे १९ पांडवोंसमेत पांचालोंने उनद्रोणा-
चार्य्यकी सन्मुखताकही जिनके बड़े वेगवान धनुष और प्रकाशित
अग्न्यास्त्रथे २० द्रोणाचार्य्यने थोड़ेही समयमें उनसबको हाथी
घोड़े और पदातियों समेत यमलोककोभेजा और पृथ्वीको रुधिर
रूपकीचवाली करदिया २१ उत्तम शस्त्रोंको छोड़ते और बराबर
बाणोंको चलाते द्रोणाचार्य्यका रचाहुआ बाणोंकाजाल दिशाओं
में दिखाईदिया २२ उसके ध्वजा पदाती और रथकेघोड़े औररथों
के मध्यभी सब ओरसे ऐसे दृष्टपड़े जैसे कि बादलोंमेंघूमती हुई
बिजली होतीहैं २३ वे बड़े साहसी हाथ में धनुषबाण धारणकरने
वाले द्रोणाचार्य्य केकय देशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ पांचों राजकुमार
और राजाद्रुपदको बाणोंसे मथनकर युधिष्ठिरके सन्मुखगये २४
भीमसेन अर्जुन और शिनीकापौत्र, द्रुपदकापुत्र, सात्विकी, शैब्या-
त्मज, काशिपति, शिवि, इनसब शूरोंने उन द्रोणाचार्य्यजीको देखकर
बाणोंके समूहोंसे ढकदिया २५ द्रोणाचार्य्यजी के धनुषसे छूटेहुये

सुनहरी पुंखवालेबाण उनसब वीरोंके और हाथी घोड़े और अन्य वीरलोगोंके शरीरोंको वेधकररुधिरमें भरेहुये पृथ्वीमें समागये२६ वहपृथ्वी शूरवीरोंके समूह टूटेहुये बाण और गिरेहुये हाथीघोड़ोंसे ऐसी ढकगई जैसेकि कालके मेघोंसे आच्छादित आकाशहोताहै२७ आपकेपुत्रोंका ऐश्वर्य्य चाहनेवाले द्रोणाचार्य्यनेसात्विकी,भीमसेन, अर्जुन,धृष्टद्युम्न,अभिमन्यु,द्रुपद,काशीनरेश,और युद्धमें अलंकृत अन्य बहुतसे वीरोंको पराजयकिया २८ हेकौरवेन्द्र राजा धृतराष्ट्र महात्मा द्रोणाचार्य्यभी इनकर्मोंको औरअन्य२ कर्मोंको करके और कालरूपसूर्य्यके समान लोगोंको तपाकर इसलोकसे स्वर्गकोगये २६ इसरीतिसेवह शत्रुओंकी सेनाको पीड़ादेनेवाले स्वर्णमयीरथपर सवार द्रोणाचार्य्य महाभारीकर्मकोकरके औरयुद्धमेंपांडवोंके लाखों शूरवीरोंको मारकर धृष्टद्युम्नके हाथसे गिरायेगये ३०युद्धमें मुख न मोड़नेवाले आचार्य्यने शूरोंके एक अक्षौहिणीसेभी अधिक समूह को मारकर और आपभी घायल होकर परमगतिको पाया ३१हे-राजावह स्वर्णमयी रथपरसवार द्रोणाचार्य्य अत्यन्त कठिनकर्म-कोकरके अशुभऔर क्रूरकर्मी पांचालोंसमेत पांडवोंसे मारेगये३२ तदनन्तर युद्धमें उन आचार्य्यजीके मरनेपर आकाशमें जीवोंकेऔर सेनाके मनुष्योंके बड़े शब्द प्रकटहुये ३३ स्वर्ग पृथ्वी आकाश दिशा और विदिशाओंकोभी शब्दायमान किया और जीवों के यह उच्च स्वरसेशब्दहुये कि क्षत्री धर्मको धिक्कारहै ३४देवता पितरों ने और जो उसके पीछे बान्धवथे उन्होंने वहांपर मरेहुये महारथी द्रोणाचार्य्यको देखा ३५फिरपांडवोंने विजयकोपाकर सिंहनादोंको किया औरअत्यन्त सिंहनादोंकेहोनेसे पृथ्वीबड़ी कंपायमानहुई३६

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रजीबोले कि पांडवऔरसृंजियोंने उनअस्त्रोंमें कुशलसबशस्त्र धारियोंके शिरोमणि द्रोणाचार्य्यको क्याकर्मकरते हुयेमारा १इनका

रथ टूटा अथवा खिंचाहुआ धनुष टूटा या यह द्रोणाचार्य्य विमोह को प्राप्तहुये जिससे कि उन्होंने मृत्युको पाया२ हेतात राजाद्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्नने उन शत्रुओंसे भय न करनेवाले और सुनहरी पुंखवाले बाणोंके समूहोंको बहुत प्रकारसे फैलानेवाले३ हस्तलाघवी ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठसाध अपूर्व्व युद्धकर्त्ता दूर२के स्थानोंपरदौड़ने वाले जितेन्द्री शस्त्रोंके युद्ध में प्रवीण ४ दिव्य अस्त्रोंके धारण करनेवाले अजेय भयकारी कर्मों के करनेवाले महासाहसी और महारथी द्रोणाचार्य्यको मारा ५ प्रकटहैकि उपाय करनेसे होनहार भावीप्रबल है यहमेरा मतहै जिसके कारणसे कि महात्मा धृष्टद्युम्न के हाथसे द्रोणाचार्य्यमारेगये ६।७ जिस शूरबीरमें चार प्रकारके अस्त्र नियतथे उसबाण और अस्त्रोंके धारण करनेवालेमेरे आचार्य्यको मराहुआ कहताहै अबमैं उसव्याघ्र चर्म्मसेमढ़े सुनहरी जाल रूपनाम सुबर्णसे चित्रित रथवालेको मृतक सुनकर शोकको करताहूं ८ हे संजय निश्चय करके कोई मनुष्यभी दूसरेके दुखसे नहीं मरताहै जो मैं निर्बुद्धी उन द्रोणाचार्य्यजीको मृतक सुनकर जीवताहूं ९ मैं होनहारको अधिकतर मानताहूं और उपायकरना निरर्थकहै जो मैं अल्पबुद्धी उन द्रोणाचार्य्यको मृतकहुआ सुनकर जीवताहूं १० निश्चय करके मेराहृदय बज्रसेभी कठोरहै जोद्रोणाचार्य्यजीको मृतक सुनकर सौप्रकारसे खण्ड २ नहींहोता है ११ गुणके चाहनेवाले ब्राह्मण और राजकुमारोंने ब्रह्मास्त्र और देवताओंकेअस्त्र इसीप्रकार बाणबिद्यामें भी जिसकीउपासनाकरी वहकैसे मृत्युसे हारागया १२ शुष्क समुद्र वा मेरुकीचलायमानता अथवा सूर्य्यके पतनहोनेके समान द्रोणाचार्य्यके गिरानेको नहींसहसक्ता हूं १३ वह पापियोंको निषेध करनेवाला और धर्म करने वालोंका रक्षक हुआ और जिसशत्रुसंतापीने उसनीचके निमित्तप्राणोंको भी त्यागकिया१४ और जिसकेपराक्रममें मेरेअभागे पुत्रोंको बिजयकी आशाथी औरजो बुद्धिमें बृहस्पतिजी और शुक्रजीके समानथा वह कैसे मारागया १५ वह लालरंगवाले बड़े घोड़े सुनहरी जालोंसे

ढकेहुये वायुके समान शीघ्रगामीरथमेंजुड़े और युद्धमेंसब शस्त्रोंको उल्लंघनकरके चलनेवाले १६ पराक्रमी हिंसन शब्दकरनेवाले शिक्षा पायेहुये सिंधदेशी श्रेष्ठलोगोंके सवारकरवानेवाले युद्धमें भयाकुल होकर भयभीततानहींहुये १७ युद्धमेंशंखऔर दुन्दुभियोंके शब्दोंसे चिंघारते हाथियोंको प्रत्यंचाकेआघातको और बाणोंसमेतशस्त्रोंकी वर्षाके सहनेवाले १८ शत्रुओंके विजय करनेकी आशाकरने वाले श्वास और पीड़ाके जीतनेवाले शीघ्रगामी द्रोणाचार्य्य के रथ के लेचलने वाले घोड़े पराजयहुये १९ हेतात स्वर्णमयी रथमें जुड़े हुये नरवीरोंकेहाथसे घायलउनघोड़ोंने पांडवोंकी सेनाको कैसेनहीं तरा २० सत्यपराक्रमी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य जीने जातरूप नाम सुवर्णसे अलंकृत और उत्तमरथ परसवार होकर युद्धकेमध्यमें क्या किया२१ सवलोककेधनुपधारी जिसकीविद्यासे अपनीजीविकाऔर निर्वाहकरतेहैं उस सत्यसंकल्पी पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने युद्धमेंक्या किया २२ जिसप्रकारकि स्वर्गमें इन्द्रउत्तमहै उसी प्रकार कौनसे रथी युद्धमें उसश्रेष्ठ और धनुष धारियोंके वृद्धभयकारी कर्म करने वालेके सन्मुखगये २३ पांडवलोग उस स्वर्णमय रथवाले दिव्य अस्त्रोंके चलानेवाले महावलीको युद्धमें देखकर भागे २४ कहोकि धर्मराज युधिष्ठिरने अपनेछोटेभाई और सवसेना समेत धृष्टद्युम्न सेनापति होनेमें द्रोणाचार्य्यको सवओरसे घेरलिया २५ निश्चय करके अर्जुनने सीधे चलनेवाले बाणोंसे अन्यरथियोंको रोकदिया इस हेतु से पापकर्म करने वाला धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य के ऊपर चढ़ाई करके प्रवल होगया २६ मैं उस अर्जुनसे रक्षित रुद्र धृष्ट-द्युम्न के सिवाय द्रोणाचार्य्य के मारने की सामर्थ्य किसी शूर में नहीं देखता हूं २७ इस हेतुसे पांचाल देशियों में नीच और सब ओरसे उन कैकेय चन्देरी कारुण्य और मत्स्य देशियों के शूरवीर आदि अन्यराजाओं से घिरेहुये शूर धृष्टद्युम्न ने २८ कठिन कर्मों में प्रवृत्त जैसेकि चेंटियों से व्याकुल सर्पहोताहै उसीप्रकारसे महा व्याकुल आचार्य्य जीकोमाराहै यहमेरा मतहै २९ जो अंगोंसमेत

चारों वेद जिनमें कि पांचवां इतिहास है उनको पढ़कर ब्राह्मणों में ऐसा प्रतिष्ठावानहुआ जैसे कि नदियोंमें समुद्रकी प्रतिष्ठाहोती है ३० जो शत्रुओं का तपाने वाला इसलोकमें क्षत्री और ब्राह्मण के धर्ममें नियत हुआ उस वृद्धब्राह्मणने किसप्रकारसे शस्त्र बिद्यामें लड़ कर गति को पाया ३१ सदैव मुझसे अप्रसन्न और कुन्ती के पुत्रसे पूजन नपाने वाले अशान्त चित्त में उसको क्षमाकिया उसी का यह फल है ३२ लोकके मध्यमें सब धनुष धारीजिसके कर्म के अनुसार कर्मोंको करते हैं वह सत्य संकल्पी शुभकर्मी किस रीतिसे धनाभिलाषी पुरुषोंके हाथसे मारागया ३३ स्वर्ग में रहने वाले इन्द्रके समान श्रेष्ठ महाबली और पराक्रमी थे वह पांडवोंके हाथ से ऐसे क्योंमारे गये जैसेकि छोटी मछलियों केहाथसे तिमि नाममत्स्य मारा जाताहै ३४ वह हस्तलाघवी महाबली बड़े दृढ़ धनुष का रखने वाला और शत्रुओंका मर्दनकरनेवालाथा बिजया-भिलाषी जिसकेदेशको पाकर जीवता नहींरहताहै ३५ जिस जीवते हुये को दो प्रकार के शब्दोंने कभी नहीं त्याग किया वेद चाहने वालोंकी वेदध्वनि और धनुष धारियों की प्रत्यंचाका शब्द ३६ मैं उसबड़े साहसी पुरुषोत्तम लज्जायुक्त अजेयसिंह औरहाथीके समान पराक्रमी द्रोणाचार्य्य का मरना नहीं कह सक्ता हूं ३७ हे संजय धृष्टद्युम्नने युद्धकेमध्यमें सबराजाओंके देखतेहुये उसनिर्भय अजेय यशी और महा पराक्रमीको किस प्रकारसे मारा ३८ द्रोणाचार्य्य को सन्मुख से रक्षा करते हुये कौनआगे युद्ध करने वाले हुये और दुःखसे मिलने वाली गतिके पानेवाले उसी द्रोणाचार्य्य के पीछे कौन २ बर्तमान हुये ३९ युद्धमें लड़ते हुये उसीबीर महात्मा के दाहिने और बायें चक्रको किस २ ने रक्षितकिया और किनलोगोंने आगेसे रक्षाकरी४० और किन२पुरुषोंने उसयुद्धमें शरीरोंको त्याग कर बिपरीत मृत्युको पाया और कौनसे बीरोंने द्रोणाचार्य्यके युद्ध में परम गतिको पाया ४१ निर्बुद्धी रक्षा करनेवाले क्षत्रियोंने भय से युद्धमें उसको त्यागतो नहींकर दिया जिससे कि एकाकीहोकर

शत्रुओंके हाथसे मारागयाहै ४२ वहमहा आपत्तिमेंभी प्राप्तहोकर अपनी वीरताके कारण शत्रुओं के भयसे पीठनहीं दिखला सक्ताथा वह किसरीतिसे शत्रुओंके हाथ से मारागया ४३ हे संजय दुःख और आपत्तियोंकेप्राप्त होजानेपर श्रेष्ठलोगोंको यहीकरनेके योग्य है कि सामर्थ्यके अनुसार पराक्रमकरे तो वहीगुण उसमें नियत है ४४ हे तात अब मेरा चित्त मोहित अर्थात् विह्वल हुआ जाताहै तबतक कथा बन्दकरो जब मुझको सावधानी होगी तब मैं फिर तुमसे पूछूंगा ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिनवमोऽध्यायः ९ ॥

दसवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी बोलेकि सूतके पुत्र संजय से इतना पूछकर हृदय के शोकसे अत्यन्त पीड़ामान पुत्रोंकी विजयमें निराशावान् होकर धृतराष्ट्र पृथ्वीपर गिरपड़े १ तब सेवक लोगोंने उस असावधान् निश्चेष्ट गिरे हुये सजीवके ऊपर अत्यन्त शीतल और सुगन्धित जलसे सींचा २।३ हे महाराज भरत वंशियोंकी स्त्रियोंने उसपृथ्वी परगिरेहुये धृतराष्ट्र को देखकर चारोंओरसे घेरकर हाथोंसेस्पर्श किया अर्थात् पकड़ा अश्रुपातोंसे पूर्ण सुन्दर मुखवाली स्त्रियोंनेबड़े धीरेपनेसे इसराजाको पृथ्वीपरसे उठा कर आसन पर बैठाया ४ तबमूर्च्छासे संयुक्त राजा आसनकोपाकर चारोंओरसेपंखोंकी वायु का लेनेवाला होकर निश्चेष्ट और निश्चल होकर नियत हुआ ५ उस कंपायमान राजाने बड़ेधीरेपने से सावधानी को पाकर फिर गोलकनके पुत्र सूतसंजयसे सत्य२वृत्तान्तपूछा ६ कि उस सूर्य्यके समान उदयहोनेवाले अपनी ज्योतिसे अन्धकारको दूर करनेवाले अजातशत्रु युधिष्ठिर को किसने द्रोणाचार्य्य की ओर से हटाया ७ मदझाड़नेवाले क्रोधयुक्त वेगवान् हाथीकेसमान प्रसन्नमुखहाथीके सन्मुख जानेवालेको किसनेरोका ८ जोकि उसरीतिसे विजय करने के योग्यतथा जैसेकि अपनी हस्थिनीसे संग करते झुंडके प्रधानोंसे

हाथी अजेयहोताहै उसपुरुषोत्तम बीरने युद्धमें बड़े२बीरोंकोमारा ६ जो बड़े बली धैर्य्यवान् सत्यसंकल्पी अकेलाही अपने घोर नेत्रों से दुर्योधन की सबसेनाको भस्मकर सक्ताथा १० उस नेत्रसेमार ने वाले बिजय में प्रवृत्त धनुषबाणधारी अजेय जितेन्द्री और लोक में महा मान्यको किन २ शूरोंने रोका ११ वहांपर मेरेकौन २ से शूरोंने उस निर्भय धनुषबाणधारी अबिनाशी पुरुषोत्तम राजा युधिष्ठिरसे अच्छे प्रकार करके सन्मुखता करी १२ फिर जो तीब्रता से आकर द्रोणाचार्य्यके सन्मुख दौड़ा और जो बड़ा पराक्रमी शत्रुओंके युद्धमें बड़े कर्मका करने वालाहै १३ वहबड़े शरीर और उत्साहवाला बलमें दशहजार हाथीकेसमानहै उसआतेहुये भीमसेन को किन२शूरोंनेरोका१४।१५ जबबादलके समान बड़ेरथमेंबैठाहुआ महा पराक्रमी बीर्य्यमान इन्द्रके समान बाणरूप बज्रों को फेंकता तल और नेमियोंके शब्दोंसे सब दिशाओं को शब्दायमान करता अर्जुनआया धनुषरूपबिजलीका प्रकाश रखनेवालानेमीके शब्दरूप गर्जना का करने वाला व बाणोंके शब्दोंसे अत्यन्त सुन्दर१६।१७ क्रोधजन्य जीमूतनाम बादल रखनेवाला चित्तके बिचारके समान शीघ्रगामी मर्मोंको भेदकर चलनेवालेबाणोंका धारण करने वाला रुधिररूप अथाह जल रखनेवाला दिब्य दिशाओं को चलायमान करता मनुष्योंसे पृथ्वीको आच्छादित करता भयकारी शब्दवाला जो अर्जुनहै१८उसबुद्धिमान गांडीवधनुषधारी अर्जुननेयुद्धमें दुर्योधनादिकोंको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे स्नान कराया तब तुम्हारा मनकैसा हुआ १६। २० आकाश को बाणों से पूर्ण करता उत्तम बानरी ध्वजा रखनेवाला जब वह अर्जुन आयाउस समय तुम्हारा चित्त कैसा हुआ२१गांडीव धनुषकेशब्दसे सेनाकातो नाशनहींहुआ जब वहअर्जुन महाभयकारी युद्ध करता तुम्हारे सन्मुख आया उस समय अर्जुननेबाणोंसे तुम्हारेप्राणोंको तोशरीरसे पृथक् नहींकिया और जैसेवायु वेगसे बादलोंको घायल करताहै उसी प्रकारबाणोंके समूहोंसे राजाओंको घायलकिया२२।२३ कौनमनुष्य युद्धमेंगांडीव

धनुषधारी के सहनेके योग्यहै तब सेना के पुरुषके समूह जिसको सेनाके आगेहुआ सुनकर व्याकुल होकर भागतेहैं २४ वह सेना जब अत्यन्त कंपायमान हुई अथवा वीरोंको भयने स्पर्श कियाथा उससमय किन २ लोगोंने द्रोणाचार्य्य को नहींत्याग किया और कौनसे नीचपुरुष भयसे व्याकुल होकर भागे २५ वहांकिन लोगों ने शरीरको त्यागकरके बिपरीत मृत्यु को पाया जहां कि युद्ध में देवताओंकेभी बिजय करनेवाले अर्जुनको अपने सन्मुखपाया २६ मेरे पुत्र अथवा अन्यशूरवीर उसश्वेत घोड़े रखने वाले अर्जुनके वेगको और वर्षाऋतुके वादलके समान गांडीव धनुषके शब्द को सह नहीं सकेंगे २७ जिसके सहायक श्रीकृष्णजीहैं और युद्ध करने वाला वीरअर्जुनहै वहरथी देवता और असुरों सेभी विजय करना असंभवहै यहमुझे पूर्ण निश्चयहै २८ यह पांडव सुकुमार युवाशूर वीरऔर दर्शनीय होकर मेधावान निपुण बुद्धिमान और संग्राम में सत्य पराक्रमी है २९ बड़े शब्दको करते सब सेनाके मनुष्यों को पीड़ामान करतेहुये और द्रोणाचार्य्यके सन्मुख आनेवाले उसनकुल को कौन २ से शूरवीरोंने रोका ३० जब सर्पके समान क्रोध युक्त युद्धमें अपने तेजसे पराजय नहोने वाले सहदेव शत्रुओंके नाशको करता हुआ सन्मुख आया ३१ उस श्रेष्ठ पुरुषोंके व्रत रखने वाले सफल बाणवाले लज्जावान् अजेययुद्धमें आतेहुये सहदेवको किन२ शूरवीरोंने रोका ३२ जिसने राजा सौवीर को सेनाको मथनकरके शरीरसे शोभायमान सुन्दर भोजवंशी पटरानीको हरणकिया ३३ और उसी पुरुषोत्तम युयुधान में सत्यता धैर्य शूरता और पवित्र ब्रह्मचर्य्य व्रत इत्यादि सब गुणथे ३४ उस पराक्रमी सत्य कर्मी उदार बुद्धिमहासाहसी अजेय युद्धमें वासुदेवजीके समान अथवा वासुदेवजीसे अन्तरहित ३५ अर्जुनकी शिक्षासे बाण और अस्त्रों के कर्ममें श्रेष्ठ अस्त्रविद्यामें अर्जुनके समान उस युयुधानको किसने द्रोणाचार्य्य की ओरसे रोका ३६ जोकि वृष्णि वंशियों में अत्यन्त श्रेष्ठबड़ा वीरसब धनुष धारियोंमें प्रबल शूरयश पराक्रम केसाथ

अस्त्रों में बलदेवजीके समान है ३७ सत्यता धैर्य्य बुद्धि शूरता सर्वोत्तम ब्रह्मास्त्र यह सब उसी यादव में इसरीतिसे नियतहैं जैसे कि तीनोंलोक केशव जी में नियत हैं ३८ इसरीतिके सब गुणों से युक्त और देवताओंसे भी अजेय बड़े धनुषधारी उस यादव को किन शूरोंनेरोंका ३९ पांचालदेशियोंमें श्रेष्ठबीर औरउत्तम जीवोंके प्यारे सदैव उत्तम कर्म वाले युद्धमें उत्तम पराक्रम वाले ४० अर्जुन के हित करनेमें प्रवृत्त और मेरे अनर्थके निमित्त तत्पर और यम-राज कुबेर सूर्य्य महा इन्द्र और वरुण नाम देवताओंके समान४१ महारथी नामसे विख्यात और तुमुल युद्धमें द्रोणाचार्य्यके बिजय करनेके निमित्त उपाय करनेवाले प्राणोंके त्यागनेवाले धृष्टद्युम्नको किस २ शूरबीरनेरोका ४२ जो अकेलाही चंदेरी देशवासियोंसेपृथक् होकर पांडवोंमें संयुक्तहुआ उस द्रोणाचार्य्यके सन्मुख आनेवाले धृष्टकेतुको किसनेरोंका ४३ जिस ध्वजाधारीवीर ने कठिनता से बिजय होनेवाले पर्व्वतके द्वारपर भागनेवाले राजकुमारको मारा उसको द्रोणाचार्य्यकी ओरसे किसनेरोंका ४४ जो पुरुषोत्तम स्त्री और पुरुषके गुण अवगुणोंका जाननेवालाहै उसयुद्धमें प्रसन्न मन और लड़ाईमें महात्मा देवब्रत भीष्मजी की मृत्युके कारण और द्रोणाचार्य्य के सन्मुखजातेहुये राजाद्रुपदके पुत्र शिखंडीकोकिन२ शूरोंने रोंका ४५ जिसबीरमें सबगुण अर्जुनसे अधिकहैं औरजिस में सब अस्त्र सत्यता ब्रह्मचर्य्य सदैव बल पराक्रममें वासुदेवजीके समान बलमें अर्जुनके तुल्य तेजमेंसूर्य्यके समान बुद्धिमें वृहस्पति जीके सदृश ४६ महात्मा व्यात्ताननमृत्युके समान द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जातेहुये अभिमन्युको किन शूरोंने रोंका ४७ तरुण अव-स्था युवा बुद्धि शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला अभिमन्यु जबद्रोणा-चार्य्यके सन्मुख दौड़ा तब तुम्हारा चित्तकैसा होगयाथा ४८ जैसे कि नदियां समुद्रकी वेगसे जातीहैं उसीप्रकार पुरुषोत्तम द्रौपदी के पुत्र अपने आपहीजब द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये तब उनकोकिस २ शूरने रोंका ४९ जोवह धृष्टद्युम्नके पुत्र बालक बीर बारहवर्ष की

अवस्थावाले और क्रीड़ा कुतूहलोंको छोड़कर उत्तम ब्रतको धारण करतेहुये अस्त्रोंके निमित्त भीष्मजीके पास निवासीहुये ५० जिनके नाम क्षत्रंजय क्षत्रदेव क्षत्रवर्मा और मानद हैं उनको द्रोणाचार्य्यकी ओरसे किस २ शूर वीरने रोंका ५१ वृष्णियोंने जिस बड़े धनुपधारी चेकितानको सौ शूरबीरोंसेभी उत्तममाना उसको द्रोणाचार्य्यकीओरसे किसनेरोंका ५२ जिस अनाधृष्टी अदीनात्मा वार्द्धक्षेमीने युद्धमें कलिंगदेशियोंकी कन्याकोहरणकिया उसको किसने द्रोणाचार्य्यको ओरसे रोंका ५३ पांचोंकैकेय आदि धार्मिक और सत्यविक्रम इन्द्र गोपकनाम जीवकेसमान रक्तवर्ण कवचशस्त्र और ध्वजाको भी ग्रहणही रखनेवाले ५४ पांडवोंकी मौसीकेपुत्र बड़े वीर पांडवोंकीही विजयके चाहनेवालेहैं द्रोणाचार्य्यके मारने को आनेवाले उनपांचोंको द्रोणाचार्य्यकी ओरसे कौन २ से वीरोंने रोंका ५५ क्रोधयुक्त मारनेकेअभिलाषी छः महीनेतक लड़ते हुये राजालोगोंनेभी जिसशूरवीरोंके प्रधानको वारणावत नगरमेंविजय नहीं किया ५६ उस धनुपधारियोंमें श्रेष्ठ नरोत्तम शूरसत्य संकल्प महाबली युयुत्सुको किसने द्रोणाचार्य्यकी ओरसेरोका ५७जिसने वाराणसी अर्थात् काशीमें काशीके राजाके पुत्र महारथी स्त्रियों में आसक्त होनेवालेको युद्धमें अपने भल्लकेद्वारा रथसे गिराया ५८ उस बड़े धनुपधारी पांडवोंमें मुख्यमंत्री दुर्य्योधनके अनर्थमें प्रवृत्त द्रोणाचार्य्य के मारनेके निमित्त उत्पन्न ५९ युद्ध में शूरबीरोंको जलाते और सब ओरसे छिन्न भिन्न करते और द्रोणाचार्य्यके सन्मुखआते उसधृष्टद्युम्नको कौन २ से शूरवीरोंनेरोंका ६० द्रुपदको गोदोमें पोपण पानेवाले अस्त्रोंके उत्तम जाननेवाले शस्त्रोंसे रक्षित शिखंडीको कौन से युद्ध कर्त्ताओं ने द्रोणाचार्य्यकी ओरसे रोंका ६१ जो श्रेष्ठ शत्रुओंका मारनेवाला महारथी रथके बड़े शब्दके साथ इस सम्पूर्ण पृथ्वीको चमड़े के समान लपेट लेवे और प्रजाओंको पुत्रोंकेसमानपोपण करते इसराजानेअच्छे अन्न६२ पान और उत्तम दक्षिणा वाले दश अश्वमेधोंको किया वह सब

यज्ञ अर्गल से रहितथे अर्थात् उस यज्ञ में किसी देखने वाले की रोंक नथी ६३ गंगा नदी में जितने किबालूके कणहैं उतनीहीगौयें यज्ञमें उसबीर उशीनरके पुत्रने दानकीं६४कठिनतासे करनेकेयोग्य कर्मके करनेपर देवताओंने बड़े उच्चस्वरसे यहबचन कहा कि पहले और दूसरेमनुष्योंमेंसे किसीने यह नहींकिया६५अब तीनोंलोक में जीवधारियों के मध्य सिवाय उशीनरके पुत्र शिवीके राज्यका भार उठाने वाला अन्य किसी बर्त्तमानको अथवा आगेउत्पन्न होनेवाले को भी नहीं देखतेहैं लोकबासी मनुष्य जिसकी गतिको नहींपावेंगे ६६।६७ उसकेपौत्र धनसे अत्यन्त उदार मृत्युके समान द्रोणाचार्य्य के सन्मुख आनेवाले शिवीको किस पराक्रमी शूरने रोंका६८शत्रुओंको मारने वाली राजाविराट की रथसेना जोकि युद्धमें द्रोणाचार्य्य को चाहने वालीथी उस सेना को किन२ बीरोंने रोका ६९ भीमसेभी अधिक बल पराक्रमका रखने वाला मायावी बीरराक्षस जोकि शीघ्रही उत्पन्न हुआहै उससे मुझको बड़ाहीभयउत्पन्नहोता है ७० पांडवोंके विजयकरनेके अभिलाषी मेरे पुत्रोंके कंटक रूप उस बड़ेसाहसी घटोत्कचको द्रोणाचार्य्य की ओरसे किसने रोंका ७१ हे संजय जिन्होंके निमित्त यह और अन्य बहुतसे शूरबीरलोग युद्धमें प्राणोंके त्याग करने वालेहैं युद्ध में जिनका अजेय कोई भी नहींहै ७२ जिन पांडवोंका रक्षा स्थानशार्ङ्ग धनुषधारी पुरुषोत्तम है और उनके प्रियहित का भी चाहने वालाहै उनकी पराजय कैसे होसक्ती है ७३ लोकों के गुरू लोकनाथ और सनातन नारायण दिव्यात्मा दिव्य प्रभु श्रीकृष्णजीयुद्धमें जिनके स्वामीहैं ७४ ज्ञानी लोग जिनके जिनकर्मों को कहते हैं मैं अपने धर्मके निमित्त भक्ति पूर्वक उनको कहूंगा ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय अब बासुदेवजी के दिव्यकर्मों को

सुनो जिन २ कर्मोंको कि श्री गोबिन्दजीने किया उनकर्मोंको कोई अन्य पुरुष कहीं भी नहीं करसक्ता १ हे संजय गोपकुल में पोषणपाने वाले महात्मा बालकनेही तीनों लोकोंमेंअपने भुजबलको बहुत प्रकारसे अच्छी रीतिसे विख्यात किया २ और उच्चैःश्रवाके समान वल शीघ्रगामीपनेमें तीव्र वायुकेसमान जमनाके वनबासी घोड़ोंके राजा केशीकोमारा३बाल्यावस्थामें भयकारीरूप गौवोंका काल रूप बैलकी सूरत धारण करने वाला वृषभासुरको अपनी भुजाओंसे मारा ४ इसीकमललोचन ने प्रलम्ब नरकासुरजंभपीठ और मृत्युके स्वरूप मुरनाम दैत्यकोभी मारा ५ और इसीप्रकार से जरासन्धसेपोषणपाया हुआ बड़ातेजस्वीकंस अपने सबराक्षसों के समूहों समेत युद्धमें श्रीकृष्णजी से मारागया ६ इसी प्रकार कंस का भाई महाबली युद्धमें पराक्रमी और पूरी अक्षौहिणी सेना का स्वामी बड़ा वेगवान् शूरसेन देशके राजा भोजराजके मध्यवर्ती सुनामा नामभी इस शत्रु संहारी बलदेवजीको साथमें रखने वाले श्रीकृष्णजीके हाथ से युद्ध में अपनी सब सेनासमेत मारा गया७।८ इसी प्रकार स्त्री समेत श्रीकृष्णजीने महाक्रोधी दुर्बासा ऋषिको भी सेवन किया उसने उनको अनेकवरदान दिये ९ इसी प्रकार यह कमललोचन वीर श्रीकृष्णजी स्वयंवर में राजाओंको विजय करके गांधार देशके राजाकी पुत्रीकोलाये १० सहन न करने वाले राजा लोग एकजातिके घोड़ोंके समान जिसके विवाहके रथ में जोते गये और चाबुकसे घायलहुये ११ जनार्द्दनजीनेपूरी अक्षौहिणी के स्वामी महाबाहु जरासन्धको बड़े उत्तम उपायसेमारा१२ और इसी बलवान् ने चंदेरीके स्वामी महापराक्रमी अर्घपर प्रथम पूजनकेविवाद करनेवाले शिशुपाल को पशुके समान मारा १३ इन्हींमाधवजीने आकाशमें नियतराजाशाल्वसे रक्षित और अजेय दैत्योंके सौभ नामपुरको पराक्रम करके समुद्र की कुक्षिमें गिराया १४ और युद्धमें अंग, बंग, कलिङ्ग, मागध, काशी, कौशल, वात्स्य गार्ग्य, करूष, और पौण्ड्र देशियों को भी विजय किया १५

आवन्त्य और दाक्षिणात्य पर्वतो पदशेटक् काश्मीरके और सिक पिशाच मुद्गल १६ कांबोज वाट धान चोल पाण्ड्य संजय त्रिगर्त मालव और बड़ेदुर्जय वदरद देशियों कोभी बिजय किया १७ और नाना दिशाओं से सन्मुख होने वाले अनुगामियों समेत बश और शक जातवालों को और यवन अर्थात् यूनानके राजा को भी बिजय किया १८ पूर्व्व समय में इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी ने जलचारी जीव समूहोंके निवास स्थान समुद्रमें प्रवेश करके जल के मध्यवर्त्ती बरुण देवता को युद्ध में बिजय किया १६ और पाताल वासी पंजजन दैत्यको मारकर पांचजन्य नाम शंखको बजाया२० इस महाबली नेही अर्जुन को साथ लेकर खांडवबन में अग्नि को प्रसन्न करके अजेय और महाउत्तम अग्न्यास्त्र चक्रको पाया २१ यही बीर गरुड़पर सवार होकर अमरावती पुरीको भयभीत करके महा इन्द्रके भवनमें से कल्पवृक्ष को लाये २२ इन श्रीकृष्णजी के पराक्रमको जानकर इन्द्रने क्षमाकरी अर्थात् शान्तरहा यहां राजाओंके मध्यमें भी श्रीकृष्णजी से अजेय किसी को नहीं सुनतेहैं २३ हे संजय कमललोचन श्रीकृष्णजीने मेरीसभा में वह महाअपूर्व्व कर्म किया उसकर्मके करने को इनके सिवाय कौन पुरुष करने को समर्थ है २४ जिस हेतुसे कि मैंने भक्तिके साथ प्रसन्न मूर्ति श्रीकृष्ण ईश्वर को देखा इसी कारणसे सब इनका कर्म मेराजानाहुआहै जैसे कि वेद और शास्त्र से निश्चय करनेके योग्य है २५ हे संजय पराक्रम और बुद्धिसे युक्त इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजीके कर्मोंका अन्तपानेके योग्य नहींहै २६ इसी प्रकार गद, सांब,प्रद्युम्न,बिदूरथ,अंगावह,अनिरुद्ध,चारुदेष्ण,सारण २७ उल्मुक,निशठ, झिल्ली पराक्रमी बभ्रु,पृथु,विपृथु,शमीक, अरिमेजय २८ यह और इनके विशेष अन्यपराक्रमी आघातकरनेवालेबीर वृष्णिबंशीहैं वह वृष्णी बीर महात्मा केशवजीके बुलायेहुये किसी प्रकारसे युद्धमें नियत होकर पांडवोंकी सेनामें संयुक्तहोंगे इनके संयुक्तहोनेके पीछेसब संशयसे युक्त होंगे यहमेराबिचार पूर्व्वक मतहै २६।३०दशहजार

हाथीकेसमान पराक्रमी और कैलासके शिखरके समान शरीरवाले वनकीमाला और हलमूसलके धारण करनेवाले बीर बलदेवजीभी उधरहीहैं जिधर श्रीकृष्णजी हैं ३१ ब्राह्मणोंने जिन बासुदेवजीको सबका पालन करनेवाला वर्णन किया हेसंजय यह श्रीकृष्णजीभी पांडवोंके निमित्त युद्ध करेंगे ३२ हेतात संजय जब वह पांडवों के निमित्त युद्ध करने को उपस्थितहोयं तो उनके सन्मुख लड़ने वाला हमारी सेनामें कोई न होगा ३३ जोवह अकेलेही सब कौरव और पांडवोंको विजयकरें तो उससमय श्रीकृष्णजी उन पांडवोंके निमित्त उत्तम सलाहको देंगे ३४ तब वह महाबाहु पुरुषोत्तम युद्ध में सबराजाओं और कौरवोंको मारकर इस सब पृथ्वीको कुन्तीको देंगे३५ जिसके सहायक श्रीकृष्णजी और युद्ध करनेवाला अर्जुन है उसके रथके सन्मुख कौन सारथी शूरता करसक्ताहै ३६ किसी प्रकारसेभी कौरवोंको विजयनहीं दिखाईदेतीहै इस हेतुसे वह सब मुझसे कहो जैसे कि युद्ध जारी हुआ३७ अर्जुन केशवजीकीआत्मा है और श्रीकृष्णजी भी अर्जुनकी आत्माहैं अर्जुनमें सदैव पूर्ण विजयहै और श्रीकृष्णजी में अविनाशी कीर्त्ति है ३८ सब लोकोंमें अकेला वही अर्जुन सबसे अजेयहै और केशवजी में उत्तमता के साथ असंख्य गुणहैं ३९ जो दुर्य्योधन यहां अपने मोहसे श्रीकृष्णजीको नहीं जानताहै इसीसे वहदैवयोग से मोहित होके फांसीके आगे नियत है ४० वह श्रीकृष्णजीको और पांडव अर्जुनको नहीं जानताहै वह दोनों महात्मा पूर्वके नरनारायण नाम देवताहैं ४१ यह एक आत्मा दो रूपोंको धारण कियेहुये पृथ्वीपर मनुष्यों को देखनेमें आतेहैं यह दोनों अजेय यशस्वी इच्छाहीसे अर्थात् चित्त के संकल्पही से इस सेनाका नाश करसक्ते हैं ४२ परन्तु नररूप होनेसे ऐसा करना नहीं चाहतेहैं समयकी विपरीतता और लोगों का मोहनहै ४३ हेतात जो यह महात्मा भीष्मजी का और द्रोणाचार्य्यजी का मरनाहै ब्रह्मचर्य्य वेदका पढ़ना ४४ यज्ञ और अस्त्रों के द्वाराभी कोई मनुष्य मृत्युसे नहीं छूट सक्ता है लोक के प्रधान

प्रतिष्ठित और अस्त्र शस्त्रादिके युद्धमें महादुर्मद ४५ शूरवीर भीष्म और द्रोणाचार्य्यको मृतक हुआ सुनकर मैं क्या जीवताहूं अर्थात् मृतककेही समानहूं हेसंजय हम पूर्बसमयमें जिसलक्ष्मीको युधिष्ठिरकेपास देखकर दोष लगातेथे४६ अबउसलक्ष्मीको भीष्म और द्रोणाचार्य्यके मरने से अंगीकार करेंगे यहकौरवोंका नाशभी मेरे ही कारणसे वर्त्तमान हुआहै ४७ हेतात पक्के फलों के नाशकरनेमें घास आदिक तृणभी अत्यन्त कठोर होजातेहैं लोकमेंइसअत्यन्त ऐश्वर्य्यको युधिष्ठिरने पाया ४८ जिसके क्रोधसे महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य जो गिरायेगये उसने स्वभावसे ही धर्मको पाया वह धर्म मेरे पुत्रोंमें नहींहै ४९ यह निर्दय काल सबके नाशके निमित्त पृथक् नहीं होताहै हेतात चित्तवाले मनुष्योंसे अन्य प्रकार से शोचेहुये प्रयोजन ५० दैवकी इच्छासे अर्थात् होनहार और प्रारब्धसे बिपरीतबर्त्तमानहोतेहैं यह मेरामतहै इस हेतुसे हटाने केअयोग्य असंख्य ध्यानसेभी बाहर बड़ेदुःखके बर्त्तमान होनेपर जैसे प्रकारसे हुआ उस सबको ब्योरे समेत मुझसे कहो ५१।५२

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि बहुत अच्छा जिस प्रकारसे कि मैंने अपने नेत्रों सेदेखाहै अर्थात् जैसे कि पांडव और सृंजियोंसे मारे हुये द्रोणाचार्य्यजी पृथ्वीपरगिरे उस सब बृत्तान्तको मैं आपसे कहताहूं१महारथी भरद्वाज द्रोणाचार्य्यजी सेनाकी प्रधानताको पाकर सबसेनाके मध्यमें आपके पुत्रसे यह बचनबोले२हेराजा कौरवोंमेंउत्तम गांगेय भीष्मजीकेपीछेजो तुमने अब मुझको सेनाका सेनापतिबनायाहै ३ हे भरतवंशी उसके कर्मके सदृश फलको पावोगे अब तूक्या चाहताहै उसको मांगमैं तेरे कौनसे कामको करूं ४ इसके पीछे राजा दुर्योधन कर्ण औरदुश्शासन आदि समेत उसबड़े विजय कर्त्ताओं में श्रेष्ठ अजेय आचार्य्यजी सेयह बचन बोले ५ कि हे आचार्य्यजी जो

आप मुझको बरदेतेहो तो रथियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिरको जीवता पकड़
कर यहां मेरे सन्मुखलावो ६ यह सुनकर कौरवों के आचार्य्यजी
सब सेनाको प्रसन्न करते यह बचनवोले ७ हे राजा कुन्तीकापत्र
युधिष्ठिर धन्य है अर्थात् प्रशंसनीय अभीष्ट मनोरथ वाला और
प्रतापीहै तुमउसके पकड़नेको चाहतेहो परन्तु उस निर्भयकेमारने
को नहींचाहतेहो ८ हेनरोत्तम किसहेतुसे उसकेमरणको नहींचाह-
ताहै दुर्य्योधन निश्चय करके इस हेतु से उसके मारने को नहीं
कहताहै ६ कि उस धर्मराज युधिष्ठिरका शत्रु कोई नहींहै जो तुम
उसको जीवता चाहतेहो और अपने कुलकी रक्षा करतेहो १० हे
भरतर्षभ अथवा तुम युद्ध में पांडवलोगोंको विजय करके व अपनी
ओरसेराज्यको देकर भाईपनेकी प्रीति प्रकट किया चाहतेहो ११
कुन्तीकापुत्र राजायुधिष्ठिरधन्यहै औरइसीसेउसबुद्धिमान्‌कीअजात
शत्रुता निश्चय होतीहै क्योंकि जिसपर तुमभी प्रीति करतेहो १२
इसरीतिके द्रोणाचार्य्यके वचनोंकोसुनकरआपकेपुत्रकेमनकी अभि-
लाषा अर्थात् वह चित्तका भाव अकस्मात् चित्तसे वाहर निकला
जोसदैव उसके मनमेंनियतथा १३ जिसका वहहृदगतभाव बृहस्पति
सरीखे पुरुषोंसे भी जानने के अयोग्यथा हेराजा इसीहेतुसे आप
कापुत्र अत्यन्त प्रसन्न मनहोकर यहवचनबोला १४ किहे आचा-
र्य्यजी युद्धभूमिमें युधिष्ठिरकेमरनेसे मेरीपूर्ण विजय नहींहै क्योंकि
युधिष्ठिरके मरनेपर निश्चय करके पांडव लोग हम सवको मारेंगे
क्योंकि वह सब देवताओंसे भी युद्धमें मारनेके योग्य नहींहैं उन-
में से एक भी कोई शेष रहेगा वह भी हम सबको मारसक्ता है
अर्थात्‌हमारामूलसेनाश करसक्ताहै१५।१६ उस सत्यसंकल्पयुधि-
ष्ठिरके पकड़लाने और फिर उस को द्यूतमें हरानेसे उसकी आज्ञा
पाकर फिर पांडवलोग वनको चलेजायंगे निश्चय करके वह मेरी
विजय वहुत कालतक होगी इसकारणसे मैं धर्मराजके मारनेको
नहींचाहताहूं १७।१८ मुख्यप्रयोजनके जाननेवाले बुद्धिमान्‌चतुर
द्रोणाचार्य्यजी ने उसके चित्तकी बड़ी नीच निन्दित और अयोग्य

इच्छाको जानकर अपने चित्तमें बहुतसा विचारकर वह बरप्रतिज्ञा केसाथ उसको दिया १९ द्रोणाचार्य्यजी बोले कि जो बीर अर्जुन युद्धमें युधिष्ठिरकी रक्षा नहीं करता होगा तो पांडवोत्तम युधिष्ठिर को पकड़ा हुआही जानो अर्थात् अपने वशीभूतही जानकर लाया हुआही जानो २० अर्जुनयुद्धमें इन्द्रसमेत देवताओंसे और असुरों सेभीजीतनेके योग्य नहींहै२१हेतात इस हेतुसेमैं उसकोनहीं सह सक्ताहूं यद्यपि वहअस्त्र कर्ममें निस्सन्देहमेरामन बाणी औरउत्तम कर्मोंसेयुक्त दृढ़चित्तसे २२ शिष्यहै इसकेविशेष उसने इन्द्रऔररुद्र- जीसेभी अनेक अस्त्र अच्छे प्रकारसे पायेहैं और हे राजा तुझपर क्रोधयुक्त है इसहेतुसेमैं उसकोनहीं सहसक्ताहूं २३ वहजब किसी उपायसे युद्धसे पृथक् होजाय अर्थात् अर्जुनके अलग होने और युद्धसे दूरलेजानेपर वहधर्मराजतुझसेविजय होसक्ताहै २४हेपुरु- षोत्तम उसके पकड़नेमें ही तुम्हारी विजय है इस उपाय से उसको अच्छी रीतिसे तुम पकड़ोगे २५ हे राजा अब मैं धर्मकी सत्यतामें नियत राजायुधिष्ठिर को पकड़ करके निस्सन्देह तेरी आधीनता में लाऊंगा २६ जो कुन्तीके पुत्र नरोत्तम अर्जुनके दूर लेजाने पर युद्धमें एक मुहूर्त भी मेरे आगे नियत होगा तो मैं उसको तेरे आ- धीन करसक्ताहूं २७ नहीं तो हेराजा युद्धमें अर्जुनके समक्षमें राजा युधिष्ठिर इन्द्रादिक देवता और असुरोंसे भी पकड़ने के योग्य नहीं है २८ संजयबोले कि राजाके पकड़ने में द्रोणाचार्य्यजी के नियम पूर्वक प्रतिज्ञा करने पर आपके अज्ञानी पुत्रोंने उसको पकड़ाही जाना २९ आपका पुत्र द्रोणाचार्य्यको पांडवोंसे संबंध रखने वाला जानताहै इसकारण प्रतिज्ञाके दृढ़करनेके निमित्त उसने वह अपना गुप्त मंत्र प्रकट किया ३० हे शत्रुओंके विजय करनेवाले धृतराष्ट्र इसके अनन्तर दुर्योधनने भी युधिष्ठिर के उस पकड़ने को सेनाके सब स्थानों पर प्रसिद्ध करवादिया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि राजायुधिष्ठिरके पकड़ने के विषयमें द्रोणाचार्य को नियम पूर्व्वकप्रतिज्ञा करने पर और दुर्योधनके सर्वत्र बिख्यात करने से आपकी सेनाके मनुष्योंने युधिष्ठिरके उस पकड़ने को सुनकर सिंहनादपूर्व्वकशब्दोंको किया १ और भुजा अर्थात् तालों को ठोंका हे भरतवंशी धर्मराज युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य की उस कर्म करने की इच्छाको न्यायके अनुसार २ प्रमाणीक दूतोंके द्वारा शीघ्रही जानकर सब भाइयोंको और अन्य सब राजाओंको बुलाकर ३ अर्जुनसे यह वचन कहा कि हे पुरुषोत्तम तुमने भी द्रोणाचार्य्यजी के कर्म करने की इच्छाको सुना ४ अब जिसरीतिसे वह उनकी इच्छा सत्यन होय उसी प्रकारका बिचार करना चाहिये हे शत्रुओंके पराजय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने नियम पूर्व्वक प्रतिज्ञाकरीहै ५ हे बड़े धनुषधारी वह नियम उन्होंने तुझमेंही नियत किया है हे महाबाहो सो तुम अब मेरे पीछे लड़ो ६ जिससे कि दुर्य्योधन इस अभीष्टको द्रोणाचार्य्य से नहीं पावे अर्जुनने कहा हे राजा जिस रीतिसे मैं आचार्य्यजीको कभी मारने के योग्यनहीं हूं ७ उसी प्रकार मैं आपके भी त्यागनेको नहीं चाहताहूं हे पांडव चाहें युद्धमें मेरे प्राणभी जातेरहैं ८ परन्तु मैं किसी दशामेंभी आचार्य्यजी का शत्रुनहींहोसक्ता यह दुर्य्योधन आपको पकड़कर राज्य को चाहताहै ९ सो वह दुर्य्योधन इस जीवलोक में उस अभीष्ट को किसी दशामें भी नहीं पावेगा चाहै नक्षत्रों समेत स्वर्ग गिर पड़े अथवा पृथ्वीके खण्ड २ होजायं १० परन्तु निश्चय करकेमेरे जीवतेहुये द्रोणाचार्य्यजी आपको नहीं पकड़सक्तेजो युद्धमें आप वज्रधारी इन्द्रभी उनकी सहायताकरें ११ अथवा देवताओं समेत विष्णुजी भी सहायक हो जायं तौ भी वह द्रोणाचार्य्य आपको युद्धमें नहीं पकड़सकेंगे हे राजेन्द्र मेरे जीवते रहने पर आपकिसी प्रकार कभी भय के करने को योग्यनहींहै १२ अस्त्र धारियों में

और शस्त्र धारियोंमें भी श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य से तुम कभी भय मत करो हे राजेन्द्रमैं दूसरी बात और भी कहताहूं कि मेरी प्रतिज्ञा सत्य ही है १३ मैं अपने मिथ्या बचन को कभी स्मरण भी नहीं करताहूं और न कभी अपनी पराजयको याद करताहूं और कुछ प्रतिज्ञा करके आजतक कभी मिथ्या होजाने का भी मुझको स्मरण नहीं आताहै तात्पर्य्य यहहै कि मैंने मिथ्या न कभी किया और न करूंगा १४ संजय बोले हे महाराज इसके अनन्तर पांडवोंकेनिवास स्थानों में शंखभेरी मृदंग और ढोलोंके बडेशब्द हुये १५ अर्थात् महात्मा पांडवों के शंखोंकेनादोंसे धनुष प्रत्यंचा और तलोंके महा भयकारी शब्द आकाशके स्पर्श करनेवाले हुये १६ बड़ेतेजस्वी पाण्डवोंके शखोंके शब्दोंको सुनकर आपकी सेना ने भी बाजोंकोबजाया १७ हेभरतबंशी इसकेपीछे आपकी औरपाण्डवोंकीअलंकृत सन्नद्धसेनाके लोग बड़ेधैर्य्यसेयुद्धमें लड़तेहुये परस्परमेंसन्मुख हुये१८फिर तो पांडवकौरवों समेत द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नकाभी युद्धरोमांच खड़ाकरनेवाला लोमहर्षणनाम महा कठिन युद्धजारीहुआ१६ युद्धमेंबड़े बिचार पूर्व्वक उपायकरनेवाले संजय उन द्रोणाचार्य्यजीकी सेनाके मारनेको समर्थ नहींहुयेक्योंकि वहसेना द्रोणाचार्य्यजीसे रक्षितथी २० इसीप्रकार आपके पुत्र के प्रहारकर्त्ता बड़ेरथी उस अर्जुनसे रक्षित पांडवीसेनाके भी मारने को समर्थनहीं हुये २१ परस्परमें रक्षित वहदोनों सेना ऐसीस्तिमित और निष्फलसी होगई जैसे कि रात्रिके समय संसारीलोगों के शयन करनेपर अच्छी प्रफुल्लित बनकी परम्परा अर्थात् पंक्ति निश्चल होजातीहै२२हेराजा इसकेपीछे स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्य प्रकाशमान सूर्य्यके समान रथपर सवारहोकर सेनाको सन्मुख करके सेनाके मुखपर भ्रमण करनेलगे २३ रथकी सवारीसे उपाय पूर्वक परिश्रम करनेवाले युद्धमें शीघ्रकर्त्ता अकेले उसद्रोणाचार्य्यहीको पांडव और सृंजियोंने भयभीतहोकर बहुतोंके समान माना २४ हे महाराज उसके हाथसे छोड़ेहुये भयकारी बाण

पांडवोंकी सेनाको डरातेहुये सबदिशाओंमें चलायमान हुये २५ सैकड़ों किरणोंसे संयुक्त दिवसमें वर्त्तमान ऊष्मकिरणोंका रखने वाला सूर्य्य जैसा दिखाई देताहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्यभी सबको दिखाईपड़े २६ हे भरतवंशी पांडवोंके मध्यमें पांडवोंकी सेनामेंसे कोईभी शूरवीर उसयुद्धमें क्रोधरूप द्रोणाचार्य्यके देखनेको ऐसे समर्थ नहीं हुआ जैसे किदानवलोग महाइन्द्रके देखनेको समर्थनहीं हुयेथे २७ इसकेपीछे प्रतापवान् भरद्वाज द्रोणाचार्य्य ने सेनाको मोहित करके तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे धृष्टद्युम्नकी सेनाको शीघ्र ही छिन्नभिन्न करदिया २८ अर्थात् उन द्रोणाचार्य्यने सब ओरसे दिशाओंको रोंककर और बाणोंसे आकाशको व्याप्तकरके जहांपर धृष्टद्युम्न था वहांजाकर पांडवोंकी सेनाको मर्दनकिया २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर उन द्रोणाचार्य्यजीने पांडवोंकी सेनामें बड़े भयको उत्पन्नकिया और सेनाको भस्मकरतेहुये ऐसे भ्रमण करनेलगे जैसे सूखेवनमें अग्निदेवता घूमते हैं १ संजय नामक्षत्री उस साक्षात् अग्निके समान प्रकटहोकर सेनाको भस्मी-भूतकरते क्रोधसंपूर्ण सुवर्णके रथपर सवार द्रोणाचार्य्यको देखकर अत्यन्त कंपायमानहुये २ वारंवार क्रोधयुद्धमें शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य्यके धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द अत्यन्यतासे ऐसे सुनेगये जैसे वज्रके शब्द सुनाई देतेहैं ३ द्रोणाचार्य्यके छोड़ेहुये भयकारी शायकोंने रथी सवार हाथी घोड़े और पदातियोंको अत्यन्त मर्दन किया ४ जैसे कि ग्रीष्मऋतुके अन्तमें बड़ीवृद्धितायुक्त गर्जताहुआ बादल वर्षा करताहै उसीप्रकार पाषाणोंकीसी वर्षा करनेवाले होकर शत्रुओंको भयके उत्पन्न करनेवालेहुये ५ हेराजा तब उस भ्रमण करते और सेनाको महाव्याकुल करते द्रोणाचार्य्यने बुद्धिसे बाहर शत्रुओंके भयकोबढ़ाया ६ जैसे कि बिजली बादलोंमें घूमती

हुई दिखाई देतीहै उसी प्रकार सुवर्ण से जटित उनका धनुष उस बादलरूपी रथके बीचमें बारम्बार घूमता हुआ दृष्टि पड़ा ७ फिर उस पूर्ण बुद्धिमान् सत्यवक्ता सदैव धर्मके अभ्यासी द्रोणाचार्य्य जीने प्रलय कालके समान जीवोंके समूहों से युक्त घोर भयानक रूपनदी को जारीकिया ८ जो कि तीव्रक्रोध से प्रकटहोने वाले गर्दभआदि जीव समूहोंसे व्याप्त और सबओर से सेनाके समूहों से पूर्ण ध्वजा रूपवृक्षोंको दूरफेंकने वालीथी ९ रुधिर रूप जल रथ रूप आवर्त्त हाथी घोड़े रूप किनारे रखने वाली कवच रूपी नौकाओंसे व्याप्तमांसरूपी कीचसे भरीहुई १० मेदमज्जाऔर अस्थि रूप सीपी धारण करनेवाली वेष्टनी रूप फेनोंसे युक्त युद्ध रूपबादलोंसे घिरीहुई प्रास नाम शस्त्र रूपी मछलियोंसे पूर्ण ११ मनुष्य घोड़े और हाथियों से प्रकट तीक्ष्णबाणों के समूह रूपप्रवाहोंसे बहने वाली शरीर रूपी लकड़ी से परस्पर में घिसावट वाली रथ रूपी कछुओंसे पूर्ण १२ शिर और खड्ग रूप झषनाम मछलियों से भरी हुई रथ हाथी सुरतगर्तों से युक्त और नानाप्रकारके भूषणों से शोभायमान १३ महा रथ रूपी शतावर्त्त रखने वाली धूल पृथ्वी रूप लहरोंकी पंक्ति रखने वाली युद्ध में बड़े२ पराक्रमी बलवानोंको बड़ी सुगमता से तरने के योग्य और भयभीतों को दुर्गम्य १४ हजारों शरीरों से परस्पर घिसावट वाली गृध्र कंकनाम जीवोंसे सेवित औरहजारों महारथियों को यमलोक में पहुंचाने वाली १५ शूल रूप सर्पों से पूर्ण जीवों की पंक्तियों से सेवित टूटे छत्र रूप बड़े हंस रखने वाली मुकुट रूपपक्षियों से शोभित १६ चक्र रूप कूर्म गदा रूप नक्र और बाण रूपी छोटी २ मछलियोंसे पूर्ण बगले गृध्र और शृगालोंके भय कारी समूहों से सेवित १७ और युद्ध में द्रोणाचार्य्य से मारेहुये सैकरों जीवों को पितृ लोकके निमित्त बहाने वाली १८ सैकड़ों शरीरोंसे परस्पर घिसावट वाली बाल रूप शैवल और शाड्बलों को रखने वाली भयभीतों के भय को बढ़ाने वाली नदीको जारीकिया १९ फिरजिन

का अग्रगण्य युधिष्ठिर है वह सब शूर वीर उन कौरवीसेनाओंको घुड़कते हुये महारथी द्रोणाचार्य्य के सन्मुख दौड़े २० उस समय आयके दृढ़पराक्रमी शूरवीरोंने उनकेसन्मुख दौड़तेहुये वीरोंकोसब ओर से घेरा वहां का युद्ध भी रोमांच खड़े करने वाला हुआ २१ हजारों छलोंसेभराहुआ शकुनि सहदेवके सन्मुखगया और तीक्ष्ण धार वाले बाणों से सारथी ध्वजा और रथको घायल किया २२ माद्रीके पुत्र क्रोध युक्त सहदेवने उसके उन ध्वजाधनुष और घोड़े को भी बाणोंसे काटकर सात बाणोंसे शकुनी को पीड़ितकिया २३ फिर शकुनी गदा को लेकर उत्तम रथ से कूदा हेराजा उसने गदा से उसके सारथीको रथसे गिराया २४ इसके अनन्तर वह दोनों महाबली शूरवीर रथ से रहित होकर गदा हाथोंमें लिये युद्धमें क्रीड़ाकरने वाले ऐसेहुये जैसे कि शिखरधारी दोपर्व्वतहोतेहैं २५ द्रोणाचार्य्य ने शीघ्रगामी दशबाणोंसे राजा द्रुपदको वेध कर, जितने बाणोंसे द्रुपदने घायल कियाथा उससे अधिक बाणों से आचार्य्यने घायल किया २६ वीर भीमसेन ने तीक्ष्ण धारवाले बीस बाणों से विविंशतिको वेधकर कंपायमान नहीं किया यह महा आश्चर्य्य साहुआ २७ हे महाराज फिर विविंशतिने अकस्मात् भीमसेनको घोड़े ध्वजा और धनुष से रहित करदिया इस हेतुसे सेनाके लोगों से उसकी प्रशंसा करी २८ उस वीरने युद्ध में उस शत्रुके पराक्रम कोन सहकर अपनीगदासे उसके सब सिखायेहुये घोड़ोंको गिराया २९ हे राजा फिर वह महाबलीमृतकघोड़ेवालेरथसेढालको लेकर भीमसेनके सन्मुख ऐसे गया जैसेकि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सन्मुख जाताहै ३० फिर हंसते प्यार करते और क्रोधकरतेवीर शल्यने अपने प्यारेभानजे नकुलको बाणोंसे घायल किया ३१ प्रतापवान् नकुलने उसके घोड़े छत्रध्वजा सारथी और धनुष को गिराकर युद्धमें अपने शंखको बजाया ३२ धृष्टकेतुने कृपाचार्य्यके चलायेहुये अनेक प्रकार के बाणोंको काटकर सत्तर बाणोंसे कृपाचार्य्यको घायल किया और उसकी ध्वजाके चिह्नको भी तीन

बाणोंसे तोड़ा ३३ कृपाचार्य्यने बाणोंकी बड़ी बर्षासे उसको ढक दिया और बहुत क्रोधित होकर धृष्टकेतुको घायल किया ३४ सात्यकीने कृतबर्माको नाराचनाम बाणोंसे छातीमें बेधकर बड़ी मन्द मुसकान समेत फिर दूसरे सत्तर बाणों से घायलकिया ३५ फिर उस भोजबंशीने शीघ्रही तीक्ष्ण धार वाले सतहत्तर बाणोंसे सात्यकीको वेधकर कंपायमान नहीं किया ३६ सेनापति धृष्ट-द्युम्नने सुशर्मा को मर्म स्थलोंपर अत्यन्त घायल किया फिर उस नेभी उसको तोमर से जत्रुस्थानपर घायलकिया ३७ विराट ने बड़े पराक्रमी मत्स्य देशियों समेत युद्धमें सूर्य्यके पुत्र कर्णको रोका यहभी आश्चर्य्य साहुआ ३८ वहां कर्णने वह भयकारी बीरता करी कि सबसेनाको गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे रोका ३९ और आप राजाद्रुपद भगदत्तके साथ भिड़ा हेमहाराज उनदोनोंका युद्ध अ-पूर्व्वरूपका हुआ ४० फिर पुरुषोत्तम भगदत्तने अपने बाणोंसे राजा द्रुपदको सारथी ध्वजा और रथसमेत घायलकिया ४१ इसकेपीछे क्रोध युक्त द्रुपदने महारथी भगदत्तको झुकी गांठवाले बाणोंसे शीघ्रही छातीपर घायल किया ४२ लोकके सब शूरवीरों में श्रेष्ठ अस्त्रबिद्यामें पण्डित भूरिश्रवा और शिखण्डीने ऐसा युद्ध किया जोकि जीवमात्रोंका भयकारीथा ४३ हे राजा पराक्रमी भूरिश्रवाने युद्धमें महारथी शिखण्डीको शायकोंके बड़े समूहोंसे ढकदिया ४४ हेभरत बंशी राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे क्रोधयुक्त शिखण्डीने भूरि-श्रवाको नब्बे शायकों से कंपायमान किया ४५ बड़े भयकारी कर्मकर्त्ता परस्परमें बिजयाभिलाषी घटोत्कच और अलम्बुषनाम दोनों राक्षसोंने अत्यन्त अपूर्व्व युद्धकिया ४६ सैकड़ों मायाकेउत्प-न्न करने वाले अहंकारी मायासे एक दूसरेको बिजयकरनेवाले आश्चर्य्यकारी वह दोनों राक्षस अत्यन्त भ्रमण करने वाले हुये ४७ चेकितानने अनुबिन्दके साथ महा भयकारी ऐसायुद्ध किया जैसे कि देवता और असुरोंके युद्धमें महाबली राजा बलि और इन्द्रका हुआथा ४८ लक्ष्मणने क्षत्र देवसे ऐसा बड़ा युद्ध किया

जैसेकि पूर्व्व समयमें विष्णु भगवानने युद्ध भूमिके बीच हिरण्या-
क्षके साथमें कियाथा ४६ हे राजा इसकेपीछे राजा पौरव अत्यन्त
शीघ्रगामी घोड़े वाले बुद्धिके अनुसार तैयार कियेहुये रथकी सवा-
रीमें गर्जना करता हुआ अभिमन्युके सन्मुख गया ५० फिर वह
युद्धाभिलाषी शत्रुओंका विजय करनेवाला महाबली अभिमन्यु
भी शीघ्रतासे सन्मुख आया और उससे बड़ा भारी युद्धकिया ५१
फिर पौरवने बाणोंके समूहोंसे अभिमन्यु कोढकदिया अर्जुनकेपुत्र
अभिमन्युने उसके ध्वजा छत्र और धनुषको पृथ्वी पर गिराया ५२
अभिमन्युने पौरवको दूसरे सात बाणोंसे वेधकर उसके सारथी
समेत घोड़ेको पांच शायकोंसे घायलकिया ५३ इसके अनन्तर
सेनाको महाप्रसन्न करते सिंहके समान बारम्बार गर्जते अर्जुन के
पुत्र अभिमन्युने पौरवके नाशकरने वाले बाणको शीघ्रतासे हाथमें
लिया ५४ फिर पौरवने उस धनुष पर चढ़ाये हुये महाभय कारी
शायकको जानकर दोबाणोंसे बाण समेत धनुषकोकाटा ५५ तब
शत्रुओंके वीरोंकेमारने वाले अभिमन्युने उस टूटे धनुषके डालते
और दूसरेधनुषके लेतेहुये तीक्ष्ण खड्गको उठाया५६ वह हस्तला
घव अपने पराक्रमके दिखलाता बहुतसेनक्षत्र चिह्नवाली ढालको
लेकर अनेकमार्गोंमें घूमा ५७ हेराजा प्रथमतो ढाल और तलवारके
के घुमानाऊंचेशे उठाना नीचेगिराना और फिर उठाना विनाअन्तर
दिखाई नहींपड़ा ५८ अकस्मात् गर्जना करतेहुये उस अभिमन्युने
पौरवकेरथांग ईशाको चलायमान करके उसीके रथमें नियत होकर
कौरवकी चोटीकोपकड़लिया ५९ और इसके सारथीको पावोंसे मार
कर खड्गसे ध्वजाकोगिराया और जिस प्रकार गरुड़ समुद्रको च-
लायमान करके सर्पको पकड़ लेताहै उसी प्रकारसे उसको पकड़
लिया ६० सबराजालोगोंने सिंहसे गिराये हुये बैलके समान उस
टूटीचोटीवाले महाव्याकुल अचेत रूपकोदेखा ६१ जयद्रथनेअभि-
मन्युको आधीनतामें वर्त्तमान अनाथके समान खैंचे और गिराये
हुये पौरव को देखकर नहींसहा ६२ हेमहाराज वह सौक्षुद्रघंटिका

ओंके जालसेयुक्त मयूरोंके चित्रोंसेयुक्त ढाल तलवारको लेकर गर्जताहुआ रथसे उतरा ६३ इसकेपीछे अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु जयद्रथको देखकर पौरवको छोड़ रथसे उछलकर बाज पक्षीके समान गिरा ६४ और गिरकर उस अर्जुनके पुत्रने शत्रुओं से चलायमान किये हुये प्रासऔर पट्टिश और तलवारोंको अपनीतलवारसे काटा और ढालसे ही रोका ६५ अपनी हस्त लाघवता अपनीही सेनाओंको दिखलाकर वह पराक्रमी शूरबीर अभिमन्यु उस बड़े खड्ग और ढालको उठाकर वृद्धक्षत्रके पुत्रपिताके बड़ेभारीशत्रु जयद्रथके सन्मुख ऐसेगया जैसेकि शार्दूलसिंह हाथीके सन्मुख जाताहै ६७ खड्ग दांत और नखरूप शस्त्ररखनेवाले वहदोनों परस्परमें सन्मुख होकर प्रसन्न चित्तों के समान होकर ऐसे युद्धक्रीड़ा करने लगे जैसेकि व्याघ्र और केशरी क्रीड़ा करतेहैं ६८ किसीने भी उननरोत्तमोंका अन्तर, वा ढाल तलवार का गिरना परस्परकेआघातोंमें नहीं देखा ६९ घुड़कना खड्गका शब्द शस्त्रोंकी रोकटोक का दिखलाना वाह्याभ्यन्तरीयघात यहसब उनदोनोंके बिनाअन्तरके दृष्टिपड़े ७० वह दोनों महात्मा बीर वाह्याभ्यन्तरीय उत्तम मार्गों में घूमते हुये पक्षधारी पर्बतों के समान दिखाई पड़े ७१ इस के पीछे जयद्रथ ने यशस्वी अभिमन्युके चलायमान कियेहुये खड्गको ढालकेकिनारे पर रोका ७२ उस सुनहरी पर और प्रकाशमान ढाल के मध्यमें लगाहुआ वह खड्ग जयद्रथके पराक्रमसे चलायमानहोकर टूटा ७३ खड्ग को टूटा हुआ जानकर और छः चरणहटकर एक निमेषही मात्रमें अपने रथ पर नियत हुआ देखाईदिया युद्धसे रहित उत्तम रथपर नियत अभिमन्युको सबराजाओंने एकसाथही चारों ओरसे घेरलिया ७५ तदनन्तर अर्जुनका पुत्र महाबली ढाल तलवारको छोड़कर जयद्रथको देखता हुआ गर्जा ७६ शत्रुके मारनेवाले अभिमन्युने उससिंधके राजा जयद्रथको छोड़कर उससेनाको ऐसातपायाजैसे कि सूर्य्य भुवनको संतप्तकरताहै ७७ शल्यने अत्यन्त लोहमयी और सुवर्णसे जटित भयकारी महा प्रकाशमान अग्नि ज्वाल

केसमान शक्तीको युद्धमें उसके ऊपर फेंका ७८ अर्जुनकेपुत्रअभि-
मन्युने उछलकर उसको पकड़लिया और खड्गको ऐसे मियानसे
बाहर किया जैसेकि गरुड़ गिरतेहुये सर्पको७९ उसअमिततेजस्वी
अभिमन्युकी हस्त लाघवता और पराक्रमको जानकर सबराजाएक
साथही सिंहनादको करतेहुये गर्जे८० शत्रुके वीरोंको मारने वाले
अभिमन्युने उसवैडूर्य्य जटित श्वेत वर्णवाली शक्तिको अपनी भुजा
के पराक्रमसे शल्यके ऊपर छोड़ा ८१ उससर्पाकार छोड़ीहुई शक्ति
ने उस शल्यके रथकोपाकर उसके सारथी को मारा और उसको
भी रथसे गिराया ८२ इसके पीछे विराट,द्रुपद,धृष्टकेतु,युधिष्ठिर,
सात्यकीपांचों केकेय,भीमसेन,धृष्टद्युम्न, शिखण्डी ८३ नकुल और
सहदेव यहसब धन्य हैं २ ऐसाकहकर पुकारे और नाना प्रकारके
बाणोंकेशब्दोंसहित सिंहनाद८४उसमुख न मोड़ने वाले अभिमन्यु
कोप्रसन्नकरते प्रकट हुये आपके पुत्रनेशत्रुके उस विजय के शब्द
रूपचिहनकोनहीं सहा ८५ हेमहाराज फिर सबने अकस्मात् उस
कोचारों ओरसे तीक्ष्ण धारवाले बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि
बादलपहाड़को ढकदेता है ८६ फिर उन्होंकाप्रिय चाहनेवाला
शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त आर्त्तायनि अभिमन्यु के सन्मुख गया ८७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि चतुर्द्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं तेरे कहेहुये बहुतसे विचित्र द्वन्द्वनाम
युद्धोंको सुनकर नेत्रवाले मनुष्योंकी इच्छाकरताहूं१देवासुरोंके यु-
द्धोंके समान इसकौरव पांडवोंके युद्धकोलोकमें मनुष्य लोगआश्च-
र्य्य रूपही वर्णन करेंगे इस उत्तम युद्धके सुनने से मेरी तृप्त नहीं
होतीहै इसहेतुसेआर्त्तायनि और अभिमन्युकेयुद्धकोमुझसे वर्णनकरो
२।३ संजय बोले किराजाशल्य अपने सारथीको नाश हुआ देख
कर केवल लोहमयी गदाको उठाकर महा क्रोधसे गर्जना करता
हुआ उत्तमरथसेकूदा४ और भीमसेन बड़ीशीघ्रतासे २ अपनीउत्तम

गदाकोलेकर उसकालाग्नि के समान प्रकाशित दण्डधारी यमराज के समान राजाशल्यके सन्मुख दौड़ा ५ और युक्तिपूर्वक भीमसेनसे शल्यको रुका हुआ जानकर अभिमन्युभी बड़ी गदाको लेकर शल्य से बोलाकि आवोआवो ६ फिर प्रतापवान भीमसेन अभिमन्यु को रोककर युद्धमें शल्यको पाकर पर्व्वतके समान निश्चल होकर नियतहुआ ७ और मद्रदेशका राजाशल्यभी महाबली भीमसेनको देख कर शीघ्रतासे ऐसेसन्मुख गया जैसे कि शार्दूल हाथीके सन्मुख जाताहै ८ इस के पीछे हज़ारों तूरी बाजे शंख भेरी आदिके बड़े २ शब्दों समेत सिंहनाद जारीहुये ९ देखते हुये परस्पर में सन्मुख दौड़ते हुये पांडव और कौरवोंके सैकड़ों ऐसे शब्द प्रकट हुये कि धन्यहै धन्यहै १० हेभरतवंशी सब राजाओं में शल्य के सिवाय युद्धमें भीमसेनके वेगके सहनेको दूसराकोईभी राजा सामर्थ्य नहीं रखताथा इसी प्रकार इसलोकमें भीमसेन के सिवाय महात्माशल्य कोभी गदाके वेगको कौन पुरुष सहनेको समर्थ होसक्ता है १२ स्वर्णमयी रेशमी बस्त्रों से मढ़ीहुई वह गदा मनुष्योंको प्रसन्न करने वालीहुई तब भीमसेनसे फेंकीहुई बड़ी गदा अग्नि रूपहुई उसी प्रकार सब प्रकार के मंडलों और मार्गोंको घूमतीहुई वह शल्यकी गदाभी बड़ी बिजलीकी सूरतहोकर शोभायमान हुई १४ फिर वह बैलों के समान गर्जते हुये शल्य और भीमसेन जिनके गदारूपी सींग चारोंओरको फैलेहुयेथे मंडलोंमें घूमे १५ उनदोनों पुरुषोत्तमों कायुद्ध चक्रमंडलरूपमार्गों और गदाके प्रहारोंमें समानहुआ अर्थात् किसी प्रकारका उनमें अन्तर नहीं हुआ १६ तब भीमसेनसे ताड़ित वह शल्यकी गदा जो सबको भयकारी और अग्निरूप थी शीघ्रही टूटी १७ इसीप्रकार भीमसेन की भी गदा शत्रुसे ताड़ित होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि बर्षाऋतुके त्रिदोषकालमें पट बीजनोंसे युक्त वृक्षहोताहै १८ हेभरतवंशी युद्धमें मद्रदेशीय राजा शल्यकी फेंकीहुई आकाशको प्रकाशित करतीहुई उसगदाने बारंबार अग्निको उत्पन्नकिया १९ इसीप्रकार शत्रुके ऊपर भीमसेन

को भेजीहुई गदानेभी सेनाको ऐसे तपाया जैसे कि गिरतीहुई बड़ी उल्का संतप्त करतीहै २० गदाओं में श्रेष्ठ नाग कन्याओं केसमान श्वास लेनेवाली उन गदाओंने परस्पर में मिलकर अग्नि को उत्पन्न किया २१।२२ जैसे कि बड़ेव्याघ्र नखों से और बड़े हाथी दांतोंसे आघातकरतेहैं उसीप्रकार वह गदाकी नोंकोंसे घायलहुये दोनों महात्मा एकक्षण में ही रुधिरसे लिप्त ऐसे दिखाईदिये जैसे कि फूलेहुये किंशुककेवृक्षहोते हैं २३ उनदोनों पुरुषोत्तमोंकी गदाओंके आघात शब्द इन्द्रके वज्रके समान सब दिशाओंमें सुनेगये २४ तब मद्रदेशके राजाकी गदासे दाहिने और बायें पक्षमें ताड़ित होकर भीमसेन ऐसे कंपायमान होकर चलायमान नहीं हुआ जैसे कि घायलहुआ पर्व्वत अचलहोता है २५ उसी प्रकार भीमसेनकी गदाके वेगोंसे ताड़ित महाबली शल्यभी धैर्य्यसे ऐसे नियत रहा जैसे कि वज्रोंसे ताड़ित पर्व्वत अचल रहताहै २६ गदाको उठाने वाले बड़े वेगवान् दोनों वीर दौड़े और फिर अन्तर्मार्गमें नियत होकर दोनों मंडलों को घूमे २७ फिर आठचरण जाकर हाथियों के समान गिरकर अकस्मात् लोह दंडोंसे परस्परमें घायल किया २८ परस्परकी तीव्रतासे और गदाओंसे अत्यन्त घायलहुये वह दोनों वीर इन्द्र धनुषके समान एक साथही पृथ्वी पर गिरे२९ इसके पीछे महारथी कृतवर्मा बड़ी शीघ्रता से उस व्याकुल और वारंवार श्वास लेनेवाले शल्यके पासगया ३० हे महाराज गदासे वारंवार पीड़ित सर्पके समान चेष्टा करनेवाले मूर्च्छासे संयुक्त को देखकर महारथी कृतवर्मा युद्धमें से मद्रदेशियों के राजा शल्यको अपने रथमें बैठाकर युद्ध भूमिसे दूरलेगया ३१।३२ मतवाले के समान व्याकुल वीरशल्य एक निमिष में ही फिर उठखड़ा हुआ और बड़ा महा बाहुभीमसेन भी हाथमें गदा लियेहुये दिखाई पड़ा ३३ हे श्रेष्ठ इसके अनन्तर आपके पुत्र मद्रदेश के राजा को मुखफेरने वाला देखकर हाथी प्रधान घोड़े और रथों समेत अत्यन्त कंपायमान हुये ३४ विजयसे शोभा पानेवाले पांडवोंसे पीड़ामान वह

आपके शूर बीर भयभीत होकर दिशाओं को ऐसे भागे जैसे कि वायुसे चलायमान बादल भागतेहैं ३५ हे राजा महारथी पांडव आपके पुत्रोंको बिजय करके युद्धमें प्रकाशित अग्नियों के समान शोभायमान हुये ३६ और बहुत प्रसन्न मनहोकर सिंहनाद करके भेरी मृदंग और ढोलोंके बाजों समेत शंखोंको बजाया ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय॥

संजय बोले हेराजा अकेले पराक्रमी वृषसेनने उस आपकी संपूर्ण सेनाको पराजित देखकर अस्त्रों की मायासे धारण किया १ युद्धमें वृषसेन के छोड़े हुये वह बाण मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को घायल करके दशों दिशाओंमें घूमे २ उसके हजारों प्रकाशित बड़े२ बाण इस प्रकार की चेष्टाकरनेवाले हुये जैसे कि ऊष्णऋतुमें सूर्य्य की किरणें होती हैं ३ हे महाराज उसके हाथ से पीड़ामान रथी और अश्वसवार अकस्मात् पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि बायुसे ताड़ित वृक्ष टूटकर पृथ्वी पर गिरतेहैं उस महारथीने युद्ध में घोड़े रथ और हाथियोंके सैकड़ों हजारों समूहोंको गिराया ५ फिरयुद्ध में निर्भयके समान उस अकेलेको घूमतेहुये देखकर सब राजाओंने एक साथही चारों ओरसे घेरलिया ६ और नकुलका पुत्र शतानीक वृषसेन के सन्मुखगया औरमर्मभेदी दश नाराचोंसे उसको घायलकिया ७ कर्णके पुत्रने उसके धनुषको काटकर ध्वजाको गिराया तब द्रौपदीके पुत्र अपने भाईको चाहतेहुये उसके सन्मुख गये ८ और शीघ्रही बाणों के समूहोंसे कर्णके पुत्रको दृष्टिसे गुप्तकरदिया फिर अश्वत्थामा आदिक महारथी गर्जतेहुये उनके सन्मुख दौड़े ९ हे महाराज द्रौपदी के महारथी पुत्रों को बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक नाना प्रकारके बाणों से ढकतेहुये ऐसे सन्मुख गये जैसे कि बादलपर्व्वत को ढकतेहुये सन्मुख जातेहैं १० बेटोंको चाहते शीघ्रता करनेवाले पांडव शस्त्रधारी पांचाल कैकय मत्स्य और सृंजयों ने उनको घेर

लिया ११ वहां आपके शूरवीरों के साथ पांडवों का वह युद्ध महा भयकारी रोमहर्षण ऐसा हुआ जैसा कि देवताओं के साथ असुरों का युद्ध महाभयकारीहुआ था १२ परस्पर अपराध करनेवाले और देखने वाले क्रोधमेंभरेहुये वीर कौरव और पांडव इसरीतिसे युद्धों के करने वाले हुये १३ उन असंख्य तेजस्वियोंके शरीर क्रोधसे ऐसे दिखाई दिये जैसे कि पक्षियोंमें श्रेष्ठ गरुड़से युद्धाभिलाषी सर्पोंका रूप आकाशमें होताहै १४ भीमसेन,कर्ण,कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा,धृष्टद्युम्न,और सात्यकी से वह युद्धभूमि ऐसी प्रकाश-मान हुई जैसे कि उदयहोनेवाला समय सूर्य्यसेप्रकाशमान होता है१५ परस्परमें युद्धकरनेवाले उन महाबलियोंका युद्ध ऐसाकठिन हुआ जैसे कि पराक्रमी देवताओंके साथ दानवोंका युद्धहोताहै १६ इसके अनन्तर समुद्रके समान शब्दायमान युधिष्ठिर की सेनाने आपकी उस सेनाकोमारा जिसके कि महारथीभागगयेथे १७ द्रोणा चार्य्यजी उसपराजित शत्रुओंसे अत्यन्तपीड़ामान सेना को देखकर बोले कि हे शूरवीर लोगो तुममत भागो १८ इसकेपीछे लालघोड़े रखनेवाले और चारदांत रखनेवाले हाथी के समान द्रोणाचार्य्य क्रोध रूपहो पाण्डवीय सेनामें प्रवेशकर युधिष्ठिरके सन्मुखगये१६ युधिष्ठिरने कंकपक्षोंसेयुक्त तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उनकोवेधा फिर द्रोणाचार्य्य भी शीघ्रतासे उसके धनुषको काटकर सन्मुखगये २० फिर पांचालों को यश बढ़ानेवाले चक्रके रक्षककुमारने उनआतेहुये द्रोणाचार्य्यको ऐसे रोका जैसे कि समुद्रको समुद्रकी मर्यादा वा कि नारा रोकताहै २१ कुमार से रुकेहुये ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य्य को देखकर धन्य धन्य वचनोंके साथ सिंहनादों के शब्दहुये २२ इस केपीछे अत्यन्त क्रोध युक्त सिंहके समान बारंबार गर्जते कुमारने उस बड़े युद्धमेंद्रोणाचार्य्यको अपने शायकोंसे छातीपर घायलकिया २३ फिर महाबली हस्तलाघवी और श्रमसे रहित कुमारने युद्धमें द्रोणाचार्य्यको रोका २४ ब्रह्मणवर्य द्रोणाचार्य्य ने उस शूर वीर श्रेष्ठव्रत रखनेवाले अस्त्रोंके मन्त्रोंमें परिश्रम करनेवाले चक्रकी

रक्षा करने वाले कुमारको मर्दनकिया २५ वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य सेनाओंके मध्यको पाकर सब दिशाओंमें घूमतेहुये आपकी सेनाके रक्षकहुये २६ शिखंडी कोबारह बाणोंसेउत्तमौजस को बीसबाण से नकुल को पांच बाण से और सहदेव को सात बाणोंसे घायल करके २७ युधिष्ठिरको बारह बाणोंसे द्रौपदी केपुत्रोंको तीन२ बाणोंसे सात्यकी को पांचबाणसे राजा द्रुपदको दश बाणोंसे घायल करके २८ युद्ध में जाकर बड़े २ शूरबीरोंको व्याकुल किया और बड़े२ श्रेष्ठ बीरों के सन्मुख दौड़े और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर को चाहते हुये सन्मुख आकर बर्त्तमान हुये २९ हे राजा इसके पीछे युगन्धरने बायुसे उठाये हुये समुद्रके समान क्रोध युक्त महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यको रोका ३० उसने गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे युधिष्ठिरको घायलकरके भल्लसे युगंधर को रथके बैठनेके स्थानसे गिरा दिया३१ तदनन्तर बिराट द्रुपद कैकयसात्यकी शिवि व्याघ्रदत्त पांचालदेशी और प्रतापी सिंहसेन ३२ यह सब और अन्य बहुतसे शायकोंके फैलाने वाले और युधिष्ठिरके चाहने वाले बीरोंने उन द्रोणाचार्य्यके मार्गको चारोंओरसे रोका ३३ फिर पांचाल देशी व्याघ्रदत्तने द्रोणाचार्य्य को तीक्ष्ण पचास बाणोंसे घायलकिया हेराजा इस हेतुसे सेनाके मनुष्योंने बड़ाउच्च शब्द किया ३४ फिर सिंहसेन शीघ्रतासे महारथी द्रोणाचार्य्य को घायल करके महारथियों को भय भीत करताहुआ अकस्मात् हंसनेलगा ३५ उसकेपीछे द्रोणाचार्य्य अपनेदोनों नेत्रोंको खोलेधनुष कीप्रत्यंचा को टंकार तलके बड़े शब्दको करके उसके सन्मुख गये ३६ वहां जाकर उस पराक्रमीने सिंहसेन और व्याघ्रदत्तके शरीरसे कुंडलोंसमेत कानोंकोदोभल्लोंसे काटकर गिराया३७ और पांडवोंके उन महारथियों को बाणोंके समूहोंसे मर्दनकरके नाशकरने वाले कालके समान उस युधिष्ठिरके रथकेपास नियत हुये ३८ हेराजा इनकेपीछे ब्रतमें सावधान द्रोणाचार्य्य के सन्मुख नियत होनेपर युधिष्ठिर की सेनाके मध्यमें युद्ध कर्त्ताओंके बड़ेशब्द हुये ३९ वहां

सेनाके लोग द्रोणाचार्य्यके पराक्रमको देखकर बोले कि निश्चय करके अब राजा दुर्योधन अभीष्ट प्राप्तकरेगा ४० इस मुहूर्त में प्रसन्नचित्त द्रोणाचार्य्य पांडव युधिष्ठिर को पकड़ कर दुर्योधनके युद्धमें हमारेसन्मुख आवेंगे ४१ इसप्रकार से आपके शूरबीरों के कहतेहुये ही महारथी अर्जुन रथके शब्द से गर्जताहुआ बड़ीतीव्रतासे आया ४२ और आतेही अर्जुन ने सेनाके मारनेमें उस रुधिर रूप रथ रूप भंवर वाली शूरोंके अस्थि समूहोंसे युक्त मृतकोंको किनारेसे दूर फेंकने वाली नदीको जारीकरके ४३ उस बाणसमूह रूप बड़ेफेण रखनेवाली प्रासशस्त्ररूपी मछलियोंसे व्याकुल नदी को बड़ी तीव्रतासे पारहोकर और कौरवोंको भगाके ४४ वह मुकुट धारी अर्जुन अकस्मात बाणोंके बड़े जालोंसे ढकता और मोहित करता द्रोणाचार्य्य की सेनाके सन्मुख गया ४५ बाणोंको बराबर चढ़ाते और शीघ्रतासे छोड़तेहुये यशस्वी अर्जुन का अन्तर किसी ने भी नहीं देखा ४६ हे महाराज न तो दिशा दीखीं न अन्तरिक्ष आकाश और पृथ्वी दिखाईपड़े सब बाण रूपही होगया ४७ उस समय गांडीव धनुषधारी से किये हुये बड़े अन्धकार में किसी को कुछभी नहीं दिखाई दिया ४८ तब सूर्य्य के अस्त होने और अन्धकार में संसार के प्रवृत्त होने पर मित्र शत्रु आदि कोई भी नहीं जान पड़े ४९ इसके पीछे उन द्रोणाचार्य्य और दुर्योधनादिक ने विश्राम किया फिर अर्जुन ने उन शत्रुओं को भय भीत और युद्धसे मन हटानेवाला जान कर ५० धीरे पने से अपनी सेनाओं को भी विश्राम दिया इस के पीछे अत्यन्त प्रसन्नचित्त पांडव सृंजी और पांचालोंने चित्त रोचक वचनों से अर्जुन की ऐसे प्रशंसापूर्वक स्तुति करी जैसे कि ऋषिलोग सूर्य्यकी प्रशंसा पूर्वक स्तुति करते हैं इस रीतिसे अर्जुन शत्रुओं को विजयकरके अपने डेरों को गया ५१ । ५२ और केशव जी प्रसन्नचित्त होकर उस की सेनाओं के पीछे कीओर से गये ५३ पांडु का पुत्र अर्जुन इन्द्र नीलमणि और सुवर्ण रजत वज्र स्फटिक आदि उत्तमवस्तुओं से जटित रथमें ऐसा

प्रकाशमानहुआ जैसे कि नक्षत्रों से अलंकृत वा जटित आकाश में चन्द्रमा शोभित होता है ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सत्तरहवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा वह दोनों सेना डेरोंको जाकर यथा भाग यथान्याय यथागुल्म सब ओर से बिश्राम करने वाली हुई १ अत्यन्त खेदित मन द्रोणाचार्य्य सेनाओं का बिश्राम करके दुर्य्योधन को देखकर लज्जायुक्त होकर यह बचन बोले २ कि मैंने पूर्व्व मेंही कहाथा कि अर्जुन के नियत होने पर युद्धमें देवताओं से भी युधिष्ठिर पकड़े जानेके योग्य नहींहै ३ अर्जुनने युद्धमें उपाय करने वाले तुमलोगों का वह बिचार तोड़ दिया तुम मेरे बचन परशंका मत करना मैंसत्य २ कहताहूं कि श्रीकृष्ण जी और अर्जुन सबसे अजेय हैं ४ हे राजा किसी हेतुसे अर्जुन के दूर लेजाने पर यह युधिष्ठिर तेरी स्वाधीनता में बर्त्तमान होगा ५ कोई युद्ध में उसको बुलाकरदूसरे स्थानपर लेजाय और अर्जुनउसको न जीतकरकिसी दशा में भी लौट कर न आवे ६ तो हेराजा मैं उसी अन्तरमें धृष्टद्युम्न के देखते हुये सेनाको छिन्न भिन्न करके अकेलेपने में धर्मराज को पकडूंगा ७ जो अर्जुन से पृथक् वह मुझको समीप आयाहुआ देख कर युद्ध को नहीं त्यागे तो पांडव युधिष्ठिर को पकड़ा हुआ हीजानो हेमहाराज अबमैं इस रीतिसे धर्मके पुत्र युधिष्ठिर कोउस के सब समूहों समेत तेरी आधीनता में बर्त्तमान करूंगा इस में किसी प्रकार का सन्देह न समझो ८ जो पांडव एक मुहूर्त्तभी युद्धमें नियत होगा तोमैं उसको युद्ध भूमिमेंसे पकड़ लाऊंगा क्योंकि वह अर्जुनही के कारणसे प्रबलहै १० संजय बोले हेराजातब त्रिगर्तका राजा अपने भाइयों समेत द्रोणाचार्य्य के उस वचन को सुनकर बोला ११ किहमसदैव गांडीव धनुषधारीसे निरादरकियेगये निश्चय करके उसी ने हम निरपराधीलोगों पर भी बड़ी द्वेषता

करीहै १२ हमसब लोग उन पृथक् २ प्रकारके अपमानोंको स्मरण करते अपनी क्रोधाग्नि से भस्मीभूत होकर कभी रात्रि में नींद भर कर नहीं सोते हैं १३ वह अस्त्रों से युक्त हमारे प्रारब्ध से हमारे नेत्रों केही सन्मुख दीखता हुआ वर्त्तमान है हम अपने हृदयवर्त्ती उस कर्म को करने वाले हैं जिस को कि हम अच्छा समझतेहैं १४ वह कर्म आपका प्रियकारी और हमारे यशकाकरनेवालाहै अर्थात् हम उसको युद्धभूमिसे बाहर लेजाकर मारेंगे १५ अब चाहे पृथ्वी अर्जुन से रहित होय अथवा फिर त्रिगर्त्त देशियों से रहित होय परन्तु हमतुमसे सत्य२ प्रतिज्ञा करतेहैं हमारीप्रतिज्ञा मिथ्या नहीं होगी १६ हे भरतवंशी महाराज दश हजार रथियों समेत वह पांचोंभाई इस रीतिके वचनों को कह कर १७ युद्ध में शपथखाकर लौटे सबमालव और तुंडकेर तीसहजार रथोंसमेत प्रस्थलका राजा त्रिगर्त्त देशी नरोत्तमराजासुशर्मा मावेल्लकललित्थ मद्रक १८।१६ दश हजाररथ और भाइयोंके साथगया और नाना प्रकारके देशियोंसे युक्तउत्तमपुरुषोंका समूह दशहजार रथों समेत शपथखाने के निमित्त पासगया इसके पीछे सबने पृथक्२ अग्नि लाकर पूजन करके २०।२१ कुशोंकेचीर और अलंकृत कवचोंको लिया वहकवच धारण करनेवाले घृतसे संयुक्त शरीर कुशाओं के चीरधारी २२ मूंजकी मेखला धारण करने वाले लाखोंदक्षिणा देने वालाबीर अथवा यज्ञ करनेवाले सन्तानमान स्वर्ग लोकके योग्य कृतकर्मी शरीरके अभिमानोंको दूरकरने वाले२३ यश और विजय के साथ आत्माको पूजते वेदके मुख और काल्दक्षिणावाले यज्ञों से ब्रह्मचर्य्य को पाकर २४ उत्तम युद्ध से शीघ्रही लोकोंको जानेके अभिलाषी सब ब्राह्मणों को संतुष्ट और तृप्त करके पृथक्२ निष्कों की दक्षिणा देकर २५ गौ और वस्त्रोंका दान करके परस्परमें बारं बार वार्त्तालाप करते अग्नि को प्रज्ज्वलित कर युद्ध व्रतको धारण करके २६ उन दृढ़ व्रत और निश्चय वालों ने उस अग्निके समक्ष में प्रतिज्ञा करी और सब जीवों के सुनते हुये उच्चस्वरसे वचनोंको

कहा २७ और सबोंने अर्जुन के मारने की भी प्रतिज्ञा करी कि जो लोक मिथ्या बादियों के हैं और जो ब्राह्मणों के मारने वालों केहैं २८। २६ जो मद्यपान औ गुरूकी स्त्रीसेसंभोग करने वालों के ब्राह्मणों का धन चुरानेवालों के राजपिण्ड चुराने वालों के शरणागत के त्यागने वालोंके प्रार्थना करनेवालोंके मारनेवालों के घरों में अग्नि लगाने वालोंके और गौओं के मारने वालों के जो लोक हैं ३० अथवा दूसरों के अप्रिय करने वालों के ब्राह्मणों से शत्रुता करने वालों के ऋतुकाल में मोहसे अपनी स्त्रीके पास न जानेवालों के जो लोकहैं ३१ व श्राद्ध में संभोग करने वालोंके आत्म घातियों के दूसरे की धरोहड़ मारनेवालों के शास्त्रके नाश कर्त्ताओं के नपुंसक से लड़नेवालों के अथवा नीचोंके पीछे चलने वालोंके जोलोकहैं ३२ और नास्तिक लोगोंके जोलोक हैं और अग्नि व माता पिताको त्याग कर ने वालों के अथवा अन्य प्रकार कभी पाप करने वालों के जोलोकहैं ३३ उन सब लोकोंको हम प्राप्तहोंय जो हम अर्जुन को युद्ध में मारे बिना लौट कर आवें ३४ और उनलोगों से पीड़ामान होकर भयसे मुखकोमोड़ें जो लोकके मध्य युद्धमें कठिन कर्मों को करतेहैं ३५ इसीसे अब हम सब लोग अपने अभीष्ट लोकोंको निस्सन्देह पावेंगे हे राजा तब वह वीर इस प्रकार से कहकर अर्जुन को दक्षिण दिशा में बुलाते हुये युद्ध में सन्मुख वर्त्तमान हुये उन नरोत्तमोंसे बुलाया हुआ शत्रुओं के पुरों का बिजय करने वाला अर्जुन ३६। ३७ धर्मराज से शीघ्रही यह बचन बोला किमैं बुलाया हुआ होकर नहीं लौटताहूं यह मेराव्रत नियतहै ३८ हे राजा प्रतिज्ञा करने वालेससप्तक मुझको बड़े युद्धमें बुलातेहैं और यह सुशर्मा भी भाइयोंसमेत युद्धाभिलाषी होकर युद्धमें बुलारहाहै ३९ सो आप उसके सब साथियों समेत मारने के निमित्त मुझको आज्ञादीजिये हे पुरुषोत्तम मैं इस बुलाने के सहने को समर्थ नहींहूं ४० मैं आपसे सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं कि युद्धमें सब शत्रुओंको मराहुआ ही जानो ४१ युधिष्ठिर बोले

हे तात जो द्रोणाचार्य्य के चित्तमें कर्म करने की इच्छा है उसको तुमने अच्छीरीतिसे मुख्यता पूर्वक सुनाहै उनकी वह प्रतिज्ञा जैसे प्रकार से मिथ्याहोय वही तुमको सब प्रकार से करना उचित्त है ४२ निश्चय करके द्रोणाचार्य्यजी महापराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ और श्रमसे रहितहैं हे महारथी उसने मेरे पकड़ने की प्रतिज्ञा करीहै ४३ अर्जुन बोले कि हे राजा निश्चय करके यह सत्यजित युद्धमें आपकी रक्षा करेगा औरधृष्टद्युम्न के जीवतेहोने पर द्रोणाचार्य्य अपने अभीष्ट को नहीं पावेंगे ४४ हे प्रभु युद्धमें पुरुषोत्तम सत्यजित के मरने पर मिले हुये सबका भी किसी दशामें नियत न होना चाहिये ४५ संजय बोले कि इसके अनन्तर अर्जुन राजा से आज्ञादिया गया और छातीसे मिलाया गया और बहुत प्रसन्न चित्त होकर राजाने अनेक प्रकार के आशीर्वाद दिये ४६ तब वह पराक्रमी अर्जुन इस रीतिसे कह सुनकर त्रिगर्त्त देशियों के सन्मुख ऐसे गया जैसेकि क्षुधामान सिंह अपनी क्षुधादूर करने के निमित्त मृगोंके यूथोंके सन्मुख जाताहै ४७ इसके पीछे दुर्य्योधन की सेना बड़ी प्रसन्न हुई और अर्जुनकेजानेपर धर्मराजकेपकड़ने में अत्यन्त क्रोधयुक्त हुये ४८ फिर वह दोनों सेना शीघ्रतासे ऐसे परस्पर में फिरीं जैसे कि जल वाली वर्षा ऋतुमें गंगा और सरजू यह दोनों नदी वेगसे मिलतीहैं ४९

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसके पीछे प्रसन्नता से युक्त संसप्तक लोग रथोंसे सेनाको चन्द्रमा के आकारकी बनाकर समभूमि वाले स्थान पर नियत हुये १ हे श्रेष्ठतव वह नरोत्तम आतेहुये अर्जुन को देखकर प्रसन्न होकर बड़े शब्दोंसे पुकारे २ उस शब्दने सब दिशा और विदिशाओं समेत आकाश को व्याप्त करदिया और शब्दसे लोकके अत्यन्त भरजाने पर वहां पर कोई प्रकार का दू-

सरा शब्द नहीं हुआ ३ वहअर्जुन उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त क्षत्रियों को देखकर कुछ मन्द मुसकान करताहुआ श्रीकृष्णजी से यह बचन बोला ४ कि हेदेवकीनन्दन अब तुम युद्ध में इन मरने के अभिलाषी और रोनेके योग्यस्थानपर अत्यन्त प्रसन्न चित्त त्रिगर्त्त देशी भाइयों को देखो ५ निस्संदेह त्रिगर्त्त देशियोंको प्रसन्नताका यह समय है कि वह उन श्रेष्ठ उत्तमलोकों को पावेंगे जो कि नीच मनुष्यों को कठिनता से प्राप्तहोतेहैं ६ इसके पीछे महाबाहुअर्जुन ने इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी को ऐसे प्रकार के बचन कहकर युद्धमें त्रिगर्त्त देशियोंकी अलंकृत सेनाको सन्मुख हुआ पाया ७तब उसने सुवर्ण से जटित देवदत्त नाम शंखको लेकर बड़ी तीव्रता से बजाया और उसके शब्द से सब दिशाओं को व्याप्त करदिया ८ उस शब्द से संसप्तकों की सेना महा भयभीत होकर पाषाण की मूर्त्तियोंके समान युद्धमें निश्चल होकर नियतहुई ९ और उनकी सवारियों के वहानोंने नेत्रोंको फाड़कर कानों को खड़ा कर ग्रीवा और शिरों को स्तब्ध करके अपने चरणोंको स्थिर करते मूत्रऔर रुधिर को गेरा १० इसके पीछे सावधान और सचेत हो सेना को नियत कर एक बार ही सब इकट्ठे होकर अर्जुन के ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे ११ पराक्रमी अर्जुनने उन पन्द्रह हजार बाणोंको शीघ्रही अपने तीव्र बाणों से बीचही में काटा १२ इसके पीछे फिर उन लोगोंने अर्जुन को दश२ बाणों से घायल किया फिर अर्जुन ने उनको तीन२ बाणों से घायल किया १३ हे राजा इसके पीछे प्रत्येकने अर्जुन को पांच २ बाणोंसे व्यथित किया इस पराक्रमीने भी उनको दो २ बाणोंसे घायल किया १४ फिर उन क्रोधयुक्तों ने केशव जी समेत अर्जुनको तीक्ष्ण बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि बर्षा की बूंदें तालाबको घायल करतीहैं १५ तदनन्तर हजारों बाण अर्जुन के ऊपर ऐसे गिरे जैसे कि भ्रमरोंके गण फूले हुये बनके वृक्षोंपर गिरतेहैं फिरसुबाहुने तीस लोहमयी बाणों से अर्जुनको मुकुट पर बहुत घायल किया १७ सुवर्णका मुकुट रखने

वाला अर्जुन उन सुनहरी पुंख युक्त सीधे चलने वाले मुकुट पर नियतहुये बाणोंसे उदय हुये सूर्य्यके समानशोभायमान हुआ १८ अर्जुनने युद्धमें सुवाहुके हस्तावाय अर्थात् लोहे के हस्तत्राण को काट कर बाणोंके जालोंसे ढकदिया १६ इसके पीछे सुशर्मा सुरथ सुधर्मा सुधनु और सुवाहुने अर्जुनको दश२बाणोंसे घायलकिया२० हनुमानजी को ध्वजा रखनेवाले अर्जुनने उन सबको पृथक् २ बाणों से बेधा और भल्लों से उन सबकी ध्वजा और शायकों को काटा २१ फिर सुधन्वाके धनुप को काट उसके घोड़ों को मार उसके शरीर समेत शिरको पृथक्२ करके गेरदिया २२ उस वीर के गिराने पर उसके अनुगामी भय भीत होकर महा व्याकुलता से उधर को भागे जिधर दुर्योधन की सेना थी २३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोध युक्त इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने अखंडित बाण जालों से उस बड़ी सेनाको ऐसे माराजैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से अन्धकारको नाश कर देताहै २४ उस सेनाके पराजय और चारोंओर के भागजाने व गुप्तहोजाने पर अथवा अर्जुनके अत्यन्तकोप युक्त होने पर त्रिगर्त्त देशियोंने भय प्रविष्टहुआ २५ वह सब अर्जुन के गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे घायल जहां तहां मृगोंके समूहोंके समान भयभीत और अचेत हो गये २६ इसके पीछे क्रोधयुक्त त्रिगर्त्त का राजा उन महारथियों से बोला कि हे शूरलोगो तुम मत भागो तुमको भयकरना योग्य नहीं है २७ सब सेनाके सन्मुख भयकारी शपथों को खाकर यहां आयेहो अब दुर्योधन की सेना में शीघ्रता से जाकर क्याकहोगे२८ हम सब एक साथ युद्धमें ऐसे कर्म करने से इसलोकमें क्यों नहीं हास्यके योग्यहोंगे अवश्य निन्दित गिने जायंगे इससे तुम सबसाथहोकर सेना समेत युद्धकरो २६ हेराजा ऐसे कहे हुये वे वीर परस्परमें प्रसन्न करते वारवार पुकारे और शंखोंकोबजाया३०इसके पीछे वह संसप्तकोंके समूह जिनका कि नारायण और गोपाल नामथामृत्युको निवृत्तकरके फिरलौटे ३१॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय॥

संजयजी बोले कि अर्जुन फिर उन लौटे हुये संसप्तकों के समूहों को देखकर अर्जुन महात्मा बासुदेवजी से बोले १ कि हे श्रीकृष्णजी घोड़ों को संसप्तकों के समूहों पर चलायमानकरो ये लोग जीवते हुये युद्ध को त्याग नहीं करेंगे यह मेरा बिचारहै २ अब आप मेरे भुजबल और धनुष के भयकारी पराक्रम को देखो अबमैं इनसबको ऐसे गिराऊंगा जैसे कि क्रोधयुक्त रुद्रजी पशुओंको गिरातेहैं ३ इसके पीछे निर्भय श्रीकृष्णजीने मन्द मुसकान करके बड़े आनन्दसे उसको प्रसन्न करके सेनामें जाकर जहां जहां अर्जुन ने चाहा वहां वहां उसकोप्रवेशित किया ४ तब युद्धमें श्वेतघोड़ोंसे खैंचाहुआ वहरथऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में चलायमान कियाहुआ बिमानहोताहै ५ फिर दाहिने और बायें मंडलों को भी ऐसाकिया जैसे कि पूर्वसमय में इन्द्रके रथने देव दानवों के युद्धमें कियाथा ६ इसके पीछेबड़े क्रोधयुक्तनानाप्रकारके शस्त्रोंको हाथमें रखने वाले बाणों के समूहों से ढकतेहुये नारायण नाम क्षत्रियोंके समूहने अर्जुनको चारों ओरसे घेरलिया ७ हे भरतर्षभ फिर उन्होंने युद्धके मध्यवर्त्ती श्रीकृष्णजी समेत कुन्तीके पुत्र अर्जुनको एक मुहूर्त्त मात्रही में दृष्टि से गुप्तकर दिया ८ फिर क्रोध भरेयुद्धमें पराक्रमको द्विगुणित करने वाले अर्जुनने शीघ्रही युद्धमें अपने गांडीव धनुषको हाथ में लिया ९ और क्रोध को शूचन करने वाली भृकुटीको मुखपरबांधकर देवदत्त नामबड़े शंखको बजाया १० और शत्रु समूहोंके मारनेवाले त्वाष्ट्रनाम अस्त्रको चलायाउसकेचलते हीहजारों रूप पृथक् २ प्रकटहुये ११ अपने रूपके समान अथवा बहुत प्रकारके रूप रखने वाले उन रूपों से क्षत्री लोग अत्यन्त मोहित हुये और एकने दूसरेको अर्जुन मानकर अपने आप अपने को मारा १२ यह अर्जुन है यह गोबिन्दजीहै यह पांड़व लोगऔर यादव हैं ऐसे २ बचनोंको बोलतेहुये उन अज्ञानियों ने परस्पर युद्ध

में एकने एक को मारा १३ अर्थात् उन अचेतोंने परम अस्त्र से परस्परमें नाशकिया उस युद्धमें शूर वीर लोग प्रफुल्लित किंसुक वृक्षके समान शोभायमानहुये १४ इसके पीछे उस अस्त्रने उनके छोड़ेहुये हजारों बाणोंको धूलमें मिलाकर उनवीरोंको यम लोकमें पहुंचाया १५ फिर अर्जुन ने हंसकर ललित्थ मालव मावेल्लक औरत्रिगर्त देशीय शूर वीरोंको बाणों से पीड़ामान किया १६ उनकालके प्रेरित और वीर अर्जुनसे घायलहुये क्षत्रियों ने अर्जुन के ऊपरनाना प्रकारके बाण जालोंको फेंका १७ वहां उस भय कारी बाणों की वर्षासे ढकीहुईन ध्वजा दृष्टपड़ी न अर्जुन रथ और न केशवजी दिखाई दिये १८ तबतो वह लब्धहुये लक्षसे परस्परमें पुकारे कि दोनों अर्जुन और केशवजीको माराहै ऐसा पुकारकर प्रसन्नतासे वस्त्रोंको हलाया १९ हेश्रेष्ठ वहां हजारों वीरोंनेभेरी मृदंग और शंखोंकोभी बजाया और महाभयकारी सिंह नादोंके शब्दों को किया २० इसके पीछे श्रीकृष्णजी प्रस्वेदसे व्याप्त होगये और महा दुःखी होकर अर्जुन से बोले हे अर्जुन तू कहांहै मैं तुमको नहीं देखताहूं हे शत्रुओं के मारनेवाले तू जीवताहै२१ श्रीकृष्णजीके इसबचनको सुनकर शीघ्रता करने वाले अर्जुनने वायु अस्त्रसे उनके छोड़ेहुये बाणों के समूहों को दूरकिया २२ इसके अनन्तर उस समर्थ वायुने संसप्तकोंके समूहों को घोड़े रथ हाथी और शस्त्रों समेत ऐसे उड़ाया जैसे कि सूखेपत्तों के समूहोंको उड़ाताहै २३ हे राजा वह फिरवायुसे चलायमान होकर ऐसे बड़े शोभायमान हुये जैसे कि समय पर वृक्षसे उड़ने वाले पक्षी शोभायमान होतेहैं २४ फिर शीघ्रता करने वाले अर्जुनने उनसबको इसरीतिसे व्याकुल करके तीक्ष्णबाणों से हजारों को मारा २५ भल्लोंसे शिर और शस्त्रों समेत भुजाओंको काटा हाथीकी शूंड़के समान उन सब की जंघाओंको बाणोंसे पृथ्वी पर गिराया २६ अर्जुनने शत्रुओंको टूटीपीठ औरभुजाचरण कमर और नेत्रोंको तोड़कर नाना प्रकारके शरीर के अंगोंसे रहित किया २७ फिर बुद्धिके अनुसार गन्धर्व नगर के समान अलंकृत

किये हुये रथोंको बाणोंसे चूर्ण करके अर्जुनने उन सब लोगों को रथ घोड़े और हाथी आदि सवारियों से भी रहित कर दिया २८ वहां पर कहीं कहीं टूटे रथ और ध्वजाओं के समूह स्थान स्थान परमुंडतालबनों के समान प्रकाशमान हुये उत्तरायुधपताका और अंकुशों समेत हाथी भी ऐसे गिर पड़े जैसे कि इन्द्रके बज्रसे ताड़ित वृक्षधारी पर्व्वत गिरते हैं २६।३० चामरआपीड़ और कवचोंके रखने वाले और इसी प्रकार आंत निकलने वाले घोड़े अपने सवारों समेत अर्जुन के बाणों से घायल होकर पृथ्वीपर गिरे ३१ जिनके खड्ग और नख कटगये और ढाल,दुधारा,खड्ग,शक्ति और कवचभी टूटगये ऐसे मर्मोंसे छिन्न महादुखी पतिलोगभी मृतक हुये ३२ उन मृतक घायल पड़े गिरते घूमते और शब्दों को करते शूर वीरों सेवहयुद्ध भूमि शोभायमान हुई ३३ उस पृथ्वी की महाभयानक धूलि रुधिर की बर्षा से दबगई और सैकड़ों बिना शिर के शरीर अर्थात् रुण्डोंसे भी युक्त होकर वह पृथ्वी दुर्गम्य होगई ३४ अर्जुन का वह भयकारी रथ युद्धमें ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि प्रलय के समय पशुओंके मारने वाले रुद्रजीको क्रीड़ाका स्थान होताहै ३५ अर्जुन से घायल हुये घोड़े रथ और हाथियों वाले और अर्जुन के सन्मुख नाशवान उन क्षत्रियोंने इन्द्रकी आतिथ्यताको पाया ३६ हे भरतर्षभ उन चारों ओर से मृतकरूप महारथियों से आच्छादित वह पृथ्वी महा शोभायमान हुई ३७ इसी अन्तरमें अर्जुन के अज्ञात होने पर सेनाको अलंकृत करके द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिर के सन्मुख गये ३८ शीघ्रता से युक्त अलंकृत सेनावाले प्रहार कर्त्ता युधिष्ठिर को चाहने वालों ने उसको घेर लिया उस समय वहां बड़ा कठिन युद्धहुआ ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनविंशोऽध्यायः १६ ॥

बीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजेन्द्र महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी उस

रात्रिको व्यतीतकर दुर्योधन को वहुतसे वचन कहके १ अर्जुन और संसप्तकों से युद्धको नियत करके संसप्तकोंके रथों की ओर अर्जुन की यात्राहोने पर २ अलंकृत सेनावाले द्रोणाचार्य्य धर्मराज के पकड़नेकी इच्छासे पांडवों कीवड़ी सेनाके सन्मुख गये ३ तबयुधिष्ठिरने भारद्वाज के रचेहुये गरुड़ व्यूहको देखकर मण्डलार्द्धनाम व्यूहसे अपनी सेनाको अलंकृत किया महारथी भारद्वाज तो गरुड़ व्यूहके मुखपरहुये४ राजा दुर्य्योधन अपने सगे भाइयों समेतपीछे चलने वालोंसे संयुक्त होकर शिरके स्थान पर हुआ धनुषधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य और कृतवर्मा ये दोनों नेत्र हुये ५ भूतशर्मा, क्षेमशर्मा, पराक्रमी करवर्ष, कलिङ्गदेशी, सिंहलदेशी, पूर्वीय, राजा, लोग, शूर, अभीरक, दशेटक, ६ शक, यवन, कांबोजदेशी, इसी प्रकार हंसपथ शूरसेनदेशी, दरददेशी मद्रदेशी और जोकेकयदेशीहैं ७ वे ग्रीवामें संयुक्त हुयेऔर हाथी घोड़े रथ और पत्तियों के समूह अच्छे अलंकृत होकर नियतहुये भूरिश्रवा शल्य सोमदत्त औरवाल्हीक ८ ये सववीर अक्षौहिणी से संयुक्त दक्षिण पक्षमें नियतहुये और विन्दु, अनुविन्दु, अवन्ति, देशके राजालोग काम्बोज और सुदक्षिण ६ वामपक्षमें आश्रित होकर अश्वत्थामाके आगे नियत हुये और पृष्ठभाग पर कलिंग, अम्बष्ठ, मागध, पौण्ड्र, मद्रक १० गान्धारदेशी, शकुनदेशी, पूर्वीय राजा पर्वतीयराजा और वशातयनियत हुये और पुच्छ पर सूर्य्यका पुत्र कर्ण अपने सब पुत्र बांधव और ज्ञाति वालों समेत नियतहुआ११नाना प्रकारके देशियोंसे उत्पन्न होनेवाली बड़ीसेना समेत जयद्रथ, भीमरथ, संपाति, याजभोज, भूमिंजय, वृष, क्राथ१२और पराक्रमी राजा निषध हे राजायुद्ध में सावधान और ब्रह्मलोककेअर्थ संस्कारी बड़ीसेनासेयुक्त व्यूह की छातीपर नियत हुये द्रोणाचार्य्य, सेरचाहुआ व्यूह रथघोड़ेहाथीऔर पदातियोंसमेत१३।१४ वायुसे उठायेहुये समुद्र के रूप नर्तक के समान दिखाईदिया उसके पक्ष और प्रपक्षोंसेयुद्धाभिलाषी शूरबीर लोग ऐसेनिकले१५जैसेकिऊष्मऋतुमें विद्युत और गर्जना समेत

सब ओरसे बादलनिकलतेहैं हे राजाउ सराजा प्राग्ज्योतिषका हाथी सेना केमध्यमें बिधिके अनुसार अलंकृत १६ और नियत होकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि उदयाचलमें सूर्य्यहोताहै मालायुक्त श्वेतछत्रधारी हाथीसे ऐसीशोभाहुई १७ जैसेकि पूर्णमासीकेदिन कृत्तिकानक्षत्रके योगसे युक्त चन्द्रमासमेत नीलेबादलकी शोभाहोतीहै उस प्रकार उस मदसे अन्धे हाथी कीशोभा हुई १८ जैसे किबड़ा पर्व्वत बड़े बादलोंकीकठिन वर्षासे युक्त होय उसी प्रकार नानाप्रकार केदेशोंके बीर राजाओं से व नाना प्रकारके शस्त्र और भूषणों से अलंकृत पर्व्वतीय राजाओंसे ऐसे संयुक्त हुआ १६ जैसे किदेवताओं केसमूहोंसे इन्द्र संयुक्त होताहै इसके पीछेराजायुधिष्ठिर उस दिव्य युद्धमें शत्रुओंसे अजेय ब्यूहको देखकर धृष्टद्युम्नसे यह बचनबोले कि हेसमर्थ अब मैं जैसी रीतिसे ब्राह्मण के स्वाधीनता में नआऊं २०।२१ हे कपोतग्रीव वर्ण अश्वोंके रखने वाले वही उपाय करना चाहिये धृष्टद्युम्न बोले कि हे उत्तमब्रत धारण करनेवाले अब तुम उस उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्यके स्वाधीनता में नहीं होगे क्योंकि अब मैं उनके अनुगामियों समेत युद्ध में उनको रोकूंगा २२ हे युधिष्ठिर मेरे जीवते हुये आपको ब्याकुलकभी न होनायोग्यहै द्रोणाचार्य्ययुद्धमें किसी दशामें भी मुझको बिजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते २३ संजय बोले कि कपोतग्रीव वर्णके घोड़े वाला पराक्रमी द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न बाण जालों को फैलाता आपही द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया २४ द्रोणाचार्य्य उस अप्रिय दर्शन धृष्टद्युम्न को नियत देख कर क्षण मात्रहीमें अप्रसन्न चित्त वाले के समान हुये २५ तब शत्रुओंके बिजय करने वाले आप के दुर्मुख नाम पुत्रने धृष्टद्युम्न को देखकर द्रोणाचार्य्य का प्रियकरने कोइच्छा से धृष्टद्युम्न को रोका २६ हे भरतवंशी शूर धृष्टद्युम्न और दुर्मुखका वह सामहना बड़ा कठिन और भय कारी हुआ २७ धृष्टद्युम्न ने शीघ्रही बाणों के जाल से दुर्मुख को ढककर बाणोंके बड़े समूहों से द्रोणाचार्य्य को रोका २८ द्रोणाचार्य्यको रुका हुआ देख

कर आप का पुत्र शीघ्रता से आया और नाना प्रकार के चिन्हित बाण समूहोंसे धृष्टद्युम्न को मोहित किया २६ युद्ध में उन धृष्टद्युम्न और दुर्य्योधन के भिड़ने पर द्रोणाचार्य्यने बाणों से युधिष्ठिर की सेनाको अनेक प्रकारसे छिन्न भिन्न कर दिया ३० जैसे कि बादल बायु से चारों ओर को उच्छिन्न हो जातेहैं उसी प्रकार पांडवयुधिष्ठिर की सेनाभी जहां तहां उच्छिन्न हो गई ३१ हे राजा वहयुद्ध एक क्षण मात्रतो अपूर्व्व दर्शनीय हुआ तदनन्तर शूर बीर लोगउन्मत्तोंके समान मर्य्यादा से रहित कर्मों को करने लगे ३२ यहांतक कि परस्परमें अपने और दूसरोंको नहीं जाना ध्यान और नामोंके द्वारा वह युद्ध वर्त्तमान हुआ ३३ उन शूर बीरों की सूर्य्य वर्णवाली किरणों से युक्त चूड़ामणि निष्क और भूषणोंसे अलंकृत कवच प्रकाश मानहुये ३४ युद्धमें गिरीहुई पताका वालेरथ हाथीऔर घोड़ों का वह रूपबगलोंके समूहोंके समान श्वेतरंगका दिखाई पड़ा ३५ मनुष्योंने मनुष्यों को ऊंचे घोड़ों ने नीचेघोड़ों को रथियों ने रथियोंको और हाथियों ने उत्तम हाथियों को मारा ३६ ऊंचीपताका वाले हाथियों का युद्ध उत्तम हाथियों के साथ एक क्षण मात्रमें महा भय कारी और कठिन वर्त्तमानहुआ ३७ उन छुटे अंग और परस्पर खैंचनेवाले हाथियों के दांतोंके संघात औरसंघर्षणसे सधूम अग्नि उत्पन्नहुई ३८ जिनकी पताका फैलगई और दांतोंसे अग्निप्रकटहुई वह भिड़कर बिजली रखने वाले बादलोंके समान होगये ३९ दौड़ते गर्जते और गिरते हुये हाथियों से पृथ्वी ऐसी आच्छादितहोगई जैसे कि बादलोंसे शरदऋतु का आकाश होजाताहै ४० बाण और तोमरों की वर्षा से घायल उन हाथियों के शब्द ऐसे उत्पन्न हुये जैसे कि बड़ी चल बिचलतामें बादलों के शब्द होतेहैं ४१ कितनेही उत्तम हाथी तोमर और बाणोंसे घायल होकर भय भीतहुये और कितनेही अन्यहाथियोंके शब्दोंसे ही भाग गये ४२ वहां हाथियों के दांतों से घायल कितनेहीने पीड़ा युक्त होकर ऐसे भयानक शब्दकिये जैसे कि उत्पात के बादल शब्द करते

है ४३ उत्तम हाथियोंसे बिरुद्ध कियेहुये हाथी हाथियों को मथ कर उत्तम अंकुशों से प्रेरित फिर लौट आये ४४ अच्छे अलंकृत बाण और तोमरों से घायल हुये हाथियोंके अलंकृत वह सवार हाथियों से पृथ्वीपर गिरे जिनके कि हाथों से अंकुश और शस्त्र छूट गये थे ४५ अपने सवारों से रहित हाथी जहां तहां शब्दों को करतेहुये परस्पर प्रवेश करके टूटे हुये बादलों के समान गिर पड़े ४६ अकेले घूमने वाले के समान कितनेही बड़ेहाथी उन मृतक और गिरे हुये शस्त्र वाले मनुष्यों को लियेहुये दिशाओं को गये ४७ तब उसमार धार में तोमर दुधारे खड्ग और परसों से घायल व ताड़ित हाथी कष्टित शब्दों को करते हुये पृथ्वी पर गिर पड़े ४८ उस पर्वता कार चारों ओर को गिरने वाले हाथियों के शरीरों से आघातित पृथ्वी अकस्मात् कंपायमानहो कर शब्दायमानहुई ४९ अश्वारूढ़ व पताका धारी हाथियों के सवार और हाथियों से वह पृथ्वी चारों ओर से ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि फैले हुये पर्व्वतोंसे शोभितहोतीहै ५० वह अच्छे अलंकृत हाथियोंके सवार जिनके हृदय युद्ध में घायलहुये फैले अंकुश और तोमर और रथियोंके भल्लोंसे गिरायेगये ५१ और बहुत से हाथी नाराचोंसे घायल क्रौंचके समान गर्जते हुये शत्रुओंको और अपनी सेनाके भी लोगों को मर्दन करते हुयेदशों दिशाओं को भागे ५२ हे राजा पृथ्वी हाथी घोड़े रथऔर युद्ध कर्त्ताओंके असंख्य शरीरों से संयुक्त होकर मांस रुधिर रूप कीचकी रखने वालीहुई ५३ दांतों की नोकसे मथकर हाथियों से उछाले हुये और पहिये रखने वाले बड़े २ रथोंसेही बिना पहिये किये हुये ५४ रथ अपने २ रथियों से रहित हुये और घोड़े भी अपने २ अश्वारूढ़ों से खाली होगये और जिनके सवार मारे गये वे भयसे दुखी हाथी भी दिशाओं को भागे ५५ इस युद्धमें पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको भी मारा अर्थात् ऐसाकठिन युद्धहुआ कि जिस में किसीने किसी को नहीं जाना ५६ उस युद्धमें मनुष्य रुधिरकी कीचोंसे डाढ़ी मूछों समेत लिप्त होकर ऐसे दुखीहुये जैसे

कि प्रकाशित अग्निसे संयुक्त बड़े २ वृक्ष होते हैं ५७ रुधिर से लिप्त वस्त्र कवच छत्र और पताका येसब लालरंग के दृष्टपड़े ५८ गिराये हुये घोड़े रथ और मनुष्यों के समूह पृथ्वी पर पड़े हुये फिर रथ की नेमियों से दबकर अनेक प्रकार से खंड २ हुये ५९ वह सेनारूपी समुद्रहाथियों के समूहसे बड़ी तीव्रतासेयुक्त निर्जीव मनुष्य रूप शैवल रखनेवाला और रथोंके समूहरूपकठिन भंवरवाला हो कर महा शोभायमान हुआ६० विजयरूपी धनकेचाहनेवाले शूरवीरोंने सवारी रूपी बड़ी२ नौकाओं के द्वारा उस सेना सागर को मझाकर डूबने वालोंने मोहको नहीं किया ६१ बाणोंकी बर्षासे अत्यन्त वर्षा युक्त घात चिन्हों समेत उन शूरवीरोंके मध्य में किसी विना घायलने भी चित्तकी दृढ़ताको नहीं पाया ६२ इसी प्रकार भयकारी रूप मद के उत्पन्न करनेवाले युद्ध के वर्त्तमान होने पर द्रोणाचार्य्यजी शत्रुओंको मोहित और अचेत करके युधिष्ठिर के सन्मुख गये ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिविंशतितमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसके अनन्तर युधिष्ठिरने समीपआयेहुये द्रोणाचार्य्यकोदेखकरनिर्भयपुरुष के समान होकर बाणों की वर्षा से उनको ढकदिया १ इसकेपीछे युधिष्ठिर की सेना में बिलबिला नाम शब्द उत्पन्न हुआ कि बड़ा सिंह हाथियोंके स्वामीको पकड़ना चाहताहै २ फिर बड़ा शूरवीर सत्य पराक्रमी सत्यजित द्रोणाचार्य्य को देखकर युधिष्ठिर को चाहताहुआ आचार्य्य के सन्मुख गया ३ तब महाबलीद्रोणाचार्य्य और पांचालदेशी उस सेनाको व्याकुल करते हुये इन्द्र और वैरोचनके पुत्र असुराधिप राजाबलिके समान युद्ध करने लगे ४ इसके पीछे बड़े धनुषधारी सत्यपराक्रमी उत्तम शस्त्रको दिखाते हुये सत्यजित ने द्रोणाचार्य्य को तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे घायल किया ५ उसी प्रकार विषैले सर्पके समान मृत्यु

रूप पांच बाणोंकोउन के सारथी पर छोड़ा और उन बाणोंके लगने से उनकासारथी अचेत हुआ ६ फिर अकस्मात् दशबाणों से उनके घोड़ोंको घायल किया और फिर इसीकोप संयुक्तने दशदशबाणों से उसके पार्ष्णि समेत सारथी को बेधा ७ फिर मंडल को घूमकर सेना के मुखपर घूमने लगा इन सब बातों के पीछे उस शत्रुओंके मारने वालेने क्रोधकरके द्रोणाचार्य्यकी ध्वजाको काटा ८ फिरशत्रु ओंके विजय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने युद्धमें उसके उसकर्म कोदेख कर अपने मनसे मरणप्राय समझा ९ औरशीघ्रही बाणसमेत उसके धनुषको काटकर मर्मवेधी तीक्ष्ण दशबाणोंसे सत्यजितको घायल किया १० हेराजा फिर उस प्रतापीने शीघ्रतासे दूसरे धनुषको लेकर तीस बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको व्यथित किया ११ युद्धमेंसत्यजि तसेग्रसेहुये द्रोणाचार्य्यको देखकर पांचालदेशी वृकनेसैकड़ों तीक्ष्ण बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको पीड़ामान किया१२तबयुद्धमें महारथी द्रोणा चार्य्यको बाणोंसे ढकाहुआ देखकर पांडव प्रसन्नतासे पुकारे और बड़ी प्रसन्नतासे वस्त्रोंको फिराया १३ हेराजाबड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त वृकने फिर द्रोणाचार्य्यको साठ बाणोंसे छातीपरघायल किया और बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ१४बाणोंकी बर्षासे ढकेहुये बड़ेवेगवानमहा रथी द्रोणाचार्य्यने क्रोधसे दोनोंनेत्रोंको निकालकरबड़ा वेगकिया१५ अर्थात् द्रोणाचार्य्यने सत्यजित और वृकके धनुषोंको काटकर छः बाणोंसे सारथी और घोड़ोंसमेत वृकको मारा १६ इसके पीछेसत्य जितने बड़ेवेगवान् दूसरे धनुषको लेकर विशिखनाम बाणोंसे घोड़े सारथी और ध्वजा समेत द्रोणाचार्य्यको घायल किया१७ पांचाल देशीसे युद्धमें पीड़ामान द्रोणाचार्य्यने भीउसके प्रहारोंको नहींसहा और उसके नाशकरने केलिये शीघ्रही बाणोंको छोड़ा १८ अर्थात् द्रोणाचार्य्यने हजारोंबाणोंकी बर्षासे उसकेघोड़े धनुषध्वजा सारथी और पृष्ठके रक्षकोंको आच्छादित करदिया १९ इसीप्रकार बार बार धनुषके टूटनेपर उत्तम अस्त्रोंके ज्ञाता पांचालदेशी सत्यजितने रक्तबर्ण घोडे रखनेवाले द्रोणाचार्य्य से बड़ा युद्धकिया २० द्रोणा-

चार्य्यने युद्धमें उस सत्यजित को इस प्रकारका शूरवीर जानकर अपने अर्धचन्द्र नाम बाणसे उस महात्मा के शिरको काटा २१ उस पांचालोंके महारथी बड़े पराक्रमीके मरने पर द्रोणाचार्य्य से भयभीत राजा युधिष्ठिर शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा हटगया २२ पांचाल,केकय, मत्स्य,चेदि, कारुष्य और कोशल देशियोंके शूरवीर युधिष्ठिर को चाहते उस द्रोणाचार्य्य को देखकर उनके सन्मुख गये २३ इसकोपीके शत्रुसमूहोंके मारनेवाले आचार्य्यने युधिष्ठिर की चाहनेवाली उनसेनाओं को ऐसे भस्म करदिया जैसेकि तृण समूह कोअग्नि भस्म करदेता है २४ राजा विराटका छोटा भाई सतानीक उस सब सेनाके बारंबार नाश करनेवाले द्रोणाचार्य्यके सन्मुख वर्त्तमान हुआ २५ और सूर्य्यकी किरणोंके समान प्रकाशमान कारीगरके स्वच्छ किये हुये छः बाणों से सारथी और घोड़ों समेत द्रोणाचार्य्य को अत्यन्त घायल करके बड़े वेगसे गर्जा २६ निर्दय कर्म में प्रवृत्त कठिनता से होनेके योग्य कर्मको करना चाहते सतानीकने महारथी द्रोणाचार्य्य को सैकड़ों बाणोंसे ढक दिया २७ फिर द्रोणाचार्य्यने भी शीघ्रता करके क्षुरनाम बाणसे उस गर्जते हुये सतानीक के शरीर से कुण्डल धारी शिरको काट कर पृथ्वी पर गिराया इसके मत्स्य देशी लोग भागगये २८ भार द्वाजने मत्स्य देशियों कोविजय करके चन्देरी कारुष्य केकय पां- चाल सृंजय देशी और पांडवों को भी बारंबार विजय किया २९ जैसे कि अग्नि वनको भस्म करताहै उसी प्रकार सेनाओं के भस्म करने वाले क्रोध रूप स्वर्णमयी रथ वाले द्रोणाचार्य्यको देखकर सृंजयनाम क्षत्री अत्यन्त कम्पायमान हुये ३० इस शीघ्रता करने वाले उत्तम धनुषधारी शत्रुहन्ता द्रोणाचार्य्यकी प्रत्यंचाकाशब्दसब दिशाओं में सुना गया ३१ हस्तलाघवी द्रोणाचार्य्य के छोड़े हुये भय कारी शायकों ने हाथी घोड़े पदाती रथारूढ़ और गजारूढ़ों को बहुत मथा ३२ जैसे कि हिम ऋतुके पीछे वायु से युक्त गर्जता हुआ बादल वर्षाको करताहै उसी प्रकार पाषाण वृष्टिके समान

वर्षाकरते द्रोणाचार्य्यने शत्रुओंके भयको उत्पन्न किया ३३ पराक्रमी शूरवीर बड़े धनुष धारी मित्रोंके अभय देनेवाले द्रोणाचार्य्य सेनाको व्याकुल करते सब दिशाओंमें घूमे ३४ हमने उस बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य के स्वर्णमयी धनुष को सब दिशाओं में ऐसे देखा जैसे कि बादलों में बिजली होतीहै ३५ हे भरतवंशी हमने इस युद्धमें अत्यन्त घूमते द्रोणाचार्य्य की ध्वजा में शोभायमान हिमाचलके शिखरकी समान वेदीको देखा ३६ फिर द्रोणाचार्य्य ने युधिष्ठिर की सेनाके मध्यमें ऐसा बड़ा बिध्वंसन किया जैसेकि देवता औरअसुरोंसे प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले बिष्णुभगवान् दैत्यों के समूहोंमें बिध्वंसन करते हैं ३७ उस शूरबीर सत्यवक्ता ज्ञानी पराक्रमी सत्य पराक्रमी महानुभाव द्रोणाचार्य्य ने उस नदीको जारी किया ३८जोकिप्रलयकालीन भयकारी नदीके समानभयभीतों को डराने वाली कवच रूप तरंग ध्वजा रूप भंवर मृतकोंको किनारेसे दूरहटाने वाली हाथी घोड़े रूपी बड़ेग्राह और खड्गरूपी मछली रखने वाली कठिनता से स्पर्श करने के योग्य ३९ वीरों के अस्थिरूप कंकड़ रखने वाली भयकारी भेरी मृदंग रूपीकछुये रखने वाली ढालऔर कवचरूपी नौका रखनेवाली महाभयानक केशरूप शैवल और शाड्वल रखने वाली ४० बाण समूहों को रखने वाली धनुषरूप झिरनोंसे युक्त भुजा रूप पत्तोंसे व्याप्त युद्ध भूमिमें बहने वाली कठिन कौरव और सृंजियों से प्राप्तकरने वाली ४१ मनुष्यों के शिर रूप पाषाण रखने वाली शक्ति रूप मछली गदा रूप मुडुपनाम नौका रखने वाली पगड़ी रूपी फेनों से आच्छादित निकली हुई आंतरूपी सर्पोंसे युक्त ४२ वीरों को मारने वाली और भयकारी मांस रुधिर रूप कीच रखने वाली हाथी रूप ग्राह ध्वजारूप वृक्षों सहित क्षत्रियों को डुबानेवाली ४३ निर्दय शरीरों से परस्पर घिसावट रखनेवाली अश्वारूढ़ रूप नक्रोंकी रखने वाली ऐसी दुर्गम नदीको द्रोणाचार्य्यने प्रकट किया वह नदी मृत्यु रूप कालसे मिली हुई थी ४४ राक्षस और

गिद्ध आदि के समूहोंसे सेवित श्वान शृगालोंकेसमूहों से युक्त बड़े भयकारी मांसभक्षी जीवों करके चारों ओरसे सेवितथी ४५ वह युधिष्ठिरादिक उस कालरूप के समान सेनाके नाश करने वाले बड़े रथी द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ४६ वहां उन शूरों ने एक साथही द्रोणाचार्य्यको सबओरसे ऐसे रोका जैसे कि किरणोंसे संसार के तपाने वाले सूर्य्य रुकते हैं ४७ शस्त्र उठाने वाले आप के बेटे राजा लोग और राजकुमारों ने बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य को चारों ओरसे घेरलिया ४८ इसके पीछे शिखण्डीने पांचबाणसे क्षत्रधर्माने बीस बाणोंसे वसुदान ने पांच बाणसे उत्तमौजा ने तीन बाणोंसे क्षत्रदेवने सात बाणों से सात्यकी ने सौ बाणोंसे युधामन्यु ने आठ बाणों से ४९ युधिष्ठिर ने बारह शायकों से द्रोणाचार्य्यको घायल किया ५० और धृष्टद्युम्न भी तीन बाणसे व्यथित किया ५१ इस के पीछे सत्यसंकल्पी महारथी द्रोणाचार्य्य ने मतवाले हाथीके समान रथ वाली सेनाको उल्लंघन करके इस दृढ़ सेनाको गिराया५२फिर निर्भयके समान प्रहार करने वाले राजाको पाकर नौ बाणोंसे क्षेमको ऐसाघायल किया कि मृतक रथसे गिरपड़ा५३ वह रक्षा के योग्य गुरू द्रोणाचार्य्य सेना के मध्य को पाकर सब दिशाओं में घूमे और किसी दशामें भी अन्य लोगोंके रक्षक नहीं हुये ५४ बारह बाणसे शिखण्डी को बीस बाणसे उत्तमौजस को घायल करके भल्लसे वसुदानको यम लोकमें भेजा५५अस्सी बाणों से कृतवर्माको छब्बीस बाणसे सुदक्षिण को घायल करके भल्लसे क्षत्रदेवकोरथके नीड़स्थान सेगेरा५६ फिर उस स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्यने साठबाणसे युधामन्यु को तीस बाण से सात्यकीको घायल करकेशीघ्रही युधिष्ठिर के सन्मुख गये ५७ फिर राजाओं में श्रेष्ठयुधिष्ठिर शीघ्र गामी घोड़ों के द्वारा शीघ्रही गुरूके सन्मुख से हट गये और पांचालदेशी शूरवीर द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया ५८ फिर द्रोणाचार्य्यने उसको धनुष घोड़े और सारथी समेतऐसा मारा कि वह मृतक होकर रथसे पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि

आकाशसे तारा गिरताहै ५९ उस पांचाल देशियोंके यश करनेवाले राजकुमारके मरनेपर यह बड़ाभारी शब्द हुआ कि द्रोणाचार्य्यको मारो मारो ६० पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने उन अत्यन्त क्रोध युक्त पांचाल मत्स्य और केकय देशियों समेत सृंजयोंसे युक्त पांडवों को छिन्न भिन्न करदिया ६१ सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, बार्धक्षेम, चित्रसेन, सेनाबिन्दु, सुवर्चस ६२ इन समेत अन्य२ नाना प्रकारके देशाधिपति अनेक राजाओं को कौरवोंसे घिरेहुये द्रोणाचार्य्यने बिजय किया ६३ हे महाराज आपके शूर बीरोंने महा युद्ध में बिजयको पाकर युद्धमें चारोंओरसे छिन्न भिन्नहुये पांडवोंके शूर बीरोंको मारा ६४ हे भरतबंशी जैसेकि इन्द्रके हाथसे दानवघायल होतेहैं उसी प्रकार महात्मा द्रोणाचार्य के हाथसे घायलहुये वह पांचाल केकय और मत्स्य देशीभी अत्यन्त कंपायमानहुये ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले उस बड़े युद्धमें द्रोणाचार्य्यसे पांचलोंके औरपांडवों के पराजयहोने पर कोईभी दूसरा सन्मुख न रहा १ क्षत्रियों के यशकी बढ़ाने वाली उत्तम बुद्धिको जिस पर कि नीच मनुष्यनहीं चलते और उत्तम पुरुष उस पर कर्मकरते हैं उस बुद्धिको युद्धमें करके सन्मुख वर्त्तमान हुआ २ वही बड़ा पराक्रमी और शूरबीर है जो छिन्न भिन्न होने वालोंमें लौटताहै बड़ा आश्चर्य्यहै कि कोई मनुष्यभी द्रोणाचार्य्य को नियत देखकर सन्मुख नहीं हुआ ३ व्याघ्रके समान जंभाई लेने वाले मतवाले हाथीके समान युद्धमें प्राणोंके त्यागनेवाले अलंकृतहोकर अपूर्व्व युद्धकरने वाले ४ बड़े धनुषधारी नरोत्तमशत्रुओंको भयबढ़ानेवाले उपकारके ज्ञाता सत्य बक्ता दुर्योधन का प्रिय चाहनेवाले ५ शूर बीर द्रोणाचार्य्य को सेनामें देखकरकौन२सेशूरबीर लौटे हेसंजय यहसबमुझसेकहो ६ संजय बोलेकि पांचाल पांडव मत्स्य देशी सृंजयी चंदेरी देशियों

और केकयोंकोयुद्धमेंद्रोणाचार्य्यके शायकोंसेघायलऔरछिन्नभिन्न किया ७ जैसेकि समुद्रके बड़े समूहसे नौका हरणकी जातीहैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य के धनुषसे छोड़ेहुये और शीघ्रमारनेवाले बाणों के समूहोंसे स्वाधीनता में होनेवालोंको देखकर८कौरवोंने नाना प्रकारके बाजोंके शब्द और सिंहनादोंको करतेहुये रथ हाथी और मनुष्योंको सब ओरसे घेरलिया ९ सेनाके मध्यमें नियत अपने मनुष्योंसे युक्त राजादुर्य्योधन उनको देखताहुआ अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक कर्ण से बोला १० हे कर्ण द्रोणाचार्य्य के शायकों से घायलहुये पांचालोंको देखो कि जैसे सिंहसेवनमें मृग भयभीतहोते हैं उसीप्रकार दृढ़ धनुषधारी द्रोणाचार्य्यसे भयभीत इनलोगोंको भी देखो ११ यह मेरी बुद्धिमें आताहै कि यह कभी युद्ध को नहीं चाहेंगे क्योंकि द्रोणाचार्य्यसे इसरीतिपर पराजय हुयेहैं जैसे कि वायुसे बड़े २ वृक्षताड़ित होकर गिरतेहैं १२ इनमहात्मा के सुन हरी पुंखवाले बाणोंसे पीड़ामान जहांतहां घूमतेहुये ये लोग एक मार्गसे नहींजातेहैं१३कौरवोंसे और महात्मा द्रोणाचार्य्यसेरोकेहुये ये और अन्य शूरवीर लोग ऐसे मंडलरूप घिरावमें हुये जैसे कि अग्निसे हाथीहोतेहैं १४ द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्ण धारवाले भ्रमररूप बाणोंसे युक्तशरीर भागनेमें प्रवृत्त चित्त होकर परस्पर में भिन्न २ होगये १५ हेकर्ण यहबड़ा क्रोधी भीमसेन पांडवों और सृञ्जयोंसे पृथक् होकरमेरे शूरवीरोंसे घिराहुआ मुझको प्रसन्नकरता१६प्रकटहैअबयह दुर्बुद्धीलोकको द्रोणाचार्य्यरूप देखताहै इससेनिश्चय होताहै कि यह भीमसेन अबअपने जीवनसे और राज्य से निरास होगयाहै १७ कर्णबोला यहमहाबाहु अपने जीतेजी कभी युद्ध को नहीं त्यागेगा यह पुरुषोत्तम इनसिंह नादोंको नहींसहैगा १८ और पांडवभी युद्धमेंसे कभी पृथक् नहींहोंगे यहमेरा विचारहै, क्योंकि पराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ होकर युद्धमें दुर्मद हैं १९ ये पांडवलोग विष अग्नि द्यूत और वनवास करनेके दुःखोंको स्मरणकरतेयुद्धको नहीं त्यागेंगे यहमेरा निश्चय सिद्धान्तहै २० बड़ातेजस्वी महाबाहु

कुन्तीका पुत्रभीमसेन लौटता हुआभी बड़े २ उत्तम रथियोंको मारे
गा २१ खड्ग धनुषशक्ति घोड़ेहाथी और मनुष्योंके समूहोंको रथ
और लोहेके दंडसे मारेगा२२पांचाल केकय मत्स्यदेशी शूर सात्य-
की आदिकरथी पांडवअधिकतर इस भीमसेनके पीछेकर्मकरनेवाले
होतेहैं २३ शूरबीर पराक्रमी और बड़े २ बलवान महारथी लोग
इस अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेनको प्रेरणासे मारनेवाले२४कौरवों
में श्रेष्ठ भीमसेनको चाहतेहुये लोग सबओर से द्रोणाचार्य्य के
सन्मुख ऐसे बर्तमानहैं जैसेकि बादलोंके समूह सूर्य्यको सबओरसे
घिरेहुये होतेहैं २५ एकस्थानपर बर्त्तमान ये लोग इस अरक्षित
ब्रतमें सावधान द्रोणाचार्य्यको ऐसेपीड़ा देतेहैं जैसे कि मरणकेअभि
लाषी टीड़ियों के समूह दीपकको कष्टदेतेहैं२६ निस्सन्देह ये लोग
अस्त्रज्ञ होकरयुद्धमेंभी पूरेहैं अबमैं भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के ऊपर
बड़ाभारी बोझानियत मानताहूं २७ हमवहां शीघ्रही जायंगे जहां
कि द्रोणाचार्य्यजी नियतहैं ये लोग इससावधान ब्रत द्रोणाचार्य्य
को ऐसे न मारडालें जैसेकि कोकनाम जीव बड़ेसर्पको मारडालता
है २८ संजयबोले हेराजा इसकेपीछेराजा दुर्य्योधनकर्णके वचनको
सुनकरभाइयों समेत द्रोणाचार्य्य के रथके समीप गया २९ वहां पर
नानाप्रकारके बर्ण रखने वाले उत्तम घोड़ों को सवारी से लौटेहुये
अकेले द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी पांडवों का बड़ा भारी
शब्द हुआ ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय सब के रथोंके चिन्हों को मुझसे वर्णन
करो जो क्रोध युक्त शूरबीर जिन में अग्रणीय भीमसेन था वे
सब द्रोणाचार्य्य के सन्मुख हुये १ संजय बोले कि सुवर्ण वर्ण वा-
ले घोड़ों की सवारी से जाते हुये भीमसेन को देखकर रुक्म बर्ण
वाले अश्वों की सवारी वाला शूर बीर रथी सात्यकी लौटा२ और

निर्भयता पूर्वक क्रोधयुक्त कपूर वर्ण वाले घोड़ोंको चलाता हुआ युधामन्यु भी द्रोणाचार्य्य के रथ के समीप वर्त्तमान हुआ ३ राजा पांचाल का पुत्र धृष्टद्युम्न कपोतग्रीव वर्णवाले बड़े शीघ्रगामी सुवर्णके आभूषणादिक सामानोंसे अलंकृत घोड़ोंकी सवारीसे लौटा ४ पितको चाहता और उसको सिद्धी का अभिलाषी व्रतमें सावधान श्वेत घोड़े वाला क्षत्रधर्मा लौटा ५ शिखण्डी का पुत्र कमलपत्र और मल्लिका के समान नेत्र रखने वाला क्षत्रदेव अपने सुन्दर अलंकृत घोड़ोंको आप चलाता हुआ गया ६ तोते के परके समान हरित वर्ण वाले दर्शनीय सामान रखने वाले कांबोज देशी घोड़ों पर सवार होकर नकुल भी आपके शूरवीरों के सन्मुख गया ७ हे भरतर्षभ मेघके समान श्यामवर्ण क्रोधभरे घोड़े कठिन युद्ध करने के विचार से अपने स्वामी उत्तमौजस को लेचले ८ इसी प्रकार उस तुमुल युद्धमें तीतरके समान चिन्ह रखने वाले वायुके समान शीघ्रगामी घोड़े उसशस्त्रधारी सहदेव को लेचले ९ श्वेत रंग काली पूंछ महाभयकारी तीव्रतासे युक्त वायुके समान शीघ्र गामी घोड़े उस नरोत्तम राजा युधिष्ठिर को लेचले १० सुवर्ण निर्मित सामानों से अलंकृत वायुके सदृश शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से युधिष्ठिर के पास आकर वर्त्तमान हुये ११ राजायुधिष्ठिर के पीछे पांचाल देशका राजा द्रुपदहुआ वह बड़ा धनुषधारी महानिर्भय युद्धमें सबप्रकार के शब्दोंको सहनेवाले घोड़े सुवर्ण के क्षत्र और घोड़ों के सामानों से युक्त राजाओं में सब से रक्षित होकर सन्मुख वर्त्तमान हुआ १२ । १३ राजा विराट सब महारथियों समेत शीघ्रतासे उस के पीछे चला सब केकय देशी शिखण्डी धृष्टकेतु १४ ये सब अपनी २ सेनाओं से परिवेष्टित राजा विराटके पीछे २ चले उस शत्रुहन्ता राजा विराटके पाटलि पुष्पके समान वर्ण रखने वाले उत्तम घोड़े उस राजा विराट की सवारी में महा शोभायमान हुये हल्दीके समान पीतरंग तीव्रगामी सुवर्ण माला धारी घोड़े १५ । १६ राजा विराट के पुत्र को

शीघ्र लेचले पांचोंभाई केकय इन्द्र गोपक जीव अर्थात् बीरवहूटी के समान लालरंग वाले घोड़ों की सवारी से चले १७ जात रूप सुवर्ण के समान प्रकाशित रक्त ध्वजा और सुवर्ण की माला रखने वाले शूर बीर युद्ध में कुशल वह सबभाई १८ शस्त्रों से अलंकृत बादलोंके समान बाणों की बर्षाकरते दिखाई दिये हरित पत्रके समान रंगवाले और तुम्बुर गन्धर्वके दियेहुये दिव्य घोड़े उस बड़तेजस्वी पांचालदेशी शिखण्डीको लेचले इसी प्रकार पांचालदेशोंके महारथी बारह हजार थे १६। २० उनमें छःहजारतो वे थे जो शिखण्डी के पीछे चले हे श्रेष्ठ नरोत्तम धृतराष्ट्र प्रतापी शिशुपालकेपुत्रको २१ कपूरी रंगकेघोड़े बड़ीक्रीड़ा करते हुये ले चले फिर चंदेरी देशियोंमें श्रेष्ठ दुर्ज्जय रक्तबर्णकी पोशाक वाला धृष्टकेतु २२ नाना प्रकारकेरंग रखनेवाले काम्बोजदेशी घोड़ोंकी सवारीसेसन्मुख वर्त्तमानहुआ२३वेफिर केकयदेशीसुकुमारबृहत्क्षत्र कोभीबड़े २ उत्तमघोड़े लेचले वे घोड़ेभी पलाल धूसर बर्णके सिन्ध देशीथे चमेलीके समान नेत्र रखनेवाले कमलबर्ण अच्छे अलंकृत बाल्हीकदेशी घोड़े २४ शिखण्डी केपुत्र शूरबीर क्षत्रने देवकोलेचले और स्वर्णमयी सामानसे अलंकृत रेशमी बर्णवाले घोड़े २५ उसशत्रु बिजयीसेना बिन्दुकोयुद्धमें लेचले और क्रौंचके समानरंग वाले शान्तरूपउत्तमघोड़े राजा काशीके पुत्र युवा सुकुमार अति भुवको युद्धमें लेचले हेराजा उसकुमार प्रतिबिन्दुको श्वेतरंग कालीगर्दने और चित्तके समान शीघ्रगामी २६।२७ सारथीकेप्रसन्नकरने वालेघोड़े लेचले फिरजिस पांडवने अपूर्व दर्शनीय सुतसोम नामपुत्रको उत्पन्न किया २८ उसको उर्दके फूलके रंगवाले घोड़े युद्धमें लेचले कौरवोंके उदयेन्दुनाम पुरमें हजार चन्द्रमाके स्वरूप वाला उत्पन्नहुआ और जो कि वह सोमसंक्रंद के मध्यमें उत्पन्नहुआ इसहेतुसे उसपुत्रका नाम सोमहुआ २६ नकुलकेपुत्र प्रशंसनीयसतानीक नामको शाल पुष्पके बर्णवाले और तरुणसूर्य्य केसमान प्रकाशित घोड़े लेचले ३० सुवर्णके समान योक्त मोर

की ग्रीवके समान रंगवाले घोड़े उस द्रौपदीके पुत्रनरोत्तम श्रुलक-र्माको युद्धमें लेचले ३१ नीलकण्ठके पक्षके समान रंगवाले उत्तम घोड़ोंने उस द्रौपदीकेपुत्र आस्त्रज्ञ युद्धमें अर्जुनकेसमानश्रुतकीर्त्ति को सवारकिया ३२ जिसकोयुद्धमेंश्रीकृष्णजी और अर्जुनसे ड्योढ़ाकहाहै उस कुमार अभिमन्युको पिंगलवर्ण घोड़े युद्धमें लेचले ३३ जो अके-लाही धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे पृथक् होकर पांडवोंके पासशरणागतहुआ उस युयुत्सुको बड़े शरीर वाले बड़ घोड़े लेचले ३४ और बड़े तुमु-लयुद्धमें प्रसन्न और अच्छे अलंकृत पलाल काण्डके वर्णवाले घोड़े वेगवान् वार्द्ध केशीको लेचले ३५ श्वेत वा श्याम चरण सारथीके आज्ञावर्त्ती घोड़े बड़े सामानवाले सुनहरी रथकेद्वारा उसकुमारसौ-चित्तिको लेचले ३६ स्वर्णमयी जीनपोश वाले रेशम शरीर सुवर्ण निर्मित मालाधारी शान्तरूप घोड़े श्रेणिमन्तको लेचले ३७ सुन-हरी मालाधारी बड़े शूर स्वर्णमयी जीनपोशधारी अच्छे अलंकृत घोड़े उस प्रशंसनीय नरोत्तम काशीके राजाको लेचले ३८ उस अस्त्रज्ञ धनुर्वेदज्ञ ब्रह्मअस्त्र और वेदोंमें पूर्ण सत्यधृतिको लालघोड़े लेचले ३९ जिस पांचालदेशी पतिने अपनाअंश अर्थात् भागद्रोणा-चार्य्यको नियत किया उस धृष्टद्युम्नको कपोत वर्णवाले घोड़ेलेच-ले ४० सत्यधैर्य्यसे युक्तयुद्धमें दुर्म्मद सौचित्ति श्रेणिमान वसुदान और बड़ासमर्थ काशीकेराजाकापुत्र ये सब उसकेपीछेचले ४१ तीव्र गामी सुवर्णमयी मालाधारी कांबोजदेशी उत्तमघोड़ेसे संयुक्त रथों परसवार यमराज और कुबेरके समान वे सबलोग शत्रुकी सेनाको डराते हुयेचले ४२ प्रभद्रक और कांबोजदेशी शस्त्रोंसे अलंकृतसुन-हरीरथ और ध्वजाओंके रखनेवाले छःहजार शूरवीर नानाप्रकारके वर्णवाले घोड़ोंकी सवारीसे ४३ धनुषखेंचने वाले बाणोंके समूहों से शत्रुओंको कंपायमान करनेवाले वे सबलोग मृत्युके समान होकर धृष्टद्युम्नकेपीछेचले ४४ लालरेशमके वर्ण उत्तम सुवर्णके माला रखने वाले उत्तमघोड़े चेकितान कोलेचले ४५ सव्यसाची अ-र्जुनका मामा पुराजित कुन्तभोज इन्द्र धनुषके वर्णबड़े श्रेष्ठ घोड़ों

की सवारी के द्वारा आया ४६ अन्तरिक्ष वर्ण चित्रित तारागणों के समान घोडे राजा रोचमान को युद्धमें लेचले ४७ नानाप्रकार के रंग रखनेवाले श्वेत चरण सुवर्णके जाल आदि सामानों से अलंकृत उत्तमघोड़े उस जरासन्धके पुत्र सहदेवको लेचले४८और जो घोड़े किकमलनाल के समान वर्ण शीघ्रता में बाज पक्षी के समान महाअपूर्व उत्तम थे वह सुदामाको लेचले ४६ शशलोहित वर्ण श्वेतरेखा रखनेवाले घोड़े पांचाल देशी पति के पुत्र सिंहसेन को लेचले ५० जो नरोत्तम जन्मेजय नामपांचालदेशियोंका राजा प्रसिद्धहै उसके सरसोंके पुष्प वर्णवाले उत्तम घोड़े पीत वर्णथे ५१ माषवर्ण शीघ्रगामी स्वर्णमयी मालाधारी श्वेतपृष्ठ और चित्र मुखवाले बड़े घोड़े उसपांचाल देशीको शीघ्रतासे लेचले ५२ शूर भद्रकशर कोडके समान किंजल्क वर्ण प्रकाश मान घोड़े दंडधारको लेचले ५३ रास भारुण वर्णपृष्ठ भागमें मूखकवर्ण सावधान अपनी चाल चलते हुये घोड़े व्याघ्रदत्तको लेचले ५४ कालक प्रकारवाले अपूर्व मालाओं से अलंकृत घोडे पांचाल देशी नरोत्तम सुधर्माको लेचले इन्द्रवजके समान स्पर्श वाले बीरबहूटी के वर्ण शरीरों में नाना प्रकार के चित्रोंसे चित्रितअद्भुत घोड़ेचित्रायुधकोलेचले ५६ चक्रवाकके समान उदर रखनेवाले स्वर्णमयी मालाधारी घोड़े राजाकोशलकेपुत्रसुक्षत्रको लेचले ५७ हरताल के वर्णबड़े शिक्षित सुनहरी मालाधारी ऊंचे शुभ घोडे युद्ध में सच्चे धैर्य्यवाले क्षेमी को लेचले ५८ एकही श्वेत रंगवाली ध्वजा कवच धनुष औरघोड़ों से युक्त राजा शुक्र लौटा ५९ शशांक वर्ण समुद्र देशी घोड़े समुद्र सेनके पुत्र चन्द्रसेन जोकि रुद्रजी के समान तेजस्वी था उस को लेचले ६० नीले कमलके वर्ण स्वर्णालंकृत अपूर्व माला धारी घोड़े युद्ध में शिवीके पुत्र चैत्र रथको लेचले ६१ गुलाबके पुष्पके समान रंग वाले श्वेत रक्तपंक्ति रखने वाले घोड़े उस युद्धमें दुर्मद रथसेन को लेचले ६२ जिस राजा को सब मनुष्यों से उत्तम और शूर बीर कहतेहैं उस पटच्चरथा को तोतेके समान वर्णवाले घोड़े

लेचले ६३ और किंशुक के पुष्प के समान वर्ण रखने वाले उत्तम घोड़े उस चित्रायुध को लेचले जो कि अपूर्व्व माला कवच शस्त्र और ध्वजा का धारण करने वाला था ६४ राजानील एक नीले रंग वाली ध्वजा कवच धनुष रथ और घोड़ों से युक्त सन्मुखआकर वर्त्तमान हुआ ६५ नाना प्रकार के रूप वाले रत्नों से चिह्नित कवच धनुष अपूर्व्व घोड़े और ध्वजा पताकाओंसे युक्त राजा चित्र सन्मुखआया ६६ जो कमल वर्णके समान रंगवाले उत्तम घोड़े हैं वह रोचिमान के पुत्र हेमवर्ण को लेचले ६७ युद्ध कर्त्ता शुभ रूप शर दंड अनुदंड श्वेतांड और कुकुटांड वर्णवाले घोड़े दंड केतुको लेचले ६८ हे राजा युद्धमें केशव जी के हाथ से पिताके मरने पर पांड्यदेशियों के द्वार खंडितहोने और बांधव लोगों के भाग जाने पर ६९ भीष्म द्रोणाचार्य्य राम और कृपाचार्य्यसे अस्त्रोंको पाकर और अस्त्रों के द्वारा रुक्म कर्ण अर्जुन और श्रीकृष्ण जी के साथ समानता को पाकर ७० द्वारका के नष्ट करने वा सब पृथ्वीके विजय करने की अभिलाषा करी इसके अनन्तर बुद्धिमान मित्रों की ओर से उसीकी भलाई के निमित्त निषेध किया गया ७१ जोराजा शत्रुता के हठको त्यागकर अपने राज्यमें शासन करताहै वह पराक्रमी सागरध्वजनाम राजा पाण्ड्यचन्द्ररश्मिके समानवर्णवाले७२ वैडूर्य्य मणिके जालोंसे ढकेहुये घोड़ोंकेद्वारा वीर्य्यद्रविणको धरेहुये अपने दिव्यधनुषको टंकारताहुआ द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया ७३ आटरूशक वर्णवाले एक लाख चालीसहजारघोड़े राजा पांड्यके पीछे चलने वाले उत्तम रथोंको लेचले ७४ नानाप्रकारकेरूप और मुखोंकीआकृति रखनेवाले घोड़े उस शूरवीर घटोत्कचजिसकी ध्वजा में रथके चक्रका चिह्नथा उसको लेचले ७५ जोअकेला मिलेहुये भरत वंशियोंके मतोंकोत्यागकर अपनेमनकेसवमनोरथोंसेरहितहोकर प्रीतिसे युधिष्ठिरमेंआकर संयुक्तहुआ७६ उस रक्तनेत्र महाबाहु सुवर्ण के रथ में नियत उस बृहंतको चक्ररूप ध्वजाधारी बड़े पराक्रमी और उन्नत शरीरवाले घोड़े लेचले ७७ सुवर्ण वर्ण सब घोड़ें।

में श्रेष्ठ घोड़े सब ओर से और मुख्यकर पृष्ठ भागसे उस धर्मज्ञरा-
जाओं में श्रेष्ठ सेनाके मध्यवर्ती युधिष्ठिर के साथचले ७८ देवता
रूप बहुतसे प्रभद्रक कुमार नानाप्रकारके शरीरवाले अन्य २ उत्तम
घोड़ोंकी सवारी से युद्ध के निमित्त लौटे ७६ हे राजेन्द्र वह स्वर्ण-
मयी ध्वजावाले भीमसेनके साथ उपाय करनेवाले ऐसे दिखाईदिये
जैसे कि इन्द्रके साथमेंदेवता होतेहैं ८० धृष्टद्युम्ननेउन सबआयेहुओं
को अत्यन्त अंगीकारकिया और भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी सबसेना
ओंको उल्लंघकर शोभायमान हुये ८१ हे महाराज उनकी ध्वजा-
जोकि काले मृगचर्मसे संयुक्त थी और उनके शुभदर्शनीय सुनहरे
कुंडलभी अत्यन्त शोभित होरहेथे ८२ मैंनेभीमसेन की उसध्वजा
को जिसमें कि वैडूर्य्य मणिकी आंख रखने वाला महा प्रकाशित
शोभायुक्त बड़ासिंह था अच्छे प्रकारसे देखा और उसीमें ग्रहों के
समूहों से संयुक्त चन्द्रमाभी प्रकाशमान होरहा था ८३ मैंने बड़े
तेजस्वी कौरव राज पांडव युधिष्ठिरकी सुनहरी ध्वजाकोभी देखा
कि उसमेंभी सबग्रह समूहों समेत चन्द्रमादे दीप्यमान था ८४ यहां
नन्द उपनन्दबजायदो बड़े मृदंग जोकि सुन्दर शब्दवाले और आ-
नंदके बढ़ानेवालेथे वह यन्त्रद्वारा बजाये गये ८५ हमने नकुल की
बहुतबड़ीध्वजा जोकि शरभनाम पशुका चिह्न रखनेवाली सुवर्णपृष्ठ
रथमेंभयानकरूप नियतथी उसकोभीदेखा ८६ सहदेवकी ध्वजामें
सुवर्ण निर्मित हंसघंटा और पताका रखनेवालामहादुर्जय शत्रुओंके
दुखऔर शोकका बढ़ानेवालाभी देखा ८७ द्रौपदीकेपांचोंपुत्रोंकीध्व-
जाधर्मवायु इन्द्र और महात्मा अश्विनीकुमारकी मूर्तियोंसे शोभाय
मानथी ८८ हे राजा अभिमन्यु कुमारके रथमें तपाये हुये सुवर्ण
केसमान अतिउज्ज्वलऔर श्रेष्ठ ऐसीध्वजाथी जिसमें सुनहरीसारंग
नामपक्षीथा ८६ हे राजेन्द्रघटोत्कचकी ध्वजामें गिद्धशोभायमान
था और उसके घोड़ेऐसे इच्छाके अनुसार चलने वालेथे जैसे कि
पूर्व्वसमय में रावणके घोड़ेथे ६० हेराजा धर्मराज युधिष्ठिरके पास
माहेन्द्र नाम दिव्य धनुष और भीमसेन के पास वायव्यनाम उत्तम

दिव्यधनुष था ६२ ब्रह्माजीने तीनोंलोकोंकी रक्षाकेनिमित्त जो धनुष उत्पन्न किया वह दिव्य और रूपान्तर दशा से रहित धनुष अर्जुन केलिये व शार्ङ्गनाम विष्णुधनुष नकुलके लिये व अश्विनीकुमार का धनुष सहदेवकेलिये और रावणका दिव्य और भयका उत्पन्न करनेवाला धनुष घटोत्कच के निमित्त आकर वर्त्तमान था ६३ हे भरतवंशी द्रौपदी के पांचांपुत्रोंके धनुष रूपरत्न यहथे रुद्रजी का धनुष अग्नि का धनुष कुबेरका धनुष यमराज का धनुष और शिवजीका धनुष ६४ बलदेवजीने जिस धनुषोंमें श्रेष्ठ महाउत्तम रुद्रधनुष को पाया और प्रसन्न होकर बलदेवजी ने वह धनुष महात्मा अभिमन्युके निमित्तदिया ६५ शूरलोगोंकी यहवर्णा कीहुई और अन्य २ सुवर्ण से अलंकृत ध्वजा शत्रुओं के शोभा की वह बढ़ानेवाली वहां देखने में आई ६६ हे महाराज द्रोणाचार्य्य की वहउत्तम लोगोंकीसेना ध्वजाओं से ऐसे व्याप्त हुई जैसेकि वस्त्रपर खैंचाहुआ चित्र शोभित होताहै ६७ तब युद्ध मे द्रोणाचार्य्य के सन्मुख दौड़नेवाले बीरोंकेनाम गोत्र ऐसेसुनेगये जैसे कि स्वयंबर में सुनेजाते हैं ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले हेसंजय यह देवताओंकोभी सेनाकोपीड़ामानकरने वाले राजा लोग जिनमें मुख्य भीमसेन है युद्धमें लौटे१ निश्चयकरके यह पुरुष प्रारब्धसे अच्छी रीतिसे संयुक्त होताहै उसी में पृथक् २ प्रकारके राज्य धनआदिक अर्थदिखाई देतेहैं २ जटाऔर मृगचर्म धारी होकर युधिष्ठिर ने बहुत कालतक वनमें निवास किया और लोकों से अज्ञात होने पर क्रीड़ाकरने वाला हुआ ३ उस ने युद्धमें बड़ी सेनाको प्रवृत्त किया और मेरे पुत्रकी भी सेनाइकट्ठी हुई दैव संयोग से दूसरी बातक्या है ४ निश्चय करके प्रारब्ध से संयुक्त मनुष्य चेष्टाकरता है और उससे वह उस प्रकार से खैंचा

जाताहै जिसप्रकारको कि वह आप नहीं चाहताहै ५ युधिष्ठिर द्यूत के दुःखको पाकर दुखित होगयाथा और फिर उसने प्रारब्धसेही सहायकों कोपाया ६ अब मुझको केकय देशीमिले और जोकाशी देशी कोशल देशी चंदेरी और बंगदेशीहैं वहमेरे पास आकर वर्त्त-मान हुये ७ हे तात जैसे यह संपूर्ण पृथ्वी मेरीहै उस प्रकार पांड-व युधिष्ठिरकी नहींहै हेतात पूर्व समयमें निर्बुद्धी दुर्य्योधनने मुझ सेकहाथा ८ कि उस कौसेनाके समूहोंमें अच्छे प्रकारसे रक्षित हुये द्रोणाचार्य्यजी युद्धभूमिमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये इस हेतुसे मेरी बुद्धिमें प्रारब्धसे अन्य और क्याबातहै ९ सदैव युद्धको अच्छा माननेवाले सब अस्त्रोंके पारगामी महाबाहु द्रोणाचार्य्य को राजाओंके मध्यमें किसरीतिसे मृत्युने प्राप्त किया १० बड़ी आपत्तियोंके भोगने वाले मैंने बड़ेभारी मोहको पायामैंभीष्म और द्रोणाचार्य्य को मृतक सुनकर जीवते रहनेको साहसनहीं कर-सक्ताहूं ११ हे तात मुझको बेटेका लोभी देखकर और बिदुरजीने कहाथा हे सूत वह सबमुझ समेत दुर्य्योधन ने पाया १२ जो दु-र्य्योधन को त्याग करने सेमेरी निर्दयता न समझी जाय तोपुत्रों को बाकीरक्खूं अर्थात् सब न मारे जायं १३ जो मनुष्य धर्मको त्याग करके धनादिक अर्थ को उत्तम मानने वाला होताहै वह इस लो-कसे भी पतित होताहै और नीच भावकोपाताहै १४ हे संजयअब मैं छत्रादिकके मर्दितहोने पर इस उत्साहसे रहित देशके भी बाकी रहने कोनहीं देखताहूं १५ नाश होनेवाले दोनों राजाओंका शेष कैसे होय हम जिन शान्त क्षमावान पुरुषों के पास सदैव अपना निर्वाह करतेहैं १६ हे संजय इस बातको प्रकट करकेमुझ से कहो जिस प्रकारसे कि युद्ध जारी हुआ कौन २ लड़े और कौन २ युद्धसे हटगये और कौनसे नीचभयसे भागे १७ उस अर्जुन को भी मुझसे कहो कि जिस रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तम नेजो २ कर्मकिये और मेरे भतीजे भीमसेनसे भी मुझको बड़ाभयहै १८ हे संजय पांडवोंके शूर बीरोंके लौटने पर मेरी शेष बाकी बचीहुई सेनाको अत्यन्त भय

कारी सन्मुखता कैसी रीतिसे हुई १६ हेतात पांडवोंके लौटने पर तुम्हारा चित्त कैसाहुआ औरमेरे पुत्रों समेत शूर वीरों में जो बड़े शूरहैं उनमें से किन्होंने किन लोगोंको रोका २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः२४ ॥

पच्चीसवां अध्याय॥

संजयबोले कि पांडवोंके लौटने पर जैसे कि बादलोंसे सूर्य्यगुप्त होताहै उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य को उनलोगोंसे ढकाहुआ देखकर बड़ा भयकारी युद्धहुआ १ उनसे उठीहुई कठिन धूलने आपकी सेनाको ढकादिया इसकेपीछे हमने दृष्टि के मार्गबन्दहोजाने पर द्रोणाचार्य्यको मृतक माना२ उन शूरवीर बड़े धनुषधारी निर्दय कर्म करने के अभिलाषी लोगोंको देखकर दुर्य्योधनने शीघ्रही अपनी सेनाको चलायमानकिया३ और सबसे यह वचनकहा कि हेराजाओपराक्रमबुद्धिबल सामर्थ्यऔर समयकेअनुसार पांडवोंकीसेनाको हटाओ ४ इसके पीछे आपकापुत्र दुर्मर्षण समीपसे भीमसेन को देखकर बाणोंको फैलाता उसके मारनेकी अभिलाषा करता हुआ सन्मुख गया ५ युद्धमें मृत्युकेसमान क्रोधयुक्तनेउसकोअपनेबाणों सेढकदिया और भीमसेननेभीउसकोबाणोंसे महापीड़ितकिया उस समय बड़ाकठिन युद्धहुआ ६ वह ईश्वरकी आज्ञासे बड़ेज्ञानी शूर वीर प्रहार करनेवाले राज्यको और मरनेके भयको त्यागकरके युद्धमें शत्रुओंके सन्मुख नियतहुये ७ हेराजा कृतवर्माने युद्धकोशोभादेने वाले द्रोणाचार्य्यको चाहनेवाले आतेहुये शूरसात्यकीकोरोका८ फिर क्रोधयुक्त सात्यकीने उस क्रोधयुक्त कृतवर्मा को बाणोंके समूहोंसे रोका और कृतवर्माने सात्यकिको ऐसेरोका जिसप्रकार मतवाला हाथी मतवाले हाथीको रोकताहै ९ फिर भयकारी धनुषवाले बड़े उपायमें प्रवृत्त सिंधके राजा जयद्रथने बड़े धनुषधारी आतेहुये क्षत्रधर्माको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंके द्वारा द्रोणाचार्य्यकी ओरसे रोका १० क्षत्रधर्माने सिन्धके राजाकी ध्वजा और धनुषको

काटकर बड़े क्रोध पूर्वक दशनाराचों से उसके सब मर्मस्थलों को घायल किया ११ इसकेपीछे हस्तलाघवी राजा सिन्धने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें लोहमयी बाणों से छत्रधर्माको घायल किया १२ पांडवके निमित्त उपाय करनेवाले भाई शूर बीर महारथी युयुत्सूको उपायकरनेवाले सुबाहुने द्रोणाचार्य्यकी ओर सेरोकायुयुत्सूने बाणचलानेवाले सुबाहु की दोनोंभुजा जो कि सुन्दर धनुष बाणकी रखनेवाली और परिघके समानथीं उनको श्वेत और पीत क्षुरनाम बाणोंसे काटा १४ और मद्रके राजाशल्य ने धर्मात्मा पांडवोंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिरको ऐसी अच्छी रीति से रोका जैसे कि मर्य्यादा वा किनारा बड़े व्याकुल समुद्र को रोकते हैं १५ धर्मराजने मर्मोंके भेदी अनेक बाणों से उसको ढकदिया फिरराजा मद्र चौंसठ बाणोंसे उसको बेधकर बड़े शब्दसेगर्जा १६ तबयुधिष्ठिरने क्षुरनाम दोबाणोंसे उस गर्जनेवालेकी ध्वजाऔरधनुषकोकाटा औरकाटतेहीसबमनुष्यपुकारे१७और इसीप्रकार सेना समेतराजा बाल्हीकनेभी आतेहुये राजाद्रुपदको सेना समेतबाणों सेरोका १८ उनदोनों वृद्धोंकायुद्ध सेनाओं समेत ऐसा बड़ा भयकारीहुआ जैसे कि बड़े२ समूहोंको आदिपति दो हाथियों का युद्ध होताहै १६ और अवन्ति देशों के राजा बिन्द अनुबिन्दने अपनी सेनाओं समेत मत्स्य देशके राजा विराटको सेनासमेत ऐसे प्राप्त किया जैसे कि पूर्व समयमें इन्द्र और अग्नि दोनोंने राजावलि को प्राप्तकिया था २० केकयोंकेसाथ मत्स्यदेशियों का वह युद्ध महा भयानक देवासुर युद्धके समान हुआ जिसमें कि हाथी घोड़े और रथ भयभीतथे २१ उसराजा भूतकर्माने बाणोंके जालोंको छोड़ने वाले और द्रोणाचार्य्यकी ओरको जातेहुये नकुलके पुत्र सतानीक को रोका २२ इसकेपीछे नकुलके पुत्रनेयुद्धमें जाकर अत्यन्त तीव्र धारवाले तीनबाणोंसे भूतकर्माको भुजा और शिरसे रहितकिया २३ फिर पराक्रमी बाण समूहोंके रखनेवाले द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जाते पराक्रमी शूरबीर सुतसोम को बिविंशतिने रोका २४ तब वह

अत्यन्त क्रोधभरा सुतसोम उस पिताके भाई विविंशति को सीधे चलनेवाले बाणोंसे घायल करके सन्मुख वर्त्तमान नहीं रहा २५ इसकेपीछे भीमरथने शीघ्रगामी तीक्ष्णलोहमयी छःबाणोंसेशाल्वको घोडे और सारथीसमेत यमपुरकोभेजा २६ हे महाराज चित्रसेनने मोरके समान वर्णवाले घोड़ोंकी सवारीसे आतेहुये आपकेपुत्र श्रुत वर्माको रोका २७ उन आपके दोनों निर्भय और परस्पर मारने के अभिलाषी पौत्रोंने पिताओंके अभीष्ट सिद्धीके लिये बड़ा भारी युद्ध किया २८ पिताकी प्रतिष्ठा करतेहुये अश्वत्थामाने युद्धमें सन्मुख वर्त्तमान उस प्रतिविन्धकोबाणोंके द्वाराअच्छे प्रकार से रोका २९ फिर प्रतिविन्धने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उसक्रोधयुक्त सिंह लांगूलके चिह्नरखने वाले और अपने पिताके हेतुयुद्धमें नियतअश्वत्थामा को घायलकिया ३० हे भरतवंशी नरोत्तम जैसे बीजबोनेके समय बीजोंको बोतेहैं उसी प्रकार बाणोंको फैलाते हुये द्रौपदी के पुत्रोंने अश्वत्थामाको बाणोंकीवर्षासे आच्छादितकिया ३१ अर्जुन और द्रौपदीके महारथीपुत्र श्रुतकीर्त्ति को जोकि द्रोणाचार्य्यकी ओर जाताथा उसको दुश्शासन के पुत्रने रोका ३२ फिर श्री कृष्णजीके समान श्रुतकीर्त्ति अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले तीनभल्लोंसे उसके धनुष ध्वजा और सारथीको काटकर द्रोणाचार्य्यके पासगया ३३ हेराजा जो दोनों सेनाओंके मध्यमें बड़ाशूर गिनाजाताथा उसपटच्चरहन्ता को लक्ष्मणने रोका ३४ हे भरतवंशी वह लक्ष्मण के धनुष और ध्वजाको काटकर और उसीके ऊपरबाण जालोंको छोड़ता अत्यन्त शोभायमानहुआ ३५ फिर बड़ेज्ञानी और तरुण अवस्थावाले विकर्णने राजा द्रुपदके पुत्र युवा शूरवीर युद्धमें आतेहुये शिखंडीको रोका ३६ इसके अनन्तर राजा द्रुपदके पुत्रने उस को बाणों के जालसे ढकदिया उससमय आपका पराक्रमी पुत्रउसबाणों केजाल को काटकर महा शोभायमान हुआ ३७ अंगदने द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जातेहुये उत्तमौजसकोबाणोंके समूहों सेरोका ३८ उन दोनों पुरुषोत्तमों का वह बड़ा भारीयुद्ध हुआ और सबसेनाके मनुष्योंको

युद्धभी उनदोनोंको प्रसन्नताका बढ़ानेवाला हुआ ४० फिरबड़ेधनुष धारीपराक्रमी दुर्मुखने द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जातेहुये बीरपुरजित को बत्सदन्तनाम बाणोंसे रोंका ४१ फिर उसने दुर्मुखको नाराच से दोनों भृकुटियों के मध्यमें घायल किया उसका वहमुख सनाल कमलके समान शोभायमानहुआ ४२ फिरकर्णने लाल ध्वजारखने वाले द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जातेहुये केकय देशी पांचों भाइयों को बाणोंकी वर्षासेरोंका ४३ उनअत्यन्तपीड़ा मानोंनेभी उसकोबाणों की वृष्टिसे ढकदिया उसने उनको फिर बाणों की वर्षा से बारंबार ऐसेढक दियाकि घोड़ेसारथी और ध्वजा समेत दोनोंबाणों से ढके हुयेनवहपांचों दिखाईपड़े और नकर्णदिखाईपड़े ४४ आपके दुर्ज्जय जय और बिजय तीनोंपुत्रोंनेनील काशीकेराजा और जयत्सेन इन तीनोंकोरोंका ४५ वहयुद्धभी महाभयकारी और तमाशादेखनेवालों का ऐसामहा आनन्दकारीहुआ जैसे कि सिंह और व्याघ्रों का युद्ध उत्तमरीछ और भैंसाओंके साथहोताहै ४६ क्षेत्रधूर्त्त और वृहन्त इन दोनों भाइयों ने द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जाते हुये सात्य की यादवको तीव्र बाणोंसे घायल किया ४७ उन दोनोंका और उसका वह युद्ध ऐसा अत्यन्त अपूर्व्व हुआ जैसे कि बनके मध्य में सिंह का युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियों से होता है ४८ उसी प्रकार क्रोध युक्त बाणों को छोड़ते चन्देरी के राजाने युद्ध को श्रेष्ठ मानने वाले अकेले राजा अम्बष्ठ को द्रोणाचार्य्य की ओर से रोंका ४६ इसके पीछे अम्बष्ठने हाड़ोंकी भेदनकरने वाली शलाकासे उस को ऐसा घायलकिया कि वह बाण समेत धनुष को छोड़ कर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५० शारद्वत महासाहासी कृपाचार्य्य ने क्षुद्रक नाम बाणों से यादव बार्द्धक्षेमी को रोंका ५१ जिन्हों ने उन अपूर्व्व युद्ध करने वाले कृपाचार्य्य और बार्द्धक्षेमी को लड़ते हुये देखा उन युद्ध में चित्त लगाने वालोंने दूसरे कर्मको नहींजाना ५२ और द्रोणाचार्य्य के यश को बढ़ाते सोमदत्तने चैतन्य होकर आते हुये राजा मणिमन्त को रोंका ५३ फिर उस शीघ्रता करने वाले

सोमदत्तने उसको धनुष ध्वजा पताका सारथी और छत्र समेत रथसे गिराया ५४ इसके पीछे शत्रुओं के मारने वाले ध्वजा में यूप चिन्ह रखने वाले सोमदत्त ने शीघ्रही रथ से कूद कर घोड़े सारथी ध्वजा और रथ समेत उस को उत्तम खड्ग से काटा ५५ हेराजा दूसरे रथमें सवार होकर दूसरे धनुषकोलिये हुये आ-पही घोड़ोंके हांकने वालेने पांडवीय सेनाको छिन्नभिन्न करदिया ५६ असुरों के ऊपरइन्द्रके समान आते हुये दुर्जय राजा पांड्यको समर्थ वृषसेनने बाणों से रोंका ५७ गदा, परिघ, खड्ग, पट्टिश, दुधारे खड्ग, भुशुंडी, प्रास, तोमर, शायक और जो २ युद्धभूमिके मल्लयुद्ध हैं ५८ मूसल, मुद्गर, चक्र, भिगडपाल, परश्वध, धूली, वायु, अग्नि, जल, भस्म, लोष्ट, तृण और वृक्षोंसे ५९ पीड़ा देता और चलायमान करता तोड़ता मारता भगाता गिराता और सेना को डराता द्रोणाचार्य्य को चाहता घटोत्कच सन्मुख आया ६० फिर क्रोध युक्त अलंबुष राक्षसने नाना प्रकारके शस्त्रोंसे और बहुत प्रकारके युद्ध रीतियों से उस राक्षसको अच्छी तरह घायल किया ६१ उनदोनों राक्षसोत्तमों का वह युद्ध उस प्रकारका हुआ जैसा कि पूर्व्व समय में शम्वर और देवराज इन्द्रका हुआथा ६२ आप का कल्याण होय इसरीतिसे आपके और उन्होंके कठिन युद्धमें हजारों रथ हाथी घोड़े और पदातियों के द्वन्द्व नाम युद्ध हुये ६३ इस प्रकार का युद्ध मैंने कभी सुना भी नहीं था जैसे कि द्रोणाचार्य्य की वर्त्तमानता अथवा अवर्त्तमानतामें शूर वीरोंने किया ६४ हे समर्थ यह युद्ध बड़ा भयकारी अपूर्व्व और भयानक रूप वाला हुआ इस प्रकार के फैले हुये अनेक युद्ध देखनेमें आये ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचविंशतितमोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले इस प्रकार उनके लौटने और भागियोंके सन्मुख जाने पर वे गवान पांडव और मेरे पुत्र किस प्रकार से युद्धमें प्रवृत्त

हुये १ हे संजय अर्जुनने भी संसप्तकों की सेनामें क्या२ कर्म किये अथवा संसप्तकोंने अर्जुन से युद्ध करने में जो २ कर्म किये उन सब कोमुझसेकहो २ संजय बोले कि उस प्रकार से उन्होंके लौटने और भागगयोंके सन्मुख जाने पर आपका पुत्र हाथियों की सेनासे युक्त आय भीमसेन के सन्मुख दौड़ा ३ जैसे कि हाथी हाथी को और गोवृष गोवृष को युद्धमें बुलाता है उसी प्रकार आप राजासे बुलायागया वह भीमसेन हाथियोंकी सेनाके सन्मुख गया४हे श्रेष्ठउस युद्धमें सावधान और भुजबल से युक्त पराक्रमी भीमसेनने थोड़ेही समय में हाथियों की सेनाको छिन्न भिन्न करदिया ५ वह पर्व्वताकार हाथी सब ओरसे मदको छोड़ते हुये उस भीमसेनके नाराचों से मुख फेर फेर कर मदों से रहित होगये६ जैसे कि अत्यन्त कठोर और प्रबल बायु बादलके जालोंको तिर्र बिर्र करदेताहै उसी प्रकार बायुके पुत्रने भी उन सब सेनाओं को छिन्न भिन्न करदिया ७ वह भीमसेन उन हाथियों पर बाणोंको छोड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि उदयमान सूर्य्य सब संसार पर अपनी किरणों को छोड़ता हुआ शोभित होता है ८ भीमसेन के बाणोंसे घायल और अच्छे प्रकार से छिदेहुये वह हाथी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि आकाशमें सूर्य्य की किरणों से नाना प्रकारके बादल शोभा पाने वाले होते हैं ९ क्रोध युक्त दुर्योधनने इस प्रकार हाथियों के नाशकरने वाले बायु पुत्र भीमसेन को देख और सन्मुख जाकर उसको तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया १० इसके अनन्तर रक्तनेत्र और राजादुर्योधनके नाशकरने की इच्छा करते भीमसेन ने क्षण भरहीमें अपने तीक्ष्ण धार वाले बाणोंसे राजाको घायल किया ११बाणोंसे छिदे हुये शरीर महाक्रोधित मन्द मुसकानकेसाथ बड़े आश्चर्य्य को करते उस दुर्योधन ने सूर्य्य की किरणके समान प्रकाशित नाराचों से पांडव भीमसेनको घायल किया १२ फिर पांडवने दोभल्लोंसे उस के रत्न जटित ध्वजा में वर्त्तमान मणियों से जटित नागको और धनुष को शीघ्रही काटा १३ हे श्रेष्ठ हाथी पर नियत राजा अंग

दुर्योधनको भीमसेन से पीड़ामान देखकर उस के व्याकुल करने कोइच्छासे उसके सन्मुख गया १४ भीमसेनने उस बादलके समान शब्द करते हुये गजेन्द्रको नाराचोंसे मस्तकके मध्यमें अत्यन्तपीड़ा मान किया १५ वह बाण उसके शरीर को वेधकर पृथ्वीमें प्रवेश करगया उसके पीछे वह हाथी ऐसे पृथ्वी पर गिरपड़ा जैसे किवज्र से ताड़ित पर्व्वत पृथ्वी पर गिर पड़ता है १६ फिर शीघ्रता करने वाले भीमसेनने भल्लसे उस हाथीसे रहित नीचेको गिराना चाहते हुये म्लेच्छ का शिर काटा १७ उस वीर के गिरने पर वह सेना जिसके कि घोड़े हाथी और रथ महा व्याकुलथे पदातियोंको मर्द-नकरते हुये भागे १८ उन सब सेनाओंके पराजयहोने और चारों ओरके भागने पर राजा प्राग्ज्योतिप हाथी की सवारी से भीम-सेनके सन्मुख आया १९ इन्द्रने जिस हाथी की सवारी से दैत्यऔर दानवों को विजय किया उस घराने या जातिके हाथीकी सवारीसे भीमसेन के सन्मुख गया २० वह हाथियों में बड़ाश्रेष्ठ दोनों पैर और लिपटी हुई सूंड़से अकस्मात् भीमसेन के सन्मुख गया २१ उस बड़ी आंखवाले क्रोध युक्त भीमसेन के मथन करने के अभि-लाषी हाथीने भीमसेन के रथको घोड़ों समेत चूर्णकिया २२ इसके पीछे पावोंसे दौड़ता हुआ भीमसेन उसके अंगोंमें चिपट गया और जोकि भीमसेन अंजलिका वेधनाम पेंचको जानताथा इसीसे नहीं हटा २३ अंगोंके मध्यमें वर्त्तमान होकर बार बार हाथों से घाय-लकरते हुये भीमसेनने उस मारनेकेअभिलाषी अति दुर्ज्जय हाथी को प्यार किया २४ तब वह हाथी शीघ्रही कुम्हारके चक्रकेसमान घूमने लगा दशहजार हाथीके समान पराक्रमी श्रीमान् भीमसेन उस को चलायमान करने वालाहुआ २५ इस के पीछे भीमसेन भी अंगोंसे निकलकर उस सुप्रतीक नामहाथी के आगे हुआ उस ने भीमसेनको सूंड़सेझुकाकर अपनी जंघाओंसे घायलकिया२६ उस हाथीनेउसको गर्दनमें लपेटकर मारनाचाहा तबभीमसेनने घुमाव देकरसूंड़की लपेटनको छुड़ादिया २७ फिरभीमसेन हाथीकेअंगों में

प्रवेशकरगया जबतक अपनी सेनामें नियत हाथीके सन्मुख आये हुये हाथीकोदेखा २८तबभीमसेन हाथी के अंगोंसे निकलकर बड़ी तीव्रतासे दूर चलागया उसकेपीछे सबसेनाका बड़ा शब्दहुआ २६ किबड़ेखेदकी बातहै कि भीमसेन हाथीसे मारागयाहेश्रेष्ठधृतराष्ट्र उसहाथीसे पांडवोंकी सेना भयभीतहोगई ३० हेराजा सबशूरवीर अकस्मात् उसस्थानपर आगये जहांपर कि भीमसेन नियतथाउस केपीछेराजा युधिष्ठिरने भीमसेनको मृतकजानकर ३१ धृष्टद्युम्न समेत भगदत्तको सबओरसे घेरलिया उनशत्रु संतापी रथियों में श्रेष्ठोंने उसरथको घेरकरके ३२ हज़ारों तीक्ष्ण बाणों से ढकदिया पृषत्कनाम बाणोंके आघातको अंकुशसे निष्फल करतेहुये ३३ उस पर्वतीय राजानेहाथीसे पांडवों और पांचालोंको छिन्नभिन्न करदिया हेराजायुद्धमें उसप्रकारके वृद्धभगदत्तके उसअपूर्व ३४ कर्मको हाथी के द्वारादेखा इसकेपीछे दशार्ण देशियोंका राजा भगदत्तके सन्मुख गया ३५ तिरछेचलनेवाले मतवाले शीघ्रगामी हाथी के द्वार उन भयानकरूपवाले दोनोंहाथियोंका ऐसा बड़ाभारी युद्धहुआ ३६ जिस प्रकारसेकि पूर्व समयमें पक्षधारी और वृक्षोंसेसंयुक्त दोपर्वतोंकेहुये राजाप्राग्ज्योतिषके हाथीने लौटकर और दूरजाकर राजादशार्णके हाथीको पार्श्वमें घायल करके गिरायाथा ३७फिर भगदत्त ने सूर्यकी किरणके समान प्रकाशित सात तोमरोंसे ३८ उस हाथीपर सवार प्रचलित आसनवाले शत्रुकोमारा तब युधिष्ठिरने राजा भगदत्तको बहुत प्रकारसे घायलकरके ३६ रथकीबड़ीभारी सेनासे चारों ओर को घेरलिया वहहाथी परचढ़ाहुआ भगदत्त सबओर को रथियों से संयुक्त होकर ऐसा शोभायमान हुआ ४० जैसे किपर्वत में बन के अन्तर्गतबर्त्ती अग्निका पुंजहोताहै उसहाथीने उनबाणों की वर्षाओं कोफैलाते और भयानक धनुष धारी रथियों के मंडल जो कि सब ओरसे चिपटाथा उससे सन्मुखताकरी इसकेपीछे राजाप्राग्ज्योतिष ने बड़ेहाथीको रोंककर ४१ । ४२ अकस्मात् युयुधानके रथपर भेजा फिरउस बड़े हाथीने शिनीके पौत्रकेरथको पकड़कर ४३ बड़ीतीव्रता

सेफेंकदिया और युयुधान रथसे कूदगया फिरसिन्धदेशी सारथी बड़े घोड़ोंको अच्छीरीतिसे खड़ाकरके ४४ सात्यकी को पाकर नियत हुआ और वह अपने रथपरगया इसकेपीछे वहहाथी मौकेको पाकर शीघ्रही रथमंडलसे निकलगया ४५ और फिरसवराजाओंकोव्याकुल किया उसशीघ्रगामी हाथीसे भयभीतहुये उन नरोत्तमोंने ४६ युद्धमें उसअकेले हाथीको सैकड़ों हाथियोंके समान माना व पांडवहाथी परचढ़ेहुये भगदत्तसे ऐसेपृथक् २ होतेथे ४७ जैसेकि ऐरावत हाथी परचढ़ेहुये देवराज इन्द्रसे दानवलोग पृथक् होतेहैं इसके अनन्तर इधरउधर से बोलतेहुये उन पांचालों के भयकारी शब्द ४८ और हाथीघोड़ोंके बहुत बड़ेशब्द उत्पन्नहुये युद्धमें भगदत्तसे पांडवों के छिन्नभिन्न होनेपर ४९ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन राजा प्राग्ज्योतिषके सन्मुख गया उसके सन्मुख जातेहुये भीमसेनकेघोड़ोंको हाथीनेसूंड़से निकालेहुये जलसे ५० तराबोरकरके भयभीतकिया फिर वहघोड़े भीमसेनको दूरलेगये तब आकृतीका पुत्र रुचिपर्वा शीघ्रही उसके सन्मुखगया ५१ वहकालरूपरथपरसवार बारह बाणोंसेअच्छी रीतिसे घायल करता हुआ ५२ इसकेपीछे उस सुन्दर तेजवाले पहाड़ी राजाने गुप्तग्रन्थीवाले बाणसे रुचिपर्व्वाको यमलोककोमें पहुंचाया उसवीरके गिरनेपर उनअभिमन्यु द्रौपदीकेपुत्र ५३ चेकितान धृष्टकेतु और युयुत्सूने उसहाथीको बाणोंकी वर्षासे ऐसासींचा जैसे कि जल की धाराओंसे बादल सींचताहै ५४ और मारने के अभिलाषी होकर बड़े भयानक शब्दोंसे गर्जनाकरी इसकेपीछे योग्य पार्ष्णीके अंकुश और अंगूठेसे चलायमान वह हाथी ५५ जिस की फैलीहुई सूंड़ कान आंख खड़े थे बड़ीशीघ्रतासे चला और अपनेपैरोंसे घोड़ों को दाबकर युयुत्सूको पीड़ामान किया ५६ हे राजा शीघ्रतासे युक्त युयुत्सूरथसे कूदगयाउसकेपीछे मारनेके अभिलाषी भयकारीशब्दों को गर्जते उन युधिष्ठिरके शूरवीरोंने बाणोंसे शीघ्रही हाथीको व्यथितकिया फिर आपकापुत्र भ्रान्तीसे युक्तहोकर अभिमन्युके रथपर गया ५७ । ५८ वह हाथी परनियत राजाभगदत्त शत्रुओं के ऊपर

बाणोंको छोड़ता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि भुवनोंके ऊपर किरणोंको डालता सूर्य्य शोभायमान होताहै ५९ उसको अभिमन्युने बारह बाणोंसे युयुत्सूने दशबाणोंसे और द्रौपदीके पुत्रों समेत धृष्टद्युम्नने तीन २ बाणोंसे पीड़ामानकिया ६० वह हाथीबड़े उपाय पूर्व्वक मारेहुये बाणोंसे छिन्नशरीरहोकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि सूर्य्यकी किरणों से व्याप्तहोकर बड़ा बादल शोभित होताहै ६१ हाथीवानकी शिल्पविद्याके उपायोंसे चलायमान और शत्रुके बाणोंसे पीड़ामान उस हाथीने शत्रुओंको दायें बायें फिरनेसे कँपाया ६२ जैसे कि ग्वालिया बनमें पशुओंके समूहोंको दण्डसे घेरताहै उसीप्रकार भगदत्तनेभी बारंबार उससेनाको घेरलियाद६३ जैसेकि बाजपक्षीके अपराधी अथवा सन्मुख जानेवाले काकपक्षियोंके शीघ्रतासे शब्दहोतेहैं उसीप्रकार भागते अथवा दौड़ते पांडवोंके शूरबीरोंके शीघ्रशब्दहुये ६४ हे राजा जैसे कि पूर्व समय में पक्षधारी उत्तम पहाड़ घायल होताहै उसी प्रकारके अत्यन्त उत्तम अंकुशसे घायलहुये उस गजराजने शत्रुओंके मध्यमें ऐसेबड़ेभयको उत्पन्नकिया जैसे कि क्षुभितहुआ समुद्र व्यापारीलोगोंके भयको बढ़ाताहै ६५ इसकेपीछे मार्गमें उन हाथी रथ और राजालोगजो कि भयसे भागतेथे उनसे बड़ा भयकारी शब्द उत्पन्नहुआ हे राजा इसी प्रकार उस शब्दसे युद्धमें पृथ्वी आकाश स्वर्ग दिशा और विदिशा व्याप्तहोगईं ६६ उसराजाने उस अत्यन्त श्रेष्ठ हाथीकेद्वारा शत्रुओंकी सेनाको ऐसे अत्यन्त मथाया जैसे कि पूर्व समय में देवताओंसे सुरक्षित देवसेनाको युद्धमें बिरोचन असुरने मथाया था ६७ बड़ेवेगवाली बायुचली और धूलने बारंबार आकाशको और सेनाकेमनुष्योंकोभी ढकदिया फिरमनुष्योंने चारोंओरसे चेष्टा करनेवाले चलायमान उस अकेलेहाथी को हाथियों के समूह की समान माना ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाबाहो जोतुम युद्ध में अर्जुन के कर्म को मुझसे पूंछते हो सो तुम उसको सुनो जो कि अर्जुन ने युद्धमें काम किया १ उठी हुई धूलको देखके और हाथी के शब्दको सुन कर भगदत्तसे भय का जानने वाला अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले २ कि हे मधुसूदन जो जैसे राजा प्राग्ज्योतिप सवारी में बैठा हुआशीघ्रता करता हुआ निकला है निश्चय करके उसी का यह शब्दहै ३ युद्धमें इन्द्र के समान हाथी की सवारी में अति कुशल और युद्ध के हाथियों के सवारोंमें सबसे श्रेष्ठ है वह मेरी रायहै ४ उस श्रेष्ठहाथी के भीसमान युद्ध में कोई नहीं है वह युद्ध में सब शस्त्रोंको उल्लंघन करके चलने वाला बड़ा कर्मकरने वाला और थकावट से रहित होकर ५ शस्त्रोंके प्रहार और अग्निके स्पर्श का सहने वालाहै हे पापोंसे पृथक् श्रीकृष्ण जी अब वह अकेलाही हाथी पांडवों कीसब सेनको नाश करेगा ६ हम दोनों के सिवय दूसरा कोई भी पुरुष उसके रोंकनेको समर्थ नहींहैं आप शीघ्रही उधरहो कोचलोजिधर राजा प्राग्ज्योतिप है ७ मैं युद्ध में इस हाथीके पराक्रम से अहंकार में भरे हुये वृद्धावस्था से भी आश्चर्य्य युक्त इन्द्र केप्यारे अतिथि को स्वर्ग में भेजंगा ८ इसके अनन्तर श्रीकृष्ण जी अर्जुनके इस वचनसे वहां गये जहां पर कि पांडवो सेना भगदत्त से छिन्नभिन्न होरही थी ६ इसके पीछे चौदहहजार संसप्तक महारथी उसजाते हुयेको पीछेसे पुकारते हुये चढ़ाई करने वालेहुये १० त्रिगर्त्त देशियोंके दशहजार महारथी और चारहजार वासुदेव की सेना के मनुष्य भी चढ़ाई करनेवाले हुये ११ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र भगदत्त से छिन्न भिन्न करीहुई सेनाको देखकर उन संसप्तकों से बुलाये अर्जुनका हृदय दो प्रकारका हुआ १२ और शोचनेलगा कि इन दोनों कामों मेंसे कौनसा काम आनन्द से सुफल करने के योग्य है इस चिन्ता में पड़ा कियहां लौटूं कि युधिष्ठिरके पासजाऊं १३

तब अपनी बुद्धिसेही बिचार कर उस अर्जुन की बड़ी बुद्धि संसप्त कों केही मारने में नियत हुई वह हनुमान् जी की ध्वजाका धारण करने वाला इन्द्र का पुत्र अर्जुन अकेलाही उन हजारों रथियों के मारने को अकस्मात् युद्धमेंलौटा १४ दुर्योधन और कर्ण दोनों काभी वही बिचार अर्जुन के मारने के उपाय में हुआ अर्थात् उन दोनों ने उसके मारने की कल्पना करी १५ वे पांडव दोप्रकार के बिचार से डोलायमान हुये तब उत्तम पुरुषों के मारनेमें उस को नहीं छिपाया १६ हे राजा इस के पीछे संसप्तक नाम महा रथियोंने गुप्त ग्रन्थी वाले लाखों बाण अर्जुन के ऊपर छोड़े १७ फिर वह बाणों से ढकाहुआ कुन्तीनन्दन अर्जुन दृष्ट नहीं पड़ा न जनार्दन श्रीकृष्ण जी घोड़े और रथसमेत दिखाई पड़े १८ उस समय जनार्दन जी ने मोह को पाया अर्थात् पसीने में तर होगये तब अर्जुन ने उनको अक्षर ब्रह्मास्त्र से मारा १९ उस समय शूर वीरोंके बाण प्रत्यंचा और धनुष समेत सैकड़ों हाथकट गये ध्वजाओं समेत घोड़े सारथी रथ और रथी भी पृथ्वीपर गिर पड़े २० सवृक्ष पर्वत के शिखर और बादल के समान शरीर वाले अच्छे अलंकृत हाथी जिन के कि सवार मारे गये वे सब अर्जुन के बाणों से घायल होकर पृथ्वी पर गिरे २१ टूटी झूल बिखरे हुये भूषणों समेत निर्जीव हाथी सवारोंसमेत युद्धमें बाणों से अत्यन्त मथन किये हुये गिर पड़े २२ अर्जुन के भल्लोंसे मरे हुये बहुत से मनुष्यदुधारे खड्ग प्राशनखर मुद्गर परशेआदि शस्त्रोंसमेत पृथ्वी पर गिर पड़े २३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र बाल सूर्य्य कमल और चन्द्रमा के समान रूपवान अर्जुन के बाणोंसे कटे हुये पृथ्वी पर वर्त्तमान हुये २४ तब नाना प्रकार की सूरतों से शत्रुओंको क्रोध युक्तअर्जुनके हाथ से मारे जाने पर वह अलंकृत सेना उन प्राणों के हरने वालेअर्जुन के बाणों से अग्निके समान होगई २५ जैसे कि हाथी कमलों के समूहोंको विध्वंस करता है उसी प्रकार सेनाको व्याकुलकरनेवाले अर्जुन को जीवों के समूहों ने पूजा अर्थात् धन्यहै

धन्य है ऐसा कह कर स्तुति करी २६ माधव जी इन्द्र के समान अर्जुनके उस कर्मको देखकर वड़े अश्चर्य्य युक्तहोकर बड़ी नम्रता पूर्व्वक उससे बोले २७ हे अर्जुन जो युद्धमें तैंने कर्म किया ऐसा कर्म इन्द्र यमराज और कुवेरसे भी होना महा कठिन है यह मेरा मत है २८ मैंने संसप्तक नाम महारथी हजारों एक साथही युद्ध भूमि में गिरे हुये देखे २६ इसके पीछे अर्थात् उन सन्मुख वर्त्त-मान असंख्य संसप्तकों को मार कर श्रीकृष्ण जी से कहा कि अब भगदत्त के सन्मुख चलो ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी ने जाने के अभिलाषी अर्जुन के उन घोड़ोंको जो कि चित्त के समान शीघ्रगामी स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत होकर शीघ्र चलने वाले थे द्रोणाचार्य्य की सेनाकी ओर चलाया १ युद्धाभिलाषी सुशर्मा अपने भाइयों समेत उस कौरव्य अर्जुनके पीछे की ओर से जो कि द्रोणाचार्य्य से संतप्त किये हुये अपने भाइयों के पास जाता था पीछे२ चला २ इसके अनन्तर वह महाविजयी अर्जुन उन अजेय श्रीकृष्ण जी से बोले हे अविनाशी यह सुशर्माभाइयों समेत मुझको बुलाता है ३ हे मधुसूदन जी वह सेना उत्तर दिशासे छिन्न भिन्नहोती है अब मेरा चित्त संसप्तकों ने दो प्रकार का किया अब मैं संसप्तकों को मारूं अथवा शत्रुओं से पीड़ामान अपने भाई वन्धु आदि की रक्षा करूं आप मेरे चित्त के ज्ञाता हैं अब मुझको क्या करना योग्यहै ४ अर्जुन के इस कहने से श्रीकृष्णजी ने रथ को लौटाया और उसी मार्ग होकर चले जिस मार्गमें त्रिगर्त्त के राजा ने अर्जुनको बुलायाथा ५ फिर अर्जुन ने सात वाणोंसे सुशर्मा को वेधकर उस के धनुष को क्षुरप्र नाम दो वाणों से काटा ६।७ उनको काटकर अर्जुनने बड़ीशीघ्रता पूर्व्वक अपने छः वाणों से राजा त्रिगर्त्त के भाई को घोड़े और सारथीसमेत

यमलोकको पहुंचाया ८ तदनन्तर सुशर्माने अर्जुनको लक्षबनाकर सर्पाकार लोहेकी शक्तिको बासुदेवजी के ऊपरकोफेंका ९ फिरअ-र्जुन तीनबाणसे शक्तिको और तीनहीसे तोमरकोभी काटकरशरोंके समूहोंसे सुशर्माको अचेतकरकेलौटा १० हेराजा आपकी सेनाओं मेंसे किसी ने भी उस बाणों की वर्षाकरने वाले भयकारी इन्द्रके समान आतेहुयेअर्जुनको नहींरोंका ११ फिर अर्जुन अपने बाणोंसे उन कौरवी महारथियोंको ऐसे मारताहुआआया जैसे कि सूखेवन कोजलाताहुआअग्नि आता है १२वह सबलोगभी उस बुद्धिमानी अर्जुन के उस महाअसह्य बेगके सहनेको ऐसे समर्थनहीं हुये जैसे कि प्रजा के लोग अग्नि केस्पर्शको नहीं सह सक्के १३ हेराजा वह अर्जुन बाणोंकी बर्षासे सेनाओंको ढकता गरुड़के झपटने के समान राजा प्राग्ज्योतिषके सन्मुख आया १४ और अर्जुननेभागने वाले भरतबंशियोंका शुभदायक और युद्ध में शत्रुओं को अश्रुपातों का बढ़ानेवाला अपना धनुष लचाया १५ अर्थात् हेराजा अर्जुननेदुष्ट द्यूत करनेवाले आपके पुत्रके कारणसे क्षत्रियों के नाश के निमित्त उसी धनुषको खैंचा १६ फिर अर्जुनके हाथसे व्याकुलहुई आपकी सबसेना ऐसे भयभीत होकर खंड मंडहोगई जैसे कि पर्व्वत सेटक्करखाकर नौकाखंडमंड होजातीहै १७ इसकेपीछे धनुषधारीदश हजार शूरबीर युद्धमें जयपराजय के निमित्त बुद्धि को निर्णय करके लौटे १८ वहांउग्रनिर्भय चित्तवाले महारथियोंने उस अर्जुन को घेरलिया फिर युद्धमेंसबभारके सहनेवाले अर्जुनने बड़ेकठिन भार कोसहा १९ जैसेकि क्रोधयुक्त मतवालाहाथी वनको मर्दन करता है उसीप्रकार अर्जुनेभी आपकी सेना को मर्दन किया २० उस सेनाके अत्यन्त मर्दनपर राजाभगदत्त अकस्मात् उसहाथी समेत अर्जुनके सन्मुखगये २१ नरोत्तम अर्जुनने रथकेद्वारा उसकोरोंका रथ और हाथीका इभिड़नाभी अत्यन्त कठिनहुआ २२ वहभग-दत्त और अर्जुन दोबीर शास्त्रकेअनुसार अलंकृत रथ और हाथी की सवारीके द्वारा चलनेलगे २३ इसकेपीछे इन्द्रके समान समर्थ

भगदत्तने वादलके समानहाथी परसे अर्जुनके ऊपर बाणोंके समूहों को वर्षाकरी २४ उसपराक्रमी इन्द्र के पुत्र अर्जुन नेभी भगदत्त के उसवाणवृष्टिको मार्गहीमें काटा २५ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे उसराजा प्राग्ज्योतिपने उसवाणोंकी वर्षाको रोककर अपने वाणों सेमहावाहुअर्जुन और श्रीकृष्णजीको घायलकिया २६ और बाणों के बड़ेजालसे उनदोनोंको ढककर उसहाथीको श्रीकृष्ण और अर्जुन के मारनेके निमित्त प्रेरितकिया २७ जनार्दनजी नेउसकालके समान क्रोध युक्त आतेहुये हाथी को देखकर रथ के द्वारा दक्षिण किया २८ धर्मको देखतेअर्जुनने उससन्मुख वर्त्तमान समीपपहुंचे हुये हाथीकोभीउसकेसवार समेतमार डालनेकीइच्छा नहींकी २९ हे श्रेष्ठ फिरउसहाथीने हाथी घोड़े और रथोंको मर्दन करके यमलोक को भेजा इस हेतुसे अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिअष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८॥

उन्तीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रजीबोलेकि इसप्रकारसे क्रोधयुक्त अर्जुनने भगदत्तकाक्या किया अथवा उसराजा प्राग्ज्योतिपने अर्जुनकाक्याकिया हेसंजय इसको यथार्थता से वर्णनकरो १ संजयबोलेकि सबजीवोंनेराजा प्राग्ज्योतिपसे भिड़ेहुये पांडव अर्जुन और श्रीकृष्ण जीको काल के गालमें फंसाहुआ माना २ हे समर्थ महाराजाह भगदत्त गजेन्द्र के कंधेपरसे उनरथपर सवार दोनोंअर्जुन औरश्रीकृष्णजी पर इस रीतिसेबाणोंकी वर्षाकरताथा ३ फिरउसनेपूरेधनुषसे निकलेहुयेसुनहरी पुंखतीक्ष्णधार और कालेलोहेके वाणोंसेश्रीकृष्णजीको बेधा ४ अग्निके स्पर्शसे संयुक्त भगदत्तसे प्रेरित सुनपक्षवाले बाण श्रीकृष्णजीको घायलकरके पृथ्वीमें समागये ५ अर्जुनने उसके धनुष को काटकर रक्षकोंको मारकर राजाभगदत्त लालनकरतेहुये के समान युद्धकिया ६ उसअर्जुनने सूर्यकी किरणों के समान तीक्ष्ण चौदह तोमरोंको चलाया और उसने प्रत्येतोमरोंकेदो२ खंडकर

दिये ७ इसकेपीछे इन्द्रकेपुत्र अर्जुनने हाथीके उसकवचकोबाणोंके बड़े जालसे टुकड़े २ करदिया और वहपृथ्वीपर गिरपड़ा यहांयहभीप्रसिद्धहै किराजा भगदत्तने अपनेगिरतेहुये मरे हाथी को अपनीजंघाओं सेपृथ्वीपर नहींगिरनेदिया ८ फिरवहकवचसे रहित बाणोंसे अत्यन्त पीड़ितहाथी ऐसाशोभायमानहुआ जैसे कि जलकी धाराओंसेसंयुक्त बादलसे रहित गिरराज होताहै ९ इसकेपीछे राजा प्राग्ज्योतिषने सुनहरी दंडरखनेवाली लोहेकी शक्तिको बासुदेवजीके ऊपर छोड़ा और अर्जुनने उसको बीचमेंसे दोखंड करदिये १० इसकेपीछेमन्द मुसकान करतेअर्जुनने राजाकेछत्र ध्वजाको काटकर शीघ्रतापूर्वक दशबाणोंसे उसपर्व्वतीय राजाको पीड़ितकिया ११ पुंखवाले कंक पक्षसेयुक्त अर्जुनके बाणोंसे घायल क्रोधयुक्त राजा भगदत्तने १२ उस श्वेतघोड़े वालेपांडवके मस्तकपर तोमरोंको छोड़ा और बड़े उच्चस्वरसे गर्जा युद्धमें उनबाणोंसे अर्जुनका मुकुट लौटगया १३ उस लौटे हुये मुकुट को संभालते उस अर्जुनने राजा से कहा कि लोकमेंदेखाहुआ कर्मकरना चाहिये १४ इसरीतिसे कहेहुये अर्जुनके वचनसे क्रोधयुक्त भगदत्तने प्रकाशित धनुषको लेकर बाणों की अर्जुन और गोविन्दजीपर वर्षाकरी १५ फिरवो अर्जुनने उसके धनुषको काट तूणीरोंको तोड़के बड़ीशीघ्रता पूर्व्वक बहत्तर बाण से सब मर्मोंको बिदीर्णकिया १६ इसके पीछे घायल और अत्यन्त पीड़ामान क्रोधयुक्त विष्णु अस्त्रको प्रयोगकरतेहुये भगदत्तने अंकुश को मन्त्रसे संयुक्तकरके अर्जुनकी छातीपर छोड़ा १७ केशव जीने अर्जुनको ढककर भगदत्तके छोड़ेहुये सबके मारनेवाले उसअस्त्रको अपनी छाती पररोका १८ वहअस्त्र केशव जी की छातीपर जाकर बैजयन्ती मालाहोगया जोकिअपूर्व्व कमलोंके समूहोंसेसंयुक्तसर्वत्र पुष्पोंसे जटित १९ अग्निसूर्य्य और चन्द्रमा के समान प्रकाशित और अग्निहीके समान प्रकाशित पत्रों से संयुक्त अलसीकेपुष्प के बर्णवालीथी उस मालासे श्रीकृष्णजी अत्यन्त शोभायमान हुयेवह मालाबायुसे कंपायमान कमलके पत्तोंके समानथा इसके पीछेदुखी

चित्तहोकर अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले २० । २१ कि हे निष्पाप केशवजी में युद्धको त्यागकर घोड़ोंकोहाकूंगा यहकहकरकि अपनी प्रतिज्ञाकोरक्षानहीं करतेहोजेमेंआपत्तिमेंफंसाहुआ२२ अथवारोकने में असमर्थ होजाऊंतो तुमकोऐसाकरना योग्यहै मेरे नियत होने पर यह आपको न करना चाहिये२३ धनुषबाणको रखनेवाला मैं होकर इनलोकोंको देवता असुर और मनुष्यों समेत आपकीकृपा से विजय करनेको समर्थहूं यहसब आपको विदितहै २४ फिरउस वृत्तान्तके जाननेवाले वासुदेवजी अर्जुनसे बोले हे निष्पाप अर्जुन तुमइस प्राचीन और गुप्तवृत्तान्त को सुनो २५ मैंचारमूर्त्तियों का रखनेवाला संसारकी रक्षाके निमित्त सदैव प्रवृत्त होकर रहाअबयहां आपलोगों को विभागकरके लोकोंके कल्याणको किया २६ मेरी एकमूर्त्ति तो पृथ्वीपरनियतहोकर तपस्याकरतीहै दूसरीमूर्त्ति शुभा शुभ कर्मोंकी करनेवाली संसारको देखतीहै२७तीसरीमूर्त्ति नरलोक में नियत होकर कर्मको करतीहै और चौथीमूर्त्ति दिव्यहजारवर्षकी नींदमेंसोतीहै२८जो यहमेरी मूर्त्ति हजार वर्षकेअन्तपरसोतेसेउठती है वहउस समयपर वरकेयोग्य भक्तोंके निमित्त उत्तम वरदानोंको देतीहै२९एकसमय मेरीचौथी मूर्त्ति के उठनेके समयपृथ्वीने समय वर्त्तमान जानकर अपने नरक नाम पुत्रके अर्थ वरकोमांगा उसको सुनो३०अर्थात् उसने याचनाकरी कि मेरापुत्र वैष्णवास्त्रसे संयुक्त देवताऔर दानवोंसे अजेयहोययह वरआपमुझे देनेके योग्यहैं ३१ मैंने पूर्व समयमें इसप्रकारके वरको सुनकर पृथ्वीके पुत्रको सबसे श्रेष्ठसफल वैष्णवास्त्रको दिया३२और यहभीमैंनेकहा कि हे पृथ्वी निश्चय करके यह अस्त्र नरककी रक्षाके निमित सफलहोय इसको कोईनहीं काटेगा ३३ इस अस्त्रसे रक्षित होकर तेरापुत्र सदैव सब लोकोंके मध्यमें शत्रुकी सेनाको पीड़ा देने वाला और निर्भय होगा ३४ तब वह चित्तसे प्रसन्न देवी पृथ्वी ऐसा होय यह कहकर अभीष्टपाने वाली हुई और वह नरकभी निर्भय होकर शत्रुओं को तपाने वालाहुआ ३५ हे अर्जुन इस कारण से वह मेरा अस्त्रराजा

प्राग्ज्योतिष को प्राप्त हुआ हे श्रेष्ठ इस अस्त्रसे इन्द्र रुद्रादि समेत कोईभी लोकों में अवध्य नहीं है अर्थात् सब को बध करनेवाला है ३६ इसी निमित्त इस अस्त्रको मैंने तेरे कारण से बिपरीत करदिया हे अर्जुन इस उत्तम अस्त्रसे यह रहित होगया अब इस महा असुर को मारो ३७ इस निर्भय और देवताओं से शत्रुता करने वाले अपने शत्रु भगदत्त को ऐसे मारो जैसे कि मैंने पूर्व्व समय में संसार के कल्याण के लिये नरकासुर को माराथा ३८ तब तो महात्मा केशवजीसे इस प्रकार कहेहुये अर्जुनने भगदत्तको तीक्ष्णबाणों से अकस्मात् ढकदिया ३९ इसकेपीछे निर्भय और बड़े साहसी अर्जुन ने हाथी को दोनों कुंभोंके मध्यमें नाराचसे घायल किया ४० जैसे कि बज्र पर्व्वतको पाकर उसमें समा जाताहै उसी प्रकार वह बाण भी हाथीको पाकर पुंख समेत ऐसे समा गया जैसे कि सर्पबामीमें समा जाताहै ४१ तब भगदत्तसे बार बार प्रेरणा किया हुआ वह हाथी उसके बचन को ऐसे नहीं करताथा जैसे कि स्त्रियां दरिद्रोंके बचन को नहीं करतीहैं ४२ वह बड़ा हाथी अपने अंगोंको रोककर दांतोंके बल पृथ्वी पर गिरपड़ा और महापीड़ा के शब्दोंको करता हुआ मृत्युके बश हुआ ४३ यह राजा नेत्र खोलनेके निमित्त पटका बांधने वालाथा अर्जुनने देवता के बचनसे उस पटके को अपनेबाण से काटा ४४ उसपटके के टूटतेही वह अंधा होगया इसके अनन्तर सूर्य्य और चन्द्रमाके मंडल के समान रूपवाले गुप्त ग्रन्थीके बाणों से ४५ अर्जुन ने राजा भगदत्तके हृदय को घायल किया तब वह राजा भगदत्त अर्जुन के बाणों से घायल हृदय हुआ ४६ और निर्जीव होकर धनुष बाण को छोड़ दिया उस समय उसके शिरसे उत्तम मुकुट भी ऐसे गिर पड़ा ४७ जैसे कि नालके छेदन करने से कमलके वृक्ष से गिराहुआ पत्ता होताहै ४८ वह सुबर्ण की माला रखने वाला भगदत्त उस स्वर्णमयी माला वाले पर्व्वताकार हाथी से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि अच्छा फूलाहुआ और बायुसे झुकाया हुआ कर्णिकारका वृक्ष पर्व्वत के शिखरसे गिरता है ४९ इन्द्रके

समान पराक्रमी और इन्द्रके मित्र भगदत्तको युद्धमें मारकर फिर उस इन्द्रके पुत्र विजयाभिलाषीने आपके अन्य लोगोंको ऐसेपरा जय किया जैसे कि प्रबलवायु वृक्षोंको संहार करती है ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकोनत्रिंशतमोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुनने सदैवसे इन्द्रकेप्यारे मित्रबड़े तेजस्वी राजा प्राग्ज्योतिषको मारकर प्रदक्षिणा किया १ इसके पीछे राजा गान्धारके पुत्र उन वृषक और अचल नामदोनों भाइयोंनेजोकिशत्रु-ओंके पुरके विजय करनेवालेथे युद्धमें अर्जुनको पीड़ामान किया २ उनदोनों वीर धनुष धारियोंने सन्मुख होकर बड़े वेगवान शीघ्रगा-मी तीक्ष्ण धारवाले बाणोंके द्वारा अर्जुनको आगे और पीछेसेअत्य-न्त घायल किया ३ अर्जुनने सौबलकेपुत्र वृषिकके घोड़ेसूत धनुष छत्र रथ और ध्वजाको अपनेतीक्ष्ण बाणोंसे तिलके समान खण्ड २ करदिया ४ तदनन्तर अर्जुनने सौबल आदि गांधारियों को बा-णोंके समूह और अन्यनाना प्रकार शस्त्रोंसे भीमहा व्याकुल किया ५ इसके पीछेक्रोध युक्त अर्जुनने बाणोंसे उनशस्त्र उठानेवाले पचास गांधार देशीवीरोंको यमलोकको भेजा ६ वह महाबाहु मृतक घोड़े वाले रथसे शीघ्रही उतरकर भाईके रथपर तीव्रतासे सवार होगया और दूसरे धनुषको जल्दीसेहाथमें लिया ७।८ उनएकरथमें सवार वृषिक और अचल दोनों भाइयोंने बाणोंकी वर्षासे वारंवार अर्जुन कोऐसे घायल किया जैसेकि वृत्रासुर और बलिने इन्द्रको कियाथा ९ फिर उनदोनों लक्षभेदी गांधार देशियोंने पांडवको इस प्रकारसे व्यथित किया जैसेकि लोकमें गरमी और बरसातके महीने गरम और ठंढे जलोंसे पीड़ित करते हैं १० हेराजा अर्जुनने उन अंगोंसे शिथिल रथमें नियत नरोत्तम वृषिक और अचल दोनों भाइयोंको एकही बाणसे मारा ११ तबवेसिंहके समान लालनेत्र महाबाहु एक लक्षण वाले दोनोंशूर वीर और सगेभाई रथसे गिरपड़े १२ उनदोनों

के रथसे गिरने पर उनके पवित्र और बन्धु जनोंके प्रियशरीर दशों दिशाओं में यशको प्रसिद्ध करके नियत होगये १३ हे राजा आपके पुत्रोंने युद्धमें भागनेवाले मृतक रूपदोनों मामाओंको देखकर बारं बार अश्रुपातोंको छोड़ा १४ इसकेपीछे हजारों मायाओंके ज्ञाता शकुनीने उनदोनों भाइयोंको देखकर अर्जुन और श्रीकृष्ण जीको मोहित करके मायाका करना प्रारंभ किया १५ लकुट, अयूगढ़, पाषाण, शतघ्नी, शक्ति, गदा परिघ, तलवार, शूल, मुदगर, पट्टिश १६ सकम्पन, दुधारे खडग, नखर, मुशल, परश्वध, क्षुर, क्षुरप्र, नालीक, बत्सदन्त, अस्थिसंधि, चक्र, विशिख, प्राश और अन्य २ प्रकारके सैकड़ों शस्त्र दिशाओंसे अर्जुनके ऊपर गिरे १७।१८ खर, उष्ट्र, महिष, सिंह, व्याघ्र, समर, चिल्लक, ऋक्ष शृगालआदि गर्धभ और बन्दरके रूप १९ और नाना प्रकारके राक्षस और अनेक प्रकार के पक्षी भी बड़े क्रोध युक्त भूखे होकर अर्जुनकी ओरको दौड़े २० इसके पीछे दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले शूरबीर बाणजालोंको फेंकते हुये कुन्तीके पुत्र अर्जुनने अकस्मातही उनको घायल किया २१ फिर वहसब शूरबीर अर्जुनके अत्यन्त दृढ़ बाणोंसे घायल होकर बड़ेभारी शब्दोंसे गर्जना करते सबओरसे मरकर नाशहोगये २२ इसके पीछे अर्जुनके रथपर अंधेरा प्रकट हुआ उसअंधेरेमेंसे बड़े २ कठोरबचनोंसे अर्जुनको घुड़का २३ अर्जुनने उस बड़े भयानक बड़े युद्धमें भयके उत्पन्न करनेवाले अन्धकार को अपने बड़े उत्तम ज्योतिषनाम अस्त्रसे दूरकिया २४ उसके नाश करनेपर भयानक जलके समूह प्रकटहुये तब अर्जुनने उस जलके नष्ट करनेके नि- मित्तआदित्य अस्त्रको प्रयोग किया इसके पीछे उसअस्त्रके द्वारा बहु तप्रकारसे जलको २५ नष्टकिया अर्थात् शुष्ककिया इसी प्रकार से शकुनीकी उत्पन्नकीहुई अनेक मायाओंको दूरकिया २६ तबहंसते हुये अर्जुनने शीघ्रही अस्त्रोंके प्रभावसे मायाओंको नाश किया उन मायाओंके दूरहोनेपर अर्जुनके बाणोंसे घायलकिया हुआ वह भय भीत २७ शकुनी साधारण मनुष्यके समान शीघ्रगामी घोड़ों के

द्वारायुद्ध भूमिसे हटगया इसके पीछे अस्त्रोंका जानने वाला अर्जुन अपनेशत्रुओं में तीव्रताको दिखाता २८ कौरवोंकी सेनापर बाणो के समूहोंसे वर्षा करनेलगा हे महाराज अर्जुन के हाथसे घायल आपकेपुत्रकी वहसेना २९ ऐसे दोप्रकारकी होगई जैसेकि गंगाजी समुद्रसे मिलकर होतीहैं वहांपर कितनेही नरोत्तम तो द्रोणाचार्य्य की शरणमें गये ३० और कितनेहीअर्जुनसे पीड़ामान होकरदुर्योधनके परिकरमें जामिले उसकेपीछे धूलसे सेनाके गुप्त होजाने पर हमने उसको नहींदेखा ३१ मैंनेगांडीव धनुष का शब्द दक्षिण की ओरको सुनाकि उस गांडीव धनुषके शब्दमें शंख दुन्दुभी आदि बाजोंके शब्दोंको उल्लंघन करके आकाशको स्पर्श किया३२इसके अनन्तर दक्षिण ओरसे अपूर्व युद्धकरने वालोंका युद्ध फिर जारी हुआ ३३ वहांअर्जुनको अच्छा युद्धहुआ फिरमैं द्रोणाचार्य्यके पीछे गया युधिष्ठिरकी सेनाजहां तहां से प्रहार करतीथी ३४ हे भरतवंशी अर्जुनने समयपर आपके पुत्रोंकी नाना प्रकारकी सेनाओंको ऐसेछिन्न भिन्न करदिया जैसे कि आकाशमें वायु बादलोंको तिर्रबिर्र करदेताहै३५बड़ेधनुषधारी नरोत्तमोंने उस इन्द्रके समानआनेवाले बहुत बाणोंकी वर्षाकरनेवाले भयानकरूप अर्जुनको नहींरोंका३६ अर्जुनसे घायल उन आपके अत्यन्त पीड़ामान जहां तहां भागते हुये अनेक शूरबीरोंने अपनेही लोगोंको मारा ३७ अर्जुन के छोड़े कंकपक्षसे युक्त शरीरके छेदनकरने वाले वे बाण दशों दिशाओंको ढकतेहुये टीड़ीके समानगिरे ३८ हेश्रेष्ठ वहअर्जुनके बाणघोडेहाथी रथी और पदातियोंकोभी घायल करके पृथ्वीमेंऐसे समागये जैसे कि बामीमें सर्प समाजाताहै ३९ उसने हाथीघोड़े और मनुष्योंपर दूसरे बाणको नहींछोड़ा उसीसे एकबाणसे इनसबके सिवाय वह सबध्वजाभी टूटटूटकर गिरपड़ीं ४० तबवह युद्धभूमि मृतकमनुष्य हाथी और सबओरसे छोड़ेहुयेबाणोंके द्वारा गिरायेहुये घोड़ोंसे अपूर्व रूपहोकर श्वान और शृगालोंसे शब्दाय मान होगई ४१ पिताने पुत्रको मित्रने उत्तम परममित्र को त्यागकिया और इसी

कार बाणोंसे दुखी पुत्रने पिताको त्याग किया तबअपनी रक्षामें
बचार करनेवाले और अर्जुनसे पीड़ामान मनुष्योंने सवारियोंको
ी त्याग किया ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिंशत्तमोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रजीबोले हेसंजय अर्जुनसे उस सेनाके पराजय होनेपर
वेष्टाकरते और भागतेहुये तुम लोगोंका चित्त कैसाहुआ १ परा-
जित और आश्रय देखने वाली अर्थात् शरण ढूंढ़ने वाली सेनाओं
का सन्मुख करना बड़ा कठिन है हे संजय वह सब मुझसे कहो २
संजय बोले हे राजा इसी प्रकार आपके पुत्रके प्रिय चाहने वाले
बड़े २ बीर लोकों के मध्य में अपने २ यशको रक्षा करते द्रोणा-
चार्य्य के पीछे चले ३ अस्त्रों के प्रकट होने और युधिष्ठिरके
सन्मुख आने अथवा भयकारी युद्धके बर्तमान होनेपर निर्भयके
समान उत्तम २ कर्मोंको किया ४ और अमितौजस भीमसेन के
ऊपर और बीर सात्यकी व धृष्टद्युम्नके ऊपरभी चढ़ाईकरी ५
निर्दय चित्त पांचालोंने प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्यको मारो और
आपके पुत्रोंने सब कौरवोंको यह प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्यका
नाश मतकरावो ६ कोई यहबोले कि द्रोणाचार्य्यको द्रोणाचार्य्य को
और किसी २ ने यह कहा कि द्रोणाचार्य्य को नहीं किन्तु कौरव
और पांडवों का द्यूत द्रोणाचार्य्यसे संबन्ध रखनेवाला जारी हुआ
है ७ द्रोणाचार्य्य पांचालोंके जिन २ रथ समूहोंको मथन करतेथे
वहां वहां पांचालदेशी धृष्टद्युम्नही उनके सन्मुख होता था ८ इसी
प्रकार भागके बिपर्य्ययसे और भयकारी युद्धके होनेपर भयानक
शब्दोंके करनेवाले बीरोंने बीरोंको सन्मुख पाया ९ वहां पर पांडव
लोग शत्रुओंके कंपायमान करनेवाले हुये और अपने कष्टोंको स्म-
रण करके उन्होंने सेनाओंको कंपायमान किया १० वह क्रोधके
बशीभूत होकर लज्जासे युक्त पराक्रमसे चेष्टा करनेवाले उस बड़े

युद्धमें प्राणोंको त्यागकरके द्रोणाचार्य्य को घायल करनेमें प्रवृत्त हुये ११ तुमुल युद्धमें प्राणोंपर खेलते बड़े तेजस्वी लोगोंके लोहेके शस्त्रोंका गिरना शिलाओंके समानहुआ १२ हे महाराज वृद्धलोग भीऐसे युद्धका देखना और सुनना कभीस्मरण नहींकरतेहैं १३ उस वीरोंके नाशमें उस लौटेहुये सेनाके वडे समूहके भारसे पीड़ामान पृथ्वी बड़ी कंपायमानहुई १४ और उस घूमतेहुये सेनाके समूहके बड़े भयानक शब्दभी आकाशको पूर्णकर के युधिष्ठिरकी सेनामें प्रवेशित होगये १५ पांडवोंकी हजारों सेना सन्मुख होकर युद्धमें घूमतेहुये द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्णधार बाणोंसे पराजितहुई १६ अपूर्व कर्मी द्रोणाचार्य्य से उससेनाओंके अत्यन्त मथेजाने पर आपसेना पतिने द्रोणाचार्य्य कोपाकर घेरलिया १७ वहां द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नको वह युद्ध अपूर्व हुआ मेरे चित्त से उसकी किसी से समानता नहीं होसक्ती है १८ इसके पीछेअग्निके समान उस राजानीलने जिसका कि प्रस्फुलिङ्ग अग्निके समान धनुषथा कौरवीय सेनाको ऐसे भस्मकर दिया जैसेकि सूखेवनको अग्निभस्म करता है १९ प्रथम वचन कहनेवाले आश्चर्य्यकारी प्रतापवान् अश्वत्थामा जी उस सेनाके भस्मकरने वाले राजा नीलसे यह शुद्ध वचन बोले २० कि हेनील तेरेबाणरूप अग्निसे बहुतसे शूर वीरोंके भस्महोने से क्या लाभ है तू केवल मुझ अकेलाही के साथ युद्धकर और क्रोधितहोकर तू बड़ी शीघ्रतासे मुझपर प्रहारकर २१ खिले हुये कमलके समान प्रकाशमान मुसुख वाले राजानीलने उस कमल समूहोंके समानरूप और कमल पत्रके समान नेत्रधारी अश्वत्थामाको शायकनाम बाणोंसे घायलकिया २२ अकस्मात् उससे अत्यन्त घायल अश्वत्थामा जीने तीव्र तीक्ष्ण भल्लोंसे उस शत्रुके धनुष ध्वजा और छत्रको विध्वंसन किया २३ फिरउत्तम ढालतलवार रखनेवाले राजानीलने पक्षीके समान उसरथसे कूदकर अश्वत्थामाके शरीरसे शिरको काटनाचाहा २४ हेनिष्पाप धृतराष्ट्र फिर मन्द मुसकान करते अश्वत्था

माने उसके शरीसे अंधेकन्धे सुन्दर नाक और कुंडलधारी शिरको भल्लसे काटकर गिराया २५ पूर्णचन्द्रमाके समान मुख व कमलपत्र के समान नेत्र और अत्यन्त प्रकाशित कमलपत्र के समान प्रकाश मान वह मारा हुआ राजानील पृथ्वीपर गिरा २६ उसके पीछे आचार्य्यके पुत्रके हाथसे देदीप्य तेजवाले राजानीलके मरनेपर पांडवीयसेन अत्यन्त ब्याकुल होकर पीड़ा मानहुई २७ हे श्रेष्ठ उस समय पांडवों के उन सब महा रथियोंने यह चिन्ताकरी कि इन्द्रका पुत्र अर्जुन शत्रुओंसे किसप्रकार करके हमारी रक्षाकरेगा २८ क्योंकि वह बलवान् सेनाके दक्षिण भागमें संसप्तकोंकी शेष बची हुई नारायण नाम सेनाका नाश कररहाहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि फिर भीमसेन अपनी सेनाके घायलपनेको नहीं सहसका उसने गुरूको साठ बाणोंसे और कर्णको दश बाणोंसे घायल किया १ फिर उसके मरणको चाहते द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्ण धार तीव्रसीधे चलनेवाले बाणोंसे शीघ्रही भीमसेनको मर्मस्थलों को घायलकिया २।३ भीमसेनके पराजयको चाहते द्रोणाचार्य्यने छब्बीसबाणसे कर्णने बारह बाणोंसे और अश्वत्थामाने सातबाणों से घायलकिया महाबली भीमसेननेभी उनसबको घायलकिया ४ द्रोणाचार्य्यको पांचसौ बाणसे कर्णको दशबाणसे दुर्योधनको बारह बाणसे अश्वत्थामाको आठबाणसे घायलकिया ५ और युद्धमें कठिन शब्दको करता उनके सन्मुख बर्तमानहुआ उसकी ओर से प्राणोंकी प्रीतिको अत्यन्त त्यागने और मृत्युके साधारण करनेपर ६ अजातशत्रु युधिष्ठिरने उनशूर बीरोंको प्रेरणाकरी कि भीमसेन को रक्षाकरो फिरवह बडेतेजस्वी युयुधानआदि और पांडव नकुल सहदेव ये सब भीमसेनके पासगये वह अत्यन्त क्रोधयुक्त पुरुषोत्तम सब साथ मिलकर ७।८ उत्तम धनुष धारियोंसे रक्षित और

द्रोणाचार्य्यकी सेनाको पराजय करनेके अभिलाषी वड़े पराक्रमी भीमसेन आदिक रथी चढ़ाई करनेवालेहुये ६ रथियोंमें श्रेष्ठऔर सावधान द्रोणाचार्य्यनेभी उनवड़े पराक्रमी युद्धभूमिके लड़नेवाले वीर महारथियोंकोरोका १० फिर पांडवराज भी मृत्युकेभयको त्यागकरके आपके शूरवीरोंके सन्मुखगये अश्वारूढ़ोंने अश्वारूढ़ों को और रथियोंने रथियोंकोमारा ११ शक्ति खड्गोंका गिरना और फरसोंसेभी युद्धहुआ प्रकृष्ट तलवारोंसे वह युद्ध वड़ा कठिन और तीव्रताका प्रकट करनेवाला हुआ १२ हाथियोंकी चढ़ाईमें महा भयकारी युद्धहुआ कोई हाथीसे औरकोई घोड़ेसे औंधेमुख होकर गिरा १३ और हे श्रेष्ठ वहुतसे मनुष्य वाणोंसे घायलहोकर रथसे गिरे वड़े गर्द मर्दहोनेवाले युद्धमें हाथीने किसी२ विनाकवचवाले गिरेहुये मनुष्यके शिरको छातीपर दवाकर तोड़डाला और किसी हाथीने अन्य २ वहुतसे गिरेहुये मनुष्योंको मर्दनकिया १४।१५ और दांतोंसे पृथ्वीको पाकर वहुतसे रथियों को भी मर्दन किया कोई २ हाथी भयकारी रुधिरमें भरेहुये दांतोंसे युक्त १६ युद्धमें सैकड़ों मनुष्योंको मर्दनकरते घूमनेलगे और पड़ेहुयेकाष्णलोहेके कवचधारी मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को दूसरे हाथियों ने ऐसा मर्दनकिया १७ जैसेकि नरकुलनाम मोटेतृणकोकरतेहैं वहां लज्जायुक्त राजालोग समयके योग से उन शयन स्थानोंपर सोये जोकि गृध्रपत्र रूप वस्त्रोंसे आच्छादित वड़े दुःख रूपथे इसयुद्धमें पितानेरथकी सवारीसे सन्मुख होकर पुत्रको १८।१९ और पुत्रने मोहसेपिताको मारा यहवड़ाअमर्यादावाला युद्धवर्तमान हुआ रथ-टूटे ध्वजा कटगई छत्रपृथ्वीपरगिरे २० और घोडे टूटे हुयेआधेजुयें को लियेहुये भागे और कुंडलधारी शिरके खंड २ हुये खड्ग रखने वाली भुजाभी गिरपड़ी २१ पराक्रमी हाथीनेरथको पृथ्वीपर दवा-कर चूर्णकिया और रथीके नाराचसे घायल हुआ हाथी पृथ्वीपर गिरा २२ हाथी से अत्यन्त घायल कियाहुआ घोड़ा अपने सवार समेत गिरा वड़ा भयकारी युद्ध वर्त्तमान हुआ २३ हायपिता हाय

पुत्र हायमित्र कहांहै खड़ाहो कहां दौड़ता है प्रहारकर और मन्द मुसकान और सिंहनाद समेत इसको मार २४ इसप्रकार की बातोंके नाना प्रकारके बचन सुने गये और मनुष्य घोड़े व हाथियोंका भयदूर हुआ २५ पृथ्वीकी धूलशान्त होगई और भयभीत लोगोंको मूर्च्छा हुई प्रत्येक वीरने अपने चक्र से दूसरे बीरके चक्रको पाकर २६ अस्त्रमार्गके बन्दहोनेके समय गदा से शिरको गिराया बालोंका पकड़ना आदि मुष्टिक युद्ध भी बड़ा भयकारी हुआ २७ तब बिजयाभिलाषी बीरोंका युद्ध दन्त न-खके प्रहारोंसे हुआ वहां खड्ग समेत उठो हुई शूरों की भुजा भी कटीं २८ इसी प्रकार किसी २ की भुजा धनुष बाण और अंकुश समेत कट गईं इस युद्धमें एकने दूसरे को पुकारा औरदूसरा मुख फेर कर भागा २९ एक ने दूसरेके शिरको स्वाधीन करके शरीरसे पृथक् किया कोई शब्द के साथही दौड़ा कोई शब्दसे अत्यन्त भय भीतहुआ ३० किसी ने सेनाके मनुष्यों को और किसी ने अपने शत्रुओंको तीक्ष्ण बाणों से मारा इस युद्धमें पर्व्वतके शिखरके स-मान हाथी नाराच बाणसे गिराया हुआ ३१ पृथ्वीपर गिरा जैसे कि ऊष्म ऋतुमें नदीका रोधहोताहै उसी प्रकार पर्व्वताकार हाथी रथीको मारता और पीड़ा देता ३२ घोड़े और सारथी समेत पृथ्वी पर नियत हुआ शस्त्रज्ञ भय भीत और प्रहार करनेवाले शूरोंकोदेख कर ३३ दूसरे भय भीत और निर्बल चित्तवाले बहुत से लोगों में मोह पैदा हुआ सब व्याकुल हुये और कुछ नहीं जाना गया ३४ सेनाकी उठीहुई धूलसे गुप्त मर्य्यादासे रहित युद्ध वर्त्तमान हुआ इसके पीछे सेनापति शीघ्रतासे यह बोलताथा कियहीसमयहै ३५ सदैव शीघ्रता करने वाले पांडवोंको प्रेरणा करने वाला हुआ फिर बाहुशाली पांडव उसकी आज्ञाको करते ३६ और मारते हुयेद्रोणा चार्य्यके रथपर ऐसे गिरे जैसे कि सरोवर पर हंस गिरतेहैं परस्पर दौड़ो पकड़ो भय मत करो मारो ३७ उस निर्भय द्रोणाचार्य्य के रथ पर यह कठिन शब्द हुये इसके पीछे द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य

कर्ण अश्वत्थामा राजा जयद्रथ ३८ बिन्दु अनुबिन्दु अवन्ती देशके राजा लोग और शल्यने उनको रोंकाउन उत्तम धर्मसे संयुक्त क्रोध भरे कठिनता से हटाने और पकड़नेके योग्य ३९ बाणसे पीड़ामान पांचालोंने पांडवों समेत द्रोणाचार्य्यको त्यागनहीं किया इसकेपीछे अत्यन्त क्रोध युक्त सैकड़ों बाणोंको छोड़ते हुये द्रोणाचार्य्य ने ४० चंदेरी देशी पांचाल देशी और पांडवों का बड़ा मर्द्दन और नाश किया हे श्रेष्ट उसके धनुषकी प्रत्यंचा और तलका शब्द दशोंदिशा ओंमें सुना गया ४१ वह शब्द हजारों मनुष्यों का भय भीत करने वाला वज्रकोसमानथा इस अन्तरमें विजयका अभ्यासी अर्जुनबहुत से संसप्त कोंको विजय करके ४२ वहां आया जहां पर कि वह द्रोणाचर्य्य जी पांडवों का मर्द्दन कररहेथे संसप्तकों को मार कर उन वड़े भारी भंवर और रुधिर रूप जल संयुक्त हद रखने वाली रुधिर प्रवाहसे वहने वालीनदीसे पार उतरा हुआअर्जुन दृष्टि गोचर हुआ हमने उसकीर्तिमान् और सूर्य्यके समान तेजस्वी अर्जुनके चिह्न४३।४४वानरीध्वजाको तेजसे प्रकाशमान देखाउससंसप्तका नाम समुद्रकोअस्त्रोंकी किरणों से शुष्क करके ४५ प्रलय काल के समानउस पांडव अर्जुनने कौरवोंकोभी तपायाअर्जुनने अस्त्रोंकेसंता पसेसबकोरवोंको ऐसे भस्म करदिया ४६ जैसे कि प्रलयकाल की उठी हुई अग्नि सब जीवोंको भस्म करदेतीहै इसके बाणों के हजारों समूहों से घायल हुये हाथी घोड़े और रथोंकी सवारी से लड़नेवाले ४७ शूरवीर पृथ्वी पर गिरे और कितनेही बाल खुले बाणों से पीड़ित मनुष्यों ने महापीड़ा के शब्द किये और कितनेही नाश होगये ४८ और कुछेक मनुष्य अर्जुन के बाणों से पीड़ितऔर निर्जीव होकर गिरपड़े उन सब में से कितनेही उछल २ कर गिरे और मुख फेरने वाले शूरवीरों कोशूरोंके व्रतको स्मरणकरतेअर्जुन ने नहींमारा फिर वह गिरेहुये और अपूर्व्व रथ वाले मुखोंको फेर२ कर बहुत से कौरव पुकारे ४९।५० कि हाय कर्ण हाय कर्ण तब अधिरथी कर्ण उन शरण चाहने वालोंके दीनता के वचनों कोसुन-

कर ५१ भयमतकरो यह कहकर अर्जुनके सन्मुखगया हेभरतबंशी उन रथियों में श्रेष्ठ सब भरतबंशियोंके प्रसन्न करने वाले ५२ और अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ कर्णने अग्न्यास्त्रको प्रकट किया तब अर्जुन ने उस प्रकाशित बाण समूह और धनुष रखनेवाले कर्ण के ५३ बाण समूहों को अपने बाण समूहों से काटा और कर्णने भी उस अग्नि रूपअर्जुन के भी बाणोंको काटा ५४ और अस्त्रको अस्त्रसे अच्छी रीतिसेरोककर बाणोंको छोड़ताहुआ अत्यन्तगर्जा फिर धृष्टद्युम्न भीमसेन और महारथी सात्यकिने ५५ कर्णको पाकर तीन २ बाणों से घायलकिया कर्णने अर्जुनके अस्त्रको बाणकी बर्षासे हटाकर ५६ उनतीनोंके धनुषों को तीन बिशिखों से काटा वह टूटे धनुष और निर्विष सर्पोंके समानशूरबीर ५७ रथसेअपनी शक्तियों को फेंककर सिंहों के सदृश अत्यन्त गर्जे हाथसे छोड़ी हुई और बड़ी शीघ्रगामी सर्पोंके समान ५८ प्रकाशमान महा शक्तियां कर्णके ऊपरगईं तब बाणों के समूहोंसे और मुख्य तीन २ बाणों से उन शक्तियों को काटकर ५६ अर्जुनके ऊपर बाणों को छोड़ताहुआ बलवान् कर्ण गर्जा फिरअर्जुनने भी सात बाणोंसेकर्णको घायलकरके ६० तीक्ष्ण धारवाले बाणसे कर्णके छोटेभाई को मारा इसके पीछे अर्जुनने छः बाणोंसेशत्रुंजयको मारकर ६१ शीघ्रही भल्लसेबिपाटकेशिरको रथ से गिराया धृतराष्ट्रके पुत्रोंके देखते हुये अकेले अर्जुनने ६२ कर्णके सन्मुखही उसके तीनभाइयोंको मारा उसकेपीछे भीमसेनने गरुड़ के समानअपने रथसे उछलकर ६३ उत्तम खड्गसे कर्णके पन्द्रह पक्ष वालोंकोमारा फिर रथमें नियतहो द्वितीय धनुषकोलेकर ६४ दशबाणोंसे कर्णको औरपांच बाणोंसेसारथीसमेत घोड़ोंको घायल किया धृष्टद्युम्ननेभी उत्तम खड्ग और प्रकाशित ढालको लेकर ६५ निषध देशी वृहत्क्षत्र और चन्द्रबर्माको मारा इसके पीछे धृष्टद्युम्न ने अपनेरथमें नियतहोकर दूसरे धनुषको लेकर ६६ युद्धमें गर्जना करके तिहत्तर बाणोंसे कर्णको घायल किया फिर चन्द्रमाकेसमान सात्यकीभी दूसरे धनुष को लेकर ६७ चौंसठ बाणों से कर्णको

वेधकर सिंहके समान गर्जा अच्छे प्रकारसे छोड़ेहुये दोभल्लों से कर्ण के धनुष को काट कर ६८ फिर कर्णको तीन वाणों से भुजा और छातीपर घायल किया इसके पीछे दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्य और राजाजयद्रथने ६९ डूबे हुये कर्णको सात्यकीरूप समुद्र से निकाला फिर आपके अन्य २ सैकड़ों प्रहार करनेवाले शूरवीर पति घोड़े रथ और हाथियोंको ७० दौड़तेहुये कर्ण के समीप दौड़े तब धृष्टद्युम्न भीमसेन अभिमन्यु अर्जुन ७१ नकुल और सहदेव ने युद्धमेंजाकर सात्यकीकी रक्षाकरी इसरीतिसे आपके और पांडवों के सब धनुष-धारियों के नाशके निमित्त प्राणों को त्याग करके यह बड़ा भारी भयानक युद्ध हुआ पदाती रथी हाथी और घोड़े दूसरे रथ हाथी और घोड़ोंके अन्य २ पतियोंकेसाथ युद्ध करनेवाले हुये ७२।७३ रथी हाथीसे पती घोड़ोंसे रथपति अन्यघोड़े रथ और हाथियों के साथ घोड़ोंसे घोड़े हाथियोंसे हाथी और रथियों से रथी युद्ध करनेवाले हुये ७४ पतीभी पतियोंकेसाथ भिड़ेहुये दिखाईपड़े इसप्रकारमांसा-हारियोंका प्रसन्न करनेवाला घोर और कठिन युद्धहुआ ७५ उन महापुरुषोंके साथ निर्भय लोगों का युद्ध यमराजके देशोंका अत्यन्त वृद्धि करनेवालाहुआ ७६ इसकेपीछे वहुतसे हाथी रथपति औरघोड़े दूसरे रथघोड़ेहाथी और मनुष्योंसे मारेगये हाथियोंसे हाथी और रथियोंसे शस्त्रधारीरथीघोड़ोंसेघोड़े और पतियोंकेसमूहोंसे पतिमारे गये ७७ रथियोंसेहाथी और उत्तम हाथियोंसे वड़ेघोड़े और घोड़ोंसे मनुष्य और उत्तम रथियोंसेवहघोड़े जिनकी जिह्वा दांत और आंखें निकलपड़ीं और कवच समेत भूषण टूटे उन सबने मृत्युकोपाया ७८ इसीप्रकारअन्य वहुतसी क्रियावाले उत्तम शस्त्रोंसे मरेहुये भयानक रूपहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े घोड़े और हाथियोंके पैरोंसे घायल और मर्दनकियेहुये अत्यन्त व्याकुल और घोड़ोंके खुर और रथके पहियों से कुचले हुयेथे ७९ वहां महाभयानक कुत्ते शृगाल पक्षी और राक्षसों के अत्यन्त प्रसन्न करनेवाली पुरुषों की प्रलय वर्त्तमान होने पर वह क्रोधयुक्त वड़ीसेना परस्पर मारती हुई पराक्रमसे घूमने वाली

हुइ ८० हे भरतवंशी तदनन्तर सूर्य के अस्ताचल पर नियत होने पर वह अत्यन्त चलायमान रुधिरसे भरीहुई परस्पर में देखनेवाली दोनोंसेना डेरोंमेंगई ८१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि प्रथम बड़े तेजस्वी अर्जुन से हमारे शूरबीरों के पराजय होने पर और द्रोणाचार्य्यके निष्फल प्रतिज्ञा होने और युधिष्ठिर के रक्षित होने पर १ आपके सब युद्धकर्त्ता टूटे कवच और युद्ध में पराजित धूलमें लिपटे अत्यन्त व्याकुलहोकर दशों दिशाओंके देखनेवाले हुये इसके पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के कहने से बिश्रामको करके युद्ध में लक्षभेदी बाणों से घायल और कठिन कर्मोंके करनेसे निश्चेष्ट होगये २ । ३ स्तुतिमान् पुरुषों में अर्जुन के असंख्य गुण और अर्जुन में केशवजी की प्रीतिको कहने पर ४ दुष्ट कर्मोंसे अपवाद युक्तों के समान ध्यान रूप मौनता में नियत हुये इसके पीछे प्रातःकालके समय दुर्योधन द्रोणाचार्य्य जीसेबोला ५ अर्थात् शत्रुओंकी वृद्धि से खेदित चित्त महाक्रोधयुक्त बार्त्तालाप में कुशल दुर्य्योधन नम्रता और अहंकार से सब शूरों के समक्षमें यह वचन बोला ६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ निश्चय करके हम आपके कारण से बध्यपक्ष में हैं अब भी आपने इस प्रकार सन्मुख पायेहुये युधिष्ठिर को नहीं पकड़ा ७ देवताओं समेत पांडवों से रक्षित युद्धमें नेत्रके सन्मुखआयेहुये शत्रुको आप पकड़ना चाहैं तो वह किसी प्रकारसे भी नहीं छूट सक्ताहै८ आपनेप्रसन्नतासे मुझको बरदान देकर बिपरीत कर्म कियाहै उत्तमपुरुष किसी दशामें भी अपने भक्त को निराश नहीं करते हैं इसके पीछे बड़े लज्जित होकर भारद्वाज जी दुर्योधनसेबोले कि मैं तेरे प्रियमें उपाय करनेवालाहूं तुमकोमुझे वैसा न जानना चाहिये९।१०देवता असुर गन्धर्व यक्ष सर्प और राक्षसों समेत सब लोक भी इस अर्जुन के

रक्षा किये हुये पुरुष को विजय करने को समर्थ नहीं हैं ११ जहां सबके पति जगत्के स्वामी गोविन्दजी और सेनापति अर्जुनहैं वहां सिवाय प्रभु शिवजीके और किसकी सेना जासक्तीहै १२ हे तात अब मैं सत्य २ कहताहूं यह कभी मिथ्या न होगा कि अबमैं किसी एक अत्यन्त उत्तम महारथीको गिराऊंगा १३ मैं उस व्यूहको रचूंगा जो कि देवताओं से भी नहीं टूट सक्ताहै हे राजा अब तुम किसी उपाय से अर्जुन को दूर लेजाओ १४ युद्ध में कोई बात भी उससे अविदित और करनेके अयोग्य नहीं है उसने सम्पूर्णप्रकार के ज्ञान विद्या आदि जहां तहां से प्राप्त किये हैं १५ द्रोणाचार्य्य के इस प्रकार कहनेपर संसप्तकों के समूहोंने अर्जुनको दक्षिण दिशाकी ओर बुलाया १६ फिर इसके पीछे अर्जुन का युद्ध शत्रुओं से उसप्रकारका हुआ जैसा कभी न देखाथा न सुनाथा १७हेराजा वहां द्रोणाचार्य्य का रचा हुआ व्यूह ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि मध्याह्नके समय अत्यन्त संतप्तकर्त्ता कठिनता से देखने के योग्य घूमताहुआ सूर्य्य होताहै १८ हेभरतवंशी अभिमन्युने अपने ताऊजी के वचन से उस कठिनता से तोड़नेके योग्य व्यूहको युद्ध में अनेक प्रकार से तोड़ा १९ फिर वह उस कठिनकर्म को करके और हजारों वीरोंको मार कर छःवीरोंसे भिड़ाहुआ दुश्शासनकेपुत्र के आधीन हुआ २० हे शत्रुसंतापी राजा धृतराष्ट्र उस सुभद्रा के पुत्र अभिमन्युने प्राणोंकोछोड़ा उसके सुनने से हम अत्यन्त प्रसन्न और पांडव शोकग्रस्त हुये हे राजा अभिमन्युके मरने पर हमने विश्राम लिया २१ धृतराष्ट्र बोले हे संजय उस पुरुषोत्तमके पुत्रको जिसने तरुणता को भी नहीं पायाथा युद्धमें माराहुआ सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त दुर्विदीर्ण होताहै २२ धर्म नियत करने वालों ने यह क्षत्री धर्म बड़ा भयकारी नियत कियाहै जिस धर्ममें राज्यके अभिलाषी शूरवीरोंने बालकके ऊपर शस्त्रोंका प्रहार किया २३ हेसंजय अब तुम यह बताओ कि बड़ेभारी अस्त्रज्ञ लोगों ने उस महासुखी और निर्भयके समान घूमनेवाले बालक को कैसे २ मारा २४ हे

संजय जैसे कि रथकी सेना के तोड़ने के अभिलाषी बड़े तेजस्वी अभिमन्युने युद्धमें क्रीड़ा करी वह सब तुम मुझसेकहो २५ संजय बोले हे राजा जो आप अभिमन्युका मारना मुझसे पूछतेहो वह मैं संपूर्णता पूर्व्वक तुमसे कहताहूं तुम बड़ी सावधानीसे सुनो कि जिस प्रकार सेनाके तोड़नेके अभिलाषीकुमारने क्रीड़ाकरी औरजैसे आपत्तिमें भी पड़कर कठिनता से बिजय करने के योग्य बीरों को मारा जैसे कि बहुत से गुल्म तृण और वृक्षवाले बनमें दावानल नाम अग्निसे घिरेहुये बनबासीजीवों को भय होता है उसीप्रकार आपके शूरबीरों को भी भय उत्पन्नहुआ २६।२८॥

इतिश्रीमन्महाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि युद्धमें अत्यन्त भयकारी कर्म वाले और कर्ममें शस्त्रों का अभ्यास प्रकट करने वाले पांचोपांडव श्रीकृष्णजी समेत देवताओं से भी बिजय करनेको कठिनहैं १ बुद्धिका पराक्रम कर्म कुल बुद्धि कीर्त्ति यश और लक्ष्मीसे युक्त ऐसे नहैं न होंगे नथे और न वैसे सदैव सर्व गुण संपन्न वाले पुरुष हैं २ और निश्चय सच्चे धर्म में प्रीति रखने वाला जितेन्द्री राजा युधिष्ठिर ब्राह्मणादिकरके पूजनादि गुणोंसे सदैव स्वर्गका प्राप्त करनेवाला है ३ हे राजा प्रलयकाल में मृत्यु व पराक्रमी परशुरामजी और युद्धमें नियत भीमसेन यह तीनोंएकसे कहेजातेहैं ४ प्रतिज्ञा और कर्ममें कुशल और सावधान गांडीव धनुषधारी अर्जुन के समान दृष्टान्त के अर्थ उपमाके देनेको इस पृथ्वीपर युद्धमें लड़ने वाला मैं किसीको नहीं पाताहूं ५ नकुल में गुरु भक्ति सेवा परायणता नम्रता शान्ती जितेन्द्रीपन बीरता और अनुपम स्वरूपता यह गुणवर्त्तमानहैं६ निश्चय करके शास्त्र गंभीरता मधुरता सत्यता और स्वरूपसे वीर सहदेव यह दोनों अश्विनीकुमार देवताओं के समान हैं ७ जो वृद्धियुक्त गुण श्रीकृष्णजी में हैं और जो गुण कि पांडव अर्जुनमें हैं

निश्चय करके वह सब गुण अभिमन्यु में वर्त्तमान दीखते थे वह अभिमन्युपराक्रममें युधिष्ठिर के और कर्म में श्रीकृष्णजी के और भयानककर्म करनेमें भीमसेनके समान था ८।६ और रूप पराक्रम औरशास्त्रमेंअर्जुन के और नम्रतामें सहदेव और नकुल के समान था१० धृतराष्ट्रबोलेहेसूत मैंउसअजेय सुभद्राके पुत्रअभिमन्युकेसब वृत्तान्त को यथार्थ सुनाचाहताहूं वहऐसा वीर बालक युद्धभूमि में कैसे मारागया ११ संजय बोले हे महाराज स्थिर चित्त होकर दुस्सह शोकको सहो अबमैं बांधवों के बड़ेनाशको तुमसे कहताहूं तुम उसको सावधानी से सुनो १२ हे महाराज आचार्य्य जीने चक्रव्यूह को रचा उसमें इन्द्रके समान सबराजा नियत किये १३ और द्वारोंपर सूर्य्यके समान तेजस्वी कुमार नियत किये तब सब राजकुमार इकट्ठे हुये १४ रथ नियम करने वाले सुनहरी ध्वजा लालवस्त्र रक्ताभरणधारी १५ लाल पताकावाले सुनहरी माला युक्त अगर चन्दनसेलिप्त अंग होकर सूक्ष्म वस्त्रोंकेही धारण करने वालेथे १६ वहसब मिलकर अभिमन्युसे युद्धाभिलाषी होकर एक साथहीदौड़े उनदृढ़ धनुषधारियोंकी दशहजार संख्याथी १७ वह सब आपके दर्शनीयपौत्र लक्ष्मणको आगे करके समानदुःखी और समानही साहसी १८ परस्परमें ईर्षायुक्त और प्रिय करनेमें प्रवृत्त चित्तथे हेराजा दुर्य्योधन भी सेनाकेमध्यमें आकर१६ राजाकर्ण दु-श्शासन और कृपाचार्य्य आदिक महारथियों समेत देवराज इन्द्रके समान शोभायमान श्वेतछत्रसे संयुक्त होकर नियतहुआ २० और चमररूप पंखोंके चलानेसे उदय होनेवाले सूर्य्यके समान था उस सेनाकेमुखपर सेनापति द्रोणाचार्य्यके नियत होनेपर २१ श्रीमान् राजा सिंधभी मेरुपर्व्वतके समान निश्चल होकर नियतहुआ और देवताओंके समान आपके वहतीसपुत्र जिनके अग्रगामी अश्वत्था-माजीथे यहसब सिंधके राजाके पक्षमें नियतहुये हेमहाराज राजा गान्धार कितवशल्य और भूरिश्रवा २२।२३ यह सबमहारथी राजासिंध के पक्षमें नियतहुये उसके पीछे अपने जीवनसे निराश

होकर आप के शूरबीर और दूसरों का युद्ध महाकठिन और रोम-
हर्षण करनेवाला जारीहुआ २४ । २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि वहपांडव जिनका अग्रगण्य भीमसेनहै उसभार-
द्वाजजीसे रक्षित और अजेयसेनाके सन्मुख बर्त्तमानहुये १ सात्य-
की, चेकितान, पुरुषतकापुत्रधृष्टद्युम्न, पराक्रमी कुन्तभोज, महारथी
द्रुपद, अभिमन्यु, छत्रधर्मा, पराक्रमी बृहच्छत्र, धृष्टकेतु, चन्देरीकारा
जानकुल, सहदेव, घटोत्कच, २।३ पराक्रमी युधामन्यु, अजेयशिखंडी,
साहसी उत्तमौजा, महारथी बिराट, ४ द्रौपदीके पुत्रक्रोधमूर्त्ति शिशु-
पालका पुत्र पराक्रमी बड़ेबलीकेकय औरहजारोंसृंजी ५ यह और
अन्य २ अस्त्रज्ञयुद्धमें दुर्मद अपनेसमूहों समेत द्रोणाचार्य्यसे लड़ने
के अभिलाषी एकाएकी सन्मुख दौड़े ६ बड़ेपराक्रमीऔरनिर्भय
भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने उन सन्मुख बर्त्तमान शूरबीरोंको अपने
बाणोंके बड़ेसमूहोंसे रोंका ७ जैसे कि जलका बड़ासमूह दुःख से
पराजय होनेवाले पहाड़को पाकर नियतनहीं रहताहै उसी प्रकार
यह सबबीरभी द्रोणाचार्य्यके सन्मुख ऐसे नियत नहीं रहे जैसे कि
नदियांमर्य्यादापर नियतनहींरहतीं ८ हेराजाभारद्वाजद्रोणाचार्य्य
के धनुषसे निकलेहुये बाणोंसे पीड़ामान पाण्डव उनके सन्मुख खड़े
होनेको समर्थनहींहुये ९ हमने द्रोणाचार्य्यकी दोनों भुजाओंका वह
अपूर्वपराक्रम देखा जो सृंजियों समेत पांचाल देशी उनके सन्मुख
नियत नहींरहे युधिष्ठिरने उसअत्यन्तक्रोधयुक्तआतेहुये द्रोणाचार्य्य
को देखकर उनके रोकनेको अनेकप्रकार से बिचार किया १० । ११
फिर युधिष्ठिरने उन द्रोणाचार्य्य को अन्यसे अजेयमानकर बड़ेभारी
असह्य कठिन भार को अभिमन्यु के ऊपर छोड़ कर १२ बासुदेव
जी और अर्जुन के समान बड़े तेजस्वी शत्रुओं के बीरोंको मारनेवाले
अभिमन्यु से यह बचनकहा १३ कि हे तात अर्जुन आकर जिस

प्रकार से हमारी निन्दा न करे उसी प्रकार को करो हम चक्रव्यूह का तोड़ना किसी प्रकारसे भी नहीं जानते हैं १४ उस चक्रव्यूहको अर्जुन श्रीकृष्ण जो प्रद्युम्नजी अथवा तुम तोड़ सक्तेहो हे महाबाहु तुम चारों के सिवाय पांचवां कोई तोड़नेवाला नहीं है १५ हे पुत्र अभिमन्यु तुम पिता आदिक वा मामा अथवा सब सेनाओं का मांगा हुआ यह वरदान देने को योग्यहो १६ नहींतो हे पुत्र अर्जुन युद्ध भूमिसे आकर हमारी निन्दा करेगा इस हेतुसे तुम शीघ्रही अस्त्रको लेकर द्रोणाचार्य्य की सेनाको मारो १७ अभिमन्यु बोला कि मैं पिता लोगों की विजयको चाहता हुआ युद्ध में द्रोणाचार्य्य की अत्यन्त उत्तम दृढ़ और बड़ी भयकारी शीघ्रगामिनी सेनाको मँझाऊंगा १८ मेरे पिताने सेनाके नाश करने में मुझको योगका उपदेश किया है परन्तु मैं किसी आपत्ति में बाहर निकलनेको उत्साह नहीं करताहूं १६ युधिष्ठिर बोले कि हे शूरवीरोंमेंश्रेष्ठ तू सेनाको पराजित करके हम लोगोंकेद्वारको उत्पन्नकर हे तात हमसबभी तेरे पीछे उसी मार्गमे जायँगे जिस मार्ग से तुम जावोगे २० हे तात हम युद्धमें अर्जुनके समान तुमको लड़ाई में आगे करके सब ओरको मुख कियेहुये तेरीरक्षा करतेहुये पीछे २ चलेंगे २१ भीमसेनबोले कि मैं तेरे पीछे जाऊंगा और धृष्टद्युम्न, सात्यकी, पांचालदेशी, कैकय, मत्स्यदेशी और सब प्रभद्रक भी तेरे पीछे २ चलेंगे २२ हम एकवार तेरे तोड़ेहुये व्यूहको जहां तहां उत्तम २ शूरवीरोंको मारतेहुये बार २ सबका नाश करेंगे २३ अभिमन्यु बोले कि मैं द्रोणाचार्य्य के इस दुःख से सन्मुखता के योग्य सेना में ऐसी रीति से प्रवेशकरूंगा जैसे कि अत्यन्त क्रोधयुक्त पतंग पक्षी प्रज्वलित अग्नि में जाता है २४ अब मैं उस कर्मको करूंगा जो दोनों कुलोंका प्रिय होगा और वह मेरे मामू व पिताकी प्रसन्नता है उसीको उत्पन्न करूंगा २५ निश्चय करके सब जीवधारी युद्ध में मुझ बालकसे हटाये हुये शत्रुओंकी सेनाओंके समूहों को देखेंगे २६ मैं अर्जुन से पैदा नहीं अथवा सुभद्रासेभी उत्पन्न नहींहूं जो

अब मेरे युद्धमें कोईभी जीवता बचसके २७जो मैं युद्धमें एकरथ सेसंपूर्णक्षत्री मंडलको आठ खंड न करूंतो अर्जुनका पुत्र नहींहूं २८ युधिष्ठिर बोलेकि हे अभिमन्यु तुझ ऐसे बचन कहने वालेके पराक्रमकी वृद्धिहोय जो तू द्रोणाचार्य्य की उस सेना के पराजय करने को उत्साह करताहै जोकि कठिनतासे सन्मुख होनेके योग्य और साध्यरुद्र मरुतनाम देवता बसु अग्नि और सूर्य्यकेतुल्य पराक्रमी महाबली बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तमोंसे रक्षितहै ३० संजय बोले कियुधिष्ठिरने अभिमन्युकेइस बचनको सुनकर सारथीको प्रेरणा करी ३१ किहे सुमित्र युद्धमें घोड़ोंको शीघ्रता से द्रोणाचार्य्य की सेनामें चलाय मानकरो ३२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचत्रिंशो ऽध्यायः ३५॥

छतीसवां अध्याय॥

संजय बोलेकि हे भरत बंशी अभिमन्यु ने बुद्धिमान धर्मराजके उस बचनको सुनकर सारथीको द्रोणाचार्य्यकी सेना में चलने की आज्ञादी १ चलोचलो ऐसी रीतिसे उसकी आज्ञा को पाकर वह सारथी अभिमन्यु से यह बचन बोला २ हे चिरंजीवि पांडवोंने यह बड़ाभारी बोझा तुझपर नियत कियाहै एकक्षणभर बुद्धि से बिचार कर फिरतुमयुद्ध करनेको योग्यहो ३ द्रोणाचार्य्य बड़े अस्त्रादिक कर्मोंकेज्ञाता और परिश्रमीहैं और तुमबड़े सुखमें पोषण पानेवाले हो अभी युद्धमें अतिकुशल नहीं हो ४ इसके पीछे अभिमन्यु अत्यन्त हंसताहुआ सारथी से यह बचन बोला हे सारथी यह द्रोणाचार्य्य अथवा संपूर्ण क्षत्रीमंडलभी क्या पदार्थहैं ५ मैंयुद्धमेंदेवताओं समेत ऐरावत हाथीपर सवार इन्द्रको अथवा सब जीवधारियों के समूहोंसे पूजित ईश्वर रुद्रजीसे भी युद्ध करसक्ताहूं अबमुझको इसक्षत्री मंडलमें किसी प्रकारका भय नहींहै ६ यहशत्रुओंकी सेना मेरीसोलहवीं कलाके भी योग्य नहींहै हे सूतके बेटे बिश्व भर के स्वामी अपनेमामा बिष्णुजी को पाकर और युद्धमें अर्जुन को भी

पाकर मेरे सन्मुख भयनहीं आवेगा इन बातोंसे अभिमन्यु सारथी के उसवचनकोतुच्छऔरकदर्थी करके८उससेकहनेलगा कि द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलविलम्ब मतकर उसकेपीछे उस सारथीने जो कि मनसे अत्यन्त अप्रसन्नथा सुनहरी सामान और तीन वर्षकीअवस्थावाले घोड़ोंको शीघ्रही चलायमान किया सुमित्रसे द्रोणाचार्य्य कीसेनामें भेजेहुये वह घोड़े ६।१० बड़ेवेग और पराक्रमवाले द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गये हे राजा सब कौरव जिनके अग्रगामी द्रोणा चार्य्यथे वहसब उसआते हुये अभिमन्यु को देखकर सन्मुख वर्त्तमानहुये और पांडव लोग उसकेपीछेचले ११ वहश्रेष्ठतम कर्णकार वृक्षके चिह्नवाली ध्वजाको ऊंचाकरनेवाला अर्जुनके समान पराक्रमी सुवर्णकी ध्वजावाला अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु युद्धाभिलाषी होकर द्रोणाचार्य्य आदिक महारथियों के सन्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सिंहका बच्चा हाथियोंके सन्मुख होय वह सब प्रसन्नतासे युक्त होकर प्रवेशित हुये और ऐसाबड़ा भारी युद्ध एक मुहूर्त्त तक किया जैसेकि गंगाजीका आवर्त्त समुद्रमें होताहै १३ हे राजा परस्पर मारते और लड़तेहुये शूरवीरोंका युद्ध कठिन और महाभयकारी वर्त्तमानहुआ १४ उस अत्यन्त भयानक युद्धके वर्त्तमान होनेपर अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु द्रोणाचार्य्य के देखतेव्यूह को वेधकर प्रवेश करगया १५ हाथीघोड़े रथ और पत्तियों के शस्त्र उठाने वाले समूहोंने उस प्रवेश करके शत्रुओंके समूहोंको मारतेहुये महाबली अभिमन्युको चारोंओर से घेरलिया १६ नाना प्रकारके बाजे और कठिन गर्जनाओंकी ध्वनिटंकार सिंहनाद और खड़ाहोखड़ाहो इन शब्दोंके १७ और घोरहला हलानाम शब्दोंके साथमतजाओ यहां मेरेसन्मुख खड़ाहो हे शत्रु यहमैंहूं इसरीतिसे अनेकभांति वारंवार बचन कहनेवालेहुये १८ हाथियोंकी चिंहाड़ गर्जनाहंसनाखुर और रथकेपहियोंके शब्दोंसे पृथ्वीको शब्दायमानकरते अभिमन्युके सन्मुखगये १६ हेराजा शीघ्रतासे युद्ध करने वाले और अस्त्र चलाने वाले मर्मस्थलोंके जाननेवाले महाबली वीर अभिमन्युने मर्म भेदी

बाणोंसे उन आनेवाले शूरबीरोंको घायलकिया २० नानाप्रकारके चिह्न वाले तीक्ष्ण बाणों से घायल अस्वतंत्र वह बहुतसे शूरबीर उसके सन्मुख ऐसे आये जैसे कि टीड़ीदल अग्निके सन्मुख आताहै २१ इसके पीछे उस अभिमन्युने उन शूरोंके शरीर और शरीरों के अंगोंसे ऐसे शीघ्र पृथ्वीको आच्छादित किया जैसे कि यज्ञके मध्य मेंकुशाओंसे बेदीको आच्छादित करतेहैं २२ हस्तत्राण के धारण करने वाले, धनुष,बाण, तलवार,ढाल,अंकुश,लगाम, तोमर,फरसे, २३ गदा,आयोगुड़,प्रास,दुधारे खड्ग, तोमर,पट्टिश, भिन्दपाल, परिघ,शक्ति,बाण,कंपन २४ चाबुक,महाशंख,भल्ल,कचग्रह,मुद्गर, क्षेपणी,पाश, परिघ और उपलके रखने वाले २५ केयूर, बाजूबन्द आदि भूषणों से युक्त मनोहर सुगन्धियोंसे संयुक्तआपके शूरबीरों की हज़ारों भुजाओंको जो२ कि दृष्टिके सन्मुख आई उन सबको अभिमन्यु ने काटा २६ हे श्रेष्ठ महाराज उनफड़कती औरअत्यन्त रक्तबर्णवाली भुजाओंसे पृथ्वी ऐसी शोभाय मानहुई जैसे किगरुड़ जी के काटे हुये पंचमुखी सर्पोंसे शोभित होतीहै सुन्दरनाक मुखके शान्त धारी और स्वच्छ कुंडल रखने वाले और बहुत रुधिर को छोड़ते क्रोध से दोनों ओठोंको काटने वाले २८ मणिरत्नों से अलं-कृत सुन्दर मुकुट और पगड़ी रखने वाले नाल से रहित कमल के स्वरूप सूर्य्य चन्द्रमा के समान प्रकाश मान २६ समय पर प्रिय बाणोंसे शुभ बार्त्ताके कहनेवाले बहुत पबित्रसुगंधियोंसे युक्त शत्रु-ओं के शिरोंसे उस अभिमन्युने पृथ्वीकोआच्छादित करदिया ३० गन्धर्व नगर के समान बिधिपूर्व्वक्र अलंकृत ईशा रूप मुख और बिचित्र त्रूणवाले रथोंको जिनके दंडकबंधुर गिर पड़े ३१ चक्र उपस्कर और उपस्थोंसे रहित और सबसामानभी टूटगयेथे,अथवा जिनके उपस्तरण गिरपड़े और हजारों जीव धारी जोकि जांघचरण नाक और दांतोंसे भी रहित होगयेथे वह सब मरगये उनरथोंको खंड२करता सब दिशाओंमें दिखाई पड़ा ३२ फिर हाथी औरहाथी के सवार बैजयन्ती अंकुश ध्वजा तरकस छ कवच हाथी के बंधन

की रस्सीगलेका भूषणकम्बल३४घंट,सूंड़,दांतकीनोक, छत्र, माला,
पदानुग शत्रुओंके इन सब सामान आदिकों को तीक्ष्ण धार वाले
बाणों से नाश किया ३५ वानायुज प्रकार के पहाड़ी कांबोजदेशी
और बाह्लीक देशी घोड़ोंको जिनकी आंख कान और पूंछनियतथी
शीघ्रगामी और अच्छे लोगों के सवार कराने वाले थे३६ और
शक्ति दुधारे खड्ग और पासोंसे युद्धकरनेवाले होकर शिक्षितशू-
रवीरोंसे युक्तथे जिनके चामरसुख टूटे उनप्रसिद्ध घोड़ों को ३७
और जिनकी जिह्वा और आंखें निकल पड़ीथीं कान आंखसे रहित
जिनके कि सवार मरगये घंटेटूटगयेऔर गिद्धराक्षसादि केसमूहोंके
प्रसन्न करने वाले थे ३८ और जिनके चर्मका कवच कटगया वारं-
वार मूत्र रुधिरसे लिप्तथे उन आपके उत्तम घोड़ोंको गिराता हुआ
शोभायमानहुआ३९ अकेले विष्णुभगवान के समान एकाकी नेही
ध्यानसे अगम्य बड़े दुःखसे करने के योग्य कर्मको करके उसनेइस
रीतसे आपकीतीनअंग रखनेवाली बड़ी सेनाको वारंवार ऐसे मथ
डाला ४० जैसेकि बड़े तेजस्वी शिव जी असुरों की बड़ी घोर सेना
को मथते हैंअर्जुन के पुत्रने शत्रुओं के साथ असह्य कर्म को करके
४१ आपकेसब शूरवीरों को बाणोंसे घायलकिया जैसे कि देवता-
ओंके सेनापति स्वामिकार्त्तिकजी असुरों की सेनाको मारते हैं उसी
प्रकार उस अकेले अभिमन्यु के तीक्ष्ण बाणों से उस सेनाको अत्य
न्त घायल देखकर आप के पुत्र और शूरवीर दशों दिशाओं को
देखते ४२।४३ अत्यन्त सुष्कमुख और चलायमान नेत्र पसीने
से लिप्त शरीर रोमांचों से युक्त भागने के विचार में चित्तसे प्रवृत्त
शत्रुके विजय करने में साहसोंकोत्यागेहुये४४ जीवनके अभिलाषी
सबलोग गोत्र और नामों के द्वारा परस्पर में पुकारे मरे हुये पुत्र
पिता भाई बांधव और नातेदारोंको ४५ छोड़ कर घोड़े और हाथि-
योंको शीघ्र चलाते सन्मुख गये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि बड़े तेजस्वी अभिमन्यु से उस अत्यन्तपराजित हुई सेना को देखकर अत्यन्त कोप में भराहुआ दुर्योधन आपही अभिमन्युके सन्मुख गया १ तदनन्तर युद्धमें अभिमन्यु के सन्मुख लौटे हुये राजा को देखकर द्रोणाचार्य्य जी शूर बीरों से बोले कि राजा को चारों ओर से रक्षित करो २ पराक्रमी अभिमन्यु हमारे देखते हुये समीप ही लक्ष भेदन करता है उस के सन्मुख जाओ भय मत करो शीघ्रता से इस दुर्य्योधनकी रक्षा करो ३ इसके पीछे कृतज्ञ पराक्रमी बिजयसे शोभापानेवाले और भयसे भयभीत सुहृदोंने आपके पुत्र बीर दुर्य्योधन को चारोंओर से घेर कर रक्षित किया ४ द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कर्ण, कृतबर्मा, शकुनी, बृहद्बल, शल्य, भूरिश्रवा, पौरव, वृषसेन इन सब शूर बीरों ने तीक्ष्ण बाणों की बर्षा करके अभिमन्यु को ढकदिया ६ फिर उस अभिमन्यु को अचेत करके दुर्य्योधन को छुटाया अर्जुन के पुत्रने मुखसे गिरे हुये ग्रास के समान उस को न सहकर ७ वह सुभद्राका पुत्र बाणों के बड़े समूहों से उन महारथियों को घोड़े और सारथियों समेत मुख मोड़ने वाला करके फिर सिंहनाद को गर्जा ८ इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यादिक रथियोंने उस मांसाभिलाषी सिंहके समान गर्जना करनेवाले अभिमन्यु के शब्दको सुनकर नहींसहा ९ हे श्रेष्ठ फिर उनसबोंने रथोंके समूहों से उसको घेरकर नानाप्रकारके रूपवाले बाणजालोंके समूहोंको उत्पन्नकिया १० आपके पोतेने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उन सबके बाणजालोंको अन्तरिक्षमेंही अर्थात् बीचमेंही काटा और उनको भी घायलकिया यह बड़ा आश्चर्य्यसाहुआ ११ इसकेपीछे उससे क्रोधरूपकिये हुये सर्पके बिषके समान बाणोंसे मारनेके अभिलाषी उन लोगोंने अजेयअभिमन्युको चारोंओरसे घेरलिया १२ हे भरतर्षभ उस अकेलेअभिमन्युने बाणोंसे आपकेउस सेनारूपी समुद्रको ऐसे

धारणकिया जैसे किकिनारा या मर्य्यादासमुद्रकोधारणकरताहै १३ परस्पर मारते और लड़ते हुये अभिमन्यु और शत्रुओंके शूरोंमें से किसीने भी मुखनहीं मोड़ा १४ उस घोर और भयकारी युद्धकेवर्त्त-मान होने पर अन्य शत्रुओंने नौ बाणों से अभिमन्युको घायल किया १५ दुश्शासनने बारहबाणों से सारद्वत कृपाचार्य्यने तीन बाणसे द्रोणाचार्य्यने ऐसे सत्रह बाणोंसेजोकि सर्पके बिषके समा-नथे१६ विविंशतिने सत्रहबाणोंसे कृतवर्माने सातबाणोंसे वृहद्बलने आठबाण से अश्वत्थामाने सात बाण से भूरिश्रवाने तीन बाणसे राजामद्रने छः बाण से शकुनीने दो बाणसे और राजा दुर्य्योधनने तीनबाणसे घायल किया १८ हे महाराज उसधनुष हाथ में लिये नृत्य करते के समान प्रतापी अभिमन्युने तीन २ बाणोंसे उनको घायल किया १९ इसके पीछेआपके पुत्रोंसे व्याकुल अत्यन्त कोप युक्त और शिक्षित अभ्याससे उत्पन्नबड़ेभारी पराक्रम को दिखलाते अभिमन्युने गरुड़ और वायुके समान शीघ्रगामी सारथीके आज्ञा-वर्ती और शिक्षापाये हुयेघोड़ोंके द्वारा शीघ्रता करने वाले अश्मक पुत्रकोरोका २१ और दश बाणोंसे घायल किया और तिष्ठतिष्ठ इस वचनको भी बोला फिर मन्दमुसक्यानकरते अभिमन्युने दशबाणोंसे घोड़े सारथी ध्वजा २२ भुजा और धनुष समेत उसके शिरको पृथ्वीपर गिराया अभिमन्युके हाथसे उस वीर राजा अश्मक के मरने पर २३ सब सेनाभागनेमें प्रवृत्तचित्त होकर अत्यन्त कंपाय मान हुई इसको देखकर कर्ण,कृपाचार्य्य,द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, राजा गान्धार,शल, २४शल्य,भूरिश्रवा,क्राथ,सोमदत्त, विविंशति, वृषसेन, सुषेण,कुण्डभेदी, प्रतर्द्दन २५ वृन्दारक, ललित्थ, सुबाहु, दीर्घलोचन, और क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने बाणोंकी वर्षाओं सेढक दिया २६ बड़े धनुषधारियोंके बाणोंसे अत्यन्त घायल हुये उस अभिमन्युने कवच और शरीर के भेदन करनेवाले बाणको कर्ण के मारने के लिये हाथमें लिया २७ वह बाण उसके कवचको काट कर शरीर को घायल करके ऐसेपृथ्वीमें समागया जैसेकि सर्पबामी

में प्रवेश कर जाता है उस प्रहारसे पीड़ामान महा व्याकुल के समान कर्ण युद्धमें ऐसे अत्यन्त कंपायमान हुआ जैसे कि भूकम्प होनेसे पर्वत कम्पाय मान होता है २६ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त ने उसीप्रकार दूसरे तीक्ष्ण तीन २ बाणों से सुषेण दीर्घ-लोचन और कुण्डभेदी को घायल किया ३० फिर कर्णने पच्चीस नाराचोंसे अश्वत्थामाने बीस बाणसे कृतबर्माने सात बाण से घायल किया ३१ वह इन्द्रकापोता बाणों से युक्त सब शरीर होकर भी पाशको हाथ में लिये सेनाके भीतर कालके समान घूमताहुआ दिखाई दिया ३२और सन्मुख नियत हुये शल्यको बाणोंकी बर्षासे ढकदिया फिर वह महाबाहु आपकी सेनाओंको भय भीत करता हुआ गर्जा ३३ हे राजा इसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अभिमन्युकेमर्म भेदी बाणों से घायल वह शल्य रथके बैठने के स्थान पर बैठगया और अचेत होगया ३४ यशस्वी अभिमन्यु से इस प्रकार घायल शल्यको देखकर सब सेना द्रोणाचार्य्यजीके देखते हुये भागी सुन-हरी पुंखोंवाले बाणों से युक्त उस महाबाहु को देखकर आपके शूर बीरऐसेभागे जैसेकि सिंहसेपीड़ामानहोकर मृगभागते हैं ३५।३६ फि वह पितर,देवता,चारण,सिद्ध औ यक्षोंके समूहों से और पृथ्वी तल परवर्ती संपूर्ण जीव धारियों के समूहों से युद्ध में कीर्त्ति मान स्तुतिमानप्रतिष्ठामानहोकर ऐसा अत्यन्त शोभायमानहुआ जैसे कि घृतसे सींचाहुआ अग्नि प्रकाश मान होकर शोभितहोता है ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अरतीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसप्रकार बाणों से बड़े धनुष धारियों को मर्दन करते उस अभिमन्यु को कौनसे शूरबीरोंने रोका १ संजय बोले कि हे राजन भारद्वाज द्रोणाचार्य्य से रक्षित रथकी सेना के तोड़नेको अभिलाषी अभिमन्यु कुमारके युद्ध क्रीड़ाको सुनो २ सु-भद्राके पुत्र अभिमन्यु के बाणों से युद्धमें पीड़ामान राजा मद्र को

देखकर शल्यका छोटाभाई महा क्रोधित होकर बाणों को फैलाता हुआ सन्मुख आया और आतेही दश बाणोंसे घोड़े सारथी समेत अभिमन्युको घायल करके बड़ेशब्द से तिष्ठ २ इसवचनको पुकारा ४ अर्जुनके पुत्र हस्तलाघवी अभिमन्युने उसके शिर, ग्रीवा, हाथ पैर, धनुष, घोड़े, छत्र, ध्वजा, सारथी, त्रिवेणु, कल्प, ५ दोनों चक्रयुग धनुषकी प्रत्यंचा तुणीर, अनुकर्ष, पताका, चक्र के रक्षक और सब छत्रादिक सामानको बाणों से ६ काटा उसको किसीने नहींदेखा फिरवह मराहुआ जिसके कि सब भूषण और वस्त्र टूट गयेथे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि बड़े तेजस्वी वायुसेटूटा हुआ पर्व्वत गिरताहै इसके अनन्तर उसके सबसाथीलोगभी महाभयातुर होकर सब दिशाओंको भागे ८ हे भरत वंशी सब जीवधारी अभिमन्युके उस कर्मको देखकर धन्यहै धन्यहै इसशब्द के साथ चारों ओरसे शब्द करनेवाले हुये ९ इसशल्यके भाई के मरने पर बहुतसे सेनाके मनुष्य अपनाकुल,देश,नाम,अर्जुनके पुत्रको सुनाते अत्यन्त क्रोधित नाना प्रकारके शस्त्र हाथमें लिये सन्मुखदौड़े और कोईरथ घोड़े और हाथियों की सवारी से और कितनेही बल से प्रमत्त पदातीभी सन्मुखदौड़े ११ बाणोंके रथकी नेमियोंके हुंकार और हिन हिनाहट गर्जना बड़ेसिंहनादज्यातलत्रआदिके शब्दोंको करते अभिमन्युकेऊपरगर्जतेथे १२ कोई शूरवीर यहबोलतेथे जीवता तो रहता परन्तु अबहमारे हाथसे जीवतानहीं बचसकेगा १३ हंसतेहुये अभिमन्युने उन उसप्रकार बोलते हुये शूरवीरों को देखकर जिस२नेपूर्वमें इसपर प्रहार किया उस२ कोघायल किया १४ शूर अभिमन्यु अपूर्व तीक्ष्ण अस्त्रों को अच्छीरीति से दिखलाता युद्धमें मृदुताकेसाथ युद्ध करने लगा १५ जो अस्त्र वासुदेव जी से और अर्जुनसेलियेथे उनको अभिमन्यु ने प्रकट किया वहदोनोंअस्त्रभी श्रीकृष्णऔर अर्जुनकेही समानथे १६ बारंबार उसबड़े बोझेको और भयको हटाते सहते बाणों को चढ़ाते और छोड़ते निर्विशेष दिखाई पड़े १७ इसका धनुष मंडल दिशाओं में चलायमान होकर ऐसा

दिखाई दिया जैसेकि शरदऋतु में अत्यन्त प्रकाशमान सूर्य्य का मंडल होता है १८ उसकी प्रत्यंचा का और नलका शब्द ऐसा भयकारी जान पड़ताथा जैसेकि बर्षाके समय बड़ी बिजली छोड़ने वाले बादलका शब्दहोताहै १६ महा नम्रतासे युक्त क्रोधसेअग्नि रूपमान करने वाला अपूर्व दर्शनीय अभिमन्यु बीरों की अच्छी रीतिसे प्रविष्ठा करता बाणोंसे और अस्त्रोंसे युद्धको करके हे महाराज वह नम्र होकर भी फिरऐसा कठिन बर्त्तमान हुआ जैसे कि बर्षा ऋतु को उल्लंघन कर शरदऋतुमें भगवान् सूर्य्यदेवताप्रचंड होतेहैं २१ उस क्रोधाग्नि रूपने बिचित्र तीक्ष्ण धार सुनहरीपुंख वालेबाणोंको ऐसेछोड़ा जैसेकि सूर्य्यकिरणोंको छोड़ताहै २२ उस बड़े तरुण अवस्थावाले यशस्वीने क्षुरप्र, बत्सदन्त, बिपाठ, नाराच अर्द्धचन्द्राकार भल्ल और अंजलिकों से भी २३ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के देखतेहुये रथवाली सेनाको आच्छादित करदिया उसके पीछे बाणोंसे पीड़ामान होकर वह सेनामुख फेरफेरकरभागी २४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टात्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मेरा चित्त भय औरप्रसन्नतासे दोप्रकार का होताहै जो अभिमन्युने मेरेपुत्रकी सेनाको अच्छी रीतिसे रोका १ हे संजय फिर उस कुमारकी सबक्रीड़ाको ब्योरेसमेत मुझसेकहो जो कि असुरों के साथ स्वामकार्त्तिक जी की क्रीड़ाके समानथी २ संजयबोले कि बड़ेखेदकी बात है कि मैं इस भयकारी युद्धको उसी प्रकार से आपके आगे कहूंगा जैसे कि अकेलेएक का और बहुत से शूरबीरों का युद्ध हुआ ३ रथमें सवार बड़ासाहसी अभिमन्यु उन परस्परमें शत्रुओंके पराजय करनेवाले आपके सब रथियोंपर बर्षा करने वाला हुआ४ द्रोणाचार्य्य,कृपाचार्य्य,शल्य,अश्वत्थामा, भोज,बृहद्बल,दुर्योधन, सोमदत्त, महाबली शकुनि ५ बहुत राजा और राजकुमार और नानाप्रकार के सेनाओं के मनुष्यों को उस

अलात चक्र अर्थात् बनेठी के समान घूमते हुये अभिमन्युने घायल किया ६ हे भरत वंशी वह प्रतापवान तेजस्वी अभिमन्यु परम अस्त्रोंसे शत्रुओंको मारता सब दिशाओंमें दिखाई दिया ७ उस बड़े तेजस्वी अभिमन्युके उस कर्मको देखकर आपकी हजारोंसेना भय-भीत होकर कंपायमान हुई ८ इसके पीछे प्रसन्नतासे प्रफुल्लित नेत्र प्रतापवान महाज्ञानी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य शीघ्रही कृपाचार्य्य को संबोधन करके यह वचन बोले ९ अर्थात् हे भरतर्षभ आपके पुत्रकेमर्मोंकेकंपायमान करनेवाले युद्धमेंकुशल अभिमन्युको युद्धभूमिमें देखकर यहवचन बोले १० यह सुभद्राकापुत्र अभिमन्यु व पांडवोंका प्रसिद्धयुवा सब सुहृदोंको और राजा युधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव बांधव अन्य नातेदार और मध्यम स्नेही लोगोंसमेत अन्यसब सुहृदोंको प्रसन्न करताहुआ जाता है १२ मैं इसके समान अन्यकिसी धनुषधारीको नहीं मानताहूं यह जो चाहै तोइससेनाको भी मार सक्ताहै फिर किसनिमित्तइच्छा नहींकरताहै १३ आपका पुत्र द्रोणाचार्य्य के प्रीति संयुक्त वचनों को सुनकर और मंद मुसकान करताहुआ द्रोणाचार्य्य को देखके अर्जुनके पुत्रपर अत्यन्त क्रोध युक्तहुआ १४ और कर्णराजा वाह्लीक दुश्शासन और राजा मद्र और अन्य२ भी महारथियोंसे यह वचन बोला १५ कि यह ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ सब महाराजाओं का आचार्य्य अज्ञानी द्रोणाचार्य्य अर्जुनके पुत्रको नहीं मारना चाहताहै १६ हे मित्र इस आततायी के युद्धमें काल भी नहीं युद्ध करसक्ताहै फिर दूसराकौन मनुष्य लड़सक्ताहै यह मैं तुमसे सत्य२ही कहताहूं १७ यह अर्जुनके पुत्रकी शिष्यता के कारणसे रक्षा करतेहैं शिष्य औरपुत्र बड़ेप्यारे होतेहैं वह धर्मात्मा पुरुषोंकी सन्तानहै १८ वहअहंकारी अज्ञानी द्रोणाचार्य्य से रक्षित अपने को पराक्रमी मानताहै इसको मर्दन करो विलम्ब न करो १९ राजा करके इसप्रकार कहेहुये महाक्रोध रूप मारने को अभिलाषी वह सबलोग भारद्वाजजीके देखते अर्जुन के पुत्र अभिमन्युके सन्मुखगये तब कौरवोंमें श्रेष्ठ दुश्शासन दुर्यो-

धनके उस बचन को सुनकर दुर्य्योधनसे यह बचन बोला २१ हे-महाराज मैं तुमसे कहताहूं कि पांडवोंके और पांचालोंके देखतेमें ही इस सुभद्राके पुत्र अभिमन्युको ऐसे ग्रसूंगा जैसेकि सूर्य्य को राहुग्रस लेताहै यह बड़ी बातें करके दुर्य्योधनसे कहनेलगा २३ कि वह दोनोंमुख्य श्रीकृष्ण और अर्जुन भी सुभद्राके पुत्र अभिमन्युको मुझ से ग्रस्त हुआ सुनकर निस्सन्देह जीवलोक से प्रेतलोक को जायंगे २४ प्रत्यक्षहै कि वह दोनों इस अभिमन्यु को मृतक सुन-कर प्राणों को त्यागदेंगे और पांडुके क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले पुत्र अर्थात् पांडव सुहृदों के समूहों समेत एकही दिनमें नपुंसकता से जीवन को त्याग करेंगे इस हेतुसे इस शत्रुके मरने से आपके सब शत्रु मारे जायंगे हे राजा कल्याण पूर्व्वक मुझकोध्यान करो कि मैं आपके शत्रुओं को मारूंगा २६ हे राजा आपकापुत्र दुश्शासन इस प्रकार कह कर गर्जा और महा क्रोधित होकर बाणों की बर्षा से अभिमन्युको ढकता सन्मुख गया २७ फिरशत्रु विजयी अभिमन्युने आपकेअत्यन्त क्रोध भरे पुत्रको आताहुआ देखकर छब्बीस तीक्ष्ण बाणों से घायल किया २८ फिर मतवाले हाथी के समान अत्यन्त क्रोध युक्त दुश्शासन युद्धमें अभिमन्युसे युद्ध करने लगा २९ रथ की शिक्षामें सावधान वह दोनों रथों करकेदाये बायें अपूर्व्व मंडलों को घूमते युद्ध करनेवाले हुये ३० इसकेपीछे मनुष्योंने पणव मृदंग दुन्दुभी क्रकच बड़ा खेल भेरी और झर्झर नाम बाजों के वह शब्द जो कि शंख और सिंहनादों के शब्दों से संयुक्तथे बजाये ३१॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्व्वणि एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे बाणों से घायलअंग बुद्धिमान अभि-मन्यु मन्द मुसकान करता उस सन्मुख नियत दुश्शासन शत्रु से बोला १ कि मैं प्रारब्धसे युद्ध में उस आयेहुये मानी शूर बीर को देखताहूं जो कि कठिन प्रकृति धर्मका त्यागने वाला और केवल

असभ्य वार्त्ताओंका करने वालाहै २ जो तुमने सभा में राजाधृतराष्ट्र के सुनतेहुये कठोर वचनों से धर्मराज युधिष्ठिरको क्रोधितकिया ३ और भीमसेनको भी तुझ विजय से मदोन्मत्तने बहुत से कठोर और अयोग्य वचन कहे फिर शकुनिके छली पाशेके आश्रयी भूत होकर तुमने अपने पराक्रम को प्रकट किया इसीहेतु करके उसमहात्मा के क्रोध से तुझको यह फल मिलाहै ४ दूसरेके धन कालेना क्रोध विरोधता लोभ ज्ञानध्वंस शत्रुता अप्रिय भाषण ५ अथवा उग्र धनुषधारी मेरे पिता लोगों के राज्यका हरना इनसब पापोंकाफल उन सब महात्माओंके क्रोधसे तुझको प्राप्तहुआ है ६ हे दुर्बुद्धी तू उस अधर्मके महा भय कारी फलको प्राप्तकर अब मैं सब सेनाके देखतेहुये बाणों से तुझको दंड देने वालाहूं ७ मैं युद्धमें असहा होकर कृष्णाकी व्याकुलताके और अपने पिताके चित्तकी व्याकुलता के ऋणसे अऋण हुआ चाहताहूं ८ हे कौरव अब मैं युद्धमें भीमसेन के भी ऋणसे अऋण होने वालाहूं जो तू युद्धसे न भागेगा तोमुझ से युद्धमें जीवता न बचैगा ६ शत्रुओंके बीरोंके मारने वाले महाबाहु अभिमन्युने इस प्रकार से कह कर दुश्शासन के मारने वाले कालाग्नि और वायुके समान प्रकाशित बाणको धनुष पर चढ़ाया १० वह बाण शीघ्रही उस की छाती को पाकर जत्रुस्थान को घायल करके पुंखों समेत ऐसे समा गया जैसे कि बामी में सर्प समा जाता है ११ इसके पीछे भी अग्नि के स्पर्शके समान कानतक खेंचे हुये पच्चीस बाणों से उस को घायल किया १२ हे महा राज वह कठिन घायल और पीड़ामान दुश्शासन रथ के बैठने के स्थान पर बड़ा अचेत होकर बैठगया १३ फिर शीघ्रता करने वाला सारथी उस अभिमन्यु के पीड़ित किये हुये अचेत दुश्शासन को युद्धमेंसे दूर लेगया १४ इस के पीछे पांडव द्रौपदी के पुत्र राजा विराट पांचालदेशी और केकयों ने उसको देखकरसिंहनाद किये १५ वहां पांडवों की सेनाके अत्यन्त प्रसन्न मनुष्योंने नाना प्रकार के रूपवाले बाजों को सब ओर से अच्छी रीति से

बजाया १६ और आश्चर्य्य करने वाले प्रति पक्षी लोगों ने अभि-
मन्यु के युद्ध कर्म को देखा और बड़े अहंकारी शत्रु को पराजित
देख कर ध्वजाके शिर पर धर्म, वायु, इन्द्र, और अश्विनीकुमारों
के स्वरूप १७ धारण करने वाले द्रौपदी के पुत्र महारथी सात्वकी,
चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, १८ केकयदेशी, धृष्टकेतु, मत्स्यदे-
शी, पांचाल, संजय, और प्रसन्नता से युक्त युधिष्ठिर आदि पांडव
शीघ्रता करने वाले द्रोणाचार्य्य की सेना के तोड़ने के अभिलाषी
होकर सन्मुख दौड़े १६ इसके पीछे बिजयाभिलाषी मुख न मोड़ने
वाले आपके शूर बीरोंका बड़ा भारी युद्ध उन शत्रुओंके साथ हुआ
२० हे महाराज इस प्रकार उसअत्यन्त भयकारी युद्धके बर्त्तमान
होने पर दुर्य्योधन कर्ण से यह बचन बोला २१ कि इस सूर्य्य के
समान संतप्तकरने वाले युद्ध में शत्रुबर्गोंके मारनेवाले बीरदुश्शा-
सनको अभिमन्यु के आधीनता में हुआ देखो २२ फिर अत्यन्त
क्रोधयुक्त सिंहके समान पराक्रमसे मतवाले बड़े सन्नद्ध यह पांडव
अभिमन्यु की रक्षा करने को सन्मुख दौड़े २३ इसके अनन्तर आ-
पके पुत्रका प्रिय करने वाला बड़ा क्रोध युक्त कर्ण अपने तीक्ष्ण
बाणोंसे उस कठिनता से सन्मुख होने के योग्य अभिमन्यु पर बर्षा
करने वाला हुआ २४ शूर बीर कर्ण ने युद्ध भूमिमें बड़े उत्तम तीक्ष्ण
बाणोंसे उस अभिमन्यु के साथ पीछे चलने वालोंको बड़े अनादर
पूर्व्वक घायल किया २५ हे राजा द्रोणाचार्य्य कोचाहते बड़े सा-
हसी अभिमन्यु ने तिहत्तर बाणों से बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक कर्णको
घायल किया २६ इसीप्रकार रथों के समूहोंको पीड़ामान करते
उस इन्द्रके पोते रथी अभिमन्यु को द्रोणाचार्य्य की ओर से कोई
शूर बीर रोकने को समर्थ नहीं हुआ २७ तदनन्तर बिजयाभिलाषी
सब धनुष धारियों में श्रेष्ठ कर्णने उत्तम अस्त्रोंको दिखलाकर
सैकड़ों प्रकारसे अभिमन्यु को घायल किया २८ उस अस्त्रज्ञोंमें
श्रेष्ठ परशुराम जी के शिष्य प्रतापी कर्ण ने युद्धमें अस्त्रोंकरके उस
शत्रुओं से निर्भय अभिमन्यु को पीड़ामान किया २६ वह देवता

के समान इस प्रकार कर्ण के अस्त्रों की वर्षा से पीड़ामान भी अभिमन्यु व्याकुल नहीं हुआ ३० इस के पीछे अर्जुन के पुत्रने तीक्ष्ण और तीक्ष्ण गुप्त ग्रन्थी वाले भल्लोंसे शूर वीरोंके धनुषों को काटकर कर्ण को पीड़ामान किया ३१ और मन्द मुसकान करते अभिमन्युने धनुष मंडलसे छोड़े हुये सर्पके विषकी समान बाणों से शीघ्रही छत्र ध्वजा सारथी समेत उस कर्णको घायल किया ३२ कर्णने भी गुप्तग्रन्थी वाले बाणों को उसके ऊपर फेंका ३३ अर्जुन के निर्भय पुत्रने उन सबको सहा इसके पीछे पराक्रमी वीरने एक बाणसे कर्ण धनुष को ध्वजा समेत काटकर पृथ्वीपर गिराया ३४ इसके पीछे कर्णका छोटाभाई आपत्तिमें पड़ेहुये कर्ण को देखकर दृढ़धनुषको उठाकरशीघ्रही अभिमन्युके सन्मुखगया ३५ तब पांडव समेत उसके पीछे चलने वाले मनुष्य उच्चस्वरसे पुकारे और बाजोंको बजाय अभिमन्युको प्रसन्नकिया ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह अत्यन्त गर्जता और बारंबार प्रत्यंचा को खेंचता धनुष हाथमें लिये अभिमन्यु बड़ी शीघ्रता से उन दोनों महात्माओंके रथोंपर जाकरगिरा १ कि मन्दमुसकान करतेहुये उस कर्णके भाईनेबड़ी जल्दी करके दशबाणों से दुखसे सन्मुख होनेके योग्य अभिमन्युको छत्र ध्वजा सारथी और घोड़ों समेत घायल किया २आपके शूरवीर बाप दादोंके असानुषी कर्मके करनेवाले अभिमन्युको बाणोंसे पीड़ामान देखकर प्रसन्नहुये ३ फिरमन्द मुसकान करते अभिमन्युने एकबाणसे उसके शिरको काटकर गिराया तब वहरथसे पृथ्वीपर गिरपड़ा ४ हेराजा कर्णनेबायुसे कंपित अथवा पर्व्वतसे गिरेहुये कर्णिकार वृक्षके समान भाईको मृतक देखकर अत्यन्त पीड़ाकोपाया ५फिरसुभद्राकापुत्र अभिमन्यु कर्ण को अपनेबाणोंसेमुखफेरने वालाकरके शीघ्रही दूसरेबड़े धनुषधा-

रियोंकेभी सन्मुखगया ६ इसके पीछे बड़ेतेजस्वी महारथी क्रोधभरे अभिमन्यु ने उसबड़ी सेनाको जो कि हाथी घोड़े रथ और पतियों से संयुक्तथी घायलकिया ७ अभिमन्युके बहुत बाणों से पीड़मान कर्ण शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा दूरचलागया उसकेपीछे सेना छिन्न भिन्न होगई ८ हेराजा अभिमन्युके बाणोंसे ऐसे कुछनहीं जानागया जैसे कि टीड़ियोंसे व जलकी धाराओंसे व्याप्तहुये आकाशमें कुछ नहीं जानाजाताहै ९ फिर तीक्ष्णबाणोंसे घायल आपके शूरबीरोंमें राजा सिन्धके सिवाय कोईनियत नहींरहा १० हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र इसकेपीछे पुरुषोत्तम अभिमन्यु शंखबजाकर भरतबंशियों की सेना के ऊपर जापहुंचा ११ और सूखेबनमें प्रज्वलित अग्निके समान अपनेबेगसे शत्रुओंको भस्म करता वह अभिमन्यु सेनाओंके मध्यमें भ्रमण करनेलगा १२ रथ हाथी घोड़े और मनुष्योंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे भस्मकरते उस अभिमन्युने प्रवेशकरके बिना शिर वाले रुण्डोंके समूहोंसे व्याप्तकरदिया १३ अभिमन्युके धनुष से प्रकटहुये उत्तम बाणोंसे घायल और जीवनकी इच्छा करनेवाले शूरबीर सन्मुखतामें बर्त्तमान अपनीही सेनाके मनुष्योंको मारतेहुये भागे १४ वहभयकारी दुखसे सहनेके योग्य कर्मकरने वाले विपाठ रथऔरघोड़ोंकोमारतेहुये शीघ्रही पृथ्वीमेंसमागये १५ स्वर्ण मयी भूषणों से अलंकृत शस्त्र अंगुलित्राण गदा और बाजबन्दोंकी रखनेवाली बहुत भुजायुद्धमें कटीहुई दिखाई देतीथीं १६ कुंडल मालाधारी शिर शरीर खड्ग धनुष और हजारोंबाण पृथ्वीपर गिरे हुये दिखाई पड़े १७ छत्रआदि रथके चक्र ईशादंड मुकुटअक्ष और मथेहुये चक्र और बहुत प्रकार से पड़ेयुग १८ शक्ति धनुष तलवार और गिरीहुई बड़ी २ ध्वजा ढाल धनुषबाण इन सबचारोंओर से फैलीहुई वस्तुओं से १९ और मरेहुये क्षत्रीघोड़े और हाथियोंसे पृथ्वीएक क्षणहीमेंकठिन दुर्गम्यरूप औरभयकारीहुई २० परस्पर पुकारते और घायल होतेहुये राजपुत्रोंके बड़ेशब्द भयभीतोंकोभय बढ़ानेवाले प्रकट हुये २१ हे भरतर्षभ उसशब्द ने सबदिशाओंको

भीशब्दायमान करदिया और अभिमन्युउत्तम घोड़े रथ और हाथियोंको मारता सेनाकी ओरदौड़ा २२ हेभरतबंशी सूखेबनमें छोड़ेहुये अग्निकेसमान वेगसेशत्रुओंको भस्म करताहुआ अभिमन्युसेनाओं के भीतर दिखाईपड़ा २३ उस समय धूलसे सेनाव्याप्त होगईउस दशामें हमने सर्व दिशाविदिशाओंमें भी घूमते हुये अभिमन्यु को नहींदेखा २४हेराजा फिरहमने एकक्षणमेंही हाथी घोड़े औरमनुष्यों की अयुद्दाओं को आकर्षण करनेवाले उसअभिमन्यु को ऐसे देखा जैसेकि मध्याह्न के समय सूर्य्य होताहै २५ हे महाराज इस रीति से शत्रुओंके समूहोंको अत्यन्त संतप्त करतेहुये अभिमन्युको देखा वह इन्द्रका पोता युद्धमें इन्द्रके समान अभिमन्यु सेना में अत्यन्त शोभायमानहुआ २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले युधिष्ठिर की सेनासे कोई वलवान् उस बालक अत्यन्त सुखिया भुजबलसे अहंकारी युद्ध में कुशल वीर कुल को पुत्रशरीर कोप्रीती सेरहितऔरतीनवर्षकी अवस्थावाले उत्तमघोड़ों के द्वारा सेनाओं के मझाने वाले अभिमन्यु के पीछेआया १ । २ संजयबोले युधिष्ठिर भीमसेन शिखंडी सात्यकी नकुलसहदेव धृष्टद्युम्न विराट द्रुपद केकय ३ धृष्टकेतु क्रोधभरे मत्स्यदेशी युद्ध में समीप आये उसी मार्ग से उसके पिता मामाओं के साथचले ४ वह अलंकृत सेना और घायल करनेवाले अभिमन्यु को चाहने वाले सन्मुख दौड़े उन चढ़ाई करनेवाले शूरवीरों को देखकर आप के शूरबीर मुखफेर गये ५ इसके पीछे आपका तेजस्वीजमाई आप के पुत्रकी उसबड़ी सेनाको मुखफेरने वाली देखकर नियत कराने की इच्छासे दौड़ा ६ हेमहाराजसिन्धके राजाकेपुत्र उसराजा जयद्रथने अपने पुत्रको चाहने वाले पांडवोंको सेनाओं समेतरोंका ७ वह बार्द्धक्षत्र का पुत्र उग्र धनुष धारी और वज्रबाणप्रहारी दिव्य

अस्त्रोंको प्रकट करता ऐसे सन्मुख नियत हुआ जैसे कि चौराहेमें हाथी नियत होताहै ८ धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं सिन्ध के राजा परबड़ा भारनियत मानताहूं कि जिस अकेलेने उनक्रोध युक्त और पुत्रको चाहनेवाले पांडवोंको रोका ९ मैं सिन्धके राजामें अत्यन्त अपूर्व्व पराक्रम और शूरताको मानताहूं उस महात्मा के पराक्रम और उत्तमकर्मकोतुमतुझसेकहो १० इसनेऐसाक्याहोमदानऔरतप अच्छे प्रकार से कियाहै जिसके द्वाराअकेले राजा सिन्धने पांडवों को रोका ११ संजयबोले कि जोवह जयद्रथ द्रौपदी हरणमें भीमसेनसे बिजय कियागया उस बरके चाहनेवाले राजाने पूजनकरके बड़े तपको अच्छे प्रकारसे तपा १२ इन्द्रियोंको इन्द्रियों के प्यारे बिषयों से रोककर क्षुधा तृषा और तपके सहनेवाले बड़ेकृश शरीर केवल अस्थिमात्र शरीर १३ उस सनातन ब्रह्म देवता शिवजी की स्तुति करके जयद्रथने पूजाथा उसकेपीछे भक्तोंपर कृपा करनेवाले भगवान् शिवजीने उसपरदयाकी १४ और शयनके समयपर सिन्ध केपुत्रसे कहा कि हे जयद्रथ मैं प्रसन्नहूं क्या बर चाहता है उसको मांग १५ शिवजीके इसप्रकारके बचनको सुनकरसावधानचित्त और नम्रतासे हाथजोड़ सिंधके राजा जयद्रथने कहा १६ किमैं अकेलाही एकरथके द्वारायुद्धमें भयकारी बल पराक्रमवाले पांडवोंको रोकूंयह बरदानचाहता हूं १७ इसके इसबचनको सुनकरदेवताओं के ईश्वर शिवजी जयद्रथसेबोले किहेसौम्यमैं तुझको बर देताहूं कि सिवाय पांडव अर्जुनके १८ चारोंपांडवोंको युद्धमें रोकेगाफिर राजा जयद्रथ तथास्तुकहकर निद्रासेजागपड़ा १९ उसअकेलेने उसबरदान और दिब्य अस्त्रके प्रभाव सेपांडवोंकी सेनाको अच्छीरीतिसे रोका २० उसके धनुषकी प्रत्यंचाऔर तलके शब्दसे शत्रुक्षत्रियोंमेंभय प्रवृत्त हुआ और आपकीसेनाकोबड़ा आनन्दहुआ २१ हेराजा फिरक्षत्री लोगराजासिंधपर नियतहुये सबभारको देखकर बड़ासाहस करके उधर को दौड़ेजिधर को और राजा युधिष्ठिरकी सेना थी २२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विचत्वारिंशोऽध्याय: ४२॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि हे राजेन्द्र जो तुम सिन्धके राजाके पराक्रम को पूछते हो और जैसे वह पांडवोंसे युद्धकरनेवाला हुआ उस सब को मैंकहताहूं तुमसुनो १ आज्ञाकारी और अच्छे लोगोंको सवार करानेवाले वायुके समान वेगवान् प्रसन्नतासे प्रफुल्लित मुख और शिरपरकेवाल सिन्धदेशी बड़े बड़े घोड़े उसकोलेचले २ जिसका विधि पूर्वक गंधर्वनगरके समानरथ अलंकृत कियागया वाराहका चिह्न रखनेवाली महा प्रकाशित उसकी ध्वजा शोभायमानहुई ३ वह जयद्रथ श्वेत छत्र पताका और चमर व्यजनादिक राजचिह्नों से ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि आकाश में ताराओंका स्वामी चन्द्रमा शोभित होताहै ४ उसकावह लोहमयी कवच मोती हीरा मणि और सुवर्णसे जटित होकर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि नक्षत्रादिकोंसे संयुक्त आकाश शोभितहोताहै ५ वड़ेधनुषको चलायमानकरके बाणोंके बहुत समूहोंको फैलाते उसने उस उस खण्डको पूर्णकिया जिस जिसको अभिमन्युने हटायाथा ६ उसने सात्यकी को तीनबाणसे भीमसेनको आठबाणसे धृष्टद्युम्नको साठि बाणों से विराटको दशबाणोंसे७ द्रुपदको तीक्ष्ण पांचबाणों से शिखंडी को सातबाणोंसे केकयोंको पचीसबाणोंसे द्रौपदीके पुत्रोंको तीन तीन बाणोंसे ८ और युधिष्ठिरको सत्तरिबाणोंसे घायलकिया उसकेपीछे शेष बचेहुये शूरवीरोंकोबाणोंके बड़े जालोंसे जोपीड़ामान किया यह भी बड़ा आश्चर्यसाहुआ९ फिर हंसतेहुयेधर्मपुत्र प्रतापवान् राजा युधिष्ठिरने श्वेत और पीततायुक्तभल्लसे उसकेधनुषको लक्षबनाकर काटा १० उसनेएक निमिषहीमें दूसरे धनुषको लेकर दशबाणोंसे पांडवोंको औरतीन तीनबाणोंसे उन अन्यमनुष्योंकोघायलकिया११ भीमसेनने उसकी हस्तलाघवताको जानकर तीन२ भल्लोंसे उसके धनुष ध्वजा और छत्रको शीघ्रतासे पृथ्वीपर गिराया १२ हे श्रेष्ठ उस बलवान्ने दूसरे धनुष को तैयार करके भीमसेनकी ध्वजा

धनुष और घोड़ोंको गिराया १३ वह धनुष टूटा भीमसेन मृतक घोड़ेवाले उत्तम रथसे कूदकर सात्यकी के रथपर ऐसे सवार होगया जैसे कि केशरी सिंह पहाड़की चोटीपर चढ़जाता है १४ इसके पीछे आपके शूरवीर राजा सिन्धके उस श्रद्धाके योग्य अपूर्व्व कर्म को देखकर बहुत श्रेष्ठहै इस बचनको कहते अत्यन्त प्रसन्नहुये१५ जिस अकेलेने अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडवोंको अपने अस्त्रों के तेजसे रोका उसके उसकर्म की प्रशंसा सब जीवमात्रों ने करी १६ फिर अभिमन्युसे मारेहुये मार्गमें मरेहुये हाथियों से दिखलाया हुआ पांडवका मार्ग राजासिंधने रोका १७ और उपाय करनेवाले वह मत्स्य पांचाल केकय और बीर पांडव सन्मुख हुये परन्तु सिन्धके राजाको पराजय नहीं करसके १८ जो जोआपका शत्रु द्रोणाचार्य्यकी सेनाके तोड़नेका उपाय करताथा उस २ को बरपानेवाले राजा सिन्धने रोका १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥

चौवालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि राजासिंधसे बिजयाभिलाषी पांडवों के रुकजाने पर आपके शूरबीरोंका और शत्रुओंका महाघोर और भयकारी युद्धहुआ १ फिर सत्य संकल्प कठिनतासे सन्मुख होनेके योग्य तेजस्वी अभिमन्युने प्रवेश करके सेनाको ऐसेव्याकुल किया जैसे कि समुद्रको मगर भयभीत और व्याकुल करता है २ इस प्रकार बाणोंकी बर्षासे व्याकुल करने वाले शत्रुओंके बिजयी उस अभिमन्युके सन्मुख वह उत्तम रथी हुये जो कि प्रधान गिने जातेथे ३ बाणोंकी बर्षाके उत्पन्न करनेवाले बड़े तेजस्वी उनलोगों का और अभिमन्युका वह युद्ध बड़ाभयकारी और कठिन जारीहुआ ४ उन शत्रुओंके रथोंसे इसप्रकार रुकेहुये अभिमन्यु ने वृषसेनके सारथी को मारकर धनुषको काटा ५ और इसी बलवान्ने सीधे चलने

वाले वाणोंसे उसके घोड़ोंकोभी अत्यन्त घायलकिया फिर वहउन भागनेवाले घोड़ोंकेद्वारा युद्धसे दूर हटाया गया अर्थात् अभिमन्यु केउस अन्तरसे सारथी रथको दूरलेगया इसकेपीछे रथके समूह प्रसन्न होकर पुकारे कि बहुत अच्छा बहुतअच्छा ६ । ७ फिर वसातीय उस सिंहके समान क्रोधी वाणोंसे शत्रुओंको मथनेवाले सन्मुखसे आतेहुये अभिमन्युके समीपआकर शीघ्रही सन्मुख गया ८ उसने सुनहरीपुंखवाले साठिवाणोंसे अभिमन्युको ढकदिया और यह वचन बोला कि मेरे जीवते तू इस युद्धमें बचकर जीवता नहीं छूटेगा ९ अभिमन्युने उसलोहेके कवचधारी विशातपको दूरगिरनेवाले वाणसे हृदयपर घायलकिया तब वह निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा १० हे राजा तब मारनेके अभिलाषी अत्यन्त क्रोध भरे उत्तम क्षत्रियोंने उस मरेहुये विशातपको देखकर आपके पोते को चारों ओरसे घेरलिया ११ वह क्षत्री नानारूपवाले धनुषों को अनेक प्रकारसे चलानेवाले थे वह अभिमन्युका युद्ध शत्रुओं से महा भयकारी हुआ १२ फिर क्रोधयुक्त अभिमन्युने उनके वाण धनुष शरीर और कुंडल समेत मालाधारी शिरोंको काटा १३ तब खड्ग पट्टिश अंगुलित्राण और फरसों समेत कटीहुई सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत भुजा दिखाईपड़ीं १४ माला भूषण वस्त्र और पड़ी हुई बड़ी २ भुजा कवच ढाल हार मुकुट छत्र चामर १५ उपस्कर अधिष्ठान ईशादण्ड कवन्ध अक्ष टूटेहुये चक्र अनेक प्रकारके टूटेहुये जुए अनुकर्ष पताकासारथी घोड़े टूटेरथ और मृतक हाथियों से पृथ्वी व्याप्तहुई १६ । १७ नानाप्रकारके विजयाभिलाषी देशाधिपति मरेहुये शूरवीर क्षत्रियोंसे संयुक्त पृथ्वी बड़ी भयानक वर्तमान होगई १८ उस क्रोधयुक्त युद्धको सब दिशा विदिशाओंमें घूमते हुये अभिमन्युका रूप दृष्टिसे गुप्तहोगया १९ इसके कवच भूषण धनुष और वाणोंका जो २ अंग सुनहरीथा हमने उन सबोंमें से केवल उसीको देखा २० तब कोई पुरुषभी उसवाणों के द्वारा शूरवीरोंको आधीन करनेवाले अभिमन्युके देखनेको ऐसे समर्थ नहीं

हुआ जैसे कि मध्याह्न वर्ती सूर्य्यको कोई देखनेको समर्थ नहीं होताहै २१॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

पैंतालीसवां अध्याय

संजय बोलेकि अर्जुनका पुत्र शूरवीरोंकी आयुर्दाओंका ऐसे हरनेवाला हुआ जैसेकि समय आनेपर काल सब जीवोंके प्राणोंको हरलेताहै १ तब वह इन्द्रके समान पराक्रमी इन्द्रकापोता बलवान् अभिमन्यु सेनाको व्याकुल करता हुआ दिखाईदिया २ हेराजेन्द्र फिर राजाओंके कालरूप अभिमन्युने सेनामें प्रवेश करके सत्यश्रवसको ऐसे मारा जैसे कि गर्जताहुआ व्याघ्रमृगको मारताहै ३ सत्यश्रवसके मारनेपर शीघ्रता करनेवाले महारथी बड़े शस्त्रोंको लेकर अभिमन्युके सन्मुखगये ४ ईर्षा करनेवाले उत्तम क्षत्री पहिले मैं पहिले मैं इस वचन के कहनेवाले अर्जुनके पुत्रको मारनेके अभिलाषी होकर सन्मुखगये ५ अभिमन्यु ने उन चलती और सन्मुख दौड़ती हुई क्षत्रियोंकी सेनाको ऐसे आपने स्वाधीन किया जैसे कि समुद्रकेमध्यमें तिमि नाम जलजन्तु छोटी २ मछलियोंको पाकर अपने स्वाधीन करताहै ६ जो कोई मुख न मोड़नेवाले क्षत्री उसके सन्मुख गये वह फिरकर अर्थात् लौटकर ऐसे नहीं आये जैसे कि सिन्ध नदी समुद्रसे लौटकर नहीं आती ७ समुद्रमें बड़ेग्राहसे पकड़े और बायुके बेगसे पीड़ामान डूबे हुये जहाजके समान वहसेना कंपायमानहुई ८ इसकेपीछे रुक्मरथ नाम मद्रदेशकेराजाकेपुत्रनेउस भयातुरसेनाको विश्वास कराया और यहबचन बोला ९ हेशूरबीरो तुमभय मतकरो मेरे विद्यमान और नियतहोनेपर यह कुछनहींहै मैं इसकोनिस्सन्देहजीवताहुआही पकडूंगा १० वहपराक्रमी इसप्रकारकहकर बड़े सुन्दर अलंकृतशोभितरथपरसवार अभिमन्युके सन्मुखगया ११ और अभिमन्युको तीनबाणोंसेछातीपर और तीन२ बाणोंसे दाहिनी और बाईं भुजाघायल करके बड़े शब्दसे गर्जा १२ उसअर्जुनके पुत्रनेउसके

धनुषकोकाटकरदाहिनी बाईभुजाओंको और सुन्दरनेत्र औरभृकुटी रखनेवालेशिरकोशीघ्रही पृथ्वीपर गिराया १३ अभिमन्युको जीवता हुआपकड़नेके अभिलाषी शल्यके प्यारे रुक्म रथपुत्रको यशस्वी अभिमन्युके हाथसे माराहुआ देखकर १४ युद्धदुर्मद प्रहार करनेवाले रुक्मरथके समान अवस्था सुनहरी ध्वजा रखनेवाले १५ महाबली तालवृक्षके समान बारंबार धनुषोंको खैंच तेजकुमारोंने बाणोंकी वर्षासे अर्जुनके पुत्रको चारोंओरसे रोंका १६ पराक्रम और शिक्षा से युक्त तरुणअवस्थावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त शूरोंसे युद्धमें उसअकेलेशूर अजेय अभिमन्युको१७बाणोंके समूहोंसे ढकाहुआ देखकर दुर्योधन बड़ा प्रसन्नहुआ और उसको यमराजके भवनमें गयाहुआ माना १८ उन राजकुमारोंने एकनिमिषमेंही अर्जुनके पुत्रको सुनहरी पुंखवाले अनेक चिह्नधारी सुन्दर बेतरखनेवाले बाणोंकेद्वारा दृष्टिसे अगोचर करदिया १६ हेश्रेष्ठ हमने उसके उसरथ को सारथी घोड़े और ध्वजासमेत छिपाहुआ टीड़ियोंसे व्याप्तके समान देखा २० जैसेकि चाबकोंसे पीड़ामान हाथीहोताहै उसीप्रकार अत्यन्त घायल और पीड़ामानमहाक्रोध युक्तउस अभिमन्युने गन्धर्वअस्त्रों समेत बहुतसी मायाओंको प्रकटकिया २१ अर्जुनने तपस्याओं को करके तुंबुरु आदिक गंधर्वोंसे जो अस्त्रलिये उन्हींमेंसे एक अस्त्र करके उन शत्रुओंको इसनेभी अचेतकरदिया २२ हेराजा वह युद्ध में शीघ्रही अस्त्रोंको दिखलाता हुआ बनेटीके समान एकप्रकार दो प्रकार और अनेकों प्रकारोंसे दिखाईदिया २३ फिर उस शत्रुसंतापीने रथ और अस्त्रोंके भ्रमण चक्रकी मायासे सबको अचेत करके उन राजाओंके शरीरोंको सौ२ प्रकारसे काटा २४ हेराजा युद्धमें तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे भेजेहुये राजाओं के प्राणों ने परलोक कोपाया और मृतकशरीर पृथ्वीपर गिरपड़े २५ अर्जुनके पुत्रने तीक्ष्ण शरोंसे उनसबके धनुष घोड़ेसारथी ध्वजा और बाजूबन्दों समेत भुजाओं समेत शिरोंकोकाटा २६ जैसे कि पांचवर्षका लगाया हुआ आंवोंका फलवान् बागकाटाजाताहै इसीप्रकार अभिमन्यु

के हाथसे राजकुमारोंका एकसौ मनुष्योंका समूह गिराया गया २७ क्रोधयुक्त सर्पोंके समान सुकुमार सुखके योग्य राजकुमारोंको अकेले अभिमन्युके हाथसे मराहुआ देखकर दुर्योधन बड़ाभयभीत हुआ २८ और अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर दुर्योधन रथहाथी घोड़े और पदातियोंकेमर्दन करनेवाले उसअभिमन्युको देखकर शीघ्रहीसन्मुखआया २९ एक क्षणभरतक तो उनदोनोंका बड़ाकठिन युद्ध हुआ उसकेपीछे सैकड़ोंबाणोंसे घायल आपका पुत्र मुखफेरगया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे सूत तू जिसप्रकार एकका बहुतोंके साथ कठिन और भयकारी युद्धको और उसी महात्मा की बिजय को जैसे मुझसे कहता है १ अभिमन्युका पराक्रम श्रद्धाकेअयोग्य अद्भुत है फिर क्या उन्होंका पराक्रम अत्यन्त अपूर्व नहीं है जिन्होंका कि रक्षाश्रयधर्म है २ और दुर्य्योधन के मुख फेरने और राजकुमारोंका सैकड़ा मरने पर मेरे शूरबीरों ने अभिमन्यु के बिषय में किस कर्मके ज्ञान को पाया ३ संजयबोले कि अत्यन्त शुष्क मुख चलायमान अर्थात् भैचक नेत्र प्रस्वेदोंसे युक्त रोमांच खड़े भागने में प्रवृत्त चित्त शत्रुकी बिजय में असाहसी वह आपके शूरबीर ४ मरे हुये पिता भाई बेटे मित्र नातेदार और बान्धवों को छोड़ २ अपने २ घोड़े हाथी आदिको शीघ्रतासे चलातेहुये हट गये ५ उन सबको उस प्रकार से अलग २ हुआ देख कर द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा वृहद्बल कृपाचार्य्य दुर्य्योधन कर्ण कृतवर्मा शकुनि ६ यह सब अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उस अजेय अभिमन्युके सन्मुख दौड़े हे राजा फिर वह भी आपके पौत्रसे मुखों को मोड़ गये ७ सुखसे पोषण किया हुआ बालकपने में अहंकार से निर्भय बाण अस्त्रोंका ज्ञाता बड़ा तेजस्वी लक्ष्मण अकेलाही अभिमन्यु के सन्मुखगया ८ और उसका पिता पुत्रको चाहता हुआ उसके पीछे चलने

वाला होकर फिर लौटा और दुर्य्योधन के पीछे दूसरे महारथी भी लौटे ९ उन्होंने उसको वाणों से ऐसे सींचा जैसे कि जलकी धाराओंसे बादल पर्व्वत को सिंचन करता है फिर उस अकेलेने उनको ऐसे अत्यन्त मर्द्दन किया जैसे कि बायु संसारी बादलों को मर्द्दन करताहै १० अर्जुनके पुत्र अभिमन्युने उस निर्भय प्रिय दर्श-नीय पिताके सन्मुख वर्त्तमान शूरवीर ऊंचा धनुष करनेवाले बड़े सुख पूर्व्वक लालन किये हुये कुवेर के पुत्रकी समान आपके पौत्र लक्ष्मणको युद्धमें सन्मुख पाया ११।१२ शत्रुओं के वीरोंके मार-नेवाले अभिमन्युने लक्ष्मण से भिड़कर अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले तीव्र वाणों से छाती और भुजाओं पर घायल किया १३ हे महा-राज अत्यन्त घायल सर्पके समान क्रोधयुक्त आपकापोता आपके दूसरे पोतेसे बोला १४ कि लोकका दर्शन अच्छी रीतिसे करो परलोकको जावोगे मैं तुमको सब बांधवोंके देखते हुये यमलोक में पहुंचाताहूं १५ शत्रुओंके वीरों के मारनेवाले महाबाहु अभि-मन्यु ने इस प्रकार कहकर कांचली से रहित सर्प के समान भल्ल को हाथमें लिया १६ उसकी भुजा से छूटे हुये उस भल्लने उस लक्ष्मण के शिरको जो कि सुन्दर नाक केशान्त और कुंडलोंसे शोभितथा काटकर गिराया १७ सेना के लोग लक्ष्मण को मरा हुआ देखकर हाय हाय पुकारे इसके पीछे पुत्रके मरनेसे क्रोध युक्त क्षत्रियों में श्रेष्ठ दुर्य्योधन १८ क्षत्रियों को पुकारा कि इसको मारो इसके पीछे द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण अश्वत्थामा वृहद्वल १९ हार्दिक्य का पुत्र कृतवर्मा इन छः रथियोंने अभिमन्युको चारों ओर से घेर लिया अर्जुन का पुत्र उनकोभी अपने तीक्ष्ण वाणोंसे मुखके फेरने वाला करके २० क्रोध युक्त होकर सिंधके राजाकी सेनापर दौड़ा कलिंग निषाद और क्राथके पराक्रमी पुत्र हाथियों की सेनासे अलंकृत इन सबने उस अभिमन्युके मार्ग को रोका हे राजा वह युद्ध भी बड़ा कठिन हुआ २१।२२ इसके पीछे क्राथने वाणों के समूहों से अभिमन्यु को बहुत अच्छा ढका उसके पीछे

द्रोणाचार्य्य आदिक अन्य सब रथी भी फिर लौटे २३। २४ और परम अस्त्रों को चलाते हुये अभिमन्युके सन्मुख गये अभिमन्युने बाण से उनको हटाकर फिर क्राथके पुत्रको पीड़ामान किया २५ शीघ्रता करनेवाले अभिमन्युने मारने की इच्छा से धनुष बाण और केयूर नाम भूषणों समेत उसकी दोनोंभुजा और मुकुट समेत शिरको २६ और छत्र ध्वजा और सारथी समेत रथको और घोड़ों को गिराया कुलवान् प्रिय भाषी वेदज्ञ पराक्रमी कीर्त्ति और अस्त्र बलसे संयुक्त उस बीरके मरने पर दूसरे बहुधा शूरबीर लोग मुखोंको फेर गये २७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि इस प्रकार सेनामें प्रबिष्ट तरुण अवस्था वाले अजेय सुभद्राके पुत्रनकुलके समान कर्मकरनेवाले कभीयुद्धों में पराजय नहोनेवाले १ अच्छे पराक्रमी छःबर्षके अवस्थावाले आजानेयजातिके घोड़ों से संयुक्त और आकाशमें चेष्टा करनेवालेके समान अभिमन्युको किनशूरोंने रोका २ संजय बोलेकिपाण्डव नन्दनअभिमन्युने सेनामें प्रबेशकरके इनआपके सबशूरबीर राजाओंके मुखोंको फेरदिया ३ फिर द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण अश्वत्थामा वृहद्बलहार्दिक्यका पुत्र कृतबर्मा इन छवोंरथियोंनेउस कोचारोंओरसे घेरलिया ४ हे महाराज फिरआपकी सेनाके लोग राजासिंधकेऊपर बड़ेभारी बोझेको देखकर युधिष्ठिरके सन्मुख दौड़े ५ और दूसरे महाबली शूरबीर तालवृक्षके समान बड़े २ धनुषोंको खैंचते हुये बाणरूपी जालोंसे अभिमन्युके ऊपर बर्षा करनेलगे६ शत्रुओंके बीरों के मारने वाले अभिमन्युने युद्धमें बाणोंसे इनसब बड़े२धनुषधारी और सब बिद्याओं में पूर्ण लोगोंको रोका ७ द्रोणाचार्य्य को पचासबाणों से वृहद्बलको बीस बाणोंसे कृतबर्माको अस्सीबाणोंसे और कृपाचार्य्य को साठ बाणों से घायल किया ८ अर्जुन के पुत्रने सुनहरी पंख

वाले बड़े वेगवान् कान तक खिंचे हुये दशवाणों से अश्वत्थामा को घायल किया ९ और पीतरंग के तीक्ष्ण उत्तम बाणों से शत्रुओं के मध्यमें कर्णको कानके ऊपर घायल किया १० फिर कृपाचार्य्य के घोड़ों को और दोनों ओरके रक्षकों समेत सारथी को गिराकर उनकोभी दशवाणों करके छातीपर घायल किया ११ इसकेअनन्तर उस बलवान्ने आपके शूरवीर पुत्रोंके देखते हुये कौरवोंके कीर्त्ति बढ़ानेवाले वीर वृन्दारक को मारा १२ अश्वत्थामाने उस निर्भय के समान उत्तम २ शत्रुओं के पीड़ा देनेवाले अभिमन्यु को क्षुद्रक नाम पच्चीस वाणोंसे घायल किया १३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर उस अभिमन्यु ने आपके पुत्रोंके समक्षमें अश्वत्थामा को शीघ्रही तीक्ष्ण वाणों से घायल किया १४ अश्वत्थामाने तीक्ष्णधार और उत्तम वेत रखने वाले साठि वाणोंसे उसको घायल करके ऐसे कंपित नहीं किया जैसे कि मैनाक पर्वतको कंपित नहीं करसक्के १५ उसबड़े तेजस्वी बलवान्ने सुनहरी पुंखऔर सीधे चलनेवाले तिहत्तरि वाणों से अप्रिय करनेवाले अश्वत्थामाको घायल किया १६ फिरपुत्रको चाहने वाले द्रोणाचार्य्य ने उसपर सौ वाण गिराये इसी प्रकार पिताके चाहने वाले अश्वत्थामाने युद्ध में आठवाण मारे कर्णने बाईस भल्लोंको कृतवर्माने बीसवाणों को वृहद्बलने पचासवाणोंको और शारद्वत कृपाचार्य्यने दशवाणोंको मारा १७।१८ सब ओरसे उनके तीक्ष्ण वाणोंसे पीड़ामान अभिमन्युने उन सबको दश २ वाणों से घायल किया १९ कौशिल देशियों के राजाने उसको कर्णीनाम वाणसे हृदयमें घायल किया उसने उसके घोड़े ध्वजा धनुष और सारथी को पृथ्वीपर गिराया २० फिर रथसे रहितढाल तलवार रखनेवाले राजा कौशिलने अभिमन्यु के शरीरसे कुंडल-धारी शिरको काटना चाहा २१ उसने कौशिल देशियोंके स्वामी राजपुत्र वृहद्बलको वाणों से हृदय पर घायलकिया और हृदयमें घायल होकर पृथ्वीमें गिरपड़ा २२ अयोग्य और अशुभ वचनोंको बोलते महात्माने खड्ग धनुषधारी राजाओं के दशहजार यूथको

छिन्नभिन्न किया २३ इसरीतिसे वृहद्बलको मारकर सुभद्राकापुत्र युद्धमेंघूमनेलगा और उसीदशामें बड़ेधनुषसेआपके शूरबीरोंकोबाण रूपजालोंकी बर्षासेरोका २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अरतालीसवां अध्याय॥

संजयबोलेकि उसअर्जुनके पुत्रनेकर्णीनाम बाणसेकर्णको फिर घायलकिया और अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर उसने पचासबाणसेफिर घायलकिया १ तबकर्णने भी उतनेही बाणोंसे उसको घायलकिया हे भरतबंशी उन बाणोंसे संयुक्त सबशरीर के अंगोंसमेत वहअभिमन्यु बहुतही शोभायमान हुआ २ फिरउस क्रोधयुक्त अभिमन्युने कर्ण कोभी रुधिरकी वेदनाओं से युक्त करदिया ३ और बाणों से जटित और रुधिरसे लिप्त वह दोनों महात्मा फूलेहुये किंशुक वृक्ष के समान शोभायमान हुये ४ इसके पीछे अभिमन्युने कर्ण के छः मंत्रियों को जोकि बड़ेशूर और उत्तम युद्धके करने वालेथे घोड़े सारथीरथ और ध्वजाके समेत मारा ५ इसी प्रकार निर्भय अभिमन्युने दश २ बाणोंसे अन्य २ धनुषधारियों को घायल किया वह आश्चर्य्यसा हुआ ६ इसी प्रकार छः बाणों से राजा मगध के तरुण पुत्र अश्वकेतु को घोड़े और सारथी समेत मारकर गिराया ७ इसके पीछे ध्वजामें हाथीका चिह्न रखने वाले राजामार्तिकावर्तिकभोज नामको क्षुरप्रसे मथकर बाणोंको छोड़ता हुआ गर्जा ८ दुश्शासन के पुत्रने चारबाणों से उसकेचारों घोड़ों को घायलकरकेएक बाणसे सारथी और दश बाणों से अभिमन्यु को घायल किया ९ इसके पीछे अभिमन्यु सात बाणों से दुश्शासन के पुत्रको घायल करके क्रोधसे रक्तनेत्र उच्चस्वर से इस बचन को बोला १० तेरापिता नपुंसक के समान युद्धको त्याग करके गया तूभी प्रारब्ध से युद्ध करना जानता है अब नहीं बचसक्ता है ११ इतना बचन कहकर कारीगरके साफ कियेहुये नाराच को

उस पर छोड़ा तब अश्वत्थामाने उसको तीन बाणों से काटा १२ अभिमन्युने उसकी ध्वजाको काटकर तीनबाणोंसेशल्यको घायल किया शल्यने नव बाणों से उसको घायल किया १३ अर्थात् निर्भय के समान हृदय पर घायल किया हे राजा यह भी आश्चर्य्यसा हुआ अर्जुन के पुत्रने उसकी ध्वजा को काट दोनों ओरके रक्षकों को संहार कर १४ उसको छः लोहेके बाणों से घायल किया वह दूसरे रथ में सवार हुआ शत्रुंजय चन्द्रकेतु मेघवेग सुवर्चस १५ सूर्य्यभास इन पांचों को मारकर शकुनी को घायल किया शकुनी तीनबाणों से घायल करके दुर्योधन से बोला १६ हमसब मिलकर इसको मथन करें क्योंकि यह हम एक एकको मारता है फिर सूर्य्य का पुत्र कर्ण युद्धमें द्रोणाचार्य्य से बोला १७ कि यह पहलेही से हम सब को मथन करता है इसके मारने को शीघ्र हमसे कहो इसके पीछे बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्यजी उन सबसे बोले कि १८ इस कुमारका कुछ छिद्रहो देखो अब सबदिशाओं में घूमते हुये इसका छोटाहीसा छिद्र है १९ इस नरोत्तम पांडवके पुत्रके उस छिद्रको शीघ्रतासे देखो इसका धनुष मंडलही रथके मार्गोंमें दिखाई पड़ताहै २० जोकि विशेष नाम बाणोंको धनुपपर चढ़ा २कर शीघ्रता से छोड़ने वाला है फिर यह शत्रुओंके वीरोंका मारने वाला अभिमन्यु शायकों से मेरेप्राणोंको पीड़ित और मोहित करता हुआ मुझ को अत्यन्त प्रसन्न करता है अर्थात् यहशत्रुओंके वीरोंका मारनेवालाअभिमन्यु मुझको अत्यन्त प्रसन्नकरताहै २१।२२ क्रोधयुक्तमहारथी इस हस्तलाघव और बड़े तीक्ष्णबाणोंसे सर्वदिशाओंको चलायमान करतेहुयेभी अभिमन्युके अन्तर अर्थात् छिद्रको नहीं देखतेहैं २३ मैं युद्धमेंगांडीवधनुष धारी कोभी ऐसी मुख्यताको नहीं देखताहूं अर्थात् अर्जुन और अभिमन्यु में कुछ अन्तर नहींहै इसके पीछे अभिमन्युके बाणोंसे घायलहुआ कर्ण फिर द्रोणाचार्य्यसे बोला २४ नियतहोना योग्यही है इसी हेतुसे कि अभिमन्युसेपीड़ामानहोकर भीमैं युद्धमें नियतहूं इसकुमार

के बाणबड़े भयकारी हैं २५ अब अग्निकी समान प्रकाशित भय-
कारी उसके बाणमेरे हृदयको पीड़ादेतेहैं यहसुनकर हंसतेहुये आ-
चार्य्यजी उसकर्णसे बोलेकि २६ इसका कवच अभेद्यहै अर्थात्टूट
नहीं सक्ताहै और युवापुरुष शीघ्रतासे पराक्रम करनेवाला है मैंने
इसके पिताको कवचका धारण करना सिखलायाहै २७ यहशत्रुके
पुरका विजय करने वाला अभिमन्यु निश्चय करके उससबको
जानताहै इसका धनुष और प्रत्यंचा अच्छीरीति से चलायेहुये बा-
णोंसे काटना संभवहै २८ इसीप्रकार लगाम घोड़े पृष्ठरक्षक और
सारथीकाभी मारना संभवहै हेबड़े धनुषधारी कर्णतुम जोसमर्थ
होतो यहीकरो २९ इसकेपीछे उसको मुख फिरवाके प्रहारकरो
धनुषका रखनेवाला यह देवता और असुरोंसेभी विजय करना
संभवनहींहै ३० जो तुम चाहतेहोतो इसका रथ और धनुषसेरहित
करो सूर्य्यके पुत्रकर्णने आचार्य्यजीके उस बचनको सुनकर शीघ्र-
तासे ३१ उस हस्तलाघव और धनुष खैंचनेवालेके धनुषकोप्रस्तक
बाणोंसे काटा भोजने उसके घोड़ों कोमारा और कृपाचार्य्यने पृष्ठ
रक्षक समेत सारथीको मारा ३२ फिरशीघ्रता करनेवाले बाकीछः
महारथियोंने उस टूटे धनुष और विरथको बाणोंकी बर्षाओं से
ढकदिया ३३ उन निर्दयलोगोंने बाणोंकी बर्षासे अकेले बाल-
कको ढकदिया वह टूटे धनुष रथसे विहीन ढालतलवारका रखने
वाला श्रीमान् अभिमन्यु अपने धर्मको पालनकर्त्ता आकाशसेगिरा
और कौशिक आदिक मार्गोंसे और हस्तलाघवता पूर्व्वकपरा-
क्रमसे ३४।३५ ऐसे अत्यन्त घूमनेलगा जैसे कि पक्षियोंका राजा
गरुड़ भ्रमण करता है आकाशमें खड्ग हाथमेंलिये प्रत्येककोऐसा
दिखाईदेतहुआ कि यह मेरेही ऊपर गिरताहै इस हेतुसे ऊपरको दृष्टि
करनेवाले ३६ युद्धमें छिद्र देखनेवाले शूरबीरोंने उस बड़े धनुष
धारीको पीड़ामान किया द्रोणाचार्य्यने उसकी मुष्टिकासमेत मणि
जटित खड्गको काटा ३७ अर्थात् शत्रुके विजय करनेवाले और
शीघ्रता करनेवाले बड़ेतेजस्वी द्रोणाचार्य्यने उसकी खड्ग संयुक्त

मुष्टिकाको क्षुरप्र सेकाटा कर्णने उसकी उत्तम ढालको तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे तोड़ा तलवार और ढालके टूटनेपर बाणोंसे भराहुआ शरीर वह अभिमन्यु फिर अन्तरिक्ष से पृथ्वीपर नियत हुआ और क्रोधसेभराहुआ रथकेचक्रको उठाकर द्रोणाचार्य्यकेसन्मुखदौड़ा ३६ अत्यन्त उज्ज्वलचक्रकोहाथमें रखनेवाला भ्रमणासे उत्पन्नउज्ज्वल धूलिसे शोभायमान शरीरवाला वह अभिमन्यु प्रकाशमान हुआ और वासुदेवजी के समान कर्मकोकरता युद्धमें एक क्षणभर को तो रुद्ररूप हुआ ४० गिरे हुये रुधिरसे रंगेहुये सब वस्त्र और भृकुटी पुटोंसे अत्यन्त व्याकुल बड़े सिंहनादों का करने वाला समर्थअतुल पराक्रमी अभिमन्यु युद्धमें उत्तम राजाओं के मध्यमें वर्त्तमान होकर अत्यन्त शोभायमान हुआ ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय॥

संजय बोले कि विष्णु की भगिनी को प्रसन्नता का उत्पन्न करने वाला विष्णुजीकेही शस्त्रोंसे अलंकृत दूसरे श्रीकृष्णके समान अतिरथी अभिमन्यु युद्धमें शोभायमान हुआ १ उस वायु से गिरे हुये के शान्त उत्तम शस्त्रों के उठाने वाले देवताओं से भी दुःखसे देखने के योग्य शरीरको देखकर २ व्याकुल चित्त वाले राजाओं ने उस चक्रको अनेक प्रकारसे काटा इसके पीछे उस महारथी अभिमन्यु ने बड़ी भारी गदाको लिया ३ उन शत्रुओं से धनुष रथ खड्ग और चक्रसे रहित किये हुये गदा हाथमेंलिये अभिमन्यु ने अश्वत्थामा को पीड़ामान किया ४ वह नरोत्तम अश्वत्थामा जो वज्रके समान प्रकाशित उठाये हुये गदा को देखकर रथके बैठने के स्थान से तीन चरण हटगये ५ अभिमन्यु गदा से उस के घोड़ों को मारकर उसके पृष्ठ रक्षकसमेत सारथीको मारता हुआ बाणों से भरा हुआ घायल शरीर वाला दिखाई पड़ा ६ उसके पीछे सौबलके पुत्रकालिकेय कोमारा और उसके अनुगामी

सतत्तरि गान्धार देशियों को भी मारा ७ फिर दशरथी विशातय लोगोंको मारा और केकयों को सातरथ और दश हाथियों को मार कर ८ गदासे दुश्शासन के पुत्र के रथको घोड़ों समेत मारा हेश्रेष्ठ इसके पीछे क्रोधयुक्त दुश्शासनकापुत्र गदा को उठाकर ९ अभिमन्यु के सन्मुख जाकर तिष्ठ २ इस बचनको बोला वह गदा धारी बीर परस्पर में मारने को अभिलाषी दोनों शत्रु ऐसे प्रहार कर्त्ता हुये जैसे कि पूर्व्व समय में त्र्यंबक और अन्धक युद्ध करने वालेहुये थे वह दोनों पुरुषोत्तम गदाओंसे परस्परमें प्रहार करके पृथ्वीपर गिर पड़े ११ शत्रुओंके तपाने वाले वह दोनों युद्ध के बीच में पड़ेहुये इन्द्र ध्वजाके समान दिखाईदिये इसके पीछे कौरवों की कीर्त्ति के बढ़ानेवाले दुश्शासनके पुत्रने उठकर १२ उठतेहुये अभिमन्युको गदासे मस्तक पर घायल किया गदाके बड़ेबेग और परिश्रमसे अचेत १३ शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला अभिमन्यु निश्चेष्ट होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजा इसप्रकार वह अकेलाहो बहुत से शूरबीरोंसे युद्धमें मारागया १४ जैसेकि हाथी नलनीको छिन्न भिन्न करतेहैं उसी प्रकार सबसेनाको ब्याकुल करके वह माराहुआ बीर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि ब्याधाओं करके माराहुआजंगलीहाथी होताहै १५ उस प्रकार गिरेहुये उस शूरबीरको आपके बीरोंने चारों ओरसे ऐसे घेरलिया जैसे कि शिशिरऋतु में अर्थात् माघफाल्गुनके अन्तमें बनको भस्म करके शान्तहुई अग्निको घेर लेतेहैं १६ वृक्षकी शाखाओंको मर्द्दनकरके लौटेहुये वायुकेसमान भरत बंशियोंकी सेनाको तपाकरअस्त हुये सूर्य्यके समान अथवा ग्रसेहुये चन्द्रमाके सदृश सूखेसमुद्र के तुल्य पूर्णचन्द्रमाके समान मुख वाले बालोंसे संयुक्त नेत्र १८ उस अभिमन्युको पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर वह आपके महारथी बड़े आनन्दमें भरेहुये सिंहके समान बारंबार गर्जे १९ हे राजा आपके पुत्रोंको बड़ा आनन्दहुआ और दूसरे शत्रुओंके नेत्रों से अश्रुपात गिरे २० हे-राजा आकाश से गिरे हुये चन्द्रमाके समान पड़ेहुये बीर अभि-

मन्युको देखकर पृथ्वी और आकाशके मध्यमें सब जीव पुकारे २१ कि द्रोण कर्ण आदिक छः रथियों के साथ धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रोंसे मारा हुआ यह अकेला अभिमन्यु सोता है हमने इसके मारने में धर्म नहीं माना किन्तु इन सबने इसको अधर्म से मारा है २२ इसबीरके मारनेपर पृथ्वी ऐसी अत्यन्त शोभायमान हुई जिसप्रकार नक्षत्र मंडलका रखनेवाला आकाश सूर्य्य और चन्द्रमा से शोभाय मान होता है २३ सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे पूर्ण अत्यन्त रुधिर से भरेहुये और शूरवीरोंके शोभा देनेवाले कुंडल धारी शिरों से पृथ्वी शोभायमान हुई २४ विचित्र प्रस्तों में और पताकाओं से संयुक्त चामरझूलें और खंडित उत्तम चमर २५ घोड़े मनुष्य और हाथियों अच्छे प्रकाशित भूषणोंसे और कांचली से निकले हुये सर्पोंके समान विषसे बुझायेहुये तीक्ष्णधार खड्ग कटे हुये नानाप्रकार के धनुष शक्ति दुधारे, खड्ग, प्रास, कम्पन और अन्य २ प्रकार के नानाशस्त्रोंसे संयुक्त होकर पृथ्वी शोभायमान हुई २७ अभिमन्युसे गिरायेहुये श्वासोंको लेते रुधिरसे भरेहुये सवारों से रहित निर्जीव घोड़ोंसे भी पृथ्वी दुर्गम्य होगई २८ बहुमूल्य अंकुशकवच शस्त्र ध्वजा और विशिखनाम बाणों से मथेहुये पर्व्वताकार हाथियों से २९ घोड़े सारथियों समेत पृथ्वीपर गिरेहुये शूरबीरों से व ह्रदोंके समान क्षुभित मरेहुये उत्तमहाथियोंसे ३० नानाप्रकार से शस्त्रोंसे अलंकृत मरेपदातियों के समूहों से पृथ्वी भयभीतों के भयों की उत्पन्न करनेवाली भयानक रूप की होगई ३१ चन्द्रमा और सूर्य्यके समान प्रकाशमान उस अभिमन्युको देखकर आप के शूर वीरोंको बड़ा आनन्द और पांडवोंको बड़ा खेदहुआ ३२ हे राजा उस बालक और तरुणता न पानेवाले अभिमन्यु के मरनेपर सबसेना धर्मराज के देखतेहुये भागी ३३ अजात शत्रु युधिष्ठिर उस अभिमन्युके गिराने पर सेनाको छिन्न भिन्न देखकर उनवीरों से यह वचन बोले ३४ कि यह शूर स्वर्गको गया जो कि मुख फेर कर नहीं मारागया नियत होजाओ भय मत करो हम युद्ध

से शत्रुओंको बिजय करेंगे ३५ इस प्रकार शोक युक्तोंसे वार्त्तालाप करते बड़े तेजस्वी और प्रकाशमान शूरबीरों में श्रेष्ठ धर्मराजने दुःखको सहा ३६ वह अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु पहिले युद्ध में सर्पके बिषके रूप शत्रुहुये राजकुमारोंको मारकर पीछे से युद्ध में सन्मुख गया ३७ श्रीकृष्ण और अर्जुनके समान अभिमन्यु दश हजार शूरबीर और महारथी कौशिलों को मारकर निश्चय इन्द्रलोक को गया ३८ वह पवित्रकर्म्मी हजारों रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों को मारकर युद्धसे तृप्त न होनेवाला शोचने के योग्यनहीं है उसने पवित्र कर्म्मोंसे बिजय किये हुये उन उत्तम लोकों कोपाया जोकि पवित्र कर्म्मी जीवोंके लोकहैं ३९॥

इतिश्रीमन्महाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः४९॥

पचासवां अध्याय॥

संजय बोले कि फिर हम उन्होंके उत्तम रथोंको मारकर उनके बाणोंसे पीड़ामान रुधिर भरेहुये शरीरों से सायंकाल के समय अपने डेरोंकोगये १ हे राजा हम और दूसरे लोग धैर्य्यसे युद्ध भूमि को देखते ग्लानिको प्राप्तहोकर महा व्याकुलता पूर्व्वक हटगये २ इसके पीछे दिवस के अन्तमें शृगालों के शब्दों समेत अशुभ रूप संध्या बर्त्तमान हुई अस्ताचल पर्व्वतको पाकर कमल और आपीड़ के समान सूर्य्य के बर्त्तमानहोनेपर ३ श्रेष्ठ खड्ग शक्ति कवचढाल और भूषणों के प्रकाशों को आकर्षण करते स्वर्ग और पृथ्वीको एकसा करते सूर्य्यने अपने प्यारे शरीर रूप अग्नि को प्राप्तकिया ४ बड़ेबादलों के समूहके समान बज्रसे गिराये हुये पर्व्वत के शिखर के तुल्य बैजयन्तीमाला अंकुश कवच और हाथीवानों समेत गिरायेहुये अनेकहाथियों से युक्त पृथ्वी बड़ी दुर्गम्यहुई ५ जिनके स्वामी मारे गये वह सब सामान चूर्णहुई घोड़े और सारथी मारे गये पताका और ध्वजा टूटीं उन बिध्वंस किये हुये रथोंसे पृथ्वी ऐसे शोभित होगई ६ हेराजा जैसे कि शत्रुओंसे नाश किये

हुये पुरोंसे शोभित होतीहै सवारोंके साथमरेहुये रथ और घोड़ोंके समूहोंसे और पृथक् २ प्रकार के टूटेहुये सामान और भूषणों से और निकली हुई जिह्वा दांत नेत्र और आंतोंसे पृथ्वी भयानक और अशुभ रूप देखने में आई ७ जिनके कवच भूषण वस्त्र और शस्त्र टूटे और हाथी घोड़ेरथ और आगे पीछे के मनुष्योंका नाश हुआ वह वहु मूल्य सैया और उपरिधान समेत परिधानोंके योग्य मरे हुये बीर अनाथों के समान पृथ्वी पर सोतेहैं ८ युद्धमें कुत्ते शृगाल काक बक गरुड़ भेड़िये तरक्ष और रुधिर पीनेवाले पक्षी और महाभयानक राक्षस और पिशाचों के समूह अत्यन्त प्रसन्न हुये ९ खालको फाड़कर बसाओंके रुधिर को पीते और बसामांस को खाते बहुत से मृतकों को खेंचते बसा को काट २ कर हंसते और गातेहैं १० शरीरोंके समूहों की बहाने वाली रुधिर रूप जल रथरूप नौका हाथीरूपी पर्व्वतोंसे दुर्गम्य मनुष्योंके शिररूप पाषाण मांस रूपकीच और नानाप्रकारके टूटेअस्त्रोंकी मालारखने वाली ११ भयकारी वैतरणीके समान दुर्गम उत्तम शूरबीरोंसेउत्पन्न की हुईनदीयुद्ध भूमिमें जारीहुई जोकि अत्यन्त भयको उत्पन्नकरने वाली और मृतक जीवोंकी बहाने वालीथी १२ जिसनदीमें भयानक रूप पिशाचोंके समूह खाते पीते और शब्दोंको करतेहैं और जीवों के नाश करनेवाले समान भोजन वाले अत्यन्त प्रसन्न कुत्ते शृगा-ल और पक्षीभी १३ जिसमें वर्तमान थे फिर सायंकाल के समय धैर्य्यसे देखते हुये मनुष्योंने उस भयानक दर्शन यमलोक की वृद्धि करने वाले उठे हुये और नृत्य करते हुये धड़ोंसे व्याकुल युद्धभूमि कोत्याग किया १४ तब मनुष्योंने बड़े लोगोंके योग्य और टूटे हुये भूषणों से रहित इन्द्रके समान बड़े पराक्रमी गिराये अभिमन्युको ऐसे युद्धमें देखा जैसे कि हव्यसे रहित अग्निको अग्नि होत्र वाली शालामें देखतेहैं १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

चौथेदिनकेयुद्धकाप्रारंभ ॥

संजय बोले कि उस बड़े पराक्रमी और महारथी अभिमन्युके मरने पर रथ और कवच से रहित धनुष को त्यागने वाले सब शूर वीर १ अभिमन्युमें प्रवृत्त चित्त उसी युद्ध को ध्यान करते हुये धर्म राज युधिष्ठिरको घेरकरके समीप बैठ गये २ इसके पीछे अपनेभती जे महारथी अभिमन्युके मरने परबड़े शोक ग्रस्त होकर राजा युधि-ष्ठिरने बिलाप किया ३ यह अभिमन्यु मेरे प्रिय करनेकी इच्छा से द्रोणाचार्य्य की महा अजेय सेनाको पराजयकरके व्यूहमेंऐसेप्रवेश कर गया जैसे कि बैलोंके मध्यमें केसरीसिंह प्रवेशकर जाताहै ४ बड़े धनुष धारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद शूरवीर जिसकी सेनाकेसन्मुख गये हुये पराजय होकर लौटे ५ जिसने युद्ध में हमारे बड़े शत्रु सन्मुख आयेहुये दुश्शासनको शीघ्रही बाणोंसे मुख फेरने वाला करके अचेतकिया ६ उस अर्जुनके पुत्रने कठिनतासे वृद्धिके योग्य द्रोणाचार्य्यकी सेनारूपी समुद्रकोतरकर दुश्शासनके पुत्रको पाकर सूर्य्यकेपुत्र यमराजकेलोकको पाया ७ सुभद्राकेपुत्रअभिमन्युकेमरने पर पांडव अर्जुनको अथवा प्यारे पुत्रकोन देखने वालीमहाभागा सुभद्राको कैसे देखूंगा ८ और हमउनदोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन से प्रयोजनसे रहित युक्तिके बिना इस अप्रिय बचनको कैसेकहेंगे ९ प्रिय चाहनेवाले बिभयाभिलाषी मैंनेही सुभद्रा केशवजी और अर्जुन काभी यहमहाअप्रिय किया १० अर्थी दोषोंको नहींजानताहै क्योंकि वह लोभ और मोहमें फंसाहुआ होताहै मुझशहदकेचाहनेवालेने इस प्रकार की भावीको नहीं देखा ११ जो बालक भोजनसवारी शयन और भूषणोंमें आगे करने के योग्य था उसको मैंने युद्ध के सन्मुख किया १२ युद्धमें अकुशल युवा बालक उत्तम घोड़े के स-दृश किस प्रकारसे परस्पर के मर्दन और कठिन स्थानोंपर कल्या-णके योग्य है १३ दुःखकी बातहै किअब क्रोधसे ज्वलित अर्जुनकी

दुखी नेत्रों से हम लोग भी भस्म होकर इस पृथ्वी पर सोवेंगे१४ जो कि लोभसे रहित ज्ञानी लज्जावान क्षमावान रूपवान महा॰ बली तेजस्वी मान का करने वाला वीर प्रिय और सत्य पराक्रमी है १५ जिस बड़े कर्मी के कर्मोंको देवता लोग भी बड़ा और अच्छा कहते हैं और जिस पराक्रमी ने निवात कवच और पराक्रमी का- लिकेयनाम असुरोंकोमारा १६ और जिसने कि नेत्रोंके एक पलक मारनेसे महा इन्द्र के शत्रु हिरण्य पुर के वासी पौलोमोंको उनके सब समूहों समेत मारा १७ जो समर्थ कि निर्भयता चाहने वाले शत्रुओंको भी निर्भयता देताहै उस का पराक्रमी पुत्र हम लोगोंसे रक्षित नहीं होसका १८ फिर उस महाबली से धृतराष्ट्रके पुत्रों को बड़ाभय प्राप्तहुआ पुत्र के मार डालने से क्रोध युक्त अर्जुन कौरवों को भस्म करेगा १९ प्रकटहै कि नीच लोगोंको सहायक रखने वाला अपने पक्षका नायक नीच दुर्योधन देखकर शोचकर- ताहुआ अपने जीवन को त्याग करेगा २० इस अतुल पराक्रमी महा इन्द्रके पौत्र अभिमन्यु को गिरा हुआ देखकर विजयकाहो- नाभी मेरी प्रसन्नता का करने वाला नहींहै और यह राज्य व देव- तारूप होना और देवताओं के साथ सालोक्यताका होना भी मेरी प्रसन्नता का देने वाला है २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इस के पीछे कृष्ण द्वैपायन महर्षिव्यासजी वहां इस विलापको करते कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर के पास आये १ भतीजे के मरने से शोकयुक्त युधिष्ठिर समीप आकर बैठेहुये ऋषिको न्यायके अनुसार पूजन कर के बोले २ कि युद्ध में लड़ता हुआ अभिमन्यु बड़े धनुष धारी अधर्म वाले अनेक महारथियों से घेर कर मारा गया ३ वह बालक वृद्धोंकी सी बुद्धि रखने वाला शत्रु- ओं के वीरों का मारने वाला सुभद्राका पुत्र अधिक तर युद्धमें विना

युक्ति और विचारके लड़ने वाला हुआ ४ उससे मैंनेही कहाथा कि युद्धमें हमारे द्वारको उत्पन्न कर सेनाके मध्य में उसके पहुंच ने पर हम लोग राजा सिंधसे रोकेगये ५ प्रकटहै कि युद्धको जीविका करने वालों को सत्य सत्य युद्ध करना चाहिये यह इस प्रकारका युद्ध विपरीत है जिस को कि शत्रु लोगोंने किया ६ इस हेतुसे मैं अत्यन्त दुखी और शोक के अश्रुपातों से महाव्याकुल हूं और बारंबारचिन्ता करताहुआ शान्ती को नहीं पाताहूं ७ संजय बोले कि भगवान् व्यासजी इस प्रकार बिलाप करते शोकसे उद्विग्न चित्त होकर युधिष्ठिर से यह बचन बोले ८ हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ बड़े ज्ञानी सर्व्वशास्त्रज्ञ पंडित युधिष्ठिर तेरे समान के क्षत्री दुःखोंमें मोहको नहींपाते हैं ९ निश्चय करके यह शूरबीर पुरुषो-त्तम वृद्धों के समान कर्मको करके युद्धमें असंख्य शत्रुओं को मार करस्वर्ग को गया १० हेभरतवंशी युधिष्ठिर निश्चय करके शुभा-शुभकर्म उल्लंघन के योग्यनहींहै क्योंकि वहीकर्म मृत्युरूपहोकर देवता दानव और गन्धर्वों को भी मारता है ११ युधिष्ठिर बोले कि निश्चय करके यहमहाबली राजालोग सेनाके मध्यमेंमरे और मृतकनाम होकर पृथ्वीपर सोतेहैं १२ इसीप्रकार जो दूसरे दश हजार हाथियों के समान पराक्रमी और बायुके बेगके समान बल वाले हैं वे भी बारंबार समान रूपवाले मनुष्यों के हाथसे युद्ध में मारेगये १३ मैं युद्धमें इन जीवोंके मारनेवालेको कहींनहीं देखता हूं क्योंकि वे सब पराक्रमसे संयुक्त और तपस्याके बलसे भी युक्त हैं १४ सदैव जिनके चित्तमें बिजय करनेकी अभिलाषा नियत रह-तीहै वहबड़े २ पूर्ण बुद्धिमान् मृतक होकर निर्जीव सोतेहैं १५ इस अर्थका बाचीशब्द वर्तमान् होजाता है कि ये मर गये इसहेतु से पुरुषको दूसराकौन मारताहै यहभयकारी पराक्रम करनेवालेराजा लोगबहुधा मरगये १६ अर्थात् अस्वतन्त्र प्रसन्नता रहित निश्चेष्ट होकर वे सब शूरशत्रुके आधीनहुयेऔरबहुतसे क्रोधयुक्त राजकुमार बैश्वानर अग्निकेमुखमेंगये १७ अबमुझको इसस्थानपर यहसन्देह

उत्पन्न हुआहै कि मृतकयहनाम कैसे और कहांसेहै और मृत्युकिस-
को होतीहै और मृत्यु कहांसेहै और किसप्रकार करके संसार को
मारतीहै हे देवताके समान पितामह जिस प्रकारसे वह सबसंसार
को मारतीहै उसको आप मुझसे कहिये १८ संजयबोले कि भगवान्
ऋषि इसकुन्ती पुत्र युधिष्ठिरके इसबात के पूछनेपर युधिष्ठिरसे यह
विश्वास करानेवाला वचनबोले १६ हे राजा इसस्थानपर राजा
अकंपनके उस प्राचीन इतिहासको कहताहूं जो कि पूर्व्व समय में
नारदजीने कहाहै २० हेराजा उस राजाने भी लोकमें असह्यताके
योग्य बड़ेभारी पुत्र शोकको पायाहै मैंमृत्युकी उसप्रथम उत्पत्ति को
कहताहूं २१ इसके सुननेसे तू पुत्रकेस्नेह बन्धन और शोकसेनिवृत्त
होगा २२ उसको चित्त लगाकर सुनोजोकिसब पापोंके ओघों का
नाश करनेवाला धनआयु की पूर्णता का देनेवाला शोकका शान्त
करनेवाला और निरोग्यताका बढ़ानेवालाहै २३ पवित्रात्माशत्रुओंके
समूहोंका मारनेवाला और मंगलोंका भी मंगलहै जैसे कि वेदका
पढ़नाहै उसी प्रकार यहउपाख्यानभीहै २४ हेमहाराजयह आख्यान
पुत्रधन आयु और राज्यके चाहनेवालेउत्तम राजाओंकोसदैव प्रातः
कालके समयसुननेकेयोग्यहै २५ हेतातपूर्व्वसमयमें सतयुगकेमध्यमें
राजाअकंपन हुआवह युद्धभूमिमें दैवयोगसे शत्रुके आधीनहुआ २६
उसकापुत्रहरिनामथाजोकिबलमें नारायणकेसमान श्रीमान् अस्त्रज्ञ
शास्त्र रखनेवाली बुद्धिकास्वामी पराक्रमी युद्धमें इन्द्रकेसमानथा २७
वहयुद्ध भूमिमेंशत्रुओंसे बहुतघिराहुआशूरवीर और हाथियोंपरहजा-
रों बाणोंकोचलाता २८ युद्धमें शत्रु संतापी कठिन कर्मकोकरकेसेना
केमध्य शत्रुओंके हाथसे मारागया२६ शोचसेयुक्त उस राजाने उसके
प्रेतकर्मों को करके अहर्निश शोचग्रस्त होकरकभी सुखको नहीं
पाया ३० इसकेपीछे देवऋषि नारदजी पुत्रके दुःखसे जनित इसके
शोकको जानकर उसके सन्मुखआये ३१ तबउस महाभाग राजा
ने देवऋषियोंमें श्रेष्ठ नारदजीको देखकर न्यायके अनुसार पूजन
करके सब वृत्तान्त कहा ३२ राजाने जैसा कि वृत्तान्त युद्धमें परा-

जय और पुत्रके मरनेकाथासब ज्योंकात्यों वर्णनकिया ३३ बड़ापरा-
क्रमी इन्द्र और विष्णुके समान तेजस्वी बड़ाबली मेरापुत्र युद्ध में
पराक्रम करके बहुतसे शत्रुओंके हाथसे मारागया ३४ हे बुद्धि-
मानोंमें श्रेष्ठ समर्थ ऋषि यह मृत्यु क्याहै और किस बल पराक्रम
और वीरताकी रखनेवालीहै इसकोमें ब्यौरेसमेत सुनना चाहता
हूं ३५ बरदाता समर्थ ऋषियोंमें श्रेष्ठनारदजीने उसके उसबचनको
सुनकर पुत्रके शोकका दूर करनेवाला यह बड़ा आख्यान वर्णनकि-
या ३६ अर्थात् नारदजीनेकहाकिहेमहाबाहु राजा अकंपन इस बड़े
बिस्तारवाले आख्यानको सुनोकि वहजैसेहुआ और मैंने सुना ३७
जब सबके प्रथम प्रपितामह ब्रह्माजीनेसृष्टिको उत्पन्नकिया फिरउसी
बड़ेतेजस्वी प्रभुनेइस संसारको मरणधर्मा देखकर ३८ उसकेनाश
करनेकी चिन्ताकरी हे राजाचिन्ता करतेहुये ब्रह्माजीने इस संसार
के नाशको नहींजाना ३९ फिर उनके क्रोधद्वारा आकाशसे अर्थात्
उनके कर्णादि बिवरसेअग्नि उत्पन्नहुई अन्तर्द्दिशों समेत सबदिशों
के भस्म करनेके अभिलाषी उस अग्निसे सबदिशा ब्याप्तहुई ४०
उसके पीछे प्रभु भगवान् अग्निने स्वर्गपृथ्वी और ज्वालाकीमाला-
ओंसेब्याकुल सबस्थावर जंगम जड़ चैतन्य संसार को भस्म कर
दिया ४१ जबसब जड़चैतन्य जीवनाशहुये अर्थात् पराक्रमीअग्नि
ने क्रोधकेबड़े वेगसे भयको उत्पन्नकरके सबको भस्मकिया ४२ इसके
पीछे जटाधारी निशाचरोंके स्वामी रुद्र हर शिवजी उस देवतापर-
मेष्ठी ब्रह्माजीकी शरणमें गये ४३ सृष्टिके प्रियकरनेकी इच्छा से
उन शिवजीके परम देवता महामुनि ब्रह्माजी ज्वलित अग्नि के
समान वचनबोले ४४ हेमनोरथोंके योग्य मैं तुम्हारे किस मनोरथ
कोकरूं हे पुत्र तू इच्छासे उत्पन्नहुआहै इससेतेरीसब इच्छाओंको
पूर्ण करूंगा हेरुद्रजोतुम्हारी इच्छाहोय सोकहो ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय॥

रुद्रजी बोले कि हे समर्थ तुमने संसारके उत्पत्तिको निमित्त उपाय किया और भिन्न २ प्रकारके जीवसमूह तुमसे उत्पन्न होकर पोषण पानेवाले हुये १ वह सब सृष्टि अबयहां आपके क्रोधसे फिर भस्मी भूत होते हैं उनको देखकर मुझको दया आई है सो हे प्रभु भगवान् प्रसन्न हो २ ब्रह्माजी बोले कि मारने में मेरी इच्छा नहीं है यह ऐसाही होय मुझको पृथ्वीके प्रियकरनेकी इच्छा थी इस हेतुसे मुझ में क्रोध होगया ३ हे महादेवजी इस संसार के भारसे पीड़ित और घायल पतिव्रता देवी पृथ्वीने संसारकेनाशके निमित्त बारबार मुझको प्रेरणाकरी ४ तब उसके पीछे मैंने उसरीतिके असंख्य संसारके नाशको नहीं पाया इस कारण मुझमें क्रोध आया ५ रुद्रजी बोले कि हे पृथ्वी के स्वामी संसारके नाशके लिये क्रोध मतकरो प्रसन्न हूजिये और सब जड़ चैतन्य संसारको नाश मतकरो ६ हे भगवन् आपकी कृपासे यह तीन प्रकारका जगत अर्थात् जो प्रकट नहीं हुआ और जो भूत कालमें हुआ और जो अबवर्त्त मानहै वह सब प्रकट होय ७ हे भगवन् क्रोधसे ज्वलितरूप आपने अपने क्रोधरूप अग्निको उत्पन्न किया ८ वह पर्व्वत के शिखर नदी और रत्नोंको भस्म करता है पल्वलनाम तड़ाग और सब दनोंसमेत स्थावर जंगम संसारका नाशकरता है ६ हे भगवन् आप प्रसन्न हूजिये आपमें क्रोध नहोय यह मेरा वर है हे देवता आपके सब सृष्टिके जीव किस प्रकार से नाशको पाते हैं १० इस हेतु यह तेज लौटजाय और आपमेंही लय होजाय हे देवता सृष्टि के उपकारकी इच्छासे उसको आप अच्छी रीतिसे विचार करो ११ जैसी रीतिसे ये सब जीव प्रकट होयं वही रीति आपको करना योग्य है यहां अपने बालबच्चों समेत सब सृष्टि के जीव नाश न होयं १२ हे संसारके स्वामी नें तुम्हारी ओरसे लोकोंके मध्यमें संसारकी वृद्धि के लिये प्रवृत्तकिया गया हूं हे जगत्पति यह स्थावर जंगम रूप जगत् नाशको न पावे १३ इस हेतुसे मैं कपालु देवतासे प्रार्थनाकरता

हूं नारदजी बोलेकि देवताने उसबचनको सुनकर प्रजाओंके हितकी इच्छासे तेजको फिर अन्तरात्मामें धारण किया १४ इसकेपीछेलोक के प्रतिष्ठित प्रभु भगवान् ब्रह्माजीने अग्निको अपने में लय करके संसारकी उत्पत्तिसे संबंध रखनेवाले कर्मको और मोक्षसंबंधीकर्मों कोभी वर्णनकिया १५ इस प्रकारसे क्रोधसे उत्पन्न अग्निको अपनेमें लयकरते उस महात्माकी सब इन्द्रियोंसे एकऐसीस्त्री प्रकटहुई १६ जो किकृष्णरक्त और पिंगलवर्ण औरक्तर जिह्वा और नेत्रोंसेयुक्तनिर्मलकुंडलोंसमेतपवित्र आभूषणोंको धारण करनेवालीथी १७ इस प्रकारवहइनइन्द्रियोंसे निकलकर मन्द मुसकानकरतीहुई बिश्वके ईश्वरदोनोंदेवताओंको देखकर दक्षिण दिशामें नियतहुई १८ हेराजा तब संसारके उत्पत्ति प्रलयके कर्ता देवता ब्रह्माजी उसको बुलाकर बोलेकि हेमृत्युइन सृष्टियोंका नाशकर १९ तूसंसारके नाशसे संबंध रखनेवाली वृद्धिके कारण मेरेक्रोधसे प्रकट हुईहै इस हेतु से तूइस सबजड़ चैतन्यको नाशकर २० तूमेरी आज्ञासे इसकर्मकोकर सब प्रकार कल्याणको पावेगी फिरउनके इसप्रकारके बचनोंको सुनकर उस कमललोचनी अबला मृत्युने २१ बड़ाध्यान किया और बड़ेस्वरों से रोनेलगी पितामहने उसके अश्रुपातोंको हाथोंमें लिया २२ तब सब जीवोंकी वृद्धिकेलिये उसकोभी बिश्वास कराया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि वह लता के समान एकही आश्रय रखने वाली मृत्युरूप अबला दुःख को आत्मामें लयकरके हाथ जोड़कर ब्रह्माजीसे बोली १ कि हेबक्ताओंमें श्रेष्ठ बिचार करनेका स्थान है कि तुमसे इस प्रकारकी उत्पन्नकी हुई मैं स्त्री जान बूझकर किस रीति से निर्दय और अप्रिय कर्म को करूं २ मैं अधर्म से डरती हूं हे भगवन् प्रभु प्रसन्न हूजिये हे देवता प्रिय पुत्र समान वय भाई माता पिता और भर्त्ताओं को मुझ मारने वालीको ३ मृत-

कों के पास बैठीहुई स्त्रियां खोटेवचनकहकर २ शापदेंगी मैं उन से डरतीहूं निश्चय करके दुखी और रोते हुये जीवोंके जो अश्रुपातों के बुन्द गिरतेहैं ४ हे भगवन् मैं उन से भयभीत होकर आपकी शरणमें आईहूं हे देवताओंमें श्रेष्ठ देवता मैं यमराजके भवन को नहींजाऊं ५ हे संसार के पितामह मस्तक अंजुली और शरीर के द्वाराबड़ी नम्रता पूर्व्वक मैं आपसे इस अभीष्टको चाहतीहूं ६ हे-संसारके ईश्वर मैं आपकी कृपासे तपकरना चाहतीहूं हे भगवन् प्रभु देवता तुमयहवर मुझकोदो ७ तुम्हारी आज्ञानुसार मैं धेनुक नाम उत्तम आश्रमको जाऊंगी आप के पूजन में बड़ीप्रीति करने वालीमैं कठिन तपस्याको करूंगी ८ हेदेवताओंके ईश्वर मैं विलाप करतीहुई जीवोंके प्यारे प्राणों के हरनेमें समर्थनहीं हूं ९ मुझ को अधर्मसे रक्षाकरो ब्रह्माजी बोलेकि हे मृत्यु तू संसार के नाशहीके हेतुसे उत्पन्नकी गईहै तुम सबसृष्टिको जाकरमारोऔरतू किसीबात का शोचमतकर १० यहमेरी इच्छाहै ऐसेही होगा इस में किसी प्रकार विपरीत न होगा तू लोकमें निन्दितहो और मेरे वचन को कर ११ नारदजी बोलेकि इस प्रकारके ब्रह्माजी के वचनोंको सुन कर वहस्त्री भगवान्की ओर हाथजोड़कर प्रसन्नहुई और संसारके उपकारकी इच्छासे संसारके नाशमें बुद्धिको नहीं प्रवृत्त किया १२ तब प्रजाओंके ईश्वरोंकेभी ईश्वर ब्रह्माजी मौनहुये आपही शीघ्र प्रसन्न हुये १३ वह देवदेव ब्रह्माजी सब लोकों को देखकर मन्द मुसकान करनेवाले हुये उन क्रोध रहित ब्रह्माजी के देखने से वह लोग प्रथमके समान प्रकटहुये १४ उस अजेय भगवान् को क्रोधसे रहित होजानेपर वह कन्याभी उस बुद्धिमानके सन्मुख से चलीगई १५ हेराजेन्द्र तबवह मृत्यु सृष्टिके नाशकोस्वीकार न कर के वहांसे शीघ्रही चलकर धेनुकाश्रममें गई १६ उसने वहां जाकर बड़ेकठिन और उत्तम व्रतको किया तबसृष्टिके प्रियकी चाहनेवाली मृत्यु दया करके इक्कीस पद्मवर्षतक एकपैरसे खड़ीरहीवह इन्द्रियों केप्यारे विषयोंसेअच्छे प्रकार रोंककर तपस्या करनेलगी १७।१८

इसके पीछे सात पवित्र बनों में चौदह पद्म वर्षतक एक चरण से खड़ीरही १९ इसके पीछे वह दशहजार पद्म वर्षतक मृगों के साथ भ्रमण करनेवालीहुई फिर पवित्र शीतल और स्वच्छ जल वाले नन्दातीर्थपर जाकर २० उस निष्पापने नन्दानदी पर नियम को धारण करके जलके मध्य में आठ हजार वर्षव्यतीत किये २१ वह नियमसे बुद्धिमान प्रथम पवित्र नदी कौशिकीपरगई वहां वायुजल का आहार करके फिर नियमकिया २२ फिर उसपवित्रकन्याने पांचों गंगा और वेतसकोंमें बहुतप्रकार की तपस्याओंसे अपने शरीरको जीर्ण करदिया २३ इसकेपीछे वह आकाशगंगा और महामेरुपर जा: कर प्राणायाम करनेवाली प्रकाशितपत्थरपर केवल निश्चेष्टहोकर नियत हुई २४ फिरवह शुभ औरश्रेष्ठस्त्री उस हिमाचलके मस्तकपर जहांदेवताओंने पूर्व्वसमयमेंयज्ञकिया वहांएकनिखर्ब वर्षतक नियत हुई २५ फिर पुष्कर में गोकर्ण नैमिष और मलयाचलमें बड़ीप्रीति से चित्तके नियमोंसे अपनेशरीरको कृषकिया ब्रह्माजी को दृढ़ भक्ति रखने वाली और सदैव ब्रह्माजी को सर्व रूप मानकरदूसरे देवता को न रखने वाली अनन्य भक्तिमें नियत हुई २६ और धर्मसे पिता-मह को प्रसन्न किया २७ हे राजा तब उसके पीछे लोकोंकेस्वामी अबिनाशी प्रसन्न चित्त प्रीतिमान ब्रह्माजी बड़े हित प्रिय बचन उससे बोले २८ कि हेमृत्यु यहक्या बातहै तब बड़ेतपोंके करने के पीछे वह मृत्यु उन भगवान् पितामह से फिरयह बचन बोली कि हे देवता इष्ट मित्र नातेदार आदि के मध्यमें नियत पुकारते हुये सृष्टिके लोगोंको मैंनहींमारूं २९ हेसब के ईश्वर प्रभुमैं इसवरको तुमसे चाहतीहूं ३० मैं धर्मके भय से भयभीतहूं इसी हेतु से तपमें नियत हुईहूं हे महाभाग अविनाशी मुझ भयभीत को निर्भय करो ३१ मैं पीड़ावान निरपराधीस्त्री आपसेप्रार्थना करतीहूं तुम मेरी गति अर्थात् आश्रय स्थान हूजिये इसके पीछे भूत भविष्य वर्त्तमान के ज्ञाता देवताओं के देवता ब्रह्माजी उससे बोले ३२ हे मृत्यु इन सब सृष्टियों के नाश करने में तुझको अधर्म नहीं है

हे कल्याणिनि मेरा कहा हुआ किसीदशामें भी मिथ्या नहीं है और न होगा ३३ इस हेतुसेतुम चारों प्रकारकी सव सृष्टिको मारो तुझको सनातन धर्म सव प्रकार से याचना करेगा ३४ लोकपाल यमराज और सम्पूर्ण रोगादिक भी तेरेसहायक होंगे औरमैं और सव देवता मिलकर तुझको वह वर देतेहैं ३५ कि जैसे तू पापोंसे रहित होकर विरजानाम से विख्यात होगी हे महाराज ब्रह्माजी के इस बचन को सुनकर वह मृत्यु शिरसे ब्रह्माजी को प्रसन्न करती हुई हाथ जोड़कर यह बचन बोली कि जो यह इसीप्रकार करने के योग्य है तो हे प्रभु वह मेरे बिना नहीं होय ३६।३७ मैंने आपकी आज्ञाको मस्तक पर धारण किया अब जो मैं आपसे कहतीहूं उसको आप सुनिये क्रोध लोभ दूसरे के गुणमें दोष लगाना ईर्षा शत्रुता देहमें मोह करना ३८ निर्लज्जता और परस्पर कठोरवचन यह सबभी पृथक् २ प्रकार से शरीरको व्यथित करें ब्रह्माजी बोले कि हे मृत्यु इसी प्रकार से होगा बहुत श्रेष्ठ है तुमसृष्टि को मारो तुझको कभी अधर्म न होगा हे शुभ स्त्री मैं तुझकोशापनहीं दूंगा ३९ मैंने जिन अश्रुपातों को हाथ में लिया वह जीवों के शरीरों से उत्पन्न होने वाले रोग हैं वह निर्जीव मनुष्यों को मारेंगे तुझको अधर्म नहीं होगा भय मतकर ४० प्राणियों को मारकर तुझ को अधर्म नहीं होगा निश्चय करके तूही धर्म है और तूही धर्म की स्वामिनीहै तूही धर्म रूप होकर सदैव धर्ममें नियत होके सब को धारण करने वाली है इस हेतुसे इन सृष्टियों के प्राणों को सब प्रकार करके अपने स्वाधीनकर ४१ तू क्रोध और इच्छाको अच्छी रीति से त्याग करके इस लोकमें सब प्राणियों के जीवोंको भी आधीन कर इस प्रकार से तुझको अत्यन्त धर्म होगा अधर्म दुराचारी लोगों को मारेगा ४२ इस कारण तुम आत्माके द्वारा आत्मा को पवित्र करो और सतोगुण से रहित लोग अपने पापसे ही अपने को नाश करेंगे इस हेतु से तुम अपने सन्मुख आये हुये इच्छा और क्रोधको श्रेष्ठ रीति से त्याग करके अवस्थाके अन्त

होने पर जीवों को मारो ४३ नारदजी बोले कि निश्चय करके वह मृत्यु नाम के उपदेश से और शाप से भयभीत होकर उन ब्रह्माजी से बोली कि बहुत अच्छा ऐसा कहकर इच्छा और क्रोध को त्याग करके वह मृत्यु मारने के कर्म में प्रवृत्त होकर समय के अन्तहोनेपर जीवोंके प्राणोंको हरती है ४४ मृत्यु और उस मृत्यु से ही उत्पन्न होने वाले इनसब जीवों के रोग और मारने वाले रोग जिनसे कि जीव पीड़ा पाता है यह सब संपूर्णजीवों के शरीर त्यागने के समय आते हैं इस हेतुसे तुम निरर्थक शोकमत करो ४५ सब इन्द्रिय रूप देवता शरीरके त्यागनेके समयजीवात्माओं के साथ मृतक के समान जैसे परलोक में जाते हैं उसी प्रकार वहां लौट करभी आतेहैं अपने कर्मसे देवता रूप होनेवाले कर्म देवभी लौट कर आतेहैं और सच्चे परमात्मासे प्रकाशित रूप होने वाले ज्ञान देव फिर लौट कर नहीं आतेहैं हे राजाओंमें श्रेष्ठ इस प्रकार जीव धारियों के प्रथम देवता शीघ्रतासे मृतक के समान जाकर फिर प्रकट हुये ४६ यह सर्वत्र वर्त्तमान भय कारी और भयानक शब्द बड़ा बेगवान प्राण बायुजीवोंके शरीरों को मारने वालाहै अत्यन्त प्रकाशित उग्र बायु रूप शिव और अपूर्व प्राण जन्म मरणको नहीं पाताहै अर्थात् जीवन्मुक्त है ४७ सब देवता मृतक नाम के योग्यहैं हे राजेन्द्र इस हेतुसे तुम पुत्रका शोक मत करो तेरा पुत्र रमणीक बीर लोकोंको पाकर स्वर्ग में बर्त्तमान होकर सदैव आनन्द करताहै ४८ दुःखको त्यागकर पवित्र कर्मी पुरुषों के साथमें बैठो यह सृष्टिभरे की मृत्यु देवता की आज्ञा से समय आने पर बिधिके अनुसार मारने वालीहै यह सृष्टिके शरीरों के प्राणोंकी हरण करने वाली आप अपनेही से उत्पन्न कीगई है ४९ निश्चय करके सब जीवधारी अपना आपही अपघात करतेहैं दण्डधारी मृत्यु उनको नहीं मारती है इस हेतुसे पण्डित लोग बास्तवमें मृत्युको ब्रह्माजीसे उत्पन्न जान कर मृतकों को नहीं शोचते हैं इस सृष्टि भरको देवताकी सृष्टिजानकर मृतक पुत्रों के

शोकोंको शीघ्र त्यागो ५० व्यासजीबोलेकि राजाअकंपन नारदजी के कहे हुये इस सार्थक वचनको सुनकर अपने मित्र नारद जीसे बोला ५१ हेभगवन् ऋषियोंमें श्रेष्ठमें आपके मुखसे इस इतिहास को सुनकर शोक से रहित और प्रसन्नहोकर अबमें कृतार्थहूं और आपको दंडवत् करताहूं ५२ नारदजी शीघ्रही नन्दन वनको गये ५३ इसी प्रकार सदैव इस इतिहासका सुनना और सुनाना पुण्य कीर्त्ति स्वर्ग धन और पूर्णायुका देनेवाला है ५४ संजय बोले कि तब राजा युधिष्ठिर इस प्रयोजन वाले पदको सुनकर क्षत्री धर्म और शूरोंकी परमगतिको जानकर शान्तहुआ और जाना ५५ कि वह महापराक्रमी महारथी अभिमन्यु सब धनुष धारियोंके सन्मुख शत्रुओंको मार कर स्वर्ग लोक को अच्छी रीति से प्राप्तहुआ ५६ वह बड़ा धनुष धारी महा रथी युद्धमें सन्मुख होकर खड्गगदाशक्ति और धनुष से लड़ता हुआ मारागया ५७ और वह चन्द्रमा का पुत्र रजोगुण से रहित फिर अपनेहीतेज में लय होताहै इस हेतु से पांडव युधिष्ठिरअपने भाइयोंसमेत बड़े धैर्य्यको करके सावधानता से अच्छा अलंकृत होकर शीघ्रही लड़नेको सन्मुख गया ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि धर्मराज युधिष्ठिर मृत्युकी उत्पत्ति समेत अद्भुतकर्मोंको सुन कर और व्यास जी को प्रसन्न करके फिर यह वचन बोले १ अर्थात् युधिष्ठिर ने कहा कि हे निष्पाप पवित्रात्मा सत्यवक्ता गुरू और इन्द्र के समान पराक्रमी राजऋषि सत्य लोकादिक स्थानों में निवास करते हैं २ तुम फिर भी मुझको सत्य वचनों से संतुष्ट करो और प्राचीन राज ऋषियों के कर्मोंसे भी मुझ को विश्वास कराओ ३ किन२ पवित्रात्मा राज ऋषियोंने कितने २ दक्षिणादीं वह सब आप मुझसे वर्णन कीजिये ४ व्यासजीबोले कि राजा श्वैत्यका पुत्र संजय नामथा उसके परम मित्र नारद और

पर्वत ऋषिथे ५ वह दोनों ऋषि एक समय उस राजा के देखनेकी इच्छा से उस के घरमें गये वहां राजा से बिधिके अनुसार पूजित होकर बड़ी प्रसन्नता से निवासी हुये ६ फिर दैवयोगसे एकसमय पवित्र मुसकान और सुन्दर बर्ण वाली उसकी कन्या उन दोनों ऋषि के समीप आनन्द पूर्बक बैठे हुये राजा संजयके पास आई ७ उसने राजा को प्रणामकिया फिर उसको प्रणाम लेने वाले राजा ने उस समीप में बैठी हुई कन्या को विधिके अनुसार उसके योग्य और चित्तके अभीष्ट आशीर्बादों से प्रसन्नकिया ८ तब पर्ब्बत ऋषि उस को अच्छी रीति से देख कर हंसते हुये इस बचन को बोलेकि यह चंचलाक्षी सब लक्षणों से युक्त महा सुन्दर किस की कन्या है ९ आश्चर्य्य है कि यह सूर्य्य का प्रकाश है व अग्नि की ज्वाला है या लक्ष्मी हरि कीर्त्ति धृति पुष्टि सिद्धि नाम देबी है अथवा चन्द्रमा का प्रकाशहै १० इस प्रकारसे कहने वाले देव ऋषिपर्ब्बतसे राजा संजय बोले हे भगवन् यह मेरी कन्या है और मुझसे अपने बरको चाहती है ११ फिर नारद जी उससे बोले कि हेराजा जो तुम अपना बड़ा कल्याण चाहते हो तो इस कन्या को भार्य्या करने के अर्थ मुझकोदो १२ यह सुन कर अत्यन्त प्रसन्न होकर राजा संजय ने नारद जी से कहा कि दूंगा फिर अत्यन्त क्रोधित होकर पर्ब्बतऋषि नारद जी से यह बचन बोले १३ कि निश्चय प्रथम मेरे हृदयसे बरी हुई इस कन्या को तुमने मांगाहै हे ब्राह्मण जो आपने मेरे चित्तसे बरी हुई कन्या को तुमने बरा है इस हेतुसे तुम अपनी इच्छा के अनुसार स्वर्ग को न जाओगे १४ इस प्रकार से शापित होकर नारदजी उत्तम रूप बचन उससे बोले कि मन, बचन, बुद्धि, और बाणी,से जलसंयुक्त दीहुइ, अथवा कन्या,और बरकाहाथ, मिलना, और मन्त्र यह सातों कन्याके बरहोने केचिन्ह प्रसिद्धहैं १५ परन्तु यह निष्ठा निश्चयात्मक नहींहै सत्पुरुषोंकीनिष्ठा सप्त पदीहै १६ तुमने बिना बिवाह होने केही मुझको शाप दिया है इस हेतुसे तुमभी मेरे बिना कभी स्वर्गको न जाओगे १७ तब

वह दोनों परस्पर में शाप देकर वहां निवास करनेलगे फिर पुत्रके आकांक्षी पवित्रात्मा उस राजाने भी बड़ी सामर्थ्य और उपाय से खाने पीने की वस्तुओं समेत वस्त्रोंके आस्तरणोंसे ब्राह्मणोंकी सेवा करी १८ एक समय तपस्यासे युक्त वेदपढ़नेमें प्रवृत्त वेदवेदांग पारगामी ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ और उस पुत्राभिलाषी राजापर प्रसन्नहोकर सब ब्राह्मणलोग मिलकर नारदजो से बोले किइस राजाको चित्तके अनुसार पुत्र दो १९ । २० ब्राह्मणों से यह बचन सुनकर नारद जी तथास्तु कहकर राजा संजयसे बोले कि हे राज ऋषि ये सब ब्राह्मण प्रसन्न होकर तेरेपुत्र होनेके निमित्त याचना करतेहैं २१ तेरेकल्याण होय तू जैसापुत्र चाहताहै उसको मांग इस प्रकार के नारदजीसे बचन सुनकर राजाने हाथजोड़कर ऐसा सर्वगुण संपन्न पुत्र नारदजीसेमांगा २२जोकि यशस्वी कीर्त्तिमान् तेजस्वी शत्रुओं को विजय करनेवालाहो और जिसका मूत्रविष्ठा थूक और प्रस्वेद ये सब सुवर्ण होजायं २३ उनकी कृपा से वैसाही पुत्रहुआ इस रीतिसेउसकानाम सुवर्णष्ठीव इसपृथ्वीपर विख्यातहुआ वरप्रदानसे उसराजाके पास असंख्य धन बढ़ता था २४ तब उस सुवर्णष्ठीव राजाने गृह प्राकारदुर्ग ब्राह्मणोंके स्थान और सब सामान सुवर्णके अपनी रुचिके समान बनवाये २५ सैया आसन सवारियां थाली हंडे आदिपात्र और उसराजाके जोमहलआदि बाहरीसामानथे २६ वे स्वर्णमई और समय के अनुसार बड़े वृद्धिमान हुये इसके पीछे चोरोंके समूह सुनकर और इसकोइस प्रकारका देखकर २७ उस राजाका निरादर करके बुराइयां करनेके लिये दुष्टकर्म करनेलगे कितनेही चोरोंने कहाकि हमआप जाकर इसराजा के पुत्रकोही पकड़ें २८ क्योंकिवही इसको सुवर्णकी खानहै उसका उपाय करें इसकेपीछे उनलोभी चोरोंने राजाके घरमें प्रवेश करके २९ पराक्रमसे सुवर्णष्ठीव नाम राजकुमार को हरण करलिया उपायके न जानने वाले बड़े निर्बुद्धी उनचोरोंने उसको पकड़कर बनमें लेजाके ३० मारकर खंड २ करके लोभियोंने कुछभी धनको नहींदेखा

आशाओंसे रहित उस बालकका वह धनजो कि बरप्रदानसे प्राप्तहुआ था वहसब नाशहोगया तबमूर्ख और अचेत चोरोंनेपरस्परमेंअपना२ भी अपघात किया और उस कुमारको मारकर इस पृथ्वीसे आप नष्टहोगये ३२ वे दुष्ट कर्मी चोर कठिन और भयानक नर्क को गये फिर उसबड़े तपस्वी और अत्यन्त दयावान राजाने उसबर से प्राप्तहुये पुत्रको मराहुआ देखकर ३३ महादुखी और पीड़ा से व्याकुल होकर बिलापकिया पुत्रके शोकसेघायल और बिलाप करते राजा को सुनकर देवऋषि नारदजीने उसके सन्मुख आकर दर्शनदिया ३४ उन नारदजीने उसके पासआकर उसदुःखसे पीड़ित और अचेततासे बिलाप करनेवाले राजासेजोकहा ३५ हेयुधिष्ठिर उस को समझो अर्थात् नारदजीने कहाकि यहां अभीष्टोंसे तृप्त न होने वाला होकर तू मरजायगा ३६ हम ब्रह्मबादी जिसके घरमेंनियत होकरठहरे हेसंजय हमउस राजा मरुत और आवीक्षितको मृतक सुनतेहैं ३७ जिसमरुतने प्रसन्नतापूर्व्वक वृहस्पतिजी से संबर्त्तकको पूजन कराया उस भगवान् प्रभुने नानाप्रकारके यज्ञोंसे पूजनक-रनेके अभिलाषी जिसराज ऋषिको धन और हिमालय पर्व्वतकेस्व-र्णमयी चौथेभागको दिया ३८ जिसकेयज्ञके पासउस देवताओंके समूहजिनमें मुख्य इन्द्रसमेत वृहस्पतिजीहैं ३९ और संसारकेउत्पन्न करने वाले सब देवता बर्त्तमान हुये और यज्ञ शालाके सब सामान स्वर्णमयी हुये ४० तबवेद पीठी भोजनों के अभिलाषी सब ब्रा-ह्मणोंने उसके उस अन्नको जो इच्छाके अनुसार पवित्र विचार कियाथा यथेच्छ भोजन किया ४१ जिसके सब यज्ञोंमें दूधदही घृत सहत और भक्ष्य भोज्यकी बस्तु और बस्त्र भूषणादिभी उत्तम सुडौल मनोहर और चित्त रोचकथे ४२ उस यज्ञमें वेद वेदांगपारग अत्यन्त प्रसन्न मूर्त्ति ब्राह्मणलोग जिस २ बस्तुको चाहतेथे वहसब बर्त्तमानहोतीथी उस राजा मरुत के गृहमें मरुत देवताको परो-सने वाले हुये ४३ और राज ऋषि आवीक्षित के सभासद विश्वे-देवानाम देवता हुये जिस पराक्रमी राजाकी धन रूप खेती अच्छी

वर्षासे थी ४४ जिसने अच्छे प्रकार से तैयार किये हुये हव्य से ऋषि पितर और सुख पूर्वक जीवन करने वाले देवताओं के स्वर्ग वासी प्रकारोंको ४५ सदैव ब्रह्मचर्य वेदोक्त यज्ञ और सब प्रकार के दानों के द्वारा तृप्तकिया सैया आसन खान पान की वस्तु और दुःखसे त्याग करने के योग्य सुवर्ण केचय ४६ और सब प्रकार का असंख्य धन अपनी इच्छा से ब्राह्मणोंको दिया वह श्रद्धावान् राजा प्रजा को प्रसन्न करके इन्द्रके बुलाने से प्रजा राज्य मंत्री स्त्री संतान और बांधवों समेत विजय किये हुये कर्म फल के देने वाले अविनाशी लोकोंको गया ४७।४८ राजा मरुतने तरुणतासे हजार वर्षतक राज्यकिया हे संजय जोवहधर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य्य अथवा धर्म अर्थ काम बल इन सब कल्याणों को तुझसे भी अधिक रखनेवालाहै४६ और तेरे पुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा मरगया तब तुम यज्ञोंसे रहित दक्षिणाओंके न देने वाले होकर पुत्रका शोच मतकरो यह नारदजीने कहा ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम उस राजा सुहोत्रको भी मरा हुआ सुनतेहैं जो कि एक वार देवताओंसे भी अजेय हुआ देखा गया १ जिसने राज्य को धर्मसे पाकर ऋत्विज ब्राह्मण और पुरोहितोंसे अपना कल्याण पूछा और पूछ कर उनकी आज्ञामेंनियत हुआ २ सुहोत्रने प्रजाके पापपुण्यधर्म दान यज्ञ और शत्रुओंकी विजय इन सब बातों को जान कर धर्मके अनुसार धनकी प्राप्ती को चाहा ३ धर्म से देवताओंको पूजा और बाणों से शत्रुओं को विजय किया और अपने गुणोंसे सबजीवों को प्रसन्न करके विदित किया ४ जिसने म्लेच्छ और आटविक देशोंके सिवाय इस सब पृथ्वीको भोगा और जिसके निमित्त इन्द्रने वर्षों तक सुवर्ण को बरसाया ५ वहां पूर्व समय में इच्छा के अनुसार जारी होनेवाली

सुवर्ण की उत्पत्ति स्थान नदियोंने ग्राह कर्कट और अनेक प्रकारके असंख्य मत्स्योंको धारण किया ६ और इन्द्र देवता अभीष्ट पदार्थ और नानाप्रकारकी स्वर्णमयी अनुपम मूर्त्तियोंको बरसाताथा और बावड़ी एक २ कोशकी लम्बीथीं ७ तब स्वर्णमयी सैकड़ों बौनेकुबड़े नक्र मकर और कच्छपोंको देखकर आश्चर्य्य किया ८ यज्ञ करने वाले राजऋषि ने कुरुजांगल देशके मध्य बिस्तृत यज्ञ में उस असंख्य सुवर्ण को ब्राह्मणोंके अर्थ संकल्प किया ९ उसने हजार अश्वमेध और सौ राजसूय और अन्य बहुत दक्षिणा वाले पवित्र यज्ञोंसे १० और सदैव नैमित्तिक कर्मोंके करनेसे चित्तकी अभीष्ट गति को पाया हे सौत्यके पुत्र संजयजो वह राजा सौहोत्रादि व धर्मादि चारों कल्याणों को तुझ से अधिक रखने वाला और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा मर गया तो तुम यज्ञ न करने, व दक्षिणा के भी न देने वाले होकर पुत्रका शोच मत करो यह नारद जीने कहा ११ । १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम और राजा पौरवको मृतकहुआ सुनतेहैं जिसने दश लाख श्वेत घोड़ों को यज्ञ के निमित्त छोड़ा १ उस राज ऋषिके यज्ञमें देश २ के आनेवाले पंडितोंकी गणनानहीं होसकी जोकि शिक्षा अक्षर और बिधिके जानने वाले अर्थात् वेदके पढ़ने की रीति से सूत्र व्याकरणादि के जानने वाले २ बेद बिद्या और ब्रतसे स्नान किये हुये दान के अभ्यासी अपूर्व प्रिय दर्शन और संन्यासी आदिके भोजन भिक्षाके देनेवाले बस्त्र गृह सैया आसन और सवारी वालेथे ३ वे वहां सदैव उपाय और क्रीड़ा करनेवाले नट नर्त्तक गन्धर्वपर्णक और वर्धमानकोंके द्वारा प्रसन्न कियेगये ४ उस ने प्रतियज्ञ में समय के अनुसार श्रेष्ठ दक्षिणा बांटी दशहजार ऐसे हाथी जो सुवर्ण भूषणों से अलंकृत होकर प्रकाशमान और

अत्यन्त मतवालेथे ५ उसीप्रकार ध्वजा पताका समेत सुवर्णके रथ दान किये और जिसने स्वर्ण भूषणों से अलंकृत दशलाख कन्या६ अच्छी जाति वाले घोड़े और हाथियों परसवार और सुन्दरघर और खेत रखने वाले सैकड़ों बैलऔर एक लाख सुवर्णकीमालाओं समेत गोयें और हजार दास इस प्रकारकी दक्षिणा जिसनेदी७सुवर्णशृंग चांदीके खुर कांस्य दोहनी रखने वाली सवत्सा गोयें ८ दासी दास खच्चर ऊंट और बहुत से कंबल आदिको दान किया ९ उस यज्ञके विस्तार होने पर दक्षिणा बहुतसीबांटी उसमें पुराण के ज्ञाता लोग इसकी गाथाको गातेहैं १० उस उपाय करने वाले राजा अंगके निज धर्म से प्राप्त गुणों में श्रेष्ठ सब अभीष्ट वस्तुओं से युक्त वह शुभ यज्ञथा ११ हे सौत्यके पुत्र संजय जो वह चारों कल्याणों में तुमसे और तेरे पुत्र सेभी अधिक धर्मात्मा मरगयातब तुम यज्ञ न करनेवाले और दक्षिणाके न देनेवाले होकर पुत्रका शोकमत करो १२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम औसीनरके पुत्र शिवीको भी मृतक सुनते हैं जिसने इस संपूर्ण पृथ्वीको चमड़ेके समान लपेटा अर्थात् अपने स्वाधीन किया १ उस शत्रुओंके विजय करनेवाले रथ के शब्दसे पर्व्वत द्वीपसमुद्र और वनसमेत पृथ्वी भरको शब्दायमान करते शिवीने सदैव उत्तम शत्रुओंको मारा २ उसने पूर्णदक्षिणा वाले बहुत प्रकार के यज्ञोंसे पूजन किया वह पराक्रमी बुद्धिमान राजा बहुतधनको पाकर ३ युद्धमें सब महाराजोंका अंगीकृतहुआ जिसने इससबसंसार की पृथ्वीको विजयकरकेउन अश्वमेधोंसे पूजनकिया४ जो कि अर्गल न रखनेवाले बहुत फलोंसे युक्तथे उस हजारों कोटि निष्कों के दानकरनेवाले ने हाथी घोड़े आदि पशु धान मृग गौ और भेड़बकरियों समेत ५ इस नानाप्रकारवाली पवित्र पृथ्वीको

ब्राह्मणों के अर्थ भेटकिया बादल की जितनी धारा होती हैं और आकाश में जितने नक्षत्र हैं ६ और जितने कि गंगा की बालू के कण हैं और मेरु पर्व्वतके जितने पाषाण हैं और समुद्रमें जितने रत्न और जलजीव हैं औसीनर के पुत्र शिवीने उतनीही गौयें यज्ञमेंदानकरी ७ संसार के स्वामी ने उस के कर्म के बोझेको उठानेवाला कोई पुरुष तीनों कालमें नहीं पाया ८ उस के नाना प्रकारके यज्ञसब अभीष्ट बस्तुओं से युक्तहुये ६ जिनमें सुनहरी यूप आसन गृह भित्ती परिधि और बाह्यद्वार और खाने पीने की पवित्रवस्तु और प्रयुत संख्यावाले ब्राह्मण थे १० उस के यज्ञके बाड़ेमें नाना प्रकार की भोजनादिक की बस्तुओं के साथ दूध दही के हृद नदी और उज्ज्वल अन्न के पर्ब्बत और चित्त रोचक कथाहुईं ११ स्नान भोजन पान इनमें से जो जिसको प्रिय होय वह करो ऐसोआज्ञा सब लोगोंको दे रक्खीथी इस पवित्र कर्मसे प्रसन्न होकर रुद्रजीने जिस राजा को बरदिया १२ कि हे राजा तेरे धनकांक्षा कीर्त्ति और जो तूकरे वहसब कर्म अबिनाशी होयं और जीवों की प्रीति समेत उत्तम स्वर्ग को पाओगे १३ शिवी इन अभीष्ट बरदानों को पाकर समय पर स्वर्ग को गया हे संजय जो वह चारों कल्याणोंमें तुझसे अधिक है १४ और तेरे पुत्र सेभी अधिक महात्मा पुरुष मरगया तब तुम यज्ञ और दक्षिणा से रहित अपने पुत्र का शोच मत करो यह नारदजी ने कही १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअट्ठपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जीको भी शरीर त्यागनेवाला सुनते हैं जिस के साथ प्रजा लोग ऐसे प्रसन्नहुये जैसे कि औरस पुत्र को देखकर पिता प्रसन्न होताहै १ जिस बड़े भारी तेजस्वीमें असंख्यों गुणभरे हुयेथे और जो अबिनाशी लक्ष्मणजी के ज्येष्ठ भ्राता अपने पिताकी आज्ञा से

भ्राता समेत चौदहवर्ष तक बनमें नियतहुये उस नरोत्तम ने जो तप-
स्वियों की रक्षाके निमित्त जन लोकमें चौदहहज़ार राक्षसोंकोमारा
और रावण नाम महा प्रबल प्रतापी अतुल बल राक्षसने वहां पर
निवास करने वाले २।३।४ रामचन्द्रजी की भार्य्या सीताजी को
हरण किया उस राक्षस को अपने छोटेभाई समेत जाकर महा-
हितकर युद्धमें अत्यन्त कोप करके श्री रामचन्द्रजी ने उस अपराधी
अन्यसे अजेय पुलस्त्यवंशी रावण को ऐसे मारा ५ जैसे कि पूर्व्व
समयमें शिवजी ने अन्धक को मारा था उस देवता असुरों सेभीन
मरने वाले देवता और ब्राह्मणों के दुखदाई कंटक रूप ६ पुलस्त्य-
वंशी रावण को उस महाबाहु रामचन्द्रजी ने युद्धमें उसके सब राक्ष-
सोंके समूहोंसमेत मारा वह रामचन्द्रजी प्रजाओं परअनुग्रहकरके
देवताओं से भी पूजनकिये गये ७ देवता और ऋषियों के समूहों
से पूजित और सेवित सब जीवों पर दया करने वाले उन रामचन्द्र
जीने संपूर्ण संसार को अपनी कीर्त्ति से ब्याप्त करके नाना प्रकार
के राज्यको पाकर फिर धर्म से प्रजा पालन करनेवाले समर्थ दश
रथात्मजने अनर्गल बड़े राजसूय और अश्वमेध को किया और ह-
विषसे देवताओं के ईश्वर इन्द्र को प्रसन्न किया फिर उस राजा-
धिराजने बहुत गुणवाले नानाप्रकार के अन्य२यज्ञोंसे भीपूजनकि-
या १० सदैव अपनेगुणोंसे संयुक्तअपने तेजसे प्रकाशित रामचन्द्रजी
शरीरवर्त्ती सम्पूर्ण रोगरूपक्षुधा पिपासा आदिकोभी बिजय किया
अर्थात् निवृत्त किया ११ दशरथके पुत्र रामचन्द्रजी सबजीवमात्रों
को उल्लंघन करके शोभायमान हुये राज्यमें श्रीरामचन्द्रकेसमान
करने पर पृथ्वी के ऊपर ऋषि देवता और मनुष्यों का निवास
हुआ १२ उस समय राज्य में रामचन्द्र जीके राज शासन करने
पर जीवधारियों के प्राण नाशको प्राप्तनहीं हुये और प्राणअपान
समान किसी के बिपरीत नहीं हुये अर्थात् किसी प्रकार का अनर्थ
नहींहुआ १३ और किसीकी अपमृत्यु आदि कभी नहींहुई चारों
ओरसे तेजोंकी वृद्धिहुई सबप्रजा पूर्णायुवालीहुई उससमय तरुण

अवस्था वाला नहींमरताथा और चारों वेदोंके मंत्रोंसे प्रसन्नदेवता अनेक प्रकार के हव्यकव्य और तड़ागादिक केही पूजन और यज्ञकोहीपातेथे और सबदेशमच्छरडांस और बिषवाले सर्पादिकों से रहितथे १५। १६ जलमें जीवोंकी मृत्यु नहींहुई और बिनासमयके अग्निने किसीको न जलाया उनके राज्य में मनुष्य लोभी मूर्ख और अधर्म करने वालेनहींहुये १७ तबसब वर्णअच्छे लोगों के प्रियकारी ज्ञानियोंके कर्मोंको करनेवाले हुये उस ईश्वरने जनस्थानपर राक्षसोंसे नाशकरीहुई स्वधा और पूजाको उनराक्षसोंको मारकरपितृ और देवताओंके अर्थदिया उस समय मनुष्यहज़ार २ पुत्रवाले और हज़ारोंवर्षोंकी अवस्था वाले उत्पन्न हुये थे उसकाल में बड़े भाइयोंने छोटेभाइयों से श्राद्धोंको नहीं करवाया उसश्याम तरुण अरुणाक्ष मतवाले हाथीकेसमान पराक्रमी आजानुबाहु सुन्दर भुजासिंहस्कन्ध महाबली सबजीवोंके आनन्ददायक श्रीरामचंद्र जीने ग्यारह हज़ार बर्षतक राज्यकिया राम रामेति रामेति यही सब प्रजाकी रटना रहतीथी २१।२२ राज्यपर रामचन्द्रजीके राज्य शासन करने पर संसार रामचन्द्रजी से मनोहर और शोभायमान हुआ वहरामचन्द्र जी चार प्रकारकी सृष्टि को स्वर्गमें पहुंचा कर आपभी स्वर्गकोगये २३ वह रामचन्द्रजी इसलोकमें अपनेराजवंश को आठप्रकारसे नियतकरके शरीरके त्यागनेवाले हुये हे सृंजय वह भी सुधर्मादि चारों कल्याणों में तुझसे २४ और तेरे पुत्रसेभी अधिक धर्मात्माथे तब तुम यज्ञ और दक्षिणा देनेसे रहित होकर अपनेपुत्रकाशोककयों करतेहो यहनारदजीका कथनहै २५॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५६॥

साठवां अध्याय॥

नारदजी बोलेकि हेसृंजय हमराजा भगीरथको भी मृतक हुआ सुनते हैं जिसने श्रीभागीरथी गंगाके दोनों किनारे सुबर्णके चयोंसे संयुक्तकिये १ उसनेराजा और राजकुमारोंको उल्लंघनकर स्वर्ण-

मयी भूषणोंसे अलंकृत दशलाख कन्या ब्राह्मणोंकोदीं कि वह सब कन्या ऐसेरथोंपर सवारथीं किचार २ घोड़ोंसेसंयुक्त प्रत्येक रथके साथ सौ २ हाथीसुवर्णकी मालाओंसे शोभितथे ३ और हरएकहाथी केपीछे हज़ार हज़ारघोड़े और घोड़े २ केपीछे सौ २ गाएं और गौवोंकेपीछे भेड़ बकरियांभीथीं ४ और जोकि गंगाके सन्मुख बहुतसी दक्षिणा देनेवाला राजावर्त्त मानथा उसकारणसे स्थानकी संकोचतासे जलकी आधिक्यताके भारसे आक्रांत और पीड़ामानहोकर गंगा उस राजाकी गोदमें बैठगई ५ इसके अनन्तरपूर्वकाल में जब भागीरथी गंगा जंघापर बिराजमानहुई तब गंगाजीने राजाकी पुत्री होनेकेभावकोपाया और नरकसेरक्षा करनेके कारण पुत्रभावको भी पाया ६ सूर्य्यके समान प्रकाशमान मनोहर बचनवाले गन्धर्वों ने पितृ देवता और मनुष्योंके सुनतेहुये उस गाथाको गाया ७ समुद्र में मिलनेवाली गंगादेवीने बड़ी दक्षिणासे यज्ञोंके करनेवालेइक्ष्वाकुवंशी भगीरथको अपनापिता वर्णनकिया ८ उस का यज्ञ इन्द्र समेत देवताओं के समूहों से सुन्दर अलंकृत और श्रेष्ठ रीति से रक्षित विघ्नरोग और उपाधियों से रहितहुआ ९ निश्चय करके जिस २ वेदपाठी दैवज्ञब्राह्मणने जहांजहांपर अपनेअभीष्टको चाहा उसी २ स्थानपर भगीरथ ने अत्यन्त प्रसन्न होकरदिया १० उस राजाकेयहां ब्राह्मणको अदेयकोई भी वस्तु नहीं हुई जो जिसको अभीष्ट धनथावही उसने उसकोदिया वहराजाभी ब्राह्मणोंकीकृपा से ब्रह्मलोकको गया ११ जिस हेतुसे बालखिल्य आदि का ऋषि कर्मयज्ञ और ज्ञानयज्ञके प्राप्तहोनेके द्वारारूपसूर्य्य और उसकेभीतर नियत ज्योतिस्वरूप ब्रह्म के सन्मुख होना चाहतेहैं वहउसी प्रयोजनकेलिये उस भगीरथके सन्मुख होना चाहतेहैं क्योंकिवह मोक्षसे प्रकाशमान ईश्वर है अर्थात् सूर्य्यके दर्शन से जो पापनष्ट होतेहैं वही उसकेभी दर्शनसे पापका नाशहोताहै और जो सूर्य्यके अन्तर्य्यामीकी उपासनासे सत्य संकल्पादिकफल प्राप्तहोतेहैं वह उसकीभी उपासनासे प्राप्तहोतेहैं तात्पर्य्य यहहैकि ब्रह्मभावप्राप्त

करने से यहराजाभी उनऋषियोंकी उपासना और देखनेके योग्य हुआ १२ हे सृंजय जो वह भगीरथभी अर्थ धर्मादि चारोंकल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्र से भी धर्मात्मा शरीरका त्यागने वाला हुआ तवयज्ञ और दक्षिणासे रहित तुमअपने पुत्रका शोक मतकरो यह नारदजीका कहाहुआहै १३। १४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषष्टितमोऽध्याय: ६०॥

इकसठवां अध्याय॥

नारदजी बोलेहे सृंजय हमअलोलकेपुत्र दिलीपको मृतकहुआ सुनतेहैं जिसके शतयज्ञ में प्रयुत अयुत संख्यक ऐसे ब्राह्मणवर्त्तमानथे १ जोकि ब्रह्मज्ञान और अर्थ शास्त्र ज्ञाता याज्ञिक और पुत्र पौत्रादिसे संपन्नथे जिसयज्ञ करनेवाले राजाने इसधनसे भरी हुई पृथ्वीको २ विस्तृतहुये यज्ञमें ब्राह्मणोंके अर्थ दानकिया उस दिलीपकेयज्ञोंमें स्वर्णमय मार्ग बनायेगये उसके धर्मरूपकरनेवाले देवता अपने ईश्वर इन्द्रके समेतआये ३ जिसमेंपर्व्वताकारहजार हाथी सामिग्री पहुंचानेकोजातेथे वहसबसभासुनहरी और अत्यन्त प्रकाशितहुई४ जिसमें रसोंकेतड़ाग औरभोजनकी बस्तुओंकेपहाड़ बर्त्तमानथे हेराजा सुनहरी यज्ञस्तंभ जिस में हजार व्यायाम के लम्बेथे ५ इन्द्र समेत देवता और अन्यजीवधारी उसको धर्म रूप करनेवाले हुये जिसके सुनहरी यज्ञस्तंभमें चषाल और प्रचषाल थे ६ उसके यज्ञमें छः हजार अप्सरा सात प्रकारसे नृत्यकरतीथीं और बिश्वाबसु गंधर्वभी जहांपर अपनी प्रीतिसे आपही वीणा को बजाताथा और सबजीवोंने राजा को सत्य स्वभाव युक्त माना ७ मीठे २ भोजनों से मतवाले मार्गोंमें सोतेथे उस के उसकर्मको मैं अपूर्व्व मानताहूं उसके समानदूसराकोई राजा नहींहै ८ जोजल के मध्यमें युद्ध करनेवाले राजाके दोनोंरथके पहिये जलमेंनहींडूबे जिनमनुष्योंने उसदृढ़ धनुषधारी सत्यवक्ता ९ बड़ीदक्षिणादेनेवाले राजा दिलीपको देखाथा वहभी स्वर्गके विजयकरने वालेहुये उस

खट्वाङ्ग नामदिलीपके घरमें यहपांच प्रकारके शब्दकभी बन्दनहीं होतेथे वेदध्वनि,धनुष और प्रत्यंचाकाशब्द,और खाओपीओ भोगो यहशब्द, हेसृंजय जो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरेपुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा मृत्यु वश होगया तो तुमयज्ञ और दक्षिणासे रहित होकर अपने पुत्रका शोकमतकरो यह नारदजीने कहा १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकषष्टितमोऽध्यायः६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे सृंजय हम युवनाश्व के पुत्र राजा मांधाता कोभी मृतक सुनते हैं जोकि देवता असुर और मनुष्यों समेततीनों लोकों का विजय करनेवाला था १ अश्विनीकुमार नाम देवताओंने जिसको पूर्व पिताके गर्भसे आकर्षण किया वह राजा आखेट में घूमता हुआ घोड़ों के थकित होने और परिश्रम से तृषित हुआ और कहीं धुएंको देख कर यज्ञ शालामें गया और वहां मिलेहुयेघृत को पाया वैद्यों में श्रेष्ठ अश्विनी कुमार देवताओं ने युवनाश्व के उदरमें पुत्र रूप प्राप्त करने वाला उसको देखकर गर्भ से खैंचलिया पिता के पास सोने वाले देवता के समान तेजस्वी उसको देख कर ३।४ देवता लोग परस्पर में बोले कि इस का पोषण कौन करेगा इन्द्र ने कहा कि यह प्रथम मुझीको धारण करे अर्थात् मैंही इसका पोषण करूं ५ इसके पीछे इन्द्र की उंगलियों से दूध रूप अमृत प्रकट हुआ इन्द्रने जोकि उसपर कृपा करी कि यह मुझीको धारण करेगा ६ इस हेतुसे उसका अपूर्व्व नाम मांधाता कियागया इस के अनन्तर महात्मा इन्द्रके हाथने उस मांधाता के मुखमें दूध और घृत कीधारा गिराई उसने इन्द्र के हाथको पिया और एकही दिनमें बड़ा होगया ७।८ फिर वह पराक्रमी बारह दिनमें बारह वर्ष की अवस्थाके समान हुआ उसने इस संपूर्ण पृथ्वी को एकही दिनमें विजय किया ९ उस धैर्य्ययुक्त धर्मात्मा सत्यसंकल्प जितेन्द्री मनके जीतने वाले वीर मांधाताने जन्मेजय,सुधन्वा,गय,पुरु, बृह-

द्रल, १० असित, और नृग, को विजय किया सूर्य्य के उदय से अस्त पर्य्यन्त जितनी पृथ्वी है ११ वह सब युवनाश्व के पुत्र मांधाताका क्षेत्र कहा जाताहै हे राजा उसने सैकड़ों अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञों से पूजन करके १२ ब्राह्मणोंके अर्थ ऐसी सुवर्ण वर्ण की रोहित मछलियां दान करीं जो कि एक योजन ऊंची और सौ-योजन लंबी थीं १३ उन यज्ञों में ब्राह्मणों से शेष बचेहुये भोजनों-को मनुष्य खातेथे और आदर करते थे उन अनेक प्रकारके भक्ष्यभोज्यचूस्य लेह्य आदि सुस्वादु पदार्थोंके और अन्नके पर्वत लगेथे १४ खाने पीने की बस्तुओं के ढेर और अन्नके पहाड़ महाशोभायमान हुये घृत रूप ह्रद और सूप आदिक रूप कीच दधि रूप फेण और रस रूप जल १५ सहत दूधसे बहने वाली शुभ नदियों ने उन अन्न के पहाड़ों को घेर लिया वहां पर देवता असुर मनुष्य यक्ष गन्धर्व सर्प पक्षी १६ और बेद बेदाङ्ग पार गामी वेद पाठी ब्राह्मण और ऋषि लोग भी आकर नियतहुये वहां आने वालों में कोई भी अपंडित नहीं था १७ तब वह राजा अपने यशों से सब दिशाओं को ब्याप्त करके पवित्र कर्मी पुरुषों के लोकों को गया हे सृंजय वह चारों कल्याणों में तुझ से और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा पुरुष मृत्यु बश हुआ उस दशामें यज्ञ और दक्षिणासे रहित तू अपने पुत्रका शोक मतकरे यह नारदजी ने कहा ॥ १९ । २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विषष्ठितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय ॥

नारद जी बोले हे सृंजय हम नहुष के पुत्र ययाति को मृतक सुनतेहैं उसने सैकड़ों राजसूय अश्वमेधों से पूजन करके १ हजार पुण्डरीक यज्ञ सैकड़ों बाजपेय यज्ञ हजार अतिरात्र यज्ञ अपनी इच्छा से चातुर्मास यज्ञ अग्निष्टोम आदि नाना प्रकार के दक्षिणा वाले यज्ञों से पूजन करके २ पृथ्वी पर ब्राह्मणों के शत्रु म्लेच्छोंका जो कुछ धन था वह सब छीन कर ब्राह्मणोंके अर्थ भेट

किया ३ देव दानवोंके अलंकृत युद्धमें देवताओं की सहायता करके इस सम्पूर्ण पृथ्वी भरको चार ऋषियों को चार भाग करके बांट दी और नाना प्रकार के यज्ञों से पूजन कर उत्तम सन्तान को उत्पन्न करके ४ वह देवता के समान शुक्रजी की पुत्री देवयानी में और धर्म से शर्मिष्ठा में सन्ततिको उत्पन्न करके सब देववनोंमें विहार करने वाला हुआ ५ अपने स्वेच्छा चारी कर्म से दूसरे इन्द्रके समान सब वेदोंके ज्ञाताने जब इच्छाओंकी पूर्णताको नहीं पाया ६ तब इस गाथाको गाकर स्त्री समेत बनको चलागया पृथ्वी पर जितने धान्य जव सुवर्ण पशु और स्त्रीहैं ७ वह सब मिलकरभी एककी तृप्ति नहीं करसक्केहैं ऐसा मानकर जितेन्द्री होना चाहिये इस प्रकार राजाययाति अपनी इच्छादिकों को त्यागकर धैर्य्यको पाकर ८ अपने पुत्र पुरुके राज्य पर नियत करके वनको गया हे सृंजय जो वह भी चारों कल्याणोंमें तुझसे ९ और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा प्रतापी होकर देहको त्याग गया तो तू यज्ञ और दक्षिणाओं से रहित अपने पुत्रके शोक को मत कर यह नारदजीने कहा १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे सृंजय जो हम नाभाग के पुत्रअम्बरीष को मृतकहुआ सुनतेहैं कि जिसअकेलेनेहीलाखोंराजाओं सेयुद्धकिया १ विजयाभिलाषी और अस्त्र युद्धकेज्ञाता और अशुभ अयोग्य वचनों के कहने वाले घोर रूप शत्रु युद्धमें उसके चारों ओर से सन्मुख गये २ तब वह राजा बल हस्त लाघवता शिक्षित अस्त्रोंके पराक्रम से उन्हों के छत्र ध्वजा और शस्त्रोंको काटकर प्राणोंको पीड़ादेने वालाहुआ३वह कवचके त्यागने वाले जीवनके अभिलाषी शरणागत शब्दके कहने वाले प्रार्थना को करते हुये उस शरण्य राजा की शरण में गये ४ हे निष्पाप फिर उस राजाने उन राजाओं

को आज्ञावर्ती कर और इस पृथ्वीको बिजयकरके शास्त्र की रीतिसे सैकड़ों यज्ञोंसे पूजन किया ५ उस यज्ञ में बेद पढ़ने वाले उत्तम ब्राह्मण बड़े पूजित होकर तृप्त हुये और दूसरे मनुष्योंने सदैव सब वस्तुओं से संयुक्त अन्नको भोजन किया ६ वहां पर ब्राह्मण लोग मोदक पूरिक पूप स्वादुष्ट शस्कुली करंभ पृथक् और अच्छे प्रकार बनेहुये रुचिदायक अन्न सूप मैरिक पूप राग खांडव पानक और अच्छी रीतिसेबनाये हुये मृदु सुगंधित मिष्टान्न ८ घृत सहत दूध जल दही यह सब और रसोंसे युक्त अत्यन्त चित्त रोचक फल औरमूलोंको भोजन करतेथे ६ मदको उत्पन्न करने वाली पापकी मूल मद्यादिकों को अपना आनन्द दायक जानकरमद्यपीनेवालोंने गीत बाद्यों समेत अपनी २ इच्छानुसार सबने पान किया १० वहां पर प्रसन्न और मदों से उन्मत्तोंने नाभाग की प्रशंसाओंसे भरीहुई गाथाओंको गान कर करके पढ़ा और हजारों नृत्य करने लगे ११ राजा अम्बरीष ने उन यज्ञों में दक्षिणाओं को दिया उस यज्ञ में एक लाख दश प्रयुत १२ राजाओंकी संख्याथी उन सब सुनहरी कवच श्वेत छत्र और चामर रखने वाले सुनहरे रथ पर चढ़ेहुये राजाओंको उनके बस्तु लेचलने वाले अनुगामियों समेत १३ और मूर्द्धाभिषिक्त राजाओंको और सैकड़ों राज कुमारोंको उसविस्तृत यज्ञमें पूजन करने वाले राजा ने दक्षिणा दिया १४ हे सृंजयजो वह चारों कल्याणों में तुझ से और तेरे पुत्र सेभी अधिक धर्मात्मा काल बश हो गया तो तू यज्ञ और दक्षिणाओं से रहित पुत्र के शोचने को नहीं योग्य है यह नारदजीने कहा १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे सृंजय हम राजा शशिबिन्दु को मृतक सुनते हैं उस श्रीमान् सत्य पराक्रमी ने नाना प्रकार के यज्ञों से पूजन किया १ उस महात्माकी एक लाख स्त्रियांथीं प्रत्येक भार्य्या

के हजार २ पुत्रहुये२ वह सब बड़े पराक्रमी नियुत यज्ञोंके कर्त्ता वेद वेदांगों के पारगामी उत्तम याज्ञिक राजा नाम ३ उत्तम सुनहरी कवच और श्रेष्ठ धनुषधारी अश्वमेधी शशिबिन्दुके कुमारथे ४ हे महाराज उनके पिताने अश्वमेध यज्ञमें उन कुमारों को ब्राह्मणों को भेंट किया तब प्रत्येक राज पुत्र के पीछे सौ २ रथ और हाथी गये तब सुवर्ण भूषणों से अलंकृत कन्याओं का दानकिया हरएक कन्याके साथ सौ हाथी और हर हाथीके साथ सौ २ रथ दिये ६ और हर एक रथ के साथ पराक्रमी और सुनहरी माला रखनेवाले सौ २ घोड़े और घोड़े २ के साथ हजार २ गौ और प्रत्येक गौके साथ पचास कंबल ७ महा भाग शशिबिन्दुने बड़े अश्वमेध यज्ञमें यह असंख्य धन ब्राह्मणों को दान किया ८ बड़े अश्वमेध यज्ञ में जितने यज्ञस्तंभ और चैत्यथे वह उसी प्रकार बनेरहे फिर उतने ही दूसरे स्वर्ण मयी हुये ६ उस राजा के अश्वमेध यज्ञके समाप्त होने पर एक कोश ऊंचे खाने पीने के पर्व्वताकार ढेर तेरह बाकी रह गये राजा शशिबिन्दु प्रसन्न और नीरोग शरीर मनुष्यों से पूर्णरोगादि विघ्नोंसे रहित इसपृथ्वीको बहुतकाल तक भोगकर स्वर्गकोगये ११ हेसृंजय जोवहचारों अर्थधर्मादिक चारोंकल्याणों में तुमसे औरतेरेपुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा इसदेहको त्यागगये तो तुमदक्षिणा सहित यज्ञके नकरनेवाले होकर अपने पुत्रकोशोकमत करो यह नारद जीनेकहा है १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचपष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छाछठवां अध्याय ॥

नारदजी बोलेकि हे सृंजयहम अमूर्त्त रयस कोभी मृतक हुआ सुनतेहैं निश्चय करके यहराजा सौवर्पतक यज्ञके शेषबचेहुयेहव्य का भोजन करनेवालाहुआ १ अग्निने उसको वरदिया फिर गयने उससे वरमांगा कि तप, ब्रह्मचर्य्य, व्रत, नियम और गुरुओं की प्रसन्नता समेत वेदों को जानना चाहताहूं और अपने धर्मसे दूस-

रोंको न मारकर अबिनाशी धनको चाहताहूं ३ ब्राह्मणोंमें दानदेने की सदैव मुझको श्रद्धाहोय औरदूसरेमें चित्त न लगानेवालीसजातीय स्त्रियोंमें मेरेपुत्रोंका जन्महोय ४ अन्नदान करने में मेरीश्रद्धा होय धर्ममें मेरामनरमे और हे अग्निमेरे धर्मकार्य्योंमें कभीबिघ्न न होय तथास्तु अर्थात् ऐसाही होगा ऐसेकहकर अग्नि उसीस्थान में गुप्तहोगये गयनेभी उनसब बरदानों को पाकर धर्मसे शत्रुओं को बिजयकिया ६ उसराजाने दर्श,पूर्णमास,आग्रयण, चातुर्मास, और पूर्ण दक्षिणावाले नानाप्रकार के यज्ञोंसे पूरे सौबर्षतक श्रद्धा समेत पूजनकिया एकलाख गौ दशहजार घोड़े ८ एकलाख निष्क प्रातःकालके समय प्रतिदिन उठ २ कर ब्राह्मणों को दानकी ६ नक्षत्रों के समान दक्षिणा देनेवाले सबनक्षत्र में दानकिया और अन्य २ बहुतप्रकारके यज्ञों से ऐसे पूजन किया जैसे सोम और अंगिराने कियाथा १० जिस राजाने बड़ेभारी अश्वमेध यज्ञ में पृथ्वीको स्वर्णमयी और मणिरूप कंकड़ रखनेवाली बनवाकरवेद पाठी ब्राह्मणोंके अर्थदानकरी ११ राजागयकेसब सुबर्ण के यज्ञस्तंभ रत्नोंसे जटित बड़े धनवाले होकर सबजीवोंके चित्त रोचक हुये १२ तबगयने सबअभीष्ट बस्तुओंसे युक्त अन्नको अत्यन्तब्राह्मण आदि सब जीवोंके निमित्त दानकिया समुद्र समेत बन,द्वीप, नदी, नद,नगर,देश औरस्वर्ग आकाशादि में १४ जो नानाप्रकारके जीवों के समूहहैं वहसबयज्ञके धनधान्यसे अच्छेप्रकार तृप्तहुये और तृप्त होकरकहनेलगे किराजागयके समानदूसराकिसीका यज्ञनहींहै १५ छब्बीसयोजनचौड़ी और तीसयोजनलंबी और आगेपीछेसे चौबीस योजन सुनहरी बेदी उस यजमान रूप राजागय की थी उसने मोती हीरे मणि अबे बस्त्रऔर भूषणादिक ब्राह्मणों के निमित्त दान किये १७ और बड़ी दक्षिणा देने वालेने शास्त्र की आज्ञानुसार दूसरी दक्षिणा ब्राह्मणोंके लिये दानकी यहां पर यज्ञ से शेष बचे हुये भोजनों के पच्चीसपर्व्वत थे १८ तब रसोंके तड़ागों से पृथ्वी पर चेष्टा करने वाली नदियां बहींऔर बस्त्र भूषण और सुगन्धित

बस्तुओंके ढेर पृथक् प्रकार के थे १९ और जिसके प्रभावसे राजा गय तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ वह अविनाशी अंगवाला पवित्र वट ब्रह्मसर नाम है २० हे सृंजय जो वह अर्थ धर्मादिक चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा होकर मर गया तो यज्ञ और दक्षिणाओंसे रहित पुत्रका शोक मत कर यह नारदजीने कहा २१ ॥

इतिश्रीमद्भारतेद्रोणपर्वणिषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे सृंजय हम सांकृतिरन्तिदेवको मृतकहुआ सुनतेहैं जिस महात्माके भोजनबनानेवाले सूपशास्त्रज्ञ दोलाखथे १ जोकि घरमें आये हुये अतिथि ब्राह्मणोंको अमृत के समान उत्तम पक्के और कच्चे अन्नको अहर्निश परोसा करतेथे २ न्याय से प्राप्त हुये धनको ब्राह्मणों के अर्थ दानकिया और धर्मसे वेदोंको पढ़कर शत्रुओंको अपने आधीन किया ३ स्वर्ग के चाहने वाले बहुत से पशु विधिके अनुसर जिस यज्ञ से पूजन करने वाले स्तुतिमान राजाकेपास आप आआकर नियतहुये ४ जिसकेरसोईके घरके चर्म समूहों से नदी वर्त्तमान हुई उसी हेतु से पूर्व्व समय में अग्नि-होत्रके मध्यमें चर्म्मवती नाम नदी विख्यात हुई ५ वह तेजस्वी ब्राह्मणों के अर्थ सुवर्णके निष्कों को देताहुआ बड़ी प्रसन्नता से बोला कि तेरे अर्थ निष्क तेरे अर्थ निष्क तेरेअर्थ २ ऐसी रीतिसे कहकर हजारों निष्कों को दानकिया ६ फिर उसके पीछे विश्वास कराके निष्कों को देताथा ७ अब मैंने थोड़ादिया यह कहता हुआ एकही दिनमें हजारों कोटि निष्क देताथा कि फिर दूसरा इसको कौनदेगा ८ ब्राह्मण का हाथखालीहोने से निस्संदेह मुझकोबड़ा दुःख होगा इस प्रकार से राजाने धनको दान किया ९ सैकड़ों गौ के पीछे चलने वाले सुनहरे हजारों बैल और इसी प्रकार वह निष्कधन जोकि एक सौ आठ सुवर्ण का कहा जाता है हर एक

पक्षमें सौ वर्ष तक ब्राह्मणों को दानकिया अग्निहोत्र की साम-
ग्रियां यज्ञ के उपकारी जो जारहें अर्थात् कमंडल, घट, स्थाली,
पीठर, शयन, आसन, सवारियां, महल, गृह १२ नाना प्रकारके
वृक्षऔर अनेकप्रकार के अन्न व धनोंको ऋषियों के अर्थ दिया इस
बुद्धिमान रन्तिदेवका सब पुर सुवर्णका था १३ वहां पर जो २ पु-
राणके ज्ञाता पुरुषथे वे सब उस बुद्धिमान से परे रन्तिदेवकी ल-
क्ष्मीको देखकर उसकी गाथाको गाने लगे १४ ऐसा पूर्ण धन जो
इसके यहांथा वह पहले कभी कुबेरके यहां भी नहीं देखाथा तो
मनुष्यों में क्याहोगा १५ वहां मनुष्यों ने आश्चर्य्यित होकर यह
कहा कि प्रकटहै कि उस रन्तिदेवके घरमें जो अतिथि एकरात्रि
निवासकरे वह उत्तम धनों को पाता है यह जानकर उसके घरमें
अतिथि आये १६ तब उन अतिथियों ने इक्कीस हजार गौओंको
पाया और वहांपर अत्यन्त स्वच्छमणि कुण्डलधारी रसोइये पुका-
रे १७ कि बहुत से शाका दिकों को और तरकारियों को खाओ
अबपूर्वके समान मांस नहीं है तब रन्तिदेव का जो कुछ रसोईं
आदिका सामानथा वह सब सुनहरी होगया १८ विस्तृत यज्ञमें
वह सब ब्राह्मणोंके अर्थ दानकिया देवताओंने उसके समक्षमें हव्यों
को लिया १९समयपर पितरों ने कव्योंको लिया औरश्रेष्ठ ब्राह्मणोंने
सब अभीष्टोंको प्राप्तकिया हेसंजय जो वह चारों कल्याणोंमें तुझसे
और तेरे पुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा मृत्यु वशहुआ तब यज्ञ और द-
क्षिणासे रहित तुम अपने पुत्रके शोकको क्यों करतेहो यह नारद
जीने कहा २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अड़सठवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम दौष्यन्त के पुत्र भरतको भी
मराहुआ सुनतेहैं जिसबालकने वनके मध्यमें अन्यसे कठिनतासे
होनेके योग्य कर्मकोकिया १ अर्थात् उसपराक्रमी ने हिमावटप्रकार

के नख डाढ़ रूप शस्त्रधारी सिंहोंको अपनी तीव्रता से निर्बल करके खेंचा और बांधा २ और जिसने निर्दयी भय कारी रक्त पीत रंगवाले व्याघ्रोंको पराजय करके अपने स्वाधीन किया ३ फिर बड़े पराक्रमी ने व्याल और सुप्रतीकवंशी हाथी जोकि मुख फिरे हुये सूखे मुख वालेथे उनके दांतोंको पकड़ कर अपने वशीभूत किया ४ उस बड़े बली ने बलवान भैंसों को भी खैंचा और सैकड़ों अत्यन्त दृप्त सिंहोंको अपनेबलसे खेंचा बड़े बली समर गैंड़े आदि अनेक प्रकार के जीवोंको भी प्राणोंके कष्ट समेत बनमें बांध कर और अपने स्वाधीनकर करके फिर छोंड़ दिया ६ ब्राह्मणोंने उसके उस कर्म से उसका नाम सर्वदमन नामरक्खा माताने उस को निषेध किया कि तू जीवोंको मत मार ७ उस पराक्रमी ने यमुना जीके समीप सौ अश्वमेध से पूजन करके सरस्वती के तटपर तीनसौ घोड़ों को और गंगाजी के समीप चारसौ घोड़ोंको छोंड़ा ८ फिर उसने उत्तम पूर्ण दक्षिणावाले बड़े २ हजार यज्ञ सौ अश्वमेध औ सौ राज सूय यज्ञों से पूजन किया ९ अग्निष्टोम और अतिरात्र नाम यज्ञों से पूजनकर विश्वजित यज्ञसे पूजन करके अच्छी रक्षासे युक्त लाखों बाजपेय नाम यज्ञोंसे भी पूजन किया १० जिन यज्ञोंमें शकुन्तला के पुत्र राजा भरतने ब्राह्मणोंको देखकर धनों से तृप्त करके कण्व ऋषिके अर्थ हजार पद्ममुद्रा दिये ११ बड़े यश स्वीने जाम्बूनद नाम शुद्ध सुवर्ण को दिया और उसका सुनहरी यज्ञस्तंभ दोसै गज लंबा था १२ जिस प्रतापी ने ब्राह्मण और इन्द्र समेत सब देवताओं से मिलकर सब प्रकारके चित्तरोचक रत्नोंसे अलंकृत और प्रकाशमान १३ स्वर्णालंकृत घोड़े हाथी रथ ऊंट भेड़ बकरी दास दासी धन धान्य और दूध देनेवालीसवत्सा गौ १४ ग्राम गृह क्षेत्र और अनेक प्रकारके किरोड़ों सामानों को ब्राह्मणों के अर्थ दान किया १५ निश्चय करके वह चक्रवर्त्ती प्रतापवान शत्रुओं को पराजय करने वाला और शत्रुओं से सदैव अजेय था हे संजय जो व चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्रसे

भी अधिक १६ धर्मात्मा कालकेबशीभूतहुआ तो तू यज्ञ और दक्षिणा से रहित अपने पुत्रका शोक क्यों करताहै यह नारदजीनेकहा १७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे संजय बेणुके पुत्र राजापृथु को भी हम मृतक हुआ सुनते हैं जिसको राजसूय यज्ञ में महर्षियों ने सम्पूर्ण संसार के राज्य पर अभिषेक कराया १ सबके ऊपर अपना आतंक प्रबल करते हुये राजाने उपाय करके इसधराको पृथ्वी प्रसिद्धकिया इसी हेतुसे इस राजाको पृथु कहते हैं और वह हम सब घायलोंकी रक्षा करताहै इस कारण से वह क्षत्री हुआ २ और जिस निमित्तसे प्रजाके लोग पृथुको देख कर यह बचन बोले कि हमसब प्रीतिसे युक्त अत्यन्त प्रसन्न हैं इस हेतुके द्वारा उसकी प्रीति से इसका नाम राजा हुआ ३ जिस पृथुकी पृथ्वी कामधेनु अर्थात् अभीष्टों को प्राप्त करने वाली और अकृष्टपच्या अर्थात् जोतने आदिके भी बिना अनाजों की उत्पन्न करनेवाली हुई औरसब गौयें कामनाओं की दाता पुट पुट में मधुकी रूप होगईं ४ दर्भ सुख से स्पर्श करने के योग्य महा सुखदाई सुनहरी रंग की हुईं उन्होंके बस्त्रोंको प्रजालोगोंने अपने शरीरका आच्छादन बनाया और उन्हीं पर शयन भी किया ५ फल अमृत के समान स्वादु युक्त औरमधुरतासे युक्तहुये वही उन सबका आहार हुआ निराहार कोईनहीं हुये ६ सब मनुष्य रोगों से रहित अभीष्ट काम निर्भय होकर वृक्षों के नीचे अथवा पर्व्वतों की गुफाओंमें निवासी हुये उस समयतक देश और पुरोंका बिभाग नहीं हुआथा इसी प्रकारसे यह सब प्रजा सुख पूर्व्वक अपनी इच्छानुसार प्रसन्न हुईं ८ उस समुद्रमें जाने वाले राजा के जल अच्छी रीतिसे नियत हुये और पर्व्वतोंने मार्ग दिया उसकी ध्वजा भी कभी नहीं टूटी ९ वनस्पति, पर्व्वत, देवता, असुर, मनुष्य, सर्प, सप्तऋषि, पवित्र देहधारी गन्धर्व, अप्सरा,

और पितृ, देवता, उस सुखपूर्व्वक बैठे हुये राजाके पास जाकर यह वचन बोले कि आप सब संसरके राजाहो क्षत्रीहो और हमारे राजा और रक्षक होनेसे पितारूप हो ११ हे महाराज आप समर्थहो इस निमित्त से हम सब को वह अभीष्ट वरदानदो जिन वरप्रदनों के द्वारा हम सब सुख पूर्व्वक सदैव तृप्ती को प्राप्त करें १२ राजा पृथुने तथास्तु अर्थात् ऐसाही होय यह कह कर अजगव नाम धनुषको और अनुपम भय कारी वाणों को लेकर बड़ी चिन्ताकरताहुआ पृथ्वीसे बोला १३ कि हे पृथ्वी तेरा कल्याण होय आओ आओ और शीघ्रता से इन प्रजाओं के निमित्त अभीष्ट दुग्ध कोदो इसके पीछे मैं उस अन्नको दूंगा जो जिसको अभीष्ट है १४ पृथ्वी बोली कि हे वीर तुम मुझको अपनी पुत्री करके संकल्प करने के योग्य हो फिर उस योगी राजापृथुने ऐसाही होय यह वचनकहकर सब विधान को किया १५ तब उस के पीछे उस जीवोंकी निवासस्थान पृथ्वी को दोहन किया प्रथम उसके दोहनेकी अभिलाषा वाली वनस्पति उठीं १६ वह प्रीतिसे संयुक्त पृथ्वी बछड़ेको दूध निकालने वाले को और पात्रोंको चाहती हुई नियतहुई तब फूलोंसे संयुक्त शालका वृक्ष तो बछड़ाहुआ और दुहने वाला प्लक्षका वृक्षहुआ १७ काटनेसे अंकुरका निकलना दूध हुआ और औदुम्बर पात्रहुआ और उदयाचल पर्व्वत बछड़ा और सब से बड़ामेरु पर्व्वत दुहने वाला १८ रत्न औषधी आदिक दूध और पाषाणरूप पात्र हुआ फिर सबदेवताओंका समूह तो बछड़ाहुआ और इन्द्रसुनहरी पात्रहुआ और सविता देवता दूधके निकालने वालेहुये और दूधपराक्रम उत्पन्न करनेवाला अथवा जीवदान देने वाला सबका प्रियकारी हुआ १ असुरों ने आमपात्र में मद्य को दुहा वहांपर दूध निकालनेवाला द्विमूर्द्धाहुआ और बछड़ा वैरोचन नामअसुर हुआ इसी प्रकार पृथ्वीपर मनुष्योंने खेतीके अनाजों को दुहा वहां स्वायंभूमनुबछड़ा औरउन्होंका दूध निकालनेवाला राजा पृथुहुआ २० इसी प्रकारतोंवे के पात्र में पृथ्वी के विषको दुहा

वहांधृतराष्ट्र सर्पतो दूधको दुहनेवाला और बछड़ा तक्षकहुआ २२ इसी प्रकार सुगम कर्मी सप्तऋषियों के द्वारा वेदकोभी दुहा वहां दुहनेवाले वृहस्पतिजी छन्दपात्र और बछड़ा सोमराट हुआ २३ विराटने धर्मात्मा पुरुषोंके साथ आमपात्र में आन्तर्द्धान शक्ति को दुहा उन्होंका दुहनेवाला वैश्रवण अर्थात् कुवेरदेवता और शिव जी बछड़ेहुये २४ गन्धर्व और अप्सराओं ने कमल पात्रमें पवित्र सुगंधियों को दुहा उनका बछड़ा चित्ररथ गन्धर्व और दुहनेवाले बिश्वरुचि प्रभुहुये २५ पितरोंने चांदीके पात्रमें स्वधारूप पितरों के अन्नको दुहा तब उन्होंकाबछड़ा वैवस्वत और दुहनेवाले यमराजहुये २६ इसप्रकार करके उसबिराटने उन समान धर्मवालोंजीव समूहों समेत अभीष्ट दुग्धोंकोदुहा निश्चय करके अब जिन पात्र और बछड़ोंके द्वारासदैव निर्बाह करतेहैं २७ वेणुकेपुत्र प्रतापवान् राजापृथ्वीने नाना प्रकारके यज्ञोंसे पूजनकर और चित्तके प्यारे सब अभीष्टोंसे जीव धारियोंको अत्यन्त तृप्तकरके २८ धनवान कर दिया और जोकोई राजापृथ्वी परथे उनसबको राजानेबड़े अश्वमेध नामयज्ञमें ब्राह्मणोंके अर्थदानकिया ३० राजाने इसमणि रत्नोंसे अलंकृत सबपृथ्वीको स्वर्णमयी किया और सुवर्ण मय करके सब ब्राह्मणोंको दानकरदी ३१ हे संजय जो वह चारों कल्याणोंमें तुझ से और तेरेपुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा पुरुष इससंसारको त्यागगया तबयज्ञऔर दक्षिणा देनेसे रहित अपने पुत्रकाशोक मतकर यह नारदजी ने कहा ३२।३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि बड़े तेजस्वी पराक्रमी लोकमें कीर्त्तिमानबड़े यशस्वी जमदग्निजी के पुत्र परशुरामजी संसार से तृप्ती न पाने वाले भी अपने शरीरको समय पर त्यागकरेंगे १ जिस हेतुसे इस संसार को सुखी करतेहुये परशुराम जीनेइस पृथ्वी में भ्रमणकिया,

और अनूल्य धनको पाकर भी जिनकी रूपान्तर दशा नहीं हुई २ जिन्होंने वनमें क्षत्रियों के हाथसे पिताके घायल करने औरमारने पर युद्धमें अन्योंसे विजय न होनेवाले कार्त्तवीर्य्यको मारा ३ तब अकेलेनेही मृत्यु के पंजेमें दवेहुये चौंसठ अयुत हजार क्षत्रियों को एकही धनुष से विजयकिया ४ ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवाले उन क्षत्रियों के विध्वंस करनेमें चौदह हजार को मारा और बहुतों को पकड़कर दन्तकूर को मारा ५ हजारोंको मूशलसे हजारोंको खड्ग से हजारोंको फांसीसे और हजारोंकोजलमें डुबोडुबोकर मारडाला ६ हजारों के दांतोंको तोड़कर नाक कानों को काटा इसके पीछे सातहजार को कटु धूमवाली अग्नि में गिराया ७ शेषबचेहुयोंको बांधकर मृतककर उनके मस्तकोंकोविदीर्ण करके गुणावतीकेउत्तर खांडीव वनके दक्षिण ओरको युद्धमें मारेहुये लाखोंही क्षत्री पृथ्वी में समागये८पिताके मरने से महाक्रोधभरे बुद्धिमान परशुरामजी के हाथ से रथ घोड़े और हाथियों समेत मारेहुये बड़े २ वीर उस स्थान में शयन करनेवाले हुये ९ तब परशुरामजीने अपने फरसे से दशहजार क्षत्रियोंको मारा और उन बचनों को नहींसहा जोकि उन ब्राह्मणोंसे वारम्वार कहे गयेथे १० जब उत्तम ब्राह्मण पुकारे कि हेभृगुवंशी परशुरामजी दौड़ो उसके पीछे प्रतापवान् परशुरामजी ने काश्मीर, दरद, कुन्ति, क्षुद्रक, ११ अंग, वंग, कलिंग, विदेह, ताम्र, लिप्तक, रक्षोवाह, वीतिहोत्र, त्रिगर्त्त, मार्त्तिकावत, शिवी, और देशदेशके दूसरे हजारों राजाओं को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से मारा १३ क्षत्रियों के लाखों कोटि संहार किये इन्द्रगोपक अर्थात् बीरवहूटीके रंग वाले अथवा बंधुजीव वृक्षके समान१४ रुधिरों के समूहों से नदियोंको पूर्ण करके उन भार्गवजी ने अष्टादश द्वीपोंको अपने स्वाधीन करके १५ उत्तम पूर्ण दक्षिणा वाले हजारों पवित्र यज्ञोंसे पूजन किया और आठ ताल वृक्षोंके समान ऊंची ब्रह्माजीकी बनाईहुई स्वर्णमयी वेदीको सब प्रकार के हजारों रत्नोंसे जटित सैकड़ों पताका रूपमाला रखने वाली ग्रामीण और

बनके बसने वाले पशुओंके समूहोंसे पूरित उस पृथ्वीको १७फिर स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत लाखों गजेन्द्रोंको यमदग्नजी के पुत्र परशुरामजी के दिये हुयोंको कश्यप जीनेलिया १८ परशुरामजी ने पृथ्वी को चोरोंसे रहित करके उत्तम अभीष्ट पदार्थों से पूर्ण धरा देबीको बड़े अश्वमेध यज्ञमें काश्यपजीके अर्थ दानकरदिया १९ उस प्रभुपराक्रमी बीरने इक्कीसबार इस पृथ्वीकोक्षत्रियों से रहित करके और सैकड़ों यज्ञोंसे पूजन करके ब्राह्मणोंकेनिमित्त दानकिया २० मरीचिके पुत्र कश्यप ब्राह्मणने सप्तद्वीपा पृथ्वीको दानमेंलेकर परशुरामजी से कहा कि अब मेरी आज्ञासे आप इस पृथ्वीसे बाहर निकलजाओ २१ ब्राह्मण की आज्ञा पालन करने वालेउस श्रेष्ठशूरबीर प्रतापीने कश्यपजी के बचनसे बाणोंकेगिरनेके स्थानतक समुद्रको हटाकर २२ पहाड़ोंमें श्रेष्ठ बायुके समान महेन्द्र पर्व्वतपर निवासस्थान किया इस रीतिसे हजारों गुणोंसे संपन्न भृगुबंशियोंको कीर्त्ति के बढ़ानेवाले २३ बड़े यशस्वी तेजस्वी परशुरामजी भी अपने शरीरको त्यागकरेंगे जो कि चारों कल्याणों में तुझसे और तेरेपुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा हैं २४ फिर तू यज्ञ न करने वाले दक्षिणा देनेसे रहित अपने पुत्र को मतशोच हे नरोत्तम २ ऽजय यह सब तुझसे चारों कल्याणों में अधिक किन्तु सैकड़ों कल्याण अधिक रखने वाले बशहुये २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

यह सोलह राजाओंका वर्णन समाप्त हुआ ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

ब्यासजी बोलेकि वहराजा संजय सोलह राजाओंके इस आख्यानको जोकि धर्मउत्पन्न करनेवाला और पूर्णायुका करनेवाला है सुनकर बोलताहुआ मौनहुआ १ भगवान् नारद ऋषि उस मौन होनेवाले राजा से बोले कि हेबड़ेतेजस्वी तुमने मेरेकहे हुये

इतिहासोंको सुनकर अंगीकारकिया २ अबकहो कि इन इतिहासों
के सुननेसे यहतेरा शोकऐसा दूरहुआ जैसाकि शूद्रास्त्री के पति में
श्राद्धनाश होताहै इसवचनको सुनकर राजा सञ्जय हाथजोड़कर
बोले ३ हे महाबाहो प्राचीन यज्ञ करनेवाले और दक्षिणा देनेवाले
राज ऋषियों के इसधन धान्यादि को देनेवाले उत्तम इतिहास को
सुनकर ४ जैसेकि सूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकार दूरहोताहै उसीरीति
से आश्चर्य्य समेत शोकके दूरहोनेपर पापोंसे रहित और पीड़ासे
विगतहूं अब आपआज्ञाकरें कि मैं क्याकरूं ५ नारदजी बोले कि
तुम प्रारब्धसे निःशोक होकर जो चाहतेहो सो मांगो वहसब तुम
को मिलेगा हमें मिथ्या वादीनहींहैं ६ सञ्जय बोले कि अबजो आप
मुझपर प्रसन्नहैं मैं इसीसे बहुत आनन्दितहूं जिसपर आपप्रसन्न
हैं उसको कोईवस्तु दुष्प्राप्य नहींहै ७ नारदजी बोले कि यज्ञ के
निमित्त संस्कार कियेहुये पशुके समान नर्करूप दुखसे उठाकरतेरे
उस पुत्रको फिर देताहूं जो कि चोरों से निरर्थक मारा गयाहै ८
व्यासजी बोलेकि इसके पीछे प्रसन्न हुये ऋषिका दियाहुआ पुत्र
फिर प्रकट हुआ वहपुत्र अपूर्व्व प्रकाशमान कुवेरके पुत्र केसमान
था ९ इसके पीछेराजा अपनेपुत्रसे मिलकर प्रसन्नहुआ और धर्म
उत्पन्न करनेवाले पूर्ण दक्षिणा के यज्ञों से पूजन किया १० वह
अभीष्टोंको न प्राप्त करनेवाला भयभीत यज्ञोंसे रहित असन्तान
बालक युद्धमें नहींमारा गयाइसी हेतुसे वहफिर सजीव हुआ ११
शूर वीर अभीष्टोंको प्राप्त करनेवाला अभिमन्यु हजारों शत्रुओंको
संतप्त करके सेनाके सन्मुख माराहुआ होकर गया १२ ब्रह्मचर्य्य
ज्ञानशास्त्र और इष्टोनाम यज्ञों से जिन लोकोंको जातेहैं तेरापुत्र
उन्हीं अविनाशी लोकोंको गया १३ ज्ञानीलोग सदैव धर्मउत्पन्न
करने वाले कर्मोंके द्वारा स्वर्गकोचाहतेहैं परन्तु इससंसारी पृथ्वी
को स्वर्गवासीलोग स्वर्गसे श्रेष्ठ न समझकरनहीं चाहतेहैं १४इस
हेतुसे युद्धमें माराहुआ स्वर्गवासी अर्जुनका पुत्र यहां लानेकेयोग्य
नहीं है और कोई पदार्थ उसको अपेक्षित नहीं हैं क्यों कि

सब उत्तमपदार्थ उसको प्राप्त हैं १५ ध्यानसे एकान्त में ब्रह्मका दर्शनकरने वाले योगी जिस को पाते हैं और यज्ञ करने वाले उत्तम पुरुष जिसको पातेहैं और वृद्धि पानेवाले जिसको तपोंके द्वारा पाते हैं उस अविनाशी गतिको तेरे पुत्रने पायाहै १६ फिर वह भगवत् भक्तबीर चन्द्रमा की किरणों से राजाके समान समीप बर्त्तमान है वह अभिमन्यु ब्राह्मणोंसे वृद्धिपाने के कारण चन्द्रमाके शरीरको प्राप्त हुआ वह शोकके योग्य नहीं है १७ इसप्रकार से जानकर दृढ़चित्ततासे शत्रुओंको मारधैर्य्यको प्राप्तकरो हे निष्पाप हमजीवतेही शोचने के योग्यहैं और स्वर्ग में पहुंचे हुये जीवधारी तो कभीभी शोचनेके योग्य नहीं हैं १८ हे महाराज शोच करने से पापही बढ़ता है इस हेतुसे मनुष्य अपने शोकको त्याग करके अपने कल्याणके निमित्त उपायकरे १९ बड़ी प्रसन्नता ज्ञान और सुखकी प्राप्तीका बिचारकरे बुद्धिमानों ने इसको जानकर कल्याण को कहाहै शोक कल्याण नहीं कहा जाताहै २० हे ज्ञानी तुमइस प्रकारसेउठो और नियमके धारण करनेवाले होकर शोचको त्याग करो तुमनेमृत्युके प्रतापोंको अनुपम उपमाओंसेयुक्त दृष्टान्त समेत सुना २१ और सबऐश्वर्य्य बिनाशवानहैं यहभी सुनाऔर मराहुआ और फिर सजीव हुये संजयके पुत्रको भी सुना २२ हे ज्ञानी महा राज तुम इस प्रकार से शोचमतकरो मैंअब जाताहूं इतना कहकर भगवान् व्यास ऋषि उसी स्थान पर गुप्त होगये २३ युधिष्ठिर को इसरीतिसे समाश्वासन करके उनवक्ताओंमें श्रेष्ठ भगवान् बुद्धिमा-नोंमें श्रेष्ठ स्वच्छ अभ्रके समान प्रकाशित व्यासजीके चले जाने पर २४ महा इन्द्रके समान तेजस्वी न्यायसे धन उपार्जन करने वाले प्रथम महाराजाओंके यज्ञों के धनों को सुनकर २५ चित्त से प्रशंसा करता हुआ वह ज्ञानी युधिष्ठिर शोक से रहित हुआ परन्तु फिर भी उस के दुखी मन ने चिन्ता करी कि मैं अर्जुन से क्याकहूंगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस भय कारी जीवों के नाश करने वाले दिनके समाप्तहोने और श्रीमान् सूर्य्यके अस्तहोने संध्याकाल वर्त्तमान होने १ और निवास के लिये सब के चले जाने पर हनुमान् जीको ध्वजा रखने वाला अर्जुन दिव्य अस्त्रों से संसप्तकोंके समूहोंको मारकर २ अपने विजयी रथ पर सवारहोकर अपने डेरोंको आया अश्रुपातों से पूर्ण गद् दृग कण्ठ अर्जुन चलता हुआ गोविन्द जीसे बोला कि हे केशवजी मेराहृदय क्यों भयभीत होताहै ३ और वचनरुकताहै और अप्रियअशुभ शकुन दिखाईदेते हैं और शरीर में क्लेश प्राप्तहोता है ४ और मेराअप्रिय दुःख हृदय से दूर नहीं होताहै पृथ्वी और दिशाओं में जो अत्यन्त भय कारी उत्पात हैं वह मुझ को भयभीत करते हैं ५ वे सब उत्पात अनेक प्रकार के दुःखोंके शूचक दिखाई पड़ते हैं मंत्रियों समेत मेरे गुरू रूपराजा युधिष्ठिर की कुशल होय ६ वासुदेवजी बोले कि प्रकटहै कि मंत्रियों समेत तेरे भाई का कल्याण होगा शोच मतकर वहा औरही कुछ अशुभ औरअप्रिय होगा ७ संजय बोलाकि इसकेपीछे दोनों वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन वीरोंका मरण भूमि में संध्याकी उपासना करके रथ में नियत होकर युद्ध के वृत्तान्तों को कहते हुये चले ८ इसके अनन्तर वासुदेवजी और अर्जुनअत्यन्त कठिनकर्मको करके अपने उनडेरों में पहुंचे जोकि आनन्दसे रहित अप्रकाशमान थे ९ उसके पीछे शत्रुओंके वीरोंका मारने वाला हृदय से व्याकुल अर्जुन डेरेको नाशमान रूप देखकर श्रीकृष्ण जीसे बोला १० किहे जनार्दनजी अब दुन्दुभियों के शब्द से संयुक्त प्रसन्नता के बाजे और आनन्दके शब्दोंसमेत शंखभीनहींबजतेहैं ११ अब शम्यातालके शब्दों समेत वीणा नहीं बजतीहैं और आनन्दके गीतों कोभी कोई नहीं गातेहैं १२ और मेरीसेनाओंमें बन्दीजन प्रशंसा संयुक्त चित्तरोचक स्तुतियों को नहीं पढ़ते हैं और शूरवीर भी मुझकोदेखकर नीचाशिर

कियेहुयेलौटे जातेहैं १३ और पूर्वकेसमान कर्मोंको करके मुझआये हुयेकोप्रतिष्ठानहींकरतेहैं अर्थात् अभ्युत्थाननहींदेतेहैंहेमाधवजीअव मेरे भाइयोंकी भीकुशलहोय १४ अपने मनुष्योंको व्याकुलदेखकर मेरेचित्तकी व्याकुलता दूर नहीं होतीहै हेबड़ाई देनेवाले राजा पांचाल और विराटकेसबशूरवीरोंकोभीसामग्रमता अर्थात् मुलाक़ातमुझसे होय हेअबिनाशीअब भाइयोंसमेत अत्यन्त प्रसन्नअभिमन्यु१५ मुझ युद्धसेआयेहुयेप्रसन्नचित्तकेसन्मुख हंसताहुआनहींआताहै १६ संजय बोलेकिइस प्रकार से कहतेहुये और अपनेडेरेमें प्रवेश करनेवालेउन दोनोंने महा व्याकुल और अचेतसबपांडवोंको देखा १७ हनुमान्‌जी कीध्वजा रखने वाला अर्जुन भाइयोंको उदास चित्तदेख और अभिमन्युको न देखकर यह बचन बोला १८ कि तुमसबोंके मुखकावर्ण अप्रसन्न दिखाई देताहै और अभिमन्युको नहीं देखताहूं औरतुम मुझको प्रसन्न नहीं करते हो १९ मैंने सुनाहै कि द्रोणाचार्य्यने चक्रव्यूहबनाया२० और उसबालक अभिमन्युके बिना तुमसबमेंउसव्यूह कोतोड़ने वाला कोई नहीं था परन्तु मैंने सेनासे बाहर निकलना उसको नहीं सिखलायाथा क्यातुम लोगोंने उसबालक को शत्रुओं की सेनामें प्रवेशित तोनहीं किया २१ वह बड़ा धनुष धारीशत्रुओं के बीरोंका मारनेवाला अभिमन्यु युद्धमें शत्रुओंकी बहुतसी सेनाको पराजय करके युद्धमें मारातो नहीं गया २२ वह लाल नेत्र बड़ी भुजावालापर्व्वतोंमें उत्पन्न हुये सिंहके समान बिष्णुकेसमान कहो कि किस प्रकार से युद्धभूमिमें मारा गया २३ उस सुकुमार बड़े धनुषधारी इन्द्रके पौत्र सदैव मेरे प्यारे का बर्णन करोकि वहकैसे२ युद्धमें मारागया २४ मृत्युसे अचेत होकर किस पुरुषने उससुभद्रा के प्यारे पुत्र और सदैव द्रौपदी व केशवजी अथवा अम्बामाता के प्यारेको मारा २५ पराक्रम शास्त्र बुद्धिकी प्रबलता से वृष्णियों के बीर महात्मा केशवजीके समान अभिमन्यु कैसे २ युद्धभूमिमें मारा २६ यादवी सुभद्राके प्यारे और आप से सदैव पोषण पाये हुये शूर बीर पुत्र को जोनहीं देखताहूं तो यमलोककोजाऊंगा २७ मृदु

और घूंघर वाले बालोंसे युक्त मृग शावकके समान नेत्र वाले मत वाले हाथीके समान पराक्रमी सिंहके बच्चेके समान उन्नत २८ बालक मन्द मुसकानके साथ बोलने वाले जितेन्द्री सदैव गुरुपरायण बाल्यावस्थामें भी बड़ेकर्म वाले ईर्षासे रहित प्रियभाषी २६ महोत्साह महाबाहु दीर्घनेत्र भक्तोंपर दया करनेवाले शिक्षित नीचोंके संगसे रहित ३० कृतज्ञ ज्ञानी अस्त्रज्ञ वृद्धोंके आज्ञाकारी सदैव युद्धाभिनन्दनशत्रुओंके भयके बढ़ानेवाले ३१।३२इष्ट मित्र जातिकुटुम्ब नातेदार आदिके प्रियबातोंकी वृद्धिमें प्रवृत्त पिताओंकी विजयोंका अभिलाषी प्रथमन मारने वाले युद्धमेंनिर्भय३३।३४ऐसे पुत्रकोजो नहीं देखताहूं तो में यमलोकको जाऊंगा सुन्दर नासिका उत्तम ललाट कन्ध नेत्र भृकुटी दांतोंकी सुन्दर पंक्तिवाले ३५ उस मुखकोन-देखतेहुये मेरेहृदयकी क्याशांती होसक्तीहै ३६ और उसवीरकीउस अनुपम शोभा को जो कि देवताओं को भी कठिनता से प्राप्त होसक्तीहै ३७ न देखतेहुये मेरे हृदय की कैसे शान्ती होसक्ती है प्रणाम करनेमें सावधान और पिताओं के वचन में प्रीति करने वाले उस अभिमन्युकोजोमें अवनहीं देखताहूं ३८तोमेरेहृदयकी क्या शान्तीहै वह सुकुमारवीर बड़े मूल्यके शयनस्थान के योग्य ३६ सनाथोंमें श्रेष्ठ अनाथके समान निश्चय करके पृथ्वी पर सोताहै पूर्व्व समय में उत्तम स्त्रियां जिस शयन करने वाले की उपासना करतीथीं४० अब उस अत्यन्त घायल शरीर वाले के शरीर की अशुभ शृगाल उपासना करतेहैं प्रथम जो सोयाहुआ सूतमागध और बन्दीजनों से जगाया जाताथा ४१ अब निश्चय करके उसको कुत्ते और शृगाल अपने अशुभ शब्दों से जगातेहैं उस का वह शुभ मुख छत्र की छायाके योग्यथा ४२ अब युद्ध भूमिकी धूली उसको भस्मसे मिश्रितकरेगी४३ हा पुत्र प्रियदर्शनीयसदैव मेरे देखने के उत्सुक हे अभागेके पुत्र तू कालके पराक्रम से खेंचाजाताहै निश्चय करके सदैव शुभ कर्म करने वालोंकीगति वहयमपुरी४४जो कि अपने प्रकाशों से प्रसन्नता पूर्व्वक सुन्दरहै तुझसे अत्यन्त शोभा पातीहै

निश्चय तुझ निर्भय प्यारे अतिथि पाये हुये को यमराज वरुण ४५ इन्द्र और कुवेर पूजन करतेहैं जैसेकिवह व्यापारी जिसका जहाज टूट गयाहो हाय २ कर पुकारे उसी प्रकार अनेकप्रकारका विलाप करके ४६ बड़े दुःखसे भरे हुये अर्जुनने युधिष्ठिर से पूंछा कि हे- कुरुनन्दन वह अभिमन्यु शत्रुओंका नाश करके ४७ युद्धमें सन्मुख हुये नरोत्तमोंसे युद्ध करताहुआ स्वर्गको गया निश्चयकरके उपाय करने वाले बहुत नरोत्तमों से लड़ते ४८ उस असहाय और सहाय ता चाहने वालेने मुझको स्मरण किया मेरा पुत्र अभिमन्यु कर्ण द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य आदि बड़े २ वीरों के तीक्ष्ण बाणों सेपीड़ा मान ४९ नाना प्रकार के रूप युक्त अत्यन्तसाफ नोकवाले बाणों से अचेत हो इस स्थानपर मेरा पितारक्षक होय ५० इस प्रकार बारंबारबिलाप करता हुआ निर्दय लोगोंके हाथसे गिराया गया मैं यह मानताहूं कि मेरा पुत्र अथवा माधव जी का भानजा ५१ सुभद्रा में जन्मलेनेवाला इसरीतिसे कहनेके योग्य नहींहै निश्चय करके मेरा बज्रके समान हृदय अत्यन्त कठोरहै ५२ जो लम्बी भुजा और रक्तनेत्र वाले अभिमन्युको बिना देखते हुये नहीं फटता है ५३ उन बड़ेधनुष धारीमर्मस्थलोंके भेदनकरने वाले निर्दयलोगों ने किस प्रकार उस बालकपर जो कि वासुदेवजीका भानजा और मेरा पुत्रथा बाणोंको छोड़ा जो साहसी सदैवशत्रुओं को मार कर समीपआयेहुयेमुझकोदेखकर अभिवादनकरके प्रतिष्ठाकरताथा ५४ वह अब मुझको क्यों नहीं देखताहै निश्चय वह गिराया हुआ रुधिर में भरा पृथ्वीपर सोताहै ५५ और सूर्य्यके समान पृथ्वीको शोभित करता हुआ सोताहै मैं उस सुभद्राको शोचताहूं जो युद्धमें मुख न फेरने वाले पुत्रको ५६ युद्धमें मराहुआ सुनकर शोक से नाशको पावेगी सुभद्रा औरद्रौपदी अभिमन्युको न देखकर मुझको क्या कहैंगी और मैं उन दुःख से पीड़ामान उसकी माताओं से क्या कहूंगा ५७।५८ निश्चय मेरा हृदय वज्रहै जो शोकसे पूर्ण रो- तीहुई बधूको देखकर हजारों टुकड़े नहीं होता है मैंने धृतराष्ट्र

के अहंकारी पुत्रोंके सिंहनाद सुने ५६ और श्रीकृष्णजीने वीरों को कठोर वचन कहता हुआ युयुत्सू को सुना हे महारथियो अर्जुन को न सहकर तुम बालक को मारकर ६० क्या प्रसन्न होते हो हे धर्म के न जानने वाले तुम पांडव अर्जुन के पराक्रम को देखो युद्ध में उन केशवजी और अर्जुनके अप्रियको करके ६१ शोकका समय वर्त्त-मान होनेपर प्रसन्नहो होकर तुमसिंहके समान क्या गर्जतेहो इस-बुरे कर्मकाफल तुमको शीघ्रही मिलैगा ६२ निश्चय करके तुमलो-गोंने बड़ाकठिन अधर्मकिया वहकैसे विलम्बतक निष्फल होसक्ताहै निश्चय करके वड़ा बुद्धिमान् क्रोध और शोकसंयुक्त वैश्याका पुत्र उनसे कहताहुआ शस्त्रोंको छोड़कर हटगया हे श्रीकृष्णजी आपने युद्धमें किसकारण यहमुझको नहीं कहा ६३।६४ मैंउसी समय उन निर्दयी महारथियोंको भस्मकरता संजयबोले कि वासुदेव श्रीकृष्ण जी उसपुत्रके शोकसे पीड़ामान अश्रुपातों सेपूर्णनेत्र पुत्रके दुःखोंसे भरे शोकसे संयुक्त ध्यान करने वाले उसअर्जुन को पकड़कर ६५ यहबोलेकि तुमइस रीतिसे शोक मतकरो मुख न मोड़ने वालेशूरोंकी यहीमार्गहै ६६ मुख्यकरके युद्धसे जीविका रखनेवाले मुख न फेरने वालेशूरवीर क्षत्रियोंकी शास्त्रज्ञ लोगोंने यहीगतिवर्णनकीहै ६७और ऐसेमुख न मोड़कर लड़नेवाले शूरोंका मरना युद्धहीमें होताहै ६८ निश्चय अभिमन्यु पवित्रकर्मा पुरुषोंके लोकोंको गया हे भरतर्षभ सबवीरोंकी यहीचित्तकी इच्छाहै ६९ कि युद्धमेंसन्मुखहोकर मृत्युको पावेंहे प्रतिष्ठाकेदेनेवाले वह अभिमन्यु वीरोंसमेत बड़े२राजकुमारों को मारकर७० युद्धमें सन्मुखहोने वाले वीरोंकी चाहीहुई मृत्युको प्राप्त करनेवालाहुआ हेपुरुषोत्तमशोचमतकरयुद्धमेंक्षत्रियोंकोनाश रूपयह सनातन पूर्वकेधर्मकरनेवालोंसे नियतकियागयाहै हेभरत वंशियोंमें श्रेष्ठ येतेरेसब भाईमहा दुखीहैं ७१ । ७२ और तेरे शोक युक्तहोने पर राजालोग और तेरेमित्र वर्गआदिक शोक से युक्त हैं हेप्रतिष्ठा करनेवाले तुमउनको अपनेविश्वस्थ वचनोंसे आश्वासन करो ७३ जो जाननेके योग्यहै वह तेरा जानाहुआ है शोक करने

केयोग्य नहींहै उनअपूर्वकर्मी श्रीकृष्णजीसे ऐसा बिश्वासित और आश्वासन कियाहुआ अर्जुन७४उन गद्गदकंठवाले सबभाइयोंसे बोलाकिवहलंबो भुजाबड़े स्कन्धकमललोचन वाला अभिमन्यु ७५ जैसेवृत्तान्त वालाहै मैं उस को वैसाही यथार्थ सुना चाहताहूं मेरे पुत्रकेउन शत्रुओंको इष्टमित्र भाईबन्धु नातेदार आदिक समेत घोड़े हाथी और रथोंसमेत युद्धमें मेरे हाथ सेमरे हुये देखोगे अस्त्रज्ञ और अस्त्र धारी तुमलोगोंके समक्षमें७६।७७ किसरीति से इन्द्रसे घायलभी अभिमन्यु नाश को पावे जोमैं इस प्रकार अपने पुत्रकी रक्षा में पांडव और पांचालोंको असमर्थ जानताती वहमुझसे रक्षितहोता बाणोंकी वर्षा करतेरथमें सवार तुमलोगोंका किसप्रकार ७८।७६ अनादर करके शत्रुओं के हाथसे अभिमन्यु मारागया आश्चर्य्य है कितुम्हारा-उद्योग और उपायनहींहै न तुम्हारा पराक्रमहै८० जिस स्थान पर युद्ध में तुम्हारे देखतेहुये युद्ध में अभिमन्यु गिराया गया मैं अपनी निन्दा करूं किजो अत्यन्त निर्बल ८१ भयभीत और निश्चसन करनेवालेतुम लोगों को जतलाकर चलागया ॥ दुःखकी बातहै कि तुम्हारे कवच और शस्त्रादि शोभाही के दिखाने वालेहैं ८२ मेरेपुत्रकी रक्षा न करने वालोंके बचन अच्छे लोगोंके मध्यमें कहनेके योग्यहैं इस प्रकार बचन को कहकर धनुष और उत्तम खड्गको धारणकरने वालानियत ८३ अर्जुनकिसीकेदेखने को समर्थ नहींहुआ सुहृदजनलोग उसमृत्युके समान क्रोधसेपूर्ण बारंबार श्वासलेनेवाले ८४ पुत्रके शोकसेदुःखी अश्रुपातोंसे व्याप्त मुखवाले अर्जुनके उत्तर देनेको अथवा देखनेको ८५ वासुदेव जी और बड़े पांडुनन्दन युधिष्ठिरके सिवाय कोईसमर्थ नहीं हुआ वह दोनों सब दशा में प्रिय करनेवाले और अर्जुन के मन के अनुसार थे ८६ वहीदोनों बड़ेमान और प्रीतिसे इससे बोलने को समर्थहैं इसकेपीछे पुत्रके शोकसे अत्यन्त दुखीमन ८७ कमललोचन क्रोध से भरेहुये उसअर्जुनसे राजायुधिष्ठिर बचनकोबोले ८८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोलेकि हे महाबाहो संसप्तकोंकी सेनामेंतेरे जानेपर आचार्य्यनेमेरे पकड़नेमें बड़ाभारी कठिन उपायकिया १ हमसबने भी रथकीसेनाको अलंकृत करके उसप्रकार के उपाय करने वाले द्रोणाचार्य्यको युद्धमेंरोंका २ मेरेरक्षितहोनेपर रथियोंसेरुकेहुयेवह द्रोणाचार्य्य तीक्ष्ण बाणों से पीड़ामान करते हुये शीघ्रही हमारे सन्मुखआये ३ द्रोणाचार्य्यसे पीड़ामान वहसबवीर युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी सेनाके देखनेको भी समर्थनहीं हुये तो उसके पराजय करने को कहांसे समर्थ होते ४ हे समर्थ भाई फिर हम सबने उस पराक्रममें असादृश्य अभिमन्युसे कहाकि इस सेनाको पराजय कर ५ उस पराक्रमी उत्तम घोड़ेके समान और हमसे उसप्रकार आज्ञा पाये हुये ने सहने के अयोग्य उस भारको भी उठाना प्रारंभकिया ६ तेरे अस्त्रोंकी शिक्षा और पराक्रमसे संयुक्त वह बालक उससेना में ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि समुद्रमें गरुड़जी प्रवेश करजातेहैं ७ हम युद्धके मध्य सेनामें प्रवेश करने के अभिलाषी उस यादवों के पुत्र वीर अभिमन्युके पीछे उसी मार्ग से चले जिस मार्ग से कि वह सेनामें गयाथा ८ हेतात इसके अनन्तर सिंधके राजा नीच जयद्रथने रुद्रजीके वरदान से हम सबको रोंका ९ उसके पीछे द्रोणाचार्य्य,कृपाचार्य्य,कर्ण अश्वत्थामा,कौशिली,कृतवर्मा,इन छः रथियोंने अभिमन्युको चारों ओरसेरोंका १० वहबड़े पराक्रमसे उपाय करनेवाला बालकयुद्धमेंउन सबमहा रथियों से घिरकर विरथकिया गया ११ इसके पीछे उन महारथियों से विरथ कियेहुये अभिमन्यु को दुश्शासन के पुत्रने बड़े संशय को पाकर मारा १२ वह अभिमन्यु मनुष्य घोड़े रथ और हजारों हाथियों को मारकर अर्थात् आठ हजार रथ नौसे हाथी १३ दो हजार राजकुमार और दृष्टिमेंन आने वाले बहुत से वीरोंको और राजा वृहद्बलको युद्ध भूमिमेंस्वर्ग में भेजकर १४ फिर बड़े धर्मात्माने मृत्युको पाया हमारे शोक का

बढ़ानेवाला यहीवृत्तान्तहै १५ हेपुरुषोत्तम उसनेइसप्रकारसे स्वर्ग-
लोकको पाया इसके पीछे अर्जुन धर्मराजके कहेहुये बचनको सुन-
कर१६ हायपुत्र इसप्रकार वह बड़ी २ श्वासोंकोलेताहुआ महापी-
ड़ितहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा फिर व्याकुलचित्तहोकर वह सबभाई
बन्धुआदिक बीर अर्जुनको चारोंओरसे घेरकर १७ महादुःखी मन
पलक न मारनेवाले नेत्रोंसे परस्पर देखनेलगे इसके पीछे क्रोधसे
मूर्च्छीमान इन्द्र का पुत्र अर्जुन चैतन्यता को पाकर ज्वरसे कंपा-
यमानके समान बारंबार श्वासों को लेताहुआ हाथको हाथमें पीस
कर श्वासलेता अश्रुपातों से पूर्ण नेत्र १८ उन्मत्तके समान देखकर
इसबचनको बोला कि मैं तुमसे सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं कि कलह-
ही जयद्रथ को मारूंगा जो वह मरने के भयसे डरा हुआ होकर
धृतराष्ट्रके पुत्रोंको त्याग नहींकरेगा २० हे महाराजजो वह हमारी
अथवा पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजीकी वा आपकी शरण में नहीं आवे तो
कल उस जयद्रथको अवश्य मारूंगा २१ मैं उस दुर्योधनके प्रिय
करनेवाले और मेरी प्रीतिको भूलजानेवाले और बालक के मारने
के मुख्य कारण रूप जयद्रथको कल मारूंगा २२ हे राजा जोकोई
युद्धमें उसकी रक्षकरनेवाले और द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य जी भी जो
मुझसे युद्ध करेंगे तो मैं उनकोभी बाणोंसे ढकूंगा २३ हे पुरुषोत्तमो
जो मैं युद्धमें इसप्रकार किये हुये प्रणको नहीं करूं तो धर्म उत्पन्न
करनेवाले कर्म से प्रकट शूरों के लोकों को नहीं पाऊं २४ माता
पिताके मारनेवालों के जो लोक हैं अथवा गुरुकी स्त्री से संभोग
करनेवालों के जो लोकहैं सदैव दुःख देनेवालोंके जो लोकहैं २५
साधुओं के गुणोंमें दोष लगानेवालों के जो लोक हैं परोक्ष निन्दा
करनेवालोंके जो लोकहैं किसीकी धरोहर मारनेवालोंके जो लोक
हैं बिश्वासघातियों के जो लोकहैं २६ ब्राह्मण मारनेवालों के जो
लोकहैं और गोबध करनेवालों के भी जो लोकहैं २७ खीर यव
आदिके भोजनशाक कृसर संयाव पूप मांस और निरर्थक मांसखाने
वालों के जो लोकहैं २८ मैं एकही दिनमें उन लोकों को जाऊं जो

जयद्रथ को नहीं मारूं वेदके वहुत पढ़नेवाले तेज व्रतवाले उत्तम ब्राह्मण २६ वृद्ध साधू और गुरुलोगों का अपमान करनेवाले जिन लोकों को जाते हैं और चरणसे अग्नि गौ और ब्राह्मण के छूनेवालों की जो गति होय ३० और जलमें थूक मूत्र और विष्ठा छोड़नेवालों की जोगति है उस दुःख रूप गति को पाऊं जो जयद्रथ को न मारूं ३१ नंगेस्नान करनेवाले की और वंध्या के आतिथि की जोगति है उत्कोची अर्थात् घूसलेनेवाले मिथ्यावादी और छली लोगोंकी जो गतिहै ३२ आत्मघात करनेवालोंकी जोगतिहै मिथ्या भाषण करनेवालोंकी जो गति है नौकर पुत्र स्त्री और शरणागत लोगोंके साथ विवाद करनेवालों की जोगतिहै ३३ और मिष्टान्न को विना विभाग करके खानेवालोंकी जोगतिहै इन सव भयकारी गतियोंको पाऊं जो मैं जयद्रथको न मारूं ३४ जो निर्दयचित्तवाला अपने आज्ञाकारी साधू और शरणागतको भी त्याग करके पोषण नहीं करताहै और उपकार करनेवालों की निन्दा करताहै ३५ जो प्रातःकालका समय वेश्या के निमित्त देता है और श्राद्ध को नहीं करताहै और जो अयोग्यब्राह्मणोंके निमित्तदे और वृषलीपतिके अर्थ दे ३६ और जो मद्यपीनेवाला वेमर्याद और उपकारको भूलनेवाला और स्वामीकीनिन्दाकरनेवाला है मैं उन सवकी गतियोंको शीघ्रही पाऊंजो जयद्रथको नहींमारूं ३७ वामहाथसे भोजनकरनेवाले और गोदीमें रखकर खानेवालोंकीभी जो गतिहै और पलाशका आसन और तिंदुककी दांतनको ३८ त्यागन करनेवालोंके जोलोकहैं और प्रातःकाल सायंकालके समय सोनेवालोंके जो लोकहैं जोब्राह्मण शीतसे भयभीत और क्षत्रिय युद्धसे भयभीतहै उनके ३६ और वेदध्वनिसे रहित और एकही कूपके जलसे निर्वाह करनेवाले गांव में जो छःमहीने निवास करनेवालों के जो लोक हैं उसीप्रकार शास्त्र की अधिक निन्दा करनेवालोंके जो लोकहैं ४० जो लोक कि दिनमें स्त्री संग करनेवालोंके हैं और जो दिनमें सोतेहैं उनके और घरों में अग्नि लगानेवालों के और विष देनेवालोंके जो लोक मानेगये

हैं ४१ अग्निके पूजनेसे रहित गौके जलपान करने में विघ्न करने वाले रजस्वला से भोग करनेवाले मूल्य लेकर कन्यादान करने वाले४२ और धर्मसे विरुद्ध जो अन्य २ लोग यहां नहीं कहे गये और जो कहेगये उनसबोंकी गतिको मैं जल्दीसे पाऊं ४३ जोरात्रि व्यतीत होनेपर कलकेदिन जयद्रथको नहींमारूं इसके विशेष मेरी इस दूसरी प्रतिज्ञाकोभी जानो ४४ बहुतसे मनुष्योंको यज्ञकराने वाले श्वानवृत्तीरखने ब्राह्मणों की जो गति है और मुखसेसंभोग करनेवालोंकी जो गति है और जो दिनके संभोग करनेमें प्रवृत्त चित्तहैं जो ब्राह्मणसे प्रतिज्ञा करके लोभ से फिरनहीं देतेहैं उनकी गतिको पाऊं जो कल जयद्रथको न मारूं ४६ जो इसपापीके मरने पर सूर्य्य अस्त होजायगा तो मैं इसी स्थानपर प्रकाशित अग्नि में प्रवेशकरजाऊंगा ४७ असुर, देवता, मनुष्य, पक्षी, सर्प, पितृ, राक्षस, ब्रह्मऋषि, देवऋषि और यह जड़ चैतन्य जीव भी और इनसे भी परेहैं वहभी मेरे शत्रुकी रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हैं ४८ जो वह रसातल अग्नि आकाश देवताओंके पुर और असुरोंके पुरमें प्रवेश करजाय तौभी मैं प्रातःकाल बाणों के समूहों से उस अभिमन्युके शत्रुका शिरकाटूंगा ऐसे कहकर अपने गांडीव धनुष को दाहेंबायें फिराया तबधनुषके शब्दने उसकेशब्दको उल्लंघन करके आकाश को स्पर्शकिया ५० अर्जुनके इस प्रतिज्ञाके करनेपर श्रीकृष्णजीने अपने पांचजन्य शंखको बजाया और अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने अपने देवदत्त शंखको बजाया ५१ श्रीकृष्णजी के मुखकी वायु से अत्यन्त पूरित उदर और ध्वनि उत्पन्न करनेवाले पांचजन्य शंखने जगत् को पाताल आकाश और दिगेश्वरों समेत ऐसे कंपायमान किया जैसे कि प्रलय के समय संसार कंपितहोताहै ५२ इसके पीछे उस महात्माके प्रतिज्ञाकरनेपर पांडवोंके सिंहनाद और हजारों बाजोंके शब्द प्रकटहुये ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

——※——

चौहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि वहां जयद्रथ दूतोंकेमुखसे इसवृत्तान्तको जान कर और विजयाभिलाषी पांडवों के उस बड़े शब्दको सुनकर १ अपने स्थानसे उठके शोकसे अज्ञानरूप दुःखसे भराहुआ अथाह शोक समुद्रमें डूबाहुआ २ बहुत शोचकोकरता सिन्धकाराजा जयद्रथ राजाओंकी सभामें गया और वहांजाकर उसने उन राजाओं के सन्मुख विलाप किया ३ अभिमन्यु के पिता से भयभीत और लज्जायुक्तहोकर इसवचन को बोला निश्चय करके जो यह अर्जुन पांडुके क्षेत्रमें कामी इन्द्रसे उत्पन्नहुआ ४ वह निर्बुद्धी मुझ अकेले को निश्चय यमलोक में पहुंचाया चाहता है इसहेतु से मैं प्रणाम करताहूं आपका कल्याणहोय मैंअपने जीवनकोअभिलाषासे अपने घरको जाऊंगा हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ अस्त्रों के बल रखनेवाले अर्जुन से चाहेहूये मुझको तुम सब मिलकर मेरी रक्षाकरो हे वीरलोगो तुम मुझको अभयदानदो ६ द्रोणाचार्य्य,दुर्योधन,कृपाचार्य्य,कर्ण, शल्य, वाल्हीक और दुश्शासनादिक मुझ मृत्युसेपीड़ामानको रक्षा करनेको समर्थहैं ७ हे मित्रो आपसब पृथ्वीकेस्वामी इसमारने के अभिलाषी अकेले अर्जुनसे क्यामेरीरक्षा नहीं करसक्तेहो ८ पांडवों को बड़ी प्रसन्नता को सुनकर मुझको बड़ाभयहै हे राजाओ मरने के अभिलाषी मनुष्यकेसमान मेरेअंग शिथिलहोतेहैं ९ निश्चयकरके गांडीव धनुषधारीने मेरे मारनेका प्रण कियाहै और इसीप्रकार दुःखके समय प्रसन्न होकर पांडवोंने शब्दकिये १० वहां देवता, गन्धर्व,असुर, सर्प और राक्षसभी उसकी प्रतिज्ञा मिथ्या करनेको समर्थ नहीं होसक्ते हैं फिर राजालोग कैसेकरसक्तेहैं ११ इसनिमित्त हे राजालोगो आपकाभलाहो आप सब मुझको आज्ञादो कि मैं भागकर ऐसागुप्त होजाऊंगा जहां पांडव मुझको न देखसकेंगे राजादुर्योधनअपने कार्य्यकी महत्त्वतासे उस महाव्याकुल विलाप करनेवाले भयसे पीड़ित चित्तवाले जयद्रथसेबोले १३ कि हे नरो-

त्तम तुमको भय न करना चाहिये हे पुरुषोत्तम कौनसा वीर युद्ध में क्षत्रियों के मध्यमें नियतहुये तुझको अपने आधीन करसक्ताहै १४ मैं और सूर्य्यकापुत्र कर्ण, चित्रसेन, विविन्शति, भूरिश्रवा, शल्य, और दुःखसे सन्मुखताके योग्य वृषसेन १५ पुरु, मित्रोजय, भोज, काम्बोज, सुदक्षिण, सत्यव्रत महाबाहु विकर्ण, दुर्मुख, दुश्शासन, सुबाहु, और शस्त्रधारी राजाकलिंग बिन्द, अनुबिन्द, अवन्ती देश के राजालोग, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, शकुनि १७ यह सबलोग और दूसरे नानादेशोंके राजा और हे राजासिन्ध आपभी रथियों में श्रेष्ठ शूरबीरहो सो तुम किसप्रकार पांडवों करके भय को करते हो १९ मेरी ग्यारह अक्षौहिणी सेना तेरीरक्षामें कुशलहोकर युद्ध करेगी हे सिन्धके राजा तुम भय मतकरो तुम्हाराभय दूरहोय २० संजयबोले कि हे राजा आपके पुत्रसे इसरीतिपर बिश्वासित किया हुआ सिन्धकाराजा जयद्रथ दुर्योधन समेत रात्रि के समय द्रोणाचार्य्यके समीप गया २१ वहां जाकर उसने द्रोणाचार्य्य के चरणोंमें दण्डवत् करके बड़ी नम्रता से समीप बैठकर इस बात को पूछा २२ कि हेभगवान् लक्षभेदन करना दूरगिराना हस्तलाघवता और दृढ़ घायल करने में अर्जुन का अधिक गुण मुझसे कहो २३ हे आचार्य्यजी मैं मूलसमेत उस अर्जुनकी और आपकी सबविद्याओंको जानना चाहताहूं आप अपनी और अर्जुनकी ठीक २ संपूर्ण विद्याको बर्णनकरो २४ द्रोणाचार्य्यबोले कि हेतात तेरी और अर्जुन की शिक्षा समानहै परन्तु योग और दुःखके सहने में अर्जुन तुझ से अधिकहै २५ तुझको किसी दशामें भी अर्जुन से भय न करना चाहिये हे तात मैं तुझको निस्सन्देह भयसे रक्षा करूंगा २६ देवताभी मेरे भुजोंसे रक्षित पर प्रबल नहीं हो सक्ते हैं मैं उस व्यूह को तैयार करूंगा जिसको कि अर्जुन नहीं तरसकेगा २७ इसहेतुसे तुम युद्ध करो भय मतकरो अपने धर्म का पालनकरो हे महारथी तुम बाप दादे के मार्ग पर चढ़ो २८ तुमने बुद्धिके अनुसार वेदों को पढ़कर अग्नियों में अच्छीरीति से हवन किया है और

बहुत से यज्ञोंसे भी पूजन किया है तेरी मृत्यु भयकी उत्पन्न करने वाली नहीं है २९ नीच मनुष्यों से दुष्प्राप्य बड़े प्रारब्ध को पाकर भुज बल से विजय होकर उत्तमलोकों को पावेगा ३० कौरव पांडव औरयादव और जो दूसरे मनुष्यहैं और मैंभी अपने पुत्र समेत सब विनाशमान हैं यहविचारकरो ३१ हमसब क्रमपूर्व्वक पराक्रमी कालसे घायल हुये पड़े हैं अपने २ कर्म से संयुक्त होकर परलोक को जायंगे ३२ तपस्वी तपस्याओंको करके जिनलोकोंको पाते हैं उन लोकों को क्षत्रीलोग क्षत्री धर्म में प्रवृत्त होकर प्राप्त करतेहैं ३३ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के इसप्रकार के समझाने और दृढ़ता करने के कारण से राजा जयद्रथ ने अर्जुन से भयको दूरकिया और युद्ध में चित्त को लगाया ३४ हे राजा इसके पीछे आपकी सेनाओं का भी बड़ी प्रसन्नता हुई और सिंहनादों के शब्दों समेत बाजोंकी कठिन ध्वनि हुई ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि तब सिंधके राजाके मारने में अर्जुन की प्रतिज्ञाहोने पर महाबाहु वासुदेव जी अर्जुन से बोले १ कि तुमने भाइयोंके मतको न जानकर अपने वचनोंसे प्रतिज्ञाकरी कि मैं जयद्रथ को मारूंगा यह तुमने विना विचारके कर्म किया २ और मुझसे सलाह न करके कठिन बोझेको उठाया हम किसप्रकारसे सबलोकके योग्य पड़े हुये न होवें ३ मैंने दुर्य्योधन के डेरोंमें दूत नियत किये वह दूत बड़ी शीघ्रता से आकर इसवृत्तान्त को कहते हैं ४ कि हे समर्थ सिंधके राजाके मारने की तेरी प्रतिज्ञा करने पर उन लोगों से किये हुये बड़े सिंहनाद बाजों समेत सुने गये ५ धृतराष्ट्र के पुत्र जयद्रथ समेत उस शब्द को सुनकर भयभीत हुये कि यह सिंहनादनि हेतुकनहीं है यह मानकर नियत हुये ६ हे महाबाहो कौरवों के बड़े शब्दका भी प्रादुर्भाव हुआ और हाथी घोड़े पत्ति

और रथों के शब्द बड़े भयकारी हुये ७ अर्जुन निश्चय करके अभिमन्यु के मरण को सुनकर पीड़ामान होकर रात्रिही में क्रोधयुक्त होकर सन्मुख आवेगा यह समझकर सब नियत हुये ८ हे कमलवत् नेत्रवाले अर्जुन उन उपाय करनेवालों ने सिन्ध के राजा के मारने में तुझ सत्यवक्ताकी सत्यप्रतिज्ञा सुनी ९ इसकेपीछे दुर्योधन के मंत्री और वह राजा जयद्रथ यह सब चित्तसे दुखित नीच मृगोंके समान भयभीत हुये १० इसके पीछे सौवीर और सिंध देशों का स्वामी अत्यन्त दुःखी जयद्रथ मंत्रियों समेत वहांसे उठकर अपने डेरे को आया ११ वह सलाह करनेके समय परिणाम में कुशल करनेवाले कर्मकी सलाहकरके राजसभाके मध्य सुयोधन से जाकर यहबचनबोला कि १२ अर्जुन अपने पुत्रकामारनेवालामुझ को समझकर कलकेदिन मेरेसन्मुखआवेगा और सबसेनाके मध्यमें उसने मेरेमारनेकीप्रतिज्ञाकरीहै १३ अर्जुनकीप्रतिज्ञाकोदेवता गन्धर्व राक्षस असुरऔर सर्पादिक कोईभी मिथ्याकरनेको समर्थनहींहोसक्ते हैं १४ सो तुममुझकोयुद्धमें रक्षाकरो अर्जुनतुम्हारे मस्तकोंकोउल्लंघनकरकेलक्षको न पावेइसहेतुसे इसस्थानपर रक्षाकरनेकाउपाय करो हे कुरुनन्दन जो युद्धमें मेरी रक्षा नहीं करसक्तेहो तो मुझको आज्ञादो कि मैं अपने घरको जाऊंगा १६ इसप्रकार कहे हुये उस शिर झुकाये हुये और बेमन सुयोधन ने उस प्रतिज्ञा को सुनकर बिचार किया १७ कि निश्चय करके उसराजा जयद्रथने उसपीड़ामान दुर्य्योधनको देखकर मृदु और अपनी वृद्धिका करनेवाला प्रतिज्ञा पूर्व्वक यहबचन कहा १८ कि यहां आपलोगोंके मध्यमें उस प्रकार का प्रबल धनुषधारी नहीं देखताहूं जो बड़े युद्ध में अर्जुनके अस्त्रको अपने अस्त्रसे निवारण करे १९ वासुदेवजीकी सहायता रखनेवाले और गांडीव धनुष के चलायमान करनेवाले अर्जुन के आगे कौननियतहोसक्ताहै जोसाक्षात् इन्द्रभीहो यवहभी नियत नहीं होसक्ताहै २० सुनाजाताहै कि पूर्व्वसमय में बड़ेपराक्रमी प्रभुमहेश्वरजीभी हिमालय पर्व्वतपर पदाती अर्जुनके साथ युद्धकरनेवाले

हुये २१ और उसी देवराजकी आज्ञापाये हुये ने एकही रथके द्वारा हिरण्य पुरवासी हजारों दानवोंको मारा २२ बुद्धिमान् वासुदेवजी से संयुक्त अर्जुन देवताओं समेत तीनोंलोकों को भी मारसक्ता है यह मेरामतहै २३ सो मैं आज्ञादेनेको अथवा पुत्र समेत महात्मा वीर द्रोणाचार्य्यसे रक्षित होनेकी अभिलाषा करताहूं जो तुममानते हो २४ हे अर्जुन वहां आप राजाने जाकर द्रोणाचार्य्य से प्रार्थना करी और यह आगे लिखे हुये लोग रक्षित नियत किये गये और निश्चय करके रथ तैयार कियेगये २५ कर्ण, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, वृषसेन, दुर्जय, कृपाचार्य्य, और शल्य यह छःरथी अग्रगामी हैं द्रोणाचार्य्यने शकट पद्मक अर्द्धव्यूह सेनाके आगे बनाया और पद्मकर्णिक नाम व्यूह मध्यमें नियत हुआ और व्यूह के एक पक्षमें शूची रचा गया २७ वीरोंसे रक्षित अत्यन्तदुर्मद वह सिंधका राजा जयद्रथ नियत होगा धनुपविद्या अस्त्रविद्या पराक्रम और स्वाभाविक बलमें २८ यह छःरथी सहनेके अयोग्य किये गयेहैं इनछओं रथियोंको बिना विजय कियेहुये यह जयद्रथ आधीन होनेके योग्य नहींहै २९ तुम छओं रथियोंमें प्रत्येकके पराक्रमको विचारकरो हे नरोत्तम यहसब मिलेहुये शीघ्रतासे विजय करनेके योग्यनहींहैं ३० मैं फिर कार्य्यकी सिद्धीके अर्थ और अपनी वृद्धिके निमित्त सलाह के और मंत्र बिचारके जाननेवाले मंत्री और मित्रोंके साथ नीतिको निर्णय करूंगा ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवा अध्याय ॥

अर्जुनबोले कि आप दुर्य्योधनके जिन छओं रथियों को पराक्रम मानतेहो उन सबका पराक्रम मेरे आधे पराक्रमकेभी समाननहीं है यह मेरामतहै १ हे मधुसूदनजी मुझ जयद्रथके मारनेके अभिलाषी के अस्त्र से इनसबों के अस्त्रों को आप कटाहुआ देखोगे २ मैं द्रोणाचार्य्य के देखतेहुये अपने समूहके साथ बिलाप करते राजा

सिंधके मस्तकको पृथ्वीपर गिराऊंगा ३ जो साध्य, रुद्र, वसु, अश्विनी कुमार, इंद्रसमेत मरुत, ईश्वरोंसमेत विश्वेदेवा ४ पितृ, गन्धर्व, गरुड़, समुद्रादिक, स्वर्ग, आकाश और यह पृथ्वी दिग्गीश्वरों समेत सर्वादिशा ५ गांव और वन के जीव और सैकड़ों स्थावर जंगम जीव भी राजासिन्ध के रक्षक होजायं ६ हे मधुसूदन जी तौभी प्रातःकाल के समय मेरे बाणों से युद्धमें उसको मराहुआही देखोगे हे श्रीकृष्णजी मैं सत्यता पूर्वक शपथ खाता हूं और उसी प्रकार शस्त्रको उठाताहूं ७ हे केशवजी जिसपापी दुर्बुद्धीका रक्षक वहबड़ा धनुषधारी द्रोणाचार्य्यहै प्रथम उसीद्रोणाचार्य्य के सन्मुख मैंजाऊंगा ८ वहदुर्य्योधन उस द्रोणाचार्य्यमें इसजुआको बंधाहुआ मानताहै इस हेतुसे उसकी सेनाके मुखकोतोड़कर जयद्रथकोआधीन करूंगा ९ तुम प्रातःकालके समय मेरे अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से बड़े धनुषधारियोंको युद्धमें ऐसे छिन्नभिन्न और व्याकुल हुआदेखोगे जैसेकि वज्रोंसे फटेहुये पर्वतोंके शिखर होतेहैं १० गिरते व गिरे हुये अथवा तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्तघायल मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरोंसे रुधिरको जारीकरूंगा ११ गांडीव धनुष के छोड़ेहुये शीघ्रगामितामेंमन और बायुके समान असंख्य बाणहजारों हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरोंको प्राणोंसे पृथक् करेंगे १२ मैंने यम, कुवेर, बरुण, इन्द्र और रुद्रजीसेजो घोर अस्त्रलियेहैं उनको मनुष्य इस युद्धमें देखेंगे १३ राजासिंधके संपूर्ण रक्षकों के अस्त्रोंको युद्ध में मेरेब्रह्मास्त्रसे दूरकियेहुये देखोगे १४ हेकेशवजी प्रातःकाल युद्ध में मेरेबाणोंके वेगों से कटेहुये राजालोगों के शिरोंसे इस पृथ्वीको आच्छादितहुआ देखोगे १५ मैं मांसभक्षी जीवोंको तृप्तकरूंगा शत्रु लोगोंको भगाऊंगा मित्रोंको प्रसन्न करूंगा और राजा सिन्ध को मथूंगा १६ बड़ाअपराधी दुष्टनातेदार पापदेश में उत्पन्नहुआराजा सिन्धमेरे हाथसे मरकर अपने इष्टमित्र नातेदार आदिको शोचेगा १७ सबक्षीरों के पीनेवाले पापाचारीजयद्रथको रणभूमिमें मेरे हाथसे मराहुआ देखोगे १८ हे श्रीकृष्णजी मैं प्रातःकाल वहकर्म

करूंगा कि जिसको देखकर कोईभी लोकमें युद्धके बीचमेरे समान दूसरे धनुषधारीको नहींमानेगा १९ हे नरोत्तम मेरा दिव्य धनुष गांडीवहै और मैंयुद्धकरनेवालाहूं और हेइन्द्रियोंके स्वामीआपसारथी हो फिर मुझसे अजेय कौनहोसक्ताहै २० हे भगवन् आपकीकृपा से युद्धमें मुझकोअप्राप्त पदार्थक्याहै हेहृषीकेशजी मुझको असहिष्णु शीलजानतेहुये आपक्या निन्दा करतेहो २१ जिसप्रकार चन्द्रमा में चिन्ह नियतहै और जैसेकि समुद्रमेंजल नियतहै हे जनार्दनजी उसी प्रकार मेरी इस सत्यप्रतिज्ञा कोभीजानो २२ मेरे अस्त्रों का अपमान मतकरो और मेरेदृढ़ धनुषका भी अपमान मतकरो और दोनोंभुजाओंके पराक्रम काभी अपमान मतकरो और मुझ संसारके धनके विजय करनेवालेकाभी अपमान मतकरो२३ मैंयुद्ध में जाकर विजय करूंगा नहींतो जीवता नहींरहूंगा इस सत्यता से युद्धमें जयद्रथको मृतकहुआहीजानो २४ ब्राह्मणोंमें सत्यता अचल है साधुओं में नम्रता अचलहै यज्ञोंमें लक्ष्मी अचलहै श्री नारायण जीमेंविजय अचलहै २५ संजय बोलेकि इन्द्रकेपुत्र गर्जतेहुये अर्जुन ने इन्द्रियों के स्वामीको इसप्रकार कहकर भी फिर केशवजी से कहा २६ हे श्रीकृष्णजी जिसप्रकारसेकि मेरा रथ प्रातःकाल ही-अलंकृत होजाय वही प्रकार आपको करना योग्यहै निश्चय करके बड़ा भारी कार्य्य वर्त्तमान हुआ है २७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोलेकि दुःख शोकसे पीड़ामान सर्पके समान श्वासलेने वाले वासुदेवजी और अर्जुनने उस रात्रिको निद्रानहींली १ नर-नारायणको क्रोधयुक्त जानकर इन्द्रसमेत देवताओं नेभी पीड़ामान होकर चिन्ताकरी कि यह क्याहोगा२ उससमयसूक्ष्मभयकी सूचन करनेवाली दारुण वायुचली और सूर्य्यमें कबन्ध समेत परिघदृष्टि गोचर हुआ३ परस्पर आघात करतीहुईवायु और विद्युत समेतसूखे

वज्रगिरे और वनपर्व्वतों समेत पृथ्वीभी कंपायमान हुई ४ हेमहाराज मकरादिक जीवोंके आश्रयस्थान समुद्र उमगनेवाले हुये और झरने नदी आदिकभी चलने को उद्युतहुये ५ रथघोड़े हाथी और मनुष्यों के नाशका समय मांस भक्षियोंको प्रसन्नता यहसब यमराजके देशकी वृद्धि के निमित्त वत्त मान हुये ६ सवारियों ने मूत्र विष्टाको करके रुदनकिया उनभयंकारी रोमांच खड़ेकरनेवाले सब उत्पातोंकोदेखकर ७ और बड़ेपराक्रमी अर्जुनकी भयकारी प्रतिज्ञा को सुनकर आपकी सबसेना पीड़ामानहुई ८ इसके पीछे इन्द्रका पुत्रमहाबाहु अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोलेकि तुमअपनी बहिनसुभद्रा को पुत्रबधू समेत बिश्वास कराके ढाढ़स बंधाओ ९ हे माधवजी इसकीबधू और समान बय वालोंको शोकसे रहितकरो हेप्रभु मीठे और सत्यता से युक्तबचनों से उसको आश्वासनकरो १० इसके पीछे अत्यन्त दुखित चित्त बासुदेवजीने अर्जुनके घरजाकर पुत्रके शोकसेपीड़ामान और दुखी होनेवाली अपनी बहिनको ढाढसबंधाया ११ बासुदेवजी बोलेकि हेयादवी बधूसमेत तूअभिमन्युके विषय में शोचमतकर सब जीवधारियोंकी यहनिष्ठा कालदेवतासे नियत की गईहै १२ यहतेरे पुत्रका मरना मुख्यकर कुलमें उत्पन्न पंडित क्षत्रीके समानहै शोचमतकर १३ महारथीबीर पिताके समानपराक्रमी अभिमन्युने प्रारब्धसे क्षत्रियोंकी विधिसेबीरोंकी अभीष्ट गति को पाया १४ बहुतसे शत्रुओंको बिजय करताहुआ उनको मृत्युके पासभेजकर पवित्र कर्मसे प्रकट और सब कामनाओं के देनेवाले अबिनाशी लोकोंको पाया १५ सन्तलोग तप ब्रह्मचर्य्य शास्त्र और बुद्धिकेद्वारा भी जिसगतिको चाहते हैं उस गतिको तेरेपुत्रने पाया १६ तू बीरपुत्रको उत्पन्न करनेवालीबीर पुरुषकीस्त्री बीरकी पुत्री और बीरही बांधव रखनेवाली है हेकल्याणिनि पुत्रको मत शोच क्योंकि उसने परमगति को पाया है १७ यह पापी और बालकका मारनेवाला राजासिंध मित्रभाईयोंके समूहों समेत इस पापके फलको पावेगा १८ रात्रिके व्यतीत होनेपर यहपाप कर्म

करनेवाला अमरावती पुरीमें भी प्रवेश करताहुआ अर्जुनके हाथ से बिनामरे नहींछूट सक्ता १९ कल्ह उस राजासिन्धका शिर युद्ध में स्यमन्तपंचक से बाहर डालाहुआ लोगसुनैंगे शोक से रहित होजा रोदन मतकर २० उसशूरने क्षत्रीधर्मको आगेकरके सत्पुरुषोंकी गतिको पाया जिसको हम और अन्यलोग जो यहां शस्त्रों से निर्वाह करनेवालेहैं अन्तमें पावैंगे २१ बड़ावक्षस्थल और बड़े भुजा वाला मुख न फेरनेवाला रथियोंको मारनेवाला तेरापुत्र स्वर्गको गया अब तू मनकेतापको दूरकर २२वहपराक्रमी माता और पिताके पक्षका अनुयायी हुआवह शूर महारथी हजारों शत्रुओंको मारकर मरगया २३ हे रानीतू अपनी पुत्रवधू को बिश्वासित कर क्षत्रीके विषयमें बड़ेशोचको मतकरहे नन्दनी कल्ह बड़ी प्रिय बातको सुन कर शोकसे रहित हो २४ अर्जुन ने जो प्रतिज्ञा करीहै वह यथार्थ है मिथ्या नहींहोसक्ती तेरेपतिकी कर्म की इच्छाभी निष्फल नहीं होती २५ जो प्रातःकाल मनुष्य सर्प पिशाच राक्षस पशु देवता और असुर भी युद्ध में वर्त्तमान होकर जयद्रथके साथ मे होंगे तो भी वह नहीं बच सकैगाअर्थात् नाशको पावेगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उन महात्माकेशवजी के इस वचन को सुन कर पुत्रके शोक से पीड़ामान और अत्यन्त दुखी सुभद्राने बिलाप किया १ हाय पुत्र मुझ अभागिनी के बेटे और पिताके समान परा क्रमी तुमने युद्ध को पाकर कैसे अपने जीवकोगंवाया २ हेपुत्रउत्तम कमलकेसमान श्यामसुन्दरडाढ़औरनेत्रवाला तेरामुख कैसायुद्धकी धूलसे लिपटाहुआ दिखाई देताहै ३ निश्चयकरके तुझ मुखनफेरने वाले सुन्दर शिरग्रीवा भुजास्कन्ध आयत वक्षस्थल पतले उदर वाले शूर बीर को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर ४ जंगलके सबजीव तेरे सुन्दर नेत्र युक्त अलंकृत और शस्त्रों से युक्त घायल शरीरको

उदय हुये चन्द्रमा के समान देखते हैं ५ जिसके शयन के स्थान पूर्व्व समय में बहु मूल्य वाले विस्तरों से युक्त थे उस सुखके योग्य तू अब कैसे घायल होकर पृथ्वी पर सोरहाहै ६ पूर्व्व कालमें जो बड़ी भुजा वाला उत्तम बीर स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करता था अब वह युद्ध भूमिमें पड़ाहुआ किसप्रकार शृगालों के साथ अनुरक्त है ७ पूर्व्वकालमें जो प्रसन्न चित्त बीर सूत मागध और बन्दीजनों सेस्तूयमान हुआ अब वह अधिक शब्द करने वाले भयकारी मांसभक्षी गिद्ध आदिके समूहों से उपासना किया जाताहै ८ हेसमर्थ अपने स्वामी पांडव बीर वृष्णी और बीर पांचालों के मध्यमें किस कारणसे अनाथ के समान मारागयाहै ९ हे पापोंसेरहित बेटा प्रकट होता है कि तेरे देखने से तृप्त न होनेवाली मैं अभागिनी यमलोक को जाऊंगी १० हेपुत्र बड़े नेत्र सुन्दर केशान्त मृदुभाषी सुगन्धित और स्वच्छ तेरे मुखको फिर देखूंगी ११ भीमसेनके बलको धिक्कार अर्जुन के धनुष रखने को धिक्कार वृष्णी बीरोंके पराक्रम को धिक्कार और पांचालों के बल पुरुषार्थको धिक्कार है १२ केकयदेशी चंदेरी देशी मत्स्यदेशी और सृञ्जय देशियोंका भी धिक्कारहै जो कि तुझ युद्धमें बर्त्तमान शूरवीर की रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हुये १३ अब शोकसे ब्याकुल नेत्र और अभिमन्युको न देखनेसे मैं पृथ्वी कोशून्य देखतीहूं १४ अब मैं बासुदेवजी के भानजे गांडीव धनुषधारी के पुत्र गिरायेहुये अतिरथी को कैसे देखूंगी १५ हेपुत्र आओ आओ मुझ अभागिनी और पुत्रके देखने से तृप्त न होने वाली की बगल में चढ़कर तू दूधसे भरी हुई छातियों को शीघ्रता से पानकर १६ हायबीर नाश पाया हुआ तूमेरे स्वप्नके धनके समान दिखाई दिया है आश्चर्य्यहै कि यह नरलोक विनाशमान पानीके बुल बुले के समान चंचलहै १७ इस तेरी तरुणभार्य्याको तेरे दुःखसे पूर्णबछड़े से जुदीहुई गौके समान को मैं किस प्रकार से रक्खूंगी १८ हेपुत्र बड़े खेदकी बातहै कि तुमने मुझ अत्यन्त पुत्रके दर्शनाभिलाषिणी को फलके उदय होनेके समय त्याग करके बिना समयके

यात्राकरी है १९ निश्चय करके बलवान कालकी गति श्रेष्ठ लोगों सेभी जाननी कठिनहै जिस युद्धमें केशवजीके नाथहोनेपर अनाथ केसमान मारा गया २० यज्ञकरनेवाले और दानकी प्रकृति रखनेवाले शुद्ध अन्तःकरण और ब्रह्मचर्य्य करने वाले पवित्र तीर्थों के स्नान करने वाले २१ ब्राह्मण के और उपकार के ज्ञाता अतिदानी गुरु भक्तिपरायण और हजारों दक्षिणा देने वालों की जोगति है उसको तुम पाओ २२ युद्ध करने वाले मुखके न फेरने वाले और युद्धमें शत्रुओं को मार कर मारने वाले शूरों की जोगतिहै उसको पाओ २३ हजारों गौ दानकरने वाले और यज्ञमें दान देने वालों कीजोगतिहै उसकोपाओ और प्रियस्थानोंके दानकरने वालोंकीजो शुभ गतिहै २४ शरणके योग्य ब्राह्मणोंकोरक्षा करने वालोंकी और अपराधोंके क्षमाकरनेवालोंकीजोगतिहै हेपुत्र उसकोपाओ २५ तेजप्रशंसा और व्रतोंके धारण करने वाले मुनि ब्रह्मचर्य्यके द्वारा जिसगतिको पातेहैं और एकस्त्री रखने वाले जिसगतिको पातेहैं हे पुत्र तुम उसगतिको पाओ २६ राजाओंके सुन्दर आचरणोंसे जो सनातन गति होतीहै और पवित्र शरीर वाले चारों आश्रमियोंके पवित्र कर्मोंसे जोगति होतीहै २७ दीनोंपर दया करने वालोंके समान भाग करने वालोंके और परोक्षमें निन्दाकरके रहित मनुष्योंकी जो गति होतीहै हेपुत्र तुम उसगतिको पाओ २८ व्रत करने वाले धर्म के अभ्यासी गुरु भक्तिसे गुरुकी सेवाकरने और आतिथ्य करनेवालोंकी जो सफल गतिहोतीहै हे पुत्र तुम उसको पाओ २९ संकट और दुःखमें जीवन करनेवाले और शोककी अग्निसे जलने वालोंकी जो गतिहै उसगतिको पाओ ३० जो इस लोकमें माता पिताकी सेवाको करते हैं उनकी और जो पुरुष अपनीही स्त्रीमें प्रीति रखनेवाले हैं उनकी जो गतिहै उसको पाओ ३१ ऋतुकाल में अपनी स्त्रीके पास जाने वाले और अन्यकी स्त्रियोंसे बचने वाले बुद्धिमानोंकी जो गतिहै हे पुत्र उनकीगतिको पाओ ३२ जो ईर्षासे रहित मनुष्य सब जीवधारियों को क्रोधसे रहित प्रीतिके साथ देखते हैं और मर्मोंको

पीड़ा न देने वालोंकोजो गतियांहैं हेपुत्र उनकोपाओ ३३ मद्यमांस अहंकार छल और मिथ्यासे रहित होनेवाले अथवा दूसरेके दुःखों के दूरकरने वाले मनुष्यों कोजो गतिहै हेपुत्र तुम उसकोपाओ ३४ लज्जा युक्त सर्व शास्त्रज्ञ परमार्थ से तृप्त और जितेन्द्री साधु पुरुष जिसगतिको पातेहैं हे पुत्र तुम उसगतिको पाओ ३५ तब द्रौपदी उत्तरा समेत उस सुभद्राको इसरीति से बिलाप करती और दुखी देखकर उसकेपासआई ३६ हे राजा वह सबअत्यन्त दुखीचित्त बारंबार रोदनोंको करके उन्मत्तके समान अचेत होकर पृथ्वी परगिर पड़ीं ३७ फिरबिश्वासित बचनोंके द्वारा पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णजीउस महादुखीसुभद्राकोजलसेसिंचनकर उन२प्रिय बचानोंकोकहके ३८ बहुतसाढाढस बंधाकर उसअचेतरूपा मर्मस्थलोंसेभिदीहुई अत्यन्त कंपायमान बहिनसे यह बचनबोले कि ३६ हेसुभद्रा पुत्रका मत शोचकर हेद्रौपदी उत्तराको बिश्वासकरा क्षत्रियोंमें श्रेष्ठअभिमन्युने परम गतिको पायाहै ४० हे सुन्दरमुखी जो अन्यपुरुषभी हमारे बंशमेंहैं वह सबभी उस यशस्वी अभिमन्युकीगतिपाओ ४१ हम औरहमारेसब मित्रादिक उसकर्मको करें जिसकर्मको कि तेरे अकेले महारथी पुत्रने किया ४२ शत्रुओं के बिजय करने वाले महाबाहु श्रीकृष्णजी अपनी बहिन सुभद्रा द्रौपदी और उत्तराको इस प्रकार से बिश्वासित करके फिर अर्जुनकेहीपासगये ४३ हे राजा इसके पीछे श्रीकृष्णजी राजाओंको बन्धु जनोंको और अर्जुन को आज्ञा देकर अन्तःपुर में गये और वे सब लोगभी अपने २ डेरों को गये ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उनासीवां अध्याय॥

१ संजय बोले कि इसके पीछे समर्थ कमललोचन श्रीकृष्णजीने अर्जुनके अति उत्तम महल में प्रवेश करके आचमनादिक करशुभ लक्षण और समान भूमिपर१बैडूर्य्यके समान कुशाओं से शुभसैया

को बिछाया उसके पीछे माला धान आदिकवड़े मंगलीक सुग-न्धादिकों से २ उस सैया को अलंकृत करके उत्तम अस्त्रोंसे घेर दिया इसके पीछे अर्जुन के स्नान और आचमन करने पर अच्छे शिक्षितविनीति परिचारकोंने ३ समीपही देखतेहुये शिवजीके रात्रि संबंधी बलिप्रदान को तैयारकिया इसके पीछे प्रसन्न चित्त अर्जु-नने चन्दन और पुष्पमाला आदि से माधवजी को ४ अलंकृत करके उस रात्रिके बलिदानको उनके अर्पण किया फिर मन्द मुस-कान करते हुये गोविन्दजी अर्जुन से बोले ५ हे अर्जुन तेरा क-ल्याण होय तुम अपनी वृद्धिके निमित्त शयनकरो में जानताहूं इसके पीछे धीमान् कृष्णजी द्वारपाल और शस्त्र उठाने वाले रक्षक मनु-ष्योंको नियत करके ६ अपने डेरेमें गये उनके पीछे दारुक सारथी था उस समय बहुत कर्मोंमें विचार करते हुये उज्ज्वल शयन सैया पर शयन करने वाले हुये ७ भगवान् श्रीकृष्णजीने शोकदुःखोंको दूर करने वाला तेज प्रतापको बढ़ाने वाली सब विधियां अर्जुन के निमित्त करीं ८ सब के महेश्वर जगदात्मा बड़े यशस्वी अर्जुन का प्रिय करने वाले कल्याण चाहनेवाले विष्णुजीने योगमें नियतहो-कर उस विधिको किया ९ उस रात्रिको पांडवों के डेरोंमें कोई भी न सोया हे राजा सब मनुष्यों की नींदेजातीरहीं १० पुत्रके शोकसे दुखी महात्मा गांडीवधनुषधारीके हाथसे एकाएक सिन्धके राजाका मारना प्रतिज्ञाकियागया ११ शत्रुओंके वीरोंका मारने वाला महा-बाहु इन्द्रका पुत्र अर्जुन किस रीतिसे उस अपनी प्रतिज्ञाको सफल करेगा इस विषय में उन्होंने बड़ी चिन्ता करी १२ महात्मा पांडव ने यह कठिन कर्म निश्चय किया और वह राजा बड़ा पराक्रमीहै ईश्वरकी कृपासे वह अर्जुन अपनी उस प्रतिज्ञाको पूराकरे १३ पुत्र के शोकसे महादुखी अर्जुनने बड़ी प्रतिज्ञाकी और पराक्रमी भाइयों समेत बहुतसी सेनाओंको धृतराष्ट्रके पुत्रनेउसके सन्मुखकिया १४ यहअर्जुन युद्धमें सिन्धके राजाको मारकर फिरमिलो १५ अर्जुनश-त्रुओंके समूहोंको विजय करके व्रतको पूराकरताहुआ कलह सिन्ध

के राजाको न मारकर निश्चय अग्निमें प्रवेश करेगा १६ यह अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा को मिथ्या करने को समर्थ नहीं है अर्जुनके मरनेपर धर्मका पुत्र राजायुधिष्ठिर कैसाहोजायगा १७ क्योंकि उस धर्म-पुत्र पांडवने उसी अर्जुनमें संपूर्ण बिजय नियत करीहै जो हमार कर्म है दान कियाहै और जो हवन कियाहै १८उस सबके फलसे अर्जुन शत्रुको बिजय करो हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र इसप्रकारसे उन बिजय के आशीर्वाद देनेवाले शूरबीरों के कहते हुये १९ बड़े दुःखोंसे रात्रिव्यतीत हुई फिर उसरात्रि के मध्य में जागे हुये श्री कृष्णजी२० अर्जुनकी प्रतिज्ञाको स्मरण करके बोले कि उस पीड़ा-मान अर्जुनने जिसका कि पुत्र मारागया यह प्रतिज्ञा करीहै २१ कि कल्ह जयद्रथको मारूंगा हे दारुक उसबातको सुनकर दुर्यो-धन अपने मंत्रियों के साथ मिलकर सलाह करेगा २२ कि जिससे अर्जुन युद्धमें जयद्रथको न मारसके और वह उसकी सब अक्षौहिणी सेना जयद्रथकी रक्षाकरेगी २३ और द्रोणाचार्य्य अपने पुत्रसमेत सब अस्त्रों के चलाने में अत्यन्त कुशलहैं और अकेला इन्द्रभीदैत्य और दानवोंके अभिमानोंका दूरकरनेवालाहै २४ वह भीयुद्धमें द्रो-णाचार्य्यजीसे रक्षित मनुष्यके मारनेको साहसनहीं करसक्ता अवमैं प्रातःकाल वही करूंगा जिसप्रकार से कि कुन्तीका पुत्र अर्जुन २५ सूर्य्यास्त होने से पूर्व्वही जयद्रथ को मारेगा क्योंकि कुन्तीनन्दन अर्जुनसे अधिक मेराकोई प्यारा नहींहै जैसा वह मुझको प्याराहै वैसा भाई बन्धु स्त्री नातेदारआदिभी मुझकोनहीं प्यारेहैं हे दारुक मैं एकमुहूर्त्त भी अर्जुन से रहित होकर इस लोकके २६।२७ देखने को समर्थ नहींहूं औरवह वैसा नहीं होगा मैं अकस्मात् उनसबकी घोड़े हाथियों समेत बिजय करकेकर्ण और दुर्य्योधनसमेत सबको अर्जुनके निमित्त मारूंगाप्रातःकाल तीनोंलोकमेरे पराक्रमको देखो २८।२९ हेदारुक युद्धमें अर्जुनके निमित्त मुझपराक्रम करनेवाले का बलदेखो हे दारुकप्रातःकाल हजारों राजा और राजकुमारों को ३० घोड़ेहाथीऔररथोंसमेत युद्धभूमिमेंसे भगाऊंगाप्रातःकाल उनराजा

ओंकी सेनाओंको चक्रसे मथाहुआ देखेगा ३१ युद्धमेंअर्जुनके निमित्त मुझ क्रोध युक्त से गिराई हुई सेनाको देखेगा प्रातःकाल देवता और गन्धर्वों समेत पिशाच सर्प औ राक्षस ३२ और सबलोक मुझ को अर्जुन का मित्र जानेंगे जो अर्जुन से शत्रुता करता है वह मुझसे शत्रुताकरता है और जो उसका साथी है वह मेरा साथी है ३३ अर्थात् श्रीकृष्णजी नारायण हैं और अर्जुन नर हैं इसहेतुसे यह दोनों परमात्मा और जीवात्मा रूपसे शरीर में साथही रहते हैं ३४ उसको बुद्धिसे संकल्प करके अर्जुन मेरा आधाशरीर है तुम इसरात्रिके व्यतीत होने पर मेरे उत्तम रथ को शास्त्र के अनुसार अलंकृत करके हांकतेहुये सावधानी से मेरे साथचलो कौमोदकी नाम गदा दिव्य शक्ति चक्र धनुष बाण ३५ और सब सामग्री को रथ पर रखकर और रथके बैठनेकेस्थानपर मेरी ध्वजाकेस्थान को विचार करके ३६ युद्ध में रथकोशोभा देनेवाले वीर गरुड़ के स्थानको विचार करके सूर्य्याग्निके समानप्रकाशितसुवर्ण जालोंसे युक्त उस छत्रको ३७जिसके जाल विश्वकर्मा के बनाये हुये दिव्य हैं और अलंकृत बलाहक मेघ पुष्प शैव्य और सुग्रीव नाम घोड़ों में श्रेष्ठ जुड़ेहुये घोड़ोंको अपनेस्वाधीन करके सावधानी से कवच धारणकरके नियत होजाओ हेदारुक वृषभके शब्दकेसमान पांचजन्य शंखके भयकारी शब्दको ३८ सुनकर बड़ी शीघ्रतासे मेरेपास आवो हे दारुक मैं एकही दिनमें फूफी के पुत्र भाई अर्जुन के क्रोध और सब दुःखोंको दूर करूंगा जैसे कि अर्जुन युद्धमें ४० । ४१ धृतराष्ट्र के पुत्रोंके देखतेहुये जयद्रथको मारेगाअथवा अर्जुनजिस२ के मारने में उपाय करेगा हेसारथी मैं कहताहूं कि वहां २ उसकी विजय होगी ४२ दारुकबोला कि उसकी विजयतो अवश्यहै पराजय कैसे होसक्तीहै हेपुरुषोत्तम जिसकी रथवानीको आपनेपाया है ४३ मैं इस रात्रिके व्यतीत होने पर अर्जुनकीविजयके निमित्त यह सब बातें इसीप्रकार करूंगा जैसी कि आप मुझकोआज्ञा देरहेहैं ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय॥

संजय बोले कि ध्यान और बुद्धिसे परे पराक्रमी कुन्तीका पुत्र अर्जुन उस सलाह को स्मरण करता और अपनी प्रतिज्ञाकी रक्षा करताहुआ अचेत होगया १ फिर बड़े तेजस्वी गरुड़ध्वज ने उस शोकसे दुःखी ध्यान करते बानरध्वज अर्जुनको स्वप्नमेंदर्शन दिया२ धर्मात्मा अर्जुन सदैव भक्ती औरप्रेमके साथ सब दिशा में श्रीकृष्ण जीकी प्रतिष्ठाको बन्द नहीं करताथा ३ उसने उठकर उनगोबिन्द जी के निमित्त आसन दिया तब अर्जुनने आसनमें अपनी बुद्धिमानी नहींकी ४ इसके पीछे अर्जुनके निश्चयको जानते बड़ेतेजस्वी बिराजमान श्रीकृष्णजी उस नियत हुये अर्जुन से यह बचन बोले ५ हे अर्जुन अपने चित्तको ब्याकुल मत करो निश्चयकरके काल बड़ी कठिनता से बिजय होनेवाला है वह काल सब जीवमात्र को परमेश्वरमें लय करताहै ६ हे द्विपादोंमें श्रेष्ठ तेरी ब्याकुलता किस हेतुसे है उसको कहो हेज्ञानियोंमें श्रेष्ठ शोक न करनाचाहिये शोक ही नाशकारक कर्म है ७ जो कार्य करने के योग्य होय उसकोकर्म से करो कर्मसे पृथक् जो मनुष्य का शोकहै हे अर्जुन वही शत्रुहै ८ शोचकरताहुआ मनुष्य अपने शत्रुओंको प्रसन्न करताहै और बांधवोंको दुःखदेताहै उससे मनुष्य नाशको पाताहै इसहेतुसे तुमशोच करने के योग्य नहीं हो ९ बासुदेवजीके इसप्रकार के बचनोंको सुनकर बिद्यावान् और अजेय अर्जुन इस सार्थक वचनकोबोला१० हे केशवजी मैंने जयद्रथ के मारने में बड़ी प्रतिज्ञाकरी कि प्रातःकाल इसदुष्टात्मा पुत्र घाती जयद्रथको मारूंगा ११ हे अविनाशी निश्चय करके सब महारथियोंसे रक्षित राजा सिन्धमेरी प्रतिज्ञाके मिथ्या करनेके अर्थधृतराष्ट्रके पुत्रोंसे यह पीछेकीओर करनेके योग्यहै १२ हे श्रीकृष्ण माधवजी दुखःकीबात है कि वहां वह मरनेसे शेष बचीहुई ग्यारह अक्षौहिणी सेना बड़ीकठिनतासे बिजय होनेवालीहै १३ हेमाधवजी युद्धमें उन सेनाओंसे और सबमहारथियों से

घिराहुआ वह दुष्टात्मा जयद्रथकैसे देखनेको संभवहै १४ हेकेशव
जी जोमेरी प्रतिज्ञा पूरीनहोगी तोप्रतिज्ञाके निष्फल होनेपर मुझसा
क्षत्रीकैसे जीवतारहैगा १५ हेवीर मुझको दुःखके दूरकरनेके उपा-
यकी बड़ी अभिलाषाहै और सूर्य्यबड़ी शीघ्रतासे आता है इसहेतुसे
मैंयहकहताहूं १६ तदनन्तर गरुड़ध्वज श्रीकृष्णजीअर्जुनके उसशोक
स्थानकोसुनकर अपनेआचमनादिकको करकेपूर्व्वाभिमुख नियत हु-
ये १७जयद्रथके मारनेमें कर्मकरनेवाले बड़ेतेजस्वी श्रीकृष्णजीपांडवों
कीवृद्धिके अर्थ यह वचनबोले १८ हेअर्जुन पाशुपत नाम सनातन
परम अस्त्रहै श्री महेश्वर देवताने जिसअस्त्रके द्वारायुद्धमें सब दैत्यों
कोमारा १९ जोअब वह अस्त्रतुझको याद है तो प्रातःकाल अवश्य
जयद्रथको मारेगा और विस्मरण होगयाहै तो प्राप्तकर और मनसे
शिवजीको ध्यानकर २० हे अर्जुन उसदेवताको मनसे ध्यानकरके
प्रसन्नहो फिरतुम उनके भक्तहो उसी देवताकी कृपासे उसबड़े अस्त्र
कोपावोगे २१ इसके अनन्तर अर्जुनने श्रीकृष्णजीके वचनको सुन-
कर आचमन पूर्व्वक सावधान होकर पृथ्वीपर विराजमान श्रीशं-
करजीको मनसेध्यानकिया२२ फिरशुभलक्षणब्राह्मयमुहूर्त्त के वर्त्त-
मानहोनेपर अर्जुनने केशवजी समेत अपनेको आकाशमेंदेखा २३
हिमालयके पवित्रभाग प्रकाशोंसे संयुक्त सिद्धचारणोंसे सेवितमणि
मन्तपर्व्वतको चला २४वायुकेवेगकेसमान चलनेवाला अर्जुनकेशव
जीकेसाथ आकाशको गया और दहिनी भुजापर वह अर्जुन समर्थ
केशवजीसे पकड़ाहुआया २५ और अपूर्व्व दर्शनीय बहुतसे चमत्का-
रोंको देखतागया उस धर्मात्माने उत्तर दिशा में श्वेत पर्व्वत को
देखा २६ कुबेरजीके विहारमें कमलोंसे शोभायमान कमलनी को
और नदियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त जलकी रखनेवाली उस श्री गंगाजी
कोभी देखता चला जोकि सदैव फूलफल रखनेवाले वृक्षोंसे कीर्ण
युक्त स्फटिक पाषाणोंसे युक्तसिंहव्याघ्रोंसेव्याप्तनानाप्रकारकेमृगों
से व्याकुल २७।२८ पवित्र आश्रमों समेत सुन्दर चित्तरोचक पक्षि-
योंका आश्रय स्थानथा और मन्दराचलके स्थानोंको जो कि किन्न-

रोंके उद्गीतोंसे शब्दायमान स्वर्णमयी और रजतमयी शिखरोंसे युक्त अपूर्व नानाप्रकारकी औषधियोंसे अत्यन्त प्रकाशित औरउसी प्रकार फूलेहुये मन्दार वृक्षोंसे भी महा शोभायमान थी ३० और स्वच्छस्निग्धप्रकाशके समूहरूप कालपर्व्वत ब्रह्म तुंगआदि बहुत सी नदी और देशोंको भीदेखा ३१ और तुंग शतशृङ्गपर्वत समेत शर्यातिके बनको और पुण्यकारी अश्वशिरनाम पवित्रस्थान और अथर्वणऋषिके आश्रमकोदेखा ३२ और वृषदेश और अप्सराओंके आश्रयस्थानकिन्नरोंसे शोभित पर्वतोंकेइन्द्र महामन्दरकोदेखा ३३ उस पर्व्वतपर श्रीकृष्णजीके साथचलते हुये अर्जुनने उस पृथ्वीको भी देखाजो कि शुभ निर्झरों से शोभित सुवर्ण धातुमयी चन्द्रमाको किरणोंकेसमान प्रकाशितअंगवाली मालिनियोंसे व्याप्तथीऔरबहुतसे आकारवालेअपूर्व्वरूप अनेकखानोंसे युक्त समुद्रोंकोदेखा ३५ श्रीकृष्णजी के साथ में आश्चर्य्य युक्त अर्जुन आकाश स्वर्ग और पृथ्वीपर चलता हुआ छोड़े हुये बाणके समान आकाशकोगया ३६ तब अर्जुनने ग्रह नक्षत्र चन्द्रमा सूर्य्य औरअग्निके समान प्रकाशमान अतिज्वलित रूप पर्व्वत को देखा ३७ फिर पर्व्वतके शिखर पर नियत उस ज्योति रूप पर्व्वतको पाकर सदैव तप करनेवाले उन महात्मा वृषभध्वज शिवजीको देखा ३८ जो कि अपने तेज से हजार सूर्य्य के समान प्रकाशित गौर वर्ण शूल जटाधारी केवल मृगचर्म के धारण करनेवाले ३९ हजारों नेत्रोंसे अद्भुत शरीर बड़े तेजस्वी देवता प्रकाशित जीवोंसेव्याप्त श्री पार्वतीजीके साथ बिराजमानथे ४० गीतवाद्योंकेशब्द और हास्य नृत्य करती हुई अप्सराओंके घूमने के उत्तम शब्दों सेमनोहर पवित्र सुगन्धियों से शोभायमान ४१ ब्रह्मबादी ऋषियों के दिव्य स्तोत्रों से स्तूयमान होकर सब जीवधारियों के रक्षक धनुषको धारण किये अविनाशी वर्त्तमान थे ४२ फिरसनातन ब्रह्म को स्तुति करते हुये अर्जुनसमेत धर्मात्मा बासुदेवजीने उनशिवजीको देखकर शिरसे पृथ्वीपरसाष्टांङ्ग प्रणाम किया ४३ जोकि सृष्टि के आदि बिश्वकर्मा अजन्मा अवि-

नाशी चित्तकी वृत्ति निवृत्त के हेतु उत्पत्ति स्थान ईशान रूप आका-
शादि पंचभूतों के और तेजोंके निवास स्थान ४४ जलकीधाराओं के
उत्पन्न करनेवाले महत्तत्त्व और प्रकृतिसे परे देवता दानव यक्ष और
मनुष्योंके साधनरूप ४५ योगियोंके आश्रयस्थान अपने स्वरूपमें
मग्न ब्रह्मज्ञानियों के आवागवनके स्थान जड़ चैतन्यजीवोंके स्वा-
मी प्रलय कर्त्ता ४६ कालके समान क्रोधरखनेवाले होकरमहात्मा
हैं और उन्हीं से इन्द्र और सूर्य्य के गुणोंका उदयहै. तब श्रीकृष्ण
जीने मन वाणी और बुद्धिकेकर्मोंसे उन शिवजीको प्रणाम किया ४७
सूक्ष्म अध्यात्म पदके चाहने वाले ज्ञानी लोग जिसकोप्राप्त होतेहैं
उस अजन्मा कारणात्मा शिवजीकी शरण में प्राप्त हुये ४८ अर्जुन
ने भी उस देवता को सब जीवधारियोंका आदि तीनोंकालोंका भी
उत्पत्ति स्थान जान कर वारम्बार प्रणाम किया ४९ इसके पीछे
अत्यन्त प्रसन्नचित्त और हंसतेहुये शिवजी उन आये हुयेदोनों नर
नारायणजीसे बोले ५० हे नरोत्तमो तुम्हारा आना सफल होय
तुम आनन्द से उठो हे वीरो तुम्हारे चित्त की क्या अभिलाषा है
शीघ्र कहो ५१ तुम जिसप्रयोजनसे मेरे पास आयेहो उसको कहो
में उसकोकरूंगा तुम अपने कल्याण को मांगो मैं सब तुमकोदूंगा
इस केपीछे बड़े बुद्धिमान् महात्मा प्रशंसनीय वासुदेव जी और
अर्जुनने उनके उस वचनको सुनकरऔर उठकर भक्तिपूर्व्वक हाथ
जोड़कर शिवजीकी दिव्यस्तोत्रों से स्तुति करी ५३।५४ अर्जुन और
श्रीकृष्णजी बोले कि ॥ स्तुति ॥

नमोभवायशर्वायरुद्रायवरदायच । पशूनांपतयेनित्यमुग्रायचकप
र्दिने ५५ महादेवायभीमाय त्र्यंबकायचशांतये । ईशानायमख
घ्नाय नमोस्त्वंधकघातिने ५६ कुमारगुरवेतुभ्यंनीलग्रीवायवेधसे ।
पिनाकिनेहविष्याय सत्यायविभवेसदा ५७ विलोहितायधूम्रायव्या
धायानपराजिते । नित्यंनीलशिखंडायशूलिनेदिव्यचक्षुषे ५८ होत्रेहो
त्रेत्रिनेत्रायव्याधायवसुरेतसे । अचिन्त्यायांबिकाभर्त्रेसर्वदेवस्तुताय
च ५९ वृषध्वजायमुंडायजटिनेब्रह्मचारिणे । तप्यमानायसलिलेब्रह्म

गयायाजितायच६० विश्वात्मनेविश्वसृजेविश्वमावृत्त्यतिष्ठते। नमो नमस्तेसेव्यायभूतानांप्रभवेसदा ६१ ब्रह्मवक्त्रायसर्वायशंकरायशिवायच। नमोस्तुवाचांपतयेप्रजानांपतयेनमः ६२ नमोविश्वस्यपतये महतांपतयेनमःनमःसहस्त्रशिरसेसहस्त्रभुजमन्यवे ६३ सहस्त्रनेत्रपादायनमोऽसंख्येयकर्मणे। नमोहिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचायच। भक्तानुकंपिनेनित्यं सिध्यतांनोवरःप्रभो ६४॥

इति॥

संजयबोले कि अर्जुन समेत बासुदेवजी ने अस्त्रमिलनेके निमित्त उन महादेवजीको इसप्रकार से स्तुतिकरके प्रसन्न किया॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिअशीतितमोऽध्यायः ८०॥

इक्यासीवां अध्याय॥

इसके पीछे प्रसन्न चित्त प्रफुल्लित नेत्र हाथजोड़े हुये अर्जुन ने उन तेजों केभंडार शिवजी के संपूर्ण रूपको देखा१ और उस अच्छी रीतिसे दृष्टि गोचर कीहुई अपनी भेंटको जोकि रात्रिके समय सदैव अर्पण की जातीथी उसको शिवजीके पास बर्तमान देखा अर्थात् जिसको कि बासुदेवजीके अर्थ निवेदन कियाथा २ इसके पीछे पांडव अर्जुन चित्तसे श्रीकृष्णजी को और शिवजी की पूजकर शंकरजी सेबोले कि कृपासिंधु भक्तबत्सल मैं दिव्यअस्त्र को चाहताहूं फिर बरके निमित्त अर्जुनके उस बचन को जानकर मन्दमुसकान करते देवता शिवजी बासुदेवजी और अर्जुन से बोले ४ कि हे नरोत्तम पुरुषो तुम्हारा आना श्रेष्ठ था तुम्हारे चित्त का मनोरथ विदित हुआ तुम दोनों जिस अभिलाषा के लिये यहां आये हो उस मनोरथ को मैं तुम्हारे अर्थ देताहूं हे शत्रुओं के मारने वालो समीपही अमृत से भरा हुआ दिव्य सरोवर है उसमें मैंने पूर्वकालके समयसे वह दिव्य धनुष और बाण रक्खाहै ५।६ जिसके द्वारा मैंने युद्ध में देवताओं के शत्रु सब दैत्यों को माराथा हे श्रीकृष्ण और अर्जुन तुम दोनों उस उत्तम धनुष और बाण को लाओ ७ यह सुनकर

उनके वचनको अंगीकार करके वह दोनों शिवजीके सब पार्षदों समेत उस दिव्य सरोवरको चले जो कि सैकड़ों दिव्य ऐश्वर्यों से भराहुआ पवित्र दिव्य अभिलापओंका देनेवाला शिवजी काव तं-लाया हुआथा वह दोनों नरनारायण ऋषिनिर्भय उस सरोवरपर गये ८। ६ तदनन्तर उन दोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजीने सूर्य्य मंडलके समान उस सरोवरपर जाकर जलके भीतर भयकारी सर्प कोदेखा १० औरहजारशिर रखनेवाले अग्निकेसमान प्रकाशमान बड़ीज्वालाओंके उगलनेवाले एकदूसरे उत्तमसर्पको देखा ११इसके पीछेश्रीकृष्णजी औरअर्जुन आचमनादिक करके शिवजीकोनमस्का-रकर हाथजोड़करके उनदोनोंसर्पोंके सन्मुख खड़ेहुये वेदोंके जानने वाले वहदोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजी सर्वात्म भाव से शिवजीको प्राप्तहोकर उसअतुल्य प्रभाववाले ईश्वरको प्रणामकरके ब्रह्मरूप शतरुद्रीका पाठकरनेलगे १३ फिरवह दोनोंसर्परुद्रजीके माहात्म्यसे सर्परूपको छोड़करधनुषबाण रूपहोगये वहीशत्रुओंकामारनेवाला जोड़ाप्रकटहुआ १४ उन प्रसन्न चित्तदोनों महात्माओंने उसअच्छे प्रकाशमान धनुष बाणको उठालिया और वहांसे लाकर महात्मा शिवजीको लाकरदिया १५ इसकेपीछे शिवजी के बगलसे उनका दूसरा रूपब्रह्मचारी और पिंगल वर्णनेत्र तपका स्थान पराक्रमी आरक्त नीलारंग रखनेवाला प्रकट हुआ १६ फिर वह सावधान उस उत्तम धनुषको लेकर खड़ाहुआ और बाण समेत उस उत्तम धनुषकोवृद्धिके अनुसार खैंचा १७ निस्सन्देह पराक्रमी अर्जुनने उसकी मौर्वी अर्थात् प्रत्यंचा और मूठके स्थान को देखकर और शिवजीके कहेहुये मन्त्रकोसुनकर अस्त्रकोलिया फिरउसबड़ेपरा-क्रमी प्रभुने उसबाण को सरोवरही में फेंका अर्थात् उस वीरने उसधनुष को फिरसरोवरही में नियत किया १९ तब उसके पीछे स्मरण करनेवाले अर्जुनने शिवजीको प्रसन्न जानकर वनमें दिये हुयेवरको और शंकरजीके दर्शनको २० अपने मनसे यादकिया और कहा कि वह अस्त्र मुझको प्राप्तहोय तब प्रसन्न मन होकर शिव

जीने उसकी उस अभिलाषाको जानकर २१ उस श्रेष्ठ और भय-कारी उसकी प्रतिज्ञाके पूरेकरनेवाले पाशुपत अस्त्रको दिया उसके पीछे ईश्वरसे उस पाशुपतनाम दिव्यअस्त्रको पाकर २२ रोमरसे प्रसन्नचित्त निर्भय अर्जुनने अपने कार्यको कियाहुआ माना और अत्यन्तप्रसन्नमन दोनोंने शिरोंसे महेश्वर शिवजीको दंडवत्की२३ उस समय शिवजी से आज्ञा लेकर बीर अर्जुन और श्रीकृष्णजी बड़े आन्दसे युक्तहोकर अपने डेरेमें पहुंचे २४ असुरसंहारे शिवजी से ऐसे आज्ञालेने वाले हुये जैसे कि पूर्व्व समयमें जंभके मारनेके अभिलाषी प्रसन्नचित्त इन्द्र और विष्णुहुयेथे २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इस प्रकार से उन दोनों श्रीकृष्ण और दारुक सारथी के वार्त्तालाप करते हुये वह रात्रि व्यतीत हुई और राजा युधिष्ठिर भी जगे १ उस समय पाणिस्वनिक, (अर्थात् हाथ की चुटकी बजानेवाले) मागध, मधुपर्क्किक, बैतालिक, और सूत इन सब लोगोंने उस पुरुषोत्तम युधिष्ठिर की प्रशंसा करी २ नर्त्तक लोग नृत्य करनेलगे और चित्त रोचक स्वर वाले गायकों ने यहगान किया कि आपका बंश तुम्हारे अभीष्टोंको प्राप्तकरे ३ मृदंग झरझर भेरी पणव आनक गोमुख आडंबर शंख और बड़े शब्द वाली दुन्दुभी ४ इनके सिवाय अन्य २ बाजों कोभी उन सब लोगों ने बजाया जो कि अत्यन्त प्रसन्न सर्व्व गुणसंपन्न अपने काम में कुशल बड़े २ प्रबीणोंके शिक्षित शिष्य थे ५ उन बादल के शब्दों के समान बड़े भारी शब्दों में स्वर्गको स्पर्शकर-के उस सोये हुये राजशिरोमणि युधिष्ठिरको जगाया ६ वह बड़ों के योग्य उत्तम शयन परसे सोकर जागा हुआ राजा सैयासे उठ-कर आवश्यक कार्य्यके निमित्त स्नानालयको गया ७ फिर वहां स्नान करने के पीछे श्वेत वस्त्रों की पोशाकोंसे अलंकृत स्नानकराने

वाले एकसौ आठ तरुण पुरुष सुनहरी जल से पूर्ण कलशों समेत आन कर सन्मुख नियत हुये ८ तब वह लघु अम्बरों को धारण करके शुभ आसन पर विराजमान हुआ और चन्दनसे युक्त अभिमंत्रित जलों से राजाने स्नान किया ६ फिर पराक्रमी सुशिक्षित मनुष्यों के द्वारा सर्वौषधी के उबटनों से उबटन कियेहुये सुगन्धियोंसे युक्त जलसे स्नान करके अग्निकी दी हुई राजहंस के समान वर्ण वाली पगड़ी को मस्तक के जलके सुखाने के लिये शिर पर बांधा ११ वह महा बाहु श्वेत चन्दन से शरीर को लेपन करके माला धारी और पवित्र वस्त्रोंका धारण करने वाला हाथ जोड़कर पूर्वाभिमुख नियत हुआ १२ सत्पुरुषोंके मार्ग में नियत युधिष्ठिर ने जयकरने के योग्य मंत्रको जपा फिर नम्रता पूर्वक वह युधिष्ठिर ज्वलित अग्नि की शाला में पहुंचा१३ वहां पवित्रासन समेत समिध आहुती और मंत्रों से संयुक्त अग्निको पूजकर उस घरसे निकला १४ फिर उस पुरुषोत्तम राजाने दूसरे महलमें जाकर वेदज्ञ और बड़े श्रेष्ठ वृद्ध ब्राह्मणों का दर्शन किया १५ उन जितेन्द्री वेद व्रतमें स्नानकिये हुये अनृत नामस्नानसे स्नानकिये हुये हज़ारों शिष्यों समेत सूर्य्य के उपासक अन्य ब्राह्मणोंकोभी देखा१६ फिर उस महा बाहुने उन सब ब्राह्मणों को अक्षत पुष्पोंसे स्वस्ति वाचन कराके प्रत्येक ब्राह्मण को सहत घृत फल और उत्तम मंगली अनेक वस्तुओं से युक्त १७ एक२ निष्क सुवर्ण का दानदिया फिर अलंकृत सौ घोड़े अच्छे२ वस्त्र और यथाभिलाष दक्षिणादी १८ इसी प्रकार उस पांडुनन्दन ने दूधकी देने वाली सुवर्ण शृङ्गी चांदीके खुर रखनेवाली सवत्सा कपिला गौओं को दान करके परिक्रमा करी १६ स्वस्तिक अर्थात् शुभ वस्तु संपुट सुवर्णके अर्घपात्र माला जल पूरित घट और प्रकाशित अग्नि २० अक्षत पूर्ण पात्र मंगली रूप गोरोचन अच्छी अलंकृत शुभ कन्या दही, घृत,सहत, जल २१ मंगली रूप पक्षी, और अन्य२ भी जो मंगलीवस्तु हैं उन सब को युधिष्ठिर देखकर और स्पर्श करके बाहरके द्वार पर

गया २२ उस के पीछे उस द्वार पर महा वाहु युधिष्ठिर के नियत होनेपर सेवक लोगोंने बिश्वकर्माजीके बनाये हुये उस दिव्यउत्तम आसनको प्राप्त किया जो कि स्वर्णमय सब ओर से कल्याण रूप मुक्ता और बैडूर्य्य मणियों से शोभायमान २३ बहुमूल्य बस्त्रादिकों से अलंकृत और रत्नों से जटित था २४ उस आसनपर बिराजमानहुये युधिष्ठिर के उनवृद्धोंके योग्य बड़े उत्तम आभूषणों को सेवक लोगोंनेलाकर उपस्थितकिया २५ हे महाराज माला मणि मुक्ताओंकेभूषण और पोशाकधारी महात्मा युधिष्ठिरका रूप शत्रुओंके शोकोंका बढ़ानेवाला हुआ २६ सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित शोभायमान सुनहरी दंडवाले चलायमान चामरों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजिलियों से बादल शोभायमान होता है २७ फिर वह कौरवनन्दन सूत लोगों से स्तूयमान बन्दी जनों से बंद्यमान गंधर्बों से गीयमान होता हुआ २८ फिर एक मुहूर्त्त में ही बन्दियोंके बड़ेशब्द हुये रथोंकी नेमियों के और घोंड़ोंके खुरोंके शब्द प्रकटहुये २९ हाथियोंकेघंटोंकेशब्द शंखोंकी ध्वनि और मनुष्यों के चरणों के आघात से पृथ्वी कंपायमान के समान हुई ३० इस के पीछे कुण्डल धारी खड्ग युक्त कवच धारी तरुण पुरुष द्वार पालक ने द्वारके भीतर जाकर जंघाओं से पृथ्वी पर नियत होकर प्रणाम के योग्य राजा को शिरसे दंडवत औरप्रणाम करके धर्मपुत्र ३१। ३२ महात्मा युधिष्ठिर से समीप आये हुये श्रीकृष्णजी के आने का समाचार निवेदन किया वह पुरुषोत्तम आगमन के धन्यबाद के साथ श्रीकृष्णजी से बोला ३३ और कहने लगा कि परम पूजित अर्घ आसनादिक इन श्रीकृष्णजी को दो इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी को बैठा कर और आपभी उत्तम आसन पर बैठ कर ३४ उन का बिधि के अनुसार पूजन किया ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इस के पीछे अत्यन्त प्रसन्न कुन्ती नन्दन राजा युधिष्ठिर जनार्दन जी को प्रसन्न करके उन देवकी नन्दनजी से बोले १ हे मधुसूदन जी क्या आपकी रात्रि सुख पूर्व्वक व्यतीतहुई और हे अविनाशी आप के सब ज्ञान निर्मल हैं २ फिर वासुदेव जीने भी युधिष्ठिर को उन के योग्य सत्कार किया इसके अनन्तर सूत ने आये हुये सेवक नौकर आदि के आनेका निवेदन किया ३ फिर राजाकी आज्ञासे उस सूतने उन मनुष्यों को सभामें बुलाकर बैठाया विराट, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्विकी, ४ धृष्टकेतु, चन्देरी काराजा महारथी द्रुपद, शिखण्डी, नकुल, सहदेव, चेकतान, केकय,युयुत्सू, पांचालदेशी,उत्तमौजस, युधामन्यु,सुवाहु और द्रौपदीके सब पुत्रों को राजसभामें लाकर बैठाया ५ यह सब लोग और अन्य क्षत्री उन क्षत्रियों में श्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिरके पासआये और सब शुभ आसनोंपर बैठगये ७ महाबली महात्मा बड़े तेजस्वी दोनों वीर श्रीकृष्ण और युयुधान एकआसन पर बैठे ८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उन महात्माओं के समक्षमें मधुदैत्य संहारी कमल लोचन श्रीकृष्णजी से बड़ी नम्रता और मधुर वाणी से यह वचन बोले कि जिस प्रकार से देवता लोग इन्द्र की रक्षामें हैं उसी प्रकार हम सबलोग आप अकेलेकी शरणमें होकर युद्धमें विजयपूर्व्वक अविनाशी सुखोंको चाहते हैं १० हे श्रीकृष्णजी आपउस हमारे राज्य के नाशको वा शत्रुओं से अप्रतिष्ठा आदि नाना प्रकार के कष्टोंको भी जानते हैं ११ हे सबके ईश्वर हे भक्तों के प्यारे हे मधुदैत्य के मारने वाले श्रीकृष्णजी हम सबके बड़ेसुख और यात्रा तुम्ही में नियत हैं १२ हे श्रीकृष्णजी सो तुम सब प्रकार से वही करने को योग्यहो जिसको कि मेरा चित्त आप में अभिलाषा करताहै अर्थात् वह अर्जुन की प्रतिज्ञा जिसको कि उसने करना चाहाहै वह सत्यहोय १३ सो आप इसदुःख और क्रोधरूप अथाह

समुद्र से पार उतारो हे माधवजी अब पार उतरने के अभिलाषी हम सब लोगोंकी आशही नौका हूजिये १४ शत्रु के मारने को उद्युक्त रथी युद्धमें वह बात नहीं करता है जैसे कि हे माधवजी उपाय करनेमें प्रवृत्त सारथी करताहै १५ हे महाबाहु जनार्दन जी जिस प्रकारसे कि आप बड़ी२ आपत्तियोंसे यादव लोगोंकी रक्षा करते हो उसी प्रकार हम लोगोंकी भी दुःखोंसे रक्षाकरनेको योग्य हो १६ हे शंख चक्र गदा धारी आप नौका रूप हो कर नौका से रहित महा गंभीर कौरवरूपी समुद्रमें डूबेहुये पाण्डवोंको बाहर निकालो १७ हे देवताओं के ईश्वर देवता आदि अन्तसेरहित संसारके संहार कर्त्ता संसारके सब लघुदीर्घोंसेव्याप्त बिजयकेअभ्यासी पापोंके नाश करने वाले बैकुंठ परमात्मा श्रीकृष्णजी आपको नमस्कारहै १८ नारदजीने आपको प्राचीन ऋषियोंमें श्रेष्ठबरदाता शार्ङ्गधनुष धारी और सबसे परे कहाहै हे माधवजी उसको सत्य करो १९ सभाके मध्यमें इसरीतिसे धर्मराज युधिष्ठिरके कहनेपर सजल बादलके समान शब्दवाले पीताम्बर कमललोचन श्रीकृष्ण जी युधिष्ठिर से यह बचन बोले २० देवताओं समेत सब लोकोंमें भी उस प्रकार का धनुष धारी कोईनहीं है जैसा कि संसारके सब धनोंका बिजय करने वाला २१ महाबली अस्त्रों का ज्ञाता अतुल पराक्रमी युद्धमें कुशल सदैव क्रोध युक्त और तेज धारियोंमें श्रेष्ठयह पांडव अर्जुनहै २२ वह तरुण अवस्थावाला उन्नतस्कन्ध दीर्घबाहु महाबली उत्तम सिंहके समान चलनेवाला श्रीमान् अर्जुन तेरे सब शत्रुओंको मारेगा २३ और मैं वह करूंगा जिस प्रकार कुन्तीका पुत्र अर्जुन उठी हुई अग्निकेसमान दुर्य्योधन की सेनाओंको भस्म करेगा २४ अब अर्जुन उस दुर्बुद्धी नीच अभिमन्यु के मारने वाले दुष्टात्मा जयद्रथको अपने बाणों से उसमार्ग में डालेगा जिसमें कि फिर उसका दर्शन न होगा अब गिद्ध बाज कठिन शृगाल आदि अनेक जीवजो मनुष्यों के खाने वालेहैं वह सब उसके मांसकोखायेंगे २६ जो कदाचित् इन्द्र समेत देवता भी उसके रक्षक होंय तो

भी यह जयद्रथ अब युद्धमें माराहुआ होकर यमराजकी राजधानी को पावेगा २७ अब अर्जुन जयद्रथको मारकर आपकेपास आवेगा हे ऐश्वर्य्यके आगे रखने वाले राजा युधिष्ठिर तुम निस्संदेह होकर शोचसे रहित होजाओ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि इस प्रकार से उनलोगों के वार्त्तालाप करनेकी दशामें भरतर्षभ राजा युधिष्ठिरके देखने के लिये अपने मित्र वर्गों समेत अर्जुनभीआकर प्रकटहुआ १ फिर पांडवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरअपने आसनसे उठकर उसमंगलकारी सभामें नमस्कारपूर्व्वक आगे नियत हुये अर्जुन को बड़े प्रेमसे छातीसे मिलाकर मिले २ औरउसके मस्तकको सूंघकर भुजासेअपनी बगलमें लेकर उत्तम २ आशीर्वादों को देकर मन्द मुसकानके साथ यहवचन बोले ३ हे अर्जुन प्रकट है कि युद्धमें निश्चयकरके तेरेचित्तके अनुसारतेरीबड़ी बिजयहै क्योंकि श्रीकृष्णजीप्रसन्नहैं४ फिरअर्जुन युधिष्ठिर से बोले कि आपका भलाहोय मैंने केशव जीकीही कृपा से दृष्टि गोचरहोने वाले एक बड़े आश्चर्य्य को देखा ५ तदनन्तर अर्जुन ने अपने शुभ चिन्तकों की प्रसन्नता और बिश्वास के निमित्त जिस प्रकार से कि उन महात्मा योगेश्वर शिवजी से मुलाक़ात हुई उस सब वृत्तान्तको वर्णन किया ६ तदनन्तर वह सबलोग आश्चर्य्यित होकर शिरोंसे पृथ्वीको स्पर्श पूर्व्वक शिवजी को नमस्कार करके धन्यहै धन्यहै यह शब्द बोले ७ तदनन्तर सब इष्टमित्र व भाई बन्धु धर्म पुत्र युधिष्ठिर से आज्ञा लेकर शस्त्रोंको धारण किये हुये प्रसन्न चित्त होकर बड़ी शीघ्रतासे युद्धकेनिमित्त निकले८और वह सात्यकी अर्जुन और श्रीकृष्णजीभीबड़े प्रसन्नचित्तराजाको नमस्कार करके युधिष्ठिर के डेरे से बाहर निकले ९ फिर वह सात्यकी और श्री कृष्णजी दोनोंवीर एक रथकी सवारी में साथ बैठकर अर्जुनके

डेरेमें गये और श्री कृष्णजीने वहां जाकर सारथी के समान युद्धमें रथियोंमेंश्रेष्ठ अर्जुनके उसरथको जिसपर कि हनुमान्‌जीका स्वरूप था अलंकृत किया वह बादल के समान शब्दायमान संतप्त किये हुये सुबर्ण के समान प्रकाशित ११ अलंकृत कियाहुआ उत्तम रथ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बाल सूर्य्यसे प्रकाशित होकर शोभित होताहै इसकेपीछे सबसामानसे अलंकृत पुरुषोत्तमने उस अलंकार किये हुये रथको नित्य कर्म जपादिक से निवृत्त होनेवाले अर्जुनसे वर्णनकिया फिर पुरुषोंमें मुकुटकेसमानश्रेष्ठ सुवर्णकीमाला रखने वाले १३ । १४ धनुषबाणधारी अर्जुनने उसरथको दाहिना किया और तप,बिद्या, और अवस्थामें बड़े क्रियावान जितेन्द्री पुरुषों के बिजयकारी आशीर्बादों से स्तूयमान अर्जुन उस बड़े रथमें सवार हुआ तदनन्तर युद्धकी बिजय से संबंध रखने वाले मन्त्रोंसे वह श्रेष्ठ और प्रकाशित रथ १५ ऐसे अभि मंत्रित किया गयाजैसे कि उदय होने वाला सूर्य्य अभिमंत्रित होता है फिर वह सुबर्णके भूषणों से अलंकृत रथियोंमेंश्रेष्ठ १६ अर्जुन ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि मेरु पर्वत पर स्वच्छ और प्रकाश मान सूर्य्य होताहै फिर सात्यकी और श्रीकृष्णजी भी अर्जुनके सन्मुख ऐसे सवार हुये १७ जैसे कि राजा शर्यातके यज्ञमें जातेहुये इन्द्र देवता के आगे दोनों अश्विनी कुमार होतेहैं फिर सारथियों में श्रेष्ठ गोबिन्दजीने बाग डोरोंको ऐसे पकड़ा १८ जैसे कि वृत्रासुर के मारनेको जाते हुये इन्द्रके रथकी रस्सियोंको इन्द्रके सारथी मातलिने पकड़ाथा उन दोनोंके साथ अत्यन्त उत्तम रथमें बैठाहुआ अर्जुन १९ जयद्रथ के मारनेका और शत्रुओंके समूहों के नाश करने का अभिलाषी होकर ऐसे चला जैसे कि बुध और शुक्रके साथ अन्धकार को दूर करता हुआ चन्द्रमा चलताहै २० अथवा जैसे कि बरुण और मित्र देवताओंके साथ तारक संबंधी युद्धमें इन्द्र गयेथे इसके पीछे मागधों ने मंगली रूप शुभ स्तोत्र और बाजोंके शब्दोंके साथ २१ जाते हुये उस बीर अर्जुन की स्तुति को किया वह बिजय के

आशीर्बाद पुण्याहवाचन, घोष सूत मागधों के शब्द २२ बाजोंके शब्दोंसे संयुक्त उन्होंकी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवालेहुये इसके पीछे चलने वाली सुगन्धियों से युक्त पवित्र वायु भी २३ अर्जुन को प्रसन्न करती और शत्रुओं को सुखाती हुई चली और हे राजा उसी क्षण में नानाप्रकार के मंगलों के सूचक २४ बहुत से शकुन पांडवोंकी विजयके निमित्त प्रकटहुये और हेश्रेष्ठ वही उनके शकुन तुम्हारे पुत्रोंके अशकुन रूपहुये २५ अर्जुन विजय के निमित्त उन दाहिने शकुनोंको देखकरवड़े धनुषधारी सात्यकीसे यह बचनबोले कि २६ हे सात्यकी अबयुद्धमेंमेरीविजय अवश्य दिखाई देती है हे शिनि वंशमें पुंगव जोकि शकुन दिखाई देतेहैं २७ इस हेतु से मैं अवश्य वहांजाऊंगा जिसस्थानपर यमलोकमें जाने का अभिलाषी राजा सिंधु मेरे पराक्रमकी बाटदेखरहाहै २८ जैसे कि जयद्रथका मारना मेराउत्तम कर्महै उसी प्रकार धर्मराजकी रक्षाकरना भी मेराबहुतवड़ा परमकर्महै २९ हेमहावाहु सो तुमअब राजाकोचारों ओरसे ऐसेरक्षित करो जैसे कि मैं रक्षाकरूं उसी प्रकार तुमसे भी रक्षित कियाजाय ३० मैं लोकमें ऐसा किसीको नहीं देखताहूं जो युद्धमें तुझ वासुदेवजी के समानको विजयकरे चाहैआप देवताओं का इन्द्रभी होय उसकोभी तेरे सन्मुख होने को समर्थ नहीं देखता हूं ३१ हे नरोत्तम मैं तुझमें और महारथी प्रद्यु म्नमेंविश्वास करने वालाहोकर विनारुका हुआ जयद्रथ के मारनेको समर्थहूं ३२ हे यादवकिसी दशामेंभी मुझमें रुकावटनकरनाचाहियेतुझकोसर्वात्मा भावसे राजाकी रक्षाकरनी योग्यहै ३३ जहांपर महावाहु वासुदेव जी वर्त्तमानहैं और मैं भी जहां नियतहूं निश्चयकरके वहां किसी प्रकारकी आपत्ति नहींपड़तीहै ३४ शत्रुओंके वीरों का मारनेवाला सात्यकी अर्जुनके इसप्रकारके वचनसुनकर बहुत अच्छा कहकर वहां गया जहां पर कि राजायुधिष्ठिर वर्त्तमानथे ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुराशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

———

पचासीवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि अभिमन्युके मरने और प्रातःकाल होनेपर उन दुःखशोकसे युक्त पांडवोंने क्या किया और वहां मेरे कौन २ शूर वीरोंने युद्धकिया १ कौरव और मेरेपुत्र इसपापको करके उस अर्जुनके कर्मोंको जानतेहुये किसप्रकारसे निर्भयहुये उसकोमुझसेकहो २पुत्रके शोकसे दुखी व नाश करनेवालेकालके समान क्रोधयुक्त आते हुयेपुरुषोत्तम अर्जुनको किसप्रकारसे युद्धमेंदेखा ३ मेरेपुत्रोंने उस हनुमानजीकी ध्वजा रखनेवालेबड़ेधनुषको चलायमान करनेवाले पुत्रकेमरनेसे दुखी अर्जुनको युद्धमेंदेखकर क्या किया ४ हेसंजय युद्ध में दुर्य्योधनकी क्या दशाहुई अबमैंने बड़ाविलाप सुना है प्रसन्नता नहीं सुनी ५ जो शब्दकि चित्तरोचक औरकानोंको सुखदेनेवालेथे वह सब अब जयद्रथकेडेरेमें नहीं सुनेजाते हैं ६ अब मेरेबेटोंके डेरेमें प्रशंसा औरस्तुतिकरनेवाले सूतमागध और नर्त्तकोंकेसमूहोंके शब्दसबरीतिसेनहींसुनेजातेहैं ७ जहांपर मेरेकानशब्दोंसे सदैवशब्दायमान होतेथेउन दोनोंके शब्दोंको अब नहीं सुनताहूं ८हेतातसंजय पूर्व्वसमय में सत्यऔर धृतवाले सोमदत्तके महलमें मैंने बैठकर उत्तम शब्दको सुना ९सो मैं पापात्मा पुण्यसेरहित अपनेपुत्रोंकेडेरेको शोकके शब्दोंसे शब्दायमान औरउत्साहकेबिना देखताहूं १० विविंशति, दुर्मुख,चित्रसेन, बिकर्णऔर दूसरेमेरे पुत्रोंकेशब्दभी पूर्वके समान नहीं सुने जाते हैं ११ जिस द्रोणाचार्य्य के पुत्र और मेरे पुत्रों के रक्षास्थान बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा को ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य जातिके शिष्यलोग उपास ना करतेथे १२ और बितंडावाद वर्णन वार्त्तालाप शीघ्रता करने वाले और बजाये हुये नाना प्रकार के चित्त रोचक बाजे और गानोंसे दिनरात्रि रमण करता हुआ हास बिलास करताथा १३ और बहुत से कौरव पांडव और यादवोंसे उपासना किया हुआ था हे सूत उस अश्वत्थामा के घरमें अबपूर्व्व के समान शब्द नहीं है १४ जो नर्त्तक और गाने वाले उस

बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाके पास सदैव नियत होतेथे उनकी भी ध्वनि नहीं सुनीजातीहै १५ रात्रिके समय विन्दु अनुविन्दु राजाओं के डेरे में जो बड़ी भारी ध्वनि १६ सुनी जातीथी अब उस प्रकार की नहीं सुननेमें आतीहै और प्रसन्न रहने वाले केकयलोगों के डेरेमें ताल समेत गीतोंके बड़े२ शब्द सुने जातेथे १७ और हेतात नर्त्तक लोगोंके जो शब्द सुनेजातेथे वह अब नहीं सुनेजाते जो साततार वाले तमूरोंके फैलानेवाले शास्त्रज्ञ याजकलोग सोमदत्ति की उपासना करते थे १८ उनके भी शब्द नहीं सुनेजातेहैं धनुष प्रत्यंचा के शब्द वेदध्वनि तोमर खड्ग और रथ के जो शब्द १९ द्रोणाचार्य्य के घरमें होतेथे मैं उनको भी नहीं सुनताहूं नानाप्रकार के देश जन्यगीतोंके जो शब्द और बाजोंके जो शब्द अधिकथता से होतेथे वह भी अब नहीं सुनेजातेहैं जब अविनाशी श्री कृष्णजी सब जीवोंकी दयाके लिये शान्तीकी इच्छासे उपप्लव्य स्थानसेआये तब उसके पीछे मैंने उस निर्बुद्धी दुर्य्योधन से कहाथा २१।२२ कि हे बेटा वासुदेव रूप तीर्थके द्वारा पांडवोंसे सन्धिकर लो मैं इस बातको समय के अनुसार उचित और योग्य जानताहूं हे दुर्य्योधन तुम विपरीत कर्म मत करो २३ जो तुम सन्धि चाहने वाले और परिणाम में कुशल चाहने वाले केशवजी को उत्तर दोगे तो युद्धमें तेरी विजय नहींहै २४ उसने उस सब धनुष धारियों में श्रेष्ठ और पूर्व कर्मोंके कहने वाले श्री कृष्णजी को उत्तर दिया और अन्याय से उनकी बातको अंगीकार नहीं किया २५ इसके पीछे वह दुर्बुद्धी कालकाखेंचाहुआ दुर्य्योधन मुझको त्यागकरके उन दोनों दुश्शासन और कर्णके मतपर कर्म करनेवाला हुआ २६ मैं द्यूत कर्म को नहीं चाहताहूं और विदुरजी उसको निषेध करतेहैं और जयद्रथ भी उस द्यूत कर्मको नहीं चाहताहै और भीष्मजीभी वारंवार निषेध करतेहैं २७ हे संजय शल्य,भूरिश्रवा,पुरु,मित्रोजय,अश्वत्थामा,कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, यह सब भी द्यूतकर्म को नहीं चाहते हैं २८ जो मेरा पुत्र इन सबके मतको अंगीकार करके कर्म करेगा

तो ज्ञाति,मित्र,और अपने शुभचिन्तकों समेत वेदनासेरहित नीरोग होकर जीवतारहैगा २६ और शुद्ध मधुर भाषण करनेवाले ज्ञाति बान्धवों से प्रीति पूर्वक बोलने वाले कुलीन संमती और प्राज्ञ अर्थात् ज्ञानी पांडव लोग सुखको पावेंगे ३० धर्म से संबंध रखने वाला मनुष्य सदैव और सब स्थानोंमें सुखको पाताहै और मरने पर शुद्ध मोक्षको भी प्राप्त करताहै ३१ वह पराक्रम से बिजय करने वाले पांडव आधे राज्य को भोगने के योग्यहैं यह समुद्रान्त पृथ्वी उन्होंके भी बाप दादोंकीहै ३२ पांडव लोग धर्ममार्गमें प्रवृत्त होकर धर्ममें ही नियतहोतेहैं हेतात वह पांडव लोग जिनलोगोंके बचनों को मानतेहैं वह मेरी ज्ञाति वालेहैं ३३ शल्य,सोमदत्त,महात्माभीष्म,द्रोणाचार्य्य,बिकर्ण,बाल्हीक,कृपाचार्य्य ३४ और अन्य सब महात्मा भरतबंशी वृद्धलोग तेरे निमित्त बार्त्तालाप करेंगे उन महात्मा लोगों के बचन को वह पांडव करेंगे ३५ क्या तुम उनको मध्यमें किसी को ऐसा मानतेहो कि वह तुम्हारे बिपरीत कहेगा श्रीकृष्णजी कभी धर्म को नहीं त्यागेंगे और वह सब उनकीआज्ञानुसार चलने वालेहैं ३६ वह बीर मुझसे भी धर्मरूप उपदेशों के द्वारा समझायेगयेहैं इससे वह पांडव लोग धर्मके बिपरीत कभी नहीं करेंगे क्योंकि वह धर्मात्माहैं ३७ हे सूत इस प्रकार बिलाप करतेहुये मैंनेअनेक प्रकारसे पुत्रको समझाया परन्तु उस अज्ञानीने मेरे बचनोंको नहीं सुना इसमें मैं कालकी बिपरीतगति मानताहूं जिसस्थान पर भीमसेन अर्जुन वृष्णियोंमें बीर सात्यकी पांचाल देशी, उत्तमौजा, दुर्जय युधामन्यु ३८ निर्भय धृष्टद्युम्न आदि करके सहित दुर्जय शिखण्डी, अश्मक, केकयदेशी क्षत्रधर्मा सोमकि ४० चन्देरी का राजा चेकितान काशीके राजा का पुत्र समर्थ द्रौपदी के पुत्र राजा बिराट महारथी द्रुपद ४१ पुरुषोत्तम नकुल औरसहदेव और मंत्री श्रीकृष्णजीहैं वहां इसलोकका जीवनचाहने वाला कौनसा शूरबीर इनबड़े शूरवीरों से युद्ध करसक्ताहै ४२ सिवाय दुर्य्योधन कर्ण सौवलके पुत्र शकुनि और दुश्शासनके मेरा

कौनसा शूरवीर इन दिव्य अस्त्र चलाने वाले शत्रुओंको सहसक्ताहै में इन चारोंके सिवाय किसी पांचवें शूरवीरको इनके सन्मुख जाने वाला नहीं देखताहूं वाग डोरोंको हाथ में रखने वाले श्रीकृष्णजी जिसके रथ परनियत होय ४३ । ४४ और अलंकार युक्त शस्त्रों-का धारण करनेवाला अर्जुन युद्ध कर्त्ताहो उस दशामें उनकीपरा-जय किसी प्रकार से नहीं होसक्तीहै फिर यह दुर्य्योधन उन विला-पों को स्मरण न करे कि ४५ पुरुषोत्तम भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारे गये संजयने कहा निश्चय करके यह वात तुमने मुझसे कहीथीफिर धृतराष्ट्रने कहा कि भविष्यत वृत्तान्तोंके ज्ञाता विदुरजीके कहेहुये उन वचनों के ४६ इस प्रत्यक्ष प्रकट होने वाले फलको देखकर मेरे पुत्र शोचको करतेहैं इस से मैं यह मानताहूं किसात्यकी समे-त अर्जुन से पराजितहुई मेरी सेना को देखकर ४७ और रथ के वैठकों को खाली देखकर मेरे पुत्र शोचकरतेहैं मैं यह मानताहूंकि जिस प्रकार वायुसे चलायमान वड़ी अग्नि समूह हिमऋतु के अन्तमें सूखेहुये वनको ४८ भस्म करदेताहै उसीप्रकार अर्जुन भी मेरी सेना को भस्म करता है वह सव तुम मुझ से कहो क्योंकि हे संजय तुमवृत्तान्तके वर्णन करनेमें वड़े कुशलहो ४९ जव अर्जुनके अपराधको करके सायंकालके समय अपने डेरेको आये हेतातव अभिमन्यु के मरने पर तुम्हारा चित्त किस प्रकारका हुआ ५० हे संजय मेरे पुत्र वड़े भारी अपराधको करके युद्धमें गांडीव धनुषधारी के उन कर्मोंके सहने को समर्थ नहीं होंगे ५१ ऐसी दशावाले उन लोगोंके मध्य में दुर्य्योधनने क्याकरने के योग्य कहा और कर्ण दुश्शासन और शकुनि ने भी क्या करने के योग्य कहा५२अभागे लोभी दुर्बुद्धी क्रोध से दुष्टचित्त राज्यके अभिलाषी अज्ञानी और रोगी चित्त दुर्य्योधन के अन्यायोंसे युद्धमें इकट्ठे होने वाले मेरे सव पुत्रोंका जो वृत्तान्तहै वह चाहे न्याय के अनुसार अथवा न्यायके विपरीत होय उस सवकोमुझसे वर्णन करो ५३ । ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियालीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि मैंने सब वृत्तान्त अपनेनेत्रोंसे देखाहै उसको यथा-
र्थता से कहताहूं तुम चित्त लगाकरसुनो उसमें सब आपकाही बड़ा
अन्यायहै १ हेराजा जैसे कि बिना जलवाली नदी में सेतु अर्थात्
पुलका बांधना है उसी प्रकार यह आपका बिलाप करनाभी
निरर्थक है हे भरतर्षभ शोचमतकरो २ यह कालकी मर्य्यादा
उल्लंघन करने के योग्यनहींहै इसकारण आपशोचको मतकरो यह
होनहार बड़ी प्राचीनहै ३ जो तुम द्यूतहोनेसे प्रथमही कुन्तीकेपुत्र
युधिष्ठिरको औरअपने पुत्रोंको खेलनेसे हटादेते तो तुमको दुःखक-
भी नहींहोता ४ फिर युद्धके बर्तमानहोने के समय परभी जो आप
उन क्रोधयुक्तों को निषेध करदेते तबभीआपको कष्टनहोता ५ जो
तुम सबकौरव लोगों को यह आज्ञा करते कि इस अनाज्ञाकारी
दुर्य्योधनको पकड़कर बंधनमेंडालो तोभी आपको दुःखनहोता ६
वह पांडव पांचालदेशी यादव और अन्य २ देशीराजा लोग हैं वे
भी बिपरीत बुद्धिको नहींचाहैं गे ७ जो तुम पितृ कर्मको करके
और अपने पुत्रको शुभमार्ग में नियतकरके धर्मसे कर्मकरो तो
तुमको दुःखप्राप्त नहोगा ८ इसलोकमें तुमऐसेबड़ेज्ञानीहोकर अपने
सनातन धर्मको छोड़कर दुर्य्योधन कर्ण और शकुनिके मतोंपर
कामकरनेवालेहुये९ हेराजातुझ स्वार्थी और अपनेप्रयोजनमें प्रवृत्त
चित्तवालेका वहसब बिलापमैंनेसुना जोकि विषमिलेहुये सहतके
समानहै१० पूर्व्वकालमें श्रीकृष्णजी राजायुधिष्ठिर भीष्म और द्रोणा
चार्य्यकोभी ऐसानहींमानतेथे जैसाकि वह अबिनाशी तुमकोमानते
थे ११ जबसे उन्होंने तुमको राजधर्मसेहीन और अन्यायमें प्रवृत्त
जाना तभीसे श्रीकृष्णजी तुमको वैसानहीं मानतेहैं १२ हेपुत्रोंके
राज्यके चाहनेवाले धृतराष्ट्र जैसे तुमनें कठोरबचन कहकर पांडवों
कोनहीं ध्यानकिया उसीकाफल तुमको प्राप्तहुआहै १३ हे पापोंसे
रहित प्रथमतो बापदादोंका राज्यसन्देह युक्तहुआ फिरतुमनेपांडवों

से विजयकीहुई संपूर्ण पृथ्वीको पाया १४ जैसे कि पांडुने कौरवोंका राज्यलेकर अपने यशको बढ़ाया उसी प्रकार उससेभी अधिक धर्मात्मापांडवोंने प्राप्तकिया१५ उनकावहउसप्रकारकाकर्मतुमकोप्राप्त होकर निष्फलहुआ जो पिताके राज्यसे तुमने उनको निकाल कर भ्रष्ट करदिया १६ हेराजा जो तुम युद्धके समयमें अब भी अपनेपुत्रोंकेदोषोंका विचार करके उनको बुरासमझोतो अब वह दुःखप्राप्त नहींहोगा १७ युद्धमें लड़ने वालेराजा लोग जीवनकी रक्षा नहीं करतेहैं और वहक्षत्रियोंमें श्रेष्ठ पांडवोंके सेनाको मझाकर युद्धकरते हैं १८ जिससेनाको श्रीकृष्णजी अर्जुन सात्यकी भीमसेन येचारों रक्षित करतेहैं उससेनाके सन्मुखता कौरवोंके सिवाय कौनकरसक्ता है १९ जिन्हांमें लड़नेवाला अर्जुन और मन्त्री श्रीकृष्णजी हैं और जिन्होंके शूरवीर भीमसेन और सात्यकीहैं २० उनके सन्मुखकौरव लोग अथवा उनके अनुगामी लोगोंके सिवाय कौनसा धनुषधारी लड़ने को समर्थहै २१ हेराजा जबतक मित्रलोग क्षत्रीधर्ममें प्रीति रखनेवाले शूरोंसे युद्धकरना संभवहै तबतक कौरवभी करतेहैं २२ अब जिसप्रकार पुरुषोत्तम पांडवोंकेसाथ कौरवोंका कठिन युद्धहुआ उस सबको मूलसमेत सुनों २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि उसरात्रिके व्यतीतहोनेपर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजीने व्यूहबनानेके निमित्त अपनी सबसेनाको समझाया१हेराजापरस्पर मारनेके अभिलाषीकोपयुक्तअमर्षी और गर्जने वालेशूरोंके अपूर्व्व वार्तालाप सुनीगई २ कोईतो धनुषको टंकार कर और कोईप्रत्यंचा को चढ़ाकर श्वासलेतेहुये पुकारे कि अब अर्जुनकहांहै ३ किसीने उत्तम मूठतीक्ष्ण धारवाली प्रकाशित आकाशके समानस्वच्छ रीतिसे उठाईहुई मियानसे जुदी तलवारोंको चलाय मानकिया ४ कोईयुद्धमें प्रवृत्त चित्त हजारों शूरवीरअपनी

सुशिक्षिताओंके प्रभाव और बलसे तलवार और धनुषोंके मार्गोंको घूमातेहुये दिखाईपड़े ५ किसी २ ने उनगदाओंको जोकिघंटा रखने वाले चन्दन से लिप्त सुवर्ण औरबज्र रूप लोहेसे अलंकृतथीं उनको उठा२कर पांडव अर्जुनको पूछा ६ बलके मदसे मदोन्मत्त भुजासे शोभित किसी किसी ने इन्द्रकी ध्वजाके समान परिघनाम शस्त्रोंसे आकाशको रोकदिया ७ और कोई कोई शूर बिचित्र मालाओंसे अलंकृत युद्धमें प्रवृत्त चित्त नाना प्रकार के शस्त्रों समेत जहांतहां वर्त्तमान होकर नियत हुये और युद्ध भूमिमें आकर पुकारने लगे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजी कहांहैं और प्रतिष्ठावानभीमसेनकहां ८ है और इनके सब मित्र लोग कहांहैं ९ उसके पीछे घोड़ोंको शीघ्रतासे चलाते आप द्रोणाचार्य्य शंखको बजाकर उन घोड़ों को इधर उधर से दौड़ाते हुये बड़ीतीव्रता से भ्रमणकरने लगे १० हे महाराज उन युद्ध में प्रसन्न होनेवाले सब सेनाओं के नियत होनेपर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी राजाजयद्रथ से बोले ११ कि तुमसोमदत्ति, महारथीकर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन, कृपाचार्य्य १२ और एक लाख घोड़े साठहज़ार रथ, चौदहहजार मतवाले हाथी १३ और इक्कीस हजार शस्त्रधारी पदाती छः कोश पर मुझसे पृथक् होकर नियत होजाओ १४ इन्द्र समेत देवताभी तुझे वहां नियत होनेवाले के सन्मुखताकरने को समर्थ नहीं हैं १५ फिर सब पांडव क्याहोसक्ते हैं १६ हे राजा इस प्रकार के वचनों से बिश्वासित किया हुआ वह सिन्ध का राजाजयद्रथ उन महारथियोंसे वेष्टित होकर गान्धार देशियों के साथ चला १७ जोकिकवचधारी युद्ध में सावधान प्रास हाथों में रखने वाले सेनाओं में नियत होकर सवारों से व्याप्तथे हे महाराज जयद्रथ के सब घोड़े चामर आपीड़ रखनेवाले सुवर्ण से अलंकृत १८ अच्छे २ लोगोंके सवार करनेवालेथे उनकी संख्या सातहजारथी और तीन हजार सिन्धदेशीथे १९ आपकापुत्र दुर्मर्षण उन डेढ़हजार हाथियोंसमेत जोकि मतवाले और सावधान हाथीवानों सेयुक्त होकर

भयकारी कर्मकरने वालेथे सबसेनाके आगे लड़ताहुआ आगे नियत हुआ २० । २१ उसकेपीछे आपके दोनोंपुत्र दुश्शासनऔर विकर्ण जयद्रथके अभीष्टके प्राप्तिकेलिये सेनाकेआगे नियतहुये २२ द्रोणाचार्य्यसे वहचक्र शकटनाम व्यूह चौबीस कोशलंबा और पिछले भागमेंदशकोशविस्तृत बनायागया २३ आपद्रोणाचार्य्यने जहांतहां हजारों शूरवीर राजारथ घोड़े औरपत्तियोंसे वहव्यूह अलंकृत किया २४ उसके पीछेके भागमें कठिनतासे तोड़नेके योग्य पद्मगर्भ नाम व्यूहअलंकृतकियाफिरपद्मव्यूहकेभीतरशूचीनामगुप्तव्यूहबनाया२५ इसप्रकारसे द्रोणाचार्य्य इसबड़े व्यूहको अलंकृत करके नियतहुये और बड़ाधनुष धारी कृतवर्मा शूचीके मुखपर नियत हुआ २६ हे श्रेष्ठउसके पीछे राजा काम्बोज औरजलसन्धनियतहुये उन दोनोंके पीछे दुर्य्योधन और कर्ण नियतहुये २७ फिरशकटके मुखके रक्षक मुखोंके नफेरने वाले लाखों शूरबीर लोगमियतहुये २८ उनकेपीछे बड़ी सेनासे व्याप्तराजा जयद्रथहुआ अर्थात् वहराजाशूचीके पार्श्व में नियतहुआ २९ हेमहाराजशकटके मुखपर द्रोणाचार्य्यजी नियतहुये उनके पीछे राजाभोजहुआ औरआपही उसकी रक्षाकरी ३० श्वेत कवच वस्त्र पगड़ी रखनेवाले बड़ेवक्षस्थल वालेकालके समान क्रोधरूप महाबाहु द्रोणाचार्य्यजी धनुषको टंकोरते हुये नियतहुये ३१ कौरव द्रोणाचार्य्यके उसरथको जोकि पताका समेत रक्तवर्णके घोड़ोंसे युक्तथा और जिसकी ध्वजामें वेदी और काले मृगचर्म काचिन्हथाउसकोदेखकरअत्यन्तप्रसन्नहुये ३२ व्याकुल समुद्रकेसमान द्रोणाचार्य्य के रचेहुये व्यूहकोदेखकर सिद्धचारणोंके समूहोंकोआश्चर्य्यहुआ ३३ जीवधारियोंने यहमानाकि यहव्यूह अनेकदेशपर्व्वत और समुद्रों समेत पृथ्वीको निगलजाय तोकुछ आश्चर्य्य नहीं ३४ उसअसंख्य रथ मनुष्य घोड़े हाथी और पत्तियों समेत भयकारी शब्दवाले अपूर्व्वरूप शत्रुओंके हृदयके तोड़नेवाले बनायेहुये बड़े शकट व्यूहको देखकर राजा दुर्य्योधन बड़ा प्रसन्नहुआ ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीका अध्याय॥

संजयबोले कि सेनाओंके अलंकृतहोने औरबड़ेउच्च शब्दसे पर-
स्पर एक२के बुलाने भेरी मृदंगोंके बजने १ सेनाओं समेत बाजों
के शब्दहोने शंखोंके बजने और शरीरके रोमांच खड़े करनेवाले
शब्दोंकेहोने धीरेपनेसे युद्धाभिलाषी भरत बंशियोंके अलंकृत होने
और भयकारी मुहूर्त के बर्त्तमान होनेपर अर्जुन दिखाईदिया ३ हे
भरतबंशी वहां अर्जुनके आगेहजारों कार्कोकेबच्चे क्रीड़ाकरने लगे४
और इसी प्रकार चलनेवाले हम लोगोंके दाहिने भयकारी श-
ब्दवाले मृग और अशुभ दर्शन शृगाल शब्दोंको करनेलगे ५ और
हजारों प्रकाशित उल्का बायुकेसाथ परस्परके आघात शब्दोंसमेत
पृथ्वी परगिरे और महाकठिन भयके बर्त्तमानहोंने पर सम्पूर्ण पृ-
थ्वी कंपायमानहुई ६ अर्जुनके आने और युद्धमें सन्मुख नियतहोने
पर महारूखी कंकड़ोंकी बर्षा करनेवाली संसारकी बायुउनके पर-
स्परीय आघातीय शब्दोंके साथ चलनेलगी७ तबबड़ेज्ञानी नकुलके
पुत्र सतानीक पर्षतकापौत्र धृष्टद्युम्न इनदोनोंनेपांडवोंकी सेनाओं
कोअलंकृत किया ८ इसके पीछे आपकापुत्र दुर्मर्षण हजाररथ सौ
हाथी तीनहजार घोड़े और दशहजार पदातियोंके साथ डेढ़हजार
धनुषके अन्तरपर सबसेनाओंकेआगे नियत यहबचन बोला १०कि
अबमैं इसयुद्ध में युधिष्ठिरको और संतप्त करनेवाले गांडीव धनुष
धारी अर्जुनको ऐसे रोकूंगा जैसे कि समुद्रको मर्य्यादा रोकतीहै११
अब क्रोधयुक्त और निर्भय अर्जुनको युद्धमें मुझसे भिड़ाहुआ ऐसेदे-
खो जैसे कि पाषाणसे भिड़ाहुआ पाषाण होताहै १२ युद्धके ज्ञातातुम
सबरथी लोग नियतहो जाओ और मैं यश और मानको बढ़ाताहुआ
इनसब मिलेहुओंसे युद्धकरूंगा १३ हेमहाराज वह महात्मा अति
बुद्धिमान बड़े धनुषधारियों से संयुक्त बड़ा धनुषधारी इस प्रकारके
बचनोंको कहताहुआ नियतहुआ १४ इसकेपीछेकालकेसमान क्रोध
युक्त बजूधारी इन्द्रके तुल्य दंडधारी कालकेसमान सहनेके अयोग्य

कालसे प्रेरित शूलधारी रुद्र वा पाशधारीबरुणके समान व्याकुलता सेरहित प्रलयकालमें फिरसंसारको भस्मकरते हुये प्रकाशितअग्नि के समान १६ क्रोध और अधैर्यसे चलायमान शरीरनिवात कवचों कामारनेवाला महाविजयी अर्जुन बड़ेभारी व्रतको धैर्य्यऔर सत्यसे पूराकरनाचाहाता आकरकेनियत हुआ १७ कवचखड्गसमेत सुवर्ण का मुकुट धारण करनेवाला श्वेतमाला पोशाक औरसुन्दरबाजूबन्दोंसमेत कुंडलोंसे शोभित १८ नररूप अर्जुन नारायण श्रीकृष्णजी के साथ अत्यन्तउत्तम रथमें बैठकरयुद्धमें गांडीवधनुषको चलायमान करते उदय हुये सूर्य्य के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुआ १९ उस प्रतापवान अर्जुनने बड़ीसेनाके आगे एकतीरके अन्तर पररथको नियत करके धनंजय शंखको बजाया २० हे श्रेष्ठ फिरउन निर्भय श्रीकृष्ण जीनेभी अर्जुनके साथही अपने पांचजन्य शंखको बड़े वेगसे बजाया २१ हेराजा उनदोनों शंखोंके शब्दोंसे आपकी सेनामें सब कंपायमान और अचेत होकर रोमांचोंके खड़ेहोने वाले हुये २२ जैसे कि वज्रके शब्दसे सब जीवधारी भयभीत होतेहैं उसी प्रकार आपकी सेनाओंके लोग शंखोंके शब्दोंसे भयभीत होगये २३ और सब सवारियोंमेंभी मूत्र और विष्टाको छोड़ा इसरीतिसे सवारियों समेत सबसेना व्याकुलहुई २४ हेनरोत्तम राजा धृतराष्ट्र शंखोंके शब्दोंसे कितनेहीतो सुस्तहुये और कितनेही अचेतहुये और कितनेही डरगये २५ इसके अनन्तर मुखको चौड़ा किये आपकी सेनाओंको भयभीत करते हनुमानजीने ध्वजामें रहनेवाले जीवों समेत बड़ाभारी शब्दकिया २६ आपकी सेनाके प्रसन्न करनेवाले शंखभेरी मृदंग और ढोल भी फिरबजायेगये २७ नानाप्रकारके बाजोंकेशब्द सिंहनादों समेत तालोंका ठोकना इत्यादि बाजोंसे युक्त महारथियोंसे २८ उस भयभीतोंके भयके बढ़ाने वाले बड़े कठोर शब्दके होनेपर अत्यन्त प्रसन्न इन्द्रका पुत्र अर्जुन श्रीकृष्ण जीसे बोला २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीका अध्याय ॥

अर्जुनबोलेकि हेश्रीकृष्णजी आप घोड़ोंको चलायमानकरिये मैं जहां दुर्मर्षण नियतहै उस हाथियोंकी सेनाको छिन्नभिन्न करके शत्रुओंकी सेनामें प्रवेशकरूंगा १ संजयबोले कि अर्जुनके इसबचन को सुनकर महाबाहु श्रीकृष्णजीने घोड़ोंको वहां ही चलायमान किया जहां पर कि दुर्मर्षण नियतथा २ वह अत्यन्त भयका उत्पन्न करनेवाला कठिन युद्ध उन एकरूप मिलेहुये वीरोंके साथहुआ जो कि रथ हाथी और मनुष्योंको नाश करनेवालाथा ३ इसके पीछे बादलकी बर्षाके समान बाणोंकी बर्षाकरनेवाले अर्जुन ने शत्रुओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि पर्व्वतको बादल ढकदेताहै ४ उन शीघ्रता करनेवाले रथियोंनेभी हस्तलाघवता के समान बाणों के जालोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुनको आच्छादित करदिया ५ तदनन्तर युद्धमें शत्रुओं से रुकेहुये क्रोधयुक्त महाबाहु अर्जुनने बाणों से रथियोंके शिरोंको शरीरोंसे पृथक् किया ६ ऊपरको ओर घूमने वाले नेत्रोंसे युक्त दोनों ओठोंको चाबनेवालेकुण्डलपगड़ियोंके धारण करनेवाले उत्तम मुखोंसे वहपृथ्वी आच्छादित होगई ७ जैसे कि चारों ओरसे कमलोंके बन टूटतेहैं उसीप्रकार शूरबीरों के फैले हुये मुख शोभा-यमान हुये ८ सुबर्णके कवचोंसे अलंकृत रुधिरमें लिप्त शरीर ऐसे भिड़ेहुयेदृष्टिपड़े जैसेकि बादलोंके समूह बिजली सेभिड़े हुयेहोतेहैं हेराजा पृथ्वीपर गिरतेहुये उनशिरों के ऐसे शब्दहुये जैसे कि स-मयपर पककर तालके फलोंके शब्द होतेहैं १० इसके पीछे कितने ही धड़धनुषको पकड़कर नियतहुये कितनेहीखड्गको पकड़ करध्वजा से उठाकर नियत हुये ११ और कितनेही युद्धमें अर्जुन को नसहने वाले बिजयाभिलाषी पुरुषोत्तम अपनेगिरेहुयेशिरोंकोभीनहीं जानते थे १२ घोड़ोंके शिर हाथियोंकीसूंड़वीरोंकी भुजा और शिरोंसे पृथ्वी आच्छादित हुई १३ यह अर्जुनहैयह अर्जुनहै हेप्रभुइसप्रकार आप-की सेनाओं में शूरबीरोंके शब्द अर्जुनसे संबंध रखने वालेहुये १४

एकने दूसरेको मारा और दूसरेने अपनेकोभीमारा समयसे अचेत होकर उनलोगोंने संसार भरको अर्जुनरूपही माना १५ पुकारते रुधिरमें लिप्तअचेत कठिनपीड़ाओंसे युक्त वारंवार अपने बांधवोंको पुकारतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े अर्थात् मरकर पृथ्वी पर सोये १६ भिण्डपाल प्रासशक्ति दुधाराखड्ग,फरसे,यूपक,खड्ग, धनुष,और तोमरोंको रखनेवाले १७ बाण कवच भूषण गदा और बाजूबन्द धारी परिघके समान बड़े सर्पके समान भुजायें १८ पकड़ती थीं और चेष्टा करतीहुई सबओरसे आघात करतीथीं और उत्तम बाणों से कटीहुई क्रोधयुक्त होकर वेगको करतीथीं १९ जो जो मनुष्य युद्धमें अर्जुनके सन्मुख जाताथा उस उसके शरीरको उसका नाश कारीबाण आघात करताथा २० वहां रथके मार्गों में नाचते और धनुषको खेंचतेहुये उस अर्जुनका छोटासाभी अन्तर किसीने नहीं देखा २१ उपाय पूर्वक विचार करनेवाले और शीघ्रता से बाणों के खेंचनेवाले अर्जुनकी हस्तलाघवता से दूसरे मनुष्य आश्चर्य युक्तहुये २२ अर्जुनने बाणों से हाथी वा हाथी के सवार घोड़े वा घोड़ोंके सवार और सारथियों समेत रथियोंको बाणों से घायल किया २३ वह पांडव अर्जुन घूमनेवाले लौटनेवाले युद्धकरनेवाले और सन्मुख युद्धमेंनियत शूरवीरोंकोमारताथा२४ जैसे कि आकाश में उदय होताहुआ सूर्य्यबड़े अन्धकार को दूरकरताहै उसीप्रकार अर्जुनने बाणों से हाथियोंकीसेनाको मारा २५ मारेहुये और गिरे हुये हाथियोंसे आपकीसेना ऐसीदिखाईपड़ी जैसे कि प्रलयकेसमय पर्व्वतोंसे आच्छादित पृथ्वीहोतीहै २६ जैसे कि सूर्य्य मध्याह्न के समय सदैव जीव धारियोंसे दुःख से देखनेके योग्य होताहै उसी प्रकारयुद्ध में क्रोधयुक्त अर्जुन भी शत्रुओंसे कठिनता पूर्व्वक देखने के योग्यहुआ २७ हे शत्रुसंतापी इसप्रकार से आप के पुत्रकी वह सेना युद्धमें भागीहुई भयभीत और छिन्नभिन्न होकर बाणों से अत्यन्त पीड़ामान २८ ऐसे व्याकुलहुई जिसप्रकारबड़ीवायुसे बादलोंकी सेना होतीहै फिर वह छिन्न भिन्न होनेवाली सेना सन्मुख

देखनेको समर्थ नहींहुई २६ चाबुकधनुषकी कोटि वा अच्छेप्रकार कियेहुये हुंकार कोड़ेबड़े २ आघात और भयकारी शब्दों से ३० आपके अश्वसवार रथसवार औरपतिलोगउस अर्जुनकेहाथसेपीड़ामान होकर बड़ीशीघ्रता से अपने २ घोड़ों को चलायमान करके भागे ३१ कोई २ शूरवीर हाथियों को एड़ीअंगुष्ठ और अंकुशआदि से चलायमान करकेभागे और बहुतसे बाणोंसे अचेत होकर फिर उसीके सन्मुखगये ३२ तबआपके शूरबीर उत्साहोंसे रहितहोकर महाब्याकुलचित्त हुये ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्वेका अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले कि उससेनाके मुखके टूटने और अर्जुन के हाथसे वहां घायल होनेपर वहां कौन२ शूरबीरअर्जुनके सन्मुखहुये१ खेद की बातहैकि सकल निश्चयवाले द्रोणाचार्य्यकी शरणमेंनियतहोनेवाले हम सब उस शकटब्यूहमें ऐसेघुसेहुयेहैं जैसेकि गढ़अर्थात् किलेमें निर्भय होतेहैं २ संजयबोलेकि हे निष्पाप धृतराष्ट्र उसप्रकार अर्जुनके हाथसेउस आपकी सेनाको पराजित साहससेरहित भागनेमें प्रवृत्त चित्तनाशवान बीरोंसे रहित होजाने पर ३ और इन्द्रके पुत्रके उत्तमबाणोंसे हजारोंके बारंबार मरनेपर वहांपर कोई भी युद्धमें अर्जुनके सन्मुख देखनेको समर्थ नहींहुआ ४ हेराजाउस के पीछे आपकापुत्र दुश्शासन उस दशावाली सेनाको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धकेलिये अर्जुन के सन्मुखगया ५ हे महाराज उस सुवर्णके कवचसे अलंकृत सुनहरी मुकुट धारी तेज पराक्रमी शूरबीर ६ और हाथियोंकी बड़ीसेना से पृथ्वीको निगलनेवाले के समान दुश्शासनने अर्जुनको घेरलिया ७ हाथियोंके घंटोंके शब्द शंखोंकीध्वनि धनुषों की टंकार और हाथियों की चिंहाड़ों से ८ पृथ्वीदिशा विदिशा और आकाश शब्दों से पूर्ण होगये वहभयकारी महा युद्ध एक मुहूर्त्त तक बर्त्तमान रहा ९ अंकुशों से प्रेरित

पेचदार सूंडवाले क्रोधयुक्त पक्षधारी पर्व्वत के समान शीघ्रता से आतेहुये उन हाथियोंको देखकर उस नरोत्तम अर्जुनने बड़े भारी सिंह नादके साथ शत्रुओंके हाथियोंकी सेनाको चारोंओरसे अपने बाणोंके जालोंसे छिन्नभिन्न करदिया ११ जैसे कि बड़े वेगवानवायु से उठायेहुये बड़ेसमुद्रमें मगर प्रवेश करताहै उसी प्रकार से वह अर्जुनभी उसहाथियोंकी सेनामें प्रवेश करगया १२ शत्रुओंकेपुरोंका विजय करनेवाला अर्जुन सबदिशाओं में ऐसेदिखाईदिया जैसे कि मर्यादको उल्लंघन करनेवाला सूर्य्य अत्यन्त संतप्त करता हुआ प्रलय कालमें होताहै १३ घोड़ों के खुरोंके शब्द रथके पहियों की नेमियोंके शब्द प्रत्यंचाका शब्द १४ नाना प्रकार के बाजोंकेशब्द पांचजन्य और देवदत्त नाम शंखोंकी ध्वनि और गांडीव धनुष के शब्दसे १५ वहसब मनुष्य और हाथियोंके समूह मन्दवेग होकर अचेत होगये अर्जुनके बाणोंसे जिनका स्पर्श पूर्व्वक लगना विष धरसर्प के समानथा इसीसे सबमरगये १६ वहहाथीयुद्धमें अर्जुन के चलाये हुये तीक्ष्ण लाखों बाणोंसे सबअंगों में घायलहुये १७ अर्जुन से घायल होकर बड़े व्याकुलता के शब्द करते सब पृथ्वी परऐसे गिरपड़े जैसेकि पृथ्वीपर टूटेहुये पर्व्वतगिरतेहैं १८ और कितनेही हाथी दांतोंकी जड़मुख मस्तक और कमरोंपर बाणों से छिदेहुये क्रौंच पक्षी के समान वारंवार शब्दों को करने लगे १९ अर्जुनके चलायेहुये गुप्तग्रन्थी वाली भल्लोंसे हाथीके सवार और अन्य मनुष्योंकेशिरखंड २ होगये २० अर्जुन के बाणों से कुंडल धारी कमलोंके समान गिरेहुये शिरों के समूहों से पृथ्वी पर भेट कियेहुये २१ जंत्रोंसेबंधेहुये प्रत्यंचासे रहित घावोंसे पीड़ितरुधिर से लिप्त मनुष्य उन युद्ध में घूमते हुये हाथियों के ऊपर चिपट गये २२ कितनेही मनुष्य अच्छीरीतिसे चलायेहुये एकही बाणसे मरकर पृथ्वीपर गिरपड़े २३ नाराचों से अत्यन्त घायल मुखों से रुधिरको डालते हाथीसवारों समेत पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़े जैसे कि वृक्षरखनेवाले पर्व्वत गिरतेहैं २४ अर्जुनने गुप्तग्रन्थी वालेभल्लों

से रथकेसवारोंकी प्रत्यंचा, ध्वजा, धनुष, युग और ईशादंडोंकोचूर्ण२ करदिया २५ वह अर्जुन अपनेधनुष मंडल से नाचतेहुयेके समान नतो बाणोंको धनुषपर चढ़ाता दिखाई दिया न खैंचता छोड़ाता और उठातादिखाईदिया २६ और बहुत से हाथीनाराचोंसे अत्यन्त घायल मुखोंसे रुधिरको गेरतेएकमुहूर्त्त में ही पृथ्वीपरगिरपड़े २७ हेमहाराज उस कठिनयुद्धमें चारोंओर से उठेहुये असंख्यों धड़दे- खनेमें आये २८ धनुष हस्तत्राण, खड्ग, बाजूबन्द, रखने वाली स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत भुजा युद्धमें कटीहुई दिखाईपड़ी २९ उपस्करोंके साथअधिष्ठान, ईशादण्ड, कवंधर, चक्र, मथेहुयेअक्ष और नानाप्रकारके टूटेहुयेशस्त्र३० जहांतहां फैलीहुईढालेंधनुष धारियों की मालाआभूषण वस्त्रगिरीहुई बड़ी २ ध्वजा मारेहुये हाथीघोड़े और गिराये हुये क्षत्रियों से वह पृथ्वी महा भयानक देखने में आई ३२ हेमहाराज इसप्रकार अर्जुनके हाथसे मरीहुई महा व्य- थित होकर पीड़ामान दुश्शासनकी सेनाभागी ३३ इसके पीछे सेनासमेत बाणोंसे पीड़ामान भयभीत और द्रोणाचार्य्य को शर- णको चाहता हुआ दुश्शासन उस शकटव्यूह में चलागया ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानवेका अध्याय॥

संजय बोलेकिमहारथी अर्जुन दुश्शासनकीसेनाको मारकरजय- द्रथको खोजता द्रोणाचार्यकी सेनाके सन्मुखगया १ फिरवह अर्जुन व्यूहके मुखपर नियतद्रोणाचार्य्य कोपाकर श्रीकृष्णजी की अनुमति से हाथजोड़कर यह बचनबोला२ कि हेब्राह्मणआप मुझको कल्या- णकेसाथ ध्यानकरो और मेरेकल्याणकोकहोआपकी कृपासे मैं इस कठिनतासे पराजय होने वाली सेनामेंप्रवेशकियाचाहताहूं ३ आप मेरे और धर्मराजके पिताके समानहैं और जैसेहमारेहैं उसीप्रकार श्रीकृष्णजीकेभी सदैवसेहैं यह आपसे मैं सत्य२कहताहूं ४ हेनि- ष्पापब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैसेकि अश्वत्थामाजी आपसे रक्षाके योग्यहैं

उसीप्रकारमें भी रक्षके योग्य हूं ५ हे द्विपादों में श्रेष्ठ प्रभु मैं युद्धमे
आपकीकृपासे सिन्धके राजाको मारना चाहताहूंआप मेरी प्रतिज्ञा
कीरक्षाकरो ६ संजयबोले कि अर्जुनके ऐसेऐसेवचनोंको सुनकरमन्द
मुसक्यानकरते द्रोणाचार्य्य जीबोले किहेअर्जुन मुझे जीतेबिना जयद्रथ
का विजय करना तुझको योग्यनहींहै ७ इतना कहकर हंसतेहुये
द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णवाणों के समूहोंसे अर्जुन को रथघोड़े सारथी
और ध्वजा समेत वाणोंसे ढकदिया ८ फिर अर्जुन अपने शायकों
से द्रोणाचार्य्यके वाण समूहोंको रोककर भयकारी रूपवाले बड़े
वाणोंसमेत द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया ६ हेराजा अर्जुनने क्षत्रीधर्ममें
नियत होकर भक्तिपूर्व्वक उनको गौरवताकी प्रतिष्ठा करके द्रोणा
चार्य्यको नौशायकोंसेघायल किया १० द्रोणाचार्य्यने उसकेवाणों
को अपने वाणोंसे काटकर उनदोनो श्रीकृष्ण और अर्जुन को विष
और प्रकाशित अग्निके समान वाणोंसे घायल किया ११ तबअर्जु
नने उनके धनुषको काटनाचाहा उस महात्मा अर्जुन के इसप्रकार
चिन्ताकरनेपर सावधान और पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने वाणोंसे ब
ड़ी शीघ्रता पूर्व्वक उसकी प्रत्यंचाको काटा और उसके घोड़े ध्वजा
और सारथीकोभी घायल किया १३ मन्द मुसकान करते वीर
द्रोणाचार्य्य ने फिर वाणों से अर्जुन को ढकदिया इसी अन्तरमें
अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ आचार्य्यजी को नाश करने की अभिलाषा करने
वालेअर्जुनने बड़े धनुष को तैयार करके जैसे एक वाण को लेते
हैं उसी प्रकार छःसौ वाणोंको एकबारही लेकर बड़ी शीघ्रता से
छोड़ा १४ । १५ फिर दूसरे प्रकार के सातसौ वाणों को और
बिना लक्ष्य भेदेहुये न लौटने वाले हजार वाणों को और नाना
प्रकार के हजारों वाणोंको फेका फिर अर्जुन ने द्रोणाचार्य्य की
उस सेनाको मारा १६ उस पराक्रमी महा कर्मी अपूर्व्व युद्ध करने
वाले अर्जुनके अच्छी रीतिसे चलाये हुये वाणों से घायल मरेहुये
निर्जीवमनुष्य घोड़े और हाथी गिरपड़े१७ सूत घोड़े और ध्वजा
से रहित टूटे शस्त्र जीवन वाले वाणों से पीड़ित रथों के सवार

अकस्मातरथों सेगिरपड़े १८ पर्व्वतके शिखर वा जलमें निवासकरने वाले वज्र वायु और अग्निसे चूर्ण उखड़ेहुये भस्मी भूत पर्व्वतोंके रूप हाथी पृथ्वीपर गिरपड़े १९ अर्जुन के बाणोंसे घायल हजारों घोड़े ऐसे गिरपड़े जैसे कि हिमाचल की पृष्ठपर पानीकी वर्षा से घायल हुये हंस गिरतेहैं २० जलके समूह के समान अपूर्व्व रथ हाथी घोड़े और पत्तियोंके समूह अर्जुनके उन अस्त्र और बाणों से जो कि प्रलय कालके सूर्य्यकी किरणों के समान थे मारेगये २१ उस बादल रूप द्रोणाचार्य्यने बाण रूपी वर्षाकी तीव्रता से उस पाण्डव रूप सूर्य्यके बाणरूप किरणों समूहोंको जो कि युद्धमें कौरवों के उत्तम वीरोंके तपाने वालेथे ऐसा ढकदिया जैसे कि सूर्य्यकी किरणोंको बादल ढकदेताहै २२ फिर द्रोणाचार्य्यने शत्रुओंके प्राणोंके भोजन करने वाले बलसे छोड़े हुये नाराचनाम बाणसे अर्जुन की छातीपर घायल किया २३ जैसे कि पृथ्वी के कंपायमान होने पर पर्व्वत कंपायमान होताहै उसी प्रकार सब अंगोंसे व्याकुल उस अर्जुन ने स्वस्थतापूर्व्वक दृढ़ताको धारण करके बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल किया २४ फिर द्रोणाचार्य्यने पांचबाणोंसे वासुदेवजी को और तिहत्तर बाणों से अर्जुनको घायल किया और तीन बाण से उसकी ध्वजाको काटा २५ हे राजा अपने शिष्यको मारना चाहते पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने पल मात्रमें ही बाणों की वर्षासे अर्जुन को दृष्टिसे गुप्त करदिया २६ हमने द्रोणाचार्य्य के शायक नाम बाणोंको मिलकर गिराहुआ देखा और उनका धनुष भी अपूर्व्व मंडलाकार दिखाई पड़ा २७ हे राजा द्रोणाचार्य्य के छोड़े हुये कंकपक्षों से युक्त वह बहुतसे बाण युद्धमें वासुदेवजी के और अर्जुन के सम्मुख गये २८ तब बड़ेबुद्धिमान वासुदेवजी ने द्रोणाचार्य्य और अर्जुनके उस प्रकार के युद्धको देखकर कार्य्यवत्ता को चिन्तवन किया २९ तदनन्तर वासुदेवजी अर्जुनसे यह वचनबोले हे महाबाहु अर्जुन हमारा समय हाथ से न जानेपावे ३० हम द्रोणाचार्य्य को छोड़कर चले यह बहुत बड़ा काम करने के योग्यहै

फिर अर्जुनने भी श्रीकृष्णजीसे कहा कि जैसी आपकी इच्छाहोय सोई करिये ३१ इसके पीछे अर्जुन महाबाहु द्रोणाचार्य्य को परिक्रमा करके चला और परिक्रमा करने वाला अर्जुन बाणों को छोड़ताहुआ चलागया ३२ इसके पीछे आय द्रोणाचार्य्य जो यह वचन बोले कि हे पांडव कहां जाताहै निश्चय करके प्रकट है कि तू युद्धमें शत्रुओंको विना विजय किये हुये कभी नहीं लौटताहै ३३ अर्जुनबोले कि आप मेरे गुरूहैं शत्रु नहीं हैं और मैं शिष्य आपके पुत्र के समानहूं ऐसामनुष्य कौन है जो आपको युद्धमें विजय कर सके ३४ संजयबोले कि जयद्रथकेमारनेमें उपाय करने वालाशीघ्रता से युक्त महाबाहु अर्जुन इस प्रकार से कहता हुआ उस सेनाके सन्मुख दौड़ा ३५ चक्रकेरक्षक पांचालदेशी, महात्मायुधामन्यु, उत्तमौजस, उस आपकी सेना में जानेवाले अर्जुन के पीछेचले ३६ हे महाराज उसकेपीछे जय, यादवकृतवर्मा, काम्बोज का राजा और श्रुतायु ने अर्जुनको रोका ३७ उन्होंके पीछे चलने वाले दशहजार हाथीथे उनके यह आगेलिखेहुये नामहैं अभीषाह, शूरसेन, शिवय, वशात्त, मावेल्लिक, ललित्थ, केकय, मद्रक, नारायण, गोपाल, और जितने कि कांबोज देशियों के समूहहैं ३८ और वह शूरोंके अंगीकृत जिनको कि पूर्व्व समयमेंयुद्धके बीच कर्णने विजय किया था वह सब प्रसन्न मन द्रोणाचार्य्यको आगे करके अर्जुनके सन्मुख गये ४० और पुत्रके शोकसेदुखी नाशकरने वाले कालके समान क्रोधयुक्त कठिन युद्धमें प्राणोंके त्याग करनेवाले कवचादिसे अलंकृत अपूर्व्व युद्धके करनेवाले गजेन्द्रके समान सेनाओंके मथनेवालेबड़े धनुषधारी पराक्रम नरोत्तम अर्जुनको रोका ४२ उन परस्पर बुलाने वाले शूरवीरोंसे अर्जुन का महाकठिन रोमहर्षण करने वाला युद्धजारी हुआ ४३ सबने एक साथही उस जयद्रथके मारनेके अभिलाषी आतेहुये पुरुषोत्तम अर्जुन को ऐसा रोका जैसे कि उठे रोगको औषधियां रोकती हैं ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि उन शूरवीरों से रुका हुआ बड़े पराक्रम वाला रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन शीघ्रही द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया १ जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणोंको फैलाताहै उसीप्रकार तीक्ष्ण बाणों के समूहों को फैलातेहुये उस अर्जुन ने उससेनाको ऐसे तपाया जैसे कि रोगोंके समूह शरीर को संतप्त करतेहैं २ घोड़ा मारागया रथ टूटा हाथी अपने सवार समेत गिराया गया छत्र टूटे रथ अपने चक्रोंसे जुदेहुये ३ और बाणोंसे पीड़ामान सेना चारों ओर से भागी वह युद्ध ऐसा कठिन हुआ कि कुछनहीं जानागया ४ सीधे चलनेवाले बाणोंसे युद्धमें उनलोगोंके परस्पर प्रहार करने पर अर्जुन ने सेना को बारम्बार कंपायमान किया ५ सत्य संकल्पी श्वेतघोड़े रखने वाला अर्जुन अपनी प्रतिज्ञाको पूरा करना चाहता रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया ६ द्रोणाचार्य्यने मर्मभेदी पच्चीसबाणों से सन्मुख नियतहुये बड़े धनुष धारी अर्जुनको घायल किया७ सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन बाणों के वेगों के नाश करनेवाले उत्तम बाणोंको छोड़ताहुआ शीघ्रही उनद्रोणाचार्य्यके सन्मुखदौड़ा८ बड़े बुद्धिमान ब्रह्म अस्त्रको प्रकट करते हुये उस अर्जुन ने शीघ्रतासे गुप्तग्रन्थी वाले भल्लोंसे उनके चलाये हुये भल्लोंको काटा ९ हमने युद्ध में द्रोणाचार्य्य के उस अद्भुत कर्म को देखा जो उपाय करने वाला बीर अर्जुन उनको घायल न करसका १० द्रोणाचार्य्य रूपी बादल अपने बाण रूपी वर्षासे अर्जुन रूपी पर्व्वत के ऊपर ऐसे बर्षा करने लगा जैसे कि हजारों जलकी धाराओं को छोड़ता बड़ा बादल होताहै ११ हे श्रेष्ठ बाणोंसेबाणोंको काटतेहुये तेजस्वी अर्जुनने उसबाणोंकी बर्षाको ब्रह्म अस्त्रसे नाश करदिया १२ फिर द्रोणाचार्य्यने शीघ्रचलने वाले पच्चीसबाणोंसे अर्जुन को और सत्तर बाणों से बासुदेव जी को भुजा और छातियों पर पीड़ामान किया१३ फिर हंसते हुये बुद्धिमान अर्जुन ने उस बाण समूहों के

धारणकरने वाले तीक्ष्णवाणोंके छोड़नेवाले आचार्य्यको युद्धमें रोका १४फिर द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल उनरथियोंमें श्रेष्ठदोनोंने उस प्रलय काल के उठे हुये प्रज्वलित अग्नि के समान दुर्विजय द्रोणाचार्य्य को हटाया १५ द्रोणाचार्य्य के धनुष से निकले हुये तीक्ष्ण बाणोंको हटाते हुये अर्जुन ने कृतवर्मा की सेनाका अत्यन्त नाश किया १६ वह अर्जुन मैनाक नाम पर्व्वत के समान द्रोणाचार्य्य को रोकताहुआ मध्यमें कृतवर्मा काम्बोज और सुदक्षिणके सन्मुख गया १७ इस के पीछे स्थिर चित्त नरोत्तम कृतवर्मा ने शीघ्रही दश बाणों से उस कौरवों में श्रेष्ठ अजय अर्जुन को घायल किया १८ हेराजा अर्जुन ने युद्ध भूमिमें उस को सौ बाणों से घायल किया फिर दूसरे तीन बाणों से अचेत करते हुये कृतवर्मा को घायल किया १९ फिर हंसते हुये कृतवर्मा ने माधव वासुदेवजी और अर्जुन को पच्चीस पच्चीस शायकों से घायल किय २० तब अर्जुन ने उस के धनुष को काटकर अग्नि ज्वाल के समान रूप क्रोध में सर्प के समान होकर सात बाणों से उसको घायल किया २१ हे भरत वंशी फिर महा रथी कृतवर्मा ने दूसरे धनुषको लेकर बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक पांच शायकों से छाती पर घायल करके २२ फिर भी पांच तीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुन को घायल किया अर्जुननेभी उसको नौ बाणोंसे छातियों पर घायल किया २३ श्रीकृष्णजी ने कृतवर्मा के रथ पर भिड़े हुये अर्जुन को देखकर चिन्ता करी कि हमारा समय नाश हुआ जाता है २४ यह विचार कर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले कि कृतवर्मा पर दया न करो नातेदारी को छोड़ कर उसको मथनकरके मारो २५ इसके पीछे वह अर्जुन बाणों से कृतवर्मा को अचेत करके शीघ्र गामी घोड़ों के द्वारा कांबोज देशियोंकी सेनाके सन्मुखगया २६ अर्जुन के सेनामें प्रवेशित होने पर क्रोध युक्त कृतवर्मा बाणोंको लिये धनुष को चलाय मान करता दोनों पांचाल देशियों पर दौड़ा २७ अर्जुनके पीछे चलने वाले चक्र के रक्षक आते हुये पांचाल देशियों को कृतवर्माने समीप प्रहार करने वाले बाणोंसे

रोका २८ इस के पीछे भोज बंशी कृतबर्मा ने उन दोनों को अपने तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया अर्थात् तीनबाणोंसे युधामन्यु कोऔर चारबाणोंसे उत्तमौजसको २९ उन दोनोंने भी उसकोदशरबाणोंसे घायल किया और तीन २ बाणों से उस की ध्वजा और धनुष को भी काटा फिर क्रोध से मूर्च्छा मान कृतबर्मा ने दूसरे धनुष को लेकर ३१ दोनों बीरों को धनुषों से रहित करके बाणों की बर्षासे ढकदिया तदनन्तर फिर उन दोनोंने दूसरे धनुषों को तैयार करके भोज बंशी कृतबर्मा को घायल किया ३२ उसी मौकेसे अर्जुन शत्रु कीसेना में प्रबेश करगया कृतबर्मा से रुके हुये उन दोनों बीरों ने द्वारको नहीं पाया ३३ यद्यपि वह दोनों नरोत्तम दुर्योधनकी सेना-ओंके मध्यमें उपायकरने वालेथे तौभी वह द्वार न पासकेफिरशीघ्र-ता करने वाले शत्रुओं के नाश करने वाले युद्धमें सेनाओंको पीड़ा देते हुये अर्जुन ने ३४ बशी भूत कृतबर्मा को भी नहीं मारा उस प्रकारसे जातेहुये उस अर्जुन को देख कर शूर बीर राजा श्रुता-युध ३५ बड़े क्रोध पूर्ब्बक बड़ेभारी धनुष को चलायमान करता हुआ सन्मुख गया और उसने तीन बाणोंसे अर्जुनको और सत्तर बाणों से श्रीकृष्णजीको मोहित किया ३६ और अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुर प्रनाम बाणसे अर्जुन की ध्वजा को घायल किया उस के पीछे अ-त्यन्त क्रोध युक्त अर्जुन ने झुकी हुई गांठवाले नव्वे बाणों से ३७ ऐसे घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथीको घायल करतेहैं हेराजा उसने अर्जुन के उस पराक्रम को नहीं सहा ३८ और उस को सत्तरनाराचों से घायल किया फिर अर्जुनने उस के धनुष को काट शरावाप को तोड़कर ३९ बड़े क्रोध पूर्व्वक छातीपर घायल किया तब क्रोध से मूर्च्छामान उसराजाने दूसरे धनुषको लेकर४० इन्द्र के पुत्र अर्जुन को नौ बाणों से भुजा और छाती के ऊपर घायल किया उसके पीछे शत्रु को पराजय करनेवाले मन्दमुस-कान करते अर्जुन श्रुतायुध को ४१ हजारों बाणों से पीड़ित किया हे भरत बंशी फिर महारथी अर्जुन ने शीघ्रही उसके घोड़ों

को सारथी समेत मारा ४२ और सत्तर नाराचोंसे उसको भी घा-
यल किया फिर वह पराक्रमी राजा श्रुतायुध मृतक घोड़े वाले
रथको छोड़ कर ४३ गदाको हाथमें लेकर युद्धमें अर्जुनके सन्मुख
गया वह वीर राजा श्रुतायुध बरुण देवता का पुत्रथा ४४ जिसकी
माता शीतल जल रखनेवाली पर्णाशा नाम थी हेराजा पूर्व्व समय
में उसकी माता पुत्रके कारण वरुण से वोली ४५ कि यहमेरा पुत्र
शत्रुओं से अजेय होय फिर प्रसन्न मनसे बरुण देवताने कहा कि
इसको इसकाप्रियकारी वरदेताहूं४६ अर्थात् इसको मैं वहअस्त्रदेता
हूं जिसके द्वारा यह अजेय होगा और मनुष्य की अविनाशता तो
किसी दशामें भी नहीं होसक्ती ४७ हे नादयों में श्रेष्ठ सब सृष्टि
मात्र को अवश्य मरनाहै यह तेरा पुत्र सदैव युद्धमें शत्रुओं से अ-
जेय होगा ४८ निश्चय करके इस अस्त्रके प्रभाव से तेरे चित्त का
संताप दूर होगा ऐसा कह कर वरुण देवताने मंत्रसमेत आगेकी
हुई गदाको दिया ४६ जिस गदाको पाकर श्रुतायुध सब लोक में
अजेय होगया जल के स्वामी भगवान बरुण देवता फिर इससे
वोले ५० कि इस गदा को विना लड़ने वाले के ऊपर न छोड़ियो
जोछोड़ेगा तो तुझपर ही गिरेगी और हेसमर्थ यह गदा विपरीत प्र-
कारसे छोड़ने वाले को भी मारेगी ५१ कालके वर्त्तमान होने पर
श्रुतायुधने उस वचन को नहीं किया और उस वीरोंकी मारनेवाली
गदासे उसने श्रीकृष्णजी को घायल किया ५२ पराक्रमी श्रीकृष्ण
जी ने उस गदाको अपने मोटे कन्धेपर लिया उसने श्रीकृष्ण जी
को ऐसे नहीं कंपाया जैसे कि वायु मन्दराचलपर्व्वतको नहीं हि-
लासक्ती ५३ कृत्याके समान कठिनतासे नियत होनेवाली और उसी
के सन्मुख जाती हुई उस गदाने युद्धमें नियत क्रोधयुक्त वीरश्रुता-
युध कोहीमारा ५४ और उस को मारकर पृथ्वी में गिरपड़ी फिर
टूटी हुई गदाको और मरे हुये श्रुतायुध को देखकर ५५ वहां सेना
ओंका बड़ा हाहाकार उत्पन्न हुआ अर्थात् शत्रुओंके मारने वाले
श्रुतायुधको अपनेहीअस्त्रसे मराहुआ देखकरबड़ाहाहाकार हुआ५६

हे राजा जोकि श्रुतायुधने युद्ध न करनेवाले केशवजीके ऊपरगदा को छोड़ा उसकारण से गदाने उसीको मारा ५७ जैसे कि वरुण देवताने कहाथा उसी प्रकार से उसने युद्धमें नाशको पाया और सब धनुषधारियोंके देखते वह राजामृतकहोकर पृथ्वीपर गिरा ५८ वह पर्णाशा नदीका प्यार ापुत्र गिराहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बायुसे टूटाहुआ बहुतसी शाखाओं वालावृक्ष होताहै ५९ इसके पीछे सब सेना और सेनाओंके अधिपति शत्रुओं के मारनेवाले श्रुतायुध को मराहुआ देखकर भागनिकले ६० उस समय राजा काम्बोज का पुत्र शूर सुदक्षिण नाम शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा शत्रुके मारनेवाले अर्जुन के सन्मुख गया ६१ हे भरतबंशी अर्जुनने सात बाणोंको उस पर फेंका वह बाण उस शूरको घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगये ६२ युद्धमें गांडीव धनुष से भेजेहुये तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त घायलहोकर उसनेभी अर्जुनको दशबाणों से घायलकिया ६३ और बासुदेवजी को तीन बाणों से घायल करके अर्जुनको फिर पांचबाणोंसे व्यथित किया तब अर्जुनने उस के धनुषको काटकर ध्वजा को काटा ६४ और बड़ी तीव्रता पूर्वक अर्जुनने दो भल्लोंसे फिर घायल किया वह अर्जुनको तीनबाणोंसे घायल करके सिंहनादको गर्जा ६५ उसक्रोध युक्त शूरसुदक्षिण ने सब लोहेके घंटेरखनेवाली भयकारी शक्तिको गांडीव धनुष धारी के ऊपर फेंका ६६ वह बड़ी उल्का के समान ज्वलित रूप प्रतंग रखनेवाली महारथी अर्जुनको पाकर उसको घायल करके पृथ्वी परगिरपड़ी ६७ शक्तिसेअत्यन्त घायल मूर्च्छा से युक्त बड़ेतेजस्वी बुद्धिसे परे पराक्रम रखनेवाले होठोंको चाबतेहुये अर्जुन ने अपने को संभालकर कंकपक्षोंसे युक्त चौदह नाराचों से उसको घोड़ेरथ ध्वजा और सूत समेत घायलकिया ६८ और दूसरे बहुत्र बाणों से रथको खण्ड २ करदिया फिर उस निष्फल संकल्प और पराक्रमवाले सुदक्षिण कांबोजको ७० अर्जुनने तीक्ष्णधारवाले बाणसे हृदयपर घायलकिया वह टूटेकवच और ढीले अंगवाला शूर जिस

के मुकुट और बाजूबन्द गिरपड़ेथे ७१ यंत्र से पृथक् होने वाली ध्वजाके समान ऐसेसन्मुख गिरपड़ा जैसे कि हिमऋतु के अन्त में पर्व्वत के शिखरपर उत्पन्न शोभायमान सुन्दर डालीवाला अच्छी रीतिसे नियत कर्णाकार का वृक्षहोताहै वायु से टूटकर गिरपड़ेवह सुन्दर वस्त्रों पर सोनेके योग्य काम्बोज देशी मराहुआ पृथ्वी पर शयनकरनेवालाहुआ ७२।७३ बहुमूल्य भूषणोंसे युक्त शिखरधारी पर्व्वतके समान अपूर्वदर्शनीय रूपवाला सुदक्षिण करणीनामबाण से ७४ अर्जुनके हाथसे गिरायाहुआ महाबाहु राजा काम्बोज का पुत्र गलेमें अग्निरूप सुवर्णकी माला रखने वाला ७५ निर्जीव पृथ्वी पर गिराया हुआ शोभायमान हुआ इसकेपीछे आपकेपुत्र की सब सेना श्रुतायुध और काम्बोज सुदक्षिणको मृतक देखकर भाग गई ७६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेका अध्याय॥

संजय बोले हे राजा सुदक्षिण और बीर श्रुतायुधके मारेजाने पर आपकी सेनाके मनुष्य क्रोधयुक्त होकर बड़ीतीव्रता से अर्जुन के सन्मुखगये १ और अभिषाह, शूरसेन, शिवय, वशातय, यहसब भी अर्जुनके ऊपर बाणोंकी वर्षाकरने लगे २ अर्जुनने बाणों के द्वारा उनके दूसरे छःसौ शूरवीरोंको मथडाला वह भयभीत होकर ऐसेभागे जैसे कि व्याघ्रसे नीच मृग भागतेहैं ३ उनलौटे हुओंनेफिर उस अर्जुनको सब ओरसे घेरलिया जो कि युद्धमें शत्रुओंको मारने वाला और शत्रुओंकी विजयकाअभिलाषी था ४ अर्जुनने गांडीव के छोड़ेहुये बाणोंसे शीघ्र ही उन सन्मुखता करनेवालों के भुजाओं समेत शिरोंको भी गिराया ५ वहां गिरायेहुये शिरोंसे पृथ्वीवारं बार आच्छादितहुई और युद्धमें काक और गृद्धोंके समूहों से बादलोंकीसी छाया होगई ६ उन के नाशहोने पर क्रोध और अमर्ष से युक्त श्रुतायु और अच्युतायु यह दोनों अर्जुनसे युद्धकरनेलगे ७

उन पराक्रमी ईर्षासे भरेकुलीन दोनों सुन्दर भुजा वालोंने उस के ऊपर दाहें बायें होकर बाणोंकी वर्षाकरी ८ हे महाराज वहशीघ्रता से युक्तदोनों धनुषधारी आपके पुत्रके अर्थ अर्जुनके मारनेके अभि-लाषी होकरबड़ेयशकीइच्छा करनेवालेथे ९ उनदोनों क्रोधयुक्तोंने झुकीगांठ वालेहजार बाणोंसे अर्जुन को ऐसेपूर्ण करदिया जैसेकि बादल तालाबको पूर्णकरदेतेहैं १० उसके पीछे क्रोधयुक्त नरोत्तम श्रुतायुने पीतरंगके तीक्ष्ण तोमरसे अर्जुनको घायल किया ११ वह शत्रुओंका पीड़ादेने वाला अर्जुन युद्धमें पराक्रमी शत्रु से अत्यन्त घायल केशवजी को मोहित करताबड़े भारीमोहको प्राप्तहुआ १२ और उसी समय पर अच्युतायुने अत्यन्त तीक्ष्ण शूलसे अर्जुन को घायलकिया १३ उसनेमहात्मा पांडव अर्जुनके घावमेंनोन लगाया उस समय वह महात्मा अर्जुन भी अत्यन्त घायल होकर ध्वजाके दंडकेआश्रयसे रक्षितहुआ १४ हेराजा इसके पीछे अर्जुनको मृतक मानकर आपकी सेनाके बड़ेसिंहनाद हुये १५ वहां अत्यन्त दुःखी चित्त श्री कृष्णजीने अर्जुनको अचेत देखकर चित्तके प्रियकारी बचनों से अर्जुन को ढाढ़स बंधाई १६ फिर उन रथियोंमें श्रेष्ठ दोनों लक्षभेदियोंने अर्जुन को और बासुदेवजी को बाणों की वर्षा करके चारों ओरसे १७ युद्धमें चक्र कूवर रथघोड़े ध्वजा और पता-का समेत दृष्टिसे गुप्त कर दिया वह आश्चर्य्य सा हुआ १८ हे-भरतबंशी बड़े धैर्य्यसे विश्वासयुक्त और मरकट जियेहुये के समान उस महारथी अर्जुनने १९ केशवजी समेत अपने रथ को बाणों के जालोंसे ढकाहुआ देखकर और अग्निके समान प्रकाश मानदोनों शत्रुओंको सन्मुख बर्त्तमान देखकर इन्द्रास्त्रको प्रकट किया उस अस्त्रसे झुकी गांठवाले हजारों बाण उत्पन्न हुये २१ उन्होंने उन दोनों बड़े धनुष धारियों को मारा उनदोनोंके छोड़े हुये बाण आ-काशमें बर्त्तमान अर्जुनके बाणसे कट२करघूमनेलगे २२ फिरअर्जुन बाणों की तीव्रतासे शीघ्र बाणोंको काटकर महारथियों से लड़ता हुआ जहां तहां गया २३ अर्जुन के बाणों के समूहों से हाथ और

शिरोंसे रहित वह दोनों पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि हवासे उखाड़े हुये दो वृक्ष होतेहैं २४ इन श्रुतायु और अच्युतायु दोनों शूरवीरोंका मरना लोकका ऐसा महा आश्चर्य्य कारी हुआ जैसेकि समुद्रका सूखजाना असंभव और आश्चर्य्य कारी होता है २५ फिर अर्जुन उन दोनों के ओर पास और पीछे चलने वाले पचासरथियों को मारकर उत्तम २ शूर लोगोंको मारता हुआ भरत वंशियों की सेना में गया २६ हे भरत श्रेष्ठ श्रुतायु और अच्युतायु को मरा-हुआ देखकर क्रोधसे भरे नियतायु और दीर्घायु २७ उन दोनों के पुत्रनरों में श्रेष्ठ पिताओंके शोकसे दुखी नाना प्रकार के बाणों को फैलाते हुये अर्जुन के सन्मुख गये २८ तब अत्यन्त क्रोध युक्त अ-र्जुन ने एक मुहूर्त में ही गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे उन दोनों को भी यमलोक में भेजा २९ जैसे कि हाथी कमल के सरोवर को उथल पुथल करताहै उसी प्रकार सेनाओंके छिन्न भिन्न और मथन करने वाले अर्जुन को वह सब श्रेष्ठ क्षत्री रोकने को समर्थ नहीं हुये ३० हे राजा उन क्रोध युक्त शिक्षापाये हुये हजारों अंगदेशी हाथियों के सवारोंने गजेन्द्रोंके द्वारा पांडव अर्जुन को रोका ३१ दुर्योधन के आज्ञावर्त्ती पूर्व्वीय और दक्षिणीय राजा जिनमें कलिंगकाराजा मुख्य और अग्रगामीथा उन्होंने पर्व्वताकार हाथियों की सवारि-योंसे सन्मुखता करी ३२ भयकारी रूप अर्जुन ने उन आनेवाले राजाओं के शिर और अच्छी अलंकृत भुजाओं को भी गांडीवधनुष से छोड़े हुये बाणों के द्वारा बहुत ही शीघ्रता से काट डाला ३३ उन शिरों और बाजू बन्द रखनेवाली भुजाओं से आच्छादितपृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि सुवर्णके पाषाण और सर्पोंसे संयुक्त होतीहै ३४ विशिख नाम बाणोंसे टूटी हुई भुजा और मथेहुये शिर पृथ्वीपर पड़े हुये ऐसे दृष्टि पड़े जैसे कि वृक्षोंसे गिरेहुये पक्षी होतेहैं ३५ बाणोंसे घायल हजारों हाथी ऐसे दिखाई पड़े जिनके शरीर से इस प्रकार रुधिर जारीथा जैसे कि गेरू धातु रखनेवाले झिरनाओं से संयुक्त पर्व्वत होतेहैं ३६ हाथीकी पीठ पर सवार

विकृत दर्शन वाले म्लेच्छ उस अर्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसेमरेहुये अ-
स्त्रोंसे ताड़ित हुये ३७ हे राजा नाना प्रकार की पोशाकों से शो-
भित बहुतभांतिके शस्त्रोंके समूहोंसेसंयुक्तरुधिर में लिप्त शरीर बड़े
अपूर्व्व रूपके बाणों से मरे हुये दिखाई पड़े३८ अर्जुनके बाणोंसे
घायल हाथियोंने रुधिरोंकी बमनकरी और पीछे वाले अन्यहजारों
सवारोंसमेत टूटेहुये शरीर वालेहुये ३९ कितनेही हाथीपुकार२कर
पृथ्वीपर गिरपड़े और दिशाओंमें घूमने लगे और बहुतसे अत्यन्त
भय भीत हाथियों ने अपने ही मनुष्यों को मर्द्दन किया ४० जोकि
तीव्र बिषके समान समीपही युद्ध करने वाले हाथीथे औरजो असुर
मायाके जानने वाले भयकारी रूप और नेत्रों से संयुक्त ४१ काक
बर्ण दुरा चारी स्त्रियों के लोभी उपद्रवी बारदशक और वाह्लीक
युद्ध करनेवालेथे ४२ और मतवाले हाथीके समानपराक्रमी द्राविड़
लोगभी युद्ध कर्त्ताथे और काल के समान प्रहार करने वाले वह
म्लेच्छ जोकि बशिष्ठ जीकी गौकी योनिसे उत्पन्नहुयेथे ४३ दारव,
अतिसार, दरद, हजारों पुंद्र पौर लाखों ब्रातज्ञातिवाले जिनकी
संख्या करनी असंभव है ४४ वह सब तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन के
ऊपर बर्षाकरनेवालेहुये नानाप्रकार के युद्धमें कुशल उन म्लेच्छोंने
अर्जुनको बाणों से ढकदिया ४५ अर्जुन ने भी उनके ऊपर शीघ्रही
बाणोंकी बर्षा करी उस युद्धमें बाणोंकी ऐसीशोभाहुई जैसे किशल-
भपक्षियोंके समूहोंकी होतीहै ४६ अर्जुन ने बाणोंसे सेनाके ऊपर
बादलके समान छाया करके उन मुंड अर्द्ध मुंड जटाधारी अपवित्र
और जटिल मुखी ४७ भागे हुये सब म्लेच्छोंको अस्त्रके प्रताप से
नाश कर दिया वह पहाड़ियोंके हजारों समूह बाणोंसे घायल युद्ध
में भयभीत होकर भागे जो पर्व्वतके दुर्गमस्थानों में रहने वालेथे
४८ और तीक्ष्ण बाणोंसे गिरे हुये हाथी घोड़े सवार और म्लेच्छों
के रुधिरको पृथ्वीपर बगले कंक और भेड़ियों ने बड़ी प्रसन्नता से
पियापत्ती घोड़े रथ और हाथियों से प्रच्छन्न रूपसेतु बाणों की वर्षा
रूप नौका रखने वाली भयकारी बाल रूप शैवल और शाद्वल

रखने वाली महा भयानक रुधिर के समूहों से तरंग वाली नदीको जारी किया ५० टूटीहुई उंगली सूरत छोटी २ मछली रखने वाली प्रलयके समयकाल रूप हाथियों से दुर्गम्य अत्यन्त रुधिरसे पूर्ण नदीको ५१ राज कुमार हाथी घोड़े और रथ सवारोंके शरीरों से जारी किया जैसेकि इन्द्रके वर्षाकरने परस्थल और गर्त नहीं रहते हैं ५२ उसीप्रकार सब पृथ्वी रुधिर से भरीहुई होगई उनक्षत्रियों मेंश्रेष्ठ अर्जुनने छःहजार अश्व सवार शूरवीरों को और एक हजार उनमक्षत्रियोंको ५३ मृत्यु के लोक में भेजा और विधि के अनुसार अलंकृत हजारोंहाथी बाणों से घायल ५४ पृथ्वीको पाकर ऐसेसो गये जैसे कि वज्रसे प्रहार कियेहुये पर्वतपृथ्वीपरगिर पड़तेहैं वह अर्जुनघोड़ेरथ और हाथियोंको मारताहुआ ऐसेघूमने वालाहुआ ५५ जैसे कि मतवाला हाथी कमलके वनको मर्दन करताहुआ घूमताहै औरजैसे कि बहुतसे वृक्ष लतागुल्म सूखे ईंधनघास और कोमल तृण रखनेवाले ५६ वनको वायुसे प्रेरित अग्नि भस्म करता है उसी प्रकार श्रीकृष्ण रूपी वायुसे प्रेरित अर्जुन रूपी अग्निने आप की सेनारूपी वनको भस्म करदिया ५७ बाण रूपी ज्वाला रखने वाले पांडव अर्जुन रूप क्रोधभरे अग्निने भस्म करदिया रथ के आश्रय स्थानों को खाली करता और मनुष्योंसे पृथ्वीको आच्छादित करता ५८ वज्रकेसमान बाणोंसे पृथ्वीको रुधिरसे पूर्णकरता धनुषधारी अर्जुन युद्धमें घूमनेलगा ५९ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुन भरत वंशियों की सेना में प्रविष्ट हुआ उसजाते हुये को श्रुतायु और अम्बष्ठने रोका हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र अर्जुनने शीघ्रहीउस उपाय करने वालेके घोड़ोंको कंकपक्षसे जटित तीक्ष्ण बाणों से गिराया ६१ और दूसरे बाणोंसे उसके धनुषको काटकर अर्जुन घूमनेलगा फिरक्रोधसे व्याकुलनेत्र अम्बष्ठने गदाकोलेकर ६२युद्ध में महारथी अर्जुन और केशवजीकोसन्मुखपाया हेभरतर्षभ्ण्इसके पीछेगदाको उठाकर प्रहारकरतेहुये वीरने ६३ रथको गदासे रोक कर केशवजीकोघायलकिया फिरगदासे पीड़ितकेशवजीको देखकर

शत्रुओंके वीरोंका मारने वाला ६४ अर्जुन अम्बष्ठकेऊपर अत्यन्त क्रोधित हुआ उसके पीछे सुनहरी पुंखवाले बाणों से उस रथियों में श्रेष्ठ को गदासमेत ६५ युद्धमें ऐसेढकदिया जैसे कि उदयहोने वाले सूर्य्य को बादलढक देताहै तब अर्जुनने दूसरे बाणों से उस महात्माकी गदाको भी ६६ टुकड़े २ किया वह आश्चर्य्यसा हुआ फिर उसने उस गिरी हुई गदाको देखकर दूसरी बड़ी गदाको लेकर के ६७ अर्जुन और बासुदेवजीको बारंबार घायल किया अर्जुनने गदा समेत उठी हुईउसकी उन दोनों भुजाओंको क्षुरप्रनाम दो बाणों से काटा ६८ जो कि इन्द्रकी ध्वजा के समान थीं और दूसरे बाण से शिरको भी काटा हे राजा वह मृतक हुआ राजा पृथ्वीको शब्दायमान करता ऐसे गिरपड़ा ६९ जैसे कि यन्त्र से पृथक् इन्द्रकी छोड़ी हुई ध्वजा गिरतीहै तब रथकी सेना से घिरा सैंकड़ों हाथी और घोड़ों से युक्त अर्जुन ऐसे दिखाई दिया जैसे कि बादलों से घिराहुआ सूर्य्य होता है ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

संजय बोले इसके अनन्तर दुःख से पार होने के योग्य द्रोणाचार्य्य और कृतबर्मा की सेनाओंको छिन्न भिन्न करके जयद्रथ के मारने की इच्छासे अर्जुन के प्रवेशित होने पर १ और अर्जुन के हाथ से कांबोज के पुत्र सुदक्षिण के मारे जाने और पराक्रमी श्रुतायुध के मरने पर २ चारों ओर से सेनाओं के भागने और नाश होने पर आपका पुत्र अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर द्रोणाचार्य्य के पास गया ३ अर्थात् एक रथके द्वारा शीघ्रतासे चलकर द्रोणाचार्य्य से बोला कि वह पुरुषोत्तम अर्जुन इस सेना को गर्द मर्द करके गया ४ बुद्धिसे बिचारिये कि इन मनुष्यों के नाश करनेवाले कठिन युद्धमें अर्जुन के नाशके अर्थ शीघ्रता पूर्व्व कवया करना चाहिये ५ जैसे रीतिसे वहपुरुषोत्तम अर्जुन जयद्रथ को न

मारसके उसी प्रकार को करिये आपका भलाहोगा आपही हमारे परम गति रूप रक्षाके आश्रयहो ६ क्रोध रूप वायुसे प्रेरित यह अर्जुन रूप अग्नि मेरी सेनारूपी वनको ऐसे भस्म करदेताहै जैसे कि उठाहुआ अग्नि सूखे वनको जलाता है ७ हे शत्रुओंके तपाने वाले सेनाको पृथक् २ करकेअर्जुनके प्रवेशकरनेपर जयद्रथके रक्षकोंने बड़े संशय को पाया है ८ हे ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ राजाओंका यह पक्का विचार और सम्मतथा कि जीवताहुआ अर्जुन द्रोणाचार्यको उल्लंघन नहीं करेगा ९ हे बड़े तेजस्वी जो यह अर्जुन आपके देखतेहुये दूर चलागया तो अवसवको मैंव्याकुलही मानता हूं और यह सेना मेरी नहीं है १० हे महाभाग मैं तुम को पांडवोंके हितमें प्रवृत्त चित्त मानताहूं और हे ब्रह्मन् इसी प्रकार करनेके योग्य कर्मको विचारता हुआ अचेत होताहूं मैं सामर्थ्य के अनुसार आपमें उत्तम वृत्ती को वर्त्तताहू ११ और सामर्थ्य केही अनुसार चाहता हूं आप उसको नहीं ध्यान करतेहो १२ हे बड़े पराक्रमी तुम सदैव भक्ति करनेवाले हमलोगों को नहीं चाहतेहो और हमारे अप्रिय करने में चित्तसे प्रवृत्त पांडवों को सदैव चाहतेहो १३ तुम हमारे पास अपनी जीविका करते और हमारे अप्रिय में प्रीति रखने वाले हो सहद से डूबी हुई छुरी के समान आपको मैं नहीं जानताहूं १४ जो आप पांडव अर्जुनके रोकनेमें मुझकोवरनहीं देते तो मैंघरजातेहुये जयद्रथको नहीं रोकता १५ आप से रक्षा को न जानने वाले और मुझसे समझायाहुआसिन्ध कारा जाजयद्रथ आश्वासित किया गया औरमोहसेमृत्युके अर्थ दिया गया १६ यमराज की भी डाढ़में वर्त्तमान हुआ मनुष्य चाहै वच जाय परन्तु युद्ध भूमिमें अर्जुन के आधीन हुआ जयद्रथकभी नहीं वचसक्ताहै १७ हे रक्त घोड़े रखने वाले आप वही कीजिये जिससे कि जयद्रथ आपत्तिसे वचे आप मुझदुखीके वचनोंपर क्रोध न करिये किसी प्रकार से जयद्रथ को वचाओ १८ द्रोणाचार्य्य बोले कि मैं तेरे वचनोंमें दोष नहीं लगाताहूं तूमेरे पुत्र अश्वत्थामाके समान

है तुझसे सत्य २ कहताहूं हे राजा तू उसको अंगीकार कर श्री-
कृष्णजी बड़ेही उत्तम उसके सारथी हैं और उसके उत्तम घोड़ेभी
शीघ्रगामी हैं अर्जुन छोटासा भी बिवर करके शीघ्र चलाजाता
है २० शीघ्र चलेजाने वाले अर्जुन के एक कोश पर फेके हुये
और रथ के पीछे पड़ेहुये बाणों के समूहों को क्या तू नहीं देख
ताहै २१ अब मैं वृद्ध होकर शीघ्र चलनेमें समर्थ नहींहूं और हमारी
सेनाके मुखपर पांडवोंकी यह सेना सन्मुख नियतहै २२ सब धनुष
धारियों के देखतेहुये भी मैं युधिष्ठिर के पकड़नेको समर्थहूं हे म-
हा बाहु मैंने उस प्रकार क्षत्रियोंके मध्यमें प्रतिज्ञा करीहै २३ हे
राजा वहयुधिष्ठिर अर्जुन से पृथक् होकर मेरे सन्मुख वर्त्तमानहै
इस हेतु से मैं ब्यूहके मुखको छोड़कर अर्जुन से नहीं लड़ूंगा २४
शूर मनुष्यों का रखने वाला समान कुल और कर्मरखने वाले अ-
केले शत्रुसे भयको त्यागकर तूही क्यों नहीं लड़ता तूही तो इस
पृथ्वी भरे का स्वामीहै २५ राजा शूरबीर कर्मका करनेवाला बि-
जय करने में सावधान शत्रुओं के पुरके बिजय करने वाले और
पराक्रमी होकर तुमआपही वहांजाओ जहां कि पांडवअर्जुनहै २६
दुर्योधन बोला कि हे आचार्य्यजी सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठआप
को भी उल्लंघन करनेवाला अर्जुन कैसे मुझ से पराजय होने को
योग्यहै २७ बज्रधारी इन्द्र भी युद्ध में चाहै बिजय किया जाय
परन्तु शत्रुओं के पुरों का बिजय करनेवाला अर्जुन युद्धमें विजय
करने के योग्य नहीं होसक्ता २८ जिस ने भोजवंशी कृतवर्मा और
देवता के समान आपको भी अस्त्रोंके प्रताप से विजय किया और
राजा श्रुतायु को मारकर २६ सुदक्षिण श्रुतायुध और श्रुतायु अ-
च्युतायु कोभी मार कर लाखों म्लेच्छोंको मारा ३० युद्धमें अग्नि
के समान भस्म करनेवाले अजेय अस्त्रबिद्यामें कुशल पांडव अर्जुन
से मैं कैसे लड़ सकूंगा ३१ अब आप युद्ध भूमिमें उस के साथ मेरे
युद्धको योग्य और उचित समझतेहो मैं दासकेसमान आपकीस्वा-
धीनता मेंहूं आप मेरे यशकी रक्षा करो ३२ द्रोणाचार्य्य बोले

कौरव तू सत्य कहताहै वास्तवमें अर्जुन दुर्जयहै अब वही करूंगा जिस्सें तू उसको सहैगा ३३ अब लोकमें धनुषधारी वासुदेवजीके देखते हुये तुझ से भिड़े हुये अर्जुनको और अपूर्व्व युद्धको देखेंगे ३४ हे राजा यह स्वर्णमयी कवच तेरे शरीर पर उस प्रकार का बांधता हूं जिस्से कि बाण युद्धमें व अस्त्र युद्ध में तुझपर कोई प्रहारनहीं करसके ३५ जो असुर यक्ष सर्प राक्षसदेवता औरमनुष्य समेत तीनों लोकभी तुझसे युद्धकरें तौभी तुझको किसी प्रकार का भय नहीं होसक्ता ३६ श्रीकृष्ण अर्जुन अथवा दूसरा कोई भी शस्त्र धारी युद्धमें तेरे कवच में बाणके प्रवेश करनेको समर्थनहीं होगा ३७ सो अब तू शीघ्रतासे उस कवचको शरीर में धारण करके आपही युद्धमें क्रोध युक्त अर्जुनके सन्मुख हो वह तुझको न सह सकेगा ३८ संजय बोले कि शीघ्रता करने वाले द्रोणाचार्य्य ने इस प्रकार से कहकर आचमन कर विधिपूर्व्वक मंत्रको जपते हुये अत्यन्त अपूर्व्व प्रकाशमान कवचको बांधा ३९ अपनी विद्या से लोकों को आश्चर्य्य युक्त करने के अभिलाषी ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने आपके पुत्रके और अर्जुन के उसबड़ेयुद्धमें यह वचन कहा ४० ब्रह्म ब्रह्मा और ब्राह्मण लोगभी तेरे कल्याण को करो और हेभरतवंशी जो२ उत्तम सर्प हैं वहभी तेरे कल्याण को करो ४१ ययाति,नहुष, धुंधुमार, भगीरथ, सब राजऋषि यह सब भी सदैव तेरे कल्याण को करो ४२ सदैव बड़े युद्ध में एक चरण रखने वालों से भी तेरा कल्याण होय ४३ स्वाहा स्वधा औरशची भी तेरा सदैव कल्याण करें हे निष्पाप लक्ष्मी अरुन्धती भी तेरा कल्याणकरें ४४ हेराजा असित, देवल, विश्वामित्र, अंगिरा,वशिष्ठ, कश्यप, यहभी तेरा कल्याण करो ४५ धाताविधाता लोकेश्वर दिगीश्वरों समेत सब दिशा और षड़ानन कार्त्तिकेयजी भी अबतुझ को कल्याण करो ४६ भगवान सूर्य्य सब प्रकारसे तेरी रक्षा करो चारोदिग्गज अर्थात् ऐरावत,वामन, अंजन, सार्वभौम,पृथ्वी, आकाश और ग्रह तेरे कल्याण को करो ४७ हेराजा जो यहसर्पोंमें श्रेष्ठ

शेषनागनीचेसे पृथ्वीको सदैव धारण करताहै वह तुझको कल्याण हो ४८ हे गान्धारी के पुत्र पूर्व समय में वृत्रासुरने युद्धमें पराक्रम करके उत्तम देवताओं को बिजय किया और हजारों मारडाले४६ तब महाअसुर वृत्रासुरसे भयभीत तेजबलसे रहित इन्द्र समेत सबदेवता ब्रह्माजीकी शरण में गये ५० और उनसे देवताओंने कहा कि हे देवताओं में श्रेष्ठ वृत्रासुर से मर्दन किये हुये देवताओंकी आपरक्षा करिये हे सुरों में शिरोमणि हम को भय से निर्भय करो ५१ फिर ब्रह्माजी एक पक्ष में नियत बिष्णु को और देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्रादिक देवताओं से यहसत्य २ बचन बोले ५२ कि इन्द्र और ब्राह्मणों समेत सबदेवता सदैव मुझ से रक्षा करनेके योग्यहैं त्वष्टा देवता का तेज बड़ी कठिनता से सहने के योग्यहै जिससे कि यह वृत्रासर उत्पन्न हुआहै ५३ हेदेवताओ पूर्व समयमें त्वष्टाने महादेवजीसे बरको पाकर दशलाख बर्षतक तपस्या करके वृत्रासुरको उत्पन्न किया ५४ वहमहा बली देवताओंका शत्रु उन शिवजीको कृपासे तुम को मारताहै शिवजी के स्थान को बिनागये हुयेवह भगवान् शिव दिखाई नहीं देते ५५ उन शिवजीको देखकर उस वृत्रासुरको बिजय करोगे इस हेतुसे तुम शीघ्रही उसमंदराचल पर्वतपर जाओ जिसपर कि वह तपोंके उत्पत्ति स्थान दक्षके यज्ञके नाशक पिनाक धनुषधारी सब जीव धारियों के ईश्वर भगनेत्रको मारनेवाले निवास करतेहैं फिरउन देवताओंने ब्रह्माजी समेत मन्दराचल पर जाकर ५६। ५७ उस तेजपुंज कोटिसूर्य्यके समान प्रकाशित शिवजीको देखा तब शिवजी ने कहाकि हे देवताओ तुम्हारा आना कल्याण कारीहो कहो मैं तुम्हारा कौनसा प्रयोजन करूं ५८ मेरादर्शन सफलहै इसहेतु से तुम्हारा अभीष्ट सिद्धहोय यह बचन शिवजीके सुनकर सब देवताओंनेउन शंकरजीको उत्तरदिया ५६ कि हे स्वामी वृत्रासुरने हम सबका तेजहरण किया आप देवताओं के रक्षा स्थानहो हे देवदेव उसके प्रहारों से घायलहुये देवताओंको देखो ६० हम सबआप

की शरण में आयेहैं हेमहेश्वरजी आप हमारे रक्षाश्रय हूजियेशिव-
जी बोले कि हेदेवताओ तुमको विदित है जैसे कि त्वष्टा देवता के
तेजसे सृष्टि और भयकारी ज्ञानियों से भी कठिनता पूर्वक हटाने
के योग्य बड़ी पराक्रमी यह कृत्या है ६१ मुझको सब देवताओं
की सहायता अवश्य करनी उचित है हे इन्द्र मेरे शरीरसे उत्पन्न
बड़े प्रकाशमान इस कवच को ले हे देवेन्द्र चित्त से कहेहुये इस
मंत्रके साथशरीर में धारण करके जाओ ६२ द्रोणाचार्य्य बोले
कि वरदाता शिवजीने यहकह कर उस कवच और मन्त्र को दिया
उस कवचसे रक्षित वह इन्द्र वृत्रासुरकी सेनापरआया ६३ बड़ेयुद्ध
में छोड़ेहुये नाना प्रकार के शस्त्रोंके समूहोंसे उस कवचका तोड़ना
असंभवथा६४इसकेपीछे इन्द्रनेआपही युद्धमें वृत्रासुरकोमारा और
मंत्ररूपजोड़ बन्दवाले उस कवचको अंगिरा ऋषिको दिया६५और
अंगिराने बड़े मंत्रज्ञ अपनेपुत्र बृहस्पतिजीको सिखाया और बृह-
स्पतिजीने महात्मा अग्निवेश्य ऋषिको शिक्षाकरी ६६ हे राजा
ओंमेंश्रेष्ठ फिर अग्नि वेश्यने मुझकोदिया अब उस मंत्रसे तेरेकवच
कोतेरे शरीरकी रक्षाके निमित्त बांधताहूं ६७ संजयबोले आचार्य्यों
में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने इस प्रकार कहकर आप के बड़े तेजस्वी पुत्र
से बड़धीरे पनेसे फिर यह वचनकहा६८कि हे भरतवंशी तेरेकवच
को में ब्रह्मसूत्रसे ऐसेबांधताहूं जैसेकि पूर्वसमयमें ब्रह्माजीने युद्ध
में विष्णुके शरीरमें बांधाथा ६९ और जिस प्रकार तारा से संबंध
रखनेवाले युद्धमें ब्रह्माजीने इन्द्रके दिव्य कवचको बांधा था उसी
प्रकार में इस कवचको तेरे बांधताहूं ७० द्रोणाचार्य्य ब्राह्मणने
मंत्रकेद्वारा विधिपूर्वक उस कवचको बांधकर राजाको बड़ेयुद्धमें
लड़नेके निमित्त भेजा ७१ महात्मा आचार्य्यसे कवच धारण किये
हुयेवह महाबाहु प्रहार करनेवालेत्रिगर्त देशियों के हजार रथ७२
व बलसे मतवाले हजार हाथी और नियुत संख्यावाले घोड़े और
अन्य२ महा रथियोंसमेत महाबाहु दुर्य्योधन अनेक प्रकारके बाजों
के शब्दों समेत अर्जुनकेरथकेपास ऐसेगया जैसे कि विरोचनकापुत्र

वलि इन्द्रकेपास गयाथा ७४ हेभरतवंशीइसकेपीछेवड़ेगंभीरसमुद्र में जातेहुये कौरवको देखकरआपकीसेनाओंकेवड़े शब्दहुये ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पञ्चानबेका अध्याय ॥

संजय वोले हे महाराज युद्धमें अर्जुन औरश्रीकृष्णजीके प्रवेश करने पर और पीछेकी ओर से पुरुषोत्तम दुर्य्योधन के जानेपर १ पांडवलोग सोमकों समेत तीव्रता पूर्व्वक बड़े शब्दको करते हुये द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गये और युद्धजारी हुआ २ व्यूह के आगे पांडवों और कौरवोंका वह युद्ध अपूर्व कठिन और रोमहर्षण करने वालाहुआ ३ वैसायुद्ध हमनेकभी न देखाथा न सुनाथा जैसा कि वह मध्याह्नके समय हुआ ४ प्रहार करने वाली अलंकृत सेना वाले उन सब पांडवोंने जिन में मुख्य धृष्टद्युम्न था बाणों की बर्षा से द्रोणाचार्य्य की सेना को ढकदिया ५ हमसबलोग शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको आगेकरके बाणोंसे उनपांडवों के ऊपर जिनमें कि प्रधान धृष्टद्युम्नथा बर्षाकरनेलगे६ जैसे कि हिमऋतुके अन्तमें बायुसे युक्तबड़े बादलोंकी शोभाहोती है उसीप्रकार सुन्दर रथोंसे अलंकृत दोनोंसेना शोभायमानहुईं ७ फिर उन दोनों बड़ीसेनाओं ने भिड़कर ऐसा बड़ा वेगकिया जैसेकि बर्षाऋतुमें वहुतजलरखने वालीगंगा और जमनादोनोंनदी परस्पर करतीहैं ८ नाना प्रकारों के शस्त्ररूपवायु आगेरखनेवाला हाथी घोड़े और रथसेसंयुक्त गदा रूपीबिजलीसे महाभयानक युद्धरूपी बड़ा बादल ९ द्रोणाचार्य्य रूपी बायुसे उठायाहुआ बाणरूपी हजारोंधाराओंका रखनेवाला पांडवीय सेनारूपी अग्नि से घायल बड़ी सेनारूपी बादल वर्षा करने लगा १० जैसे कि बर्षाऋतु में भयकारी प्रवेश करनेवाला बड़ाबायुका वेगसमुद्रको व्याकुल करता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य ने पांडवों की सेना को छिन्नभिन्न करदिया ११ और वह सब भी उपायोंको करतेहुये द्रोणाचार्य्यके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि

अत्यन्तपराक्रमी जलका समूह बड़ेपुलके तोड़नेकी इच्छासे जाता है १२ द्रोणाचार्य्यने उन युद्धमें क्रोधरूप पांडव और पांचालों को केकयोंसमेत ऐसेरोका जैसे कि जल के समूहोंको पर्व्वत रोकता है १३ उसके पीछेबड़े पराक्रमी शूर बीर अन्यराजाओं ने घेरकर पांचालको रोका १४ तबसेनाके पराजय करनेके अभिलाषीनरोत्तम धृष्टद्युम्नने पांडवों के साथ होकर युद्ध में द्रोणाचार्य्यको घायल किया १५ जैसे कि धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य्य ने बाणोंकी वर्षाको किया उसको सुनों कि १६ खड्ग रूपी वायुआगे करनेवाले शक्ति प्रास दुधारे खड्गों से युक्त प्रत्यंचा रूप विद्युत शब्द कहने वाला धृष्टद्युम्न रूपबादल १७ सब दिशाओं से बाण धारारूप पाषाणों की वृष्टि को उत्पन्न करता उत्तम रथ घोड़ोंके समूहों को मारता सेनाको छिन्न भिन्न करने वालाहुआ १८ द्रोणाचार्य्य ने पांडवोंके जिस २ रथों के समूहों को बाणों से घायल किया उसी २ ओर से धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य्य कोबाणों से हटाया १९ हे भरत वंशी इस रीतिसे उपाय करने वाले द्रोणाचार्य्य की सेना धृष्टद्युम्न को पाकर तीन ओर से छिन्नभिन्न होकर पृथक् २ होगई २० कोईतो कृतबर्मा के पास चले गये कोई राजा जलसन्ध के समीप जाकर शरण हुये और बहुत से पांडवों से घायल होकर द्रोणाचार्य्यही के शरण में गये २१ रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य सेनाओं को पृथक् २ करते थे और महा रथी धृष्टद्युम्नभी उनकी उन सेनाओं को छिन्नभिन्न करताथा २२ उस दशा वाले आपकेपुत्रों पांडव और सृञ्जयोंसे ऐसे घायल होतेथे जैसे कि रक्षकों से जुदा हुआ पशुओं का समूह वनमें बहुतसे मांसाहारी जीवोंसे व्याकुल होताहै २३ उस कठिन युद्धमें मनुष्यों ने धृष्टद्युम्न के हाथसे अचेतहुये शूरवीरोंको कालका निगलाहुआ माना २४ जैसे किअन्यायी राजाका देशदुर्भिक्ष व रोगोपद्रव में अथवा चोरों से दुखी होकर भागताहै उसी प्रकार आपकी सेना पांडवों के हाथसे आपत्तिमें फंसीहुई व्याकुल हुई २५ सूर्य्यकी किरणों से युक्त शस्त्र और कवचोंमें और उसीप्रकार सेना की धूलसे

घायल हुये नेत्रों में २६ सेनाओं के शिरोंके खंड २ होने वा पांडवों के हाथ से मारे जाने पर क्रोध युक्तद्रोणाचार्य्यने बाणोंसेपांचालों को पृथक् २ कर दिया २७ उन सेनाओंके मर्दन करते बाणों से भी मारते हुये द्रोणाचार्य्य का रूप कालाग्नि के समान प्रकाश मान हुआ २८ हे राजा उस महा रथीने युद्धमें एक एक बाण से रथ हाथी घोड़े और पतियों को भी घायल किया २६ हे भरत बंशी प्रभु धृतराष्ट्र पांडवोंकी सेनाओं में कोई ऐसा नहीं था जिसने युद्धमें द्रोणाचार्य्य के धनुषसे गिरे हुये बाणों को सहलियाहो ३० हे राजा द्रोणाचार्य्य के बाणों से ब्याकुल सूर्य्यसे संतप्त हुये के समान धृष्टद्युम्नकी वह सेना जहां तहांघूमी ३१ उसी प्रकार धृष्टद्युम्नके हाथ से छिन्न भिन्न आपकीभी सेनासबओरसे ऐसीअग्निके समानप्रज्वलितहुई जैसे कि अग्निसे सूखाहुआ बनज्वलितहोताहै ३२ द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नके बाणोंसे सेनाओं के पीड़ामानहोने पर सबओरको मुख रखनेवाले संपूर्ण बीरप्राणों को त्याग करके बड़े पराक्रम से लड़ते थे ३३ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ आपके और पांडवों के शूर बीरोंमें ऐसा कोईनहींहुआ जिसनेभयसेयुद्धको त्याग कियाहो ३४ बिबिंशति चित्रसेन और महारथी बिकर्ण सगेभाइयों ने कुन्तीके पुत्र भीमसेनको चारों ओरसे घेरा ३५ आपके पुत्रोंके पीछे चलनेवाले यहआगे लिखे हुये बीरथे बिन्द, अनबिन्द, अवन्तिदेशका राजा, और पराक्रमी क्षम धूर्त्ति ३६ महा रथी तेजस्वी कुलवान राजा बाल्हीकने सेना और मंत्रियोंके साथ द्रौपदी के पुत्रों को रोक कर ३७ हजारोंशूरबीरों के सहित राजा शैब्य गोवासन काशीके राजाके पुत्र पराक्रमी अभिभुवको रोका ३८ मद्रदेशाधिपति राजा शल्यने अग्निके समान प्रकाश मान अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको घेर लिया ३६ क्रोध युक्त असहन शील शूर दुश्शासन अपनी सेनाको नियतकरकेयुद्धके बीच रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी के सन्मुख गया ४० अपनीसेनासे अलंकृत इसने कवच धारी अपने चारसौ बड़े धनुष धारियोंसमेत चेकितानको रोका ४१ फिरशकुनी

ने धनुष शक्ति और खड्गहाथमें रखने वाले सात सौ गान्धार देशी सेनाके साथ जाकर माद्रीके पुत्र को रोका ४२ मित्रकेअर्थ शस्त्रों के उठाने वाले बड़े धनुषधारी अवन्तिदेशों के राजा विन्द अनु बिन्द प्राणों को त्याग करकेमत्स्य देशकेराजा विराटके सन्मुखगये ४३ सावधान वाल्हीकने द्रुपदके पुत्र अजेयपराक्रमी और रोकने वाले शिखण्डीको रोका ४४ फिर युद्धमें निर्दयप्रभद्रक औरसौवीर केसाथ राजा अवन्तीने राजा द्रुपदके पुत्रक्रोधरूप धृष्टद्युम्नको रोका ४५ अलायुधनाम राक्षस युद्धमें आतेहुयेक्रोधसे निर्दयकर्मी शूरघटोत्कच राक्षसके सन्मुख शीघ्रतासेगया ४६ बड़ीसेनासेयुक्तमहारथी कुन्त भोजने राक्षसोंके राजा क्रोध रूप अलंबुष को रोका ४७ हे भरत वंशी बड़े धनुष धारी कृपाचार्य्य आदिक रथियों से रक्षित जयद्रथ सब सेनाके पीछे था ४८ उस जयद्रथकेचक्र के रक्षक दो बड़े वीर हुये दाहिनीओर अश्वत्थमा और वाईं ओरकर्णथा ४९ और उसके पृष्ठ रक्षक कृपाचार्य्य,वृषसेन, शल, शल्य औरदुर्जय हुये जिनका कि अग्रगामी सोमदत्तथा ५० नीतिज्ञ बड़े धनुषधारी युद्ध में कुशल वह सबइसरीतिसे जयद्रथकी रक्षाकरके उसकेपीछे युद्ध करने वाले हुये ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छियानबे का अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा जैसे कि कौरव और पांडवोंका वह अपूर्व युद्ध जारी हुआ उसकोसुनो कि पांडवलोग१द्रोणाचार्य्यकीसेना को पराजय करनेके अभिलाषी युद्धमें व्यूहके मुखपर नियतहोकर द्रोणाचार्य्य से युद्ध करनेलगे २ तब बड़े यशको चाहते और अपने व्यूह को रक्षित करते हुये द्रोणाचार्य्य ने भी सेना के मनुष्यों को साथ लेकर पांडवों से युद्ध किया ३ आप के पुत्र का हित चाहने वाले अत्यन्त क्रोध युक्त अवन्ति देशों के राजा विन्द अनुविन्द ने दशवाणों से विराट राजा को घायल किया ४ हे महाराज

विराट ने पराक्रम करके उन युद्धमें नियत पराक्रमी दोनों राजाओं से उनके साथियों समेत युद्ध किया ५ उन्हों की लड़ाई भी महा कठिन रुधिर रूप जल रखने वाली ऐसीहुई जैसे कि वनके मध्यमें सिंहका युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियों से होताहै ६ बड़े पराक्रमी राजा द्रुपद ने मर्म और अस्थियोंके छेदनेवाले भयकारी तीक्ष्ण बिशिख नाम बाणों से उस युद्ध में बेगवान बाल्हीक को घायल किया ७ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त बाल्हीक ने सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार झुकी गांठवाले नौ बाणों से द्रुपदको घायल किया ८ वह युद्ध भय कारी बाण शक्तियों से व्याकुल भय भीतों के भय को उत्पन्न करनेवाला और शूर वीरों की प्रसन्नता का बढ़ाने वाला हुआ ९ वहां उन्होंके छोड़े हुये बाणोंसे पृथ्वी औरआकाशका मध्य और सब दिशा व्याप्तहोगईं कुछ भी नहीं जाना गया १० सेना समेत शैव्य गोवासनने युद्धमेंकाशी के राजाकेपुत्र महारथीसे ऐसा युद्ध किया जैसे कि हाथी हाथीके साथ युद्ध करताहै ११ अत्यन्त क्रोध युक्त राजा बाल्हीक युद्धमें द्रौपदी के पुत्र महा रथियों से लड़ता हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन पांचों ज्ञानेन्द्रियों के साथ लड़ताहै १२ हेदेहधारियोंमें श्रेष्ठवह चारों ओरसे बाणोंकेस मूहों से ऐसे अत्यन्त युद्धकरतेहुये जैसे कि इन्द्रियोंके बिषय सदैव शरीरसे युद्धको करतेहैं १३ आपके पुत्रदुश्शासनने युद्ध में तीक्ष्ण और झुकी गांठवाले नौ शायकोंसे वृष्णिवंशी सात्यकी को घायल किया १४ पराक्रमी बड़े बाणप्रहारी धनुषधारी से अत्यन्त घायल उस सत्य पराक्रमी सात्यकीनेशीघ्रही कुछमूर्च्छा कोपाया १५ फिर चैतन्य हुयेसात्यकीने शीघ्रही कंकपक्षसे जटित दश शायकोंसे आप केमहारथी पुत्रको पीड़ामान किया १६ हेराजा वह दोनों परस्पर कठिन घायल और बाणोंसे पीड़ामानयुद्धमें ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि फूलेहुये किन्शुकके वृक्ष होते हैं १७ कुन्तभोजके बाणों से पीड़ामान अत्यन्त अलंबुष बड़ीशोभासे ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूलोंसे लदाहुआ किंशुकका वृक्षहोताहै १८ इसके पीछे आप की

सेनाके मुखपर नियत अलंबुष राक्षस बहुत से लोहमयी बाणों से कुन्तभोजको घायलकरके भयकारी शब्दसेगर्जा १६ उस समय परस्पर युद्धमें लड़तेहुये वह दोनों शूर सबसेनाओं को ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि पूर्व समयमें इन्द्र और जंभवर्त्तमान थे २० हेभरत वंशी माद्रीकेदोनों क्रोध युक्त पुत्रोंने बाणोंसे युद्धमें क्रोधयुक्त शत्रुता करनेवालेशकुनीको अत्यन्त पीड़ामान किया२१हेराजा तुझसेअधि-कता उत्पन्न और कर्णसे अच्छी वृद्धिपायाहुआ मनुष्योंका नाशक रनेवाले कठिन युद्धजारीहुआ २२अर्थात् यहक्रोधसे उत्पन्न अग्नि आपके पुत्रोंसे रक्षितहोकर इससब पृथ्वीके भस्म करनेको तैयार हुआहै २३ वह शकुनी पांडव नकुल और सहदेवके बाणोंसे मुख-कोफेरगया और ऐसाव्याकुल हुआ कि उसने युद्धमें करनेके योग्य कर्म और कुछभी पराक्रमको नहीं करनाजाना २४ माद्रीके महार-थी दोनोंपुत्र इसको मुख फिराहुआ देखकर फिर ऐसे बाणोंकीवर्षा करने लगे जैसे कि दो बादल बड़े पहाड़ पर वर्षा करतेहैं २५ वह गुप्त ग्रन्थी वाले बाणोंसे अत्यन्त घायल शकुनी शीघ्रगामीघोड़ोंके द्वारा द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलागया २६ इसी प्रकार घटोत्कच साधारण तीव्रतासे युक्तहोकर उसयुद्धमें वेगवान शूरवीर अलायुध राक्षसके सन्मुख गया २७ हेमहाराज उन दोनोंका युद्धऐसा अपूर्व रूपकाहुआ जैसेकि पूर्व समयमें रामरावणका युद्ध हुआथा २८ इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने युद्धमें राजाशल्यको पचास बाणों से वेधकरफिर सातबाणोंसेवेधा २९उनदोनोंका युद्ध भी ऐसा अपूर्व जारीहुआ जैसे कि पूर्वसमयमें इन्द्र और सम्बर दैत्यका भयकारी और अपूर्व हुआथा ३० बड़ी सेनासे युक्त आप के पुत्र विविंशति चित्रसेन से और विकर्ण ने भीमसेन से युद्धकिया ३१

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपणावतितमोऽध्यायः ६६॥

सत्तानबे का अध्याय ॥

संजय बोले कि इसप्रकारसे उस रोमहर्षण युद्ध के जारी होने पर पांडव लोग उस तीन खण्डहोनेवाले कौरवोंके सन्मुख गये १ भीमसेन उस महाबाहु जलसन्ध के सन्मुख वर्त्तमान हुआ और सेनासे युक्त राजा युधिष्ठिर युद्धमें कृतबर्मा के सन्मुख हुआ २ हे महाराज सूर्य्य के समान शोभायमान बाणों की बर्षा करताहुआ धृष्टद्युम्न युद्ध में द्रोणाचार्य्य के सन्मुखगया ३ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले परस्पर क्रोधयुक्त कौरव पांडव और अन्य सब धनुष धारियों का युद्ध जारी हुआ ४ फिर बड़े भयकारक उसप्रकार के नाश वर्त्तमान होने और सेनाओंमें निर्भयताकेसमान दोदो के द्वन्द्व युद्ध होनेपर ५ जो पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने पराक्रमी धृष्टद्युम्न के साथयुद्धकरने में बाणों के समूहोंको छोड़ा वह आश्चर्य्यसाहुआ ६ कमल बनों के समान चारों ओर से नाश होनेलगा द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नने मनुष्यों के शिरोंको बहुत चूर्णकिया ७ सेनाओंके मध्यमें चारों ओरसे शूरबीरोंके बस्त्र भूषण शस्त्र ध्वजा कवच और धनुष आदिक फैलगये ८ रुधिरसे लिप्तसुवर्णके कवच ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि भिड़े हुये बादलों के समूह बिजली समेत होते हैं ९ फिर तालवृक्ष के समानधनुषोंको खैंचते दूसरे महारथियोंने हाथी घोड़ेऔरमनुष्योंको गिराया १० उस युद्धमें महात्माशूरोंकीतलवार, ढाल, धनुष, शिर, कवच पृथ्वीपर फैल गये ११ और चारोंओर से उठे हुये अगणित धड़भी युद्ध में दिखाईपड़े १२ हे श्रेष्ठ उस युद्धमें मांसभक्षी गिद्ध कङ्क बगले बाज काक और शृगाल भी बहुत से देखने में आये १३ मांसोंको खातेरुधिरको पीते और बहुतप्रकार से बालोंसमेत शिरोंको उखाड़तेथे १४ इसीप्रकार जहांतहां मनुष्य घोड़े और हाथियोंके भी शिरोंको शरीरों के अवयवों समेत खैंचते दिखाईदिये १५ तब वहलोग युद्ध में विजय को चाहते वारंवार युद्धोंको करनेलगे जो कि अस्त्रोंकेज्ञाता युद्धकी दीक्षासे दीक्षितहोकर

युद्धकरनेमें प्रशंसनीयथे १६ सेनाके बहुतसेमनुष्य युद्धमें तलवारों के अनेक पैतड़ोंसे मार्गोंमें घूमे और बहुतसे मनुष्य दुधारे खड्ग, शक्ति, प्रास, शूल, तोमर, पट्टिश, गदा, परिघ आदि अनेकप्रकार के शस्त्र और भुजाओंसे भी परस्पर प्रहार करतेहुये क्रोध में भरे युद्धभूमि में वर्त्तमानथे १८ रथी रथियोंके साथ और पदाती पदातियोंके साथ युद्ध करनेवाले हुये १६ मदोन्मत्तों के समान मतवाले युद्धभूमिमें वर्त्तमान बहुतसे हाथी परस्पर पुकारे और एकने दूसरेको मारा २० हे राजा उसप्रकार के बेमर्यादयुद्धके वर्त्तमान होनेपर धृष्टद्युम्नने अपने घोड़ोंको द्रोणाचार्य्य के घोड़ों से मिला दिया २१ वह वायुके समान शीघ्रगामी श्वेतकपोतवर्ण युद्धमेंमिले हुये घोड़े अत्यन्तशोभायमान हुये २२ अर्थात् वह मिलेहुये कपोत वर्ण लालरंग घोड़े ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बिजली समेत बादल शोभायमान होतेहैं २३ हे भरतवंशी वीर धृष्टद्युम्नने समीप में वर्त्तमान द्रोणाचार्य्यको देखकर धनुषको छोड़ ढाल तलवारको लिया २४ कठिन कर्मको करना चाहता शत्रुओंके वीरों का मारने वाला धृष्टद्युम्न ईर्षासे दौड़कर द्रोणाचार्य्य के रथपर पहुंचा २५ और रथके मध्य युगके बन्धनोंमें जाकर बड़ीधृष्टतासे घोड़ोंकेमध्य में प्रहारकिया फिर सेना के मनुष्यों ने उसके उस कर्म की प्रशंसा करी २६ द्रोणाचार्य्य ने लाल घोड़ोंके समीप वर्त्तमान खड्गसमेत घूमते हुये उस धृष्टद्युम्न का कोईछिद्र नहीं देखा वह आश्चर्य्य सा हुआ २७ जैसे कि वनके बीचमें मांस के अभिलाषी बाज का गिरना होताहै उसीप्रकार उस द्रोणाचार्य्यके मारनेके अभिलाषी धृष्टद्युम्नका उनकेपास जानाहुआ २८ इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्नकी उस ढालको जो कि सौचन्द्रमा रखनेवाली थी अपने सौ बाणोंसे गिराया और दशबाणों से उसके खड्गकोतोड़ा २९ इसी प्रकार पराक्रमीने चौंसठ बाणोंसे घोड़ोंको मारा और भल्लों से ध्वजा छत्र और पीठेबैठेहुये सारथी कोभी गिराया ३० फिर शीघ्रता करनेवालेने जीवनकेनाश करनेवाले कानतक खैंचेहुये दूसरे बाण

को ऐसे छोड़ा जैसे कि बज्रधारी इन्द्र अपने वज्रको छोड़ता है ३१ तब सात्यकीने उसको चौदह तीक्ष्ण बाणोंसे काटा और आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य को आधीनतामें वर्त्तमान होजानेवाले धृष्टद्युम्नकोछुड़ाया ३२ हे श्रेष्ठ जैसे कि सिंहसे निगलाहुआमृग होताहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्यसे आधीन कियेहुये धृष्टद्युम्नको शिनी के पौत्रोंमेंश्रेष्ठ सात्यकीने छुटाया ३३ शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य्यने रक्षाकरनेवाले सात्यकी को और धृष्टद्युम्न को देखकर बड़ेयुद्ध में छब्बीस बाणोंसे घायल किया ३४ उसकेपीछे शिनीके पौत्रने सृञ्जियोंके निगलनेवाले द्रोणाचार्य्यको छब्बीसही बाणोंसे छातीके मध्यमें घायलकिया ३५ फिर धृष्टद्युम्नको विजयचाहनेवाले पांचाल देशी सबरथीभी उसीसमय जब कि द्रोणाचार्य्य सात्यकीके सन्मुख गये धृष्टद्युम्नको दूरलेगये ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

अट्ठानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय उस वृष्णियोंमें बड़ेवीर सात्यकी के हाथसे उस बाण के टूटजाने और धृष्टद्युम्न के छूटजाने पर १ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने युद्धमें नरोत्तम सात्यकी के ऊपर क्या किया संजयबोले कि अत्यन्त शीघ्रगामी क्रोधरूप बिष रखनेवाले धनुषरूप अत्यन्त भोजन करनेवाले मुख तीक्ष्णधार बाणरूप दांत चांदीके नाराचरूपडाढ़ रखनेवाले ३ क्रोध और अशांती से लाल नेत्र बड़े सर्प के समान श्वासा लेनेवाले नरोंमें वीर अत्यन्त प्रसन्न द्रोणाचार्य्य उनबड़े शीघ्रगामी लालघोड़ों की सवारीसे ४ जो कि आकाशको उछलते और पहाड़ोंको उल्लंघन करते विदित होतेथे सुनहरी पुंखवाले बाणों को चलाते सात्यकी के सन्मुख गये ५ गिरतेहुये बाणरूप बर्षावाले रथके शब्दरूप बादल रखनेवाले धनुषके आकर्षण रूप चेष्टाकरने वाले बहुत नाराच रूप बिजली वाले ६ शक्ति और खड्ग रूप

बिजली रखनेवाले क्रोधकी तीव्रतासे उठेहुये घोड़ेरूपवायुसेचलाय-
मान हटाने के अयोग्य उस द्रोणाचार्य्य रूप सन्मुख आनेवाले
बादलको ७ देखकर शूरवीर शत्रु पुरंजय युद्धदुर्मद सात्यकी हँसकर
सारथीसेबोला ८ हे सूत अत्यन्त प्रसन्नचित्तके समान तू बड़े शीघ्रगामी
घोड़ोंकेद्वारा इस राजकुमारोंके आचार्य्य सदैवशूरों के प्रधानराजा
दुर्य्योधन के आश्रयस्थान उसके दुःखशोकोंके दूरकरनेवाले अपने
कर्ममें अद्वितीय शूरवीर ब्राह्मणके सन्मुखचल ९ । १० उसके पीछे
चांदीकेसमान श्वेतरंगवायुके समान शीघ्रगामी सात्यकी के उत्तम
घोड़ेशीघ्रही द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ११ तदनन्तर उनदोनोंशत्रु-
ओंकेसंतापी द्रोणाचार्य्य और सात्यकीने युद्धकिया और हजारों
बाणोंसे परस्परमें घायलकिया १२ दोनोंपुरुषोत्तम वीरोंने आकाश
बाणोंके जालोंसे पूर्ण करदिया और दशों दिशाओंकोभी बाणोंसे
भरदिया १३ जैसे कि वर्षाऋतुमें दोबादल अपनी जलधाराओं से
वर्षाकरतेहैं उसीप्रकार उनदोनोंने परस्परमें वर्षाकरी उससमय न
सूर्य्यदिखाई पड़े न वायुचली १४ तब बाणोंके जाल से ढकाहुआ
महाभयकारीअन्धकार दूसरे शूरोंका पराजय करनेवाला चारोंओर
सेहुआ १५ उससमय शीघ्रता पूर्व्वक अस्त्रचलाने में उन दोनों
द्रोणाचार्य्य और सात्यकीके बाणोंसे लोकके अप्रकाशित होनेपर
उनदोनों १६ नरोत्तमोंके बाणोंकीवर्षाओंका अन्तर नहीं देखने में
आया बाणोंके गिरनेसे ऐसेशब्दसुनेगये जैसे कि जलधाराओंके आ-
घातसेउत्पन्न शब्दोंके होतेहैं १७ अथवा जैसे इन्द्रके छोड़ेहुयेवज्रोंके
शब्द होतेहैं नाराचोंसे अत्यन्त छिदेहुयेउनदोनों शूरोंका रूप ऐसा
शोभायमानहुआ १८ हे भरतवंशी जिसप्रकार बड़े विषैले सर्पोंकारूप
होजाताहै युद्धमें उनदोनों मतवालोंकी प्रत्यंचाओंके ऐसे शब्दसुने
गये १९ जैसे कि बारंबार वज्रसंघात कियेहुये पर्व्वतोंके शिखरों के
शब्दहोतेहैं हे राजा उनदोनोंके वह दोनोंरथ घोड़े औरसारथी २०
सुनहरी पुंखवाले बाणों सेताड़ित अपूर्व्व रूप के प्रकाशमान हुये
और स्वच्छ सीधे चलनेवाले २१ कांचलीसे छुटेहुये सर्पोंके समान

नाराचोंका गिरनाभी बड़ा भयकारी हुआ उनदोनोंके छत्रों समेत ध्वजा भी गिरपड़ीं २२ दोनों के शरीर रुधिरमेंलिप्तहुये और अंगों से रुधिर को डालते दो मतवाले हाथियोंके समान २३ जीवन के नाशकारक बाणोंसे परस्पर घायलहुये हे महाराज गर्जने पुकारने और शंख दुन्दुभी आदिके बाजे बन्द हुये किसी ने वार्त्तालाप भी नहीं की सब सेना चुपहोगई शूरोंने युद्ध करना बन्द करदिया २५ जिन मनुष्यों को अपूर्व्वता के देखने का उत्साह उत्पन्न हुआ उन रथ सवार हाथीके सवार अश्व सवार और पदातियों ने उनदोनों केद्वैरथयुद्धको देखा२६ दोनों नरोत्तमोंको घेरकरके अचलनेत्रोंसे सब देखने लगे हाथियों की सेना नियत होगई औरघोड़ोंकी भी सेना ठहरगई मोती मूंगों से जटित मणि सुवर्णादि से अलंकृत २८ ध्वजाभूषण और अपूर्व्व स्वर्णमयी कवच अपूर्व्वपताका परस्तोम सूक्ष्म कंबल २९ स्वच्छ तीक्ष्णशस्त्र घोड़ोंकेमस्तकपर शोभायमान सुवर्ण भूषण मूर्द्धा और हाथियों के कुंभ और दांतोंमें लिपटी हुई मालाओं से वह सेना बादलोंकी पंक्तिके समान ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि वर्षाऋतुमें बलाक पटबीजने इन्द्रधनुष और बिजलीसमेत बादल होंय हमारे शूरबीर औरपांडवोंके वह शूरबीर तमाशा देखने को नियत हुये ३१ । ३२ महात्मा द्रोणाचार्य्य और सात्यकी के उस युद्धको बिमानों में बैठे देवताओं ने जिनमें मुख्य अग्रगामी ब्रह्माजी और सोम देवताथे देखा ३३ सिद्ध चारणों के समूह और बिद्याधर गंधर्व और बड़े२ सर्पों ने उन दोनों पुरुषोत्तमोंकी नाना-प्रकार की गतियां अथवा लौट२ कर प्रहारोंका करना और अस्त्रोंके अपूर्व्व घातोंसे आश्चर्य्यको पाया अस्त्रोंमें अपनी २ हस्तलाघवता कोदिखलाते उनदोनों महाबली३४।३५ द्रोणाचार्य्य औरसात्यकी ने बाणों से परस्परमें घायल किया इसके अनन्तर सात्यकीने बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य के बाणों को युद्ध में काटा ३६ और अत्यन्त दृढ़ बाणोंसे शीघ्रही धनुषकोभीकाटा भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने पल-मात्रमेंही दूसरे धनुषको ३७ तैयार किया सात्यकीने उनके उस

धनुषको भी काटा इसके पीछे जल्दी करनेवाले हाथमें धनुष लेकर नियत हुये ३८ इसीप्रकार जो २ धनुष तैयार करतेथे उस २ को वह काटता हुआ सौधनुषोंका काटनेवाला हुआ धनुष चढ़ाने और काटनेमें भी उनदोनोंका अन्तर नहीं देखा ३६ हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने प्रत्येक युद्धमें इससात्यकीके बुद्धिसे बाहर कर्म को देखकर चित्तसे यह चिन्ताकरी किजो यह अस्त्रबल परशुरामजी कार्त्तवीर्य्य अर्जुन और पुरुषोत्तम भीष्ममेंहै वही अस्त्रबल यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी में है द्रोणाचार्य्यने उसके उस पराक्रम को चित्त से स्तुयमान किया अर्थात् प्रशंसाकरी ४१ अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ ब्राह्मणों में उत्तम द्रोणाचार्य्यजी इन्द्रके समान उसकी हस्तलाघवता को देखकर प्रसन्न हुये और इसीप्रकार इन्द्र समेत सब देवताभी प्रसन्नहुये ४२ हे राजा देवता और गन्धर्वों ने उस शीघ्रकर्मी युद्ध के करनेवाले सात्यकी की उस हस्त लाघवताको नहीं देखा ४३ सिद्ध चारणों के समूहों ने द्रोणाचार्य्यके उस कर्म को नहीं जाना इसके पीछे क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले महा अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्य ने दूसरे धनुष को लेकर ४४ अस्त्रों से युद्ध किया हे भरतबंशी सात्यकी ने उनके अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंकी मायाओं से दूर करके ४५ तीक्ष्ण बाणों से घायल किया वह भी आश्चर्य्यसाहुआ युद्धमें असादृश्य बुद्धिसेबाहर उसके कर्मकोदेखकर ४६ योग अर्थात् भिड़ जानेकेज्ञाता आपके शूरवीरों ने योगसे संयुक्तहोनेवाले उसकर्मकी प्रशंसा करी द्रोणाचार्य्यजी जिस २ अस्त्रकोचलातेथे उसी उसीको सात्यकी भी चलाताथा ४७ फिर शत्रुओंके संतप्त करनेवाले निर्भय आचार्य्य ने उससे युद्ध किया हे महाराज धनुर्वेद में पूर्ण क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य ने ४८ सात्यकी के मारने के लिये दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया उस बड़े धनुषधारीने उस शत्रुके मारनेवाले बड़े भयकारी आग्नेय अस्त्रको देखकर ४६ दिव्य वारुणास्त्रकाप्रयोग किया उन दिव्य अस्त्रधारियों को देखकर बड़ा हाहाकारहुआ ५० तब आकाश में रहनेवाले जीवधारी भी आकाशके मध्यमें नहीं चले

उन दोनोंकरके बाणपर नियत किये हुये बारुणास्त्र और अग्न्यास्त्र जबतक परस्पर नहीं भिड़ेथे कि सूर्य्य मध्याह्नसे आगेको बढ़े उसके पीछे पांडव और युधिष्ठिर भीमसेन ५२ नकुल सहदेव और विराटने धृष्टद्युम्न आदिक केकयों समेत सात्यकी को चारों ओर से रक्षित किया ५३ मत्स्य और शाल्वेय नाम सेना शीघ्रता से द्रोणाचार्य्य के पास आई और हजारों राजकुमार दुश्शासन को आगे करके ५४ शत्रुओं से घिरेहुये द्रोणाचार्य्यके पास बर्त्तमानहुये हे राजा इसके पीछे उन्होंके औरआपके धनुषधारियों केयुद्धहुये ५५ धूलके गुब्बारों से संसार के गुप्तहोने और बाणों के जालोंसेढक जाने पर सब संसार महाव्यकुल हुआ कुछ नहींजानागया दोनों सेना धूलसे गुप्त होगईं और अमर्य्यादगी बर्त्तमान हुई ५६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टनवतितमोऽध्यायः ९८॥

निन्नानबे का अध्याय॥

संजय बोले वहां अस्ताचलके शिखरपर सूर्य्यके अधिक बर्त्तमान होने और धूलसे संयुक्त होकर सूर्य्यके न्यून प्रकाश होने पर १ युद्ध करने में नियत शूरबीर फिर लौटनेवाले अथवा पृथक् होनेवाले और विजय करनेवालों का वह दिन धीरेपनेसे गया २ इसप्रकार उन विजयाभिलाषी सेनाओं के भिड़ने पर अर्जुन और बासुदेवजी जयद्रथके मारने के निमित्तचले ३ वहां अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से रथके जाने के योग्य मार्ग को किया उसी मार्गसे श्रीकृष्णजीचले ४ हे राजा जहां जहां महात्मा पांडव अर्जुन का रथ जाता था वहां वहांसे आपकी सेना छिन्न भिन्नहोकर पृथक्हुई ५ फिर उत्तम मध्यम निकृष्ट मंडलों को दिखलाते पराक्रमी श्रीकृष्णजीने रथकोसुशिक्षितताको दिखलाया ६ फिर जिनपर नाम मुद्रित था और नोकपर सूक्ष्म चर्म लगा हुआथा वह पीत रंग कालाग्नि के स्वरूप सुन्दर पर्व्ववाले बड़ी दूर पहुंचने वाले ७ भयकारी लोहेके नानाप्रकारकेबाण शत्रुओंके शरीरों मेंलगते युद्धमें पक्षियों

समेत जीवोंके रुधिरको पीनेवालेहुये ८ रथमें बैठाहुआ अर्जुन आगे से जिनबाणोंको एककोश परसे चलाताथा उसके वह बाण उससमय पर शत्रुओंको मारतेथे जब कि उसका रथ एक कोश भर मार्ग,को उल्लंघन करजाताथा ९ तब श्रीकृष्णजी संपूर्ण जगत्को आश्चर्य्य युक्त करते गरुड़ और वायुके समान शीघ्रगामी उत्तम पुरुषोंके सवार करनेवाले घोड़ोंके द्वारा चलदिये १० हे राजा उसप्रकार का न सूर्य्यका न इन्द्रका न रुद्रका न कुबेर का ११ और पर्व्वसमय में भी किसीका रथनहीं चला जैसा कि चित्तके अनुसार शीघ्रता से अर्जुनकारथगया १२ हे भरतवंशी राजाधृतराष्ट्र फिरशत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले केशवजीने युद्धमें प्रवेश करके सेनाके मध्यमें शीघ्रता से घोड़ोंको चलायमान किया १३ उसके पीछे उसरथ समूहोंके मध्य कोपाकर क्षुधा तृषासे युक्त उत्तम घोडों ने उस रथको बड़े दुःखसे खैंचा१४ क्योंकि वह घोड़े बड़े युद्धकुशल शस्त्र विद्याके ज्ञाता शूरवीरोंके नानाप्रकार के बहुतसे शस्त्रोंसे घायल होकर वारंवार अनेक मंडलों कोघूमेथे १५ और मनुष्यों समेत मृतक घोड़े हाथी और रथियोंकेऊपरसे ऐसे उल्लंघन करनेवाले हुये जैसे कि शलभाओं के हजारोंसमूह सबको उल्लंघन करतेहैं १६ हे राजा इसीअन्तर में दोनों भाई अवन्ती के राजाओं ने सेना समेत थके घोड़वाले पांडव अर्जुनसेआकर सन्मुखताकरी १७ उन दोनों प्रसन्नचित्तों ने चौंसठ बाणोंसे अर्जुनको सत्तर बाणोंसे श्रीकृष्णजीको और सैकड़ों बाणोंसे घोड़ोंको घायलकिया १८ हे महाराज क्रोधयुक्त औरमर्मस्थलोंके जाननेवाले अर्जुनने झुकी गांठवाले मर्म्मभेदी नौबाणोंसे उन दोनोंको युद्धमें घायल किया १९ उसके पीछे उनदोनों क्रोधयुक्तोंने केशवजी समेत अर्जुनको बाणोंके समूहोंसे ढकदिया औरसिंहनाद किये २० श्वेत घोड़े रखनेवाले अर्जुनने युद्धमें दोभल्लोंसे उनदोनोंके जड़ाऊ धनुषोंको काटा और शीघ्रही सुवर्णके समान प्रकाशित दोनोंध्वजाओं कोभीकाटा२१ हे राजा तब अत्यन्त क्रोध युक्त उनदोनोंने दूसरे धनुषोंको लेकर युद्धमें बाणोंसे अर्जुनको

पीड़ामान किया २२ फिर उन दोनोंके बाणों से अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडुनन्दन अर्जुनने फिर उनके दोनों धनुषोंको काटा २३ और सुनहरी तीक्ष्णधार दूसरे विशिषोंसे शीघ्रही पदातियों समेत घोड़ोंको मारा और दोनोंके सारथियों समेत पृष्ठ रक्षकों कोभी मार गिराया २४ और क्षुरप्रनाम बाणसे बड़ेभाईके शिरको शरीरसे काटा वह मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि बायुसे उखाड़ाहुआ वृक्षगिरताहै २५ फिर प्रतापवान् महाबली अनुविन्दको मराहुआ देखकर और उसरथको जिसके कि घोड़े मरगयेथे छोड़कर गदाको हाथमें लेकर २६ भाईके मारनेको स्मरणकरता और रथियोंमें श्रेष्ठ महारथी गदासे संयुक्तनर्त्तकके समान युद्धमें सन्मुख वर्त्तमान हुआ २७ फिर क्रोधयुक्त अनुविन्दने गदासे मधुसूदनजीको ललाटपर घायलकरके ऐसे कंपित नहींकिया जैसेकि मैनाकपर्व्वतको २८ अर्जुनने छःबाणों से उसकी ग्रीवा चरण भुजा और शिरको काटा वह फिर ऐसे खंड२ होकरगिरा जैसे कि पर्व्वतोंका समूह गिरताहै २९ हेराजा फिरउनके पीछे चलनेवाले शूरबीर उनदोनोंको मराहुआ देखकर अत्यन्तक्रोध युक्तसैकड़ों बाणोंको मारतेहुयेसन्मुख दौड़े ३० हेभरतबंशियोंमें श्रेष्ठ वह अर्जुन शीघ्रही बाणोंसे उनको मारकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि हिमऋतुके अन्तमें बनको भस्म करके अग्नि शोभायमान होताहै ३१ अर्जुन बड़ी कठिनता से उन दोनों की सेनाको उल्लंघन करके ऐसा शोभित हुआ जैसे कि बादलसे पृथक् होकर उदय हुआ सूर्य्यहोताहै ३२ सबकौरव लोग उसको देखकर भयभीतहो गये परन्तु फिरअत्यन्त प्रसन्नहुये और चारोंओरसेअर्जुनके सन्मुख हुये ३३ उसको थकाहुआ देखकर और जयद्रथ को दूर जानकर बड़े सिंहनाद पूर्व्वक सब ओरसे घेर लिया ३४ उनको अत्यन्त क्रोधयुक्त देखकर मन्द मुसकान करता हुआ पुरुषोत्तम अर्जुन बड़े धीरेपनेसे श्रीकृष्णजीसे यह बचन बोला ३५ कि घोड़े बाणों से पीड़ामान और बलसे रहितहैं और जयद्रथ दूरहै यहां शीघ्रता से कौनसा उत्तम कर्म तुमको स्वीकारहै हेश्रीकृष्णजी आप मूलवृत्ता-

न्तकहो आपही सदैव बड़े ज्ञानी हो यहांपर आपके आज्ञाकारी पांडव शत्रुओं को विजय करेंगे ३७ मेरा जो काम शीघ्रता से करने के योग्यहै आप उसको मुझसे सुनिये हे माधवजी सुखपूर्व्वक घोड़ों को छोड़ो और भल्लों को शरीर से निकालो ३८ अर्जुनके इस वचन को सुनकर श्रीकृष्णजी ने उत्तर दिया कि हे अर्जुन मेरी भी यही रायहै जो तुमने कही ३९ अर्जुन वोले हे केशवजी मैंसब सेनाओंको रोकूंगा आपही यहां शीघ्रता पूर्व्वक न्यायके अनुसार कर्म करो ४० संजय वोले कि वह निर्भय स्थिर चित्त अर्जुन रथके वैठने के स्थान से उतरकर गांडीव धनुष को लेकर पर्व्वत केसमान निश्चल होकर नियत हुआ ४१ विजयाभिलाषी पुकारतेहुये क्षत्री यही समयहै ऐसा जानकर उस पृथ्वी पर नियत हुये अर्जुन के सन्मुख दौड़े ४२ धनुषोंको खैंचतेशायकों को छोड़ते वहुतसे रथ समूहों समेत उन क्षत्रियों ने उस अकेले को घेर लिया ४३ जैसे कि वादल सूर्य्य को ढकदेताहै उसीप्रकार वाणों से अर्जुनको ढकते क्रोधयुक्त क्षत्रियों ने वहां अपने अपूर्व्व शस्त्रोंको दिखाया ४४वड़े रथी क्षत्री वेगसे उस क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन के सन्मुख ऐसेगये जैसे कि मतवाले हाथी सिंहके सन्मुख होतेहैं ४५ वहां पर अर्जुन की भुजाओं का वड़ा पराक्रम देखने में आया कि उस क्रोधयुक्तने बहुत सी सेनाओं को सब ओर से रोका ४६ अर्थात् उस समर्थने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रोंको सव ओर से रोककर शीघ्रही वहुत वाणों से सवको ढकदिया ४७ हे राजा वहांपर पृथ्वी और आकाशमें वहुत वाणोंकी घिसावट से वड़ी ज्वलित रूप अग्नि उत्पन्न हुई ४८ और जहां तहां रुधिर से भरे हुये श्वासाओं को लेते वड़े धनुषधारी घायल और गर्जते हुये शत्रुओं से दुःखी हुये घोड़े हाथी ४९ और युद्धमें विजय चाहनेवाले क्रोधयुक्त एकस्थान में नियत वहुत से शत्रुओं के वीरों से गर्मी उत्पन्न हुई ५० तव मर्यादरूप अर्जुन ने उस वाणरूपी तरंग ध्वजा रूपी भंवर हाथी रूप ग्राह रखने वाली महादुस्तर पदाती रूप मछलियों से व्याप्त शंख दुन्दुभि-

योंसे शब्दायमान ५१ असंख्य रथ रूपी बड़ी लहरें रखनेवाली और पगड़ी मुख छत्र पताका रूपी फेनों की माला रखनेवाली ५२ हाथियों के अगरूप शिलाओं से संयुक्त निश्चल रथरूपी समुद्र कौरोंका ५३ धृतराष्ट्र बोले कि अर्जुनके पृथ्वीपर वर्त्तमान होने और घोड़ों को हाथसे पकड़नेवाले केशवजी के होनेपर ऐसे समय को पाकर भी अर्जुन कैसे नहीं मारागया ५४ संजय बोले हेराजा पृथ्वीपर नियत अर्जुन से शीघ्रही सब राजा लोग जो कि रथपर नियत थे ऐसे रोकेगये जैसे कि वेद के न जाननेवालोंके बचन रोके जाते हैं ५५ उस अकेले पृथ्वी पर नियत अर्जुनने रथपर चढ़ेहुये सब राजाओं को ऐसे हटाया जैसे कि लोभ सब गुणों को हटा देताहै ५६ उसके पीछे निर्भय महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्ध में उस अपने प्यारे पुरुषोत्तम अर्जुन से यह बचन बोले ५७ हे अर्जुन यहां युद्ध में घोड़ों के जल पीने का जलाशय पूर्ण नहीं है और यह घोड़े पीने के योग्य जलको चाहते हैं स्नान को नहीं चाहते हैं ५८ इस बातके कहतेही अर्जुन ने अस्त्रके द्वारा पृथ्वी को फाड़कर घोड़ों के जलपीने का ऐसा उत्तम शुभदायक जलका सरोवार उत्पन्न किया ५९ जोकि मन्त्र के प्रभाव से हंस कारण्डों से युक्त चक्रवाकों से शोभित बहुत बिस्तृत फूले हुये उत्तम कमल और स्वच्छ जल का रखनेवाला ६० कूर्म मछलियों आदिसे पूर्ण अथाह बड़े२ऋषियोंसे सेवितथा उस एकही क्षण में उत्पन्न हुये सरोवरके देखनेको नारदमुनि भी आपहुंचे ६१ त्वष्टा देवताके समान अपूर्व कर्म करनेवाले अर्जुन ने वह बाणों का स्थान बनाया जिसमें बाण केही बांस खंभ और बाणोंकाही अद्भुत पटाव था ६२ इसके पीछे महात्मा अर्जुन से उस बाणों के महल बनाये जाने पर गोविन्द जी अत्यन्त हंसकर बोले कि साधु है साधु है ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकोनशततमोऽध्यायः ९९ ॥

—*—

सौका अध्याय ॥

संजय बोले कि महात्मा अर्जुन से उस जलाशय के उत्पन्नहोने शत्रुओं की सेना हटाने और बाणमहलके बनानेपर बड़े तेजस्वी वासुदेव जीने १ शीघ्रही रथसे उतरकर बाणों से घायल घोड़ोंको छोड़दिया २ उस अपूर्व दर्शन कर्म को देखकर सिद्ध चारणों के समूहों में और सब सेनाओंमें बहुतसे प्रशंसाओं के बचन प्रकट हुये ३ महारथी लोग उस पदाती युद्ध करनेवाले महारथी अर्जुन के रोकने को समर्थ नहीं हुये यह आश्चर्य्यसा हुआ ४ तब अर्जुन बहुत हाथी घोड़े रखनेवाले रथ समूहोंके सन्मुख आजाने पर भी भयभीत नहीं हुआ वह इसका कर्म सब मनुष्यों से अधिक और अपूर्वथा ५ उन राजाओं ने अर्जुनके ऊपर बाणोंके समूहोंको छोड़ा शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला धर्मात्मा इन्द्रका पुत्र अर्जुन पीड़ामान नहीं हुआ ६ उस पराक्रमी अर्जुन ने उन बाणों के जालगदा और प्रासोंको बीचहीमें ऐसेनिगला अर्थात् ऐसेकाटा जैसेकिनदियों को समुद्र काटता है ७ अर्जुनने अस्त्रों के बड़े बेग और ध्वजा के पराक्रम से सब महाराजाओं के उन उत्तम बाणों को निगला ८ हे महाराज कौरवों ने अर्जुन और बासुदेव जी इन दोनों के उस अपूर्व्व और बड़े पराक्रमको स्तुतिकरी अर्थात् प्रशंसा करी ९ लोक में ऐसा अपूर्व कर्म न हुआ न होगा जैसे किअर्जुन और गोविन्दजी ने युद्धमें घोड़ों को छोड़कर कियाहै १० उन दोनों नरोत्तमोंने हम लोगों में बड़ा भय उत्पन्न किया और युद्ध के मस्तक पर दोनों ने महा भयकारी अपने पराक्रम को दिखाया ११ हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र तब युद्धमें अर्जुन के हाथसे बाणमहलके तैयार होनेपर स्त्रियोंके मध्यवर्त्ति योंके समान मन्द मुसकान करते कमललोचन सावधान श्रीकृष्णजीने आपकी सबसेनाओंके देखतेहुये उनघोड़ोंको जलसे तृप्त करके थकावट से भी रहित करदिया १२।१३ शालिहोत्रादिशास्त्रों के कर्मोंमें कुशल श्रीकृष्णजी ने उन घोड़ों के शरीरों

की वेदना निर्बलता झागोंका वमन करना और बड़े घाव इन सब को दूरकिया १४ हाथोंसे भल्लोंको उखाड़कर और उन घोड़ों को मलकर रीतिके अनुसार स्नान कराकर जलको पिलाया १५ उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त श्रीकृष्णजीने उनस्नान और जलपान करचुकनेवाले दानेआदिसे तृप्त दुःख और थकावटसे रहित घोड़ोंको फिर उस उत्तम रथमेंजोड़ा १६ सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ बड़ेतेजस्वी श्रीकृष्णजी अर्जुन समेत उस श्रेष्ठ रथपर सवार होकर शीघ्रचले १७ कौरवीय सेनामें श्रेष्ठ शूरबीर युद्धभूमिमें उस रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन के रथको जलपान कियेहुये घोड़ोंसे संयुक्त देखकर वे मन अर्थात् चित्तसे उदास होगये १८ हेराजा टूटीहुई डाढ़वाले सर्पकी समान श्वासालेनेवाले लोग पृथक् २ होकर बोलेकि बड़ी धिक्कारहै कि वह अर्जुन और श्रीकृष्णजी निकल गये १९ वह दोनों कवचधारी बालकों के खेलहीके समान हमारे बलको निरादर करके सबक्षत्रियों के देखते एकरथ के द्वाराही निकलगये २० उन शत्रुओं के तपानेवाले पुकारते उपाय करतेशूरबीरोंमें चित्त न लगानेवाले वह दोनों सबराजाओं के मध्य में अपनेबल पराक्रम को दिखलाकर चलदिये २१ तब दूसरे सेनाके मनुष्य उन जानेवाले दोनोंको देख कर फिर बोले कि सब कौरवलोग श्रीकृष्ण और अर्जुनके मारनेमें शीघ्रता करो २२ यहरथ सवार श्रीकृष्णजीयुद्धमें सबधनुषधारियों के देखतेहुये हमलोगोंको तुच्छ और निरादर करके जयद्रथ की ओरको जातेहैं २३ वहांपर कुछ राजालोग युद्धमें पूर्बकभी न देखे हुये उस अद्भुत बड़कर्मको देखकर परस्पर में यह बोले २४ कि दुर्योधन के अपराधसे सब सेनासमेत राजाधृतराष्ट्र और क्षत्रियों के कुलोंने नाशको पाया और संपूर्ण पृथ्वीने २५ बड़ीभारी बरबादीको पाया उसको राजा नहीं जानता है हे भरतबंशी वहांपर क्षत्री और दूसरे लोग इसरीतिसे वार्त्तालाप करतेथे २६ कि यमलोकमें पहुंचे हुये जयद्रथका जोकर्महै उसको निष्फल दीपनेवाला उपाय का न जाननेवाला दुर्योधन करो २७ उसके पीछे सूर्य्यके

तीक्ष्ण किरणोंको अस्ताचलकीओर जानेपर पांडव अर्जुन अत्यन्त प्रसन्न जलपानादि करनेवाले तृप्त घोड़ोंकी सवारीसे बड़ी शीघ्रता पूर्वक जयद्रथ के ऊपर गये २८ शूरबीर लोग उस सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ काल के समान क्रोधयुक्त जातेहुये महाबाहु अर्जुन के रोकनेको समर्थ नहींहुये २९ इसके अनन्तर शत्रुओंके तपानेवाले अर्जुनने सेनाको उछिन्न करके जयद्रथ के निमित्त ऐसा छिन्न भिन्न किया जैसे कि मृगों के समूहोंको सिंह छिन्न भिन्न करदेताहै ३० सेनाओंको मंझाते हुये श्रीकृष्ण जीने शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया और बलाका के समान श्वेतरंगवाले पांचजन्य शंख को बजाया ३१ आगेसे अर्जुनके छोड़ेहुये बाण उसके पीछेगिरे और वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंने उस मार्गको बड़ीशीघ्रतासेव्यतीत किया ३२ इसके पीछे क्रोधयुक्त राजाओंने और अनेक क्षत्रियोंने जयद्रथके मारनेके अभिलाषी अर्जुनको चारोंओरसे घेरलिया ३३ सेनाओंके भागनेपर शीघ्रता करनेवाला दुर्य्योधन उस बड़ेयुद्ध में नियत होनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुनके सन्मुखहुआ ३४ सबरथी उस वायुसे खड़ी पताकावाले बादलके समान शब्दायमान भयकारी हनुमानजीकी ध्वजा रखनेवालेरथको देखकर महाव्याकुलहुये ३५ फिर धूलसे सूर्य्यके सब ओरसे ढकजाने पर युद्धमें बाणोंसे पीड़ामान शूरवीर लोग उन श्रीकृष्ण और अर्जुन के देखनेकोभी समर्थ नहीं हुये ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशततमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौएकका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा आपकी सेनाके राजालोग उन उल्लंघन करके पहुंचे हुये अर्जुन और वासुदेव जीको देखकर भय से पृथ्वीपर गिरपड़े १ फिर वह सब क्रोधयुक्त लज्जावान् बलसे चलायमान महात्मा नियत होकर अर्जुनके सन्मुख गये २ जो क्रोध और अधैर्य्यसेयुक्त युद्धमें अर्जुनके सन्मुखगये वह अबतकभी ऐसे

लौटकर नहीं आये जैसे कि समुद्रसे फिर लौटकर नदियां नहीं आतीं ३ परन्तु असन्तलोग ऐसे मुखफेरनेवाले हुये जैसे कि वेदोंसे नास्तिक लोग मुखको फेरलेतेहैं उन नरकके चाहनेवालोंने पापकोही प्राप्त किया ४ वह दोनों पुरुषोत्तम रथकी सेनाको उल्लंघनकर सबसे छूटेहुये ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि राहु के मुखसे छूटेहुये दोसूर्य्य होंय ५ जैसे कि बड़ेजालको तोड़कर दुःख शोकसे रहितदोमछली दिखाई पड़ें उसीप्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुन उससेना के जालको तोड़कर दृष्टिगोचर हुये ६ बड़े दुःखसे तोड़ने के योग्य बाणों के कष्ट रखनेवाले द्रोणाचार्य्य की सेनासे छूटेहुये दोनों महात्मा ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि उदय हुये दोकालरूप सूर्य्य होतेहैं ७ अस्त्रों की पीड़ा और बाणोंके दुःखोंसे छूटेहुये वह दोनों महात्मा जोकि शत्रुओंके पीड़ा उत्पन्न करनेवालेथे दिखाई पड़े ८ अथवा जैसेअग्नि के समान स्पर्शवाले समुद्रसे पृथक् होनेवाली झसनाम दोमछलियां होतीहैं फिर उनदोनोंने उससेनाको ऐसे छिन्नभिन्नकरदिया जैसे कि समुद्रको दोबड़े मगर उथलपुथलकरदेतेहैं ९ प्रथम आप के शूरबीरोंने और पुत्रोंने द्रोणाचार्य्य की सेनामें उनदोनोंकेनियत होनेपर यहबात पक्की चित्तसे जानलीथी कि यह द्रोणाचार्य्य को नहींतरेंगे १० हे महाराज फिर द्रोणाचार्य्यकी सेना को उल्लंघन करनेवाले उनदोनों बड़ेतेजस्वियों को देखकर जयद्रथके जीवनकी आशाको त्यागदिया ११ हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र जयद्रथके जीवन की द्रोणाचार्य्य और कृतबर्माकी बड़ी बलिष्ठ आशाथीकि श्रीकृष्ण और अर्जुन इस व्यूहके पारनहीं होसकेंगे १२ हे महाराज शत्रुके तपानेवाले वहदोनों उस आशाको निष्फलकरके कठिनतासे तरने के योग्य द्रोणाचार्य्य और कृतबर्मा की सेनाको अच्छीरीति से पारगये १३ फिर अग्निके समान प्रकाशित सेनाके उल्लंघनकरने वाले उनदोनों को देखकर आशा से रहित शूरबीरोंने जयद्रथ के जीवनकी आशानहीं की १४ उन निर्भय दूसरे के भयके बढ़ाने वाले श्रीकृष्ण और अर्जुनने जयद्रथके मारनेमें उन २ बचनों को

बारंबार कहा १५ कि यह जयद्रथ दुर्य्योधन के छःमहारथियों ने बीचमें कियाहै यहमेरेनेत्रों के सन्मुख आयाहुआ बचनहींसक्ता १६ जो युद्धमें देवताओं के समूहों समेत इन्द्रभी इसकोरक्षा करे तौभी उसको मारेंगे यहवचन श्रीकृष्ण और अर्जुनने कहाहै १७ तब परस्पर में महाबाहु श्रीकृष्ण के इसप्रकार कहनेपर जयद्रथ को देखते हुये आपके पुत्र बहुते पुकारे १८ रेतके स्थानको उल्लंघन कर जातेहुये तृषासे पीड़ित दोहाथी जैसे जलको पीकर तृप्तहोंय उसीप्रकार शत्रुओंके पराजय करनेवाले यह दोनोंहैं १६ व्याघ्र सिंह और हाथियों से व्याप्तपहाड़ों को उल्लंघन करके हानि मृत्यु और वृद्धावस्थासे छुटेहुये दो व्यापारी जैसे दिखाई पड़ें २० उसी प्रकार इनदोनों के मुखका वर्ण दिखाई देताहै आपके शूरवीर उन दोनोंको पारहूये देखकर सबप्रकार से पुकारे २१ कि सर्पके रूप अग्नि के समान प्रकाशित द्रोणाचार्य्य आदिक अन्य राजाओं से भी मुक्त वहदोनों दो सूर्य्योंके समानप्रकाशमानहुये २२ द्रोणाचार्य्यकी समुद्र रूप सेनासे पार उतरने वाले शत्रु विजयी दोनों आनन्द युक्त ऐसे दिखाई पड़े जैसे समुद्रके पारगामी पुरुषदीखतेहैं २३ अस्त्रोंके बड़े समूहोंसेछुटे द्रोणाचार्य्य कृतवर्माकी रक्षित सेनासे मुक्त वह दोनोंयुद्धमें इन्द्र और अग्निकेसमान शोभितहोकर दृष्टि गोचरहुये २४ रुधिरसेलिप्त और द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्णशायकों से संयुक्त दोनों कृष्णावर्ण ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि कर्णिकारके वृक्षों से युक्त दोपर्वत होतेहैं २५ द्रोणाचार्य्य रूप ग्राह रखनेवाली शक्ति रूप मार से दुःखवाली लोहेके बाणरूप नौका रूपी मगरवाली क्षत्रीरूपी जलसे भरी हृदसे निकलीहुई २५ कवच और प्रत्यंचा के शब्दसे शब्दायमान गदा खड्ग रूप बिजली रखनेवाले द्रोणाचार्य्यके अस्त्र रूप बादलोंसे युक्तदोनों ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि अंधेरेमें से निकले हुये सूर्य्य और चन्द्रमा २७ मानो वर्षाऋतुमें जलसे पूर्ण बड़े ग्राहोंसे व्याकुल उन नदियों को जिनका छठवां सिन्धहै अपने भुज बलसे पार हुये २८ सब जीव-

धारियों ने द्रोणाचार्य्य के अस्त्र बलके आश्चर्य्य से उन यश करके
लोकमें प्रसिद्ध बड़े धनुषधारी दोनों कृष्ण और अर्जुनको इसप्रकार
से माना २९ मारने की इच्छासे सन्मुख बर्त्तमान हुये जयद्रथ को
देखतेहुये वहदोनों नियतहुये जैसेकि चढ़ाईमें रुरुनाम मृगकेअभि-
लाषी दो व्याघ्रहोतेहैं ३० उसी प्रकार इन दोनों के मुखका बर्ण
था हेमहाराज आपके शूरबीरोंने जयद्रथको मृतकहुआ माना ३१
लाल नेत्र महा बाहु युद्धमें प्रवृत्त श्रीकृष्ण और अर्जुन उस सिन्ध
के राजाको सन्मुख देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर बारंबार गर्जे३२
उस समय बाग डोर हाथमें रखनेवाले श्रीकृष्णजी का और उस
धनुषधारी अर्जुनके शरीरका प्रकाश उस प्रकार का हुआ जैसे कि
सूर्य्य औरअग्निका होताहै३३द्रोणाचार्य्यकी सेनासे मुक्तउनदोनों
की प्रसन्नता जयद्रथको सन्मुखदेखकर ऐसीउत्पन्नहुई जैसे कि मांस
को देखकर दो बाज़ पक्षियोंकी होतीहै ३४ फिर वह दोनों सन्मुख
वर्त्तमान जयद्रथको देखकर क्रोध रूप होकर अकस्मात ऐसे दौड़े
जैसे कि मांसको देखकर दोबाज़ दौड़तेहैं ३५ उल्लंघन करकेपहुंचने
वाले अर्जुन और केशव जीको देखकर आपकापुत्र राजा सिंध-
की रक्षा के निमित्त चला ३६ हे प्रभु धृतराष्ट्र इसके अनन्तर घोड़ों
के संस्कारको जाननेवाला राजा दुर्य्योधन जिसके शरीरपरद्रोणा-
चार्य्यने कवच बांधाथा एक ही रथसे युद्ध भूमिमें गया ३७ अर्थात्
आपका बेटाबड़े धनुषधारी श्रीकृष्ण और अर्जुनको उल्लंघन करके
पुंडरीकाक्ष बासुदेवजीके आगेगया ३८इसके पीछे अर्जुनकोआपके
बेटेकेउल्लंघन करनेपर सबसेनामें बड़ेआनन्दके समानबाजेबजे३९
वहां पर दोनों कृष्णके आगेनियत दुर्योधनकोदेखकरशंखोंकेशब्दों
से संयुक्त सिंहनादें जारी हुईं ४० हेप्रभुअग्निकेसमान जोशूरवीर
राजा सिन्धके रक्षकथे वहआपके पुत्रकोयुद्धमेंदेखकर अत्यन्तप्रसन्न
हुये ४१ तब श्रीकृष्णजी पीछेचलनेवालोंसमेत उल्लंघन करनेवाले
दुर्य्योधन को देखकर समयके अनुसार यहबचनअर्जुनसेबोले४२॥
इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकाधिकशततमोऽध्यायः१०१॥

एकसौदोका अध्याय ॥

वासुदेवजी बोले हे अर्जुन इस उल्लंघन करनेवाले दुर्य्योधनको देखोमैं इसको अत्यन्त अपूर्व्व मानताहूं इसके समान कोईरथी नहीं है १ यहधृतराष्ट्रकाबेटा बड़ा पराक्रमी दूरपहुंचनेवाला धनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद दृढ़ अस्त्रवाला अपूर्व्व युद्ध करनेवाला २ बड़ेसुखपूर्व्वक पोषण कियाहुआ महारथियोंसे प्रतिष्ठित सदैव कर्मकरता है हेअर्जुन वहसदैव बान्धवोंसे शत्रुता करताहै ३ हेनिष्पाप मैं समय आनेपर तेरायुद्ध उसकेसाथमें उचित जानता हूं यहां तुम्हारा द्यूत विजय अथवा पराजयके लिये जारीहुआ ४ हे अर्जुन बहुत दिनों के रोकेहुये क्रोधरूप विषको इसपर छोड़ यह महारथी पांडवोंके अनर्थोंका मूलहै ५ वही अब आकर तेरे बाणोंके सन्मुख वर्त्तमान हुआहै अपनी सफलताको देखो कि किस प्रकारसे राज्यका चाहने वाला राजायुद्ध कोपावे अबयह प्रारब्धसे तेरेबाणोंके लक्ष्यमें वर्त्त-मान हुआहै यहजिस प्रकारसे जीवनको त्यागे हेअर्जुन उसीप्रकार से कामकरो ७ राज्यके भोगनेसे मदोन्मत्त होकर इसने कभीदुःख कोनहीं पाया हे पुरुषोत्तम यहयुद्धमें तेरेपराक्रमको नहींजानताहै८ और हेअर्जुन देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनोंलोकभी युद्धमें तेरे विजयकरनेको साहस नहीं करसक्तेहैं फिर अकेला दुर्योधनक्या करेगा ९ यहप्रारब्धसे तेरेरथके पास वर्त्तमान हुआहै हेमहाबाहु इसको इसप्रकार सेमारो जैसेकि इन्द्रने वृत्रासुरको माराथा १० हे निष्पाप यहतेरे अनर्थमें सदैव उपाय करनेवाला रहाहै इसनेद्यूतमें छलकरके धर्मराजको ठगा ११ हेप्रतिष्ठा देनेवाले इसपाप बुद्धीने तुम निष्पाप लोगोंको सदैव दुःखदियेहैं १२ हे अर्जुन युद्धमें उत्तम कर्मको करके विचारको न करके उसनीच सदैव क्रोधयुक्त काम रूपपुरुषको मारो १३ हेपांडव छलसे राज्य हरणकरना वनवास और द्रौपदी केदुःखोंको हृदयमें धारण करके पराक्रमकरो १४ यह प्रारब्धसे तेरेबाणोंके लक्षपरवर्त्तमानहै और प्रारब्धहीसे अपनेकर्मके

नाशके अर्थ तेरे आगे उपाय करताहै १५ और भाग्यसे युद्धमें तेरे साथ लड़ना चाहताहै हे अर्जुन विनाचाहेहुये सब मनोरथ सिद्ध और सफलहैं १६ इसहेतुसे इसकुलमें महानीच दुर्योधनको युद्धमें ऐसे मारो जैसे कि पूर्व्वसमयमें देवासुरोंके युद्धमें जंभनामअसुरको इन्द्रने माराथा १७ तेरे हाथसे उस दुर्योधनके मरनेपर यह बिनास्वामीकी सेनासब पृथक् २ होजायगी इस शत्रु का अष्टभृत स्नान हो अर्थात् अन्तहो दुरात्माओंके मूलकोकाटदे १८ संजयबोले कियह सुनकर अर्जुनने श्रीकृष्णजीसे कहाकि यहमेराकर्मरूपहै दूसरे सबकार्य्यों-का निरादर करके चलो जहां दुर्योधन है १९ जिसने हमारा यह निष्कण्टक राज्य बहुतकाल तक भोगाहै उसके मस्तकको पराक्रम करके युद्धमें काटूं २० हे केशवजी उस दुःखके अयोग्य द्रौपदी के केशखींचनेमें उसके कष्टोंकाबदला लेनेको समर्थहूं २१ इस प्रकार बार्त्तालाप करते प्रसन्नचित्त उस राजा को चाहते दोनों कृष्ण और अर्जुनने अपनेश्वेत उत्तमघोड़ोंको युद्धमेंहांका २२ हेभरत बंशियों में श्रेष्ठधृतराष्ट्र आपके बेटेने उनदोनोंके सन्मुख जाकर बड़ेभयकेबर्त्त-मान होने परभी भयको नहीं किया २३ वहां सब क्षत्रियोंने उसके उस साहसकी बड़ी प्रशंसा करी जोसन्मुख आतेहुये अर्जुन और श्रीकृष्णजी को रोका २४ हेराजा वहां राजाको युद्धमें देखकर आ-पकी सब सेनाके बड़े शब्द हुये २५ मनुष्योंके उस भयकारी शब्द के बर्त्तमान होने पर आपके पुत्रने शत्रुको निरादर और तुच्छ करके रोका २६ आपके धनुषधारी पुत्र से रोके हुये शत्रुके तपाने वाले अर्जुनने फिर उस पर क्रोधकोप्रकट किया २७ भयकारी सूर-त उन क्रोध युक्त अर्जुन और बासुदेवजीको देखकर युद्धाभिलाषी हंसतेहुये आपके पुत्रने अर्जुन को बुलाया २८ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न श्रीकृष्णजी और पांडव अर्जुनने बड़ा भारी शब्दकिया और अपने २ उत्तम शंखोंकोभी बजाया ३० फिर कौरव लोग उनप्रसन्न रूप दोनोंको देखकर आपके पुत्र के जीवन में सब प्रकार करके निराशा युक्त हुये ३१ उन सब कौरवोंने बड़े शोक से युक्त होकर

आपके पुत्रको अग्निके मुखमें होमाहुआ माना ३२ भयसे पीड़ामान आपके सब शूरवीर उस प्रकार से प्रसन्न मन श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर बोले कि राजा मारा राजा मारा ३३ फिर दुर्योधन मनुष्यों के शब्दों को सुनकर बोला तुम अपने भयोंको दूरकरो मैं इन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुनको मृत्युके निकट भेजूंगा ३४ बिजयाभिलाषी राजा दुर्योधन सेनाके सब मनुष्यों से यह बचन कह कर अर्जुनको सन्मुख करके क्रोध से यह बचन बोला ३५ हे अर्जुन तुम ने स्वर्ग और पृथ्वी सम्बन्धी जो अस्त्र शस्त्र सीखे उनको मुझे शीघ्र दिखलाओ जो असल पांडुसे उत्पन्न हुआ है तो अवश्य दिखा ३६ तेरा और केशव जीका जो बल पराक्रमहै उसको शीघ्रतासे मुझ पर करो आजतेरी वीरताको देखेंगे ३७ मेरे नेत्रों के परोक्षमें तेरे कियेहुये कर्मोंको जो लोग कहा करतेहैं कि वड़े२ गुरुओंकीशिक्षाओं से युक्तहैं उनको यहां दिखाओ ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशततोपरिद्वितीयोऽध्यायः१०२॥

एकसौतीनका अध्याय॥

संजय बोले कि राजाने अर्जुन से इस प्रकार कह कर मर्मोंको उल्लंघकर चलने वाले बड़े तीक्ष्ण तीन बाणोंसे अर्जुनको औरचार बाणों से चारों घोड़ोंको घायल किया १ और वासुदेवजी को दश बाणों से छातीके मध्यमें घायल किया और एक भल्लसे उसकेचाबुक को काट कर पृथ्वी पर गिराया २ फिर सावधान अर्जुनने सुनहरी पुंख तेजधार वाले चौदह बाणों से उसको घायल किया वह अर्जुनके बाण उसके कवचसे लगकर टूट पड़े ३ अर्जुनने उनबाणों की निष्फलताको देखकर फिर चौदह तीक्ष्ण बाणोंको चलाया वह भी कवच पर लगकर टूटे ४ उन चलाये हुये अट्ठाईस बाणों को निष्फल देखकर शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले श्रीकृष्णजी अर्जुनसे यह बचनबोले ५ कि पूर्व में जो कभी नहीं देखाहै उन शिलाओं के समान बाणों के गिरनेको निष्फल देखताहूं हे अर्जुन तेरेभेजेहुये

बाण प्रयोजनको नहीं करतेहैं ६ हेभरत बंशियोंमें श्रेष्ठ गांडीवका पराक्रम उसी प्रकारका है और तेरी मुष्टि और हस्त लाघवता भी पूर्व्वकेही समान है ७ अब तेरा और इस तेरे शत्रुका यह पहला समय वर्त्तमाननहींहै इसकाक्या हेतुहै उसकोमुझसेकहो ८हेअर्जुन दुर्योधनके रथपर तेरेबाणोंको निष्फल देखकर मुझको बड़ाआश्चर्य्यहोताहै ९ बज्र और बिजलीके समान भयकारी शत्रुओंके शरीरों के भेदन करने वालेतेरे बाण अभीष्टको नहीं करते हैं हे अर्जुन अब उनकाक्या तिरस्कारहै१०अर्जुनबोले हे श्रीकृष्णजी द्रोणाचार्य्यने यहमति दुर्योधनको दीहैकि यहमेरा बनायाहुआ और धारणकराया हुआ कवच अस्त्रोंसे नहीं टूटने वालाहै ११ हेश्रीकृष्णजी इसकवचमें तीनोंलोक भीगुप्तहैं इसको केवल अकेले द्रोणाचार्य्यही जानतेहैं और उसीश्रेष्ठ पुरुषसे मैंनेभी सीखाहै १२ हेगोविन्दजीयुद्धमें आप बज्रधारी इन्द्रके बाणोंसेभी यह कवच किसीदशा में टूटने के लायक नहींहै १३ हेकृष्णजी तुम जानते हुयेभी मुझ को कैसे भुलातेहो हेकेशवजी तीनोंलोकमें जोहुआहै और होरहाहै १४ और जोहोगा उससबको आपजानने वाले हैं हेमधुसूदनजी जैसे आप जानतेहो वैसे दूसरा कोईनहीं जानसक्ताहै १५ हेश्रीकृष्णजीद्रोणाचार्य्यकी दीहुई इस कवचधारणको शरीरपर शोभित करनेवाला यहदुर्योधन युद्धमें निर्भयके समान नियत वर्त्तमान है१६हेमाधव जी अबजोकर्म यहां करनेकेयोग्य उस को यहनहींजानता है स्त्री के समान यह दूसरेको धारण कराईहुई इसकवच धारणा को धारण करताहै१७हेजनार्दनजी मेरी भुजाओंके औरधनुषके पराक्रमकोभी देखोमें इस कवचसे रक्षितहुये भी कौरव को विजय करूंगा १८ देवताओंके ईश्वरने यहप्रकाशित कवच अंगिराऋषिको दियाउनसे बृहस्पति जीनेपाया उन बृहस्पति जीसे इन्द्रने पाया १९ फिर इन्द्र ने यह देवताओंका बनायाहुआ कवच उपदेश पूर्व्वक मुझकोदिया जोकि इसका कवच आप ब्रह्माजीका बनायाहुआहै अबयह कवच मेरे बाणोंसे घायलहोकर इस दुर्बुद्धीकी रक्षानहीं करेगा२०संजय

बोलेकि स्तुतिके योग्य अर्जुनने इसप्रकार कहकर कवचके काटने वालेतीक्ष्ण मानव अस्त्रसेबाणोंको अभिमंत्रित करके खींचा२१उस के खींचेहुये और उसके धनुषके मध्यवर्त्ती उनबाणोंको अश्वत्थामाने सब अस्त्रोंके दूरकरनेवाले अपने अस्त्रसे काटा दूरसे ब्रह्मबादी अश्वत्थामाके काटे हुये उनबाणोंको २२ देखकर आश्चर्य्य युक्त अर्जुनने केशवजीसे वर्णनकिया किहे जनार्द्दन जी यह अस्त्र मुझको दुबाराचलाना योग्यनहींहै २३ क्योंकि दुबारा चलाया हुआअस्त्र मुझीको मारेगा और मेरी सेनाकोभी मारेगा हे धृतराष्ट्रइसके पीछे दुर्योधनने दोनोंकृष्णार्जुनको ऐसे नौनौ बाणोंसे २४ जोकि सर्पोंके समानथे युद्धमेंघायल किया और फिरभी इनदोनोंके ऊपरबाणोंकी वर्षाकरनेलगा२५बाणोंकी बड़ीवर्षासे आपकेशूरवीरलोगप्रसन्नहुये और बाजोंके शब्दोंसमेत सिंहनाद किये २६ इसके पीछे युद्धमें दोनों होठोंको चाटता हुआ अर्जुन बड़ाक्रोधयुक्त हुआ फिरउसके उसअंगको नहींदेखा जोकि धर्मसेरक्षित न होय२७इसकेपीछे मृत्यु केसमान अच्छे प्रकारसे छोड़ेहुयेतीक्ष्णबाणोंसे उसकेघोड़ोंको और दोनोंआगे पीछेवालों समेत सारथीको शरीरसे रहित किया २८ और पराक्रमी अर्जुननेउसके धनुष हस्तावापको काटा और रथको खण्ड २ करना प्रारंभकिया २९ इसीप्रकार अर्जुन ने विरथकिये हुये दुर्योधनको दोतीक्ष्ण बाणोंसे दोनों हाथोंकी हथेलियों पर घायलकिया ३० फिर बड़े उपायोंके ज्ञाता अर्जुनने बाणोंसे मांस और नखोंके मध्यमें घायल किया वहपीड़ासे महाव्याकुल होकर भागनेको प्रवृत्त हुआ ३१ अर्जुनके बाणोंसे पीड़ामान उसदुर्योधन को चाहते बड़े २ धनुषधारी उस राजा को आपत्ति में फंसा हुआ देखकर दौड़े ३२ उन लोगोंने हजारों रथोंके समूह हाथी घोड़े और क्रोध युक्त पदातियों समेत आनकर उस अर्जुन को चारोंओर से घेरलिया ३३ इसके पीछे अस्त्रोंकी बड़ी वर्षाओं समेत मनुष्यों के समूहोंसे घिरेहुये अर्जुन और गोविन्दजी दिखाई नहीं पड़े और उनका रथ भी दिखाई नहीं पड़ा ३४ फिर अर्जुन ने अपनेअस्त्रों के

बलसेउस सब सेनाकोमारा वहांपर अंगोंसेरहितसैकड़ों हाथीपृथ्वी पर गिरपड़े ३५ फिर उन मृतक और घायलों ने उस उत्तम रथको घेरलिया वह रथ चारोंओर से एक कोशतक रुकाहुआ नियतहुआ ३६ इसके पीछे वृष्णियों में बीर श्रीकृष्णजी अर्जुन से यह बचन बोले कि धनुष की अत्यन्त टंकार करो और मैं शंखको बजाऊंगा ३७ इस के पीछे अर्जुनने गांडीव धनुषको बड़े बलसे टंकार कर बाणोंकी बड़ी वर्षा और प्रत्यंचा के शब्दों से शत्रुओं को मारा ३८ धूलसे भरे पलक पसीनों से अत्यन्त तरबतरमुख पराक्रमी केशव जीने बड़े शब्दसे पांच जन्य शंखको बजाया ३९ तब उस शंखऔर धनुषके शब्द से पराक्रमी और बिना पराक्रमी सब मनुष्य पृथ्वी पर गिरपड़े ४० उन रथियोंसे रहित होकर रथ ऐसे शोभाय मान हुये जैसे कि बायुसे चलाय मान बादल होते हैं इसके अनन्तर जयद्रथ के रक्षक लोग पीछे चलने वालों समेत तेहमें आये ४१ फिर पृथ्वी को कंपाय मान करते जयद्रथ के बड़े धनुषधारी रक्षकोंने अकस्मात अर्जुनको देखकर शब्द किये ४२ उन महात्माओं ने शंखोंकेशब्दोंसे संयुक्त भयकारी शब्दों समेत सिंह नादोंको प्रकट किया ४३ आपके शूर बीरोंके उठेहुये इस भयकारी शब्दकोसुन-कर अर्जुन और बासुदेवजी ने अपने२ उत्तम शंखोंको बजाया ४४ हे राजा उस बड़े शब्दसे यहपृथ्वी पर्व्वत समुद्र द्वीप और पाताल समेत भरगई ४५ हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ वह शब्द दशों दिशाओं को ब्याप्त करके उस कौरवीयऔर पांडवीय सेनामें शब्दों के करने वाले हुये ४६ वहां आपके रथी और शीघ्रता करनेवाले महारथि-योंने अर्जुन और श्रीकृष्णजी को देखकर बड़े भय से उत्पन्न होने वाली बड़ीब्याकुलताको पाया ४७ इसके पीछे आपकेशूरवीरअत्य-न्त क्रोधयुक्त उन महाभाग कवचधारी दोनों कृष्ण और अर्जुनको देखकर सन्मुख गये वह आश्चर्य्य सा हुआ ४८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरितृतीयोऽध्यायः १०३॥

एकसौचारका अध्याय ॥

संजय बोले कि आपके शूर वीर वृष्णी अन्धक और कौरवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण और अर्जुन को प्रथम सन्मुख देखकर मारनेके इच्छा वान शीघ्रता करने वाले हुये उसी प्रकार अर्जुनने भी दूसरोंको १ हे राजा सुवर्ण से जटित व्याघ्र चर्मसे मढ़े हुये शब्दाय मान अग्नि कान्तिके समान बड़े २ रथों से सब दिशाओं को प्रकाशित करते २ सुनहरी पुंखदुःखसे देखने के योग्य बाण क्रोध रूप सर्पोंके समान बड़े शब्दोंको करने वाले धनुषों समेत ३ वह रथियों में श्रेष्ठ भूरि-श्रवा, शल्य, कर्ण, वृषसेन, जयद्रथ, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, यह सब महारथी सुवर्ण मयी चन्द्रमावाले व्याघ्र चर्मकी झूलोंसे संयुक्त घोड़ों के द्वारा आकाश को स्पर्श करते दशों दिशाओंको प्रकाशों से शोभायमान करनेवाले हुये ५ उन कवच धारी अत्यन्त क्रोध युक्त वीरोंने बादलों के समूहों के समान शब्दाय मान रथोंकेसाथ तीक्ष्ण बाणोंसेअर्जुनकोदशों दिशाओंको ढकदिया६ तबकौलूतदेशी शीघ्रगामी अपूर्व घोड़ेउन महारथियों को सवार करते दशोंदिशा-ओंको प्रकाशित करते अत्यन्त शोभाय मानहुये ७ हे राजा आजा-नेय प्रकारवाले बड़े वेगवान् नानाप्रकारके देशोंमें उत्पन्नहोनेवाले पहाड़ी नदीज और सिंधदेशी उत्तमघोड़ोंकी सवारीसे ८ आपकेपुत्र को चाहतेहुये उत्तम शूरवीर लोगशीघ्रही अर्जुन के रथके सन्मुख गये ९ और वहां उनपुरुषोत्तमोंने बड़ेशंखोंको लेकर बजायाउनके शब्दोंने समुद्रोंसमेत पृथ्वी और आकाशको व्याप्त करदिया१० उसी प्रकार सब देवताओंमें बड़ेश्रेष्ठ वासुदेवजी और अर्जुननेभी अपने शंखोंको बजाया ११ अर्जुनने देवदत्तको केशवजीने पांचजन्य को बजाया अर्जुन के बजायेहुये देवदत्त शंख के शब्दने १२ पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओंको व्याप्तकरदिया उसीप्रकार वासुदेवजी के बजायेहुये पांचजन्य शंखनेभी १३ सबशब्दों को उल्लंघनकर पृथ्वी और आकाशको पूर्णकिया हे महाराज भयभीतों के भय के

उत्पन्न करनेवाले शूरोंकी प्रसन्नता के बढ़ाने वाले भयकारी कठोर शब्दके वर्त्तमानहोने व भेरी झर्झर समेत ढोलोंके बजने १४।१५ और बहुत प्रकार से मृदंगोंके बजने पर दुर्य्योधन का अभीष्टचाहनेवाले बुलायेहुये १६ उस शब्दके नसहने वाले क्रोधयुक्त बड़े धनुषधारी अपनी सेनासे रक्षित नाना देशोंके राजा १७ उन क्रोध युक्त महा रथी राजाओं ने बड़े शंखों को बजाया जो कि केशवजी और अर्जुन के कर्म पर अपना कर्म करने के अभिलाषीथे १८ हे समर्थ आपकी वह सेना शंखसे चलायमान होकर व्याकुल हुई जिसके कि रथ हाथी और घोड़े व्याकुलतासे पूर्णथे १९ वह सेना शूरबीरों से घायल शंखसे शब्दायमान ऐसे महाव्याकुल हुई जैसे कि परस्पर बायुकी टक्करोंसे शब्दायमान बादलोंसे आकाश शब्दायमान होताहै २० हे राजा उसबड़े शब्दने सब दिशाओंको शब्दायमान करके उस सेनाको ऐसे भयभीत किया जैसे कि प्रलयकाल का बायु भयभीत करता है २१ उसके पीछे दुर्य्योधन और उन आठों महारथियोंने जयद्रथ की रक्षाके निमित्त अर्जुनको चारों ओर से घेरलिया २२ तदनन्तर अश्वत्थामाने तिहत्तरबाणोंसे बासुदेवजी को तीन भल्लसे अर्जुनको और पांच बाणों से ध्वजासमेत घोड़ोंको ताड़ित किया २३ श्रीकृष्णजीके घायलहोने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने प्रसक्त नाम छःसौ बाणोंसे उन अश्वत्थामाजी को घायल किया २४ फिर पराक्रमीने दशबाणोंसे कर्णको तीनबाणोंसे वृषसेन को घायल करके शल्यकी मुष्टिको बाण और धनुष समेत काटा २५ फिर शल्यने दूसरे धनुष को लेकर अर्जुनको घायल किया भूरिश्रवाने सुनहरी पुंख वाले तीक्ष्ण धारवाले तीन बाणों से २६ कर्णने बत्तीस बाणोंसे वृष सेनने सात बाणों से जयद्रथ ने तिहत्तर बाणों से कृपाचार्य्यने दश बाणों से २७ शल्यने दश बाणसे युद्धमें अर्जुन को घायल किया उसके पीछे अश्वत्थामाने साठि बाणोंसे अर्जुनको आच्छादित करदिया २८ बासुदेवजी को बीस बाण से फिर अर्जुनको पांच बाण से घायल किया तब अपनी हस्त लाघव-

ताको दिखाते हंसते हुये श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णजी को सारथी रखने वाले नरोत्तम अर्जुनने २६ उन सबको इस प्रकारसे घायल किया कि कर्णको बारह बाणसे घायल करके वृषसेनको तीनबाण से घायल किया और शल्यके धनुष समेत मुष्टिके स्थानको बाणसमेत काटा भूरिश्रवाको तीन बाणोंसे घायलकर शल्यको दशबाणों से घायलकिया ३०।३१ अग्निकी ज्वालाके समानरूप तीक्ष्ण आठ बाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया कृपाचार्य्यको पच्चीस बाणसे जयद्रथको सौबाणोंसे ३२ फिर उसने अश्वत्थामाको सत्तरबाणोंसे घायलकिया तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त भूरिश्रवाने श्रीकृष्णजी के चाबुकको काटा ३३ और अर्जुनको भी तिहत्तर बाणोंसे घायल किया इसकेपीछे अर्जुनने सैकड़ों तीक्ष्णबाणों से उन सब शत्रुओं को ३४ शीघ्रतासे ऐसे हटाया जैसे कि क्रोधयुक्त वायु बड़े२बादलों को हटाता है ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिचतुर्थोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय मेरे पुत्रोंकी और पांडवों की अनेक रूपोंको शोभायमान ध्वजाओंको मुझसे वर्णनकरो१संजयबोले कि उन महात्माओंकीबहुतसे रूपोंकी ध्वजाओंको सुनो मैं उनको रूप रंगसमेत वर्णन करताहूं २ हेमहाराज उन उत्तम रथियोंके रथोंपर नानाप्रकारकी अग्निके समान प्रकाशित ध्वजा दिखाईदीं ३ वह ध्वजा सुवर्णमयी सुवर्णहीके पीड़ और स्वर्ण निर्मित मालाओंसे ऐसे अलंकृत थीं जैसे कि सुवर्णके बड़े पर्व्वत के बड़े २ स्वर्णमयी शिखर होतेहैं ४ अनेक रंग रखने वाली अत्यन्त शोभायमानबहुत से रूपोंकी ध्वजायेंथीं उन्होंकी वह ध्वजा चारों ओर पताकाओं से संयुक्तथीं ५ वह नाना प्रकार की ध्वजा श्वेतपताकाओं से सब ओर को संयुक्त होकर अत्यन्त शोभायमान हुई उसके पीछे वायुसे चलायमान वह पताका ६ युद्धभूमि में प्रकाशित और नृत्य करने

वाली दिखाई पड़ी हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इन्द्र बज्र के समान रंग रूपसे युक्त कंपायमान उन पताकाओंने ७ रथियों के बड़े २ रथोंको शोभायमान किया भयकारी ध्वनिसे युक्त हनुमान्‌जी का चिह्न रखने वाली सिंहलांगूलनाम भयकारी अर्जुनकी ध्वजा८ युद्धमें दिखाई पड़ी हे राजा हनुमान्‌जी से युक्त पताकाओं से अलंकृत ९ अर्जुनकी उस ध्वजाने उस सब सेनाको भयभीत किया हे भरतबंशी उसी प्रकार अश्वत्थामा की सिंहलांगूल १० नाम ध्वजा की नोकको हमने देखा वह ध्वजा भी बाल सूर्य्य के समान प्रकाशित सुनहरी बायु से कंपायमान इन्द्रकी ध्वजाके समान प्रकाशितथी ११ और कौरवीय राजाओंका प्रसन्न करने वाला अश्वत्थामा का ऊंचाचिह्नथा और कर्णकी स्वर्णमयी ध्वजा हाथीकी कक्षाकाचिह्न रखने वाली थी १२ हे महाराज युद्धमें वह ध्वजा आकाश को पूर्ण करतीहुई दिखाई पड़ी और कर्ण की ध्वजापर माला रखने वाली स्वर्ण मयी पताका १३ बायुसे चलायमान रथके ऊपर नाचतीहुई सी दिखाई पड़ी फिर पांडवोंके आचार्य्य तपस्वीब्राह्मण १४ गौतम कृपाचार्य्य की अच्छी अलंकृत ध्वजा गोवृष का चिह्न रखनेवाली थी हे राजा वह ज्ञानी उस ध्वजा से ऐसा शोभायमान हुआ १५ जैसेकि त्रिपुरके मारनेवाले शिवजीका अत्यन्त प्रकाशित रथनन्दीगणसे शोभायमान होताहै और वृषसेनका सुनहरी मोर मणिऔर रत्नोंसे जटित १६ सेनाके आगे शोभा करता और बोलता हुआ सा नियत हुआ उस महात्माका रथ उस मोर से ऐसा प्रकाशमान हुआ १७ हे महाराज जैसे कि अत्यन्ततम प्रकाशमान मोर से स्वामिकार्त्तिकजीका रथ शोभित होताहै मद्रदेशके राजा शल्यकी ध्वजा के ऊपर प्रज्वलित अग्निके समान प्रकाशित १८ स्वर्णमयी अनूपम मंगल रूप सीताको देखा हे श्रेष्ठ वह सीता उसके रथपर नियत होकर ऐसी प्रकाशमान हुई १९ जैसे कि सब बीजों से संयुक्त शोभासे भरी हुई लक्ष्मी समेत सीता प्रकाशित होती है सिंधके राजाकी ध्वजापर बराह प्रकाशमान था २० और अरुण

सूर्य्य के समान प्रकाशित होकर सुनहरी जालोंसे अलंकृत जयद्रथ की ध्वजाथी वह जयद्रथ उस ध्वजासे ऐसा शोभायमान हुआ २१ जैसे कि पूर्व्व समयमें देवासुरोंके युद्धमें पूषा शोभायमान हुआ था और यज्ञके अभ्यासी बुद्धिमान् सोमदत्तकी ध्वजा में यज्ञस्तंभका चिह्नथा २२ वह ध्वजा सूर्य्यके समान प्रकाशमान होकर जिसमें चन्द्रमा रूप दिखाई देताहै हे राजा वह सोमदत्त का स्वर्णमयी यज्ञस्तंभ ऐसा प्रकाशमान था२३ जैसे कि राजसूययज्ञमें बहुतऊंचा यूप होताहै हे महाराज उस शल्यकी ध्वजामें बड़ा हाथी भी प्रकाशमान था २४ वह ध्वजा स्वर्ण से जटित अंगवाले मोरोंसे शोभायमान थी हे भरत वृषियोंमें श्रेष्ठ उस ध्वजाने आपकी सेनाको ऐसे शोभायुक्तकिया २५ जैसे कि देवराज इन्द्रकी सेनाको बड़ाश्वेत ऐरावत हाथी शोभित करताहै आपके पुत्र राजाकी ध्वजाका हाथी मणियों से जटित सुवर्ण से खचित २६ सैंकड़ों क्षुद्र घंटिकाओंसे शब्दायमान अपूर्व्व उत्तम रथपर शोभायमान था वह ध्वजा भी अत्यन्त शोभायमान हुई तब कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्य्योधनउस अपनीध्वजाओं समेत युद्ध करनेलगा२७आपकी सेनाकी उनउत्तम ऊंची प्रलयकालके सूर्य्यके समानप्रकाशित नव ध्वजाओंने आपकी सेना को अत्यन्त प्रकाशित किया और हनुमान्‌जी से युक्त दशवीं ध्वजा एक अर्जुनकीथी २८।२९ उसी ध्वजासे अर्जुन ऐसे शोभाय मान हुआ जैसे कि अग्नि से हिमालय पर्व्वत शोभितहोता है उस के पीछे शत्रु संतापी महारथियोंने अपूर्व्व उज्ज्वल बड़ेबड़े ३० धनुषों को अर्जुन के लिये हाथोंमें लिया हे राजा उसी प्रकार आपकी दुर्मतितामें दिव्यकर्मा शत्रुहंता अर्जुन ने गांडीवधनुष को लिया फिर आपके ही अपराध से अनेक राजा मारे गये ३१।३२ और जिन राजाओंको हाथीघोड़े और रथों समेत नाना देशोंसे बुलवाया उन परस्पर गर्जने वाले लोगोंकी बढ़ीचढ़ाई हुई ३३ दुर्य्योधनादिक धृतराष्ट्र के पुत्रोंके साथ पांडवोंमें श्रेष्ठ अर्जुन का बड़ा कठिन युद्ध हुआ श्रीकृष्णजी को सारथी रखने वाले अर्जुनने वहां

बड़ा अपूर्व कर्म किया ३४ कि जो अकेलाही निर्भयके समानबहुत से बड़े २ शूरवीरों के सन्मुख युद्ध करने वालाहुआ वह महाबाहु गांडीव धनुषको चलायमान करता शोभायमान हुआ ३५ और जयद्रथके मारनेका अभिलाषी हुआ शत्रुके तपाने वाले नरोत्तम अर्जुन ने वहां पर छोड़ेहुये हजारों बाणोंसे ३६ आपके शूरबीरोंको दृष्टिसे अलक्षकर दिया इसके पीछे उन सब नरोत्तम महारथियों ने भी ३७ युद्धमें बाणोंके समूहों से अर्जुनको चारों ओरसे ढंकदिया उन नरोत्तमों से कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन के ढंक जाने पर उनकी सेनाओंके बड़े शब्द प्रकट हुये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचमोऽध्यायः ॥ १०५ ॥

एकसौछःका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय जयद्रथसे अर्जुन के सन्मुख होनेपर द्रोणाचार्य्य के सन्मुख बर्त्तमान पांचालों ने कौरवों के साथक्या किया १ संजय बोले हे महाराज तीसरे पहरको रोम हर्षणकरने वाले युद्ध में पांचाल और कौरवों के द्यूत रूप द्रोणाचार्य्यजी बर्त्तमान हुये २ हे श्रेष्ठ अत्यन्त प्रसन्न मन द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी और गर्जते हुये पांचालों ने बाणों की बर्षाको छोड़ा ३ इसके पीछे उन पांचाल और कौरवों का युद्ध अत्यन्त कठिन अपूर्व भयकारी देवासुरों के युद्धके समान हुआ ४ उस सेनाके छिन्नभिन्न करनेके अभिलाषी पांडवों समेत पांचालों ने द्रोणाचार्य्य के रथको पाकर बड़े अस्त्रोंको दिखलाया ५ रथ में नियत रथी सामान्य तीव्रतासे युक्त होकर पृथ्वीको कंपित करते हुये द्रोणाचार्य्य के रथके समीप बर्त्तमान हुये ६ केकय देशियोंका महारथी बृहत्क्षत्र इन्द्रबज्रके समान तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करता हुआ उसके सन्मुख गया ७ फिर बड़ायशस्वी क्षेम धूर्त्त हजारों तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ता शीघ्रही उसके सन्मुख गया ८ बड़े बलसे उदय होने वाले चंदेरी देशियों में श्रेष्ठ धृष्टकेतु भी ऐसे शीघ्रता से सन्मुख गया जैसे

कि देवेन्द्र संवर दैत्यके पास गयाथा ६ अत्यन्त खुलाहुआ मुख कालके समान अकस्मात् आतेहुये उस धृष्टकेतु के सन्मुख बड़ा धनुषधारी शूर धन्वा शीघ्रता से गया १० इसके पीछे पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने विजयाभिलाषी सन्मुखतामें नियत हुये महाराज युधिष्ठिरको सेना समेत रोका ११ हे प्रभु आपका पुत्र पराक्रमी विकर्ण उस युद्ध कुशल बड़े पराक्रमी आते हुये नकुल के सन्मुख हुआ १२ शत्रुविजयी दुर्मुखने तीक्ष्ण चलने वाले हजारों बाणोंसे उसी प्रकार आतेहुये सहदेवको ढकदिया १३ अत्यन्त तीक्ष्ण धार वाले बाणोंसे वारंवार कंपायमान करते व्याघ्रदत्त ने नरोत्तम सात्यकीको रोका १४ सोमदत्तने उत्तम बाणों को छोड़ते अत्यन्तक्रोध युक्त नरोत्तम उत्तम रथी द्रौपदी के पुत्रों को रोका १५ तब भयकारी रूप बड़े उत्कट महा रथी आर्षश्रृङ्गीने उस क्रोधयुक्त आते हुये भीमसेन को रोका १६ हेराजा युद्धभूमिमें उन दोनों नर और राक्षस का ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसा कि पूर्व्व समय में रामऔर रावण का हुआथा १७ हे भरतवंशी इसके पीछे भरतवंशियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ने झुकी गांठवाले नव्वे बाणों से द्रोणाचार्य्य को सब मर्मोंपर घायल किया १८ तब यशस्वी युधिष्ठिर से घायल क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य ने पच्चीस बाणोंसे उसको छातीपर घायल करके १९ सब धनुषधारियों के देखते उसको घोड़े ध्वजा और सारथी समेत बीस बाणों से वेधा २० फिर हस्तलाघवता दिखलाते धर्मात्मा पांडवने द्रोणाचार्य्य के उन छोड़े हुये बाणोंको अपने बाणों की वर्षासे हटाया २१ इसके पीछे अत्यन्त क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य ने युद्ध भूमिके बीच उस धर्मात्मा धर्मराज के धनुषको काटा २२ और बड़ी शीघ्रता से हजारों बाणों के द्वारा इस टूटे धनुष वाले राजा युधिष्ठिर को सब ओरसे आच्छादित किया २३ सब जीवधारियों ने भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के बाणों से ढंके हुये राजा युधिष्ठिरको देखकर मृतक रूप माना २४ हे महाराज इसीप्रकार बहुत से मनुष्यों ने इस मुख फेरने वाले राजाको देखकर माना कि

यह राजा इस महात्मा ब्राह्मणके हाथसे मारागया २५ फिर बड़ी आपत्तिमें पड़े हुये उस धर्मराज युधिष्ठिर ने युद्ध में द्रोणाचार्य्य के काटे हुये उस धनुषको छोड़कर २६ दूसरे प्रकाशमान अत्यन्त दिव्य तीव्र धनुषको लेकर उस बीरने द्रोणाचार्य्य के उन चलायमान हजारों बाणों को २७ युद्धमें काटा यह आश्चर्य्य सा हुआ और क्रोध से रक्तनेत्र वाले युधिष्ठिर ने उन बाणोंको काटकर२८ युद्ध में पहाड़ोंको भी विदीर्ण करने वाली सुवर्ण दंड युक्त आठघंटे रखने वाली महा भयकारी भयानक शक्तिको हाथमेंलिया २६ हे भरतबंशी वह पराक्रमी प्रसन्न मुख उस शक्तिको फेंककर सब जीव धारियोंको भयभीत करता हुआ बड़े बलसे गर्जा ३० युद्धमें धर्मराज की उठाई शक्तिको देखकर सब जीवधारी अकस्मात् बोले कि द्रोणाचार्य्य का कल्याणहो ३१ राजाकी भुजासे छोड़ीहुई कांचलीसे निकले हुये सर्पकी समान वह शक्ति आकाश दिशाबिदिशाओंको प्रकाशमान करती प्रकाशित मुख वाले सर्प की समान द्रोणाचार्य्यके पास पहुंची ३२हेराजा इसके पीछे अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने उस अकस्मात् गिरती हुई शक्ति को देख करब्रह्मास्त्रको प्रकट किया वह अस्त्र उस भयकारी दर्शन वाली शक्तिको अत्यन्त भस्म करके ३३।३४ शीघ्रता से यशस्वी धर्मराज के रथ पर गया हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे बड़े ज्ञानी राजा युधिष्ठिर नेद्रोणाचार्य्य के चलाये हुये उस अस्त्रको३५ब्रह्म अस्त्रसेही शान्त किया फिर युद्धमें द्रोणाचार्य्य को पांच बाणों से घायल करके ३६ क्षुरप्रनाम अत्यन्त तीक्ष्ण बाणसे उनके बड़े धनुष को काटा तब क्षत्रियों के मर्द्दन करने वाले द्रोणाचार्य्य ने उस टूटे हुये धनुषको डालकर ३७ युधिष्ठिर के ऊपर अकस्मात् गदाको फेंका युधिष्ठिर ने उस अकस्मात् गिरती हुई गदाको देखकर ३८ बड़े क्रोधयुक्त होकर गदाको हीलिया और लेकर फेंका हे शत्रुसंतापी वह अकस्मात् छोड़ी हुई दोनों की दोनों गदा परस्पर मिलकर ३६ घिसावट से अग्नियों को छोड़कर पृथ्वी पर गिर पड़ीं हे श्रेष्ठ उस

केपीछे अत्यन्त क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य ने धर्मराज के चारों घोड़ोंको बड़े तीव्रधार उत्तम बाणोंसे मारा४० और इन्द्र की ध्वजाके समान धनुष को एक भल्लसे काटा ४१ एक बाणसे ध्वजा को काट कर तीन बाणों से युधिष्ठिर को पीड़ामान् किया हे भरतवंशियों मेंश्रेष्ठ फिर ऊपर को भुजा रखनेवाला अशस्त्र राजा युधिष्ठिर मृतकघोड़े वाले रथ से शीघ्रही कूदकर खड़ा हुआ उसको विरथ और अधिकतर निश्शस्त्र देखकर ४२ । ४३ द्रोणाचार्य्यने शत्रुओंको और सब सेनाओं को अत्यन्त मोहित किया और इसके पीछे फिरतीव्र व्रती द्रोणाचार्य्य तीक्ष्ण बाणोंकेसमूहोंको छोड़ते४४ राजाकेसन्मुख ऐसे दौड़े जैसेकि गर्जताहुआ सिंहमृगके सन्मुख जाता है शत्रुओंके मारनेवाले द्रोणाचार्य्यसे पराजितहुये उस युधिष्ठिरको देखकर४५ अकस्मात् पांडवोंके हायहाय शब्द प्रकटहुये हे श्रेष्ठ फिर पांडवों कीओरसे ऐसाशब्दभीहुआ कि भारद्वाजके हाथसे राजा मारागया ४६ हेभरतवंशी इसके पीछे कुन्तीका पुत्र राजायुधिष्ठिर शीघ्रही सहदेवके रथपर चढ़कर शीघ्रगामी घोड़ोंकेद्वारा दूर हटगया ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिषष्ठो ऽध्यायः १०६ ॥

एकसौसातका अध्याय॥

संजयबोले कि हेमहाराज क्षेमधूर्त्तीने उसदृढ़ पराक्रमीकेकयदेशी आतेहुये बृहत्क्षत्रको बाणोंसे छातीपर घायलकिया १ और द्रोणाचार्य्यकी सेनाको छिन्नभिन्न करनेके अभिलाषी शीघ्रता करनेवाले राजा बृहत्क्षत्रने उसको नब्बेबाणों से व्यथित किया २ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्तीने महात्मा बृहत्क्षत्र के धनुषको तीक्ष्ण पीतवर्णके भल्लसे काटा ३ फिर सब धनुषधारियोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ इस बृहत्क्षत्रको जिसकाकि धनुष टूटगयाथा गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से शीघ्रही युद्धमें घायल किया ४ फिर हंसतेहुये बृहत्क्षत्रने दूसरे धनुषको लेकर महारथी क्षेमधूर्त्तीको घोड़े सारथी और रथसे रहित करदिया ५ इसकेपीछे तीक्ष्ण धार पीतरंगवाले दूसरे भल्लसेप्रका-

कुंडल रखनेवाले राजा के शिर को शरीर से अलग किया ६ वह घुंघुरवाले बालोंवाला अकस्मात कटाहुआ उस का कुंडल समेत शिर पृथ्वीको पाकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि आकाशसे गिरा हुआ ताराहोताहै ७ फिर प्रसन्न चित्त महारथी वृहत्क्षत्र युद्ध में उसको मारकर अर्जुनके कारण से आपकी सेनापर अकस्मात दौड़ा ८ हे भरतबंशी पराक्रमी बड़े धनुषधारी बीर धन्वाने द्रोणाचार्य्य के निमित्त इस प्रकार जातेहुये धृष्टकेतु को रोका ६ बाण रूप डाढ़रखनेवाले बेगवान उन दोनोंने परस्पर सन्मुख होकर हजारों बाणोंसे एकने दूसरे को घायलकिया १० वह दोनोंनरोत्तम परस्पर में ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि महाबन में बडे मतवाले गजराज लड़तेहैं ११ अर्थात् वह दोनों बड़े पराक्रमीपरस्पर मारनेको अभिलाषासे ऐसे युद्ध करतेहुये जैसे कि क्रोधयुक्त दोशार्दूल पहाड़की गन्दरा को पाकर लड़तेहैं १२ हे राजा वह कठिन युद्ध देखने के योग्य सिद्ध चारणोंके समूहोंके आश्चर्यों से अपूर्वही देखनेके योग्य हुआ १३ इसके पीछे क्रोधयुक्तहंसते हुये बीरधन्वाने धृष्टकेतुके धनुष को भल्लसे दो खंड कर दिया १४ महारथी राजा चन्देरी ने उस टूटे धनुषको छोड़कर सुनहरी दंडवाली लोहेकी बड़ी शक्तिको हाथमें लिया १५ हे राजा फिर उस सावधानने उस बड़ी पराक्रमवाली शक्तीको दोनों हाथों से अकस्मात बीरधन्वा के रथपर फेंका १६ तब उस बीरोंकी मारने वाली शक्तीसे अत्यन्त घायल और टूटे हृदय वाला बीरधन्वा शीघ्रही रथसे पृथ्वीपर गिरा १७ हे समर्थ त्रिगर्त्त देशियोंके उस महारथी बीरके मरनेपर आपकी सेना पांडवोंकी चढ़ाई से चारों ओर को छिन्न भिन्न हुई १८ उसके पीछे दुर्मुखने साठबाणों को सहदेवपर छोड़ा और युद्धमें पांडव सहदेवको घुड़कताहुआबड़ेशब्द से गर्जा १६ इसके पीछे हंसतेहुये क्रोधयुक्त भाई सहदेवने तीक्ष्ण बाणोंसे उसआतेहुये भाई दुर्मुख को घायल किया २० फिर दुर्मुखने युद्धमें उस बेगवान महाबली सहदेव को देखकर नवबाणों

से घायल किया २१ महाबली सहदेवने भल्लसे दुर्मुख की ध्वजा को काटकर तीक्ष्णधार वाले चार बाणों से चारोंघोड़ोंको मारा२२ फिर पीतरंग दूसरे तीक्ष्ण भल्लसे सारथी के शरीर से प्रकाशित कुंडल रखने वाले शिरको काटा २३ इसके पीछे सहदेवने क्षुरप्र-नाम तीक्ष्णबाणसे युद्धमें उसके बड़े धनुषको काटकर पांचबाणोंसे उसको भी घायल किया २४ हे भरतवंशी धृतराष्ट्र तब बिमन दुखी दुर्मुख उस मृतक घोड़ेवाले रथको त्याग करके निरमित्रके रथपर सवार हुआ २५ इसके पीछे शत्रुओं के संतापी क्रोधयुक्त सहदेव ने बड़े युद्धमें सेनाके भीतर भल्लसे निरमित्रको घायल किया २६ वह त्रिगर्त के राजाका पुत्र निरमित्र अपनी सेनाको दुःख युक्त करता रथके बैठने के स्थान से पृथ्वीपर गिर पड़ा २७ महाबाहु सहदेव उस को मारकर ऐसे अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि दशरथात्मज श्री रामचन्द्रजी बड़े पराक्रमी खर राक्षसको मारकर शोभितहुयेथे २८ हे राजा उस महारथी राजकुमार निर-मित्र को मृतक देखकर त्रिगर्त्त देशियों में बड़ा हाहाकार हुआ२९ फिर नकुलने आपके पुत्र बड़े नेत्रवाले विकर्ण को भी एक मुहूर्त मात्रमें विजय किया वह भी सबको आश्चर्य्यसा हुआ ३० तब व्याघ्रदत्तने सेनाके मध्यमें गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे सात्यकी को घोड़े सारथी और ध्वजा समेत दृष्टिसे गुप्त करदिया ३१ शूर सात्य-कीने हस्तलाघवताके समान उन बाणोंको रोककर अपने बाणोंसे व्याघ्रदत्तको घोड़े ध्वजा और सारथी समेत रथसे गिराया ३२ हे प्रभु उस मगधके राज कुमार के मरने पर युद्धमें कुशल मगधदेशी उस सात्यकीके सन्मुखगये ३३ बाणोंकोछोड़ते हजारों तोमर भिंड-पाल प्रास मुद्गर औरमूशलोंकोछोड़तेहुये शूरोंनेयुद्धमें दुर्मदयादव सात्यकी से युद्धकिया हंसतेहुये पुरुषोत्तम पराक्रमीयुद्ध दुर्मद सा-त्यकीनेउनसबको ३५बड़ी सुगमतासे विजय किया हेसमर्थ मरनेसे बाकी बचेहुये चारोंओर से भागते हुये मगधदेशियों को देखकर ३६ सात्यकी के बाणों से पीड़ामान आपकी सेना भिन्नभिन्न होगई

मधु देशियों में श्रेष्ठ सात्यकी युद्धमें आपकी सेनाको मारकर ३७ बड़ा यशस्वी उत्तम धनुष को चलायमान करता अत्यन्त शोभाय-मान हुआ हे राजा महात्मा सात्यकी के हाथ से छिन्न भिन्न ३८ उस लम्बी भुजा वालेसे भयभीत वह सेना युद्धकेनिमित्त सन्मुख-तामें बर्त्तमान नहीं रही इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य अकस्मात दोनों नेत्रोंको उघाड़कर आपही उस सत्य कर्मी सात्य-की के सन्मुख गये ३९॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिसप्तमोऽध्यायः १०७॥

एकसौआठका अध्याय॥

संजय बोले कि बड़ेयशवान् सौमदत्त ने बड़े धनुषधारी द्रौपदीके पुत्रोंको पांच २ बाणोंसे घायल करके फिर प्रत्येक को सातसात बाणोंसेछेदा १ हे समर्थ उसभयंकारी सौमदत्तसे अकस्मात् अत्यन्त पीड़ामान औरअचेत द्रौपदीकेपुत्रोंने युद्धमें करनेकेयोग्य किसी कर्म कोभी नहीं जाना २ शत्रुका पराजय करने वाला नकुलकापुत्र सता-नीक नरोत्तम सौमदत्तको दो बाणोंसे घायल करके बड़ी प्रसन्नता सेगर्जा ३ इसीप्रकार युद्धमें कुशल अन्यलोगोंने भी युद्धमें तीन २ बाणोंसे शीघ्रही उसक्रोधयुक्त सौमदत्तको घायल किया ४ हे महा-राज उसबड़ेयशस्वी सौमदत्तने उनकेऊपर पांचबाणोंको फेंका और प्रत्येकको एक २ बाणसे हृदय पर घायल किया ५ इसकेपीछे उस महात्माके बाणोंसे बहुत घायल उन पांचों भाइयोंने युद्धमें उसको घेरकर शायकों से अत्यन्त घायल किया ६ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुन के पुत्रने तीक्ष्ण धारवाले चार बाणों से उसके घोड़ों को यमलोकमें पहुंचाया ७ भीमसेन का पुत्र उस महात्मा सौम-दत्तके धनुषको काटकर बड़े बेग वाले शब्दको गर्जा और तीक्ष्ण बाणों से घायल किया ८ युधिष्ठिर के पुत्रने उसकी ध्वजाको काट कर पृथ्वी पर गिराया फिर नकुल के पुत्रने सारथी को रथके बैठने के स्थानसे गिराया ९ और सहदेवके पुत्रने अपने भाइयों

से मुख फेरनेवाला जानकर क्षुरप्रनाम बाणसे महात्मा के शिरको काटा १० उसका शिर सुवर्णसे अलंकृत बालार्कके समान प्रकाशित युद्ध भूमिको सुशोभित करता पृथ्वीपर गिरपड़ा ११ हेराजामहात्मा सोमदत्तके कटेहुये उस शिरको देखकर आपकी सेनाके लोग भय- भीत होकर अनेक प्रकारसे भागे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अलंवुष महाबली भीमसेन से युद्धमें ऐसे युद्ध करनेवाला हुआ जैसे कि रावण का पुत्र मेघनाद लक्ष्मणजी के साथ करनेवाला हुआ था १२ उन दोनों नर और राक्षसको युद्धमें कठिन युद्ध करने वाला देखकर सब जीवों को आश्चर्य्य पूर्व्वक बड़ी प्रसन्नता प्राप्तहुई १४ हे राजा इस के पीछे हंसते हुये भीमसेन ने तीक्ष्ण धार वाले नवबाणों से उस क्रोधयुक्त राक्षसाधिप अलंवुप राक्षसको घायल किया १५ इसके अनन्तर युद्धमें घायल हुआ वह राक्षस भयकारी शब्दको करके भीमसेन के सन्मुख दौड़ा और जो उसके आगे पीछे रहनेवाले थे वे भी दौड़े १६ उस राक्षस ने युद्धमें गुप्त ग्रन्थी वाले पांचबाणोंसे भीमसेन को घायल करके शीघ्रही भी- मसेनके तीस रथोंको मारा १७ फिर चारसौ शूरवीरों को मारकर बाण से भीमसेन को घायल किया इस प्रकार उस राक्षसके हाथ से अत्यन्त घायल वह महाबली भीमसेन १८ मूर्च्छासे युक्त हो- कर रथके बैठने के स्थान पर बैठगया इसके पीछे महाक्रोध भरे वायुपुत्र भीमसेन ने १९ बोझेके साधनेवाले भयकारी उत्तम धनुषको खैंचकर तीक्ष्ण बाणों से अलंवुपकोसब ओर से पीड़ामान किया २० हे राजानीले बादलों के समान वह राक्षस बहुत बाणों से घायलहोकरफूलेहुये किंशुकके समान शोभायमान हुआ २१ युद्धमें भीमसेन के धनुषसे गिरेहुये बाणोंसे घायल हुआ राक्षस महात्मा पांडव के हाथ से भाई के मरने को स्मरण करता २२ भयानक रूप बनाकर भीमसेन से बोला हेकुन्तीके बेटे अब युद्धमें नियत होकर मेरे पराक्रम को देख २३ हे दुर्बुद्धी वह युद्ध मेरे पीछे जारी हुआ था जिसमें राक्षसोंमें श्रेष्ठ बड़ा पराक्रमी वकनाम मेरा

भाई तेरे हाथसे मारा गया २४ इसके पीछे अन्तर्द्धान होजाने वाले राक्षसने बाणोंकी बड़ी बर्षासे उस भीमसेन को अत्यन्त घायल किया २५ तब राक्षसके गुप्तहोने पर भीमसेन ने गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे आकाश को पूर्ण कर दिया २६ भीमसेन के हाथ से घायल वह नीच राक्षस क्षण भरही में रथ पर चढ़कर पृथ्वी पर आया और अकस्मात् आकाशको गया २७ बादलके समान शब्द करतेहुये उस राक्षसने छोटे और बड़े नाना प्रकार के अनेक रूपों को धारण किया अर्थात् कभी छोटा कभी लम्बा और कभी मोटा होजाता था २८ इसी प्रकार नाना प्रकार के बचनों को भी चारोंओर से बोला और आकाश से बाणोंकीहजारोंधारा गिरीं२९ शक्ति,कणप,प्रास,शूल, पट्टिश,तोमर,शतघ्नी, परिघा,भिण्डिपाल, फरसा ३० शिलाखड्ग,अगुड़,दुधाराखड्ग,बज्र, यह सब आकाश से गिरे राक्षस की छोड़ीहुई अत्यन्त भयकारी शस्त्रोंकी बर्षाने ३१ युद्ध में जाकर पांडवकी सेनाके मनुष्योंको मारा उसयुद्धमें पांडवीसेनाओं के हाथी नाशहुये ३२ हे राजा इसी प्रकार अनेक घोड़े और बहुत से पत्तिलोगभी नाशको प्राप्तहुये और उसके बाणोंसे घायल रथ सवार रथों से गिरपड़े ३३ रुधिर रूपी जल रथ रूपी भंवर छत्र रूप हंसरखने वाली हाथी रूप ग्राह और भुजा रूपसर्पों से ब्याकुल ३४ राक्षसोंके समूहोंसे ब्याकुल चंदेरी सृञ्जय और पांचाल देशियोंकी बहुधा बहाने वाली नदी जारी होगई ३५ तब अत्यन्त ब्याकुल पांडवोंने उस प्रकार निर्भयके समान घूमने वाले राक्षसको और उसके पराक्रम को देखा ३६ फिर आपकी सेना में बड़ी प्रसन्नता हुई और बाजोंके बड़ेभारी भयकारी रोमहर्षण करने वाले शब्दजारीहुये ३७ पांडवने आपके भयकारी शब्दों को सुनकर ऐसे नहीं सहाजैसे कि हथेली से किये हुये शब्दको सर्प नहीं सह सक्ता ३८ इसके पीछे क्रोधसे रक्तनेत्रज्वलितअग्निके समान बायुपुत्र भीमसेनने आपही त्वष्टा देवताके समान त्वाष्ट्र अस्त्रको धनुष पर चढ़ाया ३९ उस अस्त्रसे हजारों बाण चारोंओरको प्रकट

हुये उन बाणोंसे आपकी सेनाके अत्यन्त भागने पर ४० युद्धमें भीमसेन से चलाये हुये उस अस्त्रने राक्षस की बड़ी मायाको नाश करके पीड़ामान किया ४१ भीमसेन के हाथसे बहुत घायल हुआ वह राक्षस युद्धमें भीमसेनको त्याग करके द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलागया ४२ हे राजा महात्मा भीमसेन के हाथ से उसराक्षसाधिपके विजयहोने पर पांडवोंने अपने सिंहनादों से सब दिशाओं को शब्दायमानकिया ४३ उन अत्यन्त प्रसन्न मन वालोंने वायुके पुत्रमहाबली भीमसेनकी ऐसी प्रशंसाकरी जैसे कि मरुद्गण नाम देवतानेयुद्धमेंप्रह्लादको विजयकरके इन्द्रकी स्तुति करीथी ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिगणतोपरिअष्टमोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनवका अध्याय ॥

संजय बोले कि इस प्रकार युद्धमें निर्भय के समान घूमने वाले अलंबुषके सन्मुख घटोत्कचगया और शीघ्रहीतीक्ष्णधार वालेबाणों से उसकोघायल किया १ नानाप्रकारकी मायाको प्रकटकरने वाले उन दोनों राक्षसोत्तमों का युद्धऐसा भयकारीहुआ जैसा कि इन्द्र और संबर दैत्यकाहुआथा २ अत्यन्त क्रोधयुक्त अलंबुषने घटोत्कचको घायलकिया फिर उन दोनों प्रबलराक्षसोंका ऐसायुद्धहुआ ३ जैसे कि पूर्व्वसमयमें रामचन्द्रजी और रावणका युद्धहुआथा हे प्रभु फिर घटोत्कच ने बीस नाराचों से छाती के मध्य में ४ अलंबुष को घायल करके वारंवार सिंहनाद किया हे राजा इसी प्रकार अलंबुष भी उस युद्ध दुर्मद घटोत्कचको वेधकर ५ प्रसन्न मन चारों ओरसे आकाश को व्याप्त करता हुआ गर्जा उसी प्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी दोनों राक्षसाधिप ६ मायाओं के द्वारा परस्पर समान बल करने वाले हुये सदैव सैकड़ों मायाके करने वाले परस्पर एक एक को मोह युक्त करने वाले ७ मायाके युद्धोंमें सावधान मायाही के युद्ध करने वाले हुये घटोत्कच ने जिस जिस माया को प्रकट किया ८ हे राजा अलंबुषने उस उस मायाको मायाही

से नाश किया उस माया युद्धमें कुशल और युद्ध करने वाले उस राक्षसाधिप अलंबुष को देखकर पांडव लोग क्रोध रूप हुये अत्यन्त व्याकुल क्रोधयुक्त वह भीमसेनादिक पांडव रथों के द्वारा सब ओर से उस के सन्मुख गये हे श्रेष्ठ उन्हों ने अपने बहुत से रथोंसे उस को घेरकर १०।११ सब ओरको बाणोंसे ऐसा ढकदिया जैसे कि उल्काओं से हाथीको ढकते हैं वह मायाके अस्त्रोंसे उन्होंके बेगोंको दूर करके १२ उन रथसमूहोंसे ऐसे निकलगया जैसे कि वनकी अग्नि से हाथी निकल जाता है वह इन्द्र बज्र के समान शब्दायमान भयकारी धनुष को टंकार कर १३ बायु के पुत्र भीमसेन को तीस बाणोंसे युधिष्ठिर को तीन बाणों से सहदेव को सातबाण से नकुल को बहत्तर बाणों से और द्रौपदीके पुत्रोंको पांच पांच बाणों से छेदकर बड़े भयकारी शब्दसे गर्जा १५ भीमसेन ने उस राक्षस को नवबाणोंसे सहदेव ने पांच बाण से युधिष्ठिर ने सौ बाणों से घायल किया १६ फिर नकुल ने चौंसठ बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रों ने तीन २ बाणसे घटोत्कचने पचासबाणसे उसको घायलकरके १७ फिर सत्तर बाणसे घायल करता हुआ बड़े बेगसे गर्जा हे राजा उसके बड़े शब्दसे यह पृथ्वी १८ पर्ब्बत वृक्ष और नदियों समेत कंपायमान हुई सब ओरसे उन बड़े धनुषधारी महारथियों से अत्यन्त घायल उस राक्षस ने १९ उन सबको पांच पांच बाणोंसे घायल किया हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ फिर युद्धमें क्रोधयुक्त घटोत्कच राक्षस ने उस क्रोध भरे राक्षस को २० सात बाणोंसे घायल किया तब उस बलवान्‌के हाथसे अत्यन्त घायल उसबड़े पराक्रमीराक्षसाधिपने २१ शीघ्रही सुनहरी पुंख तीक्ष्ण वाले बाणों को छोड़ा वह झुकी हुई गांठ वाले बाण राक्षस के शरीर में ऐसे प्रविष्ट होगये २२ जैसे कि बड़े बलवान् प्रसन्न सर्प पर्वत के शिखरमें प्रविष्ट करते हैं हे राजा उसके पीछे उन व्याकुल पांडवों ने चारोंओर से तीक्ष्णधार वाले बाणोंको २३ बर्षाया और हिडम्बाके पुत्र घटोत्कच ने युद्ध में बिजय से शोभापानेवाले पांडवों से घायल २४ मरण धर्मको पाने

वाले उस राक्षस ने करने के योग्य कर्म को नहीं जाना इसके पीछे युद्ध में भीमसेन के पुत्र घटोत्कचने २५ ऐसी दशावाले उस राक्षसको देखकर उसके मारनेके निमित्त मनसे विचारकिया और उसराक्षसाधिपके रथपर बड़ा वेगकिया २६ क्रोधयुक्त घटोत्कच नेरथ के द्वारा सन्मुख जाकर भस्महुये पर्व्वतके शिखरकेसमान टूटे हुये बादलोंके समूहके सदृशरथको पकड़लिया २७जैसेकिगरुड़जी सर्पकोपकड़लेते हैं उसीप्रकार उसराक्षसकोभी रथसेउठालिया और भुजाओंसेदवा करबारंबार घायल करके २८शीघ्रही पृथ्वीपर ऐसाघिसाजैसेकिपूर्ण घटको पत्थर पर घिसतेहैं बल पराक्रमको तीव्रतासे युक्त २९क्रोधयुक्त घटोत्कचने युद्धमें सबसेनाओं को डराया सब अंगोंसे रहित चूर्णीभूत अस्थि भयकारी सूरतवाला राक्षस ३० उसवीर घटोत्कचके हाथसे मारागया फिर उस राक्षसके मरनेपर प्रसन्नचित्त पांडव ३१ सिंहनादसे गर्जना करनेलगे और वस्त्रोंकोभी फिराया और आपके शूरवीर और सेनाके लोगोंने उसबड़े पराक्रमी राक्षसोंके राजा ३२ अलंबुषको अत्यन्त फटेहुये पर्व्वतके समान देखकर हाहाकारोंको किया उस अपूर्व्व दर्शनीयके देखनेके इच्छावान् मनुष्योंने दैवइच्छा से मंगल नक्षत्रके समान पृथ्वीपर पड़ेहुये उस राक्षस कोदेखा ३४ फिर घटोत्कचने उसबड़े पराक्रमी राक्षसको मारकर बडे बलको प्रकट करके ऐसा शब्दकिया जैसेकि राजाबलिको मारकरके इन्द्रने कियाथा ३५ तबउस कठिन कर्मके करनेपर बान्धव और पिताओंसे स्तुतिमान वह घटोत्कच पकेहुये लजालूवृक्षके समान अलंबुषशत्रुको मारकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ३६ इसकेपीछे शंखोंके और नाना प्रकारके बाजोंके शब्दों समेत बहुतबड़े शब्दहुये जिसको सुनकर पांडव लोग गर्जे फिर इतना बड़ा शब्दहुआ कि स्वर्गलोककोभी स्पर्शकरगया ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिअलंबुषवधेएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९ ॥

—※—

एकसौदशका अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हेसंजय द्रोणाचार्य्यनेयुद्धमें कैसेसात्यकी कोरोका इसकोमूलसमेत मुझसेकहो इसके सुननेका मुझकोबड़ा उत्साहहै १ संजय बोले हे बड़ेज्ञानी राजा धृतराष्ट्र जिनका अग्रगामी सात्यकी है उन पांडवोंके साथ उस रोमांच खड़े होनेवाले द्रोणाचार्य्यके युद्धको मुझसेसुनो २ हे राजा सात्यकीसे घायलहुई सेनाको देखकर आप द्रोणाचार्य्यजी उस सत्य पराक्रमी सात्यकीके सन्मुखगये ३ सात्यकीने उस अकस्मात् आतेहुये महारथी द्रोणाचार्य्यको पच्चीस बाणोंसे घायलकिया ४ युद्धमें पराक्रमी और सावधान द्रोणाचार्य्यनेभी सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण पांचबाणोंसे सात्यकीको घायल किया ५ हे राजा शत्रुके मांसके भोजन करनेवाले वहबाण अत्यन्त दृढ़ कवचको काटकर सर्पोंके समान श्वासा लेतेहुये पृथ्वीपर गिर पड़े ६ उसलम्बी भुजावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त चाबुकसे संतप्तकिये हाथीके समान सात्यकीने अग्निके समान नाराचनाम पचास बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको छेदा ७ युद्धमें सात्यकीके हाथसे घायल द्रोणाचार्य्यने उपाय करनेवाले सात्यकीको बहुतसे बाणोंसेछेदा ८ इसके पीछे क्रोधयुक्त बड़े धनुषधारी महापराक्रमी द्रोणाचार्य्यने गुप्तग्रन्थी वाले बाणसे फिर यादव सात्यकीको पीड़ित किया ९ हे राजा युद्धमें द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल सात्यकीने करनेकेयोग्य किसीकर्मको नहीं पाया १० युद्धमें तीक्ष्णबाणोंके छोड़नेवाले द्रोणाचार्य्य को देखकर सात्यकी भी व्याकुल मुखहुआ ११ आपकेपुत्र और सेना के लोग उसको देखकर अत्यन्त प्रसन्न मनसे सिंहके समान बारंबार गर्जे १२ हे भरत बंशी वह राजायुधिष्ठिर उसभयकारीशब्दको और माधव सात्यकी को पीड़ामान सुनकर सबसेनाके लोगोंसे बोला १३ कि वृष्णियों में श्रेष्ठ सत्यपराक्रमी वहसात्यकी युद्धमेंवीरद्रोणाचार्य्यसे ऐसेग्रसा जाताहै जैसे कि सूर्य्य राहुसे १४ चलो वहांजावो जहांपर कि सात्यकी लड़ताहै यहबात राजाने पांचालदेशी धृष्टद्युम्न

सेकही १५ हे पुरुपत के पौत्र क्यों खड़ेहो तुम द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जावो तुम द्रोणाचार्य्यसे हमारे समक्षमें नियत कठिनभयकोनहींदेखतेहो १६ वह बड़ा धनुषधारी द्रोणाचार्य्य युद्ध में सात्यकीके साथ ऐसे क्रीड़ा करता है जैसे कि बालक सूतमें बंधे हुये पक्षी के साथ करताहै १७ भीमसेन जिनमें अग्रगणनीय है वह सब उसके पास जावो और सब तुम्हारे साथमें होकर सात्यकी के रथ के समीप पहुंचे १८ में सेनासमेत तुम्हारेपीछे चलूंगा अब तुम सबयमराजके मुखफंसेहुये सात्यकी को छुड़ावो १९ हे भरतवंशी राजा इसप्रकार सब से कहकर सबसेनाके लोगोंसमेत सात्यकीके कारणसे युद्ध में द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया २० आपका कल्याणहो वहां अकेले द्रोणाचार्य्यसे लड़नेके अभिलाषी पांडव और सृञ्जियों के बड़े शब्द सब ओर से प्रकट हुये २१ वह नरोत्तम महारथी द्रोणाचार्य्य के सन्मुख होकर कंकपक्ष और मयूरपक्षों से युक्त तीक्ष्ण बाणों से वर्षा करनेवाले हुये २२ फिर मन्द मुसकान करते द्रोणाचार्य्य ने आपही उन वीरोंको ऐसे लिया जैसे कि आये हुये अतिथियों को जल और आसनसे लेतेहैं २३ वह धनुषधारी लोग उन द्रोणाचार्य्य के बाणों से ऐसे तृप्त हुये जैसे कि अतिथि लोग राजाकी अतिथि शालाको पाकर तृप्त होतेहैं हे प्रभु वह सब लोग द्रोणाचार्य्य की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहींहुये जैसेकि मध्याह्न के समय सूर्य्यके देखनेको समर्थ नहीं होते हैं २५ फिर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने उन सब बड़े धनुषधारियों को बाणों के समूहों से ऐसे संतप्त किया जैसे कि अपनी किरणों से सूर्य्य सबको तप्त करता है २६ हे महाराज इसप्रकार घायल हुये पांडव सृंजियों ने अपना रक्षक ऐसे नहीं पाया जैसे कि कीच में फंसा हुआ हाथी २७ द्रोणाचार्य्य के बड़े बाण अच्छेप्रकार से चलायमान होकर ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि चारोंओर से तप्त करनेवाले सूर्य्य की किरणें होती हैं २८ उस युद्ध में द्रोणाचार्य्य के हाथसे वह पच्चीस पांचाल देशी मारेगये जो कि धृष्टद्युम्नके अंगीकृत

महारथी प्रसिद्धथे २६ सबसेनाओंके मध्यमें पांचाल और पांडवोंके उत्तम २ शूरवीरों के मारनेवाले शूरवीर द्रोणाचार्य्य को देखा ३० हे महाराज वह द्रोणाचार्य्य केकयलोगों के सौ शूरबीरों को मार कर चारोंओरसे छिन्न भिन्न करके मुख फैलाकर मृत्यु के समान नियत हुये ३१ महाबाहु द्रोणाचार्य्यने सैकड़ों हजारों पांचाल सृञ्जी मत्स्य और केकय लोगोंको विजय किया ३२ द्रोणाचार्य्य के शायकों से घायल उनलोगों के शब्द ऐसे प्रकट हुये जैसे कि बनके मध्यमें अग्नि से व्याप्त बनबासियों के होतेहैं ३३ हे राजा वहांपर देवतालोग गन्धर्ब पित्रों समेत बोले कि यह पांचाल और पांडव लोग सेना के सब मनुष्यों समेत जातेहैं ३४ युद्ध में इसी प्रकार सोमकों के मारनेवाले उस द्रोणाचार्य्य के सन्मुख भी नहीं गये कितनेही लोग घायल भी नहींहुये ३५ इसरीतिपर उनउत्तम बीरोंके उस महाभयकारी नाशके होनेपर युधिष्ठिरने अकस्मात् पांचजन्य शंख के शब्दको सुना ३६ जयद्रथ के सहायक बीरों के लड़नेपर बासुदेवजी का पूर्णकियाहुआ वह शंखोंकाराजा पांच-जन्य अत्यन्त शब्द करताहै ३७ अर्जुनके रथके पास धृतराष्ट्र के पुत्रों के गर्जने और चारोंओर से गांडीव धनुष के शब्द न सुनाई देनेसे ३८ मूर्च्छासे घायलराजा युधिष्ठिरनेचिन्ताकरी कि निश्चय करके अर्जुनका कल्याण नहींमालूम होताहै क्योंकि ऐसे शंखशब्द करताहै और कौरव लोगप्रसन्न होकर बारंबार गर्जतेहैं इसप्रकार बिचार करते बारंबार अचेत होतेहुये अजात शत्रु युधिष्ठिर जयद्रथ केमारनेमें निर्विघ्नता चाहनेवाला अन्तःकरणसे व्याकुल अश्रुपातों से गद्गद बचनों समेत शिनी वंशियों में श्रेष्ठ यादव सात्यकी से बोला ४० । ४१ हे सात्यकी आपत्तिकालमें मित्रोंके काममें जोवह सनातनधर्म पूर्बसमय में अच्छे लोगोंसे देखागया है वहीसमय अब बर्त्तमान हुआहै ४२ हे शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी मैं सब बीर लोगोंमें सबको शोचता हुआ तुझसे अधिकतर किसी अपने शुभ-चिन्तकको नहींदेखताहूं ४३ कि जो सदैव प्रसन्न मन और सदैव

अनुकूलहै आपत्तिकाल में प्रवृत्त होकरभी वह कर्म करनेके योग्य है ४४ जैसेकि केशवजी सदैव पांडवोंके रक्षकहैं हे सात्यकी उसी प्रकार तुमभी श्रीकृष्णजी केही समान पराक्रमीहो ४५ मैं तुम्हारे ऊपर भारको रक्खूंगा तुम उसके उठाने के योग्य हो तुम मेरे विचारकोकभीव्यर्थ करनेकेयोग्य नहींहो ४६ हेनरोत्तमसोतुम युद्धमें भाईके समान अवस्था और गुरूरूप अर्जुन को आपत्तिकाल में सहायताकरो ४७ तुम सत्यसंकल्पी होकर मित्रों के निर्भय करने वाले प्रसिद्धहो ४८ हे सात्यकी मित्रके निमित्त जो युद्ध करनेवाला पुरुष शरीर को त्यागकरे और जो ब्राह्मणों के अर्थ पृथ्वीको दान करे वह दोनों समानहैं ४९ जो राजा इस सब पृथ्वीको विधिके अनुसार ब्राह्मणों के लिये दान करके स्वर्ग को गये उन सबको हमने बहुत सुनाहै ५० हे धर्मात्मा अब मैं यहां हाथजोड़कर तुझ सेभी प्रार्थना करताहूं हे समर्थ पृथ्वीदान के समान अथवा इससे भी अधिक फल होगा ५१ हे सात्यकी मित्रोंके निर्भय करनेवाले एक श्रीकृष्णजी सदैव युद्धमें प्राणोंकी प्रीतिको त्याग करतेहैं और दूसरे तुम ५२ युद्धमें यशके चाहनेवाले और पराक्रम करने वाले वीरका सहायक वीर पुरुषही होसक्ताहै दूसरा सामान्य पुरुषनहीं होसक्ताहै ५३ हे माधव इसप्रकार के युद्धमें वर्त्तमान अर्जुन का रक्षक युद्धमें तेरेसिवाय कोई दूसरा वर्त्तमान नहींहै ५४ तेरे सैकड़ों कर्मोंकी प्रशंसा करते और मेरी प्रसन्नताको उत्पन्न करतेहुये पांडव अर्जुन ने तेरे कर्मोंको बारंबार कहाहै ५५ कि हस्तलाघवी अपूर्व्व युद्ध कर्त्ता तीव्र पराक्रमी और सब अस्त्रज्ञों में बुद्धिमान् शूर सात्यकी युद्धमें अचेत नहीं होताहै ५६ वह महात्मा महारथी महास्कन्ध बड़ा वक्षस्थल महाबाहु महाहनु महाबली और महावीर्य्यवान्है ५७ और मेरा शिष्य होकर और मित्रहै मैं उसका प्याराहूं और वह मेरा प्याराहै मेरा सहायक सात्यकी कौरवोंको छिन्नभिन्न करके मर्दन करेगा ५८ हे महाराज जो हमारे निमित्त केशवजी कवचमें प्रवृत्त होंय व बलदेवजी व अनिरुद्ध व महारथी प्रद्युम्न ५९

गद दशार्ण और शाम्ब भी वृष्णियों समेत युद्ध के मुखपर ६० सन्नद्ध होकर सहायताके लिये आकर नियत होंय हे महाराज तौ भी मैं इस सत्य पराक्रमी नरोत्तम सात्यकी को अपनी सहायता में संयुक्त करूंगा उसके समान दूसरा कोई नहीं है ६१ हे तात द्वैत वनके मध्य अच्छेलोगों की सभामें तेरे परोक्ष में तेरेसत्य गुणों को कहते हुये अर्जुनने मुझसे कहाहै ६२ हे वृष्णिवंशी तुम उसअर्जुन के इस संकल्प और मेरे और भीमसेनके संकल्पको निरर्थक और मिथ्या करने को योग्य नहीं हो ६३ जो मैं तीर्थों में घूमता द्वारकापुरी को गया वहां भी मैंने तेरी भक्ति को अर्जुन में देखा ६४ हे सात्यकी मैंने तेरीसी प्रीति दूसरों में नहीं देखी जैसे तुम युद्ध में वर्त्तमान हम लोगोंको चाहतेहो ६५ हे महाबाहु बड़े धनुषधारी माधव सात्यकी तुम कुलीनता से भक्ति से मित्रता से शिष्यता से प्रीतिसे पराक्रम से कुलके गुणों से ६६ और सत्यता के अनुसार अर्जुन पर दया करने के लिये कर्म करने को योग्यहो भीमसेन और हम सब सेना समेत युद्धमें प्रवृत्त होकर उन द्रोणाचार्य्यको रोकेंगे जो तेरे सन्मुख जायगे हे सात्यकीयुद्धमें चलायमान सेनाओं को और भरतवंशियों की छिन्नभिन्न सेनाओंको देखो और युद्धमें होनेवाले बड़े शब्दको भी सुनो ७१ जिसप्रकार से पर्व्वों में कठिन वायु की तीव्रता से समुद्र व्याकुल होता है उसीप्रकार अर्जुन के हाथसे दुर्योधन की सेना उच्छिन्न होगई ७२ चारोंओर से दौड़ते हुये रथ घोड़े और मनुष्यों से उठीहुई यह धूलभी चारों ओरसे वर्त्तमान है ७३ शत्रुके वीरोंका मारनेवाला अर्जुन अत्यन्त समीपी वर्त्तमान नखर प्रासोंसे लड़नेवाले सिन्धु सौवीरनाम शूरवीरों से घिराहुआ है ७४ यह सेना हटाने के योग्य है और जयद्रथ का विजय करना संभव है यह सब लोग जयद्रथ के अर्थ अपने२ जीवन को त्यागे हुये हैं ७५ धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी उस सेनाको देखो जो कि उत्तम बाण शक्ति ध्वजाकी रखनेवाली घोड़े हाथियों से व्याकुल होकर कठिनतासे सन्मुखताके योग्य है ७६ दुन्दुभी

और शंखों के बड़ेशब्द सिंहनाद वा रथ की नेमियों के शब्दों को सुनो ७७ हजारों हाथी पति और चेष्टा करते वा पृथ्वीको कंपायमान करते सवारों के शब्दोंको सुनो ७८ प्रथम जयद्रथ की सेनाहै उसके पीछे द्रोणाचार्य्य की सेनाहै हे नरोत्तम वह इतनी अधिक है कि देवराज को भी पीड़ित करसके ७९ उस असंख्य सेनामें डूबा हुआ अर्जुन भी जीवन को त्यागे हुये है जो युद्धमें वह जीवन को त्यागदेगा तो उसके मरने पर मुझसा राजा कैसे जीसक्ता है ८० तेरे जीवते हुये मैंने सब रीतिसे बड़े कष्टको पाया हे तात वह श्याम तरुण दर्शनीय शीघ्रता से अस्त्रोंका चलानेवाला अपूर्व्व युद्धकर्त्ता महाबाहु पांडव अर्जुन सूर्य्य के उदय होने के समयपर भरतवंशियोंकी सेनामें प्रवेशित हुआहै और अब दिन ढलावपर है ८१।८२ हे यादव मैं उसको नहीं जानताहूं कि वह जीवता है अथवा नहीं जीवता है और कौरवोंकी वह सेना भी समुद्र के समान बड़ीहै८३ हे तात वह अकेला महाबाहु अर्जुन बड़े युद्ध में देवताओं से भी असह्य भरतवंशियोंकी सेना में प्रविष्टहुआ है८४अबमेरी बुद्धि किसी दशामें भी युद्धमेंनियतनहीं होती और युद्धमें वेगवान् द्रोणाचार्य्यभी मेरी सेनाको पीड़ादेते हैं ८५ हे महाबाहो जिसप्रकार यह ब्राह्मण घूम रहा है वह तेरे नेत्रों के समक्ष है तुम साथही आगे आजाने वाले कार्य्यों में सावधान और कुशल हो ८६ हे प्रतिष्ठा देनेवाले सात्यकी शीघ्र करने के योग्य बड़े कर्म के करने को योग्य हो इस कामको मैंने सब कामों से बड़ा मानाहै ८७ कि युद्धमें अर्जुनको रक्षा और सहायता करनी योग्यहै मैं उस जगत् के स्वामी रक्षक श्रीकृष्णजी को नहीं शोचताहूं ८८ हे तात वह पुरुषोत्तम युद्ध में सन्मुख होनेवाले तीनोंलोकों को भी विजय करने को समर्थ है यहतुझसे सत्य२ कहताहूं ८९ फिर दुर्य्योधन की यह अत्यन्त निर्बल सेना क्या पदार्थ है हे यादव युद्ध में बहुत वीरों से पीड़ामान वह अर्जुन ९० युद्धमेंही कहीं प्राणों को न त्याग दे इसहेतु से मैं मूर्च्छित हुआ जाताहूं तुम उसकेही मार्गपर जावो जैसे कि तुम सरीखे

वीर जाते हैं ९१ उसप्रकारवाले समयपर मुझ सरीखे राजासे प्रेरणा किये हुये तुम जावो वृष्णियोंके बड़ेवीरों में युद्धके करनेवाले दोही अतिरथीकहे हैं ९२एक महाबाहु प्रद्युम्न और दूसरे यादवों मेंप्रसिद्ध तुमहो हे नरोत्तम तुमअस्त्रोंमें नारायणके समान बलपराक्रममें बलदेवजीके समान ९३ और बीरतामें अर्जुनके सम तुल्यहो लोकमें सन्त लोग भीष्म और द्रोणाचार्य्यको उल्लंघनकर तुझपुरुषोत्तम को सब युद्धोंमें कुशल और सावधानकहते हैं और हे माधव यहभी वर्णन करते हैं कि लोकमें ऐसा कोई कर्म नहीं है जिसको सात्यकी नहीं करसके ९४।९५ इसहेतुसे हे बलवान् पराक्रमी जो मैं तुमसे कहूं उसके करनेको तुमयोग्यहो हेमहाबाहु तुममेरे अर्जुन के और लोकके बिश्वासपात्रहो ९६ अन्यथा करनेके योग्यनहींहो प्यारे प्राणोंको त्याग करके युद्धमें वीरोंके समान भ्रमण करो९७ हे सात्यकी युद्ध में यादव लोग अपने जीवन और प्राणों की रक्षा नहीं करते हैं युद्ध न करना युद्धमें नियत न होना और भागना ९८ यहमार्ग भयभीत और नीचलोगोंका है यादवलोगोंका किसीदशा में भी नहींहै हे शिनियोंमें श्रेष्ठ तात सात्यकी धर्मात्मा अर्जुन तेरा गुरूहै ९९ और वासुदेवजीभी तेरे औरबुद्धिमान् अर्जुन के गुरूहैं इन दोकारणोंको मैं जानताहूं इसीसे मैंने तुझसे कहाहै १०० मेरे वचनका अपमान मतकर मैंतेरेगुरूकाभी गुरूहूं वासुदेवजीका अर्जुनका और मेरा वह मतहै१०१मैंने तुझसे यहसत्य२ हीकहाहै अब तुममेरे कहनेसे शीघ्र वहांजावो जहां कि अर्जुनवर्त्तमानहै हे सत्य पराक्रमी इस मेरे वचनको जानकर १०२ दुर्बुद्धी दुर्योधन की इससेनामें प्रविष्ट होकर न्यायके अनुसार महारथियों सेभिड़कर जैसा उचितहै वैसाहीयुद्धमें अपना कर्म दिखलावो१०३

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदशोपरिशततमोऽध्यायः ११०॥

एकसौग्यारहका अध्याय॥

संजय बोले कि हे भरतर्षभ प्रीतिसे संयुक्त वृद्ध मधुराक्षसोंसे

लित समयके अनुसार अद्भुत औरन्यायके अनुसारभी जो २ कहा१ उस धर्मराज के वचनों को सुनकर शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकीने युधिष्ठिरको उत्तर दिया २ हे अधिकारसे च्युत न होनेवाले आपके कहेहुये इनसब वचनोंको मैंने सुना यह आपके वचन न्यायसे युक्त अपूर्व और अर्जुनके प्रयोजनमें यशके करनेवालेहैं ३ हे महाराज इसप्रकारके समयपर मुझसरीखे शुभचिन्तकको देखकर आपको उसीप्रकार की आज्ञाकरनी उचित है जैसे कि अर्जुनको करतेहो ४ किसीदशामेंभी अर्जुन के प्रयोजनमें मेरे प्राण रक्षाके योग्य नहींहैं फिरमें युद्धमें आपको आज्ञासे कौनसा कर्म नहीं कर सक्ता अर्थात् जो आपकहेंगे उसी को करूंगा ५ हे महाराज आपकी आज्ञाको पाकर मैं देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनोंलोकोंसे भी युद्ध करसक्ताहूं यहां यह अत्यन्त अल्प पराक्रमी सेना कौन वस्तुहै ६ हे राजा अब मैं युद्धमें चारोंओरसे दुर्योधनकी सेनासे युद्धकरूंगा और युद्धमें सबको विजयकरूंगा ७ हेराजा आप सावधान रहिये मैं बुद्धिमान् अर्जुनको पाकर जयद्रथके मरनेपर आपके पास आऊं गा ८ हे राजा वासुदेवजीका औरबुद्धिमान् अर्जुनका जो वचनहै वह सबभी मुझको आपसे कहना अत्यन्त योग्यहै ९ सबसेनाके मध्यमें वासुदेवजी के समक्ष में अर्जुन मुझको वारंवार यह समझागया है १० कि हे माधव अबतुम युद्धमें उत्तम बुद्धिकोकरके बड़ी साव-धानीसे सचेत होकर जबतक किमें जयद्रथ को मारकर आऊं तब तक श्रेष्ठ रीतिसे राजाकी रक्षा करो ११ हे महाबाहो मैं तुझपर अथवा महारथी प्रद्युम्नपर राजाको धरोहड़ के समान सुपुर्द करके निर्पेक्ष होकर जयद्रथके सन्मुख होऊंगा १२ तुम दुर्योधन के वि-श्वासपात्र और शुभचिन्तक द्रोणाचार्य्य को युद्धमें जानतेहो हे समर्थ उस देखने वालेने दुर्योधनसे यह प्रतिज्ञाकीहै किमें देख-तेही युधिष्ठिरको पकड़कर तेरेसुपुर्द करूंगा इसकारण भारद्वाज द्रोणाचार्य्य भी युधिष्ठिरके पकड़नेकीअभिलाषा करताहै यहद्रोणा-चार्य्यजी युद्ध में युधिष्ठिर के पकड़नेको समर्थहैं १४ अब मैं इस

रीति से नरोत्तम धर्मराज युधिष्ठिर को तेरे सुपुर्द करके जयद्रथके मारने को जाऊंगा १५ हे माधव मैं जयद्रथको मारके शीघ्र आऊंगा ऐसा न होय कि युद्ध में द्रोणाचार्य्य बलकरके युधिष्ठिरको पकड़ें १६ हे सात्यकी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के हाथ से धर्मराज युधिष्ठिर के पकड़ने पर वैसीही मेरी अप्रसन्नता होगी १७ अर्थात् सत्य वक्ता नरोत्तम युधिष्ठिरके पकड़ेजाने पर फिर हम लोगों को वनमें जाना होगा १८ और यह सब मेरीविजय की हुई अत्यन्त व्यर्थ और निरर्थक होजायगी जो क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिर को पकड़ेंगे हे माधव सो तुम युद्ध में मेरे प्रिय के निमित्त और बिजय रूपी यशके अर्थराजाकी रक्षाकरो २० हे समर्थसदैव द्रोणाचार्य्य से भयको मानने वाले अर्जुनकी ओरसे आप मुझको धरोहड़ रूप सुपुर्द कियेगयेहो २१ हे समर्थ महाबाहो मैं सदैव युद्धमें प्रद्युम्न के सिवाय किसी दूसरेको उससेसन्मुखता करनेको नहीं देखताहूं२२ वहमुझको बुद्धिमान द्रोणाचार्य्यकेयुद्धमें योग्यसमझताहैसो मैं इसबिश्वास औरगुरूकेउस बचनको २३ अथवातुम्हारे त्याग करनेको साहस नहीं करताहूं अजेय कवचधारी द्रोणाचार्य्य २४ तुमको युद्धमें सन्मुख पाकर अपनी हस्तलाघवतासे इस प्रकार क्रीड़ा न करैं जैसेकि बालक पक्षी के साथ करता है जो धनुष हाथमें लेनेवाला मकरध्वज प्रद्युम्न यहां होवे तो मैं तुमको उसके पास छोडूं क्योंकि वह अर्जुनके समान तुम्हारी रक्षाकरेगा और तुमभी अपनी रक्षाकरो मेरेजानेपर आपका ऐसा रक्षककौन है २६ जोकि युद्धमें तबतक द्रोणाचार्य्यकी सन्मुखताकरे जबतक कि मैं जयद्रथ को मारकर युधिष्ठिर के पास न आजाऊं हे राजा अबतुम अर्जुनकी ओरका कभी भयमतकरो २७ वहमहाबाहुअपने ऊपर भार को उठाकर कभी पीड़ामान नहीं होताहै जो सौवीरक सिन्धु बासी पौरव उत्तरीय दक्षिणीय शूरवीर आदिक महारथी हैं और जो कर्णमुख नाम बड़े रथी बिख्यात हैं २८ यह सब क्रोध युक्त अर्जुनके सोलहवीं कलाके भी समान नहीं हैं हे राजा देवता

असुर मनुष्य राक्षसोंके समूह किन्नर और बड़े २ सर्पोंसमेतउपाय करने जड़ चैतन्य जीवों समेत सब पृथ्वी युद्धमें अर्जुनके साथलड़ने कोसमर्थ नहींहैं ३१हे महाराज इसप्रकार जानकर आप अर्जुन के विषयमें उत्पन्न भय को कभीमनमें भी न लाओ जहांपर सत्य परा- क्रमी धनुषधारी वीर अर्जुन और श्रीकृष्णजीहैं ३२ वहांकिसी प्र- कारकाभी आपत्ति कर्मनहीं व्यासहोताहै तुम युद्धमें भाईअर्जुन के दिव्य अस्त्रोंके योगकोध ३३ यादव कृष्णकोउपकार और दयाको विचारकरो और मेरेदूरजाने अर्थात्अर्जुन के पासचले जानेपर३४ तुम युद्धमें द्रोणाचार्य्यकी अपूर्व्व अस्त्रविद्या को विचारो हेराजा आचार्य्यजी आपके पकड़नेकी अत्यन्त इच्छाकररहेहैं ३५ हेभरत वंशी वहगुरूजी अपनीप्रतिज्ञाके सत्यकरनेकोतुम्हारेपकड़नेकेअभि- लाषीहैं अबअपनीरक्षाकरिये मेरेजानेपर आपकारक्षककौन है ३६ जिसपर भरोसाकरके और उसके सुपुर्द्द गीमें आपको करकेमैंअर्जुन के पास चलाजाऊं हे महाराज मैं इस महायुद्ध में आपको सुपुर्दन करके३७कहीं नहीं जाऊंगा हेकौरवमैं यह आपसेसत्य २ कहताहूं हेबुद्धिमानों में श्रेष्ठ तुम अनेक प्रकारकी बुद्धि से इसको विचारक- रये३८और बुद्धिसेही अपने बड़ेकल्याणको देखलो तबमुझकोआज्ञा करो३९युधिष्ठिर बोले हे महाबाहो माधव सात्यकीयहइसी प्रकार है जैसा कि तुम कहतेहो हे श्रेष्ठ परन्तु मेरे चित्तका वृत्तान्त अर्जुन के विषय में स्पष्ट नहीं होताहै ४० मैं अपनी रक्षामें बड़े उपायोंको करूंगा मेरी आज्ञानुसार तुम वहां जाओ जहां अर्जुन गयाहै ४१ युद्धमें अपनी रक्षाको और अर्जुन के पासजानेको मैंने अपनी बुद्धि से विचार कर दोनों कार्यों में से वहां का तुम्हारा जानाही में ठीक विचार करताहूं ४२ सोतुमजहां अर्जुनहै वहीं जाओ मेरीरक्षा को बड़ा बली और पराक्रमी भीमसेन करेगा ४३ हे तात सगे भा- इयों समेत धृष्टद्युम्न आदिक बड़े२पराक्रमी राजालोग और द्रौपदी के पुत्रमेरी निस्सन्देह रक्षा करेंगे ४४ हे श्रेष्ठ पांचो भाई केकय घटोत्कच राक्षस राजा विराट द्रुपद महारथी शिखण्डी ४५ महा

बली धृष्टकेतु कुन्तभोज नकुल सहदेव सब पांचालदेशी और सृ-
ञ्जय देशी ४८ यह सब सावधानी से निस्सन्देह मेरी रक्षा करेंगे
युद्धमें सेना समेत द्रोणाचार्य्य और कृतबर्मा मेरे पकड़नेको समर्थ
नहीं हैं और न मुझको पराजय करसकेंगे जहां शत्रुओंका तपाने
वाला धृष्टद्युम्न नियत होगा ४९ वहां पर द्रोणाचार्य्यजी किसी
प्रकार सेभी सेनाको उल्लंघन नहीं करसक्ते क्योंकि यह धृष्टद्युम्न
द्रोणाचार्य्यके ही नाशकेनिमित्त कवच बाण धनुष खड्ग औरउत्तम
आभूषणों समेत अग्नि से उत्पन्न हुआ है ५० हे सात्यकी तुम
विश्वास करो और मेरे विषयमें व्याकुलताको मतकरो युद्धमें क्रोध
युक्त द्रोणाचार्य्य को धृष्टद्युम्न रोकेगा ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकादशोपरिशततमोऽध्यायः१११ ॥

एकसौबारहका अध्याय ॥

संजय बोले कि वह शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी धर्मराजके बचन
को सुनकर राजा युधिष्ठिर के त्याग से अर्जुन से भयभीतताको
कहता १ और मुख्यकर संसारकी ओरसेअपनी इस अपकीर्त्ति को
देखकर कि सब लोग मुझको अर्जुन की ओर न जानेसे भयभीत न
कहैं २ ऐसे अनेक बातोंका निश्चय करके वह युद्धमेंदुर्मद पुरुषो-
त्तम सात्यकी धर्मराजसे यह बचनबोला ३ हे राजाजो आपअपनी
रक्षाको कीहुई मानतेहो तो आपका कल्याण होय मैं अर्जुनके पास
जाऊंगा और आपकी आज्ञाको करूंगा ४ हे राजा तीनों लोक में
अर्जुन से प्यारा मुझको कोई नहीं है यह मैं सत्य२ आपसे कहता
हूं ५ हे प्रतिष्ठाकेदेने वाले मैं आपकी आज्ञासेउसके मार्गको जा-
ऊंगा आपके अर्थ किसी दशामेंभी मेरा कोई काम न करनेके योग्य
नहीं है ६ हेद्विपादों में श्रेष्ठ जैसेकि गुरूका बचन मुझको मान-
नीय और श्रेष्ठ है उसी प्रकार आपका भी बचन मुझ को श्रेष्ठ
समझकर मानना योग्यहै ७ दोनों भाई श्रीकृष्ण और अर्जुन
आपके हितमें प्रवृत्त होकर कर्म कर रहेहैं हे राजाओंमें श्रेष्ठ आप

मुझको उन दोनों पुरुषोत्तमोंके मनोरथों में प्रवृत्त और नियत जा-
नों ८ हे समर्थ नरोत्तम युधिष्ठिरमें आपकी आज्ञाको शिरसे अंगी-
कार करके अर्जुनके निमित्त उसकठिनतासे पृथक्होंने वालीसेनाको
छिन्न भिन्न करके जाऊंगा ९ हे राजा अवमैं द्रोणाचार्य्यकी सेनामें
ऐसे प्रविष्ट होताहूं जैसे कि क्रोध युक्त झस नाम जलजीव समुद्र में
प्रवेश करताहै मैं वहां पर जऊंगा जहां पर कि राजा जयद्रथहै१०
जहांपर पांडव अर्जुनसे भयभीत होकर अश्वत्थामा कर्ण और कृपा-
चार्य्य आदिक उत्तम रथियों से रक्षित जयद्रथ सेनामें शरणागतहो-
करनियत है ११ हेराजा यहांसे मैंउसमार्गको तीनयोजन मानताहूं
जहां पर कि जयद्रथ के मारने में प्रवृत्त अर्जुन नियत है १२ मैं जयद्रथ
के मरने से पूर्व्वही बड़े दृढ़ अन्तरात्मा के द्वारा तीन योजन पर
वर्त्तमान उस अर्जुन के चरणको पाऊंगा १३ गुरूसे आज्ञा पाये
विना कौन मनुष्य युद्ध कर सक्ताहै हे राजा गुरूकी आज्ञाको पाकर
मुझसा कौन मनुष्य युद्धको नहीं करे १४ हे प्रभु मैं उस स्थान को
जानताहूं जहां पर कि जाऊंगा और शूल शक्ति गदा प्रास ढाल खड्ग
दुधाराखड्ग तोमर १५ और उत्तम वाण अस्त्रों से भी दुर्गम्य सेना
रूपी समुद्रको उथल पुथल करूंगा जोइस हजारों सेनाओंके समा-
न हाथियों की सेना को देखतेहो१६ जिनका कुल आजनक नाम
है जिस सेनामें वह प्रहार करने वाले युद्धमें कुशल शूर वीर लोग
बहुत से म्लेच्छों के साथ नियत हैं १७ हे राजा वर्षा करनेवाले
बादलों के समान मदझाड़ने वाले बादलके ही रूपवाले यहहाथी
हैं यह हाथी अपने हाथीवानोंके प्रेरणा किये हुये होकर कभी मु-
खोंको नहीं फेरते १८सो हेराजा इन हाथियों को मारने के सिवाय
किसी प्रकार से पराजय नहीं है और हजारों रथियों के समानजिन
रथियों को सन्मुख देखते हो १९ हे श्रेष्ठ यह सुवर्णके रथवाले
राजकुमार महारथी रथ बाण अस्त्र और हाथीकी सवारीमें साव-
धानहैं २० धनुर्वेद में पूर्ण मुष्टिक युद्धमें कुशल गदा युद्धके विशेष
ज्ञाता भुजाओं के युद्धोंमें प्रवीण २१ खड्ग चलाने में योग्य ढाल

तलवारके उठाने चलानेमें प्रशंसनीय शूर बिद्यावान परस्पर में ईर्षा करने वाले हैं २२ हेराजा कर्ण करके नियत किये हुये दुश्शासन के आज्ञावर्त्ती यह सब लोग सदैव युद्धमें मनुष्यों को बिजय कर-नाचाहते हैं २३ बासुदेवजी भी इन बड़े रथियों की प्रशंसा करतेहैं यहसब लोग सदैव हित करने के अभिलाषी कर्णके आधीनवर्त्तमान हैं २४ उसीके बचनसे अर्जुनसे हटायेगये वह दृढ़ धनुष और कवच वाले थकावट और दुःख से रहित हैं २५ निश्चय करके यह लोग दुर्योधन की आज्ञा से मेरे निमित्त नियत हैं हे कौरव्य आपके प्रिय के अर्थ इन्हींको युद्धमें मथकर २६ अर्जुनके मार्गको जाऊंगा हेराजा और जो दूसरे तरुण कवच धारी किरात पुरुषों की सवारी सेनियत उन सातसौ हाथियों को देखते हो जिन हाथियोंको कि राजाकिरा-तने अर्जुनको दिया २७। २८ और उसी प्रकार फिर अपने जीवन को चाहते हुये उस राजा किरातने अच्छे अलंकृतकरके नौकरोंको दिया हे राजा पूर्वसमयमें यहसब लोग आपहीके दृढ़ कार्य्यकर्त्ता थे २९ अब यह आपहीसे लड़तेहैं इससमयकी बिपरीतताको देखो यह सब किरात बड़े धनवान युद्धमें दुर्मद ३० हाथियोंकी शिक्षा के ज्ञाता अग्नि से उत्पन्न होने वाले हैं इनको युद्धभूमिमेंअर्जुनने बिजय कियाथा ३१ दुर्य्योधनके आज्ञावर्त्ती होकर अवयह लोगमेरे निमित्त उद्युक्तहैं हेराजा इनयुद्ध दुर्मदकिरातोंकोयुद्धमें बाणोंसे मारकर ३२ जयद्रथके [illegible]मे में प्रवृत्त अर्जुनके पीछे जाऊंगा फिर आंजन कुल में उत्पन्न होनेवाले यह बड़ेहाथी ३३ महाकर्कश बिनीत औरगंडस्थ-लोंसेमदझाड़नेवाले स्वर्णमयी कवचोंसे अलंकृत ३४ युद्धमें लक्षभेदी ऐरावतके समान युद्ध करनेवाले हैं यहहाथी उत्तरीय पर्व्वतोंके बड़े उग्र चोरोंके साथ नियतहैं ३५ यहांपर गौ से उत्पन्न होनेवाले और बन्दरसे उत्पन्न होनेवाले शूरबीर अत्यन्त श्रेष्ठ लोहेके कवचआदि धारण करने वालेवीरों समेत वर्त्तमान हैं ३६ और बहुत से अनेक प्रकारके उत्पत्ति स्थान वाले और मनुष्योंसेभी उत्पन्न होने वालेहैं जिनको धूम्रवर्णकहतेहैं वहहिमाचल पर्व्वतके दुर्गमस्थानों

के रहने वाले और पापकर्त्ता होकर महा म्लेच्छहैं दुर्योधनने इस संपूर्ण राजमंडलकोपाकर ३८ रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य सोमदत्त जयद्रथ और कर्णको पाकर पांडवोंका अपमान किया३६ फिर कालकेचक्रमें फंसाहुआ दुर्योधन अपने को कृतार्थ मानता है अबवह सबमेरे बाणोंके गोचरतामें वर्त्तमानहुएहैं ४० हे युधिष्ठिर जोमें चित्तके अनुसार तीव्रगामीहूं तो यहकिसी प्रकारसे छुटकर नहीं जासके दुर्य्योधनने सदैवसे दूसरेके बलसे अपना निर्वाह कियाहै ४१ हेराजा जो यह सुनहरी ध्वजा वालेरथी दृष्ट पड़ते हैं वहमेरे बाणोंसे पीड़ामान होकर नाशको पावेंगे ४२ यह कांबोज देशी शूर विद्यावान और धनुर्वेदमें पूर्ण आपने सुनेहैं वह दुर्वारण नामहैं ४३ यह परस्पर अभीष्ट चाहनेवाले अत्यन्त दृढ़शरीर हैं हे भरतवंशी दुर्य्योधनकी ग्यारह अक्षौहिणी सेना क्रोधयुक्तहै४४ और चारोंओरसे रक्षित कुरुवीर मेरेनिमित्त बड़ी सावधानीसे नियतहैं हे महाराज वहसब चैतन्य होकरअभ्रान्तचित्तमेरेही सन्मुख वर्त्तमानहैं ४५ मैं उन को ऐसे मथूंगा जैसे कि तृणों को अग्नि मथताहै इस कारणसे सब तूणीरादिउपासंग औरसबसामान ४६ को रथकेतैयारकरने वाले मनुष्य विधिके अनुसारमेरेरथपर नियत करें निश्चय करके इसबड़ेभारी युद्धमें नाना प्रकारके शस्त्र हाथमें लेनेके योग्यहैं ४७ जैसे कि गुरुओं सेसिखलाये गयेहैं उस प्रकार से रथोंको पंचगुने करने चाहिये फिर तीक्ष्णसर्पोंके[illegible]ान कांबोज देशियोंसे भिडूंगा४८ उननाना प्रकारके शस्त्र समूहोंके रखने वाले विषके समान प्रहार करनेवाले किरातोंसेभी लड़ूंगा४९ राजासे सदैव पालन किये हुये दुर्य्योधनका हितचाहनेवाले इन्द्रकेसमान पराक्रमी शकों के साथ भिडूंगा ५० इसी प्रकार अग्निके समान अजेय और तेजस्वी औरकालकेसमान दुःखसेआधीन करनेकेयोग्य नानाप्रकारके अन्य २ शूरवीरोंसेभीलडूंगा ५१ हेराजा युद्धमेंदुर्मद बहुतसे शूरवीरोंके साथ युद्धभूमिमें भिडूंगा इस हेतुसे शुभलक्षण वाले घोड़ों में श्रेष्ठ प्रशंसनीय ५२ और पृथ्वीके लेटनेसे ही थका-

वटसे रहित जलसे तृप्त घोड़े फिर मेरे रथमें संयुक्त किये जायं संजय बोले कि राजा ने उसके सब तूणीरादिक सामान ५३ और नाना प्रकार के शस्त्रोंको उसके रथ पर अलंकृत करवाया इसके पीछे चार मनुष्यों ने उन सब सामानों से युक्त उत्तम घोड़ोंको ५४ रसयुवान नशेदार जलपिलाया उन थकावटसे रहित दाना जल आदि से तृप्त स्नान किये हुये अच्छे अलंकृत विनाघाव सुवर्ण की माला रखने वाले योग्य सुवर्ण वर्ण विनीत शीघ्रगामी ५६ अत्यन्त प्रसन्न मन बिधिके अनुसार अलंकृत चारो घोड़ों को उस रथमें जोड़ा जो कि स्वर्णमयी केशरकी मालाओंसे युक्त सिंहमूर्त्ति रखने वाली ध्वजासे शोभित ५७ मणि मूंगोंसे जटित सुनहरी केतुओं से संयुक्त श्वेत बादल के समान प्रकाशमान पताकाओं से अलंकृत ५८ सुनहरी दंडसे ऊंचे छत्र वाला और बहुत शस्त्रों समेत सामानों सेभराहुआ था उस स्वर्णमयी सामानसे अलंकृत रथको विधि पूर्बक जोड़ा ५६ दारुक के छोटे भाई और उसके सखा सूतने तैयार कियेहुये रथको ऐसे बर्णन किया जैसेकि इन्द्रकेतैयार किये हुये रथको मातलि नाम सारथी कहता है ६० इसके पीछे स्नान करने वाले सात्यकी ने जिसका कौतुक मंगल किया गया पवित्र होकर स्नातक नाम ब्राह्मणोंको हजार २ अशर्फियांदीं ६१ उसके पीछे आशीर्बादों समेत सबसेमिल श्रीमानोंमें श्रेष्ठ मधुपर्कके योग्य सात्यकी कैलातक नाम मदिराको पानकर ६२ अरुण नेत्र होकर महाशोभायमानहुआ फिर बड़ी प्रसन्नतासे युक्त मदसे चूर्ण और घूर्ण नेत्र सात्यकी बीरोंके कांस्य पात्रको पाकर ६३ अग्निके समान प्रकाशित द्विगुणित तेजवाला रथियों में श्रेष्ठ बाण समेत धनुष को गोदमें लेकर ६४ ब्राह्मणों से स्वस्ति बाचन किया हुआ कवच धारण किये लाजा अर्थात् धानकी खील चन्दनादि सुगन्धित बस्तु और मालाओं से अच्छी रीति से अलंकृत कन्याओं करके अभिनन्दित ६५ युधिष्ठिर के दोनों चरणों को दोनों हाथोंसे दण्डवत करके और युधिष्ठिर करके मस्तक पर सूंघाहुआ सात्य-

की बड़े रथ पर सवार हुआ ६६ उसके पीछे उन प्रसन्न हर्षित शरीर वायुकेसमान शीघ्रगामी अजेय आनन्द से प्रफुल्लित मुख सिन्धुदेशी घोड़े उस विजय करने वाले रथको लेचले ६७ इसी प्रकार धर्मराजसे पूजित भीमसेनभी युधिष्ठिरको दण्डवत् करके सात्यकीके साथ चले ६८ आपकी सेनामें प्रवेशित होनेको अभिलाषी शत्रुओंके विजय करने वाले उनदोनों वीरोंको देखकर आप के सबपुत्र जिनमें मुखिया द्रोणाचार्य्यथे नियत हुये ६९ तब वह प्रसन्नतासे पूर्णवीर सात्यकी कवच धारण किये पीछे चलनेवाले भीमसेन को देखकर उसको भी प्रसन्न करके प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले वचनको बोला कि हे भीमसेन तुमराजा की रक्षाकरो यह कर्म तेरेही करने के योग्य माना है ७० । ७१ मैं इस काल से पकीहुई सेनामें प्रवेश करूंगा और राजाकी रक्षा करना वर्त्तमान और भविष्यत दोनों कालोंमें कल्याण करने वालीहै ७२ हेशत्रुओंके पराजय करनेवाले भीमसेन तुममेरे पराक्रमको जानते हो और मैंतुम्हारीसामर्थको जानताहूं इसहेतुसे जोतुम मेराहितचाहते हो तो लौटो ७३ सात्यकीके इसवचनको सुनकर भीमसेन सात्यकी से बोले हे पुरुषोत्तम तुमप्रयोजन सिद्धकरने के अर्थ यात्रा करो मैं राजाकी रक्षाकरूंगा ७४ इसरीति से कहाहुआ माधव सात्यकी भीमसेन से बोलाकि हेपांडवतुमअवश्य जाओ निश्चयकरके मेरीही विजयहै ७५ क्योंकि जो मेरी रक्षा में प्रीति रखने वाले तुम मेरी आधीनता में नियतहो और हे भीमसेन यह शुभ शकुन भी मेरी विजयको सूचन करतेहैं ७६ और इसी हेतुसे महात्मा अर्जुनके हाथ से पापी जयद्रथ के मरने पर मैं धर्मात्मा युधिष्ठिरसे आकर मिलूंगा ७७ उस बड़े यशस्वी ने इतना कहकर भीमसेनको विदा करके आपकी सेना को इस प्रकार से देखा जैसे कि व्याघ्र मृगों के समूहोंको देखताहै ७८ हे राजा सन्मुख देखते हुये उस सात्यकी को देखकर आपकी सेना अत्यन्त अचेत होकर फिर कंपायमान हुई ७९ तदनन्तर अर्जुन के देखनेका अभिलाषी वह सात्यकी

धर्मराजकी आज्ञासे अकस्मात् आपकी सेनाकी ओर चला८० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वादशोपरिशततमोऽध्याय. ११२ ॥

एकसौतेरहका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्धाभिलाषी होकर आपकी सेनाकी ओर सात्यकी के जाने पर सेना से युक्त धर्मराज १ द्रोणाचार्य्यके रथको चाहनेवाले सात्यकी के पीछेचला२उसके पीछे युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न और बसुदान पाण्डवी सेनामें पुकारे कि आवो आवो प्रहार करो शीघ्रतासे ऐसे दौड़ो ३ जैसे कि युद्ध दुर्मद सात्यकी सुख पूर्व्वक जाताहै और बहुत से महारथी उसके पराजय करनेमें उपाय करते हैं ४ इस रीतिसे बोलते हुये वह महारथी बड़ीतीव्रतासे दौड़े वहां बिजयाभिलाषी हम सब लोग उनके सन्मुख गये५ उसके पीछे सात्यकी के रथ पर बड़े शब्द हुये अर्थात् चारोंओरसे बर्त्तमान दौड़ती हुई आपके पुत्रकी सेना ६ यादव सात्यकी के हाथसे सैकड़ों प्रकारसे छिन्नभिन्न हुई उस सेनाके तितिरबितिर होजानेपर महारथी सात्यकीने७ सब सेनाओंके आगेबड़े धनुषधारी सात शूरबीरोंको मारा हेमहाराज फिर अनेक प्रकारके देशों के स्वामी अन्य२ राजा लोगोंको भी ८ अग्नि रूप बाणों से यमलोक में पहुंचाया एक बाण से सौको घायल किया और सौबाणों से एक को ६ हाथीके सवारों समेत हाथियोंको घोड़के सवारों समेत घोड़ों को और घोड़े सारथियों समेत रथोंको भी ऐसे मारा जैसे किपशुओंको शिवजी मारते हैं १० आपकी सेनाके कोई भी शूरवीर लोग उस प्रकार अपूर्व्वकर्मी बाणरूपी वर्षा करने वाले सात्यकी के सन्मुख नहीं दौड़े ११ उन भयभीत घायल और लम्बी भुजावाले सात्यकीसे मले हुये बीरोंने उस बड़े शूर प्रतापी को देखकर युद्धभूमिको त्याग किया उसके तेज से अचेत उन लोगों ने उस अकेले को अनेक प्रकार से देखा १२ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र मथे हुये टूटे नीड़ वाले रथ और टूटे हुये रथ चक्र गदा छत्र ध्वजा १३ अनुकर्ष

पताका सुनहरी मुकुट बाजूबन्द रखने वाली चन्दन से लिप्त भुजा १४ और हाथी की सूंड़के समान सर्पके फणकी सूरत जंघाओंसे पृथ्वी आच्छादित होगई १५ वह पृथ्वी उत्तम चक्षु वाले शूरवीरोंके पड़े हुये चन्द्रमा के समान प्रकाशित कुंडलधारी मुखों से अग्नि के समान प्रकाशमान होगई १६ अनेक प्रकारसे टूटे पर्वतों के समान पड़े हुये हाथियों से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि पड़े हुये पहाड़ों से शोभित होतीहै १७ मोतियों के जालों से अलंकृत सुनहरी ठंढा दराड आदिक अपूर्व्व जेरबन्दों समेत घोड़ेभी अपूर्व्व शोभायमानहुये १८ निर्जीव पृथ्वी को पाकर उस बड़ी भुजावाले से अत्यन्त मर्दितकिये गये फिर वह यादव सात्यकी आपकीअनेक प्रकार की सेनाओं को मारकर १९ और शेष सब सेनाको उच्छिन्न करके आपकी सेनामें घुस गया वहां जाकर सात्यकीने जिसमार्ग से कि अर्जुन गयाथा उसी मार्गसे जानाचाहा२० उसके पीछेद्रोणाचार्य्य से रोका गया अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी भारद्वाजको पाकर ऐसे उल्लंघन करनेवाला नहींहुआ २१जैसे मर्यादाको समुद्र नहीं उल्लंघन करसका फिर द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें महारथी सात्यकीको रोक कर २२ मर्म भेदी तीक्ष्ण पांच बाणोंसे घायल किया हेराजा फिर सात्यकी ने भी उनको ऐसे सात बाणोंसे व्यथित किया २३ जोकि सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धार कंक और मोरके परोंसे संयुक्त थे फिर द्रोणाचार्य्य ने छः बाणोंसे घोड़े और सारथी समेत उसको घायल किया २४ महारथी सात्यकी ने उन द्रोणाचार्य्यजी को नहीं सहा इसके पीछे सात्यकी ने सिंहनाद करके द्रोणाचार्य्य को व्यथित किया २५ और दूसरे चौबीस बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल करके भी फिर दश बाणोंसे घायल किया २६ हे श्रेष्ठ युद्धमें एक बाणसे उनके सारथी को चार बाणों से चारों घोड़ों को और एक बाण से उनकी ध्वजाको भी काटा २७ फिर शीघ्रता करने वाले द्रोणाचार्य्य ने टीड़ी दलों के समान तीक्ष्ण चलने वाले बाणों से उसको घोड़े सारथी रथ और ध्वजा समेत ढक दिया २८ उसी प्रकार भयसे

उत्पन्न होने वाली व्याकुलता से रहित सात्यकी ने तीव्र चलने वाले अनेक बाणोंसे द्रोणाचार्य्य को ढकदिया इसके पीछे द्रोणाचार्य्य बोले २६ कि हे सात्यकी तेरा आचार्य्य तो मुझ लड़ने वालेको त्याग करके नपुंसकके समान युद्धको छोड़ कर गया और परिक्रमा करी ३० हे माधव अब तुम मुझसे युद्ध करते जीवते नहीं जावोगे जो तुमभी अपने गुरूके समान मुझको युद्धमें छोड़कर नहीं जावोगे तो ३१ सात्यकी बोला हे ब्रह्मन् आपका कल्याण हो मैं धर्मराज की आज्ञा से अर्जुन के खोजने को जाऊंगा मेरासमय व्यर्थ न होजाय ३२ आचार्य्योंका खोलाहुआ मार्ग सदैव शिष्यों से वर्त्ताव किया जाताहै इस हेतुसे मैं उसी प्रकार शीघ्र जाताहूं जिस प्रकार से कि मेरे गुरू गये हैं ३३ संजय बोले हे राजा सात्यकी इतना कहकर आचार्य्यजी को त्याग करता हुआ चलनेके समय सारथीसे यह बचनबोला ३४ कि द्रोणाचार्य्यजी सब प्रकारसे मेरे रोकनेको उपाय करेंगे हे सूत युद्ध में सावधान होकर चल और इस उत्तम बचनको सुन ३५ कि अवन्तिदेशियों की यहसेना बड़ी प्रकाशमान दिखाईदेतीहै और उसकेपीछे यहदाक्षिणात्योंकी बड़ीसेना दृष्टपड़ती है ३६ उसकेआगे बाह्लीकदेशियोंकीभी वहबड़ीसेना औरबाह्लीक देशियोंकेपास कर्णकीबड़ीसेना नियतहै ३७ हेसारथीयहसब सेना एक दूसरेसे पृथक् नियतहैं और युद्धभूमि में एकदूसरेकी सहायता लेकर परस्पर रक्षाकरतीहैं ३८ सोहेसारथी इस अवकाशको पाकर अत्यन्त प्रसन्नके समान घोड़ोंको चलायमानकरो मध्यम तीव्रतामें नियतहोकर मुझकोवहांलेचल ३९ जहांपर कि नानाप्रकारके शस्त्रों के उठानेवालेबाह्लीक देशी औरबहुतसे वह दाक्षिणात्य जिनका अग्रगामीकर्णहै दिखाईदेतेहैं ४० औरजहांपर नानाप्रकारके देशोंमें उत्पन्नहोनेवाले पदातियोंसेव्याप्त हाथीघोड़े औररथोंसेदुर्गम्यसेना दिखाईपड़तीहै ४१ द्रोणाचार्य्य ब्राह्मणको त्याग करताहुआसात्यकीअपनेसारथीसे इतना कहकर कि जो कर्णकी भयकारी बड़ी सेना हैउसमें होकर चलो यह कहकर चलदिया ४२ फिर बहुत बाणोंको

फैलातेहुये क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य उस मरव न मोड़नेवाले जातेहुये महाभाग सात्यकीके पीछेचले ४३ वह सात्यकी तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णकी बड़ीसेनाको घायल करके उस भरतवंशियोंकी सेनामें प्रवेश करगया जोकि असंख्यातथी ४४ फिर चलायमान सेनाके मध्यमें सात्यकीके प्रवेशित होजाने पर क्रोधयुक्त कृतवर्मा ने सात्यकी को रोका ४५ पराक्रमी सात्यकीने छःबाणोंसे उस आतेहुये कृतवर्माको घायल करके चारबाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको घायल किया ४६ इसके पीछे सात्यकीने तीव्र चलानेवाले सोलह बाणोंसे कृतवर्माको छातीके मध्यमें फिर घायल किया ४७ हेमहाराज यादव सात्यकी के अत्यन्त प्रकाशवान् अनेक बाणोंसे घायल उसकृतवर्माने सहन-ता नहींकी ४८ उस सात्यकीने टेढ़े चलनेवाले वायुके समान वत्स-दन्तनाम बाणकोधनुषपर चढ़ाकर कानतक खैंचकर छातीपर घाय-लकिया ४९ वह सुन्दर पुंख और पक्षवाला शायक नामबाण उसके शरीरके कवच को छेदकर रुधिरमें लिप्तहोकर पृथ्वीमें प्रवेश कर-गया ५० हेराजा इसकेपीछेउत्तम अस्त्रके ज्ञाता कृतवर्माने सात्यकी के धनुषको बाणोंके समूहों समेत अपने बहुतसे बाणोंसेकाटा ५१ हेराजा इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधकरके दूसरे दश तीक्ष्ण बाणोंसे सत्य पराक्रमी सात्यकीको छातीके मध्यमें घायल किया ५२ तब धनुषके टूटनेपर शक्तिमानोंमें श्रेष्ठ सात्यकीने अपनीशक्तिसे कृतव-र्माकी दाहिनी भुजाको घायलकिया ५३ इसकेपीछे सात्यकीने अत्य-न्तदृढ़ पूर्ण धनुषको चलाकर बड़ी शीघ्रतासे हजारोंहींबाणोंकोछो-ड़ा ५४ इसकेपीछेभी सात्यकीने हार्दिक्यके पुत्रकृतवर्माकोरथसमेत चारोंओरसे ढंकदिया और बाणोंसे ढंककर ५५ फिर उसके सारथीके शिरको भल्लसेकाटा फिर मृतक सारथी कृतवर्माके बड़े रथसे गिर पड़ा ५६ तदनन्तर सारथीसे रहितवहघोड़े अत्यन्तभागे फिरतोभ्रा-न्तीसे युक्त भोजन वंशीवीर कृतवर्मा आपही घोड़ोंको पकड़कर ५७ धनुष हाथमें लेकर नियतहुआ सेनाके लोगोंने उसकी प्रशंसाकरी उसने एकमुहूर्त्त दमलेकर उन उत्तम घोड़ों को चलायमान कि-

सब धर्मोंके ज्ञाताहोकर हे सात्यकी तुम मित्रधर्मको विचारकरके इस धृष्टद्युम्नसे क्रोधको दूरकरके शान्तहोजावो ५८ तुमइस धृष्टद्युम्नके कहनेको क्षमाकरो और धृष्टद्युम्न तुम्हारे कहनेको क्षमा करै और हमभी क्षमा करनेवालेहैं जितेन्द्री क्षमावान् होनेके सिवाय दूसरी कोईबात उत्तम नहींहोती ५६ हेश्रेष्ठसहदेवकेसमझाने से सात्यकीके शान्त होजाने पर राजा पांचालका पुत्र धृष्टद्युम्न यह बचन बोला ६० हेभीमसेन इस युद्धके मदसे संयुक्त इससात्यकीको छोड़दो यह मुझको ऐसेपावेगा जैसे कि वायु पर्व्वतकोपाताहै ६१ जबतक मैं युद्धमें तीक्ष्णबाणों से इसके क्रोध वा युद्धको उत्साह और जीवनकोदूरकरदूं ६२फिरमुझको क्या करनायोग्यहै जोयह पांडवोंका बड़ाकर्म वर्त्तमानहुआ औरयहकौरव आतेहैं ६३ इनसबको तोयुद्धमेंअर्जुन रोकेगाऔर मैंशायकोंसेइसके मस्तकको गिराऊंगा६४यहमुझको युद्धमेंटूटे भुजवाला भूरिश्रवामानताहै इसकोछोड़ दो कैतो मैं इसको अथवा यहमुझकोमारेगा ६५ धृष्टद्युम्न के बचनोंको सुनता और सर्पके समान श्वासलेता भीमसेनकी भुजाओंके मध्यमें लगाहुआ पराक्रमी सात्यकी बारंबारनिकलनेकी चेष्टा करताथा ६६ वह दोनों बलवान् महापराक्रमी भुजाओंसे शोभायमानहोकर बैलोंके समान गर्जनेवालेहुये हे श्रेष्ठ फिर वासुदेवजी और धर्मराजने शीघ्रतासे ६७ बड़े उपाय पूर्व्वक दोनों वीरोंको थांभा हे क्षत्रियर्षभ फिरउन क्रोधसे रक्तनेत्रवाले बड़े धनुषधारियों कोरोककर युद्धमें दूसरे युद्धाभिलाषी शूरवीरोंके सन्मुखगये६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिनवनवतितमोऽध्यायः १६६ ॥

दोसौका अध्याय॥

संजयबोले कि फिर द्रोणनन्दन अश्वत्थामाने ऐसे शत्रुओं का नाशकिया जैसे कि प्रलयकालमें काल पुरुष से संयुक्त मृत्यु जीवों का नाशकरती है १ उसने भल्लोंसे शत्रुओं के मनुष्यों को मारकर शरीरोंका ऐसा पर्व्वत लगादिया जो ध्वजा वृक्ष शस्त्र शिखर और

मरेहुये हाथीही पापाणरूप घोड़ेरूप किम्पुरुषोंसेपूर्ण धनुषरूपी लतासे संयुक्त मांस भक्षी राक्षस और पक्षियों से शब्दायमान भूत और यक्षोंके समूहों से व्याकुल था २ । ३ तदनन्तर उस नरोत्तम अश्वत्थामा ने बड़ेवेगसे गर्जकर अपनी प्रतिज्ञाको फिर आपकेपुत्रों को सुनाया ४ कि जो धर्मरूप कवच में नियत कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने युद्धकरनेवाले आचार्य से कहाथा कि शस्त्रों को त्याग दो ५ इसके प्रतीकार में उस युधिष्ठिरके देखतेहुये उसकी सेनाको भगा ऊंगा और सबको भगाकर उस मूर्ख धृष्टद्युम्न को मारूंगा ६ यह मैं तुझसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं कि जो मुझसे युद्धकरेंगे मैं उनको युद्धमें मारूंगा अब तुम अपनीसेनाको लौटावो ७ फिर आपके पुत्रने उसवचनको सुनकर बड़ेभयको त्यागकर बड़े सिंहनादोंसमेत सेनाको लौटाया ८ हे राजा फिर कौरवीय और पांडवीय सेनाकी ऐसी बड़ी कठिन चढ़ाईहुई जैसे कि दो पूर्ण सागरों की होतीहै ९ क्रोधयुक्त कौरवलोग अश्वत्थामा के साथ नियतरूप थे और द्रोणाचार्यकेमारनेसे कौरव और पांचाल बड़ेउत्साहयुक्त उदग्ररूपथे १० हे राजा उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त अपने विषय में विजय देखनेवाले क्रोधसेपूर्ण लोगोंका महावेग उत्पन्नहुआ ११ जैसेकि पहाड़पहाड़ से और सागर सागर से टक्कर खातेहैं वैसेही कौरव और पांडव हुये १२ तदनन्तर कौरव और पांडवों के अत्यन्त प्रसन्न सेना के लोगोंने हजारोंशंख और भेरियों को बजाया १३ जैसे कि मथेहुये समुद्र का शब्द होताहै उसीप्रकार आपकी सेना का बड़ा शब्द अपूर्व हुआ १४ इसके पीछे अश्वत्थामाने पांडव और पांचालोंकी सेनाको लक्ष्य बनाकर नारायणास्त्रको प्रकट किया १५ इसकेपीछे आकाश में प्रकाशित नोक मुखवाले सर्पोंके समान हजारों बाण पांडवोंको चलायमान करते प्रकट हुये १६ हे राजा उन्होंने एक मुहूर्त्त के मध्यमें दिशा आकाश और सेनाको ऐसे ढकदिया जैसे कि लोकभरको सूर्य्यकी किरणें व्याप्तकरलेतीहैं १७ हेमहाराज इसीप्रकार निर्मल आकाशके मध्यमें दूसरी प्रकाशित ज्योतियां

प्रकट हुई और काष्णा नामलोहे के गुड़क अथवा चार चक्र और दो चक्र रखनेवाली शक्ति बहुतसीगदा आरोंपर छुरे रखनेवाले प्रकाशित मंडलवाले चक्र १६ और शस्त्र रूप अस्त्रोंसे अत्यन्त व्याप्त अन्तरिक्षको देखकर पांडव सृंजी और सब पांचाललोग व्याकुल हुये २० हेराजा जैसे २ कि पांडवोंके महारथी युद्धकर-नेवालेहुये उसी उसी प्रकार वहअस्त्र अधिक वृद्धि युक्तहुआ २१ तब युद्धमें उस नारायणास्त्रसे घायल वह महारथी अग्निसेभस्म होनेके समान सबओरसे पीड़ामान हुये २२ हेप्रभुजिस प्रकार शिशिरऋतुके अन्तमें सूखे बनको अग्नि भस्म करताहै उसीप्रकार उस अस्त्रने पांडवों की सेना को भस्म करदिया २३ हेप्रभु अस्त्र के तेजसे पर्णा सेना के नाशमानहोने पर धर्मके पुत्र युधिष्ठिरने बड़ेभयको पाया २४ उस सेनाको भगाहुआ अचेततासे युक्त और अर्जुनकी दोनों ओरकी स्थिति को देखकर धर्म पुत्र यह वचनबो ला २५ किहे धृष्टद्युम्न पांचाल देशीसेना समेत भागो और हेसा-त्यकी तुमभी वृष्णी और अंधक वंशी क्षत्रियोंसे युक्त जाओ २६ धर्मात्मा बासुदेवजी भी अपने योग्य कर्मको करेंगे यह सब लोकोंके कल्याणको करतेहैं अपने कल्याणकोकैसे नहींकरेंगे २७मैं तुम सब सेनाके लोगोंसे कहताहूं युद्ध न करना चाहिये और मैंअपने सगेभाइयोंसमेत अग्निमें प्रवेशकरूंगा २८ मैं भयभीतोंसे कठिनता पूर्वक पार होनेके योग्य युद्ध में भीष्म और द्रोणाचार्य्य रूपी समुद्रकोतरकर अपनेसबसमूहों समेत अश्वत्थामारूपी गोपद जलमेंडूबूंगा २९ अबराजादुर्य्योधनको अभिलाषा प्राप्तहोव मेरेही कारणसे कल्याणवृत्ती वाले आचार्य्यजी युद्धमेंगिरायेगये ३० और जिसकारणसे युद्धोंमें अनभिज्ञ वह बालक अभिमन्युउनसमर्थ और निर्दयी बहुत से महारथियों के हाथसे मारागया और रक्षितनहीं हुआ ३१ और जिसहेतुसे प्रार्थना करती हुई विलापयुक्त द्रौप-दी सभामें गई और दासभावको प्राप्तहोकर पुत्र समेत धृतराष्ट्र नेजिसको त्यागकिया ३२ और जिसके कारण से उसप्रकार कवच

संरक्षित दुर्योधन घोड़ोंकेथकजानेपर जयद्रथकीरक्षाके निमित्त अर्जु-
नको मारनेका अभिलाषीहुआ ३३ अवमेरी विजयमें उपाय करने
वाले सतजित आदिक पांचाल जिसब्रह्म अस्त्र जानने वालेके हाथसे
कुल समेत गिराये गये ३४ अधर्मसे राज्यहीन हमलोगोंको जिस
द्रोणाचार्य्यनेरोका परन्तु उसके वचनके अभिलाषी हमलोग उसके
आज्ञावर्त्तीनहीं हुये ३५ जो वह हमपर अत्यन्त प्रीतिकरनेवाला मा-
रागया में भी बांधवों समेत उसके निमित्त मरणको पाऊंगा ३६ इ-
सप्रकार युधिष्ठिर के कहनेपर श्रीकृष्णजी शीघ्रही अपनी भुजाओं
से सेनाको रोककर यह वचनबोले ३७ कि शीघ्रही शस्त्रोंको त्याग
कर सवारियोंसे उतर पड़ो महात्माको ओरसे इसअस्त्रके रोकनेमें
यह छोक रचागयाहै ३८ तुम सब हाथी घोड़े और रथोंसे शीघ्र
उतर पड़ो इस प्रकारसे इस पृथ्वीपर शस्त्र त्यागनेवाले तुम लोगों-
को यह अस्त्रनहीं मारेगा ३९ जिस२ प्रकार से शूरबीर इसअस्त्रके
सन्मुख युद्ध करतेहैं उसी उसी प्रकार से यह कौरव अधिक वरब-
लिष्ठ होतेजातेहैं ४० जो पुरुष सवारियोंसे उतरकर शस्त्रोंको रख
देंगे उन मनुष्योंको युद्धमें यह शस्त्र नहीं मारेगा ४१ और जो कोई
चित्तसेभी इस अस्त्रके सन्मुख लड़नेकी इच्छाकरेंगे उनसबको यह
अस्त्रमारकर रसातलको भेजेगा ४२ हेभरतबंशी वह सबलोगवा-
सुदेवजीके उनबचनोंको सुनकर देह और मनकेद्वारा शस्त्रोंकेत्यागने
में उत्सुकहुये ४३ इसके अनन्तर पांडव भीमसेन उन सबबीरों को
अस्त्रोंके त्यागनेमें इच्छावान देखकर प्रसन्न करता हुआ यह बचन
बोला ४४ कि यहां किसी दशामेंभी किसीको अस्त्रोंका त्यागना
योग्यनहींहै में बाणोंसे अश्वत्थामाके अस्त्रको रोकूंगा ४५ अथवा
अपनी इस सुवर्ण जटितभारी गदासे अश्वत्थामाके अस्त्रको तोड़ता
हुआ कालके समान प्रहार करूंगा ४६ यहांमेरे पराक्रमके समान
कोई पुरुष इस प्रकारसेनहीं है जैसेकि सूर्य्यके समानदूसरीज्योति
वर्त्तमान नहींहै ४७ गजराजकी सूंड़के समान और शैशिरनाम प-
र्व्वत के गिरानेमें समर्थमेरी भुजाओंको देखो ४८ में अकेलाही इस

लोकमें दशहज़ारहाथीके समान ऐसाबलवानहूं जैसेकि स्वर्ग में देवताओंकेमध्यमेंअपनी समानतानरखनेवाला इन्द्र विख्यातहै ४६ अबयुद्धमें अश्वत्थामाके प्रकाशित और अग्निरूप ज्वलित अस्त्रके हटानेमें मोटेस्कन्ध रखनेवाली मेरी भुजाओंके बल पराक्रम कोदेखो ५० जो नारायणास्त्रके सन्मुख युद्धकरनेवाला कोईबर्तमाननहीं है तो अब पांडव और कौरवों के देखतेहुए इसअस्त्रके सन्मुख मैंही युद्धकरूंगा ५१ हे अर्जुन तेरेहाथ से गांडीव धनुष का त्यागकरना नहीं उचितहै यह अयशरूपी कीच तुम चंद्रमाके समान रूपवाले कीनिर्मलता को बिगाड़ेगी ५२ अर्जुन बोले हे भीमसेन नारायण अस्त्र और गौ ब्राह्मणोंमें गांडीव धनुष मुझसे त्याग करनेकेहीयोग्यहै यहीमेरा उत्तम व्रतहै ५३ इसबचनको सुनकरभीमसेन बादलके समान शब्दायमान और सूर्य्यके समान प्रकाशित रथकी सवारीसे उस शत्रुबिजयी अश्वत्थामा के सम्मुखगया ५४ और शीघ्र पराक्रमकरनेवाले भीमसेन ने इसकोपाकर हस्त लाघवतासे पलमात्रमेंही बाणोंके जालसे ढकदिया ५५ तब अश्वत्थामाने हंसकर और कहकर उस प्रकाशित नोंक और मंत्रपढ़ेहुये बाणों से इससन्मुख दौड़नेवाले भीमसेन कोभी आच्छादित कर दिया ५६ वह भीमसेन युद्धमें अग्नि को उल्लंघने वाले प्रकाशित मुख सर्पोंके समान बाणों से ऐसा ढक गया जैसे कि स्फुलिंगों से सुवर्ण ढक जाताहै ५७ हेराजा उसभीमसेनका रूप ऐसेप्रकार का हुआ जैसे कि रात्रि के समय पट बीजनोंसे संयुक्त पहाड़का रूप हो जाता है ५८ हे महाराज उस के ऊपर चलाने में वह अश्वत्थामा का अस्त्र ऐसा बढ़ा जैसे कि बायु से उठाया हुआ अग्नि होताहै ५९ उस भयानक पराक्रम वाले भयके बढ़ाने वाले अस्त्रको देख कर एक भीमसेन के सिवाय सब पांडवी सेनामें महा भय उत्पन्न हुआ ६० इस के पीछे वह सब लोग शस्त्रों को पृथ्वी पर छोड़ कर रथ हाथी घोड़े आदि सब सवारियों से उतर पड़े ६१ उन सब के शस्त्र त्यागने और सवारियों से उतर जाने पर उस अस्त्र का बड़ा

वेग भीमसेन के मस्तक पर गिरा ६२ सब जीव मात्रोंने और विशेष करके पांडवों ने हाहाकार किया और भीमसेन को उसी प्रकार तेजसे ढका हुआ देखा ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विशततमोऽध्यायः २०० ॥

दोसौएकका अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुनने अस्त्र से ढके हुये भीमसेन को देख कर तेज के नाश के लिये वारुणास्त्रसे आच्छादित कर दिया १ फिर अर्जुन के हस्तलाघव और अस्त्र के तेज के व्याप्त होने से किसीने भी वारुणास्त्रसे युक्त भीमसेन को नहीं देखा २ घोड़े रथ और सारथी समेत भीमसेन अश्वत्थामा के हाथसे ढका हुआ होकर ज्वालाओंकी माला रखने वाला बड़ी कठिनता से देखने के योग्य अग्नि के मध्य में रक्खी हुई अग्निके समान दिखाई पड़ा ३ हेराजा जैसे कि रात्रि के अन्त होने पर नक्षत्रादिक अस्ताचल पर प्राप्तहोते हैं उसी प्रकार भीमसेन के रथ पर बाणों के समूह गिरे ४ हेश्रेष्ठ वह भीमसेन और उस के घोड़े और सारथी समेत रथ अश्वत्थामा के अस्त्रसे ढका हुआ अग्नि के मध्य में वर्तमान हुआ ५ जैसे कि प्रलय कालमें सब स्थावर जंगम जीवों समेत सब जगतको अग्नि देवता भस्म करके ईश्वरके मुखमें प्राप्तहोते हैं उसी प्रकारसे अस्त्र नेभी अनेकों को मारकर भीमसेन को ढकदिया ६ जैसे कि अग्नि सूर्य्य में और सूर्य्य अग्निमेंप्रवेशकरे उसी प्रकार वह तेज भी प्रवेश करगया और वहपांडव नहींजानागया ७ उसप्रकार से भीमसेन के रथपरफैलेहुये उस अस्त्रको देखकर और युद्धमें अपनी समान किसी को न देखने वाले चेष्टाकरनेवाले अश्वत्थामाको देखकर ८ औरउन युधिष्ठिरादिक महारथियों को विमुख हुये देखकर शस्त्रों को त्याग ने वाली सब पांडवी सेना अचेत रूप होगई ९ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले बड़े तेजस्वी वीर अर्जुन और वासुदेव जी रथसे कूदकर भीमसेनकी ओर दौड़े १० तदनन्तर वह दोनों बड़े पराक्रमीअश्व-

त्थामाके अस्त्रबलसे उत्पन्नहोनेवालेतेज को मुंझाकरउसी प्रकार माया में प्रवेशकरगये ११ तब वारुणास्त्रके प्रयोग औरदोनों कृष्णों के बल पराक्रम द्वारा उस अस्त्र से उत्पन्न होने वाली अग्निने उन शस्त्रके त्यागनेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुन को भस्म नहीं किया १२ इसके पीछे उन दोनों नर नारायण ने अस्त्रकी शान्ती के अर्थ बलसे भीमसेन को खेंचा और सब शस्त्रादिकों को पृथक् कर दिया १३ उस समय वह खेंचा हुआ भीमसेन बड़े शब्द से गर्जता था और उसकी गर्जना से अश्वत्थामा का वह घोर और कठिनता से विजयहोने वाला अस्त्र औरभी वृद्धि को पाताथा १४ तब वासुदेव जी उससे बोले कि हे पांडुनन्दन यह क्या बातहै जो निषेध कियाहुआ भी युद्धसे नहीं लौटताहै १५ जो यह कौरव नन्दन युद्धसे बिजयहोजाय तो हम और यह सब राजालोग भी युद्ध को करें १६ हमसब तुम्हारे पक्षवाले रथोंसे उतरे हैं हे भीम-सेन इस हेतुसे तुमभी शीघ्र रथसेउतरो १७ ऐसा कहकर श्रीकृष्ण जीने उस क्रोधसे रक्तनेत्र सर्पके समान श्वास लेनेवाले भीमसेन को रथसे पृथ्वीपर खड़ाकिया १८ जब वह रथ से पृथक किया और शस्त्र पृथ्वीपर रखवादिये उसी समय वह शत्रुओंका तपाने-वाला नारायणास्त्र अत्यन्त शान्त होगया १९ संजयबोले कि इस रीतिसे उस कठिनतासे सहनेके योग्य तेजके अत्यन्त शान्त होजा-नेपर सब दिशा और विदिशा शुद्ध होगई २० आनन्दरूपी वायु चलीं पशु पक्षीआदिक जीव शांतरूपहुये और सब सवारियां भी प्रसन्न हुई २१ हे भरतवंशी इसके पीछे उस घोरतेजके शान्तहोने परवह बुद्धिमान् भीमसेन ऐसाशोभायमानहुआ जैसे कि प्रातःकाल के समय उदयहुआ सूर्य्य होताहै २२ फिर मरने से शेष बचीहुई पांडवोंकी सेना अस्त्रकी शान्तीसे प्रसन्न आपके पुत्रके मारने की इच्छासे नियत हुई २३ हे महाराज उस सेनाके नियत होने और उस प्रकार अस्त्रके निष्फल होनेपरदुर्योधन अश्वत्थामाजीसेबोला २४ कि हे अश्वत्थामा अब फिर आप उस अस्त्रको शीघ्र चलाओ

क्योंकि विजयके अभिलाषी यह पांचाल फिर सन्मुख आकर नियत हुये २५ हे धृतराष्ट्र आपके पुत्रके वचनको सुनकर अश्वत्थामाजी बड़े दुःखोंके समान श्वास लेकर उस राजासे यह वचन बोले २६ हे राजा यह अस्त्र दुबारा नहीं प्रकट होताहै न प्राप्त होताहै और बारंबार चलाहुआ चलानेवालेहीपर निस्संदेह लौटकर आता है २७ इस अस्त्रका निष्फल करना वासुदेवजीने प्रकट करदिया है राजा अब अन्य दशामें शत्रुका मारना नियत किया जायगा २८ विजय होय अथवा मृत्यु होय इन दोनोंमेंसे विजयकी अपेक्षा मृत्यु काहीहोना श्रेष्ठहै यह मृतकोंके समान शत्रु शस्त्रोंके त्याग करनेसे विजय कियेगये २९ दुर्योधनबोले हे अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ गुरूजीके पुत्र जो यह अस्त्र दुबारा नहीं चलताहै तो दूसरे और किसीअस्त्र सेही गुरूके मारनेवालोंको मारो ३० आपके पास ऐसे दिव्य अस्त्र हैं जैसे कि बड़े तेजस्वी शिवजीके पासहैं अत्यन्त क्रोधयुक्त इन्द्र भी तुझ अभिलाषी के हाथसे नहीं बच सक्ता है ३१ धृतराष्ट्र बोले कि उपाधिसे द्रोणाचार्य्य के मरने और उस अस्त्रके निष्फलहोनेपर दुर्योधनसे उसप्रकार कहेहुये अश्वत्थामा ने फिरकौनसा कामकिया ३२ नारायणास्त्र से छूटे सेना मुखपरघूमनेवाले और युद्धकेनिमित्त सन्मुख नियत पांडवोंको युद्धमें देखकर क्याकिया ३३ संजयबोले कि वह सिंहलांगूल ध्वजाधारी पिताके मरणको जानता क्रोध से युक्त निर्भय होकर धृष्टद्युम्नके सन्मुख गया ३४ हे नरोत्तम उसपुरुषोत्तमने सन्मुख जाकर क्षुद्रकनाम बीस बाणोंसे और फिर बड़े वेगवाले पांच बाणोंसे घायल किया ३५ हे राजा इसके पीछे धृष्टद्युम्नने अग्निके समान ज्वलितरूप अश्वत्थामाको तरेसठ बाणों से घायल किया ३६ और सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाले बीसबाणों से उसके सारथीको और तेजधार चारबाणोंसे चारोंघोड़ों को ३७ छेद छेद कर पृथ्वीको कंपायमान करता अश्वत्थामाके ऊपर ऐसा गर्जा मानो उस बड़ेयुद्धमें सब लोकके प्राणोंको हरणकरलेगा ३८ हे राजा फिर अस्त्रज्ञ और निश्चय करनेवाला धृष्टद्युम्न मृत्यु को

निवृत्त करके अश्वत्थामाके सन्मुख दौड़ा ३६ तिसके पीछे रथि-
योंमें श्रेष्ठ बड़े साहसी धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामाके शिरपर बाणों की
वर्षाकरी ४० तबतो पिताके मरणको याद करतेहुये अश्वत्थामाने
युद्धमें उस क्रोधयुक्त को बाणोंसे ढककर दशबाणों से उस को भी
छेदा ४१ अश्वत्थामाने अच्छी रीतिसे छोड़ेहुये क्षुरनाम दो बाणों
से उसकी ध्वजा धनुषको काटकर अन्यबाणोंसे धृष्टद्युम्न को पीड़ा
मान करके ४२ युद्धमें उसको घोड़े सारथी और रथसे रहित भी
करदिया और फिर क्रोधपूर्वक बाणोंकेप्रहारोंसे उसकेसबपीछे चलने
वालोंको घायलकिया ४३ हे राजा इसकेपीछे पांचालोंकी वह सेना
भागी और भ्रान्तीसे युक्तरूप महापीड़ामानों ने परस्पर देखा
४४ फिरसात्यकी ने शूर वीरों को विमुख और धृष्टद्युम्न को पी-
ड़ामान देखकर शीघ्रही अपने रथको अश्वत्थामा के रथपर चला-
यमानकिया ४५ और क्रोधयुक्त ने तीक्ष्ण धारवाले आठ बा-
णोंसे अश्वत्थामा को पीड़ामान किया फिर नानाप्रकार के रूप
वाले बीस बाणोंसे घायल करके ४६ उसको और उसके सारथी
को घायल किया और चारबाणों से घोड़ों को छेदा सात्यकी के
नानाप्रकार के बाणों से अत्यंत घायल बड़ा धनुषधारी ४७ वह
अश्वत्थामा हंसताहुआ इस वचन को बोला हेसात्यकी इस गुरू
के मारनेवाले में तेरीभी संयुक्तता जानीजाती है ४८ अब तू मुझसे
उस ग्रसेहुयेको और अपने को रक्षित नहीं करसकेगा हे सात्य-
की मैं अपने सत्य और तपकी शपथ खाताहूं ४९ कि जबतक मैं
पांडवों के और वृष्णियों के बल पराक्रम रूप सब पांचालों को न
मारलूंगा तबतक शान्ती को नहीं पाऊंगा ५० उनसबको यहां
एकट्ठे करो मैं सोमकोंको मारूंगा अश्वत्थामाने ऐसा कहकर सूर्य्य
की किरणरूप अत्यन्ततीक्ष्ण और उत्तम उस बाण को ५१ यादव
के ऊपर ऐसे छोड़ा जैसे कि हरिने वृत्तासुर के ऊपर वज्रको छोड़ा
था उसका चलायाहुआ वह शायक उसको कवच समेतछेदके ५२
पृथ्वी को चीरकर ऐसे प्रबेश करगया जैसे कि श्वास लेताहुआ

सर्प विलमें प्रवेश करताहै वह टूटेकवच वाला शूर अंकुशसे पीड़ित हुये हाथीके समान ५३ वाणसे बहुत रुधिरको डालनेवाला धनुष वाण को छोड़कर रुधिर में लिप्त घायल होकर रथकीउपस्थ पर बैठ गया ५४ और सारथी केद्वारा अश्वत्थामाके सन्मुखसे शीघ्र-हीदूसरे रथपर पहुंचायागया फिरशत्रु संतापी अश्वत्थामानेसुन्दर पुंख और टेढे पर्व वाले दूसरे वाण से ५५ धृष्टद्युम्न को भृकुटी के मध्य में घायल किया प्रथम अत्यन्त घायल और पीछे अत्यन्त घायल और पीड़ा मान ५६ उसधृष्टद्युम्न ने निश्चलताको पाकर ध्वजाका सहारालिया हेराजा जैसे कि सिंहसे पीड़ामान हाथीहोता है उसी प्रकार वाणसे पीड़ामान उस धृष्टद्युम्नको देखकर ५७ पां-डवों की ओरसे यहपांच शूरवीर रथी बड़े वेगसे उसके सन्मुख दौड़े अर्जुन,भीमसेन,पौरवद्वद्ध क्षत्र,चंदेरी देशियोंका युवराज, और मा-लव सुदर्शन, इन हाहाकार करने वाले सबधनुषधारी वीरों ने ५८ वीर अश्वत्थामाको सबओरसे घेरलिया वीसपदोंपर उन सावधान वीरों ने उस क्रोधयुक्त गुरु पुत्रको सब ओरसे एकसाथही घायल किया अश्वत्थामा ने विषैले सर्प के रूप तेजधार पच्चीसवाणों से ६०।६१ एकहीवाणमें पच्चीस शायकोंकोकाटा औरफिर साततीक्ष्ण वाणों से पुरूरवाको पीड़ामान किया ६२ तीनवाण से मालवको एक वाणसे अर्जुनको और छः वाणों से भीमसेनको घायलकिया हेराजा इसके पीछे उनसब महारथियोंने सुनहरी पुंख तेजधार वाणों से एक समयपर और पृथक् २ भीछेदा युवराजने वीसवाणों से ६३।६४ अर्जुन ने आठ वाणोंसे और बाकी सबोंने तीन २वा-णोंसे अश्वत्थामा को व्यथितकिया फिर अश्वत्थामा ने छः वाणोंसे अर्जुन को दशवाणसे वासुदेव जी को पांचसे भीमसेनको चारसे यु-वराजको और दोदो वाणोंसे मालव और पुरूरवाको घायल किया ६५ अश्वत्थामाने छः वाणोंसे भीमसेनके सारथी को दो वाणोंसे धनुष और ध्वजाकोछेदकर अर्जुनको पांच वाणोंसे घायलकरके घोर सिंहनादसे गर्जनाकरी ६६ आगेपीछे से अश्वत्थामाके चलाये हुये

उन तेजविषभरे घोर बाणोंसे पृथ्वी आकाश स्वर्ग दिशा और वि-
दिशा ढकगई ६७ बड़ेतेजस्वी इन्द्रके समान पराक्रमी अश्वत्थामा
ने अपने रथपर बैठे हुए सुदर्शनकी उनदोनोंभुजावोंको जोकि इन्द्र
कीध्वजाके समान थीं और शिरकी तीन बाणोंसे एकही समयमें
काटा६८ और पौरवको रथशक्तीसे घायल करके उसके रथको
बाणों से तिलतिल के समान काट श्रेष्ठ चंदन सेलिप्तभुजाओं को
काटकर भल्लके द्वारा उसके शिरकोभी शरीरसे जुदाकिया ६६
फिर शीघ्रता करनेवाले ने हटकर कमल मालाके वर्ण चंदेरी
देशकेस्वामी तरुण युवराजको अत्यन्त अग्निरूप प्रज्वलित बाणों
से घोड़े सारथी समेत छेदकर मृत्युके वशीभूत किया ७० नेत्रोंके
सन्मुख अश्वत्थामाके हाथसे मारेहुये मालव पौरव और चन्देरीके
राजा युवराजको देखकर ७१ महाबाहु पांडव भीमसेनने बड़ाक्रोध
किया और शत्रु संतापीने बड़ेक्रोधमें भरकर विषधर सर्पके समान
सैकड़ों तीक्ष्ण बाणोंसे ७२ युद्धमें अश्वत्थामाको आच्छादित कर
दिया फिर बड़े तेजस्वी क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने उस बाण वृष्टि
को काटकर ७३ तेजधार बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया उसके
पीछे महाबाहु महाबली भीमसेनने अश्वत्थामाके ७४ धनुषकोक्षुर-
प्रसे काटकर उसकोभी बाणोंसे घायलकिया फिर बड़े साहसी अ-
श्वात्थमाने उस टूटे धनुषको डालकर ७५ दूसरे धनुष को लेकरबा-
णोंसे भीमसेनको व्यथितकिया युद्धमें पराक्रम करनेवाले उनदोनों
भीमसेन और अश्वत्थामाने ७६ वर्षा करनेवालेदोबादलोंकेसमान
बाणोंकी वर्षाको बरसाया भीमसेनके नामसे चिह्नित सुनहरी पुंख
तेजधार बाणोंने ७७ अश्वत्थामाको ऐसेढकदिया जैसेकि बादलोंके
समूह सूर्य्यको ढकदेतेहैं और उसीप्रकार वह भीमसेनभीअश्वत्था-
माके छोड़े हुये टेढ़े पर्ब्बवाले हजारों बाणोंसे शीघ्रढकगया युद्धमें
शोभा पानेवाले अश्वत्थामासे युद्धमें ढकाहुआ ७८। ७६ भीमसेन
पीड़ामान नहींहुआ हेमहाराज वह आश्चर्य्य साहुआ फिरमहा-
बाहु भीमसेनने सुवर्णसे अलंकृत ८० यमराजके दण्डकी समान

तीक्ष्ण दशनाराचों को छोड़ा हेराजावह बाण अश्वत्थामा के जत्रु-
स्थान को ८१ घायल करके पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगये जैसे
वामीमें सर्प घुस जातेहैं महात्मा पांडव के हाथसे अत्यन्त घायल
उन अश्वत्थामाजीने ८२ ध्वजाकी लाठीको पकड़करदोनों नेत्रोंको
बन्दकर लिया हेराजा फिर वह अश्वत्थामा एकमुहूर्त में सचेत
होकर ८३ युद्धमें रुधिरसे लिप्त वड़ेक्रोधमें नियतहुये उस महात्मा
पाण्डवसे अत्यन्त घायल ८४ उस महाबाहुने भीमसेन के रथ
पर वेगकिया फिर कानतक खैंचेहुये बड़े प्रकाशित ८५ विषैले
सर्पकेरूप सौबाण उसके ऊपर फेंके फिर युद्धमें प्रशंसनीय उसके
पराक्रम को साधारण माननेवाले पांडव भीमसेनने भी ८६
शीघ्र उग्रबाणोंकी वर्षाकरी इसकेपीछे क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने
विशिखनाम बाणोंसे उसके धनुषको काटकर ८७ तेजधार बाणोंसे
पांडवको छातीपर घायल कियाफिर क्रोधयुक्त भीमसेनने धनुषको
लेकर ८८ युद्धमें तेजधार पांचबाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया
वर्षाऋतुमें बादलोंके समान बाण वृष्टियोंकेबरसाने वाले ८९ क्रोधसे
रक्तनेत्र उनदोनोंने युद्धमें परस्परढकदिया फिरतालोंकेघोरशब्दोंसे
परस्पर डरानेवाले ९० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्मपर कर्म करनेकी इ-
च्छासे युद्धकरने लगे अश्वत्थामाने सुवर्ण जटित बड़ेधनुषको चला
यमानकरके ९१ सन्मुखसे बाण चलानेवाले भीमसेनको ऐसेदेखा
जैसेकि शरदऋतुमेंमध्याह्नके समय प्रकाशितकिरणोंकेस्वामीसूर्य्य
होतेहैं ९२ विशिखोंके लेनेवाले बाणोंके चढ़ानेवाले और खैंचकर
छोड़नेवाले अश्वत्थामाका अन्तर मनुष्योंने नहींदेखा ९३ हेमहा
राज तब बाणोंके छोड़नेवाले उन अश्वत्थामा जीका धनुष मंडल
आलात चक्रके स्वरूप होगया उसके धनुषसे गिरेहुये सैकड़ों हज़ा-
रोंबाण आकाशमें ऐसे दिखाई पड़े जैसेकि टीड़ियोंकेसमूहदिखाई
देतेहैं ९४।९५ फिर अश्वत्थामाके छोड़ेहुये सुवर्णोंसे अलंकृत वह
घोरबाण लगातार भीमसेनके रथपर फैले ९६ हे भरतवंशी वहां
हमने भीमसेनके बड़े अद्भुत पराक्रम बल सामर्थ्य प्रभाव और नि-

श्चयकोदेखा ६७ जैसेकि वर्षाऋतुमें बड़ीघोर दृष्टी होती है उसी प्रकार चारोंओर से [illegible]मान अश्वत्थामाकी प्रकटकीहुई उस बाणदृष्टिको ध्यान न करते उस ६८ भयानक पराक्रमी अश्वत्थामाके मारनेकोइच्छा करते भीमसेनने बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि वर्षा ऋतुमें बादल करताहै ६६ बड़े युद्धमें भीमसेन का सुवर्ण पृष्ठीखेंचा हुआ धनुष द्वितीय इन्द्र धनुषके समान शोभायमान हुआ १०० उस धनुषसे युद्धमेंसैकड़ोंहजारोंबाण उस युद्धके शोभा देनेवाले अश्वत्थामा को ढकते प्रकट हुये १०१ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र इस प्रकार बाण जालों को उनदोनों के छोड़ते में मध्यकी वायुभी समीपजानेको समर्थनहींहुई १०२ हेमहाराज जिस प्रकार अश्वत्थामाने भीमसेन के मारनेकी इच्छासे सुवर्णसे अलंकृततेल मले साफनोकवाले बाणोंको चलाया १०३ उसीप्रकार अश्वत्थामा को मारना चाहते भीमसेनने भी उनबाणों के विशिषोंसे अन्तरिक्ष में तीन २ खंडकर दिये १०४ फिर बलवान क्रोधयुक्त पांडव भीमसेन ने अश्वत्थामा के मारने की इच्छासे घोर और उग्रबाणोंको बरसाया १०५ इसकेपीछे महाअस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने उस बाण दृष्टिको अपनीअस्त्र मायासे रोककर शीघ्रही भीमसेनके धनुषको काटा १०६ और क्रोधभरेनेत्र बहुतसे बाणोंसेउसको भीछेदा उसटूटे धनुषवाले पराक्रमी भीमसेनने बड़ी भयानकरथ शक्तीको १०७ वेगसे घुमाकर अश्वत्थामाके रथपर फेंका युद्धमेंहस्तलाघवता को दिखलाते अश्वत्थामाने उस बड़ी उल्कारूप अकस्मात आतीहुई रथ शक्तीको तेजबाणोंसे काटा इसी अंतरमें मन्द मुसकान करते भीमसेनने दृढ़ धनुषको लेकर १०८। १०६ विशिखोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया हेमहाराज फिरउसअश्वत्थामाने भीमसेनके सारथीको ११० टेढ़े पर्ववाले बाणसे ललाट परघायल किया हे राजा फिर बलवान अश्वत्थामाके हाथसे अत्यन्त घायल उससारथीने १११ घोड़ोंकी बागडोरों कोछोड़कर बड़ीअचेतता को पाया फिर रथसारथी के अचेत होनेपर घोड़े भागे ११२ हेराजेन्द्र

सब धनुष धारियों के देखते भीमसेनके घोड़े भागे भागेहुये घोड़ों के कारणसे युद्ध भूमिसेहटायेहुये उसभीमसेन को देखकर ११३ अत्यन्त प्रसन्नचित्त अजेय अश्वत्थामाने बड़े शंख को बजाया फिर सबपांचाल और पांडव भीमसेन ११४ भयसे पूर्ण धृष्टद्युम्नके रथ को छोड़कर दिशाओंको भागे तब अश्वत्थामा जोउनछिन्नभिन्नों को पीछेकी ओरसेबाणोंकरके घायल करतेवेगसे पांडवीसेनाको चलायमान करते सन्मुखवर्त्त मानहुये ११५ हेराजा युद्धमें अश्वत्थामा के हाथसे घायलहुये उन राजाओंने उस द्रोण पुत्रके भय से सब दिशाओंको सेवनकिया ११६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विशतोपरिएकतमोऽध्यायः २०१॥

दोसौदोका अध्याय॥

संजयबोले कि उसइधर उधर होनेवाली सेनाको देखकर कुन्ती केपुत्र बड़े साहसी अर्जुनने अश्वत्थामाके विजय करनेकी इच्छासे सेनाको रोका १ तब गोविंदजी और अर्जुनके बड़ेउपायसे नियत कियेहुये वहसेनाके लोग वहांनियत नहींहुये २ अकेलाअर्जुनही सोमक मत्स्य देशीयऔर अन्यवीरों समेतकौरवोंके सन्मुखवर्त्त मा नहुआ ३ फिर बड़ा धनुषधारी अर्जुन शीघ्र दौड़कर सिंहलांगूल ध्वजाधारी अश्वत्थामासे बोला ४ किहे अश्वत्थामा आप अपनी बुद्धि सामर्थ्य बल वीरता और धृतराष्ट्र केपुत्रोंमें जोप्रीति पूर्व्वक हमारे साथमें जो शत्रुताहै ५ और जोआपमें तेजहै उससबको मुझ पर दिखलावो और द्रोणाचार्य्य का मारने वाला वह धृष्टद्युम्नही आपके अभिमानको दूरकरेगा ६ कालाग्नि के समान प्रसिद्ध शत्रु ओंकी मृत्युरूप धृष्टद्युम्न के और केशवजी समेत मेरे भी सन्मुख हो ७ अब युद्धमें तुझदुष्ट तकेअहंकारकोनाशकरूंगा धृतराष्ट्र बोले हेसंजयआचार्यकापुत्रपराक्रमीप्रतिष्ठाके योग्यहैउसकी प्रीति अर्जुन केसाथहै और वह महात्मा अर्जुनका प्याराहै प्रथम अर्जुनका ऐसा

कठोर बचन नहींहुआ फिर अर्जुनने किसहेतुसे अपने मित्रसे रूखे बचन कहे ९ संजय बोले कि बाण और अस्त्रकी रीति के ज्ञाता माधव सुदर्शन युवराज और पौरव वृद्ध क्षत्र के मरने पर १० धृष्टद्युम्न सात्यकी और भीमसेन के पराजय होनेऔर उन वचनों से युधिष्ठिर के मर्मस्थलोंके चलायमान होने ११ और दुःखको स्मरण कर हृदय की व्याकुलता उत्पन्न होनेपर अर्जुन का क्रोध जैसा पहिले नहीं हुआ था उससे अधिक उत्पन्नहुआ १२ उस कारण से नीच पुरुषके समान होकर प्रतिष्ठाके योग्य आचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा से अयोग्य अप्रिय निन्दित और रूखेबचनकहे १३ हेराजा सबमर्मों के छेदने वाले अर्जुनके बचनों से इस प्रकार कठोर वचन सुनने वाले क्रोधसे श्वासलेते बड़े धनुष धारी १४ सावधानअश्वत्थामाजी ने अधिक तर श्रीकृष्ण और अर्जुन पर क्रोध करके युद्धमें नियत होकर पवित्रता से आचमनकर १५ देवताओं से भी अजेय आग्नेय अस्त्रको धारण किया औरदृष्टिके सन्मुख आनेवाले शत्रुओं के समूहों को लक्ष्यबना कर १६ निर्धूम ज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित बाण को परम मन्त्र पढ़कर बड़े क्रोध में प्रवृत्त होकर फेंका १७ फिर आकाश में बाणों की कठिन बर्षाहुई अग्निकीज्वालाओं से पूर्ण उस बाणोंकी वर्षाने अर्जुनकोचलाय मानकिया १८ आकाश से उल्का पात हुये दिशा अविदित हुई भयकारी अन्धकारसे अकस्मात वह सब सेना व्याप्त होगई १९ और इकट्ठे होने वाले राक्षस और पिशाच अत्यन्त शब्द करने लगे अशुभ वायुचलीं सूर्य्य अप्रकाशितहुये और सब दिशाओंमें काकभयानक शब्द करने लगे और रुधिर की बर्षा करने वाले बादलभी आकाशमें गर्जने लगे २०। २१ पशुपक्षी गौ योगी और सुन्दर व्रतवाले मुनियों ने भीबड़ी अशान्ती को पाया २२ जिसमें सूर्य्य समेत सब जीव धारी घूमते दिखाई पड़ते थे वह त्रिलोकी चारों ओरसे दुखी और तापोंसे व्याप्त हो गई २३ इसी प्रकार अस्त्रके तेजसे अत्यन्त संतप्त पृथ्वी में रहने वाले सर्पादिक भी श्वासलेते हुये घोर तेजके

देखने की इच्छा से ऊपर आये २४ हे भरतवंशी जलके स्थानों के गरम होने से जलते हुये जल जीवों ने भीबड़ी व्याकुलताकोपाया २५ बाणों की छोटी बड़ी वर्षा जो कि गरुड़ और वायु के समान वेग वानथीं दिशा विदिशा आकाश पृथ्वी औरसब ओरसे हुई २६ वज्र के समान वेग वान अश्वत्थामा जीके बाणोंसे घायल और अत्यन्त भस्मीभूत शत्रु ऐसे गिर पड़े जैसे कि अग्निके जलायेहुये वृक्ष गिर पड़ते हैं २७ जलते हुये बड़े हाथी बादल के शब्द के समान भयानक शब्दों को गर्जते चारों ओरसे पृथ्वी पर गिरपड़े २८ हे राजा भयसे भयभीत हुये अन्य हाथी दिशाओंको भागे और ऐसे शब्द करने लगे जैसे कि पूर्व समयमें वन के मध्यमें दावानल नाम अग्नि से घिरे हुये २९ पुकारते हैं हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र जैसे दावानल अग्नि से जली हुई वृक्षों की चोटियां होती हैं उसी प्रकार घोड़े और रथों केसमूह दृष्टि गोचर हुये ३० और जहां तहां रथों के हजारों समूह भी गिरपड़े हेराजा उस भयसे व्याकुल सेनाको युद्धमें ऐसे भस्म कर दिया ३१ जैसे कि प्रलय कालमें सम्वर्त्तक नाम अग्नि सब जीवों को भस्म कर देताहै फिर युद्धमें जलती पांडवी सेना को देखकर ३२ अत्यन्त प्रसन्न चित्त आपके शूर वीरों ने सिंहनादों को किया इसके पीछे नानाप्रकारके रूप वाले हजारों बाजों को भी ३३ विजय से शोभाय मान और प्रसन्न चित्त आपकी सेना के लोगों ने शीघ्र बजाया हे राजा अंधेरे से लोक के ढकजाने पर सब अक्षौहिणी समेत पांडवअर्जुन ३४ बड़े युद्ध में दिखाई नहीं पड़े उस प्रकार का अस्त्र प्रथम हमने देखा था नसुना था ३५ जैसा कि क्रोध युक्त अश्वत्थामाने प्रकट किया हे महाराज फिर अर्जुन ने उस ब्राह्म्यअस्त्रको प्रकट किया ३६ जोकि ब्रह्माजीने सब अस्त्रों के दूरकरनेको प्रकटकिया था तदनन्तर एक मुहूर्त्त में ही वह अन्धकार दूर होगया ३७ शीतल वायु चली निर्मल दिशा शोभाय मान हुई उस समय वहांपर हमने सम्पूर्ण अक्षौहिणीको अपूर्व रूपसे मृतक ३८ और अस्त्रकेतेजसे

ऐसा भस्महुआ देखा कि जिनका रूप नहीं जाना जाता था उसके पीछे बड़े धनुषधारी वीर अर्जुन और केशवजी अस्त्रसे छुटेहुये ३९ एकसाथही ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि आकाशमें दो सूर्य्य होते हैं फिर गांडीव धनुषधारी और केशवजी दोनों अजेय दिखाईपड़े ४० और आपके शूरबीरों का भय उत्पन्न करनेवाला जुड़ाहुआ वहरथ पताका ध्वजाअनुकर्ष घोड़े और उत्तम शस्त्रों समेत शोभायमान हुआ ४१ इसके पीछे एक क्षणभरमेंही अत्यन्त प्रसन्न पांडवोंके किलकिला शब्दशंखभेरी आदिकबाजों समेत उत्पन्न हुये ४२ वहां बेगसे साथ आनेवाले केशवजी और अर्जुनको देखकर दोनोंसेनाओं का यहविचार हुआथा कि मारेगये ४३ फिर उनविनाघायल और अत्यन्त प्रसन्नचित्तोंने उत्तमशंखों को बजाया आपके सबपुत्र पांडवों को अत्यन्त प्रसन्न देखकर पीड़ामान हुये ४४ हे श्रेष्ठ बड़े दुःखी अश्वत्थामाने दोनोंमहात्माओं को छुटाहुआ देखकर एक मुहूर्त्त भर चिन्ताकरी कि यह क्या बात है ४५ हे राजेन्द्र इसकेपीछे ध्यान औरशोकमें नियत अश्वत्थामाजो चिन्ताकरके उष्ण और लम्बी श्वासा लेते चित्त से उदास हुये ४६ और धनुषको त्याग शीघ्र रथसे कूद यह सब मिथ्या है इस शब्द को बड़ी धिक्कारी के साथ कहते हुये युद्धसे हटगये ४७ फिर स्वच्छ बादल के रूपपापों से रहित साक्षात् धर्म के समान आगे वर्त्तमान वेदव्यास जी को देखा ४८ अश्वत्थामाजी उस कौरवकुलके तारनेवाले व्यासजीको आगे नियत देखकर रुकेहुये कण्ठ और महादुखी के समान नमस्कार करके इस बचन को बोले ४९ कि हे व्यासजी नाश युक्त का अविनाशीपनके साथ दर्शनहोना और अस्त्रका नियम से रहित होना हम इसको नहीं जानते हैं कि इसमें क्या व्यतिक्रमहै यह मेरा अस्त्र कैसे निष्फल हुआ इसमें मेरा कौनसा विपरीत कर्महै ५० अथवा यहलोकों का पराजय न होनाही विपरीतहै जो यह दोनों कृष्णजीवते हैं निश्चय काल दुःख से उल्लंघन होनेवाला है ५१ असुर,गन्धर्व,राक्षस,पिशाच,सर्प,यक्ष,पक्षी,और मनुष्य किसी दशा

में भी ५२ मेरे चलाये हुये अस्त्रको निष्फलनहीं करसक्ते हैं सोयह ज्वाला रूप अस्त्रसेनाको मारकर शान्तहोगया ५३ मैंने सबका मारनेवाला बड़ा भयानक अस्त्र छोड़ा इसअस्त्रने इनमरणधर्मी केशवजी और अर्जुन को कैसे नहीं मारा ५४ हे भगवान् इस मेरे पूछते हुये मेरे सन्देहको शीघ्र निवृत्तकरके सब ब्योरे समेत वृत्तान्त कहिये हे महामुनि मैं उससब वृत्तान्त को मूलसमेत सुनना चाहताहूं ५५ व्यासजीबोले कि यह बड़ाभारी प्रयोजनहै जिसको कि तुमने बड़े आश्चर्य्यपूर्व्वक मुझसे पूछाहै मैं उस सबको मूल समेत तुमसे कहताहूं तुम चित्त को सावधान करके सुनो ५६ जो यह विश्वका उत्पन्न करनेवाला प्राचीनों का भी प्राचीन कार्य्य करने के अर्थ धर्म्म का पुत्र नारायणनाम उत्पन्न हुआहै ५७ वह बड़े तेजस्वी अग्नि और सूर्य्यके समान हिमालय पर्व्वत परस्थित ऊर्ध्वबाहु होकर तेजन्नमें नियत हुआ ५८ तब वायु भक्षण करनेवाले कमललोचनने छासठि हजार वर्ष तक अपने शरीरको सुखाया ५९ फिर दूसरी तपस्या करके तीसरे तपको भी तप कर उससे भी द्विगुणित तपस्याको करके इसमें पृथ्वी और आकाशके मध्य भागको अपने तेजसे भरदिया ६० हे तात जब वह उस तप से अत्यन्त निवृत्त हुये तब विश्वके ईश्वर विश्व के उत्पत्ति स्थान जगत्के प्रभु ६१ अत्यन्त अजेय और सब देवताओंसे स्तूयमान उनशिवजी महाराजको देखा जोकि छोटोंसे भी छोटा अर्थात् महासूक्ष्म और स्थूलोंसे भी महास्थूल ६२ रुद्र ईशान श्रेष्ठ हर शम्भु जटाजूटधारी सबके चैतन्य करनेवाले स्थावर जंगम मात्रके बड़े उत्पत्ति स्थान ६३ दुर्वारण अर्थात् कठिनतासे हटानेके योग्य दुर्धर अर्थात् विरूपाक्ष अथवा दुःखसे धारण करनेके योग्य दुष्टोंपर कठिन क्रोध करनेवाले महात्मा और सबके नाश करनेवाले साधु लोगोंपर उदारता करनेवाले दिव्य धनुष तूणीर के धारण करने वाले सुवर्णकवची अपार बल पराक्रम वाले पिनाक, वज्र, प्रकाशितशूल, फरसा, गदा, और बड़े खड्गके रखनेवाले श्वेतवर्ण जटा

मूसलधारी चन्द्रमौलि और व्याघ्र चर्म्मके धारण करनेवाले दण्ड धारी ६५ शुभ बाजूबन्दोंसमेत नागोंकाही यज्ञोपवीत धारण करनेवाले विश्वेदेवताओंके गण और जीव समूहोंसे शोभायमान अपना पराया न रखनेवाले तपोंके रक्षाश्रय वृद्धोंके प्रिय वचनोंसे स्तुतिमान ६६ जलदिशा आकाश पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य वायु और अग्निरूपकाल स्वरूप दुराचारी पुरुष जिनके दर्शनको नहीं कर सक्ते और वेद ब्राह्मणों के शत्रुओं के मारनेवाले होकर मोक्ष का कारण रूपहैं ६७ अत्यन्त प्रसन्नचित्त बासुदेवजी उनका दर्शनकर के मन बाणी बचन और बुद्धि समेत प्रसन्नहुये और जिसको सदा चारी शोकसे रहित अन्तःकरण वाले ब्राह्मण पापोंसे रहित होकर देखतेहैं उन धर्मरूप प्रशंसनीय विश्वरूप शिवजीका भक्त बासुदेवजीने अपने तपकेद्वारा आताहुआ देखा ६८ इसके पीछे नारायणजीने रुद्राक्षकीमाला से संयुक्तशरीर प्रकाशों के समूह विश्व के उत्पत्तिस्थान शिवजी महाराजको दण्डवतकरी ६९ भक्तिमान कमललोचन नारायणजीने उस बरदाता प्रभु क्रीड़ा करनेवाले जीवों के समूहोंसे युक्त अजन्मा ईसान अर्थात् सर्वेश्वर गुप्त, कारण आत्मा, अविनाशी, अन्धकके मारनेवाले विरूपाक्ष रुद्रजी को पार्वतीजी समेत दण्डवतकरके स्तुतिकी ७०।७१ श्रीनारायणजी बोले कि हे मोक्षके अभिलाषी पुरुषोंके प्राप्यरूप आदिदेववह सब प्रजापति तुमसे उत्पन्न हुये जो कि इस भुवनके रक्षकहैं हे देवता जिन्होंने इस पृथ्वी पर आकर पूर्व्व समयमें आपकी उत्पन्न की हुई इस प्राचीन सृष्टिकी रक्षाकरी ७२ मैं देवता, असुर, नाग, राक्षस, पिशाच, मनुष्य, गरुड़ गन्धर्व, यक्ष, और पृथक् २ प्रकारके जीव समूहोंको तुमसेहीउत्पन्न हुआ जानताहूं ७३ इंद्र, यम, कुबेर, वरुण, त्वष्टा, और पितृ संबंधी शुभ कर्म आपकेही निमित्तहैं अर्थात् सबदेवताओं करके आपही तृप्त करनेके योग्यहोरूप, तेज, शब्द, आकाश, बायुस्वाद युक्त जल, गन्ध, पृथ्वी, ७४ काल, ब्रह्मा, वेद, ब्राह्मण, और सब जड़ चैतन्यात्मक जगत तुमसेही उत्पन्न होनेवालाहै जैसे कि

समुद्रसे अनुकणा पृथक् होजातेहैं और फिर अन्तसमय परउनसमु
द्रोंकेसाथऐक्यताको पातेहैं ७५ इसी प्रकार ज्ञानीपुरुष जीवोंकी उ-
त्पत्तिऔर नाशकोमानकरआपकी सायुज्यताको पाताहैहृदयाकाशमें
प्रकट होनेवाले मायारूप विद्याअविद्यासे संयुक्त महत्तत्त्व अहंकार
पंचतन्मात्रा नाममानसी प्रकृतिसे संयुक्त जीव ईश्वरनाम दोपक्षीहैं
उनके रात्रिके निवास स्थान अश्वत्थ वृक्षहैं जोकि मानसी प्रकृति
औरदशोंइन्द्रियोंके रक्षकहैं जोपुटकि पंचतत्त्वात्मक शरीरके धारण
करनेवालेहैं वहसब आपहीसे उत्पन्नहैं तुम इनसे श्रेष्ठऔरपृथक्
हो अर्थात् छब्बीसों तत्त्वादिसे तुम परमात्मा रूप सत्ताईसवें हो
भूत भविष्य वर्त्तमान काल ईश्वर और सब विश्वसंबन्धी भवनआ-
पसे उत्पन्नहैं ७६। ७७ मुझ भजनेवाले भक्तपर कृपाकरो अर्थात्
पालन पोषणकरो मेरे अप्रिय कर्मको मेरे चित्तमें प्रवेशकरनेसे मुझ
कोमतमारोअहंकार आदिकसे पृथक् जीवात्माकी निरूपाधिस्वरूप
मायासे रहित तुझ ब्रह्मको इसप्रकार जानकर ज्ञानी प्राप्तहोता है
७८ हे देवताओंमें श्रेष्ठ तुझ सर्वरूपके पूजनको करना चाहते और
तलाश करते मैंने तुझ प्रशंसनीयकी स्तुतिकरी तुममुझसे स्तूय-
मानहोकर मेरेप्रिय और कठिनतासे पानेके योग्य वरोंको दोतुमने
मायाको बहुत रूपसे प्रकट कियाहै उसमायाको मेरे ऊपरकभी
प्रकटनकरो ७९ व्यासजीबोलेकि नारायण ऋषिसेस्तूयमानअचि-
न्त्यात्मा पिनाक धनुषधारी नीलकण्ठजीने उसदेवताओंमें श्रेष्ठ और
योग्य नारायणजीके अर्थ वरदिया ८० श्रीभगवान शिवजीबोलेकि
हेनारायण तुम मेरी कृपासे मनुष्य देवता और गन्धर्वोंमें बड़ेपरा-
क्रमी और बुद्धिमान होगे ८१ और देवता असुर महासर्प पिशाच
गन्धर्व और यक्षराक्षसभीतुमकोनहींसहसकेंगे ८२ और गरुड़नाग
सिंह और व्याघ्रादिकभी तुम्हारे तेजकोनहीं सहसकेंगे और कोई
देवताभी तुमको युद्धमें विजय नहीं करसकेगा ८३ और मेरीकृपासे
कोई किसी दशामेंभी वज्रवायु शस्त्र अग्नि शुष्कता आर्द्रता सब
स्थावर जंगमोंकेद्वारातुम्हारे पीड़ाको नहींकरसकेगा और युद्धमें

जाकर मुझसेभी अधिक होगे ८४। ८५ प्रथमहीसे श्रीकृष्णजीने इन वरोंको पायाहै वही यह कृष्णदेवता अपनी मायासे मोहित होकर इस जगतमें घूमताहै ८६ उसके तपसे नरनाम महामुनि उत्पन्न हुआ उस नरनाम अर्जुनको सदैव इस श्रीकृष्ण देवताही के समान जानो ८७ वही यह देवताओं के आदि नरनारायण ऋषि बड़ेतपोंसे युक्त लोकयात्रा विधानके अर्थ युगयुगमें उत्पन्न होते हैं ८८ हे बड़े बुद्धिमान् उसीप्रकार तुमभी शीघ्र अपने कर्म और बड़े तप के द्वारा तेज और क्रोध को धारण करते रुद्रस्वरूप उत्पन्नहुये ८९ सो नारायण देवताके समान ज्ञानी आपने संसार को शम्भुरूप जानकर उसके प्रिय करनेकी इच्छासे शरीरको नियमोंकेद्वारा अत्यन्त दुर्बल किया ९० हेबड़ाई देनेवाले आपने प्रकाशमान मंत्रको करके जप होम और उपहारों के द्वारा महापुरुष स्वरूपको पूजनकिया ९१ हे पंडित इसीप्रकार पूर्व्वदेहोंमें तुमसे पूजेहुये वह शिवजी प्रसन्न हुये और तुम्हारे हृदयके बहुत वरोंको दिया ९२ तेरे और उनदोनों नरनारायणोंके जन्म कर्मतप और योग श्रेष्ठहैं प्रत्येकयुगमें उनदोनों नर नारायण रूप सूक्ष्मशरीरवाले सगुणरूप देवता में * ९३ जो पुरुष प्रभुशिवजीको सर्वरूप जानकर सूक्ष्मरूपमें पूजनकरताहै निश्चयकरके उस सूक्ष्मरूप में सनातन आत्मयोग और शास्त्रयोगहै ९४ इसप्रकारसे पूजनकरनेवाले देवता सिद्ध और महर्षि लोग परलोक में अकेले शिवजीको चाहतेहैं वह सबके उत्पन्न करने वालेहैं सनातन श्रीकृष्णजी यज्ञों के द्वारा पूजन करनेके योग्यहैं ९६ जो पुरुष सबजीवों के उत्पत्ति स्थानशिव जीको जानकर प्रभुके सूक्ष्म रूपका पूजन करताहै उसपर शिवजी

* इस स्मृति में लिखाहै कि चारकी विद्यमानता में जलफल प्राप्तहोताहै वह विनाशमान है और दोकी विद्यमानता में अविनाशी फल मिलता है अब जोकि मूर्तिपूजन करनेमें पूजनकरनेवाले का चित्त, आत्मा, इन्द्री, और विषय इनचारोंकी वर्तमानता होतीहै इसहेतुसे नरनारायणजी में सूक्ष्मरूप में शिवजी का पूजन किया क्योंकि उस में केवल आत्मा और चित्तकीही वर्तमानता होती है ९३॥

बड़ी कृपाको करते हैं ९७ फिर महारथी अश्वत्थामाने उनके उस वचनको सुनकर रुद्रजी को नमस्कार करके श्रीकृष्ण जीको बहुत माना ९८ खड़ेहुये रोमांच जितेन्द्री रूपइस अस्वत्थामाने व्यास महर्षिजी को दण्डवत करके सेना को देखकर विश्रामको करवाया ९९ हे राजा युद्धमें द्रोणाचार्य्य के गिराने के पीछे पांडवों का और दुःखी कौरवों काविश्राम हुआ १०० हेधृतराष्ट्र इसप्रकार से वेदके पारांगत होनेवाले द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण पांचदिन युद्धकर के सेना मारकर ब्रह्मलोक में गये १०१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विशतोपरिद्वितीयोऽध्यायः २०२ ॥

दोसौतीनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि धृष्टद्युम्न के हाथ से उस अतिरथी द्रोणाचार्य्य के मरनेपर मेरेपुत्र और पांडवोंने क्या किया १ संजयबोले कि धृष्टद्युम्न के हाथसे उस अतिरथी द्रोणाचार्य्य के मरने और कौरवों के छिन्न भिन्न होनेपर भरतवंशियों में श्रेष्ठ कुन्ती के पुत्र अर्जुनने २ अपनी विजय प्रकट करनेवाले बड़े आश्चर्य्य को देख कर दैवइच्छा से आये हुये व्यासजीसे पूछा ३ कि स्वच्छ शस्त्रोंसे युद्धमें शत्रुओंको मारते हुये मैंने आगेसे जातेहुये अग्नि के समान प्रकाश भरेहुये एरूपको देखा ४ हेमहामुनि वहज्वालायमानपुरुष शूलको उठाकर जिस दिशामें प्राप्त होताहै उसीदिशा में मेरेसब शत्रु छिन्न भिन्न होजातेहैं ५ सबलोग उससे छिन्न भिन्न किये हुये शत्रुओंको मेरे हाथसे भगाया और छिन्न भिन्न किया हुआ मानतेहैं मैं उसके पीछे की ओरसे उस से छिन्न भिन्न किये हुये सेनाके लोगोंके पीछे जाताहूं ६ हे भगवान् उन को आप वर्णन कीजिये कि वह पुरुषोत्तम कौनहै जिसको कि मैंने शूलहाथ में लिये तेजसे सूर्य्यके समान देखा ७ वह चरणों सेनपृथ्वीको स्पर्शकरता है न शूलको छोड़ताहै उसके तेजके कारण शूलसे हजारोंशूलगिरे८ व्यासजी बोले कि हे अर्जुन तुमने प्रजापति के अर्थात् ब्रह्मा विष्णु

रुद्रके आदि, चिन्मात्ररूप, और शरीर रूप सब पुरियों में व्याप्त आदि, प्रभु, पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्गरूप प्रकाशमान, सबलोकों के ईश्वर समर्थ, ६ महेश्वर, वरदाता, शङ्करजी, को देखा है उसवर दाता भुवनेश्वर देवताकी शरणको प्राप्तहो १० जो कि महादेव, महात्मा, ईशान, जटाधारी, विभु, त्रिनेत्र, दीर्घबाहु, रुद्र, शिखा धारी, चीर वस्त्रोंसेयुक्त शरीर ११ महादेव, हरि, स्थाणु, वरदाता भुवनेश्वर, जगत् प्रधान, अजेय, जगत्पति, ईश्वर, सेभी अधिक अर्थात् उपाधि से रहित चिन्मात्र १२ जगत् के माता पिता रूप, विजयी, जगदगति, बिश्वात्मा, बिश्वके उत्पन्न करनेवाले, विश्व-मूर्ति, यशस्वी, १३ विश्व, बिश्वेश्वर, जगत्के आनन्दउत्पन्नकरने वाले, सबकर्मोंके ईश्वर, प्रभु, शंभु, स्वयंभु, अर्थात् अपने आप उत्पन्न होनेवाले जीवमात्रोंके स्वामी, भूतभविष्य वर्त्तमान के उत्पन्न करनेवाले १४ कर्मयोगरूप योगेश्वर, सर्वात्मा, और जो सबलोकों के ईश्वर हैं उनकेभी ईश्वर सबसेश्रेष्ठ, जगत् से श्रेष्ठ, वृद्धतम, ब्रह्मारूप १५ तीनोंलोकोंके रचनेवाले एक, तीनोंलोकों के, रक्षाश्रय, शुद्धात्मा, भव, भयानकरूप, चन्द्रशेषर, १६ सनातन पृथ्वीके, धारण करनेवालेदेवता और जो सबप्राणियोंका ईश्वर, है उसकेभी ईश्वर, अनधिकारियों को कठिनतासे मिलनेके योग्य जराजन्म मरणादिकोंसे रहित १७ ज्ञानस्वरूप, ज्ञानसे मिलने, केयोग्य, ज्ञानमें श्रेष्ठदुखसो जाननेके योग्य और भक्तोंको उनवरों के देनेवालेहैं जो कि उनकी कृपा से बिचार कियेजायं १८ उस समर्थके पार्षद, दिव्य और नाना प्रकारके रूपोंसे वामन, जटिल, मुंड, छोटीग्रीवा, बड़ा उदर १९ बड़ाशरीर, बड़ाउत्साह, इसी प्रकार बड़े २ श्रवणभी धारण करनेवालेहैं हे अर्जुनवह महादेव महेश्वर इस प्रकार के भयानक मुख चरण रूपान्तर पोशाक भूषण वाले पार्षदोंसे पूजितहैं हे तात बहुतेजस्वी शिवजी अपनी कृपा से तेरे आगे चलतेहैं २० । २१ हे अर्जुन सदैव उसघोर और रोमांचों के खड़े करनेवाले युद्धमें बड़े धनुषधारी प्रहार करनेवाले अश्वत्थामा

कर्ण और कृपाचार्य्यसे रक्षित २२ सेनाको सिवाय भवरूप धारी बड़े धनुषधारी देवता महेश्वर के और कौनसा पुरुष मनकरकेभी पराजय करसक्ता है २३ उस ईश्वरके आगेनियतहोनेपर कोईसन्मुख होनेकोउत्साह नहीं करताहै तीनोंलोकोंमें उसके समानजीवधारी कोईवर्त्तमान नहींहै २४ युद्धमें उसक्रोध रूपकीगन्धसेभीवहशत्रु लोगअचेतहोकर कांपतेहैं और गिरतेहैं जिनके किवहुतसे आदमी मारेगये २५ देवतालोग उन शिवजी के अर्थनमस्कार करते स्वर्ग में नियतहैं औरलोकोंमें जो अन्य २ स्वर्गके विजय करनेवाले मनुष्यहैं वह २६ औरजोभक्तसदैवअनन्यभावहैं इसवरदातादेवता शिवरुद्र उमापति सुरेशकी उपासनाकरतेहैं वह इसलोकमें सुखको पाकर परम गतिको पातेहैं २७ हेकुन्तीके पुत्र तुम सदैवउसशान्त रूपके अर्थ नमस्कारकरो उस रुद्रनीलकगठ सूक्ष्मरूप वड़ेसूक्ष्मरूप तेजस्वी२८गंगाजलसे पूर्णजटाधारी कराल कुवेरकोभी वरदेनेवाले मायाशवल,व्रह्मवालके समान जिसकी किरणहैं उसआनन्दउत्पन्न करने वाले को नमस्कारकरो२९सवका अभिलाषित पिंगलाक्षस्थाणु और पुरी रूप शरीरों में वर्त्तमान होने वाले पिंगल वर्णकेश धारी मुंड सूक्ष्म और संसार सागरके पार करनेवाले के अर्थ नमस्कार करो ३० सूर्य्य रूप संसार के प्रकाश करनेवाले शोभायमान विभूति वाले देवताओं के भी देवता भगवान भवरूप नाश कर्त्ता और संसार के प्यारे और प्रिय पोशाके ३१ वेष्टन वांधने वाले शुभ वस्त्र धारी सहस्राक्ष वर्षा करनेवाले पर्व्वत निवासी वड़ेशान्त वल्कल धारी स्वामीके निमित्त नमस्कार करो ३२ सुवर्ण मय भुजा रोगा रूप उग्र दिशाओं के स्वामी वादल और जीवों के स्वामी के अर्थ नमस्कार है ३३ वृक्षों के और गौओं के स्वामी वृक्षोंसे संयुक्त शरीरवाले सेना पति अन्तर्यामी के अर्थ नमस्कार ३४ श्रवा हाथमें रखने वाले अन्वर्य प्रकाशमान धनुष धारी और श्रीपरशुराम रूपके अर्थ नमस्कार है भव रूप विश्वके स्वामी तप रूप विस्तरधारी के अर्थ नमस्कार है ३५ सहस्रशीर्ष सहस्राक्ष सहस्र-

भुज और सहस्रपाद के अर्थ नमस्कार है ३६ हे कुन्तीके पुत्र उस वरदाता भुवनेश्वर बिरूपाक्ष दक्षयज्ञ बिध्वंसी ३७ उमा पतिकी शरण जाओ जोकि प्रजाओं के स्वामी बड़े उग्र जीवों के पति अविनाशी जटा जूटधारी ब्रह्मादिक उत्तम पुरुषों को मायासे भ्रमाने वाले उत्तम नाभि रखनेवाले वृषभध्वज ३८ तीनों लोकों के नाश में समर्थ अहंकाररखनेवाले धर्मकेस्वामी धर्महीकोश्रेष्ठ मानने वाले बर्षा का अन्त और फल करनेवाले इन्द्रादिक देवताओं में श्रेष्ठ धर्म से प्रकाशमान पुरुषों को बड़ा फल देने वाले धर्मसेही आत्मा का साक्षात्कार करने वाले धर्मसेही पाने के योग्य सुन्दर नेत्र ३९ उत्तम शस्त्र वाले बिष्णु रूप बाण रखनेवाले धर्म रूप महेश्वर और करोड़ों ब्रह्माण्डों के आश्रय स्थान रूप उदर रखने वाले ब्रह्माण्ड रूप व्याघ्र चर्मसे संयुक्त शरीर ४० लोक के ईश्वर बर दाता वेद ब्राह्मणों के स्वामी ब्राह्मण प्रिय हाथमें त्रिशूल खड्ग और ढालके रखने वाले प्रभु ४१ पिनाक धनुषधारी लोकोंकेपति ईश्वर देवता शरण्य चीर बिस्तर धारी की शरण को प्राप्त होताहूं ४२ उस देवताओं के ईश्वरके अर्थ नमस्कारहै जिसका सखाकुवेर देवताहै ऐसे सुन्दर ब्रत श्रेष्ठ पोशाक वाले के अर्थ नमस्कारहै ४३ उग्र शस्त्रधारी देवताओं में श्रेष्ठ देवताके अर्थ नमस्कार भव रूप को नमस्कार बहु धन्वीके अर्थ नमस्कार स्थाणुके अर्थ सदैव नमस्कार धनुषधारी पार्षद रखनेवाले देवताको नमस्कार ४४ धनुष धारी धनुष धारियों के प्यारे धनुष धारी देवता को नमस्कार और तुझ धन्वन्तर धनुष रूप धनुष धारियों के आचार्य्य के अर्थ नमस्कार ४५ त्रिपुर के मारने वाले भगके नेत्र उखाड़ने वाले वनस्पतियों के पति और नरोंके स्वामी के अर्थ नमस्कार माताओं के और गौओं के स्वामी के अर्थ नमस्कार ४६ गौओं के पति और सदैव यज्ञोंके स्वामी के अर्थ नमस्कार जलोंके और देवताओं के स्वामी के अर्थ नमस्कार ४७ पूषा देवताके दांत तोड़नेवाले और तीन नेत्र रखने वाले बरदाता नीलकण्ठ पिंगल बर्ण सुवर्णकेश धा-

नीके अर्थनमस्कार ४८ ज्ञानी महादेवजीके जो दिव्य कर्महैं उनको अपनीबुद्धि की सामर्थ्यके अनुसार कहताहूं ४९ उनशिवजीके क्रोध युक्तहोनेपर पातालवर्ती देवता असुर गन्धर्व औरराक्षस लोकमेंसुख से वृद्धि नहीं पातेहैं ५० पूर्व समयमें क्रोध युक्तमहा देवजीने विधिके अनुसार रचेहुये दक्षकेयज्ञको विध्वंस किया उस समय वह शिवजी दया से रहित होकर ५१ धनुरसेवाणको छोड़कर बड़ेशब्द से गर्जे तब उन देवताओंने सुख और शान्तीको पाया ५२ अकस्मात यज्ञके विध्वंसहोने और महेश्वरजीके क्रोध युक्त होनेपरउस तर्क प्रत्यंचाके शब्दसे सब लोक महा व्याकुल हुये ५३ हे अर्जुन देवता और असुर गिरपड़े और आधीनतामें वर्त्तमानहुये और सब समुद्र व्याकुल होकर पृथ्वी भी कंपायमान हुई ५४ पर्व्वत फटगये दिशाओं समेत सर्प मोहित हुये कठिन अन्धकार से पूर्ण लोक नहीं जाने गये ५५ सूर्य्य समेत सब प्रकाशमानोंके प्रकाशोंकोअस्तकिया और वह सब भयसेव्याकुल अचेतहोगये इसीप्रकार ५६ सुख चाहनेवाले ऋषियोंने अपनी और जीव धारियों की शान्तीको किया और हंसते हुये शिवजी पूपा देवताकी ओर दौड़े ५७ और पुरोडाश भक्षण करनेवाले के दांतों को उखाड़ा इसके पीछे उन शिवजीसे नम्र होनेवाले कंपायमान देवता उस यज्ञशाला से निकल गये ५८ फिर बुद्धिमान शिवजी ने धुएं और पतंगों से युक्त बिजली बादल के रूप तेजवाले देवताओं के वाणोंको धनुष पर चढ़ाया ५९ फिर सब देवताओं ने वाणों को देख महेश्वर जी को दण्डवत करके रुद्रजीके उत्तम यज्ञ भागको कल्पना किया ६० हे राजा देवता भयसे शरणमें आये तब क्रोधरहित शिवजी केही द्वारा वह यज्ञपूर्ण हुआ ६१ और भिन्न भिन्न देवता भी अबतक उन से भयभीत हैं आकाश के मध्यमें बलवान असुरों के लोहमयी रजतमयी और स्वर्णमयी तीनपुर बहुत बड़ेथे स्वर्णमयी कमलाक्षका रजतमयी तारकाक्षका ६२ और तीसरा लोहमयी विद्युन्माली राक्षसकाथा इन्द्र अपने सब अस्त्रों सेभी उन पुरोंके तोड़ने कोसमर्थ

नहीं हुआ ६४ उसके पीछे सब देवता पीड़ामान होकर रुद्रजी की शरण में गये और इन्द्र समेत वहसब देवता रुद्रजी से बोले ६५ कि यह त्रिपुरबासी घोर दैत्य ब्रह्माजी से बरपाकर लोकोंको अधिक पीड़ा देतेहैं और वरकेहो पाने से वह बड़े अहंकारी हैं ६६ हे देवताओं के महेश्वर महादेवजी आपके सिवाय दूसरा कोई किसी प्रकारसे भी उनके मारने को समर्थ नहीं है हे ईश्वर उन देवताओं से शत्रुता करने वालोंको आपमारिये हे रुद्रजी सब कर्मोंमें पशु रुद्र होंगे हेभूतेश्वर तुमइन असुरों को मारोगे ६८ देवताओं के बचनों को सुनकर उन हरने तथास्तु यह कहकर देवताओं के प्रियकी इच्छासे गन्धमादन और बिन्ध्याचलपर्ब्बत को अपनी छोटी ध्वजा बनाकर ६९ उन त्रिनेत्रधारी शंकरजी ने सागर बन समेत पृथ्वीको रथबना कर सर्पों के राजा शेषनाग को रथका अक्ष बनाकर ७० चन्द्रमा और सूर्य्यको रथके पहिये बनाके और ऐल पुत्र और पुष्पदन्त को कमानी बनाकर ७१ मलयाचल को युग करके तक्षक को त्रिवेणु बनाके सर्पों समेत पर्ब्बतोंको पोकच बनाकर चारों वेदोंको चारों घोड़े बनाकर धनुर्वेद आदिक उपवेदोंको लगाम बनाकर ७३ सावित्रीको रस्सी ओंकार को चाबुक बनाकर और ब्रह्माजीको सारथी बनाकर ७४ उसीप्रकार मन्दराचल पर्ब्बत को गांडीव और बासुकी सर्पको गुण करके बिष्णुजीको उत्तमबाण और अग्निको भाल्व बनाकर ७५ बायुको बाणके पक्षोंमें यमराज को पुंखमें बिजलीको निश्राण बनाके और मेरुपहाड़को ध्वजा करके ७६ फिर प्रहार करने वालोंमें उत्तम और अचल शिवजी सब देवताओंके उस दिव्य रथ पर सवार होकर त्रिपुर के मारने के निमित्त ७७ असुरों के नाश कर्त्ता बड़े पराक्रमी तपोधन ऋषि और देवताओं से स्तुति किये हुये श्रीमान् ७८ प्रभु शिवजी अपने से सम्बन्धरखने वाली दिव्य और अनुपम सवारीको बनाकर अचल रूप हजार बर्षतक नियत हुये ७९ जब अन्तरिक्षके मध्य में तीनों पुर मिल गये तब उन शिवजीने तीन पर्ब्ब और तीन भाल रखने

वाले बाण से उन पुरोंको तोड़ा ८० दानव लोग उस कालाग्निसे युक्त विष्णु और चन्द्रमा से संयुक्त उस बाणकी ओर देखनेको भी समर्थ नहीं हुये ८१ फिर देवोपार्वती आप पंचशिखाधारी बालक को गोदीमें करके उन पुरोंके भस्म करनेवाले शिवजीके देखनेको गई ८२ जानने की इच्छा करके उमा देवी देवताओं से बोली कि यह कौनहै तब सब लोकों के ईश्वर समर्थ प्रभु शिवजी ने हंसकर शीघ्रही उस क्रोधयुक्त और निन्दा करने वाले और वज्रसे प्रहार करने वाली इन्द्रकी उस भुजाको वज्र समेत रोकदिया ८३। ८४ इसके पीछे वह अचल भुजा वाला इन्द्र देवताओं के समूहों से युक्त शीघ्र अविनाशी प्रभु ब्रह्माजी के पास गया ८५ तब वह सब देवता उनको प्रणाम करके हाथ जोड़कर बोले कि हेब्राह्मण पार्वतीजीकी गोदीमें वर्त्तमान अपूर्व जीव धारी कौन पुरुष था ८६ वह बाल रूपधारी हमसे नहीं देखागया इस हेतुसे आपको पूछना चाहते हैं जिस युद्ध करने वाले बालक की लीलासेही इन्द्र समेत हम सब देवता पराजित हुये तब ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ ब्रह्माजी उन देवताओं के वचनों को सुनकर ८७। ८८ स्वयंभू ब्रह्माजी उस बड़े तेजस्वी बालक को ध्यान करके इन्द्रादिक देवताओं से बोले ८९ कि वह बालक भगवान् हर चराचर जगत का प्रभु है उस महेश्वर से दूसरा कोई बड़ा नहींहै जो महा तेजस्वी उमा देवीके साथ तुमने देखाहै उन शिवजीने पार्वतीजीके कारणसे बाल रूप को धारण किया तुमलोग मुझ समेत उसीको प्राप्तकरो ९१ वही भगवान् देवता सब लोकोंका ईश्वर प्रभुहै प्रजा पतियों समेत उन सब देवताओं ने उस भुवनेश्वर बाल सूर्य्यके समान प्रकाश मानको नहीं जाना इसके पीछे उन पितामह ब्रह्माजीने पास जाकर महेश्वरजी को देखकर ९२। ९३ उत्तम जानकर स्तुतिकरी ९४ ब्रह्माजी बोले कि तुम यज्ञ अर्थात् विष्णु रूप हो तुम्हीं इस भुवन के पालन करने वाले हो तुम्हींलय स्थानहो तुम्हीं उत्पत्ति के कारणहो हे महा देवजी तुम परमज्योति रूप स्थानहो ९५ हे

भगवान् हे भूत भविष्य बर्त्तमान के स्वामी लोक नाथ जगत् पति यह सब स्थावर जंगम संसार तुम से ब्याप्तहै ९६ आपके क्रोधसे पीड़ामानहोने वाले इन्द्रके ऊपर कृपाकरो ब्यासजी बोलेकि ब्रह्मा जी के इन बचनोंको सुनकर प्रसन्न चित्त महेश्वरजीने कृपापूर्व्वक सन्मुख होकर अट्टहास किया ९७ फिर सब देवताओंने उमा देवी समेत रुद्रजीको प्रसन्न किया और इन्द्रकी भुजा फिर यथावस्थित होगई ९८ वह देवताओंमें श्रेष्ठ दक्ष यज्ञ बिध्वंसी भगवान् शिवजी उमादेवी समेत उन देवताओंके ऊपर प्रसन्न हुये ९९ वही रुद्रहै वही शिवहै वही अग्निहै वही सर्व रूपहै वही सब का ज्ञाता है वही इन्द्र बायु अश्विनी कुमार और वही बिजलीहै १०० वही उत्पत्तिका कारण बादल और वही महादेवहै वही सनातनहै वही चन्द्रमा वही ईशान और सूर्य्यहै वही बरुणहै १०१ वहीकालवही नाश करने वाली मृत्युहै वही यमराजहै वही दिनरातहै वही मास पक्ष ऋतु संध्या और बर्ष है वही धाता बिधाता बिश्वात्मा और सृष्टिका उत्पन्न करनेवाला है वही अशरीरी होकर सब देवताओं के शरीरों को धारण करताहै १०२ सब देवताओंसे स्तुतिमानवह देवता एक प्रकार अनेक प्रकार अथवा हजारों लाखों प्रकार का और लाखों रूपोंका रखनेवालाहै १०३ वेदज्ञ ब्राह्मणोंने उसदेवता के दो शरीर जानेहैं एक घोर दूसरा अघोरहै फिर वहदोनों शरीर बहुत प्रकारके हैं १०४ उसका जो घोर शरीर है वह अग्नि विष्णु और सूर्य्य है और उसका अघोर शरीर जल ज्योति अर्थात् नक्षत्र और चन्द्रमाहै १०५ वेद वेदांग उपनिषद पुराण यहसब आत्मतत्त्व का निश्चय करने वालेहैं जो इनमें बड़ा गुप्तहै वही निश्चय करके देवता महेश्वरहै १०६ वहफिर अजन्मा भगवान्महादेवजी ऐसेहैं कि उनके गुणोंका बर्णन मैं हजार बर्षतक भीनहीं करसक्ता हेपांडुनन्दन वह शरण्य अत्यन्त प्रसन्न शिवजी सब ग्रहोंके पंजे में फंसे हुये सब पापोंसे युक्त शरणागत भक्तोंकोमुक्त करतेहैं १०७ १०८ वह शिवजी आयु नीरोग्यता ऐश्वर्य्यधन और उत्तम कामनाओंको

अपने भक्तोंको देतेहैं फिरवहीगिराता है १०६ इंद्रसमेत सबदेवताओंमें उसीका ऐश्वर्य्य कहाजाता है वहीलोकमें मनुष्योंके शुभाशुभ कर्मोंका फल देताहै ११० वह कामनाओं के ऐश्वर्य्यसे ईश्वर और महेश्वरभी कहाजाता है वहबड़े २ जीवों काभी ईश्वरहै १११ निश्चय करके वह अनेक प्रकारके असंख्य रूपोंसे विश्वको व्याप्त करताहै उसदेवताका जो मुखहै वह समुद्रमेंनियतहै११२वही बड़वानलनामसेविख्यात होकरहव्यको पानकरताहै यहीदेवता स्मशान भूमियों में सदैव बास करताहै ११३ मनुष्य उसवीर स्थानपरइस ईश्वरको पूजतेहैं इसके रूप प्रकाशमान और घोर अनेकहैं ११४ मनुष्य लोकमें इसके जिन रूपोंको पूजते और स्तुति करतेहैं और लोकमें उसके सार्थक अनेक नाम हैं ११५ प्रतिष्ठा और कर्मोंकी प्रसिद्धीसे सदैव कहेजातेहैं और वेदमें उसकी शतरुद्रीगाई जातीहै और उस महात्माका उपस्थान अनन्त रुद्रनामहै ११६ वह देवता कामनाओंका प्रभुहै जो दिव्य और मानुष है वह विभु और प्रभु बड़ादेवता विश्वको व्यापित करताहै ११७ब्राह्मण और मुनि लोग इसको सबसे परे कहतेहैं यही देवताओंका आदिहै इसीके मुखसे अग्नि उत्पन्नहुईहै ११८ जिस हेतुसे किसब प्रकार करके जीवोंका पालनकरताहैसाथ रहताहैऔर उन्होंका बड़ा स्वामीहैइसीसेविश्व पति कहागयाहै११९जिस हेतुसे कि उसका लिङ्ग अविनाशी और ब्रह्मचर्य्यके साथ नियतहै और लोकका पालन करताहै उस हेतुसे महेश्वर कहागयाहै १२० ऋषि देवता गन्धर्व और अप्सराओंने उसके लिङ्गको पूजा वह भी सबसे परे नियतहै १२१ उस लिंगके पूजे जानेपर वह महेश्वरजी अत्यन्त प्रसन्न होतेहैं और उस पूजा से वह सूक्ष्म शरीरसेभी बहुत सुखी होकेसर्व्वानन्दको देतेहैं १२२ जिस हेतुसे कि उसके बहुत प्रकारके जड़ चैतन्य नाम रूप भूत भविष्य और वर्त्तमान तीनों कालों में नियतहैं उसहेतुसे भवरूपकहे जातेहैं १२३ अग्नि रूप एक नेत्र रखनेवाला और सबओर को नेत्र रखनेसे भी प्रकाशमानहै और जो क्रोधसे लोकोंमें व्याप्त

हुआ इस हेतुसेसर्व रूप कहागया १२४ और जो कि उसका धूम्र रूपहै इसीसे धूर्जटी कहा जाताहै और जो कि उसमें बिश्वेदेवात्मयहैं इसीसे वह बिश्वरूप कहागया १२५ जब स्वर्ग जल पृथ्वी नाम यहतीनों देवी उस भुवनेश्वरको भजतीहैं उस हेतुसेत्र्यम्बक कहे जातेहैं १२६ जो कि वह सब कर्मोंमें मनुष्योंके कल्याणको चाहताहै उस हेतुसे शिव कहाजाताहै १२७ और जो कि यह महा पुरुष सहस्राक्ष अयुताक्ष और सब ओरको नेत्र करके बिश्वका पोषण करताहै उस हेतुसे महादेव कहाजाताहै १२८ जो कि मह तत्त्वसे पूर्व नियत हुआ और जिस हेतुसे प्राणकी उत्पत्ति स्थितिसे भीपूर्व हुआ और सदैव अचल स्वरूप वालाहै उस हेतुसे स्थाणु कहाजाताहै १२९ लोकमें जो सूर्य्य चन्द्रमा और अग्निकी किरणें प्रकाशको करतीहैं वह सूर्य्य चन्द्रमा और अग्नि रूपनेत्र रखने वाले शिवजीके केश संज्ञिक नामहैं इसी हेतुसे ब्योमकेश कहेजाते हैं १३० जो कि तीनों कालोंमें उत्पन्न होनेवाला सब जगत शिव रूपहै इस हेतुसे वह तीनों कालोंका उत्पत्ति स्थानहै १३१शरीरों के मध्यमें दश प्रकारके बिषम रूपोंसे नियत है और इस लोकमें आत्मारूप होनेसे सब जीवोंका समरूपहै वह बिषमतामें नियत जीवोंके मध्यमें प्राण और अपान रूप बायुहै १३२ जो कि उस महात्माके स्वरूप और लिंगको भी पूजताहै वह लिंगका पूजन करनेवाला सदैव बड़ी लक्ष्मीको भोगताहै १३३ दोनों जंघाओंसे ऊपर शिवजीका शरीर अग्नि रूपहै अर्थात् भोगनेवालाहै उसी से ब्राह्मण और क्षत्री उत्पन्न हुये और शिवजी का आधाशरीर चन्द्रमा रूपहै अर्थात् भोजन रूपहै उसमेंसे वैश्य और शूद्र उत्पन्नहुये इस प्रकारसे शिवजीका आधा शरीर अग्नि और आधा चन्द्रमा कहाजाताहै १३४ उसका बड़ा शरीर देवताओंसे भी अधिक तेजस्वी और प्रकाशमानहै और नरलोकोंके मध्यमें उसका प्रकाशमान घोर शरीर अग्नि रूप कहाजाताहै १३५ इसी प्रकार जो उसका शिव नाम शरीरहै वह ब्रह्मचर्य्यको करताहै और जो

उसका बड़ाघोर रूपहै वह ईश्वर रूपसबका भक्षण करताहै १३६ जो कि अग्निके समान भस्म करताहै और शस्त्रके समान तीक्ष्णहै और यमराजके समान उग्रहै और कालके समानप्रतापवानहै और मांस रुधिर और मज्जाका भक्षण करनेवालाहै इन सब कारणोंसे रुद्रकहाजाताहै १३७ कपि शब्द श्रेष्ठ का वाचीहै और वृष धर्म कहाजाताहै इसी हेतुसे वह देवताओंका भी देवता भगवान् वृषा कपि नाम कहाजाताहै १३८ और जो कि ब्रह्मा इन्द्र वरुण और कुबेरको अपने आधीन करताहै इस हेतुसे हरनाम कहा जाताहै १३९ देवता महेश्वरने वन्द किये हुये नेत्रों समेत बल करके अपने ललाटमें तीसरे नेत्रको उत्पन्न किया उसी हेतुसे वह त्र्यक्ष कहा जाताहै १४० हे अर्जुन यह देवता महादेव हैं जो युद्ध में पिनाक धनुषधारी होकर तेरेआगे शत्रुओंके मनुष्योंकोमारताहुआ तुझको दिखाईदिया १४१ हे निष्पाप जिसको कितैंने जयद्रथके मारने की प्रतिज्ञाके समय स्वप्नावस्थामें गिरिराज के ऊपर श्री कृष्णजीके द्वारा देखा १४२ वही देवता युद्धमें तेरे आगे होकर अपनी भक्तवत्सलता से उपाय करताहै जिसने कि तुझको वह अस्त्र दिये जिन अस्त्रोंके द्वारा तुमने दानवोंको मारा १४३ हे अर्जुन यह मैंने देवताओंके देवता शिवजीकी शतरुद्री तुझसे कही यह शतरुद्री धनयश और आयुकी देनेवाली पवित्र वेदोंके समान १४४ सब मनोर्थोंकी पूरी करनेवाली सब पापोंकी नाशक और भयोंकी निवारण करनेवालीहै १४५ जो मनुष्य शुद्धता पूर्व्वक इस मोक्ष धनकीर्ति आदिके देनेवाले स्तोत्रको सदैव शुद्ध, यश, सूत्र, विराट, इन चारों प्रकारोंसे श्रद्धासे सुनताहै वहसवशत्रुओंको विजयकरके रुद्रलोकमें पूजित होताहै १४६ यह युद्धसंबन्धी महात्मा शिवजीका प्राचीन चरित्र मैंने कहा जो सावधान मनुष्य इसनरलोक में इस शतरुद्रीको सदैव पढ़ता और सुनताहै १४७ वह पुरुषविष्णु ईश्वर देवताका भक्तहोकर शिवजीके प्रसन्न होनेपर उत्तम कामनाओंको पाताहै १४८ हे कुन्तीके पुत्रजाओ युद्ध करो तेरी पराजय नहीं है

जिसके कि मन्त्री रक्षक १४६ मित्र शुभ चिन्तक बन्धुरूप और पार्श्ववर्त्ती श्रीकृष्णजीहैं उसकी पराजय कैसे होसक्तीहै १५०संजय बोले कि हे भरतर्षभ शत्रुओंके बिजय करनेवाले धृतराष्ट्र वह ब्यासजी युद्धमें अर्जुनसे ऐसा कहकर जैसे आयेथे वैसे ही चलेगये १५१ हेराजा महाबली अद्भुत पराक्रमी ब्राह्मण द्रोणाचार्य्यजी पांचदिन घोर युद्ध करके मारेगये और ब्रह्मलोकको प्राप्तहुये १५२ अच्छी रीतिसे वेदके पढ़नेमें जो फलहै वह इस पर्व्वमें है क्योंकि इसमें भयसे रहित क्षत्रियोंका बड़ायश संयुक्त है १५३ जो इस पर्वको पढ़ेगा या सदैव सुनेगा वह बड़े महापापोंसे और कियेहुये घोर कर्मोंसे छूटेगा १५४ इस घोर युद्ध में सदैव ब्राह्मण को तो यज्ञका फल और क्षत्रियोंको उत्तम यशका फल मिलताहै और शेष बचेहुये वैश्य और शूद्र वर्णोंको अभीष्ट फल मिलता है इन फलोंके सिवाय चारों वर्ण वाले अपने २ प्रिय पौत्रादिधन ऐश्वर्य्य को भी पातेहैं १५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि द्विशतोपरितृतीयोऽध्यायः२०३ ॥

द्रोणपर्व्व समाप्तहुआ शुभंभूयात् ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में छपा ॥
नवम्बर सन् १८८८ ई० ॥

—※—

महाभारतोंकीफेहरिस्त।

महाभारत के पर्व अलग २ भी मिलते हैं॥

१ आदिपर्व १

२ सभापर्व २

३ वनपर्व ३

४ विराटपर्व ४

५ उद्योगपर्व ५

६ भीष्मपर्व ६

७ द्रोणपर्व ७

८ कर्णपर्व ८

शल्य व गदा ९ सौप्तिक १० योषिक व बिशोक ११ स्त्रीपर्व १२

१० शांतिपर्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म

११ अश्वमेध १४ आश्रमबासिक १५ मूसलपर्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८

१२ हरिबंशपर्व १९॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से मालूमहोगा॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (९) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) गदा, ये पर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व मिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाशयोंको मिलसक्ती हैं कृपा करके भेजदेवैं तौ छापेजावें॥

महाभारत वार्तिक भाषानुवाद॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगयाहै जिसकी आदि, सभा, बन, बिराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अनुशासन, शान्ति, और हरिवंशपर्व्व छप गईहैं शेषपर्वें भी बहुत शीघ्र छपरही हैं॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृतिसांख्यादि सार भूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकराया है वही उक्त भगवद्गीतायद्यपि वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छेशास्त्रवेतार अपनीबुद्धि से पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करने की सामर्थ्य है यह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं-और यहप्रत्यक्षहीहै कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक जनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्वविद्याविलासीभगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसाधनव्यय कर फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीसे इसमनोरंजन वेदवेदान्तशास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मितभाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलकरूपा नवलभाष्यसाक्षत्व मे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

अबकल्पनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यहविचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य कृत भाष्य भाषाके साथ और इस ग्रन्थ के टीकाकारों को टीका भी जितनी मिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजीको शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरि कृत तिलक व श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकोंसहित इसपुस्तकमेंउपस्थित है॥

——※——

इश्तहार॥

माहमार्च सन् १८८८ ई० से तमामिलिकमगरबी व शुमालीका बुकडिपो इलाहाबादक्यूरेटर बुकडिपो से मतबा मुन्शी नवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ में आगयाहै इस बुकडिपो में सरकारी व निसाबी एजूकेशनल बुक किताबोंके सिवाय औरभी हरएक विद्याकी किताबें मौजूद हैं इन हर एक किताबोंको खरीदारी की कुल शर्तें क़ीमतके सहित इस छापेखाने के छपे हुए फ़ेहरिस्तमें दर्ज हैं जो दरख़्वास्त करनेपर हरएकचाहने वालोंको बिलाक़ीमत मिलसक्ती है जिनसाहबोंको इनकिताबों का खरीदकरनाहो वेइसेख़रीदकरें और फ़ेहरिस्त मँगावैं॥

द० मैनेजर अवध अख़बार
लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज

महाभारत भाषा

कर्णपर्व

—※—

जिसमें

व्यूहनिर्माण, क्षेमधूर्त्ति, विन्द, अनुविन्द, चित्र, दण्डधार, पाण्ड्य आदि
वीरोंका पाण्डवोंके हाथसेबध और अत्यन्त बलवान् कर्णजीका
सेनापति होकर दोदिन अर्जुनादिकोंसे महाघोर संग्रामकर
गाण्डीव धनुषधारी अर्जुनके हाथसे बधहोना इत्यादि
मनोहर कथा वर्णन कीगई हैं

जिसको

भार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशी नवलकिशोर जी
(सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि
चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से
संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक
श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

—※—

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा
नवम्बर सन् १८८८ ई०

पहलीवार ६००

महाभारतोंकीफेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

—※—
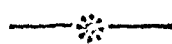
जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै वरन वहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदवताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईवात इससेछूट नहींगई मानोंयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० वर्षकेवीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर भीयह पुस्तक नहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेखानेमें छपीथी और क़ीमत वहुत सस्ती यानेवाजिवी १२) थे जैसाकारखानेकादस्तूरहे ॥

अव दूसरीवार डवलपैका वड़ेहरफों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने वहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै ॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसार अलग२भी मिलतेहैं ॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) वनपर्व्व ॥

दूसरेभागमें (४) विराटपर्व्व (५) उद्योगपर्व्व (६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व ॥

तीसरेभागमें (८) कर्णपर्व्व (९) शल्यपर्व्व (१०) सौप्तिकपर्व्व (११) ऐषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में (१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेध (१५) आश्रमवासिकपर्व्व (१६) मूसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व ॥

अथ महाभारतभाषा कर्णपर्व्वका सूचीपत्र ॥

कर्णपर्वका सूचीपत्र।

इतिकर्णपर्वसूचीपत्रंसमाप्तम् ॥

—— ❋ ——

अथ भाषा महाभारते कर्णपर्वणि ॥

—*—

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दबन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वारागमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंवन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमंजुलकर्णपर्व भाषानुवादंविद धातिसम्यक् ५ ॥

अथ कर्णपर्वणिभाषावार्त्तिक प्रारम्भ ॥

वैशंपायन बोले किहेराजा इसके अनन्तर द्रोणाचार्यके मरनेसे अत्यंत व्याकुलचित्त दुर्योधनादिकराजालोग अश्वत्थामाजीके पा- सगये २ फिरद्रोणाचार्य्यके शोचकरनेवाले मूर्च्छावान् महाघायल पराक्रमोंसे थके हुये शोकसे पीड़ितहोकर वहसव राजालोग अश्व- त्थात्माजीके चारोंओर बैठगये ३ फिरएकमहूर्त्त तकशास्त्रके अनुसार अनेकहेतुओंसे अश्वत्थामाजीको समाश्वासन करके सवराजालोग सायंकालके समय अपने२ डेरोंकोगये ४ हे कौरव फिरदुःखशोकमें भरे कठिननाशको शोचतेहुये उनराजाओंने डेरोंमेंभी जाकरसुख

नहींपाया ५ विशेषकरके कर्ण वा राजादुर्योधन वा दुश्शासन और सौबलकेपुत्र महाबली शकुनिने महाखेदकिया ६ यहसब राजालोग महात्मापांडवोंके कष्टोंकी चिन्ताकरतेहुये रात्रिको दुर्योधनकेही डेरेमें निवासकरने वालेहुये७जो द्रौपदीको द्यूतमें कष्टदियागया और सभामेंभी लाईगई उसकोस्मरण करतेऔर शोचतेहुये अत्यंत व्याकुल चित्तहुये ८ हेराजा इसप्रकार द्यूतमें प्रत्यक्षहोनेवालेउन दुःखोंको चिन्ता करनेवाले उनलोगोंकी रात्रिसैकड़ों वर्षके समान व्यतीतहुई ६ उसकेपीछे निर्मल प्रभातके होतेही वेदोक्तरीतिकेअनुसार आवश्यक नित्यकर्मोंको करके देवकी आज्ञामें नियत हुये१० अर्थात् आवश्यककर्मोंसे निवृत्तहोकर बड़ी सावधानीसे सेनाकोतैयारहोजानेकी आज्ञादी और युद्धकरनेकेनिमित्त बाहर निकले ११ मंगल कौतुककरनेवाले कर्णको अपना सेनापतिकरके दधिपात्रघृत आदि पदार्थोंसे१२और सुवर्णमाला युक्तउत्तम वस्त्रादिकोंसे उत्तम२ ब्राह्मणोंको पूजनकरते हुये सूतमागध वंदीजन आदिसेभीस्तूयमानहुये१३और हेराजा इसीप्रकारसे प्रातःकालके कर्मकरनेवाले युद्धमें निश्चयकरने वाले पांडवलोगभी शीघ्र अपने डेरोंसेतैयारहोकर बाहरनिकले १४ इसके पीछे परस्परमें विजयाभिलाषी कौरव और पांडवोंका महारोमहर्षण युद्ध प्रारंभहुआ १५ हेराजा कर्णकेसेनापतिहोनेसे उसकौरवो और पांडवोसेनाओंका देखने के योग्यदो दिन तकअपूर्व युद्धहुआ१६इसकेपीछे हजारों शत्रुओंको मारकरकर्णवा धृतराष्ट्रकेपुत्रोंके देखतेहीदेखते अर्जुनके हाथसेमारागया १७फिर शीघ्रही हस्तिनापुर जाकर यहसब वृत्तांतलोगोंने धृतराष्ट्रसेकहा वहवृत्तान्त कौरव जांगल देशोंमें प्रसिद्ध हुआ १८ जन्मेजयबोले कि श्रीगंगाजीके पुत्र भीष्मपितामहको और महारथी द्रोणाचार्यजीकोभी मृतकहुआ सुनकर अंबिकाके पुत्रवृद्ध राजाधृतराष्ट्रने बड़ाखेदकिया १६ हेब्राह्मण फिरइसदुःखी धृतराष्ट्रने दुर्योधनकेहितकारी कर्णकोभी मराहुआ सुनकर कैसेअपने प्राणोंको धारणकिया २० जिसने कि अपने पुत्रोंके विजयकी इसी कर्णमें आशा निश्चय

करके कर रक्खीथी ऐसेकर्णके मरने परइस कौरवने कैसे अपनेजी वनको रक्खा २१ ऐसे स्थानमें कर्ण को मृतक सुनकर जो राजाने अपनेप्राणोंका त्यागनहींकिया इससेमैं निश्चय जानताहूं किदुःख में वर्त्तमानमनुष्य बड़ी कठिनता सेमरताहै २२ हेराजा इसीप्रकार वृद्धभीष्म बाल्हीक द्रोणाचार्य सोमदत्त और भूरिश्रवाको २३ और अन्य मित्रोंसमेत गिरायेहुये पुत्र और पौत्रोंकोभी सुनकर जोप्राणोंका त्याग नहीं किया इसीसे हे ब्राह्मणमैं उसको महा कठिन मानताहूं २४ हे महामुनि इससब वृत्तान्तको आपमूल समेत वर्णन कीजियेमैं अपने प्राचीनवृद्धलोगों केचरित्रोंके सुननेसे तृप्त नहीं होताहूं २५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय॥

वैशंपायन बोले हेमहाराजकर्णकेमृतक होनेसे महादुःखी संजय सायंकालके समय वायुकेसमान शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारीसे हस्तिनापुरको गया १ और बड़ीव्याकुलतासे हस्तिनापुरमें पहुंचकर उस धृतराष्ट्रके स्थानकोगया जो बांधवोंका नाशकारी था २ वहां मूर्च्छासेशोभाहीनराजाको देखकर बड़ीनम्रतापूर्वक हाथजोड़ मस्तकसे चरणोंमें दंडवत्करके ३ न्यायके द्वाराराजा धृतराष्ट्र को पूजके हायबड़ा खेदहै ऐसावचन कहकर वार्त्तालाप करना प्रारंभ किया ४ और कहने लगा किहेराजामैं संजयहूं क्याआपप्रसन्नता सेहैं और आपत्तिपाकर अपने अपराधोंसे आपविस्मरण तोनहीं होतेहो ५ विदुर द्रोणाचार्य भीष्मपितामह और केशवजीके महा उपकारी वाहितकारी वचनोंकोजो तुमनेअंगीकार नहींकिया उनको स्मरणकर २ तोआप पीड़ित नहींहोतेहो ६ सभाकेमध्यमें परशुराम नारद और कण्वादिक मुनियोंके हितकारी वचनोंकोभी स्वीकार नहींकिया उसको स्मरणकरके तोतुम दुःखीनहीं होतेहो ७ आपके हित करनेमें प्रवृत्त भीष्म द्रोणाचार्य आदिमित्रोंको युद्ध मेंशत्रुओंके

हाथसे मरेहुये स्मरणकरके तो खेद नहीं करतेहो ८ तबतो दुःखसे महापीड़ित राजाधृतराष्ट्र बहुत लम्बी स्वासलेलेकर इसप्रकारसे कहनेवाले संजयसे बोले ६ कि हेसंजय दिव्यअस्त्रों केज्ञाता भीष्मपितामह औरबड़े बाणप्रहारी द्रोणाचार्यके मरनेपरमेराचित्त अत्यंत पीड़ितहै१० और वसुदेवताओंके अंशसे उत्पन्नहोनेवाले महातेजस्वी पितामहने प्रतिदिन दशहजार शस्त्रधारी रथियोंको मारा ११ पांडव अर्जुनसे रक्षित द्रुपदके पुत्र शिखण्डीके हाथसेमरेहुये उसभीष्मपितामहको सुनकर मेराचित्त पीड़ामानहुआ १२ जिसकेलिये भार्गव परशुराम जीने महायुद्ध में परम अस्त्रदिया और बाल्यावस्था में उन्हीं साक्षात्परशुराम जीने अपने शिष्य करनेके लिये अंगीकार किया १३ और जिसकी कृपासे महारथी राजपुत्र पांडवोंने और अन्य राजाओंने महारथी पनेकोपाया १४ उससत्यसंकल्प महाधनुर्बाणधारी द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्नके हाथसे मराहुआ सुनकर मेराचित्त अत्यन्त पीड़ित होरहाहै १५ इस लोकमें चारों प्रकारकीविद्या और अस्त्रविद्या भीष्म और द्रोणाचार्य्यके सिवाय औरकिसीमें नहींहै उन दोनों महात्माओंके मरनेसे मैं महा खेदितहूं १६ तीनोंलोकोंमें अस्त्रविद्याका ज्ञाता जिसके समान कोईनहीं ऐसे महात्मा द्रोणाचार्य्य को मृतक सुनकर मेरे पुत्रोंने क्या क्या किया १७ महात्मा अर्जुन ने पराक्रम करके संसप्तकोंकी सेनाको मारकर यमलोकमें पहुंचाया १८ बुद्धिमान अश्वत्थामाके नारायणास्त्रके निष्फल होने और सेना केभागनेपर मेरे पुत्रोंने क्या२ कामकिया १६ मैं द्रोणाचार्य्यकेमरनेपर सबको भगाहुआ वा शोकसमुद्रमें डूबाहुआ जीवनकी आशासे ऐसा चेष्टा करनेवाला देखताहूं जैसेकि समुद्रमें नौकाके टूटजानेपर उसपर चढ़ेहुये मनुष्योंकी चेष्टा होतीहै २० हेसंजय सेनाके भागजाने पर दुर्योधन कर्ण भोजवंशी कृतवर्मा मद्रदेश का राजा शल्य द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और मेरे शेष बचेहुये पुत्रादि और समेत अन्य लोगोंके मुखका वर्ण कैसा होगया २२ हेसंजय इस वृत्तान्तको और पांडव वा मेरे पुत्रोंके पराक्रमको यथार्थ जैसा हुआ वैसामुझ

से बर्णनकरो २३ संजय बोले हेश्रेष्ठ कौरव लोगों मेंआपके अपराध से जोदेखनेमें आया उसको सुनकर तुम खेदमतकरो क्योंकि बुद्धिमान मनुष्य होनहार बिषयमें दुखी नहीं होतेहैं २४ जैसाकि मनुष्य मेंसुखदुख संबंधी प्रयोजन होताहै उसकी प्राप्ति वा अप्राप्तिमें कोई बुद्धिमान दुखी नहीं होताहै २५ धृतराष्ट्र ने कहाकि हेसंजय इससे अधिक मुझको कोई पीड़ा नहींहै मैंउसको प्राचीन होनहार मानता हूं इससे तुम अपनी इच्छाके अनुसार बर्णनकरो २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

संजय बोले कि बड़े बाणप्रहारी महातेजस्वी द्रोणाचार्य्य के मरने पर आपके महारथी पुत्रोंके मुख शोभा से रहित हुये और चित्तसे व्याकुल होकर वह सब अचेत भी होगये १ हे राजा उस समय सब नीचामुख करनेवाले शोचग्रस्त महापीड़ित उन शस्त्र धारियों ने परस्पर में बार्त्तालाप भी नहींकरी २ अनेक प्रकार से दुःखसे पीड़ित आपकी सेनाओंको और उन लोगोंकोव्याकुल चित्त देखकर सबने स्वर्ग जानेकाही बिचार किया ३ हे राजेन्द्र फिर युद्धमें द्रोणाचार्य्य को मराहुआ देखकर इन सबलोगों के रुधिर से भरे हुये शस्त्र हाथों से गिरपड़े ४ उस समय वह बंधे लटके और गिरेहुये शस्त्र ऐसे देखने में आये जैसे कि आकाश में नक्षत्र दिखाई देतेहैं ५ इसके पीछे उस आपकी सेनाको हटाहुआ पराक्रम हीन देखकर राजा दुर्य्योधन बोला ६ कि मैंने आपलोगों के पराक्रम में रक्षित होकर पांडवोंसे युद्धकरना प्रारंभ किया ७ अब द्रोणाचार्य्य के मरने से वह सब सेना व्याकुल हुई सी दिखाई देतीहै और युद्धमें युद्धकर्त्तालोग सबप्रकार से मरते हैं ८ युद्ध में युद्ध करनेवाले की विजय और पराजय दोनों होतीहैं इसमें क्या आश्चर्य्य है आपलोग सब ओर को मुख करके युद्ध करो ९ बाण बिद्यामें अद्वितीय दिव्य अस्त्रोंके ज्ञाता महाबली सूर्य्यकेपुत्र महात्मा

कर्णको देखो १० कि युद्धमें जिसके पराक्रम को देखकर कुन्तीका पुत्र अल्पबुद्धी अर्जुन ऐसे भाग जाताहै जैसे कि सिंहको देखछोटा मृग भगजाताहै ११ जिसने दशहजार हाथी के समान बली भीमसेनको मानुषी युद्ध करके परास्त किया १२ औरउसी कर्णनेदिव्य अस्त्रों के जानने वाले शूर मायावी भयानक गर्जना करनेवाले घटोत्कचको अपनी अमोघ शक्तीसे युद्ध में मारा १३ अब युद्धमें उस दुर्जय पराक्रमी सत्य संकल्पी महा बुद्धिमानके भुजाओंके बल को देखोगे१४विष्णुके वाइन्द्रके समान अश्वत्थामा और कर्ण इन दोनों के पराक्रमको पांडव लोगदेखेंगे १५ तुम सब लोग युद्धमें सब सेना समेत पांडवोंके मारने को समर्थ हो फिर सबके साथ मिलकर कैसे समर्थ नहोगे अब पराक्रमी और अस्त्रज्ञ तुम लोग परस्पर मेंदेखोगे १६ संजय बोले कि हेनिष्पाप आपके महाबली पुत्रने अपने भाइयोंको इसप्रकार से समझाकर कर्णको सेनापति बनाया १७ हेराजा युद्धदुर्मद महाबली कर्णने सेनापति होकर बड़े शब्दसे सिंहनादोंको करकरके युद्धकरना प्रारंभ किया १८ और सब सृंजय पांचाल विदेह और केकय लोगों को विध्वंस करके युद्धमें अपनेधनुष से ऐसी बाणोंकी वर्षा करी कि सबको व्याकुल कर दिया १९ । २० फिर वह वेगवान पांडव और पांचाल लोगोंको पीड़ित करता युद्धमें अर्जुन के हाथसे मारागया २१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंजयवाक्यंवर्णनेतृतीयोऽध्यायः३॥

चौथा अध्याय॥

वैशंपायन बोले हेमहाराज अंबिकाका पुत्र धृतराष्ट्र यहसुनकर दुर्य्योधन को मृतक केही समान मानता हुआ १ महाव्यकुलता से अचेत होकर हाथीके समान पृथ्वी पर गिरपड़ा उस राजाको अचेत होकर पृथ्वी पर गिरने से २ रणवास मेंसे स्त्रियों का बड़ा शोक कारी शब्द हुआ उस शब्दसे सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होगई ३ दुःख शोकसे पीड़ित अत्यन्त व्याकुल चित्त भरतवंशियोंकी स्त्रियां

महाघोर शोकसागर में डूबकर रुदन करने लगीं ४।५ इसके पीछे संजय ने उन शोकसे मूर्छितनेत्रों से अश्रुपात डालनेवाली स्त्रियोंको विश्वास देकर समझाया ६ जैसे कि केलेके वृक्ष चारोंओर की वायुसे कंपायमान होतेहैं इसीप्रकार बारंबार कंपतीहुई वह सब स्त्रियां विश्वास युक्त हुईं ७ तब जलसे कौरवों के सींचनेवाले बिदुरजीने भी उस बुद्धिरूपी नेत्र रखनेवाले राजा धृतराष्ट्रको विश्वास कराया ८ हेराजेन्द्र उनके बचनों से वहराजा धृतराष्ट्र बड़े धीरेपने से सचेत होकर उन स्त्रियोंको देखके उन्मत्तके समान फिर मौनहोगया ६ फिर बारंबार स्वासलेतेहुये धृतराष्ट्र ने बहुत समय तक ध्यान करके अपने पुत्रोंकी निन्दा करी और पांडवोंको प्रशंसा करी १० फिर अपने और सौबलके पुत्र शकुनी की बुद्धिकीनिन्दा करता हुआ बारंबार कांपकर ध्यान को करके ११ मनको थांभकर धैर्य्यतासे धृतराष्ट्र ने संजय पूछाकि १२ हे संजय तुमने जो बचन कहा वहतो मैंने सुना परन्तु यहतोबताओ कि दुर्य्योधन तो यमपुर नहीं गया १३ सदैव बिजयाभिलाषी मेरापुत्र बिजय से निराश होगयाहै हे संजय इस कही हुईकथाको फिर भी मुख्यता से बर्णन करो १४ हे जन्मेजय धृतराष्ट्र के इस बचनको सुनकर संजय बोले हे राजा सूर्य्यका पुत्र महारथी कर्ण बड़े बाणप्रहारी शरीरके त्याग-नेवाले सूतका पुत्रअपने सब भाइयों समेत मारागया और यशस्वी पाण्डव के हाथसे आपकापुत्र दुश्शासन भी मारागया और उसी युद्धमें भीमसेन नेउसके रुधिर कोभी पान किया १६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रशोकवर्णनेचतुर्थोऽध्यायः४॥

पांचवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि हेजन्मेजय शोकसे महाव्याकुल अम्बिका कापुत्र धृतराष्ट्रइस बातको सुनकर संजय से बोला १ हे तातथोड़े जीवनवाले मेरे पुत्र की दुर्बुद्धि से कर्ण के मरण को सुनकर मेरा प्रबल शोकमेरे अंगोंको काटे डालताहै सो हेसूत मुझदुःख से पार

होनेकी इच्छावान् के सन्देहोंको निवृत्त करो २ अब कौरव और सृंजियों में कौन २ जीवते बाकीहैं और कौन २ मरगये ३ संजय बोले हे राजा महाप्रतापी अजेय भीष्मजी दशदिनमें पांडवों के एक अरब शूरवीरों को मारकर मारेगये ४ इसी प्रकार बड़े धनुर्धारी दुराधर्ष सुवर्ण के रथपर चढ़नेवाले द्रोणाचार्य्य युद्धमें पांचालोंके असंख्य रथ समूहोंको मारकर आपभी मारेगये ५ महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य के मरनेसे शेषबची हुईसेनाके अर्धभागको मारकर सूर्य्य का पुत्र कर्ण भी मारागया ६ और महाबली राजपुत्र विविंशति भी आनर्त देशी सैकड़ों शूरवीरों को मारकर युद्धमें मारागया ७ इसी प्रकार आपका पुत्र महाबली विकर्ण भी घोड़े और शस्त्रोंके नाश होजानेसे क्षत्री वर्णको स्मरण करता शत्रुओंके सन्मुख नियत हुआ ८ दुर्य्योधन के किये हुये घोररूप अनेक क्लेशोंको और अपनी प्रतिज्ञा के स्मरण करनेवाले भीमसेन को स्मरण करता हुआ उसी भीमसेन के हाथसे युद्धमें मारागया ९ और अवन्ति देशके राजा राजकुमार विन्द अनु विन्द बड़े २ कठिन कर्मोंको करके यमलोकको गये १० सिन्धके देशोंमें बड़े उत्तम जो दशदेश वीरजयद्रथके स्वाधीनहैं और वह जयद्रथआपके आधीन होकर आपका आज्ञावर्त्तीथा ११ वह महापराक्रमी जयद्रथअर्जुन के हाथसे विजयहुआ तीक्ष्णबाणों से ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओं को विजय करके और इसीप्रकार दुर्योधन का पुत्र महावेगवान युद्ध में वीरों का मर्दन करनेवाला और पिनाकी शास्त्र का ज्ञाता राजकुमार लक्ष्मण अभिमन्यु के हाथ से मारागया १३ इसी प्रकार दुश्शासन का पुत्र बाहुशाली रण में उसी उत्कृष्ट अभिमन्यु केसाथ लड़कर मृत्युके वशहुआ १४ सागर और अनुपदेशवासी किरातों का राजा धर्मात्मा देवराज इन्द्र का प्यारा और अंगीकार किया हुआ मित्र १५ सदैव क्षत्री धर्ममें प्रीति रखनेवाला राजा भगदत्त अर्जुन के पराक्रम से यमलोक में पहुंचाया गया १६ हे राजा इसीप्रकार कौरववंशी बड़ायशी शूरवीर भूरिश्रवा

युद्धमें सात्वकी के हाथसे मारागया १७ और क्षत्रियोंके भार के धारण करनेवाले श्रुतायु और अम्बष्ठ भी युद्धमें निर्भयतासे घूमते हुये अर्जुनके हाथसे मारेगये १८ हे महाराज सदैव क्रोध- रूप अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद आपका पुत्रदुश्शासन भीमसेनके हाथसे मारागया १९ और जिसकी हाथियोंकी सेना अपूर्व्व और असं- ख्यथी वह सुदक्षिण खड्गके युद्धमें अर्जुनके हाथसे मारागया २० कोशल देशियोंका राजा बड़े २ अंगीकृत शत्रुओंको मारकर अभि- मन्युसे महापराक्रम करनेके द्वारा यमलोकबासी हुआ २१ शत्रु- ओंके भयको बढ़ानेवाला महाशूर जयद्रथका पुत्र पृथ्वीपर ढाल तलवारका रखनेवाला श्रीमान अर्जुनके हाथसे मारागया २२ और आपका पुत्र चित्रसेन महारथी भीमसेनसे अच्छी रीतिसे यु- द्धको करके उसीके हाथसे मारागया२३युद्धमें कर्णकीसमान बड़ा तेजस्वी अस्त्रोंको शीघ्रतासे चलानेवाला दृढ़ पराक्रमी वृषसेन २४ बड़ापराक्रम करके अर्जुनके हाथसे कालवश हुआ अभिमन्युके बधको सुनकर अपनी प्रतिज्ञाको करके जो राजा सदैव पांडवोंसे शत्रुता करताथा वह श्रुतायुशत्रुताको सुनाकर अर्जुनके हाथसेमारा- गया २५ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र सहदेवने अपने मामा शल्यके पुत्र पराक्रमी भाई रुक्मरथ नामको युद्धमेंमारा २७ वृद्धराजा भगीरथ और वृहच्छत्र केकय यह दोनों बड़ेबली महाप्रतापी भी मारेगये २८ हे राजा बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान भगदत्तका पुत्र युद्धमें बाजकी समान घूमनेवाले नकुलके हाथसे मारागया २९ इसी प्रकार महा- बली शस्त्रधारी आपके पितामह बाल्हीक अपने बाल्हीक लोगों समेत भीमसेनके हाथसे मृत्युवश कियेगये ३० और जरासन्धका पुत्र महाबली जयत्सेन मगधका राजा युद्धमें महात्मा अभिमन्युके हाथसे मारागया ३१ हे राजा आपके पुत्र महारथी दुर्मुख और दुस्सह शूरोंमें प्रशंसनीय भीमसेनकी गदासे मारेगये ३२ और महारथी दुर्मर्षण दुर्विष और महारथी दुर्जय यह तीनों कठिनकर्मों को करके यमके स्थानको गये ३३ और युद्धमें दुर्मद कलिंग और

वृषक दोनोंभाई कठिनकर्मी होकर यमलोकको सिधारे३४ आपका शूरवीर पराक्रमी मन्त्री वृषवर्मा भीमसेनके हाथसे कालके बसी भूत हुआ ३५ इसीप्रकार दशहजार हाथीके समान पराक्रमी महाराज पौरव युद्धमें बड़े पराक्रमीअर्जुनके हाथसे मारागया ३६ और प्रहार करनेवाले दो हजार वशातय और पराक्रमी शूरसेन यहसब युद्धमें मारेगये ३७ कवचधारी प्रहार करनेवाले युद्धमें उद्भटमहारथी अभीषाह शिवय यह दोनों कलिंग देशियों समेत मारेगये३८ जो कि गोकुलमें सदैव बढ़ेहुये युद्धमें महाक्रुद्धरूप युद्धसे मुख न मोड़नेवाले वीरथे वहभी अर्जुनके हाथसे मारेगये ३६ हजारों संसप्तकों समेतघूमनेवाले जो गोपालथे वह सब भी अर्जुनके हाथसे यमलोकको गये ४० हे महाराज आपके निमित्त बड़ा पराक्रम करनेवाले आपके साले वृषक और अचल भी अर्जुनके हाथसेमारे गये ४१ इसीरीतिसे नाम और कर्मसे उग्रकर्मी बड़ा धनुर्धारीमहाबाहु राजा शाल्वभीमसेनके हाथसे मारागया ४२ हे राजा मित्रके निमित्त युद्धमें पराक्रम करनेवाले ओघवान और वृहन्त दोनों एक साथही यमलोकको गये ४३ इसी रीतिसे महाधनुर्धर रथियोंमें श्रेष्ठ क्षेमधूर्त्ती भी युद्धमें भीमसेनके हाथकी गदासे मारेगये ४४ ऐसेही बड़ाधनुषधारी महाबली जलसंध युद्ध में कठिन कर्मों को करके बड़े शब्दोंको करताहुआ सात्विकीके हाथसे मारागया ४५ गधोंकारथ रखनेवाला राक्षसोंका राजा अलंबुष पराक्रमकरके घटोत्कचके हाथसे यमलोकको पहुंचा ४६ कर्णके पुत्र और भाई महारथी और सब केकयलोगभी अर्जुनके हाथसे मारे गये ४७ बड़े कठिन कर्मी मालव मद्रक और द्रविड़ योधेय ललित्थ क्षुद्रक उशीनर ४८ मावेल्लकतुंडिकेर सावित्रीके पुत्र और पश्चिमोत्तरीय वा पूर्वीय दक्षिणीय राजालोग ४६ पतियोंके और घोड़ोंके लाखों शत्रु रथ हाथियोंके झुंडों समेत मारडाले ५० ध्वजा शस्त्र कवच और वस्त्रोंसे अलंकृत शूरवीर जो बहुत कालसे बुद्धिमानलोगोंकेद्वारा रात्र वासोंमें कुपढ और पोपणकियेगये ५१ वहसुगस कर्मा युद्धमें

अर्जुनके हाथसे मारेगये इसी प्रकार अन्यसेनाके लोगजो परस्पर मारनेकी इच्छारखतेथे मारेगये ५२ हे राजा इनके बिशेष बहुतसे अन्य हजारों राजालोग अपनी सेनाओं समेत युद्धमें मारेगये ५३ इस रीतिसे कर्ण और अर्जुनकीसन्मुखतामें यह ऐसाघोर नाशहुआ जैसे कि इन्द्रके हाथ बृत्रासुर और श्री रामचन्द्रजीके हाथसे रावण मारागया ५४ और जैसे श्री कृष्णजीके हाथसे नरक और मुरनाम दैत्य युद्धमें मारेगये और जैसे श्री भार्गव परशुरामजी के हाथ से राजाकार्त्ति बीर्य्य अर्थात् सहस्राबहुमारागया ५५ इसीप्रकार वह युद्धमें दुर्मद शूरबीर कर्णअपनी जाति और बांधवों समेत युद्धमेंतीनों लोकोंके मोहन करनेवाले महाघोर संग्रामकोकरके मारागया ५६ जैसे स्वामिकार्त्तिकजीने महिषको रुद्रजीने अन्धकको माराथा उसीप्रकार युद्ध में दुर्मद प्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ द्वैरथकर्ण अर्जुन के साथ युद्ध करके मन्त्री और बांधवों समेत मारागया जिससे धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी विजयकी आशा और शत्रुताका मुख उत्पन्न हुआथा ५७ । ५८ हे राजा पांडव लोग उसदोषसे निवृत्तहुये जो पूर्व्व समय में भलाई चाहनेवाले बांधवों के समझाने से तुमनहीं समझे ५९ इसीकारण राज्यके चाहनेवाले पुत्रोंकी वृद्धिके चाहनेवाले तुमने बड़ानाशकारी यहमहाघोरदुःख पाया और जो दुष्कर्मकिये उनका यहयोग्यफलपाया ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेतात संजय युद्धमें पांडवोंके हाथसे मारेहुयेमेरे शूरबीरलोग और हमारे वर्णनकियेहुये शूरबीरोंके हाथसेमरेहुयेपांडवोंके शूरवीरोंका वर्णनकरो १ संजयबोले युद्धमेंबड़ेपराक्रमीबलवान कुंतदेशी मन्त्री औरबांधवोंसमेत श्रीगांगेयभीष्मजीके हाथसेमारेगये २ और नारायण वा बालभद्रनाम अन्यशूरवीरलोगजोबड़ेभगवद्भक्तथे युद्धमें वहसबभी बीरभीष्मके हाथसेमारेगये ३ और वह

सत्यजित जोकि बड़ाबली युद्धमें सत्यसंकल्प अर्जुन के समान था लड़ाईमें द्रोणाचार्यकेहाथसे मारागया ४ औरयुद्धमें कुशल बड़ेधनुषधारी सब पांचाल देशीलोग युद्धमें सन्मुख होकर द्रोणाचार्यकेहाथ से यमलोकको गये ५ इसीप्रकार मित्रकेलिये पराक्रम करनेवाले राजा विराट और द्रुपद दोनों वृद्धभी युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथ से मारेगये ६ हे समर्थधृतराष्ट्र जो अर्जुन केशवजी और बलदेवजीसे भी अजेय महारथियोंमें श्रेष्ठ मंदमुसकान करनेवाला बालकअभिमन्यु शत्रुओंके बड़े भारी नाशको करकेमुख्यउत्तम रथी जो अर्जुनके पराजय करनेमें असमर्थथे उन छः महारथियोंने घेरकर मारडाला हे महाराज क्षत्रीधर्म में वर्त्तमान रथसे हीन शत्रुहन्ता वीर अभिमन्युको युद्धमें दुःश्शासन के पुत्रनेमारा शत्रुहननेवाली सेना संयुक्त राजाअम्बष्ठ का पुत्र श्रीमान मित्रके निमित्त पराक्रम करताहुआ युद्धमें दुर्योधन के पुत्रवीर लक्ष्मणको पाकर ११ और बड़े भारी नाशकोकरके यमलोकको गया बड़ाधनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्म्मद बृहन्त दुश्शासन के साथ पराक्रम करके यमलोक को सिधारा और युद्धमें दुर्म्मद राजामणिमान और दण्डधार १२ यह दोनों मित्रके निमित्त पराक्रम करनेवाले युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे मारेगये और महारथी अंशुमान औरभोजराज सेना समेत १४ पराक्रम करके द्रोणाचार्यके हाथसे कालवशहुये और पुत्रसमेत १५ सामुद्र और चित्रसेन समुद्रसेनकेपराक्रम सेयमलोकको पहुंचायागया अनूपवासी राजानील और पराक्रमी व्याघ्रदत्त १६ यहदोनोंअश्वत्थामा औरविकर्णके हाथसेयमपुरकोगये चित्रायुध चित्रयोधीयह दोनोंभीबड़े नाशको करके १७ और चित्रमार्गसे पराक्रमकरतेहुये युद्धमें कर्णकेहाथसेमारेगये युद्धमें भीमसेनके समान और केकयदेशीशूरवीरोंसेसंयुक्त १८ महापराक्रम करकेअपने भाई कैकेयकेहाथ सेमारागया हेमहाराज गदासेयुद्ध करनेवाला पर्वत निवासीमहाप्रतापवान तेजस्वी १९ आपके पुत्र दुर्मुखके हाथसेमारागया ग्रहों केसमान प्रकाशित नरोत्तम रोचमान नाम दोनोंभाई २० एकवारमें

द्रोणाचार्य्यकेबाणोंसे स्वर्ग कोपठायेगये हेराजासन्मुख युद्धकरनेवाले पराक्रमी राजालोग २१ कठिनकर्मको करके यमकेलोकोंको सिधारेहेराजा सन्मुख युद्ध करने वाले सव्यसाची अर्जुनके मामा पुरजित और कुंतभोज युद्धमें पराजयहोकर द्रोणाचार्यके बाणोंसेयमकेलोकोंको प्राप्तहुये२२अभिभूनाम काशीकाराजा काशीके अनेकशूर बीरोंसमेत युद्धमें वसुदान के पुत्रके हाथसे मारागया और बड़ा तेजस्वी युधामन्यु और महापराक्रमी उत्तमौजा२३।२४युद्धमेंसैकड़ों शूरबीरोंको मारकर हमारे बीरोंके हाथसेमारेगये और पांचालदेशी मित्रवर्मा और क्षत्रवर्मा यह दोनों महाधनुषधारी द्रोणाचार्यकेहाथसे यमलोकको भेजेगये२५।२६शूरबीरोंमें प्रधान शिखंडीका पुत्रक्षत्रदेवआपके पौत्र लक्ष्मणके हाथसे मारागया चित्रवर्मा और सुचित्र महारथीमहाबली दोनों पितापुत्र युद्धमें घूमतेहुये महाबीरद्रोणाचार्य्य केहाथसे मारेगये२७हेमहाराज जैसेकि पर्वमें समुद्रशांतीको पाताहै उसी प्रकार वार्धक्षेमीने शत्रोंकेनाशहोने पर परमशांती कोपाया२८ हेराजा शस्त्रधारी युद्धमें श्रेष्ठ सेनाविन्दुकापुत्र कौरवेन्द्र बाल्हीकके हाथसेमारागयाऔरचंदेरीदेशियोंमें अत्यंत उत्तमरथीधृष्टकेतु२६।३० कठिनकर्मको करके यमलोकको गया इसीप्रकार बड़ाबीर सत्यधृती युद्धमेंबहुतोंको नष्टकरके ३१पांडवोंके निमित्त पराक्रम करनेवाला यमकेलोकको गया वहकौरवोंमें श्रेष्ठ सेनाबिन्दुभी युद्धमें अनेकोंको मारकर कालबशहुआ ३२ फिर शिशुपालका पुत्र राजासुकेतु युद्ध में कठिनकर्मी होकर द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारागया ३३ इस रीतिसे पराक्रमी सत्यधृती बीरमदिराश्व और महाबली सूर्य्यदत्त द्रोणाचार्य्यके शायकोंसे मारेगये३४ और युद्धकर्त्तापराक्रमी श्रेणीमान् कठिन कर्मकरके मारागया ३५ इसी प्रकार युद्धमें पराक्रमी परमअस्त्रज्ञ राजामगधभी भीष्मजीके हाथसे मारागया और वह शत्रुहन्ता अब पड़ाहुआ सोताहै ३६ और विराटके पुत्र महारथी शंख और उत्तरदोनों बड़े कर्मको करके यमलोकको सिधारे ३७ और बसुवान्युद्धमें कठिन कर्मको करताहुआ पराक्रम करकेद्रोणा-

चार्य्यकेहाथसेमारागया ३८ हेराजाजिसको तुमपूछतेहो उसद्रोणा-
चार्य्यने पराक्रम करके पांडवोंके अनेक महारथीमारे ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः६॥

सातवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेसंजय प्रधान पुरुषोंका नाश होजानेसे उसमरने
से शेषबची हुई अपनी सेनाको नहीं देखताहूं १ मेरे प्रयोजनसे
मरनेवाले उन दोनों महाधनुषधारी अतुलपराक्रमी कौरवों में श्रेष्ठ
भीष्म और द्रोणाचार्य्यको सुनकर जीवनको मैं नहीं चाहताहूं २
मैंयुद्धको शोभित करनेवाले मरेहुये कर्णको नहींशोचताहूं जिस-
की भुजाओंका पराक्रम दशहजार हाथी काथा३ हेसंजय इस हेतु
सेकैसेकि मेरी सेनाके मरेहुओंका तुमने वर्णनकिया वैसेही यहभी
कहोकि मेरीसेनामें कौन२ जीवताहै४ अब आपके वर्णन कियेहुये
इनबड़े२ शूरवीरोंके मरजानेसे शेष बचेहुये भी मरोंकेसदृश मुझको
जानपड़तेहैं ५ संजय बोले हेराजा ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने
जिसकोअपने उत्तम दिव्य अस्त्रसमर्पण करदिये ६ वह महारथी
कर्मकर्त्ता हस्त लाघव करनेवाला दृढ़धनुष बाणोंसे युक्त पराक्रमी
वेगवान् तेरेनिमित्त युद्धाभिलाषी अश्वत्थामा अचल होकर विद्य-
मान है ७ यह आनर्त्त देश वासी हृदिककापुत्र यादवोंमें श्रेष्ठ महा-
रथी भोजवंशी कृतवर्मा आपकेही निमित्त युद्धकी इच्छाकरने वाला
अभी विद्यमान है ८ युद्धमें दुराधर्ष आपकेपुत्रों का पूर्व सेनापति
शल्य जो अपना वचन सत्य करनेको अपने भानजे पांडवोंकोत्याग
कर ९ जिसने युधिष्ठिरके आगे युद्धमें कर्णके पराक्रमके नाशकरने
की प्रतिज्ञाको पूर्णकिया वह अजेय इन्द्रके समान पराक्रमी आपके
निमित्त लड़नेकी इच्छा करनेवाला नियत है १० और अपने कुल
समेत राजागान्धार आजानेय, सिन्धदेशी, पर्वती काम्बोजदेशी
तिथी वनायुजनदीज इत्यादि ११ अनेकप्रकारके घोड़ों समेत तेरे
लियेयुद्धाकांक्षी वर्त्तमानहै १२ हे कौरवेन्द्र राजाकैकेयका पुत्रमहा

रथी उत्तम घोड़ों समेत पताका युक्तरथपर चढ़कर आपके निमित्त युद्धका अभिलाषी अभीवर्त्त मानहै १३ इसीप्रकार कौरवोंमें बड़ा बीर पुरमित्रनाम आपका पुत्र अग्नि और सूर्य्यके वर्णरथ पर स-वारहोकर ऐसा बर्त्त मानहै जैसे कि बादलोंसे रहितस्वच्छ आकाश में सूर्य्य प्रकाशमान होताहै १४ भाइयोंमें नियतदुर्य्योधन सिंहके समान स्वभाव वाला युद्धाभिलाषी सुवर्ण जटित रथकी सवारीमें नियतहै १५ वह पुरुषोंमें बड़ाबीर सुबर्ण जटित कवचधारी कमल के समान प्रकाशित निर्धूम अग्निके समान तुल्य राजाओंमें ऐसा शोभायमान हुआ १६ जैसेकि बादलोंमें सूर्य्यका प्रकाशहोताहै इसी प्रकार प्रसन्न चित्त युद्धाभिलाषी ढालतलवार धारण किये आपके पुत्रसुषेण,चित्रसेन और सत्यसेन यह तीनोंनियतहैं १७ हेभरतर्षभ शीलवान् उग्रशस्त्रधारी शीघ्रभोजी राजकुमार जरासन्धका प्रथम पुत्र अदृढ़ चित्रायुध श्रुतवर्मा जय शल्य सत्यव्रत दुःशल यह सब नरोत्तम सेना समेत नियतहैं१८और प्रत्येक युद्धमें शत्रुओंका हन्ता शूरोंमें प्रतिष्ठित कैतवोंका राजा राजकुमार रथ घुड़चढ़े हाथी और पत्तियों समेत चढ़ाई करनेवाले१९और आपके निमित्त युद्धाभिलाषी बीर श्रुतायु धृतायु चित्राङ्गद और चित्रसेन भी अभी युद्धमेंनियत हैं २० यह सब युद्धाभिलाषी प्रहार कर्त्ता प्रतिष्ठावान् सत्य प्रतिज्ञ नरोत्तम नियतहैं और कर्णका पुत्र सत्यप्रतिज्ञ युद्ध करनेका उत्सु-कभी अभी नियतहै २१ और कर्णकेदूसरे दो पुत्र उत्तम शस्त्रधारी हस्त लाघवी महाबलीहैं वह आपके निमित्त युद्धाभिलाषी बीरोंके बंधेहुये व्यूहमें बर्त्त मानहैं वह भी साधारण अल्प पराक्रमियोंसे कठिनता पूर्व्वक बिजय होनेवालेहैं २२ हे राजा इनअनेक असंख्य प्रभाववाले मुख्य २ बीरोंसे संयुक्तकौरवोंका राजा दुर्य्योधनहाथि-योंके समूहोंके बीच महेन्द्रके समान बिजयकरनेके निमित्तउपस्थित है २३ धृतराष्ट्र बोले कि हमारे और पांडवोंके जो शूरबीर शेष बचे हुये जीवतेहैं उनका तुमने बर्णन किया इसको सुनकर मुझकोबड़ा शोकहोताहै परन्तु जो होनहारहै वह मिट नहींसक्ती२४ वैशंपायन

बोले कि इस रीतिसे वचनों को कहताहुआ अम्बिकाका पुत्र धृत-राष्ट्र अपनी उस सेनाको जिसके बड़े २ वीर मारेगये और नाशको प्राप्तहुये उसमें से कुछशेष बचेहुये सुनकर २५ दुःखसे व्याकुल होकर महामोह के वशीभूत हुआ और मोहित होकर बोला कि हे संजय एक मुहूर्त ठहरो २६ हे तात इस बड़ीअप्रियवार्त्ताकोसुनकर मेराचित्त व्याकुलहै और मैं अंगोंसे भी शिथिल होगयाहूं २७ वह अम्बिका सुतधृतराष्ट्र ऐसे वचनकोकहकर भ्रान्तिसेयुक्तहोगया२८॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः७ ॥

आठवां अध्याय॥

हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ बैशंपायनजी युद्धमें कर्ण को मृतक औरपुत्रों को नियत बर्त्तमान सुनकर उस महा व्याकुल राजा धृतराष्ट्रनेक्या कहा १ पुत्रकी आपत्तियोंसे उत्पन्नहोनेवाले महाकष्टको प्राप्तहोकर जो २ बर्णन किया उसको मुझसे ब्यौरेवार कहिये २ वैशंपायन बोले हे महाराज उस कर्णके मरने को सुनकर जो कि श्रद्धाके अयोग्य और जीवोंके अपूर्व मोहका करनेवाला महा भयानक था जिस प्रकार कि मेरुपर्व्वतका चलायमान होना ३ और जैसेभार्गव परशुरामजीका अनुचित मोह और जैसेकि शत्रुओंके भयकारीइन्द्र देवताकी पराजय ४ और जैसे महातेजस्वी सूर्य्यका स्वर्गसे पृथ्वी पर गिरना और जैसे अविनाशी समुद्रका जल सूख जाना बुद्धिसे बाहर अर्थात् असंभवहै ५ और जैसे पृथ्वी और आकाशकी नाश-कारक अपूर्व्व वायु और जैसे शुभाशुभ दोनों कर्मोंकी निष्फलता होय ६ उसी प्रकार राजाधृतराष्ट्र युद्धमें कर्णके मरजानेको बुद्धिसे विचार कर और सेना नहीं है यहनिश्चय करके ७ दूसरे जीवोंका भी नाश होगा यह सोचकर शोकाग्निसे जलता हुआ ८ चित्तसे कम्पायमान ढीले अंग महादुःखी लम्बी दुःखकी श्वासालेनेवाला होकर हाय हाय शब्दका कहता बिलाप करनेलगा ९ धृतराष्ट्र बोले हे संजय सिंह और हाथीकेसमान पराक्रमी वृषभकेसे स्कन्ध

वाला शीघ्रगामी महातेजस्वी शूरबीर कर्ण घूमनेलगा १० जो उत्तम बज्रके समान दृढ़ देह महातरुण अपने शत्रु महाइन्द्रके भी युद्धमें बली बद्ध के समान नहीं लौटता ११ और युद्धमें जिसके धनुषकी टंकारको सुनकर और बाणोंकी बर्षाको देखकर युद्धमें रथ घोड़े हाथी और मनुष्य नहीं ठहरसक्तेथे १२ और दुर्य्योधनने शत्रुओंके विजयकी इच्छासे जिस महाबाहुकी शरण लेकर पांडवोंसे शत्रुताकरी १३ वह असह्य पराक्रमी रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तमकर्ण युद्धमें अर्जुनके हाथसे कैसेमारागया १४ जिसअहंकारीने अपनेही भुजबलसे श्रीकृष्ण अर्जुन वा यादव और अन्य किसी क्षत्रीको ध्यान नहीं किया अर्थात् किसीको कुछमाल नहींजाना १५ अर्थात् यही कहताथाकि मैं अकेलाही युद्धमें उन अजेय शार्ङ्ग धन्वा और गांडीव धनुषधारीको एक साथही उनको दिव्य रथसे गिराऊंगा यह अपनी प्रतिज्ञा उस लोभसे बिस्मर्णचिन्तासे अधोमुख राज्यके लोभी रोगग्रस्त दुर्य्योधनसे बारंबार बर्णनकरी १६।१७ और उस कर्णने पूर्व समयमें काम्बोजदेशी अवन्तदेशी कैकयदेशीगान्धार मद्रक मत्स्य त्रिगर्त्त तंगण १८ शक पांचाल बिदेह काशी कोशल सुम्हल अंग बंग निषाद पुंड चारक १९ वत्स,कलिंग, तरलअश्मक और ऋषिक देशियोंको भी युद्धमें जीतकर बलिभृत् अर्थात् कर देने वाला करदिया २० वह रथियोंमें श्रेष्ठदिव्य अस्त्रोंकाज्ञातामहातेजस्वीधर्मरूपपरमअस्त्रज्ञ अत्यन्ततीक्ष्णधारकंकपक्षसेयुक्तसैकड़ोंबाणों कोबर्षासे दुर्य्योधनकी वृद्धिकेलिये सेनाका रक्षकसूर्य्यकापुत्र कर्ण कैसे २ युद्धोंको करके पांडव अर्जुनके हाथसे मारागया २१।२२ औरजैसे कि देवताओंमें इन्द्रबर्षा करनेवालाहै उसीप्रकार कर्णभी धनकी वृष्टिसे मनुष्यों पर बर्षा करने वालाहै इन दोनों के सिवाय लोकमें किसी तीसरे बर्षाकरनेवाले को नहीं सुनतेहैं जैसे घोड़ों में उच्चैःश्रवा राजाओंमें कुबेर २३।२४ देवताओंमें महाइन्द्र उत्तम है इसीप्रकार शस्त्रप्रहार करनेमें पृथ्वीपर कर्णसब से उत्तमहै ऐसे समर्थ पराक्रमसे शान्ति शूरबीर राजाओंसे अजेयकर्णने २५ दुर्य्यो

धनकी वृद्धिकेलिये संपूर्णपृथ्वीको विजय किया २६ और जिसको प्राप्तहोकर मगधके राजा जरासंधनेयादव और कौरवों के सिवाय अन्यसबराजाओंको आधीनकरलिया उसकर्णको द्वैरथयुद्धमें अर्जुनके हाथसेमराहुआ सुनकरमें शोकसमुद्रमें ऐसेडूबरहाहूं जैसेकिसमुद्रमें टूटीनौकाडूबतीहै २७ उसधनकीवृष्टि करनेवाले और रथियोंमेंश्रेष्ठ कर्णकोद्वैरथयुद्धमें मराहुआसुनकर २८ मैंशोकसमुद्रमें ऐसेडूबनेको होरहाहूं जैसेकिसमुद्रमें विना नौकाके मनुष्यहोताहै हे संजय जो मैं ऐसे २ दुःखोंसेभी नहींमरूंगा २९ तोनिश्चय करकेमेरा हृदयवज्र सेभीकठोर शोकचिन्तासे फटजानेके योग्यहै और हेसूत संजयज्ञात वाले और मित्रोंकीइस पराजयको सुनकर ३० मेरेसिवाय कौनसा पुरुषहै जो प्राणोंकोनहीं त्यागकरे मैं विषखाना अग्निमेंप्रवेशहोना वा पर्व्वतके ऊपरसे गिरना चाहताहूं परन्तु मैं इन कठिनदुःखोंके सहनेको समर्थनहीं होसक्ता ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रवाक्ये अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

संजयबोलेकि अयसन्तलोग तुमकोलक्ष्मीसे कुलसेयशसे तपसे और शास्त्रज्ञतासे नहुषकेपुत्र ययातिके समानमानतेहैं १ हे राजा शास्त्रमेंतुम महर्षिके समान कृतकृत्यहो आपअपनेको सावधानकरो और व्याकुलताको त्यागो २ धृतराष्ट्र बोले मैं दैवकोश्रेष्ठ मानताहूं निरर्थक उपायकरनेको धिक्कारहै जहां कि शालवृक्षके समान उन्नत महाबलीकर्ण युद्धमें मारागया ३ वह महारथी युधिष्ठिरकी सेना और पांचालोंके रथसमूहोंको मारकर और बाणोंकी वर्षासे सबदिशा-ओंकोसंतप्त करताहुआ ४ जैसेकि वज्रधारीइन्द्र असुरोंको मोहित करताहै उसीप्रकार युद्धमें पांडवोंको मोहितकरके इसप्रकारसे मृतक होकर सोताहै जैसे कि वायुसेटूटाहुआ वृक्षपृथ्वीपर पड़ाहोता है ५ मैं शोकसमुद्रके अन्तको नहींदेखताहूं मेरीचिन्ताकीवृद्धि और मरनेकी इच्छाभी उत्पन्नहोतीहै ६ हेसंजय मैं कर्णके मरनेको और

अर्जुनकी विजयको सुनकर कर्णके मारेजानेको श्रद्धा विश्वास से अयोग्य जानताहूं ७ निश्चयकरके मेराहृदय बज्रके समान दुःखसे फटनेवालाहै जो पुरुषोत्तम कर्णको मृतक सुनकरभी नहींफटताहै ८ पर्वसमयमें देवताओंनेमेरी आयुबहुतबड़ी विचारकरीहै इस हेतुसे कि कर्णकोभी मृतक सुनकर अभी पृथ्वीपर महादुःखी जीवता हुआ वर्त्तमानहूं ६ हेसंजयमुझ सुहृदजनों से रहितके इसजीवनको धिक्कारहै जिससेकि मैंनेइस दुर्दशाको पाया १० मैं निर्बुद्धी सब के शोचके योग्य होकर दुःखीरहूंगा औरपर्वकालमें सबलोकमें मान्य होकर ११ शत्रुओंसे तुच्छकिया हुआमैं कैसेकैसे जीवनको समर्थ हूंगा हे सूतसंजय मैंनेभीष्म द्रोणाचार्य्यके मरणसे उत्पन्नहोनेवाले शोकसे महादुःखदायी आपत्तिकोपायाहै १२ युद्धमें कर्णके मरनेपर भीष्म द्रोणाचार्य्य और महात्मा कर्णके मरने से मैं शेष बचीहुई सेनाको नहींदेखताहूं १३ क्योंकि वह शूरबीर कर्णमेरे पुत्रोंको युद्ध रूपीनदीमें नौकारूप होकर बीरोंकी लड़ाईमें अनेकशायकोंको बरसाताहुआ मारागया १४ उसपुरुषोत्तम के बिनामेरा जीवन वृथाहै निश्चय करके शायकोंसे पीड़ित होकर अतिरथीकर्णरथसे ऐसेगिर पड़ा १५ जैसेकि बज्रके पातसे पर्वतका टूटाहुआ शिखरपृथ्वीपर गिरताहै निश्चयकरके वहरुधिरमें भराहुआ पृथ्वीको शोभित कर के ऐसासोताहै जैसेकिमतवालेहाथीसे गिरायाहुआ हाथीहोताहैयही धृतराष्ट्र के पुत्रकाबलथा जिससे कि पांडवोंको बड़ाभयथा १६।१७ वह धनुषधारियों का ध्वजारूप कर्ण अर्जुनकेहाथ से मारागयाहाय वह धनुषधारी मित्रोंका निर्भय करनेवाला बीरकर्ण मराहुआ ऐसा सोताहै१८ जैसे कि देवताओंके इन्द्रका घातकियाहुआपर्वत होता है जैसे कि पंगु मनुष्यका मार्ग चलना और कंगाल निर्धनकी धनकी इच्छा करना वृथाहै १६ इसीप्रकार दुर्योधनके मनकी इच्छा कठिनतासे प्राप्तहोनेकेयोग्य है जैसे कि जलके अंबुकण श्वासके दुःखसे उल्लंघनके योग्यहै अहंकारी नीच दुःखी मन और पराक्रम हीन २०। २१ क्या मेरापुत्र दुश्शासन भी मारागया हेतात क्या

उसने युद्धमें भयकारी कर्मोंको नहीं किया २२ जैसे कि अन्यक्षत्री मारेगये उसीप्रकार कहीं शूरवीर दुर्योधन तो नहीं मारागया युधिष्ठिर सदैव कहतारहा कि युद्ध मतकरो २३ परन्तु दुर्योधनने उस को ऐसे नहीं स्वीकारकिया जैसे कि अज्ञानमनुष्य नीरोग करनेवाली ओषधीको नहीं अंगीकार करताहै बाण सय्यापर सोनेवाले महात्मा भीष्मजीने जलकी इच्छाकरी २४ तब उस अर्जुनने पृथ्वी के तलको तोड़ा उस अर्जुनके हाथसे उत्पन्नहुई जलधारा को देख कर २५ उस महाबाहुने कहा कि हेतात पांडवोंके साथ सन्धिकर निश्चय करके सन्धिसे सुखहोगा और तुम्हारा युद्ध मेरेही अन्त तकहोय २६ तुम सजातियों समेत प्रीतिपूर्व्वक पृथ्वीको भोगो परन्तु उसने न माना और उसके वचनको शोचताहै २७ हेसंजय वह दूरदेशी वचन अब आगे दिखाईदेते हैं और मैं मन्त्री वा पुत्रों से रहित हुआ २८ और द्यूत खेलनेसे ऐसे बंधनमें पड़ा जैसे कि परकंच पक्षीहोताहै हेसंजय जैसे कि अत्यन्त प्रसन्न बालक पक्षी को पकड़कर पक्षकाटकर २६ मारतेहुये छोड़देतेहैं और वह अपने पक्ष टूटजानेसे चलनहीं सक्ताहै ३० इसीप्रकार सब मनोरथों से रहित और बांधव आदिसे पृथक् मैंभी टूटे पक्षवाले पक्षीकेसमान वर्त्तमानहूं ३१ महादुःखी शत्रुके आधीन होकर मैं किसदशा को पहुंचूंगा ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रशोकेनवमोऽध्यायः ६ ॥

दशवां अध्याय॥

वैशंपायनबोले कि इसरीतिसे महादुःखी व्याकुल चित्त धृतराष्ट्र इसरीतिसे विलाप करके फिर संजयसे कहनेलगे १ कि जिसने मद्रकाम्बोज अंबष्ट गांधार और विदेहोंको कैकय लोगों समेत विजयकिया और युद्धमेंप्रयोजनके निमित्त विजय कराके २ जिसने दुर्योधनकेलिये पृथ्वीको विजयकिया वह बाहुशाली शूरवीर शल्य युद्धमें पांडवोंके हाथसे विजय कियागया ३ हे संजय उसबड़े धनुष-

सन्तोषहीके अर्थ होते हैं उसीप्रकार दूसरे प्रकारसे बिचारकिया हुआ कर्म और हो प्रकारसे होताहै दैवबड़ा बलवान्है और काल-धारी कर्णके मरनेके पीछे युद्धमें कौन २ से बीरसन्मुख हुये वह मुझसेकहो ४ कहीं अकेलाही युद्ध करताहुआ पांडवोंके हाथसे तो नहीं मारागया हे तात जैसे वहबीर मारागया उसका वृत्तांत तुमने प्रथमही कहा सबशस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ शिखण्डीने अपने सन्मुख न होनेवाले भीष्मपितामहको युद्धमें उत्तम २ बाणोंसे मारा ६ इसी प्रकार धृष्टद्युम्नने युद्धमें शस्त्र त्यागनेवाले महाधनुषधारी योगा-भ्यासमें नियत द्रोणाचार्य्यको बहुत बाणोंसे घायलकिया ७ हे संजय वह द्रोणाचार्य्य खड्गकेद्वारा धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये यहदोनों बीर समयपाकर छलसेही मारेगये ८ मैंने इनगिरायेहुये भीष्मको सुना मैं निश्चय जानताहूं कि आप बज्रधारी इन्द्रभी युद्धमें भीष्म और द्रोणाचार्य्यको नहीं मारसक्ता था जब कि यहदोनों न्यायके अनुसार युद्धकरें मैं इसबातको सत्य २ कहताहूं कियुद्धमेंबड़ेदिव्य अस्त्रोंके छोड़नेवाले इन्द्रके समान बीर कर्णको कैसे बहुतोंने पकड़ा इन्द्रनेबिजलीकेसमान प्रकाशित दिव्य सुवर्णसेअलंकृत ९।१०।११ शत्रुओंके मारनेवाली शक्ती जिसको कुंडलों के बदलेमें दी और जिसका बाण सर्पमुख दिव्य और सुवर्णसे जटित १२ शत्रुओंका मारनेवाला था वह चन्दनसे चर्चित होकर पृथ्वीपर सोताहै जिस-ने भीष्म द्रोणाचार्य्य आदि बड़े २ बीर महारथियोंका भी अपमान किया और श्रीपरशुरामजीसे महाघोर ब्रह्मास्त्रको सीखा औरजिस महाबाहुने द्रोणाचार्य्य आदिको मुख मुड़ाहुआ बाणोंसे पीड़ित देख कर १३।१४ अभिमन्युके धनुषकोअपने तीक्ष्ण बाणोंसेकाटा और जिस प्रकार दशहजार हाथीके १५ समानबली बज्रके समान बेगवान दुराधर्ष भीमसेनको अकस्मात् रथसे बिरथकरके हँसताहुआ गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे सहदेवको बिजयकरके १६ धर्म और कृपालुता के ध्यानसे बिरथकरके नहींमारा जिसने बिजयाभिलाषी महामाया-बी १७ राक्षसोंके राजा घटोत्कचको इन्द्रकी शक्तीसे मारा इन्हीं

दिनतक उससे भयभीत अर्जुनने १८ युद्धमें जिसके द्वैरथ संग्राम को प्राप्त नहींकिया वह वीर पुरुष कैसे युद्धमें मारागया जिसका न रथटूटा न धनुषटूटा और अस्त्रोंकाभी नाशनहुआ वहकर्णशत्रुओं के हाथसे कैसे मारागया उसबड़े धनुषके चढ़ानेवाले घोरबाण और दिव्य अस्त्रोंको युद्धमें छोड़नेवाले सिंहकेसमान वेगवान् पुरुषोत्तम कर्णके विजयकरनेको कौन समर्थहै१९।२०।२१ उसका धनुष-अवश्यटूटा वा रथ पृथ्वी परगिरा अथवा शस्त्रों का नाश होगया था जिससे कि उसकोमराहुआ मुझसे वर्णनकरताहै२२उसके नाश होनेसेमैं अन्य सबकोभी नाशमान देखताहूं उसकाप्रणथा कि जब तक अर्जुनकोनहीं मारलूंगा तबतकनतो अपने चरणों को धोऊंगा न युद्धमें पैदल होकर चलूंगा जिसमहात्माका यहमहाघोर प्रणथा किजिसके भयसेभयभीतधर्मराज पुरुषोत्तम युधिष्ठिरने२३।२४तेरह वर्षतक सदैव आनन्दसे जीवनको नहींपाया जिस पराक्रमी महा-त्मा के पराक्रममें मेरेपुत्रने आश्रयलेकर पांडवोंकी स्त्री द्रौपदीको बड़ेबलसे सभामें बुलाया वहांभी सभाके मध्यमें पांडवों के देखते हुये २५।२६ कौरवोंके सन्मुख द्रौपदीसेबोलाहे दासकी भार्य्या कृष्णा तेरे पतिनहींहैं किन्तु सबकेसब षंडतिल अर्थात्थोथे तिलके समानहैं२७हेसुन्दरीतू दूसरेपतिकेपास वर्त्तमानहोजिसकर्णनेसभा के मध्यमें ऐसेरअसभ्य और रूखेदुर्वचन द्रौपदीसेकहे वह शत्रुओं के हाथसे कैसेमारागया२८उसने यहभी कहाथा कि हेदुर्य्योधनजो युद्धमें प्रशंसनीय भीष्मओर युद्ध दुर्मद द्रोणाचार्य्य पक्षपात करके कुन्तीके पुत्रोंको नहींमारेंगे तोमैंसबको मारडालूंगा तू अपनेमनकी चिन्ताको दूरकरदे२९।३०गांडीव धनुष और अविनाशीदोनोंतूणीर इसउत्तम चन्दनसेलिप्त सन्मुख दौड़नेवाले मेरेबाणका क्या कर-सकेहैं ३१ वहमहादोष युक्तकर्ण निश्चय करके अर्जुनके हाथसे कैसेमारागया गांडीवधनुषसे छूटेहुये बाणोंके उदग्रस्पर्शकी चिन्ता रहित द्रौपदीसे यहकहतेहुयेकि हे कृष्णातू विनापतिकीहै जिसकर्ण ने पांडवोंकोदेखा और अपनेभुजाका आश्रयलेकर जिसको श्रीसमेत

सपुत्र पांडवोंसे जराभी भयनहींहुआ हे संजय उसकामारना देव-ताओं समेत इन्द्रसेभी कठिनथा ३२।३३।३४हेतात उसकोसन्मुख दौड़नेवाले पांडवलोग कैसेमारसक्तेहैं धनुषज्याके स्पर्श करनेवाले अथवा हस्तत्राणकेद्वारा पकड़नेवाले कोई धनुषधारी मनुष्यकर्णके सन्मुख होनेको समर्थ नहीं हैं पृथ्वीचन्द्र और सूर्य्यचाहो अपनी किरणोंसेरहितहोजांय३५।३६परन्तु युद्धमेंमुखनमोड़नेवाले पुरुषोत्तमका मरणनहींहै जिसके कारण प्रारब्धहीन दुर्बुद्धी दुर्योधन ने सदैव भाईदुश्शासन समेत ३७ बासुदेवजीके उत्तरहीको अंगीकार किया मैंयह जानताहूं कि वहमेरापुत्र दुर्योधन बड़ेदोषयुक्त कर्णको पराजय और दुश्शासनको मराहुआ ३८ देखकर शोचको करताहै हे संजय द्वैरथयुद्धमें अर्जुनके हाथसे कर्णको मराहुआ सुनकर ३९ और बिजय करनेवाले पांडवोंको देखकर दुर्योधनने क्याकहा वा दुर्मर्षण और वृषसेनको युद्धमें मृतकदेखकर ४० और अपनीसेना को महारथियोंसे घायल होकर भागतीहुई देखकर और भागनेकी इच्छावान् मुखमोड़नेवाले राजाओं और रथियोंको घायल देखकर शोचकरताहै ४१ अथवा दुर्योधनने उस शासनाके अयोग्यपलायमान इन्द्रियोंके बशीभूत ४२ सेनाको उत्साहसे रहित देखकरक्या कहा और जिनकेबहुत मनुष्य मारेगये उनराजाओंसे घिरेहुयेआप शत्रुता करनेवाले दुर्योधनने क्याकहा और युद्धमें रुधिरपीनेवाले भीमसेनके हाथसेमरेहुये भाई दुश्शासनको देखकर क्याकहा और सभामें जो राजा गान्धारकेसन्मुख कहाथा कि कर्ण युद्धमें अर्जुनको अवश्य मारेगा उस कर्णके मरनेपर क्याकहा ४३।४४।४५पूर्व्व समयमें सौबलके पुत्र शकुनीने द्यूतरचकर पांडवोंको ठगकर ४६ कर्णके मरनेपर क्याकहा यादवों में महारथी हार्दिक्यके पुत्र बड़ेधनुषधारी कृतवर्माने ४७ कर्णको मृतक देखकर क्या कहा क्षत्रीवैश्य धनुर्वेदके जाननेके आकांक्षी जिस बुद्धिमान् अश्वत्थामाकी शिक्षाको प्राप्तकरते हैं उस बड़े प्रतापी यशस्वी तरुण वय वाले धनुर्धारी अश्वत्थामा ने कर्णके मरने पर क्या कहा ४८।४९ जो गौतमकेपुत्र

महा धनुर्धारी धनुर्वेदके आचार्य कृपाचार्य्य हैं हेतात उन्होंने कर्णके मरने पर क्या कहा और रथियों में श्रेष्ठ मद्रदेशाधिपति पराक्रमी युद्धमें शोभायमान राजा शल्यने अपने सारथीपने में कर्णको मृतक देखकर क्याकहा ५० । ५१ । ५२ इनके सिवाय और सब दुराधर्ष धनुषधारीराजाओंने युद्धमें कर्णको मरा देखकर क्या कहा औरजो२ इस पृथ्वीके राजा यहां युद्ध करनेको आये उनसबोंने ५३ कर्णको माराहुआ देखकरकौन२से वचनकहे हेसंजय उस रथियोंमें श्रेष्ठनरोत्तमवीर कर्णके मरने पर ५४ कौन २ सेनाके सेनाध्यक्ष हुये और रथियोंमें श्रेष्ठ मद्रदेशका राजा शल्य कर्णके सारथ्य कर्ममें कैसेनियतकिया गया यह सबवृत्तान्त मुझसे ब्योरे समेत वर्णनकरो ५५ युद्धकरने वाले कर्णके दाहिने रथके चक्रकी किसने रक्षा करी और बायें चक्रकी और पृष्ठभागकी किस २ने रक्षाकरी ५६ किसने कर्ण का संग न छोड़ा और कौनसेनीच भागगये और तुम्हारे भागजानेसे महारथी कर्णकैसे मारागया ५७ और जिस प्रकार बादलोंसे जल कीधारा गिरतीहैं उसी प्रकार बाणोंकी वर्षाकरते हुये महारथीशूर वीर पांडव कैसे सन्मुख हुये ५८ हे संजय उसयुद्धमें बाणोंमें श्रेष्ठ कर्णका वह दिव्य बाण कैसे निष्फल हुआ उसको मुझसेकहो ५६ प्रधान पुरुषके नहोनेसे में अपनी शेषबचीहुई सेनाको नहीं देखता हूं ६० उनवीर धनुर्धारी मेरेलिये जीवन के त्यागने वाले भीष्म और द्रोणाचार्य्य को मृतक देखकर अबमेरा जीवना निरर्थकहै ६१ में पांडवोंके हाथसे मरेहुये कर्णको वारंवार स्मरण करके शान्तीको नहींपाताहूं जिसकी किभुजाओंका बलदश हजारहाथियोंके समान था ६२ हे संजय द्रोणाचार्य्य के मरनेपर युद्धमें शत्रुओं के हाथसे नरोत्तम कौरवों का जोवृत्तान्त हुआ वह मुझसे कहो ६३ और जैसे कर्ण कुन्तीके पुत्रों से युद्ध करने को प्रवृत्त हुआ और युद्धमें जैसे मारागया उसकोभी ठीकर कहो ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रप्रश्नेदशमोऽध्यायः १० ॥

—※—

ग्यारहवां अध्याय॥

संजयबोले हेभरतवंशी महाराज उस दिनबड़े धनुर्धारी द्रोणाचार्यकेमरने और महारथी अश्वत्थामाके निष्फल संकल्प करने १ औरकौरवोंकी समुद्ररूपी सेनाके भागनेपर अर्जुन अपनीसेनाको व्यूहित करके भाइयों समेत युद्धमें नियतहुआ२उस समय आपके पुत्रने उससन्मुख नियत होनेवाले अर्जुनको जानकर अपनीभागती हुईसेनाको भागनेसे रोका ३ और अपनेभुजबलसे सेनाकोरोककर दुर्योधन पांडवोंके साथ बिलम्ब तक युद्धकरके ४ संध्यासमय जानकर विजयी और बिलम्बतक बिचारनेवाले शत्रुओंसमेत अपनी सेनाको विश्राम कराया ५ सेनाके विश्रामकोकर अपने डेरेमें पहुंचकर कौरवोंने परस्परकी निर्विघ्नताका बिचारकिया ६ बहुमूल्यआस्तर्ण वा शय्या और आसनोंपर बैठेहुये उन लोगोंनेऐसेसलाहकरी जैसेकि देवतालोग सुखशय्याओं पर ७बैठेहुये सलाहोंको करतेहैं इसकेपीछे राजा दुर्योधन प्यार और मृदुभाषणसे उन धनुषधारियोंके सन्मुखहोकर समयके अनुसार इन बचनोंको बोला किहेबुद्धिमानोंमेंश्रेष्ठ तुम सब अपनी अपनी रायको शीघ्रता सेकहो बिलम्ब मतकरो हेराजालोगो ऐसी दशामें क्याकरना उचितहै और कौनसी बातअवश्य करनेके योग्यहै ८।९ संजयनेकहा कि इसप्रकार महाराजदुर्योधनके कहनेपर सिंहासनोंपर वर्त्तमान युद्धाभिलाषी नरोत्तमोंने अनेक प्रकारकी चेष्टाओंको किया १० युद्धमें प्राणोंकेहोम करनेके अभिलाषी उन लोगोंकी चेष्टाओंको देखकर और बालसूर्य केसमान तेजस्वी राजाके स्वरूपको देखकर ११ शास्त्रोंके ज्ञाता बुद्धिके स्वामी वार्त्तालापके जाननेवाले अश्वत्थामाजीने बर्णनकरना प्रारंभकिया कि स्वामीकीभक्ति और देशकालका पहिचानना और बल वा नीतिसे प्रयोजनकी सिद्ध करने वाले १२ उपाय पंडितोंने कहेहैं वह उपाय दैवके आधीनहैं हमारे जोमहारथीवीर देवताओं के समान १३ नीतिमान भक्तिमान और सावधानतामें योग्यथे वहतो मारेगये परन्तु हमलोगोंको बिजय से निराश होनाभीनचा-

लिये १४ इसलोक में अच्छीरीतिसे कियेहुये नीतिआदि सबअर्थों से दैवभी अनुकूल किया जाता है हे राजा वह लोग हम सबों में अत्यंत श्रेष्ठ गुणोंसे भरेहुये १५ कर्णकोही सेनापतिके अधिकार पर अभिषेक करादेंगे और कर्णको सेनापति करके शत्रुओंको मारेंगे १६ निश्चय करके यह बड़ा पराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्म्मद यमराजके समान असह्य लड़ाई में शत्रुओं के बिजय करनेको इन्द्रकेहीसमानहै १७ हे राजा अश्वत्थामाके इस बचन को सुनकर आपके पुत्रने कर्णसे यहबड़ा भरोसाकिया १८ कि भीष्म और द्रोणाचार्य्यके मरनेपर यही पांडवोंको मारेगा इसआ-शाको हृदयमें धारण करके बड़ा विश्वास युक्तहोकर १९ प्रसन्न चित्त दुर्योधन उस प्रीति सत्कारसे युक्त प्रियतम अपनी वृद्धि करने वाले वचनको सुनकर २० अपने मनको अच्छीरीतिसे दृढ़करके अपनी भुजाओंके बलमें रक्षित होकर कर्णसे यह वचन बोला २१ कि हे कर्ण मैं तेरे पराक्रमको और अपने ऊपर जोतेरी प्रीतिहै उसको अच्छी रीतिसे जानताहूं हेमहाबाहो मैंभी तुमसे सुन्दर फलयुक्त बचनकहूंगा२२मेरे सेनापति अतिरथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारे गये उनसेभी अधिक आप पराक्रमी होकर सेनापतिहूजिये२३।२४ वह दोनों वृद्ध महा धनुषधारी अर्जुनसे मेलरखतेथे हेकर्ण मैंनेतेरे कहनेसे दोनोंकी बड़ीप्रतिष्ठा करीथी२५हेतात भीष्मजीने अपनेको बाबा समझकर बड़े युद्धमें दशों दिनतक पाण्डवोंकी रक्षाकरी २६ आपके शस्त्ररहित होनेपर शिखण्डीको आगेकरके अर्जुनके हाथ से भीष्म पितामह मारेगये २७ हेपुरुषोत्तम उस पुरुषसिंहके मरने और शरशय्यापर बिराजमान होनेपर तेरे कहनेसेद्रोणाचार्य्य संग्रा-ममेंसन्मुखहुये२८उन्होंनेभी अपना शिष्य जानकर पांडवोंकी रक्षा करी वह वृद्धभी शीघ्रतासेही धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये २९ इन दोनों प्रधान पुरुषोंके मरनेसे चिन्तायुक्तहोकरमैं तुझबड़े पराक्रमीके समान किसी शूरवीरको नहीं देखताहूं हमलोगोंके बीचमें आपही आदि मध्य और अन्तमें विजय करनेको समर्थहो और जिसरीति

आपने सदैव मेराहित कियाहै ३१ उसीप्रकार आपबैलके स-
मान धुरके उठानेके योग्यहौ मैं आपको सेनापतिके अधिकार पर
अभिषेक करूंगा ३२ जैसे कि देवताओंके सेनापति प्रभु अविनाशी
स्वामिकार्त्तिकजी हैं उसी प्रकार आपमेरी सेनाकी रक्षाकरो ३३
जैसे कि महाइन्द्र युद्धमें दानवोंको मारताहै उसी प्रकार आपभी
हमारे शत्रुओंको मारिये तुमको सन्मुख देखकर महारथी पांडव
और पांचाल लोग ऐसे युद्धमें से भागेंगे जैसे कि विष्णुजी को
देखकर दानव भागते हैं इस हेतुसे हे पुरुषोत्तम तुम इस बड़ी सेना
को अपनी रक्षामेंकरो ३५ आपको युद्धमें उपायकरताहुआ देखकर
मन्त्रियों समेत पांडव सृंजय और पांचालदेशी यह सबभागेंगे३६
जैसे उदय हुआ सूर्य्य अपने तेजसे तपाता हुआ महाघोर अन्ध-
कारको बिध्वंस करताहै उसी प्रकार तुमभी शत्रुओंको तपाओ३७
संजय बोले हेराजा आपके पुत्रकी यही आशा प्रबल हुई कि भीष्म
और द्रोण के मरनेपर यह कर्ण पांडवों को अवश्य मारेगा ३८
इस आशाको हृदयमें धरकर इसप्रकारकर्णसे बोलाहेकर्ण वह अ-
र्जुन तेरेसन्मुख युद्धकरनेकी इच्छानहीं करताहै ३९ कर्णबोलाहेगां-
धारीके पुत्र मैंने प्रथमही यह तुझसे कहाहै कि मैं पुत्र पौत्र और
श्रीकृष्णजी समेत सब पांडवोंको बिजय करूंगा ४० मैं निस्सन्देह
तेरासेनापति बनूंगा हे महाराज आपतय्यार हूजिये और पांडवोंको
बिजय कियाजानो ४१ संजय बोलेहे महाराज इसबातके सुनतेही
राजादुर्य्योधन अपने राजाओं समेत ऐसाउठा जिस प्रकारदेवता-
ओंसमेत इन्द्र उठताहै ४२ अर्थात् सेनापति बनानेकेलिये कर्णके
सत्कार करने को ऐसा उठा जैसेकि स्वामिकार्त्तिकके अभिषेककरा
नको देवताओं समेत इन्द्रउठाथा इसके पीछे बिजयाभिलाषी उन
सब राजाओं ने जिनका अग्रगामी दुर्योधन था सुवर्ण के कलश
और अभिमंत्रित मृणमयपात्र हाथी के दांतके पात्र गेंड़ेके सींगके
पात्र वा अन्य यज्ञपशुओंके दांतोंकेपात्र मणिमोतियोंसे आच्छादित
वा बहुतसी सुगन्धित द्रव्योंसे युक्त जलपूरित पात्र और गंधा-

क्षत आदि अभिषेककी वस्तुओंसे वेदोक्तमंत्रोंके द्वाराकर्णका अभिषेक कराया ४३ । ४४ । ४५ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और अंगीकारकिये हुये शूद्रोंने भी उस महात्मा कर्णको प्रसन्न किया जोकि शास्त्रोक्त वृद्धकी श्रेष्ठरीति से इकट्ठे किये हुये सामानों समेत स्नान किये हुये रेशमी वस्त्रों के बिछौनों से युक्त तांबेके उत्तम आसन पर विराजमानथा ४६ । ४७ हे राजेन्द्र फिर अभिषेक होजाने पर शत्रुहन्ता कर्णने निष्क और गोधन देकर ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराया ४८ उस समयवन्दीजन और ब्राह्मणोंने उस पुरुषोत्तम से यह कहा कि तुम गोविन्दजी आदिसब साथियों समेत पांडवोंको विजय करो ४९ हेकर्ण तुमहमारी विजयके निमित्त पांचालोंसमेत सब पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि सदैव होनेवाला सूर्य्यबड़े अंधकारको दूर करताहै ५० आपके बाणोंको केशवजी समेत पांडव लोग देखनेकोभी ऐसे समर्थनहोंगे जैसे कि सूर्य्यकी प्रकाशितकिरणों के देखनेको उलूक पक्षी नहीं समर्थ होसक्ता है ५१ युद्धमें तुमशस्त्रधारी के सन्मुख पांडव नियत होनेको ऐसे समर्थ नहीं हैं जैसेकि महाइन्द्र के सन्मुख दैत्य दानव नियत नहीं होसक्ते ५२ अभिषेक कियाहुआ वह कर्णबड़े तेजसे दूसरे सूर्य्यके समानप्रकाशमान हुआ ५३ तबकालसे प्रेरित आपके पुत्रने कर्णको सेनापति के अधिकार परअभिषेक कराके अपनेको सिद्धमनोरथ समझा ५४ हे राजाविजयी कर्णने भी सेनापति होकर सूर्य्योदयके समयसेना के तय्यार होनेकी आज्ञादी ५५ फिर वहां आपके पुत्रों समेत वह कर्ण ऐसा शोभितहुआ जैसे कि तारक असुरकेयुद्धमें देवताओं समेत स्वामि कार्त्तिकजी शोभित हुयेथे ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णाभिषेकेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोलेकि जबसूर्य्यकेपुत्र कर्णने सेनापति पदवीकोपाकर राजादुर्योधनसे भाईके समान मृदुभाषणको सुनके १ सूर्य्योदयके

समय असंख्यसेनाकी तैयारीकेलिये आज्ञादेकर क्या कामकिया हे संजय उसकोमुझे समझाके कहो २ संजयबोले हे भरतर्षभ आपके पुत्रोंने कर्णके अभिप्रायको जानकर सेनाकी तैयारीके लिये आज्ञा करी जिसमें आनन्द मंगलसूचक बाजेआगेचले ३ और पिछली रात्रिमें अकस्मात् आपकी सेनामें तैयारी करनेकाशब्द आधिक्य-तासेहुआ ४ इसकेपीछे अलंकृत उत्तमहाथीरथ मनुष्यपदातीघोड़े ५ और शीघ्रता करनेवाले और परस्पर में बोलनेवाले शूरबीरों के महाकठिनशब्द आकाशतक व्याप्तहुये ६ इसकेपीछे श्वेत पताका और हंसकेवर्ण घोड़े सुवर्णपृष्ठी धनुष नागकक्षीध्वजा ७ सैकड़ों तूणीरोंसे युक्त बाजूबन्द और कवचोंको धारण करनेवाले शतघ्नी किंकिणी शक्ति शूल और तोमरों से भरे हुये धनुषोंसेयुक्त निर्मल सूर्य्यकेसमान प्रकाशमान बायुके बिपरीत होने से सन्मुख पताका वाले रथको सवारियोंसे ८। ९ और स्वर्णमयी जालोंसे अलंकृत शंख को बजाता स्वर्णमयी धनुषको हिलाताहुआ कर्ण चला हे श्रेष्ठनरो-त्तम वहां कौरवोंने उसबड़े धनुषधारी रथारूढ़ सूर्य्यके समानप्रका-शित असह्य तेजसे अन्धकारको दूरकरतेहुये १०। ११ कर्णको देखकर किसीनेभी भीष्म द्रोणाचार्य्य और अन्य २ बीरोंके दुःखोंको नहीं माना १२ इसकेपीछे शंखध्वनिकेद्वारा शूरबीरोंको चैतन्य करतेहुये कर्णने कौरवोंकी बड़ीसेनाको आकर्षणकिया १३ इसरीतिसे महा-धनुषधारी शत्रुसंतापी कर्ण मकरव्यूहको रचकर पांडवों के विजय की इच्छासे सन्मुखचला १४ हेराजा उसमकरव्यूहके मुखपर तो कर्ण नियतहुआ नेत्रोंके समीप महारथी शकुनी और शूरबीरउलूक नियतहुये शिरपर अश्वत्थामा और ग्रीवापर सबसगेभाई और कटि भागपर बड़ी सेनासमेत आप राजादुर्योधन नियतहुआ १५। १६ और बामपादपर नारायण और गोपालनाम सेनासेयुक्त दुर्मद कृतबर्मा नियतहुआ और बड़े धनुषधारी त्रिगर्त्त देशी सत्यपराक्रमी कृपाचार्य जो दक्षिणचरणके समीपनियतहुये १७। १८ और मद्रदेशी बड़ीसेना समेत राजाशल्य बांये चरणके पीछे और हजाररथ और तीनसौ

हाथियोंसमेत सत्यसंकल्पसुपेणदक्षिणचक्रणके पीछेहुआ १९।२० बड़ी सेनासमेत बड़ेपराक्रमी दोनोंभाई राजाचित्र और चित्रसेन पुच्छपर नियतहुये २१ हेराजेन्द्र इसरीतिसे नरोत्तम कर्णके चलनेपर धर्मराज युधिष्ठिर अर्जुनकी ओर देखकर यहबोले २२ कि हेवीरअर्जुन देखो जैसे जैसे इस युद्धमें शूरवीर महारथियोंसे रक्षित दुर्योधनकी सेना कर्णने अलंकृतकरी २३ वह दुर्योधनकी बड़ीसेना वहीहैजिसके बड़े२ वीरमारे गये हेमहाबाहो यहशेष बचीहुईहै आशय यहहै कि यह सेनामेरी बुद्धिसे तृणोंकी समानहै२४इस सेनाभरमें अकेला धनुषधारी कर्णही प्रकाशितहै यह रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण देवताअसुर किन्नर गंधर्व नाग पिशाच और २५ तीनोंलोकोंके स्थावर जंगमों से महादुर्जयहै हेमहाबाहुअर्जुन अब इसकेही मारने पर तेरी पूर्ण विजयहै २६ इसके मरने पर बारहवर्षका मेरा कंटक उखड़जायगा हेमहाबाहु ऐसा जान और समझकर व्यूहको जैसा चाहो वैसा तैयार करो२७पाण्डव अर्जुनने भाईके उस वचनको सुनकर अपनी सेना को अर्द्धचन्द्र व्यूह से अलंकृत किया २८ उसके वाम भागपर भीमसेन और दाहिने भागपर बड़ा धनुष धारी धृष्टद्युम्न वर्त्तमान हुआ२९ और व्यूहके मध्यमें राजा युधिष्ठिर और अर्जुन नियतहुये और धर्मराजके पीछे नकुल सहदेव हुये ३० और पांचाल देशी उत्तमौजा और युधामन्यु रथके पहियोंके रक्षकहुये अर्जुनसे रक्षित उन दोनोंनेभी युद्धमें अर्जुनको नहीं त्यागा ३१ हेराजा शेषशूरवीर राजा लोग शस्त्रादिसे अलंकृत अपनी २ युक्तिके अनुसार व्यूहमें नियतहुये ३२ पांडव और अन्य शूरवीरोंने इसरीतिसे अपने व्यूहको रचकर तैयार किया हेराजा इसरीतिसे पांडव और आपके पुत्रोंने अपने२ व्यूह को रचकर युद्ध करने को उत्साह किया ३३ दुर्य्योधनने कर्णकी रचित कीहुई अपनी सेनाको युद्धमें देखकर भाई बन्धुओं समेत पांडवों को मृतक रूप जाना ३४ उसी प्रकार राजा युधिष्ठिर ने भी अपनी पांडवी सेनाको अलंकृत देखकर कर्ण समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको मृतक रूपमाना ३५ इसके पीछे शंख भेरीढोल

दुन्दुभी डिमडिम आदि बाजेभी चारों ओरसे बजे ३६ हेराजा उस समय दोनों सेनाओं में बड़े शब्दायमान बाजे गाजे बजे और युद्धाभिलाषी शत्रुहन्ता शूरवीरों के भी महासिंहनाद हुये ३७ हे राजा घोड़ों के हींसने और हाथियों के चिग्घाड़ने के और रथकी नेमियोंके महाकठोर शब्द उत्पन्न हुये ३८ फिर व्यूह के मुखपर नियत बड़े धनुषधारी कर्णको देखकर किसीने भी द्रोणाचार्य्य के दुःखको नहीं जाना ३६ उस समय अत्यन्त उत्तम मनुष्यों से भरीहुई युद्धाभिलाषी दोनों सेना पराक्रम से परस्पर मारने को नियतहुई ४० वहां पर सावधान और क्रोधसे भरे हुये एक दूसरे को नियत देखकर कर्ण और पांडव अर्जुन सेनाके मध्यमें फिरनेलगे फिर वह दोनों सेना नाचती हुईसी परस्पर में भिड़ गईं उनके भागवा बिभाग कोणों से युद्धाभिलाषी लोग सेनासे बाहरनिकले इसके अनन्तर परस्पर में युद्धकर्त्ता लोग हाथी घोड़े और रथों के साथ युद्धमें प्रवृत्त हुये ४१। ४२। ४३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिव्यूहनिर्माणेद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

संजयबोलेकि अत्यन्त प्रसन्नचित्त घोड़े हाथी और मनुष्योंवाली उनदोनों सेनाओंने जोकि देवता और असुरोंकी सेना के समान प्रकाशमानथीं परस्परमें एकनेएकको सन्मुखपाकर अत्यंत प्रहार किये १ इसकेपीछे बड़े पराक्रमी मनुष्य रथ घोड़ेहाथी औरसेनाके पतियोंने शरीर और प्राणोंकेनाशकरने वाले अनेक प्रहार किये २ औरचन्द्रमा सूर्य और कमलोंकेसमान प्रकाशमान सुगन्धिसेभरे नृसिंहोंके शिरोंसे पृथ्वीको आच्छादित करदिया ३ अर्द्धचंद्र भल्ल क्षुरप्र खड्ग पट्टिश और परश्वधों से युद्ध करनेवालों के शिरों को काटा ४ तबलम्बी स्थूल बाजूआदिसे अलंकृत शस्त्रधारी भुजाओंसे बड़े२ दीर्घ भुजवाले शूरबीरोंकी भुजा पृथ्वीपर पड़ीहुई शोभायमान हुईं ५ रक्तअंगुष्ठ और हथेलीसमेत फड़कतीहुई उनभुजाओंसे पृथ्वी

सेनी शोभायमान हुई जैसे कि गरुड़जीके छोड़े हुये उग्रपंख मुख वाले सर्पोंसे शोभित होतीहै ६ शत्रुओं केहाथसे मारेहुये बीरहाथी घोड़े और रथोंसे ऐसे गिरे जैसेकि क्षीण पुण्यहोनेसे स्वर्गबासी जीव अपने अपने विमानोंसे गिरतेहैं ७ युद्धमें बड़े बड़े वीरों की भारीगदा परिघ और मूसलोंसेभी मारेहुये अन्यहजारों बीर पृथ्वी परगिरे८रथी रथियोंसे मतवालेहाथी मतवालेहाथियोंसे अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ोंसे उस कठिन युद्धमें मर्दितकियेगये९ रथोंसेमनुष्य और हाथियोंसे रथ वा पतियोंसे रथी और हाथियोंसे रथपति घोड़े और सवार और हाथी दोनोंरथोंसेमथेगये१०।११ मनुष्य घोड़ेहाथी और रथियोंने हाथ पांव शस्त्र और रथोंसेरथ घोड़े हाथी और मनुष्योंका बड़ाविनाशकिया१२इसरीतिसेशूरवीरोंकेहाथसे सेनाके घायलऔर मारेजानेसे वह पांडव जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा हमारे सन्मुख आये १३ धृष्टद्युम्न शिखंडी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक नामक्षत्रीसात्यकी चेकितान द्रविड़ देशी सेनासमेत१४बड़ेव्यूहसे युक्त और बड़े वक्षस्स्थल लम्बीभुजा दीर्घ नेत्री वेगवान्आभूषणों से अलंकृत १५ रक्त दंत मतवाले हाथी के समान पराक्रमी नाना प्रकार के रंगों कीपोशाकोंसे भूषित चन्दनादिसे चर्चित देहवाले खड्ग भिंदिपालों को हाथ में लिये हाथियों के हटानेवाले एकसी मृत्यु वाले पांड्यचोल और केरल लोगोंने परस्पर में त्याग नहींकिया१६।१७ तूणीर धनुष भिंदिहाथमें लिये लम्बेकेश रखनेवाले प्रियभाषी घोर पराक्रमवाले अन्य पति और अश्वारूढ़ोंने भी परस्पर में त्याग नहीं कियाइसके पीछे दूसरे शूरचन्देर पांचाल केकय कारूप कौशल कांच्य और मगधशूरवीर सन्मुखदौड़े१८।१९उन्होंके रथघोड़े हाथी औरअत्यन्त भयानक पतिलोग नानाप्रकारकेबाजे बजानेवालोंके साथमें बड़े प्रसन्न चित्त हँसते नाचते और गातेथे२० अत्यन्त उत्तम रथोंसेयुक्त हाथीके कन्धोंपर सवार भीमसेन बड़ीसेनाके मध्यमें आपके शूरवीरोंके सन्मुख गये२१ अत्यन्त उत्तम महाभयानक युद्धके अनुसार अलंकृत कियाहुआ वह हाथी ऐसा शोभाय-

मानहुआ जैसेकि सूर्य्योदय वाला उदयाचल का भवन शोभाय-
मान होताहै २२ उसका लोहमयी रत्नोंसे जटित कियाहुआ कवच
इस प्रकारका प्रकाशमानथा जैसे कि नक्षत्रों समेत शरद ऋतुका
आकाश शोभित होताहै तोमर संयुक्त चपलभुज और सुन्दर मुकुट
धारण कियेहुये महा अलंकृत सूर्य्यके समान प्रकाशमान वहभीम-
सेन अपनेतेजसे शत्रुओंको भस्म करताहुआ युद्धमेंनियतहुआ २३
२४वहां हाथीपर चढ़ाहुआ क्षेमधूर्त्ति दूरसे उस हाथी पर सवार
बड़ेसाहसी भीमसेनको देखकर पुकारता और बुलाताहुआसन्मुख
गया २५ प्रथम तो इनदोनोंके हाथियोंमेंही परस्पर ऐसा युद्धहुआ
जैसेकि दैवइच्छासे वृक्षों समेत दोपर्व्वतोंका युद्धहोताहै २६ उन
हाथियोंके बड़े युद्ध होनेके पीछे वहदोनों बीर सूर्य्यकी किरणरूप
तोमरोंसे परस्पर एक एकको घायल करतेहुये बड़ेवेगसे गर्जे २७
फिरवह दोनों हाथियोंके द्वारा हटकरके मंडलोंमेंघूमे और धनुषोंको
पकड़कर परस्परमें एकने दूसरेको घायलकिया २८ फिर उनदोनों
नेभुजा और बाणोंकेशब्दोंसे मनुष्योंको प्रसन्नकरके बड़े २ सिंह ना-
दोंकोकिया २९ और फिर वह दोनों महाबली ऊंची सूंड़वाले हाथि-
यों और बायुसे उड़तीहुई पताकाओं समेत युद्ध करनेलगे ३० उन
दोनोंने परस्परमें एकने दूसरेके धनुषको काटकर शक्ति औरतोमरों
की वर्षासे परस्परमें ऐसे घायल किया ३१ जैसेकि वर्षाऋतुमेंबाद
ल जलोंसे व्यथित करतेहैं उस समय महागर्जना करतेहुये क्षेमधू-
र्त्तीने अत्यन्त वेगवान् दूसरे छः तोमरोंसे भीमसेन कोछातीपरघा-
यलकिया ३२क्रोधसे भराहुआ भीमसेन शरीरमें लगेहुये तोमरोंसे
ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि बादलोंसे सूर्य्य शोभितहोताहै३३इस
के अनन्तर उपाय करनेवाले भीमसेनने सूर्य्यके समान प्रकाशित
सीधा चलनेवाला लोहेका तोमर उसशत्रुकेऊपर फेंका ३४ फिर
राजा कुलूतने धनुषको नवाकर दशबाणोंसे तोमरको काटकरभीम-
सेनको घायलकिया ३५ इसके अनन्तर गर्जना करते भीमसेनने
बादलके समान शब्दायमान धनुषको लेकर बाणोंसे शत्रुके हाथी

को घायल और पीड़ित किया ३६ युद्धमें भीमसेनके बाणोंसे वह हाथी पीड़ित होकर थंभाहुआभी ऐसे नहीं ठहर सका जैसेकि वायुसे उड़ा हुआ बादल नहीं ठहरसक्ताहै ३७ और भीमसेन का गजराज हाथी उसहाथीपर ऐसा दौड़ा जैसेकिवायुसे उड़ाहुआ बादल बड़ीवायुसे उड़े हुये बादलके पीछे दौड़ताहै ३८ फिर प्रतापीक्षेमधूर्त्ती ने अपने हाथीको अच्छी रीतिसे रोककर शीघ्रहीअपने बाणोंसे भीमसेनके हाथीको घायल किया इसके पीछे अच्छे प्रकारसे छोड़हुये टेढ़ेपक्षवाले क्षुरप्रसे शत्रुके धनुषको काटकरप्रतिपक्षवाले शत्रुको पीड़ामान किया ३९।४० इसके अनन्तर क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्तीने भीमसेनको घायल करके उसके हाथीको सब मर्म्मोंमें अपने नाराचोंसे घायल किया ४१ हे भरतवंशी उस घायलकरने से वह भीमसेनका हाथीपृथ्वीपर गिरपड़ा और भीमसेन हाथीके गिरनेसे पूर्व्वही हाथीसे कूदकर पृथ्वीपर नियत हुआ ४२ फिर भीमसेनने भीउसके हाथीको गदासे मारा तब उसगदासे मथे हुये हाथीसे उतरेहुये ४३ और शस्त्रउठाकर आने वाले क्षेम धूर्त्तीको भीमसेनने गदासे मारा और गदाके लगतेही मृतक होकर खड्गसमेत पृथ्वीपरऐसे गिरपड़ा ४४ जैसेकि वज्रसे टूटा हुआ पर्व्वत वा वज्रसे मराहुआसिंह पृथ्वीपर गिरताहै हे भरतर्षभ उसकुलूतोंके यशस्वीराजाको मृतक हुआ देखकर आपकी सेना भयभीत और पीड़ितहोकर भागी ४५।४६

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्व्वणि क्षेमधूर्त्तिवधेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय॥

संजय बोलेकि इसके पीछे बड़े धनुषधारी शूरवीर कर्णने टेढ़े पक्षवाले बाणोंसे युद्धमें पांडवोंकी सेना कोमारा १ हेराजा इसी प्रकार क्रोधयुक्त उनपांडवोंके महारथियोंने कर्णके देखतेहुये आपके पुत्रकी सेनाको मारा २ हेराजा फिर कर्णनेभी सूर्य्यकी किरण

के समान प्रकाशित चतुरकारीगरोंके साफकियेहुये नाराचोंसेउस युद्धमें पांडवोंकी सेनाको मारा ३ तबतो कर्णके नाराचोंसे घायल हुये हाथी चिग्घारें मारनेलगे और महापीड़ित होकर दशोंदिशाओंमेंघूमनेलगे ४ हे श्रेष्ठ कर्णके हाथसे उससेनाके घायल होनेपरशीघ्रही नकुल उस युद्धमें कर्णके सन्मुख गया ५ उसीप्रकार भीमसेनने कठिन कर्म करनेवाले अश्वत्थामाको और सात्यकीने विन्द अनुविन्दनाम केकयोंको रोका ६ और राजा चित्रसेनने आतेहुये श्रुतकर्माको और प्रतिविन्ध्यने अपूर्वध्वजाधारी राजाचित्रको रोका फिर राजा दुर्य्योधनने धर्मपुत्र युधिष्ठिर को रोका और क्रोधयुक्त अर्जुनने संसप्तक गणोंको जा रोका ७।८ उस उत्तम बीरोंके नाशमें धृष्टद्युम्न कृपाचार्य्य से लड़ने लगा और शिखण्डी के सन्मुख अजेय कृतबर्मा नियत हुआ ९ हे महाराज इसी प्रकार श्रुतकीर्तिने शल्य को और माद्रीके पुत्र सहदेवने आपके पुत्र दुश्शासनको रोका १० दोनों केकेयोंने युद्धमें प्रकाशित बाणोंकी बर्षासे सात्यकीको आघेरा सात्यकीने बाणोंसे केकयोंको ढकदिया ११ हे भरतबंशी उन दोनों बीर भाइयोंने उसको हृदय पर ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि बनमें सन्मुख आनेवाले दो हाथी अकेले हाथीको अपने दांतोंसे घायल करते हैं १२ हे राजा बाणोंसे टूटे हुये कवचवाले सात्यकीको दोनों भाइयोंने बड़ा घायल किया १३ फिर सात्यकीने हँसते हुये बाणोंकी बर्षा करके उन दोनोंको सब ओर से रोका १४ इसके पीछे सात्यकी के बाणोंसे रुके हुये उन दोनोंने शीघ्रही बाणों से सात्यकी के रथको ढक दिया १५ फिर इस बड़े यशस्वी सूरबंशी सात्यकीने उन दोनोंके छत्र और धनुषों को काटकर उन दोनोंको अपने तीक्ष्ण शायकोंसे रोका १६ तबतो उन दोनोंने दूसरे छत्र और बाणोंको लेकर सात्यकी को ढकदिया और बहुत शीघ्रही शोभायुक्त होकर फिरनेलगे १७ और कंक और मोर पक्षोंसे शोभित दोनोंके छोड़ेहुये प्रकाशित बाण सब ओरको गिरे १८ हे राजा उस महाभारी युद्धमें उनदोनोंके बाणोंसे अन्ध-

कारसाछागया उस समय उन महारथियोंने परस्परमें एकनेदूसरे के धनुषको काटा १६ इसके पीछे क्रोधभरे युद्धमें दुर्मदसात्यकी ने दूसरे धनुषको लेकर और तय्यारी करके युद्धमें बड़े तीक्ष्णक्षुर प्रसे अनुविन्दके शिरको काटाहे राजा वहकुंडलोंसे अलंकृत महाभारी शिर २०।२१ बड़े युद्धमें मरे हुये सम्बरके शिरके समानसब कैकेय लोगोंको शोचताहुआ पृथ्वीपर गिरा २२ उस शूरवीरको मृतक देखकर उसके भाई महारथीनेदूसरेधनुषको तैयार करके सात्यकी को रोका २३ वह सुनहरी पुंख और तीक्ष्ण धारवाले साठबाणोंसे सात्यकीको घायल करके तिष्ठ २ वचनके साथ बड़े वेगसेगर्जा २४ इसके पीछे कैकेयों के महारथीने हजारों बाणोंसे बहुत शीघ्रता पूर्वक भुजा और छातीपर घायल किया २५ हे राजा बाणोंसे बिदीर्ण सर्वांग सात्यकी युद्धमें ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूला हुआ किंशुकका वृक्ष होताहै २६ युद्धमें महात्मा कैकेयके हाथसेघायल और हंसते हुये सात्यकीने कैकेयको पच्चीस बाणोंसे घायल किया २७ वह रथियोंमें श्रेष्ठ युद्धमें एक दूसरेके शुभ धनुषको काट कर बड़ी शीघ्रतासे घोड़े और सारथियोंकोमारकर २८ रथसेउतर कर युद्धमें खड्गोंसे प्रहार करनेकेलियेसन्मुख हुये वहसुन्दर भुजा और उत्तम खड्ग धारण करनेवाले दोनोंशूरवीर चन्द्रसूर्य्य के चित्र वाली ढालोंको लेकर उसमहायुद्धमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि देवासुर युद्धमें महाबलीइंद्र और जंभशोभित हुयेथे २९।३० इस के पीछे युद्धमेंमंडलोंको घूमते शीघ्रही परस्पर में सन्मुख हुये ३१ और एकएकनेदूसरेके मारनेमें बड़े २ उपायकिये इसकेपीछे सात्यकी ने कैकेयकी ढालके दोखंडकिये ३२ इसीप्रकार वह राजाभी सात्यकी की सैकड़ों नक्षत्रोंसे चिह्नित ढालको काटकर ३३ दाहिने औरबायें मंडलोंमें घूमा फिर सात्यकीनेउसबड़ेयुद्धमें शीघ्रतासेघूमनेवाले कैकेयको तिरछेहाथसे मारडालाहेराजावह कैकेयउस घोर युद्धमें कवच समेत दोखंडहोकर ऐसेपृथ्वी में गिरपड़ा ३४। ३५ जैसेकि वज्रसे घायल पर्व्वत गिरताहै इसरीतिसे रथियों में श्रेष्ठ

शूरवीर सात्विकीने उसयुद्धमें उसकोमारा ३६ फिरवह शत्रुहन्ता शीघ्रही युधामन्युके रथपर सवारहुआ और थोड़ेसमय पीछेसात्विकीने बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर बाणोंसे कैकेयोंकी बड़ीसेनाको मारायुद्धमें वह कैकेयों की बड़ी सेना महा घायल होकर उस सात्विकी को छोड़कर दशों दिशाओं कोभागी ३७। ३८। ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिबिन्दअनुबिन्दवधोनामचतुर्द्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

संजय बोलेकि हे राजा इसके पीछेयुद्धमें क्रोधभरे श्रुतिबर्माने राजा चित्रसेनको पचास बाणोंसे घायल किया १ फिर चित्रसेनने टेढ़े पुंखवाले नौ बाणोंसे श्रुतिबर्माको घायल करके पांच बाणों से उसके सारथीको घायल किया २ इसके अनन्तर सेनामुखपर क्रोध युक्त श्रुतिकर्माने चित्रसेनको अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे मर्मस्थल में घायल किया ३ हे महाराज उसमहात्माके नाराचसे अत्यन्त घायल होकर वह वीरमूर्च्छायुक्तहोकर निश्चेष्टहोगया ४ इसीअन्तरमें बड़े यशस्वी श्रुतिकीर्त्ति नेनब्बे ६० बाणोंसे इसराजाकोभी ढकदिया ५ इसकेपीछे महारथी चित्रसेनने सावधान होकर भल्लसेउसके धनुषको काटकर सातबाणोंसे उसको घायल किया ६ फिर उसने वेग केनाश करनेवाले स्वर्णसे भूषित सोम धनुषको लेकरबाणोंकी तरंगोंसे चित्रसेनको बिचित्ररूपधारी किया७ वह युवावस्थायुक्तबाणों से वेधित होकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि गौशालामें अच्छा अलंकृत बड़ा बैलहोताहै८ फिर उस शूरनेवेगसे श्रुतिकर्माकोनाराच सेछातीपर बिदीर्णकर तिष्ठतिष्ठ शब्दउच्चारणकिया ६ वहांनाराचसे घायलहोकर श्रुत्तिकर्माने भी युद्धमें रुधिरको ऐसेगिराया जैसेकि पर्बतीयधातुओंसे संयुक्त पर्व्वतरक्तवर्णके जलकोडालताहै १० इसकेपीछेवह रुधिरसे भरेशोभाहीन शरीरसेयुद्धमेंऐसेशोभायमानहुआ जैसे कि फूलाहुआ किंसुकका वृक्षहोताहै११इसके पीछे शत्रुसेग्र-

घायलकरनेवाले क्रोधयुक्त श्रुतिकर्माने शत्रुके हटानेवाले धनुषके दश खंडकिये१२तदनन्तर हेराजाइसटूटेधनुषवालेको श्रुतिकर्मानेसुन्दर पक्षवाले तीनसौ नाराचोंसे घायलकर बड़ेतीक्ष्णधारवाले१३भल्लसे उसकेशिरसमेत धड़कोकाटा१४तबचित्रसेनका वह प्रकाशमानशिर पृथ्वी पर ऐसेगिरा मानों देवइच्छासे स्वर्गसे पतितहोकर चन्द्रमा गिरताहै१५हेश्रेष्ठ चित्रसेनकी सेनाके सबलोगउसअभयसारदेशके राजाको मृतक देखकर बड़ी तीव्रतासे सन्मुख दौड़े १६ इसकेपीछे वह क्रोधयुक्त महा धनुषधारी बाणोंकी वर्षा करताहुआ उससेनापर ऐसे दौड़ा जैसे कि प्रलयकालमें सब जीवोंपर क्रोधभरे यमराज दौड़तेहैं १७ अग्निसे भस्मीभूत वृक्षोंके समान युद्धमें आपकेपौत्र उस धनुषधारीसे घायलहोकर चारों ओरको भागे १८ शत्रुके जीतनेमें असाहसी और भागनेवाले उनलोगों को देखकर श्रुतिकर्मा तीक्ष्णबाणोंसे उनको भगाताहुआ अत्यन्त शोभायमान हुआ १९ इसके पीछे प्रतिविंध्यने पांचबाणोंसे चित्रको तीनबाणोंसे सारथीको घायल करके एक बाणसे ध्वजाको भी खंडित करदिया २० और चित्रसेनने सुनहरे पक्ष तीक्ष्ण नोक कंक और मोरके पक्षोंसे जटित नौभल्लोंसे उसकी दोनों भुजा और छातीपर घायल किया २१ हे भरतवंशी प्रतिविन्ध्यने शायकों से उसके धनुषको काटकर उसको तीक्ष्ण पांचबाणोंसे घायल किया २२ इसके पीछे सुनहरी घंटेरखने वाली महाअसह्य अग्निकी शिखाके समान प्रकाशमानशक्तिकोआप के पोतेपर फेंका २३ तब हंसते हुये प्रतिविंध्यने उसउल्कारूपअकस्मात् आतीहुई शक्तिको देखकर युद्धमेंदो खंडकिये२४प्रतिविंध्यके तीक्ष्ण बाणोंसे टुकड़े २ होकर वह शक्ति ऐसे गिरपड़ीजैसे प्रलयके समयसबजीवोंको भयकी करनेवाली अशनिहोतीहै २५ चित्रनेउस शक्तिको कटाहुआ देखबड़ीगदालेकरप्रतिविन्ध्यके ऊपर फेंका २६ उस गदाके आघातसे उसके सारथीसमेत घोड़े मारे गये और बड़ी तीव्रता से रथको मर्दन करके पृथ्वीपर गिरपड़े २७ हे भरतवंशी उस समय उसने रथसे उतरकर सुनहरी दण्डवाली सुनहरीशक्ति

को चित्रके ऊपरफेंका २८ फिरउस महासाहसी चित्रने उसआती हुई शक्तिको पकड़ लिया और उसी शक्ति को प्रतिबिन्ध्य के ऊपर फेंका २९ वह बड़ी प्रकाशमान शक्ति युद्ध में शूर प्रतिबिन्ध्य को पाके दक्षिण भुजा को घायल करके पृथ्वी पर गिरपड़ी ३० अश्विनीके समान गिरी हुई उस शक्तिने उस स्थानको प्रकाशित किया इसके पीछेअत्यंत क्रोध युक्त प्रतिविध्यने ३१ सुवर्णसेमंडित तोमरको चित्रके मारनेको चलाया वह तोमर उसके कवच और हृदयको छेदकर ३२ पृथ्वीमें ऐसे समागया जैसे बड़ाभारी सर्प बिलमें समाजाताहै उस तोमरसे घायल वहराजा ३३ परिघकेसमान बड़ी और मोटीभुजाओंको फैलाकर पृथ्वीमें गिरपड़ातबचित्रसेनको मरा हुआ देखकर आपकी शोभायमान सेनावेगसे प्रतिविन्ध्य के चारोंओर सन्मुखताके लियेगई ३४ औरवहां जाकर नाना प्रकारके बाण और शक्तियोंकीबर्षासे प्रतिविन्ध्य को ऐसाढकदिया जैसे कि बादलोंके समूह सूर्यकोढक लेतेहैं ३५ फिरउसमहाबाहुने बाणोंसे उन सबको पृथक्२ करके आपकी सेनाको ऐसे भगाया जैसेकि बज्रधारी इन्द्रअसुरोंकी सेनाको भगाताहै ३६ हे राजा युद्धमें पांडवोंके हाथसे घायल शूरवीर अकस्मात् ऐसे छिन्न भिन्न होगये जैसेकिहवासे हटायेहुये बादलतिरबिर होजातेहैं ३७ उससेनाको चारोंओरसे घायलहोकर भागजानेपर अकेलेअश्वत्थामाजी शीघ्रही महाबली भीमसेन के सन्मुख गये ३८ इसके पीछे अकस्मात् उन दोनोंका परस्परमें भिड़ना ऐसा महाभयकारीहुआ जैसा कि देवासुरोंके युद्धमें वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिचित्रवधेपंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

संजय बोले हेराजा इसके पीछे बड़ीशीघ्रता युक्त अस्त्रों की तीव्रता दिखातेहुये अश्वत्थामाने बाणसे भीमसेनको घायलकिया१ फिरमर्मज्ञ हस्त लाघवी अश्वत्थामाने सबमर्मों को जानकरतीक्ष्ण

धारवाले नव्वेबाणोंसे भीमसेनको घायल किया २ हे राजा अश्वत्थामाके तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे छिदाहुआ भीमसेन युद्धमें अंशुमान् सूर्यके समान शोभायमान हुआ ३ इसके पीछे भीमसेनने अच्छी रीतिसे फेंकेहुये हजारबाणोंसे अश्वत्थामाको ढककरबड़ाभारी सिंह नाद किया ४ इसके अनन्तर मंदमुसकान करतेहुये अश्वत्थामाने बाणोंको रोककर भीमसेनको नाराचोंसे ललाट पर घायलकिया ५ तबभीमसेनने ललाटपर वर्त्तमान बाणोंको ऐसे धारणकियाजैसेकि गंडकनाम अहंकारी पशुसिंहको धारणकरताहै ६ फिरमन्द मुसकान करते पराक्रमी भीमसेनने युद्धमें उपाय करनेवाले अश्वत्थामा को तीननाराचोंसे ललाटपर वेधा ७ तब यह ब्राह्मणललाट पर नियत हुये बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे किजलसे सींचाहुआ तीनशिखर रखनेवाला उत्तम पर्वत होताहै ८ इसके पीछे अश्वत्थामाने सैकड़ों बाणोंसे भीमसेन को पीड़ित किया परन्तु उसको ऐसे कंपायमान न करसका जैसेकि वायु पर्व्वत को नहीं कंपासक्ती ९ फिर अत्यन्त प्रसन्नपांडुनन्दन भीमसेन ने भी इसको ऐसे कंपायमान नहीं किया जैसेकिजलका समूह पर्व्वत को कंपायमान नहीं करसक्ता १० परस्पर घोर बाणों से ढकतेहुये उत्तम रथोंपर सवार पराक्रम से मतवाले वह दोनों महारथी शूरवीर महाशोभायमान हुये ११ फिर वह दोनों सूर्य्य के समान प्रकाशित लोक के नाशक अपने तेजों समेत उत्तम२ बाणोंसे परस्पर संतप्तकरनेवाले हुये १२ इसकेपीछे वह दोनों युद्धमें अशंक के समान बदला लेनेमें उपाय करने वालेहुये १३ वहदोनों नरोत्तम युद्ध में व्याघ्रोंके समान भ्रमण करने वाले हुये बाणरूप जिनकीडाढ़ें और भयानक धनुषही जिनकामुख था १४ वह दोनोंबाणोंके जालसेसब ओरसे ऐसे गुप्तहोगये जैसेकि बादलके जालोंसे ढकेहुये आकाशमेंचन्द्रमा औरसूर्य्यहोते हैं १५ इसके पीछे वह शत्रुहन्तादोनों एक मुहूर्त्त मेंही ऐसे प्रकाशमान हुये जैसेकि बादलोंके जालसे निकले हुयेमंगल और बुध होतेहैं १६ इसकेपीछे अत्यन्त भयकारी युद्धजारी होनेपर वहांअश्व-

त्थामाने भीमसेनको सैकड़ोंउग्र बाणोंसे ऐसेढकदिया १७ जैसेकि धाराओंसे बादलपर्व्वत को ढकदेता है फिर भीमसेनने भी शत्रुके उस बिजयकेलक्षणको नहींसहा १८ इसके पीछेपांडवनेभी दाहिने औरबायें मंडलोंके भागोंमें जाना आनाकिया१९ और दोनों पुरुष सिंहोंमें बड़ातुमुल युद्ध हुआ २० फिर हरएक ने कानतकखैंचे हुये बाणोंसे परस्परमें एकने दूसरे को घायल किया और एकनेदूसरे के मारनेमें बड़े२ उत्तम उपाय किये २१ युद्धमें एकने दूसरेकोवि-रथकरना चाहा इसके पीछे महारथी अश्वत्थामाने युद्धमें महाअ-स्त्रों को प्रकट किया २२ पांडवने उन अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे हीदूर किया इसके पीछे अस्त्रोंका ऐसाघोर युद्धजारीहुआ जैसेकि जीवोंकी प्रलयमें ग्रहोंका घोर युद्ध हुआथा २३ हेभरतबंशी उनदोनोंके छो-ड़े हुये वह बाणचारों ओरसे सबदिशा और आपकी सेनाकोअच्छे प्रकार से प्रकाशित करने लगे और बाण समूहोंसे व्याप्त आका-श महा भयानक रूपहुआ २४ । २५ हे राजाजैसे जीवों के प्रलय में उल्कापातोंसे संयुक्त युद्धहुआथा वैसेही वहां बाणोंके आघातसे ऐसी अग्नि उत्पन्न हुई जैसेकि फुलिंगरखनेवाली प्रकाशमानअग्नि की ज्वाला होतीहै २६ फिर अग्निने दोनोंसेनाओं को भस्म किया तबवहां सिद्धलोग आकर कहने लगे २७ कि सबयुद्धोंमें यहभीयु-द्धबड़ाहै और सब युद्ध इसयुद्धके षोड़शांश कलाकेभी समान नहीं हैं २८ ऐसा युद्धफिर कभी न होगा बड़ा आश्चर्य्य है कि यह ब्रा-ह्मण और क्षत्रीदोनों पूर्णहैं २९ यह दोनों पराक्रमी अपनी २ उग्र शूरताओं से संयुक्तहैं और भीमसेन भयानक पराक्रमीहै और इस-की अस्त्रज्ञताभी पूर्णहै ३० इन दोनोंकी प्रतिष्ठा और बड़े२ साहस अपूर्व्वहैं यहकाल और मृत्युके समान दोनों युद्ध में नियतहैं ३१ यहदोनों रुद्रके समान प्रकट हुये दोनोंसूर्य्यके समानहैं अथवादो-नों पुरुषोत्तम घोररूप यमराजके रूपहैं ३२ यह सिद्धोंके वचन बारंबार सुनेगये और भागने वाले देवताओंके सिंहनाद प्रारंभहु-ये ३३ युद्धमें उनदोनोंके अपूर्व्व बुद्धिसे बाहर कर्मको देखकर सिद्ध

और चारण लोगोंकेसमूहको बड़ाआश्चर्य्य हुआ ३४ तबदेवतासिद्ध और परमऋषियों ने प्रशंसाकरी कि हे महाबाहु अश्वत्थामाऔर हे महाबाहु भीमसेन तुम दोनोंको धन्यहै ३५ हे राजा परस्पर अपराध करने वाले उनदोनों शूरोंने युद्धमें क्रोधसे आंखोंको फाड़कर परस्परमें देखा ३६ वह दोनोंक्रोधसे रक्तनेत्रहो क्रोधसेहीओठोंके चाबने वाले होकर दांतोंके किट किटाने वालेहुये ३७ बाणरूप जलधारा और शस्त्ररूप विजलीसे प्रकाशकरनेवालेदोनोंमहारथियों ने बाणोंकी वर्षासे परस्पर में ढकदिया ३८फिर उनदोनोंने परस्परकीध्वजा और सारथीको वेधकर प्रत्येकने दूसरेके घोड़ोंको घायल करके परस्पर में घायल किया ३९ हे महाराज इसकेपीछे परस्पर मारने के इच्छावान् क्रोधभरे हुये उनदोनोंने युद्धमें बाण को लेकर शीघ्रही एकने दूसरे के ऊपरफेंका ४० उन वज्रकेसमान वेगमान विजयी और सेनामुखपर प्रकाशमान् दोनोंने सन्मुखपाकर परस्पर में शायकोंसे घायल किया ४१ तब परस्पर की तीव्रता और बाणोंसे घायल बड़े पराक्रमी वह दोनोंरथोंके बैठनेकेस्थानों में गिरपड़े ४२ इसके अनन्तरसारथीअश्वत्थामाको अचेतजानकर सब सेनाके देखतेहुये युद्धसे दूर लेगया ४३ हे राजा इसी प्रकार भीमसेनका सारथीभी उस वारंवार शत्रुओं के तपाने वाले पांडव भीमसेनको युद्धमें रथके द्वारा दूरले गया ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिअश्वत्थामाभीमसेनयुद्धेषोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले जिस प्रकार अर्जुनका युद्ध संसप्तक लोगोंके साथ और अन्यराजाओंकायुद्ध पांडवोंके साथहुआ उसको मुझसेकहो १ हे संजय अश्वत्थामा और अर्जुनका जो युद्धहै और पांडवोंके साथ जो अन्य २ राजाओंका युद्धहै वह सब मुझसे कहो २ संजय बोले हे राजा मैं कहताहूं आप सुनिये जिस प्रकार प्राणोंकानाशकारक शत्रुओंसे वीरोंका युद्धजारी हुआ ३ शत्रुओंके मारनेवाले अर्जुनने

समुद्रके समान संसप्तकोंकी सेनाओंमें घुसकर ऐसे छिन्न भिन्नकर दिया ४ जैसे कि तीव्र बायु समुद्रको उथल पुथल करदेता है अर्जुनने अपने तीक्ष्ण भल्लोंसे पूर्ण चन्द्रमासे प्रकाशित ५ सुन्दरमुख नेत्र भृकुटी और दांतरखनेवाले बीरोंके शिरोंको काटकर शीघ्रता पूर्व्वक ऐसे पृथ्वीको आच्छादित करदिया ६ जैसेकि कमल नालसे कमलोंको काटकर हाथी सरोवरको आच्छादित करताहै अर्जुनने युद्धमें बड़ेलम्बे मोटे चन्दन अगरसेलिप्त शस्त्र और हस्तत्राणधारी पांचमुख धारीसर्पोंके समान शत्रुओंकीभुजाओंको क्षुरप्रोंसे काटा ७ और घोड़े घोड़े के सवार और सारथी लोगोंकेध्वजा धनुष शायक और अंगूठी धारण किये बीरोंके हाथोंको भी बारंबार भल्लोंसे काटा ८ हे राजा इसी प्रकारसे अर्जुनने युद्धमें अपने हजारोंबाणों से रथ हाथी और घोड़ोंको उनके सवारों समेत यमलोकमें पहुंचा या ९ जैसे कि मदसे मतवालेगर्जनेवाले बैलगौके निमित्त सिंहोंके सन्मुख जाकर प्रहार करें उसी प्रकार उन क्रोधसे भरे बड़े २ शूर बीरोंने उस क्रोधयुक्त और प्रहार करनेवालेको बाणोंसे घायल किया उसका और सब लोगोंका वह घोरयुद्ध ऐसारोमहर्षण करने वाला हुआ १०।११ जैसे कि तीनोंलोकोंके बिजयके लिये दैत्योंका युद्ध इन्द्रके साथ हुआथा उस अर्जुनने अपने अस्त्रोंसेशत्रुओंके अस्त्रों को रोककर बहुत शीघ्र बाणोंसे बिदीर्ण करके १२ प्राणोंकाहरण किया जिनके तूणीर चक्र और रथके अंग टूटगये और सारथियों समेत घोड़े भी मारेगये १३ और धनुष वा ध्वजाटूटीं और रथकी बागडोरेंटूटीं रथसे क्ररजुदेहुये १४ और स्यन्दनोंके जुयेंपहिये आदि भी गिरपड़े उन रथोंको खंड २ करताहुआ ऐसे चला जैसे कि बड़े २ बादलोंको खंड २ करता बायुचलताहै १५ आश्चर्य्य उत्पन्न करानेवाले अर्जुनने शत्रुओंको भय करनेवाले दर्शनीय हजारों महारथियोंके समान बलकिया १६ सिद्ध देवर्षि और चारण लोगोंने भी उसकी प्रशंसाकरी देवताओंने दुन्दुभी बजाकर पुष्पों की बर्षाकरी १७ वह पुष्प श्रीकृष्ण और अर्जुनके मस्तक पर

गिरे और आकाश वाणोंनेसदेवचन्द्रमा वायु अग्नि और सूर्य्यकी कान्ति और तेजको प्रकटकिया१८ वह ब्रह्मा और शिवजीके समान श्रीकृष्ण और अर्जुन एक रथपर नियत सब जीवोंमें श्रेष्ठ दोनोंनर नारायण रूप वीरहैं १६हे भरतवंशी इस बड़ेआश्चर्य्यको देखकर बड़ेसावधान अश्वत्थामाजी युद्ध में श्रीकृष्णजीके सन्मुख गये २० फिरजिनकी नोकें शत्रुओंके मारनेवालीथीं उनवाणोंके चलानेवाले पांडव अर्जुनसे वाण पकड़नेवाले हाथके द्वारा बुलाकर २१ यह वचनबोले हे वीरजो यहां वर्त्तमान मुझ अतिथि रूपको पूजनके योग्य मानताहै २२ तो तुम सब आत्मासे युद्धरूप अतिथि मुझको जानो इस प्रकार युद्धाभिलाषी आचार्य्यके पुत्रसे बुलायेहुयेअर्जुन ने अपनेको बहुत कुछमाना२३और श्रीकृष्णजीसे कहा कि मैं संसप्त कोंको मारसक्ताहूं और अश्वत्थामाजी मुझको बुलातेहैं २४ इस स्थानपर जो उचितहोय वह आपमुझसे कहिये जो आपमानतेहैंतो उठकर अतिथि कर्म कीजिये २५ ऐसे कहेहुये श्रीकृष्णजीने बुद्धिके अनुसारबुलायेहुये अर्जुनको विजयीरथकीसवारीकेद्वाराअश्वत्थामा के समीप ऐसे पहुंचाया जैसे कि वायु इन्द्रको यज्ञमें पहुंचाता है २६ केशवजी उस एक चित्त अश्वथामा को संबोधन करके बोले कि हे अश्वत्थामा शीघ्र नियतहोके घातकरो और क्षमा करो२७ स्वामीके अर्थ निमकहलाली करनेका यह समय है ब्राह्मणोंका सम्वाद बड़ा सूक्ष्महै और क्षत्री संबन्धी विजय और पराजययोग्य है २८ तुम अज्ञानतासे अर्जुनके शिसाढ्य और उत्तम कर्म को चाहतेहो अब उसके अभिलाषी होकर तुम नियत होकर पांडवोंसे युद्धकरो २९ श्रीकृष्णजीके इस प्रकारके वचोंको सुनकर अश्वत्थामाजीने बहुत अच्छा कहकर आठ नाराचों केशवजीको और तीन बाणोंसे अर्जुनको घायल किया ३० फिर अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुनने उसके धनुष को तीनबाणोंसे काटा ३१ तब अश्वत्थामाने बड़े घोर दूसरे धनुषको लिया और क्षणभरमेंही श्रीकृष्ण और अर्जुनको घायल किया तीनसे बाणोंसे वासुदेवजीको और हजार

बाणोंसे अर्जुनको घायल किया ३२ इसके पीछे उपाय करनेवाले अश्वत्थामाने युद्धमें अर्जुनको रोककर हजारोंबाणोंकी वर्षाकरी ३३ हे श्रेष्ठ उसब्रह्मबादी अश्वत्थामाके तूणीर धनुष कवच ध्वजा हाथ छाती ३४ नाक मुख नेत्र कान शिर और अंग देहकेरोम और रथसे वहुतसे बाण निकले ३५ प्रसन्नचित्त बीर अश्वत्थामा बाण समूहों से अर्जुन और श्री कृष्णजीको घायल करके बड़े बादलोंके समान शब्दोंसे गर्जा ३६ उसके शब्दको सुनकर अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोलेकि हे माधवजी गुरु पुत्रके आन्तरीयद्वेषको मेरेऊपर देखो ३७ यह हम दोनोंको बाण पिंजरमें प्रविष्ट करके मरा हुआ जानताहै मैं इसके बाण पिंजरको अपने पराक्रमसे नाश करूंगा ३८ फिर उस भरतर्षभने अश्वत्थामाके चलायेहुयेबाणोंकोछःछःखण्डकरके इधर उधर करदिया ३९ इसके पीछे अर्जुनने उग्रबाणोंसे घोड़े सारथी रथ हाथी ध्वजा और पतियों समेत संसप्तकों को घायल किया ४० उस समय जिस २ रूपके जो २ मनुष्य वहां दिखाई दिये वहां उन्होंने अपनेको बाणोंसे घायल माना ४१ और युद्धमें गांडीवधनुषसे छूटे हुये वह नाना प्रकारके बाण एककोस से अधिक दूर पर बर्त्तमान हाथी और मनुष्यों को भी मारतेथे ४२ मदोन्मत्त हाथियों की सूंड़ भल्लोंसे कटकर ऐसे गिर पड़ी जैसेकि फरसोंसे कटेहुये बनके बड़े २ वृक्ष होतेहैं ४३ इस केपीछे सवारों समेत वहहाथीऐसे गिरपड़े जैसेकि इन्द्रके बज्रसे कटेहुये पर्वतोंके समूह गिरपड़तेहैं ४४ युद्धमें दुर्मद अर्जुन गंधर्व नगर के समान अच्छे अलंकृत शीघ्रगामी सुशीक्षित घोड़ोंसे युक्त रथ पर नियत होकर ४५ बाणोंकी वर्षाकरताहुआशत्रुओंके सन्मुखगया वहांजा- कर अर्जुनने अश्वारूढ़ोंको और पतियोंको मारा ४६ अर्जुनरूपी प्रलयकालीन सूर्यने कठिनतासे सूखनेवाले संसप्तक रूप समुद्रको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यंत शोषण किया फिर बड़ी शीघ्रताकरने वालेने अश्वत्थामाको बड़ेवज्रके समान वेगवान् बाणोंसे घायल किया ४७। ४८ क्रोध युक्त युद्धाभिलाषी आचार्यके पुत्रअश्वत्था-

माजी बाणोंके द्वारा घोड़े और सारथी समेत अर्जुनसे लड़नेको आये अर्जुनने उनके बाणोंको काटा ४६ इसके पीछेबड़े क्रोधसे भरे अश्वत्थामाने अर्जुनके ऊपर अस्त्रोंको ऐसे छोड़ा जैसेकि अतिथि केलिये शिष्टाचारी करीजाय फिर अर्जुनसंसप्तकों को छोड़कर अश्वत्थामाके सन्मुखऐसेगये जिस प्रकार दान करनेवाला मनुष्य पंक्तिके अयोग्य लोगोंको छोड़ कर पंक्तिके योग्य मनुष्यों के पास जाताहै ५० । ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणि अश्वत्थामार्जुनयुद्धे सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजयबोले किइसकेपीछे शुक्रऔर बृहस्पतिजीके समानतेजस्वी उन दोनोंका युद्ध ऐसे अच्छे प्रकार से हुआ जैसे कि नक्षत्र मंडल के पास आकाशमें शुक्र और बृहस्पतिका युद्धहुआथा १ एकनेदूसरे को प्रकाशित बाणोंकी किरणोंसे अच्छी रीति से संतप्तकिया और अपनेमार्गसे हटकर चलनेवाले ग्रहोंकी समान लोकों का भयउत्पन्नकरनेवाले हुये २ उसके पीछे अर्जुनने नाराचसे दोनोंभृकुटियों केमध्य कठिन घायल किया वहअश्वत्थामाजी उसघावसे ऐसेशोभा यमानहुये जैसेकि ऊपरकी ओर किरणरखने वाला सूर्य होताहै ३ इसके अनन्तर अश्वत्थामाके सैकड़ों बाणोंसे अत्यन्त पीड़ामानथ्री कृष्ण और अर्जुन भीऐसेप्रकाशमान हुये जिसप्रकार अपनी किरणों से प्रकाशित प्रलयकालके दोसूर्य होतेहैं ४तदनन्तर वासुदेवजीके व्याकुल होनेसे अर्जुनने सब ओरसे अस्त्रोंकी धाराओं को छोड़ावज्र अग्नि और यमराजके दंडकी समान बाणोंसे अश्वत्थामाको घायल किया ५ उस बड़ेतेजस्वी और भयानककर्मा अश्वत्थामाजीने अच्छे प्रकारसे चलाये महाकठोर औरवेगवानबाणों सेअर्जुनऔर केशवजी कोमर्मस्थलों पर घायल किया वह ऐसे बाणथे जिनकेमारे मृत्युभी व्याकुल होजाय ६ फिर अर्जुन उस उपाय करनेवाले अश्वत्थामाके उनबाणोंको उससे द्विगुणित अपने बाणोंसे अच्छीरीतिसे रोककर

उस बड़ेमुख्य बीरको घोड़े सारथीऔर ध्वजासमेत अपने सुन्दरपुंख वाले दूने बाणोंसे ढककर संसप्तकोंकी सेनाके सन्मुखगया ७ अर्जु-नने अच्छीरीति से चलायेहुये बाणोंसे मुख न मोड़नेवाले सन्मुख तामें नियत शत्रुओंके धनुषबाण तूणीर और कवच हाथ भुजा वा हस्तगत शस्त्र और शस्त्र ध्वजा घोड़े और रथ और अनेक वस्त्रादिक वस्तुमाला भूषणों समेतमर्मस्थल और चित्त रोचकप्यारेकवच और अनेक प्रिय वस्तुओं समेत शिरों को काटा और उपाय करनेवाले नरोत्तमों समेत अच्छीरीतिसे रथ घोड़े और हाथियों समेत नियत और अलंकृत सैकड़ों शूरबीरोंकोभी अर्जुनने सैकड़ोंबाणोंसे गिरा या तब उनके साथ बड़े २ उत्तम मनुष्यभी गिरपड़े ८ । ९ १० कमल सूर्य और पूर्णचन्द्रमाके समान बिशाल मुख मुकुटमाला और आभूषणोंसे प्रकाशमान शिर और भल्ल अर्द्धचन्द्र और क्षुरप्रनाम बाणोंसे घायल मनुष्योंकेभी शिर बारंबार पृथ्वीपर गिरे ११ फिर कलिंग अंगबंग देशोनिषाद जातिके असुरोंकेगर्भ प्रहारी बीरलोग जो बड़े उग्ररूप अर्जुनके मारनेके अभिलाषीथे उनके गज और असुरोंकेसमान हाथियोंके कवच सूंड़ सारथी ध्वजा और पताकाओं कोकाटा इसके पीछे वहऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्रके प्रहारसे पर्व तोंके शिखर गिरतेहैं १२ । १३ उनके पराजय और छिन्नभिन्नहोने पर अर्जुनने सूर्यबर्णके बाण जालोंसे गुरूके पुत्रको ऐसा ढकदिया जैसेकि बड़े बादलों के जालों से वायु उदय हुये सूर्य को ढकता है १४ इसकेपीछे अश्वत्थामाजी अपने बाणोंसे अर्जुन के बाणोंको काटकर बड़े तीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुनऔर श्रीकृष्णजीको ढककरऐसे गर्जे जैसेकि वर्षाऋतुमें चन्द्रमा और सूर्यको ढककर बादलगर्जता है १५ फिर अर्जुनने भी अश्वत्थामाजीको और अन्यलोगोंको ढक कर शस्त्रोंसे घायलहुयेने समीप जाकर शीघ्रही बाणोंके अंधकार को दूरकर सुन्दर पुंखवाले बाणोंसे सबको घायल किया १६ फिर अर्जुन रथके ऊपर बाणोंको लेता चढ़ाता और मारता हुआ भी युद्धमें दृष्ट न पड़ा फिर बाणोंसे छिद्रेहुये रथ हाथी घोड़े और पदा-

नियोंको अर्जुन ने मृतकदेखा १७ तब शीघ्रता करने वाले अ-श्वत्थामाने शीघ्रहीदश उत्तम नाराचोंको चढ़ाकर एकही के समान छोड़ा उनमेंसे पांच उत्तम बाणोंने श्रीकृष्णाजीको औरपांचनेअर्जुनको घायलकिया १८ अन्यमनुष्योंने ऐसे धनुर्वेदके ज्ञाता अश्वत्थामाजीसे पराजित और रुधिर डालनेवाले नरोत्तम इन्द्रके समान श्रीकृष्ण और अर्जुनको युद्धमें मृतक समझा १६ इसके पीछे श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले कि क्या भूलमें पड़ाहै इस युद्ध कर्त्ताको मार नहींतो यहवीरअपूर्व दोषको उत्पन्नकरेगा और इसका बदला न लेने वाला शूरवीर कठिनरोगीके समानहोगा २० फिरसावधान अर्जुनने श्रीकृष्णजी से बहुतअच्छा यह शब्द कहकर बड़े उपाय के साथ अश्वत्थामाको घायल किया चन्दन के सारसे पीठभुजा छाती शिर और जंघावोंको २१ क्रोधयुक्त अर्जुनने गांडीवधनुषसे छोड़ेहुये विकर्णनाम बाणोंसे घायलकिया और बाग डोरोंको काटकर उसके घोड़ोंको भी घायलकिया फिर वहघोड़े व्याकुलहोकर उसको युद्धसे दूरले गये २२ उनवायुके समान शीघ्रगामी घोड़ों से हटायेहुये और अर्जुनके बाणोंसे पराजित बुद्धिमान् अश्वत्थामा जीने विचार कर फिर लौटकर अर्जुनके साथ लड़नानहींचाहा २३ अर्जुनऔर श्रीकृष्णजीकी निश्चयविजयको जानतेहुये वह वेगवान् उत्साह से भ्रष्टनाशमान बाण और अस्त्र योगवाले अंगिरावंशियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी कर्णकी सेनामें गये २४ अर्थात् वह अश्वत्थामाजी घोड़ोंको स्वाधीन करके बहुत विश्वासित कर रथघोड़े और मनुष्यों से पूर्ण होकर कर्णकी सेनामें जा पहुंचे २५ जैसे कि मन्त्र वा औषधी वा कर्मके करने से रोग शरीर से जाता रहताहै उसी प्रकार घोड़ोंके द्वारा उस विरोधी अश्वत्थामा के हट जाने पर २६ अर्जुन और श्रीकृष्णजी वायुसे उड़ाईहुईपताका और बादल के समान गर्जते हुये रथकी सवारीसे संसप्तकोंके सन्मुखगये २७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिअश्वत्थामापराजयोनामअष्टादशोऽध्यायः१८॥

———※———

उन्नीसवां अध्याय॥

संजय बोले इसके पीछे पांडवोंकी सेनामें उत्तर दिशाकी ओर दंडधार के हाथ से घायल रथी हाथी घोड़े और पतियोंके शब्द उठे १ तब गरुड़ और बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ों को चलाते केशवजी रथको लौटाकर अर्जुनसे बोले २ कि बल और शिक्षामें भगदत्त के समान मगध देशी दंडधार भी नाश करने वाले हाथी समेत कठिन युद्धकरनेवालाहै ३ इसको मारकर तू फिर संसप्तकोंको मारेगा श्रीकृष्णजीने यह कहकर अर्जुन को दंडधारके समीप पहुंचाया ४ वह मगधदेशियों के मध्यमें अंकुश धारणहाथियोंके युद्धमें ऐसा अत्यन्त उत्तम और असह्यथा जैसेकि ग्रहोंके मध्य में धूम्रकेतु ग्रहहोताहै उस भयानक रूपने शत्रुकी सेनाको ऐसा मर्दन किया जैसे कि धूम्रकेतु उपग्रह सम्पूर्ण पृथ्वीको मर्दन मरताहै ५ फिरवह राजा अच्छे प्रकार से अलंकृत गजासुरके समान बड़े बादल की समान शब्द करनेवाले शत्रुहन्ता हाथी पर सवार बाणोंसे हजारों हाथी घोड़े और रथोंके समूहोंको मारताहै ६ वह श्रेष्ठ हाथी घोड़े सारथी मनुष्य और रथोंको दबाकर चरणोंसे हाथियों को मलता सूंड़से मारता हुआ चक्रके समान भ्रमण करने लगा ७ फिरउसने उस बली पराक्रमी उत्तम हाथीके द्वारा लोहेके कवचोंसे अलंकृत मनुष्योंको और पतियों समेत घोड़ोंकोभी गर्जना पूर्वक ऐसे शब्दायमान स्थूल नर्सलके समान गेरकर मारा ८ इसके पीछे अर्जुन धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द मृदंग भेरी और बहुतसे शंखोंसे शब्दायमान हजारों घोड़े रथ और हाथियोंसे संकुलित युद्ध भूमिमें उत्तम रथकी सवारी से उत्तम हाथीके सन्मुख गये ९ वहां उस दंडधारने अर्जुनको दश उत्तम बाणों से और श्रीकृष्णजीको सोलह बाणोंसे व्यथित करके तीन२ बाणोंसे घोड़ोंको घायल किया इनको घायल करके बड़े शब्दको करके बारंबार हंसा और गर्जा १० इसके पीछे अर्जुनने भल्लोंसे प्रत्यंचा समेत उसके धनुषको काटकर

उसकी अलंकृत भुजाको भी काटा फिर रक्षकों समेत सारथियोंको मारा इस कारण वह महा क्रोधित हुआ इसके अनन्तर उस मत वाले घातक वायुकेसमान तेजस्वी हाथीके द्वारा अत्यन्त व्याकुल करनेके अभिलाषी उस राजाने तोमरोंसे अर्जुन और श्रीकृष्णजीको घायल किया ११ । १२ इसकेपीछे इसको हाथकीसूंड़केसमान भुजा ओंको और पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखको तीनक्षुरप्रसे एकबार में छेदा और सैकड़ों बाणोंसे हाथीको घायलकिया १३स्वर्णमयी अर्जुन के बाणों से संयुक्त वह स्वर्णमयी कवचधारी हाथी सायंकाल के समय ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि दावानल अग्निसे ज्वलित ओषधियों समेत वृक्षोंवाला पर्व्वत प्रकाशित होताहै वह बादलके समान गर्जता चलता घूमता दुःख से पीड़ितचलते २ सवार समेत ऐसे गिरपड़ा जैसेकि वज्रसे टूटाहुआ पर्व्वतगिरपड़ता है १४ । १५ उसकेमरनेकेपीछे उसका दूसरा भाई द्वन्द युद्धमें भाई के मरनेपर श्रीकृष्णअर्जुनके मारनेकाअभिलाषी स्वर्णमयी मालाधारी हिमाचल के शिखरके समान हाथीकी सवारीसे सन्मुखआया १६ वह सूर्य्य कोकिरणके समान प्रकाशित तीक्ष्ण तीन तोमरोंसे श्रीकृष्णजीको और पांचसेअर्जुनको घायलकरताहुआ गर्जा इसकेअनन्तर अर्जुन नेउसकी भुजाओंको काटा १७सुन्दर तोमर और बाजूबन्द रखने वाले चन्दनसे चर्चित और क्षुरप्रबाण से कटीहुई दोनों भुजाहाथी परसे गिरतीहुई ऐसीशोभायमान हुईं जैसे कि अत्यन्तसुन्दर दोबड़े सर्प पर्व्वतसे गिरतेहोयं १८ इसीप्रकार अर्जुनके अर्द्धचन्द्र बाणसे कटाहुआ दंडका शिर हाथी के ऊपरसे पृथ्वीपर गिरते समय ऐसे शोभायमानहुआ जैसेकि सूर्य्यअस्ताचलसे पश्चिम दिशामें गिरता है १९इसके पीछे अर्जुनने सूर्य्यकी किरणरूप उत्तम बाणोंसे उसके श्वेतहाथीकोभी छेदा वहभी शब्दकरताहुआ ऐसेगिरा जैसे वज्रसे टूटा हिमाचलका शिखर गिरताहै २०उसके सिवाय उसीकेसमान अन्य उत्तम२ हाथी विजयाभिलाषी हुये और वह भी उसी प्रकार से अर्जुनके हाथसेमरे जैसेकि वह दोनों हाथी मारे गये थे इसके

पीछे शत्रुओंकी बड़ी भारीसेना छिन्नभिन्न होगई २१ युद्धमें परस्पर मारने वाले हाथी घोड़े और मनुष्योंके समूह चारों ओरसे परस्पर में अत्यन्त घायल होकर गिरपड़े और बहुतसे अत्यन्त बकने वाले मनुष्यभी मारेगये २२ इसके पीछे पांडवीसेना के मनुष्य अर्जुनको घेरकर ऐसे बोले जैसेकि देवताओंके समूह इन्द्रको घेरकर बोलेथे कि हेबीर अर्जुन हमलोग जिससे कि मृत्युके समान भयभीतथे वह शत्रुप्रारब्धसे तुम्हारे हाथसे मारागया २३ जो इस प्रकार पराक्रमीशत्रुओंसे पीड़ामान इन मनुष्योंकी तुमरक्षानहीं करतेतो शत्रुओं की वैसीही प्रसन्नता होती जैसी कि हम लोगोंको हुईहै २४ इसकेअनन्तर शुभ चिन्तकोंके इन बचनोंको सुनकर वह प्रसन्न चित्तसंसप्तकोंका मारनेवाला अर्जुन प्रत्येकको उनकी योग्यता के अनुसार प्रसन्न करके चलदिया २५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदंडधारबधेएकोनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे अर्जुन ने वहांसे लौटकर मंगल ग्रहके समान बक्र और अतिबक्र गतियों से हजारों संसप्तकों को मारा १ हेभरतबंशी अर्जुनके बाणोंसे घायल मनुष्यघोड़े रथहाथी सब के सब इधर को तितिरबितिर होकरघूमनेलगे और घूम २ कर गिरे औरमृतक होकर नष्ट होगये २ युद्धमें सन्मुख लड़नेवालेबीरोंके उत्तम घोड़ेरथ हाथी रथी ध्वजा धनुष शायक हाथ वा हाथ में लिये शस्त्र भुजा और शिरों को अर्जुन ने अपने भल्ल क्षुरप्र अर्द्धचन्द्र और बत्स दन्तनाम बाणों से काटा ३।४ जैसेकि गौकेनिमित्तयुद्धाभिलाषी अनेक बैल दूसरे बैलके सन्मुख जाते हैं उसीप्रकारहजारों शूरबीर अर्जुनके ऊपर गिरते थे ५ उन सब बीरों के साथ अर्जुन का युद्ध ऐसा बड़ा भयकारी रोम हर्षण करने वाला हुआ जैसे कि तीनों लोकोंकी विजयके वास्ते दैत्योंका युद्ध इन्द्र के साथमें हुआ था ६ उग्रायुधके पुत्रने सर्पोंके समान तीनबाणोंसे उस अर्जुनको घायल

किया और अर्जुनने उसके शिरको धड़से जुदा किया ७ फिर क्रोधित होकर उन लोगोंने सबओर से अर्जुनके ऊपर नाना प्रकारके शस्त्रोंकी ऐसी वर्षाकरी जैसे कि वर्षा ऋतुमें मरुत् देवता के प्रेरित किये हुये बादल हिमालय पर जलकी वृष्टिको करते हैं ८ अर्जुन ने शत्रुओं के अस्त्रों को सब ओरसे अपने अस्त्रों से रोककर अच्छी रीतिसे चलाये हुये बाणोंसे अनेक शत्रुओं को मारा ९ और उनके रथोंको भी बाणोंसे रथियों समेत ऐसी दशाका करदिया कि जिन के घोड़े और सारथी मरजाने से हाथोंसे तरकस और ध्वजा पताका गिर पड़ीं बागडोर हाथसे छूटगई पहिये टूटे दांतुये और जुये और शरीरके कवचभी टूट १०। ११ वहां टूटे हुये बहुमूल्य रथ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि अग्नि वायु और जलसे टूटेहुयेधनी लोगोंके घर होतेहैं १२ फिर वज्र और बिजली के समान बाणों से टूटे हुये हाथियोंके कवच ऐसे टूटे पड़े जिस प्रकार वज्रपात और अग्निसे पर्व्वतों के शिखर गिर पड़तेहैं १३ फिर अर्जुन के हाथ से घायल होकर बहुत से घोड़े सवारों समेत गिरपड़े उन घोड़ों की जीभ औरनेत्र निकल पड़े थे इसहेतुसे वहपृथ्वी पर पड़े हुये रुधिर से लिप्त देखने के अयोग्य मालूम होतेथे १४ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र अर्जुन के नाराचोंसे छिदे हुये मनुष्य घोड़े और हाथी गर्ज २ करघूमते और मलिन मन होकर पृथ्वी पर गिर पड़े १५ अर्जुनने बड़े स्वच्छ बिजली और विषके समान बहुतसे बाणोंसेउनको ऐसेमारा जैसे कि महा इन्द्र दानवों को मारता है १६ अर्जुन के हाथसे मरे हुये जो वीर रथ और ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर शयन करने वाले हुयेवह वीरबड़े मूल्यके कवच भूषण और नाना प्रकारकी पोशाकों समेत शस्त्रोंके धारण करने वाले थे १७ वह पवित्रकर्मा वाउत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ युद्धकर्त्ता अर्जुन के बाणों से पराजय होकर पृथ्वी पर गिरपड़े और अपने उत्तम कर्म के द्वारा स्वर्ग को गये १८ उसके पीछे भिन्न २ देशोंके स्वामी क्रोधयुक्त शूरवीर आपके युद्ध कर्त्ता अपने समूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके सन्मुख गये १९

रथ घोड़े औरहाथियों परसवार मारनेके अभिलाषी वहपतिलोगभी नाना प्रकारके शस्त्रों को चलातेहुये शीघ्र सन्मुख दौड़े २० जिनको अर्जुन रूपी वायुने शीघ्रता पूर्वक छोड़ेहुये बाणोंसे उस शस्त्ररूपी बड़ी बर्षाको जोकि युद्ध कर्त्ता रूपी बड़े २ बादलोंसे छोड़ी हुईथी पृथक् २ करदियाथा २१ वह घोड़े हाथी और पतियोंसे युक्त बड़े२ शस्त्रोंसे पूर्ण अर्जुनके शस्त्र और अस्त्र रूपी पुलसे हटकर साथमें पार होने के अभिलाषीथे २२ इसके अनन्तर बासुदेवजीने कहा कि हे निष्पाप अर्जुन वृथा खेल करताहै इन संसप्तकोंको मारकर फिर कर्ण के मारनेका उपाय शीघ्रतासे कर २३ तब अर्जुनने श्री-कृष्णजीसे बहुत अच्छा यह शब्द कहकर श्रेष्ठ संसप्तकोंको तुच्छ करके शस्त्रोंकेबल से ऐसामारा जैसेकि दैत्योंको इन्द्रमारताहै २४ अर्जुन बाणोंको लेता चढ़ाता और मारताहुआ किसीको दिखाई नहीं दिया और सावधान वीरोंनेउसको शीघ्रता से बाणोंकोछोड़ता हुआ भी देखा २५ हे भरतबंशी उन श्रीकृष्णजीने बड़ा आश्चर्य्य किया कि हंसोंकेसमान उज्ज्वल वह बाण सेनामें ऐसे पहुंचे जैसे कि सरोवर में हंसपक्षी पहुंचते हैं २६ इसके अनन्तर मनुष्योंकी प्रलय बर्त्तमान होनेपर युद्ध भूमिको देखकर श्री कृष्णजी अर्जुन से बोले २७ हे अर्जुन दुर्य्योधनके कारणसे यह भरतबंशी और अन्य राजाओं की प्रलय पृथ्वी पर वर्त्तमान है २८ हेभरतबंशी बड़े धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठवाले धनुषधारियोंकोवा आभूषणों समेत तूणीरोंको टूटाहुआ देखो २९ और टेढ़े पर्व्व औरसुनहरी पुंखवाले तेलसे सींचकर कांचली से छुटे सर्पोंके समान नाराच नाम बाणों को देखो ३० हेभरतबंशी सुवर्ण से अलंकृत चित्र विचित्र तोमरों को भी देखो और धनुषसे टूटेहुयेसुवर्ण पुंखवाले बाणों को देखो ३१ सुबर्ण से अलंकृत बाण वा कंचन से शोभित शक्तियों को वा सुनहरी वस्त्रों से मढ़ीहुई गदाओं को देखो ३२ सुनहरी दुधारे खड्ग पट्टिश और डंडों समेत कटेहुयेफरसोंको देखो ३३ और वह मूठके पड़ेहुये परिघ भिन्दिपाल भुशुंडी कुणप और अपरकुन्तोंको

देखो ३४ विजयाभिलाषी वेगमान शूरवीर नाना प्रकारके शस्त्रोंको लेकर निर्जीव होकर जीवते से दिखाई देते हैं ३५ गदाओं से मथित अंगवाले हाथी घोड़े और रथों समेत मूशलोंसे कूटे हुये मस्तक वाले हजारों युद्ध कर्त्ताओंको देखो ३६ हे शत्रुहन्ता बाण शक्ति दुधारे खड्ग तोमर पट्टिश प्रास नखरल गुड़आदि अनेक शस्त्रोंसे अत्यन्त घायल मनुष्य हाथी घोड़ोंके समूह रुधिर में भरे हुये निर्जीव देहोंसे पड़ेयुद्धभूमि में वर्त्तमानहैं ३७।३८ और बाजूबंद आदि शुभभूषण हस्तत्राणऔर केयूरको धारण करनेवाली चन्दन से लिप्त भुजाओंसे पृथ्वीशोभायमानहै ३९ और वेगवान् शूरवीरों की टूटीहुई उत्तम भुजाओंसे वा हाथीकी सूंड़के समान टूटीहुई जं-घाओंसे और उत्तम चूड़ा बांधनेवाले कुंडल धारीशिरोंसे युद्ध भूमि अत्यन्त शोभादेरहीहै सुनहरी घंटे रखनेवाले उत्तम रथोंको भी अ-नेक प्रकारसे टूटाहुआ देखो ४०।४१ और रुधिरमें भरे हुये बहुत से घोड़ोंको देखो वा अनुकर्ष उपासंगपताका और नाना प्रकारकी ध्वजाओंको देखो ४२ युद्धकर्त्ताओंके फैलेहुये श्वेतरंगके महाशंखों को और जिह्वा निकले पर्व्वतके समान पड़े सोते हुये हाथियोंको देखो४३वैजयन्ती नाम विचित्र मालाओंसे और मरेहुये हाथियोंके सवार औरअनेक कालेकंमलोंसे युक्त परिस्तोमोंसे ४४ अच्छी कृष्ण औरविचित्र अद्भुतरूप कुथाओंसेऔरहाथियोंसे टूटकर गिरेहुयेघंटा ओंके चूर्णोंकोदेखो ४५ वैडूर्य्य मणिके डन्डेवाले पृथ्वीपर पड़ेहुये अंकुशोंको और घोड़ोंके जुये पीठ और रत्न जटित छिद्रोंकोदेखो४६ सवारोंकी ध्वजाओंको नोकापर टूटेहुये सुवर्णसे चित्रित घंटाओंको और विचित्र मणियोंसे जटित सुवर्णअलंकृत ४७ पृथ्वीपर पड़ेहुये मृगचर्मसे बनेहुये घोड़ोंके जीनपोशोंको और राजाओंकी चूड़ामणि औरसुनहरी विचित्र मालाओंको देखो ४८ धनुषसे छिदेहुये छत्र चामर और वैजयन्तियोंको देखो चन्द्रमा और नक्षत्रोंके समानप्र-काशित सुन्दर कुंडल धारी ४९ अलंकार युक्तडाढ़ी मूछोंसे संयुक्त पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखोंसे बिछीहुई पृथ्वीको देखो ५० इसी

प्रकार कुमुद उत्पल नाम कमलोंके समान रूपीराजाओंके मुखोंसे इस पृथ्वीको नक्षत्र समूहों समेत निर्मल चन्द्रमासे शोभितआकाश केसमान सदैव बाणरूप नक्षत्रोंकी मालाओंके रखनेवालीको देखो हे अर्जुन इस महा युद्धमें यह कर्मतेरेही योग्यहै ५१।५२चाहै वह कर्मजो तुमने स्वर्गके युद्धमें इन्द्रका किया इसरीतिसे वह युद्धभूमि अर्जुनको दिखाते ५३ और चलतेहुयेश्रीकृष्णजीने दुर्य्योधन कीसेना में शंखदुन्दुभी भेरी और पणवोंकेबड़ेशब्दों कोसुना५४और रथघोड़े हाथी और शस्त्रोंके भयानक शब्दोंकोभी सुनाफिरश्रीकृष्णजीनेवायु केसमान घोड़ोंके द्वारा उस सेनामें प्रवेशकरके ५५ राजा पाण्ड्य केहाथसे आपकी सेनाको पीड़ित देखकर बड़ा आश्चर्य्यकिया बाण और अस्त्र विद्यामें अत्यन्त श्रेष्ठ उस पांड्यने युद्धमें अनेक प्रकारके बाणोंसे ५६ शत्रुओंके समूहोंको ऐसेमारा जैसे कि मृत्यु निर्जीव मनुष्योंको मारतीहै घात करनेवालोंमें श्रेष्ठ पांड्यने तीक्ष्ण बाणोंके द्वारा हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरोंको ५७ छेदकर उन निर्जी- वोंको गिराया फिर पांडवोंने शत्रुओंकेचलाये अस्त्र और नानाप्रकार के शस्त्रोंको शायकोंसे काटकर उन शत्रुओं को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र असुरोंको मारताहै ५८। ५९॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे विंशोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेसंजय तुमने प्रथमही लोकमें विख्यात पांड्य बड़ा बीर बर्णन किया परन्तु तुमने युद्ध में इसके कर्म को वर्णन नहीं किया १ अब उस बड़ेवीर के पराक्रम और शिक्षाके प्रभाव बल बड़प्पन और अहंकारको ब्योरेबार कहो २ संजय बोले कि तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य अश्वत्थामा कर्ण अर्जुन और श्रीकृष्ण आदि जिनरथियोंको सर्व विद्या सम्पन्न और धनुष विद्या में सबसे श्रेष्ठ मानतेहो और जो इन सब महारथियोंको भी अपने पराक्रमसे तुच्छ समझताहै जिसने अन्य किसी राजा को अपने

समान नहीं माना ।३।४ और जो भीष्मद्रोणाचार्य्यके साथमें अपनी समानताकोभी नहीं सहताहै और जिसने अपने को वासुदेवजी और अर्जुनसे कम नहीं जाना ५ उसराजाओंमें और सबशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ राजा पाण्ड्यने अत्यन्तक्रोध युक्तहोकर यमराजके समान कर्णकी बड़ीसेनाको मारा ६ बड़ेरथ घोड़ोंसमेत अत्यंतउत्तम पति-योंसे व्याप्त और पांड्यकेपराक्रमसे घायल होकर वहसेनाकुम्हार के चक्रके समान घूमती हुई इधर उधर फिरनेलगी ७ पांड्यने घोड़े ध्वजा और सारथियों से रहित रथोंको और कठिन युद्धसे मारेहुये हाथियोंको अच्छीरीतिसे चलाये बाणोंसे ऐसे हटादिया जैसे कि वायु बादलोंको हटाता है ८ पताका ध्वजा और शस्त्रोंसे रहित हाथियों को हाथियोंके सवारों समेत पीछेके रक्षकोंको ऐसे मारा जैसेकिशत्रुहन्ता इंद्रअपने वज्रसे पर्वतोंकोविदीर्ण करताहै ९ उसने शक्ति प्रास और तूणीरों समेत अश्वारूढ़ और घोड़ोंकोभी मारकर पुलिंद,खस,वाल्हीक,निषाद अंधककुंतल१० दक्षिणात्यऔर भोजोंको और युद्धमें निर्दई शूरोंको बाणोंके द्वारा शस्त्र और कवचों सेरहित करके निर्जीव किया ११ युद्धमें बाणोंसे मारनेवाले रुधिर से उत्पन्न होनेवाले व्याकुलतासे पृथक्पांड्य को देखकर अश्व-त्थामाजी भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित चतुरंगिणी सेना समेत उसके सन्मुख गये १२ वहां प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजीने निर्भयता के समान इसको मीठेवचनों से समझा-करकहा १३ और बड़ी मंद मुसकान समेत युद्धके निमित्त बुलाया और कहा कि हे कमलदल लोचन उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ वज्रके समान दृढ़ शरीर और बलमें विख्यात राजापांड्य १४ आपके धनुष की प्रत्यंचा दृढ़स्थान में चिपटी हुई दिखाई देतीहै औरबड़े भुज-दंडोंसे बहुत बड़े धनुषको बड़े बादलके समान कठिन टंकारते हुये दृष्टिपड़तेहो १५ बड़े वेगवान्बाणोंकी वर्षासे शत्रुओंके सन्मुखमुझवा समवर्षा करनेवाले के सिवाय आपके सन्मुख होनेवालाशूरवीर युद्धमें नहीं देखताहूं १६ तुमअकेलेही बहुतसे हाथीघोड़े रथ और पतिलोगों

को ऐसे मथते हो जैसे कि निर्भय और भयानकरूप पराक्रमी सिंह वनमें मृगोंके समूहोंको मथन करता है १७ हे राजा रथके बड़े शब्द से पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करते हुये ऐसे दिखाई देते हो जैसे कि वर्षाके अन्तमें खेतोंका हरित करनेवाला गर्जता हुआ बादल होता है १८ विषैले सर्पकी समान तीक्ष्ण बाणोंको तूणीरसे निकाल २ कर मुझ अकेलेसे ऐसे युद्ध करो जैसे कि अन्धकने शिवजीके साथ युद्ध किया था १९ प्रहार करो ऐसे कहे हुये घायल हुये उस मलयध्वज पांड्यने बहुत अच्छा ऐसा शब्द कहकर कर्णीनाम बाणसे अश्वत्थामाको घायल किया २० आचार्य्योंमें श्रेष्ठ मंद मुसकान करते अश्वत्थामाने मर्मभेदी अत्यन्त उग्र अग्नि शिखाके समान बाणोंसे पांड्य को घायल किया इसके पीछे अश्वत्थामा जीने अत्यन्त तीक्ष्ण मर्म भेदी अन्य नाराचोंको भी फेंका २२ पांड्यने उन बाणोंको अपने तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणोंसे काटा और चार बाणोंसे घोड़ोंको घायल किया और घायल होतेही वह शीघ्र मरगये २३ इसके पीछे सूर्य्य के समान तेजस्वी पांड्यने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे अश्वत्थामा के उन बाणोंको काटकर धनुषकी बड़ी प्रत्यंचाको काटा २४ इसके पीछे शत्रुहन्ता ब्राह्मण अश्वत्थामा जीने दिव्य धनुषको तैयार करके और शीघ्रही रथमें जुटे हुये दूसरे उत्तम घोड़ोंको देख कर २५ उसमें बैठे हजारों बाणोंको चलाया आकाश और दिशाओं को बाणोंसे व्याप्त करदिया २६ इसके पीछे बाण फेंकनेवाले अश्वत्थामाके उन सब बाणोंको अविनाशी जानकर उस पुरुषोत्तम पांड्यने उनको काटकर गिराया २७ फिर पांड्यने अश्वत्थामा जी के उन बाणोंको काटकर युद्धमें अपने तीक्ष्णधार बाणोंसे उनके दोनोंचक्र रक्षकोंको मारा २८ इसके पीछे शत्रुकी हस्त लाघवताको देखकर धनुषको मंडलरूप करने वाले अश्वत्थामाजीने ऐसे बाणोंको छोड़ा जैसे कि पूषाका छोटाभाई पर्जन्य नाम जलकी वर्षाको छोड़ता है २९ हे श्रेष्ठ जिनशस्त्रोंको आठ २ बैल वाले आठ छकड़े ले चलते हैं उनको अश्वत्थामाजीने आधीघड़ीमें चलाया ३० उस यमराज

के समान क्रोधरूप और मृत्युके सदृशको जिन्होंनेवहांदेखाथा उनमें से बहुधातो अचेत होगये ३१ जैसेकि वर्षाऋतु में बादलोंके समूह पर्वत वृक्ष रखनेवाली पृथ्वीपर वर्षा करतेहैं उसीप्रकार आचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामाने उस संपूर्णसेनापर बाणोंकी वर्षाकरी ३२ पांड्यरूपीवायुने उस अश्वत्थामारूप बादल से छोड़हुये बड़े दुःखसे सहने के योग्य उस बाणरूपी वर्षाको बड़ी प्रसन्नतासे अपने वायुरूप अस्त्रसे हटाकर नाशकर दिया ३३ अश्वत्थामाजीने उसगर्जने वाले पांड्यकी ध्वजा को जोकि चन्दन अगरसे चर्चित मलयाचलके स्वरूपथी काटकर चारों घोड़ों को मारा ३४ फिर एकबाणसे सारथीको मारकर और अर्धचन्द्रसे बड़े बादलकी समान शब्दायमान धनुषको काटकर रथको टुकड़े २ करदिया ३५ अश्वत्थामा ने अस्त्रोंको अस्त्रोंसेरोककर और सब शस्त्रोंको काटकर आधीन होने वाले शत्रुको युद्धाभिलाषीहोकर युद्धमें नहीं मारा३६ इसी अन्तरमें कर्ण हाथियोंकी सेनामें गया और वहां उसनेजाकर पांडवोंकी बड़ी सेनाको भगाया ३७ हे भरतवंशी उसने टेढ़े पर्व वाले बहुतसे बाणोंसे रथियोंको विरथ करके हाथीऔर घोड़ोंकोअचेतकरदिया ३८ इसके पीछे बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाने शत्रुहन्ता रथियोंमें श्रेष्ठ रथसेरहित पांड्यको युद्धकी इच्छा करके नहीं मारा ३९ अच्छा अलंकृत शीघ्रगामी शब्द पर चलनेवाला अश्वत्थामा के बाणोंसे घायल पराक्रमीहाथी जिसका कि स्वामी मारा गयाथा वेगसे हाथियोंको मलताहुआ शीघ्र उस पांड्यकीओर गया ४० हाथियोंके युद्ध में कुशलमलयध्वज पांड्य बड़ी शीघ्रताको करता हुआ उस पर्वत के शिखरकी समान श्रेष्ठहाथी पर ऐसे सवार हुआ जैसेकि गर्जताहुआ सिंह पर्वत के शिखर पर चढ़ता है ४१ उस मलयाचलके स्वामी गर्जते और अंकुशसे हाथी को क्रोधयुक्त करवानेवालेपांड्यने पराक्रम और अस्त्रचलानेके उपाय जाननेके अभिमानसे शीघ्रही सूर्य की किरणोंके समान तोमर को गुरु के पुत्र पर छोड़कर ४२ माराहै मारा है ऐसे आनन्द पूर्वक

शब्दोंको करताहुआ बड़ेवेगसेगर्जा और अश्वत्थामा के उस मुकुट को तोमर सेतोड़ा जोकि मणियों से जटित उत्तम हीरोंसे और सुवर्णसे शोभितबहु मूल्यकेवस्त्र और मालाओंसे अलंकृत था ४३ सूर्य चन्द्रमा ग्रह और अग्निकेसमान प्रकाशित वह मुकुट कठिन अघातसे ऐसेचूर्णहोकर गिरपड़ा जैसेकि इन्द्र के वज्रसे घात किया हुआ बड़े शब्दयुक्त होकर पर्वत का शिखर पृथ्वीपरगिरै ४४ उस केपीछे अश्वत्थामाजीने यमराजदंडके समान शत्रुओं के पीड़ा करने वाले चौदह बाणोंको हाथमेंलिया ४५तब उस उत्तम तेजस्वी ने हाथीके चारों पैर और सूंड़ पांच बाणोंसे राजा को दोनोंभुजा और शिरको तीनबाणोंसे और राजा पांड्यके पीछेचलनेवाले छः महारथियोंको छः बाणोंसे मार डाला ४६ राजाकी दोनों भुजाजो बहुत लंबी चन्दनसे चर्चित सुवर्ण मुक्ताहीरे और अन्य २ मणियों से अलंकृतथीं पृथ्वीपर गिरपड़ी और गरुड़ से व्याकुल सर्पोंकी समान फड़फड़ाने लगीं ४७ वह पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रकाशमान और क्रोधसे बड़ी २ लालआंख रखनेवाला कुंडलधारी शिरभी पृथ्वीपर गिराहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि दोनों विशाखों के मध्यमें चन्द्रमा वर्त्तमान होताहै ४८ फिरवह हाथी पांच उत्तम बाणों से छःभाग किया गया और राजा भी तीन बाणोंसे चारखंड कियागया उस सावधान युद्ध कर्त्ताने इस प्रकारसे दशभाग किये जैसे कि दश देवताओंसे संबंध रखनेवाला हव्य होताहै ४६ वह पांड्य घोड़ेहाथी और मनुष्योंको जोकि राक्षसोंके भोजनथे टुकड़े२ कराके अश्वत्थामाके बाणोंसे ऐसे शांतहोगया जैसे कि पितरोंको प्रिय अग्नि मृतकदेह रूप हव्य को पाकर जल प्रवाह से शांत होजातीहै ५० फिर सुहृदजनों समेत आपकेपुत्र राजा दुर्योधनने उस युद्धकर्ममें विशारद और निवृत्त कर्म गुरूके पुत्रसे मिलकर प्रसन्नतासे ऐसे उनका धन्यबाद किया जैसे कि देवताओंके ईश्वर इन्द्रने बलिके बिजय होनेपर विष्णु को धन्यबाद दियाथा ५१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिपांड्यबधेएकविंशोऽध्यायः॥२१॥

बाईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय पांड्यके मरने और एक वीर कर्ण के हाथ से शत्रुओंके भागनेपर अर्जुनने युद्धमें क्या किया १ वह विद्यामें पूर्ण पराक्रमी योग्य वीर अर्जुन महात्मा शंकरजीसे भी विजयनहीं किया गया २ उस शत्रुहन्ता अर्जुनसे बड़ाभारी कठिन भय है उस अर्जुनने जो २ वहां कर्म किये हे संजय उन सबको मेरे आगे वर्णनकरो ३ संजय बोले कि पांड्य के मरजाने पर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यह हितकारीवचन कहा कि मैं राजायुधिष्ठिरको औरहटेहुये पांडवोंको नहींदेखताहूं ४ लौटे हुये पांडवसे शत्रुकी फिर बड़ी सेना पराजय हुई परन्तु अश्वत्थामाके संकल्पसे कर्णके हाथसे संजय मारेगये ५ इसप्रकारसे घोड़े हाथी और रथोंके नाश करनेवाले बड़े वीर वासुदेवजीने अर्जुनसे सब वृत्तान्त कहा ६ भाई युधिष्ठिरके उस बड़े भयको देख और सुनकर पांडव अर्जुनने श्री कृष्णजीसे कहा कि शीघ्र घोड़ोंको चलाइये ७ इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी रथकी सवारीके द्वारा उसके सन्मुख शीघ्रगये जिसका कि कोई सन्मुखता करनेवाला न था फिर बड़ी कठिन सन्मुखताहुई ८ तदनन्तर निर्भय कौरव पांडव अर्थात् कुन्तीके पुत्र भीमसेन आदि और कर्णआदिक कौरव और हम सब लोग परस्परमें सन्मुख हुये हेराजाओंमें श्रेष्ठ इसके पीछे कर्ण और पांडवोंका युद्ध यमराजके देशका बढ़ानेवाला फिरजारी हुआ १० धनुषबाण परिघ खड्ग पट्टिश तोमर मूशल भुशुंडी शक्ति दुधारा खड्ग फरसा ११ गदा प्रास तीक्ष्ण कुन्त भिंदिपाल और बड़े २ अंकुशोंको हाथमें लेकर परस्पर मारनेकी इच्छासे चढ़ाई करनेवाले हुये १२ बाण और धनुषोंकी प्रत्यंचाके शब्दोंसे दिशा विदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाशको शब्दायमानकरतेहुयेशत्रुओंके सन्मुखगये १३ बड़ेशब्दोंसे अत्यन्त प्रसन्न हुवसे पारहोने के अभिलाषी वीरोंने शत्रुओंके वीरोंके साथ महाघोर युद्धकिया १४

तब धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द और चिंघाड़ते हाथी और गिरतेहुये मनुष्योंका महाघोर शब्द हुआ १५ फिर वहां पर सेनाके मनुष्य सन्मुख गर्जतेहुये शूरबीरोंके नानाप्रकारों के शब्दोंको सुनकर अत्यन्त भयभीत और अचेत होकर गिरपड़े १६ उनके गर्जते और बाणोंकी बर्षाकरतेहुये बीर कर्णने पांचालदेशी बीरोंके बीस रथियोंको घोड़े सारथी और ध्वजाओं समेत अपनेबाणोंसे स्वर्गको पठाया १७।१८ युद्धमें पांडवोंके बड़ेपराक्रमी उत्तम युद्धकर्त्ताओंनेशीघ्रता पूर्बक अस्त्रोंके चलानेसे आकाशको ब्याप्तकरके कर्णकोचारों ओरसे घेरलिया १९ इसके पीछे कर्णनेबाणोंकी बर्षासे शत्रुओंकी सेनाको छिन्न भिन्न करके ऐसा ब्यथित किया जैसे कि पक्षियोंसे ब्याप्त कमलोंके बनोंको गजराज मथन करताहै २० कर्णनेशत्रुओं में घिरकर उत्तम धनुषकोले तीक्ष्णबाणों से उन शत्रुओंके शिरोंको काटकर दूर गिराया २१ तब मृतक बीरोंकी टूटीहुई ढालें और कवच पृथ्वीपर गिरपड़ीं २२ धनुषसे छोड़ेहुये मर्म देह और प्राणोंके घातक बाणोंसे धनुषोंकी प्रत्यंचा और तूणीरोंको ऐसा घायल किया जैसे कि चाबुकसे घोड़ोंको घायल करतेहैं २३ कर्णने बाणके लक्षमें बर्त्तमान पांड्य सृंजय और पांचालोंको बड़ेवेगसे ऐसे मर्द्दन किया जैसे किमृगोंके समूहोंको सिंह मर्द्दन करताहै २४ हे श्रेष्ठ इसके पीछे पांचाल और द्रौपदीके पुत्र नकुल और सहदेव सात्यकी समेत एक साथही कर्णके सन्मुखगये २५ उनकौरव पांचाल और पांडवोंके उपाय करने पर युद्धमें बड़े २ युद्ध करने वालोंने अपने प्रियप्राणोंको त्यागकरकेपरस्परमें घायल किया २६ अच्छे अलंकृत कवचधारी आभूषणोंसे युक्त महाबली कालदण्डके समान गदा मशल और परिघोंको उठाये हुये गर्जते और एकएक को पुकारते शीघ्रसन्मुखगये २७।२८ इसके पीछे एकने एककोघायल किया और घायल हो होकर गिरपड़े और कोईशूरबीर अंगोंसेरुधिर गेरतेमस्तकनेत्र और शस्त्रोंसे हीनहोकर २९ शस्त्रोंसे युक्त और दांतों से पूर्ण रुधिर में भरे हुये अनारके वृक्षकी समान मुखोंसे जीवत

हुयेसे नियत हुये ३० इसीप्रकार दूसरोंने फरसा पट्टिश खड्ग शक्ति भिन्दिपाल प्रास और तोमरों से ३१ काटाछेदा और घायल करके फेंका गिराया मारा और क्रोध युक्त बीरोंने युद्धरूपी महा समुद्रमें घायल किया ३२ परस्पर में मारे हुये निर्जीव रुधिर से भरे हुये सुन्दर रथवाले रुधिर को गिराते हुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि चन्दन के कटेहुये वृक्ष गिराये जाते हैं ३३ रथोंसे रथीमारेगये हाथियों से हाथी मारेगये मनुष्यों से मनुष्य और घोड़ों से मारे हुयेहजारों घोड़े ३४ क्षुरत्र भल्ल और अर्द्धचन्द्रों से कटे हुये भुज शिर छत्र और हाथियों की सूंड़ों समेत मनुष्यों की भुजा पृथ्वी पर गिर पड़ीं ३५ हाथियों ने रथों समेत घोड़े और मनुष्यों को मर्द्दन किया अश्वारूढ़ों के हाथ से शूरवीर मारे गये ३६ और पताका ध्वजाओं समेत कटीहुई सूंड़ों समेत हाथी ऐसे गिरे जैसे टूटे हुये पर्व्वत गिरते हैं वह हाथी रथ पतियों के सन्मुख जाकर मरे और मरकर गिरपड़े ३७ और शीघ्रता करने वाले अश्वसवार सन्मुख होकर पतियों के हाथसे मारे गये ३८ और युद्धमें अश्व-सवारों के हाथसे मारे हुये पतियोंके समूह ऐसे नष्टहोगये जैसे कि मर्द्दन किया हुआ कमल और मुरझाई हुई माला होंय ३९ इसी प्रकार उस बड़े युद्ध में मृतकों के मुख भंग होगये और मनुष्यों के अत्यन्त प्रकाशमान रूप और हाथियों ने ऐसे कुरूपता को पाया जैसेकि म्लान वस्त्र होते हैं ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिगामंकुलयुद्धे द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि आपके पुत्रके कहने से हाथियों के सवार अपने हाथियों के द्वारा मारने के इच्छावान् पर्वत के पोते क्रोध युक्त धृष्ट-द्युम्न के सन्मुख गये १ हे भरतवंशी अत्यन्त उत्तम हाथियों के सवार शूरवीर पूर्व दक्षिणाकेवासी अंग वंग पुंड्र मागध ताम्र लिप्त-क २ मेकल कोशल मद्र दशार्ण निषध कलिंगों समेत गजयुद्ध में

कुशल ३ बाण तोमर और नाराचोंसे बादलकी समान बाण वृष्टि करनेवाले उन सबने पांचलदेशी सेनाको अपने बाणरूप वृष्टीसे सींचा ४ एंड़ी अंगुष्ठ और अंकुशों से अत्यन्त तेज किये हुये उन हाथियों को मर्द्दन करने का अभिलाषी धृष्टद्युम्न बाण और नाराचों से बर्षा करनेवाला हुआ ५ हे भरतबंशी उन पर्व्वताकार हरएक हाथीको फेंके हुये दश छः और आठ बाणोंसे घायल किया जैसे कि बादलों से सूर्य्य ढक जाता है उस रीतिसे धृष्टद्युम्न को हाथियों से घिरा हुआ देखकर तीक्ष्णशस्त्रधारी पांडव और पांचाल लोग गर्जते हुये गये६।७प्रत्यंचाके शब्दों से शब्दायमान बाणों से हाथियों के सन्मुख बाणवृष्टि करनेवाले नकुल और सहदेव और द्रौपदीके पुत्र वा प्रभद्रक ८ सात्यकी शिखंडी चेकितान नाम पराक्रमी बीरोंने चारों ओरसे ऐसे सींचा जैसे कि जलकी धाराओं से बादल पर्वतोंको सींचताहै ६ बरछोंसे भिदेहुये उन अत्यंत क्रोधयुक्त हाथियोंने मनुष्य घोड़े और रथोंको भी सूंड़ोंसे पकड़ २ पटक पटक कर पैरोंसे मर्द्दनकिया और किसी२ को दांतोंकी नोकोंसे घायल कर करके घुमाकर दूर फेंकदिया और दांतोंमें चिपटे हुयेअन्यभयानकरूप जीवभी गिरपड़े१०।११ सात्यकीने सन्मुख वर्त्तमान राजा अंगके हाथीको उग्रवेगी नाराचमें मर्मस्थलोंमें छेदकरगिरादिया१२ फिर सात्यकीने उन प्रहारोंसे बचेहुये शरीरवाले हाथीसे उछलनेके अभिलाषी राजा अंगकी छातीको नाराचसे घायल किया तब वह पृथ्वीपर गिरपड़ा १२ सहदेवने पुण्ड्रके राजाके हाथीको चलायमान पर्वत के समान आते हुयेको बड़े उपायसे चलाये हुये तीन नाराचोंसे घायलकिया १३।१४ सहदेवउस हाथीको पताका हाथीवान कवच और ध्वजा समेत मारकर राजा अंगके सन्मुखगया १५ फिर नकुलनेसहदेवको रोककर यमराजके दंडकेसमान तीन नाराचोंसे हाथी को औरसौसे उस राजा अंगको घायल करके व्यथित किया १६ फिरराजा अंगने सूर्यकी किरणोंके समान प्रकाशित आठ सौ तोमरों को नकुलके ऊपर फेंका तब नकुलने प्रत्येक तोमरके

तीन २ खंडकरदिये १७ और अर्द्धचंद्र सेउसके शिरको काटा तब वह मृतक होकर अपने हाथी समेत गिरपड़ा १८ फिर हाथीकी शिक्षा में कुशल इस अंगदेशी राजपुत्रके मरनेपर अत्यंत क्रोधमें भरे हुये अंगदेशी हाथीसवार अपने हाथियों समेत नकुलके सन्मुख गये १६ चलायमान सुन्दर मुखरखने वाली पताका और सुवर्ण के कवचधारी हाथियों समेत नकुलके पीड़ा करने के अभिलाषी होकर अत्यंत प्रकाशमान पर्वतोंके समान उसके सन्मुख गये २० फिर वह मारने के आकांक्षी मेकल उत्कल कलिंग निषद ताम्र लिप्तक देशी युद्धकर्त्ता बाण और तोमरोंकी वर्षा करतेहुये सन्मुखगये २१ जैसे बादलमें सूर्य ढकजाताहै इसीप्रकार हाथियोंसे ढकेहुये नकुलको देखकर अत्यंत क्रोधयुक्त पांडव पांचाल युद्ध करने को उपस्थित हुये २२ उसके पीछे हजारों तोमर और बाणोंकी वर्षा करनेवाले रथियोंका वह युद्ध हाथियों के साथहुआ २३ जिसमें अत्यंत घायल हाथियोंके कुंभ और नानासमांग वा दांत वा आभूषणोंको नाराचोंसे काटा २४ सहदेवने उनहाथियोंमेंसेबहुतबड़े २ हाथियोंकोमारा वहसब मरेहुयेहाथी अपने२ सवारों समेतपृथ्वीपर गिरपड़े २५ फिर नकुलनेबड़े उपायसे उत्तम धनुषको चढ़ाकर सीधे चलनेवाले बाणोंसे हाथियोंको मारा २६ इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक नाम क्षत्री और शिखंडीने बाणोंकी वर्षासे बड़े २ हाथियोंको व्यथित किया २७ वह शत्रुओं के पर्वताकार हाथी पांडवी युद्धकर्त्ता रूपी बादलोंकी बाणरूप वर्षा सेऐसेगिरपड़े जैसे कि वज्रोंकी वर्षासे पर्वत गिरतेहैं २८ इसप्रकारसे उन पांडवों के हाथी और रथियोंने आपके हाथियोंकोमारकरसेनाकोऐसेभागता देखा जैसे कि टूटा किनारा भागती हुई नदीको देखता है २६ पांडवोंकीसेना के मनुष्य उससेनाको छिन्न भिन्न करके कर्णके सन्मुख गये ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिविमिश्रयुद्धेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

——*——

चौबीसवां अध्याय ॥

संजयबोले हेमहाराज भाई दुश्शासन उस आपकी सेनाकेनाश करनेवाले क्रोधयुक्त भाईसहदेव के सन्मुखगया १ वहां महायुद्ध में भिड़हुये उन दोनों को देखकर सिंहनाद किये और डुपट्टोंको फिराया इसके पीछे क्रोधयुक्त आपके पुत्रके तीन बाणोंसे महाबली सहदेव छातीपर घायल हुआ २।३ हे राजा तबतो क्रोध करके सहदेवने नाराचसेआपके पुत्रको छेदकर सत्तरबाणोंसे पीड़ामान किया४ और तीन बाणोंसे सारथी को हे राजा इसके पीछे दुश्शासन ने उसबड़े युद्धमें धनुषकोकाटकर सहदेवकी दोनों भुजाओंको तिहत्तर बाणोंसे छातीसमेत घायलकिया५ फिर अत्यंत क्रोधयुक्त सहदेवने उस महायुद्धमें खड्ग को लेकर अत्यंत शीघ्रता से घुमाकरआपके पुत्रके ऊपर छोड़ा ६ वह बड़ा खड्ग उसके प्रत्यंचा समेत धनुषको काटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि आकाशसे सर्प गिरताहै ७ उसके पीछे प्रतापवान् सहदेवने दूसरे धनुषको लेकर फिर नाश करने वाले बाणको दुश्शासनके ऊपरफेंका ८ तब उसकौरव दुश्शासनने यमदंड के समान प्रकाशमान आतेहुये बाणको अपने तीक्ष्ण धारवाले खड्ग से दो टुकड़े करदिया इसके पीछे शीघ्रता करने वाले महापराक्रमी सहदेवने उस तीक्ष्ण धार खड्ग को घुमाकर और दूसरे धनुषको लेकर बाणको हाथमेंलिया ९।१० फिर युद्धमें हंसतेहुये सहदेवने उस अकस्मात् आतेहुये खड्गको तीक्ष्णबाणों से गिराया ११ हे भरतवंशी इसके पीछे उस महायुद्ध में आप के पुत्रने शीघ्रही चौंसठ बाणोंको सहदेव के रथपर चलाया १२ उन वेगसे आतेहुये बाणोंको देखकर सहदेवने पांचबाणोंसे काटा १३ फिर उसने आपके पुत्रके चलाये हुये वेगवान् बाणोंको हटाकर युद्धमें उसके ऊपर बहुतसे बाणोंकी वर्षाकरी १४ आपका पुत्रभी उन प्रत्येक बाणको तीन बाणोंसे काटकर पृथ्वीको फाड़ताहुआबड़े शब्दोंसे गर्जा १५ हेराजा इसके पीछे दुश्शासनने युद्ध में सहदेव

को घायलकरके उसके सारथीको नौ बाणों से घायल किया १६ हे महाराज इसकेपीछे क्रोधयुक्त प्रतापी सहदेवने मृत्युकाल और यमराजके समान घोर बाणको हाथमें लिया १७ और अपने पराक्रम से धनुषको खैंचकर आपके पुत्रपर फेंका वहबाण उसको छेदके कवचको काटकर पृथ्वी में ऐसे समागया १८ जैसे कि बामीमें सर्प समाजाताहै हेमहाराज इसके पीछे आपका महारथी पुत्रअचेत होगया १९ अत्यंत भयानक तीक्ष्ण बाण से घायल रथको चलाता हुआ सारथी उसको अचेत जानकर शीघ्रही दूर लेगया २० पांडुनन्दनने इस कौरवको विजयकरके और दुर्योधनको सेनाको देखकर चारों ओरसे मर्दन किया २१ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र जैसेकि मनुष्य क्रोधयुक्त होकर चेंटियोंकी पंक्तियों को मर्दन करताहै उसीप्रकार उसके हाथ वह कौरवी सेना मर्दन करी गई २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिदुश्शासनयुद्धेनामचतुर्विंशोऽध्यायः२४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हेराजा सूर्य्यके पुत्र कर्णने क्रोधसे युद्धसे सेनाको भगानेवाले वेगवान् नकुलको रोका १ उसके पीछे हंसताहुआ नकुल कर्णसे यह बोला कि बड़े दुःखकीबातहै कि देवताओंने बहुत कालके पीछे तुमको अपनी कृपा दृष्टिसे देखा हेपापी युद्धमें नेत्रोंके सन्मुख आयेहुये तुमको देखा २ तूही शत्रुता उपद्रव और अनर्थोंका मूलहै ३ तेरेही अपराधसे कौरव परस्पर सन्मुख होकर नाशवान् होगये अब मैं युद्धमें तुमको मारकर कृतकृत्य होकर तापसे निवृत्तहूं इसप्रकार के वचनोंका सुनकर कर्णने नकुलको उत्तरदिया ४ कि अतिरथीरूप धनुषधारी राजकुमारके योग्यहै हे वीर तू मुझपर प्रहार कर मैं तेरेपौरुष को देखूंगा हे शूर प्रथम युद्धमें अपने शूरताकोदिखलाकर फिर अपनी प्रशंसा करनेको योग्यहै ५ ६ हेतात शूरवीर युद्धमें कुछ न कहकर सामर्थ्यसे लड़तेहैं तू अपनी सामर्थ्यसे मेरे साथ युद्धकर मैं तेरे अभिमान को दूर करूंगा ७ कर्णने यहकहकर

शीघ्रही नकुल पर प्रहार किया अर्थात् युद्धमें इसको तिहत्तर बाणों से घायल किया ८ हे भरतवंशी इसके पीछे कर्णके हाथसे घायल नकुलनेसर्पके समान असीबाणोंसे सूर्य्यके पुत्रको छेदा ९ कर्णने सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसके धनुषको काटकर तीस बाणोंसे नकुलको पीड़ित किया १० उन बाणोंनेउस के कवच को काटकर रुधिर को ऐसे पान किया जैसे कि विषधर सर्प पृथ्वी को छेदकर जलको पीताहै ११ इसके पीछे नकुलनेसुवर्ण पृष्ठवाले असह्य दूसरे धनुषको लेकर कर्णको सत्तर बाणसे और सारथीको तीनबाण से घायल किया १२ फिर क्रोधयुक्त शत्रुके बीरों केमारने वाले नकुलनेबड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे कर्णके धनुषको काटा १३ फिर हंसतेहुये बीर नकुलनेइस टूटे धनुषवाले सब लोकके महारथी कर्णको तीन सौ शायकों से घायल किया १४ हे श्रेष्ठ तबतो नकुलके हाथसे पीड़ामानकर्णको देखकररथियोंने देवताओं समेत बड़ाभारी आश्चर्य किया १५ तब सूर्य्यके पुत्र कर्णने दूसरे धनुषको लेकर नकुलको पांचबाणोंसे जत्रुस्थानपर घायल किया १६ वहां जत्रुस्थानमें नियत होनेवालेबाणोंसे नकुल ऐसा शोभायमान हुआ १७ जैसे कि संसारमें प्रकाशकरताहुआ सूर्य्यअपनी किरणोंसे शोभायमान होताहै हे श्रेष्ठ इसके पीछे नकुलने शीघ्रगामी सात बाणोंसे कर्णको छेदकर फिर उसके धनुषकी कोटिको काटा १८ इसकेपीछे उसनेबड़े वेगवान् दूसरे धनुष को लेकर युद्धमें बाणों करके नकुल की दिशाओंको ढकदिया १९ अकस्मात् कर्णके बाणोंसे घिरेहुये उस महारथीनेअपनेबाणोंसेही कर्णके बाणोंको काटा २० इसके पीछे आकाशमें बाणोंका जाल फैलाहुआ ऐसा दिखाई दिया जिस प्रकार पटबीजनोंके समूहोंसे व्याप्त आकाशहोताहै २१ हेराजा उन छोड़ेहुये सैकड़ों बाणोंसे नकुलऐसा ढकगया जैसे कि शलभाओंके समूहोंसे कोई ढक जाताहै २२ वह सुवर्णसे चित्रित वारंवारगिरते हुये पंक्ति रूप बाण ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि पंक्तिरूप क्रौंच नाम पक्षीहोते हैं २३ बाणजालसे आकाशको व्याप्त होजाने और

सूर्य्यके ढकजाने से कोई अन्तरिक्षगामीजीव पृथ्वीपरनहीं गिरा २४ बाणोंके समूहोंसे चारों ओरके मार्गोंकेरुकजाने पर दोनों महात्मा उदयमान काल सूर्य्यके समान शोभायमान हुये २५ हे राजेन्द्र कर्णके धनुषसे गिरेहुये बाणोंकेसमूहोंसेघायल दुःखसे दुःखित और अत्यन्त पीड़ामान सब सोमक पृथक् २ होगये २६ इसी प्रकार नकुलके बाणोंसे घायल आपकी सेनाभी दिशाओंमें ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे कि वायुके वेगसे बादलोंके समूह तिर्रबिर्र होजातेहैं २७ तब उन दोनोंके दिव्य और बड़े बाणोंसे घायल वह दोनों सेना बाणोंकी आधिक्यताको विचारकर चित्रलिखी सीखड़ी रहगईं २८ कर्ण और नकुलके बाणोंसे उन मनुष्योंकेसमूहोंके हटजाने पर उन दोनों महात्माओंनेबाणोंकी वर्षासे परस्पर में घायल किया २९ परस्पर मारनेके अभिलाषी वह दोनोंअकस्मात् सेनाके मस्तकपर दिव्य अस्त्रोंके दिखानेवाले और सेनाओं के ढकने वाले हुये ३० नकुलके छोड़े कंकपक्षसे जटित बाणकर्णको ढककर आकाशमेंनियत हुये ३१ इसी प्रकार कर्णके चलायेहुये बाण नकुलको ढककर आकाशमें नियतहुये ३२ हेराजा बादलोंसे ढकेहुये सूर्य्य और चन्द्रमा के समान बाणपिंजरमें प्रविष्ट होकर वह दोनों किसीको दिखाई नहीं दिये ३३ इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त कर्णने शरीरको बड़ा घोर करके ३४ बाणोंकी वर्षासे नकुलको चारोंओरसे ढकदियाहे महाराज कर्णके बाणोंसे ढकेहुये उस नकुलने ऐसे पीड़ाको नहीं माना जैसे कि बादलोंसे ढकाहुआ सूर्य्यपीड़ाको नहीं मानताहै ३५ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसकेपीछे कर्णने हंसकरयुद्धमें हजारों बाणजालोंको उत्पन्नकिया ३६ उस महात्माकेबाणोंसेसब संसार छायामानहुआ और गिरतेहुये उत्तमबाणोंसे अभ्रकेसमान छाया उत्पन्नहोगई ३७ हे महाराज इसकेपीछे हंसते हुये कर्णने महात्मानकुलके धनुषको काटकर सारथीको रथकी नीड़से गिरादिया ३८ हेभरतवंशी इसके अनन्तर तीक्ष्णधार चारबाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको शीघ्रहीमार कर यमपुरको भेजा ३९ इसके पीछे फिर तीक्ष्ण बाणोंसे इसकेउस

दिव्यरथ पताका और चक्रके रक्षकों समेत गदा और खड्गको भी तिलके समान खंड२ करदिया ४० और सूर्य्य चन्द्रमाके चित्रवाली ढाल और अन्य सब प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंकोभी काटडाला हे राजा वह रथ और कवचसे बिहीन शीघ्रही रथसे उतरकर ४१ परिघको लेकर नियतहुआ तब कर्णने उसके उठाये हुये उस महाघोरपरिघ को ४२ अत्यन्त तीक्ष्ण भारबाहक बाणोंसे तोड़डाला तबतो कर्ण- ने उसको शस्त्रहीन देखकर टेढ़ेपर्बवाले ४३ अनेक बाणोंसे उसको घायल किया परन्तु इसको अधिक पीड़ामान नहींकिया युद्धमें उस शस्त्रज्ञ पराक्रमी कर्णसे घायल ४४ होकर महाब्याकुलनकुलअक- स्मात् भागा तबतो बारंबार हंसतेहुये कर्णने उसके पासजाकर४५ अपनी प्रत्यंचा समेत धनुषको उसके कण्ठमें डालदिया इसकेपीछे वह नकुल कण्ठमें लगेहुये उस धनुषसे ऐसाशोभायमान हुआ ४६ जैसेकि आकाशमें चन्द्रमा अपने मंडलसे युक्त होताहै और जैसे कि श्याममेघ इन्द्र धनुषसे शोभित होताहै ४७ इसके पीछेकर्णने कहाकि तुमने मिथ्या कहाथा अब बारंबार घायल हुये प्रसन्नचित्त होकर फिर कहो ४८ हेपराक्रमी पांडव तुम कौरवोंके साथमतलड़ो हेतात अपने समानवालों से लड़ो हेपांडव लज्जा मतकरो ४९ हे माद्रीके पुत्र घरको जावो अथवा जहां श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं वहां जावो हे महाराज ऐसा कहकर उसको छोड़ दिया ५० तब उस धर्मज्ञ शूरबीरने मारनेके योग्यको नहींमारा हेराजा कुन्तीके बचन को स्मरण करके उसको छोड़दिया५१ फिर धनुषधारी कर्णसे छोड़ा हुआ नकुल लज्जा युक्त शीघ्रही युधिष्ठिरके रथके पासगया ५२ कर्णसे अत्यन्त संतप्तकियाहुआ घटमें बंदहुये सर्पकेसमान दुःखसे दुःखी बारंबार श्वास लेताहुआ रथके ऊपरभी सवारहुआ५३ कर्ण भी उसको बिजय करके शीघ्रही बड़ा पताका वाले चन्द्रवर्ण घोड़े रखनेवाले रथकी सवारीसे पांचालोंकेसन्मुख गया ५४ वहांपांचा लोंके रथसमूहों पर जातेहुये सेनापतिको देखकर पांडवों में बड़ा शब्द हुआ ५५ हे महाराज महाचक्रके समान घूमते हुये कर्णने

मध्याह्नके समय शूरवीरों का नाशकिया ५६ उस समय हे श्रेष्ठ जनाधिप वहांपर हमने टूटीहुई ध्वजा पताका फूटी आंखके मृतक घोड़े और सारथियों समेत कितनेहीरथोंसे ५७ हटेहुये पांचालोंके रथ समूहों को देखा वहां भ्रांतियुक्त हाथी और रथ जहां तहां ऐसे घूमतेथे ५८ जैसेकि महावनमें दावानलसे जलेहुयेहाथीहोतेहैं टूटे हुये कुंभरुधिरसेभरे खण्डितहाथ ५९ अंगभंग आदि और कोईपूंछ कटेहुयेहाथीमहात्माके हाथसे घायलटूटेहुये बादलोंकेसमान गिर पड़े ६० नाराचबाण और तोमरोंसे भयभीत हाथी उसके सन्मुख ऐसेगये जैसे कि शलभानाम पक्षी अग्नि के सन्मुख जाते हैं ६१ जल डालनेवालेपर्वतोंकी समान अंगोंसे रुधिरकी रक्षा करतेहुये अन्य बड़े २ हाथी शब्द करतेहुये हटपड़े ६२ वहांहमने उरःछिद वाले बालबन्धोंसेवियुक्तघोड़ोंको सुवर्णचांदी और कांसेके भूषणोंसे पृथक् ६३ और अन्यभूषण और लगामोंकेबिना चामर जीनपोश और गिरेहुये तूणीर ६४ और युद्धमें शोभादेनेवाले शूरवीर सवारों सहित युद्धभूमि में घूमते हुओंको देखा ६५ हेभरतवंशी हमने प्रास खड्ग और दुधारे खड्गसे रहित लोहेके कवच और दिस्ता-नोंके धारण करनेवाले अश्वारूढ़ोंको देखा ६६ और मरे वा मरने वाले अथवा कांपतेहुये नाना प्रकारके अंगोंसे रहित युद्ध करने वालोंकोभी जहां तहां देखा ६७ हमने रथियों के मरनेपर सुव-र्णसे जटित शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त शीघ्रघूमतेहुयेरथोंकोदेखा ६८ हे भरतवंशी हमने अक्ष कूबर और पायेवाले पताका ध्वजासे र-हितकितनेही अन्य रथोंको देखा ६९ वहां कर्णके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल मृतकरूप जहांतहां दौड़नेवाले रथियोंको देखा ७० इसीप्र-कार शस्त्रोंसे खाली बाणरखनेवाले बहुतसे मृतकों को देखा और तारका जालोंसे ढकेहुये उत्तम कवचोंसे शोभायमान ७१ नाना प्रकारकी विचित्र पताकाओंसे अलंकृत चारों ओरसे दौड़ने वाले हाथियोंकोदेखा ७२ इसीप्रकार चारोंओरको कर्णकेधनुषसे निकले हुये बाणोंसे टूटेहुये शिर भुजा और जंघाओंको देखा ७३ कर्णके

बाणोंसे घायल और तेजबाणोंसेलड़नेवालेयुद्धकर्त्ताओं कावड़ाभयानक दुःख बर्त्तमानहुआ ७४ युद्धमें कर्णके हाथसे घायलवहसंजय उसके सन्मुख ऐसे जातेथे जैसकि अग्निके सन्मुखपतंग जाते हैं ७५ प्रलयकालकी अग्निके समान जहांतहां सेनाओंकेभस्मकरने वाले उस महारथी कर्णको क्षत्रियोंने त्यागकिया ७६ जोपांचालोंके महारथी बीरलोग मरनेसे बाकी रहेथे उन शीघ्रगामी पृथक् २ होनेवाले महारथियोंके पीछेसे बाणोंको छोड़ताहुआ कर्ण सन्मुख दौड़ा ७७ उस महाबली सूतपुत्रने उन टूटेकवच ध्वजावालेदुःखी बीरोंको बाणोंसे ऐसे संतप्त किया ७८ जैसे कि मध्याह्नके समय सूर्य्य जीवधारियों को तपाताहै ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णयुद्धेपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय॥

संजय बोलेकि आपके पुत्र युयुत्सुकीसेनाकेभगानेवाले उलूकके सन्मुख गया और तिष्ठतिष्ठ इस बचनकोकहा १ हेराजाउसकेपीछे युयुत्सूने बज्रकी समान तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे महाबली उलूक को घायल किया २ फिर क्रोधयुक्त उलूकने युद्ध में आपके पुत्रके धनुषकोक्षुरप्रसे काटकर क्षुरणनाम बाणसे उसको घायलकिया ३ फिरलालनेत्र करनेवाले युयुत्सूने उसटूटे धनुषको डालकर दूसरे बड़े वेगवान् उत्तम धनुषको हाथमें लिया ४ उसके पीछे शकुनिके पुत्रको सात बाणोंसे और तीनबाणोंसे सारथीको घायल करके बारंबार छेदा ५ फिर उलूकने उसको सुवर्ण से चित्रित बीसबाणों से घायल करके महाक्रोधमें भरकर उसकी सुनहरी ध्वजाको काटा ६ हे राजा वह टूटी हुई बड़ीभारी सुवर्ण की ध्वजा युयुत्सूके सन्मुख गिरपड़ी ७ फिर क्रोधसे मूर्च्छित युयुत्सूने ध्वजाको टूटीहुई देखकर पांच बाणों से उलूक को छातीपर घायल किया हेश्रेष्ठ राजाफिर उलूकने युद्धमें तेलसे स्वच्छ किये हुये भल्लसे उसके सारथी के शिरको काटा ८।९ तब युयुत्सूके सारथी का वह कटाहुआ शिर पृथ्वीपर ऐसा गिरा जैसे अपूर्व्व तारा आकाशसे पृथ्वीपर गिरता

है १० चारों घोड़ोंकोमारा और उसको पांचवाणोंसे भेदा फिर इस पराक्रमीके हाथसे घायल वह युयुत्सु दूसरे रथपर चलागया ११ हे राजा युद्धमें उलूक उसको विजयकरके शीघ्रतासे तीक्ष्णवाणोंको फेंकता पांचालों और सृंजियोंको मारताहुआ सृंजियोंके सन्मुख गया १२ हे महाराज भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित आपके पुत्र श्रुतकर्मा ने अर्द्धनिमेष मारनेमेंही शतानीक को घोड़े रथ और सारथीसे रहित करदिया १३ फिर मृतक घोड़ेवाले रथ पर नियत अत्यन्त क्रोधयुक्त शतानीकने आपकेपुत्रके ऊपरगदाको फेंका १४ वह गदा रथ घोड़े सारथी समेत रथको भस्मकर कवच को फाड़ती हुई शीघ्र पृथ्वीपर गिरपड़ी १५ रथसे विहीन परस्परमें देखने वाले कौरवोंकी कीर्त्तिके बढ़ानेवाले दोनों वीर युद्धमें हटगये १६ फिर भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित आपका पुत्र रथपर सवार हुआ और शीघ्रता करनेवाला शतानीकभी प्रतिविन्ध्य के रथपर गया १७ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनीने तीक्ष्ण धारवाले वाणोंसे सुतसोमको ऐसे कंपायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्व्वत को कंपित नहीं करसक्ता १८ हे भरतवंशी सुतसोमने पिताके बड़े शत्रु शकुनीको देखकर बहुत हजारों वाणोंसे ढकदिया १९ तेज अस्त्र और मित्रकेअर्थ लड़नेवाले विजयसे शोभायमान शकुनीने शीघ्रही दूसरे वाणोंसे उन वाणोंको काटा २० और क्रोधयुक्त होकर युद्धमें उन वाणोंको भी तीक्ष्ण धारवाले वाणोंसे रोककर तीन वाणोंसे सुतसोमको घायल किया २१ हे महाराज आपके सालेने वाणोंसे उसके घोड़े ध्वजा और सारथीको तिलके समान खंड२ किया इस हेतुसे सब मनुष्य बड़े शब्दसे पुकारे २२ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वह मृतक घोड़े और टूटीध्वजावाला रथसे रहितहोकर उत्तमरथको लेकर रथसे पृथ्वीपर खड़ाहुआ २३ सुनहरी पुंख वाले तीक्ष्ण धार वाले वाणों को छोड़ता हुआ युद्ध में आपके सालेके उस रथको ढक दिया २४ वह महारथी शकुनी शलभनाम पक्षीके समूहोंकी समान रथके समीप वर्त्तमानवाणोंके

समूहों को देखकर पीड़ामान नहीं हुआ २५ और बड़े यशस्वी ने अपने बाणोंके समूहों से उसके बाणोंको मथ डाला उस स्थान पर युद्ध करनेवाले आकाश बासी सिद्धभी प्रसन्न हुये २६ सुतसोमके उस अद्भुत और श्रद्धाके योग्य कर्मको देखकर प्रसन्न हुये और बहुतसे पदाती और रथ सवार शकुनी के साथ युद्ध करने वाले हुये २७ हेराजा तीक्ष्ण वा बड़े वेगवान् टेढ़े पर्व्ववाले भल्लोंसे उसके धनुष और सब तूणीरोंको तोड़ा २८ फिर वह टूटे धनुष रथ से बिहीन वैडूर्य्य और नील कमल के वर्ण हाथीदांतके मूठ रखने वाले खड्गको उठाकर बड़ी ध्वनिसे गर्जा २९ उसके पीछे बुद्धिमान् सुतसोमके घुमाये हुये निर्मल आकाश के समान उस खड्ग को काल दण्डके समान समझा ३० हे महाराज वह शिक्षायुक्त पराक्रमी खड्गधारी एकाएकी हजारों प्रकारसे चौदह मंडलों को घूमा ३१ उनके नाम भ्रांत, उद्भ्रांत, आविद्ध, आप्लुत, बिप्लुत सृतसंपात, समुदीर्ण इन मंडलों को युद्धमेंदिखाया यह सातमंडल लोम बिलोम के बिभाग से द्विगुणित होकर चौदह होजातेहैं ३२ फिर उसके पीछे पराक्रमी शकुनी ने बाणोंको उसके ऊपर फेंका उसने उनआते हुये बाणोंको उत्तम खड्ग से काटा ३३ हेमहाराज इसके अनन्तर क्रोध युक्त शकुनी ने फिर भी सर्पके बिषके समान बाणों को सुतसोमके ऊपर फेंका ३४ युद्धमें गरुड़जी के समान पराक्रमी सुतसोमने अपनी हस्त लाघवताको दिखाते हुयेखड्गकी शिक्षाके पराक्रम से उन बाणोंको काटा ३५ हेराजा तब दायेंबायें मंडलोंके घूमनेवाले उस सुतसोमके प्रकाशमान खड्ग को बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे काटा और टुकाहुआ खड्ग एकबारही पृथ्वीपरपड़ा और उसश्रेष्ठ खड्गका आधाभाग उसकेहाथमें नियतरहा ३६।३७ महारथी सुतसोमने खड्ग को टूटा जानकर और छःचरण हटकर फिर उस आधे खड्गको प्रहार किया ३८ वह सुवर्ण और हीरोंसे अलंकृत खड्ग उस महात्माकेडोरी समेत धनुषको काटकर शीघ्रही पृथ्वी पर गिरपड़ा ३९ फिर सुतसोम श्रुतिकीर्त्ति के बड़े रथपर

चलागया और शकुनी भी बड़े कष्टसे विजय होने वाले दूसरे घोर धनुष को लेकर ४० शत्रुओंके बहुत से समूहोंको मारता हुआ पांडवी सेना के सन्मुख गया हेराजा युद्धमें निर्भय के समान घूमने वाले शकुनी को देखकर पांडवों के बड़े शब्द हुये महात्मा शकुनी के हाथसे वह अहंकारी शस्त्रोंकी धारण करने वाली सेना भागती हुई दृष्टपड़ी जैसेकिदेवराजइन्द्रने दैत्योंकी सेनाको मर्द्दन कियाइसी प्रकार शकुनीनेभी पांडवोंकी सेनाका नाश किया४१। ४२।४३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसुनसोमसौबलयुद्धेषड्विंशोऽध्यायः २६।

सत्ताईसवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजा कृपाचार्य्यने युद्धमें धृष्टद्युम्नको ऐसे रोका जैसेकि बनमें हाथीको सिंहरोकताहै १ हे भरतवंशी वहां उसपराक्रमी गौतम कृपाचार्य्यजीसे रुकाहुआ धृष्टद्युम्न एकचरण चलने कोभी समर्थ नहींहुआ २ कृपाचार्य्यके रथको धृष्टद्युम्न के रथके समीप देखकर सबजीवमात्र भयभीत होकर नाशको माननेलगे ३ वहांपर चित्तसे उदास होकररथी और अश्वारूढ़ कहनेलगे कि निश्चय करके द्रोणाचार्य्य के मरनेसे द्विपादों में श्रेष्ठ ४ बड़े तेजस्वी दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले बड़े बुद्धिमान् शार्दूल रूप कृपाचार्य्य अत्यन्त क्रोधयुक्तहैं अब कृपाचार्य्यके हाथसे धृष्टद्युम्नकी कुशल ५ और इस सब सेनाकाभी भयसे निवृत्त होना और हमसब भागने वालोंकाभी इस ब्राह्मणसे बचना कठिन विदित होताहै ६ क्योंकि यह आचार्य्य रूप कालके समान दृष्ट पड़ताहै हेकृपाचार्य्य अब द्रोणाचार्य्यके मार्गपर चलेंगे ७ यह कृपाचार्य्य सदैव हस्तलाघव करके युद्धमें विजयका पानेवाला अस्त्रज्ञ पराक्रमी होकर क्रोधयुक्त है ८ अबधृष्टद्युम्न युद्धमें मुखको फेरनेवाला दिखाई देता हेमहाराजयहां उनदोनों के सन्मुख होनेमें आपके पुत्रोंके नाना प्रकारके शब्द दूसरों के साथमें कहे हुये सुनेगये ९ इसके पीछे शार्दूल कृपाचार्य्यने क्रोधसे बड़ी २ श्वासें लेकर १० सदैव चेष्टाकरनेवाले

धृष्टद्युम्नको सबअंगोंपर पीड़ामान किया फिरमहात्मा कृपाचार्य्य से घायल होकर बड़ेमोहमें ब्याकुल होके उसने युद्धमें ११ करने के योग्य कर्मको नहींजाना इसके पीछे सारथीने कहा हे धृष्टद्युम्न कुशलहै १२ मैंनेकहीं तेरेऐसे समयको नहींदेखाथा दैवयोगसेसब ओरमें तेरे मर्मस्थलों को लक्ष करके इस उत्तम ब्राह्मणके फेंकेहुये बाणतेरे मर्मोंके छेदनेवाले मर्मोंपर पड़े हैं जो तुमकहो तौ रथको शीघ्रहीऐसेलौटाऊं जैसेकि समुद्रसे नदीकेवेगको हटातेहैं १३।१४ मैं ब्राह्मणको अवध्य मानताहूं इसीसे तेरा पराक्रम नष्ट होगयाहै हे राजायह सारथीके बचनको सुनकर धृष्टद्युम्न बड़े धीरेपनेसे यहबचन बोला १५ हे तात मेराचित्त अचेत होताहै और अंगोंपर पसीना उत्पन्न होताहै और शरीरमेंकंप और रोमांच खड़े हैं १६ युद्धमें ब्राह्मणको त्यागकरके उधरको बड़ेधीरे २ चलजहांकिअर्जुन है हेसारथी अबयुद्धमेंअर्जुनको या भीमसेनको पाकर१७कुशलहोगी यहीमेरा दृढ़ बिश्वासहै हे महाराज इसके पीछेवह सारथी घोड़ोंको मारताहुआ १८ बड़ीशीघ्रता से वहांगया जहांबड़ाधनुर्द्धर भीमसेन आपकीसेनाके मनुष्योंसे युद्धकररहाथा हेश्रेष्ठतब गौतम कृपाचार्य्य धृष्टद्युम्नके रथको भागाहुआ देखकर १९ सैकड़ों बाणोंको छोड़ते हुये उसके पीछेगये और शत्रुके बिजय करनेवालेने बारंबार शंख को बजाया २० और धृष्टद्युम्नको ऐसे भयभीतकिया जैसेकि इन्द्र- ने नमुचिको भयभीत कियाथा फिर भीष्मजीके मृत्युरूप बिजयी शिखण्डीको २१ बारम्बार मंद मुसकान करतेहुये कृतवर्माने रोका तबतो शिखण्डीने भी हार्दिक्येंके महारथीको पाकर२२ तीक्ष्णधार वाले पांचबाणोंसे जत्रुस्थानपर घायलकिया फिर हंसतेहुये महार- थीकृतबर्माने साठबाणोंसे २३ शिखंडीको घायलकरके एकबाणसे उसके धनुषको काटा फिर पराक्रमी द्रुपदके पुत्रने दूसरे धनुष को लेकर २४ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कृतवर्मासे तिष्ठ २ ऐसाबचन कहा हेराजा इसके अनन्तर सुनहरी पुंखवाले नौबाणोंको उसके ऊपर चलाया २५ वहबाण उसके कवचपर लगकर गिरपड़े उन

निष्फल पृथ्वीपर गिरेहुये बाणोंको देखकर २६ अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रसे धनुषको काटा फिर टूटे धनुषवाले कृतवर्माको २७ शिखंडी ने क्रोधयुक्त होकर अस्सीबाणोंसे छाती और भुजापर घायलकिया तब अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्माने अंगोंसे ऐसे रुधिरकोडाला जैसे कि मटकेसे जल डालाजाताहै फिर रुधिरसे भराहुआ कृतवर्मा ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि वर्षासेधातु रखनेवालापर्वत होताहै इसकेपीछे प्रभु कृतवर्माने बाणसमेत धनुषको लेकर २८।२६।३० बाणोंकेसमूहोंसे शिखण्डीको स्कंधस्थानमें घायलकिया फिर शिखंडीस्कंध परलगेहुये बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि छोटी बड़ीशाखाओंसे बड़ावृक्ष शोभित होताहै ३१ वह दोनों परस्पर में अत्यन्त घायल और रुधिरमें भरेहुये ऐसे शोभितहुये ३२ जैसेकि परस्पर सींगोंसे घायलदो बैल होतेहैं परस्परमें मारनेकी इच्छा करनेवाले वहदोनोंमहारथी ३३ वहांहजारों मंडलोंकोघूमे हेमहाराज कृतवर्माने शिखंडीको ३४ तीक्ष्णधार सुनहरी पुंखवालेसत्तर बाणोंसे घायलकिया इसकेपीछे शीघ्रता युक्त युद्ध कर्ताओंमें श्रेष्ठ भोजवंशी कृतवर्माने युद्धमें ३५ मृत्युकारी घोरबाणको उसकेऊपर छोड़ा हेराजा वह शिखंडी उस बाणसे घायल होकर शीघ्र मूर्च्छा युक्त होगया ३६ और मूर्च्छासे अचेत होकर अकस्मात् ध्वजाकी यष्टीका आश्रयलिया और सारथी इस महारथीको शीघ्रही युद्धसे दूर लेगया ३७ इस शूरवीर शिखंडीके परास्त होनेपर कृतवर्माके बाणसे दुःखी बारंबार श्वास लेनेवाली चारों ओरसे घायल वह पांडवी सेना भागी ३८ । ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

संजय बोले हेमहाराज इसके पीछे अर्जुनने आपकी सेनाको पाकर चारों ओरसे छिन्न भिन्न ऐसा करदिया जैसेकि वायु रुई को तिर बिर कर देताहै १ तब त्रिगर्त, शिबी, शाल्व, संसप्तक और

कौरवोंकी नारायणीसेना उस के सन्मुख गई हेभरतवंशी सत्यसेन चन्द्रदेव,मित्रदेव,शत्रुंजय,सौश्रुति, चित्रसेन,मित्रबर्मा और बड़ेधनुर्द्धारी अपनेपुत्र भाइयों समेत राजात्रिगर्त्तने २।३।४ बाणोंके समूहों को छोड़ा और युद्धमें अर्जुन पर एकाएकी बाणोंकी वर्षा करते हुये सन्मुख वर्त्तमान होकर ऐसे बिलायमान होगये जैसेकि गरुड़को देखकर सर्प बिलायमान होतेहैं ५।६ हेमहाराज युद्धमें घायलउन युद्ध कर्त्ताओंने पांडवोंको ऐसे त्यागनहीं किया जैसे कि घायल हुये शलभ अग्नि को नहीं त्याग करते हैं ७ सुतसेनने तीन बाण से मित्रदेवने तिरेसठ बाणोंसे चन्द्रसेन ने सात बाणोंसे युद्धमें पांडवों को घायल किया ८ मित्रबर्माने तिहत्तर बाणोंसे सौश्रुतिने सात बाणोंसे शत्रुंजयने बीसबाणोंसे सुशर्माने नौबाणोंसे ६ घायल किया बहुतों के हाथसे घायल उस अर्जुनने इसक्रमसे युद्धमें उन राजाओंको घायल किया कि सौश्रुति को सातबाणोंसे सुतसेन को तीन बाणोंसे शत्रुंजयको बीस बाणोंसे चन्द्रसेनको आठबाणसे मित्रदेव को सौबाणसे श्रुतिसेन को तीन बाणसे १०।११ मित्रबर्माको नौबाणोंसे सुशर्माको आठबाण से घायल किया और राजा शत्रुंजयको बाणोंसे मारकर १२ सौश्रुतिके शिरको धड़ समेत शरीरसे जुदाकर दिया और शीघ्रही चन्द्रदेवको बाणोंके द्वारा यमलोकमें पहुंचाया १३ हेमहाराज इसी प्रकार उपाय करने वाले अन्य महारथियों को भी पांच २ बाणों से रोका १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतिसेनने युद्धमें श्रीकृष्णजी को लक्ष्यकर उनके ऊपर बड़े तोमरको फेंक सिंहनादसे गर्जा वह सुवर्ण दण्डवाला लोहेका तोमर महात्मा माधवजीको बाम भुजाको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १५।१६ उस समय उसबड़े युद्ध में घायल माधवजीके हाथ से चाबुक और घोड़ोंकी रस्सियां छूटगई १७ हेराजा तब कुन्तीके पुत्र अर्जुनने बासुदेवजीको अंगसे घायल देखकर बड़ा क्रोधकिया और श्रीकृष्णजीसे कहनेलगा १८ हेमहाबाहो प्रभु घोड़ोंकोसुतसेन केपास पहुंचाओ मैं उसको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे यमलोकमें

पहुंचाऊंगा १९ फिर श्रीकृष्णजीने पूर्वके समान दूसरे चाबुक और घोड़ोंकी डोरीको पकड़कर उनघोड़ोंको सुतसेनके रथपर चलाया २० कुन्तीकेपुत्र महारथी अर्जुनने श्रीकृष्णको घायल देखकर तीक्ष्ण बाणोंसे सुतसेन को रोककर २१ सेनाके मध्य में अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले भल्लोंसे उसराजाके कुंडलों समेतबड़े शिरको देहसे काटा २२ उसको मारकर तीक्ष्ण बाणोंसे मित्रवर्माको और मत्स्य दंत नाम तीक्ष्ण बाणोंसे उसके सारथी कोमारा २३ हेश्रेष्ठ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से संसप्तकों के हजारों समूहोंको गिराया २४ हेराजा उसकेपीछे उसमहारथी ने सुवर्ण पुंख वाले क्षुरप्रसे महात्मा मित्रसेन के शिरको काटा २५ और अत्यन्त क्रोधसे सुशर्माको जत्रुस्थानपर घायलकिया इसके पीछे क्रोधमें भरे दशोंदिशाओं को शब्दायमान करने वाले सब संसप्तकोंने अर्जुनको घेरकर शस्त्रों के समूहोंसे घायल किया इन्द्रके समान पराक्रमी बड़े साहसीसंसप्तकोंसेपीड़ामान महारथी अर्जुनने २६।२७ ऐन्द्र अस्त्रकोप्रकट किया हेराजा उस ऐन्द्रास्त्रसे हजारों बाण प्रकटहुये हेश्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र जहांतहां टूटीहुई ध्वजा धनुष और पताका समेत रथ बाजुओंके समेततूणीरों केबड़ेशब्दसुने गये२८।२९ युद्धमें गिरनेवाले अक्ष चक्रबाण डोर पोक्कर बरूथ और पार्षदोंके शब्द सुनेगये ३० गिरते हुये घोड़े प्रास दुधारा खड्ग गदापरिघ शक्ति तोमर और पट्टिशोंकेभी बड़े २ शब्दसुनेगये ३१ चक्र शतघ्नी और जंघाओं समेत भुजा कण्ठ सूत्र बाजूबन्द समेत केयूरोंके शब्द सुने गये ३२ हे भरतवंशी हार निष्क कवच छत्र व्यजन और शिरोंके मुकुटों समेत जहांतहां बड़ाभारी शब्द सुना गया सुन्दरकुंडल नेत्रवाले पूर्णचन्द्रमाकेसमान मुखोंसेयुक्त शिरोंके समूह पृथ्वीमें गिरेहुये ऐसे शोभायमानथे जैसे कि आकाशमंडलमें तारागण चमकतेहैं सुन्दरमाला वस्त्रालंकार आदि चंदनोंसे लिप्त ३३।३४।३५ मृतकोंके शरीर पृथ्वीपर गिरेहुये इटपड़े तब युद्धभूमि गन्धर्व नगरके समान घोररूप होगई ३६ वहसवपृथ्वी राजकुमार

और महाबली क्षत्री और पड़ेहुये हाथी घोड़ों से ३७ युद्ध में ऐसी दुर्गम होगई जैसेकि पर्वतोंके गिरनेसे होतीहै, वहांमहात्मा पांडव अर्जुनके रथका मार्ग नहींरहा३८ इससे हेराजाभल्लोंसे शत्रुओंको और घोड़े हाथियोंको मारतेहुये रथोंके पाये बड़े पीड़ितहोतेथे ३९ उन रुधिररूपकीच रखनेवाले युद्धमें उसघूमनेवाले अर्जुनके पीड़ामान पायोंको घोड़ोंने अच्छे प्रकारसे चलाया ४० मन और वायुके समान सदैव शीघ्रगामी वह घोड़े बहुत थकगये फिर धनुषधारी अर्जुनके हाथसे घायलवह सबसेना ४१ बहुधा मुखफेरकर सन्मुख नियत नहींहुई तब वह कुन्तीनन्दन अर्जुन युद्ध में संसप्तकों के बहुत समूहोंको विजय करके निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान होकर शोभायमान हुआ ४२।४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिमहासंसप्तकयुद्धे अष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय॥

संजय बोले हे महाराज निर्भय होनेवाले के समान आपराजा दुर्योधनने बहुत बाणोंके छोड़नेवाले युधिष्ठिरको रोका १ धर्मराज ने उस अकस्मात् आतेहुये आपके पुत्र महारथीको शीघ्र घायल करके तिष्ठ तिष्ठ इसबचनकोकहा २ फिर उसने तीक्ष्णधारवाले नौ बाणोंसे उसको घायल किया और अत्यंत क्रोध युक्त होकर उसने भल्लसे उसके सारथी को घायल किया ३ इसके पीछे युधिष्ठिरने सुनहरी पुंखवाले तेरह बाणों को दुर्योधनके ऊपर फेंका ४ फिर महारथीने चार बाणोंसे उसके चारोंघोड़ोंको मारकर पांचवें बाण से उसके सारथी का शिरशरीर से जुदाकरदिया ५ फिरछठे बाण से राजाकी ध्वजाको सातवें से धनुषको और आठवें से खड्ग को पृथ्वीपर गिराया फिर धर्मराजने पांचबाणों से राजा को अत्यन्त पीड़ित किया ६ तबवह उसमरे सारथी और घोड़ेवाले रथसे कूद कर बड़ी आपत्तियोंमेंफंसाहुआ आपकापुत्र पृथ्वीपरही नियतहुआ फिर कर्ण अश्वत्थामा और कृपाचार्य आदि उस आपत्ति में फंसेहुये

राजाको देखकर७।८ उसको चाहतेहुये अकस्मात् सन्मुख आनकर वर्त्तमान हुये फिरसवलोगोंने युधिष्ठिर को चारोंओरसेघेरकर युद्ध में पीछे २ चलेहेराजा इसके पीछे युद्धजारीहुआ औरउस महायुद्धमें हजारोंवाजेवजे९।१० और कलकला शब्दप्रकटहुआ जिसस्थानपर पांचाल कौरवोंसेयुद्धकर रहेथे ११ वहांमनुष्य मनुष्यसे हाथीहाथी से रथी रथियोंसे घोड़े घोड़ेसे अश्वसवार अश्वसवारसे १२ हे महाराजउसयुद्धमें देखनेकेयोग्य वुद्धिसेवाहर शस्त्रोंसे संयुक्तनानाप्रकार से उत्तम द्वन्द्व युद्ध हुये १३ युद्धमें वड़े वेगवान् परस्पर मारने के इच्छावान् उन सव सवारोंने अपूर्व तीव्रता पूर्वक चित्त रोचकयुद्ध किया १४ और युद्ध कर्त्ताओंकी वृत्तिमें नियत होकर उनलोगोंने युद्ध में परस्पर शस्त्रोंके प्रहारकिये और किसीदशामेंभी मुखको नमोड़ा १५ हेराजा वह युद्ध एकमुहूर्त्त पर्यन्त देखनेमें वड़ा प्यारा हुआ इसके अनन्तर उन्मत्तों के समान वेमर्याद युद्ध वर्त्तमान हुआ १६ तीक्ष्ण धारवाले वाणोंसे चीरते हुये रथीने हाथीको पाकर टेढ़ेपर्व्ववाले वाणोंसे मारकर यमपुरको भेजा १७ युद्धमें वहुतसे युद्धकर्त्ताओं को फेंकते हुये हाथियों ने जहां तहां घोड़ों को सन्मुख पाकर अत्यन्त भयकारक दशासे चीरडाला १८ वहुतसे घोड़े रखने वाले अश्वसवारोंने उत्तम घोड़ोंको घेरकर इधर उधर दौड़कर तलकेशब्द किये १९ इसकेपीछे अश्वसवारोंने उसदौड़ते और भागतेहुये हाथियोंकोवगल और पीठकी ओरसे घायल किया २० हेराजामतवाले हाथी वहुतसे घोड़ोंको भगाकर किसीने दांतोंसे किसीने पैरोंसे मलकर मारा २१ और क्रोधयुक्त होकर सवारों समेत घोड़ोंको दांतोंसे घायलकिया फिरदूसरे पराक्रमियोंने अत्यन्त वेगसे एकने एकको पकड़कर फेंक दिया २२ पदातियों के हाथ से इन्द्रियोंपर घायल हाथियोंने चारों ओरसे पीड़ा के घोर शब्द कियेऔर दशों दिशाओंको भागे २३ फिर उसमहायुद्धमें एकाएकी छोड़कर भागने वाले पदातियोंके आभूषणोंको झुककर उसयुद्ध भूमिमें से उठा लिया २४ विजय के चिह्न पानेवाले वड़े २ हाथियों के सवारोंने

हाथीको झुकाकर अपूर्व २ भूषणोंकोलेलिया औरउनको छेदा २५ वहांउन बड़ेवेगवान पराक्रमसे मदोन्मत्त पदातियोंने उन युद्धकरने वाले हाथियोंके सवारोंकोघेरकर मारा २६ बड़े युद्धमेंअच्छे शिक्षित हाथियोंकी सूंड़ोंसे आकाश को फेंकेहुये अन्ययुद्धकर्त्ता पृथ्वीपर गिरतेहुये दांतोंकी नोकोंसे अत्यन्त घायल हुये २७ कितनेही अकस्मात् पकड़करदांतोंसे मारेगये और कितनेही पदाती सेना के मध्य को पाकर २८ बड़े हाथियोंसे बारंबार उछाले हुये होकर घायल हुये और कितने ही युद्धमें पंखेके समान घुमा २ कर मारेगये २९ हे राजा कोई २ मनुष्य जो हाथियोंके सन्मुखथे उनके शरीर उस युद्धभूमिमें जहां तहां अत्यन्त घायल हुये ३० और कितनेहीहाथी प्रासतोमर और शक्तियोंसे दोनोंदांतोंके मध्यमें कुंभ और दन्तवेष्ठों पर कठिन घायल हुये ३१ बगलमें नियत बड़े भयानक रूप युद्ध कर्त्ताओंके हाथसे घायल होकर कितनेही हाथी रथ और रथके सवार बहां शरीरसे घायल होकर गिरपड़े ३२ उस महायुद्धमेंघोड़ों समेत सवारोंने ढाल बांधनेवाले पदातियोंकोबड़ी शीघ्रतासे अपने तोमरों से मर्दनकिया ३३ हे श्रेष्ठराजाधृतराष्ट्र जहां तहां हाथियों ने आभूषणोंसे अलंकृत कितनेही रथियों को पाकर और पकड़कर ३४ अकस्मात उस घोररूप युद्धमें फेंकदिया और नाराचोंसेघायल होकर बड़े २पराक्रमी हाथी भी जहां तहां गिरपड़े ३५ युद्धमेंशूरोंने शूरोंको पाकर मुष्टिकाओंसे व्यथितकिया ३६ और परस्पर शिरके बालों को पकड़कर एकने दूसरे को गिरादिया और घायलकिया और किसीने ध्वजाओंको उठाके पृथ्वीपर गिराकर ३७ चरणसे छातीको दबाकर फड़कते हुये शिरोंकोकाटा ३८ इसीप्रकार दूसरों नेभी शस्त्र को जीवते शरीर में प्रवेश करदिया हे भरतवंशी वहां युद्धकर्त्ताओं का मुष्टि युद्ध अच्छे प्रकारसे हुआ ३९ इसी प्रकार शिरकेबालों का पकड़ना उग्रहुआ और भुजाओं का महायुद्ध बड़ा भयकारी हुआ इसी रीतिसे एक दूसरे से भिड़े हुये युद्ध में नाना प्रकारके शस्त्रोंसे बहुतप्रकार से एकने एकके प्राणोंको हरणकिया

युद्धकर्त्ताओंके भिड़ने और संकुल युद्ध होनेपर ४०।४१ हजारों कबंध अर्थात् धड़ उठखड़े हुये और रुधिरसे भरेहुये शस्त्र कवच ४२ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि वड़े रंगोंसे रंगीनवस्त्र इनभयानक शस्त्रोंसे व्याकुल ४३ बड़े युद्धमें उन्मत्त गंगाकेसमान शब्दोंसे जगतको पूर्ण किया बाणोंसे पीड़ामान अपने और दूसरों के कुछ नहीं जानेगये ४४ विजयके लोभी राजालोग युद्ध करना चाहिये ऐसा समझकर युद्ध करतेहैं हेमहाराज भाइयोंने भाइयोंको और भिड़े हुये शत्रुओंको भी मारा ४५ दोनों सेना वीरोंसे व्याकुलयुद्ध में वर्त्तमानहुई हेराजा टूटेरथ और गिरायेहुये हाथियोंसे४६ और वहां पर पड़े हुये घोड़ोंसे वा गिराये हुये मनुष्योंसे वह पृथ्वी क्षण भरहीमें दुर्गम होगई ४७ हेराजा एकक्षणमेंही रुधिररूप जलकी बहनेवाली नदी होगई वहां कर्णने पांचलों को और अर्जुननेत्रिगर्त्त देशियोंको मारा ४८ और भीमसेनने कौरवलोगों को और हाथियोंकी सेनाको सब रीतिसे मारा इस रीतिसे दिनके तीसरे भागमें सूर्य्य के होतेहुये बड़े यशकी चाहने वाली कौरवी और पांडवी सेनाका यह बड़ा नाशहुआ ४९।५०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैंने बड़े असह्य और कठिन बहुत से दुःखोंको और पुत्रोंके नाशको तुझसे सुना १ हेसूत जैसेकि तू मुझसे कहताहै और जैसे युद्ध वर्त्तमानहुआ वैसे नहींहै यह मुझकोअपनी बुद्धिसे दृढ़ विश्वास है २ वहां महारथी दुर्य्योधन विरथ कियागया फिर धर्मपुत्रने किसरीति से उससे युद्ध किया ३ उसके पीछे फिर तीसरी वार रोम हर्षण करनेवाला युद्ध कैसे हुआ हे संजय उसको मूल समेत मुझसे वर्णन कर ४ संजय बोला हेराजासेनाके भिड़ने वा विभागियों के घायल होने पर विषैले सर्पके समान क्रोधयुक्त आपके पुत्र दुर्य्योधन ने दूसरे रथ पर सवार होकर धर्म

राज युधिष्ठिर को देखकर सारथी से कहा कि शीघ्रता पूर्ब्बक मुझ को वहींपहुंचा जहां पर पांडव लोग हैं ५ । ६ । ७ वह राजा युधिष्ठिर कवच और छत्र धारणकिये हुये शोभाय मानहै राजाकी आज्ञा पातेही सारथीने उसके उत्तम रथको ८ युद्ध में युधिष्ठिर के सन्मुख पहुंचाया उसके पीछे मतवाले हाथी की समान युधिष्ठिर ने सारथी को आज्ञा करी कि जहां दुर्य्योधन है वहीं चल वह रथियों में श्रेष्ठ शूरबीर दोनों भाई परस्पर में सन्मुख हुये ६ । १० उन क्रोध युक्त युद्ध दुर्म्मद महाधनुषधारी दोनों बीरोंने युद्धमें परस्पर बाणों की बर्षाकरी ११ तदनन्तर राजा दुर्य्योधनने युद्ध में तीक्ष्णधार वाले भल्लसे उस धर्माभ्यासी युधिष्ठिर के धनुषको काटा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने उस अपने अपमान को नहीं सहा इसहेतु से क्रोधयुक्त लालनेत्र होकर दूसरे धनुष को लेके सेना मुखपर दुर्य्योधन की ध्वजा और धनुष को काटा १२ । १३ । १४ फिर उसने भी दूसरे धनुषको लेकर युधिष्ठिर को वहुत घायलकिया तबतो उन अत्यन्त क्रोधयुक्तोंने परस्पर में शस्त्रोंकी बर्षाकरी १५ सिंहोंके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बैलोंकी समानगर्जने बोलेदोनोंने विजयाभिलाषी होकर परस्पर में घायल किया १६ फिरवहदोनों महारथी अवकाशको ढूंढ़ते हुये फिरने लगे इसके पीछे कर्णपर्य्यन्तखेंचे हुये बाणोंसे घायल दोनों १७ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि फूले हुये किंशुक के वृक्ष शोभित होतेहैं इसके पीछे बारंबार सिंहनादों को करते १८ उन दोनों नरोत्तमोंने उस बड़े युद्धमें तल धनुष और शंखों के शब्दोंको किया १६ हेराजा उन दोनों ने परस्पर में एकने एकको बहुत पीड़ामान किया फिर क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने आपके पुत्र को २० बज्रके समान वेगवान महाअसह्य तीनबाणों से छाती पर घायल कियाफिर राजा दुर्य्योधनने सुनहरी पुंख युक्त तीक्ष्ण धारवाले पांचबाणोंसे शीघ्रही उसको घायलकिया २१ इसकेपीछे राजा दुर्य्योधनने तीक्ष्ण बड़ीभारी उल्कारूप लोहेकीशक्ती को फेंका २२ उस अकस्मात आतीहुई शक्तिको देखकर धर्मपुत्र युधिष्ठिरने तीन

तीक्ष्ण बाणोंसे काटा और उसकोभी पांचबाणोंसे घायलकिया २३ इसकेपीछे सुनहरी दंडवाली महाशब्द करनेवाली वहशक्ति गिर-पड़ी और अग्नि रूपबड़ी उल्का के समान गिरकर शोभायमान हुई २४ हे राजाफिर आप के पुत्रने शक्ति को टूटाहुआ देखकर तीक्ष्ण धारवाले नौबाणोंसे युधिष्ठिरको घायलकिया २५ पराक्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल शत्रुहन्ता युधिष्ठिरने दुर्य्योधन को विचार करके शीघ्रही बाणको लिया २६ हे राजा उस क्रोधयुक्त महाबली युधिष्ठिरने उसबाणको धनुषमें चढ़ाकरछोड़ा २७ फिर उस बाणने आपके महारथी राजाको पाकर अचेतकिया और पृथ्वीको फाड़ा २८ इसकेपीछे युद्धकी इतिश्री करने काअभिलाषी क्रोधयुक्त दुर्य्योधन शीघ्रतासे गदाको उठाकर धर्मराजके सन्मुख गया धर्म-राजने यमराजके समान गदा उठानेवाले दुर्य्योधन को देखकर आपके पुत्रपर उस शक्तिको चलाया जो कि बड़ी वेगवान अग्निके समान देदीप्यमान उल्काके समानथी २९।३० उसगदा से कवच कटकर हृदयपरघायल रथपर सवार अत्यन्त अचेतहोकर गिरपड़ा और अचेतहोगया ३१ उसकेपीछे अपनी प्रतिज्ञाको स्मरणकरने-वाले भीमसेनने उससे कहा कि हेराजा यह आपके हाथ से नहीं मारा जायगा यह सुनकर युधिष्ठिर लौटगये ३२ इसके पीछे कृत-वर्माने शीघ्रआकर आपकेपुत्र राजा दुर्य्योधन को आपत्तिके समुद्र में डूबाहुआ पाया ३३ और भीमसेनभी सुवर्ण वस्त्रोंसे अलंकृत गदाको लेकर युद्धमें बड़े वेगसे कृतवर्माके सन्मुखगया ३४ हेमहा-राज तीसरे पहर युद्धमें विजयाभिलाषी आपके पुत्रोंका युद्धपांडवोंके साथइस रीतिसेहुआ ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिद्वन्द्वयुद्धेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसके पीछे युद्धमें दुर्मद आपके युद्ध कर्त्ताओंने कर्णको आगेकरके फिरभी लौटकर देवासुरोंके युद्धके समान युद्ध

किया १ मनुष्य रथहाथीघोड़े और शंखोंके शब्दों से प्रसन्न नाना प्रकारके शस्त्रोंकी आधिक्यतासे क्रोधयुक्तहो उनहाथीरथी और सवारोंके समूहोंने सन्मुख होकर प्रहारकिये २ उत्तम पुरुषोंके श्वेत फरसे खड्ग पट्टिश और नाना प्रकार के भल्लों से हाथीरथ और घोड़े उसमहा युद्धमें मारेगये और अनेक २ प्रकारकी सवारियों से मनुष्य चूर्णहोगये ३ कमल सूर्य्य और चन्द्रमा के समान श्वेत दांतसुन्दरआंखनाक समेतमुख और अद्भुतकुंडलमुकुटवाले मनुष्यों के कटेहुये शिरोंसे आच्छादित वह युद्ध भूमि बड़ीही शोभायमान हुई ४ तबसैकड़ों परिघमूशलशक्ति तोमर नखरभुशुंडी और गदाओंसेघायल हजारोंहाथी घोड़े मनुष्य रुधिरकी नदी के जारीकरने वालेहुये५ मृतकघायलभयानक और अत्यन्त घायलरथमनुष्यघोड़े हाथीवालीशत्रुओंसे घायल वहसेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि संसारके नाश करनेमें यमराजकादेश होताहै ६ हे राजा इसकेपीछे आपकीसेनाके मनुष्य और देवकुमारोंके समान आपकेपुत्रों समेत उत्तमकौरवलोग जिनकेआगे चलनेवाली असंख्य सेनाथी सबमिल करसात्विकीके सन्मुखगये ७ रुधिरसे अत्यन्तभय उत्पन्न करनेवाले उत्तम पुरुष घोड़ेरथ और हाथियोंसे व्याप्त और उठेहुये समुद्र की समान शब्दायमान वहसेना देवता और असुरोंकी सेनाके समान प्रकाशित होकर शोभायमानहुई ८ इसकेपीछे इन्द्रकेसमान पराक्रमी युद्ध में बिष्णुके समान सूर्य्यके पुत्र कर्णने सूर्य्यकी किरणोंके समान प्रकाशित प्रषत्कनाम बामबाणोंसे शूरोंमें बड़ेवीर सात्विकी को घायल किया ९ तब शीघ्रता करने वाले सात्विकी ने विषैले सर्पकी समान नानाप्रकार के बाणों से पुरुषोत्तम कर्णको रथ घोड़े और सारथी समेत ढकदिया १० आप के शुभचिन्तक अतिरथी हाथी रथ घोड़े और पदातियों समेत शीघ्रही उस रथियों में श्रेष्ठ सात्विकी के बाणोंसे पीड़ामान सुषेण के पास गये ११ बड़े शीघ्रगामी शत्रुओंसे दबाई हुई समुद्रके रूप वह सेना भागी तब धृष्टद्युम्न आदि के हाथसे मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों

का बड़ा विनाश हुआ १२ इसके पीछे नित्य कर्म से निवृत्त होकर बुद्धिके अनुसार प्रभु शिवजीके पूजनेवाले और शत्रुओंके मारनेमें निश्चय करनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुन और केशवजी शीघ्रही आपकी सेनाके ऊपर चले १३ तवटूटे हुये चित्तवाले शत्रुओंने बादल के समान शब्दायमान वायुसे कंपित पताका ध्वजावाले श्वेत घोड़ोंसे युक्त सन्मुख आनेवाले रथको देखा इसकेपीछे रथपर नाचतेहुये अर्जुनने गांडीवधनुष को टंकारकर आकाश और दिशा विदिशाओं को बाणोंसे आच्छादित किया १४। १५ और विमानरूप रथोंको शस्त्र ध्वजा और सारथियों समेत बाणोंसे ऐसा मारा जैसेकि वायु बादलोंको ताड़ित करताहै १६ फिर उसने हाथी हाथीवान और वैजयन्ती शस्त्र ध्वजा अश्वारूढ़ और पत्तियोंको बाणोंसे यमलोकमें पहुंचाया १७ सीधेबाणोंसे मारता हुआअकेला दुर्य्योधन उस यमराज के समान क्रोधयुक्त मुखन मोड़ने वाले महारथी अर्जुन के सन्मुख गया १८ अर्जुनने सातबाणोंसे उसके धनुष और ध्वजा को काटकर सारथी घोड़ोंको मारकर एकबाणसे उसके छत्रको काटा १९ और प्राणोंके नाशकरनेवाले उत्तम नवें बाणको धनुष पर चढ़ाकर दुर्य्योधनके ऊपर छोड़ा उस बाण के अश्वत्थामाने आठ टुकड़े करडाले २० इसके पीछे अर्जुनने बाणोंसे धनुषको काट रथकेघोड़ों को मारकर कृपाचार्य्यके उसउग्रधनुषकोभी काटा २१ तब कृतवर्माके धनुष और ध्वजाको काटकर घोड़ोंको मारा और दुश्शासनके धनुष को काटकर कर्णके सन्मुख गया २२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कर्णने सात्वकी को छोड़कर तीन बाणसे अर्जुनको और बीसबाणसे श्रीकृष्णको घायल करके फिर अर्जुनको बारंबार घायलकिया २३ युद्ध में बहुत शायकोंको छोड़ते शत्रुओंको मारते हुये कर्णकी ऐसी ग्लानि नहीं हुई जैसे कि क्रोधयुक्त इन्द्रकी हुई २४ इसके पीछे सात्विकीने आकर तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको घायल करके एकसौनिन्नानवे उग्रबाणोंसे घायल किया २५ इसके पीछे पांडवोंके इन सब वीरोंने

कर्णको पीड़ामान किया जिनके नाम युधामन्यु शिखंडी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक २६ उत्तमौजा युयुत्सु नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न चंदेर कारुष मत्स्य और कैकय देशवालोंकी सेना २७ पराक्रमी चेकितान सुंदर व्रतवाले धर्मराज युधिष्ठिर इन सबोंने उग्रपराक्रमी कर्णको रथघोड़े हाथी और पत्तियों समेत घेरकर २८ युद्धमें नानाप्रकारके अस्त्रों और शस्त्रोंसे ढकदिया और उग्रवचनोंसे वार्त्तालाप करतेहुये सब कर्णके मारनेमें प्रवृत्त चित्त हुये २९ कर्णने उस अस्त्रोंकी वर्षाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अनेकरीतिसे काटकर अस्त्रोंकेबलसे ऐसेहटादिया जैसे कि वायु वृक्षको काटकर हटादेता है ३० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णरथी और सवारों समेत हाथीघोड़े और अश्व सवारोंसमेतसहायकोंकेसमूहोंकोमारताहुआदिखाईदिया ३१ कर्णके अस्त्रोंसेघायल वह पांडवीसेना शस्त्रत्राण शरीर और प्राणोंसेरहित होकर बहुधालोग मुखोंको मोड़गये ३२ इसके पीछे मन्द मुसकान करतेहुयेअर्जुननेकर्णकेअस्त्रको अपनेअस्त्रसेदूरकरकेदिशाविदिशाओं समेतपृथ्वी और आकाशको बाणोंकी वर्षासे ढकदियावहबाण फिर मुशल और परिघोंके समानगिरे कितनेही शतघ्नियोंके समानऔर कोई२ उग्रवज्रों के समान आकाशसे पृथ्वीपर गिरे पत्ति घोड़े रथ और हाथियोंसे संयुक्त वह सेना उन बाणोंसे घायल आंखोंको बंद करनेवाली होकर वहुतघूमी ३३।३४।३५ तवघोड़े हाथी और मनुष्योंने उस युद्धको पाया जिसमें मरना निश्चय होगयाथा तबबाणों से घायल पीड़ामान और भयभीत होकर भागे ३६ युद्धमें प्रवृत्त विजयाभिलाषीआपके युद्धकर्त्ताओंके बाणोंसेऐसीदशाहुई औरसूर्य्य अस्ताचलको प्राप्तहुआ ३७ हेमहाराज फिर हमने अधिकअंधकार और धूलीकेगुब्बारोंसे अंधेरेमें कुछ अच्छा बुरानहीं देखा ३८ हे भरतवंशी रात्रिके युद्धसे भयभीत बड़े२ धनुषधारी वर्त्तमानलोग सब शूरवीरों समेत युद्धभूमिसे अलगहुये ३९ हेराजा दिनकेसमाप्तहोनेपर सायंकालके समय कौरवोंके हटजानेपर प्रसन्नचित्त पांडव विजयको पाकर अपने२ डेरोंकोगये ४० और नाना प्रकारकेबाजे

और सिंहनादों समेत गर्ज२ कर शत्रुओंका हास्यकरते अर्जुन और श्रीकृष्णजीकी प्रशंसा करते चलेगये ४१उन वीरोंके विश्राम करने पर उनसब सेनाके लोगोंने और राजाओंने पांडवोंको अशीर्वाद दिया ४२ उसके पीछे वहां विश्रामके करनेपर अत्यन्त प्रसन्नयुक्त होकर पांडव और अन्य राजालोग रात्रिमें अपने २ डेरों में जाकर विश्राम युक्तहुये ४३ इसके पीछे राक्षस पिशाच और भेड़ियेआदि मान्साहारी पशुओंके समूह उस युद्धभूमि में गये जोकि रुद्रजीकी क्रीड़ाके स्थान रूपथी ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिप्रथमयुद्धे एकत्रिंशोध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवांअध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि यहप्रत्यक्षहै कि अर्जुनने अपनी इच्छासे हम सबकोमारा इसशस्त्रधारीके युद्ध में मृत्युभी मरनेसे नछूटे १ अकेले अर्जुनने सुभद्राका हरणकिया अकेलेनेही अग्निको तृप्तकिया और अबइसीअकेलेनेइसभारी पृथ्वीकोविजयकरके भेंटदेनेवाली किया२ दिव्य धनुधारी अकेलेने किरातरूप धारी शिवजीसे युद्धकिया और निवात कवचोंको मारा ३ अकेलेने ही भरतवंशियोंकी रक्षाकरी अकेलेनेही शिवजीको प्रसन्न किया उसउग्रतेज वाले ने सबराजालोगोंकोविजयकिया ४ और हमारे शूरवीरभी निन्दाके योग्य नहींहैं किंतु प्रशंसा के योग्यहैं जो उन्हों ने किया उसको भी कहोहे सूत इसके पीछे दुर्योधनने क्याकिया ५ संजय बोले उनघायल औरटूटे अंग सवारियोंसे गिरेहुये कवच शस्त्र और सवारियोंसे रहितदुःखित शब्दकरते शत्रुओंसे कंपायमान पराजित अहंकारी उन कौरवों ने ६ फिर दुर्योधनकी सलाहकरी जोकि टूटीडाढ़ विषसे रहितपैर से दबायेहुयेसर्पोंकी समानथे ७ उसके पीछे सर्पकी समान श्वास लेताहुआ आपके पुत्रको देखता क्रोधयुक्तकर्ण हाथसेहाथोंको मल कर उनसेबोला कि अर्जुन सदैवसावधान दृढ़पराक्रमीऔरधैर्य्यमान है औरश्रीकृष्णजीभी समयके अनुसारउसको समझा देतेहैं ८ । ६

अब हम उसके अस्त्रों के छोड़नेसे अकस्मात् ठगेगये हेराजा अब कलके दिन में उसके सब संकल्पोंको नाशकरूंगा १० यहकर्णके वचनसुनकर दुर्योधन ने बहुत अच्छा कहकर उत्तम राजाओं को आज्ञादी तब उसकी आज्ञापाकर सबराजालोग अपनेडेरोंकोगये ११ उसरात्रिमें सुखपूर्वक निवास करके प्रातःकाल बड़ी प्रसन्नता से युद्धकरनेकेलिये निकलेउन्होंने कौरवोंमेंश्रेष्ठ बृहस्पतिऔर शुक्रजी के मतमें नियत धर्मराजके बड़े उपायसे रचेहुये कठिनतासे बिजय होने वाले व्यूहको देखा १२ इसके पीछे शत्रुहन्ता दुर्योधनने उस शत्रुओंके मारनेवाले बड़ेवीर पराक्रमी और उन्नत स्कन्धवाले कर्ण को स्मरण किया १३ जोकर्ण युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रम में मरुद्गणों के सदृश बलमें सहस्राबाहुके सम तुल्यथा उसकर्ण में राजाका चित्तगया १४ सब सेनाओं का चित्तभी उस बड़े धनुषधारी कर्णमें ऐसागया जैसे कि प्राणों के संकटमें मन बन्दहोकर एक ओरको जाता है १५ धृतराष्ट्र बोले हे सूत इसके पीछे दुर्योधनने क्याकिया हे हीन प्रारब्धी लोगो जो तुम्हारामन सूर्य के पुत्रकर्ण मेंगया १६ तो सेनाओंके विश्रामकरनेकेपीछे फिर युद्धके जारीहोने पर कर्णको ऐसेदेखा जैसे कि शीतसे पीड़ित मनुष्य सूर्यको देखता है १७ वहां सूर्यका पुत्र कर्ण इस रीतिसे युद्धमें प्रवृत्तहुआ हेसंजय फिर वहां सब पांडवोंने कर्णसे कैसे युद्धकिया १८ अकेलाही महाबाहुकर्ण सृंजियोंसमेत सब पांडवों को मारसक्ता है क्योंकि युद्धमें कर्णकी भुजाओंका पराक्रमइन्द्र और बिष्णुके समान है १९ उस महारथीके पराक्रम संयुक्त शस्त्र बड़े घोरहैं युद्धमें कर्णका आश्रय लेकर राजा दुर्य्योधन मदोन्मत्त है २० इसकेपीछे पांडवके हाथसे अत्यन्त पीड़ामान दुर्य्योधनको देखकर और पांडवोंकोभी पराक्रम करनेवाला देखकर महारथी कर्णने क्या किया २१ फिर अभागा दुर्य्योधन युद्धमें कर्णका आश्रयलेकर पांडवोंको श्रीकृष्ण और उन के पुत्रों समेत बिजय करने की अभिलाषा करता है २२ यहमहा शोककारी दुःख है जिसस्थानपर कि वेगवान् कर्णने युद्धमें पांडवों

को नहीं निश्चयकिया इससे निश्चयकरके दैव बड़ाहै २३ यह द्यूत की निंदा वर्त्तमानहै और शोकका स्थानहै मैं दुर्य्योधन के उत्पन्न कियेहुये भालेके समान घोर कठिन दुःखोंको सहरहाहूं हे तात संजय वह दुर्य्योधन शकुनीको नीतिज्ञ मानता है २४। २५ और सदैव राजाके आज्ञावर्त्ती वेगवान् कर्णको भी नीतिमान् मानता है हेसंजय महाभारी युद्धों के वर्त्तमान होनेके कारण २६ मैंने सदैव अपने पुत्रोंको घायल और मृतकसुना और युद्धमें पांडवोंका कोई रोकनेवाला नहींहै २७ जैसेकि स्त्रियोंके मध्यमें डोलतेहैं उसीप्रकार सेनाकोभी मथतेहैं इससे दैव अधिक बलवानहै संजय बोलेकि हे राजा पूर्वसमयके धर्म संबंधीवार्त्ताओंको विचारो २८ जो मनुष्य असंभव कार्य्यको पीछेसे शोचता है उसका वहकार्य्य नहीं होताहै किन्तु शोचसे नाशकोपाताहै २९ हेराजा मुझबुद्धिमानके पूर्वयोग्य विचारको जोतुमने नहींकिया इसीसे वहकार्य्य तुम्हारे हाथसेजाता रहा ३० हेराजा सदैव मैंने समझायाथा कि पांडवोंसे युद्धमतकरो तुमने अपनी अज्ञानतासे उसवचनको नहींमाना ३१ तुमने पांडवों के साथमें परस्पर मिलकर बड़े २ घोरपापकिये और आपही के कारणसे अच्छे२हजारों राजाओंकानाश वर्त्तमान हुआ३२हे भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ अबसमय आगया शोचमतकरो हेअजय जैसेकि यह घोरनाशहुआ उससबको मुझसेसुनो ३३ प्रातःकालके समय कर्ण राजादुर्य्योधनके पासगया और मिलकर दुर्य्योधनसेकहनेलगा३४ किहेराजाअबमैं यशस्वी पांडवोंसेयुद्धकरूंगा मैंकितो उसवीरअर्जुन कोमारूंगा या वही मुझको मारेगा ३५ हेभरतवंशी राजादुर्य्योधन मेरे और अर्जुनके कार्योंकी अधिकतासे मेरी और अर्जुनकी सन्मु खता नहीं हुई ३६ हे दुर्य्योधन मेरे इस वचनको तुमबुद्धिके अनु- सार जानोकिमैं युद्धमें अर्जुनको मारकरनआऊंगा३७जिसके बड़े २ वीर मेरे वर्त्तमान होनेपर युद्धमें मारेगये वह अर्जुन मेरे सन्मुख आवे- गानहींकिमैं इन्द्रकीशक्तिसे पृथक्हूं ३८ हेराजाजो अपनी रक्षाकरने वाला है उसको तुमसमझो कि मेरे और अर्जुनकेअस्त्रोंका पराक्रम

और प्रताप समानहै शत्रुके बड़े कार्य्यका नाश हस्तलाघवता बाणों का दूरफेंकना और अस्त्र गिरानेकी सावधानीमें अर्जुन मेरे समान नहींहै ४० हेभरतवंशी देहकाबल वा मनकाबल वा अस्त्रोंकीशिक्षा वा पराक्रममें लक्षभेदन करने में भी अर्जुन मेरे समान नहीं है ४१ सब शस्त्रोंमेंश्रेष्ठ विजयनाम धनुष इन्द्रके प्रिय होनेकी इच्छासे विश्वकर्माजीने उत्पन्न किया ४२ हे राजा निश्चयकरके इन्द्रने उसी धनुषकेद्वारा दैत्योंके समूहोंको विजयकिया और जिसकेशब्दसे दैत्यों की दशोंदिशा मोहितहुई ४३ वह बड़ाउत्तम धनुष इन्द्रने भार्गव जीको दिया और भार्गवजीने वह दिव्यधनुष प्रसन्नहोकर मुझको दिया ४४ हे महाविजयी उसी धनुषके द्वारामैं महाबाहु अर्जुनसे लडूंगा वैसेहीलडूंगा जैसेकि भागेहुये दैत्योंसे इन्द्र लड़ाथा ४५ परशुरामजीकादियाहुआ घोरधनुष गांडीव धनुषसे अधिकहै जिसके द्वारा यहपृथ्वी इक्कीसबार विजयकरी गई ४६ इसधनुषके घोरकर्म कोभार्गवपरशुरामजीने मुझसेकहाहै उनकेउस दियेहुयेधनुषकेद्वारा मैं पांडवोंसे लडूंगा ४७ हे दुर्य्योधन अबमैं बड़े विजयी विख्यात अर्जुनको युद्धमें मारकर तुझको बांधवों समेत प्रसन्न करूंगा ४८ हेराजा अबपर्व्वत बनद्वीप और समुद्रोंसमेत यहसब पृथ्वीतेरीहोगी जिसकेकि बीरमारे गये और पुत्र पौत्रोंकी प्रतिष्ठा है ४९ अबतेरे अभीष्टके निमित्त मेरी कोई अच्छे प्रकारकी विशेषता ऐसीनहींहै जैसेकि अच्छे धर्मपर प्रीति करनेवाले मनुष्यकी मोक्षहोतीहै ५० वह अर्जुन युद्धमें मेरे सहने को ऐसे समर्थ नहीं होसक्ता जैसे कि वृक्ष अग्निको नहीं सहसक्ता मैं जिसहेतुसे कि अर्जुन से कमहूं उसको अब मुझे कहना अवश्यहै ५१ एकतो उसके धनुषकी प्रत्यंचा दिव्यहै और इसी प्रकार उसके दो तूणीर अक्षयहैं और उसके सारथी श्रीकृष्णजीहैं मेरा वैसा सारथी नहींहै ५२ उसका गांडीव धनुष दिव्य उत्तम होकर युद्धमें सबसे अजेयहै और मेराविजयनाम धनुष भी दिव्य और उत्तम है ५३ हेराजा वहां मैं उस धनुषके कारणसे अर्जुनसेअधिक हूं और जिन कारणोंसे कि वीर पांडव अर्जुन

मुझसे अधिक है उसको भी मुझसे सुनो ५४ प्रथम तो सबके पूज्य
सब श्रीकृष्णजी सारथी हैं और अग्नि देवताका दियाहुआ सुवर्ण
जटित रथभी दिव्यहै ५५ हे वीर वह सबप्रकारसे अजेयहै उसके
घोड़ेभी चित्तके अनुसार शीघ्रगामीहैं और ध्वजा भी दिव्य प्रकाश
मानहै और उस ध्वजामें हनूमानजी बड़े आश्चर्य्यकारीहैं ५६ और
संसारके स्वामी श्रीकृष्ण महाराज उसके रथकी रक्षा करतेहैं इन
वस्तुओंसे रहित होकर मैं अर्जुनसे लड़ना चाहताहूं ५७ युद्धको
शोभा देनेवाला यह राजा शल्य श्रीकृष्णजी के समानहै जो राजा
शल्यमेरा सारथी बनजायतो अवश्य तेरी विजय होय ५८शत्रुओंके
साथ कठिन कर्म करनेवाला शल्य मेरा सारथी होय और कंकपक्ष
वाले मेरे अनेक बाणोंके बहुतसेछकड़े साथमें ले चलें ५९ हे भरत
र्षभ राजेन्द्र उत्तम घोड़ोंके रथमें बैठकर तुमभी मेरे साथहीसाथ
चलो ६० मैं अपने गुणोंसे अर्जुनसे अधिक होजाऊंगा शल्य भी
श्रीकृष्णजीसे अधिकहै और मैंभी अर्जुनसे अधिकहूं ६१ जिस
प्रकार शत्रुहन्ता श्रीकृष्णजी अश्वहृदय नाम विद्याके जाननेवाले
हैं इसी प्रकार महारथी शल्यं भी अश्वविद्या का ज्ञाताहै ६२ और
भुजामें राजाशल्य के समान कोई नहींहै इसी प्रकार अस्त्रवेत्ता
मेरे समान कोई नहीं है ६३ जो कि अश्वविद्या में शल्य के समान
कोई नहीं है इसलिये यह मेरारथ अर्जुनसे भी अधिक होगा हे कौ-
रवोंमें श्रेष्ठ ऐसा करनेसे मैं रथकी सवारीमें अधिक होजाऊंगाऔर
युद्धमें अर्जुन को विजय करूंगा ६४।६५ इन्द्र समेत देवताभी मेरे
सम्मुखहोने को समर्थ नहीं हैं हे शत्रुहन्ता महाराज दुर्य्योधन यह
कामों तुमसे करवाया चाहताहूं ६६ यहमेरा मनोरथपूर्ण करोइस
समय को किसी प्रकारसे उल्लंघन न करना चाहिये ऐसा करनेसे
सब अभीष्ट सिद्ध होंगे ६७ हे भरतवंशी इसके पीछे जैसा मैं युद्ध
करूंगा उसको भी तुम देखोगे मैं सन्मुख आनेवाले पांडवोंको सब
प्रकारसे विजय करूंगा ६८ सुर और असुर भी युद्धमें मेरे सन्मुख
आनेको समर्थ होनेको समर्थ नहीं हैं हे राजा फिर मनुष्ययोनि

पांडवलोग मेरी सन्मुखता क्या करेंगे ६९ संजय बोले कि कर्णके इन सब बचनों को सुनकर आपका पुत्र दुर्य्योधन अत्यन्त प्रसन्न होकर कर्णसे प्रशंसा पूर्वक यह बचन बोला ७० कि हेकर्ण जैसा तुम कहते हो मैं इन सब बातोंको वैसाहीकरूंगा तूणीरों से भरेहुये रथ तुम्हारे पीछे २ चलेंगे ७१ कंकपक्षसे जटित तेरे बाणोंके बहुत से छकड़े लेचलूंगा और मुझ समेत सब राजालोग तेरे पीछे २ चलेंगे ७२ संजय बोले हे महाराज आपका प्रतापी पुत्र दुर्य्योधन इस प्रकारके बचन कहकर मद्रदेशके राजाशल्यके पास जाकर उससे यह बचन बोला ७३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णदुर्य्योधनविचारेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज आपकापुत्र बड़ी नम्रता समेत समीप जाकर महारथी शल्य से यह बचन बोला १ हे सत्यब्रती महाबाहु शत्रु शोककारी मद्रदेशकेस्वामी युद्धमेंशूर और शत्रुकी सेनाको भय उत्पन्न करनेवाले २ श्रेष्ठबक्ता आपने कर्णका बचन सुनाहै मैं सब श्रेष्ठ राजाओंमें आपको उत्तम जानताहूं ३ हे अनुपम पराक्रमी शत्रुपक्षके नाशकारी राजा मद्र मैं नम्रता पूर्वक आपको शिरसे दण्डवत् करताहूं ४ हे रथियोंमें श्रेष्ठ आप अर्जुन के नाश और मेरी वृद्धिके अर्थ न्याय से सारथ्य कर्म करने को योग्यहो ५ आपके सारथी होनेसे कर्ण मेरेशत्रुओंको बिजयकरेगा कर्णकी बागडोरों का पकड़ने वाला दूसरा कोई पुरुष नहींहै ६ हे महाबाहु युद्धमें बासुदेवजी के समान तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य नहीं है ७ आप सब प्रकार से कर्ण की ऐसी रक्षाकरिये जैसेकि ब्रह्माजी ने महेश्वरजी की और श्रीकृष्णने सब आपत्तियों में पांडवों की करी है और करते हैं हेमहाराज उसी प्रकार आपभी कर्णकी रक्षा करिये ८ भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण और पराक्रमी कृतवर्मा सौबलका पुत्र शकुनी अश्वत्थामा मैं और हमारी सब्सेना ९

हे राजा इसरीतिसे यह नौ भागकियेहैं परन्तु इन भागोंमें महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य का भाग नहींहै १० इन्होंने उन दोनोंभागों को उल्लंघन करके मेरे शत्रुओं को मारा वह दोनों वृद्ध बड़े धनुष-धारी युद्धमें छलसे मारे गये ११ हे निष्पाप वह दोनों कठिन कर्मों को करके यहांसे स्वर्गको गये और इसी प्रकार अन्य२ भी बहुतसे पुरुषोत्तम युद्धमें शत्रुओंके हाथसे मारेगये १२ हमारे अनेक शूर वीर युद्धमें बड़े२ पराक्रमों को करके प्राणोंको त्याग कर स्वर्गको गये १३ हे राजा यह मेरी बहुतसी सेना मारीगई पूर्व्वमें भी इन अत्यन्त थोड़े पांडवोंसे मेरे बहुतसे मनुष्य मारेगये अबकौनसी बात करनी उचितहै १४ कुन्तीकेपुत्र महाबली सत्य पराक्रमी हैं सो हेराजा जिस रीतिसे वह पांडवलोग मेरी शेषबची हुई सेनाको नमार सकें वही उपाय आपको करना योग्य है १५ हेसमर्थ यह सेना युद्धमें पांडवोंके हाथसे मृतक हुये शूरबीरवाली है अर्थात् इस के युद्धकर्त्ता शूरवीर मारेगये अबहमारी वृद्धि चाहने वाला एक महाबाहु पराक्रमी कर्ण और सब लोगोंके महारथीपुरुषोत्तम आप हो हे शल्य अब कर्ण युद्धमें अर्जुनके साथलड़ना चाहता है १६। १७ हे राजा शल्य उस कर्णमें मुझको बिजयकी बड़ी आशाहै इस पृथ्वीपर उसकाउत्तम सारथी कोईनहींहै १८जैसे कि युद्धमें अर्जुन के सारथी श्रीकृष्णजी हैं उसी प्रकारआपभी कर्णके रथपर सारथी हूजिये १९ हे राजा श्रीकृष्णजीसे युक्तऔर रक्षित होकर जैसे कि वह अर्जुन जिन२ कर्मों को करताहै वहसबके प्रत्यक्षहैं २० पूर्व्व में अर्जुन ने युद्धमें हमारेशत्रुओं को मारा अब श्रीकृष्ण को साथ रखनेवाले उस अर्जुनकापराक्रम है २१हेराजा मद्र अर्जुन श्रीकृष्ण जी के साथ हमारी बड़ीभारी सेनाको प्रतिदिन युद्धमें भगाताहुआ दिखाई देताहै २२ हे बड़ेतेजस्वी कर्णका और तुम्हारा भाग शेष रहगया है कर्णसमेतआप एकही भागसे उस पांडवी सेनाका नाशकरो जैसेकि सूर्य्यअपनी किरणों से अंधकार को दूर करताहै उसी प्रकार आपभीकर्ण समेत होकर युद्धमें अर्जुनको मारो २४

सूर्य्यके समान उदय होनेवाले बालार्कके समान प्रकाशमान कर्ण और शल्यको देखकर युद्धसे सब महारथी ऐसेभागेंगे जैसेकि सूर्योदयमें अरुणको देखकर अंधकार दूरहोताहै २५ इसीप्रकार आपके युद्धमें प्रकाशमान होतेही पांचाल और सृंजियों समेत कुन्तीके पुत्र भी नाशको पावेंगे २६ कर्ण रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठहै और आप रथियोंमें असादृश्यहैं जैसा तुम दोनोंका योगहोगा वैसा संयोग न पूर्व्वमें हुआहै न आगे होगा २७ जैसेकि श्रीकृष्णजी सब दशाओं में पांडवोंकी रक्षा करतेहैं उसी प्रकार आपभी सूर्य्यके पुत्र कर्णकी रक्षाकरो २८ यहकर्ण तुझसारथीकेसाथ होकर इन्द्रसमेत देवताओं से भी युद्धमें अजेयहोगा फिर पांडवोंके युद्धमें कैसे विजयी न होगा हेराजा तुममेरे बचनोंमेंसन्देह मतकरो२९संजय बोलेकिकुलीनता शास्त्रज्ञता अधिकार और पराक्रमसे अजेय महाबाहुशल्यदुर्य्योधन के बचनको सुनकर क्रोधमें भराहुआ बारंबार हाथियोंकोप्रेरणा करता हुआ भृकुटीको त्रिबलीकरके क्रोधसे रक्तवर्ण नेत्रोंको खोलकर यह बचनबोला ३० । ३१ हे गांधारीके पुत्र निश्चय करके तू मेरा अपमान करताहै और सन्देह करताहै जो तू निस्सन्देह होकर मुझसे कहताहै कि सारथीपना करो ३२ और कर्णको मुझसे भी अधिक जानकर उसकी प्रशंसा करता है मैं युद्धमें कर्णको अपनी समाननहीं समझताहूं ३३हे राजा तुममेरा अधिकतर भाग बिचार करो मैं युद्धमें उसको बिजय करके जहांसे आयाहूं वहांको चला जाऊं ३४ हे कौरवनन्दन चाहैमैंहो अकेला युद्धकरूंगा अबतुमयुद्ध में मुझ शत्रुहन्ताके पराक्रमको देखो ३५ जैसेकि मुझसा पुरुषउस अपमानको हृदयमें धारण करके फिर त्याग करने को कर्मकर्त्ता होजाय वैसेही तुमभी मुझमें सन्देह न करो ३६ अथवा युद्धमें भी मेरा अपमान किसीप्रकारसे न करना चाहिये मेरीबज्ररूपीमोटी२ भुजाओंको देखो ३७ और मेरेचित्र धनुष समेत विषवाले सर्पके समान बाणोंको देखो और बायुके समान वेगमान उत्तम घोड़ों से अलंकृत मेरेश्रेष्ठ रथको देखो ३८ हे गान्धारीके पुत्र सुवर्ण सूत्रोंसे

लेकिन मेरीगदाको देखो मैं संपूर्ण पृथ्वीको फाड़कर पर्व्वतोंको भी तोड़ सक्ताहूं ३९ औरहेराजा अपने तेजसेसमुद्रको शोषण करसक्ताहूं मुझ शत्रुओंके विजय करनेमें समर्थ ऐसे सामर्थ्यवान को ४० युद्ध में तू नीच अधिरथीके सारथीपने में क्यों संयुक्त करता है हेराजा तुम मुझको नीचकर्ममें संयुक्त करनेको योग्य नहींहो ४१ मैं उत्तम होकर नीचजाति के सेवन करने को नहीं चाहताहूं जोकि प्रीति से समीप आया और स्वाधीनता से नियत हुआ ४२ उसको तू नीचजातिकी आधीनता में करता है देखो छोटे बड़ों का विपर्य्यय करना बड़ापापहै ब्रह्माजीने मुखसे ब्राह्मण उत्पन्नकिये और भुजा से क्षत्रियों को उत्पन्न किया ४३ वैश्योंको जंघा से और शूद्रों को चरणोंसे उत्पन्न किया यह वेदका वचनहै इनचारों वर्णों से अनुलोम प्रतिलोम लोगहुयेहैं हे भरतवंशी चारोंवर्णों की मिलावटसे उत्पन्न होनेवालोंके क्षत्रीलोग रक्षक दंड देनेवाले और दान करने वालेकहेहैं ४५ और ब्राह्मणोंको ब्रह्माजीने यज्ञकरने कराने दान देनेलेने और वेदपढ़ने और शुद्ध दानोंके द्वारा लोक के अनुग्रह के निमित्त इसपृथ्वीपर नियत कियाहै ४६ वैश्योंका कर्मधर्म से खेती करना पशुपालन और दान करनाहै और शूद्रलोग ब्राह्मण क्षत्री और वैश्योंके सेवा करनेवाले वर्णन कियेहैं ४७ और सूत लोगतो अवश्यही क्षत्री और ब्राह्मणोंके सेवा करनेवालेहैं क्षत्रीकिसी दशा में भी सूतों का आज्ञावर्त्ती नहीं होसक्ता ४८ हे राजा मैं राजर्षियोंके कुल में उत्पन्न मूर्द्धाभिषेक नामसे प्रसिद्ध इसरीति से वन्दीजनोंका पूज्य और स्तूयमानहूं ४९ हे शत्रुसेनापहारी सो मैं ऐसा होकर सूतके सारथीपने को इच्छानहीं करताहूं ५० मैं अपमान युक्तहोकर फिरकिसीप्रकारसेभी युद्धनहीं करूंगा हे गांधारीके पुत्र मैं तुमसे पूछकर अबअपने घरको जाऊंगा५१ संजयबोले हे महाराज युद्धमें शोभापानेवाला क्रोधयुक्त शल्य इसप्रकार से कहकर राजाओं के मध्य मेंसे शीघ्रही उठकर चलदिया ५२ आप का पुत्रबड़ी प्रतिष्ठा पूर्वक उसको पकड़कर सब प्रयोजनोंके सिद्ध करने

वालेमीठे २ वचनोंसे बड़ी नम्रतापूर्व्वक बोला ५३ हे शल्य जैसा आप जानतेहो और कहतेहो सो यथार्थहीहै इसमें किसी प्रकारका सन्देहनहींहै इसमेंमेरा प्रयोजनहैउसको आपकृपाकरके सुनिये५४ हे राजाकर्ण आपसे अधिक नहींहै और न मैं आपपर सन्देहकरता हूं आपमद्रदेशके राजाहैं जो मिथ्या समझें तो उसकाम को न करि येगा ५५ हे पुरुषोत्तम तुम्हारे वृद्धलोगोंको रतअर्थात् सत्यतायुक्त बोलते हैं उनको सन्तान होनेसे आप आर्तायन कहे जाते हैं यह मेरामत है ५६ हे प्रतिष्ठा देनेवाले इस कारण से आप युद्ध में शत्रुओंके शल्यरूप अर्थात् भल्ल रूपहो इसी हेतुसे पृथ्वीपर आप का नामशल्य विख्यातहै ५७ हे बड़े दक्षिणा देनेवाले आपने जो प्रथम कहाहै उसीकोकरो हेधर्मज्ञ मेरेनिमित्तजो २कहाजाताहै५८ कर्णसमेत मैंभी आपसे अधिकपराक्रमी नहींहूं परन्तु मैंयुद्धमें आप को उत्तम घोड़ोंका सारथी चाहताहूं ५९ हेशल्यमैंकर्णकोभी उत्तम गुणोंके द्वारा अर्जुनसे अधिक मानताहूं और आपको बासुदेवजीसे भी अधिक मुझसमेत सबलोकमानतेहैं ६० हेनरोत्तमकर्ण अस्त्रोंमें भी अर्जुनसे अधिकहै इसीप्रकार आपभी अश्वबिद्याकेजाननेमें और पराक्रममें श्रीकृष्णसे अधिकहो ६१ जैसेकि बड़ेसाहसी बासुदेवजी अश्व हृदयको जानतेहैं उसी प्रकार उनसेभी द्विगुणित आप जान तेहो ६२ शल्य बोला हे गांधारीके पुत्र कौरवजोतुम सेनाकेमध्य में मुझको श्रीकृष्णजीसे अधिकमानते और कहतेहो इसीसे मैं तुमपर प्रसन्नहूं ६३ अब मैं अर्जुनके साथ युद्ध करनेवाले यशस्वी कर्णके साथ सारथीपनेमें नियतहोताहूं हे बीर जैसेकि तुम मानकर चाह- तेहो ६४ हेबीर कर्णके बिषयमें मेरा यहसंकल्पहै अर्थात् प्रतिज्ञाहै कि मैं इसके सन्मुख श्रद्धाके समान कहूंगा ६५ संजय बोलेहेभरत वंशी राजा धृतराष्ट्र आपका पुत्र कर्ण समेत बोलाकि जैसी राजा मद्रकी इच्छाहै वैसाही हो ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसारथ्येत्रयस्त्रिंशो ऽध्यायः ३३ ॥

———※———

चौंतीसवां अध्याय ॥

दुर्योधन बोले हेराजा मद्र आपसे जोमैं कहताहूं उसको फिर भी तुम सुनो हेसमर्थ जैसेकि पूर्व देवासुरोंके संग्राममें जोवृत्तान्त हुआ १ उसीको महर्षी मार्कण्डेय जीने जिसरीतिसेमेरेपितासे कहा है राजऋषभ आप उसको मुझसे सुनिये और चित्तसे समझिये २ तुमको इसमें विचार न करना चाहिये हेराजा परस्परमें विजयकी इच्छासे देवता और असुरोंका प्रथमयुद्ध ३ तारक संबंधीहुआ तब दैत्य देवताओंसे हारगये यह हमने सुना ४ हेराजा दैत्योंके हारने परतारक के तीन पुत्र ताराक्ष कमलाक्ष विद्युन्माली ५ उग्र तपोहोकर बड़ेभारी नियममें नियतहुये हेशत्रु संतापी उन तीनोंने तपस्याओंसे अपने२ शरीरोंको दुर्बल करदिया उन की शान्त चित्तताताप नियम और समाधीसे प्रसन्न होकर वरदाता ब्रह्माजीने उनको वरदानदिये ७ हेराजा उन सब मिलेहुओंने सब जीवमात्रके हाथसे मृत्युका नहोना लोकके पितामह ब्रह्माजीसे वरमांगा तब ब्रह्माजीने उनसे कहा कि सबकी अविनाशिता नहींहै हेअसुर लोगोंइसविचार से लौटो ६ और इसके सिवाय जो दूसरा वर चाहतेहोउसको मांगो हेराजा इसके पीछे वह सब मिलेहुये प्रभुका वारंवार ध्यान करके १० और सर्वेश्वरको नमस्कार पूर्व्वक यह वचन बोले हेदेवता पितामह हमको यह वरदानदो ११ कि हम तीनपुरोंमें नियत होकर आपकी कृपासे इस लोक में इस पृथ्वीपरघूमें १२ इसके पीछे हजार वर्षके अनन्तर परस्परमें मिलेंगे हेनिष्पाप यह तीनों पुर एकही रूप होजांय १३ हेभगवान् उस समयजो देवता हमारे इस मिलेहुये पुरको एकही वाणसे ढानेवाला होगा उसीसे हमारी मृत्युहो१४ ब्रह्माजी तथास्तु कहकर स्वर्गमें चलेगये फिरवह तीनों वर प्रदानको पाकर अत्यन्त प्रसन्नहुये १५ और तीनपुर बनानेके लिये असुरोंके विश्वकर्मा अजर अमर और दैत्योंसे पूजितजोमय नामदैत्यहै उससे बोले१६ उसकेपीछेउसबुद्धिमान् मयदैत्यने अपने

तपसे तीन पुरोंको उत्पन्नकिया उनमें एक सुवर्णका दूसरा चांदी-
का तीसरा लोहेकाथा १७ वह सुवर्णकापुरतो स्वर्गमें नियतहुआ
चांदीकाअंतरिक्षमें और लोहेकापुर इच्छाके अनुसार पृथ्वीपरचलने
वालाहुआ १८ उनमें प्रत्येक पुर सौयोजन बर्गात्मक गृह अट्टादि-
कों सेयुक्त प्राकार और तोरणोंसे शोभित अत्यन्त शोभित धामोंसे
भराहुआ और खुलाहुआ निविड़तासे रहित बड़े २ चौड़े मार्गोंका
रखने वाला नाना प्रकारके हर्म्य और स्वच्छ द्वारोंसे शोभायमान-
था १९।२० हेराजा उन तीनोंपुरोंमें जुदे२ राजाहुये सुवर्णकापु-
रतो महात्मा ताराक्षका हुआ और चांदीवाला कमलाक्षका हुआऔर
लोहे वाला विद्युन्मालीका हुआ वह तीनों दैत्योंके राजा अस्त्रोंकेते-
जोंसे तीनों लोकोंको जीतकर नियत हुये २१। २२और कहनेलगे
कि कौन प्रजापतिहैउन उत्तम बीर दैत्योंकी संख्या प्रयुत अर्बुदोंथीं
और किरोड़ों दैत्य जहां तहांसे आये वहमांस भक्षी महाबली
पूर्व समयमें देवताओंसे पराजित २४ बड़ेऐश्वर्यके चाहने वाले
त्रिपुरनाम गढ़में आश्रितहुये फिर मयदैत्य इनके सब मनोरथोंका
पूरा करनेवाला हुआ २५ वह सबदैत्य उसमयकी रक्षामें होकर
निर्भय रहतेथे त्रिपुरके राजाओंने जिस जिस अभीष्टको मनसे ध्यान
किया २६ उस अभीष्ट को उनके निमित्त मयदैत्यने अपनीमा-
यासे प्रकटकिया तारताक्षके पुत्रबीर पराक्रमी हरिनामने बड़ीघोरत-
पस्या करी २७ उस तपसे ब्रह्माजी प्रसन्नहुये तब ब्रह्माजीको प्रस-
न्न जानकरउसने यहवर मांगा कि हमारे पुरमेंएकऐसीबापीअर्थात्
बावड़ी उत्पन्नहो २८ जिसमें शस्त्रोंसे मृतकलोग उसमें डालने से
सजीवहोकर बलवान होजांय हे राजा उस तारकाक्ष केपुत्र हरिने
इस वरको पाकर२९वहां मृतक संजीविनी वावड़ीको तैयार किया
फिरमरेहुये दैत्य जिसरूप और पोशाकथे उसमें डालेगये ३० वह
उसीरूपकोधारणकिये पोशाकसमेत उत्पन्नहुये उन्होंनेउसवावड़ी
को पाकर फिर उन सबलोकोंको पीड़ित किया ३१ वहसबदैत्य बड़े
बड़ेतपस्वी और सिद्ध लोगोंके भीभयके बढ़ानेवाले हुयेहेराजा कभी

उनको युद्धमें पराजय नहींहुई ३२ उसके पीछे लोभमोहसे व्याप्त
निर्बुद्धी निर्लज्जहोकर वह सबलोभमें फंसेहुयेनियतहुये ३३ वरदान
से अहंकारी होकर वह सब जहां तहां देवताओंकेसमूहोंको भगाकर
अपनी इच्छा के अनुसार घूमने लगे ३४ देवताओं के प्रिय कारी
सब क्रीड़ा स्थानोंको वा ऋषियों केपवित्रआश्रमोंको और अनेक
सुन्दर सुन्दर देशोंकोनाश करके उनदुष्टकर्मी दैत्योंने मर्यादाओंको
भी बिगाड़ा इसकेपीछे सबके पीड़ितहोनेपर मरुद्गणोंसमेत इन्द्रने
३६ चारों ओरको वज्रोंके प्रहारसेतीनों पुरोंसे युद्ध किया जब इन्द्र
उन वरदान पानेवालोंकेपुरों के तोड़ने और पराजयकरनेको समर्थ
नहीं हुआ तब भयभीत होकर वह उनपुरों को छोड़कर ३७ । ३८
देवताओंकोसाथलेकर ब्रह्माजीके पासगया वहां जाकर उसने अ-
सुरोंकी प्रबलता ब्रह्माजीसे वर्णन करी ३९ फिर शिरसे दण्डवत् क-
रके उनका वृत्तान्त वर्णनकिया और उनके मारनेका उपाय
ब्रह्माजीसे पूछा भगवान् ब्रह्माजी इन्द्रके वचनको सुनकर देवताओं
से बोलेकि जो तुमसे शत्रुता करताहै वह मेराभी शत्रुरूप और
अपराधीहै निश्चय करके वह देवताओंसे विरोधकरने वाले निर्बुद्धी
असुर जो तुमको पीड़ित करतेहैं इसीसे वह सदैव अपराधीहैं ४२
मैं सब जीवमात्रको निस्सन्देह समान दृष्टिसे देखताहूं परन्तु धर्म
के विरोधी जीवनाशने केहीयोग्यहैं यही मेरा नियतव्रत है ४३ मैं
उनपुरोंको एकही बाणसे तोड़ूंगा इसमें विध्यान होगा उनपुरोंको
एकही बाणसे शिवजीके सिवाय तोड़नेवाला दूसरा देवता कोई
समर्थनहींहै ४४ हे देवताओ तुमउस युद्धकरनेवाले अचल आदि
ईश्वर शिवजी की शरणलो जिससे कि वह शिवजी उन असुरोंको
मारे ४५ इन्द्रादिक सब देवता ब्रह्माजीके वचनोंको सुनकर ब्रह्मा
जीको आगे करके शिवजीकी शरणमें गये ४६ वह धर्मज्ञ देवता
ऋषियों समेत तप और नियमोंसे नियत होकर सनातन वेदोंको
पढ़ते हुये सर्वात्मरूप शिवजीके पासगये ४७ हे राजा उन्होंने उस
सबोंको निर्भयता देनेवाले जगदीश्वर शिवजीको उत्तम स्तुतियों

से प्रसन्न किया जिसआत्मारूपसे सब जगत् व्याप्तहै ४८ और नाना प्रकारके मुख्यतपोंसे मनकेयोगवाली सबवृत्तियोंको रोकने कोजानताहै और जिसका चित्तभी सदैव अपने आधीनहै४९ उसने उससर्वशक्तिमान् षड़ैश्वर्य्यके स्वामी उपाधि रहित शिवजीको देखा ५० और उसी अद्वितीय ईश्वर कोही नानाप्रकार के रूपोंका धारणकरने वाला कल्पनाकिया अर्थात् उस परमात्मामें अपनेसंकल्पकेअनुसार अनेक रूपोंको ५१ और एकने दूसरेके रूपको देखा जिसने विष्णुरूपसे कल्पना किया उसको विष्णुरूप दृष्टपड़े और जिसने इन्द्ररूप ध्यान किया उसको इन्द्ररूप दिखाई दिये यह देखकर सब आश्चर्य्यित होकर उसजगत्के स्वामी अजन्माको सर्वरूप देखकर ५२ देवता और ब्रह्मऋषियोंनेशिरोंको पृथ्वीमेंधर कर प्रणाम किया फिर शिवजीने उठकर उनको स्वस्ति वचनसे पूजन किया ५३ फिरमन्द मुसकान करते हुये भगवान्ने कहा कि कहो कहो किस निमित्त आयेहो तबतो शिवजीकी आज्ञापाकरवह सब देवता नियत चित्ततासे तप नियमोंमें नियत होकर सनातन वेदको पढ़ते हुये शिवजीकी स्तुति करनेलगे (स्तोत्र) नमोनमो नमस्तेस्तुप्रभोइत्यब्रुवन्वचः । नमोदेवाधिदेवायधन्विनेवनमालिने ५५ प्रजापतिमखघ्नायप्रजापतिभिरीज्यते । नमोस्तुतायस्तुत्यायस्तूयमानायशंभवे ५६ विलोहितायरुद्रायनीलग्रीवायशूलिने । अमोघायमृगाक्षायप्रवरायुधयोधिने ५७ अर्हायचैवशुद्धायक्षयायक्राथनायच । दुर्वारणायक्राथायब्रह्मणेब्रह्मचारिणे ५८ ईशानायाप्रमेयायनियंत्रेचर्मवाससे । तपोरतायपिंगायव्रत्तिनेकृतिवाससे ५९ कुमारपित्रेत्र्यक्षायप्रवरायुधयोधिने ।प्रपन्नार्त्तिविनाशायब्रह्मद्विट्संघघातिने६०वनस्पतीनांपतयेनराणांपतयेनमः । गवांचपतयेनित्यंयज्ञानांपतयेनमः ६१ नमोस्तुतेससैन्यायत्र्यंबकायामितौजसे। नमोवाक्मर्मभिर्देवत्वांप्रपन्नान्भजस्वनः ६२ ततःप्रसन्नोभगवान्स्वागतेनाभिनंद्यच ॥ प्रोवाचव्येतुवस्त्रासोब्रूतकिंकरवाणिच ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणित्रिपुराख्यानेचतुर्स्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्य्योधन बोले कि पितृदेवता और ऋषियों के समूहों को शिवजीने निर्भयतादी उसनिर्भयताके देनेपर ब्रह्माजी शिवजीकी प्रशंसा करके यह लोकोंका हितकारी वचन बोले १ हे देवताओं के ईश्वर आपके दियेहुये प्रजापति के पदपर वर्त्तमान होकर मैंने दैत्योंको बड़ाभारी वरदान दियाथा २ उन मर्य्यादा उल्लंघन करनेवाले असुरोंके मारनेको आपकेसिवाय किसीको सामर्थ्यनहींहै हेभूतभविष्यके स्वामी आपही उनके मारनेको विरोधी शत्रुहो ३ हे देवेश्वर शंकर देवता तुम शरणागत आनेवाले और प्रार्थना करनेवाले देवताओंके ऊपर कृपाकरो और दानव लोगोंको मारो ४ हे बड़ाईदेनेवाले आपकी कृपासेही सब संसार वृद्धिपाता है हेलोकेश आपही रक्षाके स्थानहैं हमसब आपकी शरण हैं ५ शिवजीने कहा कि तुम्हारे सब शत्रुमार डालनेकेही योग्यहैं यहमेरा मतहै परन्तु मैं अकेला उनके मारने को उत्साह नहीं करताहूं क्योंकि वह बहुतसे असुर बड़े २ पराक्रमीहैं ६ सोतुमसब बड़े २ पराक्रमी मेरे साथी होकर मेरे आधेतेजसे उनशत्रुओंको युद्धमें विजय करो ७ देवता बोले कि हे विश्वनाथ जितना हमारा पराक्रम है उससे द्विगुणित उनका पराक्रम युद्धमें हममानते हैं क्योंकि उनका तेजबल हमने देखाहै वहवास्तवमें हमसे द्विगुणित बलवान्हैं ८श्रीभगवान् बोले कितुममें शत्रुता करनेसे वहसब पापात्मा हैं इससे वधके अवश्य योग्यहैं तुमउन शत्रुओंको मेरेआधेतेज और बलसेमारोगे ८ देवता बोले हे महेश्वरजी हमआपका आधातेज और बल धारण करने को समर्थनहींहैं आपही हमसबके आधेबलसे शत्रुओंको मारो १० श्रीभगवान् शिवजीने कहा जो मेरापराक्रमधारणकरनेको तुम्हारी कोईसामर्थ्य नहींहै तो तुम्हारे आधेतेजसे वृद्धिपानेवाला मैंही उनको मारूंगा ११ तबदेवताओंने कहा बहुतअच्छा यह देवताओं के वचनको सुनकर देवेश्वर शिवजी सबके आधेतेजको लेकर अधिक

होगये १२ अर्थात् शिवजी उनकेआधेबलसे सबसेअधिकबलवान्
होगयेतभीसे शिवजीकामहादेवनामप्रसिद्धहुआ १३ इसकेपीछेमहा-
देवजीबोले कि हेदेवताओ मैं धनुषबाण धारीहूं और युद्धभूमिमेंरथ
की सवारीकेद्वारा तुम्हारे उनशत्रुओंको मारूंगा १४ इसहेतुसेतुम
मेरेरथ और धनुष बाणको विचार करके तबतक खोजोजबतक कि
उनशत्रुओंको पृथ्वीपर न गिराऊं १५ देवता बोले कि हे देवेश्वर
हमजहांतहांसे तीनोंलोकोंका सबतेज इकट्ठा करके उससे आपके
प्रकाशमान रथको तैयार करेंगे १६ फिर जैसा कि बुद्धिके अनुसार
बतायागया वैसाही विश्वकर्माजीने शुभ और उत्तम रथको तैयार
किया तदनन्तर उन उत्तम देवताओंने उस बनेहुये दिव्य रथको
अच्छे प्रकारसे अलंकृतकिया १७ विष्णुजी चंद्रमा और अग्निदेवता
यह तीनोंतो शिवजीके बाणमें कल्पितहुये अग्नि शृंगहुआ और
चंद्रमा भल्लहुआ १८ और विष्णुजी उस उत्तम बाणमें कुंतलहुये
और बड़े२पुरोंकी धारणकरनेवालीधरा अर्थात्पृथ्वीदेवी शिवजी का
रथबनी वहपृथ्वी पर्वत वा द्वीपोंसे युक्तहोकरअखिलजीवोंकी धारण
करनेवालीथी उस समय मन्दराचल पर्वत अक्षहुआ और उसकी
जंघामहानदी हुई २० तबदिशाविदिशारथकेपरिवारहुये औरनक्षत्रों
केसमूहईशाहुये उसरथमें सतयुगजुआहुआ औरसर्पोंमें श्रेष्ठवासुकी
सर्परथका कूबरहुआ २१ हिमाचल और विंध्याचल यह दोनों रथके
पहियोंके उपस्करहुये उदयाचल और अस्ताचल पायेहुये २२ और
दानवोंका उत्तम स्थान समुद्र अक्षबना और सप्तऋषियोंका मंडल
रथका पुरस्कर हुआ २३ गंगा सरस्वती सिंधु और आकाश धुर
हुआ और जल समेत सबनदियांभी रथकी उपस्कर हुईं २४ दिन
रात्रि और कलाकाष्ठा नाम समय और सब ऋतुओं समेत प्रकाश
मान ग्रह अनुकर्षहुये और नक्षत्र वरूथहुये २५ धर्म अर्थ कामसे
संयुक्त त्रिवेणु द्वार और बन्धनहुये औषधी वीरुध और फल फूल
युक्त वृक्ष घंटेबने २६ उस महा उत्तम रथमें सूर्य्य और चन्द्रमा पूर्व
और पश्चिमके पायेहुये और दिन वा रात्रि पूर्व्वापरनाम शुभपक्ष

हुये२७ तब धृतराष्ट्र नाम नागपतिको आदिलेकर दशनागपतियों को ईषाकिया और श्वासलेनेवाले बड़े २ सर्पोंको योक्तरकिया २८ सर्पको दूसरा जुआवनाया और संवर्त्तक वा बलाहक नामबादलों का जुयेका चर्मवनाया कालपृष्ठ नहुष कर्कोटकधनंजय औरअन्य२ सर्प घोड़ोंके बालबंधनहुये और दिशा विदिशा आदि घोड़ोंके मार्ग हुये ३० संध्या पृथ्वी मेधा स्थिति सन्नति और नक्षत्रों से चित्रित आकाशको रथका चर्म्मकिया ३१ मद्यजल और प्रेतोंकेस्वामी लोकेश्वरोंकोघोड़ावनाया पूर्व्वअमावास्याऔर पूर्व्वपूर्णिमाऔर उत्तर अमावास्यावा उत्तर पूर्णमासी इनसुन्दरव्रत वालियोंकोयोकवनाया३२उसरथमेंउसअमावास्या आदिके अधिष्ठातापितरोंको ईशावन कोकीलकवनाई उनकीलकोंमें धर्मसत्य और तपको रस्सियां वनाई ३३ उस रथका आधारमनहुआ और सरस्वती प्रचारमार्गहुईऔर नाना प्रकारके वर्णवाली विचित्र प्रेरणाही उत्तमपता काहुई ३४ विजलीइन्द्रधनुपसेअलंकृत प्रकाशमान्रथको प्रकाशितकिया वषट्कारमंत्र चाबुकहुआ और गायत्रीशिरका बंधनहुई ३५ पूर्व्वसमयमें यज्ञके मध्यमें महात्मा महेश्वरजीका जो संवत्सर नामधनुषनियत हुआथा वही धनुष ठहरायागया और बड़ी शब्दवाली सावित्री जो प्रत्यंचावनी ३६ और दिव्य कवच वह नियतकिया जो कि वड़ोंके योग्य रत्नोंसे जटित खंडित न होनेवाला रजोगुण रहित कालचक्र से बाहरथा ३७ श्रीमान् सुवर्णका मेरु पर्व्वत ध्वजाको यष्टीहुआ और विजलियोंसे अलंकृत वादल पताकाहुआ ३८ और अध्वरोंके मध्यमें देदीप्यअग्नियां प्रकाशमानहुईं फिरदेवतालोग उसअलंकृत रथको देखकर आश्चर्य्य युक्तहुये ३९ हेश्रेष्ठ इसकेपीछे देवताओं ने सबलोकोंके तेजको एक स्थानपर इकट्ठा देखकर उस सजेहुये रथको ४० उस महात्माके सन्मुख वर्त्तमान करके वर्णनकिया हे महाराज नरोत्तम इस प्रकारसे देवताओं की ओरसे उसशत्रुओं के मारनेवाले उत्तम रथके तैयार होनेपर ४१ शंकर जीने अपने अस्त्र शस्त्रों को उस रथपर रक्खा औरआकाश को ध्वजाकी यष्टी वनाके

नंदीगण को उसपर नियत किया ४२ ब्रह्मदंड कालदंड रुद्रदंड और तप यह चारों सब दिशाओं से युक्त रथके ओर पासके रक्षक हुये ४३ अथर्वा और अंगिरस उस महात्मा के रथ चक्रों के रक्षक हुये ऋग्वेद सामवेद और पुराण यहसब आगे चलनेवाले हुये ४४ इतिहास और यजुर्वेद पीछेके रक्षक हुये और दिव्यबाणी और विद्या यह रथके चारों ओर नियत हुये ४५ हे राजेन्द्र स्तोत्रादिक वषट्कार और प्रणव यह मुखमें शोभा करनेवाले हुये ४६ और छओं ऋतुओं समेत बर्षके अन्तको बिचित्र धनुष करके अपने सन्मुख अविनाशी छायारूप सावित्रीको युद्धमें धनुष की प्रत्यंचा बनाई ४७ वेगवान् रुद्रजी कालरूप हुये और उनका धनुष बर्षान्त रूप हुआ इसहेतुसे रौद्री कालरात्री कोधनुषकी प्रत्यंचा बनाया ४८ बिष्णु अग्नि और चन्द्रमा भी बाण रूप हुये यह सब जगत् अग्निषोम नाम दोरूपवाला बैष्णव कहा जाताहै ४९ और बिष्णुजी उस भगवान् महातेजस्वी शिवजी की आत्मा हैं इस कारणसे उन्होंने शिवजीके धनुषकी प्रत्यंचाके स्पर्शको न सहा ५० ईश्वरने भृगु वा अंगिरा ऋषिके क्रोधसे उत्पन्न बड़ी कठिनता से सहनेके योग्य तेज संकल्पवाले असह्य क्रोधाग्निको उस बाणमें लगाया ५१ और नीललोहित धूम्रबर्ण दिगम्बर भयकारी दशहजार सूर्य्य के समान प्रकाशों से संयुक्त ज्वलित तेज को ५२ कठिनतासे गिरने के योग्य राक्षसों का संहार करनेवाला और ब्राह्मणों के मारनेवाले शत्रुओं का नाश करनेवाला सदैव धर्म में नियत मनुष्यों की रक्षा करनेवाला और अधर्मी लोगों का संहार कर्त्ताथा ५३ शत्रुओं के मथन करनेवाले भयानक बल और रूपचित्तके समान शीघ्रगामी इन अपने गुणोंसे युक्त भगवान् शिवजी प्रकाशमान हुये ५४ यह जड़ चैतन्य रूप विश्व उनशिव जीके अंगोंमें शरणरूप होकर अपूर्व्व दर्शनवाला शोभायमान हुआ ५५ वह धनुषधारी शिवजी उस तैयार हुये रथको देखकर और चन्द्रमा विष्णु और अग्निसे उत्पन्न होनेवाले उस बाणको

लेकर ५६ नियत हुये हे प्रभु राजा शल्य तब देवताओं ने उसके पीछे चलनेवाले देवताओं में श्रेष्ठ वायुको पवित्र गंधियोंका पहुंचानेवाला विचार किया ५७ तब सावधान शिवजी देवताओंको भी भयभीत करते हुये पृथ्वी को कंपायमान करके उस रथपर सवार हुये ५८ उस रथपर सवार होनेके अभिलाषी देवताओं के ईश्वर शिवजी को परमऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओं के गणोंने स्तुतिमान किया ५६ ब्रह्मऋषियों से स्तुतिमान और वन्दीजनों से प्रतिष्ठित और नृत्यविद्यामें कुशल नाचनेवाली अप्सराओं से शोभायमान ६० खड्ग बाण और धनुषधारी बरदाता शिवजी देवताओं से बोले कि हमारा सारथी कौनहोगा६१ तब देवगणोंने कहा कि हे देवेश आप जिसको आज्ञा देंगे वही निस्सन्देह आपका सारथी होगा ६२ फिर शिवजीने कहा कि जो मुझसे श्रेष्ठतम होय उसको तुम अच्छीरीति से विचारकर शीघ्रही मेरा सारथी बनावो बिलम्ब न करो ६३ इसके पीछे शिवजीके इस वचनको सुनकर देवतालोग ब्रह्माजी के समीप पहुंच बहुत प्रसन्न करके यह वचन बोले ६४ कि हे देवता असुरों के मारने में जो२ आपने कहा वह सब हमनेकिया और शिवजी हमपर प्रसन्न हैं ६५ हमने विचित्रशस्त्रोंसे युक्त रथको तैयार किया है हम नहीं जानतेहैं कि उस उत्तम रथमें सारथी कौन होगा ६६ हे देवोत्तम इसहेतुसे आपही किसी सारथीको विचार कीजिये हेसमर्थ देवता हमारे इसवचनके सफलकरनेको आपही समर्थ हैं ६७ हे भगवान् तुमने पूर्व्व समय में हम लोगों से ऐसा कहाहै किमें तुमलोगोंका हित करूंगा उसको आपकरनेके योग्य हैं ६८ हे देव तब वह रथियों में श्रेष्ठ कठिनतासे सहने के योग्य शत्रुलोगोंका भगानेवाला पिनाक धनुषधारी हमारे अनुकूल युद्ध करनेवाला विचार कियागया वह दानवोंको भयभीत करता हुआ वर्त्तमान है ६६ उसीप्रकार चारोंवेदयही चारों उत्तम घोड़ेहुये और पर्व्वतों समेत पृथ्वी रथहुई नक्षत्रोंसमेतआकाश निवासस्थान और

शिवजी युद्धकर्त्ताबने हैं परन्तु सारथी जाननेके योग्यहै इन सबसे अधिक तेज बलवाला सारथी चाहिये हे देव रथघोड़े समेत लड़ने वाला देवता नियतहै७०।७१ और हे पितामहजी कवच धनुष और शस्त्र भी तैयार हैं परन्तु उनका सारथी आप के सिवाय दूसरा हम नहीं देखतेहैं ७२ हे प्रभु आपही सबगुणों से संपन्न देवतासे अधिकहो सो तुम शीघ्रही उत्तमरथपर सवार होकर घोड़ोंकी बाग पकड़ो ७३ आपको देवताओं के विजय और असुरोंके नाशकेलिये ऐसा करना उचित है यह कहकर उन देवताओंने तीनोंलोकों के ईश्वर ब्रह्माजीको शिरसे दण्डवत् करी और उनको सारथी बनने के निमित्त प्रसन्न किया ब्रह्माजी बोले हे देवताओ तुमसे जो कहा है उसमें कुछभी मिथ्यानहींहै ७४।७५ अब मैं युद्धकर्त्ता शिवजी के घोड़ोंको थांभताहूं यह कहकर वह संसारके स्वामी ब्रह्मा जी ७६ देवताओं की प्रार्थनासे सारथी नियतहुये उन लोकेश ब्रह्माजी के रथपर सवार होनेपर ७७ उन बायु के समान शीघ्रगामी घोड़ोंने शिरोंसे पृथ्वीको प्राप्तकिया अपनेतेजसेही प्रकाशमान भगवान् ७८ ब्रह्माजीने रथपर चढ़कर बागडोरों समेत चाबुकको हाथ में लिया उसके पीछे देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् ब्रह्माजी उन बायुके समान घोड़ोंकोउठाकर ७९ शिवजीसे बोलेकि रथपर सवारहूजिये इसके अनन्तर शिवजी विष्णु अग्नि और चन्द्रमासे उत्पन्न होनेवाले उसबाणको लेकर ८० धनुषसे शत्रुओं को कंपाते सवार हुये परम ऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओंके गणोंने उस रथारूढ़ देवेश की स्तुति करी वह शोभायमान खड्ग धनुष बाणधारी बरदाता ८१।८२ अपने तेजसे तीनोंलोकोंको अत्यन्त प्रकाश करते हुये रथ पर सवार हुये और इन्द्रादिक देवताओंसे फिर कहनेलगे ८३ कि यह तुमसन्देह न करना कि शत्रुनहींमारे जांयगे ८४ इस बाण से तुम असुरोंको मराहुआही जानना उन देवताओं ने कहा कि सत्य है असुर मारगये यह बचन जोआपके मुखसे निकला है वह मिथ्या नहीं है ८५ देवतालोग ऐसा बिचारकर बड़े प्रसन्नहुये उसकेपीछे

सब देवगणों समेत देवेश शिवजी ८६ उस बड़े रथ में बैठे हुये चले जिसके समान कोईनहीं वहबड़ा यशस्वी देवता मांसभक्षी अजेय दौड़ते नाचते और चारोंओरसे धमकातेहुये अपने पार्षदोंसे शोभित था ८७ महाबाहु तपोमूर्त्ति बड़े गुणवान् सब ऋषि और देवगणों ने महादेवजी की विजयकी आशाकरी ८८ हे नरोत्तम इसरीति से लोकोंको निर्भय करनेवाले लोकेशके चलनेपर सब संसारी जीवों समेत देवतालोग प्रसन्नहुये ८९ वहां ऋषिलोग बहुतसे स्तोत्रोंसे शिवजीकी स्तुतिको करते हुये वारंवार इनकेतेजकी वृद्धिकरनेवाले हुये ९० उनके यात्राकरनेपर प्रयुतों अर्वुदों गंधर्वोंने नानाप्रकारके वाजोंकोवजाया ९१ इसकेपीछे वरदाताब्रह्माजीके रथपरसवारहोने औरअसुरोंकीओरको चलनेपर मन्दमुसकान करतेहुये शिवजीबोले कि धन्यहै धन्यहै ९२ हेदेवता उधरकोचलो जिधर दैत्यलोगहैं और सावधानहोकर तुम घोड़ोंको तेजकरो अब तुम मुझ शत्रुहन्ताके युद्ध में भुज बलको देखो ९३ हेराजा इसके पीछेमन और वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको तीक्ष्ण किया और जिस ओर को दैत्य दानवोंसे संयुक्त वह त्रिपुरथा उधरकोही उनका मुखकिया ९४ भगवान् शिवजी देवताओंकी विजयके निमित्त लोकपूजित इन आकाशके पान करनेवाले घोड़ोंके द्वारा बड़ी शीघ्रता सेचले ९५ शिवजीको रथपर सवार होकर त्रिपुरके सन्मुख चलनेके समयनन्दीगण दिशाओंको शब्दायमान करताहुआ बड़ेवेग से गर्जा ९६ वहां देवताओंके शत्रु तारकदैत्य इस नन्दी गणके महाभयकारी शब्दको सुन करनाशको प्राप्तहुये ९७ तब दूसरे असुरलोग वहां युद्धकेनिमित्त सन्मुखगये हेमहाराजइसके पीछे त्रिशूलधारी शिवजी क्रोध मेंज्वलितहुये ९८ तव सबजीव धारी और तीनोंलोक भयभीत हुये और पृथ्वीकंपायमान हुई और धनुपके चढ़ातेही बड़े२ शकुनहुये ९९ उस समय चन्द्रमा अग्नि विष्णु ब्रह्मा और रुद्रसमेत जो धनुपथा उसकेवेगसे वह रथ अत्यंत पीड़ाको पाताथा २०० इसके पीछे नारायण जोउसबाणके भागमेंसे बाहर निकले और वृषभरूप होकर उसबड़े

रथको उठालिया १०१ रथके पीड़ित होने और शत्रुओंके गर्जने पर उन महाबली शिवजीने भ्रांतीसे शब्दकिया १०२ इसकेपीछे बैल के मस्तक और घोड़ों के पीछे नियत होनेवाले रथपर बैठकर उन शिवजीने दानवोंके पुरको देखा १०३ हे नरोत्तम तबबैल और घोड़ों पर नियत रुद्रजी ने उनके घोड़ोंके स्तनोंकानाशकरके खुरोंकेटुकड़े२ करदिये १०४ हे राजा शल्य आपका भला हो तभी से गौ और बैलोंके पैर बीचमेंसे फटे और उसीसमय से घोड़ोंके स्तन नहीं हुये १०५ अद्भुतकर्मी महाबली रुद्रजी ने उनको पीड़ितकर अपने धनुष को संधान बाणको चढ़ाके पाशुपत अस्त्रसे संयुक्त करके त्रिपुरको अच्छेप्रकार से चिन्ता युक्त किया हे महाराज उस धनुषधारी शिव जीके नियत होने १०६।१०७ पर दैवकी प्रेरणा से समय के आने पर वहतीनों पुर एकत्वभाव को प्राप्तहुये फिर उन त्रिपुर नामकी एकदशा होनेपर देवताओं को बड़ी प्रसन्नताहुई १०८ इसके पीछे महेश्वरजीकी स्तुति करतेहुये देवगण और सब सिद्धमहर्षियोंनेयह शब्दकियाकि विजय करिये इसके पीछे त्रिपुर और असुरोंके मारने वालेक्षमा न करनेवाले तेजस्वी देवता शिवजीके शरीरमेंसे एकमहा उग्ररूपवालादूसरारूपप्रकट हुआ फिर उस भगवान् लोकेश्वर ने अपने उसदिव्यधनुषको खैंचकर १०६।११०।१११ उस तीनोंलोक के सारवान बाणको त्रिपुरके ऊपरमारा हे महाराज उसउत्तम बाण के छोड़नेपर११२ पृथ्वी पर वह तीनोंपुर गिरपड़े और उनके पीड़ित शब्द बड़े भयकारीहुये उस बाणने उन दैत्य गणों को नाश करके पश्चिमी समुद्र में डालदिया ११३ इसप्रकार क्रोधयुक्त महेश्वर जीके हाथसे तीनोंलोकों का दुःखदाई त्रिपुर नाशको प्राप्त हुआ उनकानाश तीनोंलोकोंकी वृद्धिका कारण हुआ और दैत्यभी सब मारेगये११४ इसके पीछे बड़े हाहाकार करके अपने क्रोधसे उत्प-न्नहोनेवाली उस प्रचंडअग्निको शान्तकिया और उसको रोककर शिवजीने कहा कि तू संसार को भस्ममत कर ११५ इसके अनन्तर सब देवगण ऋषि और महर्षिलोग स्वस्थचित्तहुये और उत्तम२ ब-

चनोंसे शिवजीको प्रसन्न करके सबने स्तुतिकरी ११६ इनबातोंके पीछेब्रह्मादिक सब देवता शिवजीको प्रणामकर उनकी आज्ञाले २ कर जहां२ से आयेथे वहां२ को चलेगये ११७ इसरीतिसे उस संसारके स्वामी देवऋषियोंके पूज्य महेश्वरजी महाराज ने लोकोंके कल्याणको किया११८ जैसे कि सृष्टिके कर्त्ता भगवान् ब्रह्माजीने वहां रुद्रजीके सारथ्य कर्मको किया ११६ उसीप्रकार आपभीशीघ्रता से महात्मा कर्णके सारथीहोकर घोड़ोंकी रस्सीपकड़िये १२० हे राजाओंमें श्रेष्ठ आप श्रीकृष्ण कर्ण और अर्जुनसे अधिकश्रेष्ठहो यह निश्चयहै कि यहकर्ण युद्धमें रुद्रजीके समानहै और आप नीति में ब्रह्माजीके बराबरहो इसकारणसे आप मेरे उन शत्रुओंके मारनेको वैसे समर्थहो जैसे कि इन्द्रअसुरोंके मारने को समर्थ होता है १२१।१२२ हेशल्य अब यह कर्णश्रीकृष्ण सारथी समेत श्वेत घोड़े वाले अर्जुनको युद्धमें मथन करके जिस रीतिसे अर्जुनको मारे वही प्रकार आपको करना उचितहै १२३ हे मद्रदेशके स्वामी तुम्हारेही कारणसे हमको राज्य मिलने की और अपने जीवनकी आशा है अबमुझकर्णके मंत्रीकीविजयहै अर्थात् तुम्हीं हमारे राज्यकीप्राप्ति और शत्रुओंके नाश के हेतुहो १२४।१२५ जिसको धर्मज्ञ ब्राह्मणने मेरे पिताके सन्मुख कहाहे शल्य इसकारण अर्थ और कर्म से युक्त अपूर्व वचनको सुनकर बड़े निश्चयके साथ कर्मकरो इसमें किसी बातका विचार मतकरो १२६ भार्गववंशमें बड़े यशस्वी जमदग्नि जी उत्पन्नहुये उनके पुत्र तेजगुणमें पूर्ण परशुराम जी प्रसिद्ध हुये १२७ उस प्रसन्नचित्त सावधान जितेन्द्री ने अस्त्रों के निमित्त उत्तम व्रतोंको धारण करके शिवजीको प्रसन्न किया १२८ उसकी भक्ति और शान्तचित्ततासे प्रसन्नहोकर शिवजीने उनको दर्शनदिया १२६ और परशुरामसे कहा हेपरशुरामजी तुम्हाराकल्याणहो मैं प्रसन्नहूं और तुम्हारे चित्तकी इच्छाभी मुझको विदित हुईतुम अपनी आत्माको पवित्रकरो सबअभीष्टोंकोपावोगे१३० और जबतुम पवित्रहोगे तभीतुमको अस्त्रदूंगा क्योंकि यहअस्त्र अपात्र और अस

मर्थको भस्म करते हैं १३१ शिवजीके इसबचन को सुनकर परशु रामजीने उत्तरदिया१३२हेदेवेश जब आपमुझको पवित्र और पात्र जानें तभी अस्त्र दीजियेगा१३३दुर्योधनने कहा कि हे शल्य इसके पीछे तपशांति और नियम पूर्वक पूजा भेंट और बलिप्रदान होम और मुख्य मन्त्रोंके द्वारा१३४बहुत बर्षांतक शिवजीकी आराधना करी तब उन महादेवजीने महात्मा भार्गवजीको१३५ प्रशंसा देवी पार्वतीजीके सन्मुख बर्णन करी कि यह दृढ़व्रत रखनेवाले परशु राम सदैव मुझमें भक्ति रखनेवालेहैं१३६हेशत्रुहन्ता इसप्रकार से प्रसन्न होकर शिवजीने देवता और पितरोंके सन्मुख उन परशु रामजीके बहुतसे गुणोंकावर्णनकिया १३७ इसकेपीछे उसीसमय में दैत्यलोग बड़े पराक्रमीहुये और प्रबल और अहंकारी राक्षसों से देवतालोग पराजित होकर घायल हुये १३८ तब उनकेमारनेमें निश्चय करनेवाले देवताओंने इकट्ठे होकर उन शत्रुओंके मारनेका उपाय किया परन्तु उनके मारनेको समर्थ नहीं हुये १३९ इसके पीछे देवताओंने उमापति महेश्वरजीको भक्तिसे प्रसन्नकिया और प्रार्थनाकरी कि शत्रुओंके समूहोंको मारिये १४० इसके अनन्तर वह देवेश शिवजी देवसंतापी दैत्योंके नाश करनेका प्रणकरके भार्गव परशुरामजीको बुलाकरयह बचन बोले १४१ कि हे भार्गव देवताओंके सब आयेहुये शत्रुओंको हमारी प्रीति और लोकोंके हितके अर्थ तुममारो १४२ यह बचन सुनकर परशुरामजीने शिव जीसे प्रार्थना करी कि हे देवेश युद्धमें दुर्म्मद अस्त्रवेत्ता दानवों के मारनेको अस्त्रोंसे अभिज्ञकैसे मारनेको समर्थहोसक्ताहैमहेश्वरजीने कहा कि मेरी आज्ञासे तुम वहांजावोशत्रुओंको मारोगे१४३।१४४ और शत्रुओंके समूहोंको बिजय करके बड़े गुणोंको प्राप्त होगे इस बचनको सुनकर परशुरामजी सब बातोंको अंगीकार करके १४५ स्वस्तिबाचन पूर्व्वक दानवोंकी ओरचले वहां जाकर बड़े अहंकार और बलसे उन दानवोंसे बोले १४६ कि हे युद्धदुर्म्मद दैत्यलोगो मुझसे युद्धकरो हे महा असुर लोगो मुझको महादेवजीने तुम्हारे

विजय करनेको भेजाहै १४७ फिर भार्गवजीके इस वचनको सुन कर दैत्योंने युद्धकिया उससमय उस भार्गवनन्दनने वज्र और बि- जिलीके समान स्पर्शवाले प्रहारोंसे युद्धमें उन दैत्योंको मारकर शिवजीका दर्शन किया फिर जमदग्नि जीके पुत्र ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ परशुरामजी दानवोंके हाथसे घायल शरीर शिवजीके हाथकेस्पर्शसे घातजन्य पीड़ासे रहित हुये और शिवजी महाराजने इनके उस कर्मसे अत्यन्त प्रसन्न १४८।१४६।१५० होकर इन महात्माभार्ग- वजीको बहुतसे वरदान दिये और उन प्रसन्नमूर्त्ति शिवजीने पर- शुरामजीसे कहा १५१ कि शस्त्रों के आघातसेयह तेरे शरीरमें पीड़ा हुई उस पीड़ासे हे भृगुनन्दन तेरामानुषी कर्म नष्ट होकर दिव्यकर्म प्राप्तहुआ १५२ अब तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे दिव्यअस्त्रोंको लो, दुर्योधनने कहाकि इसके पीछे परशुरामजी सब अस्त्रोंको और अनेक अभीष्ट वरोंको पाकर शिरसे दण्डवत् कर शिवजीकी आज्ञा लेकर वहांसेचलेगये १५३ तब ऋषिने इसरीतिसे प्राचीन वृत्तान्त को वर्णन कियाभार्गवजीनेभी अत्यन्त प्रसन्नअन्तःकारणके साथ दिव्य धनुर्वेद महात्मा कर्ण को दिया हे पुरुषोत्तम राजा शल्य जो कर्णमें कुछ पापहोतातो भृगुनन्दन जी काहे को दिव्यअस्त्र उसको देते और मैं भी उसको सूत के वंशमें उत्पन्न नहीं समझता हूं १५४।१५५।१५६ मैं इसको क्षत्रियोंके वंशमें उत्पन्न देवकुमार जानताहूं और यहकुलके गुप्तकरने को आज्ञादियाहै यह मेरामत है १५७हे शल्ययह कर्ण सबप्रकारसे क्षत्रीहै और सूतकेवंशमें नहीं उत्पन्न हुआहै कुंडलऔर कवचधारी महाबाहु महारथी१५८सूर्य्य के समानतेजस्वी सिंहको मृगी कैसे उत्पन्न करसक्ती है और जैसे कि इसकेदोनों भुजागजराजकी सूंड़के समान मोटी हैं १५९ उसी प्रकार हे शत्रुहन्ता इसकी बड़ी छातीको भी देखो यह सूर्य्यका पुत्र धर्मात्माकर्णकोई प्राकृतिपुरुष नहींहै१६०हे राजेन्द्र यह कर्ण म- हात्मपराशुरामजीकाप्रतापवान् और महापराक्रमी शिष्यहै१६१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यदुर्य्योधनसंवादेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

पैंतीसवां अध्याय॥

दुर्य्योधनबोले कि इसरीतिसे वहां सब लोकोंके पितामह भगवान् ब्रह्माजीने सारथ्य कर्म किया और श्रीरुद्रजी रथी हुये १ हे वीर रथीसे अधिक रथका सारथी करना योग्यहै हे पुरुषोत्तम इस हेतुसे तुम युद्धमें घोड़ोंकोथांभोजैसेकि शिवजीके निमित्त देवगणोंने भगवान् ब्रह्माजीको सारथ्यकर्मके लिये प्रार्थना करी उसीप्रकार हमलोगोंकी ओरसेकर्णसे भी अधिकआप प्रार्थनाकिये गयेहो२।३ जैसेकि देवताओंकी ओरसे शिवजीसे बड़ेभी ब्रह्माजी प्रार्थनाकिये गये हे महाराज उसी प्रकार आपभी कर्णसे अधिक होनेकेकारण प्रार्थना किये गयेहैं जैसेकि ब्रह्माजीने रुद्रजीके घोड़ोंको थांभा ४ उसी प्रकार आपभी बड़े तेजस्वी कर्णके घोड़ोंको थांभो शल्य बोले कि हेनरोत्तम मैंने भी इन नरोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुनके मुखसे कही हुई इस उत्तम अद्भुत कथाको बहुधा सुनाहै जैसे कि ब्रह्माजीने शिवजीके सारथ्यकर्मको किया है ५ और जैसेकि शिवजीने एक ही बाणसे सब असुरोंको मारा हेभरतवंशी यह भूतकाल का वृत्तान्त श्रीकृष्णजीका भी जानाहुआहै६।७जैसेकि भगवान्ब्रह्माजी सारथी हुये उसी प्रकार श्रीकृष्णजी भी भूतभविष्य के वृत्तान्तों को जानतेहैं ८ इसीहेतुसे जैसे कि जान बूझकर भगवान् ब्रह्माजीने शिवजीके सारथ्य कर्मको किया हे भरतवंशी उसी प्रकार श्रीकृष्णजीने अर्जुनकी रथवानी अंगीकारकरी ९ जो कर्ण किसी दशामेंभीअर्जुनको मारडालेगातो अर्जुनके मरने के पीछे आपश्रीकृष्णजी युद्ध करेंगे १० शंख चक्र गदाके हाथमेंधारण करनेवाले श्रीकृष्णजी तेरी सेना को भस्मकरेंगे उस समय उन क्रोधयुक्त श्रीकृष्णजीके सन्मुख तेरी सेना मेंसे कोई भी युद्धकरनेको समर्थ न होगा ११ संजय बोले कि शत्रुओं का विजय करनेवाला महासाहसी आपका पुत्र दुर्य्योधन ऐसे वचन कहनेवाले शल्य से बोला हे महाबाहु तुम सूर्य्यके पुत्र महापराक्रमी कर्णका अपमान

मतकरो १२ । १३ जो कर्ण कि सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठहोकर सर्व शस्त्रोंका पारगामीहै जिसके धनुषकी भयानक प्रत्यंचा के शब्द को सुनकर १४ पांडवी सेना दशोंदिशाओं को भागतीहै हे महाबाहू आपके नेत्रोंकेही सन्मुख हुआथा जैसे कि वह मायावी सैकड़ों मायाओंका प्रकट करनेवाला घटोत्कच मारागया और अर्जुन किसी प्रकार से भी सेनाके सन्मुख नहीं हुआ १५।१६ बड़ा भयभीत अर्जुन इस सब दिनोंमेंकभी सन्मुखनहींहुआ और पराक्रमी भीमसेन धनुषकी कोटिसे प्रेरित किया गया १७ हे राजा बहुतसे लोगोंने कर्णसे कहाथा कि तू पेट पालन करने वालोंके समान अज्ञानहे इसी प्रकार बड़े युद्धमें माद्रीके पुत्रशूरवीर नकुल और सहदेवको विजय करके १८ किसी प्रयोजनसे युद्धमें नहीं मारा हे श्रेष्ठ जिस कर्णनेवृष्णियोंमें बड़ावीर और यादवोंमें श्रेष्ठ महा पराक्रमी सात्यकीको १९ युद्धमें विजय करके रथसे विहीन करदिया और उसी मन्द मुसकान वालेनेसृंजियोंकोआदि लेकर अन्य सब योद्धाओंको जिनमेंमुख्य धृष्टद्युम्नथा उनको वारंवार युद्धमें विजय किया उस महारथी पराक्रमीकर्णको पांडव लोग युद्धमें कैसे विजय करसक्तेहैं २०।२१ जो क्रोधयुक्त होकर युद्धमें वज्रधारी इन्द्रको भी मारसकाहै और आप सर्वविद्या सम्पन्न महाअस्त्रज्ञ और पंडित हो२२ और पृथ्वी पर आपके भुजबलके समानभी कोईनहींहै तुम शत्रुओंके भल्लरूप होकर पराक्रममेंभी अक्षयहो २३ हे शत्रुहन्ता राजा शल्य इसीहेतुसे आपका नाम विख्यात है आपके भुजबल को पाकर सब यादव लोग समर्थ नहीं हुये २४ हे राजा श्रीकृष्णजी आपके भुजबलसे अधिकहैं जैसेकि अर्जुनके मरनेपर श्रीकृष्णजीसे सेना रक्षाके योग्यहै २५ उसीप्रकार कर्णके नाशहोजाने पर सेनाके लोग आपसे रक्षाके योग्यहैं जैसेकि वासुदेवजी युद्धमें सेनाको रोकेंगे उसी प्रकार आपभी सेनाको अवश्यमारोगे २६ आपके कारणसे युद्धमें अऋणता प्राप्त करना चाहताहूं और सब सगे भाई इष्टमित्र और अन्य सब राजाओंकी अऋणता चाहताहूं २७

शल्य बोला हे प्रशंसा करनेवाले दुर्य्योधन तुम सब सेनाकेसमक्ष जो कृष्णजीसे भी अधिक मुझको कहतेहो इस हेतुसे मैं तुझपर प्रसन्न हूं अबमैं प्रसन्नतासे अर्जुनसे लड़नेवाले यशस्वी कर्णके साथ उसके रथपर इस प्रतिज्ञासे सारथी बनताहूं कि मैं जिसस-मय जो चाहूंगा वह कर्णके विषय में कहूंगा उसका किसी प्रकार का मान नहीं करूंगा २८।२९।३०संजयबोले हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र तब आपका पुत्र कर्णसमेत यहबोला कि ऐसाही होय यह कहकर सब क्षत्रियोंके समक्षमें ३१ शल्यके सारथी होनेसे विश्वास युक्त होकर दुर्य्योधन बड़ी प्रसन्नतासे कर्णसे प्रीति पूर्व्वक मिला ३२ और बड़ी प्रशंसा करके कहनेलगा कि युद्धमें तुम सब पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र सब दानवोंको मारताहै ३३ इसके अनन्तर घोड़ोंकेहांकनेपर शल्यके तैयारहोनेपर प्रसन्नचित्त होकर कर्णने दुर्य्योधनसे कहा ३४ यह मद्रदेशका राजा अत्यन्त प्रसन्न चित्त होकर बात नहीं करताहै हे राजा आप मीठे बचनोंसे फिर इस प्रकारसेकहो ३५ तब महाज्ञानी सर्वशास्त्र और अस्त्रोंका वेत्ता पराक्रमी राजा दुर्य्योधन मद्र देशियोंके महाराजसे बोला ३६ हे शल्य अबकर्ण बादलके समान घिरेहुये शब्दयुक्तबाणोंसे युद्धभूमि को पूर्णकरना मानताहै कि अर्जुनके साथ युद्धकरना चाहिये३७ हे पुरुषोत्तम आपयुद्धमें उसके घोड़ोंको थांभो कर्ण आप सबयोद्धाओं को मारकर फिर अर्जुनको मारना चाहताहै३८ हेराजा मैं बारंबार आपकोकर्णके सारथी बननेके निमित्त अपनीइच्छासे प्रार्थनाकरता हूं जैसेकि सारथियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुनकेमन्त्रीहैं उसीप्रकार आपभी कर्णकी सब ओरसे रक्षाकरो ३९ । ४० संजयबोले इसके पीछे प्रसन्नचित्त हो राजाशल्य आपके पुत्र दुर्योधनसे बड़ेस्नेहसे मिलाप करके यह बचन बोला ४१ हेगांधारीके पुत्रअपूर्व दर्शन राजा दुर्योधन जो तुम मुझको ऐसा मानतेहो इसहेतुसे तेराजोअ-भीष्टहै उस सबको मैं करूंगा ४२हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ शत्रुसंता-पी मैं जिसजिस कर्मके योग्यहूं और जहां जहां जैसा२मैं करसक्ता

हूं वहां २ अपने मनसे सर्वात्मासे तेरेकर्मको करूंगा ४३ में वृद्धि-
का चाहने वालाहोकर कर्णसे जो कुछ प्रियवार्त्ताकं हूं उसवचनको
आप और कर्णदोनों सब प्रकारसे सहनेके योग्यहैं ४४ कर्णबोला
हेराजा मद्र जिस प्रकारसे ब्रह्माजी शिवजी के और श्रीकृष्णजी
अर्जुनके सारथीहुये उसी प्रकार तुमभी हमारी वृद्धिमें प्रवृत्तहूजि-
ये ४५ शल्यनेकहा कि अपनी निन्दा और स्तुति और दूसरे की
निन्दा और स्तुति यह चार प्रकारके कर्म अच्छे लोग नहीं करते
हैं ४६ हेबुद्धिमान् फिरभीमैंतेरे निश्चयहोनेके लिये अपनीप्रशंसा
से भरेहुये वचनको कहताहूं उसको तुम यथार्थही समझो हेप्रभु मैं
मातलिके समान सावधानी व अश्वकी रथवानी अथवा आगेहोने
वालेदोषके जानने और उसके दूरहोनेकेउपाय के जानने से और
दोषोंके दूरकरनेकी सामर्थ्य रखने से इन्द्रके सारथी होने केयोग्य
हूं ४७। ४८ हेनिष्पापकर्ण इसहेतुसे युद्धमेंअर्जुनसे युद्धकरनेवाले
तुझ रथीके साथसारथी होकर तपसे पृथक्घोड़ोंको चलाऊंगा ४९

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणि सारथ्यस्वीकारेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५

छत्तीसवां अध्याय ॥

दुर्योधनबोला हेकर्ण यहराजामद्र तेरासारथी बनेगा यहतुम्हारा
सारथी श्रीकृष्णजीसे भी ऐसा अधिकहै जिसप्रकार इन्द्रकासारथी
मातलि १ जैसेकि मातलि हरितघोड़ोंकेरथको चलाताहै उसीप्रकार
यहशल्यभीतेरेरथके घोड़ोंको चलावेगा २ तुझयुद्धकर्त्ताकेरथीहोनेऔर
राजामद्रकेसारथीहोने पर तुम्हाराही उत्तम रथ निश्चय करके पांड
वोंकोविजयकरेगा ३ संजयबोले हेराजा इसकेअनन्तर प्रातःकाल
होजानेपर राजा दुर्योधनने उस वेगवान् राजा मद्र सेफिर कहा ४
किहेराजा मद्र आप अब युद्धमें कर्णके उत्तम घोड़ोंको थांभो तुमसे
रक्षित होकर यह कर्ण अर्जुनको अवश्य विजय करेगा ५ हे भरत
वंशीयह वचन सुनकर शल्यने रथपर नियत होकर कहाकिऐसाही
होगा तब प्रसन्नचित्त कर्ण अपने सारथी शल्य केपास आकरयह

बचन बोला किहे सूत आपमेरेरथको शीघ्र तैयार करो उसकेपीछे सारथी शल्यने कहा विजयकरो यह शब्दकहकर रथोंमे श्रेष्ठ गंधर्व नगरके समान६।७ बुद्धिके अनुसारअलंकृतकल्याणरूप और बिजयी रथको बड़ी शीघ्रता से तैयार करके वर्त्तमान किया उसउत्तम रथको प्रथमतो महारथी कर्णने ब्रह्मज्ञानी अपने पुरोहितके द्वारा बुद्धिके अनुसारपूजके परिक्रमा कर बिचार पूर्वक सूर्यका उपस्थान करके ८।६ सन्मुख वर्त्तमान हुये शल्यसेकहा कि आप सवार हूजिये इसके पीछे बड़ा तेजस्वी शल्य कर्णके उस अत्यन्त उत्तम बड़े अजेय रथ पर ऐसे चढ़ा १० जैसेकि पर्वतपर सिंह चढ़ता है तदनन्तर कर्ण अपने उत्तम रथ को शल्य के स्वाधीन देख कर ११ ऐसे सवारहुआ जैसे बिजली सेभरेहुये बादल पर सूर्य्य सवार होताहै फिरवह सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमानदोनों एकरथपर सवारहोकर १२ ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि स्वर्ग के सूर्य्य और चन्द्रमा दोनों बादलों में शोभित होतेहैं उससमय वह महात्मा बड़े तेजस्वी ऐसे दिखाई दिये १३ जैसेकि यज्ञमें ऋत्विज् और सदस्योंसे स्तुतिमान इन्द्र और अग्नि होतेहैं फिर वहकर्णरथ पर नियत होगया जिसके घोड़ोंको शल्यने पकड़ रक्खाथा १४ बाणरूप किरणोंका रखनेवाला कर्णघोर धनुषको टंकारताहुआ अपने उत्तम रथपर ऐसे नियत हुआ जिस प्रकार मंडलयुक्त सूर्य्य नियत होताहै १५ वह पुरुषोत्तम ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकिमन्दराचल पर्बत पर सूर्य्य नियतहोताहै फिर शल्य उस महाबाहु रथपर चढ़ेहुये तेजस्वी कर्णसे १६ यह बचन बोलाकि हेवीर कर्ण युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मजीसे कठिन कर्म नहीं कियागया १७ तुमसब धनुषधारियोंके समक्षमें उसको करो मेरे चित्तमें यह पूर्ण बिश्वासथा कि महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य १८ अवश्य अर्जुन और भीमसेनको मारेंगे हेवीर उस महायुद्धमें जो वीरताका कर्म उन दोनोंसे नहींहुआ१९ हेकर्णतुम द्वितीय इन्द्रकेसमानहोकर उस कर्मको करो तुम धर्मराजको बांधो अथवा अर्जुनकोमारो २० हेकर्ण

तुम भीमसेन समेत माद्रीकेपुत्र नकुल और सहदेव कोभी मारो हे पुरुषोत्तम तुम यात्राकरो तुम्हारा कल्याणहै और विजय होगी २१ वहांजाकर पांडवोंको सबसेनाको भस्मकरोइसकेपीछेतूरी नामादि हजारों बाजे और भेरी बजाई२२ उनका शब्द ऐसा सुन्दर विदित हुआ जैसेकि स्वर्गमें बादलोंके शब्द होतेहैं फिरवह महारथी रथमें बैठाहुआ कर्ण उसके बचनको अंगीकार करके २३ उस युद्धमेंअ- त्यन्त सावधान शल्यसे बोलाहेमहाबाहु घोड़ोंकोतीक्ष्णकरोमैं अर्जुन को मारूंगा२४ और भीमसेन समेत दोनों नकुलसहदेव और राजा युधिष्ठिरको मारूंगा हेशल्य अब तुम अर्जुनको और मुझ हजारों बाण फेंकनेवाले के भुज बलकोदेखो अबमैं बड़े प्रकाशित बाणोंको २५।२६ पांडवोंके नाश और दुर्योधनकी विजयके लिये फेंकताहूं शल्यबोला हेसूतके पुत्र तुम इसरीतिसे पांडवोंका अपमानकरते हो २७ वह पांडव सब अस्त्रशस्त्रोंके ज्ञाता बड़े धनुषधारी अतिबली कभी मुख न मोड़नेवाले महाभाग अजेय और सत्य पराक्रमीहैं २८ जो साक्षात् इन्द्रकोभी भयके उत्पन्न करनेवालेहैं हेकर्ण जब बज्रके समान२९ गांडीवधनुषके शब्दकोसुनेंगे तब ऐसानहींकहोगे अथवा जबकि भीमसेनके हाथसे३० हाथियोंकी सेनाकोखंडित दन्तहोकर मृतक देखोगे तब ऐसा नहींकहोगे जब युद्धमें धर्मपुत्र युधिष्ठिर वा नकुल सहदेवको देखोगे३१औरजबतीक्ष्ण बाणोंसे आकाशको आ- च्छादितकरनेवाले बाणोंके चलानेवाले हस्तलाघवकरनेवालेअजेय शत्रुओंको अथवा अन्य २ बड़े २ प्रतापी राजाओं को देखोगे तब तुम ऐसे वचन नहीं कहोगे ३२।३३संजय बोले कि इसकेपीछे कर्ण राजामद्रके कहेहुये वचनोंको निन्दित करके उस वेगवान् राजा मद्रसे कहने लगा कि अबचलो ३४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यसंवादेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि प्रसन्न मूर्ति सब कौरव उस बड़े धनुषधारी

युद्धाभिलाषी कर्णको देखकर चारों ओर से पुकारे १ इसके पीछे दुन्दुभी और नाना प्रकारके बाजों के घोड़ों की गर्जना समेत शब्दोंको करते आपके युद्धकरनेवाले २ युद्धमें मृत्युको लौटाकर निकले इसकेपीछे कर्णसमेत प्रसन्न चित्त युद्धकर्त्ताओंके चलनेपर ३ पृथ्वी कंपायमान हुई और बड़ी दूरतक शब्दायमान होगई और सूर्य्यादि नवग्रह युद्धके निमित्त निकलतेहुये दृष्टपड़े ४ और उल्काओंका गिरनावा शुष्कविद्युत्पत न होना प्रारंभहुआ और महाभयकारीबायु चली उस समय महाभय सूचक पशु और पक्षियों के समूह आपकी सेनाको बहुधा दाहिने हुये और यात्रा करने वाले कर्णके घोड़े पृथ्वीपरगिरे और अन्तरिक्षसे अस्थियोंकी महाभयकारी बर्षाहुई ५।६।७ अस्त्रशस्त्र अग्निरूपहुई ध्वजा कंपायमान हुई और बाहनोंने अश्रुपातकिया ८ ऐसे२ अनेकभय और अशुभ सूचक उत्पात कौरवोंके नाशके लिये प्रकटहुये ९ परन्तु दैवसे मोहितहुये उनसब राजाओंने इन भयकारी उत्पातोंको कुछ नहीं गिना और यात्रा करनेवाले कर्णसे कहने लगे कि बिजय करो उस स्थान पर कौरव लोगोंने पांडवोंको पराजय माना १० हे राजा इसके पीछे शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला रथियोंमें श्रेष्ठ यह रथपर बैठा हुआ कर्ण बड़े पराक्रमी सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान भीष्म और द्रोणाचार्य्यको बिचारकर ज्वलित रूपहुआ ११ अहंकार और क्रोधज्वलित रूप श्वासाओंको लेता हुआ कर्ण अर्जुन के अद्भुत कर्म को बिचार कर शल्यको सन्मुख करके यहवचन बोला कि हे शल्य मैं शस्त्रधारी रथमें सवार होकर युद्धमें बज्रधारी इन्द्र से भी नहींडरताहूं भीष्मही जिनमें मुख्य गिनेजातेथे उनको पृथ्वीपर पड़ा हुआ देखकर मुख न मोड़ना यह जो प्रशंसा है वह मुझको त्याग करतीहै१२।१३ जबकि महाइन्द्र और विष्णुकेरूपवाले निर्दोष अत्यन्त उत्तम रथ और घोड़ेवाले और हाथियों के संहार करनेवाले घायलनहोनेके समान भीष्म और द्रोणाचार्य्यजी शत्रुओंके हाथसे मारेगये इसहेतु से इसयुद्धमें मुझको भी भय नहींहै १४ बड़ेअस्त्रज्ञ

ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ गुरूजीने सारथी वा हाथी और रथों समेत बड़े २ वीरपराक्रमी राजाओंको युद्धमें शत्रुओंके हाथसे मराहुआ देखकर किस कारण से युद्धमें सब शत्रुओं को नहीं मारा १५ सो मैं इस प्रबल घोरयुद्धमें द्रोणाचार्य्यको स्मरण करताहुआ सत्य २ कहता हूं हे कौरव तुमउसको समझो तुममेंसे मेरेसिवाय कौनसा दूसरा मनुष्यहै जो उसमृत्युके समान सन्मुख आनेवाले उग्ररूप अर्जुनसे सन्मुखलड़े १६ द्रोणाचार्य्यजी में शिक्षाकरना वा बल धैर्य्य और महान् अस्त्रज्ञता पूर्वक नम्रताथी जो वहमहात्मा मृत्युके वशीभूत हुये तो मैं अबउसको आसन्न मृत्युही मानताहूं १७मैं इसलोक में शोचताहुआ कर्म और दैवयोग से सबको नाशमानही जानताहूं गुरूके गिराये जानेपर सूर्य्योदयके समय सन्देहसे रहितकौनमनुष्य अपने जीवने की आशा करसक्ता है १८ निश्चय करके अस्त्र, बल पराक्रम, कर्म, श्रेष्ठनीति और उत्तमशस्त्र मनुष्यके सुखके कर्म को नहीं करसक्तेहैं क्योंकिजब इसरीतिसे गुरूजी शत्रुओंके हाथसेमारे गये १९ तबकोईभी अस्त्रादिकउन असहिष्णुअग्निवा सूर्य्यकेसमान तेजस्वी पराक्रम में इन्द्र और विष्णु के सदृश नीति में शुक्र और बृहस्पतिके समान गुरूजीकी रक्षाकरनेको समीपतामें नियत नहीं हुये २० स्त्री वा बालकों के पीड़ित और रोदनकरनेपर और दुर्य्योधनके उपायोंके निष्फल होनेपर मुझको कर्म करना उचितहै यह मेरामतहै हे शल्य इसहेतुसे शत्रुओंकी उससेनामें चलो २१ जहां सत्य संकल्प राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, वासुदेवजी, सात्यकी, सृंजय नकुल और सहदेव नियतहैं उनसे युद्धकरने वालामेरे सिवाय अन्य दूसरा कौनहै २२ इसहेतुसे हे राजा मद्र शीघ्रचलो मैं युद्धमें सन्मुख होकर उन पांचालोंको वा सृंजियों समेत पांडवों को मारूंगा वाउनके हाथसे मरकर द्रोणाचार्य्यके समानयमराजके समीप जाऊंगा २३हेशल्य यहबात नहींहैकिमैं भीष्मादिकशूरोंके समान न मरूंगाकितुमरना अवश्यहै परन्तु मुझसेमित्रकेद्रोहकरने वाले नहीं सहेजाते इसहेतुसे उनसे पराक्रमपूर्वक लड़करप्राणोंको

त्यागकरके द्रोणाचार्य्यके पीछे जाऊंगा २४ जीवनकेअन्त होनेपर मृत्युके चाहेहुये बुद्धिमान् और अबुद्धिमान् दोनों बच नहींसक्ते हे बुद्धिमान इसहेतुसेमैं पांडवोंके सन्मुख जाऊंगा निश्चयकरके दैवके उल्लंघन करनेको कोई समर्थ नहींहै २५ राजा धृतराष्ट्रका पुत्र सदैवसे मेरा शुभचिन्तक और मित्ररहा है इस निमित्त मैं उसके अभीष्ट सिद्धहोनेके लिये प्रियभोग और कठिनतासे त्यागनेकेयोग्य अपने प्राणोंकोभी त्यागकरूंगा २६ वह व्याघ्रचर्मसे मढ़ाहुआ रथ मुझको परशुरामजीने दियाहै जोशब्दरहित चक्र सुवर्णमयत्रिकोश और रजतमय त्रिवेणु और अत्यन्त उत्तम घोड़ोंसे संयुक्तहै २७ हे शल्यचित्र विचित्र धनुष ध्वजा गदा वा उग्ररूप शायक प्रकाशित खड्ग और उत्तम आयुधों समेत शब्दायमान उग्र उज्ज्वल शंखको देखो २८ मैं इसपताकाधारी बज्रके समान दृढ़ शब्दायमान श्वेत घोड़े और तूणीरोंसे शोभायमान रथोंमेंश्रेष्ठ इसरथपर आरूढ़होकर युद्धमें अपने पराक्रमसे अर्जुनको मारूंगा २९ जो युद्धभूमिमें सदैव सावधान सबकानाश करनेवाला कालभी अर्जुनकी रक्षाकरे तोभी युद्धमें सन्मुख होकर उसको अवश्य मारूंगा अथवा भीष्मके समक्ष यमराजकेपास जाऊंगा ३० जो युद्धमें यमराज वरुण कुबेर इन्द्र अपने सबसमूहों समेत इकट्ठे होकरभी अर्जुनकी रक्षाकरें तबभीमैं उनसब समेत अर्जुनको बिजय करूंगा बहुतबातोंके कहनेसे क्या प्रयोजनहै ३१ संजयबोले कि कर्णके वचनोंको सुनकर पराक्रमी राजाशल्य उसका अपमान करके हंसा और निषेधकरके उत्तर दिया ३२ शल्यनेकहा हेकर्ण अपनीप्रशंसा मतकरो हे बड़ेअहंकारी तुमबड़ाबोल बोलतेहो बड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि कहांतो नरोत्तम अर्जुन और कहां नराधम तुम ३३ अर्जुनकेसिवाय कौन पुरुषविष्णुजी और इन्द्रसे रक्षित देवस्वरूप यदुभवन को बिलोड़न करके श्रीकृष्णकी छोटीबहिन सुभद्राको हरणकर सकाथा ३४ और मृगवध कलहमें अर्थात् शूकरके शिकार करनेमें इन्द्रके समान पराक्रम वाले अर्जुन के सिवाय कौनसापुरुष इसलोक में त्रिभुवनके स्वामी

ईश्वरोंकेभी ईश्वर शिवजीको युद्धमें बुलासक्ताहै ३५ अर्जुनने अग्नि की गौरवतासे असुर,सुर,महाउरग,मनुष्य,गरुड़,पिशाच, यक्ष और राक्षसों को अपने बाणोंसेविजयकिया औरअग्निको यथेच्छ भोजन रूप हव्यदिया ३६ तुझको स्मरणहैकि जबयुद्धमें कौरवों समेततुम सबको पराजय करके गन्धर्वोंने इसधृतराष्ट्रकेपुत्र दुर्य्योधनकोबांध लियाथा और तुमलोग भाग आयेथे उससमय इसी अकेलेअर्जुनने सूर्य्यके समान प्रचंड शायकोंसे गन्धर्वोंको पराजय करके उसको छुटायाथा ३७।३८ फिर गोहरणमें सेना वा सवारी समेत चढ़ाई करनेवालेगुरू,गुरुपुत्र और भीष्मादिकतुमसब उस पुरुषोत्तमकेहाथ सेविजयकियेगयेथेउससमयतुमनेक्योंनहींअर्जुनकोविजयकिया ३९ संजय बोले कि इस रीतिसे शत्रुओंकी प्रशंसा बड़ेसाहसी शल्यके मुखसे होनेपर कौरवी सेनाका सेनापति कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजामद्रसे बोला ४० ऐसाही होगा ऐसाहीहोगा क्याअधिक बर्णन करते हो अबतो निश्चय करके मेरा उसका युद्ध वर्त्तमानहै जो वह इस युद्धमें मुझको विजय करलेगा तब तेरा यह कहनाठी-क २ होगा ४१ । ४२ राजामद्रने कहा ऐसाही होय यह कह-कर उत्तर नहीं दिया तब युद्धकी इच्छाकरके कर्णने शल्यसे कहा कि हे शल्य सावधान होजाओ ४३ वह श्वेत घोड़ोंसेयुक्त शल्यको सारथी रखनेवाला युद्धमें शत्रुओं को मारता हुआ उन वीरशत्रुओं के सन्मुख ऐसे गया जैसे कि अन्धकार को दूरकरता हुआ सूर्य्य जाता है उसके पीछे व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुये श्वेतघोड़ों के रथके द्वारा वहां पहुंचकर सब पांडवी सेनाको देखकर बड़ी शीघ्रतासे अर्जुन को पूछा ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

इसके अनन्तर यात्राकरनेमें आपकी सेनाको प्रसन्न करते हुये कर्णने युद्धमें प्रत्येकको देखकर पांडवोंसेकहा १ कि इससमय

जोपुरुष महात्मा अर्जुन को मुझे दिखावे उसको मुंहमांगा धनदूं२ और जो पुरुष अर्जुनको मुझसे थोड़ाजाने उसको मैं रत्नोंका भरा-हुआ एक शकटदूं ३ और जो अर्जुन काबतलानेवाला पुरुषउस-कोभी थोड़ा माने तोमैं उसकोभोजन और कांस्य दोहिनियोंसमेत सौगौवें दूं ४ अर्जुन के दिखलाने पर सौ उत्तम गांवदूं और खच्चरों समेत रथभी दूं ५ अथवा इन सबको भी थोड़ाजाने तोमैं उसको कृष्ण केशोंसे शोभित स्त्रियोंको दूंगा जो अर्जुन का दिखलाने-वाला इसकोभी साधारण जाने ६ तो उसको सुनहरी हाथीकेसमा-न छः बैलोंसे युक्त रथदूं और इसीप्रकारउसे ऐसो बस्त्रा लंकारयुक्त स्त्रियोंका एक सैकड़ा दूंगा ७ जोकि निष्ककी माला धारणकिये गीत वाद्यमें कुशल श्यामांगीहों अथवा जोअर्जुनका दिखलानेवाला उसकोभी कमजाने उसको सौहाथी सौगांव सौरथ औरदशहजार सुवर्ण सेयुक्त ८। ९ सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथके लेचलनेमें समर्थ होंय ऐसे घोड़े दूंगा और सुवर्ण शृंगोंसेयुक्त सवत्सा चारसौगौवें दूंगा १० जो अर्जुनका दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा माने ११ उसकेलिये दूसरा बर देकर ऐसे पांचसौ घोड़ेदूं जोकि श्वेतबर्ण और सुबर्ण से मंडित स्वच्छ मणियोंके भूषणोंसे अलं-कृत हों १२ इसके बिशेष मैं अठारह अच्छे शिक्षित अन्यघोड़ों को भीदूंगा और अतिउज्वल सुबर्ण से अलंकृत कांबोजी भी घोड़ों से युक्त रथदूं १३ जोअर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष उसकोभी न्यून समझे १४ तो दूसरादानदूं अर्थात् नानाप्रकारके स्वर्णभूषणोंसे और मालाओं से अलंकृत पश्चिमीय कच्छदेशोंमें उत्पन्न और मालय वान हाथीवानोंसेशिक्षितसौ हाथी दूं और जोइसकोभी थोड़ामाने १५। १६ उसको बहुत वृद्धियुक्त धनसेपूर्ण वन जंगलवाले ऐसे चौदहगांवदूं जोनिर्भयऔर अच्छेराजाओंके भोगनेकेयोग्य होंय१७ इसी प्रकार निष्ककी माला धारण करनेवाली मगधदेशी दासियों का एक सैकड़ादूं और जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा माने तो जोवह मांगेवहदूं अर्थात् बेटी स्त्रीको आदिलेजो

मेरा प्रियधन होय उसको भी दूंगा इसके विशेष जोजो मेरा धनहै और वह चाहता है वह सब उसको देसक्ताहूं जो अर्जुन को मुझे बतावे वादिखावे १८।१९।२० श्रीकृष्ण और अर्जुनको एक समय मेंहीमारकर इनका सबधन उसको दूं जो अर्जुन और श्रीकृष्णजी को मुझे दिखावे २१ युद्धमें ऐसे वचनोंको कहते हुये कर्णने समुद्र से उत्पन्न हुयेअपने शंखको बजाया२२ हे महाराजकर्णके इनवचनों को सुनकरदुर्य्योधन अपने साथियों समेत अत्यन्त प्रसन्नहुआ २३ इसकेपीछे हे पुरुपोत्तम दुन्दुभी आदि मृदंगोंके सबप्रकारके शब्द वा बाजोंसमेतसिंहनाद और हाथियोंके शब्द२४ सेनाओं के मध्य में प्रकटहुयेइसीप्रकार अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरोंके अनेकशब्द हुये २५ तबतो सेनाके प्रसन्न होनेपर राजामद्रहंसकर उसशत्रुओं के विजयकरनेवाले और अपनी प्रशंसा करतेहुये जानेवालेमहारथी कर्णसे यह वचन बोला २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णावलेपेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

शल्यबोले हे सूतपुत्र दानकरनेसे बन्द हो तू सुवर्णमयहाथी के समान छः बैलोंसे संयुक्त रथको पुरुपके अर्थ अर्थात् ब्रह्मके अर्पणकरो तबतुम अर्जुनको देखोगे १ हेराधाकेबेटे तुम यहां बाल बुद्धिसे अज्ञानोंके समान धनको देतेहो अब तुम बिनाउपायकेही अर्जुनको देखोगे २ तुम अज्ञानियोंके समान जो निरर्थक धनको देतेहो सोअपात्रकेदानदेनेमें जोदोपहैं उनकोभी अपने मोहसे नहीं जानतेहो ३ जो तुम बहुतसे धनको देतेहो उसधनके द्वारा तुमको उचितहै कि यज्ञोंकोकरो४जोतुम अपनी अज्ञानतासे श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारना चाहतेहो वह निरर्थकहै शृगालोंसे सिंहोंकामारना हमनेकभी और कहीं भी नहींसुनाहै ५ तू अप्रियता को और अप्राप्तको चाहताहै तेरे शुभचिंतक मित्रहैं जो कि तुझको अग्निमें गिरतेहुयेनहीं रोकतेहैं६ तू शुभाशुभ कर्मकोभीनहीं जानताहै और

निस्संदेह तू कालके गालमें फंसताहै जीवनकाचाहनेवाला कौन पुरुष सर्वथा निष्प्रयोजन और सुननेके अयोग्य बार्त्ताओंकोकरे ७ जैसे कि गलेमें पत्थरकी शिलाको बांधकर समुद्रमें पैरना चाहै अथवा पर्व्वतके शिखरसे गिरनाहोय वैसेही प्रकारका तेराईप्सितकर्महै ८ जो अपना कल्याण चाहते हो तो तुमसब योद्धाओंसे युक्त सजीहुई अपनी सेनासमेत अर्जुनसे युद्धकरो ९ मैं दुर्योधनकी वृद्धिकेलिये तुझसे कहताहूं जो तू जीवनकी इच्छारखताहै तो मेरे बचनोंको शत्रुता और ईर्षासंयुक्त नजान १० कर्णबोला मैं अपनेही भुजबलकेआश्रितहोकर युद्धमें अर्जुनको चाहताहूं हे उत्तममित्र तुम शत्रुरूप होकर मुझको भयभीत करातेहो ११ अबमुझको मेरे इसबिचारसे कोईभी नहीं हटासक्ता इन्द्रभी जो बज्रदिखाकर मुझकोयुद्धसे निवृत्त कियाचाहै तो नहीं निवृत्त होसक्ता फिर मनुष्यकी क्या सामर्थहै १२ संजयबोले कि फिर कर्णको क्रोध युक्त करनेकी इच्छासे मद्रदेशकेस्वामी शल्यने कर्णके बोलने के पीछे इसउत्तर रूप बचनकोकहा १३ किजब अर्जुनके बेगसेयुक्त प्रत्यंचासे प्रेरित तीव्र हाथोंसे छोड़ेहुये कंकपक्षसे जटित तीक्ष्णनोकवाले बाणतेरे सन्मुख आवेंगे तब तू अर्जुनके विषयमें ऐसे बचन कहनेको दुखी होगा १४ जब सेनाको संतप्त करताहुआ तुझको तीक्ष्णनोक वाले बाणोंसे मर्द्दन करना चाहनेवाला अर्जुन अपने दिब्य धनुष को लेकरतेरे सन्मुख आवेगा तब हेसूतपुत्र तू महादुखीहोगा १५ जैसेकि माताकी गोदीमें कोई सोताहुआ बालक चन्द्रमाके पकड़नेकी इच्छा करताहै उसीप्रकार अबतुम इसरथपर सवार होकर प्रकाशमान अर्जुनको अपने मोहसे बिजय किया चाहतेहो १६ हे कर्ण अबतुम अत्यंत तीक्ष्णधारवाले त्रिशूल से चिपटकर अपने अंगोंको घसीटते हो जो कि अत्यंत तीक्ष्ण धारवाले त्रिशूल कर्मी अर्जुनके साथमें लड़ना चाहते हो १७ जैसे कि अज्ञानबालक वा बेगवान नीचमृग क्रोधयुक्त बड़े केसरीसिंहको युद्धके निमित्तबुलावे हेसूतपुत्र इसीप्रकारसे तू भी अर्जुनको बुलाता है १८ हे सूतके

पुत्र तू राजकुमारको मतबुलावे जैसे कि मान्ससे तृप्तहुआ शृगा-
लवनमें केसरी सिंहको नहीं बुलासक्ता उसीप्रकार तुम अर्जुन
को प्राप्त होकर अपना नाशकरना चाहतेहो सो मतकरो १६
जैसेकि शृगाल ईशाके समान दांत रखनेवाले मुख और गंडस्थल
से मद भाड़नेवाले बड़े हाथी को युद्धमें बुलावे हेकर्ण उसीप्रकार
तुम पांडव अर्जुनको बुलातेहो २० तुम अपनी अज्ञानता और वल
वुद्धिसे बिलमें बैठेहुये क्रोधयुक्त महाविषधर कालेसर्पको लकड़ीसे
मारतेहो जोअर्जुनसे युद्धकरना चाहतेहो २१हेकर्ण अवशृगाल रूप
अज्ञानहोकर तुम केसरीसिंहरूप क्रोधयुक्त नरोत्तम पांडवअर्जुनको
उल्लंघन करके गर्जते हो २२ और सर्प के समान तुम अपनी मृत्यु
के लिये सुन्दर पक्षवाले अद्भुत पराक्रमी गरुड़के समान वेगवान्
महाबली पांडव अर्जुन को बुलातेहो २३ सब जलोंके स्वामीभयो
नक्र मत्स्यादिक जीवों से व्याप्त चन्द्रोदय में प्रसन्नरूप वृद्धिपाने
वाले मूर्तिमान समुद्रको भुजाओंसे तरनाचाहतेहो २४ हेकर्णवछड़े
के समान तुमदुन्दुभी रूप क्षुद्रघंटिकाओंके शब्दरखनेवाले होकर
तीक्ष्ण शृंगसे घात करनेवाले बड़े बैलके समान पांडवअर्जुन को
युद्धमें बुलातेहो २५ तुम मेंढकके समान होकर लोकमें घोरजल बर
सानेवाले नररूप बादलके समान अर्जुनकेसन्मुखऐसेगर्जतेहो २६
जैसेकि अपने घरमें नियत कुत्ता वनमें वर्त्तमान व्याघ्रको अपने
स्थानसे भौंकताहै उसीप्रकार तुमभी कुत्ते के समान नररूपव्याघ्र
अर्जुनकी ओरको भौंकतेहो २७ हेकर्णखरगोशोंसेयुक्तशृगालभीवन
में निवास करताहुआ अपनेको उस समयतक सिंहरूप मानता है
जबतक किसिंहको नहीं देखताहै २८ हेराधाकेपुत्र इसीप्रकार शत्रु
ओंके विजय करनेवाले अर्जुनको नदेखके तुमभीअपनेकोसिंहरूप
मानरहेहो २९ जबतक एकरथपर सूर्य्य और चंद्रमाकेसमाननियत
श्रीकृष्ण और अर्जुनको नहीं देखतेहो तबतकतुम अपनी आत्माको
व्याघ्र मानते हो ३० हेकर्ण जबतक कि तुम युद्ध में गांडीव धनुष
के शब्द को नहीं सुनतेहो तभीतक तुम इनअस्तव्यस्त वचनों को

मुखसे बोलरहेहो रथ और धनुषों से दशोंदिशाओं को शब्दायमान करनेवाले और शर्दूलके समान गर्जनेवाले अर्जुन को देखकर तू शृगालरूप होजायगा ३१ । ३२ तुम सदैव शृगाल रूप हो और अर्जुन सदैव सिंहरूपहै हे अज्ञान इसकारण बीरलोगों से शत्रुता करने में तू शृगालके समान दिखाई देताहै३३ जैसेकि चूहाबिलार और महावनमें कुत्ता और व्याघ्रहोय और जैसे शृगाल और सिंह होंय और जिसप्रकार खर्गोश और हाथी होंय ३४अथवा मिथ्या और सत्य वाविष और अमृतहोंय उसीप्रकार तुम और अर्जुनभी अपने२ कर्मसे विख्यातहो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३६ ॥

चालीसवाअध्याय ॥

संजय बोलेकि तेजस्वी शल्यसे निन्दाकियाहुआकर्ण अत्यन्तक्रोध-युक्तहोकर बचन रूपभालोंको सहनकरताहुआबोला१ कि हेशल्य गुणवानोंके गुणों को गुणवानही जानताहै गुणहीन मनुष्य नहीं जानताहैतुमगुणोंसेरहितहो इसीसे गुण और अवगुणोंकोक्याजान-सक्तेहो२हेशल्य मैं महात्मा अर्जुनके बड़े अस्त्रोंको वाक्रोध बलपरा-क्रम धनुष और बाणोंको अच्छे प्रकारसे जानताहूं ३ और राजाओं मेंवा यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजीकी भी महानताको जैसा किमैं जानताहूं वैसा तुम नहीं जानतेहो ४ मैं अपने और पाण्डवोंके परा-क्रमको अच्छेप्रकार से जानता हुआ युद्धमें उस गांडीव धनुषधारी को बुलाताहूं ५ हे शल्य यह सुन्दर पुंखवाला रुधिर पीनेवाला तरकसमें अकेलाही रहनेवाला स्वच्छ अलंकृत ६ चन्दन सेलिप्त बहुत बर्षोंसे पूजित सर्परूप बिषधर उग्रमनुष्य घोड़े और हाथियों के समूहोंका मारनेवाला ७ घोररुद्ररूप कवच समेत अस्थियोंका चूर्णकर्त्ता जिसके द्वारामैं क्रोधयुक्त होकर मेरुपर्व्वत सरीके बड़े २ पर्व्वतों को भी चीर डालताहूं ८ मैं अर्जुन और देवकीनन्दन श्रीकृष्णके सिवाय उस बाणको कभी दूसरे परनहीं चलाऊंगा

इसकेतुझसे में सत्य २ वचन कहताहूं ६ किमैं अत्यन्त क्रोधयुक्तहो-
कर उसवाणमें अर्जुन और वासुदेवजीसे लडूंगा यह कर्ममेरे ही
योग्य है १० सब वृष्णावंशी वीरोंकी लक्ष्मी श्रीकृष्णजीमें नियत
है और सब पांडवोंकी विजय अर्जुन में नियत है ११ इससे अब
दोनों कोपाकर कौन लौटसक्ता है वह दोनों पुरुषोत्तम भागेहुये
हैं वा रथपरनियत हैं १२ मुझअकेले के सन्मुख होनेपर हे शल्य
श्रेष्ठकुलकी शोभाको देखना हुआ और मामाकेबेटे अजेय दोनोंभा-
इयोंको १३ सूतमें पोहीहुई दोमणियोंके सदृश मेरेहाथ से मृतक
ही देखोगे अर्जुनके पास गांडीवधनुषहै श्रीकृष्णकेपास सुदर्शनच
क्रहै और गरुड़ वाहनूमानजीकेरूप रखनेवाली दोनों ध्वजाहैं १४
हेशल्य भयभीतोंको भयके उत्पन्न करनेवाले और मेरी प्रसन्नता
के बढ़ानेवाले वह दोनोंहैंदुष्ट प्रकृति अज्ञानी महायुद्धमें अनभिज्ञ
भयसे विदीर्ण चित्त तुमभयभीत होकर बहुतसे भयकारी वचनों
को कहतेहो हेपापीदेश में उत्पन्न होनेवाले निर्बुद्धी नीच क्षत्रियों
के कुलको कलंक लगानेवाले अब युद्धमें उनदोनोंको मारकरतु-
झको भी बांधवों समेत मारूंगा १७ तू मित्रहोकर शत्रुके समान
शत्रुओंकी प्रशंसाकरताहै मुझको श्रीकृष्ण और अर्जुनसेक्याडराता
है कैसो वह दोनों मुझकोही मारेंगे वामैंही उन दोनोंको मारूंगा
१८ मैंअपने पराक्रमको जानता हुआ श्रीकृष्ण और अर्जुनसे नहीं
डरताहूं मैं अकेलाही हजारों वासुदेव और अर्जुनोंको मारसक्ताहूं
१९ हे दुर्देशमें उत्पन्न होनेवाले मौनहो दुष्ट अन्तष्करणवाले मद्र
देशियोंके विषयमें क्रीड़ाके निमित्त इकट्ठे होनेवाले स्त्रीबालक वृद्ध
मनुष्य बहुधा जिन कथाओंको गान करके पढ़ा करते हैं हे शल्य
उन गाथाओंको मुझसे सुनो २० । २१ और पूर्व समय में इन्हीं
कथाओंको राजाओंके समक्षमें ब्राह्मणोंनेभी जिस प्रकारसे वर्णन
कराहैं हे अज्ञानी तुम उनको एकाग्र चित्तसे सुनकर क्षमाकरना
वा उत्तरदेना २२ अर्थात मद्रदेशी सदैव मित्रसे शत्रुता करनेवाले
हैं जोहमसे शत्रुता करताहै हम उसको मद्रदेशीही जानतेहैं मद्रदे-

शीमें मेल मिलाप नहींहोताहै और आपसमें क्षुद्रबचन बोला करते हैं २३ हमने सुनाहै किमद्रदेशीय लोग सदैव दुष्टात्मामिथ्या वादी और कुटिलहोते हैं २४ पिता,माता,पुत्र,सास,ससुर,मामा,जामात्र, लड़की,भाई,पोते, बांधव और समान अवस्थावाले, अभ्यागत, और अन्यदासी दास आदि सब मिलेहुये हैं और बुद्धिमान होकरभी अज्ञानियोंके समान अपनी इच्छासे पुरुषोंसे विषय भोगकरनेवालेहैं २५।२६इसीप्रकार जिननीच अचेततामेंयुक्त मत्स्यखादकोंके घरमें गौके मान्ससमेत मद्यकोपीकर पुकारते और हंसतेहैं २७ और अयोग्यगीतोंकोभी गातेहुये इच्छानुसार कर्मोंको करतेहैं और परस्पर में भीइच्छानुसार वार्त्तालाप करतेहैं उनमें धर्म कैसे होसक्ताहै २८ जो किमद्रदेशी अहंकारीहोकर दुष्टकर्मीबिख्यातहैं इसहेतुसेमद्रदेशियों से मित्रता और शत्रुतादोनों नकरे २९ मद्रदेशियों में स्नेह और प्रीति नहींहोती और वह सदैव अपवित्र हैं मद्रदेशी और गान्धार देशियोंमें पवित्रता नष्टहोगई है३०राजा जिस में याचकहै उसयज्ञमें जो दियाजाता है वहसब जैसे नष्टताको पाताहै और जिसप्रकार शूरोंका संस्कार करनेवाला तिरस्कारको पाता है और जैसे इसलोकमें ब्राह्मणोंके शत्रु सदैव नाशहोतेहैं उसीप्रकार मद्रदेशियोंसे प्रीतिकरके मनुष्य नष्टताको पाता है ३२ मद्रदेशीमें मेलमिलाप नहींहै हे विषैले विच्छू मैंने तेरे विषको अथर्वणवेदके मंत्रोंसे शांत कियाहै ३३ इसीप्रकार ज्ञानीलोग बिच्छूके काटेहुये विषके वेगसे घायल मनुष्यकी औषधीकरतेहैं वहभी सत्य२ देखनेमें आतेहैं ३४ हे बुद्धिमान कैतो मौन होजाओ नहीं तो ऐसे२ वचनों को सुनोगे जिन वचनों को मद्यसे मदोन्मत्त स्त्रियां गाकर नाचती हैं३५ उन स्वेच्छाचारी पति वंचक भोगों में अनियम स्त्रियों का पुत्र मद्रदेशी किसरीति से धर्म कहनेको योग्य होसक्ता है ३६ जो स्त्रियां कि ऊंट और गधोंसमान खड़ी खड़ी पेशाब किया करतीहैं उन बेधर्म और निर्लज्ज ३७ स्त्रियों का पुत्र होकर तू धर्म कहना चाहता है जो स्त्रियां कांजी मांगनेपर कीचों को खींचती हैं ३८ और न

ऐसे ही इच्छा से इन भयकारी असह्य वचनों को कहती हैं कि कोई हमसे कांजी मतमांगो वह हमारी वड़ीप्रिय है ३९ बेटी को दें पतिको दें परन्तु कांजी को न देंगे कन्या और वृद्ध स्त्री निर्लज्ज हैं और कम्बलोंकी धारणकरनेवाली होकर बहुधा दुराचारिणी और भ्रष्टहैं इसरीतिसे अन्यलोगभी शिरकीचोटीसे पैरके नखोंतक अयोग्य और अनुचित बातें मद्रदेशियों के विषय में कहाकरते हैं और यहभी हमने सुनाहै कि४०।४१।४२पापिष्ठ देशमें उत्पन्न होने वाले म्लेच्छरूप धर्म्मों से रहित मद्र,सिन्ध, और सौवेर देशीलोग कैसे धर्म्मोंको जानेंगे क्षत्रियोंका यह श्रेष्ठधर्म्म है ४३ कि युद्धभूमिमें मृतक होकर अथवा सत्पुरुषों से स्तूयमान होकर पृथ्वीपर शयनकरें इसहेतुसे जो में युद्धभूमिमें जीवनको त्यागकरूं ४४ तो मुझ स्वर्गाभिलाषी का यह प्रथम कल्पहै ऐसा में बुद्धिमान दुर्योधन का प्यारामित्र हूं ४५ उसके लियेही मेरेप्राण और धन हैं हेपापी देशमें पैदा होनेवाले विदित होताहै कि तूभी पांडवोंसे भगायाहुआ है तुम शत्रुकेसमान जैसे कर्म हमारेसाथमें करतेहो वह सब तुम इच्छापूर्वक करो यह निश्चय समझो कि मैं तुझ सरीके सैकड़ों मनुष्योंसेभी युद्धमें अजेयहूं जैसेकि धर्मज्ञ मनुष्य नास्तिक के वचनोंसे धूपकेमारे सारंग पक्षीके समान विलापकरके शरीरको सुखाताहै४६।४७।४८उसीप्रकार क्षत्रीके व्यवहारमें नियतहोकरमैं डरानेके योग्य नहींहूं पूर्व्वसमयमें मेरेगुरू श्रीपरशुराम जीने युद्धमें मुख न मोड़नेवाले और शरीर त्यागनेवाले नरोत्तम लोगों की जो गति कहीहै उसको मैं स्मरण करताहूं और धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी रक्षा और शत्रुओंके नाशकरने में प्रवृत्तहूं ४९ । ५० मुझको उत्तम व्यवहार में नियत पुरूरवावंशी जानो हे राजामद्र मैं तीनोंलोकों में ऐसा किसी जीवधारीको नहींदेखताहूं ५१ जो मुझको इस विचार से हटावे यह मेरा सिद्धान्त है हे बुद्धिमान ऐसा जानकर मौन हो भयभीत होकर क्यों बहुत बकता है ५२ हे मद्रदेशियों में नीच मैं तुमको मारकर कच्चेमांस भक्षियोंको नहींदूंगा हेशल्य तुममित्र

और मित्रकेपिता धृतराष्ट्र इनदोनों बिचारोंसे और कठिनबचनों की सहनशीलतासे अबतक जीवते वचेहो हेराजा मद्र जो तू फिर ऐसे बचनोंको कहैगा ५३।५४ तो तेरेशिरको अपनी बज्रकीसमान गदासे काटकर पृथ्वीपर गिराऊंगा हे दुष्टदेशमें उत्पन्नहोने वाले अब यहां इसबातके देखने और सुननेवालेहैं ५५ कि श्रीकृष्ण और अर्जुन कर्णको मारें अथवा कर्ण उनदोनोंको मारे हे राजा इसप्रकार कहकर ५६ फिर कर्ण राजामद्र से बोला कि निर्भय होकर तुम रक्षाकरो रक्षाकरो ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यकर्णपरस्परनिन्दाकरनेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे श्रेष्ठ फिर शल्य युद्धकेअभिलाषी अधिरथी कर्णके बचनोंको सुनकर उससे यह विश्वासरूप बचनबोला १ कि मैं अपने धर्ममें नियत यज्ञकर्त्ता युद्धमें मुख न मोड़नेवाले मूर्द्धाभिषेक राजाओंके बंशमें उत्पन्नहुआहूं २ हेकर्ण जैसे मदिरासे उन्मत्त मनुष्य होताहै वैसाही तू मुझको दिखाईदेता है इससे अबमैं उसीप्रकारसे शुभचिन्तकतासे तुझ मतवालेकी चिकित्सा करताहूं ३ हेनीच कुलकलंकी कर्ण इसमेरी कहीहुईकाकोपमाको समझो उसको सुनकर अपनी इच्छाके अनुसार कर्मकरना ४ हेकर्ण मैं अपने बिषय में उस दोषको स्मरण नहींकरताहूं अर्थात् नहीं जानता हूं जिसके हेतुसे हेमहाबाहु तुममुझ निरपराधीको मारनाचाहते हो५ मुख्यकर राजाका अभ्युदय चाहनेवाले रथपर सवारहोकर मैं तेरे हानिलाभके कहनेके योग्यहूं मेरे इनवचनों को समझो ६ कि टेढ़ासीधा मार्ग रथके सवारोंकोबल निर्बलता रथकी सवारी में घोड़ों का क्लेश और थकावट ७ शस्त्रोंकाज्ञान पशु पक्षियोंके शब्दभारकी न्यूनाधिकता बाणोंके भालोंकी चिकित्सा८ अस्त्रोंकायोगयुद्ध और शकुन यह सब बातें मुझरथके रक्षकसे तुमको जानने केयोग्यहैं ९ हे कर्ण इसहेतु से यहदृष्टान्त तुझसे कहताहूं ठठ समुद्र के किनारे

पर एक बड़ाधनीवैश्य अनाज रखनेवाला था १० वहवैश्य यज्ञोंका करनेवाला महादानी शान्तचित्त होकर पवित्रता पूर्वकअपनेकर्म में नियत बहुतसे पुत्रपौत्रादि से युक्त प्रीतिमान और जीवमात्रोंपर दया करनेवालाथा ११वहधर्मपर चलनेवालेराजाके देशमें निर्भय-तासे निवासकरताथा उसके कुमार बालकोंकी जूठनकाखानेवाला एक उच्छिष्टभृतनामकाक था उसको वैश्यके कुमार बालक सदैव मांस उष्णा अन्न दही दूध खीर मधु घृत यहसबवस्तुखिलायाकर-तेथे उसबालकों के जूठन खानेवाले अहंकारी काकने अपने बरा-बरवाले वा अपनेसे बड़ोंकीभी निन्दाकरी इसके पीछे किसी समय दैवयोगसे समुद्रके तटपर चलनेमें गरुड़के समान मनके समान बड़े शीघ्रगामी प्रसन्नचित्त चक्रांगआदिक हंसआये तबवह वैश्योंके बालक उनहंसोंको देखकर अपने जूठन खानेवाले को ऐसे बोले १६ हे आकाशचारीकाक आपतो सब पक्षियों से उत्तमहो यह प्रशंसा सुनकर उस निर्बुद्धी काकने अपने अहंकार और अज्ञान तासे उसवचनको सत्यहीजाना और उन दूरजानेवाले बहुतहंसों के पासजाकर उस दुर्बुद्धीने कहाकि तुमलोगों में से जोश्रेष्ठ होय वहमेरे साथउड़े यहसुनकर वहसब आयेहुयेहंस हंसे १८।१९।२० और उन आकाशचारी मनगामी और पक्षियोंमें श्रेष्ठ हंसोंमेंसे च-क्रांगनाम हंसने उस अहंकारी काकसे कहा २१ कि हमहंसों की गतिमनके समानहै और दूर जानेके कारणसे हम सब पक्षियों में शिरोमणि गिनेजातेहैं हे निर्बुद्धी तू काक होकर अपने साथहम-को उड़नेकेलियेक्योंबुलाताहै २२।२३ भला कहतो सहीकि तूहमारे साथकिस प्रकारसे उड़ेगा यहसुनकर उसनिकृष्ट जाति और अपनी प्रशंसा आपकरनेवाले काकने हंसोंके कहेहुये वाक्योंको वारंवार निन्दा करके उत्तरदिया २४ किमैं निस्सन्देह सौ प्रकारकी गतिसे उड़सक्ताहूं और प्रत्येकगति शतयोजनलंबी चित्रविचित्र औरजुदे२ प्रकारकीहै २५ उनगतियों के यहनामहैं उड्डीन अर्थात् ऊपरको उड़ना अवडीन, नीचेकोचलना प्रडीन, सबओरको जानाविडीन,

केवल उड़नानिड्डीन,धीरेचलना संडीन, चित्तरोचकगति तिरछोडीन गतिभी चारप्रकार कीहै २६ विडीन,बड़ीबिस्तृत परिडीन,सबओर सेचलनापराडीन,पीछेको उड़ना सुडीन, स्वर्गमार्गमें चलना अभि-डीन,सन्मुखचलनामहाडीन,पवित्र और ऊंचीगतिखडीन, आकाश कोजाना परिडीन, चारोंओरको चलना अवडीन, चढ़ना प्रडीन, अ-द्भुतगति संडीन,डीन, डीनक, ऊपरकी ओरकीगतें बिडीन, उड्डीन, संडीन, पुनडीन, विडीन २८ संपात, समुदीष, व्यतरिक्त, गता-गत, प्रतिगत,वह्नी निकुलीनइत्यादि अनेकप्रकार की गतिहैं २६ उनगतियोंकोमैं तुम्हारे सन्मुख करताहूं इसीसेमेरे पराक्रमको दे-खोगेमैं उनगतियोंमेंसेएकगतिके द्वाराआकाशमेंउड़ताहूंहेहंसलोगो आपजिसगतिसेकहोउसीगतिसेउड़ूं ३१हेपक्षियोनिश्चय करके इस निराश्रय आकाशमें इनगतियोंसे उड़सक्तेहो तौतुमभी अच्छेप्रकार से निश्चय करके मेरेसाथउड़ो काकके इसवचनको सुनकर ३२एक हंसने हंसकरकाकको उत्तरदियाहैहेकर्ण उसबचनको मुझसेसमझो अर्थात् हंसने कहा हेकाकतुम निश्यकरके सौ प्रकारकी गतिको उड़ोगे ३३ और मैं उसीगतिसे उडूंगा जिसगतिसे सबपक्षीउड़तेहैं क्योंकिमैं इसएकगतिकेसिवायदूसरीगतिको नहीं जानताहूं ३४ हे ताम्राक्ष अबतुमभीचाहे जिसगतिसे उड़ो इसकेपीछे जो वहां और काक इकट्ठे होगयेथे वह सबहंसे ३५ और कहनेलगेकि हंसएकही गतिवालाहोकर सौगति जाननेवालेको कैसे परास्तकरसक्ताहै ३६ इसके अनन्तर हंस और काक ईर्षाकरके उड़े अर्थात् एकगतिउड़ने वाला हंस सौगतिवाले काककेसाथउड़ा ३७ काकउड़तेही वृक्षोंपर बैठ२ अहंकारमें भराहुआ इधरउधरफिरता बोलनेलगा ३८उसको ऐसीगतिको देखकरसबकाक प्रसन्नहुये और सब हंस उसकीअभा-ग्यता देखकर हंसनेलगे ३६ इसरीतिसे एकमुहूर्त्त तक उड़करहंस को पुकार २ करकहताथाकि ४०।४१ मेरी इनकलाओंको देखकर आपभी अपनी कलाओं को प्रकटकीजिये ४२ हंसउसके वचन को सुन बहुतसा हंसकर पश्चिम समुद्रको ओरको चला ४३।४४ और

उसकेसंगकाकभी अपनेपरों को चपल करताहुआ चला समुद्र के ऊपरचलते २ कुछदूरपरकाक थकित होगया ४५ और कोई वृक्षटापून देखके धैर्य्यता से रहित होकर उड़नेलगा ४६ जब उसके सब पक्ष शिथिलहोगये तब समुद्रमें गिरपड़ा ४७ उसको गिराहुआ देखकेवहहंसवहां स्थिरहोकरहंसकर कहनेलगा ४८ हेकाक आपअपनाव्रत और स्नान शीघ्रकरके चलो क्योंकि अभी समुद्रका पाट सौयोजनहै कहो सौगतियोंमेंसे यहकौनसी आपको गतिहै कि जलमें मौनहोकर अपनेपक्ष और चोंचकोडुबाते और निकालतेहो यहबचनसुनकरवहनीच बायस आरत वचनोंसेबोला हेहंसअब आपअपनीओरकोदेखकरमेरेऊपर क्षमाकरो और जलसे निकालकर मुझकोआनन्ददो और हमने अपनी कुमतिके वसीभूत होकर जो आपसेकुत्सित वचनकहे उनको अपने हृदयसे दूरकर दयाकरके मुझको जलसे निकालिये हे कर्ण यह काकके वचन सुनकर हंसने अपने पंजेसे उसको पकड़कर स्थलमें लाकर डाल- दिया सो जैसेकि वैश्यकेघरमें उच्छिष्ट खाखाकर काकपुष्टहुआ और हंससे प्रणकरके अपनाहास्य कराया उसीप्रकार तुमभीधृतराष्ट्र के घरमेंखाके मोटेहोकर बढ़ेहो अब तुमकाकके समानहो हंसरूपी पार्थसे लड़कर अपना हास्यकराया चाहतेहो अरे विराटनगर में द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य औरभीष्मादिकसरीकेशूरवीरोंको पार्थने बिजयकिया तब तुमने अकेलेअर्जुनको क्योंनहींमारा ७६ । ७३। उसस्थानपर पृथक् २ और संयुक्त तुमसब लोगोंको अर्जुनने ऐसे बिजयकिया जैसेकि शृगालोंको सिंह विजय करताहै तबतेरापरा- क्रम कहांथा ७४ युद्धमें अर्जुनके हाथसे मारेहुये भाईको देखकर सबकौरवोंवीरोंके देखतेहुयेप्रथमतो तुम्हींभागे७५हेकर्णइसीप्रकार द्वैतबनमें गन्धर्वोंसे सन्मुखता होनेमें प्रथम तुमहीं सब कौरवोंको छोड़कर भागेथे ७६ वहांभी हेकर्ण अर्जुननेही युद्धमेंगंधर्वोंकोमार- कर और चित्रसेनादिकोंको बिजयकरके स्त्रीसमेततेरे मित्रवपालन करनेवाले दुर्य्योधनको छुटायाथा ७७ हेकर्णफिर परशुरामजी ने

राजाओंके मध्य सभाकेबीच अर्जुनऔर केशवजीका प्राचीनप्रभाव वर्णनकियाथा ७८ तुमने राजालोगोंकेसमक्षमें श्रीकृष्ण औरअर्जुन को अवध्यबर्णन करनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य्यके वारंवारकहे हुये बचनोंको सुना मैं उसको कहांतक तुझसे कहूं अर्जुन अनेक प्रकारसे तुझसे ऐसा अधिकहै जैसेकि सबजीवोंसे ब्राह्मण अधिक होताहै ७९।८० तूअभीरथपर चढ़ेहुये बसुदेवनन्दन और कुन्तीनन्दन श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखेगा जैसे कि बुद्धिमें नियत होकर काकहंसके पास शरणागतहुआ उसीप्रकार तूभी बासुदेव जी और अर्जुनके पास जाकर शरणागतहो ८१।८२ हेकर्ण जब तुम युद्धमें पराक्रमी अर्जुन और बासुदेवजीको एक रथपर देखोगे तब ऐसी२ बातें न कहोगे ८३ जब अर्जुन सैकड़ों बाणों से तेरे अहंकार का नाशकरेगा तभी तुम अपने और अर्जुनकेबलाबल रूप अन्तरको देखोगे ८४ अरे जोनरोत्तम देव असुर और मनुष्योंमें प्रसिद्ध हैं उनका अपमान तुमऐसे मतकरो जैसे कि पट बीजना सूर्य्य का अपमान नहीं करसक्ता ८५ जैसे कि सूर्य्य और चन्द्रमा हैं उसी प्रकार अर्जुन और श्रीकृष्णजी अपने तेजसे विख्यातहैं तुममनुष्यों में पटबीजने के समान हो ८६ हेबुद्धिमान सूतकेपुत्र कर्णतू अर्जुन और केशवजी का अपमान मतकर वह दोनों नरोत्तम महात्मा हैंमौन होजा अपनी प्रशंसा मतकर ८७॥

दोहा॥

सूर्य्यचन्द्रसम बिदितहै पारथ कृष्ण अमान।
तिनकीसरवरि जिनकरो तुमखद्योतसमान १
बरप्रभाव हरिपार्थको पूर्व कह्यो बलिराम।
सोभुलाय कत मोहवश लरन चहत जयकाम २

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसंबादेहंसकाकोपाख्यानेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

बयालीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि महात्मा कर्ण शल्य के अप्रिय वचनों कोसुन-

कर शल्य से बोला कि मैं ठीक २ जानताहूं जैसे कि अर्जुन और श्रीकृष्ण जी हैं १ मैं अर्जुन के रथके हांकनेवाले केशवजी और अर्जुन के पराक्रम समेत बड़े अस्त्रोंको भी अच्छी रीति से जानताहूं हेशत्रुरूपशल्य उसको तू नहीं जानता है २ मैं उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और निर्भय रूप श्रीकृष्ण और अर्जुनसे युद्ध करूंगा परन्तु ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजीका दियाहुआशाप अब मुझको अधिकतर दुःख देरहाहै ३ हे शल्य शापका कारण यहथा कि मैं पूर्व समय में दिव्य अस्त्रोंका अभिलाषी होकर ब्राह्मण का रूप बनाकर कपटसे परशुरामजी के पास ठहरने को गयाथा वहांभी अर्जुन की हीउन्नति चाहनेवाले देवराज इन्द्रने ४ भयानकरूप कीटके शरीर में प्रवेश करके मेरी जंघा में चिपटकर काटनेसे विघ्नकरदिया अर्थात् मेरी जंघापर शिर रखकर गुरू परशुरामजी के सोने पर उस कीटने मेरीजंघाको काटा ५ और बड़े घाव होनेके कारण मेरी जंघामें से बहुत सा रुधिर प्रकट हुआ परन्तु मैंने गुरूजीके भयसे शरीर को जराभीन कंपाया इसके पीछे जब गुरूजी जागे और उस मेरी जंघाके रुधिर को देखा ६ उन्होंने उस घाव से भी मुझको धैर्य्यतामें नियत देखा तब यह बचन कहा कि निश्चयकर के तू ब्राह्मण नहींहै कौन है यह सत्य २ कहो हेशल्य तबतो मैंने सूतके समान समीप जाकर अपना यथार्थ वृत्तान्तकहा ७ उससमय क्रोधयुक्त होकर महा तपस्वी गुरूजीने मुझको देखकर शापदियाकि हे सूत तैंने अपनी ज्ञातिको गुप्तकरके जो इस अस्त्रकोप्राप्त कियाहै वह युद्धकर्मके समय पर तुझको स्मरण नरहैग ८ इसके सिवाय और कालमें इस अस्त्रसे तेरी मृत्युहोगी क्योंकि ब्राह्मण के बिना मन्त्र और वेदरूप ब्रह्म अचल होकर स्थिर नहीं होता है अब इस भयकारी कठिन युद्धमें उसबड़े अस्त्रका प्रयोग संहार स्मरण नहींआताहै ९ हेशल्य जोयह सबका मारनेवाला महाघोर भयानकरूप प्रबलयुद्ध भरतबंशियों में उत्पन्न हुआ है यह कालरूप युद्ध बहुतसे बड़े २ क्षत्री शूर बीरोंको निश्चय करके संतप्त

करेगा परन्तु मैं उस उग्र धनुषधारी महावेगवान् भयानक कठिनतासे सहने के योग्य सत्य पराक्रम और प्रतिज्ञावाले पांडव अर्जुन को युद्धमें मृत्युके मुखमें पहुंचाऊंगा१०।११वहमेराअस्त्र वर्त्तमानहै उसीकेद्वारा युद्धमें शत्रुओंके समूहोंको और प्रतापी बलवान् अस्त्रज्ञ और महाउग्र धनुषधारी तेजस्वी निर्दयी शूर रुद्रशत्रुओंके नाशकरनेवाले अर्जुनको युद्धमें ऐसेमारूंगा जैसेकि महावेगवान् अप्रमेय जलोंकास्वामी समुद्रअनेकजीवोंको अपनेमें मग्न करलेताहै १२।१३ जैसे समुद्र बड़ाबेगवान् बुद्धिसे परे मर्य्यादा और किनारों समेत बड़े २ प्रभाववालोंको धारणकरताहै१४ इसीप्रकार अबमैंभी इस लोकके युद्धमें मर्मोंके भेदी बीरोंके मारनेवाले तीक्ष्णबाण समूहोंके छोड़नेवाली प्रत्यंचा खैंचनेवालोंमेंश्रेष्ठ अर्जुनकेसाथ युद्धकरूंगा१५ इसरीतिसे बाणोंके बलके प्रतापसे उसबड़े पराक्रमी अस्त्रज्ञ समुद्र की समान महादुर्जय बड़े २ शूरबीर राजाओं के नाशकरनेवाले अर्जुनको ऐसे सहूंगा जैसेकि समुद्रको मर्य्यादा सहलेतीहै१६ अब युद्धमें जिसके समान दूसरे धनुषधारीको नहीं समझता और मानताहूं वह देवता और असुरोंको भी युद्धमें बिजय करसक्ताहै उस के साथ अबमेरे महाघोर युद्धकोदेखो युद्धाभिलाषी महा अहंकारी अर्जुन दिव्य महाअस्त्रों के द्वारा मेरे सन्मुख आवेगा १७ तब मैं युद्धमें उसके अस्त्रों को अपने अस्त्रोंसे हटाकर उत्तम बाणोंसे उस सूर्य्यके समान उग्र दिशाओंके तपानेवाले अर्जुनको गिराऊंगा १८ जैसे कि बड़ाबादल सूर्य्यको ढकदेताहै उसीप्रकार अग्निरूपक्रोध रखनेवाले महातेजस्वी इसलोक के भस्म करनेवाले अर्जुन को अपने बाणोंसे आच्छादित करदूंगा १९ मैं बादलरूप अपने वर्षा रूप बाणोंसे युद्धमें उस अग्निरूप बल पराक्रम रखनेवाले प्रहार कर्त्ता बायुरूप उग्र अर्जुनको शांतकरूंगा २० हिमालय पर्वत के समानयुद्धमें अग्निके समान क्रोधरूपप्रपण्डितसत्यवक्ताअर्थमार्गोंमें समर्थ महाबली अर्जुनको देखूंगा२१लोकमें अद्वितीयधनुर्धर जिसके समान दूसरा नहीं देखता और जिसनेसबपृथ्वीको बिजयकिया मैं

युद्धमें सन्मुखहोकर उस अर्जुनसेलडूंगा २२जिस अर्जुनने इन्द्रप्रस्थ के समीप खांडव बनमें देवताओं समेत सबजीवोंको विजयकिया २३ उसवीरके सन्मुख मेरे सिवाय इच्छा पूर्वक कौन युद्धकर सक्ताहै वह महाअहंकारी अस्त्रज्ञ हस्तलाघवका करनेवाला दिव्य अस्त्रोंके प्रयोग संहारोंका ज्ञाता प्रलय का मचानेवालाहै २४ अब मैं तीक्ष्ण बाणोंसे उसअतिरथीके शिरकोदेहसे जुदाकरूंगा हेशल्य मैं युद्धमें विजयको और मृत्युको आगेकरके इसअर्जुन से लडूंगा २५ ऐसामेरे सिवाय दूसरा कोई मनुष्यनहींहै जो कि उसइन्द्रके समान पराक्रमीके साथ एकरथसे युद्धकरे मैं युद्धमें प्रसन्नचित्त होकर क्षत्रियोंके देखतेहुये उसपांडव अर्जुनकी वीरता वर्णन कर-ताहूं २६ तुम महामूर्ख और अज्ञानचित्त होकर हठसेउस अर्जुन की बीरता को क्याकहतेहो जो पुरुष सबका अप्रिय कठोर चित्त नीच और अशान्तचित्तहोताहै वह शान्तचित्तवालोंकी निन्दाकरता है २७ मैं इसप्रकारके सैकड़ों पुरुषोंको मारसक्ताहूं परन्तुमें क्षमा करने के समय आनेपर क्षमाकरदेताहूं हे पापात्मा शल्य तू अज्ञा-नी के समान मुझकोडराकर अर्जुन के लिये प्रियवचनोंको कहता है २८ हे सत्यताके समय मित्रसे शत्रुताकरने वाले कुटिलबुद्धी निश्चयकरके मित्रता सातपदोंसेसंबंध रखनेवालीहै वह भयकारी समय सन्मुख आताहै जिससे कि दुर्य्योधनने युद्धको प्राप्त किया है २९ और मैंभी उसीके अभीष्ट सिद्धीका चाहने वालाहूं परन्तु तुमउसी बातको मानतेहो जिसमेंकि प्रीतिनहीं है अर्थात् हमारापक्षवालाहोकरभी अन्यके साथप्रीति करताहै मित्रशब्द मिदधातुसे संबंध रखताहै जिसका अर्थमोदहै वामिदि धातुसे जिसका अर्थप्र-सन्न करना तृप्त करना रक्षाकरना और अन्तमें कुशल करताहै अ-थवासुखसे संपन्न करना कहाहै इनलक्षणोंसे मित्रकहाजाताहै ३० मैं तुझसे सत्य २ कहताहूं कि यह सबगुणमुझमेंप्राप्तहैं राजादुर्य्यो-धन मेरेइन सबगुणोंको जानताहै और मारना शासनकरना स्वा-धीनकरना दंडदेना लम्बेस्वासलेनेमें पकड़लेना और पीड़ितकरना

इनगुणोंके होनेसे शत्रुकहाजाताहै ३१यह सबगुण बहुधामुझमेंनियत हैं इस निमित्त अबमैं दुर्य्योधनकी वा तेरीइच्छा अथवा अपनीशुभकीर्त्ति और ईश्वरकी प्रसन्नताके लिये अर्जुन और बासुदेवजीसे लडूंगा अब उसकर्मको वा ब्रह्मास्त्रआदि महाउत्तम और दिव्य अस्त्रोंको औरमानुषी शस्त्रोंको देखो ३२।३३ मैं उस उग्रपराक्रमी को ऐसे प्राप्तकरूंगा जैसे कि बड़ा मतवालाहाथी दूसरे मतवालेहाथीको और विजयकेहेतु उस अजेय ब्राह्मअस्त्रको मनसे अर्जुनके ऊपर चलाऊंगा ३४ उस मेरे अस्त्रसेभी युद्धमें कोईशत्रु नहीं बचसक्ताहै जो कदाचित् यह रथकाचक्र किसी गढ़ेमें नहींगिरे३५तो हेशल्य मैं दण्डधारी यमराज पाशभृत् वरुण गदाधारी कुबेर बज्रधारी इन्द्र और युद्धाभिलाषी शस्त्रोंसे मारनेवाले किसीप्रकारकेभी शत्रुसे३६ नहीं डरताहूं इसीहेतुसे मुझको अर्जुन और श्रीकृष्णजीसे जराभी भयनहीं है ३७ मेरायुद्ध उनदोनोंके साथ परलोक के निमित्तहोगा हेराजा इसकाहेतु यहहै कि एक समय अस्त्रोंके सीखनेमें मैंने घोररूपअस्त्रोंकोफेंकाथा३८वहांअज्ञानतासे एकब्राह्मणकी होमसाधन करनेवाली गौकाबछड़ा जो निर्जन बनमें चररहाथा वह मेरेबाणसे मारागया उसके मरजानेसे उसब्राह्मणने कहा कि३९ जो तुझबड़े मतवालेने मेरीहोमकी गौके बछड़ेको माराहै इसहेतुसे तुझ युद्ध में लड़नेवालेको रथका पहिया पृथ्वीमें घुसजायगा यह ब्राह्मणने मुझको शापदियाहै४०।४१इसहेतुसेमैं ब्राह्मणके शापसे बहुत डरता हूं इन ब्राह्मणोंका राजा चन्द्रमा है इसीसे यह सब ब्राह्मण सुख दुःखके स्वामीहैं ४२ हेमद्रदेशाधिपति मैंने हजारों गौ और बैल देनेसेभी उसको प्रसन्न करनाचाहा परन्तु वह किसी प्रकारसेभी प्रसन्न नहींहुआ ४३ वह उत्तम ब्राह्मण सातसौ हाथी और सैकड़ों दास दासी देनेपरभी मुझपर प्रसन्न नहींहुआ ४४ श्वेतबत्सा चौदह हजार कृष्णागौवोंकेभी भेटकरनेसे उसकाचित्त मुझसे प्रसन्न नहींहुआ इसके सिवाय सब पदार्थोंसेयुक्त मैंने अपनेस्थान धनआदि जो२मेरीबस्तुथीं४५उनसबकोभी बारम्बारउसकोभेट कि-

या तबभी उसने इच्छानहींकरी ४६ और मुझ अपराध क्षमाक-
रानेवाले से कहाकि हेसूत जोमैंने कहाहै वह वैसेहीहोगा मिथ्या
कभीनहीं होसक्ता ४७ मिथ्या बोलना सन्तानका नाशकरनेवाला
होताहै पापकाभागी होताहै इसकारण धर्मकी रक्षाके निमित्त मैं
मिथ्या नहीं बोलसक्ताहूं ४८ तू ब्राह्मणकी गतिको नाश मतकर
तुमने बड़ाअपराध किया है इसलोक में मेरे बचनको कोई मिथ्या
नहींकरसक्ता इससे मेरेशापको अंगीकार कर ४६ हेअनघ होने-
वाले मैंने शुभचिन्तकतासे यह कहाहै मैं तुझ निरादर करनेवाले
को जानताहूं तू मौनहोकर उत्तरको सुन ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसम्वादेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज इसके पीछे शत्रुविजयी कर्ण राजामद्र
को सम्बोधन करके यह वचन बोला १ हे शल्य जो तुमने निदर्शन
के निमित्त अर्थात् दृष्टान्तार्थ मुझसे कहाहै सोमैं युद्धमें तेरेवचनोंसे
भयभीत नहीं होसक्ता जो देवताओं समेत इन्द्र भी मुझसे युद्धकरें
तौभी मैं भयभीत नहींहोसक्ता फिर श्रीकृष्णजीको साथरखनेवाले
अर्जुनसे क्या भय करसक्ताहूं वह क्या करसक्ते हैं २।३ मैं केवल
बातोंहीसे किसीदशामेंभी भयभीत होनेको योग्य नहींहूं हेशल्यवह
कोई दूसरेही मनुष्यहोंगे जो युद्धमें अर्जुनसे डरें ४ नीच मनुष्यकी
इतनीही सामर्थ्य है जो तुमने मुझको कठोर वचन कहे हे दुर्बुद्धी
मेरी प्रशंसा करनेको असमर्थ होकर तुम बहुतसी बातें करतेहो ५
हे मद्रदेशी इसलोकमें कर्ण भयकेलिये नहीं उत्पन्न हुआहै किन्तु
यश कीर्त्ति और पराक्रमके हेतु मैंने जन्मलिया है हेराजाशल्यतुम
इनतीन कारणोंसे जीवतेबचेहो एक तो सारथ्यकर्म करनेसे उत्प-
न्नहुई मित्रता दूसरे मेरी क्षमायुक्त प्रकृति तीसरे अपने परममित्र
दुर्योधनके कार्य्य सिद्धकेलिये ६।७हे शल्य राजादुर्योधनका बड़ा
भारी कार्य्य बर्त्तमान होकर मुझमें नियतहै इसहेतु से अल्पकाल

तक मेरेहाथसे जीवतेहो क्योंकि प्रथम मैं नियम करचुका हूं कि तेरेअप्रिय वचनोंकोसहूंगा मैं शल्यकेबिनाभी शत्रुओंको बिजयकर सक्ताहूं क्योंकि मैं अकेलाही हजार शल्य के बराबर हूं ८। ९ और मित्रसे शत्रुता करना पापकर्म कहा है इसी कारणसे तुम जीवते हो १०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णशल्यसम्वादेत्रिचत्वारिंशोध्यायः ४३॥

चवालीसवां अध्याय॥

शल्यबोला हेकर्ण निश्चय करके येसब निष्फल बातेंहैं जिनको तुम शत्रुओं केबिषयमें कहतेहो युद्धमें हजार कर्णोंके बिनाभी मेरे हाथसे शत्रु बिजय होनेके योग्यहैं अर्थात् मैं हजार कर्णोंके समतुल्यहूं १ संजय बोलेकि इसपीछे कर्णने इस प्रकारके कठोर वचन कहने वाले शल्यसे फिर प्रथमसेभी द्विगुणित ऐसेकठोर बचन कहे जो देखने और सुननेके अयोग्यथे २ कर्ण बोला हेराजा मद्र तुम चित्तकोस्थिर करके उनबचनोंको सुनोजोदुर्य्योधनके समक्षमें ३ ब्राह्मणोंने धृतराष्ट्रकी सभाके मध्य नाना प्रकारके अद्भुत देशोंके भूत भविष्य वृत्तान्तोंको राजाओंसे बर्णन कियाथा वहां एक वृद्धब्राह्मणोत्तम भूतकालीन वृत्तान्त विषयक कथाओंको कहता वाहीकऔर मद्रदेशोंकी निन्दा करता हुआ यह बचन बोला ४। ५ कि जोलोग हिमाचल पर्व्वत श्रीगंगाजी सरस्वती यमुना और कुरुक्षेत्रसे अलग कियेगयेहैं और जो लोग पंजाब और सिन्धके मध्यमें निवास करनेवालेहैं उन धर्महीन अपवित्र वाहीक नामवालोंको त्यागकरे ६। ७ वहांपर गोबर्धन अर्थात् गौओंके मारनेको स्थान और मद्य पीनेवालोंके चौतरे यही दोनों राजकुलके द्वारहैं मैं बालकसे लेकर वृद्धोंतकके मुखसे सुना हुआ स्मरण करताहूं ८ मैंने बड़ेकार्य्य के कारणसे वाहीक देशियोंमें सातरात्रि निवास करके वहांका सब चरित्र जाना ९ उनमें शाकलनाम नगर और आपगानाम नदी वा जरत्का नाम वाहीक इन तीनोंका चरित्र महा निन्दितहै १०

यह लोग जौ और गुड़की मद्यको पानकर लहसनकेसाथ गोमांस को खाके मांसके पूप आदि बाजारके सम्पूर्ण भोजनोंको करनेवाली शीलतासे रहित नङ्ग शरीर और दिखानेको माला चंदन आदि धारण करनेवाली स्त्रियां नगरके स्थानोंमें अथवा नगरके बप्रागारमें गाती और नाचतीहैं ११।१२ और गधे वा ऊंटोंके समान शब्दोंसे नाना प्रकारके निर्लज्ज गीतोंसे मतवाली विषय भोगोंमें अपने और पराये जाति कुजातिका बिवेक न रखनेवाली सब प्रकारसे स्वैरिणी अर्थात् स्वेच्छाचारिणी कुत्सित कर्म कराने वालीहैं १३ उन मदोन्मत्त असभ्य बार्त्ता करनेवालियोंने बड़ेविनोद पूर्वक इन गीतोंको गाया कि हे घायलभग हे घायलभग हेपति और स्वामीसे ताड़ितभग १४ वह संस्कार रहितअजितेन्द्री स्त्रियां इस रीतिसे पुकारती हुई उत्सवों के दिनोंमेंयथेच्छ नृत्यकरतीहैं फिर ब्राह्मणने कहा कि वाहीक बासियोंसे भ्रष्ट कुरु जांगल देशोंमें निवास करनेवाली १५ अप्रसन्न चित्त स्त्रियोंने यह गीत गायाकि निश्चय करके कुरुजांगल देशोंमें रहती गौरी औरसूक्ष्म कंबलोंकी धारणकरनेवाली स्त्रियां शाक लहसनके मिलनेपरकाक के समान हर्षित होतीहैं १६ औरमद्यपान करहंसती और नाचतीहैं ऊंटवा गधेके समान स्वरसेहर समय गान क्रियाकरतीहैंसदैवमैथुनमें ऐसी रतहैं कि कभीनहींअघातीहैं १७ औरपुरुषोंको बुलाकर अपने आप प्रसन्नतासे मिलतीहैं और अपने वा परायेपुरुषके वर्णकाभी जहां बिचार नहीं वह स्त्रियां कलह हास्य औरबिहारमें परस्पर गालियों से बातेंकरतीहैं १८वहां स्त्री पुरुषरात्रिदिन इसी प्रकारसे बकते रहतेहैं और अपनी पराई स्त्री वा अपना परायापुरुष इन बातोंका जो बिचार करे वह कुत्सित गिना जाताहै १९ और जहांवाराह कुक्कुटगौ गधाइनकेमांसकोज्ञोनखाय अथवा मद्यका जो पान न करे उसका जन्म निष्फल गिना जाता है २० इस प्रकारसे कहकरवह ब्राह्मण पंचनदोंकेनाम राजासे कहनेलगा कि २१चन्द्रभागाशतद्रू बिपाशाइरावतीवितस्त्राऔर छठवांसिंध इननदोंकेमध्यमें

वह पुरुष बसतेहैं जिनके पूर्वजन्मके पापसंचित होतेहैं २२ उनका
दियाहुआ देव पितर और ब्राह्मण ग्रहण नहीं करतेहैं कुत्सितकर्म
करनेवाले अशुभ भेष भक्ष्याभक्ष्य और गम्यागम्यका विचाररहित
जिस देशमें धर्मका लवलेशभी नहींहोताहै २३ इस वृत्तान्तको अन्य
ब्राह्मणोंनेभी कौरवों की सभा में हमसे कहा कि यह पांचो नदियां
जहां बहती हैं २४ वहां पीलुनाम वृक्षोंके वनहैं वह धर्म्महीन देश
आरट्टनामसे प्रसिद्धहैं २५ यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंसे रहित दासी
पुत्र कुचाली यज्ञोंके न करनेवाले वाहीकोंके इनदेशों में नहींजाना
उचित है २६ देव पितर और ब्राह्मणभी उनके हव्यकव्य औरदानों
को नहीं ग्रहण करते कुष्ठकुण्ड नाम मृत्तिका विशेष और मट्टीके
पात्रोंमें भोजनकरतेहैं २७।२८ सत्तू वा मद्यसे अहंकारी उच्छिष्टभोजी
कुत्ते भेड़ी ऊंट गधे इनका दूध और मांस खाते पीतेहैं पुत्रोंकेमारने
वाले महामूर्ख सब अन्न और दूधके खानेवालेहैं २९।३० वह आरट्ट
वाहीक पण्डितलोगोंसे त्यागनेके योग्यहैं हे शल्य इसको समझकर
फिर उस दूसरी बातको तुझसे कहताहूं ३१।३२ जिसको अन्यब्रा-
ह्मणोंने कौरवोंकी सभामें वर्णनकियाहै कि युगंधरदेशजहांभक्ष्या-
भक्ष्यका बिचार नहीं है उसमें दूधपीकर और अच्युतस्थल नाम
नगरमें निवासकरके ३३।३४ औरभूतल तड़ाग जिसमेंचांडाल और
ब्राह्मण सब संगस्नान करते हैं उसमें स्नान करके कैसे स्वर्ग को
जायगा जहां यह पांचोंनदी पर्व्वतसे निकलकरबहतीहैं ३५।३६ उस
आरट्टनाम वाहीक देशमें श्रेष्ठमनुष्य दो दिनभी न बासकरें विपा-
शानदीमें वहि और हीकनाम दो पिशाचहैं ३७।३८ उन दोनों की
सन्तान वाहीकलोगहैं यहब्रह्माजीकी सृष्टिमें नहींहैं वह नीचयोनि
मेंउत्पन्न होनेवाले नानाप्रकारके धर्म्मोंको कैसेजानसक्ते हैं ३९।४०
कारस्कर माहिष कलिंग केटल कर्कोटक और वीरक इन भ्रष्ट
धर्मियोंको त्यागकरनायोग्यहै ४१।४२ बड़ेउलूखलकेसमान मेखला
रखनेवाली किसी राक्षसीने तीर्थयात्रा करनेवाले एकरात्रि घरमें
निवासकरनेवाले ब्राह्मणसे यहबचनकहा ४३।४४ कि वह आरट्टदेश

और वाहीक नाम जल ब्राह्मणोंके निमित्त सदैव ब्रह्माजी के काल के समान हैं ४५ उन जाति वेदरहित यज्ञहीन पूजनादिके अकर्ता दासी पुत्र कुटिल बुद्धि संस्कारसेहीन लोगों के अन्नको देवता पितर भोजन नहीं करते हैं ४६ प्रस्थल मद्र गान्धार आरट्टनाम पखश व साति सिन्धु और सौवीरनाम देशों के रहनेवाले बहुधा निन्दित हैं ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

कर्णबोला हेशल्य समझो मैं फिरभी तुमसे कहताहूं तुम चित्त को स्थिरकरके अच्छेप्रकारसे मेरे बचनोंको सुनो १ निश्चयकरके पूर्व्वसमय में एक अतिथि ब्राह्मण हमारे घर में आया और हमारे आचारको देखकर प्रसन्नचित्त होके कहनेलगा २ कि मुझ अकेले ने बहुतकाल पर्य्यंत हिमाचल के शिषरपर निवासकिया था तब वहां मैंने नानाप्रकार के धर्म्मोंसेयुक्त देशोंको देखा ३ जहां प्रजा-लोग किसी अधर्म्मसेभी शास्त्रके विरोधी नहींहोते हैं वहांके वेद-पारग ब्राह्मणोंके कहेहुये सब धर्म्मोंको तुझसे कहताहूं ४ हेमहा-राज नानाप्रकार के धर्म्मोंसेयुक्त देशोंमें घूमताहुआ वाहीकदेशोंमें आनेके समय मैंनेसुना ५ निश्चयकरके उसदेश में ब्राह्मण होकर फिर क्षत्री होता है वैश्य शूद्र और वाहीक होकर फिर नाईहोता है ६ नाई होजाने के पीछे ब्राह्मण होता है फिर वह द्विजहोकर दास होजाता है ७ सब कुलभर में एकही वेदपाठी होताहै और अन्य सब भाईलोग वर्णसंकर स्वेच्छाचारी कर्मोंके करनेवाले होतेहैं ८ गांधार मद्रदेशी और वाहीक यह निर्बुद्धी होते हैं मैंने संपूर्ण पृथ्वीको घूमकर उस वाहीक देशमें धर्मोंका संकर करने वाला यह बिपर्य्यय सुनाहै उसकोमैं फिर कहताहूं ९ तुम चित्तसे सुनो इस वाहीकोंके निन्दित वृत्तान्तोंको एकअन्य ब्राह्मणने कहा है १० वहभी मैंनेसुनाहै कि पूर्वकालमें किसी पतिव्रता स्त्रीको उस

आरट्टदेशसे चोरोंने हरलियातब वह अधर्म युक्तहोगईतबउसस्त्रीने उनको शापदिया ११ कि जो मुझवाला और भाइयों वालीको तुम ने अधर्मसे प्राप्तकिया इस कारणसे तुम्हारे कुलकी सब स्त्रियां वेश्या होजांयगी १२ हेनीच मनुष्यो तुम इस घोरपापसे कभी न छूटोगे इस हेतु से उनके पापभागी भानजेहैं पुत्रनहींहैं अर्थात् माताके धनकी लेनेवाली बेटीही होतीहै और पिताके धनका लेने वाला पुत्र होताहै यद्यपि वह दोनों कुकर्मसे उत्पन्नहैं तौभी पुत्र तो पिताकानहीं कहलाताहै परंतु बेटी माताकीही कहलातीहै इस हेतुसे भानजाही अंशका भागी होताहै १३ कौरव, पांचाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोशल, काश, पौंड्र, कलिंग, मागध १४ और चंदेरी देशी यह महाभाग सनातन धर्मको जानतेहैं वाह्लीक देशमें केवल असन्त लोग रहतेहैं १५ मत्स्य देशियोंसे लेकर कौरव पांचाल देशी और नैमिष देशियोंसे लेकर चंदेरी देशियों तक जो उत्तम और संतलोगहैं वह सब प्राचीन धर्मोंसे अपना कर्म धर्म और नि- र्बाह करतेहैं इन कुटिल पांचाल और मद्रदेशियोंके सिवाय १६ हे बुद्धिमान राजाशल्य इसरीतिसे धर्म कथाओंमें मौन और जड़के समान होकर तुम उन मनुष्योंके रक्षक होकर उनके पाप पुण्यके छठेभागके लेनेवालेहो १७ अथवा तुम उनकी रक्षा न करने वाले पाप भागीहो क्योंकि प्रजाकी रक्षा करनेवाला राजा पुण्यका भा- गीहै परन्तु तुम पुण्यभागी नहींहो १८ पूर्व समयमें सबदेशोंके बीच सनातन धर्मके पूजित होनेपर ब्रह्माजीने पंजाब देशके धर्म को देखकर कहा कि धिक्कारहै १९ सतयुगमें भी संस्कारसे रहित अशुभकर्मी दासी पुत्रोंका धर्म ब्रह्माजीसे निन्दित होनेपर तुम वाह्लीक लोकमें क्याकहा करतेहो २० जिनब्रह्माजीने पंजाबके धर्म कोनष्टकहाहै उनब्रह्माजीने सब वर्णोंको अपने २ धर्ममेंनियत होने परभी उनकी प्रशंसा नहींकी २१ हेशल्य इसको तुमसमझो और दूसरा वृत्तान्त कहताहूं जो कल्माष पादके सरोवरमें डूबनेवालेरा- क्षसने कहाहै २२ क्षत्री का मल भिक्षाहै और ब्राह्मण का मल व्रत

का न करनाहै और संपूर्ण पृथ्वी भरेका मल बाह्लीकलोगहैं और स्त्रियोंका मल मद्रदेशकी स्त्रियांहैं २३ किसी राजाने उस डूबनेवाले राक्षस को डूबने से निकाल कर उससे जो २ पूछा और उसने जो २ उत्तर दिये उन सबको मुझसे सुनो २४ मनुष्योंकामल वह म्लेच्छहैं जो पापमें प्रवृत्त होकर अप शब्द बोलतेहैं और म्लेच्छों का मल औष्ट्रिकाहैं औष्ट्रिकों का मल नपुंसक हैं और नपुंसकों का मलराजपुरोहित अथवा राजाके यज्ञ करानेवाले होतेहैं २५ राजा से बिनयकरके याचना करनेवाले वा उसके याज्ञिक लोगोंका और मद्रदेशियोंका जो मलहै वह तुझको प्राप्तहोय जो हमको नहीं त्याग करताहै २६ राक्षससे वा भूतादिकके आवेशसे व्याकुल और पीड़ित मनुष्योंकी चिकित्सा कौलकरारकरके पीछेस्वाधीन होनेवालाराक्षसहोताहै २७ पांचालदेशी वेदोंका संचय रखनेवालेहैं कौरवलोगधर्म संयुक्त कर्मके करनेवालेहैं मत्स्य देशीसत्यवक्ताहैं सूरसेनदेशी यज्ञ को करतेहैं और पूर्वके बासीदासहैं अर्थात् शूद्रधर्म वालेहैं और मत्स्यों के खानेवालेहैं दाक्षिणात्य लोग धर्माभ्यासीहैं परन्तुबाह्लीक और सुराष्ट्र देशी चोर और वर्ण संकरहैं २८ कृतघ्नता दूसरेका धनहरना मद्यपीना गुरूकी स्त्री से संभोग करना कठोर वचन कहना गौको मारना और घरसे बाहर रात्रिमें अन्यकी स्त्री से भोग करना अन्य पुरुषोंके बस्त्रोंकाधारण करना यहअवगुणहीं २९ जिनलोगोंका धर्म हैउनमेंकहो कि अधर्मनहींहै नहीं अवश्यहै परन्तुअरट्ट और पंजाब देशियोंको धिक्कारहै पांचाल देशियोंसे लेकर कुरव देशियोंतक और नैमिष देशियोंसे लेकर मत्स्यदेशियोंतकके लोगभी धर्मको जानते हैं फिर उत्तरमें रहनेवाले अंग और मगधदेशी वृद्ध मनुष्य उत्तम धर्मोंसे अपना बर्त्तावकरके निर्वाह करतेहैं ३० जिनमें मुख्यअग्नि है वह देवता पूर्व दिशा में रहते हैं और शुभकर्म करनेवाले यमराजसे रक्षितहोकर दक्षिण दिशामें पितरलोग निवास करतेहैं ३१ और पराक्रमी बरुणदेवता सब देवताओं समेत पश्चिम दिशाकी रक्षाकरता है और भगवान् चन्द्रमा ब्राह्मणों समेत उत्तर दिशाकी

रक्षाकरताहै ३२ हेमहाराजइसीप्रकार राक्षस और पिशाचहिमालय नामश्रेष्ठपर्व्वतकोगुह्यक गन्धमादन शैलकोरक्षाकरतेहैं ३३ औरसब जीव मात्रोंकी भगवान् विष्णुजी रक्षाकरते हैं मगधदेशीलोग अंग चेष्टाओंसे उत्पन्न होनेवाले वृत्तान्तोंके जाननेवाले हैं और कौशल देशी प्रत्यक्ष और प्रकटहुये वृत्तांतोंके ज्ञाताहैं ३४ कौरव पांचाल देशी आधीबात केही कहनेसे पूरीबातके जाननेवालेहैं शाल्वदेशी सब आज्ञाओंके पूरे करनेवाले हैं और पर्व्वती विषमहैं इससे कठिनतासे आधीन होनेवालेहैं ३५ हेराजा मुख्यकरके सब बातोंके जाननेवाले सुरयुवन अर्थात् यूनानीम्लेच्छ बनावटके धर्मपरचलते हैं अर्थात् वैदिक धर्मको नहीं मानतेहैं और अन्य लोग बिना समझायेहुये मंगलपूर्व्वक पूर्णहोनेवाले बचनोंको नहीं समझतेहैं ३६ वाह्लीकलोग अपनेशुभचिन्तकोंके बिरोधीहैं और मद्रदेशी कुछभी नहींहैं हेशल्य इसनिमित्त तुम ऐसे उत्तरदेनेको योग्यनहीं हो इस पृथ्वीपर सब देशोंकामल मद्र देश कहाताहै ३७ मद्यकापान गुरूकी स्त्रीसे संभोग कुस्तीलड़ना पराये धनकाहरना यही जिनलोगोंका धर्महै उनमें धर्म अवश्यहै उन अरट्टदेशी और पंजाबदेशियोंको धिक्कारहै ३८ इसबातको जानकर मौन होकर विरुद्धता मतकर नहींतो मैं प्रथमतुझकोमारूंगा फिरअर्जुनऔर केशवजीकोमारूंगा कर्णकी इनसबबातोंको सुनकर शल्यबोला हेकर्ण अंगदेशमें रोगी दुखिया लोगोंका त्याग और अपनी स्त्री पुत्रका बेचडालना वर्त्तमानहै उनदेशोंका तू अधिपतिहै ४० भीष्मजीने जो तुमको रथी अतिरथीकी संख्यामें कहा उन अपने दोषोंको जानकर क्रोधरहित होकरक्रोधयुक्त मतहो ४१ हेकर्ण सर्वस्थानोंमेंब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रहैं और सुन्दरव्रतवालीपतिव्रता स्त्रियांहैं ४२ मनुष्य मनुष्य के साथमें हास्य विनोद पूर्व्वक क्रीड़ा करतेहैं और विषय भोग करनेवाले मनुष्य प्रत्येक देशमें परस्पररक्षा करनेवालेहोतेहैं ४३ हरएक मनुष्य सदैव दूसरेको बुराइयोंसे कुशल होताहै और अपने दोषोंको नहीं जानता वा जानताहुआ भी अज्ञानहोकर मोहित

होजाता है ४४ अपने २ धर्मपर कर्म करनेवाले राजा सब स्थानों में हैं दुराचारियों को दण्ड देते हैं और सर्वत्र धर्म के रखनेवाले मनुष्यहैं ४५ हेकर्ण देशके सामान्य होने से सब मनुष्य पापको सेवन नहीं करते हैं वह अपने स्वभावसे जैसेहोतेहैं वैसे देवताभी नहीं होते संजयबोले कि इसके पीछे राजा दुर्योधन ने मित्रता की रीतिसे कर्णको और हाथ जोड़कर शल्यको निषेधकिया ४७ इसके पीछे हे श्रेष्ठ दुर्योधनके निषेध करनेसे कर्णने उत्तर नहींदिया और शल्यभी शत्रुओंके सन्मुखहुआ ४८ फिरकर्णने शल्यको प्रेरणाकरी कि शत्रुके सन्मुख चलो ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे धृष्टद्युम्न से रक्षितपांडवों की सेना को देखकर कर्णने शत्रुकी सेनाके सहने वाले अपूर्व व्यूहको अलंकृतकिया १ औररथ शंख और अन्य२बाजोंके द्वारा पृथ्वीको कंपायमान करता हुआ चला २ हेभरतर्षभ बड़े तेजस्वी युद्ध में कुशल शत्रुसंतापी क्रोधयुक्त कर्णने बुद्धि के अनुसार व्यूह को शोभित करके ३पांडवों की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न कर दियाजैसे किआसुरी सेनाको इन्द्र छिन्न भिन्न करदेताहै वहां युधिष्ठिर को घायल करके बाम अंगमें करदिया ४ धृतराष्ट्र बोले हे संजय कर्णने भीमसेनसे रक्षित उन सब पांडवों के सन्मुख जिनमें अग्रगामी धृष्टद्युम्न था कैसे व्यूहको अलंकृत किया ५ और देवताओं सेभी अजेयबड़े धनुषधारी सबयुद्धकर्त्ताओं को किस२ रीतिसे रोका और हे संजय मेरी सेनाके पक्ष और प्रपक्ष कौन २ हुये ६ और न्यायके अनुसार सेनाका विभागकरके किस रीतिसेनियत हुये औरपांडवोंनेभी मेरे पुत्रोंके सन्मुख कैसे२ व्यूहको रचा ७ और वह महाभयानक युद्ध कैसे जारी हुआ और उस समय अर्जुन कहांथा जबकि कर्ण युधिष्ठिर के सन्मुख गयाथा ८ क्योंकि अर्जुनके समक्ष में युधिष्ठिर के

सन्मुख जानेको कौन समर्थ होसक्ता है कि जिस अकेलेने पूर्वकाल में खाण्डव बनके सबजीव मात्रोंको विजय किया उसके सन्मुख कर्णके सिवाय कौनसा पुरुष जीवनकी आशा करके युद्धको करे ९ संजय बोले कि व्यूहकी रचनाको सुनिये और जैसे अर्जुन वहां से गया और जिसरीतिसे अपने २ राजाको घेरे हुये युद्ध जारीहुआ १० हेराजा सारद्वत कृपाचार्य्य वेगवान् मगध देशीय यादव कृतवर्मा यहतो दाहिने पक्षपर नियत हुये ११ और उनके प्रपक्षपर महारथी शकुनि और महारथी उलूकने स्वच्छ प्रास रखने वाले सवारों समेत आपकी सेनाको रक्षित किया १२ भयसे उत्पन्न होने वाले व्याकुलता से रहित गान्धार देशी लोग और कठिनता से विजय होने वाले उन पहाड़ियों समेत जो कि टीड़ीदलके समान पिशाचोंके तुल्य कठिनता से देखने के योग्य थे १३ मुख न मोड़नेवाले चौबीस हजार रथी युद्धमें कुशल संसप्तकों ने बायें पक्षको रक्षित किया १४ वह सब आपके पुत्रोंसे युक्त श्रीकृष्ण अर्जुनके मारनेके अभिलाषी थे और पांडवोंके प्रपक्षमें यवनों समेत कांबोजदेशीय शकजातिके लोग हुये १५ और कर्ण की आज्ञासे रथ घोड़े और पत्तियों समेत सब लोग श्रीकृष्ण जी और अर्जुन को पुकारते हुये नियत हुये १६ वह अपूर्व कवच बाजूबन्द और माला धारण करने वाला कर्णभी सेना मुखको रक्षित करता हुआ सेनाके मुख पर नियत हुआ १७ वह अत्यन्त क्रोधित आपके पुत्रोंसे व्याप्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शूरबीर कर्ण सेनाका संहार कर्त्ता मध्य सेना मुखपर शोभायमान हुआ १८ और सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशित अपूर्व दर्शन पिंगलबरण नेत्रवाले बड़ेहाथी पर सवार सेना समेत व्यूहके पृष्ठभागपर दुश्शासन नियत हुआ हेराजाउस के पीछे अद्भुत अस्त्र और कवचधारी निज भाइयों से और एकत्रहुये बड़े शूरबीर मद्र और कैकेय देशियोंसे चारों ओरसे रक्षित आप राजा दुर्य्योधन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि देवताओं के मध्यमें रक्षा किया हुआ इन्द्र शोभित होताहै और अश्वत्थामा

वा कौरवों के बड़े२ महारथी शूरम्लेच्छों से युक्त सदैव मतवाले बादलोंके समान मद रूप जलके डालने वाले हाथी उस रथोंकी सेनाके पीछे२ चले १९ । २० । २१ । २२ । २३ वह ध्वजापताका वा प्रकाशित उत्तम शस्त्र और सवारों समेत नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि वृक्ष धारी पर्वत होतेहैं २४ उन पदाती और हाथियों के पाद रक्षक भी पट्टिश और खड्गके धारण करने वाले मुखन मोड़ने वाले हजारों शूरवीर वर्त्तमान थे २५ वह देवा सुरों की सेनाके समान व्यूहराज सवार रथ और हाथियों समेत अलंकृतमहा शोभायमान हुआ २६ उसबुद्धिमान सेनापतिने इसरीति से वार्हस्पत्य व्यूहको रचा उस नाचते हुये महा व्यूहको देखकर शत्रुओंको भय उत्पन्न हुआ २७ उसके पक्ष और प्रपक्षोंसे पती घोड़े रथ और हाथी सबके सब युद्धाभिलाषी होकर ऐसे निकलतेथेजैसे कि वर्षाऋतु में बादल निकलतेहैं २८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर कर्णको सेना मुखपर देखकर शत्रुओंके मारने वाले अकेले अर्जुनसे बोले २९ हे अर्जुन युद्धमें कर्णके रचेहुये उस महा व्यूहको देखोजो पक्ष और प्रपक्षोंसे संयुक्त शत्रुकी सेनाको प्रकाशित करताहै३० सो तुम इस शत्रुकी बृहत्सेनाको अच्छे प्रकारसे देखकर ऐसी नीति बिचारो जिससेकि यह हमको भयभीत न करे ३१ राजाके इसरीतिके बचनको सुनकर अर्जुन हाथ जोड़कर राजासे कहने लगाकि जैसा आप कहतेहैं वैसाहीहै मिथ्या नहीं है ३२ हेभरतर्षभ जिस रीतिसे इसका मारना बिचार किया है उसको मैं करूंगा इसका मारना बहुत श्रेष्ठहै इससेमैं इसका नाशकरताहूं ३३ युधिष्ठिर बोले कि तुम तो कर्णसेलड़ो भीमसेन सुयोधनसे नकुलवृषसेनसे सहदेव सौबल से ३४ शतानीक दुश्शासनसे सात्विकी कृतबर्मासे पांड्यअश्वत्थामासे सन्मुख होकर लड़ो और मैं आप कृपाचार्यसे युद्धकरूंगा ३५ और शिखंडी समेत द्रौपदी के सब पुत्र उन शेषबचेहुये धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे सन्मुख होकर लड़नेको जाओ और सब हमारे शूरवीर उन के शूरवीरोंको मारो ३६ संजय बोले कि इस रीति से धर्मराजके

बचनों कोसुनकर अर्जुनने कहाकि ऐसाही होगा यह कहकर अपनी सेनाओंको आज्ञादी और आप सेना मुख परगया ३७ जोकि यह वैश्वानर अग्नि बिश्वका प्रभुहै वह प्रथम ब्रह्माजीके मुखसे उत्पन्न चन्द्रमारूप से प्रकट होनेवालाहै उसीने घोड़के रूपको पाया उस घोड़को देवता और ब्राह्मणोंने जानलिया कि यह ब्रह्माजीके मुख से उत्पन्नहै वही अकेला एकदेवता अपने चाररूप बनाकर अर्जुनके रथको ले चलताहै ३८ जिसने पूर्व समय में ब्रह्मा रुद्र इन्द्र और बरुणको क्रम पूर्वक सवार कियाहै इसहेतुसे प्रथमतो रथपर सवार होकर केशवजी और अर्जुनचले ३९ तदनन्तर शल्य उस अपूर्व दर्शनीय आतेहुये रथको देखकर उस युद्धदुर्मद अधिरथी कर्णसे बोला ४० यह श्वेत घोड़ोंसे युक्तसारथी श्रीकृष्णजी समेत सबसेना ओंसेभी कठिनतासे रोकने के योग्य अर्जुन का रथ आया यह रथ ऐसे कठिनतासे रोकनेके योग्यहै जैसे कि कर्मोंका फल रोकने के योग्य नहीं होताहै ४१ हे कर्ण जिसको तुम पूछतेथे वह शत्रुओंको मारताहुआ अर्जुनचला आताहै उसका ऐसा कठोर शब्दसुनाईदेता है जैसाकि बादलका घोर शब्द होताहै ४२ निश्चयकरके यहदोनों महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं देखो यह उठीहुई धूलि आकाश को व्याप्त करके नियतहै ४३ हेकर्ण रथके पहियेके नीचेसे चला-यमान पृथ्वी कंपायमानहै और महा वेगवान् बायु आपकी सेनाके सन्मुख चलरही है ४४ यह कच्चे मांस खानेवाले राक्षस आदिभी बोलरहे हैं यह मृग भयानक शब्दोंको करतेहैं हेकर्ण इसघोरभय दायक रोमहर्षण करने वालेसूर्यको आच्छादित कियेहुये बादलकी सूरत केतु नक्षत्रको देखो और सब दिशाओंमें नानाप्रकारके पशुओं के झुंड और पराक्रमी शार्दूल सूर्यको देखतेहैं हजारों भागनेवाले और सन्मुख नियतहोनेवाले परस्परमें घोर शब्द करनेवाले कंक और गृध्रोंको देखो और हेकर्ण तेरे रथपरलगेहुये अतिउत्तम चामर भी अग्निके समान होगयेहैं ४६ । ४७ । ४८ और ध्वजा कांपतीहै बड़े वेगवान् उन्नत बलिष्ठ शरीर वाले घोड़ों के कंपको देखो ४९

जैसे दर्शन करनेके योग्य आकाशमें उड़नेवाले गरुड़ोंको देखते हैं उसीप्रकार निश्चय करके युद्धोंमें हजारों मरे हुये राजालोग पृथ्वी पर आश्रय लेकर ५० शयन करेंगे और शंखोंके कठोर शब्दरोमां च खड़े करनेवाले सुनाई देतेहैं ५१ हेकर्ण ढोल और मृदंगों के शब्दोंको सुनों हेराधाके पुत्र बाणोंके मनुष्योंके और घोड़े हाथियों के शब्द ५२ महात्माके प्रत्यंचा केतलत्रोंके शब्दोंको और कारी गरोंके हाथसे सुवर्ण और चांदीसे निर्मित वस्त्रोंके वनाये हुये ५३ नाना प्रकारकी वर्णवाली ध्वजाओंसे कंपायमान पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य और नक्षत्र रखनेवाली क्षुद्रघंटिका युक्त पताका रथपर महा शोभायमान फरारही हैं ५४ हेकर्ण देखो कि अर्जुनकी ध्वजा बायुसे चलायमान ऐसी कणकणारही हैं जैसे कि आकाश में बिजिलियां कण कणाया करती हैं ५५ और महात्मा पांचालोंके यह पताकाधारी रथकैसे शोभायमानहैं ५६ वानराधीशको धारण करनेवाली अति उत्तम विजय कारिणी ध्वजा संयुक्त आनेवाले अजेय कुन्ती नन्दन अर्जुनको देखो ५७ यह चारोंओरसे देखनेके योग्य महा भयानक शत्रुओंका भयकारी बानर अर्जुनकी ध्वजाकी नोकपर दिखाई देरहाहै ५८ और बुद्धिमान श्री कृष्णजी का यह शंख चक्र गदा और शार्ङ्ग धनुष है जिसमें श्रीकृष्णजी का कौस्तुभमणि ज्यारीही शोभादेरहाहै ५९ यह शार्ङ्ग धनुष और गदाहाथमें रखनेवाले पराक्रमी बासुदेवजी बायुके समान शीघ्र गामी श्वेतघोड़ोंको चलातेहुये चलेआतेहैं ६० अर्जुनसे खैंचाहुआ यह गांडीव धनुष कैसे शब्दोंको करताहै उस हस्तलाघवीके छोड़े हुये यह तीक्ष्णबाण शत्रुओंको माररहेहैं ६१ और मुख न मोड़ने वाले बड़े लंबेरक्त नेत्रधारी पूर्णचंद्रमाके समान मुखवाले शूरबीरों के शिरोंसे यह पृथ्वी आच्छादित होती चली आतीहै ६२ उठाये हुये शस्त्रोंमें कुशल युद्ध कर्त्ताओंके परिघकी समान पवित्र चन्द-नादिसे चर्चित भुजदंड शस्त्रोंके द्वारा गिराये जातेहैं ६३ जिनके नेत्रऔर जिह्वा निकल पड़ीं वह सवारों समेत घोड़े पृथ्वीपर मर

करगिरेहुये सोरहेहैं ६४ पर्व्वतके शिखरकी समान रूपवाले यह
हाथी मारेगये और अर्जुनके हाथसे घायल वा चूर्णीभूत अंगवाले
हाथी पर्व्वतोंके समान घूमतेहैं ६५ यह गंधर्वनगरके समान रूप
वाले रथ जिनके कि राजा मरगये वह स्वर्गबासियों के पवित्र
विमानोंके समान पृथ्वीपर गिरतेहैं ६६ अर्जुन के हाथसे अत्यन्त
व्याकुलसेना ऐसी दिखाई देतीहै जैसे कि नानाप्रकारके हजारोंप-
शुओंके समूह केशरीसिंहसे व्याकुल होतेहैं ६७ आपके हाथीघो-
ड़े रथ और पतियोंके समूहोंको मारनेवाले सन्मुख दौड़नेवाले
महबीर पांडवलोग राजाओंको मारतेहैं ६८ जैसे कि बादलोंसे सूर्य्य
ढकजाताहै उसीप्रकार यह अर्जुन ढकाहुआ दिखाई नहीं देताहै
उसकी ध्वजाकी नोकही दिखाई देतीहै और प्रत्यंचाका शब्दभीसु-
नाजाता है अब उसश्वेतघोड़ेवाले श्रीकृष्णजीको सारथी रखने
वाले युद्धमें शत्रुओं के मारनेवाले बीर अर्जुनको देखोगे ६९ जि-
सको कि तुम पूछतेथे हे कर्ण अबतुम इनपुरुषोत्तम लालनेत्र शत्रु-
ओंके संतप्तकरनेवाले एकरथपर नियत अर्जुन और बासुदेवजीको
देखोगे ७० जिसकेसारथी श्रीकृष्णजीहैं और धनुषजिसका गांडीवहै
हे कर्णउसको जो तुम मारोगे तो हमारे राजाहोगे ७१ संसप्तकोंका
बुलाया हुआ यह अर्जुन उनके समीप सन्मुख होकर उन महाप-
राक्रमियोंका युद्धमें नाशकररहाहै ७२ ऐसे शल्यके बचनोंकोसुन-
कर कर्ण महाक्रोधयुक्त होकर बड़े अहंकार से बोला कि हे शल्य
तुम महाक्रोधयुक्त संसप्तकोंसे सबओरसे घिरेहुये अर्जुनकोदेखो ७३
जैसेकि सूर्य्यबादलों से ढकजाय उसीप्रकार ढकाहुआ यह अर्जुन
दिखाई नहीं पड़ताहै हे शल्य अर्जुन ऐसेही अन्तका करनेवाला है
जोकि युद्धकर्त्ताओंके समुद्रमें डूबरहाहै ७४ शल्यबोला कि कौन पुरुष
वरुणको जलसेमारे और कौन मनुष्य इंधनसे अग्निको बुझावे और
कौन हवाको पकड़े अथवा कौन पुरुष महासमुद्रको पानकरे ७५
मैं युद्धमें अर्जुनका मरना असंभव मानताहूं इन्द्रसमेत देवतालोग
भी युद्धमें अस्त्रोंसे अर्जुनको विजय नहींकरसक्ते ७६ अब तेरीप्रस-

न्नताहै तो अपने बचनको कहकर चित्तको प्रसन्नकर वहतो युद्धमें किसीसेबिजय करनेके योग्यनहींहै अवतू दूसरेमनोरथको कर७७ जोभुजाओं से पृथ्वी को उठासके और क्रोधयुक्त होकर इनसब जड़ चैतन्योंका नाशकरे स्वर्गसे देवताओंको गिरासकै उस अर्जुन को युद्धमें कौन बिजय करसक्ता है ७८ साधारण कर्मी महाप्रकाशमान द्वितीय मेरुपर्वतके समान नियत महाबाहु कुन्तीके पुत्र शूरबीर भीमसेनकोदेखो ७९ कि सदैव क्रोधयुक्त असहिष्णुविजयाभिलाषी यह पराक्रमी भीमसेन चिरकालकी शत्रुताको स्मरणकरता युद्धमें नियतहै ८० यह धर्मधारियों में श्रेष्ठ युद्धमें शत्रुओंके साथ कठिन कर्म करनेवाला शत्रुओंके पुरोंका विजय करनेवाला धर्मराज युधिष्ठिर नियतहै ८१ यहकठिनतासे विजय होनेवाले दोनों पुरुषोत्तम अश्विनीकुमारों के समाननिज सहोदर नकुल सहदेव दोनों भाई युद्धमें नियतहैं ८२ यहपांच पर्वतोंके समान पांचो द्रौपदीकेपुत्र नियत हैं यह सब अर्जुनके समान युद्धाभिलाषी युद्धमें वर्त्तमानहैं८३बलकीवृद्धिवाले वड़ेतेजस्वी सत्यबक्ता द्रुपदके शूरबीर पुत्र जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न है वहभी नियतहैं ८४ इन्द्रके समान असह्य पूर्व समयमें क्रोधयुक्त मृत्युके समान यादवोंमें श्रेष्ठ युद्धाभिलाषी यह सात्यिकी हमारे सन्मुख आताहै ८५ उन दोनों पुरुषोत्तमोंके इसरीतिसे वार्त्तालाप करते करते वह दोनोंसेना श्री गंगा और यमुनाके समान बड़े वेगसे भिड़गईं ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णशल्यसंबादेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसरीतिसे सेनाओंके तैयार होनेपर और अच्छीरीतिसे भिड़जानेपर अर्जुन किसरीतिसे संसप्तकोंके सन्मुख गया और कर्णकैसे पांडवोंके सन्मुखगया१इस युद्धको ब्यौरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़ेचतुरहो मैं युद्धमें शत्रुओंके पराक्रमोंके सुनने से तृप्तनहीं होताहूं २ संजयबोले कि आपके पुत्रके हेतु अन्याय

होनेपर अर्जुननेशत्रुओंकोबड़ी सेनाको नियतजानकर व्यूहको रचा वह अश्व सवार हाथियों समेत रथ और पदातियोंसे आवृत बड़ी सेनावाला व्यूह जिसमें मुख्यधृष्टद्युम्नथा शोभायमान हुआ३।४ चंद्रमा और सूर्य्यके समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्त्ति मान काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतवर्ण घोड़ों समेत शोभितहुआ ५ दिव्य कवच और धनुष रखने वाले शार्दूलके समान पराक्रमी शरीरसे प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रोंने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्नको ऐसा रक्षितकिया जैसेकि तारागण चन्द्रमाको रक्षित करतेहैं तदनन्तर सेनाओंके सन्नद्ध होनेपर युद्धमें संसप्तकोंको देख कर ६।७ क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गांडीव धनुषको टंकारता हुआ सन्मुखगया इसके पीछे मारने के अभिलाषी संसप्तकलोग अर्जुनके सन्मुख दौड़े ८ वह बिजयमें संकल्प करनेवाले मृत्युको तिरस्कार करके सन्मुखगये मनुष्य हाथी घोड़ोंके समूहोंसेयुक्त मतवाले हाथी और रथोंसेव्याप्त ९ पत्तियोंसे युक्त शूरबीरोंके उस समूहको अर्जुन ने बड़ी शीघ्रतासे पीड़ितकिया अर्जुनके साथमें उनलोगोंका ऐसा कठिन युद्धहुआ १०जैसा कि उसका युद्ध निवात कवचियोंकेसाथ हमने सुनाथा रथ घोड़े ध्वजा हाथी इन युद्धमें बर्तमानोंको भी ११ बाण धनुष खड्ग चक्र फरसे आदि नानाप्रकारके शस्त्रोंको उठाये हुये भुजाओं वा नानाप्रकारके शस्त्रों १२को और शत्रुओंके हजारों शिरोंको अर्जुननेकाटा तबपातालतलकेसमान उससेनारूपी सागर में १३ इसप्रकार मग्नहुये उसरथको देखकर संसप्तकलोग गरजे तदनन्तर उसने उनशत्रुओं को मारकर फिरभी उत्तरकी ओरसे मारा १४ दक्षिण और पश्चिम ओरसेभी ऐसामारा जैसे कि क्रोध युक्त रुद्र पशुओंको मारतेहैं उसकेपीछे हे श्रेष्ठ पांचाल चंदेरी और सं जयदेशियों के युद्ध १५ आपके युद्धकर्त्ताओं से बड़ेभारी कठिन हुये युद्धमें दुर्म्मद अत्यन्त क्रोधयुक्त रथसमेत सेनाको मारनेवाले प्रसन्न चित्त कृपाचार्य्य कृतवर्मा और सौबलके पुत्र शकुनीनेकोशल काशीमत्स्य कारूषकैकय१६।१७ और शूरसेनदेशी उत्तमशूरोंसमेत

युद्ध किया यह तीनों उनके युद्धका अन्त करनेवाले शरीर पाप और प्राणोंके नाश करनेवाले १८ क्षत्री वैश्य और शूद्र वीरोंकेधर्म स्वर्ग और यशके उत्पन्न करनेवालेहुये हे भरतर्षभ इसकेपीछे बड़े वीर कौरव और महारथी मद्रदेशियों से रक्षित वीर दुर्योधनने भाइयोंसमेत युद्धमें आकर पांडवपांचाल और चंदेरी देशियोंसमेत सात्विकीकेसाथ १६।२० युद्धकरनेवाले कर्णको चारों ओरसे रक्षित किया फिर कर्णने भी तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे बड़ीभारी सेनाको मारकर २१ उत्तम २ रथियोंको मर्द्दन करके युधिष्ठिरको पीड़ामान कियाहजारों शत्रुओंको वस्त्रशस्त्र शरीर और प्राणोंसेपृथक् कर२२ स्वर्ग और यशको स्पर्श करके अपने शूर वीरोंको प्रसन्नकिया हे श्रेष्ठ इसरीतिसे मनुष्य हाथी और घोड़ोंका नाश करनेवाला युद्ध कौरव और संृजियोंमें देवासुरोंके युद्धके समानहुआ २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपरस्परयुद्धेसप्तचत्त्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अरतालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले हेसंजय मनुष्योंका नाश करनेवाले कर्णने पांडवों कीउससेनामें जाकर राजा युधिष्ठिरको जैसे अचेतकिया वहसवमुझ सेवर्णनकरो १ युद्धमें पांडवोंके कौन२ से बड़े वीरोंने कर्णको रोका और अधिरथी कर्णने कौन २ से वीरोंको मथकर युधिष्ठिरको पीड़ितकिया २ संजयबोले कि शत्रुओंका विजय करनेवाला कर्ण सन्मुख वर्त्तमानपांडवोंकोजिनमें मुख्य धृष्टद्युम्नथा देखकरशीघ्रही पांचालके सन्मुख दौड़ा ३ विजयसे शोभायमान पांचालशीघ्रही उससन्मुख दौड़नेवाले महात्माके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि हंस सन्मुख जातेहैं ४ इसकेपीछे दोनोंओरसे हजारोंशंखोंके चित्तरोचक शब्द प्रकटहुये और भेरियोंके भयानक शब्द होनेलगे ५ तबनाना प्रकारकेबाणोंकागिरनाओर हाथीघोड़ेवारथोंकेशब्द और भयकारी वीरोंके सिंहनाद उत्पन्नहुये ६ पर्व्वत वृक्ष और समुद्रसमेत पृथ्वी बायु और बादलोंसमेत आकाश अथवा सूर्य्य चन्द्रमा ग्रह नक्षत्रा-

दिक समेत स्वर्ग यहसब प्रत्यक्षमें घूमनेलगे ७ सवजीवमात्रउस शब्दको इसप्रकारका मानकर घातकरनेसे बन्दहुये और छोटे २ जीवतो भयभीत होकर मरगये ८ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्तकर्ण ने शीघ्रहीअस्त्रको प्रकटकरके पांडवीसेनाको ऐसेमारा जिसप्रकार आसुरी सेनाको इंद्रमारताहै ९ बाणोंको छोड़तेहुये उसकर्णनेपांडवी सेनामें घुसकर प्रभद्रकोंके बड़े २ सतहत्तर बीरोंकोमारा १० इसके पीछे उस महारथीकर्णने सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार पच्चीसउत्तम बाणोंसेपच्चीसही पांचालोंको मारा ११ फिरउसबीरने सुनहरापुंख वाले शत्रुओंके चीरनेवाले नाराचोंसे हज़ारों चंदेरी देशियोंको भी मारा १२ हेमहाराज इसकेपीछे पांचालोंके रथसमूहोंने इसरीति केबुद्धिसेबाहर कर्मकरनेवाले कर्णकोचारोंओरसे घेरलिया १३ फिर तो सूर्य्यकेपुत्रमहात्माकर्णनेदुस्सहपांचविशिखोंको धनुषपरचढ़ाकर पांच पांचालोंकोमारा १४ अर्थात् हेभरतर्षभ युद्धमेंभानुदेव, चित्रसेन सेनाबिन्दु, तपन, शूरसेन इनपांचालोंकोमारा १५ उस युद्धमें शूर बीर पांचालोंके मरनेपर पांचालोंमें बड़ाहाहाकारहुआ १६ हेमहा-राज तबतोपांचालोंके दश महारथियोंने कर्णको चारोंओरसे घेर-लिया उससमयभी कर्णनेशीघ्रही बाणोंसे उनकोमारा १७ इसके पीछे चक्रकेरक्षकदुर्जय कर्णकेपुत्र सुखेन और सत्यसेनने कर्णको त्यागकरयुद्ध किया १८ फिर कर्णके पुत्र पृष्ठरक्षक वृषसेनने कर्णको पीछेकी ओर से रक्षित किया १९ कवच और शस्त्रोंके धारण करने वाले धृष्टद्युम्न, सात्यकी, द्रौपदीके पुत्र, भीमसेन, जन्मेजय, शिखण्डी, और बड़ेबीर प्रभद्रक २० चंदेरी, केकय, पांचालदेशी, नकुल, सहदेव, और मत्स्यदेशी शूरबीर यह सब मारने के इच्छा-वान् उस प्रहार करनेवाले कर्ण के सन्मुख दौड़े २१ और नाना प्रकारकी बाण बर्षासे इस कर्णको ऐसा मर्दन किया जैसे कि वर्षा ऋतुमें बादल पर्व्वत को मर्दन करते हैं २२ इसके पीछे पिताके चाहनेवाले प्रहारकर्त्ताकर्णके पुत्रोंने और आपके अन्य२वीरोंने उन सब बीरोंको रोका २३ सुसेन भल्लसे भीमसेन के धनुषको काटकर

और सात नाराचोंसे भीमसेन को छातीपर घायल करके गर्जा २४ इसके पीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन ने बड़े दृढ़ दूसरे धनुषको लेकर अपने बाणसे सुसेन के धनुषको २५ काटकर क्रोध से युक्त नाचते हुये भीमसेन ने दश बाणों से उसको घायल किया और बड़ीशीघ्रतासेकर्णकोभी तिहत्तर बाणोंसेघायलकिया २६ औरदेखने वाले मित्रोंके मध्यमें कर्णके पुत्र भानुसेनको घोड़े, सारथीरथ शस्त्र और ध्वजासमेत दशबाणोंसेगिरादिया २७फिर क्षुरप्रसे कटा हुआ उसका वह प्रकाशमान शिर ऐसा शोभितमालूम हुआ जैसेकि नालसे जुदाहुआ कमल होताहै २८ भीमसेनने कर्णके पुत्रको मारकर आपके शूरवीरोंको फिर पीड़ामान करके कृपाचार्य्य और कृतवर्माके धनुषोंको काटकर उनकोभी व्याकुलकिया फिर दुश्शासनको तीन बाणसे और शकुनीकोछः लोहेके बाणोंसे घायलकरके उलूक और पत्री इनदोनोंको विरथकिया हाय सुसेनकोमाराहै ऐसा कहतेहुये भीमसेनने शायककोलिया तबकर्णने उसकेउसबाणकोकाटकरतीन बाणोंसेउसकोभी घायलकिया २९।३१ इसकेपीछे भीमसेनने सुन्दर पर्ववाले बाणको लेकर सुसेनके ऊपरछोड़ा फिर कर्णने उसबाण कोभीकाटा ३२ इसकेपीछे पुत्रको चाहते निर्दय कर्णने मारनेकी इच्छासे तिहत्तर बाणों से निर्दय होकर भीमसेन को फिर घायल किया ३३ फिर सुसेनने बड़े भारबाहक उत्तम धनुषको लेकर पांच बाणोंसे नकुलको दोनोंभुजा और छातीपर घायलकिया ३४ तब नकुलभी भारसहनेवाले बीसबाणोंसे उसकोघायलकरके बड़ेशब्द को गर्जा और कर्णके भयको उत्पन्नकिया ३५ फिरमहारथी सुसेन ने शीघ्रगामी तीक्ष्णदशबाणोंसे उसको घायलकरके शीघ्रही क्षुरप्र से उसके धनुषको काटा ३६ इसकेपीछे क्रोधसे भरेहुये नकुल ने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें नौबाणोंसे सुसेनकोरोंक कर ३७ उस शत्रुहन्ताने बाणोंसे दिशाओंको ढककर इसके सारथीको घायल किया फिर सुसेनको तीनबाणसे ३८ और तीनभल्लोंसे उसके बड़े दृढ़ धनुषके तीनखगड करदिये इसकेपीछे क्रोधयुक्त सुसेनने दूसरे

धनुष को लेकर ३६ साठ बाणों से नकुल को घायल करके सात बाणों से सहदेव को छेदा परस्पर के युद्ध में शीघ्रतापूर्वक शायक मारनेवाले वीरोंका युद्ध देवासुरोंके युद्धके समान हुआ फिरसात्यिकी तीन बाणों से वृषसेन के सारथी को मारकर ४० । ४१ भल्लसे उसके धनुष को काट घोड़ोंको भी सात बाणों से मारा एकबाणसे ध्वजाको काटकर तीनबाणों से उसकोभी हृदयपर घायलकिया ४२ इसकेपीछे एक मुहूर्त अपने रथपर अचेतहोकर फिर उठखड़ाहुआ युद्धमें सात्विकीके हाथसे सारथी घोड़े रथ और ध्वजासे रहित कियाहुआ वह वृषसेन ४३ सात्विकी के मारनेकी इच्छासे ढाल तलवार बांधकर सात्विकीके सन्मुख गया उस शीघ्रतासे आनेवाले वृषसेनकी ढाल तलवारको सात्विकीने ४४ बाराहकर्णनाम दशबाणोंसे काटा और दुश्शासनने उस रथ और शस्त्रसेहीन वृषसेन को देखकर ४५ अपने रथपर सवार करके शीघ्रही दूसरे रथपर सवारकिया इसकेपीछे महारथी वृषसेन ने दूसरे रथपर सवार होकर ४६ तिहत्तरबाणों से द्रुपदके पुत्रोंको और पांचबाणोंसे सात्विकीको चौंसठ बाणोंसे भीमसेनको पांचसे सहदेवको ४७ तीनबाणों से नकुलको सातबाणोंसे शतानीक को दशबाणसे शिखण्डीको और सौबाणोंसे धर्म्मराजको घायलकिया ४८ हेराजा उस धनुषधारी कर्णकेपुत्रने इन और अन्य २ शूरवीरों को पीड़ामान किया ४६ इसकेपीछे उस अजेयने युद्धमें कर्णकेपृष्ठ भागको रक्षित किया फिर सात्विकीने नवीन लोहेके नौबाणों से दुश्शासन को ५० सारथी घोड़े और रथसे विहीन करके तीनबाण से उसके ललाटको घायलकिया फिर वह दुश्शासन बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर५१ कर्णके बलको बढ़ाताहुआ पांडवोंके साथ युद्ध करनेलगा इसीप्रकार धृष्टद्युम्ननेदश बाणोंसे कर्णको घायलकिया ५२ द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर बाणोंसे सात्विकीने सात बाणोंसे भीमसेनने चौंसठ बाणोंसे सहदेवने सात बाणोंसेनकुलने तीनसौबाणसे शतानीकने सातबाणसे५३शिखंडीने

दशवाणोंसे और वीर धर्म्मराजने सौवाणोंसे घायल किया ५४हे राजेन्द्र विजयाभिलाषी इनवीरोंने और अन्यवीरोंने उसमहायुद्ध में बड़ेभारी धनुषधारीको पीड़ामान किया५५ फिररथसे घूमकर उस शत्रुविजयी वीर कर्णने विशिषनाम दशदश वाणों से प्रत्येक को घायल किया ५६ हेमहावाहो हमने महात्माकर्णकेअस्त्र बल और हस्तलाघवताको देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया ५७ क्रोधसे वाणों को लेते चढ़ाते औरमारते हुये कर्णको नहींदेखा परन्तु शत्रुओं को मृतक हुआ देखा ५८ उससमय तीक्ष्णधारवाले वाणोंसे पृथ्वी स्वर्ग दिशा और आकाशभर व्याप्त होगया उस स्थानपर आकाश लालबादलोंसे व्याप्त होनेकेसमान परिपूर्ण होगया ५६ उससमय धनुष हाथमेंलिये नाचताहुआ प्रतापवान् कर्ण जिन २ के हाथसे घायलहुआथा उन२को एकएक करके तिगुने वाणोंसे घायलकिया ६० फिर हजार वाणोंसे उनको घायल करके बड़ेवेगसे गर्जा इस के पीछे घोड़े रथ सारथी समेत वह सबलोग घायल होहोकर हट गये ६१ शत्रुओंका घायल करनेवाला कर्ण वाणोंकी वर्षा से उन बड़े२ धनुषधारियोंको मथकर परस्पर मर्द्दनरूप पीड़ासेरहित हो-कर हाथियोंकी सेनाओंमें आया ६२ वहां उस कर्णने मुख न मो-ड़नेवाले चंदेरी देशियोंके तीनसौ रथोंको मारकर तीक्ष्ण धारवाले वाणोंसे युधिष्ठिरको घायलकिया ६३ इसकेपीछे हेराजा सबपांडव सात्विकी और शिखण्डी जोकि राजाको कर्णसे रक्षा कररहेथे उन सबनेआकर युधिष्ठिरको चारोंओरसे रक्षितकिया ६४ उसीप्रकार सावधान शूरवीर महाधनुषधारी आपके सब युद्धकर्त्ताओंने युद्ध में दुर्ज्जय कर्णको चारोंओरसे रक्षितकिया ६५ हेराजा फिर नानाप्र-कारके बाजोंके शब्द प्रकटहुये और सन्मुख गर्जनेवाले वीरों के सिंहनाद उत्पन्नहुये ६६ इसके पीछे निर्भय पांडव और कौरव फिर सन्मुखहुये पांडवोंका मुख्य युधिष्ठिरथा और हमारा मुख्य अग्रगामी कर्ण था ६७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय ॥

संजयबोले कि इसकेपीछे हजारों रथ घोड़े हाथी और पत्तियों समेत कर्ण उससेनाको चीरकर युधिष्ठिरके सन्मुखगया १ वहां कर्ण निर्भयता पूर्वक शत्रुओंसे संतप्त होकर नानाप्रकारके हजारों शस्त्रोंको काटकर सैकड़ों महाउग्र बाणोंसे शत्रुओंको घायलकिया २ कर्णने उनके शिर जंघा और भुजाओंको काटा तब वह घायल और मृतक होकर पृथ्वीपरपड़े और बहुतसे भागगये ३ फिर सात्विकीके कहनेपर द्राविड़ निषाद और शूरवीर पत्तीलोगयुद्ध में मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुखगये ४ वह लोगभी कर्णके हाथ से शायक और भुजाओंसे रहित होकर मारेगये और एकसाथही पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसेकि टूटाहुआ तालका बन गिरपड़ताहै ५ इसरीतिसे युद्धभूमि में दिशाओंको व्याप्तकरते सैकड़ों और हजारों शूरवीर मृतक होकर पृथ्वीपर बर्त्तमानहुये इसके पीछे पांडव और पांचालोंने मृत्युके समान सूर्यके पुत्र कर्णको ऐसे रोका जैसे कि मन्त्र और औषधियोंकेद्वारा रोगको रोकतेहैं ६।७ वहकर्ण उन को भी मर्द्दनकरके फिर युधिष्ठिरके पास ऐसे पहुंचा जैसे कि मन्त्र वा औषधियोंके कर्मको उल्लंघनकरनेवाला महाकठिन रोगहोताहै ८ राज्यके अभिलाषी पांडव पांचाल और केकयलोगोंसे रोकाहुआ वह कर्ण उल्लंघन करनेको ऐसेसमर्थनहींहुआ जैसे कि काल ब्रह्मज्ञानीको नहीं उल्लंघन करसक्ताहै ९ इसकेपीछे समीप बर्त्तमान शत्रुबिजयी रोकेहुये कर्णसे वह क्रोधसे रक्तनेत्र युधिष्ठिरबोले १० हेवृथा दीखनेवाले सूतपुत्र कर्ण मेरे बचनकोसुन तू सदैव युद्धमें महाबेगवान् अर्जुनसे ईर्षा करताहै ११ और दुर्योधन के मतमें होकर सदैव हमलोगोंको पीड़ादेताहै तेरा तेज बल पराक्रम और पांडवोंकेसाथमें जो शत्रुताहै १२ उस सबको तू बड़ीवीरतामें नियत होकर दिखला अब मैं बड़े युद्धमें तेरेयुद्धके निश्चयका नाशकरूंगा १३ हेमहाराज पांडव युधिष्ठिरने कर्णसे ऐसेबचन कहके सुनहरी

पुंखवाले दशबाणोंसे उसको घायलकिया १४ हेभरतवंशी शत्रुओं के बिजयी कर्णने हंसकर बिषदन्तनाम दशबाणोंसे उसको घायल किया १५ हेश्रेष्ठ कर्णके हाथसे घायल वह युधिष्ठिर उसको तुच्छ करके ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसेकि हव्यके कारणसे अग्नि प्रज्वलित होतीहै १६ प्रलयकालकरनेकी इच्छावाली ज्वालाओंकी मालाओं सेव्याप्त युधिष्ठिरका शरीर ऐसा दिखाई दिया जैसेकि प्रलयकाल में कामनाओंका भस्मकरनेवाला दूसरा संवर्त्त के अग्निहोताहै १७ हेराजेन्द्र इसकेपीछे वह सेनाके मनुष्य जोकि अत्यन्त प्रकाशित शस्त्रोंके धारण करनेवाले थे और जिनके प्रकाशमान वस्त्र और माला गिरपड़ीथीं वेदशोदिशाओंको भागे १८ उसकेपीछे सुवर्णसे जटित बहुतबड़े धनुषको टंकारकर पर्व्वतोंकेभी विदीर्ण करनेवाले बहुत तीक्ष्ण बाणोंको चढ़ाया १९ इसकेपीछे राजाने कर्णकेमारने की इच्छासे शीघ्र कर्णतक खैंचेहुये यमराजके दण्डकी समान बाणकोछोड़ा २० फिर वह उस वेगवान्के हाथसे छूटाहुआ बिजली के समान शब्दायमान बाण अकस्मात् उस महारथी कर्ण के बाईं कोखमें नियतहुआ २१ तब वह महाबाहु उसबाणसे पीड़ितहोकर रथपर धनुषको छोड़कर अचेत होगया २२ इसकेपीछे दुर्योधन की बड़ीसेनाने कर्णको उसदशामें विपरीत चेष्टायुक्त देखकर बड़ाहाहाकारकिया २३ हेराजा युधिष्ठिरके पराक्रमको देखकर पांडवोंका सिंहनाद और क्रीड़ापूर्व्वक किलकिला शब्द प्रकटहुआ २४ फिरबड़े पराक्रमी कर्णने थोड़ेहीकाल में सचेतहोकर राजाके मारने का मनोरथकिया २५ और उस साहसीने सुवर्णजटित विजयनाम धनुष को टंकारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे पांडवोंको घायलकिया २६ इसकेपीछे युद्धमें महात्मा राजाके चक्रकेरक्षक पांचालदेशी चंद्रदेव और दण्डधार को दो क्षुरप्रोंसे घायलकिया २७ धर्म्मराजके वह दोनों बड़ेवीर दोनों पहियोंकीओर रथके समीप ऐसे शोभायमान हुये जैसेकि चन्द्रमाकेपास पुनर्वसु नक्षत्र शोभायमान होतेहैं २८ युधिष्ठिरने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे कर्णको फिरछेदा और सुसेन

ला सत्यसेनको तीनबाणोंसे घायलकिया २६ शल्यको नब्बेबाणों से और कर्णको तिहत्तर बाणोंसे पीड़ामान किया और उनके उत्त रक्षकोंको सीधे चलनेवाले तीन२ बाणोंसे घायलकिया ३० इसके पीछे धनुषको चलायमान करताहुआ वह कर्ण बहुतहंसा और भल्लसे राजाको व्यथितकर साठबाणों से घायल करके गर्जा ३१ इसकेपीछे युधिष्ठिर पांडवके बड़े२वीर क्रोधयुक्त होकर युधिष्ठिरकी रक्षाकरनेको कर्णके सन्मुखदौड़े और बाणों से उसको पीड़ामान किया ३२ सात्विकी, चेकितान, युयुत्सु, पांड्य, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीकेपुत्र, प्रभद्रक ३३ नकुल, सहदेव, भीमसेन, शिशुपालकेपुत्र, कारुष्य, मत्स्य, कैकय, काशी, कोशिल इनदेशोंके शेषशूरवीरोंने ३४ सुसेन को घायलकिया और पांचालदेशी जन्मेजय ने शायकों से कर्णको पीड़ित किया ३५ बाराह, कर्ण, नाराच, नालीक, वत्सदन्त, विपाट, क्षुरप्र, चुटका, मुख ३६ और नानाप्रकारके उग्रशस्त्रों से और रथ हाथी घोड़े और अश्व सवारोंसे कर्णको घेरकर मारने की इच्छासे सन्मुख दौड़े ३७ सबप्रकार करके पांडवों के उत्तम शूरवीरोंसे घिराहुआ होकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट करतेहुये उस कर्णने बाणोंसे दिशाओंको व्याप्त करदिया ३८ इसकेपीछे बाणरूप बड़ी अग्नि और पराक्रमरूप बड़ी उष्णता रखनेवाला अग्निरूप कर्ण पांडवरूपी बनको भस्मकरताहुआ इधरउधर भ्रमण करनेलगा ३९ फिर उस बड़े धनुषधारी वीरकर्णने हंसकर महाअस्त्रोंको चढ़ाकर बाणोंसे महाराजा युधिष्ठिरके धनुषकोकाटा ४० इसकेपीछे कर्णने एक पलभरमेंही नब्बे बाणोंको चढ़ाकर युद्धमें राजाके कवच को छेदा ४१ उससमय वह रत्नजटित सुवर्णसेखचित कवच पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसाकि बिजलीका रखनेवालाबादल बायुसे ताड़ित होकर सूर्य्यसे चिपटाहुआ होता है ४२ उस महाराजके शरीरसे गिराहुआ अपूर्व रत्नों से अलंकृत वह कवच ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि रात्रिके समयबादलोंसेरहित आकाश होताहै ४३ इसकेपीछे बाणोंसे टूटे कवच रु-

धिरसे भरेहुये उस राजाने केवल लोहेकी बनीहुई शक्तिको कर्णके ऊपर फेंका ४४ कर्णने उसअग्निरूपी शक्तिको आकाशमेंही सात बाणोंसे काटा और वहशक्ति पृथ्वीपर गिरपड़ी ४५ इसके पीछे पीछे पांडव युधिष्ठिर चार तोमरोंसेकर्णको दोनोंभुजा ललाट और हृदयपर घायल करकेबड़ी प्रसन्नतासे गर्जा ४६ फिररुधिरभरेक्रोध युक्त सर्पके समान श्वासलेनेवाले कर्णने भल्लसे ध्वजाको काटकर तीनबाणोंसे पांडव युधिष्ठिरको घायलकिया ४७ और उसकेदोनों तूणीरोंको काटकर रथको तिलतिलके समान चूर्णकरडाला जिन कृष्णवर्णबालरखनेवालेदत्तवर्ण घोड़ोंनेयुधिष्ठिरको सवारकिया४८ राजा उन घोड़ोंके रथपर चढ़कर मुखमोड़कर घरकोचलदिया इस रीतिसे वह युधिष्ठिर जिसका सारथी और पीछे रहनेवाला मर गयाथावहहटगया ४६ फिर वह महाखेदितचित्तहोकर कर्णकेसन्मुख होनेको समर्थनहींहुआ फिरकर्णने पांडवयुधिष्ठिरके पासजाकर५० बज्र अंकुश मत्स्य ध्वजा कच्छप और कमल आदिके चिह्नवाले हाथसे उसको पकड़ना चाहा ५१ और अपने पवित्र होनेको हाथ से कन्धेको छूकर बलसे पकड़ना चाहाही था कि कुन्ती का बचन उसको स्मरण होआया ५२ तब शल्यने कहाकि हेकर्ण इस उत्तम राजाको मतपकड़ो वहपकड़तेही तुझको भस्मन करडाले५३ हेराजा इस बातके सुनतेही वह कर्ण हंसा और पांडवोंकी निन्दाकरता हुआ बोला बड़े कुलमें उत्पन्न क्षत्रीधर्म में नियत होकर ५४ इस बड़े युद्धमें भयभीततासे प्राणोंकी रक्षा करते युद्धको त्यागकर कैसे जातेहो इससे मेरेमतसे आपक्षत्रीधर्ममें कुशल नहीं हो ५५ आप ब्राह्मणोंके समूहोंमें वेदपाठ और यज्ञ करनेमें योग्यहो हेकुन्तीकेपुत्र युद्ध मतकरो और बीरोंके सन्मुख मतहो ५६ इनको अप्रिय मतकहो बड़े युद्धमें मतजाओ उस बड़े बीरने इसरीति से कहकर पांडवको छोड़ ५७ पांडवी सेनाको ऐसे मारा जैसे बज्रधारी इन्द्र आसुरी सेनाको मारताहै हे राजा इसके पीछे लज्जायुक्त राजायुधिष्ठिर शीघ्रही हटगया ५८ तदनन्तर उस अजेय राजाको हटाहु-

आ मानकर आगे लिखेहुये बीर इसके पीछे पीछे चले चंदेरीदेश वाले पांडव पांचाल महारथी सात्विकी ५६ शूर द्रौपदीके पुत्र नकुल सहदेव इत्यादि तदनन्तर युधिष्ठिरकी सेनाको फिराहुआ देखकर ६० अत्यन्त प्रसन्न चित्त कर्ण कौरवों समेत पीछेकी ओरसे चला और धृतराष्ट्रके पुत्रोंके भेरी शंख मृदंग धनुष ६१ औरसिंहनादोंके शब्दहुये हे कौरव्य महाराज फिरयुधिष्ठिरने शीघ्रही६२ श्रुतकीर्त्ति के रथपर चढ़कर कर्णके पराक्रम को देखा फिर धर्मराज अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर ६३ महाक्रोधित हो अपने शूर बीरोंसे बोला कि तुम कैसे खड़ेहो इनको क्योंनहीं मारते तबवह राजाकी आज्ञापाकर पांडवोंकेसब महारथी ६४ जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा आपके पुत्रोंके सन्मुख दौड़े तब वहां शूरवीरोंके बड़े कठोरशब्द हुये ६५ रथहाथी घोड़े औरपत्तियोंके जहांतहां शब्द होनेलगेफिर उठो घायलकरो सन्मुख होजाओ दौड़ो ६६ इसप्रकार कीपरस्परमें बार्त्ता करतेहुये शूरवीरोंने उसबड़े युद्धमें एकने एकको मारा और आकाशमें बाणोंके कारण घटासी छागई ६७ परस्पर में मारने वाले लौटेहुये उत्तम पुरुषोंके हाथसे युद्धमें ध्वजापताकाओंसे खंडित घोड़े सारथी और शस्त्रोंसे रहित एकएक शरीरकेअंगों से चूर्णित राजालोगमृतक होकर पृथ्वीपरऐसेगिरपड़े६८जैसे कि टूट २ करपहाड़ोंके शिखर गिरपड़तेहैं इसीप्रकार सवारों समेत ६९ उत्तम २हाथी मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसेकिबज्र से टूटेहुये सारोह भूषण और कवचोंसे संयुक्त पर्व्वत गिरतेहैं ७० हजारों सवारों समेत घोड़े जिनके बहुतसे शूरबीर मारेगये वहभी पृथ्वीपर गिरपड़े और जिनके शस्त्र अत्यन्त टूटगये वह रथहीन होकर रथोंसेही मारेगये ७१ और युद्धमें सन्मुख युद्धकरने वाले वीरोंसे पत्तियोंके हजारों समूह मारेगये बड़ी लंबी लाल आंखऔर चन्द्रमा कमल केसमान मुख रखने वाले ७२ युद्ध कुशल पुरुषोंके उत्तम शिरोंसे सब ओरमें पृथ्वी आच्छादित होगई और जो२काम पृथ्वीपर हुआउसकाशब्दमनुष्योंने आकाशमेंभीसुना ७३ उत्तमगीत

और बाजों समेत अप्सराओंके समूह हजारों वीरलोगोंको ७४ बिमानोंमें बैठाकर लिये जातेथे उस बड़े आश्चर्यको प्रत्यक्षमें देख कर स्वर्गकी अभिलाषासे ७५ अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरोंने बड़ी शीघ्रता से परस्परमें मारा और रथियोंने रथों समेत बड़ी वीरता से अद्भुत युद्धकिया ७६ पत्तियोंने पत्तियोंके साथ हाथियोंने हाथियों के साथ घोड़ोंने घोड़ोंके साथ मनुष्य और हाथियोंका नाशकारक युद्धकिया ७७ इस रीतिके युद्ध जारीहोने और धूलसे सेनाके ढकजानेपर कचाकच युद्धहुआ और एकने एकको वा अपनोंने अपनेको मारा और अन्योन्यमें बालोंका पकड़ना दांतोंसे काटना नखोंसे विदीर्ण करना ७८ मुष्टि प्रहारकरना भुजासे भुजाको तोड़- ना यह सबयुद्ध पाप और प्राणोंके नाशकारी हुये इसरीतिसे हाथी घोड़े और मनुष्योंका नाश कारक युद्धजारी होनेपर ७९ मनुष्य हाथी और घोड़ोंके शरीरोंसे रुधिरकी ऐसी नदी वह निकली जिस नेहाथी घोड़े और मनुष्योंके कटेगिरे शरीरोंको पृथ्वीपर बहाया ८० मनुष्य हाथी और हाथियोंके परस्पर जुटजाने पर घोड़े हाथी और सवारोंकारुधिररूप जलरखनेवाली ८१ महाघोर मांस रुधिरमज्जा रूप कीचसे संयुक्त नदी मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीरोंकोब- हानेवाली और भयभीतोंको भयकी करानेवाली थी विजयाभि- लाषी वीरोंने उस अपार नदी के पार को पाया ८२ और कोई २ उछलते डूबतेहुये स्नान करने के अभिलाषी हुये हे भरतर्षभ उनभय भीत युक्त शरीर वाले उत्तम रक्तवर्ण कवच और शस्त्रों के धारण करने वालोंने ८३ उस नदीमें स्नान किया और पानकरतेहो कुम्ह- लाकर लज्जित हुये हमनेरथ घोड़े मनुष्य हाथी भूषण ८४ कपड़े और टूटे हुये कवचोंको पृथ्वी दिशा और आकाश समेत बहुधा रक्त बर्णही देखा ८५ हे भरतवंशी रुधिरके गंध स्पर्श रस और कठिनतारूप समेत शब्दोंसे ८६ बहुतसी सेनामें व्याकुलता प्राप्त हुई तब भीमसेन और सात्विकी जिनमें मुख्यथे वह वीर उसअ- त्यन्त घायल और मृतक सेनाके सन्मुख फिरगये ८७ उससेनय

उन चढ़ाई करने वाले बीरोंका वेग असह्य हुआ ८८ हे राजा आपके पुत्रोंके समेत बड़ी सेनाकेमुखमुड़ गये और मनुष्य घोड़ोंसे व्याकुल वह आपकी सेना रथघोड़े औरहाथियोंसे रहित होकर ८९ टूटीढाल टूटे कवच और खंडित शस्त्र धनुषवाली चारों ओरसे ऐसे तिर्र बिर्र होकर भागी ९० जैसेकि बन में सिंहसे पीड़ित हाथियों के समूह व्याकुल होकर भागतेहैं ९१

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे एकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

संजयबोले कि हेमहाराज आपकी सेनाके सन्मुख दौड़नेवालेपांडवोंको देखकर दुर्योधनने सेनाको हरप्रकारसे रोका १ हे भरतर्षभ उस दुर्योधनने बड़े २ शूरबीरोंको और सेनाको अनेक प्रकार से रोका परन्तु आपके पुत्रकेभी पुकारनेसे वहलोग नहीं लौटे २ तबउसके पीछे पक्ष प्रपक्ष समेत सौबलका पुत्र शकुनी और शस्त्रधारी कौरव युद्धमें भीमसेनके सन्मुख गये ३ कर्णभी राजाओं समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको देखकर मद्रके राजासे यह बोलाकि तुम भीमसेनके रथके समीप चलो ४ कर्णकेइस बचनको सुनकर राजा मद्रने हंसवर्णके उत्तम घोड़ोंको वहां पहुंचाया जहांकि भीमसेनथा ५ हेमहाराज युद्धको शोभा देने वाले कर्णके प्रेरित घोड़े भीमसेन के रथको पाकर अच्छे प्रकारसे भिड़े ६ हे भरतर्षभ क्रोधयुक्त भीमसेनने कर्णको आताहुआ देखकर उसके मारनेका उपाय विचारा ७ और बीरसात्यिकी और धृष्टद्युम्न से बोला कि तुम धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरकी रक्षाकरो ८ क्योंकि वह मुझको देखकर बड़े सन्देहको नकरें और मुझपरकर्णचला आताहै ९ सोमैं आजउसको युद्धमेंबधकरके अपनेजयके होने की विधिकरताहूं १० मैंतुमसे सत्य सत्यकहता हूं कि घोर युद्धके द्वारा कितौ मैंही कर्णको मारूंगा अथवाकर्णमुझको मारेगा ११ अबमैं राजाको आपलोगोंके सुपुर्द करताहूं तुम सबलोग अनेकप्रकारसे उसकी रक्षाके उपायको करो १२ वहम-

हावाहु भीमसेन इस प्रकार धृष्टद्युम्न से कहकर बड़े शब्दसे सिंहनाद को करके दिशाओंको शब्दायमान करता हुआ कर्णके रथकी ओरगया १३ इसके पीछे मद्रदेशियोंका स्वामी समर्थ शल्य युद्धके चाहनेवाले शीघ्रता पूर्वक आनेवाले भीमसेनको देखकर कर्णसेबोला १४ हेकर्ण इस अत्यन्त क्रोधयुक्त बहुतकालसेदवेहुये क्रोधको तेरे ऊपर निकालनेकी इच्छावाले पांडुनन्दन भीमसेनको देखो१५ हेकर्ण पूर्वमें मैंने अभिमन्यु और घटोत्कच के मरने परभी इसका इस प्रकारका रूप नहीं देखा था जैसाकि अब देखने में आता है १६ यह क्रोधयुक्त तीनों लोकोंके भी हटाने में समर्थहै इससमय इसने प्रलय कालकी अग्निके समान देदीप्यमान अपने रूपको धारण कियाहै १७ संजय बोले हेराजा शल्यके इस प्रकारके कहतेही कहते में महाबिकराल रूप भीमसेन कर्णके सन्मुख वर्त्तमान हुआ इसके पीछे हंसता हुआ कर्ण उस सन्मुख आये हुये भीमसेन को देखकर शल्यसे यह वचन बोला १८ । १६ हेमद्रदेश के स्वामी अब तुमने भीमसेनके विषयमें जो वचन मुझसे कहा वह सत्यहै इसमें सन्देह नहीं है २० यह भीमसेन बड़ा शूरवीर क्रोधमें भरा शरीरसे असादृश्य पराक्रमियों मेंभी अधिक पराक्रमी है २१ बिराट नगर में गुप्त रहने वाली द्रौपदीके अभीष्ट चाहने वालेने केवल भुज बलकेही द्वारा २२ गुप्त उपायमें आश्रित और प्रवृत्त होकर कीचक को उसके सब समूहों समेत मारा अबकवच धारी क्रोधसे व्याकुल यह भीमसेन दण्डधारी मृत्युके संगभी युद्ध करने को समर्थहै फिर यह मेरे मनका अभिलाष बहुत कालसे होरहाहै कि मैं युद्धमें अर्जुन को मारूं अथवा अर्जुन मुझेमारे वह मेरा प्रयोजन भीमसेनके लड़नेसे कदाचित् अभी होजाय क्योंकि भीमसेन के मरने पर अथवा बिरथ करने पर अर्जुन मेरे सन्मुख आवेगा यही मुझको श्रेष्ठ लाभहोगा २३ । २४ । २५ । २६ अब यहां जो उचित समझतेहो उसको शीघ्रतासेकरो बड़ेतेजस्वी कर्णके इस बचनको सुनकर २७ शल्य कर्णसे बोला कि हे महाबाहो तुम

बड़े पराक्रमी भीमसेन के सन्मुखचलो २८ तुमभीमसेन कोविजय करके अर्जुनको पाओगे जोतेरे चित्तका अभीष्ट बहुत कालसे हृदय में वर्त्तमानहै २९ हे कर्ण वह अभीष्टतेरा तुझको प्राप्तहोगा इसमें मिथ्या न होगा ऐसा कहनेपर फिर कर्ण शल्य से बोला ३० कि मैं युद्धमें अर्जुनको मारूंगा वा अर्जुन मुझ को मारेगा तुम युद्धमें मनलगाकर वहां चलोजहां भीमसेनहै ३१ तबसंजयनेकहाहेराजा फिर शल्य रथके द्वारा वहांगया जहांपर बड़े धनुषधारी भीमसेन ने आपकीसेनाको भगायाथा ३२ हे राजेन्द्र इसके पीछे कर्ण और भीमसेनकी सन्मुखतामें तूरी और भेरी आदिबाजोंके शब्दहोनेलगे ३३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने उसकी महा दुर्ज्जय सेनाको साफ और तीक्ष्ण नाराचोंसे दिशाओंमें भगा दिया ३४ हेमहाराज धृतराष्ट्र इसके पीछे भीमसेन और कर्ण का महा भयकारी कठिन रोमहर्षण युद्ध हुआ ३५ इसके पीछे एकक्षण मात्रमेंही भीमसेन कर्णकी ओर दौड़ा फिर सूर्य्य के पुत्र धर्मात्मा कर्णने उस आते हुये भीमसेनको देखकर ३६ अत्यन्त क्रोधितहोकर छाती पर घायल किया और बाणोंकी वर्षासे ढकदिया ३७ कर्णके हाथसे छिदे हुये भीमसेनने भी कर्णको बाणोंसे ढककर टेढ़े पर्व्व वाले नौ बाणोंसे देहमें घायल किया ३८ फिर कर्णनेबाणोंसे उसके धनुषको दोस्थानों से काट कर अत्यन्त तीक्ष्ण सब प्रकारके कवचोंके काटने वाले नाराचसे उसकी छाती को घायलकिया ३९ फिर मर्मों के जानने वाले उस भीमसेन ने दूसरे धनुष को लेकर तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णकी ४० मर्म स्थलोंमें घायल कियाऔर पृथ्वी वा आकाश को कंपायमान करता हुआ महा घोर शब्दको गर्जा ४१ फिर कर्णने उसको पच्चीस नाराचोंसे ऐसे घायलकिया जैसे कि बनमें मतवाले हाथीको उल्काओं से घायल करतेहैं ४२ इसके पीछे शायकों से घायल शरीर क्रोधसे व्याकुल क्रोध और ईर्षासे लाल नेत्र करके उसके मारनेकी इच्छासे भीमसेन ने ४३ बड़े भारबाही पर्व्वतोंकेभी छेदने वाले उग्र बाणको धनुषमें चढ़ा-

या ४४ और बड़े धनुषधारी वेगवान् वायुपुत्र भीमसेनने कर्णके मारनेकी अभिलाषा से कर्ण पर्य्यन्त धनुषको खैंच कर वहवाण चलाया ४५ पराक्रमी भीमसेन के हाथसे छूटे हुये वज्र और बिजली के समान शब्दायमान उस प्रवल वाणने युद्ध में कर्ण को ऐसे घायलकिया जैसे कि वज्रकावेग पर्व्वतको व्याकुल करके घायल करताहै ४६ हे कौरव्य वह सेनापति कर्ण भीमसेनके हाथ से घायल और अचेत होकर रथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा४७ तबतो राजा मद्रकर्णको अचेत देखकर युद्धमें शोभा देनेवाले कर्ण को युद्धभूमि से दूरलेगया ४८ इसके पीछे कर्णके विजय होनेपर भीमसेन ने दुर्य्योधनकी बड़ी सेनाको ऐसा भगाया जैसे कि पूर्वकाल में इन्द्रने दानवोंको भगायाथा ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णापयानोनामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय भीमसेनने यह अत्यन्त कठिन कर्म किया जिसने अपने हाथ से कर्णको रथके स्थानमें अचेत करके गिराया १ अकेला कर्णयुद्धमें सृंजियोंसमेत सब पांडवोंकोमारेगा हेसंजय यहबात बारम्बार मुझसे दुर्य्योधनने कहीहै २युद्धमेंभीमसेनके हाथसे विजय कियेहुये कर्णको देखकरमेरे पुत्र दुर्य्योधनने क्याकिया ३ हेमहाराजयुद्धमें आपकापुत्र कर्णको मुखमोड़ने वाला देखकर अपने निजभाइयोंसे बोला कि ४ तुम्हारा भलाहो तुम शीघ्रजाकर कर्णको भीमसेनके महाकष्टरूपी अथाह समुद्र में डूबे हुये कर्णकी सबओरसे रक्षाकरो ५ राजाकी आज्ञापातेही वह सब लोग महाक्रोधयुक्त होकर भीमसेन के सन्मुख ऐसेहुये जैसे कि अग्निके सन्मुख पतंग होतेहैं ६ श्रुतवान्, दुर्द्धर, क्राथ, विवित्सु विकट, सम, निषंगी, कवची, पाशी, नन्द, उपनन्द ७ दुष्प्रधर्षसुबाहु, बाणवेग, सुवर्चस, धनुर्ग्राह्य, दुर्मद, जलसंध, शल, सह, इनमहापराक्रमी रथोंसे रक्षित धृतराष्ट्र के पुत्रोंने भीमसेनको पाकरचारों

औरसेघेरलिया८।६ औरनानाप्रकारके रूपवालेबाण समूहोंकोचारोंओरसेफेंका फिर वह महाबली भीमसेनने उन्होंके हाथसे पीड़ामानहोकर १० उनआतेहुये आपके पुत्रोंके पन्द्रहरथोंसमेत पचास रथियोंको मारा ११ इसकेपीछे फिर क्रोधयुक्त भीमसेनने भल्लसे विवित्सुके शिरको देहसे जुदाकिया और वह मरकर पृथ्वीपरगिर पड़ा १२ पूर्णचन्द्रमाके समान कुंडलभी उसकेशिरके साथहीगिरा हेराजा तबतो उसके सबभाई उसशूरवीर अपने भाईको मराहुआ देखकर १३ युद्धमें भयानक पराक्रमी भीमसेनके सन्मुखगयेइसके अनन्तर उस भयानक भीमसेनने उस महायुद्धमें दूसरेदो भल्लोंसे १४ आपके दोपुत्रोंके प्राणोंका हरणकिया हेराजा हवासे टूटेहुये वृक्षोंके समान देवकुमारोंके समान वह विकट और सहनाम दोनोंभाई भीमरकर पृथ्वीपरगिरपड़े इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेनने क्राथकोभी यमलोकमें पहुंचाया १५।१६ अत्यन्ततीक्ष्ण नाराचका माराहुआ वहक्राथ पृथ्वीपर गिरपड़ा तबतो महाकठिन हाहाकार उत्पन्नहुआ १७ आपके धनुषधारी वीरबेटोंके मरने और उनकी सेनाके चलायमान होनेपर फिर महाबली भीमसेनने १८ युद्धमें नन्द उपनन्दको यमलोकमें पहुंचाया उसकेपीछे वह आपके पुत्र भयभीत और व्याकुल१६ युद्धमें कालरूप भीमसेनको देखकर भागे फिरबड़ेदुःखी कर्णने आपकेपुत्रोंको मराहुआ देखकर२० फिर हंसवर्ण घोड़ोंको वहांहींचलाया जहांपर पांडव भीमसेनथा हेमहाराज राजामद्रके चलायेहुये वह बेगवान् घोड़े२१भीमसेनके रथको पाकर अच्छीरीतिसे भिड़े हेराजा धृतराष्ट्र युद्धमें कर्ण और पांडव भीमसेनका वह युद्धमहाकठिनघोर रूपरुधिरका उत्पन्नकरनेवाला हुआफिरउनभिड़ेहुयेमहारथियोंकोदेखकर२२।२३ मैंने विचारकिया कि यहयुद्ध कैसेहोगा इसकेपीछे युद्धमें प्रशंसनीय भीमसेनने बाणों से२४ कर्णको आपके पुत्रोंके देखतेहुये ढकदिया फिरअत्यन्तक्रोधयुक्त अस्त्रोंके जाननेवाले कर्णनेभी भीमसेनको २५ टेढ़े पर्व्ववाले नौभल्लोंसे पीड़ामानकिया तबउस घायल महाबाहु भयानक परा-

क्रमी भीमसेनने २६ कानतक खैंचेहुये सात विशिखोंसे कर्णको पीड़ामानकिया हेमहाराज इसकेपीछे विषैले सर्पकी समान श्वास लेनेवाले कर्णने २७ बाणोंकी बड़ी बर्षासे भीमसेन को ढकदिया फिरमहाबली भीमसेननेभी अपनेबाणोंकी वृष्टिसे उसकर्णको ढक दिया २८ और कौरवोंके देखतेहुयेगर्जा इसकेपीछे अत्यन्त क्रोध-युक्त कर्णने दृढ़धनुषको लेकर तीक्ष्णधारवाले दशबाणोंसे भीमसेन को पीड़ामान करके तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उसकेधनुषकोकाटाइस-केपीछे बड़ेपराक्रमी महाबाहु कर्णकेमारनेकी इच्छासे गर्जनाकरते हुये भीमसेनने सुवर्णबस्त्रोंसे अलंकृत कालदण्डके समानघोरपरि-घको लेकरफेंका कर्णनेउसबज्र औरबिजलीके समानआतेहुये परि-घको २९।३०।३१।३२ विषैले सर्पोंकीसमान बाणोंसे टुकड़े २कर दियातबतोशत्रुसंतापी भीमसेनने बहुतबड़े दृढ़धनुषको लेकर ३३ कर्णको मारेबाणोंकेआच्छादित करदिया उसकेपीछे कर्णऔरभीम-सेनका ऐसाघोरयुद्धहुआ ३४जैसे कि परस्पर मारनेकी इच्छाकरने वाले महाबली बन्दरोंके राजाओंका युद्ध कटकटकर वारंवारहोता है हेमहाराज इसकेपीछे कर्णने दृढ़धनुषको चढ़ाकर तीनबाणसे ३५ भीमसेनको कर्णमूलपर घायलकिया कर्णकेहाथसे अत्यन्तघायल महाबली भीमसेननेकर्णकेशरीरको छेदनेवालेघोरविशिखकोहाथमें लेकरफेंकावहबाणउसकर्णके कवचमेंघुस शरीरको छेदकर३६।३७ पृथ्वीमें ऐसासमागया जैसेकि सर्पबामीमें समाजाताहै उसकठिन घातसे महापीड़ित ब्याकुल और अचेतकेसमान ३८ वहकर्ण रथ-पर ऐसाकंपितहुआ जैसेकि पृथ्वीके भूकम्पमें पर्व्वत हिलताहै हे महाराज इसके पीछे क्रोध और ब्याकुलतासे कर्णने ३९ भीमसेन कोपच्चीस नाराचोंसेघायलकिया और अनेकबाणोंसे देहकोघायल करके एकबाणसे ध्वजाकोकाटा ४० और भल्लसे उसके सारथी को कालके बशकिया और शीघ्रही तीक्ष्णबाणोंसे उसके धनुषको काटकर ४१ हंसतेहुये कर्णने एकमुहूर्त्तमें सावधानीसे भयकारी कर्मकरने वाले भीमसेनको रथसेबिरथ करदिया ४२ हेभरतर्षभवह

वायुकेसमान रथसे विहीन हंसताहुआ महाबाहु भीमसेन गदाको लेकर उसउत्तम रथसेकूदा ४३ औरबड़े वेगसे दौड़कर भीमसेनने आपकीसेनाको उसगदासे ऐसा तिर्रविर्र करदिया जैसेकि बादलों को वायु छिन्नभिन्न करदेताहै ४४ फिरउस भयानकरूप शत्रुसंतापी सर्वज्ञ भीमसेनने ईर्षाकेसमान दांतरखने वाले घातक सात सौहाथियोंकोभी छिन्नभिन्न करके ४५ बड़े पराक्रम से उनहाथियों के जाबड़ेआंखमस्तक कमर और मर्मस्थलों को घायल किया ४६ इसके पीछे सब हाथी भयभीत होकर भागे और फिरशत्रुओं की ओरसे भेजेहुये अन्य सवारों समेत हाथियों ने उसको ऐसा घेर लिया जैसे कि सूर्य्यकोबादल घेरलेताहै ४७ फिरउस पृथ्वी पर नियतने उनसातसौ हाथियोंकोभी सवार शस्त्र और ध्वजाओं समेत ऐसा मारा जैसे कि इंद्र बज्रसे पहाड़ों को मारता है ४८ इसके पीछे शत्रुओंके बिजयी भीमसेनने शकुनी के बड़े पराक्रमी बावन हाथियों को फिर मारा ४९ इसी प्रकार आपकी सेनाकोकंपायमान करते हुये पांडव भीमसेनने एकसौसे अधिक रथ और हजारों पत्तियोंको मारा ५० तब आपकी सेना महात्माभीमसेन रूपीसूर्य्यसे सतप्त होकर छिन्न भिन्न होगई ५१ हे भरतर्षभ भीमसेनके भयसे आपके शूरवीर भयभीत होकर युद्धमें भीमसेन को छोड़कर दशों दिशाओंको भागे ५२तबशब्द करनेवाले चर्मके कवच धारी अन्य पांचसौ रथ रथियों समेत भीमसेन पर चारों ओरसे बाणोंकी बर्षाकरते हुये सन्मुख आये ५३ भीमसेन ने उन पांचसौरथ समेत बीरोंको भी ध्वजा पताकाओं समेत अपनी गदासे ऐसा मारा जैसे कि असुरोंको बिष्णु भगवान् मारते हैं ५४ इसके पीछे शकुनी के आज्ञावर्त्ती शूरोंके अंगीकृत शक्ति दुधारे खड्गऔर प्रासोंके हाथमें रखने वाले तीनहजार अश्व सवार भीमसेनकेसन्मुख गये ५५ तब शत्रुहन्ता भीमसेन ने नाना प्रकार के मार्गों में घूमघूमकर शीघ्रही सन्मुख जाकर बड़े वेग पूर्व्वक गदासे उन अश्वसवारोंकोभी मारा ५६ हेभरतवंशी तबतो उनसब घायलोंके

ऐसे शब्द प्रकटहुये जैसेकि पत्थरोंसे घायल हुये हाथियों के शब्द होतेहैं ५७ इसरीति से शकुनी के तीनों हजार अश्वारुढ़ोंको मारकर दूसरे रथमें सवार हो क्रोधयुक्त भीमसेन कर्णके सन्मुख गया ५८ वहां उस कर्णने भी शत्रु विजयी धर्म पुत्र युधिष्ठिर को बाणों सेढक कर सारथी को रथसे गिराया ५९ इसके पीछे वह महारथी युद्धमें सारथीसे रहित रथको देखकर भागा और कर्ण कंकपंखोंसे जटित सीधे बाणोंको मारता हुआ उसके पीछेचला ६० वायुके पुत्र भीमसेन ने राजाकी ओर जाने वाले कर्णको देखकर अपने बाण जालोंसे ढकदिया फिर बाणोंसे पृथ्वी आकाशको ढककर शत्रुओंका विजय करने वाला कर्ण बहुत शीघ्रलौटा और तीक्ष्णबाणों से भीमसेन को सब ओरसे ढकदिया ६१ । ६२ इसके पीछे हे राजा बड़े धनुषधारी सात्यकीने पीछे होनेके कारण भीमसेन के रथसेव्याकुल कर्णकोपीड़ामान किया ६३ बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित कर्णभी उसके सन्मुख वर्त्तमान हुआ फिर सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ वह दोनों बीर सन्मुख होकर युद्धकरने लगे और हरएकने परस्पर में चौसठ२ बाण छोड़ उनबाणोंके छोड़ते मेंवह दोनों वीर अत्यन्त शोभितहुये हेराजा उनदोनोंका फैलाया हुआ भयकारी मर्द्दनकरनेवाला६४।६५ रुद्र बाणजाल क्रौंचको पुच्छके समान रक्त बर्ण दिखाई दिया फिरछोड़े हुये हजारों बाणों के करणसेहमने औरउन सबलोगोंने नसूर्य्यको देखा और नदिशाओंको ऐसेनहीं पहिचाना जैसे कि मध्याहन के समय तेजस्वी सूर्य्य के कारण दिशाओं का ज्ञान नहीं होताहै ६६।६७ उस समय कर्ण और भीमसेनके बाण समूहों से हटाये हुये शकुनी अश्वत्थामा कृतबर्मा और अधिरथी कृपाचार्य ६८ यह सब कर्णको पांडवों से भिड़ा हुआ देखकर फिर लौटे हेराजा उनआने वाले बीरोंके ऐसे बड़े कठोर शब्द हुये६९ जैसेकि चन्द्रके उदयसे उठेहुये महा समुद्रोंके शब्द होतेहैं वहदोनों सेना उस महायुद्धमें परस्पर अच्छेप्रकारसे देखकर खूबलड़ीं ७० और परस्परमें एकएकको घेरकर बड़ीप्रसन्न हुईं इसकेपीछेमध्याहन

के समय सूर्यके वर्त्तमान होनेपर युद्धजारी हुआ ७१ ऐसा युद्ध पूर्वमें कभी देखाथा न सुनाथा फिर सेनाके समूह दूसरी सेनाके समूहोंको पाकर ७२ तीव्रतासे ऐसे सन्मुख गये जैसेकि जलोंके समूह समुद्रके सन्मुख होते हैं उससमय परस्पर बाणोंकी बर्षाके ऐसेबड़े२ शब्दहुये जैसे कि गर्जनेवाले समुद्रोंके जलकेबेग की बड़ी ध्वनि होतीहै फिर उनदोनोंवेगवान् सेनाओंने परस्परमें एकएकको पाकर७३।७४एकताको ऐसेपाया जैसेकि दोनोंनदियां परस्पर मिल-कर एक होजाती हैं हेराजा इसके पीछेयशके चाहनेवाले कौरव और पांडवोंका घोर रूपयुद्ध जारीहुआ उससमय वहां गर्जनेवाले शूरबीरोंकी वार्त्तालाप जोकि निरन्तर नानाप्रकारकीथीं ७५।७६ और नामोंको ले लेकर होरहीथीं सुनीगईं जिस २ के पितामाताके अवगुण स्वाभाविक दोषथे वह युद्धमें परस्पर एकएकको सुनातेथे हेराजा युद्धमें परस्पर घुड़कनेवाले उनशूरोंको देखकर७७।७८मैंने समझाकि अबइनका जीवन नहींहै और उन क्रोधयुक्त बड़े तेजस्वि-योंके शरीरोंको देखकर ७९ मुझको अत्यन्तभय हुआ कि यहकैसे होगा इसके पीछे उन महारथी पांडव और कौरवोंने परस्पर में मारते२ प्रत्येकको अपने२ तीक्ष्ण शायकों से घायल किया ८० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धे एकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१

बावनवां अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज परस्परमें मारनेके अभिलाषी और श-त्रुता करनेवाले उनक्षत्रियोंने परस्परमें घायल कियाऔर रथ घोड़े और मनुष्यों समेत राजाओंके समूह चारों ओरसे आपस में खूब जुटे१।२फेंकेहुयेपरिघ, गदा, कुणप, प्रास, भिन्दिपाल औरभुशुंडियोंके सब प्रकार के प्रहारोंको ३ युद्धमें महाभयकारी देखा और बाणों की बर्षा टोड़ीके समान हजारोंप्रकार से होनेलगी ४ हाथियोंने हाथियों को परस्परमें पाकर छिन्न भिन्न किया तब घोड़ोंने घोड़ोंको रथियोंने रथियोंको ५ पतियोंने पतियोंके समूहोंको वा घोड़ोंके

यूथोंको अथवा रथ और हाथियों और रथवा हाथियोंने घोड़ोंको ६ और शीघ्रगामी हाथियोंने सेनाको अंगोंसेविहीन करके छिन्नभिन्न करदिया ७ वहांशूरवीरोंके समूह परस्परमें घायल होते औरपुकारतेथे इसहेतुसे युद्धभूमि ऐसी अत्यन्त भयानक होगई जैसी कि पशुओंको संहार स्थानकी भूमि होतीहै ८ हे भरतवंशी उससमय रुधिरसे भरीहुई पृथ्वी ऐसी दिखाई देतीथी जैसेकि वर्षाऋतुमें बीर बहूटियोंके समूहोंसे पृथ्वीरक्त दिखाईदेतीहै अथवा जैसे कुसुमके रंगेहुये श्वेतवस्त्रोंकोश्यामा स्त्री धारणकरे वह पृथ्वीऐसे प्रकार की होगई मानों मांस रुधिरसे व्याप्तस्वर्णमयी कुंभोंसेही व्याप्त है ६।१०हे राजाकटेवा टूटेहुये शिरजंघाभुजा वहुतवड़ेकुंडल आभूषण ढाल पताकाओं के समूह विशिख और धनुषधारी शूरोंके शरीर पृथ्वीपर गिरपड़े ११।१२ हेराजा हाथियोंने हाथियोंको पाकर दांतोंसे पीड़ामान किया उस समय दांतोंसे कटे रुधिरसे भरे हुये हाथी ऐसे शोभायमान हुये १३ जैसेकि सुवर्णकेसे रंगवाले झिरनोंके गिराने वाले और पहाड़ो धातुओंसे शोभित जलोंके गेरनेवाले पर्व्वत शोभित होतेहैं १४ फिर वह हाथी भ्रमण करने वालेहुये और इसी प्रकारअन्य हाथियोंने भुजासे छोड़े हुयेतोमरों समेत सन्मुख खड़ेहुयेअनेक शत्रुओंको विध्वंस किया१५फिरनाराचोंसेघायल टूटकवचवाले उत्तमहाथीऐसेशोभायमानहुये जैसेकि मार्गशिर और पौषके महीने में वादलोंसे रहित पर्व्वतहोतेहैं १६ सुनहरी पुंखवाले वाणोंसे छिदेहुये हाथीऐसेशोभितहुये जैसेकि उल्काओंसे पर्व्वतोंके शिखर प्रकाशमानहोतेहैं१७ कितनेही पर्व्वताकारहाथी अन्य हाथियोंसे घायलऔर पक्षधारी पर्व्वतोंके समान उसयुद्धमें नाशकोप्राप्तहुये १८ और वहुतसेशल्यों से पीड़ित घावोंसे खेदित हाथी युद्धमें भागगये और घोरयुद्धमें अपने कुंभों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े १९ और वहुतेरे सिंहोंके समान शब्दोंको गर्जेबहुतसे घूमने लगे २० और बहुतसे हाथी पुकारे और सुनहरी सामानों से अलंकृत घोड़े वाणोंसे मारेहुये बैठगये और

मृतक प्राय होकर दशों दिशाओं में घूमने लगे २१ बाण वा तोमरोंसे घायल चेष्टाओंको करते हुये बहुतसे हाथी घूमने लगे और अनेक हाथियोंने नाना प्रकार की चेष्टाओं को किया २२ हे श्रेष्ठ भरतवंशी वहां मनुष्य घायल हो होकर पृथ्वी पर शब्द करने लगे और बहुतसे लोग भाई बन्धु पिता और पितामहादिकों को देखकर २३ किसीने दौड़तेहुये शत्रुओंको देखकर गोत्रनामों समेत अपनी जातोंको वर्णनकिया २४ हे महाराज उनलोगोंके स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत भुजदण्ड टूटेहुये हाथ पैरोंमें चेष्टा करकर लिपटते थे और उछलतेथे इसीप्रकार बहुतसी भुजा उछल २ कर अनेक चेष्टाकरतीथीं और हजारों ऊपर नीचे होकर अपूर्व चेष्टाकरतीथीं और किसी २ भुजाओंने पांचमुख रखनेवाले सर्पकी समान युद्धमें बहुतसा वेगकिया २५।२६ हे राजा सर्पोंके फणोंकेसमान चन्दनसेलिप्त रुधिरसे भरीहुई वहसबभुजा स्वर्णमयी ध्वजाकेसमान बहुतशोभायमान हुई २७ इसरीतिसे दशों दिशाओंमें घोषसंकुलनाम घोरयुद्ध होनेपर अज्ञातरूप परस्परमें युद्ध करनेवालेहुये २८ और धूलसे संयुक्त शस्त्रोंके आघातोंसे व्याकुल युद्धमें अंधेरे होनेके कारण अपने और पराये नहींजानेगये २९ इसरीतिसे वहयुद्ध महाघोररूप और भयानकहुआ वहांपर रुधिररूप जल रखनेवाली बड़ी २ नदियां बहनिकलीं ३० वह नदियां बाणरूप पत्थरोंसे युक्त केशरूप शैवल औरशाद्वलरखनेवाली अस्थिरूपमछलियोंसे पूर्णधनुषबाणऔरगदारूपी नौका रखनेवाली ३१ मांस रुधिररूपी कीचसे भरीहुई घोररूप बड़ी भयानक रुधिररूप जलकेवेगकी बढ़ानेवाली होकर बहने लगीं ३२ भयभीतों के भयकी बढ़ानेवाली शूरवीरोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाली घोररूप वह नदियां यमलोककी पहुंचानेवाली होगईं ३३ हेनरोत्तम वह नदियां भीतर जानेवालोंको डुबानेवाली क्षत्रियों का भय बढ़ानेवालीहुईं जहां तहां मांसभक्षी जीवोंकी गर्जना करने से ३४ वह युद्धभूमि घोररूप यमराजपुरीके समान होगया और चारों ओरसे असंख्यों रुंडउठ खड़ेहुये ३५ मांस और रुधिरसे तृप्त

हो होकर जीवोंके समूह नाचतेथे हेभरतवंशी वहां रुधिर और मज्जाका भोजन करके ३६ मांस मज्जा और भेजोंके खानेसे मतवाले सिंह काक गृध्र और बगलेभी दौड़तेहुये दिखाईदिये ३७ शूरवीरोंने त्यागनेके अयोग्य भयको भी त्यागकरके युद्धाभिलाषी होकर निर्भयलोगोंके समान युद्धमेंकर्मोंको किया ३८ उस युद्धमें वह शूरलोग अपनी वीरताको प्रसिद्ध करतेहुये भ्रमण करनेलगे जोकि बाण और शक्तियोंसे युक्तहोकर मांसभक्षियोंसे व्याकुलथे ३६ हे समर्थ भरतवंशी उनलोगोंने परस्परमें गोत्रनामों समेत अपने २ पिताओंकाभी नामलिया ४० हजारोंनेतो अपने गोत्रादि और नामों को सुनाया और बहुत से युद्धकर्त्ता ४१ इधर उधर से तोमरशक्ति और पट्टिशोंके द्वारा परस्पर में मर्दन करनेलगे इस रीतिसे घोररूप महाभयानक युद्ध जारी होनेपर कौरवी सेना ऐसी पीड़ित हुई जैसे कि समुद्रमें टूटीहुई नौका डामाडोल होकर पीड़ित होतीहै ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरेपनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हेश्रेष्ठ इसरीति से क्षत्रियोंके नाशकारी युद्ध के जारीहोनेपर युद्धमें गांडीव धनुष के बड़ेशब्द सुनाईदिये हे राजा जहांपर कि पांडव अर्जुनने संसप्तकोंका वा कोशिलदेशियोंका और नारायण नामसेनाका नाशकिया वहां क्रोधयुक्त संसप्तकोंने युद्ध में चारोंओरसे अर्जुनके शिरपर बाणोंकीवर्षाकरी हेराजारथियोंमें श्रेष्ठ वेगसे अकस्मात् उनबाणवर्षाको सहते और मारतेहुये प्रभु अर्जुनने सेनाकोविलोडनकिया १।२।३।४ और अपनेतीक्ष्णधारवालेबाणोंके द्वाराउसरथवाली सेनाकेपारहोकर उत्तमशस्त्रधारीसुशर्माकोसन्मुख पाया ५ तबउस श्रेष्ठ रथीने बाणोंकी वर्षा से उसको आच्छादित किया और संसप्तकोंनेभी बाणोंकी वर्षासे अर्जुनको ढका ६ इसके पीछेसुशर्माने शीघ्रगामी दशबाणोंसेअर्जुनको और तीनउत्तम बाणों से श्रीकृष्णचन्द्रजी को दाहिनी भुजापर छेदकर ७ दूसरे भल्लसे

ध्वजाकोभी विदीर्णकिया हेराजा विश्वकर्मा जीका उत्पन्न कियाहुआ वानरोंमें श्रेष्ठ वह बड़ा वानर ८ सबको भयभीत करके बड़ेशब्दको गर्जा इस हनुमानजीके शब्दको सुनकर आपकीसेना महाभयभीत हुई ६ और अत्यन्त भयभीत होकर चेष्टारहित होगई इसके पीछे हेराजा वह सेना निश्चेष्ट होकर ऐसी शोभायमान हुई १० जैसे कि नाना प्रकारके फूलोंसेयुक्त चैत्ररथ बनहोताहै हे कौरव्य इसकेपीछे उन युद्धकर्त्ताओंने सावधान होकर ११ अर्जुन को बाणों से ऐसा आच्छादित करदिया जैसेकि पर्व्वतको बादल आच्छादित करलेते हैं इसके पीछे सबने अर्जुन के बड़े रथ को घेरलिया १२ उस को घेरके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल करके पुकारनेलगे हेश्रेष्ठ इसकेपीछे वह सब क्रोधयुक्त रथके चारों ओर होकर रथके चक्र और ईशाके भी पकड़ने को पासगये वह हजारों शूर बीर उसके उस रथको पकड़कर १३ । १४ और बड़े बलसे उसके सब साथियोंको पकड़ कर सिंहनाद करनेलगे और कितनोंहीने केशवजीकीभी भुजा को पकड़ लिया १५ और बहुतोंने रथमें सवार अर्जुनको पकड़ लिया इसके पीछे दोनों भुजाओं को कंपायमान करते हुये केशवजी ने उन सब को ऐसे गिरादिया जैसे कि मतवाला हाथी हाथीके सवारों को गिरा देता है इसके पीछे उन महारथियों से घिरेहुये क्रोधयुक्त अर्जुनने युद्धमें १६ । १७ उस पकड़े हुये रथको देख और श्रीकृष्णजीकोभी गिराहुआ जानकर बहुतसे रथसवारोंसमेतपदाति योंको गिराया उसी प्रकार समीप वर्त्तमान शूरबीरोंको समीपहोनेसे मारे बाणोंके ढकदिया औरकेशवजीसे कहनेलगा १८ । १६ हेमहाराज श्रीकृष्णजीभयकारीकर्मकरने वालेशरीरसे घायल हजारों संसप्तकोंको देखो २० यह रथोंकी बंधावट महाघोरहै और पृथ्वीपर मेरे सिवाय ऐसा कोई नहींहैजो नरलोकमें इसबंधनको सहै अर्जुनने ऐसाकहकर अपनेदेवदत्त शंखकोबजाया औरपृथ्वी आकाशादिकोंव्याप्तकरकेश्रीकृष्णजीने भी पांचजन्यशंखकोबजाया २१ । २२ हे महाराज उस शंखके शब्दको सुनकर संसप्तकोंकी सेना महा

कंपित हुई और भयभीत होकर भागी २३ इसकेपीछे शत्रु विजयी अर्जुनने बारंबार नागास्त्रको प्रकट करके उनके चरणोंको बांध दिया २४ हेराजा महात्माअर्जुनके बंधनसे चरणों में बंधेहुये वह लोग लोहेकी मूर्ति के समान निश्चेष्ट खड़े रहगये २५ इसके पीछे उन निश्चेष्ट मनुष्यों को पांडुनन्दनने ऐसेमारा जैसे कि पूर्वसमय में तारक असुरके मारनेवाले युद्ध में इन्द्रने दैत्योंको माराथा २६ युद्ध में घायल होकर उनलोगोंने अर्जुनके उत्तम रथको छोड़दिया और शस्त्रोंका मारनाप्रारंभकिया २७ हेराजा चरण बंधनके कारणसे वहलोग हिलचलभी नसके इसकेपीछे अर्जुनने टेढ़ेपर्ववालेबाणोंसे उनकोमारा २८ युद्धमें वह सबशूरबीरलोग सर्पोंसे बंधेहुये खड़ेरह गये जिनको कि अर्जुनने लक्षकरके चरणोंका बन्धनकिया २९ हे राजा इसकेपीछे महारथी सुशर्माने बंधीहुईसेनाको देखकर शीघ्रही गरुड़ास्त्रको प्रकटकिया ३० तबतो बहुतसे गरुड़ सर्पोंको भक्षण करनेको दौड़े और वहसर्प उन गरुड़ोंको देखकर भागे ३१ फिर चरण बंधनोंसे छूटीहुई वहसेना ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि सब सृष्टिके संतप्त करनेवाले सूर्य्य बादलोंसे रहित होकर शोभित होते हैं ३२ इसकेपीछे उनबंधनोंसे छूटेहुये शूरबीरोंने अर्जुन के रथपर बाण और शस्त्रोंके समूहोंको छोड़ा ३३ और सबने नाना प्रकारके अस्त्रोंको चलाया तबतो इन्द्रकेपुत्र महाबीर अर्जुनने उनलोगों को बाणोंकी वर्षासे ढककर ३४ युद्धकर्त्ताओंको मारा इसकेपीछे सुशर्मा ने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे अर्जुनको हृदय में घायलकरके दूसरे तीन बाणोंसेपीड़ितकिया तब वह अत्यन्तघायल और पीड़ामान होकर रथके बैठनेके स्थानपर बैठगया ३५।३६ इसकेपीछेसबोंनेपुकारकरी कि अर्जुन मारागया इसकेपीछे शंखभेरी आदि बाजोंकेशब्द ३७ और सिंहनाद उत्पन्नहुये फिर श्वेतघोड़ोंसे युक्त श्रीकृष्णजीको सारथी रखनेवाले बड़े साहसी शीघ्रतासे युक्त अर्जुनने सचेत होकर ३८ ऐन्द्रास्त्रको प्रकटकिया हेश्रेष्ठ उस ऐन्द्रास्त्रसे हजारों बाण उत्पन्न हुये ३९ और सबदिशाओंमें दिखाईदिये और युद्धमें आपकेहजारों

रथघोड़े और हाथियोंको शस्त्रोंसेमारा ४० हेभरतबंशी इसकेपीछे सेनाके मरनेपर संसप्तक और गोपालोंके समूहोंको बड़ाभयउत्पन्न हुआ ४१ ऐसाकोई मनुष्य न था और न रहाजोअर्जुन को मारता सबबीरोंके देखतेहुये आपकी सेनामारीगई ४२ वहां पांडव अर्जुन सेनाको घायल और पराक्रमसे थकितदेखताहुआ युद्धमें दशहजार शूरबीरोंको मारकर ४३ निर्द्धूम अग्निकेसमान प्रकाशित होकरशोभा यमान हुआ हेभरतबंशीमहाराज परीक्षाकरीहुई चौदहसहस्र सेना और तीनहजार हाथियों समेत दशहजार रथों से संसप्तकोंने फिर अर्जुनको आघेरा और यहविचार ठानलिया किंवाहै विजयहोय वा पराजयहोय युद्धमें लड़कर मरना योग्य है ऐसा विचारकर आपके शूरबीरोंका और अर्जुनका महाघोर युद्धहुआ ४४।४५।४६।४७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय॥

संजयबोले हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र कृतबर्मा, कृपाचार्य्य अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनि, और अपने निजभाइयों समेत राजा दुर्य्योधनने १ अर्जुनके भयसेपीड़ामान सेनाको देखकर बड़ेवेगसे उनकोऐसेछुटाया जैसे समुद्र मेंसेटूटीहुई नौकाको निकालतेहैं २ हेभरतबंशी इसके अनन्तर एकमुहूर्त्त तक वहकठिन युद्धरहा जोभयभीतोंको भय और शूरबीरोंकीप्रसन्नताका बढ़ानेवालाथा ३ युद्धमें कृपाचार्य्यकेछोड़े हुये टीड़ियोंकेसमूहोंकेसमान बाणोंने सृंजियोंको ढकदिया ४ इसकेपीछे बहुतशीघ्रतासे शिखंडी कृपाचार्य्यके सन्मुखगया और चारोंओरसे उनश्रेष्ठब्राह्मण कृपाचार्य्यके ऊपरबाणोंको बरसाया ५ फिरमहाअस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य्य ने क्रोधयुक्त होकर उन बाणोंके समूहोंको हटा करयुद्धमें शिखंडीको दशबाणों से पीड़ितकिया ६ फिर शिखंडीनेभी क्रोधयुक्त होकर कंकपक्षसे जड़ित शीघ्रगामी सातबाणोंसे उनक्रोध रूप कृपाचार्य्यको पीड़ामानकिया ७ उसकेपीछे उनमहारथी कृपाचार्य्यजीने तीक्ष्णबाणोंसे शिखंडीको घोड़ेरथ और सारथीसे रहित

करदिया ८ इसकेपीछे महारथी शिखंडी मृतक घोड़ोंके रथसे कूद करअच्छेप्रकारसे ढालतलवारकोलेकर शीघ्र आचार्य्यजीके सन्मुख गया ९ तबआचार्य्य जीने उसआतेहुयेको टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे ढक दिया यह देखकर सबको आश्चर्य्यसा हुआ १० वहां हमने शस्त्रोंके अपूर्व आघातोंको ऐसादेखा जैसे कि शिलाओंका उछलना होताहै जब हेराजा शिखंडी निश्चेष्ट होकर युद्धमें नियतहुआ ११ तब श्रेष्ठ महारथी धृष्टद्युम्नउस कृपाचार्य्य के बाणोंसे ढकेहुये शिखंडीको देखकर शीघ्रही कृपाचार्य्यके सन्मुखगया १२ इसकेपीछे महारथी कृतवर्मा ने कृपाचार्य्यके रथकीओर जानेवाले धृष्टद्युम्नकोबड़े वेगसे रोका १३ पीछेसे कृपाचार्य्यके रथकीओर पुत्र और सेनासमेतआने वाले युधिष्ठिर को अश्वत्थामा ने रोका १४ और बाणों की वर्षा करनेवाले आप के पुत्रोंने शीघ्रता करनेवाले महारथी नकुल और सहदेवकोरोका १५ हे भरतवंशी सूर्य्यके पुत्रकर्णने युद्धमें भीमसेन कारुष्य कैकय और सृंजय देशियोंकोरोका इसकेपीछे शीघ्रता से युक्तभस्म करनेके अभिलाषी सारद्वत कृपाचार्य्यने युद्धमें शिखंडी के ऊपरबाणोंको चलाया १६।१७ फिर बारंबारखड्गकोफिरातेहुये शिखंडीने उनकृपाचार्य्य के स्वर्णमयीचारों ओरसे फेंकेहुयेबाणोंको काटा १८ हे भरतवंशी फिरगौतम कृपाचार्य्यजीने उसकीसौचन्द्रमा रखनेवालीढालको बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक शायकोंसे तोड़ा इसहेतु से सब मनुष्यपुकारे १९ फिर वह ढालसे रहितहाथमें खड्गलिये जैसे कि मृत्युकेमुखपर रोगी वर्त्तमान होताहै वैसेही कृपाचार्य्यके स्वाधीनतामें वर्त्तमान शिखंडी उनकेपासगया हेराजाचित्रकेतु कापुत्र बड़ापराक्रमी सुकेत कृपाचार्य्यकेबाणोंसे ढकेहुये महादुःखी शिखंडी कोदेखकर शीघ्रही सन्मुखगया २०।२१ युद्धमें बड़ेतीक्ष्ण बाणोंसे ढकताहुआ महासाहसी सुकेत कृपाचार्य्यके रथकेसमीपपहुंचा २२ हेराजाओंमें श्रेष्ठइसकेपीछे शिखंडीयुद्धमें प्रवृत्त उस व्रतकरनेवाले ब्राह्मणको देखकर शीघ्रही हटगया तदनन्तर सुकेतने कृपाचार्य्य कोनौ बाणोंसे व्यथितकर सत्तरबाणोंसे पीड़ामानकिया फिर दूस-

रीबारभी तीनबाणोंसेघायलकिया २३।२४ और उनकेधनुषकोबाण समेत काटकर एक बाणसे उनके सारथीकोभी मर्मस्थल में कठिन घायलकिया २५ इसकेपीछे क्रोधयुक्त कृपाचार्य्यनेदृढ़ नवीनधनुष लेकर तीसबाणोंसे सुकेतके सब मर्मस्थलोंको घायलकिया २६ तब वह अत्यन्त कंपायमान और व्याकुल सुकेत अपने उत्तम रथ पर ऐसेचेष्टा करनेवाला हुआ जैसे कि भूकंपहोने में वृक्ष कांपताहै २७ तबउस कंपायमानके शरीर से प्रकाशित कुंडलों समेत शिरको पगड़ी समेत क्षुरप्रसे गिराया उससमय उस का शिर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बाजपक्षीका लायाहुआ मांस पिंड गिरपड़ताहै शिर कटतेही उसका शरीर भी पृथ्वीपर गिरपड़ा २८।२९ इसके मरनेकेपीछे उसके अग्रगामी लोग क्रोधयुक्तहुये और युद्धमें कृपाचार्य्यको त्यागकरके दशों दिशाओं में भागगये ३० हे भरतवंशी प्रसन्नचित्त महारथी कृतवर्मा युद्धमें धृष्टद्युम्नको रोककर बोला कि खड़ाहो यह कहकर कृतवर्मा और धृष्टद्युम्नका वह महा भयकारी युद्धहुआ जैसे कि मांसके निमित्त लड़नेवाले दो बाज पक्षियोंका अत्यन्त युद्धहोताहै ३१।३२ हार्दिक्यकेपुत्र कृतवर्माको पीड़ित करने वाले क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने युद्ध में नौ बाणोंसे कृतवर्माको छातीपर घायलकिया ३३ फिर धृष्टद्युम्नके हाथसे अत्यन्त घायल कृतवर्मा ने युद्ध में बाणोंसे धृष्टद्युम्नको रथ और घोड़ोंसमेत ढकदिया ३४ हेराजा रथसमेत ढकाहुआ धृष्टद्युम्न ऐसा दिखाईदिया जैसे कि जलधारावाले बादलोंसे ढकाहुआ सूर्य्यहोताहै ३५ अर्थात् वह घायलहुआ धृष्टद्युम्न युद्धमें स्वर्णमयी बाणोंसे उन बाण समूहोंको हटाकर महा शोभायमान हुआ इसकेपीछे क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्नने कृतवर्मापर बड़ी बाणोंकी बरषाकरी ३६।३७ कृतवर्मानेभी उस एकासकी गिरनेवाले बाण समूहोंको हजारों बाणों से हटाया ३८ फिरउस असह्य हटायेहुये बाण समूहोंको देखकर युद्धमें कृतवर्माको रोका ३९ और तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उसके सारथीको बड़ेबेगसे यमलोक को भेजा और वहमृतक होकर रथ

पर गिड़पड़ा ४० फिर पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने बड़े वली शत्रु को विजय करके युद्धमें शायकोंके द्वारा कौरवों को शीघ्रतासेरोका ४१ उसके पीछे आप के शूरवीर सिंहनादोंको करके शीघ्रही धृष्टद्युम्न के सन्मुखगये और युद्धजारी हुआ ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धे चतु:पंचाशत मोऽध्याय:५४॥

पचपनका अध्याय॥

संजयबोले कि सात्विकी और शूरवीर द्रौपदीकेपुत्रोंसे रक्षित युधिष्ठिरको देखकर अश्वत्थामाजी प्रसन्न चित्तके समान सन्मुख वर्त्तमान हुये १ अर्थात् हस्तलाघवता के समान सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण घोर बाणोंको फेंकते और नाना प्रकारके मार्गों समेत अपने अभ्यासोंको दिखलाते हुये सन्मुख आये २ उसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने युद्धमें युधिष्ठिर को घेरकर दिव्य अस्त्रों से अभिमंत्रित बाणोंकी वर्षाकेद्वारा आकाश को व्याप्तकिया ३ अश्वत्थामा के बाणोंसे आच्छादित आकाशमें कुछनहीं जानागया औरबड़ीयुद्धभूमिका शिर बाणरूप होगया ४ हे भरतर्षभ आकाशमें सुवर्णजालों से अलंकृत और ढकाहुआ बाणजाल ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि नियत हुआ यज्ञ शोभित होता है ५ उन प्रकाशित बाण जालोंसे जब आकाश ढकगया और बाणोंके युद्धमें आकाश मंडलमें बादलोंकी छायाहोगई ६ ऐसे बाणरूप जालोंकेहोनेपर हमनेएक आश्चर्यको देखाकि अन्तरिक्षका उड़नेवाला कोईजीव नहींउड़ा ७ उपाय करनेवाले सात्विकी और पांडव धर्मराज समेत अन्यसेना के शूरवीर लोग पराक्रम नहीं करसके ८ हेमहाराज वहां महारथी अश्वत्थामा की हस्तलाघवता को देखकर आश्चर्य्य युक्त होकर वह सब राजालोग उसके सन्मुख देखनेकोभी ऐसे समर्थनहुये ९ जैसे कि संतप्त करनेवाले सूर्यको कोई नहीं देखसक्ताहै इसकेपीछे सेनाके घायल होने पर महारथी द्रौपदीकेपुत्र १० सात्विकी धर्मराज और सब पांचालदेशी इकट्ठे हुये और घोर मृत्युके भयकोत्याग

करअश्वत्थामाके सन्मुखगये ११ सात्विकीने शिलीमुख नामसत्ता-
ईस बाणोंसे अश्वत्थामाको छेदकरसुवर्णसे अलंकृत सातनाराचोंसे
पीड़ामान किया १२ युधिष्ठिरने तिहत्तर बाणोंसे प्रतिविंध्यने सात
बाणोंसे श्रुतकर्माने तीनबाणोंसे श्रुतिकीर्त्ति ने सातबाणोंसे १३ सुत-
सोमनेनौबाणोंसे सतीनीकने सातबाणोंसे और अन्य २ शूरोंने भी
चारों ओर से घायल किया १४ हे राजा इसकेपीछे उस क्रोधयुक्त
विषैले सर्पके समान श्वासलेनेवाले अश्वत्थामाने शिलीमुख नाम
पच्चीस बाणोंसे सात्विकीको घायलकिया १५ श्रुतकीर्त्ति को नौबाणों
से सुतसोमको पांच बाणोंसेश्रुतकर्माको आठबाणोंसे प्रतिविंध्यको
तीन बाणोंसे १६ सतानीकको नौबाणोंसे युधिष्ठिरको पांचबाणसे
और इसीप्रकार अन्य शूरोंकोभी दो २ बाणोंसे घायलकिया १७
और तीक्ष्णधारवाले बाणसे श्रुतकीर्त्ति के धनुषकोकाटा इसकेपीछे
महारथी श्रुतकीर्त्ति ने दूसरे धनुषको लेकर १८ अश्वत्थामाको तीन
बाणोंसे छेदकर दूसरे तीक्ष्णबाणोंसे पीड़ामानकिया हे भरतर्षभ
महाराज धृतराष्ट्र इसकेपीछे अश्वत्थामाने बाणोंकी बर्षासे १६
उससेनाको चारोंओरसे ढकदिया तबतो महासाहसी हंसते हुये
अश्वत्थामाने धर्मराजके धनुषको फिर काटा २० और तीनबाणों
से पीड़ामानकिया हेराजा उसकेपीछे धर्मपुत्रने दूसरे बड़े धनुष
को लेकर २१ अश्वत्थामाको सत्तरबाणोंसे पीड़ितकिया और छाती
समेत भुजाओंको घायलकिया तबसात्विकी युद्धमें प्रहारकरनेवाले
अश्वत्थामा के २२ धनुषको अपनेतीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाणसे काटकर
महाध्वनिसे गर्जा इसके पीछे उस टूटे धनुषधारी शक्ति रखनेवाले
अश्वत्थामाने शक्तिसे सात्विकीके रथसे बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक सारथी
को गिराया २३।२४ तदनन्तर प्रतापवान् अश्वत्थामाने दूसरेधनुष
को लेकर सात्विकीको बाणोंकी बर्षासे ढकदिया रथसेसारथीकेगिर-
नेपर युद्धमें उसके घोड़े भागने लगे २५ और जहां तहांभागते हुये
दिखाई दिये २६ फिर युधिष्ठिर के साथी शूरबीर तीक्ष्ण बाणों को
छोड़ते बेगसे उस महाशस्त्रधारी अश्वत्थामाके ऊपर बाणोंकोदृष्टि

करनेलगे उनक्रोधरूप आनेवालोंको देखकर शत्रुसंतापी २७ हंसते हुये द्रोणपुत्रने उस महायुद्धमें उनकोरोका इसके पीछे सैकड़ों बाण रूपज्वाला रखनेवाले महारथी २८ अश्वत्थामाने युद्धमें सेनारूपी सूखे बनको ऐसे भस्मकरदिया जैसेकि वनमें सूखे तृणोंको अग्नि भस्म करदेता है हेभरतबंशी अश्वत्थामासे संतप्त करी हुई वह पांडवी सेना २९ ऐसे ब्याकुल होगई जैसे कि तिमिना जीव करके नदीका मुख ब्याकुल कियाजाताहै हे महाराज अश्वत्थामाके ऐसे पराक्रमको देखकर ३० उसके हाथसे सब पांडवोंको मृतकरूप माना फिर क्रोध और शीघ्रतासे युक्त द्रोणाचार्य्यका शिष्य महारथी युधिष्ठिर ३१ अश्वत्थामासे कहनेलगा कि ठीक २ तुममें नतो स्नेहहै और न उपकारको स्मरण करतेहो ३२ हे पुरुषोत्तम तुम मुझीको मारना चाहतेहो तुम ब्राह्मण होकर तपस्यादान और वेद-पाठ करनेके योग्य हो ३३ क्योंकि लिखा है कि ब्राह्मण तपदान औरवेदपाठके योग्यहैं क्षत्री धनुष नवाने के योग्यहैं सो आप नाम क्षत्रिकेहीब्राह्मणहैं हे महाबाहो तेरे देखतेही देखते कौरवोंको युद्ध में विजय करूंगा ३४ तुम युद्ध में कर्म करो निश्चय करके ब्राह्मण बन्धुहो हे महाराज इस प्रकार के बचनों को सुनकर हंसते और मंद मुसकान करते हुये अश्वत्थामाने ३५ योग्य और मुख्यबात को विचार कर कुछ उत्तर नहीं दिया और उत्तर न देकर बाणों की बर्षासे पांडवोंको ऐसेढकदिया ३६ जैसे कि क्रोधरूप मृत्युसब संसारकोब्याप्त करदेताहै हे श्रेष्ठ तबअश्वत्थामाके हाथसे ढकाहुआ पांडव युधिष्ठिर ३७ शीघ्रही अपनी बड़ी सेनाको छोड़कर दूरहट गया हेराजा इस युधिष्ठिरके हटजानेपर ३८ बड़ेसाहसी अश्वत्थामाजी पश्चिममुख हुये और युधिष्ठिर युद्धसे अश्वत्थामा को छोड़ करकठोर कर्ममें चित्तकोकरके आपकी सेनाके सन्मुखगया ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपार्थापयानेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

———※———

छप्पनवां अध्याय॥

संजय बोले कि चंदेरी और कैकयदेशियोंसे युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेनको आपकर्णने रोककर शायकोंसे हटाया १ इसके पीछे कर्णने भीमसेनके देखतेहुये युद्धमें चंदेरी कारुष्य और संजय देशी महारथियोंकोमारा २ तब भीमसेन रथियों में श्रेष्ठ कर्णको छोड़कर कौरवीसेनाके सन्मुखगया ३ कर्णने भी युद्धमें हजारों पांचालकैकय और बड़े धनुषधारी सृञ्जियोंकोमारा ४ अर्जुनने संसप्तकोंमें भीमसेनने कौरवों में और कर्णने महारथी पांचालोंमें प्रलय करदी ५ हे राजा आपके कुबिचार में अग्निके समान उनतीनों बीरों के हाथसे युद्धमें मरनेवाले असंख्य क्षत्रियोंने नाशको पाया ६ हे भरतर्षभ और क्रोधयुक्त दुर्य्योधन ने नौबाणोंसे चारों घोड़ोंसमेत नकुलको घायल किया ७ इसके पीछे बड़े साहसी आपकेपुत्र ने क्षुरप्रसे सहदेवकी स्वर्णमयी ध्वजा को काटा ८ फिर क्रोधयुक्त नकुलने सातबाणोंसे सहदेव ने पांचबाणोंसे आपके पुत्रको घायल किया ९ उससमय अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने पांच २ बाणोंसे उन भरतवंशियोंमें और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ नकुल सहदेवको घायल करके दूसरे दोभल्लों से उनदोनोंके धनुषोंकोभी अकस्मात् काटडाला और इक्कीस बाणोंसे घायलकिया १० । ११ युद्धमें देवकुमारोंके समान वह शूरबीर दूसरे इन्द्रधनुषके समान शुभधनुषोंको लेकर शोभायमानहुये १२ इसकेपीछे युद्धमें वेगवान् वह दोनोंभाई युद्ध में घोरबाणोंकी बर्षाभाईके ऊपर ऐसे करनेलगे जैसे कि दोबादल पर्ब्बतपर बर्षाकरते हैं १३ हेमहाराज तब तो आपकेक्रोधयुक्त पुत्रने बड़ेधनुषधारी दोनों पांडवोंको अपने बाणोंसे रोका १४ उससमय दुर्योधनका धनुष युद्धमें मंडलाकार दिखलाई देताथा और चारोंओरसे दौड़तेहुये शायक दृष्टपड़तेथे १५ सबदिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि सूर्यकीकिरणें संसारको व्याप्तकरदेतीहैं इसके अनन्तर आकाश मंडलको बाणरूपी जालोंसे ढकजाने

पर १६ नकुल और सहदेवके निमित्त उसकारूप काल और मृत्यु-रूप यमराजके समान दिखाईपड़ा महारथियोंने आपकेपुत्रके उस पराक्रमको देखकर १७ नकुल और सहदेवको मृत्युकेगालमें फंसा हुआ माना इसके पीछे पांडवोंका महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न १८ वहांगया जहांपर कि राजा दुर्योधनथा वहां जाकर महारथी शूरबीर नकुल और सहदेवको उल्लंघनकर धृष्टद्युम्नने आपकेपुत्रकोशायकों से रोका तब आपकेसाहसी क्रोधयुक्तपुत्रने हंसकर १६।२० धृष्टद्युम्न को पचीस बाणोंसे छेदकर पैंसठबाणों से घायल बड़े शब्दसे गर्ज नाकरी और फिर उसकेबाण और हस्तत्राण समेत धनुषको २१।२२ अपने तीक्ष्णक्षुरप्र से काटडाला तबशत्रुबिजयीधृष्टद्युम्नने उसटूटे धनुषको डालकर २३ बड़ेबेगसे बड़े भारबाहक नवीनधनुषकोहाथमें लिया और बेगसे लालनेत्र क्रोधयुक्त २४ घायल हुआ धृष्टद्युम्न महाशोभायमान हुआ फिर सर्पोंके समान श्वास लेनेवाले पन्द्रह नाराचोंको मारनेके इच्छावान् धृष्टद्युम्नने राजादुर्योधनके ऊपर छोड़े २५ वहतीक्ष्णधार कंक और मोरपक्षीके परोंसे जटितबाणराजा के स्वर्णमयी कवचको काटकर पृथ्वीमें २६ बड़े बेगसे समागये फिर वहआपकापुत्र अत्यन्त घायलहोकर ऐसाशोभायमानहुआ २७ जैसे कि बसन्तऋतुमें अच्छाप्रफुल्लित किंशुकवृक्ष होताहै नाराचोंसेटूटा कवच और प्रहारोंसे घायल शरीर २८ क्रोधयुक्त दुर्योधननेभल्लसे धृष्टद्युम्नके धनुषको काटा और बड़ी शीघ्रतासे टूटेधनुषवाले धृष्ट-द्युम्नको २६ दश शायकोंसे दोनों भृकुटियोंमें घायलकिया बड़े-कारीगरके स्वच्छकियेहुये उनबाणोंने उसके मुखको ऐसा शोभाय-मानकिया ३० जैसेकि मधुकेलोभी भ्रमर अच्छेफूले हुये कमलको शोभितकरतेहैं फिर उस महासाहसी धृष्टद्युम्नने उस टूटेहुये धनुष को डाल कर ३१ बड़े बेगसे सोलह भल्लों समेत दूसरे धनुष को लिया इसके पीछे पांचबाणों से दुर्योधन के सारथी समेत घोड़ों को मारकर ३२ एकभल्लसे सुनहरी धनुष कोकाटा फिरधृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र के रथ, उपस्कर, क्षत्र, शक्ति, खड्ग, गदा और ध्वजा

को दश भल्लोंसे काटा ३३ सब राजाओंने दुर्य्योधनकी उसटूटीहुई ध्वजाको जोकि सुवर्णके बाजूबंदरखनेवाली अपूर्व मणियोंसेजटित नाग चिह्नवाली अतिशुभरूप की थी देखा हेभरतर्षभ फिर उस रथसे बिहीनटूटे कवच और ध्वजावाले दुर्य्योधन को ३४ । ३५ उसकेनिज भाइयोंने चारोंओरसे रक्षितकिया हेराजा भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित राजादंडधारी दुर्य्योधनकोरथपरबैठा कर ३६ धृष्टद्युम्नके देखतेहुये दूरलेगया फिर राज्यकालोभीमहा-बलीकर्ण सात्विकीको बिजयकरके ३७ युद्धमें द्रोणाचार्य्यके मारने वालेउग्रबाणधारी धृष्टद्युम्नके सन्मुखगया फिरबाणोंकोमारताहुआ सात्विकीउसकेपीछे ऐसाशीघ्रचला ३८ जैसे कि हाथीकोहाथीदांतों से जंघास्थानमें पीड़ामान करताहुआ जाताहै ३९ हेभरतबंशी बड़े महात्माआपके शूरबीरोंका वह महाघोर युद्ध कर्ण और धृष्टद्युम्नके मध्यमें ऐसाउत्तम युद्धहुआकि जिसमें पांडवोंके और हमारी ओरके किसी पुरुषनेभीमुखको न मोड़ा ४० इसकेपीछे बड़ीशीघ्रतासे कर्ण पांचालोंसेयुद्ध करनेलगा हेनरोत्तम राजाधृतराष्ट्र मध्याह्नके समय घोड़े हाथी और मनुष्योंका विध्वंसन दोनों ओरमेंहुआ फिरविजया-भिलाषी वहसब पांचाल ४१ । ४२ शीघ्रतासे कर्णकेसन्मुख ऐसेगये जैसेकि वृक्षकी ओर पक्षी जातेहैं इस रीतिसे क्रोधयुक्त बाणसमूहों सेरोकतेहुये अधिरथी कर्णने उन उपाय करनेवाले साहसी सेना-पतिसे मिलेहुये४३ व्याघ्रकेतु सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्ल, रोचमान, सिंहसेन और दुर्जयको सन्मुखपाया उनबीरोंने उसनरो-त्तमको रथमार्गसे घेरलिया ४४ । ४५ जोकि बाणोंका छोड़नेवाला क्रोधयुक्तहोकर युद्धमें शोभादेनेवालाथा उसप्रतापी कर्णने उनदूर से युद्धकरनेवाले ४६ आठों बीरोंको तीक्ष्णधारवाले आठ बाणोंसे पीड़ामान किया हेमहाराज उनको पीड़ित करके महाप्रतापी कर्ण ने ४७ उन अन्य हजारों शूर बीरोंकोभी जो कि युद्ध में बड़े कुशल सेमारा इसकेपीछे उस अत्यन्त क्रोध युक्तने जिष्णु, जिष्णुकर्मा, दे-वापी, भद्र ४८ दंड, चित्र, चित्रायुध, हरि, सिंहकेतु, रोचमान, म-

हारथी शलभ४६ इन चंदेरी देशोंके महारथियोंको मारा उस समय उनके प्राण हरनेवाले कर्णका शरीर ऐसाहोगया ५० जैसे कि रुधिरसेलिप्त शिवजीका बड़ाशरीर होताहै हेभरतवंशी इसके सिवाय युद्धमें कर्णके बाणोंसे अनेक हाथीभी घायलहुये ५१ बड़ी व्याकुलता उत्पन्नकरनेवाले भयकारी वहहाथी युद्धमें कर्णके बाणों से चारोंओरको भागभागकर पृथ्वीपर गिरपड़े ५२ वज्रसे ताड़ित पर्व्वतोंके समान घोरशब्द करतेहुये गिरनेवाले हाथी घोड़ेमनुष्य और रथोंसे कर्णके मार्ग की पृथ्वी आच्छादित होगई ५३ युद्धमें भीष्म, द्रोणाचार्य और अन्य आपके वीरोंनेभी ऐसाकर्म नहींकिया जैसा कि युद्धभूमिमें कर्णने किया५४।५५ हेमहाराज हाथी घोड़ेरथ औरमनुष्योंका कर्णकेहाथसे नाशहुआ जैसे कि मृगोंकेमध्यमें घूमने वाला निर्भय सिंह पशुओंका नाशकरताहै ५६ उसीप्रकार कर्णभी भयभीत मृगोंके समान पांचालोंमें निर्भयता पूर्व्वक विचरता हुआ नाश करताथा जैसे कि सिंह भयभीत मृगोंको दिशाओं में भगा देताहै ५७ उसीप्रकार कर्णने पांचालोंके रथसमूहोंको भगादिया जैसे कि सिंहके मुखको पाकर कोई पशु नहींजीता है ५८ उसी प्रकार महारथी कर्णकोपाकर कोई जीवता नहींरहा निश्चय करके जिसप्रकार सबजीवमात्र वैश्वानर अग्निकोपाकर भस्महोतेहैं ५६ उसीप्रकार हेभरतवंशी सृञ्जीरूपी वनभी कर्णरूपी अग्निसे भस्म होगये हेभारत कर्णने चंदेरी कैकय और पांचाल देशियोंके मध्यमें नामोंको सुना२ कर वीरोंके अंगीकृत अनेक युद्धकर्त्ताओं को मारा इसकर्णके पराक्रमको देखकर मैंने बिचारकिया ६०।६१ कि कर्ण के हाथसे एकभी पांचालदेशी जीवता न बचेगा कर्णने युद्धमें पांचालोंको बारम्बार छिन्नभिन्न करदिया ६२ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त धर्म्मराज युधिष्ठिर उसमहायुद्धमें पांचालोंके मारनेवाले कर्णको देखकर सन्मुखदौड़े ६३ हे श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पुत्र, और अन्य हजारोंमनुष्योंने शत्रुके मारनेवाले कर्णको घेरलिया ६४ शिखण्डी, सहदेव, नकुल, नकुलकापुत्र, जन्मेजय, सात्विकी, बहव,

प्रभद्रक ६५ और धृष्टद्युम्न, यह सब बड़ेतेजस्वी युद्ध में सन्मुख होकर धनुषधारी बाणफेंकनेवाले कर्णके सन्मुख होकर बाण और अस्त्रों समेत शोभायमान हुये ६६ वहां अकेला कर्ण युद्ध में उन चंदेरी पांचालदेशी और अन्य शूरवीरोंसमेत पांडवोंके सन्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सर्पोंके सन्मुख अकेला गरुड़ होताहै ६७ हेराजा उन सबकेसाथ कर्णके ऐसे घोररूप युद्धहुये जैसे कि पूर्व समयमें देवताओंका युद्ध दानवोंसे हुआथा ६८ फिर उस क्रोधरूपने यम-दण्डके समान अपने बाणों से बाहीके कैकय मत्स्य वासत्य मद्र सिन्ध इन देशियोंको सबओरसे मारा ६९ वह बड़ा धनुषधारी अकेलाही युद्धमें लड़ताहुआ बहुत शोभित हुआ और भीमसेन के नाराचोंसे हाथी मर्मस्थलों में घायलहुये ७० जिनके सवार मारे गये उनगिरतेहुये हाथी घोड़े और निर्जीव पत्तियोंने पृथ्वीको क-म्पायमान करदिया ७१ युद्धमें घायल रुधिरको बमन करतेहुये और जिनके कि शस्त्र गिरपड़े वह हजारों रथी मारेगये ७२ रथी अश्व सवार सारथी पदाती घोड़े यह सब हाथियों समेत घायल होकरभीमसेनसेभयभीतऔर मरेहुये दृष्टपड़े ७३ भीमसेनकेतोड़ेहुये अस्त्र शस्त्रादिकोंसे पृथ्वीभरगई दुर्योधनकी वह सबसेना भीमसेन के भयसेपीड़ित अचेष्टितोंके समान नियतथी ७४ उत्साहसे रहित घायल और अंगचेष्टाबिना अत्यन्त दुःखीरूप युद्धमेंदिखाईपड़ी ७५ हेराजा जैसे कि प्रसन्नकाल में स्वच्छ जलवाला समुद्र स्थिर नि-यतहोताहै उसीप्रकार आपकी सेनाभी निश्चल होगई ७६ अर्थात् क्रोध पराक्रमसेयुक्त आप के पुत्रकी वहसेना अहंकारसे पराजित होकर शोभासे रहित होगई ७७ हेभरतर्षभ वह सेना परस्पर घायलहोकर रुधिरोंसे लिप्तहोकरभागी ७८ फिर युद्धमें क्रोधयुक्त पराक्रमी कर्ण पांडवों समेत सेनाको ७९ और भीमसेनभी कौरवों समेत कौरवी सेनाको भगातेहुये शोभायमानहुये इसरीतिसे महा-घोर भयंकर युद्धजारीहोनेपर ८० महाबिजयी अर्जुन सेनामें संत-प्तकोंके बहुतसे समूहोंको मारकर फिर वासुदेवजीसे बोला ८१

कि हेजनार्दनजी यह युद्धाभिलाषी सेना छिन्नभिन्नहोकर पराजित हुई यह संसप्तक महारथी अपने समूहों समेत मेरेबाणों से ऐसे भागतेहैं ८२ जैसे कि सिंहके शब्दको सुनकर मृग भागतेहैं और बड़ेयुद्धमें सृञ्जियोंकी बड़ीसेनापृथक्२ हुईजातीहै ८३ हे श्रीकृष्णजी राजाओंकी सेनाकेमध्यमें प्रसन्नतापूर्व्बक घूमनेवाले बुद्धिमान् कर्णकी यह ध्वजा दिखाईदेतीहै जिसमें कि हाथीकी कक्षाकाचिह्न है ८४ और कोई महारथी कर्ण के बिजय करनेको समर्थ नहींहै आपभी कर्णको बड़ापराक्रमी जानतेहैं ८५ अब आप वहांचलिये जहांपर कि वह कर्ण हमारी सेनाको भगारहा है आप इन सबको त्यागकर युद्धमें महारथी कर्णके सन्मुखचलिये ८६ हेश्रीकृष्णजी मुझको यह उचित मालूम होताहै अथवा जैसी आपकी इच्छाहो वही करना योग्यहै उसके इसबचनको सुनकर गोविन्दजी हंसकर बोले ८७ हेपांडव तुम शीघ्रही कौरवोंकोमारो इसकेपीछे गोविन्दजीकी आज्ञानुसार अपने सारथीरूप श्रीकृष्णजी समेत श्वेतहंसवर्ण घोड़ोंकी सवारीसे अर्जुन आपकी सेनामें आपहुंचा केशवजीका आज्ञाकारी सुवर्णके भूषणोंसे युक्त ८८।८६ श्वेतघोड़ोंकेरथके पहुंचतेही आपकी सेनाचारों दिशाओंमें हटगई बादलके समानशब्दायमान हनुमान जीकी ध्वजासे संयुक्त चेष्टावान् पताका वाला ६० वह रथ उससेनामें ऐसे पहुंचा जैसे कि स्वर्गमें बिमान पहुंचताहै वहां वह अर्जुन और केशवजी दोनोंसेनाको चीरतेहुये प्रविष्ट हुये ६१ और क्रोधसे भरे लालनेत्र कियेहुये वह दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन शोभायमान हुये युद्धमें कुशल और बुलायेहुये वहदोनों युद्धरूपी यज्ञभूमिमें ऐसे आपहुंचे ६२ जिसप्रकार बिधिपूर्व्वक यज्ञ करने वालोंसे आह्वापन किये हुये अश्विनीकुमार होतेहैं फिर क्रोधयुक्त वह दोनों नरोत्तम ऐसे युद्धमें प्रवृत्त हुये ६३ जैसे कि महाबनमें तलशब्दसे क्रोधित महाबली हाथी होतेहैं फिर अर्जुन रथोंकीसेना और घोड़ोंके समूहों को मझाकर६४ पाशधारी यमराज केसमान सेना में घूमनेलगा हे भरतबंशी युद्ध में आपकी सेना के मध्य

में पराक्रम करनेवाले उस अर्जुन को देखकर ९५ आपके पुत्रने संसप्तकोंके समूहोंको फिर प्रेरणा करी तब हजाररथ तीनसौहाथी ९६ चौदह हजार घोड़े और दोलाख धनुषधारी ९७ शूरबीरलक्षों के बेधनेवाले चारोंओरसे घिरेहुये पदातियों समेत महारथी अर्जुनको बाणोंसे आच्छादित करतेहुये सन्मुख वर्त्तमानहुये ९८ हे महाराज उन सबलोगोंने चारोंओरसे बाणोंकी बर्षा करके अर्जुन को ढकदिया फिर शत्रुकी सेना का पीड़ामान करनेवाला युद्ध में बाणोंसे ढका हुआ वह अर्जुन पाशधारी यमराजके समान अपना रुद्ररूप दिखलाताहुआ और संसप्तकोंको मारताहुआ अपूर्व्व दर्शन केयोग्यहुआ ९९।१००इसकेपीछे बिजलीकेसमान प्रकाशमान सुवर्णसे अलंकृत अर्जुन के चलाये हुये बाणोंसे सब आकाशढकगया १०१ वहां अर्जुनके छोड़े हुये बड़े २ बाणोंके गिरनेसे सब आकाश आच्छादित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि कद्रू के बेटे सर्पोंसे व्याप्त होकर शोभित होता है १०२ बड़े साहसी पांडवने सुनहरी पुंखयुक्त तीक्ष्णनोककेसे टेढ़े पर्ववाले बाणोंको सबदिशाओं में छोड़ा १०३ मनुष्योंने अर्जुनकी प्रत्यंचाके शब्दसे यह अनुमान किया कि पृथ्वी आकाश सबदिशा समुद्र और पर्वत टूटतेहैं १०४ महारथी अर्जुन दशहजार क्षत्री महारथियोंको मारकर शीघ्रही संसप्तकों के सन्मुख गया १०५ वहां अर्जुनने काम्बोज के राजासे रक्षित सेना को नेत्रों के सन्मुख पाकर अपने बाणों के बलसे उसको ऐसे मारा जैसे कि दानव लोगों को इन्द्र मारता है और बड़ी शीघ्रतासे मारने के इच्छावान् शत्रुलोगों के शस्त्र भुजा हाथ और शिरोंको भी काटा १०६।१०७ वह शस्त्रोंसे रहित टूटे अंग होकर पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़े जैसे कि संसारी वायुसे टूटे बहुत शाखावाले वृक्ष गिरते हैं १०८ हाथी घोड़े रथ वा पत्तियों के समूहोंके मारनेवाले अर्जुनके ऊपर सुदक्षिणाके छोटे भाईने बाणोंकी बर्षाकरी १०९ तब अर्जुनने उस बाणवर्षा करनेवालेकी परिघ के समान दोनों भुजाओंको दो अर्द्धचन्द्रों से और पूर्णचन्द्रमाके समान

मुखवाले शिरको क्षुरप्रसे जुदाकिया ११० उसकेपीछे बड़े रुधिर को गिरानेवाला वह राजा रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे फटाहुआ मनशिल पर्व्वतका शिखर गिरताहै सुदक्षिणके छोटेभाई कांबोजदेशी कमलपत्रके समान नेत्रधारी उन्नत बड़ेतेजस्वी अपूर्व दर्शनको इसरीतिसेमारा १११।११२ वह कांचनके स्तंभसमान टूटे हेमगिरिके समान वर्त्तमानथा इसके अनन्तर फिर महाघोर युद्ध जारीहुआ ११३ उसयुद्धमें लड़नेवाले शूरवीरोंकी नानाप्रकारकी अपूर्व्वदशा वर्त्तमानहुई अर्थात् एकबाणसे मरेहुये काम्बोज देशी यवनदेशी और शकदेशीघोड़ोंसे ११४ और रुधिरसेलिप्त शूरवीरों से सब रुधिरमयी भूमि होगई मृतक घोड़े और सारथीवाले रथ वा मृतक सवारोंके घोड़े वा मृतक हाथीवान और सवारोंवाले हाथियोंसे परस्परमें मनुष्योंका बड़ा नाशहुआ ११५।११६ अर्जुनके हाथसे उस पक्ष और प्रपक्षके मरनेपर बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक अश्वत्थामाजी उस महाबिजयी अर्जुनके सन्मुख गये ११७ सुवर्ण जटित बड़े धनुषको कम्पायमान करता सूर्य्यकी किरणोंके समान घोरबाणोंको लेता ११८ क्रोध और अशान्तीसे फैलाहुआ मुख रक्तनेत्र वह पराक्रमी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलयकाल में किंकरनाम दण्डधारी क्रोधरूप अग्नि होताहै ११६ इसकेपीछे उग्रबाणोंकी वर्षाओंको बरसाया हेमहाराज उन छोड़े हुये बाणोंसे पांडवी सेनाको भगाया १२० हेश्रेष्ठराजा उसने रथपरसवार श्रीकृष्णजीको देखतेही फिर उदग्र बाणोंकी वर्षाकरी १२१ तब हे महाराज अश्वत्थामाके छोड़ेहुये और चारोंओरसे गिरतेहुये उन बाणोंसे वह रथपरचढ़ेहुये दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ढकगये१२२ इसकेपीछे तदनन्तर प्रतापी अश्वत्थामाने युद्ध में हजारों तीक्ष्ण बाणोंसे उन श्रीकृष्ण अर्जुनको स्तब्ध करदिया १२३ इसरीति से युद्धके रक्षक उनदोनोंको बाणोंसे आच्छादित देखकर सब जड़ चैतन्य हाहाकार करनेलगे १२४ सिद्ध चारणों के वह समूह चारों ओरसे यह चिन्ताकरतेहुये दौड़े कि अब लोकोंकी कुशलहोगी वा न

होगी १२५ हेराजा ऐसायुद्ध और पराक्रम हमने प्रथम कभी न देखाथा जैसा कि दोनों श्रीकृष्ण अर्जुनको बाणोंसे ढकनेवाले अश्वत्थामाने किया १२६ वहां मैंने शत्रुओंके भयकारी अश्वत्थामा के धनुषका शब्द बारम्बार सुना १२७ इस युद्ध में बाम दक्षिण दोनोंओर को घूमनेवाले सव्यसाची अश्वत्थामा की प्रत्यंचा ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि बादलोंके मध्यमें बिजली चमकतीहै १२८ फिर शीघ्रकर्मी दृढ़हस्तवाले अर्जुनने अश्वत्थामाकोदेख बड़ेमोहको प्राप्तहोकर १२९ अपने बल पराक्रमको हतमाना और युद्धमें दोनोंका शरीर दुर्दर्शहुआ १३० हे राजेन्द्र इसप्रकारसे अश्वत्थामा और अर्जुनके महाघोर युद्धहोने और पराक्रमी अश्वत्थामाके प्रबल होने १३१ और अर्जुन के निर्बल होनेपर श्रीकृष्णजी में महाक्रोध उत्पन्नहुआ क्रोधसे श्वासलेते और नेत्रोंसे भस्म करतेहुये उन श्रीकृष्णजीने १३२ युद्धमें अश्वत्थामा और अर्जुनको बारम्बार देखा और क्रोधरूप होकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे प्रीति पूर्वकबोले १३३ हेभरतबंशी अर्जुन युद्ध में इसतेरेकर्मको अपूर्व मानताहूं कि जहां अश्वत्थामा सरीखा तुझको उल्लंघन करके वर्त्तमानहै १३४क्या तेरा पराक्रम और भुजबल पूर्वके समान है क्या तेरा गांडीवधनुष रथमें हस्तगत नियतहै १३५ क्या तेरेदोनोंभुज कुशलहैं और मुट्ठी तो निर्बलनहीं होगई हैं हेअर्जुन मैं युद्धमें अश्वत्थामाकोही प्रबल बिजयी देखताहूं १३६ हे भरतर्षभ अर्जुन यह गुरूका पुत्रहै ऐसा मानकर छोड़ना न चाहिये यहसमय त्यागनेकेयोग्य नहींहै १३७ इसरीतिके श्रीकृष्णजीके बचनोंकोसुनकर शीघ्रताकरनेवाले अर्जुन ने चौदह भल्लों को लेकर बड़ी शीघ्रतासे अश्वत्थामाके धनुषको काटा १३८ इसीप्रकार से ध्वजा, पताका, रथ, छत्र, शक्ति और गदाको तोड़कर वत्सदन्तनाम बाणों से ठोढ़ीके स्थानपर अत्यन्त घायलकिया १३९ तबतो अश्वत्थामा बड़ा मूर्च्छित होकर ध्वजा की यष्टीके आश्रयहुआ हेराजा फिर अर्जुनसे बचाताहुआ उसका सारथी उस शत्रुओंके भयभीत करनेवाले अचेतरूप अश्वत्थामा

को युद्धसे दूरलेगया फिरउससमय शत्रुसंतापीअर्जुनने १४०।१४१ आपकी हजारों सेनाको मारा यह सब कर्म अर्जुनने उस आपके बीर पुत्रके देखतेहुये किया १४२ इसरीतिसे आपके कुमन्त्रों के कारण शत्रुओंकेसाथ आपके शूरबीरोंका यह महाघोर नाश वर्त्त-मानहुआ १४३ अर्जुनने संसप्तकों को भीमसेनने कौरवों को वा सुषेणने पांचालोंको क्षणमात्रमेंही युद्धभूमि में छिन्नभिन्न करदिया १४४ हे राजा इसरीतिसे उत्तम बीरोंके सन्मुख नाशकारी युद्ध के होनेपर चारोंओरसे असंख्य रुण्ड उठखड़ेहुये १४५ हेभरतर्षभ आघातोंसे कठिन पीड़ामान युधिष्ठिरभी युद्ध में एककोस हटकर नियतहुआ१४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

संजय बोले हे भरतर्षभ इस के पीछे दुर्य्योधनने शल्य आदि अन्य राजाओं समेत कर्णसे कहाकि १ दैवइच्छासे यह स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है ऐसे युद्धको स्वर्ग और मोक्षके पानेवाले क्षत्री लोगपातेहैं २ हेकर्ण तू युद्धमें अपने समान युद्ध करनेवाले शूरबीर क्षत्रियों के चित्तका जो प्यारा होताहै वह दिन आज वर्त्तमान हो-कर नियत हुआहै ३ युद्धमें पांडवों को मारकर वृद्धि युक्त पृथ्वी को पावोगे अथवा युद्ध में शत्रुओंके हाथसे मरकर बीरों के लोकों को पावोगे ४ वह सब श्रेष्ठ क्षत्री लोग दुर्य्योधन के इस वचनको सुनकर बड़े प्रसन्न होकर अत्यन्त उच्चस्वरसे गर्जे और बाजोंको बजाया ५ इसके पीछे दुर्य्योधनकी उस सेनाके अति प्रसन्न होने पर अश्वत्थामाजी आपके शूरबीरोंको प्रसन्न करते हुये यह वचन बोले कि सबसेनाके मनुष्योंके समक्षमें शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरा पिता इस धृष्टद्युम्न के हाथसे मारागया ६ । ७ हे राजालोगो इसहेतु से मैं उस क्रोधसे मित्रके लिये भी तुमसे सत्य प्रतिज्ञा करताहूं उसको आपसब समझो ८ मैं धृष्टद्युम्नको जबतक न मार

लूंगा तब तक कवचको नहीं उतारूंगा जो मेरी प्रतिज्ञा पूरीनहोगी तो स्वर्गकोभी मैं नहीं पासक्ता ९ युद्धमें भीमसेन अर्जुन को आदि ले जो कोई शूरबीर धृष्टद्युम्न का रक्षक होगा उसकोभी में युद्धमें बाणोंसे मारूंगा १० इसबचनके सुनतेही भरतबंशियोंकी सबसेना एक साथही पांडवों के सन्मुख गई और इसीप्रकार वह पांडव लोगभी कौरवों के सन्मुख दौड़े ११ हे राजा वह महारथियों का संग्राम बड़ा भयकारीहुआ और कौरव वा सृञ्जियोंके आगेमनुष्यों का नाश कुछकम प्रलयहीके समान हुआ १२ इसके पीछे युद्धमें उनकठिन प्रहारोंके बर्त्तमान होनेपर अप्सराओं समेत देवताओर सब जीवमात्र उन नरबीरों के देखने के अभिलाषी इकट्ठे हुये १३ अत्यन्तप्रसन्न चित्त अप्सराओंने युद्ध में अपने कर्मसेस्वर्ग में पहुंचने के योग्य बड़े २ नरोत्तम बीरोंको दिव्यमाला वा नानाप्रकार की गन्धि और रत्न जटित उत्तम २ अद्भुत भूषणों से बर्षाकरके ढक दिया १४ फिर बायुने उन सब गन्धादिकोंको लेकर उन सबश्रेष्ठ युद्ध करनेवाले शूरबीरोंको सेवन किया बायुसे सेवित होकर परस्पर में मारे हुये शूरबीर पृथ्वी पर गिरपड़े १५ दिव्यमाला वा सुनहरी पुंखवाले बिचित्र बाणोंसे व्याप्त उत्तम शूरबीरोंसे बिचित्र वह पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नक्षत्र मंडल से अलंकृत आकाश होताहै १६ इसके पीछे वह युद्धभूमि अन्तरिक्ष के प्रशंसा युक्त बचन बाजोंके शब्दोंसे शब्दायमानधनुष और रथचक्रों के अपूर्व्व शब्दों से अद्भुत रूप होकर व्याकुल रूप होगई १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभूमिअद्भुतरूपवर्णनेसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुन कर्ण और भीमसेनके क्रोधयुक्त होनेपर इसरीति से राजाओं का यह अद्भुत युद्ध हुआ १ हे राजा अर्जुन अश्वत्थामाको पराजित करके और दूसरे महारथियों कोभी बिजय करके बासुदेवजीसे यह बचन बोला २ हे महाबाहु श्रीकृष्णजी

भागती हुई पांडवी सेनाको और युद्ध में महारथियों को भगातेहुये कर्णकोदेखो ३ हे श्रीकृष्णजी मैं धर्मराज युधिष्ठिरको नहीं देखता हूं हे बड़े शूरबीर मुझको युधिष्ठिरकी बड़ी ध्वजाभी नहीं दिखाई देती ४ हे जनार्दनजी जिनका तीसराभाग शेषहै उन धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्धमें मेरे सन्मुख कोई नहीं आताहै ५ इसहेतु से आप मेरे हितको करतेहुये वहां चलो जहांपर युधिष्ठिर है हे माधवजी मैं युद्ध में अपने छोटे भाइयों समेत युधिष्ठिर को कुशल देखकर फिर आनकर शत्रुओं से लड़ूंगा यह सुनकर श्रीकृष्णजी शीघ्रही रथकेद्वाराचले६।७ जहांराजायुधिष्ठिर और महारथी सृञ्जय अपनी२ सेना समेत मृत्यु को हाथ में लिये परस्पर में युद्ध करतेथे इसके पीछे मनुष्यों के नाश काल बर्त्तमान होनेपर युद्धभूमि को देखते हुये गोबिन्दजी अर्जुनसेबोले ८।९ हे अर्जुन देखो कि दुर्य्योधन के कारण से पृथ्वी पर क्षत्रियों का और भरतवंशियों का महाघोर रुद्ररूप नाश बर्त्तमानहै १० हे धनुषधारी मरेहुये धनुष धारियों के सुवर्ण पृष्ठवाले धनुष और बहुमूल्य टूटेहुये तूणीरोंकोदेखो ११ और सुनहरी पुंख युक्त टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंको तेलसे सफा किये हुये कांचलीसे रहित सर्पोंकी समान नाराचोंको देखो १२ हाथीदांत का बेंटा रखनेवाले सुवर्ण जटित खड्गों को और टूटेहुये स्वर्णमयी कवचोंको देखो १३ सुवर्ण जटित प्रास और सुबर्ण भूषणों से अलंकृत शक्ति अथवा स्वर्ण सूत्रोंसे खचित बड़ी२ गदाओंको देखो १४ सुवर्णसे जटित दुधारे खड्ग और पट्टिश और फरसों को देखो १५ गिरेहुये भारी२मुशल चित्रितशतघ्नी और बड़े२परिघोंको देखो १६ इसमहायुद्धमें टूटेचक्र और तोमरोंकोदेखो विजयाभिलाषी वेगवान् युद्धकर्त्ता लोग नानाप्रकार के शस्त्रों समेत मरेहुयेभी जीवतेहुये से विदितहोतेहैं गदाओंसे अंगभंग मुशलोंसे टूटेमस्तक १७।१८ हाथी घोड़े और रथोंसे घायल हज़ारों शूरबीरोंकोदेखो हे शत्रुहन्ता अर्जुन मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीर बाण, शक्ति, दुधारा, खड्ग, पट्टिश १९ घोर रूप लोहेकी परिघ असिकान्त, फरसा

इत्यादिशस्त्रोंसेछिन्नरूप और बहुतसेमृतकरूप शरीरोंसे २० आच्छादितहोकरचन्दनसे लिप्त सुवर्ण के बाजुओंसे अलंकृत २१ हस्तत्राण वा केयूर रखनेवाली भुजाओंसे पृथ्वी प्रकाशमान हुई हेभरतवंशी हस्तत्राण रखनेवाले अत्यन्त अलंकृत औ छिदीहुई उत्तम भुजा २२ और हाथीकी सूंड़के समान महावेगवानोंकी टूटीजंघा और उत्तम चूड़ामणिसमेत कुंडलधारी २३ उत्तम नेत्रवाले बीरोंसमेत पड़े हुये शिरोंसे पृथ्वी महा शोभायमान होगईहै हेभरतर्षभ रुधिरसे लिप्त अंग जिनकी ग्रीवा टूटीहुई २४ इन सब नानाअंगों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशितहुई जैसे कि शांतज्योतिवालीअग्नियोंसेवन शोभित होताहै और सुनहरी घंटे रखनेवाले बहुत प्रकारसे टूटेहुये शुभरथों से व्याप्त २५ बाणोंसे घायल मृतक वा व्याकुलपड़े हुये आनत्त वाले घोड़ोंकोदेखो अनुकर्ष उपासंग पताका औरनानाप्रकारकी ध्वजाओं को देखो २६ रथी लोगोंके बड़े २ शंख श्वेत चामर और जिनकी जिह्वाबाहर निकलपड़ीं उन पर्व्वताकार सोतेहुये हाथियोंकोदेखो २७ बैजयन्ती माला वा रथके बिचित्र मृतक घोड़े वा हाथियों के परिस्तोम मृगचर्म और कम्बलोंकोदेखो २८ फैलनेसे बिचित्रचांदी से जड़े हुये अंकुश और बड़े २ हाथिओं समेत गिरकर टूटे घंटोंको देखो २९ बैडूर्य्य मणियोंसे जटित सुन्दर दण्ड युक्त गिरेहुये शुभ अंकुश और सवारोंकी भुजाओंमें बंधेहुये सुवर्ण जटित चाबुकोंको देखो ३० बिचित्र मणियोंसे जटित सुवर्णसे अलंकृत रांकवान मृगचर्मसे बनेहुये पृथ्वीपर पड़े हुये घोड़ोंके स्तर परिस्तोमों को देखो ३१ राजाओंकी चूड़ामणि वा बिचित्र स्वर्णमयी माला वा टूटेहुये छत्रचामर और व्यजनोंकोदेखो ३२ चन्द्रमा और नक्षत्रोंकेसमान प्रकाशमान सुन्दर कुंडलधारी डाढ़ी मूछोंसे अलंकृत भयसंयुक्त बीरोंके मुखोंसे ३३ ढकीहुई रुधिररूप कीचवाली पृथ्वी को देखो और चारों ओरसे शब्द करनेवाले अन्य सजीव जीवोंकोदेखो ३४ हेराजा शस्त्रोंको त्यागकर बारंबार रोनेवाले जातवालोंसे घिरेहुये बहुतसे मनुष्योंको देखो ३५ वेगवान् वा विजयाभिलाषी क्रोधभरे

शूरवीर दूसरे मृतक शूरवीरोंको ढककर फिर युद्धके लिये जाते हैं ३६ इसीप्रकार पड़ेहुये शूरवीरोंने जिन जातवालोंसे जल कोमांगा वह मनुष्य जहांतहां दौड़रहेहैं ३७ हेअर्जुन कोई तोजलके निमित्त गये और अनेक मृतकहुये वह शूर उनको अचेत देखकर लौटे ३८ जलकोत्यागकर परस्पर पुकारतेहुये दौड़तेहैं हे श्रेष्ठजल पी२ कर मरनेवालोंको वा जलके पीनेवालोंको भी देखो ३९ कितनेहो बांधवोंके प्यारेमनुष्य अपने प्रिय बांधवोंको त्यागकरजहांतहां इस महायुद्धमें युद्ध करतेहुये दृष्टपड़ते हैं ४० हेनरोत्तम इसीप्रकार दोनोंओष्ठोंको काटनेवाले टेढ़ी भृकुटीवाले मुखोंसेचारोंओरकोदेखनेवाले अन्य मनुष्योंको देखो ४१ तब इस रीतिसे बातें करतेहुये श्रीकृष्णजी वहांगये जहांपरकि युधिष्ठिरथे औरअर्जुननेभी राजाके देखनेकेनिमित्त ४२बारंबार गोबिन्दजीको प्रेरणाकरी कि शीघ्रचलो२ ऐसी शीघ्रता करनेवाले माधव श्रीकृष्णजीने वह युद्धभूमि अर्जुनको दिखाकर ४३ बड़ी धैर्य्यतासे अर्जुनसे यह वचन कहा कि हे अर्जुन राजा युधिष्ठिरको और सन्मुख जानेवाले राजाओंको देखो४४ और महायुद्धमें अग्निके समान क्रोधरूप कर्णकोभी देखो यह बड़ाधनुषधारी भीमसेनयुद्धमें लौटाहै ४५पांचाल सृंजी और जो२पांडवोंके उत्तम गिनेजातेहैं जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्नहै वहसब उस भीमसेनके संगमें लड़तेहैं ४६ और उस लौटनेवाले पांडव भीमसेनसे शत्रुओंकी बड़ी सेना फिर पराजयहुई हेअर्जुन यह कर्ण भागनेवाले कौरवोंको रोकताहै ४७ हेकौरव्य वेगमें यमराजके समान और इन्द्रके सदृश पराक्रमी शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ यह अश्वत्थामाभी जाताहै ४८ महारथी धृष्टद्युम्न युद्धमें उस भागनेवालेके पीछे जाताहै और युद्धमें मरेहुये संजियोंको देखो ४९ महाअजेय बासुदेव जीने इसरीतिसे इससब वृत्तान्तको अर्जुनसे कहाहे राजा इसकेपीछे महाघोर युद्धजारीहुआ ५० तब मृत्युको निवृत्त करकेदोनों सेनाओंके समागम होनेमें दोनों ओरको सिंहनादोंके महान् शब्द होनेलगे ५१हे पृथ्वीपति राजा धृतराष्ट्र आपके दुर्मंत्रोंसे पृथ्वीपर

आपके और अन्योंके शूरवीरोंका इसरीतिसे नाशजारीहुआ ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिमहायुद्धे अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसकेपीछे निर्भय कौरव सृञ्जी और युधिष्ठिरको अग्रगामीकरनेवाले,पांडवऔर कर्णको अग्रगामीकरनेवालेहमलोग फिर भिड़गये १उस समय कर्ण और पांडवों का वहयुद्ध फिर जारी हुआ जो भयकारी रोमहर्षण करनेवाला यमराजके देशकी वृद्धि करनेवालाथा२ हे भरतबंशी उस कठिन रुधिर रूप जल रखनेवाले युद्धकेजारीहोनेपर और शूरबीर संसप्तकोंके कुछबाकी रहने पर ३ धृष्टद्युम्न और महारथी पांडव सब राजाओं समेत कर्णके सन्मुख गये तब अकेलेकर्णने युद्धमें आनेवाले प्रसन्नचित्त बिजयाभिलाषीउन बीरोंको ऐसे धारण किया जैसे कि जलके समूहोंको पर्व्वत धारण करताहै ४।५ वह सब महारथी कर्णको पाकर ऐसे भिन्न२ होगये जैसे कि जलके समूह पर्व्वतको पाकर इधर उधर दिशाओंको चले जातेहैं ६ हेमहाराज इसके पीछे रोमहर्षण करने वाला युद्ध होने लगा तब धृष्टद्युम्न ने कर्णको टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे ७ घायल किया उस समय तिष्ठ२ कहकर विजय नाम उत्तम धनुषको खैंच कर महारथी कर्णने ८ धृष्टद्युम्न के धनुषको और बिषैले सर्पोंके समान बाणोंको काटकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर नौ बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल किया ९ हेनिष्पाप वह कर्ण के बाण उसमहात्मा के सुनहरी कवचको छेदकर रुधिरमें भरहुये वीरबहूटी के समान शोभायमान हुये १० महारथी धृष्टद्युम्न ने उस टूटे हुये धनुषको डालकर दूसरे धनुष और बिषैले सर्पकी समान बाणोंको लेकर११ टेढ़े पर्व्व वाले सत्तर बाणोंसे कर्णको पीड़ामान किया और उसी प्रकार कर्णनेभी युद्धमें शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको १२ विषैलेसर्पके समान बाणोंसे ढक दिया फिर द्रोणाचार्य्यके शत्रु बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे पीड़ामान किया १३ हेराजा

फिर अत्यन्त क्रोध युक्त कर्णने सुनहरी भूषण युक्त द्वितीय यमदंड के समान बाणको उसके ऊपर फेंका १४ हस्तलाघव करनेवाले सात्यकी ने उस अकस्मात् आने वाले घोररूप बाणको सौ प्रकार से काटा १५ तब कर्णने बाणको कटाहुआ देखकर सात्यकी को बाणोंकी वर्षा करके चारोंओर से ढकदिया १६ और सातनाराचों से पीड़ामानभी किया इसकेपीछे सात्यकीनेभी सुवर्णजटितबाणोंसे इसको छेदा १७हेमहाराज इसकेपीछे घोरयुद्धहुआ वहयुद्धनेत्र और कर्णोंको भयभीत करने वाला महा अद्भुत चारों ओरसे देखनेकेहो योग्य था १८ हेराजा वहां कर्ण और सात्यकी के उस कर्मको देख कर सब जीवोंके रोमांच खड़ेहोगये १९ इसी अन्तरमें अश्वत्थामा जीबड़े पराक्रमी उस धृष्टद्युम्नके सन्मुख गये जोकि शत्रुओंका बिजय करने वाला और पराक्रम समेत प्राणोंका हरनेवालाथा २० शत्रुके पुरके बिजय करनेवाले और अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा जी बोले कि हे ब्राह्मणके मारनेवाले ठहरो ठहरो अब मुझसे बच कर जीतानहीं बचसक्ता २१ यहकहकर शीघ्रताकरनेवालेअश्वत्था माने तीक्ष्णधार घोररूप सुन्दर बेंतवाले बाणोंसे वीर धृष्टद्युम्न को अत्यन्त वेगसे ढकदिया २२ हे श्रेष्ठ जैसे कि महारथी द्रोणा-चार्य्यजी युद्धमें उपायकरनेवाले धृष्टद्युम्नको देखकर बड़ेपरिश्रम से उपाय करनेवाले हुये २३ उसी प्रकार शत्रुओंके वीरोंके मारने वाले धृष्टद्युम्न युद्धमें अश्वत्थामाको देखकर कुछ अप्रसन्न होकर अपनी मृत्युको माना २४ फिर वह युद्धमें अपनेको शस्त्रसे अवध्य जानकर बड़ीतीव्रतासे अश्वत्थामाके सन्मुखऐसेगया जैसेकिप्रलय-कालमें काल कालके सन्मुख जाताहै २५ हे महाराजेन्द्र फिर वीर अश्वत्थामा अपने सन्मुख धृष्टद्युम्नको देखकर क्रोधसे श्वासलेता हुआ उसके सन्मुखगया २६ और उनदोनोंने परस्पर देखकरबड़ा क्रोधकिया हे महाराज राजाधृतराष्ट्र इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाला प्रतापवान् अश्वत्थामा २७ सन्मुख होनेवाले धृष्टद्युम्न से बोले हेपांचालदेशियोंमें नीच अबमैं तुझको मृत्यु के समीप भेजूंगा २८

जोकि पूर्व्वसमय में तुमने द्रोणाचार्य्यको मारकर पापकर्म कियाहै अब वह पापका फलतुझको ऐसामिलैगा जिसमेंतेरा कल्याण न होगा २९ हे अज्ञान जो तू अर्जुनसे अरक्षितहोकर युद्धमें नियत होता है या नहीं हटताहै इसीसे सत्य२ तेराकल्याण नहींहै ३० यहबचन सुनकर प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने उत्तरदिया कि मेरावही खड्गतेरे उत्तरकोदेगा ३१ जिसने कि युद्धमें उपाय करनेवाले तेरे पिताको उत्तर दियाथा नाममात्र अपनेको ब्राह्मण कहनेवाले द्रोणाचार्य्यजी मेरेहाथसे मारेगये ३२ अब युद्धमें अपने पराक्रमसे तुझकोभी क्यों न मारूंगा हे महाराज क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्नने ऐसाकह कर ३३ अत्यन्त तीक्ष्णबाणसे अश्वत्थामाको घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने टेढ़ेपर्व्व वाले बाणों से युद्धमें धृष्टद्युम्नकीदिशाओंको ढकदिया ३४उससमयचारोंओरसेबाणोंसेढके हुये न शूरबीर दिखाईदिये न दिशाविदिशासमेत अन्तरिक्ष दिखाई दिया हे राजा इसी प्रकार धृष्टद्युम्नने भी युद्धमें शोभा देनेवाले अश्वत्थामा को ३५।३६ कर्ण के देखते हुये बाणोंसे ढकदिया फिर चारों ओरसे देखनेके योग्य अकेले कर्णनेभी पांचाल पांडव ३७ द्रौपदीकेपुत्र युधामन्य और महारथी सात्यकी को रोका ३८ फिर धृष्टद्युम्न ने युद्धमें अश्वत्थामा के धनुषको काटा तब वेगवान् अश्वत्थामाने उसकोडाल दूसरे धनुषको लेकर घोरजंगमें बिषैले सर्पोंकी समान बाणोंकोफेंका फिर उसने धृष्टद्युम्नकी गदा शक्ति धनुषध्वजा३९।४०रथसारथीऔर घोड़ोंको बाणोंसेएक क्षणमात्रमें मारातब उसधनुष रथ गदा शक्ति रथध्वजा टूटेहुये धृष्टद्युम्नने ४१ बड़े खड्ग और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको लिया हेराजेन्द्र तब हस्तलाघवी बीर अश्वत्थामाने शीघ्रही अपने भल्लोंसे रथसे न उतरनेवाले धृष्टद्युम्नके उसखड्गकोभी काटा यहबड़ा आश्चर्य्यसा हुआ ४२ । ४३ हेभरतर्षभ फिर उपाय करनेवाला महारथी उस रथ गदा शक्ति खड्ग आदिसे रहित बाणोंसे अत्यन्त घायल धृष्टद्युम्न को न मारसका हेराजा जब अश्वत्थामा बाणोंसे उसको

न मारसका ४४।४५ तब वहवीर धनुषको त्यागकर धृष्टद्युम्नकी ओरकोचला और उससमय हेमहाराज उसमहात्मा भ्रमरहितअश्वत्थामाका वेग इसप्रकारकाहुआ ४६ जैसेकि उत्तम सर्पके भक्षण करनेवाले गरुड़का वेगहोताहै उसीसमय श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले ४७ हेअर्जुन देखोजैसेकि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके रथपर बड़ेउपायोंको करताहै वहनिस्सन्देह इसको मारेगा ४८ हेशत्रुओंके विजय करनेवाले महाबाहु जैसे होसके वैसे अश्वत्थामारूप मृत्युके मुखमें फंसेहुये धृष्टद्युम्नको निश्चयकरकेछुटाओ४९ हेमहाराज ऐसा कहकर प्रतापवान् वासुदेवजी ने घोड़ोंको वहां पहुंचाया जहांकि अश्वत्थामा नियतथे ५० केशवजीके हांकेहुये वह चन्द्रवर्णघोड़े आकाशगामी होकर अश्वत्थामाके रथपर पहुंचे ५१ हेराजा महापराक्रमी अश्वत्थामाने उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर धृष्टद्युम्नके मारनेमें उपायकिया ५२ तब बड़े पराक्रमी अर्जुनने खिंचे हुये धृष्टद्युम्नको देखकर बाणों को अश्वत्थामा के ऊपर फेंका ५३ गांडीवधनुष से चलाये हुये वह स्वर्णमयी बाण अश्वत्थामाको पाकर उसकेशरीरमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि सर्प बामीमेंघुसतेहैं हेराजा उनबाणोंसे घायल और पीड़ावान्वीर अश्वत्थामा युद्धमें बड़े तेजस्वी धृष्टद्युम्नको छोड़कर रथपर सवार हुये५४।५५और अर्जुनके बाणसे पीड़ित होकर उत्तमधनुषको लेकर शायकोंसे अर्जुनको घायलकिया ५६ इसी अन्तरमें बीर सहदेव युद्धभूमि में शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको रथमें बैठाकर दूरलेगया ५७ हे महाराज फिर तो अर्जुनने भी अश्वत्थामा को बाणों से पीड़ित किया फिर बड़े क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने अर्जुन को दोनों भुजा और छातीपर घायल किया ५८ फिर क्रोधयुक्त अर्जुनने युद्धमें कालके समान दूसरे कालदंडके समान नाराचनाम बाणको अश्वत्थामा के ऊपरफेंका ५९ वहबड़ा तेजस्वी बाण उसब्राह्मण अश्वत्थामा के कन्धेपर गिरा तब बाणके वेगसे व्याकुल होकर अश्वत्थामा रथके बैठनेके स्थानपर बैठगये और महाव्याकुलताको पाया हे महाराज

इसकेपीछे कर्णने अपने बिजयनामधनुषकोटंकारा ६०।६१ युद्धमें क्रोधयुक्त होकर बारंबार अर्जुनको देखने वाले और अर्जुनसे युद्धमें द्वैरथ युद्धकरनेके अभिलाषी कर्णने धनुषको टंकारकर ६२ युद्ध भूमिमें शीघ्रता करने वाले अश्वत्थामाकोव्याकुलदेखके रथकेद्वारा युद्धभूमिसे दूर लेगया ६३ हे महाराज धृष्टद्युम्नको छूटाहुआ और अश्वत्थामाको अचेतता पूर्वक व्याकुल देखकर बिजय से शोभायमान पांचालोंने बड़े शब्दकिये ६४ हजारों दिव्यबाजे बजे और युद्धमें उस अद्भुतपनेको देखकर शूरवीरोंने सिंहनाद किये ६५ पांडव अर्जुन ऐसाकर्मकरके बासुदेवजीसे बोला कि हे श्रीकृष्णजी आप संसप्तकों के सन्मुखचलो यहमेरा बड़ा कामहै ६६ अर्जुन के बचनको सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी पताका वाले मन और वायुके समान शीघ्रगामी रथकी सवारी से चलदिये ६७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणि अश्वत्थामा अचेतोनामएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥

साठवां अध्याय॥

संजय बोलेकि इसीअन्तर में कुन्ती के पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर को दिखातेहुये श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यहबचन कहा हे पांडव बड़े पराक्रमी मारने के इच्छावान् महाधनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों से यहतेराभाई राजायुधिष्ठिर बड़ीशीघ्रता से पीछाकिया जाताहै १।२ वहांमहादुर्मदक्रोधयुक्त पांचालमहात्मा युधिष्ठिरको चाहतेहुयेपीछे चले जातेहैं ३ और पृथ्वीका राजा रथसमेत सेनाओं से अलंकृत दुर्योधन राजा युधिष्ठिरके पीछे दौड़ताहै ४ हे पुरुषोत्तम यहपराक्रमी बिषैले सर्पके समान स्पर्शवाले सबयुद्धों में कुशल भाइयों समेत मारनेका अभिलाषीहै ५ युधिष्ठिरके पकड़नेकी इच्छा करने वाले यह धृतराष्ट्र के पुत्र हाथी घोड़े रथ और पत्तियों समेत ऐसे जातेहैं कि जैसे कि इच्छावान् पुरुष उत्तम मनुष्यके पासजातेहैं ६ यादव सात्यकीवाभीमसेनसे रोकेहुयेयुधिष्ठिरको पकड़नेके इच्छावान्यहलोगफिरऐसेनियतहैं जैसे कि इंद्र औरअग्निसे वारंवाररुके

हुये अमृत के चाहने वालेदैत्य होते हैं ७ यह शीघ्रता करने वाले महारथी बहुत होनेकेकारण पांडव युधिष्ठिरकीओर फिर ऐसेजाते हैं जैसे कि बर्षाऋतुमें जलके प्रवाह समुद्रकीओर जाते हैं ८ बड़े २ पराक्रमी बड़े धनुषधारी सिंहनादोंको करते शंखोंको बजाते और शत्रुओंको चलायमान करतेहुये चलेजाते हैं ६ मैं कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर को मृत्युके मुखमें वर्त्तमान मानताहूं और उस कुन्ती के पुत्रको दुर्योधनकी आधीनतामें वर्त्तमानहोकर अग्निमें होमाहुआ बिचार करताहूं १० हे अर्जुन फिर दुर्योधनकी सेना इसप्रकारकीहै कि इसके बाणलक्षमें वर्त्तमानहोकर समर्थभी नहीं बचसक्ताहै ११ युद्ध में बाणों के समूहों को शीघ्र छोड़नेवाले यमराज के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बीर दुर्योधन के बेगको कौन सहसक्ता है १२ बीर दुर्योधन अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और कर्णके बाणोंकावेग पर्वतोंकाभी तोड़नेवाला है १३ शत्रुओंका संतप्त करनेवाला पराक्रमी हस्तलाघवी कर्म कर्त्ता युद्धमें कुशल राजा युधिष्ठिर कर्ण के हाथसे मुख मोड़नेवाला होचुकाहै और बड़े शूरवीर धृतराष्ट्रके पुत्रों समेत कर्ण युद्धमें युधिष्ठिरको पीड़ामान करनेको समर्थहै १४।१५ युद्ध में लड़नेवाले प्रशंसनीय बुद्धि उस युधिष्ठिरके पराजय होनेका गुमान इन और अन्य महारथियोंकोभी प्राप्तहै १६ क्योंकि यह भरतवंशियों में श्रेष्ठ ब्रत करनेवाला समर्थ राजा युधिष्ठिर ब्राह्मणोंके क्षमा आदि पराक्रमों में नियतहै यह क्षत्री धर्म्मरूप पराक्रम में अर्थात् कठोर प्रकृति आदि में नियत नहींहै १७ निश्चय करके कर्णके साथ भिड़े हुये शत्रुहन्ता युधिष्ठिर बड़े संशयमें प्राप्तहुआ है १८ हे अर्जुन जोकि असहन शील भीमसेन शत्रुओंके सिंहनादों को सहरहा है इससे मैं अनुमान करताहूं कि महाराज युधिष्ठिर जीवतेहुये नहींहैं १६ हे भरतर्षभ युद्धमें बिजयसे शोभायमान बारम्बार गर्जते और शंखोंको बजातेहुये २० यह कर्ण बड़े पराक्रमी उन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको प्रेरणा करताहै कि तुम पांडव युधिष्ठिर को मारो २१ हे अर्जुन महारथीलोग इन्द्रजालरूप स्थूणा कर्णनाम

गान्धर्व अस्त्र वा पाशुपति अस्त्र और बाणों के जालोंसे राजाको ढकरहे हैं २२ हेभरतवंशी अर्जुन राजा युधिष्ठिर ऐसा व्याकुलकर दियाहै जैसा कि यह पांचालदेशी अश्वत्थामाने कियाथा पांडवों समेत सब शूरबीर इसकेपीछे हुयेहैं इसीप्रकार तुमसेभी यहराजा रक्षा करनेकेयोग्य है २३ सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी शीघ्रता के समय शीघ्रता करनेवाले शूरबीर उसपातालमें डूबेहुयेकेसमान युधिष्ठिरको निकालनेकी इच्छा कररहेहैं २४ राजाकी ध्वजानहीं दिखाई देतीहै हेअर्जुन वह राजा नकुल, सहदेव, सात्यकी और शिखण्डीके देखतेहुये कर्णके बाणोंसे मारागया २५ हेभरतवंशी समर्थअर्जुन वह राजा धृष्टद्युम्न, भीमसेन, सतानीक औरसबपांचाल वा चंदेरीदेशियोंके देखतेहुये मारागया २६ हे अर्जुनयहकर्णबाणोंसे पांडवोंकी सेनाको ऐसे माररहा है जैसे कि कमलके बनोंको हाथी मारता है २७ हे पांडुनन्दन यह आपके रथी भागते हैं हेअर्जुन देखो २ यह महारथी जातेहैं २८ हेभरतवंशी यहहाथी कर्णकेबाणों से घायल और पीड़ित होकर शब्दोंको करते हुये दशों दिशाओंको भागतेहैं २९ हे अर्जुन शत्रुओंके पराजय करने वाले कर्णसेयुद्धमें भगाये हुये यह रथोंके समूह चारों ओरसे भागते चले जातेहैं ३० हे ध्वजाधारियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन कर्णके रथपर नियत हाथीकी कक्षा का चिह्न रखनेवाली और जहां तहां युद्धमें घूमने वाली ध्वजा को देखो ३१ यह कर्ण हजारों बाणोंको बरसाता तुम्हारी सेनाको मारता हुआ भीमसेनके रथपर दौड़ताहै ३२ इनभगाये हुये महारथी पांचालोंको ऐसा देखो जैसे कि महायुद्धमें इन्द्र से भगायेहुये दैत्य होतेहैं ३३ यह कर्ण युद्धमें पांचाल पांडव और सृञ्जियों को बिजयकरके तेरे निमित्त सब दिशाओंको देखताहैयहमेरा पक्काअनुमानहै ३४ हे अर्जुन यह कर्ण उत्तम धनुष को खैंचता हुआ ऐसा शोभायमानहै जैसे कि देवगणोंसे व्याप्त शत्रुओं को विजयकरके इन्द्र शोभायमान होताहै ३५ यहसबकौरव कर्णके पराक्रमको देख कर गर्जते हुये शब्दोंको करतेहैं और युद्धमें चारों ओरसे पांडव

और सृंजियोंको डरतेहैं ३६ हे प्रशंसा देनेवाले यह कर्ण युद्धमें सब आत्मासे पांडवों को भयभीत करके सब सेनाके मनुष्यों को बोला ३७ हे कौरव्य तुम्हाराकल्याणहो तुमशीघ्रचलकर सन्मुखताकरो जिससे कि कोई सृंजी युद्धमें तुम्हारे हाथसे जीवता बचकर न जावे तुम शस्त्रोंको धारणकिये सावधानी से युद्धकरो और हम पीछे की ओर से चलतेहैं यह कर्ण इस रीति से कहकर पीछे की ओर से बाणोंको मारता हुआ चलागया ३८। ३६ हे अर्जुन श्वेत छत्रसे शोभायमान कर्णको देखो वह ऐसा मालूम होताहै जैसे कि चन्द्रमा से शोभायमान उदयाचल पर्व्वत होताहै ४० हेभरतवंशी अर्जुन पूर्ण चन्द्रमाके समान शोभायमान सौ शलाका रखने वाले मस्तक पर धारण किये हुये छत्रसमेत ४१ यह कर्ण तुझको सकटाक्ष देखता है निश्चय करके यह बड़ी तीव्रतामें नियत होकर युद्धमें आवेगा ४२ हे महाबाहु बड़े युद्धमें वृहत् धनुषको चढ़ाने वाले बिषैले सर्पोंके समान बाणोंके छोड़नेवाले इसकर्णको देखो ४३ हे शत्रुसंतापी अर्जुन यह कर्ण तुझसे युद्ध करनेकीइच्छा करता हुआ तेरी बानरी ध्वजाको देखकर लौटा ४४ यह अपने मरनेके लिये ऐसे आताहै जैसे कि शलभ नाम पक्षी प्रकाशमान अग्नि के मुखमें जाताहै हेभरतवंशी रथकी सेना समेत रक्षाकरने का अभिलाषी दुर्य्योधन अकेले कर्णको ही देखकर लड़ताहै इन सब समेत इस दुष्ट अन्तःकरण वाले दुर्य्योधन को बड़े विचार पूर्वक उपायों से मारना चाहिये ४५। ४६ हे उच्चाभिलाषी शस्त्रोंको अच्छी रीति से जाननेवाले युद्धाभिलाषी यश राज्य औरउत्तम सुखको चाहने वाले तेरे हाथ से मारने के योग्य है ४७ हेराजा जैसे कि देवासुरोंके युद्धमें देवता और दानवों के युद्ध होतेहैं इसीप्रकार हेभरतर्षभ अत्यन्त क्रोधयुक्त तुझको और कर्णको देखकर ४८ यह क्रोधयुक्त दुर्य्योधन अपनेको बुद्धिमान् बिचारकर उत्तरको नहीं पाताहै ४६ हे कुंतीके पुत्र तुम धर्मात्मा युधिष्ठिरकेसाथ अपराध करनेवाले आसन्नमृत्यु कर्णकेसन्मुख शीघ्र

होजाओ ५० और बुद्धिको प्रबल करके इस महारथी के सन्मुख चलो हे रथियों में श्रेष्ठ यह पांच महापराक्रमी और तेजस्वी उत्तम रथी ५१ पांचहजार हाथी और दशहजार घोड़ोंसमेत हजारों शूरवीरोंको साथलिये५२अयुतोंपदातियोंसे युक्तहोकरआतेहैं हेवीर परस्परमें रक्षित सेना तेरे सन्मुख आतीहै ५३ हेभरतर्षभ तुम आप चलकर इस बड़े धनुषधारी कर्णकोदर्शनदो और बड़ीतीव्रता में नियतहोकर सन्मुख जाओ५४यह अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर कर्ण पांचालोंके सन्मुख दौड़ताहै मैं इसकी ध्वजाको धृष्टद्युम्नके रथपर देखताहूं ५५ हेशत्रुसंतापी मैं मानताहूं अर्थात् अनुमान करताहूं कि यह पांचालोंके सन्मुख जाताहै हेअर्जुन अब मैं उस तेरी अभीष्ट प्रियवार्त्ताको कहताहूं ५६ कि यह श्रीमान धर्मकापुत्र राजा युधिष्ठिर आनन्दपूर्ब्बक कुशलसेहै और यह महाबाहुभीमसेन सेनाके मुखसे निवृत्तहुआ लौटाहै ५७ और वह भरतबंशी संजियोंकीसेना सात्विकीसेयुक्तहै यह कौरवयुद्धमें तीक्ष्णधार बाणोंसे मररहेहैं५८ हेअर्जुन महात्मा पांचालोंसे और भीमसेनकेहाथ से दुर्योधन की सेनायुद्धमें मुखोंको मोड़मोड़कर५६ भीमसेनके बाणोंसे घायलहोकर बड़ी शीघ्रतासे भागतीहै और टूटे कवच रुधिरसे लिप्त शरीरवाली ६० महादुखी भरतबंशियोंकी सेना दिखाईदेतीहै हे भरतर्षभ अर्जुन इस शूरबीरोंकेस्वामी फैलेहुये भीमसेनको देखोकि यहविषैलेसर्पकी समान क्रोधयुक्त सेनाका भगानेवाला है हेराजा यह लाल पीले काले औरश्वेत सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रोंसे शोभायमान ६१।६२ अलंकृत पताका और छत्रगिरतेहैं मुखन मोड़नेवाले और नाना प्रकारके बर्णवाले पांचालोंके बाणोंसेघायल और निर्जीवहोकर यह रथीअपने२रथोंसे गिरतेहैं ६३।६४ हेअर्जुन बेगवान पांचाल मनुष्य हाथीघोड़े और रथोंसेजुदे धृतराष्ट्रके पुत्रों केसन्मुखजातेहैं और नरोत्तम भीमसेनसे रक्षित होकर ६५।६६ वह अजेय पांचाललोग अपने२ प्राणोंकी आशाछोड़२शत्रुओंको मर्द्दनकरतेहैं हे शत्रुबिजयी यह सब पांचाल प्रसन्नहो होकर शंखोंको बजातेहैं ६७ और युद्धमें

बाणोंसे शत्रुओंको मर्दन करतेहुये दौड़तेहैं इन अपने शूरवीरोंके साहसको देखोकि पांचाल देशी शूर अपने पराक्रमोंसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंकोऐसे मारतेहैं ६८ जैसेकि क्रोधयुक्त सिंह हाथियों को मारते हैं शस्त्रोंसेरहितशूरबीर शस्त्रधारीशत्रुओंके शस्त्रकोकाटकर६९उसी-से इन फलयुक्त शस्त्रधारियों को मारते हुये गर्जनाओंको करतेहैं शत्रुओंके शिर और भुजाभी गिरायी जाती हैं ७० रथ हाथी घोड़े और युद्धके सबबीर लोग शूरताके उत्पन्न करनेवाले शब्दोंकोकर-रहेहैं और यह दुर्य्योधन की बड़ीसेना सबओरको पांचालों के सन्मुख ऐसेवर्त्तमानहै ७१ जैसेकि वेगवान् हंसोंसे चारों ओरको व्याप्त श्रीगंगाजी होती हैं श्रेष्ठोंमेंभी अतिश्रेष्ठ वीरकृपाचार्य्य और कर्ण आदि यह सब पांचालों के रोकने में कठिनपराक्रम करनेवाले हुये और भीमसेनके अस्त्रोंसे पराजित महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रोंको देखो ७२ । ७३ और शत्रुओंके हाथसे पांचालोंके परा-जय होनेपर निर्भय होकर गर्जनेवाले धृष्टद्युम्न आदि बीरहजारों शत्रुओंको मारतेहैं ७४ बायुका पुत्र भीमसेन शत्रुओंके पक्षोंको भगाकर बाणोंकी वर्षाकरताहै और धृतराष्ट्र की बड़ीसेना महाव्या-कुल है ७५ और यह रथीभी भीमसेन के भयसे अत्यन्त पीड़मान होकर भयभीत हैं देखो भीमसेन के नाराचोंसे घायल होकर यह हाथीऐसे गिरतेहैं ७६ जैसे कि इन्द्र के बज्रसे टूटे हुये पर्व्वतोंके शिखर गिरते हैं भीमसेन के गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से घायल यह बड़े २ हाथी अपनी सेनाओंको कुचलते दाबते हुये इधर उधरको भागतेहैं भीमसेन कासिंह बड़ेदुःख से सहनेकेयोग्य जानो७७।७८ हे राजादण्डधारी यमराजके समान क्रोधयुक्त तोमरोंसे भीमसेन के मारने की इच्छासे यह निषादकापुत्र इसयुद्ध में गर्जने वाले और बिजयसे शोभायमान बीरभीमसेनके सन्मुख आताहै इसकी दोनोंभुजाओंको उसगर्जनेवाले भीमसेनने तोमरसे काटडाला ७९। ८० और देदीप्य अग्नि और सूर्य्यके समान प्रकाशित दशबाणों से मारडालाइसको मारकर अब प्रहार करनेवाले दूसरे हाथियों

के सन्मुख आताहै ८१ सवारों समेत सवारियोंको और नीलेबा-
दलोंके समान हाथियोंको शक्ति और तोमरोंसे मारनेवाले भीम-
सेनको देखो ८२ हेराजा तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उन सात २ हा-
थियोंको वैजयन्ती ध्वजाओंको काटकर तेरे बड़े भाई भीमसेन
ने मारडाला ८३ दश २ नाराचोंसे एक २ हाथी मारागया इसीसे
धृतराष्ट्रके पुत्रोंकेशब्द नहीं सुने जातेहैं हे भरतर्षभ इसीप्रकारयुद्ध-
में इन्द्रके समान भीमसेन के लौटनेपर क्रोधयुक्तनरोत्तम भीमसेन
के हाथसे दुर्य्योधन की तीन अक्षौहिणीसेना घायल और रोकीगई
संजय बोलेकि भीमसेनके उन कठिनकर्मोंको देखकर ८४।८५।८६
अर्जुनने शेषबचेहुयेशत्रुओं को तीक्ष्ण धारबाणों से छिन्न भिन्न कर
दिया हे प्रभुवह संसप्तकोंके समूह युद्धमें घायल और भयभीत
होकर दशोंदिशाओं मेंबिभागित होकर भागे और इन्द्रके आतिथ्य
को पाकर शोकसे रहितहुये ८७। ८८ पुरुषोत्तम अर्जुनने टेढ़ेपर्व्व
वाले बाणोंसे दुर्य्योधन कीचतुरंगिणी सेनाकोमारा ८९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे षष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोलेकि पांडव भीमसेनऔर युधिष्ठिरके लौटने और
पांडव वा सृञ्जियोंके हाथसे मेरीसेनाके मरने १ अथवा अप्रसन्न
ता पूर्व्वक सेनाकेसमूहों के बारंबारभागनेपर हे संजय मुझको
समझाकर कहो कि कौरवोंने क्या २ किया संजय बोलेकिहेराजा
क्रोधसे रक्तनेत्रवाला प्रतापवान कर्ण महाबाहुभीमसेनको देखकर
उसके सन्मुख गया ३ और उस पराक्रमी भीमसेन से मुखफे-
रीहुई आपके पुत्रकी सेनाकोदेखकर बड़ीयुक्ति और उपायसे नियत
तकिया ४ वह महाबाहु कर्णआपके पुत्रकी सेनाको नियत करके
युद्धमेंदुर्मद पांडवोंके सन्मुख गया ५ फिर युद्धभूमि में धनुषोंको
चढ़ाकर शायकों को छोड़ते पांडवों के महारथीलोग कर्णके सन्मु-
खगये ६ उनके नामयहहैं भीमसेन, सात्विकी, शिखण्डी, जन्मेजय

पराक्रमी धृष्टद्युम्न और सब प्रभद्रक नाम नरोत्तम क्षत्री ७ मारने की इच्छासे अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धके शोभा देनेवाले आपकी सेनाके सन्मुख गये ८ हेराजा इसीप्रकार मारने के इच्छावान शीघ्रता करनेवाले आपके भी महारथी पांडवोंकी सेनाके सन्मुख गये ९ हे पुरुषोत्तम रथ हाथी घोड़े पति और ध्वजाओंसेयुक्त वह सेना अपूर्व देखनेमें आई १० हेमहाराज शिखण्डी कर्णके सन्मुख गया धृष्टद्युम्न उसआपकेपुत्र दुश्शासन के सन्मुखगयाजोकि बड़ी सेनाको साथ लिये हुयेथा ११ हेराजा नकुल वृषसेन के युधिष्ठिर चित्रसेन के और सहदेव उलूक के सन्मुख गया १२ सात्विकी शकुनि के द्रौपदीके पुत्र कौरवोंके और युद्धमें कुशल अश्वत्थामा अर्जुनके सन्मुख गया १३ कृपाचार्य्य युद्धमें बड़े धनुषधारी युधामन्युके और पराक्रमी कृतवर्मा उत्तमौजाके सन्मुख गया १४ हे श्रेष्ठ फिर महाबाहु अकेले भीमसेनने सब कौरवों समेत सेनाको साथ रखने वाले आपके पुत्रोंको रोका १५ हेमहाराज इसके अनन्तर भीष्मजी के मारनेवाले शिखण्डीने उस निर्भय के समान घूमने वाले कर्णकोरोका १६ उसकेपीछे रुकेहुये और क्रोधसे चलायमान ओष्ठवाले कर्णने शिखण्डीको तीनबाणोंसे दोनों भृकुटियोंके मध्य में घायलकिया वह शिखण्डी उन बाणोंको धारण किये हुये ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखरोंसे उठेहुये सुबर्णके पर्वत होते हैं १७।१८ युद्धमेंकर्णके हाथसे अत्यन्तघायल बड़े धनुषधारी शिखण्डीने तीक्ष्णधारवाले नब्बेबाणोंसे कर्णको पीड़ामान किया १९ फिर महारथी कर्णने तीनबाणोंसे सारथीको मारकर क्षुरप्रसे उसकी ध्वजाको काटा २० शत्रुओंके संतप्त करनेवाले महारथी शिखंडीने मृतक घोड़ोंके रथसे उतरकर अपनीशक्तिको कर्णकेऊपर फेंका २१ हे भरतवंशीफिर कर्णने तीनशायकों से उस शक्तिको काटकर तीक्ष्ण बाणोंसे शिखण्डीको घायलकिया २२ इसके पीछे अत्यन्त व्याकुल शिखण्डी कर्णके धनुषसे निकलेहुये बाणोंको रोकताहुआ शीघ्रही हटगया २३ हे महाराज इसकेपीछे कर्णने

पांडवी सेनाको ऐसा भिन्न २ करदिया जैसेकि बड़ा पराक्रमी वायु रुईके ढेरोंको तिरविरं करदेता है २४ फिर आपके पुत्रके हाथसे पीड़ामान धृष्टद्युम्नने तीन बाणोंसे दुश्शासनको छातीपरछेदा २५ फिर दुश्शासनने उसकी बाईंभुजाको छेदा हे भरतबंशी सुनहरी पुंख टेढ़े पर्ववाले भल्लसे घायल २६ क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने घोर-बाणको दुश्शासनके ऊपर फेंका २७ हेराजा आपके पुत्रने धृष्ट-द्युम्नके चलाये हुये बड़े वेगवानबाणको तीनबाणोंसे काटकर २८ सुनहरे अंगवाले सत्रह भल्लोंसे धृष्टद्युम्नको दोनोंभुजा और छाती पर घायलकिया २९ इसकेपीछे उसक्रोधभरे धृष्टद्युम्नने अत्यन्त तीक्ष्णक्षुरप्रसे दुश्शासनके धनुषकोकाटा तबतो मनुष्य पुकारे ३० इसकेपीछे हंसतेहुये आपके पुत्रने दूसरे धनुषको लेकर बाणोंके समूहोंसे धृष्टद्युम्नको चारोंओरसे रोका ३१ वह सब शूरवीर और सिद्धोंसमेत अप्सराओंके समूह आपके पुत्रके पराक्रमको देखकर युद्धमें आश्चर्य्य सा करनेलगे ३२ उपायकरनेवाले बड़े पराक्रमी दुश्शासनसे रुकेहुये धृष्टद्युम्नको ऐसे नहींदेखा जैसे कि सिंहसे रुकेहुये बड़ेहाथीको नहीं देखते ३३ हे पांडुके बड़ेभाई इसके पीछे सेनापतिके चाहनेवाले पांचालोंने रथहाथी और घोड़ों समेत आपके पुत्रकोरोका ३४ हेशत्रु संतापी इसके पीछे आपके शूरबीरों का युद्धदूसरों के साथहोनेलगा वह युद्ध महाघोर भयानकरूप और समय पर प्राणोंका हरनेवाला था ३५ पिताके सन्मुख नियत वृषसेनने पांचलोहेके बाणोंसे और तीनअन्यबाणों से नकुलको छेदा ३६ इसके पीछे हंसतेहुये शूरबीर नकुलने अत्यंत तीक्ष्ण नाराचसे वृषसेनको हृदय पर कठिन पीड़ामान किया ३७ परा-क्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल उसशत्रुओंके पराजय करनेवा-लेने बीसबाणोंसे शत्रुको पीड़ामानकिया और उसनेभी उसकोपांच बाणोंसे व्यथितकिया ३८ उसके पीछे उनदोनों पुरुषोत्तमों ने हजारों बाणोंसे परस्पर ढकदिया तदनन्तर सेना छिन्नभिन्न होग-ई ३९ हे राजा कर्णने दुर्योधनकी भागीहुई सेना को देखकर

उनको पीछे से जाकर रोका ४० इसके पीछे कर्णके लौटने परन-
कुल कौरवोंकी ओर चला फिर कर्णके पुत्रने युद्धमें नकुलकोछोड़-
कर ४१ फिर शीघ्रतासे कर्णकीही सेनाको रक्षित किया वहां क्रोध-
युक्त उलूकको युद्धमें प्रतापवान सहदेवने रोककर ४२ उसकेचारों
घोड़ोंको मार सारथीको यमलोक में पहुंचाया हेराजा इसके पीछे
पिताको प्रसन्न करनेवालाउलूक रथसे उतरकर शीघ्रही त्रिगर्त्त
देशियोंकी सेनामें गया ४३ और हंसते हुये सात्विकीने तेजधार
वाले बीसबाणोंसे शकुनिको छेदकर एकबाणसे उसकी ध्वजाकोका-
टा ४४ हे राजा फिर क्रोधयुक्त प्रतापवान शकुनी ने युद्धमें उसके
कवचको चीरकर उसकी सुनहरीध्वजाको काटा ४५ इसके पीछे
शीघ्रता करनेवाले सात्विकीने बाणोंसे उसके घोड़ोंको यमलोक
में पहुंचाया हे भरतर्षभ फिर शकुनी अकस्मात रथसे कूदकर
शीघ्रही ४६ । ४७ महात्मा उलूकके रथपर सवारहुआ तब युद्धको
शोभा देनेवाले सात्विकी ने उसको शीघ्रही हटाया ४८ हे राजा
फिर सात्विकी आपकी सेनाके सन्मुख गया और सेना भिन्न
भिन्न होगई ४९ सात्विकी के बाणोंसे ढकीहुई आपकी सेना
के लोग शीघ्रही दशों दिशाओं में भागकर निर्जीवों के समान
गिरपड़े ५० फिर आपके पुत्रने युद्धमें भीमसेनकोरोका तबभीम-
सेनने एकमहूर्त्त भरमेंही वहां उस पृथ्वीके राजा दुर्योधनको
घोड़े रथ सारथी और ध्वजासे रहित करदिया ५१ उसकर्म से सब
मनुष्य प्रसन्नहुये इसके पीछे राजा दुर्योधन भीमसेनके आगेहट-
गया ५२ फिर सब कौरवी सेनाने भीमसेनको घेरा वहां भीमसेनके
मारने के इच्छावान शूरबीरोंके बड़े शब्दहुये ५३ युधामन्युने
कृपाचार्यको छेदकर शीघ्रही उनके धनुषको काटा इसके पीछे
शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्यने दूसरे धनुषको लेकर ५४
युधामन्युकीध्वजा सारथी और छत्रको पृथ्वीपर गिराया इसके
पीछे महारथी युधामन्यु रथकी सवारीसे हटगया ५५ उत्तमौजाने
भयानकरूप और भयानक पराक्रम वाले कृतवर्माको बाणों से

अकस्मात ऐसा ढकदिया जैसेकि बादल पानीकी वर्षासे पर्व्वतको ढकदेताहै ५६ हे शत्रुसंतापी राजा धृतराष्ट्र वह महाघोर युद्धऐसा बहुत बड़ाहुआ जैसाकि मैंने पहले कभी न देखाथा ५७ इसके पीछे कृतवर्माने युद्धमें उत्तमौजसको हृदयपर पीड़ामान किया तब वह अकस्मात रथके अंगपर बैठगया ५८ फिर सारथीरथके द्वाराउस महारथीको दूरलेगया इसकेपीछे सब कौरवीसेना भीमसेनकेऊपर चढ़आई ५६ दुश्शासन और शकुनीने हाथियोंकी बड़ीसेना समेत भीमसेनको घेरकर क्षुरप्र नामबाणोंसे घायलकिया ६० तब क्रोध-युक्त भीमसेन सैकड़ों बाणोंसे क्रोधयुक्त दुर्य्योधनको बिमुख करके बड़ी तीव्रतासे हाथियोंकी सेनापर आटूटा ६१ वहां अत्यन्तक्रोध-युक्त भीमसेनने उसअकस्मात आनेवाली हाथियोंकी सेनाकोदेख-कर दिव्यअस्त्रको प्रकट किया ६२ हाथियोंको हाथियोंसे ऐसेमारा जैसेकि बज्रसे इन्द्र असुरोंको मारताहै ६३ इसकेपीछे युद्धकेबीच हाथियोंको मारतेहुये भीमसेननेबाणोंके समूहोंसे आकाशको ऐसा ढकदिया जैसेकि टोड़ियोंसे वृक्ष ढकजाताहै इसकेपीछे भीमसेनने मिलेहुये हाथियोंके हजारों झुण्डोंको बड़ेवेगसेऐसे छिन्न भिन्नकर-दिया जैसेकि बादलोंके समूहोंको बायु तिर्र बिर्र करदेताहै सुवर्ण और मणियोंकेजालोंसे ढकेहुयेहाथी ६४।६५ युद्धमें ऐसे अधिक शोभायमानहुये जैसेकिबिजली रखनेवाले बादल हेराजाभीमसेन के हाथसे घायल होकर सबहाथी शब्द करतेहुयेभागे ६६ कितने ही हाथी हृदयमें घायलहोकर पृथ्वीपरगिरपड़े उन गिरेहुयेसुवर्ण भूषणोंसेअलंकृत हाथियों से ६७ वहां पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसेकि फैलेहुये पर्बतोंसे प्रकाशित मुखवाले रत्नों से अलंकृत गिरनेवाले हाथियोंके सवारोंसे होतीहै ६८ अथवा पृथ्वी ऐसी मालूमदेतीथी जैसेकि क्षीणपुण्यवाले ग्रहोंके गिरनेसे शोभायमान होतीहै इसकेपीछे मदझाड़नेवाले टूटेहुये मुखवालेसैकड़ों हाथीभीम-सेनके बाणोंसे घायलहोकर युद्धसेभागे भयसे पीड़ित बाणोंसे घा-यलअंगरुधिरको बमनकरनेवाले पर्ब्बताकार अनेकहाथी ६६।७०

धातुयुक्तपर्व्वतोंके समानभागे हमने भीमसेनकी दोनोंधनुषखैंचने-
वाली भुजाओंको बड़ेसर्पकी समान चन्दन अगरसे अलंकृत देखा
और उसके वज्रके समान शब्दवाले ज्याशब्दको सुनकर ७१। ७२
मूत्र विष्ठाको करतेहुये हाथी बड़े कठिनशब्दों को करते हुये भागे
हेराजा उस अकेले बुद्धिमान भीमसेनका वहकर्म ७३ इसरीति का
शोभितहुआ जैसेकि सबजीवोंके मारनेवाले रुद्रजीकाहोताहै ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे एकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर श्वेतघोड़ोंसे युक्त और श्रीनारायण-
जीके थांवेहुये उत्तम रथपर नियत श्रीमान् अर्जुन आकर सन्मुख
हुआ १ हेभरतर्षभ अर्जुनने युद्धमें आपकी उसबड़ी घोड़ोंवालीसेना
को ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसेकि बायुबड़े समुद्रको उथल पुथल
करदेताहै २ अर्जुनके प्रमत्त होनेपर आधीसेनाको साथ लियेहुये
आपके पुत्र दुर्य्योधनने अकस्मात् सन्मुख आकर ३ आते हुयेक्रोध-
युक्त युधिष्ठिरको रोककर तिहत्तरबाणों से घायल किया ४ तबतो
कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर बड़े क्रोधयुक्तहुये और शीघ्रही उसने बीस
भल्लोंको आपके पुत्रके शरीरमें प्रविष्ट किया ५ इसकेपीछे युधि-
ष्ठिरकेपकड़नेकी इच्छासे कौरव दौड़े तब महारथीलोग शत्रुओंका
दुष्ट बिचार जानकर ६ उसकुन्तीके पुत्रयुधिष्ठिरको चाहतेहुये सब
आनकर इकट्ठे होगये नकुल सहदेव और पर्षतका पौत्रधृष्टद्युम्न
एक अक्षौहिणी सेना समेत युधिष्ठिरके पासदौड़े ७ और युद्धमें
आपके महारथियोंको मर्दन करताहुआ भीमसेनभी शत्रुओंसेघि-
राहुआ ८ राजाको चाहताहुआ दौड़ा हेराजा सूर्य्यके पुत्रकर्णने उन
आनेवाले सब बड़े धनुषधारियोंको ९ बाणोंकी वर्षासे रोका और
बाणोंकीबर्षा करते तोमरोंको चलाते १० वह उपायकरनेवाले लोग
भीकर्णकीओरदेखनेको समर्थनहींहुये फिरकर्णनेउन सबशस्त्रकुशल
बड़े२ धनुष धारियोंको ११ बड़ी बाणोंकी बर्षा करके रोका और शीघ्र

अस्त्रके प्रकट करनेवाले प्रतापी सहदेवने दुर्य्योधनके सन्मुखहोकर शीघ्रही बीसबाणोंसे छेदा सहदेवके हाथसे घायल पर्व्वतके समान राजादुर्य्योधन १२।१३ मदोन्मत्त हाथीकेसमान रुधिरसे लिप्तहुआ फिरवहां बाणोंसे घायलहुये आपके पुत्रकोदेखकर १४ रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण क्रोधित होकर दौड़ा तब दुर्य्योधनको देखकर शीघ्रही अस्त्रको प्रकटकिया १५ उसअस्त्रसे युधिष्ठिरकी सेनासमेत धृष्टद्युम्नको घायल किया इसके पीछे महात्मा कर्णकेहाथसेघायल और पीड़ामान युधिष्ठिरकी सेना अकस्मात्भागी १६ हेराजा वहां नानाप्रकारके बाणपरस्परमें फेंकेगये १७कर्णके धनुषसे निकले हुये बाणोंने भल्लोंसे पुंखोंको काटा हेराजा अन्तरिक्षमें परस्पर गिरनेवाले बाण समूहोंकी१८ घिसावटसेअग्नि उत्पन्न हुई इसके पीछे कर्णने चलनेवालीटीड़ियोंकेसमान शत्रुकेशरीरमें प्रवेशकरजाने वाले बाणोंसे बड़े बेगयुक्त होकर दशोंदिशाओंका आच्छादितकरदियालालचन्दनसेचर्चितसुबर्ण और मणियोंसेअलंकृत१९।२०भुजाओंको उत्तमअस्त्रकेदिखानेवाले कर्णनेचेष्टावान्कियाइसके अनन्तर अपनेशायकोंसे सबदिशाओंको ब्याप्तकरके २१ कर्णने धर्मराज युधिष्ठिर को बहुत पीड़ित किया इसकेपीछे क्रोधयुक्त धर्मके पुत्र युधिष्ठिरने २२ तीक्ष्ण पचास बाणोंसे कर्णको घायलकिया वह युद्धभूमि बाणोंसेअन्धकार युक्त होकरमहाभयकारीदिखाईदी २३हे श्रेष्ठराजा धृतराष्ट्रतबधर्मपुत्रकेहाथसेसेनाकेघायलहोजानेपर आपके शूरबीरोंनेबड़ा हाहाकारकिया २४फिर कंकपक्ष वालेअनेक शायक तीक्ष्णधारवाले बहुतसे भल्ल नानाशक्ति दुधारे खड्ग और मुशलों से उस धर्मात्माने जहां जहां अपने क्रोधको प्रकटकिया हेभरतर्षभ तहांतहां आपके शूरबीर छिन्नभिन्न होगये २५।२६ फिर अत्यन्तक्रोध युक्त कर्णनेभी धर्मराज युधिष्ठिरको नाराच अर्द्धचन्द्र और वत्सदन्तनाम बाणोंसे घायलकिया २७ वह अशान्तचित्त क्रोधयुक्त महासाहसी कर्ण क्रोधसे ओठोंको चबाताहुआ शायकोंको लेकर युधिष्ठिरकेपास गया २८ तब युधिष्ठिरने उसको सुनहरी पुंखवाले

सौ बाणोंसे घायलकिया फिर हंसतेहुये कर्णने तीक्ष्ण कंकपक्षसे जटित २६ तीनभल्लोंसे उस युधिष्ठिरको छातीपर घायलकिया उससे अत्यन्त पीड़ामान राजायुधिष्ठिर ३० रथके अंगपर बैठकर सारथीसे कहनेलगा कि चल तदनन्तर सब धृतराष्ट्र के पुत्र और राजालोग पुकारे ३१ कि राजाको पकड़ो यह कहकर सब दौड़े उसकेपीछे प्रहार करनेवाले केकय देशियोंके एकहजार सातसौ रथियोंने ३२ पांचालों समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको रोका और ३३ मनुष्योंके नाशकारी उस कठिन युद्धके जारीहोनेपर बड़े पराक्रमी भीमसेन और दुर्य्योधन परस्परमें सन्मुखहुये ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि कर्णने आगे नियत होनेवाले महारथी केकयदेशियोंकोअपने बाणजालोंसे छिन्नभिन्न करदिया रोकनेमेंहीउन केकयदेशियोंके पांचसौ रथोंको कर्णने यमलोकको भेजा १।२ इसके पीछेशूरबीर लोगनियतहुये कर्णको रोकनेको समर्थ होकर उसके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर भीमसेनके पासगये ३ फिर कर्ण एकही रथकेद्वाराबाणोंके बलसेरथकी सेनाओंको चीरताहुआ युधिष्ठिरके पासगया ४ अपने डेरेको जानेवाले बाणोंसे घायल शरीर धीरे २ चलनेवाले अचेतहुये नकुल और सहदेवके मध्यवर्तीवीर५ राजाको पाकर दुर्य्योधनकी प्रसन्नताकी इच्छासे कर्णने तीक्ष्ण धारवाले तीन उत्तम बाणोंसे पीड़ामानकिया और इसीप्रकारयुधिष्ठिरनेभी कर्णको छातीपर घायल करके तीन बाणोंसे सारथी को और चारबाणोंसे घोड़ोंको पीड़ामानकिया६।७फिरशत्रुसंतापीनकुल सहदेव और जो लोग कि अर्जुनकी सेनाके रक्षकथे वहसब कर्ण की ओर इस निमित्त दौड़े कि यह कहींराजाको न मारे ८ उनदोनों नकुल और सहदेवने कर्णके ऊपरबाणोंकी वर्षाकरी और बड़ेउपाय में प्रवृत्तहुये ६ इसीप्रकार प्रतापवान् कर्णनेभी उनशत्रुओंके विजयी

महात्मा दोनों नकुल और सहदेवको वड़े तीक्ष्ण भल्लोंसे घायल किया १० फिर कर्णने धर्मराजके दन्तवर्ण कालेबाल और चित्तके समान शीघ्रगामी घोड़ोंकोभीमारा ११ इसकेपीछे वड़े धनुषधारी हंसतेहुये कर्णने दूसरे भल्लसे युधिष्ठिरके छत्रको गिराया १२ इसीप्रकार प्रतापी वुद्धिमान् कर्णने नकुलके भी घोड़ोंको मारकर उसके रथकेईशा और धनुषकोकाटा १३ तब मृतक घोड़े और टूटे रथवाले अत्यन्त घायल वह दोनोंभाई सहदेव के रथपर सवार हुये वहांशत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला मामाशल्य उन दोनोंको विरथ देखकर १४ करुणा करके कर्ण से बोला कि हे कर्ण तुझ को पांडव अर्जुन से लड़ना चाहिये १५ तू अत्यन्त क्रोधरूप होकर धर्मराज के साथ क्यों लड़ताहै शस्त्र अस्त्र कवचबाण और तूणीर से रहित १६ रथके सारथी और घोड़ेवाला होकर यह शत्रुओंके अस्त्रोंसे टूटेअंगहैं तुम अर्जुनको पाकर हास्य के योग्य होगे १७ इसरीतिके शल्यके बचनको सुनकर क्रोधयुक्त कर्णनेवैसी दशामेंभी युधिष्ठिरको घायलकिया १८ और पांडव नकुल और सहदेवको तीक्ष्णबाणोंसे छेदा फिर कर्णने हंसकर बाणोंसे उनका मुखफेरदिया १९ इसकेपीछे उसक्रोधयुक्त युधिष्ठिरके मारनेमें प्रवृत्त कर्णको शल्यने हंसकर फिरयह बचनकहाकि हे कर्ण आपको दुर्य्योधनने जिस प्रयोजनकेलिये प्रतिष्ठित कियाहै २० उस अर्जुन कोमारो युधिष्ठिरके मारनेसे तेराक्यालाभ होगा २१श्रीकृष्ण और अर्जुनके बड़ेशंखोंके यहबड़े शब्द और धनुषका यह शब्द ऐसा सुना जाताहै जैसेकिबर्षाऋतु में बादलोंके शब्द होतेहैं २२ यह अर्जुन बाणोंकी बर्षासे महारथियोंको मारता हुआ हमारी सब सेनाको निगले जाताहै हे कर्ण इसकोतुम युद्धमें देखो २३ उस शूरके पृष्ठ के रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजसहैं और इसकी उत्तरीय सेनाका सात्विकी रक्षकहै २४ इसी प्रकार धृष्टद्युम्न उसकी दक्षिण सेना का रक्षकहै और भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे युद्ध करताहै २५ सो अब हम सबके देखतेहुये वहभीमसेन जैसे उस दुर्य्योधन को नहीं

मारे और जिसप्रकार से वह छूटजाय हे कर्ण उसी प्रकार तुमको करना चाहिये २६ युद्धकोशोभा देनेवाले और भीमसेन से निगले हुये इस दुर्य्योधनको देखोजो कदाचित् तुमको पाकर यह छूटजाय तो बड़ा आश्चर्य्य होय २७ इसबड़े संशयमें पड़ेहुये दुर्य्योधन को बचाओ माद्रीके पुत्र नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर के मारनेसे क्या लाभहै २८ हेराजा कर्णने शल्यके इनवचनोंको सुनकर और महायुद्धमें भीमसेनसे पराजित दुर्य्योधनको देखकर २६ राजा का अत्यन्त चाहनेवाला और शल्यकेबचनसे चलायमान बड़ापरा क्रमी कर्णअजातशत्रु युधिष्ठिर और पांडव नकुल सह देवको छोड़ कर ३० आपके पुत्रकी रक्षा करनेको दौड़ा हेश्रेष्ठधृतराष्ट्र राजामद्र की प्रेरणासे और मानों आकाशगामी घोड़ोंके द्वारा ३१ कर्णके चलेजानेपर कुन्तीका पुत्र युधिष्ठिर और पांडवनकुल सहदेव शीघ्र-गामी घोड़ोंकेद्वारादूर चलेगये ३२ वह लज्जायुक्त राजायुधिष्ठिर बाणोंसे घायल उनदोनों भाइयों समेत शीघ्रही डेरेको पाकर ३३ बहुतशीघ्र रथसेउतरा वहां जिसके भल्ल निकालेगये वह राजायुधि-ष्ठिर हृदयके भालोंसे महापीड़ामान होकर अपने शुभ शयन पर जाकर लेटगया ३४ और लेटकर अपने महारथी दोनों भाई नकुल और सहदेवसे बोला हे पांडव तुम दोनों बहुत शीघ्र भीमसेनकी सेनामेंजाओ ३५ वहभीमसेन बादल के समान गर्जताहुआ लड़ता है इसके अनन्तर बड़े भाईकी आज्ञापाकर शत्रुओंके पीड़ा देनेवाले महातेजस्वी रथियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी दोनोंभाई नकुल और सहदेव दूसरेरथपर सवार होकर उत्तम वेग वाले घोड़ोंके द्वारा भीमसेन कीसेनाको पाकर ३६ । ३७ दोनोंभाई अपनी सेनाओं समेत वहां नियत हुये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

संजय बोले हेराजा इसके पीछे रथकी सेनाके बड़े समूहों स-

मेत अश्वत्थामा जी अकस्मात् वहां पहुंचे जहां पर अर्जुन नियत था १ श्रीकृष्णजी को साथ रखने वाले शूरवीर अर्जुनने अकस्मात् आनेवाले अश्वत्थामा को तत्क्षण ऐसे रोका जैसे किमर्य्यादा समुद्र को रोकतीहै २ हेमहाराज इसकेपीछे क्रोधयुक्तप्रतापवान् अश्वत्थामाने शायकों से श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को ढकदिया ३ इसके पीछे वहां पर महारथी कौरवोंने श्रीकृष्ण अर्जुनको ढकाहुआ देख कर बड़ा आश्चर्य्य किया ४ इसके अनन्तर हेभरतर्षभ हंसते हुये अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों को प्रकट किया तब अश्वत्थामा ने उस अस्त्र कोरोका ५ फिर अर्जुनने मारनेकी इच्छा से जिस२ अस्त्रको चलाया उस उस अस्त्रको बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने नाशकरदिया६ इसके पीछे बड़े भयकारी अस्त्रोंको युद्ध बर्त्तमान होनेपर युद्धमें हमने अश्वत्थामा को मुख फाड़ेहुये काल के समान देखा ७ उसने बाणोंसे दिशा बिदिशाओं को आच्छादित करके तीनबाणोंसे बासुदेव जीको दाहिनी भुजापर छेदा८ इसके पीछे अर्जुनने उस महात्माके सब घोड़ों को मारकर युद्धभूमिपर रुधिरों के प्रवाह वाली नदीको बहाया ६ वह भयानक नदी सबलोकको परलोक में प्राप्त करने वाली महाघोररूपीथी युद्धमें अर्जुनके धनुषसे निकले हुये बाणोंसे रथों समेत सब रथियोंको १० और अश्वत्थामा के घोड़ों को मृतक देखा और उस महाघोर शत्रुओंको परलोकमें पहुंचाने वाली नदीको इसरीति से जारी किया ११ कि उनदोनों अश्वत्थामाऔर अर्जुन के महाघोर संग्राम होनेपर अमर्य्यादासे युद्धकरने वाले शूरवीर पीछेकी ओरसे दौड़े १२ हेराजा अर्जुन ने युद्धमेंघोड़े सारथी समेत रथ वा मृतक सवार वाले घोड़े और हाथियोंके हजारों यूथोंको मारकर मनुष्योंका घोरनाश करदिया अर्जुनके धनुष सेनिकले हुये बाणोंसे हजारों रथी मरकर गिरपड़े १३।१४ और जिनघोड़ोंके योक्तछूट गये वह घोड़े जहांतहां चारोंओर को दौड़े युद्धमें शोभायमान पराक्रमी अश्वत्थामा अर्जुनके उस कर्मको देख कर १५ उस बिजयी अर्जुनके पास शीघ्रही जाकर स्वर्णमयी बड़े

धनुषको टंकारता हुआ १६ तीक्ष्ण बाणोंसे उसको चारोंओरसे ढकने लगा हेमहाराज अश्वत्थामा ने बाणोंसे अर्जुनको फिर आच्छादित करके १७ बड़ी निर्दयता पूर्व्वक उसको छातीपर अत्यन्त घायल किया हेभरतबंशी उस अश्वत्थामा के हाथसे युद्धमें अत्यन्त घायल १८ गांडीव धनुषधारी बड़े बुद्धिमान् अर्जुनने बाणों की वर्षा से अश्वत्थामा को ढककर उसके धनुष को काटा १६ तब उस टूटे धनुष वाले अश्वत्थामा ने युद्धमेंवज्र के समान स्पर्श वाली परिघकोलेकर अर्जुन के ऊपर फेंका २० हे राजा उस स्वर्णमयी आतेहुये परिघको हंसतेहुये पांडुनन्दन अर्जुनने अकस्मात् काट डाला २१ फिर अर्जुन के शायकों से वह टूटा हुआ परिघ पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि वज्रसे घायल टूटेहुये पहाड़ गिरतेहैं २२ हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी अश्वत्थामाने इंद्रास्त्र के बेग से अर्जुन को ढकदिया २३ तब उस बेगवान् पांडव अर्जुन ने उसके फैलेहुये इन्द्रजालको देखकर अपने गांडीव धनुष को लिया २४ और महाइन्द्रके उत्पन्नकिये हुये उत्तम अस्त्रकोलेकर इन्द्र जालको दूरकर के अर्जुन ने महा इंद्रकी शक्तिसे युक्त उसजालको फाड़कर एक क्षणभरमेंही अश्वत्थामाके रथको ढकदिया इसके अनन्तर अर्जुनके बाणोंसे दबेहुयेअश्वत्थामाने समीप मेंआकर२५ अर्जुनकी उस बाण दृष्टिको सहके और अपने बाणों से शत्रुकी दृष्टिके सन्मुख करके सौबाणोंसे अकस्मात् श्रीकृष्णजीको घायल करता हुआ तीन क्षुद्रकनाम बाणोंसे अर्जुनको घायल किया२६ इसके पीछे अर्जुनने सौशायकों से गुरूके पुत्रको मर्मस्थलों पर छेदा और आपके शूरबीरों के देखते हुये घोड़े सारथी कवच और धनुषको काटा २७ फिर उस शत्रुओंके मारने वाले अर्जुनने मर्मस्थलोंमें छेदकर भल्लसे उसके सारथी को रथकी नीड़से गिरादिया २८ फिर उसने आप घोड़ोंको थांभकर बाणोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुनको ढकदिया वहां हमने अश्वत्थामा के इसशीघ्र पराक्रम को देखा २९ किजिसने घोड़ोंको भी थांभा और अर्जुनसे भी युद्ध किया

हे राजा युद्धमें सब शूरबीरोंने उसके उसकर्मकी बड़ी प्रशंसाकरी ३० इसके पीछे अर्जुनने हंसकर अपने क्षुरप्रनाम बाणोंसे शीघ्रही अश्वत्थामाके घोड़ोंकी बागको काटा ३१ फिर बाणकेवेगसे पीड़ामान होकर वह घोड़ेभागे हे भरतबंशी इसके पीछे आपकी सेना का घोर शब्द हुआ ३२ फिर चारों ओरसे तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते बिजयाभिलाषी पांडव बिजयको पाकर आपकी सेनापर दौड़े ३३ हे महाराज युद्धमें बिजय से शोभायमान वीर पांडवों के हाथसे दुर्योधनकी बड़ी सेना बारंबार छिन्न भिन्न हुई ३४ तव अपूर्व युद्ध करने वाले आपके पुत्र और सौबलके पुत्र शकुनी और कर्णके देखते हुये सबभागे ३५ उससमय चारों ओरसे पीड़ामान आपके पुत्रोंसे रोकीहुई बड़ी सेना युद्धमें नियत हुई ३६ हे महाराज उसके पीछे आपके पुत्रोंकी बड़ी सेना चारों ओरसे भागने वाले शूरवीरों के कारण व्याकुल और भयभीत होगई ३७ तदनन्तर ठहरो ठहरो इस प्रकार से कर्ण के कहने परभी महात्माओं के हाथ से घायल हुई वह सेना नियत नहीं हुई ३८ हे महाराज इसके पीछे दुर्योधनकी सेनाको चारोंओरसे भागी हुई देखकर बिजयसे शोभायमान पांडवोंने बड़े शब्दकिये ३९ तब दुर्योधन बड़ी नम्रता पूर्वक कर्णसे बोला हेकर्ण देखो पांचालोंके हाथसे बड़ी सेना अत्यन्त पीड़ित होगईहै ४० तेरेनियत होनेपर भी भागी हे शत्रुबिजयी महाबाहो इसबातको समझकर उचित कर्मकरो ४१ हे पुरुषोत्तम वीर पांडवोंके हाथसे भगायेहुये हजारों शूरबीर युद्धमें तुझीको पुकारतेहैं ४२ दुर्योधनके इसबड़े बचनको सुनकर हंसताहुआ कर्णभी मद्रदेशके राजासेयह वचन बोला ४३ हे राजा अस्त्रोंसमेत मेरी दोनों भुजाओंके पराक्रम को देखो अबमें युद्धमें पांडवों समेत सब पांचालोंको मारताहूं ४४ हे नरोत्तमअब तुम कल्याणके निमित्त घोड़ोंको निस्सन्देह चलाओ हेमहाराज प्रतापी कर्णने इस बचनको कहकर ४५ विजयनाम उत्तम और प्राचीन धनुषकोलेकर प्रत्यंचा समेत बड़ी दृढ़ता से पकड़कर ४६

सच्चेप्रकारसे शूरबीरोंको रोककर उस शूर पराक्रमी और साहसी ने भार्गव अस्त्रको धनुषपर चढ़ाया इसके पीछे उस महायुद्धमेंला-खों प्रयुतों और अर्बुदों तीक्ष्णबाण धनुषसे निकले ४७। ४८ उन अग्निरूप घोरकंक और मोरके पंखोंसे जटित बाणोंसे पांडवी से-ना ऐसीढकगई कि कुछभी नहीं ज्ञानपड़ताथा ४९ हेराजा युद्धमें भार्गव अस्त्रसे पीड़ामान पराक्रमी पांचालोंका बड़ाहाहाकार हुआ ५० हेनरोत्तम राजा धृतराष्ट्र चारों ओरसे गिरतेहुये हजारोंहाथी घोड़े रथ और चारोंओरसे मृतकहुये मनुष्योंसे पृथ्वी कंपायमान हुई और सब पांडवीसेना व्याकुल हुई ५२ हे नरोत्तम शत्रुओं का तपानेवाला अकेला कर्ण शत्रुओंको भस्मकरताहुआ निर्धूम अग्नि के समान शोभायमान हुआ ५३ कर्णके हाथसे घायल वह पांचा-ल चन्देरी देशियों समेत जहां तहां ऐसे अचेत होगये जैसे कि बनके भस्म होनेमें हाथी अचेत होजातेहैं ५४ हेनरोत्तम वह उत्तम पुरुष व्याघ्रोंके समान पुकारे इसके पीछे युद्धमें उनभय-भीत पुकारने वाले ५५ और चारोंओरसे दौड़ने वालोंके ऐसेवड़े शब्द उत्पन्न हुये जैसे कि महाप्रलयमें जीवोंके शब्द होते हैं ५६ हे श्रेष्ठ फिर कर्णके हाथ से घायल उन जीवोंको देखकर पशु पक्षी जीवभी भयभीत होगये ५७ युद्धमें कर्णके हाथसे घायल वह संजय अर्जुन और बासुदेव जीको वारंवार ऐसे पुकारतेथे ५८ जैसे कि यमपुरीमें दुःखोजीव यमराजको पुकारतेहैं कर्णके शायकोंसे घायल होनेवालोंके शब्दोंकोसुनकर ५९ कुन्तीकापुत्र अर्जुन वहांपर छोड़हुये भार्गवास्त्रको देखकर बासुदेवजीसे बोला ६० हेमहाबाहो श्रीकृष्णजी भार्गवास्त्र के पराक्रमको देखो यह अस्त्र युद्धमें कैसे नाश करनेके योग्य नहींहै ६१ हेश्रीकृष्णजी युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले पराक्रम में यमराजके समान क्रोधरूप कर्ण कोदेखो ६२ यह कर्ण घोड़ोंको चलाचला कर प्रतिपद वारंवार मुझको देख-ताहै मैं युद्धमें कर्णसे भागनेवाला नहींहूं ६३ मनुष्य युद्धमें विजय और पराजय दोनों पाताहै हे शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी मृतक

मनुष्यकीतो पराजयहीहोतीहै विजय कैसे होसक्तीहै ६४ अर्जुनके इसवचनको सुनकर श्रीकृष्णजीने बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठअर्जुनसे समयके अनुसार यह वचनकहा६५ कि कर्णके हाथसे राजायुधिष्ठिर अत्यन्त घायल हुआहै हेअर्जुन तुम उसको देखकर और भरोसा देकर फिर कर्णको मारोगे ६६ हेराजा ऐसा कहकर युधिष्ठिरको देखना चाहते और युद्धमें कर्णको थकावटमें पकड़ना चाहते श्रीकृष्णजी चले ६७ इसकेपीछे केशवजीकी आज्ञासे अर्जुन बाणोंसे पीड़ामान् राजा युधिष्ठिरके देखनेको रथकी सवारीकेद्वारा युद्धभूमिसे शीघ्रही अपने डेरोंकोगया ६८ तब चलतेहुये अर्जुनने धर्मराजके दर्शनकी अभिलाषा से सेनाको देखा और उसमें अपने बड़ेभाई को नहीं देखा ६९ हेभरतबंशी वह अर्जुन अश्वत्थामासे युद्धकरके और उस बज्रधारी इन्द्रसे भी न रुकनेवाले अपने गुरू के पुत्रको पराजय करके चलदिया ७०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥

पैंसठवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसकेपीछे उग्रधनुषधारी शत्रुओंसे अजेयअर्जुन नेअश्वत्थामाको पराजय कर बड़े कठिन शूरोंके कर्मोंको करके फिर अपनी सेनाको देखा१महात्मा अर्जुन शूरोंकेसाथयुद्ध न करनेवाली सेनाके मुखपर नियत शूरवीरोंको प्रसन्नकरता और पहलेप्रहारोंसे घायल और नियतहुये बहुत रथियोंकी प्रशंसा करताहुआ २ और अजमीढ़बंशी अपने भाई युधिष्ठिरको न देखकर भीमसेन के पास जाकर यह बचन बोला कि राजा कहां हैं और किसरीतिसे उसने युद्धकिया ३ भीमसेननेकहा कि कर्णके बाणों से पीड़ामान धर्मपुत्र युधिष्ठिर यहां से हट गयाहै और किसी प्रकार से जीवताहै ४ अर्जुनने कहा कि हे भीमसेन आप शीघ्रतासे उस कौरवों में श्रेष्ठ राजाकी खबर लेनेको यहांसे चलो निश्चय करके वह राजा युधिष्ठिर कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल होकर अपने डेरे को गया

है ५ द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्णधार बाणोंके प्रहारोंसे अत्यन्त घायल होकर भी वेगवान् राजा युधिष्ठिर विजयकी अभिलाषा करके जब तकवहां नियत नहीं हुआ था तबतक द्रोणाचार्य्य जी भी नहीं मरे थे६ वह महानुभाव बड़ा पांडव अब युद्धमें कर्णके हाथसे संशय संयुक्त हुआहै हेभीमसेन अब तुम बड़ी शीघ्रतासे उनके निश्चयकरने को जाओ और मैं शत्रुओंको रोककर नियतहूंगा ७भीमसेन बोले हे महानुभाव तुम भी उसभरतर्षभ युधिष्ठिर के वृत्तान्तको जानोहो और हे अर्जुन जो मैं यहां से चलाजाऊंगा तो बड़े शूर वीर शत्रु मुझको अपने से भयभीतहुआ कहैंगे ८ तब अर्जुनने भीमसेनसे कहा कि संसप्तक मेरी सेनाके सन्मुख नियत हैं अब उनको बिना मारे इनशत्रु समूहों के स्थानसे जाना योग्य नहींहै ९ हे कौरवों में बड़े बीर तब भीमसेन अपने पराक्रमको पाकर अर्जुन से बोले कि मैं संसप्तकों के सन्मुख युद्धकरने को जाऊंगा हे अर्जुन तुम चले जाओ १० शत्रुओंके मध्य में भाई भीमसेन के कठिनतासे होने के योग्य इस बचनको कि हे अर्जुनमैं अकेला बड़ीकठिनतासे विजय होनेवाले महा असहनशील संसप्तकों की सेना को रोकूंगा सुन कर११महापराक्रमी सत्यवक्ता बानरध्वज अर्जुन महात्माकौरवोंमें श्रेष्ठ सत्य पराक्रमी भाई युधिष्ठिर के देखनेको चलनेवाला होकर उन वृष्णिबंशियों में श्रेष्ठ श्रीनारायणजी से बोला कि हे इंद्रियों के स्वामी इस समुद्र रूप सेनाको त्यागकर घोड़ोंको चलाइये हे केशवजी अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको मैं देखना चाहताहूं १२।१३ संजय बोला कि तदनन्तर घोड़ोंको चलायमान करतेहुये सबयादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण जी भीमसेन से यह बात बोले कि हे भीमसेन अब यह तेरा कर्म कुछ अपूर्व्व नहींहै मैं जाताहूं तुम बाणोंके समूहोंसे शत्रुओंके समूहों को मारो १४ हे राजा इसके पीछे श्रीकृष्ण जी गरुड़के समान शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा बड़ी शीघ्रतासे जहां राजा युधिष्ठिरथा १५ वहां गये हे राजेन्द्र उस शत्रुबिजयी भीमसेनको युद्धके विषय में समझाकर सेनाके सन्मुख नियत करके १६ फिर

पुरुषों में बड़े वीर दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन युधिष्ठिर के समीपगये और वहां अकेलेही सोतेहुये राजाको पाकर दोनोंने रथसे उतरकर धर्मराजके चरणोंको नमस्कार किया श्रीकृष्ण और अर्जुनउसपुरुषोत्तमको कुशल पूर्वक देखकर ऐसे प्रसन्न हुये जैसे कि इंद्रको देख कर अश्विनीकुमार प्रसन्न होतेहैं १७।१८ फिर राजाने भी उनकोऐसा प्रसन्न किया जैसेकि इंद्र अश्विनीकुमारोंको औरजैसे महाअसुर जंभके मरने पर बृहस्पतिजी ने इन्द्र और बिष्णुको किया था १६ संजय बोलेकि इसकेपीछे शत्रुसंतापी राजा युधिष्ठिर कर्णको मृतक मानताहुआ बड़ी प्रसन्नता पूर्ब्बक बाणोंसे भिदेहुये रुधिरसे लिप्त शरीर महाप्रतापी लालनेत्रवाले उन बड़े पराक्रमी साथ आने वाले अर्जुन और केशवजीको देखकर युद्धमें गांडीव धनुषधारी के हाथसे कर्णको मृतक माना २०। २२ हेभरतर्षभ मन्द मुसकान पूर्ब्बक दोनोंकी प्रशंसाकरते युधिष्ठिरने उन शत्रुसंहारी श्रीकृष्ण अर्जुन को बड़ी मृदुता और मिष्टबाणीसे प्रसन्न किया २३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे पंचषष्टितमोध्यायः ६५॥

छासठवां अध्याय॥

युधिष्ठिरबोलेकि हेश्रीकृष्णजी आपका आगमन शुभकारीहोतुम दोनों श्रीकृष्णजी और अर्जुनका दर्शन मुझको अत्यन्त अपूर्व्वहै १ अक्षत और निर्बिघ्नआपदोनोंके हाथोंसेवह महारथी कर्ण मारागया हीजानो जो युद्धमेंविषधर सर्पकोसमान सबशस्त्रोंमें कुशल २ धृतराष्ट्र के पुत्रोंका सहायक और सबकौरवी सेनाका रक्षक और बृद्धि कर्त्ताधनुषधारी वृषेण वा सुषेणसे रक्षित श्रीपरशुरामजीसे अस्त्रों का सीखनेवाला बड़ापराक्रमी दुर्जयसंसारमें अद्वितीय महारथीधृतराष्ट्र के पुत्रोंका रक्षक सेनाके मुखपर जानेवाले शत्रुओं का मारने वाला वा मर्दन करनेवालाहै३।५ दुर्य्योधनके हितमेंयुक्त हमारेपीड़ा देनेकेनिमित्त युद्धमेंदेवताओं समेत इन्द्रसेभी अजेय तेजबलमेंअग्नि बायुकेसमान पातालके समानगंभीर मित्रोंको प्रसन्नता का बढ़ाने

वालाहै ६। ७उसमेरे मित्रोंकेमारनेवाले कर्णकोयुद्धमेंमारकरप्रारब्ध से तुमदोनोंऐसे आयेहो जैसेकिअसुरको मारकर दो देवता आतेहैं ८ सबसृष्टिके मारनेके अभिलाषी यमराजके समान अपनेको बड़ामान-नेवाले उस कर्णनेहेश्रीकृष्णऔर अर्जुनमेरेसाथबड़ाघोरयुद्ध किया ६ उसनेमेरी ध्वजा काटकर दोनोंआगेपीछेवाले सारथियोंकोभी मारा तदनन्तरमैं सात्विकीके देखतेहुये मृतकघोड़े वालाहोगया १० धृष्ट-द्युम्न नकुल सहदेव बीरशिखंडी वा द्रौपदीकेपुत्र और सबपांचालों के देखते हुये उसने ऐसा कर्म किया ११ हे महाबाहो उस उपाय करनेवाले महापराक्रमी कर्णने शत्रुओंके बहुतसेसमूहोंको मारकर मुझको बिजयकिया १२ हे शूरोंमें श्रेष्ठ अर्जुन उसकर्णने जहांतहां मुझकोपराजय को करके निस्सन्देहपूर्व्वक बहुतकठोर असभ्यवचन कहे १३ हे अर्जुनमैं भीमसेनके प्रभावसे अबतक जीवताहूं बहुतसी बातोंके कहनेसे क्या प्रयोजनहै मैं उसकर्ण को अबनहीं सहसक्ता हूं १४ हे अर्जुन मैंने तेरह वर्षतक जिससे भयभीत होकर न रात्रि को निद्राली न दिनको कहींसुखचैनपाया १५ हे अर्जुनउसकी शत्रु-तासे युक्त होकर भस्म होरहाहूं और अपने मरणको प्राप्त होकर वाध्रीनसमेढ़के समान भागाहूं १६ बहुतकालसे मुझचिन्तासे युक्त होनेवालेका अब यहसमर्थ वर्त्तमानहुआहै वहकर्ण युद्धमेंमेरे हाथ से कैसे पराजय होनेको योग्य होय १७ हे अर्जुन मैं जागते सोतेउठते बैठते चलतेफिरते जहांतहां हरसमय कर्णहीको देखताहूं अर्थात् सब संसार मुझको कर्णहीरूप दीखताहै १८ हे अर्जुन मैंकर्णसे ऐसा भयभीत होरहाहूं कि जहांजहां जाताहूं वहां२ कर्ण कोही नियत देखताहूं १९ हे श्रीकृष्ण अर्जुन उस युद्धसे कभी न हटनेवाले बीर कर्णने मुझको घोड़े और रथ समेत बिजय करके जीवता त्याग कियाहै २० अबमुझ कर्णके हाथसे पराजय पानेवाले का इस संसार में जीवना व्यर्थहै २१ पूर्व्वमें भीष्मजी द्रोणाचार्य्य वा कृपाचार्य्यसे भी ऐसा दुःख मैंने नहीं पायाथा जैसा कि अब युद्धमें इस महारथी कर्णसे पायाहै २२ हेअर्जुन अबमैं तुझसे यह

पूछताहूं कि किस रीतिसे निर्विघ्नता पूर्व्वक तेरे हाथसे कर्ण मारा गया उससब वृत्तान्तको यथावस्थित व्यौरे समेत मुझसे वर्णन करो २३ पराक्रम में यमराज और पुरुषार्थ में इन्द्रके समान और अस्त्रोंमें परशुरामजी के समान वह कर्ण युद्धमें कैसे मारागया २४ महारथी और सब युद्धोंमें कुशल धनुर्धारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और सबमें अकेला पुरुषार्थी २५ वह कर्ण तेरेही निमित्त पुत्रों समेतधृत-राष्ट्रसे स्तुति किया गयाथा वह तेरेहाथसे कैसे मारागया २६ हे पुरुषोत्तम अर्जुन वह दुर्य्योधन सदैव सब शूरोंके मध्यमें कर्णहीको तेरा मारनेवाला मानताथा वह कर्ण तेरे हाथसे कैसे मारागया २७।२८ और तुमने उसके शुभचिन्तकोंके देखतेहुये उस युद्ध करने वालेका शिर ऐसे काटडाला जैसे कि रुरुनाम मृगका शिर सिंह काटताहै २९ छः हाथी दानकरने का इच्छावान् युद्धमें तुझकोचा-हने वाले जिस कर्णने दिशा और बिदिशाओंको सेवन किया वह दुरात्मा कर्ण क्या अब तेरे अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे ३० युद्धमेंमरा हुआ पृथ्वीपर सोताहै युद्धमें तैंने कर्णको मारकर मेरा बड़ाभारी अभीष्टकिया ३१ जोकर्ण सदैव पूजित और अहंकार युक्त होकर तेरे निमित्त सबओर को दौड़ा वह अपनेको शूर मानने वाला तुझको युद्धमें पाकर अबक्या मारागया ३२ हेतात जोकि तेरेनिमित्त हाथी घोड़ों समेत उत्तम सुनहरी रथोंको दूसरे लोगोंको देनेकी इच्छा कररहाथा और सदैव युद्धमें ईर्षाकरनेवालाथा वह पापात्मा क्या युद्धमें तेरे हाथ से मारागया ३३ जो बल पुरुषार्थ में दुर्मद सदैव कौरवोंकी सभामें निरर्थक वार्तालाप करताथा और उस दुर्य्योधन का अत्यन्तप्रियथा अबवह दुष्टात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया ३४ सन्मुख होकर तेरे चलाये हुये रक्तांगवाले आकाशचारी बाणोंसे शरीर में अत्यन्त घायलथा वह पापी कर्ण क्या अबसोताहै दुर्य्यो-धनकी भुजा ढीली और निर्बल हुई ३५ जो यह कर्ण अपने अज्ञान से राजाओं के मध्यमें दुर्य्योधन को प्रसन्न करता हुआ अहंकारमें भराहुआ सदैव अपनी यहप्रशंसा करताथा किमैं अर्जुनका मारने

वाला हूं क्या उसका वह बचन ठीक नहीं हुआ ३६ किमैं तबतक कभी पदाती रूपसे नहीं दौडूंगा जबतक कि अर्जुन नियत होकर बर्त्तमानहै उस निर्बुद्धीका सदैव यही ब्रतथा हे इन्द्रकेपुत्र अर्जुन वहकर्ण क्या अबतेरे हाथसे मारागया ३७ जिस दुष्ट बुद्धी कर्णने सभामें कौरवी बीरोंके मध्य में द्रौपदीसे यह कहाथा कि हे कृष्णा तूइन अत्यन्त निर्बल और नाशयुक्त पुरुषार्थ रहित पांडवोंको क्यों नहीं त्याग करतीहै ३८ और उसीकर्णने तेरेबिषयमें प्रतिज्ञाकरी थी किमैं श्रीकृष्ण समेत अर्जुनको बिनामारे हुये यहांनहीं आऊंगावह पाप बुद्धी तेरे बाणोंसे घायलहुआ अबक्या सोरहा है ३९ सृञ्जियों और कौरवों के इसयुद्ध को क्या तुमजानतेहो जिसमें किमेरी यह दशाहोगईहै अबवह दुरात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया ४० हे अर्जुन तुमनेयुद्धमें अपने गांडीव धनुषसे छोड़ेहुये अग्निरूप बाणोंसे उस अत्यन्त निर्बुद्धीकर्णकाकुंडलों समेत देदीप्यमान शिर क्या शरीर से काट डालाहै ४१ हे बीर जो मुझ बाणों से घायलने तुमको कर्णके मारनेकेनिमित्त ध्यान कियाहै अबतुमने कर्णके मारनेसेक्या वह मेरा ध्यान सफल किया ४२ जोदुर्योधनकर्णके आश्रितहोकर हमको देखताहै अबतुमने उस दुर्योधन के रक्षकको क्या पराजय किया ४३ पूर्व समयमें जिसने सभाके मध्यवर्ती होकर कौरवोंके सन्मुख हमको थोथेतिल और नपुंसककहा वह दुर्बुद्धी और क्रोधसे भराहुआ कर्ण सन्मुख होकर क्यायुद्धमें तेरेहाथसेमारागया ४४ पूर्व काल में जिस हंसतेहुये दुरात्मा कर्णने शकुनीसे जीतीहुई द्रौपदी को बड़ी हटतासे कहाथा कि इस द्रौपदीको यहांलाओ वहकर्णक्या अब तेरे हाथसे मारागया ४५ और जिसनिर्बुद्धीने विख्यात शस्त्र धारी महात्मा पितामहकी निन्दाकरी हे अर्जुन वह अर्द्धरथी क्या तेरे हाथसे अबमारागया ४६ हे अर्जुन अबतुम इसबातको कहकर कि वह कर्ण युद्धमें मेरे हाथ से मारागयाहै मेरे हृदयकी जलती हुई अग्नि को बुझाओ क्योंकि वह अग्नि अमर्ष जनित वायु से प्रेरित मेरेहृदयमें प्रदीप्तहोकरसदैवनियतरहतीहै ४७ सो हे अर्जुन

तेरे हाथसे कर्ण कैसे मारागयाहै उसमेरे दुष्प्राप्यमनोरथको वर्णन करो हे बड़ेवीर मैं तुझकोसदैव ऐसे ध्यानकरताहूं जैसेकि वृत्रासुर केमरनेपर भगवान् इन्द्र ध्यान कियेगयेथे ४८॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसहस्रसंहितायांवैय्यासिक्यांकर्णपर्वणियुधिष्ठिरवाक्यषटषष्टितमोध्यायः ६६॥

सड़सठवां अध्याय॥

संजय बोले कि वह अत्यन्त पराक्रमी महात्मा अतिरथी अर्जुन उस क्रोधयुक्त धर्मके अभ्यासी राजाके उस बचनको सुनकर उस निर्भय और महापराक्रमी युधिष्ठिरसे बोला १ हेराजा अब कौरवी सेनामेंआगे चलनेवाला अश्वत्थामा विषैले सर्परूप बाणोंकोछोड़ता मुझ संसप्तकोंसे भिड़ेहुयेके सन्मुख आकर अकस्मात् नियतहुआ २ हे श्रेष्ठ वह अश्वत्थामा बादल के समान शब्दायमान मेरे रथको देखकर सबसेना के मध्यमें आकर नियतहुआ तबमैंने उसके पांच सौ बीरों को मारकर फिर अश्वत्थामाको पाया हे महाराज वह बड़ा सावधान मुझको पाकर ऐसे मेरे सन्मुखहुआ जैसे कि सिंहके सन्मुख गजराज आता है हेमहाराज उसने मरनेवाले कौरवीरथों के बचानेका उपाय किया३।४तदनन्तर दुःखसे कंपायमान कौरवों के अत्यन्त श्रेष्ठशूरबीर उस आचार्य्यके पुत्रनेयुद्धमें श्वेतरंगवाले कुछ कम बिष और अग्निके समान बाणोंसे श्रीकृष्णजी समेत मुझको अत्यन्त पीड़ामान किया ५ उस मुझसे लड़नेवाले अश्वत्थामा के बाणों को आठ बैल रखनेवाले आठसौ छकड़े लेचलतेहैं मैंने उसके छोड़े हुये उन बाणोंको अपने बाणोंसेही ऐसे नाशकरदिया जैसे कि बादलोंके जाल समूहोंको बायु नाशकरदेताहै इसके पीछेसुशिक्षित अस्त्रोंके बलसे बड़ेप्रयाससे कर्ण पर्य्यंत खेंचेहुये अनेकबाण समूहों कोऐसे छोड़ताहुआ जैसेकि बर्षाऋतुमें कालमेघ नामबादल जलको बरसाताहै ६।७ हमने उस बाणलेते और चढ़ातेहुये को नहीं जाना किवह बायें हाथसे वा दक्षिण हाथसे बाणोंको फेंकताहै वह अश्व

त्थामा युद्धमें सन्मुख वर्त्तमानहुआ ८ जिस अश्वत्थामाका प्रत्यंचासे युक्त धनुष मंडलके समान दिखाई देताथा उस अश्वत्थामाने पांच बाणोंसे मुझको और पांचही बाणोंसे वासुदेवजीको छेदा ९ तबतो मैंने एकपलमात्रमेंही बज्रके समान तीसबाणोंसे उसको पीड़ामानकिया फिर मेरे पृषत्कनाम बाणों से पीड़ित होकर वह अश्वत्थामा क्षण मेंही स्वावितके समान रूपवाला होगया १० सब अंगोंसे रुधिरको डालताहुआ वह अश्वत्थामा मुझसे पराजित होकर सेनाके बड़े २ श्रेष्ठ मनुष्योंको अपने रुधिर भरेहुये शरीरसे देखताहुआ कर्णकेरथों की सेनामें चलागया ११ उसके पीछे मारनेवाला कर्ण युद्धमें अपनी सेनाको भयभीत और हाथी घोड़े और रथोंको भगाताहुआ देखकर पचास उत्तम रथियोंको साथमें लियेहुये बड़ी शीघ्रता करताहुआ मेरे सन्मुख आया १२ मैं उनको मारकर युद्धका भार भीमसेन के सिपुर्द कर और कर्ण को छोड़करके आपके देखने को बड़े बेग से शीघ्रता करके आयाहूं सब पांचाल लोग कर्णको देखकर ऐसे भयभीत हुये जैसेकि केसरी सिंहको देखकर गौवें भयभीत होतीहैं १३ हेराजा प्रभद्रकनाम क्षत्री मृत्युके फैलेहुये मुखको प्राप्तकरके और कर्णको पाकर युद्ध करनेवालेहुये तब कर्णने मृत्युरूपी नदीमें डूबेहुये उन सातसौ रथियोंको मृत्युलोकमें भेजा १४ हेराजा वह कर्णभी तब तक चित्तसे पीड़ामान और क्लांत चित्तही रहा जबतक कि उसने हमलोगोंको नहीं देखा फिरतुमको उससे भिड़ाहुआ और अश्वत्थामासे पहिले बहुत घायलहुआ सुनकर १५ मैं कर्णसे हटजानेका आपका समय मानताहूं हेध्यानसे बीरोंके कर्मकरनेवाले राजायुधिष्ठिर मैंने पूर्वही कर्णका यह अपूर्वरूप वाला अस्त्रदेखा १६ सृंजियोंमें कोई ऐसा शूरबीर नहीं बर्त्तमानहै जो अब उस महारथी कर्णका सामना करसके हेराजा मेरी सेनाका रक्षक धृष्टद्युम्न, सात्विकी १७ और युधामन्यु, उत्तमौजस यह दोनों राजकुमार भी पीछेकी ओरसे मेरी रक्षाकरें हेमहानुभाव मैं कठिनतासे पारहोनेके योग्य महाबीर और रक्षापूर्वक शत्रुकी सेनामें बर्त्तमान उससूत

पुत्रकर्ण से अपने सहायकों समेत सन्मुख होकर युद्ध में ऐसे युद्ध करूंगा जैसे कि बज्रधारी अपने वज्रसे युद्धकरताहै हेराजाओंमें श्रेष्ठ भरतबंशी अबजोवह इसयुद्धमें दिखाईदेताहै १८।१९ उस सूतपुत्र का और मेरा युद्ध जयके निमित्त आपऐसे देखोगे जैसे कि नंदीके मुखके आश्रयी प्रभद्रक कर्णके सन्मुख जातेहैं २० हेभरतबंशी वह राजकुमार बांधे मारे और युद्धमें सबलोकके अर्थडूबे इससे हेराजा अबजो मैं हटकरके बांधवों सहित उस लड़नेवाले कर्ण को नहीं मारूं तो प्रतिज्ञाके नकरने वालेकी जो घोरगतिहै उसकोमैं पाऊंमैं आपसे पूछता हूं आप युद्धमें मेरी बिजयको कहिये और मेरेआगे२ भीमसेन धृतराष्ट्र के पुत्रोंको ग्रसे २१।२२ तब हेराजाओंमें श्रेष्ठमैं कर्णसमेत सेनाको और शत्रुओं के सब समूहोंको मारूंगा २३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअर्जुनप्रतिज्ञायांसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अड़सठवां अध्याय॥

संजय बोले कि बड़ातेजस्वी कर्णके बाणोंसे पीड़ामान युधिष्ठिर कर्णको समर्थ और बड़ापराक्रमी सुनकर अर्जुनसे महाक्रोधयुक्त होकर यहवचन कहनेलगा१किहेभाईतेरी सेनाभागी और जैसीरीति से अब पराजित हुई वह श्रेष्ठ नहींहै तुम कर्ण के मारने को समर्थ नहीं होसके हो इसी हेतुसे तुम भीमसेन को वहां छोड़कर भयभीत होकर यहांचलेआयेहो २ हेअर्जुन तुमने कुन्तीकेगर्भसे उत्पन्नहोकर जैसी प्रीतिकरी वह श्रेष्ठ नहींहै कि कर्णकेमारने में समर्थन होकर भीमसेनको त्यागकरके हटआया ३ द्वैतबनमेंजोतुमने सत्यप्रतिज्ञा करीथी कि मैं एकरथसे कर्णको मारूंगा उस बचनको कहकर अब कैसे कर्णसे भयभीत होकर भीमसेनको छोड़कर हटआयाहै ४ जो तू द्वैतबनही में यह कहदेता कि हे राजा मैं कर्णसे लड़नेकोसमर्थ न होऊंगा तो हे अर्जुन हम अपने समयके अनुसार सब कामोंको करते ५ हे बीर तैंने मेरे सामने उसके मारने की प्रतिज्ञा करके उस प्रतिज्ञाको पूरानहींकिया उसी प्रतिज्ञाने हमसबको शत्रुओंके

मध्यमें लाकर युद्धभूमिरूपी शिलापर छोड़कर किसहेतुसे पीसाहै ६ इसके विशेष हे अर्जुन बनजानेके अभिलाषी हमलोगोंने तेरे विषय में बिश्वास करके बहुतसे अपने अभिमत कल्याणोंकी आशाकरी थी हे राजपुत्र हम सबफल चाहने वालोंकी वह सब आशा ऐसे निष्फल होगई जैसेकि बहुतसे फलरखनेवाला वृक्ष निष्फलहोय ७ अथवा जैसे कि मांससे ढकीहुई वंशी और भोजनसे ढकाहुआ विष होताहै इसीप्रकार तुमनेभी मुझराज्याभिलाषीके नाशकेअर्थ राज्य रूपी अनर्थको दिखलायाहै ८ हेअर्जुनहम उनतेरह वर्षोंतक सदैव आशाकरके तेरेहीपीछे ऐसे जीवतेरहेजैसे कि बोयाहुआबीज समय पर देवताइन्द्रकी कृपासेबर्षाकी आशाकरताहै सोतुमने हमसबको नर्कमेंडुबाया ९ तुझ निर्बुद्धीके उत्पन्न होनेके सातदिन पीछे अन्त-रिक्षसेयह आकाशबाणी हुईथी कि यहपुत्र इन्द्रकेसमान पराक्रमी उत्पन्नहुआहै यह शत्रुरूप शूरवीर मनुष्यों को विजय करेगा १० औरमद्रकलिंग और केकयदेशियोंकोभी विजयकरकेराजाओंके मध्य में सब कौरवोंको मारेगा ११ इससे उत्तमकोई धनुषधारी नहीं होगा कोईजीवधारी इसकोकभी विजयनहीं करसकेगा यहजितेन्द्री और सब विद्याओंमें पूर्ण होकर अपनी इच्छासे सबजीवमात्रोंको अपने आधीन करेगा १२ हे कुन्ती यह तेरा पुत्र कांति और शोभा में चन्द्रमाके समान तीव्रता और शीघ्रतामें बायुकेसदृश औरस्थिर तामें मेरुपर्व्वतके समान क्षमा करनेमें पृथ्वीके तुल्य तेजमें सूर्य्य के समान लक्ष्मी में कुबेरकेशूरतामें इन्द्रके पराक्रममें विष्णुके समान यह महात्मा ऐसा उत्पन्न हुआहै १३ जैसेकि शत्रुओंके मारनेवाले दितिके पुत्र विष्णुजी अपने लोगोंके विजय और शत्रुओं के मार-नेके निमित्त सब जगत में बिख्यात महातेजस्वी धनुष चलाने वाले उत्पन्न हुये हैं १४ शतशृंगके मस्तकपर अन्तरिक्ष में यह सब तपस्वी लोगोंके सुनते हुये आकाशबाणीने कहाहै सो वह जैसा कहाथा वैसानहीं हुआ इससे निश्चयकरके देवताभी मिथ्या बोलतेहैं १५ और इसीप्रकार सदैवतेरी प्रशंसा करने वाले अन्यर

उत्तम ऋषियों के बचनों को सुनकर दुर्य्योधन के शिष्टाचार को अंगीकार नहीं करताहूं और कर्णके भयसे पीड़ामान तुझ को नहीं जानताहूं १६ हे अर्जुन त्वष्टा देवताके बनाये हुये निश्शब्द पहिये वाले हनुमान् जी की ध्वजा रखने वाले उस शुभरथ पर सवार होकर और स्वर्णमयी बेष्ठनसे अलंकृत खड्गको और ताल वृक्षके समान इस गांडीव धनुषको लेकर १७ केशवजी के साथ रथपर सवार होकर तुम कर्ण से भयभीत होकर कैसे हट आये अब उस धनुष को केशवजी को दो और तुम युद्ध में केशवजी के सारथीब-नों १८ तबकेशवजी उस उग्र कर्णको ऐसे मारेंगे जैसेकि बज्रधारी इन्द्रने वृत्रासुरको माराहै जोतू अब इसघूमने वाले उग्रकर्णकेमा-रने में समर्थनहीं है १६ तोजो राजा अस्त्रविद्या में तुझसे अधिकहो उसको यह गांडीव धनुष देदो हे पांडव अब यह लोकपुत्र स्त्रियोंसे रहित और राज्यके नाशकरने के हेतुसे आनन्द और कुशलतासे रहित हमलोगोंको २० उस पापियोंसे सेवित अगाध और घोरन-र्कमें पड़ाहुआ देखेगा जो तूकुंतीके गर्भसे नपैदा होतातो इसदुःखमें काहे को पड़ता २१ हेराजपुत्र निर्बुद्धी वहीं तेराकल्याणहोजाताजो तूयुद्धसे हटकरन आता गांडीव धनुषको और तेरे भुजबल को २२ धिक्कारहै और तेरे असंख्य बाणोंको भी धिक्कारहै और हनुमान् रूप धारण करने वाली तेरी ध्वजाको भी धिक्कार और अग्नि के दियेहुये तेरे रथको धिक्कार है २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णप्रतियुधिष्ठिरक्रोधवाक्येअष्टषष्टितमोऽध्यायः६८॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि हेभरतर्षभ युधिष्ठिर के इन बाणरूप निन्दित बाक्योंको सुनकर महा क्रोधरूप होकर कुन्तीके पुत्र अर्जुनने मारने की इच्छा करके हाथमें खड्गको लिया १ तब अन्तर्य्यामी सब केमनके जानने वाले श्रीकृष्ण जी ने उसके क्रोधको देखकर कहा कि हेअर्जुन यह क्यावातहै जोतैंने खड्गको हाथमेंलिया२ हेअर्जुन

तुझसे लड़ने के योग्य मैं किसीको नहींदेखताहूं बुद्धिमान् भीमसेन ने उन धृतराष्ट्र के पुत्रोंकोघेरलियाहै ३ वह राजा देखने के योग्यहै इसहेतुसे हटआयाहै हेअर्जुन उस राजाको तुमने कुशल पूर्वक देखा४ सोतुमउस राजाओं में श्रेष्ठ शार्दूल के समान पराक्रमीअपनेभाई राजा युधिष्ठिरको देखकर और प्रसन्नताका समयवर्त्तमान होनेपर जो भूलसे यह कर्महोगया तो क्या हुआ ५ हेकुन्तीके पुत्र मैंऐसा किसीको नहीं देखताहूं जोतुझको मारने के योग्यहोय किस हेतुसे तू प्रहारकरना चाहताहै तेरेचित्तकी भ्रान्तिक्याहै ६तुमकिस कारणशीघ्रतासे बड़े खड्गको पकड़तेहो हेकुन्तीके पुत्र अबमैंतुझसे पूछताहूं कितेरी कौनसे कर्मकरने कीइच्छाहै ७ जो महाक्रोधितहोकर इस बड़ेभारी खड्गको पकड़ता है फिर श्रीकृष्णजीके वचनोंको सुनकर युधिष्ठिरको देखताहुआ ८ सर्पके समान श्वासलेता क्रोध युक्त होकर अर्जुन श्रीगोबिन्दजीसे बोला कि आप इसगांडीव धनुष को किसीदूसरेको देदो जो मुझको इसरीतिसे प्रेरणाकरे मैं उसके शिरकोकाटूंगा९यहमेरा अपांशुव्रतहै अर्थात् गुप्तव्रतहै हे अतुलबल पराक्रमवाले गोबिन्दजी जैसा कि इसराजाने आपके सन्मुख मुझसे कहा १० उसके सहनेको मैं उत्साहनहीं करसक्ताहूं इसहेतुसे उस धर्मसे भयभीत राजा को मारूंगा ११ इस नरोत्तमको मारकर अपनी प्रतिज्ञाको पूराकरूंगा हे यदुनन्दन मैंनेइसी निमित्त खड्ग को पकड़ाहै १२ हे जनार्द्दनजी सो मैं युधिष्ठिरको मारकर सत्य संकल्प होकर शोक और ज्वरसे निवृत्त होऊंगा १३ अथवा ऐसे समयके वर्त्तमान होनेपर आप क्या उचित आज्ञादेतेहैं जिसकोमैं योग्य समझकरकरूं १४ मैं आपकी जो आज्ञाहोगी उसीको करूंगा संजय बोले कि इसबातको सुनकर गोबिन्दजीने बड़ी धिक्कारियां देकर अर्जुनसेकहा १५हे अर्जुन मैं निश्चयजानताहूंकि तुमने वृद्ध लोगोंका सेवननहीं कियाहै पुरुषोत्तमजो तुमको क्रोधहुआ है यह क्रोध समयके समान नहीं है १६ हे अर्जुन धर्मके प्रकारों का ज्ञातापुरुष ऐसानहीं करसक्ताहै जैसे कि अब यहां तुमधर्म से भय-

भीतहोकर निर्बुद्धीसेहोरहेहो १७ जो मनुष्य करनेकेअयोग्यकर्मोंको और योग्य कर्मोंको एककरताहै हेअर्जुन वह अधमपुरुष कहाजाता है १८ पंडितलोग जिसधर्म पर आरूढ़होकर ईश्वरका उपस्थान करतेहैं उसीके अनुसार इतरलोगभी आचरण करतेहैं १९ हे अर्जुन योग्यायोग्य कर्मोंके निश्चयमें दृढ़ता रखनेवाला मनुष्यविवश होकर ऐसाही अज्ञानी होजाताहै जैसे कि तुमहोगयेहो २० उचित और अनुचित कर्म किसी प्रकारसेभी आनन्द पूर्व्वक जाननेके अयोग्यनहींहै यह सब शास्त्र कहतेहैं तुम उसका विचार नहीं करते हो २१ तुम पूरे बुद्धिमान् नहींहो जिसबुद्धिके द्वारा धर्मज्ञ होकर धर्मको रक्षा करताहै हे अर्जुन जो धर्मके अभ्यासी होकर भी पाप पुण्यकारी कर्म नहीं जानतेहो २२ हे तात जीवोंका न मारनाही उत्तम धर्महै यहमेरामतहै चाहै मिथ्या बचन किसी समय कहदेपरंतु हिन्सा कभीनकरे २३ सो हेनरोत्तम तुम इसधर्ममें पंडित होकर अपने बड़े भाई राजा युधिष्ठिरको कैसे मारनेको प्रवृत्तहो जैसेकि कोई साधारण मनुष्य होताहै २४ हे प्रशंसादेनेवाले सुनोकि युद्धन करनेवाले वा युद्धसे मुखमोड़नेवाले वा भागनेवाले औरघरमें आश्रयलेनेवाले शत्रु अथवा हाथ जोड़नेवाले वाशरणागत और मदोन्मत्तों के मारनेको उत्तमलोगनहीं प्रशंसा करतेहैं वह सबगुणतेरे गुरूरूप बड़ेभाई युधिष्ठिरमेंहैं २५ । २६ हेअर्जुन पूर्वसमयमें तुमने बाल्यावस्थासे ऐसा व्रतकियाथा इसीहेतुसे अपनी अज्ञानता करकेअधर्म युक्त कर्मको निश्चय करतेहो २७ हेअर्जुन धर्म्मोंकी कठिनतासे मिलनेवाली सूक्ष्मगतिको अच्छेप्रकारसे धारणनकरके तू किसहेतु से अपने गुरूरूप बड़ेके मारने की इच्छासे दौड़ताहै २८ हे पांडव धर्मकी इस गुप्तवार्त्ताको भीष्मजीके अथवा पांडव युधिष्ठिरके द्वारा मैं तुझसे कहूंगा २९ वा विदुरजी और यशस्विनी कुन्ती तुमसेकहैगी हेअर्जुन इसको मैं मूलसमेत कहूंगा तुम चित्तसे सुनना सत्य बोलनेवाला साधुहै ३० गृहस्थाश्रमीसेकोई आश्रमी श्रेष्ठनहींहै बड़े दुःखसे जाननेकेयोग्य अभ्यास करीहुई सत्यताकोमूलसमेतदेखो ३१

सत्यता कहनेके योग्यनहीं होतीहै अर्थात् सत्यतामें कोई दोषनहीं कहसक्ता परन्तु जबसत्यतामें मिथ्यापन होताहै तबवह सत्यताभी मिथ्या कहनेके योग्यहोतीहै ३२ अर्थात् किसी२अस्थानपरसत्यता से अधर्मभी होताहै जैसे कि बिवाहके समय वा बिषयभोग करनेके समय वा प्राणोंके नाशमें वा सबधनके चोरीहोनेमें और ब्राह्मणके मनोरथ सिद्धहोनेमें मिथ्याबोलना इनपांचों स्थानोंमें मिथ्याबोलने का कोईपापनहींहोताहै ३३ सबधनके चुरायेजानेमें मिथ्याबोलना योग्य होताहैऐसेस्थानमें सत्यभी मिथ्याहोताहै३४ बुद्धिमान्साव-धान पुरुष इसरीतिसे देखताहै अभ्यास करीहुई सत्यताको देखो कि सत्यता दोषलगानेके योग्यनहींहै और अभ्यास करीहुई कहनेके योग्यनहीं प्रथमसत्य और मिथ्याको अच्छीरीतिसेजानकर निश्चय धर्म का ज्ञाताहोता है ३५ क्या अद्भुत कर्म देखने में आताहै कि बड़ाज्ञानी वा बड़ाभयकारी मनुष्यभीबहुत बड़े पुण्यको ऐसे प्राप्त करता है ३६ जैसे कि बलाकनाम बधिकने व्याघ्रके मार डालने से पुण्यप्राप्त किया फिर क्या आश्चर्य्य है कि अज्ञानी और मूर्ख धर्म का अभिलाषी पुरुष बहुत बड़े पाप को प्राप्तकरे जैसे कि न-दियोंके समीप कौशिक ने प्राप्त किया था ३७ अर्जुनबोले हे श्री-कृष्णजी इसबलाकनदी और कौशिक संबंधीकथा को ऐसे विचारसे कहिये जिससेमैं समझूं ३८ बासुदेवजीबोले हेभरतबंशीपूर्वसमय में बलाकनाम एक बधिक हुआ वह सदैव अपने स्त्री पुत्रादिकोंको पोषणके अर्थ मृगोंको माराकरताथा अपनी इच्छासे नहींमारताथा अपनेवृद्ध मातापिता और अन्यआश्रित लोगोंकी पालना करताथा ३९और अपने धर्ममें प्रीतिवान्होकर सत्यवक्ता और किसीकेगुण में दोषनहीं लगाताथा एक समय उस मृगाकांक्षीको कोई मृग नहीं मिला तब बहुत खोज करते करते एकजलपीताहुआनाकहो जिसकी नेत्र रूपथी ४० ऐसे व्यापद व्याघ्रको उसने देखा ऐसे रूपकाजीव उसने पहले नहीं देखाथा इसी हेतुसे उसकोभी अपूर्व दर्शनजानक रमारा उस अंधेस्वापदके मारनेपर आकाशसेपुष्पोंकी बर्षाहुई ४१

और उत्तम गीत वाद्योंसमेत अप्सरानाचीं औरउस वधिकके लेजा-
नेके लिये स्वर्गसे विमान आया ४२ हे अर्जुन निश्चय करके उस
स्वापद जीवने सब जीवोंके नाशके लिये तपस्याकरके वरदानपा-
याथा इसीसे ब्रह्माजीने उसको अंधा करदिया ४३ सबजीवोंके ना-
शमें निश्चय करनेवाले उसजीवको मारकर पीछेसे वह बलाकस्व-
र्गकोगया इसरीतिसे धर्मको बड़ी सूक्ष्मगति है बड़ी कठिनतासेजा-
ननेके योग्यहै ४४ और कौशिक ब्राह्मणभीएक बड़ा तपस्वी और
शास्त्रोंका जाननेवालाथा वह गांवसे दूर नदियोंके संगमपर निवा-
स करताथा ४५ सत्यबोलनेका सदैव ब्रतरखताथा इसीसेहे अर्जुन
वह सत्य बक्ता विख्यात हुआ ४६ इसके पीछे कितनेही मनुष्य
चोरोंके भयसे उसबनमें रहनेलगे वहांभी क्रोधयुक्तचोरोंने बड़े उपा
योंसे उनकोढूंढ़ा ४७। ४८इसके अनन्तर उन्होंने सत्य बोलनेवाले
कौशिकके पास आकरकहा कि हे भगवन् बहुतसे मनुष्योंका समूह
किस मार्गसे गयाहै हम सत्य२ पूछतेहैं जो आप जानतेहोयं तो क-
हिये सत्यतासे पूछेहुये उस कौशिकने उनसेकहा४६ कि बहुत वृक्ष
लता बल्लीवाले उसबनमें रहतेहैं उस कौशिकने उनको प्रकटकरके
मूल वृत्तान्त कोभी प्रकट किया ५० इसकेपीछे उन्होंने उन क्रूर
मनुष्योंको पाकर मारडाला यह सुनाजाताहै सूक्ष्म धर्मोंसे अनभिज्ञ
वह कौशिक उनबड़े अधर्म रूप कहेहुये दुष्ट बचनसे महादुःखरूप
नर्कको ऐसे गया जैसे कि थोड़े शास्त्रका जाननेवाला अज्ञानी धर्मोंके
प्रकारोंको न जानकरजाताहै ५१५२ अपने संदेहोंको वृद्धलोगोंसे न
पछने वाला बड़े नर्कके योग्य होताहै उस धर्म और अधर्म का मूल
निश्चय करनेके लिये तेरायोग्यताका कोईतो वचन होगा ५३
कठिनतासे प्राप्तकरनेके योग्य उत्तमज्ञानको तर्कसे निश्चय करतेहैं
और बहुतसे लोग कहतेहैं कि धर्मवेदसे होताहै५४ इसहेतुसेतुझको
दोष नहींलगाताहूं सब नहीं किया जाता है क्योंकि जीवधारियोंकी
उत्पत्तिकेलिये धर्मका बर्णन किया गया ५५जो अहिंसासेयुक्त होता
है वही धर्महै और धर्मरूप बचनभी हिंसा न करनेवालोंकी अहिंसा

के निमित्त वर्णनकिया गयाहै ५६ धारण करनेसे धर्म कहागया है क्योंकि वह सृष्टिको धारण करताहै अर्थात् उत्पत्तिऔर पोषणकरता है जिस हेतुसे कि वह धारण नाम गुणसे युक्तहै इसी कारणसे वह निश्चयकरके धर्मकहाजाताहै ५७ जो किसीसमयपर अन्यायसेचोरी करतेहुये धर्मको चाहतेहैं अथवा वेदके विरुद्ध मोक्षपदको चाहते हैं उनकेसाथ कभी वार्त्तालापभी न करना चाहिये५८ अथवा अवश्यक बोलनेके समय परभी वेदवालौकिक वचनका सन्देहहोय अर्थात् इस बिषयके बिचार करनेके समयकि यहब्राह्मण चोरहै वानहीं ऐसे समयमें वहां मौनहोना अवश्यहै और जो कदाचित् मौन होनेसेभी काम न होसके तोवहांमिथ्या बोलनाभी योग्यगिनाजाताहै वहबिना बिचारेसेभी सत्यहीके तुल्यहै ५९ जोकिसी कामके बिषयमें ब्रतकरके कर्मसे उसको पूरा न करे अर्थात् बिरुद्धकर्मकरे उसके बिषयमें बुद्धि मानलोगोंका बचनहै कि वह उसकेफलको नहींपाताहै ६० किसी के प्राणजानेमें बिवाह में सबजाति के नाशमें और जारी होनेवाले कर्ममें कहाहुआ बचनमिथ्यानहीं कहलाताहै ६१ धर्मतत्वकेजानने वाले वा देखनेवालेइसबातमें अधर्मको न देखते हैं न जानतेहैं जो शपथोंके खानेमेंभी चोरोंसे मिलाहुआनहींहै६२ वहां मिथ्या कहना हीश्रेष्ठहोताहै वहभीबिना बिचारकेसत्यहै और समर्थहोने परउनको किसी दशामें भी धनदेनेके योग्यनहींहै ६३ पापियों को दियाहुआ धनदाताको भी पीड़ित करताहै अर्थात् नर्कमें डालताहै इसीकारण धर्मकेनिमित्त मिथ्याकहनेसे मिथ्याके फलकोभोगनेवाला नहींहोता है मैंनेबुद्धिके अनुसारयह लक्षणोद्देश तुझसे बिधिपूर्व्वक कहा ६४ यहसबमुझ शुभचिन्तकनेधर्म और बुद्धिकेअनुसार कहाहै हे अर्जुन इसकोसुनकर अबतुमकहौ कि यह युधिष्ठिर तेरेमारनेके योग्यहैवा नहीं६५ अर्जुनबोले बड़ाज्ञानी और बुद्धिमान् जिसरीतिसेकहै और जिसरीतिसे हमाराभलाहोय उसीप्रकारका यहआपका बचनहै ६६ हे श्रीकृष्णजी आपहमारेमाता और पिताकेसमान होकर परमगति और परमस्थानहो ६७ तीनोंलोकों में आपसे कोई बातछिपी नहींहै

इसीसे आप सबप्रकारके उत्तम धर्मोंको ठीक २ जानतेहो ६८ में धर्मराजपांडव युधिष्ठिरको अवध्य अर्थात् मारनेकेअयोग्य मानताहूं आपइसमेरे संकल्पमें प्रतिज्ञाके रक्षाकाकोई उपायवर्णनकीजिये६९ अथवा इस स्थानपर मेरेहृदयमेंवर्त्तमान कहनेके योग्यउत्तमबातोंको सुनिये हे श्रीकृष्णजी आपमेरे व्रतकोजानतेहैं जो कोईमनुष्य सब मनुष्योंकेआगे मुझसे ऐसावचनकहैकि ७० हेअर्जुन तुम इसगांडीव धनुषको ऐसेमनुष्यको देदोजो बलपराक्रम और शस्त्रविद्यामें तुमसे अधिकहो हे श्रीकृष्णजी मैं ऐसे कहनेवाले मनुष्यको हठकरके ऐसे मारूंजैसेकिमिथ्याशब्दके कहनेसेभीमसेन मारताहै ७१ हेवृष्णियों में बीर श्रीकृष्णजी आपकेसन्मुख राजायुधिष्ठिरने इसीशब्दकोबारंबार मुझसेकहा कि धनुषको दूसरेकोदे हे केशवजीजोमैं उसकोमार डालूंतो मैं थोड़ेसमयतकभी इसजीवलोकमें नियतनहीं रहूंगा ७२ इससे निश्चयकरके मैं निष्पाप राजाकेमारनेको ध्यानकरके पराक्रम से हीन अचेतहोकर अपने शरीरको त्यागकरूंगा हे धर्मधारियों में श्रेष्ठजिससे कि मेरीप्रतिज्ञा संसारकी बुद्धिमेंसत्य समझी जाय ७३ और जिसप्रकार पांडवयुधिष्ठिर और मैं जीवतारहूं हे श्रीकृष्णजी वैसेहीआपभीअपना सम्मतमुझकोदीजियेबासुदेवजीबोलेहेबीरयुद्ध मेंकर्णकेतीक्ष्ण धारवाले बाणोंकेसमूहोंसे राजायुधिष्ठिरमहाघायल दुःखी थकावटसे युक्त वारंबार युद्धकरनेमें कर्ण के बाणोंसे विदीर्ण होगयाहै ७४ इस हेतुसे इसने महादुखी होकर ऐसे अयोग्य वचन तुमसेकहेजिससे कि तुम क्रोधयुक्त होकर युद्धमें कर्ण को मारो इसी कारणसे बारंबारतुझमें क्रोध बढ़ानेकेलिये कहाहै कि तू युद्धमेंक्रोध रूप होकर कर्णकोमारे ७५ यह युधिष्ठिरभी इसलोक में उसपापी कर्ण के समान अथवा उससे सन्मुखता करनेवाला तेरे सिवाय किसी दूसरेको नहीं समझता है हे अर्जुन इसी हेतुसे मेरे सन्मुख अत्यन्तक्रोधयुक्तहोकर राजाने तुमसे यह कठोर बचन कहेहैं ७६ युद्धमें सदैवसन्नद्ध दूसरेके सहनेको अयोग्य कर्णमेंही अब युद्धरूपी द्यूत बांधागया है उसीके मरनेपर कौरव लोग विजय होंगे ऐसी

बुद्धि राजायुधिष्ठिरमेंहै ७७ इसकारणसे धर्मपुत्र युधिष्ठिरमारने के योग्य नहीं है हे अर्जुन तुझको अपने प्रणको पूराकरना योग्य है औरअपने योग्यउस बातको तू मुझसे समझ जिससे कि यह जीवताहुआभी मृतकके समान होजाय ७८ जब प्रतिष्ठाके योग्यमनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्तहोतीहै तभी वह इस जीवलोकमें जीवता रहताहै और जब प्रतिष्ठित पुरुष अपमानको पाताहै तब वह जीवताहुआ भी मृतकके समान कहाजाताहै ७९ यह राजायुधिष्ठिर सदैवसे भीमसेन नकुल सहदेव और तुझसे अच्छी रीतिसे प्रतिष्ठा किया गयाहै और लोकमें वृद्ध वा शूरवीर लोगोंनेभी इसकी प्रतिष्ठा की हैइसीप्रकार तुमभी बातोंकेही द्वारा इसका अपमान करो ८० हे कुन्ती के बेटे उसके साथ ऐसा कर्म करके अधर्म युक्त कर्मको कर ८१।८२यह अथर्वाङ्गिरसी नाम श्रुतिहै कल्याणके चाहनेवाले पुरुषोंको सदैव इस श्रुति को काममें लाना योग्य है ८३ यही बिना मारेहुये मारना कहाजाताहै और यही समर्थ गुरुतम कहाजाताहै हेधर्मज्ञ तुम इस मेरे कहेहुये वचनको धर्मराजसे कहो ८४ हेपांडव यह धर्मराज तेरे हाथसे इसरीतिपर मरनेको अयोग्यजानता है इसके पीछे इसके चरणोंको दण्डवत् करके बड़े मीठेवचनोंसेइससे शुभ चिन्तकताकी बातेंकहो ८५ बुद्धिमान् तेराभाई राजायुधिष्ठिर भी धर्मको बिचारकर फिरकभी तुझपर क्रोधनकरेगा हे अर्जुनभाई के मिथ्या मारनेसे अलग होकर तुमबड़ेहर्षसे युक्तहोके इससूत के पुत्र कर्णको मारो ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिश्रीकृष्णअर्जुनसंवादेएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि श्रीकृष्णजीके इसरीतिकेवचनको सुनकर अपने मित्र श्रीकृष्णजीकी प्रशंसा करनेलगा और बड़े हठको करके धर्मराजसे ऐसे कठोर बचन बोलाजैसे पूर्वकभीनहींबोलाथा १ हेराजा तुमतो युद्धसे एक कोश दूरनियतहो तुमऐसा मुझसेकभी मतकहो

जोचाहै तो भीमसेनमेरी निन्दा करनेकोयोग्यहै किसब लोकके शूर बीरोंसे लड़ताहै २ वहकाल रूप भीमसेन युद्धमें शत्रुओं को पीड़ा मान करके बड़ेशूरबीरराजाओंको उत्तमरथोंको श्रेष्ठतर हाथियोंको उत्तमअश्वारूढ़ोंको और असंख्य वीरोंको ३ हाथियोंसमेत मारकर बड़ेकठोरसिंहनादको गर्जनाकरताहै औरजैसे कि मृगोंकोसिंह मारताहै उसीप्रकार युद्धभूमिमें दशहजार कांबोजदेशी औरपहाड़ी शूर बीरोंकोमारकर वहबीरबड़े२ ऐसेकठिनकर्मोंकोकरताहै जिनको तुम कभीकरने को समर्थ नहींहोसक्के और रथसे कूद गदाको हाथमें लेकर उसके प्रहारोंसे युद्धमें घोड़े रथऔर हाथियों को मारकर सिंहके समान दहाड़ताहै ४।५ इसके बिशेष खड्गसे भी घोड़े रथ और हाथियों को अथवा रथांग और धनुष से शत्रुओं को मारकर फिरबड़े क्रोध और पराक्रमका रखने वाला दोनों भुजाओं से पकड़ कर चरणोंसेही शत्रुओंको मारडालताहै ६ वह कुबेर औरयमराज केसमान महा पराक्रमी बड़े हठकरके शत्रुओंकी सेनाका मारने वालाहै वह भीमसेन मेरी निन्दा करने के योग्यहै न कि तुम जोकि सदैव शुभ चिन्तकों से रक्षा किये जातेहो ७ अकेला भीमसेनही बड़े२ रथ हाथी घोड़े और असंख्यों पदातियोंकोमथकर धृतराष्ट्र के पुत्रोंमें मग्नहै वह शत्रुओं का बिजयी मेरी निन्दा करने केयोग्य है ८ जोकि कलिंग बंग अंग निषाद और मगध देशियों को और नीले बादलके समान मतवाले हाथियोंको और शत्रुओंके मनुष्यों को सदैव मारताहै वह शत्रुसंहारी भीम मेरी निन्दाके योग्य है ६ वहबड़ाबीर महा युद्धमें समय पर उचित रथपर सवार होकरधनुष को चलायमान करताहुआ बाणोंसेपूर्ण ऐसी बाणों की वर्षा करता है जैसे जलधाराओं की बर्षा बादल करता है १० जिस भीमसेनने अभी मुखकी नोंक सूंड़ और अङ्गों समेत घायल करके आठसौ बड़े२ हाथी युद्धभूमिमें मारडाले वह शत्रुओंका मारनेवाला मुझसे कठोर बचन कहने के योग्यहै ११ बुद्धिमान मनुष्य उत्तम ब्राह्मणों के बचनमें पराक्रमको और बहुतसे क्षत्रियों में पराक्रमको कहते हैं

हेभरतवंशी तुम वचनमें बली और कठोरहो और तुम्हीं मुझकोजा-
नतेहो जैसा कि मैं पराक्रमीहूं १२ जोकि मैं स्त्रीपुत्र जीवन औरआत्मा
केसाथ तेरे चित्तकाप्रियकरनेको सदैव प्रवृत्त रहताहूं इसपरभी जो
तू मुझकोबचनरूपी बाणोंसे भेदकर मारताहै हमतुझसे उससुखको
नहीं जानते १३ तू द्रौपदीकी शय्यापर नियतहोकर मेरा अपमान
मतकर मैं तेरेही निमित्तमहारथियोंको मारताहूं हेभरतवंशी इसहेतु
से तुमशंका करनेवाले होकर महानिष्ठुर प्रकृतिहो मैंने तुझसेकभी
सुखको नहींपाया १४ हेनरदेव युद्धमेंसत्यसंकल्प भीष्मजीने अपने
आपतेरेही अभीष्टकेलिये अपनी मृत्यु को तुझसे कहा द्रुपदकापुत्र
शिखण्डी बीर महात्माहै उसीनेमेरे आश्रयमें होकरउनकोमारा १५
जो कि तुम पांशोंकी बाजीमें कार्य्योंके बिगाड़ने में प्रवृत्त हुये इस
हेतुसे मैं तेरे राज्यकी प्रशंसा नहीं करताहूं तुम नीचों से सेवित
अपनेआप पापोंको करके हमारेद्वारा शत्रुओंको विजयकरना चाह-
तेहो १६ तुमने पांशोंकी बाजीमें धर्मके विपरीत बहुत से दोषोंको
जिनको कि सहदेवने बर्णन किया तुम नीचोंसे सेवित उन दोषोंके
त्याग करनेकी इच्छानहीं करतेहो इसीकारणसे हम सब दुःखोंमें
पड़ेहुयेहैं १७ किसी प्रकारकाभी सुखतुमसेहमको नहीं हुआ क्यों
कि तुम पांशोंके खेलमें बड़े मतवालेहो हेपांडव तुम आप दुःखको
उत्पन्न करके अब हमको कठोर बचन सुनातेहो १८ हमारे हाथ
से अंगभंगभारी हुई शत्रुओंकी सेना पृथ्वीपर सोतीहुई पुकारतीहै
तुमने ऐसा निर्दयकर्म किया जिसके दोषसे कौरवोंका मरण उत्पन्न
हुआ १९ उत्तर के रहनेवाले मारे पश्चिमी लोगोंका नाश किया
और पूर्वी वा दक्षिणी मारेगये युद्धमें हमारे और उनकेशूरवीरों ने
वह अपूर्व और अद्भुत कर्मकिया २० तुम द्यूतके खेलनेवालेहो
तुम्हारेही कारणसे राज्यका नाशहुआ हे नरेन्द्र हमारा दुःख तुझ
से पैदाहोनेवाला है हे राजा हमलोगोंको बचन रूपी चाबुकों से
पीड़ा देनेवाले तुम दुर्भागी फिर हमको क्रोधयुक्त मतकरना २१
संजय बोले कि वह स्थिरबुद्धी धर्म से भयभीत महाज्ञानी अर्जुन

इन कठोर अप्रतिष्ठित बचनोंको सुनाकर कुछपापकियाहुआ समझ
कर उदास होगया अर्थात् वह इंद्रका पुत्र वारंवार श्वासलेता
हुआ पीछे से महा दुखी हुआ और फिर खड्गको निकाल लिया
तव श्रीकृष्णजी बोले आप इस आकाश रूप खड्गको फिर किस
निमित्त म्यानसे अलग करतेहो २३ इसका हमको उत्तर दोगे तब
मैं तुम्हारे कल्याण और प्रयोजन के सिद्ध होने को कुछ कहूंगा
पुरुषोत्तमजीके इस बचनको सुनकर अर्जुन बड़ा दुखीहोकर केशव
जीसे बोला कि जो मैंने अप्रिय रूपी पापकर्म कियाहै इससे अपने
शरीरको नाशकरूंगा धर्म धारियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुन के इस
बचनको सुनकर यह बचन बोले कि २५ हे अर्जुन तुम इसराजासे
ऐसे बचन कहकर घोरदुःखमें क्यों प्रवृत्तहुये हे शत्रुओं के मारने
वाले अर्जुनजो तुम अपघात करना चाहतेहो यह कर्म सत्पुरुषों
का नहींहै २६ हेनरबीरजो तुम अब इसधर्मात्मा बड़े भाईकोखड्ग
से मारोगे तो तुझ धर्मसेडरने वालेकी कीर्त्ति किस प्रकारकी होगी
इसका तुमक्या उत्तर दोगे २७ हे अर्जुन धर्म बड़ा सूक्ष्म होकर
कठिनतासे जानने के योग्यहै तुम बड़े २ बुद्धिमानोंके कहेहुये
धर्मको समझो तुम आप अपना अपघात करके वा भाई के मारने
से महाघोर नरक में पड़ोगे २८ हे अर्जुन अब तुम यहां अपने
बचनसे अपनेही गुणोंको वर्णन न करो जिससे कि तुमहतात्माहो-
जाओ इस बचनको इंद्रके पुत्र अर्जुनने पसन्द किया कि हे श्री-
कृष्णजी ऐसाहीहो २६ फिर धनुषको लचाकर धर्म धारियोंमें श्रेष्ठ
युधिष्ठिरसे बोला कि हेराजा सुनो कि महादेवजीकेसिवाय मुझसा
धनुषधारी कोईनहींहै३०मैं तुझमहात्माकी आज्ञासे एक क्षणभर
मेंही सब स्थावर जंगमजीवों समेतसंसारभरेको मारसक्ताहूं हेराजा
मैंने दिग्पालों समेत सब दिशाओंको बिजय करके तेरे अधीनकर
दीन्हीं३१वह पूर्णदक्षिणायुक्त राजसूययज्ञ औरआपकी वह दिव्य
सभा मेरेही पराक्रमसे हुई और मेरेहाथोंमें तीक्ष्णधारवाले बाणहैं
और बाणोंसेयुक्तप्रत्यंचावाला लम्बायमानधनुषहै३२औरमेरेचरण

रथ और ध्वजा समेतहैं और युद्धमें वर्त्तमान होकर मुझको कोई शूरवीर विजयनहीं करसक्ताहै मैंने पूर्व्वीय पश्चिमीय उत्तरीय और दक्षिणीय राजालोगोंको मारा ३३ संसप्तकोंका कुछ शेषबाकीहै इसरीतिसे सबसेनाका आधाभाग मारडाला हे राजा देवसेनाके समान यह भरत बंशियोंकी सेना मेरे हाथसेही मारीहुई पृथ्वीपर सोरहीहै ३४ जो अस्त्रोंके जाननेवालेहैं उनकोमैं अस्त्रोंहीसे मारता हूं इसीहेतुसेयह अस्त्रलोकोंके भस्मकरनेवालेहैं हेश्रीकृष्णजीभयके उत्पन्न करनेवाले इस विजयीरथपर सवारहोकर कर्णके मारनेको चलैं ३५ अबयह राजायुधिष्ठिर सुखीहोजाय मैं युद्धमें अपनेबाणों से कर्णको मारूंगा ऐसाकहकर अर्जुनने धर्मधारियोंमेंश्रेष्ठयुधिष्ठिर से यहबचनकहा ३६ कि अबकर्णकीमाता अपनेपुत्रसे रहितहोगी अथवा कुंती मुझसे पृथकहोगी मैं सत्य२ कहताहूं कि अबयुद्धभूमि में कर्णको बाणोंसे मारेबिनामैं अपने कवचको नहीं उतारूंगा ३७ संजयबोलेकि अर्जुननेयुधिष्ठिरसे ऐसाकहकरफिरभी शस्त्रोंकोउतार धनुषछोड़ बड़ीशीघ्रतासे खड्गको म्यान में रखकर३८बड़ीलज्जा से नीचा शिरकिये हाथजोड़कर युधिष्ठिरसेकहा कि हे राजा प्रसन्न हूजिये और मेरे कहेहुयेको क्षमाकरिये आप समय पाकर जानेंगे अब आपको नमस्कारहै ३९ इसरीतिसे अप्रसन्नराजाको प्रसन्न करकेफिर यहबचनबोलाकि इसकार्य्यमें बिलम्बनहोगी बड़ीशीघ्रता पूर्वक यहकार्य्यहोगा मैं इसलौटतेहुयेके सन्मुख जाताहूं ४० अबमैं सर्वात्मभाव से भीमसेनको युद्धसेछुटाने और कर्णको मारनेको जाताहूं मेराजीवन केवल आपके अभीष्टकेही निमित्तहै हेराजा मैं आपसे सत्य २ कहताहूं आप मुझको आज्ञादीजिये ४१ यहकहकर बड़ातेजस्वी अर्जुन चलनेके समय भाईके चरणोंको पकड़कर उठा फिर पांडवधर्मराजने अपनेभाई अर्जुन के इस कठोर बचन को सुन कर ४२ महादुखीहो अपने उस शयनस्थान से उठकर अर्जुन से कहा हे अर्जुन मैंने वहमहादुष्ट कर्म किया जिसके कारण तुमको ऐसा महाघोर दुःखप्राप्तहुआ ४२इसकारणसे मुझकुलके नाशक

महापापीदुःखोंसेयुक्तअज्ञानबुद्धी आलसी भयभीत वृद्धोंकेअपमान करनेवाले इसनीच पुरुषके शिरको काटडालो तेरेरूखे २ बचनों के सुननेसे मेराकोई प्रयोजन नहींहै अबमैं महापापी बनकेही जानेके योग्यहूं मैं अवश्यबनहीको जाऊंगा और आपमुझसे पृथक् होकर सुखसेराज्यकोकरो४४।४५महात्माभीमसेनराजाहोनेकेयोग्यहै मुझ नपुंसकका राज्यमें क्याकामहै और तुझक्रोधयुक्तके इनकठोरबचनों के सहने कोभी मैं समर्थ नहीं हूं ४६ हे बीर मुझ अपमानवाले के जीवन के कारण से फिर भीमसेन राजाकरने के योग्य न होगा इसरीति के बचनों को कहकर राजा युधिष्ठिर अपने शयन स्थान को छोड़कर उछला ४७ और बनके जानेकी इच्छाकरी तब तो वासुदेव जीने बड़े नम्रहोकर युधिष्ठिरसे कहा हेराजा यह आप समझिये ४८ कि जैसे कि सत्यप्रतिज्ञ गांडीव धनुषधारी की प्रतिज्ञा सुनीगई अर्थात् जो कोई कि ऐसा कहै कि गांडीव धनुष दूसरे के देनेके योग्यहै वहपुरुष लोकमें उसके हाथ से मारने के योग्य है और यहतुमने उससे कहा इस हेतुसे अर्जुन ने उस अपनी सत्य प्रतिज्ञाकी रक्षाकरीहै४६।५०हेराजायह तेराअपमान मेरीइच्छासे कियागयाहै क्योंकि गुरुओं का अपमानही मारने के समान कहा जाताहै ५१ हे महाबाहो राजा युधिष्ठिर इसहेतुसे सत्यकी रक्षा के निमित्त मेरी और अर्जुनकी अनम्रताको आप क्षमा करिये ५२ हे महाराज हमदोनों आपकी शरणमें बर्त्तमानहैं हेराजामुझप्रणात रूप प्रार्थना करनेवालेका अपराध क्षमाकरिये ५३ अबयहपृथ्वी उस पापात्मा कर्णके रुधिरकोपानकरेगी यहमैं तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूंकि अबतुम कर्णको मराहुआहीजानो ५४ जिसकातूमरना चाहताहै अबउसकी अवस्था जीवनकीभी समाप्तहुई तब श्रीकृष्ण जीके बचनको सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने ५५ भ्रान्ती से युक्त झुकेहुये श्रीकृष्णजीको उठाकर हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजी से यह बचनकहा ५६ कि हे श्रीकृष्णजी जैसा आपने कहाहै वैसाही है कि इसमें मेरी अमर्य्यादा होय हेमाधव गोबिन्दजी मैं आपकेसम-

झाने से समझ गयाहूं ५७ हे अविनाशी अवहम तुम्हारे कारणसे घोर दुःखसेछूटे और अपनी अज्ञानतासे अचेतहम दोनोंआप रूप स्वामीको पाकर इसघोररूप दुःखसमुद्रसेपारहुये ५८ हमसबअपने मंत्रियोंसमेतआपकीबुद्धिरूपी नौकाकोपाकरदुःख और शोक रूपी नदी से पारहुये हेअबिनाशी हमतुमसे सनाथहैं ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणियुधिष्ठिरप्रबोधनेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसके पीछे धर्मात्मा यदुनन्दनगोविन्दजी धर्मराजके इसप्रीति युक्त बचनों को सुनकर अर्जुन से बोले १ और अर्जुन इसरीतिसे श्री कृष्ण जी के बचनसे युधिष्ठिरको कठोरवचन कहकर उदास हुआ जैसे कि कुछपापको करके उदास होतेहैं २ तब हंसतेहुये बासुदेवजी उस पांडव से बोले कि हे अर्जुन यहकैसे हो सक्ताहै जो उसधर्मनिष्ठ धर्मके पुत्रको तीक्ष्णधारवाले खड्ग से मारे तुमराजासेयह कहकरएक पापमेंपड़े ४ हेअर्जुन राजाकोमार करपीछे से तुमक्या करते इस रीतिसे अल्प बुद्धियोंसे बड़ीकठिनता पूर्वक धर्मजानने के योग्यहै ५ सो आपधर्म के भयसे बड़े भाई के मारनेकेद्वारा बहुत बडे घोर नर्क में अवश्य पड़े ६ सो तुम धर्मधारियों में श्रेष्ठ धर्मकेसमूह कौरवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरको प्रसन्न करो यहीमेरा मतहै ७ अपनी भक्तिसे राजाको प्रसन्नकरो फिर उस युधिष्ठिरके प्रसन्नहोनेपर शीघ्रही युद्धके निमित्त कर्णके रथकेसमीप चलेंगे ८ हे बड़ाई देनेवाले अब तुम युद्ध में अपने तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे कर्णको मारकर धर्मराजको बड़ी प्रसन्नताको प्राप्त करो ६ हेमहाबाहोयहांपर यह वार्त्तासमयके अनुसारहै यहमेरामत है ऐसा करने पर तेराकियाहुआ कार्य सिद्धहोगा १० हेमहाराज इसके पीछे लज्जा युक्त अर्जुन धर्मराजके दोनों चरणोंको पकड़कर शिरसे झुकगया ११ औरउस भरतर्षभसे बारंबार बिनयकरनेलगा किहेराजाजोमुझसबकामोंसे डरेहुयेने आपकेसन्मुख असभ्यबचन

कहे उनको आप क्षमा करिये १२ हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र तबतो धर्मराज युधिष्ठिरने उस शत्रुसंहारी रोतेहुये और गिरेहुये अर्जुनको देखकर १३ उस संसारकी लक्ष्मीके बिजयकरनेवाले भाईको उठाकर बड़ी प्रीतिसे हृदय से लगाकर अतिरोदन किया १४ हे महाराज वह महातेजस्वी शुद्धअंतःकरणवाले दोनोंभाई बहुत बिलंबतकरोदन करके प्रसन्न हुये १५ फिर पांडव धर्मराज बड़े प्रेमसे मिलकर उसके मस्तकको सूंघके बड़ी प्रीतियुक्त मंदमुसकान करते हुये उस बड़े धनुषधारीसे बोले १६ हे महाबाहो बड़े धनुषधारी कर्णने युद्धमें सबसेनाके देखतेहुये मुझ उपाय करनेवाले को कवच, ध्वजा, धनुष, शक्ति घोड़े और बाणोंको १७ अपने बाणोंसे काटकर पराजयकिया हे अर्जुन सोमैं युद्धमें उसको जानके और उसकेकर्मको देखकर १८ महादुःखी होताहूं और जोतू युद्ध में उसबीर शत्रुको नहीं मारेगातो मुझको जीवन प्यारा न होगा १९ अर्थात् अपनेप्राणोंको त्यागकरूंगा फिर जीने से मेराकोई प्रयोजन नहींहै हेभरतर्षभ इसप्रकार के युधिष्ठिरके बचनों को सुनकर अर्जुनने उत्तरदिया २० हेनरोत्तम महाराज मैं आपकोसत्यता वा प्रसन्नता वा भीमसेन नकुल और सहदेवकी शपथकरताहूं २१ मैं जिसप्रकारसे अब कर्णको मारूंगा वा आप मरकर पृथ्वीपर गिरूंगा मैं सत्यतासे उसशस्त्रको प्राप्तकरता हूं २२ ऐसा राजासे कहकर फिर माधवजीसे बोला कि हेश्रीकृष्णजी अब मैं निस्संदेह युद्धमें कर्णकोमारूंगा २३ आपकाकल्याणहोय यहसब आपहीके बिचारसेहै उस दुरात्माका मरण होगा हेराजाओंमें श्रेष्ठ यहबचन सुनकर केशवजी अर्जुनसेबोले २४ हेभरतर्षभ तुम बड़े पराक्रमी होकर कर्ण के मारने को समर्थ हो हे महारथी मेरीभी सदैवसे यही इच्छा है २५ तुम युद्ध में कैसे कर्णको मारोगे यहकहकर वहश्रेष्ठपुरुषोत्तम माधवजी फिर युधिष्ठिरसेबोले २६ हेयुधिष्ठिर तुमअब दुरात्माकर्णके मारनेकेनिमित्त अर्जुनको विश्वासपूर्बक आज्ञादेनेको योग्यहो २७ हे पांडुनन्दन आपको कर्णकेबाणों से पीड़ामान सुनकर मैं और अर्जुन वृत्तान्त निश्चय करनेको यहां

आयेथे सो २८ हेराजा आप प्रारब्धसे जीवतेहुये और उसकेपकड़ने से बचेहुयेहो हे निष्पाप अब तुम इस अर्जुन को विश्वास पूर्वक विजयका आशीर्वाददो २९ युधिष्ठिर बोले हे पांडव अर्जुन आओ आओ मुझ से मिलो कहनेके योग्य और चित्तके अभीष्टको प्राप्त करनेवाला बचन कहागयाहै जोतुमने मुझसेकहा वहमैंने सवक्षमाकिया ३० हेअर्जुन अबमैं तुझको आज्ञादेताहूं कितुम कर्णकोमारो हे अर्जुन और जो २ मैंने कठोर बचन कहे हैं उनसे क्रोधयुक्त मतहो ३१ संजय बोले हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र तबतो कमरसे झुके हुये अर्जुनने हाथोंसे अपने अपने बड़े भाईके दोनों चरणोंको पकड़ लिया ३२ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उसको उठाके अच्छीरीतिसे मिलकर मस्तकको सूंघ फिर उस से कहनेलगे ३३ हे महाबाहो अर्जुन मेरी तैंने बड़ी प्रतिष्ठाकरीहै तुम फिर महत्त्वता और अविनाशी विजय को प्राप्त करोगे ३४ अर्जुन बोलेकि अब मैं उसपापी और बलसे अहंकारी कर्णको युद्धमें पाकर बाणोंसे उसके भाईबेटों समेत मारूंगा ३५ जिसके खिंचेहुये धनुषके बाणोंसेतुम महापीड़ामान हुयेहो वहकर्ण अब बहुत शीघ्रही उसके फलको पावेगा ३६ हेराजा अबमैं कर्णको मारकरही आपको सेवन करनेके निमित्तदेखूंगा मैं उच्चस्वरसे यहतुमसेसत्य२ कहताहूं ३७ हे पृथ्वीके स्वामी अबमैं कर्णको मारेबिना युद्धभूमिसे नहींलौटूंगा सत्यतासे आपके दोनों चरणोंको छूताहूं ३८ संजय बोलेकि तबतो प्रसन्नचित्त युधिष्ठिरने इसप्रकारकी बातें करनेवाले अर्जुनसे बहुत बड़ा यह बचन कहा कि तेरी अबिनाशी कीर्ति वा मनोभीष्ट जीवन वा विजय वा सदैव पराक्रम वा शत्रुओंका नाश ३९ और वृद्धि को देवता लोग कृपा करकेदें और जैसा मैं चाहताहूं वैसाही तेरा अभीष्ट सिद्धहोय शीघ्रजाओ और युद्धमें कर्णको ऐसेमारो जैसे कि इन्द्रने अपनी वृद्धिकेनिमित्त वृत्रासुरको माराथा ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणियुधिष्ठिरवरप्रदानेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि कर्णके मारने को उपस्थित अर्जुन अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर धर्मराजको प्रसन्न करके गोविन्दजीसे बोला १ कि मेरा रथ फिर तैयार करिये और उत्तम घोड़ोंको पूजो और उसी मेरे कल्याण रूपी रथपर सब अस्त्र शस्त्रोंको धरो २ अश्वसवारों से शिक्षित और पृथ्वीके लोटनेसे गत परिश्रम और रथके सब सामानोंसे अलंकृत शीघ्रता युक्त चंचल घोड़े बहुत शीघ्र सन्मुख लाये जायं ३ हे गोविन्द जी कर्णके मारनेकी इच्छा से अब शीघ्र चलो हे महाराज महात्मा अर्जुनके इस बचनको सुनकर ४ श्रीकृष्ण जी दारुक सारथीसे बोले कि वह सब करो जिस प्रकार इस भरतर्षभ और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ अर्जुनने कहाहै ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ इसके पीछे श्रीकृष्ण जीकी आज्ञा पातेही उस दारुकने शत्रुसंतापी ब्याघ्र चर्म से मढ़े हुये उत्तम रथको जोड़ा ६ और रथको तैयार करके महात्मा पांडव अर्जुन के आगे निवेदन किया कि रथ तैयार है तब महात्मा दारुक के तैयार किये हुये रथको देखकर ७ धर्मराजसे आज्ञा ले ब्राह्मणों से स्वस्ति बाचन कराके बड़े मंगल और स्वस्त्ययनके साथ रथपर सवार हुआ उस समय बड़े ज्ञानी धर्मराज राजा युधिष्ठिरने उसको आशीर्बाद दिया इसके पीछे वह कर्णके रथके पीछे चला ८।९ हे भरत-बंशी सब जीवोंने उस बड़े धनुषधारी अर्जुनको आता देखकर महात्मा पांडवके हाथसे कर्णको मरा हुआ माना १० हे राजा सब दिशा चारों ओरसे निर्मल हुईं उस समय चाष शतपत्र और क्रौंचनाम पक्षियोंने ११।१२ पांडुनन्दन अर्जुनको दक्षिणा किया हे राजा मंगल वा कल्याणरूप और प्रसन्न रूप अर्जुन को युद्धमें प्रेरणा करते बहुत से नर पक्षी भी शब्द करनेलगे १३ और हे राजा भयानकरूप कंक गिद्ध बक बाज़ और काक यह सब मांसखानेकेलिये उसके आगे २ चले उन्होंने अर्जुन के मंगलकारी शकुनोंको इसरीतिसे बर्णन किया १४ कि शत्रुओंकी सेनाका और कर्णको नाश होगा इसके पीछे यात्रा करने

वाले अर्जुनको बड़ा खेद उत्पन्न हुआ १५ और बड़ी चिन्ताउत्प-न्नहुई कि यह कैसेहोगा इसके अनन्तर मधुसूदनजी गांडीव धनुष-धारीसे बोले १६ हेगांडीव धनुषधारी युद्धमें जो२ तेरेधनुषसे वि-जय कियेगये उनका विजय करनेवाला दूसरा मनुष्य इस पृथ्वी पर नहींहै १७ इन्द्रके समानभी अनेक पराक्रमी देखेउनशूरोंने भी तुझको पाकर युद्धमें परमगतिको प्राप्त किया १८ इन द्रोणाचार्य्य भीष्म, भगदत्त, बिन्द, अनुबिन्द, अवन्तिदेश के राजालोग, कां-बोज, सुदक्षण१९ बड़े पराक्रमी श्रुतायुश और अश्रुतायुशके सन्मुख जाकर जोतेरे प्रास दिव्य अस्त्र वा हस्तलाघवता वा पराक्रम वा युद्धोंमें मोहन होता वा विज्ञानरूपी नम्रता नहोती तोतेरे सिवाय किस दूसरेकी सामर्थ्यथी जो इनके आगे कुशलरहता२०।२१ और बेधचिह्न युक्त योगभी तुझ को प्राप्तहै आप गंधर्व और संसारके जड़ चैतन्यों समेत देवताओंकोभी मारसक्तेहो हे अर्जुन इसपृथ्वी पर तेरे समान कोई शूरवीर पुरुष नहींहै और जोकोई क्षत्रीयुद्धमें दुर्मद बड़े धनुषधारीहैं २२।२३ उनके मध्यमें तेरे समान देवताओं तकमें किसीको नहीं देखताहूं न सुनताहूं ब्रह्माजीने सृष्टिकीउत्पत्ति करके गांडीव धनुषको उत्पन्न कियाहै २४ हेअर्जुन जोकि तुम उस धनुषके द्वारा लड़तेहो इसीकारणसे तुम्हारे समान कोईनहीं है हे पांडव मैं उस बातको अवश्यकहूंगा जिसमेंतेरा कल्याणहोगा२५ हे महाबाहो युद्धके शोभा देनेवालेकर्णको तू मत अपमानकर यह महारथीकर्णपराक्रमी अहंकारीअस्त्रज्ञ २६ कर्मकर्त्तावाअपूर्व युद्धकर्त्ता होकरदेशकालका जाननेवालाहै यहां अबबहुत कहनेसे क्यालाभहै हेपांडव अब इसकासंक्षेपसुनो २७ मैं महारथी कर्णको तेरेसमान वा तुझसे अधिकमानताहूं वह तुझसे बड़े उपाय पूर्वक युद्धमेंस्थिर होकरमरने के योग्यहै २८ तेजमें अग्निकेसदृश वेगमें वायुकेसमा-न क्रोधमें यमराजकी सूरत सिंहके समान दृढ़शरीर महापराक्रमी २९ और शरीरकी लम्बाईमें आठहाथबड़ी भुजाओंसे युक्त वृहद्व-क्षस्थल वाला बड़ी कठिनता से बिजय होनेवाला महाअभिमानी

शूर और बड़ा बीरहै अपूर्व्व दर्शन ३० सब शूरबीरोंके समूहोंसे युक्त मित्रोंकोनिर्भय करनेवाली सदैवपांडवोंका शत्रु दुर्योधनके मनोरथ सिद्ध करनेमें तत्पर ३१ तेरेसिवाय इन्द्रसमेत सबदेवताओंसे भी मारने के अयोग्य है यह मेरामत है कि तुम उस सूत पुत्रको मारो ३२ सावधान रुधिरमांस के धारण करने वाले मनुष्यों समेत युद्धाभिलाषी सब देवताओं सेभी वह महारथी कर्ण विजय करने के योग्य नहींहै ३३ उस दुरात्मा पाप से अहंकारी निर्दयी सदैव पांडवों से दुष्टबुद्धि रखने वाले और पाण्डवों से निरर्थक विरोध करने वाले कर्ण को मारकर अब तुम अपने अभीष्ट को सिद्ध करो ३४ अर्थात् अब तुम उस रथियों में श्रेष्ठ अजेय सूत पुत्र को कालकेबशमें करो और रथियोंमें श्रेष्ठ सूत पुत्रको मारकर धर्मराज में प्रीतिकरो ३५ हे अर्जुन देवता और असुरोंसे अजेय तेरेपराक्रम को मैं ठीक २ जानताहूं यह दुरात्मासूतपुत्र अहंकारसे सदैवपांडवोंका अपमान करता चला आताहै ३६ और जिसकेद्वारा पापीदुर्योधन अपनेको बीरमानताहै हे अर्जुन अब उस पापोंके मूलरूपसूतपुत्रकोमारो ३७ हे अर्जुन खड्गके समान जिह्वा धनुषकेसमानमुख और बाणरूपडाढ़ रखनेवाले उसबेगवान् अहंकारी पुरुषोत्तम कर्णकोमारो ३८ मैंतुझको आज्ञादेताहूं कियुद्धमेंउस शूरबीर कर्णको ऐसेमारो जिस प्रकार केसरी सिंह हाथीको मारताहै ३९ दुर्योधन जिसके पराक्रमसे तेरे पराक्रमको अपमान करताहै हे अर्जुन उस कवच और कुंडलके उखाड़ देने वाले कर्णको अबयुद्धमें मारो ४०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णवधार्थअर्जुनगमनेद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

हेभरतबंशी इसकेपीछे बड़े बुद्धिमान् केशवजी कर्णके मारनेमें संकल्प करके यात्रा करनेवाले अर्जुन से फिर बोले १ हेभरतबंशी अब मनुष्य घोड़े हाथीआदिके घोर नाशके होनेको सत्रह दिन व्यतीतहुये २ हेराजा शत्रुओंके समूहोंसे आपके शूरबीरोंकी

सेना बड़ीहोकर परस्पर युद्ध करतीहुई कुरुवाकी रहगईहै ३ हेअ-
र्जुन निश्चय करके कौरवलोग बहुत हाथी घोड़ेवाले होकर तुझशत्रु
कोपाकर सेनाकेमुखपरनाशवान् होगये ४ वह राजालोग और संजय
इकट्ठे हैं और सब पांडवलोगभी तुझअजेयको पाकर वर्त्तमानहैं ५
तुझ से रक्षित शत्रुओं के मारने वाले पांचाल पांडव मत्स्य और
कारुण्य देशियोंने चंदेरी देशियों समेत शत्रुओं के समूहों का नाश
किया ६ हेतात युद्ध में तुझ से रक्षित महारथी पांडवों के सिवाय
कौन मनुष्य युद्धमें कौरवोंके विजय करने को समर्थ होसक्ता है ७
तुम देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्ध में तत्पर होकर
तीनोंलोकोंके विजय करनेको समर्थहो फिर कौरवी सेनाके विजय
करनेको क्यों न होगे ८ हेपुरुषोत्तम तेरे बिना दूसरा कौन मनुष्य
इन्द्रकेसमान बल पराक्रमीभी राजाभगदत्तके विजय करनेको समर्थ
है ९ हेनिष्पाप अर्जुन इसी प्रकार सब राजालोग भी तुझसे रक्षित
इस बड़ी सेनाके देखने को भी समर्थ नहीं हैं १० हे अर्जुन इसी
प्रकार युद्धमें तुझ से सदैव रक्षित धृष्टद्युम्न और शिखण्डी के हाथों
से द्रोणाचार्य्य और भीष्म मारे गये ११ हेअर्जुन कौन मनुष्य युद्ध
में इन्द्रके समान पराक्रमी और भरतबंशियोंके महारथी भीष्म और
द्रोणाचार्य्यको लड़ाई में विजय करनेको समर्थथा १२ हे पुरुषोत्तम
इस लोकमें तेरे सिवाय कौनपुरुष युद्धमें मुख न मोड़ने वाले महा-
अस्त्रज्ञ अक्षौहिणी सेनाओं के स्वामी अतिउग्र परस्पर मिले हुये
युद्धमें दुर्मद इन भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य सोमदत्त अश्वत्थामा
कृतवर्मा जयद्रथ शल्य और राजा दुर्योधन के विजय करने को
समर्थ है १३ । १४ । १५ बहुतसे सेनाओंके समूह तो नाशहुये घोड़े
रथ वा हाथी पराजित और मारे गये हे भरतबंशी क्रोधयुक्त नाना
देशोंके क्षत्री और गोपालदास, मीयान, वशाती पूर्व्वीय राजालोग,
वाढ़धान, अभिमानी भोजबंशी और ब्राह्मण क्षत्रियों की बड़ी सेना
घोड़े हाथी और नाना देशों के बासी यहसब महा उग्ररूप तुमको
और भीमसेनको पाकर नाशहोगये १६ । १७ । १८ महाउग्र भय-

कारी कर्म करने वाले तुषार, यवन, खश, दार्व, अभिसार, दरद बड़े समर्थ मोठर तंगण, आंध्रक, पुलिन्द और उग्र पराक्रमी किरात म्लेच्छ, पहाड़ी, सागर और अनूप देशके रहने वाले १६।२० यह सब वेगवान् युद्धमें कुशल पराक्रमी हाथमें दंड रखने वाले कौरवों समेत दुर्य्योधन के साथ क्रोधयुक्त २१ युद्ध में तेरे सिवाय दूसरे से बिजय करने के योग्य नहीं है शत्रुओं के तपाने वाले जिस के तुमरक्षक न हो वैसा कौनसा मनुष्य दुर्य्योधन की उसबड़ी अलंकृत सेना को देखकर सन्मुख होसक्ता है २२ हे समर्थ वह समुद्र के समान उठीहुई धूलसे युक्त सेना २३ तुझसे रक्षित क्रोधयुक्त पांडवों से चीरकर मारी गई अब सातदिन हुये कि मगधदेशियों काराजा बड़ापराक्रमी जयत्सेन २४ युद्ध में अभिमन्यु के हाथ से मारागया उसके पीछे भीमसेन ने भयभीत कर्म करने वाले दश हज़ार हाथियों को अपनी गदासेही मारडाला २५ और जो कुछ राजाके घोड़े आदिथे उनकोभी मारडाला इसकेपीछे अपने पराक्रम सेही अन्य सैकड़ों हाथी और रथियोंको मारा २६ हेपांडव अर्जुन इसरीतिसे उस बड़ेभयकारी युद्धके बर्त्तमान होने पर कौरव लोग भीमसेन और तुझको पाकर २७ घोड़े रथ और हाथियोंसमेत यहां से मर मरकर यमपुरको गये हे अर्जुन इसीप्रकार वहां पांडव के हाथसे सेना मुखके मरनेपर २८ परम अस्त्रज्ञने बाणों से ढककर सबका नाशकरदिया उसके धनुषसे निकलेहुये शत्रुओंके शरीरोंके चीरनेवाले२९।३०सुनहरी पुंखयुक्त सीधेजानेवाले बाणोंसे आकाश व्याप्तहोगया वह भीमसेन एक२ घंसे सेहज़ारों रथियोंको मारता था ३१ उसने बड़ेपराक्रमी इकट्ठे हुये एकलाख मनुष्य और हाथियों को मारकर दशवींगतिसे उनहाथी घोड़े और रथोंको पाकरमारा३२ दोषों से पूर्ण नवगतियोंको त्यागकरते उसने युद्धमें बाणोंको छोड़ा और आपकी सेनाको मारतेहुये भीष्मजीने दशदिनतक ३३ । ३४ रथके आसन खाली करके घोड़े वा हाथियोंको मारा इसने युद्धमें रुद्र और विष्णुके समान अपने रूपको दिखाकर और पांडवों की

सेनाको आधीन करके मारा फिर चंदेरी पांचाल और केकय देशीय राजाओंको मारतेहुये ३५ बिना नौकाके नदीमें डूबनेवाले अभागे दुर्योधनके निकालनेके इच्छावान् भीष्मने रथ हाथी और घोड़ोंसे व्याकुल पांडवीसेनाको भस्मकिया ३६ युद्धमेंउत्तम शस्त्ररखनेवाले हजारों कोटि पदाती वा सृंजय वा अन्य राजालोग चलते हुये सूर्य्यके समान घूमनेवाले युद्धमें विजय से शोभायमान जिसभीष्म जीके देखनेकोभी समर्थ नहींहुये ३७।३८ऐसाप्रतापी भीष्मभी बड़े उपाय से पांडवोंके सन्मुखगया वहांअकेले भीष्मनेपांडव और सृंजियोंको भगाकर३६ सब वीरोंमें प्रतिष्ठाकोपाया फिरतुझसे रक्षित शिखण्डीने उस महाव्रतनाम भीष्म को पाकर४० गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे मारा वह भीष्मपितामह तुझपुरुषोत्तमको पाकर गिराहुआ शर शैयापर ऐसे सोताहै जैसे कि इन्द्रको पाकर वृत्रासुर सोया था उग्ररूप भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने पांचदिन तक शत्रुओं की सेनाको छिन्नभिन्न करके ४१।४२ अभेद्यव्यूहको अलंकृतकरकेबड़े २ महारथियोंको गिरातेहुयेयुद्धमें जयद्रथको रक्षाकरकेउसउग्ररूपने यमराजके समान रूप धारण करके रात्रिके युद्ध में प्रजाका नाशकर दिया फिर शूरबीरोंको बाणोंसेमारकर ४३।४४ धृष्टद्युम्नको पाकर परमगतिको पाया अबजो तुम कर्णआदि रथियोंको ४५ न हटाते तो द्रोणाचार्य्य युद्धमें नमारे जाते तुमने दुर्य्योधनकी सबसेनारोकी उसकारणसे द्रोणाचार्य्य युद्धमें धृष्टद्युम्नके हाथसेमारेगये हेअर्जुन तेरे सिवाय दूसरा कौनसा क्षत्री ऐसे कर्मको करसक्ताहै ४६।४७ जैसा कि तुमने जयद्रथके मारनेमें कियाथा अर्थात् बड़ीभारी सेनाकोरोककर बड़े २ शूरबीरोंकोमारके ४८ राजाजयद्रथको तैंने अपने तेज और बलसे मारा सब राजालोग जयद्रथके मारनेको आश्चर्य और अद्भुत मानते हैं ४६ हे अर्जुन तुम महारथीहो इससे उसका मरना आश्चर्य युक्त नहींहै हेभरतबंशी मैं तुझकोयुद्धमें पाकर एकही दिनमें क्षत्रियोंके समूहों का नाशहोना मानताहूं ५० यहमेरा पूर्ण बिश्वासहै सो हे अर्जुन यह दुर्योधनकी घोरसेना युद्धमें ५१

सब शूरबीरों समेत मृतक रूपहै जब कि भीष्म और द्रोणाचार्य्य सरीखे मारेगये वह भरतवंशियोंकी सेना जिस के अत्यन्त शूरबीर मारेगये और घोड़े रथ और हाथीभी मारेगये ५२ अब ऐसी दिखाई देतीहै जैसे कि सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रोंसे रहित आकाश होता है हेभयानक पराक्रमी अर्जुन यह सेना युद्धमें ऐसे नष्टहोगई ५३ जैसे कि पूर्व्व समयमें इन्द्रके पराक्रमसे असुरोंकी सेना नाशहोगई थी इससेनामें मरनेसे बाकी बचेहुये पांचमहारथीहैं ५४ अश्वत्थामा कृतबर्मा, कर्ण, शल्य, कृपाचार्य्य हेनरोत्तम अबतुम इनपांचों महा रथियोंकोमारकर ५५ शत्रुओंसे रहित जानकर द्वीप,नगर, आकाश तल,पाताल,पर्व्वत और महाबनों समेत पृथ्वीको अपनीकरकेराजा को सुपुर्दकरो ५६ अब असंख्यलक्ष्मी और पराक्रमका रखनेवाला युधिष्ठिर इसपृथ्वीको पावे जैसे कि पूर्व्व समयमें विष्णुजीने दैत्य और दानवोंको मारकर पृथ्वीको इंद्रके अर्थदीथी उसीप्रकार तुमभी इनसब कौरवादि क्षत्रियोंको मारकर राजाकोदो ५७ अबतेरे हाथ से शत्रुओंको मारनेसे पांचालदेशी ऐसे प्रसन्न होयं जैसेकि विष्णु जीके हाथसे दैत्योंके मरनेपर देवतालोग प्रसन्नहुयेथे ५८ अथवा जो गुरूकी महत्वतासे द्विपादोंमें श्रेष्ठ गुरू द्रोणाचार्य्यके तुझमारने वालेकी दया और करुणा अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य परहै ५९ वह अत्यन्त पूजित भाई माताके बांधवोंको मानताहुआ कृतवर्माको पाकर यमलोकमें नहीं पहुंचावेगा ६० और हे कमलनयन अबजो तुम दयाकरके माताकेभाई मद्रदेशियोंके राजाशल्यको मारना नहीं चाहतेहो ६१ तो हेनरोत्तम अब पांडवोंकेऊपर पाप बुद्धि रखनेवाले अत्यंतनीच इस कर्णको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसेमारो ६२ यहतेरा श्रेष्ठ और शुभकर्महै इसमें किसीप्रकारका तुझको दोषनहीं होसक्ता है और हमभी ठीक २ जानते हैं कि इसमें कोई दोष नहीं है ६३ हेनिष्पाप रात्रिके समय पुत्रोंसमेत तेरी माताके शोककरनेमें और द्यूतके निमित्त दुर्योधनने तुमलोगोंको जो २ कष्टदिये ६४ इनसब बातोंका मूलरूप यह दुष्टात्मा कर्णहीहै दुर्योधन सदैवसेही कर्ण

से अपनी रक्षा मानताहै ६५ और इसी कर्णके कारणसे उसनेमेरे भी पकड़नेका बिचारकिया हे बड़ाई देनेवाले इसराजा दुर्योधनको बुद्धिसे दृढ़ बिश्वासहै कि ६६ कर्णही युद्धमें निस्संदेह सब पांडवों को बिजय करेगा हेअर्जुन तेरे पराक्रमके जाननेवाले दुर्योधननेकर्ण का आश्रय लेकर तुमलोगोंसे शत्रुता अंगीकार करी वह कर्णसदैव यही कहताहैकि मैं सन्मुख आनेवाले पांडवोंको ६७।६८और महारथीयादव बासुदेवको बिजयकरूंगावह अत्यन्त दुष्टात्मा दुर्योधनको उत्साह दिला दिलाकर यहकहा करताहै ६९ वहकर्णजो युद्धमेंगर्ज रहाहै हे भरतबंशी अब उसको मारो निश्चयकरके दुर्योधनने जो २ तुम्हारे साथ पापकिये ७० उनसबमें यही दुष्टात्मा कर्णही कारणथा और जो उस दुर्योधनके रखतेहुये उसके निर्दयीइन छः महारथियों ने ७१ अधर्म युद्ध करके अभिमन्युको मारडाला द्रोणाचार्य्य,कृपाचार्य्य,अश्वत्थामा इनतीनोंने नरोत्तम बीरोंकेपीड़ामान करनेवाले हाथियोंको मनुष्योंसेरहित करनेवाले औरमहारथियोंको रथसे विरथ करनेवाले घोड़ों को उनके सवारों से रहित करनेवाले पतियों को शस्त्र और जीवनसे रहितकरनेवाले ७२ कौरव वृष्णियों के यशके बढ़ानेवाले सेनाओंके छिन्नभिन्न करनेवाले महारथियोंको पीड़ामान करनेवाले ७३।७४ मनुष्यघोड़े और हाथियोंको यमलोकमें पहुंचानेवालेबाणोंसेसेनाको भस्मकरनेवाले आतेहुये अभिमन्युको जोमारा ७५वहदुःख मेरेअंगोंको भस्मकियेडालताहै हे मित्र मैं तेरीसत्यता की शपथ खाताहूं हे प्रभु जोदुष्टात्मा कर्णनेवहांभी शत्रुताकरी ७६ वह कर्ण युद्धमें अभिमन्युके आगेसन्मुखता करनेको असमर्थ अभिमन्युके बाणोंसे छिदाहुआ अचेत रुधिर में डूबा शरीर ७७ क्रोधसे प्रकाशित श्वासलेता मुखफिरा शायकोंसे पीड़ामानभागनेको चाहता जीवनसे निराश ७८ अत्यन्त ब्याकुल युद्धमें प्रहारों से थकाहुआ नियतहुआ तदनन्तर समय के अनुसार युद्ध में द्रोणाचार्य्य के ७९ निर्दय बचनको सुनकर फिर कर्णने धनुषको काटा इसकेपीछे उसके हाथसे टूटेशस्त्रवाले अभिमन्युको छलीबुद्धिवाले पांच महारथियों

ने ८० युद्धमें बाणोंकी बर्षासे घायल किया उसवीरके मरनेपर सब लोगोंमें दुःख प्रवृत्तहुआ अर्थात् सबको तो बड़ाखेद हुआ परन्तु वह दुष्टात्मा कर्ण और दुर्य्योधन बहुतहंसे कर्णने निर्दयमनुष्यके समान पांडव और कौरवोंके सन्मुख सभाकेमध्यमें द्रौपदी सेजो यह कठोर शब्द कहे कि हे कृष्णा पांडव नाशमान होकर सनातन नरक को गये ८१।८२।८३ हे पृथुश्रोणि मृदुभाषिणी द्रौपदीतुम दूसरे पति को बरो अथवादासीरूप होकर दुर्य्योधनके महलमें ८४ प्रवेशकरो तेरे पतिनहींहैं हे भरतवंशी उस समय महादुर्बुद्धी पापात्मा कर्णने तेरेसुनतेहुये धर्मराजसे यहपाप बचनकहाहै अब पापीकेउस बचन को सुवर्णसे जटित दश८५।८६महातीक्ष्ण मृत्युकारी तेरे चलाये हुये बाण शान्तकरो उस दुष्टात्माने जो २ और पाप तुझपर किये अब उसके कियेहुये पाप और तेरेचलाये हुयेबाण उसके जीवनको नाशकरो अब वह दुष्टात्मा कर्ण गांडीवसे निकलेहुये घोरबाणों को अपनेअंगोंसे स्पर्श करेगा और द्रोणाचार्य्य और भीष्मजीके बचनों को स्मरणकरते सुनहरीपुंख शत्रुओंके मारनेवाले बिजलीसे प्रकाशित ८७।८८।८९ तेरेचलाये हुयेबाण उसकेकवचको काटकर रुधिरको पानकरेंगे अबतेरी भुजाओं से छोड़ेहुये महाउग्र वेगवान् बाण उसकेबड़ेकवचको काटकर ९० कर्णको यमलोकमें पहुंचावेंगे अबहाहाकार करनेवाले महादुःखी तेरेबाणोंसे पीड़ित होकर राजा लोग रथसे गिरतेहुये कर्णको देखें और दुःखीहुये बांधव रुधिर में भरे पृथ्वीपरपड़े सोतेहुये ९१।९२ टूटे शस्त्रवाले कर्णको देखोतेरे भल्लसे घायलहाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली इसकेरथकी बड़ी लंबी ध्वजा महा कंपित होकर पृथ्वी परगिरे ९३ और भयभीत शल्यतेरे असंख्यों बाणोंसे टूटासुवर्णसे जटित मृतकरथीवाले रथ को छोड़कर भागो ९४ इसके पीछे तेराशत्रु दुर्य्योधन तेरे हाथसे कर्णको मराहुआ देखकर अपने जीवन और पृथ्वीके राज्यसे निराश होजाय ९५ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ कर्णके तीक्ष्णबाणोंसे घायल पांडवोंकी रक्षाचाहनेवाले यह पांचालदेशी जातेहैं ९६ सबपांचाल

और द्रौपदीके पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखंडी धृष्टद्युम्न के पुत्र, शतानीक नकुलके पुत्र ६७ नकुल, सहदेव, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा और सात्यकीको कर्णके स्वाधीनही वर्त्तमान जानो ६८ हे शत्रुओं के तपानेवाले युद्धमें कर्णके हाथसे घायल तेरे बांधव पांचालोंके यह घोर शब्द सुने जाते हैं ६९ बड़े धनुषधारी पांचाल देशी किसी दशामें भी भयभीत होकर पीठ नहींमोड़ते और बड़े युद्धमें मृत्युको भी नहीं गिनतेहैं १०० जिस अकेले ने बाणोंके समूहों से पांडवी सेनाको ढकदिया ऐसे भीष्मजीकोभी पाकर वह पांचालदेशी नहीं मुड़े १०१ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले इसीप्रकार युद्धमें सदैव अग्निके समान प्रकाशित अस्त्ररूपी अग्नि रखने वाले सबधनुषधारियों के गुरू युद्धमें अपने तेजसेही भस्म करनेवाले अजेयद्रोणाचार्य्यको १०२ और सब शत्रुओं के विजय करने में प्रवृत्त हुये पांचाल देशी कभी कर्णसे भयभीत और मुखमोड़ने वाले नहीं हुये हैं १०३ उन शूरबीर पांचालों के प्राणोंको कर्णने बाणोंके द्वारा ऐसे हरलिया जैसे कि पतंगोंके प्राणोंको अग्नि हरलेता है १०४ युद्धमें इस रीतिसे सन्मुख अपने मित्रके निमित्त जीवनका त्यागने वाला कर्ण उन हजारों शूरबीर पांचालोंको नाश कररहाहै १०५ सोतुम हे भरतबंशी नौकारूप होकर उस कर्ण रूपी नौका रहित अथाह समुद्रमें डूबतेहुये बड़े धनुषधारी पांचालों की रक्षा करनेके योग्यहो १०६ कर्णने जो महाघोर अस्त्र महात्मा भार्गव परशुरामजीसे लियाहै उसका रूप बुद्धियुक्त है १०७ वह सब सेनाओं का तपाने वाला घोर रूप बड़ा भयानक बड़ी सेनाको ढककर अपने तेजसे प्रकाशमान है १०८ कर्णके धनुषसे निकले हुये यह बाण युद्धमें घूमते हैं और भ्रमरोंके समूहों के समान उन बाणोंने आपके पुत्रोंको तपायाहै १०९ हेभरतबंशी यह पांचाल युद्धमें अज्ञानी मनुष्यों से कष्टसे हटाने के योग्य कर्ण के अस्त्रको पाकर सबदिशाओंको भागते हैं ११० हे अर्जुन कठिन क्रोधमें भरा चारोंओरको राजा और स्टंजियों से घिराहुआ यह भीमसेन कर्ण से युद्धकर्त्ता

हुआ उसके तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे पीड़ामान होताहै १११ हे भरतबंशी बिचार न किया हुआ कर्ण पांडवसंजी और पांचालोंको ऐसे माररहाहै जैसेकि उत्पन्नहुआरोग शरीरकोमारडालताहै११२ मैं युधिष्ठिर की सेना भरेमें तेरे सिवाय किसी दूसरे शूरबीरको नहीं देखताहूं जोकर्णके सन्मुखहोकर जीताहुआअपने घरकोआवे११३ हेनरोत्तम अर्जुन अब तुम अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उसको मारकर अपनी प्रतिज्ञाके समान कर्मको करके कीर्त्तिको पावो ११४ हेशूर-बीरोंमें श्रेष्ठ तुमहीं युद्धमें कर्णसमेत कौरवोंके बिजय करने को स-मर्थ हो दूसरा कोई नहींहै यह तुझसे मैं सत्य २ कहताहूं ११५ हेनरोत्तम अर्जुन उस बड़े कर्मको करके और उस महारथी कर्णको मारकर सफल अस्त्र युक्त होकर प्रसन्नहो ११६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिअर्जुनउपदेशेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले हेभरतबंशी केशवजी के बचन सुनकर वह अर्जुन एक क्षणमात्रमें ही शोकसे रहित होकर प्रसन्न हुआ १ इसके पीछे प्रत्यंचाको चढ़ाकर गांडीवधनुष को टंकारा और कर्णके मारनेमें चित्तको लगाकर केशवजीसेबोला २ हेगोविन्दजी तुझ नाथकेद्वारा मेरी अवश्य बिजय होगी अब सब भूतभबिष्य वर्त्तमान केउत्पन्न होनेवाले सबजीव मुझपर प्रसन्न होजावें हेकृष्णजीआपके संगहो-कर मैं सन्मुखआनेवालेतीनों लोकोंको भी परलोक मेंपहुंचा सक्ता हूं फिर इस बड़े युद्धमें कर्णको क्योंनहीं यमपुर पहुंचाऊंगा ३।४ हेजनार्द्दनजी पांचालोंकी सेनाको भगाहुआ देखताहूं और कर्णको युद्धमें निर्भयके समान देखताहूं ५ हे वार्ष्णेय श्रीकृष्णजी कर्ण-के छोड़े हुये सब प्रकारसे प्रकाशमान भार्गवास्त्र को ऐसे देखताहूं जैसेकि इन्द्रका छोड़ाहुआ अशनि होताहै ६ निश्चय करकेयहवह युद्धहै जिसमें मेरेहाथसे मारेहुये कर्णको सबसंसारकेलोग तबतक कहैंगे जबतक कि यह पृथ्वी रहैगी ७ हेश्रीकृष्णजी अब गांडीव-

धनुषसे छोड़े हुये मेरे हाथसे प्रेरित नाशकारी विकर्णनाम बाण कर्णकी मृत्युके समीप पहुंचावेंगे८अबराजा धृतराष्ट्र अपनीबुद्धिकी निन्दाकरेगा और दुर्योधनको राज्यके अयोग्य जानेगा हे महाबाहो अब राजा धृतराष्ट्र राज्य, सुख, लक्ष्मी, देश, पुर और पुत्रोंसे पृथक् होगा ९ । १० हे श्रीकृष्णजी अब कर्णके मरनेपर दुर्योधन राज्यऔर जीवनसे निराशहोगा यह आपसे सत्यसत्यकहताहूं ११ अबराजा धृतराष्ट्र मेरेबाणोंसे कर्णको खंड खंडहुआ देखकर संधि सम्बन्धी आपके बचनोंको स्मरण करेगा १२ हे श्रीकृष्णजी अब यह बाणों के और गांडीवधनुष के दांवघात से मेरे रथको मंडलाकार जानो १३ हे गोविंदजी अब मैं तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको मारकर राजा युधिष्ठिरके कठिन जागरण को दूरकरूंगा १४ अबमेरे हाथसे कर्णके मरनेपर राजा युधिष्ठिर प्रसन्नचित्त होकर बहुतकालतक आनन्दोंको पावेगा १५ हेकेशवजी अब मैं ऐसे अजेय और अनुपम बाणोंको छोड़ूंगा जोकि कर्णको जीवनसे नष्टकरके गिरावेंगे १६ निश्चय करके जिस दुरात्माका यह व्रतमेरे मारनेमेंहै कि जबतक अर्जुनको न मारलूंगा तबतक अपने चरणों को भी न धोऊंगा१७ हे मधुसूदनजी उस पापीके व्रतको मिथ्या करके गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे उसको रथसे गिराऊंगा १८ जो यह पृथ्वीपर अपने समान दूसरेको नहीं मानताहै इसीसे इस सूतपुत्रके रुधिरकोपृथ्वी पान करेगी १९ हेकृष्णा तू बिना पतिकीहै इस प्रकारसे अपनी प्रशंसा करतेहुये कर्णने जो धृतराष्ट्र के मतसे कहाहै उसको विषैले सर्पकी समान तीक्ष्ण धारवाले मेरे बाण मिथ्या करकेउसके रुधिर को पियेंगे२०।२१मुझ हस्तलाघवी से छोड़े गांडीवधनुष से निकले हुये बिजलीके समान प्रकाशमान नाराच कर्णको परमगति देंगे२२ अब वह कर्ण महादुःखी होगा जिसने पांडवोंके निन्दक कौरवों की सभामें कुत्सित बचनोंको कहाहै २३ निश्चय करके जो वहां मिथ्यावादी और हास्य करने वालेथे वह सबलोगभी अब इससूत पुत्रके मरनेपर शोकयुक्त होंगे अपनी प्रशंसा करने वाले कर्णने

धृतराष्ट्र के पुत्रोंसेजो यह वचन कहाहै किमैं तुमको पांडवोंसे बचाऊं गा२४।२५उसकेउसबचनकोभीमेरे तीक्ष्णधारवालेबाण मिथ्याकरेंगे औरजिसने यहभी कहाहै किमैं बेटों समेत सब पांडवोंको मारूंगा २६ उस कर्णको अब मैं सब धनुषधारियोंके देखते हुयेहीमारूंगा बड़े साहसी दुरात्मा २७ दुर्बुद्धी दुर्योधनने जिसके पराक्रमका आश्रय लेकर सदैव हमारा अपमानकिया हे श्रीकृष्णजी अब कर्ण केमरनेपर भयभीत धृतराष्ट्रके पुत्र राजाओं समेत दिशाओंको ऐसे भागो जैसेकि सिंहसे भयभीत होकर मृगभागतेहैं २८ अबयुद्ध में मेरे हाथसे पुत्र मित्र आदि समेत कर्णके मरनेपर राजा दुर्योधन अपनेको शोचो २९ हे श्रीकृष्णजी अबअत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन कर्णको मृतकदेखकर ३० मुझको सब धनुषधारियों में श्रेष्ठजानेगा मैं राजाधृतराष्ट्र को पुत्र पौत्र सुहृद मंत्रीऔर सेवकोंसेनिराशकरके राज्यपर नियतकरूंगा हे केशवजी अब अनेक प्रकारके मांसभक्षी चक्रांगनामजीवमेरे बाणोंसेटूटेहुये कर्णके ३१।३२ अंगोंको भक्षण करेंगे हे मधुसूदनजीअबमैं युद्धमें राधाकेबेटेकर्णके ३३शिरको सब धनुषधारियोंके देखतेहुयेही काटूंगा औरअब तीक्ष्णबिपाटक्षुरप्रनाम बाणोंसे ३४ दुरात्मा राधेयकेगात्रोंको रणमेंछेदूंगा तबराजायुधि-ष्ठिर बड़ेदुःखको त्यागकरेगा ३५ अर्थात् बड़ावीर युधिष्ठिर बहुत कालसे धारणकियेहुये अपनेचित्तके शोकको दूरकरेगा हे केशव अबमैं बांधवों समेत राधाकेपुत्रको मारकर ३६ धर्मपुत्र राजायुधि-ष्ठिर को अत्यन्त प्रसन्न करूंगा और कर्ण के दुःखी सब सहायकों को अग्निके समान प्रकाशमान सर्पके समान बाणों से मारकर सुवर्ण जटित गृध्रपक्षयुक्त सीधेचलनेवाले बाणोंसे ३७।३८ पृथ्वी को राजाओं समेत तरूंगा और अभिमन्युके सबशत्रुओंके ३९ अंग और शिरोंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे मथन करूंगा और धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे रहित इसपृथ्वीको अपने बड़े भाईकोदूंगा ४० अथवा हे केशवजी आप अर्जुनसे रहित पृथ्वीपर घूमोगे हे यदुनाथ अबमैं धनुषधारियोंका ४१ वा कौरवोंकेक्रोध वा गांडीवधनुष के बाणोंसे

अऋणहूंगा अबमैं तेरहबर्षके इकट्ठे कियेहुये दुःखोंको त्यागूंगा ४२ युद्धमेंकर्णको मारकर जैसे कि इन्द्रने संबर दैत्यको माराथा उसी प्रकार हे केशवजी अबयुद्धमें कर्णके मरनेपर युद्धमें अभीष्ट चाहने वाले मित्रसोमकोंके महारथीकारको प्राप्त हुआमानो हे माधवजी अबमेरी और सात्यकीकी कैसीप्रीति ४३ । ४४ होगी और कर्णके मरने वा मेरीबिजय होनेपर कैसीप्रसन्नता होगी मैं युद्ध में उसके महारथी पुत्रसमेत कर्णको मारकर ४५ भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकीको प्रसन्नकरूंगा हे माधवजी अब मैंयुद्ध में कर्णको मारकर धृष्टद्युम्न शिखण्डी और पांचालोंकी अऋणताको पाऊं-गा ४६ । ४७ अब युद्धमें क्रोधयुक्त कौरवोंसे युद्धकरनेवाले और युद्ध में कर्णके मारनेवाले अर्जुनको देखो इसकेपीछे मैं अपनी प्रशंसा आपके सन्मुख करूंगा ४८ इसपृथ्वीपर धनुर्वेद विद्यामें आजमेरे समानकोई नहींहै और पराक्रममेंभी मेरेसमान कौन होसक्ताहै न मेरेसमानकोई क्षमावान्हैऔर इसीप्रकार क्रोधमेंभी मेरेसमान मैं हीहूं ४६ मैं धनुषधारी अपने भुजाओंकेबलसे इकट्ठे होनेवालेदेव-ता असुर और मनुष्यों आदिजीवोंको पराजयकरसक्ताहूंमेरेपराक्रम और पुरुषार्थको अद्वितीयजानो ५० मैं अकेलाही बाणरूप अग्नि रखनेवाले गांडीवधनुष सेसब कौरव और बाह्लीकोंको विजयकर के बड़े हठसे समूहों समेत इसरीतिसे भस्म करसक्ताहूं जैसेकिहिम ऋतुकेअन्तहोनेपर सूखेबनको अग्निभस्मकरदेताहै ५१ मेरेहाथमें पृषत्कनाम बाणबत्त मानहैं और अबयह धनुषभी बाणोंसमेत मं-डलाकारहै और मेरेदोनों चरणरथ और ध्वजासेयुक्त हैं ऐसीदशा में मुझ युद्धमें बर्त्तमानसे युद्धकरके कौनबिजय पासक्ताहै ५२ वह शत्रुओंका मारनेवाला रक्तनेत्र अद्वितीयवीर अर्जुन ऐसा कहकर भीमसेनके छुटानेका अभिलाषी और कर्णके शरीरसे उसकेशिरके काटनेका उत्सुक शीघ्रही युद्धभूमिमें गया ५३

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिअर्जुनयुद्धोत्सुकेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेतात इसकेपीछे युद्धके निमित्त अर्जुनके जानेपर वहां पांडव सृंजी औरमेरेशूरबीरोंका महाभयकारी कर्णकेसन्मुखहोनेवालावह युद्धकैसा हुआ १ संजय बोले कि बड़ेध्वजाधारी बहुमूल्य सामानोंसे अलंकृत भेरीकेशब्दसे ऊंचामुख रखनेवाली सन्मुख आईहुई उनकीसेना ऐसीगर्जी कि जैसेबर्षाऋतुमें बादलोंके समूह गर्जनाकरतेहैं बड़ेहाथी रूप बादलोंसे व्याप्त अस्त्ररूपी जलसे पूर्ण बाजे वा रथ की नेमी और क्षुद्रघंटिकाओंसे शब्दायमान सुवर्णजटित अस्त्ररूप बिजली रखने वालावाण खड्ग नाराच आदि अस्त्रों की धारोंसे युक्त २।३ भयानक वेगवान् रुधिर प्रवाहसे बहनेवाला खड्गोंसे व्याकुल क्षत्रियों का मारनेवाला निर्दय और ऋतुके बिनाही अप्रियवर्षा का करनेवाला प्रजानाशक बादल उत्पन्नहुआ ४ फिर बहुत से मिले हुयेरथ उस अकेले रथीको घेरकर मृत्युके पास पहुंचातेथे उसी प्रकार एक उत्तमरथी एक २ अकेले रथी को और कोई २ अकेला रथीभी बहुतसे रथियोंको मारताथा ५ और किसी रथीने कितनेही सारथी घोड़ों समेत रथों को मृत्युबशकिया और कितनोहीने एक२ हाथी के द्वारा बहुत से रथ और घोड़ोंको मृत्यु के मुख में डाला ६ अर्जुन ने बाणोंके समूहों से सब शत्रुओं को घोड़े रथ और सारथियों समेत यमपुरको भेजा औरसवारों समेत घोड़े और पदातियों के समूहोंको भी मारा ७ कृपाचार्य्य औरशिखण्डी युद्धमें सन्मुख हुये सात्यकी दुर्य्योधनके सन्मुख गया श्रुत अश्वत्थामाके साथ और युधामन्यु चित्रसेन के साथमें युद्ध करने लगा ८ फिर रथी संजय और उत्तमौजा कर्णकेपुत्र सुषेणके सन्मुख हुआ और सहदेव राजागांधारके सन्मुख ऐसेदौड़ा जैसे कि क्षुधासे पीड़ित सिंहबड़े बैलकी ओर दौड़ताहै नकुलके पुत्रशतानीकने कर्ण के पुत्रको सात्यकीने वृषसेन को बाणोंके समूहों से घायल किया और बड़े शूरबीर कर्णके पुत्रने बाणोंकी अतिवर्षासे पांचाल देशी

को घायलकिया ९। १० रथियोंमें श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले माद्रीनन्दन नकुलने कृतबर्माको मोहितकिया और पांचाल देशियोंका राजासेनापति धृष्टद्युम्नने सब सेनासमेत कर्णको घायल किया हे भरतवंशी दुश्शासन और भरतबंशियोंकी सेना और संसप्तकोंकी बुद्धिमान् सेना ने युद्धमें शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ असह्य बेगवाले भयकारी रूप वाले भीमसेनको मोहितकिया ११।१२ वहां इस प्रकारसे घायलशूर बीर उत्तमौजाने बड़े हठ करके कर्णके पुत्रकोमारा और उसकाशिर पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करता पृथ्वीपर गिरपड़ा १३ तब पीड़ामान रूपकर्णने सुषेणके शिरको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देख करक्रोधयुक्तहो पृथ्वीपर उसकेघोड़ेरथ और ध्वजाको अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे काटा १४ फिर उस उत्तमौजाने भी अपनेप्रकाशितखड्ग से कर्णको पीड़ामान किया तदनन्तर वह कृपाचार्य्य के पीछे चलनेवालोंको मारकर शिखण्डीकेरथपर सवार हुआ १५ फिररथारूढ़ शिखण्डीने रथसे रहित कृपाचार्य्यको देखकर बाणों से घायल करना नहीं चाहा फिर अश्वत्थामाने कृपाचार्य्यको चारों ओरसे आड़में करके ऐसे छुटाया जैसे कि कीचमें फंसीहुई गौको निकालतेहैं १६ वायुके पुत्र सुवर्णमयी कवच वाले भीमसेनने आपकेपुत्रोंकी सबसेनाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे ऐसे संतप्तकिया जैसे कि उष्णऋतुमें आकाशमें वर्त्तमान सूर्य्य सबको संतप्त करदेताहै १७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धे पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसकेपीछे कठिन युद्धमें बहुतसे शत्रुओंसे घिरा हुआ अकेला भीमसेन उस युद्धमें अपने सारथीसे यह वचनबोला कि अब तुम दुर्य्योधनकी सेनामेंचलो १ हे सारथी तुम घोड़ोंकेद्वारा बड़ी शीघ्रतासे चलो मैं इन धृतराष्ट्र के पुत्रोंको यमपुर पहुंचाऊंगा उसकी आज्ञापातेही वह बड़ा बेगवान् सारथी आपकेपुत्रकी

सेनामें भीमसेनकोले पहुंचा २ जिधरसे कि भीमसेनने उससेनामें जानाचाहा वहां दूसरे कौरव रथ हाथी घोड़े और पतियों समेत उसके सन्मुख गये ३ और चारों ओरसे भीमसेनके बड़े दृढ़रथको अपने बाणोंके समूहोंसे घायल किया तब भीमसेनने अपने सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे उन सबके छोड़ेहुये आतेहुये बाणोंको काटा ४ भीमसेनके बाणोंसे टूटेहुये वह सुनहरी पुंखवालेबाण दोदो चार २ खंड होकर गिरपड़े हेराजा इसके पीछे उत्तम २ राजाओंके मध्यमें भीमसेनके हाथसे मारेहुये हाथी घोड़े रथ और शूरलोगोंके ५ घोर शब्द ऐसे प्रकटहुये जैसे कि बज्रसे टूटे हुये पर्व्वतों के शब्द होते हैं भीमसेनके उत्तम बाणजालों से घायलहुये उत्तम २ राजाओंने ६ युद्धमें भीमसेनके ऊपर चारों ओरसे ऐसे चढ़ाई करी जैसे कि फूलके निमित्त पक्षीलोग वृक्षपर चढ़ाईकरते हैं इसकेपीछे आपकी सेनाके सन्मुखजानेपरउस अत्यन्त बेगवान् भीमसेनने अपने वेगको ऐसा प्रकटकिया ७ जैसेकि प्रलयकालमें सबके मारनेका अभिलाषी दण्डधारी जीवोंका नाशककाल जीवोंको मारताहै तब आपके सब शूरबीरयुद्धमें उसवेगवान्के वेगके सहनेको ऐसेसमर्थनहींहुये ८ जैसे किसमयपर सबके भक्षण करनेवाले कालके वेगको सबसृष्टिकेजीव नहींसहसक्तेहैं हेभरतबंशीइसके पीछे भरत बंशियोंकी सेना युद्धमें उस महात्मा भीमसेनके हाथसे भस्मीभूत ९ भयभीत और महा घायलहोकर चारोंदिशाओंमें ऐसेबिह्वलहोकरभागी जैसेकिवायुसे बादलोंके समूह पलायमान होतेहैं इसके पीछे बुद्धिमान् भीमसेन प्रसन्न होकर सारथीसेफिरबोले १० हेसारथी तुम अपने औरदूसरों के शूरबीरोंके भिड़े और गिरतेहुये रथ और ध्वजाओंकोजानो मैं युद्धकरताहुआ कुछभीनहीं जानताहूं क्योंकिमैं भ्रांतिसेकहीं अपनी सेनाकोही पृषत्क नाम बाणोंसेनहीं छांडूं ११ हेविशोक सबओरसे शत्रुओंको देखकर मेरारथ ध्वजाकी नोकको अधिक कंपायमान करताहै बिदित होताहै कि राजारोगमें ग्रसित होगयाहै जो अबतक अर्जुन नहींआया हेसूत मैंनेबड़े२कष्टोंको पायाहै हेसारथी यहबड़ा

दुःखहै जोधर्मराजमुझको शत्रुओंकेमध्यमें छोड़करचलागया अवमें उस को वा अर्जुनको जीवतानहींजानताहूं मुझको यहीबड़ाकष्टहै १२।१३ सो में प्रसन्नचित्त उस बड़ी साहसी शत्रुओंकीसेनाको नाशकरूंगा इससे अब मैं युद्धभूमि में सन्मुख आनेवाली सेनाको मारकर तुझ समेत प्रसन्नहोऊंगा १४ हे सूत रथमें शायकोंके सब तूणीरोंको देख कर और यह जानकर कहो कि शायक कितने बचे हैं और जो २ शायकबचेहैं वह किस२प्रकारके और संख्यामें कितने२हैं १५ विशो- कबोला हे वीर मार्गणनाम बाणोंकी संख्या तो साठहजारहै और क्षुर वा भल्लोंकी संख्या दशहजारहै और हे वीर पांडव नाराचोंकी संख्या दोहजारहै औरप्रदरनाम बाणोंकी संख्या तीनहजारहै १६ इतने शस्त्र वर्त्तमानहैं जिनको छः बैलोंसे युक्त छकड़ाभीनलेचले हे बुद्धिमान् शस्त्रोंको छोड़ो और हजारोंगदा खड्ग वा भुजारूपी धन आपकेपास वर्त्तमानहै १७ प्रास,मुद्गर, शक्ति, और तोमर भीहैं तुमशस्त्रोंकी न्यूनता और खर्चहोने का भयमतकरो १८ फिर भीमसेनके चलायेहुये राजाओं के छेदनेवाले बड़े वेगवान् बाणोंसे गुप्त होनेवाले युद्धमें घोररूप छिपीहुई सूर्य्यवाली संसारकी मृत्यु के समान इस युद्धभूमि को देखो १९ हे सूत अब राजाओं के बालकोंतककोभी यह मालूम होगा कि अकेला भीमसेनयुद्धमें डूब गया वा उसने कौरवों को बिजय किया २० अब सब कौरवलोग मेरे ऊपर चढ़ाईकरो और वृद्धोंसे बालक पर्य्यन्त सब लोग मेरा यशबखानकरो मैं अकेलाही उन सबको मारूंगा अथवा वह सब मिलकर मुझ भीमसेन को पीड़ित करो २१ जो देवता कि मेरे उत्तम कर्मके उपदेश करनेवाले हैं वह सबकेवल मेरीइतनीसाधना करें कि वहशत्रुओंकामारनेवाला अर्जुन मेरे ध्यानसे शीघ्रऐसे आ- जाय जैसे कि यज्ञमें बुलायाहुआ इन्द्रआताहै २२ भरतवंशियोंकी इससेनाको छिन्नभिन्नदेखो यहराजालोग किसहेतुसेभागतेहैंमुझे विदितहोताहै कि वह बुद्धिमान् नरोत्तम अर्जुनशीघ्रतासे इससेना को ढकता चलाआताहै २३ हेबिशोक युद्धमें ध्वजाओंकी ओर भागते

हुये हाथी घोड़े औरपत्तियोंके समूहोंको देखो हेसूत बाण औरशक्ती से घायल उनरथियोंको औरफैलेहुये रथोंको देखो २४ यह कौरवी सेनाभी महा घायल और वज्रके समान वेगयुक्त सुनहरीपर वाले अर्जुनके बाणोंसे बराबर गुप्त २५ यहरथघोड़े औरहाथी पदातियों के समूहोंको मर्दन करते हुयेभागतेहैं और सबकौरवलोगभी महा मोहितहुये ऐसे भागेजाते हैं जैसेकि वनदाहसे भयभीत होकर हाथी भागतेहैं २६ हे विशोकयुद्ध में हाहाकार करनेवाले गजराज बड़े२ भयानक शब्दोंको करतेहैं २७ बिशोक बोला कि हेभीमसेन क्रोधयुक्त अर्जुनके हाथसे खैंचेहुये गांडीव धनुषके घोरशब्दों को क्या आपनहीं सुनतेहो क्या आपके दोनों कर्णोंमें बधिरताती नहीं आगई २८ हे पाण्डव अब आपके सब मनोरथ वृद्धियुक्त हैं यह बानर हनुमानजी हाथियोंकी सेनामें दिखाई देते हैं और धनुषकी प्रत्यंचाको ऐसे चेष्टाकरती देखो जैसे कि नीले बादल से निकल-तीहुई प्रकाशमान बिजली चमकतीहै २९ यह बानर अर्जुन की ध्वजाके नोक पर चढ़ाहुआ शत्रुओंके समूहों को भयभीत करता हुआ सब ओरसेदीखताहै मैं आप उसको युद्धमें देखकर भयभीत होताहूं ३० और यह अर्जुन का विचित्र मुकुटभी अत्यन्त शोभादे रहाहै ३१ उसकेपार्श्वमें महाभयानकश्वेत बादलकेरूप महाशब्दा यमान देवदत्तनाम शंखको देखो और हे वीर बागडोर हाथमें लिये ३२ उन श्रीकृष्णजीके पार्श्ववर्त्ती सूर्य्यके समानप्रकाशमान वज्रनाभ चारों ओर छुराओं से जटितबड़े यशके बढ़ानेवाले सदैव यादवोंसे पूजित केशवजीके चक्रकोदेखो ३३ सीधेवृक्षोंके समान बड़े२ हाथियों की यहशूंड़ छुरोंसेकटीहुईपृथ्वीपर गिरतीहैं और उस अर्जुनके हाथ के बाणोंसेसवारों समेत हाथी ऐसेमारेगये जैसे कि वज्रोंसेपर्व्वत चूर्णकियेजातेहैं ३४ इसीप्रकार श्रीकृष्णजीके उसमहाउत्तमचन्द्रमा के समानबर्णवाले बड़ोंकेयोग्य पांचजन्य शंखको देखो औरहृदयमें शोभायमान कौस्तुभमणि और बैजयन्तीमालाकोभी देखो ३५ निश्च-यकरकेरथियोंमेंश्रेष्ठ अर्जुन शत्रुओंकी सेनाको भगाता श्वेतबादलों

के रंग श्रीकृष्णजीसे युक्त बड़ोंके योग्य घोड़ोंकेद्वारा सन्मुखआता है ३६ देवराज के समान तेजस्वी आप के छोटे भाई के शायकों से फटेहुये रथघोड़े और पतियोंके समूहोंको देखो कि यह ऐसेगिर रहे हैं जैसे कि गरुड़जीके परोंकी वायुसे महावन गिरतेहैं ३७ युद्धमें अर्जुनके हाथसे घोड़े और सारथियों समेत मारेहुये इनचार सौ रथोंको देखो और बड़े बाणोंसे मरेहुये इनसातसौ हाथी पदाती अश्वसवार और अनेक रथियोंको देखो ३८ यह महाबली अर्जुन कौरवोंको मारताहुआ तेरे समक्षमें ऐसे आताहै जैसेकि बड़ा चित्र-ग्रह आता है तुम अभीष्टसिद्धहो आपके सब शत्रु मारे गये आप का बल पराक्रम और आयुर्दा चिरकाल पर्य्यन्त वृद्धिको पावे ३९ भीमसेन बोले हे विशोक सारथी मैं अत्यन्त प्रसन्नहोकर तुझको चौदह गांव सौ दासी और बीसरथ देताहूं जो अर्जुनके विषयकी प्रसन्नता वाली बातें मुझसे कहताहै ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिभीमसेनविशोकसंवादेपटसप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि युद्धमें सिंहनाद और रथके शब्द को सुनकर अर्जुन गोविंद जीसे बोला कि हे गोविन्दजी शीघ्रही आप घोड़ों को हांकिये १ गोविन्दजी अर्जुनके वचनको सुनकर कहनेलगे कि अबमैं वहीं पर शीघ्र पहुंचाताहूं जहांपर कि भीमसेन नियतहै २ तुषार और शंखके रंगवाले सुवर्ण मोती और मणिजटित जालोंसे अलंकृत घोड़ोंके द्वारा जंभके मारनेके इच्छावान् वज्रधारी क्रोध युक्त इन्द्र जैसे जाता है उसीप्रकार जानेवाले उस अर्जुन को ३ रथ घोड़े हाथी पदातियोंके समूह और बाण नेमी वा घोड़ोंकेशब्दों से पृथ्वी और दिशाओंको शब्दायमान करतेहुये क्रोधरूप नरोत्तम ने सन्मुख पाया ४ हेश्रेष्ठ उन्होंका और अर्जुनका युद्ध शरीर और प्राणोंके पापोंका हरनेवाला ऐसाहुआ जैसे कि त्रिलोकीके निमित्त महाबिजयी विष्णुजी और असुरों का हुआ था ५ अकेले अर्जुनने

उन्होंके चलायेहुयेसब छोटेबड़े शस्त्रोंको काटकर क्षुरअर्द्धचंद्र और तीक्ष्ण भल्लों से उनके शिर और भुजाओं को अनेक प्रकार से काटा ६ चित्र बिचित्रवाले व्यजन ध्वजा घोड़े रथ हाथी और पति-योंके समूहोंको भी काटा इसके पीछे वह अनेक प्रकारके रूपांतर होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायुके वेगसे वन गिरपड़ते हैं ७ फिरसुनहरी जालयुक्त बैजयंती ध्वजाओं समेत शूरवीरों से अलंकृत बड़े हाथी सुनहरी पुंखबाणोंसे चित्रित प्रकाशमान पर्वतों के समान प्रकाशमान हुये ८ अर्जुन इन्द्रके बज्रकी समान उत्तम बाणोंसे हाथी घोड़े और रथोंको मारकर कर्णके मारनेकी इच्छासे इसरीतिसे शीघ्रचला जैसे कि पूर्वसमयमें राजाबलिके मारने में इन्द्र चलाथा ६ हे शत्रुसंहारी उसके पीछे वह महाबाहु पुरुषोत्तम ऐसे आपहुंचा जैसेकि समुद्रमें मगर घुसआताहै १० हे राजा रथ और पतियोंसे संयुक्त अनेक हाथी घोड़े और सवारों समेत बड़े प्रसन्नचित्त आपके शूरबीर इसपांडवके सन्मुख गये अर्जुनकी ओर दौड़नेवाले उनलोगोंके ऐसे बड़े शब्दहुये जैसेकि अपनी उन्मत्ततामें आनेवाले समुद्रके शब्द होतेहैं ११।१२ फिरव्याघ्रोंके समान वह सबमहारथी युद्धमें अपनेप्राणोंकी आशाको त्यागकरउसपुरुषोत्तम के सन्मुखगये वहां अर्जुनने उनबाणोंकी बर्षा करतेहुये आनेवाले शूरबीरोंकी सेनाका ऐसा छिन्नभिन्नकरदिया जैसेकि बड़ाबायुबाद-लोंको तिर्रबिर्र करदेताहै१३।१४उन प्रहार करनेवाले बड़े धनुषधा-रियोंनेरथसमूहोंसमेत उसके सन्मुखजाकर तीक्ष्णबाणोंसे अर्जुनको घायलकिया १५ इसके पीछे अर्जुनने बिशिखोंसे हजारोंरथ हाथी और घोड़ोंको यमलोकमेंभेजा१६ युद्धमेंअर्जुनके धनुषके निकलेहुये बाणोंसे घायल वह महारथी भयके उत्पन्नहोनेपर जहांतहां छिप गये१७अर्जुनने उनके मध्यमें उपाय करनेवाले चारसौ बड़े२महा-रथी शूरबीरोंको बाणोंकेद्वारा यमलोकमें पहुंचाया १८नानाप्रकार के रूपवालेयुद्धमें तीक्ष्णबाणोंसे घायलहोकर वह शूरवीर अर्जुनके सन्मुखजाकर दशोंदिशाओंको भागे १६ युद्धमेंसे भागनेवाले उन

लोगोंके ऐसे महाशब्दहुये जैसे कि पर्व्वतको पाकर फटनेवाले बड़े नदीके प्रबाहकेशब्द होते हैं २० हे श्रेष्ठ फिर अर्जुन बाणोंसे उस सेनाको खूबछेदकर औरभगाकरकर्णके सन्मुखगया २१ वहां उस शत्रुजेता अर्जुनका ऐसामहाशब्दहुआ जैसेकि पूर्व्वसमयमें सर्पके खानेको घानेवाले गरुड़काशब्दहोताहै २२ अर्जुनके देखनेका अभिलाषी महाबली भीमसेन उसअर्जुनके शब्दको सुनकर बहुतप्रसन्न हुआ २३ हे महाराज उसप्रतापवान् भीमसेनने आते हुये अर्जुन को सुनकर अपने प्राणोंकी आशा छोड़कर आपकी सेनाका मर्दन किया २४ पराक्रममें बायुकेसमान शीघ्रचलनेमें बायुकी तीव्रताके सदृश बायुकापुत्र प्रतापी भीमसेन बायुकेसमान घूमनेलगा २५ हे महाराज राजाधृतराष्ट्र उससेघायल और पीड़ितहोकर आपकी सेना ऐसे गिरपड़ी जैसे कि टूटीहुई नौका सागरमें गिरतीहैं २६ फिर अपनी हस्तलाघवताको दिखाते सबको यमलोकमें पहुंचातेहुये उसभीमसेनने बारंबार उग्रबाणों की वर्षाकरकेउस सेनाको काटा २७ हे भरतबंशी उसयुद्धमें महाबली भीमसेनके अद्भुतआश्चर्य्यकारी पराक्रमको देखकर सबलोग ऐसे चक्कर मारनेलगे जैसे कि प्रलयकालमें कालके पराक्रमको देखकर सब भयभीतहोकर फिरतेहैं २८ हे भरतबंशी इसप्रकार भीमसेनके हाथसे पीड़ामान भयानक पराक्रमवाले बड़े २ शूरबीरोंको देखकर राजा दुर्य्योधन इसबचनको बोला २९ कि हे महाबली शूरबीरलोगो तुमभीमसेन को मारो ३० इसीभीमसेनके मरनेपर मैं सबपांडवोंकी सेनाकोभी मृतकरूपही मानताहूं तबतो सबराजाओं ने आपके बेटेकीआज्ञा को अंगीकार किया ३१ और भीमसेन को चारोंओर से बाणों की वर्षासे आच्छादित करदिया हेराजाबहुतसेहाथीघोड़े और बिजयाभिलाषी रथारूढ़ मनुष्योंने ३२ भीमसेनको घेरलिया तबउनशूरों से चारोंओरको घिराहुआ वह पराक्रमीभीमसेन ३३ महाशोभायमानहुआ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ जैसे किनक्षत्रोंसे शोभायमान चन्द्रमा पूर्णमासीके दिन अपने मंडलसे युक्तहोकर शोभितहोताहै ३४

उसीप्रकार वह दर्शनीय नरोत्तम भीमसेन भी युद्धमें शोभायमान हुआ हेमहाराज जैसाअर्जुनहै वैसाही यहभीहै इसमें भेदनहींहै ३५ क्रोधसेरक्तनेत्र भीमसेनके मारनेके उत्सुक उनसब शूरवीर राजाओं ने बाणोंकी वर्षा उसकेऊपरकरी ३६ भीमसेनटेढ़े पर्ववालेबाणोंसे उस बड़ी सेनाको चीरकर युद्धभूमिसे ऐसेनिकलगया जैसे कि जल कीमछली जलकेजालमेंसेनिकलजातीहैं ३७।३८ हेभरतवंशीभीमसेननेमुखनमोड़ने वाले दशहजार हाथी दोलाख दोसौ मनुष्य पांच हजारघोड़े और सौ रथियों को मारकर रुधिर के प्रवाह वाली नदी कोजारी किया ३९ जिसमें रुधिररूप जल रथरूप भ्रमर चक्र हाथी रूप ग्राहोंसे भयानक मनुष्य रूप मछली घोड़ेरूपनक्र और बाल रूप शैवल और साड्वल थे ४० और बहुत रत्नोंकी हरने वाली सेड़कटे हाथियों से व्याप्त जंघारूप ग्राहों से भयानक मज्जा रूपी पंक और शिररूप पत्थरोंसे संयुक्त थी ४१ धनुष, चावक, तूणीर, गदा, परिघ, ध्वजा, छत्ररूपी हंसोंसे युक्त और उष्णीष अर्थात् पगड़ी रूप झाग वाली ४२ हाररूपी कमलों के बन रखनेवाली और पृथ्वी की धूली रूप तरंगोंकी रखने वाली युद्धमें उत्तम पुरुषों के चलन रखने वाले पुरुषोंसे सुगमतासे पार होनेके योग्य भयभीतोंको दुर्गम ४३ शूरवीर रूप ग्राहोंसे पूर्ण युद्धमें पितृलोक की ओरको बहने वाली थी ऐसी उग्र अद्भुत नदीको इस पुरुषोत्तम भीमसेननेएकक्षण मात्रहीमें जारी करदिया ४४ जैसेकि अशुद्ध अन्तःकरण वाले पुरुषोंसे महा दुस्तर रूप बैतरणी कहातीहै उसीप्रकार इसको भी महाघोर दुःख और भयकी करनेवाली कहा ४५ वह रथियोंमें श्रेष्ठ पांडव जिस २ ओर होकर निकला उस २ ओरके लाखों ही शूरबीरों को मारा ४६ हेमहाराज इस रीतिसे युद्धमें भीमसेनके कियेहुये कर्मको देखकर दुर्य्योधन शकुनी से यह वचन बोला ४७ कि हे मामाजी इसबड़े पराक्रमी भीमसेनको युद्धमें तुम विजयकरो इसके बिजय होजानेपरमैं सब पांडवी सेनाको विजय किया हुआ ही मानताहूं ४८ हे महाराज इसके अनन्तर भाइयों समेत वह

भारी युद्ध करने को उत्सुक प्रतापवान् शकुनी चला ४६ उस वीरने युद्ध में भयानक पराक्रमी भीमसेन को पाकर उसको ऐसे रोकाजैसेकि समुद्रकी मर्य्यादा समुद्रको रोकलेतीहै ५० तीक्ष्णबाणों से रोका हुआ भीमसेन उसकी ओर को लौटा और शकुनीने उसके हाथओर छाती पर ५१ सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार नाराचों को चलाया फिर वह कंकपक्षसे जटित घोर बाण महात्मा पांडव भीमसेनकेकवच को काटकर ५२ शरीर में घुसगये फिर युद्धमें अत्यन्त घायल उस भीमसेनने क्रोधयुक्त होकर सुवर्ण जटित बाणको ५३ शकुनीके ऊपर चलाया हेराजा शत्रुसंतापी हस्तलाघवी महाबली शकुनी ने उस आते हुये घोरबाण को सात खण्डकर दिया ५४ हे राजा उस बाणके पृथ्वी में गिरनेपर क्रोधयुक्त हंसते हुये भीमसेनने भल्ल से शकुनीके धनुष को काटा फिर प्रतापवान् शकुनी ने उस धनुषको डालकर ५५।५६ बेगसे दूसरे धनुष और सोलह भल्लोंको लेकर उन टेढ़े भल्लोंमें से दो भल्लोंसे उसके सारथीको और सात भल्लोंसे भीमसेन को घायल किया फिर एक से ध्वजा को और दो भल्लोंसे छत्रको काटकर ५७।५८ सौबल के पुत्र शकुनी ने चार बाणोंसे चारों घोड़ों को घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने युद्धमेंसुनहरी दंडवाली शक्तिको फेंका ५६ भीमसेनकी भुजासे छोड़ी हुई वह सर्पकी जिह्वा के समान चंचल शक्ति युद्ध में शीघ्रही महात्मा शकुनी के ऊपरगिरी ६० इसके पीछे क्रोधरूप शकुनी ने उस सुवर्ण से अलंकृत शक्ति को लेकर ६१ भीमसेन के ऊपरफेंकातब वहमहात्मा पांडवकी बाम भुजा को छेदकर पृथ्वीपर ऐसे गिर पड़ी ६२ जैसे कि आकाश से गिरी हुई बिजली होती है इसकेपीछे धृतराष्ट्र के लड़कों ने चारोंओर से बड़ाशब्द किया ६३ फिरउन वीरों के सिंहनाद को न सहकर बड़ेभारी अलंकृत धनुष को लेकर६४अपने जीवनकी आशाको त्यागकरके युद्धमें एकमुहूर्त्त में ही शकुनी की सेना को शायकों से ढकदिया ६५ हेराजा फिर शीघ्रता करने वाले पराक्रमी भीमसेनने उसको चारों घोड़ोंसमेत

सारथीको मारकर भल्लसे उसकी ध्वजाकोभी काटा ६६ फिर यह नरोत्तम भी शीघ्रता करके मृतक घोड़ोंके रथको त्यागकर धनुषको टंकार क्रोधसे लालनेत्र करके सन्मुख नियतहुआ ६७ और भीमसेनको चारों ओरसे बाणोंकेद्वारा मोहितकिया फिर अत्यन्तप्रतापवान् भीमसेनने बड़े बेगसे उनको निष्फल करके ६८ धनुषकोकाटकर तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे महा पीड़ित किया पराक्रमी शत्रुसे अत्यन्त घायल हुआ वह शत्रुबिजयी शकुनी ६६ कुछ प्राणशेष होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हेराजा इसके पीछेसे आपका पुत्र उसको अचेतजानकर७० भीमसेनके देखतेहुये युद्धभूमिसे रथकी सवारीमें बैठाकर हटा लेगया फिर उसनरोत्तम के रथपर सवार होने और भीमसेनको बड़ा भय उत्पन्न होनेपर और धनुषधारी भीमसेनके हाथसे शकुनीके बिजय होनेपर धृतराष्ट्र के पुत्र मुखमोड़ मोड़कर भयभीत होकर दशों दिशाओंको भागे ७१ । ७२ बड़ेभय से पूर्ण अपने मामाका चाहने वाला आपका पुत्र दुर्योधन शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा हटगया ७३ हे भरतबंशी सेनाके सबलोग राजाको मुखफेरकर हटाहुआ देखकरचारोंओरसे द्वैरथियोंको छोड़कर भागे ७४ तब भीमसेनउन घायलभयभीत मुख मोड़करभागने वाले धृतराष्ट्र केपुत्रोंको देखकरसैकड़ों बाणों की बर्षाकरताहुआ बेगसे उन सबके सन्मुख दौड़ा७५ हेराजा भीमसेनके हाथसेघायल चारों ओरसे मुखमोड़ने वाले वह धृतराष्ट्रके पुत्र कर्णको पाकर युद्धमें नियत हुये ७६ वह बड़ा पराक्रमी बलवान् कर्ण उनकाऐसे रक्षकहुआ जैसेकि टूटी हुई नौकाटापूको पाकर नियत होजाती है ७७ हे पुरुषोत्तम समयके लौटपौट होनेपर जैसी दशावाली पतवार होतीहै वैसेही आपके शूरबीर लोगभी पुरुषोत्तम कर्ण को पाकर उसी दशावाले हुये ७८ हेराजा वह परस्परमें बिश्वास युक्त अत्यन्त प्रसन्ननियतहुये और मृत्युको हथेली पर रखकर युद्धके निमित्त गये ७६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिभीमसेनयुद्धे सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तवयुद्धमें भीमसेनके हाथसे सेनाके पराजयहोनेपर दुर्योधनने वा शकुनीने क्याकहा १ विजय करनेवालों में श्रेष्ठ कर्ण वा मेरे शूरवीर कृपाचार्य्य कृतवर्मा अश्वत्थामा और दुश्शासन इनसबने युद्धमें क्याक्या कहा २ मैं पांडव भीमसेन के पराक्रमको अत्यन्त अद्भुत और अपूर्व मानताहूं कि उसअकेलेनेही युद्धमें मेरे सब शूरवीरोंसे युद्धकिया ३ और राधाकेपुत्र शत्रुहन्ता कर्णनेअपनीप्रतिज्ञाके अनुसारसबशूर वीरोंसमेत कौरवोंको कल्याण रक्षास्थिरता वा जीवन की आशा को नियत किया ४ हे संजय बड़ेतेजस्वी भीमसेनके हाथ से छिन्नभिन्न होजानेवाली उससेना को देखकर ५ अधिरथी कर्ण मेरे पराजित पुत्र और बड़े महारथी राजाओंनेयुद्धमें क्या २ किया यह सबमुझसे कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर और सावधानहो ६ संजयबोले हेमहाराज प्रतापवान् कर्णने तीसरेपाशमें भीमसेनके देखतेहुये सबसोमकोंकोमारा ७ और भीमसेननेभी दुर्योधनकी बड़ीपराक्रमी सेनाको सबके देखते हुयेमारा इसकेपीछे कर्णनेशल्यसेकहाकिमुझकोपांचालोंकेसमीपपहुंचाओ ८ अर्थात् बुद्धिमान् पराक्रमी भीमसेन के हाथ से सेना को भागा हुआ देखकर कर्णने अपने सारथी शल्यसे कहाकि मुझको पांचालों के सन्मुखलेचलो ९ इसकेपीछे बड़े बलवान् मद्रदेशके राजाशल्यने बड़े शीघ्रगामी श्वेतघोड़ोंको चंदेरी पांचाल और कारुण्य देशियों के सन्मुख पहुंचाया १० शत्रुकी सेनाके मर्द्दन करनेवाले शल्यने उस बड़ी सेनामें प्रवेश करके घोड़ों को वहां २ पर चलाया जहां २ उस सेनापति कर्णने चाहाथा ११ हेराजापांडव और पांचालउसबादल के रूप व्याघ्रचर्मसे मढ़हुये रथकोदेखकर भयभीतहुये १२ इसके अनन्तर उसबड़े युद्धमें उसरथका शब्दबादलके गर्जने के समान ऐसा प्रकट हुआ जैसे कि फटतेहुये पर्व्वतका शब्दहोताहै १३ इस के पीछेकर्ण ने कानतक खैंचेहुये धनुषके छोड़े हुये बाणसमूहों से

पांडवीसेनाके हजारों मनुष्योंकोमारा १४ पांडवोंके महारथीवड़े २ धनुषधारियोंने युद्ध में ऐसेकर्म करनेवाले उस अजेय कर्णको घेर लिया १५ शिखंडी भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेवद्रौपदीके पुत्र और सात्विकी १६ बाणोंकी वर्षासे कर्णके मारने के अभिलाषीइन सब शूरवीरोंने जबकर्ण को घेरलिया तब नरोत्तम शूर सात्विकीने तीक्ष्णधार वाले बीसबाणों से कर्णको युद्धमें जत्रुस्थान पर घायल किया१७।१८शिखंडीने पच्चीसबाणोंसे धृष्टद्युम्नने सातबाणोंसेद्रौपदी के पुत्रोंने चौसठ बाणोंसे सहदेवने सातबाणोंसे नकुलने सौबाणोंसे उसकर्णको पीड़ामानकिया१९ और बड़ेपराक्रमीक्रोधयुक्तभीमसेनने युद्धमें टेढ़ेपर्व्ववाले नब्बे बाणोंसे कर्णको जत्रुआदि अंगोंपर पीड़ित किया २० इसके पीछे बड़े बली कर्णने बहुत हंसकर अपने धनुष को टंकारकर बाणोंको छोड़ा २१ हे भरतर्षभ कर्णने उन सबको पांच २ बाणोंसे व्यथितकिया २२ और सात्विकीके धनुष ध्वजाको काटकर नौबाणों से उसको छातीपर घायल किया फिर उसक्रोध-युक्तने तीनसौ बाणोंसे भीमसेनको पीड़ामानकिया २३ और भल्लसे सहदेवकी ध्वजाकोकाटउस शत्रुसंतापीने तीनबाणोंसेउसकेसारथी को मारा २४ और एकपलमात्रमेंही द्रौपदीके पुत्रोंको बिरथ कर दिया यहबड़ा आश्चर्य्यसा हुआ २५ टेढ़ेपर्व्ववाले बाणोंसे उनसब कामुखमोड़कर पांचाल और चंदेरीदेशके बड़े २ महारथी शूरवीरों को मारा२६हेराजा युद्धमें घायल उनचंदेरी देशियोंने अकेलेकर्णके सन्मुख जाकर उसको बाणोंके समूहों से घायल किया २७ हेमहा-राज जोअकेले प्रतापी कर्णने युद्धमेंबड़ी सामर्थ्यसे उपायकरनेवाले धनुषधारी शूर युद्धकर्त्ता पांडवोंको बाणोंसे रोका वहां महात्माकर्ण की हस्तलाघवता से २८।२९ सिद्धचरणों समेत सबदेवता प्रसन्न हुये और बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्रके पुत्रोंने उसमहारथियोंमेंश्रेष्ठनरो-त्तम सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ कर्णकी प्रशंसाकरी हेमहाराजइसके पीछेकर्णने शत्रुओंकी सेनाका ऐसा नाशकर दिया ३०।३१ जैसेकि ऊष्म ऋतुमें बड़ाबुद्धिमान् प्रचंडअग्नि बनको जलाताहै उसप्रचंड

अग्निके समान कर्णसे घायल हुये वह सब पांडव महारथी कर्ण को देखकर इधरउधर भयभीत होकरभागे ३२।३३ वहां उसबड़े युद्धमें कर्णके उत्तम धनुषसे निकले हुये तीक्ष्ण शायकों से घायल पांचाल लोगोंके बड़े भारी शब्दहुये उनशब्दोंसे पांडवोंकी बड़ीसेना अत्यन्त भयभीतहुई ३४।३५ वहांशत्रुओंके मनुष्योंने युद्धमें अकेले कर्णकोही शूरबीर युद्धकर्त्तामानातब शत्रुओंके पीड़ाकरनेवाले कर्णने फिरभी अद्भुत कर्मकिया कि ३६ कोईपांडव उसको ओर देखने को भी समर्थ नहींहुआ जैसे कि जलका प्रवाह उत्तम पर्व्वतको पाकर रुकजाताहै ३७ उसी प्रकार वह पांडवी सेना कर्णको पाकर छिन्न भिन्न होगई हेराजा युद्धमें महाबाहु कर्णभी निर्धूम अग्निकेसमान प्रकाशमान ३८ पांडवोंकी बड़ीसेनाको भस्मकरताहुआ नियत हो-कर उसशूरवीरने युद्धकरनेवाले वीरोंके कुंडलधारण कियेहुये ३९ शिरोंको और भुजाओंको बड़ीतीव्रतासे अपनेबाणोंकेद्वाराकाट डा-ला हे राजा युद्धव्रतधारी कर्णने हाथीदांतके कब्जा रखनेवाले ख-ड्गध्वजा और शक्तियोंको घोड़ेहाथी ४० वा अनेक प्रकारके रथ पताका व्यजन अक्षयुग योक्त और बहुतरूपके चक्रोंको ४१ बहुत प्रकारोंसे काटा हेभरतवंशी वहां कर्णके हाथसेमारेहुये हाथीघोड़ों के कारणसे ४२ वहपृथ्वीरुधिरमांसकी पंकवाली होकरमहाअगम्य होगईमृतक घोड़े पदातीरथ और हाथियोंके हेतुसे पृथ्वीकी समता और असमतानहीं जानीगई अपने और दूसरोंके शूरवीरभीपरस्पर में नहींजानेगये ४३।४४ हेमहाराज कर्णकेअस्त्र और बाणों से घोरअंधकार होजानेपर उसके धनुषसे छूटेहुये सुवर्ण जटित बाणों से ४५ पांडवोंके महारथी ढकगये और वहसब कर्णसे लड़नेवाले पांडवोंके महारथी बारंबार कर्णसे पराजितहुये और जैसे कि वनमें मृगोंके समूहोंको सिंहभगाताहै ४६।४७ उसी प्रकार पांचालोंके उत्तमरथी और शत्रुओंके मनुष्योंको भगाते और युद्धमें शूरवीरोंको डरातेबड़े यशस्वी कर्णने ४८ उससेनाको ऐसे भगाया जैसे कि भे-ड़िया पशुओंके समूहोंको भगाताहै फिर बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के

पुत्र पांडवी सेनाको मुख मुड़ाहुआ देखकर ४६ भयानक शब्दोंको करतेहुये वहां आये और अत्यन्त प्रसन्नचित्त दुर्य्योधनने ५० अनेकप्रकारके सब बाजोंको बजवाया वहांपर पराजितहुये नरोत्तम पांचाल देशीभी ५१ शरीरकी आशा छोड़कर शूरों के समान लौटे हे महाराज फिर कर्णाने उनलौटेहुये शूरबीरोंको ५२ बहुतप्रकारसे पराजयकिया उसयुद्ध में क्रोधयुक्त कर्णाके बाणोंसे पांचालों के बीस रथी ५३ और सैकड़ों चंदेरीकेबासी मारेगये फिर वह शत्रुसंतापी कर्णारथोंको रथकीबैठक और उत्तमघोड़ोंसे रहितकरके ५४ हाथियों के कन्धोंको सवारों से रहितकर पदातियों को भगाता मध्याह्न के सूर्य्यकेसमान कठिनतासे दर्शनकेयोग्य ५५ मृत्यु वा कालकेसमान शरीरकोधारणकिये शोभायमानहुआ हेमहाराज इसरीतिसे शत्रुओं के समूहों को मारनेवाला बड़ा धनुषधारी कर्णामनुष्य घोड़ेरथ और हाथियोंकोमारकर ऐसेनियतहुआ जैसे कि बड़ापराक्रमीकाल जीवों के समूहोंको मारकर नियतहोताहै ५६।५७ इसीप्रकार वह अकेला महारथी सोमकोंको मारकरनियतहुआ वहांपरहमने पांचालोंके अ-द्भुत पराक्रमको देखा ५८ कि सेनामुखपर घायलहोने वालोंनेभी कर्णासेमुख न मोड़कर सन्मुखताकरी राजादुर्य्योधन दुश्शासन वा शार्दूल कृपाचार्य्य ५६ अश्वत्थामा कृतवर्मा औरमहाबली शकुनीने पांडवोंकेहजारों मनुष्योंकोमारा ६० हे राजेन्द्र फिर सत्यपराक्रमी औरक्रोधयुक्तदोनोंभाई कर्णाकेपुत्रोंने इधरउधरसे पांडवोंकी सेनाको मारा ६१ वहांबड़ाभारी नाशकारी घोरयुद्धहुआ इसीप्रकारशूरवीर पांडव, धृष्टद्युम्न ६२ और अत्यन्तरोषभरे द्रौपदीकेपुत्रोंने आपकी सेनाकोमारा इसप्रकारसे जहांतहांस्थानोंमेंपांडवीसेनाकाबहुतनाश हुआ ६३ औरयुद्धमेंबड़ेपराक्रमी भीमसेनकोपाकर आपकेभीशूरोंका नाशहुआ ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

—※—

उन्नासीवां अध्याय॥

संजयबोलेकि हे महाराज फिर अर्जुनने चारोंप्रकारकी सेनाको मारकेयुद्ध में महाक्रोधरूप कर्णको देखकर १ पृथ्वीको मांसरुधिर मज्जाहाड़से व्याप्तकर नदीकेरूपबनाया जिसमेंरुधिरजल वा मांस मज्जा हाड़रूपकीच और मनुष्योंके शिररूपपत्थर और हाथी और घोड़ेरूप किनारे २ शूरवीरोंके अस्थिसमूहोंसे पूर्णकाक और गिद्धों सेशब्दायमान छत्ररूपधनुष और नौकासेयुक्तबीररूपवृक्षोंकी बहाने वाली ३ धाररूपकमलनी वा हस्तप्राणरूपउत्तम फेनोंकोरखनेवाली धनुषबाण औरध्वजासे संयुक्त मनुष्योंके घुटेहुये कपालों सेव्याप्त ४ ढालवाकवच रूप भ्रमणोंसेयुक्त रथरूप नौकासे व्याकुल विजया-भिलाषी शूरवीर लोगोंको सुखपूर्व्वक तरने के योग्य और भयभीतों को अत्यन्त अगम्य ५ ऐसीनदीकोजारीकरके फिर शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले अर्जुनने बासुदेवजीसे यह वचनकहा ६ कि हे श्रीकृष्णजी युद्ध में यह कर्णकी ध्वजा दिखाई देती है और यह भीमसेन आदिमहारथी कर्णसे लड़रहेहैं ७ हेजनार्दनजी कर्णसेभयभीत हो होकर यहपांचाललोगभागतेहैं और श्वेतछत्रधारीयहराजा दुर्य्योधन ८ कर्णसेपराजितहुये पांचालोंको भगाताहुआ बड़ा शोभितहो रहाहै महारथी अश्वत्थामा, कृतबर्मा, कृपाचार्य्य ९ यहसबभीकर्ण से रक्षितहोकर राजाकी रक्षाकरतेहैं वह हमसबसे अबध्य सोमकों को मारेंगे १० और हेश्रीकृष्णजी रथवानोंमें कुशल यहशल्यरथके ऊपर बैठाहुआ कर्णकेरथको अत्यन्त शोभितकररहाहै ११ वहां मैं चाहताहूंकि आपमेरेरथको लेचलो मैं युद्धमेंकर्णकोमारेबिना किसी प्रकारसेनहीं लौटूंगा १२ हेजनार्दनजी दूसरीदशामें यहकर्णहमारे देखतेहुये महारथीपांडव और सृंजियोंकानाशकरेगा १३ इसकेपीछे केशवजी अर्जुन समेत रथकी सवारीकेद्वारा शीघ्रही द्वैरथयुद्ध में बड़ेधनुषधारी कर्ण और आपकी सेनाके सन्मुख गये १४ महा बाहु श्रीकृष्णजी अर्जुनके कहनेसे सबपांडवी सेनाको रथपरसेही

विश्वासयुक्तकरतेहुयेचले १५ उसशुभकारी युद्धमें अर्जुनके रथका शब्दऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र बज्रके समान बड़े जल के वेगका शब्दहोताहै१६ सत्यपराक्रमी महासाहसी पांडवअर्जुन रथके बड़े शब्दसमेत आपकी सेनाको विजय करता हुआ सन्मुख गया १७ मद्रका राजाशल्य श्वेत घोड़ों समेत श्रीकृष्णजी के साथ आते हुये अर्जुनको और उस महात्माकी ध्वजाको देखकर कर्णसे बोला १८ हेकर्ण श्वेत घोड़े और श्रीकृष्ण को सारथी रखने वाला यह वैरथ जिसको कि तुम पूछतेहो युद्धमें सबको मारता हुआ आताहै १९ यह अर्जुन गांडीव धनुषको लियेहुये वर्त्तमानहै जो तू इसको मारेगा तब हमाराकल्याण होगा २० हेराधाके पुत्रकर्ण यहअकेला भरतबंशी अर्जुन उत्तम रथियोंको मारता हुआ तुमको चाहता चला आता है अब तुम इसके सन्मुख जाओ २१ देखो यह दुर्य्योधन की सेना शीघ्रतासे शत्रुओंके मारनेवालेअर्जुनकेभयसेचारोंओरअलग२ हुई जातीहै२२अर्जुन सबसेनाओंको छोड़ताहुआ तेरेही निमित्त शीघ्रता करताहै मैं यह मानता और जानताहूं और उसके शरीरसे भी विदित होताहै २३ वह अर्जुन तेरेसिवाय किसीकेसाथ युद्धकरनेका अभिलाषीहोकर स्थिरनहीं होताहै जोकि भीमसेनके पीड़ित होनेसे क्रोधमें भराहुआहै २४ अत्यन्त घायल और बिरथ धर्मराजको वा शिखण्डी सात्विकी धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदी के पुत्र युधामन्यु, उत्तमौजा और नकुल सहदेव इनदोनों बीर भाइयोंकोघायल देखकरशत्रुओंका तपानेवाला अकेला रथी अर्जुन अकस्मात् तेरेसन्मुखआता है वह क्रोधसे रक्तनेत्र रोषमेंभरासब राजाओंकेमारनेका अभिलाषी शीघ्रतासे सेनाओंको त्यागताहुआ निस्सन्देह हमारेसन्मुखआताहै २६।२७ हेकर्ण तुम शीघ्रही उसके सन्मुखचलो तेरे सिवाय इसलोक में दूसरे ऐसे धनुषधारी को नहीं देखताहूं२८जोकि युद्धमें क्रोधयुक्त अर्जुनको मर्य्यादा के समान रोककर धारणकरे मैं पीछे और दोनों दाहें बायें उसकी रक्षाको नहीं देखताहूं वह अकेलाही तेरे सन्मुख आताहै तुम अपने स्थानको देखो २९।३० हेराधाके पुत्र तुम्हीं युद्धमें

श्रीकृष्ण और अर्जुनको अपने स्वाधीनकरनेको समर्थहो यहतेराही भार रूप कार्य्यहै तू अर्जुनके सन्मुख चल ३१ तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यकेसमानहो इसहेतुसे महायुद्धमें इस आतेहुये अर्जुनको रोको ३२ हेकर्णसर्पकी समान होठोंकेचाबनेवाले वृषभके समान गर्जनेवाले बनबासीव्याघ्रकेसमान अर्जुनको मारो ३३ यह महारथी धृतराष्ट्र के पुत्र और अन्य राजालोग युद्धमें अर्जुनकेभयसे बड़ी शीघ्रतासे भागतेहैं ३४ हेसूतनन्दन वीरकर्णतेरे सिवाय अबदूसरा कोई ऐसा मनुष्य नहींहै जोकि उनभागेहुओं के भयको निवृत्त करे हे पुरुषोत्तम यहसब कौरव युद्धमेंतुझ रक्षक को पाकर ३५ तेरी रक्षा में आश्रित होनेकी इच्छा से नियत हैं वैदेह काम्बोज अम्बष्ठ नग्नजित३६ और युद्धमेंबड़ीकठिनतासेविजयहोने वाले गान्धारदेशी जिसतेरेधैर्य्यसे विजयकियेगये हे राधाकेपुत्र उस धैर्य्यकोकरके फिरपाण्डवोंकेसन्मुखचल ३७ हेमहाबाहो बड़ीशूरता मेंनियतहोकर उन यादव बासुदेवजीके सन्मुखचलो जोकिअर्जुनके साथ अत्यन्त प्रीति रखने वालेहैं ३८ कर्णबोला हेशल्य तुम अपने स्वभावमें नियत होजाओ हे महाबाहो अबतुममुझकोअंगीकृत विदितहोतेहो तुमअर्जुनसे भयभीत मतहो ३९ अबमेरेभुजाओंके बल को और पाईहुई शिक्षाकोदेखो मैं अकेलाही इसपांडवोंकी बड़ीसेना को मारूंगा ४० इसके अनन्तर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारूंगा यहतुमसे सत्यहीसत्य कहताहूं कि इनदोनों वीरोंकोविना मारेहुये कभी न हटूंगा अथवा चाहै उन्हीं के हाथसे मरकर शयन करूंगा क्योंकि युद्धमें सदैवही बिजय नहीं हुआकरतीहै ४१ अबमैं उनको मारकर वा उनके हाथसे मरकर अपने मनोरथको सिद्ध करूंगा शल्यबोला हे कर्ण महारथी लोग युद्धमें इस रथियोंमें बड़े बीर अर्जुनको सबसे अजेय कहते हैं फिर हेकर्ण ऐसा कौनसामनुष्यहै जोइस श्रीकृष्णसे रक्षित अर्जुन को बिजय करने का उत्साह करे ४२ कर्ण बोला कि लोकमें ऐसा उत्तमरथी जहांतक हमनेसुना कभी कोईनहीं हुआ ऐसे प्रतापी प्रसिद्ध कीर्त्ति वालेअर्जुनकेसन्मुख

होकर युद्ध को करूंगा उस महायुद्ध में मेरी वीरताको देखो ४३ यहरथियोंमें बड़ावीर कौरवराज का पुत्र युद्धभूमिमें श्वेत घोड़ोंके द्वारा घूमताहै अब वहमुझको बड़ेदुःखसे मिलताहै औरकहताहै कि कर्णकेही बिजयमें मेरी बिजय और कर्णकेही नाशमें मेराभी नाश है ५४ राजकुमारके प्रस्वेद और कंपसे रहित दोनों हाथ चिह्नोंसे युक्त होकर वृद्धिमान हैं वह दृढ़शस्त्र अर्जुन बड़ा कर्मी और हस्त-लाघवीहै इसपांडवके समान कोई युद्धकर्त्तानहीं है ४५ बहुतबाणों कोभी लेताहै और उनसबको एकही बाणके समान धनुषपर चढ़ा कर छोड़ताहै फिर सकलबाण एक कोशपर गिरतेहैं उसके समान इस पृथ्वीपर कौन शूरबीरहै ४६ श्रीकृष्णको साथ रखनेवाले जिस वेगवान् अधिरथी अर्जुनने खांडव बनमें अग्निको तृप्तकिया वहांही महात्मा श्रीकृष्णजी ने चक्रको और पांडव अर्जुनने गांडीव धनुष कोपाया ४७ अर्थात् बड़ेपराक्रमी महाबाहुने अग्निसेही महाशब्दा-यमान श्वेतघोड़ोंसे युक्त रथको वा दो अक्षय तूणीरोंको और दिव्य शस्त्रोंको पाया ४८ इसीप्रकार इन्द्रलोकमें युद्धकरकेअसंख्य काल-केयनाम दैत्योंकोमारा और देवदत्तनाम शंखको पाया इसपृथ्वीपर उससे अधिक कौन होसक्ताहै ४६ इस महानुभावने उत्तम युद्धसे अस्त्रोंके द्वारा साक्षात् महादेवजी को प्रसन्न किया और उनसेतीनों लोकोंका नाशकरनेवाला बड़ाघोर पाशुपत नाम महाअद्भुत अस्त्र पाया ५० सब लोकपालोंने इकट्ठे होकर युद्धमें पृथक्२ बड़े२अस्त्रों को दिया जिन अस्त्रोंके द्वारा इसनरोत्तम ने युद्ध में इकट्ठे होनेवाले कालकेय नाम असुरोंको बड़ी शीघ्रतासे मारा ५१ इसीप्रकारइस अकेले अर्जुनने राजाबिराटके पुरमें कौरवों समेत हमसब मिलेहुओं को एकही रथके द्वारा विजय कर युद्धभूमिमें उसगोधनको हरण करके उनसब महारथियों के वस्त्रोंको भी छीन लिया ५२ हेशल्य इस प्रकारके पराक्रमी और गुणवाले श्रीकृष्णको साथमें रखनेवाले सबलोक और राजाओंमें श्रेष्ठ इस अर्जुनको अपने साहससे बुला-ताहूं५३वह महा पराक्रमी ब्रह्मा विष्णु और महेशजीके भी कंपाने

वालेनारायणसे रक्षितहै सब संसार इकट्ठाहोकर हजारों वर्षतक भी जिसके गुणोंका वर्णन न करसके ५४ ऐसे शंखचक्र गदा पद्मधारी बसुदेव जीके पुत्र महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुनके गुणोंके कहनेको कोई समर्थ नहींहै एक रथपर बैठेहुये श्रीकृष्ण और अर्जुनको देख कर मुझको महाभय उत्पन्नहोताहै ५५ अर्जुन युद्धमें सब धनुषधारियोंसे श्रेष्ठतरहै और नारायणजी भी युद्धमें अद्वितीय हैं ऐसे अर्जुन और बासुदेवजी हैं हेशल्य चाहै हिमाचल अपने स्थानसे चलायमानहोजाय परन्तु अर्जुनऔर श्रीकृष्ण चलायमाननहीं होसक्ते५६ यह दोनों दृढ़ शस्त्रधारी शूरबीर महारथी बड़े कठोर शरीर वालेहैं हे शल्य ऐसे दोनों अर्जुन और बासुदेव जीके सन्मुख मेरे सिवाय दूसरा कौन जासक्ताहै यह अत्यन्त अद्भुत वा अद्वितीय उनकाऔर मेरायुद्धशीघ्रही होगा ५७ । ५८ मैं युद्धमेंइनदोनोंको गिराऊंगा वा श्रीकृष्ण समेत अर्जुनही मुझको गिरावेंगे शत्रुओंका मारने वाला कर्ण युद्धमेंशल्यसेऐसे२बचनोंको कहता हुआ बादलके समानगर्जा ५९ फिरआपके पुत्रके पास जाकरबड़ेप्रेमसे मिला उसनेभी इसको अनेकप्रकारसेप्रसन्न किया फिर वहां प्रसन्न होकर कौरवोंमें बड़ेवीर दुर्य्योधन कृपाचार्य्य कृतवर्मा राजागान्धार समेत उसकेछोटेभाई इनसबसे ६० वा अश्वत्थामा वा अपने पुत्र और उनपदाती हाथी औरअश्वसवारोंसे बोलाकिश्रीकृष्ण औरअर्जुनको रोकोप्रथमउनके सन्मुखजाकर शीघ्रही उनको सब प्रकारसे थकाओ ६१ जिससे कि हेराजा लोगो आप लोगोंसे अत्यन्त घायलहुये इनदोनोंको मैंसुख पूर्वक मारूं वह बड़े बड़े सब महावीर बहुत अच्छा ऐसा कहकर अर्जुनके मारनेके अभिलाषी होकर बड़ी शीघ्रतासे उनके सन्मुख गये ६२ कर्णके आज्ञाकारी महारथियों ने बाणोंसे उस अर्जुनको घायलकिया फिर अर्जुनने युद्धमें उनको ऐसा निगला जैसेकि बड़ा जलसमूह रखनेवाला समुद्र नदनदियोंको निगल जाताहै ६३ वह अर्जुनअपने उत्तम बाणोंको चढ़ाता और छोड़ता हुआ शत्रुओं को दिखाईभी नहीं पड़ा फिर अर्जुनके चलायेहुये बाणोंसे घायल और

मृतकहुये सब मनुष्य हाथी और घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े ६४ सब कौरव उसबाण रूप अग्नि और गांडीव रूप सुन्दर मण्डल रखने वाले प्रलय काली ने सूर्य्य के समान महातेजस्वी अर्जुन की ओर देखनेको ऐसेसमर्थ नहीं हुये जैसेकि नेत्ररोगी मनुष्य सूर्य्यकेदर्शन करनेको असमर्थ होता है ६५ हंसते हुये गांडीव धनुष रूप पूर्ण मंडलवाले अर्जुनने उन महारथियोंके चलायेहुये बाण जालों को ऐसेकाटा जैसेकि ज्येष्ठ आषाढ़में उग्रकिरण रखनेवाला सूर्य्यजल समूहोंको सुखपूर्वक सोखलेताहै हे महाराज फिरअर्जुनने बाणोंके समूहोंकोछोड़कर आपकीसेनाकोभस्म करदिया६६।६७ फिरकृपा-चार्य्यजी बाणोंको छोड़तेहुयेउसके सन्मुखगये उसीप्रकार कृतबर्मा और आपकापुत्र दुर्य्योधन भी दौड़ा और महारथी अश्वत्थामा ने शायकों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल पहाड़को ढकदेताहै ६८ उससमय कुशलबुद्धी शीघ्रता करनेवालेपांडव अर्जुनने उसबड़ेयुद्ध-में बड़े उपायसे मारनेके इच्छावान् बीरोंके चलायेहुये उत्तमबाणों को अपने बाणोंसे काटकर तीन तीन बाणों करके उनको छातीपर घायलकिया ६९ गांडीव रूप बड़े पूर्ण मंडलवाला बाणरूपी उग्र किरणोंसे युक्त अर्जुनरूपी सूर्य शत्रुओंको संतप्त करताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़में पाश्र्व मंडलसे युक्त सूर्य बर्त्तमानहोताहै७० इसकेपीछेअश्वत्थामाने दशउत्तम बाणोंसेअर्जुन को तीनबाणोंसे श्रीकृष्णजीको चारबाणोंसे चारों घोड़ों को घायल करके नाराचनाम उत्तम बाणोंसे ध्वजास्थ हनुमान्जी को ढकदिया ७१ तौभी अर्जुनने उस धनुषधारी अश्वत्थामाको तीनही बाणों से कंपायमान करकेक्षुरसे सारथीके शिरको चारबाणोंसे घोड़ोंकोऔर तीन बाणोंसे अश्वत्थामाकी ध्वजाको रथसे गिराया ७२ फिरक्रोध युक्त अश्वत्थामाने हीरे मणि और सुवर्णसे जटित तक्षकके फणके समान प्रकाशित बड़े मूल्यके दूसरे धनुषको ऐसे उठाया जैसे कि अत्यन्त उत्तम बड़ेसर्पको पर्व्वतके किनारेसे कोईउठालेवे ७३ उस बड़ेगुणी अश्वत्थामाने अपनेशस्त्रको निकालकर घोड़े और सारथी

से रहित पृथ्वीके समान रथपर अपने धनुषको प्रत्यंचा समेतकरके समीपसे आकर उनदोनों अजेय नरोत्तमोंको उत्तमबाणोंके द्वारा पीड़ामान किया ७४ युद्धके शिरपर नियत वह महारथी कृपाचार्य कृतबर्मा और आपका पुत्र दुर्य्योधन युद्धमें अनेक बाणोंसमेत अर्जुनके ऊपर ऐसे आनकरगिरे जैसे कि बादल सूर्यको घेरलेतेहैं ७५ फिर सहस्त्राबाहु के समान पराक्रमी अर्जुनने कृपाचार्यके धनुष बाण घोड़े ध्वजा और सारथीको बाणोंसे ऐसे घायल करदिया जैसेकि पूर्वसमयमें राजा वलिको वज्रधारी इन्द्रने घायलकियाथा ७६ वह कृपाचार्य अर्जुनकेबाणोंसे अस्त्रोंसे रहितहोगये और उस बड़े युद्धमें ध्वजाके टूटने पर हजारोंबाणोंसे ऐसे छेदेगये जैसेकि पूर्व्व में अर्जुन के हाथसे भीष्मजी छेदे गयेथे ७७ इस के पीछे प्रतापवान् अर्जुनने गर्जते हुये आपके पुत्रको ध्वजा और धनुषको बाणों से काटकर कृतबर्माके उत्तम घोड़ों को मार ध्वजा को भी काटडाला फिर शीघ्रता करनेवाले उसअर्जुनने घोड़े हाथी रथ ध्वजा और धनुष को विध्वंसन करदिया इस के पीछे आपकी बड़ी सेना पृथक् २ होकरऐसेछिन्नभिन्नहोगई जैसे कि जलकेवेग से टूटाहुआ पुलछिन्नभिन्न होकरबहजाताहै ७८।७९ तदनन्तरकेशवजीनेशीघ्रही रथकेद्वारा अर्जुनके महादुखी शत्रुओंको दक्षिणकिया औरजैसे इन्द्र केमारनेकी इच्छासे वृत्रासुर आदि दैत्यचलेथे उसीप्रकार दूसरे युद्धाभिलाषी ऊंचीध्वजाधारी सुन्दररत्न जटितरथोंके द्वारा शीघ्र जानेवाले अर्जुनकेऊपरदौड़े इसकेपीछे महारथी शिखण्डी सात्विकी नकुल और सहदेव समीपजाके उन अर्जुनके सन्मुख आनेवाले शत्रुओंको रोककर८०।८१तीक्ष्णबाणोंसे घायलकरके बड़े भयानक शब्दोंसे गर्जे और सृञ्जियों समेत क्रोधयुक्त कौरवी बीरोंने सीधे चलनेवाले सुन्दर बेतयुक्तबाणोंसे परस्परमें ऐसेमारा जैसे कि पूर्व्व समयमें असुरोंने देवताओंके गणोंसमेत युद्धमें परस्पर माराथा हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र वह बिजयाभिलाषी स्वर्गजाने के उत्सुक हाथी घोड़े और रथगिरतेथे८२।८३ और ऊंचे स्वरोंसे गर्जतेथे फिरअच्छी

रीतिसे छोड़ेहुये बाणोंसे पृथक् २ होकर परस्परमें अत्यन्त घायल किया हेराजा उसमहायुद्ध में शूरबीरोंमें श्रेष्ठमहात्माओंके कर्मसे परस्पर बाणोंका अन्धकार उत्पन्नकरनेपर ८४ चारोंदिशा विदिशा औरसूर्य्यकी किरणोंभी अन्धकार होजानेसे गुप्तहोगईं ८५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

संजयबोले हेराजा कौरवोंकी अत्यन्त उत्तमसेनाओंसे घिरेहुये और डूबेहुये पांडव भीमसेनको निकालनेके अभिलाषी अर्जुनने १ शायकोंसे कर्णकीसेनाको मर्दनकरके शत्रुओंके बीरोंको मृत्युलोक में भेजा २ इसकेपीछे इसकेबाण जालक्रम २ से आकाशमें जाकर दिखाईदिये इसरीतिसे औरोंनेभी आपकी सेनाकोमारा ३ वहमहाबाहुअर्जुन पक्षीगणोंसे सेवित आकाशको अपनेबाणोंसे पूर्णकरता कौरवोंका नाश करनेवाला हुआ ४ फिरअर्जुनने निर्मलभल्ल क्षुरप्र और नाराचोंसे अंगोंको छेदछेदकर शिरोंकोकाटा ५ कटे हुयेअंग और कवचोंसेरहित वहशिर चारोंओर से गिरे उन गिरनेवाले शूरबीरोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई ६ अर्जुन के बाणोंसे मृतक अंग भंग चूर्ण २ नाश हुये अंगों सेरहित हाथी घोड़े रथी और रथों से पृथ्वी व्याप्तहोगई ७ हे राजा युद्धभूमि बड़ीदुर्गम विषय महाघोर दुःखसे देखने के योग्य वैतरणीनदी के समान होगई ८ शूरबीरों के घोरसारथी रखनेवाले मृतकघोड़े वा सारथी समेतरथोंसे और ईशा रथ चक्रअक्ष और भल्लोंसे पृथ्वी महाचित्रितसी होगई ९ कवचोंसे अलंकृतसेनाके सेनाधिप सुनहरी कवच सुनहरीभूषण रखनेवाले शूरबीरों समेत नियतहुये १० कठोर प्रकृतिवाले सवारों की एंड़ी औरअंगुष्ठोंसे प्रेरित क्रोधयुक्त चारसौहाथी अर्जुनकेबाणोंसे ऐसेगिर पड़े ११ जैसेकिबज्रसे बड़ेपर्व्वतोंके शिखरगिर पड़तेहैं रत्नोंसेपूर्ण पृथ्वीपर अर्जुनकेबाणोंसे नाशहोकर गिरेहुये उत्तमहाथियोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई १२ अर्जुनकेरथने बादलकेरूप मद डालनेवाले

हाथियोंको चारोंओर से ऐसेप्राप्तकिया जैसे कि सूर्य्य वा
प्राप्तकरता है १३ मृतकहाथी घोड़े मनुष्य अनेकप्रकारके
शस्त्र सारथी वा कवचोंसे रहित युद्धमें मतवाले मृतकमनु
और बड़े भयानक शब्दवाले गांडीव धनुष को टंकारते
हाथसे टूटेहुये शस्त्रोंसे युद्ध भूमिका मार्ग आच्छादित होग
जैसे कि आकाश में घोरवज्र से विनिष्पेष स्तनयित्नुहोता
प्रकारवाला धनुषका शब्दथा उसके पीछे अर्जुनके बाणोंसे
होकरसेना ऐसे पृथक्होकर छिन्नभिन्न होगई १६ जैसे कि
बड़े बायुके वेगसे चलायमान नौकाहोती है नानाप्रकारके
प्राणों के हरनेवाले गांडीव धनुष से छोड़े हुये १७ उल्क
बिजलीके रूपवाले बाणोंने आपकी सेनाको ऐसे भस्म
जैसे कि सायंकाल के समय बड़े पर्व्वतपर प्रचण्डअग्नि
बनको भस्म करदेता है १८ इसीप्रकार बाणों से पीड़ित
बड़ी सेनाभी महा व्याकुल होकर चलायमान हुई और
के हाथसे मर्द्दित और भस्मीभूत करीहुई सेनानाशको प्राप्त
बाणोंसे कटीहुई वा घायलहोकर वह सेना सबओर को
जैसे कि दावानल अग्निसे भयभीत होकर बड़े मृगों के स
गते हैं २० इसी प्रकार अर्जुनके हाथसे भस्महुये कौरव उ
बाहु भीमसेन को छोड़कर चारों ओर को भागे २१ इस
कौरवोंकी सबसेना व्याकुल होकर मुखमोड़२करभागी इस
कौरवोंके छिन्नभिन्न होनेपर वहअजेय अर्जुन भीमसेनको प
एक मुहूर्त पर्य्यन्त समीप बर्त्तमान रहा वहां भीमसेन
ष्ठिरका सबवृत्तान्त और आनन्दसे होनेका समाचार कहक
सेन से आज्ञा लेकर अर्जुन फिर चलागया २३। २४ हे
वह रथके शब्दसे पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान कर
गया इसके पीछे शूरवीरों में श्रेष्ठ प्रतापी अर्जुन २५ दुश्श
छोटे आपके दशपुत्रोंसे घेरागया उन्होंने भी उसको बाणो
पीड़ामान किया जैसे कि उल्काओंसे हाथीको पीड़ित कर

कारी युद्ध भूमिको देखकर गिरती हैं ५ हे महाबाहु इस राजपुत्री लक्ष्मणाकी माताको देखकर मेरा चित्त शान्ती को नहीं पाताहै ६ यह अन्य स्त्रियां मरे हुये पृथ्वीपर पड़े अपने भाई पिता और पुत्रों को देखकर और बहुत बड़ी २ भुजाओं को पकड़कर चारों ओरको गिरतीहैं ७ हे अजेय जिनके बांधव मारेगये उन तरुण षोड़श वर्ष वाली स्त्रियोंके शब्दोंको इसकठिन बिनाशमें सुना ८ हे महाबाहु थकावट और अचेततासे पीड़ामान स्त्रियां रथकी नीड़ और मृतक हाथी घोड़ेके शरीरों के आश्रित होकर नियत हैं ९ हे कृष्णजी शरीर से जुदे सुन्दर कुंडल और बेणी रखनेवाले अपने बांधवके शिरको पकड़कर नियत होनेवालीं अन्य स्त्रियों को देखो १० हे निष्पाप इननिर्दोष स्त्रियों से और मुझ निर्बुद्धी से पिछले जन्म में किया हुआ पाप छोटा नहीं है मेरी बुद्धिसे बहुतबड़ाहै ११ जो यह हमारा पापधर्म राजने दूरकिया है यादव श्रीकृष्णजी शुभा शुभ कर्मोंका नाश नहींहै अर्थात् उसका फल अवश्य होताहै १२ हे श्री-कृष्णजी इननवीन अवस्था दर्शनीय स्तन औरमुखवाली कुलवन्ती लज्जावान् काले पलक नेत्र और बालरखनेवाली स्त्रियों को देखो १३ हे माधवजी हंसके समान गद्गद बोलनेवाली दुःख शोक से अचेत सारसोंके समान पुकारनेवालीं पृथ्वीपर पड़ीहुई स्त्रियों को देखो १४ कमल लोचन स्त्रियों के मुख जोकि फूले कमलके समान और निर्दोषहैं उनको दुःखरूप सूर्य्य संतप्तकररहाहै १५ अबअन्य लोग मतवाले हाथीके समान अहंकारी मेरे पुत्रों की रानियों को देखतेहैं १६ हे गोविन्दजी सौ चन्द्रमा रखनेवाली सूर्य्यके समान प्रकाशमान ढाल और सूर्य्यही के समान प्रकाशित ध्वजा रैवत प्रकारके कवच सुवर्ण के निष्क १७ पृथ्वीपर पड़े होमीहुई अग्नि के समान प्रकाशित मेरे पुत्रोंके उनमुकटोंको देखो १८ शत्रुओं के मारनेवाले शूर भीमसेन के हाथसे युद्ध में गिरायाहुआ रुधिर से लिप्त सर्वाङ्ग यह दुश्शासन सोताहै १९ हे माधवजी द्यूतके दुःख को स्मरण करके द्रौपदीकी प्रेरणा पूर्व्वक भीमसेनकी गदासे मृ-

तक हुये मेरे पुत्रको देखो २० हे जनार्दनजी कर्णका और भाई दुर्योधनके प्रिय करनेका अभिलाषी इस दुश्शासनने सभाके मध्य में द्यूतमें पराजित द्रौपदीसे यह बचन कहे २१ कि हे द्रौपदी तू सहदेव नकुल और अर्जुन समेत दासीहुई शीघ्र हमारे घरोंमें प्रवेश करो २२ हे श्रीकृष्णजी उससमय मैंने राजा दुर्य्योधन से कहा कि हे पुत्र मृत्युकी फांसीमें बंधेहुये शकुनिको निषेधकरो २३ इस अत्यन्त दुर्बुद्धी युद्धको प्रिय जाननेवाले मामाको समझाओ हे पुत्र इस द्यूतको शीघ्र त्याग करके पाण्डवों के साथ शान्तहो २४ जैसेकि उल्काओं से हाथियों को पीड़ामान करतेहैं इसीप्रकार बचन रूप तीक्ष्ण नाराचों से क्रोध युक्त भीमसेन को पीड़ामान करता तू सचेत नहीं होता है अर्थात् हे दुर्बुद्धी तू भीमसेन के अमर्षको नहीं जानताहै २५ इसप्रकार उन बचन रूपी भालों से घायलकरते उसक्रोध युक्तने एकान्तमें उनपांडवों पर इसप्रकार बिषको छोड़ा जैसे कि सर्प गो और वृषभ पर छोड़ते हैं २६ जैसेकि बड़ाहाथीसिंह से माराजाताहै उसीप्रकार भीमसेनकेहाथसे मृतक यह दुश्शासन भुजाओंको फैलाकर सोताहै २७ अत्यन्तक्रोध युक्त भीमसेनने बड़ा भयकारी कर्मकिया जो क्रोध युक्तने युद्धमें दुश्शासन के रुधिरको पानकिया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

गांधारी बोली हे माधवजी यह ज्ञानियोंका अंगीकृत भीमसेनके हाथसे सैकरोंखण्ड किया हुआ मेरा पुत्र बिकर्ण मृतक पृथ्वीपर सोताहै १ हे मधुसूदनजी वह बिकर्णमरेहुये हाथियोंके मध्यमें ऐसे सोताहै जैसेकि नीलेबादलोंसे घिराहुआ शरदऋतु का चन्द्रमा होताहै २ धनुष पकड़नेसे बड़े चिह्न रखनेवाला खड्गसे युक्तइसका हाथ खानेके अभिलाषी गिद्धोंसे कुछकाटा जाताहै ३ हे माधवजी उसकी तपस्विनी बालाभार्य्या मांसके अभिलाषी गिद्ध और कागों

को हटातीहै परन्तु हटानेको समर्थनहीं होतीहै ४ हे पुरुषोत्तम माधवजी तरुणदेवता रूपशूरबीर सुखपूर्वक निवास करनेवाला विकर्ण पृथ्वीकी धूलपर सोताहै ५ युद्धमें करणी, नालीक, और नाराचनाम बाणोंसे टूटेमर्मस्थलोंवाले भरतर्षभ इसविकर्णको अबभी शोभानहीं छोड़तीहै ६ युद्धमें शत्रुओंके समूहोंका मारनेवाला सन्मुखरहनेवाला यह दुर्मुख उस युद्धभूमिमें वीर प्रतिज्ञा पूरीकरनेके अभिलाषी भीमसेन केहाथसे मृतक होकरसोताहै ७ हे श्रीकृष्णजी उसकायह मुख श्वापदजीवोंसे आधा खाया हुआ ऐसे अधिक प्रकाशित है जैसे कि सप्तमीका चन्द्रमा होताहै ८हे कृष्णजी युद्धमें मेरे शूरपुत्रकेऐसे मुख को देखो वह मेरा पुत्र किसरीति से शत्रुओंके हाथ से मारागया और युद्धकी धूलको निगलताहै ९ हे स्वामी युद्धके मुखपर जिसकी सन्मुखता करने वाला कोई नहीं वह देवलोकका विजयकरनेवाला दुर्मुख किस प्रकार शत्रुओंके हाथसे मारागया १० हे मधुसूदनजी इस धृतराष्ट्रके पुत्र धनुषधारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्रसेनकी मृतक मूर्ति को देखो ११ शोकसे पीड़ित रोनेवाली स्त्रियां मांसभक्षियोंके समूहोंसमेत उसजड़ाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेन केपास नियतहैं १२ हे श्रीकृष्णजी स्त्रियोंके रुदनकेशब्द और मांसाहारियोंकी गर्जना अपूर्वरूप और बिचित्र मालूम होतीहै १३ हे माधवजी यह तरुण सदैव उत्तम स्त्रियोंसे सेवित देवतारूपविविंशति धूलमें पड़ासोताहै १४ हे श्रीकृष्णजी देखो कि गिद्धनाम पक्षी इस बाणोंसे टूटे कवच वीरविविंशति,को बड़ी रणभूमिमें घेरकरबैठे हैं १५ वहशूरयुद्धमें पांडवोंकी सेनामें प्रवेशकरके सत्पुरुषोंकेयोग्य वीर शैयापर सोताहै १६ हे श्रीकृष्णजी विविंशतिके मुखकोदेखो जो कि मन्द मुसकान समेत सुन्दर नाक और चन्द्रमाके समान बहुत उज्वल है १७ बहुधा उत्तम स्त्रियोंने चारोंओर उसकी ऐसी वर्त्तमानता करीहै जैसेकि हजारों देवकन्या क्रीड़ाकरनेवालेगन्धर्व की वर्त्तमानताकरतीहैं १८ शत्रुओं की सेनाके मारनेवाले युद्ध को शोभादेनेवाले और शत्रुओंका नाशकरनेवाले दुखसे सहनेके योग्य

शूरको कौनसहसक्ताहै १९ दुस्सह का यहशरीर बाणोंसे युक्त ऐसा शोभायमान है जैसेकि अपने ऊपर वर्त्तमान कर्णिकार के पुष्पों से व्याप्त पर्ब्बत होताहै २० यह मृतकभी दुखसे सहनेके योग्य स्वर्ण माला और प्रकाशित कवचसमेत ऐसे प्रकाशमानहै जैसेकि अग्नि से श्वेतपर्ब्बत प्रकाशित होताहै २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिगांधारीवाक्येएकोनविंशोऽध्यायः१९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे यादव केशवजी जिस अहंकारी और सिंहके समान अभिमन्यु को बल पराक्रम में पिता अर्जुन और तुमसे भी ड्योढ़ाकहाहै १ जिसअकेलेने मेरे पुत्रकी सेनाको जोकि कठिनता से चीरनेके योग्यथी चीरा वह दूसरोंका काल रूप होकर आपही कालके आधीन हुआ २ हेश्रीकृष्णजी मैं देखतीहूं कि उस अर्जुन के पुत्रबड़े तेजस्वी मरेहुये अभिमन्यु का तेजनाशको नहींपाताहै ३ यह बिराटकी पुत्री और अर्जुनकी पुत्रबधू निर्दोष और पीड़ामान इस बालक और बीरपतिको देखकर शोच करतीहै ४ हेश्रीकृष्ण यह बिराटकी पुत्री भार्य्या समीपसे उस पतिको मिलकर हाथोंसे साफ़ करतीहै ५ यह चित्तवाली मनोहर रूप तेजस्विनी उसअभि-मन्युके मुखको जो प्रफुल्लित कमलके रूप और गोलगर्दन वाला है सूंघकर उससे मिलतीहै जोकि पूर्व समयमें माध्वीक नाम मद्यके मदसे अचेतभी लज्जा युक्तथी ६ । ७ हेश्रीकृष्णजी उसके सुवर्ण जटित रुधिरसे लिप्त कवचको उघारकर शरीर को देखतीहै ८ हे मधुसूदनजी यह बाला उसको देखकर तुमसे कहतीहै कि हेकमल लोचन यह आपके समान नेत्र रखनेवाला गिरायागया ९ हे पापोंसे रहित यह बल पराक्रम और तेज और बड़े रूपमें आपकी समान पृथ्वीपर गिराया हुआ सोताहै १० अबतुझ अत्यन्तकोम-ल शरीर और रांकनाम मृगचर्मपर सोने वालेका शरीर पृथ्वीपर दुखतोनहीं पाताहै ११ तुम हाथीकी सूंड़के समान प्रकाशमान

प्रत्यंचाके खैंचनेसे कठिनस्पर्शवाले सुवर्णके बाजूबन्दोंसेअलंकृतबड़ी भुजाओंको फैलाकरसोतेहो १२ निश्चय करके बहुत प्रकार के परिश्रम करके थकावटसे विश्रामयुक्त होकर सोगयेहो जो इसप्रकार से बिलाप करनेवाली मुझको उत्तरनहीं देतेहो १३ तुम्हारे विषयमें मैंअपने अपराधको नहीं स्मरण करतीहूं मुझको उत्तर क्यों नहीं देते हो निश्चय करके तुम पूर्वसमय में मुझको देखकर बोलतेथे अब भी मेराकोई अपराधनहींहै मुझसे क्यों नहीं वार्त्तालाप करतेहो हे श्रेष्ठ तुमसेरीलासमुमत्ता और देवताओंके समान १४ । १५ इन पिताओं समेत दुखसे पीड़ामान मुझको छोड़कर कहां जाओगे फिर उसके रुधिरसेलिप्त मृतक शिरको हाथसे उठाकर १६ और बगलमेंमुख को रखकर ऐसे पोंछतीहै जैसे कि जीवतेको पोंछतेहैं तुम वासुदेव जीके भानजे और अर्जुन के पुत्र १७ युद्धमें वर्त्तमानको इन महारथियोंने कैसेमारा उन निर्दय कर्मी कृपाचार्य, कर्ण, जयद्रथ, १८ द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामाको धिक्कारहै जिन के कि हाथसे मैं विधवाकरीगई उससमय उनउत्तम रथियोंका चित्तकैसाहोगया १९ कि तुझ अकेले बालकको घेरकर मेरेदुःख देनेकोमारा हेवीर नाथवान्होते तुमनेपांडवों और पांचालोंके देखते अनाथके समान कैसे मरणकोपाया २० तेरापिता पुरुषोत्तम वीर पांडव युद्धमें बहुतों के हाथसे तुझको मराहुआ देखकर कैसेजीवताहै २१ हेकमल लोचन तेरे बिना सब राज्यकी प्राप्ति और शत्रुकी पराजय पांडवों की प्रसन्नताको उत्पन्न नहीं करेगी २२ तेरेधर्म और जितेन्द्रीपन और शस्त्रोंसे विजय कियेहुये लोकोंको २३शीघ्रपीछेसेमैं भी प्राप्तकरूंगी वहांपर मेरीप्रतीक्षाकरो फिरसमय के वर्त्तमान न होनेपर प्रत्येक को मरना कठिन होताहै २४ जो दुर्भागिनी मैं युद्धमें तुझकोमृतक देखकर जीवतीहूं हे नरोत्तम अब इच्छा के अनुसार पितृ लोक में मिलने वालोंको मन्दमुसक्यानके साथमधुर बचनसे २५ ऐसेअपनी ओर लगाओगे जैसेकि मुझको और स्वर्ग में अप्सराओं के चित्तों को २६ उत्तमरूप और मन्द मुसक्यान समेत मधुर वाणी से मथन

करोगे पुण्यसे प्राप्तहोनेवाले लोकोंकोपाकर अप्सराओंसेमिले २७ हुये हेस्वामी तुम स्वर्गमें बिहारकरते मेरे कर्मोंको स्मरण करना इसलोकमें आपका मेरेसाथ इतनेही कालके लिये सम्बन्ध नियत कियाथा २८ हेबीर छः महीने साथरहे सातवें महीनेमें मृत्युको पायाराजाबिराटके कुलकी स्त्रियांऐसे कहनेवाली महादुःखीनिष्फल संकल्पवाली२६इस उत्तराकोहटातीहैं आपभी महापीड़ित वहस्त्रियां इस अत्यन्त पीड़ित उत्तराको हटाकर मरेहुये बिराट को ३० देखकर पुकारतीहैं बिलाप करतीहैं द्रोणाचार्य्य के अस्त्र और बाणोंसे टूटे अंग रुधिरसे लिप्त सोनेवाले ३१ बिराटको यहगिद्ध शृगाल और काग काटतेहैं श्यामचक्षु पीड़ामान स्त्रियां पक्षियों से घायल होते बिराटको देखकर ३२ पक्षियोंके हटानेको समर्थनहीं होतीहैं सूर्य्य के तापसे तपनेवाली इनस्त्रियोंके मुखोंका तेजजोकि ३३ परिश्रम और थकावटसे अप्रकाशित है दूर होगया उत्तर, अभिमन्यु, काम्बोज, सुदक्षिण ३४ और सुन्दर दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक बालकों को देखो हेमाधवजी इनसबको युद्धभूमि में सोता हुआ देखो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिबिंशतमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोलीयह बड़ा धनुषधारी महारथी कर्ण सोताहै यह अर्जुनकेतेजसे युद्धमें ज्वलितअग्निके समान शान्तहोगया १ बहुत से रथियोंको मारकर पृथ्वीपर पड़ासोताहै और रुधिरसेलिप्तशरीर सूर्य्यके पुत्र कर्णको देखो २ यह अशान्तचित्त महाक्रोधी बड़ाधनुष धारी पराक्रमीशूर युद्ध में अर्जुनके हाथसे माराहुआ सोताहै ३ मेरे महारथी पुत्र पांडवोंके भयसे जिसको अग्रवर्ती करके अच्छेप्रकार ऐसे युद्ध करनेवालेहुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को अग्रवर्ती करके उत्तम युद्ध करतेहैं ४ वह युद्धमें अर्जुनके हाथसे ऐसे गिरायागया जैसे कि सिंहसे शार्दूल और मतवाले हाथीसे मतवा-

लाहाथी गिराया जाताहै ५ हेपुरुषोत्तम यह बिखरेहुये बालरोदन करती इकट्ठी स्त्रियां इस युद्धमें मरेहुये शूरके चारोंओर नियतहैं ६ सदैव जिससे व्याकुल भयभीत और चिन्ता करके धर्मराज युधिष्ठिरने तेरहवर्षतक निद्राको नहींपाया ७ युद्धमें इन्द्रकेसमान अन्य शत्रुओंसे अजेय प्रलयकालकी अग्निकेसमान तेजस्वी हिमाचलके समान युद्धसे न हटनेवाला ८ वहबीर दुर्योधनका रक्षाश्रय होकर ऐसे माराहुआ पृथ्वीपर सोताहै हेमाधव जैसे कि बायुसे टूटा हुआ वृक्षहोताहै ९ तुम कर्णकीस्त्री वृषसेनकीमाता पृथ्वीपर गिरीरोदन करतीहुई और शोकको बार्त्ता करनेवाली को देखो १० निश्चय करके गुरूकाशाप तुझको प्राप्तहुआ जो पृथ्वीने इसतेरे रथचक्रको दबालिया इसकेपीछे युद्धकी शोभा देनेवाले अर्जुनके बाणसे तेरा शिर काटागया ११ हाय २ धिक्कार यह रोदन करती अत्यन्तपीड़ा मान सूरसेनकी माता इस सुवर्णके बाजू बन्दसे अलंकृत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ीहै १२ यह महात्मा श्वापदोंके भक्षणकरनेसे अभी थोड़ाशेषरहाहै वह देखने में हमारी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला ऐसेनहींहै जैसे कि कृष्णपक्षकीचौदशमें चन्द्रमा प्रसन्नतासे रहित होताहै १३ यह पृथ्वीपर पड़ी हुई महादुःखी और उठकर कर्णकेमुखको सूंघती पुत्रके मरण शोकसे दुःखी रोतीहै १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिएकबिन्शोऽध्यायः२१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

गान्धारीबोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेनकेगिरायेहुयेराजा अवन्तीको जोकि शूरबीर और बहुत बान्धव रखनेवाला है भाइयों सेरहितके समान खातेहैं १ हेश्रीकृष्णजी उस कर्णकोभी जोकि शत्रुओंके समूहोंका मर्दन करनेवालाहै खैंचतेहैं हेमधुसूदनजी शूरोंका नाशकरके बीर शैयापर सोनेवाले रुधिरसे भरेहुये उसको देखो शृगाल कंक और काकआदिक अनेक मांसभक्षी उसको २ । ३ कैसे २

मार्गोंसे खैंचतेहैं समयकी बिपरीतिताको देखो युद्ध करनेवाले शूर बीर शैयापर सोनेवाले ४ राजा आवन्तिके पास रोनेवाली स्त्रियां नियतहैं हेश्रीकृष्णजी इसबड़े धनुषधारी और भल्लसे मृतकप्रतीप बंशी बाहलीकको ५ शार्दूल के समान सोवता हुआ देखो इस मरे हुयेकाभी मुखकावर्ण ऐसा शोभादेताहै ६ जैसे कि पूर्णमासी का पूर्ण चन्द्रमा होताहै पुत्रशोकसे दुःखी और प्रतिज्ञा को पूरा करने वाले ७ इन्द्रके पुत्र अर्जुनसे युद्धमेंजयद्रथ गिरायागया प्रतिज्ञाको सत्य करनेके अभिलाषी अर्जुनने ग्यारह अक्षौहिणी सेना को हटा-कर महात्मासे रक्षित ८ इस जयद्रथको मारा हे जनार्दनजी देखो इससिन्ध सौवीर देशके स्वामी अहंकारी साहसी ९ जयद्रथ को शृगाल और गिद्ध खाते हैं हे अबिनाशी वह डराते हुयेपक्षी इन आज्ञाकारी स्त्रियोंसे रक्षित जयद्रथको १० पासहीसेनीचे और घने स्थानपर खैंचतेहैं यह कांबोज और यवनदेशी स्त्रियां इस रक्षित महाबाहु ११ सिन्धसौबीर देशकेस्वामी जयद्रथके चारोंओर नियत हैं हे जनार्दनजी जबयह जयद्रथ केकय देशियों समेत द्रौपदी को पकड़कर भागा १२ तभी पांडवोंके हाथसे मारने के योग्यथा उस समय दुश्शलाके माननेवाले पांडवोंके हाथसे जयद्रथबचाथा १३ हेश्रीकृष्ण अबउन पांडवोंने उसबहनोईको कैसे नहींमाना वह मेरी पुत्रीबालक दुःखीबिलाप करती १४ और पांडवोंको पुकारती आप अपनेशरीरको घायल करतीहै हेश्रीकृष्णजी इससे अधिकमेरा और कौनसादुःख होगा १५ जोबालक पुत्रीविधवा और पुत्रबधू मृतक पतिवालीहैं हाय २ धिक्कार शोकभयसे जुदेके समान दुश्शला को देखो १६ उस पतिकेशिरको नपाकर इधरउधर दौड़नेवालीहै जिसने कि पुत्रको चाहनेवाले सबपांडवों को रोका १७ वहबड़ीसेनाओं को मारकर आप कालके बशीभूतहुआ चन्द्रमुखी स्त्रियां उस हाथी के समान मतवालेबड़े दुःखसेविजय होनेवाले बीरको घेरकरके रोदन करतीहैं १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

गान्धारीबोली हेतात युद्धमें धर्मज्ञ धर्मराजसे माराहुआ साक्षात् नकुलका मामायह शल्यसोताहै १ हेपुरुषोत्तम जोकि सदैव सर्वत्र तेरेसाथ ईर्षाकरताथा वह बड़ा बलवान् पराक्रमी मद्रकाराजा सोता है २ युद्धमें कर्णके रथको पकड़नेवाले जिसशल्यने पांडवोंकोविजय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीणकिया ३ दुःखका स्थानहै और धिक्कारहैकि शल्यके मुखकोकाकोंसे काटाहुआदेखो जो कि पूर्णचन्द्रमा केसमान सुन्दर दर्शनकमल पलाशके समाननेत्रधारी और स्वच्छ था ४ जिससुवर्णवर्णवालेकी जिह्वा तपायेहुये सुवर्णके समान प्रकाशमान् और मुखसेनिकलीहुई पक्षियोंसेभक्षणकी जातीहै ५ राजा मद्रके कुलकी रोदन करनेवाली स्त्रियांइस युधिष्ठिरके हाथ से मरे हुयेयुद्धके शोभादेनेवाले शल्यके चारोंओर नियतहैं ६ यहअत्यन्त सूक्ष्मवस्त्रोंकीपोशाकवाली पुकारनेवाली क्षत्राणीनरोत्तमराजामद्रको पाकर पुकाररहीहैं ७ स्त्रियां पृथ्वीपर गिरेहुयेशल्यकोचारोंओरसेघेर करऐसे समीप नियतहैं कि जैसे बारंबार बच्चा उत्पन्न करनेवाली हथिनियां कीच में डूबेहुये हाथीको घेरलेती हैं ८ हे वृष्णिनन्दन इसरक्षा देनेवाले शूरशल्यको बाणोंसे विदीर्ण शरीर और वीरोंकी शय्यापरसोनेवाला देखो ६ यह पहाड़ी श्रीमान् प्रतापवान् भगदत्त हाथीका अंकुश हाथ में रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोता है १० जिस शृगालादिकके खाये हुयेकी यह स्वर्णमयी माला केशोंको शोभादेती हुई शिरपर बिराजमान है ११ निश्चय करके इसके साथ पांडवोंका युद्ध वह हुआ जोकि बड़ा भयकारी अत्यन्त कठिन रोमांचोंका खड़ा करने वाला था और इन्द्र और वृत्रासुर के युद्धके समानथा १२ यह महाबाहु पांडव अर्जुन से युद्धकरके और संशयको उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर से गिरायागया १३ लोकमें जिसकी शूरता और बलपराक्रम के समान कोई नहींहै युद्ध में भयकारी कर्मकरने वालेयह भीष्मजी आसन्न मृत्युहोकर सोते

हैं १४ हेश्रीकृष्णजी इस सूर्य्यके समान तेजस्वी सोनेवाले भीष्म जीको ऐसे देखो जैसे कि प्रलयकालमें कालसे प्रेरित आकाश से गिराहुआ सूर्य्य होताहै १५ हेकेशवजी यह पराक्रमी नररूप सूर्य्य युद्धमें शस्त्रोंके तापसे शत्रुओंको संतप्त करके ऐसा अस्तंगत होताहै जैसे कि अस्ताचलपर वर्त्तमानू सूर्य्य होताहै १६ इस वीर्य्यको च्युत न करनेवाले अजेय शरशैयापर वर्त्तमान शूरबीरों से सेवित वीरशैयापर सोनेवाले भीष्मको देखो १७ करणी नालीक और नाराच नाम बाणोंसे उत्तम शैयाको बिछवाकर उसपर चढ़ेहुयेऐसे सोतेहैं जैसे कि भगवानू स्वामिकार्त्तिकजी शरवण को पाकर सोते हैं १८ यह गंगाजीके पुत्र रुईसे रहित तीनबाणों से बने अर्जुनके दिये हुये तकियेको शिरके नीचे धरकर १९ पिताके आज्ञानुसारी ब्रह्मचारी महा तपस्वी युद्धमें अनुपम भीष्मजी सोतेहैं २० हेतात सबबातोंके जाननेवाले नररूप होकर इस धर्मात्माने ब्रह्मज्ञानके बलसे देवताओंके समान प्राणोंको धारण कियाहै २१ युद्धमेंकोई कर्मकर्त्ता पंडित और पराक्रमी नहींहै जबकि यह शंतनुके पुत्रभीष्म जी सरीकेभी बाणोंसे घायल सोतेहैं २२ पांडवोंसे पूछे हुये इस शूरधर्मवानू सत्यवक्ताने आप अपनी मृत्युको युद्धमें बतलादिया२३ जिसने बिनाशवानू कौरववंश फिर सजीवकिया उसबड़े बुद्धिमानू ने कौरवों समेत नाशको पाया २४ हे माधवजी इस देवता के समान नरोत्तम देवव्रत भीष्मके स्वर्गबासी होनेपर कौरवलोग धर्मोंके विषय किससे पूछेंगे २५ जो कि अर्जुन का विजेता और सात्यकी कागुरुहै उस कौरवों के उत्तमगुरू द्रोणाचार्य्य को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखो २६ हे माधवजी जैसे कि देवताओंके ईश्वर इन्द्र और बड़े पराक्रमी भार्गव परशुराम जी चारों प्रकार के अस्त्रोंके ज्ञाताथे उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य भी जानतेथे २७ जिसके प्रभाव से पाण्डव अर्जुनने कठिन कर्म को किया वह मृतक होकर सोताहै उसको भी अस्त्रोंने रक्षित नहीं किया २८ कौरवों ने जिसको अग्रवर्त्ती करके पांडवों को बुलाया वह पृथ्वीपर मरा

हुआ ऐसे सोताहै जैसे कि निर्ज्वलित अग्नि होतीहै २६ हे माधव जो मृतक द्रोणाचार्य्यकी धनुषकीमुष्टि और युद्धके हस्तत्राण बिना जुदेहुये रणभूमिमें ऐसे दिखाई पड़तेहैं जैसे कि जीवतेहुये के होते हैं ३० हे केशवजी चारों वेद और सब अस्त्र जिस शूरसे ऐसेपृथक् नहीं हुये जैसे कि आदिमें प्रजापतिजीसे जुदेनहीं हुये थे ३१ उनके उन दोनों चरणों को शृगाल खैंचते हैं जो कि दण्डवत्के योग्य और बन्दीजनोंसे स्तूयमान अतिशुभ होकर सैकड़ों शिष्योंसे पूजितथे ३२ हेमधुसूदनजी यह दुःखसे घातितबुद्धि कृपीइसधृष्टद्युम्न के हाथसे मृतक द्रोणाचार्य्यके पास महादुःखी नियतहै ३३ उस रोदन करनेवाली पीड़ामान खुले केशनीचाशिरकिये शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्य्यके समीप नियतको देखो ३४ हे केशवजी यह जटिला ब्रह्मचारिणी रणभूमिमें धृष्टद्युम्न के बाणोंसे टूटे कवचवाले द्रोणाचार्य्यके पास नियतहै ३५ यह अत्यन्तकोमल शरीर यशवन्ती दुःखी कृपीयुद्धमें मृतकपतिके क्रिया कर्ममें दुःखसे उपाय करतीहै ३६ सामग ब्राह्मण विधिपूर्व्वक अग्नियोंको धारण करके सब ओरसे चिताको अग्निसे प्रज्वलितकरके द्रोणाचार्य्यको उसमें रखकर सामवेदके तीनमन्त्रोंको गातेहैं ३७ हे माधवजी यह जटिल ब्रह्मचारी धनुषशक्ति और रथोंकी नीड़ोंसे चिताको बनाते हैं ३८ नाना प्रकारके दूसरे बाणोंसे चिताको बनाकर बड़ेतेजस्वी द्रोणाचार्य्यको अच्छे प्रकारसे धरकर जलाते हुये मन्त्रोंको गातेहुये रुदनको करतेहैं ३६ दूसरे शिष्य अग्निमें अग्निको धारण करके और द्रोणाचार्य्यको अग्निमें हवन करके अन्तमें नियत होकर तीन सामसंत्रोंको गातेहैं ४० द्रोणाचार्य्यके शिष्यवह ब्राह्मण चिताको दक्षिण करके और कृपीको आगे करके श्री गंगाजी के सन्मुख जातेहैं ४१॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणित्रिविंशोऽध्यायः २३॥

—※—

चौबीसवां अध्याय ॥

गांधारीबोली हे माधवजी सन्मुखही सात्यकीके हाथसे गिराये हुये और बहुतसे पक्षियों से घिरेहुये सोमदत्त के पुत्रको देखो १ हे जनार्दनजी पुत्रशोकसे दुःखी सोमदत्त मानो बड़े धनुषधारी सात्यकी की निन्दा करता हुआ देखताहै २ यह भूरिश्रवाकी माता निर्दोष दुःख से पूर्ण अपनेपति सोमदत्तको मानो विश्वास कराती है ३ कि हे महाराज प्रारब्ध से इस भरतबंशियों के भयानक नाशको और कौरवोंके घोर प्रलयकालके समान रोदन करने को तुम नहीं देखतेहो ४ और प्रारब्धसे इस हजारों दक्षिणा देनेवाले बहुत यज्ञोंसे पूजन करनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्र को नहीं देखतेहो ५ हे महाराज प्रारब्धसे रणभूमिमें इन पुत्र बधुओं के घोर बिलापको ऐसे नहीं देखतेहो जैसे कि समुद्रपर सारसियोंके शब्द होते हैं ६ तेरी पुत्रबधू मृतक पतिवाली एकवस्त्राद्ध से गुप्त शरीर और शिरके खुलेकाले केशवाली चारोंओरको दौड़ती हैं ७ तुम प्रारब्धसे शृगालआदिकसे खाईहुई टूटी भुजा और अर्जुनसे गिरायेहुये नरोत्तम पुत्रको नहीं देखतेहो ८ अब यहां युद्धमें मृतक भूरिश्रवा और शल्यको और नानाप्रकार के पुत्रबधुओंको नहीं देखतेहो ९ प्रारब्धसे यूपभुजाधारी महात्मा भूरिश्रवाके उस सुवर्णके छत्रको रथके बैठनेके स्थानपर गिराहुआ नहीं देखतेहो १० भूरिश्रवाकी यह श्याम चक्षु स्त्रियां सात्यकी के हाथसे मरेहुये पति को घेरकर शोचतीहैं ११ हेकेशवजी दुःखकी बातहै कि पतिकेशोकसे पीड़ामान यह स्त्रियां दुःखका बिलापकरके सन्मुख पृथ्वीपर गिरती हैं १२ हे अर्जुन तुमने बीभत्सुनाम हो यह निन्दितकर्म कैसे किया जो यज्ञ करनेवाले अचेत शूरको भुजाको काटा १३ सात्यकी ने भी उससे अधिक पापकर्म किया कि शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्ण बुद्धिका शिरकाटा १४ हे धर्मके अभ्यासी दो के हाथसेमारेहुये तुम अकेलेसोतेहो अर्जुन गोष्ठी और सभाओंमें क्या

कहैगा १५ और वह सात्यकी भी इस अपवित्र अपकीर्त्ति करने वाले कर्मको करके क्या कहैगा हे माधवजी यह भूरिश्रवाकीस्त्रियां पुकारतीहैं १६ भूरिश्रवाकी यह स्त्री जिसकी कमर हाथकी मुट्ठीके समानहै पतिकीभुजाको बगलमेंलेकर दुःखका बिलापकरतीहै १७ कि यह वह हाथहै जो कि शूरोंका मारनेवाला मित्रोंको निर्भयता देनेवाला हजारों गोदानकरनेवाला और क्षत्रियोंका नाशकरनेवाला है १८ यह वहहाथहै जो कि सरसनोत्कर्षी अर्थात् स्त्रियोंकेवस्त्रोंका उघाड़नेवाला पीन स्तनोंका मर्दन करनेवाला नाभि छाती और जंघाओंकास्पर्शकरनेवाला और नीबी अर्थात् आंगीनाम स्तनरक्षक वस्त्रका हटानेवालाहै १९ बासुदेवजीकेसन्मुख सुगमकर्मी अर्जुनने युद्धमें दूसरे के साथ लड़नेवाले तुझ अचेतका हाथ काटडाला २० हे जनार्द्दनजी सत्पुरुषोंके मध्यमें और कथाओंमें अर्जुनके इस बड़े कर्मको क्या कहोगे अथवा आप अर्जुनही क्या कहैगा २१ यह उत्तम स्त्री इसप्रकार निन्दा करके मौनहै यह सपत्नी स्त्रियां इसको ऐसे शोचतीहैं जैसे कि अपनी पुत्रबधू को शोचती होतीहैं २२ यह बलवान् और सत्य पराक्रमी शकुनी गांधार देशका राजा नातेमें मामा अपने भानजे सहदेवके हाथसे मारागया २३ जो कि पूर्व्व समयमें सुवर्ण दंडीवाले पंखोंसे बायुकिया जाताथा वहअब सोता हुआ पक्षियोंके परोंसे बायु किया जाता है २४ जो कि अपने सैकड़ों और हजारों रूपों को करलेता था उस मायावी की माया पांडवोंके तेजसे नष्टहोगई २५ जिस छलीने सभामें मायासेजीवते युधिष्ठिरको और बड़े राज्यको बिजय किया अन्तमें वह पराजित हुआ २६ हे श्रीकृष्णजी पक्षीगण चारोंओरसे उस शकुनीकी बर्त्तमानता करतेहैं जो कि मेरेपुत्रोंकेलिये कुल्हाड़ा और संसारकेनाश केअर्थ शिक्षापानेवालाहुआ २७ इसनेमेरे पुत्र और अपने समूह समेत अपने मरनेके लिये पांडवों के साथ बड़ी शत्रुता करी २८ हे प्रभु जैसे कि मेरे पुत्रोंके लोक शस्त्रोंसे बिजयहुये उसीप्रकार इस दुर्बुद्धी के भी लोक शस्त्रोंसे बिजय होगये २९ हे मधुसूदनजी

यह कुटिल बुद्धी वहां भी मेरे सत्य बुद्धिवाले पुत्रोंको कहीं भाइयों समेत बिरोधी न करे ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पञ्चीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी इस मृतक और पृथ्वीकी धूलपर सोनेवाले काम्बोजके राजाको देखो जोकि अजेय उत्तम स्कन्ध युक्त होकर काम्बोज देशी उत्तम पुरुषोंके योग्यहै १ वह भार्या जिसकी रुधिर भरी चन्दन से लिप्त भुजा को देखकर महा दुःखी होकर दुःखका यह बिलाप करती है २ कि यह वह शुभउंगलियां और हथेली रखनेवाले परिघनाम शस्त्र के समान भुजाहैं पूर्वसमय में जिनके मध्य को पाकर मुझ को कभी प्रीति ने नहीं त्याग किया३ हे राजा मृतक बन्धुवाले अनाथ कम्पायमान मधुर शब्द वाले मैं तुमसे जुदी होकर किस दशा को पाऊंगी ४ धूपमें म्लान नानाप्रकार की मालाओं का रूपान्तर होजाता है परिश्रम से पीड़ामान स्त्रियोंके शरीरको शोभा त्यागनहीं करतीहै ५ हे मधुसूदनजी इस सोनेवाले शूरवीर राजा कलिङ्ग को चारोंओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा प्रकाशित बाजूबन्दों के जोड़ से अलंकृतहै ६ हे जनार्दनजी स्त्रियां सब ओर से इस जयत्सेन राजा मगध को घेरकर अत्यन्त रोदन करतीहुईं ब्याकुलहैं ७ हे मधुसूदनजी इन बड़े नेत्रवाली और सुन्दर स्वरवाली स्त्रियों के शब्द जोकि चित्त-रोचक और श्रवणोंको प्यारेहैं मेरे मनको ब्यथित करतेहैं ८ गिरे हुये बस्त्र और भूषणवालीं शोकसे पीड़ित रोदन करनेवालीं मगध देशी स्त्रियां जोकि सुन्दर बस्त्रवाले शयनोंसे युक्तथीं पृथ्वीपर सोतीहैं ९ यह स्त्रियां कौशलदेशोंके राजा बृहद्बलनाम अपने पतिको घेरकरपृथक्२रोतीहैं १० यहबारंबार अचेत और दुःखसेपूर्णस्त्रियां अभिमन्युके भुजबल से मारे और उसके अंगोंमें लगेहुये बाणोंको निकालतीहैं ११ हे माधवजी इन सब निर्दोष स्त्रियों के सुख धूप

और परिश्रम से ऐसे दिखाई पड़तेहैं जैसे कि कुम्हलायेहुये कमल होतेहैं १२ धृष्टद्युम्नके सब पुत्र बालक सुबर्णकीमाला और सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले शूरबीरद्रोणाचार्य्यके हाथसे मरेहुये सोते हैं १३ जिसका रथ अग्निकुण्ड है धनुष अग्निहै और बाण शक्ति गदा यह ईंधनहैं उस द्रोणाचार्य्यको पाकर ऐसे भस्महोगये जैसे शलभानाम पक्षी अग्निको पाकर भस्म होजातेहैं १४ उसीप्रकार सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले कैकयदेशी पाचों शूर भाई सन्मुखतामें द्रोणाचार्य्यके हाथसे मरेहुये सोतेहैं १५ तप्तसुबर्णकेसमान कवच तालवृक्षके समान ध्वजाधारी रथोंके समूह अपनेतेजसे पृथ्वीको ऐसे प्रकाशित करतेहैं जैसे कि ज्वलित अग्नि प्रकाशकरतीहै १६ हे माधवजी युद्धमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे गिरायेहुये द्रुपदको ऐसे देखो जैसे कि बनमें बड़े सिंहसे मारेहुये बड़े हाथीको देखतेहैं १७ राजा द्रुपदका श्वेत निर्मल छत्र ऐसेप्रकाशमानहै जैसे कि शरद ऋतुमें चन्द्रमा होताहै १८ यह दुःखीभार्य्या और पुत्रबधू पांचाल के वृद्ध राजाद्रुपदको दाहदेकर दाहिनी ओरसे जातीहैं १९ अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारे हुये इस महात्मा शूर चन्देरके राजा धृष्टद्युम्नको उठातीहैं २० हे मधुसूदनजी यह बड़ा धनुष-धारी युद्धमें द्रोणाचार्य्यके अस्त्रको दूर करके मराहुआ ऐसे सोताहै जैसे कि नदी से उखाड़ा हुआ वृक्ष होताहै २१ यह महारथी शूर चंदेरीका राजा धृष्टकेतु युद्ध में हजारों शत्रुओंको मारकर मराहुआ सोताहै २२ हे हृषीकेशजी स्त्रियां उन पक्षियोंसे घायलहोती सेना और बान्धवों समेत मरे हुये राजा चंदेरीके पास नियत हैं २३ हे श्रीकृष्णजी राजाचंदेरीकी यह उत्तमस्त्रियां इस सत्यपराक्रमी वीर मैदानमें सोनेवाले अपने पौत्रको बगलमें लेकर रोतीहैं २४ हे श्रीकृष्णजी इस के पुत्र सुन्दर मुख और कुण्डलधारी को युद्ध में द्रोणाचार्य्यके बहुतप्रकारके बाणोंसे घायलदेखो २५ निश्चय करके इसने अबतक भी रणभूमिमें नियत शत्रुओंके साथ युद्ध करनेवाले वीर पिताको त्याग नहीं किया २६ हे माधव इसप्रकार मेरे पुत्र

का भी पुत्र शत्रुओंके वीरों का मारनेवाला लक्ष्मण अपने पिता दुर्योधन के पीछे गया २७ हे श्रीकृष्णजी इन अवन्तिदेश के राजा बिन्द अनुबिन्दको ऐसे देखो जैसे कि हिमऋतु के अन्तपर वायुसे गिराये हुये दो पुष्पित शालवृक्षों को देखतेहैं यह दोनों सुवर्ण के बाजूबन्द और कवच से अलंकृत बाण खड्ग धनुष धारण करने वाले बैलकीसमान नेत्ररखनेवाले निर्मलमालाधारीसोतेहैं २८।२९ हे श्रीकृष्णजी सब पांडव आपके साथ मारनेके अयोग्यहैं जो कि द्रोणाचार्य,भीष्म,कर्ण, और कृपाचार्य्यसे भी बचेहुये हैं दुर्योधन, अश्वत्थामा,सिन्धकाराजा, जयद्रथ, बिकर्ण,सोमदत्त,और शूरकृत-बर्मासेभीबचे ३०।३१ जो नरोत्तमशस्त्रोंकी तीक्ष्णतासे देवताओं को भी मारसक्तेथे वह सब इस युद्धमें मारेगये इस बिपरीत समयको देखो ३२ हे माधवजी निश्चय करके दैवका कोई बड़ाभार नहीं है जो यह शूर क्षत्री क्षत्रियोंके हाथसे मारेगये ३३ हे श्रीकृष्णजी मेरे वेगवान् पुत्र तभी मारेगये जब कि तुम अपने अभीष्ट प्राप्तीसे रहित उपप्लवीस्थानको लौटकरगये ३४ उसीसमय मुझको भीष्म-पितामह और ज्ञानी बिदुरजीने समझायाथा कि अपने पुत्रोंपरप्रीति मतकरो ३५ उनदोनोंकी वह दूरदर्शकता मिथ्याहोनेके योग्य नहीं थी इसीसे हे जनार्दनजी मेरे पुत्र थोड़ेही दिनोंमें नाश होगये ३६ बैशंपायन बोले हे भरतवंशी वह गान्धारी यह सब कहकर शोक से मूर्च्छामान दुःख से घायल बुद्धि धैर्य्य को त्यागकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ३७ फिर क्रोधसे पूर्ण शरीर पुत्र शोकमें डूबीअसावधान इंद्री गान्धारीने श्रीकृष्णजी को दोष लगाया ३८ गान्धारी बोली हे श्रीकृष्ण पाण्डवों के और धृष्टद्युम्न के पुत्रादिक सब परस्पर भस्म हुये हे जनार्दन तुम किसहेतु से इन विनाश होनेवालोंको त्यागकिया ३९ समर्थ और बहुत से नौकर चाकर रखनेवाले बड़े बलमें नियत दोनोंओर के विषयों में समर्थ शस्त्र रूप वचन रखने वालेने किस कारण से उपद्रवको दूर नहीं किया ४० हे महाबाहु मधुसूदनजी जिसकारण से तुझ इच्छावान् ने जानबूझकर कौरवों

का नाश होनेदिया इसहेतुसे तुम भी उसके फलको पावोगे ४१ पतिकी सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तपप्राप्त किया उस दुष्प्राप्य तपकेद्वारा तुझ चक्र गदाधारीको शापदेतीहूं ४२ हेगोबिन्दजी जो कि तुमने परस्पर जातवालोंको मारनेवाले कौरव और पांडवों को नहींरोका इसहेतुसे तुमभी अपनी जातवालोंकोमारोगे४३ हेमधु-सूदनजी तुम भी छत्तीसवांबर्ष वर्त्तमान होनेपरमंत्री पुत्र ज्ञातिवाले वनमें फिरनेवाले ४४ अज्ञातरूप लोकोंमें गुप्त अनाथ के समान निन्दित उपायसे मरणको पावोगे ४५ इसीप्रकार तेरी स्त्रियां भी जिनके पुत्रबान्धव और ज्ञातिवाले मारेगयेऐसे चारोंओरको दौड़-गी जैसे कि यह भरतबंशियों की स्त्रियां दौड़ती हैं ४६ वैशंपायन बोले कि बड़ेसाहसीवासुदेवजी इसघोर वचनको सुनकर मन्दमुस कान करतेहुये उस देवीगान्धारीसेबोले हेक्षत्राणी मैं जानताहूं कि तुमरे कर्मके समान कर्म्मको भी अपने तपके नाशकेलिये करती है यादव लोग दैवसेही नाशको पावेंगे इसमें सन्देह नहींहै हे शुभ स्त्री मेरे सिवाय कोई दूसरा पुरुष यादवोंकी सेनाको मारनेवाला नहींहै वहसब अन्यमनुष्य देवता और दानवोंसेभी अवध्यहै ४७। ४८।४९ इसहेतुसे यादव परस्पर बिनाशकोपावेंगे श्रीकृष्णजीके इसप्रकारकहनेपर पांडवलोग भयभीतचित्त अत्यन्त व्याकुल और जीवन में निराशा युक्त हुये ५०॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिपंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

श्रीभगवान्‌बोले हे गांधारी उठोउठो शोकमेंचित्तकोमतकरो तेरे अपराधसे कौरवोंनेनाशकोपाया १ जो उस दुर्बुद्धी अत्यंतअहंकारी ईर्षा करनेवाले दुर्य्योधनको अग्रवर्त्ती करके अपने दुष्ट कर्म्म को अच्छामानतीहै २ जो कि कठोरवचन शत्रुताको प्रिय जाननेवाला मनुष्य और वृद्धोंकीआज्ञाकेबिपरीत बिरुद्धकर्मकरने वालाथा यहां तू अपने कियेहुयेदोषको कैसे मुझमें लगानाचाहतीहै ३ जो मृतक

अथवा बिनाशयुक्त व्यतीत समय को शोचती है और दुःखसे दुःख को पाती है अर्थात् आदि अन्तके दोनों दुःखोंको पाती है ४ ब्राह्मणी ने तपके निमित्त उत्पन्न होनेवाले गर्भको धारणकिया गौने मारले चलने वालेको घोड़ीने दौड़ानेवालेको शूद्राने दासको वैश्याने पशुपाल को और राजपुत्री क्षत्रियाने युद्धके अभिलाषी गर्भ को धारणकिया ५ वैशंपायनबोले कि शोकसे व्याकुलनेत्र गान्धारी वासुदेवजी के उस अप्रिय और दुबाराकहे हुये बचनको सुनकर मौन होगई ६ फिर राजऋषिधृतराष्ट्रने अज्ञानसे उत्पन्न होनेवालेमोहकोरोककर धर्मज्ञ राजायुधिष्ठिरसे पूछा ७ कि हे पांडव तुमजीवतीहुई सेनाकीसंख्या के जाननेवाले हो और जो मृतक शूरबीरोंकी संख्या को जानते हो तो मुझसे कहो ८ युधिष्ठिरबोले हे राजा इसयुद्धमें एकअरबछ्यासठकिरोड़बीसहजार शूरबीरमारेगये ९ (इससमयके लोग आश्चर्य न करें और दो बातों की ओर ध्यान करें प्रथम यह कि इस महाभारत के युद्धमें सब संसार भरके राजा सेना समेत इकट्ठे हुये थे वह सब सेनासमेत मारेगये दूसरे आजकलकी अपेक्षा उन दिनोंमें मनुष्योंमें संख्या भी अधिकथी इसीप्रकार पृथ्वी का परिमाण भी अधिकथा) हे राजेन्द्र दृष्टि न आनेवाले बीरोंकी संख्या चौबीस हज़ार एकसौ पैंसठहै धृतराष्ट्रबोले हे पुरुषोत्तम महाबाहु युधिष्ठिर उन्होंने किसगति को पाया वह मुझसे कहो मेरे बिचारसे तुमसब बातों के जाननेवाले हो १०।११ युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्नचित्तोंने बड़े युद्धमें अपने शरीरको नाशकिया वह सत्यपराक्रमी इन्द्रलोकके समान लोकोंको गये १२ हे भरतबंशी जो अप्रसन्न चित्तसे युद्धमें लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्वलोककोगये १३ और जो रणभूमिमें नियत याचना करते पराङ्मुख होकर शस्त्रोंसे मारे गये वह गुह्यकोंके लोकोंको गये १४ जो पात्यमान अशस्त्र लज्जासे युक्त और बड़े साहसी युद्धमें शत्रुओंके सन्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरते क्षत्री धर्मको उत्तममाननेवाले तेजशस्त्रोंसे मारेगये वह निस्सन्देह ब्रह्मलोकको गये १५।१६ हे राजा जो मनुष्य यहां रणभूमिकेमध्यमें

जिसकिसीप्रकार से मारेगये वह उत्तर कौरवदेशको गये १७ धृत- राष्ट्रबोले हेपुत्रतुम सिद्धोंकेसमान किसज्ञानबलसे इसप्रकार देखते हो हे महाबाहु वह मुझसेकहो जो मेरेसुननेकेयोग्यहै १८ युधिष्ठिर बोले कि पूर्वसमय में आप की आज्ञानुसार बन में घूमतेवाले मैंने तीर्थयात्राके योगसे इसअनुग्रहकोप्राप्तकिया १९ देवऋषिलोमश- ऋषिदेखे उनसेइसमनुस्मृतिकोपाया और निश्चयकरके पूर्व्वसमय में ज्ञानयोगसे दिव्यनेत्रोंको पाया २० धृतराष्ट्र बोले हेभरतवंशी क्या तुम नाथ और सनाथलोगोंके शरीरोंको विधिके अनुसार दाह करोगे २१ जिन्होंका संस्कार करनेके योग्य नहींहै और यहां जि- नकी अग्नि नियत नहींहै हे तात कर्मोंकी आधिक्यतासे हम किस का क्रियाकर्मकरें जिन्हों को सुपर्ण अर्थात् गरुड़ और गिद्ध इधर उधरसे खैंचतेहैं हे युधिष्ठिर क्रियाकर्मसे उन्होंकेलोकहोंगे २२।२३ वैशंपायन बोले हेमहाराज इसबचनको सुनकर कुन्तीके पुत्र युधि- ष्ठिरने दुर्योधन का पुरोहित सुधर्मा, धौम्यऋषि, सूत संजय, बड़े बुद्धिमान् विदुरजी, कौरव युयुत्सु, इन्द्रसेनादिक भृत्य और सब सूत २४।२५ इनसबलोगों को आज्ञाकरी कि आपसबलोग इन्हों के सब प्रेतकार्य्योंको करो जिससे कि कोई शरीर अनाथके समान नाशको न पावे २६ धर्मराजकी आज्ञासे बिदुर,सूतसंजय, सुधर्मा और धौम्य पुरोहित समेत इन्द्रसेन और जयने २७ चन्दन, अग- र, काष्ठ, और कालीयक, घृत, तेल, सुगन्धियां बहुमूल्य क्षौमव- स्त्र २८ लकड़ियोंके ढेर और बहांपर टूटेहुये रथ और नानाप्रकार के शस्त्रोंको इकट्ठा करके २९ सावधानोंने बड़े उपायों से चिताओं को बनाकर मुख्य २ राजाओंको शास्त्र बिहित कर्मों के द्वारा दाह किया ३० राजा दुर्य्योधन उसके सौभाई शल्य राजाशल भूरिश्र- वा ३१ राजा जयद्रथ, अभिमन्यु, दुश्शासन के पुत्र, राजा धृष्टके- तु ३२ बृहन्त, सोमदत्त, सैकड़ों सृंजयदेशी, राजा क्षेमधन्वा, बि- राट,द्रुपद, शिखंडी,धृष्टद्युम्न,पराक्रमीयुधामन्यु, उत्तमौजस३३।३४ कौशल्य, द्रौपदीकेपुत्र, सौबलका पुत्र शकुनी, अचल, वृषक,राजा

भगदत्त ३५ क्रोधयुक्त सूर्य्यकापुत्र कर्ण,पुत्रों समेत बड़े धनुषधारी केकयदेशी, महारथी त्रिगर्त्तदेशी ३६ राक्षसाधिप घटोत्कच, बक, राक्षसोंका राजा अलंबुष राजा जलसिन्ध इनको और अन्यहजारों राजाओंको घृतकी धाराओं से होमीहुई प्रकाशमान अग्नियों से अच्छेप्रकार दाहक्रिया३७।३८ कितनेही महात्माओंकेपितृयज्ञवर्त्त- मानहुये और सामवेदके मन्त्रोंसे गानकिया उन्होंने दूसरोंके साथ शोचकिया रात्रिमें सामवेदकी ऋचा और स्त्रियोंके रोदनोंके शब्दोंसे सबजीवों का मोह आदिक बर्त्तमान हुआ ३९।४० वह निर्धूम अत्यन्त प्रकाशित अग्नियां आकाशमें दृष्टिपड़ीं और ग्रह छोटे बा- दलोंसे ढकगये ४१ वहांपर नानाप्रकारके देशों से आनेवाले जो अनाथभीथे उनसबको इकट्ठा करके४२सीधे वृद्धियुक्त तेलसेसंयुक्त लकड़ियोंकी चिताओंसे बिदुरजीने राजाकी आज्ञानुसार उनसबको दाहक्रिया कौरवराज युधिष्ठिर उन्होंकी क्रियाओंको कराके धृतराष्ट्र को आगे करके श्रीगंगाजी के सन्मुख गये ४३।४४॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिकुरूणामौर्ध्वदेहिकेषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

बैशंपायन बोलेकि उन्होंने कल्याण रूप पवित्र जलों से पूर्ण श्री गंगाजीको और बड़ी रूपवान् स्वच्छ जल रखने वाली ह्रदनी को पाकर १ उत्तरीयबस्त्र और पगड़ी आदिको उतारकर पिताभाई पौत्र स्वजन पुत्र और नानाओंके जलदानोंकोकिया अत्यन्तदुखी रोनेवालीं सबकौरवीय स्त्रियोंनेअपने २ पतियोंको जलदानकिया३ धर्मज्ञ लोगोंने सुहृदोंकीभी जलक्रियाओंको किया वीरोंकीपत्नियों से वीरोंका जलदान करनेपर ४ गंगाजी सूपतीर्था अर्थात् सुन्दर घाटवालीहुईं और फिरशीघ्रगामीहोगईं वह गंगाजीकातट महा- समुद्रकेरूप प्रसन्नता और उत्सव से रहित ५ वीरोंकी स्त्रियों से संयुक्त होकर महा शोभायमान हुआ हे महाराज इसकेपीछे शोक से पीड़ित धीरे२ रोदन करतीकुन्ती ६ अकस्मात् अपने पुत्रोंसे यह

वचनबोली कि जोवह बड़ाधनुषधारी महारथी ७ बीरोंके चिह्नोंसे चिह्नित युद्धमें अर्जुनके हाथसे बिजयहुआ हे पांडव तुम जिस को सूतका और राधाका पुत्र मानतेहो ८ और जोसमर्थ सूर्य्यकेसमान सेनाके मध्यमें बिराजमान हुआ प्रथमजिसने तुमसब समेततुम्हारे साथियोंसे युद्धकिया ९ और जो दुर्य्योधन की सब सेनाको खेंचता शोभायमान हुआ जिसके बलकेसमान संपूर्ण पृथ्वीपर कोई राजा नहीं है १० और जिस शूरने सदैव इस पृथ्वीपर शुभ कीर्त्ति को प्राणोंसेभी अधिकचाहा उससत्य प्रतिज्ञ युद्धमें पराङ्मुख न होने वाले ११ सुगमकर्मी अपनेभाई कर्णका जलदान करो वह तुम्हारा बड़ाभाई सूर्य्य देवतासे मुझमें उत्पन्नहुआथा वहशूर कुंडल कवच धारी और सूर्य्यके समान तेजस्वीथा सबपांडव माताके उसअप्रिय बचनको सुनकर १२ । १३ कर्णको शोचतेहुये फिर पीड़ामान हुये इसकेपीछे सर्पकीसमान श्वासलेता वहकुन्तीका पुत्रपुरुषोत्तम बीर युधिष्ठिर अपनी मातासेबोलाकि जो बाणरूपतरंग ध्वजारूपभवंर बड़ी भुजारूप बड़ेग्राह रखने वाली १४।१५ ज्या शब्द से शब्दाय मानबड़े ह्रदरूप उत्तम रथका रखनेवालाथा और अर्जुन के सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी बाण वृष्टी को पाकर सन्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्व समय कैसे आपका पुत्र हुआ जिसके भुजों के प्रताप से हम सब ओरसे तपायेगये १६ । १७ जैसे कि अग्नि को कपड़ोंसे ढके उसीप्रकार तुमने इसको किस निमित्त गुप्त किया जिसकी कठिन भुजाओं का बल धृतराष्ट्र के पुत्रों से ऐसे उपासना कियागया १८ जैसे कि हम लोगों से अर्ज्जुन के भुजबल की उपासनाकरीगई सबराजाओंके मध्यमें कुन्तीके पुत्रकर्ण के सिवाय दूसरारथी औरमहाबलवान् उत्तम रथी भी रथों की सेना को नहीं रोकसक्ता था और सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ हमारा बड़ा भाई था १९।२० आपने प्रथमही उसश्रेष्ठ पराक्रमी को कैसे उत्पन्न किया दुःखकी बातहै कि आपके भेदगुप्त करनेसे हम मारे गये २१ हम बान्धवों समेत कर्णके मरनेसे पीड़ामानहुये अभिमन्यु द्रौपदी के

पुत्र २२ पांचालोंके नाश और कौरवोंके गिरनेसे भी हम पीड़ामान् हुये परन्तु उनसबसे भी सौगुने इसदुःखने अबमुझको दबायाहै २३ मैं कर्णकोही शोचताहुआ मानों अग्निमें नियत होकर जलताहूंस्वर्ग में प्राप्तहोकर भी मेराकुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं था २४ जोयहघोर युद्धकौरवों का नाशकरनेवाला न होता हेराजा इसप्रकार धर्मराज युधिष्ठिरने बहुतबिलाप करके २५ धीरे २ बहुतरोदन किया इसके पीछे उस प्रभुने उसका जलदान किया उससमय सब स्त्री पुरुष अकस्मात् पुकारे २६ वहां उस जलदान क्रियामें गंगाजी समीप जलरखनेवाली नियत हुई इसके पीछे उसबुद्धिमान् कौरवपति युधिष्ठिरने भाई के प्रेम से कर्ण की सबस्त्रियोंको परिवार समेतबुला लिया उस धर्मात्मा बुद्धिमान् धर्मराज युधिष्ठिरने उन्होंके साथ निस्सन्देह विधिपूर्व्वक प्रेतक्रियाको किया इसमाता के गुप्तपापसे मुझसे बड़ाभाई जातवाला गिरायागया २७। २८। २९ इस हेतुसे स्त्रियोंके चित्तमें जो गुप्तकरने के योग्य बात है वह गुप्तनहीं होगी वह महा ब्याकुल चित्तऐसा कहकर गंगाजी को उतरा और सब भाइयों समेत गंगाजीके तटको प्राप्त किया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिकर्णगूढ़जन्मकथनोनामसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति स्त्री पर्व्व समाप्तम् ॥

———※———

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने लखनऊ में छपी
दिसम्बर सन् १८८८ ई०

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥
१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० योषिक व विशोक ११
स्त्रीपर्व्व १२
१० शांतिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानध[illegible]
११ अश्वमेध १४ आश्रमबासिक १५ मुसलपर्व्व १६ मह[illegible]
प्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिबंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत [illegible] कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कम[illegible] हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही [illegible] मालूमहोगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भी[illegible] (७) स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (९) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) ग[illegible]
येपर्व्व छपचुकेहैं बाकी जब और पर्व्वमिलेंगे छापे जावेंगे जिन महा[illegible] योंको मिलसक्ते हैं कृपा करके भेजदेवैं तो छापेजावें ॥

महाभारत वार्त्तिक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगयाहै जिसके आदि, सभ[illegible] बन, बिराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अनुशासन, शान्ति, सौप्तिक, स्त्री औ[illegible]

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सार
ूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्या
दिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोह
ााशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकरायाहै वही उक्त
मगवद्गीता वजूवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्तारअपनी
ुद्धिसे पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी
ामर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं और यहप्रत्यक्षहीहै कि जबतक
किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब
ाक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक
ानोंकेचित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकला चातुरीण सद्विद्याबि-
ासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसा धनव्यय
कर फ़र्रुख़ाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्त
ाास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषा में
तिलकरचा नवलभाष्य आख्यमे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि
जिसकोभाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

जबछपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यह विचार
हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी
क इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाकेसाथ और इस ग्रन्थके टीकाकारोंकी टीका भी
जितनीमिलें शामिलकीजावें जिसमें उन टीकाकारोंके अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसका-
रणसे श्रीस्वामीशंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक
व श्रीधरस्वामि कृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थित है॥

———※———

हे भरतवंशी धनुषको मंडलाकार करनेवाले शूरवीर नर्तकों के स-
मान दिखाई दिये उनको मधुसूदनजी ने अपने रथके द्वारा दक्षिण
किया २७ और अर्जुनके हाथसे मरकर उनको यमराजकेपासजाने-
वाला अनुमान किया उसके पीछे अर्जुनके रथके मुड़नेपर उनशूरों
ने चढ़ाईकरी २८ अर्जुनने उनसन्मुख आनेवालोंके घोड़े रथसारथी
और ध्वजा समेत धनुष और शायकोंको शीघ्रही अपनेनाराच और
अर्द्धचन्द्रनाम बाणोंसे गिराया २९ पीछेसेदूसरे दशभल्लोंसे उनके
उन शिरोंकोपृथ्वीपर गिराया जोकि वहुत कालसे रक्त नेत्रकर कर
ओठोंको काटतेथे ३० वह बहुतसे कमलरूपीमुखों समेत शिर बड़े
शोभायमान हुये फिर वह शत्रुओंका मारनेवाला सुनहरी बाजूबन्द
रखनेवाला सुनहरी पुंखवाले दश भल्लोंसे बड़ेबेगवान् दशोंकौरवों
को मारकर चलदिया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धे अशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि कौरवोंके बड़े बेगवान नब्बे रथी घोड़ों के
द्वारा उस आनेवाले कपिध्वज अर्जुनके सन्मुखगये १ और नरो-
त्तम संसप्तकोंने परलोक संबंधी घोर शपथको खाकर युद्धमें पुरुषो-
त्तम अर्जुनको घेरलिया २ और श्रीकृष्णजीने बड़े वेगवान् सुवर्ण
भूषणोंसे अलंकृत मोतियोंके जालोंसे ढकेहुये श्वेतघोड़ोंको कर्ण के
रथपर हांका ३ इसके पीछे संसप्तकों के रथ बाणोंकी वर्षासेप्रहार
करते कर्णकी ओरको जानेवाले उसअर्जुनके सन्मुखगये ४ अर्जुन
ने अपने तीक्ष्णबाणों से शीघ्रता करनेवाले उन सब नब्बे वीरोंको
सारथी धनुष और ध्वजासमेत मारा ५ अर्जुन के नानारूप के
बाणोंसे घायलहोकर वह शूरवीर ऐसे गिरपड़े जैसे कि तपकेक्षीण
होनेपर सिद्धलोग अपने विमान समेत स्वर्गसे गिरते हैं इसकेपीछे
कौरवलोग बड़ी निर्भयता से रथहाथी और घोड़ों समेत उस वीर
अर्जुनके सन्मुख आये ६।७ तीव्रतायुक्त मनुष्यघोड़े और उत्तमहाथी

वाली उस आपकी बड़ी सेनाने अर्जुनको घेरलिया ८ वहां बड़े धनुष धारी कौरवोंने शक्ति, दुधारा खड्ग, तोमर, प्रास, गदा, खड्ग और शायकोंसे कौरवनन्दन अर्जुन को ढकदिया ९ फिर अर्जुनने चारों ओरसे अंतरिक्षमें फैलीहुई उसबाणोंकी बर्षाको अपने बाणोंसे ऐसा छिन्न भिन्नकरदिया जैसे कि सूर्य अपनीकिरणोंसे अंधेरेको तितरबितर करदेताहै १० इसकेपीछे मतवाले तेरहसौ हाथियों समेत नियतहुये म्लेक्षोंने आपके पुत्रोंकी आज्ञा से अर्जुन को पार्श्वभाग की ओरसे घायलकिया ११ और कर्णी, नालीक, नाराच, तोमर, प्रास, शक्ति, मुशल और भिन्दिपालोंसे रथमेंसवार अर्जुनको पीड़ामानकिया १२ अर्जुन ने उन हाथीके सवारोंसे छोड़े हुये बड़े बाण जालोंको अपनेतीक्ष्ण धार भल्ल और अर्द्धचन्द्रबाणोंसे काटा १३ इसके पीछे नानारूपके उत्तमबाणोंसे उन सबहाथियोंको पताका ध्वजा और सवारों समेत ऐसेमारा जैसेकि वज्रोंसे पर्वतोंको मारतेहैं १४ वह स्वर्णमयमाला धारी बड़े २ हाथी सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे पीड़ित और मृतक होकरऐसे गिरपड़े जैसे कि ज्वालामुखी पर्वत गिरपड़तेहैं १५ हे राजाइसकेपीछे हाथीघोड़ेसमेत मनुष्योंको पुकारते और चिंघाड़ते हुये गांडीव धनुषका बड़ाशब्दहुआ १६ और वहघायल हाथीचारोंओर मृतक सवारोंसमेत भागे १७ हेमहाराज रथियों और घोड़ों सेरहित हजारोंरथ गन्धर्वनगरके रूपदिखाईपड़े १८ और इधरउधरसे दौड़नेवाले अश्वसवार जहांतहां अर्जुनके शायकोंसे मृतक दिखाईदिये १९ उसयुद्धमें पांडव अर्जुनकी भुजाओंका पराक्रम देखागया जो अकेलेनेही युद्धमें अश्वसवार हाथी और रथोंको बिजय किया २० हे भरतर्षभ राजाधृतराष्ट्र इसकेपीछे भीमसेन तीनअंग रखनेवाली बड़ीसेनासे घिराहुआ अर्जुन को देखकर २१ मरने से शेषबचेहुये आपके थोड़े रथियों को छोड़कर वेगसे अर्जुन केरथकी ओरकोदौड़ा २२ इसकेपीछे बहुतमृतक और दुखीसेना भागी तब भीमसेन अपनेभाई अर्जुनके पासगये बड़े युद्ध में थकावटसे रहित गदाकोलियेहुये भीमसेनने अर्जुनसे बचेहुये शेषपराक्रमी घोड़ोंको

मारा २३।२४ इसकेपीछे भीमसेनने कालरात्रिके समानबड़े उग्र हाथीघोड़े और मनुष्योंकी खानेवाली नगरकेकोटोंकी तोड़नेवाली-महाभयानकगदाको २५ मनुष्यहाथी और घोड़ोंपर छोड़ा हेराजा उसगदानेबहुतसेहाथी घोड़े और अश्वसवारोंको मारकर लोहेके कवचधारी मनुष्य और घोड़ोंकोमारा और वहमनुष्य मृतकहोकर शब्दकरतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े २६।२७ दांतोंसे पृथ्वीको काटतेरु धिरमेंभरे टूटेमस्तक हाड़ और चरणहोकर मांसभक्षी जीवोंकोभक्ष-णार्थ मृत्युवसहुये २८ तबगदानेभी रुधिरमांस और मज्जासे तृप्तहो कर शीतलताको पाया कालरात्रिके समान दुःखसे देखनेके योग्य हाड़ोंकोभी खातीहुई नियतहुई २६ अत्यन्त क्रोधयुक्त गदाहाथमें लिये भीमसेन दशहजारघोड़े औरअनेक पत्तियोंको मारकर इधर उधरको दौड़ा ३० हे भरतबंशी इसकेपीछे आपके शूरवीरोंने गदा धारी भीमसेनको देखकर कालदंडके उठानेवाले यमराजकोही स-न्मुख आयाहुआ माना ३१ मतवाले हाथीके समान अत्यन्त क्रोध युक्त वह पांडुनन्दन हाथियोंकी सेनामें ऐसेपहुंचा जैसे कि समुद्रमें मगरपहुंचताहै ३२ वहां अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेननेबड़ीगदाकोले-कर हाथियोंकी सेनाको मझाकर वा मथकर क्षणमात्रमेंही यमलोक मेंपहुंचाया ३३ घंटोंसमेत वाध्वजा पताकाधारी सवारोंसे युक्तमत-वाले हाथियोंको ऐसेगिरता हुआदेखा जैसे कि पक्षधारी पर्व्वतगि-रतेहैं ३४ बड़े पराक्रमी भीमसेन उसहाथियोंकी सेनाको मारकर अपने रथपर सवारहोकर अर्जुनकेपीछे चले ३५ हे महाराज श-त्रुओंकी बहुतसी सेनामारीगई औरबहुधा सेनाकेलोग मुखफेरेहुये निरुत्साह और बहुतेरे शस्त्रोंसे ढकेहुये शरणमेंआये ३६ अर्जुन ने उसशरणमें आईहुई अचेतसेनाको देखकर प्राणोंके तपानेवालेबा-णोंसे ढकदिया ३७ उसयुद्धमें गांडीवधनुषधारी के बाणोंसे छिदे-हुये मनुष्य घोड़े रथ औरहाथी ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि केश-रोंकरके कदम्बका वृक्षशोभित होताहै ३८ हे राजाइसकेपीछे मनु-ष्यघोड़े और हाथियोंके प्राणोंके हरनेवाले अर्जुनके बाणोंसेघायल

हुये कौरवोंके बड़े पीड़ावान शब्दहुये ३९ तबहाय हाय करनेवाली आपकीसेना अत्यन्त भयभीतहोकर परस्परमें गुप्तहोनेवाले अलातचक्र अर्थात् बनेटीके समान भ्रमण करनेलगी ४० इसकेअनन्तर वह कौरवोंका युद्ध बड़े पराक्रमियोंके साथहुआ जहांरथअश्वसवार घोड़ेऔर हाथियोंमें कोईभी बिनाघायल हुयेनहींरहा ४१ वहसेना चारोंओरसे अग्निरूप बाणोंसे विदीर्ण रुधिर औरचर्मसे भरेशरीर फूलेहुये अशोक वृक्षकेबनके समानहोगयी ४२ वहां सब कौरव इसपराक्रमी अर्जुनको देखकर कर्णके जीवनमें निराशायुक्तहुये ४३ गांडीव धनुषधारी सेमारेहुये कौरव युद्धमें अर्जुनके बाणोंकी बर्षा को असह्य मानकर लौटे ४४ शायकोंसे घायल हुये वह कौरव कर्णको त्यागकर भयभीत होकर चारों ओर को भागे और कर्ण कोभीपुकारे ४५ उससमय अर्जुनहजारों बाणोंको छोड़ता हुआ और भीमसेन आदि युद्धकर्त्ता पांडवोंको प्रसन्न करता हुआ उनकेसन्मुख गया ४६ हे महाराज फिर आपके पुत्रकर्णके रथके पासगये तब उन अथाह समुद्रमें डूबे हुये आपके पुत्रादिकों को आश्रयरूप टापू होगया ४७ हेराजा निर्विष सर्पके समानसब कौरव अर्जुनके भयसे कर्णकेपास गुप्तहोकर छिपगये ४८ जैसेकि कर्मकरता लोग मृत्युसे भयभीत होकर अपनेही धर्ममें आश्रितहोतेहैं उसीप्रकार आप के पुत्रभी महात्मापांडव अर्जुनके भयसे बड़े धनुषधारीकर्णकेपास शरणागतरूपहुये ४९ । ५० उनरुधिरसेभरे बाणोंसेपीड़ामान बड़ीआपत्तिमें फंसेहुये लोगोंको देखकरकर्णनेकहा कि भयमतकरो और मेरेही पास नियत रहो ५१ फिरअर्जुनके पराक्रमसे अत्यन्त छिन्नभिन्न और ब्याकुल आपकीसेनाको देखकर वह कर्ण शत्रुओंके मारनेकी इच्छासेधनुष टंकारता हुआनियतहुआ ५२ उस शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्वास लेनेवाले कर्णने उन भागेहुये कौरवोंको देखकर चिन्ता पूर्वक अर्जुनके मारने में चित्त किया ५३ इसके पीछे अधिरथी कर्ण बहुतबड़े भारी धनुषकोटंकारकर अर्जुनके देखतेहुये फिर पांचालोंकी ओरको दौड़ा ५४ उस

समय रक्तनेत्र राजाओंने एक क्षणभरमेंही कर्णके ऊपर ऐसीबाण वर्षाकरी जैसेकि पर्व्वतपर बादल वर्षाकरते हैं ५५ हे जीवधारियों मेंश्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछेकर्णके छोड़ेहुये हजारों बाणोंने पांचालों को प्राणोंसे रहित करदिया ५६ हेवड़े ज्ञानी वहां मित्रको चाहने वाले कर्णके हाथसे मित्रोंकेही निमित्त घायल होनेवाले पांचालोंके बड़ेशब्द हुये ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे एकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि हेराजा इसकेअनन्तर कवच और श्वेतघोड़ेवाले अर्जुन के हाथसे कौरवोंके भागजानेपर सूतकेपुत्रकर्णने बड़े बाणोंसे राजापांचाल के पुत्रोंको ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि बादलों केसमूहोंको बायुतिर्रबिर्र करदेताहै १ अंजलिक नामबाणोंके द्वारा रथसे सारथीको गिराकर घायल कियेहुयेघोड़ोंको मारा और सतानीक वा श्रुतसोमको भल्लोंसे ढक कर उनके धनुषोंको भी काटा २ इसके पीछे छःबाणोंसे धृष्टद्युम्न को छेदके बड़े वेगसे उसके घोड़ों कोभी मारा फिर सूतपुत्रने सात्विकी के घोड़ोंको मारकर कैकेयके बिशोकनाम पुत्रकोमारा ३ कुमार के मरनेपर कैकेय का सेनापति जो कि महाभयानककर्म्म करनेवाला था वह अपने उग्रबाणों से सेनाको छिन्नभिन्न करता हुआ उसके सन्मुख दौड़ा और कर्णके पुत्र प्रसेनको घायल किया ४ कर्णने हंसकर तीन अर्द्धचन्द्र बाणोंसे उसकीभुजा और शिरको काटा तबवह मृतक होकर रथसेपृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसेसे काटा हुआ सालका वृक्ष होताहै ५ कर्णका पुत्र प्रसेन मृतक घोड़ेवाले सात्विकी को अपने कानतक खेंचेहुये पृषत्क नाम बाणोंसे ढककर नाचताहुआ सात्विकीके हाथसे घायल होकर गिरपड़ा ६ पुत्रके मरने से क्रोधयुक्त चित्तकरके सात्विकी के मारनेको इच्छाकरतेहुये माराहै इसप्रकार बोलतेहुये कर्णने सात्विकी केऊपर शत्रुघाती बाणको छोड़ा ७ उसके उसबाण

को शिखण्डीने काटकर तीनबाणोंसे कर्णको पीड़ितकियाफिर शिख-ण्डीके बाण कर्णकी ध्वजा और धनुषको काटकर पृथ्वीमें गिरपड़े ८ तबउग्ररूप महात्मा अधिरथीकर्णने शिखंडीको छः बाणोंसे घायल करके धृष्टद्युम्नके लड़केके शिरकोकाटा और इसीप्रकारबड़े तीक्ष्ण बाणोंसे श्रुतसोमको घायलकिया ९ हेराजाओंमें श्रेष्ठवहांप्रबलशूर बीरके वर्त्तमानहोने और धृष्टद्युम्नके पुत्रके मरनेपर श्रीकृष्णजीने अर्जुनसेकहाकि यहकर्णइसलोकको पांचालोंसेरहितकिये देताहै हे अर्जुनसेअबचलकर कर्णको मार १० उसकेपीछे नरोंमेंबड़ेवीरसुन्दर भुजावाले भयकेस्थानमें महारथीसे घायलइन लोगोंकीरक्षा करने की इच्छावान् अर्जुनने हंसकरशीघ्रही रथकेद्वारा कर्णके रथको पा-या ११ और महाकठोर उग्रगांडीव धनुषको चढ़ाकर हथेलीपर प्रत्यंचाका शब्दकरके अकस्मात् बाणोंका अन्धकार उत्पन्न करके ध्वजारथघोड़े और हाथियोंकोमारा अन्तरिक्षमें बहुतसे शब्दघूमने लगे और पक्षीलोग पर्व्वतोंकी गुफाओंमेंगिरे जो कि जीवाकेमंडल से जंभाईलेता अर्जुनरुद्र मुहूर्त्त में सन्मुखगया १२।१३ और एक वीरभीमसेन रथकेद्वारा अर्जुनको पीछेकीओरसे रक्षाकरता हुआ चला शत्रुओंसेघिरेहुये वहदोनों राजकुमाररथोंकेद्वाराशीघ्रहीकर्णके सन्मुखगये १४ वहांपर अन्तरिक्षमें कर्णकेसोमक लोगोंको घेरकर उस महायुद्धकेनियत रथघोड़े और हाथियोंके समूहोंको मारा और बाणोंसे सर्वदिशाओंको ढकदिया १५ उत्तमौजा, जन्मेजय, क्रोधयुक्त युधामन्यु, शिखंडी और धृष्टद्युम्न इनसबने अपने२ पृषत्कोंसे कर्ण को छेदावहपांचाल देशीरथियोंमेंबड़े बीर पांचोंकर्णके सन्मुखदौड़े धैर्य्यसेबड़े सावधान कर्णको यहसबलोग रथसेगिरानेको ऐसेसमर्थ नहींहुये जैसेकिशान्त और जितेन्द्री पुरुषको इन्द्रियोंके बिषयनहीं गिरासके १६।१७ कर्णनेबाणोंसे उन्होंके धनुष ध्वजाघोड़े सारथी और पताकाओंको शीघ्रतासे काटकरपांच पृषत्कोंसे उनको घायल करकेसिंहनादकिया १८ इनबाणोंकोछोड़ते और चारोंओरसे मारते उसप्रत्यंचा और बाणरखनेवालेकर्णकेधनुषकेघोरशब्दसे पर्व्वत वा

वृक्षादिसमेत पृथ्वीकंपायमानहोगी ऐसाजानकर मनुष्योंके समूह पीड़ामानहुये १९ वहकर्ण इन्द्रधनुषके समान अपने बड़े धनुष से बाणोंको छोड़तायुद्धमें ऐसाशोभायमानहुआ जैसेकिप्रकाशितज्योतियोंकामंडल और किरणोंके समूहोंका रखनेवाला पार्षमंडलसेघिरा हुआसूर्य होताहै २० शिखंडीको तीक्ष्णबारहबाणोंसेउत्तमौजसको छः बाणोंसे युधामन्युको शीघ्रगामी तीनबाणों से और सोमकधृष्टद्युम्नके पुत्रोंकोतीन २ बाणोंसे छेदा २१ हेश्रेष्ठफिर युद्धमें कर्णके हाथसे पराजितशत्रुओंके प्रसन्न करनेवाले पांचोंमहारथीकर्मरहित होकरऐसेनियतहुये जैसेकिज्ञानीसे जीतेहुये इन्द्रियोंके विषयहोते हैं २२जैसेकिनौकासे रहितव्यापारीलोग समुद्रमेंडूबतेहैं इसीप्रकार कर्णरूपी समुद्रमें डूबनेवाले उन अपने मामाओंको द्रौपदीके पुत्रोंने अच्छे अलंकृत रथरूप नौकाओंके द्वारा उस समुद्रसेनिकाला २३ उसके पीछे सात्विकीने कर्णके चलाये हुये बहुत बाणोंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे काटकर और तीक्ष्णलोहेके बाणोंसे कर्ण को घायल करके आठ बाणोंसे आपके बड़ेबेटे को छेदा २४ इसकेपीछे कृपाचार्य कृतवर्मा दुर्योधन और आपकर्णने तीक्ष्णबाणों से घायल किया वह श्रेष्ठ यादव इन चारोंके साथ ऐसे युद्ध करनेलगा जैसे कि दैत्यों का स्वामी दिग्पालोंके साथ लड़ताहै २५ बड़े उच्च शब्दवाले बहुतलंबे असंख्यबाण बरसानेवाले बड़ेधनुषसे वहसात्विकी उनपर ऐसा प्रबलहुआजैसे कि शरदऋतुमें आकाशमें बर्त्तमान सूर्यप्रबल होता है २६ शत्रुसंतापी बड़ेअलंकृत शस्त्रधारी पांचालदेशी महारथियोंने फिर रथोंपर सवार होके सात्विकी को ऐसे रक्षित किया जैसे कि शत्रुओंके मारनेमें मरुद्गणलोग इन्द्रकोरक्षित करतेहैं २७ इसकेपीछे आपकी सेनाओंके साथ शत्रुओंका वह युद्ध महाभयकारी हुआ जोकि उन रथ घोड़े और हाथियों का विनाशकारीथा जैसे कि पूर्वसमयमें देवताओंका युद्ध दैत्यों के साथ हुआ २८ उसीप्रकार रथ हाथी घोड़े और पदातियों समेत सब सेना शस्त्रोंसे ढकगई और परस्पर शब्दोंको करतेहुये मृतकहोकर गिर-

पड़े २९ उस दशामें राजा दुर्योधनसे छोटा आपका पुत्र दुश्शासन बाणोंसे भीमसेनको ढकता सन्मुख गया भीमसेन भी बड़ीशीघ्रतासे उसके सन्मुख गया और उसको ऐसे सन्मुख पाया जैसे कि सिंह बड़े रुरुको सन्मुख पाताहै ३० इसकेपीछे प्राणों का द्यूत खेलनेवालेपरस्पर क्रोधभरेहुये उन दोनोंका ऐसा महाभारी युद्ध हुआ जैसे कि बड़े साहसी संवरदैत्य और इंद्रकाहुआथा ३१ उन दोनों ने शरीरको पीड़ित करनेवाले सुंदर वेतवाले बाणों से परस्परमें ऐसाकठिन घायलकिया जैसे कि हथिनियोंके मध्यमें कामदेवसे प्रवृत्तचित्त बारंबार घायलहुये दो बड़े हाथी लड़ते हैं ३२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेनने आपके पुत्रके ध्वजा और धनुषको दो क्षुरप्रोंसे काटा और उसके ललाटको बाणसे छेदकर सारथी के शिरको शरीरसे पृथक् करदिया ३३ उस राजकुमारने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेनको बारहबाणसे छेदा और आपही घोड़ोंको चलाताहुआ भीमसेनपर बाणों की वर्षा करनेलगा ३४ इसकेपीछे सूर्य्यकी किरणके समान प्रकाशमान सुवर्ण हीरे आदि उत्तम रत्नोंसेअलंकृत महाइन्द्रके वज्ररूप बिजलीके गिरनेके समान कठिनतासे सहनेके योग्य भीमसेन के अंगों के चीरनेवाले बाणको छोड़ा ३५ उसबाणसे घायलशरीर व्यथितरूप भीमसेन निर्जीव के समान गिरा और दोनोंभुजाओंको फैलाकर उत्तम रथपर आश्रित हुआ और थोड़ेही कालमें सचेत होकर गर्जा ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिदुश्शासनभीमसेनयुद्धेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय॥

संजयबोले कि उस युद्ध में कठिन युद्धकरनेवाले राजकुमार दुश्शासनने ऐसा कठिन कर्मकिया किएकबाणसे तोभीमसेनके धनुषको काटा और सातबाणोंसे सारथीको छेदा १ उस वेगवान राजकुमारने उसकर्मको करके भीमसेनकोनव्वे पृषत्कोंसे पीड़ित किया इसकेपीछे बड़ीशीघ्रता करके उत्तमबाणोंसे फिर भीमसेनको छेदा २

फिर महाक्रोधरूप भीमसेनने आपके पुत्रपर उग्रशक्तिको चलाया तब आपके पुत्रने उसजलती हुई उग्र शक्तिको अकस्मात् आतेहुये देखकर ३ कानतक खैंचेहुये दश पृषत्क बाणोंसे काटा उससमय सब शूरवीरोंने प्रसन्नचित्त होकर उसकी प्रशंसाकरी ४इसकेअनन्तर शीघ्रही आप के पुत्रने भीमसेनको फिर कठिनपीड़ित किया तब भीमसेन उसपर अत्यन्त क्रोधितहुआ और उसको देखकर क्रोधसे अत्यन्त कोपयुक्त होकर ५ कहनेलगाकि हेवीर मैंतेरेबाण से घायलहूं अबतुम मेरीगदाकोसहो तब क्रोधयुक्त भीमसेनने बड़े शब्दसे यहकहकर उसभयानकरूप गदाकोमारनेकेनिमित्तलियाद् और कहाकि अरेदुरात्मा अबमैं इसयुद्धभूमिमेंही तेरेरुधिरकोपान करूंगा यहवचन सुनकर आपकेपुत्रने मृत्युरूप उग्रशक्तिकोअकस्मात्फेंका तबक्रोधमें पूर्णभीमसेननेभी बड़ीउग्ररूपगदाकोघुमाकर फेंका उसगदाने उसकी शक्तिको अकस्मात् तोड़कर आपके पुत्रको मस्तकपर घायलकिया ७।८ मदझाड़नेवाले हाथीके समान रुधिर को गिरातेहुये उस दुश्शासनपर फिरभीमसेनने उसकठिन गदाको चलाया उसगदाके द्वारा भीमसेनने बड़े हठ पूर्व्वक दुश्शासन को दशधनुष की दूरीपरडाला ६ अर्थात् उस वेगवान् गदासे घायल औरकंपितहोकर दुश्शासन गिरपड़ा हेमहाराज गिरतीहुई गदासे सारथी समेत घोड़े मारेगये और उसकारथभी चूर्ण २ होगया१० टूटेकवचभूषण और पोशाकवाला फड़कताहुआ दुश्शासन कठिन पीड़ासेदुःखी हुआ और सबपांडव और पांचालोंने दुश्शासन को देखकर बड़ीप्रसन्नता पूर्व्वक सिंहनादोंको किया इसकेपीछे भीमसेन इसको गिराकर बड़ीखुशीसे दिशाओं को शब्दायमान करता हुआ गर्जा हे अजमीढ़वंशी सब पार्श्ववर्त्ती नियत मनुष्य भी उस शब्दसे मूर्च्छितहोकर गिरपड़े वेगवान् भीमसेनभी बड़े वेग पूर्व्वक रथसे उतरकरदुश्शासनकीओरदौड़ा और वहशत्रुताजो११।१२।१३ आपकेपुत्रोंकीओरसेकीगईथी उसको स्मरणकरकेहेराजा चारोंओर से उत्तम पुरुषों समेत उसघोर और कठिनयुद्धके वर्त्तमान होनेपर

वहांबुद्धिसे बाहरकर्मकरनेवाला महाबाहु भीमसेन दुश्शासन को देखकर१४देवीद्रौपदीके केशका पकड़ना और उसीरजस्वलाकेवस्त्रों का पृथक् करना इन दोनोंबातों को स्मरण करताहुआ उस निरपराधिनीपतियोंसे जुदीहुईको दुःखोंके देनेको शोचकर १५ फिरभीमसेनक्रोधसे ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि घृत सींचाहुआ अग्नि प्रज्वलित होताहै ऐसा होकर उसने उसस्थानपर खड़ाहोकर कर्ण दुर्योधन, कृपाचार्य,अश्वत्थामा और कृतवर्मासेकहा १६ कि अबमैं इस पापी दुश्शासनको मारताहूं अब सब युद्ध करनेवाले शूरवीर इसकी रक्षा करनेको आवो ऐसाकहकर मारनेको उत्सुक महापराक्रमी और वेगवान् भीमसेन सन्मुखदौड़ा १७ इसरीतिसे भीमसेन ने युद्धमें पराक्रम करके जैसे कि केशरीसिंह हाथीको पकड़ना चाहताहै उसीप्रकार वह अकेला भीमसेन वीर दुर्योधन और कर्णके समक्षमें दुश्शासनको पकड़नेकी इच्छाकरके १८ बड़े उपायसेउसमें दृष्टीको लगा रथसे कूद पृथ्वीपर गया और सुन्दर धारवाले उत्तम खड्गको उठाकर उस कंपतेहुये पृथ्वीपर पड़े हुये कंठको दबाय छातीको और जंघाको काटकर थोड़ासा गरम गरम रुधिरपिया उसकेपीछे गिराकर उसके शिरकोभी काटनेकी इच्छासे अपनीप्रतिज्ञा पूरी करनेके लिये उसबुद्धिमान् भीमसेनने फिरथोड़ासा गरम लोहू पिया और इसरुधिरके स्वादुको लेकर महा क्रोधित होकर सबके सन्मुख यह बचनकहा १९ । २० । २१ कि माताके स्तन्य मधु घृत अच्छी बनीहुई दिव्य माध्वी मदिरा अथवा दुग्ध दधि व दुग्ध दधिको मथकर जो तक्रहोताहै इनके सिवायजो इससंसार में सुधा और अमृतके स्वादुयुक्त पानकरनेवालेरसहैं उन सबपदार्थोंसे अब इस शत्रुके रुधिरमें मुझको अधिकस्वाद आताहै २२।२३ तदनन्तर उसको कुछेकसचेतदेखकर भीमसेनने कहाकि हेदुष्टसभाके मध्यमें जो हमने तेरे रुधिर पीनेकी प्रतिज्ञाकरीथी उसको हमने सत्यकिया अब तुमको कौनसा शूरवीर बचासक्ताहै हेराजा भीमसेनके इसबचनको सुनकर आपकेपुत्र दुश्शासनने उत्तरदिया कि॥

चौ० येअमकर करि कुंभविदारन । देनहार मो वाजि हजारन ॥
इनके बल तुम सर्वस हारे । बर्षत्रयोदश बिपिन बिहारे ॥
शर पंजर बिरचन बलभारे । पीन पयोधर मर्दन हारे ॥
अति सुकुमार सुगन्धनि मीजे । राजसूयके जलसों भीजे ॥
केश द्रौपदीकेत्यहि कर्षण । करणहारमम भुजअरिघर्षण ॥
तुमसवलखत रहेत्यहिक्षनमें । तवनरह्यो कछुबिक्रमतनमें ॥
अवहम परे समर में ऐसे । मन में रुचै करो सोतैसे ॥
शोणित पानकियो ममसोऊ । यामेंममनहिं अमरष कोऊ ॥
क्षात्रधर्म पालनकरि रण में । हमइमि परेमरे भटगण में ॥
काकशृगालपियेंममशोणित । कैतुमपिये ।करनिकरद्रोणित ॥
यहसुनिभीमसक्रोधअतिगहिकै । फिरवहिभांतिभटनसोंकहिकै ॥
गहितो सुतको भुजा उपारी । सोई तासु मुख में मारी ॥
लागोपियन रुधिर पुनिवातो । बीर बिभित्सरौद्र रसरातो ॥
पियेवारिभीषमको प्यासो । तिमिसोरुधिरपियततहंभासो ॥
दो० भरिअंजलिपीवतरुधिर उमंगिगातपैजात ।
गिरधार धरधिलासम लसौभीसकोगात ॥
कुंभकरणसमभीमसजिकै फिरसवभटनप्रचारि ।
कंठकाटिपीवनलगो शोणितकर्मबिचारि ॥
कहिकहिकहि ताकेकिये कर्मआदितेसर्व ।
ड़कारिड़कारिपीवतभयो शोणितभीमसगर्व ॥

इसकेपीछे महाघोर कर्म्म क्रोधमें भराहुआ भीमसेन बड़ेशब्दसे हंसा और दुश्शासन को निर्जीव देखकर यह वचन बोला किमैं क्याकरूं तू मृत्युसे रक्षितहै २४ उस समय जिन जिन लोगोंनेइस प्रकारसे बोलने वाले वा दौड़नेवाले स्वादुलेनेवाले अत्यंतप्रसन्न होनेवालेउसभीमसेनकोदेखा वहसब महाभयभीत होकरभागे २५ और जो लोग कि दृढ़तासे नहींभागे उनके हाथोंसे शस्त्र गिरपड़े और बहुतेरे आंखोंको बन्द करके भयके कारण घोरसे पुकारे और चारों ओरको देखकर २६ । २७ कहनेलगे कि यह मनुष्य नहींहै

कोई उग्र राक्षसहै इस प्रकार कहकर भयभीत होकर भागे २८ और राजपुत्र युधामन्यु अपनी सेना समेत उस भागेहुये चित्रसेन केसन्मुखगया और बड़ी निर्भयतासे तीक्ष्ण धारवाले साठ पृषत्कों से उसको पीड़ामान किया २९ ऊंचाफण करनेवाले जिह्वाकेचाटनेवाले क्रोधरूप विषके छोड़ने को अभिलाषी बड़े सर्प के समान चित्रसेननेलौटकर उस युधामन्युको तीन बाणोंसे औरउसकेसारथी को छःबाणोंसे छेदा ३० इसकेपीछे शूरवीर युधामन्युने सुन्दर पुंख और नोकवाले अच्छेप्रकार धनुषपर चढ़ायेहुये कानतक खैंचे हुये बाणसे उसके शिरको काटा ३१ उसभाई चित्रसेन के मरनेपर बड़े तेजस्वी शूरता को दिखलाते क्रोधयुक्त कर्णने पांडवी सेना को भगाया और नकुलके सन्मुखगया ३२ वहांपरभीमसेन भी दुश्शासनको मारकर बड़ा क्रोधयुक्त कठोर शब्द करता अपनी रुधिरकी अंजलीकोपूजकर ३३ सबलोकोंके वीरोंकोसुनाकर यह वचन बोला कि हेनीचपुरुष मैं इस तेरे रुधिरको कण्ठसे पीता हूं ३४ अब तुम अत्यन्त प्रसन्न होकर फिरकहोकि हेगौ हेगौ उससमयजो जोलोग हमको देखकर नाचतेथे वह हेगौ हेगौ इसशब्दको फिरकहैं ३५ हम उनके सन्मुख नाचतेहैं वह फिरकहैंकि हेगौ हेगौ प्रमाणकोटीनाम स्थानमेंसोना कालकूटनाम बिषकाभोजनकाले सर्पोंसेकाटनालाक्षा गृहमेंभस्महोना द्यूतबिद्यासे राज्यका हरनाबनमें निवास ३६।३७ द्रौपदीके केशोंका भयानक पकड़ना और युद्धमें बाणअस्त्रऔरस्थान पर अत्यन्तदुःख ३८ बिराटभवनमें नवीनप्रकारकेदुःख जो हमको हुये और जो दुःखकि शकुनि दुर्य्योधन और कर्णके मतसेहुये ३९ उनसब कारणोंका हेतुरूप तुही है हमने इनदुःखोंके सिवाय कभी सुखको नहींपाया ४० पुत्रसमेत धृतराष्ट्रकी दुर्बुद्धी से हमलोग सदैवदुःखीहुये हेमहाराज राजाधृतराष्ट्र यहकहकर बिजयकोपाकर ४१ फिरमंदमुसकानकरता वेगवान् रुधिरमेंभरालालमुख और क्रोध में भराहुआ भीमसेन अर्जुन और केशवजीसे बोलाकि हेवीरो युद्धमें दुश्शासनकेसाथ जो प्रतिज्ञाकरीथी वहयहां अबमैंसत्यरकरके पूरी

करी इसस्थानपरयज्ञपशुरूप दुर्य्योधनकोमारकर मैं अपनीदूसरीप्र
तिज्ञाकोभी पूरीकरूंगा ४ २।४३जब कौरवोंके समक्षमेंइसकेशिरको
काटूंगातभी मैं शान्तीको पाऊंगा फिरवह रुधिरमें डूबाहुआ अत्यन्त
प्रसन्नचित्त भीमसेन इसवचनको कहकर बड़े शब्दसे ऐसागर्जाजैसे
कि सहस्राक्षइन्द्र वृत्रासुरको मारकर प्रसन्नतासेगर्जाथा ४४।४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनवधेत्र्यशीतितमोऽध्यायः८३ ॥

चौरासीवां अध्याय॥

संजय बोलेकि हेराजा फिर दुश्शासनके मरनेपर क्रोधरूपी बड़े
बिषके रखनेवाले युद्धोंसे मुखनफेरनेवाले महापराक्रमी आपके शूर
वीर दशपुत्रोंने बाणोंसेभीमसेनको ढकदिया उनके नामयहहैं निषंगी
कवची, पाशी, दण्डधार धनुर्द्धर १।२ अलोलुप, सहखण्ड, बातवेग
सुवर्चस भाईके दुःख से पीड़ामान इनदशोंने मिलकर ३ महाबाहु
भीमसेनकोरोका फिरचारोंओरसे उन महारथियों के बाणोंसे रोका
हुआ ४ क्रोधअग्निसे रक्तनेत्र वह भीमसेन क्रोधभराहुआ कालके
समानशोभायमानहुआ उससमय पांडव भीमसेननेसुनहरी पुंखवाले
दशभल्लोंसे उनसुनहरी बाजूबन्दरखनेवाले दशोंभाई भरतबंशियों
को यमलोकमें पहुंचाया उनवीरोंके मरनेपर ५।६ भीमसेनके भय
से पीड़ित आपकी सेना कर्णके देखतेहुये भागी हे महाराज इसके
अनन्तरकर्ण ७ प्रजाओंपर पराक्रम करनेवाले कालमृत्युकेसमान
भीमसेनके पराक्रमको देखकर बड़ा भयभीतहुआ उसके रूपान्तर
सूरतसे वृत्तान्तके जाननेवाले युद्धमें शोभायमान राजाशल्यने ८
उस शत्रुबिजयी कर्णसे समयके अनुसार यहवचन कहाकि हेराधा
केपुत्र पीड़ामतकर तुझको ऐसीपीड़ा करना उचितनहींहै ९भीमसेन
के भयसे पीड़ामानहोकर यहराजालोग भागतेहैं औरभाईके दुःखसे
पीड़ामान दुर्य्योधन अचेत होरहाहै १० बड़ेसाहसीसे दुश्शासनका
रुधिर पीनेपर अचेत और शोकसे घायलचित्त११कृपाचार्य्य आदि
यह मरनेसे बाकीबचेहुये सगेभाई चारोंओरसे दुर्य्योधनके पासबैठे

नियतहैं १२ और लक्षभेदी शूरवीर पांडव जिनमें अग्रगामी अर्जुन है वह युद्धकेलिये तेरे सन्मुख वर्तमानहै १३ हे पुरुषोत्तम इससे अबतुम शूरवीरतासे नियत होकर क्षत्रीधर्म को आगेकरके अर्जुन के सन्मुख जावो १४ राजा दुर्योधन ने सब युद्धकाभार तुझीपर नियत किया है हे महाबाहो उस भार को तुम अपने बल और पराक्रम से उठावो १५ बिजय करने में तो अतुल्य कीर्ति होगी और पराजयमें निश्चयस्वर्गहै हेराधाकेपुत्र अत्यन्त क्रोधयुक्ततेरा पुत्र १६ तेरेमोहित होनेपर पांडवोंके सन्मुखदौड़ताहै बड़े तेजस्वी शल्यकेइस बचनको सुनकर १७ कर्णने युद्धकरनेका दृढ़बिचारअपने हृदयमें नियतकिया उसकेपीछे क्रोधयुक्त वृषसेन उससन्मुख वर्त्तमान भीमसेनके सन्मुखदौड़ा १८ जो कि दण्डधारी कालके समान गदाधारण करनेवाला आपके शूरोंसे युद्धकर रहाथा औरबड़ाभारी नकुलपृषत्कोंसे शत्रुओंको पीड़ामानकरतादौड़ा१९ युद्धमेंप्रसन्नचित्त उसकर्णकेपुत्र वृषसेनकेसन्मुख ऐसेगया जैसेकि पूर्वसमयमें जंभ केमारनेकी इच्छासे इन्द्रउसके सन्मुखगयाथा वहांपहुंचकर बीर नकुलनेक्षुरप्रसे उसकी उसध्वजाको काटाजोकि श्वेतरंगके अपूर्व कवचवालीथी २० और सुनहरी चित्रोंसेचित्रित अत्यन्त अद्भुतवृ- षसेनके धनुषकोकाटा तबतो कर्णके पुत्रने शीघ्रही दूसरे धनुषको लेकर नकुलको छेदा २१ दुश्शासनका बदला लेनेके अभिलाषी कर्णकेपुत्रवृषसेनने दिव्यमहाअस्त्रोंसे नकुलको घायलकिया उसके पीछेक्रोधयुक्त महात्मा नकुलने बड़ीउल्काके समान बाणोंसेउसको छेदा २२ फिर अस्त्रज्ञ कर्णकापुत्र दिव्यअस्त्रोंसे नकुलपर बर्षाकर- नेलगा हेराजा वहकर्णकापुत्र बाणोंके प्रहारवा क्रोधवा अपनेतेज अथवा अस्त्रोंके चलानेसे ऐसाअत्यन्त क्रोधरूप हुआ जैसेकि घृत की आहुतियों से बढ़ीहुई अग्निहोतीहै हे राजा कर्णके पुत्रनेअपने उत्तमअस्त्रोंसे नकुलके उनसबघोड़ोंकोमारा २३।२४ जोकिश्वेतरूप बड़ेऊंचे सुनहरीजालोंसे अलंकृतबना युजनामप्रकारकेथे उसकेपीछे मृतक घोड़ेवाले रथ से उतरकर सुवर्णमयी चन्द्रमावाली निर्मल

ढालकोलेकर २५ आकाशरूप खड्गकोपकड़कर चलायमान पक्षी
के समानघूमा उस समय अपूर्व्व युद्ध करनेवाले नकुलने शीघ्रतासे
अन्तरिक्षमें रथघोड़े और हाथियोंको मारा २६ खड्गसे कटकरवह
सब पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़े जैसे कि अश्वमेध यज्ञ में मारनेवाले के
हाथसे यज्ञपशु गिरपड़ता है नानादेशों में उत्पन्नहोनेवाले अच्छी
जीविका पानेवाले सत्यसंकल्पी दो हजार शूरवीर गिरपड़े २७
युद्धमें बिजयाभिलाषी चन्दनसे युक्तशरीरउत्तम शूरबीरलोग अकेले
नकुलके हाथसे मारेगये फिरउसने सन्मुख जाकर उसआतेहुयेनकु
लकोशायकोंकेद्वारा चारोंओरसे घायलकिया २८ पृषत्कोंसे पीड़ा-
मान उस नकुलनेभी उसबीर को व्यथित किया फिरवहभी व्यथित
होकर महा क्रोधयुक्त हुआ बड़े भारी घोरभयमें भी भाई भीमसेन
से रक्षित नकुलने महाभयको नहींकिया २६ फिरक्रोधयुक्त कर्णके
पुत्रने बहुतसे मनुष्यघोड़े हाथी और रथों के मर्द्दन करनेवाले पीड़ा-
मान अकेले बीरनकुलको अठारह पृषत्कोंसे पीड़ामान किया ३० हे
राजा उस महायुद्धमें वृषसेनसे महाघायल वह बड़ा वेगवान् नर
बीरनकुल कर्णकेपुत्रको मारनेकोयुद्धमें दौड़ा ३१ जैसे कि मांसका
चाहने वाला पक्षोंको फैलाकर आनेवाले बाजपक्षी को घायलकर-
ताहै उसीप्रकार उसक्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी आनेवाले नकुल को
अपने तीक्ष्ण बाणोंसे वृषसेनने ढक दिया ३२ वह नकुल उस के
बाणोंकोनिष्फल करताहुआ अपूर्व्वरूपकेमार्गोंमेंघूमा हे महाराज
इसके पीछे कर्णके पुत्रने खड्ग समेत उसघूमनेवाले नकुलकीउस
हजारों नक्षत्रोंसे चित्रित अपने बड़ेबाणोंसे टुकड़ेटुकड़े करके उस
खड्गकोभीकाटा जोकि लोहेसे निर्मित तीक्ष्णधारवाला मियानसे
जुदामहाभयानक बड़ेभारका सहनेवाला ३३।३४ शत्रुओंकेशरीरों
कोनाशकरनेवाला महाघोरसर्पकेसमान उग्ररूपथाउसको उसकर्ण
केपुत्रने तीक्ष्णधारवाले उत्तम छः बाणोंसे शीघ्रही काटडाला और
नकुलकोछातीपर बड़ेतीव्र पृषत्कोंसे छेदा हेराजायुद्धमें अन्यमनुष्य
से कठिनतासे करनेकेयोग्य श्रेष्ठ मनुष्योंसे सेवितकर्मको करकेफिर

बाणोंसेदुःखितमहात्मा३५।३६ शीघ्रताकरनेवाला नकुलभीमसेनके रथकेपासगया वहमृतकघोड़ेवाला कर्णपुत्रके बाणोंसेव्यथित माद्री नन्दन नकुल अर्जुनकेदेखते भीमसेनकेरथपर ऐसेगया जैसेकिसिंह पर्वतकी नोकपर चढ़जाता है उसके पीछे बड़ासाहसी क्रोधयुक्त वृषसेन अपनेबाणोंको दोनोंकेऊपर बरसानेलगा ३७।३८ तवएक रथपर मिले हुये दोनों महारथी पांडवोंने उसकोभी बाणोंसे छेदा फिर शीघ्रही विशिखोंसे रथ और खड्गके खंडित होनेपर ३९ बड़े वीर मिले हुये कौरवोंने सन्मुख आकर पूजीहुई अग्निके समान उन दोनों पांडवों को चारोंओर से बाणोंके द्वारा घायल कियाफिर क्रोधयुक्त भीमसेन और अर्जुनने बड़े घोर बाणोंकी वर्षा वृषसेन परकरी इसके अनन्तर भीमसेन अर्जुनसे बोले कि इस पीड़ामान नकुलको देखो ४०।४१ और यह कर्णका पुत्र हमको पीड़ा देताहै इससे अबतुम उस कर्णके पुत्रके सन्मुख जावो इस बचनको सुन कर वह अर्जुन भीमसेन के रथको पाकर नियत हुआ ४२ इसके पीछे नकुल उस बीरको देखकर बोला कि शीघ्रही इस सन्मुखआनेवालेको मारो इसप्रकार भाईके बचनको सुनकर अर्जुन ४३ कपिध्वज वाले केशवजी को सारथी रखने वाले अपने रथको वृषसेनके घोड़ोंके समीप लाया ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिवृषसेनयुद्धे नकुलपराजयोनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

पच्चासीवां अध्याय ॥

इसके पीछे नकुलको टूटा धनुष खड्ग वाला रथसे रहितशत्रुओंके बाणोंसे घायल कर्णके पुत्रके अस्त्रसे पराजित जानकर वह बीर जिनकी पताका बायुसे कंपित और घोड़े शब्दोंको करतेअच्छे शीघ्रगामीथे अपने सेनापतिकी आज्ञासे रथोंकी सवारीसे शीघ्रचले आये १ अर्थात् उनके नाम वरिष्ठद्रुपद के पांचोंपुत्रजिनमें छठा सात्यकी है और पांचों द्रौपदीके पुत्र यह सब शस्त्रधारी सर्पराजके समान बाणोंसे आपके हाथी रथ मनुष्य और घोड़ोंको मारते चढ़

आये २ इसके पीछे शीघ्रता करने वाले कृपाचार्य कृतवर्मा अश्व-त्थामा और दुर्य्योधन यह सब आपके उत्तम रथी उनके सन्मुख गये ३ हे राजा शकुनि, सुतवृष, क्राथ, देवावृद्ध यह आपके वीररथी हाथी और बादलके समान शब्दायमान रथ और धनुषों समेत उन ग्यारह बीरोंके रोकनेवाले हुये अत्यन्त उत्तम बाणोंसे घायल कर-ते ४ कलिन्द देशी बादल और पर्ब्बतके शिखरोंकेसमान भयान-कवेग वाले हाथियों समेत उनके सन्मुख गये और अच्छे प्रकारसे अलंकृत मदसे मतवाले युद्धाभिलाषी कर्मकर्त्ता पुरुषोंसे युक्त ५ सुनहरी जालोंसे अलंकृत हाथी ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि आ-काशमें बिजली रखने वाले बादल होतेहैं वहां कलिन्दके पुत्रने दशलोहेके बाणोंसे कृपाचार्य्यको सारथी और घोड़ों समेत अत्यन्त घायल किया ६ इसके पीछे कृपाचार्य्यके बाणोंसे वह मरा हुआ कलिन्दका पुत्र हाथी समेत पृथ्वी पर गिरपड़ा तब उसका छोटा भाई सूर्य्यकी किरण के समान प्रकाशित लोहेके तोमरों से ७ रथ को कंपायमान करके गर्जा इसके पीछे राजा गान्धारने इस गर्जने वालेके शिरको काटा तदनन्तर उन कलिंग देशियों के मरनेपर अत्यन्त प्रसन्न रूप आपके उन महारथियों ने ८ शंखोंको बड़ी ध्वनियोंसे बजाया और धनुषको हाथमें रखनेवाले होके शत्रुओंके सन्मुख गये इसकेपीछे सृंजियों समेत पांडव और कौरवोंका महा घोर भयकारी वहयुद्ध फिर हुआ ९ जोकि बाण खड्ग शक्ति दुधा-रे खड्ग गदा औरफरसोंसे मनुष्य हाथी और घोड़ोंके प्राणोंकाहर-नेवालाथा इसके अनन्तर हजारों रथ घोड़े और हाथी पदातियों से परस्पर में घायल होकर पृथ्वी परऐसे गिर पड़े १० जैसेकि बिज-ली और गर्जना रखने वाले धुवेंसे युक्त बादल दिशाओं से गिरेउस केपीछे सैकड़ों सेना रखनेवाले हाथी रथी और पतियोंके समूहों को ११ और घोड़ोंको भोजवंशी कृतवर्माने मारा वह सब उसके बाणोंसे मृतक होकर एकक्षणमेंहीगिरपड़े उसकेपीछे अश्वत्थामाके बाणसेसबशस्त्र और ध्वजाओंसमेत घायलशूरवीर १२ और निर्जीव

अन्यबड़े २ हाथीऐसे पृथ्वीपर गिरपड़े जैसेकिवज्र से ताड़ित बड़े२ पर्व्वतगिरतेहैं १३ राजाकलिन्दकेछोटे भाईनेउत्तम बाणोंसे आपके पुत्रको छातीपर घायलकियाफिर आपकेपुत्रोंनेभी अपनेतीक्ष्णबाणों से उसके शरीरसमेत हाथीकोमारा १४ तबवह गजराज उसराजकुमारसमेतसबओरको रुधिरको गेरता ऐसेगिरपड़ा जैसेकिबादलोंके आनेमेंइन्द्रकेबज्रसेटूटाधातुवान पर्व्वतजलकोगिरातागिरपड़े१५फिर कलिन्दके पुत्रकेभेजे हुये दूसरेहाथीने किरातकोसारथी घोड़े और रथकेसमेतमारा तदनन्तर बाणोंसे घायलहाथी अपने स्वामी समेत ऐसेगिरपड़ा जैसेकिबज्रका मारा हुआ पर्व्वत होताहै १६ वह रथमें सवार कठिनतासे बिजयहोनेवाला राजाकिरात हाथी सारथी धनुष और ध्वजासमेत उसहाथीपर सवार पर्व्वतीके बाणों से घायलऐसे गिरपड़ा जैसेकि बड़ीबायुसे ताड़ित और कंपितहोकर बड़ावृक्षहोता है १७ वृकने गिरिराजके रहनेवाले हाथीके सवारको बारह बाणों से अत्यन्त घायलकिया उसकेपीछे उसबड़े हाथीने बड़ी शीघ्रतासे चारोंपैरोंसेघोड़े और रथसमेत वृकको मारा १८ फिरउस बभ्रु के पुत्रकेबाणोंसे कठिनघायल वहगजभी अपनेहाथी सवारसमेत गिर पड़ा सहदेवके पुत्रकेहाथसे घायल और पीड़ामान वहदेव वृद्धका पुत्रभी गिरपड़ा १९ उत्तमयुद्धकर्त्ताओं के ऊपर गिरनेवाले हाथीकी सवारीसे राजाकलिन्दका बिषाणगात्रनामपुत्रभी बड़े वेगसेशकुनि को बहुत कठिनपीड़ित करताहुआ उसके मारनेकोगया उसके पीछे गांधारके राजाशकुनीने उसके शिरकोकाटा २० उससमयउन कलिन्द देशियों के मरनेपर अत्यन्त प्रसन्नमूर्त्ति आपकेअन्य महारथियोंनेशंखोंको अच्छीरीतिसे बजाया और धनुषहाथोंमें लियेशत्रुओंकेसन्मुखगये२१इसकेपीछे कौरवोंका युद्धपांडव और सृञ्जियों के साथऐसाहुआ जो अत्यन्तभयकारी बाणखड्ग शक्तिदुधारे खड्ग गदा और फरसोंसे रथहाथी और घोड़ोंके प्राणोंका हरनेवाला घोर रूपथा २२ फिरपरस्परमें घायलरथ घोड़े हाथी और पदाती पृथ्वी परऐसे गिरपड़े जैसेकि प्रचंड बायु से ताड़ित बिजली और गर्जना

रखनेवाले बादल दिशाओंसे गिरतेहैं २३ इसके पीछे आपके बड़े हाथीघोड़े रथ और पतियोंके समूह सतानीक के हाथसे मारेगये और अचेततासे चूर्ण २ होकरपृथ्वी परऐसे गिरपड़े जैसे कि गरुड़-जीके पंखोंकी बायुसेघायल सर्प गिरतेहैं २४ उसकेपीछे मन्दमुसकान करतेहुये कलिन्दके पुत्रनेबड़े तीक्ष्णबाणोंसे नकुलके बेटोंको छेदाफिरनकुलके पुत्रनेभी क्षुरप्रसेकमलरूपी मुखरखनेवाले उसके शिरको शरीरसेकाटा २५ तबकर्णकेपुत्रनेतीन लोहेकेबाणोंसे सतानीकको और तीनबाणोंसे अर्जुनकोतीनसेभीमसेनको सातसे नकुलको और बारहसे श्रीकृष्णजीको घायलकिया २६ तदनन्तर प्रसन्नचित्त कौरवोंने बुद्धिसे बारह कर्मकरनेवालेकर्णके पुत्रकेउस कर्मको देखकर बड़ीप्रशंसाकरी परन्तुजो अर्जुनके पराक्रमकेजाननेवालेथे उन्होंने यहमानाकि अबयह अग्निमेंहोमागया २७ इसकेपीछेनरोंमें बड़ा शूरबीर शत्रुओंके बीरों का मारनेवाला अर्जुन माद्री के पुत्र नकुलको मृतक घोड़ेवाला देखकर और लोक में श्रीकृष्णजी को अत्यन्त घायल बिचारकर २८ युद्धमेंवृषसेनके सन्मुखदौड़ा तबकर्ण का पुत्रउस आनेवाले नरबीर गुरुरूपमहायुद्धमें हजारोंबाणधारण करनेवाले महारथी अर्जुनके सन्मुख ऐसेगया जैसेकि पूर्वसमयमें नमुचि महाइन्द्रके सन्मुख गयाथा उसकेपीछे कर्णका पुत्र शीघ्रतापूर्वक बड़े तीव्र और स्वच्छ बाणोंसे अर्जुन को छेदकर युद्धमेंऐसे महाशब्द से गर्जा जैसे कि वह महानुभाव बीरनमुचि इन्द्रको छेदकर गर्जाथा फिरउस वृषसेनने उग्रबाणोंसे अर्जुनकी वाम भुजा की जड़मेंछेदा २९।३०।३१ और इसीप्रकार नौबाणोंसे श्रीकृष्णजी कोपीड़ामानकिया इसकेपीछेफिरभी अर्जुन को दशबाणोंसे घायल किया जैसे कि वृषसेनके पहलेबाणोंसे अर्जुनघायलहुआ ३२ और कुछक्रोधयुक्तहुआ फिर दूसरीबारके बाणोंसेउसकेमारने का मनमें बिचारकियाफिरअर्जुनने युद्धमुखपर अपने क्रोधसे ललाटपरभृकुटी को तीनरेखावालीकरके ३३ शीघ्रही विशिखों को छोड़ा तब युद्धमें कर्णकेपुत्रकेमारनेमेंचित्तको प्रवृत्तकरके बड़ासाहसीनेत्रोंके कोणों को

लाल करके अर्जुन बहुतहंसकरकर्ण दुर्य्योधन और अश्वत्थामाआदि शूरवीरोंसेबोला ३४ हेकर्णअवमैं तेरेदेखतेहुये तीक्ष्णधारवाले पृष-त्कोंसे इस उग्ररूप वृषसेनकोपरलोकमें पहुंचाताहूं३५ निश्चयकरके तबतक मनुष्यकहैंगे जोमुझसेपृथक् अकेला यहमेरारथी वेगवान् पुत्रआपसबके हाथसे मारागया इसीसे मैं आपसब लोगोंके समक्षमें इसको मारूंगा ३६ रथोंमें सवार तुमसब मिलकर इसकी अच्छी रीतिसे रक्षाकरो यहउग्ररूप आपका वृषसेनपुत्रहै इसकोमैंमारूंगा इसकेपीछे इसीयुद्ध भूमिमें जो मेरानाम अर्जुन जो तुझ महाअज्ञानी को भी इसीप्रकारसे न मारूं ३७ अबमैं युद्ध में तुझ उपद्रवके मूल दुर्य्योधनकी आश्रयतासेअहंकारी होनेवालेको बड़ी हठतासे मारूंगा और इसनीच दुर्य्योधनका मारनेवाला भीमसेनहै ३८ जिसके कि अन्यायसे यह बड़ाभारी बीरोंकानाशहुआ ऐसाकहकर उसने अपने धनुषको तैयारकरके और युद्धभूमि में वृषसेनको लक्षबनाकर ३९ उसबड़े साहसीने कर्णके पुत्रके मारनेकेलिये विशिखनाम बाणोंको छोड़ा हेराजा हंसतेहुये अर्जुनने दशपृषत्कोंसे वृषसेनको मर्मस्थलों में वेधा ४० और क्षुरप्रनाम तीक्ष्णधारबाणोंसे धनुष समेत उसकी दोनोंभुजाओंसमेत शिरकोकाटा अर्जुनके बाणोंसेघायल औरवेशिर होकर वह कर्णकापुत्र रथसे पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़ा४१ जैसे कि बहुत लम्बा और फूलाहुआ शालकावृक्ष वायुके वेगसे पर्व्वतके शिखरसे गिरपड़े फिर शीघ्रता करनेवाले कर्णने बाणोंसे मरेहुये रथसेगिरते हुये पुत्रको देखकर ४२ शीघ्रही पुत्रके मारनेसे अर्जुनपर क्रोधयुक्त होकर अपने रथको उसके सन्मुखकिया अर्थात् युद्धमें अपनेनेत्रोंके सन्मुख पुत्रको माराहुआ देखकर ४३ वह महासाहसी अत्यन्तक्रोध से मूर्च्छितहोकर अकस्मात् श्रीकृष्ण और अर्जुनकेसन्मुखदौड़ा ४४

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिवृषसेनवधोनामपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

संजयबोले कि मर्य्यादाके उल्लंघन करनेवाले समुद्रके समान

डौलडौल युक्त उस गर्जनेवाले आयेहुये कर्णको देखकर १ पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी हंसकर अर्जुनसे बोले कि यहश्वेत घोड़ेवाला शल्यको सारथी बनानेवाला अधिरथी आताहै २ इसकेसाथ तुझको लड़ना चाहिये हे अर्जुन अवहढ़ होकर नियतहो हे पांडव इसरथको देखो जोकि अच्छे प्रकारसे बनाहुआ ३ श्वेतघोड़ोंसे युक्त राधाके बेटेकी सवारीसे शोभित नानाप्रकारकी ध्वजापताका और क्षुद्रघंटिकाओं के जालोंका रखनेवाला ४ और श्वेतघोड़ेरूप आकाशमेंचलनेवाला चित्रबिचित्ररूप आकाशके बिमानके समानहै और महात्मा कर्णके नागकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली ध्वजाकोदेखो ५ और इन्द्रधनुष के समान धनुषसेमानो आकाशमें लिखनेवाले दुर्योधनका अभीष्ट चाहनेवाले बाणोंकी बर्षासेयुक्त आतेहुयेकर्णको ऐसेदेखो जैसे कि जलकीधाराओंके छोड़नेवाले बादलको देखतेहैं रथके आगे नियत यह मद्रदेशकाराजा ६।७ उसबड़े तेजस्वी कर्णके घोड़ोंको हांकताहै दुंदुभियों और शंखोंकेभयानक शब्द ८ और नानाप्रकारके सिंहनादों का सब ओरसे सुनो हे पांडव बड़े तेजस्वी कर्णकेद्वारा बड़े २ शब्दों को गुप्तकरके ९ कठोर कंपायमान धनुषके शब्दकोसुनो यह पांचालों के महारथी अपने सेनासमूहों समेत छिन्नभिन्नहोकर ऐसेपृथक्होते हैं जैसेकिमहाबनमें क्रोधयुक्तकेशरीसिंहकोदेखकर छिन्नभिन्नहोकर मृगपृथक् होतेहैं हेअर्जुन तुमसब उपायोंसे कर्णके मारने के योग्य हो१०।११तुम्हारे सिवाय दूसरामनुष्य कर्णकेबाण सहनेकीसामर्थ्य नहीं रखताहै देवता असुरगंधर्व और जड़चैतन्यजीवोंसमेततीनोंलो-कके १२ बिजय करनेको तुम्हींसमर्थहो यहमैंनिश्चय जानताहूंकिउस भीम उग्ररूप महात्मात्रिनेत्रधारीकपर्दी प्रभुशिवजीके १३ देखनेको भीकोईसमर्थ नहींहोसक्ताहै फिरयुद्धकरनेको किसको सामर्थ्य होस क्तीहैतुमनेसब जीवमात्रके कल्याण रूप साक्षात् महादेवजीको युद्ध केद्वाराआराधनाकरी १४ और देवताभी तुझको वरदेनेवालेहैं हे महाबाहो अर्जुन उसदेवताओंकेभी देवता शूलधारी शिवजीकी कृ-पासे १५ तुम कर्ण को ऐसेमारो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको माराथा

हेअर्जुन सदैव तेरा कल्याण होय तूयुद्ध में बिजयको पावेगा १६ अर्जुनने कहा हेकृष्णजी जो सबलोक के गुरू और स्वामी आप मेरेऊपर प्रसन्नहैं तो निश्चय करके मेरी अवश्य विजयहै इस-मेंकिसी प्रकार का सन्देह नहींहै १७ हेमहारथी श्रीकृष्णजी मेरे रथ और घोड़ोंको चलायमान करो अब अर्जुन कर्णको बिनामारे हुये युद्धसे नहीं लौटेगा १८ हेगोबिन्दजी अबमेरे बाणोंसे कर्णको मृतक और खंड २ देखोगे अथवा कर्णके बाणोंसे मुझको मृतक और खंड खंड देखोगे १९ यह तीनों लोकोंका मोहने वालाघोर युद्ध अब वर्त्तमानहुआ जिसको पृथ्वी जबतक रहैगी तबतकमनुष्य बर्णनकरेंगे २० तब सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी से ऐसा कहता हुआ अर्जुन रथकी सवारी के द्वारा ऐसी शीघ्रतासे सन्मुख गयाजैसे कि हाथीहाथीकेसन्मुख जाताहै २१ तेजस्वी अर्जुन फिरभीशत्रु संहारी श्रीकृष्णजी से बोलाकि हे हृषीकेशजी आप शीघ्र घोड़ोंको तीव्रकरो यह समय व्यतीत हुआ जाताहै २२ उस महात्माअर्जुनके इसवचन के कहतेही श्रीकृष्णजी ने उसको बिजय का आशीर्वाद देकर चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ों को तीक्ष्ण किया २३ चित्त के समान शीघ्रगामी वह अर्जुनका रथ क्षणमात्रमेंही कर्ण के रथसे आगे होगया २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णबधायअर्जुनप्रस्थानेषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वृषसेनको मृतक देखकरशोक संतापसेयुक्तकर्ण ने पुत्रकेशोकसे उत्पन्न होनेवाले जलको नेत्रोंसे छोड़ा १ फिरक्रोध से रक्तनेत्र तेजस्वी कर्ण युद्धके निमित्त अर्जुनको बुलाता रथकीसवा रीके द्वारा शत्रुके सन्मुख गया २ सूर्य्यके समान प्रकाशमान व्याघ्र चर्मसे मढ़ेहुये वहदोनों और दोनोंके रथमिले हुयेऐसे दिखाईदिये जैसे कि आकाशमें बर्त्तमान दो सूर्य्य होयँ ३ वहशत्रुओं के मर्द्दन करने वाले दिव्य पुरुष श्वेतघोड़े वाले दोनों महात्मा युद्धभूमि में

नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्गमें चन्द्रमा और सूर्य्य शोभादेते हैं ४ हेश्रेष्ठ तीनोंलोक के विजय करनेमें उपाय करनेवाले इन्द्र और वैरोचन असुरके समान उनदोनोंको देखकर सबसेनाके मनुष्योंको बड़ा आश्चर्य्यसाहुआ ५ रथ कवच प्रत्यंचा और बाणोंके शब्द और इसीप्रकार सिंहनादों समेत सन्मुख दौड़ने वाले उन रथियोंको देखकर ६ और मिली हुई ध्वजाओंकोभी देख कर राजाओं को आश्चर्य्य उत्पन्न हुआ गजकी कक्षाकेचिह्न वाली कर्णकी ध्वजा और हनुमान्जी के रूपकी धारण करनेवाली अर्जुन की ध्वजाथी ७ हे भरतबंशी फिर सब राजाओंने उन मिलेहुये रथि योंको देखकर सिंहनाद पूर्वक बड़ी प्रशंसाकरी ८ वहांपर हजारों शूरबीरोंने उनदोनों के साथमें द्वैरथ युद्धको देखकर भुजाके शब्द अर्थात् खंभोंको फटकार कर दुपट्टोंको घुमाया ६ और कर्णके प्र- सन्न करने को कौरव लोगोंने चारोंओर से बाजोंको बजाकार सब ने शंखोंको बजाया १० इसीप्रकार अर्जुनको प्रसन्नताके लियेसब पांडवोंने तूरी और शंखके शब्दों से सब दिशाओं को शब्दायमान किया ११ सिंहनाद तालोंका ठोकना शूरोंका पुकारना और शूरोंकी भुजाओं के महाकठोर शब्द अर्जुन और कर्णकी सन्मुखता में सब ओरको हुये १२ हेराजा उन रथपर नियत रथियों में श्रेष्ठ बड़ेधनुष धारी बाण शक्तिध्वजासे युक्त १३ कवच खड्गधारी श्वेत घोड़ों समेत मुखोंसे शोभायमान उत्तम तूणीर बांधे सुन्दर दर्शन १४ लालचन्दन से अलंकृत सुन्दर शरीर उत्तम मतवाले बैलों के समान धनुष और ध्वजारूपी बिजुलीसेयुक्त घनरूपी शस्त्रोंसेयुद्धक- रनेवाले १५ चमर और व्यजनोंसेयुक्त श्वेतछत्रोंसे शोभितश्रीकृष्ण औरशल्यको सारथी रखनेवाले एकसेरूप महारथी १६ सिंहकेस- मान स्कन्धलम्बी भुजा रक्तनेत्रसुवर्णकी मालाओंसे भूषित सिंहके समानशरीर बड़ेहृदय और पराक्रमवाले परस्पर एकदूसरेका मरण चाहनेवाला दोनों परस्पर विजयाभिलाषी गोशाला में उत्तमबली बैलोंकेतुल्य परस्पर सन्मुख दौड़नेवाले मतवाले हाथियोंके और

पर्वतोंके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त १७।१८ विषैले सर्पके बच्चोंके समान यमराजकाल और मृत्युके समान इन्द्रसज़के समान क्रोधी सूर्य्यचन्द्रमाकेसमान तेजस्वी १९ प्रलयकालकेलिये उठेहुये महा ग्रहोंकेसमान क्रोधमेंभरे देवकुमार देवताकेसमान पराक्रमी रूप में भी देवरूप दैवकोइच्छासे सूर्य्यचन्द्रमाके समान सन्मुख आनेवाले पराक्रमी युद्धमें अभिमानी लड़नेमें नानाप्रकारके शस्त्रोंकेरखनेवाले २०।२१ शार्दूलोंके समान नियतउनदोनों पुरुषोत्तमोंको देखकर आपके शूरवीरोंको बड़ाआनन्दहुआ २२ भिड़ेहुये पुरुषोत्तम कर्ण और अर्जुनको देखकर पूरीविजयमें सबजीवोंको सन्देह वर्त्त मान हुआ २३ दोनोंउत्तम शस्त्रधारी और युद्ध में परिश्रम करनेवालों ने भुजाओंकेशब्दोंसे आकाश मंडलको शब्दायमान किया २४ दोनों वीरता और पराक्रमसे प्रसिद्धकर्मी और समरमें देवराज और सं-बरकेसमानथे २५ फिरदोनों सहस्त्रबाहुकेसमान वा श्रीरामचंद्रजी केतुल्य पराक्रमी और उसीप्रकार युद्धमें शिवजीकेसमान पराक्रमी थे २६ हेराजादोनों श्वेतघोड़ेवाले उत्तमरथोंकी सवारी रखनेवाले थे और उस बड़ेयुद्धमें दोनोंके श्रेष्ठतर सारथीथे २७ हेमहाराजइस केअनन्तर उनशोभायमान महारथियोंकोदेखकर सिद्धचारणलोगों केसमूहोंकोभी आश्चर्य्य उत्पन्नहुआ २८ हेभरतर्षभ इसकेपीछेसेना समेत आपके पुत्रोंने युद्धको शोभा देनेवाले महात्माकर्णको शीघ्र ही चारोंओरसे घेरकर रक्षितकिया २९ इसीप्रकार प्रसन्नरूपपांड-वोंनेभी जिनके अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा उसयुद्धमें अनुपममहात्मा अर्जुनको चारोंओरसे रक्षितकिया ३० हेराजा तबयुद्धमें आपकेपु-त्रोंका रक्षक कर्णहुआ औरपांडवोंका रक्षक अर्जुनहुआ ३१ वहांपर वहीसब बर्त्त मान शूरसभासदहुये और वही देखनेवालेहुये वहां इनरक्षा करनेवालोंकी बिजय और पराजय निश्चयहुई युद्धकेअग्र भागमें बर्त्तमान पांडव और हम लोगों का विजय और पराजय वाला द्यूत उनदोनोंशूरबीरोंके द्वारा जारीहुआ ३२।३३ हेमहाराज वह युद्धभूमिमें युद्धमें प्रशंसनीय परस्पर क्रोधभरे परस्परकेमारने

की इच्छासे नियतहुये ३४ हे प्रभु वहदोनों क्रोधरूप इन्द्र औरवृत्रासुरके समान प्रहारकरनेके उत्सुकहुये और बड़े धूम्रकेतुउपग्रहों केसमान भयानकरूप धारीहुये ३५ हेभरतर्षभ इसकेपीछेकर्णऔर अर्जुनकेबिषयमें अन्तरिक्षमें जीवोंके परस्पर में निन्दा स्तुतिकरने के शास्त्रार्थरूप बादहुये ३६ पिशाच सर्प औरराक्षस दोनोंओरको परस्परमें सुनेगये ३७ उनसबोंने कर्ण और अर्जुनके पक्षपातों में चित्तकोप्रवृत्तकिया स्वर्ग उसकर्णकी ओरके पक्षमें नियतहुआ ३८ और पृथ्वी माताके समान अर्जुनकी बिजय चाहनेवालीहुई इसी प्रकार पर्व्वतसमुद्र नदीभी जलोंसमेत अर्जुनके पक्षपातीहुये वृक्ष और औषधियांभी अर्जुनकेही पक्षमेंहुयेयहसबपरस्परदोनोंओरोंको सुनेगये हेशत्रुसंतापी धृतराष्ट्र असुर,यातुधान और गुह्यक ३९।४० इन स्वरूपवानों ने चारोंओरसे कर्ण को प्राप्तकिया मुनि,चारण, सिद्ध,गरुड़,पक्षी ४१ रत्न,सबखाने,चारों वेद जिनमें पांचवां इतिहासहै उपवेद,उपनिषद,रहस्य और संग्रहसमेतबासुकी, चित्रसेन, तक्षक,पन्नग, सब कद्रू के पुत्रसर्प ४२।४३ और बिषैलेसर्पयहसब अर्जुनकी ओर हुये ऐरावतबंशी, सुरभीबंशी, वैशाली, भोगीनाम, सर्प ४४ यहसब अर्जुन की ओर हुये और नीच सर्प कर्णकी ओर हुयेईहामृग,व्यालमृग औरमंगली पशुपक्षी यहसब ४५ अर्जुनकी बिजयमें प्रवृत्त चित्तहुये आठोंवसु,ग्यारहोंरुद्र,साध्यगण,मरुदगण, विश्वेदेवा, दोनोंअश्विनीकुमार ४६ अग्नि,इन्द्र,चन्द्रमा,दशोंदिशा, बायुयहसब अर्जुनकी ओरहुये और बारहसूर्य कर्णकी ओरहुये ४७ हेमहाराज तब वैश्य शूद्र सूत औरजोजो किसंकर जातिवालेहैं इन सबने कर्णको सेवनकिया ४८ पीछे चलनेवाले समूहों समेत पितरोंसे युक्त देवता यमराज और कुबेरअर्जुनकीओर हुये ४९ब्राह्मण क्षत्री यज्ञ दक्षिणा अर्जुनकी ओरहुये प्रेतपिशाच मांसभक्षी राक्षस आदि पशु पक्षी ५० और जलके जीव,श्वान शृगाल कर्णकी ओर हुये देवर्षि ब्रह्मर्षि और राजऋषियोंकेसमूह पांडवोंकी ओरहुये ५१ हेराजा और तुम्बर आदि गन्धर्वभी अर्जुनकी ओर हुये मनुके पुत्र

गन्धर्व और अप्सराओंके समूह कर्णकी ओरहुये ५२ भेड़ियेआदि पशु और पक्षियोंके समूह हाथी घोड़े रथ और पति इसीप्रकार मेघ वायुपर आरूढ़ ऋषिलोग ५३ कर्ण और अर्जुनके युद्ध के देखने की इच्छासे आये देवता दानव गन्धर्व नाग यक्ष गरुड़ आदि ५४ और वेदज्ञ महर्षी लोग स्वधाके भोजनकरनेवाले पितर और अनेक प्रकारके रूप पराक्रमोंसे युक्त तप विद्या औषधी ५५ हेमहाराज यह सब शब्दों को करते हुये आकाशमें नियतहुये ब्रह्मर्षि और प्रजापतियों समेत ब्रह्माजी ५६ औरविमानपर बिराजमान शिवजी उस दिव्य देशको आये तब उन भिड़हुये महात्मा कर्ण और अर्जुन को देखकर ५७ इन्द्र देवता बोले कि अर्जुन कर्णको मारकर विजय करो और सूर्यदेवताने कहा कि कर्ण अर्जुनको विजयकरो ५८ मेरा पुत्र कर्ण युद्धमें अर्जुनको मारकर बिजय करे और इन्द्रने कहा कि मेरा पुत्र अर्जुन कर्णको मारकर बिजयकरे ५९ वहां देवताओंमें श्रेष्ठ पक्षपातमें युक्त इनदोनोंसूर्य और इन्द्रका परस्परवादहुआ ६० हे भरतवंशी देवता और असुरों के दोपक्ष हुये भिड़े हुये उनदोनों महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर देवता सिद्ध चारण आदिक समेत तीनोंलोक कंपायमान हुये ६१ सबदेवताओं के गण और जीवमात्र जितनेहैं उनमें देवता अर्जुनकी ओरहुये और असुर कर्ण कीओरहुये ६२ देवताओंने कौरव और पांडवोंके बीरमहारथियोंके दोनों पक्षोंको देखकर स्वयंभू ब्रह्माजीसेकहा कि हेब्रह्माजी महाराज इनकौरव और पांडवोंके दोनों युद्ध कर्त्ताओं में किसकी बिजय होगी हेदेव इनदोनों नरोत्तमोंकी बारंबार विजयहोय ६३।६४हेप्रभू ब्रह्माजीकर्ण और अर्जुनके बिवाद युद्धसे सबजगत् संदेहयुक्तहैइन दोनोंकी बिजयको सत्यसत्य हमसेकहियेहेब्रह्माजीआप इसीवचन कोकहिये जिसमें इनदोनोंकी बिजय समानहो इनबचनोंकोसुनकर पितामहजीको प्रणामकरके ६५।६६ बड़ेज्ञानी इन्द्रने देवताओंके ईश्वर ब्रह्माजी को यहजतलाया किप्रथम आप भगवान्नेश्रीकृष्ण औरअर्जुनकी पूर्णबिजयवर्णनकरीवहजैसा आपने कहाहैवैसेहीहोय

में आपको नमस्कार करताहूं आप मुझपर प्रसन्न हूजिये इसके पीछे ब्रह्माजी और शिवजी इन्द्रसे यह वचन बोले ६७। ६८ कि इसमहात्मा अर्जुनकीही निश्चय विजय होगी जिस अर्जुनने कि खांडववन में अग्निको प्रसन्नकिया और हे इंद्र उसने स्वर्ग में आकर तेरी सहायताकरी और कर्ण दानवोंके पक्षमें है इसहेतुसे वह पराजय होनेके योग्यहै ६९। ७० ऐसा करने से देवताओंका कार्य्य निश्चय होताहै हे देवराज सबका निजकार्य्य बड़ा है ७१ महात्मा अर्ज्जुनभी सदैव सच्चे धर्म्म में प्रीति रखनेवाला है इसी की अवश्य विजयहोगी इसमें किसीप्रकारका सन्देह नहीं है ७२ और जिसने भगवान् महात्मा शिवजीको प्रसन्नकिया हे इन्द्र उस की विजय कैसे न होगी अर्थात् अवश्य होगी ७३ जगत् के प्रभु विष्णु भगवान् ने जिसकी आप रथवानी करी और जो साहसी पराक्रमी अस्त्रज्ञ तपोधन ७४ बड़ा तेजस्वी सबगुणोंसे युक्त अर्जुन संपूर्ण धनुर्वेदको धारणकरताहै इसीसे यह देवताओंका कामहोगा ७५ पांडव सदैवसे बनबास आदिसे दुःखपातेहैं तपसे युक्त वह योग्य पुरुष अर्जुन ७६ अपनी प्रतिष्ठा से बांछित मनोरथोंकी अमर्य्यादाओं को उल्लंघन करे उसके उल्लंघन करनेपर लोकों का अवश्य नाश होजाय ७७ क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनकी पराजय कहीं नहीं वर्त्तमानहैं यह दोनों पुरुषोत्तम सदैव से संसार के स्वामीहैं अर्थात् इन दोनों परमात्मा और आत्मा के तेज से सब जगत् प्रकट होताहै ७८ यह दोनों नरनारायण पुराण पुरुष ऋषियोंमें श्रेष्ठ अजय सबके ऊपर मुख्यहैं इसीहेतु से यह दोनों शत्रुओंके संतप्त करनेवाले हैं ७९ स्वर्ग मर्त्य पाताल इन तीनों लोकोंमें इन दोनोंके समान कोई नहीं है ८० सब देवगण और जीवोंके गण जितनेहैं इन सब समेत सबसंसार इन दोनोंसे मिलकर उन्हींके प्रभावसे प्रकट होताहै ८१ यह पुरुषोत्तम कर्ण उत्तम लोकोंको पावे क्योंकि यह सूर्यका पुत्र और बड़ा शूरवीरहै परन्तु श्रीकृष्ण और अर्जुनकी विजय होय ८२ यह कर्ण वसुओं की सा-

लोक्यता को और मरुद्गणोंकेस्थानोंको पावे औरद्रोण वा भीष्म-
पितामह के साथ स्वर्गलोकको पावे ८३ देवताओंके देवता ब्रह्मा
जी और शिवजीके इस वचनको सुनकर इन्द्रने सब जीवमात्रों को
समझाकर ब्रह्माजी और शिवजीके आज्ञारूपइसवचनकोकहा ८४
कि हे सब जीवमात्रो आप सबलोगों ने सुना जो जगत्के हित-
कारी भगवान् ब्रह्माजी और शिवजीने कहा है वह वैसाही होगा
इसमें अन्यथा कभी न होगा तुम निस्संदेहरहो ८५ हे श्रेष्ठ राजा
धृतराष्ट्र सब जीव इन्द्रके इसवचनको सुनकर आश्चर्य युक्त हुये
और इन्द्रका पूजन किया और देवताओंने प्रसन्नचित्त होकर सुग-
न्धित पुष्पोंकी वर्षाकरी और नानारूपके देवताओं के बाजों को
बजाया ८६।८७ इन दोनो नरोत्तमोंको अनूपम द्वैरथ युद्धके देखने
कोइच्छासे देवता दानव औरगन्धर्व सब नियतहुये ८८ उनदोनों
महात्माओंके वह दोनों दिव्य रथ श्वेतघोड़ोंसे युक्तथे जिनपर यह
दोनों महात्मा सवारथे ८९ सन्मुखआयेहुये लोकोंकेवीरोंनेअपने २
शंखोंको पृथक् २ बजाया हे भरतवंशी फिर वासुदेवजीअर्जुन कर्ण
और शल्यने भी शंखोंको बजाया ९० तब परस्पर ईर्षा करनेवाले
दोनों वीरोंका युद्ध भयानकों का भी भयकारी ऐसा कठिन हुआ
जैसे कि इन्द्र और संवर दैत्यका युद्ध हुआथा ९१ उन दोनों की
निर्मल भुजारथपर नियत होकर ऐसी शोभायमान हुईं जैसे कि
संसारकी प्रलयहोनेके समयमें आकाशमें उदयहोनेवाले राहु और
केतु होतेहैं ९२ विषवाले सर्पकी समान रत्नसार से जटित बड़ी
दृढ़ इन्द्र धनुषके समान हाथीकी कक्षाकेचिह्नवाली कर्णकी ध्वजा
शोभा देरही थी ९३ और खुले मुखवाले यमराजके समान बिक
राल दंष्ट्रावाले हनुमान्जीसे शोभितअर्जुनकी ध्वजा ऐसी भयकारी
देखने में आती थी जैसे कि सूर्य अपनी किरणोंसे दुःख से देखने
के योग्य होता है ९४ गांडीव धनुषधारीकी ध्वजामें से युद्धाभि-
लाषीहनुमान्जी अपने स्थानसे उछलकर कर्णकी ध्वजापर नियत
हुये९५वह भगवान् हनुमान्जीने उछलकरकर्णके ध्वजाको नागक-

क्षाको अपने दांत और नखोंसे ऐसे घायलकिया जैसे कि सर्पको गरुड़ करताहै ९६ इसकेपीछे क्षुद्रघंटिका और भूषण रखनेवाली कालपाशके समान अत्यन्त क्रोधरूप वह नागकीकक्षा हनुमान्जी की ओर दौड़ी ९७ तब उनदोनोंका अत्यन्त घोररूप द्वैरथ युद्धहो नेपर उनदोनों ध्वजाओंने प्रथम वा उत्तम युद्धके ९८ परस्पर ईर्षाकरनेवाले घोड़ोंसे घोड़ोंको हिंसन किया और कमललोचन श्रीकृष्णजीने नेत्ररूप बाणोंसे शल्यको छेदा ९९ इसीप्रकार शल्य नेभी श्रीकृष्णजी को देखा वहां वासुदेवजीने नेत्ररूपी बाणोंसे शल्यको बिजयकिया १०० और कुंतीकेपुत्र अर्जुननेभी कर्णकोदेख कर बिजयकिया इसके पीछे सूतपुत्र कर्णने शल्यसे समक्षहोकर मंदमुसकान समेत यह बचनकहा १०१कि अब युद्धमें किसीसमय पर जो कदाचित् अर्जुन मुझको मारडाले तब हेशल्य तुम क्याकरो गे यह सत्य सत्य हमसेकहो १०२ शल्यनेकहा कि जो श्वेतघोड़े वाला अर्जुन तुझको युद्धमें मारडालेगा तोमैं एकही रथकेद्वारा उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारूंगा १०३ संजयबोले कि इसी प्रकार अर्जुन ने गोबिन्दजी से कहा तब श्रीकृष्णजी ने भी हंसकर उस अर्जुन से यह सत्य २ बचनकहा १०४ कि हेअर्जुन चाहैसूर्य्य अपने स्थानसे गिरपड़े और समुद्रभी सूखजाय और अग्निशीतलताको पावे परन्तु कर्ण तुझको नहीं मारसक्ताहै १०५ जो यह किसीप्रकारसे होजाय और इनलोगोंका निवासहोय तोमैंकर्णऔर शल्यको युद्धमें अपनी भुजाओंसेही मारडालूंगा १०६ श्रीकृष्णजी के इसबचन को सुनकर हंसते हुये कपिध्वज अर्जुन ने उनसुगम कर्मी श्रीकृष्णजी को यह उत्तर दिया कि १०७ हेजनार्दनजी जब आपकी मेरेऊपर ऐसी कृपाहै तोकर्ण और शल्य मुझकोयुद्धमें विजय करने को असमर्थ हैं हेश्रीकृष्णजी अब युद्धमें मेरेहाथके बाणों से पताका ध्वजा शल्य रथ घोड़े छत्र कवच शक्ति बाण और धनुष सहित बहुतप्रकार से घायल हुये कर्णको देखोगे १०८। १०९ अबहीं रथ घोड़े शक्ति कवच और शस्त्रों समेत ऐसे अच्छीरीतिसे

चूर्ण होगा जैसे कि बनमें हाथीसे वृक्षोंका चूर्ण होताहै ११० अब कर्णकी स्त्रियोंको वैधव्यता अर्थात् विधवापना प्राप्तहुआ हेमाधव जी निश्चय करके उन स्त्रियोंने सोतेहुये अशुभ स्वप्नोंको देखाहोगा १११ अभी आप कर्णकी स्त्रियोंको विधवा देखेंगे क्योंकि वह मेरा क्रोध शान्त नहीं होताहै जो इस प्रकार से हमको हँसकर और बारंबार हमारी निन्दा करके इस अज्ञानीअदीर्घदर्शी ने पूर्व समयमें सभामें वर्त्तमानद्रौपदीको देखकर कर्मकियाथा ११२।११३ हे गोविन्दजी अब मेरे हाथसे मथनकिये हुये कर्णको ऐसे देखोगे जैसे कि मतवाले हाथीसे मर्द्दन कियाहुआ पुष्पित वृक्ष होताहै हे मधुसूदनजी अब कर्णके पछाड़नेपर उनमधुर बचनोंकोआप सुनेंगे कि हे श्रीकृष्णजी आप प्रारब्धसे विजय करतेहो ११४।११५ हे जनार्द्दनजी अब आपअत्यन्त प्रसन्न होकर अभिमन्युकी माताको और अपनी फूफी कुन्तीको विश्वास युक्तकरोगे ११६ हेमाधवजी अब तुम अमृतके समान वचनोंसे अश्रुओंसे पूरित मुखवाली द्रौपदीको औरधर्मराजयुधिष्ठिरको विश्वासयुक्त करकेशान्तकरोगे ११७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकृष्णार्जुनसंवादेद्वैरथयुद्धे सप्ताशीतितमोऽध्यायः८७॥

अट्ठासीवां अध्याय॥

संजयबोलेकिआकाशदेवता,नाग,असुर,सिद्ध,यक्ष,राक्षस,गन्धर्व और अप्सराओंके समूहोंसे और राजऋषि ब्रह्मऋषि औरगरुड़सेसेवितहोकर अपूर्व शोभितहुआ१ और सबमनुष्य और पक्षियोंनेनाना प्रकारकेबाजेगान प्रशंसानृत्यहास्य और अनेकचित्तरोचक शब्दोंसे अन्तरिक्षको अपूर्वरूपका शब्दायमानदेखा २ तदनन्तर बाजेशंख और सिंहनादोंके शब्दोंसेपृथ्वी और दिशाओंको शब्दायमानकरते अत्यन्तप्रसन्नचित्तकौरवों और पांडवोंसेनाकेशूरवीरोंनेसबशत्रुओंको मारा३तब युद्धभूमि मनुष्य घोड़े हाथी और रथोंसेव्याप्त बाणखड्ग शक्ति और दुधारेखड्गोंकेप्रहारोंसे महाअसह्य और निर्भयशूरवीरों से सेवित वा मृतकयोद्धाओंसे पूरित होकर रक्तवर्णको धारणकिये

अत्यन्त शोभायमानहुई ४ इसरीतिसेकौरव और पांडवोंका ऐसायुद्ध हुआ जैसे कि असुरोंका और देवताओंका हुआथा इसप्रकारमहाभय कारी घोरयुद्ध के जारीहोनेपर अर्जुन और कर्णके महातीक्ष्ण सीधे चलनेवालेअच्छे अलंकृत उत्तम शायकोंसे दिशाओंसमेतसंपूर्णसेना ढकगई तदनन्तरअन्धकार होजानेपरआपके और पांडवोंके युद्धकर्त्ता ओंनेकुछभी नहींदेखा ५ । ६ रथियोंमेंश्रेष्ठ वहदोनोंकर्ण और अर्जुन भयसे दुःखी होकर सन्मुखहुये फिर सबओरसे अपूर्व युद्ध हुआ अर्थात् पूर्वीय पश्चिमीय बायुके समानपरस्पर में अस्त्रोंसे अस्त्रोंको हटाकर ७ ऐसेशोभायमानहुयेजैसे कि बादलोंसे अन्धकार होजाने पर उदयहोनेवालेसूर्य्य और चन्द्रसा हटनानहीं चाहते इसनियमसे प्रेरितआपके और पांडवोंके शूरवीर लोग सन्मुख नियत हुये ८ वह दोनोंमहारथी नरोत्तम सबओरसेघेरकरमृदंगभेरीपणवऔर आनक नामबाजोंके और सिंहनादोंके शब्दोंकेद्वाराऐसेशब्दवालेहुयेजैसे कि देवताअसुरसंबर और इन्द्रहुयेथे ९ तबवहदोनों पुरुषोत्तम बड़े धनुष मंडलमें वर्त्तमान बड़ेतेजस्वी बाणरूप हजारोंकिरणोंके रखनेवाले होकरऐसे शोभायमान हुयेजैसेकि बादलोंके शब्दोंसे चन्द्रमा और सूर्य्यहोतेहैं १० वहदोनों प्रलयकालके सूर्य्यके समानयुद्धमें कठिन तापूर्व्वक सहने के योग्य जड़चैतन्यों समेत संसार के भस्मकरने के इच्छावान् महाअजेय शत्रुओंका नाशकरनेवाले परस्पर में मारने के अभिलाषी ११ कर्ण और अर्जुन निर्भयता पूर्व्वक उसबड़े युद्धमें ऐसेसन्मुखहुये जैसे कि महाइन्द्र और जंभसन्मुखहुयेथे उसके पीछे बड़े धनुषधारी भयके उत्पन्न करनेवाले बाणोंके द्वारा बड़े अस्त्रोंको छोड़तेहुये १२ दोनों महारथियोंने बहुतसे मनुष्यघोड़े और हाथियों समेत परस्परमें एकनेदूसरेको घायलकिया हेराजा इसकेपीछे उन दोनों नरोत्तमोंसे पीड़ामान कौरवीय और पांडवीय मनुष्यहाथीपति घोड़े और रथोंसेयुक्त ऐसेदशोंदिशाओंमेंभागे जैसे कि सिंहसेघायल हुये बनबासी जीवभागतेहैं इसके पीछे दुर्य्योधन, कृतबर्मा, शकुनि, कृपाचार्य्य और शारद्वतका पुत्र इन पांचों महारथियों ने शरीरके

छेदनेवाले बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया तब अर्जुननेउनके धनुष, तूणीर, ध्वजा, घोड़े, रथ और सारथियों समेत १३।१४।१५ चारों ओर से इन शत्रुओं को मथनकरके शीघ्रहीउत्तम बारह बाणोंसे कर्ण को घायलकिया इसके पीछे शीघ्रताकरनेवाले मारनेके अभिलाषी लोग सन्मुखदौड़े और अर्जुनके मारनेके उत्सुक सौ रथ सौ हाथी १६ और अश्व सवार शक, तुषार, यवन, कांबोज देशियों समेत इन सबोंनेहाथोंमें क्षुरप्र लेकर सबशस्त्रोंको काटकर शिरोंकोभी काटा उससमय वहां अनेकशिर पृथ्वीपर गिरपड़े १७ तब उसयुद्धकरनेवाले अर्जुननेघोड़े हाथी और रथोंसमेत उनशत्रुओं के समूहोंको काटा इसके पीछे अन्तरिक्ष में देवताओंने इन दोनोंकी कीर्त्ति समेत बाजोंसे स्तुति करी १८ और आकाशसे सुगन्धित पुष्पोंकी बर्षा होनेलगी तब उस आश्चर्य्य को देखकर देवता और मनुष्योंके समक्षमें सब जीवमात्र अचंभासा करनेलगे फिर उत्तम निश्चय रखनेवाले आपके पुत्र और कर्णने न पीड़ाकरी न आश्चर्य्य को पाया इसके पीछे मधुरभाषी अश्वत्थामाजी हाथ से हाथको मलकर आपके पुत्रसे बोले १९।२० हेदुर्योधन अब तू प्रसन्नहोकर पांडवोंसे सन्धिकर लड़नात्यागो और युद्धको धिक्कार हो बड़े अस्त्रज्ञ ब्रह्माजीके समान गुरूजी और वैसेही भीष्म सरीखे प्रतापी वीर मारेगये २१ मैं और मेरा मामा चिरंजीवी हैं पांडवों समेत तुम बहुतकाल तक राज्यकरो मुझसे निषेध किया हुआ अर्जुन सन्धिको करताहै और श्रीकृष्णजीभी शत्रुताको नहीं चाहते हैं २२ युधिष्ठिर सदैव जीवधारियोंके मनोरथोंमें प्रवृत्तहै और इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेवभी मेरे स्वाधीनहैं तेरी इच्छा से पांडवोंसे और तुझसे सन्धि होनेपर प्रजालोगों का कल्याण होगा और सुखको पावेंगे बाकी बचेहुये बांधवलोग अपने२ पुरोंकोजांय और सेनाके मनुष्यभी युद्ध करना छोड़ें हे राजा जो मेरे बचन को नहीं सुनोगे तो निश्चय जानो कि अवश्य तुम शत्रुओं से घायल और पीड़ित होकर दुःखोंको पावोगे २३। २४ तेरे साथ

सब जगत्‌ने देखा जो अकेले अर्जुनने किया ऐसा कर्म न यमराज न इंद्र न भगवान् ब्रह्मा और यक्षोंका राजा कुवेरभी नहीं करसक्ता है २५ अर्जुन अपनेगुणोंसे इनसबसेभी अधिकहै परंतु वह मेरेकिसी वचनकोभी उल्लंघन नहींकरेगा अर्थात् मेरेकहनेको अवश्यकरेगा और सदैव तेरेपीछे चलेगा हे राजेन्द्र तुम प्रसन्नहोकरशांततामेंयुक्त होजावोतुझमें मेरासदैवबड़ामनहै इसीहेतुसे मैं वड़ी शुभचिन्तकता सेअर्थात् तेरेभलेकेलिये तुझसेकहताहूं जबआप मृदुहोगे तबमैं कर्ण कोभी निषेधकरूंगा२६।२७पंडितलोग साथउत्पन्न होनेवालेकोमित्र कहतेहैं इसीप्रकार प्रीति और धनके द्वाराप्राप्त होनेवालाऔरअपने प्रतापसे नम्रोभूतहोनेवालेको मित्रकहतेहैं यहचारप्रकारकीमित्रता है वहतेरी चारोंप्रकारकी मित्रता पांडवोंमेंहै २८हेप्रभुतेरी उत्पत्तिसे तोतेरेबांधवहैंप्रीतिसमेत उनकोप्राप्तकरो औरतेरीप्रसन्नतासे अर्थात् आधाराज्य देनेसे जो मित्रहोजायं उस दशामेंतेरे कारणसे जगत् का बड़ाहित होगा उस शुभचिन्तक के ऐसे हितकारी वचनों को सुनकर वह दुःखीचित्त दुर्य्योधन बहुत शोचसेश्वासोंकोलेकरबोला हे मित्र जैसा आपनेकहा वहसब इसीप्रकारहै परंतुमुझकहनेवाले केभी बचनोंको सुनो कि २९ । ३० इस दुर्बुद्धी भीमसेनने शार्दूलके समान अपना हठकरके दुश्शासनको मारकर जो वचनकहा है वह मेरे हृदयमें नियतहै यह सब आपके समक्षमेंही हुआहै कैसे शान्ती होसक्तीहै ३१ अर्जुनभी युद्धमें कर्णको ऐसेनहीं सहसकेगा जैसे कि कठोरपवन मेरुनाम पर्व्वतकोनहीं सहसक्ताहै कुन्तीकेपुत्र हठकरके और बहुधा शत्रुताको शोचकर मेराबिश्वास नहींकरेंगे हेगुरूजीके पुत्र तुम अजेयहोकर इसबातको कर्णसेकभीनकहिये कि तुम युद्धको त्यागदो अबअर्जुन बहुतथकावटसे युक्तहै इसीसेयहकर्ण वड़े हठसे उसको मारेगा ३२।३३आपकेपुत्रने उससेऐसाकहकर और वारंवार समझाकर अपनेसेनाके लोगोंको आज्ञादी कि तुमहाथोंमें बाणोंको लेलेकर मेरे शत्रुओंकेसन्मुखजावो क्यामौन होकर नियतहो ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाहितवर्णनेअष्टाशीतितमोऽध्याय: ८८ ॥

नवासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा आपके पुत्रके दुर्मन्त्रित होने वा शंख और भेरीके शब्दोंकी अधिक्यतासे श्वेतघोड़े रखनेवाला नरोत्तम अर्जुन और सूर्य्यकापुत्र कर्णदोनोंऐसे सन्मुखहुये जैसेकि मदझाड़नेवाले दीर्घदन्ती हिमालय पर्व्वतके उत्पन्न बड़े दोहाथी हथिनी के निमित्त भिड़तेहैं १।२ अथवा जैसेकि दैवइच्छासे महा बलाहक नाम बादल बलाहक बादलसे औरपर्व्वत पर्व्वतसे भिड़जायं उसी प्रकार बाणरूपी वर्षाके करनेवाले धनुषरोंदा और प्रत्यंचाके शब्दों समेत सन्मुखहुये ३ और परस्परमें ऐसेघायलहुये जैसे कि बड़ेवृक्ष औषधी और शिखरवाले नाना झिरनोंसेयुक्त बड़ेपराक्रमी दोपर्व्वत आपसमें घायल होतेहैं उसीप्रकार वहदोनों महाअस्त्रोंसे परस्पर में घायलहुये ४ फिर बाणोंसे घायल शरीर सारथी और घोड़े वाले उनदोनोंकी वहचढ़ाई बहुत बड़ीहुई जो अन्यसे दुःख पूर्व्वक सहनेकेयोग्य कठोररुधिर रूपजलको ऐसी रखने वालीथी जैसे कि पूर्व्वसमयमें देव इन्द्र और बिरोचनके पुत्रबलिकी चढ़ाई हुई थी जैसेकि बहुतसे पद्म वा उत्पलकमल मछलीकछुये रखनेवाले पक्षियोंके समूहोंसे वेष्टित अत्यन्त समीप वायुके वेगसे दोहूदपरस्परमें भिडजायं उसीप्रकार वह दोनों ध्वजाधारी रथ आपसमेंसन्मुख हुये ५।६ महेन्द्रके समान पराक्रमी और रूपवाले उनदोनों महारथियोंने उसी महेन्द्रके वज्रके समान शायकोंसे परस्परमें ऐसे घायलकिया जैसेकि महेन्द्र औरवृत्रासुरने परस्पर घायलकियाथा ७ हाथीपति घोड़े रथ और चित्रबिचित्र कवच भूषण बस्त्र और शस्त्रों की धारण करनेवाली वह अपूर्व रूपवाली दोनों बिस्मित सेना कंपायमानहुई उस अर्जुन और कर्णकेयुद्धमें बस्त्र और अंगुलियोंसे युक्त ऊंची २ भुजा आकाशमें वर्त्तमान हुई मतवाले हाथीके समान प्रसन्नचित्त अर्जुन तमाशा देखने वालोंके सिंहनादों समेत मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला

हाथी मतवालेहाथी के सन्मुख जाता है ८।६ वहां आगेचलनेवाले सोमक लोग अर्जुनको पुकारेंकि हेअर्जुन कर्णकोछेदकर इसकेमस्तककोकाटो और धृतराष्ट्रके पुत्रको श्रद्धाको राज्यसे पृथक्‌करोइसमें विलम्बमतकरो १० इसीप्रकार हमारेभी वहुतसे शूरवीरोंने कर्णको प्रेरणाकरी कि चलोचलो हेकर्ण अत्यंत तीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुनको मारो और पांडव फिर वहुतकालके लिये बनको जायं ११ इसके पीछे प्रथमतो कर्णने उत्तम दशबाणों से अर्जुनको छेदा और अर्जुन नेहंसकर तीक्ष्ण दशबाणोंसे कर्णको कुक्षमें वेधा १२फिर उनदोनों कर्ण और अर्जुनने सुन्दर पुंखवाले बाणोंसे परस्पर घायलकिया और बड़ी प्रसन्नतासे एकने दूसरे को छेदा और भयकारी रूपों से सन्मुखगये १३ इसकेपीछे उग्र धनुषधारी अर्जुनने दोनों भुजाओंसे गांडीवधनुषको ठीक करके नाराच,नालीक, वाराहकर्ण,क्षुरप्र, आंजलिक, अर्द्धचन्द्र इनबाणोंको छोड़ा १४ हेराजा वह अर्जुनके छोड़े हुयेबाणकेरथमें प्रवेशकरगये और सबओरसे ऐसेफैलगये जैसे कि सायंकालके समीप नीचा शिरकरने वाले पक्षियोंके समूहनिवासके लिये शीघ्र वृक्षपर प्रवेशकरतेहैं १५ शत्रुओंके विजयकरने वाले अर्जुनने जिनबाणोंको भृकुटीके कटाक्षसे युक्तकर्णके निमित्त छोड़ाथा उन बाणोंको कर्णने अपने शायकों से दूरकिया १६ इसके पीछे इंद्रकेपुत्र अर्जुनने शत्रुके वशीभूत करनेवाले अग्न्यास्त्रको कर्ण के ऊपर छोड़ा तब पृथ्वी अंतरिक्ष और दिशाओंके मार्गोंकोढककर उसका शरीर प्रकाशमानहुआ १७और अग्निसेजलतीहुई पोशाक वाले वा पोशाकोंसे अत्यंतरहित होजाने वाले शूरवीरवड़े व्याकुल होकरभागेऔर ऐसाबड़ाघोर शब्दहुआ जैसेकि बांसोंके वनमेंजलते हुये बांसोंके शब्द होतेहैं १८ फिरउस प्रतापवान् कर्णने युद्धमें उठे हुये उस अग्न्यास्त्रको देखकर उसके शांतहोनेकेनिमित्त वारुणास्त्र को छोड़ा और उसीसे वह अग्नि शांतहुई १६ फिर उस वेगवान्‌ने बादलोंके समूहों से सब दिशाओंमें अंधकार करदिया तव पर्वतके समान किनारा रखनेवाले कर्णने चारोंओरको जलकी परिधि कर-

के २० उस अत्यंतभयानक अग्निको शांतकरदिया परन्तु दिशाओं के सबस्थान जोकि बादलोंसे युक्तथे २१ इससेकुछदिखाई नहींदिया तदनन्तर अर्जुनने वायुअस्त्रसे कर्णके उनअस्त्रोंके समूहोंको दूरकिया २२फिरशत्रुओंसेअजेय अर्जुननेगांडीवधनुषप्रत्यंचा औरविशिखों पर मंत्रोंको पढ़करबड़े प्रभाववाले देवेन्द्रकेप्यारे बज्रास्त्रकोभीप्रकट किया२३इसकेपीछे क्षुरप्र, आंजुलिक, अर्द्धचन्द्र, नालीक, नाराच, वराहकर्णनाम अत्यन्ततीक्ष्ण वज्रके समान वेगवान् हजारोंवाणगांडीव धनुषसेप्रकटहुये २४ वहबड़ेप्रभाव युक्तसुन्दरश्वेत गृध्रपक्षोंसे जटित अच्छे वेगवान् बाणकर्णको पाकर उसके सबअंग घोड़े, धनुष, जुये चक्रसेहोकर पृथ्वीमें प्रवेशकरगये तबबाणोंसेयुक्त रुधिरसेलिप्तअंग क्रोधसे खुलेनेत्रवालेमहात्माकर्णने २५।२६ दृढ़प्रत्यंचावाले समुद्रके समान शब्दायमानधनुषको दबाकर भार्गवअस्त्रको प्रकट किया और महेन्द्रास्त्रके सन्मुख छोड़हुये अर्जुनके बाणोंके समूहोंको काट २७ अपनेअस्त्रसे उसकेअस्त्रकोहटाके युद्धमेंरथहाथी और पत्तियोंकोमारा महेन्द्रके समान कर्मकरनेवाले कर्णने भार्गवअस्त्र के प्रताप से ऐसा कर्मकिया २८ इसकोकरके फिर क्रोधयुक्त सूतके पुत्र कर्ण ने युद्धमें पांचालों के अत्यन्त उत्तम शूरबीरोंको रोककर अच्छी रीतिसे छोड़े हुये तीक्ष्णधार सुनहरी पुंख वाले बाणोंसे पीड़ामान किया २९ हे राजा युद्ध भूमिमें कर्णके बाण समूहोंसे पीड़ित पांचाल और सोमकों ने भी हठ करके प्रसन्नतासे कर्णको बाणोंसे छेदकर पीड़ामान किया ३० फिर कर्णने बाणोंसे पांचालोंके उन रथ हाथी और घोड़ों के समूहोंको मारा और मारे बाणोंके सबको पीड़ित करडाला ३१ वह कर्णके बाणोंसे निर्जीव होकर शब्दोंको करतेहुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि महाबन में क्रोधयुक्त भयानक सिंह से हाथियों के समूह गिरपड़तेहैं ३२ हेराजा इसके पीछे वहबड़ा साहसी और बड़े उत्साहका करने वाला कर्ण अत्यन्त उत्तम २ शूरबीरों को मारकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें तीक्ष्ण किरणों का रखनेवाला सूर्य्य होता है ३३ हेकौरवेन्द्र फिर आपके शूरवीरोंने कर्णकीबिजय

को मानकर बड़ीप्रसन्नता मनाकर सिंहनादोंको किया और सबने कर्णके हाथसे श्रीकृष्ण और अर्जुनको निहायत घायल माना ३४ फिर वह महारथी कर्ण अपने उस पराक्रम को दूसरोंसे असह्य वाला जानकर और इसरीति से अर्जुन के उस अस्त्रको अपनेसे निष्फल हुआ देखकर ३५ क्रोधसे रक्तनेत्रअसह्य क्रोधयुक्त वायु के पुत्र भीमसेन श्वासों को लेताहुआ हाथसे हाथको मलकर सत्यसंकल्प अर्जुनसे बोला ३६ अब युद्धमें तेरे और विष्णुजी के सन्मुख किस प्रकारसे उस पापी अधर्मी सूतके पुत्र कर्णने प्रबल होकर पांचालों के उत्तम शूरबीरों को मारा ३७ हेअर्जुन साक्षात् शिवजीकी भुजाके स्पर्शको पाकर कालकेय नाम असुरों से अजेय रूप तुझको इस कर्णने प्रथम दश बाणोंसे कैसे छेदा ३८ औरतेरे चलाये हुये बाण समूहोंको सहगया इससे यह कर्ण मुझको अपूर्व्वदिखाई देताहै तुम द्रौपदीके उन दुःखोंको स्मरण करोकिइसने कैसे २ बचन कहेथे ३९ हेअर्जुन इस पाप बुद्धी दुर्मति दुष्टहृदय सूतपुत्रने रूखे२ अत्यन्त तीव्रबचन कहे अब तुम उन सब वचनों को स्मरण करके उस पापी कर्णको युद्धमें शीघ्रमारो ४० हेअर्जुन उसको कैसे छोड़रक्खाहै अब यहां यह समय तेरे त्याग करने का नहींहै खांडववन में जिस धैर्य्यतासे तैंने सबजीवोंको बिजय किया उसी धैर्य्यतासे इस दुर्मति सूतपुत्रको मारोमैं उसको गदासेमारूं-गा उसके पीछे बासुदेवजी भी बाणोंसे व्यथित देखकर अर्जुन से बोले ४१।४२ कि अबइसकर्णने तेरे अस्त्रको अपनेअस्त्रोंसे सबप्रकार मर्द्दन कियाहै हे अर्जुन यह क्या बातहै हे बीर तुमक्यों मोहितहो रहेहो क्यों नहीं सचेत होतेहो देखो यहकौरवलोग अत्यन्त प्रसन्न होकरगर्जतेहैं ४३ सबनेकर्णको आगेकरके तेरे अस्त्रकोअस्त्रोंसेगिरा-याहुआ जानाहै जिस धैर्य्यतासे तैंने तामस अस्त्रको दूरकिया और युग२मेंभी ४४ दंभोद्भवनाम घोरराक्षसोंको युद्धोंमेंमाराउसी धैर्य्यसे अबतुमकर्णको मारो अब हठकरके मेरे दियेहुये नेमियोंपर छूरेवाले सुदर्शनचक्रसे इसशत्रुके शिरको ऐसेंकाटो जैसे कि इन्द्रने अपनेशत्रु

नमुचिके शिरको काटाथा किरातरूपी भगवान् शिवजीभी तेरेधैर्य्य से प्रसन्नहुये ४५ । ४६ हेवीर तुमफिर उसीधैर्य्यको धारण करके कर्णको उसके सब साथियों समेतमारो इसकेपीछे तुम सागर रूप मेखला रखनेवाली नगरग्रामोंसेयुक्त और धनरत्नोंसेपूर्ण उसपृथ्वी को४७ जिसमें कि शत्रुओंके समूह मारेगयेहैं अपनेराजायुधिष्ठिरके सुपुर्दकरो यहबचन सुनकर उसबड़े बुद्धिमान् महापराक्रमी महात्मा अर्जुनने कर्णके मारने के निमित्त बुद्धिकरी ४८ भीमसेन और श्रीकृष्णजीसे प्रेरणाकियेहुये उस अर्जुनने आपको ध्यानकरकेऔर सबबातोंको बिचारकर इसलोकके इन्द्र अपने आनेमें प्रयोजन को जानकर केशवजीसे यहबचनकहा ४९ कि हे केशवजी मैं लोकके आनन्द और कर्णके मारनेके निमित्त इस उग्र महाअस्त्रको प्रकट करताहूं सो आप ब्रह्माजी शिवजी देवता और वेदोंके सब जानने वाले ऋषिलोग मुझको आज्ञादो ५० उसमहासाहसी अर्जुननेइस प्रकारसे कहके और ब्राह्मणोंको नमस्कारकरके उसउग्र महाअस्त्र को प्रकटकिया जोकिअसह्य और चित्तसेप्रकट करनेकेयोग्यथा५१ जैसेकि बादल शीघ्रजलधाराओंको छोड़ताहै उसीप्रकार कर्णबाणों से इसके उसअस्त्रको दूरकरके शोभायमान हुआ तबक्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने इसरीतिसे युद्धभूमिमें कर्णके हाथसे अर्जुनके उस अस्त्रको दूरकियाहुआ देखकरसत्यसंकल्प अर्जुनसेकहा किनिश्चय करके मनुष्योंने तुमको बड़ा उत्तम और ब्रह्मास्त्रनाम बड़े अस्त्रका जाननेवाला कहाहै ५२ । ५३ हे अर्जुन इसहेतुसे अब तुम दूसरे अस्त्रको चलाओ ऐसेकहेहुये अर्जुनने अस्त्रका प्रयोगकिया तदनन्तर बड़ेतेजस्वी अर्जुनने गांडीवधनुष और भुजाओंसे छोड़ेहुयेभयकारी सूर्य्यकी किरणोंके समानप्रकाशितबाणोंसे सबदिशा और विदिशाओंकोढकदिया उसभरतर्षभ अर्जुनके छोड़ेहुये सुवर्णपुंखवालेहजारों बाणोंने ५४ । ५५ क्षणभरहीमें कर्णके रथको ढकदिया वह बाण प्रलयकालके सूर्य्यकी किरणोंके समानथे इसके पीछे सैकड़ों शूल फरसे चक्र और नाराच ५६ भी महा भयकारी निकले उससे बहुत

सेशूरवीर चारोंओरसे मारेगये युद्धभूमिमें किसीकाशिर धड़सेकट करगिरा५७ और कितनेही उनगिरेहुओंको देखकर भयभीत होकर जल्दीसे पृथ्वीपर गिरपड़े और किसी शूरवीरकी हाथीकी सूंड़के समान भुजाटूटकर खड्ग समेत पृथ्वीपर गिरपड़ी ५८ किसीकी बाईंभुजा क्षुरप्रसे कटकर ढालसमेतगिरी अर्जुनने इसरीतिके शरीरों के नाश करनेवाले भयकारी बाणोंसेउनसब उत्तम २ शूरवीरोंसमेत दुर्य्योधनकी संपूर्णसेनाकोमारा और घायलकिया इसीप्रकार कर्ण नेभी युद्धभूमिमें अपने धनुषसे हजारों बाणोंकोछोड़ा ५९।६० वह शब्दायमान बाण अर्जुनके सन्मुखऐसेगये जैसे कि परिजन्यमेघसे छोड़ीहुई जलकीधारा होतीहै इसकेपीछे वह अनुपम प्रभाव और भयानक रूपवालाकर्ण श्रीकृष्ण अर्जुन और भीमसेनको६१ तीन२ बाणोंसे घायल करके बड़ेस्वरसे घोरशब्दकोगर्जा फिर अर्जुननेउस असह्य कर्णकेबाणोंसे व्यथित भीमसेन औरश्रीकृष्णको देखकर६२ अठारह बाणोंको उठाया एकबाणसे तो उसकीध्वजाको चारबाण से शल्यको और तीनबाणोंसे कर्णको घायलकिया ६३ फिरअच्छी रीतिसे छोड़े हुये दशबाणोंसे सुवर्ण कवचसे अलंकृत सभापतिको मारा वह राजकुमार शिर भुजा घोड़े सारथी धनुष और ध्वजासे रहित ६४ मृतकहोकर रथसे ऐसेगिरपड़ा जैसेकि फरसोंका काटा हुआ और उखड़ाहुआ शालकावृक्ष गिरताहै फिरकर्णको तीनआठ बारह चार और दशबाणोंसेछेद६५ चारसौघोड़ोंको मारकरआठसौ शस्त्रधारी रथियोंकोभीमारा तब सवारोंसमेत हजारों घोड़ोंको वा आठहजार बीरपत्तियोंको ६६ मारकर सारथी घोड़े रथ और ध्वजा समेत कर्णकोसीधेचलनेवाले बाणदृष्टिसे अलक्षकरदिया इसकेपीछे अर्जुनके हाथसेघायलहोकर कौरवचारों ओरसेकर्णको पुकारे६७ हेकर्ण तुम शीघ्रही अर्जुनको छेदकर हमको छुड़ावो वह समीपसे बाणोंकेही द्वारा सब कौरवोंको मारताहै उनके वचनोंको सुनकर कर्णनेभी बहुत उपायोंसे बहुतसे बाणोंको बारम्बारछोड़ा ६८ उन मर्मभेदी रुधिरधूलसे लिप्त बाणोंने पांडव और पांचालोंके समूहों

को व्यथितकिया सबधनुषधारियोंमें श्रेष्ठ बड़ेपराक्रमी सब शत्रुओं के पराजय करनेवाले महाअस्त्रज्ञ उनदोनोंने ६९ महाअस्त्रोंसेशत्रु की उग्रसेनाको और एकने दूसरेको घायलकिया इसकेपीछेशीघ्रता करनेवाला युद्धके देखनेका अभिलाषी वह युधिष्ठिर पासगया जो कि अत्रिकुलमेंउत्पन्न होनेवाले अष्टांगविद्याके आसनपर बैठनेवाले अश्विनीकुमारसुरवैद्योंकेमंत्र औषधियोंकेद्वारा पीड़ासेरहित भालों से पृथक् शुभचिन्तक चिकित्सा करनेवालेउत्तम पुरुषोंसे मर्हमपट्टी बांधाहुआ सुवर्णके कवचको पहिरेहुयेथा इसीसे वह सावधानऐसा न था जैसेकिदैत्योंकेहाथसे घायलशरीर देवराज इन्द्रथा इसप्रकार के रूपवाले धर्मराजको युद्धमें समीप आयाहुआ देखकर सबजीव-मात्र बड़ेप्रसन्नहुये ७०।७१।७२ जिसप्रकार राहुसे छूटेहुयेनिर्मल और पूर्णचन्द्रमाको देखतेहैं उसीप्रकार उदयहोनेवाले उनयुद्धकर्त्ता उत्तमश्रेष्ठ शत्रुओंके मारनेवाले दोनोंपुरुषोत्तमोंको देखकर देखनेके इच्छावान् ७३ आकाशके देवता और पृथ्वीके मनुष्य कर्ण और अर्जुनको देखतेहुये नियतहुये वहांबाणोंके जालोंसे परस्पर मारने वाले अर्जुन और कर्णके छोड़ेहुये बाणोंसेउसधनुषरोदा औरप्रत्यं-चाका गिरना कठिनहुआ इसकेपीछे अच्छी खिंचीहुई अर्जुनकेधनुष कीजीवाअकस्मात् शब्दकरकेटूटी ७४। ७५ उसीसमय सूतकेपुत्र ने सौ क्षुद्रक बाणोंसे अर्जुनको छेदा और सर्परूप तेलसे साफ गृध्र पक्षसेजटित बराबर छोड़ेहुये ७६ साठबाणोंसे शीघ्रताकरके वासु-देवजीकोछेदा इसकेपीछे फिर आठबाणोंसे अर्जुनकोछेदा तदनन्तर सूतपुत्र कर्णने हजार बाणोंसे भीमसेनको मर्मस्थलोंपरछेदा ७७ और सोमकोंको गिरातेहुयेउनशूरबीरोंनेविशिख वा पृषत्कनामबाणों से श्रीकृष्ण अर्जुनकी ध्वजा और उनके छोटेभाइयोंको बाणोंसेऐसे ढकदिया जैसेकि बादलोंके समूह सूर्य्यको ढक देतेहैं ७८ फिर उस अस्त्रज्ञ कर्णने उनसबको विशिखनाम बाणोंसेरोककर अपनेअस्त्रोंसे सब अस्त्रोंको हटाकर उनके रथ घोड़े और हाथियोंको भी मारा ७९ हेराजा इसीरीतिसे सूतपुत्रने बाणोंसे सेनाकेउत्तम २ शूरबीरों को

पीड़ित किया फिर कर्णके बाणोंसे घायल और मृतक होकर शब्दोंको कर-
तेहुये पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ८० जैसेकि बड़े पराक्रमी कुत्तोंके समूह क्रोध
भरे बड़े पराक्रमी सिंहसे गिरते हैं फिर पांचालदेशियोंके उत्तम २ लोग
और अन्य २ शूरवीर इसस्थानपर कर्ण और अर्जुनके लिये ८१ चेष्टाकरने
वाले उसपराक्रमी कर्णके अच्छीरीति के छोड़े हुये बाणोंसे मारेगये
और आपके शूरोंने बड़ी बिजयको मानकर तालियां बजाईं और बारं-
बार सिंहनादको किया उनसबोंने युद्धमें श्रीकृष्ण और अर्जुनको कर्ण
कीस्वाधीनतामें माना फिरतो कर्णकेबाणोंसे अत्यन्तघायलशरीरवाले
क्रोधयुक्त अर्जुनने धनुषकी प्रत्यंचाको नवाकर शीघ्रतासे कर्णके उन
बाणोंको हटाकेकौरवोंको रोका ८२।८३ प्रत्यंचाकोठीककरकेतलको
वरमेंदबाया और अकस्मात् बाणोंका अंधकार उत्पन्नकिया उससमय
बड़ेहठसे अर्जुननेबाणोंके द्वाराकर्णशल्य और सबकौरवोंको छेदा ८४
तब महाअस्त्रसे अंधकार उत्पन्न होजानेपर अंतरिक्षमें पक्षीभी नहीं
घूमे और आकाशवर्त्ती जीवोंके समूहोंसे प्रेरितवायुने दिव्य सुगन्धि-
योंको फैलाया ८५ फिरहंसतेहुये अर्जुननेदशपृषत्कोंसे शल्यकेकवच
को छेदा इसकेपीछे अच्छेप्रकारसे छोड़ेहुये ८६ बारहबाणोंसे कर्णको
छेदकरदुबारीभी सातबाणोंसेछेदा अर्जुनके धनुषसे छूटेहुये महावेग
वालेबाणोंसे अत्यन्त घायल ८६।८७ बिदीर्ण और रुधिरसेभराअंगवह
कर्णजिसकेकि बाणफैलरहेथे रुद्रजीकेसमान शोभायमानहुआ इसके
पीछे श्मशानभूमिमें रुद्रमुहूर्त्त मेंक्रीड़ा करनेवाले रुधिरसेलिप्तशरीर
अधिरथीकर्णने उसदेवराजकेसमान रूपवाले अर्जुनकोतीनबाणोंसे
छेदा ८८।८९ फिरमारनेकीइच्छासेसर्पोंकेसमानअग्निरूपपांचबाणों
को श्रीकृष्णजीकेशरीरमें प्रविष्टकिया ९० वहसुवर्णजटित अच्छीरीति
सेछोड़ेहुये बाणपुरुषोत्तमजीके कवचको छेदकरगिरपड़े ९१ और बड़े
वेगसेपृथ्वीमें प्रवेशकरगये और पातालगंगामें स्नानकरके फिरकर्ण
से मुखफेरकरचलेगये इसकेपीछे अर्जुनने उनबाणोंकोअच्छीरीतिसे
छोड़े हुये पन्द्रहभल्लोंसे तीन २ खंडकरदिया ९२ उनबाणोंसे घायल
तक्षककेपुत्रके साथीबड़े सर्प पृथ्वीपर आयेफिरतो अर्जुन ऐसा क्रोध

युक्तहुआ जैसे कि सूखेबनको जलाताहुआ अग्निहोताहै ६३ उस अर्जुनने कर्णकी भुजासे छोड़ेहुये बाणोंसे इसप्रकारघायल शरीर श्रीकृष्णजीको देखकर कानतक खैंचकर शरीर के नाश करनेवाले अग्निरूप बाणोंसे कर्ण को ६४ मर्मस्थलोंमें छेदा वह दुःखसे तो कंपितहुआ परन्तु बड़ीबुद्धि से धैर्य्य युक्तहोकर दैवयोगसे नियत रहा हेराजा इसके पीछे अर्जुनके क्रोधरूप होनेपर ६५ ॥

दो० तजि कर्णहिं तेहि क्षण भगे तो सुत भट समुदाय ।
जिमिव्याधहिंलखिसुतरुतजि भगतविहग भयपाय ॥
पार्थ अधिरथीके बधन को प्रण पूरण धारि ।
पार्थ लसौ जिमित्रि पुरदल मध्य लसौ त्रिपुरारि ॥

सो० तिमि सूतज रणधीर प्रलयभरयो परसेनमधि ।
दोऊ तुल बलबीर कीन्हें अद्भुत युद्ध तहं ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥

महाबीर दोऊ धनुर्वेदधारी । दुहूंओरके बाणकीवृष्टिभारी ॥
किये घोरसंग्रामतांठौरदोऊ । नहींसामुहेंभे दुहूंओरकोऊ ॥
गयेदूरिजेते भयेमौन ऐसे । गयेसामनेसिंहपशुभीत जैसे ॥
दुहूंओरकेयोंकहैंजाचिवेको । नहीआजुतोयोगहैबाचिवेको ॥

दो० कर्णहिं बधिदल कौरवौ वधिहि पार्थ बल ऐन ।
कै पार्थहि वधिकै करण बधत पांडवी सैन ॥

दोऊ गगन शरनभरिदीन्हे । अन्धकार आरोपित कीन्हे ॥
दोउनकेअति बिक्रम देखी । बिस्मित भेसुरगण अवरेखी ॥
दोऊ क्षात्रधर्म अवतंसे । इमि कहि कहिकै दुहुनप्रशंसे ॥
दोउनकेकर करिकर भारी । रहे जात लखि काननवारी ॥
कबहुंपार्थबढ़ि बिक्रमकीन्हों । कबहुं सूतसुतगुरुतालीन्हों ॥
रह्योनथिरिघटिबढ़िपदकोऊ । अतिशयप्रबलधनुर्द्धरदोऊ ॥
भूपहुई तहँ तुमुललराई । पृथक् पृथक् सबकही न जाई ॥

६६ । ६७ । ६८ ६६ । १०० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिद्वैरथकर्णार्जुनयुद्धे एकोननवतितमोऽध्यायः ८६ ॥

नब्बेवां अध्याय॥

संजयबोले इसके पीछे पृथक् २ सेनावाले एकवीरके अन्तर पर जानेवाले कौरव नियतहुये और अर्जुनके प्रकट कियेहुये अस्त्र को चारोंओरसे बिजलीके समान प्रकाशमान देखा १ तब कर्णने उस अर्जुनके आकाशमें वर्त्तमान महाअस्त्रको बड़ेघोरबाणोंसे दूरकिया जोकि बड़े युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने कर्ण के मारने को छोड़ाथा २ उस कौरवोंके भस्म करनेवाले उदयरूप अस्त्रको सुनहरी पुंखवाले बिशिखोंसे मर्द्दनकिया फिर दृढ़ प्रत्यंचायुक्त सफल धनुष को उठाकर बाणोंके समूहोंको छोड़तेहुये कर्णने ३ परशुरामजी से पायेहुये शत्रुओं के नाशकरनेवाले अथर्ववेदसम्बन्धी मन्त्रसे अभिमंत्रित कियेहुये तीक्ष्ण धारवाले बाणसे उसभस्म करनेवाले अर्जुनके अस्त्रको दूर करदिया ४ हेराजा इसकेपीछे वहां वृषकों से परस्पर युद्ध करनेवाले कर्ण और अर्जुनका ऐसा घोरयुद्धहुआ जैसे कि दांतोंके कठिन प्रहारोंसे दो हाथी युद्ध करतेहोयँ ५ उस समय वहां सबओरसे अस्त्रोंके प्रहारोंसे बड़ाकठिनयुद्धहुआ और दोनों ने अपने अपने बाण समूहोंसे आकाशको पूर्णकरदिया ६ इसके पीछे सब कौरव और सोमकों ने बड़े बाणजालोंको देखा और बाणों से अन्धकार होनेपरअन्तरिक्षमें किसीजीवमात्रकोभी नहींदेखा हेराजा तब उन अनेकबाणोंके छोड़ने औरचढ़ानेवाले दोनों धनुषधारियोंने अनेक प्रकारकी अपनी अस्त्रज्ञताओंके साथ युद्धमें विचित्रमार्गोंको दिखलाया ७ । ८ इसरीतिसे कभी अर्जुन कभी कर्ण प्रबलहोतेहुये देखके ९ अन्य सब शूरबीरोंने युद्धभूमि में परस्पर घात ढूंढ़नेवाले उनदोनोंके असह्य और घोरयुद्ध को देखकरबड़ाही आश्चर्य किया हेनरेन्द्र इसकेपीछे अन्तरिक्षबर्त्ती जीवोंने उनकर्ण और अर्जुन दोनों की प्रशंसाकरी कि हेकर्णधन्यहै हेअर्जुन धन्यहैधन्यहै यहशब्द सब ओरसे सुनेजातेथे १०।११ तब उस युद्धमें रथघोड़े और हाथियों के प्रहारोंसे पृथ्वीके धसकने पर पातालतल में विश्राम करनेवाला

अर्जुनका शत्रु अश्वसेन सर्प१२जोकि खांडवबनकी अग्निसेनिकलकर क्रोधयुक्त होकरपृथ्वीमें घुसगयाथा वहफिर ऊर्ध्वगामी होकर कर्ण औरअर्जुनका युद्धदेखकर ऊपरकोआया१३ हेराजा उसनेशोचा कि इस दुष्ट अर्जुनसे अपना बदला लेनेका यही समय है इसीहेतु से बाणरूप बनकर कर्णके तूणीरमें आया इसकेपीछे अस्त्रोंके प्रहारों से संयुक्त फैलेहुये बाणोंके समूह रूपी किरणोंसे पूर्णहुआ तबउन दोनों कर्ण और अर्जुनने बाणोंके समूहोंकी बर्षासे आकाशके अंतर को निरन्तर करदिया उससमय वह आकाश बड़ी दूरतक बाणस-मूहोंसे एकसेहीरूपकाथा उसको देखकर सब कौरव और सोमक भयभीतहुये१४।१५।१६ उसबाणोंके बड़ेअन्धकारमें दूसराकोईजीव आताहुआ नहींदेखा तदनन्तर सबलोकके धनुषधारी महावीर वह दोनों पुरुषोत्तम युद्धमेंप्राणोंके त्यागनेवाले युद्धके परिश्रममें प्रवृत्त १७ निन्दितबचनोंकोपरस्पर कहने वालेहुये फिरवह देखनेवालोंसे व्याप्त जल चंदनसेसींचेहुये दिव्यबालव्यजनोंकी रखनेवाली स्वर्ग बासिनी अप्सराओंके समूहों समेत इन्द्र और सूर्यके करकमलों से स्वच्छ मुखवाले हुये १८ जब अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ा मानकर्ण अर्जुनको नमारसका तब बाणोंसे अत्यंत घायल शरीर वाले उसवीरने उस अकेले तरकसमें रहने वाले सर्परूप बाणके चलानेको चित्तकिया १९ और बड़े क्रोधपूर्वक उस अच्छीरीति से प्राप्त होने वाले बहुतकालसे गुप्तरूप सर्प मुखबाणको अर्जुन केवास्ते धनुषपर चढ़ाया अर्थात् बड़े तेजस्वी कर्णने उस सदैव से पूजित चन्दन चूरमें रहनेवाले सुवर्णके तूणीरमें नियत बड़े प्रका-शित बाणको कानतक खैंच अर्जुनके मुखकीओर धनुषपर चढ़ाया २०।२१ अर्जुनकेशिरकाटनेको अभिलाषी उसऐरावतके वंशमें उत्प-न्न होने वाले अत्यंत प्रकाशमान बाणको चढ़ातेही सबदिशा और आकाशमें अग्नि ज्वलितहुईऔर आकाशसे सैकड़ों घोररूपउल्का पातहुये २२ धनुषमें उसरूप सर्पबाणके चढ़ानेपर इन्द्र समेतसब लोकपाल हाहाकार करने लगे और सूतपुत्र कर्णने योगबलसे

उसबाणमें प्रवेश करनेवाले सर्पको न जाना परंतु सहस्राक्षइन्द्र उस कर्णके तूणीरमें प्रवेश करनेवाले सर्पको देखकर अपने पुत्रके मारेजाने के सन्देह और शोचमें शिथिल अंग हुआ उसको शोच ग्रस्त देखकर बड़ेमहात्मा कमल योनि ब्रह्माजी इंद्रसेबोलेकिशोच मतकरो अर्जुनही में लक्ष्मी औरविजयदोनोंहैं २३।२४ इसके पीछे मद्रके राजा महात्मा शल्यने उस उग्रबाणके चलानेवाले कर्णसे कहाकि हेकर्ण यहबाण अर्जुनको नहीं पावेगा इसशिर काटने वाले बाणको तुम अच्छीरीतिसे देखकर चढ़ाओ २५ इसके पीछे क्रोधसे रक्तनेत्र बड़ावेगवान कर्ण राजामद्रसे बोलाकि हेशल्य कर्ण दूसरीबार बाणकोनहीं चढ़ाताहै मुझसे मनुष्यकुलसेयुद्धनहीं करते हैं २६ हे राजा उस शीघ्रता करनेवाले उद्युक्त कर्णने यह कहकर बिजयके निमित्त बड़े उपायसे उस बाणको छोड़ा और कहने लगा कि हे अर्जुन अब तुझकोमाराहै २७ कर्णकी भुजासे धनुषके द्वारा छूटा हुआ वह घोरबाण प्रत्यंचासे पृथक् हो उग्रसूर्यकेसमान आकाशमेंजाके अग्निके समान होगया २८ तबतोबड़ी शीघ्रता पूर्वक माधवजीने उस अग्निरूप बाणको देखकर बड़ीशीघ्रतासे अपने चरणोंसे रथको दबाकर थोड़ासा पृथ्वी में घुसाया तब वह सुवर्ण भूषणोंसे अलंकृत वह घोड़ेभी घुटनोंसे पृथ्वीपर बैठगये २९ महा पराक्रमी माधवजीने कर्णके हाथसे धनुषपर चढ़ायेहुये सर्पको देख करपहियोंपर बलकरकेउसउत्तमरथको पृथ्वीमेंगड़ादिया ३० तभी वह घोड़े पृथ्वीपर बैठगये इसके पीछे मधुसूदनके पूजनके निमित्त अंतरिक्षमें बड़ाभारी शब्दहोकर अकस्मात् आकाशवाणीहुई और दिव्य पुष्पोंकी वर्षाहोकर सिंहनादहुये ३१ उससमय मधुसूदनजी के बड़े उपाय से पृथ्वीमें रथके घुसनेपर उस बाणने उस बुद्धिमान् अर्जुनके बड़े दृढ़रूप इन्द्रके दियेहुये किरीटको घायल किया इसके पीछे सूतपुत्रने सर्पअस्त्रके छोड़ने और क्रोधयुक्त उत्तमउपाय पूर्वक बाणकेद्वारासे अर्जुनके शिरसे मुकुटकोहरणकिया वहमुकुट आकाश स्वर्ग और जलोंमें प्रसिद्ध सूर्य चन्द्र और अग्निकेसमान प्रकाशित

सुवर्ण मोती हीरे मणियोंसेजटित था जिसको कि आपसमर्थ ब्रह्मा जीने तपकेद्वारा बड़ेउपायसे इन्द्रकेलिये उत्पन्नकियाथा और बड़ा-सुन्दररूप शत्रुओंकोभयकारी शिरपर धारण करनेवाले को महा आनन्ददायक होकर श्रेष्ठगंधियोंसेयुक्तथा ३३ उसीको प्रसन्नचित्त होकर आप इन्द्रने असुरोंके मारनेकेअभिलाषी अर्जुन को दियाथा वहमुकुट ऐसे प्रभाववाला था कि इन्द्र वरुण कुवेर वज्रपाश और उत्तमबाणों से अथवा शिवजीके पिनाक धनुष से भी ३४ मर्दन के योग्य नथा ऐसे मुकुटको कर्णने अपनी हठसे सर्परूपवाण के द्वारा हरणकरलिया अर्थात् दुरात्मा दुष्टभाव असत्य प्रतिज्ञावाले ३५ वेगवानसर्पने अर्जुनके उसकिरीटको शिरपरसेहरलिया वहकिरीट अत्यन्तअद्भुत बड़ोंकेयोग्य सुवर्णकेजालोंसेमंडित प्रकाशित शब्दाय मानहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ३६ अर्थात् उत्तमबाण से मथितविष की अग्निसे प्रकाशित वह अर्जुन का मुकुट पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्तमंडलवालासूर्य अस्ताचलसे गिरता है ३७ उससर्पने बलके द्वारा रत्नोंसेजटित और अलंकृत मुकुटको अर्जुन के शिरसे ऐसे जुदाकिया जैसे कि पर्वत के अंकुर और पुष्पित वृक्षोंसे जटित श्रेष्ठशिखर को इन्द्रकावज्र गिरादेता है ३८ । ३९ अथवा जैसे कि वायु से पृथ्वी आकाश स्वर्ग और जलोंके समुद्र उत्पातयुक्त होकर कंपित होतेहैं उसीप्रकार वह उग्रमुकुट हटकरके अत्यन्त चूर्ण हुआ उस समय तीनों लोकों के बड़े शब्दों को मनुष्यों ने सुना और सुन-कर सब पीड़ित होके गिरपड़े ४० बिना किरीट के भी वह पार्थ ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि श्याम रंगवाला नवीन उत्पन्नहुआ पर्व्वत का ऊंचा शिखर होता है इसके अनन्तर पीड़ा से रहित अ-र्जुन अपने शिरकेवालों को श्वेतवस्त्र से बांधकर ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि शिरपर वर्त्तमान सूर्य्य की किरणवाला उदयाचल पर्व्वत होता है सूर्य्य के पुत्र कर्णके भेजेहुये नेत्र रूप कान रखने वाले दुःखसे रक्षाकरनेवाले सर्पके पुत्र अश्वसेन सर्पने प्रत्यक्ष में बड़े तेजस्वी नागडोरों के समीप शिर रखनेवाले अर्जुनको देखकर

थी बड़ीतीव्रता सेनीचेको झुकनेसे असामर्थ होकर उस इन्द्रकेपुत्र अर्जुनके मुकुटको जोकि अच्छी रीति से अलङ्कृत सूर्यके समान प्रकाशमान था हरणकिया और बाणके छोड़नेसे सर्पको मर्दन करनेवाला अर्जुनसर्पको नपाकर मृत्युकेआधीन नहींहुआ ४१।४२।४३ कर्ण की भुजासे छोड़ा हुआ अग्नि सूर्यरूप बड़ेशूरवीर के योग्य वह शायक और उसमें प्रवेश करनेवाला अर्जुन का शत्रु मुकुट को घायल करके चलागया तब अर्जुन के उस सुवर्ण जटितमुकुट को खेंचकर भस्म करके उसने फिर तूणीरमें जानचाहा और कर्ण से बोला कि हेकर्ण मैं बिनाबिचार किये हुये तेरेहाथसे छोड़ गया था इसीसे अर्जुनके शिरको न काटसका अबतू युद्धमें अर्जुन को अच्छे प्रकार से लक्षकरके शीघ्रतासे मुझको छोड़ मैं अपने और तेरे शत्रु अर्जुन को अभी मारूंगा यह बचन सुनतेही कर्ण उससे बोला हेश्रेष्ठ तुम कौनहो ४४।४५ सर्पने कहा माताकेमारनेसे मुझशत्रुता करनेवाले को अर्जुनकाशत्रु जानो चाहे उसका रक्षक यमराजभी होजाय तौभीमैं उसको यमलोकमें पहुंचाऊंगा ४६ कर्णबोला हेसर्प अबकर्ण युद्धमें दूसरेके बलसे अपनी विजयको नहींचाहताहै और एकबार बाणको चढ़ाकर उसको फिर दूसरीबार नहीं चढ़ाऊंगा मैं अकेलाही एक अर्जुन नहींजो ऐसे२ सौ अर्जुनभी होंय उनकोभीमार सक्ताहूं यहकहकर ४७ सूर्य्यके पुत्रोंमें श्रेष्ठ कर्ण युद्धभूमिमेंफिरभी उससर्पसे बोलाकि हेसर्प मैंअस्त्रके बलकोयुक्त किसीउत्तम उपाय केद्वाराअर्जुनको मारूंगा तुम खुशीसे चलेजाओ कर्णके इसबचनको उससर्पने क्रोधयुक्त होकरनहींसुना और अर्जुनके मारनेकीइच्छासे वहसर्पराज अपने निजस्वरूपको धारणकरके आपहीअर्जुनकेमारनेकोचला ४८ तदनन्तर श्रीकृष्णजी उसयुद्धभूमिमें अर्जुनसेबोलेकि तुमइसशत्रुता करनेवाले बड़ेसर्पकोमारो श्रीकृष्णजीके इसबचनको सुनतेही शत्रुकेबलका नसहनेवाला वह गांडीवधनुषधारी अर्जुनयहबचनबोला कियहसर्प मेराकौनहै जोआपने आपगरुड़केमुखमें आयाहै श्रीकृष्णजीने कहा कि खांडववनमें अग्निकेतृप्तकरनेवालेतुम

धनुषधारीने ५० । ५१ इसआकाशमें वर्त्तमान अपनीमातासे गुप्त शरीरवालेको एकरूप जानकर इसकी माता को मारा था उसीके कारणसेउसशत्रुताको स्मरणकरता निश्चयकरके अपनेमरनेकेलिये तुझकोचाहताहै ५२ हेशत्रुकेहंसनेवाले तुम आकाश से प्रज्वलित उल्कापातकेसमान उसआनेवाले सर्पकोदेखो संजयबोलेकि इसके पीछेउसअर्जुनने महाक्रोधयुक्तहोकर बड़ेतीक्ष्णउत्तम छःबाणोंसेउस सर्पको जो आकाशसे तिरछाहोकर आ रहाथा काटडाला५३ फिर वहअंगोंसे कटाहुआ पृथ्वीपरगिरपड़ा अर्जुनके हाथसे उस सर्पके मरनेपर आप समर्थरूप पुरुषोत्तमजीने ५४ उसगिरे और घुसेहुये रथको शीघ्रही अपनीदोनोंभुजाओंसे ऊपरको उठाया उसीमुहूर्त्त में अर्जुनको तिरछा देखनेवाले पुरुषों में बड़ेवीर कर्णने उग्रपक्ष-धारी दशपृषोत्कोंसे फिरअर्जुनकोव्यथितकियातबअर्जुननेभी अच्छे प्रकार से छोड़ेहुये बराह कर्णनाम बारह तीक्ष्णबाणों से कर्ण को घायलकरके ५५ बिषवालेसर्प की समान शीघ्रगामी कानतकखैंचे हुये नाराचनाम बाणकोछोड़ा वहअच्छीरीति से छोड़ाहुआ उत्तम बाणकर्णकेजड़ाऊकवचकोचीरकर मानोप्राणोंको घायलकरताहुआ ५६ कर्णके रुधिरकोपीकर रुधिरमें लिप्तहोके पृथ्वी में समागया इसकेपीछे बाणके आघातसेकर्ण ऐसाक्रोधयुक्तहुआ जैसे कि दण्ड से प्रेरित होकर महासर्प क्रोधरूपहोताहै ५७ तबतो शीघ्रताकरने वाले कर्णने उत्तमबाणोंको ऐसेछोड़ा जैसे कि बड़ाबिषधर सर्पअपने बिषको छोड़ताहै उससमय कर्णने बारहबाणसे तो श्रीकृष्णजीको और निन्नानबेबाणोंसे अर्जुनकोछेदा ५८ फिरकर्ण घोरबाणोंसे अ-र्जुनको घायलकरके गर्जनापूर्व्वकहंसा तबउसकेउसहास्यको नसह-कर उसमर्मज्ञ अर्जुनने उसकेमर्मोंको छेदा ५९ इसइन्द्रके समान पराक्रमी अर्जुनने सैकड़ोंबाणों से ऐसेवेगसे छेदा जैसे कि इन्द्रने राजाबलिकोछेदाथा इसकेअनन्तर अर्जुनने यमराजकेदण्डकीसमा-न नब्बेबाणोंकोकर्णकेऊपरछोड़ा ६० इनअर्जुनके बाणोंसे विदीर्ण शरीर वहकर्ण ऐसापीड़ामानहुआ जैसे कि बज्रसे कटाहुआ पर्व्वत

पीड़ित होताहै और अर्जुनके बाणोंसे टूटाहुआ इसका सुवर्ण हीरोंसेजटित प्रकाशमान मुकुट ६१ वा दोनोंकुण्डल औरबड़ेमूल्य-वालाबड़ेउपायोंसेअच्छेकारीगरोंका बनायाहुआ कवचयहतीनोंक-टकरपृथ्वीपरगिरे इसकेपीछेफिरक्रोधभरे अर्जुननेउसकवच रहित खालीशरीरवाले कर्णको चारतीक्ष्ण बाणोंसे छेदा ६२।६३ फिर शत्रुकेहाथसे अत्यन्त घायल वहकर्ण ऐसा अत्यन्त पीड़ामानहुआ जैसेकि बात पित्त कफसे ग्रसित रोगीपीड़ित होताहै उस समय शीघ्रता करनेवाले अर्जुनने बड़ेधनुषमंडलसे निकलेहुये और बड़े उपायपूर्वक कर्मसे चलायेहुये ६४ बहुतसे उत्तमबाणोंसे घायल करके मर्मस्थलोंकोभीछेदा अर्जुनके बड़ेवेगवान तीक्ष्ण नोकवाले नानाप्रकारके बाणोंसे अत्यन्तघायल कर्ण ६५ ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि पहाड़ी धातुओंसे लालवर्णकापर्वत बज्रोंके प्रहारोंसे रक्तजलोंको छोड़ताहुआ शोभितहोताहै इसकेपीछेअर्जुननेसीधेच-लनेवाले बड़े दृढ़रूप सुन्दररीतिसे छोड़ेहुये लोहेके यमराज और अग्निके दण्डकेसमान नौबाणोंसे कर्णको ऐसे छातीपर छेदा जैसे कि अग्निके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजीने क्रौंच पर्वत को छेदाथा उससमय सूतपुत्र तूणीरको और इन्द्र धनुषके समान उस धनुषको त्यागकर ६६।६७रथकेऊपर अचेत होकर गिरताहुआ नियतहुआ हेप्रभु जिसकी मुट्ठी फैलगईथी और अत्यन्तघायल था तब उत्तम पुरुषोंके व्रतमें नियत अर्जुन ने उस आपत्तिमें पड़ेहुये कर्णके मार-नेकी इच्छा नहींकी ६८ इसके पीछे इन्द्रके छोटे भाई विष्णुरूप श्रीकृष्णजी भ्रान्तीसे आश्चर्य्य पूर्वक उससेबोले कि हेअर्जुन क्या भूलकरता है पंडितलोग अपने से कमपराक्रमी शत्रुको भी कभी नहीं त्याग करते हैं मुख्यकर पंडितलोग भी आपत्तियों में शत्रुको मारकर धर्म और यशको पातेहैं सोतुम बिना विचारकियेही इस अपने प्राचीन शत्रु बीरकर्ण के मारने का उपाय करो ६९।७०यह समर्थ कर्णजो आगे आताहै इसको तुम ऐसेछेदो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको छेदाथा इसके पीछे सबकौरवों में श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले

अर्जुन ने शीघ्रही श्रीकृष्णजी को मिलकर और पूजन करके कर्ण को ७१ उत्तमबाणों से ऐसा छेदा जैसे कि पूर्व समय में संवरके मारनेवाले इन्द्रने राजाबलिको छेदाथा हेभरतवंशी फिर अर्जुन ने दंतवक्र नाम बाणोंसे कर्णको घोड़े और रथके समेत ढकदिया७२ सब उपायों से सुनहरी पुंखवाले बाणोंके द्वारा दिशाओंको भी ढक दिया फिर वह बड़े दीर्घ और उन्नत बक्षस्थलवाला कर्ण वत्सदन्त नाम बाणोंसे छिदाहुआ ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि अच्छे२ पुष्पवाले अशोक पलाश शालमलि और रक्तचन्दन के वनसेयुक्त पर्ब्बत शोभयमान होताहै हेराजा वहकर्ण शरीर में लगे हुयेबहुत बाणोंसे ऐसा शोयमान हुआ ७३ । ७४ जैसे कि वृक्षोंसे पूर्ण वन अथवा कन्दरा और प्रफुल्लित कर्णिकारके वृक्षोंसेयुक्त गिरिराज शोभितहोताहै वह बाणजालरूप किरणोंका रखनेवालाकर्ण बाणों केसमूहोंको छोड़ताहुआ ऐसा प्रकाशमान था ७५ जैसे कि अस्ता-चलके सन्मुख रक्तमंडलवाला सूर्य्य होताहै अर्जुनकी भुजाओं से छोड़ेहुये तीक्ष्णनोकवाले बाणोंनेदिशाओंको पाकर कर्णकी भुजाओं से छुटेहुये सर्परूप प्रकाशित बाणोंको पराजय किया इसकेपीछे क्रोधयुक्त सर्पोंके समान बाणोंको छोड़तेहुये उसकर्णने धैर्य्यको पाकर ७६ । ७७ क्रोधयुक्त सर्पकी समान दशबाणोंसे अर्जुनको और छःबाणोंसे श्रीकृष्णजीको पीड़ितकिया इसके पीछे बड़ाबुद्धि-मान अर्जुन कठोर शब्द युक्त सर्प विष और अग्निके समानलोहे के भयंकर बाणोंके फेंकने में प्रवृत्तहुआ हेराजा फिर तो अदृष्टगुप्त रूपकालब्राह्मणके क्रोधसेकर्णके मरनेकोकहनेवालाहुआ ७८।७९ कर्णके मरनेका समय आनेपर यहवचनबोला कि पृथ्वीरथकेपहि-येको निगलती है इसकेपीछे वह महात्मा परशुरामजीके उसदिये हुये अस्त्रकोभी चित्तसे भूलगया८०हेबीर धृतराष्ट्र उसके मरणका समय आनेपर उसके रथके पहियेको पृथ्वीने पकड़ा तब उसउत्तम ब्राह्मणके शापसे उसका रथ घूमगया ८१ और रथका पहिया पृथ्वीपर गिरपड़ा तबतो वह कर्ण युद्धमें ऐसा व्याकुलचित्त हुआ

जैसेकि अच्छे पुष्पवाला वेदिका समेत चैत्यनाम वृक्षभूमिमें डूब जाताहै ८२ ब्राह्मणके शापसे रथके घूमने और परशुरामजीसे पाये हुये अस्त्रके विस्मरण होनेपर ८३ और अर्जुन के हाथसे सर्पमुख प्रकाशित घोरबाणके गिरनेपर उन दुःखोंको न सहनेवाला कर्ण दोनों हाथोंको कंपायमान करके इसबातकीनिन्दा करनेलगा कि धर्मज्ञ लोग सदैव इसबातको कहाकरतेहैं कि धर्मकरनेवाले का धर्म उस धार्मिक पुरुषकी सदैव रक्षाकरताहै और हमपराक्रमी लोग उनके कहनेके अनुसार विश्वासपूर्वक धर्मकरनेमें उपायोंको करतेहैं ८४।८५ सो मेरीबुद्धिसे वह कियाहुआ धर्म रक्षा नहींकरता है किन्तु अवश्यमारताहै भक्तोंकी रक्षा कभी नहीं करताहै यह मैं मानताहूं कि धर्म सदैव रक्षानहींकरता है इसरीतिसे घोड़े और सारथीसे पृथक् और अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त चेष्टावान ८६ और मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल होने से कर्मकरने में शिथिल होकर बारम्बार धर्मकी निन्दाकरी इसकेपीछे अत्यन्त भयकारी तीनबाणों से युद्धमें श्रीकृष्णजीको हाथपर छेदा और अर्जुनकोभी सातबाणों से ८७ इसकेपीछे अर्जुनने कठिन बेगयुक्त सीधे चलनेवाले इन्द्र वज्रके समान घोर अग्निकेसमान सत्तरबाणोंको छोड़ा वह भयानक बेगवालेबाण उसको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़े ८८ तदनन्तर अपने शरीरको कम्पायमान करतेहुये कर्णने अपनीसामर्थ्यसे चेष्टा को दिखाया फिर बलसे अपनेको साधकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट किया फिर अर्जुननेभी उस अस्त्रको देखकर ऐन्द्रास्त्रके मन्त्रको पढ़ा ८९ फिर उस शत्रुके तपानेवालेने गांडीवधनुष प्रत्यंचा और बाणपरमंत्र को पढ़कर बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि इन्द्र जलकी वृष्टिको करताहै ९० इसकेपीछे अर्जुनके रथसे निकलेहुये तेजरूपीपराक्रमी बाण कर्णके रथके समीपजाकर प्रकटहुये ९१ फिरमहारथी कर्णने अपनेछोड़ेहुये बाणोंसे उनबाणोंको निष्फल करदिया इसपीछे उस अस्त्रके दूरहोने पर वह वृष्णिवीर श्रीकृष्णजी बोले ९२ हे अर्जुन तूपरमअस्त्रको छोड़ क्योंकि कर्णबाणोंको निष्फलकरदेताहै इसके

पीछे ब्रह्मास्त्रके उग्रमंत्रको पढ़कर बाणको धनुषपरचाढ़ाया ९३ और कर्णको बाणोंसे ढककर उसपर फिरबाणोंको फेंका तबकर्णने सुन्दर बेतवाले तीक्ष्णबाणों से उसकी प्रत्यंचाको काटकर पहली दूसरी तीसरी चौथी पांचवीं छठी सातवीं आठवीं नौमी दशवीं ग्यारहवीं प्रत्यंचाको काटापरन्तुवहकर्ण उसहजारोंप्रत्यंचाचढ़ानेवालेकोनहीं जानताथा ९४।९५ तदनन्तर अर्जुनने दूसरीप्रत्यंचाकोधनुषपरचढ़ाकर मंत्रोंसे अभिमंत्रितकर सर्पोंकीसमान प्रकाशित बाणोंसेकर्णको ढकदिया ९६ कर्णनेउसकीप्रत्यंचाके टूटनेऔरचढ़ानेकोहस्तलाघवता केकारणनहींजानायहभीआश्चर्य्यसाहुआ ९७ फिर कर्णनेअपनेअस्त्रों सेअर्जुनके अस्त्रोंकोरोककरघायलकियाऔर अपनेपराक्रमकोअच्छा दिखाकरउसने अर्जुनसेभीअधिककर्मकिया ९८ इसकेपीछेश्रीकृष्णजी कर्णकेअस्त्रसे अर्जुनको पीड़ामान देखकर बोलेकिचलो अन्यबाणोंको प्रेरितकरके चलाओ ९९ इसके पीछे शत्रु संतापीअर्जुन अग्निकी समानघोर सर्पकेबिषकेसमानलोहेके दिव्यबाणोंकोअभिमंत्रितकर के १०० रुद्रअस्त्रको चढ़ाकर छोड़नेको उपस्थितहुआ हेराजाउसी समयपृथ्वीने कर्णकेरथ चक्रको निगला १०१ इसकेपीछे उससावधानकर्णने शीघ्र रथसेउतरकर दोनोंभुजाओंसे चक्रकोपड़करपृथ्वी से निकालनाचाहा १०२ वहसप्तद्वीपा बसुन्धरा रथचक्रको निगलने वालीपृथ्वी पर्बतबननदी औरसमुद्रोंसमेतकर्णके हाथसेचारअंगुल ऊंचीउठआई परन्तुपहिया नछूटातबतो कर्णनेक्रोधकरके अश्रुपातों कोडाला औरअर्जुनको क्रोधयुक्त देखकर यहबचनबोला १०३।१०४ हे बड़ेधनुषधारी अर्जुनमैंजबतकइसपृथ्वीमें गड़ेहुयेचक्रकोननिकाल लूंतबतकक्षणभरकेलियेशस्त्रफेंकनेकोरोको १०५ हेअर्जुन दैवयोगसे इसमेरे बामरथके चक्रको पृथ्वीमें गड़ाहुआ देखकर नपुंसकोंके युद्ध को त्यागकरो १०६ हे कुन्तीनन्दन तुमनपुंसकोंकेसमानअथवा नपुंसकोंकेमतपरचलनेकेयोग्यनहींहोक्योंकि युद्धकर्ममें बड़ेनामीप्रसिद्ध हो १०७ हेपांडव तुमगुणोंसे भरेहुये कर्मकरनेकेयोग्यहो जो शूरबीर लोगकिसाधुओंकेब्रतमेंनियतहैं वहकेशोंके फैलानेवाले १०८ शरणा-

गतहोनेवालेअस्त्रोंकेत्यागनेवाले अथवाप्रार्थनाकरनेवाले वा बाण न रखनेवाले कवचसेरहित और टूटेशस्त्र वालेपर१०९ अपनेशस्त्रों को नहींछोड़तेहैं हेपांडव तुमलोकमेंवड़े शूरबीर साधुव्रतवाले११०युद्ध केधर्म्मोंको उत्तमरीतिसेजाननेवाले यज्ञान्तमेंअमृतस्नानकरनेवाले दिव्यअस्त्रोंकेज्ञाता महासाहसी युद्धमें सहस्त्राबाहुकेसमानहो१११हे महाबाहो जबतकमैं इसगड़ेहुये पायेको न निकाललूं तबतकतुमरथ परसवार होकरपृथ्वीपर नियत मुझव्याकुलचित्तके मारनेको योग्य नहींहो११२हेअर्जुनमैंतुझसे और वासुदेवजीसे नहींडरताहूं और तुम क्षत्रीकेपुत्र और बड़ेबंशके बढ़ानेवालेहो ११३ इसहेतुसे तुमसेमैंकह-ताहूंहेपांडव एकमुहूर्त्त तक ठहरजाओ ११४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णरथचक्रग्रसनंनामनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

चौ० समयदेखिहवै व्याकुलमनमें । रथ बिनुचले कर्णतेहि क्षनमें ॥
धनुरथ पै धरि बीर उतरिकै । चारुचक्रयुत करसों धरिकै ॥
लगो उठावन सुनु महिसाईं । अचरज कियो कर्णतेहिठाईं ॥
गिरि सागर कानन सह धरनी । रथ के संग उठाई अवनी ॥
अंगुलचारि प्रमाण उठायो । सुरगण के मनविस्मय छायो ॥
छुटो न रथतब कर्णबिलखिकै । सजलनयनभो इत उतलखिकै ॥
करि शरवृष्टि पार्थ तेहि क्षनमें । बहु शर हने कर्ण के तनमें ॥
तिनसों कर्ण महादुखपायो । पारथ को इमि टेरि सुनायो ॥
हे हे पार्थ कहा अघ धारो । बाण वृष्टि क्षण एक निवारो ॥
ग्रसित चक्र धरणीते जबलौं । मैं काढ़ौं तू थिर रहु तबलौं ॥
बिनाशस्त्रपहं तजिबोशायक । उचित न तुम्हें विदितभटनायक ॥

दो० नहिंकृष्णहिं नहिंतुमहिं हम भीति कहत येवैन ।
तुमसे क्षत्रिहि धर्मको तजिबो सोहत हैन ॥
जौलगि चक्र छुड़ाइ हम नहिं पकरैं धनुवान ।
पारथ तौलगि करिक्षमा बहुरि करौ मनमान ॥

जयकरीछन्द ॥

तहां कर्णके सुनि यहबैन । कहत भये केशव मतिऐन ॥

तुम दुर्य्योधन शकुनिकराल। कबकीन्हे सुधरम प्रतिपाल॥
भीमसेन कहं जहर खवाय। सांपनसों दीन्हों कटवाय॥
करिकै मंत्र नाश अभिलाखि। इनकहं लाक्षागृहमें राखि॥
निशिमें दाह करायो पूर्व्व। तब कित रह्यो धर्मव्रत गूर्व्व॥
किये सभामें कुकरम जौन। अबनहिं कहतबनत सबतौन॥
तेरहें वर्ष बांटि महि लेन। किये करार न चाहे देन॥
तबकितगयो धरमको काम। अब लखिपरा धरमअभिराम॥
बिरथ बिधनुष अकेलोबार। पार्थसुतहि बधि षट्‌धनुधार॥
अति अनन्द लहिभये अभर्म। अब चाहत करवावो धर्म॥
अब तो वध करिवो यहियाम। है पारथको धर्म ललाम॥
केशवके यह वचन अनूप। सुनि सूतज ह्वै लज्जित रूप॥
फिरि रथपर चढ़ि गहि कोदण्ड। वर्षनलागो बाण उदण्ड॥
भरो क्रोध लाघव दरशाय। दये पार्थ पहं शायक छाय॥
सो लखिके केशव अनुमानि। कहे पार्थसों अवसरजानि॥
दिव्य शरन सों बेधि सडौर। अबयहि शीघ्रवधौ करिगौर॥

दो० केशवके यह वचनसुनि पारथ धनुटंकारि।
वर्षनलागो कर्णपहं दिव्यअस्त्रपण धारि॥
करतभयो ब्रह्मास्त्रको तेहिक्षणकर्ण प्रयोग।
पारथतजिब्रह्मास्त्रतेहि क्षमितकियोकरियोग॥
ताहिक्षमित करितजतभो दइत अस्त्रसोवीर।
वारुणास्त्रसों तेहिसमित कियो कर्ण रणधीर॥
घनतमसों छादितदिशा देखि पार्थ करिकोप।
कियोअस्त्र बायब्य सों बारुणास्त्रको लोप॥

सो० सोलखिकर्णअमान परम दिव्य शरगहतभो।
करि अद्भुत संधान तज्यो देखिडरपे सुमन॥
वज्रसरिससोबाण तासुभुजा तर मधि लगो।
भिदितासों बलवान मोहितभो अर्जुन सुभट॥

चौ० महाराज सुनिये तेहिक्षनमें। रथतेउतरिकर्णगुणि मनमें॥

हर्ष विषाद क्रोधसों पागो । बलकरि सुरथ उठावनलागो ॥
कृष्णचन्द्र सो समय निरेखी । पारथ सों बोले अवरेखी ॥
रथचढ़ि गहै धनुषशर जौलों । कर्णहिं पार्थवधो तुमतौलौं ॥
कृष्णचन्द्रकी वाणी सुनिकै । पारथ मंत्र यथारथ गुनिकै ॥
तीक्ष्ण शर क्षुरप्र करलीन्हो । तासों केतुकाटि द्वै कीन्हो ॥
फिरिअमोघआंजलिकसुशायकागह्योपार्थभटधनुधरनायक॥
चक्र त्रिशूल बज्रसम घोरा । कालदंड सम कठिन कठोरा ॥
प्रलयकालके भानुसमाना । वायुअग्निसम दुसहअमाना ॥
भरिआंगिरसमंत्रकीपुरता । करिअतिअगणितगौरवगुरता ॥
सबदिशि हेरि क्रोधसों रातो । बोलो पार्थ बीररसमातो ॥
अबहनि यहशर गौरवभेखो । कर्णहिं बधिडारत शरदेखो ॥
इमिकहिपारथतेहिशर बरसों । काट्योशीश कर्णकेधरसों ॥
मार्त्तण्ड सम परम प्रभाको । महिपरगिरोशीशकटिताको॥
तदनुगिरो धरतजि बलगारो । सरससुखोचितसुखमाभारो॥
मणिमयभूरिभूषणनिछाजित । महिपरभयोकर्णभटराजित॥

दो० सबके देखत तहंभयो अद्भुत अति अमलीन ।
तेज कर्णकी देहसों कढ़िभो रबि में लीन ॥
इहिविधि कर्णकोवध निरखिकेशव पांडवसर्व ।
लगे बजावन शंख अति आनंद भरे सगर्व ॥
गरजिगरजिसोमक सकलअरुपांचालसमस्त ।
सानंद बजवावन लगे जय दुन्दुभी प्रशस्त ॥
नृपतहं ममदल मधिबढ़ो हाहा धुनि गंभीर ।
भागिचले भटबिकलहवै तजिबल गौरवधीर ॥

इक्यानबेका अध्याय ॥

इन पद्योंके गद्य आशय में ॥

संजयबोलेकि रथपर चढ़ेहुये वासुदेवजी उससेबोले हे कर्णअब
यहांतू धर्मको यादकरताहै आपत्तिमें डूबेहुये नीचलोग बहुधाईश्वर

की निन्दाकिया करतेहैं परंतु अपनेदुष्ट कर्मको नहींकहते १ हेकर्ण जब दुश्शासन शकुनि दुर्य्योधन और तुमने एकवस्त्र रखनेवाली द्रौपदीको सभामें बुलाया तबवहां तुमकोधर्म नहींदिखाईदिया २ जब शकुनीने विद्याकेद्वारा द्यूतकर्म न जाननेवाले राजा युधिष्ठिर कोअधर्मसे सभामें बिजयकिया तबतेरा धर्मकहां गयाथा ३ हेकर्ण वनबासके व्यतीतहोनेपर तेरहवेंबर्षकोभी पाकर आधाराज्य नहीं दिया तबतेरा धर्मकहांगयाथा ४ जबराजा दुर्य्योधनने तेरेमतसे भीमसेनको सर्पोंसे और विषमिले अन्नखवाने से मारना चाहातब तेराधर्म कहांगयाथा५ जबकि बारणावत नगरमें लाक्षागृहमें सोते हुये पांडवोंको अग्निसे जलाया तब तेराधर्म कहांगया था हेकर्ण जब सभामें बैठकर दुश्शासनके आधीनहुई द्रौपदीको हंसातब तेरा धर्मकहांगयाथा ६।७ हेकर्ण जबपूर्वकालमें नीचोंसे दुखित निरपराधिनी द्रौपदीको त्यागकरताथा तबतेरा धर्मकहांगयाथा ८ जब द्रौपदीसे तैंनेयहकुत्सित अभद्र बचनकहेथे कि हेकृष्णापांडवों कानाश होगया और सनातननर्कमेंगये तुम दूसरेपतिकोवरो उस हाथीके समान चलनेवाली कोऐसे दुर्बाक्य कहर करत्यागताथा६ तबतेरा धर्म कहांगयाथा हेकर्ण फिर जब तैंने शकुनीसे मिलकर राज्यका लोभी होकर पांडवोंको बुलाते बालक अभिमन्युको मारा तबतेरा धर्म कहांगयाथा१०। ११ जोयहधर्म तैंनेधारणनहीं किया था तो अब गालवजानेसे क्यालाभहै हेसूत अबचाहै जितना तू धर्म बर्णनकर परन्तु जीतेनहींबचसक्ता जैसे कि द्यूतमें अपनेभाईपुष्कर से हारेहुये पराक्रमी नलने भाईको बिजय करके फिर राज्यको पाया१२।१३उसीप्रकार निर्लोभ होकर सबको जीतकरपांडवोंनेभी अपनी भुजाओंके बलसे राज्यको पाया इन पांडवोंने युद्धमें बड़ेबड़े वृद्धियुक्त शत्रुओंको सोमकों समेत अनेक पराक्रमोंसे मारकर रा-ज्यको पाया और धर्मधारी नरोत्तमों समेत दुष्टात्मा धृतराष्ट्र केपु-त्रोंने पराजयको पाया १४ संजय बोलेकि हे भरतबंशी वासुदेव-जीके ऐसे ऐसे बचनोंको सुनकर कर्णने १५ लज्जासे नीचा शिर

करके कुछ उत्तरनहींदिया और क्रोधसे होठोंको चाट हाथमें धनुष लेकर १६ उस पराक्रमी वेगवानने फिर अर्जुन से युद्ध किया इसके पीछे वासुदेवजी पुरुषोत्तम अर्जुनसे बोले १७ कि हेमहाबली अब इसको दिव्य अस्त्र से छेदकर गिराओ श्रीकृष्णजी के इस बचन कोसुनतेही अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ अर्थात् अर्जुन उन पूर्व बातों को स्मरण करके महाक्रोधित हुआ हे राजा तब तो उस क्रोधभरे अर्जुन के सब शरीरके छिद्रोंसे तेजकी अग्नियां प्रकट हुईं १८।१६ यह बड़ा आश्चर्य्य सा हुआ इसके पीछे कर्ण उसको देखकर २० ब्रह्मास्त्र से बाणोंकी बर्षाकरने लगा फिर रथको पृथ्वी से निकालनेका उपायकिया तब अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र से उसपर बाणोंकी बर्षाकरने लगा २१ फिर पांडवने कर्ण के अस्त्र को अपने अस्त्रसे रोककर दूर किया तब कुन्तीनन्दनने अग्निके अतिप्रिय दूसरे अस्त्रको २२ कर्णको लक्षबनाकर छोड़ा वह अस्त्रतेजसे देदीप्यहुआ फिर कर्णने बारुणास्त्र से उसकी अग्नि को शान्त किया २३ और बादलोंसे सबदिशाओंको अंधकार युक्त करके दिनको अशुभ रूप करदिया फिर बड़ी सावधानीसे अर्जुनने बायव्यास्त्रसे २४ बादलोंको कर्णके देखतेहुये दूर करदिया इसके पीछे सूतके पुत्र नेपांडवके मारनेकी इच्छासे अग्निके समान महा प्रज्वलित उग्र बाणको अपनेहाथमें लिया तदनन्तर अपने पूजित धनुषमें उसबाण के योजितकरने पर २५ । २६ पर्वतबन समुद्रों समेत पृथ्वी कंपायमानहुई और कंकड़ पत्थरोंसे मिलेहुये पवन बड़े वेगसेचले सब दिशा बिदिशा धूलीसे मंडित होगईं २७ और हेभरतवंशी स्वर्गमें देवताओंका हाहाकार उत्पन्नहुआ हे श्रेष्ठ कर्णके हाथमें चढ़ायेहुये उसबाणको देखकर २८ अर्जुनने चित्तमें दुखपाकर बड़ीव्याकुलता कोपाया कर्णकी भुजासे छोड़ाहुआ वह इन्द्रवज्रकी समान तीक्ष्ण नोकवाला बाण अर्जुन की भुजामें आकर ऐसेप्रवेशित होगया जैसे किसर्पअपनी उत्तमबामीमें प्रवेशकर जाताहै २६ युद्धमें वहशत्रुओंका मारनेवाला अर्जुन अत्यन्त घायल होकर बड़ा सुस्त होकर ऐसे

कंपायमानहुआ जैसे कि बड़े भूकम्प होनेसे उत्तम पर्वत कंपायमान होताहै उसअवकाशकोपाकर पृथ्वीमेंगड़ेहुये अपने रथके पहियेको निकालनेकी इच्छासे महारथी कर्णने ३०।३१ रथसे कूदकर अपने दोनों हाथोंसे पहियेको पकड़कर खैंचा परन्तु वह महापराक्रमीभी उसके निकालनेको समर्थ नहींहुआ उसकेपीछे अर्जुनने सचेतहोकर यमराजके दंडकी समानबाणको हाथमेंलिया ३२ अर्थात् महात्मा अर्जुनने आञ्जुलिकनाम बाणको हाथमें लिया इसके पीछे वासुदेवजी अर्जुनसे बोले कि जबतक यहकर्ण रथ पर सवारनहोने पावे तबतक तुम इस अपने बाणसे अपने शत्रुके शिरकोकाटो ३३ इस के पीछे अर्जुनने अपने प्रभुकी आज्ञापाकर महातीव्र प्रज्वलित उग्रक्षुरप्रको लेकर प्रथम तो सूर्यके समान निर्मल अत्यन्त उत्तम हाथी की कक्षा रखनेवाली सुवर्ण हीरे मोतियों से जटित अच्छे कारीगरोंकी बनाईहुई सुन्दररूप स्वर्णमयी ३४।३५ सदैव आपकी सेनाके बिजय का स्थान शत्रुओं को भयभीत करनेवाली स्तुति मान लोकमें सूर्य्यके समान प्रसिद्ध और क्रांतिमें सूर्य्यचन्द्रमा और अग्निकेसमान ३६ लक्ष्मीसे ज्वालामान महारथी कर्ण की ध्वजाको अर्जुनने अत्यन्ततीक्ष्ण सुनहरी पुंखवाले अग्निके समान प्रकाशमान क्षुरप्र सेकाटा ३७ और उस ध्वजा के कटने से कौरवोंके यश अभिमान और सब मनके मनोरथों सहित हृदयटूट गये और महा हाहाकार शब्द हुआ ३८ हेभरतवंशी उससमय जो २ आपके युद्धकर्त्ता शूरबीरथे उस सबोंने और कौरवोंके बड़े २ बीरोंने अर्जुन के हाथसे काटी और गिराई ध्वजाको देखकर कर्णके बिजयी होनेकी आशा छोड़दी ३९ फिर कर्ण के मारने में शीघ्रता करने वाले पांडव अर्जुनने महा इन्द्रके बज्र वा अग्निके दण्डकी समान हजार किरण रखनेवाले सूर्य्य की उत्तम किरण के समान आंजुलिक नाम बाणको अपने तूणीरसे निकला ४० वह मर्मभेदी रुधिर मांससे लिप्त अग्नि सूर्य्य के रूप बड़ोंकेयोग्य मनुष्य घोड़े और हाथियोंके प्राणों का हरनेवाला तीनअर्त्निलम्बा (अर्त्नि नी

किसी नपानेकी संज्ञाहै) छःपक्ष रखनेवालासीधा चलनेवाला महा-
वेगयुक्त ४१ इन्द्रवज्र के समान पराक्रमी कालकाभी काल अग्नि
की समान बड़ा घोर पिनाक धनुष और नारायणजी के सुदर्शनचक्र
की समान भयकारी और जीव मात्रका नाशकरने वालाथा ४२जो
देवगणोंसे भी हटानेके अयोग्यमहात्माओंसे सदैव पूजित देवासुरों
का भी बिजयकरनेवाला था उसको अर्जुनने अपनेहाथमेंलिया४३
युद्धमें उस अर्जुन से पकड़ेहुये उसबाणको देखकर सब जड़ चैतन्य
स्थावर जंगम जीवों समेत सबजगत कंपायमान हुआ अर्जुन को
उस बाण को उठाये हुये देखकर ऋषि लोग पुकारे कि संसार का
कल्याण हो ४४ इसके पीछे उसगांडीव धनुषधारीने उसअचिन्त्य
प्रभाववाले बाणको धनुषमेंलगाया और उत्तम महाअस्त्रसे संयुक्त
कर गांडीव धनुष को खैंचकर शीघ्रता से बोला ४५ यह महाअस्त्र
से संयुक्तबड़ा बाण शत्रुके शरीर और प्राणोंका हरनेवालाहो जो
मैंने तपस्या करीहै वा गुरुओं को प्रसन्न करके यज्ञों को किया है
और शुभचिन्तक मित्रों की आज्ञा को मानाहै ४६ इससत्यता से
सेवित यह कठिन और उग्रबाण मेरे बड़े शत्रु कर्ण के शिरको काटो
यहकहकरअर्जुनने उसघोर उग्रबाणको कर्णके मारनेको छोड़ा ४७
और अत्यन्त प्रसन्न मन अर्जुन यह कहता हुआ कियह अथर्व
नगरसे कृत्याके समान उग्रप्रकाशित और युद्ध में मृत्युसेभी असह्य
रूप बाणमेरी बिजय का करनेवाला हो ४८ कर्ण के मारने का
अभिलाषी सूर्य्य चन्द्रमाके समान प्रभाववाला अर्जुन यह बोला
कि मेराचलायाहुआ बाणकर्णको मारकर यमपुरको भेजे यहकह-
करमारनेके इच्छावान शस्त्रधारी अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्जुनने उस
उत्तम बिजय करनेवाले ४९ सूर्य्यचन्द्रमाके समान प्रकाशित बाण
से चक्रके उठानेमें प्रवृत्त शत्रुको मारनाचाहा तबउस छोड़ेहुये सूर्य्य
की समान प्रकाशमान बाणने आकाश और दिशाओंको अग्निरूप
किया ५० फिरइन्द्रके पुत्र अर्जुनने दिनके समाप्त होनेपर उसबाण
से उसके शिरको ऐसेकाटा जैसेकि महाइन्द्रने अपनेवज्रसे वृत्रासुर

के शिरको काटाथा ५१ इसकेपीछे आंजुलिकसे कटाहुआ उसका शिर गिरपड़ा तदनन्तर उसकाधड़ भी गिरपड़ा वह उदयमान सूर्य्यके समान तेजस्वी आकाशस्थ ऐसेसूर्य्यकेसमानथा५२उसका शिरकटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि रक्त मंडलवाला सूर्य्य अस्ताचल से गिरताहै तदनन्तर इसमहाकर्मीके सदैवसुखकेयोग्य सुन्दर शिरने अपने शरीर के रूपकोवड़े कष्टसेऐसे त्यागकियाजैसे कि बड़ाधनवान अपनेधनसे पूर्णघरको बड़े दुःखों से त्यागता है उस बड़े तेजस्वी कर्ण का उन्नतशरीर बाणों से भिदाहुआ निर्जीव होकरबाणोंके घावोंसेरुधिरगिराताहुआ ऐसेगिरपड़ा५३।५४ जैसे कि बज्रसे घायलहोकर पर्व्वतका बड़ाशिर रक्तधातुसे युक्तजल को छोड़ता गिरताहै उसगिरेहुये कर्णके शरीरसे निकलाहुआतेज आकाशको व्याप्तकरके सूर्य्यमें प्रवेशकरगया ५५ कर्णकेमरनेपर सब शूरबीर युद्धकर्त्ता मनुष्योंने इसआश्चर्य्यको देखा इसकेपीछे अर्जुन के हाथसे गिरायेहुये कर्णको देखकर पांडवोंने ऊंचेस्वरोंसे शंखोंको बजाया ५६ इसी प्रकार प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुन नकुल और सहदेवनेभी शंखोंको बजाया फिर सोमकोंने उसमरे हुयेकर्ण कोपृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर सेनाओं समेतशंखोंके नादकिये ५७ और अत्यन्तप्रसन्न होकरतूरीआदि अनेकबाजोंकोभीबजवाया और बस्त्रोंको हला २ कर अपनी भुजाओं को ठोंका और अत्यन्तप्रसन्न आशीर्वादोंको देतेहुये अर्जुनके पासगये५८और अन्य२शूरलोगभी अर्जुनके हाथसे मराहुआ रथसेपृथ्वीमेंपड़ा हुआकर्णकोदेखकर५९ नृत्यकरनेलगे और परस्पर में गर्जना पूर्व्वक ऐसी बार्त्तालापें करने लगे जैसे कि कठिन बायु के बेगसे घायल पर्व्वतहोते हैं उससमय वहकर्णका पृथ्वीपर पड़ाहुआ शिरऐसाशोभायमानहुआजैसेकि यज्ञ के अन्तमें शान्तहुईअग्नि अथवा जैसेकि अस्ताचलपर पहुंचाहुआ सूर्य्यका बिम्ब होताहै ६० वहसूर्य्यके समान तेजस्वीयुद्धमें पांडवों की सेनाको अपनी बाणरूपी किरणों से अच्छी रीति से तपाकर अन्तको अर्जुनरूपी कालके द्वारा अस्तहोगया ६१ सब अंगों में

बाणोंसे छिदारुधिर में भराहुआ कर्णका शरीर ऐसा प्रकाशितथा जैसेकि सूर्य्य अपनी किरणों से शोभित होताहै ६२ वहकर्णरूपी सूर्य्य किरणों से शत्रुओंकी सेनाको संतप्त करके महापराक्रमी अर्जुन रूपीकाल के बशीभूत होगया ६३ जैसे कि सूर्य्य अस्तहोता हुआ प्रकाशको लेकर जाताहै इसीप्रकार वहबाण कर्णके जीवनको लेकरगया ६४ हेश्रेष्ठ दिवसके अन्तभागमें कर्णके मरनेके दिनकर्ण का शिर शरीर समेत अंजुलिक बाणसे जब युद्धभूमि में गिरातब उस बाणनेभी सेनाओंसे पृथक् अर्जुन के शत्रुका वहशिर शरीर समेत शीघ्रता पूर्व्वक अपने वेग से हरलिया ६५ फिरउस शूर वा बाणोंसे छिदेहुये रुधिर से लिप्तपृथ्वी परगिरकर शयन करनेवाले कर्णकोदेखकर राजा युधिष्ठिर ध्वजावाले रथकीसवारीसे चला६६ और कर्णके मरनेपर भयसे पीड़ित युद्धमें अत्यन्त घायलहुये कौरव बारम्बारअर्जुनकेक्रोधरूपीमुखको देखतेहुयेअचेतहोहोकरभागे६७ इन्द्रके समान कर्म करनेवाले कर्णका शिर जोकि इन्द्रकेही शुभ मुखके समानथा वहऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसेकि दिनके अन्तमें सहस्रांशु सूर्य्यअस्त होजाताहै ६८॥

सो० कर्णअग्निकी शांति युद्धयज्ञके अन्तलखि।
आवतभयोअक्रान्ति सरथशल्यअध्वजबिकल॥
दुर्य्योधनक्षितिपाल कर्णसखाकोबधनिरखि।
तजतनयनजलधार महाराजअतिबिकलभो॥
पूरित मोदमहान करिकरि धनु टंकारअति।
भीमसेनबलवान गरजिगरजिनिरततभयो॥
शल्यनृपतिपहंआय सकलव्यवस्थाकहतभो।
सुनितासुतक्षितिराय रुदनकियोअतिदीनह्वै॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णबधेएकनवतितमोऽध्यायः ९१॥

बानबेका अध्याय॥

संजयबोलेकि अर्जुनके हाथसे कर्णके मरनेपर राजाशल्यसेना-

को भयभीत और पीड़ामानरूप देखकर अपनेसाथी अधिरथीकर्ण के मरनेपरटूटेसामानवाले रथकीसवारीकेद्वारा चलदिया १ अर्थात् राजाशल्य कर्ण और अर्जुनके युद्धमें बाणोंसे घायल और म्लान-चित्त सेनाओंको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर टूटे सामानवाले रथकी सवारीसेचला २ जिसके रथघोड़े और हाथीगिरायेगये वह सेनापति कर्णभी मारागया उससेनाको देखकर अश्रुपातों से पूर्ण महादुखित पीड़ामानरूप दुर्य्योधनने बराबर श्वासोंकोलिया ३ फिर पृथ्वीपरगिरे बाणोंसे छिदेहुये रुधिरमें भरे दैवइच्छासे सूर्य्यके समान प्रतापी पृथ्वीपर नियत कर्णके देखनेके अभिलाषी मनुष्य कर्णको चारोंओरसे घेरेहुये ४ अत्यन्त भयभीत व्याकुल चित्त आश्चर्य्य युक्त होकर शोकसे पीड़ामान हुये इनके सिवाय आपके और सबशूरबीरभी परस्परमें वैसीही दशाको प्राप्तहुये जैसे प्रकार काकि उनका स्वभावथा ५ कौरवलोग बड़ेतेजस्वी कर्णको अर्जुन के हाथसे टूटे कवच भूषण बस्त्र और शस्त्रोंसे रहित देखकर और मृतक सुनकर ऐसेभागे जैसेकि निर्जनबनमें मृतक बैलवाली गौवें भागतीहैं ६ तबभीमसेन भयानक शब्दोंसे गर्जनाकरके पृथ्वी और आकाशको कंपायमान करता भुजाओंको ठोकताहुआ गर्ज २ कर उछला और कर्ण के मरनेपर धृतराष्ट्रके पुत्रोंको भयभीत करता नृत्य करनेलगा ७ हेराजा इसीप्रकार सब सोमक और सृञ्जियोंने शंखोंको बजाकर एक एकसे प्रीतिपूर्व्वक मेल न किया और अन्य क्षत्री लोगभी कर्णके मरनेपर परस्परमें प्रसन्नरूपहुये ८ सूत पुत्र कर्ण अर्जुनसे महाघोर युद्ध करके ऐसे मारागया जैसे कि केसरी सिंहके हाथसे हाथीमाराजाताहै पुरुषोत्तम अर्जुनने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्णकरके शत्रुताके अन्तकोपाया ९ हे राजा फिर व्याकुलचित्त मद्रदेशके राजाशल्यनेभी शीघ्रहीध्वजारहित रथकी सवारीके द्वारा दुर्य्योधनकेपास जाकर अश्रुपात डालकर यह बचन कहा १० कि आपकीसेना परस्परमें सन्मुख होकर गिरेहुये हाथी रथ घोड़े वा बड़े २ शूरबीरोंवाली यमराजके देशकी समान और बड़े २ मनुष्य

और घोड़े पर्वतके शिखरके समान हाथियोंसे मारेगये ११ हे भरतवंशी यह सबतोलड़े औरमरे परन्तु ऐसायुद्ध कोई नहींहुआ जैसाकि कर्ण और अर्जुनकाहुआहै कर्णने सन्मुखहोकर श्रीकृष्ण अर्जुनको और अन्य बड़े२तेरेशत्रुओंको अपने स्वाधीनकिया १२ निश्चयकरके पांडवोंकी रक्षाकरनेवाला दैवही अर्जुनके आधीन होकर कर्मकर्त्ताहै जो पांडवोंको बचा२करहमलोगोंको मारताहैतेरे मनोरथ सिद्धकरनेवाले सबशूरबीर युद्धकरके शत्रुओंकेहाथ सेमारे गये१३हेराजावहउत्तमबीरकुबेरयमराज और इन्द्रकेसमान प्रभाव-वाले और पराक्रम बल औरतेजमेंभी इन्हींदेवताओंके समाननाना प्रकारोंके गुणोंसेयुक्तहोकर अबध्योंके समान तेरे अभीष्टोंके चाहने-वाले राजालोग युद्धमें पांडवोंके हाथसे मारेगये १४ हे भरतवंशी सोतुम अबशोचमतकरो यहहोनहारहै निश्चय समझोकि सदैव किसीको बिजय नहींहोती राजाशल्यके इस बचनको सुनके और अपने अन्यायको बिचार १५ महादुखोचित अचेत और पीड़ित रूपदुर्य्योधनने बारंबार श्वासाओंकोलिया १६ ॥

इति॥

चौ० नृपधृतराष्ट्रबचनयहसुनिकै। संजयसोंबूझेशिरधुनिकै॥
संजय कहौ दशालहिऐसी। ममसुतभूपगहीगतिकैसी॥
संजयकह्योसुनोनरनायक। तेहिपलतोभटभयेअचायक॥
पार्थधनुर्द्धरकर्णहिबधिकै। अबहमसबकहंवधवबरधिकै॥
भीमसेनबिनुबधेनछांड़िहि। कोअससुभटताहिजोआड़िहि॥
यहबिचारअतिशयभयपागे। साहसछोड़िभूरिभटभागे॥
नृपतेहिक्षण ममभटभे तैसे। बूड़ेनावबणिकजनजैसे॥
लखियहदशाभूपदुर्योधन। निजचखजलकोकरिअवरोधन॥
गुणिदुखगहेहारियहिक्षणमें। तोसुतभूपधीरधरिमनमें॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२॥

——※——

तिरानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले कि रुद्ररूपकर्ण और अर्जुनकेयुद्धमें दंडरूप बाणों से मथित और भागेहुये कौरव और सृञ्जियोंकी सेना के लोगोंका रूप कैसाहोगया १ संजयबोलेकि हेराजा सावधान होकरसुनो जैसे-कि युद्धभूमिमेंमनुष्यों के शरीरोंका अत्यन्त घोरनाश वा राजाओं की हानिहोजाने और कर्णकेमरनेपर पांडवोंनेसिंहनादकिये तब आपके पुत्रोंमें बड़ाभारीभय उत्पन्नहुआ २।३ कर्णकेमरनेपर आपके किसी शूरबीरकीभी सेनाओंकीचढ़ाई और शीघ्रपराक्रम करनेके साहसकी बुद्धिनहींहुई ४ जैसे कि नौकारहित अथाहजल में नौकाके टूटनेपर व्यापारीलोग अपारजलके पारहोनेकीइच्छारखनेवाले होतेहैं उसी-प्रकार अर्जुनके हाथसेसेनापति कर्णके मरनेपर आपकेलोग रक्षाके चाहनेवालेहुये ५ हेराजा सूतपुत्रकेमरनेपर भयभीत शस्त्रोंसेघायल आपके अनाथलोग नाथके ऐसे चाहनेवाले हुये जैसे कि सिंहोंसे पीड़ामान मृगटूटी शाखावाली वेल और टूटी डाढ़वाला सर्प रक्षा को चाहतेहैं ६ सायंकालके समय अर्जुनसे पराजित मृतकवीरवाले तीक्ष्णबाणोंसे घायलहोकर लोगहटआये ७ हेराजा कर्णकेमरतेही यंत्रवा कवचोंसेरहित अचेत भयभीत ८ और परस्परमें मर्द्दनकरने वाले और भयसे व्याकुलहोकर देखनेवाले आपकेपुत्र महाभयातुर होकरभागे और यह निश्चय जानकर कि अर्जुन हमारेही सन्मुख आताहै वा भीमसेन हमारेही मारने को सूलाहै ९ यह मानतेहुये महा व्याकुलतासे गिरकर मृतक प्रायहोगये किसी महारथी ने घोड़ोंपर किसीने हाथियोंपर किसीने रथोंपर १० चढ़कर बड़े वेग से भयभीत होकर अपने २ पदातियोंको त्यागकिया हाथियोंसेरथ महारथियों से अश्व सवार ११ और भयसे व्याकुल भागनेवाले घोड़ोंसे पदातियोंकेसमूहमारेगये जैसे कि सर्प और चोरोंसेभरेहुये वन में अपने संग के लोगों से पृथक् होकर मनुष्योंकी जो दशा होतीहै १२ हेराजा उसी प्रकार कर्णके मरनेपर आपके शूरबीरोंकी

भी वहीदशाहुई अथवा जैसेकि मृतक सवारवाले हाथी औरटूटे हाथवाले मनुष्य होतेहैं १३ इसी प्रकार आपके सबमनुष्य संसार भरेकोही अर्जुनरूप देखतेहुये भयसे पीड़ामानहुये भीमसेनके भयसे पीड़ित होकर भागता हुआ सबको देखकर १४ और उन हजारोंशूरोंको भी भागते देखकर दुर्योधन ने बड़ा हाहाकारकरके फिर अपनेसारथीसे यहवचनकहा १५ किअर्जुन सबसेनाके मारनेको मुझ धनुषधारीके होतेहुये नहीं आसक्ताहैइससे तुमलोगअपने अपने घोड़ोंको रोको १६ मैंनिस्संदेह उस युद्धकरनेवाले अर्जुनको अवश्य मारूंगा वह मुझको ऐसे उल्लंघन नहीं करसक्ता है जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्य्याद नहीं उल्लंघन करसक्ताहै १७ अबमैं श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को वा बड़ेअहंकारी भीमसेन को और इसी प्रकार सबबाकी बचेहुये शत्रुओंको मारकर कर्ण केऋण से उद्धार हूंगा १८ सारथीने कौरवोंके राजा दुर्योधनके उस बचनको जो कि शूरऔर श्रेष्ठलोगोंके कहनेके समानथा सुनकर सुबर्णके सामानोंसे आच्छादित घोड़ोंको बड़ेधीरेपनेसे चलायमान किया१९हेश्रेष्ठ फिर रथघोड़े और हाथियोंसे रहित आपके पच्चीस हजार पदाती युद्धके निमित्त नियतहुये २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्नलेचतुरंगिणी सेनासमेत उनपदातियोंकोघेर कर मारा २१ वहसब भीमसेन और धृष्टद्युम्नके सन्मुख होकर युद्ध करनेलगे और किसी २ नेपांडव और धृष्टद्युम्नके नामोंको लेकर पुकारा २२ तब उन सन्मुखआयेहुये पदातियोंसे युद्धमेंभीमसेनक्रोधरूपहुये और बड़ी शीघ्रतासे अपने रथसे उतरहाथमें गदा लेकर युद्धकरने लगा २३ अपने भुजबलमें दृढ़रूप धर्मकोचाहनेवाले रथमें सवार कुन्तीके पुत्रभीमसेनने रथपर चढ़कर उनपदातियोंसेयुद्ध नहींकिया २४ हाथमें दंडधारी यमराजकेसमान भीमसेनने सुवर्णसे मंडित अपनी गदाको हाथमें लेकर पदाती होकर आपकेसब पदातियोंको मारा फिर वह सब पदातीभी अपनेप्यारे जीवनको त्यागकरके २५ युद्धमेंभीमसेनके सन्मुख ऐसेगये जैसेकि

अग्नि में पतंग जातेहैं वह सबलोग युद्धमें क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेनको पाकर २६ अकस्मात ऐसे नाशहोगये जैसेकि जीवों केसमूह मृत्युको देखकर नाशहोजातेहैं फिर बाजकी समान गदा हाथमें लिये घूमनेवाले भीमसेनने २७ आपके पच्चीस हजारपदातियोंको मारा फिर वह महापराक्रमी अतुलबल भीमसेन उस पदातियोंकी सेनाको मारकर २८ धृष्टद्युम्नको आगेकरके वहांपर नियतहुआ २९ और महारथीनकुल सहदेव और सात्यिकी शकुनी केसन्मुखहुयेऔर बड़े प्रसन्नचित्त होकर दुर्योधनकी सेनाको मारते हुये बड़ी शीघ्रतासे सन्मुख दौड़े ३० अर्थात् वह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बहुतसे सवारोंको मारकर शीघ्रतासे उसके सन्मुखदौड़े और बड़ा युद्धहुआ ३१ हेप्रभुफिर अर्जुननेभी आपकी रथवाली सेनाके सन्मुख जाकर तीनोंलोकोंमें प्रसिद्ध अपने गांडीव धनुषको टंकारा आपके युद्धकर्त्ता शूरवीर उसरथको जिसमेंकि श्रीकृष्णजी सारथी और श्वेतघोड़ोंसे युक्तथादेखकर और युद्धकरनेवाले अर्जुन कोभी देखकर भागे ३३ रथोंसे रहित और बाणों से पीड़ामान पच्चीसहजार पदातियोंने कालको पाया ३४ पांचालों का महारथी अत्यन्त साहसी पुरुषोत्तम श्रीमान धृष्टद्युम्न उनको मारकर ३५ थोड़ेही कालमें भीमसेन को आगे करके दिखाई दिया ३६ तबआपके शूरबीर उस कपोत बर्ण घोड़े और कोबिदार रूपी ध्वजाधारी धृष्टद्युम्नको युद्धमें देखकर भयभीत होकर भागे ३७ और यशस्वी नकुल और सहदेव उस शीघ्रअस्त्रोंके चलाने वाले गांधार पतिको स्मरण करके सात्विकी समेत थोड़ीही देरमें दृष्टिपड़े ३८ हेश्रेष्ठ इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदीके पुत्रोंने आपकी बड़ी सेनाको मारकरबड़े शंखोंको बजाया ३९ फिर वह आपके शूरवीरों को मुखमोड़ कर भागते हुये देखकर ऐसे सन्मुख आकर बर्त्तमान हुये जैसे कि बैलोंको बिजय करकेक्रोधयुक्तबैल बर्त्तमान होतेहैं ४० हेराजा इसके पीछे महा पराक्रमी पांडव अर्जुन आपकी बाकीबची हुई सेनाको देखकर क्रोधयुक्त हुआ ४१ और आपकी रथकी सेना

केसन्मुख वर्त्तमान हुआ और अपने विख्यात गांडीव धनुषको सन्नद्धकिया ४२ बाणोंकी वर्षाकरके उससेनाको ढकदिया फिर अन्धकार होजाने पर कुछदिखाई नहींदिया ४३ हेमहाराज लोककेहत तेज होने और पृथ्वीको धूलयुक्त होनेपर आपकेसब शूरबीरभयभीत होकर भागे ४४ हेराजा सेनाके छिन्न भिन्न होनेपर आपका पुत्र दुर्य्योधन सन्मुख आनेवाले शत्रुओंकी ओरको दौड़ा ४५ इसकेपीछे दुर्य्योधन ने सब पांडवोंको युद्धके लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हेभरतर्षभ पूर्व्वसमय में राजा बलिने देवताओं को बुलाया था ४६ नानाप्रकार के शस्त्रों से युक्त क्रोधयुक्त बारंबार घुड़कीदेते और गर्जना करते हुये एकसाथही उसके सन्मुखगये ४७ इसके पीछे वहां भयसे अव्याकुलचित्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने युद्धमें अपने तीक्ष्ण बाणोंसे हजारों सेनाके लोगोंको मारा ४८ औरसबओरको पांडवों की सेनासे युद्धकरने लगा उस स्थानपर हमने आपके पुत्र की अपूर्व्व बीरताको देखा ४९ कि अकेलाही उनसब इकट्ठे होने वालेपांडवोंसे युद्धकरने लगा इसकेपीछे उसमहात्मा ने अपनीसेना को अत्यन्त दुखीदेखा ५० हेराजा उससमय आपका बुद्धिमान पुत्र उन दुखी शूरबीरोंको खड़ा करके उनको प्रसन्न करताहुआ यहवचन बोला ५१ कि मैं उसदेशको नहीं देखताहूं जहांपर तुम भयसे पीड़ित होकर जाओ और वहां पांडवोंके हाथसे बचने पाओतुमको भागनेसे क्यालाभ है ५२ उनकी सेना बहुतकम रहगईहै औरश्रीकृष्ण अर्जुन अत्यन्त घायलहैं इससेमैं उन सबको निश्चय मारूंगा अब मेरी पूरी बिजयहै ५३ जोतुम भागोगे यापृथक् होगे तो पांडव लोग अपराधी जानकर तुमलोगोंको पीछाकरके मारेंगे इससेहमारा और तुम्हारा युद्धमेंही मरना श्रेष्ठहै ५४ क्षत्रीधर्मसे युद्धमें लड़नेवालोंकी मृत्युका होना सुखरूपहै क्योंकि मरने केदुःखोंको नहीं भोगता है शीघ्रही मरकर अविनाशी गति को पाताहै ५५ तुमजितनेक्षत्री अब इकट्ठे हुयेहो सब चित्तलगाकर सुनो कि जन्मनाशकरनेवाला महाबली यमराजही भयभीत लोगोंको मारताहै ५६ तोफिर

मेरे समान क्षत्री व्रतकारखनेवाला कौन अज्ञानीयुद्धको नहींकरेगा देखो भागनेसे एकतो क्रोधरूप हमारे शत्रुभीमसेनके आधीन होगे दूसरे इस संसार में अपकीर्त्ति पाकर स्वर्गवासी न होगे इस हेतु से तुमलोगोंको अपने पूर्वजोंके कियेहुये धर्मका त्यागना उचितनहीं है भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्री का धर्म नहीं है ५८ हे कौरव लोगो युद्धसे बढ़कर क्षत्रियों का कोई उत्तम धर्म नहीं है हे शूरबीरो जो मरभी जाओगे तो थोड़ेही दिनों में शीघ्रलोकों को भोगो गे ५९ आप के पुत्र के इस रीति के बचनों को सुनकर भी सेनाकेलोग उसबचनका बिचारन करसके सबदिशाओंकोभागे ६०

चौ० बिचले भटन टेरि अनखायो । क्षात्रि धर्म बहुभांति सुनायो ॥
सो सुनि ते सब फिरे न कैसे । रुकैन बहुत सरित जल जैसे ॥
सो लखितो सुत सुभट अतोलो । सुहित सारथी सों इमि बोलो ॥
संशय त्यागि चपल करिघोरे । सादर चलो पार्थ के धोरे ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकौरवसेनपलायिनेत्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसकेपीछे आपके पुत्रसे युद्धहुआ और सेनाको देखकर अज्ञानचित्त रूपान्तर चेष्टाकिये मद्रदेश के राजा शल्यने दुर्य्योधन से यहबचन कहा १ कि मनुष्य हाथी घोड़े और हजारों पर्व्वताकार शूरबीर बारंबार बाणोंसे घायलहोकर पराजितटूटेअंग पृथ्वीपर गिरेहुओं से और मरेहुये हाथियों से व्याप्त इसघोर उग्र रूपयुद्धभूमिकोदेखो २ इनव्याकुल निर्जीव टूटेकवचशस्त्रढालखड्ग वाले शूरबीरोंसे व्याप्त पृथ्वीऐसी दिखाई देती है जैसे कि अत्यन्त टूटेपत्थर बड़े २ वृक्ष और औषधीवाले बज्रसे ताड़ित पहाड़ोंसेव्याप्त होकर दीखतीहै ३ टूटेघटे अंकुश तोमर ध्वजा और सुवर्णके जालों सेअलंकृत रुधिर से लिप्तबाणोंसे टूटेअंग श्वासालेनेवाले रुधिरको बमनकरनेवाले पीड़ामान पड़ेहुये घोड़ोंसे भीभरी हुईपृथ्वीकोदेखो कम्पितशब्दोंको करते भग्ननेत्र पृथ्वीको काटनेवाले महादुखीगर्जते

हुयेहाथीघोड़े शूरवीर मनुष्य औरसेनाहोंसे घायल वीरोंके समूहोंसे युक्त इसयुद्ध भूमिको देखो ५ निश्चय करके इसघोरयुद्धमें यह पृथ्वी मन्द आशावाले युद्धकर्त्ताओं से वैतरनीनदी के समान शोभायमान हो-रहीहै ६ कटेहुये हाथी कंपायमान और टूटेहुयेदांत रुधिरकी वमन करनेवालेफड़कतेपीड़ित शब्दोंसे दुखभोगते पृथ्वीपर पड़ेहुये मनुष्य वा हाथियोंके शरीरोंसे पृथ्वी पूर्णहोरहीहै ७ टूटेपहिये, वान, जुये, योकर, वा छिदेहुये तूणीर पताका ध्वजा अथवा सुवर्णके जालोंसे युक्त अत्यन्तटूटे हुये बड़े २ रथोंके समूहोंसे ऐसीभरी हुईहै जैसेकि बादलोंसे भरीहुई होतीहै ८ जिनके कवच स्वर्ण भूषण और शस्त्र टूटकर गिरपड़े उनसन्मुख होकर शत्रुओंको हाथसे मरे उत्तमनामी हाथीघोड़े और शूरवीर लड़ने वालोंसे पृथ्वीऐसी व्याप्तहै जैसेकि शान्तरूप अग्नियोंसे व्याप्तहोतीहै ९ बाणों के प्रहारों से घायल देखनेवाले और गिरेहुये हजारों पराक्रमियोंसे ऐसी संयुक्त है जैसे-कि रात्रिके समय स्वर्गसे गिरेहुये अत्यन्त प्रकाशित स्वच्छ और देदीप्यमान ग्रहोंसे संयुक्तपृथ्वी और आकाश होते हैं १० कर्ण और अर्जुनके बाणोंसे टूटेअंग अचेतरूप बारंवार श्वासें लेने वाले मृतकहुये कौरव और सृञ्जयी वीरोंसे पृथ्वी उस प्रकारकी होगई जैसेकिसमीपवर्त्ती प्रज्वलित अग्नियोंके समूहोंसे व्याप्तहोतीहै ११ कर्ण और अर्जुनकी भुजाओंसे छोड़हुयेबाण हाथी घोड़े और मनु-ष्योंके शरीरोंको चीर प्राणोंको निकालकर शीघ्रतासे ऐसे पृथ्वीपर गये जैसेकि झुकेहुये बड़े २ सर्प बिबरोंमें घुसते हैं १२ हे नरेन्द्र अर्जुन और कर्णके बाणोंसे युद्धमें घायल और मरेहुये मनुष्य और हाथियोंसे पृथ्वी अगम्य होगई १३ शूरवीर वा उत्तम धनुष आदि शस्त्रोंसे भुजबल करके अच्छे मथेहुये सुन्दर अलंकृतरथ और पड़े हुये योक्तर टूटेबंधन चूर्णित रथचक्र अंकुश त्रिवेणु और जिनसेशस्त्र निशंग बंधन जुदेहोगये वा अनुकर्ष टूटे उनमणि सुवर्णसे अलंकृत खंडित नीड़वाले रथोंसे ऐसी आच्छादित होगई जैसेकि शरदऋतु के बादलोंसे आकाश व्याप्त होता है १५ जिनके स्वामी मारे गये

और शीघ्रगामी घोड़े जिनको खैंचतेथे उन सुन्दर अलंकृत राज- रथ हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूहों से शीघ्र चलनेवाले लोग अनेक प्रकारसे चूर्ण होगये १६ स्वर्णनिर्मित वस्त्रधारी परिघफरसे तीक्ष्णशूल मुद्गर मियान से निकलेहुये सुन्दर खड्ग और स्वर्णमयी बस्त्रोंसे मढ़ीहुई गदा गिरपड़ीं १७ सुवर्ण के बाजूबंदों से अलंकृत धनुष स्वर्णपुंखी बाण पीतरंगके निर्मल मियानसे जुदे दुधारा खड्ग उत्तम दण्डवाले प्रास १८ छत्र बाल व्यजनशंख टूटी और बिखरी हुईमाला कुथा पताका वस्त्र आभूषण किरीट माला और उत्तम मु- कुट १६ हेराजा बहुतसे गिरे और बिनागिरे हुये मूंगे मोतीवाले हार आपीड़ केयूर उत्तमबाजूबन्द और स्वर्ण सूत्रोंसे पुहेहुये गुलू- बन्द और निष्कनाम आभूषणथे २० उत्तम मणिहीरा सुवर्णमोती छोटेबड़े रत्न औरमंगलीकबस्तु बड़ेसुख भोगनेकेयोग्य शरीरचन्द्र- माके समान मुखरखने वाले शिर २१ शरीरके भोगनेवाले सामान और यथेप्सित सुखोंको त्यागकरके अपनेधर्मकी बड़ी निष्ठाकोपाकर लोकोंको कीर्तिसे व्याप्त करके वहसब युद्धकर्त्ता शूरवीरचलेगये २२ हेबड़ाई देनेवाले राजादुर्य्योधन लौटजाओ सेनाके मनुष्य भी अ- पने २ डेरोंमें जायँ हेप्रभु अब सूर्य्यभी अस्त होताहै अब चलनाही योग्यहै हेनरेन्द्र दुर्य्योधन इस स्थान में तुम्हीं कारणरूपहो २३ शोकसे दुखीमन राजाशल्य हायकर्ण हायकर्ण इसरीति से कहनेवा- ले पीड़ामान अत्यन्त अचेत अश्रुपात युक्त दुर्य्योधन से यह वचन कहकर मौन होगया २४ फिर अश्वत्थामा आदिक वह सबराजा लोग अर्जुनकी यशकीर्तिवाली प्रज्वलित ध्वजा को बारंबार देखते और दुर्य्योधन को आश्वसन करते हुये चले २५ हेराजा इसीप्रकार मनुष्य घोड़े हाथी और मनुष्योंके शरीरोंसे उत्पन्न हुये रुधिर से सींचीहुई लाल पोशाक माला आदिस्वर्ण भूषण धारी निर्लज्जवेश्या- ओंके समान रुधिरसे आच्छादित भूमिको देखकर देवलोकके नि- मित्त सन्यास धारण करनेवाले सब कौरव उसअत्यन्त शोभायमान रुद्र मुहूर्त्त में नियत नहीं हुये२६।२७ हे राजावह मारनेसेदुःखीहाय

कर्ण हायकर्णयही उच्चारण करते हुये शीघ्रही अपनेडेरों मेंगये२८ और युद्धमें गांडीव धनुष से छोड़ सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार-वाले रुधिर भरे पैनेबाणोंसे युक्त शरीरवाला मृतक कर्णभी किरण मंडल रखनेवाले सूर्य्य के समान प्रकाशमान था २६ भक्तों पर दया करनेवाले रक्तवर्ण भगवान सूर्य्य कर्ण के रुधिर भरे शरीर कोअपनी किरणोंसे स्पर्श करके स्नान करनेके निमित्त पश्चिमीय समुद्रको जातेहैं३० और देवता ऋषियोंकेसमूहभी इसका शोचकरते हुये यात्रायुक्त होकर अपने २ स्थानोंको जाते हैं जीवोंके समूह भी विचार करते सुख पूर्ब्बक आकाश और पृथ्वी को गये ३१ तब कौरवीयबीरोंमें श्रेष्ठ अर्जुन और कर्णके सबजीवों के महा भयकारी घोरयुद्ध को देखकर बड़े आश्चर्य्य युक्त होकर उनकी प्रशंसाओंको करते हुये मनुष्य भी चले ३२ बाणोंसे टूटे कवच रुधिरसे सींचेहुये वस्त्रोंसे युक्त निर्जीव कर्णको भी शोभानहीं छोड़ती है संतप्त सुवर्ण अग्नि और सूर्य्यके समान प्रकाशमान ३३ उस शूरवीर को सब जीवोंने जीवतेहुयेके समानही माना हेमहाराज युद्धमें उस मरेहुये कर्णसे भी ३४ युद्धकर्त्ता लोग सब ओरसे ऐसे भयभीत हुये जैसे कि दूसरे मृग सिंहसे भयभीत होतेहैं क्योंकि वह मृतक हुआ भी पुरुषोत्तम जीवतेके समान दिखाई देताथा ३५ इस निमित्त कि मरनेपर भी उसमहात्मा के रूपमें अन्तर नहीं हुआ इसी से उस सुन्दर पोशाक मुकुट और ग्रीवा धारण करनेवाले वीर पुरुष को जीवतेकेही समानमाना ३६ कर्णका वहमुख पूर्णचन्द्रमाके समान प्रकाशमान नाना भूषण तप्तकांचनमयी बाजूबंद धारणकिये महा-प्रकाशित होकर शोभासे युक्त ३७। ३८ वह सूर्य्यका पुत्र ऐसेमृ-तक होकर सोता है जैसे कि अंकुर रखनेवाला वृक्ष उत्तमसूर्य्य के समान प्रकाशमानहो ३६ वह पुरुषोत्तम कर्ण अर्जुन के शायकरू-पी जलसे ऐसे शान्त होगया जैसे कि प्रकाशमान देदीप्य अग्नि जलको पाकर शान्त होजाता है ४० इसीप्रकार कर्णरूप अग्नि युद्धमें अर्जुन रूप बादलसे शान्त कीहुई पृथ्वीपर उत्तम युद्धमेंअपने

प्रकाशित यशकोप्राप्त करके ४१बाणोंकी वर्षाको छोड़दशोंदिशाओं को तपाती हुई अर्जुन के तेजसे शान्तहुई ४२ वह सूर्य्य का पुत्र कर्णअस्त्रोंके तेजसे सबपांडव और पांचालोंको तपाकरबाणोंकोवर्षा से शत्रुओंकी सेनाको व्यथितकर ४३ श्रीमान सूर्य्य के समानसब संसारको तपाताहुआ पुत्र और सवारी समेत मारागया ४४ यह कर्ण आकांक्षा करनेवाले मनुष्य और पक्षियोंका कल्पवृक्ष था जो कि आकांक्षा करनेवाले सत्पुरुषोंको सदैव यथेप्सित दानदियाकरताथा कभी किसी प्रकारकेभी याचना करनेवाले से यह वस्तुनहीं है इस बचनको नहीं कहा ४५ ऐसा सत्पुरुष कर्ण द्वैरथ युद्ध में मारागया जिस महात्माका सबधन ब्राह्मणोंकेही देनेकेयोग्यहुआ जिसका सबजीवन ब्राह्मणोंको किसी वस्तुका अदेयरूपनहींहुआ ४६ सदैव स्त्रियोंके प्यारेदानी अर्जुन के अस्त्रसे मरे हुये उसमहारथी ने परमगति को पाया जिसके आश्रय में होकर आप के पुत्रने शत्रुताकरीथी ४७ वह आपके पुत्रोंको विजयकीआशा प्रसन्नता और रक्षाको साथ लेकर स्वर्गकोगया कर्णके मरनेपरनदियों ने चलना बन्दकिया औरसब संसारका प्रकाशक सूर्य्यभी अस्तहो गया ४८ तिर्य्यग् ग्रह और अग्नि सूर्य्यकेवर्ण समानहुये औरचन्द्रमाका पुत्र बुध उदयहोनेके निमित्त तिरछाहोगया आकाश चलायमानहुआ पृथ्वी शब्दायमानहुई सूक्ष्मसहाभयकारी बायुचलीदिशा ज्वलित रूप हुई और महा समुद्र धूम और शब्द से युक्त होकर चलायमानहुआ ४९ काननों समेत सबपर्व्वतोंके समूह कंपायमान हुये और सब जीवोंके समूह पीड़ामानहुये और हे राजा बृहस्पति जी रोहिणीको घेरकरचन्द्रमा और सूर्य्यके समान हुये ५० कर्णके मरने पर बिदिशा भी प्रज्वलित होगई आकाश अन्धकारसे युक्त हुआ अग्निके समान प्रकाशमान उल्कापातहुये राक्षस भी अत्यन्त प्रसन्न हुये ५१ जब अर्जुनने चन्द्रमुखवाले प्रकाशमान कर्णके शिर को अपने क्षुरसे काटा तब आकाशमें देवता लोग अकस्मात हाय हाय ऐसा शब्द करनेलगे ५२ वह अर्जुन देव गन्धर्व औरमनुष्यों

से पूजित अपने शत्रु कर्ण को युद्ध में मारकर बड़े तेजसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि पूर्वसमय में वृत्रासुरको मारकर इन्द्र शोभायमान हुआथा ५३ इसके पीछे महाइन्द्र के समान पराक्रम करनेवाले वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन बादलों के समूह के समान शब्दायमान आकाशस्थ मध्याह्न के सूर्यके समान प्रकाशितपताका और भयानक शब्दवाली ध्वजा रखनेवाले हिमचन्द्रमा और शंखकेसमानश्वेत उज्ज्वल महाइन्द्र रथके तुल्य अनुपमसवारी में बैठेहुये युद्धमें बिष्णु और इन्द्रके समान शोभायमानहुये अर्थात् सुवर्ण मणि हीरे मोती और मूंगोंसे अलंकृत अग्नि और सूर्य्यकेसमान तेजस्वी दोनों नरोत्तम केशवजी और पांडवअर्जुनथे इसकेपीछे उन गरुड़ध्वज और बानरध्वज श्रीकृष्ण और अर्जुन ने हठ करके धनुष प्रत्यंचा और बाणोंके शब्दों से शत्रुओंको प्रभा रहित करके ५४।५५।५६।५७ कौरवोंको उत्तमबाणोंसे ढककर उन प्रसन्नचित्त अतुल प्रभाववाले शत्रुओंके मनको संदेह करनेवाले नरोत्तमोंने ५८ सुवर्ण जालसे युक्त बड़े शब्दवाले उत्तम शंखोंको हाथमेंलेकर मुख से चुम्बनकर ५९ अकस्मात् अपने मुखोंसे बजाया उन पांचजन्य और देवदत्तनाम दोनोंशंखोंके शब्दोंने ६० पृथ्वी दिशा बिदिशाओं समेत आकाशको शब्दायमानकिया हे राजाओंमें श्रेष्ठ अर्जुन और माधवजीके उन शंखों के शब्दोंसे सब कौरव लोग भयभीत हुये ६१ शंखोंके शब्दोंसे बनपर्व्वतनदी और पर्व्वतोंकी कन्दराओं को शब्दायमान करनेवाले उनदोनों पुरुषोत्तमोंने आपकेबेटेकी सेनाको भयभीत करके राजा युधिष्ठिर को प्रसन्नकिया ६२ हे भरतवंशी इसके अनन्तर उनके शंखोंके शब्दोंको सुनकर सबकौरवलोग भरतबंशियोंके राजा दुर्य्योधनको और राजामद्र को छोड़कर बड़ेवेग से भागे ६३ तब जीवोंके भागनेवाले बड़ेसमूहोंने उसबड़े युद्धमेंबड़े तेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्जुनको ऐसेप्रसन्न किया जैसे कि उदयहोने वाले दोसूर्य्यको सब प्रसन्न करतेहैं ६४ उसयुद्धमें कर्णके बाणोंसे चितेहुये शत्रुओंके संतप्त करनेवाले दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ऐसे

प्रकाशमानहुये जैसे कि किरण समूहोंके रखनेवाले निर्मलचन्द्रमा और सूर्य्य उदयहोकर अंधकारको दूरकरकेप्रकाशमान होतेहैं वह अनुपम पराक्रमी दोनों ईश्वर उनबाण समूहोंको छोड़कर मित्रों को साथमें लियेहुये सुखपूर्व्वक अपनेडेरोंमें ऐसेपहुंचे जैसेकि सदस्यों के बुलाये हुये बिष्णु और इन्द्रजातेहैं ६५।६६ तबकर्णके मरनेपर उसबड़े युद्धमें वहदोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन देवता गन्धर्व मनुष्य चारण महर्षि यक्ष राक्षस और महासर्पोंकेभी अपूर्व्व उत्तम बिजय के आशीर्वादोंसे पूजित हुये ६७ फिर वह योग्य आशीर्वादोंसे युक्त दोनोंअपने गुणोंसे स्तुतिमान होकर अपने मित्रोंसमेत ऐसे प्रसन्न हुये जैसे कि राजा बलिको बिजय करके देवगणों समेत इन्द्र और बिष्णुप्रसन्नहुयेथे ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधानन्तरसर्वस्तूयमानश्रीकृष्णार्जुनचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबे का अध्याय ॥

संजयबोले कि हे राजाकर्णके मरनेपर भयसेपीड़ितहो सबदिशा ओंको देखतेहुये कौरवलोगभागे १ अर्थात् घोरयुद्धमेंअर्जुनके हाथ सेकर्णको मराहुआ देखकरआपके सबशूरवीर घायल और भयभीत होकर दिशाओंमें छिन्नभिन्नहुये २ इसकेपीछे चारोंओरसे रोके हुये व्याकुल और महादुःखी होकर आपके उनसब शूरोंने बिश्रामकिया हेराजाइसकेपीछे आपकेपुत्र दुर्य्योधननेउनसबकेउसमतको जानकर शल्यके मतसे बिश्रामकिया ३।४ हेभरतवंशीआपके शीघ्रगामी रथ और शेषबचीहुई नारायणी सेनासेयुक्त कृतवर्मा डेरेकी ओरको चला ५ और हजारों गांधारदेशियोंसेव्याप्तशकुनिभी कर्णकोमृतक देखकर डेरेकी ओरचला ६ हे भरतबंशी राजाधृतराष्ट्रशारद्वत कृपाचार्य्यजीभी बड़े २ बादलोंके समान हाथियोंकीसेनाको साथलिये डेरेकी ओरको चले ७ फिर बड़े शूरबीर अश्वत्थामा बारंबार श्वास लेते पांडवोंकी बिजयको देखकर डेरेकीओरकोचले ८ हेराजाशेष

बचीहुई संसप्तकोंकी सेनाको साथलियेहुये सुशर्माभी भयसे पीड़ित चारों ओरको देखताहुआ चलदिया ९ फिर जिसके सब बांधव मारे गये वह शोकमें डूबाहुआ अप्रसन्न चित्त राजा दुर्य्योधनभी बड़ी २ चिन्ताओंको करताहुआ चलदिया १० रथियोंमें श्रेष्ठशल्यभी दशों दिशाओंको देखताटूटी ध्वजावाले रथकी सवारी से डेरेकी ओरको चला ११ इसकेपीछे भरतवंशियोंके बहुतसे अन्य महारथीभी भय से पीड़ित लज्जा से युक्त उदासचित्त होकर भागे १२ इसी प्रकार रुधिर पटकते ब्याकुल कंपित महादुःखी सबकौरव कर्णकोगिरा हुआ देखकरभागे१३ हेकौरव्य कोई कौरवतो महारथीअर्जुनकी और कोई कर्णकी प्रशंसा करतेहुये दिशाओंको भागे १४ फिरवहांवड़े युद्धमें आपके हजारों शूरबीरोंके मध्यमें कोई ऐसा मनुष्य नहींरहा जिसनेकि फिर युद्धकेनिमित्त चित्त कियाहो १५ हे महाराज कर्णके मरनेसे कौरव लोग जीवन राज्य और स्त्रीकी आशासेभी निराश होगये १६ दुःख शोकसे युक्त आपके समर्थ पुत्रने बड़े २ उपायोंसे उनको इकट्ठाकरके निवासके लिये चित्तकिया फिर वह रूपांतर दशावाले महारथी शूरबीर उसकी आज्ञाको शिरसे अंगीकारकरके ठहरे १७।१८

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकौरवपलायिनेपंचनवतितमोऽध्यायः ९५॥

छानबेका अध्याय॥

संजयबोले कि इसप्रकारसे कर्णके गिराने और शत्रुओंकीसेना के भागनेपर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे प्रीति पूर्वक मिलकर बड़ेआनन्द से इसबचनको बोले १ हे अर्जुन जैसे इन्द्रके हाथसे वृत्रासुरमारा गया वैसेही तेरे हाथसे कर्ण मारागया सबमनुष्य कर्णऔर वृत्रासुरके घोर मरणको सदैवकहैंगे २ युद्धमें बड़ा तेजस्वी वृत्रासुर जैसे बज्रसे मारागया उसीप्रकार तुम्हारे धनुषसे छूटेहुये तीक्ष्ण बाणोंसे कर्ण मारागया ३ हेकुन्तीके पुत्र लोकमेंविख्यात यशकरनेवाले अर्जुन तेरे इसपराक्रमको उस बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिरसे

वर्णनकरें ४ युद्धमें कर्णके मारनेको बहुतदिनसे कहनेवाले धर्मराज राजा युधिष्ठिरसे यह बचनकहकर तुम उसकेऋणसेअऋणहोगे ५ तेरे और कर्ण के बड़ेघोर और अपूर्व युद्धहोनेपर धर्मनन्दन राजा युधिष्ठिर पूर्वही युद्धभूमि देखनेको आये ६ फिर अत्यन्त घायल होनेसे युद्धमेंनियत होनेको समर्थ न होकरवह पुरुषोत्तम अपनेडेरेमें पहुंचकर नियतहुये ७ अर्जुनसे बहुतअच्छा कहेहुये बड़े सावधान यादवेन्द्र केशवजीने उसउत्तमरथीके श्रेष्ठ रथको लौटाया ८ श्रीकृष्णजी अर्जुनसे इसप्रकारकी बात कहकर सेनाके मनुष्योंसे बोले कि हेउत्तम शूरबीरलोगो तुम सावधानहोकर शत्रुओंके सन्मुखहोकरलड़ो तुम्हारा कल्याणहोगा ६ गोबिन्दजी,धृष्टद्युम्न, युधामन्यु नकुल,सहदेव,भीमसेन और युयुधानसे यहबचनबोले किहमजब तक अर्जुनके हाथसेकर्णका बध राजायुधिष्ठिरसे बर्णनकरें१०।११ तब तक आप सबलोगों को राजाओं समेत निवास करनायोग्य है तब उनशूरोंकी आज्ञा पाकर गोबिन्दजी अर्जुनको साथ लेकर डेरेको गये १२ और राजेन्द्रराजा युधिष्ठिरको सुवर्ण रचित अच्छे शयन स्थानमें सोताहुआदेखा १३तब उन दोनोंश्रीकृष्ण और अर्जुन ने राजाके दोनों चरणोंको स्पर्शकिया उससमय युधिष्ठिरने उन दोनोंको प्रसन्नदेखकर बड़ी प्रसन्नताके अश्रुपातोंको डाला१४और कर्णको मृतक मानकर महाबाहु शत्रुंजय राजा युधिष्ठिर उठकर बारंबार १५ दोनों अर्जुन और वासुदेवजी को अत्यन्त प्रेमसे मिले फिरयादवोंमें श्रेष्ठ बासुदेवजीने जैसे कि अर्जुनने युद्धकरके उसकर्णकाबधकिया वह सब बृत्तांत उससे बर्णनकिया फिर मन्द मुसकानकरते अबिनाशी श्रीकृष्णजी हाथ जोड़कर अजात शत्रु राजायुधिष्ठिरसे यह बचन बोले हे राजा प्रारब्ध से गांडीवधनुषधारी अर्जुन भीमसेन १६।१७ नकुल सहदेव और तुम कुशल पूर्वक हो अब तुम इन बीरों के नाश करनेवाले और रोमांच खड़े करनेवाले महाघोर युद्धसे निवृत्तहुये १८।१६ हे पांडव अबतू बड़ी शीघ्रता से आगे करने वाले कर्मों को करो हे राजा सूतका

पुत्र महारथी कर्ण मारागया २० हे राजेन्द्र तुम अपने प्रारब्धसे बिजय करतेहो और भाग्यसेही वृद्धि पातेहो और जो नीचपापात्मा पुरुष द्यूत में हारी हुई द्रौपदी को हंसाथा २१ उस सूतके पुत्र के रुधिर को अब पृथ्वीपान कररही है हे कौरवोंमें श्रेष्ठ यह तेराशत्रु बाणों से भरे हुये शरीर से पृथ्वीपर पड़ा हुआ सोता है २२ हे पुरुषोत्तम उस बहुत बाणोंसे टूटे अंगवाले कर्णको देखो हे मृतक शत्रुवाले महाबाहो तुमइसपृथ्वीपर राज्यकरो और हमसमेत साव धान होकर उत्तम भोगोंको भोगो २३ संजय बोले कि तब अत्यन्त प्रसन्न चित्त धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने इन बचनों को सुनकर उन महात्मा केशवजीसे कहा २४ हे महाबाहु आपने जो प्रारब्ध-से हुआ यह वचन कहासो हे महाबाहो देवकीनन्दन यह बात आपमें कुछ अपूर्व्व नहींहै आपकी यहयोग्यता सदैव से चली आई है २५ उपाय करनेवाले अर्जुनने तुमसारथीके साथहोकर उसको मारा हे महाबाहो तुम्हारी स्वच्छ बुद्धि से उत्पन्न हुई वह बात आश्चर्य्यकी नहींहै यहकहकर वहधर्मधारी कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर बाजूबन्द रखनेवाली दक्षिणभुजाको पकड़कर २६ । २७ उनदोनों अर्जुन और केशवजी से बोले कि नारदजीने तुमदोनों को धर्मात्मा महात्मा और प्राचीन ऋषियोंमें श्रेष्ठ नरनारायण रूप देवता मुझ से बर्णन कियाहै और बुद्धिमान् सिद्धान्तोंके ज्ञाता व्यासदेव जीने भी इस महाभाग कथाको बारंबार मुझसे कहा है हे कृष्णजी इस पांडव अर्जुनने आपकी कृपासे २८ । २९ सन्मुख होकर शत्रुओं कोबिजय किया और किसी स्थानपर मुखनहींफेरा निश्चय हमारी हीबिजयहै हमारी पराजय नहींहोगी ३० जबआपनेअर्जुनकी रथ-वानी अंगीकार करी हे गोबिन्दजी आपकी बुद्धि से कर्णके मरनेपर भीष्म,द्रोणाचार्य्य,कर्ण, महात्मा गौतम,कृपाचार्य्य, ३१ और अन्य २ बड़े २ शूरबीर जोउनके साथमें आगे पीछे थे वहसब हरप्रकार से मारेगये ३२ तब पुरुषोत्तम महाराज धर्मराज यह कहकर श्वेत वर्णकालेबाल चित्तके अनुसार शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त सुवर्ण सूत्रसे

निर्मितरथपर ३३ सवारहो अपनी सेनाको साथ लेकर युद्धभूमिके देखनेको प्रवृत्तहुये ३४ बीर श्रीकृष्ण और अर्जुनसेपूछकर औरदोनों से प्यारे २ मिष्ट बचनोंको कहतेहुये चलदिये ३५ वहांजाकर उस राजा युधिष्ठिर ने युद्धभूमिमें शयन करते हुये कर्णको ऐसा देखा जैसेकि सबओरसे केसरोंसे युक्त कदम्बका फूलहोता है ३६ उस धर्मराजने हजारों बाणोंसे चितेहुये कर्ण वा सुगंधित तेलोंसेसिंचे हुये और हजारों सुनहरी मशालोंसे ३७ प्रकाशमान जिसकाकवच टूट२ करचूर्णहोगया वा बाणोंसे छिदाहुआ था उसकर्णको देखा ३८ पुत्रसमेत मरेहुये कर्णको बारंबार देखकर निश्चयकरनेवाले राजा युधिष्ठिर ने ३९ उनदोनों नरोत्तम पांडव अर्जुन और माधवजी की प्रशंसा करी कि हे गोविन्दजी अबतुमनाथ शूरबीर औरमहाज्ञानी से पोषण किया हुआमैं बड़े अहंकारी कर्णको मृतक देखकर भाइयों समेत पृथ्वी पर राजाहूं ४० । ४१ राजा धृतराष्ट्र राधाके पुत्र कर्णके मरनेपर अपने जीवन और राज्यसे निराशहोंगे ४२ हे पुरुषोत्तम हम आपकी कृपाओंसे अभीष्ट मनोरथों के सिद्ध करने वाले हैं हे गोविन्दजी आपने प्रारब्धसे शत्रुओंको विजय किया और भागही से यह महाशत्रु भी मारागया ४३ और पांडुनन्दन अर्जुन प्रारब्ध से विजय करनेवाला है हमलोगोंने बड़े दुःखदायी तेरह बर्ष जाग २ कर वनोंमें ब्यतीत किये ४४ हे महाबाहो अब आपकी कृपासे रात्रिमें नींद भरके बेखटके होकर सोवेंगे इस रीति से उसधर्मराज राजायुधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी और कौरब्य अर्जुनकी प्रशंसाकरीसंजयबोलेकिअर्जुनके शायकोंसे पुत्रसमेतकर्णको मृतक देखकर ४५ । ४६ उसराजा युधिष्ठिरने अपना पुनर्जन्मसाना हे महाराज फिरबड़ीप्रसन्नता भरेहुयेमहारथियोंने कुन्तीके पुत्रराजा युधिष्ठिरको मिलकर बड़ा प्रसन्नकिया और पांडव नकुलसहदेव भीमसेन और वृष्णियोंमेंबड़ेश्रेष्ठ रथी सात्यकी, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी पांचाल और सृञ्जयोंने ४७।४८।४९ कर्णकेमरनेपर युधिष्ठिरकी स्तुतिकी फिर वह सबधर्मात्मा राजायुधिष्ठिर की स्तुतिकरके ५०

महाविजयसे शोभायमान लक्षभेदी युद्धमें कुशल सावधानीसे युद्ध करनेवाले प्रशंसायुक्त उनश्रीकृष्ण औरअर्जुनकीकीर्त्तिगानेवाले ५१ प्रसन्नतामेंडूबेहुये सब महारथीअपने २ डेरोंकोगये हे राजा आपके दुर्विचारोंसे यहबड़ाभारी घोररोमहर्षण करनेवाला विनाशकाल जारीहुआ५२ अबतुमकिसनिमित्त शोचकरतेहो वैशम्पायन बोले कि अम्बिकाकेपुत्र राजा धृतराष्ट्र इसशोक और दुःखदायी वृत्तान्तको सुनकर ५३ अचेत और निश्चेष्टहोकर पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़ा जैसे कि जड़समेत टूटाहुआ वृक्ष गिरपड़ताहै उसीप्रकार वहदूरदर्शिनी देवी गांधारी भी गिरपड़ी ५४ और युद्धमें कर्णके मरने को बहुत बिलाप करकरके शोचा तब बिदुरजी और संजयने उस राजाको पकड़लिया ५५ और दोनोंने राजाको बिश्वासयुक्तकिया और इसी प्रकार कौरवीय स्त्रियोंने गांधारीकोभीउठाया फिर वहबड़ातपस्वी राजा धृतराष्ट्र ईश्वर और होतव्यताको मुख्य मानकर ५६ महा पीड़ित होकर अचेतहोगया चिन्ता शोकसे पूर्णचित्त मोहसे पीड़ित राजाने कुछनहींजाना और बिश्वास देनेपरभी अचेतहोकर मौन होगया ५७ हेभरतवंशी जो पुरुष महात्मा कर्ण और अर्जुनकेइस महाघोर युद्धरूपी यज्ञको पढ़ेगा वह उस फलको पावेगाजो अच्छे प्रकारसे कियेहुये यज्ञकाफल होताहै और सुननेवालोंको भी यही फलहोगा ५८ अग्नि बायु और चन्द्रमाके उत्पन्न करनेवालेसना-तन भगवान् बिष्णुहैं उन्हींको यज्ञ कहते हैं इसकारण जो पुरुष दूसरेके गुणोंमें दोषनलगाकर पढ़ेगा वासुनेगा वहसुखीहोगा ५६ भक्तलोग सदैव धर्मकी वृद्धिके हेतुसे इस उत्तम संहिताकोपढ़तेहैं वहमनुष्य उसके पढ़नेसे धनधान्य और कीर्त्तिमान् होकर आनन्द करतेहैं ६० इसहेतुसे जो दूसरेकेगुणोंमें दोषनलगानेवालामनुष्य सदैवही सुनेगा वह सबसुखोंको पावेगा और भगवान् ब्रह्माजी बिष्णुजी और शिवजी भी उसनरोत्तमके ऊपर प्रसन्न होतेहैं ६१ इससंहितामें ब्राह्मणको वेदोंकीप्राप्ति और युद्धमें क्षत्रियोंकोपराक्रम वा बिजयकीप्राप्ति वैश्योंको धनकीप्राप्ति और शूद्रोंको नीरोगताकी

प्राप्तिहोतीहै ६२ जोकिइसमें भगवान् सनातन देवताविष्णुजीका वर्णनहै इसहेतुसे वह मनुष्य सुखीहोकर मनोभीष्टोंको पातेहैं यह उस महामुनिने बचन कहाहै कि जो इस कर्णपर्व्वको सुनताहै वह एकबर्षतक सवत्सा कपिला गौके प्रतिदिन दान करनेके समान फलको पाताहै ॥ महिखरीछंद ॥

सुनिप्रबलअरिभटकरणकोबध धरमअतिआनंदभरे । वहुभांतिहरिहिप्रशंसिप्रभुता कृपाकी बर्णनकरे ॥ फिरकृष्णपारथभटनसह चढ़ि सुरथपैमोदितमहा । गेधर्मभूपति कर्णभटमणि परोहो जेहिथल तहा ॥ तहँसहित सुतमैंरिपरो कर्णहिं देखिआनंदकोगहे । तुवकृपा सोंममसुजयसबथर इबिधिकेशवसोंकहे ॥ बहुजरत चारुमशाल संग उमंगसों सब देखिकै । नृपधमडेरनगयेफिरि निज सुजयध्रुव अवरेखिकै ॥

दो० करतप्रशंसाकृष्णअरुपारथकोसबबीर । गेनिजनिजडेरनलहतआनंदसिंधुगंभीर ॥
भूपतिकियोकुमंत्रतुमकरताइतोअनर्थ । प्रलयकालआरोपिअवशोचकरतहौव्यर्थ ॥

वैशंपायन उवाच ॥

दो० इबिधिकर्णकोमरणसुनिदम्पतिवृद्धनरेश । मोहितह्वैगिरिपरतभेत्यागिचेतकोलेश ॥
भूपतिगहिसंजयबिदुरगंधारिहिकुरुनारि । चेंततकीन्हेयतनकरिधीरजधरोपुकारि ॥
कर्णपर्वमेंहोतभोयाह्विबिधियुद्धबिनोद । रामकृष्णकहंजयतसोलहतसदाजयमोद ॥
सो० रामभक्तकपिबीरबिलसोजासुध्वजरथहै । कृष्णबसेजातीरकिमिनलहैजयपार्थसो ॥

श्लो० बर्षेब्धिवेदांकशशांक १६४४ संख्येविद्वान्सकालीचरणाभिधानः ।
अचश्रीतद्रसमंजुलकर्णपर्वभाषानुवादंमधुरंव्यधत्त १ ॥

इतिश्रीभाषामहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांकर्णपर्वणि
षण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

इतिकर्णपर्वसमाप्तः

मुन्शी नवलकिशोर प्रेस लखनऊ में छपो ॥ नवम्बर सन् १८८८ ई०

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० योषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२
१० शांतिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुसलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिवंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से मालूमहोगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) वन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (९) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) गदा, ये पर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व मिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाशयोंको मिलसक्ती हैं कृपा करके भेजदेवें तौ छापेजावें ॥

महाभारत वार्तिक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषासें होगयाहै जिसकी आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अनुशासन, शान्ति, और हरिवंशपर्व्व छप गईहैं शेषपर्व्व भी बहुत शीघ्र छपरही हैं ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृतिसांख्यादि सार भूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकराया है वही उक्त भगवद्गीतावज्रवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छेशास्त्रवेतारअपनीवुद्धि से पारनहींपासक्ते तव मन्दवुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करने की सामर्थ्यहै वह कव इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं-और यहप्रत्यक्षहीहै कि जवतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार वुद्धिमें न भासितहो तव तक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक जनों के चित्तानन्दार्थ व वुद्धिवोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्वविद्याविलासीभगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने वहुतसाधनव्यय कर फ़र्रुख़ाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीसे इसमनोरंजन वेदवेदान्तशास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलकरचा नवलभाष्यआख्य से प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं ॥

जवछपनेका समयआया तो वहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यहविचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाके साथ और इस ग्रन्थ के टीकाकारों की टीका भी जितनी मिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी वोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरि कृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकोंसहित इसपुस्तकमेंउपस्थित है ॥

महाभारत भाषा

शल्यपर्व, गदापर्व

जिसमें

राजा शल्यका सेनापति होकर दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जयत्सेन,
सुशर्मा, शकुनि और उलूकादिकों समेत वध और
दुर्योधन भीमसेनके गदायुद्ध में भीमसेन के हाथसे
जंघा टूटकर दुर्योधनका पृथ्वी में मृतक सदृश
होकर गिरना इत्यादि कथा वर्णितहैं ॥

जिसको

भार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशी नवलकिशोर जी
(सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि
चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से
संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक
श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा
दिसम्बर सन् १८८८ ई०

पहलीवार ६००

महाभारतों की फ़ेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

—※—

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै वरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदवताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससेछूट नहींगई मानोंयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० वर्षकेवीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ीथे परनहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेखानेमें छपी-थी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिवी १२) थे जैसा कारखानेकादस्तूरहै ॥

अब दूसरीबार डबलपैका वड़ेहरफों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै ॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसार अलग२भी मिलतेहैं ॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) वनपर्व्व ॥

दूसरेभागमें (४)विराटपर्व्व(५)उद्योगपर्व्व(६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व ॥

तीसरेभागमें (८)कर्णपर्व्व(९)शल्यपर्व्व(१०)सौप्तिकपर्व्व (११) ग्रोषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में (१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेध (१५) आश्रमवासिकपर्व्व(१६) मुसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व ॥

अथ शल्य व गदापर्व्व महाभारतभाषाका सूचीपत्रप्रारम्भः ॥

इतिमहाभारत शल्य व गदापर्व्व भाषाका सूचीपत्र समाप्त ॥

महाभारतभाषा शल्यपर्व्वणि ॥

—*—

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वारागमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंबन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमंजुलशल्यपर्व भाषानुवादंविद धातिसम्यक् ५ ॥

अथशल्यपर्व्वणिभाषावार्तिक प्रारम्भ ॥

श्रीनारायणजी को नरोत्तम नरको और सरस्वती देवीको नमस्कारकरके जयनाम इतिहासको वर्णनकरते हैं १ जनमेजय बोला कि हेब्राह्मण इसप्रकार अर्जुनके हाथसे युद्धमेंकर्णके गिरानेपर पीड़े से बचेहुये कौरवों ने क्या किया १ कौरव दुर्य्योधन ने अपनीसेना को साहस से रहित देखकर समयके अनुसार पाण्डवों के साथ कौनसा कर्म किया २ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मैं यह सुनना चहताहूं आप इसको वर्णन कीजिये क्योंकि मैं अपने प्राचीन वृद्धों के चरित्रों के सुनने से तृप्त नहीं होताहूं ३ वैशंपायन बोले हे राजा फिर कर्णके

मरनेपर धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्य्योधन बड़े शोक समुद्रमें डूबकर सब प्रकारसे दुःखी हुआ ४ हाय कर्ण हाय कर्ण इसप्रकार बारंबार शोचता मरनेसे बचे हुये शेषराजाओं समेत बड़े दुःखसे अपने डेरे कोआया ५ सूतपुत्र कर्णके मरने को स्मरण करते और शास्त्रनिश्चित हेतुओंसे राजाओं के समझाने परभी दुर्य्योधन ने सुखको नहीं पाया ६ वह राजा दैवइच्छाको बलवान् मानकर युद्धके निमित्त निश्चय करके फिर युद्ध करनेके लिये निकसा ७ हे राजावह राजाओं में श्रेष्ठ दुर्योधन बिधिपूर्व्वक शल्यको सेनापति करके मरनेसे बचेहुये शेषराजाओं समेत युद्धके लिये चला ८ हे भरतर्षभ इसके अनन्तर कौरवीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध देवासुर युद्ध के समान महाकठिन हुआ ६ हे महाराज तब राजा शल्य युद्धमें सेनाका नाश करके अपनी सेनाके मरजानेके पीछे मध्याह्नके समय धर्मराजके हाथसे मारागया १० इसके पीछे राजा दुर्योधन उन लोगोंको जिनके कि बान्धव मारेगये युद्धभूमि से हटाकर शत्रुओंके भयसे बड़े गम्भीर तड़ागमें प्रवेश करगया ११ इसके पीछे उस दिनके तीसरे प्रहरमें महारथियोंसे घेरकर ह्रदसे बुलाकर बड़े वेग पूर्वक भीमसेन के हाथसे गिरायागया १२ हे राजेन्द्र उस बड़ेधनुषधारीके मरनेपर शेषबचे हुये महारथियोंने रात्रिके समय पांचाल देशी सेनाके लोगोंको मारा १३ उसके पीछे दुःख और शोचसे संयुक्त संजय प्रातःकालके समय अपने डेरे से चलकर महा दुःखित चित्त होकर पुरमें आया १४ वह सूत संजय पुरमें प्रवेश करके महा क्लेशित मन अपनी भुजाओंको ऊपर करके कांपताहुआ फिर राजमन्दिरमें आया १५ हे नरोत्तम वह अत्यन्त दुःखी हायराजा हायराजा यह कहता हुआ रोदन करनेलगा बड़े कष्टकी बातहै कि हम महात्माके मरनेसे नाशहोगये १६ आश्चर्य्य है कि काल बड़ा बलीहै उसीप्रकार उसकी गतिभी टेढ़ी है जिस स्थानपर कि इन्द्र केसमान महापराक्रमी सब शूरबीर पाण्डवों के हाथसे मारेगये १७ हे राजओं में श्रेष्ठ जनमेजय वह सब मनुष्यों के समूह नगरमें सं-

जयको देखतेही सब सबओर को बड़े दुःखोंसे संयुक्त हुये १८ हे नरोत्तम कुमार बालकों तक अत्यन्त व्याकुल वह सब नगर चारों ओरसे हायराजा हायराजा इसप्रकार ऊंचेस्वरों से पुकारता रोदन करने लगा इसकेपीछे राजाको मराहुआ सुनकर सबने महापीड़ाके शब्दकिये उससमय वहां हमने उन स्त्री पुरुषोंको भी दौड़ताहुआ देखा जोकि नाशमान चित्त उन्मत्त और शोकसे महापीड़ामान थे इसप्रकार महाव्याकुल मन उस सूतने राजमन्दिर में प्रवेशकरके राजाओंमें श्रेष्ठ ज्ञानरूपी नेत्र रखनेवाले निष्पाप चारोंओरको पुत्र बधुओं समेत गान्धारी बिदुर और अन्य इष्टमित्र और जातवालोंसे घिरेहुये कर्णकेमरनेके विषय में उसी प्रयोजनको ध्यान करते बैठे हुये महाराज धृतराष्ट्र को देखा हेजनमेजय वह दुःखीचित्तसूतअश्रुपातोंसे युक्त गदगद बाणीसे रोताहुआ राजा धृतराष्ट्र से यह बचन बोला कि हेनरोत्तम मैं संजयहूं हे भरतर्षभ तुमको नमस्कार है १९ । २० । २१ । २२ । २३ । २४ । २५ मद्रदेशका राजाशल्य मारागया उसीप्रकार सौबलका पुत्र शकुनी मारागया हे पुरुषोत्तम दृढ़ पराक्रमी कैतव्य, उलूक, और शकुनी समेत सब काम्बोजदेशी और संसप्तकमारेगये और म्लेच्छ पहाड़ी और यवन मारेगये२६ । २७ हेमहाराज राजा धृतराष्ट्र सब पूर्वीय दक्षिणीय उत्तरीय और पश्चिमीय राजालोग मारेगये२८इनके सिवाय सबराजा और राजकुमार मारेगयेऔर राजा दुर्योधन भी उसीप्रकार से मारागया जैसे कि पांडव भीमसेनने सभामें प्रतिज्ञा करीथी २९ हेमहाराज वह टूटी जंघासेधूलमें पड़ासोताहै धृष्टद्युम्न और अपराजित शिखंडीभीमारा गया ३० इसीप्रकार नरोत्तम उत्तमौजा, युधामन्यु, प्रभद्रक नाम क्षत्री पांचालदेशी और चंदेरीदेशी मारेगये ३१ हे भरतवंशी आप केसबपुत्र और द्रौपदीके सब बेटे मारेगये और कर्णका पुत्र बड़ा शूरबीर वृषसेन मारागया ३२ सब मनुष्य मारेगये हाथी नाशहुये रथसवार और घोड़े युद्धमें गिरपड़े ३३ हेसमर्थ परस्पर सम्मुख होकर आपके बेटे पांडवोंके और कौरवोंके कुछडेरे बाक़ीरहे ३४यह

संसार बहुधा कालसे मोहित स्त्रियोंका शेष रखनेवाला हुआ पांडवोंकी ओर से सात और आपकी ओरके तीन शेष रहगये हैं ३५ अर्थात् वह पांचोंभाई बासुदेवजी और सात्यकी और आपकीओर विजयी लोगोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्य,कृतबर्मा, और अश्वत्थामा शेषरहे हैं३६हेराजाओं में श्रेष्ठ महाराजा धृतराष्ट्र इकट्ठी होनेवालीआपकी सबअक्षौहिणियोंमें आपके यह तीनरथी जीवतेरहेहैं३७हेभरतर्षभ महाराजाधृतराष्ट्र यही केवलबचेहैं और सबनाशहोगये हेभरतवंशी निश्चयकरके शत्रुतापूर्व्वकदुर्योधनको आगेकरके सबजगत्कालसे मारागया ३८ बैशंपायनबोले हेमहाराज वह राजा धृतराष्ट्र इस कठिन और महादुःखदायी वचनको सुनकर अचेतहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ३९ उस धृतराष्ट्र के पृथ्वीपर गिरनेपर शोक और दुःख से पीड़ामान बड़े यशमान बिदुरजी भी गिरपड़े ४० हे राजेन्द्र गान्धारी आदि सब कौरवों की स्त्रियां भी उन कठोर बचनों को सुनकर अकस्मात् पृथ्वीपर गिरपड़ीं ४१ तब राजमण्डल निरर्थक बचनों से युक्त अचेत होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़े बस्त्रपर खैंचा हुआ चित्र होताहै ४२ उसके पीछे पुत्र के दुःख से राजा धृतराष्ट्र ने बड़े दुःख पूर्व्वक धीरे धीरे प्राणोंको प्राप्त किया ४३ फिर वह राजा सचेतताको पाकर कंपता हुआ महादुःखी सब दिशाओंको देखकर बिदुरजी से यह बचनबोला४४ हे बुद्धिमान् बड़ेज्ञानी भरतर्षभ बिदुरजी मुझ सब पुत्रोंसे बिहीन और अनाथ के तुम्हीं गतिहो ४५ इसप्रकार कहकर फिर अचेत होकर गिरपड़ा इसरीतिसे पड़े हुये उस धृतराष्ट्र को देख कर ४६ जो कोई उसके बान्धवथे उन्होंने उसको शीतल जलोंसे सींचा और ब्यजनोंसे हवाभी की फिर वह राजा बहुत देरके पीछे चैतन्य हुआ ४७ हे राजा मटकेमें डालेहुये सर्पकी समान श्वास लेते और पुत्रके शोकसे पीड़ामान और मौन उस राजाने ध्यान किया ४८ फिर वहां राजा को दुःखी देखकर संजयभीरोया उसी प्रकार यशवन्ती गान्धारी और सब अन्य स्त्रियां भी रोदन करने

लगीं ४६ इसके पीछे बारंबार मोहित राजा धृतराष्ट्र बहुत देरके पीछे बिदुरजीसे वह बचन बोला ५० कि सबस्त्रियां और यशवान् गान्धारी और मेरे सब सुहृद जनलोग यहां से चलेजांय मेराचित्त अत्यन्त मूर्च्छित होताहै ५१ हे भरतर्षभ इसके पीछे उसके उस बचन को सुनकर बिदुरजीने उन बारंबार कम्पायमान स्त्रियोंको बड़े धीरजसे बिदा किया ५२ तब सब स्त्रियां उस स्थान से निकल गईं और सबसुहृद लोग भी राजा को देखकर चलेगये ५३ इसके पीछे संजयने उस राजाको सचेतता युक्त महादुःखी और रोदन करनेवाला देखा ५४ उस बारंबार श्वास लेनेवाले महाराज को बिदुरजी ने हाथ जोड़कर मधुर बाणी से बिश्वास कराया ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिधृतराष्ट्रप्रमोहोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय॥

बैशंपायन बोले हे महाराज तब स्त्रियोंके बिदाकर देनेपर अम्बिका के पुत्र धृतराष्ट्रने बिलाप किया और महादुःखकोपाया १ हे महाराज बारंबार अपने हाथोंको कंपाते उस धृतराष्ट्र ने उष्ण श्वासाओं को लेकर और बहुत चिन्ता युक्त होके यह बचन कहा २ हे सूत यह महादुःख और दुःखका स्थानहै जो मैं तुझसे पांडवों को कुशल पूर्बक अविनाशी सुनताहूं ३ निश्चय करके मेरा हृदय बज्रके समान कठोर है जो पुत्रोंको मराहुआ सुनकर हजारों टुकड़े नहीं होताहै ४ हे संजय उन्होंकी बालक्रीड़ा और अवस्थाको शोचकर और अब बेटोंको मृतक सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त फटता है ५ जो अन्धेपने से मुझको उनके रूपका दर्शन नहीं होताथा परन्तु पुत्रता से उत्पन्न हुई प्रीति सदैव उनपर नियत थी ६ हे निष्पाप मैं उनको बाल्यअवस्था के व्यतीत करने वाले और तरुण सुनकर अत्यन्त प्रसन्नहोताथा ७ अब उन पुत्रोंके दुःख समुद्र में डूबाहुआ मैं उन बड़े तेजस्वियोंको ऐश्वर्य्यसे रहित

और मराहुआ सुनकर कहीं शान्तीको नहीं पाताहूं ८ हे राजेन्द्र पुत्र अब मुझ अनाथके सन्मुख आवो आवो हे महावाहु मैं तुझसे रहित होकर किसगतिको पाऊंगा ९ हे तात तुम किसप्रकार मिले हुये राजाओंको छोड़कर प्राकृत नीच मंत्री रखनेवाले राजा के समान मृतक होकर पृथ्वीपर सोतेहो १० हे महाराज वीर तुम जातवाले और सुहृदजनोंके गति होकर मुझ अन्धे और वृद्ध को त्यागकर कहां जावोगे ११ हे राजा तेरी वह कृपा प्रीति और शिष्टाचारथा युद्धोंमें अजेय होकर तुम पाण्डवों के हाथसे कैसेमारे गये १२ समयपर उठनेवाला होकर मुझको वारंवार कौनकहै गा कि हे तात हे महाराज और हे लोकनाथ १३ प्रीतिसे आर्द्र नेत्र होकर तुम कण्ठसे मिलकर मुझको शिक्षाकरो हे कौरव उस शुभबचनको मुझसे कहो १४ हे पुत्र निश्चय करके मैंने तेरे इस बचनको सुना कि यह बहुत पृथ्वी जैसे मेरीहै वैसे कुन्तीके पुत्रकी नहीं है १५ भगदत्त, कृपाचार्य्य, शल्य, अवन्तिदेशकाराजा, जयद्रथ, शल, सोमदत्त, वाह्लीक १६ अश्वत्थामा, कृतबर्मा, महाबली मगधका राजा, दृहद्बल, काशीका राजा, सौबलका पुत्र राजा शकुनी १७ बहुत से हजारों म्लेच्छ देवताओं समेत शक, सुदक्षिण, काम्बोज, राजा त्रिगर्त्त १८ भीष्मपितामह, भारद्वाज, द्रोणाचार्य्य, गौतम कृपाचार्य्य, पराक्रमी श्रुतायु, अच्युतायु, शतायु १९ जलसन्ध, आर्ष्यशृंगी, अलायुध राक्षस महावाहु अलंबुष, महारथी सुबाहु २० हे राजर्षि यह सब राजा और अन्य बहुत से राजा सब बड़े युद्धमें प्राणोंको त्याग करके मेरे निमित्त तैयारहैं २१ उन्होंके मध्यमें नियत और भाइयों से संयुक्त मैं युद्धमें सबपांडव और पांचालों से युद्ध करूंगा २२ हे राजाओं में श्रेष्ठ मैं युद्धमें चंदेरी देशी राजा द्रौपदी के पुत्र सात्यकी कुन्तभोज और घटोत्कच राक्षसके साथ युद्ध करूंगा हे महाराज मैं क्रोधयुक्त अकेलाभी युद्धमें सन्मुख दौड़नेवाले इन पाण्डवों के हटाने में समर्थहूं २३ । २४ फिर पाण्डवोंके साथ शत्रुता

करनेवाले सब बीरलोग साथ होकर क्यों न समर्थ होंगे हे राजेन्द्र अथवा यह सबलोग पांडवों के आगे पीछेवाले सब शूरबीरों से लड़ेंगे २५ और उनको युद्धमें मारेंगे अकेला कर्णही मेरे साथ होकर पांडवोंको मारेगा २६ इसके पीछे राजालोग मेरी आज्ञा में नियत होंगे और जो उन्होंका स्वामी और रक्षक वासुदेवहै २७ हे राजा वह शस्त्रोंको नहीं धारण करेगा उसनेमुझसे यह प्रतिज्ञा करलीहै हे सूत मैंने बहुधा अपने सन्मुखकहेहुये उसके बचन को सुना २८ कि युद्धमें शक्तिसे पांडवों को मृतक देखताहूं उन्होंके मध्यमें युद्धके उपाय करनेवाले मेरे पुत्र उस बायुके पुत्र भीमसेन के हाथसे बहुधा युद्धमें अधिकतर मरतेहैं २९ इसमें प्रारब्धके सिवाय दूसरी बात क्याहै जिस स्थानपर लोकनाथ प्रतापवान् भीष्मजी ३० शिखंडीको सन्मुखपाकर ऐसे मारेगये जैसे कि शृगालों को पाकर महामृगेन्द्र सिंह माराजाताहै जिस स्थानपर सब अस्त्र शस्त्रों में कुशल द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण पांडवों के हाथसे मारे गये तो प्रारब्धसे दूसरी कौन बातहै इस युद्धमें भूरिश्रवा सोमदत्त ३१ । ३२ और महाराज बाह्लीक मारेगये और हाथियोंके युद्धमें कुशल भगदत्त मारागया इसमें प्रारब्धके सिवाय कौनसी बातहै ३३ और जयद्रथ मारागया अथवा सुदक्षिण पौरव जलसन्ध मारागया वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्याहै ३४ श्रुतायु अच्युतायु मारेगये और इसीप्रकार सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महाबली पांड्ययुद्धमें पांडवोंके हाथसे मारागया वहां प्रारब्धसे दूसरी बातक्याहै जिसस्थानपर महाबली बृहद्बल मागध ३५ । ३६ और धनुषधारियों का ध्वजा रूप पराक्रमी उग्रायुध दोनों अवन्ति देशके राजा और राजात्रिगर्त्त मारेगये ३७ और बहुतसे संसप्तक मारेगये वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै उसीप्रकार राजा अलंबुष और अलायुध राक्षस ३८ और आर्ष्यशृंग राक्षस मारा गया वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै जिस स्थानमें युद्ध दुर्मद गोपाल, और नारायण नाम शूरबीर मारेगये ३९ और हजारों

म्लेच्छ मारेगये वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै जिसस्थान पर सौबल का पुत्र महाबली वीर शकुनी कैतव्य ४० सेना समेत मारागया वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै हे सूत संजय जिस स्थानपर शूर माहात्मा और सब अस्त्र शस्त्रोंमें कुशल ४१महाइन्द्र के समान पराक्रमी नानाप्रकारके देशोंके स्वामी बहुतसे क्षत्री ४२ युद्धमें मारेगये वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है मेरे महाबली पुत्र और पौत्र ४३ समान अवस्थाके भाई मारेगये वहां दूसरी बात क्याहै निश्चय करके मनुष्य प्रारब्धको साथ लेकर उत्पन्न होताहै जो प्रारब्धवान् है वह सुखकोपाताहै ४४ हे संजय अपने प्रारब्ध और पुत्रोंसे रहित शत्रुओंकी आधीनतामें वर्त्तमान वृद्धमें अब कैसे रहूंगा हे समर्थ यहां बनबास के सिवाय दूसरी बात श्रेष्ठ नहीं मानताहूं ४५ सौ पुत्रोंमें और अपने जातके लोगों से रहित मैं जातवालों के नाश होनेपर बनको जाऊंगा बनमें जानेके सिवाय कोई दूसरी बात मेरे कल्याणकी नहींहै ४६ हे संजय जोकि मैं परकंच पक्षी के समान इस दशाका पानेवाला हूं जिस युद्धमें दुर्योधन, शल्य ४७ महाबली, दुश्शासन, शल, और महाबली विकर्ण मारागया तब मैं भीमसेनके कठोर शब्दोंको कैसेसुनूंगा ४८ जिस अकेलेने युद्धमें मेरे सब पुत्रोंको मारा दुर्योधन के मरने से दुःखी और शोचसे अत्यन्त संतप्त होकर मैं उस बारंबार वार्त्तालाप करनेवाले भीमसेन के कठोर वचनों को नहीं सुनूंगा ४६ । ५० वैशंपायन बोले कि जिसके बान्धव मारेगये वह राजा इसप्रकार शोकसे तपा हुआ बारंबार अचेत पुत्रोंके शोकमें डूबे हुये ५१ अम्बिका के पुत्र भरतर्षभ बड़े शोकसे पूर्णदुःखी धृतराष्ट्र ने बड़ी देरतक विलापकर लंबी श्वासा लेकर अपनी पराजयको शोच करके फिर गौकनके पुत्र सूत संजय से मुख्य वृत्तान्त पूछा ५२।५३ धृतराष्ट्र बोलेकि मेरे पुत्रोंने भीष्म द्रोणाचार्य्यको मृतक और सेनाके स्वामी कर्णको गिराया हुआ सुनकर किसको सेनापतिकिया ५४ मेरेपुत्रोंने जिस२ को स्वामी औरसेनापति बनाया

पाण्डवों ने थोड़ेही समय में उस २ कोमारा ५५ युद्धके मस्तक पर वर्त्तमान भीष्मजी तुम्हारे देखते हुये मारेगये इसीप्रकार द्रोणाचार्य्य भी सब के देखते मारेगये ५६ ऐसेही राजाओं समेत तुम सबके देखते सूतका पुत्र प्रतापवान् कर्ण अर्जुन के हाथ से मारा गया ५७ मुझको प्रथमही महात्मा विदुरजीने समझाया था कि यहसब सृष्टि दुर्य्योधन के अपराधसे नाशको पावेगी ५८ परकोईअज्ञानी बहुत बिचारकर अच्छीरीति पर ध्याननहींकरते हैं यह कच्चाबिचार मुझअज्ञानी काहीहै वहबचन वैसाहीहुआ ५९सव धर्मोंके जाननेवाले उनबिदुरजीने जो जो कहाथा वहसत्य २ कहा हुआ बचन उसीप्रकार से प्रत्यक्षहुआ ६० पूर्व्व समयमें दैवसे हत चित्तमैंने जो उनके बचनोंको नहींकिया उसी अन्याय का यहफल वर्त्तमानहुआ हे संजय अब फिर कहोकि ६१ कर्ण के गिराने पर सेनाओंकामुख्य अर्थात् सेनापतिकौनहुआ और कौनसारथीअर्जुन और बासुदेवजीके सन्मुखगया ६२ युद्धमें युद्धाभिकांक्षी शल्यकेदाहिनेचक्रको किसने रक्षितकिया और किसने उसवीरके बामचक्रकी रक्षाकरी और किसनेपीछेसे रक्षाकरी ६३ हेसंजयतुमलोगोंकेएकत्र स्थितहोनेपर महाबली शल्य औरमेरापुत्र युद्धमेंकैसे पांडवोंकेहाथसे मारागया ६४ भरतवंशियोंके उससबबड़े नाशको मुख्यतासे कहो जिसप्रकार युद्धमेंमेरा पुत्रदुर्य्योधनमारागया ६५ और जैसे २ सब पांचाल धृष्टद्युम्न शिखंडी अपनेपीछे चलनेवालोंसमेत और द्रौपदी के पांचोंपुत्र मारेगये ६६ और जैसेकि सबपांडव दोनोंयादव कृपाचार्य्य कृतवर्मा औरभरद्वाजका पुत्र अश्वत्थामा यहसब युद्धसे बचे ६७ इसकेपीछे जिस प्रकार जो २ जैसायुद्ध हुआउस सबको सुनाचाहताहूं हे संजयतुम वर्णन करनेमें बड़ेकुशलहो ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिधृतराष्ट्रविलापोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

संजय बोलेकि हेराजा सावधान होकर उसको सुनो जैसे कि

परस्पर सन्मुख होकर कौरव और पांडवोंकी सेनाका नाशहुआ है महात्मा पांडव अर्जुनके हाथसेकर्णके मारने और वारंवार बुलाई हुई सेनाके भागने और युद्धभूमि में मनुष्यों के शरीर और उत्तम हाथियोंका घोरनाश होनेपर १।२कर्णके मरनेपरफिर पांडवोंनेसिंह-नादकोकिया हेराजातब उससिंहनादसे उत्पन्न होनेवालाभय आप के पुत्रोंमें प्रवेश करगया ३ कर्णकेमरनेपर आपके किसीशूरवीरकी बुद्धिसेनाकी चढ़ाई और पराक्रमकरनेमें नहींहुई ४ जैसे कि अथाह समुद्रमें नौकाके टूटनेपर बिनानौकाके कारण व्यापारी लोग भय-भीतहोतेहैं उसीप्रकार अर्जुनके हाथसे द्वीपरूप कर्णकेमरनेपर युद्ध रूपी अपार समुद्रमें पारजानेके अभिलाषीहुये ५ हे राजा कर्ण के मरनेपर भयभीत और बाणोंसेघायल वह अनाथ नाथके चाहनेवाले सिंहसे पीड़ित मृगोंके समान और टूटेशृङ्ग बैलोंकी सदृश टूटीडाढ़ सर्पकेतुल्य और अर्जुन से पराजित होकर हमलोग सायंकाल के समय अपने डेरेकोचलेआये ६।७ हेराजा सूतपुत्रके मरनेपर तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसेटूटे अंगपराजित आपके वहपुत्र जिनकेवहुतसेवीर मारेगये भय करकेभागे ८ शस्त्र और बलसेरहित भय से भागेहुये अचेत और परस्पर प्रहार करनेवाले भयसेदिशाओंको देखनेवाले वहसब ९ यह मानते हुये कि अर्जुन और भीमसेन मेरेही सन्मुख आतेहैं ऐसाजानकर गिरपड़े और मरणप्राय होगये १० कोईमहा रथीवेगवान् घोड़ोंपर और कितनेहीने हाथियोंपर सवारहोकरभय से पदातियोंको त्यागकिया ११ हाथियों से रथटूटे अश्वसवार बड़े रथोंसे मारेगये और कठिनभागनेवाले घोड़ोंके समूहोंसे पदातियों केसमूह मारेगये जैसेकि सर्प और चोरोंसेव्याप्तबनमें अपनेसाथियों से पृथक्मनुष्य होतेहैं उसीप्रकार सूतपुत्रके मरनेपर आपके पुत्रभी उसीदशावालेहुये१२।१३ तबमृतक सवार वाले हाथीउसीप्रकारटूटी सूंड़और भयसे पीड़ित अन्य २ हाथियोंनेभी सबलोकको अर्जुनरूप देखा १४ दुर्य्योधन उनसब भागनेवाले और भीमसेन के भयसे पीड़ामान सेनाके मनुष्योंको देखकर हायहाय करके अपनेसारथी

से यहवचनबोला कि १५ अर्जुनमुझ धनुषहाथमें रखनेवालेऔरसेनाके जघनस्थानपर वर्त्तमान होनेवालेको उल्लंघन नहीं करेगा तू शीघ्र घोड़ोंको चलायमानकर १६ कुन्तीकाबेटा अर्जुन युद्धभूमिमेंमुझ लड़ने वाले के उल्लंघन करनेको ऐसे उत्साह नहीं करेगा जैसे कि महा समुद्र अपनी मर्यादाको नहींउल्लंघन करता १७ अबगोबिन्दसमेत अर्जुनको और भागेहुये भीमसेनको और शेषवचेहुये शत्रुओंकोमार-करकर्णाको अऋणताको पाऊंगा १८ सारथीने कौरवराज के उन बचनोंकोजो कि शूर और उत्तम पुरुषोंके समानथे सुनकर घोड़ोंको बड़ेधीरे पनेसे चलायमान किया १९ हेश्रेष्ठ हाथी घोड़े और रथसे बिहीन पच्चीसहजार पदाती बड़े धीरेपनेसेचले २० अत्यन्तक्रोध युक्तभीमसेन और धृष्टद्युम्नने चारअंगरखनेवाली सेना समेतचारों ओरसे घेरकर बाणोंसेमारा २१ तबवहसब उसभीमसेन और धृष्ट द्युम्नसे युद्धकरनेलगे वहां प्रति पक्षियोंने भीमसेन और धृष्टद्युम्न के नामोंकोलिया उससमय भीमसेनयुद्धमें उनयुद्धभूमिमेंनियतबीर सेयुद्धकरने लगा अर्थात् वहगदा हाथमें रखनेवाला भीमसेन शी-घ्रही रथसेउतरकर युद्ध करनेवाला२२।२३उस भुजबल में आश्रित धर्मसे सम्बन्ध रखने वाला रथ सवार कुन्तीका पुत्र भीमसेन उन पृथ्वी पर नियत हुये शूरबीरों से नहीं लड़ा २४ और दण्डधारी यमराजके समान भीमसेन ने सुवर्ण से मढ़ीहुई बड़ी गदाको लेके कर आपके सब शूरबीरोंको मारा २५ अत्यन्त क्रोधयुक्त जीवन त्यागने वाले वह सब पदाती बान्धव भीमसेनकी ओर ऐसे दौड़े जैसे कि पतंग अग्निकी ओर दौड़तेहैं २६ तब युद्धमें दुर्मद महा क्रोध युक्त वह सब भीमसेनको पाकर अकस्मात् ऐसे नाशवान् होगये जैसेकि कालको देखकर सबजीवों के समूह नाशको प्राप्त होतेहैं २७ भीमसेन खड्ग और गदाके साथ बाज पक्षीके समान अच्छीरीति से भ्रमण करने लगा और आपके पच्चीस हजार शूर बीरोंको मारडाला २८ सच्चा पराक्रमी वह महाबली भीमसेन उस पदाती सेनाको मारकर और धृष्टद्युम्नको आगे करके फिर

नियत हुआ २६ पराक्रमी अर्जुन रथकी सेनाके सन्मुख हुआ और प्रसन्न चित्त मारनेके अभिलाषी बड़े पराक्रमी नकुल और सहदेव महारथी सात्यकी समेत शकुनीके सन्मुख गये वह उसके बहुत घोड़ोंको तीक्ष्ण बाणोंसे मारकर ३० । ३१ शीघ्रही उसके सन्मुख दौड़े वहां बड़ा युद्ध हुआ हे राजा इसके पीछे अर्जुन ने रथकी सेनाको भगाया ३२ और तीनों लोकोंमें विख्यात गांडीव धनुष को टंकारा श्रीकृष्णको सारथी और श्वेत घोड़े रखने वाले आते हुये रथको देखकर ३३ औरशूरवीर अर्जुनकोभी देखकर आपके शूरवीरोंने घेरलिया रथ और घोड़ोंसे रहित बाणोंसे रोकेहुयेपच्चीस हजार पदातियोंने अर्जुन को घेरलिया पांचालोंका महारथी बड़ा धनुषधारी शत्रुओंके समूहका मारनेवाला बड़ा यशस्वी राजा पां-चालकाबेटा श्रीमान् धृष्टद्युम्न उसपदाती सेनाकोमार भीमसेनको आगे करके थोड़ीही देरमें सन्मुख बर्त्तमान हुआ आपके शूरवीर कपोत वर्ण घोड़े और कोविदारका चिह्नरखनेवाली ध्वजाधारण करनेवाले धृष्टद्युम्नको देखकर भयसे भागे और यशवान् नकुल सहदेव और सात्यकी उस शीघ्रअस्त्र चलानेवाले गान्धारके राजा परचढ़ाई करके ३४।३५।३६ ३७। ३८थोड़ीहीदेरमें सन्मुख टूटपड़े हे श्रेष्ठ चेकितान शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रोंने ३९ आपकी बड़ी सेनाको मारकर फिर शंखोंका बजाया वह लोग आपके सब शूर बीरोंको भागे हुये और मुख फेरने वाला देखकर ४० मारते हुये चारों ओरको ऐसे दौड़े जैसेकि बहुतसे बैल एक बैलको विजय करके दौड़तेहैं हे राजा बलवान् पाण्डव अर्जुन आपके पुत्रकी उस शेष बचीहुई सेनाको देखकर ४१ क्रोधयुक्त हुआ उसके पीछे अकस्मात् उसको बाणोंसे आच्छादित करदिया ४२ फिर उठी हुई धूलसे कुछ दिखाई नहीं पड़ा हे महाराज लोकके अन्धकार रूप और पृथ्वीके बाण रूप ४३ होजाने पर आपके शूरबीर भयभीत होकर सब दिशाओंको भागे हेराजा सेनाओंके छिन्न भिन्न होने पर ४४ चारों ओरसे अपने शत्रुओंके सन्मुख जाकर भरतर्षभ

दुर्योधनने सबपाण्डवोंको ४५ युद्धके निमित्त ऐसे बुलायाजैसे कि पूर्व समयमें राजा बलिने देवताओं को बुलायाथा नाना प्रकारके शस्त्र चलानेवाले क्रोध युक्त बारंबार घुड़कनेवाले वह लोग सब साथ होकर इससन्मुख गर्जने वालेके सन्मुख गये भयसे उत्पन्न व्याकुलतासेपृथक् दुर्योधन ने भी उन शत्रुओंको बाणों से हटाया ४६। ४७वहां पर हमने आपके पुत्रके अपूर्व पराक्रम और बीरत को देखाकि सब पाण्डव उसकेसन्मुख नियतहोनेको समर्थनहीं हुये ४८दुर्योधन ने बहुत दूर न पहुंचनेवाली और भागनेमें बुद्धि करने वाली अपनी सेनाको देखा ४६ हे राजेन्द्र इसके पीछे आपका बेटा बड़ी बुद्धिमानीसे सबको प्रसन्न करता हुआ उन शूरबीरोंको नियत करके यह बचन बोला ५० किमैं पृथ्वी औरपर्व्वतोंमें किसी ऐसे स्थानको अथवा देशकोनहीं देखताहूं जहां पर जानेवाले तुम लोगोंको पाण्डव नहीं मारें तुमको भागने से क्या प्रयोजनहै ५१ उन्होंकी सेना भी थोड़ीहै और श्रीकृष्ण वा अर्जुन अत्यन्त घायल हैं जो यहां हम सब नियत होजायंतो इस समय अवश्य हमारी पूर्ण बिजय होजाय ५२ यह पाप करने वाले पाण्डव तुम हटने वाले और छिन्न भिन्न होने वालोंको पीछा करके मारेंगे युद्धमें हमारा मरना शुभदायकहै क्षत्री धर्मसे लड़नेवाले का युद्धमें मरण होना सुखहै मरा हुआ दुःखको नहीं जानताहै और मरकर अत्यन्त सुखको भोगताहै ५३।५४ सबक्षत्री लोग सुनो जितने कि यहां इकट्ठे हैं तुम क्रोध युक्त शत्रु भीमसेनके आधीन होगे क्षत्रीका पाप कर्म भागने से अधिक नहींहै हे कौरव्यधर्म युद्धसे श्रेष्ठ स्वर्ग मार्ग नहीं है ५५।५६ युद्धकर्त्ता थोड़े हीसमयमें प्राप्तहोनेवाले लोकोंको शीघ्र भोगताहै महारथी क्षत्री उसराजा दुर्योधनके बचनकी प्रशंसा करके ५७ फिर भी पराजयको न सहने वाले पराक्रम में प्रवृत्त चित्त होकर पाण्डवोंके सन्मुख वर्त्तमान हुये ५८उसके पीछे फिर भी आपके युद्ध कर्त्ता और दूसरे प्रतिपक्षी लोगों का बड़ा भयकारी देवासुरोंके युद्धके समान युद्ध जारी हुआ ५६ हे महाराज आप

का बेटा दुर्योधन सब सेना समेत उन पाराडवों के सन्मुख दौड़ा जिनका कि अग्रवर्त्ती युधिष्ठिर था ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिकौरवसैन्यप्रयाणंनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय॥

हेभरतबंशी गिरेहुये रथोंके नीड़ और महात्माओंके रथोंकोऔर युद्धमें मरेहुये हाथी और पतियोंको देखकर १ और रुद्रजीकेविहार क्रीड़ा स्थानके समान बड़ी भयानक युद्धभूमिको वा अपकीर्त्ति पानेवाले सैकड़ों हजारों राजाओंको २ और अर्जुन के पराक्रम को देखकर आपके बेटेके मुखफेरने शोकसे घायल चित्तहोने सेनाओंके अत्यन्त व्याकुल होने ३ सेनाके दुःखी ध्यान करनेवाले होने पर मथीहुई सेनाओंके कठिन शब्दको सुनकर ४ औरयुद्धमें राजाओंकी पहिंचानोंके चिह्नोंको टूटाहुआ देखकर और आयु और शीलस्वभावसे युक्त कृपासे पूर्ण वह तेजस्वी वार्त्तालापमें कुशल गुरू कृपाचार्य्य जी ५ राजाके पास जाकर बड़े क्रोधयुक्त होकर उस दुर्य्योधनसेबोले६ कि हेभरतर्षभजोमैं तुमसेकहताहूं उसको समझो हेमहाराज उसको सुनकर जोतुमको अच्छालगे उसको करना ७ हेराजेन्द्र निश्चय करके धर्मयुद्धसे अधिक कोईकल्याण करनेवाला मार्गनहींहै हेक्षत्रियों में श्रेष्ठ उत्तम क्षत्री लोगभी उसी मार्गमेंनियत होकरलड़ते हैं ८ बेटा भाई,पिता,भानजा,मामा,नातेदार,भाई,बन्धु केसाथ लड़नेके योग्यहैं ९ मरने में श्रेष्ठ धर्महै और भागना महा अधर्महै इसीहेतुसे जीवनकी इच्छा रखने वाले क्षत्रियोंने भयकारी घोर जीविकाको प्राप्तकियाहै १० वहांमैं तुझसे कुछ वृद्धिकरनेवाला बचन कहताहूं कि भीष्म द्रोणाचार्य्य महारथी कर्ण ११ जयद्रथ आपके बहुतसे भाई और आपके बेटे लक्ष्मणके मरने पर किस शेषबचे हुये प्रधानकी बर्त्तमानता करें १२ हमजिनके ऊपर भार रखकर राज्यमें अपना प्रबन्ध जारी करतेथे उन शूरबीरोंने शरीरोंको त्याग करके ब्रह्म ज्ञानियोंकी गतियोंको पाया १३ हम उन प्रशंसनीय

महारथियोंके बिना बहुतसे राजाओं को गिराकर दुःखी रहैंगे १४ श्रीकृष्णकोप्रधान रखनेवालामहाबाहु अर्जुन देवताओंसेभी दुःखसे सन्मुखताके योग्य और सब जीवधारियोंसे अजेयहै १५ इन्द्र धनुष और वज्र रूप इन्द्र ध्वजाके समान ऊंची बानर ध्वजाकोपाकर वहबड़ी सेना कंपायमान हुई १६ भीमसेन के सिंहनादपांचजन्य शंखका शब्द और गांडीवधनुष के शब्दोंसे हमारे चित्तव्याकुल होतेहैं १७ चक्षुके प्रकाशको चुराता घूमता औरबड़ी बिजली के समान आलात चक्रके समान घूमता गांडीव धनुष दिखाई पड़ा १८ सुवर्ण जटित धनुष बड़ा दिशाओंमें चलायमान ऐसे दिखाई पड़ा जैसे कि बादलोंमें बिजलीदिखाई देतीहै १९ श्वेतचन्द्रमाके समान प्रकाशमान अपनी तीव्रता से युक्त घोड़े आकाशको पानकरते रथमें संयुक्तहैं २० जैसेकि बायु से युक्त बादल होते हैं उसीप्रकार श्रीकृष्णजीकीसवारीसे युक्त सुवर्ण जटित अंगवाले घोड़े युद्धमें अर्जुनको लेचलतेहैं २१ हेराजा अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने युद्ध भूमिमें उसआपकी सेना को ऐसे भस्मकर दिया जैसे कि उठा हुआ अग्नि बड़ेघने शुष्कबनको भस्मकरदेताहै २२ हमनेचारदांत रखनेवाले हाथीके समान सेनाओंके मझाने वाले महा इन्द्र के समान प्रकाशमान अर्जुनकोदेखा २३ जैसेकि कमलके बनको हाथी छिन्न भिन्नकर देताहै उसीप्रकार आपकी सेनाके छिन्न भिन्न करने वाले और राजाओंको भयभीतकरने वाले अर्जुनको देखा २४ और जैसे कि सिंह मृगोंके समूहोंको भयभीत करताहै उसी प्रकार धनुष के शब्दसे डरानेवाले पांडव अर्जुन को फिर देखा २५ सबलोककेबड़े धनुषधारियों में श्रेष्ठ कवचधारी श्रीकृष्ण और अर्जुन लोकमेंशोभायमान हुये २६ हेभरतबंशी अब युद्धमें चारोंओरके मरने वालोंके महाघोर युद्धों के सत्रहदिन व्यतीत हुये २७ आपको सब सेना चारोंओर से ऐसे पृथक् २ होगई जैसे कि वायु से शरद ऋतुके बादलोंकेसमूह पृथक् २ होजाते हैं २८ हे महाराज अर्जुन ने आपकी सेनाको ऐसे अत्यन्त कंपायमान किया जैसे कि समुद्र

में बायुसे घूमने वाली और चारोंओरसे डूबनेवाली नौका होतीहै तेरा सेनापति कर्ण कहांगया और पीछे चलनेवालों समेत द्रोणाचार्य्य कहांगये में कहां और तेरा शरीर कहां कृतवर्मा कहां २९।३० और भाइयों समेत तेरा भाई दुश्शासन कहांहै बाणोंके लक्ष्यों में वर्त्तमान जयद्रथको देखकर ३१ उसी प्रकार नाते रिश्तेदार भाई साथी और मामाआदिकों को देखकर किसकी वर्त्तमानता करें सब के देखते पराक्रम करके सब लोकको मस्तकपर उल्लंघनकरके ३२ राजा जयद्रथको मारा फिर औरकौनसे शेषबचे हुये कोवर्त्तमानताकरें यहां ऐसा कौनसा मनुष्यहै जोपांडव अर्जुनको विजय करसक्ताहै ३३ उसमहात्माके अस्त्रबड़े दिव्य और नानाप्रकारकेहैं और गांडीवधनुष का शब्द हमारेबल पराक्रमोंको हरताहै ३४ जैसे कि चन्द्रमा से रहित रात्रि अशोभित होतीहै उसप्रकारकी यह सेनाहै जिसका कि प्रधान मारागया और जैसे हाथीसे तोड़ हुयेवृक्षवाली नदी होती है उसी प्रकार से इस सेनाने भी महा व्याकुलता को पाया ३५ जिसकाकिप्रधान मारागयाहै उससेनामें महाबाहु अर्जुन स्वेच्छाचारी होकर ऐसे घूमेगा जैसे कि सूखेवनमें ज्वलित अग्नि घूमतीहै ३६ सात्यकी और भीमसेन इनदोनों का जो वेगहै वह सब पर्वतोंको तोड़कर समुद्रोंको भी शुष्ककरसक्ताहै ३७ हेराजा भीमसेन ने सभाके मध्यमें जो२ बचन कहेथे वह सब सत्य किये और आगेभी करेगा ३८ तब कर्णके सन्मुख नियत होनेपर गांडीवधनुषधारी से अलंकृत और रक्षित वह पांडवीय सेना कठिनतासे सन्मुखताके योग्य और रक्षितहुई तुमनेभी वहकर्मकिये जो किसाधुओंके मध्यमें नीच कर्म गिने जातेहैं औरवह सब कर्म तुमने निर्हेतुककिये इसीसे उनका फल तुमको प्राप्तहुआ है ३९।४० हे भरतर्षभ तुमने उपायोंसे सबपृथ्वी को विजय किया हेतात वह सब पृथ्वी और तेराशरीरसंदेहोंमेंप्रवृत्तहै ४१ हेदुर्योधन आत्माकी रक्षाकर आत्माही सबका पात्रहै हेतात पात्रके खंडितहोनेपर उसमेंकी सबबस्तु इधर उधर दशोंदिशाओंमें बहजातीहैं ४२ बिनाश पानेवाले सीधेमनुष्यसे

सन्धिकरलेना योग्यहै और वृद्धियुक्तसे युद्धकरना योग्यहै यहवृहस्पतिजीकी नीतिहै ४३ हेसमर्थसोहम अपनेबल पराक्रममें पांडवों से न्यूनहैं सोयहां अब पांडवोंसे सन्धिकरनाही मैं उचित मानता हूं ४४ जो कल्याण को नहींजानता है और कल्याणका अपमान करता है वह शीघ्रही राज्यसेक्षीण और रहित होकर कल्याणको नहींपाता है ४५ जो हमराजाको झुककर राज्यको पावैंतो हमारा कल्याणहोय हे राजाअज्ञानतासे पराजय पानेके योग्यनहीं है ४६ दयावान राजायुधिष्ठिर राजा धृतराष्ट्र और गोबिन्दजी के बचनोंसे तुमको राज्य से संयुक्त करेगा ४७ इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी अजेय राजायुधिष्ठिर से और अर्जुन भीमसेनसेभी जो कुछ कहैंगे वह सब उनके कहनेको निस्सन्देह करैंगे ४८ श्रीकृष्णजी कौरव धृतराष्ट्र के बचनको उल्लंघन नहीं करैंगे और पांडवभी श्रीकृष्णजीके बचनको उल्लंघन नहीं करेगा यहमैं निश्चय मानता हूं ४९ मैं पांडवोंके साथतेरी सन्धिको शुभ कल्याणकारी मानताहूं शत्रुताको नहींमानताहूं मैं अशूरता और प्राणोंकी रक्षाके अर्थतुझसे नहींकहताहूं मैं केवलतेरे कल्याण के अर्थ उपकारी बचन कहताहूं नहींतो तू युद्धभूमिमें पड़ाहुआ होकरमेरे बचनोंको स्मरणकरेगा इसप्रकार वह वृद्ध सारद्वत कृपाचार्य्यजी यह बिलाप करकेलम्बी और उष्णश्वासाओंको छोड़कर महाअचेत होगये ५० । ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिचतुर्थोध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

संजयबोलेकि हेराजा यशवान गौतम कृपाचार्य्यकेऐसे२बचनों कोसुनकर राजादुर्य्योधनभीलंबी और उष्णश्वासाओंको लेकरमौन होगया १ वहशत्रुओं का तपानेवाला महासाहसी दुर्य्योधन एक मुहूर्त ध्यानकरके सारद्वत कृपाचार्य्य से यहवचनबोला २ किजो कुछ शुभचिन्तकोंको कहनायोग्यहै वहसब बातेंमैंने सुनीहैं उनसब कहनेवाले शुभचिन्तकोंनेभी प्राणोंको त्यागकरके आपके साथयुद्ध

किया ३ महातेजस्वी महारथी पांडवोंके साथलड़नेवाले और सेना ओंके भगानेवालेतुमको सबलोकोंनेदेखा ४ मुझको जोआप शुभ चिन्तकोंने ऐसेबचन सुनायेहैं यहसब आपलोगों के वचनमुझे ऐसे प्रसन्नतानहीं करतेहैं जैसेकि मरनेके इच्छावानको औषधी प्रसन्न नहींकरती ५ हेब्राह्मणोंमें श्रेष्ठमहाबाहु सहेतुक हितकारी वचनोंसे मुझको प्रसन्नतानहीं प्राप्तहोती है वह बड़ाधनाढ्य राजा युधिष्ठिर पाशोंके द्यूतमेंहमसे पराजित हुआ है और राज्यसेभी रहित किया गयाहै वहहमारे ऊपरकैसे बिश्वासकरेगा६।७अर्थात् वह हमारेबच नोंपरकैसे श्रद्धाकरेगा इसीप्रकार दूतहोकर आनेवाले और पांडवों कीवृद्धिमेंप्रीतिकरनेवाले इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजीभी ८ठगेगये उसकर्मको आपनेनहींबिचारा हेब्राह्मण वहकिस प्रकारसेमेरेबचनों को अंगीकार करेगा ६ जो द्रोपदीने सभाके मध्यमें विलापकिया है उसको और उसप्रकारके राज्यहरणको श्रीकृष्ण जी कभी नहीं सहेंगे १० श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों एकप्राण और मित्रहैं ऐसा पर्व समय में हमनेसुना है हे प्रभु अब मैं उसको देखता हूं ११ केशवजी अपने भानजेको मृतकसुनकर दुःखसे सोतेहैं हमउसके अपराधीहैं वह हमारे निमित्तऐसा कैसेकरेंगे और अर्जुनभी अभि मन्युके नाशमान होनेसे आनन्दको नहीं पाताहै वह प्रार्थना करने सेभी मेरीवृद्धिमें कैसेउपाय करेगा १२।१३ मझला पांडव महाबली भीमसेन बड़ातीव्रहै उसने उग्र प्रतिज्ञाकरीहै वह अवश्य शत्रुताकरे- गा कभीशांतीको नहींपावेगा १४ वह नकुल और सहदेव दोनों वीरखड्ग और कचुकधारीदोनों शत्रुताकरनेवाले और अश्विनीकु- मारोंके समानहैं १५ और धृष्टद्युम्न वा शिखंडी मेरेसाथ शत्रुता करने वालेहैं हेब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ वहदोनों मेरी वृद्धिमें कैसे उपायकर- सक्तेहैं १६ दुश्शासनने सबलोकोंके देखतेहुये एकवस्त्र रखनेवा- ली रजस्वला द्रोपदीको जोसभाकेमध्यमें दुखीकिया १७ उसबात को अबतक वह पांडव स्मरण करकेदुखको पातेहैं वहशत्रु ओंकेतपा नेवाले पांडवयुद्धसे हटाने के योग्यनहींहै १८ जबद्रोपदी को दुःख

दियागयाथा तब उस महादुखी कृष्णाद्रौपदीने मेरेनाश औरअपने सुहृदोंके प्रयोजनकी सिद्धीके निमित्त बड़े तपको कियाहै १६ और तबतक सदैव पृथ्वीपर शयन करतीहै जब तककि शत्रुताका अंत होगा बासुदेवजीकी सगीबहिन अपनी प्रधानता और अहंकारको त्यागकर २० और द्रौपदी सदैव दासीरूप होकर सेवाकरतीहै यह सब अच्छीरीतिसे क्रोधमें भरेहुयेहैं किसी प्रकारसेभी शांतीकोनहीं पासक्ते २१ अभिमन्युके नाशहोनेसे किस प्रकारवह युधिष्ठिर मेरे साथ सन्धि करने को योग्यहोगा और प्रकटहै कि इससागराम्बरा पृथ्वीकोभोगकर २२ फिर किसप्रकारसे पांडवोंकी कृपा पाकर इसको भोगूंगा औरमैं किसरीतिसे राज्यको करूंगा निश्चय करके सूर्यके समान सबराजाओंके ऊपरप्रकाशमान होकर २३ फिर कैसेमैं दासके समान होकर युधिष्ठिरके पीछे२ चलूंगा अपने आप बड़े बड़े भोगोंको भोगकर और देने के योग्य अनेकदानोंको देकर २४ किसप्रकारसे नीचोंके साथ नीच जीविकासे अपना निर्वाहकरूंगा मैंआपके बचनोंकी निन्दा नहींकरताहूं आपने मधुर स्वच्छ और प्रियकारीबचन कहेहैं २५ मैंकिसी दशामेंभीसमयके अनुसार सन्धिको श्रेष्ठ नहींमानताहूं हेशत्रुओंके तपानेवाले मैं युद्धमेंअच्छीरीतिको देखताहूं २६ यह समययुद्धकरनेकाहै नपुंसकबननेका नहींहै मैंने बहुतसे यज्ञोंसे पूजनकिये औरब्राह्मणोंको दक्षिणा दानकरी २७ सबअभीष्टोंको प्राप्तकिया वेदोंको श्रवणकिया शत्रुओंके मस्तक पर नियतहूआ और दासोंका पोषणकरके मैंनेदुखी लोगोंकोभी दुःखोंसे छुटाया २८ हेब्राह्मणोंमें श्रेष्ठमैं पांडवोंसे ऐसाकहने को उत्साह नहींकरताहूं दूसरोंके देशोंको विजय किया अपने देशका पोषणकिया २६ नाना प्रकारके भोगभोगे और मैंनेधर्म अर्थ काम इन तीनोंवर्गोंकाभी सेवनकिया क्षत्रीधर्म औरपितृलोग इनदोनोंके ऋणोंसेभी अऋणता प्राप्तकरी ३० इसलोकमें सुखअविनाशी नहींहै राज्य और यशकहांहै यहांकेवल कीर्ति ही प्राप्त करने केयोग्यहै परन्तु वह कीर्ति युद्धसे प्राप्तहोतीहै दूसरेप्रकारसे

नहीं होतीहै ३१ घरमेंजो क्षत्रीको मृत्युहै वहभी निन्दाके योग्यहै जोघरमें शय्यापर मरताहै यह महाअधर्महै ३२ जोमनुष्य वनमें अथवायुद्धमें शरीरको त्यागकरताहै वहयज्ञोंके फलोंको पाकर बड़ी वृद्धताको पाताहै ३३ वृद्धावस्था से युक्त रोगीमनुष्य दुःख की बातोंको करता और रोताहुआ रुदन करनेवाले जातवालों में जो मरता है वह पुरुषनहींहै ३४ मैं अभी नानाप्रकारके भोगोंको त्याग करके शुभ युद्धसे परमगति पानेवाले पुरुषों के लोकोंको और इन्द्रकी सालोक्यताको पाऊंगा अर्थात् सदैव इन्द्रकेही पास रहूंगा निश्चयकरके शूरबीर श्रेष्ठ चलन युद्धमें मुख न फेरनेवाले बुद्धिमान सत्यसंकल्प सबयज्ञों के करनेवाले और शस्त्ररूपी यज्ञ स्नानसे पवित्र पुरुषोंका निवास स्वर्गमेंहै निश्चय बातहैकियुद्धमें अप्सराओंकेसमूह आनन्दपूर्वकदेखतेहैं ३५।३६। ३७ और यहभी निश्चयहै कि पितृलोग उनदेवताओंकी सभा में पूजित अप्सराओं से व्याप्त उन स्वर्गमें आनन्द करनेवालोंकोदेखते हैं देवताओं से चलायाहुआ मार्ग्ग दूसरों से अधिककर्म करनेवाले उन शूरोंसेभी प्राप्त कियागयाहै हम उसमार्ग्गमें चढ़नाचाहतेहैं३८।३९वृद्धभीष्म-पितामह उसीप्रकार वृद्ध बुद्धिमान द्रोणाचार्य जयद्रथ कर्ण और दुश्शासननेभी वह मार्ग्ग प्राप्तकिया ४० इस मेरेप्रयोजन के लिये उपाय करनेवाले शूरबीर राजालोग मारेगयेवहसब लोग रुधिरमें लिप्त बाणोंसे विदीर्णअंग पृथ्वीपरसोतेहैं ४१ उत्तमअस्त्रोंके ज्ञाता महाशूर वेदोक्तरीतिसे यज्ञकरनेवाले न्यायके अनुसार युद्धमें प्राणों को त्यागकरके इन्द्रभवनमें नियतहैं ४२ चढ़ाईकरने वालेबड़ेवेग-वान और इसलोकमें सद्गतिको पानेवाले उनलोगोंसे यह दुष्प्रा-प्यमार्ग रचागया है जोकि फिर कठिनतासे प्राप्तहोगा ४३ जोशूर मेरेनिमित्त मारेगयेउनके कर्मको स्मरणकरता और उनके ऋणोंसे अऋणहोनेकेनिमित्त राज्यमें अपना चित्तनहींकरताहूं४४समान अ-वस्था वालेभाईऔरपितापितामहादिकोंको गिराकरजोअपनेजीवन कीरक्षा करूंगा तोनिश्चय करके सब संसारमेरीनिन्दाकरेगा ४५

पांडवकोझुककरमित्र शुभचिन्तक और बांधवोंसे रहित मुझराजाका वह राज्य कैसाहोगा ४६ सोमैं इसप्रकार से इससंसारके नाशको करके उत्तम युद्धके द्वारास्वर्गको पाऊंगा यह बिपरीतनहींहै ४७ इस प्रकार से उसके वचनों को सुनकर उसकी प्रशंसा करके सब क्षत्री लोग राजासे यह बचन बोलेकि धन्यहै धन्यहै ४८ वहसब पराजयके न शोचनेवाले पराक्रम करनेमें प्रवृत्तचित्त युद्धकरनेमें निश्चयकरके बड़े साहसी हुये ४९ इसके पीछे युद्धको स्वीकार करने वाले सब कौरवोंने सवारियों को बिश्वास देकर कुछकम दोयोजन परजाकर नियत हो५० चारोंओर से प्रकाशमान वृक्षोंसे रहितपवित्र हिमाचल पर्वतके सुन्दर शुभशिखरपर अरुणबर्णा सरस्वतीको पाकर उसमें स्नान किया और उसके जलको भी पानकिया ५१ तब फिर आपके पुत्रके द्वारा साहस रखनेवाले वहसब शूरबीर परस्पर चित्तको स्थिर करके वहांसे लौटे अर्थात् हे राजा कालकी प्रेरणासे सब क्षत्रीलौट आये ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे उस हिमालयके शिखरपर युद्धको उत्तम माननेवाले सब शूरबीर इकट्ठे हुये १ महारथी शल्य, चित्रसेन, शकुनि, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, यादव कृतवर्मा, २ पराक्रमीसुषेण, अरिष्टसेन, धृतसेन और जयत्सेन नाम वह सब राजा लोग रात्रिमें निवासी हुये इसके पीछे ३ युद्धमें बीरकर्णके मारेजानेपर बिजय से शोभापानेवाले पांडवोंसे भयभीत आपके पुत्रों ने बिना हिमाचल पर्व्वतके आनन्दको नहीं पाया ४ हेराजा तब वहां युद्धमें उपाय करनेवाले वहलोग एक साथही शल्यके सन्मुख बिधि पूर्व्वक प्रशंसा करते हुये राजासे यह बचनबोले ५ किआप अभी अपना सेनापति नियत करके शत्रुओं से लड़ने के योग्य हो और ऐसा सेनापति करिये जिस्से कि हमलोग युद्धमें रक्षित होकर

शत्रुओंको बिजयकरें ६ तबतो दुर्य्योधन उत्तम रथमें नियत होकर अश्वत्थामाजीसे बोलाकिजो युद्धोंमें सबप्रकारके युद्धोंके चमत्कारों के जाननेवाले युद्धमें कालके समान ७ उत्तम अंगोंसे गुप्त शिखवाला कंबुग्रीव प्रियभाषी प्रसन्नचित्त कमलके समाननेत्र व्याघ्र के समान मुख रखनेवाला मेरुपर्वतके समान गौरवता रखनेवाला८ स्कन्ध गति और शब्दसे नन्दीगणके समान हृष्टपुष्ट श्लिष्ट आयत भुजा वाला और बहुत बड़े सघन वक्षस्थलवाला ९ तीव्रता और बलमें बायु और गरुड़के समान तेजमें सूर्य्यके समान और बुद्धिमें शुक्रजी के समान १० कान्ती रूप और मुख इनतीनों ऐश्वर्य्यों से चन्द्रमाकेसदृश सुनहरीकमलसमूहोंके समानस्वच्छअंगकेजोड़ ११ गोल टांग कमर और जंघावाला सुन्दरचरण उंगली और नख रखने वालाहै ईश्वरने बारंबार गुणोंको स्मरण करके उपायसे उत्पन्न कियाहै १२ और अन्य सबलक्षणोंसे युक्त वह सावधान वेदोंका समुद्र और वेगोंसे शत्रुओंका बिजय करनेवाला बल पराक्रम के द्वारा शत्रुओंसे अजेयहै १३ जो दशअंग और चारचरण रखने वाले बाण और अस्त्रोंको मूलसमेत जानताहै और अंगों समेत चारोंवेद जिनमें पांचवां इतिहास है उन सबको अच्छीरीतिसे पढ़ा १४ वहबड़ा तेजस्वी उपायके द्वारा उग्रतपोंसे शिवजीको आराधनकरके योनिसे जन्म न लेनेवाले द्रोणाचार्य्यसे उसस्त्रीमें उत्पन्न हुआ जोकि योनिसे उत्पन्ननहींहै १५ आपका पुत्र उस अनुपम कर्म और रूपसे पृथ्वीपर असादृश्य सब विद्याओं में पूर्ण गुणों के समुद्र शत्रुओंके बिजयकरने वाले १६ अश्वत्थामाजीके पासजाकर बड़ी शीघ्रतासे उनसे बोला कि हम साथहोकर जिसको अग्रगामी करके पांडवोंको बिजयकरें १७ उसको आप बताइयेआपगुरूजीके पुत्रहैं इस हेतुसे आपकी आज्ञासे उसका निर्णय होना चाहिये कि मेरा सेनापति कौन होय १८ अश्वत्थामाजी बोलेकि कुल तेजबल यश लक्ष्मी और सबगुणोंसेपूर्ण यहशल्य हमारा सेनापतिहोय १९ उपकारका ज्ञाता बड़ी सेनाका स्वामी महाबाहु दूसरे स्वामिका-

र्त्तिकके समान यह शल्य अपने निजभानजोंको त्यागकरके हमारे पास आया २० हे उत्तम राजालोगो इसशल्य राजाको अपनासेनापति बनाकर हमलोग ऐसे शत्रुओंके विजय करनेको योग्य होंगे जैसे कि स्वामिकार्त्तिकजीको सेनापति बनाके देवताओंको बिजय प्राप्तहुई २१ अश्वत्थामा के इसप्रकारके बचनों को सुनकर सबमहारथी राजा शल्यको घेरकर चारोंओर को खड़े हुये और विजयके शब्दों को किया २२ युद्धमें सबने बुद्धिकी और उत्तम निवासस्थान को प्राप्त किया इसके पीछे दुर्य्योधन उस रथसवार युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मके समान शल्यको २३ हाथजोड़ कर बोला हे मित्रोंके प्यारे अब मित्रोंका वह समय वर्त्तमान हुआहै २४ जिस में कि बुद्धिमान लोग अपने मित्र और शत्रुओंकी परीक्षा लेतेहैं सो हे शूर आप हमारी सेनाके मुखपर सेनापति हूजिये २५ जिस्सेकि हमलोग युद्ध करनेवाले पांडवों को सन्मुख पाकर बिजयकरें आप के युद्धकरने पर निर्बुद्धी पांडव अपने मन्त्री और पांचालों समेत उपायों से रहित होंगे २६ शल्यबोला कि हेराजा जोतुम मुझको मानतेहो हेकौरवराज मैंइसको करूंगा क्योंकि मेरे तन धन प्राण औरराज्य सब तेरेही हितकेनिमित्तहैं २७दुर्य्योधनवोला हेमामाजी मैंआप श्रेष्ठपुरुषको सेनापतिबनाना चाहताहूं सोआपयुद्धमेंहमारी ऐसी रक्षाकरो जैसेकि स्वामिकार्त्तिजीने युद्धमें देवताओं कीरक्षा करीथी२८हेराजेन्द्रऐसे अभिषेषिक्तहोजाओजैसेकिदेवताओंकेसेनापति अग्निरूप शिवजीकेपुत्र स्वामिकार्त्तिकजीने अभिषेचनपाया था औरशत्रुओंकोऐसेमारो जैसेकिमहाइन्द्रदानवोंकोमारताहै२९॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिदुर्य्योधनवाक्यनामषष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि हेराजा तब प्रतापवानराजामद्रने राजादुर्य्योधन के बचनको सुनकर इस बचनको कहा १ हेमहाबाहु राजादुर्य्योधन इस बचनको सुनो जिन इन रथ सवार श्रीकृष्ण और अर्जुनको तू

रथियोंमें श्रेष्ठ मानताहै २ यह दोनों भुजबलमें किसीप्रकारसे भी मेरे समान नहींहैं क्रोधयुक्त होकरमैं युद्धके मुखपर देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्धमें सन्नद्ध होकर सब पृथ्वीके मनुष्योंसेयुद्ध करसक्ताहूं फिर पाण्डवों से कैसे नहीं लड़सक्ता युद्धमें सन्मुख आनेवाले पाण्डव और सोमकोंको विजय करूंगा ३। ४ मैंनिस्स न्देह तेरासेनापति हूंगा और ऐसे व्यूहको रचूंगा जिसको किप्रति पक्षीलोगनहीं तरसक्ते ५ हेदुर्य्योधन यहमैं निस्सन्देह सत्यसत्यही कहताहूं इसके अनंतर इस प्रकार कहेहुये राजाने शीघ्रही मद्रके राजाको सेनामें अभिषेक कराया हेभरतर्षभ राजाधृतराष्ट्र उसप्र- सन्नरूप दुर्य्योधनने शास्त्रोक्त विधिकेअनुसार ऐसाकिया६।७इसके पीछे उसके अभिषेक करनेपर बड़ेसिंहनाद हुये औरआपकी सेनामें बाजेबजे ८ इसके अनंतर मद्रदेशी महारथी शूरवीर लोग बहुत प्रसन्नहुये और युद्धको शोभा देनेवाले राजाशल्यकी प्रशंसाकरी ९ कि हेराजा तेरी विजय होय और तुम सन्मुख आनेवाले शत्रुओंको मारो और महाबली धृतराष्ट्रकेपुत्र आपके भुजबलको पाकर १० शत्रुओंसे रहित होकर इस पृथ्वीपर राज्यकरो निश्चयकरके तुम युद्धमें देवता असुर और मनुष्योंके विजय करनेकोसमर्थहो ११ फिर यहांमरणा धर्मवाले सोमक और संजयलोग क्यापदार्थहैं इसप्रकार से प्रशंसित होनेपर मद्रदेशका स्वामी राजाशल्यबहुत प्रसन्नहुआ १२ शल्य बोलाकि हे राजा अबमैं युद्धमें सब पांचालोंको पाण्डवों समेत मारूंगा अथवा मरकर स्वर्गको जाऊंगा १३ अबलोगनिर्भ- यके समान मुझ घूमने वालेको देखें अबसबपाण्डव सात्यकीसमेत बासुदेवजी १४ पांचालदेशी, चन्देरी देशी, सबद्रोपदीके पुत्र, धृष्टद्यु- म्न, शिखण्डी और सब प्रभद्रकभी १५ मेरे पराक्रमको और धनु- षके बड़ेबल कोदेखो और युद्धमें मेरे भुज बलकी हस्त लाघवता और अस्त्रबलकोदेखो १६ अब सबपाण्डव सिद्धचारणों समेत मेरी भुजाओंमें जैसा बलहै और जैसे कि अस्त्रोंमें मेरी बिज्ञताहै उसको देखें १७ अब पाण्डवोंके महारथी मेरे पराक्रमको देखकर और

सन्मुखतामें सहायक होकर नानाप्रकारके कर्मकरो १८ हेसमर्थ कौरव अबमैं युद्धमें द्रोणाचार्य्य भीष्म और कर्णको उल्लंघन कर पाण्डवोंकी सेनाओं को चारों ओरसे भगाऊंगा और तेरे हितके लिये युद्धभूमिमें लड़ता हुआ घूमूंगा १९ संजयबोले कि हेबड़ाई देनेवाले भरतर्षभ उससमय शल्यके सेनापतिहोनेपर आपकी सेना में किसीनेभी कर्णके दुःखको नहीं माना २० और सेनाके लोगबहुत प्रसन्नचित्त हुये और पाण्डवों को राजामद्रके आधीन माना २१ हे भरतर्षभ फिर आपकी सेनाबड़ी प्रसन्नताको पाकर उस रात्रिमें सुखसे सोनेवाली होकर चित्तसे सावधान हुई २२ राजा युधिष्ठिर सेनाके उस शब्दको सुनकर सब क्षत्रियों के समक्षमें श्रीकृष्णजीसे यह बचन बोला २३ हेमाधवजी दुर्य्योधन ने बड़े धनुषधारी सब सेनामें पूजित मद्रके राजा शल्यको अपना सेनापति कियाहै २४ हे माधवजी यह जैसा हुआहै उसको जानकर जो उचितहोय उसको करिये आपहमारेस्वामी औररक्षकहैं इससे जैसाजानिये वैसाबड़ी शीघ्रतासे करना योग्य है २५ हेमहाराज यह सुनकर वासुदेवजी राजा युधिष्ठिर से बोले कि हेभरतर्षभ मैं शल्यको मुख्यता समेत जानताहूं २६ वह अधिकतम पराक्रमी महात्मा बड़ातेजस्वी अभ्य-स्त अपूर्व युद्धकर्ता और हस्तलाघवतासे संयुक्त है २७ युद्धमें जैसे कि भीष्म द्रोणाचार्य्य और कर्ण थे मेरे मतसे राजामद्र भी उनके समान अथवा उनसेभी अधिकहै २८ हेभरतवंशी राजा युधिष्ठिर मैं शोचता हुआभी उसयुद्धभूमिमें लड़नेवाले शूरवीर शल्यकेसमान किसीकोभी उससे लड़नेके योग्य नहींपाताहूं २९ हेभरतवंशी वह शल्य बलमें इनशिखण्डी अर्जुन भीमसेन सात्यकी और धृष्टद्युम्न सेभी अधिकहै ३० हेमहाराज सिंह और हाथीके समान पराक्रमी निर्भय राजा मद्र समयपर ऐसाघूमेगा जैसे कि क्रोधयुक्त कालसं-सारकी सृष्टिमें घूमताहै ३१ हेपुरुषोत्तम अबमैं युद्धमें तुझ शार्दूल केसमान पराक्रमी के सिवाय उसकी सन्मुखता करनेवाला नहींदे-खताहूं ३२ हेकौरवनन्दन देवताओं समेत इस संपूर्ण सृष्टिमें तुझ

से अधिक दूसरा पुरुष नहींहै जोकि युद्धमें क्रोधयुक्त हुये राजामद्र कोमारे ३३ इसहेतुसे युद्धभूमिमें प्रति दिन युद्ध करनेवाले और तेरी सेना के छिन्न भिन्न करनेवाले इस शल्यको युद्धमें ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने शम्वरको माराथा ३४ यह बीर अजेय और दुर्य्यो-धन से प्रशंसाके साथ प्रतिष्ठा पानेवाला है युद्ध में इस राजामद्रके मरनेपरतेरीही बिजय है ३५ हे पाण्डव उसके मरनेपर दुर्य्योधन की सबबड़ी सेना मृतकरूप है हेमहाराज अबतुम मेरे इस वचन को सुनकर ३६ युद्धमें महारथी शल्य के सन्मुख जावो हे महा-बाहु इसको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको माराथा ३७ इसपर अपना मामा जानकर दया न करना चाहिये तुम क्षत्रीधर्म को आगे करके राजामद्रको मारो ३८ कर्ण रूप पाताल से उत्पन्न होनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य रूपी समुद्र को तरकर सेनासमूह समेत इस गोपदके समान स्रोतरूपी शल्यको पाकर इसमें मतडू बो ३९ अपने तपके बलको और क्षत्रीपनेके बलको दिखलाओ और इस महारथीकोमारो ४० इसकेपीछे पांडवोंसे पूजित शत्रुओं के बीरोंके मारनेवाले केशवजी इस बचनको कहकर सायंकालके समय अपने डेरेकोगये ४१ फिर केशवजीके चलेजानेपर धर्मरा-ज युधिष्ठिर सबभाई पांचाल और सेनाके लोगोंको बिदा करके ४२ बिना घायलहाथीके समान उस रात्ति में सोया और कर्णके मरने से बड़े प्रसन्नचित्त वह सब पांडव और पांचाल भी आनन्दसे सोये ४३ हे श्रेष्ठ सूतपुत्र के मरनेपर पांडवोंकी सेनावाले जोकि बड़े धनुषधारी और पारहोनेवाले होकर महारथीथे बिजयको पाकर तापसे रहित अत्यन्त प्रसन्नहुये ४४ । ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिशल्यसेनापतिनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

संजयबोलेकि फिर रात्रिके व्यतीत होनेपर दुर्योधन आपकेसब शूरबीरोंसे बोला हेमहारथियो सन्नद्ध होकर अलंकृत होजावो तब

राजाके विचारको जानकर वहसेना अलंकृत हुई और शीघ्रहीरथों को जोड़ २ कर उसी प्रकार से शूरवीर लोग चारों ओर से दौड़े १ । २ हाथी अलंकृत होकर पतियां सन्नद्ध हुईं बाजोंके शब्द प्रकटहुये ३ हेभरतबंशी इसकेपीछे युद्धके निमित्त शूरवीर सेनाके लोगोंकी बार्त्तालाप करतेहुये शेष बचीहुई सबसेना४मृत्युकोलौटाकर टूटपड़ी महारथी लोग मद्रके राजाशल्यको सेनापति करके५ और सबसेनाको विभागकरके अनेकनामभागोंसे युक्तहुये और वह सेनाभी आकर नियतहुई इसकेपीछे कृपाचार्य कृतवर्मा अश्वत्थामा शल्य शकुनि औरअन्य अन्य शेष बचेहुये राजाओंने अपनीअपनी सब सेनाओं समेत इकट्ठे होकर आपके पुत्रसे मिलकर यहसलाहकरी ६ । ७ कि किसीदशामेंभी एक मनुष्यको पांडवोंके साथयुद्ध न करना चाहिये जो अकेला पांडवोंके साथयुद्धकरे अथवा जो अकेले लड़नेवालेको त्यागकरे ८ वहपातक औरउपपातकनाम पांच पापोंसे संयुक्तहोय परस्पर रक्षा करनेवाले और साथरहने वाले हमलोगोंको लड़ना चाहिये ९ वहांवह सबमहारथी इस प्रकारसे नियमकरके और राजामद्र को आगे करके शीघ्रही शत्रुओंके सन्मुखगये १० हे राजा इसी प्रकार सबपांडवभी अपनी सबसेनाको अलंकृत करके बड़े युद्धमें युद्धाभिलाषी होकर चारों ओरसे कौरवोंके सन्मुखगये ११ हे भरतर्षभ वह सेना जिसमें रथ और हाथी चढ़ाई करनेवालेथे व्याकुल समुद्रके समान शब्दायमान उठहुये समुद्रके रूप हुई १२ धृतराष्ट्र बोले कि मैंने द्रोणाचार्य भीष्म और कर्णका गिराना सुना फिर अब तुम शल्य और मेरे पुत्रका गिराना मुझसे कहो १३ हेसंजय युद्धमें शल्य किस प्रकार से धर्मराजके हाथसे मारागया १४ संजय बोले कि हे राजा उस युद्धमें जो घोड़ेहाथी आदिके शरीरों के नाशहुये उनको सावधान होकरसुनो १५ भीष्म द्रोणाचार्य्य और कर्णके गिराने पर आपके पुत्रोंको बड़ीप्रबल आशाहुईथी १६ कि शल्ययुद्ध में सब पांडवोंको मारेगा हे श्रेष्ठभरतर्षभ उस आशाको हृदयमें धरकर बड़े विश्वास

युक्त होकरके १७ और युद्धमें महारथी राजामद्रके आश्रित होकर आपके पुत्रने अपने को सनाथमाना १८ हेराजा जब कर्णके मरने पर पांडवोंने सिंहनादकिये तब धृतराष्ट्रके पुत्रोंको महाभय उत्पन्न हुआ १९ हेमहाराज उससमयप्रतापवान् राजामद्र उनकोविश्वास युक्तकरके और सबसामानसे अलंकृत सर्वतोभद्रनाम व्यूहको रच-कर २० प्रतापवान् महारथी शल्यअत्यन्त उत्तम सिन्धदेशीघोड़ों के उत्तमरथपर सवार होकर रत्नों से जटित बड़ेभार के सहनेवाले महावेगवान् धनुषकोचलायमान करताहुआ पांडवों के सन्मुखगया हे महाराज वहांजाकर उसकेनियत रथके सारथीने उसरथ समेत सिन्धुदेशी घोड़ोंको शोभायमान किया २१ । २२ हे राजा शत्रुओं को पीड़ा देनेवाला शूरबीर उसरथपर सवार वह राजा शल्य आपके पुत्रोंके भयको दूरकरताहुआ युद्धभूमिमें नियत हुआ २३ उस युद्धमें कवचधारी शस्त्रोंसेयुक्त वहराजा शल्य मद्रदेशीवीर और कठिनतासे बिजय होनेवाले कर्णके पुत्रोंसमेत व्यूहकासुखहुआ२४ और उत्तम २ कौरवोंसे रक्षित होकर वह दुर्य्योधन सेनाके मध्यमें नियतहुआ और त्रिगर्त्त देशियोंसे वेष्टित कृतवर्मा बाम भाग पर नियतहुआ २५ और शक और यवनोंसमेत कृपाचार्य्य दक्षिणभाग परनियतहुये और काम्बोज देशियोंको साथलेकर अश्वत्थामापीछे की ओरहुये २६ और घोड़ोंकी बड़ी सेना से युक्त महारथी शकुनी और कैतव्य सबसेनासमेतचले २७ तबवह बड़ेधनुषधारी निर्दोष पांडव सेनाकोअलंकृत और तीनभाग करके आपकीसेनाके सन्मुख दौड़े २८ महारथी धृष्टद्युम्न शिखंडी और सात्यकी यहसब बड़ी शीघ्रतासे शल्यकी सेनाके सन्मुखदौड़े २९ हेभरतर्षभ अपनीसेना से युक्तमारनेका अभिलाषी राजायुधिष्ठिरशल्यके सन्मुखदौड़ा ३० और शत्रुओंका मारने वाला अर्जुन वेगयुक्त होकर बड़े धनुषधारी कृतबर्मा और संसप्तकोंके समूहोंके सन्मुखगया ३१ हेराजेन्द्रयुद्धमें शत्रुओंके मारनेके इच्छावान् महारथी सोमकनाम क्षत्री और भीम-सेन कृपाचार्य्य के सन्मुखगये ३२ और सेनासमेत वह नकुल और

सहदेव युद्धमें उनसेना समेत नियत होनेवाले महारथी शकुनि और उलूकके सन्मुख नियतहुये ३३ इसीप्रकार नानाप्रकारके शस्त्रहाथ में रखनेवाले अत्यन्तक्रोधयुक्त हजारों आपके शूरवीर युद्धमें पांडवों के सन्मुख वर्त्तमान हुये ३४ धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में महारथी महाधनुषधारी भीष्मद्रोणाचार्य्य और कर्णके मरने और कौरवीय पांडवीय सेनाके थोड़ेलोगों के शेष रहनेपर ३५ और पांडवों के अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर चढ़ाई करनेपर हमारेमित्र और दूसरोंकी सेना कितनी बाकीरही ३६ संजयबोलेकि हेराजा जैसेप्रकारसे हम और हमारे प्रतिपक्षी युद्धके निमित्त सन्मुख नियतहुये और युद्धसे जितनी सेनाबाकीरही उसको मुझसे सुनिये ३७ हे भरतर्षभ रथों की संख्या ग्यारह हजार हाथियोंकी दशहजार सातसौ ३८ घोड़ों कीपूर्णसंख्या दोहजारयह आपकी सेनाबारहकोटि पदातियोंसमेत शेषरही और रथोंकीसंख्या छःहजार हाथीछःहजार घोड़ेदशहजार और दो करोड़ पदाती यहपांडवोंकी सेनाबाकीरही हेभरतवंशीयह सब मिलकर युद्धके निमित्तआये ३९।४०।४१ हे राजेन्द्र इसप्रकार राजा मद्रके मनमें नियत विजयकेलोभी क्रोधयुक्त हमलोगसेनाओं को बिभाग करके पांडवोंके सन्मुख गये ४२ इसी प्रकार विजय से शोभापानेवाले शूर पांडव और यशवान् नरोत्तम पांचाल सन्मुख आये ४३ हेप्रभु महाराज इसप्रकार परस्पर विजयाभिलाषी नरोत्तमलोग प्रातःकालकी संध्याकेसमयसन्मुखहुये ४४ इसकेपीछेपरस्पर मारनेवाले पांडव और आपकेपुत्रोंका युद्धमहाघोर रूपहोकर भयानकजारीहुआ ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

हे राजा फिर कौरवोंका युद्ध जो सृंजियोंके साथ जारीहुआ वह घोर भयका बढ़ानेवाला देवासुर युद्धके समानथा चढ़ाई करनेवाले हजारोंमनुष्य और रथघोड़ों के समूह अश्वसवार और घोड़ेपरस्पर

में भिड़े १२ भयानक रूप हाथियोंके भागनेके ऐसे शब्द सुनेगये जैसेकि समयपर आकाश में बादलोंके शब्दहोते हैं ३ हाथियों से घायल कितनेही रथसवार रथों समेत गिरपड़े और युद्धमें मतवाले हाथियोंसे भगायेहुये बीरभागे ४ हे भरतवंशी वहांशिक्षापाने वाले रथ सवारोंने घोड़ोंके समूहोंको और चरणरक्षकोंको बाणोंसे परलोकमें भेजा ५ और इसीप्रकार युद्धमें घूमनेवाले शिक्षितअश्व सवारोंने महारथियोंको प्रास शक्ति और दुधारे खड्गोंसेमारा और कितनेही धनुषधारी मनुष्योंने महारथियोंको घेरकर बहुतोंनेएकको पाकर यमलोकमें भेजा और रथियोंमें श्रेष्ठदूसरे महारथियोंनेहाथी को घेरकरमारा६।७हेमहाराज इसीप्रकार सौकेसे लड़नेवालेमहारथीको और बहुतबाणोंसे लड़नेवाले क्रोधयुक्तरथीको ८ हाथियोंने चारोंओरसे घेरकरमारा हे भरतवंशी हाथीने हाथीको सन्मुख होकरमारा और रथीने रथीको ६ शक्ति तोमर और नाराचों से मारारथहाथी और घोड़े पदातियों को मर्दनकरते १० बड़ीव्याकुलताको उत्पन्न करते युद्धमें दिखाईपड़े और चामरोंसे शोभायमान घोड़े मानोंपृथ्वीको पानकरतेचारों ओरको ऐसे दौड़े ११ जैसे कि हिमालयके शिखरपर हंस दौड़तेहैं हे राजा उन घोड़ों के खुरों से चिह्नित पृथ्वी१२ ऐसेशोभायमानहुई जैसे कि स्त्री हाथोंसे उत्पन्न नखोंसेबिदीर्णहोतीहै घोड़ोंकेखुरोंकेशब्द रथनेमियोंकेशब्द१३पतियोंकेशब्द हाथियोंकी चिग्घाड़ बाजोंकेशब्द और शंखोंके शब्दोंसे १४पृथ्वी ऐसी शब्दायमान हुई हेभरतवंशी जैसे कि परस्पर आघात करने वाली हवाओंके पृथ्वीपर गिरनेसे उत्पन्न होनेवाले शब्द होतेहैं उस समय शब्द करनेवाले धनुष प्रकाशितखड्ग १५ और शरीरके कवचोंके प्रकाशोंसे कुछ नहीं जानागया गजराजकी सूंड़के समान टूटीहुई बहुतसी भुजा १६ व्याकुल और अधिकचेष्टा करतीहुई भयानक वेगोंको करतीथीं हेमहाराज पृथ्वीपर गिरते हुये शिरोंके ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि तालके वृक्षोंसे गिरतेहुये फलोंके शब्दहोतेहैं रुधिरसेलिप्त पड़ेहुये शिरोंसेपृथ्वी ऐसेप्रकाश-

मानहुई १७।१८जैसेकि समयपर सुनहरीकमलोंसे शोभित होतीहै हेराजा फैलेहुये नेत्र निर्जीव और अत्यन्त घायल उन नरोंसे १६ युक्तहोकर वह पृथ्वी ऐसेशोभायमानहुई जैसे कि कमलोंसे शोभित होतीहै चन्दनसेलिप्त बहुमूल्य रत्नमयी केयूर रखनेवाली२० पड़ी हुई भुजाओंसे पृथ्वी ऐसे प्रकाशयुक्त हुई जैसे कि इन्द्रकी ध्वजाओंसे बड़ेयुद्ध में काटीहुई महाराजाओं की जंघाओं से होजातीहै और हाथीकी सूंड़के समान दूसरी जंघाओंसे वह युद्धभूमि व्याप्त होगई सैकड़ों घड़ोंसेआच्छादित छत्रचामरोंसे व्याकुल२१।२२ वह सेनारूप बन ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि फूलोंसे चिताहुआ वन होताहै हेमहाराज वहां निर्भयके समान घूमनेवालेशूरबीर २३ रुधिरसे लिप्त अंगऐसे दिखाई पड़े जैसेकि प्रफुल्लित किंशुकके वृक्ष होते हैं बाण और तोमरों से पीड़ामान हाथी भी २४ जहां तहां टूटेहुये बादलों के समान गिरतेहुये दृष्टपड़े और महात्माओं के हाथसे घायलहुई वह हाथियोंकी सेना २५ सब दिशाओं में ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसेकि वायुसे छिन्नभिन्न बादलहोतेहैं अर्थात् वह बादलके स्वरूप हाथी चारों ओरसे ऐसे गिरपड़े २६ हेसमर्थ जैसेकि प्रलयकाल में बजूसे टूटेहुये पहाड़ गिरतेहैं सवारों समेत पृथ्वीपर पड़े हुये घोड़ोंके समूह जहांतहां पर्व्वतके समान दिखाई दिये फिर युद्धभूमिमें परलोककी ओरको बहनेवाली नदी उत्पन्न हुई२७।२८जिसमेंरुधिर जलरथ भवंर ध्वजा वृक्ष हाड़ कंकड़ भुजा नक्र धनुष झिरने हाथीपर्व्वत घोड़े पाषाण २६ वसा कीच छत्रहंस और गदाउडुपक्षी वह नदी कवच और पगड़ियोंसे पूर्ण औरपताका रूपी सुन्दर वृक्षरखनेवाली ३० रथके पहिये रूप चक्रावलीसे पूर्ण त्रिवेणुरूप दण्डकसे संयुक्त शूरों की प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाली और भयभीतोंके भयों को बढ़ानेवाली ३१ कौरव औरसृञ्जियोंसे व्याकुल महारुद्र नदी जारीहुई परिघरूप भुजारखनेवालेवह शूरलोग पितृलोकके निमित्त बहनेवाली उस बड़ीभयानक नदीको सवारी रूपनौकाओंके द्वारा तरे हेराजा इसप्रकार उस अमर्य्यादा

रूपयुद्धके जारीहोनेपर ३२।३३ जोकि पूर्व समयमें होनेवाले देवासुर युद्धके समानथा और घोर चतुरंगिणी सेनाके नाशमान होनेपर जहां तहां अन्य बान्धवपुकारे ३४ पुकारनेवाले उनबांधवोंकेकारणसे भयसे पीड़ामान दूसरे शूरवीर नियतहुये इस प्रकार उसअमर्याद भयानक युद्धके वर्त्तमान होनेपर ३५ अर्जुन और भीमसेनने शत्रुओंको अचेतकिया तबहेराजा वहआपकी बड़ीसेना महाघायल होकर ३६ जहां तहां ऐसी अचेतहुई जैसे कि नशेकी दशामें स्त्री अचेत होजातीहै वहां भीमसेन और अर्जुनने उससेनाको अचेतकरके ३७ शंखोंको बजाकर सिंहनादोंको किया फिर बड़ेशब्दको सुनते ही धृष्टद्युम्न और शिखंडी ३८ धर्मराजको आगेकरके राजामद्रके सन्मुखगये हे राजा तबवहां हमनेएक भयानक रूप आश्चर्यको देखा ३९ जो शल्यसे भिड़े हुये शूरभागी होकर युद्ध करनेलगे फिर वेगवान् अस्त्रज्ञ युद्धदुर्मद शीघ्रतासे युक्तआपकीसेनाकेविजय करनेके अभिलाषी नकुल और सहदेव सन्मुखगये हेभरतर्षभ इसके पीछे वह आपकीसेना लौटी ४०। ४१ जोकि विजयसे शोभित पांडवोंके बाणोंसे अत्यन्त घायलथी फिरउसघायल सेनाने आपके पुत्रोंके देखते ४२ हुये दिशाओंको सेवनकिया वहसबसेना बाणों की वर्षासे अत्यन्त संयुक्तथी हेराजा तब आपके शूरबीरोंका बड़ा हाहाकार उत्पन्नहुआ ४३ और युद्धमें परस्पर विजयाभिलाषी महात्मा पाण्डवों समेत क्षत्रियोंके तिष्ठ२ शब्दहुये ४४ इसकेपीछे पाण्डवोंकेहाथ पराजित आपकीसेनाकेलोग युद्धमें अपनेप्यारे पुत्र भाई और पिता बाबाओंको त्याग करके ४५ घोड़े हाथियोंकोशीघ्र चलानेवाले शूरबीर मामाभानजे आदिनातेदारोंको छोड़२ कर चारों ओरसे चलदिये ४६ अर्थात् हेभरतर्षभ आपके शूरबीर अपनीरक्षा में उत्साह करने वालेहुये ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय॥

संजय बोले कि प्रतापवान् राजामद्र उस पराजित हुई सेनाको देखकर अपने सारथी से बोला कि मनके समान इन शीघ्रगामी घोड़ोंको शीघ्रतासे चलायमानकरो यह पांडुका पुत्र राजायुधिष्ठिर श्वेत शोभायमानछत्र को धारण किये शोभायमान होकर नियत है १।२ हेसारथी वहां जल्दीसे मुझको पहुंचाकर मेरे बलको देख अबयुद्धमें पाण्डव लोग मेरे आगे नियत होनेको समर्थ नहींहैं ३ इसप्रकार के बचनको सुनकर वह राजा मन्द्रका सारथी वहांही को चला जहांपर कि सत्यसंकल्प धर्मराज राजा युधिष्ठिर था ४ और वह पांडवोंकी सेनाभी अकस्मात् चढ़ाई करनेवाली हुईऔर अकेले शल्यनेही युद्धमें उन सबको ऐसे रोका जैसेकि उठेहुये समुद्रको मर्य्यादा रोकतीहै ५ हेश्रेष्ठ तब पांडवोंकी सेनाका समूह शल्य को पाकर युद्धमें ऐसे नियत हुआ जैसेकि पर्व्वतको पाकर समुद्रका वेग नियत होताहै ६ फिर युद्धके निमित्त युद्धभूमिमें नियतराजा मद्रको देखकर मृत्युको पीछे करके सब कौरव लौटे ७ हेराजा वह भागकी हुई लोग उन अलंकृत सेनाओंके लौटने पर रुधिर रूप जल रखनेवाला महा रौद्र युद्ध प्रारंभ हुआ ८ युद्धमें दुर्मद नकुलने चित्रसेनको सन्मुख पाया उनदोनों अपूर्व धनुषधारियोंने परस्पर सन्मुख होकर ६ युद्धमें बाण रूपी जलोंसे परस्पर ऐसे सींचा जैसे कि दक्षिण और उत्तरसे उठे हुये वर्षाकरने वालेदो बादल होतेहैं १० वहां हमने पाण्डवों के अथवा अन्य लोगोंके अन्तरको नहीं देखा वह दोनों अस्त्रज्ञ बलवान रथचर्या अर्थात् मारकोंमें सावधान ११ परस्पर मारनेमें उपाय करने वाले छिद्रों के अन्वेषण में प्रवृत्तथे हे महाराज फिर चित्रसेनने पीतवर्ण तीक्ष्ण धारभल्ल से १२ नकुलके बड़े धनुष को मूठके स्थानपरकाटा फिर भयसे उत्पन्न व्याकुलता से रहित ने इस टूटे धनुष वाले को सुनहरीपुंख और तेजधार १३ तीन बाणों से ललाटपर घायल किया

और उसके घोड़ोंको भी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे कालवश किया १४ इसप्रकार ध्वजा औरसारथी कोभी तीन२ बाणोंसे गेरा हेराजावह नकुल शत्रुकी भुजासे छूटे हुये ललाटपर नियत तीन बाणोंसे१५ तीन शिखर वाले पर्व्वतके समान शोभायमान हुआ वह टूटे धनुष रथसे बिहीन होकर बीर नकुल ढाल तलवारको लेकर १६ रथसे ऐसे उतरा जैसेकि पर्वतके शिखर से केसिरी सिंह उतरताहै तब उसने उस पदाती आनेवाले के ऊपर बाणों की बर्षाकरी १७ उसतेज पराक्रमी नकुलने भी बलके द्वारा उस बाण दृष्टीको नि-ष्फल किया फिर अपूर्व शूरबीर थकावट को जीतनेवाला महाबाहु नकुल चित्रसेनके रथको पाकर १८ सबसेना के देखतेहुये उसपर चढ़ा वहांजाकर उस नकुलने सुन्दरमुख बड़ेनेत्र कुंडल और मुकुट धारी१९ चित्र सेनके शिरको उसके शरीरसे जुदाकिया वह सूर्य्यके समान महा तेजस्वी रथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा २० फिर वहां महारथियोंने मारे हुये चित्रसेनको देखकर धन्य धन्यशब्दों से प्रशंसाकरी औरबड़े सिंहनादों को किया २१ कर्णके पुत्र महा रथी सुषेण और सत्यसेन मरे हुये अपने भाईको देखकर नाना प्र-कारके बाणोंको छोड़ते २२ शीघ्रही रथियोंमेंश्रेष्ठ पाण्डव नकुलको मारनेके अभिलाषी होकर ऐसे सन्मुख दौड़े जैसे कि महावन में हाथीके मारनेके अभिलाषी दोव्याघ्र दौड़ते हैं २३ वह दोनों बाण समूहोंको अच्छी रीतिसे छोड़ते इस महारथीके ऊपर ऐसे बर्षा करनेवाले हुये जैसे कि दोबादल जलकी बर्षा करते हैं २४ सब ओरको बाणोंसे घायल और अत्यन्त प्रसन्न पराक्रमी नकुल दूसरे धनुषको लेकर और रथपर चढ़कर २५ क्रोधयुक्त कालके समान युद्धमें नियत हुआ हे राजा उन दोनों भाइयों ने टेढ़े पर्व वाले बाणोंसे २६ उसके रथको खण्ड२ करना प्रारंभ किया उसके पीछे नकुलने हंसकर अपने तीक्ष्णधार चार बाणोंसे २७ सत्यसेन के चारों घोड़ों को मारा फिर सुनहरी पुंख तीक्ष्णधार नाराचको धनुष पर चढ़ाकर २८ सत्य सेनके धनुषको भी काटा इसके पीछे

दूसरे रथमें सवारहोकर दूसरे धनुषकोलेकर २६ सत्सेन और सु-
षेण नकुलके सन्मुखदौड़े हेमहाराज भयजनित व्याकुलतासे रहित
प्रतापवान नकुलने युद्धके मुखपर दो२ बाणोंसे उनदोनोंको छेदा
इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी हंसतेहुये सुषेण ने अपने क्षुरप्रसे
नकुलके बड़े धनुषको काटा ३०।३१ तव पीछेक्रोधसे मूर्च्छित नकु-
लने दूसरे धनुष को लेकर पांच बाणों से सुषेणको छेदा एकबा-
णसे ध्वजा को काटा ३२ और बड़े वेगसे युद्ध में सत्सेन के धनुष
और हस्तत्राण कोभी काटा इस हेतुसे लोगोंने बड़ा उच्च शब्द
किया ३३ इस के पीछे शत्रुके मारनेवाले भार के साधनेवाले
दूसरे धनुषको लेकर बाणोंकी वर्षासे उसने पांडुनन्दन नकुल को
सब ओर से आच्छादित करदिया ३४ शत्रुओं के मारनेवाले
नकुलने उन बाणोंको हटाकर सत्सेन और सुषेणको दो२ बाणोंसे
छेदा ३५ हे राजा उन दोनों ने भी अपने जुदे जुदे बाणोंसे उस-
को छेदा और उसके सारथी को तीक्ष्णबाणोंसे घायलकिया ३६
फिर हस्तलाघवी प्रतापवान सत्सेनने नकुलके धनुष और रथके
ईशादंडको पृथक् २ बाणोंसेकाटा ३७ उस रथपरनियत अतिरथी
ने सुनहरी दंड स्वच्छधार तेलसे मलीहुई बड़ी निर्मल रथशक्तिजो
कि ओठोंको चाटनेवाली बड़ीविषैलीनागकन्याके समानथी उसको
उठाकर युद्धमें सत्सेनके ऊपर छोड़ा ३८।३६ हेराजा उस शक्तिने
युद्धमें सत्सेनके हृदयके सौखंड करदिये तबवह अचेत और निर्जीव
होकर रथसे पृथ्वीपर गिरपड़ा ४० क्रोधसे मूर्च्छामान सुषेणअपने
इसभाई कोभी माराहुआ देखकर तीक्ष्णबाणों से पदाती नकुल पर
वर्षाकरनेलगा४१वहकर्णकापुत्र चारबाणोंसेचारों घोड़ोंको पांचवा
णोंसे ध्वजाको काटकर और तीन बाणोंसे सारथीको मारकरगर्जा
४२ फिर युद्ध में पिता को चाहताहुआ सुतसोम उसके पासगया
इसके पीछे भरतर्षभ नकुल सुतसोमके रथपर सवार होकर ४३
ऐसे शोभायमान हुआ जैसेकि पर्वतपर नियत केसिरी सिंहहोताहै
उसने दूसरेधनुषको लेकर सुषेणसे अच्छा युद्धकिया ४४ उनदोनों

बड़ेमहारथियोंनेपरस्पर सन्मुख होकरबाणोंकी वर्षासे परस्पर मार नेमें उपाय किये ४५ इसके पीछे क्रोधयुक्त सुषेणने पांडवको और सुत सोमको तीन तीन बाणोंसे उसकी छाती और भुजाओं परघा यल किया ४६ इसके पीछे शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त वेगवान नकुलने बाणोंसे उसकी दिशाओंको ढकदिया ४७ उसके पीछे तीक्ष्ण नोक सुन्दर वेतवाले वेगवान अर्द्धचन्द्र नाम बाणको लेकर युद्धमें कर्ण के पुत्रपर फेंका ४८ हे राजाओंमें श्रेष्ठ सबसेना के लोगोंके देखते उस बाणही से उसके शिर को काटडाला यह आश्चर्यसा हुआ ४६ फिर उस महात्मा नकुलके हाथसेमाराहुआ वहबीर ऐसेगिर- पड़ा जैसे कि बड़ा भारी नदीके तटका वृक्ष नदीकेवेगसे गिरपड़ता है ५० हे भरतर्षभ आपकी सेना कर्णकेपुत्रोंकेमरणको और नकुल के पराक्रमको देखकर भीयभीतहोकर भागी ५१ उस समय शत्रुओं के बिजय करनेवाले प्रतापवान शूरसेनापति, राजामद्र, युद्धमें उस सेनाको रक्षित किया ५२ और आपउससेनाको नियत करके धनुषके भयानकशब्द और बड़ेसिंहनादकोकरकेनिर्भय होकरनियतहुआ ५३ हेराजा युद्धमेंदृढ़ धनुषधारीसे रक्षित और पीड़ासे रहितवहसवलोग शत्रुओंके सन्मुखगये ५४ और युद्धाभिलाषी बड़े साहसी शूरवीर उस बड़े धनुषधारी राजाको चारों ओरसे मध्यवर्ती करके उसके चारों ओर नियत हुये ५५ सात्यकी पाण्डव भीमसेन नकुल और सहदेव इनसब बीरोंने लज्जावान शत्रुओंके बिजय करनेवाले यु- धिष्ठिरको आगे करके ५६ और चारों ओरसे अपना मध्यवर्ती करके सिंहनाद किये और वारंबार बाणोंके उग्र शब्द और नाना प्रकार के सिंहनादोंको किया ५७ इसीप्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त आपके सब शूरबीरोंने बड़े बेगसे राजा मद्रको अपनामध्यवर्त्ती करके फिर युद्ध करना स्वीकार किया ५८ इसके अनन्तर मृत्युको पीछे करके आपके शूरवीर और प्रतिपक्षियों के वह युद्ध जारीहुये जोकि भयभीतोंके भयके बढ़ानेवालेथे ५६ हे राजा जैसेकि पूर्व समयमें देवासुरनाम संग्राम हुआ था उसीप्रकार इननिर्भय लोगों

के युद्ध यमराजके देशके बढ़ानेवाले हुये ६० हे राजा इसके पीछे वानर ध्वजा धारी पाण्डुनन्दन अर्जुन युद्धमें संसप्तकों को मार कर उस कौरवीयसेनाके सन्मुख गया ६१ उसीप्रकार सब पांडव जिनमें अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा तीक्ष्णबाणोंको छोड़तेहुये उससेना के सन्मुख गये ६२ पांडवों से घिरेहुये उन लोगोंका ऐसा बड़ा मोह उत्पन्न हुआ कि सबसेनाने दिशा और विदिशाओं को नहीं पहिंचाना ६३ पाण्डवों से चलायमान तीक्ष्णधारबाणों से पूर्ण बहुत मृतक शूरोंवाली पराजित चारों ओरसे चलायमान ६४ वह कौरवीय सेना महारथी पांडवों के हाथसे मारीगई हे राजा इसी प्रकार आपके पुत्रोंके बाणों से पाण्डवोंकोभी हजारों सेना युद्धमें चारों ओरसे मारीगई वह दोनोंसेना अत्यन्त पीड़ित और घायल ६५ । ६६ होकर ऐसी व्याकुलहुई जैसे कि वर्षाऋतु में दो नदियां व्याकुल होतीहैं हेराजेन्द्र इसके पीछेउसप्रकारके बड़ेयुद्धमें आपके पुत्र और पांडवों में बड़ाभय उत्पन्नहुआ ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसंकुलयुद्धे दशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि उस समय परस्पर युद्ध करनेवाली वह दोनों सेना ऐसी छिन्न भिन्न और व्याकुल होगई जैसेकि वर्षा ऋतुमें दो नदियां होतीहैं १ हे राजा उस बड़े युद्धमें शूरवीरोंके भागने हाथियोंके चिंघाड़ने पुकारने गर्जने पदातियों के भागने २ । ३ बहुत प्रकारसे घोड़ोंके भागने सबजीवोंके भयकारी बड़े नाशके वर्त्तमान होने ४ और युद्धमें मतवाले पुरुषों के प्रसन्न करनेवाले भयभीतों के भय बढ़ानेवाले रथ औरहाथियों से युक्त नानाप्रकारके भिड़ने ५ परस्पर मारने के अभिलाषी शूर वीरोंके सेनामें प्रवेश करने और बड़े घोरजीव नाशरूपी द्यूतके होनेपर ६ पांडवोंने यमराज केदेशके बढ़ानेवालेघोररूपयुद्धमें तीक्ष्णबाणोंसे आपकीसेनाको छिन्नभिन्न करदिया ७ उसीप्रकार आपके वीरोंने भी पांडवोंकी सेनाके लोगों

को मारा भयभीतोंके भयके उत्पन्न करनेवाले उस युद्धके जारीहो-
नेपर ८ सूर्य्योदयके पीछे दिनके प्रथम भागके वर्त्तमान होनेपर
महात्मासे रक्षित लक्ष्यभेदन करनेवाले प्रतिपक्षी ६ मृत्युको पीछे
करके आपकी सेनासे युद्ध करने लगे उनबलवान अहंकारी लक्ष्य-
भेदी और प्रहार करनेवाले पांडवोंसे १० कौरवीय सेना ऐसेपी-
ड़ामानहुई जैसे कि अग्निसे व्याकुल मृगी और जैसेकि निर्बल गौ
कीचमें फँसी पीड़ित होतीहै तब उस प्रकारसे पीड़ामान सेनाको
देखकर ११ उनके छुटाने का अभिलाषी राजा शल्य पांडवीयसेना
केसन्मुख गया अर्थात् अत्यन्त क्रोधयुक्त राजामद्र उत्तम धनुषको
लेकर १२ युद्धमें मारनेका अभिलाषी होकर पांडवोंके सन्मुखगया
हेमहाराज युद्धसे बिजयी शोभायमान पांडवोंनेभी १३राजामद्रको
पाकर तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे घायल किया इसके पीछे बड़ेपरा-
क्रमी राजामद्रने सैकड़ों बाणोंसे उस सेनाको धर्मराजके देखतेहुये
पीड़ामान किया हेराजा इसके अनन्तर बहुतसे अशुभ लक्षणोंके
चिह्न प्रकट हुये और पर्व्वतों समेत शब्द करनेवाली पृथ्वीभीकं-
पाय मानहुई चारोंओर से फटने वाली दण्ड और शूल रखनेवाली
प्रकाशित उल्का १४ । १५ । १६सूर्य्य मण्डलको भेदकर स्वर्गसे
पृथ्वी परगिरी हेराजा बहुधामृग भैंसेऔर पक्षियोंनेभी १७ आपकी
सेनाको दक्षिण किया शुक्र और मंगल बुधसे संयुक्त हुये १८ यह
शकुन पांडवोंके पीछे और अन्य सबराजाओं के आगे हुये औरने-
त्रोंको घायल करके बरसनेवाली ज्वाला शस्त्रोंकी नोंकोंपर प्रकट
हुई और काक उलूक ध्वजा और शिरोंपर बैठगये उसकेपीछे सेना-
केसमूहोंमें घूमने वालोंका महाउग्रयुद्धहुआ १६ । २० इसके पीछे
कौरव सबसेनाओं परचढ़ाई करनेवाले होकर पांडवोंकी सेनाके
सन्मुख गये २१ फिर प्रसन्नचित्त शल्य बाणोंकी बर्षाकरताकुन्तीके
पुत्र युधिष्ठिर परबर्षा करनेलगा २२ बड़े पराक्रमीने सुनहरी पुंख-
वाले और तीक्ष्ण धारवाले दशदश बाणोंसे भीमसेन और सबद्रु-
पदके पुत्रों समेत नकुल सहदेव २३ धृष्टद्युम्न सात्यकी और शि-

खण्डोको भी घायल किया २४ इसके पीछे ऐसीबाणोंको वर्षाकरी जैसेकि वर्षाऋतुमें इन्द्रकरताहै हेराजा इसके पीछे हजारों सोमक और प्रभद्रक नामक्षत्री २५ शल्यके बाणोंसे गिरते हुयेऐसे दिखाई पड़े जैसेकि भौंरोंके झुंड और टीड़ियोंके समूह दीखतेहैं २६ और जैसेकि बादलोंसे बिजली गिरतीहै उसीप्रकार शल्यके बाणगिरे हाथी घोड़े पति रथी यहसब पीड़ामान २७ शल्यके बाणोंसे महा-व्याकुल घूमते और शब्दोंको करते गिरपड़े राजामद्र क्रोध और शूरता में पूर्णहोकर २८ काल सृष्टिमें अन्तके समान गर्जने बादल केसमान शब्दायमान बड़े बलवान राजा मद्रने युद्धमें शत्रुओं को अच्छीरीतिसे आच्छादितकिया २९ शल्यके हाथसे घायल पांडवी सेना कुन्तीकेपुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिरकी ओर दौड़ी ३० इसकेपीछे बड़ेपराक्रमी शल्यने तीक्ष्णबाणोंसे उससेना को युद्धमें मर्द्दन करके बड़ी बाणोंकी बर्षासे युधिष्ठिरको पीड़ामान किया ३१ क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिरनेपति और घोड़ोंसमेत उस आतेहुये शल्यको तीक्ष्ण बाणोंसे ऐसे रोका जैसे कि अंकुशोंसे मतवाले हाथीको रोकते हैं शल्यने विषैले सर्पकेसमान घोरबाण उसके ऊपर छोड़ा ३२वहबाण महात्मायुधिष्ठिरको छेदकर बड़ीतीव्रतासे पृथ्वी परगिरा इसकेपीछे क्रोधयुक्त भीमसेनने शल्यको पांचबाणोंसे घायलकिया३३ सहदेवने पांचसे और नकुलने दशबाणोंसे घायल किया और द्रोपदीके पुत्र उस शत्रुओंके मारनेवाले शल्यपर३४बाणोंकी ऐसीवर्षा करनेलगे जैसे कि बादल पर्वत पर करतेहैं इसके पीछे चारोंओरको पांडवोंके हाथसे पीड़मान शल्यको देखकर ३५ अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्मा और कृपाचार्य सन्मुख दौड़े और बड़ा पराक्रमी उलूक औरसौबल कापुत्र शकुनी यह सब सन्मुखगये ३६ फिर युद्धमें महाबलीअश्व-त्थामा और आपके सब पुत्रोंने धीरेपनेसे मिलकर शल्यकी रक्षा करी३७ कृतवर्माने शिलीमुखनाम तीनबाणोंसे भीमसेनको छेदकर बड़ी बाणोंकी वृष्टीसे उस क्रोधरूपको रोका ३८ इसके पीछेक्रोध-युक्तने बाणोंकी बर्षासे धृष्टद्युम्नकोपीड़ामान किया शकुनीद्रोपदीके

पुत्रोंके और अश्वत्थामा नकुल औरसहदेवके सन्मुखगया ३६ युद्ध कर्त्ताओंमें श्रेष्ठ बड़ातेजस्वी पराक्रमी दुर्योधन युद्धमें अर्जुन और केशवजीके सन्मुख गया और बाणोंसे भी घायल किया ४० हेराजा इस प्रकार जहां तहां आप के शूरवीरोंके सैकड़ों द्वन्द्वयुद्ध शत्रुओंके साथ महाघोर रूप और अपूर्वहुये ४१ भोजवंशी कृतवर्माने युद्धमें भीमसेनके रीछ वर्ण घोड़ोंकोमारा मृतक घोड़ेवाले उसपांडुनन्दन भीमसेन ने रथकी बैठकसे उतरकर ४२ कालदंडके समान हाथमें गदा को लेकर युद्धकिया राजा मद्रने सहदेव के सन्मुख उन घोड़ों को मारा ४३ फिर सहदेवने शल्यके पुत्रको खड्ग से मारा और कृपाचार्य धृष्टद्युम्न से युद्ध करनेलगे ४४ भयजनित व्याकुलतासे रहित उपाय करनेवाले आचार्यके पुत्र गुरूजी उस भ्रांतीसे रहित उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्नसे अच्छे प्रकारसे लड़े न्यून क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने मन्द मुसकान के साथ द्रोपदीके प्रत्येक शूरबीर पुत्र को दश दश बाणोंसे घायलकिया इसके पीछे भीमसेनके घोड़ोंको मारा ४५ । ४६ मृतक घोड़ेवाले बड़े पराक्रमी उस पांडुनन्दन भीमसेननेशीघ्रहीरथसे उतरकर कालदंडके समानगदाको उठाकर४७ कृतबर्माके रथ और घोड़ोंको चूर्णकिया कृतवर्माभी उसरथसेकूदकर हटगया४८हेराजा फिर सोमकऔरपांडवोंको मारतेअत्यंतक्रोधयुक्त शल्यनेभी तीक्ष्ण बाणों से युधिष्ठिरको फिरपीड़ामान किया ४६ क्रोधयुक्त दांतोंको पीसकर पराक्रमी भीमसेनने युद्धमें उसके नाशके निमित्त अवकाश देखकर गदाको लिया ५०जोकि यमराजकेदंडरूप काल रात्रिके समान ऊंची हाथी घोड़े और मनुष्योंके प्राणोंकी नाश करनेवाली सुवर्णके पत्रोंसे मढ़ीहुई ज्वलितउल्का के समान ५१ शैक्यमें रहनेवाली सर्पिणीकेसमान बड़ीउग्रवज्रकेसमानलोहमयी चन्दन और अगर से लिप्त स्वेच्छा चारी तरुण स्त्रीके समान वसा रुधिरसेलिप्त अंग बिश्वती देवीकी जिह्वाके समान सैकड़ों सुन्दर घंटोंकेसमान शब्दायमान इन्द्रवज्रके समान५२।५३ कांचलीसेछुटे बिषधर सर्पकी समान हाथीकेमदों से संबन्ध रखनेवाली शत्रुओं

को सेनाओंको भयभीत करनेवाली अपनी सेनाओंको प्रसन्नकरने वाली ५४ त्रिलोकी में विख्यात पर्वतोंके शिखरों को तोड़नेवाली थी जैसे कि बलवान भीमसेनने कैलास भवनमें शिवजीकेमित्र ५५ अत्यन्त क्रोध युक्त कुवेरजीको बुलाया और मन्दिरके लिये माया रूप अहंकारी बहुतसे गुह्यकोंको गंधमादन पर्वत परमारा बहुत से रुकेहुये और द्रौपदी के हितमें नियत होकर भीमसेन ने ऐसा पराक्रम किया ५६।५७ वह महाबाहु बज्रमणि और रत्नोंसेजटित अष्टकोण रखनेवाली बज्रके समान महाभारी उसगदाको उठाकर युद्धमें शल्यके सन्मुखगया ५८ उस युद्ध कुशलने इस भयकारी शब्दवाली गदासे शल्यके चित्तके समान शीघ्रगामी चारोंघोड़ों को मारा ५९ इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त गर्जतेहुये वीरशल्य ने तोमर को भीमसेनकी बड़ी छाती पर मारा वह उसके कवच को काटकर गिर पड़ा ६० फिर भयजनित व्याकुलता रहित भीमसेन ने उसी तोमरको उठाकर राजा मद्रके सारथीको छाती पर छेदा वह टूटे कवच चित्त से भयभीत रुधिरकी वमन करता ६१ महा दुःखी होकर समक्षमेंही गिर पड़ा और राजामद्र हटगया आश्चर्य चित्त धैर्यमती बुद्धिवाले राजाशल्य ने कर्मके बदले कर्मको देखकर गदाको लेकर शत्रुको देखा ६२ उसके पीछे प्रसन्न चित पांडवोंने युद्धमें साधारण कर्मवाले भीमसेनके उस कर्मको देखकर उसकी प्रशंसा करी ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसंकुलयुद्धे एकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि हे राजा तबशल्य सारथीको गिराहुआ देखकर केवल लोहमयी गदाको तीव्रतासे लेकर पर्वतके समान निश्चय होकर नियत हुआ १ भीमसेन तीव्रतासे बड़ी गदाको लेकर उस प्रकाशित कालाग्निके समान पाशधारी यमराज शिखर धारी कैलासके समान बज्रधारी इन्द्रके २ शूलधारी रुद्रके और बन के

मतवाले हाथीके समान शल्यके सन्मुख टूटा ३ उसकेपीछे शंखादि हजारों बाजोंके कठिन शब्द और शूरोंकी प्रसन्नताके बढ़ानेवाले सिंहनाद उत्पन्न हुये ४ सब ओरसे उस रणभूमिके बड़े हाथी रूप भीमसेन और शल्यको देखकर आपके और पाण्डवों के शूर-बीरोंने धन्य धन्य शब्दकिया ५ युद्धमें शल्य और यदुनन्दन बलदेवजी के सिवाय दूसरा मनुष्य भीमसेन के वेगके सहनेको समर्थ नहीं होसक्ताहै ६ उसीप्रकार युद्धमें भीमसेन के सिवाय दूसरा शूरबीर महात्मा शल्यकी गदाके बेगके सहनेको उत्साह नहीं करसक्ताहै ७ वह चेष्टा करनेवाले वृषभ के तुल्य गर्जनेवाले गदाधारी शल्य और भीमसेन मण्डलों को घूमे ८ मंडल घूमने केमार्ग और गदाके प्रहारों में उनदोनों पुरुषोत्तमों का युद्ध समान हुआ ९ शल्यकी घुमाई हुई वहगदा तपायेहुये सुबर्णकी बनीहुई प्रज्वलित अग्निके समान उज्वल वस्त्रोंसे भय की बढ़ानेवाली हुई १० इसीप्रकार मण्डलों में मार्गोंके घूमने वाले महात्मा भीमसेनकी गदा बिजली बादलके समान शोभायमान हुई ११ हे राजा राजामद्रकीगदासे घायलआकाशमें चलनेवालेके समान भीमसेन की गदाने अग्निकी ज्वालाओंको छोड़ा १२ इसीप्रकार भीमसेन कीगदासे घायल शल्यकी गदा अंगारोंकी बर्षाकरनेवाली हुई वह आश्चर्य्यसा हुआ १३ जैसेदोबड़े हाथी दांतोंसे और बड़ेबैल सींगों सेप्रहारकरैं उसीप्रकार उनदोनोंनेभी परस्पर गदाओंसे प्रहारकिया फिर वह दोनों क्षणमात्रमेंही रुधिरसे लिप्तशरीर गदासे घायलअंग ऐसे देखनेके योग्यहुये जैसे कि किंशुकके दोवृक्ष होतेहैं १४ । १५ शल्यकीगदासे बाम और दक्षिणओरसे घायल वह पर्ब्बतकेसमान भीमसेन कंपायमान नहीं हुआ १६ उसीप्रकार भीमसेनकी वेगयुक्त गदासे बारंबार घायल शल्यभी ऐसे पीड़ामान नहींहुआ जैसे कि हाथीसे घायल पर्ब्बत पीड़ामान नहीं होता १७ उनदोनों पुरुषोत्तमोंकी गदाओंके आघातित शब्द जोकि बज्रके शब्दकी समान थे दशों दिशाओं में सुनेगये १८ गदाऊंची करने वाले बड़े पराक्रमी

वह दोनों लौटकर फिर मार्गोंमें नियत होकर मण्डलोंको घूमे १६ इसके पीछे आठचरणपासजाकर औरगदाकोउठाकर वुद्धिसे वाहर कर्म करनेवाले उनदोनोंकी चढ़ाइयां लोहके दंडोंसे हुईं २० तव वह दोनों वड़े कुशल महा अभ्यासी विजयके चाहनेवाले दोनों मण्डलोंकोघूमे उससमय दोनोंने अपने२ मुख्यकर्मोंको दिखाया२१ इसके पीछे उन दोनोंने शिखरधारी पर्वतों के समान घोर गदाओं को उठाकर परस्परमें ऐसेघायलकिया जैसे कि भूकम्पमें दोपर्व्वत परस्पर घायलकरतेहैं २२ वह दोनोंबीर परस्पर क्रोधयुक्तगदाओं से अत्यन्त घायल इन्द्रध्वजाके समान एकसाथही गिरपड़े २३ तब दोनों सेनाओंके बीरलोग हाहाकार करनेलगे परमस्थलों में अत्यन्त घायल दोनों अचेत होगये २४ इसके पीछे पराक्रमी कृपाचार्य्य राजामद्रको अपने रथपर बैठाकर युद्धभूमिसे दूरलेगये २५ भीमसेन नशेकरनेवाले के समान एक निमिषमेंही अचेतता से सचेत होकर उठा और गदाहाथमें लेकर राजामद्र को बुलाया २६ इसके पीछे नानाप्रकारके शस्त्रोंसे संयुक्त आपके शूरवीरों ने नानाबाजों समेत पांडवीयसेनासे युद्धकिया २७ हेमहाराजइसके अनन्तर वहसब शूरबीर जिनका अग्रवर्ती दुर्य्योधनथा दोनों भुजा और शस्त्रोंको ऊंचा करके बड़े शब्दोंसमेत सन्मुख गये २८ फिर वहपांडुनन्दन उस सेनाको सन्मुख देखकर सिंहनादोंसमेत दुर्य्योधनादिककेसन्मुखगये २९ हेभरतर्षभ आपकेपुत्रने शीघ्रही उनआते हुओंकेमध्यमें चेकितानको प्राससेहृदयपर कठिन घायलकिया ३० आपके पुत्रसे घायल रुधिरसे लिप्त वह चेकितान बड़ीअचेतताको पाकररथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा ३१ पांडवोंके महारथियोंने चेकितानको घायल और अचेत देखकर बारी२ से बाणोंकी वर्षाको बरषाया ३२ हे महाराज विजयसे शोभायमान और चारोंओर से दर्शनीय पांडवलोग आपकी सेनामें घूमनेलगे ३३ बड़े पराक्रमी कृपाचार्य्य, कृतवर्मा और शकुनीने जिनमें अग्रवर्ती राजामद्रथा उन सबने धर्मराजसे युद्धकिया ३४ हेराजा आपकेपुत्रकी प्रेरणासेउन

तीनहजार रथियोंनेजिनके अग्रवर्ती अश्वत्थामाथे अर्जुनसे युद्धकिया ३५ विजयमें संकल्पकरनेवाले और युद्धमें जीवनको त्यागनेवाले आपके शूरबीरोंने सेनामें ऐसेप्रवेशकिया जैसे कि हंसवड़े सरोवरमें प्रवेश करतेहैं ३६ इसकेपीछे परस्पर मारनेके अभिलाषी उन वीरों का महाघोर युद्धहुआ जोकि परस्पर मारनेकी अभिलाषासे युक्त और अन्योन प्रीति बढ़ानेवालाथा३७।३८हेश्रेष्ठराजा वीरोंके नाश-कारी उस युद्धकेजारी होनेपर हवासे उठाईहुई घोर धूल पृथ्वीसे उठी ३९ पांडवोंके कहने और नामोंके सुननेसे हमने परस्पर में उनकोजाना जो निर्भयके समान युद्धकरतेथे ४० हे पुरुषोत्तम वह धूल रुधिरसे शान्तहोगई उस अंधेरेके दूर होनेपर साफ २ दिशा बिदितहुईं इसप्रकार भयभीतोंके भयकेबढ़ानेवाले४१घोरयुद्धकेवर्त्त-मानहोनेपर आपके और प्रतिपक्षियोंके शूरवीरोंमेंसे किसीने मुख को नहींमोड़ा ४२ युद्धभूमिमें शुभयुद्धसे विजयके अभिलाषी और स्वर्गके चाहनेवाले लोग ब्रह्मलोकके अभिलाषी होकर चढ़ाईकरने वालेहुये ४३ तब स्वामीके कार्य्यमें निश्चय करनेवाले और स्वर्ग में प्रवृत्तचित्त शूरबीर स्वामीके अन्नोदक के बिमोक्षार्थ युद्ध करने लगे ४४ महारथीलोग नाना प्रकारके शस्त्रोंको छोड़ते परस्पर सन्मुख गर्जतेहुये युद्धमें प्रवृत्तहुये और प्रहार करनेलगे ४५ उस समय आपकी और उनकी सेनामें मारो छेदो पकड़ो प्रहारकरो यहीशब्द सुनेगये ४६ हे महाराज इसकेपीछे मारनेके अभिलाषी शल्यने महारथी धर्मराज युधिष्ठिरको तेजधार बाणोंसे घायल किया ४७ फिर मर्मकेज्ञाता हंसतेहुये युधिष्ठिरने मर्मोंको लक्ष्य करके चौदह नाराचोंकोमारा ४८ फिर युद्धमें क्रोधयुक्त राजामद्रने कंकपक्षवाले बहुतसेबाणोंसे युधिष्ठिरको ढककर घायलकिया ४९ हेमहाराज फिर सबसेनाके देखते टेढ़े पर्ववाले बाणोंसेभी युधिष्ठिर को घायलकिया ५० क्रोधयुक्त बड़े यशवान धर्मराजनेभी तीक्ष्ण धारकंक और मोरपक्षसे जटितबाणोंसे राजामद्रकोघायलकिया ५१ इसको घायलकरके महारथीने चन्द्रसेनको सत्तरबाणसे सारथीको

नौ बाणसे और द्रुमसेनको चौंसठ बाणोंसे घायलकिया ५२ हे राजा महात्मा पांडवके हाथसे चक्रके रक्षकके मरनेपर शल्यने पच्चीस चंदेरी देशियोंको मारा ५३ रणभूमिमें पच्चीसबाणसे सात्यकीको सातबाणसे भीमसेनको और सौबाणोंसे नकुल और सहदेव को घायलकिया ५४ क्षत्रियोंके नाश करनेवाले पांडवने विषैले सर्पकी समान बाणोंको उस इस प्रकार घूमनेवालेके ऊपरफेंके ५५ कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरने इस सन्मुख वर्त्तमानकी ध्वजाको रथके युद्ध द्वारा जुदाकिया ५६ हंसतेहुये पांडवने इसप्रकारसे उसकी ध्वजा को काटा और हमने पब्बतके टूटे शिखरके समान उसको गिरते हुयेदेखा ५७ मद्रकाराजा गिरीहुई ध्वजाको और सन्मुखवर्त्तमान युधिष्ठिरको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर बाणोंकी वर्षा करने लगा ५८ क्षत्रियोंमें श्रेष्ठबड़ा साहसी शल्य वर्षाकरनेवाले बादलों के समान बाणोंकीवर्षासे क्षत्रियोंपर वर्षाकरनेलगा ५९ औरउसने सात्यकी, भीमसेन, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव इनको पांच २ बाणोंसे छेदकर युधिष्ठिरको पीड़ामानकिया ६० इसके पीछे युधिष्ठिरकी छातीपर उठेहुये मेघजालकीसमान फैलेहुये बाणजालोंको देखा ६१ युद्धमेंक्रोधयुक्त महारथी शल्यने गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे उसकी दिशा और विदिशाओंको ढकदिया६२इसकेपीछे बाणजालों से पीड़ामान राजा युधिष्ठिर पराक्रमसे ऐसेरहित होगया जैसे कि इन्द्रके हाथसे जृम्भअसुर हुआथा ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिसंकुलयुद्धेनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

संजयबोले हेश्रेष्ठ राजामद्रके हाथसे धर्मराजके पीड़ामानहोने पर सात्यकी भीमसेन और नकुलने १ रथोंसेशल्यको घेरकरयुद्धमें पीड़ामानकिया बहुतसेमहारथियोंके हाथसे उस अकेलेको पीड़ामान देखकर २ बड़ा धन्यबादका शब्द उत्पन्नहुआ और सिद्धलोग बहुत प्रसन्नहुये और मिलेहुये मुनियोंने भी आश्चर्य्यमाना ३ भीमसेनने

पराक्रममें भालुरूप शल्यकोयुद्धमें एकबाणसेघायलकरके फिरसात बाणोंसेछेदा ४ फिरसात्यकी धर्मपुत्रकी इच्छासे सौ बाणोंसे राजा मद्रकोढककरसिंहनादको गर्जा५ नकुलने पांचबाणसे औरसहदेवने सातबाणोंसे उसकोछेदकर फिरशीघ्रही उसको पांचबाणोंसेछेदा ६ फिर उनमहारथियोंसे पीड़ामान युद्धमें उपाय करनेवाले शूरशल्य ने वेगकेनाशक और भारकेधारणकरनेवाले घोरबाणको खैंचकर ७ सात्यकीको पच्चीसबाण से भीमसेनको तिहत्तर बाणसे और नकुल को सातबाणसे घायलकियाइसकेपीछे ८ शल्यनेधनुषधारी सहदेव के धनुषको विशिखनाम बाणसमेत भल्लसे काटकर उसको इक्कीस बाणसेछेदा ६ इसकेपीछे सहदेव ने दूसरे धनुषकोतैयार करके बड़े तेजस्वी मामाको उनपांचबाणोंसे घायल किया १० जोकि विषैले सर्पके समान और प्रज्वलित अग्निके समान थे फिर अत्यन्त क्रोध युक्तने टेढ़े पर्ववालेबाणसेउसके सारथीको ११ अत्यन्तछेदा और उसकोभी तीनबाणोंसे घायल किया भीमसेनने सत्तरबाणसेसात्य-कीने नौबाणोंसे१२ और धर्मराजने साठबाणोंसे शल्यको अंगोंपर घायलकिया हेमहाराज फिर उन महारथियोंके हाथसे घायलहुये शल्यने१३अपने अंगोंसेरुधिरको ऐसेगिराया जैसे कि पर्वत धातुओं को गिराताहै तबउसने पांच २ बाणोंसे उन सब बड़े२धनुषधारियों को १४ वेगसे छेदा यहआश्चर्य्यसाहुआ हे श्रेष्ठ फिर उस महारथी ने युद्ध में दूसरे भल्ल से धर्मपुत्र के धनुषको काटा १५ फिर धर्म पुत्र ने भी दूसरे धनुषको लेकर १६ शल्य को घोड़े सारथी ध्वजा और रथके साथ ढकदिया धर्मपुत्रके शायकों से ढकेहुये उस शल्य ने १७ तेजधार दशबाणों से युधिष्ठिरको छेदा फिर बाणोंसे धर्म-पुत्रके पीड़ित होने पर क्रोधयुक्त सात्यकीने १८ मद्रदेशियों के राजाको बाण समूहोंसे हटाया उसने भी क्षुरप्रसे सात्यकी के बड़े धनुषको काटा १६ और उन भीमसेनादिकों को तीन २ बाणसे पीड़ित किया हे महाराज सत्यपराक्रमी क्रोधयुक्त सात्यकी ने सुनहरी दण्डवाले बहुमूल्य तोमरको उसपर चलाया २० फिर

भीमसेन ने ज्वलित सर्पके समान नाराचको नकुलने शक्तिको और सहदेवने शुभगदाको चलाया २१ युद्धमें शल्यके मारने के अभिलाषी धर्म राजने शतघ्नीको चलाया पांचोंके हाथसे छोड़े हुये और आतेहुये अस्त्रसमूहोंको २२ युद्धमें राजामद्रने रोका शल्यने सात्यकीके चलाये हुये तोमरको भल्लसे काटा २३ हस्तलाघवी प्रताप वान शल्यने भीमसेन के चलाये हुये सुवर्ण से अलंकृत बाणको भी युद्धमेंदो खण्ड किया २४ और नकुलकी चलाई हुई महाभयकारी शक्तिको और सहदेवकी फेंकीहुई गदाको बाणों के समूहोंसे काटा हे भरतबंशी दो बाणोंसे राजाकी उसशतघ्नीको काटा २५ और सब पांडवोंके देखते सिंहनादोंसे गर्जा सात्यकीने युद्धमें शत्रु की बिजय को नहीं सहा २६ तव क्रोध से मूर्च्छामान सात्यकीने दूसरे धनुष को लेकर दोबाणसे शल्यको घायल करके तीनबाण से सारथीको घायल किया २७ इसके पीछे क्रोधभरे शल्यने उन सबको दशबाणों से ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि अंकुशोंसे बड़े २ हाथियों को करतेहैं वह शत्रुओंके मारनेवाले महारथी युद्ध में राजामद्रसे रोकेहुये होकर २८ उसके सन्मुख नियत होनेको समर्थ नहींहुये इसके पीछे राजा दुर्योधनने शल्यके पराक्रम को देखकर २९ पांडव पांचाल औरसृञ्जियोंको मृतक रूपमाना हे राजा फिर प्रतापवान महाबाहु भीमसेनने ३० चित्तसे जीवन को त्याग करके राजा मद्रसे युद्धकिया और बड़े पराक्रमी नकुल सहदेव और सात्यकीने ३१ शल्यको घेरकर चारों ओरको बाणोंसे आच्छादित करदिया फिर पांडवों के बड़े धनुषधारी महारथियों से ३२ घिरेहुये उस प्रतापवान राजा मद्रने सब से युद्धकिया हे राजा तब धर्म पुत्र युधिष्ठिरने बड़े युद्धमें अपने क्षुरप्रसे ३३ उस राजामद्रके चक्ररक्षकको शीघ्रतासेमारा फिर उसशूर महारथीचक्र रक्षकके मारे जानेपर ३४ बड़ेबलवान राजामद्रने बाणोंसे सेना के सब लोगोंको ढकदिया इसके पीछे धर्म राज युधिष्ठिरने युद्धमें बाणोंसे ढकेहुये उनसेनाके लोगोंको देखकर ३५ चिन्ताकरी कि

माधवजीका वह बचनकैसे निश्चय करके सत्यहोय ३६ कि हेपांडवों के बड़े भाई युद्धमेंक्रोधयुक्त राजाशल्य तेरीसेनाका नाशनहीं करेगा इसके अनन्तर चारोंओर से पीड़ित करते पांडवोंने रथ हाथी और घोड़ों समेत जाकर ३७ राजामद्रको प्राप्तकिया राजाने नाना प्रकार के शस्त्रों समेत उठीहुई बाण दृष्टीको ३८ युद्धमें ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसेकि बायु बड़े २ बादलोंको अलग २ कर देता है इसके पीछे शल्यजनित आकाश में वर्त्तमान सुनहरी पुंखोंके बाण दृष्टी को सलभाओंके समूहोंके समान देखा युद्धके मुखपर राजामद्रके चलायेहुये ३६।४० वह बाणचलतेहुये पक्षियोंके समूहोंके समान दिखाई पड़े हे राजा शल्यके छोड़ेहुये सुवर्णसे अलंकृत बाणोंसे४१ आकाश अत्यन्त ब्याप्त होगया वहां पांडवों का और हमारा कोई शूरबीर दृष्टिनहीं पड़ा ४२ उस बड़े युद्ध में बलवान राजामद्र की हस्तलाघवता और बाणोंकीबर्षासे महा अन्धकार होनेपर ४३ और समुद्र रूपी पांडवोंकी सेनाको छिन्न भिन्न किया हुआ देखकर देवता गन्धर्ब और दानवोंने बड़ा आश्चर्य्य किया ४४ श्रेष्ठ फिर वह शल्य सबओरसे उन लोगोंको युक्ति पूर्वक बाणोंसे पीड़ामान करके धर्मराज को आच्छादित करके सिंहके समान बारम्बार गर्जा ४५ तब युद्धमें उसके बाणोंसे ढकेहुये पाण्डवों के महारथी युद्धमें उस महारथी के सन्मुख जानेको समर्थ नहीं हुये ४६ भीमसेनादिक रथियों ने जिन के अग्रवर्त्ती धर्म राजथे युद्धको शोभा देनेवाले शूरबीर शल्यको रणमें त्यागनहीं किया ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिशल्ययुद्धे त्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय॥

संजय बोले कि युद्ध में अश्वत्थामा और उसकेआगे पीछेवाले त्रिगर्त्त देशियों केशूर महा रथियों के बाणोंसे छिदेहुये अर्जुनने १ युद्धमें तीनशिलीमुख बाणोंसे अश्वत्थामाकोघायलकिया उसीप्रकार अन्य शूरबीरोंकोभी अर्जुनने दोदो बाणोंसेछेदा २ हेमहाराज फिर

वाणों की वर्षासे आच्छादित करदिया हेभरतर्षभ वाणोंसे विदीर्ण उन आपके शूरवीरोंने ३ जोकि तेजवाणोंसे पीड़ामान थे अर्जुन को पाकर त्यागनहींकिया वह महारथी जिनकेअग्रवर्त्ती अश्वत्थामाजीथे उन्होंनेरथोंके समूहोंसे ४ अर्जुनकोघेरकर युद्धकिया हे राजा उनके छोड़हुये सुवर्णसे अलंकृत वाणोंने ५ वेगसे अर्जुनके रथके बैठनेके स्थानको भरदिया उसीप्रकार सवधनुषधारियोंमें श्रेष्ठ बड़ेधनुषधारी श्रीकृष्ण और अर्जुनको ६ वाणोंसे घायल अंगदेखकर युद्धमें दुर्मद शूरबीर प्रसन्नहुये हे समर्थ तव कूबर रथचक्र,रथ,योक्तर,युग, अनुकर्ष यहसव रथके अंग बाणरूपहोगये ७ हे राजापूर्वसमयमें वहां आपके शूरवीरोंने जैसीदशा अर्जुनकी करी वैसीदशा पूर्वसमयमें न देखीगई न सुनीगई ८ वह रथ पुंखयुक्त तीक्ष्णवाणोंसे सब ओर को ऐसा दिखाई देताथा जैसे कि पृथ्वीपर सैकड़ों उल्काओं से प्रकाशमान बिमान होताहै ९ हे महाराज फिर अर्जुनने गुप्तग्रन्थी वाले वाणोंसे उसकी सेनाको ऐसा ढकदिया जैसे बादल अपनी वर्षासे पर्व्वतको ढक देताहै १० युद्धमें उन बाणोंसे जिनपर कि अर्जुन का नाम चिह्नित था घायल और उसप्रकारके अर्जुनको देखते हुये उन लोगोंने लोकको अर्जुनरूप माना ११ उस अर्जुनरूपी अग्नि ने जिस की क्रोधरूपी ज्वाला से उत्पन्न होनेवाले वाण हवा और धनुषके बड़े शब्दथे उस अग्निने शीघ्रहीसेनारूपी इन्धन को भस्मकिया १२ हे भरतवंशी महाबाहु धृतराष्ट्र अर्जुनके रथ मार्गोंमें पृथ्वीपर गिरते चक्र रथ युग तूणीर और रथोंसमेत पताका ध्वजा १३ ईशा,अनुकर्ष, त्रिवेणु,अक्ष,योक्तर और सवप्रकारके चाबुक १४ कुण्डल और वेष्टनधारी गिरेहुये शिर भुजा कन्धे १५ व्यजनों समेत छत्र और मुकुटोंके ढेर चारोंओर दिखाई पड़े १६ हे राजा इसकेपीछे क्रोधयुक्त अर्जुन के रथ मार्ग में पृथ्वी दुर्गन्ध और मांस रुधिरकी कीचरखनेवाली होगई १७ हेभरतर्षभ वहरणभूमिमें रुद्रजी के क्रीड़ास्थानके समान भयभीतों का भय बढ़ाने वाला और शूरबीरोंकी प्रसन्नताका बढ़ानेवाला हुआ १८ फिर शत्रु-

ओंका तप्तकरनेवाला अर्जुन युद्धमें कवचधारी दोहजार रथियोंको मारकर निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान हुआ १९ हे राजा जैसे कि प्रलयकालमें भगवान् अग्नि सब जड़ चैतन्योंको भस्म करके निर्धूमदिखाई देतेहैं उसीप्रकार कुन्ती का पुत्र अर्जुन दिखाई पड़ा २० फिर अश्वत्थामाने युद्धमें अर्जुन के पराक्रमको देखकर बड़ीपताकावाले रथ समेत अर्जुन को रोका २१ तब परस्पर मारनेके अभिलाषी धनुषधारियों में श्रेष्ठ वह दोनों पुरुषोत्तम परस्पर सन्मुखहुये २२ हे महाराज उन दोनोंकी बाणवृष्टी ऐसीबड़ी भयकारी हुई जैसे कि वर्षाऋतुमें वर्षाकरनेवाले दो बादलोंकी होतीहै २३ तब परस्पर ईर्षा करनेवाले उनदोनों ने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से ऐसे परस्पर घायल किया जैसे कि सींगोंसे दो बैल परस्पर घायल करते हैं २४ हे महाराज उनदोनों का युद्ध देरतक सीधाहुआ इसके पीछे वहां शस्त्रोंका घोर संघट्टन हुआ २५ तब अश्वत्थामाने सुनहरी पुंख और सुन्दरबेतवाले बारह बाणोंसे अर्जुनको और दश बाणोंसे वासुदेवजीको घायल किया २६ इसकेपीछे अर्जुनने बहुत हँसकर गांडीव धनुषको टंकारा और उस बड़े युद्धमें एक मुहूर्त्त गुरूका पुत्रमानकर २७ महारथी अर्जुनने घोड़े सारथी औरध्वजा से रहित किया इसकेपीछे बड़ी मृदुतासे तीनशायकोंसे भी उसको घायल किया २८ तब मृतक घोड़ेवाले रथ पर नियत मन्द मुसकान करते अश्वत्थामाने परिघाके समान मूसलको अर्जुनके ऊपर फेंका २९ शत्रुओं के मारनेवाले वीर अर्जुन ने उस स्वर्णमयी वस्त्र से अलंकृत अकस्मात् आतेहुये मूसलको सातखण्ड किये ३० बड़े क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने मूसल को टूटाहुआ देखकर हिमालय के शिखरकीसमान महाघोर परिघको हाथमेंलिया ३१ युद्धमें सावधान अश्वत्थामाने उस को अर्जुन के ऊपर फेंका पाण्डुनन्दन अर्जुन ने उसकालरूपक्रोधभरीहुई परिघकोदेखकरशीघ्रही पांचउत्तमबाणोंसे खंड २ किया ३२ हे भरतर्षभ बड़ेयुद्धमें अर्जुनके बाणोंसेटूटीहुई वह परिघ पृथ्वीके महाराजाओंके चित्तोंको विदीर्णकरतीहुई पृथ्वीपरही

गिरपड़ी ३३ उसके पीछे अर्जुनने अन्य तीनबाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया तब बलवान् अर्जुनके हाथसे अत्यन्त घायल वह बड़े पराक्रमी ३४ अश्वत्थामाजी अपनीवीरता में नियत हुये इसकेपीछे महारथी भारद्वाज अश्वत्थामाने सुरथनाम क्षत्रीको ३५ सब क्षत्रियोंके देखते बाणोंके समूहों से ढकदिया इसके अनन्तर पांचालोंका महारथी सुरथ रणभूमि में बादल के समान शब्दायमान रथकी सवारीसे अश्वत्थामाके सन्मुख वर्त्तमान हुआ सब भारके सहने वाले उत्तम दृढ़ धनुषकोखैंचतेहुये ३६।३७ उसनेअग्नि और सर्पके समान बाणोंसे उसको ढकदिया आतेहुये महारथी सुरथको क्रोध युक्त देखकर ३८ अश्वत्थामा ने दण्डसे घायल सर्पके समान युद्ध में क्रोधकिया होठोंको चाटते अश्वत्थामाने भृकुटीको तीन शिखा वाली करके ३९ बड़े क्रोध से उसबीर सुरथ को देखकर धनुषकी प्रत्यंचाको चढ़ाकर यमदण्डके समान प्रकाशित तीक्ष्ण नाराचको छोड़ा ४० इन्द्र बज्रके समान छोड़ाहुआ वह नाराच उसके हृदय को तोड़ पृथ्वीको चीरकर बड़े बेगसे प्रवेश करगया ४१ इसके पीछे नाराचसे बिदीर्ण वह बीर पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़ा जैसे कि बज्र से फटनेवाले पहाड़का शिखर गिरताहै ४२ उस बीरके मरने पर रथियों में श्रेष्ठ प्रतापवान् अश्वत्थामा शीघ्रही उसी रथपर सवार हुये हे महाराज फिर युद्ध दुर्मद महाअलंकृत युद्ध में संसप्तकों समेत अश्वत्थामाने फिर अर्जुनसे युद्धकिया ४३।४४ वहांमध्याह्नवर्त्ती सूर्य्यके बर्त्तमान होनेपर एकका बहुतोंके साथ वहबड़ायुद्धहुआ जोकि यमराजके देशका बढ़ानेवालाथा ४५ वहां हमने उन्हीं के पराक्रमको देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया जो अकेलाअर्जुन एकसाथ होनेवाले बहुतसे बीरोंसेलड़ा ४६ एक का बहुतोंके साथ ऐसा बड़ा युद्धहुआ जैसे कि पूर्व्वसमय में इन्द्र का युद्ध दैत्यों की बड़ी सेनाके साथ हुआथा ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसंकुलयुद्धेनामचतुर्द्दशोऽध्यायः १४॥

—*—

पन्द्रहवां अध्याय॥

संजयबोले हे महाराज दुर्य्योधन और धृष्टद्युम्नने भी बड़ा युद्ध किया वह युद्धभी बाण और शक्तियोंसे व्याप्तथा १ हे महाराजउन दोनोंकी बाणधारा ऐसे प्रकट हुई जैसे कि समयपर चारोंओर से बादलोंकी जलधारा होतीहै २ फिर राजा दुर्य्योधन ने शीघ्रगामी पांचबाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल करके उग्रबाण रखनेवाले द्रोणाचार्य्य के मारनेवाले धृष्टद्युम्नको सातबाणोंसे छेदा ३ फिर बलवान् दृढ़ पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने युद्धमें दुर्य्योधनको सत्तरविशिखों से पीड़ामानकिया ४ हे भरतर्षभ तब उसके सगेभाइयोंने राजा को पीड़ामान देखकर बड़ीसेना समेत घेरलिया ५ उससमय सब ओर को उन अतिरथियोंसे घिराहुआ वह शूरयुद्धमें अस्त्रों की तीव्रतादिखाता हुआ अच्छेप्रकारसे भ्रमणकरनेलगा ६ प्रभद्रकनाम क्षत्रियों से संयुक्त शिखंडीने धनुषधारी महारथी कृपाचार्य्य और कृतबर्मासे युद्धकिया ७ हे राजा प्राणोंके द्यूतरूपी युद्धमें प्राणोंके त्यागनेवाले उनलोगोंका घोररूप महायुद्धहुआ ८ फिर दिशाओंमें बाणवृष्टीको करतेहुये शल्यने पांडवों को सात्यकी और भीमसेन समेत पीड़ित किया ९ हेराजेन्द्र इसीप्रकार अश्विनीकुमारोंके समानपराक्रमी उन दोनों नकुल और सहदेवसेभी बलपराक्रम और अस्त्रोंकी सामर्थ्यके द्वारायुद्धकिया १० उस बड़ेयुद्धमें किसी महारथी ने शल्यकेशायकों से घायल पांडवोंके रक्षकको नहींपाया ११ उसकेपीछे माद्रीनन्दन शूर नकुल धर्मराजके अत्यन्त पीड़ामान होनेपर तीव्रतासे मामाजी के सन्मुखगया १२ शत्रुओं के मारनेवाले मन्दमुसकान करते नकुलने युद्धमें इस शल्यको ढककर उनबड़े उग्र दशबाणोंसे छातीपर घायल किया जोकि लोहमयी कारीगरके हाथसे साफ़ सुनहरीपुंख तेजधार धनुषरूपीयन्त्रसे प्रेरणाकियेहुयेथे १३।१४ फिर उस महात्मा भानजेके हाथसे पीड़ामान शल्यने टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे नकुल कोपीड़ामान किया १५ इसकेपीछे राजायुधिष्ठिर भीमसेन सात्यकी

माद्रीनन्दन सहदेव यह सब राजामद्रके सन्मुख गये १६ दिशा-ओंको रथोंके शब्दोंसे पूर्ण करते और पृथ्वीको कंपाते शीघ्र आते हुये उनवीरोंको १७ युद्ध में शत्रुविजयी सेनापति शल्यनेरोका तीन बाणसे युधिष्ठिरको पांचसे भीमसेनको १८ सात्यकीको सौबाणोंसे और सहदेवको तीनबाणोंसेछेदा हे श्रेष्ठ फिरभी राजामद्रने महात्मा नकुलकेधनुषबाणको १६ क्षुरप्रसेकाटा तव शल्यके शायकोंसे कटा हुआ वह धनुष गिरपड़ा २० इसके पीछे महारथी नकुलने दूसरे धनुषको लेकर शीघ्रही राजा मद्रके रथको बाणोंसे भरदिया २१ हे श्रेष्ठ फिर युधिष्ठिर और सहदेवने दश २ बाणोंसे इसमद्रके राजाको छातीपर घायल किया २२ और भीमसेनने राजामद्र के सन्मुख जाकर कंकपक्षयुक्त साठबाणोंसे और सात्यकीने दशबाणोंसे उस-कोघायलकिया २३ इसकेपीछे क्रोधयुक्त राजामद्रने सात्यकीको टेढ़े पर्ववाले नौ और सत्तरबाणोंसे घायल किया २४ इसके अनन्तर इसके धनुषको भी बाणसमेत मूठके स्थानपर काटकर चारोंघोड़ों कोभी कालके वशकिया २५ महारथी राजामद्रने सात्यकी को वि-रथदेखकर सौविशिखोंसे उसको चारों ओरसे घायलकिया २६ हे कौरव फिर क्रोधसे पूर्णने माद्रीके दोनोंपुत्र भीमसेन और युधि-ष्ठिरको दश२बाणोंसे घायलकिया २७ वहां हमने राजामद्रकेअपूर्व्व पराक्रमकोदेखा कि सबपांडव मिलकरभी उसकेसाथयुद्ध में सन्मुख नहीं हुये २८ इसकेपीछे बलवान् सत्यपराक्रमी सात्यकी दूसरेरथ पर नियत होकर राजामद्रके आधीन और पीड़ामान पांडवोंकोदेख कर २९ तीव्रतासे शल्यके सन्मुखगया युद्धका शोभादेनेवाला शल्य रथकी सवारीसे उस आतेहुये रथीके सन्मुख ऐसे गया ३० जैसे कि मतवालाहाथी मतवालेहाथीकेसंमुखहोताहै शूरसात्यकीका और राजामद्रका वहयुद्धऐसाकठिनहुआ ३१ जैसा कि पूर्व्वसमयमें सम्बर और देवराजका युद्धहुआथा ३२ सात्यकीने युद्ध में सन्मुख वर्त्तमान राजामद्रकोदेखकर दशबाणोंसेघायलकरके तिष्ठ२ शब्द किया ३३ फिर उस महात्माके हाथसे कठिनघायल राजामद्रने

अपूर्व पुंखवाले तीक्ष्णबाणोंसे सात्यकीको घायलकिया ३४ इसके पीछे बड़ेधनुषधारी पांडव सृञ्जय और यादव रथोंकी सवारी में मामाकेमारनेकी इच्छाओंसे शीघ्रसन्मुखगये३५ उसकेपीछेसिंहके समान गर्जनेवाले शूरवीरों का महाकठिन युद्ध रुधिररूपी जल रखनेवाला जारीहुआ ३६ हे महाराज युद्धमें मांसके अभिलाषी सिंहोंकेसमान गर्जनेवाले उनवीरोंकी परस्परचढ़ाई बहुतअच्छीहुई ३७ उन्होंकेबाणोंके हजारोंसमूहोंसेपृथ्वी आच्छादित होगई और अन्तरिक्षभी अकस्मात् बाणरूपहोगया ३८ वहां चारोंओरसेअनेक प्रकारके बाणोंका अन्धकार करनेपर महात्माओं के छोड़हुये बाणोंसे बादलोंकीसी छाया उत्पन्नहोगई ३९ हे राजा वहां सुनहरी पुंखवाले प्रकाशमान कांचलीसेछुटेसर्पोंकीसमान छोड़हुये बाणों से दिशा शोभायमानहुईं ४० शत्रुओंके मारनेवाले शल्यने बड़ा अपूर्व कर्मकिया जोअकेलेही शूरवीरने युद्धमें बहुतोंके साथलड़ाईकरी ४१ राजामद्रको भुजासे छोड़े हुये कंक और मोरकेपरोंसे जटित गिरते हुये घोरबाणों से पृथ्वी आच्छादित होगई ४२ वहां बड़े युद्ध में शल्यके घूमतेहुये रथको ऐसेप्रकारका देखा जैसे कि पूर्वसमयमें असुरोंकेनाशमें इन्द्रका रथ हुआथा ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिसंकुलयुद्धे पंचदशोऽध्यायः१५॥

सोलहवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे समर्थ इसके पीछे आप की सेना के लोग जिनका अग्रवर्ती राजामद्रथा बड़ी तीव्रतासे फिर पांडवोंके सन्मुख गये १ युद्धमें मतवाले और पीड़ामान दौड़तेहुये आपके उन सब शूरवीरोंने आधिक्यतासे क्षणभरमेंही पांडवोंको छिन्नभिन्न करदिया २ कौरवोंसे घायल वह पांडव श्रीकृष्ण और अर्जुनके देखते भीमसेनसे रोकेहुये भी युद्धमें नियत नहींहुये ३ उसके पीछे क्रोध युक्त अर्जुनने कृपाचार्य और कृतबर्माको उनके साथियोंसमेत बाण समूहोंसेढकदिया ४ सहदेवने शकुनीको उसकी सेनासमेत हटाया

नकुलने एकभागमें नियत होकर राजा मद्रकोदेखा ५ और द्रौपदी केपुत्रोंने भी बहुतसे राजाओंकोरोका पांचालदेशी शिखंडीने अश्वत्थामाको रोका ६ और गदाधारीभीमसेनने राजा दुर्योधनकोरोका कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने सेना समेत शल्य को रोका ७ इसके पीछे युद्धसे न लौटनेवाले आपके शूरवीर और प्रतिपक्षियोंके शूरवीरोंका युद्ध जहां तहां बहुत कठिन हुआ ८ वहां हमनेयुद्धमें शल्य के बहुत बड़े कर्मको देखा जोकि अकेलेनेही पांडवोंकी सबसेनाओं से युद्धकिया ९ तब शल्य उस युद्ध में युधिष्ठिरके समक्ष में ऐसा दिखाई पड़ा जैसे कि चन्द्रमाके सन्मुख शनीचर नक्षत्र दिखाई देता है १० फिर बिषैले सर्पकी समान बाणोंसे राजाको पीड़ामानकरके भीमसेनके सन्मुख दौड़ा और बाणोंकी वर्षासे ढकदिया ११ आप की और दूसरोंकी सेनाओंने उस की हस्त लाघवता और अस्त्रज्ञताकी प्रशंसा करी १२ फिर शल्य के हाथसे पीड़ामान अत्यन्त घायल पांडव युधिष्ठिरको पुकारतेहुये युद्धको छोड़भागे १३ राजा मद्रके हाथसे सेनाओंके घायल होनेपर धर्मराज पांडव युधिष्ठिर क्रोधके बशीभूत हुये १४ इसके पीछे बिजयहोय वा पराजय होय यह निश्चय करनेवाले युधिष्ठिरने वीरतामें नियत होकर राजामद्र को पीड़ामान किया १५ सबभाई और माधव श्रीकृष्णजीको बुला कर बोला कि भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण आदिक जो अन्य राजालोग थे१६ कौरवोंके निमित्त उपाय करनेवाले उनलोगोंने युद्धमें नाशको पाया आपलोगभाग और उत्साहके समान पराक्रम करनेवाले १७ यह महारथी अकेला शल्य मेरा भाग शेष है सो मैं अब युद्धके द्वारा राजामद्रको बिजयकरनेकी आशा करताहूं १८ अब जो मेरे चित्तकी इच्छाहै वह सब आपसे कहताहूं माद्रीके पुत्र शूर नकुल और सहदेव मेरे चक्रके रक्षक होंय १९ जोकि युद्धमें इन्द्रसे भी अजेय होकर बीरोंके अंगीकृतहैं अच्छाहै यह युद्ध में क्षत्रीधर्मको आगे करनेवाले २० प्रतिष्ठाके योग्य सत्यसंकल्प नकुल औरसहदेव मेरेनिमित्त मामासे युद्धकरें शल्य युद्धमें मुझको मारेगा अथवा

मैं उसको मारूंगा तुम्हारा कल्याण होय २१ हे लोकवीर राजा लोगो तुम मेरे इस सत्य सत्य बचनको जानो मैं क्षत्रीधर्मसे मामा के साथ लड़ूंगा २२ मैं विजय वा पराजयको निश्चय करके लडूंगा अब मेरे सब शास्त्र और सामानोंको २३ रथ जोड़नेवाले मनुष्य बहुत शीघ्रतासे शस्त्रके अनुसार रथपर रक्खें सात्यकी दक्षिणी चक्रको और धृष्टद्युम्न उत्तरचक्रकी रक्षाकरें अब मेरे पृष्ठका रक्षक पांडव अर्जुन होय और अग्रवर्ती शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बलवान् भीमसेन होय २४।२५ इसप्रकार भीमसेनके कारण युद्ध में अधिक हूंगा इसप्रकारके बचनसुनकर राजाके हितचाहनेवाले सबलोगोंने उसीप्रकार किया २६ इसकेपीछे सेनामें बड़ी प्रसन्नता उत्पन्नहुई विशेषकरकेपांचाल सोमक औरमत्स्यदेशी लोगोंको प्रसन्नताबहुत प्रकट हुई २७ तब राजा युधिष्ठिर प्रतिज्ञाकोकरके शल्यकेसन्मुख गया उसके पीछे पांचालोंने सैकड़ों शंख और उत्तम भेरियोंको बजाया २८ और सिंहनादोंकोकिया और क्रोधयुक्त होकर उसराजा मद्रके सन्मुखदौड़े २६ फिर श्रेष्ठ कौरवप्रसन्नतासे उत्पन्नबड़े शब्द वाले हाथियोंके घंटे और शंखोंके शब्द और ३० तूरी बाजेके बड़े शब्दसे पृथ्वीको शब्दायमान करते सन्मुखहुये उससमय आपके पुत्र और पराक्रमी राजामद्रने उनसब पाण्डवोंको ऐसेरोका ३१जै-से कि अस्ताचल और उदयाचल पर्व्वत बहुतसे बड़े २ बादलोंको रोकतेहैं फिर युद्धमें प्रशंसनीय शल्य बाणोंकी वर्षासे शत्रुओं केवि-जय करनेवाले धर्मराजपर वर्षा करनेलगा जैसे कि जलकी वर्षा इन्द्र बरसाताहै उसीप्रकार बड़े साहसी कौरवराजनेभी द्रोणाचा-र्य्यकी नानाशिक्षाओंको दिखलाते बाणों की वर्षाको बरसाया वह बाणवृष्टी अपूर्व तीक्ष्ण और मनोहरथी ३२।३३।३४ और युद्ध में घूमतेहुये उसके छिद्रको किसीने नहींदेखा उन दोनोंने नानाप्र-कारकेबाणोंसे परस्पर ऐसे घायलकिया ३५ जैसे कि मांसके अभि-लाषीयुद्धमेंपराक्रम करनेवाले दोशार्दूल होतेहैं फिर भीमसेन उस युद्धमेंकुशल आपके पुत्रसेलड़ा ३६ धृष्टद्युम्न,सात्यकी,पांडव नकुल

और सहदेवने शकुनी आदिक वीरोंको चारोंओरसे रोका ३७ हे राजा आपकी कुमन्त्रता होनेपर विजयाभिलाषी आपकेपुत्र और प्रतिपक्षियोंका फिर युद्धजारीहुआ ३८ दुर्योधनने टेढ़े पर्ववाले बाणसे भीमसेनकी उस ध्वजाको जोकि सूर्य्यकेसमान प्रकाशमान और सुवर्णसे अलंकृतथी ३९ काटा हेबड़ाईदेनेवाले भीमसेनकी वह ध्वजा जोकि क्षुद्रघंटिकाओं के बड़े जालसे सुन्दर दर्शन और चित्त रोचकथी युद्धभूमिमें गिरपड़ी ४० फिर राजाने उसके उसधनुषको जोकि रत्नोंसे जटित और गजराजकी सूंड़के समानथा तीक्ष्णधार वाले क्षुरप्र से काटा ४१ उस टूटे धनुषवाले तेजस्वी पराक्रमीने रथशक्तिसे आपके पुत्रको छातीपर छेदा तबवह रथकेबैठनेकेस्थान पर गिर पड़ा तब उसके अचेत होनेपर भीमसेनने क्षुरप्रसे उसके सारथीके शिरकोकाटा ४२।४३ हेभरतबंशी राजाधृतराष्ट्र तबउसके वह घोड़े जिनका कि सारथी मारागया रथको लेकर दिशाओंको भागे उस हेतुसे बड़ा हाहाकारहुआ ४४ बड़ा बलवान् अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कृतवर्मा, आपके पुत्रके चाहनेवाले यहसबरक्षाके निमित्त उसकी ओरको दौड़े ४५ उस सेनाके चलायमान होनेपर उसकेपीछे आगेवाले लोग भयभीतहुये तब गांडीव धनुष धारीने धनुषको टंकारकर उनको बाणोंसेमारा ४६ फिर क्रोधयुक्त युधिष्ठिर चित्तके समान शीघ्रगामी अपने श्वेतवर्णके घोड़ों को चलायमान करता राजामद्रके सन्मुख दौड़ा ४७ वहां हमने कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरमें अपूर्व चमत्कारको देखा कि जो प्रथम मृदुऔर जितेन्द्री होकर फिर कठिन हुआ ४८ फिर फैलेनेत्र क्रोधसेकंपायमानकुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरने तीक्ष्णधार भल्लोंसे लाखों शूरवीरोंकोमारा ४९ हे राजा वह बड़ा पांडव जिस २ सेनाके सन्मुख गया उसउससेनाको बाणोंसे ऐसागिराया जैसे कि उत्तमवज्रोंसे पर्वतोंको गिराते हैं ५० अकेला पराक्रमी घोड़े सारथी ध्वजा और रथ समेतबहुतसे रथ सवारोंको गिराता ऐसा क्रीड़ा करनेवाला हुआ जैसे वायु बादलोंको गिराकर क्रीड़ा करनेवाला होताहै ५१ उसनेयुद्धमें अश्व-

सवार घोड़े और पतियोंको ऐसे हजारोंप्रकारसे नाशकिया जैसे कि क्रोधरूप रुद्रजी पशुओंका नाशकरतेहैं ५२ चारोंओर बाणोंकीवर्षा सेरणभूमिको निर्जनकरके राजामद्रके सन्मुख जाकरतिष्ठ२ शब्दोंको किया ५३आपके सबशूरबीर उसभयकारी कर्मकर्त्ता युधिष्ठिरके उस कर्मको युद्धमें देखकर भयभीतहुये फिरशल्यउसकेसन्मुखगया ५४ तब वह दोनों अत्यन्त क्रोधयुक्त शंखोंको बजाकर परस्पर बुलाते औरघुड़कतेहुये सन्मुखहुये ५५ तब शल्यने बाणोंकी वर्षासे युधिष्ठिरको पीड़ामानकिया और कुन्तीके पुत्रनेभी बाणोंकी दृष्टियोंसे राजाशल्यको ढकदिया ५६ तब शल्य और युधिष्ठिर दोनों वीरबाणोंसेचिते हुये रुधिरसे पूर्ण शरीर दिखाईपड़े ५७ वनमें प्रफुल्लित शालमाली और किंशुकनाम दृक्षोंके समान दोनोंशोभाय मानहुये उन प्रकाशमान प्राणोंके द्यूतसे दुर्मद दोनोंको ५८ देखकर सब सेनाके लोगोंने विजयको नहीं निश्चय किया अर्थात् यह संकल्प बिकल्प करनेलगे कि अबनजानिये पाण्डव शल्यको मारकर पृथ्वी कोभोगेगा व पांडवको मारकर शल्य इसपृथ्वीको भोगेगा ५९ अथवा शल्य पांडवको मारकर इस सबपृथ्वीकोदुर्य्योधनके अर्थदेगा हेभरतर्षभ वहांशूरबीरोंको यह निश्चय नहींहुआ ६० युद्धकरने वाले धर्मराजके सब शकुनादिक दाहिनेहुये इसकेपीछे शल्यने सौ बाणोंको युधिष्ठिर परछोड़ा६१और उसकेधनुषको तीक्ष्णधारवाले क्षुरसेकाटा उसने दूसरे धनुषको लेकर शल्यको तीनसौ बाणोंसे छेदा ६२ और क्षुरसे ही उसके धनुष को काटा फिर टेढे पर्ववाले बाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको मारा ६३ और तीक्ष्ण दोबाणों से दोनों आगेपीछे वालों समेत सारथी को मारा फिर प्रकाशित पीत वर्ण तीक्ष्ण धारबाण से ६४ और भल्लसे उसकी ध्वजाको काटा हेशत्रुओंके बिजय करनेवाले इसके अनन्तर वह दुर्योधनकी सेना छिन्न भिन्न होगई ६५ उसके पीछे अश्वत्थामाजो उस दशावाले शल्यको ओरदौड़े और उसको अपने रथपर बैठाकर शीघ्रता से चलदिये ६६ वहदोनों एकमहूर्त्त चलकर युधिष्ठिरके गर्जने पर

नियत हुये तब राजाशल्य उस दूसरेरथपर सवारहुआ ६७ जोकि विधिके अनुसार अलंकृत बड़े बादलके समान शब्दायमान बड़े २ अस्त्र शस्त्र यन्त्रोंसे पूर्ण और शत्रुओंके रोमांचोंका खड़ा करने वालाथा ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिषोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

संजयबोले कि इसके अनन्तर पराक्रमी राजा शल्य बड़े वेग वान दूसरे धनुषको लेकर युधिष्ठिरको छेदताहुआ सिंहके समान गर्जा १ फिरबड़ा साहसी क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ शल्य वर्षाके बादलोंके समान बाणोंकी वर्षा से क्षत्रियोंके ऊपर वर्षा करनेलगा २ सात्य-कीको दशबाणसे भीमसेनको तीन बाणसे सहदेवकोभी तीनबाण से छेदकर उसनेयुधिष्ठिरको पीड़ामानकिया ३ विशिखनाम बाणों से उन उनबड़े धनुष धारियोंको घोड़े रथ और कूवरों समेत ऐसा पीड़ामान किया जैसे कि उल्काओंसे हाथियोंको पीड़ित करतेहैं ४ उस रथियोंमें श्रेष्ठने हाथीहाथीके सवार घोड़े घोड़ोंके सवार और रथोंको रथ सवारों समेत मारा ५ औरतीव्रतासे शस्त्र और ध्वजाओं समेत ध्वजाओंको काटा और पृथ्वीको शूरवीरोंसेऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि यज्ञकी वेदीको कुशाओंसे आच्छादित करतेहैं ६ अत्यन्त क्रोधयुक्तपांडव पांचाल और सोमकोंने उसप्रकार कालके समान शत्रुओंकी सेनाके मारनेवालेशल्यको चारोंओरसे घेरलिया ७इसकेपीछे पुरुषोत्तम नकुल सहदेव सात्यकीऔर भीमसेननेभय-कारी बलवाले राजा युधिष्ठिरसे भिड़ेहुये समर्थ शल्यको परस्पर बुलाया ८ इसकेपीछे शूरोंने उस शूरवीरोंमें श्रेष्ठ नरवीर महाराज शल्यको पाकर और युद्धमेंउसको घेरकर बड़े वेगवान बाणोंसेघाय लकिया ९ भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकीसे अच्छे प्रकार रक्षित धर्मपुत्रयुधिष्ठिरने बड़े वेगवानबाणोंसे राजामद्रको छातीपर घायलकिया १० इसकेपीछे अच्छी अलंकृतबड़े उत्तम आपकेरथि

थोंके समूहोंने युद्धमें राजामद्रको बाणोंसे पीड़ामानदेखकर दुर्य्यो-
धनके मतसे शल्यको आगेसे मध्यवर्त्तीकिया ११ इसके पीछेराजा
मद्रनेयुद्धमें युधिष्ठिर को शीघ्रता पूर्वक सातबाणोंसे घायल किया
हेमहाराज महात्मा युधिष्ठिरनेभीतुमलयुद्धमेंपृषत्कनाम नौबाणों से
उसकोघायलकिया१२तब युद्धमेंदोनोंमहारथी युधिष्ठिर और शल्य
नेकानतक खैंचकर छोड़े हुये तेलसेसाफ कियेहुये बाणोंसे परस्पर
ढकदिया १३ फिर परस्पर अवकाश ढूढ़नेवाले शत्रुओं से निर्भय
बड़े बलवान महारथी राजाओंमेंश्रेष्ठ दोनोंने शीघ्रही बाणोंसेकठिन
घायल किया १४ परस्पर बाण समूहों समेत धनुष खैंचनेवाले
महात्मा राजाशल्य और युधिष्ठिर की प्रत्यंचाके ऐसे बड़ेशब्द हुये
जो कि महाइंद्र के वज्रके समान शब्दायमानथे १५ वहदोनों महा
वनमें मांसाभिलाषी व्याघ्रोंके बच्चोंके समान घूमने वाले हुयेऔर
युद्धमें अहंकारी दोनोंने बड़े दन्ती हाथियोंके समान परस्परघायल
किया १६ उसके पीछे महात्मा राजामद्रने भयानक पराक्रम वाले
राजा युधिष्ठिरको रोककर सूर्य्याग्निके समान प्रकाशित बाणों से
उस बड़े वेगवान वीरको हृदय पर घायल किया १७ हेराजाइसके
पीछे अत्यन्त घायल युधिष्ठिरनेभी अच्छे प्रकार चलाये हुये बाण
से राजामद्रको घायल किया और बहुत आनन्दको पाया १८ इस
पीछे इन्द्रके समान प्रभाव वाले क्रोधसे रक्त नेत्र महाराज शल्यने
एक मुहूर्त्त ही में सचेतताको पाकर सौबाणसे शीघ्रही पांडवको
घायल किया १९ तब शीघ्रता करते धर्म पुत्र महात्माने क्रोधयुक्त
होकर पृषत्कनाम नौबाणोंसे शल्यकी छाती और सुबर्णके कवचको
छेदकर दूसरे छःपृषत्कों सेभी घायल किया २० इसके पीछेबड़े
प्रसन्न राजामद्रने धनुषको खैंचकर पृषत्कों को छोड़ा और कौरवों
मेंश्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरके धनुषको दोबाणोंसेकाटा २१ इसप्रकार युद्ध
में महात्मा राजायुधिष्ठिरनेभी बड़े घोर दूसरे नवीन धनुषकोलेकर
तीक्ष्णनोकवाले बाणोंसे शल्यको चारों ओरसे ऐसे घायल किया
जैसेकि महा इन्द्रने नमुचि असुरको घायल कियाथा २२ तब महा-

त्मा शल्यने नौपृषत्कों से भीमसेन और राजा युधिष्ठिर के सुन्दर स्वर्णमयी कवचोंको काटकर इनदोनोंकीभुजाओंको घायलकिया २३ इसके पीछे सूर्य्याग्निके समान प्रकाशित क्षुरसे राजाके धनुषको तोड़ा और कृपाचार्य्यने छःबाणोंसे उसके सारथीको मारा तबवह सारथी सन्मुख गिरपड़ा २४ राजामद्रने भी चारोंओरसे युधिष्ठिरके चारों घोड़ोंको मारकर उसधर्म राजके शूरवीरोंका बड़ा बिनाश किया २५ राजाके उसदशा वाला करने पर महात्मा भीमसेन ने शीघ्रही तीब्रगामी बाणसे राजामद्रके धनुषको काटकर दोबाणों से राजाको कठिन घायल किया २६ फिर उपाय पूर्व्वक दूसरे बाण से उसके सारथीके शिरको देहसे जुदाकिया और महाक्रोधित होकर उस बायुपुत्रने शीघ्रही चारों घोड़ोंकोभी मारा २७ और सब धनुष धारियोंमें श्रेष्ठ उस भीमसेनने युद्धमें अकेले घूमने वाले बड़े बेगवानको सौबाणोंसे घायल किया २८ इसी प्रकार माद्री के पुत्र सहदेवने भी भीमसेन के शायकों से शल्य को मोहित देखकर बाणोंसेउसके कवचकोकाटा भीमसेन और सहदेव के हाथसे टूटे कवच वालासहात्मा राजा मद्रहजार नक्षत्र रखने वाली ढाल २९ और खड्गको लेकर रथसे कूदके कुन्तीके पुत्रके सन्मुख दौड़ा फिर वह भयकारीपराक्रम वाला नकुलके रथके ईशादण्डको काट कर युधिष्ठिर के सन्मुख दौड़ा ३० तदनन्तर धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र शिखण्डी और सात्यकी भी अकस्मात उस क्रोधयुक्त उछलते और कालके समान आते हुयेराजाशल्य के सन्मुखहुये ३१ तब अत्यन्त प्रसन्न और गर्जते महात्मा भीमसेनने नौ पृषत्कोंसे उसकी अनुपम ढालको काटा और आपकी सेना में गर्जते हुये उसने खड्ग को भी पकड़ने की मूठपर काटा ३२ उन पांडवोंके अत्यन्त उत्तम और प्रसन्न चित्त रथ समूहोंने भीमसेन के उस कर्म्म को देखकर बड़े आश्चर्य्यित होकर शब्द किये और चन्द्रमाके समान प्रकाशित शंखोंको बजाया ३३ फिर उस भयकारी शब्द से आपकी अजेय सेनाके समूह ब्याकुल रुधिरसेलिप्त शरीर और अचेत होकर नाश-

मान हुये ३४ भीमसेनजिनका अग्रवर्त्ती था इन पांडवोंके श्रेष्ठ शूर बीरोंसे घायलवह राजामद्र अकस्मात तीव्रतासे युधिष्ठिरके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि मृगके पकड़ने को सिंहजाताहै ३५ मृतक घोड़े और सारथी वाले क्रोधसे ज्वलित रूप अग्निके समान प्रकाशित उस धर्म्मराजने बलसे सन्मुख दौड़ने वाले अपने शत्रु शल्यको देखकर ३६ शीघ्रही गोविन्दजीके वचनको विचारकर शल्यके मारने का बिचार किया मृतक घोड़े और सारथीवाले रथपर नियत उसधर्म्मराजने शक्तीकोचाहा ३७ उस स्थानपर भी महात्मा युधिष्ठिरने महात्मा शल्यके कर्मको देखकर और शेषबचेहुये अपनेही भागको विचारकरके शल्यके मारने में ऐसे चित्त किया जैसे कि श्रीकृष्णजीने कहाथा ३८ उस धर्मराजने मणि और सुवर्ण से जटित दण्ड युक्त सुवर्णके समान प्रकाशित शक्तीको लिया और अकस्मात प्रकाशमान नेत्रोंको खोलकर क्रोधसे पूर्ण चित्तने राजा मद्रको देखा ३९ उस पवित्रात्मा और पापोंसे रहित नरदेव राजा युधिष्ठिर से देखाहुआ यह शल्य अत्यन्त भस्म नहीं हुआ हेराजा यही मुझको बड़ा आश्चर्य्य होताहै ४० इसके पीछे कौरवों में अत्यन्त श्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिरने उस सुंदर उग्रदंडवाली मणियों से जटित अग्निरूप अत्यन्त प्रकाशित शक्तिको बड़े बेगसे राजा मद्रकेऊपर फेंका ४१ उसकेपीछेसब इकट्ठे हुये कौरवोंने उसप्रकाशित और स्फुलिंग संयुक्त अकस्मात बड़े वेगसे गिरती हुई शक्ति को ऐसे देखा जैसेकि प्रलय कालके समय आकाशमेंबड़ी उल्काओं को देखतेहैं ४२ पाशधारी कालरात्रिके समानयमराजकी उग्ररूप धात्रीके समान ब्रह्मदण्डकी सूरत उससफल शक्तिको युद्धमें उपाय करनेवाले धर्मराजने छोड़ा ४३ कि पांडवोंकी ओरसेबड़े उपाय पूर्वक सुगन्ध, माला, आसन भोजन और पानसे पूजित सम्वर्त्त क नाम अग्निके स्वरूप ज्वलित रूप अथर्वाङ्गिरसीनाम उग्र कृत्या के समान ४४ शिवजीके लिये त्वष्टादेवताकी बनाईहुई शत्रुओंके प्राण और शरीरोंकी भक्षण करने वाली और हठ करके पृथ्वी

अन्तरिक्ष आदिकों के रहनेवाले और ज लमें रहनेवाले जीवोंके मारने में समर्थ ४५ घंटा, पताका, और मणि वजकी माला रख. नेवाली बैडूर्य्यसे जटित स्वर्णमयी दण्डधारी बड़े नियम और उ-पायके द्वारा त्वष्टा देवताकी बनाईहुई ब्राह्मणों से शत्रु ता करने वालेंको नाश करनेवाली सफल ४६ वल औरबड़े उपायसेउस वेगवान शक्तिको घोर मन्त्रोंसे संयुक्तकरके उसराजा मद्रके मारने के निमित्त उत्तम रीतिसे छोड़ा ४७ जैसे कि शिवजीने अन्धकके नाश करनेवाले बाणको छोड़ाथा उसी प्रकार क्रोध से नाचतेहुये और हे पापीमाराहै इस प्रकार गर्जते हुये युधिष्ठिरने बहुत दृढ़ सुन्दर हाथवाली भुजाको फैलाकर छोड़ा ४८ युधिष्ठिरकी सब सामर्थ्य से छोड़ी हुई अपूर्व पराक्रम और घृतकी धारासे अच्छे प्रकारसे होमी हुई अग्निके समान उस सुन्दर शक्तिकोपकड़नेके निमित्त सन्मुख गर्जा ४६ वह निर्लेपशक्ति उसके सबमर्मस्थलों समेत उज्वल और बड़ी छातीको फाड़कर राजा के बड़े यशको बिख्यातकरतीहुई पृथ्वी और जलमें प्रवेश करगई ५० तब वह शल्य नाक आंख कान और मुखसे निकलनेवाली चेष्टा करनेवाले घावसे उत्पन्न होनेवाले रुधिरसे अच्छे प्रकार लिप्ताङ्ग होकर जैसे कि स्वामकार्त्तिकजीके हाथसे घायल क्रौंचनाम बड़ा पर्वत हुआथा ५१ उसीप्रकार वह महात्माइन्द्रके गजराजकी सूरत और युधिष्ठिरकी शक्तीसे टूटे मर्मस्थलवाला शल्य भुजाओंको पसारकर रथसे पृथ्वीपर ऐसेगिरा जैसे कि वज्रसे ताड़ित पर्व्वतका शिखर होताहै ५२ इसके पीछेमद्रका राजा धर्मराजके सन्मुख भुजाओंको पसारकर इन्द्रकी ध्वजाके समान ऊंचा पृथ्वीपर गिरपड़ा ५३ इसप्रकार सब अंगोंसे घायल रुधिरसे भराहुआ वह नरोत्तमशल्य प्रीतिसे सन्मुख जानेवाले के समान पृथ्वीपर गिरपड़ा ५४ वह प्रभु पृथ्वीको अपनी प्यारीस्त्रीके समान बहुत कालतक भोगकर गिरताहुआ शोभायमान ५५ सब अंगोंसे प्यारीस्त्रीके साथ छाती पर मिलकर शयन करनेवाले के समान धर्मात्मा धर्मपुत्र के

हाथसे धर्मरूपी युद्धमें मरनेपर इसप्रकार शान्तहुआ ५६ जिस प्रकार यज्ञमें अच्छेप्रकार हौमीहुई स्विष्टनाम अग्नि देवता होते हैं शक्तिसे फटाहृदय टूटे शस्त्र और ध्वजावाले मृतक राजा मद्रको इसदशामें भी शोभाने नहीं छोड़ा इसके पीछे युधिष्ठिरने इन्द्र धनुषके समान प्रकाशमान धनुषको लेकर ५७।५८ युद्धमें शत्रुओं को ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे गरुड़ सर्पोंको करताहै औरतेजधार भल्लोंसे शत्रुओंके शरीरोंको एकक्षण भरमेंही नाश करदिया ५६ इसके पीछे पांडवोंके बाण समूहों से ढकेहुये वन्दनेत्र आपकी सेनाकेलोग शस्त्रोंको चलाते परस्पर कठिन मर्द्दितहुये ६० और शरीरोंसे रुधिरोंको छोड़ते शस्त्र औरजीवनसे जुदेहुये इसके पीछे शल्यके गिरनेपर राजामद्रका छोटा तरुण अवस्थावाला ६१ सब गुणोंमें भाईके समान रथी पांडव युधिष्ठिरके सन्मुख गया और शीघ्रता करनेवाले नरोत्तमने बहुत नाराचोंसे घायल किया ६२ वह युद्धमें दुर्मद मृतक भाईकाबदला लेनेका अभिलाषी हुआ फिर शीघ्रता करनेवाले धर्मराजने छः बाणोंसे उसको घायलकिया ६३ बाणोंसेही उसके धनुष ध्वजाको काटकर प्रकाशमान अत्यन्त दृढ़ और तीक्ष्ण ६४ भल्लसे उस सन्मुख वर्त्तमानके शिरको काटा तब वह कुंडलधारी शिररथसे गिरताहुआ ऐसा दिखाई पड़ा ६५ जैसे कि शुभ कर्म फलके नाशको पाकर स्वर्गसे च्युत मनुष्य होताहै फिर शिरसे रहित उसका शिररथसे गिरपड़ा ६६ रुधिरसे लिप्त शरीर को देखकर सेना छिन्न भिन्न होगई उस अपूर्व कवचधारी शल्यके छोटेभाईके मरनेपर ६७ हाहाकार करनेवाले कौरव भागे तब शल्यके छोटेभाईको मराहुआ देखकर आपके शूरबीर जीवन के त्यागनेवाले धूलसे अत्यन्त लिप्त शरीर पांडव युधिष्ठिरके भय से भयभीत होगये हे भरतर्षभ शिनीका पौत्र सात्यकी बाणोंसे ढकता उसप्रकार छिन्न भिन्न होनेवाले कौरवों के सन्मुख वर्त्त-मानहुआ ६८ । ६६ तब शीघ्रता करनेवाले कृतबर्माने निर्भयके समान उस बड़े धनुषधारी सहनेके अयोग्य कठिनतासे सन्मुखताके

करने के योग्य आतेहुये सात्यकीकोरोका७० वह दोनों महात्मावड़े अजेय सिंहोंके समान वलसे मतवाले यादवकृतवर्मा और सात्यकी सन्मुखहुये ७१ सूर्य्यके समान तेजस्वी वह दोनों शुद्ध प्रकाशवान बाणोंसे परस्पर ऐसे ढकनेवालेहुये जैसेकि सूर्य्यकी किरणोंसे ढक जातेहैं ७२ हमने उनदोनों उत्तम यादवोंके धनुष मार्ग और वल से उठेहुये आकाशमें वर्त्तमान बाणोंको शीघ्रगामी पक्षियों के समान देखा ७३ कृतबर्माने दशबाणसे सात्यकी को और तीनबाण से उसके घोड़ोंको घायल करके टेढ़े पर्बवाले एक बाणसे उसके धनुषको काटा ७४ सात्यकीने उसटूटेहुये उत्तम धनुषको डालकर ७५ तीव्रतासे दूसरे दृढ़ धनुषको लिया सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ सात्यकीने उसधनुषको लेकर ७६ दश बाणोंसे कृतबर्माको छाती पर घायल किया इसके पीछे रथयुग और ईशादण्डको अपने श्रेष्ठ चलायेहुये भल्लसे काटकर ७७ शीघ्रही उसके घोड़े सारथी और पीछे चलनेवालेको मारा हेप्रभु तब पराक्रमी शारद्वत कृपाचार्य्य उसको बिरथ देखकर ७८ शीघ्रतासे अपने रथपर चढ़ाकर दूर लेगये हेराजाराजामद्रके मरने और कृतबर्माके बिरथ होनेपर ७९ दुर्य्योधनकी सब सेना फिर मुखफेरनेवाली हुई इसहेतुसे और धूल से सेना के ढकजाने पर दूसरे पक्षवाले नहीं जानेगये ८० तब वह बहुत मारीहुई सेनामुखोंको फेरगई हे पुरुषोत्तम इसके पीछे उन लोगोंने एक मुहूर्त्तमेंही उठीहुई पृथ्वीकी धूलको ८१ नाना प्रकार के रुधिरोंके बहनेसे छिड़का हुआ देखा उससमय दुर्य्योधनने सन्मुखसे अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर ८२ तीव्रतासे आनेवाले सब पाण्डवोंको अकेलेनेही रोका रथ सवार पाण्डवों को धृष्टद्युम्नको ८३ और अजेय सात्यकी को तीक्ष्णबाणोंसे रोका उस समय शत्रुलोग उसके सन्मुख ऐसे नहींहुये जैसे कि मरण धर्मवाले जीव आयेहुये कालके सन्मुख नहीं वर्त्तमान होतेहैं ८४ इसके पीछे कृतबर्मा भी दूसरे रथपर सवार होकर लौटा तब शी- घ्रता करनेवाले महारथी राजा युधिष्ठिरने ८५ चारबाणोंसे कृत-

वर्माके घोड़ोंको मारकर कृपाचार्य्यको भीसुन्दर बेतवाले छःभल्लोंसे घायल किया ८६ इसके पीछे अश्वत्थामाजी राजाके आघातसे घोड़े और रथसे विहीन कृतवर्मा को अपने रथके द्वारा युधिष्ठिरके सन्मुखसे हटालेगया ८७ इसके पीछे कृपाचार्य्य ने भी छःबाणोंसे युधिष्ठिरको घायल किया और उसीप्रकार तेजधार आठशिली मुख नाम बाणोंसे घोड़ोंकोभी घायल किया ८८ हेभरतवंशी महाराज राजाधृतराष्ट्र पुत्र समेत आपकी कुमन्त्रतासे यह शेषलोगों का युद्ध वर्त्तमानहुआ ८९ युद्धमें श्रेष्ठ कौरवके हाथसे उस धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ शल्यकेमारेजानेपर अत्यन्त प्रसन्नचित्त पाण्डव लोगोंने इकट्ठे होकर शंखोंको बजाया ९० और युद्धभूमिमेंयुधिष्ठिरकी ऐसी प्रशंसाकरी जैसे कि पूर्व समयमें वृत्रासुरके मारने परदेवताओंने इन्द्रकी प्रशंसाकरीथी फिर उनलोगोंने चारोंओरसे पृथ्वीकोशब्दायमानकरके नाना प्रकारके बाजों को बजाया ९१॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिशल्यवधोनामसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

संजयबोले हे राजा शल्यके मरने पर उस राजामद्रके आगे पीछे चलने वाले सातसौ महारथीबीर बड़ीसेनाको साथलेकर बाहरनिकले १ फिर शिरपर धारणकिये छत्रोंसे औरचामरोंसे युक्त दुर्योधनने पर्वताकार हाथीपर चढ़कर २ मद्रदेशियोंको निषेधकिया कि तुमकोनजाना चाहिये नजाना चाहिये दुर्योधनसे बारंबार रोकेहुये वह वीर ३ युधिष्ठिरके मारनेके अभिलाषी होकर पांडवों की सेनामें पहुंचे हे महाराज फिर लड़ने में प्रवृत्तचित्त वहशूरवीर ४ धनुषोंके बड़े शब्दोंको करके पांडवों से युद्ध करनेलगे शल्यको मृतक और धर्म पुत्र युधिष्ठिर को राजा मद्रके हितकारी मद्रदेशी महारथियों से पीड़ामान सुनकर अर्जुन अपने गांडीव धनुष को टंकारता आया ५। ६ वह महारथी अर्जुन सब दिशाओंको शब्दों से पूर्णकरता युद्धमें आपहुंचा उसके पीछे पांडव अर्जुन भीमसे

नकुल सहदेव ७ नरोत्तम सात्यकी द्रौपदी के सवपुत्र धृष्टद्युम्न शिखंडी और सोमकों समेत सव पांचाल ८ इन सव युधिष्ठिर के चाहनेवाले लोगोंने राजा युधिष्ठिरको मध्यवर्त्ती किया चारों ओर से घिरेहुये उन पुरुषोत्तम पांडवों ने ९ उस सव सेना को ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि समुद्रको मगर छिन्नभिन्नकरताहै और आपके पुत्रोंको ऐसे कंपायमान किया जैसे कि वृक्षोंको वड़ीतीव्र वायु कंपायमान करतीहै १० हे राजा तव पांडवीसेना भी फिर ऐसेउथल पुथल हुई जैसे सन्मुख की वायुसे गंगानदीव्याकुलहोती है ११ महात्मा महारथी लोग वड़ीसेनामें प्रवेश करके जहांतहांपुकारे किवह राजा युधिष्ठिर कहांहै १२ और उसके वह शूरवीरभाईकहांहैं वहांकोई दिखाई नहीं देतेहैं धृष्टद्युम्न सात्यकी द्रौपदीके सबपुत्र १३ बड़े पराक्रमी पांचाल और महारथी शिखंडी कहां हैं इसप्रकार वार्त्तालाप करनेवाले उनशूरोंको द्रौपदीके महारथीपुत्रों ने १४ और युयुधानने घायल किया राजामद्रके पीछेचलनेवाले कितनेही तो वाणोंसे मर्दित और कितनेही टूटीहुई वड़ी ध्वजाओं से विनाशहुये १५ युद्धमें आपके शूरवीर शत्रुओंके हाथसे मरे हुये दिखाई पड़े हे भरतवंशी वह लोग युद्धमें पांडवोंको औरचारों ओरसे शूरवीरोंको देखकर १६ आपके पुत्रसे रुकेहुये होकर वड़ी तीव्रता पूर्वकगये और क्रोधके दूरकरने के लिये दुर्योधनने मधुर बचन कहकर उन वीरों को रोका १७ तव वहां किसीमहारथी नेभी उसकी आज्ञाको नहींकिया इसके पीछे गांधार देशके राजा का पुत्र १८ वार्त्तालापमें कुशल शकुनी दुर्योधनसे वोला कि हेभरतवंशी यह क्यावातहै किजो हमारे देखतेहुये मद्रदेशियोंकी सेना मारीजातीहै १९ युद्धमें तेरेनियत होनेपर यहवात उचित और योग्य नहींहै इनके साथ होकर भी युद्ध करना चाहिये क्योंकितुमनेनियम कियाहै हे राजा फिर किसहेतुसमरनेवाले दूसरे मनुष्यों को क्षमाकरताहै २० दुर्योधनबोला कि प्रथममेरे रोकने परभी मेरे बचनको नहींकिया यहसव पांडवी सेनामें प्रवेश करके मारेगये २१

शकुनिने कहा कि युद्धमें क्रोधयुक्त बीर स्वामीकी आज्ञाको नहींकरते हैं क्रोधको दूरकरिये यह समय उन लोगोंके त्यागनेका नहींहै २२ घोड़े रथ और हाथियों समेत हम सब निश्चय करके राजामद्र के पीछे चलने वाले बड़े धनुषधारियोंकी रक्षाके लिये चलें २३ हे राजा बड़े उपायोंसे परस्पर रक्षाकरें ऐसा बिचारकर वह सब वहांगये जहां परकि वह सेनाके लोगथे २४ इसके पीछे बड़ी सेना समेत राजा दुर्योधन पृथ्वीको सिंहनादोंसे कंपाताहुआ चलदिया २५ हे भरतबंशी फिर आपकी सेना का यह कठिन शब्द हुआ कि मारो छेदो पकड़ो प्रहार करो शिरों को काटो फिर पाण्डव राजा मद्रके पीछे चलनेवालोंको एक साथ देखकर मध्यवर्ती गुल्मनाम सेनाकेभागमेंनियतहोकरसन्मुख वर्त्तमान हुये२६।२७ हेराजाराजा मद्र के पीछे चलनेवाले वहबीर युद्धमें एक मुहूर्त्त भरमेंही मरेहुये दिखाई पड़े २८ इसके पीछे हमारे जानेपर मद्रदेशियोंके मारने वाले वेगवान प्रसन्न चित्त प्रति पक्षियोंने एक साथही किलकिला शब्दकिया २९ सबओरसे उठेहुये धड़दिखाईपड़े और सूर्यमंडल के मध्यसे बड़ी उल्का पातहुई ३० टूटे रथयुगअक्ष मृतकमहारथी और पड़े हुये हाथियोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई ३१ हे महाराज वहां युद्ध भूमिमें शूरबीर वायुके समान शीघ्र गामी और जहां तहां युगोंसे चिपटेहुये घोड़ों समेत दिखाई दिये ३२ युद्धमें कितने ही घोड़े टूटे पहियोंवाले रथोंको लेचले और कितने ही अधिरथी को लेकर दशोंदिशाओंको भागे ३३ जहांतहां पोक्तरोंसे चिपटेहुये घोड़े दृष्टिपड़े हे राजाओंमें श्रेष्ठ कहीं गिरतेहुये रथी ऐसे दृष्टिगोचरहुये ३४ जैसेकि शुभकर्म फलोंके समाप्त होनेपर आकाशसे गिरेहुये सिद्ध दिखाई देतेहैं राजामद्र के पीछे चलनेवाले शूरबीरोंके मरने पर ३५ बिजयकेलोभी प्रहार करनेवाले महारथी पांडव हमलोगों को आताहुआ देखकर तीब्रतासे सन्मुख बर्त्तमान हुये ३६ शंखोंके शब्दोंसे संयुक्त बाणोंका शब्दकरते हमलोगोंको पाकर लक्ष्यभेदन करनेवाले प्रहार करनेवाले ३७ और धनुषके चलायमान करने-

वालोंने सिंहनादोंको किया उसके पीछे राजामद्रकी बड़ी सेनाको मरा हुआ देखकर ३८ और युद्धमें शूरवीर राजामद्रको युद्धभूमिमें गिरा हुआ देखकर दुर्योधनकी सब सेना फिर मुख फेरनेवाली हुई ३६ हे महाराज बिजयसे शोभायमान दृढ़धनुषधारी पांडवोंसे घायल भयसे व्याकुल भयभीत सेनाने दिशाओंको सेवन किया ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय॥

संजयबोले कि युद्धमें अजेय महारथी राजा मद्रके मरनेपर आपके पुत्र और युद्धकर्त्ता लोग बहुधामुख फेरनेवाले हुये १ जैसेकि अथाह और बिनानौकावाले समुद्रमें नौकाके टूटनेपर व्यापारी लोगपारहोने के अभिलाषी होतेहैं उसी प्रकार महात्मा युधिष्ठिरके हाथसे शूर शल्यके मारे जानेपर अपारमें पारके चाहने वालेहुये २ हेमहाराज वह भयभीत बाणों से घायल अनाथ होकर इस प्रकार नाथोंके चाहने वाले हुये जिस प्रकार सिंहसे पीड़ामान मृग ३ टूटे सींगवाले बैल और टूटे दांतोंवाले हाथी होतेहैं उसी प्रकार अजात शत्रु युधिष्ठिरसे बिजय किये हुये हमलोग भी मध्याह्नके समय हटआये ४ हेराजा शल्यके मरनेपर आपके किसी शूरवीरका साहस सेना इकट्ठी करने और पराक्रम करने में नहींहुआ ५ हेभरतवंशी भीष्म द्रोणाचार्य और कर्णके मरनेपर आपके शूर लोगोंको जोदुःख और भयहुआथा हेराजावही अब हुआ ६ हमारा वहभय औरशोक फिर वर्त्तमान हुआ महारथी शल्यके मरनेपर उसविजय में अनाशाहुई ७ हेराजा राजामद्रके मरने पर वहशूरवीर जो कि तीक्ष्ण बाणोंसे घायल पराजितहुये और जिनकेबड़े वीर मारेगयेथे सब भयभीत होकर भागे ८ कोई महारथी घोड़ोंपरकोई रथोंपरकोई हाथियोंपरसवार होकर भागे और पदातीहीतीव्रतासे भागे ९ शल्यके मरनेपर पर्वतकेरूप प्रहार करनेवाले दोहजारहाथी अंकुश और अंगूठेसे चलायमान होकर भागे १० हेभरतर्षभ वह आपके शूरवीर

युद्धसे दिशाओंको भागे और बाणोंसे घायल श्वास लेते और दौड़ते हुये दिखाई पड़े ११ विजयके अभिलाषी पांचाल और पांडव उन असाहसी पराजित छिन्न भिन्न और भागे हुओंको देखकर पीछे दौड़े १२ शूरवीरोंके बाणोंके उत्तम शब्द सिंहनाद और शंखोंकेश-ब्द महाभयकारी प्रकट हुये १३ पांडवों समेत पांचाल लोग उन कौरवीय सेनाके लोगोंको भयभीत औरभागेहुये देखकर परस्परमें यह बचनबोले १४ कि अब सच्चे धैर्य्यवाला राजा युधिष्ठिर मृत-क शत्रुओं वालाहै अब दुर्य्योधन प्रकाशमान राजलक्ष्मी से रहित हुआ १५ अब राजाधृतराष्ट्र पुत्रको मराहुआ सुनकर पृथ्वीपर पड़ा हुआ अचेत होकर रोगग्रस्तहोगा १६ अब अर्जुनको सब धनुषधा रियों में श्रेष्ठ और समर्थ जानो अब वह पापकर्मी दुर्बुद्धी अपनीही निन्दा करेगा १७ अब हितकारी बचनके कहने वाले बिदुरजी के बचनोंकोस्मरणकरेगा अबसे लेकर नौकरकेसमान युधिष्ठिरकीउपा-सना करता १८ राजा धृतराष्ट्र उस दुःखको जानेगा जो पांडवों ने पायाथा अब राजा श्रीकृष्णकेभी महात्म्यको जानेगा १९ अब युद्धमें अर्जुनके धनुषके घोर शब्दको और लड़ाईमेंदोनों भुजाऔर अस्त्रोंके सब बलको जानेगा २० जैसेकि इन्द्रके हाथसे बलिनाम असुर मारागयाथा उसी प्रकार युद्धमें अब मद्रराजके मरनेपर महा-त्मा भीमसेनके घोर पराक्रमको जानेगा २१ जिस भीमसेनने दु-श्शासनकमारनेमें जो कर्मकिया उसकर्मकोमहात्मा भीमसेनकेसिवा-य दूसरा कौनमनुष्य करसक्ताहै २२ देवताओंसेभी अजेयराजा मद्रको मृतक सुनकर बड़े पांडवके पराक्रमकोभी जानेगा २३ अब शूरवीर शकुनि और सबगान्धार देशियोंके मरने पर युद्धमें पाण्डव नकुल और सहदेवको भी जानेगा २४ उनलोगोंकी विजयकैसेनहीं होसक्ती जिन्होंके शूरवीर अर्जुन सात्यकी भीमसेन धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदी के पांचो पुत्र पाण्डव नकुल सहदेव बड़ा धनुषधारी शिखण्डीऔर राजायुधिष्ठिरहैं २६ और सब जगतके स्वामी दुष्टसंहारी श्रीकृ-ष्णजी जिन्होंके नाथहैं और धर्म जिन्होंका आश्रय स्थानहै उन्हों

की विजय कैसे नहीं होसक्ती २७ भीष्म द्रोणाचार्य्य कर्ण राजा मद्र और अन्य सैकड़ों हजारों राजाओंको युद्धमें विजय करनेको पांडव युधिष्ठिर के सिवाय कौन समर्थ है सदैव धर्म और यशके भंडार इन्द्रियोंकेस्वामी श्रीकृष्णजी जिसकेस्वामी हैं २८। २६ इस प्रकार वार्त्तालाप करते बड़े आनन्दसे युक्त अन्तःकरणसे अत्यन्त प्रफुल्लित वहलोग आपके भागेहुये शूरवीरोंके पीछे चले ३० पराक्रमी अर्जुन रथकी सेनाके सन्मुख वर्त्तमानहुआऔर महारथी सात्यकी नकुल और सहदेव यहतीनों शकुनीके सन्मुखहुये ३१ तब दुर्य्योधन उनसबको भीमसेनके भयसे पीड़ामान और भागताहुआ देखकर आश्चर्य्य करताहुआ अपने सारथीसे बोला ३२ कि धनुष हाथमें लिये सन्मुख नियत अर्जुन मुझको उल्लंघन करताहै सब सेनाओंके मध्यमें मेरे घोड़ोंको पहुंचाओ ३३ कुन्तीकापुत्र अर्जुन मुझसेनाके मध्यमें वर्त्तमान हुयेके उल्लंघन करनेको ऐसे उत्साह नहीं करेगा जैसेकि महासमुद्र मर्य्यादाकोनहीं उल्लंघन करसक्ताहै ३४ हेसूत पांडवोंसे पराजितहुई सेनाको देखो और चारों ओरसे इससेनाकी उठीहुई धूलकोदेखो ३५ और बड़ेभयकारीघोरसिंहनादों कोसुनो इस हेतुसे हेसूत सेनाके मध्यको रक्षाकरताहुआधीरे२चल ३६ सेनामें मेरे नियत होने और पांडवोंके रोकनेपर शीघ्रही मेरी सेना तीव्रतासे फिर लौटेगी३७सारथीने आपकेपुत्रके उसशूर और श्रेष्ठ पुरुषोंके योग्य बचनको सुनकर सुवर्णके सामान से ढकेहुये घोड़ोंको धीरे पनेसे चलायमान किया ३८ हाथीघोड़े और रथ- योंसे रहित देहकी प्रीतिको त्यागनेवाले इक्कीस हजार पदातीयु- द्ध करनेको नियतहुये ३६ तबनाना देशोंमें उत्पन्न होनेवाले अपू- र्व नगरोंमें रहनेवाले शूरबीर बड़े यशको चाहते नियतहुये ४० वहां उन प्रसन्न चित्त आनेवालोंका वह परस्पर बड़ा युद्ध उत्पन्न हुआ जोकि घोररूप और भयानकथा ४१हेराजा तब भीमसेनऔर धृष्टद्युम्नने चतुरंगिणी सेनासमेत उन नानादेश निवासियोंको रोका ४२ फिर सिंहनाद और भुजदण्डोंके शब्दों समेत अत्यन्त

प्रसन्न बीर लोकोंकेजानेके अभिलाषी अन्य पदाती भीमसेनके स-
न्मुख वर्त्तमानहुये४३क्रोध युक्त युद्धदुर्मद धृतराष्ट्रके पुत्रभीमसेन
को पाकर गर्जना करनेलगे और दूसरी कथाको नहींकहा ४४
उन सबने युद्धमें भीमसेनको घेरकर चारोंओरसेघायलकियाइसके
पीछे युद्धमें पदाती समूहोंसे घिराहुआ और घायल वह भीमसेन
अपने नियत स्थानसे ऐसेचलायमान नहींहुआ जैसे कि मैनाक
पर्व्वत निश्चल होताहै हेमहाराज फिर पाण्डवोंके महारथी क्रोध-
युक्तहुये४५।४६ और मारनेमें प्रवृत्तहोकर अन्य२ शूरवीरोंकोरोका
तव भीमसेन युद्धमें उनचारों ओरको नियतपदातियोंके कारणसे
क्रोधयुक्त हुआ४७ और शीघ्रही रथसे उतर सुवर्णसे मढ़ीहुई बड़ी
गदाको लेकर आपभी पदाती होकर नियत हुआ ४८ और दण्ड-
धारी कालके समान होकर आपके शूरवीरों समेत रथ घोड़ेसे
रहित पदातियोंको मारा ४६ अर्थात् उस युद्धमें इक्कीस हजार
पदातियोंको मारकर रुधिरलिप्त शरीरसे शोभायमानहुआ५०और
थोड़े ही समयमें धृष्टद्युम्नको आगेकरके दृष्टिगोचर हुआ और वह
सबपदाती मृतक रुधिरसे लिप्तहोकर पृथ्वीपर शयन करगये जैसे
किपुष्पितकर्णिकारकेवृक्षहवासेटूटकरगिरेहोंयउसीप्रकार नानाप्रका
रके शस्त्रोंसे संयुक्तनानाप्रकारकेकुंडलरखनेवाले५१।५२ नानाजा-
तिकेबहुत प्रकारके देशोंसे आनेवाले शूरबीर मारेगये पताका और
ध्वजाओंसे ढकीहुई पदातियोंकी बड़ीसेनाके लोग लेटेहुये ५३ महा
घोररूप और भयानक होकर शोभाय मानहुये औरसवसेनाकेलोग
और महारथीजिनकेअग्रबर्ती युधिष्ठिरथे वहसबआपकेपुत्रमहात्मा
दुर्य्योधनके सन्मुख दौड़े उनसबने बड़े धनुषधारी और मुखफिरे
हुये आपके शूरबीरोंको देखकर५४।५५आपकेपुत्रको ऐसेउल्लंघन
नहींकिया जैसे कि समुद्रको मर्यादा नहीं उल्लंघन करसक्ती वहां
हमने आपके पुत्रको उसअपूर्व बीरताको देखा ५६ जोसब पाण्डव
उस अकेलेको युद्धमें उल्लंघन करनेको समर्थ नहींहुये बहुतदूर न
जानेवाले भागनेमें प्रवृत्तचित्त५७अत्यन्त घायल अपनी सेनासेयह

वचनकहा कि मैं पृथ्वी और पर्व्वतोंमेंभी उसदेशको नहींदेखताहूं ५८ जहांपर जानेवाले तुमलोगोंको पाण्डव नहींमारें अर्थात उनसे कहीं नहीं बचसक्के तोभागनेसे क्याप्रयोजनहै उन्होंकीसेनाथोड़ीहै और श्रीकृष्ण समेत अर्जुन अत्यन्त घायल हैं ५९ जोहम सब यहां नियतहोजायं तो अवश्यहमारी विजयहोय अनहित करनेवालेपांडव भागेहुये और छिन्न भिन्न होनेवाले तुम लोगोंको ६० पीछा करके मारेंगे इससे युद्धमेंही हमारामरना श्रेष्ठहै जितने क्षत्री यहां इकट्ठे हैं वहसब सुनो ६१ जब कि कालसदैव शूर और भयभीतोंको भी मारताहै तो कौन अज्ञान पुरुष असल क्षत्रीहोकर युद्धनहीं करे ६२ क्रोधयुक्त भीमसेनके सन्मुख हमारा कल्याण नियतहै क्षत्रीधर्म से लड़नेवालोंका युद्धमेंही मरना सुखदायी है ६३ मनुष्यको घरमेंभी कभीअवश्य मरनाहै क्षत्रीधर्मसे लड़नेवालेको मृत्यु सनातनहै ६४ यहां विजय करके सुखको पाताहै और मराहुआ परलोकमें बड़े फलको पाताहै हे कौरव निश्चय करके स्वर्गका मार्ग धर्म युद्धसे उत्तम कोई नहींहै ६५ युद्धमें मरनेवाला थोड़ेही समय में प्राप्त होनेवाले लोकोंको भोगता है राजालोग उसके वचनको सुनकर और बड़ी प्रशंसा करके ६६ शस्त्रोंको धारण करके फिर पांडवोंके सन्मुख आकर वर्त्तमानहुये अलंकृत सेनासमेत शस्त्रधारी विजयके आकांक्षी और क्रोधयुक्त वह पांडव शीघ्रही उन आनेवालों के सन्मुख गये पराक्रमी अर्जुन रथकी सवारीसे युद्ध भूमिमें वर्त्तमान हुआ और तीनोंलोकमें विख्यात गांडीव धनुषको टंकारा ६७।६८ बड़ा पराक्रमी सात्यकी नकुल और सहदेव यहतीनोंवीर तीव्रतासे उस ओर शकुनीके सन्मुखगये जिधरको कि आपकी सेनाथी ६९॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

संजयबोले कि सेनाके समूहके लौटनेपर म्लेछों के समूहोंका राजा महाक्रोध-युक्त शाल्व पांडवोंकी बड़ी सेनाके सन्मुखगया १

मतवाले पर्वताकार अहंकारी ऐरावतके समान शत्रुओंके समूहों के मर्द्दन करनेवाले बड़े हाथी पर सवार २ जो मद्रनाम बड़े कुलमें उत्पन्न सदैव दुर्योधनसे पूजितथा शास्त्रके निश्चय जानने वाले मनुष्योंसे अलंकृत हाथी युद्धमें जिसकी सदैवसवारी था ३ हेराजा वह राजाओंमें श्रेष्ठ हाथीपर नियत होकर उस प्रकारका विदित होताथा जैसे कि प्रातःकालके समय उदयाचलपर नियत सूर्य होताहै उस अत्यन्त उत्तम हाथीकी सवारीसे उन इकट्ठे होने वाले पांडवोंके सन्मुखगया ४ और उसने बड़े तेजवान वेगवान इन्द्र वज्रके समान व महाघोर पृषत्कोंसे पांडवोंको घायलकिया इसके पीछे बड़े युद्धमें बाणोंको छोड़नेवाले और शूरवीरोंको यम लोकमें पहुंचाने वाले ५ इस राजाका छिद्र अपने और दूसरेशूर वीरोंने भी ऐसे नहीं देखा जैसे कि पूर्व समयमें ऐरावत हाथीपर सवार सेनाके मर्द्दन करनेवाले वज्रधारी इन्द्रके छिद्रोंको देवताओं ने और असुरोंने नहीं देखाथा ६ उन पांडव सोमक और सृञ्जि-योंने चारों ओरको हजारों प्रकारसे घूमनेवाले उस अकेले हाथी को सन्मुख ऐसेदेखा जैसे कि महाइन्द्रके हाथीको देखाथा ७ तब प्रति पक्षियोंकी सेना चारोंओरसे भागीहुई और मरणप्राय दिखाई पड़ी और युद्धमें परस्पर अत्यन्त मर्द्दन पायेहुये भयसे नियत नहीं हुये ८ फिर पांडवोंकीवह बड़ी सेना उसराजाके हाथसे अकस्मात पराजित हुई औरगजेन्द्रके उस वेगके पारको न पाकर अकस्मात चारोंओर को दौड़ी ९ आपके सब उत्तम शूरबीरोंने युद्धमेंउस वेग-वानसेनाको पराजित हुई देखकर उस राजाकी प्रशंसाकरी और चंद्रवर्णी श्वेत शंखोंको बजाया १० पांडव और सृञ्जियोंके सेनापति धृष्टद्युम्नने कौरवोंकी वह शंखोंके द्वाराकी हुई गर्जना सुनकर सहन नहीं किया ११ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला महात्मा धृष्टद्युम्न बिजय के निर्मित्त उस हाथीके सन्मुख ऐसेगया जैसे कि इन्द्रके सन्मुख जंभनाम असुर इन्द्रकी सवारीके गजराज ऐरावतके सन्मुख गयाथा १२ उसराजाओंमें श्रेष्ठने उस अकस्मातआतेहुये

धृष्टद्युम्नको देखकर शीघ्रतासे अपने उस हाथीको द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नके मारनेके निमित्त चलायमानकिया १३ उसधृष्टद्युम्न ने अग्निकेरूप कारीगरके हाथसे सफ़ाकिये हुये तेजधार प्रकाशित औरबड़े वेगवान उत्तम पृषत्कनाम तीनबाणोंसे उस अकस्मातआते हुयेहाथीको घायल किया १४ इसके पीछे उसीमहात्माने अन्य पांचसौ नाराचोंको उसहाथीके कुंभपर छोड़ा तबवह उत्तमहाथी युद्धमें उनबाणोंसे अत्यन्त घायल और घूमकर तीव्रतासे भागा १५ फिरशाल्वने अकस्मात भागेहुये और चलायमानउस गजराजको लौटाकर धृष्टद्युम्नके रथको जतलाकर शीघ्र चाबुक और अंकुशोंके द्वाराभेजा १६ फिर अकस्मात आतेहुये उसहाथीको देखकरभयसे ब्याकुलशरीर बीर धृष्टद्युम्न शीघ्रही अपनी गदाको रथसेलेकर तीव्रतापूर्व्वक पृथ्वीपर वर्त्तमानहुआ १७ उसबड़े गर्जते हुयेहाथीने उससुवर्णसे अलंकृत रथको घोड़े और सारथी समेत अकस्मातसूं- डसे उठाकर पृथ्वीपर चूर्ण करडाला १८ तबउस उत्तम हाथीसे पीड़ामान राजाद्रुपदके पुत्रको देखकर भीमसेन सात्यकी औरशि- खण्डी यहतीनों अकस्मात बड़ीतेजीसे उसकीओर दौड़े १९ और अकस्मात उस आनेवालेहाथी के वेगको रोका वहहाथी उनरथियों से युद्धमें घेरा और रुकाहुआ कंपायमान हुआ २० इसके पीछेरा- जाशाल्व पृषत्कोंकी चारोंओरसे ऐसीवर्षाकरनेलगा जैसे कि किरणों केजालको सूर्य बरसाताहै उनशीघ्रगामी बाणोंसेघायलरथोंकेसमूह एकसाथही जहांतहांभागे २१ हेराजा नरोंमेंउत्तम और हाहाकारों से शब्दकरने वाले सबपांचाल मत्स्य और सृञ्जय देशियोंनेशा- ल्वके उसकर्मको देखकर उसहाथीको चारोंओरसे रोका २२ हेभर तवंशी वह शत्रुओं का मारनेवाला शूरबीर द्रुपद का पुत्र शीघ्रही भ्रान्तीसे रहित पर्व्वतके शिखरकी समान गदाको लेकर तीव्रतासे हाथीकी ओरचला २३ फिर धृष्टद्युम्न ने उस गदाको लेकर उस पर्व्वताकार बादल के समान मदझाड़नेवाले हाथी को बहुतघा- यल किया २४ वह पर्व्वत समहाथी टूटाकुंभ अकस्मात गर्जकर

मुखसे बहुत रुधिर को छोड़ता ऐसे गिरपड़ा जैसे कि भूकम्प होने से पर्व्वतगिरताहै २५ तब गजराजके गिराने और आपके पुत्रकी सेनाके हाहाकार करनेपर उसशिनियोंमें बड़ेबीर सात्यकी ने राजा शाल्वके शिरको भल्लसे काटा २६ युद्धमें यादवके हाथसे कटाशिर वहराजागजराज समेत पृथ्वीपर ऐसे गिर पड़ा जैसेकि देवराज के चलायमान बज्रसे टूटा पर्वतका बड़ा शिखर होताहै २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिविंशोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उस युद्धके शोभा देनेवाले शूर शाल्वके मरने पर आपकी सेना तीव्रतासे ऐसी पृथक् २ हुई जैसे कि वायुसेवड़े वृक्ष पृथक् २ होजातेहैं १ बड़े बलवान शूरवीर महारथी कृतवर्मा ने उससेनाको पृथक् २ हुआ देखकर युद्धमेंही रोका २ हेराजाव-हवीर उसपर्वतके समान युद्धमेंनियत बाणोंसेढकेहुयेयादवको युद्धमें देखकरलौटे ३ इसकेअनन्तरमृत्युको पीछेकर लौटनेवाले कौरवोंका युद्ध पांडवोंकेसाथ जारीहुआ ४ वहां यादवका युद्ध प्रतिपक्षियों के साथ अपूर्वहुआ जो अकेलेनेही कठिनतासे रोकनेके योग्य पांडवी सेनाकोरोका ५ परस्पर शुभचिन्तक उनलोगोंके कठिनकर्म करने पर अत्यंततासे उनलोगोंकेसिंहनाद आकाश अथवा स्वर्गकेभीस्पर्श करनेवाले हुये ६ हेभरतर्षभ उस शब्दको सुनकर पांचालदेशी भयभीतहुये फिर शिनीका पौत्र महाबाहु सात्यकी उसके सन्मुख वर्त्तमान हुआ ७ उसने बड़े पराक्रमी राजा क्षेमकीर्त्ति को पाकर तेज धारवाले सातबाणोंसे यमलोकमें पहुंचाया ८ तब बुद्धिमान कृतवर्मा तीव्रतासे उस तेजबाणोंके फेंकनेवाले आतेहुये महाबाहु सात्यकीके सन्मुख दौड़ा ९ अत्यन्त उत्तम शस्त्रोंके धारण करने वाले रथियोंमें श्रेष्ठ धनुष धारी सिंहोंके समान गर्जनेवाले दोनोंस-न्मुख दौड़े १० उनदोनोंके घोर संग्राममें पांडवआदिक उत्तम उत्तम राजा लोग और पांचालों समेत अन्य अन्य शूरबीर देखनेवाले

हुये ११ अत्यन्त प्रसन्न हाथीके समान उस वृष्णी और अन्धक कुलके महारथियों ने नाराच और वत्सदन्तनाम बाणोंसे परस्पर घायल किया १२ नाना प्रकारके मार्गोंको घूमनेवाले वह दोनोंकृ-तवर्मा और सात्यकी परस्परकी बाण वृष्टीसे बारंबार गुप्तहोग-ये १३ हमने उन वृष्णियों में श्रेष्ठोंके धनुषोंकी तीव्रता और बलसे उंचे फेंके हुये बाणोंको आकाशमें शीघ्रगामी पक्षियोंके समानदेखा १४ हार्दिक्यके पुत्र कृतबर्माने उस अकेलेसत्यकर्माको पाकरतेज-धार चारबाणोंसे उसके चारोंघोड़ोंको घायलकिया १५ उसलंबी भुजावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त चाबुकसे पीड़ामान हाथीके समतुल्य ने आठ उत्तम बाणोंसे कृतबर्माको घायल किया १६ उसके पीछे कृतबर्माने अच्छे प्रकार खैंचकर तेजधार तीनबाणोंसे सात्यकीको घायल करके एक बाणसे धनुषको काटा फिर शिनियों में श्रेष्ठ सा-त्यकीने उस टूटे धनुष को डालकर बड़े वेगसे बाणसमेत दूसरे धनुषको हाथमेंलिया १७।१८ सब धनुष धारियों में श्रेष्ठ बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान् बलवान और कृतबर्मा के हाथ से धनुष के तोड़ने को न सहने वाला क्रोधयुक्त अतिरथी सात्यकी उस उत्तम लिये हुये धनुष को चढ़ाकर शीघ्रही कृतबर्मा के सन्मुख गया १९।२० वहां जाकर सात्यकीने अत्यन्त तेजधार दशबाणों से कृ-तबर्माके ध्वजासमेत सारथी और घोड़ोंकोमारा २१ इसकेपीछे बड़े धनुषधारी महारथीबड़ेक्रोधयुक्त सात्यकीके मारनेके इच्छावान कृ-तबर्माने सुवर्णके समानवाले रथको मृतक घोड़े सारथीवाला देख-कर शूलको उठाकर अपनी भुजाके वेगसे फेंका २२।२३ युद्धभूमिमें माधवको मोहित करते यादवकृतबर्माके फेकेहुयेउस शूलको सात्य कीने तेजधार बाणोंसे काटकर चूर्णकरके गिराया २४ इसके पीछे दूसरे भल्लसे उसको कठिन घायलकिया उसशुभयुद्धमें बड़े अ-स्त्रज्ञ सात्यकीके हाथसे मृतकघोड़े और सारथीवाले कृतबर्माने पृथ्वीको प्राप्तकिया उस द्वैरथ युद्धमें सात्यकी के हाथसे वीर कृत-बर्माके विरथकरनेपर २५।२६ सबसेनाओं को बड़ाभय वर्त्त मान

हुआ और आपका पुत्रभी महाव्याकुल हुआ २७ हे राजासूत सारथीके मरने और कृतबर्मा के विरथ होनेपर उस शत्रुओंके विजयीको मृतक सारथी और घोड़े वाला देखकर २८ सात्यकीकेमारनेके अभिलाषी कृपाचार्य्य सन्मुख दौड़े और सबधनुष धारियोंके देखतेहुये उस महाबाहुकोरथके बैठनेकेस्थानमें बैठाकर २९ शीघ्रही युद्ध भूमिसे दूरलेगये हेराजा सात्यकीके नियतहोने और कृतवर्माके विरथ होनेपर ३० दुर्य्योधनकी सबसेना फिर मुखोंको फेरगई सेनाकीधूलसे ढकेहुये प्रतिपक्षियोंने उसको नहींजाना ३१ हेराजा उस समय सिवाय राजा दुर्य्योधनके और सबआपकेशूरवीरभागेफिरदुर्य्योधननेसन्मुखसे अपनी सेनाको देखकर ३२ तीव्रतासे शीघ्रही सन्मुख आकर अकेलेनेही सबको रोका और अत्यन्त क्रोधयुक्तने सबपांडव धृष्टद्युम्न ३३ द्रौपदीके पुत्र पांचालोंकी सेनाओंके समूह केकय सोमक और सृञ्जियोंको तीक्ष्ण बाणोंसे रोका ३४ आपका पुत्रबड़ा बलवान सावधान और अजेय युद्धमेंभ्रांतीसेरहितहोकरनियतहुआ ३५ राजा दुर्य्योधन सब ओरसे तपाताहुआ युद्ध में उस प्रकार नियतहुआ जैसे कि यज्ञमेंमन्त्रसेपवित्र बड़ाअग्निहोताहै ३६ और प्रतिपक्षीलोग युद्धमें उसके सन्मुख ऐसेनहीं वर्त्तमानहुये जैसे कि मृत्युके आगे मर्त्यलोकके रहनेवाले नहीं वर्त्तमानहोते इसकेपीछे कृतबर्मा दूसरे रथपर सवारहोकर युद्धभूमिमें आया ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज रथियों में श्रेष्ठ रथ में सवार आपका पुत्रयुद्धमें उत्साहवाला ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि प्रतापवान रुद्रजी नियत होकर शोभित होते हैं १ उसके हजारों बाणों से पृथ्वी आच्छादित होगई उसने शत्रुओंको बाणोंसे ऐसे सींचा जैसे कि धाराओंसे बादल पहाड़ोंको सींचताहै २ पांडवोंके सेना सागर में ऐसाकोईमनुष्य घोड़ा हाथी और रथनहीं था जोकि उसके बाणों

से बिदीर्ण न हुआहो ३ हे भरत- वंशीराजाधृतराष्ट्र हमने जिस जिसशूरबीरको युद्धमेंदेखा वहवहआपकेबेटेके बाणोंसे छिदाहुआथा ४ जिसप्रकारसेनाकीउठीहुई धूलसे सेनाढकीहुई दिखाईपड़ी उसी प्रकार महात्मा दुर्य्योधन के बाणोंसेभी ढकीहुईथी ५ हेराजाहस्त- लाघवी धनुषधारी दुर्य्योधन के हाथसे बाणरूप कीहुई पृथ्वी को हमने देखा ६ आपके और प्रतिपक्षियोंके हजारों शूरबीरोंके मध्यमें वह अकेला दुर्य्योधन ही पुरुष सिंहहुआ यहमेरामतहै ७ हेभरत- वंशी वहां हमने आपके पुत्र के इस अपूर्व पराक्रमको देखा जो सबमिलकर भी पांडवलोग उसके सन्मुख वर्त्तमान नहीं हुये ८ हे भरतर्षभ उसने युद्धभूमि में युधिष्ठिर को सौबाणसे भीमसेनको स- त्तरबाणसे सहदेवको सातबाणसे ९ नकुल को चौंसठ बाणसे धृष्ट- द्युम्नको पांचबाणसे द्रौपदीके पुत्रोंको और सात्यकीको तीनबाण सेघायल किया १० हेश्रेष्ठ उसने भल्लसे सहदेव के धनुषको काटा तबप्रतापवान माद्रीका पुत्र उसटूटे धनुष को डालकर ११ दूसरे धनुषको लेकर राजाकेसन्मुख दौड़ा और दशबाणोंसे दुर्य्योधनको घायल किया १२ इसके पीछेबीर नकुल घोररूप बड़े नौबाणों से राजाको घायलकरके बड़ी ध्वनिसे गर्जा १३ सात्यकीने भी टेढ़ेपर्व वाले एकबाणसे द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर बाणोंसे धर्मराजने पांच बाणसे १४ और भीमसेनने सत्तर बाणोंसे राजाको पीड़ामानकिया चारों ओर महात्माओं के बाणोंकी बर्षासे ढकाहुआ दुर्य्योधन १५ सबसेनाके देखतेहुये कंपायमान नहींहुआ सबमनुष्योंने महात्माकी हस्तलाघवता सौष्टवता और बलको भी १६ सब जीवधारीयोंसे अधिक देखा हे राजेन्द्र थोड़े अन्तरको न देखनेवाले कवचधारी आपके शूरबीरपुत्र राजाके चारोंओरआकरवर्त्तमानहुये उनचढ़ाई करने वालोंके ऐसे घोरशब्द उत्पन्न हुये १७। १८ जैसेकि वर्षाऋ- तुमें वेगमें आनेवाले समुद्रके शब्दहोते हैं फिर वहबड़े धनुषधारी युद्धमें अजेय राजाको पाकर १९ शस्त्रधारी पांडवोंके सन्मुख गये अश्वत्थामा ने क्रोधयुक्त भीमसेन को युद्धमें रोका २० हेमहाराज

इसके पीछे सबदिशाओंसे छोड़ेहुये बाणोंके कारणसे बीरोंने दिशा विदिशाओंको नहीं जाना २१ उन दोनों निर्दय कर्मी कठिनता से सहनेके योग्य अस्त्रोंके काटनेवालोंने घोररूप युद्धकिया २२ जो कि प्रत्यंचाके आघातसे कठिन चर्म रखनेवाले और सर्वदिशाओंको भयसे पूर्णकरनेवाले थे इसके अनन्तर बीरशकुनीने युद्धमें युधिष्ठिर को घायलकिया २३ युद्धमें सब सेनाओंको कंपायमान करते उस सौबलके पुत्रने उसके चारों घोड़ोंकोमारकर कठोरशब्दकिया २४ इसीअन्तर में प्रतापवान सहदेव युद्धमें अजेयबीर राजाको रथके द्वारा दूरलेगया २५ इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिरने दूसरे रथपर सवार होकर नौ बाणोंसे शकुनीको घायलकरके फिर पांच बाणसे घायल किया २६ और सबधनुष धारियोंमें अत्यन्त श्रेष्ठबड़े शब्द से गर्जा हे श्रेष्ठ वह युद्धअपूर्व भयकारी रूप २७ देखने वालोंकी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला और सिद्धचारणों से सेवित हुआफिर बड़ा साहसी उलूकचारोंओर से बाणोंकी वृष्टियों समेत उस बड़े धनुष धारी युद्धदुर्मद नकुलके सन्मुखगया उसीप्रकार शूरबीर नकुल ने युद्धमें शकुनी के पुत्रको २८ । २९ बाणोंकी वर्षाके द्वारा चारों ओरसे रोका उसयुद्धमें वह दोनोंबीर कुलीन महारथी ३० परस्पर अपराध करने वाले लड़तेहुये दिखाईपड़े उसीप्रकार शत्रुओंकात-पानेवाला सात्यकी कृतबर्मासे ३१ लड़ता हुआ ऐसा शोभायमान हुआ हे राजा जैसे कि युद्धमें बलिसे लड़ताहुआ इन्द्रशोभित हुआ था इसके पीछे दुर्योधनने युद्धमें धृष्टद्युम्नकेधनुषको काटकर ३२ इस टूटे धनुष वालेको तीक्ष्णधारबाणोंसे घायलकिया तब धृष्टद्यु-म्नभी युद्धमें उत्तम शस्त्रको लेकर ३३ सब धनुष धारियोंके देखते राजासे युद्ध करनेलगा हे भरतर्षभ, इसके पीछे युद्ध भूमिमें ऐसा बड़ा भारी युद्धहुआ ३४ जैसे मद झाड़नेवाले दो मतवाले हाथियों का युद्ध होताहै इसके पीछे युद्ध में क्रोध युक्त बीर कृपाचार्य्य ने बड़े बलवान द्रौपदीके पुत्रोंको ३५ गुप्त ग्रन्थीवाले बहुत बाणोंसे घायल किया इनका उनके साथ ऐसा युद्धहुआ जैसेकि शरीर वाले

का युद्ध इन्द्रियोंके साथहोताहै ३६ घोर रूप बन्धुओंका अयोग्य और वेमर्य्यादायुद्ध वर्त्तमान हुआ परन्तु उनको ऐसा पीड़ामाननहीं किया जैसेकि इन्द्रियां बालकको पीड़ित नहीं करतीं ३७ क्रोधयुक्त होकर उन्होंने युद्धमें उनके साथ युद्ध किया हे भरतवंशी इसप्रकार उनका उन्होंके साथ ऐसा अपूर्वयुद्ध हुआ ३८ जैसेकि शरीरवालेका युद्ध उठ उठकर इन्द्रियोंसे होताहै मनुष्यमनुष्योंके साथ हाथीहाथियोंके साथ ३९ घोड़े घोड़ोंके साथ और रथीरथियोंके साथभिड़गये इसरीतिसे वहयुद्ध महाघोर रूप और संकुलहुआ ४० हेप्रभु महाराज यह अपूर्वहै घोर है रुद्रहै इस प्रकारके बहुत घोर युद्ध हुये ४१ उनशत्रुओंके विजय करनेवालोंने युद्धमेंपरस्पर एकएकको पाकर घायलकिया और मारा ४२ हेराजा तब उन्होंके शस्त्रोंसे प्रकटहोनेवाली बड़ीधूल दिखाईपड़ी और बहुतसे अश्व सवारोंकी हवासे ऊंचीउठी ४३ रथकी नेमियोंसे और हाथियोंकी श्वासाओंसे उठनेवालीसायंकालकीसी अरुणतासेयुक्त सूर्य्यके मार्गमें गई ४४ उसधूलसे ढकाहुआ सूर्यप्रकाशसे रहितहुआ तब पृथ्वी और वह महारथी शूरढकगये ४५ हेभरतर्षभ फिर एकमुहूर्त्त मेंही चारोंओर से सब स्वच्छ होगया क्योंकि वीरोंके रुधिरसे आर्द्र पृथ्वीपर ४६ वहघोर दर्शन कठिन धूल शांत होगई हेभरतवंशी महाराज फिर द्वन्दनाम युद्धोंको देखा ४७ मध्याह्नके समय बल पराक्रमके समान बड़ा भयकारी वह युद्धहुआ हे राजेन्द्र तब वहां कवचोंके स्वच्छ प्रकाश दिखाईपड़े ४८ और युद्धमें गिरनेवाले बाणोंके ऐसे कठोर शब्द हुये जैसे कि पर्व्वतपर जलतेहुये बांसोंके बड़े २ वनों के शब्द होते हैं ४९॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय॥

संजय बोले कि इस प्रकार वहां घोररूप भयकारी आपके बेटोंकायुद्ध पांडवोंके साथ वर्त्तमान होनेपर सेना छिन्न भिन्न हुई १

फिर आपके पुत्रने बड़े उपायोंसे उनमहारथियोंको रोककर पांडवों की सेनासे युद्धकिया २ आपके पुत्रकी बिजय चाहनेवाले शूरबीर अकस्मात लौटे और उन्हों के लौटने पर ३ आपके शूरबीर और दूसरों के शूरवीरों का युद्ध देवासुर संग्राम के समान बड़ा भयानक हुआ दूसरों में और आप की सेना में किसी ने भी मुखको नहीं मोड़ा ४ ध्यान और नामोंके द्वारा परस्पर लड़तेथे तब उन परस्पर युद्ध करनेवाले वीरोंका बड़ा विनाश हुआ ५ इसके पीछे बड़े क्रोधभरे युद्धमें राजाओं समेत धृतराष्ट्र के पुत्रों के विजय करनेके अभिलाषी राजायुधिष्ठिरने ६ सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार तीनबाणोंसे कृपाचार्य्यको घायल करके चारनाराचोंसे कृत-बर्माके घोड़ोंकोमारा ७ अश्वत्थामाजी उस यशमान कृतवर्माको युद्ध भूमिसे दूरलेगये इसके पीछे कृपाचार्य्यने आठबाणोंसेयुधि-ष्ठिरको घायल किया ८ तब राजादुर्योधन ने सातसौ रथियों को युद्धमें उस स्थानपर भेजा जहांपर कि यह धर्मपुत्र राजायुधिष्ठिर था ९ शीघ्रवायुके समान शीघ्रगामी वह रथ रथियों समेत युद्धमें युधिष्ठिरके रथकी ओरगये १० हेमहाराज उनसब रथियोंने चारों ओरसे युधिष्ठिरको घेरकर शायकोंसे ऐसा गुप्त करदिया जैसे कि सूर्य्यको बादल गुप्त कर देतेहैं ११ उन अत्यन्त क्रोध युक्त शिख-ण्डीआदिक रथियोंने कौरवोंसे उसप्रकार घिरेहुये युधिष्ठिरको देख-कर सहन नहीं किया १२ उत्तम घोड़ोंसे युक्त क्षुद्रघंटिकाओं से अलंकृत रथोंकी सवारीसे आपहुंचे और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर को चारों ओर से रक्षित करनेवाले हुये १३ इसके पीछे पाण्डव और कौरवोंका वह युद्धजारी हुआ जो कि रुद्ररूप रुधिर रूपी जलसे युक्त यमराजके देशका बढ़ानेवाला था पांचालों समेत पाण्डवोंने सात सौ रथियोंको मारकर कौरवोंके युद्धकर्त्ताओंकोरोका १४।१५ वहां पांडवोंसे और आपके पुत्रसे ऐसा बड़ा युद्ध हुआ जैसा न देखाथा न सुनाथा १६ इसप्रकार चारों ओरोंको वे मर्य्यादयुद्धोंके जारी होनेपर और आपके और दूसरोंके शूरवीरोंके मरने पर १७

और उत्तम शंखों के बजने ऊंचे सिंहनादहोने धनुष धारियोंके ग-र्जना के साथ शूरबीरोंके गर्जने पर १८ बड़े युद्धोंमें मर्मस्थलोंके घायलहोने और बिजयाभिलाषी शूरबीरों के दौड़नेपर १९ सब ओरसे पृथ्वीपर शोकके उत्पन्न करनेवाले नाशके उत्पन्न होने और बहुत उत्तम कुलाङ्गनाओंके मांग मिटाने २० बड़े भयानक और अ-मर्याद युद्धके बत्त मान होनेपर नाशके द्योतन करनेवाले महाभया-नक उत्पात प्रकट हुये २१ पर्व्वत और बनोंके समेत शब्द करने वाली पृथ्वी कंपायमान हुई और हे राजा दण्ड ज्वालाओं समेत चारों ओरको फैलीहुई उल्का २२ सूर्य्यमण्डलको घायल करके स्वर्ग से पृथ्वीपर गिरी और कंकड़ पत्थर बरसानेवाली बायु प्रकट हुई २३ हाथियोंने आंसूडाले और कठिन कंपन उत्पन्नहुआ इन बड़े भयानक और घोर उत्पातोंको अनादर करके २४ पीड़ा से रहित स्वर्गके अभिलाषी क्षत्री लोग फिर युद्ध करने का मता करके सुन्दर धर्मके मूल कुरुक्षेत्र में नियत हुये २५ इसके पीछे गान्धार देशके राजाका पुत्र शकुनी यह बोला कि तुम तब तक आगेसे युद्ध करो जबतक कि मैं पीछे की ओरसे पांडवोंको मारूं २६ इसके पीछे चढ़ाई करनेवाले हम लोगों के मध्यमें वेगवान प्रसन्न चित्त मद्रदेशी और अन्य २ शूरबीरोंने किल किला शब्द किया २७ लक्ष्यके प्राप्त करनेवाले कठिनतासे सन्मुखताके योग्य और धनुषोंको चलायमान करनेवाले उन पांडवोंने हमको फिर पाकर बाणोंकी बर्षासे आच्छादित किया हे राजा फिर राजामद्रकी सेना शत्रुओंके हाथसे मारीगई उसको देखकर दुर्योधन की सेना फिर मुखफेर चली २८।२९ तब गान्धारके राजा पराक्रमी शकुनीने यह बचनकहा कि हे धर्मके न जाननेवाले बीरलोगो लौटो युद्धकरो तुमको भागने से क्या प्रयोजनहै ३० हे भरतर्षभ राजा गान्धार के शूरबीर जो कि बड़े २ प्रासों से लड़नेवाले थे उन्हों की घोड़ा-वाली दशहजार सेनाथी ३१ मनुष्योंके नाश वर्त्तमान होनेपर उस सेनासमेत पराक्रम करके तेजधार बाणों से पांडवी सेनाको

पीछे की ओर से मारा ३२ हे महाराज जैसे कि वायु से हटाया हुआ बादल चारोंओरसे फटजाताहै उसीप्रकार पांडवोंकी वह बड़ी सेना छिन्न भिन्न हुई ३३ उसके पीछे सावधान युधिष्ठिरने अपनी सेनाको सन्मुखसे छिन्न भिन्न देखकर बड़े पराक्रमी सहदेवको प्रेरणाकरी ३४ कि यह सौबलका पुत्र हमारीजघन सेनाकोपीड़ा-मान करके नियत है और सेना को माररहा है हे पांडव तुम इस दुर्बुद्धी को देखो ३५ तुम द्रौपदी के पुत्रों समेत जाओ और इस सौबल के पुत्र शकुनी को मारो हे निष्पाप मैं धृष्टद्युम्न को साथ लेकर रथकी सेना का नाश करूंगा सब हाथी घोड़े और तीन हज़ार पदाती तेरे साथ जायं उन सबसेनाओं से युक्त होकर तुम शकुनीको मारो इसके पीछे धनुषधारियों से युक्त सातसौ हाथी और पांच हजार घोड़े पराक्रमी सहदेव ३६ । ३७ तीन हजार पदाती और द्रौपदीके पुत्र यह सब मिलकर उस युद्ध दुर्मद शकुनीके सन्मुखगये ३८ । ३९ हे राजा इसके अनन्तर शकुनीको उल्लंघन करके विजया भिलाषी प्रतापवान सहदेव ने पीछे की ओरसे मारा ४० फिर वेगवान पांडवों के क्रोधयुक्त अश्व स-वार उनरथियोंको उल्लंघनकर शकुनीकीसेनामें पहुंचे ४१ वहां युद्धमें नियत उन अश्वसवारोंने शकुनीकी बड़ी सेनाको बाणोंकी वर्षासे ढकदिया ४२ हेराजा आपकी कुमन्त्रतासे वह युद्धजारीहुआ जोकि गदा और प्रास उठानेवाले महात्माओंसे सवितथा ४३ जिसमें धनुषोंकी प्रत्यंचाओं के शब्द बन्दहोगये रथी कुतूहल दर्शीहुये और अपने और दूसरोंकी मुख्यताभी दृष्टिनपड़ी ४४ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ उन कौरव और पांडवोंकी भुजाओंसे छोड़ी हुईं शक्तियों का गिरना नक्षत्रोंके आकाशसे पतन होनेके समान हुआ ४५ हे राजा जहां तहां गिरतेहुये निर्मल दुधारा खड्गोंसे संयुक्त आकाश बहुत शोभायमान हुआ ४६ हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र तब चारोंओरसे गिरते हुये प्रासोंके रूप ऐसेहुये जैसे कि आकाशमें शलभाके समूहोंके रूप होतेहैं ४७ रुधिरसे लिप्तसंपूर्ण

शरीर और बाणोंसे घायल हजारों घोड़े चारोंओरसे गिरे ४८ परस्पर सन्मुखहो होकर चूर्ण होगये मुखोंसे रुधिरकी वमन करते घायल दृष्टि पड़े ४९ शत्रुओंके विजय करने पर फिर सेनाकी धूलसे संयुक्त होनेपर घोर अन्धकार हुआ तब अन्धकारसे ढकजानेपर उन घोड़ों और मनुष्यों को उस स्थानसे हटाहुआ देखा कितनेही रुधिरको वमन करतेहुये पृथ्वीपर गिर पड़े ५० । ५१ घोड़ोंकी पीठसे परस्पर खैंचनेवाले बाणोंसे चिपटेहुये मनुष्य अंगोंकी चेष्टा करने को समर्थ नहीं हुये ५२ मल्लोंके समानमिलकर परस्परमें मारा और बहुत से निर्जीव मनुष्य घोड़ोंसे दूर दूर तकखेंचेगये ५३ बहुतसे बिजयाभिलाषी अपने को शूरमाननेवाले मनुष्य जहां तहां पृथ्वीपर पड़े हुये दिखाई पड़े ५४ रुधिर से लिप्त टूटे भुज केशोंसे रहित हजारों मनुष्यों से आच्छादित पृथ्वी दिखाई पड़ी ५५ सवारों समेतमृतक घोड़ोंसे पृथ्वीके आच्छादित होनेपर घोड़ेकी सवारी से दूरजाना असंभव होगया ५६ रुधिर से लिप्त सब शरीर शस्त्र धनुष आदिके उठानेवाले नाना प्रकारके प्रहार करनेवाले घोर रूप परस्पर मारने के अभिलाषी ५७ युद्धमें सेनाके मनुष्योंके समीपबर्त्ती जिनके कि बहुतसे मनुष्य मारे गये उनलोगों समेत युद्धमें एक मुहूर्त्त भर लड़कर वह शकुनी शेष बचे हुये छः हजार घोड़ों समेत हटगया ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणित्रिविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उसीप्रकार रुधिरसे लिप्तथकी सवारीवाली पाण्डवी सेनाभी शेष बचे हुये छः हजार घोड़ोंसमेत हटगई १ बहुत समीपी युद्धमें जीवनके त्यागने वाले रुधिरसे भरे पाण्डवी अश्वसवार बोले २ कि यहां जबकि हाथियों से लड़ना असंभवहै तो बड़े हाथियोंसे लड़ना कैसेसंभव होगा रथरथोंके और हाथीहाथियोंकेही सन्मुख जायं ३ वह सन्मुख होनेवाला शकुनी अपनीसेना

में नियतहै राजा शकुनी फिर युद्धको प्राप्त नहीं करेगा ४ इसके पीछे द्रौपदीके पुत्र और मतवाले बड़े हाथी वहां गये जहां पर कि पांचालदेशी महारथी धृष्टद्युम्नथा ५ धूलके बादल उठनेपर कौरव्य सहदेव भी अकेला वहां गया जहां पर राजा युधिष्ठिरथे ६ इसके पीछे उनकी चढ़ाई होनेपर क्रोधयुक्त शकुनी ने अपने पक्षमें नियत हुई धृष्टद्युम्नकी सेनाकोमारा ७ फिर प्राणोंको त्यागकर परस्पर मारने के अभिलाषी आपके और प्रति पक्षियों के शूरबीरोंका वह कठिन युद्ध वर्त्तमानहुआ हेराजा उसबीरोंकी सन्मुखतामें उन्होंने परस्पर देखा सैकड़ों हजारों शूरबीर चारोंओरसे दौड़े ८।६ संसार के नाशमें खड्गोंसे कटनेवाले शिरोंके ऐसे बड़े शब्द प्रकट हुये जैसे कि गिरतेहुये तालफलोंके शब्द होतेहैं १० हे राजा कवचोंसे रहित टूटे अंगपृथ्वीपर गिरतेहुये शरीर शस्त्रधारी भुजा औरजंघा-ओंके चट चटानाम शब्द बड़े कठोर और रोमांच खड़े करनेवाले उत्पन्न हुये तीक्ष्णधार शस्त्रोंसे भाईपिता और पुत्रोंको मारते ११।१२ शूरवीर चारोंओरसे ऐसे दौड़े जैसे कि मांसके निमित्तपक्षी परस्पर क्रोधयुक्त एक दूसरेको पाकर १३ प्रथम में प्रथममैं इस प्रकारसे कहकर हजारोंने प्रहारकिये और कठिन प्रहारोंसे निर्जीव आसनोंसे च्युत अश्वसवारों के कारणसे हजारों घोड़े चारों ओर को दौड़े हे राजा फड़कते मर्दन युक्त तीव्रगामी घोड़ोंके १४।१५ और अलंकृत गर्जनेवाले मनुष्यों के और शक्ति प्रास और दुधारे खड्गोंके कठोर शब्द वर्त्तमान हुये १६ हे राजा आपके कुबिचार में शत्रुके मर्म स्थलोंके काटनेवाले पुरुषोंके बड़े शब्दहुये परि-श्रमसेदबाये क्रोधयुक्त प्यासेथकी सवारीवाले १७ और तेजबाणों से अत्यंतघायल आपके शूरबीर सन्मुख वर्त्तमानहुये वहां रुधिरकी गन्धसे मतवाले और अचेत बहुतमनुष्योंने १८ समीप आनेवाले शत्रुओंसमेत अपनेही शूरबीरोंकोमारा और बिजयाभिलाषी मरेहुये बहुतसे क्षत्री बाणोंकी बर्षासे घायलहोकर पृथ्वीपरगिरपड़े १६।२० आपके पुत्रके देखते हुये सेनाका घोर नाशहुआ हे राजा पृथ्वी

मनुष्य और घोड़ोंकेशरीरोंसे ढकगई २१ रुधिररूप जल रखनेवाली महा अपर्व्वभयतीतोंका भयबढ़ानेवाली होगई हे भरतवंशी खड्ग पट्टिश और शूलोंसे बारंबार घायल २२ पांडव और आपके शूरवीर नहीं लौटे जबतक शरीर में प्राणशेष रहे तबतक सामर्थ्यके अनुसार युद्धकरते रहे २३ व्रणोंसे रुधिरको डालते हुये शूरवीरचारों ओरको दौड़े और धड़ अर्थात् रुंड शिरकोबालोंसे पकड़कर२४ रुधिरसेभरेहुये तीक्ष्ण खड्गको उठाकर दिखाईदिया हेराजाइसके पीछे बहुत रुंडोंके उठने पर २५ उसप्रकारके रुधिरको गन्धसे शूरवीर मूर्छित होनेलगे उसके पीछेशब्दके न्यून होनेपर शकुनी थोड़े शेषबचेहुये घोड़ों समेत पांचाल देशियोंकी बड़ीसेनाके सन्मुखवर्त्तमान हुआ इसके पीछे बिजयाभिलाषी पांडव शीघ्रही सन्मुख दौड़े २६।२७ शस्त्र उठानेवाले युद्धके अन्तपर पहुंचनेके इच्छावान पदाती हाथी और अश्वसवारोंने उसको चारोंओरमें सब प्रकारासे घेरकर २८ नानाप्रकाके शस्त्रोंसे घायल किया फिर आपके रथ घोड़े पतिऔर हाथी सबओर से चढ़ाई करनेवाले उन पांडवोंको देखकर सन्मुख पहुंचे और शस्त्रोंसे कितनेही शूरवीर पदातियोंने युद्धमें चरणघात और मुष्टिकाओं से परस्पर २९।३० घायल किया और घायलकरके फिर गिरपड़े रथी रथपरसे और हाथीकेसवार हाथीपरसे ऐसे गिरपड़े ३१ जैसेकि पुण्य फलके क्षीणहोनेसे बिमानपरचढ़े हुये सिद्ध स्वर्गसे गिरतेहैं इसप्रकार महादुखित शूरवीरोंने परस्पर प्रहार किये और इसीप्रकार अन्य लोगोंने पिताभाई समान वयवाले औरपुत्रोंको भीमारा हेभरतर्षभ इसप्रकार प्रासखड्ग और बाणोंसे युक्त बड़ा भयानक युद्ध वर्त्तमान होनेपर बड़ीही बेमर्यादा हुई ३२।३३॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पच्चीसवां अध्याय॥

संजय बोलेकि उसशब्दके मृदुहोने और पांडवोंकेहाथसे सेनाके

मारेजानेपर शकुनी शेषबचे हुये सातसौ घोड़ों समेत हटगया १ युद्धमें शीघ्रता करताहुआ वह शकुनि सेनाके पास शीघ्र पहुंचकर यह बारंबार बचन बोला कि हेअत्यन्त प्रसन्नचित्त और शत्रुओंके बिजय करनेवालो तुमयुद्ध करो २ और वहां सब क्षत्रियोंसे पूछा किवह दुर्य्योधन कहांहै हेभरतर्षभ तब वहक्षत्री लोग शकुनी के बचनको सुनकरबोले ३ कि वहमहारथी कौरव युद्धमें वहां वर्त्तमा- नहै जहां वह पूर्णचन्द्रमा के समान उसका छत्रदिखाई देताहै ४ जहांपर कियह उत्तम कवचधारी शस्त्रलिये रथीलोग नियतहैं और जहांपर यह बादलके समान घोर शब्द वर्त्तमानहै ५ हेराज तुम वहां शीघ्रजाओ वहां जाकर तुमउस कौरव राजको देखोगे उनशूरों केऐसे बचन सुनकर वहशकुनीवहांगया ६ हेराजा वहांपरवह आ- पकापुत्र युद्धमें मुखन मोड़नेवाले बीरोंसे चारोंओरको रक्षितथा ७ वहांरथकी सेना समेत दुर्य्योधनको नियत देखकर आपकेसबरथि- योंको प्रसन्न करता ८ प्रसन्न मूर्त्ति अपनेको कृत कृत्यमानता श- कुनी राजा दुर्य्योधनसे यहबचन बोला ९ हेराजा अबतुमरथकीसे- नाकोमारो मैंने सबघोड़े बिजय किये युद्धमें जीवनको त्यागनकरके युधिष्ठिर बिजय करनेके योग्य नहींहै १० पांडवों से रक्षित उसरथ कीसेनाके मरनेपर इनहाथी पदाती आदि सबकोमारेंगे ११ बिजया- भिलाषी प्रसन्नचित्त आपके पुत्र उसके बचनको सुनकर तीव्रतासे पांडवोंकीसेनाके सन्मुखदौड़े १२ सब तूणीर बांधे धनुषोंको चला- यमान करते धनुषधारियों ने सिंहनाद किये १३ हेराजा इसकेपीछे प्रत्यंचा और तलों समेत अच्छे प्रकारसे छोड़े हुये बाणोंके फिर महाभयकारी शब्द प्रकट हुये १४ कुन्तीका पुत्र अर्जुन उन सन्मु- खवर्त्तमान तीव्रतासे धनुष उठानेवालों को देखकर श्रीकृष्णजी से यह बचनबोला १५ कि आप भ्रान्तीसे रहित होकर घोड़ोंकोचला- यमान करो और सेनारूपी समुद्रमें प्रवेश करिये अब मैं तेजधार- वाले बाणोंसे शत्रुओंके नाशको करूंगा १६ हेजनार्दन जोपरस्पर सन्मुख होते हुये इस महाभारी युद्धको होतेहुये अब अठारह दिन

हुये १७ इन महात्माओं की असंख्यसेनाने अवयुद्धमें नाशको पाया देवको देखिये कि कैसाहै १८ हे अविनाशी माधवजी समुद्रकी समान दुर्य्योधन की सेना हमकोपाकर गोदके समान देखने में आई १९ हेमाधवजी भीष्मके मरनेपर जो यहसन्धि करलेता तोयहां केसब लोगोंकी कुशल होजाती परन्तु अज्ञान निर्बुद्धी दुर्य्योधन ने उसको नहीं माना २० हे माधवजी भीष्मजीने भी जोबड़ा हितकारी शुभदायक बचनकहा था इस निर्बुद्धी दुर्य्योधनने उसको भी नहीं किया कठिन युद्ध में उनभीष्मजीके पृथ्वीपर गिरनेपर मैं नहींजानताहूं कि कौनसा कारणहै जिससेकि युद्ध जारीहुआ २१ २२ मैं सबप्रकारसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंको अज्ञान और निर्बुद्धी मानताहूं कि जिन्होंने भीष्मजीके भी गिरनेपर युद्धकिया २३ इसके अनन्तर ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य कर्ण और विकर्ण के मरने परभीविनाशने शांतीको नहीं पाया २४ इससेनाके थोड़े बाकीरहने और नरोत्तम कर्णके पुत्र समेत गिरानेपर नाशने शांतीको नहीं पाया २५ बीर श्रुतायुश पौरव जलसिंधु और राजा श्रुतायुधके मरने परभी नाश होनाबंद नहींहुआ २६ हेजनार्द्दनजी भूरिश्रवा शल्यशाल्व और दोनों अवन्ति देशके बीर राजालोगोंके भी मरने पर नाशहोना बंदनहींहुआ २७ जयद्रथ अलायुधराक्षस बाह्लीक सोमदत्त २८ शूर भगदत्त काम्बोज सुदक्षिण और दुश्शासन के मरनेपर भी यह क्षत्रियों का नाश बन्द नहीं हुआ २९ हे कृष्णजी पृथक् २ मंडलवाले शूरवीर पराक्रमी राजाओं को युद्धमें मरा हुआ देखकरभी नाश बन्दनहींहुआ ३० भीमसेनके हाथसे अक्षौहिणीके प्रधान लोगों को मृतक देखकर मोह और लोभसे नाश बन्द नहींहुआ ३१ राजाओंके घराने मुख्यकर कौरवोंके घरानेमें उत्पन्नहोकर दुर्योधनके सिवाय कौन पुरुष निरर्थक बड़ी शत्रुताको करेगा ३२ गुण बल और शूरतासेभी अधिक जानकर हानिलाभको जानताहुआ कौनसा बुद्धिमान् मनुष्य युद्ध करेगा ३३ जो तुम्हारे भी हितकारी बचनोंके कहनेसे उस दुर्योधनका चित्त पांडवोंकेसाथ

सन्धि करने में नहींहुआ वह फिरदूसरेके बचन को कैसे सुनसक्ता है ३४ सन्धिके विषयमें भीष्म द्रोणाचार्य और विदुरजी को भीजिसने उत्तरदिया अब उसका कौनसा इलाजहै ३५ हे जनार्द्दन जी जिसने अपनी अज्ञानतासे हितकारी बचनोंके कहनेवाले वृद्ध पिता और माताओंको भी बारंबार अनादर करके उत्तर दिया वह कैसे दूसरेके बचनों को अंगीकार करसक्ताहै हेमधुसूदनजी प्रकटहै कि यहकुलका नाश करनेवाला उत्पन्न हुआ ३६ । ३७ हे विशाम्पते उसी प्रकार इसकी चेष्टा और नीयत देखी जातीहै कि यह हमको राज्य नहींदेगा हे अबिनाशी मेरा यह मतहै ३८ हेबड़ाई देने वाले भाई मुझसे बहुधा महात्मा विदुरने कहाथा किदुर्य्योधन कभी अपने जीते जी राज्यका भाग नहीं देगा ३९ दुर्य्योधनजबतक जीवताहै तबतक हम निरपराधियों के साथ पापकर्म करेगा ४० हे माधवजी वह बिनायुद्ध किये और किसीप्रकारसे भी बिजयकरने के योग्यनहीं है न्यायके देखनेवाले विदुरजीने सदैव मुझसे यही कहा कि ४१ सो अबउस दुरात्माके सब निश्चयको और जो बचन उस महात्मा विदुरजीने कहाहै उसको जानूंगा ४२ जिस दुर्बुद्धीने परशुरामजीके सत्य और परिणाममें हितकारी बचनोंको सुनकर अपमानकिया इससे निश्चयज्ञातहोताहै कि वहनाशके सन्मुखनियत हुआहै ४३ दुर्य्योधनके उत्पन्नहोनेपर बहुत सिद्धलोगोंने कहाथा कि इस दुरात्मा दुर्बुद्धीको प्राप्त होकर बहुतसे क्षत्रियोंके कुल नाश होजायंगे ४४ हेजनार्द्दनजी उन्होंका बारंबार कहा हुआ वह बचन अब सत्य होरहाहै कि दुर्य्योधनके कारणसे बहुत से असंख्य राजाओंका नाशहोगया ४५ सो हेमाधवजीअबमैंयुद्धमें सबशूरबीरोंको मारूंगा क्षत्रियोंके शीघ्र मरने और डेरोंके जल्दीसे खालीहोने पर ४६ अपने मरणकेलिये वह दुर्य्योधन हमारे साथ युद्धकरनेको अंगीकार करेगा हे जनार्द्दनजी अनुमान से विदित होताहै किशत्रुताका अंत वही होगा ४७ हे श्रीकृष्णजीमैं अपनी वृद्धिसे शोचता विदुरजीके बचन और इस दुरात्माके कर्मसे ऐसाही देखताहूं ४८

हेबीर इस हेतुसे आप उससेनामें चलो जब तक युद्धमें तेजबाणोंसे इस दुरात्मा दुर्योधनको और इसकीसेनाको मारूंगा ४६ हेगरुड़-ध्वजजी अबमैं दुर्योधनके देखते इसनिर्बल सेनाको मारकर धर्म-राजकी कुशलताको करूंगा ५० संजय बोले कि अर्जुनके इसप्र-कार वचनको सुनकर हाथमें रस्सी पकड़नेवाले श्रीकृष्णजीने नि-र्भयतासे उस सेनामें प्रवेशकिया ५१ बड़े साहसी गोविन्दजीबड़ी पताका वाले रथकी सवारीसे उस सेनाको मझातेहुये घूमनेलगे जोकि प्रास खड्ग और बाणोंसे भयानक शक्ति रूपी कांटोंसेपूर्ण गदा और परिघसूरतमार्ग रखनेवालारथ हाथी रूप बड़ेवृक्षवाला घोड़े और पतिरूपी लताओंसे संयुक्त सेना रूपी बनथा ५२।५३ हे राजा युद्धमें श्रीकृष्णजी से चलायमान वह श्वेत घोड़े अर्जु-नको सवार किये हुये सबदिशाओंमें दिखाई पड़े ५४ इसके पीछे शत्रुओंका तपाने वाला अर्जुन सैकड़ों बाण जालोंको फैलाता रथ-कीसवारीसे युद्धमें ऐसे आया जैसेकिजलकी धाराओंको बरसाता बादल आताहै ५५ युद्धमेंअर्जुनके बाणोंसे ढकेहुयेशूरबीर और टेढ़े पर्ववाले बाणोंके बड़े शब्द प्रकटहुये ५६ गांडीवधनुषसे चलाये हुये इन्द्र बज्रकी समान स्पर्शवाले कवचोंपरलगतेहुये बाण समू-ह पृथ्वीपर अच्छे गिरे ५७ हेराजा वह बाण हाथीऔर घोड़ोंको मारकर पक्षियोंके समान युद्धभूमिमें गिरपड़े ५८ गांडीवधनुष के चलायेहुये बाणोंसे सब पृथ्वी ऐसी ढकगई कि युद्धमेंदिशा और विदिशा भी नहीं जानीगईं ५६ अर्जुनके नामोंसे अंकित सुनहरी पुंख तेलसे साफ़ किये हुये और कारीगरके मांजे हुयेबाणोंसे सब जगत् पूर्ण होगया ६० अग्निके समान अर्जुनसे भस्म होनेवाले तेज बाणोंसे घायल उन घोररूप हाथियोंने अर्जुनको त्यागनहीं किया ६१ सूर्य्यके समान प्रकाशमान तेजस्वी धनुषबाणधारी अर्जुनने युद्धमें लड़ने वालोंको ऐसेभस्मकिया जैसेकि ज्वलितरूप अग्नि सूखे बनको भस्मकरताहै ६२ जैसेकि बनकेसमीप बनवासि-योंसे छोड़ाहुआ कालामार्ग अथवा बड़े शब्द रखनेवाली वृद्धियुक्त

प्रतापी अग्नि उस सूखेबनको भस्मकरै जोकि बहुतसे वृक्षोंसे पूर्ण होकर सूक्ष्म लताओंसे आच्छादित होय ६३ इसीप्रकार नाराचोंसे संतप्त करनेवाले बाणरूप छोटीबड़ी ज्वाला रखनेवाले बड़ेतेजस्वी वेगवान् अशान्तचित्त अर्जुनने आपके पुत्रकी सबसेनाको नाशकर दिया ६४ अच्छे प्रकारसे छोड़हुये सुनहरी पुंख जीवनके हरनेवाले उसके बाण कवचोंको भेदकर पार होगये उसने मनुष्य घोड़े और उत्तम हाथीपरभी एकके सिवाय दूसरे बाणको नहींमारा ६५ उस अकेलेने महारथियोंकी सेनामें प्रवेशकरके बहुत प्रकारके रूपवाले बाणोंसे आपके पुत्रकी सेनाको ऐसे मारा जैसे कि दैत्यलोगों को बज्रधारी इन्द्रमारताहै ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिपंचविंशो ऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि अर्जुनने गांडीवधनुषके द्वारा उनधनुषधारीउपाय करनेवाले और मुख न मोड़नेवाले शूरवीरोंके संकल्पोंको निष्फल करदिया १ वहइन्द्र बज्रके समान स्पर्शवाले असह्य महाप्रकाशित बाणोंको छोड़ता ऐसे दिखाई देताथा जैसे कि जलधाराओंको छोड़ता बादल दिखाई पड़ताहै २ हेभरतर्षभ अर्जुनके हाथसे घायल वहसेना आपकेपुत्रके देखतेहुये युद्धसे भागी ३ कितनेहीभाई पिता और समान अवस्था वालोंकोभी छोड़करभागे कोईमृतक घोड़ेवाले और कोई मृतक सारथीवाले रथ दिखाई पड़े ४ हेराजा कितनेही रथटूटे ईशादण्ड युग और चक्र वालेहुये और दूसरोंके शायकोंने नष्टताको पाया बहुतेरे बाणोंसे पीड़ामानहुये ५ कितनेही बिना घायलहुयेही भयसे पीड़ित होकरभागे और जिनकेबहुत भाईबन्धु मारेगये ऐसे बहुतसे मनुष्य पुत्रभाई आदिको लेकरभागे ६ कोई पिताकोकोई साथी बान्धव नातेदार और भाइयोंको पुकारे ७ और हे राजा कितनेही जहां तहां सामानको छोड़कर भागे फिर वहां बहुतसे महारथी कठिनघायल और अचेतहोकर ८ अर्जुनकेबाणोंसे

घायल और श्वास लेते दिखाईपड़े बहुतसे उनको रथपर सवार करके एकमुहूर्त विश्वास कराके थकावटसे रहितअच्छे प्रकार तृप्त करके फिर युद्धके निमित्त भेजेगये कितने युद्धाभिलाषीलोग उनको छोड़कर ६ । १० आपके पुत्रकी आज्ञाको मानकर फिर युद्धमेंगये बहुतसे युद्ध दुर्मद जलको पीकर सवारीको आराम देकर और कितनेही कवचोंको बदलकर युद्धमें गये हे भरतर्षभ कितनेही अपने भाइयोंको डेरेमें छोड़ विश्वासदेकर चलदिये११।१२किसीने पुत्रोंको किसीने पिताओंको डेरों में छोड़कर युद्धकोही स्वीकार किया और कितनेही शूरबीरोंनेउत्तम रथों को अलंकृतकरके १३ पांडवीसेनामें प्रवेश करके फिर युद्धको स्वीकार किया वहशूर क्षुद्रघंटिकाओं के जालोंसेयुक्त ऐसेशोभायमानहुये१४जैसेकि तीनोंलोकोंकी विजयमें प्रवृत्त दैत्य और दानव होतेहैं कितनेही शूरबीरों ने सुवर्ण से अलंकृत रथोंकी सवारीसे १५पाण्डवोंकी सेनामें आकर धृष्टद्युम्नसे युद्धकिया पांचालदेशी धृष्टद्युम्न महारथी शिखण्डी१६ और नकुल केपुत्र सतानीकनेरथकी सेनासेयुद्ध किया इसकेपीछे क्रोधयुक्त और बड़ी सेनासे युक्त१७ मारनेको सन्नद्धधृष्टद्युम्न आपकेपुत्रोंकेसन्मुख गया फिर उस धृष्टद्युम्नकेआनेपर आपके पुत्र राजा दुर्य्योधन ने १८ बाणोंके बहुतसे समूहोंको चलाया हेराजा इसकेअनन्तरआपके धनुषधारी पुत्रसे घायलहुये धृष्टद्युम्नने १९ शीघ्रकर्मी कारीगरके हाथसेमांजेहुये नाराचअर्द्धनाराच और वत्सदन्त नाम बाणों से २० आपके पुत्रके चारों घोड़ोंको मारकर दोनोंभुजा और छाती पर घायल किया चाबुकसे पीड़ित हाथीके समान अत्यन्त घायल उस बड़े धनुषधारी ने २१ बाणोंसे उसके चारोंघोड़ोंको मारडाला और उसके सारथीके शिरकोभी भल्लके द्वारा धड़से अलगकिया २२ फिर शत्रुबिजयी राजा दुर्य्योधन रथ टूटनेसेघोड़ेकीही पीठपर चढ़कर थोड़ीदूर हटगया२३ हेमहाराज फिरआपका बड़ाबलवान् पुत्रसेनाकोपराक्रमसे हीनदेखकरवहांगया जहांपरकि शकुनीथा२४ तदनन्तर रथोंके टूटने पर तीनहजार बड़ेहाथियोंने पांचों महारथी

पाण्डवों को चारों ओरसे घेरलिया २५ हे भरतवंशी युद्धमेंहाथियों कीसेनासे घिरेहुये वह पांचों नरोत्तम ऐसे शोभायमानहुये जैसेकि बादलोंसे घिरेहुये ग्रहहोतेहैं २६ इसकेपीछे श्वेतघोड़े और श्रीकृष्णको सारथी रखनेवाला लक्ष्यभेदी महाबाहु अर्जुन रथकी सवारीसे बाहर निकला २७ चारों ओर पर्व्वताकार हाथियोंसे घिरेहुये उसअर्जुनने निर्मल और तीक्ष्ण नाराचों से हाथियोंकी सेना का नाशकिया २८ वहांपर हमने अर्जुनके एकही बाणसे बड़े हाथियोंको घायल मृतक और गिरता हुआदेखा २९ फिर मतवाले हाथीके समान पराक्रमी भीमसेन उनहाथियोंको देखके गदाको हाथमें लिये हाथियोंके सन्मुखगया इसकेपीछे दण्ड हाथ में रखने वालेकालकेसमान शीघ्ररथसे कूदकर गदाउठानेवाले उसपांडवोंके महारथीकोदेखकर ३०।३१ आपकी सेनाकेलोग भयभीतहुये और विष्ठामूत्रकोभीगिराया भीमसेनकेगदाहाथमेंलेनेसेसबसेनाव्याकुल हुई ३२ हमने भीमसेन की गदासे उन पर्व्वताकार मदझाड़नेवाले हाथियोंको टूटेकुंभ और दौड़ताहुआ देखा ३३ फिरभीमसेनकीगदा सेघायल वहहाथीभागे और टूटेपक्षवाले पर्वतोंकेसमान शब्द करते पृथ्वीपर गिरपड़े ३४ आपकी सेनाके लोग उनटूटेकुंभ इधरउधरसे भागते और गिरतेहुये बहुतसे हाथियोंको देखकरभयभीतहुये ३५ क्रोधयुक्त युधिष्ठिर औरपांडव नकुल सहदेवनेभी गृध्रपक्षसे जटित तीक्ष्ण बाणोंसे लोगोंको यमलोकमें पहुंचाया ३६ धृष्टद्युम्न युद्धमें राजाको पराजय करके और अश्वकी सवारीसे आपके पुत्रके हट जाने पर ३७ सब पांडवोंको हाथियोंसे घिराहुआ देखकर सब प्रभद्रकों समेत ३८ हाथियोंके मारनेका अभिलाषी होकर चलदिया और शत्रुबिजयी दुर्योधनको रथोंकी सेनामें देखकर ३९ उन अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा ने क्षत्रियोंसे पूछा कि दुर्योधन कहां गया ४० अर्थात् मनुष्यों का नाश वर्त्तमान होनेपर वहां आपकेपुत्र महारथी राजाको न देखते और मृतकहुआ मानते ४१ उन वीरोंने मुखको रूपांतर करके सबसे आपके पुत्रको पूछा

कितनेही लोगोंनेतो यह कहाकि सारथीके मरनेपर वह वहां गया है जहांपर कि राजा शकुनीहै ४२ तब अत्यन्त घायल दूसरे क्षत्री बोलेकि दुर्य्योधनसे आपको क्या कामहै देखो जो जीवताहै ४३ सब मिलकर युद्धकरो राजा तुम्हारा क्या करेगा जिनकीबहुतसी सवारियां मारीगईं वह क्षत्री घायलअंग ४४ बाणोंसे पीड़ित बड़े धीरेपनेसे यहबोलेकि हम इस सबसेनाकोमारें जिससेकि चारोंओरको घिरेहुयेहैं ४५ यह सब पांडव हाथियोंको मारकर सन्मुख आये फिर उन्होंके बचनको सुनकर बड़े पराक्रमी अश्वत्थामा ४६ कृपाचार्य्य कृतवर्मा यह तीनों कठिनता से सन्मुखताके योग्य राजा पांचालकी सेनाको चीरकर वहांगये जहांपर कि शकुनीथा ४७ अर्थात् यह दृढ़ धनुषधारीशूर रथोंकी सेनाकोत्याग करके वहां गये हेराजा इनके चलेजाने पर धृष्टद्युम्नको अग्रवर्त्ती रखनेवाले ४८ पांडव आपके शूरबीरोंको मारतेहुये वहां आपहुंचे तब उन अत्यन्त प्रसन्न आतेहुये महारथियोंको देखकर ४९ और उस प्रकार पराक्रम करनेवाले बीरोंको जानकर आपकी सेना जीवनसे निराश होकर अत्यन्त बिबर्ण मुखवाली होगई ५० हेराजा मैं उन नाशमान सेनाओं को और चारोंओर से घिरेहुओं को देखकर अपने जीवन को त्याग करके दो अंग रखनेवाली सेना समेत ५१ उस स्थानपरगया जहांपरकि कृपाचार्य्य बर्त्तमानथे वहां नियत होकर अपने शरीरसे पांचवें राजा पांचालकी सेनासे युद्ध करनेलगा ५२ अर्जुनके बाणोंसेपीड़ामान हमपांचों पीड़ामानहुये वहां धृष्टद्युम्नसे हमारा महारुद्र और घोरयुद्ध हुआ ५३ हमसब उससेपराजय होकर वहां से हट आये इसके पीछे मैंने सन्मुख आने वाले सात्यकी कोदेखा ५४ वहबीर चारसौ रथियों समेत मेरे सन्मुख दौड़ा और मैं कुछ थकी सवारी वाले धृष्टद्युम्नसे छूटा ५५ और कृतवर्माकी सेनाकी ओर ऐसेदौड़ा जैसे पापीनरकको जाताहै वहांपरएकमुहूर्त्त तकघोर युद्धहुआ ५६ फिर महाबाहु सात्यकीने मेरे घोड़े आदि कोमारकर मुझ अचेत और पृथ्वीपर गिरेहुये को जीवता पकड़

लिया ५७ इसके एक महूर्त्त मेंहीं भीमसेनकी गदा और अर्जुन के नाराचोंसे वह हाथियोंकी सेनानाशमानहुई ५८ चारोंओरसे पर्ब्बतोंके समान चूर्ण शरीरवाले बड़े हाथियों से पांडवोंका मार्ग अविदितसा होगया ५६ हेमहाराज इसके पीछे हाथियोंको हटाते बड़ेपराक्रमी भीमसेनने पांडवोंके रथमार्गको साफकिया ६० अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, यादव, कृतबर्मा रथकी सेनामें उस शत्रुविजयी दुर्य्योधनको न देखनेवाले इनसब लोगोंने ६१ आपकेपुत्रमहारथी राजा दुर्य्योधनको निश्चय और खोज किया और धृष्टद्युम्न को छोड़करवहांगये जहांपर कि शकुनीथा यहसब मनुष्योंका नाशहोने पर और राजाको न देखनेसे व्याकुल हुये ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि पांडव अर्जुनके हाथसे उसरथकी सेनाके मारने और युद्धमें भीमसेनके हाथसे सेनाके नाशहोनेपर १ और क्रोधयुक्त प्राणोंके हरनेवाले दंडधारी कालके समान घूमते शत्रुविजयीभीमसेनको देखकर २ मरनेसे शेषबचेहुये आपकेपुत्र युद्धमें इकट्ठे होकर अपने बड़े भाई कौरव दुर्योधनके दिखाई न देनेपर ३ सबसगेभाई इकट्ठे होकर भीमसेनके सन्मुखगये उनके नाम दुर्मर्षण, श्रुतान्त जयत्र, भूरिबल, रवि ४ जयत्सेन, सुजात शत्रुहन्ता, दुर्बस, दुर्बिमोचन दुष्प्रधर्ष ५ महाबाहु श्रुतिर्बाच युद्धमेंकुशल इन सब आपके पुत्रोंने साथहोकर ६ चारोंओरसे भीमसेनके सन्मुख जाकर सब दिशाओंसे रोका हे महाराज तब तो भीमसेन फिर अपने रथपर सवारहुये ७ और आपके पुत्रोंके मर्मस्थलोंपर तेजधार वाले बाणों को मारा बड़ेयुद्धमें भीमसेनके हाथसे घायल उन आपके पुत्रोंने ८ भीमसेनको ऐसे घेरलिया जैसे कि नीचेस्थानसे हाथीको घेरलेतेहैं तदनन्तरक्रोधयुक्तभीमसेनने दुर्मर्षणके शिरको ६ क्षुरप्रसे काटकर शीघ्रही पृथ्वीपर गिराया फिर भीमसेनने सब कवचोंके काटनेवाले

दूसरे भल्लसे १० आपकेपुत्र महारथी श्रुतान्तको मारा फिर हंस-
तेहुये शत्रु बिजयीने जयत्सेन को नाराचसे घायल करके ११ उस
कौरवको भी रथके स्थानसेगिराया हेराजा वह शीघ्रही रथसेगिर-
तेही मरगया १२ इसके पीछे आपके पुत्र क्रोधयुक्त श्रुतर्वाने गृध्र
पक्षसे जटित टेढ़े पर्बवाले सौबाणोंसे भीमसेनको घायलकिया १३
इसकेपीछेयुद्धमें क्रोधयुक्त भीमसेनने विष अग्निके समानतीनबाणों
से जयत्र भूरिबल और रवि इन तीनोंको घायलकिया १४ वहमृतक
महारथी रथोंसे ऐसे गिरपड़े जैसे कि बसन्तऋतु में कटेहुये पुष्पि-
तकिंशुकके वृक्षगिरते हैं १५ इसके पीछे शत्रु संतापी भीमसेनने
दूसरे भल्लनाम नाराचसे दुर्बिमोचन को घायल करके मृत्युके वश
किया १६ वह महारथी मृतक होकर रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि
पर्ब्बतपरउत्पन्नहोनेवाला बायुसेटूटाहुआ वृक्षगिरता है १७ इसके
पीछे सेनाके मुखपर दुष्प्रधर्ष औरसुजातनाम आपके पुत्रोंको युद्धमें
दो २ बाणसे मारा १८ वह उत्तमरथीशिलीमुख बाणसे घायलशरीर
होकर पृथ्वी परगिरपड़े इसके पीछे भीमसेनने युद्धभूमिमें गिरते
हुये आपके पुत्रको देखकर १९ दुर्बसकोभी भल्लसे युद्धमें गिरायावह
माराहुआ सब धनुष धारियोंके देखते रथसेगिरपड़ा २० युद्धमेंएक
के हाथसे मरेहुये बहुत भाइयोंको देखकर क्रोधमें भराहुआ श्रुतर्वा
भीमसेनके सन्मुखगया २१ सुवर्णसे अलंकृत बड़े धनुषको टंकारता
बिष अग्निके समान बहुत बाणोंको छोड़ता हुआ गया २२ हेराजा
इसने उस बड़े युद्धमें भीमसेनके धनुषको काटकर इसटूटे धनुषवाले
को बीस बाणसे घायल किया २३ इसके पीछे महारथी भीमसेनने
दूसरेधनुषको लेकर आपकेपुत्रको घायलकरके तिष्ठ२वचनकहा २४
उनदोनोंका महाअपूर्ब और भयकारी युद्ध ऐसा शोभायमान हुआ
जैसा कि पूर्ब्ब समयमें जंभ और इन्द्रका युद्धशोभित हुआथा २५
वहां उनदोनोंके यमराजके दण्डको समान तेजबाणोंसे सब पृथ्वी
आकाश और दिशाविदिशा ढकगईं २६ हेराजा इसके पीछे अत्यन्त
क्रोधयुक्त श्रुतर्बाने धनुषकोलेकर युद्धमें शायकोंसेभीमसेनको दोनों

भुजाओं समेत छातीपर घायलकिया २७ हेमहाराज आपकेधनुष धारीपुत्रके हाथसे अत्यन्तघायल होकर क्रोधयुक्तवह भीमसेन ऐसे वेगमें प्राप्तहोगया जैसेकि पर्व्वकालमें समुद्रवेगवान् होजाताहै २८ हेश्रेष्ठइसकेपीछे क्रोधसे पूर्णभीमसेननेबाणोंसे आपके पुत्रकेसारथी और चारोंघोड़ोंको यमलोकमेंपहुंचाया २९ हस्तलाघवताकोदिखा तेहुये बड़ेसाहसी भीमसेनने उसकोबिरथदेखकर बिशिखोंसेढकदि-या ३० हेराजारथसे रहितश्रुतर्वाने खड्ग और ढालकोलिया फिर खड्ग और सौचन्द्रमारखनेवाली प्रकाशित ढालकेधारणकरनेवाले इसश्रुतर्वाके शिरकोभी भीमसेनने क्षुरप्रकेद्वाराशरीरसेजुदाकरदिया ३१।३२ तबउसका शरीरभी पृथ्वीकोशब्दायमान करता रथसेगिर पड़ा उसबीरके गिरनेपर भयसेअचेत ३३ युद्धकेअभिलाषी आपके शूरबीर लोगयुद्धमें भीमसेनकेसन्मुखगये मरनेसे शेषबचीहुई समुद्र केसमान शीघ्रआनेवाली सेनाकेकवच शस्त्रधारी शूरबीरोंको प्रताप वान्भीमसेनने शीघ्रहीरोका उन्होंनेभी उसकोपाकर चारोंओरसेघेर लिया ३४।३५ इसकेपीछे घिरेहुयेभीमसेननेआपके उनसबशूरबी-रोंको तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे ऐसेपीड़ामानकिया जैसे कि असुरोंको इन्द्र पीड़ामानकरताहै ३६ इसकेपीछे युद्धमें पांचसौकवचधारी म-हारथियोंको मारकर फिर सातसौहाथियोंकी सेनाकोमारा ३७ वह श्रेष्ठभीमसेन बाणोंसे दशहज़ार पत्तियों और आठसौ घोड़ोंको मार-कर शोभायमानहुआ ३८ हेप्रभुकुन्तीकेपुत्रभीमसेनने आपके पुत्रों कोमारकर अपनेकोअभीष्ट प्राप्तकरनेवाला और सुफल जन्मवाला माना ३९ हेश्रेष्ठ आपकी सेनाके लोगोंने उसप्रकार युद्धकरनेवाले और आपके शूरोंकेमारनेवाले उसभीमसेनके देखनेकोउत्साह नहीं किया४० फिर सबकौरवोंको भगाकर और उनपीछे चलनेवालोंको मारकर बड़े हाथियोंके डरानेवालेने बड़ीभुजाओंसे शब्दकिया ४१ हेमहाराजराजा धृतराष्ट्र फिर आपकीसेना जिसके कि बहुतसेशूर-बीर मारेगये वहकुछशेष और दुखी आकर वर्त्तमानहुये ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज तब मरने से शेषवचे हुये आपके पुत्र दुर्योधन और सुदर्शन युद्धमें घोड़ोंके मध्यवर्त्तीहोकर बर्त्तमान हुये १ इसकेपीछे देवकीनन्दन श्रीकृष्णजीघोड़ोंकेमध्यमें दुर्योधनको देखकर कुन्तीकेपुत्र अर्जुन से बोले २ कि शत्रु बहुत नाशयुक्तहुये औरजातवाले हटायेगये औरयह सात्यकी संजयकोपकड़कर लौटा३ हे भरतवंशी नकुल और सहदेव धृतराष्ट्रके पुत्र और उनके सब साथियोंसे लड़तेश्थकगये ४ औरकृपाचार्य्य कृतवर्माऔरमहारथी अश्वत्थामा यहतीनों दुर्योधनको त्यागकरकेनियतहुये५ बड़ीशोभा से युक्त यह धृष्टद्युम्न दुर्योधनकी सेनाको मारकरसवप्रभद्रको समेतनियतहै ६ हे राजा शिरपर धारण कियेहुयेछत्रसमेत वारंवार देखता हुआ यह दुर्योधन घोड़ोंके मध्यवर्त्ती ७सब सेनाकोअलंकृत करके युद्धभूमिमें उपस्थित होकर नियत है इस को तीक्ष्ण बाणों से मारकर कृतकृत्य होजायगा रथकी सेनाको मृतकऔरतुझशत्रु विजयी को बर्त्तमान देखकर जबतक यह लोग नहीं भागें तबतक इस दुर्योधनको मारें ८ । ९ कोई धृष्टद्युम्नके पास जाकर उसको जल्दीसे लावे जबतक वह नहीं आवेगा तबतक यह थकीहुईसेना वाला पापीनहीं छूटेगा धृतराष्ट्र का पुत्र युद्धमें आपकी सब सेना को मारकर पाण्डवोंको बिजय किया हुआ मानकर बड़े रूप को धारणकरताहै १०।११ वह राजा पाण्डवोंकेहाथसे अपनी सेनाको मरा हुआ औरपीड़ामान देखकर युद्धमें अपने मरनेकेलिये अवश्य बर्त्तमान होगा १२ यह बचन सुनकर अर्जुनने श्रीकृष्णजी से यह बचनकहा कि धृतराष्ट्र केसब पुत्र भीमसेनहीके हाथ से मारेगये हैं १३ हेश्रीकृष्णजी जो यह दोनों नियतहैं वहअबनहीं रहेंगे अर्थात् मारे जांयगे भीष्मजी मारेगये द्रोणाचार्य्य मारे गये और इसीप्रकार कुंडल कवच का दान करनेवाला कर्णभी मारागया १४ राजाशल्य और जयद्रथमारागया हे श्रीकृष्णजी सौवलके पुत्रशकु-

नी के अभी पांचसौ घोड़े शेष रहगयेहैं १५ हे जनार्दनजी उसके सौ रथ कुछ ऊपर सौहाथी और तीनहजार पदाती शेष रहेहैं १६ अश्वत्थामा कृपाचार्य्य राजात्रिगर्त्त उलूक शकुनि औरयादव कृत-वर्मा १७ हेमाधव इतनी दुर्योधनकी सेना बाकी है निश्चयकरके पृथ्वीपर कालसे किसीका बचना नहींहै १८ इसी प्रकार सेनाके मरने पर दुर्योधनको नियत देखो महाराज युधिष्ठिर आजके दिन मृतक शत्रु वालाहोगा १९ शत्रुओंमें मेरेहाथसे कोई नहीं बचकर जाताहै यह बिचारकर हे श्रीकृष्णजी आजकेदिन जो यहमदोत्कट लोग युद्ध त्याग नहीं करेंगे २० तो निश्चय करकेचाहै इनमें मनु-ष्योंके बिशेष देवता आदिकभी होंगे तौभी इनसबकोमारूंगा अब युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त होकरमैं तेजबाणोंसे शकुनीको मारकररा-जा युधिष्ठिर के बड़े जागरण को दूर करूंगानिश्चय करके दुरा-चारी शकुनीने छलसे जिन रत्नोंको २१ । २२ सभामें द्यूतके मध्य में लियाहै मैं फिर उनकोलूंगा अब हस्तिनापुरकी सबस्त्रियांभी२३ युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारेहुए अपने पति और पुत्रोंको जानेंगी हे श्रीकृष्णजी अबहीं निश्चय करके सब कार्य्यपूर्ण होगा २४ अब दुर्योधन अपनी प्रकाशित लक्ष्मी समेत प्राणोंकोभी त्याग करेगा जब कि वह भयभीतताके कारण मेरेयुद्धसे नहीं हटताहै २५ हेश्री-कृष्णजी बड़े अज्ञानी दुर्योधनको आप मृतकही जानो हे शत्रुओंके विजय करने वाले यह घोड़ोंके समूह २६ मेरी प्रत्यंचा और तलके शब्दों के सहने को असमर्थहैं आप चलिये मैं जबतक इन्हींकोमा-रूं हे राजा बड़े साहसी अर्जुनके इस प्रकार बचनों को सुनकर श्रीकृष्णजीनेघोड़ोंको दुर्योधनकीसेनामें चलायमानकिया२७ हे श्रे-ष्ठ उससेनाको देखकर तीनों कवच और शस्त्रधारण करनेवालेमहा-रथी भीमसेन, अर्जुन और सहदेव सिंहनादों समेत दुर्योधन के मारनेकीइच्छासे चले२८।२९सकुनी तीव्रता पूर्व्वक सब साथमिले हुये उनधनुषों के उठाने वालोंको देखकर युद्धमें मारनेका अभि-लाषी होकरपाण्डवोंके सन्मुखगया ३०आपकापुत्रसुदर्शनभीमसेन

के सन्मुखगया सुशर्मा और शकुनी अर्जुनके साथ युद्ध करनेलगा३१ घोड़े की पीठपर सवार आपकापुत्र दुर्योधन सहदेवके सन्मुखगया हे राजा फिर आपके पुत्रने शीघ्रही उपाय पूर्व्वक ३२ प्रासमे सहदेवके शिरपर कठिन प्रहारकिया आपके पुत्रसे घायल वह सहदेव रथके बैठनेके स्थानपर ३३ रुधिरसेलिप्त शरीर और बिषैले सर्प की समान श्वास लेतागिरपड़ा हेराजा थोड़ी देरपीछे सहदेवने सचेतताको पाकर ३४ बड़ेक्रोधयुक्तने तेजबाणोंसे दुर्योधनको घायल किया कुन्तीकेपुत्र अर्जुननेभी युद्धमें पराक्रमकरके ३५ शूरोंकेशिरोंको घोड़ोंकी पीठपर काटकर उससेना को तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे छिन्नभिन्नकिया ३६ इस प्रकारसे वह सब घोड़ोंको गिराकर त्रिगर्त्त देशी रथियों के सन्मुख गया तब उनत्रिगर्त्त देशियोंके रथियोंने इकट्ठे होकर ३७ अर्जुन और बासुदेवजी को बाणों की वर्षाओं से ढकदिया फिर बड़े यशस्वी ने क्षुरप्रसे सत्कर्माको गिराकर ३८ उसके रथके ईशाको तेजधार क्षुरप्रसे काटा ३९ और अकस्मातही सुवर्ण के कुंडलोंसे अलंकृत शिरकोभी काटा तबवह आपके शूर बीरोंके देखते हुये युद्ध में गिरपड़ा ४० हेराजा जिसप्रकार वनमें भूखासिंह मृगको मारता है उसीप्रकार अर्जुन ने उसको मारकर तीनबाणोंसे सुशर्माको घायल करके ४१ । ४२ सुवर्ण के भूषणोंसे अलंकृत उनसब रथियोंको मारा इसकेपीछे बहुत कालसे इकट्ठे कियेहुये क्रोधकेबिषकोछोड़ता अर्जुन उसप्रस्थलके राजाकेसन्मुख दौड़ा हेभरतर्षभ अर्जुनने उसको सौ पृषत्कोंसे घायल करके उस धनुषधारी के घोड़ों को मारा इसके पीछे हंसतेहुये अर्जुनने यम राजके दण्डकी समान बाणको चढ़ाकर ४३।४४ सुशर्माको लक्ष्य बनाकर शीघ्रतासे छोड़ा उसक्रोधयुक्त धनुषधारीके छोड़ेहुये बाणने ४५ सुशर्माको युद्धमें हृदयपर छेदा हेमहाराज फिर वह निर्जीव होकर ४६ सबपांडवों को प्रसन्न करता और आपके पुत्रोंको पीड़ा देताहुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा सुशर्माको युद्धमें मारकर उसके पैंतालीस महारथी पुत्रोंको शायकोंसे यमलोक में पहुंचाया ४७ इसके

अनन्तर इसके सब अनुगामियों को तेजधार बाणोंसे मारकर ४८ वह महारथी मरनेसे शेषबचीहुई भरतवंशियों की सेनाके सन्मुख गया और युद्धमें क्रोधयुक्त हंसते हुये भीमसेन ने ४९ सुदर्शनको बाणोंसे गुप्त करदिया फिर क्रोधभरे हंसते हुयेने इसके शिरकोभी शरीरसे जुदाकिया ५० तबवह अत्यन्त तेज क्षुरप्रसे मृतक होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उसबीरके मरनेपर बिशिख नाम बाणोंकोफैलाते उसकेपीछे चलनेवालोंने५१भीमसेनको घेरलिया इसकेपीछे भीमसेनने इन्द्रबज्रके समान स्पर्श तेजधार वाले बाणोंसे आपकी सेना को सबओरसे घायलकिया हेभरतर्षभ भीमसेनने एकक्षणमेंही उस सेनाकोमारा ५२।५३ उनके मरनेपर बड़े पराक्रमीसेनाके प्रधानों नेभीमसेनको पाकर युद्धकिया ५४ तब भीमसेमने उन सबकोभी तेजबाणोंसे घायलकिया हेराजा इसीप्रकार आपके शूरबीरोंने महा रथी पांडवोंको ५५ बड़ी बाणोंकी वर्षासे चारोंओरको रोका पांडवों का और आपके शूरबीरोंका वह युद्ध महाव्याकुल करने वालाहुआ उससमय वहां अपने बान्धवोंको शोचते परस्पर घायल दोनों सेनाओंके शूरबीर चढ़ाई करनेवाले हुये ५६।५७॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिअष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

उन्तीसवां अध्याय॥

संजय बोले हेराजा मनुष्य हाथी और घोड़ोंके नाशकारी उस युद्धके जारीहोनेपर सौबलकापुत्र शकुनी सहदेव के सन्मुखगया१ इसकेपीछे उस प्रतापवान् सहदेवने शीघ्रही उस आतेहुये के ऊपर सूर्यादिकके समान शीघ्रगामी बाणोंके समूहोंको चलाया २ फिर उलूकने दशबाणोंसे युद्धमें भीमसेन को घायल किया हेराजा फिर शकुनीने तीनबाणोंसे घायल करके नब्बे शायकों से सहदेवको ढकदिया ३ हेराजेन्द्र उन शूरोंने युद्धमें सन्मुख होकर उनकंकऔर मोरपक्षोंसे जटित तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया ४ जोकि सुनहरी पुंख शिलासे स्वच्छ हुये कानतक खैंचकर छोड़ेथे उन्होंके धनुष

और भुजासे छोड़ीहुई बाणवृष्टीने ५ सबदिशाओं को ऐसे ढकदिया जैसे कि जलकी धाराओंसे बादल ढकदेताहै इसकेपीछे युद्धमेंक्रोध युक्त भीमसेन और पराक्रमी सहदेव दोनों महाबली युद्धमें प्रलय को करते हुये भ्रमण करनेलगे हेभरतबंशी तब आपकी वह सेना उन्होंके बाणोंसे ढकगई ६।७ जहांतहां आकाश अन्धकार रूप हुआ और बाणोंसे ढकेहुये चारोंओर दौड़ते ८ और बहुत मृतकों को खैंचते हुये घोड़ोंसे जहांतक मार्ग संयुक्त हुआ हेश्रेष्ठ अश्वस-वारोंके साथ मृतक घोड़ोंके समूह ९ टूटे कवच प्रास खड्ग शक्ति और तोमरोंसे १० पृथ्वी चारोंओरसे ऐसी गुप्त विदितहुई जैसे कि पुष्पोंसे शबल गुप्तहोते हैं हेमहाराज वहां शूरबीर परस्पर सन्मुख होकर ११ युद्धमें क्रोधयुक्त परस्पर मारते अच्छे प्रकारसे भ्रमण करने लगे क्रोधसे फैलेनेत्र दोनों ओष्ठोंके काटनेवाले कुंडल धारी कमलकी किंजल्कके समान मुखोंसे पृथ्वी ढकगई १२ हेसमर्थ म-हाराज गजराजकी सूंडकी समान बाजूबन्द कवच खड्ग औरफर-सा धारणकरने वाली टूटीभुजा १३ और युद्धमें टूटेखड़े और नृत्य करते अन्य२ रुंडोंसे पृथ्वी महाघोर और मांसाहारी जीवोंकेसमूहों से पूर्ण होगई १४ फिर थोड़ीसेना शेष रहनेपर पांडवोंने अत्यन्त प्रसन्न होकर बड़ेयुद्धमें कौरवोंको यमलोकमें पहुंचाया १५ हेराजा उसी अन्तरमें प्रतापवान् शकुनीने प्राससे सहदेवके शिरपर कठिन प्रहार किया हेमहाराज उस भारी प्रहारसे वह सहदेव व्याकुल होकर रथके बैठनेके स्थानपरही बैठगया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्तप्रतापवान् भीमसेनने सहदेवकोदेखकर१६।१७सबसेना-ओंकोरोका और हजारों शूरबीरोंको नाराचोंसे छेदा १८ फिर उस शत्रु बिजयीनेउनको छेदकर सिंहनाद किया उस शब्दसे शकुनीके सबहाथी घोड़े और हाथियों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े १९ और भय-भीतहोकर अकस्मात भागे फिर राजा दुर्य्योधनने उन छिन्नभिन्न सेनाओंसे कहा २० हेधर्मके न जाननेवाले शूरवीरो लौटो युद्धकरो युद्धसे भागने में तुम्हारा क्या प्रयोजन है जोवीर युद्धमें पीठको न

दिखाताहुआ सन्मुखहोकर अपने प्राणोंकोत्याग करताहै वह इस लोक में शुभ कीर्ति कोपाकर मरनेकेपीछे शुभलोकोंको भोगता है राजाके इसप्रकार कहने पर शकुनीके वहसाथी २१।२२ मृत्युको पीछेकरके पांडवोंके सन्मुख वर्त्तमानहुये हेराजा वहां भागनेदौड़ने वाले वीरोंने बड़ेभयकारी शब्दकिये २३ वहसेना वेगयुक्त सागरके समान सबओरसे व्याकुल होगई हेमहाराज इसके पीछे विजय के निमित्त सन्नद्ध पांडव शकुनीके उन साथियोंको आगे देखकर २४ सन्मुखगये फिर अजेय सहदेवने विश्रामलेकर २५ दश बाणों से शकुनीको घायलकरके तीन बाणोंसे उसके घोड़ोंको घायल किया और हंसतेहुयेने बाणोंसे शकुनीके धनुषको काटा इसकेपीछे युद्ध में दुर्मद शकुनीने दूसरेधनुषकोलेकर साठबाणसे नकुलको और सात बाणसे भीमसेनको घायलकिया२६।२७हेराजाजंगमें पिताके चाहने वालेउलूकने भी सातबाणसे भीमसेनको और सत्तरबाण से सहदेव को घायलकिया २८ भीमसेनने उसको नौबाणसे शकुनीको चौसठ बाणसे और इधरउधरके पक्षवर्त्ती शूरवीरोंको तीन२ बाणोंसेघायल किया २९ भीमसेनके तीक्ष्णनाराचोंसे घायल और क्रोधयुक्त उन शूर वीरोंनेयुद्धमें बाणोंकी वर्षासे सहदेवको ऐसे ढकदिया जैसे कि बिजलीरखनेवाले बादल जलकी धाराओंसे पहाड़को ढकदेतेहैं हे महाराज इसकेपीछे प्रतापवान् शूरसहदेवने इससन्मुख दौड़नेवाले ३०।३१उलूककेशिरको भल्लसेकाटावह रुधिरसे लिप्तशरीर सहदेव का गिरायाहुआ युद्धमें पांडवोंको प्रसन्न करताहुआ रथसेपृथ्वीपर गिरा हेभरतवंशीतब शकुनी अपनेपुत्रको मराहुआ देखकर३२।३३ विदुरजीके वचन को स्मरणकरता आंसुओंसे पूर्णकण्ठ बड़े श्वास लेकर एक मुहूर्त तक चिन्ता करनेलगा फिर आश्रुपूरित नेत्रवाले उस शकुनीने ३४ सहदेवको पाकर तीन शायकोंसे घायल किया हे महाराज प्रतापवान् सहदेवने अपने बाण समूहोंसे उन छोड़े हुये बाणोंको हटाकर युद्ध में धनुष को काटा हे राजेन्द्र धनुषके टूटने पर सौबलकेपुत्र शकुनीने ३५।३६ बड़ेखड्गकोलेकर सहदेव

के ऊपर चलाया तब हंसतेहुये सहदेवने उस अकस्मात् आतेहुये शकुनीके घोर रूप खड्गको ३७ खण्ड२ करदिया खड्गको खंडित देखकर बड़ी गदाको लेकर ३८ सहदेवके ऊपर फेंका वह गदा भी निष्फल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी इसके पीछे अत्यन्त क्रोध युक्त शकुनीने महाघोर कालरात्रि के समान उठाई हुई घोरशक्ति को सहदेव पर चलाया हंसतेहुये सहदेवने अपने स्वर्ण भूषित बाणोंसे उसआतीहुई शक्तिको ३९।४० युद्धमें तीनखण्डकरदिये वह सुवर्णसे अलंकृत तीनस्थानों से टूटीहुई शक्ति पृथ्वीपर ऐसे गिर-पड़ी ४१ जैसे कि प्रकाशित गिरने वाली बिजली आकाशसे गिर तीहै शक्तिको टूटी और शकुनीको पीड़ामान देखकर ४२ भय उ-त्पन्न होनेपर शकुनी समेत आपके सब शूरबीर भागे इसके पीछे बिजय से शोभायमान पांडवोंकी ओर का बड़ा शब्द हुआ ४३ तब आपके सब शूरबीर मुखफेरगये माद्रीके पुत्रप्रतापवान्ने उनको उदास चित्त देखकर ४४ युद्ध में हजारों बाणोंसे रोका फिर सह-देवने हृष्टपुष्ट गान्धार देशी घोड़ोंसे रक्षित बिजयमें प्रवृत्तचित्त ४५ युद्धमें बर्त्तमान होनेवाले शकुनीको सन्मुख पाया हे राजा सहदेव उस सन्मुख नियत होनेवाले शकुनीको अपना भाग स्मरण करके सुबर्णके अंगवाले रथकी सवारीसे सन्मुखगया ४६ और बड़े बल-वान् दृढ़ धनुष को चढ़ाकर टंकारा ४७ उस क्रोधयुक्तने शकुनीके सन्मुखजाकर गृध्रपक्षयुक्त तीक्ष्णबाणों से ऐसे कठिन घायलकिया जैसे कि चाबुकोंसे बड़े हाथीको घायल करतेहैं ४८ वह बुद्धिमान् उसको रोककर स्मरण कराताहुआ बोला कि क्षत्री धर्म में नियत और शूरता करके युद्ध करो ४९ हे अज्ञानी जब सभा में पाशों के द्यूत में जो तुम प्रसन्नहुये थे हे दुर्बुद्धी अब उस दुष्टकर्मके फलको देखो ५० वह सब दुरात्मा तो मारेगये जो पूर्व में हमको हंसेथे अब इस दुर्योधनके कुलके भस्म करनेवाले अग्निरूप तुम्हीं हमारे मामाजी शेषरहेहो ५१ अब क्षुरप्रसे काटेहुये तेरेशिरको ऐसे जुदा करूंगा जैसे कि प्रहारकरनेवाली लाठीसे वृक्षका फलतोड़तेहैं ५२

हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी
इसप्रकार कहकर बड़े वेग से उसको घाय
अजेय शूरबीरों के प्रधान क्रोधसे जलते हुये
धनुषको खैंचकर ५४ दशबाणोंसे शकुनीको
घोड़ोंको घायल करके उसके छत्र ध्वजा धनु
समान गर्जनाकी ५५ अर्थात् वह शकुनी स
धनुष ध्वजा और छत्रवाला कियागया और
मर्मस्थलों पर अत्यन्त घायलहुआ ५६ हे
प्रतापवान् सहदेवने कठिनतासे सहनेके योग
फिर शकुनीकेऊपरकिया ५७ तबतो अत्यन्त
सुवर्णसे जटित प्रासके द्वारा माद्रीनन्दन सह
से शीघ्रही अकेला शकुनी उसके पासगया ५
एक साथ तीनभल्लसेउसके उठायेहुये प्रास औ
को युद्धके मुखपर काटा और बड़े वेगसे युद्ध
गर्जनाकरी ५६ फिर शीघ्रता करनेवाले सहदे
शिलापर घिसेहुये सब कवच आदिसे पार
चलाये हुये भल्लसे उसके शिरको शरीरसे जु
अलंकृत सूर्यके समान प्रकाशमान अच्छेप्रक
देवके बाणसे युद्धमें कटाहुआ शिर पृथ्वीप
क्रोधयुक्त पांडवोंने सुनहरी पुंख तेजधार वेग
उस कटेहुये शिरको बहुत दूरफेंका जो कि
मूलथा ६२ आपके शूरवीर उस टूटे और पृथ्
लिप्तशरीर शकुनीको देखकर भयसे पराक्रमह
भागे ६३ शुष्कमुख अचेत और गांडीव धनु
भयसे पीड़ित टूटे और घायल रथ घोड़े अ
होकर दुर्योधन समेत भागे ६४ हे भरतवंशी

शंखोंको वजाया ६५ तव सब प्रसन्न लोगोंने युद्धमें उस सहदेवकी पूजन पूर्वक प्रशंसा करी हे वीर यह छली और दुरात्मा शकुनी प्रारब्धसेही पुत्र समेत तेरे हाथसे मारागया ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिशकुन्युलूकवधे एकोनत्रिंशोऽध्यायः २६ ॥

तीसवां अध्याय॥

संजयबोले हेमहाराज इसके पीछे शकुनीके क्रोधयुक्त साथियों ने जीवनको त्यागकरके पांडवोंको चारोंओर से रोका १सहदेवकी बिजयमें प्रवृत्तचित्त अर्जुनऔर क्रोधयुक्त विषैलेसर्पके समानदिखाई देनेवाला तेजस्वी भीमसेन इनदोनोंने उन सब शकुनीके साथियोंकोरोका २ अर्जुनने गांडीवधनुषकेद्वारा शक्ति दुधारे खड्ग और प्रासहाथ में रखनेवाले सहदेव के मारनेके अभिलाषी उनलोगों का संकल्प निष्फल किया ३ और भल्लोंसे उन सन्मुख दौड़नेवाले शूरबीरोंके शस्त्रधारी भुजाओं समेत शिरोंकोभीकाटा ४ तब वह मृतक निर्जीव होकर पृथ्वीपर गिरपड़े उस लोकवीर घूमनेवाले अर्जुनके हाथसे सब मारेगये ५ उसके पीछे शत्रुओंका तपानेवाला क्रोधयुक्त आप का पुत्र राजा दुर्योधनअपनी सेनाका नाशदेखकर मरनेसे शेष बचेहुये बहुतसे रथ हाथी घोड़े और पदातियोंके समूहोंको इकट्ठा करके उनसेयह वचनबोला ६।७ कि युद्धमेंपाकरमित्र समूहों समेत पांडवोंको और सेना समेत धृष्टद्युम्नको भी मारकर शीघ्र लौटो ८ युद्धमें दुर्मद वह सबवीर उसके वचनको शिरसेअंगीकार करके पांडवोंके सन्मुख गये ९ पांडवोंने वडे युद्ध में विषैलेसर्प की समान बाणोंसे मरनेसे शेषबचेहुये सन्मुख आनेवालों को घायल किया १० हे भरतर्षभ एक महूर्त्त मेंही वह सब सेना युद्धकोपाकर महात्माओंके हाथसे मारीगई औरकिसी अपने रक्षकको नहीं पाया ११ वह शस्त्रधारी सेना भयभीत होकर नियत नहीं होतीथी चारोंओरको दौड़नेवाले घोड़ों की धूलसे व्याप्त दिशा और विदिशा नहीं जानीगईं इसकेपीछे पांडवीसेनासे वहुत मनुष्योंने निकलकर

१२।१३युद्धमें एकमुहूर्त भरमेंहीआपकीसेनाके लोगोंकोमारा हेभर-
तवंशी तब आपकी वह सेना समाप्तहोगई १४ हेप्रभु आपकेपुत्रकी
इकट्ठी होनेवाली वह ग्यारह अक्षौहिणी युद्धमें पांडव और सृंजियों
के हाथसे मारीगई १५ हे राजा आपके उनहजारों महात्मा राजा-
ओंमें से केवल अकेला राजा दुर्योधन अत्यन्त घायल दिखाई
पड़ा १६ इसके पीछे सब दिशाओंको देखकर और सब शूरवीरों
से रहित पृथ्वीको और युद्धमें प्रसन्नता पूर्वक अभीष्ट प्राप्तकरने
वाले चारोंओर से गर्जनेवाले पांडवोंको देखकर औरउन महात्मा-
ओंके बाणोंके शब्दोंको सुनकर १७। १८ दुर्योधन मूर्च्छासे पूर्ण
हुआ फिर सेना औरसवारियों से रहितने हटजानेमेंचित्तकिया १९
धृतराष्ट्र बोले हे सूत मेरी सेनाके मरने और डेरोंके खाली करनेपर
पाण्डवोंकीसेनामें तबक्याशेषरहा २० हेसंजय इसमेरे प्रश्नकोकहो
क्योंकि तुम वर्णन करने में बड़े सावधान और कुशलहो और उस
समय मेरे पुत्र अभागे दुर्य्योधनने सेनाके नाशको देखकर अकेले
नेही जो किया उसकोभीकहो २१ संजयबोले कि दोहजार सातसौ
हाथी पांचहजार घोड़े और दशहजार पदाती २२ यह बड़ीसेनातो
पांडवों की बाकीथी जिस को कि धृष्टद्युम्न युद्ध में अलंकृत करके
नियतथा २३ हे भरतर्षभ इसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ अकेले राजा
दुर्य्योधनने युद्ध में किसी साथीको नहींदेखा २४ हे महाराज उस
अकेलेराजाने उसप्रकार गर्जतेहुये शत्रुओंको और अपनी सेनाकेना-
शको देखकर २५ ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओंका स्वामी आपका
पुत्र दुर्य्योधन अपने मृतक घोड़े को छोड़कर युद्धसे पूर्वकी ओर
भागा २६ और बड़ीतेजस्वी अपनी गदाको लेकर हृदको चला
फिर पैदलही थोड़ी दूरजाकर २७ उसने धर्मके अभ्यासी महा-
बुद्धिमान् बिदुरजीके वचनको स्मरणकिया कि निश्चय करके पूर्व
समयमें बड़े ज्ञानी बिदुरजीने २८ युद्धमें हमलोगोंके और अन्य २
सबक्षत्रियोंकेनाशकोजानलियाथा हे राजा वहदुर्य्योधन इसप्रकार
अधिक चिन्ताकरता हृदमें प्रवेशकरजानेका अभिलाषी २९ सेनाके

नाशको देखकर शोकसे महादुःखी हुआ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र इसकेपीछे वहसबपांडव जिनका अग्रवर्त्ती धृष्टद्युम्नथा ३० अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर आपकी सेनाके सन्मुखदौड़े अर्जुनने गांडीव धनुषके द्वारा उन सन्मुख गर्जनेवाले शक्ति दुधारा खड्ग और प्रासोंको हाथमें रखनेवालेशूरबीरोंका ३१ संकल्प निष्फलकिया उनसबको मन्त्री और बान्धवों समेत तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे मारकर ३२ श्वेत घोड़ेवालेरथपर अर्जुन बहुतशोभायमानहुआ घोड़े हाथी और रथोंसमेत सौबलके पुत्र शकुनीके मरनेपर ३३ आपकी सेनाटूटेहुये महाबनकीसमान होगई बीरअश्वत्थामा कृतबर्मा गौतम कृपाचार्य्य और आपकेपुत्र राजादुर्य्योधनके सिवाय दूसरा जीवताहुआ कोई महारथी देखनेमें नहींआया फिर धृष्टद्युम्न मुझको देखकर हँसता हुआ सात्यकीसे बोला ३४।३५।३६ कि इसके पकड़े हुयेसे क्या प्रयोजन है और जीवतेहुयेसेभी कुछभी प्रयोजन सिद्ध नहींहै तब महारथी सात्यकी धृष्टद्युम्नके बचनको सुनकर ३७ और तेजधार खड्गको उठाकर मेरेमारनेको उद्युक्तहुआ तब बड़ेज्ञानी व्यास-जीने आकर उससे कहा कि ३८।३९।४० संजयको जीवता छोड़ो इसकोकभी न मारनाचाहिये व्यासजीके बचनकोसुनकर हाथजोड़ केसात्यकी मुझकोछोड़कर मुझसे यहबचनबोला कि हे संजय तुम कल्याणका साधनकरो तबमैंउसकीआज्ञापाकर कवचऔरशस्त्रोंको त्यागकररुधिरसेभराहुआ सायंकालकेसमय जिधरनगरथा उधरकी ओरकोचलदिया एककोस हटआनेवाले गदाहाथमेंलिये नियत ४१ अत्यन्त घायल शरीर मैंने राजा दुर्य्योधनको देखा हेराजा उस समय वह अश्रुओंसे पूर्णनेत्र मेरी ओर देखनेको समर्थनहींहुआ ४२ इसप्रकार दुःखी नियत मुझको देखकर ठहरारहा और मैंभी युद्धमें शोचकरनेवाले उस अकेलेको देखकर ४३ बड़े दुःखसे संयुक्त होकर एकमुहूर्त्त भरभी वार्त्तालापकरनेकोसमर्थ नहींहुआ इसकेअनंतरमैंने अपने सब पकड़े जानेका वृत्तान्त उससेकहा ४४ और व्यासजी की कृपासे अपनेजीवतेहुये छुटआनेको वर्णनकिया इसकेपीछे उसने

एकमुहूर्त्तध्यानकरके सचेतताको पाकर ४५ भाइयों समेत सबसेना केलोगोंको मुझसे पूछा तब अपने नेत्रसे देखनेवाले मैंनेसबवृत्तान्त उससेकहा ४६ सब भाइयोंकामरना और सेनाका नाशहोनावर्णन किया हे राजा निश्चयकरके आपकेतीनरथी बाकीहैं ४७ यहवृत्तान्त चलतेसमय व्यासजीने मुझसे कहाहै तब लम्बीश्वासा लेकर और बारंबार शोचकर ४८ उस आपके पुत्रने मुझको हाथसे स्पर्श करके यह बचनकहा कि हे संजय इस युद्धमें तेरेसिवाय अबकोई जीवतानहींहै ४९ यहांकिसी दूसरे को नहीं देखताहूं और पांडव सहायतावाले हैं हेसंजय अबतुम उसज्ञानरूपीनेत्र रखनेवालेमहाराज धृतराष्ट्रसेकहना कि आपकापुत्र दुर्य्योधन ह्रदमें प्रवेशकरगया उसप्रकारकेमित्रपुत्रऔरभाइयोंसे रहितहुआ ५०।५१ पांडवोंसेराज्य हरण होनेपर मुझसा कौन मनुष्य जीवता रहसक्ताहै इस सब वृत्तान्तको और बड़ेयुद्धमेंसे छुटाहुआ ५२ इसह्रदके जलमें गुप्तअत्यन्तघायल जीवता हुआ मुझको कहदेना हे महाराज संजयसे ऐसा कहकर वह उसबड़े ह्रदमें प्रवेश करगया ५३ वहां ह्रदमें जाकर राजाने अपनी मायासे जलको नियतकिया ह्रदमें उसके प्रवेशकरजाने पर मुझअकेलेने उसस्थानपर आनेके अभिलाषी थकी सवारीवाले तीन रथियोंको देखा ५४ अर्थात् शारद्वत कृपाचार्य्य रथियोंमेंश्रेष्ठ वीर अश्वत्थामा ५५ भोजवंशी कृतबर्मा इनतीनोंकोबाणोंसेघायल साथसाथ आनेवालों को देखा उनसबने मुझको देखकरशीघ्रहीघोड़ोंको चलायमान किया ५६ और समीप आकर मुझसेबोले कि हेसंजय तूप्रारब्धसे जीवताहै यहकहकर सबने आपकेपुत्र राजाको मुझसेपूछा ५७ किहेसंजय वह हमारा राजादुर्य्योधन जीवताहै तब मैंने उसराजाकी कुशलताकही ५८ और वहसब बातेंभीउनसेकहीं जोदुर्य्योधननेमुझसेकहीथीं और उस ह्रदकोभीबताया जिसमें किराजाप्रवेशकियेहुयेथा ५९ हेराजा अश्वत्थामानेउसमेरे बचनकोसुनकर उस बड़े ह्रदकोदेखकर दयासे बिलापकिया ६० कि अहोधिक्कारहै किवहराजा हमको जीवतानहीं जानताहै उसकेसाथहोकरहमलोग

शत्रुओंसे युद्धकरनेको समर्थहैं ६१ वहरथियोंमें श्रेष्ठमहारथी वहां बहुत देरतक विलाप करके और युद्धमें पांडवोंको देखकर भागे६२ मरने से बचेहुये वह तीनोंरथी कृपाचार्य्यके अच्छे अलंकृत रथपर मुझको बैठाकर सेनाके निवासस्थानमें आये ६३ वहां सूर्य्यकेअस्त होनेपर भयभीत होकर सब गुल्म अर्थात् वृक्ष आपके पुत्रोंका नाश सुनकर पुकारे ६४ हे महाराज इसके पीछे स्त्रियोंके रक्षक वृद्ध मनुष्य रानी आदिको लेकर नगरको चले ६५ वहां उस सेनाके नाशको सुनकर पुकारती और रोतीहुई सबस्त्रियोंके बड़ेशब्द प्रकट हुये ६६ हे राजा बारंबारशब्दकरनेवाली उन स्त्रियोंने कुररी पक्षी के समान अपने आर्त्त शब्दों से पृथ्वी को शब्दायमान किया ६७ तब जहां पुकारती हुई स्त्रियोंने उंगलियों और हाथोंसे अपने२ शिरोंको पीटा और शिरोंके बालोंको उखाड़ा ६८ हेराजा वहां हाहा कार करके शब्द करनेवाली और छाती पीटनेवाली शोचतीपुकारती स्त्रियां रोदन करनेलगीं ६९ इसके पीछे दुर्योधनके प्रधानजो कि आंसुओंसे गद्गद कण्ठ और अत्यन्त दुःखीथे रानी आदिको लेकर नगरको चलदिये ७० हे राजा हाथमें बेतलिये रक्षक लोग और द्वाराध्यक्ष बहुमूल्यके उज्ज्वल शयनोंकोलेकर ७१ शीघ्रतासे नगरकोगये कितनेही मनुष्य खिच्चरोंसे युक्त रथोंपरसवारहोकर ७२ अपनी २ स्त्रियोंको लेकर नगरको गये हे महाराज जो स्त्रियां महलोंमेंसे प्रथम कभी सूर्य्यसे भी नहीं देखीगईथीं उन स्त्रियोंको पुरमें जातेहुये लोगोंनेदेखा हे भरतर्षभ वह कोमल शरीरवाली स्त्रियां ७३।७४ जिनके स्वजनबान्धवमारेगये शीघ्रही नगरकोचलीं और गोपाल बिपाल आदिक सब नगरकी ओर दौड़े ७५ भीमसेन के भयसे पीड़ित और भ्रान्ती से युक्त मनुष्य चले उन्होंकोभी बड़ा असह्य और कठिन भय उत्पन्न हुआ ७६ तब परस्पर देखतेहुये नगरकी ओर दौड़े इसप्रकार उस अत्यन्त भयानक भगोड़के वर्त्तमान होनेपर ७७ शोकसेअचेत युयुत्सूने समयके अनुसार चिन्ता करी कि युद्धमें भयानक पराक्रमवाले पांडवोंने ग्यारह अक्षौहिणी

सेनाके स्वामी दुर्य्योधनको बिजयकिया उसके भाई मारेगये और वह सब कौरव लोग जिनके कि अग्रवर्त्ती भीष्म और द्रोणाचार्य्य थे वह भी मारेगये ७८।७९ मैं अकेला प्रारब्ध और ईश्वरकी इच्छासे बचाहूं सब डेरे आदिके लोग चारों ओरसे भागे ८० जिनकेस्वामी मारेगये वह कान्ति शोभासे रहित अपूर्व रूप दुःखसे पीड़ामान भयसे व्याकुलचक्षु इधर उधरसे ऐसे भागतेहैं कि ८१ जैसे कि सिंहसे भयभीत मृग दशोंदिशाओंको देखतेहुये भागतेहैं दुर्योधन के प्रधान और सलाहकार जो कुछ बाकी रहे ८२ वह राजकी स्त्रियोंको लेकर नगरकी ओर दौड़े हे प्रभु मैं उनके साथ नगरमेंपहुंच जानाही समयके अनुसार उचितजानताहूं महाबाहुयुयुत्सूने युधिष्ठिर औरभीमसेनको जतलाकर इसप्रयोजनको प्रकट किया ८३।८४सदैव दयावान् राजायुधिष्ठिरउसपरप्रसन्नहुआ तब महाबाहुने मिलकर उस युयुत्सू को बिदा किया उसकेपीछे उसने रथपरसवार होकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान कियाऔरभागती हुई राजस्त्रियोंकोपुरमें लेगया८५।८६सूर्यकेअस्तहोनेपरआंसुओंसे पूर्णनेत्र औरगदगद कंठ युयुत्सू उनसबकोसाथलियेशीघ्रहीहस्तिनापुरमें पहुंचा ८७।८८ औरआर्द्र नेत्रशोकसेव्याकुल चित्तबड़ेज्ञानी राजाको और समीपसे निकलेहुये विदुरजीको देखा वह सच्चे धैर्य वाले विदुरजी उस नम्रीभूत आगे नियतहोनेवाले युयुत्सूसे बोले हेपुत्र इस कौरवोंके नाश होनेमें तुम प्रारब्धसे जीवतेहो ८९ राजाके पहुंचने बिना तू यहां क्यों आयाहै इस सबकारणको ब्योरे समेत मुझसेकहौ ९० युयुत्सू बोला कि हेतात ज्ञातिपुत्र बांधवोंसमेत शकुनीके मरनेपर मरनेसे शेषबचेहुये परिवारका रखनेवाला राजा दुर्य्योधन अपनेघोड़ेको छोड़कर भयसे पूर्वकी ओर भागगया सेनाके निवास स्थानके लोग राजाके दूरचले जानेपर९१।९२भय से व्याकुल होकर सबनगरको भागे इसकेपीछे प्रधान अधिकारी और नौकर चाकर लोग राजा दुर्य्योधन समेत सबभाइयोंकी स्त्रियोंको९३ सवारियों पर बैठाकर सेनासे भागे उसकेपीछे मैं केशव

जी समेत राजा युधिष्ठिर से पूछकर ९४ दौड़ते हुये मनुष्योंकी रक्षा करता हुआ हस्तिनापुरमें आया युयुत्सू के कहे हुये इस वचन को सुनकर ९५ सर्व धर्मज्ञ बड़े बुद्धिमान् बिदुरजीने युयुत्सूकी प्रशंसा करी और यह बचन कहा कि यह सबसमयके अनुसारहै ९६ और यह सबभी समयके अनुसार योग्यहै जो तुमने भरतवंशियों के नाश होनेपर दयासे अपने कुल और धर्मकी रक्षाकरी ९७ हे बीर हम प्रारब्धसेबीरोंके भयकारी इसयुद्धसे बचकर पुरमें आयेहुये तुझको ऐसे देखतेहैं जैसे कि सृष्टि सूर्य्यको देखतीहै ९८ हे पुत्र लोभी अदूरदर्शी बहुत समझाये हुये दैवसेघातित बुद्धि अन्धे राजा धृत-रष्ट्र की लाठी ९९ तूही अकेला उस आपत्ति से बचकर सबप्रकार जीवताहै अब तू यहां रहकर प्रातःकाल युधिष्ठिर के पास जायगा आंसू भरे बिदुरजीने इतनी बात कहकर और युयुत्सू से पूछकर राजमहलमें प्रवेश किया १०० । १०१ पुरबासियोंने भी बड़े दुःख और हाय २ के शब्द किये वह पुर प्रसन्नता और शोभासे रहित अप्रकाश टूटे बागवाले स्थानके समान १०२ उजाड़ रूप और बड़े दुःखसे दुःखरूप हुआ और सब धर्मोंके ज्ञाता बिदुरजी अंतरात्म समेत ब्याकुल १०३ श्वासलेते धीरे २ नगर में पहुंचे हे राज युयुत्सूभी उसरात्रिको अपनेघरमेंरहा १०४ वह महादुःखी भरत बंशियोंके परस्पर नाशको शोचता हुआ अपने लोगोंसे प्रशंसित भी आनन्द युक्त नहीं हुआ १०५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांशल्यपर्वणि दुर्योधनहृद प्रवेशेयुयुत्सुगमनेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

शल्य पर्व समाप्त हुआ ॥
इति

महाभारत भाषागदापर्व्वणि

——※——

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वारायमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंवन्देबादरायणम् ३ विद्याविदग्धेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंरम्यगदाख्यपर्व भाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ गदापर्व्वभाषावार्त्तिकप्रारम्भः ॥

श्री नारायणजी को नरोत्तम नरको और श्री सरस्वती देवीको नमस्कार करके जयनाम इतिहास को वर्णन करताहूं—धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्धभूमि में पाण्डवों के हाथसे सबसेना के मरनेपर मेरी उन शेषबची हुई सेनाओं ने कौनसा कर्मकिया १ उससमय पराक्रमीकृतवर्मा, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और निर्बुद्धी राजादुर्योधन ने क्याकिया २ संजय बोले कि महात्मा क्षत्रियोंकीस्त्रियोंके शीघ्रचले जाने भागजाने और डेरोंके खाली होनेपर विजय के अभिलाषी अत्यन्त व्याकुल तीनोंरथियोंने ३ बिजयकरनेवाले पाण्डवोंके शब्दों को सुनकर और सायंकाल के समय डेरेको भागाहुआ देखकर ४

वहां निवासको स्वीकार नहीं किया और वहां से चलकर फिर वह हृदकेही समीपगये धर्मात्मा युधिष्ठिरभी भाइयोंसमेतयुद्धमें ५ प्रसन्न चित्त दुर्य्योधन के मारनेकी इच्छासे चारोंओर को भ्रमण करने लगा हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त आपके पुत्रके विजय करनेके अभिलाषी पाण्डव उसकेखोजको करने लगे ६ विचार पूर्वक उपायसे ढूढ़नेवालोंने राजाको नहीं देखा वह बड़े वेग समेत गदाहाथमें लेकर दूर चलागया ७ और अपनी मायासे जलको रोककर उस हृदमें प्रवेश करगया जब सब पाण्डव बहुत थकी सवारीवाले हुये ८ तब डेरेको पाकर अपनी सेनाके लोगोंसमेत डेरेमें नियतहुये इसके पीछे कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा ९ पाण्डवोंके डेरेमें प्रवेशकरने पर बड़ी सावधानी और अलक्षितता से उसहृदके पासगये उन्होंने उस हृदको जहांपर कि राजा सोताथा पाकर १० जलमें सोनेवाले अजेय राजादुर्योधन से कहा कि हे राजा उठो हमारेसाथ होकर युधिष्ठिरसे युद्धकरो ११ और उसको बिजयकरके पृथ्वीको भोगो अथवा मृतक होकर स्वर्गको पावो हे दुर्योधन तुमने भी उन्होंकी सब सेनामारी १२ और वहां जो सेनाके लोग बाकी हैं उनको अत्यन्त घायल किया हे राजा वह आपके वेग सहने को समर्थ नहीं हैं १३ जब कि तुम हमसे रक्षित होकर लड़ोगे हे भरतवंशी उस कारणसे आप उठो तब दुर्य्योधन बोला कि प्रारब्धसे इसप्रकार के पांडव और कौरवोंके मनुष्योंके नाश होनेपर युद्धसे बचे १४ और जीवतेहुये तुम नरोत्तमोंको देखताहूं विश्राम करने वाले और थकावटसे रहित हमलोग सब मिलकर विजयकरेंगे १५ आप थकेहुये हैं और हम अत्यन्त घायल हैं और उन्होंकी सेना बड़ी है इसहेतुसे युद्धकी स्वीकार नहीं करताहूं १६ हे वीरलोगो यह अपूर्व बातनहींहै जो तुम्हारा चित्त बड़ा उत्साह युक्त है और हममें बड़ी सामर्थ्य है परन्तु पराक्रमका समय नहींहै १७ अब मैं एक रात्रि विश्राम करके आपलोगोंकेसाथप्रातःकालके समय युद्धमें शत्रुओंसे लड़ूंगा इसमें मुझको संशयनहीं है १८ संजय बोले कि इस

प्रकार दुर्य्योधनके वचनोंको सुनकर अश्वत्थामाजी उस युद्धदुर्मद राजासे बोले हे राजा उठो आपका भलाहोय हम शत्रुओंको विजय करेंगे १९ हे राजेन्द्र अबमैं यज्ञ वा बावड़ीआदिक सुकर्मदान सत्यता और बिजयकी शपथ खाताहूं कि मैं सोमकोंको मारूंगा २० मैं यज्ञ करनेवाले सज्जनों के योग्य फलों को नहीं पाऊं जो इस रात्रिके व्यतीत होनेपर युद्धमें शत्रुओंको नहीं मारूं २१ हे समर्थ सब पांचालोंको बिनामारेहुये कवचको नहीं उतारूंगा यह तुमसे सत्य२ कहताहूं हे राजा उसको मुझसे सुनो २२ उन्होंकी वार्त्तालाप करनेकी दशामें मांसके भारसे थकेहुये वधिक लोग दैवयोगसे उस स्थानपर आये २३ हे समर्थ महाराज वह वधिक सदैव बड़ी भक्तिपूर्व्वक मांसोंके भारोंको भीमसेनके पासलातेथे २४ परस्पर मिलेहुये और वहांपर बर्त्तमान होनेवाले उन बधिकोंने एकान्तमें उन्होंके सब बचन और दुर्य्योधनके वचनोंको सुना २५ तब कौरवके युद्धसे अनिच्छावान् होनेपर उन सब युद्धाभिलाषी बड़े धनुषधारियोंने भी युद्धकेनिमित्त बड़ा हठकिया २६ हे राजेन्द्र उन बधिकोंने कौरवोंके उन महारथियोंको उसप्रकार देखकर और युद्धसे अनिच्छावान् ह्रदमें नियत राजाको जानकर २७ उन्होंकी और जलमें बर्त्तमान राजाकी वार्त्तालापको सुनकर जल में नियत दुर्य्योधनको जाना २८ दैवकी इच्छासे समीप जानेवाले उन बधिकों से राजाके खोजकरनेवाले पांडवोंनेपूछा आपके पुत्रको २९ हे राजा तब वह मृगोंके मारनेवाले पांडवोंके वचनको स्मरण करके धीरेपनसे परस्परमें यह बोले ३० किजो हम दुर्य्योधनकोबता देंगे तो पांडव हमको धनदेंगे राजादुर्य्योधन इस जलमें गुप्तहै इस हेतुसे हम सब उस जल में सोनेवाले क्रोधयुक्त दुर्य्योधनके प्रकट करनेको वहां पर चलें जहांपर कि राजा युधिष्ठिरहैं ३१।३२ हम सब इसजलमें सोनेवाले धृतराष्ट्रके पुत्रको उस बुद्धिमान् धनवान् भीमसेनसे बर्णन करें ३३ इसबातको सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त वह भीमसेन हमको बहुतधनदेगा हमको इस सूखे और आघातसे

उत्पन्न कठिन मांससे क्यालाभ है ३४ तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त धनके अभिलाषी वह वधिक इसप्रकार कहकर और मांसके बोझों को लेकर डेरे में गये ३५ हे महाराज लक्ष्यको प्राप्त प्रहारकर्त्ता युद्धमें नियत दुर्योधनको न देखनेवाले ३६ और उस पापीके छलके अन्तपर पहुंचनेके अभिलाषी उनपाण्डवोंने भी उस युद्ध भूमिमें चारोंओर दूतोंको भेजा ३७ उसके पीछे धर्मराजकी सब सेनाके लोगोंने एकसाथ आकर दुर्योधन का गुप्तहोना वर्णन किया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ राजाने उन दूतोंके उस वचन को सुनकर कठिन चिन्ताकोपाया और बारंबार श्वासलिया ३८।३९ हे भरतर्षभ समर्थ धृतराष्ट्र इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले वह वधिक उस स्थानसे चलकर दुःखी चित्त नियत होनेवाले पांडवों के ४० डेरेको आये और राजा दुर्योधनको देखकर प्रसन्न चित्त और रोके हुये भी भीमसेन के देखते हुये प्रवेश करगये ४१ वहां उन्होंने बड़े बलवान् पांडव भीमसेन को पाकर वह सब वृत्तान्त जो वहां सुनाथा भीमसेन से कहा ४२ हे राजा इस के पीछे शत्रुकेतपाने वाले भीमसेनने उन्होंको बहुतसाधन देकर वह सब वृत्तान्त धर्मराजसे कहा कि ४३ हे राजा उस दुर्योधन का पता वधिकों के कहने से मुझको विदित हुआहै वह जल को स्थिरकरके सोताहै जिसके लिये आप दुःख मानतेहो ४४ हे राजा वह कुन्तीका पुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिर भीमसेनके उस प्रिय बचन को सुनकर सगे भाइयों समेत बहुत प्रसन्न हुआ ४५ ह्रदके जलमें प्रवेश करनेवाले बड़े धनुषधारी उस दुर्योधनको सुनकर श्रीकृष्णजीको आगे करके शीघ्रतासे वहां पहुंचे ४६ और अत्यन्त प्रसन्न सबपांडव और पांचालों के कलकलानाम शब्द प्रकटहुये ४७ हे भरतर्षभ इसके पीछे सिंहनाद और शब्दोंको भी किया हे राजाशीघ्रता करनेवाले क्षत्री व्यासजीके ह्रदको गये ४८ वहां अत्यन्त प्रसन्न मूर्त्तिमानक युद्धमें चारोंओरसे बारंबार पुकारे कि पापी दुर्योधनको जानलिया और देखाहै ४९ हे पृथ्वीनाथ वहां उन शीघ्रचलनेवाले वेगवान्

रथियों के कठिन शब्द स्वर्गको स्पर्श करनेवाले हुये ५० वह थकी सवारीवाले दुर्योधन के चाहनेवाले बड़ी शीघ्रता करनेवाले क्षत्री यत्रकुत्र राजा युधिष्ठिरके पीछे चले ५१ अर्जुन, भीमसेन, पांडव नकुल, सहदेव, पांचालदेशकाराजा धृष्टद्युम्न, अजेय शिखण्डी ५२ उत्तमौजा, युधामन्यु, महारथी सात्यकी, और जो पांचालोंके शेष रथीथे वह और द्रौपदीके पुत्र५ ३सब घोड़े हाथी और सैकड़ोंपदाती पीछे चले हे महाराज इसकेपीछे प्रतापवान् धर्मराज ५४ व्यास जीकेउसघोरह्रदपरपहुंचे जिसमें कि दुर्योधनथाऔर जोकि शीतलता युक्त निर्मल जलसेपूर्ण बड़ाप्रिय ह्रद दूसरे सागरके समानथा५५ जिसमें आपका पुत्र मायासे जलको रोककर नियतथा हे भरत-बंशीवह बड़ी अपूर्व बुद्धिवाला और दैवयोगसे ५६ जलके मध्यमें बर्त्तमान शूरबीरोंका मारनेवालाथा हे प्रभु महाराज धृतराष्ट्र वह गदाधारी राजादुर्योधन किसीमनुष्यकोभी मिलना असंभवथा ५७ उसकेपीछे जलके मध्यमें बर्त्तमान राजा दुर्योधनने बादलोंकी गर्जनाके समान कठिन शब्दको सुना ५८ हे राजेन्द्र महाराज फिर राजा युधिष्ठिर अपने सगे भाइयों समेत आपकेपुत्रको मारने केलिये उस ह्रद पर आये ५९ शंखके और रथनेमियोंके बड़ेशब्द समेत बड़ी धूलको उठाते औरपृथ्वीकोभी कंपायमान करते आपहुंचे ६० महारथी कृतबर्मा, कृपाचार्य, और अश्वत्थामा, युधिष्ठिरकी सेनाको देखकर राजासे यह बचनबोले ६१ कि अत्यन्त प्रसन्नचित्त विजयसे शोभा पानेवाले यह सब पांडव आतेहैं तबतक हमको आप आज्ञादें कि हम यहांसे हटजायं ६२ हेप्रभुतब उस दुर्योधन ने उनवेगवानोंके उस बचनको सुनकर और बहुत अच्छा कहकर मायासे उस जलको रोकदिया ६३ हे महाराज फिर शोकसे पूर्ण कृपाचार्य आदिकरथी राजाको पूछकर दूर चलेगये ६४ हेश्रेष्ठवह तीनों दूरमार्गपर जाकर एकबटके वृक्षको देखकर अत्यंत थकेहुये राजाके विषयमें शोचते निवासीहुये ६५ बड़ा बलवान् दुर्योधन जलको रोककरसोया और युद्धके अभिलाषी पांडवभी उसस्थान पर

पहुंचे ६६ किसप्रकार से युद्धहोगा और कैसे राजाहोगा और कैसे पांडवलोग उस कौरव दुर्य्योधनको पावेंगे ६७ हे राजा इस प्रकार चिन्ताकरते उन कृपाचार्य्य आदिक रथियोंने रथोंसे घोड़ोंको छोड़कर वहां निवास किया ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिदुर्य्योधनान्वेषणेप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय॥

संजय बोले कि इसके उन तीनोंरथियोंके दूरचले जानेपर उन पांडवोंने उस हृदको पाया जिसमें कि दुर्योधनथा १ हे कौरवोंमेंश्रेष्ठ तब दुर्योधनसे अचल कियेहुये उस व्यास हृदको और जलमें सोनेवाले राजाको देखकर २ कौरवनन्दन युधिष्ठिर वासुदेवजीसे यह वचन बोले कि दुर्योधनकी जलमें संयुक्तकीहुई इस मायाकोदेखो ३ कि जलको रोककर सोताहै इसको मनुष्यसे भयनहींहै इस दैवी मायाको प्रकट करके जलके मध्यमें वर्त्तमान ४ छल संयुक्त बुद्धिका रखनेवाला यह दुर्योधन मेरे हाथसे अब जीवताहुआ नहीं बचसक्ता जो आप बज्रधारी इन्द्रभी युद्धमें इसकी सहायता करें ५ तौभी हे माधवजी युद्धमें इसको सबलोग माराहुआ देखेंगे वासुदेव जी बोले कि हे भरतवंशी माया करनेवालेकी इस मायाको माया केही द्वारा नाशकरो ६ मायावी पुरुष मायाहीके द्वारा मारनेके योग्यहै हे युधिष्ठिर यह सत्यहै कि यहराजा दुर्योधन बहुत उपाय और कर्मोंके द्वारा जलमें मायाको संयुक्तकरके सोताहै ७ हे भरतर्षभ तुम इस मायात्मा अर्थात् छलीको मारो इन्द्रने भी कर्म और उपायोंके द्वारा दैत्यऔर दानवोंको माराहै ८ महात्मा इन्द्रकेहाथसे बहुत कर्म और उपायोंकेही द्वारा राजा बलिबांधागया और बड़े२ कर्म और उद्योगोंके द्वारा महाअसुर हिरण्याक्ष ९ और हिरण्यकश्यपदोनोंभाई मारेगये हे राजा वृत्रासुरभी कर्मोंकेही द्वारा निस्सन्देह मारागया १० हे राजा इसीप्रकार पुलस्त्यका पुत्र रावणनाम राक्षस अपने सबभाई साथियों समेत श्रीरामचन्द्रजीके हाथसे मारा

गया ११ इसीप्रकार तुमभी कर्म करने में नियत होकर पराक्रम करो हेसमर्थ राजा युधिष्ठिर उसीप्रकार कर्म और उपायों के द्वारा दोनों प्राचीन राक्षस मेरे हाथसे मारेगये १२ बड़ा दैत्य तारक और पराक्रमी बिप्रचित्ति वातापी इल्वल और त्रिशिराभी मारे गये १३ इसीप्रकार सुन्द उपसुन्द असुरभी कर्मसेही मारेगये हे समर्थ इन्द्रभी कर्म और उपायोंके द्वारा स्वर्गको भोगताहै १४ हे राजायुधिष्ठिर कर्म प्रबलहै दूसरा कुछ प्रबलनहीं है दैत्य दानव राक्षस इसीप्रकार राजालोग १५ कर्म और उपायों केही द्वारा मारेगये इसहेतुसे कर्मको अच्छीरीतिसे करो संजय बोले हे महाराज भरतबंशी धृतराष्ट्र बासुदेवजी से समझाये हुये तेजव्रत हँसते हुये कुन्ती के पुत्र पांडव युधिष्ठिरने १६ उस जलमें नियत बड़ेबलवान् आप के पुत्र से यह कहा कि १७ हेदुर्योधन तुमने जलके मध्य में यह प्रारम्भ कर्म किस निमित्त किया हे राजा सब क्षत्रियोंके कुलों को और अपने कुलको मरवाकर १८ अब अपने जीवनको चाहताहुआ ह्रद में घुसा हुआ बैठा है हे दुर्योधन उठो और हमारे साथ युद्ध करो १९ हे नरोत्तम वह तेरा अभिमान और अहंभाव कहां गया जोभयभीत होकर तुम जलको रोककर नियत हुयेहो २० सबलोग तुझको सभामें शूर कहतेहैं जलमें सोनेवाले आपको उस शूरताको निरर्थक मानताहूं २१ हे राजा उठो युद्धकरो कुलीन क्षत्रीहो और अधिकतर कौरवबंशीहो अपने कुल और जन्मको यादकरो २२ सो कौरव कुलमें अपने जन्मको कहता हुआ कैसे युद्धसे भयभीत होके जलमें प्रवेश करके नियतहै २३ युद्धका और राज्यका त्याग अथवा स्वर्ग के निमित्त उपाय न करना यह प्राचीन धर्मनहीं है हे राजा युद्ध से भागना नीचों का कर्म है स्वर्ग का देनेवाला नहीं है २४ निश्चय करके युद्ध में पारको न पाकर किसरीति से तुम जीवन के अभिलाषीहो इन पड़ेहुये पुत्र भाई और वृद्ध पुरुषोंको देखकर २५ नातेदार समानवय मामा और बान्धवों को मरवाकर अब कैसे ह्रद में नियत है २६ अपने को शूरमानता है परन्तु तू शूर

नहींहै हेभरतवंशी दुर्बुद्धी सवलोगोंके समक्षमें तुम मिथ्याकहतेहो
किमैं शूरहूं २७ शत्रुओंको देखकर शूरबीर किसीप्रकारसे भी नहीं
भागतेहैं तुम जिस वृत्तीसे युद्धको त्याग करतेहो २८ उसको कहो
अब तुम उठो युद्धकरो और अपनेभयको दूरकरो हे दुर्य्योधनसव
भाई और सेना को मरवाकर युद्धकरो २९ और क्षत्रीधर्ममेंनियत
होकर धर्म करनेकी इच्छासे तुझसरीके राजाको अव जीवनमें बुद्धि
नकरनी चाहिये ३० कर्ण और सौबलके पुत्र शकुनीकेआश्रयहोकर
अपनेको सदैव जीवनेवाला माना इस भूलसे जोतुमनेअपनेकोनहीं
जाना३१हेभरतबंशी वहपाप बड़ादुःखरूपहै सन्मुख होकरयुद्धकरो
तुझसा राजाहोकर मोहसे किस प्रकार भागनेको अंगीकार करे३२
हेसुयोधनतेरी वह बीरता और अहंकार कहांगये और वहपराक्रम
और बड़ी गर्जना कहांगई३३ तेरी अस्त्रज्ञता कहांगई तड़ागमेंक्यों
सोताहै हेभरतवंशी इससे तुम उठकर क्षत्री धर्मसे युद्धकरो३४हम
को विजय करके इस पृथ्वीपर राज्यकरो अथवा हमारे हाथसेमरा
हुआ होकर पृथ्वीपर सोवेगा ३५ हेमहारथी महात्मा ईश्वरने यह
तेरा उत्तम धर्म उत्पन्न कियाहै इसको विधि पूर्वक करो और राजा
होजाओ संजयबोले हेमहाराजजलमें नियतऔरबुद्धिमानधर्मराजके
इसप्रकारके बचनोंको सुनकर आपका पुत्र यह बचनबोला३६।३७
हेमहाबाहु यह अपूर्व बातनहीं है जो जीवधारीमें भयप्रवेशहोय हे
भरतबंशी मैं जीवके भयसे डराहुआ नहींबैठाहूं ३८ रथ औरतूणी-
रसेरहित मृतक सारथी और साथवाला होकर अपनेसमूहसे पृथक्
होकर युद्धमें अकेला होकर मैंने इस विश्रामको अंगीकारकिया३९
हेराजा प्राणोंके कारणसे भय और व्याकुलतासे मैं इस जलमें नहीं
घुसाहूं मैंनेकेवल थकावट से यह कर्मकियाहै४० हेकुन्तीके पुत्रतुम
बिश्रामकरो और जोतेरे आसपास वालेहैं वहभी विश्रामकरें मैं इस
जलसे निकल कर युद्धमें तुम सबसेलड़ूंगा ४१ युधिष्ठिर बोले कि
हम विश्राम करचुकेहैं और विलम्वसे तुझको अन्वेषण करतेहैं हे
सुयोधन इसहेतुसे अब उठो और यहां युद्धकरो ४२ युद्धमेंपांडवोंको

मारकर वृद्धियुक्त राज्यको पाओ अथवा युद्धमें हमारे हाथसे मरकर बीरलोकको पाओगे४३ दुर्य्योधनबोले हे कौरवनन्दन राजायुधिष्ठिर मैंजिन कौरवोंके लिये राज्यको चाहताथा वह सबमेरे भाईमारेगये ४४ मैंइस रत्नोंसे रहित मृतक उत्तम क्षत्रियोंवाली बिधवास्त्री के समान पृथ्वीके भोगनेको उत्साहनहीं करताहूं४५ हेभरतर्षभ युधिष्ठिर मैं अबभी पाण्डवों समेत पांचालोंके उत्साहोंको तोड़कर तेरे विजय करनेको आशाकरताहूं४६ अबमैं द्रोणाचार्य्य कर्णऔर भीष्म पितामहके मरने पर किसी समय भी युद्धसे अपने कार्य्यको नहीं मानता हूं ४७ हे राजा अब यह सब पृथ्वी तेरीहो अपने साथियों से रहित होकर कौनसाराजा राज्यपरराज्य शासन करनेकी इच्छा करेगा ४८ उस प्रकारके मित्र पुत्र भाइयों और वृद्धोंको भी मारकर और आपलोगोंसे राज्य हरण होनेपर मुझसा कौन मनुष्यजीवतारहैगा ४९ हेभरतवंशीमैं मृगचर्मको धारण करनेवाला होकर बनको जाऊंगा जिसके पक्षवाले लोग मारेगये उस राज्यमें मेरी प्रीति नहीं है ५० हे राजा जिसमें बहुत बान्धव घोड़े और हाथी आदिक मारे गये वह सब पृथ्वी तेरी है इसको तुम बिगत ज्वरहो कर भोगो ५१ मैं मृग चर्मोंको धारण करके बनको जाऊंगा हे समर्थ अबजीवनमें मुझभाईपुत्रोंसे जुदेहोनेवालेकी इच्छानहींहै ५२ हे राजेन्द्र तुमजाओ और इस पृथ्वीको जिसके स्वामी और शूरबीर मारे गये और जिसमें रत्नोंका नाशहुआ औरगढ़ प्रकोष्ठादिकजीर्ण होगये सुखपूर्वक भोगो ५३ संजय बोले कि बड़ायशस्वी युधिष्ठिर ऐसे दीन बचनोंको सुनकर उसजलमें निवास करनेवाले आपके पुत्र दुर्योधनसे बोला ५४ हेभाई जलमें नियत तुमपीड़ाके प्रलापों को मतकहो हे राजा पक्षीके समान निवास करना मेरे चित्तमेंनहीं है५५ हे सुयोधन जो तुम देनेके निमित्त भी समर्थहो तौभी मैं तेरी दीहुई पृथ्वीपर राज्यशासन करनेकी इच्छानहीं करताहूं ५६ तेरी दीहुई इस पृथ्वीको अधर्मसे नहींलूंगा दानलेना क्षत्रीका धर्मनहीं कहागया है ५७ मैं तेरीदीहुई इस संपूर्ण पृथ्वीको नहीं चाहता

तुझको युद्धमें बिजयकरके इसपृथ्वीको भोगूंगा ५८हेराजातुम स्वामी न होकर पृथ्वीको कैसे देना चाहतेहो तुमने यहपृथ्वी उससमय परकुलकीशान्तीके लिये धर्मसे मांगनेवालेहमलोगोंको क्योंनहींदी प्रथम बड़ेबलवान् श्रीकृष्णजीको उत्तरदेकर ५६।६० अब तुम क्यों देतेहो तेरेचित्तकी भ्रान्ती क्याहै कौनपराजयहोनेवाला राजापृथ्वी को देनाचाहै६१हे कौरवनन्दन अबतुम पृथ्वीके देनेको स्वामीनहीं हो न बलसे लेनेको समर्थहो सो कैसे देना चाहतेहो मुझको युद्धमें विजयकरके इसपृथ्वीका पालन करो६२हेभरतवंशीसुईके अग्रभाग भरभीपृथ्वीजो तुमनेहमको पूर्ब समयमें नहींदी अब उससबपृथ्वी कोकैसेदेतेहो६३।६४प्रथमतो सुईके अग्रभाग केभीसमानपृथ्वीको नहींदिया अबउस पृथ्वीको कैसे त्यागकरतेहो इसप्रकारके ऐश्वर्यको पाकर और इस पृथ्वीपरराज्य करके ६५ कौनसा अज्ञानी अपने शत्रुको उस पृथ्वीके देनेको निश्चय करेगा तुममहा अज्ञानीहोकर केवलअज्ञानता सेही सावधान नहीं होते हो ६६ पृथ्वीके देनेका अभिलाषा भी होकर तू जीवताहुआनहीं बच सक्ता तुमहमको विजय करके इस पृथ्वीपर राज्यकरो ६७ अथवा हमारे हाथसे मरकर उत्तम लोकोंको जाओ हेराजा निश्चय मेरे और तेरे जीवतेरहनेपर हमदोनोंकी इच्छानुसार सब जीवधारियों को सन्देह होगा हेदुर्बुद्धी तेराजीवन मुझ में बर्त्तमानहै ६८।६९ मैं जीवता रहूंगा परन्तुतुमजीवते रहनेकोसमर्थ नहींहो हेराजातुमनेहमारे नाशकरनेमें बड़ेबड़े उपायकिये ७० अर्थात् तुमने हमलोगों को विषधर सर्पोंकेविषसे जलके डुबोनेसे और राज्यके छीनलेनेसे निरादरकिया ७१ अयोग्य अप्रिय वचन और द्रौपदीके खैंचनेसे पीड़ामानकिया हेपापी इसकारण से तू जीवताहुआ नहीं बच सक्ता ७२ उठ उठ युद्धकर इसीसे कल्याणहोगा हे राजा उन वीरोंने वहां इस प्रकार बिजयसेयुक्त नाना प्रकारके वचनोंको वारंवार कहा ७३॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिद्वितीयोऽध्यायः२॥

तीसरा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि शत्रुओंका तपानेवाला स्वभावसे क्रोधयुक्त वह मेरा पुत्र बीर राजा दुर्योधन इस प्रकारके कठोर बचनोंकोसुनकर कैसी दशावाला हुआ १ उसनेपूर्व में कभी भी निन्दित और प्रतिष्ठित बचन नहीं सुने वह राजाहोनेसे सब लोकका माननीय हुआ२जिसकेअभिमानसे छत्रकीछाया भी सूर्यकेतापसे रक्षाकरनेके कारण दुखके निमित्तहोतीथी वह ऐसेप्रकार के बचनोंको कैसे सह सक्ता है ३ हेसंजय तेरेनेत्रके समक्षमें यह संपूर्णपृथ्वी म्लेक्ष और आटविकाओंसमेत जिसकी प्रसन्नतासे सजीवरहतीथी वह अधिक तरपांडवोंसेघुड़काहुआ निर्जनबनमें अपनेनौकरोंसे रहितऔरशत्रुओं से घिराहुआ था४।५उसनेबिजयसे संयुक्त कटुबचनोंकोबारंबारसुनकरपाण्डवोंसे क्याकहा हेसंजयवह मुझसेकहो ६ संजयबोले हेराजेन्द्र तब भाइयों समेत युधिष्ठिर से घुड़केहुये जलमें नियत आपके पुत्र आपत्तिमें नियत राजा दुर्य्योधनने ७ कटुबचनों को सुना तब वह बारंबार लम्बी उष्ण श्वासालेकर बारंबार हाथोंको भी कंपाता हुआ जलसे बाहर निकला और युद्धके निमित्त चित्तको करके राजा युधिष्ठिरसेबोला ८ ९ हेपांडव लोगो तुमसब रथ घोड़े और मित्रों समेतहो औरमैं अकेलाथकाहुआ बिरथ और मृतकसवारीवाला १० अकेला अशस्त्र होकर शस्त्रउठानेवाले बहुतसे रथसवार शूरबीरोंसे संयुक्त आपलोगोंसे कैसे लड़ने को उत्साह करसक्ताहूं हे युधिष्ठिर तुम एक२ होकर मेरे साथयुद्धकरो युद्धमें एकमनुष्य बहुतोंके साथ न्यायसे लड़नेको योग्य नहीं है ११।१२ अधिकतर कवचसे रहित थका हुआ आपत्तिमें फंसा हुआ और अत्यन्त घायल अंग मृतक सवारी सेनावाला १३ हेराजा मुझको तुझसे भयनहीं है पांडव भीमसेन, अर्जुन,बासुदेवजी और पांचालों से भी भयनहीं १४ नकुल सहदेव सात्यकीसे और जो अन्यर आपकी सेनाके लोगहैं उन सेभी भयनहींहै युद्धमें क्रोधयुक्तहोकर मैं अकेलाही तुमसबको रोकूं

गा १५ हेयुधिष्ठिर अच्छेलोगोंकी शुभ कीर्त्ति धर्मका मूल रखने वालीहै मैं यहां धर्म और कीर्त्ति को पालनकरताहुआ यह कहता हूं १६ कि मैंउठकर तुमसबके सन्मुखजाकर युद्धमें ऐसेलडूंगा जैसे कि बर्षकी समाप्तीमें सब ऋतुओंके सन्मुख होकर वर्षका युद्धहोता है १७ अब शस्त्रोंसे रहित बिरथ होकरभी रथ घोड़े रखने वाले तुमसबको ऐसे नाश करूंगा जैसे कि रात्रिके समाप्त होनेपर सब नक्षत्रोंको सूर्य्य नष्टकर देताहै हेपांडव लोगो नियत होजाओ मैंतुम सबको अपने तेजसे नाश करूंगा अबमैं यशवान् क्षत्रियोंकी अऋ-णताको पाऊंगा१८।१६हेभरतर्षभ अबतुझको तेरेसबभाइयों समेत मारकरबाल्हीक,द्रोणाचार्य्य,भीष्म,महात्माकर्ण,शूरजयद्रथ,२० मद्र काराजा शल्य,भूरिश्रवा, अपने पुत्र, सौबलके पुत्र शकुनी, मित्र, शुभचिन्तक,और बान्धवोंकी अऋणताको पाऊंगा वहराजा इतना बचन कहकर मौन होगया २१।२२ युधिष्ठिर बोले हे सुयोधन तुम भीप्रारब्धसे क्षत्री धर्मकोजानतेहो हेमहाबाहु प्रारब्धहीसे तेरीबुद्धि युद्धकेलिये बर्त्तमानहै २३ हे कौरव प्रारब्धसेही शूरहोकर तू युद्ध को जानता है जो अकेलाही होकर तू हमसब से लड़ना चाहता है २४ जोशस्त्र तुझको अंगीकृत है उसको लेकर चाहै जिस अकेले सेही भिड़ कर युद्ध कर हम सब तेरा तमाशा देखने को नियत हैं २५ हेबीर अब फिरमैं तेरे इस अभीष्ट को देताहूं हम पांचोमें एक को मारकर तेरा राज्यहोय अथवा मरकर तू स्वर्ग को पावे २६ दुर्य्योधन बोलाकि जो अब युद्धमें लड़नेको एकशूर मुझे दे-तेहोतो आपके मतसेशस्त्रोंमेंसे यहगदाभी चाहीगई२७ एकको मार करही जो राज्यके मिलने न मिलनेकी प्रतिज्ञाहै तोतुममें एकशूरजो मुझको योग्य मानताहै वह पदाती होकर गदाकेद्वारायुद्धमें मुझसे युद्धकरो २८ प्रथम स्थान२ पर रथोंके बिचित्र युद्ध जारीहुये यब यहां गदाका युद्ध अपूर्ब और बड़ाहोय२६ मनुष्य शस्त्रोंकोभी रच-नाको करना चाहतेहैं अबतेरी बुद्धिसे युद्धोंकोभी रचनाहोय ३० हे महाबाहु अबमैं गदासे तुझको तेरे छोटेभाइयों समेत विजयकरूंगा

पांचाल सृञ्जी आदिजोअन्य २ तेरीसेनाके लोगहैं उनकोभीविजय करूंगा हेयुधिष्ठिर कभो इन्द्रसेभी मुझको भयनहींहै ३१ युधिष्ठिर बोले हे गान्धारीकेपुत्र सुयोधन उठ और मुझसे युद्धकर बलवान् और अकेला युद्धमें गदाकेद्वारा एकके साथ भिड़कर ३२ शूरहोजा और हेगान्धारीके पुत्र अच्छी सावधानीसे युद्धकरो अबजो इन्द्रभो तेरीसहायता करें तोभीतेराजीवननहींहै ३३ संजय बोलेकि उसनरो त्तम जलके मध्यवर्त्ती सर्पकेसमान महाश्वासालेते आपकेपुत्रने इस बातको नहींसहा ३४ हेराजा उसप्रकारके बचनरूपी कोड़ोंसे घायल उस दुर्य्योधन ने उन बचनोंको ऐसे नहींसहा जैसेकि उत्तम घोड़ा चाबुकको नहीं सहताहै ३५ वह पराक्रमी वेगसे जलको छिन्नभिन्न करके सुनहरी बाजूबन्दोंसे अलंकृत लोहेकी गदाको लेकर ३६ सर्प राजकीसमान श्वासलेता जलके मध्यमेंसेउठा अर्थात् वह आपकापुत्र उस रोकेहुये जलको हटाकर लोहेकी गदाको कन्धेपर रखकर ३७ सूर्य्यके समानतपाताहुआ जलसे बाहरनिकला उसकेपीछेशैक्यमें रहने वाली लोहेकी भारी सुवर्ण जटित गदाको ३८ बुद्धिमान् बड़े पराक्रमी दुर्य्योधनने अपने हाथमेंलिया शिखर रखनेवाले पर्बतके समान गदा हाथमें रखनेवाले उस दुर्य्योधनको देखकर ३९ उसको क्रोध युक्त नियत होनेवाले शिवजीके समान माना वह भरतबंशी सूर्य्यके समान तपाताहुआ शोभायमानथा ४० सबजीवोंने उस जलसे बाहर आयेहुये महाबाहु गदा हाथमें लिये शत्रु विजयी दुर्य्योधनको दंडधारी यमराजके समान माना ४१ सबपांचालोंनेआ पके पुत्र राजा दुर्योधनको उसप्रकारका देखा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र और शूलधारी रुद्र जीको देखतेहैं ४२ सबलोगजलसे बाहर निकलनेवाले उस दुर्योधनको देखकर बहुत प्रसन्नहुये औरउन पां- चाल और पांडवोंने तालीबजाई ४३ फिरआपकापुत्र दुर्योधनउनकी ताली बजानेको अपनाहास्य मान कर दोनोंनेत्रोंको खोलके क्रोध युक्तपांडवोंको भस्म करताहुआ सा ४४ भृकुटीको तीन शिखावाली करके दांतोंकी पंक्तिको काटता केशवजी समेत पांडवोंसे यह उत्तर

बचनबोला ४५ कि हे पांडवलोगो तुमइसहास्यके फलको पाओगे और पांचालोंसमेत मुझसे मरकर शीघ्रहीयमलोकको जाओगे ४६ संजय बोलेकि वह जलसे निकलाहुआ आपका पुत्र दुर्य्योधनभयसे युक्त गदाहाथमें लेकर नियतहुआ ४७ तबउस भयसे युक्तकाशरीर जलसेआर्द्र उस प्रकारका बिदित होताथा जैसेकि झरनाओंसे युक्त पर्व्वत होताहै ४८ वहांपांडवोंने उस गदाऊंची करनेवाले बीरको क्रोधयुक्त दंडधारी यमराजके समान माना ४६ उसकेपीछे प्रसन्नतासे वृषभके समान गर्जनेवाले बादलके समान शब्दायमान पराक्रमी उसदुर्य्योधनने गदाके द्वारा युद्ध में पांडवों को बुलाया ५० दुर्य्योधनबोला हेयुधिष्ठिरतुमयुद्धमें एक२ मेरेसन्मुखआओ अकेला बीर बहुतोंकेसाथयुद्धमें लड़नेको न्यायके अनुसार योग्य नहींहै ५१ अधिकतर कवचत्याग थकाहुआ जल से आर्द्रशरीर अत्यन्तघायल अंगमृतक सवारी और सेना के लोगवाला ५२ सब को मेरे साथ अवश्यही लड़ना चाहिये तुम सदैव योग्य और अयोग्य बातों को जानतेहो ५३ युधिष्ठिर बोले हेसुयोधन यहतेरी बुद्धि नहीं हुई यह बाततबकैसी हुईथी जब कि बहुतसे महारथियोंनेयुद्धमें अकेले अभिमन्युको मारा ५४ क्षत्रीधर्म अत्यन्त निर्दय और असंबंधित है उस समय उस दशावाले अभिमन्युको विपरीत रीति से कैसेमारा ५५ आपसब धर्मोंके जाननेवालेशूर और शरीरकीप्रीति के त्यागनेवाले थे न्यायसे उत्तमरीतिके युद्ध करनेवालोंको इन्द्रलोक में उत्तम गति कहीहै ५६ जोअकेला बहुतोंके हाथसेमारनेके योग्यनहीं यहीधर्महै तो उससमय तेरीबुद्धिसे बहुतसे शूरवीरोंने मिलकर अकेले बालक अभिमन्युको कैसेमारा ५७ दुख में पड़ेहुये सबजीव धर्मदर्शन का बिचारतेहैं और अपने स्थानपर नियतपरलोकके द्वारको बन्दमानतेहैं ५८ हे बीरकवचको धारणकरो और शिरके बालोंको बांधो हे भरतबंशी जो दूसरी और कोईवस्तु तेरे पास न होय उस को भी लो ५६ और हे बीर फिरमैं तेरेइसएक मनोरथको देताहूं कि पांचों पांडवोंमेंसे जिसके साथतुम लड़ना चाहतेहो ६० निश्चय उस को

मारकर आपराजाहोगे अथवा मरकर स्वर्गको जाओगे हे बीर युद्ध में जीवनके सिवाय तेरी कौनसी शिष्टाचारीको करें ६१ संजयबोले हेराजाइसकेपीछे आपकेपुत्रने सुनहरीकवच और जांबूनद सुवर्ण से जटित शिरस्त्राणको लिया ६२ तबवह आपका पुत्रशिरस्त्राणको बांधनेवाला उज्वल स्वर्णमयी कवच धारण करने वाला सुवर्ण के पर्बतके समान शोभायमान हुआ ६३ हे राजा कवच धारी महा अलंकृतगदाधारी आपकापुत्र दुर्य्योधन युद्धकेमुखपर खड़ाहोकर सब पांडवोंसे बोला ६४ कि आपसब भाइयों में से एकभाई गदा लेकर मेरेसाथ युद्धकरो सहदेव भीमसेन अथवा नकुलके साथयुद्ध करूंगा ६५ हे भरतर्षभ अथवा अबमैं युद्धको पाकर अर्जुनके साथ वा तेरेसाथ लडूंगा और रणभूमि में तुमको बिजय करूंगा ६६ हे पुरुषोत्तम अबमैं स्वर्णवस्त्रोंसे मढ़ीहुई गदाकेद्वाराबड़े दुखसेमिलने के योग्य शत्रुताके अन्तको पाऊंगा ६७ गदायुद्धमें मेरीसमान कोई नहीं है यही अपने चित्त में बिचारताहूं सन्मुख आनेवाले तुम सब कोगदासेही मारूंगा ६८ तुमसब न्यायसे मेरेसाथ लड़नेकोसमर्थ नहींहो इसप्रकार अहंकारसेप्रेरितबचन अपनीओरसे कहनेकेयोग्य नहींहैं ६९ अथवा आपलोगोंके आगे इस बचनको सफल करूंगा इस मुहूर्त्तमें यहबात सत्यहोय वा असत्यहोय तुममेंसे वह मनुष्य गदाको हाथमेंले जोकि अब मेरेसाथमें लड़नाचाहता है ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

संजयबोले कि हेराजा इसप्रकार बारंबार दुर्य्योधनकेगर्जनेपर युधिष्ठिरके ऊपर क्रोधित होकर बासुदेवजी यहबचन बोले १ कि हेयुधिष्ठिरजो यह युद्ध में तुझको अर्जुनको नकुलको सहदेवकोभी बुलावे २ तो क्याहोगा हेराजातुमने बिनाबिचार के यहऐसाबचन क्योंकहा कि रणभूमि में एकको ही मारकर कौरवों में राजाहोय ३ उस गदा हाथ में लेनेवाले दुर्य्योधनके युद्ध में तुमको समर्थ नहीं

मानताहूं यहां इसने तेरह बर्षतक भीमसेन के मारने की इच्छासे लोहेकीमूर्त्ति पर कृत्यासिद्ध करीहै हे भरतर्षभ हमलोगोंकी ओरसे अब कैसे कार्य्य होसक्ताहै ४ । ५ हेराजेन्द्र तुमने दयाकरके विना विचारे यहकर्म किया मैं युद्धमें उसके सन्मुख लड़नेवाला राजाओंमेंसे किसी राजाकोभी नहीं देखताहूं ६ सिवाय पांडव भीमसेन के कि वह भी अत्यन्त अभ्यास करनेवाला नहींहै यह द्यूत फिरभी आपनेप्रारंभ किया जैसा कि पूर्वमें कियाथा ७ हे राजा शकुनिको और तेरी बिषमताहै भीमसेन बलवान् औरसमर्थहै राजा दुर्य्योधन कर्मकर्त्ताहै ८ बलवान् और कर्मकर्त्तामें कर्मकर्त्ता अधिकहै हे राजा इस शत्रुकोतुमने सत्यमार्गमें प्रवृत्त किया ९ औरअपनेको बड़ी आपत्तिमें डालकर हमको भी दुःखमें संयुक्त किया कौन मनुष्य सब शत्रुओंको बिजय करके दुःखमें पड़हुये अकेले शत्रुकेसाथ १० प्राप्तहोनेवाले राज्यको हारताहै मैं लोकमें अब उस पुरुषको नहीं देखताहूं जो कि युद्धमें ११।१२ गदाहाथमें रखनेवाले दुर्य्योधनके विजय करनेको समर्थहो चाहे देवताभी होय वह भी विजय करनेको समर्थ नहींहै क्योंकि राजा दुर्य्योधन कर्म कर्त्ताहै हे भरतबंशी सो तुम किसप्रकार शत्रुसे कहतेहो कि तुम गदासेयुद्धकरो १३ और हमारे मध्यमें से एक को मारकर राजा हो भीमसेनको पाकर न्यायसे युद्धकरने वाले हम लोगोंको बिजयमें सन्देह है १४ क्यों कि यह बड़ा बलवान् दुर्य्योधन कर्म कर्त्ताहै फिर तुमने यह भी कहाहै कि हममें से एकको मारकर राजाहोगे निश्चय करके पांडु और कुन्तीकी सन्तान राज्य भोगनेवाली नहीं है केवल बड़े बनवास और बार बार भिक्षा मांगनेकेअर्थ उत्पन्न करीगईहै १५।१६ भीमसेन बोले हे मधुदैत्य के मारनेवाले यदुनन्दनजी व्याकुलता मतकरो अब उसी कठिन और दुष्प्राप्य शत्रुताके अन्तको पाऊंगा १७ अबमैं युद्धमें दुर्य्योधनको मारूंगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है हे श्री कृष्णजी धर्मराजकी पूर्ण और अचल विजय दिखाई देतीहै १८ यह मेरी गदा अर्द्ध भागमें बहुत भारीहै ऐसी दुर्य्योधनकी नहीं है हे माध-

वजी पीड़ामतकरो १६ मैं युद्धमें गदासे इसके साथ लड़नेको उ-त्साह करताहूं हे जनार्दनजी आप सब लोगमेरे युद्धके देखनेवाले रहो २० हे श्रीकृष्णजी मैं युद्धमें नानाप्रकारके शस्त्रधारी देवताओं समेत तीनों लोकोंसे भी युद्ध करसक्ताहूं तो अब दुर्य्योधनसे क्यों नकरूंगा २१ फिर प्रसन्न चित्त बासुदेवजीने उस प्रकार बार्त्ता करनेवाले भीमसेनकी प्रशंसाकरी और यह वचन बोले २२ हे महाबाहु यह धर्मराज युधिष्ठिर तुम्हारे आश्रित होकर निस्स-न्देह मृतक शत्रुवाला और अपनीप्रकाशमान लक्ष्मीको प्राप्तहै २३ युद्धमें धृतराष्ट्रके सब पुत्र तेरेही हाथसे मारेगये राजा राजकुमार और हाथी भी गिरायेगये २४ हे पाण्डुनन्दन कलिंग मगध पूर्वीय और गान्धार देशियों समेत कौरव लोग तुझको बड़े युद्धमें पाकर मारे गये २५ हे कुन्तीके पुत्र अब तू दुर्योधनको भी मार कर इस सागराम्बरा पृथ्वीको धर्मराजके ऐसे सुपुर्दकरो जैसे कि विष्णुने इन्द्रको सुपुर्दकरीथी २६ पापी दुर्योधन युद्धमें मुझको पा-कर नाशको पावेगा तुम इसकी जंघाको तोड़कर अपनी प्रतिज्ञा का पालन करोगे २७ हेभीमसेन यह दुर्योधन सदैव उपाय पूर्व्वक लड़ने के योग्यहै यह सदैव कर्मकर्त्ता बलवान् और युद्धमें कुशलहै २८ हे राजा इसके पीछे सात्यकी पांचाल और धर्मराज समेत सब पांडवों ने उस भीमसेनकी प्रशंसाकरी २६ अर्थात् सबनेही भीम-सेनके उसबचनकी प्रशंसाकरी उसके पीछे भयानक पराक्रमी भी-मसेन ३० उस सृंजियों समेत नियत सूर्य्यके समान संतप्त करनेवाले युधिष्ठिर से बोले कि मैं युद्धमें इसके सन्मुख होकर ल-ड़नेको उत्साह करताहूं ३१ यह नीच पुरुषयुद्धमें मेरेबिजयकरने को समर्थ नहींहै अब मैं हृदयमें रक्खेहुये कठिन क्रोधको ३२ धृत-राष्ट्र केपुत्र दुर्योधन पर ऐसे छोडूंगा जैसे कि खाण्डवबनमें अर्जुन ने छोड़ाथा हे पांडव अबमैं गदासे पापीको मारकर आपके हृदयमें रहने वाले भल्लको उखाडूंगा ३३ हे राजा अब प्रसन्न होजाओ हे निष्पाप अबमैं कीर्त्तिरूपी मालाको आपके कंठमें डालूंगा ३४

अब यह सुयोधन राज्यलक्ष्मी समेत अपने प्राणों को त्यागेगा और राजा धृतराष्ट्र मेरे हाथसे मारेहुये पुत्रको सुनकर ३५ उस दुष्ट कर्मको स्मरण करेगा जोकि शकुनी की बुद्धिसे उत्पन्न होकर श्रेष्ठ भरतर्षभ लोगोंपर गिरा यह कहकर भीमसेन गदाको उठाकर खड़ाहुआ ३६ और युद्धके निमित्त उसको ऐसे बुलाया जैसेकि इन्द्रने वृत्रासुरको बुलायाथा आपका बड़ा पराक्रमी पुत्र उसके बुलाने को न सहता हुआ ३७ शीघ्रता से ऐसे सन्मुख हुआ जैसेकि मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सन्मुख जाताहै सब पांडवोंने गदा हाथमें रखने वाले और सन्मुख नियत आपके पुत्रको ३८ शिखर रखने वाले कैलासके समान देखा अपने यूथसे जुदा हाथीके समान अकेले बड़े बलवान् दुर्योधनको पाकर ३९ सब पांडव अत्यन्त प्रसन्नहुये दुर्योधनको ब्याकुलता भय ग्लानि और पीड़ा ४० नहीं हुई और युद्धमें सिंहके समान नियतहुआ हे राजा तब भीमसेन ने उस गदा उठानेवाले शिखर धारी कैलासके समान दुर्योधन को देखकर ४१ यह बचनकहाकि राजाधृतराष्ट्रने और तुमने जो हमारे साथकिया ४२ व जोबारणावत नगरमें किया उसपापकर्म को स्मरणकरो और जोरजस्वला द्रौपदीको सभामें दुःखीकिया ४३ औरजो शकुनिकी बुद्धिके निश्चयसे राजायुधिष्ठिर को द्यूतमें छलसे बिजयकिया और हे दुर्बुद्धी इनके सिवाय जो २ तुमने अन्य पापों को ४४ । ४५ निरपराधीपांडवोंके साथकियाहै उसके बड़े फल को देखकर तेरे कारणसे मृतक बड़े यशवान् गांगेय हमसबके पितामह भरतर्षभ भीष्मजी शरशैयापर सोतेहैं प्रतापवान् शल्य कर्ण और द्रोणाचार्य्यजी मारेगये ४६ और शत्रुताका आदिकारण वह शकुनि भी युद्धमेंमारागया और सेनाके लोगोंसमेततेरेशूरभाई पुत्रादिकभी मारेगये ४७ और युद्धमें परांमुखन होनेवाले शूरवीर राजालोगमारे गयेइनकेसिवाय अन्य २ हजारों उत्तमक्षत्रीमारेगये ४८ उसप्रकार द्रौपदीके दुःखकाउत्पन्न करनेवालापापीप्रातकामी मारागयाकुलका नाशकरनेवाला नीचपुरुष अकेला तूही शेषरहगयाहै ४९ अबतुझको

गदासे निस्सन्देह अवश्य मारूंगा हे राजा अबमैं युद्धमें तेरे सब अहं-
कारको नाश करूंगा और बिजयकी बड़ी आशा समेत पांडवोंके साथ
तेरे दुष्टकर्मकोभी दूर करूंगा ५० दुर्य्योधनने कहा हे भीमसेन अधिक
वार्त्तालाप करनेसे क्यालाभहै अबतूमेरे साथयुद्धकर मैं तेरे युद्धकरने
के उत्साहको दूरकरूंगा ५१ हे पापी हिमाचलके शिखर के समान
बड़ी गदा को लेकर गदा युद्ध में नियत होनेवाले मुझको क्यानहीं
देखता है ५२ हे दुष्टात्मा अब कौनशत्रु अथवा देवताओं में इन्द्र
भी न्याय से युद्ध करनेवाले मुझ गदाधारी के मारने को उत्साह
करताहै ५३ हे कुन्तीके बेटे जलसे खाली शरद ऋतुके बादल के
समान निरर्थक क्यों गर्जताहै युद्धमें अपने बलको दिखलाओ जहां
तक तुझसे पराक्रम होसके उस सबको दिखलाव ५४ बिजयाभि-
लाषी सब पांडवोंने सृंजियों समेत उसके उस बचनको सुनकर उस
बचनकी प्रशंसाकरी ५५ हे राजा मनुष्योंने उसहाथीके समानमत-
वाले राजा दुर्य्योधनको प्रत्यंचा के शब्दोंसे फिर प्रसन्न किया ५६
वहां हाथी चिग्घाड़े घोड़े बारंबारही से और इच्छावान् पांडवोंके
शस्त्रप्रकाशित हुये ५७॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज उसबड़े भयकारी युद्धके वर्त्तमान होने
और सबमहात्मा पांडवोंके बैठजाने १ और उनदोनों शिष्योंको युद्ध
नियतहोनेपर तालध्वजाधारी हलधर बलदेवजीभी उसयुद्धको सुन
करआपहुंचे २ उनको देखकरकेशवजीसमेत सबपाण्डवलोगअत्यन्त
प्रसन्न हुये उनकेसमीप जाकर बड़े आदर मान समेत लाकर बि-
धिपूर्वक पूजन किया ३ हे राजा पूजन करनेके पीछे सबलोग यह
बचन बोले कि हे बलदेवजी युद्धमें दोनों शिष्योंकी सावधानीको
देखो ४ तब बलदेवजी पांडवों समेत श्रीकृष्णजी को और हाथमें
गदालिये सन्मुख नियत दुर्योधनको देखकर बोले ५ कि अबमुझ

तीर्थयात्रा करनेवालेके बयालीसदिन व्यतीतहुयेपुण्यनक्षत्रमें गयाहूं और पितृलोक सम्बन्धी श्रवण नक्षत्र में फिर लौटकर आयाहूं अर्थात् इस नक्षत्रमें शरीर त्याग करनेवालों को दिव्य शरीर और स्वर्ग मिलताहै ६।७ हे माधव [illegible]चय करके मैंअपने शिष्यकेगदा युद्धके देखनेका अभिलाषीहूं इसके पीछे गदाहाथमें रखनेवाले रण भूमिमें वर्त्तमान दोनोंबीर दुर्य्योधन औरभीमसेन अत्यन्त शोभायमानहुये तदनन्तर राजायुधिष्ठिरनेहलधारी बलदेवजीसे मिलकर ८ बुद्धिके अनुसार स्वागत पूर्व्वक उनकी कुशलक्षेमको पूछा बड़े धनुषधारी अत्यन्त प्रसन्न प्रीतिमान् और कीर्त्तिमान् श्रीकृष्णजी और अर्जुनभी नमस्कार करके मिले हे राजा उसी प्रकारशूरनकुल सहदेव और द्रौपदीके पांचों पुत्र ६।१० बड़ेबलवान् बलदेवजीको नमस्कार करके नियतहुये हे राजा इसके पीछे बलवान् भीमसेन और आपकेपुत्र ११ गदा उठानेवालोंने बलदेवजीका पूजन किया वहांपर वह सब लोग चारोंओरसे स्वागत पूर्व्वक प्रतिष्ठाकरके१२ बलदेवजीसे बोले कि हे महाबाहु युद्धको देखो इस प्रकार से सब राजाओंने बलदेवजीसे कहा १३ तब बड़े तेजस्वी बलदेवजीने पांडव सृंजी आदि सब महात्मा राजाओंसे मिलकर उनकी कुशल क्षेम पूछी १४ इस प्रकार उन सबने मिलकर बलदेवजीसे चित्तके आनन्दको पूछाफिर बलदेवजीने सबमहात्मा क्षत्रियोंकोनमस्कारादिक करके १५ और अवस्थाके अनुसार कुशलक्षेमके शब्दोंसेयुक्त बार्त्तालाप करके बड़ीप्रीति पूर्व्वक श्रीकृष्ण और सात्यकीसेमिलाप किया १६ और उन दोनोंको मस्तकपर सूंघकर कुशल मंगल को पूछा हे राजा उन दोनोंनेभी उनगुरूजीका विधि पूर्व्वक ऐसेपूजन किया १७ जैसे कि प्रसन्न चित्त इन्द्र और उपेन्द्र ब्रह्माजीका पूजन करतेहैं इसके पीछे धर्मकेपुत्रयुधिष्ठिर उन शत्रुविजयी बलदेवजीसे बोले १८ कि हे बलदेवजी दोनों भाइयों के इस बड़े युद्धको देखो यह सुनकर हे भरतबंशी उन महारथियों से प्रतिष्ठा पूर्व्वक पूजित अत्यन्त प्रसन्न महाबाहु श्रीमान् बलदेवजी उनके मध्यमें बैठगये

नीलाम्बर गौरवर्ण बलदेवजी राजाओंके मध्यमें नियत होकर ऐसे शोभायमानहुये १९।२० जैसेकि स्वर्गमेंनक्षत्रोंकेसमूहोंसे घिराहुआ चन्द्रमा शोभित होताहै २१ हे राजा इसके पीछे आपके उनदोनों पुत्रोंका युद्ध बड़ा कठिन और रोमहर्षण करनेवाला शत्रुताका अन्त करनेवाला हुआ २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवागमनेपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

संजयबोले प्रथमही उस युद्धके वर्त्तमान होनेपर जबप्रभुबलदेव जी केशवजीसे पूछकर वृष्णियोंके साथ यह कहकरगये १ कि हेकेशवजी मैं पांडवोंको और दुर्योधनकी सहायता नहीं करूंगाजैसे आयाहूं वैसेही चलाजाऊंगा २ अर्थात् तब शत्रुओं के मारनेवाले बलदेवजी ऐसा कहकर चलेगये फिर जन्मेजयने कहा कि हे ब्रह्मन् आप फिर उनके आगमनके वृत्तांतको मूलसमेत वर्णन करने को योग्यहो कैसे सन्मुख वर्त्तमान हुये और कैसे युद्धको देखा हे श्रेष्ठ आप वर्णन करनेमें समर्थ हो ४ वैशंपायन बोले कि उपप्लवी स्थानपर महात्मा पांडवों के निवास करने पर सब शरीरधारियों के आनन्दके अर्थ सन्धिकेनिमित्त मधुसूदनजी धृतराष्ट्र के सन्मुख भेजेगये हे महाराज श्रीकृष्णजीने हस्तिनापुरमें पहुंच धृतराष्ट्र से मिलकर५।६ सत्य२सबकी वृद्धिकाकरनेवालाबचनकहा परन्तुबहुत सा कहनेपर धृतराष्ट्रने उसको नहीं किया ७ तब यहांपुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी सन्धिको न पाकरउपप्लवीस्थानकोआये ८ अर्थात् वहमधुसूदनजी दुर्योधनसे बिदाहोकर उपप्लवी स्थानपर आकर सन्धिकेन होनेसे पांडवोंसे यहबचन बोले ९ किकालसे प्रेरित होकर कौरव लोग मेरेबचनको नहींकरते हैं हे पांडवो तुमसेरे साथ पुष्यनक्षत्रमें यात्राकरो १० उसके पीछे सेनाओंके बिभक्त होनेपर बलवानों में श्रेष्ठ बड़े साहसीबलदेवजी अपनेभाइ श्रीकृष्णजीसेबोले ११ हेमहाबाहु मधुसूदनजी उन्होंकोभी सहायताकरोपरन्तुश्रीकृष्णजीने उनके

उस वचनको नहींकिया १२ इसकेपीछे क्रोधसेपूर्णचित्तबड़ेयशवान् यदुनन्दन बलदेवजी सरस्वती तीर्थ को यात्राकरगये १३ अर्थात् अनुराधा नक्षत्र के प्रारंभमें यादवोंसमेत चलेगये फिर शत्रुबिजयी कृतबर्मा दुर्योधनमें आकर मिला १४ और साल्यकी समेत बासुदेवजी पांडवोंमें संयुक्त हुये शूर बलदेवजी के जाने पर मधुसूदनजी पुष्य नक्षत्रमें १५ पांडवोंको आगे करके कौरवोंके सन्मुख गये फिर चलते हुये मार्गमें नियत बलदेवजीने सेवकोंको आज्ञाकरी १६ कि तीर्थयात्रामें सब सामान और शस्त्रादिकोंको लाओ और द्वारकासे अग्नियों समेत यज्ञकराने वालोंकोभी लाओ १७ सोना चांदीगौ वस्त्र हाथी रथ खिच्चर ऊंट आदि सवारियां १८ और सब प्रकार के सामानको तीर्थयात्राकेनिमित्त शीघ्रलाओ और तुम शीघ्रतासे चलकर सरस्वतीके तटपर आओ १९ और सैकड़ों उत्तम वेदपाठी याज्ञिक ब्राह्मणों को भी लाओ तब कौरवों के नाशहोने पर वह बड़े बलवान् बलदेवजी इस प्रकारकी आज्ञा अपने नौकरोंकोदेकर तीर्थयात्राकोगये और चारोंओरके सरस्वती तीर्थोंकी यात्राकरी २१ ऋत्विज, मित्रवर्ग अन्यश्रेष्ठ २, ब्राह्मण, रथ, हाथी, घोड़े, नौकर, चाकर २२बैल खिच्चर और ऊंटोंसेयुक्त बहुतसीसवारियोंसमेत थकेथकावटसे पीड़ामान शरीर बालक, वृद्ध, और आकांक्षा करने वालोंके पूजनकेलिये दानकेयोग्य नानाप्रकारकी अनेक वस्तुओंको प्रत्येक स्थानपर बर्त्तमान् किया २४ हे राजा तब जोजो ब्राह्मण जहांजहां भोजन करनेकीइच्छा करताथा वहांवहां उसके अभीष्ट भोजनको बर्त्तमानकिया२५ हेराजा वहां बलदेवजीकी आज्ञासे जहांतहां सेवकअहल्कारलोग चारोंओरको खानपानके पदार्थोंको करतेथे२६ वहां सुखचाहनेवाले वेदपाठी ब्राह्मणोंके पूजनकेलिये बहुमूल्य वस्त्र पलंग और उनके बस्त्रतैयार किये २७ हेभरतवंशी जहांपर जो ब्राह्मण अथवा क्षत्रीभी जिसबस्तुको चाहताथा वहां पर उसकी अभीष्टवस्तु तैयारहुई दिखाईपड़ी २८ हेभरतर्षभ उस समयसब लोग बड़े आनन्द और सुखपूर्वक जातेथे और उत्तम उत्तम स्थानोंपर निवास

करतेजातेथे वहां मनुष्योंने चलनेवालोंकी सवारियोंको और प्यासोंकी पानकरनेवाली वस्तुओंको २९ और क्षुधायुक्तोंके स्वादिष्ट भोजन वस्त्रऔर भूषणोंको बर्त्तमान किया ३० हेवीर राजाजन्मेजय तब चलनेवाले मनुष्योंका वहमार्ग सबका सुखदायी होकर स्वर्गके समान शोभायमान हुआ ३१ सदैव प्रसन्न लोगोंसे संयुक्त स्वादिष्ट भोजन रखनेवाली मंगलकारी मार्गमें बर्त्तमानदूकानोंसे और बेंचनेकेयोग्य वस्तुरखनेवाले नाना प्रकारके सैकड़ों मनुष्यों से व्याप्त अनेक प्रकारके वृक्ष बल्लियोंसे युक्त भांतिभांतिके रत्नों से अलंकृतथा ३२ हे राजा उसके पीछे महात्मा नियम में नियत चित्त यादवोंमें बड़ेवीर प्रसन्नचित्तबलदेवजीने धर्मकीवृद्धिके कारण तीर्थोंपर ब्राह्मणोंके निमित्त धन और यज्ञकी दक्षिणाको दिया ३३ दूधदेनेवाली सुन्दर पोशाकयुक्त सुवर्णस्वङ्गी गौवें और नानाप्रकारके देशोंमें उत्पन्न होनेवाले उत्तमघोड़े सवारियां और शुभदासोंको ब्राह्मणोंके अर्थ दानकिया ३४ बलदेवजीने रत्न, मणि, मोती, मूंगा श्रेष्ठ सुवर्ण शुद्धचांदी औरलोहेतांबेके पात्रभी बड़ेबड़े उत्तम ब्राह्मणों को दानकिये ३५ इसप्रकार उसमहात्माने सरस्वतीके उत्तमतीर्थों पर बहुतसा धनदिया वह अनुपम प्रभाववाले उत्तम वृत्तीवालेबलदेवजी क्रम पूर्वक कुरुक्षेत्रको गये ३६ जन्मेजय बोले हे द्विपादोंमें श्रेष्ठ बैशंपायनजी सरस्वतीके तीर्थोंकेगुण उत्पत्तिफल और यात्रा कीविधिकोभी मुझसे कहो ३७ हेबक्काम्बर ब्रह्मज्ञानी समर्थ बैशंपायनजी मुझको बड़ाही उत्साहहै आपतीर्थोंको क्रमपूर्वक बर्णन कीजिये ३८ बैशंपायन बोले हेराजेन्द्र राजा जन्मेजय तीर्थोंके क्रम सर्वगुण और उत्पत्तिकोमैं संपूर्णताके साथ तुझको सुनाताहूं तू उस धर्मकीवृद्धिकरनेवाले माहात्म्यकोमनसेसुन ३९ हेमाहाराज प्रथम वह यादवोंमें बड़े वीर बलदेवजी ऋत्विज मित्र और ब्राह्मणों समेत उस प्रभासक्षेत्र नाम उत्तम और पवित्र तीर्थकोगये जिसपर कि चन्द्रमा यक्ष्मानामरोग से दुःखी होकर गयाथा ४० और शापसे निवृत्त होकर तृतीयाके दिनसे सब जगत् को प्रकाशित

करताहै इस रीतिसे उस चन्द्रमाकी अत्यन्त प्रकाशित किरणोंसे उत्पन्नहुआ वह अत्यन्त उत्तम तीर्थहै और इसी हेतुसे उसका नाम प्रभास क्षेत्र होगया है ४१ जन्मेजय ने पूछा कि भगवान् चन्द्रमाजीको कैसे यक्ष्मा रोग उत्पन्नहुआ और कैसेवहरोग उसअत्यंत उत्तमतीर्थ के प्रभावसे नष्ट हुआ ४२ वह चन्द्रमा किस प्रकार उस तीर्थ में स्नानकरके फिर वृद्धियुक्त हुआ हे महामुनि उस सबवृत्तान्तको व्योरे समेत वर्णनकरो ४३ वैशंपायन बोले हे राजा दक्षकी जोवह कन्या उत्पन्नहुई उनमेंसे सत्ताईस कन्या चंद्रमाको दीं ४४ वह कन्या नक्षत्र योगमें अधिकारी होकरउनकी संख्याके निमित्त हुईंहेराजेन्द्र जोकि उसशुभकर्म करनेवाले चन्द्रमाकी स्त्रियांथीं ४५ वह सबदीर्घ नेत्रा और स्वरूपमें अनुपमथीं उन सत्ताईसोंमें रोहिणी स्वरूप और लावण्यतामें सबसे अधिकथी ४६ इससे उसभगवान् चन्द्रमाने उसीमें अधिक प्रीतिकी वही उसकेचित्तको प्यारीहुई इसहेतुसे सदैव उसीकोभोगा ४७ हेराजेन्द्र चंद्रमा पूर्वसमय में रोहिणीके ही समीप अधिक स्थितरहा उसहेतुसे महात्माचन्द्रमाको नक्षत्र नामसे विख्यात वह सबस्त्रियां क्रोधयुक्तहुईं ४८ और बड़ी सावधानों ने अपनेपिता दक्ष प्रजापति के पास जाकर कहा कि चन्द्रमा हमारे पास कभीनिवास नहींकरता सदैव रोहिणीको चाहताहै ४९ हेसृष्टिके स्वामीसोहमसब उचितआहार करनेवाली और तपकरनेमें प्रवृत आपके सन्मुख निवास करेंगी ५० तबदक्षप्रजापतिजो उन सबके बचनोंको सुनकर चन्द्रमा से बोले कि तुम सब स्त्रियोंमें समान भावसे बर्ताव करो इससे तुमको बड़ा अधर्म स्पर्श नहीं करेगा ५१ फिर दक्षजी उन सबसे बोलेकि चन्द्रमाके पासजाओ चंद्रमा मेरी आज्ञासे सबकेपास बराबर निवास करेगा ५२ तब उसप्रकारसे बिदाकीहुई वह सब स्त्रियां शीतांशु चन्द्रमा के भवनकोगईं हेराजा इसपरभी भगवान् चन्द्रमा उसीप्रकार ५३ बारंबार प्रीति करनेवाले होकर रोहिणीकेही पास रहतेथे इसके अनन्तर उन सबोंने फिर अपनेपितासेकहा ५४ कि हम सबआप

की सेवामें प्रवृत्त होकर आपकेही पास निवास करेंगी क्योंकि चन्द्रमा हमारे पास निवास नहींकरताहै उसने आपकेभी बचनको नहींकिया ५५ दक्षजीने उन सबके उस बचनको सुनकर फिर चन्द्रमासे कहा कि हे अत्यन्त प्रकाशमान तुम स्त्रियोंमें बराबरबरतावकरो जो मेराकहना न करोगे तोमैं तुझको शापदूंगा ५६ फिर भगवान् चन्द्रमा दक्षके वचनको अनादर करके रोहिणीकेही पास निवासी हुये इसहेतुसे वहस्त्रियां फिर क्रोधयुक्तहुईं ५७ तबउन्हों नेजाकर शिरसे प्रणाम करके पितासे कहा कि चन्द्रमा हमारेपास निवास नहीं करताहै अब आपही हमारे रक्षकहूजिये ५८ भगवान् चन्द्रमासदैव रोहिणीके पासहीनिवास करतेहैं आपके बचन को कुछ नहीं गिनतेहैं और हमपर प्रीतिकरना नहीं चाहते हैं ५९ इस कारणसे हमसबकी ऐसी रक्षाकरो जिसके भयसे चन्द्रमा हम को अपने पास ठहरावे हे राजा क्रोधयुक्त भगवान् दक्षप्रजापतिने उसको सुनकर क्रोधसे यक्ष्मानाम रोगको ६० चन्द्रमाके ऊपर छोड़ा तब वह चन्द्रमामें प्रवेश करगया फिर यक्ष्मा रोगसे ग्रसित शरीर होकर वह चन्द्रमा प्रतिदिन क्षीणतासे युक्तहुये ६१ हे महाराज जन्मेजय चन्द्रमाने नानाप्रकारके यज्ञोंसे पूजन करके उस यक्ष्मारोगके दूर करनेके अनेक उपाय भी किये ६२ परन्तु शापसे निवृत्त नहीं हुआ और सदैव क्षीणताकोही पाया तब चन्द्रमाके क्षीणता युक्त होनेपर औषधियां पृथ्वीपर उत्पन्न नहीं हुईं ६३ सब ओरसे सब रस स्वादुओंसे रहित और निर्बल हुये और औषधियों का बिनाश होनेपर जीवोंका भी नाशहुआ ६४ चन्द्रमाके बिनाश युक्तहोनेपर सब सृष्टिकेजीव दुर्बल शरीर हुये इसके पीछे सबदेवताओंने मिलकर चन्द्रमासे कहाकि आपका यह ऐसा रूप कैसे होगयाहै कि प्रकाशनहीं करता अब जिनसे तुमको बड़ाभयहै उनसब कारणोंको आपहमसे कहो ६५।६६ जब हमसे सब वृत्तान्तकहोगे तब हम सब देवता उसका उपाय करेंगे देवताओंके इनबचनोंको सुनकर चन्द्रमाने उनसे ६७ अपने शापकाकारण

और यक्ष्मारोग होने का सब वृत्तान्त कहा तब देवता चन्द्रमाके वृत्तान्त को सुनकर दक्षके पासजाकर बोले ६८ कि हे भगवन् आपचन्द्रमाके ऊपर प्रसन्नहूजिये और अपनेशापको लौटाइये यह चन्द्रमानाशमान होकर कुछ शेष बाकीरहा दीखताहै ६९ हेदेवता-ओंके ईश्वर उसके विनाशमान होनेसे सृष्टिभी नाश युक्त होगई है बोरुध औषधी और नानाप्रकारके बीजोंने बिनाशको पाया ७० उनके नाशसे हमारानाश है और हमारे बिना जगत कैसाहोगा हे लोक गुरू इस बातको जानकर आप कृपाकरने के योग्यहो ७१ इसप्रकारके देवताओंके वचनोंको सुनकर प्रजापतिजीने देवताओं से यह बचन कहा कि मेरा बचन विपरीत करना उचित नहींहै ७२ हे महाभागो मेराशाप इसोवहानेसे लौटेगा कि चन्द्रमा सदैव सब स्त्रियोंमें बराबर बरतावकरे ७३ हे देवता लोगो सरस्वतीके उत्तम तीर्थमें ग्रीवापर्य्यन्त जलमें गोते लगानेवाला होकर फिर वृद्धियुक्त होगा यह मेरा बचन सत्यहै ७४ चन्द्रमा सदैव आधेमासतक क्षीणता को पावेगा और आधेमहीने वृद्धिको पावेगा यह मेरा वचन भी सत्यहै ७५ पश्चिमीय समुद्रके जिस स्थानपर कि सरस्वती समुद्र का मिलापहै वहांपर जाकर देवताओंके ईश्वरका आराधन करके तेजको पावेगा ७६ इसके पीछे वह चन्द्रमा ऋषिकी आज्ञानुसार सरस्वती तीर्थको गये प्रथम सरस्वती तीर्थको जाकर फिर प्रभास क्षेत्रको गये ७७ अमावास्याकेदिन उसमें स्नान करके बड़ेतेजस्वी और उत्तम कान्तिवालेने लोकों को प्रकाशित किया और किरणों की शीतलताको पाया ७८ हे राजेन्द्र फिर सब देवता प्रभासक्षेत्र नाम उत्तम तीर्थको पाकर चन्द्रमा समेत दक्षजीके सन्मुख हुये इस के पीछे प्रजापतिजीने सब देवताओंको बिदाकिया फिरप्रसन्नचित्त भगवान् प्रजापति ऋषि चन्द्रमा से यह वचनबोले ७९।८० कि हे पुत्रस्त्रियोंका अपमान औरब्राह्मणोंका अपमान तू कभीमतकर अब जाओ और सदैव प्रवृत्त होकर मेरी आज्ञाको करो ८१ हे महाराज फिर उनसे बिदाहोकर वह चन्द्रमा अपने लोक को गया और सब

सृष्टि भी प्रसन्न होकर पूर्व्वके ही समान फिर नियतहुई ८२ यह सब चन्द्रमाके शापका और शाप से निवृत्त होनेका वृत्तान्त और प्रभासतीर्थका सब तीर्थोंमें अत्यन्त श्रेष्ठतर होनेका भी उत्तमवृत्तान्तमैंने तुझसे कहा ८३ हे महाराज श्रीमान् चन्द्रमा सदैव अमावास्याके दिन प्रभासनाम उत्तम तीर्थमें स्नान करके वृद्धिको पाता है ८४ हे राजा इस हेतुसे इस तीर्थको प्रभासक्षेत्र जानतेहैं चन्द्रमाने उसमें गोते लगाकर बड़े प्रकाश को पाया ८५ इसके पीछे वलवान् और अजेय बलदेवजी उसचमस्होद्भेद तीर्थको गये जिस को लोग चमसोद्भेद तीर्थकहते हैं ८६ फिर हलायुध बलदेवजी वहां उत्तम दानोंको देकर एक रात्रि निवासकर बिधि पूर्वक स्नान करके ८७ शीघ्रता करनेवाले केशवजी के बड़े भाई उस उदपान नाम तीर्थको गये जहां पर कि बड़े प्राचीन और कल्याणकारी उत्तम फलको पाया ८८ हेराजेन्द्र जन्मेजय औषधियोंसे औरपृथ्वी के स्वच्छता युक्त सचिक्कण होनेसे सिद्धलोग गुप्त होनेवाली सरस्वतीको भी जानतेहैं ८९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांचन्द्रशापविमोचनेषष्ठोऽध्यायः६ ॥

सातवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे महाराज इस कारण से बलदेवजी यशवान त्रितसीके उदपान तीर्थको जोकि नदीमें वर्त्तमानथा गये १ वहां वहुत साधन दान पुण्यकर ब्राह्मणोंको पूज और उसीतीर्थमें स्नान करके बलदेवजी अत्यन्त प्रसन्न हुये २ वहां पर वह बड़ा तपस्वी त्रित धर्मका करनेवाला बड़ा पूर्ण सिद्धहुआ जिस महात्माने कूपमें निवास करके अमृत को पानकिया ३ वहां इसको उसके दोनों भाई कूपमें छोड़कर अपने २ घरोंको चलेगये इसके पीछे ब्राह्मणों में श्रेष्ठत्रितने उनदोनोंको शापदिया ४ जन्मेजयबोला हेब्रह्मन् किस प्रकारका कूपथा और वह बड़ा तेजस्वी उसकूपमें किसरीतिसेगिरा और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ दोनों भाइयोंने उसको क्यों त्याग किया ५

और दोनोंभाई उसको किसप्रकार कूपमेंही छोड़कर घरोंको चले गये और कैसे अमृतको पान किया हे ब्रह्मन् जो उसको आपमेरे सुननेके योग्यमानते होतो मुझसे वर्णनकरो ६ वैशंपायन बोले हे राजा सतयुगमें तीन भाई मुनिहुये जोकि एक द्वित और त्रितनाम से विख्यात सूर्यके समान तेजस्वीथे ७ सब प्रजापतिके समान सन्तानवाले तपस्याके द्वारा ब्रह्म लोकको विजय करनेवाले और ब्रह्मवादीथे ८ धर्ममें प्रीतिरखनेवाला उनका पितागौतम उन्होंके तप, नियम, और जितेन्द्रीपने से सदैव प्रसन्न रहताथा ९ फिर वह भगवान् गौतम ऋषि बहुत काल पीछे उन्होंकी प्रीतिको पाकर अपने योग्य स्थानको गये १० हे जन्मेजय जोजो राजा उसमहात्माके यजमानथे उन सबने उन गौतमजीके स्वर्गजानेपर उनके पुत्रोंको पूजा ११ फिर उनमें से उसत्रितने अपनेकर्म और वेदपाठ आदिक आचरणोंसे वैसीही प्रतिष्ठाकोपाया जैसी कि उसकेपिताने पाईथी १२ उसीप्रकार पवित्र लक्षणवाले महाभाग सबमुनियोंने भी उस महाभागको ऐसा पूजा जैसे कि पूर्वसमयमें उसके पिताको पूजतेथे १३ हेराजा इसके अनन्तर किसीसमय एक औरद्वितनाम उसकेदोनों भाइयोंने यज्ञके और धनकेनिमित्त इच्छाकरी १४हेशत्रुके तपानेवाले उनदोनोंका यह विचारहुआ कित्रितकोलेकर सबयजमानोंको इकट्ठाकर दक्षिणा में गौवेंलेकर १५ बड़े फलवाले यज्ञको पाकर प्रसन्नतासे अमृतको पानकरेंगे हेराजातीनों भाइयोंने वैसेही किया १६ फिर वह गोरूप दक्षिणाके निमित्तसब यजमानोंकेपास उसी प्रकार घूमकर यजमानोंको यज्ञकराके १७उस यज्ञकर्मकेद्वारा विधिपूर्वकबहुतसेधन और पशुओंकोलेकर वहसबमहर्षीपूर्वदिशाको गये १८हेमहाराज प्रसन्नचित्तत्रित उन्होंके आगेजाताथा और पीछे पीछेएक औरद्वितयहदोनोंपशुओंको हांकतेहुयेजातेथे १९ उसपशुओं केबड़े समूहको देखकर उनदोनोंको चिन्ताहुईकिइसत्रितकेबिना यह गौ किसप्रकारसे हमारी होसक्तीहैं हेराजा यह विचारकरएक और द्वितदोनों पापीभाइयोंने परस्पर मिलकर यह बचनकहा उसको

समझो २०।२१ कि त्रितयज्ञमें सावधान है औरवेदोंकाभीपूर्णज्ञाताहैइस
सेवह त्रित बहुतसी अन्य२गौओंको प्राप्तकरलेगा२२इस हेतुसेहम
दोनों साथहोकर गौओंको हांकतेहुयेचलदें और हम दोनोंसे पृथक
होकर त्रितभी स्वेच्छापूर्व्वक जाय २३ रात्रिमें चलने वाले मार्गमें
नियत उनके आगे एकभेड़िया वर्त्तमानहुआ औरवहांही सरस्वती
केकिनारेपर एकबड़ा कूप था २४ इसकेअनन्तर त्रित मार्गमें नियत
भेड़ियेको देखकर बड़ाभयभीत होकर हटा और उसकूपमें गिरपड़ा
२५ जोकि बड़ा अगाध घोर और सबजीवोंके भयका उत्पन्न करने
वालाथा हेमहाराज तबतोमुनियोंमें श्रेष्ठ कूपमेंनियत त्रितने२६ पीड़ा
केशब्द किये और उन दोनोंभाई मुनियोंनेभी सुने तब एकओर छिपे
दोनोंभाई उसकूपमें पड़ेहुये त्रितको जानकर२७ भेड़ियेकेभयसेऔर
लोभसे उसको उसी कूपमें पड़ाहुआछोड़करचलेगये पशुओंको पाने
वाले और दोनों भाइयोंसे त्यागेहुये उसबड़े तपस्वी २८ त्रितने उस
निर्जलधूलसे युक्त तृणोंसेआच्छादित कूपमें २९ अपनेकोइसप्रकार
डूबादेखकर जैसेकि पापी नर्कमें डूबाहोय तबउसज्ञानीमृत्युसे भय
भीत और अमृतपान न करनेवालेने बुद्धिसेविचारकिया३० कि यहां
परनियत होकर मैंकैसे अमृतकापानकरसक्ताहूं हेभरतर्षभ राजा
जन्मेजयउसबड़ेतपस्वीनेउसकूपकेभीतर३१इसप्रकार निश्चय कर
वहां दैवयोगसेलटकतीहुई एकलताकोदेखाउसकेपीछेधूलसे आच्छा
दित कूपमें मुनिने जलको ध्यानकरके ३२ अग्नियोंको कल्पनाकरके
अपनेको होता कल्पनाकिया तबउसबड़ेतपस्वी मुनिने उस बीरुध
को अमृत कल्पनाकरके ३३ यजुर्वेद और साम वेदको ऋचाओं को
चित्तसेध्यानकिया हेराजा उसनेकंकड़ोंको खांड़बनाकरचूर्णकिया३४
और जलको घृतबनाकर देवताओं के भागोंको विचार किया और
अमृतके यज्ञको करकेबड़ी ध्वनिकरी ३५ हेराजा फिर उस त्रितकी
वहशब्द स्वर्गमें ऐसेपहुंचा जैसेकि ब्रह्मवादियोंसे कियाहुआ पहुंच
ताहै इसरीतिसे उसयज्ञकोप्राप्त३६ होनेवालेमहात्मा त्रितके यज्ञके
वर्त्तमान होनेपर सब स्वर्ग व्याकुलहोगया परन्तुकोई कारण नहीं

जानागया ३७ उसकेपीछे देवताओंकेपुरोहित बृहस्पतिजीनेभी उस बड़े शब्दको सुनकर सबदेवताओंसे कहा ३८ कि हेदेवताओ त्रित कायज्ञ वर्त्तमानहै उसमेंचलो वह वड़ातपस्वी क्रोधयुक्तहोकरदूसरे देवताओंकोभी उत्पन्न करसक्ताहै३९ उनके उसबचनको सुनकरसब देवता वहां गये जहांत्रितका वह यज्ञवर्त्तमानथा४० उनदेवताओंने उस कूपमें जाकर जहां वह यज्ञकर्मोंमें दीक्षित त्रितवर्त्तमानथा उस महात्मा कोदेखा४१ बड़ीशोभासेयुक्त उसमहात्माको देखकर देवता लोग उसमहाभागसे बोले कि भागके चाहनेवाले हमसब देवताव-र्त्तमानहैं ४२ इसकेपीछे वह ऋषि देवताओंसेबोला कि हेदेवताओ इस भयकारी कूपमें डूबाहुआ बुद्धिसेहीनमुझकोदेखो४३ हेमहाराज इसके अनन्तर त्रितने मंत्रोंसे युक्त भागोंको विधि पूर्वक उनकेअर्थ दिया तबवह प्रसन्नहुये ४४ उसके पीछे विधिपूर्वक मिलेहुयेभागों को पाकर प्रसन्नचित्त देवताओंने उसको वह वरदियेजिनको कि वह मनसे चाहताथा ४५ तबउसने इनवरोंको मांगाकि हेदेवताओप्रथ-मतो मुझको इस कूपसे निकालकर रक्षाकरो फिर यह वरदानकरो किजो इसकूपमेंस्नानआचमन करैवह अमृतपानकरनेवाले की गति कोपावे ४६ हे राजाउस कूपमें तरंगोंकी रखनेवाली सरस्वती ऊपर आईउनसे उछालाहुआ वहऋषिदेवताओंकोपूजताहुआ ऊपरनियत हुआ ४७ हेराजाफिर देवता इसप्रकारसेकहकरअपने लोकोंकोगये तबप्रसन्नचित्तत्रितभी अपनेस्थानकोआया ४८क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी त्रितने उन दोनों ऋषि भाइयोंको पाकर कठोर बचनकहे औरशाप दिया ४९ किजोतुम पशुओंके लोभमें युक्तहोकर मुझको छोड़कर भागआये उस हेतुसेबगलेके समान भयानकरूप चारोंओरकोघूमने वाले औरडाढ़ रखनेवाले होगे ५० मेरेशापकेद्वारा इसपापकर्मके कारणसे तुमऐसी दशावाले होगे औरतुमदोनोंकी सन्तानगोलांगूल रीछ और बन्दर होगी ५१हेराजातब उसके इसप्रकार कहनेपर उस सत्यबक्ताके कहतेही वहदोनों उसीक्षणमें उसरूपवाले दिखाई पड़े ५२बड़ेपराक्रमीबलदेवजीने वहांभीआचमन और स्नानपूर्वकनाना

प्रकारकेदानदेकर ब्राह्मणोंकोपूजकर और नदीमेंवर्त्तमान उसकूपको देखकर बारंवार प्रशंसा करकेबिनशन तीर्थको प्राप्तकिया५३।५४॥

इतिश्रीमहाभारते गदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांतीर्थकथनेसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हेराजा इसके अनन्तर बलदेवजी उसविनशन तीर्थकोगयेजहांपरकि शूद्रआभीरोंकीशत्रुतासेसरस्वती गुप्तहोगई १ इस हेतुसे ऋषियोंने सदैवसे उसको बिनशन कहाहै बड़े बलवान् बलदेवजी वहांभी सरस्वतीमें स्नान आचमन करके२फिर सरस्वतीके उत्तम किनारेपर उस सुभूमिक तीर्थकोगये जहांपर कि निर्मल मुख निरालस्य अप्सरागण सदैव स्वच्छ क्रियाओंसे क्रीड़ा करती हैं३हेराजा वहांपर देवता गन्धर्व हरमहीनेमें उस ब्राह्मणोंसे सेवित पवित्र तीर्थको जातेहैं उस स्थानपर अप्सरा और गन्धर्वोंके समूह दिखाई पड़े४।५हेराजेन्द्र वहांपर देवता और पितरसाथ मिलकर समय पूर्व्वक सुखको पाकर बीरुधियोंसमेत सदैव ६ पवित्र दिव्य पुष्पोंसे बारंवार युक्त होकर क्रीड़ा करतेहैं उन अप्सराओंको वह शुभ भूमिहै ७ और सरस्वती के उत्तम तटपर सुभूमिका नामसे प्रसिद्धहै बलदेवजी वहांपर स्नान करके ब्राह्मणोंको धनदेकर ८ उसगीत बाद्योंके शब्दोंको सुनकर गन्धर्वराक्षसोंको बड़ी २ छायाओंको देखतेहुये गन्धर्वोंके तीर्थकोगये वहां प्रीतिसेयुक्त विश्वावसु नामगन्धर्वहै।१०बड़े चित्तरोचक गीत वाद्योंको करतेहैं हलधरभी वहां बहुतसे ब्राह्मणोंको नाना प्रकारके धनोंको देकर भेड़ बकरी गौ खच्चर ऊंट और सुवर्ण चांदी आदिको दान करके बड़ी प्रसन्नतासे उत्तम पदार्थोंकेद्वारा ब्राह्मणोंको भोजन कराके बड़ी दक्षिणाओंसे तृप्तकर ११।१२ ब्राह्मणोंसेस्तूयमान महाबाहु रेवतीरमणजी उसगान्धार तीर्थसेचले १३ उसके पीछे बलदेवजी गर्गस्रोततीर्थको गये हे जन्मेजय वहां पर तपसे शुद्ध अन्तःकरण वृद्ध महात्मा गर्गजीने १४ त्रिकाल ज्ञानकी गतिके द्वारा नक्षत्रोंका व्यतिक्रम

और अशुभ भयकारी उत्पातोंको सरस्वतीके शुभ तीर्थपर विदित किया उन्हींके नामसे वह तीर्थ गर्गस्त्रोतनामसे विख्यातहै १६ हे प्रभु राजा जन्मेजय वहांपर सुन्दर व्रतवाले ऋषि लोग सदैव काल ज्ञानके निमित्त महात्मा गर्ग ऋषिके पास वर्त्तमान रहते थे १७ हे राजा श्वेत चन्दन लगानेवाले बलदेवजी वहां जाकर और शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियोंको धन देकर १८ नाना प्रकारके भोजनके पदार्थ ब्राह्मणोंको भोजन कराके बड़े यशवान् नीलाम्बर धारी होकर शंख तीर्थको गये१९ वहांपर महा मेरु पर्व्वतकेसमान ऊंचे श्वेत पर्व्वतकी समान ऋषियोंके समूहों सेसेवितमहाशंखनाम २० वृक्षको उस तालध्वजाधारी बलवान् बलदेवजीनेदेखा जो कि सरस्वतीके किनारेपर था जहांपर हजारों सिद्ध यक्ष विद्याधर और बड़े २ तेजस्वी राक्षस २१ और बड़े बलवान् पिशाचादिकोंने उस वृक्षके फलोंको २२ व्रत और नियमों समेत समय २ पर भोजन किया और उन २ प्राप्त होनेवाले नियमों से पृथक् २ विचरनेवाले हुये२३हे पुरुषोतम वह सब मनुष्यों की दृष्टि से गुप्त भ्रमणकरने वाले हुये हे नरोत्तम इसप्रकारसे वह वृक्षइसलोकमें विख्यातहुआ २४इसके पीछे वह यादवोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीके उसविख्यात पवित्र तीर्थको जाकर तीर्थपर गौओंको दानकरके २५ तांबेलोहे केवर्त्तन और नानाप्रकारके वस्त्रोंसमेत ब्राह्मणों को पूजकर और आपभी ब्राह्मणोंसे स्तुतिमान २६ बलदेवजी द्वैतवननाम पवित्रसरोवर पर गये वहांजाकर बलदेवजीने नानाप्रकारको पोशाकधारी मुनियोंको देखकर२७जलमें स्नानकरब्राह्मणोंकोपूजउन ब्राह्मणोंके अर्थबड़े २ अभीष्टपदार्थोंकोदिया२८फिरबलदेवजी सरस्वती केदक्षिणओरचले और थोड़ी दूरजाकर २९ धर्मात्मा अविनाशीनेउसनागधन्वानाम तीर्थको पायाजहांपरकि सर्पोंकेराजा महातेजस्वी राजावासुकी का स्थानबहुतसेसर्पोंसेव्याप्तथावहांही चौदहहजार ऋषियोंनेभीनिवा सकियाथा३०।३१जहांपर देवताओंनेइकट्ठे होकरसर्पोंमेंउत्तमसर्पोंके राजा बासुकीको विधि पूर्व्वक अभिषेक कराया ३२ हेकौरव वहां

उनको सर्पोंसे भय नहींहुआ वहांभी ब्राह्मणोंके अर्थ रत्नसमूहों को विधिपूर्व्वकदेकर ३३ पूर्व्वदिशाको गयेवहां पदपदपर लाखोंतीर्थों कोदेखा ३४ और जैसे जैसे ऋषियोंनेकहा उसीउसी प्रकारसे उन तीर्थोंमेंस्नानकर उपबास नियमादिक करके सवप्रकारके दानों को देके ३५ उनतीर्थ बासीमुनियोंको दंडवत् करके मार्गपूछकर वहांसे सरस्वतीके पूर्वमुखहोकर ३६ फिरऐसेलौटेजैसेकिवायुसेप्रेरितबादल लौटतेहैंअर्थात्नैमिषवासी महात्मा ऋषियोंके दर्शनोंकेनिमित्तलौटे हे राजाश्वेतचन्दनसे लिप्तशरीर हलायुध बलदेवजी वहांपर उस नदियोंमें श्रेष्ठलौटीहुई सरस्वतीको देखकर अत्यन्त आश्चर्य्य युक्त हुये ३७।३८ जन्मेजयनेपूछाकि हेब्राह्मणसरस्वती किसहेतुसे पूर्व्वाभिमुखलौटी हे अध्वर्य्योंमेंश्रेष्ठ मैं इससब वर्णनकोसुना चाहताहूं ३९ वहांपर यदुनंदन बलदेवजी किसकारणसे आश्चर्य्य युक्तहुये और वहउत्तमनदी किसहेतुसे और किस प्रकार इसरीति से लौटी ४० वैशंपायन बोले कि हे राजा पूर्व्व सतयुगमें नैमिषबासी बहुतसे तपस्वी ऋषिवारह वर्षके बड़े यज्ञकेबर्त्तमानहोनेपर ४१ उसयज्ञमें आये वह महाभाग उसयज्ञमें बिधिपूर्व्वक निवासकरके ४२ नैमिषारण्यमें बारहवर्षकेयज्ञ समाप्तहोनेपरतीर्थकेकारणसेवहांगये ४३ हेराजा तब ऋषियोंकी अधिकयतासे सरस्वतीके दक्षिण तटकेतीर्थों की संख्या न होसकी ४४ हे नरोत्तम जहां तक समन्त पंचक है वहांतक वह उत्तमब्राह्मण तीर्थके लोभसेनदीके किनारेपर निवासी हुये ४५ वहांपर उनहवनकरनेवाले शुद्ध अन्तः करणवाले मुनियोंके बड़े वेदपाठसे दिशापूर्ण होगई ४६ वहांपर उन महात्माओंके किये हुये प्रकाशित अग्निहोत्रोंसे वह उत्तमनदी चारोंओरसे शोभायमानहुई ४७ हे महाराज बालखिल्य अस्मकुट दन्तोलूखली प्रसंख्यान ४८ बायुभक्षी जलाहारी और वृक्षोंके पत्ते खानेवाले नाना प्रकारके नियमोंसे युक्त मैदानमें सोनेवाले तपस्वी ४९ मुनिसरस्वतीके सन्मुख ऐसे ठहरेहुयेथे जैसे कि नदियोंमें श्रेष्ठ श्रीगंगाजी को शोभायमान करते देवता होतेहैं ५० यज्ञसे पूजन करनेवाले

सैकड़ों ऋषि आये उन बड़ेव्रत वालोंने सरस्वती के अवकाशको नहीं देखा ५१ इसके पीछे उन ऋषियों ने यज्ञोपवीतोंसे उस तीर्थको रचकर अग्नि होत्रादिक अनेक प्रकारकी क्रियाओंको किया ५२ हेराजेंद्र इसके पीछे सरस्वतीने उन्होंकोप्रसन्नताके लिये उस निराश चिन्तासे युक्त ऋषि समूहकोअपना दर्शनदिया ५३ हेजन्मेजय इसके पीछेवहश्रेष्ठ नदी पवित्र तपकरनेवाले ऋषियों की दयासे बहुत कुंजोंको करके लौटी ५४ हेराजेंद्र इसीहेतुसे वह श्रेष्ठ सरस्वती उनके लिये लौटकर फिर पश्चिमाभिमुख जारीहुई ५५ और कहाकिमैं तुम्हारे आनेको सफलकरके फिर जातीहूं यह उस महानदीने बड़ा अपूर्व कर्म किया ५६ हेराजा इस प्रकारसे वह कुंजनैमिषी नामसे प्रसिद्ध है हेकौरवोत्तम तुमइस कुरुक्षेत्र में बड़ी क्रियाकोकरो ५७ वहां बहुतकुंजोंसमेत लौटीहुई सरस्वतीको देखकर उन महात्मा बलदेवजीको बड़ा आश्चर्यहुआ ५८ उसतीर्थ मेंभी यदुनन्दन बलदेवजी बिधि पूर्वक स्नानकर ब्राह्मणोंको नाना प्रकारकेदान देकर नाना भक्ष्य भोज्य पदार्थोंसे ब्राह्मणोंको तृप्त करके और ब्राह्मणोंसेपूजितहोके चले ५९।६० फिरहलधारी बलदेव जी उससप्तसारस्वत तीर्थ कोगये जोकि सरस्वतीके तीर्थों में श्रेष्ठ नानाप्रकारके पक्षीगणोंसे युक्त बदरी,इंगुद,काश्मर्य्य,प्लक्ष,पीपल, विभीतक,कंकोल,पलाश,करील,पीलूऔरसरस्वतीकेतीर्थपर उत्पन्न होनेवाले नानाप्रकारके वृक्षोंसे शोभित ६१।६२ करूषवर, बिल्व आम्रातक, अतिमुक्तक, अखंड और पारिजातकों से शोभितकेलोंके बहुतबन रखने वाला प्रिय देखनेके योग्य चित्तरोचक वायुजलफल और पत्तों के खानेवाले दांतों को उलूखल रखनेवाले ६३।६४ पाषाण परकूटनेवाले बनबासी बहुतसे मुनियों से युक्त वेदध्वनिसे शब्दायमान मृगोंके अनेक यूथोंसे व्याकुल हिंसारहित और धर्म को उत्तम जाननेवाले मनुष्यों से सेवितथा और जहांपर महामुनि सिद्ध मंकणकनेतपस्या करीथी ६५।६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय॥

जनमेजय बोले कि सप्त सारस्वत नाम किसहेतुसे हुआ और मंकणक नाम मुनिकौन था और वह समर्थ और सिद्ध कैसे हुआ उसकानियम क्याथा १ हेब्राह्मणोत्तम वहकिसके कुलमें उत्पन्नहोकर क्याक्या पढ़ाथा इसको आप बिधिपूर्वक मुझसे वर्णनकीजिये २ वैशंपायन बोले हेराजा सात सरस्वतीहैं जिनसे कि यह जगत् व्याप्तहै बलवानोंसे बुलाईहुई सरस्वती जहांतहां प्रकटहुई ३ उनके नाम यहहैं सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मनोरमा, ओघवती, सुरेणु विमोलदका ४ ब्रह्माजीका बड़ा यज्ञ वर्त्तमान होने और यज्ञके विस्तृत बाड़ेमें निर्मल पुण्याह वाचनके शब्द वेदध्वनियोंसमेत ब्राह्मणोंके सिद्धहोने और यज्ञ विधिमें देवतावोंके सावधानहोने ५ । ६ और वहां ब्रह्माजी के दीक्षित होनेपर सब अभीष्ट बस्तुओं से वृद्धि युक्तयज्ञकेद्वारा उनब्रह्माजीको पूजन करते ७ धर्मअर्थमें कुशलपुरुषों के मनसे बिचारेहुये अर्थ जहांतहां ब्राह्मणोंके पास नियत हुये हे राजेन्द्र तब वहां गन्धर्वोंने गाया अप्सरागणोंने नृत्यकिया और वेगसे दिव्य बाजोंको बजाया ८ । ९ उस यज्ञकी ध्वनि आदिक से देवतादिक भी प्रसन्न हुये तो मनुष्य कैसे न प्रसन्न होगा १० हेराजा इसी प्रकार पुष्करजीमें ब्रह्माजीके नियत होने और यज्ञके वर्त्तमान होनेपर ऋषि बोले कि यह यज्ञ वड़े विशेष वाला नहींहै ११ इसहेतुसे कि यहां नदियोंमें श्रेष्ठनदी सरस्वती दिखाई नहींदेती तब भगवान् ब्रह्माजीनेउनके वचनको सुनकर सरस्वतीकोस्मरण किया १२ हेराजेन्द्र वहां पुष्करोंमें यज्ञकरनेवाले ब्रह्माजीकी बुलाईहुई सरस्वती सुप्रभानाम प्रकटहुई १३ मुनिलोग उसशीघ्रता सेयुक्त ब्रह्माजीकी प्रतिष्ठा करनेवाली सरस्वतीको देखकर प्रसन्न हुये और उसयज्ञको भी बड़ामाना १४ इस प्रकार यह नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती ब्रह्माजीकी और बुद्धिमान् ऋषियोंकी प्रसन्नताके लिये प्रकट हुई तब सब मुनिलोग नैमिषमें इकट्ठे होकर बैठगये

औरवेदकेविषयमें अपूर्व कथाहोनेलगी १५।१६ हेराजाजहांपर अनेकप्रकारकी ऋचा जाननेवाले वह मुनिबैठेथे उनमुनियोंने मिलकर सरस्वतीको स्मरणकिया १७ तब यज्ञोंसे पूजन करनेवाले ऋषियोंसे ध्यानकीहुई धर्मकी वृद्धिकाहेतु वह महाभाग कांचणाक्षीनाम सरस्वती इकट्ठे होनेवाले महात्मा ऋषियोंकी सहायताके निमित्त वहां नैमिष में आपहुंची और यज्ञसे पूजन करनेवाली मुनियों के आगे प्रकटहुई १८। १६ अर्थात् वह नदियोंमें श्रेष्ठ महापूजित नदी वहांपर आई इसके पीछे वह श्रेष्ठनदी गय देशमें बड़े यज्ञोंसे पूजन करनेवाले राजागयकी बुलाईहुई गयके यज्ञ में प्रकट हुई तेजव्रत ऋषियोंने उस गयकी बुलाई हुई सरस्वतीको विशाला कहा २०। २१ वह शीघ्र चलनेवाली नदी हिमाचलकी कुक्षसे उत्पन्न हुई हेभरतवंशी इसी प्रकार उस पूजनकरनेवाले औद्दालकके यज्ञमें २२ सब ओरसे वृद्धियुक्त इकट्ठे होनेवाले मुनियोंके मंडलमें कौशलदेशके पवित्र भागपर महात्मा २३ पूजन करनेवाले औद्दालकसे ध्यानकी हुई सरस्वती उस ऋषिके निमित्तसे उसदेश में आपहुंची २४ जो कि केवल मृगचर्मधारी मुनियोंके समूहोंसे पूजितथी उनकेमनसे प्रकटकीहुई वह सरस्वती मनोरमा नामसेप्रसिद्धहुई २५ यज्ञकरनेवाले महात्मा कुरुके इस कुरुक्षेत्रमें जोकि राज ऋषियोंसे सेवित पवित्र और उत्तमद्वीपमें वर्त्तमान है वहां सुरेणु नाम महाभाग सरस्वती आई हे राजा महात्मावशिष्ठजी से २६ बुलाईहुई दिव्य जल रखनेवाली ओघवती नाम सरस्वती कुरुक्षेत्र में प्रकटहुई और गंगाद्वारपर यज्ञकरनेवालेदक्षसेबुलाईहुई २७।२८ शीघ्रगामी सरस्वती सुरेणुनामसे प्रसिद्धहुई फिर यज्ञ करनेवाले ब्रह्माजीसे बुलाईहुई विमलोदानाम भगवती सरस्वती २६ पवित्र हिमाचल पर्व्वतपरगई फिर सब एकत्र होकर उसतीर्थपरआई ३० इसीसे वह तीर्थ इस पृथ्वीपर सप्त सारस्वतनामसे विख्यातहुआ यह सातों सरस्वती नामों समेत वर्णन करीं ३१ इस प्रकारसे वह पवित्रतीर्थ सप्त सारस्वतनाम से विख्यात किया गयाहै हे राजा

बाल्यावस्था से ब्रह्मचारी ३२ नदी के जल में स्नान करनेवाले मंकणक नाम ऋषिके भी उत्तम चरित्रको सुनो हे भरतबंशी महाराज किसीसमय वहां दैवइच्छासे जलमें ३३ स्नानकरनेवालीएक अतिमनोहर श्रेष्ठनेत्रवाली निर्दोषनंगीस्त्री को देखकर सरस्वतीके जलमें इनका बीर्य्य गिरपड़ा ३४ फिर उसबड़े तपस्वीने उसवीर्य्य को कलश में रखदिया फिर कलशमेंनियत उस बीर्य्यने सातभागों को पाया ३५ अर्थात् उसमें वह सात ऋषिउत्पन्नहुये जिन्होंने मरुद्गणोंमें अवतारलिया था उनकेनाम यहहैं वायुवेग,वायुबल, वायुहा, वायुमंडल, ३६ वायुज्वाल, वायुरेता, और पराक्रमी वायुचक्र,इस प्रकार मरुतोंकेयह ऋषिउत्पन्नहुये ३७ हे राजेन्द्र पृथ्वी पर बड़े आश्चर्य्यकारी उस महर्षीके चरित्रको सुनो जो कि तीनों लोकोंमें बिख्यातहै ३८ हे राजा निश्चय करके पूर्व्व समय में मंकणक नाम सिद्ध कुशाओंकी नोकसे घायलहुआ था तब उसके हाथसे शाकरस टपकाथा यह सुनागया ३९ वह ऋषि अपने हाथ से टपकेहुये शाकरसको देखकर प्रसन्नतासे नृत्य करनेलगा हे-बीर फिर उस ऋषिके नृत्य करनेपर सब संसारके जड़ चैतन्यजीव उसके तेजसे नृत्य करनेलगे ४०।४१ हे राजा तबब्रह्मादिक देवता और तपोधन ऋषियोंने महादेवजीसेप्रार्थना करी कि हे देवताओंके देवता जैसे यह ऋषि नृत्यकोनकरे वही आपउपाय करनेकोयोग्य हो ४२ इसके पीछे देवता महादेवजी मुनिको अत्यन्त प्रसन्नतासे पूर्ण देखकर देवताओं के प्रियकारी हितके लिये यह वचन बोले ४३ हे धर्मज्ञ ब्राह्मण आप किस निमित्त नृत्य करतेहो हे मुनि आपको इतनी प्रसन्नता किस हेतुसेहुईहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण धर्ममार्ग में तपस्वीकी प्रसन्नताकाकारण क्याहै ४४ ऋषिबोला हे ब्राह्मण मेरे हाथसे टपकेहुये इस शाकरस को क्या तुम नहीं देखतेहो हे समर्थ में इसी शाकरसको देखकर बड़े आनन्द युक्त होकर नाचता हूं ४५ तब देवता शिवजी उस रागसे मोहित मुनिसे अच्छेप्रकार हँसकर बोले कि हे वेदपाठी मुझ को आश्चर्य्य नहीं होताहै तुम

मुझको देखो ४६ हे राजेन्द्र उस श्रेष्ठ मुनिसे इस प्रकार कहकर बुद्धिमान् महादेवजीने अँगूठेकीनोकसे अपनेअँगूठेको घायलकिया ४७ हे राजा उस घावसे वर्फके समान श्वेत भस्म निकलीउसको देखकर बड़ी लज्जापाकर वह मुनि उनके दोनों चरणोंपर गिरपड़ा (आशय) शरीरका भस्मरूप होना बड़ी सिद्धी है रुद्रजी उसको दिखलाकर उसके अहंकार को दूरकरते हैं ४८ उसनेउसको देवताओंका भी देवता महादेव माना और आश्चर्य्यित होकर यह बचन बोला कि मैं रुद्र देवता से उत्तम और वड़ा दूसरे किसी देवताको नहीं मानताहूं ४६ हे शूलधारी तुम देवता असुर आदिक समेत सब जगत की गतिहो तुमसे सब जगत उत्पन्न हुआहै ऐसा इस लोकमें पंडित लोग कहते हैं ५० प्रलय काल के पीछे फिर यह सब जगत तुममें ही लय होता है तुम देवताओंसेही जाननेको योग्य नहीं हो तो मुझ अल्प बुद्धीसे कैसे जाननेके योग्य होगे ५१ जो प्रकाश रूप भाव जगतमें नियत हैं वह सब आपके रूपमें दिखाई पड़ते हैं हे निष्पाप ब्रह्मादिक देवताओं ने भी तुझो वरदाता की उपासना करी है ५२ देवताओं के उत्पन्न करने वाले और सब को कर्मों में प्रवृत्त करने वाले आपही हो इस लोक में सब देवता आपकी ही कृपासे निर्भय होकर आनन्द करते हैं ५३ वह ऋषि महादेव जी की इस प्रकारस्तुति करके नम्र होगया और कहने लगा कि हे देवता मैंने जो अहंकारादिक चपलताकरी है ५४ उस सब से ही आपको प्रसन्न करताहूं और यह चाहताहूं कि मेरातप नाशको न पावे इसके पीछे प्रसन्न चित्त शिवजी उस ऋषि से बोले ५५ हे ब्राह्मण मेरी कृपासे तेरातप हजार प्रकार से वृद्धि युक्त होय और मैं इस आश्रम में सदैव तेरे साथ निवास करूंगा ५६ जो मनुष्य इस सप्त सारस्वततीर्थ में मुझको पूजेगा उस को इसलोक और परलोक में कोई दुष्प्राप्य वस्तु नहींहै अर्थात् जो चाहैगा सोई मिलैगा ५७ और निस्सन्देह वह सारस्वत लोक में जायगा यह बड़े तेजस्वी मंकणक नाम ऋषि का चरित्र

है ५८ वह बैठाहुआ इसी सुकन्या में उत्पन्न हुआहै ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेनवमोऽध्यायः९ ॥

दशवां अध्याय॥

वैशंपायनबोले कि हलधारीबलदेवजीने वहां निवासकरके और आश्रमबासियोंको अच्छीरीतिसे पूजकरमंकणाकऋषिमें शुभप्रीतिकरी १ हे भरतवंशी बड़े बलवान् हलायुध बलदेवजी ब्राह्मणोंको दान देके उसरात्रि वहां निवास कर बड़े प्रातःकाल उठकर मुनियोंके समूहों से पूजित होकर २ और आपभी सब मुनियों को पूजकर स्नान आचमनकर तीर्थके निमित्त शीघ्रचलदिये ३ इसके पीछेबल-देवजी शुक्रजीके कपालमोचन नाम तीर्थको गये हेमहाराज राजा जनमेजय जहां पर पूर्व समय में रामचन्द्रजी के फेंके हुये राक्षसके बड़े शिरसे निगली हुई जंघावाले महोदरनाम महामुनि मुक्तहुये ४ । ५ वहां पूर्वकाल में बड़े महात्मा शुक्रजीने तपकिया जहांपर उस महात्मा की सम्पूर्ण नीति प्रकट हुई ६ वहांहीं नियत होकर शुक्रजीने दैत्य और दानवों के परस्पर बिरोधको शोचा हे राजा राजाबलिने उस अत्यन्त श्रेष्ठ तीर्थको पाकर बिधिपूर्बक महात्मा ब्राह्मणोंको धनदिया ७ जनमेजय ने कहा हे द्विजवर्य इस तीर्थका कपाल मोचन नाम कैसेहुआ उस में महामुनि कैसे छूटे और उस राक्षसका शिरकिस हेतुसे उनकी जंघामें चिपटा ८ वैशंपायन बोले हे राजेन्द्र पूर्व्व समयमें दंडकबनमें निवास करनेवाले राक्ष-सोंके मारने के अभिलाषी महात्मा रामचन्द्रजीने ९ जिस स्थान में दुरात्मा राक्षस का शिरकाटा वहां उस वनमें तेजधार क्षुरसे काटा हुआ वह शिर उछला १० निश्चय करके दैव योगसे वह शिर महोदरकी जंघापर चिपटगया अर्थात् वह शिर वनमें घूमने-वाले महोदर के हाड़को छेदकर कुछ चेष्टा करनेलगा ११ तब वह बड़ाज्ञानी ब्राह्मण उस चिपटेहुये शिरके कारणसे तीर्थ और देवा-लयोंके जानेको समर्थनहीं हुआ१२उस चिपटेहुये दुर्गन्धित शिरके

कारण दुःखसे पीड़ामानभी वह महामुनि पृथ्वीके सब तीर्थोंकोगया यहहमने सुनाहै १३ उस बड़े तपस्वीने सबनदियोंपर और समुद्रों पर जाकर वह सब वृत्तान्त शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों के सन्मुख जाकर वर्णन किया १४ सब तीर्थोंमें स्नानकरनेवालेने उस शिरसे पृथकताको नहीं पाया तब फिर उस ऋषिने मुनियोंके बड़े इन वचनोंको सुना १५ कि सरस्वतीका एक उत्तम तीर्थ औशनस नामसे विख्यात सब पापोंका दूर करनेवाला सिद्धोंका क्षेत्र और श्रेष्ठतरहै १६ उसके पीछे उसब्राह्मणने उस औशनस तीर्थमें जाकर स्नान किया तब औशनस तीर्थमें स्नान करनेवाले उस ऋषि के चरण को छोड़कर वह शिरजलके मध्यमें गिर पड़ा उस शिरसे छुटेहुये ने बड़े आनन्दको पाया१७।१८ और उसशिरने भी जलके मध्यमें गुप्तताको पाया हे राजा उसके पीछे उस शिरसे पृथक् पवित्र शरीर पापोंकी लिप्ततासे रहित १९ सुखी और कृतकर्माहोकर वह महोदर ऋषि अपने आश्रमको आया वहां उस शिरसेछुटे उस बड़े तपस्वीने पवित्र आश्रमकोजाकर उस सब वृत्तान्तको शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों से वर्णन किया हे बड़ाई देनेवाले इसके पीछे इकट्ठे होनेवाले उन ऋषियों ने उसके बचनको सुनकर उस तीर्थका नाम कपालमोचन रक्खा तब उसमहर्षीने भी उस अत्यंत उत्तम तीर्थको जाकर २२ जलको पान करके बहुत बड़ी सिद्धीको पाया वहां भी वृष्णियोंमें श्रेष्ठ हलधर बलदेवजी बहुत दानोंको देकर ब्राह्मणोंको पूजकर २३ उस रुषंगोंके आश्रमको गये जहांपर आर्ष्टिषेणने बड़ी घोर तपस्याकरी थी २४ वहांहीमहामुनि विश्वामित्रने ब्राह्मण वर्णको पाया वह बड़ा स्थान २५ सब अभीष्टोंसे वृद्धि युक्त और सदैव मुनि ब्राह्मणों से सेवित है हे समर्थराजेन्द्र इसके पीछे ब्राह्मणों समेत श्रीबलदेवजी वहां गये २६ जहां पर कि रुषंगोंने अपने शरीरोंको त्यागा हे भरतवंशी सदैव तप करने वाले वृद्ध ब्राह्मण २७ शरीर के त्यागनेमें प्रवृत्तचित्तरुषंगने बहुत प्रकारकी चिन्ता करके अपने सबपुत्रोंको बुलाकर २८ सबसेकहा

कि मुझको पृथूदक तीर्थ को लेचलो उनतपोधन ऋषिकुमारोंनेउस तपोधन रुषंगको वृद्ध जानकर२९ सरस्वतीके उसतीर्थपर पहुंचाया जोकि धर्मकी वृद्धिका कारण सैकड़ों तीर्थोंसे युक्त और वेदपाठियों से सेवित था ३० हे राजा वह बड़ा तपस्वी ऋषियों में श्रेष्ठ रुषंग वहां बिधि पूर्व्वक स्नान करके ३१ तीर्थके गुणोंको जानकर अत्यन्त प्रसन्न होकर समीप बैठेहुये सब पुत्रोंसे बोला ३२ किजो जपमें प्रवृत्त होकर मनुष्य सरस्वतीके उत्तरीयतटमें वर्त्तमान पृथूदक तीर्थपर अपने शरीरको त्याग करेगा उसको कलियुगमेंमरना दुःखी नहीं करेगा अर्थात् अबिनाशी होकर स्वर्गको पावेगा ३३ उन ब्राह्मणों के प्यारे बलदेवजीने वहां भी जाकर स्नान आचमनादि करके बहुतसा दान ब्राह्मणोंको दिया ३४ जहां पर भगवान् लोक पितामहने लोकोंको उत्पन्न किया और जहां पर तेज ब्रत आर्ष्टि षेणने ३५ बड़े तपसे ब्राह्मण वर्णकोपाया ऋषियोंमें श्रेष्ठ बड़े तपस्वी राजर्षिसिन्धुद्वीप और देवापीने ३६ ब्राह्मणवर्ण को पाया इसीप्रकार जहांपर महातपस्वी उग्रतेज बड़े तपवाले समर्थ विश्वामित्र मुनिने भी ब्राह्मण वर्णको पाया ३७ वहांभी प्रतापवान् बलभद्रजी गये ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेदशमोऽध्यायः॥१०॥

ग्यारहवां अध्याय॥

जनमेजयने पूछा कि भगवान् आर्ष्टिषेणने किसप्रकारसे बड़ी तपस्याको किया और सिन्धुद्वीप देवापी और विश्वामित्रने किस प्रकार ब्राह्मणबर्णको पाया हेभगवन् वहसब मुझसे कहो क्योंकि मुझको सुननेका बड़ा उत्साहहै १।२ वैशम्पायन बोले हेराजा पूर्व सतयुगमें द्विजोंमें श्रेष्ठ आर्ष्टिषेण सदैव वेदपाठमें प्रीति रखनेवाले सदा गुरु कुलमेंही निवास करतेरहे ३ सदैव गुरुकुल में निवास करने परभी उस राजऋषिकी विद्या और वेदोंने संपूर्णता को नहीं पाया ४ इसकेपीछे उस व्याकुल चित्त तपस्वीने बड़ेतप को तपा तब

उस तपके द्वारा वेदोंको पाकर ५ उस बुद्धिमान् वेदज्ञ सिद्धऔर ऋषियों में श्रेष्ठ बड़े तपस्वीने उस तीर्थके अर्थ यहतीन वरदिये ६ अर्थात् अबसे लेकर इस महानदीके तीर्थमें स्नान करनेवाला मनुष्य अश्वमेध के बड़े फलको पावेगा ७ और अबसे लेकर यहां सर्पसे किसीको भय नहीं होगा और थोड़ेही समय में उत्तम फलको पावेगा ८ बड़े तेजस्वी मुनि इसप्रकार कहकर स्वर्ग को गये वह भगवान् प्रतापवान् आर्ष्टिषेण इसप्रकार से सिद्ध हुये ९ हेमहाराज तब उसतीर्थमें प्रतापवान् सिन्धद्वीप और देवापीने बड़े ब्राह्मणभावको पाया १० हेतात उसीप्रकार सदैव तप करनेवाले जितेन्द्री विश्वामित्रने अच्छे प्रकारसे तपेहुये तपके द्वारा ब्राह्मण बर्णकोपाया ११ एकगाधिनाम क्षत्री इसपृथ्वी पर बड़ा विख्यातहुआ उसका पुत्र बिश्वामित्रभी बड़ा प्रतापवान् हुआ १२ हेतात निश्चय करके वहराजा कौशिक बड़ा बुद्धिमान् और प्रज्ञहुआ उसबड़े तपस्वीने विश्वामित्रनाम पुत्रको राज्यपर अभिषेक कराके १३ शरीर त्यागमें चित्तको प्रवृत्त किया तबहाथ जोड़कर प्रजा लोगोंने उस से कहा कि हेबड़ेज्ञानी आपको वन में न जाना चाहिये हमको आप बड़े भयसेरक्षा करो १४ इसके पीछे इस प्रकारसे प्रजाके वचनको सुनकरगाधिने प्रजालोगों को उत्तर दिया कि मेरा पुत्र संसार भरे का रक्षकहोगा १५ हेराजा राजागाधि ऐसा बचन कहकर और विश्वामित्र को राज्यसिंहासन पर बैठाकर स्वर्गको गया और विश्वामित्र राजा हुये १६ बिश्वामित्र भी अनेक उपायोंसे पृथ्वीकी रक्षा करनेको समर्थ नहीं हुआ इसके पीछे उस राजाने राक्षसों से बड़े भयको सुना १७ और चतुरंगिणी सेना समेत नगर से निकला और बहुत दूर मार्ग चलकर बशिष्ठजीके आश्रमको गया हेराजा वहां उसकी सेनाके लोगोंने बड़ेअन्याय किये तब ब्रह्माजीके पुत्र भगवान् ब्राह्मण बशिष्ठजी ने१८।१९ सबमहाबनको टूटा और बिगड़ादेखा तब उस पर क्रोधयुक्त होकर मुनियों में श्रेष्ठ बशिष्ठजीने २० अपनी गौसे

कहाकि घोर शवरोंको उत्पन्नकर उनकी आज्ञासे उस गौने घोर दर्शनवाले मनुष्यों को उत्पन्न किया २१ उन्होंने विश्वामित्रकी सेनाको पाकर सबदिशाओंमें छिन्नभिन्न किया गाधिके पुत्र विश्वामित्रने उस अपनी भागीहुई सेनाको भागाहुआ सुनकर २२ तपको श्रेष्ठ माननेवालेने तपहीमें चित्त किया हे राजा उस सावधान विश्वामित्रने सरस्वतीके उत्तम तीर्थपर २३ नियम और व्रतके द्वारा अपनेशरीरको दुर्बल और कृशाङ्ग किया और जलवायु और पत्रोंका आहार करनेवाला हुआ २४ और स्थंडिलशायी अर्थात् मैदानमें शयन करनेवाला हुआ और बहुतसे अनेक पृथक् २ नियमोंकोभी बारंबार किया फिर देवताओंने उसके व्रतका विघ्न किया २५ परन्तु इस महात्मा की बुद्धि नियम से पृथक् नहीं हुई फिर उत्तम उपायों से बहुत प्रकारके तपको करके २६ वह गाधिका पुत्र तेज से सूर्य्यके समान हुआ तब बड़े बरदाता ब्रह्माजीने इसप्रकार तप में प्रवृत्त बिश्वामित्र को और उसके उत्तमतपको स्वीकार किया २७ और मांगनेकी आज्ञाकरी तब उसने यह वरमांगा कि मैं ब्राह्मण हो जाऊं २८ उस समय सब लोकोंके पितामह ब्रह्माजीबोले कि ऐसा ही होय वह बड़ा यशवान् बड़ीतपस्या से ब्राह्मण वर्णको पाकर २९ अभीष्ट सिद्धि करनेवाला देवताओंके समान होकर सब पृथ्वीपर घूमा बलदेवजीने उस उत्तम तीर्थपर बहुतप्रकारका धनदेकर ३० दुग्धवती गौ सवारी वस्त्र भूषण भक्ष्य भोज्य और पानकी बस्तु ३१ यह सब दानकी हे राजा इसप्रकारसे बलदेवजी उन उत्तम ब्राह्मणों को पूजकर समीपही उस बकके आश्रम को गये जहां पर दाल्भोवकने कठिन तपस्याको कियाथा यह सुनाजाताहै ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी बोले कि यदुनन्दन बलदेवजी उस ब्रह्मयोनि तीर्थ से संयुक्त तीर्थको गये जहांपर अपने आश्रममें नियत बड़े तपस्वी

दालभीवकने विचित्र वीर्य्यके पुत्रधृतराष्ट्रके देशको हवनकिया और घोररूप तपसे अपने शरीरको दुर्बलकरता१२ धर्मात्मा प्रतापवान् बड़े क्रोधसे पूर्णहुआ पूर्व समय में नैमिष निवासियोंका बारह वर्ष का यज्ञ ३ समाप्त होनेपर विश्वचिति यज्ञके अन्तमें ऋषिलोग पांचाल देशोंमें गये उन ज्ञानी ऋषियोंने वहांपर दक्षिणाके निमित्त राजासे याचना करी ४ उस राजाने बलवान् न्यून अवस्था और नीरोग इक्कीस गौओंको दिया दालभीवक उनसे बोले कि पशुओंको त्रिभागकरो ५ मैं इन पशुओंको छोड़कर उस उत्तम राजासे भिक्षा मांगूंगा हे राजा ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ प्रतापवान दालभीवक सबऋषियों से इस प्रकार कहकर ६ धृतराष्ट्रके भवनको गये और राजाधृत-राष्ट्रके सन्मुख जाकर ७ उससे पशुओंको मांगा तब उस श्रेष्ठ राजाने दैवयोगसे गौ बैलोंको मृतकदेखकर बड़ेक्रोध पूर्वक उनसे कहा ८ हे ब्रह्म बन्धो जोतू चाहताहै तोइन पशुओंको शीघ्रलेजाओ तब धर्मज्ञ ऋषिने इसप्रकार के बचनको सुनकर बड़ी चिन्ताकरी९ कि बड़े दुःखकी बातहै कि इसने मुझको सभामें ऐसे निर्दय और अनादरता के बचन कहे तब क्रोधसे पूर्ण उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने एक मुहूर्त भर चिन्ता करके १० राजा धृतराष्ट्र के नाशकरनेका विचार किया पूर्वसमय में उसश्रेष्ठ मुनिने मृतक पशुओंके मांसको काट कर ११ राजा धृतराष्ट्र के देशको हवन करदिया अर्थात् हेमहा राज सरस्वतीके अवकीर्ण तीर्थमें अग्निको प्रज्वलित करके १२ वह बड़ा तपस्वी दालभीवक बड़े नियममें नियत हुआ और उन मांसखण्डोंसे उसके देशकोहोमा१३हेराजा इसके पीछे विधिकेअनु-सार उस भयानक यज्ञके जारी होनेपर धृतराष्ट्र का देश नाशको प्राप्तहुआ१४औरराजाका वहराज्य ऐसा अत्यन्त नाशहुआ जैसे कि फरसेसे कटा हुआ बड़ा बनहोताहै १५ वह सब देश महाआपत्तिमें फंसा नाशयुक्त होकर अचेत होगया हेराजा वह राजा अपने देशको इसप्रकार नाशयुक्त देखकर१६महादुःखीचित्तहुआ और बड़ीचिन्ता से युक्तहोकर उसनेब्राह्मणोंसमेत राज्यकेआपत्तिसे बचनेके अनेक

उपाय किये १७ परन्तु कल्याणको नहींपाया अर्थात् देशका नाश होना वन्दनहीं हुआ हे निष्पाप जनमेजय जब वह राजासमेत सब ब्राह्मण दुःखी हुये तब १८ सबने प्रश्नोंके बतानेवालोंसे पूछा उन लोगोंने कहा कि पशुओंके बिषय में तुमसे अनादर कियाहुआ १९ एक मुनि गौवोंके मांसोंसे तेरे देशको होमताहै उससे होमे हुये इस तेरे देशकोवड़ा नाश होरहाहै२० यह उसीके तपका बड़ाकर्महै जिस से कि तेरा बड़ानाशहै हेराजा सरस्वतीके जलकुंजमें उसको प्रसन्न करो २१ हेभरतर्षभ इसके पीछे उसराजाने सरस्वतीको जाकर हाथ जोड़शिरसे पृथ्वीपर गिरकर उस बकमुनिसे कहा २२ हेभगवन् मैं आपको प्रसन्न करताहूं मेरे अपराधको क्षमाकरो मुझदुःखी लोभी और अज्ञानतासे निर्बुद्धोंकी तुम गति हो २३।२४ तुममेरे नाथहो मुझपर कृपा करनेके योग्य हो इस प्रकार बिलाप करनेवाले शो- कसे निर्बुद्धो उस राजाको देखकर उसके दया उत्पन्न हुई और उस देशकेनाश न होनेके लिये फिर अग्निमें आहुतिदी इसके पीछे देशको निर्विघ्न कर बहुतसे पशुओंको लेकर २५।२६ प्रसन्नहोकर फिर नैमिषारण्यकोगये और धर्मात्मा सावधान बड़ेसाहसी भी बड़े बृद्धिवाले राजाधृतराष्ट्र ने भी अपने नगरको प्राप्तकिया हे महा- राजउसी तीर्थपर बड़ेबुद्धिमान् बृहस्पतिजीने २७।२८ असुरोंकेनाश और देवताओंकी वृद्धिके निमित्त मांसोंसे यज्ञमें हवन किया इस हेतुसे असुरोंने विनाशको पाया २९ और युद्धमें बिजयसे शोभाय- मान देवताओंके हाथसे राक्षसनाशको प्राप्तहुये बड़े यशस्वी बल- देवजी वहांभी ब्राह्मणों के अर्थबिधिपूर्बक ३० घोड़े हाथी औरखच्च रोंसे युक्त रथ बहुमूल्य रत्न और बहुतसे धन धान्यको देकर ३१ फिर महाबाहु बलदेवजी ययातितीर्थको गये हे पृथ्वीनाथ महाराज वहांनहुषके पुत्र महात्मा ययातिके यज्ञ में सरस्वतीने ३२ घृतऔर दूधको बहाया सब पृथ्वीका स्वामी पुरुषोत्तम ययाति वहां यज्ञको करके ३३ प्रसन्नतासे ऊपरके उत्तमलोकोंको गया और श्रेष्ठलोकों को पाया इसके अनन्तर महाप्रभु राजा ययातिके यज्ञ करतेहुये ३४

बड़ी उदारता और सनातन भक्तिको चित्तमें धारण करके ब्राह्मणों को उन २ अभीष्ट वस्तुओंका दान किया जो २ इच्छाके समान जैसी २ वस्तुको चाहताथा ३५ यज्ञरचनामें बुलाया हुआ जो २ पुरुष यहां निवासीथा उस २ पुरुषकोउसउत्तम नदीने गृहों समेत उत्तम शयनों को दिया ३६ षटरस भोजन पूर्व्वक अनेक प्रकारके दान दिये राजाके उत्तम दानको स्वीकार करने वाले ३७ उन प्रसन्न ब्राह्मणोंने शुभ आशीर्वादोंको देकर राजाको प्रसन्न किया वहांगन्धर्वों समेत सब देवता यज्ञके सामानोंसे प्रसन्न हुये और सब मनुष्य यज्ञकी उस सामग्री आदिको देखकर आश्चर्य्यित हुये ३८ इसके पीछे तालध्वजाधारी बड़े धर्मध्वज महात्मा शुद्ध अन्तःकरण सदैव बड़े दानी साहसी और धैर्य्यमान बलदेवजी बशिष्ठजीके उस भयानक वेगवाले तीर्थको गये ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

जनमेजय बोले कि यह बशिष्ठ जीका अपब्राह नाम तीर्थ जो भयानक वेगवालाहै वह कैसेहुआ और उसउत्तम नदीने उसकोकैसे बहाया १ उसकी शत्रुता कैसे हुई हे प्रभु उसका क्याहेतुहै हे बड़े ज्ञानी आपमुझसे बर्णनकीजिये मैं उसके सुनने से तृप्त नहींहोता हूं २ । ३ बैशंपायन बोले हे भरतवंशी राजा जनमेजय ब्रह्मर्षि वशिष्ठ और बिश्वामित्रके तपकी ईर्षासे उत्पन्न होनेवाली बड़ीशत्रुता हुई ४ शिवजीके तीर्थपर बशिष्ठजीका बड़ा आश्रमहुआ और पूर्व्वीय पक्ष में बुद्धिमान् बिश्वामित्र का आश्रम हुआ ४ हे महाराज जहां पर शिवजी ने उत्तम तपको तपाथा वहांहीं ज्ञानीलोग इसके घोर कर्मको कहतेहैं ५ हे प्रभुजहांपर प्रभुशिवजीने यज्ञकरके सरस्वती का पूजन कर स्थाणुनामसे प्रसिद्ध उसतीर्थको नियत किया ६ हे राजा देवताओंने जिस तीर्थपर असुरोंके मारनेवाले स्वामिकार्तिक जीको देवताओं के सेनापति के अधिकारपर अभिषेक कराया ७

उस सारस्वततीर्थमें विश्वामित्र महामुनिने उग्रतपके द्वारा वशिष्ठ जीको चलायमानकिया ८ हे भरतवंशी उनतपोधन वशिष्ठजी और विश्वामित्रजी ने तपके कारणसे उत्पन्न होनेवाली कठिन ईर्षाको प्रतिदिन किया ९ वहांभी अत्यन्तदुःखी महामुनि बिश्वामित्र ने वशिष्ठजीके तेजको देखकर बड़ी चिन्ताको पाया १० हे भरतवंशी तब सदैव धर्मपर चलनेवाले उस बिश्वामित्र की यह मतिहुई कि यह सरस्वती शीघ्रही उस तपोधन ११ और जपकरनेवालों में श्रेष्ठ बशिष्ठजीको मेरे सन्मुख लावेगी यहां जब आवेंगे तब उस आयेहुये उत्तम ब्राह्मणको निस्सन्देह म रूंगा १२ इसप्रकार उस महामुनि क्रोधसे रक्तनेत्र बिश्वामित्रने चय करके नदियों में श्रेष्ठ सरस्वतीको स्मरण किया १३ उस नके ध्यान करतेही उस प्रकाशमान सरस्वतीने बड़ी ब्याकुल को पाया और इसबड़े पराक्रमी विश्वामित्रको बड़ा क्रोधयुक्त ाना १४ तब इसके पीछे कंपायमान रूपान्तर्मुख हाथजोड़कर सरस्वती इस मुनियोंमें श्रेष्ठ विश्वामित्रके सन्मुख खड़ीहुई १५ और जैसे कि मृतक बीरों वाली स्त्री होती है उसीप्रकार वह सरस्वती भी अत्यन्त दुःखीहुई औरउस श्रेष्ठ मुनिसे बोली किकहो क्या आज्ञाहै १६ तब क्रोधयुक्त मुनि उससेबोलेकि मैं वशिष्ठ जीको मारूंगा इससे तुमशीघ्र उनको लाओ यह बचनसुनकर वह नदी बड़ीपीड़ामानहुई १७ वह कमल लोचन अत्यन्त भयभीत हाथ जोड़कर ऐसे कंपायमान हुई जैसे कि बायुसे ताड़ित लता होती है १८ तब वह मुनि उस प्रकार के रूपवाली नदीसेबोले कि तुम बिना बिचारके बशिष्ठजीको मेरेपास लाओ १९ वह उनके बचनको सुनकर और पापकरनेकी इच्छा जानकर पृथ्वीपर बशिष्ठजीके अतुल प्रभावको जानतीहुई २० उससरस्वतीने बशिष्ठजीके पासजाकर इसबातको कहदिया नदियोंमेंश्रेष्ठ सरस्वतीसे बुद्धिमान् बिश्वामित्रने जो कहाथा२१उससेऔर बशिष्ठ जीकेशापसे भयभीत और बारंबार कंपायमान महाशापको बिचार करऋषिसे अत्यन्त भयभीतथी २२ हेराजा द्विपादोंमें श्रेष्ठ धर्मात्मा

वशिष्ठजी उस दुर्बल विपरीत रूपान्तरकिये चिन्तासे युक्त सरस्वतीको देखकर यह वचन बोले कि हे नदियोंमें श्रेष्ठ शीघ्रगामिनी तूअपनी रक्षाकर और मुझको शीघ्रलेचल नहींतो विश्वामित्र तुझको शापदेगा इसमें तू विचार मतकर २४ हे कौरव तवतो उस नदीने इन करुणाभ्यासो वशिष्ठजीके वचनोंको सुनकर चिन्ताकरी किकौनसी रीति और उपायसे शुभकर्महोय २५ उसको यहचिन्ताउत्पन्नहुई कि वशिष्ठजीने मुझपर सदैव दयाकरीहै मुझको इनका हित करना योग्यहै २६ हे राजा तव सरस्वतीने अपनेतटपर जपहोमादिक करनेवाले ऋषियोंमें श्रेष्ठ विश्वामित्रको देखकरचिन्ताकरी२७ कि यह समर्थहै इसके पीछे उस नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीने अपने वेगसे किनारेको हटाया २८ वशिष्ठजी उस किनारेके हटानेसे सवार कियेगये हे राजा तबउस जलपरसवार ऋषिने सरस्वतीकीप्रशंसा करी २९ कि हेसरस्वती तुम ब्रह्माजीकी नदीसे जारी हुईहो और यह सब संसार तेरेही उत्तमजलोंसे व्याप्तहै ३० हे देवीआकाशमें वर्त्तमान होकर तुमहीं बादलोंमें अमृतकोछोड़तीहो औरसबजलभी तुम्हींहोहमतुमसे वेदोंकोपढ़तेहैं ३१ तुम्हीं पुष्टि द्युति कीर्त्ति सिद्धिबुद्धि उमा औरवाणीहोकर तुम्हीं स्वाहाहोयहजगत तुम्हारे आधीनहै ३२ तुम्हीं इन चारोंप्रकारके जीवोंमें वासकरतीहो हे राजा इसप्रकार महर्षीसे स्तुतिमान सरस्वतीने ३३ उस ब्राह्मणको वेगसे विश्वामित्रके आश्रममें पहुंचाया और लेजाकर विश्वामित्रसे उनका आना बारंबार वर्णनकिया ३४ तब सरस्वतीके लायेहुये उसऋषिको देखकर क्रोधसेयुक्त विश्वामित्रने वशिष्ठजी के नाशकरनेवाले शस्त्रको चाहा ३५ सावधान नदीने उस क्रोधयुक्त विश्वामित्रको देखकर ब्रह्महत्याके भयसे वशिष्ठजीको पूर्वदिशाकी ओरबहाया ३६ दोनों के वचनको करनेवाली सरस्वती ने विश्वामित्र को छलकर ऐसा कर्मकिया तब अत्यंत अशान्तचित्त क्रोधयुक्त विश्वामित्र बोले कि हे उत्तम नदी जैसे तुम मुझको छलकर चली गईहो ३७ । ३८ इसहेतुसे हे कल्याणी तुम राक्षस गणोंके स्वीकृत रु-

धिरको धारण करो इसके पीछे बुद्धिमान् विश्वामित्रसे शापित सरस्वतीने ३९ एक बर्षतक रुधिरयुक्त जलको बहाया इसके अनन्तर ऋषि देवता अप्सरा और गन्धर्व ४० उसप्रकारकी सरस्वतीको देखकर अत्यन्तदुःखीहुये हेराजा इसप्रकार वशिष्ठजीका अपवाह लोक में प्रसिद्ध हुआ ४१ तब वह श्रेष्ठ नदी फिर अपने मार्गको आई ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिहलधरतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि क्रोधयुक्त बुद्धिमान् विश्वामित्रसे शापित सरस्वतीने उस उत्तम और उज्ज्वल तीर्थपर रुधिरको बहाया १ हे भरतवंशी राजा जनमेजय इसकेपीछे वहां राक्षसआये और वह सब रुधिरको पान करतेहुये सुखपूर्वक रहनेलगे २ उस रुधिर पानकरनेसे वह राक्षस स्वर्गके बिजय करनेवाले पुरुषोंकी समान अत्यंत तृप्त सुखी और तपोंसेरहित हर्षयुक्तहुये ३ इसकेपीछे तपोधनऋषि किसीसमय सरस्वती के तीर्थपर तीर्थयात्राकोगये ४ वह तपके लोभी पंडित और श्रेष्ठमुनि उन सब तीर्थोंमें स्नानकर श्रेष्ठ प्रीति को प्राप्त करके ५ वहांसे चलेगये और जिसमार्गसे रुधिर का बहानेवाला तीर्थथा उस भयानक तीर्थपर भी वह महाभाग सबऋषिगये वहां रुधिरसेयुक्त सरस्वतीके जलको बहुत राक्षसोंसे पान कियाहुआ देखकर और उन राक्षसोंकोभी देखकर उन तेज ब्रतमुनियोंने सरस्वतीकी रक्षा में बहुतउपायकिया ६।७।८ अर्थात् वह सब महाभाग बड़े ब्रतवाले ऋषि नदियों में श्रेष्ठ सरस्वतीको वुलाकर यह बचनबोले कि ९ हे कल्याणिनि इस तेरे ह्रदनेकिस हेतुसे इस महा व्याकुलताको पायाहै इसका सब वृत्तान्त बर्णन करो हम सुनकर इसका निश्चय करेंगे १० इसकेपीछे उसकंपित सरस्वतीने सब वृत्तांत बर्णनकिया वह तपोधन ऋषि उस दुःखी कोदेखकर कहनेलगे ११ कि हे निष्पाप हमनेहेतु और शापदोनों

सुने हम सब तपोधन ऋषि इसके उपायका विचारकरेंगे १२ उस श्रेष्ठ नदीसे ऐसा कहकर फिर ऋषि परस्पर बोले कि हमसब इस सरस्वतीको निष्पाप करें १३ हे राजा तब उन सब ब्राह्मणोंने तप नियम और नानाकठिन ब्रत और जितेन्द्रीपने से १४ पशुओं के स्वामी जगत्पति महादेवजीको आराधन करके इस नदियोंमें श्रेष्ठ देवी सरस्वतीको पापध्वंससे मुक्त किया १५ वह सरस्वती उन्होंके प्रभावसे उसीप्रकार के मुख्यरूप और स्वभाववाली हुई जैसी कि पूर्वमेंथी १६ शापसे युक्त वह श्रेष्ठनदी पूर्व्वकेही समान शोभायमानहुई उन मुनियोंसे शुद्धकी हुई उस सरस्वतीको देखकर १७ क्षुधात्त राक्षस उनकी शरणमें गये हे राजा वह क्षुधासे पीड़ित राक्षस हाथजोड़कर १८ उन दयावान् मुनियोंसे वारंबार यह बचन बोले कि हम क्षुधासे दुःखीहोकर सनातन धर्मसे रहितहैं १९ यह इच्छा के अनुसार प्रवृत्तिवा नहींहै जो हम पापोंको करतेहैं अब आपकी कृपासे पापकर्मसे छूटजांय २० वह हमारे पाप जिनसे कि हम ब्रह्मराक्षस हैं और बढ़तेजाते हैं उन सब पापोंको सुनो स्त्रियोंके उस पापसे जोकि उत्पत्ति स्थान योनिदोषसे सम्बन्ध रखनेवालाहै हम ब्रह्मराक्षस होतेहैं २१ इसप्रकार वैश्य शूद्र और क्षत्रियों में से जो लोग ब्राह्मणोंसे शत्रुता रखते हैं वह इसलोकमें राक्षस होतेहैं २२ जोलोग गुरू ऋत्विज आचार्य्य और वृद्ध मनुष्यों समेत सब जीवधारियोंका अपमान करतेहैं वह इस लोकमें राक्षस होतेहैं २३ हे उत्तम ब्राह्मण लोगो आप हमारी रक्षाकरो आप सबलोकोंकेभी तारनेमें समर्थहैं २४ मुनियोंने उन्होंके बचनोंको सुनकर महानदीकी स्तुतिकरी और बड़े सावधान उनमुनियों ने उनराक्षसोंको मोक्षके निमित्त उससे कहा २५ क्षुतकीटयुक्त उच्छिष्ट समेत केश रखनेवाला त्यागाहुआ नेत्रोंके अश्रुओंसे युक्त जो अन्नहोय २६ इन कारणोंसे इसलोकमें त्याग किया हुआ अन्न राक्षसोंका भागहै इस हेतुसे बुद्धिमान् मनुष्य अच्छेप्रकार जानकर सदैव ऐसे अन्नोंको उपाय पूर्व्वक त्यागकरे २७ जो ऐसे अन्नको खाताहै वह राक्षसोंके

अन्नको खाताहै इसके पीछे उन तपोधन ऋषियोंने उस तीर्थको पवित्र करके राक्षसोंकी मोक्षके लिये उसनदीको चलायमान किया हेपुरुषोत्तमफिर उसउत्तम नदीनेमहर्षियोंकाबिचारजानकर २८।२९ अपने अरुणा नामशरीर को वहां बर्त्तमान किया वह राक्षस उस अरुणामें स्नानकर अपने२ शरीरको छोड़कर स्वर्गको गये ३० हे महाराज वह तीर्थ ब्रह्महत्याका दूर करनेवालाहै निश्चय सौयज्ञ करनेवाला देवताओंका इन्द्र इसबातको जानकर उस उत्तमतीर्थ में स्नानकर पापोंसे निवृत्त हुआ ३१ जनमेजयने कहा कि हे भगवान् इन्द्रने कैसे ब्रह्महत्याको पाया और कैसे इसतीर्थमें स्नानकर के पापोंसे छूटा ३२ बैशंपायन बोले हे राजा इस वृत्तान्तको सुनो यह बृत्तान्त जैसाहै और जिसप्रकार इन्द्रने पूर्वसमयमें नमुचि की प्रतिज्ञाको भंगकिया ३३ अर्थात् इंद्रसे भयभीत होकर नमुचि सूर्य्यकी किरणों में प्रवेशकरगया इन्द्रने उससे मित्रता करी और यह बचनपर्वक प्रतिज्ञाकरी कि हे असुरोंमें श्रेष्ठ मैं जल थल और रात्रि दिनमेंभी तुझको कभी न मारूंगा हे मित्र मैं सत्यता से तुझसे शपथ खाताहूं ३४।३५ हे राजा उस ईश्वर इंद्रने बचन प्रतिज्ञा करके नीहारको देखकर जलके फेणसे उसके शिर को काटा ३६ तब वह कटा हुआ नमुचिका शिर समीप से यह बचन कहता हुआ इन्द्रके पीछे चला कि हे मित्रके मारनेवाले पापी ३७ कहां जाताहै इसप्रकार उस शिरसे बारबार कहेहुये महादुःखी इन्द्रने उस बृत्तान्तको ब्रह्माजीसे निवेदनकिया ३८ तबलोक के गुरू ब्रह्माजीने उससे कहाकि हे देवेन्द्र तुम बिधिपूर्बक पापों के भयके दूरकरनेवाले अरुणा तीर्थपर यज्ञ करके स्नानकरो ३९ हे इन्द्र मुनियों से रचाहुआ पवित्रजलवाला यह तीर्थहै प्रथम भी इसलोकमें उस तीर्थकी यात्रा गुप्तहोतीथी ४० इसके पीछे इन्द्रने अरुणा देवीके पासजाकर जलसे अपनेको पवित्रकिया सरस्वती और अरुणा देवीका यह बड़ा पवित्र संगमहै ४१ हे देवेन्द्र यहां तुम यज्ञकरो और बहुत प्रकारके दानोंको दो तुम इस तीर्थमें

स्नान करके बड़े घोर पापोंसे छूटोगे ४२ हे जनमेजय ब्रह्माजी के इस बचनको सुनकर इन्द्रने सरस्वतीकेकुंजमें यज्ञ करके अरुणामें स्नान किया ४३ ब्रह्महत्याके उस पापसे छुटाहुआ वह प्रसन्नचित्त इंद्रस्वर्गको गया ४४ हे राजाओं में श्रेष्ठ भरतवंशी नमुचिके उस शिरने भी इसी तीर्थमें स्नान करके अभीष्टों के प्राप्त करनेवाले अबिनाशी लोकोंको पाया ४५ वैशंपायन बोले कि महात्मा और बड़े कर्म करनेवाले बलदेवजी उस तीर्थमें भी स्नान करके अनेक प्रकार के दानोंके देनेसे धर्मको प्राप्त करके चन्द्रमाके उस बड़ेतीर्थ को गये ४६ हे महाराज जहांपर साक्षात् चन्द्रमाने पूर्व समयमें विधिपूर्वक राजसूययज्ञ किया था उस उत्तम यज्ञमें बुद्धिमान् ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महात्मा अत्रिजी होताहुये ४७ जिस तीर्थके पास दानव दैत्य और राक्षसोंका महा युद्ध देवताओं के साथहुआथा और जहां तारकानाम कठिन युद्धहुआ जिसमें स्वामिकार्त्तिकजीने तारक असुरको मारा ४८ और जहांपर महासेन नाम दैत्यों के नाशकरने वाले स्वामिकार्त्तिकजीने देवताओंकी सेनापती को पाया और साक्षात् कुमार कार्तिकेयजी स्थितहुये, यहांपर वह प्लक्षनाम राजतीर्थथा ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

जनमेजय बोले हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ तुमनेयहसरस्वतीका प्रभाव कहा हे द्विजवर्य्य कुमारके अभिषेकको भी आप कहनेको योग्यहो १ हे वक्ताम्बर वह प्रभु भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी जिस देशमें जिस समय जिसविधिसे उत्पन्नहुये और जिन२ देवताओंने इनकुमारजीको अभिषेक किया २ और उन्होंने जैसे दैत्योंको बड़े नाशको किया यह सब वृत्तान्त मुझसे कहिये क्योंकि मुझको उसकेसुननेकी बड़ी उत्कण्ठा है ३ वैशंपायन बोले हे जनमेजय यह तेरा सुनने का उत्साह कौरववंशके योग्यहै यह बचन मेरे प्रसन्नता को उत्पन्नकरता

है ४ हे राजा बहुत अच्छा मैं कुमार जीके अभिषेक और प्रभाव को तुझसे कहताहूं ५ पूर्वसमयमें शिवजीका तेजरूप वीर्य्य अग्निमें गिरा सबके भस्म करनेवाले भगवान् अग्नि उस अविनाशीके भस्मकरनेको समर्थ नहींहुये ६ उसके कारण वह प्रकाशित अग्नि अत्यन्त तेजस्वीहुये परन्तु उसतेजरूप गर्भको धारण नहीं करसके ७ उस प्रभुअग्निने ब्रह्माजीकी आज्ञा से गंगाजीमें जाकर उस सूर्य के समान महातेजस्वी दिव्य गर्भको नियत किया तदनन्तर उस गर्भके धारण करनेको अक्षम श्री गंगा जीनेभी देवताओंसे पूजित सुन्दर हिमालय पर्वतपर उसको छोड़ा ८ ९ वह अग्निका पुत्र वहांपर अपने तेजसे लोकोंको व्याप्त करके बड़ाहुआ इसके पीछे कृत्तिकाओंने उस अग्निरूप गर्भको देखा १० पुत्रकी अभिलाषी वह सब उस अग्नि के पुत्र महात्मा ईश्वरको शरस्तम्बपर देखकर यह हमाराहै ऐसा कहकर पुकारीं ११ तब भगवान् प्रभुने उन दुग्धपान करानेकी उत्सुक माताओंके उस भावको जानकर छः मुखों से उनके दूधको पान किया १२ दिव्य दुग्धधारी कृत्तिकाओंने उस बालक के अतुल प्रभावको जानकर बड़ा आश्चर्य्यमाना १३ हे कौरव्य जहां कि उस पर्व्वतके मस्तक पर वह कुमार गंगाजीके हाथसे छोड़ागयाथा वह सब पर्व्वत सुवर्ण का होकर शोभायमान हुआ १४ उस बढ़ने वाले बालक से पृथ्वी भी रंगोंसे युक्त होगई इसहेतु से सब पर्व्वत सुवर्णकी खानें होगये १५ बड़ा पराक्रमी कुमार कार्त्तिकेय अर्थात् कृत्तिकाओंकापुत्र कहागया वहकुमार बड़ेयोगबलसेयुक्त प्रथम गंगा जीके पुत्रहुये १६ हे राजेन्द्र अन्तःकरण से जितेन्द्री तप पराक्रम समेत चन्द्रमा के समान अपूर्व दर्शनवाला वह कुमार बहुत बड़ा हुआ १७ वह शोभासे युक्त गन्धर्व और मुनियों से स्तुतिमान होकर उस दिव्य सुवर्ण के शरस्तम्ब पर सदैव शयन करता था १८ उसीप्रकार दिव्य वाद्य और नृत्यों की ज्ञाता प्रशंसा करनेवाली सुन्दर दर्शनवाली हजारों देवकन्या इसके पास आकर नृत्य करने लगीं १९ नदियों में श्रेष्ठ श्री गंगाजी उसके पास नियतहुईं और

उत्तम रूपको धारण करके पृथ्वीने उसको धारण किया २० वहां बृहस्पतिजीने उसके जातिकर्म आदिक क्रियाओंको किया और चारमूर्त्ति धारण करनेवाला वेदभी हाथ जोड़कर इसके सन्मुख वर्त्तमान हुआ २१ चारचरण रखनेवाला धनुर्वेद और संग्रहों समेत अस्त्रोंके समूहभी इसके पास आकर वर्त्तमानहुये और वहां साक्षात् केवल वाणीभी उसके पास वर्त्तमानहुई २२ उसने पार्वतीजी समेत पुत्र और जीवधारियों के अनेक समूहों सहित बड़े पराक्रमी देवताओं केभी देवता शिवजी महाराजको देखा २३ अत्यन्त सुंदर और अपूर्वदर्शन रूप और भूषण रखनेवाले २४ व्याघ्र, सिंह, रीछ, विडाल, मकर, बिलाव, हाथी, और ऊंटके समान मुख रखनेवाले २५ कोई उलूक, गिद्ध, शृगाल, क्रोंच, कपोत, और रंकनाम मृगोंके समान मुखरखनेवाले २६ श्वावित, शल्लक, गोधा, बकरी, भेड़ और बैलोंके समान शरीरोंको दूसरे पार्षदोंने जहां तहां धारण किया २७ कितनेही पर्व्वत और बादल के रूप चक्र गदाधारी कितनेही कज्जल समूहके समान और कोई श्वेत पर्वताकारथे २८ हे राजासप्तमाताओं समेत साध्य, विश्वेदेवा, मरुद्गण, अष्टवसु, सब पितर २९ एकादशरुद्र, द्वादशसूर्य्य, सिद्ध, सर्प, दानव, गरुड़ादिकपक्षी, और विष्णुजी समेत अपनेआप प्रकटहोनेवाले भगवान् ब्रह्माजी ३० इसीप्रकार इन्द्रभी उस अजेय उत्तमकुमार के देखनेको पासआये नारदादिक ऋषि, देवता, गन्धर्व ३१ देवऋषि सिद्ध जिनकेअग्रवर्ती बृहस्पतिजीथे और देवताओंकेभीदेवता जगत् में श्रेष्ठ पितृगण सब याम, और धाम, यह सबभी आये फिरबड़ेयोग बलसे युक्तवहबालकभी ३२।३३ शूल और पिनाक धनुषहाथमेंरखने वाले देवताओंके ईश्वर शिवजीके पासगया उसआतेहुये कुमारको देखकर शिवजी के चित्तमें यह विचारहुआ ३४ कि यह बालक एकबारही पार्वतीगंगा और अग्नि इनतीनोंमें से किसकी महत्त्वता और गौरवतासे प्रथम किसके पासजायगा ३५ और मेरे पासभी आवेगा या नहींउन शिवजीकेचित्तमें यह ध्यान हुआ उस कुमारने

उनसबके इस अभिप्रायको जानकर ३६ एकसाथही योगसे नियत होकर नानाप्रकारके शरीरोंको उत्पन्नकिया इसके पीछे वह भगवान् प्रभु क्षणमात्रमेंही चारमूर्ति वालाहुआ ३७ शाख विशाख और नैग-मेय नाम मूर्तियां उसके पृष्ठभागसे प्रकटहुईं इसप्रकार उस भग-वान् प्रभुने अपनेको चाररूपवाला करके ३८ जिधर रुद्रजीथे उधर-हीवह अपूर्वदर्शन स्वामिकार्त्तिकजी गये और जिधर देवी पार्वतीथीं उधर विशाख गया और वायुरूप भगवान् शाख अग्निके पास गया और अग्निके समान प्रकाशित कुमार नैगमेय गंगाजीके पा-सगये ३९। ४० वह चारों सूर्य्यके समान शरीर रखनेवाले सब एकरूप सावधान उनकेपास गये यह आश्चर्यसा हुआ ४१ अ-पूर्व और शरीरके रोमांच खड़ेकरनेवाले उस बड़े आश्चर्यको देख कर देव दानव और राक्षसोंका बड़ा हाहाकार हुआ ४२ उसके पीछे रुद्र, देवी, अग्नि, और गंगाजी इनसबने जगत्पति ब्रह्माजीको दण्ड-वत् करी ४३ और विधिपूर्व्वक दण्डवत् करके स्वामिकार्त्तिकजीकी प्रसन्नताके अर्थ यह वचन कहा ४४ कि हे देवताओंके ईश्वर भ-गवान् हमारे हितके लिये इस बालकको इसके योग्य अधिकार देनेको योग्यहो ४५ इसके पीछे लोकोंके पितामह बुद्धिमान् ब्रह्मा जीने चित्तसे विचार किया कि इसको कौनसा अधिकार दियाजा-य ४६ प्रथमही इस तेजस्वीने देवता गन्धर्व राक्षस भूत यक्ष पक्षी और सर्प इन सबके ऐश्वर्य्योंको ४७ महात्माओंके समूहोंमें उप-देशकियाहै इसीसे बड़े बुद्धिमानोंने उसको सब ऐश्वर्य्योंमें समर्थ मानाहै ४८ इसके पीछे देवताओंकी वृद्धिमें नियत देवताओंमें श्रेष्ठ ब्रह्माजीने एक मुहूर्त्त ध्यानकरके उस कुमारको सबजीवधा-रियोंका सेनापति किया ४९ और उनसब जीवोंको उनके आज्ञा-कारीहोनेकी आज्ञादी जोकि सब देवसमूहोंके राजा प्रसिद्धथे ५० इसके पीछे ब्रह्मादिक सब देवता मिलकर कुमारको लेकर अभिषेक केलिये गिरिराजके समीप ५१ धर्मकी वृद्धिके हेतु नदियोंमें श्रेष्ठ उस हिमाचलकी पुत्रीदेवी सरस्वतीके पास आये जोकि तीनों लोकोंमें

प्रसिद्ध समन्त पंचकदेशमेंहै ५२ बड़ेप्रसन्नचित्त सवदेवता गन्धर्व उस सरस्वतीकेपवित्र पुण्यकारी किनारेपर जाकर बैठगये ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिपंचदशोऽध्यायः१५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले इसके पीछे बृहस्पतिजीने शास्त्रोक्तरीतिसेअभिषेककी सब सामग्रियोंको इकट्ठा करके वृद्धियुक्त अग्निमेंविधिपूर्वक अग्निदेवताकी आहुतिदी १ इसकेपीछे देवगणोंने हिमाचलकेदिये हुये अत्यन्त उत्तम मणियोंसे शोभित दिव्य रत्नोंसे जटित धर्मकी वृद्धिकेहेतु रूप उत्तम आसन पर बिराजमानको २ सब मंगलरूप सामग्रियों समेत बिधि पूर्वक मंत्रोंके द्वारा अभिषेककी वस्तुओं से अभिषेककराया ३ बड़ेपराक्रमीविष्णुजी इन्द्र, सूर्य, चंद्रमा, धाता, विधाता, अग्नि, वायु ४ पूषा, भग, अर्यमा, अंश, विवश्वत, और मित्र, वरुण समेत एकादश रुद्र ५ अष्टवसु, द्वादशसूर्य, दोनों अश्विनीकुमार, विश्वेदेवा, मरुद्गण, पितृ, साध्यगण, ६ गंधर्व, अप्सरा, यक्ष, राक्षस सर्प, असंख्य, ब्रह्मऋषि, देवऋषि, ७ वायुभक्षी, सूर्यांशुको, पानकरनेवाले वैषानस बालखिल्य ऋषि भृगुवंशी अंगिरावंशी महात्मायती ८ सर्प विद्याधर और पवित्र योगवाले सिद्धपुरुषों समेत ब्रह्माजी पुलस्त्य पुलह बड़ेतपस्वी अंगिरा ९ कश्यप, अत्रि, मरीचि, भृगु, क्रतु हर, प्रचेता, मनुदक्ष १० सबऋतु, उत्तम ग्रह, नक्षत्रादिक प्रकाशित शरीरवाली मूर्तिमान नदियां, सनातन वेद, हृद, नानाप्रकारके तीर्थ, पृथ्वी, स्वर्ग, दिशा, वृक्ष, देवताओंकीमाता, अदिती, ह्री, श्री, स्वाहा, सरस्वती, उमा, शची, शिनीवाली अनुमति, कुहू ११।१२।१३ सका, धिषणा, और देवताओंकी अन्य अन्य स्त्रियां हिमाचल विंध्याचल और अनेक शिखरधारी मेरुपर्वत १४ साथियों समेत ऐरावतहाथी, कलाकाष्ठा, मास, पक्ष, ऋतु, दिन, रात १५ घोड़ों में श्रेष्ठ उच्चैःश्रवासर्पोंकाराजावासुकी अरुणगरुड़ औषधियोंसमेतवृक्ष १६ भगवान्धर्म देवता, काल, यम, मृत्यु, और जो २ यमराजके आगेपीछे

चलनेवालेहैंवहसबमिलेहुये वहांआये१७और जो नानाप्रकारकेदेव गणोंवृद्धितासेतहींकहेगये वहकुमारके अभिषेकके लियेजहां तहांसे आये१८हेराजाइसकेपीछेउनसबदेवताओंने अभिषेककेपात्रऔरस- बमंगलीकबस्तुओंकोलिया१९हेराजाअत्यन्त प्रसन्नचित्तदेवताओं ने दिव्यसामग्रियोंसे युक्त और सरस्वतीके पवित्ररूपदिव्य जलोंसे पूर्णसुवर्णके कलशोंसे२०उस कुमारकोअभिषेक कराया जोकिअसु- रोंकेभयका उत्पन्न करनेवाला महात्मा सेनापतिथा२१हे महाराज पूर्व्व समयमें जैसे कि जलके स्वामी बरुणको अभिषेक करायाथा उसी प्रकार सब लोकके पितामह भगवान् ब्रह्माजी २२ और बड़े तेजस्वी कश्यपादिक ऋषिजो लोकमें बिख्यात हैं उन सबने मिल कर अभिषेक कराया प्रसन्न प्रभु ब्रह्माजीने इस कुमारके निमित्त बलवान् और बायुके समान शीघ्रगामी २३ इच्छा नुसार पराक्रमी सिद्ध महापार्षदों को दिया उनके नाम नन्दिसेन, लोहिताक्ष,घंटा कर्ण २४ इसका चौथा अनुचर कुमुद मालीनामसे प्रसिद्ध हेराजेन्द्र उसके पीछे बड़े तेजस्वी प्रभु शिवजीने २५ सैकड़ों मायाधारी इच्छानुसार बल पराक्रमी असुरोंके नाश करनेवाले महा पार्षद कामनामको स्वामिकार्त्तिकको दिया २६ उस क्रोधयुक्तने देवा- सुर नामयुद्ध में दोनों हाथोंसे भयकारी कर्म करनेवाले चौदह प्रयुत दैत्योंको मारा २७ उसीप्रकार देवताओंने असुरोंको नाश करनेवाली अजेय और नैऋत असुरोंसे युक्त बिष्णुरूप सेनाको उसके निमित्त दिया २८ तब इन्द्र समेत सब देवता, गन्धर्व यक्ष, राक्षस, मुनि, और पित्रोंने बिजयका शब्दकिया २९ उसके पीछे यमराजने दोअनुचर दिये वह दोनोंकालरूप बड़े पराक्रमी और तेजस्वी उन्माथ और प्रमाथ नामथे ३० प्रसन्नचित्त प्रतापवान् सूर्य्यने सुभ्राज और भास्करनाम उनदोनों अनुचरोंको स्वामिका- र्त्तिकके निमित्त दिया जोकि दोनों सूर्य्यके पीछे चलने वालेथे ३१ चन्द्रमाने भी मणि और सुमणि नामउन दोअनुचरोंको दिया जोकि कैलास के शिखरके रूप श्वेतमाला और चन्दनधारी थे ३२ उसी

प्रकार अग्निनेभी अपने पुत्रकेलिये ज्वालाजिह्व और ज्योतिनाम दोनों अनुचर जोकि शूर और शत्रुकी सेनाके नाशकारी थे उनको दिया ३३ अंश देवताने भी बुद्धिमान् स्वामिकार्त्तिकके अर्थ पांच अनुचर दिये उनके नाम परिघ, वट, बलवान् भीम, दहति, दहन यह पांचों अत्यन्त शीघ्रगामी और अंगीकृत पराक्रमीथे ३४ शत्रु बिजयी इन्द्रने उस अग्निके पुत्रकेलिये उत्क्रोश, पंचक, वज्रधारी, दण्डधारी इनचारों अनुचरोंको दिया ३५ उनदोनों वज्रधारी और दण्डधारीने युद्धमें महा इन्द्रके बहुत शत्रुओंको माराथा ३६ बड़े यशवान् बिष्णुजीने कुमारको बड़ा बलवान् चक्र, बिक्रमक, और संक्रम, यह तीन अनुचर दिये ३७ वैद्योंमें श्रेष्ठ प्रसन्न चित्त अश्विनीकुमारोंने बर्द्धन और नन्दन नाम दोअनुचर स्वामिकार्त्तिक को दिये वह दोनों भी सब बिद्याओंमें कुशल थे ३८ बड़े यशवान् धाताने उस महात्माके लिये नीचे लिखेहुये अनुचर दिये कुन्द कुसुम,कुमुद,डंबर,अडम्बर ३९ त्वष्टाने स्वामिकार्त्तिक को चक्र अनुचक्र यह दोनों अनुचरदिये वह दोनों बड़ेमायावीबलमें मतवाले बड़े बलवान् मेघोंकीसेना रखनेवाले थे ४० प्रभुमित्रने महात्मा कुमारके निमित्त सुब्रत और सत्यसंध यह दोनों अनुचरदिये जो कि तप और विद्याके धारणकरनेवाले महात्माथे ४१ विधाताने महात्मा सुब्रत और शुभकर्मको स्वामिकार्त्तिकके निमित्तदिया जोकि प्रसन्न मूर्त्ति वरदाता तीनोंलोक में विख्यातथे हे भरतवंशी पूपाने बड़े मायावी पानीतक और कालकनाम ४२ पार्षदोंको स्वामिकार्त्तिकके अर्थदिया हेभरतर्षभ वायुने बड़े बलवान् और मुखवाले बल और अति बलनामको ४३।४४ स्वामिकार्त्तिकके लिये दिया सत्यसंकल्प बरुणने निमि मत्स्यके समान मुख रखनेवाले बड़े बलवान् यम और अतियम नाम अनुचरोंको ४५ स्वामिकार्त्तिकके लिये दिया हेराजा हिमाचलने सुवर्चस और अति वर्चसनाम अनुचरोंको ४६ अग्निके पुत्रके लियेदिया महात्मा मेरु पर्वतने स्थिर और अस्थिर नाम पार्षदोंको मेरु पर्वतने महात्माकांचन और मेघमाली नाम

उन अनुचरोंको अग्निके पुत्रकोदिया जो कि बड़े बल पराक्रम रखते वालेथे विन्ध्याचलने उच्छृङ्ग अति शृङ्गनाम बड़े पाषाणोंसे लड़नेवाले ४७।४८।४६ दोपार्षदोंको अग्निके पुत्रकोदिया समुद्रने भी गदाधारी संग्रह और विग्रहनाम ५० दोमहापार्षदोंकोदिया इसी प्रकार उन्माद पुष्पदंत और शंकुकर्ण ५१ पार्षदोंको शुभ दर्शन पार्वतीजीनेदिया हेपुरुषोत्तम सर्पोंके राजा बासुकीनेजय और महाजयनाम सर्पोंकोदिया इस प्रकार साध्य रुद्र वसु पितृ ५२।५३ सागर नदियां और बड़े २ बलवान् पर्वतोंने सेनाके अप्सरों को दिया जोकि शूल पट्टिश धारण करनेवाले ५४ दिव्य अस्त्र शस्त्रोंसे युक्त और नाना प्रकारकी पोशाकोंसे अलंकृतथे उन्होंकेनामोंको भी सुनो और स्वामिकार्त्तिकके जो अन्य २ सेनाके लोग ५५ नाना शस्त्रधारी अपूर्व भूषणोंसे अलंकृत थे उनकेनाम यहहैं शंकुकर्ण निकुंभ, पद्म, कुमुद ५६ अनन्त, द्वादश, भुज, कृष्ण, उपकृष्णक, घ्राण श्रवा, प्रतिस्कंध, कांचनाक्ष, जलन्धम ५७ अक्षसंतर्जन, कुनदीक तमोन्त कृत, एकाक्ष, द्वादशाक्ष, प्रभुएकजटा ५८ सहस्त्राबाहु, विकट, व्याघ्राक्ष, क्षिति कंपन, पुण्यनामा, सुनामा, सुचक्र, प्रियदर्शन ५९ परिश्रुत कोकनद, प्रियमाल्यानुलेपन, अजोदर, गजशिरा, स्कंदाक्ष, शतलोचन ६० ज्वालाजिह्व, करालाक्ष, शितिकेशी, जटी, हरि परिश्रुत, कोकनद, कृष्णकेश, जटाधर ६१ चतुर्दंष्ट्र, उष्ट्र, जिह्व, मेघनाद, पृथुश्रव, बिद्युताक्ष, धनुर्वक्र, जाठर, मारुताशन ६२ उदाराक्ष, रथाक्ष, वज्रनाभ, बसु प्रद, समुद्रवेग, शैलकंपी ६३ वृष, मेष प्रबाह, नन्द, उपनंदक, धूम्र, श्वेत, कलिन्द, सिद्धार्थ, बरद, प्रियक, एकनन्द, प्रतापवान् गोनंद, आनंद, प्रमोद, स्वस्तिक, ध्रुवक ६४ ६५ क्षेमवाह, सुबाह, सिद्धपात्र, गोव्रज, कनका, पीड़नाम, महा पार्षदोंका ईश्वर, गायन, हसन, बाण पराक्रमी खड्ग, बैताली गतिताली, कथक, वार्त्तिक ६६।६७ हंसज, पंकदिग्धांग, समुद्रोन्मादन, रणोत्कट, प्रहास, श्वेतसिद्ध, नंदक, ६८ कालकण्ठ, प्रभास इसी प्रकार दूसरा कुभाण्डक, कालकाक्ष, इसी प्रकार जीवोंको

मथन करनेवाला सत ६६ यज्ञवाह, प्रवाह देवयाजी, सोमप, बड़ा तेजस्वी, मज्जान, क्रथ, क्राथ, ७० तुहर, तुहार, पराक्रमीचित्रदेव मधुर, सुप्रसाद, बलवान् किरीटी ७१ वत्सल, मधुवर्ण, कलशोदर, धर्म्मद, मन्मथकर, पराक्रमी सूचीवक्र ७२ श्वेतवक्र, सुवक्र, चारु वक्र, पांडुर, दंडबाहु, सुबाहु, रज, कोकिलक ७३ अचल, कंकाक्ष, जोकि बालकोंकाभी प्रभुहै चंचारक, कोकनद, गृध्रप, जंबुक ७४ लोहाजवक्र, जवन, कुंभवक्र, कुंभक, स्वर्णग्रीव, कृष्णौजा, हंसवक्र चन्द्रभ, ७५ पाणिकूर्चा, शंबूक, पंचवक्र, शिक्षक, चापवक्र जंबूक शाकवक्र, कुंजल ७६ यह सब योगसे संयुक्त सदैव महात्मा ब्राह्म- णोंके प्यारे बड़े साहसी ब्रह्माजीके पुत्र पार्षदहैं ७७ हे जनमेजय हज़ारों तरुण बालक और वृद्ध कुमारके पास आकर नियतहुये ७८ और जो पार्षद नानाप्रकारके मुखरखनेवालेथे उनकोभीसुनो कच्छ और कुक्कुटके समान मुखवाले शश उलूक के समान मुखरखने वाले ७६ गर्दभ, ऊंट, शूकर, मार्जार और शशवक्रके समान दीर्घ मुखरखनेवाले थे ८० इसीप्रकार दूसरे पार्षद नौला, उलूककाक चूहेका मुख रखनेवाले और मयूरके समान मुख रखनेवालेथे ८१ बहुतसे अन्यपार्षद मत्स्य, मेष, बकरी भेड़ भैंसा, रीछ, शार्दूल और सिंहका मुखरखनेवालेथे ८२ इसी प्रकार भयानकरूप हाथी नक्र, गरुड़, कंक, भेड़िया और काकका मुख रखनेवालेथे ८३ बैल गर्दभ ऊंट बृषदंश मुखवाले बड़ा उदर चरण अंगरखनेवाले और नक्षत्रों के समान नेत्रवालेथे ८४ हेभरतर्षभ बहुतसे कपोतमुखी, वृषमुखी कोकिलामुखी, बाजमुखी और तीतरमुखीथे ८५ कृकलास मुखी दिव्यबस्त्रधारी, व्यालमुखी, शूलमुखी, चंडमुखी, और शुभमुखथे ८६ डाढ़में बिषरखनेवाले चीरधारी बैलके समान नाक मुखरखनेवाले स्थूल, उदर, कृशशरीर, स्थूल शरीर और सूक्ष्म उदरवाले ८७ छोटीगर्द्दन और बड़े कान नाना प्रकारके सर्पोंका भषण रखनेवाले गजराजके चर्मकी पोशाक और काले मृगचर्मकी पोशाक रखने वाले और कृष्ण मृगचर्म के धारण करनेवालेथे ८८ हेमहाराज

बहुतेरे कन्धेपर मुख रखनेवाले उदर पीठ ठोड़ी अथवा जंघा पर भी मुख रखनेवाले ८९ उसीप्रकार बहुतसे पार्षद कुक्ष में और अनेक प्रकारके स्थानोंपर कीट पतंगों के समान मुखवाले होकर सेना समूहोंके ईश्वरथे ९० बहुतेरे अनेकप्रकारके सर्पोंकी समान मुखवाले बहुत भुजा शिर और उदर रखनेवाले कोई नानाप्रकार के वृक्षोंकी समान भुजा रखनेवाले और कोई कमरपर शिररखने वालेथे ९१ सर्पके फणकीसमान मुखवाले बहुतसे सेनाके भाग में निवासकरनेवाले चीरधारी नानाप्रकारकी स्वर्णमयी पोशाक रखनेवाले ९२ अनेक प्रकारकी पोशाक रखनेवाले नानाप्रकार की माला और चंदनादिसे संयुक्त शरीर बहुत प्रकारके वस्त्रधारी चर्म वस्त्रोंसे अलंकृत ९३ वेष्टनसमेत सुन्दर मुकुटधारी सुन्दरग्रीवा बड़े तेजस्वी किरीटसे शोभित पांचशिखा रखनेवाले और स्वर्णकेश धारी ९४ तीनशिखा दोशिखा और सातशिखाधारी शिखंडी मुकुटधारी जटाधारी ९५ और चित्रमालाधारी इसीप्रकार कोई मुखपर रोमरखनेवाले सदैव युद्धको स्वीकार करनेवाले उत्तम देवताओंसे भीअजेय ९६ श्यामरूप मांससे रहित मुखमोटी पीठपरन्तु छोटा उदर स्थूल पृष्ठ सूक्ष्म पृष्ठ अत्यन्त लम्बोदरलिंगेन्द्री युक्त९७ वड़ी भुजा और छोटी भुजावाले छोटाडील बौना कुबड़े अल्पजंघाहाथी केसमान कानशिर और पेटरखनेवाले ९८ इसीप्रकार बहुतसेहाथी कछुआ और बगलेकेसमान नाकरखनेवाले लम्बीश्वास रखनेवाले लंबीजंघारखनेवाले बिकरालरूप अधोमुख ९९ बड़ीडाढ़ छोटीडाढ़ और चारडाढ़ रखनेवालेथे हेराजा बहुतसे पार्षदगजेन्द्र के समान भयंकर रूपथे १०० सुडौल शरीर प्रकाशित अच्छे अलंकृत पिंगलाक्ष शंख श्रोत्र रक्तनासिकावाले १०१ मोटीडाढ़बड़ीडाढ़ मोटेहोठ औरपिंगलवर्णथे बहुतसे केशधारी नानाप्रकारके चरणहोठडाढ़हाथ औरग्रीवा रखनेवालेथे १०२ वहसब नानाप्रकारके मृगचर्मोंसे ढके हुयेनानाप्रकारके देशोंकी भाषाबोलनेवाले और उनमेंकुशल परस्पर वार्त्ताकरनेवाले ईश्वर प्रसन्न चित्त १०३ महापार्षद चारों

ओरसे आये जो लम्बी गर्दनें नख चरण और भुजाओं के रखनेवाले १०४ पिंगलाक्ष नीलकण्ठ लम्बेकानवाले वृकोदरके समान कितनेही अंजन के रूप १०५ श्वेताक्ष, रक्तग्रीव और पिंगलाक्ष थे हे भरतवंशी राजा जनमेजय इसी प्रकार बहुतसे पार्षद कल्माषवर्ण, चित्रवर्ण १०६ चामरा पीडकसमान, श्वेतरक्त पंक्ति रखने वाले नानावर्ण सवर्ण मयूरके सदृश वर्णधारी प्रकाशमानथे १०७ अब मैं इन सबके शस्त्रों का वर्णनकरता हूं उनको तुमसुनो कोई हाथोंसे पाश उठानेवाले, फैलेमुख, गर्दभके समानमुख, पृष्ठपरनेत्र रखनेवाले नीलकण्ठ और परिघशस्त्रकी समान भुजा रखनेवालेथे १०८ । १०९ कोई शतघ्नी चक्रको हाथमें धारण करनेवाले, मूसल हाथमें रखनेवाले खड्ग मुद्गर और दण्डधारण करनेवाले ११० गदाभुशुंडी और तोमर हाथमें रखनेवाले नाना प्रकारके घोर शस्त्रोंसे युक्त बड़े साहसी और शीघ्रगामी १११ बड़े बलवान् वेगवान् युद्धको प्रिय माननेवाले महा पार्षद यह सब कुमार के अभिषेक कोदेखकर प्रसन्नहुये ११२ घंटाजाल से अलंकृत शरीर बड़े तेजस्वी वहसब पार्षदनृत्य करनेलगे और अन्य २ बहुतसेमहापार्षदभी ११३ यशवान् कीर्त्तिमान् प्रतापी महात्मा स्वामिकार्त्तिकके पास आकर वर्त्तमानहुये स्वर्ग आकाश और पृथ्वीसे सम्बन्धरखनेवाले वायुके समान ११४ यहसब शूरवीर देवताओं के आज्ञावर्त्ती होकर कुमार स्वामिकार्त्तिकजीके अनुचर हुये उस प्रकारके हजारोंकरोड़ों किन्तु अर्बुदों पार्षद ११५ उस अभिषेक कियेहुये महात्मा कुमारकेचारों ओरसे परिधि रूप होकर उसके समीप वर्त्तमानहुये ११६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले हे बीर राजा जनमेजय अब मुझसे इनमाताओं के समूहों को सुनो जोकि शत्रु समूहोंको मारनेवाले और कुमारके पीछे चलने वालेहैं १ हे भरतवंशी इन यशवान् माताओंके नामों

को सुनो जिन कल्याण रूप नामोंसे तीनोंलोक विभाग पूर्व्वक व्याप्तहैं २ प्रभावती, विशालाक्षी, पालिता, गोस्तनी, श्रीमती, बहुला बहुपुत्रिका, ३ अप्सुजाता, गोपाली, बृहदा, अंबालिका, जयावती मालतिका, ध्रुवरत्ना, अभयंकरी ४ वसुदामा, सुदामा, विशोका नन्दिनी, एकचूड़ा, महाचूड़ा, चक्रनेमि ५ उत्तेजसी, जयत्सेना, कमलाक्षी, शोभना, शत्रुंजया, क्रोधना, शलभी, खरी ६ माधवी, शुभवक्रा, तीर्थसेनी, गीतप्रिया, कल्याणी, रुद्ररोमा, अमिताशना ७ मेघस्वना, भोगवती, सुभ्रू, कनकावती, अलाताक्षी, वीर्य्यवती विद्युज्जिह्वा ८ पद्मावती, सुनक्षत्रा, कन्दरा, बहुयोजना, संतानिका कमला, महाबला ६ सुदामा, बहुदामा, सुप्रभा, यशस्विनी, नृत्यप्रिया, शतोलूखलमेखला १० शतघण्टा, शतानन्दा, भाविनी, वपुष्मती, चन्द्रशीता, भद्रकाली, ऋक्षांबिका, निस्कुटिका, बामा, चत्वरवासिनी, सुमंगला, स्वस्तिमती, बुद्धिकामा, जयप्रिया ११।१२ धनदा, सुप्रसादा, भवदा, एढ़ी, भेड़ी, समेड़ी, बेतालजननी, गण्डूती, कालिका, देवमित्रा, वसुश्री, कोटिरा, चित्रसेना, अबला१३।१४ कुक्कुटिका, शंखलिका, अशकुनिका, कुंडारिका, कौकुलिका, कुंभिका, शतोदरी १५ उत्क्रोधनी, जनेना, महावेगा, कंकणा, मनोजवा, कंटकिनी, परिघा, पूतना १६ केशयंत्री, त्रुटि, क्रोशना, तड़ित्प्रभा, मन्दोदरी, मुंडी, कोटरा, मेघबाहिनी १७ सुभगा, लम्बिनी, लम्बोदरा ताम्रचूड़ा, बिकाशिनी, ऊर्ध्ववेणी, धरा, पिंगाक्षी, लोहमेखला १८ पृथुवस्त्रा, मधुनिका, मधुकुंभा, पक्षालिका, मत्कुणिका, जरायुट, जर्जरानना १६ ख्याता, दहदहा, धमधमा, खंडखंडा, पूषणा, मणिकुट्टिका २० अमोघा, लम्बपयोधरा, बेणुवीणाधरा, पिंगाक्षी, लोहमेखला २१ शशोलूकमुखी, कृष्णा, खर जंघा, महाजवा, शिशुमारमुखा, श्वेता, लोहिताक्षी, बिभीषणा २२ जटालिका, कामचरी दीर्घजिह्वा, बलोत्कटा, कालोहिका, बामनिका, मुकुटा २३ लोहिताक्षी, महाकाया, हरिपिंडा, एकत्वचा, सुकुसुमा, कृष्णकर्णी २४ क्षुरकर्णी, चतुष्कर्णी, कर्णप्राबर्णा, चतुष्पथ निकेता, गोकर्णा,

महिषानना २५ खरकर्णी, महाकर्णी, भेरीस्वना, महास्वना, शंख, कुम्भश्रवा, भगदा, महाबला २६ गणा, सुगणा, भीति, कामदा, चतुष्पथरता, भूतितीर्था, अन्यगोचरा, पशुदा, वित्तदा, सुखदा, महायशा, पयोदा, गोमहिषदा, सुविशाला २८ प्रतिष्ठा, सुप्रतिष्ठा, रोचमाना, सुरोचना, नौकर्णी, मुखकर्णी, चिशरामंथिनी २६ एकचन्द्रा, मेघकर्णा मेघमाला, बिरोचना, हेभरतर्षभ यह सब और अन्य २ बहुतसी माता ३० स्वामिकार्त्तिक के पीछे चलनेवाली नाना रूप वाली हज़ारोंथीं लंबेनख लंबेदांत लम्बामुख रखनेवाली ३१ बलवान्, मधुरबचन, तरुण, अच्छे अलंकृत महत्वतासंयुक्त स्वेच्छाचारी रूप धारण करनेवाली ३२ मांससे रहित शरीर श्वेतवर्ण और कांचन रूपथी हेभरतर्षभ इसीप्रकार दूसरी देवी कृष्ण मेघकी सूरत धूम्रवर्ण ३३ अरुणबर्ण महाभाग लम्बे केश रखनेवाली कोई लम्बी मेखलारखनेवाली ३४ लम्बाउदर कान और स्तनरखनेवालींउसी प्रकार दूसरीदेवी लम्बेरक्तनेत्र लालवर्ण पिंगलाक्षी ३५ बरदाता इच्छानुसार कर्मकर्त्ता सदैवप्रसन्न यमराज रुद्र और चन्द्रमासमेत कुबेरसे संबन्ध रखनेवाले बड़ेबलवान् लोग ३६ वरुण महाइन्द्र अग्नि बायुकुमार और ब्रह्माजीसे सम्बन्ध रखनेवाली देवियां ३७ उसीप्रकार बिष्णु सूर्य्य और बाराहजीसे संबन्ध रखनेवाली बड़ी बलवानरूप रूपमें अप्सराओं के समान चित्तरोचक मनको प्रसन्न करनेवाली ३८ बार्त्ताओं में कोकिलाओंकेसमान धनमें कुबेरकीतुल्य युद्ध में रुद्र इन्द्रके सम तुल्य और तेजमें अग्निकेसदृशथीं ३९ वह सदैव शत्रुओंके युद्धमें भयकी देनेवाली होतीहैं उसीप्रकार इच्छानुसार रूपधारण करनेवाली वेग में वायुके समान ४० ध्यानसे बाहरबलपराक्रम रखनेवाली वृक्ष चत्वर और निर्जनवनमें निवास करनेवाली ४१ गुफा और श्मशान वासिनी पर्व्वतोंके झिरनों में निवासकरनेवाली ४२ नानाप्रकारके भूषण और मालारखनेवाली नाना प्रकारके बिचित्र वेशरखने वाली यह और अन्य २ बहुतसे शत्रु समूहों को भय उत्पन्न करने वाली ४३ उस देवराजकी

आज्ञासे महात्मा कुमारके पीछेचली इसकेपीछे भगवान् इन्द्रने शक्तिअस्त्र ४४ असुरोंके नाशकेलिये स्वामिकार्त्तिकको दिये इभर-तर्षभ शब्दायमान और बड़े घंटेवाली प्रकाशित श्वेत प्रभारखने वाली सूर्य्यके बर्ण अरुण पताकाकोभी दिया पशुपतिजी ने सब जीवोंको उस बड़ी सेनाको उसके निमित्तदी ४५ । ४६ जोकि महा-उग्र नाना प्रकारके शस्त्रोंको धारण करने वाली तपबल पराक्रमसे युक्त अजेय उत्तम गुणवाली धनंजय नामसे बिख्यात ४७ और रु-द्रजीके समान तीन अयुत शूरबीरोंसे संयुक्तथी वहसेना कभी युद्धसे मुखफेरना नहीं जनतीथी ४८ और बिष्णुजीने बलको बढ़ानेवाली बैजयन्ती मालादी उमादेबीने सूर्य्यकेसमान प्रकाशमान दो दिब्य वस्त्रदिये ४९ श्रीगंगाजी ने बड़ी प्रीति से दिब्य और अमृतका उत्पन्न करने वाला उत्तम कुण्डल दिया और बृहस्पति जीने कु-मारके अर्थ दण्ड दिया ५० गरुड़जी ने बिचित्र पुच्छवाला सुन्दर मोरदिया अरुणने चरणायुधवाला तामरचूड़ अर्थात् कुक्कुटदिया ५१ फिर राजा बरुणने बल पराक्रम से युक्त नागदिया इसके अनन्तर प्रभुब्रह्माजीने उस वेदब्राह्मणों के रक्षक कुमारको कृष्णमृग दिया ५२ और युद्धोंमें बिजयकोभीदियातबस्वामिकार्त्तिकजीसबदेवगणों के सेनानीपदको पाकर ५३ दूसरे प्रज्वलित अग्निके समान प्रका-शित होकर शोभायमानहुये फिर पार्षदों और माताओंसे युक्त ५४ स्वामिकार्त्तिकजी उत्तम देवताओं को प्रसन्न करके दैत्योंके नाश करने के लिये चले और राक्षसोंकीभी वह भयानक रूपसेना घंटे ऊंची ध्वजा ५५ भेरी शंख मुरजा शस्त्र और पताका रखनेवाली प्रकाशित शरीरों से शोभायमान शरद ऋतुके आकाशकी समान प्रकाशमानथी ५६ इसके पीछे देवताओंके समूह और सावधान नाना प्रकारके जीव समूहोंने उत्तम भेरी और शंखोंको बजाया ५७ फिर इन्द्र समेत सब देवताओंने कुमार स्वामिकार्त्तिकको स्तुतिकी देवगन्धर्वोंनेगाया और अप्सराओंके गणोंनेनृत्यकिया ५८ । ५९ तद-नन्तर अत्यन्त प्रसन्न रूप स्वामिकार्त्तिकजीने देवताओंके निमित्त

यह बरदान दिया कि मैं उन शत्रुओंको मारूंगा जो तुम्हारे मारने के अभिलाषीहैं ६० तब प्रसन्न चित्त महात्मा देवताओंने उसश्रेष्ठ देवतासे बरप्रदान लेकर शत्रुओंको मराहुआ माना ६१ महात्मा की ओरसे बरके देनेपर सब जीव समूहोंके प्रसन्नताके ऐसे शब्द उत्पन्न हुये जिनकेमारे तीनोंलोक पूर्ण होगये ६२ बड़ी सेनासमेत वह स्वामिकार्त्तिकजी युद्धमें दैत्योंके मारनेको और देवताओं के रक्षाके निमित्त यात्रा करनेवाले हुये ६३ हे राजा निश्चय करके धर्म सिद्धी लक्ष्मी धृति स्मृति यह सब स्वामिकार्त्तिकजीकी सेनाके आगे चलीं ६४ वह स्वामिकार्त्तिक देवता भयानक शूल मुद्गर हाथ में रखनेवाले ज्वलित शस्त्र धारी जड़ाऊ भूषण और कवच धारण करनेवाले ६५ गदा मूशल नाराच शक्ति और तोमर धारी उन्मत्त सिंहके समान गर्जनेवाले सेनाके साथ गर्जतेहुये चले ६६ भयसे महाव्याकुल सब दैत्य दानव और राक्षस चारोंओर सब दिशाओंमें भागे ६७ नानाप्रकारके शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले देवताओंके सन्मुख गये तब तेजबलसे युक्त भगवान् स्वामिकार्त्तिक जीने उस सेनाको देखबारंबार क्रोधयुक्त होकर भयानकरूपशक्ती को छोड़ा और अपने तेजको ऐसे धारणकिया जैसेकि हव्यसेवृद्धि युक्तअग्नि तेजको धारणकरताहै ६८।६९ हे महाराज बड़े तेजस्वी स्वामिकार्त्तिकसे शक्ति अस्त्रके छोड़ने पर उल्काकी ज्वलित अग्नि पृथ्वीपर गिरी ७० इसीप्रकार वायुसेवायुके संघट्टनोंके शब्द शब्द को उत्पन्न करते ऐसे पृथ्वीपर गिरे जैसे कि प्रलयकालमें बड़े घोर शब्द होतेहैं ७१ हेभरतर्षभ जब अग्निके पुत्रके हाथसेवहबड़ीघोर शक्ति छोड़ीगई उस शक्तिसे करोड़ों शक्तियां उत्पन्न होगईं ७२ उसके पीछे प्रसन्नचित्त भगवान्स्वामिकार्त्तिकजीने बड़ेबल पराक्रम वाले तारक असुरको मारा ७३ हे राजा बलवान् आठ पद्म एक लाख शूरवीर दैत्योंसे युक्त महिषासुरको भी कुमारने युद्धमें मारा ७४ फिर उस ईश्वरनेएक करोड़ दैत्योंसमेत त्रिपादको औरनाना प्रकारके शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले दश निखर्व दैत्यों समेत ह्रदो-

दरको मारा ७५ इसप्रकारसे शत्रुओंके मरनेपर दशोंदिशाओं को पूर्ण करते कुमारके साथियोंने बड़ेशब्द कियेऔर प्रसन्नहोकर नृत्य करते हुये चेष्टाओंको करते प्रसन्नहुये ७६।७७ हे राजेन्द्र इसके पीछे शक्ति अस्त्रके चारोंओरको प्रज्वलित होनेसे तीनोंलोक सब ओरसे भयभीत हुये ७८ बहुत से शस्त्रों समेत हजारोंदैत्य स्वामिकार्त्तिकजीके शब्दोंसेही भस्म होगये और कितनेही असुरपताका से घायल होकर मरगये कितनेही घंटोंके शब्दों से पृथ्वीपर भयभीत होकर बैठगये और कितनेही असुर अस्त्रों से खंडित अंग मरकर गिरपड़े ७९।८० इस प्रकार बलवान् बीर पराक्रमी स्वामिकार्त्तिकजीने उन मारनेके अभिलाषी असंख्य दैत्य राक्षसादिकों कोमारा ८१ इसके पीछे बलिकेपुत्र महाबली बाणनाम दैत्यनेक्रौंच पर्व्वत में आश्रित होकर देवताओंके समूहोंको पीड़ामान किया ८२ तब बड़े बुद्धिमान् स्वामिकार्त्तिकजी उस देवताओंके शत्रुबाण के सन्मुखगये उसने स्वामिकार्त्तिकजीके भयसेक्रौंचपर्व्वतकीशरणली ८३ इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त भगवान् स्वामिकार्त्तिकनेक्रौंच पक्षीके समान गर्जनेवाले उस क्रौंच पर्व्वतको अग्निकीदीहुई शक्ति से घायल किया ८४ जो कि शाल वृक्षके गुद्दों से शवलवर्ण भयानक बानर और हाथीवाला और बहुत उड़नेवाले व्याकुल पक्षियोंवाला बिल से बाहर दौड़नेवाले सर्पोंवाला ८५ गोलांगूल भागे रीछोंके समूहोंसे और कुरंगोंके शब्दोंसे शब्दायमान पृथ्वी और वनरखनेवालाथा ८६ अकस्मात् दौड़नेवाले और भागनेवाले शरभ और सिंहोंसे शोचग्रस्तदशाको प्राप्तहोनेवाला वह पर्व्वतभी शोभायमानहुआ ८७ उस पर्व्वतके शिखरपर रहनेवाले बिद्याधर उछले और शक्तिके संघात शब्दसे घायल किन्नर लोग व्याकुल हुये ८८ इसके पीछे बिचित्र भूषण रखनेवाले हजारों दैत्य अत्यन्त ज्वलित रूप उस उत्तम पहाड़से बाहर को दौड़े ८९ कुमारके पीछे चलने वालोंने युद्धमें उनकोपराजय करकेमारा तब उस क्रोधयुक्तभगवान ने भी दैत्यराज के पुत्रको ९० उसके भाई समेत ऐसे मारा जैसे

कि देवराजने वृत्रासुरको माराथा शत्रुके वीरोंके मारनेवाले महा बली अग्निकेपुत्रने बहुतरूपवाला और एक रूपवालाकरकेशक्तिसे क्रौंच पर्व्वतको घायलकिया युद्धमें फेंकीहुईशक्ति वारंवारउसकेहाथ में आतीथी ९१।९२ इसके अनन्तर ऐसेप्रभाववालेभगवान् स्वामि कार्त्तिकजी शूरता द्विगुणित योग तेज यश औरशोभासे महाप्रभाव वाले हुये ९३ उनके हाथसे क्रौंचपर्व्वत टूटाऔर हजारों दैत्यलोग मारेगये उस भगवान् देवताने असुरोंकोमारकर ९४ सुरोंसेसेवित होकर बड़े आनन्दको पाया हेभरतबंशी राजा जनमेजय फिर देव-ताओंके दुन्दुभी और शंख बजे ९५ और देवताओंकी हजारों स्त्रियों ने उस योगियोंके ईश्वर देवताकुमार के ऊपर पुष्पोंकी उत्तम वर्षा कोकिया ९६ और सुन्दर दिव्य गन्धियोंको लेकर पवित्र वायुचली गन्धर्वों समेत यज्ञ करनेवाले महर्षियोंनेस्तुतिकरी ९७ कोई इस प्रभुको ब्रह्माजीका वह पुत्र निश्चय करतेहैं जो कि ब्रह्माजीसे प्र-कट होनेवाले सबके आदि भूत सनत्कुमार नामहैं ९८ कोई महे-श्वरजीका पुत्र कोई उमा गंगा अग्नि और कृत्तिकाओंका पुत्र कह-तेहैं ९९ उस योगेश्वर महाबली देवताको एक रूप दो रूप चार रूप और हजारों लाखों रूपवाला कहतेहैं १०० हे राजा कार्त्तिकेय जीका यह अभिषेक मैंने तुमसे कहा अब सरस्वती के उत्तम तीर्थ के मूल हेतुरूप वह धर्म की वृद्धिकोसुनो १०१ हे महाराज कुमार के हाथ से असुरों के मरनेपर वह अत्यन्त उत्तम तीर्थ दूसरे स्वर्ग के समानहुआ १०२ वहांपरनियत होनेवालेईश्वर कुमारनेपृथक् २ राज्यशासनों समेत तीनों लोकों को देवताओं को दिया १०३ इस प्रकार उस तीर्थपर दैत्योंके कुलके नाश करनेवाले वह भग वान् देवसेनापति देवताओं की ओरसे अभिषेक किये गये १०४ हे भरतर्षभ वह तीर्थ तैजस नाम से प्रसिद्धहै जिस तीर्थपर जलके स्वामी वरुण देवता देवसमूहोंसे अभिषेक किये गये १०५ बल-देवजीने उस उत्तम तीर्थपर स्नान करके स्वामिकार्त्तिकजीको पूजकर सुवर्ण वस्त्र और भूषणादिक ब्राह्मणोंको दान किये १०६

शत्रुके बीरोंके मारनेवाले माधव हलधारी बिलदेवजी वहां एकरात्रि निवास करके उस तीर्थराज महापूज्य तीर्थको और उसके जलको स्पर्शकरके १०७ बड़े प्रसन्नचित्त हुये हेराजा जो तुमनेपूछा कि कैसे स्वामिकात्तिकजीका अभिषेकहुआ वह सब मैंने तुमसेकहा १०८॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

जनमेजय बोले कि हे द्विजबर्य्य मैंने कुमारके इसअत्यन्त अपूर्व्व अभिषेकको विधि पूर्व्वक मूल समेत सुना १, हे तपोधन मैं जिस को सुनकर अपने को पवित्र जानताहूं मेरे शरीरके रोमांच प्रसन्नतासे पूर्णहैं और चित्तभी मेरा अत्यन्त प्रसन्नहै २ कुमारके अभिषेक और दैत्योंके नाशको सुनकर मुझको बड़ा आनन्द हुआ ३ हे बड़े ज्ञानी श्रेष्ठ बैशंपायनजी इस तीर्थपर प्राचीन समय में जलके देवता कैसे २ देवताओंसे अभिषेक करायेगये उसको आपकहिये क्योंकि आप सर्व्वज्ञहैं ४ बैशंपायनबोले हेराजा इसअपूर्व्व वृत्तान्त को जैसे कि पूर्व्व कल्पमें हुआ है उस सबको यथार्थतासे सुनो कि सतयुगके प्रारंभ में ५ सब देवता बारुण से मिलकर यह बचन बोले कि जैसे देवराज इन्द्र हमको सदैव भयोंसे रक्षित करताहै ६ उसीप्रकार तुमभी सब नदियोंके स्वामीहो हेदेवता आपका निवास मकरोंकेनिवासस्थान सागरमेंहोय ७ यह नदियोंका स्वामीसमुद्र आपके आधीन होगा और आपके बृद्धिक्षय चन्द्रमाकेसाथहोंगे ८ तब बरुण देवता उन देवताओंसे यह बचन बोले कि ऐसाही होय इसके पीछे सब देवताओंने समुद्रमें निवास करनेवाले बरुण से मिलकर ९ वेदोक्त कर्मके द्वारा बरुणको जलोंकास्वामी किया फिर देवतालोग जलोंके स्वामी बरुणको अभिषेककराके १० और पूजनादिक करके अपने २ लोकोंकोगये तब देवताओंसे अभिषेक कियेहुये बड़े यशवान् बरुणनेभी ११ नदी सागर नद और सरोवरोंकोभी बिधिसे ऐसे पोषणकिया जैसे कि मनुष्य इन्द्रियोंको पोषण करता

है १२ इसके पीछे प्रलंबके मारनेवाले बड़े ज्ञानी बलदेवजी उसतीर्थ
मेंभी स्नानआचमनकरके नानाप्रकारकेधनकादान देकरउसअग्नि-
तीर्थको गये १३ जहांपर कि देवता लोग सबलोकों के पितामह
ब्रह्माजी केसमीप नियतहुये और कहनेलगे हेभगवन् यहां अग्नि
गुप्तहोगये परन्तु इसका हेतुहमनहीं जानतेहैं १४ शमीगर्भमें वह
गुप्त होनेवाले अग्नि दिखाई नहीं पड़तेहैं सो हेनिष्पाप सब गुप्त
प्रकट संसार के नाश प्रकट होनेमें १५ सबजीवों का नाशनहोय
हेसमर्थ इससेआप अग्निको उत्पन्नकरो जनमेजय बोले कि लोक-
भावन भगवान् अग्नि किस निमित्त गुप्तहुये १६ और किसरीतिसे
उनको देवताओंने जाना यहसब वृत्तान्त आप मुझसे कहिये वैशं-
पायन बोलेकि भृगुजीके शापसे अत्यन्त भयभीत प्रतापवान् १७
भगवान् अग्नि जब शमीगर्भको पाकर अदृश्य हुये तब इन्द्रसमेत
सब देवता अग्निके गुप्तहोनेपर १८ अत्यन्त दुःखी हुये और उस
गुप्त होनेवाले अग्निको अन्वेषण किया फिर अग्नि तीर्थको पाकर
शमीगर्भमें नियत होनेवाले अग्निको १९ विधिपूर्वक पूजन करके
शमीमेंही देखा हेनरोत्तम इन्द्रसमेत वह सब देवता जिनके अग्र-
वर्ती बृहस्पतिजी थे २० उस अग्नि को पाकर बहुत प्रसन्न हुये
तदनन्तर अपने अपने लोकों को गये हेराजा वह अग्नि भृगुजी के
शापसे सर्वभक्षी हुये २१ उस तीर्थमें भी ब्रह्मवादियों के कहनेसे
वह ज्ञानी बलदेवजी स्नान करके ब्रह्मयोनि नाम तीर्थको गये२२
जहांपर कि सबलोकोंके पितामह प्रभु भगवान् ब्रह्माजी ने संसार
की पूर्व सृष्टिमें देवताओं समेत उसतीर्थमें स्नानकरके २३ विधिके
अनुसार देवताओं के तीर्थों को उत्पन्न किया बलदेव जी वहांपर
स्नान कर अनेक प्रकार के धनोंका दान करके २४ कुवेर तीर्थ को
गये बड़े तपस्वी प्रभु कुवेरजी ने वहां बड़ी तपस्या करके धनोंकी
ईश्वरता को पाया २५ हे राजा सबधन और रत्नोंकी खानें उस
तीर्थपर नियत होने वाले कुवेर जीके पास आकर वर्त्तमान हुईं
हेनरोत्तम हलधारी बलदेवजीने उस तीर्थपर जाकर २६ विधिपूर्वक

स्नान करके ब्राह्मणों के अर्थ धन दिया वहां उन्होंने कुबेर जी के उत्तम वनमें उस स्थानको भी देखा २७ जहांपर यक्षराट महात्मा कुबेरजीने बड़ी तपस्या करके श्रेष्ठ बरोंको प्राप्त कियाथा २८ सब धनोंकी ईश्वरता बड़े तेजस्वी रुद्रजीके साथ मित्रता देवभावलोक पालका अधिकार और नलकूवर नाम पुत्रको पाया २९ हेमहाबाहु वहांही कुवेरजीने ऊपर लिखे हुये अभीष्टोंको पाकर उसी स्थानमें मरुद्गणों समेत अभिषेकको भी प्राप्तकिया ३० और उनको नैऋतनाम राक्षसों का राज्य और वह दिव्य सवारी दीगई जोकिहंसों से सेवितमनके समान शीघ्रगामी पुष्पक बिमानहै ३१ बलदेवजी वहां स्नानकरके उत्तमदानोंको देकरशीघ्रही उस श्वेतानुलेपननाम तीर्थ को गये ३२जोकि सब प्रकार के जीवोंसे सेवित अत्यन्तशुभ और सदैव फलफूल रखनेवाला बदरपाचन नामहै ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि इसके पीछे बलदेवजी तपस्वी और सिद्ध लोगोंसे सेवित उस बदरपाचन नाम उत्तम तीर्थको गये जहांपर व्रतधारी १ भरद्वाज ऋषिकी पुत्रीरूपमें पृथ्वीपर अनुपम कुमारी ब्रह्मचारिणी २ बहुत नियमवाली तेजवन्ती श्रुतावतीनाम कन्याने यह निश्चय करके कि देवराज इन्द्र मेरा पति होय महा उग्र तप किया ३ हे कौरव्य स्त्रियों समेत उन तीव्र महादुःख से करनेके योग्य नियमों के करने में उस कन्याके सौ बर्ष व्यतीत हुये ४ हेराजा भगवान् इन्द्र उसके उसचलनभक्ति और तपसे प्रसन्नहुये ५ देवराज प्रभुइन्द्र महात्मा ब्रह्मर्षि बशिष्ठजीके रूपको धारण करके उसके आश्रममें आये ६ हेभरतवंशी उसने उन उग्रतपस्वी तपस्वियों में श्रेष्ठ बशिष्ठजीको देखकर मुनियों से सीखेहुये आचारोंसे उनका पूजन किया ७ और बड़ी नम्रमधुर बाणीसे वह नियम धर्मवाली कल्याणी यह वचन बोली हे प्रभु भगवान् मुनि

यों में श्रेष्ठ आप क्या आज्ञा करतेहो ८ हे सुन्दर व्रत वाले अबमें इन्द्रके प्रभाव से सामर्थ्यके अनुसार जोआप चाहेंगे सो सब दूंगी परन्तु किसी दशामें भी तुझ को अपना हाथ न दूंगी ९ हे तपोधन तीनोंभुवनोंका ईश्वर इन्द्र व्रत नियम और तपस्याके द्वारा मुझसे प्रसन्न करनेके योग्य है १० हे भरतवंशी इस प्रकारके वचन सुन कर भगवान् देवता मन्द मुसकान करता उस को देखकर और इसके नियम को जानकर बड़ी मधुरवाणी से यहवचनबोला ११ हे सुंदर व्रतवाली कल्याणी मुझ को वह सब विदित है जिस प्रयोजनके निमित्त यह कर्मका प्रारंभ तेरे चित्तमें वर्त्तमान हुआहै और उग्रतपको करती है १२ हे सुन्दरमुखी जैसा तेरेचित्तमें विचार हुआ है वह सब होगा और जैसा तैंने बिचारकियाहै वह तपस्या केही द्वारा प्राप्त होता है हे शुभमुखी जैसे कि देवताओं के दिव्य लोकहैं वह तपसे प्राप्त होनेके योग्य हैं बड़े सुख का मूलतपहै १३। १४ हे कल्याणी इस प्रकार मनुष्य घोर तपस्या करके अपने शरीर को त्यागकर देवभावको पाते हैं अब तू मेरे वचनको सुन हे सुन्दरव्रत और ऐश्वर्य्यवाली तुम इन पांच वदरीफलों को पकाओ भगवान् इंद्र इतना कहकर चलेगये १५।१६ और उसने भी उस कल्याणीसे पूछकर वहां जपको जपा इसके पीछे उस आश्रमसे थोड़ी दूरपर वह उत्तम तीर्थ १७ तीनोंलोकोंमें इन्द्रतीर्थ नामसे प्रसिद्ध हुआ हे बड़ाई देनेवाले उस देवराज भगवान् इन्द्रने उसकी परीक्षाके लिये १८ वदरफलोंका परिपाक होना बंदकरदिया हेराजा तब वह बड़ीतपस्विनी वार्त्तालापमें चतुरथका-वटसे रहित १९ उसमेंही प्रवृत्त पवित्र शरीरवालीने अग्नि में लकड़ी रक्खी हे राजाओं में श्रेष्ठ उस बड़े व्रतवाली ने उन वदर फलोंको पकाया २० और परिपक्क करते हुये उस पकानेवाली कोबहुत समय व्यतीतहुआ परवह फल नहीं पके और दिन समाप्त होगया २१ इसका जितनाइंधनका ढेरथा वह सब अग्निमें भस्म होगया फिर उसनेअग्निको इंधनसे खाली देखकर अपने शरीरको

भी भस्म करदिया २२।२३ प्रथम अपने दोनों चरणोंको अग्निमें डालकर फिर उस निष्पापने जलेहुये चरणोंको आगे आगे बढ़ाना प्रारंभकिया महर्षिकी इच्छासे कठिन कर्म करनेवाली निर्दोष ने जलते हुये चरणोंसे कुछभी दुःखसे चिन्ता नहींकी २४ पैरोंके जलने परभी उसके चित्तमें उदासीनता और रूपान्तरता नहीं हुई शरीर को अग्निसे प्रज्वलित करके जलमें वर्त्तमान होने के समान प्रसन्नथी २५ हे भरतवंशी उसका वह बचन वारंवार हृदय में वर्त्तमान हुआ कि सब दशामें बदरफल पकानेके योग्य हैं उस शुभ कन्याने २६ महर्षि के उस बचनको चित्तमें नियत करके बदर फलोंको पकाया परन्तु वह नहीं पके २७ भगवान् अग्निने आप उसके चरणों को जलाया तबभी उसके चित्तमें किसी प्रकारके दुःख का लवलेश नहीं हुआ २८ इसके पीछे तीनों भुवनका ईश्वर इन्द्र उसके कर्मको देखकर प्रसन्न हुआ और अपना मुख्यरूप कन्याको दिखलाया २९ और उस दृढ़ ब्रतवाली कन्यासे बोले कि हे शुभ मैं तेरे नियम भक्ति और तपस्या से प्रसन्नहूं ३० हे शुभदर्शन अब तेरा अभीष्ट सिद्ध होगा हे महाभाग तू इस शरीर को त्याग करके स्वर्गमें मेरे साथ सुख पूर्व्वक निवास करेगी ३१ हे सुन्दर भृकुटी वाली यह तेरा बदरपाचन नाम उत्तम तीर्थ सब पापों का दूर करने वाला लोक में विख्यात होकर नियत होगा ३२जोकि तीनों लोकोंमें विख्यात और ब्रह्मर्षियोंसे स्तूयमान है हे महाभागनिष्पाप निश्चय करके इस शुभ और उत्तम तीर्थप· र ३३ सप्तर्षि अरुन्धतीको त्याग करके हिमालय पर्व्वत परगये इसके पीछे वह बड़े महाभाग तेजब्रतधारी वहां जाकर ३४ आजीविकाके निमित्त उत्तम फल मूलोंके लेनेको वहां ठहरे तब उस हिमालयके बनमें उन जीविकाके अभिलाषी ऋषियों के निवास करनेपर ३५ बारह वर्षका दुर्भिक्ष वर्त्तमान हुआ तब वह सातों तपस्वी वहां आश्रमको बनाकरठहरे ३६ उस समय वह कल्याणी अरुन्धती भी सदैव तपस्या करने में प्रवृत्तहुई फिर अरुन्धतीको

तीव्र नियम में नियत देखकर ३७ अत्यन्त प्रसन्नमूर्ति सबवरोंके देनेवाले शिवजी महाराज आपहुंचे अर्थात् बड़े यशवान् देवता महादेवजी ब्राह्मणकारूप धारणकरके ३८ उसके पृष्ठभागमें जाकर बोले कि हेशुभस्त्री मैं भिक्षाको चाहताहूं तब उस सुन्दरदर्शनने उस ब्राह्मणको उत्तर दिया ३९ कि हेवेदपाठी अनाजका ढेर नाशहुआ यहां आप बदरफलोंको भक्षण करो यह बात सुनकर महादेवजीने कहा कि हेसुन्दरव्रत तुम इन बदरफलोंको पकाओ ४० इसप्रकार शिवजीके वचनको सुनकर उस यशवन्तीने ब्राह्मणके हितके लिये उन बदरफलों को प्रकाशित अग्निपर चढ़ाकर पकाया ४१ और चित्तरोचक धर्म की वृद्धिके हेतुरूप दिव्य कथाओं को भी सुनाया उतने अन्तरमें वह बारहवर्षका दुर्भिक्ष समाप्तहुआ ४२ उसभोजन न करने वाली और शुभकथा सुनाने वाली अरुन्धती का वह बड़ा भयानक समय एक दिनके समान व्यतीत हुआ ४३ इसके पीछे मुनिलोग पर्वत से फलोंको लेकर आगये इसहेतुसे वह प्रसन्नचित्त भगवान् शिवजी अरुन्धतीसे बोले ४४ कि हेधर्मकी जानने वाली मैं तेरे धर्मरूपी तप और नियमसे प्रसन्नहूं अब तुम प्रथमके समान इनऋषियों के पासजाओ ४५ तदनन्तर भगवान् हरने अपने रूपका अच्छेप्रकारसे दर्शन दिया और उसके बड़े कर्मको ऋषियों के आगे वर्णन किया ४६ कि आपलोगोंने हिमवान् पर्वत परजो तपप्राप्त किया और इसका भी जोतपहै हेब्राह्मणो वह तुम्हारा तपइसके तपकी समान मेरी बुद्धि से नहींहै ४७ इस तपस्विनी ने बड़ीकठिनतासे करनेकेयोग्यतपको तपाहै इसभोजन न करनेवाली और बदर पकानेवालीने बारहवर्ष व्यतीत किये ४८ इसके पीछे शिवजी उस अरुन्धती से फिर बोले कि हेकल्याणी जोतेरे हृदयमें इच्छाहोय उसवरको मांगो ४९ तबवह रक्त और दीर्घनेत्र रखने वाली अरुन्धती सप्तर्षियों की सभा में देवता शिवजी से बोली कि हेभगवन् जो आपमुझपर प्रसन्नहैं तो यह तीर्थ अपूर्व होजाय ५० अर्थात् सिद्ध देवर्षियोंका प्यारा बदरपाचन नामसे विख्यात होय

हे देवेश इस प्रकार से इसतीर्थपर तीनरात्रि निवास करनेवाला पवित्र मनुष्य ५१ व्रतके द्वारा बारह वर्षके व्रतके फलको पावे तब देवताने उस तपस्विनी अरुन्धतीसे कहाकि ऐसाहीहोय ५२ तदनन्तर सप्तर्षियों से स्तूयमान होकर देवता शिवजी स्वर्गको गये ऋषियोंनेभी उस अरुन्धतीको देखकर बड़े आश्चर्य्य को पाया ५३ जो कि थकावटसे रहित विपरीत रूप और क्षुधा पिपाशासे युक्तथी इसरीतिसे उस अत्यन्त पवित्र अरुन्धतीने बड़ी सिद्धीको पाया ५४ हे स्तुतिमान् व्रत युक्त महाभाग कल्याणी जिसप्रकारसे कितुमने मेरे निमित्त इसव्रतमें आधिक्यताकरी ५५ हेश्रेष्ठकल्याणी इस प्रकार के तेरे नियमसे अत्यन्त प्रसन्न होकर मैं यह मुख्यवर तुझको देताहूं ५६ महात्मा शिवजीने जो बर उस अरुन्धती को दिया हे काल्याणी मैं उसके प्रभाव और तेरे तेजसे ५७ यहां बिधि पूर्व्वक श्रेष्ठ बरको फिर कहता हूं अर्थात् जो अत्यन्त सावधान मनुष्य एकरात्रि इस तीर्थमें निवास करेगा ५८ वह स्नान के फल से अपने शरीर को त्यागकर बड़ेदुष्प्राप्य लोकोंको पावेगा प्रतापवान् भगवान् इन्द्र देवता ५९ श्रुतावती को यह वचन कहकर अपने पवित्र स्वर्गको गये हेभरतर्षभ राजाजनमेजय बज्रधारीइन्द्रके जानेपर ६० उसस्थानमें पवित्र सुगन्धित दिव्य पुष्पोंकी वर्षा हुई और बड़े शब्दोंसे देवताओंने दुन्दुभी बजाई ६१ और पवित्र सुगन्धवाली शीतल मन्दवायुचली और उस शुभस्त्रीने इन्द्रकी स्त्रीभाव को पाया हेअजेय वह स्त्री उग्रतपकेद्वारा उसको पाकर उसकेसाथ क्रीड़ा करनेवाली हुई ६२ जनमेजय बोला हे भगवन् उस स्त्रीकी माता कौनथी और उसने कहां पोषणपाया हे द्विजवर्य्य मुझको सुननेका बड़ा उत्साहहै इसलिये उसको आप वर्णन कीजिये ६३ वैशंपायन बोले किवड़े दिव्य नेत्रवाली एकसमय आतीहुई घृताची अप्सरा को देखकर महात्मा ब्रह्मर्षि भारद्वाजजी का वीर्य्य पतन हुआ ६४ और उस जापकोंमें बड़ेश्रेष्ठने अपने गिरेहुये वीर्य्यको हाथमें लिया तब एक दोनेमें गिरपड़ा उस में वह कन्या उत्पन्न

हुई ६५ उस महामुनि तपोधन भारद्वाज मुनिने जातकर्मादिक सब क्रियाओंको करके उसका नामकरण किया ६६ धर्मात्माने देवर्षियों के समूहों की सभा में श्रुतावती उसका नाम रक्खा उस को अपने आश्रममें छोड़कर हिमालयके वनको गये ६७ तब वह महानुभाव बलदेवजी वहांभी स्नान आचमन करके बहुतसे उत्तम ब्राह्मणोंको धनोंका दान देकर चित्तसे बड़े सावधान होकर इन्द्रके पासगये ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिएकोनविंशोऽध्यायः १६॥

बीसवां अध्याय॥

वैशंपायन बोलेकि इसके पीछे यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ बलदेव जीने इन्द्रतीर्थमें जाके उस में विधिपूर्व्वक स्नानकरके ब्राह्मणों के निमित्तधन रत्नादिकका दानकिया १ वहां पर उसदेवेन्द्रने सौयज्ञ से पूजन किया था तब उसने बृहस्पतिजी को बहुतसा धनदिया था२ अर्थात् वहां इन्द्रने अर्गला रहित कपाटों के रखनेवाले नाना प्रकारके धन और दक्षिणारखनेवाले यज्ञोंकी वैसीही तैयारी करी जैसी कि वेदोंके पूर्णज्ञाता ऋषियोंने कहीथी ३ हे भरतर्षभ बड़े तेजस्वी इन्द्रने उन यज्ञोंको सौ बार बिधि पूर्व्वक पूर्ण किया इसी हेतुसे उसकानाम शतक्रतु प्रसिद्धहुआ ४ उसकेनामसेवहतीर्थ जोकि कल्याण रूप धर्मकी वृद्धि का हेतु सब पापोंसे छुटानेवाला और प्राचीनहै इन्द्रतीर्थ नामसे विख्यातहुआ ५ मुशलधारी बलदेवजी वहां भी विधिपूर्व्वक स्नान आचमन करके उत्तम भोजन वस्त्रादि से ब्राह्मणोंको पूजकर ६ वहांसे उस रामतीर्थको गये जोकि तीर्थों में उत्तम और शुभहै और जहां पर महाभाग भार्गव परशुरामजी ने ७ वारंवार उस पृथ्वीको जिसमें कि उत्तम २ क्षत्री मारे गये विजय करके मुनियों में श्रेष्ठ उपाध्याय कश्यपजीको आगे करके ८ सौ अश्वमेधोंसे पूजनकिया और समुद्रोंसमेत सब पृथ्वीको दक्षिणामें दिया ९ नाना प्रकारके रत्न गौ हाथी घोड़े दास दासी और

भेड़बकरियोंसे युक्त बहुत प्रकारके दानों को देकर बनकोगये १० वहां पवित्र और श्रेष्ठ देवर्षियोंके गणों से सेवित तीर्थपर मुनियों को दण्डवत् करके यमुना तीर्थ पर गये ११ हे राजा जहां पर अदिति के पुत्र महाभाग श्वेतवर्ण बरुणने राजसूय यज्ञ को प्राप्त किया १२ वहां शत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले बरुणने युद्धसे नरलोक बासी जीव और देवताओं को भी बिजय करके उत्तम यज्ञकी तैयारी की १३ उस उत्तम यज्ञके जारी होनेपर देवता और दानवोंका वह युद्ध जारी हुआ जोकि तीनों लोकके भयको उत्पन्न करनेवाला था १४।१५हे जनमेजय यज्ञोंमें श्रेष्ठ राजसूयके समाप्त होनेपर क्षत्रियों में बड़ाघोर युद्ध जारीहुआ वहांभी अभीष्ट वस्तुओंके देने में समर्थ बलदेवजी महर्षियोंसे स्तुतिमान होकर वहांसे उस आदित्य तीर्थ को गये १६ । १७ हे राजर्षभ जहांपर ज्योतिरूप भगवान् सूर्य्यने पूजन करके प्रकाशित पदार्थोंके राज्य और भावको पाया १८ हे शत्रुसंतापी राजाजनमेजय उस नदीके तटपर इन्द्रादिक सबदेवता बिश्वेदेवा, मरुद्गण, गन्धर्व, अप्सरा १९ व्यासजी, शुकदेवजी मधु दैत्य संहारी श्रीकृष्णजी यक्ष राक्षस और पिशाचभी निवासी हुये २० यह और अन्य २ हजारों सरस्वती के उस कल्याण रूप पवित्रतीर्थपर योग सिद्धहुये २१ हेभरतर्षभ पूर्वसमयमें बिष्णुजीने मधुकैटभ नाम दैत्यको मारकर उस अत्यन्त पवित्र तीर्थ में स्नान करके २२ और व्यासजीने भी वहीं स्नान करके परम योग को पाकर सिद्धीको पाया २३ बड़ेतपस्वी असित और देवलनेभी उस तीर्थपरपरम योगमें नियत होकर ऋषि योगको पाया २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायनबोले कि पूर्व्व समयमें असित और देवल ऋषिजोकि धर्मात्मा और तपरूप धन रखने वाले गृहस्थ धर्ममें नियत होकर उसी तीर्थपर निवास करनेवाले हुये १ यह दोनोंऋषि सदैव धर्म

करनेवाले पवित्र जितेन्द्री दण्ड के त्यागी महातपस्वी मनबाणी और शरीरसे सब जीवोंमें समान दृष्ट २ क्रोध रहित निन्दास्तुति कोसमान जाननेवाले प्रिय अप्रियमें समान बुद्धिवाले यमराज के समान समदर्शी ३ सुवर्ण लोहको तुल्य जानने और देखनेवाले महातपस्वी और देवताओं समेत ब्राह्मण और अतिथियोंको सदैव पूजते ४ सदा ब्रह्मचर्य्य में प्रवृत्त और सदैव धर्मकोही श्रेष्ठमानने वालेथे हे राजा इसके पीछे महाभाग बुद्धिमानसावधान महातेजस्वी जैगीषव्य नाम मुनि संन्यासी उस तीर्थपर आके योगमें नियत होकर देवल के आश्रममें बसे ५ । ६ हेमहाराज वह महातपस्वी सदैव योगमेंनियत और सिद्ध था देवलने वहां निवास करनेवाले उस महामुनि जैगीषव्यको ७ देखतेही अतिथि धर्मसे युक्त किया हेमहाराज इसीरीतिसे इन दोनोंका बहुतसा समय व्यतीतहुआ८ देवलने मुनियोंमें श्रेष्ठ जैगीषव्यको नहीं देखा हेजनमेजय तब वह बुद्धिमान् धर्मज्ञ संन्यासी ६ आहार और भिक्षाके समयपर देवल के पास आकर नियतहुआ तब देवलऋषिने उस भिक्षुक रूपसे आनेवाले महामुनिको देखकर बड़ी प्रतिष्ठा पूर्व्वक अत्यन्त प्रीति प्रकटकी १० हेभरतबंशी सावधान देवलऋषिने ऋषियोंकी बताई बिधिसे सामर्थ्यके अनुसार बहुत वर्षोंतक उसका पूजन किया दैव योगसे एक समयपर देवलऋषिको ११ । १२ उस महातेजस्वी मुनिके देखनेसे यह बड़ी चिन्ताहुई कि मुझको इस मुनिका पूजन करतेहुये बहुत बर्ष व्यतीतहुये १३ परन्तु आजतक इस उदासीन-कर्मी भिक्षुकनेकभी कोई बातनहीं कही इसप्रकार विचारकरते वह अन्तरिक्षचारी श्रीमान् देवलऋषि कलशको लेकर महा समुद्रको गये हेभरतबंशी इसकेपीछे नदियोंके स्वामी समुद्रको जातेहुये उस धर्मात्माने १४ । १५ प्रथमगयेहुये जैगीषव्यको देखा उसको वहां देखकर उसबड़ेतेजस्वीने आश्चर्य्यकरके चिन्ता करी १६ कि यह भिक्षुक कैसे समुद्रको आया और कैसेइसने स्नान किया तब उस महर्षिने ऐसे चिन्ता करी १७ और विधिवत् समुद्रमें स्नान करके

उस पवित्रने जपको जपा जब और संध्या करनेवाले श्रीमान् देव-लऋषि १८ जलसे पूर्णकलश को लेकर अपने आश्रम को आये हे जनमेजय फिर अपने आश्रम स्थान में प्रवेश करते हुये उस मुनि ने १६ वहां आश्रम में बैठे हुये जैगीषव्यको देखा और उससमय परभी जैगीषव्यने किसी प्रकारसे कुछनहीं कहा २० फिर वह महातपस्वी काठरूप आश्रम स्थानमें निवासी हुआ उस देवलऋषिने उसको समुद्रके समान समुद्रके जलमें स्नान कियाहुआ देख कर २१ प्रथमही आश्रममें बैठाहुआ देखा हेराजा तब बुद्धिमान् असित देवलने चिन्ताकरी २२ अर्थात् उस मुनियोंमें श्रेष्ठने जैगीषव्यके योगसे उत्पन्नहोनेवाले तपको देखकर बड़ीचिन्ताकरी २३ कि मैंने तो इसको समुद्रपर देखाथा अब यहमुझसे प्रथमही इस आश्रममें कैसे आगया हेराजा तब वह मन्त्रविद्यामें पूर्ण देवलमुनि इसप्रकार विचारकरते २४ जैगीषव्य संन्यासीकी परीक्षाके अर्थ उस आश्रमसे ऊपर आकाशकी ओर उछले २५ अन्तरिक्षचारी और सावधान सिद्धोंको देखते उस देवलऋषिने जैगीषव्यको उन सिद्धोंसे पूजित और प्रतिष्ठावान् देखा २६ तदनन्तर उसक्रोध युक्त दृढ़व्रतवाले असित देवलने वहां से चलनेवाले जैगीषव्यको देखा २७ उसने वहां से उसको पितृलोक में जानेवाला देखाऔर पितृलोकसे यमलोकमें भी जानेवाला उसको देखा २८ और उन लोकोंसे भी उछलकर चन्द्रलोकमें जानेवाला उस महामुनि जैगीषव्यको देखा २९ फिर अच्छे यज्ञ करनेवालोंके शुभलोकोंमें भी उसको उछलकर जानेवाला देखा और वहांसे भी अग्निहोत्रियोंके लोकोंकोउछले ३० जो तपोधन ऋषिअमावस औरपूर्णमासीके दिन यज्ञोंसे पूजनकरतेहैं अथवा पशुओंके यज्ञकरनेवालोंकेलोकोंसे निर्मलऔर देवपूजित लोकको जानेवाले मुनिको उस बुद्धिमान् देवल नेदेखा जो तपोधन कि चातुर्मास्य नाम नानाप्रकारके यज्ञोंसेपूजन करतेहैं ३१।३२ वहां से उनके लोकोंमें और अग्निष्टोम यज्ञ करने वालोंके लोकोंको जानेवाले मुनिको देखा जो तपोधन अग्निष्टुत

यज्ञसे पूजन करतेहैं ३३ उनके जो लोकहैं उस लोकमें भी जाते हुये मुनिको देवल ऋषिनेदेखा इसी प्रकार बहुत सुवर्णवाले यज्ञों में श्रेष्ठ बाजपेय यज्ञको ३४ जोबड़ेज्ञानी करतेहैं उनके भी लोकों में जातेहुये मुनिको देखा जो लोग राजसूय और पुण्डरीक यज्ञोंसे पूजन करतेहैं ३५ उनके लोकोंमेंभी उस जैगीषव्यको देवलने देखा इसीप्रकार जो नरोत्तम पुरुष यज्ञोंमें श्रेष्ठ अश्वमेध और नरमेधको करतेहैं ३६ उनके भी लोकोंमें उसको देखा जो लोग कठिनता से प्राप्त होनेवाले सर्बमेध और सूत्रामणि यज्ञको करतेहैं ३७ उनके लोकोंमें भी देवलने उस जैगीषव्यको देखा हे राजा जो लोगद्वाद-शाह नाम नाना प्रकारके यज्ञोंसे पूजनको करते हैं ३८ उस देवल ने उस जैगीषव्यको उनके भी लोकोंमें देखा इसके पीछे असित देवलने अदितिके पुत्र मित्रावरुण और सूर्य्यादिक की ३९ सालो-क्यता पानेवाले जैगीषव्यको देखा ग्यारह रुद्र अष्टवसु और वृह-स्पतिजीका जो स्थान है ४० असित देवलने उनसब लोकों को जैगीषव्य से उल्लंघन किया हुआ देखा इस के पीछे गोलोक को चढ़कर ब्रह्मयज्ञ करनेवालों के लोकों को गया ४१ फिर असित देवलने अपने तेजसे तीनोंलोकोंकोत्यागकरअन्यलोकोंके जानेवाले जैगीषव्यको देखा ४२ और पतिब्रताओंके भी लोकोंमें जानेवाले उस मुनिको देखा तब असित देवलने उस मुनियोंमें श्रेष्ठ योग में नियत अन्तर्द्धान होनेवाले जैगीषव्यको नहीं देखा ४३ हेशत्रु-बिजयी जनमेजयउसमहाभाग देवलनेजैगीषव्यके४४प्रभावब्रतकी उत्तमता और योगकी बड़ीसिद्धीको विचार किया तब असितदेवल ने लोकोंमें श्रेष्ठसिद्धोंसे पूछा ४५ अर्थात् उस पंडित देवलने हाथ जोड़कर उन ब्रह्मयज्ञ करनेवालोंसे कहा कि मैं अब उसजैगीषव्यको नहींदेखताहूं ४६ उस बड़ेतेजस्वीका सबवृत्तान्त वर्णन कीजिये मुझ को उनके वृत्तान्त सुननेकी बड़ी उत्कण्ठाहै सिद्ध बोले कि हे दृढ़ ब्रत वाले देवल हमतुमसे इसकावृत्तान्त कहतेहैं तुम मनलगाकर सुनो निश्चय करके वह जैगीषव्य सनातन ब्रह्मलोकको गया ४७

वैशंपायनबोले कि वह असित देवल उन ब्रह्म यज्ञकरनेवालेसिद्धों के वचनको सुनकर शीघ्र ऊपरको चला परन्तु गिरपड़ा ४८ इसके पीछे वह सब सिद्धलोग देवलसे बोले कि हे तपोधन बलरखनेवाले देवल उस ब्रह्मलोकमें जानेको तेरी गति नहींहै हे वेदपाठी जिस को कि जैगीषव्यने पाया ४९ वैशंपायननेकहा कि फिरवहदेवलजी उन सिद्धोंके बचनको सुनकर क्रम पूर्व्वक अपने लोकोंकोउतरे ५० और पक्षीके समान अपने पवित्र स्थान आश्रमको आये आश्रममें प्रवेश करनेवाले उस देवलने जैगीषव्यको देखा ५१ फिर देवलने जैगीषव्यके योगसे उत्पन्न होनेवाले तपके प्रभावको देखकर धर्म युक्त बुद्धिके द्वारा बिचार किया ५२ और नम्रतासे झुकेहुये उस देवलने महात्मा महामुनि जैगीषव्यके पास जाकर यह बचन कहा ५३ हे भगवन् मैं मोक्षधर्म में नियतहोना चाहताहूं तब जैगीषव्य ने उसके उस बचनको सुनकर उपदेशकिया ५४ अर्थात् शास्त्रके द्वारा योग और कार्य्याकारकी परम विधिको उपदेशकिया इसके पीछे बड़े तपस्वीने संन्यासमें प्रवृत्तचित्त उसदेवलको देखकर ५५ वेदोक्त कर्मोंके द्वारा उस की सब क्रियाओंको किया इसके पीछे पितर लोगों समेत सबजीवधारी उससंन्यासमें बुद्धि लगाने वाले देवलको ५६ देखकर अत्यन्त रोदन करकेकहने लगे कि हमको कौन अब भागदेगा इसप्रकार दशोंदिशाओंमें बचन कहने वाले दुःखित बचनोंको सुनकर देवलने ५७ मोक्षके त्याग करनेको चित्त किया हे भरतवंशी फिरपवित्र फल मूल ५८ औरहजारों औषधियां भी रोदन करनेलगीं कि निश्चय करके वह नीच और दुर्बुद्धी देवल फिर हमको काटेगा ५९ जोकि सब जीवोंको निर्भयता देकरसाव- धाननहीं होताहै इसके पीछे मुनियोंमें श्रेष्ठ देवलने अपनी बुद्धिसे फिर बिचार किया ६० कि मोक्ष और गृहस्थ धर्म इन दोनोंमेंसे कौनसा धर्म कल्याण का करने वाला है हे राजाओं में श्रेष्ठ उस देवलने चित्तसे निश्चय करके ६१ गृहस्थ धर्मको त्यागकर मोक्ष धर्मको स्वीकार कियाफिर देवलने निश्चयसे उनको और अन्य २

सब बातोंको बिचारकर ६२ परम सिद्धी समेत परमयोगको पाया इसके पीछे उन देवताओंने जिनमें कि अग्रवर्त्ती वृहस्पतिजी थे आकर ६३ जैगीषव्य की और इस तपस्वीके तपकी प्रशंसाकरी इसके अनन्तर ऋषियों में श्रेष्ठ नारदजी देवताओंसे बोले ६४ कि जैगीषव्य में तपनहीं है जो कि असितको आश्चर्य्य युक्त करताहै इस प्रकारसे कहनेवालेवह देवता उस वीरसे बोले ६५ कि ऐसा नहींहै फिरमहामुनि जैगीषव्यकी प्रशंसा करतेहुये बोलेकि प्रभाव में इससेबड़ा और समानभी कोई नहीं है ६६ इस महात्माके तेज तप और योगके समान कोई नहींहै धर्मात्मा जैगीषव्य और असित देवलभी ऐसेही प्रभाववालेहैं ६७ इन दोनों उत्तम महात्माओं का यहश्रेष्ठ आश्रम और तीर्थहै इसकेपीछे वह परमार्थकर्त्ता महात्मा बलदेवजी उसतीर्थ परभी स्नान आचमनकर ब्राह्मणों को वहुत धनदेकर धर्म को पाकर चन्द्रमा के तीर्थको गये ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिएकविंशोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे भरतबंशी जहांपर चन्द्रमाने राजसूय यज्ञसे पूजन किया उस तीर्थपर तारकासुर से सम्बन्ध रखने वाला बड़ा युद्ध हुआ १ ज्ञानी धर्मात्मा बलदेवजी वहां भी स्नान आचमनकर के दानोंको देकर सारस्वत मुनिके तीर्थको गये २ वहां पूर्व्वकालमें सारस्वत मुनिने बारह बर्षके दुर्भिक्षमें उत्तम ब्राह्मणों को कैसे वेद पढ़ाया वैशंपायन बोले हेमहाराज पूर्व्व समयमें एक बुद्धिमान्ब्रह्म-चारी जितेन्द्री दधीचि नामसे विख्यात मुनिथे ५ हे समर्थ उसकी तपस्यासे इन्द्र सदैव भयभीत रहताथा और उसको नाना प्रकार के फलों से लुभाताथा परन्तु वह किसी फलसे भी नहीं लोभित हुये ६ इसके पीछे इन्द्रने उसके लुभाने केलिये दिव्य पवित्र और दर्शनीय अलंवुषानाम अप्सराको उनकेपास भेजा ७ हेमहाराज वह प्रकाशमान अप्सरा सरस्वतीपर देवताओंका तर्पण करनेवाले उस

महात्माके सन्मुखहुई ८ उस दिव्यशरीरवाली अप्सरा को देखकर उस शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषिकावीर्य स्खलित होकर सरस्वती में गिरा उस नदीने उसको धारण किया ९ हे पुरुषोत्तम उस नदीने ऋषिकेवीर्य को अपनी कुक्षमें धारणकिया अर्थात् उसनदीने अपने पुत्रार्थ उस गर्भको अपनेउदरमें धारणकिया १० हे प्रभु फिर कुछ समयपीछे उसश्रेष्ठ नदीने पुत्रकोभी उत्पन्नकिया और पुत्रकोलेकर उसऋषिके पासगई ११ हेराजेन्द्र वह नदीऋषियोंकी सभामें उस श्रेष्ठ मुनिको देखकर उनके उस पुत्रको उनको देतीहुई यह वचन बोली १२ हे ब्रह्मर्षि यह तेरापुत्रहै मैंने तेरीभक्तिसे अपनेमें इसको धारणकिया अर्थात् पूर्वकाल में अलंबुषा अप्सरा को देखकर जो तेरावीर्य्य पतन होगया था १३ उस को हे ब्रह्मर्षि मैंने भक्ति से और इस निश्चयसे कि तेरा यहतेज नाशको न पावे इसहेतुसे उस गर्भको अपनीकोख में धारणकिया १४ मेरे दियेहुये इसनिर्दोष अपने पुत्रकोलो इसप्रकारके सरस्वती के बचनको सुनकर ऋषिने उस पुत्रको लेकर बड़ा आनन्दमाना १५ तब उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने बड़ेप्रेमसे अपने पुत्रके मस्तक को सूंघा और बड़ी बिलम्बतक उस श्रेष्ठमुनिने अपने पुत्रको गोदी में लेकर १६ सरस्वती को यह वर दिया कि हे सुन्दर ऐश्वर्य्यमान् पितरों समेत विश्वेदेवा गन्धर्व अप्सराओंके गण १७ तेरे जलसे तृप्तहोकर आनन्दको पावेंगे यह कहकर वचनोंसेभी उस महानदीको प्रसन्नकिया १८ हे राजा उस प्रसन्न और अत्यन्त आह्लादचित्तने जैसे प्रकारसे प्रसन्नकिया उस कोसुनो हेमहाभाग श्रेष्ठ तुम ब्रह्माजीके सरोवरसे निकलीहो १९ हे उत्तम नदी तुमको प्रशंसनीय व्रत वाले मुनिलोग जानते हैं हेप्रियदर्शन तुमसदैव मेरा प्रियकरने वालीभीहो २० हे सुन्दरी इसीहेतुसे तेराबड़ा सारस्वत नामहोगा और तेरा पुत्र लोकभावन होकर तेरेही नाम से विख्यात होगा २१ अर्थात् यह महातपस्वी सारस्वत नामसे प्रसिद्ध होगा यह महाभाग सारस्वत बारह बर्षके दुर्भिक्षमें उत्तम ब्राह्मणोंको २२ वेदपढ़ावेगा हेशुभ महाभाग सर-

स्वती तुम मेरी कृपासे सदैव पवित्र नदियोंसे भी महापवित्र नदी होगी हेभरतर्षभ इसप्रकार उस ऋषिसे स्तूयमान वह महानदी वरकोपाकर२३।२४बड़े आनन्दपूर्वक अपने पुत्रको लेकर चलीगई उसीसमयमें देवता और दानवों में परस्पर विरोध हुआ २५ इस हेतुसे इन्द्रने उनके मारनेवाला अस्त्र बहुतढूंढ़ा परन्तु ऐसा अस्त्र कोई न मिला जोकि असुरोंके मारनेको समर्थ होय तब इन्द्रने देवताओंसे कहा कि दधीचिऋषिके अस्थिके बिना किसी अस्त्रसे भी देवताओंके शत्रु महाअसुरोंके मारनेको मैं समर्थनहीं होसक्ता इस कारणसे हे उत्तम देवतालोगो उस उत्तमऋषिसे प्रार्थना पूर्वक यह याचना करो २६।२७।२८ कि हे दधीचि आप हमपर कृपा करके अपने हाड़ोंको दो उन आपके हाड़ोंसे हम अपने शत्रुओंको मारेंगे हे कौरव्य तब उसीप्रकार से उनदेवताओं से याचनाकियेहुये उस महाश्रेष्ठ ऋषिने श्रेष्ठरीतिसे २६ बिचार किये बिनाही अपने प्राणोंको त्याग किया और अविनाशी लोकोंको पाया ३० उसके प्राण त्यागके पीछे अत्यन्त प्रसन्न इन्द्रने उसके हाड़ोंसे नाना प्रकारके दिव्य अस्त्र शस्त्रोंको तैयार करवाया ३१ अर्थात् वज्र, चक्र, गदा, और ऐसेभारी दण्डोंको जोकि तपसे पूर्ण और श्रेष्ठथे ब्रह्माजीके पुत्र संसार के प्यारे भृगुऋषि से निर्मित बड़े तेजस्वी शरीर धारण करनेवाले संसारमें अद्वितीय पर्व्वताकार हृष्ट पुष्ट शरीरबड़े लम्बेमहान्तासेयुक्त भरतबंशी भगवान्इन्द्रने उसब्रह्मतेजसे उत्पन्न होनेवाले तेजसंयुक्त शब्दायमान छोड़े हुये वज्र से ३२।३३।३४।३५ आठसे दश दैत्य दानवोंके बड़े वीरोंको मारा हे राजा इसके पीछे अत्यन्त भयकारी बड़े समयके अन्त होनेपर ३६ बारहवर्षकादुर्भिक्ष वर्त्तमान हुआ उस बारहवर्षके दुर्भिक्षमें महर्षीलोग ३७ क्षुधासे व्याकुल आजीविका के निमित्त दशों दिशाओंको चलेगये तब सारस्वत मुनिने दिशाओं में भागनेवाले उन ऋषियों को देखकर ३८ चलनेका विचार किया उससमय सरस्वती उनसे बोलीकि हे पुत्र यहांसे तुमको जाना योग्यनहींहै मैं सदैव तेरे आ-

हारके निमित्त ३९ अत्यन्त उत्तम मछलियों की दूंगी हे भरतबंशी ऐसे माताके बचन सुनकर उस ऋषिने उसीप्रकारसे देवता और पितरोंको तृप्त किया ४० पुराण और वेदोंको धारणकरते उस ऋषिने सदैव आहार किया फिर उस दुर्भिक्षके समाप्त होनेपर महर्षियोंने ४१ वेदज्ञताके कारण परस्पर पूछा हे राजेन्द्र क्षुधार्त्त और चारोंओरको दौड़नेवाले उन सबऋषियोंके वेदबिस्मरण होगये ४२ और किसीने नहीं जाना इसके अनन्तर उनमें से किसी ऋषिने उस सारस्वत ऋषिको पाया ४३ जोकि तीक्ष्ण बुद्धि और वेद पाठ करनेवाले ऋषियों में श्रेष्ठ थे उसने जाकर उस बड़े तेजस्वी ४४ देवताकेसमान निर्जनबनमें वेदपाठ करनेवाले सारस्वत ऋषिको उन अपने साथी ऋषियोंसे बर्णनकिया तब वह सबऋषि मिलकर वहांगये ४५ और मिलेहुओंने मुनियोंमें श्रेष्ठ सारस्वतमुनिसे यह बचन कहा कि हे मुनि आप हमसब मुनियोंको वेदपढ़ावो तब उस मुनिने उन ऋषियोंसेकहा ४६ कि तुम बिधिपूर्व्वक मेरीशिष्यताको प्राप्तकरो तब वह महामुनियोंके समूह यहबचनबोले कि हेपुत्र तुम बालकहो ४७ तब वह सारस्वत मुनियोंसे बोले कि मेराधर्मनाश होगा निश्चय करके जो अधर्म से कहे और अधर्मही से लेवे ४८ उन दोनोंका शीघ्रही नाश होताहै अथवा वह दोनों परस्पर शत्रु होजातेहैं यह सुनकर ऋषियोंने बर्षोंकी अधिकयता श्वेतबाल धन और बान्धवोंके कारणसे ४९ उत्पन्न होनेवाले धर्म को नहीं किया और कहा कि जो शिक्षाआदिक छओं अंगों समेत वेदोंका पढ़ने वालाहै वही हममें बड़ा है ऐसा बिचारकर मुनियोंने बिधिके अनुसार ५० उस सारस्वत मुनिसे वेदोंको पाकर फिर धर्मोंको क्रिया अर्थात् साठहजार मुनियोंने ५१ वेदपढ़ने के कारण से उस परम ऋषि सारस्वतकी शिष्यताको पाया तदनन्तर वह सब उस परम ऋषिके आसन के लिये एक मुट्ठो कुशालाये और उस बालक के अधीनतामें नियत हुये ५२ इसके पीछे केशवजीके बड़ेभाई महाबली बलदेवजी वहांभी धनोंको दान करके क्रमपूर्वक उस प्रसिद्ध

तीर्थ परगये जहांपर कि एक बहुत वृद्ध कन्या ठहरी थी ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

जन्मेजय बोले कि हे भगवान् पूर्व्वसमय में वह कुमारी कैसे तपमें प्रवृत्त हुई किस निमित्त तपस्याकरी और उसका क्यानियम था १ हे ब्राह्मण मैंने तुमसे यह महाश्रेष्ठ और बड़े कष्ट से करने के योग्य तप सुना अब उसका वह सब मूल समेत वृत्तान्त कहो जैसे कि वह तपमें प्रवृत्त हुई २ बैशंपायनबोले कि हे राजा बड़े पराक्रमी और यशमान एककुणिगर्गनाम ऋषिहुये उस महातपस्वी ने बड़ी तपस्या करके ३ मनसे सुन्दरी बेटीको उत्पन्न किया तब यशस्वी कुणिगर्गमुनि उसकन्याको देख और बहुत प्रसन्नहोकर ४ इस लोकमें शरीर को त्यागकर स्वर्गको गये इसके पीछे वह सुन्दर भृकुटी कमललोचना कल्याणी ५ निर्दोष बड़े भारी उग्र तपके द्वारा परिश्रम करके ब्रतोंसमेत देवता और पितरोंकी पूजन करनेवाली हुई ६ हे राजा उस उग्रतपमेंही उसका बड़ासमय व्यतीतहुआ और उस पितासे दीहुई निर्दोषनेभी कभी पतिकी इच्छा नहींकी इसहेतुसे कि उसने अपनेयोग्य पतिको नहीं पाया तब वह बड़े उग्रतपसे अपने शरीरको पीड़ितकरके ७।८ निर्जनवनमें देवता और पितरोंके पूजन में प्रवृत्तहुई हे राजेन्द्र परिश्रमसे रहित अपने को अभीष्ट प्राप्त करनेवाली मानकर वह कन्या ९ बड़ी तपस्या से जीर्ण शरीरहुई जबकि वह अपने चरणोंसे कहीं चलने फिरनेको भी समर्थ नहीं हुई १० तब परलोकके जाने में विधिपूर्व्वक बुद्धिकी फिर नारदजी उस शरीर त्यागनेकी इच्छावान् कुमारीसे बोले ११ हे निष्पाप तुझ संस्कार से रहित कन्या के लोक कैसे होसक्ते हैं हे महाब्रत हमने देवलोक में ऐसासुनाहै १२ तुमने बड़ी तपस्या करी परंतु लोकों को विजय नहींकियाहै महाब्रत यहभी हमने देवलोकमें सुनाहै १३ तब तो वह कुमारी नारदजीके इन बचनों को

सुनकर ऋषियोंकी सभामें बोली १४ हे उत्तम ऋषि मैं आधेतपका फल अपने पतिको दूंगी ऐसा कहने पर इसके हाथको गालवके पुत्रशृंगवान् ऋषिने पकड़ा और इसनियमको कहा कि हेशोभायमान अब मैं तेरेपाणिको इसप्रतिज्ञाके साथ ग्रहण करताहूं १५ कि जो तू एकरात्रि मेरे साथ निवासकरे तब उसने कहा तथास्तु ऐसी प्रतिज्ञा करके उसने अपना पाणि उसके हाथमें दिया १६ गालवके पुत्र शृंगवान्ने वेदोक्त विधिसे अग्निमें हवन करके उसका पाणिग्रहण करके विवाह किया १७हेराजा वह स्त्री रात्रिमें तरुण दिव्य भूषण और वस्त्रोंसे अलंकृत और दिव्य सुगन्धियों से युक्त शरीर हुई १८ गालवके पुत्र शृंगवान् उसलक्ष्मीके समान प्रकाशमान उस स्त्रीको देखकर प्रसन्नचित्त होकर एकरात्रि उसके साथ निवासी हुये तब वह स्त्री प्रातःकाल के समय उस ऋषिसे बोली १६ हे तपकरनेवालोंमें श्रेष्ठ ब्राह्मण तुमने जो प्रतिज्ञा मुझसेकरीहै इसीहेतुसे मैं तेरे पासरहीहूं तेरा कल्याण और शुभहोय अब मैं जातीहूं २० तब वहांसे निकलकर वह स्त्री फिर बोली जो सावधान पुरुष इस तीर्थ में देवताओं को तृप्त करके एकरात्रि निवासकरे २१वह उस फलकोपावे जो कि अट्ठावन वर्षतक श्रेष्ठ रीति से ब्रह्मचर्यकोकरे २२ इसकेपीछे वह पतिव्रता ऐसा कहकर शरीरकोत्यागकर स्वर्गको गई और वह ऋषिभी उसकेरूपको शोचताहुआ महादुःखीहुआ२३नियमके कारणसेउसका आधातपबड़ी कठिनतासे लिया और उसनेआत्माको साधन करके उसकी गतिको पाया२४ हे भरतर्षभ उसके रूप और तेजवलसे महादुःखीनेऐसा किया इसप्रकारसे उसने उस वृद्धकन्याके शुभचरित्र २५ ब्रह्मचर्य्य और शुभगतिको उससे कहा उस स्थानपर नियत होने वाले बलदेवजीने शल्यको मृतकहुआ सुना२६ अर्थात् शत्रुओंके तपानेवाले बलदेवजीने वहांभी ब्राह्मणोंको दानदेकर शल्यकोमृतक हुआसुना २७इसके पीछे माधव बलदेवजी ने समन्तपंचक के द्वारासेनिकलकर कुरुक्षेत्रके फलको ऋषियों से पूछा २८हेसमर्थ उनयादवों

में श्रेष्ठ बलदेवके इसवचनको सुनकर उन महात्माओंने उस कुरुक्षेत्रका ठीक २ फल वर्णन किया २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेत्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय॥

ऋषिबोले हे बलदेवजी यह समन्त पंचक ब्रह्माजी की सनातन उत्तर वेदी कही जातीहै जहांपर कि बड़े दाता देवताओंने उत्तमयज्ञ के द्वारा अच्छेप्रकार से पूजनकिया १ पूर्व समयमें राजऋषियोंमें श्रेष्ठ बड़े बुद्धिमान और तेजस्वी महात्मा कुरुने इसक्षेत्र को जोता था इसहेतुसे इसका नामलोकमें कुरुक्षेत्रप्रसिद्ध हुआ २ बलदेवजी बोले हे तपोधन ऋषियो कुरुने इसक्षेत्र को किसहेतु से जोता मैं इसका सबवृत्तान्त सुनाचाहताहूं ३ ऋषिबोले हेबलदेवजी निश्चय करके पूर्व्व समयमें इन्द्रने स्वर्ग से यहां आकर उस सदैव सन्नद्ध और जोतनेमें प्रवृत्तचित्त राजाकुरुसे इसकाहेतु पूछा अर्थात् इन्द्रने कहा कि हेराजेन्द्र बड़े उपायसमेत आप यह क्याकाम करतेहैं हे राजर्षि आपकी इसमें क्या करनेकी इच्छाहै जिसके कारण यह पृथ्वी आप जोतते हैं ४।५ कुरु बोले हे इन्द्र जो पुरुष इसक्षेत्रमें शरीरको त्यागकरेंगे वहअपने पुण्यसे निष्पापलोकों को जायँगे ६ इसके पीछे इन्द्रहंसकर अपने स्वर्गकोचलेगये इसीप्रकार वह राज ऋषि दुखीहोहोकर उस क्षेत्रको जोताकरताथा और इन्द्र वारंवार इसीप्रकारसे पूछ२ और हंस२करचले जातेथे७।८जब राजाने उग्र तपसे पृथ्वीकोजोता तब उस राजऋषिके मन को इच्छाको इन्द्रने देवताओं से कहा ९ देवता यह सुनकर इन्द्रसे यह वचन बोले कि हे इन्द्र जो बनसकेतो इस राजऋषिको वरसे लुभानायोग्य है १० जो इसलोकमें मनुष्य यज्ञोंसे हमको न पूजकर इस क्षेत्रमें मरकर स्वर्गको जायँगे उस दशामें हमारे भागोंकी नष्टताहोगी ११ इसके

पीछे इन्द्रनेआकर उस राजाऋषिसे कहा आपको कष्ट करनायोग्य नहीं है मैं कहूंसो कीजिये १२ हे राजा जो सावधान मनुष्य यहां निराहार होकर अथवा युद्धमें अच्छी रीतिसे मरणको पाकर शरीर को त्यागकरेंगे यद्यपि तिर्य्यक योनिमेंभी उनका जन्म होजाय तौ भी १३ हे बड़ेबुद्धिमान राजेन्द्र वह स्वर्गभागी होंगे इन्द्रके इस वचनको सुनकर राजाकुरुने इन्द्रसे कहा कि ऐसाही होय तब तो इन्द्र अत्यन्त प्रसन्नचित्त से उससे पूछ शीघ्रही स्वर्गको गये १५ हे यादवोंमें श्रेष्ठ इस प्रकारसे पूर्व्व समय में यहक्षेत्र राजऋषि कुरुसे जोतागयाहै और उसीप्रकार देवताओंने और ब्रह्माने इन्द्रको आज्ञाकरी १६ इससे श्रेष्ठतर धर्मकी वृद्धिका हेतु पृथ्वीपर कोई स्थाननहीं होगा जो कोई मनुष्य यहां उत्तम तपस्याकरेंगे १७ वह सब शरीरको त्यागकर ब्रह्मलोकको जायंगे और जो पुण्यात्मालोग यहां धनादिक का दानकरेंगे १८ उन्होंका वह दान थोड़ेही समय में सहस्रगुना होगा और भलाचाहनेवाले मनुष्य सदैव यहांनिवास करेंगे १९ वह कभी यमराजके देशको नहीं देखेंगे और जो राजा लोग यहां बड़ेयज्ञोंसे पूजनकरेंगे २० उन्होंका निवास स्वर्गमें तब तक होगा जबतक कि यह पृथ्वी नियतहै यहां देवताओंके राजा इन्द्रनेभी आप उस गाथाको गयाहै २१ जो कि कुरुक्षेत्रसे सम्बन्ध रखनेवालीहै हे बलदेवजी उसको आप सुनिये कि इस कुरुक्षेत्रमें वायुसे उड़ाई हुई धूलभी पापी मनुष्यको परमगति देतीहै २२ हे नरोत्तम यहां उत्तम देवता ब्राह्मण और नृगआदिक श्रेष्ठ राजाओं नेभी बड़े २ पूजित यज्ञोंसे पूजन करके अपने २ शरीरोंको त्याग कर उत्तमगतिको पाया २३ तरन्तुक, और आरन्तुक, परशुरामजी केहद और मचक्रकका जो अन्तरहै यहकुरुक्षेत्र समन्त पंचक नाम ब्रह्माजीकी उत्तरवेदी कहीजातीहै २४ यह कल्याणरूप और धर्मकी बड़ी वृद्धिका कारण देवताओंका अंगीकृत और सब गुणोंसे युक्तहै इस हेतुसे यहां सदैव युद्धमें मरेहुये राजालोग पवित्र और अविना शी गतिको पावेंगे २५ तब ब्रह्माजी समेत इन्द्रने आप अपने मुख

से यह वर्णनकिया और ब्रह्माविष्णु महेश्वर इनतीनोंने उससबको अंगीकार किया २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेचतुर्विंशोऽध्यायः २४

पच्चीसवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे जन्मेजय इसकेपीछे यादव बलदेवजी कुरुक्षेत्रको देख दानादि देकर उस बड़े दिव्य आश्रमको गये १ जोकि मधूक, और आम्र केबनोंसे संयुक्त प्लक्ष और न्यग्रोध, नामबृक्षोंसे ब्याप्तचिरविल्व बृक्षोंसे संयुक्त पुण्यकारी पनस और अर्जुननाम वृक्षोंसेसंकुलथा २ यादवोंमेंश्रेष्ठपवित्र लक्षणवाले बलदेवजीने उस आश्रमको देखकर उनसबऋषियोंसे पूछाकि यह अतिउत्तम किसका आश्रमहै ३ हे राजाफिर उन सबमहात्माओंने बलदेवजीसे कहाकि हे बलदेवजी यह जैसेप्रथम जिसका आश्रमहै उसकामूलसमेतसबवृत्तान्त सुनो ४ जहांपर पूर्वसमयमें विष्णुदेवताने उत्तमतप को तपाहै औरयहांही उनके सब सनातन यज्ञभी विधिपूर्व्वक पूर्णहुये ५ इस स्थानमें कौमार ब्रह्मचारिणी ब्राह्मणी सिद्धहुई वह तपसे सिद्ध योग सेसंयुक्त तपस्विनी स्वर्गकोगई ६ हे राजा महात्मा शांडिल्य ऋषि की पुत्री श्रीमती व्रत धारिणी पतिव्रता ब्रह्म चारिणी हुई ७ ब्रह्मचारिणी होकर वह महाभाग देवता ब्राह्मणोंसेपूजित स्त्रियोंके साथ कठिनतासेकरनेके योग्य घोर तपको तपकर स्वर्गको गई ८ इसके पीछे महा अजेय बलदेवजी ऋषियों के बचनको सुनकर उस आश्रमको गये औरउन ऋषियोंको दण्डवत करके हिमवान पर्व्वत के पार्श्वमें ९ संध्याके सब कर्मोंको करके उसपर्व्वतपर चढ़े इसके पीछे ताल ध्वजाधारी पराक्रमी बलदेवजीने थोड़ी दूर पर्व्वत पर जाकर १० धर्मकी वृद्धिके हेतुरूप उत्तमतीर्थको सरस्वती के प्रभावको और प्लक्षनाम झिरने को देखकर आश्चर्य्यको पाया ११ और वहां से चलकर कारपवन नाम अत्यन्त उत्तम तीर्थको पाया महाबली बलदेवजीवहां भी दानकोदेकर १२ पवित्र शीतलनिर्मल

और धर्मकी वृद्धिके कारण रूप जलमें स्नान करनेवाले युद्ध दुर्मद ने देवता और पित्रोंको अच्छीरीति से तृप्तकिया १३ फिर वह अजेयजती और ब्राह्मणों समेत वहां एकरात्रि निवास करके मित्रा-वरुण के पवित्र आश्रमको गये १४ इसोपीछे कारपवन से उस यमुना देशको गये जहांपर कि पूर्व्व समयमें इन्द्र अग्नि और अ-र्य्यमानाम देवताओंने परम प्रीतिको पाया था १५ उस तीर्थमें भी स्नानकर धर्मात्मा बलदेवजीने परम प्रीतिको पाया ऋषि सिद्धों समेत बैठेहुये महाबली बलदेवजीने उज्वल कथाओंको सुना उस प्रकार उन लोगोंके बैठने पर भगवान नारदऋषि १६।१७ उस स्थानपर आये जहांपर बलदेवजीथे हेराजा वह जटामण्डल समेत स्वर्णमयी वस्त्रधारी महा तपस्वी १८ स्वर्णदण्ड धारी कमण्डल हाथमें लिये नृत्यगानमें सावधान देवता ब्राह्मणोंके पूजित कल-होंके करनेवाले सदैव कलह प्रिय नारदजीउस चित्त रोचक शब्द-वाली अपनी कच्छपी नाम बीणाको लेकर १९।२० उस देशको गये जहांपरकि श्रीमान् बलदेवजी नियतथे बलदेवजीने अभ्युत्थान पूर्व्वक उस सावधानव्रत देवऋषि नारदजीको सुन्दर रीतिसे पूजकर कौरवोंका वृत्तान्तपूछा तब सर्वधर्मज्ञ नारदजीने बलदेवजी से कौरवों के बड़े कठिन नाशको बर्णन किया तब बलदेवजीने भी खेदयुक्त होकर नारदजी से कहा २१।२२।२३ किजो राजालोग वहां बर्त्तमानथे वहसब क्षत्रियोंका समूह कैसाहै हेतपोधन इसको मैंने पूर्व्व सुनाहै परन्तु अब ब्यौरे समेत सब पूरा २ वृत्तान्त आ-पसे सुनना चाहताहूं २४ नारदजी बोले कि भीष्मजी तो प्रथमही मारेगये उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य और जयद्रथ मारेगये २५ हेबल-देवजी भूरिश्रवा और पराक्रमी राजामद्र मारेगये इनकेबिशेष अ-न्य२ बहुतसे ऐसे बलवान लोगभी २६ कौरवोंकी बिजयके निमित्त अपने२ प्यारेप्राणोंको त्यागकर मारेगये जोकि युद्धोंमें मुखनफेरने-वाले राजा और राजकुमार थे २७ हे महाभाग माधवजी वहांजो२ जीवते बचेहैं उनको भी मुझसे सुनो युद्धमें मर्दनकरनेवाले तीन

पुरुष तो दुर्य्योधनकी सेनामें बचेहैं २८ अर्थात् कृपाचार्य्य, कृत-वर्मा, और पराक्रमी अश्वत्थामा, हेबलदेवजी वहतीनोंभी भय-भीत होकर दशों दिशाओंको भागे २९ शल्यके मरने और कृपा-चार्य्यादिक तीनों बचेहुये शूरवीरों के भागजाने पर अत्यन्त दुखी दुर्य्योधन ब्यासजी के द्वैपायन नाम ह्रदमें प्रवेशकरगया ३० वहां श्रीकृष्णजी समेत पांडवोंने उस जलमें नियत और शयन करनेवा-ले दुर्य्योधन को उग्र बचनोंसे पीड़ामानकिया ३१ हेभगवन् बल देवजी तबवह वीर चारोंओर के दुर्बचनोंसे पीड़ामान होकर उस ह्रदसे गदाको लेकर उठा ३२ सो वह भीमसेन से सन्मुख लड़ने कोगया अब दोनोंका भी महा भयानक युद्धहोगा ३३ हेमाधवजी जो आपको उस युद्धके देखनेका उत्साहहै तो शीघ्रजाओ देर मत करो आप अपने दोनों शिष्योंके घोर युद्धको देखिये ३४ वैशंपायन बोले कि बलदेवजी ने नारदजी के बचनको सुनकर उन उत्तमब्राह्म णोंको अच्छी रीतिसे पूजकर बिदाकिया जो उनके साथ में आये थे ३५ और बड़े प्रसन्नचित्त महाअजेय बलदेवजी ने साथियों को आज्ञाकरी कि तुम द्वारकाकोजाओ पर्व्वतोंमें महाश्रेष्ठ प्लक्षनामशुभ झरनेसे उतरकर ३६ और तीर्थके बड़े फलको सुनकर ब्राह्मणोंके सन्मुख इसश्लोक को कहा कि ३७ सरस्वती पर निवास करनेके सिवाय कोई कहीं उत्तमगुण नहीं है सब मनुष्य इस सरस्वती को पाकर स्वर्गकोगये और वह सदैवसरस्वतीनदीको स्मरणकरेंगे ३८ सब नदियोंमें सरस्वती नदी बड़े धर्मका कारणहै सरस्वती सदैव लोकका भला करनेवालीहै मनुष्य इस सरस्वतीको पाकर सदैव इसलोक और परलोकमें पापको नहीं शोचतेहैं ३९ इसके पीछेशत्रु संतापी बलदेवजी प्रीतिसे बारंबार सरस्वतीको देखते सुन्दरघोड़े वाले उज्वलरथपर सवार हुये ४० शिष्योंका वर्त्तमानयुद्ध देखनेके अभिलाषी वह बलदेवजी उस शीघ्रगामी रथकी सवारीसे उनके सन्मुख जा पहुंचे ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिपञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हे जन्मेजय जिस स्थानपर दुखी राजा धृतराष्ट्रने यह बचन कहाकि १ हे संजय मेरापुत्र गदायुद्ध के वर्त्तमान होने पर बलदेवजीको सन्मुख देखकर कैसे युद्धमें प्रवृत्त हुआ और किस प्रकारसेयुद्धहुआ संजय बोलेकि आपका पुत्र महाबाहु युद्धाभिलाषी दुर्य्योधनबलदेवजीकीवर्त्तमानता देखकर बहुतप्रसन्नहुआ२।३ और हे भरतवंशी बड़ी प्रीतिसे युक्त राजा युधिष्ठिरने हलधारी बलदेवजीको आयाहुआ देखकर बड़े सत्कार पूर्वक ४ उनकोउत्तम आसन दिया और उनके कुशल मंगलको पूछा तब बलदेवजीने युधिष्ठिर से बड़ामधुर धर्मसेयुक्त और शूरोंका हितकारी यह बचनकहा कि ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ मैंने ऋषियोंके मुखसे सुनाहै कि कुरुक्षेत्र धर्म की वृद्धिका बड़ा कारण रूप महापवित्र स्वर्गका देनेवाला होकर देवता ऋषि और महात्मा ब्राह्मणोंसे सेवित है ६।७ वहां पर जो युद्ध करने वाले मनुष्य अपने शरीर को त्याग करेंगे उन का निवास निश्चय करके स्वर्ग में इन्द्र के साथ होगा ८ हे राजा इस हेतु से शीघ्रही यहां से समन्त पंचक को चलें वह देवलोक में ब्रह्माजी की उत्तर वेदी प्रसिद्ध है उस अत्यन्त पवित्र तीनोंलोक के सनातन तीर्थ पर युद्धमें मरणको पाकर निश्चय स्वर्ग होगा ६।१० हे महाराज कुन्तीका पुत्र प्रभु बीर युधिष्ठिर बहुत अच्छाकहकर समन्त पंचकके सन्मुख गया ११ इसके पीछे तेजस्वी राजादुर्य्योधन क्रोध से बड़ीगदाको लेकर पांडवों के साथ पदातीहीचला १२ अन्तरिक्षचारी देवताओंने उस गदा और कवचधारी दुर्योधन को देखकर धन्य२ करके बड़ी प्रशंसाकरी १३ और जोवायु के साथ चलनेवाले सिद्धचारण थे वह भी उसको देखकर प्रसन्न हुये वह आपका पुत्रकौरवराज दुर्य्योधन पांडवोंसे घिराहुआ १४ मतवाले गजराजकीसी चालमें नियतहोकर चला फिर शंख भेरियों के बड़े शब्द १५ और शूरोंके सिंहनादों से सबदिशा पूर्ण हुई और थोड़े ही

समयमें वह नरोत्तम कुरुक्षेत्रमें पहुंचे १६ वहां जैसे आपके पुत्रने बतलाया उसीप्रकार जाकर वह पश्चिमओरकादेश चारों ओरो सब दिशाओंमें युक्त होकर परिधिरूपहुआ १७ जोकि सरस्वती के दक्षिण ओर से दूसरा उत्तमतीर्थ है वहां हरितभूमियुक्त देशमें युद्ध करना स्वीकार करके नियत किया १८ इसकेपीछे कवचधारीभीम सेनने बड़ी कोटिवाली गदाको लेकर गरुड़के समानरूपको धारण किया १६ युद्धमें शिरस्त्राण और सुवर्णका कवचधारी आपका पुत्र सुवर्ण केगिरिराजके समान शोभायमान हुआ २० वह कवचधारी भीमसेन और दुर्य्योधन दोनोंबीर युद्धमें क्रोधयुक्त हाथियोंके समान दिखाई पड़े २१ हेमहाराज युद्धमंडलमें नियत दोनोंनरोत्तम भाई उदयमान सूर्य्य और चन्द्रमाके समान शोभायमान हुये २२ हे राजापरस्पर मारनेके अभिलाषी नेत्रों से भस्मकरनेवाले बड़े हाथियोंके समान क्रोधमें पूर्णहोकर दोनोंने परस्पर देखा २३ तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरव दुर्य्योधन गदाको लेकरहोठों कोचाबता और क्रोधसे रक्तनेत्र श्वासाकोलेता गदा लेकर नियत हुआ २४ तदनन्तर पराक्रमी दुर्य्योधनने गदाको लेकर भीमसेनको देखकर बुलाया जैसे हाथीहाथी को २५ बुलाता है उसीप्रकार पराक्रमी भीमसेननेगदाकोलेकर राजाको ऐसेबुलाया जैसे कि बनमेंसिंहको सिंहबुलाताहै २६ वह हाथमें गदाउठानेवाले दुर्य्योधन और भीम-सेनयुद्धमेंऐसे दिखाई पड़े जैसे किदोशिखरधारी पर्व्वतहोतेहैं २७ वह दोनों अत्यंत क्रोधयुक्त भयानक पराक्रमी गदायुद्ध में बड़े कुशल और बलदेवजीके शिष्यथे २८ यमराज और इन्द्रकी समान कर्म करनेवाले दोनों महाबली वरुणके समान कर्मकर्त्ताथे २६ हे महाराज इसीप्रकार वह दोनों बासुदेवजी परशुरामजी कुवेरदेवता और मधुकैटभदैत्योंके समान होकर ३० दोनों सुंद,उपसुंद, राम-रावण और बाल,सुग्रीवके समान कर्म करनेवालेथे ३१ वैसेही शत्रुओंके तपानेवाले वह दोनों कालमृत्युकी समान मतवाले बड़े हाथियोंकेसमान परस्पर सन्मुख दौड़नेवालेथे ३२ वह भरतवंश-

योंमें श्रेष्ठ शरदऋतुकेमध्यमें हथिनीके मिलापमें मत्त अहंकारी मतवाले विजयाभिलाषी हाथियोंकेसमानथे ३३ फिर वह दोनों शत्रुसंतापी परस्पर क्रोधयुक्त देखनेवाले और सर्पोंके समान क्रोधके प्रकाशितविषोंके उगलनेवालेथे ३४ दोनों भरतर्षभ पराक्रमों से भरे सिंहोंकेसमान अजेय और गदायुद्धमें कुशलथे ३५ दोनों नख दंष्ट्रारूप शस्त्र रखनेवाले वीर व्याघ्रोंके समान दुखदाई उत्सववाले सृष्टिके नाशमें क्रोधभरे दोसमुद्रोंके समतुल्य थे ३६ जैसे पूर्व्व पश्चिमकी वायुसे उत्पन्न होने वाली वायुसे चलायमान दोबादल होतेहैं उसीप्रकार वह दोनों महारथीभी क्रोधसंयुक्त होकर दौड़ने वालेथे ३७ वर्षाऋतुमें कठिन गर्जनाकरते किरणोंसेयुक्त दोबादल के समान तेजस्वी पराक्रमीहोकर महासाहसीथे ३८ कौरवोंमेंश्रेष्ठ वह दोनों उदयहुये दोकालरूपी सूर्यकेसमान अत्यन्त क्रोधीव्याघ्रों के समान गर्जने वाले दो बादलके रूप दिखाईपड़े ३९ केसरी सिंहोंके समान महाक्रोधी हाथियोंके समान और ज्वलितअग्निके समान दोनों महाबाहुने आनन्दको पाया ४० क्रोध से चलायमान दोनोंहोठ परस्पर देखनेवाले दोनोंमहात्मा शिखरधारीपर्व्वतोंकेसमानदृष्टिगोचरहुये ४१ वह दोनोंमहात्मा नरोत्तम गदाओंकोहाथमें लेकर सन्मुखहुये दोनोंअत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर परस्परअंगीकृत थे ४२ वहदुर्योधनऔर भीमसेनहिंसनेवाले उत्तमघोड़े चिंहाड़ने वाले हाथी और डकारने वाले बैलोंकेसमान दिखाईदिये ४३ वहपराक्रमसे मतवाले दोनों नरोत्तम दैत्योंके समानशोभायमानहुयेहेराजा इसकेपीछेदुर्य्योधनने महात्मा श्री कृष्ण और बड़े पराक्रमी बलदेव जी औरभाइयों समेत नियतयुधिष्ठिरसे बड़ेअहंकारियोंके समानयह वचनकहा ४४।४५ कि जो बड़े साहसी पांचालसृञ्जी और कैकयदेशियोंसे अपनेको बड़ा अहंकारी मानताथा उस भीमसेनसे मेरायुद्ध निश्चयहुआ ४६ हे युधिष्ठिर तुम इनउत्तम राजाओं समेत इसमेरे और भीमसेनके युद्धको देखो तब युधिष्ठिरने दुर्य्योधनके बचन को सुनकर वैसाही किया ४७ इसके अनन्तर वह सब राजमंडलवहां

बैठगया और बैठकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें सूर्य्यमंडल शोभित होताहै ४८ हे महाराज उन सबके बीचमें केशवजीके बड़े भाई महाबाहु श्रीमान् बलदेवजीभी बैठगये ४६ उज्वल वर्ण नीलाम्बरधारी बलदेवजी उनराजाओंके मध्यमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि रात्रिमें नक्षत्रोंसेसंयुक्त पूर्ण चन्द्रमा होता है ५० हे महाराज उसीप्रकार वह दोनों गदा हाथमें लिये कठिनतासे सहने के योग्य परस्पर उग्रवचनों से घायल करते नियत हुये ५१ अर्थात् वह कौरवोंमें श्रेष्ठ वहां अयोग्य अप्रिय वचनोंको परस्पर कहकर ऊपर को देखते ऐसे नियत हुये जैसेकि युद्धमेंइन्द्र और वृत्रासुर नियत हुयेथे ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिगदायुद्धे षड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताइसवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे जन्मेजय इसके पीछे प्रथम तो वार्त्तालापका ही कठिन युद्धहुआ उस समय वहां दुखित होकर राजाधृतराष्ट्रने यह वचन कहा १ कि निश्चय करके इस मनुष्य शरीरको धिक्कार है जिसकी कि ऐसी दशाहै हेनिष्पाप जिसस्थानपर ग्यारह अक्षौहिणीका स्वामी मेरापुत्र २ सब राजाओंपर शासन करके इस पृथ्वीको भोगकर गदाको लेकर बड़ी तीव्रतासे युद्धमें पैदल चलाजो मेरा पुत्र जगत का स्वामी होकर अनाथके समान गदाको उठा कर चला इसमें प्रारब्धसे दूसरीबात क्या है ३।४ हे संजय मेरे पुत्रने बड़े दुःखको पाया दुखित पीड़ित राजाधृतराष्ट्र इस प्रकार कहकर मौनहोगया ५ संजय बोले कि तब प्रसन्नचित्त बैलके समान गर्जते उस पराक्रमी बादलके समान शब्दायमान दुर्य्योधन ने पार्थ भीमसेन को युद्धके निमित्त बुलाया हे महात्मा कौरवराज दुर्योधनकी ओरसे भीमसेनके बुलाने पर नाना प्रकारके घोर रूप उत्पात जारीहुये ६।७ परस्पर आघातित शब्दों समेत वायु चली धूलकी वर्षाहुई सब दिशा अन्धकारसे पूर्ण हुईं ८ शरीर के रोमां

चौंकी खड़ीकरनेवाली वायुओंके कठिनआघात बड़े शब्दोंके करने वाले हुये पृथ्वीपर बड़ी शब्दायमान सैकड़ों उल्का आकाशसे गिरीं ९ हे राजा पर्व्वके बिनाही राहुने सूर्य्यको ग्रसा अर्थात् बिना पर्व्व के ग्रहण पड़ा और पृथ्वी बनके सब बृक्षों समेत कंपायमानहुई१० नीचेसे कंकड़ पत्थर खैंचनेवाली बड़ी घोर औरप्रकाशित वायुचली और पर्व्वतोंके शिखर पृथ्वीपर गिरे ११ अनेक रूपवाले मृगदशों दिशाओंको दौड़े और घोर रूप ज्वलित भयानक शृगाल भी शब्द करने लगे १२ महा घोर निर्घात भी शरीरके रोमांच खड़े करने वालेहुये हे राजा ज्वलित रूप दिशाओंमें अशुभ सूचक मृग महा घोर अशुभके प्रकट करनेवाले हुये १३ उस समय कूपोंके जलभी चारों ओरको अत्यन्त बृद्धियुक्त हुये आकाशबाणी भी सुनीगई १४ भीमसेनने इसप्रकार के उत्पातोंको देखकर अपने बड़े भाई धर्म-राज युधिष्ठिरसेयह बचन कहा १५ कि यहअभागा दुर्य्योधन युद्ध में मेरे बिजय करने को समर्थ नहीं है अब मैं अपने बहुत कालके संचित क्रोधको १६ कौरवराज दुर्य्योधन पर ऐसे छोड़ूंगा जैसे कि खांडव बनमें अग्निको छोड़ाथा हे पांडव अब मैं तेरे हृदयके बड़े शूलको उखाड़ूंगा १७ अर्थात् मैं गदासे इसकौरवों के कुलमें महा-नीच पापीको मारकर कीर्त्ति रूप मालाको आपके शरीरमें धारण करूंगा १८ अबमैं इस युद्धमें इसपापकर्मीको मारकर इसके शरीर कोइसगदासे खंड २ करूंगा १९ यह अब दुबारा हस्तिनापुरनगर में प्रवेशन करेगा हे भरतर्षभ अब मैं उन सब आगेलिखे दुखोंके अन्तको प्राप्तहूंगा जैसे कि शयन पर सर्पका छोड़ना,भोजनमें बिष देना,प्रमाण कोटीमें गिराना, लाक्षा गृहमें जलाना,सभामें हास्य करना, सर्बस्व हरण २० । २१ एक बर्ष अज्ञात होकर बनमें वास२२इन सब दुःखरूपी ऋणोंसे एकही दिनमें इसको मारकर अऋणहूंगा हे भरतर्षभ अब दुर्बुद्धी म्लान अन्तःकरणवाले दुर्य्यो धन की आयुर्दा पूर्णहुई २३ माता पिताका दर्शन भी समाप्तहुआ हे महाराजेन्द्र अब दुर्बुद्धी कौरव राजका सुख २४ और स्त्रियों

कादर्शनभी संपूर्ण हुआ अब यह शन्तनुके कुलको कलंक लगाने वाला दुर्य्योधन २५ लक्ष्मी, राज्य और प्राणोंको त्यागकरपृथ्वी पर सोवेगा अबराजा धृतराष्ट्र मरेहुये अपने पुत्रको सुनकर२६ अपने उस दुष्टकर्मको यादकरेगा जोकि शकुनीकीबुद्धिसे उत्पन्न हुआ हेराजाओंमें श्रेष्ठ पराक्रमी भीमसेन ऐसी बातें कहकर गदाकोहाथमेंलेकर २७ युद्धके निमित्त दुर्य्योधनको ऐसेबुलाताहुआ सन्मुख नियतहुआ जैसे कि इन्द्र वृत्रासुरको बुलाता हुआ नियत हुआथा शिखरधारी कैलास के समान उस गदा उठानेवाले दुर्य्योधनको देखकर २८ क्रोधयुक्त भीमसेनने फिर कहा कि हे दुर्य्योधन राजा धृतराष्ट्रसमेत तुमअपने उनपापकर्मोंको स्मरणकरो जोकिवारणावत नगरमें हुये और सभामें रजस्वला द्रौपदीको दुःखदिया २९।३० और जोतैंने और शकुनीने राजा युधिष्ठिर को द्यूतमें ठगा औरहम सबने महाबनों में जिस तेरे कारण से बड़े२ दुःखोंको पाया ३१ और योन्यन्तरके समानहोकर हमलोगोंने जिस दुःखको बिराटनगर में पाया अब मैं उनसब दुःखोंके कारण रूपको मारताहूं हे दुर्बुद्धी तुझको प्रारब्धसे देखाहै और तेरेही कारणसे शिखण्डी के हाथसे मारेहुये यह रथियोंमें श्रेष्ठ श्रीगंगाजी के पुत्र प्रतापवानकौरवों के पितामह भीष्मजी शर शय्यापर सोतेहैं ३२।३३ द्रोणाचार्य्य कर्ण और प्रतापवानशल्य मारागया और शत्रुताकी अग्नि का उत्पन्न करनेवाला सौबलकापुत्र शकुनी मारागया ३४ फिर द्रौपदीका क्लेश उत्पन्न करनेवाला पापी प्रातिकामी मारागया सिंह केसमान युद्धकरनेवाले शूरवीर तेरे सबभाई मारेगये ३५ तेरेही कारणसे यह सब और अन्य बहुतसे राजा मारेगये अबमैं मुझको निस्सन्देहगदासे मारूंगा ३६ हेराजेन्द्र सत्यपराक्रमी और निर्भय आपका पुत्र इसप्रकार बड़े उच्चस्वरसे वार्त्तालाप करनेवाले भीमसेनसेबोला ३७ कि हेकुलमें महानीच भीमसेन बहुत बातोंसेक्या प्रयोजनहै तुम युद्धकरो अबमैं तेरे युद्धके उत्साहको भंगकरूंगा३८ हेनीच मैं दुर्य्योधन तुझ सरीके किसी मनुष्य के वचनसे डरने के

योग्य नहींहूं बहुत कालसे चाहता हृदयमें नियत तेरे साथमेरा यह गदायुद्ध प्रारब्ध केहीद्वारा देवताओंसे प्राप्तहुआहै ३९।४० हेदुर्बुद्धी बहुत वार्तालाप और अपनी प्रशंसाकरनेसे क्यालाभहै यह बचन कर्मकेही द्वारा प्राप्त करना योग्यहै बिलम्ब मतकरो ४१ उसके उस बचनको सुनकर उन राजा लोगोंने और सोमकोंने जोवहां इकट्ठे थे उसकी प्रशंसाकी ४२ इसके पीछे वह शरीरके रोम २ से प्रसन्न सबसे स्तूयमान वह कौरवनन्दन दुर्य्योधन युद्धकेलिये बुद्धिके द्वारा फिर धैर्य्यमें प्रवृत्त हुआ ४३ राजाओं ने क्रोधयुक्त उस दुर्य्योधन को जोकि मतवाले हाथी केसमान था तलके शब्दोंसे फिर प्रसन्न किया ४४ महात्मा पांडव भीमसेन अपनी गदाको उस कर तीव्रतासे उस बड़े साहसी दुर्य्योधन के सन्मुखगया ४५ उसके जातेही वहां हाथी चिंहाड़े बारंबार घोड़े हींसे और विजयाभिलाषी पांडवों के शस्त्र भी प्रकाशित हुये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

संजयबोले कि इसके पीछे बड़ा साहसी दुर्य्योधन बड़ी तीव्रता से गर्जता उसप्रकार से आते हुये भीमसेन को देखकर सन्मुख गया १ और शृंगधारीबैलों के समान परस्पर में दोनों दौड़े और गदा के प्रहारों के बड़े शब्द उत्पन्न हुये २ उन दोनों विजयाभिलाषियों का युद्ध महाकठोर औररोमहर्षण करनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि युद्धसेपरस्पर विजयाभिलाषीइन्द्र और प्रह्लाद का हुआ था ३ रुधिर से लिप्त सब शरीर गदाहाथों में लिये बड़े साहसी दोनों महात्मा फूलेहुये किंशुकवृक्ष के समान दिखाई पड़े ४ इस प्रकार उसबड़े भयानक घोर युद्धकेवर्त्तमान होने पर आकाशदर्शनीय होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पटबीजनोंके समूहों से होताहै ५ इसप्रकार उस कठिनतर संकुलनाम युद्धके वर्त्तमान होनेपर वह शत्रुओं के विजय करनेवाले दोनों शूरभीथक गये ६

शत्रुसंतापी उनदोनोंने एक मुहूर्त्त समाश्वासित होकर शुभगदाओं को पकड़कर परस्पर विश्राम किया ७ फिर इन महापराक्रमी विश्राम किये हुये नरोत्तमों को हथिनीकेलिये मतवाले बलवान् हाथियों के समान ८ एकसे पराक्रमी गदापकड़नेवाले दोनोंको अच्छी रीतिसे देखकर देवता मनुष्य और गन्धर्वोंने बड़े आश्चर्य्यकोपाया ९ गदा पकड़नेवाले उनदुर्योधन और भीमसेन को देखकर विजय होनेमें सबजीवों को संदेह प्राप्त हुआ १० इसके पीछे बलवानों में श्रेष्ठ परस्पर अन्तर चाहनेवाले दोनों भाई भिड़कर प्रत्यन्तर के समान भ्रमण करनेलगे ११ हे राजा अवलोकन करनेवालोंनेउस रौद्री मारनेवाली भारी और इन्द्रवज्र के समान उठाईहुई यमराज के दण्ड की समान गदाको देखा १२ युद्धमें भीमसेन के हाथ से मारती हुई गदाका एक मुहूर्त्त बड़ा कठिन और घोरशब्द वर्त्तमान हुआ १३ इसके अनन्तर वह दुर्योधन उस कठिन तीव्रता रखने वाली गदाके मारनेवाले अपने शत्रुभीमसेनको देखकर आश्चर्य्य युक्तहुआ १४ हे भरतवंशी उससमय भीमसेन नाना प्रकारके मार्ग और मंडलोंको घूमताहुआ शोभायमान हुआ १५ परस्पर अपनी२ रक्षामें सावधान उनदोनोंने अन्योन्य सन्मुख होकर बारंबार ऐसे प्रहार किये जैसे खानेकी वस्तुके लिये दोबिलार परस्पर प्रहार करते हैं १६ भीमसेन इसप्रकार के बहुतसे मार्गोंको घूमा फिर सन्मुख तिर्य्यक् विचित्रमण्डल १७ अपूर्व्व अस्त्रान्तर बहुत प्रकार के दाहिने बायें प्रहारस्थानों का छोड़ना बचाना दाहिने बायें करना १८ तीव्रतासे सन्मुखजाना गिराना और अचल होना शत्रुके उठने पर फिर युद्ध करना शत्रुके मारनेको चारों ओर जाना शत्रुके हटजानेका स्थान रोकना प्रहारबचाने के लिये झुककर हटजाना मध्यगति १९ समीप जाकर शत्रुका मारना चारोंओरको घूमकर पीछेकी ओर वर्त्तमान होके हाथसे शत्रुको घायल करना इनमार्गोंमें घूमते उन गदायुद्धमें कुशल दोनोंने अनेक प्रकारसे परस्पर घायल किया २० फिर धोखादेनेवाले होकर वह कौरवोत्तम

दोनों भ्रमण करने लगे और क्रीड़ा करने वाले वह दोनों पराक्रमी मण्डलोंको घूमे २१ युद्धमें चारोंओरसे युद्धकी क्रीड़ाको दिखलाते उनदोनों शत्रुसंतापियोंने गदाओंसे अकस्मात् ऐसेघायल किया२२ जैसे कि दांतोंसे दो हाथी परस्पर घायल करतेहैं हे महाराज वह दोनों रुधिरसे लिप्त शरीर परस्पर सन्मुख होकर शोभायमान हुये २३ इस प्रकार दिवस के अन्त पर वह घोररूप युद्ध सबके समक्षमें ऐसा हुआ जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा २४ फिर वह दोनों महाबली गदाहाथों में लेके मंडलोंमें प्रवृत्तहुये उससमय दुर्योधन दाहिने मंडलमें वर्त्तमान हुआ २५ और भीमसेन बायें मण्डलमें वर्त्तमान हुआ हे महाराज इस प्रकार से उस युद्धके मुखपर भीमसेनको घूमते २६ दुर्योधनने कुक्षमें घायल किया हेभरतर्षभ फिर आपके पुत्रसे घायल २७ और उसप्रहारको विचारन करते भीमसेनने भारीगदाको घुमाया हे महाराज उनलोगोंनेइन्द्र वज्रके समान घोर यमराजके दण्डकीसमानउठाईहुई २८ भीमसेन की उसगदाको देखा तब आपके पुत्रने गदाउठानेवाले भीमसेनको देखकर २९ उठाईहुई उस घोरगदाको ताड़ितकिया हेशत्रुसंतापी भरतबंशी आपके पुत्रकी गदारूप बायुकी तीव्रतासे ३० कठोरशब्द होकर अग्नि उत्पन्नहुई फिर भीमसेननेभी अपनीगदासे दुर्योधनकी गदाको ताड़ितकिया३१उससमय वहदोनोंसमान बलवालेभीमसेन और दुर्योधन नानाप्रकार के मार्ग और मंडलोंको घूमतेहुये महा शोभायमानहुये फिर पूर्णबेगसे भीमसेनसेताड़ित बड़ी गदाने ३२ धूमसमेत अग्निको प्रकटकरके बड़ी ज्वालाको प्रकाशितकिया तब दुर्योधन भीमसेनसे कंपायमान अपनी गदाको देखकर ३३ लोहमयी बड़ीभारी गदाको घुमाता महाशोभायमानहुआ उस महात्मा की गदारूपी बायुकी तीव्रताको देखकर ३४ सोमकों समेत सब पांडवोंको भय उत्पन्नहुआ युद्धमें चारोंओरसे युद्धक्रीड़ाको दिखलाते ३५ वह शत्रुसंतापी गदाओंसे अकस्मात् परस्पर घात करनेलगे हेमहाराज जैसे कि दो हाथी डाढ़ोंसे युद्ध करतेहैं उसीप्रकार वह

दोनों परस्पर पाकर ३६ रुधिरसे लिप्तहोकर शोभायमानहुये इस प्रकार दिन समाप्त होनेपर वह घोररूप और महा कठिन ऐसा युद्धहुआ ३७ जैसे कि इन्द्र और वृत्रासुरकाहुआथा आपका महाबली पुत्र अपने सन्मुख भीमसेनको देखकर ३८ अपूर्वतर मार्गोंको घूमता कुन्तीके पुत्रके सन्मुख गया तब क्रोधयुक्त भीमसेनने उस क्रोधयुक्त दुर्योधनकी स्वर्णजटित रत्नोंसे अलंकृत गदाको ताड़ित किया उस समय उन दोनोंके संघट्टनसे उत्पन्न होनेवाला शब्द स्फुलिंगों समेत ३९। ४० ऐसा प्रकट हुआ जैसे कि छोड़ेहुये दो बज्रोंके संघट्टनसे होताहै हेमहाराजवहां भीमसेनकी गिरतीहुई ४१ उस बेगवान् गदासे पृथ्वी अत्यन्त कंपायमान हुई दुर्योधनने भी युद्धमें ताड़ित उस गदाको ऐसे नहीं सहा ४२ जैसे कि क्रोधयुक्त मतवाला हाथी सन्मुख आनेवाले हाथीको नहीं सहताहै ऐसे निश्चय करनेवाले राजाने बायंमंडलको घूमकर ४३ भीमसेनको अपनी भयानक बेगवाली गदासे मस्तकपर घायलकिया हेमहाराज आपके पुत्रकी उस गदासे घायल पांडव भीमसेन ४४ कंपायमान नहीं हुआ वह आश्चर्य्यसा हुआ हेराजा सब सेनाके लोगोंने उसके उस अपूर्व धैर्य्यकी बड़ीप्रशंसाकरी ४५ जो गदासे मस्तकपर घायलहोकरभी भीमसेन चरणोंसे एक पदभरभी कंपायमान नहींहुआ तब भयानक पराक्रमी भीमसेनने बहुतभारीप्रकाशित स्वर्णालंकृत गदाको ४६ दुर्योधनके निमित्त छोड़ा भयजनित व्याकुलतासे रहित बड़ेबलवान् दुर्योधनने अपनी हस्तलाघवता से उसप्रहारको निष्फलकिया ४७ यह भी महा आश्चर्य्यसा हुआ हेराजाफिर भीमसेनसे चलाईहुई वहमेघके समानशब्दायमानगदा पृथ्वीको कंपित करके कौशिक नाम मार्गोंमें नियत होकर बारंबार उछली ४८। ४९ गदाके गिरनेको और भीमसेनको ठगाहुआजानकर अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबली कौरवोत्तम दुर्योधनने उसप्रकार गदासे भीमसेन को छलकर छाती पर घायल किया तबबड़े युद्धमें आपके पुत्रकी गदासे घायल और अचेत भीमसेनने ५०। ५१ कर

नेके योग्य कर्मकोनहीं जाना हेराजा इसप्रकार उसयुद्धके वर्त्तमान होनेपर सोमक और पाण्डव ५२ अत्यन्त हतसंकल्प होकरचित्तसे दुःखीहुये फिर उस प्रहारसे हाथीके समान क्रोधयुक्त ५३ हाथीके समान भीमसेन उस हाथीहीके समान आपके पुत्रके सम्मुखगया अर्थात् फिर भीमसेन बड़ीतीव्रतासे गदा समेतआपके पुत्रकेसन्मुख ऐसे गया जैसेकि सिंह बड़ीतीव्रतासे जंगलके हाथीके सन्मुखजाता है हे राजागदा छोड़नेमें सावधान भीमसेनने राजाके पास जाकर ५४।५५उस आपके पुत्रको लक्ष्यबनाकर गदाको घुमाया और उसगदासे भीमसेन दुर्योधनको पार्श्व अर्थात् कुक्षिस्थानमें घायल किया ५६ उसप्रहारसे व्याकुल वह दुर्योधनजंघाकेबल पृथ्वीपर गिरपड़ा उसकौरवकुलमें श्रेष्ठ दुर्योधनको जंघाके बलसे पृथ्वीपर गिरनेपर ५७ सृञ्जियों के शब्द प्रकटहुये हेराजा वह जगत्पति आपका पुत्र उन सृञ्जियोंकी गर्जनाओंको सुनकर ५८ अशांतीसे क्रोधयुक्त बड़े सर्पके समान श्वासालेते नेत्रोंसे भस्मकरते महाबाहु दुर्योधनने उठकर ५९ भीमसेनको देखा और गदा हाथमें लेकर भीमसेनकेसन्मुखगया ६० युद्धमें भीमसेनके शिर को मर्दन करना चाहते बड़ेसाहसी और भयानक पराक्रमी राजा दुर्योधनने महात्मा भीमसेनको शंखस्थानमें घायलकिया परन्तु वह पर्व्वताकार कंपायमाननहींहुआ हेराजा युद्धमें गदासे घायल औररुधिरसेलिप्त वह भीमसेन मद झाड़नेवाले हाथीके समान फिर शोभायमान हुआ६१ इसकेपीछे शत्रुसंतापी अर्जुनके बड़े भाई भीमसेनने वीरोंको मारने वाली वज्रबिजलीके समान शब्दायमान लोहेकी गदाको पकड़कर बड़ेबल और पराक्रमसे शत्रुको घायलकिया ६३ भीमसेनके हाथ से घायल होकर अत्यन्त कंपायमान शरीरमें जोड़वाला आपका पुत्र ऐसेगिरपड़ा जैसे कि बनमें अच्छा पुष्पितशालका वृक्ष बायुसे ताड़ित घूमताहुआ गिरताहै ६४ इसकेपीछे आपके पुत्रको पृथ्वी पर गिराहुआ देखकर सब पाण्डवलोग गर्जे और प्रसन्नहुये फिर आपकापुत्र सचेतहोकर ऐसेउछला जैसे कि हृदनाम तड़ागसेहाथी

उछलताहै ६५ तब सदैव क्रोधयुक्त शिक्षापायेहुयेके समान चारों ओरको घूमते उस महारथी राजाने आगे नियत होनेवाले पाण्डव को घायलकिया उस व्याकुलने भी पृथ्वीको स्पर्शकिया ६६ वह कौरव बलसे भीमसेनको पृथ्वीपर गिराकर सिंहनादको गर्जा और वज्रके समान बड़ी तेजस्वी गदाके प्रहारसे उसके कवचको तोड़ा ६७ इसके पीछे आकाशसे गर्जनेवाले देवता और अप्सराओंके बड़ेशब्दहुये और देवताओंने उत्तम पुष्पोंकी भी बर्षाकरी६८इसके पीछे पृथ्वीपर पड़ेहुये नरोत्तमको देखकर प्रतिपक्षियोंमें बड़ाभय उत्पन्नहुआ कौरवका बलसे पूर्ण और भीमसेनके अत्यन्त दृढ़ कवचके टूटनेको देखकर सब अत्यन्त भयभीतहुये ६९ इसके पीछे भीमसेन एक मुहूर्त्त में सचेतताको पाकर रुधिरसे भरेहुये अपने मुखको साफ़ करके धैर्य्यको धारण कर दोनों नेत्रोंसे अवलोकन कर अपनेको बड़े बलसे थांभकर नियतहुआ ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिभीमसेनदुर्य्योधनसंग्रामेअष्टविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछेअर्जुन उन कौरवोंमें श्रेष्ठ भीमसेन और दुर्य्योधनके युद्धको देखकर यशमान् बासुदेवजीसे यह वचन बोला १ हे जनार्द्दनजी इन दोनों बीरोंके युद्धमें आपके विचार से कौन बिशेषहै अथवा किस में कौनसा अधिक गुणहै उसको आप कहिये २ बासुदेवजीने कहा दोनोंकी शिक्षा बराबरहै और भीमसेन अधिक बलवानहै परन्तु यह दुर्य्योधन भीमसेन से अधिक अभ्यासी और उपाय करनेवालाहै ३ भीमसेन धर्म से युद्ध करके इसको बिजय नहीं करसक्ता और जो अन्यायसे लड़ेगा तो अवश्य दुर्य्योधनको बिजय करेगा ४ और यहभी हमने सुनाहै कि असुरलोगोंको देवताओंने छलसेही बिजय किया है निश्चय करके उस बिरोचनको छलही सेइन्द्रने बिजय कियाथा ५ और छलही से इन्द्रने वृत्रासुरको भी विजय किया इसकारण भीमसेन

मायारूप पराक्रम में नियत होकर लड़े ६ हे अर्जुन भीमसेन ने द्यूतके समय उस दुर्योधनसे प्रतिज्ञाकरीथी कि युद्धमें तेरीजंघाओं को गदासे तोडूंगा ७ सो यह शत्रुसंतापी भीमसेन उस प्रतिज्ञाको भी पूराकरे छलसेही छली राजाको मारे ८ जो यह वलमें नियत होकर न्याय पूर्व्वक प्रहार करेगा तो राजा युधिष्ठिर अवश्य आपत्तिमें फंसेगा ९ हे पांडव जोमैं कहताहूं उसको सुनो कि धर्मराज के अपराधसे हमको फिर भयप्राप्त हुआ १० बहुत बड़े कर्मोंको करके और भीष्मादिक बड़े२ कौरवों कोभी मारकर बिजय पूर्व्वक अत्यन्त उत्तमयश और शत्रुताके बदलेको प्राप्त किया ११ इस प्रकारकी प्राप्त होनेवाली बिजयको फिर संदेहसे युक्त किया हे अर्जुन धर्मराजको यह बड़ी निर्बुद्धताहै १२ जो बिजयमें इसप्रकार के एक केही साथ घोर युद्धकी प्रतिज्ञाकरी दुर्योधन अभ्यासीबीर और एकसे चित्तवालाहै १३ और शुक्रजीका कहाहुआ यह प्राचीन और मुख्य प्रयोजन से युक्त श्लोक भी सुनाजाताहै उसको तुम मुझसे सुनो १४ कि लौटकर आनेवाले पराजित जीवन की इच्छा करनेवाले और एकाकीपने में बंधेहुये मनुष्यों से भयकरना चाहिये क्योंकि वह एकसे चित्तवालेहैं हे अर्जुन अकस्मात् चढ़ाई करनेवाले जीवन से निराश शूरबीरोंके आगे इन्द्रसे भी नियत होनासंभव नहींहै इसपराजित मृतक सेनावालेहृदमें वर्त्तमानहारे हुये वनको चाहनेवाले और राज्यपाने में आशा रहित दुर्योधनको १५ । १६ कौनसा बुद्धिमान् फिर द्वन्द्व युद्धमें बुलावे दुर्योधन हमारे बिजय किये हुये राज्यको हरण नहीं करसक्ता १७ । १८ जो निश्चय करनेवाला दुर्योधन भीमसेनके मारने की इच्छा से तेरहवर्षसे गदाके द्वारा ऊंची नीची और तिरछी गतिकरताहै १९ जो महाबाहु भीमसेन इसप्रकार इसको अन्यायसे नहीं मारेगा तो यह कौरव दुर्योधन तुम्हारा राजाहोगा २० फिर अर्जुनने महात्मा केशवजीके इसवचनको सुनकर भीमसेनके देखतेहुये बाईं जंघाको ठोंका २१ इसके पीछे भीमसेन उस संकेतको पाकर युद्धमें गदाके

द्वारा यमक आदिक बहुत से विचित्र मंडलोंको घूमा २२ हे राजा पांडव भीमसेन शत्रुको अचेत और मोहित करता गोमूत्रक नाम मंडलों को घूमा २३ उसी प्रकार गदामार्गमें सावधान आपका पुत्र भी भीमसेनके मारने की इच्छासे तीव्रतासे अपूर्व्व मार्गोंको घूमा २४ चन्दन अगर से युक्त घोर गदाओंको चलाय मान करने वाले शत्रुताका अन्त चाहते युद्धमें यमराजके समान क्रोधयुक्त २५ परस्पर मारनेके अभिलाषी बड़ेवीर पुरषोत्तम वह दोनों ऐसे युद्ध करनेवालेहुये जैसे कि सर्पोंकामांस चाहनेवाले दो गरुड़ युद्ध करतेहैं २६ वहां विचित्र मंडलोंके घूमनेवाले राजा दुर्योधन और भीमसेनकी गदाओंके प्रहारसे उत्पन्न होनेवाली अग्निकी ज्वाला प्रकट हुईं २७ हे राजा वहां बराबर प्रहारकरनेवाले उन पराक्रमी शूरोंका घोर शब्द ऐसा उत्पन्नहुआ जैसे कि वायुसे वेगयुक्त दोस-मुद्रोंका घोरशब्द होताहै २८ मतवाले हाथीके समान बारंबारप्र-हार करने वाले उनदोनोंके प्रहारकरनेसेपरस्पर गदाओंके संघट्टन से बड़ा शब्द उत्पन्न हुआ २९ तब उसभयानक और व्याकुलयुद्धमें लड़नेवाले वह दोनों शत्रुसंतापी थकगये ३० अर्थात् शत्रुओं के तपानेवाले क्रोधयुक्त वह दोनों एक मुहूर्त समाश्वसित होके दोनों गदाओंको पकड़कर फिर विश्राम युक्त हुये ३१ हे राजेन्द्र गदाओ के प्रहारोंसे परस्पर प्रहार करने वाले उन दोनोंका घोररूप युद्ध सबके देखते हुये हुआ ३२ फिर युद्धमें चलायमान उनदोनों श्रेष्ठ नेत्रवाले बीरोंनेपरस्पर ऐसे घायलकिया जैसे कि हिमालयपर्व्वतपर फूले हुये दो किंसुकके वृक्षहोते हैं ३३।३४ भीमसेनसे कुछ छिद्रदि-खानेपर थोड़ासा प्रसन्नचित्त दुर्योधन अकस्मात् दौड़ा ३५ बुद्धिमान् बलवान् भीमसेनने युद्धमेंउस समीप वर्त्तमान दुर्योधन कोदेखकर बड़ी तीव्रतासे उसके ऊपर गदाको मारा ३६ हे राजा आपकापुत्र उस गदाचलाने वालेको देखकर उसस्थानसे हटगया वह गदानि-ष्फल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ३७ हे कौरवोत्तम तब आपके पुत्रने बड़ी व्याकुलता समेत उसप्रहारको विचार कर भीमसेनको गदासे

घायलकिया ३८ रुधिरके चलायमान होने और बड़े प्रहारकेगिरने से उस बड़े तेजस्वीको मूर्च्छा होगई ३६ दुर्योधनने उसयुद्धमेंपीड़ामान भीमसेनको नहींजाना और भीमसेननेअत्यन्त पीड़ितशरीरको धारणकिया ४० आपके पुत्रनेयुद्धमें उसको नियत और प्रहारकरने का इच्छावान् माना इसहेतुसे फिर उसपर प्रहार नहींकिया ४१ हे राजा इसके पीछे प्रतापवान् भीमसेन एक मुहूर्त्त विश्राम करके तीव्रता से सन्मुख वर्त्त मान दुर्योधन के समक्षमें दौड़ा ४२ हे भरतर्षभ उस क्रोधयुक्त बड़े तेजस्वी आतेहुयेको देखकर उसके उस प्रहार को निष्फल करनेकी इच्छासे ४३ बड़े साहसी भीमसेन को छलना चाहते आपके पुत्रने अवस्थान अर्थात् ठहरनेमे मति करके उछलना चाहा ४४ परन्तु भीमसेन ने उस राजा के कर्म करने की इच्छाको जानलिया और सन्मुख जाकर सिंहकेसमान गर्जना करके ४५ भीमसेनने गदाको बड़ी तीव्रतासे उस कालरूप के ठगनेवाले और फिर उछलने के अभिलाषी की जंघाओं पर चलाया ४६ भयकारी कर्मकर्त्ता भीमसेन से चलाई हुई और वज्र के समान घिसावट वाली उसगदाने दुर्योधनकी दर्शनीय जंघाओं कोतोड़ा ४७ हेराजाभीमसेन के हाथसे टूटी जंघावाला वह आप का नरोत्तम पुत्र पृथ्वीको शब्दायमान करता हुआ गिरपड़ा ४८ उस समयपरस्पर संघट्टनकरती वायुचलीं धूलकी वर्षा हुई और वृक्षवन पर्व्वतों समेत पृथ्वी कंपायमान हुई ४६ सब राजाओं के स्वामी और सब पृथ्वी के अधिपति उस दुर्य्योधनके गिरनेपर बड़ी शब्दायमान प्रकाशित और परस्पर संघट्टनवाली वायु समेत ५० बहुतसी उल्कागिरीं और रुधिर समेत धूलकीभी वर्षा हुई ५१ हेभरतर्षभ वहां दुर्योधनके गिरानेपर इन्द्रनेवर्षाकरी इसीप्रकारयक्ष राक्षस और पिशाचोंकेभी बड़ेशब्द अन्तरिक्षमें सुनाईपड़े ५२।५३ उस घोरशब्दसे बहुतसे पशुपक्षियों केभी बड़ेघोरशब्द सबदिशाओंमें उत्पन्नहुये और जोवहां मनुष्योंसमेत घोड़े हाथी आदिकथे ५४ उन्होंनेभी दुर्योधनके गिरानेपर बड़े शब्दकिये भेरी शंख और मृदंगों के

बड़ेशब्द हुये ५५ आपके पुत्र दुर्योधन के गिरानेपर पृथ्वीके भीतर भी शब्द हुये सबदिशा बहुतसे चरण भुजाओंसे और घोरदर्शन ५६ नृत्य करनेवाले भयकारी रुंडोंसे पूर्ण होगईं ५७ ध्वजासमेत शस्त्र धारी वीर भी कंपायमान हुये हे भरतर्षभराजा धृतराष्ट्र आपकेपुत्र दुर्योधनके गिरनेपर तड़ाग और कूपोंनेभी ऊपर को रुधिर बहाया ५८ बड़ी शीघ्रगामी नदियां उल्टीबहीं स्त्रियां पुरुषों के समान और पुरुषस्त्रियोंके समान होगये ५९ हे राजाआपके पुत्र दुर्योधनकेगिरने पर पांचालों समेत सब पांडव उन अपूर्व उत्पातोंको देखकरचित्तसे ब्याकुलहुये६०।६१इसीप्रकार देवता गन्धर्व और अप्सरा आपके पुत्रोंके अपूर्व युद्धको बर्णन करतेहुये इच्छानुसार चलेगये और हे राजेन्द्रइसीप्रकार शुद्धवायुके साथ चलनेवाले चारणलोगभी६२ उनदोनोंनरोत्तमोंकी प्रशंसाकरते अपने २ स्थानोंको चलेगये ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वणिदुर्योधनबधेएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय॥

संजयबोले कि इसके अनन्तर शाल वृक्षके समान ऊंचे गिराये हुये उस दुर्योधनको अत्यन्त प्रसन्न चित्त सबपांडवोंने देखा१और रोम २ से प्रसन्न उन सबसोमकोंने भी सिंहके हाथसे गिराये हुये मतवाले हाथी के समान दुर्योधनको देखा २ इसरीतिसे प्रतापवान् भीमसेनने दुर्योधनको मारकर उसगिराये हुये मृतकप्राय कौरवेन्द्र के पासजाकर यहकहा ३ कि हे दुर्मतिअभागे जो पूर्व्वकालमें तुमने सभाके मध्यमें हमारा हास्यकरके एकवस्त्रा द्रौपदीसे जो हेगो हेगो कहा ४ उसहास्यकेफलको अबतुमने पाया यह कहकर उसने अपने वामपादसेउसकेमुकुटको स्पर्शकिया ५ इसी प्रकार शत्रुकी सेनाके पीड़ामानकरनेवाले क्रोधसे रक्तवर्ण भीमसेनने उसराजाओंमें श्रेष्ठ दुर्योधनके शिरको पैरोंसे ठुकराया ६इसके पीछेभी जो२ बचनकहे उनकोभी सुनो जो अज्ञानी पूर्व्वकालमें हेगो हेगो ऐसा कहते हुये हमारे सन्मुख नृत्य करनेवालेहुये ७ उनके सन्मुख अब हम

नाचतेहैं कि हेगौ हेगौ इसरीति से कहो हमारा छलना अग्नि का लगाना द्यूतका पांसा और ठगना नहींहै हमअपने भुजबलके आश्रितहोकर शत्रुओंको पीड़ादेतेहैं ८ वह भीमसेन उस बड़ीशत्रुताके अन्तको पाकर हंसकर बड़े धीरेपने से युधिष्ठिर, केशवजी, अर्जुन, नकुल, सहदेव, और सृञ्जियों से यहवचन बोले ६ कि जोपुरुष रजस्वला द्रौपदीको लाये और लाकर जिन्होंने सभामें नंगीकिया अथवा नङ्गी करनाचाहा उनधृतराष्ट्रके पुत्रोंको युद्धमें द्रौपदीके तेज और पांडवोंकेपराक्रमसेमृतकहुआ देखो १० पूर्व्वसमयमें राजाधृतराष्ट्रके जिन निर्दय पुत्रोंने हमको नपुंसक कहाथा वह अपने सब समूहों और सहायकों समेत हमारे हाथसे मारेगये इससे हमको स्वर्ग होय अथवा नर्कहोय ११ फिर उसने पृथ्वीपर गिरेहुये राजा के कन्धेपर वर्त्तमान गदाको मर्द्दनकर बामपादसे शिर को अच्छे प्रकारसे मल उसछली दुर्योधनसे कहा १२ हेराजा सोमकों समेत श्रेष्ठ२ महात्माओंने राजा दुर्य्योधनके मस्तकपर उस प्रसन्न चित्त नीचात्मा भीमसेनके चरणको रक्खाहुआ देखकर अच्छा नहींमाना १३ उसप्रकार आपके पुत्र को मारकर वार्त्तालाप करने वाले और बहुत रीतोंसे नाचनेवाले भीमसेनसे धर्मराजने यहबचन कहा कि तुमने शत्रुताकी अऋणताको प्राप्तकिया १४ और अपनीप्रतिज्ञा कोपूराकिया अब शुभाशुभ कर्मों से पृथक् होकर चरण से इसके शिरको मर्द्दन मतकर धर्मतुझको उल्लंघन करने वाला नहोय हे निष्पापयहराजा और अपना भाई मारागया यहतेरी बात न्यायके योग्यनहींहै १५ । १६ हेभीमसेन ग्यारह अक्षौहिणीसेनाके स्वामी कौरवों के राजा अपने भाईको चरण से मत ठुकराओ १७ मृतक भाई मन्त्री और नाश युक्त सेनावाला यह राजादुर्य्योधन युद्ध में मारागया यह सब प्रकार से शोचनेकेयोग्य है हास्यके योग्यनहीं है १८ यह मृतक मन्त्री भाई सन्तान और पिण्डवाला और आप भी नाशको प्राप्त हुआ भाईहै तुमने यह न्यायके योग्य नहीं किया १६ पूर्व्व समयमें लोगोंने कहाहै कि यह भीमसेन धर्मकाअभ्यासी

है हे भीमसेन तुम धर्मज्ञ होकर इस राजाको किस निमित्त चरणों से ठुकरातेहो २० फिर अश्रुओंसे पूर्ण राजा युधिष्ठिर भीमसेन से ऐसे वचन कहकर महादुःखी होकर उस शत्रुविजयी दुर्य्योधनके पास जाकर यह बचन बोले २१ कि हे तात तुझको क्रोधन करना चाहिये और अपना भी शोचनकरना चाहिये निश्चयकरके पर्व्वका कियाहुआ घोरकर्म फलको अवश्यदेताहै २२ हे कौरव्य निश्चय करके ईश्वरसे बिपरीत अशुभ और अपवित्र फलवाला कर्म उपदेश कियागयाहै जो तुम हमको और हमतुमको मारतेहैं २३ हे भरत-बंशी निश्चयही अपने अपराधसे उसप्रकार के बड़े दुःखको प्राप्त किया है जो कि लोभ अहंकार और अज्ञानतासे प्राप्तहुआ है २४ हमारे भाई समान बय पिता पुत्र पौत्र और अन्य २ लोगोंको मर वाकर आपभी नाशहुआ २५ तेरे ही अपराधसे तेरे सब भाई ह-मारे हाथसे मारेगये और जातवाले भी मारे इससे मैं प्रारब्धको ही कठिनतासे पारहोनेके योग्य मानताहूं २६ हे निष्पाप तेरा आत्मा शोचके योग्य नहीं है तेरी मृत्यु प्रशंसा के योग्य है परन्तु हे कौरव अब हम सब दशामें शोचके योग्यहैं २७ उन भाइयोंसे रहित होकर हम दुःखसे अपना जीवन करेंगे और भाईपुत्रादिकों के शोकसे ब्याकुल होंगे २८ शोकमें पूर्ण विधवा बधुओं को किस प्रकार से देखूंगा हे राजा तुम अकेले चले निश्चय तुमको स्वर्ग होगा २९ हम लोग अवश्य नर्कगामी हैं और बड़े कठिन दुःखों को पावेंगे धृतराष्ट्र के पुत्र पौत्रोंकी स्त्रियां ब्याकुल शोकसे पीड़ित और बिधवा होकर हमारी निन्दाकरेंगी ३० संजयबोले कि दुःखसे पीड़ामान वह धर्मका पुत्र राजायुधिष्ठिर इस प्रकार कहकर और श्वासोंको लेकर अत्यन्त पीड़ामानहुआ ३१॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणित्रिंशोऽध्यायः ३०॥

इकतीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे सूत तब माधवों में श्रेष्ठ बड़े बलवान् बलदेव

जीने अधर्म से मारेहुये राजाको देखकर क्या कहा १ गदा युद्धमें कुशल माधव बलदेवजीने जो किया वह सब मुझसेकहो २ संजय बोले कि प्रहारकर्त्ताओंमें श्रेष्ठ बलवान् बलदेवजी भीमसेन के चरणोंसे घातित आपके पुत्रको देखकर बड़े क्रोधयुक्त हुये ३ इस के पीछे राजाओंके मध्यमें ऊंची भुजा करनेवाले बलदेवजी पीड़ित शब्दोंसे यह बचन बोलेकि हे भीमसेन धिक्कारहै धिक्कारहै धिक्कार है ४ जो युद्धमें तैंनेनाभिके नीचे धर्मके विरुद्ध प्रहारकिया यह गदा युद्धमें कभी नहीं देखाथा जिसको किहे भीमसेन तुमने किया ५ नाभिकेनीचे प्रहारकरना अधर्महै यह शास्त्रको न जाननेवाला अ-ज्ञान भीमसेन अपनी इच्छासे कर्म करताहै ६ ऐसे अनेक बातोंको कहकर उनबलदेवजीका बड़ाक्रोध प्रकटहुआ इसकेपीछे वह महा बली अपने हलको उठाकर भीमसेनकेसन्मुखगये७ उस समयउस ऊंची भुजा करनेवाले महात्माका रूप बहुत अनेक धातुयुक्त श्वेत पर्व्वतके समानहुआ ८ तब नम्रतासेयुक्त पराक्रमी केशवजीने बड़े उपायके द्वारा हृष्ट पुष्ट लम्बी भुजाओंसे उछलनेवाले बलदेवजी को बड़े बलसे पकड़लिया ९ तब मृदुस्वभाव वालोंमें श्रेष्ठ गौरऔर श्याम वर्णवाले वह दोनों महात्मा ऐसे अधिक शोभायमान हुये हेराजा जैसे कि दिनकेअन्तमें वर्त्तमान होनेवालेचन्द्रमा औरसूर्य्य शोभित होतेहैं १० केशवजी उनक्रोधयुक्त बलदेवजीको शान्तकरके यहवचन बोले कि अपनी वृद्धि, शत्रुकानाश, अपने मित्रकी वृद्धि, शत्रुके मित्रकानाश, और अपने मित्रके मित्रकी वृद्धि और शत्रुके मित्रके मित्रका नाश ११ यह छः प्रकारकी अपनी वृद्धिहै जबअपने में और मित्रों में अन्तर होगा १२ तब चित्त ग्लानिको पावेगा उससमय कोई अशुभनहोगा पवित्र बीरतावाले पांडवहमारे भाई और मित्रहैं १३ अपनी फूफीके पुत्रहैं उनका शत्रुओंने अनादर कियाथा हम इसलोकमें प्रतिज्ञाके पूरे करने को क्षत्रीका धर्मजान तेहैं १४ पूर्व्व समय में भीमसेनने सभाके मध्यमें प्रतिज्ञाकरीथी कि मैं बड़े युद्धमें दुर्योधनकी जंघाको अपनी गदा सेतोडूंगा १५

हेशत्रुसंतापी पूर्व्वमें मैत्रेय महर्षिने इसको शापदियाथा कि युद्धमें भीमसेन गदासेतेरी जंघाओंको तोड़ेगा१६इसकारणमैं दोषको नहीं देखताहूंहे बलदेवजी आपक्रोधनकरो पाण्डवों से हमारी नातेदारीहै प्रथम योनिसंबंधसे अर्थात् हमारेबाबा और पाण्डवोंके नानाएकहैं दूसरेअपनीप्रीतिसे अर्थात् अर्जुनवहनोई और मित्रभीहै १७उन्होंकी हीवृद्धिसे हमारी वृद्धिहै हे पुरुषोत्तम क्रोध न करोधर्मज्ञ बलदेवजी ने वासुदेवजीके वचनकोसुनकर कहा१८ कि छः गुणोंसे अच्छीरीति करकेअभ्यास कियाहुआ धर्मकहाहै और दोगुणोंसे हानिको पाताहै वह दो गुणयहहैं कि बड़े लोभीका अर्थ और अतिप्रसंगीका काम १६ जो पुरुषकामसे धर्मअर्थ को अर्थ से धर्मकामको और धर्म से काम अर्थको पीड़ामान न करता धर्म अर्थकामको प्राप्त होताहै वह बड़े सुखको पाताहै २० सो धर्मके पीड़ामान करनेसे भीमसेनने यह सब व्याकुलतासेकियाहै गोविन्दजी तुमनेमुझसे अपनी इच्छा-नुसार कहाहै धर्मके अनुसार नहीं कहाहै२१ श्रीकृष्णजी बोले कि आप इसलोकमें क्रोधरहित धर्मात्मा और सदैवधर्मवत्सल विख्यात हो इसहेतुसे आपशान्त हूजिये क्रोधन करिये अब आप कलियुग को वर्त्तमान हुआ जानिये और पांडवोंकी प्रतिज्ञाको समझोपांडव लोगशत्रुता और प्रतिज्ञाकी अऋणताको पावें २२। २३ संजयबोले हे राजा उन अप्रसन्न मन बलदेवजीने केशवजीसे इस छलसंयुक्त धर्मकोभी सुनकर सबके समक्षमें इस वचनको कहा २४ कि पांडव भीमसेनधर्मात्मा राजादुर्योधनको अधर्मसे मारकर इसलोकमेंअधर्म युद्ध करनेवाला प्रसिद्धहोगा २५ धर्मात्मा दुर्योधन भीसनातनगति कोपावेगाक्योंकि सत्ययुद्ध करनेवाला राजादुर्योधन मारागया२६ युद्धदीक्षाको प्राप्तकर और युद्धभूमिमें युद्धरूपी यज्ञकी रचनाकरके अपनेकोशत्रुरूपी अग्निमेंहोमकर शुभकीर्त्ति रूपीयज्ञस्नानकोइसने पाया२७ श्वेत शिखर और स्वच्छबादलरूप बलदेवजी यहकहकर रथपर सवार होकर द्वारकाको चलेगये २८ हे राजा बलदेवजीके द्वारकाजानेपर पांडवोंसमेत सबपांचाल अत्यन्त प्रसन्न नहींहुये२९

इसके पीछे वासुदेवजी उसदुःखी शोचग्रस्त नीच शिर करनेवाले शोकसे हतसंकल्प युधिष्ठिरसे यह बचनबोले३० कि हे धर्मराज तुम किसनिमित्त अधर्मकोस्वीकारकरतेहो हेराजा तुम धर्मज्ञहोकर जो इसमृतक भाईवाले अचेत गिरेहुये दुर्य्योधनके शिरको भीमसेनके पैरोंसे मर्द्दनकियाहुआ देखकर निषेधनहीं करतेहो इसकाक्या हेतु है ३१ ३२ युधिष्ठिर बोले हेश्रीकृष्णजी यहमैं नहीं चाहताहूं जो भीमसेनने क्रोधसे राजाके शिरको चरणसेछुआ इसकुलके नाशमें में प्रसन्न नहींहोताहूं ३३ हमलोग धृतराष्ट्रके पुत्रोंके छलोंसे छले गये इनलोगोंने बड़े२ कठोर और असह्य बचन कहकर हमसबको बनमें भेजाथा ३४ वह कठिन दुःख भीमसेनके हृदयमें बर्त्तमानहै हेश्रीकृष्णजी मैंने यहबिचारकर तरहदीहै ३५ इसहेतुसे पांडवभीमसेन उस निर्बुद्धी लोभी और कामकी आधीनता में बर्त्तमान दुर्य्योधनको मारकर धर्मसे वा अधर्म करकेभी प्रयोजनको सिद्धकर सक्ताहै ३६ संजय बोले कि धर्मराजके इसप्रकार कहनेपर वासुदेव जी इस वचनको दुःखसेबोले कि यह इच्छाके अनुसार होय ३७ भीमसेनका प्रिय और हितचाहने वाले बासुदेवजी के इस प्रकार कहेहुये वचनको सुनकर धर्मराजने उससब अपराध को क्षमा किया जो कि युद्धमें भीमसेनसे कियागयाथा ३८ हेराजा युद्धभूमि में आपकेपुत्रको मारकर क्रोधसेरहित अत्यन्त प्रसन्न हाथजोड़ेहुये प्रसन्नतासे प्रकाशितनेत्र बिजय से शोभायमान महातेजस्वी भीमसेननेभी दण्डवत् करके आगे नियत होकर धर्मराज युधिष्ठिर से कहा ३९।४० कि हेराजा अब निष्कण्टक और क्षेमकारी यहसब पृथ्वी तेरीहै हेमहाराज इसपर राज्यकरो और अपने धर्मकोपालन करो ४१ जो छली छलसेही इस शत्रुताका पालन करनेवालाथा हेराजा वह मराहुआ इस पृथ्वीपर पड़ाहुआसोताहै४२ और तुम कोकठोर बचन कहनेवाले आपके शत्रु कर्ण शकुनि और दुश्शासनादिक सब भाईभी मारेगये ४३ हेमहाराज बहरत्नों से पूर्ण मृतक शत्रुवाली पृथ्वी वनपर्व्वतों समेत अब आपको प्राप्तहुई ४४ युधि-

स्थिर बोलेकि राजा दुर्योधन मारा इससे अब शत्रुताका अन्त प्राप्त हुआ और श्रीकृष्णजीकेविचारमें नियत होकर हमसबलोगोंने इस पृथ्वीको विजय किया ४५ आपने प्रारब्धसेही दोनों माताओं के क्रोधकी अक्षयताको पाया हे अजेय आप प्रारब्धसेही विजयकरते हो और प्रारब्धहीसे यहसब शत्रुमारे गये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्ध में भीमसेन के हाथ से मृतक देख कर पांडव और सृंजियों ने क्या किया १ संजय बोले हेमहाराज जिस प्रकार सिंह के हाथ से मरे हुये मतवाले जंगली हाथी को देखते हैं उसी प्रकार युद्ध में भीमसेन के हाथ से दुर्योधन को मरा हुआ देखकर २ श्रीकृष्णजी समेत प्रसन्नचित्त पांडव पांचाल और सृंजियोंने कौरवनन्दन के मरनेपर ३ डुपट्टों को घुमा घुमाकर सिंहनादकिये परन्तु पृथ्वीने इन प्रसन्नता से पूर्ण वीरों को नहीं सहा ४ किसी किसीने धनुषोंको टंकारा किसीनेज्याको शब्दायमान कियाबहुतोंने बड़ेशंखोंको बजाया कितनोंने दुन्दुभियोंकोबजाया५ इसीप्रकार बहुतेरे क्रीड़ा करनेवाले हुये और आपके बहुत से शत्रु प्रसन्नमन हुये यह सबवीर वारंबार भीमसेनसे यह बचनबोले ६ कि अब युद्धमें तुमने थकेहुये कौरवराजको अपनी गदासे मारकर बड़ाकठिन कर्मकिया ७ मनुष्योंने आपके हाथसे युद्धमें उसशत्रुके मरने को इसप्रकारका माना जैसे कि इन्द्र के हाथसे वृत्रासुर का मरणहुआ था ८ भीमसेन के सिवाय कौनसामनुष्य उस सबप्रकार के मार्गों समेत घूमनेवाले शूरवीर दुर्योधन को मारसका था ९ तुमने यहां शत्रुताके अन्तको पाया यह आपका कर्म दूसरोंसे बड़ी कठिनता से भी करनेके योग्यनथा१०हे वीर तुमने युद्धभूमिमें प्रारब्ध से मतवाले हाथीके समान दुर्योधनके शिरको अपने चरणोंसे मर्द्दन किया हे निष्पाप तुमनेउत्तम युद्धकरके प्रारब्धसेही दुश्शासन

के रुधिर को ऐसे पान किया जैसे कि भैंसे के रुधिर को सिंहपान करता है ११।१२ जिन्होंने धर्मात्मा राजायुधिष्ठिरका अपमानकिया था उनके शिरपर तुमने अपने कर्मके द्वारा अपनाचरण रक्खा १३ हे भीमसेन प्रारब्धसेही तुम शत्रुओं के ऊपर बिराजमान हो और दुर्योधनके मारनेसे तेरी बड़ी कीर्त्ति पृथ्वीपर हुई १४ निश्चयकरके कि वृत्रासुर के मरनेपर बन्दीजनोंने जैसे इन्द्रको प्रसन्न कियाथा हे भरतवंशी उसीप्रकार हमसबभी निश्शत्रु होकर तुम को प्रसन्न करतेहैं १५ दुर्योधनके मरनेसे जो हमारे रोम२ हर्षितहुये वहअब तक शरीरपर उठेहुये नहीं बैठतेहैं हे भरतवंशी इसको सत्यसत्यही जानो १६ इसप्रकार से भीमसेन की प्रशंसाकरतेही में उस स्थान पर वार्त्तिकजन इकट्ठे हुये पांडवों समेत एकसीवार्त्ता करनेवालेउन पुरुषोत्तम पांचालों को देखकर १७ मधुसूदनजी बोले कि हे राजा ओ मृतकशत्रुको फिर मारना नीति के बिपरीत है १८ यह निर्बुद्धी कठोर बचनों से बारंबार घायलहुआ यह पापी इसी हेतुसे मारा गया जबकि इसने निर्लज्ज १९ लोभी और पापियों का साथी होकर शुभचिन्तकोंकी आज्ञाओंके बिना कर्मोंकोकिया इसदुष्टात्माने, बहुधा बिदुर, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, भीष्मपितामह, सृञ्जी २० और पांडवोंसे प्रार्थना करने पर भी पिताके विभाग को नहीं दिया यद्यपि यहनीचपुरुष मित्र अथवा शत्रुभी था तौ भी इसका हास्य करना योग्य नहींहै २१ बचनों से घायल काष्ठ के समान इस दुर्योधन से हमारा क्या प्रयोजन है हे राजाओ शीघ्र रथ पर सवार होजाओ अब यहांसे चलेंगे २२ यह पापात्मा मन्त्री भाई और ज्ञातिवालों समेत प्रारब्धसेही मारागया राजादुर्योधन श्रीकृष्णजीसे ऐसे निन्दाके वचनों को सुनकर २३ और क्रोधके आधीन होके दोनोंहाथोंसे पृथ्वीको आश्रित होकर स्फिगनाम अंगकेसहारे से बैठगया २४ और अपनी दृष्टिको और भृकुटी कोटेढ़ी करकेवासु देवजी के ऊपर फेंका हेभरतवंशी अर्द्धशरीर ऊंचाकरनेवाले राजा का रूप २५ दबेहुये क्रोधयुक्त ज़िहरीले सर्पके समान हुआ प्राणोंके

नाशकरनेवाली महाघोर पीड़ाको कुछ ध्यान न करते २६ उसदुर्यो-धनने कठोरवचनोंसे वासुदेवजीको अत्यन्त पीड़ामान कियाअर्थात् यह कठोर बचन कहा किहे कंसके दासकेपुत्र तुझको निश्चयकरके इससे लज्जा नहीं आतीहै २७ जो मैं गदायुद्धमें भीमसेनके हाथसे तुझनिरर्थक स्मरण करानेवाले के अधर्मसे गिरायागया अर्थात् तैंने यह स्मरण कराया कि इसकी जंघाओं को तोड़ो २८ सत्य युद्धसे हजारों राजाओंको मरवाकर यह मुझको क्यों नहीं जतलाया जो अर्जुन को बताया २९ बहुतसे विपरीत उपायकर्मोंसे तुझको लज्जा है न दयाहै प्रतिदिन शूरोंके बड़े नाशकेकरनेवाले ३० भीष्मपिता-महको तुमने शिखंडी को आगे करके मरवाया हे दुर्बुद्धीअश्वत्थामा के सनाम हाथीको मारकर ३१ आचार्य्यजीको शस्त्रोंसे रहितकिया क्या करूं वह मैंने नहीं जाना वह पराक्रमी तेरेही कारणसे इस निर्दयी धृष्टद्युम्न के हाथसे ३२ गिरायागया तुमने उसको देखकर निषेध नहींकिया पांडव अर्जुनके मारनेवाली चाहीहुई शक्तिको ३३ घटोत्कच के ऊपर फेंकवाकर निष्फल किया तुझ से अधिक पाप करनेवाला कौनहै इसीप्रकार हाथ टूटा हुआ शरीरत्यागनेके अर्थ नियमकरनेवाला पराक्रमी भूरिश्रवा ३४ तेरीही आज्ञापाकर महा-त्मा सात्यकीके हाथ से मारागया अर्जुनके विजयकरने की इच्छा से कर्ण उत्तमकर्मका करनेवाला हुआ ३५ सर्पराजके पुत्र अश्वसेन के दुःख से और फिर रथ के चक्र के पृथ्वीमें धसजाने की आपत्ति में फंसा हुआ पराजयकिया ३६ अर्थात् मनुष्यों में श्रेष्ठ रथचक्र के धुसजाने से व्याकुलचित्त कर्ण युद्ध में गिरायागया जो मिले हुये द्रोणाचार्य्य, भीष्म, कर्ण, और मुझसे भी ३७ सत्य २ युद्ध करते तो तुम्हारी बिजयकभी नहीं होसक्तीथी और तुझो निर्गुणी और कुमार्गी के कारण से ३८ अपने धर्मपर आरूढ़ होनेवाले राजा लोग और बहुतसे अन्य२ लोग वह सब भी मारेगये वासुदेवजी बोले हे गान्धारी के पुत्र पापमार्ग में चलनेवाले तुम अपने भाई पुत्र बान्धव और मित्रों के समूहों समेत मारेगये हो तेरेही दुष्ट

कर्मोंसे शूरबीर भीष्म और द्रोणाचार्य्य गिरायेगये ३६।४० और तेरा साथी कर्मकर्त्ता कर्ण भी युद्धमें मारागया हे अज्ञानी तुमने लोभ और शकुनी के वचन के निश्चय से मेरे बहुत से कहने पर भी पांडवों के बाप दादोंके राज्यके भागको नहीं दिया तुमने भीम-सेनको बिषदिया और माता समेत सब पांडवोंको ४१।४२ लाक्षा-गृहमें भस्मकिया और सभामें द्यूतके मध्य रजस्वलास्त्री द्रौपदीको दुःखी किया ४३ हे कठोर चित्त उसीसमय तुम मारडालनेके योग्यथे जब कि द्यूतबिद्याके छलके जाननेवाले शकुनी के द्वारा द्यूतकर्म में अकुशल धर्मज्ञ युधिष्ठिरको छलसे विजय कियाथा४४ इन सब कारणों से तू युद्धमें मारागया है आखेट में पांडवके जाने पर तृणबिन्दुके आश्रमके समीप बनमें द्रौपदी को पापी जयद्रथने जो दुःखदिया और जो अकेला अभिमन्यु तेरे दोषोंसे युद्धमें बहुत से शूरवीरोंके हाथसे मारागया ४५।४६ हेपापी तू इन कारणों से युद्धमें मारागयाहै और हमारे कियेहुये जिन करनेके अयोग्य कर्मोंको कहता है ४७ वह सब भी तेरेही दुराचारसे कियेगये हैं तुमने वृहस्पतिजी और शुक्रजीकी शिक्षाको नहीं सुना४८वृद्धोंका सत्संग नहीं किया तुमने क्षेमकारक बचनोंको नहीं सुना तुम ईर्षा और लोभके आधीनहुये ४९ इन सब दुष्ट कर्मोंको जो तुमने किया है उसके फलको भोगो दुर्य्योधनने कहा कि वेदोंको पढ़ा विधि पूर्व्वक दानदिये सागरों समेत सब पृथ्वीपर राज्य किया५० और शत्रुओं के मस्तकों पर नियत हुआ मुझसे अधिक सफल शुभकर्मा कौन है अपने धर्म के देखने वाले क्षत्रियों का जो हितकारी और प्रियहै ५१ वही मरण मैंने पायाहै मुझसे अधिक शुभकर्मा कौनहै मैंने राजाओंसे दुष्प्राप्य शरीर के योग्य संसारी सुखऐश्वर्य्योंको प्राप्त किया ५२ और उत्तम राज्यको पाया मुझसे अधिक सुकृती कौनहै हे अविनाशी मैं अपने मित्रवर्ग और सब छोटेभाइयों समेत स्वर्गको जाऊंगा ५३ तुम नष्टसंकल्पहोकर अ-पना जीवन करोगे संजय बोले कि उस बुद्धिमान् कौरव राजके इस

बचनके समाप्त होनेपर ५४ पवित्र सुगन्धित पुष्पोंकी बड़ी वर्षाहुई और गन्धर्वोंने बड़े चित्तरोचक बाजोंको बजाया ५५ अप्सराओंने राजाकी शुभकीर्त्ति सम्बन्धीगानोंको गाया और सिद्धोंने धन्य२शब्द किया शीतल मन्द सुगन्धित वायुचली सबआकाश दिशाओंसमेत बैडूर्य्य मणिके रंगके समान शोभायमान हुआ ५६।५७वासुदेवजी जिनमें मुख्यहैं वह सब पांडवादिक उस अपूर्वता और दुर्योधनकी पूजाको देखकर लज्जित हुये ५८ भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण, और भूरिश्रवाको अधर्मसे मारा हुआ सुनकर शोकसे पीड़ित होकर उन बीरोंने शोचकिया ५९ बादल और दुन्दुभीके समान शब्दवाले श्रीकृष्णजी उन पांडवोंको चिन्तायुक्त और दुःखीचित्त देखकर यह बचन बोले ६० कि बहुत शीघ्रअस्त्र चलानेवाला यह दुर्योधनऔर वह सब पराक्रमी महारथी युद्धमें सत्य २ युद्धके द्वारा तुम्हारे हाथसे मारने के योग्य नहीं थे ६१ यह राजा दुर्योधन अथवा भीष्मादिक वीर बड़े धनुषधारी महारथी कभी धर्मसे किसी से भी मारनेके योग्य न थे ६२ आपलोगोंके भले चाहनेवाले मैंने बहुतसे उपाय और मायायोगोंके द्वारा रणभूमिमें वह सब वारंवार मारे६३ जो मैं कदाचित् ऐसी मायाको न करता तौ तुम्हारी बिजय और राज्यधननहीं प्राप्तहोते ६४ वह चारोंमहात्मा अतिरथी इस पृथ्वी पर साक्षात् लोकपालोंसेभी धर्मके द्वारा मारनेके योग्य न थे ६५ इसीप्रकार यह गदा हाथमेंलिये अश्रमित दुर्योधन दण्डधारीकाल सेभी धर्मके द्वारा मारनेके योग्य नथा तुमको चित्तमेंइसशत्रुके मारनेका कोई बिचार न करना चाहिये उसीप्रकार बहुतसे शत्रु छल के द्वारा आपसे मारनेके योग्यहैं६६।६७प्राचीन वृद्धलोग और असुरोंकेमारनेवाले देवता आदि सत्पुरुषोंसे चलाया हुआ मार्ग है इसी हेतुसे वहसबसे चलाया जाताहै ६८ तात्पर्य्य यहहै कि हम सायंकालके समय निवासस्थानोंमें बिश्राम किया चाहतेहैं हेराजालोगो हम सब घोड़े हाथी और रथोंसमेत विश्रामकरें ६९ तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त पांडवों सहित पांचाल वासुदेवजीके बचनको सुनकर

सिंहोंके समूहोंके समानगर्जे ७० हे पुरुषोत्तम इसके पीछे राजा लोग शंखोंको और माधवजी पांचजन्य शंखको बजाते दुर्योधनको मृतक देखकर प्रसन्न हुये ७१ ॥

इतिश्रीमन्महाभारतेगदापर्व्वणिकृष्णपाण्डवसंवादेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसकेपीछे परिघके समान भुजारखनेवालेबड़े प्रसन्नचित्त शंखोंको बजाते हुये वह सब राजालोग विश्राम करने के निमित्त चले १ हे राजा हमारे डेरेको जानेवाले पांडवों के पीछे बड़ा धनुषधारी युयुत्सु, और सात्यकी चले २ धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, और द्रौपदीके सब पुत्र और अन्य२ सब धनुषधारीअपने२ डेरोंको गये ३ इसके पीछे मनुष्योंके भागजाने पर वह सब पांडव दुर्योधनके उस डेरेमें जोकि प्रकाश रहित और मृतक राजावालाथा उसमें इसरीतिसे प्रवेशित हुये जैसेकि युद्धभूमिमें प्रवेशकरतेहैं वह स्थान उत्सवसे रहित पुरके समान और जिसका नाग मारागया उसहृदके समान उत्तमस्त्रियोंके बड़े समूहोंसे और वृद्ध मन्त्रियोंसे पूर्णथा ४ । ५ हे राजा वहां कषाय और मलिन वस्त्रोंके धारण करनेवाले दुर्योधनके परस्पर लोग हाथजोड़कर उनके पास आकर वर्त्तमान हुये ६ हे महाराज रथियोंमें श्रेष्ठ पांडवलोग कौरव राजके डेरेको पाकर रथोंसे उतरे ७ हे भरतर्षभ इसके पीछे केशवजी जोकि सदैव पांडवोंकी शुभचिन्तकतामें नियतथे गांडीव धनुषधारीसे बोले ८ हे भरतर्षभ इस गांडीव धनुषको और दोनों अक्षय तूणीरोंको उतारो पीछेसे मैं भी उतरूंगा ९ तुम आपउतरो हे निष्पाप इसमें तेरा कल्याण है यह सुनकर उस बीर अर्जुनने वैसेहीकिया १० इसके अनन्तर पूर्ण बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी घोड़ोंकी बागडोरोंको छोड़कर अर्जुन के रथसे उतरे ११ फिर सब जीवोंके ईश्वर परमात्माके उतरनेपर अर्जुनकी दिव्यध्वजा और हनुमानूजी अन्तर्द्धान होगये १२ हे राजा कर्ण और द्रोणाचार्य्यके दिव्यअस्त्रोंसे

भस्मीभूत वह बड़ारथभी शीघ्रही विनाअग्निके ज्वलित अग्निरूप होगया १३ अर्जुनका वह रथ उपासंग वागडोर घोड़े और युगवन्धुर समेत भस्महोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १४ हे प्रभु राजा धृतराष्ट्र पांडव लोग उसप्रकार से भस्म होनेवाले उस अर्जुनके रथकोदेख-कर बड़े आश्चर्य्यित हुये तब अर्जुन यह वचन बोला १५ अर्थात् हाथजोड़कर बड़ी नम्रतासे अर्जुनने कहाकि हे भगवान गोविन्दजी यह रथकिसहेतुसे अग्निके द्वारा भस्महोगया १६ हे यदुनन्दनजी यह क्याबड़ा आश्चर्य्य हुआ हे महाबाहु जो सुनानेके योग्य मुझको जानते हो तो उस सबवृत्तान्तको मूलसमेत मुझसेवर्णन करो १७ बासुदेवजी बोले हे अर्जुन यहरथ प्रथमही बहुत प्रकारके अस्त्रोंसे भस्म रूपहोगयाथा हे शत्रुसंतापी मेरे सवार होनेसे यह पृथ्वीपर नहींगिरा १८ हे अर्जुन अबमुझसे पृथक् होनेपर और तेरे कृत कृत्य होनेपर यह रथ भस्मीभूत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा यह ब्रह्मअस्त्रके तेजसे भस्म हुआहै १९ शत्रुओंके मारनेवाले और मन्द मुसकान करते भगवान केशवजी राजा युधिष्ठिर से मिलकर बोले २० हेराजा युधिष्ठिर तुम प्रारब्धसे शत्रुओंको विजय करतेहो और प्रारब्धसे तेरे सबशत्रु पराजितहुये प्रारब्धसेही गांडीव धनुष-धारी अर्जुन भीमसेन २१ नकुल सहदेव और आपभी कुशलतायुक्त हो अब हे मृतकशत्रुवाले वीरोंके नाशकर्त्ता तुम इस युद्धसे निवृत्त हुये २२ हेभरतबंशी अब करनेके योग्य आगेके कर्मोंको करो पूर्व समयमें मधुपर्क निवेदन करके उपप्लवी स्थानमें पहुंचेहुये मुझसे जो आपने अर्जुनको साथलेकर कहाथा कि हेमहाबाहु श्रीकृष्णजी यह तुम्हारा भाई और मित्र अर्जुन २३ सब आपत्तियोंमें तुमसे रक्षा के योग्यहै इसप्रकार आपके कहनेको मैंने अंगीकारका वचन कहा था २४।२५ हेराजा वह सत्यपराक्रमी तेराभाई शूर अर्जुन भाइयों समेत बिजयी और रक्षित २६ वीरोंके नाशकारी रोमहर्षण करने वाले इस महाघोर युद्धसे निवृत्तहुआ हेमहाराज श्रीकृष्णजीके इस-बचनको सुनकर रोम२सेहर्षित युधिष्ठिरने २७ जनार्दनजीको उत्तर

दिया कि हे शत्रुओंके विजय करनेवाले द्रोणाचार्य्य और कर्णके
छोड़ेहुये ब्रह्मअस्त्रको २८ आपके सिवाय साक्षात बज्रधारी इन्द्रभी
सहनेको योग्य नहींहै आपकीही कृपासे संसप्तकोंके समूह बिजय
किये २९ जो उस बड़ेभारी युद्धमें अर्जुन कभी पड्मुख नहींहुआ
हे महाबाहुप्रभु इसी प्रकार मैंने अनेक प्रकारसे ३० वर्मों के
विस्तारको और तेजको गतिको जाना उपलपवी स्थानपर व्यास
महर्षीने मुझसे कहाथा कि ३१ जिधर धर्महै उधरही श्रीकृष्णजी
हैं और जिधर श्रीकृष्णजीहैं उधरही बिजयहै हेभरतवंशी इस
प्रकार कहने पर उन बीरोंने आपके डेरेमें ३२ प्रवेश करके रत्न
और धनोंके समूहोंकोपाया अर्थात् चांदी,सोने,मणि और मोतियों
के हार इत्यादिक ३३ उत्तमभूषण, दुशाले,मृगचर्म, असंख्य दासी
दास और राज्यके बहुतसे सामानोंकोपाया ३४ हे भरतर्षभ महा-
राज वह महाभाग शत्रुओंके बिजयी आपके असंख्य धनको पाकर
बड़े उच्चश्वरसे पुकारे ३५ वह बीर पाण्डव और सात्यकी सवा-
रियोंको छोड़कर बारंबार बिश्वसित होकर डेरोंमें नियतहुये ३६
हेमहाराज इसकेपीछे बड़ेयशस्वी बासुदेवजीबोले कि हमलोगोंको
मंगलके निमित्त डेरोंसेबाहर निवास करनाचाहिये ३७ यहसुनकर
वह पाण्डव और सात्यकी उनकी आज्ञाको मानकर बासुदेवजीके
साथ मंगलकेलिये डेरेसेबाहरगये ३८ हेराजा फिर वह सबपांडव
और सात्यकी धर्मकी वृद्धिको हेतुरूपओघवती नदीको पाकर वहीं
उस रात्रिको बसे ३९ इसकेपीछे यादव श्रीकृष्णजीको हस्तिनापुर
भेजा तब प्रतापवान बासुदेवजी शीघ्रही तीव्रतासे दारुककोरथपर
बैठाकर वहांको चले जहांपर राजाधृतराष्ट्रथे उससमयपांडवलोग
उस यात्रा करनेके उत्सुक शैव सुग्रीव नामघोड़े रखनेवाले श्री कृ-
ष्णजीसे बोलेकि ४० । ४१ तुम यशस्विनी मृतपुत्रा गान्धारीको
आश्वासनकरो पांडवोंसे समझाये हुये श्रीकृष्णजी उस पुरकोगये
और शीघ्रही उस मृतपुत्रा गान्धारीको पाया ४२ । ४३ ॥
इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिवासुदेववाक्येत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय॥

जन्मेजयबोला हेब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ धर्मराजयुधिष्ठिरने किसहेतुसे शत्रुओंके विजय करने वाले बासुदेव जीको गांधारीके पासभेजा १ जब प्रथम श्रीकृष्णजी संधि के निमित्त कौरवों के पास गये और अपने अभीष्टको नहीं पाया२ इसीकारणसे यह महा युद्ध हुआ अब शूरबीरोंकेमरने और राजादुर्योधनके घायलहोने और इस पृथ्वीपर पांडवोंको रणभूमिमें निश्शत्रु करने ३ मनुष्यों के भागने डेरों के खाली होने और उत्तम शुभ कीर्त्ति के प्राप्त होजानेपर ऐसाकौनसा कारण है जिसके हेतुसे श्रीकृष्णजी हस्तिनापुर को गये ४ हेबड़े ज्ञानी ब्राह्मण मुझको यह अल्प कारण नहीं मालूम होताहै जिस स्थानपर कि बड़े ज्ञानी श्रीकृष्णजी आपगये ५ हेअध्वर्य्यों में श्रेष्ठ इस सब वृत्तान्तको मूलसमेत बर्णन करो ६ वैशंपायन बोलेकि हे भरतवंशी जो तैंने मुझसेपूछाहै यह प्रश्न तेरे पूछने केही योग्यहै हे भरतर्षभ मैंभी उसको यथार्थही कहताहूं ७ हेराजा युद्धमें भीमसेनके हाथसे अमर्य्यादा पूर्व्वक बड़े शूरबीर धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधन को न्यायसे बिरुद्ध गदायुद्धमें मराहुआ देखकर युधिष्ठिरको बड़ा भय उत्पन्नहुआ ८। ९ तपसे युक्त महाभाग गान्धारीसे भयभीत और चिन्ता करताहुआ भयसे उद्विग्न चित्तहुआ कि वह घोर तपवाली गान्धारी अपने कोपसे तीनोंलोकोंको भी भस्म करसक्तीहै १० इस हेतुसे उस चिन्ताकरनेवाले युधिष्ठिरका बिचार हुआ कि प्रथम क्रोधसे प्रज्वलित गान्धारीके क्रोधको शान्तीकरनी योग्यहै ११ क्योंकि वह हमारे हाथसे इसप्रकार करके अपने पुत्रका मरण सुनकर क्रोधसे पूर्ण अपने अग्निरूप मनसे हमको भस्म करेगी १२।१३ भयऔर क्रोधसे युक्त धर्मराजने इसप्रकारकी बहुतसी चिन्ता करके बासुदेवजीसे यह वचनकहा १४ हेअविनाशी गोविन्दजी आपकी कृपासे यह अकण्टकराज्य हमको प्राप्त हुआ जोकि मन सेभी महा दुष्प्राप्यथा १५ हेयादवनन्दन महाबाहु रोमहर्षण कर-

नेवाले युद्धमें मैंने देखाहैकितुमने बड़े युद्धको प्राप्तकिया १६ तुमने पूर्वसमयके देवासुरोंकेयुद्धमें असुरोंके मारनेके निमित्त देवताओंको जिसप्रकारसेसहायताकरी औरदेवताओंके शत्रुमारेगये १७हेमहा-बाहु अविनाशीश्रीकृष्णजी उसीप्रकारसे आपने हमारीभी सहायता करीहै औरअपने रथवानी करनेसे हमारी रक्षाकरी १८ जो तुमबड़े युद्धमेंअर्जुनके स्वामी न होते तो इससेनारूपी समुद्रको कैसे पारहो करविजयकरते १६ हे श्रीकृष्णजी तुमनेहमारे कारण सेगदा, परिघ, शक्ति, भिन्दपाल, तोमर और फरसों केबड़े प्रहार २० कठोरवचन और युद्धमें वज्र स्पर्श के समानशस्त्रों के गिरने को भीसहा २१ हे अविनाशी दुर्योधनके मरनेपर वह आपकेकठिन दुःखसफलहुये हे श्रीकृष्णजीअब जिसप्रकार से वह सब आपके उपकारनाशन होंय वही आपको करना उचितहै २२ हे माधवजी विजयी होने पर भी हमारा चित्तसंदेहोंमें हिंडोले के समान झूलताहै हे महाबाहुआप गान्धारी के क्रोधको जानिये २३ वह महाभाग यशस्विनीसदैव बड़े २ तापोंसे बड़ी पीड़ामान है वह अपने पुत्रपौत्रादिकों के नाश को सुनकर अवश्य हमलोगों को भस्मकरेगी २४हे वीरमेरे विचार से उसका प्रसन्नकरना समयके अनुसार है हे पुरुषोत्तम आपके सिवाय कौन पुरुषउसक्रोध सेरक्तनेत्र और पुत्रोंके शोकसेपीड़ामान के देखने को समर्थहै हे शत्रुओंके विजयकरनेवाले माधवजीक्रोध से ज्वलित रूप गान्धारीके क्रोधके दूरकरनेको वहां आपकाजाना मुझको स्वीकार है क्योंकि तुम्हीं सब सृष्टिकेकर्त्ता नाशकर्त्ता और उत्पत्तिके हेतुरूपहोकर अबिनाशी हो २५ । २६ । २७ हे महाबाहु तुम कार्य्यकारणसेयुक्त समयके अनुसार बचनोंसे शीघ्रही गान्धारी को शान्तकरोगे २८ वहां हमारे पितामह भगवान्व्यासजीभीहोंगे हे यादवेन्द्र पांडवोंकेहितकारी तुमको सबरीतिसेउस महाभाग गा-न्धारीकाक्रोधशान्तकरना योग्यहै यादवेन्द्रजीनेधर्मराजके वचनको सुनकर २६ । ३० दारुकको बुलाकर कहा कि रथतयारकरो इसके पीछेकेशवजी के वचनको सुनकर शीघ्रताकरनेवाले दारुकने ३१

रथकोतैयार करके महात्मा केशवजीके पास वर्त्तमान किया फिर यादवेन्द्रशत्रुसंतापी केशवजी उसरथपर सवार होकर ३२ शीघ्रही हस्तिनापुर को गये और बड़े पराक्रमी और साहसी श्रीकृष्णजी हस्तिनापुरमें पहुंचे और रथके शब्दोंसे शब्दकोउत्पन्नकर वह वीर श्रीकृष्णजीनगरमें प्रवेश करके ३३।३४ धृतराष्ट्रकेजाने हुये उत्तम रथसे उतरकर धृतराष्ट्रके महलमें पहुंचे ३५ उनजनार्दन केशवजी ने वहांपूर्वसेगये हुये और बैठे हुये ऋषियोंमें श्रेष्ठव्यास महर्षिजी को देखा व्यासजीके और राजाके भी चरणोंको स्पर्शकरके ३६ सावधान केशवजीने गान्धारी को भी दण्डवत की हे राजा इसके पीछे यादवेन्द्र श्रीकृष्णजी ३७ धृतराष्ट्रको हाथ से पकड़कर बड़े शब्द से रोदन करनेलगे और एक मुहूर्त तक शोकजनितअश्रु-पातोंको करके३८ जलसे दोनोंनेत्रोंको धोकर विधिपूर्वकआचमन करके समयके अनुसार धृतराष्ट्रसे वचनकहा ३९ कि हे भरतवंशी तीनोंकालके वृत्तान्तोंको आप अच्छी रीतिसेजानतेहो अर्थात्समय का जैसा जो कुछ वृत्तान्तहै वह सब आपको विदितहै ४०हेभरत-वंशी तेरे चित्तके समान कर्मकर्त्ता सब पाण्डवोंसे जो यह कुलका और सब क्षत्रियोंकानाश हुआवहकैसे न होयअवश्यही होनाउचित था क्योंकि धर्मवत्सल युधिष्ठिरने प्रतिज्ञा करके क्षमाकरी और छलद्यूत से पराजित पवित्रात्मा पांडवोंको वनवास हुआ ४१।४२ उन लोगोंने नानावेषोंको धारण करके अज्ञातवास चर्य्या आदिक अनेक प्रकारके क्लेशोंको अपने ऊपर सहा अर्थात् असमर्थोंकेसमान होकर पांडवों ने अन्य२ भी बहुत से कठिन दुःखों को पाया ४३ मैंने आपयुद्धके प्रवृत्त होनेकेसमय आपके पासआकर सबलोगोंके समक्षमें पांचगांव तुमसे मांगे४४ परन्तु कालसे प्रेरित होकरतुमने लोभसे अपने पुत्रोंको निषेध नहीं किया हे राजा आपके अपराध से सब क्षत्रियों के समूहों का नाश हुआ ४५ भीष्म, सोमदत्त, बाल्हीक, कृपाचार्य्य, पुत्रसमेत द्रोणाचार्य्य और बुद्धिमान बिदुरजी ने ४६ सन्धिके निमित्त आपसे बारंबार प्रार्थना करी परन्तु तुमने

उनमें से किसी के भी वचन को नहीं किया हे भरतबंशी काल से घायल चित्त सब मनुष्य ऐसे अचेत होजाते हैं ४७ जैसे कि पूर्व्व समय में इसप्रयोजन के बर्त्तमान होनेपर आप अज्ञानहुये काल-योगसे दूसरी क्या बातहै निश्चय प्रारब्धही सबसे प्रबल है ४८ हे बड़े ज्ञानी आप पांडवों में दोषोंको न लगाओ महात्मा पांडवोंमें थोड़ीसीभी अमर्य्यादा नहीं है ४९ हेशत्रुसंतापी आप अपनेही अपराध से उत्पन्न होनेवाली इन सबबातोंको जानकर धर्म न्याय और प्रीतिसे ५० पांडवों के गुणोंमें दोष लगानेके योग्य नहीं हो कुल वंशपिण्ड और जोपुत्रहोने का धर्मफल है वह सब आपका और गान्धारीका पांडवों में नियतहै हेकौरव्य नरोत्तमआप और यशस्विनी गांधारी ५१ । ५२ पांडवोंके अपराधोंको मतबिचारो अपनीही इस सब अमर्य्यादगीको ध्यानकरके ५३ अपने कल्याण वचनों से पांडवोंकी रक्षा करो हे भरतर्षभ आपको नमस्कार है हेमहाबाहु प्रीति और स्वभाव से धर्मराजकी जो आप में भक्ति है उसको आप जानतेहो वह युधिष्ठिर अवज्ञा करनेवाले क्षत्रियों का नाश करके ५४ । ५५ अहर्निश जलताहै और कल्याणको नहीं पाताहै हेनरोत्तम वहपुरुषोत्तमतुमको और यशमान गांधारीको ५६ शोचता हुआ शान्तीको नहीं पाताहै और बड़ी लज्जासेयुक्त वह युधिष्ठिर तुम्हारे पासभी नहीं आताहै ५७ जोकि पुत्रशोकसे दुखी व्याकुल बुद्धिऔर इन्द्रीवालेहो हे महाराज इस प्रकारसे श्रीकृष्ण जी राजा धृतराष्ट्र से कहकर ५८ शोकसे महापीड़ित गान्धारी से यह वचन बोले कि हे सौवलकी पुत्री जो अब मैं तुमसेकहूं उसको सुनकर चित्त से समझो ५९ हे शुभ अङ्ग इसलोक में तेरे समान कोईस्त्री नहीं है हेरानी मैं जानताहूं जैसे कि सभा के मध्य मेरे समक्षमें ६० तुमने धर्म अर्थ संयुक्त दोनों ओरका हितकारी वचन कहाथा हे कल्याणी तेरे पुत्रोंने उसको नहींकिया ६१ और तुमने दुर्योधनसेभी यह कठोरबचन कहेकि हे अज्ञानी मेरे बचनको सुन जिधर धर्महै उधरही विजयहै ६२ सो हे राजपुत्री बहतेराकहाहु-

आ वचन वर्त्तमानहुआ हे कल्याणी इस प्रकारसे जानकर शोकमें चित्तमतकरो ६३ पांडवोंके नाशकेलिये तेरी बुद्धिकभी मतहोय हेमहाभाग तुम क्रोधसे ज्वलित नेत्रोंकी अग्नि और तपके बलसे इस सब जड़चैतन्यों समेत पृथ्वीको भस्म करनेके समर्थहो गांधारीबासुदेवजीके बचनकोसुनकरबोली ६४।६५ कि हे महाबाहुकेशव जी यह ऐसेहीहै जैसे कि आपकहतेहो परन्तु चित्तके अनेक दुःखों सेमुझ जलनेवालीकी बुद्धि चलायमानहुईहै ६६ हे जनार्दनकेशव जी आपके बचनोंकोसुनकर अब वह मेरी बुद्धिस्थिरहुई हेद्विपादोंमें श्रेष्ठ तुमबीर पांडवोंके साथ इस अन्धे वृद्ध और असन्तान राजा की गतिहो वह गान्धारी इतना कहके अपने मुखको वस्त्रसे ढककर ६७। ६८ पुत्र शोक से दुखी होकर बहुत रोदन करने लगी इस के पीछे महाबाहु केशवजीने उस शोक पीड़ित गांधारी को ६९ हेतुकारण संयुक्त बचनोंके द्वारा बिश्वास कराया माधवजीने उस धृतराष्ट्र और गान्धारी को बिश्वास देकर ७० अश्वत्थामा के हृदय के बिचारको जाना तबतो केशवजी शीघ्रही मस्तक से व्यासजी के चरणों को दंडवत करके फिर कौरवराज धृतराष्ट्रसे बोले कि हेकौरवोंमेंश्रेष्ठ तुमकोमैं नमस्कार करताहूं आप शोकमें चित्त मतकरो ७१।७२ अश्वत्थामाका पापरूप चित्तहुआ है इस हेतुसे मैं शीघ्रतासे उठाहूं उसने रात्रिके समय पांडवों के मारने का बिचार पक्का प्रकट कियाहै ७३ महाबाहु धृतराष्ट्र गान्धारी समेत इस वचनको सुनकर केशीदैत्यके मारनेवालेकेशव जीसे बोले ७४ हे महाबाहु आप शीघ्र जाओ और पांडवोंकी रक्षा करो हेजनार्दनजीमैं फिर आपसे शीघ्र मिलूंगा ७५ इसकेपीछे अबिनाशी केशवजी शीघ्रहीदारुक समेतगये हे राजा वासुदेवजीके जानेपर ७६ बड़े बुद्धिमान और लोक मान्य व्यासजीने राजा धृतराष्ट्रको बिश्वास कराया धर्मात्मा बासुदेवजी भी प्राप्त मनोरथहोकर ७७ पांडवोंके देखनेकी इच्छासे हस्तिनापुरसे डेरेकोगये और रात्रिके समय डेरेको पाकर पांडवों के पास गये और

वह सब वृत्तान्त उनसे कहकर उनसमेत सावधान हुये ७८ ॥

॥ इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिधृतराष्ट्रगान्धारीप्रबोधनेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हेसंजय पांवसे मस्तकपरदबायेहुये टूटीजंघापृथ्वी परगिरेहुये मेरे अहंकारी पुत्रने क्याकहा १ अर्थात् अत्यन्त क्रोध- युक्त और पांडवोंकेसाथ शत्रुताकरनेवाले बड़ेसंकटको प्राप्त राजाने बड़ेयुद्धमें क्याकिया २ संजय बोले हेराजा जैसा वृत्तान्तहै उस सब वृत्तान्तको मैं कहताहूं अर्थात् उसदुखके प्राप्तहोनेपर टूटेअंगवाले राजानेजो कहाहै उसको आप सुनिये ३ हेराजा टूटीजंघा धूलसे लिप्त शिरके केश बांधनेवाले उस राजाने वहां दशों दिशाओंको देखकर ४ सर्पकी समान श्वास लेतेहुयेने उपायसे बालोंकोबांध- कर क्रोध और अश्रुओंसे पूर्ण नेत्रों से मुझको देखकर ५ मतवाले हाथीकेसमान अपनी भुजाओंको बारंबार मलकर बिखरेहुयेबालों को कंपाते दांतोंसे दांतोंको दबाते ६ और युधिष्ठिरकी निन्दाकरते दुर्योधनने श्वासलेकर यहकहा कि शन्तनुकेपुत्र भीष्मजी शस्त्रधा- रियोंमें श्रेष्ठ कर्ण, कृपाचार्य,शकुनि, महाअस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य,अश्व- त्थामा,शल्य और शूरकृतबर्माके नाथहोनेपर ७।८ मैंने इस दशा को पाया निश्चयकरके काल बड़े दुखसे उल्लंघनके योगयहै जोकि ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके मुझ स्वामीनेभी इस दशाको पाया ९ हेमहाबाहु कोई मनुष्य कालको उल्लंघन नहीं करसक्ताहै अब तुम उन मेरे शूरवीरोंका बर्णन करो जो इस युद्धमें जीवतेहैं १० जिस प्रकार नियम को उल्लघनकर भीमसेन के हाथसे मारागयाहूं इससे बिदित होता है कि पांडवोंकीओरसे बहुत निर्दयकर्मकिये गयेहैं ११ निर्दय पांडवोंकीओरसे अपकीर्त्ति से उत्पन्न होनेवाला यहकर्म भूरिश्रवा, कर्ण,भीष्म,और श्रीमान द्रोणाचार्यकेभी साथमें कियागया १२ इस हेतुसे वह सब पांडव मेरी बुद्धिसे सत्पुरुषोंमें अपमानको पावेंगे छलसे प्राप्त होनेवाली बिजयको करके पराक्रमी

पुरुषकी कौनसी प्रसन्नताहै १३ कौन बुद्धिमान समयके स्वामीका अपराध करने को योग्यहै और कौनसा पंडित अधर्मसे विजयको पाकर ऐसे प्रसन्नहोगा १४ जैसे कि पापी भीमसेन प्रसन्न होताहैअब इससे अपूर्व्वक्याहै जोमुझ टूटीजंघावालेके शिरको १५ क्रोधयुक्त भीमसेन ने चरणों से मर्द्दन किया संतप्त करनेवाले लक्ष्मी से सेवित बान्धवोंके मध्य में वर्त्तमान पुरुषको १६ जो मनुष्य ऐसी दशावाला करे हे संजय वही पूजित है मेरे माता पिता भी धर्म्म युद्ध को अच्छी रीति से जानते हैं १७ हे संजय वहदोनों दुःखी मेरे बचनों से जतलाने के योग्यहैं अच्छे प्रकार यज्ञादिकांकिये प्रजापालन किया और समुद्रों समेत सबपृथ्वी पर राज्यकिया १८ हे संजय जीवते शत्रुओंके मस्तकपर नियत हुआ सामर्थ्य के अनुसार दानकिये मित्रोंकाहितकिया १९ सब शत्रु पीड़ामानकिये मुझसे अधिक सुकर्मी कौनहै सब बान्धवों कोप्रतिष्ठा करी और अपने आश्रित कार्य्य कर्त्ताओं को प्रसन्न किया २० धर्म अर्थकामादिकसबसेवनकियेमुझसेअधिकसुकर्मीसुकृतीकौनहैउत्तम२ राजाओंपर आज्ञाकरी बड़े दुःखसे प्राप्तहोनेवाली आज्ञासेउत्पन्न होनेवाली प्रतिष्ठा कोपाया२१ आजानेय प्रकारवाले घोड़ोंके द्वारा सवारी की मुझसे अधिकसुफलवाला कौनहै वेदपढ़करविधिपूर्वक दानकिया नीरोग आयुर्दापाई २२ अपने धर्मसेलोक प्राप्तकियेमुझ से अधिकसुकर्मी कौनहै मैं प्रारब्ध सेयुद्धमें विजयवालानहीं हुआ २३ और हे प्रभुप्रारब्धसेही जो मेरीबड़ी लक्ष्मीथी वह मेरे मरने पर दूसरे को प्राप्तहुई अपनेधर्म परचलनेवाले क्षत्रियोंका जोहित और प्रियहै २४ वह मरण मैंने पाया मुझसे विशेषशुभकर्मीकौन है मैं प्रारब्धही से साधारण मनुष्य की शत्रुता से नहीं हटा २५ और प्रारब्धसेही किसी अपमानको पाकर पराजयनहींहुआ जैसे कि सोतेहुयेको नशेसे अचेतको अथवा विषपानकियेहुये को कोई मारताहै २६ इसीप्रकार धर्मके त्यागनेवालेने नियमको त्यागकर मारा महाभाग अश्वत्थामा यादव कृतवर्मा,२७शारद्वत, कृपाचार्य्य

मेरे वचनसे कहनेके योग्यहैं कि अनेक प्रकार के अधर्म के कर्ता नियमोंके त्यागनेवाले २८ पांडवोंका बिश्वास आपको करना उचित नहीं है आपका पुत्र सत्यपराक्रमी राजा दुर्योधन वातिक नाम सिद्धोंसे बोला कि जैसे मैं अधर्मकी रीतिसे भीमसेन के हाथ से मारागयासोमैं स्वर्गबासी द्रोणाचार्य्य,कर्ण,शल्य२६।३०महात्मा-वृषसेन, सौबलकापुत्र शकुनि, महापराक्रमी जलसिन्ध राजाभग दत्त ३१ बड़े धनुधारी सोमदत्त, सिन्धकाराजा जयद्रथ, उसी प्रकार आत्माके समान दुश्शासनादिक भाई ३२ पराक्रमी दुश्शा सन कापुत्र और लक्ष्मण इन दोनों पुत्रोंके और अन्य २ हजारों अपने शूरवीरों के पीछे ऐसे जाऊंगा३३ जैसेकि अपने साथीसमूह से पृथक् बिदेशीजाताहै मेरीबहिन दुश्शला भाइयों समेत अपने पतिकोमराहुआ सुनकर रोतीहुई कैसी महादुःखी होगी मेरा वृद्ध पिता राजाधृतराष्ट्र पुत्रपौत्रों को ३४।३५ स्त्रियों और गान्धारी समेत किसगति को पावेगा निश्चयकरके मृतक पुत्र और पति वालीलक्ष्मण की माता जोकि कल्याणी और बड़े नेत्रवालीहै वह भी शीघ्रहीनाश को पावेगी जो ब्राह्मण रूपधारी संन्यासी वार्त्ता-लापमें सावधान चार्वाकनाम राक्षस इसबातको जानेगा तो वह महाभाग अवश्य मेरा बदला पांडवोंसे लेगा मैं इस पवित्र और तीनों लोकों में विख्यात समन्त पंचकमें ३६।३७।३८ मृत्युको पाकर प्राचीन लोकोंको पाऊंगा हे श्रेष्ठ इसके अनन्तर अश्रुवोंसे पूर्णनेत्र हजारों मनुष्य ३९ राजाके उस बिलाप को सुनकर दशों दिशाओंको भागे पृथ्वी समुद्र बन और जड़ चैतन्य जीवों समेतघोर रूप४०शब्दायमान होकर कांपनेलगी और दिशासब प्रभासेरहित हुईं उन्हों ने अश्वत्थामा को पाकर जैसा वृत्तान्त था सब बर्णन किया४१हेभरतवंशी वह सब गदायुद्धके व्यवहारको और दुर्योधन के गिराने को अश्वत्थामाजी के सन्मुख बर्णन करके ४२ बड़ी देर तक ध्यान करके पीड़मान होकर अपने२स्थानोंको चलेगये४३॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिदुर्योधनविलापेपंचत्रिंशोऽध्यायः३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजा मरनेसे शेषबचे कौरवोंके तीनों महारथी१ अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और यादव कृतवर्मा दूतों के मुखसे राजा दुर्योधनको मराहुआ सुनकर शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से बड़े शीघ्रही रणभूमिमें आये वहां आकर गदा, तोमर, शक्ति, और तेज-बाणोंसे अत्यन्त घायल गिरायेहुये महात्मा दुर्योधन को ऐसेदेखा जैसे कि बड़ेबन में बायुके वेगसे गिरेहुये बड़े शालके वृक्षकोदेखते हैं उसको पृथ्वीपर तड़फता रुधिरसेलिप्तऐसा देखा २। ३।४ जैसेकि बनमें ब्याधके हाथसे गिरायेहुये बड़े हाथीको देखतेहैं बहुतप्रकार से रूपान्तर रुधिर समूहसे लिप्त ५ दैव इच्छासे गिरेहुयेसूर्य की किरणोंमेंघूमनेवाले चक्रको समान बड़े बायुके वेगसे उठे हुये घोर समुद्रके तुल्य ६ आकाश में शीतयुक्त मंडलवाले पूर्ण चन्द्रमा के सदृश धूलसे लिप्त लम्बीभुजावाले हाथीके तुल्य पराक्रमी ७चारों ओर भूतप्रेतों से ब्याप्त और मांसभक्षी जीव समूहों से ऐसे संयुक्त देखा जैसे कि धनके अभिलाषी सेवकों से घिरेहुये उत्तम राजाको देखते हैं ८ टेढ़ी भृकुटीवाले क्रोधसे फैलेनेत्र क्रोधमें पूर्ण नरोत्तम कोऐसेदेखा जैसेकि गिरेहुये व्याघ्रको देखतेहैं ९ उनकृपाचार्य्यादि-कसबरथियोंने उसबड़ेधनुषधारी पृथ्वीपर गिरेहुये राजाको देखकर बड़ेमोहको पाया १० रथों से उतर कर राजाके सन्मुख गये और दुर्योधनको देखकर सबपृथ्वीपर बैठगये ११ हेमहाराज इसकेपी छे अश्रुओंसे पूर्णनेत्र श्वासाओंको लेतेहुये अश्वत्थामाजी उससब राजाओंके महाराज भरतर्षभ दुर्योधनसे बोले १२ हे पुरुषोत्तमनि श्चय करके इसनरलोकमें कोई सत्यबात वर्त्तमान नहींहै जहांकि आपसरीके लोग धूलमेंलिप्तहोकर सोतेहैं १३ हेराजेन्द्र तुम पूर्व कालमें राजा होकर पृथ्वीपर राज्यशासन करके अब कैसे निर्जन बनमें नियतहो १४ मैं दुश्शासन महारथी कर्ण और उनसब सुहृदों कोभीनहीं देखताहूं हेभरतर्षभ यह क्या बातहै १५ निश्चय करके

किसी दशामेंभी काल और लोकोंकी गति जाननी कठिनहै जहां कि
धूलसे लिप्तआप सोतेहो १६ यहशत्रुओंका तपानेवाला राजाओंके
आगे चलकर धूलको कठिनतासे स्पर्शकरताहै इस विपरीत समय
को देखो १७ हेराजा वहतेरा निर्मलछत्र बचनऔर तेरी बड़ीभारी
सेनाकहांगई १८ निश्चय करके गुप्तरूप होनेपर परिणाम दुखसे
जाननेके योग्यहै जो लोकगुरू होकर आपने इसदशाको पाया१६
सवइन्द्रसे ईर्षाकरनेवाले आपके कठिन दुःखको देखकर सब मनु
ष्योंमें लक्ष्मीकारूप बिनाशवान दिखाई देताहै २० संजयनेकहाहे
राजा आपका पुत्र दुर्योधन उस महाखेदभरे अश्वत्थामाके उसबच
नकोसुनकर हाथोंसे अपने दोनोंनेत्रोंको साफकरके शोकके आंसुओं
कोछोड़ता उन सब कृपाचार्य्यादिक बीरोंसे समयके अनुसार यह
बचनबोला २१।२२ कि यहऐसालोक ईश्वरसे उपदेश कियाहुआ
धर्म कहाजाताहै सब जीवोंके नाशने बिपरीतहीविपरीत समयको
प्राप्त किया २३ वही अब मुझको भी प्राप्तहुआ है जो कि आप
लोगोंके समक्ष में वर्त्तमानहै मैंने पृथ्वीका पोषण करके इस दशा
को पाया २४ मैं प्रारब्धसे किसी आपत्तिमेंभीरणसे पराङ्मुखनहीं
हुआ हे श्रेष्ठो मैं प्रारब्धसेमुख्य करके पापियोंके छलसे मारागया
हूं २५ युद्धका अभिलाषी होकर मैंने प्रारब्धही से उत्साह किया
और ज्ञातिबान्धवों समेत युद्धमें मारागया २६ मैं प्रारब्धसेही इस
मनुष्योंके नाशसे रहित कल्याण युक्त आपलोगोंको देखताहूं यह
मरण मेरा बड़ा प्रियतम अभीष्टहै २७ जो आपको वेद प्रमाणहै
तो यहां पर आपलोग मित्रतासे मेरे मरने में दुःखीमतहो क्योंकि
मैंने अविनाशी लोक बिजय किये २८ मैं बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी
के प्रभावको माननेवालाहुआ इस हेतुसे मैं अच्छीरीतिसे किये
हुये क्षत्रीधर्मसे नहीं गिराया गयाहूं २६ वह मैंने अच्छीरीतिसे
प्राप्त किया मैं कभी शोचके योग्य नहीं हूं आपलोगोंने अपने
योग्य कर्म किये ३० और सदैव बिजय में उपाय किये परन्तु
दैवदुःखसे उल्लंघनके योग्य है हे राजेन्द्र इतना बचन कहकर

आंसुओंसे व्याकुल नेत्र ३१ अत्यन्त खेदयुक्त वह राजादुर्य्योधन मौन होगया फिर अश्वत्थामाजी उस प्रकार राजाको शोक और अश्रुओंसे संयुक्त देखकर ३२ क्रोधसे ऐसे प्रज्ज्वलितहुये जैसे कि प्रलयकाल में सृष्टिके नाशकरने को अग्नि प्रज्ज्वलित होतीहै उसक्रोध भरेनेहाथोंको मीड़कर ३३ अश्रुओंसे नेत्रोंको भरकर बड़े आकुलित बचनोंके द्वाराराजा से यह बचन कहा कि नीचोंके अत्यन्त निर्दय कर्मसे मेरा पिता मारागया उससे ऐसादुःख नहीं पाताहूं जैसेकि अब इसतेरी दशाको देखकर क्लेशित होताहूं हेप्रभुमुझ सत्यता पूर्ब्बक कहनेवाले और कूपबापी तड़ागयज्ञ दान धर्म और अपने पुण्यकी शपथखानेवालेके इसबचनको सुनो कि अबमैं सब उपायोंसे सब पांचालोंको बासुदेवजीके देखते हुये ३५ । ३६ यमलोकमें पहुंचाऊंगा हे महाराज आप मुझे आज्ञा देनेको योग्यहो ३७ कौरवराज दुर्य्योधन अश्वत्थामा के इसबचनको जो कि मनके हर्षका बढ़ानेवालाथा सुनकर कृपाचार्य्यसे यह बोला ३८ हे आचार्य्यजी शीघ्रही जलपूर्ण कलशको लाओ वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ आचार्य्यजी राजाके उस बचनको जान कर ३९ पूर्ण कलशको लेकर राजा के पासगये तब हे महाराज राजाधृतराष्ट्र आपकापुत्र आचार्य्यजीसे बोला ४० कि हे ब्राह्मण श्रेष्ठ आपका कल्याण होय जो आप मेरा हित चाहतेहो तो मेरी आज्ञासे अश्वत्थामाको सेनापतिके अधिकारपर अभिषेक कराओ ४१ मुख्यकर क्षत्रीधर्म पर कर्म करनेवाले ब्राह्मण को राजाकी आज्ञासे लड़ना चाहिये यह धर्मज्ञ लोगोंका कहाहुआ और जाना हुआ है ४२ इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य्यने राजाके बचनको सुनकर उसकी आज्ञासे अश्वत्थामाको सेनापतिके अधिकार पर अभिषेक कराया ४३ हे महाराज वह अभिषेक किया हुआ अश्वत्थामा उस श्रेष्ठ राजासे मिलकर सब दिशाओंको सिंहनादसे शब्दायमान करताचला ४४ इसके अनन्तर रुधिरसेलिप्त दुर्य्योधनने भी उस सब जीवोंकी भयकारिणी रात्रिको प्राप्तकिया ४५

और वह तीनों महारथी भी रणभूमि से हटकर शोकसे व्याकुल चित्त चिन्तायुक्त होकर ध्यानमें डूबगये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांगदापर्वणिअश्वत्थामासेनापत्याभिषेकोपनामत्रिंशोऽध्यायः ३९ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इतिगदापर्व समाप्तम् ॥

*

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने लखनऊ में छपा
दिसम्बर सन् १८८८ ई०

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
६ शल्य ६ गदा व सौप्तिक १० योषिक व विशोक ११
स्त्रीपर्व्व १२
१० शांतिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमबासिक १५ मुसलपर्व्व १६ महा-
प्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिबंशपर्व्व १६ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की
ा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े
मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से
ूमहोगा ॥
(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) बिराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म,
स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (६) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) गदा,
ये पर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व मिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाश-
ो मिलसक्ते हैं कृपा करके भेजदेवें तौ छापेजावें ॥

महाभारत बार्तिक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगयाहै जिसके आदि, सभा,
, बिराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अनुशासन, शान्ति, सौप्तिक, स्त्री और
बंशपर्व्व छप गयेहैं शेषपर्वभी बहुत शीघ्र छपरहे हैं ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सार भूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्या दिगुणसम्पन्ननरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोह नाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकरायाहै वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ता रअपनी बुद्धिसे पारनहींपासक्ते तव मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं और यहप्रत्यक्षहीहै किजबतक किसी पुस्तक अथवा किसी बस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक जनोंकेचित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधात्यर्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकला चातुरीण सविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसा धनव्यय कर फ़र्रुख़ाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषा में तिलकरचा नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसकोभाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं ॥

जबछपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाकेसाथ और इस ग्रन्थके टीकाकारोंकी टीका भी जितनीमिलें शामिलकीजावें जिसमें उन टीकाकारोंके अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारणसे श्रीस्वामीशंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामि कृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थित है ॥

—※—

इश्तहार ॥

माहमार्च सन्१८८६ ई० से मुमालिकमग़रबी व शुमालीका बुकडिपो इलाहाबादक्यूरेटर बुकडिपो से मतबा मुन्शी नवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ में आगयाहै इस बुकडिपो में मग़रबी व शिमाली एजूकेशनल बुकडिपो क सिवाय औरभी हरएक बिद्याकी किताबें मौजूद हैं इन हर एककिताबोंकी ख़रीदारी की कुल शर्तें क़ीमतके सहित इस छापेख़ाने कीछपी हुई फ़ेहरिस्तमें दर्ज हैं जो दरख़्वास्त करनेपर हरएक चाहनेवालोंको बिलाक़ीमत मिलसक्ती है जिनसाहबोंको इनकिताबों का ख़रीदकरनाहो वेइसेख़रीदकरें और फ़ेहरिस्त तलबकरें ॥

द० मनेजर अवध अख़बार
लखनऊमुहल्ला हज़रतगंज

महाभारत भाषा

सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व

जिसमें

अश्वत्थामा व कृपाचार्य व कृतबर्मा करके राजायुधिष्ठिर की सुप्तसैन्य व धृष्टद्युम्न व द्रौपदीके पांचौं पुत्रोंकानाश और धृतराष्ट्र व गान्धारीको सहित अपनी एकशत बधुओंके युद्धभूमि में प्राप्तहोकर पुत्रों व सैनापतियोंकी दशा देखकर बिलाप इत्यादि कथायें वर्णित हैं॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेखाने में छपा

दिसम्बर सन् १८८८ ई०

पहलीबार ६००

महाभारतों की फ़ेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं
उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

—※—

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै बरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदबताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससेछूट नहींगई मानोयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० बर्षकेबीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ीथे परनहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेख़ानेमें छपी-थी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारख़ानेकादस्तूरहै ॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़ेहरफ़ों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै ॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसार अलग२भी मिलतेहैं ॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व (२) सभापर्व (३) बनपर्व ॥

दूसरेभागमें (४)विराटपर्व(५)उद्योगपर्व(६) भीष्मपर्व (७) द्रोणपर्व ॥

तीसरेभागमें (८)कर्णपर्व(९)शल्यपर्व(१०)सौप्तिकपर्व (११) ऐषिक व विशोकपर्व (१२) स्त्रीपर्व (१३) शान्तिपर्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में(१४)शान्तिपर्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व(१५) आश्रमवासिकपर्व(१६) मुसलपर्व (१७) महाप्रस्थानपर्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व॥

महाभारत भाषा

सौप्तिकपर्व्व

—o—

जिसमें

अश्वत्थामाके हाथसे शिखंडी और द्रौपदीके पांचोंपुत्रों का बध और दुर्योधनका प्राणत्याग,द्रौपदीका युधिष्ठिरसे अश्वत्थामाके मारने के लिये कहना और भीमसेन का उसके बध निमित्त चलना और उसके शीशसे अस्त्रद्वारा मणि छीनकर द्रौपदीको देना, अश्वत्थामाका पाण्डवोंके बीज रूप उत्तराके गर्भपर ब्रह्मास्त्र छोड़ना और श्रीकृष्णजीका उसकी रक्षा करना इत्यादि कथा वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीभार्ग्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोरजी (सी,आई,ई) ने अपनेव्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरणजी से संस्कृत महाभारतका यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

—o—

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा

जनवरी सन् १८८६ ई०

पहलीबार ६००

अथ महाभारत भाषा सौप्तिकपर्व्व का सूचीपत्रप्रारम्भः॥

—※—

इतिमहाभारत सौप्तिक पर्व्व भाषाका सूचीपत्र समाप्त॥

—※—

महाभारत भाषासौप्तिकपर्व्वणि

—*—

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंबन्देबादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंसौप्तिकरम्यपर्व भाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ सौप्तिकपर्व्वप्रारम्भः ॥

श्रीनारायण नरोत्तम नर और सरस्वती देवी को नमस्कार करके जयनाम इतिहासको वर्णन करताहूं ॥

संजय बोले इसके पीछे वहबीर एकसाथही दक्षिण ओरकोचले और सूर्य्यास्तके समय डेरोंके पासआये १ तबवह शीघ्रही रथोंको छोड़कर भयभीत हुये और घनदेशको पाकर गुप्त निवासी हुये २ अपनी सेनाके निवास स्थानसे कुछथोड़ेही अन्तर नियत हुये तेज शस्त्रोंसे टूटेअंग चारोंओरसेघायल उनबीरोंने३।४ लम्बी और उष्ण श्वासा लेकर पांडवोंकी चिन्ताकरी फिर बिजयाभिलाषी पांडवोंके

घोर शब्दको सुनकर ५ पीछाकरने के भयसे भयभीत होकर पूर्व
ओरको चलदिये वहसब एकमुहूर्त चलकर तृषार्त और थकीसवा
वाले सहनसके६ वहबड़े धनुष धारी क्रोध और अशान्तताके अ
धीन और राजाके मारेजाने से दुःखी चित्त होकर एक मुहूर्त त
नियतहुये ७ धृतराष्ट्र बोले हेसंजय भीमसेनने यहकर्म श्रद्धाके
योग्य कियाजो उस दश हजार हाथीके समान मेरे पुत्रकोमारा
हेसंजय वहमेरा पुत्र जो कि सबजीवोंसे अवध्य वज्रके समान
शरीर वाला था युद्धमें पांडवों के हाथसे मारागया ६ हेगोल्कन
पुत्र संजय मनुष्यों से प्रारब्ध उल्लंघन करनेके योग्यनहींहै जोमे
पुत्रपांडवोंके सन्मुखहोकर मारागया१०हेसंजय निश्चयकरकेमे
हृदय पत्थरहै जो सौपुत्रोंको मृतक सुनकर भीबिदीर्ण नहींहोता
मृतक पुत्रवाला वृद्धोंका मिथुन किसप्रकार से रहैगा मैं पांडवो
देशमें निवास करनेको बिचारनहीं करताहूं १२ हेसंजय मैं रा
कापिता आप राजाहोकर पांडवोंका आज्ञावर्ती होकर सेवकके
मान कैसेकर्म करूंगा१३हेसंजय पृथ्वीपर राज्यशासन करकेअ
सबराजाओं केमस्तकपर नियत होकर कैसे उसकी आज्ञाकापाल
करूंगा जिसनेकि मेरेपुत्रोंकाएकपूरा सैकड़ा मारडाला१४हेसंज
वचन को न करनेवाले उसमेरे पुत्रने महात्मा बिदुरजीके बचन
सत्य किया १५ हे सञ्जय कठिन नाश करने वाले का मैं कै
आज्ञावर्तीहूंगा और किसप्रकारसे भीमसेनके वचन सुननेको स
र्थहूंगा १६ हे संजय अधर्मसे मेरे पुत्र दुर्य्योधन के मरनेपर कृ
वर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामाने क्या किया १७ संजयबो
हेराजा आपकेबीर थोड़ीदूरजाकर नियतहुये और नानाप्रकार
वृक्ष लताओं से संयुक्त घोरवन को देखा १८ उन्होंने जलपी
वाले उत्तम घोड़ों समेत एकमुहूर्त बिश्राम करके सूर्यास्त
समय एकऐसे बनको पाया १६ जोकि नानाप्रकारके मृगसमूहो
सेवित भांतिभांति के पक्षीगणों से व्याप्त और बहुत प्रकारके वृ
लतादिकों से भराहुआ बहुत भांतिके सर्पों से सेवित २० ना

प्रकारके जलोंसे युक्त बहुत भेदके पुष्पोंसे शोभित सैकड़ों कमलि-
नियोंसे पूर्णऔर नीले कमलोंसे संयुक्तथा २१ इसकेपीछे चारों
ओरको देखते उनबीरोंने उसघोर बनमें प्रवेशकरके हजारों शाखा-
ओंसे युक्त बटके वृक्षको देखा २२ हेराजा तब उन नरोत्तम महार-
थियोंने बटवृक्षको पाकर उसउत्तम वृक्षके नीचेजाके अपनेरथोंसे
उतरकर घोड़ोंकोछोड़ा और न्यायके अनुसार स्नानादिक करके वह
सब अपनीर संध्याबंदनमें प्रवृत्तहुये २३। २४ इसकेपीछेपर्वतोंमें
उत्तम अस्ताचलमें सूर्य्यके पहुंचनेपर सबजगतकी धात्रीरात्रिबर्त्त-
मानहुई पूर्णग्रह नक्षत्र औरताराओंसे अलंकृत चारोंओरसेदर्शनीय
आकाश स्वर्ण बिन्दुओं से जटित बस्त्रके समान शोभायमान हुआ
२५।२६ जोरात्रिमें घूमनेवाले जीवहैं वहसब नींदके स्वाधीनवर्त्त-
मानहुये फिररात्रि में घूमनेवाले जीवों के शब्दभयानक हुये मांस-
भक्षी राक्षस अत्यन्तप्रसन्नहुये और घोररात्रि वर्त्तमानहुई २७।२८
रात्रिके उसघोरसुखमें दुःखशोकसे संयुक्त कृतबर्मा कृपाचार्य्य और
अश्वत्थामा बराबर समीपबैठे २९ उसबटके सन्मुख कौरव औरपां-
डवोंकोहोनेवाले नाशको शोचते ३० नींदसेपूर्णशरीर और परिश्रम
से अत्यन्तसंयुक्त नानाप्रकारके बाणोंसे घायल पृथ्वीपर बैठगये ३१
इसकेपीछेदुःखके अयोग्य औरसुखकेयोग्य पृथ्वीपरबैठेहुये महारथी
कृतबर्मा और कृपाचार्य्य नींदके बशीभूतहुये ३२ हेमहाराजथका-
वट और शोकसंयुक्त पूर्वसमय में बहुमूल्य शयनोंपर सोनेवाले वह
दोनों अनाथोंके समान पृथ्वीपर सोगये ३३ हेभरतवंशी क्रोधऔर
अशांतीमें बर्त्तमान और सर्पों के समान श्वासलेते अश्वत्थामाजीने
निद्राको नहीं पाया ३४ शोकसे ज्वलित रूप उसबीरने निद्राको नहीं
पायातब उस महाबाहुने उस घोर दर्शन बनकोदेखा ३५ किनाना
प्रकारके जीवोंसे सेवितबनकेओरको देखते महाबाहुने बटकेवृक्षको
काकोंसे संयुक्त देखा ३६ हे कौरव उस वृक्षपर हजारों काकों
ने रात्रिमें निवास किया और पृथक् २ निवासी होकर सुखसेनिद्रा
युक्त हुये ३७ चारोंओरसे उन बिश्रब्ध काकोंके सोजाने पर उन

वत्थामाजीने अकस्मात आनेवाले घोरदर्शन उलूकको देखा ३८
कि वड़ाशब्द बड़ाशरीर पीतनेत्र पिङ्गल वर्ण बहुत लम्बेनक
र ऊंची नाक रखनेवाला गरुड़की समान तीव्रगामीथा ३९ हे
तवंशी उस गुप्तआनेवाले केसमान पक्षीने मृदुशब्द करकेबटकी
ाको चाहा ४० काकोंके कालरूप उसपक्षीने बटवृक्षकी शाखा
गिरकर मिलनेवाले बहुतसे काकोंको मारा४१ चरणरूपीशस्त्र-
ोंने कितनोहीके पक्षसमेत शिरोंको काटाऔर कितनोहीचरणोंको
ा४२उसबलवानने अपने सन्मुख दीखनेवाले अनेक काकोंको
क्षणमात्रमेंकाटा हे राजाउनके शरीरोंके अंगऔर शरीरोंसे बट
क्षकामंडलसबओरसे ढकगया इसकेपीछे वहउलूक उनकाकोंको
कर प्रसन्नहुआ४३।४४अर्थात् वह शत्रुओंका मारनेवाला इच्छा
मान शत्रुओंको मारकर प्रसन्न हुआ रात्रिमें उलूकके कियेहुये
छलयुक्त कर्मको देखकर ४५ उस छलमें संकल्प करनेवाले
ले अश्वत्थामा जीने बिचारकिया कि इस पक्षीने युद्धमें मुझको
देश कियाहै४६ मेरे मतसे शत्रुओंका नाशकारी समय वर्त्तमान
ा अब बिजयसे शोभापानेवाले पराक्रमीकृतोत्साह लक्ष्यके प्राप्त
नेवाले और प्रहार करने वाले पांडव मेरेहाथसे मारनेके योग्य
हैं और मैंने राजाके सन्मुख उन सबके मारनेकी प्रतिज्ञा करीहै
।४८पतंग और अग्निके समान अपने नाशकरने वाली वृत्तीमें
त्त होकर मुझ न्यायसे लड़नेवालेका निश्चय प्राणत्याग होगा
और छलकरके बड़ीसिद्धी समेत शत्रुओंकाबड़ा नाशहोगा इसहेतु
जो संशयात्मकअर्थसे निरसंशयात्मक अर्थ होनायोग्यहै५० जो
ायावान मनुष्य हैं वह इसको बहुत मानतेहैं ऐसे स्थानपर जो
न चाहै गर्हित और लोकनिन्दित भी होंय ५१ वह क्षत्री धर्म
प्रवृत्त होनेवाले मनुष्यको अवश्य करना योग्य है अशुद्ध अन्तः
ण वालेपांडवोंने ऐसे छलसे भरेहुयेकर्मकिये जोकि गर्हितऔर
पद पर निन्दितहैं इस बिषयमें पूर्व्व समयमें न्याय के देखने-
ले धर्मका बिचार करनेवाले मुख्यताके ज्ञातालोगों के कहेहुये

मुख्य प्रयोजन रखनेवाले श्लोक सुनेजातेहैं शत्रुओं के थकजाने पृथक् होने और भोजन करने ५२।५३।५४ चलेजाने औरप्रवेश होनेपर शत्रुकी सेनाको मारनाचाहिये जो सेना अधीरात्रिकी निद्रा केसमय निद्रासे पीड़ित और नाशयुक्त प्रधान ५५ पृथक्२ शूरोंवाली और दोभाग होनेवाली होय उसपर प्रहार करना चाहियेप्रतापवान अश्वत्थामाने इसप्रकार पांचालों समेत रात्रिके समयसोते हुये पांडवों के मारनेका निश्चय किया उसने निर्दयी बुद्धिमेंनियत होकर बारंबार निश्चय करके ५६।५७ अपनेमामा औरभोजवंशी कृतबर्मा इनदोनों सोनेवालोंको जगाया तब उनजगनेवाले महात्मामहाबलीलज्जायुक्तकृपाचार्य्य औरकृतबर्माने एकमुहूर्त्त भर ध्यानकरके आसुओंसे व्याकुलनेत्रहोकर यह बचनकहा ५८।५९ कि वह बड़ा बलवान एक बीर राजा दुर्योधन मारागया जिसके हेतुसे हमारी शत्रुता पांडवोंके साथहुई ६० युद्धमें बहुत नीचों समेत ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी बड़े पवित्र पराक्रमवाला अकेला दुर्योधन भीमसेनके हाथ मारागया ६१ महाराजाधिराज का शिरजोपैरों से मर्दन कि यह नीच भीमसेनने बड़ा निर्दयकर्म किया ६२ पांचाल देशी गर्जतेहैं क्रीड़ाकरते में हंसतेहैं सैकड़ों शंखोंको बजातेहैं और प्रसन्न चित्त दुन्दुभियोंकोभी बजातेहैं ६३ शंखोंके शब्दोंसे युक्त बायुसे चलायमान बाजोंके घोरशब्द दिशाओं को पूर्णकरतेहैं ६४ हींसते घोड़े और चिंहाड़ते हाथियोंके बड़ेशब्द और शूरबीरोंके भीयह सिंहनाद सुनेजाते हैं ६५ पूर्वदिशामें नियत होकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त जानेवालोंके रथ नेमियोंके शब्दजो कि रोमांचके खड़े करनेवाले हैं वहभी सुनेजाते हैं ६६ पांडवलोगों नेधृतराष्ट्रके पुत्रोंका जोयह नाशकियाहै इस बड़े भारीनाश में हम तीनशेषहैं ६७ कितनेही सौ हाथी के समान पराक्रमी और कितनेहीसब शस्त्र विद्याओं में कुशलथे वह पांडवोंके हाथसे मारेगये मैं समयकी विपरीतिता को मानताहूं ६८ निश्चय करके इसप्रकार के इतनेही कर्म मूलसमेत बिचार करने के योग्यहैं जैसे कि कठि

नकर्मके करने पर भी ऐसी दशाहै ६९ आपकी जोबुद्धिहै वहमोह
से दूर नहीं की जातीहै इसबड़े प्रयोजन के वर्त्तमान होने पर जो
हमारो हितकारी और भला है उसको कहो ७०॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिद्रौणिमन्त्रेप्रथमोऽध्याय:१॥

दूसरा अध्याय॥

कृपाचार्य्य बोले हे समर्थ जो तुमने कहा वह तुम्हारा सब ब-
चन सुना हे महाबाहु अबमेरे कुछ बचनको भी सुन १ कि प्रारब्ध
और उद्योग इनदोनोंके कर्मोंमेंसब बंधेहुयेहैं अर्थात् प्रारब्धमें सब
ओरसे बंधेहुयेहैं और उपायमें कमबंधे हुयेहैं इस हेतुसे प्रारब्ध
मुख्यहै और उद्योग अमुख्यहैइनदोबातोंसे कुछ अधिक वर्त्तमान
नहीं है २ हे श्रेष्ठ अकेले दैव अर्थात् प्रारब्धसेही संसारके कार्य्य
पूरे नहीं होतेहैं और न केवल उद्योगही से सिद्ध होतेहैं इस द-
शामें दोनोंके मिलनेसेही कार्य्यकी पूर्णता होतीहै ३ सब छोटे बड़े
प्रयोजन इन्हीं दोनों बातोंसे बंधेहुयेहैं औरसब कार्य्यजारी होकर
पूर्ण होते दिखाईपड़तेहैं४ अबउनदोनोंमें प्रारब्धकीमुख्यता बर्णन
करतेहैं कि पर्व्वतपर बर्षा करनेवाला परिजन्य किस फलकोसिद्ध
नहीं करताहै अर्थात् बिना उद्योग और उपायके पर्व्वत पर अपने
आप सब बस्तुओंकी उत्पत्ति होतीहै उसी प्रकार जोतेहुये खेतमें
भी किस फलको प्राप्त नहीं करताहै अर्थात् उद्योग प्रारब्धके आ-
धीनहै ५ प्रारब्धको श्रेष्ठ माननेवाले उद्योग और उद्योगसे रहित
प्रारब्ध भीनिष्फल होताहै इनदोनोंको सर्वत्र निश्चयकरतेहैं इसमें
प्रथमबड़ा निश्चय है ६ जैसे कि अच्छेप्रकार दैवकेबर्षने और खेत
केजोतने पर बीज बड़ेगुणवाला होताहै उसीप्रकार मनुष्योंका भी
अभीष्ट सिद्ध करनाहै अर्थात् दोनों हो से काम पूरा होताहै ७ इन
दोनोंमें दैव बलवानहैकिवह आपही बिना उपायके फल देनेको
प्रवृत्त होताहै इसीप्रकार सावधान और ज्ञानी मनुष्य अच्छा नि-
श्चय करके उपायमें प्रवृत्त होते हैं ८ हे नरोत्तम मनुष्यों के सब

कर्म उन दोनोंसे ही जारी और पूरे होते देखने में आतेहैं ९ जो उपाय किया है वह भी दैव से ही सिद्ध होताहै इसीप्रकार इन कर्मवालों का फल कर्म होताहै १० सावधान चतुर मनुष्यों का अच्छेप्रकार से कियाहुआ भी उद्योग जो दैवसेरहितहै वह लोकमें निष्फल दिखाई देताहै ११ मनुष्यों में जो लोग आलस्यी और असाहसी होतेहैंवह उद्योग को बुरा कहतेहैं उसको बुद्धिमानलोग अच्छानहीं मानतेहैं १२ बहुधा कियाहुआ कर्म इस पृथ्वीपर निष्फल दिखाई देताहै फिर दुःख होताहै और कर्म को न करके बड़े फलको देखताहै यह दोनोंबातें बहुधा देखनेमें आतीहैं १३ कर्म को न करके दैव योगसे जो कुछ पाताहै और जो कर्म करके भी फलको नहीं पाताहै वह दोनों दुर्लभहैं १४ सावधान और निरालस्य मनुष्य जीवता रहने को समर्थ होता है और आलस्य युक्त मनुष्य सुख से वृद्धि नहीं पाता है इस जीवलोकमें कर्म करने में सावधान लोग बहुधा वृद्धिके चाहनेवाले दिखाई देते हैं १५ जो कर्म में सावधान मनुष्य प्रारम्भ कर्म से कर्म फल को नहीं भोगता है उसकी कुछ निन्दा नहीं होतीहै जो प्राप्तहोने के योग्य अभीष्ट को नहीं पाता है १६ और जो अकर्मी कर्म को न करके लोकमें फलको पाताहै वह निन्दित होताहै और बहुधा शत्रु होता है १७ जो मनुष्य इस प्रकार से इसको निरादर करके इसके बिपरीत कर्म करताहै वह अपने अनर्थोंको उत्पन्न करताहै यह बुद्धिमानोंकी नीतिहै १८ फिरजब उद्योग अथवा दैवसे रहितहोय तब इन दोनों हेतुओंसे उपाय निष्फल होताहै १९ इसलोकमें उपायसे रहित किया हुआ कर्म सिद्धनहींहोताहै जोमनुष्य देवताओंको नमस्कार करके अच्छी रीतिसे प्रयोजनोंको चाहताहै २० वह आलस्यसे रहित औरसावधानीसे संयुक्तहै कर्मकी निष्फलता सेनाशको नहीं पाताहै फिर अच्छेकर्मकी इच्छायहहै जो वृद्धोंका सेवनकरताहै २१ जो अपने कल्याणको पूछताहै और उनके हितकारी बचनोंको करताहै सदैव उठ२कर वृद्धोंके अंगीकृत पुरुष पूछ-

नेके योग्यहैं २२ वह पुरुष अभीष्ट सिद्धकरने में बड़े तेजहैं और मूलरखनेवाली सिद्धीकहेजातेहैं जो मनुष्य बृद्धोंके बचनोंको सुन-कर उपायमें प्रवृत्तहोताहै २३ वह थोड़े ही समयमें उपाय के फल को अच्छीरीतिसे पाताहै जो मनुष्य राग क्रोध भय और लोभसे अभीष्टोंको चाहताहै २४ वह अजितेन्द्री और अपमान करनेवाला शीघ्रही लक्ष्मीसे रहित होकर नाशहोता है सो इस लोभी और अदूरदर्शी दुर्योधनने अज्ञानतासे यह बिना बिचाराहुआ असमर्थ कर्म प्रारंभ किया और निषेधकरनेवाले शुभचिन्तकों को अनादर करके नीचोंकी सलाहसे २५ । २६ बड़े गुणवान पांडवों से शत्रु-ता करी बड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धोरजकरने के योग्य नहीं है २७ और अभीष्ट के पूरे न होनेपर दुःखी होताहै कि मैंने अपने मित्रोंका बचननहीं किया हमलोग उस पापीपुरुषके पीछे चलतेहैं २८ इसहेतुसे हमको भी यह भयकारी अनीति प्राप्तहुई अबतक इस दुखसे तपाये हुये २९ मुझ चिन्ता करनेवालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणको नहीं जानतीहै और अचेत मनुष्यसे सुहृदजन पूछ-ने के योग्यहैं ३० उस में उसकी बुद्धि और नम्रताहै और उसीमें कल्याणको देखताहै इसस्थानपर पूछे हुये वह ज्ञानी लोग इसके कार्य्योंके मूलोंको बुद्धिसे निश्चय करके ३१ जैसे कहैं वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा हम सब लोग जाकर धृत-राष्ट्र गान्धारी और बड़े ज्ञानी बिदुरजीसे मिलकर पूछें वह हमारे पूछनेपर जोकहैं वह निस्सन्देह हमारा कल्याणहै ३२ वही हमको फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़मतहै कार्य्योंके प्रारंभकिये बिना कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होताहै ३४ फिर उपाय करनेपर भी जिनका कार्य पूरा नहींहोताहै वह निस्सन्देह दैवके मारे हुयेहैं ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिकृपसंवादेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज तब अश्वत्थामाजी कृपाचार्य्यके उस बचनको जोकि अत्यन्तशुभ औरधर्म अर्थसे संयुक्तथा सुनकर दुःख शोकसे संयुक्त १ ज्वलितअग्नि रूपके समान शोकसे प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उनदोनोंसे बोले २ कि पुरुष पुरुष में जो २ बुद्धि होतीहै वही श्रेष्ठहै वह सब पृथक् २ अपनी २ बुद्धिसे प्रसन्न रहते हैं ३ और सब लोक के मनुष्य अपने २ को बड़ा बुद्धिमान मानतेहैं सबकी बुद्धि बहुत अंगीकृतहै और सब अपनी २ प्रशंसा करतेहैं ४ सबकी निज बुद्धी अपनी उत्तमता के वर्णन में नियतहै दूसरेकी बुद्धिकी निन्दाकरतेहैं और अपनीबुद्धिकीबारंबार प्रशंसा करतेहैं ५ सभामें अन्य २ कारणों के वर्त्तमान होनेसे जिनलोगोंकी बुद्धि एकसीहै वह परस्पर प्रसन्नहोतेहैं औरबारंबार अपने को बहुतमानतेहैं ६ उसी उसी मनुष्यकी वह २ बुद्धिजबतक समयके योगसे बिपरीतिताको पाकर परस्पर बिनाशकोपातेहैं ७ मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी बिचित्रतासे चित्तकी व्याकुलताको पाकर वह वह बुद्धि उत्पन्न होतीहै ८ हे प्रभु इसीप्रकार बड़ासावधान बैद्य बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देने के द्वारारोग की निबृत्तीके लिये चिकित्सा करताहै ९ इसीप्रकार मनुष्यभी अपने काम पूरे करने के लिये बुद्धिको करतेहैं और अपनी बुद्धिसे युक्त मनुष्य उसकी निन्दाकरतेहैं १० मनुष्य तरुणाईमें एक अन्य बुद्धिसे और सम्पूर्ण अवस्थाकेमध्यमें अन्यबुद्धिसे मोहितहोताहै वहवृद्धावस्थामेंभी अन्यही बुद्धिको स्वीकार करताहै ११ हे कृतवर्मा मनुष्य बड़े घोर दुःखको अथवाउसी प्रकारके ऐश्वर्य्यकोभी पाकर बुद्धिको बिपरीत करताहै १२ एकही मनुष्यमें वह बुद्धिसमय पर उत्पन्न होतीहै और समय न होनेपरउसकोनहीं अच्छीलगतीहै औरबुद्धि के अनुसार निश्चय करके जिस बिचारको अच्छीरीति से देखताहै उसीप्रकारकाउत्साहकरताहै वह बुद्धि उसके उपायकी करनेवालीहै

हे भोजवंशी कृतवर्मा प्रत्येक मनुष्य यह निश्चय करने वाला हैकि मेरा विचार अच्छाहै और प्रसन्न चित्तहोकर मारने आदिकमें कर्म करना प्रारंभ करताहै १३।१४।१५ सब मनुष्य अपनी बुद्धि और चतुरताकोही जानकर नानाप्रकारके कर्मकरतेहैं और यही जानतेहैं कि यह मेराहितकारी कर्महै १६ अब मेरेदुःखसे उत्पन्नहोनेवाला जो यह विचारपैदाहुआ है उस अपने शोक दूर करनेवाले बिचार कोमैं तुम दोनों से कहता हूं १७ ब्रह्माजीने सृष्टि को उत्पन्न करके और उनमें कर्मको नियत करके हर एकवर्णमें विशेषता रखने वाला एक२ गुणधारण किया १८ ब्राह्मणमें श्रेष्ठ वेद क्षत्रीमेंश्रेष्ठ पराक्रम वैश्यमें श्रेष्ठ सावधानी कर्म और शूद्रमें श्रेष्ठ सब वर्णों का आज्ञाकारी होना कहा है १९ अजितेन्द्री ब्राह्मण निकृष्ट पराक्रम से रहित क्षत्री निकृष्टकार्य्य में असावधान वैश्य निकृष्ट और सब वर्णों की आज्ञाका न करनेवाला शूद्र निकृष्ट होकर निन्दा किया जाताहै २० सो मैं ब्राह्मणों के बड़े पूजित उत्तम कुलमें उत्पन्न हुआहूं और अभाग्यतासे क्षत्री धर्मका कर्मकर्त्ता हुआहूं २१ जो मैं क्षत्री धर्मको जानकर और ब्राह्मणोंके समदमादि गुणोंमें नियत होकर बड़े कर्मको करूं यह मेरा कर्म साधुओंसे अंगीकृत नहीं मैं युद्धमें दिव्य धनुष और अस्त्रोंको धारण करता पितामहको मृतक देखकर सभामें क्या कहूंगा २२।२३ अबमैं अपनी इच्छाके अनुसार उस क्षत्री धर्मकी उपासनाकरके राजादुर्य्योधन और महात्मा पिताके भी मार्गको पाऊंगा २४ अब पांचाल देशी विजय से शोभित बड़े विश्वस्थ सवारी और कवचों से जुदे होकर प्रसन्नता युक्त सोतेहैं २५ वह थकेहुये परिश्रमसे पीड़ामानअपनी विजयकोमान कर शयन करेंगे अपने डेरोंमें सुखसे नियत और सोने वाले उन पांचाल देशियों के डेरोंके उसनाशको करूंगा जो कि कठिनतासे करने के योग्यहै अबउन अचेतमृतक रूपपांचाल देशियोंको डेरेमें पराजय करके २६ और पराक्रम करके ऐसे मारूंगा जैसेदानवों को इन्द्र मारताहै अबउन धृष्टद्युम्न आदिक सब पांचालोंको एक साथ

ही ऐसे मारूंगा २८ जैसेकि ज्वलित अग्नि सूखे बनको हेश्रेष्ठ मैं युद्धमें पांचालोंको मारकर शांती को पाऊंगा २९ अब मैं युद्धमें पांचालोंको मारता पांचालोंके बीचमें ऐसाहूंगा जैसेकि पशुओं को मारते पशुओं के मध्यमें क्रोधयुक्त पिनाक धनुषधारी आप रुद्रजी होतेहैं ३० अब अत्यन्त प्रसन्न सब पांचालोंको मारकाट करउसी प्रकारसे युद्धमें पांडवों को भी पीड़ामान करूंगा ३१ अब मैंपृथ्वीको सब पांचालोंके शरीरों से पूर्णकरकेप्रत्येक को मारकर पिताके ऋणसे अऋणहूंगा ३२ अब मैं पांचालोंको दुर्योधन कर्ण भीष्म और जयद्रथके कठिन मार्गमें पहुंचाऊंगा ३३ अबमैं रात्रिके समय थोड़ीही देरमें पांचालोंके राजाधृष्टद्युम्नके शिरकोऐसे मथूंगा जैसे कि पशुके शिरको मर्द्दन करतेहैं ३४ हे कृपाचार्य्यजी अबमैं पांचाल देशियोंके और पांडवोंके सोतेहुये पुत्रोंको रात्रिके समययुद्ध भूमिमें तेज खड्गसे मथूंगा ३५ हेबड़े बुद्धिमान् अबमैं रात्रिके युद्ध में उस पांचालकी सेनाको मारकर कृतकृत्य होकर सुखीहूंगा ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय॥

कृपाचार्य्य बोलेकि प्रारब्धसे बदलालेनेमें तेरी अविनाशी बुद्धि उत्पन्न हुईहै आप इन्द्रभी तेरे रोकनेको समर्थनहींहै १ हमदोनों एकसाथही प्रातःकालके समय तेरे पीछे चलेंगे अबरात्रिमें कवच और ध्वजासे पृथक् होकर विश्रामकरो २ मैं और यादव कृतवर्मा अलंकृत रथोंपर सवार होकर तुझ शत्रुओं के सन्मुख जाने वाले के पीछे चलेंगे ३ हे रथियों में श्रेष्ठ प्रातःकाल के समय तुम हम दोनोंके साथ सन्मुखता में पराक्रम करके शत्रु पांचालोंको उनके साथियों समेत मारोगे ४ तुम पराक्रम करके मारने को समर्थ हो इसरात्रिमें विश्रामकरो हेतात तुझको जागतेहुये बहुत विलम्ब हुई तबतक इसरात्रि में शयनकरो ५ विश्रामयुक्त शयनसे सावधा नचित्त तुमयुद्धमें शत्रुओंको पाकर मारोगे हेबड़ाई देनेवाले इसमें

संशयनहींहै ६ देवताओंके मध्यमें इन्द्रभी तुझ रथियोंमें श्रेष्ठ उत्तम शस्त्रधारीके विजय करनेको उत्साह नहीं करताहै ७ कृतबर्मासेरक्षित और कृपाचार्य्यके साथ जानेवाले युद्धमें क्रोधयुक्त अश्वत्थामासे इन्द्रभी युद्धनहीं करसक्ता ८ हमरात्रिमें विश्रामयुक्त शयन करनेवाले तापसे रहित प्रातःकाल शत्रुओंके लोगोंको मारेंगे ९ तेरे और मेरे दिव्यअस्त्रहैं और बड़ाधनुषधारी यादव कृतबर्माभी युद्धोंमें निस्संदेह सावधानहै १० हेतात हमतीनों एकसाथमिलेहुये सब शत्रुओंको हठसे युद्धमें मारकर उत्तम आनन्दको पावेंगे ११ तुमसावधान होकर विश्रामकरो और इसरात्रिमें सुखपूर्वक शयनकरो मैंऔर कृतबर्मा धनुषधारी शत्रुओंके तपानेवाले कवचधारी दोनों एकसाथ रथपर सवारहोकर तुझ शीघ्र चलनेवाले नरोत्तम रथीकेपीछे चलेंगे १२।१३ इसकेपीछे तुमउन्होंके डेरोंमें जाकर युद्धमें नामको सुनाकर युद्ध करनेवाले शत्रुओं का बड़ाभारी नाशकरोगे १४ प्रातःकालके समय उनका नाश करके ऐसे बिहारकरो जैसे कि महा असुरोंको मारकर इन्द्र बिहार करताहै १५ तुमयुद्धमें पांचालों की सेनाके विजय करनेको ऐसे समर्थहो जैसेकि सब दानवोंका मारनेवाला क्रोधयुक्त इन्द्रदैत्योंकी सेनाको मारकर विहारकरताहै १६ वज्रधारी समर्थ साक्षात् इन्द्रभी तुझमेरे साथी कृतबर्मासे रक्षितको युद्धमें नहीं सहसक्ताहै १७ हे तात मैं और कृतबर्मा युद्धमें पांडवोंको बिजय किये विनाकभी लौटकर नहींआवेंगे १८ हमसब युद्धमें क्रोधयुक्त पांचालों समेत पांडवोंको मारकर लौटेंगे अथवा मरकर स्वर्गको जायँगे १९ हेनिष्पाप हम प्रातःकाल युद्धमें सब उपायोंसे तेरे सहायकहैं हे महाबाहुमैं यह तुझसे सत्य २ ही कहताहूं २० हे राजा मामाजीके ऐसेहितकारी बचनोंको सुनकरक्रोधसे रक्तनेत्र अश्वत्थामानेमामाजीको उत्तरदिया २१कि रोगी क्रोधयुक्त धनादिकके शोचकरनेवालेऔर कामी इनलोगोंको निद्राकहांसे होसक्तीहै २२ अब यह मेरा क्रोध चौथाई उत्पन्न हुआहै वह चौथाई क्रोध दिनके अर्थ शयनकानाश करताहै २३ इसलोमकमें क्या दुःखहै कि पिता

के मरणको स्मरण करता और जलताहुआ मेरा हृदय अब दिन रात्रि शान्तिको नहीं पाताहै २४ मुख्य करके जैसे प्रकार से मेरा पिता पापियों के हाथसे मारा गया वह सब आपके नेत्र गोचरहै वह मेरे मर्मोंको काटताहै २५ लोकमें मुझसा मनुष्य एक मुहूर्त्त भी कैसेजीसक्ताहै जो मैं पाञ्चालोंका बचनसुनताहूं कि द्रोणाचार्य्य मारे गये२६ मैं धृष्टद्युम्नको न मारकर जीवते रहनेको उत्साह नहीं करसक्ताहूं वह मेरे पिताके मारनेसे काटनेके योग्य है और जो पांचालदेशी इकट्ठे हैं वह सब भी बध्यहैं २७ इसके बिशेष जो मैंने टूटी जंघावाले राजाका जो बिलाप सुना वह किस निर्दय के भी चित्तको नहीं भस्म करेगा २८ फिर टूटी जंघावालेराजाके उस प्रकार के बचनोंको सुनकर कौनसे निर्दयमनुष्य के अश्रुपात नहीं होंगे २९ मेरे जीवतेहुये जो यह मेरा मित्र पक्ष बिजय किया यह मेरे शोकको ऐसे बढ़ाताहै जैसे जलका वेग समुद्रको बढ़ाताहै ३० अबमेराचित्त एकाग्रहै निद्राऔर सुख कहांहै हे श्रेष्ठ मैं बासुदेवजी और अर्जुनसेरक्षित उन लोगोंको ३१ महाइन्द्रसेभीसहने के योग्य नहीं जानताहूं और इस उठेहुये क्रोध के भी रोकने को समर्थ नहीं हूं ३२ मैं इस लोकमें ऐसा किसीको भी नहीं देखताहूं जो मुझको मेरे क्रोध से रहित करसके इसीप्रकार साधुओंकी अंगीकृत इस मेरी बुद्धिको भी कोई नहीं लौटासक्ता ३३ मेरे मित्रोंकी पराजय और पांडवोंकी बिजय जो दूतोंने बर्णन करी वह मेरे हृदय को भस्मकररहीहै ३४ अबमैं रात्रिके युद्धमेंशत्रुओंका नाश करके फिर तापसे रहितहोकर बिश्राम करके शयन करूंगा ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिमंत्रयाणांचतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय ॥

कृपाचार्य्य बोले कि दुर्बुद्धी और अजितेन्द्री मनुष्य सुनने का अभिलाषी भी सम्पूर्ण धर्म अर्थ के जानने को समर्थ नहीं है यह मेरामतहै १ इसीप्रकार शास्त्रोंकेस्मरण रखनेवाली बुद्धिकास्वामी

पुरुष जबतक नीतिको नहींसीखताहै तब तक वहभी धर्म अर्थ के निश्चयको नहीं जानताहै २ अत्यन्त अज्ञानि शूरवीर मनुष्य बहुत कालतक भी पंडित के पास वर्त्तमान सेवाकरके धर्मोंको ऐसेनहीं जानताहै जैसे कि व्यंजनके स्वादुको चमच नहीं जानताहै ३ ज्ञानी पुरुष एक मुहूर्त भी उस पंडितके पास बैठकर शीघ्रहीऐसे धर्मोंको जानताहै जैसे कि दाल आदि के स्वादुको जिह्वा जानलेतीहै ४ बुद्धिमान् जितेन्द्री और सेवा करनेवाला पुरुष सब शास्त्रोंको जान-ताहै और ग्राह्य वस्तुओंसे बिरोधतानहीं करताहै ५ जो दुर्बुद्धी और पापी पुरुषहै वह सच्चेमार्गमें पहुंचाने केयोग्यनहीं है वह उपदेश कियेहुये कल्याणको त्याग करके बहुतसे पापोंको करताहै ६ फिर शुभचिन्तक लोग सनाथ पुरुषको पापसे निषेध करते हैं और धन का स्वामी उसपापसे लौटताहै परन्तु धन रहित पुरुष नहीं लौट-ताहै ७ जैसे कि बिषयोंमें प्रवृत्त चित्तपुरुष नानाप्रकारके बचनोंसे आधीन कियाजाताहै उसीप्रकार शुभचिन्तक मित्रसे समझाने के योग्यहै और जो योग्य नहींहै वह पीड़ापाताहै ८ इसीप्रकार ज्ञानी लोग पाप कर्म करनेवाले बुद्धिमान् मित्रको सामर्थ्यके अनुसार बारंबार निषेध करतेहैं ९ वह कल्याणमें चित्त करके और मनसे बुद्धिको आधीनतामें करके उस बचनको करताहै जिस के कारण से पीछे दुःखी नहीं होताहै १० इसलोकमें सोनेवाले मनुष्योंका मारना और इसीप्रकार अशस्त्र रथ और घोड़ोंसे रहित मनुष्योंका मारना धर्म से प्रशंसा नहीं किया जाताहै ११ जो कहे कि मैं तेरा हूं जो शरणागत होय जो खुलेहुये केशहोय और जो मृतकसवारी वालाहै १२ हे समर्थ इन सबका मारनाभी निषेधहै कवचसेरहित मृतकके समान अचेत बिश्वास युक्त सब पांचाल लोगसोतेहैं १३ जो कुटिल पुरुष उसदशावाले उन पांचाल देशियोंसे शत्रुताकरेगा वह अथाह बिना नौकावाले नर्करूपी समुद्रमें डूबेगा १४ तुम लोकके सब अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ बिख्यातहो इसलोकमें कभी तुझसे छोटासाभी पापनहीं हुआ १५ फिर सूर्य्यके समान तेजस्वी तुम प्रातःकालके

समय सूर्योदय होने और सबजीवों के प्रकट होनेपर युद्धमें शत्रुओं के लोगोंको बिजय करोगे १६ मेरेमत से तुझमें ऐसानिकृष्ट और निषिद्ध कर्म ऐसा असंभवहै जैसे कि श्वेतरंग वाला पक्ष रक्त वर्ण होना असंभवहै १७ अश्वत्थामा बोले हे मामाजी जैसा आप कहते हैंवह निस्सन्देह वैसाहीहै परन्तु प्रथम उन पांडवोंनेही इसधर्म रूपी पुलको तोड़ाहै १८ शस्त्र त्यागनेवाला मेरापिता राजाओंके समक्षमें आपलोगोंके भी देखतेहुये धृष्टद्युम्नके हाथसे गिरायागया १६ रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णरथ चक्रके पृथ्वीमें घुसजाने पर बड़े दुःख में डूबाहुआ उस अर्जुनके हाथसे मारा गया २० इसी प्रकार शस्त्र त्यागने वाले धनुष आदिकसे रहित शन्तनुके पुत्र भीष्मजीभी शिखण्डीको आगे करके अर्जुनके हाथसे मारे गये २१ इसीप्रकारयुद्ध मेंशरीर त्यागने के निमित्त बैठाहुआ भूरिश्रवा राजाओं के पुकारते हुये सात्यकी के हाथसे मारागया २२ दुर्योधन गदा समेत भीमसेन के सन्मुख होकर राजाओंके देखते अधर्मसे मारागया २३ वहां अकेला नरोत्तम बहुत रथियों से घिरकर अधर्म युक्त भीमसेनके हाथसे गिराया गया २४ मैंने दूतोंके मुखसे टूटी जंघावाले राजाका जो बिलाप सुना वह मेरे मर्मस्थलोंको काटताहै २५ उस प्रकारसे पांचाल देशीलोग अधर्मी और पापी हैं जिनकाकिधर्म का पुलटूट गयाहै आप इसप्रकार से उनवे मर्य्यादवालोंकी निन्दा नहीं करतेहो २६ मैं रात्रिके समय निशा युद्धमें अपने पिताकेमारने वाले पांचालोंकोमारकर जन्मपाकर चाहैकीट पतंगभी होजाऊं२७ और मैं इसीहेतुसे शीघ्रता करताहूं कि जो यहमेरे कर्मकरनेकी इच्छाहै उस मुझ शीघ्रता करने वालेको कहां निद्रा और सुखहै२८ वह पुरुष लोकमें नपैदा हुआहै नहोगा जोकि उन पांचाल देशियों के मारनेमें यहमति देकर मुझको लौटावे २६ संजयबोले हेमहाराज प्रतापवान् अश्वत्थामाजी इसप्रकार कहकर और एकान्त में घोड़ोंको जोड़कर शत्रुओंके सन्मुख गये ३० बड़े साहसी कृतवर्मा और कृपाचार्य्यजी दोनों उससे कहने लगे कि किस निमित्त रथक

जोड़ाहै और क्या कर्मकरना चाहतेहो ३१ हेनरोत्तम तेरे साथहम दोनोंचलेंगे एकसा सुखदुःखवाले हमदोनोंपर तुमको सन्देहकरनाउचित नहींहै ३२ पिताके मरणको स्मरणकरते अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी ने अपने मनका वह सत्य २ बिचार उनसे वर्णन किया जोउसके चित्तमें करनेकी इच्छाथी ३३ तेजबाणों से लाखों शूरबीरोंको मारकर शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरा पिता युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथ से मारा गया ३४ निश्चय करके अब मैं इसीप्रकार इसपापी धर्मके त्यागनेवाले राजा पांचालकेपुत्र धृष्टद्युम्नको पाप कर्म से मारूंगा ३५ मेरे हाथसे पशुके समान मारा हुआ धृष्टद्युम्न किसी प्रकारसे भी शस्त्रोंसे विजय कियेहुये लोकों को नहीं पावेगा यह मेरामतहै ३६ कवचधारी खड्ग और धनुष के उठानेवाले शत्रु बिजयी उत्तम रथ रखनेवाले तुम दोनों सवार होकर मेरी प्रत्यासाकरोअर्थात् मार्ग देखो ३७ हे राजावह अश्वत्थामा यह कहकर रथ पर सवार होकर शत्रुओंके सन्मुख गये कृपाचार्य्य और यादव कृतबर्मा उसके पीछे चले ३८ शत्रुओंके सन्मुख जानेवाले वह तीनों ऐसे शोभाय मानहुये जैसेकि यज्ञमें आहवानकीहुई वृद्धि युक्त अग्नि होतीहै ३९ हे समर्थ फिर वह उनके उन डेरोंमें गये जिसमें उनके मनुष्य अच्छी रीतिसे सोरहेथे और महारथी अश्वत्थामा द्वार स्थान को पाकर नियत हुये ४०॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५॥

छठा अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसके पीछे उन दोनों कृतबर्मा और कृपाचार्य्यने द्वारस्थानपर अश्वत्थामाको नियत देखकरक्याकिया उसको मुझसे वर्णनकरो १ संजय बोले कि वह महारथी अश्वत्थामा कृतबर्मा और कृपाचार्य्यको पूछकर क्रोधसे पूर्ण शरीर डेरे के द्वारपरगया२ उसने वहां जाकर एकजीवको देखा जो कि बड़े

शरीर वाला चन्द्रमा और सूर्य्यके समान प्रकाशमान् द्वारपर नि-
यत रोमहर्षण करनेवाला ३ व्याघ्र चर्मधारी बड़े रुधिरको गेरने
वाले कृष्णमृगचर्मका ओढ़नेवाला नागोंका यज्ञोपवीत रखनेवाला
४ बहुतलम्बी स्थूल औरनानाप्रकारके शस्त्रों के धारण करनेवाले
भुजाओंसे बड़े सर्प का बाजूबन्द बांधनेवाला ज्वाल समूहों से
व्याप्तमुख ५ दंष्ट्राओंसे भयानक महा भयकारी फैलेहुये हजारों
विचित्र मुखोंसे शोभायमानथा ६ उसका शरीर और पोशाक वर्णन
के योग्य नहीं जिसकोकि देखकर सब दशामें पर्व्वतभी फटजाय ७
उसके मुख नाक कान और हजारों नेत्रोंसेवड़ी २ ज्वाला निकल-
तीथीं ८ उन ज्वालाओंके प्रकाश से शंख चक्र गदाधारी हजारों
श्रीकृष्ण प्रकटथे ९ उस बड़े अपूर्व सब सृष्टि के भयकारी को देख
कर पीड़ासे रहित अश्वत्थामाने उसको दिव्य अस्त्रोंकी वर्षा से ढक
दिया १० उस बड़े तेजरूपने अश्वत्थामाके छोड़े हुये बाणोंको
निगला जैसेकि बड़वामुखनामि अग्नि समुद्रके जलसमूहोंकोनिगल-
ताहै ११ उसीप्रकार उस तेजरूपने अश्वत्थामाके चलायेहुये बाणों
को निगला फिर अश्वत्थामाने उन अपने बाण समूहोंको निष्फल
देखकर १२ ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित शक्तिको छोड़ा वह
प्रकाशमान् रथ शक्ती उसको घायल करके ऐसे फटगई १३ जैसे
कि प्रलयके समय आकाशसे गिरीहुई बड़ी उल्का सूर्य्यको घायल
करके फट जातीहै इसके पीछे सुवर्णकीमूठ आकाश वर्णदिव्य खड्ग
को १४ ऐसे शीघ्रता पूर्व्वक मियानसे निकाला जैसे कि विलसे
प्रकाशित सर्पको निकालते हैं इसके पीछे बुद्धिमानने उत्तम खड्ग
को उस तेजरूपके ऊपर चलाया १५ वह उस तेजरूपको पाकर
उसके शरीर में ऐसे चलागया जैसे कि नौला विवरमें घुसजाताहै
इसके पीछे उस क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने इन्द्रध्वजाके समान १६
उसज्वलित रूप गदाको उसके ऊपर चलाया उसतेजरूपने उसको
भी निगला इसके पीछे सब शस्त्रोंके नाशमानहोने पर जहांतहां
देखनेवाले अश्वत्थामाने १७आकाशको श्रीकृष्णसे पूर्ण देखा शस्त्रों

से रहित अश्वत्थामा उस बड़े चमत्कारको देखकर १८ अत्यन्त दुःखी और कृपाचार्य्यके बचनको स्मरण करतेबोले कि जो पुरुष अप्रिय और परिणाममें शुभदायक मित्रोंके बचनोंको नहींसुनता है वह आपत्तिको पाकर ऐसे शोचताहै १९ जैसे कि मैं दोनोंको उल्लंघनकर अर्थात् उनके विरुद्ध कर्म करकेजो अज्ञानी शास्त्रज्ञों को उल्लंघन करके मारना चाहताहै २० वह धर्मसे च्युतहोनेवालाहै इस हेतुसे कुमार्गमें माराजाताहै गौ ब्राह्मण राजा स्त्री मित्र माता गुरू २१ निर्बल विक्षिप्त अन्धे सोनेवाले भयभीत उठेहुये मदसे उन्मत्त रोगादिकोंसे अचेत और भूतादिकके आवेश से मतवाले मनुष्य पर शस्त्र नहीं चलावे २२ इसप्रकार पूर्व्वमें बड़ेबड़े लोगों के उपदेश होतेथे सो मैंने शास्त्रके बताये हुये सनातन मार्ग को उल्लंघनकरके २३ कुमार्गसे कर्मका प्रारंभ करके घोर आपत्तिको पाया बुद्धिमान् लोग उस आपत्तिको घोरकहतेहैं २४ जो बड़े कर्म को प्रारंभ करके भयसे मुखको फेरताहै यहां वह कर्मसामर्थ्य और बलसे करने के योग्यनहीं २५ मनुष्यका कर्म दैवसेबड़ा नहींकहा जाताहै कर्म करनेवाले का जोमनुष्य कर्म दैवसे सिद्धनहीं होताहै २६ वह धर्ममार्ग से च्युत होकर आपत्तिको प्राप्त होताहै ज्ञानी पुरुष प्रतिज्ञानको अविज्ञान कहतेहैं २७ जोइसलोकमें किसीकार्य्य को प्रारंभ करके फिर भयसेछोड़ देताहै सो अन्यायसे यह भयमेरे समक्षमें नियत हुआ २८ द्रोणाचार्य का पुत्रयुद्धमें किसी दशामेंभी मुखफेरने वाला नहीं हुआ और यह बड़ातेजरूप उत्पन्न दैवदण्डके समान सन्नद्ध है २९ मैंसबप्रकारसे बिचारता हुआ भी इसको नहीं जानताहूं निश्चय करके जोमेरी यह पापबुद्धि अधर्ममें प्रवृत्तहै ३० उसका यह महाभयकारी फल मरणके लिये प्रकटहै वहमेरा युद्धमें मुखका फेरना दैवका रचा हुआहै ३१ यहां किसी दशामें भी कोई बात उपाय करनेके योग्य नहीं सो मैं अबसमर्थ और शरणके योग्य महादेवजीकी शरणागत होताहूं ३२ वहीमेरे इसघोर दैव दण्डका नाशकरेगा जो कि कपर्दीन, देवताओंके, भी देवता, उमापति, उमाधि

से रहित ३३ कपालोंके मालारखनेवाले रुद्र, भगनेत्र, के मारनेवाले हर, उस देवतानेतप और पराक्रम से देवताओं को उल्लंघन किया ३४ इसहेतुसे मैं उस गिरीश और शूलधारी को शरणागत होताहूं ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजा वह अश्वत्थामा इसप्रकार अच्छेप्रकार बिचार करके रथके बैठनेके स्थानसे उतरकर नम्रता पूर्वक देवेशके सन्मुख नियत हुआ १ अश्वत्थामा बोले कि मैं अत्यन्त शुद्धचित्तसे अज्ञानियोंके कठिन कर्म्म भेंटसे शिवजीको पूजनकरताहूं जोकि उग्र, स्थाणु, शिव, रुद्र, सर्व, ईशान, ईश्वर, गिरीश, बरद, देवभवभावन, ईश्वर २ शितिकण्ठ, अज, शुक्र, दक्ष, क्रतुहर, हर, विश्वरूप, विरूपाक्ष, बहुरूप, उमापति ३ श्मशानबासी, दृप्त, महागणपति, बिभु, खट्वाङ्गधारी, रुद्र, जटिल, ब्रह्मचारी ४ स्तुत स्तुत्य स्तूयमान, अमोघ, कृत्तिवासस, बिलोहित, नीलकण्ठ, असह्य, दुर्निवारण ५ इन्द्र, ब्रह्मसृज ब्रह्म, ब्रह्मचारी, व्रतवन्त, तपोनिष्ठ, अनन्त, तपतांगति अर्थात् तपस्वियों कीगति ६ बहुरूप, गणाध्यक्ष, त्रिनेत्र, परिषदप्रिय, धनाध्यक्ष, क्षितिमुख, गौरीहृदय, वल्लभ ७। ८ कुमारपितर, पिंग, नन्दीबाहन, तनुवासस, अत्युग्र, उमाभूषणतत्पर ९ परसेपरे जिससे कि उत्तम श्रेष्ठ नहींहै उत्तमबाण अस्त्रोंके स्वामी दिगन्त देशरक्षिण १० हिरण्यकवच, सृष्टिरक्षक, देव, चन्द्रमौलि, विभूषण, ऐसे देवता के उत्तम समाधि से शरणागत होताहूं ११ अब जो इस घोर कठिनआपत्ति उत्तीर्णहोजाऊं उस दशामें उनशिवजीका मैं सर्बभूत बलिसे पूजन करूंगा १२ उस शुभकर्म्म महात्माके निश्चयको योगसे जानकर आगेसे स्वर्णमयी वेदी प्रकट हुई १३ हे राजा तब उस वेदी में अग्निदेवता प्रकट हुये उसने दिशाविदिशाओं को और आकाशको अपनी ज्वालाओंसे पूर्ण

किया उस स्थानपर प्रकाशित मुख और नेत्ररखनेवाले बहुत से
चरण शिर और भुजावाले रत्नजटित बाजूबन्दधारी ऊंचा हाथ
करनेवाले १४।१५ द्वीप और पर्वतके स्वरूप बड़ेगुण प्रकटहुये जो
कि कुत्ता बाराह और ऊंटकी सूरत घोड़े बैल और शृगालके समान
मुखरखनेवाले १६ रीछ, बिलार, व्याघ्र, हाथी, काग, प्लव और
सोतेके समान मुख रखनेवाले १७ बड़े अजगर हंस दार्वाघाट और
चाषके समान मुख रखनेवाले श्वेत प्रभाधारी १८ इसीप्रकारकूर्म,
नक्र, शिशुमार, बड़ा मगर तिमिनाम मत्स्यके समान मुखरखने
वाले १९ बानर, क्रौंच, कपोत, हाथी, कबूतर, और मगद के समान
मुख रखनेवाले २० इसीप्रकार हाथसे कान रखनेवाले हजार
नेत्रधारी दीर्घोदर मांसरहितशरीर, काग और बाज पक्षीके समान
मुख रखनेवाले २१ हे भरतबंशी इसीप्रकार शिर रहित रीछ मुख
प्रकाशित चक्षु जिह्वा और ज्वलितरूप कानवाले २२ ज्वालाकेश,
प्रकाशित देहरोम, चतुर्भुज, बहुत से मेष और छागके समान मुख
रखनेवाले २३ शंखबर्ण शंखमुखी इसीप्रकार शंखके समान कान
रखनेवाले शंखमालाधारी शंखध्वनिके समान शब्दरखनेवाले २४
जटाधारी, पांचशिखारखनेवाले मुण्ड कृशोदर चारदंष्ट्रा और चार
जिह्वा रखनेवाले शंखोंके समान कान और किरीटधारी २५ हे
राजेन्द्र उसीप्रकार मेखला, धारी घूंघरवाले बाल, पगड़ीवाले, मु-
कुटधारी, सुन्दर पोशाकसे अलंकृत २६ पद्म, उत्पली, के माला-
धारी इसीप्रकार कुमुद मालाधारी माहात्म्यसे संयुक्त सैकड़ों
गुण २७ शतघ्नी, बज्र, मूसल, भुशुंडी, पाश, और दण्ड, हाथमें
रखनेवाले २८ पृष्ठपर कवच बांधनेवाले विचित्रबाणसमूह रखने
वाले ध्वजा पताका घंटा और फरसा रखनेवाले २९ महापाशोंसे
उद्यतकरलकुट, स्थूण और खड्गधारी ऊंचे सर्पों संयुक्त किरीट रखने
वाले ३० इसीप्रकार नीलबर्ण पिंगल बर्ण मुंडमुखी अत्यन्तप्रसन्न
सुबर्ण के समान प्रकाशित पार्षदोंने ३१ भेरी, शंख, मृदंग, झर्झर,
आनक, और गौ मुखोंको बजाया इसीप्रकार बहुतसे गाते नाच-

ते३२।३३फांदते उछलते महारथी शीघ्रगामी मुंड और वायुसेचलायमान केशधारी दौड़ते३४और मतवालेबड़े हाथियोंके समानबारंबार गर्जते बड़े भयानक घोर रूप शूल और पट्टिश हाथमें रखनेवाले ३५ उसीप्रकार बहुत बर्णके वस्त्र अपूर्बमाला और चन्दनसे अलंकृत रत्न जटित बाजूबन्द रखनेवाले ऊंचाहाथ रखनेवाले ३६ ऊंधाकरके शत्रुओंकेमारनेवाले असह्य पराक्रमवाले रुधिर मज्जाओंके पानकरनेवालेमांसअँतड़ियोंकेखानेवाले ३७ कर्णिकार पुष्प के समान शिखाधारी अत्यन्त प्रसन्न पिठरोदर अर्थात् थालीके समान मुख रखनेवाले अतिह्रस्व अतिदीर्घ प्रलम्ब भयानक ३८ बिकट काले और लम्बे ओष्ठधारी बड़ेशिश्नेन्द्री और वृषणा रखनेवाले बहुतसे बहुमूल्य मुकुट रखनेवाले मुंड जटिल ३९ उन पार्षदोंनेपृथ्वीपरसूर्य्य चन्द्रमा ग्रह और नक्षत्रों समेत अकाशको बर्त्तमानकिया जोकि चारोंखानके जीवसमूहोंके मारनेको उत्साहकरें ४० और जो तीनोंलोकों के ईश्वरोंके ईश्वर निर्भय, सदैव, शिवजीकी भृकुटी को सहनेवाले और सदैव स्वेच्छाचारी कर्म करनेवाले ४१ अबिनाशी आनन्दमें अत्यन्त प्रसन्न, बचनके, स्वामी ईर्षासे रहित अष्टगुण,वाले ऐश्वर्य्य को पाकर आश्चर्य्ययुक्त नहीं होतेहैं ४२ भगवान् शिवजी जिन्होंके कर्मोंसे सदैव आश्चर्य्य करतेहैं और जिन्होंने मन बचन कर्मसे प्रवृत्त होकर सदैव आराधनकिया ४३ वह शिवजी भक्तोंको उनके मन बचन और कर्मोंके द्वारा उनकी ऐसे रक्षाकरतेहैं जैसे माता अपने पुत्रोंकी करतीहै बहुत से पार्षद सदैव ब्राह्मणों के शत्रुओंके रुधिर मज्जा आदिके पान करनेवाले थे ४४ और जो शास्त्र अथवा ज्ञान, ब्रह्मचर्य्य, तप, और चित्तकी शांती, के द्वारा सदैव चारप्रकार के अमृतका पानकरते हैं उनका ब्यौरा अन्नरूप, रसरूप, अमृतरूप, चन्द्रमण्डल रूप ४५ और जिन्होंने शिवजीकी आराधना करके उनकी सायुज्यताको पाया अर्थात् शिवरूपको पाया भगवान् महेश्वर भूत वर्त्तमान और भविष्यके स्वामी शिवजी जिन आत्मारूप महाभूतों के समूहों को

और पार्वतीजी समेत यज्ञोंको भोक्तेहैं वह पार्षद अनेक प्रकारके वाजे हिंस सिंहनाद घोरशब्द, और गर्जसे ४६ । ४७ सबसृष्टिको भयभीत करते बड़े प्रकाशको उत्पन्न करते महादेवजी की स्तुति करते बड़े तेजस्वी उस अश्वत्थामाके सन्मुखगये ४८ महात्मा अश्वत्थामाकी महिमाके बढ़ाने के अभिलाषी और उसके तेजको जाननाचाहते रात्रियुद्ध देखने के उत्कण्ठित ४६ ऐसेभयानक, और उग्र प्रभावाले शूल पट्टिश शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले घोररूप भूत-गण चारोंओर से आपहुंचे ५० जोकि अपने दर्शनसे तीनोंलोकों के भयको उत्पन्नकरें उनको देखकर महाबली अश्वत्थामाजीने भी पीड़ा नहींकी ५१ इसके पीछे हाथमें धनुष युद्धके हस्तत्राणधारी अश्वत्थामा ने आप अपनी आत्मासे आत्माको भेंट किया ५२ हे भरतवंशी वहां उस कर्ममें धनुषोंको समिध तेजबाणों को पवित्रा और आत्मा समेत शरीर के दानको हव्य नियत किया ५३ इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामाने सोमदेवता से सम्बन्ध रखनेवाले मन्त्रके द्वारा शरीर रूप भेंटको अर्पण किया ५४ हाथ जोड़हुये अश्वत्थामा उस रुद्र कर्मवाले अजेय महात्मा रुद्रजी को उनके रुद्रकर्मोंसे स्तुति करके यह बचनबोले ५५ हे भगवान् अब मैं अंगिरावंश में उत्पन्न होनेवाले इस शरीरको आत्मारूपी अग्नि में हवन करताहूं मुझ बलिरूपको आप अंगीकार करिये ५६ हे विश्वात्मा महादेवजी मैं इस आपत्तिमें आपकी भक्ति और परमस-माधिसे आपके आगे अर्पण करताहूं ५७ सब जीव आपमेंहैं और निश्चय करके सब जीवोंमें आपहीहैं और आपमें प्रधान गुणोंकी ऐक्यताभी नियतहै ५८ हे सब जीवो रक्षास्थान समर्थ देवता मुझ नियत हव्य रूपको स्वीकारकरो जो शत्रु मुझसे अजेयहैं ५६ अ-श्वत्थामाजी यह कहकर और शरीर प्रीतिको त्याग करके उस वेदीपर जिसपर अग्नि प्रकाशित थी चढ़कर अग्निमें प्रवेशकर गये ६० साक्षात् भगवान् महादेवजी हंसते हुये उस ऊंचे हाथ चेष्टारहित हव्य रूपको नियत देखकर बोले ६१ मैं जिसप्रकार

सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी की सत्यता पवित्रता सरलता त्याग तप नियत क्षान्ति भक्ति धैर्य्य बुद्धि और वचनसे आराधन किया गया और उस श्रीकृष्ण से अधिकतम मेरा कोई प्रिय नहीं है ६२। ६३ हे तात तुझको जानने के अभिलाषी श्रीकृष्णजी का मान करनेवाले मैंने अकस्मात् पांचालदेशियों की रक्षाकरी और बहुतसी माया प्रकट कीं ६४ पांचालदेशियों के रक्षा करनेवाले मैंने उन श्रीकृष्णजी का मानकिया परन्तु अब यह पांचालदेशी काल से पराजय हुयेहैं इससे अब इनका जीवननहींहै ६५ भगवान्ने उस महात्मासे ऐसा कहकर अपने शरीर को उसमें प्रवेश किया और उसको बहुत निर्मल और उत्तम खड्ग दिया ६६ फिर भगवान्के प्रवेशित शरीर से अश्वत्थामाजी तेजसे ज्वलित अग्नि रूपहुये और देवताके दियेहुये तेजसेयुद्धमें वेगवान्हुये ६७ साक्षात् ईश्वर के समान शत्रुके डेरेमें जानेवाले उन अश्वत्थामाजी के पीछे दृष्टिसे गुप्त जीव और राक्षस चारोंओर से चले ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले डेरेमें महारथी अश्वत्थामा के जानेपर भय से पीड़ामान कृपाचार्य्य और कृतवर्मा तो लौटकर नहीं चले आये १ कहीं नीचरक्षकों से तो नहीं रोकेगये और क्या उनलोगोंने उनको नहीं देखा दोनों महारथी रात्रिके युद्धको असह्य जानकर तो नहीं लौटे २ डेरेको मथकर और युद्धमें सोमक पांडवोंकोमारकर दुर्योधन की उत्तम पदवी को प्राप्तकिया ३ क्या वह दोनोंवीर पांचाल देशियोंके हाथ से मृतक होकर पृथ्वीपर शयन करनेवाले तो नहीं हुये अथवा कोई उनदोनोंने कर्म भी किया हे संजय वह सबमुझसे कहो ४ संजय बोले कि डेरेमें उस महात्मा अश्वत्थामाके जानेपर कृपाचार्य और कृतवर्मा डेरे के द्वारपर नियतरहे ५ हे राजा फिर अश्वत्थामाजी उनदोनों महारथियों को उपाय करनेवाला देखकर

बड़े प्रसन्न होकर यह बचन बोले ६ उपाय करनेवाले आप सब क्षत्रियोंके नाश करनेको समर्थ हैं मुख्यकर शेषबचे और सोते हुये शूरवीरोंके मारने को फिर क्योंनहीं समर्थ होगे ७ मैं डेरेमें प्रवेश करूंगा और कालके समान घूमूंगा इस द्वारपर आनेवाला कोई मनुष्य भी जैसेप्रकार जीवता न जानेवाले८वैसाही आपको करना योग्यहै यह मेरा दृढ़बिचारहै अश्वत्थामाजी शरीर केभयको त्याग कर अन्यद्वार में घुसकर पांडवोंके बड़े डेरेमें पहुंचे६ उसके स्थानों के जाननेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त तेजसे ज्वलित रूप उन महाबाहु अश्वत्थामाजीने प्रवेशकरके रात्रिमें निद्रामें अचेत सोनेवाले सब मनुष्योंके और पास भ्रमण किया १०।११ और सुगमतासे धृष्ट-द्युम्नके डेरे को पाया वह लौटसन्मुख होकर युद्धमेंचारोंओर दौड़ने वाले युद्धमें महाकठिन कर्मोंको करके बहुत श्रमित होकर सोगये थे हे भरतवंशी इसके पीछे अश्वत्थामाजीने उस धृष्टद्युम्न के उस स्थानमें प्रवेश करके १२।१३ शयनपर सोते हुये धृष्टद्युम्न को समीपसे देखा हे राजा स्वच्छ अत्यन्त अलसीसे तैयार बहुमूल्य बिस्तरोंसेयुक्त बड़ी उत्तम मालाओंसे अलंकृत धूपचन्दन चूरेआदि से सुगन्धित बड़े शयनपर सोनेवाले विश्वासी और निर्भयउसमहा त्मा धृष्टद्युम्नको १४।१५ चरणघात से जगाया युद्धमें दुर्मद धृष्ट-द्युम्नने चरणके घातसेजगकर १६ बड़ेबुद्धिमान्‌ने महारथी अश्व-त्थामाको पहचाना बड़े पराक्रमी अश्वत्थामानेउस शयनसेउछलने वाले धृष्टद्युम्नको १७ हाथोंसे बालोंके द्वारा पकड़कर पृथ्वीपर रगड़ा हे भरतवंशी तब बलसे उस धृष्टद्युम्न का रगड़ा हुआ वह धृष्टद्युम्न १८ भय और निद्रासे चेष्टाकरनेको समर्थ नहीं हुआ हे राजा पैरोंसे उसको कंठ और छातीपर दबाकर १६ पुकारते और चेष्टाकरतेको पशुकी भांतिमारा फिर नखोंसे पीड़ामान करते उस धृष्टद्युम्नने धीरे २ अश्वत्थामा से कहा २० हे आचार्य्य के पुत्र मुझको शस्त्रसेमारो विलम्बमतकरो हे द्विपादोंमें श्रेष्ठ मैंआप के कारण से पवित्रलोकोंको पाऊं २१ शत्रुओंका तपानेवालाबल-

वानूसे कठिनदबाया हुआ राजा पांचालका पुत्र इसप्रकारकेवचन को कहकर मौनहोगया २२ इसके पीछे अश्वत्थामा उसके उस धीरेसे कहेहुये बचनको सुनकर बोले हे कुलकलंकी गुरूके मारने वालेके लोकनहीं हैं २३ इसहेतुसे तुम शस्त्रसेमरने के योग्य नहीं हो हे दुर्बुद्धी तुझनिर्दयी और गुरुभक्तिसे रहित के हाथसे मेरापिता मारागया २४ इसकारण से मुझनिर्दयके हाथ से निर्दयीकेसमान मारने के योग्यहो जैसे कि सिंह मतवाले हाथी की ओरको गर्जता है उसीप्रकार उस बीरसे इसप्रकार कहते हुये २५ क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने कठिन एड़ियोंसे मर्मस्थलोंपर घायल किया उस मरने वाले बीरके शब्दोंसे महलमें २६ वह स्त्रियां उस बुद्धि से बाहर पराक्रमवाले और डरानेवाले अश्वत्थामा को देखकर २७ भूतको निश्चय करनेवाली होकर भयसे नहींबोलीं वह तेजस्वी उस उपाय से उस बीरको यमलोकमें पहुंचाकर २८ और सुन्दरदर्शन रथको पाकर नियत हुआ हे राजा वह समर्थ और बलवान् अश्वत्थामा उसके डेरेसे निकलकर दिशाओं को शब्दायमानकरते २९ शत्रुओं केमारनेके अभिलाषी रथ की सवारी के द्वारा डेरे कोगये इसके पीछे उस महारथी अश्वत्थामाके हटजानेपर ३० सबस्त्रियां अपने रक्षकों समेत पुकारीं हेभरतबंशीराजाको माराहुआ देखकर अत्यन्त दुःखी ३१ सब क्षत्री जोकि धृष्टद्युम्नके नौकर थे पुकारे फिर उन्होंके शब्दोंसे सन्मुखही उत्तम २ क्षत्री तयार हुये ३२ और बोले कि यह क्या बातहै हेराजा वह भयभीत स्त्रियां अश्वत्थामा को देखकर ३३ दुःखी कंठ सेबोलीं कि शीघ्रजावो यह राक्षसहोय अथवा मनुष्य होय हम इसको नहीं जानती हैं ३४ वह राजा पांचाल कोमारकर रथपर नियतहै उसके पीछे उन उत्तम शूरोंने अकस्मात् चारों ओर से घेरलिया ३५ उसने उन सब चढ़ाई करनेवालोंको रुद्रअस्त्रसे मारा फिर उसने सब साथियों समेत धृष्टद्युम्नको मारकर ३६ समीपही शयनपर सोनेवाले उत्तमौजसको देखा उसकोभी पराक्रमसे कण्ठ औरछातीको दबाकर ३७

उस पुकारनेवाले शत्रुविजयीको उसीप्रकारसे मारा और युधामन्यु उसको राक्षसके हाथसे मृतक मानकर आया ३८ औरवेग से गदाको उठाकर अश्वत्थामाको हृदय पर घायलकिया गदा के आघातसे घायल होकर भी अश्वत्थामा युद्धमें कंपायमान नहीं हुआ ३९ और उसके सन्मुख जाकर उसको भीपकड़कर पृथ्वीपर गिरायाउसीप्रकार इस चेष्टाकरनेवाले कोभी पशुकेसमानमारा४० वह वीर उसको उसप्रकार से मारकर जहां तहां सोनेवाले दूसरे महारथियोंकी ओरगया ४१ क्रोधयुक्तने समीपही पांचाल देशीवीरोंको दबाकर फड़कते और कांपतेहुओं को ऐसे मारा जैसे कि यज्ञमें मारनेवाला पशुओंको मारताहै ४२ इसके पीछे भागक्रम से मार्गोंको घूमते खड्ग युद्धमें कुशल अश्वत्थामाने खड्गको लेकर पृथक् २ अन्य लोगोंको मारा ४३ इसप्रकार गुल्मनाम सेना के भाग में सोनेवाले अशस्त्र और थकेहुये उनसब गुल्ममेंवर्त्तमान लोगोंको एकक्षण भरमेंमारा ४४ रुधिरसे लिप्त सब शरीर काल सृष्टिमें अन्तकके समान अश्वत्थामाने शूरवीर घोड़े और हाथियों को मारा४५ वह अश्वत्थामा तीनप्रकारसेरुधिरमेंलिप्तहुयेउनचेष्टा करनेवालोंसे खड्ग चलाने वालोंसे और खड्गके कंपायमानहोने से ४६ उसरुधिरसे रक्तवर्ण प्रकाशित खड्गधारी युद्ध करनेवाले बड़ेभयके उत्पन्न करनेवाले अश्वत्थामाका रूप राक्षसादिक के समानदिखाईपड़ा ४७ हे कौरव जोजागउठे वहभी शब्दसे अचेतहुये और एकदूसरेको देखकर पीड़ामानहुये ४८ उसशत्रुविजयी केउस रूपको देखकरउसको राक्षसमानते उनक्षत्रियोंने अपने २ नेत्रोंको बन्दकरलिया ४९ इसकेपीछे डेरेमें कालके समान घूमते हुये उस घोररूपने शेषबचेहुये द्रौपदीके पुत्र और सोमकों को देखा ५० हे राजाउस शब्दसे भयभीत धनुषहाथमें लिये द्रौपदी के पुत्रोंने धृष्टद्युम्नको मराहुआ सुनकर ५१ निर्भयकेसमान बाणों के समूहों से अश्वत्थामाको ढकादिया इसकेपीछे उसशब्दसे प्रभद्रकनामक्षत्री जागउठे ५२ शिखंडीनेशिलीमुख बाणोंसे अश्वत्थामाकोपीड़ामान

कियावह अश्वत्थामा बाणोंकी बर्षाकरनेवाले उन बीरोंको देखकर उन महारथियोंको मारनेका अभिलाषीबड़ाबलवान् शब्दको गर्जा फिरपिताके मरणको स्मरणकरता अत्यन्त क्रोधयुक्त ५४ रथ से उतरकर शीघ्रहीसन्मुखगया और युद्धमेंहजारचन्द्रमाओंके चित्रोंसे चित्रितनिर्मल ढालकोलेकर ५५ सुवर्णसे निर्मितदिव्यखड्गकोपकड़ करद्रौपदीके पुत्रोंकेसन्मुखजाकर बलवान्ने सबकोखड्गसे घायल किया ५६ हेराजा इसकेपीछे उसनरोत्तमने बड़ेयुद्धमें प्रतिविन्ध्य को कुक्षि स्थानपर घायलकिया वहमरकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ५७ प्रतापवान् सुतसोम प्राससे अश्वत्थामाको छेदकर खड्ग को उठा के अश्वत्थामाके सन्मुखगया ५८ नरोत्तम अश्वत्थामाने सुतसोम की भुजाको खड्ग समेत काटकर कुक्षिपर घायलकिया वहभी टूटा हृदयहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ५९ फिरनकुलकेपुत्र पराक्रमी सता-नीकने रथचक्रको दोनोंभुजाओं से घुमाकर वेगसे उसको छातीपर घायलकिया ६० फिरउस ब्राह्मणने चक्रछोड़नेवाले सतानीक को घायलकिया वहव्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसके पीछे उस के शिरकोकाटा ६१ फिरश्रुतकर्मा परिघ को लेकर और दौड़कर अश्वत्थामाके सन्मुख गया और ढाल से युक्तबाम कुक्षिपर कठिन घायलकिया ६२ फिरउस अश्वत्थामाने उत्तम खड्गसे उस श्रुत-कर्माकोमुखपर घायलकिया वह रूपान्तर और अचेतहोकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ६३ फिरउस शब्दसे महारथी श्रुतकीर्त्तिने अश्वत्थामा कोपाकर बाणोंकी बर्षा से ढकदिया ६४ उस अश्वत्थामा ने उसकी बाणवृष्टीको ढालपर रोककर कुंडलधारी प्रकाशित शिर को शरीरसे जुदाकिया ६५ उसकेपीछे उस पराक्रमीने सबओरसे नाना प्रकारके शस्त्रोंकेद्वारा बीरशिखंडी को सब प्रभद्रकों समेत घायलकिया ६६ उसशिखंडीने दूसरे शिलीमुखसे दोनों भृकुटियों के मध्यमें घायलकिया फिर क्रोधसेपूर्ण उसबड़े बलवान् अश्वत्था-माने ६७ शिखंडीको पाकर खड्गसे दोखंड करदिया फिर क्रोधसे पूर्ण शत्रुओंका तपानेवाला उसबड़े वेगवान् शिखंडी को मारकर

प्रभद्रकोंके सबसमूहोंके सन्मुखगया और राजाविराटकी जो सेना शेषथी उसपरभी चढ़ाई करनेवालाहुआ ६८।६९ बड़ेबलवान्नेदेख देखकर द्रुपदकेपुत्रपौत्र और मित्रोंकाभी घोरनाशकिया ७० खड्ग मार्गमें कुशल अश्वत्थामाने अन्यलोगोंकेभी सन्मुख जाजाकर उन कोखड्गसेकाटा ७१ उन लोगोंने रक्तनेत्र रक्तमाला चन्दनसेअलंकृतलालपोशाकधारी पाशहाथमें लड़केआदिक रखनेवालीअकेली काली ७२ गातीहुई नियत कालरात्रिको देखा हेराजा मनुष्यघोड़े और हाथियोंको पाशोंसे बांधकर जानेके अभिलाषी घोररूप ७३ वालोंसे पृथक् पाशोंमें बंधेहुये बहुत प्रकारके मृतकोंकेलेजानेवाले और इसीप्रकार अन्यरात्रियों में ७४ स्वप्नावस्थामें सदैववेसलाह सोतेहुये महारथियों को लेजानेवाली उसकाली को और उस मारनेवाले अश्वत्थामा को उत्तम शूरवीरोंने सदैव देखा ७५ जबसेकि कौरवीय और पांडवीय सेनाका युद्धजारीहुआ तब से लेकर उसकन्याको और अश्वत्थामाको स्वप्नमेंदेखा ७६ युद्धमें सब जीवधारियोंको डराते और भयानक शब्दोंको गर्जते अश्वत्थामाने प्रथम दैवसेहतेहुये उन लोगोंको पीछेसे गिराया ७७ दैवसेपीड़ित उन वीरोंने उसपूर्व समयके देखेहुये स्वप्नको स्मरण करके माना कि यह वही बातहै ७८ इसकेपीछे पांडवोंके डेरेमें वहसैकड़ों और हजारों धनुषधारी उसशब्दसे जागउठे ७९ कालसे प्रवृत्त मृत्युके समान उस अश्वत्थामाने किसीके पैरोंकोकाटा किसीके जंघन को और कितने हीको कुक्षिपरछेदा ८० हे प्रभुकठिन मर्द्दन कियेहुये शब्दकरनेवाले मतवाले हाथी और हाथी घोड़ोंसे मथेहुये अन्य मनुष्योंसे वहपृथ्वी आच्छादित होगई ८१ जोलोगकि इसप्रकार से पुकारतेथे कि यहक्याहै कौनहै कैसाशब्द होरहाहै उन सब लोगोंको प्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाने पांडवोंके नातेदार और सृञ्जीलोग जोकि शस्त्र और कवचोंसे रहितथे उनकोभी यम लोकमेंभेजा ८२।८३ इसकेपीछे उसशस्त्र सेभयभीत उछलते और भयसे पीड़ामान निद्रासे अन्धेअचेत होकर वहलोग जहांतहां गुप्त

होगये ८४ और ऊरुस्तंभ नामरोग में फंसेमूर्च्छा से निर्बल भय-
भीतकठोर शब्दकरते हम पीड़ामानहुये ८५ इसकेपीछे धनुषहाथ
मेंलिये अश्वत्थामाने भयकारी रथपर सवार होकर बाणों से अन्य
मनुष्योंकोभी यमलोकमें पहुंचाया ८६ फिरदूरसे उछलते नरोत्तम
आतेहुये दूसरे शूरोंकोभी कालरात्रि के आधीन किया ८७ उसी
प्रकार रथकीनोक से मथताहुआ वह दौड़ताथा इसके पीछे बहुत
प्रकारकी बाणवृष्टियोंसे शत्रुओंके मनुष्योंपर वर्षा करनेलगा ८८
फिर बड़ीबिचित्र सूर्य्यचन्द्रमा रखनेवाली ढाल और उस आकाश
वर्णखड्गके द्वारा भ्रमण करनेलगा ८९ हे राजेन्द्र उसयुद्धमेंदुर्मद
अश्वत्थामाने उन्होंके डेरेकोभी ऐसे छिन्नभिन्नकिया जैसे कि हाथी
बड़े हृदको करदेताहै ९० हेराजा उसशब्दसे अचेत शूरबीर उठे
और निद्रा और भयसे पीड़ामान होकर इधर उधर को दौड़े ९१
इसी प्रकार असभ्य बचन कहतेहुये अन्यलोग बड़े शब्दसे पुकारे
और शस्त्र और बस्त्रोंको नहींपाया ९२ बहुतसे खुलेहुये बालवाले
मनुष्योंने परस्पर नहीं पहचाना तब वहां उछलते हुये कितनेही
मनुष्य थककर गिरपड़े और कितनेही भ्रमण करनेलगे ९३ कित-
नेहीलोगोंने बिष्ठाकोछोड़ा कितनोंहीने मूत्रको करदिया हेराजेन्द्र
हाथीघोड़े और रथोंको तोड़कर ९४ चारोंओरकोदौड़े और कोई
महाब्याकुलता उत्पन्नकरनेवाले हुयेवहां कितनेही भयभीत आदमी
पृथ्वीपरसोगये ९५ उसीप्रकारउनपड़े हुओं को हाथी और घोड़ोंने
मर्द्दन किया हे भरतर्षभ पुरुषोत्तम इसप्रकार उसनाशके वर्त्तमान
होनेपर राक्षस ९६ लोग प्रसन्न होकर बड़ेशब्दसे गर्जे हे राजा
प्रसन्न चित्त जीवोंके समूहों से किया वहशब्द सर्वत्र व्याप्त
होगया ९७ उसबड़े शब्दने सब दिशा और आकाशको पूर्णकिया
उन्होंके पीड़ित शब्दोंको सुनकर भयभीत और बन्धनोंसे जुदेहाथी
घोड़े ९८ डेरेमें मनुष्यों को खूदते मर्द्दन करते चारोंओर को दौड़े
वहां उनचारों ओर दौड़नेवालोंके चरणोंसे उठीहुई धूलने ९९
रात्रिकेसमय उन्होंकेडेरोंमें दूने अन्धकारको उत्पन्नकिया उसअन्ध-

कारके उत्पन्न होनेपर मनुष्य सब ओरसे अज्ञानहुये १०० पिताओंने पुत्रोंको नहींजाना भाइयोंने भाइयोंको नहींजाना हाथियोंने हाथियोंको सवारोंसे रहित घोड़ोंने घोड़ोंको दबाकर १०१ घायल और टूटे अंगकिया उसीप्रकार मर्द्दन करते परस्पर मारतेहुये वह सब घायल गिरपड़े १०२ इसीप्रकार अन्योंको भी गिराकरमर्द्दनकिया अचेत निद्रासे युक्त अन्धकारसे घिरे १०३ और कालसे प्रेरित लोगोंने वहां उनको मारा इसीप्रकार द्वारपाल द्वारोंको और गुल्म लेनेवाले लोग गुल्मोंको त्याग करके १०४ भयभीत और अचेत होकर सामर्थ्यके अनुसार भागे और परस्पर नाशहोगये इसीप्रकार एकने दूसरेको नहीं पहंचाना १०५ अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओंको भागते उनलोगोंके मध्यमें से दैवसे व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हेपिता हेपुत्र १०६ इसके पीछे लोगोंने गोत्र और नामोंसे परस्पर पुकारा और कितनेही हाहाकार करकेपृथ्वी परगिरपड़े १०७ इस अश्वत्थामा ने युद्धमें उनको जानकर रोका और बहुतसे क्षत्री बारंबार घायल और अचेत १०८ और भयसे पीड़ामान होकर डेरेसे बाहर गये उन भयभीत जीवनके इच्छावान् डेरेसे निकलने वालोंको १०९ कृतबर्मा, और कृपाचार्य्य ने द्वारस्थान परमारा जिनके यंत्र और कवच गिरपड़े वह खुले हुये बाल हाथजोड़े ११० पृथ्वीपर कंपायमान और भयभीत थे उनमें से किसीको भी नहीं छोड़ा डेरेसे बाहर निकलनेवाला कोईभी मनुष्य उन दोनोंके हाथसे बचकर नहींगया १११ हेमहाराज अश्वत्थामा प्रियकरनेके अभिलाषी उन कृपाचार्य्य औरदुर्बुद्धी कृतवर्माने ११२ डेरोंके तीनोंओर अग्नि लगादी फिर डेरोंके प्रज्वलित और प्रकाशित होनेपर पिताको प्रसन्न करने वाला अश्वत्थामा हस्तलाघवीके समान खड्गको लेकर घूमने लगा कितनेही आनेवाले और दौड़नेवाले बीरोंको ११३। ११४ खड्गके द्वारा प्राणोंसे रहित किया और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ पराक्रमी अश्वथामाने कितनेही शूरबीरोंको खड्गके द्वारा मध्यसे काटकर ११५

क्रोधयुक्तने तिलकाण्डके समान गिराया हेभरतर्षभ अत्यन्त घायल गर्जते गिरते मनुष्य घोड़े और हाथियोंसे ११६ पृथ्वी आच्छादितहुई हजारों मनुष्योंके मरने और गिरने पर ११७ बहुत रुण्ड उठे और उठकर गिरपड़े शस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली भुजाओं समेत शिरको काटा ११८ और हाथीकी सूंड़के समान जंघाओंको और हाथ पैरोंको काटा हेभरतबंशी टूटी पीठ कुक्षि और शिरवाले अन्य लोगोंको गिराया ११६ उस महात्मा अश्वत्थामा ने कितने ही मनुष्योंको मुखफेरने वाला किया किसीको कानके स्थानपर और किसीको कटिस्थानपर काटा १२० किसीको कन्धेके स्थान पर घायल करके शिरको शरीरमें प्रवेशकिया इस प्रकार उसके घूमते और बहुत आदमियों को मारते हुये १२१ अन्धकारसे वह रात्रि घोररूप महा भयानक दर्शन देखनेमें आई कुछ कण्ठ गत प्राणवाले कुछमृतक हजारों १२२ मनुष्य हाथी और घोड़ोंसे पृथ्वी भयानक रूप देखने में आई यक्ष राक्षसोंसे संयुक्त रथघोड़े औरहाथियोंसे भयानक रूप पृथ्वीके होनेपर १२३ क्रोधयुक्त अश्वत्थामा के हाथसे घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े कोई भाइयोंको कोई पिताओं को और पुत्रोंको पुकारता था १२४ और कितनेही बोले कि युद्धमें क्रोधयुक्त धृतराष्ट्र के पुत्रोंने भी वह कर्मकिया था जोकि निर्दयी राक्षसोंने हम सोनेवालों के साथकियाहै १२५ पांडवों के बर्त्तमान न होनेसे यह हमारा नाशकिया वह अर्जुन असुर गन्धर्व यक्षऔर राक्षसों से १२६ भीविजय करने के योग्य नहींहै जिसके कि रक्षक श्रीकृष्णजीहैं वह अर्जुन वेद ब्राह्मणों का रक्षक जितेन्द्री और सब जीवधारियों पर कृपा करनेवाला है १२७ वह पांडवअर्जुन सोनेवाले मतवाले अशस्त्र हाथ जोड़नेवाले खुलेकेश और भागने वाले मनुष्योंको नहीं मारताहै १२८ निर्दयी राक्षसों ने हमारा यह नाशकिया इस प्रकार बिलाप करते हुये बहुतसे मनुष्य पृथ्वीपर सोगये १२६ इसकेपीछे एक मुहूर्त्त मेंही पुकारते और गर्जते हुये अन्य मनुष्योंका वह बहुतबड़ा शब्द बन्दहोगया १३०

हेराजा रुधिरसे पृथ्वीके अच्छे प्रकार तर होनेपर वहघोर और कठिन धूल एकक्षणमेंही दूरहोगई १३१ उस क्रोध युक्तने चेष्टा करनेवाले व्याकुल और उत्साह से रहित हजारों मनुष्योंको ऐसे गिराया जैसेकि पशुओंको रुद्रजी गिराते हैं १३२ उस अश्वत्थामा नेपृथ्वीपर गिरेहुये मनुष्योंको परस्पर मिलकर भागने वालों को और कितनेही गुप्त युद्धकरने वालों को अत्यन्त मारडाला १३३ तव अग्निसे जलने वाले और उस अश्वत्थामा के हाथसे घायल उन शूरबीरोंने परस्पर यमलोक में पहुंचाया १३४ हेराजा अश्वत्थामाने उस रात्रिके अर्द्धभागमें पांडवोंकी बड़ी सेनाको यमलोकमें पहुंचाया १३५ वह रात्रि राक्षसोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवालीमनुष्य घोड़े और हाथियोंका भयउत्पन्न करनेवाली होकर महाकठिन नाशकारीहुई १३६ वहांपर पृथक् २ प्रकारके पिशाच राक्षस मनुष्योंके मासको खाते और रुधिरको पीतेहुये दिखाई पड़े १३७ जोकि कराल पिङ्गल वर्ण पर्वताकार दांत रखनेबाले धूलसेलिप्त जटाधारी लम्बे शंख पांच पैर और बड़ा उदर रखने वाले पीछेकी ओर उंगलियां रखने वाले रूखे कुरूप भयानक शब्दवाले घंटा जालसे युक्त नीलकण्ठ भय उत्पन्न करनेवाले १३८। १३९ पुत्र स्त्रियोंको साथ रखनेवाले निर्द्दयी दुर्द्दर्शन और दयासे रहित थे वहां राक्षसोंके रूप भी अनेक प्रकार के देखने में आये १४० कोईरुधिर समूहको पानकरके प्रसन्न चित्त होकर नृत्य करनेलगे और कहतेथे कि यह उत्तमहै यह पवित्रहै यह स्वादुष्ट है १४१ भेजा मज्जा अस्थि और रुधिरको अच्छीरीतिसे भक्षण करनेवाले रुधिरसे अच्छे प्रकार तृप्तहुये मांससे जीवनेवाले वह राक्षस अन्य लोगोंके मांस खानेसे तृप्त हुये १४२ इसी प्रकार नाना प्रकारके मुख रखने वाले कोई रुद्र रूप मांसभक्षी बड़ा उदर रखनेवाले राक्षस मज्जा को पानकरके चारों ओरको दौड़े १४३ वहां पर निर्दय कर्मी भयानक रूप बड़े राक्षसों की संख्या हजारों किरोड़ों और अर्बुदांथी १४४ हे राजा उस बड़े नाश प्रसन्न

चित्त अत्यन्त तृप्त राक्षसोंकी यह संख्याथी और बहुत से भूत गण भी इकट्ठे हुये उसने प्रातःकालके समय उसडेरेसे निकलना चाहा मनुष्यों के रुधिरोंसेलिप्त अश्वत्थामा का खड्ग १४५।१४६ हाथसे चिपटा हुआ एक रूप होगया हेप्रभु वह अश्वत्थामा दुख से मिलनेवाले मार्गमें जाकर मनुष्योंके नाशमें ऐसा शोभायमान हुआ १४७ जैसे कि प्रलय कालमें सब जीवोंको भस्म करके अग्नि शोभायमान होताहै हे प्रभु वह अश्वत्थामा प्रतिज्ञाके अनुसार उस कर्मको करके १४८ पिताके दुष्प्राप्य मार्गको प्राप्तकरता तापसे रहित हुआ वह नरोत्तम जैसे कि रात्रिमें सोनेवाले लोगोंके समान डेरेमें पहुंचा १४९ उसी प्रकार मारकर डेरेके निश्शब्द होने पर डेरेसे बाहर निकला उसडेरेसे निकल उन दोनों से मिलकर १५० प्रसन्न और प्रसन्न करते उस पराक्रमीने उस सब कर्म को वर्णन किया हे समर्थ तब उन विजय करनेवालोंने उस प्रिय बचन को उससे वर्णन किया १५१ कि हमने डेरेसे निकलनेवाले हजारों पांचाल और सृञ्जियों को मारा वह प्रसन्नता समेत बड़े उच्चश्वरसे पुकारे और हाथकी तालियोंको बजाया १५२ सोते और अचेत सोमकोंके नाशमें वह रात्रि इसप्रकार की कठिन और भयकारी हुई १५३ निस्सन्देह समय की लौट पौट दुखसे उल्लंघन करने के योग्यहै जहां कि उसप्रकारके बीर हमारे मनुष्योंका नाश करके मारे गये १५४ धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रकी बिजय में प्रवृत्त चित्त महारथी अश्वत्थामाने प्रथमही इसप्रकारके कठिन कर्म को कैसे नहीं किया १५५ उसनीच दुर्य्योधनके मरने पर उस महात्मा अश्वत्थामाने किस हेतुसे उस कर्मको किया वह सब मुझ से कहनेको योग्यहो १५६ संजय बोले हे कुरुनन्दन निस्सन्देह उस अश्वत्थामाने उन पांडवोंके भयसे इस कर्मको नहीं किया पांडव केशवजी और सात्यकीके वर्त्तमान न होनेपर १५७ अश्वत्थामा ने इस कर्मका साधन किया उन्होंके समक्षमें कोईमनुष्य तो क्या इन्द्रभी नहीं मारसक्ताथा १५८ हे राजा रात्रिके समय मनुष्यों

के सोनेपर ऐसा वृत्तान्त हुआ फिर पाण्डवों के लोगोंका कठिन नाश करके १५९ वह महारथी परस्पर मिलकर बोले कि दिष्ट्या दिष्ट्या अर्थात् मुबारक मुबारकहोय इसके पीछे प्रसन्न कियाहुआ अश्वत्थामासे उनदोनोंसे स्नेह पूर्वकमिला १६० और प्रसन्नतासे इस उत्तम और बड़े बचनको बोला कि सब पांचाल और द्रौपदीके पांचो पुत्र मारे गये १६१ शेष बचेहुये सब सोमक और मत्स्य देशीभी मेरे हाथसे मारे गये अब हम कृत्यकृत्य हैं वहांहीं चलें बिलम्बमतकरो १६२ जो हमारा राजा जीवताहै हम उससे चलकर वर्णन करें १६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह तीनों सब पांचाल और पांचो द्रौपदी के पुत्रोंको मारकर एक साथही वहां गये जहां पर कि घायल दुर्य्योधन था १ और जाकर कुछ शेषप्राणवाले राजाको जाकर देखा इस के पीछे रथोंसे उतरकर आपके पुत्रको मध्यवर्त्तीकिया २ हे राजेन्द्र उन्होंने उस टूटी जंघा और प्राणोंसे पीड़ामान अचेत और मुखसे रुधिर डालनेवाले राजाको पृथ्वीपर देखा ३ भयानक दर्शनवाले बहुत से हिंस्रजीवोंसे युक्त और समीपसे भक्षण करनेके अभिलाषी शृगालादिकके समूहों से घिरे हुये ४ खानेके अभिलाषी भेड़िया आदिक को दुःखसे रोकनेवाले पृथ्वीपर चेष्टा करनेवाले कठिन पीड़ामान ५ रुधिरसे लिप्त उस प्रकार पृथ्वीपर सोनेवाले राजा दुर्य्योधनको देखकर मरने से शेषबचे शोकसे पीड़ामान तीनोंबीरों ने चारों से उसको व्याप्तकिया ६ अर्थात् अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और यादव कृतवर्मा, रुधिरसे लिप्त श्वासलेनेवाले तीनों महारथियोंसे ७ संयुक्त वह राजा ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि तीनों अग्नियों से वेदी शोभायमान होती है इसके पीछे वह तीनों उस दशाके अयोग्य पृथ्वीपर पड़ेहुये राजाको देखकर ८ असह्य दुःख

समेत रोदन करनेलगे फिर युद्धभूमि में सोनेवाले उसराजाके मुख से रुधिरको अपनेहाथोंसे सफा करके करुणापूर्वक बिलापकिया ६ कृपाचार्य्य बोले कि दैवका बड़ाभारनहींहै जो यह ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी राजादुर्योधन रुधिरसे लिप्त घायल हुआ पृथ्वीपर सोताहै १० इससुवर्णके समान प्रकाशमान सुवर्ण जटित राजाकी गदाको पृथ्वीपर सन्मुख पड़ीहुई गदाको देखो ११ यह गदा प्रत्येक युद्धमें इसशूरको त्याग नहीं करती अर्थात् स्वर्ग जाने वाले यशमानको नहीं त्याग करती १२ सुवर्णसे अलंकृत बीरके साथ सोनेवाली इसगदाको ऐसे देखो जैसे किमहलमें सोनेवाली प्रीतिमान् भार्य्याको देखतेहैं १३ जो यह शत्रुका तपानेवाला मूर्द्धाभिषिक्तोंके आगे प्रधानहुआ वह घायल होकर पृथ्वीकी धूलि को स्पर्श करताहै समय की बिपरीतताको देखो १४ जिसके हाथ से युद्धभूमिमें मारेहुयेशत्रु पृथ्वीपर सोनेवालेहुये वह मृतकशत्रुवाला यह कौरवराज शत्रुओंके हाथसे माराहुआ सोताहै १५ हजारों राजाओं के समूह जिसके भय से झुकतेथे वह मांसभक्षी जीवों से घिराहुआ बीरपृथ्वीपर सोता है १६ प्रथम ब्राह्मणों ने धनके निमित्त जिस ईश्वर रूपकी बर्त्तमान होकर प्रशंसाकरी अब उसको मांसभक्षी मांसखानेकेलिये बर्त्तमानता करके प्रशंसा करतेहैं १७ संजयबोले कि हे भरतर्षभ उसके पीछे अश्वत्थामाने उस कौरवोंमें श्रेष्ठ सोतेहुये दुर्योधनको देखकर दयासे करुणा बिलापकिया १८ हे राजाओंमें श्रेष्ठ तुझको सब धनुषधारियोंमें प्रथम बलदेवजीका शिष्य और युद्धमें कुबेरके समान बर्णन कियाहै १९ हे पापोंसे रहित भीमसेन ने कैसे तेरे छिद्र को देखा हे राजा उस पापात्माने तुझ बलवान् और सदैव कर्म करनेवालेको मारा २० हे महाराज निश्चय करके इसलोकमें काल बड़ा पराक्रमी है कि हम तुझको युद्धमें भीमसेन के हाथसे माराहुआ देखते हैं २१ क्रोधयुक्त अज्ञान पापी भीमसेनने किस प्रकार से तुझ सब धर्मोंके ज्ञाता को छलसे मारा निश्चय कालदुःख से उल्लंघन के योग्य है २२ धर्म युद्ध में

वुलाकर फिर युद्धमें अधर्मके साथ भीमसेनकोगदा और पराक्रमसे तेरी दोनों जंघाटूटीं २३ जिसने युद्धभूमिमें अधर्मसे घायल शिर पांवसे मर्द्दन युक्तको देखकर ध्याननहीं किया उस क्रोध युक्त श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरको धिक्कारहै २४ निश्चयकरके शूरबीर लोगयुद्धों में जबतक पृथ्वी वर्त्तमानहै तबतक भीमसेनकी निन्दाकरेंगे क्योंकि तुमछलसे मारेगयेहो २५ हे राजा निश्चयकरके यदुनन्दन पराक्रमी बलदेवजीने सदैव तुमसे कहा कि गदायुद्धकी विद्यामें दुर्योधन के समान कोई नहीं है २६ हे प्रभु भरतवंशी राजा दुर्योधन वह बलदेवजी सभाओंमें तुम्हारी प्रशंसा करतेहैं कि वह कौरव गदायुद्धमें मेरा शिष्य है २७ महर्षियों ने युद्धभूमि में सन्मुखमरने वाले क्षत्रीकी जिसगतिको उत्तम कहा तुम उसी गतिको प्राप्त हो २८ हे पुरुषोत्तम दुर्योधन मैं तुझको नहीं शोचताहूं तेरे पिताको और गान्धारीको शोचताहूं जिनके कि सब पुत्र मारेगये २९ हे वीर जो कि तुझ मरनेवाले नाथसे वह अनाथ किये गये इस पृथ्वी को शोचते वह भिक्षुक रूप होकर इस पृथ्वीपर बिचरेंगे ३० यादव श्री कृष्णजीको और दुर्बुद्धी अर्जुनको भी धिक्कारहोय आपको धर्मज्ञ जानते जिन दोनोंनेतुझ घायलहोनेको ध्यान नहीं किया ३१ हे राजा वह लज्जारहित और सब पांडव भी कहेंगे कि हमारेहाथ से दुर्योधन किसप्रकारसे मारागया ३२ हे पुरुषोत्तम दुर्योधनतुम धन्यबादके योग्य हो जो तुम बहुधा धर्मसे शत्रुओंके सन्मुखहोकर युद्धभूमिमें मारेगये ३३ जिसके जाति बान्धव और पुत्र मारेगये वह गान्धारी और ज्ञानचक्षु रखनेवाला अजेय धृतराष्ट्रदोनों किस गतिकोपावेंगे ३४ कृतबर्माको मुझको और महारथी कृपाचार्य्यको धिक्कार होय जो हमतुझ राजाको आगेकरके स्वर्गको नहींगये ३५ जो हम तुझ सब अभीष्ट के देनेवाले रक्षक और संसार के प्रिय कर्त्ताके पीछे नहीं जाते हैं हम नीच मनुष्योंको धिक्कार है ३६ हे नरोत्तम नौकरोंसमेत कृपाचार्य्यके मेरे औरमेरे पिताके रत्नजटित स्थान आपहीके पराक्रमसेहुयेहैं ३७ मित्र और बान्धवों समेतहम

लोगोंने आपकी कृपासे बहुत दक्षिणावाले अति उत्तम बहुत यज्ञ प्राप्त किये ३८ हम पापी कहांसे ऐसे मार्ग पर कर्म कर्त्ता होंगे जिस मार्ग से कि तुम सब जीवोंको आगे करके गये ३९ हे राजा जो हम तीनों तुझ परमगति पानेवाले के पीछे नहीं जाते हैं उस हेतुसे हम भस्महोतेहैं ४० स्वर्ग और अभीष्टोंसे रहित हम लोग उन राजाओंको औरतेरे शुभकर्मको स्मरण करते जिस हेतु से आपके पीछे नहीं जातेहैं वह हमारा कौन कर्म होगा ४१ हे-कौरवोंमें श्रेष्ठ राजादुर्य्योधन निश्चय करके हम सब महादुःखी होकर इस पृथ्वीपर बिचरेंगे तुझसे पृथक् होकर हम लोगोंको कहांसे शान्ती और सुख प्राप्त होसक्ताहै ४२ हे महाराज तुमजा-कर और महारथियोंसे मिलकर मेरेबचनसेवृद्धता और उत्तमताके बिचार से पूजनकरना ४३ हे राजा सब धनुषधारियोंके ध्वजारूप आचार्य्यजीको पूजकर अब मेरे हाथसे मरेहुये धृष्टद्युम्नको बर्णन करना ४४ और बड़ेमहारथी राजाबाल्हीक, जयद्रथ, सोमदत्त, और भूरिश्रवा से मिलना ४५ उसी प्रकार स्वर्ग में प्रथम जानेवाले अन्य २ उत्तम राजाओंको मेरे बचनसे मिलकर कुशल मंगल को पूछना ४६ संजय बोले कि अश्वत्थामाजी उस अचेत और टूटी जंघावाले राजाको इसप्रकार कहकर और सन्मुख देखकर फिर बचनको बोले ४७ हे दुर्योधन तुम जीवतेहो कानोंके सुखदायी बचनोंको सुनो कि पांडवोंके सात और दुर्योधनके हमतीन शेषबचे हैं ४८ वह पांचोभाई केशवजी और सात्यकीहैं उसीप्रकार से कृत-बर्मा और तीसरे शारद्वत कृपाचार्य्यजी शेषहैं ४९ हे भरतबंशी द्रौ-पदीके सब पुत्र धृष्टद्युम्न के पुत्र सब पांचाल और शेष बचे हुये सब मत्स्यदेशी मारेगये ५० बदलेके कर्मको देखो और पांडव अ-सन्तान हैं रात्रिके युद्धमें मैंने उन्होंका डेरा सब मनुष्यों समेतना-शकरदिया ५१ हे राजा मैंनेरात्रिमें डेरेमें प्रवेश करके यह पापकर्त्ता धृष्टद्युम्न पशुके समानमारा ५२ दुर्योधन उस चित्तके प्रियबचन को सुनकर और सचेत होकर यह बचन बोला ५३ कि मेरा वह

कर्म न भीष्मजीने न कर्णने और न आपके पिताने किया जो अवकृपाचार्य्य और कृतबर्मा समेत तुमने किया ५४ वह नीच सेनापति शिखण्डी समेत मारागया उस हेतुसे अबमैं आपको इन्द्रके समान मानताहूं ५५ कल्याणको पाओ तुम्हारा भलाहोय अब स्वर्गमेंहमारा तुम्हारा फिर मिलाप होगा वह बड़ा साहसी कौरवराज इस प्रकार कहकर मौन हुआ ५६ और मित्रोंके दुःखको उत्पन्न करते उस बीरने अपने प्राणोंका त्यागकर पवित्र स्वर्गको गया और शरीर पृथ्वीपर रहा५७ हे राजा इस प्रकार आपके पुत्र दुर्योधनने मरणको पाया वह शूर युद्धमें प्रथमजाकर फिर शत्रुओं के हाथसे मारागया ५८ इसीप्रकार उनसे मिलेहुये वह लोग फिर मिलकर राजाको बारंबार देखते अपने २रथोंपर सवार हुये ५९ इसप्रकार अश्वत्थामाके करुणारूप बचनोंको सुनकरशोकसे पीड़ित वहतीनों प्रातःकालके समय नगरकी ओर शीघ्रतासे चले६०हेराजा आपके कुमन्त्र होनेपर इस प्रकार कौरव और पांडवोंका यह घोर और भयकारी मारने वाला नाश बर्त्तमान हुआ ६१ हे निष्पाप शोक से पीड़ित आपके पुत्रके स्वर्ग जानेपर अब व्यास ऋषिका दिया हुआ वह दिव्य दर्शन और दिव्यनेत्र बिनाशमान हुये ६२ वैशंपायन बोले कि तबवह राजाधृतराष्ट्र पुत्रके मरणको सुनकर लंबी और उष्ण श्वासाओं को लेकर महाचिन्तायुक्त हुआ ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिदुर्योधनप्राणत्यागेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि उसरात्रिके व्यतीतहोनेपर धृष्टद्युम्नकेसारथीने युद्ध में होनेवाले नाशको धर्मराजके सन्मुख वर्णन किया १ सारथी बोला हेराजा रात्रिके समय अपने डेरेमेंसोनेवाले बिश्वास युक्त अचेत सोतेहुये द्रौपदीके पुत्र द्रुपदके पुत्रोंसमेत मारेगये २ निर्दयी कृतबर्मा गौतम कृपाचार्य्य और पापी अश्वत्थामाके हाथसे रात्रिके समय आपका डेरानाश हुआ ३ प्रासशक्ति और फरसों से

हजारों मनुष्य घोड़े और हाथियोंको मारनेवाले इनतीनों से आप की सेनामारी गई ४ हे भरतवंशी फरसोंसे कटते हुये बड़ेवनकी समान आपकी सेनाके बड़े शब्द सुनेगये ५ हे बड़े ज्ञानी केवल मैं भी अकेला उससेनामेंसे बचाहूं हे धर्मात्मा मैं उस दुष्टकृतवर्मा से किसीप्रकार करके बचगया ६ कुन्तीका पुत्र अजेय युधिष्ठिर उस दुःख शोकके बचनको सुनकर पुत्रशोकमें युक्तहोकर पृथ्वीपरगिर-पड़ा सात्यकी भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेवने उसगिरतेहुये राजाको पकड़लिया ७। ८ फिर सचेत होकर शत्रुओं का विजय करनेवाला युधिष्ठिर शोकसे ब्याकुल दुःखसे पीड़ामान के समान बिलाप करनेलगा ९ अर्थों की गति दुःखसे जानने के योग्यहै जो दिव्य चक्षु रखनेवाले हैं उनको भी अन्य लोग पराजित होकर बिजयकरते हैं बिजयकरनेवाले हमलोग बिजयकियेगये १० भाई समान अवस्थावाले पिता पुत्र मित्रबर्ग बान्धव मन्त्री और पोतों समेत सबको मारकर भी हम दूसरोंसे बिजयकिये गये ११ नि-श्चय करके अनर्थ अर्थरूप है उसीप्रकार अनर्थ अर्थको दिखलाने वालाहै यह बिजय पराजयरूपहै इसहेतुसे बिजयहीपराजयहै १२ जो दुर्बुद्धी बिजयकरके पीछे आपत्ति में बन्धे हुये के समान दुःखी होताहै वह किसप्रकार बिजय को माने उस हेतुसे शत्रु के हाथसे अत्यन्त पराजितहै १३ मित्रोंके नाशसेबिजयका पापजिनकेनिमित्त होय पराजित हुये चतुर सावधान मनुष्यों करके बिजयसे शोभा-यमान आदमी बिजयकियेगये १४ युद्धमें कर्णिनालीक नाम बाण के समान डाढ़ रखनेवाले खड्ग की समानजिह्वा धनुषके समान चौड़ामुख लहरूप प्रत्यंचा और तलके समान शब्दवाले १५ क्रोध युक्त युद्धोंमें मुख न फेरनेवाले नरोत्तम कर्णकेहाथसे जोबचे वहसब शूरबीर अचेततासे मारेगये १६ रथरूप हृद बाण वृष्टिरूप तरंग वाले रत्नोंसेपूर्ण घोड़े और सवारियोंसे युक्त शक्ति वा दुधारेखड्ग रूपमछली ध्वजारूपसर्प और नक्र धनुषरूप भंवर बड़े बाणरूपी फेण रखनेवाले १७ युद्धरूप चन्द्रोदय तीव्रतारूप किनारेवाले ज्या

तल और नेमियोंके शब्दवाले द्रोणाचार्य रूपी समुद्रको जिन राज-
कुमारोंने नानाप्रकार के शस्त्ररूपी नौकाओं के द्वारातरा वहप्रमाद
से मारेगये १८ इसजीवलोकमें मनुष्योंके मरणकाकारण प्रमत्तता
से अधिक कोईनहींहै प्रमत्त अर्थात् अचेत मनुष्यको धनादिक अर्थ
चारोंओरसे त्यागकरतेहैं और निर्धनतारूप अनर्थ प्रवेशहोतेहैं १६
उत्तमध्वजाकी नोकसूरत उंचाई रखनेवाली बाणरूप ज्वालावाली
क्रोध रूप बायु की तीव्रता रखनेवाली बड़े धनुषकी ज्या तल और
नेमीके शब्दसे युक्तकवच और नानाप्रकारके शस्त्ररूप हवन रखने
वालीबड़ी सेनारूप दावानल से संयुक्त खड़े हुये शस्त्र रूप कठिन
तीव्रतावाली भीष्मरूप अग्निकी भस्मताको जिन राजकुमारों ने
बड़े युद्धमेंसहा वहसब अचेततासेमारेगये २०।२१ प्रमत्त मनुष्यको
विद्या तप धन और उत्तमकीर्त्ति नहींप्राप्त होसक्तीहै सावधानी से
सब शत्रुओंको मारकर सुखसे वृद्धिपानेवाले महाइन्द्रको देखो २२
इन्द्रके समान राजाओंके पुत्रपौत्रादिकोंको अत्यन्तअचेततासे ऐसे
मराहुआदेखोजैसेकि धनकी वृद्धिवाला व्यापारीसमुद्रको तरकरछो
टी नदीमें डूबजाय २३ क्रोधयुक्तपुरुषोंने जो सोतेवीरोंकोमारा वह
निस्सन्देह स्वर्गकोगये मैं द्रौपदी को शोचताहूं अब वह पतिव्रता
निर्भय होकर किस प्रकारसे शोचरूपी समुद्रमें डूबगई २४ भाई
बेटे और वृद्ध पिता राजापांचालको मृतक सुनकर निश्चय करके
व्यामोहित होकर पृथ्वीपर गिरेगी शोकसे कृशांग यष्टी शरीर वह
द्रौपदी शुष्क होरहीहै २५ सुखोंके योग्यवह द्रौपदीपुत्र और भाइ
योंके मरनेसे व्याकुल अग्निसे जलतीहुई केसमान उसशोकजन्य
दुःख समुद्रसे पारन होकर कैसी दशावाली होगी २६ इस प्रकार
बिलाप करता वह कौरवराज युधिष्ठिर नकुल से बोला जाओ उस
मन्दभागिनी राजपुत्रीको उसके मातृपक्षियोंसमेत यहांलाओ २७
नकुल धर्म्मरूप राजाके वचनको धर्म्मसे अंगीकार करके रथकी
सवारीसे देवी द्रौपदीके उस स्थानको गया जहांपर राजा पांचाल
कीभीस्त्रियांथीं २८ नकुलको भेजकर शोकसे पीड़ामान रोदनकरते

युधिष्ठिर उनसुहृदों समेतपुत्रोंकी युद्धभूमिकोगया जो कि भूतगणों से युक्तथा २९ उसने उसकल्याणरूप और उग्ररूप युद्धभूमि में प्रवेशकरके पुत्रसुहृद और मित्रोंको पृथ्वीपर सोते रुधिर से लिप्त अंग टूटे शरीर और टूटे शिर देखा ३० वह धर्मधारियों में और कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उन को देखकर अत्यन्त पीड़ामान सूरत उच्चश्वर से पुकारा और साथियों समेत अचेत होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिदशमोऽध्याय: १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले हेराजा जनमेजय वह युधिष्ठिर युद्धमें मरेहुये उन पुत्र पौत्र और मित्रोंको देखकर बड़े दुःखसे पूर्णचित्त हुआ १ इसके पीछे बेटे पोते भाई और अपने मनुष्यों का स्मरण करते हुये उस महात्मा को बड़ाशोक उत्पन्न हुआ २ तब अत्यन्त व्याकुल सुहृदोंने उस अश्रुओंसे पूर्ण कंपायमान और अचेत राजा को विश्वास कराया ३ उसके पीछे समर्थ नकुल बड़ी पीड़ामान् द्रौपदी समेत सूर्य्यके समान प्रकाशमान रथकी सवारी से एक क्षणमें सन्मुख आया ४ तब उपप्लवी स्थानपर वर्त्तमान वह द्रौपदी सब पुत्रों के अप्रियनाश को सुनकर बड़ी पीड़ामान हुई ५ हवासे चलायमान केलेके समान कंपायमान वह द्रौपदी राजा को पाकर शोक से शोकमें पीड़ित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ६ उस प्रफुल्लित पद्म पलास केसमाननेत्रवाली द्रौपदी का मुख अकस्मात् शोकसे ऐसे पीड़ामान हुआ जैसे कि अंधेरे से ढकाहुआ सूर्य्य होताहै ७ इसके पीछे क्रोधयुक्त सत्य पराक्रमी भीमसेनने दौड़कर उस गिरी हुई द्रौपदीको पकड़लिया ८ भीमसेनसे विश्वसित उस रानी तेजस्विनी द्रौपदीने भाइयों समेत युधिष्ठिर से यह बचन कहा ९ हे राजा तुम निश्चय करके क्षत्रीधर्म से अपने पुत्रोंको यमराजकोलिये देकर प्रारब्ध से इस सम्पूर्ण पृथ्वी को भोगोगे १० हे राजा तुम

प्रारब्ध से कुशलहो और सब पृथ्वी को पाकर मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्यु को स्मरण नहीं करोगे ११ तुम क्षत्री धर्मसे गिराये हुये शूरपुत्रों को सुनकर प्रारब्ध से मुझ समेत तुम उनको उपप्लव्या स्थानपर स्मरण नहीं करोगे १२ हे राजा पाप कर्मी अश्वत्थामाके हाथसे सोनेवालों केमारनेसे शोक मुझको ऐसे तपाताहै जैसे कि स्थानको अग्निसंतप्त करताहै १३ अब जो युद्धमें तेरे हाथसे उसपापकर्मी अश्वत्थामाका उसके साथियोंसमेतजीवन हरण नहीं कियाजाताहैतो इसीस्थानपर शरीर त्यागने केनिमित्त आसन बिछाकर बैठूंगी हे पांडव जो अश्वत्थामा इसदुष्टकर्मकेफल को नहीं पाताहै तो निश्चय इसी मेरीबात कोजानो १४।१५ इसके पीछे वह द्रुपदकी पुत्रीयशवन्ती कृष्णा धर्मराज युधिष्ठिर से ऐसा कहकर आसनपरबैठगई १६ उसधर्मात्मा राजर्षि पांडवने उससुन्दर दर्शन प्यारी पटरानी द्रौपदीको शरीर त्यागने के निमित्त आसनपर बैठाहुआ देखकर यहउत्तरदिया १७ कि धर्मों कोजानने वाली शुभ द्रौपदी वह तेरेपुत्र और भाईधर्म रूपमरण को प्राप्तहुयेउनका शोच करनातुमको योग्य नहीं है १८ हे कल्याणी वह अश्वत्थामा यहांसे दुर्गम्यदूर बनको गया हे शोभायमान तुम युद्धमें उसके मरनेको कैसेजानोगी १९ द्रौपदी बोली कि मैंने शरीरकेसाथ उत्पन्न होनेवाला मणि अश्वत्थामा केशिरपर सुनाहै युद्धमेंउसपापी को मारकर लाये हुये उसमणिको देखूंगी २० हे राजा उसको आपके शिरपरधारण करके जीऊंगी यह मेरामतहै वहसुन्दर दर्शन द्रौपदी राजासे इस प्रकारकहकर २१ फिर भीमसेन केपासआकर उत्तम बचनको बोली हे समर्थ तुम क्षत्रीधर्मको स्मरणकरते हुये मेरी रक्षाकरनेके योग्य हो २२ उस पापकर्मीको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने शम्बरको मारा था यहांकोई दूसरापुरुष आपके पराक्रमके समाननहींहै २३ सब लोकों में सुनागया है कि जिस प्रकार बारणावत नगर के मध्यमें महाआपत्ति में तुम पांडवों के रक्षक हुये २४ उसीप्रकार हिडम्ब राक्षसके देखनेमें तुमगतिहुये इसीप्रकार बिराटनगर में कीचक के

भयसे पीड़ामान मुझकोभी तुमने दुःखसे ऐसे छुटाया २५ जैसेकि पुलोमकी पुत्री इन्द्राणी को दुःखसे छुटाया था हे पांडव जैसे कि पूर्वसमयमें तुमने इनकर्मोंको किया है २६ उसीप्रकार उसमारने वाले अपने शत्रु अश्वत्थामा को मारकर सुखीहो उसके बिलाप कियेहुये बहुत प्रकारके दुःखको सुनकर २७ बड़ेबलवान् पांडव भीमसेननेनहींसहा और स्वर्णमयीबड़े उत्तम रथपर सवारहुआ२८ बाणप्रत्यंचा समेत सुन्दर जड़ाऊ धनुषको लेकर नकुलको सारथी करके अश्वत्थामा के मारनेमें प्रवृत्त होनेवालेने २९ बाणसमेत धनुषको टंकारकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया हेपुरुषोत्तम वह सधेहुये बायुके समान बेगवान्३०शीघ्रगामी हरिजातके घोड़े तीव्रतासे जल्द चलदिये वह अजेय महापराक्रमी भीमसेन अपने डेरेसे रथके चिह्नको लेकर तीव्रता से अश्वत्थामा के रथकी ओर शीघ्रचला ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिएकादशोऽध्यायः११ ॥

बारहवां अध्याय॥

बैशंपायन बोलेकि उसअजेय भीमसेनके प्रस्थान करनेपरयादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरसे बोले १ हेपांडव पुत्र केशोकसे पर्यायहतेरा भाई युद्धमें अश्वत्थामाके मारनेका अभिलाषी अकेलाही दौड़ताहै २ हेभरतर्षभ यहभीमसेन सबभाइयोंसे अधिक तुमको प्याराहै अबतुम उस आपत्तिमें फंसेहुयेको क्योंनहीं रक्षाकरतेहो ३ मेरी बड़ीगुप्तबातको सुनो और सुनकर फिर कर्मको करो जबशत्रुओंकेपुरके बिजय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने जोउस ब्रह्मशिरनाम अस्त्रका पुत्रको उपदेशकिया जोपृथ्वीकोभी भस्मकरसक्ता है ४।५सब धनुषधारियोंकेध्वजारूप महात्मा महाभाग प्रसन्नचित्त आचार्य्यजीने वह अस्त्र अर्जुनको बतलाया क्रोधयुक्तअकेले पुत्रने भी इसअस्त्रको चाहा ६ जो कि उससे अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहींथे इसहेतुसे उन्होंने उस दुर्बुद्धी पुत्रकी चपलता जानकर सिखलाता

दिया ७ परन्तु सर्वधर्मज्ञ आचार्य्यजीने उसपुत्रको शिक्षा पूर्व्वक आज्ञादी कि हेपुत्र युद्धमें बड़ीआपत्तिमें फंसने परभी तुझकोभी ८ यह अस्त्र छोड़नेके योग्यनहींहै और बिशेषकर मनुष्योंके ऊपरतो कभी न छोड़ना यहकहकर फिर पुत्रसे यहबचनकहा ९ कि तुमकभी सत्पुरुषोंके मार्गमें नियत नहींहोगे हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर तबदुष्ट अन्तःकरण वाला पिताके अप्रिय वचनको जानकर १० सब कल्याणोंसे निराशहोकर शोकसे पृथ्वीपरघूमा ११ द्वारकामें आकर यादवोंसे परम पूजित होकर बसा वह एकसमय द्वारकाके सन्मुख समुद्रकेपास निवास करताहुआ अकेलाही हंसकर मुझसेबोला १२ कि हे श्रीकृष्णजी बड़े तपको करते भरतबंशियोंके आचार्य्य सत्य पराक्रमी मेरेपिताने जो उस ब्रह्मशर नाम अस्त्रको जो कि देवता और गन्धर्बोंसे पूजितहै अगस्त्यजीसे पाया १३ । १४ हेश्रीकृष्ण जी अब वह वैसेही मेरेभीपासहै जैसे कि पिताकेपासहै हेयादवोंमें श्रेष्ठ तुम उस दिव्यअस्त्रको मुझसे लेकर १५ मुझको भी वह चक्र अस्त्र दो जो कि युद्धमें शत्रुओं का मारनेवालाहै हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर वह हाथजोड़कर बड़ेउपायपूर्वक मुझसे अस्त्र मांगनेवाला हुआ तब मुझ प्रसन्नचित्त ने उससे कहाकि देवता, दानव, गंधर्व, मनुष्य, पक्षी, सर्प १६ । १७ यह सब मिलकर भी मेरे पराक्रम के सोलहवें भागके समान नहीं हैं यह धनुषहै यह शक्तिहै यह चक्रहै यहगदाहै १८ इनमें से जिसअस्त्रको तुम मुझसे चाहतेहो उसको मैं तुमको देताहूं जिसको तुमउठासक्तेहो और युद्धमें चलाभी सक्ते हो १९ आप जिस अस्त्रको मुझेदेना चाहतेहो उसके दियेहो इनमें से जो चाहो सो लो तब मुझसे ईर्षा करनेवाले उस महाभाग ने सुन्दर नाभि और हजार आरा रखनेवाले बज्रनाम लोहमयीचक्रको मुझसेमांगा तब मैंनेभी उसीसमय कहदिया कि चक्रकोलो २० । २१ तब उसने उठकर अकस्मात् बायें हाथसे चक्रको पकड़लिया परंतु उसको स्थानपरसे हटानेको समर्थ नहीं हुआ २२ फिर दक्षिणहाथ से भी उसको पकड़नाप्रारम्भकिया इसके पीछे अनेक उपायोंसे भी

उसको उठा न सका २३ फिर बड़ा दुःखीचित्त अश्वत्थामा जब कि सबपराक्रम करनेसेभी उसके उठाने और हटानेको भी समर्थ नहीं हुआ २४ और वह उपायोंकोकरके थककर अलगहोगया तब मैंने उस अभिलाषसे चित्त उठानेवाले बिमन२५ और व्याकुल अश्वत्थामासे यहबचनकहा कि जिसगांडीवधनुष श्वेत घोड़े और हनुमान् जीकी ध्वजारखनेवाले अर्ज्जुनने देवता और मनुष्योंके मध्यमें बड़े प्रमाणको पाया और जिसने पूर्व समयमेंसाक्षात् प्रधान देवताओं के ईश्वर शितिकण्ठ उमापति २६।२७ शंकरजी का द्वन्दनाम युद्धमें प्रसन्नकिया उससेअधिक इसपृथ्वीपरमेरादूसराकोईप्रियनहींहै २८ स्त्री और पुत्रादिकभी उसको देनेके अयोग्य नहींहैं हे ब्राह्मणउस सुगमकर्मी मेरे मित्र अर्जुनने भी २९ प्रथम मुझसे यह बचन नहीं कहा जो तुमने मुझसे कहाहै मैंने हिमालय की कुक्षिमें नियत होकर बारहबर्ष बड़ेघोर ब्रह्मचर्य्यको करके तपके द्वारा जिसको प्राप्त किया और जो सदैव ब्रतकरनेवाली रुक्मिणीमें उत्पन्नहुआ ३०। ३१ तेजस्वी सनत्कुमार प्रद्युम्न नाम मेरा पुत्रहै उसने भी इस बड़े दिव्य और युद्धमें अनुपम चक्रकी इच्छा नहीं की ३२ हे अज्ञान जिसको तैंने मांगाहै उसको कभी हमारे बड़े बलदेवजीने भी नहीं मांगाथा जोतैंने मांगाहै वह गद और साम्बनेभी नहींमांगा और अन्य वृष्णी अन्धकवंशी द्वारकाबासी महारथियोंने भी ३३ पूर्वमें इसको कभीनहीं मांगा तुम भरतवंशियोंके आचार्य्यकेपुत्रहो और सब यादवोंसे प्रशंसनीयहो ३४ हे रथियोंमें श्रेष्ठ तात तुम चक्रसे किसके साथ युद्ध करोगे मेरे इस बचनको सुनकर अश्वत्थामाने मुझको यह उत्तरदिया ३५ कि हे श्रीकृष्ण मैं आपका पूजनकरके आपहीके साथ लडूंगा मैंने देवता और दानवोंसे पूजित आपके चक्रकी याचनाकरीहै३६ औरहेसमर्थमैं आपसे सत्य २ कहताहूंकि मैं अजेयहूं हेकेशवजी आपसे दुष्प्राप्य मनोरथको नपाकर चला जाऊंगा ३७।३८ हेगोबिन्दजी आप मुझको कल्याणके साथ नमस्कारकरोतुम्ह उत्तम और अनुपम चक्रवालेने यहभयानक रूपों का

भोभयानक चक्र धारण कियाहै ३९ पृथ्वीपर दूसरा इसको नहीं पासक्ताहै अश्वत्थामा इसप्रकार मुझसे कहकर और समयपरमुझ से घोड़े धन ४० और अनेक प्रकार के रत्नोंको लेकर हस्थिनापुर कोचला गया वह क्रोधयुक्त दुर्बुद्धी चालांक और निर्दयी है और ब्रह्मशर अस्त्रको जानताहै भीमसेन उससे रक्षाके योग्यहै ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणियुधिष्ठिरकृष्णसंवादेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि युद्धकर्त्ताओं में श्रेष्ठ और सब यादवोंके प्रसन्न करने वाले श्रीकृष्णजी इसप्रकार कहकर उस उत्तम रथ पर सवार हुये जो कि उत्तम अस्त्र शस्त्रों से युक्त स्वर्ण मयी मालाधारी काम्बोजदेशी घोड़ोंसे जुड़ाहुआथा और जिसके उत्तमधुरउदय हुये सूर्य्यके स्वरूपथे १।२ शैब्यनाम घोड़ेने दक्षिण चक्रको उठाया और सुग्रीव नाम घोड़ा बाईंओर हुआ और उस रथ के पार्श्ववाहक मेघ पुष्प वलाहक नाम घोड़े हुये ३ विश्वकर्मा के बनाई हुई रत्न और धातु से अलंकृत दिव्य और उन्नत यष्टी रथकी ध्वजापर मायाके समान दिखाई पड़ी ४ प्रकाश मंडलरूप किरण रखने वाले गरुड़जी उसध्वजामें नियत हुये उससत्यवक्ता की ध्वजा गरुड़रूप दिखाई पड़ी ५ उसकेपीछे सब धनुषधारियों की ध्वजा केशवजी सत्यकर्मी अर्जुन और कौरवराज युधिष्ठिररथपर सवार हुये ६ समीप वर्त्तमान दोनों महात्माओंने रथपर सवार शार्ङ्ग धनुषधारी श्रीकृष्णजी को ऐसे शोभायमान किया जैसे कि दोनों अश्विनीकुमारोंने इन्द्रको शोभित कियाथा ७ श्रीकृष्णजीने उनदोनोंको उस पूजितरथपरबैठाकर शीघ्रगामी पनेसे संयुक्त उत्तम घोड़ों को चाबुकसे ताड़ित किया ८ पांडव और यादवोत्तमश्रीकृष्ण जी से सवारी युक्तउत्तम रथको वह घोड़े लेकर अकस्मात् उड़े ९ श्रीकृष्णजीको लेचलनेवाले शीघ्रगामी घोड़ोंके ऐसे बड़े शब्द हुये जैसेकि उड़ते हुये पक्षियों के शब्द होतेहैं १० हे भरतर्षभ उन वेग

वान् नरोत्तमोंनेबड़े धनुषधारी भीमसेनकी ओर चलकर क्षणभरमें हीउसको पाया ११ वह महारथी मिलकर भी उसक्रोध से प्रकाशित और शत्रुसे युद्धकरनेको सन्नद्धभीमसेन के रोकने को समर्थ नहीं हुये १२ वह भीमसेन उन दृढ़ धनुषधारी श्रीमान् भाइयों और श्रीकृष्णजी के देखतेहुये अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा श्रीगंगाजी के तटपर गये १३ जहांपर कि महात्माओं के पुत्रों के मारने वाले अश्वत्थामा सुनेगये थे उस भीमसेनने जलके समीप महात्मायशवान् १४ व्यासजी को ऋषियों समेत बैठाहुआ देखाऔर उस निर्द्दयकर्मी घृत से मर्द्दित शरीर बड़े चीरधारी १५ धूलसे लिप्त शरीर अश्वत्थामाकोभी समीप बैठाहुआ देखा वह कुन्तीका पुत्र महाबाहु भीमसेन धनुषबाणको लेकर उसके सन्मुख दौड़ा १६ और तिष्ठ २ बचन कहा वह अश्वत्थामा धनुषधारी भीमसेनको देखकर १७ और पीछे श्रीकृष्णजीको रथपर नियत दोनों भाइयों को देखकर चित्तसे पीड़ितहुये और मृत्युको वर्त्तमान जाना १८ उस महासाहसी ने उस दिव्य महाउत्तम अस्त्रको स्मरणकिया और बायेंहाथसे एक सींकको पकड़ा १९ और उस आपत्तिको प्राप्त होकर दिव्य अस्त्रको पढ़ा और दिव्य शस्त्र धारण करनेवाले उन शूरोंको नसहकर उन अश्वत्थामाजीने २० क्रोधसे भयकारी वचन को कहा कि यह अस्त्र मैं पांडवोंके नाशकेनिमित्त छोड़ताहूं हेराजेन्द्र प्रतापवान् अश्वत्थामाने यह कहकर २१ सब लोकके बड़े मोहके निमित्त उस अस्त्रको छोड़ा इसके पीछे उस सींकमें काल और यम राजके समान तीनों लोकोंको भस्म करनेवाली अग्नि उत्पन्न हुई २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिऐषिकेब्रह्मशिरोस्त्रत्यागेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय॥

बैशंपायन बोले कि महाबाहु श्रीकृष्णजीने प्रथमहीसे उस अश्वत्थामाके उस मनके बिचारको जानकर अर्जुन से कहा १ कि

हेपाण्डव अर्जुन जो द्रोणाचार्य्य का उपदेशकिया हुआ वह दिव्य अस्त्र वर्त्तमानहै उसकायह समय वर्त्तमान हुआहै २ हे भरतवंशी तुमभी इस युद्धभूमिमें अपनी और अपने भाइयों की रक्षाके लिये अस्त्रके रोकनेवाले उस अस्त्रको छोड़ो ३ इसके पीछे शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला और केशवजीसे इसप्रकार कहा हुआ पाण्डव अर्जुन धनुष बाणको लेकर शीघ्रही रथसे उतरा ४ वह शत्रुओंका तपानेवाला प्रथम गुरुपुत्रके लिये फिर अपने और सब भाइयोंके अर्थ भला होय यह कहकर ५ देवता और सब गुरुओंके अर्थ नमस्कार करके शिवजीको ध्यान करतेहुये अर्जुनने उस अस्त्रको छोड़ा और कहा कि अस्त्रसे अस्त्रशान्त होय ६ इसकेपीछेअकस्मात् गांडीव धनुषधारी से छोड़ा हुआ और प्रलय कालकीअग्निके समानवह प्रकाशित अस्त्र ज्वलित रूप हुआ ७ और उसीप्रकार बड़े तेजस्वी अश्वत्थामा काभी वह अस्त्र ज्वलित रूप हुआ जो कि तेजमण्डल से युक्त बड़ी ज्वाला रखनेवाला था ८ परस्पर बायुके संघट्टनों वे वड़े शब्द हुये हजारों उल्कापातहुये और सब जीवोंको बड़ाभय उत्पन्नहुआ ९ शब्दायमान आकाश ज्वाला मालाओंसेबहुतब्याप्त हुआ पर्वतबन और वृक्षोंसमेतपृथ्वी कंपायमान हुई १० इसप्रकार वह दोनों प्रकाश लोकोंको तपातेहुये नियतहुये तबवहां उनदोनों महर्षियोंने एकसाथ दर्शन दिया ११ सबजीवों के आत्मारूप नारदजी और भरतवंशियोंके पितामह ब्यासजी यहदोनों महात्मा वीर अश्वत्थामा और अर्जुनके शान्त करनेको उपस्थितहुये १२ सब धर्मोंके ज्ञाता औरसबजीवोंके हितकारी बड़े तेजस्वी वहदोनों मुनिबड़े प्रकाशित उनदोनों अस्त्रोंके मध्यमें नियत हुये १३ उससमय वह अजेय यशवान् और अग्निके समान प्रकाशित दोनों उत्तम ऋषि वहां जाकर नियतहुये १४ वह जीवमात्रों से अजेय देवता औरदानवोंके अंगीकृत दोनों ऋषिलोकोंकी वृद्धिकी इच्छासे अस्त्रों का तेजशान्त करतेहुये मध्यमें नियत हुये १५ और बोले कि नाना प्रकार अस्त्रोंके ज्ञाता सब महारथी औरजो पूर्व समयमेंभी उत्पन्न

हुये उन्होंने भी इस अस्त्रको कभी किसी मनुष्य पर नहीं छोड़ा हे वीरलोगो तुमने इस बड़े बिनाशकारी साहसको क्यों किया १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिऐषिकेअर्जुनास्त्रत्यागेचतुर्द्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हे नरोत्तम शीघ्रता करनेवाले अर्जुनने अग्निके समान प्रकाशित उनऋषियोंको देखकर दिव्यबाणको संहार कर लिया अर्थात् लौटालिया १ हेभरतर्षभ तब वह अर्जुन हाथ जोड़ कर उनऋषियोंसे बोला कि मैंने यहसमझकर अस्त्रको प्रकटकिया है कि यह अस्त्र इस अस्त्रसे शांतहोय २ इस उत्तमअस्त्रके लौटआने पर निश्चय करके पापकर्मी अश्वत्थामा इस तेज अस्त्रसे हम सब को भस्मकरेगा ३ यहां पर सदैव हमारा और लोकोंका जोहितहै उसको देवता रूप आपलोग उसीप्रकारसे अंगीकार करनेके योग्य हो ४ अर्जुनने इस प्रकारसे फिर अस्त्रको लौटाया युद्धमें देवताओं से भी उसका फिर लौटाना कठिन है ५ पांडव अर्ज्जुनके सिवाय युद्धमें साक्षात् इन्द्रभी उसछोड़े हुये परम अस्त्रके लौटाने को समर्थ नहींहै ६ ब्रह्मचारी का ब्रत रखनेवाले पुरुषके सिवाय ब्रह्म तेजसे उत्पन्न छोड़ाहुआ अस्त्र अजितेन्द्रीसे कभी लौटानेके योग्यनहींहै ७ ब्रह्मचर्य्य न करनेवाला जो पुरुष अस्त्रको छोड़कर फिर लौटाताहै वह अस्त्र साथियों समेत उस छोड़नेवालेके मस्तकको काटताहै ८ ब्रह्मचारी ब्रत करनेवाला और बड़े दुःखसे पीड़ामान अर्जुननेभी उस दुष्टआचारको पाकर उस अस्त्रको नहींछोड़ा ९ पांडव अर्जुन सच्चा ब्रत करनेवाला शूर ब्रह्मचारी और गुरुभक्तथा इस हेतुसे उसने उस अस्त्रको फिर लौटालिया १० इसकेपीछे अश्वत्थामाभी अपने आगे नियत हुये दोनों ऋषियों को देखकर अपने बलसे उस घोरअस्त्रके फिर लौटानेको समर्थ नहींहुआ ११ युद्धमें उस परम अस्त्रके लौटानेमें असमर्थ बड़े दुःखीचित्त अश्वत्थामाने व्यासजीसे कहा १२ कि हेमुनि बड़ी आपत्तिसे पीड़ामान और प्राणोंकी रक्षा

का अभिलाषीहोकर मैंने भीमसेनके भयसे उस अस्त्रको छोड़ा १३ हे भगवन् दुर्योधनके मारनेके अभिलाषी और दुराचारी इसभीमसेनने युद्धमेंअधर्मकिया १४हेब्राह्मण इस हेतुसे मुझ अज्ञानीने इस अस्त्रको छोड़ाहै अब फिर उसकेलौटानेको उत्साह नहीं करताहूं १५ हेमुनि मैंनेपांडवोंके नाशके अर्थ ब्रह्मतेजको धारणकरके इसकठिनतासे सहनेकेयोग्य अस्त्रको छोड़ा १६ यह अस्त्र पांडवोंके नाशके लिये बहुतहै अब यह अस्त्र सब पांडवोंको जीवनसे रहितकरेगा १७ हेब्राह्मण क्रोधसे पूर्णचित्त और युद्धमें पांडवोंके मारनेके अभिलाषी मुझ अस्त्र छोड़नेवालेने यह पाप किया १८ व्यासजी बोले हे तात बुद्धिमान् पांडव अर्जुननेयुद्धमें जो ब्रह्मशरनामअस्त्र छोड़ावह क्रोधसे छोड़ा तेरे नाशकेलिये नहींछोड़ा १९ युद्धमें तेरे अस्त्रको अपने अस्त्रसे शान्तकरने के अभिलाषी अर्जुनने यह अस्त्र छोड़करभी फिर लौटालिया २० यह महाबाहु अर्जुन तेरेपिताके उपदेशसे ब्रह्म अस्त्रकोभी पाकर क्षत्रीधर्मसे कंपायमान नहींहुआ२१इसप्रकारधैर्यवान्साधूसबअस्त्रोंके ज्ञाता सत्पुरुषइसअर्जुनका मारनाभाईबंधुओं समेत किसलियेतुमकरना चाहतेहो२२जिसदेशमें ब्रह्मशर अस्त्रपरम अस्त्रके द्वारा दूरकिया जाताहै उसदेशमें बारहवर्षतक इन्द्रजलको नहीं बरसाताहै अर्थात् बारहवर्षका दुर्भिक्ष पड़ताहै २३ महाबाहु समर्थ पांडव संसारके जीवमात्रोंकी वृद्धिकी अभिलाषासे इसीनिमित्त उसअस्त्रको अपनेअस्त्रसे दूरनहीं करता २४ पांडवदेश और तुमभी सदैव रक्षाके योग्यहो हेमहाबाहु इसहेतुसे तुमइसदिव्य अस्त्रको लौटाओ २५ तेराक्रोध दूरहोय और पांडवोंकी कुशल होय यहराजऋषि पांडव अधर्मसे बिजय करना नहींचाहताहै २६ अबतुम उस मणिको देदो जोतेरे शिरपर नियतहै पांडव उसको लेकर तुझको प्राणदान देंगे २७ अश्वत्थामा बोले कि पांडवोंने जो रत्न और कौरवोंने जो अन्य धन इस लोकमें प्राप्तकिया उन्होंसे यह मेरा मणि पृथक्है २८ जिसको बांधकर किसी दशामेंभी शस्त्र रोग और क्षुधा सम्बन्धी कोई भय नहीं होताहै इस बांधनेवाले

को देवता दानव और सर्पोंसेभी भय नहींहै २९ न राक्षसोंके समूहों का और न चोरोंका भयहै इसप्रकारसे यह उत्तम मणिहै और किसी दशामेंभी मुझसे त्यागकरनेके योग्य नहींहै ३० और जो भगवान ने मुझको आज्ञा करीहै वह शीघ्रही मुझको कर्त्तव्यहै यह मणिहै यह मैंहूं परन्तु यह सींक ३१ पांडवोंके गर्भोंपर गिरेगी क्योंकि यह उत्तम अस्त्र सफल है हे भगवान इस प्रकट होनेवाले अस्त्रको मैं फिर नहीं लौटा सक्ताहूं३२ मैं इस हेतुसे इसअस्त्रको पांडवोंके गर्भों पर छोड़ताहूं हेमहामुनि आपकेबचनोंको अवश्य करूंगा३३ व्यास- जी बोले हे निष्पाप इसीप्रकारकरो तुमको दूसरी बुद्धि न करना चाहिये इस अस्त्रको पांडवोंके गर्भोंपर छोड़कर युद्धसे निवृत्तहो३४ बैशंपायन बोले इसके पीछे अश्वत्थामाजीने व्यासजीके बचनको सुनकर युद्धमें सन्नद्ध परम अस्त्रको गर्भोंपर छोड़ा ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिऐषीकेब्रह्मशिरोस्त्रस्यपांडवेयगर्भप्रवेशनेपंचदशोऽध्यायः१५

सोलहवां अध्याय॥

बैशंपायन बोले तब श्रीकृष्णजी पापकर्म करनेवाले अश्वत्थामा केछोड़ेहुये उसअस्त्रको जानकर प्रसन्न होकर अश्वत्थामासे यहब- चनबोले१ किपूर्वसमयमें नियमवान ब्राह्मणने बिराटकीपुत्री अर्जुन की पुत्रबधू उत्तराको जोकि उपप्लव्य स्थानपर वर्त्तमानथी उससे यहकहा २ किकौरवोंके नाशमान होनेपर तेरापुत्र होगा इसगर्भ- स्थ बालकका इसीहेतुसे परीक्षित नामहोगा ३ उससाधूका यह बचनसत्यहोगा परीक्षितपुत्र फिरउन्होंके बंशका चलानेवालाहो- गा ४ तबअत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने यादवोंमें अत्यन्तश्रेष्ठइस प्रकारकहनेवाले गोबिंदजी कोयहउत्तरदिया ५ हे कमललोचनकेश- वजी यहइस प्रकार नहींहै जैसेकि तुमने पक्षपाती होकर यहबचन कहाहै मेराबचन मिथ्यानहींहै ६ हेश्रीकृष्णजी मेराचलाया हुआ वहअस्त्र उसउत्तराके गर्भपर गिरेगा जिसको कितुमरक्षाकिया चाह- तेहो ७ श्रीभगवान बोले कि उसपरम अस्त्रका गिरना सफलहोगा

औरमराहुआ गर्भजीकर बड़ी अवस्थाको पावेगा सबऋषिलोगतु-
झको नीचपुरुष पापी और बारम्बार पापकर्मवाला और बालकके जी-
वनका नाशकरनेवाला जानेंगे ८। ९ उसकारणसे तुमइसपापकर्मके
फलको पाकर तीनहजारदिव्यबर्षतक इसपृथ्वीपर घूमोगे १० तुमए-
काकी कहीं कुछ न पाते और कभी किसी के साथपरस्पर वार्त्तालाप न
करते निर्जन देशोंमें घूमोगे ११ हेनीचतेरा निवास मनुष्योंमेंनहीं
होगा पीब और रुधिरकी गन्धिसेयुक्त दुर्गम्य महावनोंमें निवास
करेगा १२ पापात्मा और सबबीमारियोंसे संयुक्त होकर घूमेगाशू-
रपरीक्षित अवस्था औरवेदव्रतको पाकर १३ कृपाचार्य्यसे सबअ-
स्त्रोंको पावेगा फिर परमअस्त्रोंको पाकर क्षत्रीव्रतमें नियत १४ ध-
र्मात्मा साठबर्षतक सृष्टिकी रक्षाकरेगा इसकेपीछे वहमहाबाहुकौ-
रवराजहोगा १५ हेदुर्बुद्धीतेरे देखते परीक्षित नामराजा होगा मैं
उसशस्त्रकी अग्निसे भस्महुये कोअपने तेजसे जिलाऊंगा हेनीच
मेरेसत्य और तपकेबलको देखो १६ व्यासजीबोले जोतुमने हमको
अनादर करके यहभयकारी कर्मकिया और तुझसत्पुरुष ब्राह्मणका
ऐसा चलनहुआ इनदोनों कारणोंसे श्रीकृष्णजीने जो श्रेष्ठ बचन
कहाहै निस्सन्देह वहीदशातेरी होनेवालीहै तुम क्षत्रीधर्ममें नियत
हो १७।१८ अश्वत्थामा बोलेहे ब्राह्मणमैं इसलोकके मनुष्योंमें आपके
साथ नियतहूंगा यहभगवान् पुरुषोत्तम सत्यबक्ताहैं १९ बैशंपायन
बोले कि फिरउदासमन होकर अश्वत्थामा महात्मापांडवोंको मणि
देकरउनसबकेदेखतेहुये वनकोगये२० और जिनकेशत्रु मारेगये वह
पांडव गोबिंदजी औरव्यासजी महामुनि नारदजीको आगेकरके २१
और अश्वत्थामाकेशरीरकेसाथ उत्पन्नहोनेवालीमणिको शीघ्रही उस
मनस्विनी और शरीर त्यागनेकेनिमित्त नियम करनेवाली द्रौपदीकी
ओरदौड़े २२ वैशंपायनबोले कि इसके अनन्तर वह पुरुषोत्तम पांडव
श्रीकृष्णजीसमेत वायुकेसमान शीघ्रगामी उत्तमघोड़ोंके द्वारा फिर
डेरेको गये २३ आपपीड़ामान औरशीघ्रता करनेवाले महारथियोंने
रथोंसे उतरकर प्रसन्नमन वाली द्रौपदीको पीड़ामानदेखा २४ वह

पांडव केशवजी समेत उस अप्रसन्न और दुःखशोकसे युक्त द्रौपदी केपासजाकर उसको घेरकर बैठगये २५ इसकेपीछे राजाकी आज्ञानुसार महाबली भीमसेनने उस दिव्यमणिको दिया और मणि देकर यहबचन कहा २६ हेकल्याणिनी यहतेरा मणिहै और वह तेरे पुत्रोंका मारनेवाला बिजयकियागया शोकको छोड़कर उठोऔर क्षत्रीधर्मको स्मरणकर २७ हेश्यामलोचन सन्धिके अर्थ बासुदेव जीके यात्राकरनेपर तुमने जो यहबचन उन श्रीकृष्णजीसे कहेथे कि हे गोबिंदजी राजाको सन्धिका अभिलाषी होनेपर मेरे पतिपुत्र भाई औरतुम चारोंमेंसे कोईनहींहै। २८।२९ तुमने क्षत्रीधर्मके योग्य बीरताके बचन पुरुषोत्तमसे कहेथे उनके स्मरण करनेको योग्य हो ३० राज्यका शत्रुपापी दुर्योधन मारागया मैंने उस कटे हुये दुश्शासनका रुधिरपिया ३१शत्रुताकीअऋणताको पायाहम बार्त्तालाप करनेके अभिलाषी पुरुषोंकी निन्दाके योग्यनहीं हैं अश्वत्थामा पराजित होकर ब्राह्मणबर्णकी वृद्धतासे छोड़ागया ३२ हेदेवी उसकाजो पतितता प्राप्तहुआ शरीरशेषहै उसको मणिसे जुदाकिया और उसके सबशस्त्रभी पृथ्वीपरगिरपड़े ३३ द्रौपदी बोली हेनिर्दोष मैंने अऋणता कोपाया गुरुका पुत्रमेरा गुरुहै हेभरतबंशी राजा युधिष्ठिर इसमणिको शिरपर बांधो तबराजा युधिष्ठिरने यहसमझकर कि गुरुपुत्रको धारणकी हुई यह बस्तु है और द्रौपदी का बचनहै ऐसाजानकर उसमणिकोलेकर शिरपरधारणकिया३४।३५ इसके पीछे दिव्यमणि को धारण करता हुआ प्रभु राजायुधिष्ठिर चन्द्रमासे युक्त पर्व्वतके समान शोभायमान हुआ ३६ फिरपुत्रों के शोक से पीड़ित मनस्विनी द्रौपदी उठखड़ी हुई और महाराजधर्मराजनेभी श्रीकृष्णजी से पूछा ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सत्तहवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि जोरात्रि के युद्धमें उनतीनों रथियोंके हाथसे सबसेनाके लोगोंके मरने पर शोचकरते हुये राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा १ कि हेश्रीकृष्णजी इस पापीनीच और निष्फल कर्म वाले अश्वत्थामा के हाथसे मेरेसब महारथीपुत्र कैसे मारेगये २ उसीप्रकार अस्त्रज्ञ महापराक्रमी लाखों से युद्ध करनेवाले द्रुपदके पुत्र अश्वत्थामा के हाथसे गिराये गये ३ बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्यने जिसके युद्धमें मुखनहींकिया उसरथियों मेंश्रेष्ठ धृष्टद्युम्नको उसने कैसे मारा ४ हे नरोत्तम उसने इस प्रकार का कौनसा योग्य कर्मकिया जो अकेले गुरुपुत्रने हमारेसब पुत्रादिकोंको युद्धमें मारा ५ श्रीभगवान बोले कि निश्चय करके अश्वत्थामा उस अविनाशी शिवजीके चरणमें गयाजोकि बड़े देवताओंके ईश्वरों काभी ईश्वरहै उस हेतुसे अकेलेने बहुतोंकोमारा६ महादेवजीप्रसन्न होकर देवभागकोभी देसक्तेहैं और उस पराक्रमकोभी वहगिरीश देसक्ताहै जिसके द्वारा इन्द्रकोभी नाशकरे७ हेभरतर्षभ मैंमहादेवजीको मूल समेत जानताहूं और उनके जो नानाप्रकारके प्राचीनकर्महैं उनकोभी श्रेष्ठ रीतिसेजानताहूं ८ वेदमें लिखाहैकि योगीशोकसे रहित होताहै इसनिमित्त युधिष्ठिर आदिके शोकके निवृत्तकरने को कहते हैं हेभरतवंशी यह शिव सबजीवमात्रोंका आदि मध्य और अन्तहै और सब संसार इसीके प्रतापसे चेष्टाकरता है ९ इस प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति करने के अभिलाषी समर्थ त्रिगुणात्मक ईश्वरने सबके आदि तमोगुण रूप रुद्रजीको देखकर कहाकि जीवोंकी उत्पत्ति में बिलम्ब न करो १० तब बड़े तपस्वी जीवोंके दोष जाननेवाले शिवजीने अंगीकार करके जलमें डूबकर बहुत कालतक तप कियाइसके पीछे ईश्वर ने बहुतकाल पर्य्यन्त उनकी प्रतीक्षा करकेसबजीवों के स्वामी रजोगुणी रूप प्रजापतिको मनसे उत्पन्न किया ११।१२ वह जलमें डूबेहुये शिवजीको देखकर अपने पितासे बोला किजो

मुझसे प्रथम उत्पन्नहोने वाला दूसरा नहींहै इसहेतुसे मैं सृष्टिको उत्पन्न करताहूं १३ ब्रह्माजीने कहातेरे सिवाय दूसरा पुरुष प्रथम सृष्टिनहींहै यह शिवजी जलमें डूबेहुयेहैं बिश्वास करनेवाली सृष्टि को उत्पन्न करो १४ उसने दक्षादि सातप्रजापतियों को उत्पन्न किया और सबजीवोंको भी उत्पन्न किया जिनके द्वारा इस चार प्रकारकी खानवाले जीव समूहोंको उत्पन्न किया १५ हेराजा तब वह सब सृष्टि उत्पन्नहोतेही क्षुधासे महाआर्त होकर प्रजापति के भक्षण करने की इच्छासे दौड़े १६ वह प्रजापति अपनी रक्षाके निमित्तपितामहके पासगया और कहा कि हेभगवान उन लोगोंसे मेरी रक्षाके लिये उनकी जीविका बिचारकरो १७ इसके पीछे पितामहने उनको जीविका के लिये अन्न औषधी और स्थावर जीव दिये और बलवान लोगोंके अर्थ चेष्टा करनेवाले और निर्बल जीवदिये १८ वह उत्पन्न होने वाली सृष्टि जिनके अर्थ अन्न बिचार किया गयाथा अपने स्थानों को गईं हेराजा इसके पीछे अपने उत्पत्तिस्थान माता और पिता आदिक में प्रीति करनेवाले वह प्रजापति लोग वृद्धि युक्त हुये फिर जीव समूहों के वृद्धिपाने और लोकगुरू के भी प्रसन्न होने पर वह महापुरुष जलसे उठे और उन सृष्टियोंकोदेखा १६ । २० बहुतरूप वाली सृष्टिके लोग उत्पन्न होकर अपनेतेजसे वृद्धि युक्तथे तब भगवान रुद्रजी क्रोध-युक्तहुये और अपने लिंगको भी काटकर पृथ्वीपर इस निमित्त गिराया कि यह लिंग अस्तिक्य बुद्धि वाले पुरुषोंको सब सिद्धियों का देनेवाला होगा २१ वह जैसे टूटा उसीप्रकार पृथ्वीपर नियत हुआ बचनोंसे शान्त करते अविनाशी ब्रह्माजी त्रिगुणात्मक ईश्वर करके उनसे बोले २२ हे रुद्रजी बहुत काल पर्य्यन्त आपने जलमें निवास करके क्या किया और किस निमित्त इस लिंगको उखाड़ करपृथ्वीमें नियत कियाहै २३ वह लोक गुरू महा क्रोधित होकर गुरू से बोले कि यह सब सृष्टि उत्पन्न होगई है अबमैं इस लिंग से क्या करूंगा २४ हे पितामह मेरेतप से प्रजाके निमित्त अन्न

प्राप्तहुआ और औषधी सदैव अपनेरूपान्तरको करतीरहैंगी जिस-से कि सृष्टि सदैवहोतीरहै २५ वह बिमन और क्रोधयुक्त बड़े तप-स्वी रुद्रजी इस प्रकारसे कहकर मुंजवत पहाड़केसमीप तप करने को गये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः१७॥

अठारहवां अध्याय ॥

श्रीभगवानबोले कि सतयुगके अन्तहोनेपर विधिके पूजनकरने के अभिलाषी देवताओंने वेदके प्रमाणसे यज्ञको बिचारकिया १ फिर उन्होंने सब साधनोंको धनेशोंको भागके योग्य देवताओंको और यज्ञकी द्रव्योंको कल्पनाकिया२हे राजा मूल समेत रुद्रजीको न जाननेवाले उनदेवताओंने देवता रुद्रजीके भागको विचारनहीं किया ३ अब इस बातको कहतेहैं कि बिना ईश्वरके आराधन किये यज्ञ बिनाशमानहै यज्ञमें देवताओंसेभागका विचार न करने पर साधन अर्थात् यज्ञके नाशकर्त्ता को चाहनेवाले उन रुद्रजीने प्रथम धनुषको उत्पन्नकिया ४ लोकयज्ञ,(अर्थात् सब लोक मुझको साधूजानों इस फलवाला) क्रियायज्ञ, (अर्थात् गर्भाधान संस्कार आदिक रूप) गृहयज्ञ, (अर्थात् स्त्री के साथ होमनेवाली अग्नि-होत्रादिक) पंचभूत नरयज्ञ, (अर्थात् बिषयोंसे उत्पन्न होनेवाला सुख) इन चारप्रकारके यज्ञोंमें यहसब जगत नियत है ५ रुद्रजीने लोकयज्ञ और नरयज्ञोंसे धनुषकोतय्यार किया उनका उत्पन्नकिया हुआ धनुष मापमें पांच हाथहुआ और वही पांच हाथ पांच बिषय हैं तात्पर्य यहहैकि जो ज्ञानीलोकऔर शरीरके अभिमानकात्याग करनेवालाहै उसको उसधनुष से भयनहींहै६ हेभरतवंशी उसधनुष की प्रत्यंचावषट्कार प्रत्येक बासना रूप हुआ यज्ञोंके चारों अंग उसकी दृढ़ता रूपहुये ७ उसकेपीछे क्रोधयुक्त महादेवजी उस धनुष को लेकर वहां गये जहांपर कि देवतालोग यज्ञ कररहेथे ८ उस धनुषउठानेवाले अविनाशी ब्रह्मचारीको देखकर पृथ्वी देवीपीड़ित

हुई और पर्व्वत कंपायमानहुये ६ वायु नहीं चली और वृद्धियुक्त अग्निज्वलितनहींहुई और स्वर्गमें व्याकुलनक्षत्रमंडल भ्रमणाकरने लगे१० सूर्य्य और शोभायमान चन्द्रमंडल भी प्रकाशमान नहींहुये सबआकाश अन्धकारसे व्याप्तहुआ ११ इसके पीछे व्याकुल देवताओंने बिषयों को नहीं जाना तब वह यज्ञ गुप्त हुआ और देवता भयभीत हुये १२ इसके पीछे उन्होंने यज्ञको रुद्रबाण से हृदय पर घायल किया इसके पीछेवह यज्ञमृगरूप होकर अग्नि समेतभाग गया १३ (तात्पर्य्य) (रुद्रनाम अहंकारकाहै जिसयज्ञमें यज्ञमान को यह बिचार होय कि मैं यज्ञ करनेवाला और ज्ञाताहूं वह यज्ञ ब्रह्मज्ञान रूप फलसे रहितहै।) हे युधिष्ठिर फिर वह उसी रूप से स्वर्ग को पाकर आकाशमें शोभायमान हुआ फिर कालात्मा रुद्रजीसे पीड़ा किया हुआ वह यज्ञ फलके भोगके पीछे स्वर्गसे पतित हुआ १४ इसके पीछे यज्ञके भागने पर देवताओं का ज्ञान प्रकट नहीं हुआ और देवताओं के अचेत होनेपर कुछ नहीं जाना गया १५ त्र्यंबक अर्थात् श्रवण मनननिदिध्यासनसे प्राप्तहोनेवाले क्रोध रूप परमेश्वरने सविता अर्थात् यज्ञकरनेवाले के शरीर की भुजाओंको और भगके नेत्रोंको पूषाके दांतोंको पूर्व्वोक्त धनुष की कोटिसे गिराया १६ इसके पीछे देवता और यज्ञोंके सब अंगभागे और कितनेही वहां घूमते हुये निर्जीवके समान हुये१७उनरुद्रजी ने उस सब यज्ञको अंगों समेत भगाकरके हंसकर धनुषकी कोटि को निष्कर्म करके देवताओंको रोका अर्थात् लोक और शरीरकी प्रीतिसे पृथक् किया १८ इसके पीछे देवताओंकी कही हुई वाणी ने उनके धनुषकी प्रत्यंचाको जुदा किया हे राजा फिर प्रत्यंचासे जुदा वह धनुष अकस्मात कुछ चलायमान हुआ १९ इसके पीछे यज्ञ समेत सब देवता उसदेवताओं में श्रेष्ठ और धनुष से रहित ईश्वरकी शरणमें गये अर्थात् चित्तशुद्धीके निमित्त आत्माके आधीनहुये और प्रभुने कृपाकरी २० इसकेपीछे भगवान क्रोध त्रिगुण रूपको समुद्र अज्ञान चित्तमें नियत करके प्रसन्न हुये हे समर्थ वह

क्रोध अकस्मात् अग्नि होकर जलको पानकरताहै २१ हे पांडव फिर भगदेवताके नेत्रोंको औरसबिताकी भुजाओंको पूषनके दांतों को और यज्ञोंको दिया अर्थात् सात्विकयज्ञ जारीहुआ २२ उसके पीछे यह सब जगत फिर स्थिरचित्त हुआ और देवताओंने सब हव्योंको उसका भागनियतकिया अर्थात् सबकर्म ईश्वरार्पणकिये गये २३ हे प्रभु युधिष्ठिर उसके क्रोधयुक्त होनेपर सब संसार व्याकुल हुआ और प्रसन्न होनेपर फिर स्थिरहुआ वह पराक्रमी शिवजी उसके ऊपर प्रसन्नहुये २४ उसकारणसे आपके वह सब महारथी पुत्र और धृष्टद्युम्नके पीछे चलनेवाले बहुत से अन्य २ शूरवीर मारेगये २५ वह चित्तमें नहीं धारण करना चाहिये उसको अश्वत्थामाने नहीं किया अर्थात् सब ईश्वर के आधीन है शोक न करना चाहिये महादेवजीकी प्रसन्नतासे निस्सन्देह शीघ्रतापूर्व-क करनेके योग्य कर्मोंकोकरो २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांबैयासिक्यांसौप्तिकेपर्व्वणिऐषीकेयुधिष्ठिरअर्जुन संवादेअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति सौप्तिक पर्व समाप्तम् ॥

---*---

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने लखनऊ में छपा
दिसम्बर सन् १८८८ ई०

महाभारत भाषा

स्त्रीपर्व

जिसमें

राजाधृतराष्ट्रका विलाप और संजय, विदुर और व्यासका उनको समझाना, जनमेजय और विदुरका वार्त्तालाप, पाण्डवोंसे भयभीत कृतवर्म्मा व कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा का धृतराष्ट्रसे सब हाल कहकर तीनोंका तीनों दिशाओंको भागना और श्रीकृष्णजीका धृतराष्ट्र और गान्धारी को समझाकर उनका कोप शान्त करना, गान्धारी और भीमसेनका वार्त्तालाप और सम्पूर्ण कौरवोंकी स्त्रियोंका मरेहुए पति पुत्रादिकोंको देखकर महा विलाप करना और धृतराष्ट्र का मरेहुए शूरवीरोंको इकट्ठा करके चिता बनाकर दाह करना इत्यादि कथावर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने अपने व्यय से आगरापुर पीपलमण्डी निवासि चौरासिया गौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जीसे संस्कृत महाभारतका यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोकका भाषानुवाद कराया ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा

जनवरी सन् १८८६ ई०

पहलीबार ६००

अथ महाभारत स्त्रीपर्व्व भाषाका सूचीपत्र प्रारम्भः ॥

—※—

इतिस्त्री पर्व्वभाषाका सूचीपत्र समाप्तम्॥

---*---

महाभारतभाषा स्त्रीपर्व्वणि

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाशापमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंबन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्धेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंसुन्दरनारिपर्व भाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ स्त्रीपर्वप्रारम्भः ॥

श्रीनारायण और नरोत्तम नरको और सरस्वतीदेवीकोनमस्कार करके फिर जय नाम इतिहास को वर्णन करताहूं १ जनमेजय बोले कि हे मुनि दुर्य्योधन के मरने और सब सेना के नाशहोजाने पर महाराज धृतराष्ट्र ने सुनकर क्या किया २ उसीप्रकार धर्म्म-पुत्र राजा युधिष्ठिरने औरउनकृपाचार्य्यादिक तीनोंने क्याकिया ३ आपके कहने से अश्वत्थामा का कर्म सुना परस्पर शापदेनेसेपीछे का जो वृत्तान्त संजयने कहाहै उसको आपमुझसे वर्णन कीजिये ४

वैशंपायनबोले कि सौ पुत्रों के मरने पर टूटी शाखाओं के वृक्ष समान दुःखी और पुत्र शोकसे पीड़ामान ५ ध्यान मौनता युक्त चिन्तामें डूबेहुये पृथ्वीके स्वामी महाराज धृतराष्ट्र के पासजाकर संजयने यह बचन कहा ६ हे महाराज क्या शोचतेहो शोकमें सहायता नहीं होसक्तीहै हे राजा अठारह अक्षौहिणी सेना मारी गई ७ अबयह पृथ्वी सेनाके लोगोंसे औरराजाओंसे रहित होकर मित्रोंसे बिहीनहै क्योंकि नाना देशके राजाओंने बहुत दिशाओंसे आकर ८ सबने आपके पुत्रके साथनाशको पाया अब आप अपने पुत्र पौत्र ज्ञाति सुहृद और सब कौरवोंके क्रियाकर्मको कराइये ९ वैशंपायन बोले कि पुत्र पौत्रादिकोंके मरनेसे पीड़ामान बड़ा अजेय धृतराष्ट्र उस शोककारी बचनको सुनकर पृथ्वीपर ऐसेगिर पड़ा जैसे कि बायुसे ताड़ित वृक्ष गिरपड़ताहै १० धृतराष्ट्र बोले कि जिसके पुत्र मंत्री और सब सुहृज्जन मारे गये ऐसा मैं होकर संपूर्ण पृथ्वीपर बिचरूंगा ११ अबकटे पक्षवाले पक्षीकेसमान मुझ वृद्ध दशासे दुर्बल बांधवोंसे रहित के जीवनसे क्या प्रयोजनहै १२ हे महाभाग राज्य सुहृज्जन और नेत्रोंसे रहित मैं ऐसा शोभितनहीं हूंगा जैसे कि बिना किरण वाला सूर्य्य अशोभित होताहै १३ परशुरामजी देवऋषि नारदजी और ब्यासजी इन शुभचिन्तकों के कहे हुये बचनोंको नहीं किया १४ सभाके मध्यमें जो कृष्णजीने मेरेकल्याणका करनेवाला यह बचन कहाथा कि हेराजा शत्रुताको त्यागो और अपने पुत्रको बन्धनमें करो १५ उनके बचनों को भी न करके मैं दुर्बुद्धी अब कठिन दुःखको पाताहूं और धर्म्म से संयुक्त भीष्मजीके भी बचनको मुझ अभागेने नहींसुना राजाओं में दुर्य्योधनका नाश दुश्शासनका मरण कर्णका बिपरीत मरण और द्रोणाचार्य्य रूप सूर्य्य के ग्रहण को सुनकर मेरा हृदय फटता है हे संजय पूर्व्व समय के कियेहुये अपने कुछ पापोंको नहीं जानता हूं १६। १७। १८ जिसके कि फलको अबमैं दुर्भागी भोगरहाहूं निश्चय करके मैंने पूर्व्व जन्मोंमें बड़े २ पाप कियेहैं १९ जिसके

कारण से ईश्वरने मुझको दुःख उत्पन्न करनेवाले कर्म्मोंमें प्रवृत्त किया मेरी अवस्थाका अन्तिम भाग पुत्र पौत्रादिकों का नाश २० और सुहृद बन्धुओंका मरना दैवयोगसेहै दूसरी रीतिसे नहींहै इस लोकमें मुझसे अधिक दुःखी दूसरा कौनपुरुषहै २१ हेतेजव्रत वह सब पांडव लोग मुझको उस ब्रह्मलोकके मिलने और बड़े मार्गमें नियतहुयेको देखेंगे २२ वैशंपायनबोले संजयने उस बिलाप करने वाले और अनेक प्रकारसे शोकके विस्तारकरनेवाले राजाधृतराष्ट्र के शोकका दूरकरनेवाला बचन कहा कि २३ हे राजा शोकको दूर करो तुमनेबहुत से धर्म्मके निश्चय सुनेहैं हे राजाओंमें श्रेष्ठ तुमनेवृद्धोंसे भी अनेक प्रकारके शास्त्र सुनेहैं २४ कि पूर्व समय में पुत्रके शोकसे राजा संजय के पीड़ामान होनेपर मुनियोंने जो कहा और जिसप्रकार तरुणताके अहंकारमें आपके पुत्र दुर्य्योधन के नियत होनेपर ऋषियोंने जो कहा उसको भी सुना २५ जो तुमने वार्त्तालाप करनेवाले अपने शुभचिन्तकों के बचनोंको नहीं अंगीकार किया रोगी और हतबुद्धी होकर तुमने कोई अपना प्रयोजन नहीं किया २६ आपने केवल एक धाररखनेवाली तलवारके समान अपनीही बुद्धिसे सब कर्म किये और बहुधा दुराचारीलोगों को सलाहकारकरने के निमित्त समीपबैठाया २७ दुश्शासन दुर्बुद्धी कर्ण बड़ादुष्टात्मा शकुनी दुर्मतिचित्रसेन और शल्य जिसके मन्त्री हैं २८ जिसशल्यने सब जगत्को भालरूपकिया हेमहाबाहु महाराज भरतबंशी धृतराष्ट्र आपके उसपुत्रने कौरवोंके वृद्ध भीष्मपितामह, गान्धारी, बिदुर २९ द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, श्रीकृष्णजी बुद्धिमान् नारदजी ३० और बड़े तेजस्वी व्यासजी, आदि अन्य २ ऋषियों का भी बचन नहीं किया ३१ जो कि निर्बुद्धी अहंकारी सदैवयुद्धको कहता निर्द यी अजेय पराक्रमी और सदैव अशान्तता से असंतुष्टथा ३२ तुम सदैव शास्त्रज्ञ और शास्त्रके स्मरण रखने वाले बुद्धिके स्वामी और सत्यवक्ताहो ऐसे आप सरीखे बुद्धिमान् सन्तलोग मोहको नहीं पातेहैं ३३ सदैव युद्धको कहने वाले ने

कोई उत्तम और शुभ कर्मनहीं किया सब क्षत्रियों का नाश किया और शत्रुओंका यशबढ़ाया ३४ तुमभी सबके मध्यस्थ हुये परन्तु कोई उचित बातनहीं कही हेअजेय तुमने स्नेह और प्रीतिकीतुला कोसमान नहीं रक्खा प्रारम्भ मेंही मनुष्यको उचित कर्मकरना इस निमित्त योग्यहै जिससे कि भूतकालका प्रयोजन पश्चात्तापसे युक्त न होय३५।३६हेराजा तुमने पुत्रकी प्रीतिसे पुत्रका हित औरप्रिय करना चाहाथा फिर पीछेसे इस दुःखको पाया तुमशोचने के योग्य नहींहो ३७ जो पुरुष केवलशहदको देखकर अपने गिरने कोनहीं देखताहै वहशहदके लोभसे गिरा हुआ ऐसे शोचताहै जैसे कि आपशोचते हैं ३८ शोचता हुआ पुरुष न मनोरथ को पाताहै न फलको पाताहै न कल्याणको पाताहै और न ब्रह्मको पाताहै ३९ जो पुरुष अपनेआप अग्निको उत्पन्न करके बस्त्रसे ढकता और ज-लता हुआ चित्तके दुःखको धारण करताहै वह पंडित नहींहै ४० पुत्रकेसाथ तुम्हारेबचन रूप बायुसे प्रेरित लोभरूपी घृतसेसींचा हुआ यह पांडव रूप अग्नि प्रज्वलितहुआहै ४१ उस अत्यन्तवृद्धि युक्तअग्निमें आपके पुत्र शलभनाम पक्षियोंके समान गिरे तुम बाणोंकी अग्निसे भस्म होकर उनपुत्रोंके शोचकरनेको योग्यनहीं हो ४२ हेप्रभु जोतुम अश्रुपातोंसे लिप्त मुखको धारण करतेहो यह शास्त्रके बिपरीतहै पंडितलोग इसकी प्रशंसा नहीं करतेहैं ४३ निश्च-यकरके यह आंशू अग्निके अणुफुलिङ्गोंके समान मनुष्योंको भस्मकर-तेहैं यहां तुमबुद्धिसे शोकको त्याग करके अपने चित्तको स्वाधीन करो ४४ वैशंपायन बोले कि उस महात्मा संजयसे इस प्रकारबि-श्वास दियागयाइसके पीछे बुद्धिसेयुक्त बिदुरजी यहबचनबोले४५॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय॥

वैशंपायनबोले अमृतरूपी बचनोंसे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्रकोप्रसन्न करते बिदुरजीने जोकहा उसकोसुनो १ बिदुरजीबोले हेराजाउठो

क्योंसोतेहो बुद्धिसे मनको आधीन करो सब जड़ चैतन्य जीवों का यहीनिश्चयहै २ किसब सृष्टिसमूह अन्तमें नाशहोने वालेहैं सब उदयहोनेवाले ऐश्वर्य्य अन्तमें पतनहोनेवालेहैं मिलनेवाले अन्त में जुदेहोनेवालेहैं और जीवनभी अन्तमें मरणरखने वालाहै ३ हे भरतबंशी जबयमराज शूरबीर औरभयभीतोंको आकर्षणकरताहैतो हे क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ फिरवह क्षत्री क्या नहीं युद्धकरतेहैं ४ युद्धको न करतामरताहै और लड़ताहुआ जीवता रहताहै हेमहाराजकालको पाकर कोई उसको उल्लंघन नहींकरता ५ हे भरतबंशी सबजीव प्रारम्भमेंही अभाव रूपहैं मध्यमें भावरूपहैं और मरनेपर अभाव रूपहैं ऐसे स्थानपर कौन बिलापहै ६ शोचता हुआ मृतक के पीछे नहींजाताहै शोचताहुआ मनुष्य नहींमरताहै इसप्रकारलोकमेंकिस निमित्त शोचकरतेहो ७ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ यहकाल नाना प्रकार के सबजीवोंको आकर्षण करताहै कालकाकोई प्याराहै न शत्रुहै ८ हे भरतर्षभजैसेकि बायुसब तृणकी नोकोंको उलटपलटकरताहै उसी प्रकार सबजीवकालके आधीन होतेहैं ९ एकसाथ आनेवाले और वहांजानेवाले सबजीवोंके मध्यमें जिसके आगे काल जाताहै उसमें कौनबिलाप करताहै १० हे राजायुद्धमें मृतकहुये इनबीरों के शोच करनेकोभी योग्यनहींहोइसमें शास्त्रकाप्रमाणहै कि उन्होंनेपरमगति कोपाया ११ सबवेद पढ़नेवाले और सबअच्छे प्रकार से ब्रतकरने वाले यह सब सन्मुख होकर बिनाशवान् हुये इसमें किस बातका बिलाप करनाहै १२ दृष्टिमें न आनेवाले ब्रह्मसे उत्पन्नहुये और फिरउसी दृष्टिमें न आनेवालेको पायायह न आपकेहैं न आपउनके हैंउसमें कैसाबिलापहै १३ मृतकभी स्वर्गकोपाताहै और मरकरभी जिसकोपाताहै हमलोगोंको वहदोनों बहुत गुणवालेहैं युद्धमें नि-ष्फलतानहींहै १४ इन्द्रदेवता उनके मनोरथों के प्राप्त करनेवाले लोकोंको बिचार करेंगे हे पुरुषोत्तम यहसब शूरबीर लोग इन्द्र के अतिथिहोतेहैं १५ मनुष्य दक्षिणावाले यज्ञतप और बिद्यासे उस प्रकार स्वर्गको नहींपातेहैं जैसेकि युद्धमें मृतक उनशूरबीर तेजस्वि-

योंने पायाहै जिन्होंने शरीररूपी अग्नियोंमें बाणरूप आहुतियोंको होमा और परस्पर होमेहुये बाणोंकोसहा १६ । १७ हे राजा इस प्रकार से स्वर्ग के उत्तम मार्ग को तुमसे कहताहूं इसलोक में क्षत्री का कुछ कर्म युद्ध से अधिक नहीं वर्त्तमान है १८ युद्ध में शोभायमान उन महात्मा शूरक्षत्रियोंने बड़े अभीष्ट फलको पाया सबही शोच के अयोग्य हैं १९ हे पुरुषोत्तम तुम ज्ञानसे अपनेको बिश्वास देकर शोच मतकरो शोकसे बिजय किये हुये तुमकरने के योग्य कर्मके छोड़नेको योग्य नहींहो २० हजारों मातापिता और सैकड़ों पुत्रस्त्री संसारमें प्राप्त कियेवहकिसके और हमकिस के २१ प्रतिदिनशोकके हजारोंस्थान और आनन्दके सैकड़ों स्थान अज्ञानमें प्रवेशकरतेहैं २२ हे कौरवोत्तमकालका कोई प्याराहै न शत्रुहै वह काल किसीस्थानपरभी मध्यस्थ नहींहै कालसबको खैंचताहै २३ कालजीवमात्रों को पकाताहै कालही सृष्टिको मारताहै कालही सोनेवालों के मध्यमें जागताहै और कालही दुःखसे उल्लंघन के योग्यहै २४ तरुणाई रूप वृद्धताधन समूह और नीरोगता पूर्वक निवास यह सब बिनाशवान् हैं पंडित इनमें प्रवृत्त नहींहोता है २५ अकेले तुम सब दुनियांभरे के दुःखके शोचने को योग्यनहीं हो जो अभावसे मिलताहै उसका वह फिर लौटकर नहीं आता है २६ जो पराक्रमसे नाशको पावे उसको शोचता हुआ मनुष्यउस की चिकित्साको नहीं करताहै दुःखका यह इलाजहै जो उसको न विचार करे २७ चिन्ता कियाहुआ दूरनहीं होताहै और फिरफिर अधिकबढ़ताहै अप्रियके मिलने और प्रियके बियोगसे २८ वह आदमी बड़े २ चित्तके दुःखसे संयुक्त होतेहैं जोकि निर्बुद्धी हैं यह न अर्थहै न धर्महै न सुखहै जो तुम शोचकरतेहो २९ वह करनेके योग्य प्रयोजनसेजुदा होताहै और धर्म अर्थ काम इनतीनों वर्गोंसे च्युत होताहै मनुष्य अन्य २ मुख्यधनादिक दशाको पाकर ३० इन में असंतुष्ट लोग मोहको पातेहैं पंडित सन्तोषको पातेहैं चित्तके दुःखको ज्ञानसे और शरीरके दुःखको औषधियों से दूर करना

चाहिये ३१ यही ज्ञान की सामर्थ्य है और किसी प्रकार की कोई सामर्थ्य नहींहै पूर्वजन्ममें कियाहुआ कर्म सोतेहुये मनुष्य के साथ सोताहै और बैठनेवाले के पास नियत बैठा होताहै ३२ और दौड़ते हुये के पीछे दौड़ताहै जिसजिस दशामें जिस २ शुभाशुभ कर्मको करताहै ३३ उसीउसी दशामें उस २ फल को पाताहै जोजीव जिस जिस शरीरसे जिस२ कर्म को करताहै ३४ उसी २ शरीर से उस उस कर्मके फलको भोगताहै आत्मासे आत्माही उसका बन्धुहै और आत्माही आत्माका शत्रुहै ३५ आत्माही आत्माके शुभाशुभकर्मों का साक्षीहै शुभकर्मसे सुखको और अशुभकर्मसे दुःखको३६ सर्वत्र पाताहै किसी स्थानमें भी बिनाकिये हुये को नहीं भोगताहै आपकी समान बुद्धिमान् मनुष्य उनकर्मोंमें प्रवृत्त नहींहोते हैं जोकि ज्ञान के बिपरीत बहुतपापरखनेवाले और मोक्षके नाशकरनेवालेहैं ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणि जलप्रदानिकेधृतराष्ट्र विशोकेद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे बड़े ज्ञानी तुम्हारे इन उत्तमवचनोंसे मेराशोक निवृत्तहुआ परन्तु हे निष्पाप मैं मूलसमेत इनबचनोंको फिर सुना चाहताहूं १ पंडितलोग अप्रियके योग और प्यारों के बियोग से उत्पन्न होनेवाले चित्तके दुःखोंसे कैसे छूटतेहैं २ विदुरजी बोले कि जिस जिस उपायसे दुःख अथवा सुखसे भी निवृत होता है बुद्धिमान् मनुष्य उसी उपाय से इस चित्तको स्वाधीन करके शान्ती को पावे ३ हे नरोत्तम यह सबजो ध्यानमें आताहै विना-शवानहै यह संसार केलेके समानहै इसका सार पदार्थ वर्त्तमान नहीं है ४ जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्द्धनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित सोतेहैं ५ उस स्थानपर दूसरे मनुष्य निर्मांस अथवा बहुत अस्थिरखनेवाले अंगनाड़ी और बन्धनोंसे अधिककिस वस्तुको देखतेहैं ६ जो उससमय कुल और रूप बिशेषण को नहीं पावें वह छल करनेवाले मनुष्य किसहेतुसे परस्परइच्छाकरतेहैं ७

पंडितोंने शरीरधारियों के देहोंको गृहोंके समान कहाहै वहकालसे मिलतेहैं अर्थात् नाशको पातेहैं केवल एकजीवात्माही अविनाशी है ८ जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीनकपड़ेको अंगीकार करताहै इसीप्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं ९ हे धृत-राष्ट्र सब मनुष्य अपने कियेहुये कर्मसेमिलनेके योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं १० हे भरतवंशी सब सुख और दुःख अपने कर्मसे प्राप्तहोतेहैं उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्रभी उसभारको उठाताहै ११ और जैसे मट्टीकापात्ररूपको पाकर टूटताहै कोई बनता कोई बनाहुआ १२ अवेपर रक्खाहुआ अथवा अवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्रवशुष्क अथवा पकता हुआ १३ अवेसे उताराहुआ उठाया हुआ अथवाकाममें लायाहुआभी टूटजाताहै इसीप्रकारश-रीरधारियोंके शरीरहैं १४ गर्भमें नियत जन्मलेनेवाला अथवाथोड़ी अवस्थावाली अर्द्धमास एकमास १५ एकवर्ष वा दोवर्षकी अवस्था रखनेवाला तरुण मध्यस्थ और वृद्धभी नाशको पाताहै १६ सब जीव अपने पिछले जन्मोंके कर्मोंसे उत्पन्न होतेहैं और नाशकोपा-तेहैं इस रीतिके स्वाभाविक धर्म रखने वाले लोकमें किस हेतुसे दुःखीहोतेहो १७ हे राजाजैसेकि कोई जीव क्रीड़ाके निमित्त जलमें घूमता हुआ डूबता और उछलताहै १८ इसीप्रकार महर्षीलोग अपने बड़े ज्ञानके द्वारा उसप्रकारके दुर्गम संसारसे पारहुये जोकि डूबना उछलना इनदो गुणोंका रखने वालाहै १९ जो जीवोंकी उ-त्पत्तिके जाननेवाले संसारके अन्तके खोजनेवाले सब ज्ञानीनियतहैं वह परमगतिको पातेहैं २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे वक्ताओंमें श्रेष्ठ किसरीतिसे यह संसाररूपी बनजानने के योग्यहै मैं इसको सुना चाहताहूं आपमुझसे वर्णन कीजिये १ विदुरजी बोलेकि जन्मसे लेकर जीवधारियोंकी सबक्रिया

दिखाई देती हैं इसलोकमें प्रथम कलल अर्थात् एकरात्रि निवास करने वाले गर्भमें जीवात्मा निवास करताहै परन्तु कुछ अन्तरहै अर्थात् प्रतिदिन गर्भकी वृद्धिसे उसकी सामर्थ्य अधिक बढ़तीहै २ इसके पीछे पांचवां मास व्यतीत होनेपर उस चैतन्यका प्रादुर्भाव बिचारकिया अर्थात् एकरात्रि निवासमें चैतन्यकी सत्तामात्र होतीहै परन्तु पांचवें महीनेमें उसका पूर्णप्रादुर्भाव होजाताहै ३ मांस रुधिरसे लिप्त अपवित्र स्थानमें निवास करताहै फिर वह अपानरूप वायुकी तीव्रतासे ऊंचे पैर नीचे शिरवाला ४ योनिके द्वारको पाकर बड़े कष्टोंको पाताहै योनिकी पीड़ा और पिछलेकर्मोंसे युक्त ५ उस द्वारसे छूटकर संसारके दूसरे उपद्रवोंको देखताहै और ग्रह उसके पासऐसे आतेहैं जैसेकि मांसके पास कुत्ते आते हैं ६ हे शत्रुसंतापी इसके पीछे उसीसमय रोग भी उसकेपास आतेहैं इसीसे जीवता हुआ अपने कर्मोंसे पीड़ामानहोताहै ७ हेराजाइंद्रियोंके पाशबंधनोंमें बंधेहुयेसंग और स्वादुसे संयुक्त उस जीवधारीके पास नानाप्रकार के व्यसन अर्थात् आपत्तियां वर्त्तमान होती हैं ८ फिर उन सबसे पीड़ितहोकर वहजीव तृप्तिकोनहींपाताहै इसीसे शुभाशुभकर्मों को करताहै और उनका त्यागनेवाला नहीं होताहै इसीप्रकार जो पुरुष ईश्वरके ध्यानमें प्रवृत्तहैं वह अपने को तबतक चारोंओर से रक्षा करतेहैं जबतक यहजीव मिलनेवाले यमलोकको नहीं जानताहै ९। १० यमदूतोंसे आकर्षित कालसे मृत्युको पाताहै उसमौनका जो पापपुण्यहै वहदूसरेके द्वारा मुखसे किया हुआ होताहै ११ फिर भी बिषयोंमें आसक्त होकर अपनेको पतनहुआ नहीं ध्यान करताहै अर्थात् अपनी परिणाम कुशलताको नहीं पाताहै आश्चर्य्य है कि यह संसारनीच लोभके आधीनतामें वर्त्तमान १२ क्रोध मोह और धनके मदसे अचेतहोकर आत्माको नहीं जानताहै दुष्ट कुलवालोंकी निन्दा करता अपने कुलकी प्रशंसा करता हुआ रमताहै दरिद्रियों कीनिन्दा करता धनके गर्वसे अहंकारी है दूसरोंको मूर्ख कहताहै और अपनेको अच्छीरीतिसे नहींदेखताहै १३। १४ दूसरोंकोशिक्षा

करताहै परन्तु अपनेको शिक्षाकरना नहीं चाहताहै जबज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्द्धनी १५ कुलीन अकुलीन अहंकारी और निरहंकारी भी सबपितृवन अर्थात् यमलोकमें बर्त्तमान बिगतज्वरहोकर सोते हैं १६ और वहांपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मांस बहुत से अस्थिवालेअंग और नाड़ी बन्धनोंसे अधिक कुछनहीं देखतेहैं और जो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पाते हैं १७ जबवह सब भी शरीरत्यागकियेहुये पृथ्वीपर सोतेहैं तब दुर्बुद्धी मनुष्य इसलोकमें किस हेतुसे परस्पर छल कियाचाहतेहैं १८ यह बात देखी और सुनीहै जो इस श्रुतिको सुनकर इस बिनाशमान जीव लोकमें धर्म का पालन करताहुआ १६ जन्मसे लेकर मरण तक कर्म करताहै वह परमगतिकोपाताहै जो कि इसप्रकार सबको जानकर ब्रह्मकी उपासना करताहै २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जो यह दुष्प्राप्य धर्म बुद्धिके द्वारा अच्छे प्रकारसे प्राप्त होताहै इसहेतुसे अब बुद्धिमार्गको ब्यौरेसमेत मुझ से कहो १ बिदुरजी बोले कि इसस्थानपर ब्रह्माजीकेअर्थ नमस्कार करके वह बिषय मैं तुमसे कहताहूं जैसे कि महर्षीलोग इस संसार रूपी घनबनको तरतेहैं २ निश्चय करके इस बड़े संसार में कोई द्विज मांसभक्षीजीवोंसे पूर्ण उस दुर्गम्यवनमें पहुंचा जो कि बड़े शब्दवाले भयानकरूप मांसभक्षी महा भयकारी सिंह ब्याघ्र हाथी और रीछोंके समूहोंसे ३।४चारोंओरको ब्याप्त मृत्युकाभी भयकारी था उसको देखकर इसका हृदय महा ब्याकुल हुआ ५ कंप और रोमांचोंसे शरीरब्याप्तहुआ वह उस बनमें अच्छेप्रकार घूमताहुआ इधर उधरको दौड़ा ६ और सब दिशाओंको देखताथा कि मेरारक्षा स्थान कहां होगा इसप्रकार वह भयसे पीड़ामान सिंहादिकके छिद्रोंको देखता भागा ७ वह न तो दूरजाताथा नउनसे बचताथा

इसके पीछे उसने चारोंओरको पाश अर्थात् विषयादिककी बासना से युक्त घोरबनको देखा ८ वह पाश बड़ी घोररूप स्त्रीकी भुजाओं से पकड़ाहुआथा और वह बन पांचशिर रखनेवाले पर्वतोंकेसमान ऊंचे सर्पोंसे ९ और आकाशको स्पर्श करनेवाले बड़े वृक्षोंसे चारों ओरको संयुक्तथा उस बनके मध्यमें एक कूप अंधकारसे पूर्ण १० तृणसे ढकीहुई दृढ़ बल्लियोंसे संयुक्तथा वह द्विजनाम जीव उस गुप्त कूपमें गिरपड़ा ११ और लताओंके फैलावसे पूर्ण उस कूपमें छिप गया अर्थात् अभिमानीहुआ कि यह मेरा स्थानहै जैसे कि वृक्षवंश में उत्पन्न होनेवाला बड़ाफल शाखामें लगाहुआ होताहै १२ उसी प्रकार वह द्विज ऊंचे पैर नीचे शिरवाला होकर उसमें लटका फिर उसी प्रकारसे उसका दूसरा उपद्रवभी उत्पन्नहुआ १३ कि कूपके मध्यमें बड़े बलवान् सर्प को देखा और मुखबंधन कूपके किनारे पर ऐसे बड़े हाथी को देखा १४ जो कि छः मुखवाला और बारह चरण से चलनेवाला, श्वेत श्यामवर्ण क्रमपूर्वक चलनेवाला सैकड़ों वृक्ष और बल्लियोंसे ढकाहुआथा (यहांपर गजको बर्षकीसमाप्ति छः मुखको छः ऋतु और श्वेत कृष्णबर्णोंको दोनों पक्ष बारह चरण को बारहमहीने बल्लीको जीवन और वृक्षको आयुर्दाजानो १५) इसकेपीछे बड़ीशाखाओंपर लटकनेवाले अर्थात् बाल्यतरुण और वृद्धावस्था में लटकते हुये द्विजको जानो नानाप्रकार का रूप रखनेवाले श्वेत वर्ण घोर और बड़े भयके उत्पन्न करनेवाले १६ और प्रथमही घरबनाकर सन्तानके द्वाराबृद्धि पानेवाले भौंरे शहदको इकट्ठा करके निवास करते हैं हे भरतर्षभ वह भौंरे १७ बारम्बार जीवधारियों के स्वादिष्टरसोंकी इच्छा करतेहैं जिन्होंसे बालक आकर्षण किये जाते हैं उनरसोंकी बड़ीधारा सदैव गिरती हैं १८ तब लटकताहुआ वहजीव सदैव धाराओंको पानकरता है संकटमें भी इस पानकरनेवाले की इच्छापूर्ण नहीं हुई १९ वह अतृप्त होकर सदैव बारम्बार उसको चाहता है हे राजा जीवन में उसको अप्रीतिता नहीं उत्पन्नहुई २० उसीमें मनुष्य के जीवन

की आशानियतहै श्वेत कृष्णरंग वाले चूहे अथवा रात्रिदिन उस वृक्षरूपी आयुर्दाको काटतेहैं २१ दुर्गम्य वनकेपास बहुतसे सर्प अर्थात् रोग और बड़ी उग्र स्त्री अर्थात् वृद्धावस्था और कूपकेनीचे सर्प अर्थात् मृत्यु और कूपके मुखपर हाथी अर्थात् पर्णवर्ष २२ और वृक्षके गिरनेसे भयहै और चूहोंसे पांचवां भयहै और शहदकेलोभ से छठे भयको कहाहै २३ इसप्रकार संसारसागरमें पड़ा हुआ यह जीव बर्त्तमानहोताहै और जीवनकी आशामें बैराग्यको नहीं पाताहै २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोलेकि बड़ाआश्चर्य्यहै कि निश्चय बड़ा दुःखहै और उसकी स्थितिभी दुःखरूपहै हे बक्ताओंमें श्रेष्ठ उसने उसकोप्रीति और तृप्तिकिस प्रकारसे है १ वह देशकहांहै जिसमें यह जीवधर्म-संकटमें निवास करताहै और वह मनुष्य उसबड़े भयसे कैसेछूटे-गा २ यह सब मुझसे कहो यह बहुतअच्छाहै तब हम काममेंला-वेंगे निश्चय उसके छुटानेके लिये मेरेऊपर बड़ी कृपाउत्पन्नहुईहै ३ विदुरजी बोले हे राजा मोक्षचाहनेवाले पुरुषोंने यह दृष्टान्तवर्णन कियाहै जिससेकि मनुष्य परलोकमें सुन्दर गतिको पाताहै ४ जो वहमहावन कहाजाताहै वही महा संसारहै और जोयह दुर्गम्यवन है वही संसारघनहै ५ जो सर्प तुमसे कहे वही रोगहैं वहां बड़े श-रीरवाली जो स्त्री निवास करतीहै ६ उसको ज्ञानियोंने वर्णरूपकी नाश करनेवाली वृद्धावस्था कहाहै हे राजा वहां जो कूपहै वह शरीरधारियोंका शरीरहै ७ और जो बड़ा सर्प उस कूपके भीतर निवास करताहै वही कालहै यह सब भूतोंका नाश करनेवाला और जीवात्माओंका हरनेवालाहै ८ और कूपके मध्यमें जो बल्ली उत्पन्नहुई वह मनुष्य उसके बिस्तारमें लटकताहै वही शरीरधारि-योंके जीवनकी आशाहै ९ और कूपके मुखपर जो छः मुखवाला

हाथी वृक्षकी शाखाओंके चारोंओर चेष्टा करताहै वही पूर्णावर्षहै १० उसके छः मुख ऋतु और बारहचरण महीने कहेहैं उसीप्रकार जो चूहे और सर्पवृक्षको काटतेहैं ११ उनको बिचारवान् पुरुषोंने दिन रात्रि कहाहै उसमें जो वह भौंरे हैं वह नाना इच्छाकहीहैं १२ और जो वह शहदकी बहुतसी धारा गिरतीहैं उनको काम रस जानो जिसमें मनुष्य डूबतेहैं १३ जिन्होंने इस प्रकार संसार चक्रकी गतिको जानाहै निश्चय करके वह मनुष्य संसार चक्रके पाशको काटतेहैं १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे महात्मातत्त्वदर्शी आश्चर्य्यहै कि आपने मोक्ष देनेवाली कथाकही उसको आप फिर मुख्यता समेत कहो मैं सुनना चाहताहूं १ बिदुरजीबोले सुनो मैं फिर उस मार्गके क्रमको कहताहूं जिसको सुनकर ज्ञानीलोग संसारों से छूटतेहैं २ हे राजा जैसे कि बड़े मार्गमें नियत मनुष्य जहां तहां थककर निवास करताहै ३ हे भरतबंशी इसीप्रकार अज्ञानी मनुष्यसंसार में सृष्टिरूप गर्भमें बारंबार निवासको करताहै और ज्ञानीलोग शीघ्रजातेहैं ४ इस हेतुसे शास्त्रज्ञलोगोंने इसको मार्ग कहाहै औरजिन ज्ञानियोंने जिससंसारको घनबन कहाहै ५ हे पुरुषोत्तम वह इन स्थावर और जंगमजीवोंका चलायमान चक्रहै पंडित उसकी इच्छा नहीं करता है ६ शरीरधारियोंके शरीर औरचित्तसे संबन्ध रखनेवालेजो रोग हैं उनकोज्ञानी लोग गुप्त और प्रकट रूप सर्प कहतेहैं ७ हे भरतबंशी निर्बुद्धी मनुष्य उन्होंसे दुःखपानेवाले और घायल होकर भी अपने कर्म रूपी सर्पोंसे ब्याकुलता को नहीं पातेहैं हे राजा जब मनुष्य उन रोगोंसे भी छूटताहै तब उस पुरुषको रूपकी बिनाश करनेवाली जराअवस्थादबालेती है ८।९जो कि शब्द, रूप, रस स्पर्श और नानाप्रकारकी गन्धियोंसे भी निराधार बड़ी कीचमें

चारोंओरसे डूबाहुआहै पूर्ण बर्ष छः ऋतु बारह महीने दोनों पक्ष दिनरात और उनकी सन्धियां यहसब क्रम पूर्व्वक उसके रूप और अवस्थाको क्षीणकरतेहैं १०।११ यह कालकी निधिहै दुर्बुद्धी लोग उनको नहीं जानतेहैं सब जीवोंकोउनके कर्मसेईश्वरकालिखाहुआ कहाहै १२ शरीरधारियोंका देहरथहै चिन्ता सारथीहै इन्द्री घोड़े हैं और कर्म बुद्धी उसरथकी बागडोरहै १३ जो पुरुष उन दौड़ने वाले घोड़ोंके पीछे दौड़ताहै वह इस संसारचक्रमें चक्रकी समान घूमताहै १४ जो जितेन्द्री उनकोबुद्धिसे आधीन करताहै वह चक्र केसमान घूमने वाले इस संसार चक्रमें लौटकर नहीं आताहै १५ वह संसारमें भी घूमतेहैं परन्तु घूमतेहुये मोहको नहीं पातेहैं और पर्वप्रकार से घूमताहुआ पुरुष मोह से राज्य पुत्र और सुहज्जनों के विनाश को पाताहै १६ हे राजा जिस दुःख को तुमने पायाहै वही दुःख संसार के घूमनेवालोंके लियेभी उत्पन्न होताहै १७ इस हेतुसे ज्ञानीको उचितहै कि इस संसार से छूटनेका उपायकरे इस में कभी भूल और देर न करनी चाहियेनहींतो सैकड़ों शाखावाला वृक्ष वृद्धिको पाताहै १८ हे राजा जो पुरुष जितेन्द्री क्रोध लोभसे रहित सन्तोषी और सत्यवक्ता है वह शान्तीको पाताहै १९ हे भरतवंशी यह भी कहा है कि पश्चात्ताप करने से दुःख होताहै ज्ञानी बड़े दुःखों की औषधी ज्ञानकोही समझे २० इस लोक में जितेन्द्री मनुष्यबड़ी दुष्प्राप्य ज्ञानरूपी महा औषधीको पाकर दुःखरूपी बड़ेरोगको उससेकाटे २१ घोरदुःखसे वैसेनतो पराक्रम छुड़ाताहै न धन मित्र और सुहृद्गण छुड़ातेहैं जैसेकि जितेन्द्रियात्मा छुड़ाताहै २२ हेभरतवंशी इस कारणसे सबजीवोंकी प्रीतिमें नियत होकर सुन्दरप्रकृतिको पाकर जितेन्द्रीपन त्याग और सावधानीको प्राप्तकर यहतीनों ब्रह्मके घोड़ेहैं २३ हेराजाजो पुरुष मृत्युके भय को त्यागकरके शीतल किरणों से युक्त चित्तरूपी रथपर नियत है वह ब्रह्मलोकको पाताहै २४ और जोपुरुष सबजीवों को निर्भयता देताहैवह सर्वव्यापी परमेश्वरके उसउत्तम स्थानको जाताहै जोकि

मायाकीउपाधियोंसे रहितहै २५ मनुष्य जो निर्भयता देनेसे फलपाता है वहहजारोंयज्ञ और सदैव ब्रतों के भी करनेसे नहींपासक्ताहै २६ जीवोंमें आत्मा से अधिक कोई प्यारा नहींहै हेभरतवंशी सब जीवोंका अप्रिय मरण नामहै इसहेतुसे ज्ञानीको सब जीवोंपर दया करनाचाहिये नानाप्रकारके मोहसेयुक्त अज्ञान के जालसे ढके हुये २७।२८ अल्पदृष्टी निर्बुद्धीमनुष्य जहांतहांघूमतेहैं हेराजासूक्ष्मदृष्टी वाले ज्ञानीसनातन ब्रह्मको पाते हैं २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि राजा धृतराष्ट्र बिदुरजी के इस बचन को सुनकर पुत्रशोक से दुःखी और मूर्च्छामान होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा १ सबबान्धव व्यासजी बिदुरजी संजय अन्य सुहृद द्वारपाल और जो २ उसके अंगीकृतथे उन सबने उस प्रकार पृथ्वीपर पड़े हुये अचेत उसधृतराष्ट्रको देखकर सुखदायी शीतल जलसेछिड़का और पंखोंसे हवाकरी २।३ और उपायों से चैतन्य करतेहुये उन लोगोंने हाथोंसे शरीरको स्पर्शकिया इसकेपीछे उसदशावाले धृतराष्ट्र को बहुत देरतक बिश्वास कराया ४ फिर बहुत देरके पीछे सचेतताको पानेवाला वहपुत्र शोक से युक्त राजा धृतराष्ट्र बहुत देरतक बिलाप करनेवाला हुआ निश्चय करके मनुष्यों में जन्मको और नरलोकोंमें परिग्रहको धिक्कारहै जिससेकि दुःखकामूल वारंबारउत्पन्नहोताहै ५। ६ हेसमर्थपुत्रधनज्ञानवाले और नातेदारोंका भी नाशहोताहै और बिष अग्नि के समान बहुत बड़ा दुःख प्राप्त होताहै ७ जिससे सबअंग भस्म होकर बुद्धि काभी नाश होता है और जिससे भयभीत मनुष्य मरणको बहुत मानताहै ८ सो यह दुःख प्रारब्ध के बिपरीततासे मैंनेपायाहै प्राणत्यागके सिवाय उस के अन्तको अन्य किसीप्रकारसे नहींपाताहूं ६ मैंउसीप्रकारकरूंगा हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ व्यासजी देखो उस धृतराष्ट्रने बड़े ब्रह्मज्ञानी

महात्मा पितासे यहकहकर अचेतताको पाके बड़े शोकको पाया अर्थात् वहराजा धृतराष्ट्रध्यान करताहुआ मौन होगया १०।११ प्रभु व्यासजी उसके उसवचनको सुनकर पुत्रशोकसेदुःखी अपने पुत्रसे यह वचनबोले १२ हेमहाबाहु धृतराष्ट्र जोमैंकहूं उसको सुनो तुम शास्त्रज्ञ और शास्त्रों के स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी और धर्म अर्थमें भी कुशलहो १३ हे शत्रुओं के तपानेवाले तुझसे कोई बात अज्ञातनहींहै हे बड़ेज्ञानी तुम जीवधारियोंकी अनित्यताकोजानते हो हेभरतबंशी इस बिनाशवान् जीवलोकमें बिनाशवान् निवास स्थानके होनेपर जीवन और मृत्युमें किसनिमित्त शोचतेहो १४।१५ हेराजेन्द्र इसशत्रुताकीप्रत्यक्षता आपके दृष्टिगोचरहै कालयोग से आपके पुत्रको कारण बनाकर सबमारेगये १६ हे राजा कौरवों को अवश्य भावी नाश होने परम उन परमगति पानेवाले बीरोंको किसहेतु से शोचतेहो १७ हेमहाबाहुराजा धृतराष्ट्रमैंने और बुद्धिमान् बिदुरनेभी सबप्रकार से सन्धि में उपायकिया १८ बहुत कालतक उद्योग करनेवाले किसी जीवसेभी दैवका रचाहुआ मार्ग मेरे मत से बन्दकरनेके योग्यनहींहै १९ मैंनेअपने नेत्रोंके समक्षमें देवताओं का जो कार्य्य सुनामैं उसको उसीप्रकारसे कहताहूं जिससे तेरी स्थिर बुद्धिहोय २० थकावटसे रहित मैं एक समय बड़ी शीघ्रतासे इन्द्रकी सभामें गया और सब इकट्ठे हुये देवताओंको देखा २१ हे राजा वहां पर मैंने नारदादिक सब देवऋषियों को और पृथ्वीको भी देखा २२ यह सब मिलकर अपने कार्य्यके निमित्त इन्द्रादिक देवताओंके सन्मुख वर्त्तमान हुये तब पृथ्वीने समीप जाकर उन इकट्ठे देवताओंसे कहा २३ कि हे महाभाग देवता लोगो आप लोगोंने ब्रह्मलोकमें जिस मेरे कार्य्य करनेकी प्रतिज्ञाकीहै उसको शीघ्रकरो २४ लोक पूजित बिष्णुजी देवसभामें उसके उस बचन को सुनकर हंसते हुये उस पृथ्वीसे यह बचन बोले २५ धृतराष्ट्र के सौबेटों में बड़ा बेटा दुर्योधन नाम से प्रसिद्धहै वह तेरा कार्य्य करेगा २६ उस राजाको पाकर अभीष्ट प्राप्तकरेगी उसके पीछे

कुरुक्षेत्रमें इकट्ठे होनेवाले और हरुशस्त्रोंसे प्रहार करनेवाले राजा लोग परस्पर मारेंगे हे देवी इसके पीछे युद्धमें तेरे भारकानाश होगा २७।२८ हे शोभामान शीघ्र अपनेस्थानको जावो और सृष्टि को धारणकरो हे राजाओंमें श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र संसार के नाशके कारण से वह तेरा पुत्र २६ कलियुग अंशगान्धारीमें उत्पन्न हुआ था जोकि अशान्त चपल क्रोधका अभ्यासी और दुःखसे पराजय होनेवालाथा ३० दैवयोगसे उसके भाई भी उसी प्रकारके उत्पन्न हुये और मामाशकुनी और बड़ामित्र कर्ण ३१ और बहुतसे राजा लोग संसार के नाशके निमित्त उत्पन्न हुये जैसा राजा उत्पन्न होताहै उसी प्रकारके उसके आदमी भी उत्पन्न होतेहैं ३२ जो स्वामी धर्मका अभ्यासीहोताहै उस दशामें अधर्मभी धर्मताको पाताहै स्वामियों के गुण दोषों से निस्सन्देह उसी प्रकारके नौकर चाकर होंगे ३३ हे राजा तेरे पुत्र दुष्ट राजाको पाकर इस संसारसे गये महाबाहु नारदजी इसप्रयोजनको मुख्यता समेत जानतेहैं ३४।३५ हे भरतबंशी तेरेपुत्र महात्मा पाण्डवहैंवह थोड़ा भी अपराध नहीं करते जिन्होंके हाथसे यह सब संसारमारा गया ३६ तेरा भला होय प्रथमही राजसूययज्ञमें नारदजीने युधिष्ठिरकी सभामें बर्णन कियाथा३७कि हेकुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर कुछकाल पीछे कौरव औरपांडव परस्परसन्मुखहोकर नाशकोपावेंगे जोतेरेकरनेके योग्यहै उसकोकर ३८ तबपांडवोंने नारदजीकेबचनकोसुनकरशोच किया यहदेवताओंकीगुप्त और सनातन बातेंमैंनेतुझसे कहीं३९अब तू अपने प्राणोंपर दया और पाण्डवों पर प्रीतिकर जिससेकिदैवके कर्मकोजानकर तेराशोक दूर होय४०हेमहाबाहु यहबात मैंनेप्रथम हीसुनीथी जोकि धर्मराजके उत्तमराजसूययज्ञमें कहीगईथी४१मुझ- से गुप्त बातके कहनेपर धर्मराजके पुत्रने कौरवों के युद्धहोने में उपाय किये परन्तु दैव बड़ा प्रबलहै ४२ हे राजा कालकी रचीहुई जो सनातन बिधिहै वह इस लोकमें किसी जीवधारी से उल्लंघन करने के योग्य नहींहै ४३ हे भरतबंशी धर्मात्मा आपप्राणियोंकी

गति और अगतियोंकोभी जानकर इनमें अचेत होतेहो धर्मात्मा और बुद्धिमान् ४४ राजा युधिष्ठिर तुमको शोकसे दुःखी और बारंबार अचेत होनेवाला जानकर अपने प्राणोंको भी त्याग करसक्ता है ४५ वह धैर्यवान् सदैव पशुपक्षियों परभी दयाका करनेवालाहै हे राजेन्द्र वह तुझपर कैसे कृपा नहीं करेगा ४६ हे भरतवंशी मेरी आज्ञा से दैवके उल्लंघन न होने से और पाण्डवों की दयासे प्राणोंको धारणकरो अर्थात् जीवतेरहो ४७ इसप्रकार लोकमें तुझ वर्तमान रहनेवालेकी कीर्त्ति होगी और हे तात बड़ा धर्म और बहुत कालतक तपाहुआ तप प्राप्त होगा ४८ हे महाराज ज्वलित रूप अग्निके समान उत्पन्न होनेवाले पुत्र शोकको ज्ञान रूपीजल से शान्त करने के योग्यहो ४९ वैशंपायन बोले कि धृतराष्ट्र उन बड़े तेजस्वी व्यासजीके इस बचनको सुनकर एक मुहूर्त्त अच्छे प्रकार ध्यान करके ५० यह बोला कि हे पितामैं बड़े शोक जालसे कठिन ढका हुआ बारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आता हूं ५१ दैव की आज्ञा से उत्पन्न होनेवाले आपके इस बचन को सुनकर मैं प्राणोंको धारण करूंगा अर्थात् जीवता रहूंगा और शोच करनेमें प्रवृत्त नहीं हूंगा ५२ हे राजेन्द्र सत्यवती के पुत्र व्यासजी धृतराष्ट्रके इस बचनको सुनकर उसी स्थानमें अन्तर्द्धान होगये ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

जन्मेजय बोले हे ब्रह्मर्षि भगवान् व्यासजीके जानेपर राजा धृतराष्ट्र ने क्या किया वह मुझसे कहने को योग्यहो १ उसीप्रकार धर्म्मपुत्र बड़े साहसी राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनों ने क्या किया २ अश्वत्थामाका कर्म्म सुना और परस्पर दिया हुआ शापसुना अब आप उसपूर्ववृत्तान्तको कहिये जिसको संजयनेकहा है ३ वैशंपायनबोले कि दुर्योधनके औरसब सेनाके मरनेपर अचेत

संजय धृतराष्ट्र के पास आये ४ हे राजा सब राजा नाना देशोंसे आकर आपके पुत्रों समेत पितृलोकोंको गये ५ हे भरतवंशी सदैव प्रवृत्त अन्तमें शत्रुता करने के अभिलाषी आपके पुत्रके कारण से सब संसार मारा गया ६ हे राजा पुत्र पौत्र और पिता आदिकजो रणभूमिमेंमरेहैं उनसबके कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो ७ वैशंपायन ोले कि राजाधृतराष्ट्र संजयके उसघोर बचनकोसुनकर निर्जीवके ्मान निश्चेष्टहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ८ सबधर्मोंके ज्ञाताविदुरजी सपृथ्वीपर सोनेवाले राजाके पास आकर इसबचनको बोले ९ हे भरतर्षभ लोकेश्वर राजाधृतराष्ट्र उठो शोचमतकरो सबजीवधारियों की यहीपरमगतिहै १० हे भरतवंशी जीव प्रारंभमें अभाव रूपहै मध्यमें भावरूपहै उसमें क्याबिलाप करनाचाहिये ११ शोचता हुआ मृत्युकोनहींपाताहै न शोचताहुआ मनुष्य मरताहै ऐसे स्वभाव वाले लोकमें किसलिये शोच करतेहो १२ युद्ध न करता मरताहै औरयुद्ध करतानहीं मरताहै हे महाराज कोई जीवकालको पाकर उल्लंघन कर वर्त्तमाननहीं रहता १३ यह काल नानाप्रकारके सब जीवोंको खैंचताहै हे कौरवश्रेष्ठ कालका कोईमित्रहै न शत्रुहै १४ जिसप्रकार वायु सब ओर तृणोंकी नोकोंको तिरं बिरं करताहै उसीप्रकारजीव भी कालके आधीन होतेहैं १५ एक साथ चलने वाले और वहां जानेवाले सबजीवोंके मध्यमें जिसको कालप्राप्त होताहै वहांकौन बिलापहै १६ हे राजा तुम जिन मृतकोंको शोचतेहो वह महात्मा शोचके योग्य नहींहैं वह सब स्वर्गको गये १७ दक्षिणावालेयज्ञतप और ब्रह्मज्ञान के द्वारा उस प्रकार स्वर्गको नहीं पातेहैं जैसेकि शरीर की प्रीति त्यागने वाले शूरबीर पातेहैं १८ सब वेदके जानने वाले अच्छेप्रकार व्रत करने वाले और सब सन्मुख लड़नेवाले शूर मारेगये इससेकौन बिलापहै उनउत्तम पुरुषोंने शूरोंकी शरीररूपी अग्नियोंमें बाणोंकोहोमा और होमेहुये बाणोंकोसहा १९।२० हे राजा इस प्रकारके स्वर्गके उत्तममार्गको तुझसे कहताहूं इसलोकमें युद्धसे विशेष क्षत्रीका कुछ कर्म वर्त्त मान नहींहै २१ उनमहात्मा शूरऔर

युद्धको शोभादेनेवाले क्षत्रियोंने परमगतिको पाया वहसब शोचके योग्य नहींहैं २२ हे पुरुषोत्तम बुद्धिसे चित्तको बिश्वास देकर शोच मतकरो अब शोकमें डूबे हुये तुम करनेके योग्य जल दानादिक क्रियाके त्यागने के योग्य नहींहो २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिजनमेजयविदुरवाक्यंनामनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र बिदुरजीके उस बचनको सुनकर सवारी तैयार करो यहकहकर फिर वचन को बोला १ बधू कुन्तीआदि अन्य सब स्त्रियोंको लेकर गान्धारी समेत सबभरतवं- शियोंकी स्त्रियोंको शीघ्रलावो २ वह धर्मात्मा शोकसे हतचित्त बु- द्धिमान् धृतराष्ट्र बड़े धर्मवान् बिदुरजीसे इस प्रकार कहकर सवारी परसवार हुये ३ पतिके बचनसे चलायमान शोकसेपीड़ितगान्धारी कुन्ती और अन्य सब स्त्रियों समेत वहांगये जहांपर राजा धृतराष्ट्र थे ४ अत्यन्त शोकयुक्त वह स्त्रियां राजाको पाकर परस्पर वार्त्ता- लाप करके चलीं और बड़े उच्चस्वरसे पुकारीं ५ उन स्त्रियोंसेअ- धिक पीड़ामान उन बिदुरजीने आंशुओंसे पूर्णा उन स्त्रियोंको अच्छी रीतिसे बिश्वास कराया और पालकियोंमें बैठाकर बाहरचले ६ इसके पीछे कौरवोंके सबस्थानोंमें बड़ाशब्द उत्पन्नहुआ और सब नगर लड़कोंसे वृद्धोंतक शोकसे पीड़ामान हुआ पूर्व समयमें जो स्त्रियां देव समूहोंसे भी नहीं देखीगईथीं वह सब बिधवा स्त्री अन्य२ मनुष्योंसे भी देखीगईं ७ । ८ शिरकेबालोंको फैलाकर और सुन्दर भूषणोंको उतारकर एक बस्त्र रखने वाली स्त्रियां अनाथके समान बाहरनिकलीं वह स्त्रियां श्वेत पर्व्वतोंके समान गृहोंसे ऐसे निकलीं जैसे कि पहाड़ोंकी गुफाओंसे ऐसी हिरणीनिकलें जिनके कि यूथप हिरण मारेगये हों ९ । १० हे राजा तब उन स्त्रियोंके बड़े२ समूह शोक से पीड़ामान ऐसे चले जैसे कि घोड़ियों के बच्चे मैदान में निकलते हैं ११ भुजाओं को पकड़कर पिता भाई और पुत्रों को

भी पुकारती हुई प्रलयकालीन संसार के नाशको दिखलाने वाली हुई १२ बिलाप करते रोते जहां तहां दौड़ते शोकसे हत ज्ञानउन स्त्रियोंने करनेकेयोग्य कर्मको नहीं जाना १३ पूर्व समयमें स्त्रियों ने सखियों की भी लज्जा को पाया वह एक वस्त्र रखनेवाले बिना परदेवाली स्त्रियां सासोंके आगे २ चलीं १४ हे राजा जिन्होंने बहुत थोड़ेशोकोंमें परस्पर बिश्वासकराया तब उन शोकसे व्याकुल स्त्रियों ने परस्पर देखा १५ उन रोनेवाली हजारों स्त्रियों से घिरा हुआ महादुःखी धृतराष्ट्र नगरसे चलकर शीघ्रही मैदानमेंगया १६ शिल्पी व्यापारी वैश्य और सब कर्म्मों से निर्ब्बाह करनेवाले वह सब राजाको आगे करकेनगरसेबाहर निकले १७ कौरवोंके नाशमें उन पीड़ामान और पुकारने वालोंके बड़े शब्द सब भवनों को पीड़ामान करते प्रकट हुये १८ जैसे कि प्रलयकाल वर्त्तमान होने पर भस्म होने वाले जीवोंका नाशहोताहै उसी प्रकार इस नाश काभी होना जीवोंने माना १६ अर्थात् हेमहाराज इस कौरवोंके नाश होनेपर अत्यन्त व्याकुल चित्त बड़े प्रीतिमान् वह पुरबासी कठिनतासे पुकारे २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिधृतराष्ट्रनिर्गमनेदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि फिर एक कोस जाकर उन कृपाचार्य्य अश्वत्थामा और कृतबर्मा महारथियोंको देखा १ वहशोकके अश्रुओं से पूर्ण कण्ठसे रोदन करते ज्ञानरूप नेत्ररखने वाले अपनेस्वामी राजाको देखतेही बहुत श्वास लेकर यह बचन बोले २ हेमहाराज राजाधृतराष्ट्र आपका पुत्रबड़े कठिन कर्मको करके साथियों समेत इन्द्रलोकको गया ३ हेभरतर्षभ दुर्योधनकी सेनामेंसे हम तीनरथी बचेहैं शेषसब आपकी सेना नाशहोगई ४इसके पीछेशारद्वत, कृपाचार्य्य राजासे यहकहकर पुत्र शोकसे पीड़ामान गान्धारी से यहबचन बोले कि निर्भय युद्धकरने वाले शत्रुओंके बहुतसमूहों

को मारने वाले बीरलोगों के कर्मों को करके उनतेरे पुत्रोंने मरण कोपाया ५। ६ निश्चय करके वह शस्त्रोंसे बिजय किये हुये निर्मल लोकोंको पाकर और प्रकाशमान शरीर में नियतहोकर देवताओं केसमान बिहार करतेहैं ७उनशूरोंमें से कोई शूरबीर मुखफेरनेवाला नहीं हुआ किन्तु शस्त्रोंसे मरणको पाया और हाथ जोड़कर किसी नेभी नाशको नहीं पाया ८ प्राचीन वृद्धोंने इसप्रकार युद्धमें शस्त्रों से क्षत्रीके मरणको परमगति कहाहै उसहेतुसे वह शोच करने के योग्य नहींहैं ९ हेराजा उन्होंके शत्रु पांडव भी वृद्धियुक्त नहीं हैं अश्वत्थामा आदिक हमलोगोंने जो किया उसको सुनो १० अधर्मके साथ भीमसेन के हाथसे तेरे पुत्रको मराहुआ सुनकर हमलोगोंने सोतेहुये लोगोंसे युक्त डेरे को पाकर पांडवीय शूर-बीरों का नाशकिया ११ सबपांचाल जिनका अग्रवर्त्ती धृष्टद्युम्न था उन सबको मारा राजा द्रुपद के और द्रौपदी के सब पुत्रों को भीमारा १२ इसरीतिसे हमयुद्धमें तेरेपुत्रके शत्रु समूहोंकानाशक-रकेभागेहैं इसहेतुसे हमतीनों यहां नियत होनेको समर्थनहींहै १३ वहशूरबीर पांडव महाधनुषधारी क्रोधके आधीन शत्रुताका बदला लेनेके अभिलाषी हमारी खोजमें शीघ्रतासे आतेहैं १४ हे यशस्वि-नी वह पुरुषोत्तम शूर अपनेपुत्रों को मराहुआ सुनकर मतवाले और खोज करनेके अभिलाषी शीघ्रआतेहैं १५ हे राजातुम आज्ञा दो औरबड़े धैर्यमें नियतहो प्रारब्धके अन्तपर होनेवाली मृत्युको और शुद्ध क्षत्रीधर्मकोभी बिचारो १६ हे भरतबंशी कृपाचार्य कृतब-र्मा और अश्वत्थामा इनतीनोंने इसप्रकार राजासे कहकर औरप्र-दक्षिणा करके १७ बुद्धिमान् राजाधृतराष्ट्रको देखते अपनेघोड़ोंको गंगाजीकी ओर चलायमान किया १८ हे राजा तब वह महारथी दूरजाकर परस्पर बिदा होकर व्याकुलचित्त तीनों तीनों ओर को चलदिये १९ उनमेंसे शारद्वत; कृपाचार्य्य हस्तिनापुरको कृतबर्मा अपने देशको और अश्वत्थामा व्यासजीके आश्रमको गये २० इस रीतिसे वह वीर उनमहात्मा पांडवोंका अपराध करके भयसे पीड़ा-

मान परस्पर देखतेहुये चलदिये २१ अर्थात् वह शत्रुविजयी महात्माबीर सूर्योदयसे पूर्वही इच्छानुसार चलदिये २२ हे राजा कृतबर्मा और कृपाचार्य्यसे अश्वत्थामाके जुदेहोनेपर उनमहारथी पांडवोंने द्रोणाचार्य्य के पुत्र को पाकर और पराक्रम करके युद्धमें बिजय किया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिएकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय॥

बैशंपायन बोले कि सबसेनाओंके मरनेपर धर्मराज युधिष्ठिर ने हस्तिनापुरसे निकले हुये अपने वृद्धपिताको सुना १ हे महाराज तबपुत्रशोकसे पीड़ामान वह युधिष्ठिर भाइयों समेत उस पुत्रशोक से पूर्ण बड़ी चिन्तावाले धृतराष्ट्रकी ओर चला २ महात्माबीर श्री कृष्णजी सात्यकी औरयुयुत्सु इनतीनों समेतचला ३औरबड़ेदुःखसे पीड़ित शोकमें डूबी हुई द्रौपदीपांचालीको उनस्त्रियों समेत जो वहां आतीथीं उसके पीछेचली४हे भरतर्षभ उसने गंगाजीके समीप कुररी पक्षीके समान पीड़ित होकर पुकारतीहुई स्त्रियोंके समूहोंको देखा ५ उन पुकारनेवाली ऊपरकोहाथ महापीड़ित इन प्रियअप्रिय बचनोंसमेत रोनेवालीहजारोंस्त्रियोंसे वहराजाधृतराष्ट्र घिराहुआथा कि अब राजायुधिष्ठिरकी वहदया और धर्मज्ञताकहांहै जो पिताभाई मित्र और गुरुओंके पुत्रोंको भी मारा ६ । ७ हेमहाबाहुद्रोणाचार्य भीष्मपितामह और जयद्रथकोभी मरवाकर तेरा चित्त कैसाहुआ ८ हेभरतबंशी पिता भाई और द्रौपदीके पुत्र और अजेय अभिमन्युको नदेखनेवाले तुझको राज्यसे कौनप्रयोजनहै ९ हेमहाबाहु धर्मराज युधिष्ठिरने कुररीपक्षीके समान पुकारनेवाली उन स्त्रियोंकोउल्लंघन करके ताऊजीको दण्डवत्करी १० इसकेपीछे शत्रुओंके बिजयकरनेवालेने ताऊजीको नमस्कार करके अपने नामको कहा और उन सब पांडवोंनेभी अपना२ नाम बर्णनकिया ११ पिता और पुत्रोंके मरनेसेपीड़ामान और अप्रसन्न शोकदुःखी धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंके

नाश करनेवाले उस युधिष्ठिरसे स्नेहपूर्व्वक मिला १२ हे भरत-
वंशी धर्मराजसे मिलकर और विश्वास देकर फिर जलानेवाले
अग्निके समान दुष्टात्माने भीमसेनको चाहा १३ शोकरूप वायुसे
चलायमान उसके क्रोधकी वह अग्नि भीमसेन रूपी बनको जलाने
कीअभिलाषिणी दिखाईपड़ी १४ हे राजा हरिने भीमसेनके विषयमें
उसके अशुभ संकल्पको जानकर प्रथमही सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी
ने वह मूर्त्ति मंगालीथी १५ जो लोहेकी मूर्त्ति पूर्व्व समयमें राजा
दुर्योधनने बनवाईथी और चित्तसे भीमसेनको चिन्तन करके योग
भूमिमें जिसका आवाहन कियाथा बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी ने
प्रथमही उसकी चेष्टासे प्रकट होने वाले वृत्तान्त को जानकर और
भीमसेन को हाथोंसे रोककर लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्र के हाथमें
देदिया १६ । १७ वहां बड़े ज्ञानी श्रीकृष्णजीने यह कर्म किया उस
लोहेके भीमसेनको हाथोंसेपकड़कर १८ उसको भीमसेन मानकर
बलवान्राजाने तोड़डाला साठहजार हाथीके बलसमान उसबल-
वान्राजाने लोहेकेभीमसेनको तोड़कर १९ घायलछातीने मुखसे
रुधिरकोगिराया इसकेपीछे इसीप्रकार रुधिरसेभराहुआ पृथ्वीपर
ऐसे गिरपड़ा २० जैसे कि प्रफुल्लितनोक शाखवाला पारिजातनाम
वृक्ष गिरताहै तब बुद्धिमान् संजयने उसको पकड़लिया २१ और
शान्तपूर्बक बिश्वास कराताहुआ उससेबोला कि इसप्रकार मतकरो
फिर वह बड़ा साहसी क्रोधसे पृथक् और रहित होकर २२ शोक
से युक्त राजा हाय भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा उसको
भीमसेन के मारनेसे पीड़ामान और क्रोधसे रहित जानकर २३
पुरुषोत्तम वासुदेवजी इस बचनको बोले हे समर्थ धृतराष्ट्र शोच
मत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथसे नहीं मारागया तुमने यह
लोहेकी मूर्त्ति गिराई है २४ हे भरतर्षभ तुमको क्रोधके वशीभूत
देखकर मृत्युकी डाढ़में गयाहुआ भीमसेन मैंनेखैंचा २५ हे राजा
ओंमें श्रेष्ठ कोई तेरे समान बलवान् नहींहै हे महाबाहु कौनमनुष्य
तेरे भुजाओंके पकड़नेको सहसक्ताहै २६ जैसे कि मृत्युको प्राप्त

होकर कोई जीवता नहीं छूटताहै इसी प्रकारतेरी भुजाओंकेमध्यको पाकर कोई जीवतानहीं रहसक्ताहै २७ हे कौरव जिसहेतुसे आपके पुत्रनेभीमसेनकी जो यह लोहे की मूर्त्ति बनवाई वही मूर्त्ति मैंनेतेरे पास वर्त्तमान करी२८ हे राजेन्द्र पुत्र शोकसे दुखी तेरा चित्तधर्म से पृथक्हुआथा उसहेतुसे तुम भीमसेनको मारनाचाहतेथे २९ हे राजा यह आपको योग्यनहीं है जो तुम भीमसेनको मारा चाहतेहो क्योंकि आपके पुत्र आयुर्दापूर्ण होजाने के कारणसे किसीदशामें भी जीवते नहीं रहसक्तेथे ३० इसहेतुसे सन्धिको अंगीकारकरने वाले हम लोगोंने सन्धिके बिषयमें जो कर्मकिया उस सबकोध्यान करो शोकमें चित्तमतकरो ३१॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिअयशपुरुषभंगीनामद्वादशोऽध्यायः१२॥

तेरहवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि इसके अनन्तर नौकर लोग स्नान करानेके निमित्त इसके पास आकर वर्त्तमानहुये मधुसूदनजी इस स्नानसे निवृत्त होनेवाले राजासे बोले कि हे राजा तुमने वेद और नाना प्रकारके शास्त्र पढ़ेपुराणों समेत शुद्ध राजधर्मोंको सुना २ इसप्रकार पंडित और बड़ेज्ञानी बलाबलमें समर्थ होकर तुम अपनेअपराधसे ऐसे क्रोधको किस निमित्त करतेहो हे भरतवंशी तभी मैंने भीष्मने द्रोणाचार्य्यने और संजयने भी तुमसे कहाथा परन्तु हे राजातुमने उस बचनको नहीं किया ४ हे कौरव उस समय पांडवोंको बल और वीरतामें अधिक जानते और बारंबार निषेध कियेहुये भी तुमने हमारे बचन को नहीं किया ५ जो नियत बुद्धि राजा आप दोषों समेत देश कालके बिभागको बिचारताहै वह परम कल्याणको पाताहै ६ हित अनहित में समझाया हुआ जो पुरुष कल्याणवचन को अंगीकार नहींकरताहै वह अनीतिमें नियत आपत्ति को पाकर शोचताहै ७ हे राजा इसहेतुसे बिपरीत चलनेवाले अपनेको देखो वृद्धोंके बचनोंसे बिपरीत चित्तवाले तुम दुर्योधनकी आधीनता में

नियतहुये ८ और अपनेही अपराध से आपत्ति में फँसेहो तुम भीम-सेनको क्यों मारना चाहतेहो इसहेतुसे तुमअपने क्रोधको दूरकरो और अपने दुष्ट कर्मों को स्मरण करो ९ जिस नीचने ईर्षा से उस द्रौपदीको सभामें बुलाया वह शत्रुताको बदला लेने के अभिलाषी भीमसेन के हाथसे मारागया १० अपनी और अपने दुरात्मा पुत्र की अमर्यादगीको देखोजो तुमने निरपराधी पांडवोंको त्याग किया अर्थात् राज्यका भागनहीं दिया ११ वैशंपायन बोले हे जनमेजय श्रीकृष्णजी के इसप्रकार के सत्य २ बचनों को सुनकर उस राजा धृतराष्ट्रने देवकीनन्दनसे कहा १२ कि हे महाबाहु माधव जी जो आपकहतेहैं वह सब यथार्थहै परन्तु बड़ी बलवान् पुत्रकी प्रीतिने मुझको धैर्य्यसे पृथक् कर दिया १३ हे श्रीकृष्णजी प्रारब्ध की बातहै कि तुमसे रक्षित बलवान् सत्य पराक्रमी भीमसेनने मेरे भुजाके मध्यको नहींपाया १४ हे माधवजी अब सावधान क्रोधसे रहित बिगतज्वर मैं मझले वीर पांडवको देखाचाहताहूं महाराजा-ओंके और पुत्रोंके मरनेपर मेरे सुख और प्रीति पांडवोंमें नियत होतेहैं १६ इसकेपीछे बहुत रोतेहुये उसराजाने उन सुन्दर अंगवाले भीमसेन अर्जुन और पुरुषोंमें बड़े बीर नकुल और सहदेवकोभीअं-गोंमेंसे स्पर्शकिया और उन्होंको विश्वास देकर कल्याणके वचन कहे अर्थात् आशीर्वाद दिये १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिजलप्रदानिकेधृतराष्ट्रकोपविमोचनेपांडवपरिष्व-गोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि इसके पीछे धृतराष्ट्रसे आज्ञा लेकर वह कौरव पांडव भाई केशवजी समेत गान्धारीके पासगये १ इसकेपीछे पुत्रों के शोकसे पीड़ामान निर्दोषगान्धारीने उसमृतक शत्रुवालेयुधिष्ठिर को पास आया हुआ जानकर शापदेना चाहा २ व्यासऋषिप्रथम ही पांडवोंके बिषयमें उसके पापरूप चित्तके बिचारको जानकर

सावधान हुये ३ और चित्तके समान शीघ्रगामी होकर वह महर्षी श्रीगंगाजीके पवित्र और सुगन्धित जलमेंस्नान आचमनकरके उस स्थानपर आपहुंचे और दिव्यनेत्र युक्त अपने चित्तसेदेखते उस ऋषि ने वहां सबजीवोंके चित्तके वृत्तान्तको जाना ४ । ५ शापकेसमयको निरादर करके कालको शान्तिको वर्णन करते वह महातपस्वीकल्प बादी ऋषि पुत्रबधूसे बोले ६ किहे गान्धारी पांडवके ऊपर क्रोधन करना चाहिये अपने शापबचनको रोककर इस मेरे वचनको सुनों७ अठारह दिनतक विजय के अभिलाषी पुत्रने कहाहै कि हे माता शत्रुओंके साथ मुझ युद्ध करनेवालेको शुभआशीर्बाद दो ८ हे गान्धारी उस विजयाभिलाषीसे समय २ पर प्रार्थना करीहुई तुमने कहाहैकि जिधर धर्महै उधरही विजयहै ९ हेगान्धारी मैं पूर्वसमय में तुझ दुर्योधनके शुभ आशीर्बादसे प्रसन्न करने वालेके कहेहुये बचनको मिथ्या स्मरण नहीं करताहूं तुम उस प्रकारकी समाधि धारण करने वालीहो १० इसीसे राजाओंके कठिन युद्धमें पारको पाकर पांडवोंने युद्धमें निस्सन्देह बिजयको पाया निश्चय करके उधरही धर्म अधिकहै ११ पूर्व समयमें ऐसी क्षमावान् होकर अब किसहेतुसे तू क्षमा नहीं करतीहै हे धर्मकी जानने वाली अधर्मको त्यागो जिधर धर्महै उधरही बिजयहै १२ हे मनस्विनी सत्यवक्ता गान्धारी अपनेधर्मको और कहेहुये बचनको स्मरण करक्रोधको रोको और इसदशावाली मतहो १३ गान्धारी ने कहा हे भगवान् मैं गुणमें दोषनहीं लगातीहूं और उनका नाशमान होना नहींचाह- तीहूं १४ परन्तु पुत्रशोकसे मेराचित्त अत्यन्त ब्याकुल होताहै जिस प्रकार पांडव कुन्तीसे रक्षाके योग्यहैं उसीप्रकार मुझसेभीहैं १५ और जैसे मुझसे रक्षाके योग्यहैं उसीप्रकार धृतराष्ट्र से भीहैं दुर्यो- धन, शकुनि १६ कर्ण, और दुश्शासनके अपराधसे यह कौरवों का नाशहुआ इसमें अर्जुन भीमसेन १७ नकुल सहदेव और युधि ष्ठिर काभी कुछ अपराधनहींहै यह परस्पर युद्धकरनेवाले अहंकारी कौरव १८ एकसाथ अन्य२ लोगों के हाथ से मारेगये वह मेरा

अप्रियनहींहै परन्तु बासुदेवजीके देखतेहुये भीमसेनने कैसा कर्म किया १९ कि बड़े साहसीने गदायुद्धमें दुर्योधनको बुलाकरके और शिक्षामें अधिक जानकर युद्धमें अनेकरीतिसे घूमनेवालेको २० नाभिकेनीचे घायलकिया इसबातको सुनकर मैंने क्रोधको बढ़ाया वह शूरबीर युद्धमें प्राणोंके अर्थ किसीदशामें भी धर्मको नहीं त्यागताहै जोकि धर्मज्ञ महात्मालोगोंसे उपदेश कियागयाहै २१ । २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिजलप्रदानिकेगान्धारीसांत्वनायांचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पंद्रहवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि तब भीमसेन उसके उसबचनको सुनकरभयभीतके समान नम्रताके साथ गांधारीसे यह बचनबोला १ हे माता धर्म होय वा अधर्म होय अपने शरीरकी रक्षाके अभिलाषी मैंने भयसे वहांऐसाकिया आपउस मेरे अपराधको क्षमाकरनेके योग्य हो २ वहबड़ा बलवान् आपका पुत्र धर्मयुद्धके द्वारा किसीकेसाथ लड़नेकेयोग्य नहींथा इसहेतुसे मैंने बिपरीतकर्म किया ३ पूर्वसमयमें उसदुर्योधनने अधर्मकेद्वारा युधिष्ठिरको बिजयकिया और हमसदैव ठगगये इसकारणसे मैंने बिपरीत कर्मकिया ४ सेना के मध्यमें अकेला शेषबचाहुआ यह पराक्रमी कदाचित् गदायुद्ध से मुझको मारकर राज्यको न लेले इसहेतुसे मैंनेयह कर्मकिया ५ आपको सब बिदितहै कि आपके पुत्रने एकबस्त्रा रजस्वला राजपुत्री द्रौपदीसे जो बचन कहाथा इससेदुर्योधनको बिनामारे हुये सागरों समेत निष्कण्टक पृथ्वी हमसे भोगने के योग्य नहीं थी इन बातों को बिचारकर मैंने यह कर्मकिया ६ । ७ उसी प्रकार आपके पुत्रने हमारे अप्रिय को भी किया जो सभा के मध्यमें द्रौपदी को बाम जंघा दिखलाई ८ तबहीं वह आपका दुराचारी पुत्र हमारे हाथ से मारडालने के योग्यथा परन्तु उससमय हम लोग धर्मराज की आज्ञासे नियम में नियत हुये ९ हे रानी आपके पुत्रने वह बड़ी शत्रुता प्रकटकी और सदैव बनमें दुःखीकिये इस हेतुसे मैंनेयह

किया १० युद्धमें दुर्योधन को मारकर अब उस शत्रुता के अन्तको पाया युधिष्ठिरने राज्यको पाया और क्रोधसे रहित हुये ११ गान्धारी बोली हे तात जोमेरे पुत्रके विषय में कहताहै यह केवल उसकोही नहीं मारा किन्तु इसको भी किया जो यह सब मुझसे कहताहै १२ हे भरतवंशी भीमसेन वृषसेनके हाथसे नकुलके घोड़े मरनेपर युद्ध में तुमने दुश्शासनके शरीरसे उत्पन्न होनेवाले रुधिरको पिया १३ वह तुमनेसत्पुरुषोंसे निन्दितनिर्द्दयकर्म किया वह अयोग्यथा १४ भीमसेन बोला कि जब दूसरेका भी रुधिर न पीना चाहिये फिर अपना कैसे पानकर सक्ताहे जैसा अपना आत्माहै वैसाही भाई है कोई मुख्यता नहींहै १५ हेमाता रुधिर ओठोंसे नीचे नहींगया यम-राज उसको जानतेहैं केवल रुधिरसे भरे मेरेदोनों हाथ थे हेमाता शोचमतकर १६ युद्धमें वृषसेनके हाथसे मृतक घोड़ेवाले नकुलको देखकर मैंने प्रसन्न चित्त भाइयों का भयउत्पन्न किया १७ द्यूत केकारण द्रौपदीके शिरके बाल पकड़ेजानेपर मैंने क्रोधसे जो कहा वहमेरे हृदयमें वर्त्तमान है १८ हेरानीमैं उसप्रतिज्ञाको पूरानकरके बराबर बरसोंतक क्षत्री धर्मसे च्युत होजाता इसहेतुसे मैंने उस कर्मको किया १९ हे गान्धारी पूर्व्व समयमें हमारे निरपराधीहोने पर पुत्रोंको शासना न करके अबमुझको दोषोंसे शंकाकरने केयोग्य नहींहो २० जो अब हमारे ऊपर दोषोंकी शंकाकरतीहो २१ गान्धारी बोली कि इसवृद्धके सौपुत्रों के मारनेवाले तुझ अजेयने किस हेतुसे एकको भीबाकी नहीं छोड़ा जिसने कि थोड़ा अपराध कियाथा २२ हेपुत्र जो कि राज्यसे हीन और वृद्ध हम दोनोंकी सन्तान रूप कह लाता इस अन्धेकी एक लाठीभी तैंने कैसेनहीं छोड़ी २३ हे पुत्र पुत्रोंमें किसीके भी बाकी रहनेपर तुझ पुत्रों के नाश कर्त्ता में मेरा यहदुःख नहीं होताजो तुमधर्मको करते २४ वैशंपायन बोले क्रोध युक्त और पुत्रपौत्रों के मरने से पीड़ामान गान्धारीने इस प्रकार कहकर युधिष्ठिर के विषय में पूछा कि धर्मराज कहां है २५ कंपायमान हाथ जोड़कर युधिष्ठिर उसकेपास गये और वहां इस

मधुर वचनको बोले२६ हेदेवी मैं युधिष्ठिर तेरे पुत्रोंका मारनेवाला
और संसार के नाशका मूल निर्दयी होकर शापके योग्यहूं मुझको
शापदे २७ उसप्रकारके सुहृद्जनोंको मारकर मुझ अज्ञानी सुहृदों
से शत्रुता करनेवाले को जीवन और राज्यसे कौन प्रयोजनहै तब
कठिन श्वासा लेनेवाली गान्धारी उसइसप्रकार बोलनेवाले भय-
भीत समीप पहुंचनेवालेसे कुछ नहीं बोली२८।२६उस धर्मज्ञ दूर
दर्शी देवीने उस झुके शरीर चरणों में गिरने के अभिलाषी राजा
युधिष्ठिरकी ३० हाथकी उंगलियों की नोक को पट्टान्तर अर्थात्
बुरके के भीतरसे देखा उससे दर्शन के योग्य नखवाला वह राजा
युधिष्ठिर कुनखी हो गया ३१ अर्जुन उसको देखकर वासुदेवजी के
पीछे चला गया हे भरतबंशी इसप्रकार इधर उधर से चेष्टा करने
वाले उन पांडवोंको ३२ क्रोधसे रहित गान्धारीने माताके समान
विश्वास कराया उसहेतुसे आज्ञा पायेहुये वह बड़े बक्षस्थलवाले
पांडव एकसाथही उस बीरोंको उत्पन्न करनेवाली कुन्ती माताके
पासगये पुत्रोंके विषयमें चित्तसे खेदयुक्त उसदेवीने बहुत कालके
पीछे अपने पुत्रोंको देखकर ३३।३४ वस्त्रसे मुखको ढककर अश्रु
पात किये इसके पीछे कुन्तीने पुत्रोंसमेत अश्रुपातोंको करके ३५
उनको शस्त्र समूहोंसे बहुत प्रकार करके घायल देखा उन पुत्रोंको
पृथक् २ स्पर्शकरते दुखसे पीड़ामान उस कुंतीने ३६ मृतक पुत्रवाली
द्रौपदीको शोचा और पृथ्वीपर पड़ी रोवतीहुई द्रौपदीको देखा ३७
द्रौपदी बोली हे आर्य्ये अर्थात् सासू तेरे सब अभिमन्युसमेत पौत्र
कहांगये अब वह बहुतकालसे तुझ तपस्विनीको देखकर तेरे पास
नहीं आतेहैं ३८ मुझ पुत्रोंसे रहितको राज्यसे कौनसा प्रयोजनहै
द्रौपदीके इस बचनको सुनकर बड़े नेत्रवाली कुंतीने उसको विश्वास
कराया ३६ अर्थात् उस शोक पीड़ित रोदन करनेवाली द्रौपदी
को उठाकरउसको और सबपुत्रोंको साथ लेकर४० बड़ी पीड़ामान
कुन्ती गान्धारीके पास गई वैशंपायन बोले कि तब गान्धारी उस
बहूसमेत आनेवाली कुन्तीसे बोली ४१ हे बेटी इसप्रकार न करना

चाहिये तू मुझ दुखीको भी देख मैं मानतीहूं कि यह संसारका नाश समयकी बिपरीतता से प्रकट हुआहै ४२ और रोमांच खड़ा करनेवाली अवश्य होनहार स्वभावसे बर्त्तमानहुई यह बिदुरजीका वह बड़ा बचन सन्मुख आया ४३ जिसको कि उस बड़े बुद्धिमान्ने श्रीकृष्णकी शिक्षाके निष्फल होनेपर कहाथा इसअपरिहार्यार्थ में अर्थात् निरुपाय और ब्यतीतहोनेवाली बातमें शोचमतकर ४४ युद्ध में मरनेवाले वह बीर शोच केयोग्य नहीं है जैसी मैं हूं वैसीही तू है हमदोनोंको कौनबिश्वास करावे गामेरेही अपराध से इस उत्तम कुलका नाशहुआ ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

बैशंपायनबोले कि इसप्रकार कहकर वहांपर बैठीहुई गांधारीने दिब्यनेत्रोंसे कौरवोंके सब बड़ेभारी नाशको देखा १ उस पतिब्रता महाभागा एकसा ब्रतकरने वाली बड़ेतपसे संयुक्तसदैव सत्यवक्ता२ पवित्रकर्मी ब्यास महर्षीके बरदानके द्वारा दिब्य ज्ञानबलसे संयुक्तने बहुत प्रकारका बिलापकिया ३ उस बुद्धिमतीने दूरसेही समीपके समान नरबीरों को उस रणभूमिको जोकि शरीरके अपूर्व रोमहर्षण करनेवालीथी देखा ४ अर्थात् अस्थि केश मज्जासे युक्त रुधिर समूहसे पूर्ण हजारों शरीरोंसे चारों ओरको आच्छादित ५ हाथी घोड़े रथ और सवारोंके रुधिर समूहसे युक्तशरीरों से पृथक् शिरोंके समूहोंसे पूर्ण ६ हाथी घोड़े मनुष्य और स्त्रियोंके शब्दोंसे ब्याप्त शृगाल, बक, काकोल, कंक, और कागोंसे सेवित ७ मनुष्य के खानेवाले राक्षसों की प्रसन्न करनेवाली कुररनाम पक्षियों से सेवित शृगालोंके अशुभ शब्दोंसे शब्दायमान और गिद्धोंसे सेवित थी ८ इसके पीछे ब्यासजीसे आज्ञा पायाहुआ राजा धृतराष्ट्र और वह सब पांडव जिनका अग्रवर्त्तीयुधिष्ठिर था ९ बासुदेवजी को और जिसके बन्धु मारेगये उस राजा को आगेकर सब कौरवोंष

स्त्रियोंको साथ लेकर युद्ध भूमि में गये १० वहां बिधवा स्त्रियोंने कुरुक्षेत्रको पाकर उन मृतक भाई पुत्र पिता और सुहृदोंको देखा ११ जो कि कच्चे मांस खानेवाले शृगाल, काग, भूत, पिशाच, राक्षस, और नानाप्रकारके निशाचरोंसे खायेहुयेथे १२ रुद्रजीके क्रीड़ास्थानके समाननिवास स्थानको देखकर पुकारती हुईं स्त्रियां बहुमूल्य सवारियों से उतरीं १३ भरथबंशियों की स्त्रियां दुखसे पीड़ामान पूर्वमें कभी न देखेहुये उस नाशको देखकर कोई शरीरों पर गिरीं और कोई पृथ्वीपर गिरनेवाली हुईं १४ पांचाल और कौरवोंकी उन अनाथ और थकी हुई स्त्रियोंको कुछ चेतनहीं रहा यह बड़ा दुख हुआ १५ वह धर्मज्ञ गान्धारी दुखित चित्त स्त्रियोंसे चारोंओरको शब्दायमान बड़ी भयानकरूप युद्ध भूमि को देखकर १६ फिर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी को समक्षमें करके इस वचनको बोली १७ हेकमल लोचन माधवजी इन बिधवाशिर के बालों को फैलानेवाली कुरीके समान पुकारनेवाली मेरी पुत्र बधुओंको देखो १८ यह स्त्रियां पृथक् २ पुत्र भाई पिता और सुहृदोंको मिलतीं पतियोंके गुणोंको यादकरतीं पृथक्२ दौड़नेवाली हैं १९ हे महाराज यह रणभूमि बीरों के उत्पन्न करनेवाली और मृतक पुत्रवाली स्त्रियों से संयुक्तहै कहीं उनवीरों की स्त्रियों से संयुक्त है जिनके कि बीर भर्त्तार मारेगये २० कहीं ज्वलित अग्नि के समान पुरुषोत्तम कर्ण, भीष्म, अभिमन्यु, द्रोणाचार्य्य, द्रुपद, और शल्य, से शोभायमान है २१ महात्माओंके स्वर्णमयी कवच निष्कमणि बाजबन्द केयूर, और मालाओंसे अलंकृत २२ बीरोंकी भुजाओंसे छोड़ीहुई शक्ति परिघ और नाना प्रकारके तीक्ष्ण खड्ग बाणों समेत धनुषोंसे सुशोभितहै २३ प्रसन्न चित्त कहीं साथ निवास करनेवाले कहीं क्रीड़ा करनेवाले कहीं सोनेवाले और कहीं मांसभक्षी राक्षसोंसे संयुक्तहै २४ हे समर्थ बीर श्रीकृष्णजी इसप्रकारकी रणभूमिको देखो मैं इसको देखकर शोकसेभस्महुई जातीहूं२५हे मधुसूदनजी मैंने पांचाल और

कौरवोंके नाशमें पांचो तत्वोंकेभी नाशको ध्यानकियाहै २६ रुधिर से भरे गरुड़ और गिद्ध उनको खैंचतेहैं और हजारों गिद्ध चरणोंसे पकड़कर उनकोभक्षण करतेहैं २७कौनमनुष्य जयद्रथ,कर्ण,द्रोणाचार्य्य,भीष्मऔर अभिमन्युकेनाशको चिन्ताकरनेके योग्यहै २८ बिना घायलके समान मृतक अचेत निर्जीव गिद्ध कंक वटश्येन बाजश्वान और शृगालों के भक्ष्यरूप २६ इन पुरुषोत्तमों कोशान्त अग्नि के समान देखो जोकि क्रोधके स्वाधीन होकर दुर्योधनकी आज्ञामें नियतथे३०जो सब पूर्वसमयमें कोमल शयनोंपर सोतेथे अबवहमृतक होकर इस बिस्तृत भूमिपर सोतेहैं ३१ और जोसदैव प्रशंसाकरने वाले बन्दीजनोंसे समय २ पर प्रसन्न किये जातेथे वह शृगालोंके अशुभ और भयकारी नानाप्रकारके शब्दोंको सुनतेहैं ३२ जो यशवान् बीर पूर्व समयमें चन्दन अगरसे लिप्तहुये शयनोंपर सोतेथे वह बीर अबपृथ्वीकी धूलपर सोतेहैं ३३ बारंबार शब्दकरने वाले भयानक रूप यह गिद्ध, काक, शृगाल, मुखके भूषणोंको लेकर फेंकतेहैं ३४ यह सब अहंकारी मृतकभी जीवते हुये युद्धकरनेवालों के समान तीक्ष्णधार पीतवर्ण बाण खड्ग और निर्मल गदाओं को धारण करतेहैं ३५ सुन्दर रूप और वर्णवाले बहुत बीर कच्चेमांस भक्षियोंसे खैंचे जातेहैं बैलके रूप हरित मालाधारी सोतेहैं ३६ फिर परिघके समान भुजाधारी अन्य शूर गदाको प्यारी स्त्रीके समान अपनेसाथ लियेहुये सोतेहैं ३७ हे श्रीकृष्णजी बहुतसेमांस भक्षी स्वच्छ शस्त्र और कवचोंके धारण करनेवाले वीरोंको जीवता हुआ जानकर नहीं खातेहैं ३८ बहुतेरे महात्माओंकी स्वर्णमयी अपूर्व माला मांसभक्षियोंसे खैंचीहुई चारोंओरको फैलीहै ३६ यह भयानकरूप हजारों शृगाल इन यशवान् मृतक बीरोंके कंठमें पड़े हुये हारोंको खैंचतेहैं ४० जिनको शिक्षायुक्त बन्दीजनोंने सब पिछली रात्रियोंमें प्रशंसा और बड़ी सेवाओंसे प्रसन्न कियाथा ४१ हे श्रीकृष्णजी बड़े दुःखका स्थानहै कि यह दुःखसे पीड़ामान और दुःखशोकसे अत्यन्त दुःखी उत्तम स्त्रियां उनकाविलाप करतीहैं ४२

हेकेशवजी उत्तम स्त्रियों के सुन्दर मुख लाल कमलके सूखे बनोंके समान दृष्टि पड़तेहैं ४३ रोदनको भूलकर ध्यानमें प्रवृत्त महादुःखी यहकौरवीय स्त्रियां अपने परिवारों समेत उस मार्ग से अपने पति पुत्रादिके समीप जातीहैं ४४ कौरवोंकीस्त्रियोंके यह सूर्य्यवर्ण और सुवर्णके समान प्रकाशमान मुख क्रोध और रुदन करनेसे शोभासे रहितहैं ४५ हे केशवजी दुर्य्योधनकीउन उत्तमस्त्रियोंके समूहोंको जो कि श्यामा गौरी और उत्तम वर्णसेयुक्त एक वस्त्र रखने वालीहैं उनको देखो (शीतऋतुमें उष्ण और ग्रीष्मऋतुमें शीतल और सुख दायीहोय और तपायेहुये सुवर्णके समान वर्णवाली होय उस स्त्री को श्यामा कहतेहैं और आठ वर्षवालीको गौरी कहतेहैं)४६ स्त्रियां उन्होंके बिलाप और दुखको सुनकर एक दूसरे के रोदन करनेको नहीं जानतीहैं ४७ यह बीरोंकी स्त्रियां लम्बी श्वासाओंसे पुकारती औरबिलाप करके दुःखसे चलायमानजीवनको त्याग करतीहैं ४८ बहुतसी स्त्रियां शरीरोंको देखकर पुकारती और बिलाप करती हैं और बहुतसी कोमल हाथ रखनेवाली स्त्रियां हाथोंसे शिरोंको पी-टतीहैं ४६ पड़ेहुये शिरहाथ और इकट्ठे होकर परस्पर मिलेहुये अंगोंसे पृथ्वी आच्छादित दिखाई पड़तीहै ५० पास जानेवाली स्त्रियां इन निर्दोष शिर शरीर और शरीरों से जुदेहुये शिरोंको दे-खकर व्याकुल और अचेत होतीहैं ५१ शिरको शरीरपर रखकर देखनेवाली अचेत और दुखी स्त्रियां वहां दूसरे शिरको देखतीहैं यह समझकर कि यह इसका नहीं है ५२ बिशिख नाम बाणोंसेमथे हुये भुज जंघा चरण और अन्य २ अंगों को शरीरपर लगानेवाली दुःखसे व्याकुल यह स्त्रियां बारंबार बिमोहको पातीहैं ५३ शिरोंको काटकर पशुपक्षियोंसे खायेहुये अन्यबीरोंको देखकर भरतबंशियों की स्त्रियां अपने २ पतियोंको नहीं जानतीहैं ५४ हे मधुसूदनजी बहुतसी स्त्रियां शत्रुओंके हाथसे मरेहुयेभाई पिता पुत्र और पतियों को देखकर हाथोंसे शिरोंको पीटती हैं ५५ यह पृथ्वी खड्ग रखने वाली और कुण्डलधारी शिरोंसे दुर्गन्धरूप मांस रुधिर की कीच

रखनेवाली ५६ भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ निर्जीव बीरोंसे दुर्गम्यके स-
मान हुई पूर्व्व समयमें जो दुःखोंकेयोग्य कभी नहींहुई वह निर्दोष
स्त्रियां दुःखोंकोपाती हैं ५७ यह पृथ्वी भाई पति और पुत्रोंसे आ-
च्छादितहै हे जनार्द्दनजी धृतराष्ट्र की पौत्र बधुओंके उन बहुत से
समूहोंको जो कि किशोरी सुन्दर केश रखनेवाली और झुंडोंके
रूपहैं देखो हेकेशवजी इससे अधिक कौनसा दुख मुझको दिखाई
देताहै ५८।५६ जो यह स्त्रियां नाना प्रकारके रूपोंको करतीहैं नि-
श्चय करके बिदित होताहै कि मैंने पूर्व जन्ममें पाप कियाथा ६०
हे माधवजी जो मैं पुत्र भाई और पिताओंको मृतक देखतीहूं इस
प्रकार पीड़ामान बिलाप करने वाली और पुत्र शोकसे महा दुखी
गान्धारीने श्रीकृष्णजीको यह कहकरअपने मृतक पुत्रकोदेखा६१॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिषोड़शोऽध्याय :१६॥

सत्तहवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि शोकसे पीड़ामान गान्धारी दुर्योधनको मरा
हुआ देखकर अकस्मात् ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ी जैसे कि बनमें टूटा
हुआ केलेका वृक्ष होताहै १ फिर उसने सचेतताको पाकर पुकार
कर और बिलाप करके उस पृथ्वीपर पड़ेहुये रुधिरसे लिप्त दुर्यो-
धनको देखकर २ हृदय से लगाया और दुःखका बिलाप किया
शोकसे पीड़ामान महाव्याकुल चित्त हायपुत्र हायपुत्र इसरीतिसे
बिलाप करनेलगी३ गुप्त जत्रुस्थान रखनेवाली निष्कोंकेहारसे अलं-
कृत अपनीछातीको नेत्रोंकेजलसे सींचती महादुखी उस गान्धारीने४
सन्मुख बर्त्तमान श्री कृष्णजीसे यह बचन कहा कि हे समर्थ इस
युद्धके और ज्ञातवालों के नाशके बर्त्तमान होनेपर ५ इस हाथ
जोड़नेवाले महाराज दुर्योधनने मुझसे यह कहा कि हे माता जात
वालोंके युद्धमें मेरी बिजयको कहौ ६ हे पुरुषोत्तम उसके ऐसा
कहनेपर मैं अपनेसब दुखके आगमनको जानतीहुई बोली कि जि-
धर धर्महै उधरही बिजयहै ७ हे प्रभु पुत्र जैसे कि तू युद्धको करता

हुआ मोहित नहीं होताहै इससे निश्चय करके देवताके समान शस्त्रोंसे विजय किये हुये लोकोंको पावेगा ८ हे प्रभु मैंने पूर्व समय में इस प्रकार कहाथा मैं इसको नहीं शोचतीहूं ९ हे माधव जी इस अशान्त और शस्त्रज्ञ युद्ध दुर्मद और शूरबीरोंमें श्रेष्ठ मेरे पुत्रको बीरोंके शयनपर सोता देखो १० जो यह शत्रु संतापी महाराजाओंके भीअग्रवर्ती होकर चलताथा अब वह इस पृथ्वीकी रजमें सोताहै समयकी विपरीतताको देखो ११ निश्चय करके बीर दुर्योधनने दुष्प्राप्यगतिको पाया इसप्रकार सन्मुख बीरोंसे सेवितशयन पर सोताहै १२ पूर्व समयमें राजालोग चारोंओर वर्त्तमान होकर जिसको प्रसन्नकरतेथे अब उसपृथ्वीपर मरेहुये पड़ेको गिद्धबत्त मानता करतेहैं अर्थात् हाज़िरी देतेहैं पूर्वसमयमें सुन्दरव्यजनोंसेउत्तम स्त्रियां जिसकी बायु करतीथीं अब उसकी बायु पक्षी लोग अपने पक्षोंसे करतेहैं १३।१४ युद्धमें भीमसेनकेहाथसे गिरायाहुआ यह सत्यपराक्रमी बलवान् महाबाहु ऐसे सोताहै जैसे कि सिंहके हाथ से माराहुआ हाथी सोताहै १५ हे श्रीकृष्णजी गदाको मारकर भीमसेनसे मृतक रुधिर से लिप्त सोनेवाले दुर्योधन को देखो १६ हे केशवजी जिस महाबाहुने पूर्व समयमें ग्यारह अक्षौहिणी सेनाको युद्ध भूमिमें इकट्ठाकियाउसने युद्धमें अनीतितासे नाशको पाया१७ भीमसेनके हाथसे गिरायाहुआ बड़ा बलवान् यह दुर्योधन सोताहै १८ यह अभागा अज्ञान निर्बुद्धी विदुरजी समेत पिताकोभी अपमान करके वृद्धोंकी अवज्ञासे मृत्युके आधीनहुआ १९ तेरहवर्ष तक शत्रुओंसे रहित पृथ्वी इसके आज्ञावर्त्ती रही वह मेरा पुत्र राजादुर्योधन मराहुआ पृथ्वीपर सोताहै २० हे श्री कृष्णजी मैंने सब पृथ्वीके लोगोंको दुर्योधन के आज्ञावर्त्ती हाथी घोड़े और गौओं से पूर्ण देखा हे माधवजी वह बहुत काल तक नहींहै २१ हे महाबाहु अबमैं उस पृथ्वीको दूसरे की आज्ञावर्त्ती हाथी घोड़े और बैलोंसे रहित देखतीहूं हेमाधवजी मैंवृथाजीवती हुईहूं२२पुत्र के मरने सेभी अधिक इस मेरे दुःखको देखो जो यह स्त्रियां युद्ध

भूमिमें चारों ओरसे मृतक शूरों के पास नियतहैं २३ हे श्रीकृष्ण जी इसखुले हुये केश सुन्दर श्रोणीवाली और दुर्य्योधन की शुभ अंकमें वर्त्तमान सुबर्णकी वेदीके रूप लक्ष्मणकी माताको देखो २४ निश्चय करके पूर्व समयमें राजाके जीवते हुये होनेपर यह उत्तम चित्तवाली स्त्री सुन्दर भुजवाले दुर्य्योधन की भुजाओंके आश्रित होकर रमतीथी २५ युद्धमें पौत्र समेत मरेहुये अपने पुत्रको मुझ देखनेवाली का यह हृदय कैसे खण्ड २ नहीं होताहै २६ वह निर्दोष सुन्दरी रुधिरसे लिप्त पुत्रको सूंघती है और दुर्य्योधनको हाथसे साफ करतीहै २७ यह साहसी स्त्री क्या पति और पुत्र को शोचतीहै वह उस प्रकार पुत्रको भी देखकर नियत दिखाई देतीहै २८ हे माधवबड़े नेत्रवाली स्त्री अपने शिरको पंचांगलीवाले अपने हाथसे घायल करके बीर दुर्य्योधनकी छातीपर गिरतीहै २९ यह तपस्विनी पति और पुत्रके मुखको साफ करके कमलके अन्तर्गत भागके समान प्रकाशित और कमल बर्ण दिखाई देतीहै ३० जो शास्त्र और श्रुतियां सत्य हैं तो निश्चय करके इस राजा ने अपने भुजबलोंसे प्राप्त लोकोंको पाया ३१॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

गान्धारी बोली हे माधवजी युद्धमें परिश्रम से रहित मेरे सौ पुत्रोंको भीमसेनकी गदासे कठिन घायल हुये देखो १ अब यह मेरा बड़ा दुःखहै जो खुले केश मृतक पुत्रवाली मेरी पुत्र बधूबाला युद्ध भूमिमें मेरे चारों ओर दौड़ती हैं २ भूषणों से अलंकृत चरणों से महलोंमें फिरनेवाली स्त्रियां अपनी आपत्तिमें फंसकर इसरुधिर से आर्द्र पृथ्वीको स्पर्श करतीहैं यह कठिनतासे उनके ऊपर बैठे हुये गिद्ध शृगाल और काकों को उड़ाती हैं और दुःखसे पीड़ामान मतवालोंकी समान घूमतीहैं ३।४ यह दूसरी दिर्दोष शरीर मुष्टिप्रमाण सूक्ष्म कटि रखनेवाली अत्यन्त दुःखी स्त्रियां अत्यन्त भय-

कारी युद्ध भूमिको देखकर गिरती हैं ५ हे महाबाहु इस राजपुत्री लक्ष्मणाकी माताको देखकर मेरा चित्त शान्ती को नहीं पाताहै ६ यह अन्य स्त्रियां मरे हुये पृथ्वीपर पड़े अपने भाई पिता और पुत्रों को देखकर और बहुत बड़ी २ भुजाओं को पकड़कर चारों ओरको गिरतीहैं ७ हे अजेय जिनके बांधव मारेगये उन तरुण षोड़श बर्ष वाली स्त्रियोंके शब्दोंको इसकठिन बिनाशमें सुना ८ हे महाबाहु थकावट और अचेततासे पीड़ामान स्त्रियां रथकी नीड़ और मृतक हाथी घोड़ेके शरीरों के आश्रित होकर नियत हैं ९ हे कृष्णजी शरीर से जुदे सुन्दर कुंडल और बेणी रखनेवाले अपने बांधवके शिरको पकड़कर नियत होनेवालीं अन्य स्त्रियों को देखो १० हे निष्पाप इननिर्दोष स्त्रियों से और मुझ निर्बुद्धी से पिछले जन्म में किया हुआ पाप छोटा नहीं है मेरी बुद्धिसे बहुतबड़ाहै ११ जो यह हमारा पापधर्म राजने दूरकिया हे यादव श्रीकृष्णजी शुभा शुभ कर्मोंका नाश नहींहै अर्थात् उसका फल अवश्य होताहै १२ हे श्री-कृष्णजी इननवीन अवस्था दर्शनीय स्तन औरमुखवाली कुलवन्ती लज्जावान् काले पलक नेत्र और बालरखनेवाली स्त्रियों को देखो १३ हे माधवजी हंसके समान गदगद बोलनेवाली दुःख शोक से अचेत सारसोंके समान पुकारनेवालीं पृथ्वीपर पड़ीहुई स्त्रियों को देखो १४ कमल लोचन स्त्रियों के मुख जोकि फूले कमलके समान और निर्दोषहैं उनको दुःखरूप सूर्य्य संतप्तकररहाहै १५ अबअन्य लोग मतवाले हाथीके समान अहंकारी मेरे पुत्रों की रानियों को देखतेहैं १६ हे गोविन्दजी सौ चन्द्रमा रखनेवाली सूर्य्यके समान प्रकाशमान ढाल और सूर्य्यही के समान प्रकाशित ध्वजा रैवत प्रकारके कवच सुवर्ण के निष्क १७ पृथ्वीपर पड़े होमीहुई अग्नि के समान प्रकाशित मेरे पुत्रोंके उनमुकटोंको देखो १८ शत्रुओं के मारनेवाले शूर भीमसेन के हाथसे युद्ध में गिरायाहुआ रुधिर से लिप्त सर्वाङ्ग यह दुश्शासन सोताहै १९ हे माधवजी द्यूतके दुःख को स्मरण करके द्रौपदीकी प्रेरणा पूर्व्वक भीमसेनकी गदासे मृ-

तक हुये मेरे पुत्रको देखो २० हे जनार्दनजी कर्णाका और भाई दुर्योधनके प्रिय करनेका अभिलाषी इस दुश्शासनने सभाके मध्य में द्यूतमें पराजित द्रौपदीसे यह बचन कहे २१ कि हे द्रौपदी तू सहदेव नकुल और अर्जुन समेत दासीहुई शीघ्र हमारे घरोंमें प्रवेश करो २२ हे श्रीकृष्णजी उससमय मैंने राजा दुर्य्योधन से कहा कि हे पुत्र मृत्युकी फांसीमें बंधेहुये शकुनिको निषेधकरो २३ इस अ-त्यन्त दुर्बुद्धी युद्धको प्रिय जाननेवाले मामाको समझाओ हे पुत्र इस द्यूतको शीघ्र त्याग करके पाण्डवों के साथ शान्तहो २४ जैसेकि उल्काओं से हाथियों को पीड़ामान करतेहैं इसीप्रकार बचन रूप तीक्ष्ण नाराचों से क्रोध युक्त भीमसेन को पीड़ामान करता तू सचेत नहीं होता है अर्थात् हे दुर्बुद्धी तू भीमसेन के अमर्षको नहीं जानताहै २५ इसप्रकार उन बचन रूपी भालों से घायलकरते उसक्रोध युक्तने एकान्तमें उनपांडवों पर इसप्रकार बिषको छोड़ा जैसे कि सर्प गो और वृषभ पर छोड़ते हैं २६ जैसेकि बड़ाहाथीसिंह से माराजाताहै उसीप्रकार भीमसेनकेहाथसे मृतक यह दुश्शासन भुजाओंको फैलाकर सोताहै २७ अत्यन्तक्रोध युक्त भीमसेनने बड़ा भयकारी कर्मकिया जो क्रोध युक्तने युद्धमें दु-श्शासन के रुधिरको पानकिया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

गांधारी बोली हे माधवजी यह ज्ञानियोंका अंगीकृत भीमसेनके हाथसे सैकरोंखगड किया हुआ मेरा पुत्र विकर्ण मृतक पृथ्वीपर सोताहै १ हे मधुसूदनजी वह बिकर्णमरेहुये हाथियोंके मध्यमें ऐसे सोताहै जैसेकि नीलेबादलोंसे घिराहुआ शरदऋतु का चन्द्रमा हो-ताहै २ धनुष पकड़नेसे बड़े चिह्न रखनेवाला खड्गसे युक्तइसका हाथ खानेके अभिलाषी गिद्धोंसे कुछकाटा जाताहै ३ हे माधवजी उसकी तपस्विनी बालाभार्य्या मांसके अभिलाषी गिद्ध और कागों

को हटातीहै परन्तु हटानेको समर्थनहीं होतीहै ४ हे पुरुषोत्तम माधवजी तरुणदेवता रूपशूरबीर सुखपूर्बक निवास करनेवाला विकर्ण पृथ्वीकी धूलपर सोताहै ५ युद्धमें करणी, नालीक, और नाराचनाम बाणोंसे टूटेमर्मस्थलोंवाले भरतर्षभ इसविकर्णको अबभी शोभानहीं छोड़तीहै ६ युद्धमें शत्रुओंके समूहोंका मारनेवाला सन्मुखरहनेवाला यह दुर्मुख उस युद्धभूमिमें बीर प्रतिज्ञा पूरीकरनेके अभिलाषी भीमसेन केहाथसे मृतक होकरसोताहै ७ हे श्रीकृष्णजी उसकायह मुख श्वापदजीवोंसे आधा खाया हुआ ऐसे अधिक प्रकाशित है जैसे कि सप्तमीका चन्द्रमा होताहै ८ हे कृष्णजी युद्धमें मेरे शूरपुत्रकेऐसे मुख को देखो वह मेरा पुत्र किसरीति से शत्रुओंके हाथ से मारागया और युद्धकी धूलको निगलताहै ९ हे स्वामी युद्धके मुखपर जिसकी सन्मुखता करने वाला कोई नहीं वह देवलोकका विजयकरनेवाला दुर्मुख किस प्रकार शत्रुओंके हाथसे मारागया १० हे मधुसूदनजी इस धृतराष्ट्रके पुत्र धनुषधारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्तसेनकी मृतक मूर्त्ति को देखो ११ शोकसे पीड़ित रोनेवाली स्त्रियां मांसभक्षियोंके समूहोंसमेत उसजड़ाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेन केपास नियतहैं १२ हे श्रीकृष्णजी स्त्रियोंके रुदनकेशब्द और मांसाहारियोंकी गर्जना अपूर्बरूप और बिचित्र मालूम होतीहै १३ हे माधवजी यह तरुण सदैव उत्तम स्त्रियोंसे सेवित देवतारूपबिबिंशति धूलमें पड़ासोताहै १४ हे श्रीकृष्णजी देखो कि गिद्धनाम पक्षी इस बाणोंसे टूटे कवच बीरबिबिंशति,को बड़ी रणभूमिमें घेरकरबैठे हैं १५ वहशूरयुद्धमें पांडवोंकी सेनामें प्रवेशकरके सत्पुरुषोंकेयोग्य वीर शैयापर सोताहै १६ हे श्रीकृष्णजी बिबिंशतिके मुखको देखो जो कि मन्द मुसकान समेत सुन्दर नाक और चन्द्रमाके समान बहुत उज्वल है १७ बहुधा उत्तम स्त्रियोंने चारोंओर उसको ऐसी वर्त्तमानतर करीहै जैसेकि हजारों देवकन्या क्रीड़ाकरनेवालेगन्धर्व की बर्त्तमानताकरतीहैं १८ शत्रुओं की सेनाके मारनेवाले युद्ध को शोभा देनेवाले और शत्रुओंका नाशकरनेवाले दुखसे सहनेके योग्य

शूरको कौनसहसक्ताहै १९ दुस्सह का यहशरीर बाणोंसे युक्त ऐसा शोभायमान है जैसेकि अपने ऊपर वर्त्तमान कर्णिकार के पुष्पों से ब्याप्त पर्व्वत होताहै २० यह मृतकभी दुखसे सहनेके योग्य स्वर्ण माला और प्रकाशित कवचसमेत ऐसे प्रकाशमानहै जैसेकि अग्नि से श्वेतपर्व्वत प्रकाशित होताहै २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिगांधारीवाक्येएकोनविंशोऽध्यायः१९॥

बीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे यादव केशवजी जिस अहंकारी और सिंहके समान अभिमन्यु को बल पराक्रम में पिता अर्जुन और तुमसे भी ड्योढ़ाकहाहै १ जिसअकेलेने मेरे पुत्रकी सेनाको जोकि कठिनता से चीरनेके योग्यथी चीरा वह दूसरोंका काल रूप होकर आपही कालके आधीन हुआ २ हेश्रीकृष्णजी मैं देखतीहूं कि उस अर्जुन के पुत्रबड़े तेजस्वी मरेहुये अभिमन्यु का तेजनाशको नहींपाताहै ३ यह बिराटकी पुत्री और अर्जुनकी पुत्रबधू निर्दोष और पीड़ामान इस बालक और बीरपतिको देखकर शोच करतीहै ४ हेश्रीकृष्ण यह बिराटकी पुत्री भार्य्या समीपसे उस पतिको मिलकर हाथोंसे साफ करतीहै ५ यह चित्तवाली मनोहर रूप तेजस्विनी उसअभिमन्युके मुखको जो प्रफुल्लित कमलके रूप और गोलगर्दन वाला है सूंघकर उससे मिलतीहै जोकि पूर्व समयमें माध्वीक नाम मद्यके मदसे अचेतभी लज्जा युक्तथी ६ । ७ हेश्रीकृष्णजी उसके सुवर्ण जटित रुधिरसे लिप्त कवचको उघारकर शरीर को देखतीहै ८ हे मधुसूदनजी यह बाला उसको देखकर तुमसे कहतीहै कि हेकमल लोचन यह आपके समान नेत्र रखनेवाला गिरायागया ९ हे पापोंसे रहित यह बल पराक्रम और तेज और बड़े रूपमें आपकी समान पृथ्वीपर गिराया हुआ सोताहै १० अबतुम अत्यन्तकोमल शरीर और रांकनाम मृगचर्मपर सोने वालेका शरीर पृथ्वीपर दुखतोनहीं पाताहै ११ तुम हाथीकी सूंड़के समान प्रकाशमान

प्रत्यंचाके खेंचनेसे कठिनचर्मवाले सुवर्णके बाजूबन्दोंसेअलंकृतवड़ी भुजाओंको फैलाकरसोतेहो १२ निश्चय करके बहुत प्रकार के परिश्रम करके थकावटसे विश्रामयुक्त होकर सोगयेहो जो इसप्रकार से बिलाप करनेवाली मुझको उत्तरनहीं देतेहो १३ तुम्हारे विषयमें मैंअपने अपराधको नहीं स्मरण करतीहूं मुझको उत्तर क्यों नहीं देते हो निश्चय करके तुम पूर्वसमय में मुझको देखकर बोलतेथे अब भी मेराकोई अपराधनहींहै मुझसे क्यों नहीं बार्तालाप करतेहो हे श्रेष्ठ तुममेरीसासमुभद्रा और देवताओंके समान १४ । १५ इन पिताओं समेत दुखसे पीड़ामान मुझको छोड़कर कहां जाओगे फिर उसके रुधिरसेलिप्त मृतक शिरको हाथसे उठाकर १६ और बगलमेंमुख को रखकर ऐसे पोंछतीहै जैसे कि जीवतेको पोंछतेहैं तुम बासुदेव जीके भानजे और अर्जुन के पुत्र १७ युद्धमें वर्त्तमानको इन महारथियोंने कैसेमारा उन निर्दय कर्मी कृपाचार्य, कर्ण, जयद्रथ, १८ द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामाको धिक्कारहै जिन के कि हाथसे मैं विधवांकरीगई उससमय उनउत्तम रथियोंका चित्तकैसाहोगया १९ कि तुझ अकेले बालकको घेरकर मेरेदुःख देनेकोमारा हेवीर नाथवान्होते तुमनेपांडवों और पांचालोंके देखते अनाथके समान कैसे मरणकोपाया २० तेरापिता पुरुषोत्तम वीर पांडव युद्धमें बहुतों के हाथसे तुझको मराहुआ देखकर कैसेजीवताहै २१ हेकमललोचन तेरे बिना सब राज्यकी प्राप्ति और शत्रुकी पराजय पांडवों की प्रसन्नताको उत्पन्न नहीं करेगी २२ तेरेधर्म और जितेन्द्रीपन और शस्त्रोंसे विजय कियेहुये लोकोंको २३ शीघ्रपीछेसमैं भी प्राप्तकरूंगी वहांपर मेरीप्रतीक्षाकरो फिरसमय के वर्त्तमान न होनेपर प्रत्येक को मरना कठिन होताहै २४ जो दुर्भागिनी मैं युद्धमें तुझकोमृतक देखकर जीवतीहूं हे नरोत्तम अब इच्छा के अनुसार पितृ लोक में मिलने वालोंको मन्दमुसक्कानके साथमधुर बचनसे २५ ऐसेअपनी ओर लगाओगे जैसेकि मुझको और स्वर्ग में अप्सराओं के चित्तों को २६ उत्तमरूप और मन्द मुसकान समेत मधुरवाणी से मथन

करोगे पुण्यसे प्राप्तहोनेवाले लोकोंकोपाकर अप्सराओंसेमिले २७ हुये हेस्वामी तुम स्वर्गमें विहारकरते मेरे कर्मोंको स्मरण करना इसलोकमें आपका मेरेसाथ इतनेही कालके लिये सम्बन्ध नियत कियाथा २८ हेवीर छः महीने साथरहे सातवें महीनेमें मृत्युको पायाराजाबिराटके कुलकी स्त्रियांऐसे कहनेवाली महादुःखीनिष्फल संकल्पवाली२९इस उत्तराकोहटातीहैं आपभी महापीड़ित वहस्त्रियां इस अत्यन्त पीड़ित उत्तराको हटाकर मरेहुये बिराट को ३० देखकर पुकारतीहैं बिलाप करतीहैं द्रोणाचार्य्य के अस्त्र और बाणोंसे टूटे अंग रुधिरसे लिप्त सोनेवाले ३१ बिराटको यहगिद्ध शृगाल और काग काटतेहैं श्यामचक्षु पीड़ामान स्त्रियां पक्षियों से घायल होते बिराटको देखकर ३२ पक्षियोंके हटानेको समर्थनहीं होतीहैं सूर्य्य के तापसे तपनेवाली इनस्त्रियोंके मुखोंका तेजजोकि ३३ परिश्रम और थकावटसे अप्रकाशित है दूर होगया उत्तर, अभिमन्यु, काम्बोज, सुदक्षिण ३४ और सुन्दर दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक बालकों को देखो हेमाधवजी इनसबको युद्धभूमि में सोता हुआ देखो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिविंशतमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोलीयह बड़ा धनुषधारी महारथी कर्ण सोताहै यह अर्जुनकेतेजसे युद्धमें ज्वलितअग्निके समान शान्तहोगया १ बहुत से रथियोंको मारकर पृथ्वीपर पड़ासोताहै और रुधिरसेलिप्तशरीर सूर्य्यके पुत्र कर्णको देखो २ यह अशान्तचित्त महाक्रोधी बड़ाधनुष धारी पराक्रमीशूर युद्ध में अर्जुनके हाथसे माराहुआ सोताहै ३ मेरे महारथी पुत्र पांडवोंके भयसे जिसको अग्रवर्ती करके अच्छेप्रकार ऐसे युद्ध करनेवालेहुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को अग्रवर्ती करके उत्तम युद्ध करतेहैं ४ वह युद्धमें अर्जुनके हाथसे ऐसे गिरायागया जैसे कि सिंहसे शार्दूल और मतवाले हाथीसे मतवा-

लाहाथी गिराया जाताहै ५ हेपुरुषोत्तम यह विखरेहुये बालरोदन करती इकट्ठी स्त्रियां इस युद्धमें मरेहुये शूरके चारोंओर नियतहैं ६ सदैव जिससे व्याकुल भयभीत और चिन्ता करके धर्मराज युधिष्ठिरने तेरहवर्षतक निद्राको नहींपाया ७ युद्धमें इन्द्रकेसमान अन्य शत्रुओंसे अजेय प्रलयकालकी अग्निकेसमान तेजस्वी हिमाचलके समान युद्धसे न हटनेवाला ८ वहवीर दुर्योधनका रक्षाश्रय होकर ऐसे माराहुआ पृथ्वीपर सोताहै हेमाधव जैसे कि वायुसे टूटा हुआ वृक्षहोताहै ९ तुम कर्णकीस्त्री वृषसेनकीमाता पृथ्वीपर गिरीरोदन करतीहुई और शोककी वार्त्ता करनेवाली को देखो १० निश्चय करके गुरूकाशाप तुझको प्राप्तहुआ जो पृथ्वीने इसतेरे रथचक्रको दबालिया इसकेपीछे युद्धकी शोभा देनेवाले अर्जुनके बाणसे तेरा शिर काटागया ११ हाय २ धिक्कार यह रोदन करती अत्यन्तपीड़ा मान सूरसेनकी माता इस सुवर्णके बाजू बन्दसे अलंकृत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ीहै १२ यह महात्मा श्वापदोंके भक्षणकरनेसे अभी थोड़ाशेषरहाहै वह देखने में हमारी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला ऐसेनहींहै जैसे कि कृष्णपक्षकीचौदशमें चन्द्रमा प्रसन्नतासे रहित होताहै १३ यह पृथ्वीपर पड़ी हुई महादुःखी और उठकर कर्णकेमुखको सूंघती पुत्रके मरण शोकसे दुःखी रोतीहै १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिएकविंशोऽध्याय:२१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

गान्धारीबोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेनकेगिरायेहुयेराजा-अवन्तीको जोकि शूरबीर और बहुत बान्धव रखनेवाला है भाइयों सेरहितके समान खातेहैं १ हेश्रीकृष्णजी उस कर्णकोभी जोकि शत्रुओंके समूहोंका मर्दन करनेवालाहै खैंचतेहैं हेमधुसूदनजी शूरोंका नाशकरके बीर शैयापर सोनेवाले रुधिरसे भरेहुये उसको देखो शृगाल कंक और काकआदिक अनेक मांसभक्षी उसको २। ३कैसे२

मार्गोंसे खैंचतेहैं समयकी बिपरीतिताको देखो युद्ध करनेवाले शूर बीर शैयापर सोनेवाले ४ राजा आवन्तिके पास रोनेवाली स्त्रियां नियतहैं हेश्रीकृष्णजी इसबड़े धनुषधारी और भल्लसे मृतकप्रतीप बंशी बाह्लीकको ५ शार्दूल के समान सोवता हुआ देखो इस मरे हुयेकाभी मुखकावर्ण ऐसा शोभादेताहै ६ जैसे कि पूर्णमासी का पूर्ण चन्द्रमा होताहै पुत्रशोकसे दुःखी और प्रतिज्ञा को पूरा करने वाले ७ इन्द्रके पुत्र अर्जुनसे युद्धमेंजयद्रथ गिरायागया प्रतिज्ञाको सत्य करनेके अभिलाषी अर्जुनने ग्यारह अक्षौहिणी सेना को हटा-कर महात्मासे रक्षित ८ इस जयद्रथको मारा हे जनार्द्दनजी देखो इससिन्ध सौवीर देशके स्वामी अहंकारी साहसी ९ जयद्रथ को शृगाल और गिद्ध खाते हैं हे अबिनाशी वह डराते हुयेपक्षी इन आज्ञाकारी स्त्रियोंसे रक्षित जयद्रथको १० पासहीसेनीचे और घने स्थानपर खैंचतेहैं यह कांबोज और यवनदेशी स्त्रियां इस रक्षित महाबाहु ११ सिन्धसौबीर देशकेस्वामी जयद्रथके चारोंओर नियत हैं हे जनार्द्दनजी जबयह जयद्रथ केकय देशियों समेत द्रौपदी को पकड़कर भागा १२ तभी पांडवोंके हाथसे मारने के योग्यथा उस समय दुश्शलाके माननेवाले पांडवोंके हाथसे जयद्रथबचाथा १३ हेश्रीकृष्ण अबउन पांडवोंने उसबहनोईको कैसे नहींमाना वह मेरी पुत्रीबालक दुःखीबिलाप करती १४ और पांडवोंको पुकारती आप अपनेशरीरको घायल करतीहै हेश्रीकृष्णजी इससे अधिकमेरा और कौनसादुःख होगा १५ जोबालक पुत्रीविधवा और पुत्रबधू मृतक पतिवालीहैं हाय २ धिक्कार शोकभयसे जुदेके समान दुश्शला को देखो १६ उस पतिकेशिरको नपाकर इधरउधर दौड़नेवालीहै जिसने कि पुत्रको चाहनेवाले सबपांडवों को रोका १७ वहबड़ीसेनाओं को मारकर आप कालके बशीभूतहुआ चन्द्रमुखी स्त्रियां उस हाथी के समान मतवालेबड़े दुःखसेबिजय होनेवाले बीरको घेरकरके रोदन करतीहैं १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय॥

गान्धारीबोली हेतात युद्धमें धर्मज्ञ धर्मराजसे माराहुआ साक्षात् नकुलका मामायह शल्यसोताहै १ हेपुरुषोत्तम जोकि सदैव सर्वत्र तेरेसाथ ईर्षाकरताथा वह बड़ा बलवान् पराक्रमी मद्रकाराजा सोता है २ युद्धमें कर्णके रथको पकड़नेवाले जिसशल्यने पांडवोंकोविजय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीणकिया ३ दुःखका स्थानहै और धिक्कारहैकि शल्यके मुखकोकाकोंसे काटाहुआदेखो जो कि पूर्णचन्द्रमा केसमान सुन्दर दर्शनकमल पलाशके समाननेत्रधारी और स्वच्छ था४जिससुवर्णवर्णवालेकी जिह्वा तपायेहुये सुवर्णके समान प्रकाशमान् और मुखसेनिकलीहुई पक्षियोंसेभक्षणकी जातीहै ५ राजा मद्रके कुलकी रोदन करनेवाली स्त्रियांइस युधिष्ठिरके हाथ से मरे हुयेयुद्धके शोभादेनेवाले शल्यके चारोंओर नियतहैं ६ यहअत्यन्त सूक्ष्मवस्त्रोंकीपोशाकवाली पुकारनेवाली क्षत्राणीनरोत्तमराजामद्रको पाकर पुकाररहीहैं७स्त्रियां पृथ्वीपर गिरेहुयेशल्यकोचारोंओरसेघेर करऐसे समीप नियतहैं कि जैसे बारंबार बच्चा उत्पन्न करनेवाली हथिनियां कीच में डूबेहुये हाथीको घेरलेती हैं ८ हे वृष्णिनन्दन इसरक्षा देनेवाले शूरशल्यको बाणोंसे विदीर्ण शरीर और वीरोंकी शय्यापरसोनेवाला देखो ९ यह पहाड़ी श्रीमान् प्रतापवान् भगदत्त हाथीका अंकुश हाथ में रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोता है १० जिस शृगालादिकके खाये हुयेको यह स्वर्णमयी माला केशोंको शोभादेती हुई शिरपर बिराजमान है ११ निश्चय करके इसके साथ पांडवोंका युद्ध वह हुआ जोकि बड़ा भयकारी अत्यन्त कठिन रोमांचोंका खड़ा करने वाला था और इन्द्र और वृत्रासुर के युद्धके समानथा १२ यह महाबाहु पांडव अर्जुन से युद्धकरके और संशयको उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर से गिरायागया १३ लोकमें जिसकी शूरता और बलपराक्रम के समान कोई नहींहै युद्ध में भयकारी कर्मकरने वालेयह भीष्मजी आसन्न मृत्युहोकर सोते

हैं १४ हेश्रीकृष्णजी इस सूर्य्यके समान तेजस्वी सोनेवाले भीष्म जीको ऐसे देखो जैसे कि प्रलयकालमें कालसे प्रेरित आकाश से गिराहुआ सूर्य्य होताहै १५ हेकेशवजी यह पराक्रमी नररूप सूर्य्य युद्धमें शस्त्रोंके तापसे शत्रुओंको संतप्त करके ऐसा अस्तंगत होताहै जैसे कि अस्ताचलपर वर्त्तमान सूर्य्य होताहै १६ इस वीर्य्यको च्युत न करनेवाले अजेय शरशैयापर बर्त्तमान शूरबीरों से सेवित बीरशैयापर सोनेवाले भीष्मको देखो १७ करणी नालीक और नाराच नाम बाणोंसे उत्तम शैयाको बिछवाकर उसपर चढ़ेहुयेऐसे सोतेहैं जैसे कि भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी शरवण को पाकर सोते हैं १८ यह गंगाजीके पुत्र रुईसे रहित तीनबाणों से बने अर्जुनके दिये हुये तकियेको शिरके नीचे धरकर १९ पिताके आज्ञानुसारी ब्रह्मचारी महा तपस्वी युद्धमें अनुपम भीष्मजी सोतेहैं २० हेतात सबबातोंके जाननेवाले नररूप होकर इस धर्मात्माने ब्रह्मज्ञानके बलसे देवताओंके समान प्राणोंको धारण कियाहै २१ युद्धमेंकोई कर्मकर्त्ता पंडित और पराक्रमी नहींहै जबकि यह शंतनुके पुत्रभीष्म जी सरीकेभी बाणोंसे घायल सोतेहैं २२ पांडवोंसे पूछे हुये इस शूरधर्मवान् सत्यवक्ताने आप अपनी मृत्युको युद्धमें बतलादिया२३ जिसने बिनाशवान् कौरववंश फिर सजीवकिया उसवड़े बुद्धिमान् ने कौरवों समेत नाशको पाया २४ हे माधवजी इस देवता के समान नरोत्तम देवब्रत भीष्मके स्वर्गबासी होनेपर कौरवलोग धर्मोंके बिषय किससे पूछेंगे २५ जो कि अर्जुन का बिजेता और सात्यकी कागुरुहै उस कौरवों के उत्तमगुरू द्रोणाचार्य्य को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखो २६ हे माधवजी जैसे कि देवताओंके ईश्वर इन्द्र और बड़े पराक्रमी भार्गव परशुराम जी चारों प्रकार के अस्त्रोंके ज्ञाताथे उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य भी जानतेथे २७ जिसके प्रभाव से पाण्डव अर्जुनने कठिन कर्म को किया वह मृतक होकर सोताहै उसको भी अस्त्रोंने रक्षित नहीं किया २८ कौरवों ने जिसको अग्रवर्त्ती करके पांडवों को बुलाया वह पृथ्वीपर मरा

हुआ ऐसे सोताहै जैसे कि निर्ज्वलित अग्नि होताहै २९ हे माधव जो मृतक द्रोणाचार्य्यकी धनुषकीमुष्टि और युद्धके हस्तत्राण बिना जुदेहुये रणभूमिमें ऐसे दिखाई पड़तेहैं जैसे कि जीवतेहुये के होते हैं ३० हे केशवजी चारों वेद और सब अस्त्र जिस शूरसे ऐसेपृथक् नहीं हुये जैसे कि आदिमें प्रजापतिजीसे जुदेनहीं हुये थे ३१ उनके उन दोनों चरणों को शृगाल खैंचते हैं जो कि दण्डवत्के योग्य और बन्दीजनोंसे स्तूयमान अतिशुभ होकर सैकड़ों शिष्योंसे पूजितथे ३२ हेमधुसूदनजी यह दुःखसे घातितबुद्धि कृपीइसधृष्टद्युम्न के हाथसे मृतक द्रोणाचार्य्यके पास महादुःखी नियतहै ३३ उस रोदन करनेवाली पीड़ामान खुले केशनीचाशिरकिये शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्य्यके समीप नियतको देखो ३४ हे केशवजी यह जटिला ब्रह्मचारिणी रणभूमिमें धृष्टद्युम्न के बाणोंसे टूटे कवचवाले द्रोणाचार्य्यके पास नियतहै ३५ यह अत्यन्तकोमल शरीर यशवन्ती दुःखी कृपीयुद्धमें मृतकपतिके क्रिया कर्ममें दुःखसे उपाय करतीहै ३६ सामग ब्राह्मण बिधिपूर्वक अग्नियोंको धारण करके सब ओरसे चिताको अग्निसे प्रज्वलितकरके द्रोणाचार्य्यको उसमें रखकर सामवेदके तीनमन्त्रोंको गातेहैं ३७ हे माधवजी यह जटिल ब्रह्मचारी धनुषशक्ति और रथोंकी नीड़ोंसे चिताको बनाते हैं ३८ नाना प्रकारके दूसरे बाणोंसे चिताको बनाकर बड़ेतेजस्वी द्रोणाचार्य्यको अच्छे प्रकारसे धरकर जलाते हुये मन्त्रोंको गातेहुये रुदनको करतेहैं ३९ दूसरे शिष्य अग्निमें अग्निको धारण करके और द्रोणाचार्य्यको अग्निमें हवन करके अन्तमें नियत होकर तीन साममंत्रोंको गातेहैं ४० द्रोणाचार्य्यके शिष्यवह ब्राह्मण चिताको दक्षिण करके और कृपीको आगे करके श्री गंगाजी के सन्मुख जातेहैं ४१॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणित्रिविंशोऽध्यायः २३ ॥

—*—

चौबीसवां अध्याय ॥

गांधारीबोली हे माधवजी सन्मुखही सात्यकीके हाथसे गिराये हुये और बहुतसे पक्षियों से घिरेहुये सोमदत्त के पुत्रकोदेखो १ हे जनार्दनजी पुत्रशोकसे दुःखी सोमदत्त मानो बड़े धनुषधारी सात्यकी की निन्दा करता हुआ देखताहै २ यह भूरिश्रवाकी माता निर्दोष दुःख से पूर्ण अपनेपति सोमदत्तको मानो विश्वास कराती है ३ कि हे महाराज प्रारब्ध से इस भरतबंशियों के भयानक नाशको और कौरवोंके घोर प्रलयकालके समान रोदन करने को तुम नहीं देखतेहो ४ और प्रारब्धसे इस हजारों दक्षिणा देनेवाले बहुत यज्ञोंसे पूजन करनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्र को नहीं देखतेहो ५ हे महाराज प्रारब्धसे रणभूमिमें इन पुत्र बधुओं के घोर विलापको ऐसे नहीं देखतेहो जैसे कि समुद्रपर सारसियोंके शब्द होते हैं ६ तेरी पुत्रबधू मृतक पतिवाली एकवस्त्राच्छ से गुप्त शरीर और शिरके खुलेकाले केशवाली चारोंओरको दौड़ती हैं ७ तुम प्रारब्धसे शृगालआदिकसे खाईहुई टूटी भुजा और अर्जुनसे गिरायेहुये नरोत्तम पुत्रको नहीं देखतेहो ८ अब यहां युद्धमें मृतक भूरिश्रवा और शल्यको और नानाप्रकार के पुत्रबधुओंको नहीं देखतेहो ९ प्रारब्धसे यूपभुजाधारी महात्मा भूरिश्रवाके उस सुवर्णके छत्रको रथके बैठनेके स्थानपर गिराहुआ नहीं देखतेहो १० भूरिश्रवाकी यह श्याम चक्षु स्त्रियां सात्यकी के हाथसे मरेहुये पति को घेरकर शोचतीहैं ११ हेकेशवजी दुःखकी बातहै कि पतिकेशोकसे पीड़ामान यह स्त्रियां दुःखका बिलापकरके सन्मुख पृथ्वीपर गिरती हैं १२ हे अर्जुन तुमने वीभत्सुनाम हो यह निन्दितकर्म कैसे किया जो यज्ञ करनेवाले अचेत शूरकी भुजाको काटा १३ सात्यकी ने भी उससे अधिक पापकर्म किया कि शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्ण बुद्धिका शिरकाटा १४ हे धर्मके अभ्यासी दो के हाथसेमारेहुये तुम अकेलेसोतेहो अर्जुन गोष्ठी और सभाओंमें क्या

कहैगा १५ और वह सात्यकी भी इस अपवित्र अपकीर्त्ति करने वाले कर्मको करके क्या कहैगा हे माधवजी यह भूरिश्रवाकीस्त्रियां पुकारतीहैं १६ भूरिश्रवाकी यह स्त्री जिसकी कमर हाथकी मुट्ठीके समानहै पतिकीभुजाको बगलमेंलेकर दुःखका बिलापकरतीहै १७ कि यह वह हाथहै जो कि शूरोंका मारनेवाला मित्रोंको निर्भयता देनेवाला हजारों गोदानकरनेवाला और क्षत्रियोंका नाशकरनेवाला है १८ यह वहहाथहै जो कि सरसनोत्कर्षी अर्थात् स्त्रियोंकेवस्त्रोंका उघाड़नेवाला पीन स्तनोंका मर्द्दन करनेवाला नाभि छाती और जंघाओंकास्पर्शकरनेवाला और नीबी अर्थात् आंगीनाम स्तनरक्षक बस्त्रका हटानेवालाहै १९ बासुदेवजीकेसन्मुख सुगमकर्मी अर्जुनने युद्धमें दूसरे के साथ लड़नेवाले तुझ अचेतका हाथ काटडाला २० हे जनार्द्दनजी सत्पुरुषोंके मध्यमें और कथाओंमें अर्जुनके इस बड़े कर्मको क्या कहोगे अथवा आप अर्जुनही क्या कहैगा २१ यह उत्तम स्त्री इसप्रकार निन्दा करके मौनहै यह सपत्नी स्त्रियां इसको ऐसे शोचतीहैं जैसे कि अपनी पुत्रबधू को शोचती होतीहैं २२ यह बलवान् और सत्य पराक्रमी शकुनी गांधार देशका राजा नातेमें मामा अपने भानजे सहदेवके हाथसे मारागया २३ जो कि पूर्व्व समयमें सुवर्ण दंडीवाले पंखोंसे बायुकिया जाताथा वहअब सोता हुआ पक्षियोंके परोंसे बायु किया जाता है २४ जो कि अपने सैकड़ों और हजारों रूपों को करलेता था उस मायावी की माया पांडवोंके तेजसे नष्टहोगई २५ जिस छलीने सभामें मायासेजीवते युधिष्ठिरको और बड़े राज्यको बिजय किया अन्तमें वह पराजित हुआ २६ हे श्रीकृष्णजी पक्षीगण चारोंओरसे उस शकुनीकी बर्त्तमानता करतेहैं जो कि मेरेपुत्रोंकेलिये कुल्हाड़ा और संसारकेनाशकेअर्थ शिक्षापानेवालाहुआ २७ इसनेमेरे पुत्र और अपने समूह समेत अपने मरनेके लिये पांडवों के साथ बड़ी शत्रुता करी २८ हे प्रभु जैसे कि मेरे पुत्रोंके लोक शस्त्रोंसे बिजयहुये उसीप्रकार इस दुर्बुद्धी के भी लोक शस्त्रोंसे बिजय होगये २९ हे मधुसूदनजी

यह कुटिल हुवी वहां भी मेरे सत्य बुद्धिवाले पुत्रोंको कहीं भाइयों समेत विरोधी न करे ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय॥

गान्धारी बोली हे माधवजी इस मृतक और पृथ्वीकी धूलपर सोनेवाले काम्बोजके राजाको देखो जोकि अजेय उत्तम स्कन्ध युक्त होकर काम्बोज देशी उत्तम पुरुषोंके योग्यहै १ वह भार्या जिसकी रुधिर भरी चन्दन से लिप्त भुजा को देखकर महा दुःखी होकर दुःखका यह बिलाप करती है २ कि यह वह शुभउंगलियां और हथेली रखनेवाले परिघनाम शस्त्र के समान भुजाहैं पूर्वसमय में जिनके मध्य को पाकर मुझ को कभी प्रीति ने नहीं त्याग किया३ हे राजा मृतक बन्धुवाले अनाथ कम्पायमान मधुर शब्द वाले मैं तुमसे जुदी होकर किस दशा को पाऊंगी ४ धूपमें म्लान नानाप्रकार की मालाओं का रूपान्तर होजाता है परिश्रम से पीड़ामान स्त्रियोंके शरीरको शोभा त्यागनहीं करतीहै ५ हे मधुसूदनजी इस सोनेवाले शूरवीर राजा कलिङ्ग को चारोंओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा प्रकाशित बाजूबन्दों के जोड़े से अलंकृतहै ६ हे जनार्दनजी स्त्रियां सब ओर से इस जयत्सेन राजा मगध को घेरकर अत्यन्त रोदन करतीहुई व्याकुलहैं ७ हे मधुसूदनजी इन बड़े नेत्रवाली और सुन्दर स्वरवाली स्त्रियों के शब्द जोकि चित्त-रोचक और श्रवणोंको प्यारेहैं मेरे मनको व्यथित करतेहैं ८ गिरे हुये वस्त्र और भूषणवाली शोकसे पीड़ित रोदन करनेवाली मगध देशी स्त्रियां जोकि सुन्दर वस्त्रवाले शयनोंसे युक्तथीं पृथ्वीपर सोतीहैं ९ यह स्त्रियां कोशलदेशोंके राजा वृहद्बलनाम अपने पतिको घेरकरपृथक्२रोतीहैं १० यहबारंबार अचेत और दुःखसेपूर्णस्त्रियां अभिमन्युके भुजबल से मारे और उसके अंगोंमें लगेहुये बाणोंको निकालतीहैं ११ हे माधवजी इन सब निर्दोष स्त्रियों के मुख धूप

और परिश्रम से ऐसे दिखाई पड़तेहैं जैसे कि कुम्हलायेहुये कमल होतेहैं १२ धृष्टद्युम्नके सब पुत्र बालक सुवर्णकीमाला और सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले शूरबीरद्रोणाचार्य्यके हाथसे मरेहुये सोते हैं १३ जिसका रथ अग्निकुण्ड है धनुष अग्निहै और बाण शक्ति गदा यह इंधनहैं उस द्रोणाचार्य्यको पाकर ऐसे भस्महोगये जैसे शलभानाम पक्षी अग्निको पाकर भस्म होजातेहैं १४ उसीप्रकार सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले कैकयदेशी पाचों शूर भाई सन्मुखतामें द्रोणाचार्य्यके हाथसे मरेहुये सोतेहैं १५ तप्तसुवर्णकेसमान कवच तालवृक्षके समान ध्वजाधारी रथोंके समूह अपनेतेजसे पृथ्वीको ऐसे प्रकाशित करतेहैं जैसे कि ज्वलित अग्नि प्रकाशकरतीहै १६ हे माधवजी युद्धमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे गिरायेहुये द्रुपदको ऐसे देखो जैसे कि बनमें बड़े सिंहसे मारेहुये बड़े हाथीको देखतेहैं १७ राजा द्रुपदका श्वेत निर्मल छत्र ऐसेप्रकाशमानहै जैसे कि शरद-ऋतुमें चन्द्रमा होताहै १८ यह दुःखीभार्य्या और पुत्रबधू पांचाल के वृद्ध राजाद्रुपदको दाहदेकर दाहिनी ओरसे जातीहैं १९ अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारे हुये इस महात्मा शूर चन्देरके राजा धृष्टद्युम्नको उठातीहैं २० हे मधुसूदनजी यह बड़ा धनुष-धारी युद्धमें द्रोणाचार्य्यके अस्त्रको दूर करके मराहुआ ऐसे सोताहै जैसे कि नदी से उखाड़ा हुआ वृक्ष होताहै २१ यह महारथी शूर चंदेरीका राजा धृष्टकेतु युद्ध में हजारों शत्रुओंको मारकर मराहुआ सोताहै २२ हे हृषीकेशजी स्त्रियां उन पक्षियोंसे घायलहोती सेना और बान्धवों समेत मरे हुये राजा चंदेरीके पास नियत हैं २३ हे श्रीकृष्णजी राजाचंदेरीकी यह उत्तमस्त्रियां इस सत्यपराक्रमी वीर मैदानमें सोनेवाले अपने पौत्रको बगलमें लेकर रोतीहैं २४ हे श्रीकृष्णजी इस के पुत्र सुन्दर मुख और कुण्डलधारी को युद्ध में द्रोणाचार्य्यके बहुतप्रकारके बाणोंसे घायलदेखो २५ निश्चय करके इसने अबतक भी रणभूमिमें नियत शत्रुओंके साथ युद्ध करनेवाले वीर पिताको त्याग नहीं किया २६ हे माधव इसप्रकार मेरे पुत्र

का भी पुत्र शत्रुओंके वीरों का मारनेवाला लक्ष्मण अपने पिता दुर्योधन के पीछे गया २७ हे श्रीकृष्णजी इन अवन्तिदेश के राजा विन्द अनुविन्दको ऐसे देखो जैसे कि हिमऋतु के अन्तपर वायुसे गिराये हुये दो पुष्पित शालवृक्षों को देखतेहैं यह दोनों सुवर्ण के बाजूबन्द और कवच से अलंकृत बाण खड्ग धनुष धारण करने वाले बैलकीसमान नेत्ररखनेवाले निर्मलमालाधारीसोतेहैं २८।२६ हे श्रीकृष्णजी सब पांडव आपके साथ मारनेके अयोग्यहैं जो कि द्रोणाचार्य,भीष्म,कर्ण, और कृपाचार्य्यसे भी बचेहुये हैं दुर्योधन, अश्वत्थामा,सिन्धकाराजा, जयद्रथ, बिकर्ण,सोमदत्त,और शूरकृत-बर्मासेभीबचे ३०।३१ जो नरोत्तमशस्त्रोंकी तीक्ष्णतासे देवताओं को भी मारसक्तेथे वह सब इस युद्धमें मारेगये इस बिपरीत समयको देखो ३२ हे माधवजी निश्चय करके दैवका कोई बड़ाभार नहीं है जो यह शूर क्षत्री क्षत्रियोंके हाथसे मारेगये ३३ हे श्रीकृष्णजी मेरे वेगवान् पुत्र तभी मारेगये जब कि तुम अपने अभीष्ट प्राप्तीसे रहित उपप्लवीस्थानको लौटकरगये ३४ उसीसमय मुझको भीष्म-पितामह औरज्ञानी बिदुरजीने समझायाथा कि अपने पुत्रोंपरप्रीति मतकरो ३५ उनदोनोंकी वह दूरदर्शकता मिथ्याहोनेके योग्य नहीं थी इसीसे हे जनार्दनजी मेरे पुत्र थोड़ेही दिनोंमें नाश होगये ३६ बैशंपायन बोले हे भरतवंशी वह गान्धारी यह सब कहकर शोक से मूर्च्छामान दुःख से घायल बुद्धि धैर्य्य को त्यागकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ३७ फिर क्रोधसे पूर्ण शरीर पुत्र शोकमें डूबीअसावधान इंद्री गान्धारीने श्रीकृष्णजी को दोष लगाया ३८ गान्धारी बोली हे श्रीकृष्ण पाण्डवों के और धृष्टद्युम्न के पुत्रादिक सब परस्पर भस्म हुये हे जनार्दन तुम किसहेतु से इन विनाश होनेवालोंको त्यागकिया ३९ समर्थ और बहुत से नौकर चाकर रखनेवाले बड़े बलमें नियत दोनोंओर के विषयों में समर्थ शस्त्र रूप वचन रखने वालेने किस कारण से उपद्रवको दूर नहीं किया ४० हे महाबाहु मधुसूदनजी जिसकारण से तुझ इच्छावान् ने जानबूझकर कौरवों

का नाश होनेदिया इसहेतुसे तुम भी उसके फलको पावोगे ४१ पतिकी सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तपप्राप्तकिया उस दुष्प्राप्य तपकेद्वारा तुझ चक्र गदाधारीको शापदेतीहूं ४२ हेगोविन्दजी जो कि तुमने परस्पर जातवालोंको मारनेवाले कौरव और पांडवों को नहींरोका इसहेतुसे तुमभी अपनी जातवालोंकोमारोगे४३ हेमधु-सूदनजी तुम भी छत्तीसवांबर्ष वर्त्तमान होनेपरमंत्री पुत्र ज्ञातिवाले वनमें फिरनेवाले ४४ अज्ञातरूप लोकोंमें गुप्त अनाथ के समान निन्दित उपायसे मरणको पावोगे ४५ इसीप्रकार तेरी स्त्रियां भी जिनके पुत्रबान्धव और ज्ञातिवाले मारेगयेऐसे चारोंओरको दौड़ें-गी जैसे कि यह भरतबंशियों की स्त्रियां दौड़ती हैं ४६ वैशंपायन बोले कि बड़ेसाहसीवासुदेवजी इसघोर वचनको सुनकर मन्दमुस-क्यान करतेहुये उस देवीगान्धारीसेबोले हेक्षत्राणी मैं जानताहूं कि तुमेरे कर्मके समान कर्मको भी अपने तपके नाशकेलिये करती है यादव लोग दैवसेही नाशको पावेंगे इसमें सन्देह नहींहै हे शुभ स्त्री मेरे सिवाय कोई दूसरा पुरुष यादवोंकी सेनाको मारनेवाला नहींहै वहसब अन्यमनुष्य देवता और दानवोंसेभी अवध्यहैं ४७। ४८। ४६ इसहेतुसे यादव परस्पर बिनाशकोपावेंगे श्रीकृष्णजीके इसप्रकारकहनेपर पांडवलोग भयभीतचित्त अत्यन्त व्याकुल और जीवन में निराशा युक्त हुये ५०॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिपंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

श्रीभगवानबोले हे गांधारी उठोउठो शोकमेंचित्तकोमतकरो तेरे अपराधसे कौरवोंनेनाशकोपाया १ जो उस दुर्बुद्धी अत्यंतअहंकारी ईर्षा करनेवाले दुर्योधनको अग्रवर्त्ती करके अपने दुष्ट कर्म्म को अच्छामानतीहै २ जो कि कठोरवचन शत्रुताको प्रिय जाननेवाला मनुष्य और वृद्धोंकीआज्ञाकेबिपरीत बिरुद्धकर्मकरने वालाथा यहां तू अपने कियेहुयेदोषको कैसे मुझमें लगानाचाहतीहै ३ जो मृतक

अथवा बिनाशयुक्त व्यतीत समय को शोचती है और दुःखसे दुःख कोपातीहै अर्थात् आदि अन्तके दोनों दुःखोंको पातीहै ४ ब्राह्मणी नेतपकेनिमित्तउत्पन्न होनेवाले गर्भकोधारणकिया गौनेमारलेचलने वालेकोघोड़ीने दौड़ानेवालेको शूद्राने दासको वैश्याने पशुपाल को और राजपुत्री क्षत्रियाने युद्धके अभिलाषी गर्भ को धारणकिया ५ बैशंपायनबोले कि शोकसे व्याकुलनेत्र गान्धारी वासुदेवजी के उस अप्रिय और दुबाराकहे हुये बचनको सुनकर मौन होगई ६ फिर राजऋषिधृतराष्ट्रने अज्ञानसे उत्पन्न होनेवालेमोहकोरोककर धर्मज्ञ राजायुधिष्ठिरसे पूछा ७ कि हे पांडव तुमजीवतीहुई सेनाकीसंख्या के जाननेवाले हो और जो मृतक शूरबीरोंकी संख्या को जानते हो तो मुझसे कहो ८ युधिष्ठिरबोले हे राजा इसयुद्धमें एकअरबछ्यासठकरोड़बीसहजार शूरबीरमारेगये ९ (इससमयके लोगआश्चर्य न करें और दो बातों की ओर ध्यान करें प्रथम यह कि इस महाभारत के युद्धमें सब संसार भरके राजा सेना समेत इकट्ठे हुये थे वह सब सेनासमेत मारेगये दूसरे आजकलकी अपेक्षा उन दिनोंमें मनुष्योंमें संख्या भी अधिकथी इसीप्रकार पृथ्वी का परिमाण भी अधिकथा) हे राजेन्द्र दृष्टि न आनेवाले बीरोंकी संख्या चौबीस हज़ार एकसौ पैंसठहै धृतराष्ट्रबोले हे पुरुषोत्तम महाबाहु युधिष्ठिर उन्होंने किसगति को पाया वह मुझसे कहो मेरे बिचारसे तुमसब बातों के जाननेवाले हो १०।११ युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्नचित्तोंने बड़े युद्धमें अपने शरीरको नाशकिया वह सत्यपराक्रमी इन्द्रलोकके समान लोकोंको गये १२ हे भरतबंशी जो अप्रसन्न चित्तसे युद्धमें लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्वलोककोगये १३ और जो रणभूमिमें स्थित याचना करते पराङ्मुख होकर शस्त्रोंसे मारे गये वह गुह्यकोंके लोकोंको गये १४ जो पात्यमान अशस्त्र लज्जासे युक्त और बड़े साहसी युद्धमें शत्रुओंके सन्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरते क्षत्री धर्मको उत्तममाननेवाले तेजशस्त्रोंसे मारेगये वह निस्सन्देह ब्रह्मलोकको गये १५।१६ हे राजा जो मनुष्य यहां रणभूमिकेमध्यमें

जिसकिसीप्रकार से मारेगये वह उत्तर कौरवदेशको गये १७ धृत-
राष्ट्रबोले हेपुत्रतुम सिद्धोंकेसमान किसज्ञानबलसे इसप्रकार देखते
हो हे महाबाहु वह मुझसेकहो जो मेरेसुननेकेयोग्यहै १८ युधिष्ठिर
बोले कि पर्वसमय में आप की आज्ञानुसार बन में घूमतेवाले मैंने
तीर्थयात्राके योगसे इसअनुग्रहकोप्राप्तकिया १९ देवऋषिलोमश-
ऋषिदेखे उनसेइसमनुस्मृतिकोपाया और निश्चयकरके पूर्व्वसमय
में ज्ञानयोगसे दिव्यनेत्रोंको पाया २० धृतराष्ट्र बोले हेभरतवंशी
क्या तुम नाथ और सनाथलोगोंके शरीरोंको विधिके अनुसार दाह
करोगे २१ जिन्होंका संस्कार करनेके योग्य नहींहै और यहां जि-
नकी अग्नि नियत नहींहै हे तात कर्मोंकी आधिक्यतासे हम किस
का क्रियाकर्मकरें जिन्हों को सुपर्णा अर्थात् गरुड़ और गिद्ध इधर
उधरसे खैंचतेहैं हे युधिष्ठिर क्रियाकर्मसे उन्होंकेलोकहोंगे २२।२३
वैशंपायन बोले हेमहाराज इसबचनको सुनकर कुन्तीके पुत्र युधि-
ष्ठिरने दुर्योधन का पुरोहित सुधर्मा, धौम्यऋषि, सूत संजय, बड़े
बुद्धिमान् विदुरजी, कौरव युयुत्सू, इन्द्रसेनादिक भृत्य और सब
सूत २४।२५ इनसबलोगों को आज्ञाकरी कि आपसबलोग इन्हों
के सब प्रेतकार्य्योंको करो जिससे कि कोई शरीर अनाथके समान
नाशको न पावे २६ धर्मराजकी आज्ञासे बिदुर,सूतसंजय, सुधर्मा
और धौम्य पुरोहित समेत इन्द्रसेन और जयने २७ चन्दन, अग-
र, काष्ठ, और कालीयक, घृत, तेल, सुगन्धियां बहुमूल्य क्षौमब-
स्त्र २८ लकड़ियोंके ढेर और वहांपर टूटेहुये रथ और नानाप्रकार
के शस्त्रोंको इकट्ठा करके २९ सावधानोंने बड़े उपायों से चिताओं
को बनाकर मुख्य २ राजाओंको शास्त्र बिहित कर्मों के द्वारा दाह
किया ३० राजा दुर्य्योधन उसके सौभाई शल्य राजाशल भूरिश्र-
वा ३१ राजा जयद्रथ, अभिमन्यु, दुश्शासन के पुत्र, राजा धृष्टके-
तु ३२ बृहन्त, सोमदत्त, सैकड़ों संजयदेशी, राजा क्षेमधन्वा, बि-
राट,द्रुपद, शिखंडी,धृष्टद्युम्न,पराक्रमीयुधामन्यु, उत्तमौजस३३।३४
कौशल्य, द्रौपदीकेपुत्र, सौबलका पुत्र शकुनी, अचल, वृषक,राजा

भगदत्त ३५ क्रोधयुक्त सूर्य्यकापुत्र कर्ण,पुत्रों समेत बड़े धनुषधारी केकयदेशी, महारथी त्रिगर्त्तदेशी ३६ राक्षसाधिप घटोत्कच, बक, राक्षसोंका राजा अलंबुष राजा जलसिन्ध इनको और अन्यहजारों राजाओंको घृतकी धाराओं से होमीहुई प्रकाशमान अग्नियों से अच्छेप्रकार दाहकिया३७।३८ कितनेही महात्माओंकेपितृयज्ञवर्त्त- मानहुये और सामवेदके मन्त्रोंसे गानकिया उन्होंने दूसरोंके साथ शोचकिया रात्रिमें सामवेदकी ऋचा और स्त्रियोंके रोदनोंके शब्दोंसे सबजीवों का मोह आदिक बर्त्तमान हुआ ३९। ४० वह निर्धूम अत्यन्त प्रकाशित अग्नियां आकाशमें दृष्टिपड़ीं और ग्रह छोटे बा- दलोंसे ढकगये ४१ वहांपर नानाप्रकारके देशों से आनेवाले जो अनाथभीथे उनसबको इकट्ठा करके४२सीधे बुद्धियुक्त तेलसेसंयुक्त लकड़ियोंकी चिताओंसे बिदुरजीने राजाकी आज्ञानुसार उनसबको दाहकिया कौरवराज युधिष्ठिर उन्होंकी क्रियाओंको कराके धृतराष्ट्र को आगे करके श्रीगंगाजी के सन्मुख गये ४३।४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिकुरूणामौर्ध्वदैहिकेषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोलेकि उन्होंने कल्याण रूप पवित्र जलों से पूर्ण श्री गंगाजीको और बड़ी रूपवान् स्वच्छ जल रखने वाली हृदनी को पाकर १ उत्तरीयबस्त्र और पगड़ी आदिको उतारकर पिताभाई पौत्र स्वजन पुत्र और नानाओंके जलदानोंकोकिया अत्यन्तदुखी रोनेवालीं सबकौरवीय स्त्रियोंनेअपने २ पतियोंको जलदानकिया३ धर्मज्ञ लोगोंने सुहृदोंकीभी जलक्रियाओंको किया बीरोंकीपत्नियों से बीरोंका जलदान करनेपर ४ गंगाजी सूपतीर्था अर्थात् सुन्दर घाटवालीहुई और फिरशीघ्रगामी होगई वह गंगाजीकातट महा- समुद्रकेरूप प्रसन्नता और उत्सव से रहित ५ बीरोंकी स्त्रियों से संयुक्त होकर महा शोभायमान हुआ हे महाराज इसकेपीछे शोक से पीड़ित धीरे२ रोदन करतीकुन्ती ६ अकस्मात् अपने पुत्रोंसे यह

वचनबोली कि जोवह बड़ाधनुषधारी महारथी ७ बीरोंके चिह्नोंसे चिह्नित युद्धमें अर्जुनके हाथसे बिजयहुआ हे पांडव तुम जिस को सूतका और राधाका पुत्र मानतेहो ८ और जोसमर्थ सूर्य्यकेसमान सेनाके मध्यमें बिराजमान हुआ प्रथमजिसने तुमसब समेततुम्हारे साथियोंसे युद्धकिया ९ और जो दुर्य्योधन की सब सेनाको खैंचता शोभायमान हुआ जिसके बलकेसमान संपूर्ण पृथ्वीपर कोई राजा नहीं है १० और जिस शूरने सदैव इस पृथ्वीपर शुभ कीर्त्ति को प्राणोंसेभी अधिकचाहा उससत्य प्रतिज्ञ युद्धमें पराङ्मुख न होने वाले ११ सुगमकर्मी अपनेभाई कर्णका जलदान करो वह तुम्हारा बड़ाभाई सूर्य्य देवतासे मुझमें उत्पन्नहुआथा वहशूर कुंडल कवच धारी और सूर्य्यके समान तेजस्वीथा सबपांडव माताके उसअप्रिय बचनको सुनकर १२ । १३ कर्णको शोचतेहुये फिर पीड़ामान हुये इसकेपीछे सर्पकीसमान श्वासलेता वहकुन्तीका पुत्रपुरुषोत्तम बीर युधिष्ठिर अपनी मातासेबोलाकि जो बाणरूपतरंग ध्वजारूपभवंर बड़ी भुजारूप बड़ेग्राह रखने वाली १४।१५ ज्या शब्द से शब्दाय मानबड़े ह्रदरूप उत्तम रथका रखनेवालाथा और अर्जुन के सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी बाण वृष्टी को पाकर सन्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्व समय कैसे आपका पुत्र हुआ जिसके भुजों के प्रताप से हम सब ओरसे तपायेगये १६ । १७ जैसे कि अग्नि को कपड़ोंसे ढके उसीप्रकार तुमने इसको किस निमित्त गुप्त किया जिसकी कठिन भुजाओं का बल धृतराष्ट्र के पुत्रों से ऐसे उपासना कियागया १८ जैसे कि हम लोगों से अर्ज्जुन के भुजबल की उपासनाकरीगई सबराजाओंके मध्यमें कुन्तीके पुत्रकर्ण के सिवाय दूसरारथी औरमहाबलवान् उत्तम रथी भी रथों की सेना को नहीं रोकसक्ता था और सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ हमारा बड़ा भाई था १९।२० आपने प्रथमही उसश्रेष्ठ पराक्रमी को कैसे उत्पन्न किया दुःखकी बातहै कि आपके भेदगुप्त करनेसे हम मारे गये २१ हम बान्धवों समेत कर्णके मरनेसे पीड़ामान्हुये अभिमन्यु द्रौपदी के

पुत्र २२ पांचालोंके नाश और कौरवोंके गिरनेसे भी हम पीड़ामान् हुये परन्तु उनसबसे भी सौगुने इसदुःखने अबमुझको दबायाहै २३ मैं कर्णकोही शोचताहुआ मानों अग्निमें नियत होकर जलताहूंस्वर्ग में प्राप्तहोकर भी मेराकुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं था २४ जोयहघोर युद्धकौरवों का नाशकरनेवाला न होता हेराजा इसप्रकार धर्मराज युधिष्ठिरने बहुतबिलाप करके २५ धीरे २ बहुतरोदन किया इसके पीछे उस प्रभुने उसका जलदान किया उससमय सब स्त्री पुरुष अकस्मात् पुकारे २६ वहां उस जलदान क्रियामें गंगाजी समीप जलरखनेवाली नियत हुईं इसके पीछे उसबुद्धिमान् कौरवपति युधिष्ठिरने भाई के प्रेम से कर्ण की सबस्त्रियोंको परिवार समेतबुला लिया उस धर्मात्मा बुद्धिमान् धर्मराज युधिष्ठिरने उन्होंके साथ निस्सन्देह विधिपूर्व्वक प्रेतक्रियाको किया इसमाता के गुप्तपापसे मुझसे बड़ाभाई जातवाला गिरायागया २७। २८। २९ इस हेतुसे स्त्रियोंके चित्तमें जो गुप्तकरने के योग्य बात है वह गुप्तनहीं होगी वह महा व्याकुल चित्तऐसा कहकर गंगाजी को उतरा और सब भाइयों समेत गंगाजीके तटको प्राप्त किया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिकर्णगूढ़जन्मकथनोनामसप्तविंशतितमोऽध्याय: २७ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति स्त्री पर्व्व समाप्तम् ॥

——※——

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने लखनऊ में छपी
दिसम्बर सन् १८८८ ई०

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० योषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२
१० शांतिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमबासिक १५ मुसलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिबंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इतका आनन्द देखनेही से मालूमहोगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (९) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) गदा येपर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व्वमिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाशयोंको मिलसक्ते हैं कृपा करके भेजदेवैं तौ छापेजावें ॥

महाभारत बार्त्तिक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगयाहै जिसके आदि, सभा, बन, बिराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अनुशासन, शान्ति, सौप्तिक, स्त्री और हरिबंशपर्व्व छप गयेहैं शेषपर्व्वभी बहुत शीघ्र छपरहे हैं ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सार भूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्या दिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परम अधिकारी जानके हृदयजनित मोह नाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकरायाहै वही उक्त भगवद्गीता वजवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी वुद्धिसे पारनहींपासक्ते तव मन्दवुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं और यहप्रत्यक्ष होहै किजबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक जनोंकेचित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधनार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकला चातुरीण सद्विद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसा धनव्यय कर फ़र्रुखाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषा में तिलकरूपा नवलभाष्य आख्यमे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसकोभाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

जबछपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाकेसाथ और इस ग्रन्थके टीकाकारोंकी टीका भी जितनीमिलें शामिलकीजावें जिसमें उन टीकाकारोंके अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारणसे श्रीस्वामीशंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामि कृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थित है॥

——※——

इश्तिहार॥

कोंके समान पाषाणों को हाथोंमें लिये युद्धमें सात्यकी के आगेखड़े हुये ३४ और इसी प्रकार आपके पुत्रके कहनेसे यादवके मारनेके अभिलाषी अन्य शूर लोगोंने भी भल्लों को लेलेकर सब ओर से दिशाओं को रोंका ३५ सात्यकी ने बाणोंको धनुषपर चढ़ा कर उन पाषाण युद्ध करने के अभिलाषियों पर तीक्ष्णधार बाणों को फेंका ३६ और उन पहाड़ियोंके चलायेहुये कठिन पाषाण समूहों को सर्पाकार नाराचों से काटा ३७ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र खद्योतों के समूहोंके समान प्रकाशित उन पाषाणखंडों से हाहाकार करने वाले सेनाके लोगही घायल होगये ३८ हे राजा उसके पीछे बड़े २ पाषाण उठानेवाले वह पांचसौ शूरवीर जिनकी भुजा कट गई थीं सब पृथ्वीपर गिरपड़े ३९ फिर अन्य हजारों लाखों मनुष्य सात्यकीको न पाकर पत्थर रखनेवाले कटी हुई भुजाओंसमेत गिर पड़े ४० पाषाणों से लड़नेवाले वा उपाय करनेवाले हजारों नियत शूरवीरोंको मारा वह भी आश्चर्य्यसा हुआ ४१ इसके पीछे उनव्यात्तमुख, दरद, तंगण, खश, लंपाक, और कुलिन्द नाम म्लेच्छ जिनके हाथमें शूल औरखड्गथे उन्होंने सब ओरसे पाषाणों को वर्षाया तब बुद्धिमानीके कर्म में कुशल सात्यकीने उन पाषाण वृष्टियोंको नाराचोंसे काटा ४२ । ४३ अन्तरिक्षमें तीक्ष्ण बाणों से टूटेहुये पत्थरोंके शब्दों से रथ घोड़े हाथी और पतिलोग युद्धसे भागे ४४ पाषाण खण्डोंसे घायल मनुष्यहाथी औरघोड़े खड़ेहोने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि भौरों से काटेहुये नहीं ठहरसक्ते ४५ तब मरनेसे बचेहुये रुधिरमें लिप्त टूटेमस्तक औरपिण्डवाले हाथियोंने सात्यकी के रथको त्याग किया ४६ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे सात्यकी से पीड़ित होकर आपकी सेनाके ऐसेबड़े शब्द हुये जैसेकि पर्व्वोंमें सागर के शब्द होतेहैं ४७ द्रोणाचार्य्यजी उस कठिन औरकठोर शब्दको सुनकर सारथीसे बोले हेसूतयह यादवों का महारथी युद्धमें क्रोधयुक्त ४८ सेनाको अनेक प्रकार से पराजय करता हुआ कालके समान घूमताहै सो हे सारथी जहां पर यह

कठोर शब्दहै वहांही रथको लेचल ४९ निश्चय सात्यकी पत्थरों से युद्ध करने वालों के साथ भिड़ा है और यह सब रथी भी शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा युद्धभूमिसे शीघ्रजाते हैं ५० शस्त्र और कवचों से रहित बड़े पीड़ित होकर जहां तहां गिरतेहैं और कठिन युद्धमें सारथी लोग घोड़ोंको नहीं संभाल सक्ते हैं ५१ इस बचनको सुन कर द्रोणाचार्य्यका सारथी शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ भारद्वाजजीसे बोला ५२ कि हे दीर्घायु वाले यह कौरवी सेना चारों ओरसे भागतीहै और युद्धमें छिन्नभिन्न हुये जहां तहां दौड़ते हुये शूरबीरोंको देखो ५३ यहशूर पांचालपांडवोंकेसाथ मिलेहुये तुमकोमारने की इच्छा से चारोंओर दौड़तेहैं ५४ हे शत्रुओंके पराजय करने वाले यहां स्थिरतासेअथवाचलायमान होकर समयके अनुसार कर्मकरोसात्यकी दूर गया ५५ हेश्रेष्ठ इस प्रकार भारद्वाजकी बार्त्तालापमेंही सात्यकी अनेक प्रकारके रथियोंको मारताहुआ दिखाई दिया ५६ युद्धमें सात्यकी के हाथसे घायल वह आपके शूरबीर सात्यकी के रथको त्यागकरके द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलेगये ५७ फिर दुश्शासन पूर्व्वमें जिनके साथ लौटा था वह रथ भी द्रोणाचार्य्य के रथकी ओर दौड़े ५८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकविंशतितमोऽध्यायः १२१॥

एकसौबाईसका अध्याय॥

संजय बोले कि दुश्शासन के रथको सन्मुख नियत देखकर द्रोणाचार्य्यजी दुश्शासन से यह बचन बोले १ कि हे दुश्शासन यह सब रथ किसरीतिसे भागे कहो राजा कुशल है और जयद्रथ जीवताहै २ तूभी राजकुमार औरराजाका भाईहोकर महारथीहै तू किस निमित्त युद्धमें भागताहै युवराज पदवीको प्राप्तकर ३ तूद्यूत के समय द्रौपदी से कहताथा कि तू द्यूतमें बिजय कीहुई दासीहै और मेरे बड़े भाई दुर्योधन के बस्त्रोंकी लानेवाली होकर हमारी आज्ञानुसार कामकरनेवालीहै ४ अब थोथेनलोंके अर्थात् नपुंसकों

के समान सब पांडव तेरे पतिनहीं हैं हे दुश्शासन पूर्व्व में तुम ऐसे वचन कहकर क्यों भागतेहो ५ तू आपही पांचाल औरपांडवों के साथ शत्रुता करके अकेले सात्यकी को सन्मुख पाकर युद्धमें किस हेतुसे भयभीतहै ६ तुम पूर्व्व समयमें नष्टद्यूतमें पांसोंको लेतेहुये नहीं जानतेथे कि यह सब भयकारी सर्पोंके समान बाण होंगे ७ पूर्वमें सबसे प्रथम अधिकतर तुमहीं पांडवोंके साथ असभ्य और अयोग्य अप्रिय बचनों के कहनेवाले और द्रौपदीके दुःखदेने के मूलहो ८ तेरीवड़ाई अहंकार और अहंकार से उत्पन्न होनेवाला पराक्रम कहां गया अब सर्पके समान पांडवों को क्रोध युक्त करके कहां जायगा ९ यह भरतवंशियोंकी सेना राज्य और राजादुर्यो-धन शोचने के योग्यहै जिसके कि तुम भाई होकर युद्धसे मुखफेरने वाले हो १० हे वीर अपनी भुजाके वलमें नियत होकर सेनाके छिन्नभिन्न होनेसे तुझ भयभीत के कारण पीड़ामान सेना रक्षाके योग्यहै सो तुमयुद्धमें भयभीत होकर युद्धको त्याग करके शत्रुओं को प्रसन्न करतेहो हेशत्रुओं के मारनेवाले तुझ सेनाके अधिपति और रक्षाश्रयके भयभीत होकर भागने पर युद्धमें कौनसा भय-भीत नियत होगा ११ । १२ अब युद्ध करने वाले अकेले सात्यकी के कारण से तेरी बुद्धि युद्धसे भागने में प्रवृत्तहै १३ हे कौरव जब तुम युद्धमें गांडीव धनुषधारी अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेव को देखोगे तब क्याकरोगे १४ युद्धमें सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान जैसे अर्जुन के बाणहैं उन बाणोंके समान सात्यकीके बाण नहीं हैं जिनसे कि भयभीत होकर तुम भागतेहो १५ हे बीर तुम शीघ्रजाओ और गान्धारी के गर्भमें फिर प्रवेशकरो तुझ पृथ्वी पर दौड़नेवाले का जीवन मैं और किसी प्रकार से नहीं देखताहूं १६ जो तेरी बुद्धि भागने मेंही प्रवृत्तहै तो सन्धि पूर्व्वक इसपृथ्वी को युधिष्ठिरको दो १७ जबतक अर्जुन के कांचली से छुटे सर्पकी समान छोड़े बाण तेरे शरीरमें नहीं लगतेहैं तब तक पांडवों से सन्धिकरो १८ जब तक महात्मा पांडव तेरे सौ भाइयोंको युद्धमें

मारकर पृथ्वीको नहीं लेते हैं तबतक पांडवों से सन्धि कर १६ जबतक कि धर्म का पुत्र राजा युधिष्ठिर और युद्धमें प्रशंसनीय श्रीकृष्णजी कोप युक्त नहीं होतेहैं तबतक पांडवों के साथ सन्धिकर २० जब तक महाबाहु भीमसेन बड़ीसेना को मंझाकर तेरे सगे भाइयों को आधीन नहीं करताहै तब तक पांडवों के साथ सन्धिकर २१ पूर्व्व समय में इस तेरे भाई दुर्योधन को भीष्मजीने समझाया था कि हे सुचाल और सुन्दर स्वभाववाले युद्धमें पांडवलोग अजेयहैं उनसे अवश्य सन्धि करले २२ तब तेरे निर्बुद्धी भाईदुर्योधनने उनके कहनेको नहीं किया सो तुम अब सावधान होकरबड़ी धीरतासे पांडवों के साथ युद्धकरो २३ और मैंने सुनाहै कि भीमसेन तेरे रुधिरको पियेगा यहभी सत्यहै औरवहअवश्य उसीप्रकार होगा २४ हे अज्ञानीक्या तू भीमसेन के पराक्रम को नहीं जानता है जो युद्धमें मुख फेरनेवाले होकर तुमने उनसे शत्रुता प्रारंभ की २५ शीघ्रही रथ की सवारीसे वहांजाओ जहां सात्यकी बर्तमान है हे भरतवंशी तुझ से पृथक् होकर यह सबसेना भागजायगी अपने अर्थ युद्ध में सत्यपराक्रमी सात्यकी के साथ युद्धकरो २६ इतने समझाने और कहनेपर भी आपके पुत्रने कुछभी नहींकहा सुनी अनसुनी करके उस मार्गकोचला जिसमार्गमें होकर वह सात्यकी जाताथा २७ मुख न फेरनेवालेम्लेच्छोंकी बड़ीसेना समेत युद्धमें सावधान वह दुश्शासन सात्यकीसे युद्ध करनेलगा २८ रथियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य भी मध्यम तीव्रता से संयुक्त पांचाल और पाण्डवोंके सन्मुख गये २९ द्रोणाचार्य्यने युद्ध में पांचालोंकी सेनामें प्रवेश करके सैकरों हजारोंशूरवीरोंको भगाया ३० हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने युद्धमें अपने नामको सुनाकर पांडव पांचाल और मत्स्य देशियोंका बड़ा विनाश किया ३१ द्रुपदका पुत्र तेजस्वी वीरकेतु जहां तहां सेनाओं के विजय करनेवाले उन भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजीके सन्मुख गया ३२ उसमें गुप्तग्रन्थीवाले पांच बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल करके एकबाण

से ध्वजाको भेदा और सातबाणोंसे उसके सारथीको घायलकिया ३३ हे महाराज वहां युद्धमें मैंने अपूर्व कर्म्मको देखा जो द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें वेगवान् धृष्टद्युम्नके सन्मुख नियत नहीं रहे ३४ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र युद्धमें रुकेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर उन विजयाभिलाषी पांचालोंने धर्मपुत्र युधिष्ठिरको सब ओरसे आवर्ण करलिया ३५ हे राजा उन लोगोंने अग्निरूप बाण और बड़े बादलरूप तोमर और नानाप्रकारके शस्त्रोंसे अकेले द्रोणाचार्य्यकोढक दिया ३६ कि द्रोणाचार्य्य उनको बाणोंके समूहोंके द्वारा सबओर से घायल करके ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बड़े आकाशमें बादलोंको घायलकरके वायुशोभित होतेहैं ३७ इसके पीछे शत्रुहन्ता ने सूर्य्य और अग्निके समान बड़े भयकारी बाणों को बीरकेतुके रथपर चलाया ३८ हे राजा वहबाण द्रुपदके पुत्र बीरकेतुको छेद कर रुधिरसे लिप्त अग्निरूपके समान शीघ्रही पृथ्वीपर गिरपड़ा ३९ इसके पीछे राजा पांचालका पुत्र शीघ्रही रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वायुसे पीड़ित चंपेका बड़ा वृक्ष पर्व्वतके शिखरसेगिरता है ४० उस बड़े धनुषधारी बड़ेपराक्रमी राजकुमारके मरनेपर शीघ्रता करनेवाले पांचालों ने द्रोणाचार्य्यको सबओरसेघेरलिया ४१ हे भरतवंशी भाईके दुःखसे पीड़ामान चित्रकेतु सुधन्वा चित्रवर्मा चित्ररथ ४२ यह सब वर्षाऋतुके समान बाणोंकी वर्षा करते युद्धाभिलाषी होकर एक साथही द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गये ४३ महारथी राजकुमारों से बहुत प्रकारसे घायल उसउत्तमब्राह्मणने उनके विनाशके अर्थ क्रोध करके ४४ बाणोंके जालोंको उनपर छोड़ा हे राजाओंमें श्रेष्ठ धृतराष्ट्र कानतक खींचेहुये द्रोणाचार्य्य के बाणों से घायल ४५ कुमारोंने करनेके योग्य कर्मको नहीं जाना हेभरत वंशी हंसते और क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने उन अचेत कुमारोंको ४६ युद्धमें घोड़े रथ और सारथियोंसे रहित किया और फिर बड़े यशस्वी द्रोणाचार्य्य ने अत्यन्त तीक्ष्णधार बाण और भल्लों से उन सबके ४७ शिरोंको फूलोंके समान गिराया फिर वहतेजस्वी राज-

कुमार मृतक होकर रथोंसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ४८ जैसे कि पूर्व समयमें देवासुरोंके युद्धमें दैत्य और दानव गिरेथे हे राजा प्रतापवान् भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने युद्धमें उनको मारकर ४६ सुवर्णपृष्ठी कठिनतासे चढ़ानेके योग्य धनुषको घुमाया देवताओंके रूपसमान महारथी पांचालदेशी कुमारोंको मृतक देखकर ५० युद्धमें क्रोध युक्त धृष्टद्युम्नने नेत्रोंसे जलको गिराया और क्रोधयुक्त होकर बाणोंको मारता हुआ युद्धमें द्रोणाचार्य्यके रथके पास आया ५१ हे राजा इसकेपीछे युद्धमें धृष्टद्युम्नके बाणोंसे ढकेहुये द्रोणाचार्य्यको देख कर अकस्मात् हाहाकार शब्द उत्पन्नहुआ ५२ परन्तु महात्माधृष्टद्युम्नके हाथसे बहुत प्रकारसे ढकेहुये वह द्रोणाचार्य्य पीड़ामान नहीं हुये और मन्द मुसकान करते युद्ध करने लगे ५३ हे महाराज इसके पीछे क्रोधसे मूर्च्छावान् क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने नब्बे बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको छातीपर घायल किया ५४ उस पराक्रमी के हाथसे कठिन घायल बड़े यशस्वी द्रोणाचार्य्यजी रथके बैठने के स्थानपर बैठकर मूर्च्छावान् होगये ५५ फिर महाबली पराक्रमी धृष्टद्युम्नने उस दशामें युक्त उन द्रोणाचार्य को देखकर धनुषको त्यागकर शीघ्रही खड्गको लिया ५६ हे श्रेष्ठ वह महारथी धृष्टद्युम्न शीघ्रही अपने रथसे कूदकर द्रोणाचार्य्यके रथपर चढ़गया ५७ क्रोधसे लालनेत्रने शरीरसे शिरको काटना चाहा उसके पीछे सचेतहुये द्रोणाचार्य्यने नवीन धनुषको लेकर ५८ मारने की अभिलाषा से सन्मुख वर्त्तमान धृष्टद्युम्नको देखकर समीप से छेदनेवाले वैतस्तिक नाम बाणोंसे घायलकिया ५६ और युद्ध में महारथी शत्रुसे लड़े हे राजा वह समीपसे मारनेवाले द्रोणाचार्य्यके छोड़हुये जो वैतस्तिक बाणथे ६० उन बहुत से शायकों से घायल और वेगसे रहित दृढ़ पराक्रमी वीर महारथी धृष्टद्युम्न ने अपने रथपर चढ़कर और बड़े धनुषको लेकर युद्धमें द्रोणाचार्य को घायल किया ६२ द्रोणाचार्य्यने भी बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायलकिया तब द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नका वह महायुद्ध ऐसा

अत्यन्त अपूर्वहुआ ६३ जैसा कि तीनोंलोकोंके चाहनेवाले इन्द्र और प्रह्लादका युद्ध हुआथा यमक आदि अनेक मंडलों के घूमने वाले ६४ युद्धकी रीति के ज्ञाता और युद्ध भूमिमें शूरबीरोंके चित्तों को अचेत करनेवाले द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नने बाणोंसे परस्पर घायल किया ६५ वर्षाऋतुमें बलाहकनाम बादलोंकेसमान बाणों की वर्षा करतेहुये दोनों महात्मा बाणोंसे आकाश दिशा और पृथ्वी को ढकनेवाले हुये ६६ हे महाराज वहांपर जीवोंके समूह क्षत्रियों के समूह और जो अन्य २ सेनाके मनुष्यथे उन सबने इन दोनों के अपूर्व युद्धकी प्रशंसाकरी ६७ हे महाराज फिर पांचालदेशीपुकारे कि युद्धमें धृष्टद्युम्नसे भिड़ेहुये द्रोणाचार्य्य अवश्यही हमारे आधीनतामें वर्तमानहोंगे ६८ फिर शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य ने युद्धमें धृष्टद्युम्न के सारथीके शिरको ऐसे गिराया जैसे कि वृक्ष के पकेहुये फलको गिराते हैं ६९ हे राजा इसके पीछे उस महात्मा के घोड़े भागे उनके भागनेपर पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने जहां तहां युद्धमें पांचाल और सृञ्जियों से युद्ध किया ७० हे समर्थ धृतराष्ट्र शत्रु विजयी प्रतापी द्रोणाचार्य्य पाण्डव और पांचालों को विजय करके फिर अपने व्यूहमें नियतहोकर खड़ेहुये पांडवोंने युद्धमें उनके विजय करनेको साहस नहीं किया ७१॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिद्वाविंशतितमोऽध्यायः १२२॥

एकसौतेईसका अध्याय॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे बादलके समान बाणोंकी वर्षा करताहुआ दुश्शासन सात्यकीके सन्मुख गया १ उसने सात्यकी को साठ बाणों से और सोलह बाणों से युद्धमें घायल करके युद्धमें नियत हुये को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि मैनाक पर्वत कोनहीं करसक्ते २ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ फिर नानादेशोंमें उत्पन्न होनेवाले रथोंके समूहों समेत सब ओरसे असंख्य शायकों को छोड़ते और बादलके समान शब्दोंसे दशोंदिशाओंको शब्दायमान

करते शूरबीर दुश्शासनने शायकनाम बाणोंसे उस सात्यकीको बहुत ढका ३।४ महाबाहु सात्यकीने युद्धमें उस आतेहुये दुश्शासन को देखकर सन्मुख में जाकर शायकों से ढकदिया ५ बाणों के समूहों से ढकेहुये युद्धमें भयभीत वह लोग जिनमें मुख्य दुश्शासनथा आपकी सेना के देखतेहुये भागे ६ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उन लोगोंके भागनेपर आपका पुत्र दुश्शासन सेनासे पृथक् होकर नियत हुआ और बाणोंसे सात्यकीको पीड़ामान किया ७ उसने चारबाणोंसे उसके घोड़ों को तीन बाणोंसे सारथी को और सौ बाणोंसे सात्यकी को युद्धभूमि में घायल करके सिंहनाद को किया ८ इसकेपीछे क्रोधयुक्त सात्यकीने युद्धमें उसके रथ ध्वजा और सारथीको बाणोंसे गुप्त करदिया ९ उसने शूरबीर दुश्शासन को शायकोंसे ऐसा अच्छा ढका जैसे कि मकड़ी आनेवाले मशक जन्तुको अपने जालोंसे ढकतीहै शत्रुके बिजय करनेवाले शीघ्रता युक्त सात्यकीने अपने बाणोंसे आच्छादित करदिया १० राजा दुर्योधनने इसप्रकार सैकड़ों बाणोंसे ढकेहुये दुश्शासनको देखकर त्रिगर्त्त देशियों को सात्यकी के रथ पर भेजनेकी प्रेरणाकरी ११ तब वह निर्दयकर्मी युद्धकुशल त्रिगर्त्त देशी तीन हजार रथीसात्यकी के सन्मुख गये १२ वहां जाकर उनलोगोंने परस्पर शपथ खाकर युद्धमें बुद्धिको प्रवृत्त करके उससात्यकी को रथोंके बड़े समूहों से घेरलिया १३ युद्धमें उपाय करने वाले और बाणोंकी वर्षा करने वाले उन त्रिगर्त्त देशियों के पांचसौ उत्तम शूरवीरोंको सब सेनाके देखतेहुये सात्यकीने मारडाला १४ शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी के हाथसे मरेहुये वह लोग ऐसे शीघ्रगिरे जैसे कि बड़े वायुके वेगसे पर्वत से टूटेहुये वृक्ष गिरते हैं १५ हे राजा वहां बहुतप्रकारसे टूटे अंगवाले हाथियोंसे ध्वजाओं से सुवर्णभूषित पड़ेहुये घोड़ोंसे १६ और सात्यकी के बाणों से टूटे हुये रुधिर में मनुष्यों के शरीरोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि प्रफुल्लित किंशुक के वृक्षों से शोभितहोती है १७ युद्धमें सात्यकी के हाथसे घायल

उन आपके शूरवीरों ने अपने रक्षक को ऐसे नहीं पाया जैसे कीचमें फंसा हुआ हाथी अपने रक्षक को नहीं पासक्ता १८ इसके पीछे वह सब द्रोणाचार्य्य के रथके पास ऐसे वर्त्तमानहुये जैसे कि पक्षियों के राजा गरुड़केभयसे बड़े२ सर्प बिलोंमें गुप्त होतेहैं १९ वह वीर सर्पाकार बाणों से पांच सौ वीरों को मारकर धीरेसे अर्जुन के रथकी ओर को चला २० आपके पुत्र दुश्शासनने शीघ्रही गुप्तग्रन्थी वाले नव बाणों से उस जाते हुये नरोत्तम सात्यकी को घायल किया २१ फिर उस बड़े धनुषधारीने तीक्ष्णधार सुनहरी पुंख वाले गृद्ध पक्ष युक्त सीधे चलनेवाले बाणों से उसको घायल किया २२ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र हंसते हुये सात्यकी ने तीन बाणों से दुश्शासन को छेदकर फिर पांच बाणोंसे घायल किया २३ फिर सात्यकी तीक्ष्ण शीघ्रगामी पांच बाणों से आपके पुत्रको घायल करके और युद्धमें उसके धनुषको भी काटकर हंसता हुआ अर्जुन की ओर चला २४ इसके पीछे मारनेके इच्छावान् क्रोध भरे दुश्शासन ने केवल लोहेकी बनी हुई शक्तिको चलते हुये सात्यकी के ऊपर छोड़ा २५ हे राजा तब सात्यकी ने आपके पुत्रकी उस भयकारी शक्तिको तीक्ष्ण धार वाले बाणोंसे काटा २६ हे राजा फिर आप के पुत्रने दूसरे धनुषको लेकर बाणोंसे सात्यकी को घायल करके सिंहनाद किया २७ फिर युद्धमें क्रुद्ध सात्यकी ने आपके पुत्रको अचेत करके अग्निके समान बाणोंसे छातीमेंघायल किया २८ फिर उसी महाभागने गुप्त ग्रन्थी वाले केवल लोहेके तीक्ष्ण मुख तीन बाणोंसे छेद कर फिर आठ बाणोंसे घायल किया २९ दुश्शासन ने बीस बाणसे सात्यकीको घायलकिया सात्यकीने भी गुप्तग्रन्थी वाले तीनबाणोंसे छाती के मध्यमें व्यथित किया ३० इसके पीछे महारथी सात्यकी ने तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसके घोड़ोंको मारा और बड़े तीव्र गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे सारथीको भी मारा ३१ एक भल्लसे धनुषको पांच बाणसे हस्त त्राणको दोभल्ल से ध्वजा समेत रथकी शक्ति को काटा उसी प्रकार विशिख नाम

तीक्ष्ण बाणसे सारथी के पीछे वाले को मारा ३२ वह टूटे धनुष रथ से विहीन मृतक घोड़े और सारथी वाला दुश्शासन सेनापति त्रिगर्त देशियोंकी सेनाके मुख्य रथ के द्वारा हटाया गया ३३ हे भरतबंशी महाबाहु सात्यकीने एक मुहूर्त भर सन्मुख जाकरभीम-सेन के बचन को स्मरण करके उस दुश्शासन को नहीं मारा ३४ हे भरतबंशी भीमसेन ने सभाके मध्यमें आपके सब पुत्रोंके मारने की प्रतिज्ञा करी है ३५ हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे युद्धमें सात्यकी दुश्शासन को बिजय करके उसी मार्गसें शीघ्रता से चला जिस मार्ग होकर कि अर्जुन गयाथा ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरित्रयोबिंशतितमोऽध्यायः १२३॥

एकसौचौबीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय क्या मेरी उससेनामें कोई महारथी नहींथे जिन्हों ने उस प्रकार जाते और मारते हुये सात्यकी कोभी नहीं रोंका १ युद्धमें उसने वह कर्म किया जैसे कि महाइन्द्रनेदा-नवों के मध्यमें कियाथा २ अथवा वह पृथ्वी शूरबीरों से रहितथी जिधर होकर सात्यकी गया वा वह बहुत मृतक वालीथी जिसमार्ग से सात्यकी गया ३ हे संजय युद्धमें बीर सात्यकी के किये हुयेजिस कर्म को कहता है ऐसे कर्म करने को इन्द्रभी साहस नहीं करसक्ता है ४ हेसंजय जैसा तू कहता है वह श्रद्धा से रहित बुद्धि से बाहर है निश्चय करके उस अकेले सत्य पराक्रमी ने बहुतसी सेनाओं को बिध्वंस किया ५ अकेला सात्यकी किस प्रकार उन युद्धकरने-वाले बहुत महात्माओं को बिजय करके दूर चलागया हे संजयवह मुझसे कहो ६ संजयबोले हेराजा आपकी सेनाके मनुष्य रथ हाथी घोड़े और पतियोंकी चढ़ाई बड़ी कठिन प्रलय कालके समानहुई ७ हे बड़ाई देनेवाले आहनिक समूहोंमें संसारके मध्य आपकी सेना के समान कोई समूह नहीं हुआ यह मेरा मत है ८ वहां पर आने वाले देवता और चारण लोग बोले कि इस पृथ्वी पर सेनाओं के

समूह इससे बढ़ कर कभी नहीं होंगे ६ हेराजा इस प्रकारका कोई व्यूहनहीं हुआ जैसा कि जयद्रथ के मारने में द्रोणाचार्य्य की ओर से नियतहुआ १० युद्धमें परस्पर सन्मुख दौड़ते हुये सेनाओं के समूहों के ऐसे शब्द हुये जैसे कि कठिन वायुसे ओतप्रोत समुद्रों के शब्द होतेहैं ११ हे नरोत्तम आपकी और पांडवोंकी सेनामें इकट्ठे होने वाले हज़ारों राजाथे १२ वहां युद्धमें दृढ़कर्मी क्रोधयुक्त बड़े वीरोंके बड़े रोमहर्षण करनेवाले कठिन शब्द हुये १३ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव और धर्मराजयुधिष्ठिर पुकारे १४ कि आओ प्रहार करो शीघ्र चारोंओर से दौड़ो वीर सात्यकी और अर्जुन शत्रुकी सेनामें पहुंचे हुये हैं १५ सुख पूर्व्वक जयद्रथ के पास चलो शीघ्रता से ऐसाही करो इस प्रकारसे सेनाओं को प्रेरणा करी १६ उन दोनों के मरनेपर कौरव अभीष्ट सिद्धि करें और हम हारजावें बड़े वेगवाले तुम सब साथ होकर शीघ्रहीसेना सागरको१७ ऐसे उथल पुथलकरो जैसेकिवायु समुद्रको उथल पुथल करताहै हे राजा भीमसेन और धृष्टद्युम्नकी आज्ञानुसार उन लोगों ने अपने प्राणोंको त्याग करके युद्धमें कौरवोंको घायल किया युद्धमें शस्त्रोंके द्वारा मृत्युकोचाहते स्वर्गाभिलाषी बड़े तेजस्वियों ने १६ मित्रके कार्य्यमें अपने जीवन की इच्छा को नहीं किया हे राजा उसी प्रकार बड़े यशको चाहते आपके शूर वीरयुद्धमें उत्तमबुद्धिको करके नियत हुये२० उसकठिन भयकारी युद्धके उत्पन्न होनेपर सात्यकी सबसेनाको विजय करके अर्जुनके पासगया २१ उसयुद्ध में सूर्य्यकी किरणों से प्रकाशमान शरीरों के कवचों के प्रकाशने सेनाके लोगों की दृष्टियोंको चारों ओर से घायलकिया २२ हे महाराज इसप्रकार उपायकरनेवाली महात्मा पांडवों की बड़ी सेनाको राजा दुर्य्योधन ने मंझाया २३ हेभरतवंशी उन्होंका और उसका वह कठिन युद्ध सब जीवोंका महा विनाशकारी हुआ २४ धृतराष्ट्र बोले हेसूत इसप्रकार सेनाके भागने परआपत्तिमें फंसेहुये दुर्य्योधनने आपही पीछेकीओरसेयुद्धकिया२५

बड़ेयुद्धमें एकका औरबहुतकामुख्यकरके राजाका युद्ध मुझकोबहुत
कठिनविदितहोताहै २६ बड़े सुखसेपोषणकिया हुआ औरलक्ष्मीसे
लोकका ईश्वर अकेला वह दुर्योधन बहुतशूरबीरोंको पाकर मुखको
तोनहीं फेरगया २७ संजय बोलेकि हे भरतवंशी राजाधृतराष्ट्र आप
के अकेले पुत्रका अपूर्व युद्ध जैसेकि बहुतोंसे हुआ उसको मैं तुम
से कहताहूं तुम चित्तसे सुनो २८ युद्धमें दुर्योधनने पांडवी सेनाको
ऐसा तिर्र बिर्र किया जैसे कि कमलों का बन हाथीसे छिन्न भिन्न
होताहै २९ हेराजा इसकेपीछे आपके पुत्रके हाथसे घायल हुई
उस सेनाको देखकर वह पांचाल देशी जिनमें मुख्य भीमसेनथा
उसके सन्मुख गये ३० उसने पांडव भीमसेनको दशबाणोंसे बी
नकुल व सहदेवको तीन २ बाणसे और धर्मराज को सात बाणसे
घायल किया ३१ बिराट समेत द्रुपदको छः बाणसे शिखण्डीको
सौ बाणसे धृष्टद्युम्नको बीस बाणसे और द्रौपदीके पुत्रोंको तीन २
बाण से छेदा ३२ और युद्ध में हाथी और रथों समेत अन्यसैकड़ों
शूरबीरोंको भयकारी बाणोंसे ऐसे मारा जैसे कि क्रोधयुक्त काल
सृष्टिको मारताहै ३३ गुरूकी आज्ञा पूर्व्वक अपने अस्त्रोंके बलसे
शत्रुओंको मारा वह दुर्योधन जिसकाकि धनुष मंडलरूपथा वह न
बाणको चढ़ाता और न छोड़ता दिखाई पड़ा ३४ मनुष्योंने युद्धमें
उस शत्रुहन्ता दुर्योधनका स्वर्णमयी पृष्ठवाला बड़ा धनुष मंडल
रूपदेखा ३५ हेकौरव इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने दोभल्लसे आप
के उपाय करने वालेपुत्रके धनुष को युद्धमें काटा ३६ और अच्छे
प्रकारसे चलाये हुये उत्तम दश बाणोंसे उसको घायलकिया वह
शीघ्रही कवचको फाड़ शरीरको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़े ३७ इस
केपीछे अत्यन्त प्रसन्न पांडवोंने युधिष्ठिरको ऐसे आवरण कियाजैसे
कि पूर्व्व समयमें देवता और महर्षियोंने वृत्रासुर के मारनेमें इन्द्र
को आवर्णित कियाथा ३८ उसकेपीछे आपका प्रतापी पुत्र दूसरे
धनुषको लेकर राजा युधिष्ठिरको तिष्ठतिष्ठ शब्द कहकर सन्मुख
गया ३९ बड़े युद्धमें आतेहुये उस आपके पुत्रको सन्मुख आया

हुआ देखकर अत्यन्त प्रसन्न विजयके इच्छावान पांचाल देशीउस के सन्मुख गये ४० युद्धमें पांडवको चाहते द्रोणाचार्य्य ने उनको ऐसे रोका जैसेकि कठिन वायुसे उठायेहुये जलछोड़नेवाले बाद-लोंको वायु रोकताहै ४१ हेमहाबाहो राजा धृतराष्ट्र उस युद्धमें पांडवोंका और आपके पुत्रोंका ऐसाबड़ा संग्राम हुआजोकि रोमां-चोंको खड़ा करताथा ४२ रुद्रजीके क्रीड़ा स्थानके समान सब देह धारियोंका विनाश हुआ इसकेपीछे जिधर अर्जुनथा उस ओरसे ऐसाबड़ाभारी शब्दहुआ ४३ जोकि सबशब्दोंसे अधिकतररोमांचों का खड़ा करने वालाथा महाबाहुअर्जुनके और आपके धनुषधारि-योंके शब्द ४४ और भरत वंशियोंकी सेना के मध्यवर्ती बड़ेयुद्धमें सात्यकीकेशब्द औरव्यूहके द्वारपर शत्रुओंके साथबड़ेयुद्धमें द्रोणा-चार्य्यके भीबड़े शब्द हुये ४५ हेराजा अर्जुन द्रोणाचार्य्य और महारथी सात्यकी के क्रोधरूप होनेपर इसरीतिसे यह बड़ा भारी विनाश पृथ्वीपर वर्त्तमान हुआ ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिजतोपरिचतुर्विंशतितमोऽध्यायः १२४ ॥

एकसौपच्चीसका अध्याय ॥

संजय बोलेकि हेमहाराज सोमकोंके साथ द्रोणाचार्य्यकाबड़ा-भारी युद्धहुआ वह युद्ध बादलके समान शब्दायमानथा १ नरोंमें वीरऔर सावधान द्रोणाचार्य्य लालघोड़े वाले रथपर सवार होकर मध्यमतीव्रतासे नियत होकर युद्धमें पांडवोंके सन्मुखगये २ हेभरत वंशी आप के प्रियहितकी वृद्धिमें प्रवृत्त बड़ेधनुषधारी पराक्रमी उ-त्तम कलशसे उत्पन्न होनेवाले प्रतापी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यअपूर्व्व पुंखवाले तीक्ष्ण बाणोंसे उत्तम २ शूरवीरोंकोचुनतेहुये युद्धमें क्रीड़ा करनेवाले हुये ३।४औरयुद्धमेंनिर्दयकेकयोंका महारथी पांचोंभाइयों में श्रेष्ठ वृहत्क्षत्र उनके सन्मुखगया ५ और तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते उसने ऐसा अत्यन्त पीड़ामान किया जैसेकि गंधमाधन पर्व्वतपर वर्षाके जलको वरसाताहुआ बड़ा बादल होताहै ६ हे महाराजअ-

त्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने सुनहरी पुंखतीक्ष्ण धारवाले पन्द्रह बाणोंको उसकेऊपर फेंका ७ प्रसन्न चित्तके समान उसने युद्धमें द्रोणाचार्य्य के छोड़े हुये उन प्रत्येक बाणों को जोकि क्रोध भरे सर्पकीसूरत थे पांचबाणों से काटा ८ उत्तम ब्राह्मणने उसकी उस हस्तलाघवता को देख बहुतहंसकर गुप्त ग्रन्थीवाले आठ बाणों को चलाया ९ द्रोणाचार्य्यके धनुषसे निकले हुये शीघ्रता से गिरने वाले उन बाणों को देखकर युद्धमें उसने उतनेही तीक्ष्ण बाणों से रोका १० हेमहाराज वृहत्क्षत्रके कियेहुयेकठिनतासे करनेकेयोग्य उस कर्मको देखकर आपकी सेनावालोंको आश्चर्य्यहुआ ११ इस केपीछेवृहत्क्षत्रको मारनेकी इच्छासे द्रोणाचार्य्यने युद्धमें बड़े कष्ट से विजयहोनेवाले दिव्य ब्रह्मअस्त्रको प्रकटकिया १२ तब उस वृहत्क्षत्रनेद्रोणाचार्य्यके छोड़ेहुये अस्त्रको देखकरब्रह्मअस्त्रसेही उसब्रह्मअस्त्रको निवारण किया १३ हे भरतबंशी इसकेपीछे अस्त्रसेही उस ब्रह्मअस्त्रकेशान्तहोनेपर वृहत्क्षत्रने सुनहरीपुंखतीक्ष्णधारवालेसाठ बाणोंसे ब्राह्मण को घायलकिया १४ फिर द्विपादों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उस कोनाराच से घायलकिया वह बाण उसके कवच को काटकर पृथ्वीमें समागया १५ हे राजाओं में श्रेष्ठ जैसे कांचली से छुटाहुआ काला सर्प बामीमें प्रवेश करता है उसी प्रकार वह बाणयुद्धमें वृहत्क्षत्रको घायल करके पृथ्वी में समागया १६ हे महाराज द्रोणाचार्य्य के शायकोंसे अत्यन्त घायल बड़े क्रोधसे पूर्ण उसवृहत्क्षत्रने अपने दोनों शुभ नेत्रों को खोलकर १७ सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार वाले सत्तर बाणों से द्रोणाचार्य्य को व्यथित किया और एक बाणसे उनके सारथीको मर्मस्थलमें अत्यन्त घायल किया १८ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र वृहत्क्षत्रके बहुत बाणोंसे घायल द्रोणाचार्य्यने बड़े तीक्ष्णबाणोंको वृहत्क्षत्रके रथपर फेंका १९ फिर द्रोणाचार्य्यने उस महारथी वृहत्क्षत्रको व्याकुलकरके उसके चारों घोड़ोंको चार बाणोंसेमारा २० एक बाणसे सारथीको रथके बैठने केस्थानसेगिरादिया औरबाणोंसे ध्वजासमेतछत्र को काटकरपृथ्वी

पर गिराया २१ इसके पीछे उत्तम ब्राह्मणने अच्छे प्रकार छोड़े-
हुये नाराचसे वृहत्क्षत्रको हृदयपर छेदा तब वह हृदयसे विदीर्णहो
कर गिर पड़ा २२ हे राजा केकयोंके महारथी वृहत्क्षत्रके मरनेपर
अत्यन्त क्रोध युक्त वीरोंमें उत्तम शिशुपालका पुत्र अपने सारथीसे
यह वचन बोला २३ हे सारथी तू वहांचल जहांयह कवच धारी-
द्रोणाचार्य्य सबकेकय और पांचालदेशियोंकी सेनाको मारता हुआ
नियतहै २४ रथियोंमें श्रेष्ठ को सारथीने शीघ्रगामी कांबोज देशी
घोड़ोंके द्वारा द्रोणाचार्य्यके सन्मुखकिया २५ चंदेरी देशियोंमेंउत्त-
म बड़े पराक्रमसे उदयमान धृष्टकेतु मारनेके निमित्त द्रोणाचार्य्य
के सन्मुख ऐसेगया जैसेकि पतंग अग्निमें जाताहै २६ तब सोते
हुये व्याघ्रको पीड़ामान करतेहुये उस धृष्टकेतुने साठबाणोंसे ध्वजा
रथ और घोड़ों समेत द्रोणाचार्य्यको घायलकिया फिर दूसरे अन्य
तीक्ष्ण बाणोंसेभी व्यथितकिया २७ तब द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णऔर
पक्षवाले क्षुरप्र से उस उपाय करनेवाले धृष्टकेतुके धनुषको मध्य
से काटा २८ महारथी धृष्टकेतुने फिर दूसरे धनुषको लेकर कंक
और मोरके पंखोंसे मढ़े शायकोंसेद्रोणाचार्य्यको घायलकिया २९
हंसते हुये द्रोणाचार्य्यने चारबाणोंसे उसके चारोंघोड़ोंको मारकर
सारथी के शरीर समेत उसके शिर को काटा ३० फिर उसको
पच्चीसशायकों से घायल किया राजा चन्देरीने शीघ्रही रथसे कूद
शीघ्रही गदाको लेकर ३१ क्रोध युक्त सर्पिणीके समानउसगदाको
द्रोणाचार्य्यके ऊपरफेंका उस कालरात्रिके समान उठाईहुई लो-
हेकी भारी सुवर्ण से खचित आती हुई गदा को देखकर भारद्वाज
द्रोणाचार्य्यने हजारों तीक्ष्ण बाणों से काटा ३३ हे श्रेष्ठ कौरव
धृतराष्ट्र भारद्वाजके बहुतबाणोंसे टूटीहुई वहगदापृथ्वीको शब्दाय
मान करतीहुई पृथ्वीपर गिरपड़ी ३४ फिर क्रोधयुक्त वीरधृष्टके-
तुने उस गदाको टूटीहुई देखकर तोमर और सुवर्णके समानप्रका-
शमान शक्तिको छोड़ा ३५ तोमर को पांचबाण से तोड़कर शक्ति
को पांचबाणों से काटा और गरुड़ से काटेहुये दो सर्पोंके समान

वहदोनों पृथ्वीपर गिर पड़े ३६ इसकेपीछे मारने के उत्सुक प्रतापवान द्रोणाचार्यने इसके मारनेके निमित्त युद्धमें तीक्ष्ण बाणको चलाया ३७ वहबाण उस तेजरूवीके कवच और हृदय को तोड़कर पृथ्वीपर ऐसेगया जैसे कि कमलके बनमें हंसजाताहै ३८ जैसेकि भूखनीलकंठ क्रोधसे पतंगको निगल जाताहै उसी प्रकारसे शूर द्रोणाचार्य्यने युद्धमें धृष्टकेतुको मारा ३९ चंदेरी केराजा के मरने पर क्रोधके आधीन उत्तम अस्त्रोंका जानने वाला उसकापुत्र उस सेनाकि भागमें पहुंचा ४० हंसतेहुये द्रोणाचार्य्यने बाणोंसे उसको भी यमलोकमें ऐसे पहुंचाया जैसे कि बड़े बनमें पराक्रमी बड़ाव्याघ्र मृगके बच्चेको खाजाताहै ४१ हे भरतवंशी शूरबीरोंके नाशहोनेपर जरासन्ध का बीरपुत्रआपही द्रोणाचार्य के सन्मुखगया ४२ फिर उस महाबाहुने युद्धमें बाणोंकी धाराओं से शीघ्रही द्रोणाचार्य्य को ऐसे दृष्टिसे गुप्तकरदिया जैसे कि बादल सूर्य्यको आच्छादित करदेताहै ४३ क्षत्रियों के मर्दन करने वाले द्रोणाचार्य्य ने उसको उस हस्तलाघवताको देखकर शीघ्रही सैकड़ों औरहजारों शायकों को छोड़ा ४४ द्रोणाचार्य्य ने उस रथियों में श्रेष्ठ रथ पर सवार जरासन्धके पुत्रको युद्धमें बाणोंसे ढककर सब धनुष धारियों के देखते हुये शीघ्रही मारा ४५ जो शूरबीर वहांगया उसको काल रूप द्रोणाचार्य्यने ऐसे मारा जैसे कि समयके अन्तपर काल सब जीव धारियों को मारताहै ४६ हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें नामोंको सुनाकर हजारों बाणों से पांडवों के शूरवीरोंको ढकदिया ४७ द्रोणाचार्य्यके चलाये हुये तीक्ष्ण धारवाले उनबाणों ने जिनपर कि नामखुदा हुआथा युद्धमें सैकड़ों मनुष्य हाथी और घोड़ोंको मारा ४८ जैसेकि इन्द्रके हाथसे महाअसुर घायल होतेहैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल हुये वह पांचाल ऐसे कम्पायमानहुये जैसे कि शरदी से पीड़ामान गौएं होतीहैं ४९ हे भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके हाथसे सेनाओं के मरने और घायल होने पर पांडवोंके दुखदाई शब्द उत्पन्नहुये ५० तब सूर्य्यसे संतप्त

और शायकों से घायल पांचाल चित्तसे भयभीत हुये ५१ युद्धमें द्रोणाचार्य्य के बाण जालोंसे अचेत बड़े ज्ञानमें आश्रित पांचाल देशियों के महारथी ५२ और चंदेरी सृञ्जय काशी और कोशिल देशियों के शूरवीर अत्यन्त प्रसन्न युद्धकी इच्छासे द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गये ५३ चंदेरी पांचाल और सृञ्जय देशियोंके वह शूरवीर युद्धमें परस्पर यह कहतेहुये कि द्रोणाचार्य्य को मारो द्रोणाचार्य्य को मारो द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गये बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्यको यमलोक में पहुंचानेके अभिलाषी वह पुरुषोत्तम अपनी २ सब सामर्थियोंसे उपाय करनेवाले हुये ५५ भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने उन उपाय करनेवाले वीरोंको मुख्य करके चंदेरीदेश के उत्तम शूरोंको बाणोंसे यमलोकको भेजा ५६ उन चंदेरी देशियोंके उत्तम वीरोंके नाशहोनेपर द्रोणाचार्य्यके बाणों से पीड़ामान सब पांचाल बड़े कंपायमान हुये ५७ हे श्रेष्ठ भरतवंशी धृतराष्ट्र वह पांचाल द्रोणाचार्य्यके उस प्रकारके कर्म्मोंको देखकर भीमसेन और धृष्टद्युम्नको पुकारे ५८ कि निश्चय करके इस ब्राह्मण ने दुखसे होनेके योग्य महातपको कियाहै जो क्रोध होकर युद्धमें इस प्रकारसे क्षत्रियोंका विध्वंस करताहै ५६ क्षत्रोका धर्म युद्धहै और ब्राह्मणका धर्म उत्तम तपस्याहै यह तपस्वी विद्यावान दृष्टि से भी भस्म करसक्ते हैं ६० हे भरत वंशी बहुतसे उत्तम क्षत्री द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंकी उस अग्निमें जोकि अग्निके समान स्पर्शवाली कठिनतासे तरनेके योग्य महाभयकारीथी प्रवेशित हुये और वहां जाकर भस्म हुये ६१ बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य बल पराक्रम और साहसके अनुसार सब जीवों को अचेत करते हमारी सेनाओं को मारतेहैं ६२ क्षत्रधर्मा उन सबके वचनोंको सुनकर सम्मुखनियत हुआ और क्रोधसे व्याकुल चित्त बड़े पराक्रमी क्षत्रधर्माने अर्द्धचन्द्रनाम बाणसे द्रोणाचार्य्यके धनुषबाणको काटा क्षत्रियोंके मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर६३।६४प्रकाशित और बड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेकर शत्रु की सेनाके मारने

वाले तीक्ष्णबाण को उसपर चढ़ाकर ६५ पराक्रमी आचार्य्यजीने कानतक खैंचेहुये बाणको छोड़ा वह बाण क्षत्रधर्मा को मारकर पृथ्वीपर गया ६६ फिर वहभी हृदयसे विदीर्ण सवारी से पृथ्वी में गिरपड़ा इसके पीछे धृष्टद्युम्न के पुत्रके मरनेपर सबसेना कंपायमानहुई ६७ तबबड़े पराक्रमी चेकितानने द्रोणाचार्य्यके ऊपरचढ़ाई करीउसने द्रोणाचार्य्यको दशबाणोंसे छेदकर छातीमें घायलकिया ६८ चारबाणसेउनके सारथीको और चारहीबाणोंसे उनकेघोड़ोंको घायल किया द्रोणाचार्य्यने सोलह२बाणोंसेउसकीदक्षिणभुजा६९ ध्वजाको और सात बाणसे सारथीको मारा उसके सारथीके मरने पर वह घोड़े रथको लेकर भागे ७० हे श्रेष्ठ युद्धमें भारद्वाजके बाणोंसे चेकितान के रथको मृतक घोड़े और सारथीसे रहित देखकर पांचाल और पांडवों में बड़ा भय उत्पन्न हुआ ७१ उस समय युद्ध में इकट्ठे हुये उन चंदेरी पांचाल और सृञ्जय देशियोंके शूरोंको चारोंओरसे प्रसन्न करतेहुये द्रोणाचार्य्य बहुत शोभायमान हुये ७२ कानतक श्वेतबाल रखनेवाले अवस्थामें पचासी वर्षके वृद्ध द्रोणाचार्य्य सोलहवर्षकी अवस्थावाले के समान युद्धमें घूमने लगे ७३ तब शत्रुओंनेउन निर्भयके समानघूमनेवालेशत्रुओंके मारनेवाले द्रोणाचार्यको बज्रधारी इन्द्रमाना ७४ इसके पीछे बुद्धिमान् महाबाहुराजा द्रुपद बोले कि यह लोभ कर्म्मी क्षत्रियोंको ऐसे मारता है जैसे कि व्याघ्र छोटे मृगोंको ७५ दुर्बुद्धी और पापी दुर्योधन दुख रूपी लोकोंको पावेगा जिसके लोभसे युद्धमें उत्तम २ क्षत्रीलोग मारेगये ७६ उत्तम गौ बैलोंके समान मारेहुये रुधिर से लिप्तअंग कुत्ते और शृगालों के भोजन रूप सैकड़ों शूरवीर पृथ्वीपर सोते हैं ७७ हे महाराज तब अक्षौहिणीसेनाका स्वामी राजाद्रुपदइस प्रकार से कहकर युद्ध में पांडवों को आगे करके द्रोणाचार्य के सम्मुख गया ७८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिपंचदशोऽध्यायः १२५॥

एकसौइक्कीसका अध्याय॥

संजय बोले जहांतहां पांडवोंकी सेनाओंके छिन्न भिन्न करनेपर पांडवलोग पांचाल और सौमकों समेत वहुत दूरगये १ हे भरत वंशी जैसे कि प्रलयकालमें संसारका कठिन बिनाश होताहै उसी प्रकार भयकारी रोमहर्षण करनेवाले युद्धमें संसारके अत्यन्तनाश होनेपर २ युद्धमें पराक्रम करनेवाले द्रोणाचार्यके बारंबार गर्जते वा पांचाल देशियोंके नाशयुक्त होने और पांडवोंके घायल होनेपर धर्म राज युधिष्ठिर ने किसी आश्रय स्थानको नहीं देखा ३ हेमहा-राज उससमय उसने चिन्ता करी कि यह कैसे होगा तदनन्तर अ-र्जुनके देखने की इच्छा से सब दिशाओं को देखा ४ फिर नरोत्तम युधिष्ठिरने न अर्जुन को देखा न श्रीकृष्ण जी को और हनुमान जी की मूर्त्ति रखने वाली ध्वजाको भी नहीं देखा ६ तब उनदोनों न-रोत्तमोंको नदेखकर चिन्तासे पूर्ण शरीर धर्मराज युधिष्ठिरने शा-न्तीको नहीं पाया ७ बड़े साहसी, महाबाहु धर्मराज युधिष्ठिर ने संसार के अपकीर्त्ति के भय से सात्यकी के रथके विषय में चिन्ता करी कि मित्रोंका अभय करने वाले सत्य संकल्प शिनीके पौत्र सा-त्यकी को युद्धमें मैंनेही अर्जुनके खोजके लिये भेजाहै ६ अब निश्चय करके मुझको दो प्रकार की चिन्ता उत्पन्न हुई सात्यकी पांडव अर्जुन समेत अन्वेषण करने के योग्य है १० अर्जुनके पीछे चलने वाले सात्यकी को भेजकर युद्धमें सात्यकी के पीछे चलने वाले किसवीर को भेजूंगा ११ जोमें सात्यकी को खोजन करके बड़े उपायसेभाई के खोजको करूंगा तो संसार मुझको बुरा कहैगा १२ कि धर्मका पुत्र युधिष्ठिर भाई को तलाश करके सत्य पराक्रमीयादव सात्यकी को त्याग कर देताहै १३ सो मैं संसार के अपवाद के भयसे पांडव भीमसेन को महात्मा सात्यकी की तलाश को भेजूंगा १४ शत्रुओं के मारने वाले अर्जुनमें जैसी मेरी प्रीतिहै उसी प्रकार युद्धमें दुर्मद वृष्णियों में वीर प्रतापी सात्यकी में भी मेरी बड़ी प्रीतिहै १५ मैंने

सात्यकी को बड़े भारमें संयुक्त कियाहै वह बड़ा पराक्रमी मित्रकी प्रेरणा और बड़प्पन से १६ भरतवंशियों की सेना में ऐसे पहुंचा जैसे कि सागरमें मगरजाताहै मुख न फेरने वाले बुद्धिमान् वृष्णी वीरके साथ परस्पर युद्ध करने वाले शूरवीरों के यह शब्द सुनेजाते हैं मैंने समयके अनुसार बहुतप्रकारसेनिश्चयकियाहै १७। १८ कि धनुषधारी पांडव भीमसेनका वहां जानामुझको स्वीकारहै जहांपर वहदोनों महारथी गये हैं १६ इस पृथ्वीपर भीमसेनका असह्य कुछ भीनहीं वर्त्तमानहै युद्धमें उपाय करने वाला यह भीमसेन अपनेभुज बलमें नियतहोकर पृथ्वीके सब धनुषधारियोंसे सन्मुखता करनेको समर्थहै २०। २१ हम सब जिस महात्माके भुजबलके आश्रित होकर बनवास से निवृत्त हुये और युद्धमें पराजय नहीं हुये २२ इधरसे सात्यकीके पास पांडव भीमसेनके जाने पर वह दोनों अर्जुन और सात्यकी सनाथ होंगे २३ मेरी बुद्धि से शस्त्र चलाने में कुशल वह दोनों सात्यकी और अर्जुन आप श्री बासुदेवजी से रक्षित शोचके योग्य नहीं हैं परन्तु मुझको अपने शोच का दूर करना अवश्य उचितहै इस हेतुसे सात्यकीके खोजने के निमित्त भीमसेन को आज्ञा दूंगा २५ इसके पीछे सात्यकीके बिषयमें कर्मको कियाहुआ मानताहूं धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर इस प्रकार मनसे निश्चय ठहराकर सारथी से बोला कि मुझको भीमसेन के पास लेचल २६ अश्वविद्या में कुशल सारथीने धर्मराज के बचनको सुनकर सुवर्ण के समान वाले रथको भीमसेन के पास पहुंचाया २७ फिर भीमसेन को आज्ञा देकर समयके अनुसार चिन्ताकरी अर्थात् वहां पर राजा आज्ञा करताहुआ बड़ा मूर्च्छित हुआ २८ यह मूर्च्छा से व्याप्त कुंती का पुत्र राजा युधिष्ठिर भीमसेन को बुलाकर यह बचन बोला २६ हे भीमसेन जो अकेला रथीहोकर देवता गन्धर्व और दैत्यों को भी बिजय करसक्ता है उस तेरे छोटे भाईके ध्वजा के चिह्नको नहीं देखता हूं ३० इसके पीछे भीमसेन उस दशावाले धर्मराजसे बोले कि आपकी इस प्रकार की मूर्च्छा मैंने

न कभी देखी और न सुनी ३१ निश्चय पूर्व समय में बड़े दुःखसे व्याकुल हमलोगों के आप गतिरूप हुये हेमहाराज आप उठिये उठिये जो आप कहें वही हमकरें ३२ हे बड़ाई देनेवाले मेरा कर्म निष्फल नहीं है हे कौरवों में श्रेष्ठ आज्ञा करो और चित्तमें खेद न करो ३३ काले सर्पके समान श्वास लेता अश्रुपातों से युक्त अप्रकाशित मुख राजा युधिष्ठिर उस भीमसेन से यह बचन बोले ३४ कि क्रोध युक्त यशस्वी वासुदेवजी के पांच जन्य शंख का शब्दजैसा सुनाई देता है ३५ निश्चय मालूम होताहै कि अब तेरा भाई अर्जुन मृतक होकर सोताहै उसके मरने पर अब यह श्रीकृष्णजी लौटते हैं ३६ पांडव जिस पराक्रमी के बलसे अपना जीवन करते हैं और बड़े२ भयोंमें जिस को ऐसे शरण लेते हैं जैसे कि देवता इन्द्रकी लेते हैं ३७ जयद्रथ के मारने की इच्छा से वह शूर भरतबंशियों की सेनामें गयाहै हे भीमसेन हम उसकी यात्राको तो जानते हैं परन्तु लौटने को नहीं जानते हैं ३८ वह अर्जुन श्याम तरुण दर्शनीय महारथी बड़े वक्षस्थल और भुजाओं का रखनेवाला मतवाले हाथी के समान पराक्रमी ३९ चकोर के समान नेत्रधारी रक्त मुख शत्रुओंके भयका बढ़ाने वाला है हे शत्रु बिजयी तेरा कल्याणहो मेरे शोचका यह हेतुहै ४० हे महाबाहु भीमसेन सात्यकी और अर्जुन के कारण से मुझको इतना कष्ट बढ़ रहाहै जैसे कि बारं बार घृत की आहुतिसे वृद्धि युक्त अग्नि ४१ उसकी ध्वजा के चिह्नको नहीं देखता हूं इसीहेतु से मूर्च्छा को पाताहूं उस पुरुषोत्तमको औरमहारथी सात्यकी को खोज करो वह सात्यकी उस तेरे छोटे भाई अर्जुन के पीछे गयाहै मैं उस महाबाहु को न देखकर मूर्च्छा युक्त होता हूं ४३ निश्चय करके उस अर्जुन के मरने पर वह श्रेष्ठ सात्यकी लड़ताहै उस का कोई सहायक नहीं है इसहेतु से मूर्च्छाको पाता हूं ४४ उस अर्जुन के मरने पर वह युद्धमें कुशलसात्यकी लड़ता है इससे तुम वहां जाओ जहां अर्जुन गयाहै ४५ और जहांपर बड़ा पराक्रमीसात्यकी भी गयाहै हे धर्मज्ञ जोमेरा वचन करने के योग्य

तू मानताहै तो करमैं तेरा बड़ा भाईहूं ४६ अर्जुन तुझसे उसप्रकार खोजने के योग्य नहीं है जैसे कि सात्यकी खोजने के योग्यहै ४७ हे भीमसेन वह सात्यकी मेरे हितको चाहता हुआ अर्जुन के खोज करने को गयाहै जोकि कठिनतासे प्राप्त भयकारी और मूर्खोंको अप्राप्त है हे भीमसेन दोनों कृष्ण और यादव सात्यकी को कुशल पूर्व्वक देख कर अपने सिंहनादसे प्रकटकरो ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिषड्विंशतितमोऽध्यायः १२६ ॥

एकसौसत्ताइसका अध्याय ॥

भीमसेन बोले कि पूर्व्व समयमें जिस रथने ब्रह्मा शिव इन्द्र और वरुण नाम देवताओं को सवार किया उसी रथपर श्रीकृष्ण और अर्जुन भी सवार होगये हैं उन दोनों को कभी भय उत्पन्न नहीं है मैं आपकी आज्ञाको शिर से धारण करके जाता हूं शोच मत करो मैं उन नरोत्तमों से मिल कर आपको विदित करूंगा २ संजय बोले कि इस प्रकार कहकर वह पराक्रमी भीमसेन युधिष्ठिर को धृष्टद्युम्न आदिक शुभ चिन्तकों के सुपुर्द करके चल दिया ३ बड़ा बली भीमसेन धृष्टद्युम्न से यह बोला कि हे महाबाहो तुमको विदित है जैसे कि यह महारथी द्रोणाचार्य्य हैं वह सब उपायों से धर्मराज के पकड़नेमें प्रवृत्तहैं हे धृष्टद्युम्न मेरा काम यात्रामेंऐसा वर्त्तमान नहीं है ५ जैसा कि हमारा बड़ा काम राजा की रक्षामें है मुझको राजा की यह आज्ञा हुईहै मैं उनको उत्तर नहीं देसकाहूं ६ अब मैं वहां जाऊंगा जहां पर कि वह मृत्युकी इच्छा करने वाला जयद्रथ नियतहै निस्सन्देह धर्मराज के वचन पर नियत होना योग्य है ७ मैं बुद्धिमान यादव सात्यकी और भाई अर्जुन के ढूंढने को जाऊंगा सो अब तुम युद्धमें सावधान होकर राजा युधिष्ठिर को चारों ओर से रक्षा करो ८ युद्ध के मध्यमें सब कामों से मुख्यकाम यहीहै हे महाराज यह सुनकर धृष्टद्युम्न भीमसेन से बोला ९ हे भीमसेन तू किसी बातकी चिन्ता नकर और यात्रा करो मैं तेरे अभीष्ट

को करूंगा द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्न को युद्धमें बिना मारे हुये किसी दशा में १० भी धर्मराजको नहीं पकड़ सके इसके पीछे भीमसेन राजा युधिष्ठिर को धृष्टद्युम्नके सुपुर्द करके ११ और बड़े भाईगुरू रूप को दंडवत कर धर्म राजसे मिलकर यात्रा करने वालाहुआ हेभरत वंशी जिस प्रकार से अर्जुन गयाथा १२ उसी प्रकार मस्तक पर सूंघा हुआ शुभ मंगल कारी आशीर्वाद सुनाया हुआ भीमसेन पूजित प्रसन्न चित्त ब्राह्मणों को दक्षिणावर्त्ती करके १३ अग्नि, गौ, सुवर्ण, दूर्वा, गोरोचन, अमृतके स्थान में जल घृत, अक्षत, दही, इन आठों मंगलीक बस्तुओं को स्पर्श करके और कैरातिक नाम मधुको अर्थात् मादक रस को पीकर दूने युद्धके सामानों को रख मदसे रक्त नेत्र वाला वीर १४ ब्राह्मणों से स्वस्ति वाचन किया हुआ विजय के उत्पत्तिकी जताने वाली विजया नन्द बढ़ाने वाली अपनी बुद्धिको देखता १५ अनुकूल पवनोंसे शीघ्रही बिजयके उदय का देखने वाला महाबाहु भीमसेन कवच और शुभ कुंडल धारी १६ बाजू बन्द हस्त त्राण वा रथ का रखने वाला रथियों में श्रेष्ठ होकर प्रस्थित हुआ उसका सुवर्ण से जटित लोहमयी कवच बहुमूल्य धनुष १७ सब ओरसे शरीरमें चिपटा हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली रखनेवाला बादल पीतरक्त कृष्ण और श्वेत वस्त्रोंसे अलंकृत १८ कण्ठत्राण समेत ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र धनुष रखनेवाला बादल आपकी सेनासे युद्धाभिलाषी भीमसेनके यात्रा करनेके समय १९ फिर पांचजन्य शंखका भयकारी शब्दहुआ हेराजा उस तीनो लोकोंके भयकारी पांचजन्य केबड़े शब्दको सुनकर २० धर्मकापुत्र युधिष्ठिर महाबाहु भीमसेनसे बोलाकि यह शंख वृष्णियोंमें बड़ेवीर श्री कृष्णजीने बड़ेवेगसे कठिन बजायाहै २१ इस शंखोंके राजाने पृथ्वी अन्तरिक्ष और आकाशको महाशब्दायमान करदियाहै निश्चय करकेबड़े दुःखमें अर्जुनके पड़जानेसे २२ चक्रगदा धारी श्रीकृष्णजी आपही सब कौरवोंसे लड़तेहैं निश्चय करके आर्य्या कुन्ती वा देखनेवाली

द्रौपदीऔर सुभद्राने बान्धवोंसमेत पापरूप शकुनोंकोकहाहै सो हे भीमसेन अब शीघ्रताकरकेतुमवहांजाओजहांपरकिअर्जुनहै२३।२४ हेवृकोदर अर्जुनके और यादव सात्यकीकेन देखनेके कारणमेरीसब दिशाऔरविदिशामोहसे गुप्तहोतीहैं २५ हेराजा धृतराष्ट्र वह भीम-सेनगुरूसेयह आज्ञादिया गयाकि जाओजाओ इसकेपीछे पांडुका पुत्रप्रतापवान भीमसेन २६ धर्मके हस्तत्राण और अंगुष्ठत्राणका धारणकरनेवाला हाथोंमें धनुषलिये भाईका हितकरनेवालाबड़ेभाई काभेजाहुआ २७भीमसेनदुन्दुभीकोबजाकरऔर बारंबारशंखकोभी शब्दायमानकरके सिंहनादसे गर्जकर वारंवार प्रत्यंचाको खैंचता-हुआ चला २८ उस शब्दसे वीरोंके चित्तोंको गिराकर अपनेशरीर कोभयकारी दिखलाता अकस्मात् शत्रुओंके सन्मुख चला२९शि-क्षित हंसितेमन और बायुके समान शीघ्रगामी बिशोक नामसारथी सेयुक्त बहुत उत्तम शीघ्रगामी घोड़े उसको लेचले३० मारतेपीड़ा देतेहाथसे प्रत्यंचाको अच्छीरीतिसे खैंचते लक्षबांधकर बाणोंको छोड़ते पांडवभीमसेनने सेनामुखको इधरउधरकरकेछिन्नभिन्नकरदि-या ३१ सौमकों समेत पांचालदेशी शूर उस चलनेवाले महाबाहु केपीछे ऐसेचले जैसेकि इन्द्रके पीछे देवता चलतेहैं ३२ हेमहाराज आपके उनशूरवीरोंने मिलकर उसको घेरलिया जिनके कि यह ना-महैं दुःशल,चित्रसेन,कुण्डभेदी,विविंशति३३दुर्मुख,दुस्सह,विकर्ण, शल्य,बिन्द,अनुबिन्द,सुमुख,दीर्घबाहु,सुदर्शन३४वृन्दारक,सुहस्त, सुषेण,दीर्घलोचन,अभय,रुद्रकर्मा,सुवर्मा,दुर्विमोचन ३५ यह सब रथियोंमें श्रेष्ठ सेनासे युक्तऔरपीछे चलनेवालों समेत शोभायमान हुये और युद्धमें कुशल वह सबबीर भीमसेन के सन्मुख गये ३६ युद्धोंमेंबड़ा शूर वीर महारथी चारों ओर से उन युद्धकर्ता लोगोंसे घिराहुआ कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन उनको देखकरसन्मुख-तामें ऐसे वर्त्तमान हुआ जैसे कि वेगमान सिंह छोटेमृगोंके स-न्मुख होताहै ३७ वहां उन वीरोंने दिव्य महाअस्त्रों को दिखलाया और बाणों से भीमसेन को ऐसे ढकदिया जैसे कि उदय हुये सूर्य्य

को बादल आच्छादित करदेते हैं ३८ वह वेग से उनको उल्लं-
घन कर द्रोणाचार्य्य की सेनापर दौड़ा और आगेसे हाथियोंकी
सेनाको बाणों की वर्षा से ढक दिया ३६ उस वायु पुत्र ने थोड़ेही
समय में सब दिशाओं को आच्छादित करके तीक्ष्णधार वाले
बाणों से उस हाथियों की सेना को छिन्न भिन्न किया ४० जैसे कि
वनके मध्यमें शरभ के गर्जनेसे मृग भयभीत होते हैं उसीप्रकार
भीमसेन के गर्जने से सब हाथी भयभीत होकर भागे ४१ फिर
वेग से उस हाथियों के समूहोंको उल्लंघनकर द्रोणाचार्य्य की
सेनाके सन्मुख गया वहां आचार्य्य जीने उस को ऐसे रोका जैसे
कि उठेहुये समुद्रको मर्यादारोकतीहै ४२ और मन्दमुसकान करते
हुये आचार्य्य जीने उसको ललाट पर घायल किया उससे भीमसेन
ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि उन्नतज्वाला रखनेवाला सूर्य्यहोताहै
४३ आचार्य्यजीनेकहा कि जैसामेरा शिष्यअर्जुनहै उसीप्रकार यह
भीमसेनहैयहमेरा पूजन करेगा इस प्रकारमानतेहुये उनआचार्य्य ने
भीमसेनसेकहा४४ हेमहाबाहु भीमसेन अब युद्धमें मुझशत्रुको बिना
विजय किये हुये तुझको शत्रुओंकी सेना में प्रवेश करना योग्य न-
हीं ४५ जो वह तेरा छोटा भाई अर्जुन मेरी अनुमतिसे सेनामें प्र-
विष्ट हुआ परन्तु यहां तुझसे मेरी सेनामें प्रवेश करना असंभवहै४६
फिर निर्भय क्रोधसे रक्त नेत्र शीघ्रता करने वाला भीमसेन गुरूके
वचन को सुनकर द्रोणाचार्य्य से बोला ४७ हे ब्रह्मबन्धु अर्जुन
आपकी अनुमति से युद्धभूमि में नहींगया वह निर्भय होकर इन्द्र-
की सेना में भी प्रवेश कर सक्ताहै ४८ उत्तम पूजन के करने वाले
अर्जुन से आप पूजित होकर प्रतिष्ठा दिये गयेहो हे द्रोणाचार्य्य मैं
दयावान अर्जुन नहीं हूं मैं आपका शत्रु भीमसेन हूं ४६ तुम हमारे
पिता गुरू और बन्धुहो और उसी प्रकारसेहम आपके पुत्रहैं प्रति-
ष्ठा पूर्वक नम्रता से नियत हम सब आपको इस रीतिसे मानते
हैं ५० अब आपकी बातों के करने में गुरुभक्ति पूर्वक गुरूकी
प्रीति विपरीत दिखाई देतीहै जो तुम अपने को शत्रु मानतेहो तो

वैसाही होय ५१ मैं भीमसेन तुमशत्रु रूपकेयोग्य कर्मको करताहूं हे राजा जैसे कि यमराज कालदण्डको घुमाता है उसी प्रकार भीमसेनने गदाको घुमाकर ५२ द्रोणाचार्य्यके ऊपर छोड़ा वह रथ से कूदपड़े तब उस गदाने द्रोणाचार्य्य के रथको घोड़े सारथी और ध्वजा को भी खण्ड२ अर्थात् चूर्णकरदिया ५३ और बहुत से शूर वीरोंको ऐसे मर्दनकिया जैसे कि वायु अपने वेग से वृक्षोंको करता है फिर आपके उन पुत्रोंने उस उत्तम रथीको घेर लिया ५४ प्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य दूसरे रथपरसवार होकर व्यूह केद्वार को पाकर युद्धके निमित्त सन्मुख नियत हुये ५५ हेमहाराज उसके पीछे क्रोध युक्त पराक्रमी भीमसेन ने आगेसे रथोंकी सेनाको बाणों की बर्षासे ढकदिया ५६ वह युद्धमें घायल महारथी युद्धमें भयकारी पराक्रमी और बिजयाभिलाषी आपके पुत्र भीमसेन से युद्ध करने लगे ५७ इसके पीछे पांडुनन्दन भीमसेन के मारने के अभिलाषी दुश्शासन ने अत्यन्त लोहमयी रथ शक्तिको फेंका ५८ भीमसेन ने आपके पुत्र की फेंकी हुई उस महाशक्ति को आताहुआ देखकर दोखंडकिये यह आश्चर्य्यसा हुआ ५९ फिर पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने दूसरे तीक्ष्ण तीन बाणोंसे गण्डभेदी सुषेण और दीर्घनेत्र इनतीनों आपके पुत्रोंको मारा ६० और युद्ध करने वाले आपके बीर पुत्रोंके मध्य कौरवों की कीर्त्ति बढ़ानेवाले बीर वृन्दारक कोभीमारा ६१ फिर भीमसेन ने अभय रुद्रकर्मा और दुर्बिमोचन इन तीनों आपके पुत्रोंको तीनबाणोंसे मारा ६२ हेमहा-राज उस बलवान के हाथसे घायल आपकेपुत्रोंने प्रहार कर्त्ताओं में श्रेष्ठ भीमसेन को चारों ओरसे घेरलिया ६३ वह सब उसयुद्ध में भयकारी कर्मकर्त्ता भीमसेन पर ऐसे बाणोंकी बर्षा करने लगे जैसे कि बर्षाऋतुमें बादल अपनी धाराओं से पर्व्वत पर बर्षाकर-तेहैं ६४ जैसे कि पर्व्वत पाषाण वृष्टि को सहता है उसी प्रकार शत्रुओं का मारनेवाला वह पांडव भीमसेन उन बाणरूपी बर्षाको सहता हुआ पीड़ामान नहीं हुआ ६५ फिर हंसते हुये भीमसेन ने

बाणोंसे विन्द अनुविन्दको एक साथही आपके सुवर्मा नाम पुत्र समेत यमलोक में पहुंचाया ६६ हे भरतवंशीयों में श्रेष्ठ इसकेपीछे युद्धमें आपकेपुत्र वीर सुदर्शनकोभी घायल किया और वह शीघ्रही गिरकर मर गया ६७ उस पांडुनन्दन ने सब दिशाओं को अच्छी रीतिसे देख कर थोड़ेही समयमें उस रथकी सेनाको तीक्ष्ण चलने वाले बाणों से छिन्न भिन्न करदिया ६८ हेराजा इसके पीछेआपके पुत्र युद्धमें ऐसे छिन्नभिन्न होगये जैसे कि रथके शब्दसे और गर्जने से मृग छिन्न भिन्न होकर इधर उधर भग जाते हैं ६९ भीमसेन केभयसे वह सब अकस्मात् भागे और भीमसेन आपके पुत्रोंकीबड़ी सेनापर दौड़ा ७० हे राजा युद्धमें उसने सब ओर से कौरवों को घायल किया फिर भीमसेन के हाथसे घायल आपके शूरवीर ७१ भीमसेनको त्यागकर उत्तम घोड़ोंको चलायमान करते युद्धभूमिसे चलेगये महाबली पांडव भीमसेनने युद्धमें उनको विजयकरके७२ सिंहनाद और भुजाओंके शब्दोंको किया फिर महाबली भीमसेन अपने हाथोंकी हथेलियोंसेभी बड़ेभारी शब्दोंको करके ७३ रथकी सेनाको दौड़ाकर उत्तम २ शूरोंको मारता उत्तम२ रथियोंको उल्लंघनकर द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सन्मुख गया ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिसप्तविन्शतितमोऽध्यायः १२७ ॥

एकसौअट्ठाइसका अध्याय ॥

संजयबोले कि युद्धमेंरोकनेके अभिलाषी हंसतेहुये आचार्य्यजीने रथकी सेनासे पारहोनेवाले भीमसेन को बाणोंकी वर्षासे ढक दिया१ द्रोणाचार्य्यके धनुषसे गिरेहुये उन बाणोंके समूहोंको पानकरता अपने बलके प्रभावसे सबको अचेत करता वह भीमसेनभाइयोंके सन्मुख गया२ आपके पुत्रकी प्रेरणासे उत्तम धनुषधारी राजाओंने बड़े वेगमें नियतहोकर युद्धमें सब ओरसे उसको घेरलिया३ हेभरतवंशी उन सिंहसमान गर्जनेवाले राजाओंसे घिराहुआ उस भीमसेनने उन राजाओंके निमित्त अपनी घोर गदाको उठाया ४

और शत्रुओंके मारनेवाली उस गदाको बड़े वेगसे ऐसे फेंका जैसे कि दृढ चित्तवाले इन्द्रसे घुमायाहुआ इन्द्रवज्रहोता है हेमहाराज उसगदाने आपकी सेनाके मनुष्योंका चूर्णकरडाला ५ हेराजा बड़ेशब्दसे पृथ्वीको शब्दायमानकरती अपने तेजसे प्रकाशित उस भयकारी गदाने आपकेपुत्रोंको भयभीतकिया ६ आपकेसब शूरवीर उस वेगमान प्रकाशित गदाको गिरताहुआ देखकर भयकारी शब्दों कोकर करके इधर उधरको भागे ७ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र तब वहां रथसवार और मनुष्य उस गदाके असह्य शब्दको सुनकर अपने २ रथोंसे गिरपड़े ८ गदाहाथमें लेनेवाले भीमसेन से घायल आपके शूरवीर ९ युद्धमें ऐसे भागे जैसे कि व्याघ्रके सूंघेहुये भयभीत मृगभागतेहैं उस भीमसेनने युद्धमें उनकठिनतासे विजयहोनेवाले शत्रुओंको भगाकर पक्षियोंके राजागरुड़केसमान बड़ेवेगसे सेनाओं को उल्लंघनकिया १० हेराजा भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी उसप्रकार अप्रिय कर्म करनेवाले महारथी भीमसेनके सन्मुख गये ११ द्रोणाचार्य्यने युद्धमें बाणरूपी तरंगोंसे भीमसेनको रोककर अकस्मात् शब्दोंको करके पांडवोंके भयको उत्पन्नकिया १२ महाराज महात्मा भीमसेन और द्रोणाचार्य्यका वह महायुद्ध ऐसा हुआ जैसा कि महाभयकारीदेवासुरोंका युद्धहुआथा १३ जब द्रोणाचार्य्यके धनुष से निकले हुयेतीक्ष्ण बाणोंसे सैकड़ों और हजारोंवीर युद्धमें मारे गये १४ हेराजा इसकेपीछे पांडव रथसे कूदकर बड़ेवेगमें नियत होकर दोनों नेत्रोंको बन्दकरके पदाती द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया १५ पराक्रमी भीमसेनने कन्धेपर शिर और छातीपर दोनोंहाथोंको नियतकरके मन बायु और गरुड़के समान तीव्रतामें नियत होकर १६ जैसेकि उत्तम वृषभ लीलाहीसे जलकी वृष्टिको सहताहै उसी प्रकार नरोत्तम भीमसेनने बाणोंकी वर्षाको सहा १७ हेश्रेष्ठ युद्धमें घायल उस बड़े पराक्रमीने द्रोणाचार्य्यके रथको हाथसे ईशादंडपर पकड़कर फेंकदिया हेराजा फिर युद्धमें भीमसेनके हाथसे फेंकेहुये द्रोणाचार्य्य शीघ्रही दूसरे रथपर सवार होकर व्यूहके द्वार पर

गये १९ तब फिर उस निरुत्साहरूप गुरूको उसीप्रकारसे आता-हुआदेखकर भीमसेनने वेगसे रथकीधुरीको पकड़कर २० बड़ेक्रोधपूर्वक उस बड़े रथ को भी फेंकदिया इसी प्रकार लीलापूर्वक भीमसेन ने द्रोणाचार्य्य के आठरथों को फेंका २१ फिर एक पल भरमेंही अपनेरथपर नियत दिखाई पड़ा और आश्चर्य्य करके आपके शूरोंने उसकी ओरकोदेखा २२ हेकौरव उसी क्षणमें भीम-सेनके सारथीने शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया वहभी आश्चर्य्य साहुआ इसके अनन्तर बड़ापराक्रमीभीमसेन अपने रथमें नियतहो-कर वेगसे आपके पुत्रकी सेनाकी ओरदौड़ा २४ जैसे कि उठाहुआ वेगवान वायु वृक्षोंका मर्द्दन करताहै उसीप्रकार युद्धमें क्षत्रियों को मर्द्दन करता अथवा जैसे कि समुद्रका वेगपहाड़ोंको घेरलेता है उसी प्रकार सेनाको रोकतागया २५ वहबड़ापराक्रमी वीरभोजवंशीकृत-वर्मासे रक्षित सेनाको पाकर और उसको बड़ेवेगसे मथकर २६ तलकेशब्दोंसे सेनाओंकोडरातेहुये भीमसेनने सब सेनाओं को ऐसे विजयकियाजैसेकि शार्दूलसिंह गौ औरबैलोंकोविजयकरताहै २७ कृतवर्माकी सेनाको उल्लंघनकर दुर्योधनकी सेनाको भी विजय किया उसीप्रकार म्लेच्छोंके उनबड़ेसमूहोंको जोकि युद्धमें कुशलथे उनकोभी विजयकिया २८लड़तेहुये महारथी सात्यकी कोदेखकर उपाय करनेवाला भीमसेन रथकी सवारीपर बड़ी तीव्रतासे चला २९ हेमहाराज अर्जुनके देखनेका अभिलाषी पांडुनन्दन भीमसेन युद्धमें आपके शूरवीरोंको उल्लंघन करके ३० उस पराक्रमीने जय-द्रथके मारनेके निमित्त पराक्रम और युद्धकरनेवाले महारथी अर्जुन को वहां देखा ३१ हे महाराज वर्षाऋतु के समयमें गर्जनेवाले बादल के समान पुरुपोत्तम भीमसेनने उस अर्जुन को देखकर बड़े शब्द किये ३२ हे कौरव अर्जुन और वासुदेव जीने युद्धमें उस गर्जनेवाले भीमसेनके भयकारी शब्दकोसुना ३३ वहदोनोंवीर एक साथ वारंवार गर्जनेवाले पराक्रमी भीमसेनके शब्दको सुनकर देखनेके अभिलाषीहुये ३४ हेमहाराज इसकेपीछे अर्जुन और सा-

त्यकीने बड़े शब्दोंको किया और उत्तम वृषभोंके समान गर्जतेहुये सन्मुखगये ३५ फिर धर्मकापुत्र युधिष्ठिर धनुषधारी अर्जुन और भीमसेनके शब्दोंको सुनकर प्रसन्नहुआ उनदोनोंके शब्दोंको सुनकर राजा शोचसेरहित हुआ और उस समर्थ युद्धमें अर्जुनकीही बिजयकी आशाकरी ३७ उसरीतिसे मदोन्मत्त भीमसेनके गर्जनेपर धर्मपुत्र महाबाहु धनुर्धरयुधिष्ठिरने मन्दमुसकान पूर्व्वकचित्तसे ध्यानकरके स्नेहमें प्रवृत्तहोकर यहवचनकहा हेभीमसेन तुमने मुझको जतलाया और मुझगुरूकी आज्ञाका पालनकिया ३८।३९ हेपांडव तुम जिनकेशत्रुहो युद्धमें उनकी बिजयनहीं होसक्ती सव्यसाची और संसारके धनोंका बिजयकरनेवाला अर्जुन युद्धमें प्रारब्ध से जीवताहै ४० और प्रारब्धहीसे सत्य पराक्रमी बीरसात्यकीभी आनन्द पूर्व्वक है और मैंभी प्रारब्धही से वासुदेवजी और अर्जुनको गरजताहुआ सुनताहूं ४१ जिसने युद्धमें इन्द्रको बिजय करके अग्निदेवता प्रसन्न किये वह शत्रुओंका मारनेवाला अर्जुन युद्धमें प्रारब्धहीसे जीवताहै ४२ हमसब जिसके भुजोंके आश्रयसे जीवतेरहे वह शत्रुओंकी सेनाओंका मारनेवाला अर्जुन प्रारब्धसे चिरंजीवीहै ४३ जिसने देवताओंसेभी कठिनतासे बिजय होनेवाले निवात कवचीनाम दैत्योंको एकही धनुषके द्वारा बिजयकिया वह अर्जुन भाग्यसे जीवताहै ४४ जिसने बिराटनगर में गौओंके हरने के निमित्त एकसाथ आतेहुये सब कौरवोंको बिजयकिया वहअर्जुन प्रारब्धसेजीताहै ४५ जिसने बडेयुद्धमें अपने भुजबलसे चौदहहजार कालकेय नाम असुरोंको मारा वह अर्जुन प्रारब्धसे जीवताहै ४६ निश्चयकरके जिसने दुर्योधनके निमित्त पराक्रमी गंधर्वोंके राजाको अपनेअस्त्रोंके बलसे बिजय कियावह अर्जुन प्रारब्धसे जीवताहै ४७ मुकुट मालाधारी पराक्रमी श्वेतघोड़ोंसे युक्त श्रीकृष्ण जीको सारथी रखनेवाला और सदैव मेरा प्याराहै वह अर्जुन प्रारब्ध सेजीवताहै ४८ पुत्रके दुखसे दुखी और कठिनकर्मके करनेकाअभिलाषीजयद्रथके मारनेकी प्रतिज्ञाको जिस अर्जुनने पूरा किया ४९

वह अर्जुन कब जयद्रथको युद्ध में मारेगा और कब मैं सूर्यास्त होनेसे पूर्वही उसजयद्रथको मारकर प्रतिज्ञा पूरी करनेवाले वासुदेवजी से रक्षित अर्जुनसे मिलूंगा और कब दुर्योधनकी वृद्धि में प्रीति रखनेवाला राजा जयद्रथ ५०।५१ अर्जुन के हाथसे मरा हुआ शत्रुओंको प्रसन्न करेगा क्या राजा दुर्योधन अर्जुनके हाथसे गिराये ५२ सिन्धुके राजा जयद्रथ को देखकर युद्धमें हमारे विषय में कल्याणको धारणकरेगा युद्धमें भीमसेनके हाथसे मारेहुये अपने भाइयोंको देखकर निर्बुद्धी दुर्योधन हमारे विषय में कल्याण को धारण करेगा ५३ कहीं अभागा दुर्योधन पृथ्वीपर गिरायेहुये दूसरे बड़े शूरवीरोंको देखकर पश्चात्तापको करेगा ५४ कहीं हमारी शत्रुता अकेले भीष्मसेही शान्तीको पावेगी और शेषों की रक्षाके निमित्त दुर्योधन सन्धिकरेगा ५५ तब इस प्रकारसे बहुत प्रकारकी चिन्ता करनेवाले कृपासे संयुक्त शरीरवाले उसराजा का घोर युद्ध वर्त्तमान हुआ ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिअष्टाविंशतितमोऽध्यायः १२८ ॥

एकसौउन्तीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोलेकि इसप्रकारसे गर्जने वालेमेघस्तनितके समान शब्दायमान महाबली भीमसेन को किनवीरोंने रोका १ मैं तीनों लोकोंमें ऐसे किसी शूरवीरको नहीं देखताहूं जोकि युद्धमें क्रोध युक्त भीमसेन के सन्मुख नियत होय २ हे संजयमैं यहां उस पुरुष को नहीं देखताहूं जो इसकालके समान गदाके घुमानेवाले भीमसेनके आगे नियत होय ३ जो रथसे रथको तोड़े हाथीको हाथीसे मारे उसके युद्धमें कौन नियतहोसक्ता है साक्षात् इन्द्रभी वहां नहीं ठहर सक्तेहैं ४ दुर्य्योधनके हितमें प्रवृत्त कौन २ से वीर उस मेरे पुत्रोंके मारने के अभिलाषी क्रोध युक्त भीमसेन के आगे अच्छे प्रकारसे नियत हुये ५ कौन मनुष्य घासके समान मेरे पुत्रोंको जलाने के अभिलाषी भीमसेन रूपी दावानलके आगे युद्धके मुख

पर नियत हुये ६ जैसेकि काल से सब सृष्टि परलोक को जातीहै उसीप्रकार भीमसेन के युद्धमें मेरे पुत्रोंकोभगाहुआ देखकर किन वीरोंने भीमसेनको रोका ७ मुझको वैसा भय अर्जुन श्रीकृष्ण और सात्यकीसे भी नहींहै जैसा कि भय अग्निसे उत्पन्नहोनेवाले धृष्टद्युम्नसे औरभीमसेनसेहै ८ कौन शूरवीर उसमेरे पुत्रोंके नाशकरने के अभिलाषी अत्यन्त प्रकाशित भीमसेनरूपीअग्निके सन्मुख वर्त्तमान हुये हेसंजय वह सबमुझसे कहो ९ संजयबोले कि पराक्रमी कर्णभी कठोर शब्दसे युक्त इस प्रकार गर्जनेवाले महाबली भीमसेनके सन्मुख गया १० बड़े युद्धको चाहते और युद्धमें अपने पराक्रमको दिखलाना चाहते और बहुत धनुषको चलायमान करते क्रोध युक्त कर्णनेभीमसेनके मार्गको ऐसे रोका ११ जैसेकि वायुके मार्गको वृक्षरोकताहै भीमसेन ने भी अहंकारी सन्मुख वर्त्तमान सूर्य्यके पुत्र कर्णको देखकर १२ कठिन क्रोध किया और बड़ी शीघ्रतासे वीरने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको उसके ऊपरफेंका कर्णने भी उन बाणोंको न सहकर शत्रुपर बाणों को छोड़ा १३ इसके अनन्तर कर्ण और भीमसेनके युद्धमें उपायकरनेवाले और तमाशा देखनेवाले शूरवीरोंके अंग अत्यन्त कंपायमान हुये १४ उनदोनों की प्रत्यंचाके शब्दोंको सुनकर रथ सवार और अश्व सवारोंके भी अंग कांपनेलगे युद्धभूमिमें भीमसेनके भयकारी शब्दको सुनकर १५ उत्तम २ क्षत्रियों ने आकाश और पृथ्वीको एक माना फिर महात्मा पांडव भीमसेनके घोरशब्दसे १६ युद्धमेंसव शूरवीरोंकेधनुष गिर पड़े और दोनों हाथों से शस्त्रभी गिर पड़े कितनेहीशूरवीरोंके प्राण निकलगये १७ और सब भयभीत लोगोंने मूत्र और विष्टाकोछोड़ा और सब सवारियां निरुत्साह हुईं १८ और भयकारी अनेकअशकुन प्रकटहुये गृध्रकंकआदिक पक्षियोंके समूहोंसे पृथ्वी और आकाश मध्यभाग पूर्ण हुआ १९ हे राजा कर्ण और भीमसेन का अत्यन्त घोर युद्ध हुआ इसके पीछे कर्णने भीमसेन को बीस बाणोंसे पीड़ामान किया २० और शीघ्रही उसके सारथीको पांच

बाणोंसे घायल किया भीमसेनभी हंसकर युद्ध में कर्णके सन्मुख दौड़ा २१ और शीघ्रता करके उस यशस्वी ने चौंसठ बाण मारे बड़े धनुषधारी कर्णने चार बाण उसपरफेंके २२ हेराजन्हस्तला-घवताको दिखलाते हुये भीमसेनने झुकेपक्ष वाले बाणोंसे बीचहीमें उनको काटा २३ कर्णने उसको बाण समूहों से बहुत रीति करके ढंकदिया कर्णके हाथसे अत्यन्त ढंके हुये पांडुनन्दन २४ महारथी ने कर्णके धनुष को मूठके स्थान पर से काटा और गुप्तपर्व वाले बहुत बाणोंसे उसको छेदा २५ फिर भयकारी कर्म करनेवाले कर्ण ने दूसरे धनुष को लेकर युद्धमें भीमसेनको छेदा २६ अत्यन्त क्रोध युक्त भीमसेन ने वेगसे कर्णकी छाती पर गुप्तपर्व वाले तीनबाणों कोमारा २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उस समय कर्ण छातीपर वर्त्त-मान हुये उन बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखर वाला ऊंचापहाड़ शोभित होताहै २८ उत्तम बाणोंसे घायल उस कर्ण का रुधिर ऐसे निकलने लगा जैसे कि धातुके गिराने वाले पर्व्वत से धातु निकलती है २६ घटित प्रहारसे पीड़ित और कुछ कंपायमान कर्णने कान तक खैंचकर बाणोंसे भीमसेन कोवेधा ३० फिर हजारों बाणों को फेंका उस दृढ़ धनुषधारी कर्ण के बाणों से पीड़ामान भीमसेनने शीघ्रही क्षुर से उसकी प्रत्यंचा कोकाटा ३१ और फिर महारथीनेउसके सारथी कोभी भल्लसे रथकेस्थान सेनीचे गिरादिया और उसके चारों घोड़ोंको यमपुर भेजा ३२ हेराजन्फिर कर्ण उस मृतक घोड़े वाले रथसे कूदकर भयसे शीघ्रही वृषसेनके रथपर सवार हुआ ३३ फिर प्रतापवान् भीमसेन युद्धमें कर्णको विजय करके बादलके समान शब्दायमान गर्जना को गर्जा ३४ युधिष्ठिर उसके उस शब्दको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये युद्धमें भीमसेन के हाथसे कर्णको पराजित मानकर ३५ पांडवी सेनाने चारों ओरसे शंखोंके शब्द किये आपके शूरवीर शत्रुओंकी सेनाके शब्दको सुनकर अत्यन्त गर्जे ३६ उस राजा युधिष्ठिर ने प्रसन्नता पूर्व्वक युद्धमें शंख वीणा आदिक प्रसन्नता के बाजोंसे अपनी सेना

को प्रसन्न किया ३७ अर्जुन ने गांडीवधनुष को टंकार और श्रीकृष्णजी ने पांचजन्य शंखको बजाया हेराजन् तबगर्जतेहुये भीमसेन के शब्द उन सब शब्दोंको दबाकर सब सेनाओं में बड़ेकठोर सुने गये ३८ इसके पीछे पृथक्२ बाण और अस्त्रोंसे कर्णाने बड़ी नम्रतासे प्रहार किये और भीमसेनने कठोरतासे प्रहार किये ३९॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनत्रिंशतितमोऽध्यायः १२६ ॥

एकसौतीसका अध्याय॥

संयज्ञ बोले कि उस सेनाके पृथक् २ होने और जयद्रथके लिये अर्जुन सात्यकी और भीमसेन के जानेपर आपका पुत्र द्रोणाचार्य्य के पास गया १ एक रथके द्वाराही शीघ्रता करता और बहुत बातोंको बिचारता हुआ गया आपके पुत्रका वह रथ बड़ी शीघ्रतासे युक्त २ मन बायुके समान वेगमान शीघ्रही द्रोणाचार्य्य के पास गया और क्रोधसे रक्तनेत्रहोकरआपका पुत्र उनसे बोला ३ अर्थात् हे कौरवनन्दन भय से उत्पन्न होनेवाले वेग से युक्त वह दुर्योधन यह बचन बोला कि अजेय महारथी अर्जुन सात्यकी औरभीमसेन सब बड़ी सेनाको बिजय करके बिनारुके हुये जयद्रथ के सन्मुख बर्त्तमान हुये ४। ५ वह सब अजेय महारथी सब सेनाओंको बिजय करके वहां भी प्रहार करते हैं ६ हे बड़ाई देनेवाले आप किसरीति से सात्यकी और भीमसेनसे उल्लंघन किये गयेहो इस लोकमें यह आश्चर्य्य कीसी बात है जैसे कि समुद्र का सूखजाना ७ हे उत्तम ब्राह्मण सात्यकी अर्जुन और भीमसेन के हाथसे आपके पराजय होनेको लोग बड़ा आश्चर्य्य करते हैं ८कि धनुर्वेदके पारगामी द्रोणाचार्य्य युद्धमें कैसे बिजयकियेगये सब शूरवीरइसप्रकार से कहते हैं यह आपकी पराजय श्रद्धा और बिश्वासके योग्य नहीं है ९ निश्चय करके मुझ अभागेका युद्धमें पराजय पूर्व्वक बिनाश हीहै जिस स्थान में कि तीनरथियोंने तुमसरीखे पुरुषोत्तमको उल्लंघन किया १० ऐसी दशामें इस करने के योग्य कर्ममें जो आपक

कहना योग्य है उसको कहो जो वहव्यतीत हुआ सो व्यतीत हुआ अब आगे शेषबचे हुये को विचारो ११ शीघ्रतासे समयके अनुसार जयद्रथका जो काम है उसको अच्छी रीतिसे विचारकर करो व्याकुल मतहो १२ द्रोणाचार्य्यजी बोले कि जो बहुतप्रकारसे विचारने और करनेके योग्यहै हेतात उसकोमुझसे सुनो कि पांडवोंके तीनों महारथी उल्लंघन करने वाले हुये १३ उन्होंके पीछेसे जितनाभय है उतनाही उनके आगेहै में उसको बड़ी बात मानताहूं जिसस्थान पर श्रीकृष्ण और अर्जुनने १४ वह भरतबंशियोंकी सेना आगेऔर पीछे से आधीनतामें करी वहां मैं जयद्रथकी रक्षाको करने के योग्य मानताहूं १५ हे तात क्रोधयुक्त अर्जुनसे भयभीत वह जयद्रथहम से बड़ी रक्षाके योग्यहै भयकारी रूप सात्यकी और भीमसेन जयद्रथके सन्मुख गये १६ यह वह द्यूत प्राप्तहुआ जोकि शकुनिकीबुद्धि से उत्पन्न हुआ है उससभामें न विजय हुई न पराजय हुई १७ अब यहां बाजीकरने वाले हम लोगों की जय पराजयहै पूर्व्व समयमें शकुनी कौरवोंकीसभामें जिन भयकारी पांशोंको मानताहुआ खेला है वहकठिनतासे सहनेके योग्यबाणहैं १८।१६ हेराजन् जहां पर वह बहुत से कौरव नियत हैं हेतात उस सेनाको द्यूत खेलनेवाला और बाणोंको पांशे जानो २० उसमें जयद्रथ दांवहै फिर जयद्रथ केही विषय में बड़ा द्यूत शत्रुओंसे हुआ २१ हे महाराज यहां तुम सब अपने जीवन को त्याग करके युद्ध में बुद्धिके अनुसार जयद्रथ की रक्षा करने के योग्य हो २२ दांव लगाने वाले हमलोगों की उस स्थान पर विजय और पराजय है जहां पर कि वह बड़े उपाय करने वाले धनुषधारी जयद्रथ की रक्षा करतेहैं २३ तुम आप वहां शीघ्र जावो और रक्षा करनेवालों की रक्षा करो मैं इसी स्थान पर नियतहूंगा और शत्रुओंको यमलोकमें भेजूंगा २४ पांचालों को पांडव और सृञ्जियोंसमेत मारूंगा इसके पीछे गुरुकी आज्ञा पाते ही दुर्य्योधन शीघ्र चलागया २५ पीछे चलने वालों समेत अपने को कठिन कर्मके अर्थ उद्युक्त करके गया पांचाल देशी युधामन्यु

और उत्तमौजस जो कि चक्रके रक्षक थे २६ वह बाहर की ओरसे सेनामें प्रवेश करके अर्जुनके पास गये हे महाराज जो कि पूर्व्वमें कृतवर्मा से रोके गयेथे २७ हे राजन् युद्धाभिलाषीपने से आपकी सेनामें अर्जुन के प्रवेश करनेपर दोनों बीर बगलसे आपकी सेना को चीरकर सेनामें प्रवेशित हुये २८ राजा दुर्य्योधनने बगल में से आये हुये उन दोनों को देखा पराक्रमी शीघ्रता करने वाले भरतबंशी दुर्य्योधनने उन जल्दी करने वाले दोनों भाइयोंके साथ उत्तम युद्ध किया २९ वह दोनों जो प्रसिद्ध महारथी और क्षत्रियों में अत्यन्त श्रेष्ठ जिन्होंने धनुष को ऊंचा कर रक्खाथा उसके सन्मुख गये ३० युधामन्यु ने तीस बाणोंसे उसको घायल करके बीस बाणसे उसके सारथीको और चार बाण से चारोंघोड़ों को घायल किया ३१ आपके पुत्र दुर्य्योधन ने एक बाणसे युधामन्युकी ध्वजा को दूसरे बाणसे उसके धनुषको काटकर ३२ भल्लसेउसके सारथी को रथके बैठक के स्थानसे नीचे गिरादिया उसके पीछे चारतीक्ष्ण बाणों से चारों घोड़ों को छेदा ३३ अत्यन्त क्रोधयुक्त शीघ्रताकरने वाले युधामन्यु ने युद्धमें तीस बाण आपके पुत्र पर छोड़े ३४ और इसी प्रकार अत्यन्त क्रोध युक्त उत्तमौजा ने सुवर्ण जटित तीक्ष्ण बाणोंसे छेदा और उसके सारथी को यमलोक में भेजा ३५ हे राजेन्द्र दुर्य्योधन ने भी उस पांचाल देशी उत्तमौजा के चारों घोड़ों को और उन दोनों आगे पीछे वाले सारथियों को मारा ३६ युद्धमें मृतक घोड़े और सारथी वाला उत्तमौजा शीघ्रता से अपने भाई युधामन्युके रथ पर सवार हुआ ३७ उसनेभाईके रथको पाकर दुर्य्योधन के घोड़ों को बहुत बाणोंसे घायल किया वह घोड़े मृतक होकर पृथ्वीपर गिरपड़े ३८ युधामन्युने घोड़ों के गिरनेपर युद्ध में शीघ्रहोउत्तम बाणसे उसके धनुष और तरकसको काटा ३९ आपके पुत्रराजाने मृतक घोड़े और सारथीवाले रथसेउतरगदाको लेकरउनदोनों पांचाल देशियोंको पीड़ामान किया ४० तबउसक्रोध युक्त आते हये कौरवपति दुर्य्योधनको देखकर युधामन्यु और

उत्तमौजा रथसे कूदकर पृथ्वीपर चलेगये ४१ इसके पीछे उसक्रोध युक्त गदाधारीने गदा से उस सुवर्ण जटित रथको घोड़े सारथी और ध्वजा समेत खण्ड २ कर दिया ४२ शत्रु संतापी वह मृतक घोड़े और सारथी वाला आपका पुत्र रथको तोड़कर शीघ्रही शल्य के रथपर सवार हुआ ४३ इसके पीछे पांचालदेशियोंमेंश्रेष्ठ दूसरे राजपुत्र महारथी रथपर सवार होकरअर्जुन के पास गये ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरित्रिंशतितमोऽध्यायः १३० ॥

एकसौइकतीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि हे महाराज रोमहर्षण करनेवाले युद्ध के वर्त्त-मान होने सबके व्याकुल होने और सब प्रकार से पीड़ामान होने पर १ कर्णने भीमसेनकोयुद्धके निमित्त ऐसेरोका जैसे कि बनमेंमत-वाला हाथी मतवाले हाथीके सन्मुख जाताहै २ धृतराष्ट्र बोले कि जो वह महाबली कर्ण और भीमसेन कठिन युद्ध करनेवाले हुयेतब कहो कि यह युद्धअर्जुनके रथकेपास कैसाहुआ३युद्धमें भीमसेन से कर्णपूर्व्वही विजयकिया गयाथा फिर वह महारथी कर्ण किस प्रकार से भीमसेनके सन्मुखहुआ ४ अथवा भीमसेनही युद्धमें कैसे उस कर्णके सन्मुख गया जोकि पृथ्वीपर रथियोंमें अत्यन्तश्रेष्ठ महा-रथी विख्यातहै ५ धर्मराज युधिष्ठिरने भीष्मपितामह और द्रोणा-चार्य्यको छोड़कर सिवाय महारथी कर्णकेकिसी और से भय नहीं पाया६हे महाबाहो वह युधिष्ठिर सदैवमहात्मा कर्णके पराक्रमको शोचता और उससे भयको करता हुआ बहुत बर्षसे नहीं सोताहै भीमसेनने किस प्रकार करके उसकर्णसेयुद्ध किया ७ पांडव भीम-सेन ने उस ब्राह्मणोंकेभक्त पराक्रमी युद्धोंमें मुख न फेरनेवाले शूर-बीरोंमें श्रेष्ठ कर्णसे कैसे २ युद्धकिया ८ जो वह बड़े वीर पराक्रमी कर्ण और भीमसेन युद्धमें सन्मुखहुये उनदोनोंका किस प्रकार का युद्ध हुआ ९ जिसने पूर्व्वमें अपना भायपनेका नातादिखाया वह दयावान् कर्णभी कुन्तीके बचनोंको स्मरण करताभीमसेनके साथ

में कैसे लड़ा १० अथवा शूरवीर भीमसेन प्राचीन शत्रुताको स्मरण करता हुआ सूतके पुत्र कर्णसे कैसे युद्ध करने वाला हुआ ११ मेरा पुत्र दुर्य्योधन सदैव कर्णमेंही यह भरोसा करताहै किकर्णही सब पांडवों को बिजय करेगा १२ मेरेअभागे पुत्र दुर्य्योधनकोयुद्ध में बिजयकी आशा जिसमें है वह कर्णभयकारी कर्म करनेवाले भी- मसेनके साथ किस प्रकारसेलड़ा १३ मेरे पुत्रों ने जिसको अपना आश्रय जानकर महारथियों से शत्रुताकरी हे तात वह भीमसेन उस सूतके पुत्रके साथ कैसे लड़ने वालाहुआ १४ सूत पुत्रके किये हुये अनेक अनुपकारी कर्मोंको स्मरण करतेहुये राधेयकर्णसे कैसे युद्धकिया १५ जिस पराक्रमीअकेलेने सबपृथ्वीको एक रथके द्वारा बिजय किया उस सूतके लड़के के साथभीमसेनने किस प्रकार से युद्ध किया १६ जोकि दो कुंडल और कवचधारी शरीरसे उत्पन्न हुआ उस सूत पुत्रके साथ भीमसेन ने कैसे युद्ध किया १७ जिस प्रकार से उनदोनों का युद्ध हुआ और दोनोंमें जो बिजयीहुआ उस को मुख्यता समेत मुझसे कहो १८ क्योंकि हेसंजयतुमवृत्तान्तोंके बर्णन करने में बड़े सावधानहो संजय बोले फिर भीमसेनने रथियों में श्रेष्ठ कर्णको छोड़कर वहां जानेकी इच्छाकरी जहांपर कि वह दोनों बीर श्रीकृष्ण और अर्जुनथे १६ हेमहाराज कर्ण उसजातेहुये भीमसेनकेपास जाकर बाणोंसे ऐसे वर्षाकरनेलगा जैसे कि बादल पर्व्वत पर पानीकी बर्षा करताहै २० तवप्रफुल्लित कमलके समान मुखसे हंसते हुये पराक्रमी अधिरथी कर्णने जातेहुये भीमसेनको युद्धमें बुलाया २१ कर्ण बोला हेभीमसेन शत्रुओं के साथतेरायुद्ध स्वप्नमें भी अधिक चिन्ताके योग्य नहीं हुआ सो तुम किस हेतुसे अर्जुन के देखनेकी इच्छासे मुझकोपीठ दिखलातेहो २२ हे पांडुन- न्दन यह बात कुन्तीके पुत्रोंकेसमान नहीं है इसहेतुसे मेरे सन्मुख नियत होकर बाणोंकी बर्षासे मुझको ढंको २३ तबभीमसेन युद्धमें कर्णके बुलानेको न सहसका और आधे मंडल को घूमकर सूतके पुत्रसे युद्ध किया २४ वह बड़े सीधे चलने वाले बाणों से उस

कवचधारी और सब शस्त्रोंमें कुशल और हैरथ आने वाले कर्णपर शरोंकी वर्षा करने लगा २५ युद्धका अन्तकरनाचाहते और मारने के अभिलाषी बड़े पराक्रमी भीमसेनने उसके पीछे चलनेवाले को मारकर उस कर्णको घायल किया २६ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र शत्रुसंतापी क्रोध भरे भीमसेन ने क्रोध से भयकारी नाना प्रकारके बाणोंकी वर्षा उसपर करी २७ फिर उत्तम अस्त्रके जानने वाले कर्णने उस मतवाले हाथीके समान चलनेवाले भीमसेनके उन बाणोंकी वर्षाको अस्त्रोंकी मायाओं से दूर किया २८ वह महाबाहु बड़ा नामी धनुर्द्धर पराक्रमी कर्ण अपनी बिद्याके बल से बिधिके अनुसार आचार्य्यके समान भ्रमण करनेलगा २९ हेराजन् वह हंसता हुआ कर्ण उस क्रोधसे लड़ने वाले कुन्तीके पुत्र भीमसेनके सन्मुखहुआ ३० चारों ओरसे वीरोंकेलड़ने और देखने पर भीमसेनने युद्धमेंकर्णको उसशस्त्रज्ञताकोनहीं सहा ३१ पराक्रमी क्रोध युक्त भीमसेनने वत्सदन्त नाम बाणों से उससन्मुख बर्त्तमानकर्ण को हृदयपर ऐसाघायलकिया जैसे कि चाबुकोंसेबड़ेहाथीको घायल करतेहैं ३२ फिर सुवर्ण कवचसे अलंकृतसूतपुत्रको सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधारवाले अच्छी रीतिसे छोड़े हुयेसातबाणोंसेछेदा ३३ कर्णने सुनहरी जालोंसे ढके वायुके समान शीघ्रगामी भीमसेनके घोड़ों को पांच २ बाणोंसे घायल किया ३४ हेराजन्इसके पीछे आधेही निमिषमें कर्णका उत्पन्न किया हुआ बाणरूपी जाल भीमसेन के रथपरदिखाई दिया ३५ तब भीमसेन कर्णके धनुषसेनिकलेहुयेबाणों से रथ ध्वजा और सारथी समेत ढकगया ३६ कर्णने चौंसठ बाणों से उसके दृढ़ कवच को तोड़ा और मर्म भेदी बाणों से बड़ी शीघ्रता पूर्वक भीमसेन को घायल किया ३७ इसके पीछे भयसे उत्पन्न होने वाली व्याकुलता से रहित महाबाहु भीमसेन ने कर्णके धनुष से निकले हुये बाणोंसे भयको न करके सूतपुत्र से युद्ध किया ३८ हे महाराज उस भीमसेन ने कर्णके धनुष से प्रकट हुये सर्पोंका बाणों को सहा और युद्धमें पीड़ा को नहीं पाया ३९ इसके पीछे

प्रतापवान् भीमसेन ने युद्धमें कर्णको तीक्ष्ण वेतवाले पच्चीस भ-ल्लोंसे घायल किया ४० कर्णने बिना उपाय केही अपने बाणों से उस जयद्रथ के मारने के इच्छावान् भीमसेन को अत्यन्त ढक दिया ४१ कर्णने युद्ध भूमिमें साधारणतासे भीमसेन के साथ युद्ध किया और वैसेही प्रथम की शत्रुता स्मरणकरके भीमसेन ने क्रोध से कठोरता पूर्व्वक युद्ध किया ४२ क्रोधयुक्त शत्रुओं के मारने वाले भीमसेनने उसअपमान को न सहा और शीघ्रतासे बाणोंकी बर्षा उसपरकरी युद्ध में उस भीमसेन के छोड़े हुये वह बाण सब ओरसे पक्षियों के समान शब्द करते बीर कर्णके ऊपर गिरे ४४ भीमसेन के धनुष से सुनहरी पुंख और साफ नोकवाले उन बाणों ने कर्णको ऐसे ढक दिया जैसेकि शलभ नामपक्षी अग्निको आच्छा-दित करते हैं ४५ हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र फिर चारों ओर से ढकेहुये रथियों में श्रेष्ठ कर्णने भयकारी बाणों की बर्षाकरी ४६ भीमसेन ने उस युद्धमें शोभा पानेवाले कर्णके उन बाणों को जो कि बज्रके समान थे बहुत भल्लों से बीचही में काटा ४७ हे भ-रतबंशी फिर शत्रुहन्ता सूर्य्य के पुत्र कर्णने युद्धमें उस भीमसेन को बाणोंकी बर्षासे ढक दिया ४८ वहां युद्धमें सब शूरबीरोंने भीम-सेनको शायकोंसे छेदाहुआ शरीरऐसा देखा जैसेकि शल्लोंसे घा-यल कुत्ता होताहै उसबीरने युद्धमें कर्णके धनुषसे निकलेहुये साफ बाणोंको ऐसे धारणकिया जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों को धारण करताहै ५० बसन्तऋतु में बहुत से पुष्पोंसे युक्त अशोकवृक्ष के समानरुधिरसेलिप्त अंग भीमसेन महाशोभायमानहुआ ५१ फिर क्रोधसे रक्तनेत्र महाबाहु भीमसेनने युद्धमें महाबाहु कर्ण के उस कर्मको नहींसहा ५२ उसने कर्णको पच्चीस बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि श्वेत पर्व्वतको बड़ेविषधारी सर्पों से घायल करतेहैं फिरभी देवताके समान पराक्रमी भीमसेनने शरीरसे कवचत्यागने वालेसूतपुत्रको मर्मोंपर चौदह बाणों से घायल किया ५४ फिर प्रतापवान् हंसतेहुये भीमसेनने शीघ्रहीदूसरे बाणसेकर्णकेधनुषको

काटकर ५५ और तीक्ष्ण बाणोंसे चारोंघोड़े और सारथीको मार और सूर्य्यके समानप्रकाशित नाराचनाम बाणसे कर्णको छातीपर घायलकिया ५६ वहबाण बड़ेशीघ्र कर्णको घायल करके पृथ्वीमें ऐसेसमागये जैसे कि बादलको तोड़कर सूर्य्यकी किरणें समाजाती हैं ५७ उसप्रकार बाणोंसेघायलटूटा धनुषपुरुषोत्तम कर्णबड़ीब्याकुलताकोपाकर दूसरे रथपर चलागया ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकत्रिंशतितमोऽध्यायः १३१ ॥

एकसौबत्तिसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जो भृगुवंशियों में श्रेष्ठ और धनुषधारीश्री महादेवजी के शिष्य कर्ण ने उन परशुरामजी की शिष्यता को पाया और अस्त्रविद्या में उनके समान है १ अथवा शिष्यता के गुणोंसेयुक्त कर्ण उनसे विशेषहै वह कुन्तीकेपुत्र भीमसेनसेलीला पूर्व्वकही विजय कियागया २ हे संजय जिसमें मेरेपुत्रोंकीविजय की बड़ी आशाहै उस कर्णको भीमसेनसे पराजित देखकर दुर्य्योधनने क्याकहा ३ हे तात बल में प्रशंसित पराक्रमी भीमसेन ने कैसे २ युद्धकिया अथवा इससे पूर्व कर्णने युद्ध में उस अग्नि के समान प्रज्वलित क्रोधरूप भीमसेनको देखकर क्या किया संजय बोले कि वायुसे उठायेहुये समुद्रके समान कर्ण विधि के अनुसार तय्यार किये हुये दूसरे रथपर सवार होकर पांडव भीमसेन के सन्मुख आया ५ हे राजा आपके पुत्रोंने कर्णको क्रोधयुक्त देखकर भीमसेनको अग्निके मुख में होमाहुआ माना ६ इसके पीछे कर्ण धनुष और तलके भयकारी शब्दों को करके भीमसेनके रथकीओर चला ७ फिर उस सूर्य्यके पुत्र शूरकर्ण और वायुपुत्र महात्मा भीमसेनका युद्धभयकारी हुआ ८ क्रोधयुक्त और परस्पर मारनेके अभिलाषीनेत्रोंसे भस्म करनेवाले दोनों महाबाहोंने परस्परमें देखा ९ क्रोधसे रक्तनेत्रसर्पकीसमान श्वासलेनेवाले शत्रुविजयी दोनोंशूरोंने सन्मुख होकर परस्पर घायल किया १० व्याघ्रों के समान क्रोध

युक्त और बाजपक्षियोंके समान शीघ्रगामीऔरशरभ नामपक्षियोंके समानक्रोधभरे परस्पर युद्धकर्त्ताहुये ११उसकेपीछेशत्रुविजयी भीमसेन द्यूतके फांसे बनके दुःख और बिराटनगरमें पायेहुये दुःखों को १२ और आपके पुत्रों के हाथ से वृद्धियुक्त रत्नवाले देशोंके हरणको और पुत्रोंसमेत तुमसेदियेहुये बारंबारके कष्टों को १३जिस दुर्य्योधनने निरपराधिनी कुन्तीकोपुत्रोंसमेत भस्मकरनाचाहा और उसीप्रकार सभामें दुराचारियोंके हाथसे द्रौपदीके कष्टोंको १४ हे भरतबंशी उसीप्रकार दुश्शासनके हाथसे शिरकीचोटी का पकड़ना और कर्णकी ओर कठोर बचनोंका कहना १५ कि दूसरे पति को इच्छाकर तेरेपति नहींहैं थुथेतल अर्थात् नपुंसकों के समान सबपांडव नरकमें पड़े इन सब बातोंको स्मरण करता १६ और हे कौरव उस समय आपके सन्मुख जो २ बातें कौरवोंने कहीं और आपके पुत्र दासीभावमें करके द्रौपदीके भोगनेके अभिलाषीहुये१७ और कर्णने आपके सन्मुख सभाके मध्यमें श्याम मृगचर्मधारी बनबासको जानेवाले पांडवोंकोभी जो कठोरवचन कहे १८ और जैसे कि सुखीहुये क्रोधयुक्त निर्बुद्धी आपके पुत्रने दुःखी पांडवोंको तृण के समान करके भीमसेनके चलनेकी नकल करके उपहासकिया और बहुतसी बातेंकरीं १९ शत्रुओंका मारनेवाला धर्मात्मा भीमसेन अपनी बाल्यावस्था से दुःखोंको शोचता जीवन से दुःखी हुआ २० इसकेपीछे भरतबंशियों में श्रेष्ठ शरीरकी प्रीति त्यागने वालाभीमसेन सुबर्ण पृष्ठी बड़ी कठिनतासे चढ़ानेके योग्य धनुष को चढ़ाकर कर्णके सन्मुखगया २१ उस भीमसेनने कर्णके रथपर प्रकाशित तीक्ष्णधार बाणोंके जालोंसे सूर्य्यकी किरणोंकोरोका२२ इसकेपीछे कर्णने हँसकर शीघ्रही तीक्ष्णधार बाणोंसे इस भीमसेन केबाण जालोंको तोड़ा २३ तब उसमहाबाहु महाबलीकर्णनेतीक्ष्ण धारवाले नौबाणोंसे भीमसेनको घायलकिया २४ चाबुकोंसे रोके हुये हाथीके समान बाणोंसे रोकाहुआ वह भ्रांतीसे युक्त भीमसेन कर्ण के सन्मुख दौड़ा २५ कर्णभी उस वेगसे गिरते महा वेगवान्

पांडवोंमें श्रेष्ठ भीमसेनके सन्मुखऐसेगया जैसे कि युद्धमें मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सन्मुख जाताहै २६ इसकेपीछे सौभेरी के शब्द के समान शंखको बजाया तब सेना प्रसन्नता से ऐसे चलाय-मानहुई जैसे कि उठाहुआ समुद्र२७भीमसेनने हाथी घोड़े रथ और पत्तियोंसे पूर्ण उस उठीहुई सेनाको देखकर और कर्ण को पाकर शायकोंसे ढकदिया २८ कर्णने युद्ध में ऋक्षवर्ण घोड़ोंको हंसवर्ण वालेउत्तम घोड़ोंसे मिलादिया और पांडवको बाणों से ढक दि-या २६ वायुके समान शीघ्रगामी ऋक्षवर्ण घोड़ोंको श्वेतरंगवाले घोड़ोंसे मिलाहुआ देखकर आपके पुत्रोंकी सेना हाहाकार करने वालीहुई ३० हे महाराज वहवायुके समान शीघ्रगामी श्वेत और श्याम रंगवाले घोड़े ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि आकाशमें बादल होतेहैं आपके पुत्रोंके महारथी उन क्रोधरूप और क्रोध से रक्त नेत्र कर्ण और भीमसेनको देखकर बड़े भयपूर्वक कंपायमानहुये ३२ उनदोनोंकी युद्धभूमि यमराजवाले देश के समान भयकारी और ऐसे कठिनता पूर्वक देखनेके योग्यहुई जैसे कि प्रेतोंके राजा यम-राजका पुरहोताहै ३३ उस अपूर्व रंगभूमिको देखते महारथियों ने बड़े युद्धमें प्रत्यक्षता से एककोभी विजयको नहींदेखा ३४ हे राजा पुत्रकेसाथ आपका दुर्मन्त्र होनेपर उनबड़े अस्त्रज्ञोंके कठिन युद्धको देखा३५तीक्ष्ण बाणोंसे परस्पर ढकतेउनदोनों शत्रुसंतापि-योंने बाणोंकी वृष्टीके द्वारा आकाशको बाणजालों से संयुक्त कर दिया ३६ तीक्ष्ण बाणों से परस्पर प्रहार करनेवाले वह दोनों महारथी ऐसे बड़े दर्शनके योग्य हुये जैसे कि वर्षा करनेवाले दो बादल होतेहैं ३७ हे प्रभु सुवर्ण जटित बाणोंको छोड़ते उनदोनों शत्रुविजयियों ने आकाशको ऐसा प्रकाशित किया जैसे कि बड़ी उल्काओंसे होताहै हे राजा उन दोनों के छोड़े हुये बाण जो कि गिद्धके पक्षसे युक्तथे ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि शरदऋतु में आकाशमें मतवाले सारसों की पंक्तियां होती हैं श्री कृष्ण और अर्जुनने शत्रुओंके विजय करने वाले भीमसेनको कर्णके साथ युद्ध

करनेवाला देखकर भीमसेनके ऊपर बड़ाभारी भारमाना ४० वहां कर्ण और भीमसेन के छोड़ेहुये बाणों से महाघायल घोड़े मनुष्य और हाथी बाणोंके पतन स्थानोंको उल्लंघन कर गिर पड़े ४१ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उन गिरते गिरेहुये और निर्जीव बहुत से मनुष्य घोड़े आदिसे आपके पुत्रोंके मनुष्यों का बिनाश हुआ ४२ हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ पृथ्वी एकक्षण भरमेंही निर्जीव मनुष्य घोड़े और हाथियों के शरीरों से पूर्णहोगई ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिद्वात्रिंशोऽध्याय:१३२ ॥

एकसौतेतिसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले किहे संजयमैं भीमसेनके पराक्रमको अत्यन्त अपूर्व मानताहूं जो युद्धमें तीब्रपराक्रमी कर्णसेयुद्धकरनेवाला हुआ१ जो कर्ण युद्ध भूमिमें सब शस्त्रधारी चढ़ाई करनेवाले देवताओं कोभी यक्ष असुर और मनुष्यों समेतको हटासक्ताहै २ उसने उस युद्धमें उसलक्ष्मीसे शोभित पांडव भीमसेनको युद्धमेंकैसेनहीं विजय किया हे संजय इसहेतुको मुझसे कहो ३ प्राणोंके द्यूतमें उनदोनों का युद्ध किसप्रकार से हुआ मैं मानताहूं कि इस युद्धमें जयाजय दोनों मिलीहुईहैं ४ हे सूत मेरापुत्र दुर्योधन युद्धमें कर्णको पाकर गोबिन्दजी और यादवों के साथ पांडवोंके विजय करने को साहस करताहै ५ युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेनके हाथसे कर्ण को बारंबार पराजित हुआ सुनकर बड़ा मोह होताहै ६ मैं अपने पुत्रके अन्यायोंसे कौरवों को बिनाश हुआ मानताहूं हे संजय वह कर्ण बड़े धनुषधारी पांडवों को विजय नहीं करसकेगा ७ कर्णने पांडवों के साथ जो युद्ध किया तोसर्वत्र पांडवोंनेही युद्धभूमिमें कर्ण को विजय किया ८ हे तात पांडव लोग देवताओं समेत इन्द्रसेभी अजेयहैं वह मेरा पुत्र निर्बुद्धी दुर्योधन नहीं जानताहै ९ मेरा निर्बुद्धी पुत्र दुर्योधन कुबेरके समान अर्जुनके धनको हरण करके सुहृदके चाहने के समान उपाधियों को नहीं जानता है १० मैंने

विजयकर लियाहै इसवातका माननेवाला छल संयुक्त बुद्धिरखने वाला दुर्योधन बड़े छलसे महात्माओं के राज्यको छलकर पांडवों का अपमान करताहै ११ पुत्रकी प्रीतिसे विमोहित व ग्लानचित्त मुझसेभी धर्ममें नियत महात्मा पांडव लोग अपमानकियेगये १२ सगेभाइयों के साथ सन्धिको अभिलाषी ऊंचीदृष्टिवाला युधिष्ठिर यह मानकर कि यह असमर्थहै मेरे पुत्रोंसे अपमान कियागया १३ उन बहुत से दुःख बुरे कर्म और उन अपकारोंको हृदय में करके महाबाहु भीमसेन कर्णके साथ युद्ध करनेवाला हुआ १४ हे संजय उसीहेतुसे जिसप्रकार युद्धमें श्रेष्ठ परस्पर मारने के अभिलाषी कर्ण और भीमसेनने युद्धभूमि में युद्धकिया उसको मुझसे कहौ संजय बोला कि हे राजा जैसे कि कर्ण और भीमसेनका युद्धजारी हुआ उसको कहताहूं जैसे कि वनमें परस्पर मारनेवाले दोहाथियों का युद्ध होता है उसीप्रकार इनदोनों का युद्धहुआ १६ हे राजा क्रोधयुक्त कर्णने पराक्रम करके तीसबाणोंसे उस पराक्रमीशत्रुहन्ता भीमसेन को घायल किया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ सूर्यके पुत्र कर्णने बड़े वेगवान् साफनोक सुवर्ण जटित बाणोंसे भीमसेन को घायलकिया१८भीमसेनने उस खैंचनेवालेके धनुषको तीनबाणोंसे काटा और भल्लसेसारथीको रथसेगिराया १९ भीमसेनकेमारनेको सदैव चाहते उस कर्णने सुवर्ण और वैडूर्य मणियोंसे जटित दंड शक्तिको हाथमें लिया २० अर्थात्वहां वलीकर्णने उसद्वितीय काल शक्तिके समान उस दंडशक्तिको उठाकर और पराक्रमसे पकड़ कर २१ उस जीवनकी नाशकारिणी शक्तिको भीमसेन के ऊपर फेंका इन्द्रवज्रके समान शक्तिको छोड़कर २२ वह सूत का पुत्रकर्ण बड़े भारी शब्दसे गर्जा इसकेपीछे उसशब्दकोसुनकर आपके पुत्रप्रसन्न हुये २३ भीमसेनने उस कर्णके हाथ की फेंकीहुई शक्तिको सात बाणोंसे आकाशहीमें काटा २४ हे श्रेष्ठ उसकी सर्पकेसमानशक्तिको काटकर कर्णके प्राणोंको चाहते क्रोधयुक्त भीमसेनने २५ युद्ध में मोरपक्षसे जटित सुनहरीपुंख और स्वच्छ यमराजके दण्डके समान

वाले बाणोंको चलाया २६ तब कर्णने भी सुवर्ण पृष्ठी दुःप्राप्य दूसरे धनुषको लेकर बहुत खेंचकर शायकोंको छोड़ा २७ हे राजा पांडव भीमसेनने कर्णके छोड़ेहुये नौबड़े बाणोंको दृढ़पर्ववाले बाणों से काटा २८ फिर भीमसेन उन बाणोंको काटकर सिंह के समान गर्जा जैसेकि गौवोंके मध्य में दोबैल गर्जें उसीप्रकारवहदोनोंपरा- क्रमी शब्द करनेवाले हुये २९ और जैसे कि दोशार्दूल मांसके अर्थगर्जें उसीप्रकार परस्पर प्रहार करनेके अभिलाषी परस्पर छिद्र देखनेवाले और चाहनेवाले दोनों परस्परमें गर्जे ३० जिसप्रकार गौशाला में दो बैल परस्पर देखते हैं उसीप्रकार परस्परमें देखने वालेहुये दांतोंकी नोकोंसे बड़े हाथियों के समान परस्पर सन्मुख होकर ३१ कानतक खेंचेहुये बाणोंसेपरस्पर घायल किया हेमहा- राज बाणों की वर्षा से एकएकको क्रोधित करनेवाले ३२ और क्रोधयुक्त फैलेहुये नेत्रोंसे देखने और हँसनेवाले और बारंबारआ- पसमें घुड़की देनेवाले ३३ शंखोंको शब्दायमान करनेवाले होकर परस्पर युद्धकरनेलगे हे श्रेष्ठ फिर भीमसेनने उसकेधनुषको मुष्टिका के स्थानपरकाटा ३४ और बाणों से उन शंखवर्ण घोड़ोंको यम- लोकमें पहुंचाया और इसीप्रकार उसके सारथीको भी रथकेनीड़ से नीचे गिरा दिया ३५ इसके पीछे युद्धमें बाणों से ढकेहुये सूर्य के पुत्र कर्णने जिसके कि घोड़े और सारथी मरगये थे बड़ीभारी चिन्ताको पाया ३६ और बाणजालसे मोहित होकर करनेके यो- ग्य कर्म को नहीं पाया इसके पीछे क्रोधसे कंपायमान राजा दुर्यो- धनने उसप्रकारकी आपत्तिमें पड़े हुये कर्णको देखकर दुर्जयको आज्ञाकरी कि हे दुर्जय तुम कर्णके सन्मुख जावो वह भीमसेन आगे से उसको ग्रसे लेताहै ३७। ३८ तू कर्णके पराक्रमको आ- श्रित होकर इस बड़े भोजन करनेवाले को मार इसप्रकार आज्ञा दिया हुआ आपका पुत्र तथास्तु कहकर ३९ उस भिड़ेहुये भीम- सेनको बाणोंसे ढकता सन्मुख दौड़ा उसने भीमसेनको नौ बाणों से और घोड़ों को आठ बाण से घायल किया ४० छः बाणों से

सारथीको तीनवाणसे ध्वजाको और सात बाणोंसे फिर उसको घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेनने भी शीघ्र चलने वाले बाणोंसे घोड़े सारथी समेत ४१ टूटे कवचवाले दुर्जय को यमलोकमें पहुंचाया फिर पीड़ामान और रोतेहुये कर्णनेउसअच्छे अलंकृत पृथ्वी परगिरे सर्पके समान कड़कड़ाते आपके पुत्रको प्रदक्षिणा किया तब उस हंसतेहुये भीमसेनने उस बड़े शत्रु कर्ण को विरथ करके ४२ । ४३ बाणोंके समूह और दिव्य शतघ्नी शंकुओंसे चिनदिया उसके बाणोंसे घायल शत्रुसंतापी अतिरथी कर्ण नेयुद्धमें क्रोध रूप भीमसेनको त्याग नहीं किया ४४ । ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्रयस्त्रिंशतितमोऽध्यायः १३३ ॥

एकसौचौंतिसका अध्याय ॥

संजय बोले किइस प्रकार विरथ और भीमसेनसे पराजितहुये कर्णने फिर दूसरे रथपर सवार होकर पांडव भीमसेन को फिर घायल किया १ दान्तकी नोकोंसे वड़े हाथियों के समानपरस्पर सन्मुख होकर कान तक खैंचे हुये बाणोंसे परस्पर घायल किया २ अर्थात् कर्ण बाणोंके समूहोंसे भीमसेन को घायल करके बड़े शब्दको गर्जा और फिर भी छातीपर घायल किया ३ भीम-सेन ने सीधे चलने वाले दश बाणोंसे उसको घायल किया फिर टेढ़े पर्व्व वाले सत्तर बाणोंसे घायल किया ४ हे राजा भीमसेनने कर्ण को हृदय पर नौ बाणों से घायल करके तीक्ष्ण धारवाले एकशाय-कसे ध्वजा को छेदा ५ इसके पीछे पांडवने तरेसठ बाणोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं और कोड़ेसे घोड़े को ६ यश मान पांडवके हाथसे अत्यन्त घायल क्रोधसे रक्तनेत्र वीर कर्ण ने होठों को चाटा ७ हे महाराज इसके पीछे सब शरीरों के चीरने वाले बाण को भीमसेन के लिये ऐसेफें-का जैसे कि बलिके अर्थ इन्द्र वज्रको फेंकता है ८ कर्णके धनुष से वह गिरा हुआ सुनहरी पुंख वाला बाण युद्धमें भीमसेनको घायल

करके पृथ्वीको फाड़ पृथ्वीमें समा गया ९ इसके पीछे बिचार रहित क्रोधसे रक्तनेत्र महाबाहु भीमसेन ने वज्रके समान चारहाथ मोटी स्वर्णमयी बाजूबन्द रखने वाली छः पक्ष रखनेवाली भारी गदाको कर्णके ऊपर फेंका उस गदाने श्रेष्ठोंको सवारीके योग्य कर्णके उत्तम घोड़ोंकोमारा १०।११अर्थात् क्रोधयुक्त भरतबंशी भीमसेनने गदा से घोड़ोंको ऐसेमारा जैसे कि इन्द्र बज्र से मारताहै हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे महाबाहु भीमसेन ने क्षुरनाम दो बाणों से १२ कर्ण की ध्वजाको काटकर बाणों से सारथीकोभी मारा फिर धनुष को टंकारता महादुःखी चित्त कर्ण उस घोड़े सारथी और ध्वजा से रहित रथको त्याग करके खड़ा होगया वहां हमने कर्णके अपूर्व्व पराक्रमको देखा १३।१४ जिस रथियोंमें श्रेष्ठ बिरथरूपने शत्रुको रोका युद्धमें उस नरोत्तम कर्णको बिरथ देखकर १५ दुर्य्योधन ने दुर्मुख से कहा हे दुर्मुख यह कर्ण भीमसेनके हाथ से बिरथ किया गया १६ उस नरोत्तम महारथी कर्णको रथ संयुक्त करो इसके पीछे दुर्मुख दुर्य्योधनके बचनकोसुनकर १७शीघ्रहीकर्णके पासआया और बाणोंसे भीमसेनको ढक दिया युद्धमें कर्णकेपीछे चलनेवालादुर्मुख को देखकर १८ बायुपुत्र भीमसेन होठोंको चाटताहुआ अत्यन्तप्रसन्नहुआ हे राजा इसके पीछे पांडवने शिली मुखनाम बाणोंसेकर्ण को रोककर १६ शीघ्रही अपने रथको दुर्मुखके पास पहुंचाया हेमहाराज इसके पीछे भीमसेनने एकक्षण भरमेंही टेढ़े २० सुन्दर मुख वाले नौ बाणोंसे दुर्मुखको यमलोकमें पहुंचाया हे राजा दुर्मुखके मरने पर कर्ण उसीरथ पर सवारहोकर सूर्य्यके समान तेजस्वी शोभायमान हुआ टूटेहुये मर्मस्थल और रुधिरमें भरे हुये दुर्मुखको देखकर २१।२२ अश्रुपातोंसे भरेनेत्रवालाकर्ण एकमुहूर्त्त तक सन्मुख बर्त्तमान नहीं हुआ लंबे और उष्णश्वास लेतेहुये वीर कर्णने उस निर्जीवको उल्लंघकर प्रदक्षिणा करके करने के योग्य कर्मको नहीं जाना हे राजा उस अवकाशमें भीमसेनने गृध्र पक्षसे जटित चौदह नाराचोंको २३।२४ कर्णके निमित्त चलाया हे

महाराज उन प्रकाशमान सुनहरी पुंख वाले बाणोंने उसके स्वर्ण जटित कवचको तोड़कर २५ दिशाओंको प्रकाशित किया और उन रुधिर पीने वालोंने कर्णके रुधिर को पानकिया २६ हे महाराज कालके प्रेरित क्रोधयुक्त तीव्र गामी सर्पोंके समान वह बाण पृथ्वी पर ऐसे शोभायमान हुये२७जैसेकि पृथ्वीके विवरोमें आधेघुसे हुये वड़े २ सर्प होतेहैं फिर विचार से रहित कर्णने सुवर्ण से शोभित भयकारी चौदहों नाराचोंसे छेदा वह भयकारी बाण भीमसेन की बाईं भुजाको छेदकर २८ । २९ पृथ्वीमें ऐसे प्रवेशकर गये जैसेकि क्रौंच पक्षी पर्व्वतमें प्रवेश करजातेहैं पृथ्वीमें घुसे हुये वह नाराच ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि सूर्य्यके अस्त होनेपर प्रकाशित किरणें होतीहैं युद्धमेंमर्मभेदी नाराचोंसेघायल उस भीमसेनने३०।३१ ऐसे रुधिरको गिराया जैसे कि जलको पर्व्वत गेरताहै उस दुःखित हुये भीमसेनने गरुड़के समान शीघ्र गामी तीन बाणोंसे कर्णको और सात बाणोंसे उसके सारथीको घायल किया हेमहाराजभीमसेनकेबाणों सेघायल हुआ व्याकुल कर्ण ३२।३३ बड़ेभयसे युद्धको त्याग कर शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा भागा फिर अग्निके समान प्रकाशमान अति रथी भीमसेन सुवर्ण जटित धनुषको टंकारकर युद्ध में नियत हुआ ३४ । ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिचतुस्त्रिंशतितमोऽध्यायः १३४ ॥

एकसौपैंतीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं दैवको अर्थात् प्रारब्धको बड़ा मानताहूं इस निरर्थक उपाय और उद्योग करने को धिक्कारहै इसस्थान पर उपाय करने वाले कर्णने भीमसेन को नहीं तरा १ कर्ण युद्ध में गोविन्दजी समेत सब पांडवों को विजय करने का उत्साहकरताहै मैं लोकमें इस कर्णके समान किसी शूरवीरको नहींदेखताहूं २ मैंने वारम्वार यह बात कहने वाले दुर्य्योधन के मुख से सुना कि कर्ण पराक्रमी शूर और दृढ़ धनुषधारी और महा परिश्रमीहै ३ हे

सूत पूर्व समयमें निर्बुद्धी दुर्य्योधन ने मुझसे यह वचन कहा कि देवता भी मुझ कर्णको साथ रखनेवाले के सन्मुख होनेको समर्थ नहीं हैं ४ फिर निर्बुद्धी निर्बल विचारे पांडव कैसे हो सक्ते हैं अर्थात् कभी नहीं होसक्ते वहां निर्विष सर्प के समान पराजित कर्ण को देख कर ५ उस युद्ध से मुख मोड़नेवाले को दुर्य्योधन ने क्याकहा दुःखकी बात है कि मोहित हुये कर्ण ने युद्धों में अकुशल अकेले दुर्मुखको ६ पतंग के समान अग्नि में प्रवेशित किया हे संजय निश्चय करके अश्वत्थामा, शल्य, कृपाचार्य्य, और कर्ण यह सब एक होकर भी ७ भीमसेन के सन्मुख नियत होनेको समर्थ नहीं हैं वह भी इस भीमसेन के बड़े भयकारी दशहजार हाथियों के समान बलको और बायुके समान कठिन पराक्रमी के कठिन बिचार को जानते उस निर्द्दयकर्मी कालमृत्यु और यमराज के समान भीमसेन को किस निमित्त ८।६ युद्धमें क्रोधयुक्त करते हैं जोकि उसके बल क्रोध और पराक्रम के जानने वाले हैं अपनेभुज बल से अहंकारी महाबाहु अकेले कर्णने भीमसेन को तिरस्कार करके युद्धभूमिमें संग्राम किया जिस भीमसेन ने युद्धमें कर्णको ऐसे बिजय किया जैसे कि इन्द्र असुर को बिजय करताहै १०।११ वह पांडव भीमसेन युद्धमें किसी से भी बिजय करने के योग्य नहीं जो अकेलाही द्रोणाचार्य्य की सेनाको मथकर मेरी सेना में प्रवेशित हुआ १२ भीमसेन अर्जुनके खोजने में प्रवृत्तहै कौन जीवन की इच्छा करने वाला उसको पराजय कर सक्ताहै हे संजय कौनसा बीर है जो भीमसेन के आगे सन्मुख होनेको उत्साह करे जैसे कि वज्र के उठाने वाले महा इन्द्रके आगे आनेको कोई दानव मनुष्य साहस नहीं कर सक्ता है उसी प्रकार भीमसेनके भी सन्मुख होनेको समर्थ न होकर कोई उत्साह नहीं कर सक्ताहै १३ चहै बज्रधारी इन्द्र के आगे दानव मनुष्य यमराजके पुरको पाकर लौटआवे परन्तु १४ भीमसेन को पाकर कभी नहीं लौट सक्ता जैसे कि पतंग अग्नि में प्रवेश करताहै उसी प्रकार वह सब उसमें भस्म हुये १५ जब अचेत

पुरुष अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन के सन्मुख दौड़े तब क्रोधयुक्त भयकारी रूप वाले भीमसेन ने सभामें कौरवों को सुनाकर तेरे पुत्रों के मारने से संबंध रखने वाला जो उसने वचन कहाथा उसको विचार कर और कर्ण को विजय किया हुआ देखकर १६।१७ दुश्शासन अपने भाई समेत भयकरके भीमसेनसे हटगया हे संजयजिस दुर्बुद्धी ने सभाके मध्यमें वारंबार यह वचन कहाथा कि १८ कर्ण दुश्शासन और हम मिलकर युद्धमें पांडवोंको विजय करेंगे निश्चय करके वह मेरा पुत्र भीमसेन से पराजित बिरथ कर्ण को देख कर १६ श्रीकृष्णजी के अपमान से अत्यन्त दुःखपाता है निश्चयहै कि मेरा पुत्र युद्धमें कवचधारी भाइयों को मराहुआ देखकर अपने अपराध से बड़ा पछतावा करके दुःखोंको पाताहै अपने जीवन का चाहनेवाला विरुद्ध हुये पांडव भीमसेनके आगे जासक्ताहै २० जो कि भयकारी रूप और शस्त्रोंका धारण करने वाला क्रोध से पूर्ण साक्षात् कालके समान वर्त्तमान है चाहै वड़वानल अग्नि के मुखसे भी मनुष्य वचसके २१ परन्तु भीमसेन के मुखमें पहुंचकर फिर नहीं छुट सक्ता यह मेरा मत है क्रोध युक्त अर्जुन पांचालदेशी सात्यकी और केशवजी २२ जीवनकी रक्षा करनेको जानतेहैं हेसूत वड़े कष्टकीवात है किमेरेपुत्रोंका जीवन आपत्तिमें फंसाहुआहै २३ संजयबोले कि हे कौरव जोतुम बड़ेभयके वर्त्तमान होनेपर भयको करतेहो सोतुम्हीं निस्सन्देह इस संसारके नाशके मूलहो २४ पुत्रोंकेवचनोंपर नियत होकर आपवड़ी शत्रुताको करके समझानेसेभी तुम ऐसेनहीं मानतेथे जैसे कि मरणहार मनुष्य नीरोगकारी औषधीको नहीं अंगीकार करताहै २५ हेमहाराज नरोत्तम तुम आपवड़ी कठिनतासे पचनेवाले काल कूटनाम विषको पानकरके अव उसके पूरे२ सव फलोंको पावोगे २६ फिर जो तुम युद्धकरनेवाले वड़े पराक्रमी शूरवीरोंकी निन्दा करतेहो उसका वृत्तांत तुमसे इसस्थानपरकहताहूं जैसेकि युद्ध प्रारंभ हुआ २७ हे भरतवंशी इसके अनन्तर आपके पुत्रोंने भीमसेनसे पराजित कर्ण

कोदेखकर बड़े धनुषधारी पांचोंसगे भाइयोंने नहींसहा २८ दुर्मर्षण, दुस्सह, दुर्मद, दुर्धर और जय, यह पांचों अपूर्व कवचों को धारण कियेहुये पांडव भीमसेनके सन्मुखगये २६ उन्होंने सबओर से महाबाहु भीमसेनको घेरकर बाणोंसे दिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसेकि शलभनाम पक्षियोंके समूहोंसे आच्छादित होतीहैं ३० हंसतेहुये भीमसेनने युद्धमें उन अकस्मात् आतेहुये देवरूप कुमारोंको लिया ३१ भीमसेनके आगे चलनेवाले आपकेपुत्रोंको देखकर कर्ण भी फिरबढ़े पराक्रमी भीमसेनके सन्मुखगया ३२ उस समयभी आपके पुत्रोंसे रोकाहुआ वह भीमसेन तीव्रसुनहरी पुंखतीक्ष्ण धारवाले बाणोंको छोड़ता शीघ्रही उस कर्णके सन्मुखगया ३३ फिरकौरवोंने सब ओरसे कर्णको मध्यमेंकरके टेढ़े पर्ववालेबाणोंसे भीमसेनको ढंकदिया ३४ हेराजा भयकारी धनुष रखनेवाले भीमसेनने पच्चीस बाणोंसे उन नरोत्तमोंको घोड़े सारथियों समेत यमलोकमें पहुंचाया ३५ वह मृतक होकर सारथियों समेत रथोंसे ऐसेगिर पड़े जैसे कि अपूर्व पुष्प रखनेवाले बायुसे टूटेहुये बड़े२ वृक्षहोते हैं ३६ वहां हमने भीमसेन के अपूर्व पराक्रमको देखा जो बाणोंसे कर्णको रोककर आपके पुत्रोंकोमारा ३७ हे महाराज चारों ओरसे भीमसेनके तीक्ष्ण बाणोंसे रुकेहुये उस कर्णने भीमसेनकोदेखा ३८ और क्रोधसे रक्तनेत्र भीमसेनने बड़े धनुषको टंकार कर बार बार उस कर्णको देखा ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशततोपरिपंचत्रिंशत्तमोऽध्यायः १३५ ॥

एकसौछत्तीसका अध्याय ॥

संजय बोलेकि फिर वह प्रतापवान् कर्ण पृथ्वीपर पड़ेहुये आप के पुत्रों को देखकर बड़े क्रोधमें भरा जीवनसे निराश हुआ १ तब कर्णने अपनेकोही अपराधीमाना जो कि उसकेनेत्रोंके समक्षमें आपके पुत्र भीमसेनके हाथसे मारेगये २ उसकेपीछेश्रांतिसेयुक्तक्रोधभरेपूर्व्व शत्रुताको स्मरण करते भीमसेनने कर्णकेतीक्ष्णधार बाणोंको काटा ३

फिर उस हंसते हुये कर्णने भीमसेन को पांच बाणोंसे घायल करके फिर सुनहरी पुंख वाले सत्तर तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया ४ भीमसेन ने कर्णके चलायेहुये उन बाणोंको ध्यान करके युद्धमें सुनहरी पुंख वाले सौ बाणों से कर्णको घायल किया ५ हे श्रेष्ठ फिर पांच बाणोंसे उसके मर्मस्थलोंको छेदकर एक भल्ल से कर्णके धनुषको काटा ६ हे भरतवंशी इसके पीछे शत्रु संतापी दुःखी चित्त कर्णने दूसरे धनुष को लेकर बाणों से भीमसेन को ढंकदिया ७ फिर भीमसेन उसके घोड़े और सारथी को मारकर बदला लेनेवाला कर्म होने पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ ८ तब पुरुषोत्तम ने बाणोंसे उसके धनुष को काटा हे महाराज वह सुवर्ण पृष्ठी और बड़े शब्दवाला धनुप भी गिरपड़ा ९ फिर तो महारथी कर्ण उस रथसे उतरा और क्रोधकरके गदाको भीमसेनके ऊपर फेंका १० भीमसेनने उसआती हुई बड़ी गदाको देखकर सब सेनाके देखतेहुये अपने बाणोंसेरोक दिया ११ इसके पीछे कर्णके मारनेके अभिलाषी शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेनने हजारों बाणोंको चलाया १२ कर्णने उस बड़े युद्धमें इन बाणोंको अपने बाणोंसे रोककर शायकों से भीमसेन के कवचको गिराया १३ इसकेपीछे सब सेनाके लोगोंके देखते पच्चीस नाराचों से उसको घायल किया यह आश्चर्य्यसा हुआ १४ हे श्रेष्ठ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबाहु भीमसेनने नौबाणोंको कर्णके ऊपर चलाया १५ वह तीक्ष्णबाण उसके कवच और दाहिनी भुजाको छेदकर पृथ्वीमें ऐसे समागये जैसेकि सर्पबामीमें समाजाते हैं १६ भीमसेनके धनुपसे गिरेहुये बाणोंके समूहोंसे ढंकाहुआ कर्ण फिरभी भीमसेनसे मुखफेर गया १७ राजा दुर्य्योधन भीमसेनके बाणोंसे ढंकेहुये मुखफेरनेवाले पदाती कर्णको देखकर बोला १८ कि सब ओर से उपायोंको करके तुम शीघ्रही कर्णके रथके समीप जाओ हेराजा इसके अनन्तर आपके पुत्रभाईके अपूर्व वचन को सुनकर १९ युद्धमें बाणोंको छोड़ते भीमसेनके सन्मुखगये उनकेनाम चित्र, अपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन, मित्रायुध, चित्रवर्मा

यहसबयुद्धमेंअपर्व्व युद्ध करनेवालेथे२० महारथी भीमसेननेइनआते हुये २१ आपके पुत्रोंको एक २ बाणसे युद्ध भूमि में गिराया वह मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़े जैसेकि बायुसे उखाड़े हुयेवृक्ष होतेहैं २२ हेराजाआपके महारथीपुत्रोंकोमराहुआ देखकरअश्रुपातोंसेभीजेहुये मुखवालेकर्णने बिदुरजीके बचनोंकोस्मरणकिया २३ फिरयुद्ध में शीघ्रता करनेवाला पराक्रमी कर्णविधिकेअनुसार अलंकृतकियेहुये दूसरे रथपर सवारहोकरभीम सेनकेसन्मुखगया २४ वहदोनों सुनहरी पुंखतीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे परस्पर में घायल करकेऐसेशोभायमानहुये जैसेकि सूर्य्यकीकिरणोंसे पिरोयेहुये२५दो बादल उसकेपीछे क्रोधयुक्त पांडवनेतीक्ष्णधारऔर तीक्ष्ण बेंतवाले छत्तीस भल्लोंसे कर्णकी प्रत्यंचाको तोड़ा २६ हे भरतबंशियोंमेंश्रेष्ठ महाबाहु कर्ण ने भी टेढ़े पर्व्व वाले पचास बाणों से भीमसेन को घायल किया २७ रुधिर से लिप्त अंग औरबाणोंसेटूटे कवचशरीर वह दोनों कर्णऔरभीनसेन ऐसे शोभायमान हुये जैसेकि कांचली से छूटे हुये दोसर्पहोतेहैं २८ जैसेकि दोव्याघ्रडाढ़ोंसे परस्पर रुधिर की बर्षाकरें उसी प्रकार से बाण धाराको उत्पन्न करने वाले दोनों नरोत्तम बीर बादलोंके समान बर्षा करने वालेहुये २९ जैसेकिसी गौसे दोबैल परस्परमें घायलकरें उसी प्रकार शायकों से अंगोंको घायल करने वाले वह दोनों शत्रु बिजयी अच्छे शोभायमान हुये ३० वह रथियों में श्रेष्ठ शब्दोंको करके प्रसन्न होते परस्पर क्रीड़ा करते रथोंसे मंडलोंको भी करनेवाले हुये ३१ सिंहोंके समान पराक्रम करनेवाले नरोत्तम महा बली ऐसे गर्जे जैसे किगौ के स्पर्शकोदो महाबलीबैल गर्जनाकरतेहैं ३२ परस्परदेखने वाले क्रोध से रक्त नेत्र बड़े पराक्रमी वह दोनों इन्द्र और राजा बलि के समान युद्धकर्त्ता हुये ३३ हेराजा इसके पीछे महा बाहु भीमसेन युद्धमें भुजाओं से धनुष को चलायमान करता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली रखनेवाला बादल होताहै नेमी रूप शब्द रखने वाले भीमसेन रूपी बड़े बादल ने धनुष रूप बिजली और

बाण रूपजल धाराओंसे कर्णरूपी पर्वतको ढकदिया ३४।३५ हे भरतवंशी इसकेपीछे भयकारी पराक्रम करनेवाले भीमसेनने अच्छे प्रकारसे छोड़े हुये हजार बाणसे कर्णको आच्छादित करदिया ३६ वहां पर आपके पुत्रों ने भीमसेन के पराक्रम को देख ३७ जो उसने कर्ण को सुन्दर पुंख गृध्र पक्ष युक्तबाणों से ढक दिया और अर्जुनसमेत यशस्वी केशवजीको युद्धमेंप्रसन्नकिया ३८और दोनों चक्रके रक्षक सात्यकी को भी प्रसन्नकिया और कर्ण से युद्धकिया हे महाराज उसके विख्यात बलकेपराक्रम भुज बल और धैर्य्य को देखकर आपके पुत्र उदासचित्तहुये ३९ । ४०

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिषट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः १३६ ॥

एकसौसैंतीसका अध्याय॥

संजयबोले कि कर्ण नेभीमसेनकी प्रत्यंचा और तलके शब्दको सुनकर ऐसे नहीं सहा जैसे कि मतवालाहाथी अपने सन्मुख आने वाले मतवाले हाथीके शब्दको १ उसने भीमसेनके सन्मुखसे एक मुहूर्त दूरहटकर भीमसेन के हाथसे गिराये हुये आपके पुत्रों को देखा २ हेनरोत्तम उनको देखकर लंबी और उष्ण श्वासलेकर फिर भीमसेन के सन्मुख गया ३ वह क्रोधसे रक्त नेत्र कर्ण बड़े सर्पकी समान श्वास लेता और बाणों को छोड़ता ऐसा शोभाय मान हुआ जैसे कि किरणों को फैलाता हुआ सूर्य्य शोभित होताहै ४ हेभरत-र्षभ जैसेकि सूर्य्यकी किरणों से पर्वत ढक जाताहै उसी प्रकारभी-मसेन भी कर्णके फेंके हुये बाणोंसे ढक गया ५ कर्णके धनुष से प्रकट होनेवाले मोर पक्ष से जटित वह बाण सब ओरसे भीमसेन के शरीर में ऐसे प्रवेश कर गये जैसे कि पक्षी निवास स्थानकेलिये वृक्षमें घुसजातेहैं ६ कर्णके धनुष से गिरे हुये और जहां तहां गिर-ते सुनहरी पुंख वाले वह बाण भी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि पंक्ति बांधे हुये हंस होतेहैं ७ हे राजा कर्ण के बाण धनुष ध्वजा सामान छत्र और ईशा मुख और युगसे प्रकटहोनेवाले दिखाई पड़े

आकाश को पूर्ण करते कर्णने बड़े वेगमान और पक्षियोंके परोंसे जटित आकाशगामी सुवर्ण गुंफित अपूर्व बाणोंको छोड़ भीमसेनने बाणोंको त्याग करके बिजयी होकर तीक्ष्णधार वाले बाणों से उस कालके समान तीव्र प्रकृति युक्त आयेहुये कर्णको घायल किया ६।१० पराक्रमी भीमसेनने उसकर्णको असह्य तीव्रता को देखकर उनबड़े बाण समूहोंको हटाया ११ इसके पीछे भीमसेनने कर्णके बाणजालोंको तोड़कर दूसरे तीक्ष्ण धारवाले बीसबाणसे कर्णको घायल किया १२ जैसे कि वह पांडव कर्णके बाणोंसे ढक गया था उसी प्रकार पांडवने भी युद्धमें कर्णको बाणों से ढक दिया १३ हे भरतवंशी युद्धमें भीमसेन के पराक्रमको देखकर आपके शूरबीरोंने प्रशंसा करी १४ भूरिश्रवा, कृपाचार्य, अश्व-त्थामा, शल्य, जयद्रथ, उत्तमौजा, युधामन्यु, सात्यकी, अर्जुन केशवजी १५ कौरव और पांडवोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ दश महारथी वेग से धन्य धन्य शब्द करके पुकारे और सिंहनाद किये १६ हेराजा उस कठिन और रोमहर्षण करनेवाले शब्दके उठनेपर आपका पुत्र दुर्य्योधन शीघ्रता करता हुआ बोला १७ राजा राजकुमार और मुख्य करके सगेभाइयोंसे बोला तुम्हारा भलाहो भीमसेन से कर्णको रक्षाकरतेहुये जाओ १८ भीमसेनके धनुषसे गिरेहुये बाण कर्णको बहुत शीघ्रही मारना चाहतेहैं हे बड़े धनुषधारियो सो तुम कर्णकी रक्षा करनेमें उद्योग करो १६ हे भरतबंशी फिर दुर्य्योधन की आज्ञानुसार सातसगे भाइयोंने सन्मुख जाकर भीमसेनको घेर लिया २० उन्होंने भीमसेनको पाकर बाणोंकी बर्षासे ऐसे ढकदिया जैसे कि बर्षा ऋतुमें बादल जलकी धाराओं से पर्वतको ढँकदेता है २१ हे राजा उनक्रोधरूप सातों महारथियोंने भीमसेनको ऐसे पीड़ामान किया जैसेकि प्रलयकाल में सातोंग्रह सोम देवता को पीड़ित करतेहैं २२ इसकेपीछे समर्थ भीमसेनने वेगसे मुष्टिका के द्वारा अच्छे अलंकृत धनुषको खैंचकर २३ और मनुष्योंकी संख्या कोजानकर उनके समान सातशायकों को चढ़ाकर सूर्य्यकी किरणों

के समान बाणोंको उनकी ओरको छोड़ा २४ हे महाराज पहली शत्रुताको स्मरण करते और आपके पुत्रों के शरीरों से प्राणों को निकालते भीमसेनने उन बाणोंकोछोड़ा २५ हे भरतवंशी भीमसेन के छोड़ेहुये सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाणउनसातों आपके पुत्रभरत वंशियोंको मारकर आकाशकोउछले२६ अर्थात् वहसुवर्णसेअलंकृत बाणउन सातोंके हृदयोंको फाड़कर आकाशचारी गुणोंके समान शोभायमान हुये हे राजेन्द्रवह रुधिर में लिप्तनोक और पक्षवाले सुवर्ण जटित सातोंबाण आपके पुत्रों के रुधिरों को पान करके आकाशकोगये २७।२८ बाणोंसेघायल मर्मस्थलवालेवहसातोंमृतक होकर पृथ्वीऐसे गिरपड़े जैसेकि पर्व्वतके शिखरपर उत्पन्नहुये हाथी सेतोड़ेहुये बड़े वृक्ष गिरतेहैं २९ शत्रुंजय,शत्रुसह, चित्र, चित्रायुध दृढ़, चित्रसेन, विकर्ण, यह सातों मारेगये ३० पांडव भीमसेन आपके सब मृतक पुत्रों के मध्यमें से एकप्यारे बिकर्ण को अत्यन्त शोचताथा ३१ अर्थात् इस वचनको कहताथा कि हे विकर्ण मैंने यह प्रतिज्ञाकीहै कि धृतराष्ट्रके सब पुत्र मारनेके योग्यहैं उसहेतुसे तूभी मारागया और मैंने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया ३२ हेवीर क्षत्री धर्मको स्मरण करतातू युद्ध करनेको आया इसीहेतु से युद्धमें मारागया निश्चय करके धर्मयुद्ध बड़ा कठिनहै ३३ तुम बड़े तेजस्वी होकर राजाकी और हमारी दोनों ओरकी वृद्धिकरने में प्रीतिरखने वालेथे इसप्रकार के न्यायसे तुमन्यायके ज्ञाताकाही केवल दुःखहै ३४ पृथ्वीपर वृहस्पति जीके समान अति बुद्धिमान् श्रीगंगाजीके पुत्र भीष्मजीने युद्धमें प्राणोंको त्यागकिया इसहेतुसे युद्ध बड़ा कठिन है ३५ संजय बोले कि महाबाहु पांडवनन्दनने कर्ण के देखते उनको मारकर भयकारी सिंहनाद को किया ३६ हे भरतवंशी उस शूरके उस शब्दने वहयुद्ध और अपनी बड़ी विजय धर्मराज युधिष्ठिर को विदितकरी ३७ धनुषधारी भीमसेन के उसबड़े शब्दको सुनकर बुद्धिमान धर्मराजको बड़ीप्रसन्नताहुई ३८ हे राजा इसके पीछे प्रसन्न चित्त युधिष्ठिर ने भाई के सिंहनाद के

शब्दको वा जोंके बड़े शब्दोंके साथ लिया ३९ भीमसेनके इस संज्ञाकरने पर बड़ी प्रसन्नतासे युक्त सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर युद्धमें द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गये ४० हे महाराज दुर्य्योधनने आपके इकतीस पुत्रोंको गिराये और मारेहुये देखकर विदुरजीके उस बचनको स्मरणकिया ४१ बिदुरजीका वह कल्याणकारी बचन बर्त्तमान हुआ ऐसा जान आपकेपुत्रने इसबातको शोचकर उत्तर नहीं पाया ४२ आपके निर्बुद्धी अज्ञानी और अचेत पुत्रने कर्णके साथ होकर द्यूतके समय द्रौपदीको बुलाकर सभामें जोकहा ४३ और कर्णने पांडवोंके और आपकेसमक्षमें सभाके मध्यमें द्रौपदीसे जो कठोर बचनकहे ४४ अर्थात् हे राजेन्द्र आपके और सब कौरवोंके सुनतेहुये यहबचन कहे किहेद्रौपदी पांडव नाशहुये और सनातन नरकको गये ४५ तुमदूसरे किसी पतिकोबरो उसीकायहफल अब प्राप्तहुआहै और जो नपुंसक आदि कठोरबचन क्रोधयुक्त करनेकीइच्छासे आपकेपुत्रोंने महात्मा पांडवोंकोसुनाये ४६ पांडव भीमसेनतेरहबर्षसे नियतहुये उसक्रोधकी अग्निको उगलताहै और उसअग्निमें आपके पुत्रोंका हवनकरता है ४७ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ बहुत बिलाप करतेहुये बिदुरजी ने आपके बिषयमें शान्तीको नहींपाया सो तुमपुत्रसमेत उसकेउदयहुये फलकोभोगो ४८ तुझ वृद्ध पंडित और फलको मुख्यताके देखनेवाले ने शुभचिन्तकोंके कहनेको नहींमाना और न उनकी शिक्षाको किया इसमें दैवबड़ा बलवान् है ४९ हे नरोत्तम सो तुम शोच मतकरो आपकाही इसमें महा अन्यायहै आपही अपने पुत्रोंके नाशके मूल हो यहमेरा कथनहै ५० हे राजेन्द्र बिकर्ण और पराक्रमी चित्रसेन मारेगये आपके पुत्रोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ अन्य २ बहुतसे महारथी भी मारे गये ५१ हे महाराज भीमसेन ने नेत्रोंके सन्मुख आये हुये जिन२ आपके दूसरे पुत्रोंको देखा बड़ी शीघ्रतासे उनको मारा ५२ निश्चयकरकेमैंने आपके कारणसे भीमसेन और कर्णके छोड़ेहुये हजारों बाणों से भस्म होनेवाली सेनाको देखा ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिसप्तत्रिंशतितमोऽध्यायः १३७ ॥

एकसौ अड़तीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत इसमें मेराही अधिकतर अन्यायहै हे संजय में मानताहूं कि अब वही मुझ शोच करने वालेके सन्मुख आया १ जो हुआसो हुआ यहमेरे चित्त में नियत हुआ अब इस स्थानपर अर्थात् वर्त्तमान दशामें क्या करना चाहिये हे संजय मैं उसको करूंगा २ मेरेही अन्यायसे यहबीरों का बिनाशहुआ वह मुझसे कहोमें नियतहूं संजयबोले कि हे महाराज पराक्रमी महा- बली कर्ण और भीमसेनने बाणोंकीवर्षा ऐसीकरी जैसेकि वर्षाकरने वाले दोबादल होतेहैं ३।४ सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवालेबाण जिन- परकि भीमसेनका नाम चिह्नितथा जीवनकोक्षयकर कर्णकोपाकर उस के शरीरमें प्रविष्ट हुये ५ उसीप्रकार मोरपक्षसे जटित कर्ण केछोड़ेहुये हजारों बाणोंनेवीर भीमसेनको ढकदिया ६ चारोंओरसे गिरते उनदोनोंके बाणोंने उसयुद्धमेंसेनाके उनलोगोंको व्याकुलता हुई जोकि समुद्रके समानथे ७ हे शत्रुविजयी उसभीमसेनके धनुष से निकले और सर्पके समान भयकरी बाणोंसे आपकी सेना सब सेनाके बीचमें मारीगई ८ हे राजा मनुष्यों समेत मरकर गिरेहुये हाथी और घोड़ोंसे आच्छादित पृथ्वीऐसी दिखाईपड़ी जैसेकिवायु सेगिरेहुयेवृक्षोंसे होतीहै ९ युद्धमेंभीमसेनके धनुषकेद्वारा गिरेहुये बाणों से घायल होकरवह आपकेशूरवीरभागे और यहबोलेकिक्या आपत्तिहै उसकेपीछे सिन्धुसौवेर और वह कौरवोंकी सेनाकर्ण और भीमसेनके बड़ेवेगवान् बाणोंसे हटाईहुई पृथक् २ होगई१०।११वह शूरजिनके बहुतमनुष्य मारेगये और रथहाथी और घोड़ोंकानाशहुआ वहभीमसेन और कर्णको छोड़कर सबदिशाओंकोभागे १२ निश्चय करके देवताअर्जुनके अभीष्ट के निमित्त हमको मोहित करतेहैं जो हमारीसेनाकर्ण और भीमसेनके छोड़ेहुये बाणोंसे मारीजातीहै १३ आपके शूर वीर भयसे दुःखी और इसप्रकार बोलते बाणके पतन स्थानोंको छोड़कर देखनेके अभिलाषीहोकर युद्धमें नियतहूये १४

इसके पीछे युद्धभूमि में वह नदी उत्पन्न हुई जो कि भयकारी सूरत शूरवीरों की प्रसन्नताकरनेवाली भयभीतों के भयकी बढ़ा-नेवाली १५ हाथी घोड़े और मनुष्योंके रुधिरों से उत्पन्न निर्जीव हाथी घोड़े और मनुष्यों से युक्त १६ अनुकर्षों समेत पताका हाथी घोड़े और रथके भूषण टूटेरथचक्र अक्षकूवर १७ और सुवर्ण से जटित धनुष सुनहरी पुंखवालेबाण हजारोंनाराच १८ औरकर्ण व भीमसेन के छोड़ेहुये कांचली से रहित सर्पाकारप्रास तोमरों के समूह फरसों समेत खड्ग १६ सुवर्णजटित गदा मूसल पट्टिश और नानारूपों के बज्र शक्ति परिघ २० और जड़ाऊ शतघ्नियों से शोभायमानथी हे भरतवंशी इसी प्रकार सुनहरी बाजूबन्द हार कुण्डल मुकुट २१ और टूटे बलय, अपविद्ध, अंगुलबेष्टक, चूरामणि सुवर्ण सूत्रकी बेष्टनी २२ कवच हस्तत्राण हार निष्क पोशाक छत्र टूटेचंवर व्यजन २३ घायल हाथी घोड़े मनुष्य रुधिर भरे बाण और जहां तहां इन नानाप्रकारकी टूटीहुई बस्तुओंसे २४ और टूटे गिरेहुये सामानों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि ग्रहों से आकाश शोभित होताहै ध्यानसेबाहर अपूर्व बुद्धिसे परेउन दोनोंके कर्मोंको देखकर २५ सिद्ध चारणों कोभी आश्चर्य्य हुआ जैसेकि सूखेबनमें बायुके साथ रखनेवाले अग्निकी गति होतीहै हे राजा उसी प्रकार युद्धमें २६ भीमसेनको साथमें रखनेवाले कर्ण से युक्त वह मेघजालोंके समान सेना जिसके ध्वजा रथ घोड़े हाथी और मनुष्य मारे गयेथे ऐसी भयकारी रूप वालीहुई जैसेकि भिड़ेहुये दोहाथियों से कमलका बन होता है २७। २८ युद्ध में कर्ण और भीमसेन लड़ते २ बड़े नकसेल हुये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिअष्टत्रिंशतितमोऽध्यायः १३८ ॥

एकसौउन्तालीसकाअध्याय ॥

हे महाराज इसके पीछे कर्णने तीन बाणों से भीमसेन को घायल करकेबहुत उत्तम बाणोंकी बर्षाको छोड़ा घायलहुये पर्वत

के समान कर्ण केहाथसे घायल महाबाहु पाण्डव भीमसेन पीड़ा-
मान नहीं हुआ ३।२ हे श्रेष्ठ उसने कर्णको विषमिले तीक्ष्ण तेल से
सफाकियेहुये करणीनाम बाणोंसे कानपर अत्यन्त घायल करके ३
कर्ण के सुवर्ण जटित शोभायमान बड़े कुंडलको पृथ्वी पर ऐसे गि-
राया जैसे कि आकाशसे तारा गिरताहै ४ इसके पीछे हँसते और
क्रोध युक्त भीमसेनने कर्णको दूसरे भल्लके द्वारा हृदयपर अत्यन्त
घायल किया हे भरतवंशी फिर शीघ्रता करने वाले महाबाहु
भीमसेनने युद्धमें कांचली से रहित बिषैले सर्पके समान दशना-
राचोंको उसके ऊपर चलाया ५।६ उस भीमसेन से चलाये हुयेवह
बाण कर्णके ललाटको छेदकर ऐसे घुसगये जैसेकि सर्प बामी में
घुसताहै ७ उसके पीछे कर्ण ललाटपर नियत हुये बाणोंसे ऐसा
शोभायमान हुआ जैसेकि पूर्व्व समय में कमल की मालाको धारण
करता हुआ देवता शोभित होताहै ८ वेगवान् पाण्डवके हाथसे
अत्यन्त घायल उसकर्णने रथके कूबर का बड़ा सहारा लेकर दोनों
नेत्रोंको बन्दकर लिया ६ शत्रुके तपानेवाले उस कर्णनेएक मुहूर्त्त
में ही फिर सचेतता को पाया और रुधिर से लिप्त शरीर कर्णने
महाक्रोधको धारणकिया १० इसके पीछे दृढ़ धनुषधारी से पीड़ा-
मान क्रोध युक्तबड़े बेगवान् कर्णने युद्धमें भीमसेनके रथपर वेग
किया ११ हे भरतवंशी राजाधृतराष्ट्र क्षमासे रहित पराक्रमीकर्ण
ने गृध्र पक्षवाले सौ बाणों को उसके ऊपर फेंका १२ इसके अन-
न्तरउसकेपराक्रमको ध्यान न करते पांडव भीमसेनने युद्धमें उसको
तिरस्कार करके बाणोंकी भयकारी वर्षाकरी १३ हे शत्रुओंके
तपाने वाले महाराजधृतराष्ट्र क्रोधभरे कर्णने क्रोधसे ज्वलित भीम-
सेनको नव बाणोंसे छातीपर घायल किया १४ डाढ़ रखने वाले
शार्दूलके समान वह दोनों नरोत्तम युद्धमें दो बादलोंके समान पर
स्पर बाणोंकी वर्षा करनेलगे १५ तलके शब्दोंसे परस्पर दोनोंने
भयभीतकर नानाप्रकार के बाण जालोंसे भी भयभीत किया १६
और युद्धमें क्रोध युक्त परस्पर युद्ध कर्म करनेके अभिलाषी हुये

हे भरतवंशी इसके पीछे शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला भीमसेन कर्णके धनुष को १७ क्षुरप्रसे काटकर गर्जा महारथी कर्णने टूटे धनुषको डालकर १८ भारके दूर करनेवाले बड़े बेगवान् दूसरे धनुष को लिया भीमसेनने इसके उस धनुषको भी आधेही निमेष में काटा १९ इसी प्रकार पराक्रमी भीमसेनने कर्णके तीसरेचौथे पांचवें छठे सातवें आठवें नवें दशवें २० ग्यारहवें बारहवें तेरहवें चौदहवें पन्द्रहवें सोलहवें २१ सत्रहवें अठारहवें आदि अनेक धनुषोंको काटा २२ इतने धनुषोंके कटनेपरभी आधेही निमिषमें फिर धनुष हाथ में लिये कर्ण उपस्थितहुआ कौरव लोग सौबेर और सिन्धुके बीरोंके बड़े नाशको २३ और पड़ेहुये कवच ध्वजा और शस्त्रोंसे व्याप्त पृथ्वीको देखकर अथवा हाथी घोड़े और रथ सवारोंके शरीरोंको अनेक प्रकारसे निर्जीव देखकर २४ क्रोध के मारे कर्णका शरीर अग्निरूपहुआ उस कर्णनेबड़े धनुषको चलाय-मानकरके घोरआंखोंसे घोररूप भीमसेनको देखा इसकेपीछे क्रोध युक्त कर्ण बाणोंको छोड़ता ऐसे शोभायमानहुआ २५।२६ जैसे कि शरदऋतु में मध्याह्न का सूर्य्य होताहै हे राजा सैकड़ों बाणों से चिताहुआ कर्णका शरीर ऐसा भयानक रूपहुआ जैसे कि किरण समूहोंका धारणकरनेवाला सूर्य्यका शरीर होताहै बाणोंको हाथों से लेते और चढ़ाते२७।२८खैंचते और छोड़ते कर्णका अंतर युद्धमें दिखाई नहींदिया दाहिने और बायें बाणोंको फेंकते कर्ण का धनुष अग्नि चक्रकेसमान भयकारी मंडलरूप हुआ हे महाराज कर्णके धनुषसे निकलेहुये सुनहरी पुंखवाले बाणोंने२९।३०सब दिशाओं समेत सूर्य्यकी किरणोंको ढंकदिया उसके पीछे सुनहरी पुंख और टेढ़ेपर्ब्बवाले धनुष से निकले हुये बाणोंके बहुत समूह आकाशमें दिखाईपड़े कर्णके धनुषसे शायकनाम बाण प्रकटहुये३१।३२ और आकाशमें पंक्ति वाले क्रौंचपक्षियों केसमान शोभायमान हुये कर्ण ने गृध्रके पक्षोंसे जटित स्वच्छ सुवर्ण से शोभित ३३ बड़े वेगवान् प्रकाशित नोकवाले बाणोंको छोड़ा धनुषके वेगसे फेंके औरसुवर्ण

से अलंकृत वह बाण ३४ बारंबार भीमसेन के रथ पर पड़े सुवर्ण से जटित और कर्णसे चलायमान वह हजारों बाण आकाश में ऐसे शोभायमान हुये ३५ जैसेकि शलभनाम पक्षियों के समूह कर्णके धनुष से निकले हुये बाण ऐसे शोभित हुये ३६ जैसे कि अत्यन्त लंबा एक बाण आकाशमें नियत होताहै और जिस प्रकार बादल जलोंकी धाराओंसे पर्व्वतको ढक देता है ३७ उसी प्रकार क्रोध युक्त कर्णने बाणोंकी बर्षाओंसे भीमसेनको ढकदिया हेभरत-वंशी वहां पर भीमसेन केवल पराक्रम और निश्चयको आपके पुत्रों ने और सब सेनाके लोगोंने देखा कि उठेहुये समुद्र के समान बड़ी भारी उस बाण वृष्टिको कुछ ध्यान न करके क्रोध युक्त भीमसेन कर्णके सन्मुख गया३८।३९ हे राजा भीमसेन का सुवर्ण पृष्ठी बड़ा धनुष कानसे लेकर मंडलरूप दूसरे इन्द्र धनुष के समानथा ४० उस धनुष से आकाश को पूर्ण करते हुये बाण प्रकटहुये ४१ सुन-हरी पुंख टेढ़े पर्व्व वाले बाणों से आकाशमें भीमसेन की रचीहुई स्वर्णमयीमाला शोभायमानहुई४२।४३ युद्धमें उनदोनों कर्ण और भीमसेनके बाण जालोंसे जोकि अग्निके पतंगोंके समान स्पर्श वाले थे४४और जिनकी परस्पर गतियां भी मिली हुई थीं बाण जालोंसे आकाशको व्याप्तहोने पर कुछभी नहीं जानागया वह कर्णपृथक् २ प्रकार के बाणोंसे भीमसेनको ढकता हुआ४५।४६ उस महात्माके पराक्रमको तिरस्कार करके पास गया हे श्रेष्ठ वहां उनदोनों के छोड़े हुयेबाणोंके जाल ४७ परस्पर में मिले हुये वायुरूप दिखाई पड़े और उन बाणोंके परस्पर भिड़ने से ४८ आकाशमें अग्नि उत्पन्न हुई हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ उसी प्रकार क्रोध युक्त कर्णने कारी गरके साफ कियेहुये तीक्ष्ण ४९ सुवर्ण जटित बाणोंको उस के मारनेके निमित्त चलाया भीमसेनने उनप्रत्येक बाणोंको विशिख नाम बाणोंसे खंड २ करदिया ५० कर्णके मारने के अभिलाषी भीमसेन बोले कि हे कर्ण खड़ाहो ऐसा कहकर उसभीमसेनने फिर भयकारी बाणोंकी वर्षाकी ५१ जोकि असहिष्णुबली क्रोधसे युक्त

होकर भस्म करने वाली अग्निके समानथा इसके पीछे उन दोनों गदाके प्रहारों से चट चटा नाम शब्द हुये ५२ औरबहुत बड़े वज्रके शब्द व भयकारी सिंहनाद और रथकी नेमियोंकी ध्वनियों से बड़ा भयकारी शब्द उत्पन्न हुआ ५३ हे राजा परस्पर मारने के अभिलाषी कर्ण और भीमसेन के पराक्रम के देखने के इच्छावान् शूर बीर लोगोंने युद्ध करना बन्दकरदिया ५४ देवता ऋषि सिद्ध और गन्धर्वोंने बड़ी प्रशंसाकरीकि धन्यधन्यहै उसीप्रकार विद्या धरोंके समूहोंने पुष्पों की वर्षाकरी ५५ इसके पीछे क्रोध युक्तदृढ़ पराक्रमी महाबाहु भीमसेनने अस्त्रोंसे अस्त्रोंको रोककर बाणोंसे कर्णको घायल किया ५६ महाबली कर्णने भी युद्धमें भीमसेन के बाणों को हटाकर सर्पकेसमान नौनाराचोंको चलाया ५७ फिर भीमसेन ने उतनेही बाणोंसे कर्णके नाराचोंको आकाशमें काटा और तिष्ठ तिष्ठ बचनको कहा ५८ फिर महाबाहु भीमसेनने क्रोधरूप होकर काल और यमराजके समान दूसरे दण्डके समान बाणको कर्णके ऊपर छोड़ा ५९ हे राजा तब हंसतेहुये प्रतापवान् कर्ण ने पांडव के उस आतेहुये बाणको तीन बाणों से काटा ६० फिर भीमसेनने भयकारीबाणोंकी वर्षाकरी तब निर्भयकेसमान कर्णने उसके उनसब अस्त्रोंको सहकर ६१ बड़े क्रोधसे अस्त्रोंकी मायासे उस लड़नेवाले भीमसेन के दोनों तरकस धनुष व प्रत्यंचाको गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से काटकर ६२ घोड़ोंकी रस्सी औरईशादण्ड आदिको युद्धमें काटा फिर उसकेघोड़ोंको मारकरसारथीकोपांचबाणोंसे घायल कियाद् ६३ वह सारथी शीघ्रही दूरजाकर युधामन्युके रथ पर गया फिरक्रोध युक्त कालाग्निके समान तेजस्वी हंसतेहुये कर्णने भीमसेनकी ६४ ध्वजाको काटकर पताकाकोभी गिराया उसधनुषसे रहित महाबाहु भीमसेनने रथ शक्तिको धारण किया ६५ उस शक्तिको घुमाकर क्रोध युक्त भीमसेनने कर्णके रथपर फेंका उपाय करनेवाले कर्णने उस सुवर्ण जटित ६६ बड़ी उल्काके समान आतीहुई शक्तिको दश बाणोंसे काटा कर्णके तीक्ष्ण बाणों से दशस्थान पर कटी हुई वह

शक्ति गिर पड़ी ६७ उस भीमसेनने मित्रके अर्थ अपूर्व युद्ध करने वाले कर्णसे बाण प्रहार करतेही करते सुवर्ण जटित ढालको हाथमें लिया और छेद्रान्वेषण करनेवाले ने मृत्यु व विजयकेखड्गको भी हाथमें लिया तब कर्णने बड़ेवेगसे उसकी उस स्वर्णमयी प्रकाशित ढालको बहुतसे भयकारी बाणोंसे तोड़ा हे महाराज कवच रथसे रहित क्रोधसे मूर्च्छामान ७० शीघ्रताकरनेवाले भीमसेनने खड्गको घुमाकर कर्णकेरथपर छोड़ा वह बड़ा खड्गकर्णके सन्नद्ध धनुषको काटकर ७१ पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि आकाशसे क्रोधयुक्त सर्प गिरताहै इसके पीछे क्रोधयुक्त अतिरथी कर्णने हंसकर युद्ध में शत्रुओंके मारनेवाले दृढ़प्रत्यंचावाले दूसरे धनुषकोलेकर भीमसेनके मारनेकीइच्छासे बाणोंको छोड़ा ७२।७३ हेमहाराज सुनहरी पुंख और सुन्दरवेतवाले हजारों बाणोंको मारा कर्णके धनुषसे गिरेहुये बाणोंसे घायल पराक्रमी ७४ कर्णके मन को पीड़ित करताहुआ भीमसेनआकाशको उछला उस युद्धमें विजयाभिलाषी भीमसेन के कर्मकोदेखकर ७५ उसकर्णनेशरीरको सिकोड़कर भीमसेनको ठगा उस इन्द्रियों से पीड़ित रथके वैठनेके स्थानमें छिपे और सिकुड़े हुये कर्णकोवैठाहुआ देखकर ७६ भीमसेन उसकीध्वजापर चढ़कर फिर पृथ्वीपर नियतहुआ सब कौरवोंने और चारणलोगोंने उसके उसकर्मकी बड़ी प्रशंसाकी ७७ उसने रथसे कर्णको ऐसे हरनाचाहा जैसे कि गरुड़ सर्पको हरण करताहै वह टूटा धनुष और रथसे विहीन भीमसेन अपने धर्मको पालन करताहुआ अपने रथको पीछेकीओर को करकेयुद्धके निमित्त नियतहुआ ७८ इसकेपीछेकर्ण उसकेउसविचार को निष्फल करके क्रोधसे युद्धभूमिमें युद्धके निमित्त आगेवर्त्तमान भीमसेनके सन्मुख हुआ हेमहाराज वहदोनों ईर्षा करनेवाले महाबलीपरस्परमें भिड़े ७९।८० वर्षा ऋतुके बादलों के समान दोनों नरोत्तम गर्जने वालेहुये उन क्रोधयुक्त और असह्य दोनों के प्रहार युद्धमें देवता और दानवों के प्रहारोंके समानहुये फिर टूटे शस्त्रवाला भीमसेन कर्णकेसाथ सन्मुखतामें प्रवृत्त होकर अर्जुनके

हाथसे मरकरपर्व्वताकार पड़े हुये हाथियोंको देखकर रथकेमार्गके बिघातन के अर्थ बिनाही शस्त्र के प्रवेश करगया ८३ हाथियों के समूहोंको पाकर और रथोंके दुर्गम मार्गों में प्रवेशकर के जीवनकी इच्छासे भीमसेननेकर्णको नहींपकड़ा शत्रुकेपुरको विजयकरनेवाला पांडव भीमसेन अर्जुनके बाणोंसे घायल रक्षास्थान को चाहते हुये हाथीको उठाकर ऐसे नियतकिया ८५ जैसेकि हनुमानजी महौष-धियोंसे युक्त द्रोणागिरिपर्व्वतकोउठाकर शोभित हुयेथे फिरकर्णने उसके उस हाथीकोखण्ड २ किया ८६ तव पांडुनन्दनने हाथी और घोड़ोंको पकड़२करकर्णके ऊपरफेंका और क्रोधसे युक्तहोकर रथके चक्रघोड़े आदिजिस२ सामानको पृथ्वीपर देखा ८७ उस उसको कर्णके ऊपरफेंका कर्णने उसके उन सब फेंकेहुये सामानोंको अपने बाणोंसेकाटा ८८ फिर अर्जुनको स्मरणकरतेहुयेभीमसेननेबड़ीभय-कारीबज्ररूप मुष्टिकाको उठाकर कर्णको मारनाचाहा ८९ परन्तु अर्जुनकी प्रतिज्ञाकी रक्षा करतेहुये समर्थ पांडुनन्दन भीमसेननेभी कर्णको नहीं मारा ९० कर्णने उस प्रकार व्याकुलहुये भीमसेनको तीक्ष्ण बाणोंके वारंबार प्रहारोंसे मूर्च्छायुक्त किया ९१ कुन्तीके वचनको यादकरते हुये कर्णने इस अस्त्रको नहींमारा फिर कर्णने समीप जाकर उसको धनुषकी नोकसे घायलकिया ९२ धनुषके प्रहारसे क्रोधयुक्त उस भीमसेनने उसके धनुषको तोड़कर कर्णको मस्तक पर घायल किया ९३ भीमसेनके हाथसे घायल और क्रोध सेरक्तनेत्र हंसताहुआ कर्ण इस बचन को बोला ९४ हे वारंवार बहुत भोजन करनेवाले निर्बुद्धी दीर्घउदरवाले अस्त्रके न जानने वाले युद्धमें नपुंसक बाल युद्ध मतकर ९५ हेदुर्बुद्धी पांडव भीमसेन जिस स्थानपर अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्य और पान करने की अनेक वस्तुहैं वहांकेही तुमयोग्यहो युद्धके योग्यतुम किसीप्रकारसे नहींहो ९६ हेभीमसेन तुम वनकेमध्यमें व्रत और नियमोंमें मूलफल फूलके आहारके योग्यहो तुम युद्धमें कुशल नहींहो ९७ कहांयुद्ध और कहां मुनिभाव हेभीमसेन तुमवनको जाओ हेतात तुमवन-

वासमेंही प्रीति रखने वाले होकर अब युद्धके योग्य नहीं हो ६८ हेभीमसेन तुम शीघ्रताकरनेवाले होकर घरमें भोजनके अर्थ रसोइंया नौकर ६६ और दासोंको क्रोधसे अत्यंत शासना करने के योग्य हो हेदुर्बुद्धी भीमसेन तुम मुनिहोकर फलोंको प्राप्त करो हेकुन्तीके पुत्र वनको जाओ तुम युद्धमें सावधान नहींहो १०० हे भीमसेन तुम फल मूलादि केखाने और अतिथिके पूजनमें समर्थहो मैंतुमको शस्त्र विद्यामें योग्यनहीं समझताहूं १०१हेराजा बाल्यावस्थाकेजो अप्रिय वृत्तान्तथे उन सबकोभी रूखे२ वचनोंसेखूब सुनाया१०२ फिरवहां सिकुड़कर बैठेहुये उसको धनुपसे स्पर्शकिया तबहंसतेहुये कर्णने भीमसेनसे यहबचन कहा१०३ हेश्रेष्ठ दूसरे स्थानमें लड़ना चाहिये मुझसरीके शूरवीर से न लड़नाचाहिये मुझसे लड़ने वाले शूरवीरोंकी यह दशा और अन्य अनेक प्रकारकी दशाहोजाती हैं १०४अथवा तुमभीवहीं जाओ जहां यह दोनोंकृष्णहैं वह तेरीयुद्धमें रक्षा करेंगे हेकुन्तीके पुत्र अथवा घरकोजाओ हेबालक तुझको युद्धकरनेसे क्या प्रयोजनहै १०५ भीमसेन कर्णकेअति कठोरबचन कोसुनकर सबको सुनाकर हंसताहुआ कर्णसेयहवचनबोला१०६ हेदुष्ट तुझको वारंवार मैंनेविजयकिया तूनिरर्थक अपनी क्योंबड़ाई करताहै पूर्व्वके वृद्धोंने महाइन्द्रकी विजय और पराजय दोनोंको देखाहै १०७ हेदुष्ट कुलमें उत्पन्न होनेवाले जो तू बड़ाईकरताहै तो मुझसे मल्लयुद्धकर जैसे कि महाबली और महाभोगी कीचक मारागया १०८ उसीप्रकार सबराजाओंके देखतेहुये मैं तुझको मारूंगा बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ कर्ण भीमसेनके विचारको जानकर १०६ सब धनुपधारियोंके देखतेहुये उस युद्धसे अलगहोगया हेराजा इस प्रकार कर्णने उसको विरथ करके महात्मा अर्जुन और श्रीकृष्ण जीके समक्ष में ऐसे कठोर वचनकहे हेराजा इसकेपीछे केशवजी की प्रेरणासे वानरध्वज अर्जुनने साफबाणोंको कर्णके निमित्त भेजा ११०फिर अर्जुनकी भुजासे छुटे सुवर्णसे जटित गांडीव धनुपसेप्र- कटहुये बाण१११कर्णकेशरीरमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि हंसक्रौंच

पर प्रवेश करतेहैं ११२उस अर्जुनने सर्पोंके समानघुसे और गांडीव धनुषके भेजेहुये बाणोंके द्वारा११३कर्णको भीमसेनसे दूरहटादिया भीमसेनके हाथसे टूटा धनुष और अर्जुनके बाणसे घायल वह कर्ण बड़े रथके द्वारा शीघ्रही भीमसेनके पाससे हटगया नरोत्तम भीमसेनभी सात्यकीके रथपर सवार होकर ११४।११५ युद्धमें अपने भाई पांडव अर्जुनके पीछे गया उसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले क्रोध से रक्तनेत्र नाशकारी कालकेसमान अर्जुनने कर्णको लक्ष्यबनाकर नाराच नामबाणकोभेजा गांडीवधनुषसे चलायमान और आकाशमें सर्पको चाहनेवाले गरुड़जीके समान ११६।११७ वह नाराच कर्ण केसन्मुख गिरा अश्वत्थामाने उस बाणको अपने बाणसे अन्तरिक्ष में ही काटा११८अर्जुनके भयसे कर्णकी रक्षाके अर्थमहारथीनेऐसा किया इसकेपीछे क्रोधयुक्त अर्जुनने अश्वत्थामाको चौंसठ बाणोंसे घायल किया ११९ और फिर शिलीमुखनाम बाणोंसे भी घायल किया और तिष्ठ तिष्ठ कहकर गमनंमाकुरु अर्थात् मतजाओ यह भी कहा वहअश्वत्थामा अर्जुनके बाणोंसे पीड़ामान शीघ्रही मतवाले हाथियों से पूर्ण और रथोंसे संकुलित १२० सेनामें चलागया उसकेपीछे पराक्रमी अर्जुनने गांडीव धनुष के शब्दसे युद्ध में शब्द करनेवाले सुवर्ण पृष्ठी धनुषोंके शब्दोंको १२१ निरादरकिया और अर्जुन पीछेकी ओरसे उसप्रकार से जातेहुये अश्वत्थामाके सन्मुख गये १२२ जो कि बहुतलंबा मार्ग नहींथा सेनाको भयभीतकरते हुये अर्जुनने नाराचोंसे मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरों को चीर कर १२३ कंक और मोरपक्षसे जटित बाणोंसे सेनाको छिन्नभिन्न किया फिर उपाय करनेवाले इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने उस घोड़े हाथी और मनुष्यों वाली सेनाको मारा १२४।१२५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिभीमकर्णयुद्धेशतोपरिएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः१३९ ॥

एकसौ चालीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय दिन दिन मेरा प्रकाशमान यश क्षी

होताजाता है मेरे वहुत से शूरवीर मारेगये इसमें मैं समय की विपरीततामानताहूं १ अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुन मेरीसेनामें पहुंचा जो अश्वत्थामा कर्णसे रक्षित होकर देवताओंसेभी अजेय है २ जब से वह वड़ा पराक्रमी उन वड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण भीमसेन और शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी समेत सेनामें पहुंचाहै ३ तब से मुझको शोक ऐसे भस्मकररहा है जैसे मकानको अग्नि भस्म करताहै और जयद्रथके साथ राजाओंको ग्रसित देखताहूं ४ सिन्ध का राजा उस अर्जुन का वड़ा असह्य अपराध करके नेत्रोंके सन्मुखवर्त्तमान कैसे जीवन को पासक्ताहै ५ हे संजय अनुमान से देखताहूं किजय द्रथ नहीं है वह युद्ध जैसे जारीहुआ उसको मूल समेत वर्णनकर६ जो क्रोध युक्त अकेलाही वड़ी सेनाको छिन्न भिन्न करके और वार वार मझाकर ऐसे प्रवेशित हुआ जैसे कि कमलके वनमें हाथी प्रवेश करताहै ७ उसवृष्णियों में वीर सात्यकी कावह युद्ध मुझसे ठीक २ कहो जो उसने अर्जुनके निमित्त कियाहै हे संजय तुमसाव-धान हो ८ संजय वोले हे राजा इसप्रकार कर्णसे पीड़ामान पुरुषों में वड़े वीर शीघ्रतासे जातेहुये उस भीमसेनको देखकर शिनियों में वड़ा वीर सात्यकी नर वीरोंके मध्यमें रथकी सवारी से चला ९ वर्षा ऋतुके वादलके समान गर्जता और वादलों के हटजाने पर सूर्य्यके समान प्रकाशित दृढ़ धनुष से शत्रुओंको मारता और आ-पके पुत्रकी सेनाको कंपाताहुआ चला १० हे भरतवंशी आप-के सव रथी उस मधुदेशियोंमें श्रेष्ठ युद्ध भूमिमें गर्जते और चांदीके वर्ण घोड़ोंकीसवारीसे जाते सात्यकीके रोकनेको समर्थ नहींहुये ११ तव क्रोध से पूर्ण सन्मुख लड़ने वाले धनुषधारी सुवर्ण कवचधारी राजाओंमें श्रेष्ठअलंबुषने समीप जाकरसात्यकी कोरोका १२ हेभर-तवंशीउनदोनोंकायुद्ध ऐसाहुआ जैसा कि कोईनहीं हुआथा आपके शूरवीर आदि सव लोगोंने उन युद्धमें शोभापाने वालेदोनों वीरों को देखा १३ राजाओं में श्रेष्ठअलंबुषने इसको निरादरकरके दश वाणो से घायल किया सात्यकी ने भी वाणों से उन अपलक नाम

वाणोंकोबीचहीमें काटा १४ फिर उसने अग्निके समान कानतकखेंचे हुयेतीक्ष्णधार सुन्दर पुंखवाले तीनबाणोंसे कवचको काटकर छेदा वह बाण सात्यकी के शरीरमें प्रवेश करगये १५ अग्नि और वायु के समान प्रभाव वाले तीक्ष्णधार अग्नि रूप उन बाणों से उसके शरीर को अनादर पूर्वक घायल करके चार बाणों से उन रजत वर्ण चारों घोड़ोंको घायल किया १६ चक्रधारी श्री कृष्णजी के समान प्रभाव वाले बेगवान उस घायल हुये सात्यकीने बड़े बेग-वान चारबाणों से अलंबुषके चारों घोड़ोंको मारा १७ फिर काला-ग्निके समान भल्लसे उसकेसारथी के शिरको काटकर कुंडलधारी पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रकाशमान और शोभायमान उसके मुखको भी शरीर से काटा १८ हे राजा यादवों में श्रेष्ठ शत्रुहन्ता अकेला सात्यकी युद्धमें उससूर्य्य बंशीको मार आपकी सेनाको हटाकर फिर अर्जुनके पीछे चला १६ अर्जुनके पीछेचलने वाले शत्रुओंके मध्य में घूमनेवालेने जिस प्रकार वायु बादलके समूहोंको नाश करे उसी प्रकार बाणों से कौरवी सेनाको मारते वृष्णी सात्यकी को देखकर २० श्रेष्ठ लोगोंसे शिक्षा पाया हुआ गौके दूध कुन्द फूल और बरफके समान श्वेत वर्ण वाले सुनहरीजालोंसे अलंकृत सिन्धुदेशी उत्तम घोड़े जहां जहां वह चाहताथा वहां वहां उसको लेजातेथे २१ हे भरतवंशी इसके पीछे वह आपके पुत्रादि सबशूर-बीर शीघ्रही आपके पुत्र उस अजमीढ़ वंशी दुश्शासनको जो कि शूरबीरोंमें मुख्यथा आगे करके एक साथही सन्मुख गये २२ सेना समेत उन बीरोंने सात्यकीको युद्धमें सबओरसे घेरकर घायलकिया हे बीर उस यादवों में श्रेष्ठ सात्यकीने भी उन सबको बाणोंके जालोंसे रोका २३ हे अजमीढ़ बंशी शत्रुहन्ता सात्यकीने धनुषको उठाकर शीघ्रही अग्निके समान बाणों से उनको रोक कर दु-श्शासनकेघोड़ोंको मारा २४ इसके पीछे अर्जुनने पुरुषोंमें बड़े बीर श्रीकृष्णजीको देखकर युद्धमें बड़ी प्रसन्नताको पाया २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४० ॥

एकसौइकतालीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि शीघ्रता योग्य कर्मोंमें शीघ्रता करनेवाले दुश्शासनके रथके पास वर्त्तमान१ सेनारूपी समुद्रमें प्रवेशित महाबाहु सात्यकी को उन त्रिगर्त्त देशियोंके धनुषधारियोंने जिन की ध्वजा सुवर्ण जटितथीं चारोंओरसे घेरलिया २ उसके पीछे उन क्रोध रूप बड़े धनुषधारियोंने रथोंके समूहोंसे उसको सब ओरसे घेर कर बाणोंसे आच्छादित करदिया ३ फिर सत्य पराक्रमी अकेले सात्यकीने बड़े युद्धमें तत्वके शब्दोंसेव्याकुल खड्ग गदा शक्तियों से पूर्ण विनानौकावाली नदीकेसमान भरतवंशियोंकी सेनाको पाकर उन शोभासे युक्तपचास राजकुमारशत्रुओंको विजयकिया ४।५ उस युद्धमेंहमने सात्यकीके अपूर्व्वकर्मकोदेखा कि उसको पश्चिमदिशामें देखकर शीघ्रतासेही पूर्व्वमें देखा ६ वह शूर उत्तर दक्षिण पूर्व्व पश्चिम आदि विदिशाओंमें नाचताहुआ ऐसाघूमा जैसे कि रथोंका एकसैकड़ाघूमताहै उसकेउसकर्मकोदेखकरसिंहकेसमानचालचलने वाले पीड़ामान त्रिगर्त्त देशी अपने लोगोंमें लौटगये ८ बाणोंके समूहोंसे घायल करते शूरसेन देशियोंके दूसरे शूरोंने युद्धमें उसको ऐसे रोका जैसे कि अंकुशसे मतवाले हाथीको ९ उत्तम बुद्धि सात्यकीने एक मुहूर्त्त उनकेसाथ युद्धकिया फिर वह बुद्धि से बाहर बल पराक्रम रखनेवाला सात्यकी कलिङ्गदेशियों से युद्ध करने लगा १० कलिङ्गदेशियोंकी सेनाको उल्लंघन करके महाबाहु सात्यकी पांडव अर्जुनके पास पहुंचा ११ और उनको पाकर इतना प्रसन्नहुआ जैसे कि जल का थकाहुआ स्थलको पाकर प्रसन्नहोताहै सात्यकी उस पुरुषोत्तमको देखकर विश्वासितहुआ १२ केशव जीने उस आतेहुये सात्यकीको देखकर अर्जुनसे कहा हेअर्जुन तेरे पीछे चलनेवाला यह सात्यकीआताहै यहसत्यपराक्रमी तेराशिष्य और मित्रहै उस पुरुषोत्तमने सब शूरवीरोंको निरादरकरके विजय किया१४ हेअर्जुन प्राणोंसेभीतेराप्यारा और परममित्रयहसात्यकी

कौरवी शूरवीरोंके घोर उपद्रवोंको करके आताहै १५ हेअर्जुन यह सात्यकी विशिखनाम बाणोंसे द्रोणाचार्य्य और भोजवंशी कृतवर्मा इनदोनोंको विजयकरकेआताहै १६ हेतात यह धर्मराजके प्रियका खोजनेवाला अस्त्रज्ञ शूरसात्यकी उत्तम २ शूरोंको मारकर तेरेपास आताहै १७ हे अर्जुन यह बड़ा पराक्रमी सात्यकी युद्धमें कठिनतर कर्मोंको करके तेरेदर्शनकी अभिलाषाको करता पासआता है १८ हेअर्जुन यह सात्यकी युद्धभूमिमें एकरथकेद्वारा आचार्य्यादिक अनेक महारथियोंसे युद्धकरके आताहै १६ हे अर्जुन धर्मराजका भेजा हुआ यह सात्यकी अपने भुजबलके भरोसेसेसेनाको चीरकरपास आता है २० हेअर्जुन कौरवों में जिसके समान कोई शूरबीर नहीं है वह युद्धमें दुर्मद सात्यकी आताहै २१ जैसे कि सिंह गौओंके मध्यमें से अलग होता है उसीप्रकार कौरबी सेनाओं से पृथक् होकर यह सात्यकी बहुत सेनाओंको मारकर पास आताहै २२ हेअर्जुन यह सात्यकी कमल समानमुखवाले हजारों राजाओंके शिरोंसे पृथ्वीको आच्छादितकरके शीघ्रतासेआताहै २३ यहसात्यकी युद्धमें सब भाइयों समेत दुर्य्योधनको बिजय करके और जलसिन्धुको मार करके शीघ्र आताहै २४ यह सात्यकी रुधिर समूह से युक्त रुधिररूपी कीच रखने वाली नदीको जारी करके और कौरवोंको तृणके समान छोड़ करके आताहै २५ यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न चित्त अर्जुन केशवजीसे यहबचनबोले कि हे महाबाहु मुझको स्वीकार नहींहै जो सात्यकी मेरेपास आताहै २६ हेकेशवजी मैं धर्मराज के वृत्तान्त को नहीं जानताहूं सात्यकी से पृथक् होकर वह जीवताहै या नहीं २७ हेमहाबाहु श्रीकृष्णजी वहराजा युधिष्ठिर इस सात्यकी सेही रक्षाके योग्यथा यह उसको छोड़कर किस हेतुसे मेरेपीछे चलनेवाला हुआ २८ राजा युधिष्ठिरको इसने द्रोणाचार्य्यकेलिये छोड़ा और राजासिन्धुनहीं मारागया और यह भूरिश्रवा युद्धमें सात्यकीके सन्मुख आताहै २६ यहबड़ाभारी भार जयद्रथके निमित्त नियत हुआ मुझसे राजा युधिष्ठिर जाननेकेयोग्य

और सात्यकी रक्षाकरनेके योग्य है ३० जयद्रथ मारने के योग्यहै और सूर्य्य अस्ताचल की ओरको जाते हैं अब महावाहु सात्यकी निर्बल और थकाहुआ है ३१ और उसका घोड़ों समेत सारथी भी थकगयाहै हेमाधव केशवजी भूरिश्रवा थकाभी नहींहै औरसहायता रखने वालाहै ३२ अब इस युद्धमेंभी इसकी कुशल होय सत्य परा-क्रमी सात्यकी सेनारूपी समुद्रको तरकर ३३ गायके खुरके स-मानजलरूप स्थानको पाकर नाशको न पावे बड़ातेजस्वी सात्य-की भी कौरवोंमें श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ महात्मा ३४ भूरिश्रवा के साथ भिड़-कर कुशल पूर्व्वकरहै हे केशवजी मैं धर्मराज के इस बिपर्य्यय को मानताहूं ३५ जो आचार्य्यसे भयको त्यागकरके सात्यकीको भेजा जैसे कि आकाशगामी सचान मांसकोचाहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्य धर्मराजकेपकड़नेकोचाहतेहैं ३६ वहसदैव चाहतेहैं तो राजायुधि-ष्ठिरकी कैसे कुशलरहै ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिगतोपरिएकचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४१ ॥

एकसौबयालीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि हे राजा भूरिश्रवा उस युद्ध में दुर्मद आते हुये यादव सात्यकी को देखकर क्रोधसे एकाएकी सन्मुख गया १ हे महाराज सन्मुख होकर वह कौरव सात्यकी से बोला कि अब तू प्रारब्ध से मेरे नेत्रोंके सन्मुख वर्त्तमान हुआहै मैं बहुत कालसे चाहेहुये अभिलापको अब युद्धमें पाऊंगा जो तू युद्धको न त्यागेगा तो मुझ से जीवता बचकर न जायगा ३ हे यादव अब मैं तुझ सदैव शूरताके अभिमान रखनेवालेको युद्धमें मारकर कौरवराज दुर्य्योधनको प्रसन्न करूंगावीर अर्जुन और केशवजी दोनों एक साथही अब तुझको युद्धमें मेरेबाण से मराहुआ पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखेंगे ४।५ अबधर्मपुत्र युधिष्ठिरभी मेरेहाथसे तुझकोमराहुआ सुन-कर शीघ्रही लज्जा युक्त होगा जिसने कि तुझको इससेनामें भेजा है अब तुझको रुधिरमें भरे पृथ्वीपर गिरेहुये मृतक होकर सोने

पर पांडव अर्जुन मेरे पराक्रमको जानेगा६।७यह तेरे साथ में युद्ध का करना मैं बहुत कालसे ऐसे चाहता हुआहूं जैसे कि पूर्वसमय में देवासुरों के युद्धमें इन्द्रका भिड़ना राजाबलि से चाहा हुआथा हे यादव अब बड़ा भारीयुद्ध तुझसे करूंगा उससे तू मेरे बल पराक्रम और बीरताको जानेगा८।९अब तू युद्धमें मेरे हाथसे माराहुआ यमलोकको ऐसेजायगा जैसे कि रामचन्द्रजीके छोटेभाईलक्ष्मणजी के हाथसे रावणकापुत्रमेघनाद यमलोकको भेजा गयाथा १०।११ हेमाधव अब तीक्ष्ण शायकोंसे तुझको दंडदेकर उनस्त्रियोंको प्रसन्न करूंगा जिनको कि युद्धमें तैंने बिधवा करके माराहै १२ हे माधव मेरे नेत्रोंके सन्मुख आयाहुआ तू ऐसे नहीं छुट सक्ता जैसेकि सिंह के देशमें बर्तमान छोटा मृग नहीं जासक्ता हेराजा फिर सात्यकी नेभी हंसकर उसको उत्तर दिया कि हे कौरव युद्ध में मुझको भय नहीं बर्त्तमान है १३।१४ केवलतेरी बातोंसे मैं भयके योग्य नहींहूं युद्ध में वही मुझको मार सक्ताहै जो मुझको अशस्त्र करे १५ जो मुझको युद्धमें मारै वह सदैव सबको बिजयकरै निरर्थक बहुतसी बातोंसे क्या लाभहै अपना कर्मकरके दिखलाओ १६ शरद ऋतु के बादलोंके समान तेरा गर्जना वृथाहै हेबीर तेरी गर्जनाको सुनकर मुझको हंसी आतीहै १७ हे कौरव अब लोक में बहुत काल से चाहा हुआ युद्ध होय हे तात तेरेयुद्ध को चाहनेवाली मेरीबुद्धि शीघ्रता कररहीहै १८ हे नीच पुरुष अब मैं तुझको बिनामारे नहीं लौटूंगा इसप्रकार बाक्य पारुष्योंसे परस्पर घायलकरनेवाले वह दोनों नरोत्तम १९ मारनेके अभिलाषी और अत्यन्त क्रोध रूप होकर युद्धमें सन्मुख हुये वह बड़े धनुषधारी पराक्रमी ईर्षा करने वाले युद्धमें ऐसे भिड़े जैसे कि मतवाले दोहाथी हथिनीके लिये बनमें भिड़ जाते हैं शत्रुहन्ता भूरिश्रवा और सात्यकीने बादलों के समान भयकारी बाणों की बर्षाओं को परस्पर बर्षाया फिर भूरिश्रवाने शीघ्र चलने वाले बाणोंसे सात्यकीको ढककर २०।२१।२२ मारनेकेअभिलाषीने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे घायलकिया हेभरत-

वंशोंडसकेपीछेभी भूरिश्रवाने दशबाणोंसे सात्यकीको छेदनकर २३ मारने की इच्छासे दूसरे तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ा हे राजा सात्यकीने उसके उन तीक्ष्ण बाणोंको अन्तरिक्षमें २४ अस्त्रोंकी मायासेकाटा और हे प्रभु फिर वह दोनों पृथक् २ होकर बाणोंकी वर्षा से वर्षा करनेवाले हुये २५ बड़ेकुलवान् कौरव और वृष्णियोंके यशको उत्पन्न करने वाले वह दोनों वीर ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि नखोंसे शार्दूल और दांतोंसे दो मतवाले हाथी लड़तेहैं २६ अंगोंसे घायल रुधिर छोड़नेवाले उन दोनोंने रथ शक्ति और त्रिशिखनाम बाणोंसे परस्पर घायलकिया २७ प्राणोंकेद्यूत खेलनेवाले उनदोनों-ने परस्पर रोका इस प्रकार उत्तमकर्मी कौरव और वृष्णियोंके यश बढ़ानेवाले वहदोनों २८ परस्पर मेंऐसे युद्धकरनेवाले हुये जैसे कि समूहोंके अधिपति दो हाथी युद्ध करतेहैं थोड़ेही समयमें ब्रह्मलोक को उत्तम माननेवाले २९ उत्तम स्थानों में जानेके अभिलाषी वह दोनों परस्परगर्जे सात्यकी और भूरिश्रवा प्रसन्न मनके समान धृत-राष्ट्रकेपुत्रोंके देखतेहुये परस्पर बाणोंकी वर्षाकरनेलगे लोगोंने उन शूरवीरों के अधिपतियों को लड़तेहुये ऐसे देखा ३०।३१ जैसे कि हथिनीकेलिये यूथोंकेस्वामी दो हाथी लड़तेहैं परस्पर घोड़ोंको मार धनुषोंको तोड़ ३२ विरथ होकर बड़े युद्धमें खड्ग चलानेकेलिये स-न्मुखहुये उत्तम जटित सुन्दर २ बड़ी२ ढालोंको लेकर ३३ खड्गों को मियानसे बाहर करके दोनों युद्धमें भ्रमण करनेवाले हुये नाना प्रकार के मार्गोंको घूमते अपने२ भागके मंडलोंको करते ३४ उन क्रोधयुक्त शत्रुहन्ताओंने परस्पर वारम्बार प्रहारकिये खड्गकवच निष्क और बाजूबन्द रखनेवाले ३५ दोनोंयशस्वियोंने घुमानाऊंचे घुमाना तिरछे मारना छेदना रुधिरसे लिप्तकरना रुधिर में डुबोना हटाना गिराना आदि अनेक चमत्कारी खड्गोंके प्रहारों को दिख-लाया ३६ और दोनों खड्गोंसे परस्पर प्रहार कर्त्ताहुये और अन्तर चाहनेवाले दोनोंवीरोंने अपूर्व भ्रमण किये ३७ शिक्षा तीव्रता और उत्तमताको दिखलाते युद्ध करनेवालोंमें श्रेष्ठ दोनों पुरुषोत्तमोंनेयुद्ध

में परस्पर एकने दूसरेको खींचा ३८ हेराजा दोनोंबीर सबसेना के लोगोंके देखते एक मुहूर्त परस्पर युद्धकरके फिर विश्राम करनेवाले हुये ३९ फिर उनपुरुषोत्तमोंने सौचन्द्रमा रखनेवाली सुवर्णजटित ढालोंको खड्गोंसे काटकर भुजाओंसे युद्धकिया ४० बड़ी छाती और लम्बी भुजा रखनेवाले भुजाके युद्धमें कुशल वह दोनों लोहेकी परिघोंकेसमान भुजोंसेभुजोंको मिलाकर चिपटगये ४१ हेराजा उन दोनों की भुजाओंके आघातसे उस बल और शिक्षासे उत्पन्न होने वाले निग्रह प्रग्रह नाम पेंच सबशूरों के प्रसन्न करनेवालेहुये ४२ तब युद्धमेंलड़नेवाले उनदोनों नरोत्तमों के शब्द बड़े भयकारी ऐसे प्रकट हुये जैसे कि वज्र और पर्व्वत के भयकारी शब्दहोते हैं ४३ और जैसेकि दोहाथी दांतों और दोबड़ेबैल सींगों से युद्धकरें उसी प्रकार भुजाओंकी गसावट और शिरकी टक्कर चरण का खैंचना पैंतरेबदलना खम्भठोकना नोचना चरणसेपेटको दबाना चारोंओर को घूमनाजाना आना फेंकना पृथ्वीपर लोटजाना उठबैठनाकूदना दौड़ना इनपेंचोंसे४४।४५ कौरव और यादवोंमें श्रेष्ठदोनों महात्माओंका युद्धहुआ ४६ हेभरतवंशी जो युद्धकि बत्तीस अंग रखनेवाला है उन सब अंगोंको उन युद्ध करनेवाले महारथियोंने वहां दिखलाया ४७ इसकेपीछे टूटे शस्त्रवाले यादवके युद्धकरने पर बासुदेवजी अर्जुनसे बोले कि सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ रथसे विहीन युद्ध में लड़नेवाले सात्यकीको देखो४८हेभरतवंशी अर्जुन यह सात्यकीतेरे पीछे भरतवंशियोंकी सेनाको छिन्न भिन्न करके आपहुंचा है और बड़े२ पराक्रमी सब भरतवंशियोंसे युद्धकिया ४९ और युद्धका अभिलाषी भूरिश्रवा इसबड़े शूरबीर थकेहुये आते सात्यकी के सन्मुख हुआहै हेअर्जुन यहि समयके अनुसार योग्यबातनहींहै५० इसके पीछे युद्धमें दुर्मद क्रोधयुक्त भूरिश्रवा ने सात्यकी को उठाकर ऐसे पटका जैसेकि मतवाला हाथी मतवाले हाथीको पटकता है हेराजा युद्धमें रथपरनियत क्रोधयुक्त शूरवीरोंमें श्रेष्ठ अर्जुन और केशवजीके युद्धमें देखनेपर ५१।५२ महाबाहु श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे कहा कि

वृष्णी और अन्धकों में श्रेष्ठ सात्यकीको भूरिश्रवा की आधीनता में देखो ५३ हेअर्जुन कठिन कर्मको करके थके पृथ्वीपर वर्त्तमान तेरे पास आनेवाले वीरसात्यकी की रक्षाकरो ५४ हेपुरुषोत्तम अर्जुन यह उत्तम सात्यकी तेरे कारणसे भूरिश्रवाके आधीन न होजाय हे समर्थ सो तुम शीघ्रता करो ५५ इसके पीछे प्रसन्न चित्त अर्जुन वासुदेवजीसे बोले कि कौरवोंमें श्रेष्ठ भूरिश्रवा को वृष्णियोंमें बड़े बीर सात्यकी के साथ ऐसे क्रीड़ा करनेवाला देखो ५६ जैसे कि वनमें यूथके स्वामी सिंहको मतवाले बड़ेहाथीके साथ संजय बोले हेभरतर्षभ पांडव अर्जुनके इसप्रकार कहनेपर ५७ सेनाओं में बड़ा हाहाकार हुआ फिर उस महाबाहुने सात्यकीको उठाकर पृथ्वीपर पटका ५८ वह कौरवोंमें श्रेष्ठ भूरिश्रवा उसज्ञाति में अत्यन्त श्रेष्ठ सात्यकीकोयुद्धमेंखींचता ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि सिंहहाथि-योंको खींचताहुआ शोभित होताहै ५९ फिर भूरिश्रवाने मियानसे खड्गको निकालकर उसके केशोंको पकड़लिया और वैसेले छाती पर घायलकिया ६० इसके पीछे उसके शरीर से उसका कुण्डल धारी शिरकाटनाचाहा फिर शीघ्रता करनेवाले यादवनेभी एकक्षण तक बालपकड़नेवाली भूरिश्रवाकी भुजाकेसाथ शिरको ऐसाअच्छा घुमाया जैसे कि दंडसे छेदाहुआ कुम्हारका चक्र होताहै ६१ । ६२ हेराजा फिर वासुदेवजी युद्धमें खींचते हुये उस यादव को देखकर अर्जुनसे बोले ६३ हेमहाबाहु तुम भूरिश्रवाकी आधीनता में आये हुये उस सात्यकीको देखोजो वृष्णिवंशी और अन्धक वंशियों में श्रेष्ठ और तेराशिष्यहै और धनुष बिद्यामें तेरेसमानहै ६४ हेअर्जुन वहां पराक्रम मिथ्या है जहां भूरिश्रवा युद्धमें सत्य पराक्रमी यादव सात्यकी को मारताहै ६५ वासुदेवजी के इसवचनको सुन-कर महाबाहु अर्जुन ने युद्धमें भूरिश्रवाकी चित्तसे प्रशंसाकी ६६ कौरवोंकी कीर्त्तिका बढ़ाने वाला युद्धमें क्रीड़ा करनेवाला भूरिश्रवा यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी को खींचकर मुझको फिर प्रसन्न करताहै ६७ जो वृष्णि वंशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ सात्यकी को नहीं मारताहै

और जैसे वनमें बड़े हाथी को सिंहखैंचताहै उसी प्रकार यह भी खैंचताहै ६८ हे राजा महाबाहु पांडव अर्जुनने इसप्रकार मनसे कौरवको पूजकर बासुदेवजीसे कहा ६६ कि जयद्रथमें दृष्टिलगने से इस माधव सात्यकीको नहीं देखताहूं इससे मैं इस कठिन कर्मको यादवके निमित्तकरताहूं ७० बासुदेवजी के वचन को करते हुये अर्जुनने यह कहकर उसके पीछे तीक्ष्णधार क्षुरप्रको गांडीवधनुष पर चढ़ाया ७१ जैसेकि आकाशसे गिराहुआ उल्का होताहै उसी प्रकार अर्जुनकी भुजासे छूटेहुये उस बाणने भूरिश्रवाकीउस बाजूबन्दसे शोभितखड्गपकड़नेवाली भुजाको शरीरसे काटा ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिद्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १३२ ॥

एकसौतैंतालीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि वह भुजाखड्ग और शुभबाजूबन्द समेतपृथ्वीपर गिरपड़ी उस उत्तम भुजाने जीव लोकके बड़े दुःखको नियतकिय मारने की इच्छावान् भुजा दृष्टिसे गुप्त अर्जुनके बाणसे काटी हुई पांचफण रखनेवाले सर्पकी समान बेगसे पृथ्वी पर गिरपड़ी १।२ उस कौरवने अर्जुनके कारण अपने को निष्फल देख सात्यकी को छोड़कर क्रोधसे पांडवकी निन्दाकरी ३ अर्थात् भूरिश्रवा बोला हे कुन्तीके पुत्र दुःखकीबातहै कि तुमने यह निर्दय कर्मकिया जो मुझ दूसरेसे प्रवृत्त युद्ध न देखनेवालेकी भुजाको काटा ४ धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिर जब पूछेंगे कि युद्धमें मेरे साथ किस कर्म के करने से भूरिश्रवा मारागया तब तुम उसको क्या उत्तर दोगे हे अर्जुन साक्षात् महात्मा इन्द्र रुद्र द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्यने यह अस्त्र बिद्या तुझको उपदेशकी६।६ निश्चय करके तुम अस्त्र धर्मोंके ज्ञाता और लोकमें सब शूरवीरों से अधिक होकर भी तुमने मुझ युद्ध न करनेवालेको कैसेमारा७उत्तम चित्तवालेपुरुष अचेतभयभीत विरथ प्रार्थना करने वाला और आपत्तिमें फँसाहुआ इतने प्रकारके शूरवीरोंपर प्रहार नहीं करते ८ यह कर्म जो तुमने कियाहै सो सत्पु-

रूपोंसे त्यागाहुआ और नीचोंकाकियाहुआ है हे अर्जुन तुमने इस कठिनता से करने के योग्य पापकर्मको कैसे किया ९ हे अर्जुन उत्तम कर्मका करना उत्तम पुरुषोंसे सुगमकहा है और बुरा कर्म अच्छे लोगोंसे इस पृथ्वीपर करना कठिनहै १० हे नरोत्तम मनुष्य जिन २ अच्छे और बुरे मनुष्योंमें और जिन २ बुरे भले कर्मोंमें वर्त्तमान होताहै उसी २ प्रकृति को शीघ्रतासे पाताहै वह सब तुझ में दिखाई पड़ताहै ११ सुन्दर चलन और व्रत करने वाला और राजाओंके वंशमें उत्पन्न मुख्य करके कौरव वंशी होकर तू क्षत्री धर्म से किस निमित्त जुदाहुआ १२ जो यह अत्यन्त नीचकर्म सात्यकी के निमित्त तुमने किया निश्चयकरके यह वासुदेवजी का मत है तुझमें नहीं विदित होताहै १३ प्रकट है कि दूसरे के साथ युद्ध करने वाले और अचेतके अर्थ सिवाय श्रीकृष्णके अपने मित्र को और कौन ऐसे दुःख देसक्ताहै १४ हे अर्जुन तुमने इस व्रात्य दुष्कर्मी स्वभावही से निन्दित वृष्णी और अन्धक वंशीको किस प्रकारसे प्रमाण किया युद्ध भूमिमें उसके ऐसे वचनोंको सुनकर अर्जुन भूरिश्रवासे बोला कि प्रत्यक्ष है वृद्ध मनुष्य अपनी बुद्धिको भी वृद्धकरदेताहै यहजो तुमनेकहाहै सबवृथाहै १५।१६ इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजीको जानतेहुये तुम मुझ पांडवकी निन्दा करतेहो जो कि तुम युद्धोंके धर्मोंके ज्ञाता और सब शास्त्रोंके अर्थों में पूर्णता से कुशलहो १७ मैं अधर्म कभी नहीं करसक्ता तुम जानतेहुये मोहित होतेहो अपने मनुष्योंसे संयुक्त क्षत्री लोग शत्रुओंसे लड़तेहैं १८ वह भाई, पिता, चाचा आदि और पुत्र, नातेदार मित्र और समान वय वालोंके साथ होकर शत्रुओंसे लड़तेहैं वह सब भुजामें रक्षित हैं १९ सो मैं अपने शिष्य सुखदायी नातेदार और कठिनतासे छोड़ने के योग्य प्राणोंको छोड़कर हमारे निमित्त युद्ध करने वाले २० मेरी दक्षिण भुजा रूप युद्धमें दुर्मद सात्यकी की कैसे रक्षा नहीं करूं हे राजा निश्चय करके युद्धभूमिमें वर्त्तमान वीर से अपना शरीर रक्षा करने के योग्य नहींहै २१ जो जिसके मनोरथ प्राप्त करने में

प्रवृत्त होताहै निश्चय करके वह रक्षाके योग्यहै वह राजा बड़े युद्धोंमें उन रक्षितोंसे रक्षाके योग्यहै २२ जो मैं इस बड़े युद्धमें सात्यकीको मृतक देखूं तो उस अनर्थ से और उसके पृथक् होनेके बिरहसे मुझको पापहोता २३ इस हेतुसे मैंने उसको रक्षाकरीइस कारणसे तुम मुझपर क्यों क्रोध करतेहो हे राजा जो तुम दूसरेके साथ भिड़ेहोनेसे मेरी निन्दा करतेहो २४कि मैं तुझसे ठगागयाहूं उसमें तेरे कवचको अस्तव्यस्त करतेऔरआप रथपर सवार धनुष की प्रत्यंचाको खींचते हुये वह शत्रुओंके साथ लड़ने वाली बुद्धि भ्रान्तिहै इस प्रकार रथ हाथियोंसे पूर्ण रथके सवार और पत्तियों से व्याकुल २५।२६ सिंहनादोंसे शब्दायमान सेना रूपी गंभीर सागर में मिले हुये अपनी सेनाके लोग दूसरोंसे यादव समेत सन्मुख होने में २७ किस रीतिसे एक का युद्ध एकहीके साथ होसक्ताहै यह सात्यकी बहुत बीरोंसे भिड़कर और महारथियोंको बिजय करके २८ थकाहुआ थकीही सवारी वाला बेमन और शस्त्रों से पीड़ामानहै ऐसी दशावाले और अपने बलके आधीन होनेवाले महारथी सात्यकीको युद्धमें बिजय करके २९ अपनीही अधिकता जानतेहो और युद्धमें खड्गसे उसके शिरको काटना चाहतेहो ३० उस प्रकार की आपत्तिमें फँसे हुये सात्यकी को कौनसहसक्तेगा तुम अपनीही निन्दाकरो जो अपनी भी रक्षानहीं करतेहो जो मनुष्य तुम्हारी शरण में आवे तो हे वीर उसके विषयमें तुम कैसी करोगे ३१ संजय बोले कि अर्जुनके इन वचनोंको सुनकर महा बाहु भूरिश्रवा सात्यकी को छोड़कर युद्धमें मरने के निमित्त बैठ गया ३२ उस पवित्र लक्षण और ब्रह्मलोक के जानेके अभिलाषी भूरिश्रवा ने बायें हाथ से बाणों को बिछाकर अपने प्राणों को प्राणों में नियत किया ३३ सूर्य्य में नेत्रोंको और जलमें स्वच्छमन को लय करके महा उपनिषदोंको ध्यानकरता हुआ वह भूरिश्रवा योगमें नियत चित्त होगया ३४ उसके पीछे सब सेनाके मनुष्यों ने श्रीकृष्ण और अर्जुनकी निन्दाकरी और उस मृतक पुरुषोत्तमकी

प्रशंसाकरी ३५ इस प्रकार से निन्दा किये हुये दोनों पुरुष कुछ अप्रिय वचन को नहीं बोले उसके पीछे वह स्तुतिमान भूरिश्रवा प्रसन्ननहींहुआ हेराजा चित्तसे उनके और उसके वचनको न सहता क्रोध रहित मनसे वचनों को ध्यान करता पांडव अर्जुन इस प्रकारसे निन्दाकरनेवाले आपकेपुत्रोंसेबड़ीनिन्दा पूर्व्वकबोला३६। ३७। ३८ कि सब राजा भी मेरे बड़े व्रतको जानते हैं मेरा वह शूरवीर मारनेके योग्य नहींहै जो मेरे बाणके सन्मुखहोवे ३९ भूरिश्रवाको इस बातको देखकर मेरी निन्दा करनी योग्यनहीं है धर्म्म को न जानकर शत्रुनिन्दाकरने के योग्य नहींहै४० युद्धमेंशस्त्रउठाने वाले और वृष्णी वीरको मारने के अभिलाषी भूरिश्रवा की भुजा को जो मैंने काटा वह धर्म से निन्दित कर्म नहीं है ४१ शस्त्रऔर कवचसे रहितविरथ बालक अभिमन्यु का मारना धर्मरूपहै हेतात उसको कौन अच्छा कहसक्ताहै ४२ अर्जुनके इस प्रकार के वचन को सुनकर उसने शिरसे पृथ्वीको स्पर्शकिया और बायें हाथसे अपने कटेहुये दाहिने हाथको अर्जुनकी ओर फेंका ४३ इसके पीछे बड़ातेजस्वी भूरिश्रवा अर्जुनके इसवचनको सुनकर नीचाशिरकरके चुपहोरहा ४४ अर्जुन बोले किजो मेरी प्रीति धर्मराज में वा पराक्रमी भीमसेनमें औरनकुल सहदेवमेंहै हेशल्यके बड़ेभाई भूरिश्रवा वही मेरीप्रीति तुझमें है ४५ तुम मुझसे और महात्मा श्रीकृष्णजी से आज्ञालेकर पवित्रलोकोंको ऐसे जावो जैसे कि औशीनरकापुत्र शिविस्वर्गको गया ४६ वासुदेवजी बोलेकिहेसदैव अग्निहोत्रकरने वाले भूरिश्रवा जो मेरे निर्मल लोक एक बारही प्रकाशकरतेहैंऔर देवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजी आदिक जिनको चाहते हैं उन लोकों को तुम शीघ्रता से जाओ और गरुड़के उत्तम शरीर पर सवारीकरने वाले होकर तुम मेरे समान हो ४७ संजय बोलेकि भूरिश्रवा के हाथसे छूटकर उठेहुये उस सात्यकी ने खड्ग को लेकर उस महात्माके शिरको काटनेकी इच्छासे ४८ अर्जुनके हाथसे मारेहुये परमेश्वर में प्रवृत्त चित्त निष्पाप भूरिश्रवाको मारनाचाहा ४९ बड़े

दुःखी मनसे सब सेनाओं को पुकारते निन्दा करते और श्रीकृष्ण महात्मा अर्जुन भीमसेन दोनों चक्रके रक्षक अश्वत्थामा कृपाचार्य कर्ण वृषसेन और जयद्रथके निषेध करनेपरभी सात्यकी नेसेनाओंके पुकारते हुये उस व्रतधारी टूटे भुज टूटी शूंड़वाले हाथी के समान बैठेहुये भूरिश्रवाकोमारा ५० । ५१ । ५२ सात्यकीनेयुद्ध में शरीरके त्यागनेके अर्थ अर्जुनकेबाण टूटे भुजवाले विराजमान भूरिश्रवाके शिरको खड्गसे काटा ५३ फिर सनाकेलोगोंने सात्यकीको उस कर्णके करने से अच्छा नहीं कहा जो पूर्व्वमें अर्जुनके मारे हुये कौरवको मारा ५४ सिद्ध चारण और मनुष्योंने उस इन्द्रकीसमान भूरिश्रवाको युद्धमें शरीर त्यागनेके निमित्त बैठा औरमराहुआ देखकर ५५ उसके कर्मोंसे आश्चर्य्यित उन देवताओंने उसको पूजा अर्थात् प्रशंसाकरी और आपकी सेनाके लोग पक्षपात के अनेक बचनोंको बोले ५६ किइसमें यादव सात्यकी का अपराध नहीं है यह ऐसीही होनहारथी इस हेतुसे तुमको क्रोध न करना चाहिये मनुष्यों का क्रोधही बड़ा दुःखहै मैंने इसकी मृत्यु सात्यकी कोही नियत कियाहै ५७ । ५८ सात्यकी बोला हेधर्मसे मुख फेरनेवाले और धर्म के मार्गमें नियत होने वाले शूरलोगो यह मारने के अयोग्यहै इन धर्म रूप बचनों से जोमुझको कहतेहो ५९ तो उस कालमें जबकि सुभद्राका पुत्र बालक बिनाशस्त्रकेयुद्धमें तुम्हारे हाथ से मारागया तब तुम्हारा धर्म कहां जातारहाथा ६० मैंने अपने किसी अपमानमें यह प्रतिज्ञाकरी कि जो मुझजीवतेको युद्धमें खैंच कर क्रोध पूर्व्वक पैरोंसे घायल करे ६१ वह मेरा शत्रु मुझसे ही मारनेके योग्य होय यद्यपि मुनिका व्रत रखने वाला भी होय मुझ नेत्र वाले प्रहारमें भुजासमेत चेष्टा करने वालेको मरा हुआ मानतेहोयह तुम्हारी स्वल्प बुद्धिताहै हेउत्तम कौरवो मैंने इसका मारना योग्य समझ करकियाहै६२।६३ प्रतिज्ञाकी रक्षाकरनेवाले अर्जुन ने जो उसकी खड्ग समेत भुजाकोकाटा उससेठगा गयाहूं ६४ जो होनहारहै वही होनेके योग्य है और दैव अर्थात् प्रारब्धही कर्म

करताहे सो मेंइस युद्धमें उपाय करने वाला हुआ इसमें कौनसा अधर्म किया ६५ पूर्व्व समयमें वाल्मीकिजीने भी यहश्लोककहाहै कि स्त्रियां मारनेके योग्य नहीं हे वानर जोतुम कहतेहो सोसुनोकि निश्चयवाले मनुष्यको सदैव सब समय ६६ वह कर्म करना योग्य है जो शत्रुओंके दुःखोंको उत्पन्न करने वाला होय संजय बोले किहे महाराज सात्यकी के इन वचनों को सुनकर सब उत्तम कौरवों ने कुछ भी नहीं कहा और मनसे प्रशंसाकी ६७ बड़े यज्ञोंमें मन्त्रसे पवित्र यशस्वी हजारों दक्षिणा देने वाले वनवासी मुनिके समान उसभूरिश्रवाके मारनेकी वहां किसीने प्रशंसा नहींकी ६८ उसबर-दाता शूरवीर भूरिश्रवा का वह शिर जिसके बाल बहुत नीले और कपोतके समान रक्तनेत्रथे ऐसे गिर पड़ा जैसेकि हवनके योग्ययज्ञ शालामें कटा हुआ घोड़ेका शिर रक्खा हुआ होताहै ६९ शस्त्र से उत्पन्न तेजसे पवित्र वरके योग्य वह वरदाता अर्थात् विष्णुपद के मिलने से भूरिश्रवा अपने उत्तम धर्म से पृथ्वी और आकाश को व्याप्त करके उत्तम शरीर को त्यागकर ऊपरकी ओर चला ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरित्रयश्चत्वारिंशतमोऽध्यायः १४३ ॥

एकसौचवालीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि वीर सात्यकी युधिष्ठिरके पास प्रतिज्ञा करके द्रोणाचार्य्य कर्ण विकर्ण और कृतवर्मा से अजेय सेना रूपी समुद्र से पार उतरा १ युद्धोंमें नहीं हटाया हुआ वह सात्यकी किसप्र-कार कौरव भूरिश्रवाके बलसे पकड़ करगिरायागया २ संजयबोले कि जैसे पूर्व्व समय में सात्यकी का और भूरिश्रवाका जन्महुआ है औरउसीमेंआपका सन्देहहै उसको मुझसे सुनो कि ३ अत्रिका पुत्र चन्द्रमाहुआ चन्द्रमा का पुत्र बुध और बुध का एकपुत्र इन्द्रके समान पुरूरवानाम हुआ पुरूरवाका पुत्रआयु और आयु का पुत्र नहुष नहुष का पुत्र राजा ययाति हुआ वह ययातिदेव ऋषियों काअंगी कृतहुआ ४।५ देवयानमें ययातिका बड़ा पुत्र यदु हुआ

यदुके वंशमें देवमीढ़ नाम पुत्र हुआ ६ उसकापुत्र यदुवंशी शूर-सेन नाम तीनोंलोकोंमें विख्यात कीर्त्त हुआ शूरसेन के पुत्र नरोत्तम बड़े तेजस्वी बसुदेवजी हुये ७ शूरसेन धनुष विद्यामें असादृश्य और युद्धमें कार्त्त वीर्य्य के समान हुआ और उसी कुलमें उसी के समान पराक्रमी शिनि हुआ ८ हे राजा उसी समय में महात्मा देवककी पुत्री देवकीके स्वयंवरमें सब क्षत्रियों के इकट्ठे होने पर ९ उस स्थानमें राजा शिनिने सब राजाओं को विजय करके देवी देवकी को बसुदेवजी के अर्थ शीघ्रता से रथपर बैठालिया १० तब बड़े तेजस्वी शूर सोमदत्त ने उस रथपर नियत हुई देवकीकोदेख कर शीनीसे क्षमा नहींकी ११ और उन दोनों को अनेक प्रकारका अद्भुत युद्ध मध्याह्नतकहुआ हे पुरुषोत्तम लड़ते२उनदोनों वीरोंका बाहुयुद्धभी हुआ १२ और शिनि के हाथसे सोमदत्त पृथ्वी पर गिराया गया फिर खड्ग उठाकर शिरके बालोंकोपकड़ चारोंओरसेदेखनेवाले हजारों राजाओं के मध्य में पैरोंसे घायल किया फिर उसने दया करके उसको जीवता हुआ छोड़ दिया १३।१४ हेश्रेष्ठ फिर उस संशय से उस दशावाले क्रोधयुक्त सोमदत्त ने महादेवजी को प्रसन्न किया १५ फिर उस बड़े बरदानी शिवजी ने उसपर प्रसन्न होकर उसको वरदान मांगने को उत्सुक किया फिर उस राजा ने बरमांगा १६ कि हे भगवान् मैं ऐसे पुत्र को चाहता हूं जो कि युद्धमें हजारों राजाओं के मध्यमें शिनीके पुत्रको गिराकर चरणों से घायल करे १७ हे राजा वह शिवजी उस सोमदत्त के उस बचनको सुनकर औरतथास्तु कहकर उसीस्थान में गुप्तहोगये १८ उसने उसी वर प्रदानसे भूरिश्रवानाम पुत्रको पाया और उस सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा ने शिनीके पुत्रको युद्धमें गिराया १९ और सब सेनाओं के देखते हुये उसको चरणों से घायल किया हे राजा जो आपने मुझसे पूछा सो मैंने तुमसे कहा २० यादव सात्यकी युद्धमें उत्तम पुरुषों से भी विजय करने के योग्यनहीं है क्योंकि यादव लोग युद्धमें लक्ष्य भेदी और अद्भुत योद्धा २१

देव दनुज और गंधर्वों के विजय करनेवाले आश्चर्य्य से रहित और अपने पराक्रम से विजय में प्रवृत्त होनेवाले हैं यह दूसरे के आधीन नहींहैं २२ हे प्रभु पुरुषोत्तम इसलोक में बल पराक्रम से वृष्णियों के समान तीनोंकाल में भी कोई शूरवीर उत्पन्न होने वाला नहीं जाना जाताहै २३ वह जातिका अपमान नहीं करते हैं और वृद्धोंकी आज्ञाओं में प्रीति रखनेवाले होते हैं देवता असुर गन्धर्व यक्ष उरग और राक्षस भी २४ वृष्णी वीरों के विजय करने वाले नहीं हैं फिर मनुष्यों की क्या सामर्थ्य है ब्राह्मण, गुरू, और ज्ञानवालों के धनोंके रक्षक हैं और जोकि किसी दशा में बन्धनमें पड़े हों उनके भी रक्षक हैं और धन अहंकार से रहित साधु ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले और सत्यवक्ता है २६ वह समर्थ होकर किसीप्रकार के दुःखी लोगों का अपमान नहीं करते हैं सदैव परमेश्वरके भक्त जितेन्द्री रक्षक और आत्म श्लाघाके करनेवालेनहीं हैं २७ इसीहेतु से वृष्णी वीरों के प्रताप का नाश नहीं होताहै चाहे कोई पुरुष समुद्रको तरकर मेरुपर्व्वत को भी उठाले २८ परन्तु सन्मुख होकर वृष्णी वीरों के अन्तको नहीं पासक्ता है हे राजा जिन२ बातोंमें आपको सन्देह था वह सब मैंने तुमसे कहा २९ हे नरोत्तम कौरव राज आपका बड़ा अन्याय है ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसात्यकीप्रशंसायांशतोपरिचतुश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४४॥

एकसौपैंतालिसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय उस दशा वाले उस कौरव भूरिश्रवा के मरने पर फिर जैसे युद्ध हुआ उसको मुझसे कहो १ संजय बोले कि हे भरतवंशी परलोक में भूरिश्रवा के जाने पर महाबाहु अर्जुन ने वासुदेवजीसे प्रार्थना करी २ कि हे श्रीकृष्णजी घोड़ोंको अत्यन्त प्रेरित करके वहां लेचलो जहांपर राजा जयद्रथहै हे निष्पाप आप मेरी प्रतिज्ञा को भी सफल करने को योग्य हो ३ हे महाबाहो शीघ्रता करनेवाला सूर्य्य अस्ताचलको प्राप्त होताहै हे पुरुषोत्तम

मैंने भी बड़े कर्मकी प्रतिज्ञाकरी है ४ और कौरवीय सेना महारथि-यों से रक्षितहै जैसे कि सूर्य्य अस्त न होय और मेरा वचन सत्य हो ५ और जैसे मैं जयद्रथ को मारूं हे श्रीकृष्ण जी उसीप्रकारसे आप घोड़ों को चलायमान करो इसके पीछे घोड़ोंके हृदयके जान-ने वाले महाबाहु श्रीकृष्णजी ने रजत वर्ण वाले घोड़ोंको ६ जय-द्रथके रथकी ओरको चलाया वायुके समान उछलकर चलते हुये घोड़ों के द्वारा जानेवाले उन सफल बाणवाले अर्जुन को ओर ७ शीघ्रता करनेवाले जो सेनाके अधिपति लोग दौड़े उनके नामयह हैं दुर्य्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य, ८ अश्वत्थामा, कृपाचार्य, और आपजयद्रथ, अर्जुनने सन्मुख नियतहुये जयद्रथको पाकर ६ क्रोधसे अग्नि रूप नेत्रों से उसको देखा हे राजा इसके पीछे राजा दुर्य्यो-धनशीघ्रही जयद्रथके मारनेके अर्थजानेवाले अर्जुनको देखकर कर्ण से बोला हे सूर्य्य के पुत्र महात्मा यह वह युद्धका समय है अवतुम अपने उसबलको दिखलाओ जिससे अर्जुनकेहाथसे युद्धमें जयद्रथ नहीं माराजाय हे कर्ण उसीप्रकार करना योग्य है १२ हे नरवीर दिन थोड़ाही बाकीहै अब शत्रुको बाणोंके समूहों से अच्छे प्रकार से घायलकर हे नरोंमें बड़ेबीर कर्ण दिनकेअन्तको पाकर निश्चय हमारी विजय होगी १३ सूर्य्यास्तके समय जयद्रथके बचजानेपर मिथ्या प्रतिज्ञा करनेवाला अर्जुन अग्नि में प्रवेश करेगा १४ हे बड़ाई देनेवालेकर्ण अर्जुनसे रहित पृथ्वीपर इसके सबभाई अपने साथी सहायकों समेत एक मुहूर्त्तभी जीवते नहीं रहसक्ते १५ हे कर्ण पांडवोंके नाशहोनेके पीछे इस अकंटक पृथ्वीको पर्वत बन और काननों समेत भोगेंगे १६ हे बड़ाई देनेवाले कर्ण दैव से मोहित प्रकृतिके बिपरीत कार्य्याकार्य्यके न जाननेवाले अर्जुनने युद्ध में प्रतिज्ञाकरी १७ हे कर्ण निश्चय करके पांडव अर्जुनने अपनेही नाशके निमित्त जयद्रथके मारनेमें यह प्रतिज्ञाकरीहै १८ सो हेकर्ण तुझअजेयके जीवते होनेपर अर्जुन सूर्य्यास्तसे पूर्वही कैसे राजा जयद्रथ को मारसक्ता है १९ यह अर्जुन मद्रके राजा शल्य और

महात्मा कृपाचार्य्यसे रक्षितहुये जयद्रथको युद्धकेमुखपर कैसेमारे-
गा २० कालसे प्रेरित अर्जुन अश्वत्थामा दुश्शासन और मुझसे
रक्षित जयद्रथको किसप्रकारसे पावेगा २१ बहुतसे शूरबीरलड़ने
वालेहैं और सूर्य्य जल्दीसे अस्तंगत होनेवालेहैं मैं निश्चय करके
अनुमान करताहूं कि अर्जुन जयद्रथ को नहींपावेगा २२ हे कर्ण
सो तुम मेरे साथ और अश्वत्थामा शल्य और कृपाचार्य्य और
अन्य २ महारथी शूरबीरोंके साथ२३बड़े उपाय पूर्व्वकयुद्धभूमिमें
नियत होकर अर्जुनसे युद्धकरो हे श्रेष्ठ आपके पुत्रके इनवचनों को
सुनकर कर्णने २४ कौरवोंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधनसे यहवचन कहा कि
मैं कठिन प्रहार करनेवाले धनुषधारी वीर भीमसेनके २५ नाना-
प्रकारके बाण जालोंसे अत्यन्त घायल शरीरहूं हे बड़ाई देनेवाले
नियतहोना योग्यहै इसहेतुसे मैंभी युद्धमेंनियतहूं२६ बड़ेबाणों से
अच्छासंतप्त कियाहुआ मेराकोई अंगचेष्टा नहींकरताहै सामर्थ्यके
अनुसार मैं उसीप्रकार से लडूंगा जिसमें कि यह अर्जुन जयद्रथ
को नहींमारेगा क्योंकि मेराजीवन तेरेही निमित्तहै मेरे युद्ध करते
और तीक्ष्ण शायकोंके छोड़ते २७ । २८ संसारके धनोंका विजय
करनेवाला वीर अर्जुन जयद्रथको नहीं पावेगा भक्ति रखनेवाले स-
दैव दूसरेकी भलाई चाहनेवाले पुरुषोंसे जो कर्म करनेके योग्य है
२६ हे कौरव मैं उसीको करूंगा आगे विजय होना ईश्वर के आ-
धीनहै हे महाराज अबमैं जयद्रथके अर्थ और तेरे प्रियके निमित्त युद्ध
में उपाय करूंगा परन्तु विजय ईश्वर के आधीनहै हे पुरुषोत्तम अब
अपनी वीरतामें नियत होकर मैं तेरेनिमित्त अर्जुनसे लडूंगा विजय
ईश्वरकेआधीनहै हेकौरवों में श्रेष्ठअबतेरे औरअर्जुनकेउसयुद्धको ३२
जोकि भयका उत्पन्न करनेवाला और रोमहर्षण करनेवाला होगा
सबसेनाओंके मनुष्योंके देखतेहुये युद्धमेंकर्ण और दुर्योधनको इस
प्रकारकी बातें होनेपरही ३३ अर्जुनने तीक्ष्णबाणोंसे आपकीसेना
कोमारा और तीक्ष्णधारबाणोंसे मुख न फेरनेवाले शूरोंकी३४भुजा
जो कि परिघ और हाथीकी सूंड़ोंके समानथीं उनको युद्धमें काटा

महाबाहुने फिर तीक्ष्ण धारवालेबाणोंसे उनके शिरोंकोभीकाटा ३५ हाथियोंकीसूंड़ घोड़ोंकीगर्दनें और चारोंओरसे रथियोंके अक्ष परिघ और तोमरवाले रुधिरमें भरे अश्वसवारोंको ३६ घोड़ों और उत्तम हाथियोंको अर्जुनने अपने क्षुरोंसे दोदो और तीनतीन खंडकरदिये फिरवह कट २ कर चारोंओरसे गिरपड़े ३७ ध्वजा छत्र चामर और शिर चारोंओरसेगिरे और जैसे उठाहुआ अग्नि सूखे वनको भस्म करताहै उसीप्रकार अर्जुनने आपकी सेनाको भस्मीभूत करदिया ३८ अर्जुनने थोड़ीही देरमें पृथ्वीको रुधिरसे पूर्णकरदिया वह पराक्रमी अर्जुन उस आपकी सेनाको अनेक शूरोंसे रहित करके भीमसेन और सात्यकी से रक्षित होकर ४० ऐसा प्रकाशमानहुआ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ जैसे कि प्रज्वलित अग्निहोताहै फिर बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तम आपके शूरबीरोंने उसप्रकारसे नियत उस अर्जुनको देखकरबलरूपी धनसे अर्जुनकोनहींसहा दुर्योधनकर्ण वृषसेनशल्य ४१।४२अश्वत्थामा कृपाचार्य्य आप जयद्रथ इनसब कवचधारीवीरोंने जयद्रथके निमित्त अर्जुनको घेरलिया ४३ युद्धमें कुशल और निर्भय कालके समान खुलेहुये मुखवाले उनसबने उस युद्धकुशल रथके मार्गोंमें धनुष प्रत्यंचा और तलके शब्दोंके साथ नृत्य करनेवाले अर्जुनकोचारों ओरसे घेरलिया श्रीकृष्ण औरअर्जुनके मारनेकेइच्छावान उनलोगोंने जयद्रथको पीछेकी ओर करके ४४।४५ सूर्य्यकेरक्तवर्णहोनेपर सूर्य्यास्तकोअभिलाषा करतेहुओंने सर्पके फणोंके रूप हाथोंसे धनुषोंको लचाकर सूर्य्य के समान प्रकाशमान हज़ारों बाणोंको छोड़ा उसकेपीछे युद्ध दुर्मद अर्जुनने उनखैंचे हुये प्रत्येक बाणोंको ४६।४७ दोदो तीन २ खंडकरके उन रथियोंको घायल किया हे राजा अपने पराक्रमको दिखाते सिंह लांगूल ध्वजा वाले ४८ सारद्वतके पुत्र अश्वत्थामाने अर्जुनको रोका अर्जुन को दश बाणों से और बासुदेवजी को सातबाणों से घायल करके ४९ जयद्रथको रक्षित करताहुआ रथके मार्गोंमें नियत हुआ इसकेपीछे सब उत्तम कौरवोंने उसको ५० बड़े रथोंके समूहों के द्वारा सब

ओर से रोका धनुषोंको टंकारते शायकों को छोड़ते ५१ लोगोंने आपके पुत्रकी आज्ञासे जयद्रथको चारों ओरसे रक्षितकिया इसके पीछे शूरवीर अर्जुनकी दोनोंभुजाओंका पराक्रम देखनेमेंआया ५२ और वाणोंकी और गांडीव धनुषकी अविनाशताको भी देखा कि अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यके अस्त्रों को अस्त्रोंसे रोककर ५३ प्रत्येक को दश२ वाणोंसे घायलकिया अश्वत्थामाने उसको पच्चीसवाणों से वृषसेनने सात वाणोंसे ५४ दुर्य्योधन ने वीस वाणों से कर्ण और शल्यने तीन२वाणोंसे इसप्रकार गर्जते और वारम्बार घायल करते ५५ धनुषों को कंपाते उन वीरोंने सबओर से अर्जुन को रोका और शीघ्र अपने रथमंडल को लगाया ५६ सूर्य्यास्त को चाहते और उसके सन्मुख गर्जते धनुषों को चलायमान करते शीघ्रता करनेवाले महारथियोंने ५७ उसको तीक्ष्णवाणों से ऐसा आच्छादित किया जैसे कि जलकी धाराओं से वादल पर्व्वत को आच्छादित करता है हे राजा परिघ के समान भुजाधारी उन शूरवीरों ने अर्जुन के शरीर पर दिव्य महाअस्त्रों को दिखलाया फिर उस पराक्रमी ने आपकी सेनाको वहुत मृतक शूरवीरवाली करके ५८। ५६ सत्य पराक्रमी निर्भय ने जयद्रथ को पाया हे राजा कर्णने वाणों से उसको रोका ६० हेभरतवंशी फिर अर्जुनने युद्धभूमि के मध्य भीमसेन और सात्यकी के देखते हुये उस कर्ण को दश वाणोंसे छेदा ६१ महावाहु अर्जुन ने यह युद्धकर्म सब सेनाके देखते हुये किया हे श्रेष्ठ यादव सात्यकी ने कर्ण को तीन वाणोंसे घायल किया ६२ भीमसेन ने तीन वाण से और फिर अर्जुन ने सात वाण से इसके पीछे महारथी कर्ण ने साठ२ वाणों से उनको घायल किया हे श्रेष्ठ वहां हमने कर्णके अपूर्व्व कर्म को देखा ६४ कि जिस क्रोधयुक्त अकेलेनेही युद्धमें तीन रथियों को रोका फिर महावाहु अर्जुन ने सूर्य्य के पुत्र कर्ण को युद्धमें ६५ सौ शायकों से सव मर्मोंपर घायल किया रुधिर से लिप्त सव शरीर प्रतापवान् वीर कर्ण ने ६६ पचास वाणों से अर्जुन को घायल किया अर्जुन

ने युद्धमें उसकी उस हस्तलाघवताको देखकर नहींसहा ६७ फिर शीघ्रता करनेवाले बीर अर्जुनने धनुषको काटकर नौ शायकों से उसको हृदयपर पीड़ामान किया ६८ इसके पीछे प्रतापी कर्ण ने दूसरे धनुषको लेकर आठ हजार शायकों से अर्जुन को ढक दिया ६९ अर्जुन ने कर्णके धनुष से निकले हुये उन बड़ी बाणवर्षा को शायकों से ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि शलभ नाम पक्षियों को बायु तिबिर कर देताहै ७० तब अर्जुन ने भी शायकों से उसको ढक दिया और शीघ्रतायुक्त अर्जुनने शीघ्रताके समय युद्धमें उसके मारने के निमित्त सूर्य्यके समान प्रकाशित शायक को फेंका ७१ अश्वत्थामा ने उस बेगसे आते हुये शायकको अर्द्धचन्द्र नाम तीक्ष्ण बाणोंसे काटा वह कटाहुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा ७२ इसके पीछे प्रतापवान् कर्णने दूसरे धनुषको लेकर हजारों शायकों से अर्जुन को ढकदिया ७३ अर्जुनने उस कर्णकी शस्त्रवर्षा को शायकों से ऐसे उच्छिन्न करदिया जैसे कि बायु शलभाओं को करताहै ७४ तब उसने अर्जुन को सब शूरबीरों के देखते और हस्तलाघवता को दिखाते हुये शायकों से ढक दिया ७५ शत्रुओं के मारनेवाले कर्णने भी युद्ध कर्मके वदला करने की इच्छासे अर्जुनको हजारों शायकों से ढक दिया ७६ बैलोंके समान गर्जना करनेवाले उन नरोत्तम महारथियों ने सीधे चलनेवाले शायकों से आकाश को गुप्तकिया ७७ बाणों के समूहों से गुप्त उन दोनोंने परस्पर में घायल किया और कहा कि हेकर्ण मैं अर्जुनहूं ठहरो ७८ तब इसप्रकार घुड़कनेवाले दोनोंने वचन बज्रों से परस्पर पीड़ित किया और दोनों बीर युद्धमें अपूर्व्व चित्तरोचक तीव्र युद्ध करते ७९ सब शूरबीरों के समूहों में देखनेके योग्यहुये सिद्ध चारण औ सर्पों ने भी उनकी प्रशंसा की ८० हे महाराज परस्पर मारने के अभि-लाषी वह दोनों युद्ध करनेवाले हुये इसके पीछे दुर्य्योधन आपके शूरबीरों से बोला ८१ कि उपाय से कर्णकी रक्षाकरो यह कर्ण युद्धमें अर्जुन को बिनामारे हुये नहीं लौटेगा क्योंकि उसने मुझसे

कहाहै ८२ हे राजा इसी अन्तरमें कर्णके पराक्रम को देखकरश्वेत घोड़े रखनेवाले अर्जुनने कान तक खैंचकर छोड़े हुये चार बाणोंसे कर्णके चारों घोड़ों को ८३ प्रेतलोक में पहुंचाया और भल्लसेउसके सारथीको रथकी नीढ़से गिराया ८४ और फिर आपके पुत्रकेदेखते हुये बाणोंसे उसको ढक दिया युद्धमें बाणोंसे ढके हुये मृतक सारथी और घोड़े वाले ८५ बाणजालों से मोहितने करने के योग्य कर्मको नहीं पाया हे महाराज तब उसप्रकार उस कर्णको रथ से रहित देखकर अश्वत्थामा ने ८६ रथपर बैठाकर फिर अर्जुन से युद्धकिया और मद्रके राजा शल्यने अर्जुनको तीस बाणोंसे छेदा ८७ फिर कृपाचार्य्य ने बीस बाणसे वासुदेवजी को घायल किया और शिलीमुख नाम बारह बाणोंसे अर्जुन को घायल किया ८८ जयद्रथ ने चार बाणसे वृषसेन ने सात बाण से उसको घायल किया हे महाराज जैसे पृथक् २ श्रीकृष्ण और अर्जुन को उन सबने घायलकिया ८९ उसी प्रकार कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने भी उनको घायल किया और चौंसठ बाणोंसे अश्वत्थामाको और सौबाणसे शल्यको ९० दश बाण से जयद्रथ को तीन बाण से वृषसेन को और बीस बाणसे कृपाचार्य्य को घायल करके गर्जा ९१ अर्जुनकी प्रतिज्ञाके नाशको चाहनेवाले वह सब इकट्ठे शूरवीर एकसाथही अर्जुन के सन्मुख दौड़े ९२ इसके पीछे धृतराष्ट्र के पुत्रों को सब ओर से भयभीत करते हुये अर्जुन ने वारुणास्त्र को प्रकट किया बाणों को वर्षाते कौरव बहुमूल्य रथोंकी सवारी से उस अर्जुनके सन्मुख गये ९३ हे भरतवंशी उसके पीछे उस कठोर और बड़ेभयकारी मोह के उत्पन्न करनेवाले युद्धके जारी होने पर वह राजपुत्र अचेत नहीं हुआ फिर उस मुकुट और मालाधारी राज कुमार ने सन्मुख होकर बाणोंके समूहोंको छोड़ा ९४ कौरवों के राज्यकेइच्छावान् बारह वर्षके पाये हुये महाखेदों को स्मरण करते महात्मा बुद्धिसे बाहर प्रभाववाले अर्जुन ने गांडीव धनुषके छोड़े हुये बाणों से सब दिशाओंको ढकदिया ९५ और अन्तरिक्ष बड़ी प्रकाशमान

उल्काओं से व्याप्त हुआ और मृतक शरीरों पर पक्षी गिरे जिस हेतुसे क्रोध युक्त अर्जुन पिंगल वर्णकी प्रत्यंचावाले अजगवनाम धनुषसे शत्रुओंको मारताथा ९६ इसकेपीछे बड़े यशस्वी शत्रुओंको सेनाके विजय करनेवाले अर्जुनने बड़े धनुष से बाणोंको चलाकर उत्तम घोड़े और हाथियोंकी सवारियोंसे घूमनेवाले कौरवीय शूर-बीरोंको बाणोंसे गिराया ९७ भयकारी दर्शनवाले राजालोग भारी गदा और लोहेकी परिघ खड्ग शक्तिआदिक बहुतसे बड़े२ शस्त्रोंको लेकर युद्धमें अकस्मात् अर्जुनके सन्मुख गये ९८ इसकेपीछे यम-राजके देशको बढ़ानेवाले अर्जुनने प्रलयकालके बादलके समान शब्दायमान महाइन्द्रके धनुषरूप गांडीवनाम बड़े धनुषको दोनों हाथोंसे खैंचा और बहुत हँसताहुआ आपके शूरबीरोंको भस्मकरता शीघ्रहीचला ९९ उसबीरने उन बड़े धनुषधारियों समेत पदातियोंके बड़ेसमूहोंको जिनकेसबशस्त्र और जीवनभी नष्टहोगयेथे हाथी और रथ सवारों समेत यमराजके देशकीवृद्धि करनेवाला किया १०० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिजयद्रथसकुलयुद्धेशतोपरिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः१४५ ॥

एकसौछियालीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि अर्जुनके खैंचेहुये उस धनुषका शब्दजो कि मृत्यु के शब्दके समान अच्छे प्रकारसे प्रकट उन्नत इन्द्र बज्रके समान महाभयकारीथा उसको सुनकर आपकी वहसेनाभयसे ऐसीव्याकुल हुई जैसे कि प्रलयकालकी वायुसेव्याकुल और चलायमान तरंगों से उत्तरंग २ गुप्त मछली और मगरवाला सागरका जल होताहै वह पांडव अर्जुनदेखताहुआ युद्धमेंघूमा ३एक साथही सबदिशाओंमें सबअस्त्रोंको प्रकटकरताघूमनेलगा हे महाराज हमनेउसकी हस्त-लाघवतासे उस लेते चढ़ाते४खैंचते छोड़तेहुये पांडवको नहीं देखा इसके पीछे सब भरत बंशियोंको डराते क्रोधयुक्त महाबाहु अर्जुनने कठिनतासे सहनेकेयोग्य इन्द्रास्त्रको प्रकटकिया इसके पीछे दिव्य मंत्रोंसे अभिमंत्रित ५ । ६ अत्यन्त प्रकाशमान सैकड़ों और हजारों

वाण प्रकटहुये कानतक खैंचकर छोड़े हुये अग्नि सूर्य्यकी किरणों के समान वाणोंसे ७ आकाश दुःख से देखने के योग्य ऐसा हुआ जैसे कि उल्काओंसे संयुक्तहोताहै इसकेपीछे कौरवोंसे प्रकटकिये हुये उस शस्त्रोंके अन्धकार को८ घूमते हुये पांडवने पराक्रम करके दिव्य अस्त्रोंके अभिमंत्रित वाणोंसे नाश करदिया जोकर्म दूसरोंके मनसेभी करनेके योग्य ऐसे नहींथा ९ जैसे कि प्रातःकालके समय सूर्य्य अपनी किरणोंसे रात्रिके अन्धायोंको शीघ्रही दूरकर देताहै उसकेपीछेआपकीसेनाप्रकाशित वाणोंकीकिरणोंसे १० ऐसेआकर्षण युक्तहुई जैसे उष्णऋतुमेंप्रभु सूर्यदेवता छोटे२ तालाबोंके जलोंको आकर्षण करताहै उससमय दिव्य अस्त्रज्ञ अर्जुनसे छोड़ेहुये शायक रूप किरणोंने ११ शत्रुओंकी सेनाको ऐसेस्पर्श किया जैसे कि सूर्य्य की किरणें लोकको स्पर्श करतीहैं इसकेपीछे छोड़ेहुये दूसरे कठोर प्रकाशितवाण १२ शीघ्रही वीरोंके हृदयमें प्यारे बान्धवोंके समान लगकर प्रवेशहुये जो शूरोंमें बड़े आपके युद्धकर्त्ता लोग युद्धमें उसके सन्मुख गये १३ उन्होंने ऐसे नाशको पाया जैसे कि शलभ नाम पक्षी अग्निको पाकर नाशहोतेहैं इसप्रकार देहधारीकालके समान अर्जुन शत्रुओंकेजीवन और यशोंको मर्द्दनकरता१४युद्धमेंघूमनेलगा उसने कितनेही वीरोंके मुकुट वस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली बड़ी भुजा और कुंडलोंके जोड़े धारण करनेवाले कानोंको अपनेवाणोंसे काटा १५ उसपांडवने तोमर रखनेवालेहाथीके सवारोंकीभुजाओंको और प्रास रखनेवाले अश्वसवारोंकी भी भुजाओं को काटकर १६ ढाल रखनेवाले पदातियों की भुजाओं को और धनुष वाण रखने वाले रथियोंकी भुजाओंको और चाबुकरखनेवाले सारथियोंकी भी भुजाओंको काटा १७ वहांपर अर्जुन अत्यन्त प्रकाशित और भय-कारी वाणरूपी किरणोंका धारण करनेवाला होकर ऐसा शोभाय-मान हुआ जैसे कि फुलिंगों का धारण करनेवाला देदीप्य अग्नि होताहै १८ फिर वह उपायकरनेवाले राजालोगभी उसदेवराजके समान सबशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ रथपर सवार पुरुषोत्तम बड़े अस्त्रोंके

चलानेवाले दर्शनीय रूप रथके मार्गोंमें नाचनेवाले धनुष प्रत्यंचा और तलसे शब्द करनेवाले पांडव अर्जुनको सब दिशाओंमें एकबार देखनेकोभीऐसे समर्थनहीं हुये जैसेकि मध्याह्नके समय आकाशमें तपानेवाले सूर्य्यको कोई देख नहींसक्ता १६।२०।२१ वहप्रकाशित नोकवाले बाणोंका रखनेवाला ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वर्षा ऋतुमें इन्द्र धनुषके साथ बहुत जलोंसेभरा बड़ावादल शोभित होताहै २२ उत्तमशूरबीरलोग अर्जुनके जारी कियेहुये उसकठिनता से तरनेके योग्य बड़े भयानक महा अस्त्ररूप समुद्र में डूबगये २३ टूटेमुख और भुजावालेशरीर टूटेहाथवाली भुजा उंगली टूटेहुये हाथटूटीहुईसूंड़ नोकदांतमदसे मतवालेहाथी ग्रीवारहितघोड़े चूर्णीभूतरथ२५टूटीआंत पैर इसीप्रकार टूटे जोड़वाले अन्यशूरवीर चेष्टा करनेवाले वा अचेष्टहजारों युद्धकर्त्ताओंसे २६ उस बड़ी युद्धभूमि को भयभीतोंके भयकेबढ़ानेवाली मृत्युकालकीसंहारभूमिके समान ऐसाचित्तरोचकदेखा२७जैसेकि पूर्व्वकालमें शूरोंके पीड़ा देनेवाले रुद्रजीका क्रीड़ास्थानहोताहै क्षुरसेकाटीहुई हाथियोंकीसूंड़ोंसे पृथ्वी ऐसीजुदीशोभायमानहुई जैसे कि सर्पोंसेयुक्तहोतीहै२८किसीस्थान परमुखरूपी कमलोंसेआच्छादितपृथ्वी मालाधारीकेसमानशोभायमानहुई बिचित्र पगड़ी मुकुट कुंडल केयूर वजुबन्दों से २६ और सुबर्ण जटित कवच घोड़े हाथियोंके सामान और हजारों मुकुटोंसे जहां तहां आच्छादित और संयुक्त पृथ्वी नवीन वधू के समान अत्यन्त अद्भुत शोभायमानहुई बसा मस्तकरूप कीच रखनेवाली रुधिर समूहोंसे उत्तरंग मर्म और अस्थियोंसे अथाहकेशरूप शैवल शाड्वल रखनेवाली शिरभुजारूप तटके पाषाण रखनेवाली कटेहुये घोड़ोंकी छातियोंके हाड़ोंसे अगम्य ३२ चित्रध्वजापताकाओंसे युक्त छत्रधनुषरूप तरंगमाला रखनेवाली मृतक शरीरोंसेपूर्ण हाथियोंके शरीरोंसे बिगतरूप ३३ रथरूपी हजारोंनौकाओंसे युक्त घोड़ोंके समूहरूप किनारेवाली और रथकेचक्र जुये ईशा अक्ष और कूबरोंसे अत्यन्त दुर्गम ३४ प्रास खड्ग शक्ति फरसे और विशिखरूप स-

पदोंसे कठिन काक कंकरूप नक्रोंसे पूर्ण शृगालरूप मगरोंसेकोठन रूप३५ बड़ेगृद्ध्ररूप भयानक ग्राह रखनेवाली शृगालोंके शब्दोंसे भयानक रूप और नाचतेहुये प्रेतपिशाचादि हजारों भूतोंसे युक्त ३६ मृतक और निश्चेष्टशूरवीरोंके हजारों शरीरोंकी बहानेवालीव-ड़ीभयानकरुद्र वैतरणी नदीके समान घोर३७ भयभीतोंके भयोंको वढ़ानेवाली नदीको बहाया उसयमराजरूप अर्जुनके उस पराक्रम को जिसके समान पूर्व्व कोई नहींहुआ ३८देखकर युद्धभूमिकेमध्य कौरवोंमें भयउत्पन्नहुआ रुद्रकर्ममें नियत अर्जुनने वीरोंके अस्त्रोंको अपनेअस्त्रोंसे आधीनकरके ३९ अपनेकोरुद्ररूप प्रकटकिया हेराजा इसकेपीछे अर्ज्जुनने उत्तमरथियोंको उल्लङ्घनकिया ४० और सबजीव-धारी अर्जुनकी ओरदेखनेको ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे मध्याह्नके समय संतप्तकरनेवाले सूर्यको कोईदेख नहींसक्ता ४१ उसमहात्मा के गांडीव धनुष से निकले हुये बाणोंके समूहोंको युद्धमें ऐसा देखा जैसा कि आकाशमें हंसोंकी पंक्तियोंको ४२ वह सबओरसेवीरों के अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे रोककर अपने शरीरको रुद्ररूपदिखलाता भयकारी कर्म्ममें प्रवृत्त हुआ ४३ हे राजा तब नाराचों से मोहित करते सब दिशाओंमें बाणोंको छोड़ते श्रीकृष्ण को सारथी रखने वाले अर्जुनने जयद्रथके मारनेकी अभिलाषासे उन महारथियोंको उल्लंघन किया ४४ फिर वह दर्शनीय रथी अर्जुन शीघ्रतासेचला और महात्मा शूरवीर अर्जुन के घूमते हुये बाणों के समूह ४५ हजारों अन्तरिक्षमें दिखाई पड़े निश्चय करके उससमय हमने शायकों को लेते चढ़ाते छोड़ते ४६ बड़े धनुषधारी पांडवको नहीं देखा हे राजा जिसप्रकार वह कुन्ती का पुत्र सब दिशाओं को और सब रथियों को युद्ध में ४७ व्याकुलकरता जयद्रथके सन्मुख गया और टेढ़ेपर्ववाले चौंसठ बाणोंसे घायल किया ४८ शूरवीर जयद्रथ के सन्मुख जातेहुये अर्जुनको देखकर सबलोग उसके जी-वनसे निराश हुये ४९ हे प्रभु आप का जो २ शूरवीर उस युद्धमें अर्जुनके सन्मुख दौड़ा उस उसके शरीर में वह नाशकारी बाण

समागये ५० विजय करने वालोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने अग्निकी किरण के समान बाणोंसे आपकी सेनाको घड़ोंसे पूर्णकिया ५१ हे राजा तब अर्जुनआपकी चतुरंगिणी सेनाको व्याकुल करके जयद्रथ के पासगया ५२ पचास बाणसे अश्वत्थामा को बीसबाण से वृषसेन को घायलकरके दयावान् अर्जुनने कृपाचार्य्यको नौबाणोंसे घायल किया ५३ शल्यको सोलह बाणों से कर्णको बारह बाण से और जयद्रथको चौंसठ बाणसे घायल करके सिंहके समान गर्जा ५४ गांडीव धनुषधारीके बाणोंसे उस प्रकार घायल होकर बड़े क्रोध युक्त जयद्रथने ऐसेनहीं सहा जैसे कि चाबुकोंसे पीड़ितहाथीहोताहै उस बराहध्वज जयद्रथने शीघ्रही सीधे चलनेवाले क्रोधभरे सर्पके समान और कारीगरकेसाफ कियेहुये ५६ कानतक खेंचेहुयेबाणों को अर्जुन के रथपर फेंका फिर तीनबाणों से केशवजीको और छः नाराचसे अर्जुनको घायल करके ५७ एक बाण से ध्वजा को और आठ बाणोंसे घोड़ोंको घायल किया फिर अर्जुनने शीघ्रही जयद्रथके चलाये हुये बाणोंको हटाकर ५८ एकही बारमें दो बाणों से उसके सारथीके शिरको काटकर उसकी अलंकृत ध्वजाको भी काटा ५९ अर्जुनके बाणसे घायल वह जयद्रथकी ध्वजाका बहुत बड़ा देदीप्य अग्निके समान बराह जिसकी कि यष्टी टूटगई थी गिरपड़ा ६० हे राजा उसीसमय सूर्य्यके शीघ्रजानेपर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्ण जी अर्ज्जुन से बोले ६१ हे महाबाहु अर्ज्जुन इस जयद्रथ को छः महारथी बीरोंने अपने मध्यमें कियाहै यह जीवन की इच्छा किये महा भयभीत नियतहै ६२ हे महारथी अर्जुन युद्धमें इन छः महा-रथियोंके बिना विजय किये जयद्रथ मारनेके योग्यनहींहै तुमबड़ी सावधानीसे प्रहार करो ६३ मैं यहां सूर्य्यके अस्तंगत होनेमें योग करूंगा वह अकेला जयद्रथही सूर्य्यको अस्तंगत देखेगा ६४ हे प्रभु अर्जुन वह जीवनकी इच्छा करनेवाला दुराचारी जयद्रथ प्रसन्नतासे तेरे नाशके लिये अपनेको किसी दशामें भी नहीं छुपा-वेगा ६५ हेकौरवोंमें श्रेष्ठ उससमयपर तुझको इसपर प्रहारकरना

चाहिये सूर्य्य अस्तहुआ यह ध्यान न करना चाहिये ६६ अर्जुनने केशवजीको उत्तरदियाकि तथास्तु ऐसाहोय उसके पीछे योगसेयुक्त योगी और योगियोंके ईश्वर हरि श्रीकृष्णजीसे सूर्य्यके गुप्त होनेके निमित्त अंधकार उत्पन्न करनेपर सूर्य अस्तहुआ जानकर ६७। ६८ आपके शूरवीर अर्जुन के नाश से प्रसन्न हुये हे राजा उन प्रसन्न मनहुये सेनाके लोगोंने मुखोंको ऊंचा करके सूर्य्यकोदेखा ६६ तब उसराजा जयद्रथनेभी सूर्य्यकी ओर दृष्टिकरी तब सूर्य्यको उसजयद्रथके दिखाई देनेपर ७० श्रीकृष्णजी अर्जुनसे फिर यहबचनबोले कि हे भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ तुझसे अत्यन्त निर्भय होकर सूर्य्यको देखनेवाले बीर जयद्रथ को देखो हे महाबाहो इस दुरात्माकेमारने का यहीसमयहै ७१। ७२ शीघ्रही इसके शिरको काटकर अपनी प्रतिज्ञाकी सफलताकोकर केशवजीसे इसवचनको सुनकर प्रतापवान् अर्जुनने ७३ सूर्याग्नि के समान प्रकाशित बाणोंसे आप की सेनाकोमारा बीसबाणसेकृपाचार्यको और पचासबाणसेकर्णको ७४ और छः बाणोंसे शल्य समेत दुर्य्योधनको आठ बाणसे वृषसेनको और साठबाणोंसे जयद्रथको घायलकिया ७५ हेराजा वहमहाबाहु पांडुनन्दन इसी रीति से आपके पुत्रों को भी कठिन घायल करके जयद्रथके पासगया ७६ जयद्रथके रक्षकोंने अग्निकेसमान चाटनेवाले सन्मुखनियतहुये अर्जुनको देखकर बड़े सन्देहकोकिया ७७ हे महाराज फिर आपके सबविजयाभिलाषी शूरवीरोंने युद्धमेंबाणोंकी धाराओंसे इन्द्रकेपुत्र अर्जुनको सींचा ७८ बहुत बाणजालोंसे ढका हुआ वहअजेय महाबाहु कौरवनन्दन अर्जुन क्रोधसे पूरितहुआ ७६ इसके पीछे इन्द्रनन्दन पुरुषोत्तम अर्जुन ने सेनाके मारनेकीइच्छा से बाण जालोंको उत्पन्न किया हे राजा वीर अर्जुनके हाथसे घायल और भयभीत आपके शूरवीरोंने युद्धमें जयद्रथको त्याग किया और दो पुरुष भी साथ में न रहे ८१ वहां हमने अर्जुनके अपूर्व पराक्रम को देखा जो कर्म उस यशवान्ने किया वह न हुआहै न होनेवाला है ८२ अर्थात् हाथी हाथीकेसवार घोड़े घोड़ोंके सवार और सारथी

लोगोंको भी ऐसे मारा जैसे कि रुद्रजी पशुओंको मारतेहैं ८३ हे राजा उस युद्धमें हाथी घोड़े और मनुष्यों में ऐसा किसीको नहीं देखा जो कि अर्जुन के बाणोंसे घायल नहीं हुआहो८४अंधेरे और धूलसे गुप्त नेत्रवाले शूरबीर घोर मोहमें प्रवृत्तहुये और एकनेदूसरे को नहीं जाना ८५ हे भरतबंशी बाणोंसे छिदे मर्मकाल से प्रेरित वह सेनाके लोग घूमें और घूम २ कर चलायमान गिरेहुये पीड़ावान् और मृतक प्राय शरीर हुये ८६ उस बड़े भयकारी प्रलयके समान कठिनतासे पारहोनेके योग्य बड़े भयानक युद्धके वर्त्तमान होने पर रुधिरकी आर्द्रता और वायुकी तीव्रतासे और पृथ्वीको रुधिरसे आर्द्र होने पर पृथ्वीकी धूलदबगई ८८ नाभि पर्य्यन्त रुधिरमें रथके चक्र डूबगये हे राजा युद्धभूमिमें आपके पुत्रोंकेमतवाले और वेगवान् ८९ टूटे अंग मृतक सवारवाले हजारों हाथी अपनी सेनाको मर्द्दनकरते क्रंदित चिंघाड़ोंको मारते भागे ९० और अर्जुनके बाणोंसे घायल पति लोग और घोड़े जिनके कि सवार गिर पड़े थे वह सब भी भयभीत होकर भागे ९१ फैले हुये बालकवचों से रहित घावोंसे रुधिर बहाते भयभीत लोग युद्धको त्याग करके भागे९२वहां कोई तो पृथ्वीमेंदुःखी होगये कोई मृतक हाथियों में गुप्त होगये हे राजा अर्जुनने इसप्रकार से आपकी सेनाको भगाकर जयद्रथके रक्षकों को घोर शायकों से घायल किया ९४ अर्जुनने तीक्ष्ण बाणजालोंसे अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कर्ण,शल्य, वृषसेन, और दुर्योधनको ढकदिया ९५ हे राजा वह अर्जुन शीघ्र अस्त्र चलानेसे युद्धमें बाणोंको पकड़ता चढ़ाता खैंचता औरछोड़ता हुआ किसीदशामें भी दृष्टिमेंनहीं आया९६इसबाण चलानेवालेका वह धनुष मंडलही दिखाई पड़ा और चारों ओरको घूमतेहुयेशायक दिखाई पड़े ९७ कर्ण और वृषसेन के धनुष को काटकर भल्ल से शल्यके सारथीको रथकी नीढ़से गिराया ९८ बड़े विजयी अर्जुनने युद्धमें उन दोनों मामाभानजे अश्वत्थात्मा और कृपाचार्य्यको बाणों से अत्यन्त घायल करके ९९ और इस रीतिसे आपके महारथियों

को व्याकुल करके अग्निरूप घोरबाणको निकाला १०० इन्द्र वज्रके समान विख्यात दिव्यअस्त्र से अभिमंत्रित सब भारकेसहने वाले सदैव मालासे पूजित बड़े बाणको १०१ विधि पूर्वक वज्र अस्त्रसे मिलाकर फिर उस कौरवनन्दन महाबाहुने शीघ्रही धनुष पर चढ़ाया हेराजा उस अग्निके समान प्रकाशमान बाणकेचढ़ाने पर अन्तरिक्षमें जीवोंके बड़ेशब्दहुये १०३ फिर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजी बोले हे अर्जुन दुरात्मा जयद्रथके शिरको काट १०४ क्योंकि सूर्य्य पहाड़ों में श्रेष्ठ अस्ताचलको जाना चाहता है और जयद्रथके मारने में इस मेरे बचनको सुन १०५ राजा जयद्रथका पिता वृद्धक्षत्र नाम संसार में विख्यात हुआ है उसने इसलोक में वहुत काल पीछे जयद्रथ नाम पुत्रको पायाहै १०६ मेघ दुन्दुभी के समान शब्दायमान शरीर रहित गुप्त बाणीने उस शत्रुहंता राजावृद्ध क्षत्रसे कहाहै कि१०७ हे समर्थ राजा वृद्धक्षत्र तेरापुत्रकुल स्वभाव और विजयकीर्त्ति वाला होगा१०८क्षत्रियोंमें अत्यन्तश्रेष्ठ और लोक में वड़ा मान्य होगा परन्तु अत्यन्त क्रोधयुक्त क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ वह पुरुष युद्धमें इसके शिरको काटेगा जोकि पृथ्वीपर दिखाई नहीं प-ड़ेगा शत्रुओंका पराजय करने वाला राजासिंध इस बचन को सुन वडोदेरतक ध्यान करके १०९ पुत्रके स्नेहबद्धने अपने ज्ञाति वालों से यह कहा कि जो पुरुष युद्धमें लड़नेवाले और बड़े भारके उठा ने वाले ११९ मेरे पुत्रके शिरको पृथ्वीपर गिरावेगा उसका भी मस्तक सौ टुकड़े होगा ११२ वृद्धक्षत्र इतना कहकर इस जयद्रथ को राज्य पर नियत करके वनको गया और उग्रतपमें नियत हुआ ११३ हे वानरध्वजअर्जुन वह तपस्वी वृद्ध क्षत्र इस स्यमन्तपंचक से बाहर कठिनता से करनेके योग्य घोर तपको तपरहाहै ११४ हे शत्रुहन्ता भीमसेन के छोटे भाई भरतवंशी अर्जुन इस हेतुसे तुम इस वड़े युद्धमें महाघोर दिव्यअस्त्रसे जयद्रथके शिरको काट कर ११५ फिर उस जयद्रथ के कुंडलधारी शिर को इस वृद्धक्षत्र की गोदमें गिराओ ११६ जो तुम इसके शिर को पृथ्वीपर गिरा-

आओगे तो तुम्हारे भी शिरके सौ टुकड़े निस्सन्देह होंगे ११७ जिस प्रकार कि वहतपमें युक्त राजा वृद्धक्षत्र उसको न जाने हे कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन दिव्यअस्त्रोंके आश्रयवाले तुम भी उसीप्रकार से करो इसके पीछे तुम उसके शिरको पृथ्वीपर गिराओगे हे इन्द्रनन्दन तीनोंलोकों में भी तुझको कोई कर्म करनाकठिन नहींहै और कोई बात ऐसी नहीं है जिसको तुम किसीस्थान में न करसको ११९ । १२० हे ठोंठों को चाटते हुये अर्जुनने इस वचनको सुनकर इन्द्रवज्र के समान स्पर्शवाले दिव्य मंत्रसे अभिमंत्रित १२१ सब भारके सहनेवाले सदैव सुगन्धित मालाओंसे पूजित जयद्रथके मारने के लिये धनुषपर चढ़ायेहुये बाणको शीघ्रहीछोड़ा १२२ फिर गांडीव धनुषसेछोड़ाहुआ वह बाजके समान शीघ्रगामी बाण जयद्रथके शिरको काटकर आकाशको उछला १२३ अर्जुनने मित्रोंको प्रसन्नता और शत्रुओंको दुःखके अर्थ बाणोंसे जयद्रथके उस शिर को उठाया १२४ उस समय अर्जुनने बाणोंसे जालको फैला करके फिर उन छःमहारथियोंसे भी युद्ध किया १२५ हे भरतवंशी इसके पीछे वहां हमने बड़े आश्चर्य्य को देखा जो उसबाणसे जयद्रथका शिर स्यमंतपंचकसे बाहर डाला गया १२६ हे श्रेष्ठ उसीसमय पर आप का संबन्धीवृद्धक्षत्र संध्याकररहाथा १२७ फिर श्यामकेश कुण्डलधारीजयद्रथका शिर उस बैठेहुये वृद्धक्षत्रकीगोदीमें गिराया १२८ हे शत्रुहन्ता सुन्दर कुंडलधारी वहशिर वृद्धक्षत्रका न देखाहुआ उसकी गोदीमेंगिरा १२९ हेभरतवंशी इसकेपीछे उस जपकेसमाप्त करनेवाले वृद्धक्षत्र के उठतेही वह शिर अकस्मात् पृथ्वीपर गिर पड़ा १३० हे शत्रुहन्ता उस राजाके पुत्रका शिर पृथ्वीपर गिरनेके समयही उसका भी शिरसौखंडहोगया १३१ इसकेपीछेसबसेनाके लोगोंको बड़ा आश्चर्य्य हुआ और सबने वासुदेवजीकी और अर्जुन की प्रशंसाकरी १३२ हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र अर्जुनके हाथसे राजा जयद्रथ के मारेजानेपर उस अन्धकार को वासुदेवजीने दूर किया १३३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र आपके पुत्रोंने अपने सारथियों समेत

पीछे से जाना कि यह माया वासुदेवजी की पैदा की हुईथी १३४ हे राजा आठ अक्षौहिणी सेना को मारकर बड़े तेजस्वी अर्जुन के हाथसे आपका जमाई जयद्रथ इसरीतिसे मारा गया १३५ आपके पुत्रोंने जयद्रथको मराहुआ देखकर दुःखसे अश्रुपातोंको गेरा और विजय से निराश हुये १३६ हे शत्रुहन्ता राजा धृतराष्ट्र अर्जुन के हाथसे जयद्रथ के मारेजाने पर केशवजी और महाबाहु अर्जुन ने शंखको बजाया १३७ हे भरतवंशी भीमसेन वृष्णियोंमें श्रेष्ठ युधामन्यु और पराक्रमी उत्तमौजा ने भी पृथक्२ शंखों को बजाया १३८ धर्म्मराज युधिष्ठिर ने उस बड़े शब्द को सुनकर महात्मा अर्जुन के हाथसे जयद्रथ को मारा हुआ माना १३९ इसके पीछे बाजों के शब्दोंसे अपने शूरवीरों को प्रसन्न किया और द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी वह लोग युद्धमें सन्मुख वर्त्तमान हुये १४० हे राजा इसके पीछे सूर्य्यास्त होनेपर द्रोणाचार्य्य का युद्ध सोमकों के साथ जारी हुआ वह युद्ध भी रोमहर्षण करनेवालाथा १४१ फिर सब उपायों से द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी वह महारथी जयद्रथ के मरने पर युद्ध करनेवाले हुये १४२ फिर विजय से मतवाले वह सब पांडव विजय को पाकर जयद्रथ को मारकर जहां तहां द्रोणाचार्य्य से युद्ध करने लगे १४३ इसके पीछे महाबाहु अर्जुन ने भी राजा जयद्रथ को मारकर रथियों में श्रेष्ठ आपके शूरवीरों से युद्ध किया १४४ जैसे कि देवराज इन्द्र देवताओं के शत्रु असुरों को और उदय हुआ सूर्य्य अन्धकारको दूर करते हैं उसीप्रकार उस अति शूरवीर अर्जुन ने चारों ओरसे शत्रुओं को छिन्न भिन्न कर दिया और अपनी पूर्व्व प्रतिज्ञाको दूर किया १४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिजयद्रथवधेशतोपरिषट्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः१४६॥

एकसौसैंतालीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय अर्जुनके हाथसे उस वीर जयद्रथके मरने पर मेरे पुत्रोंने जो२ किया वह सब मुझसेकहो १ संजयबोले कि हे

भरतवंशी युद्धमें अर्जुनकेमारेहुयेजयद्रथको देखकरक्रोधयुक्त कृपाचार्य ने २ बाणोंको बड़ी वर्षासे अर्जुनको ढकदिया और अश्वत्थामा भी रथमें सवारहोकर अर्जुनके सन्मुखगये ३ इनरथियोंमें श्रेष्ठ दोनों ने रथकी सवारीके द्वारा दोनोंओर से तीक्ष्णबाणोंकी बर्षाकरी ४ इसप्रकार दोनोंकी बड़ी बाणवर्षासे पीड़ामान उस रथियोंमें श्रेष्ठ महाबाहु अर्जुनने बड़ीपीड़ा को पाया ५ उस युद्ध में गुरूको और गुरुपुत्रको न मारनेके अभिलाषी उस कुन्तीनन्दन अर्जुनने अस्त्रों के अभ्यासकी पूर्णताको प्रकट किया ६ न मारने के अभिलाषी अर्जुनने अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य के अस्त्रों को अपने अस्त्रों से रोककर मन्दवेगवाले बाणोंको उनदोनोंके ऊपर छोड़ा ७ अर्जुन से छोड़ेहुये उन बिशिखनाम बाणोंनेभी उनको अत्यन्त घायलकिया और उनदोनोंनेबाणोंकी आधिक्यतासेबड़ीपीड़ाकोपाया ८ हे राजा फिर अर्जुनके बाणोंसे पीड़ामान कृपाचार्य्य रथके स्थानमेंहीब्या-कुल हुये और मूर्च्छाको पाया ९ सारथी बाणों से पीड़ित अपने स्वामीको अचेत जानकर और मरणप्राय समझकर दूरलेगया १० हे महाराज युद्धमें उस कृपाचार्य्य के पराजय होनेपर अश्वत्थामा जीभी अर्जुन से हटगये ११ उस बड़ेधनुषधारी अर्जुनने कृपाचार्य्य को रथके ऊपर बाणोंसे पीड़ित और अचेत देखकर बड़ा बिलाप किया १२ और अश्रुपूरित महादुःखी होकरयह बचनबोला कि बड़े ज्ञानी और इसनाशके देखनेवाले बिदुरजीने कुलके नाशकरनेवाले दुर्य्योधनके उत्पन्न होनेपर राजा धृतराष्ट्रसे यह कहाथा कि बहुत अच्छाहै इसकुल कलंकीको परलोकमें पहुंचाना चाहिये १३ । १४ इससेउत्तम २ कौरवोंको महाभयउत्पन्नहागा उससत्यवक्ताकाअब वहबचन बर्त्तमानहुआ १५ अब उस दुर्य्योधनके कारणसेगुरूजीको नरशय्यापर बर्त्तमानदेखताहूं क्षत्रीके आचारबल और पराक्रमको धिक्कार है १६ मुझसा कौनसा मनुष्य ब्राह्मण गुरूसे शत्रुताकरे मेरे आचार्य्य ऋषिके पुत्रहैं और द्रोणाचार्य्यके मित्रहैं १७ यह कृपाचार्य्य मेरेबाणोंसे पीड़ामानरथके स्थानपरसोतेहैं अनिच्छासे

ही मैंने विशिखनाम बाणोंसे पीड़ामान किये १८ यह गुरूजी बैठ-
नेके स्थानमें व्याकुल होकर मेरेप्राणोंको पीड़ादेतेहैं पुत्रके शोकसे
दुःखी बाणोंसे पीड़ित १६ उस पापधर्मपर चलनेवाले मुझ क्षत्रीके
बहुत बाणोंसे घायल यह गुरूजी निश्चय करके मेरे पुत्रके मरनेसे
फिर मुझको शोचतेहैं २० श्रीकृष्णजी इस दशामें एक अपनेरथपर
पड़ेहुये कृपाचार्य्य कोदेखो जोउत्तमलोग गुरुओंसे विद्याको पढ़कर
२१ इसलोकमें अभीष्ट दक्षिणाओंको देतेहैं वह देवभावको पातेहैं
औरनीचदुराचारीपुरुषगुरुओंसेविद्याकोलेकर२२ उनकोहीमारतेहैं
वहनिश्चय करकेनरकगामीहैं मैंनेयह कर्म अवश्य नरकके निमित्त
किया २३ बाणोंकी वर्षासे रथपर कृपाचार्य्यजीकोपीड़ामान करने
वाले मैंने ऐसाकिया पूर्व्वसमयमें अस्त्रविद्याको उपदेश करते समय
कृपाचार्य्यने मुझसेकहाथा २४ कि हेकौरव किसीदशामेंभी गुरूपर
न प्रहार करनाचाहिये इनमहात्मा आचार्य्यजीका वहबचन२५ अब
युद्धभूमिमें बाणोंकी वर्षाकरनेवाला मैंकाममें न लाया उसबड़ेपूजाके
योग्य मुखनमोड़नेवाले कृपाचार्य्यकेअर्थ नमस्कारहै २६ हेश्रीकृष्ण
जीमुझको धिक्कार है जो मैं इनपर प्रहार करताहूं उन कृपाचार्य्यके
रथकेपास इसरीतिसे अर्जुनके विलापकरनेपर २७ कर्ण जयद्रथको
मरादेखकर सन्मुखगया २८ दोनों पांचाल देशी और सात्यकी अ-
कस्मात् सन्मुखतामें गये महारथी अर्जुनसन्मुखआनेवाले कर्ण को
देखकर२६ हंसता हुआ वासुदेवजीसे यह वचन बोला कि यहकर्ण
सात्यकीकेरथपरआताहै ३० निश्चय करके यहयुद्धमें भूरिश्रवाका
मृतकदेखना नहींसहताहै हेजनार्द्दनजी जहांपरजाताहै वहांपरआप
इनघोड़ोंको चलायमान करो ३१ यहकर्ण सात्यकीको भूरिश्रवाके
मार्गमें नहींपहुंचावे अर्जुनके इसवचनकोसुनकर महाबाहु केशवजी
३२ समयके अनुसार इस वचनको बोलेकि हे अर्जुन यह महाबाहु
अकेला सात्यकी भी कर्णके लिये बहुतहै ३३ फिर द्रौपदीके पुत्रों
समेत यह यादव सात्यकी क्योंन समर्थहोगा हे अर्जुन तेरायुद्ध क-
र्णकेसाथ तबतक योग्यनहीं है ३४ जबतक बड़ी उल्काके समान

ज्वलित रूप इन्द्रकी शक्ति इसके पासबर्त्तमानहै हे शत्रुओंके मारने वाले यह पूजित शक्ति तेरेही निमित्त रक्षाकी जातीहै ३५ इसहेतु से कर्ण इच्छानुसार सात्यकी के सन्मुख खुशी से जाय हे अर्जुन मैं इस दुरात्माके कालको जतलाऊंगा जिससमय तू इसको तीक्ष्ण बाणसे पृथ्वीपर गिरावेगा ३६ धृतराष्ट्र बोले कि भूरिश्रवाके मरने और जयद्रथके गिराने पर कर्ण के साथ वीर सात्यकीका जो यह संग्रामहै ३७ और रथसे विहीन सात्यकी और चक्रकेरक्षक दोनों पांचालदेशी किस रथपर सवार हुये हे संजय वह मुझसे कहो ३८ संजयबोले कि बड़ेयुद्धमें जैसा२वृत्तान्त हुआहै उसको कहताहूंआप स्थिर चित्त होकर अपने दुष्टकर्म को सुनो ३९ हे प्रभु प्रथमही श्रीकृष्णजी ने अपने चित्त से इसबात को जानाथा जैसे कि वीर सात्यकी भूरिश्रवा के हाथसे विजय करनेके योग्यथा ४० हे राजा वह श्रीकृष्णजी भूतभविष्य और बर्त्तमान इन तीनोंकालोंकी बातों को जानते हैं हे राजा उस महाबलीने इसहेतु से दारुक सारथी को बुलाकर आज्ञाकरी ४१ कि मेरा रथ बिधिके अनुसार जोड़ो देवतागंधर्व यक्ष सर्पराक्षस४२और मनुष्य इनमेंसे कोईभीश्रीकृष्ण और अर्जुन के बिजय करनेको समर्थ नहींहै जिनमें मुख्यब्रह्माजीहैं उनदेवता और सिद्धोंने उनको जानाहै ४३ उनदोनोंका बड़ाप्रभाव है और जैसेवह युद्धहुआ उसकोउसीप्रकारसे कहताहूं किमाधवजी नेसात्यकीको रथसेरहित और कर्णको युद्धमें सन्नद्ध देखकर ४४ बड़े शब्दवाले शंखको बड़ेस्वरसे बजाया दारुकने उस इंगितको जानके और शंखके शब्दको सुनकर ४५गरुड़ मूर्त्ति वालेऊंचीध्वजा रखनेवाले रथको उसके पास पहुंचाया वह शिनीकापौत्र सात्यकी केशवजीकी सलाहसे उस दारुक सारथीसेयुक्त ४६ अग्नि सूर्य्यके समान रथपर सवार हुआ इच्छानुसार चलनेवाले बड़ेवेगवान् सुवर्णके सामानों से अलंकृत शैब्य सुग्रीव मेघपुष्प बलाहक नाम बड़े घोड़ों से संयुक्त बिमान रूप उस रथपर चढ़कर ४७ । ४८ बहुतशायकों को फैलाता हुआ सात्यकी कर्णकेसन्मुख गया और

चक्र रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजस ४९ अर्जुन के रथको छोड़ कर कर्ण के सन्मुख गये हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णभी बाणोंकी वर्षा को छोड़ता ५० अजेय सात्यकी के सन्मुखगया उसप्रकार का युद्ध देवता गन्धर्व और असुरों का भी पृथ्वी और स्वर्गमें नहीं सुनागया जिसको देखकर रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों समेत सबसेना भी युद्ध करने से ठहरगई ५१ । ५२ अर्थात् वह सबलोग उन दोनोंके कर्मों को देखकर अचेत थे उसके पीछे सब ने भी उसबुद्धि से बाहरवाले युद्ध को देखा ५३हे राजा उनदोनों का युद्ध और दारुक का सारथीपन गत प्रत्यागत मंडल और रथ सवार काश्यप गोत्री सारथी के कर्म से आकाशमें वर्त्तमान देवता गंधर्व और पृथ्वी के सबमनुष्य आश्चर्य्यित होकर कर्ण औरसात्य-की के युद्ध को देखने में प्रवृत्तहुये वह दोनों पराक्रमी ईर्षाकरने वाले युद्धमें मित्रके लिये पराक्रम करनेवाले हुये ५६ हे महाराज देवताके समान कर्ण और सात्यकीने परस्पर बाणोंकी बर्षाकोवर-साया ५७ हे भूरिश्रवा और जलसिन्धके मारनेको क्षमा न करने वाले कर्णने शायकोंकी बर्षासे शिनीके पौत्र सात्यकी को घायल करके अचेत करदिया ५८ हे शत्रु विजयी शोकसे पूर्ण बड़े सर्पकी समान श्वासलेता नेत्रोंसे भस्म करता क्रोधयुक्त कर्ण ५९ तीव्रता से फिर सात्यकी के सन्मुख दौड़ा तब सात्यकी उसको क्रोध-युक्त देखकर ६० बड़ी बाणोंकी वर्षासे ऐसे युद्धकरने लगा जैसे कि हाथीके साथ हाथीयुद्ध करता है व्याघ्रके समान वेगवान् अनुपम पराक्रमी सन्मुख होनेवाले नरोत्तमोंने ६१ युद्ध में परस्पर घायल किया हे धृतराष्ट्र इसकेअनन्तर सात्यकीने अत्यन्त लोहमयी बाणों से कर्णको सब अंगोंपर फिर घायल किया और भल्लसे उसके सारथीको रथकीनीढ़से गिरादिया ६३ और तीक्ष्ण बाणोंसे उसके चारों श्वेतघोड़ों को मारा हे पुरुषोत्तम फिर ध्वजाको काटकर रथ के सौ टुकड़े किये ६४ इसरीतिसे आपके पुत्रके देखतेहुये सात्य-कीने कर्णको विरथ करदिया हे राजा फिरआपके उदासरूप महा-

रथी ६५ कर्णकापुत्र वृषसेन मद्रदेशकाराजा शल्य और अश्वत्थामा इन तीनोंने सात्यकीको सबओरसे घेरलिया ६६ इसकेपीछे सब सेना महाव्याकुलहुई और कुछनहीं जानागया हेराजा इसप्रकार सात्यकीकेहाथसे वीरकर्णके विरथ करनेपर ६७सबसेनाओंमें बड़ा हाहाकारहुआ सात्यकीके बाणोंसे विरथ कियाहुआ कर्णभी ६८ श्वासलेताहुआ शीघ्रही दुर्योधनके रथपरसवारहुआ लड़कपनसेही आपके पुत्रकी प्रीतिको मानता ६९ और राज्य प्रदानसे की हुई प्रतिज्ञाको पूरीकरना चाहता रथपर सवारहुआ हेराजा इसप्रकार रथसे रहित कर्णको और दुश्शासनादिक आपके वीर पुत्रोंको ७० प्रबल होनेवाले सात्यकीने नहींमारा पूर्वसमय में भीमसेन और अर्जुनकी कीहुई प्रतिज्ञाकी रक्षा करतेहुये सात्यकी ने ७१ उनको रथसे रहित और अचेतभी किया परन्तु प्राणोंसे पृथक् नहींकिया क्योंकि भीमसेनने तेरे पुत्रोंके मारनेकीप्रतिज्ञाकरी ७२ और अर्जुन ने दूसरे द्यूतमें कर्णकेमारनेकी प्रतिज्ञाकरी इसकेअनन्तर उनकर्ण आदिकोंने सात्यकीके मारने में उपायकिया ७३ परन्तु वह सब अनेक उपायोंसेभी उस महारथी सात्यकीके मारनेको समर्थ नहीं हुये उनकेनाम अश्वत्थामा,कृतबर्मा,आदि अन्य२ महारथीथे धर्म-राजके प्रियकारी परलोकके चाहनेवाले सात्यकीने एकही धनुष के द्वारा हजारों क्षत्रीलोग विजयकिये ७५ पराक्रममें श्रीकृष्ण और अर्जुनके समान शत्रु संतापी हँसतेहुये सात्यकीने आपकी सेनाओं को विजयकिया ७६ हे नरोत्तम लोकमें श्रीकृष्णजी धनुषधारी अर्जुन और तीसरा सात्यकी इनतीनों धनुषधारियोंके विशेष चौथा कोई धनुषधारी नहीं वर्त्तमानहै७७धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें श्रीकृष्ण जीके समान सात्यकीने बासुदेवजी के अजेय रथपर सवार होकर कर्णको रथसेहीन कर दिया ७८ अपने भुजबलसे अहंकारी वह शत्रु सन्तापी दारुक सारथी समेत कहीं दूसरे रथपरभी सवार हुआ ७९ मैं उसको सुना चाहताहूं क्योंकि तुम वर्णन करने में सावधान हो मैं जिसको असह्य मानता हूं हेसंजय उसको मुझसे

कहो ८० संजयबोले कि हे राजा जैसा वृत्तान्तहै उसको सुनो दारुक के छोटेभाई बड़ेबुद्धिमान्ने शीघ्ररीति से अलंकृत ८१ लोहे और सुनहरी वस्त्रोंसेभी अलंकृत ग्रीवा हजारों नक्षत्रोंसे जटित सिंहरूप ध्वजापताकावाले ८२ वायुके समान शीघ्रगामी सुवर्णके समानोंसे शोभित चन्द्रवर्ण और सबशब्दोंको उल्लंघन करके चलनेवाले दृढ़ और सुनहरी जड़ावके कवच रखनेवाले और घोड़ों में श्रेष्ठ सिन्धदेशी घोड़ोंसे युक्त घंटाजालोंके शब्दोंसे व्याकुल शक्ति तोमर रूप बिजली रखनेवाले ८४ युद्ध के सामान और अनेकप्रकारके शस्त्रोंसे युक्त बादलके समान गंभीर शब्द रखनेवाले रथको तैयार किया ८५ सात्यकी उसरथपर सवारहोकर आपकी सेनाकेसन्मुख गया दारुकभी इच्छानुसार केशवजीके पासगया ८६ हेराजा शंख और गौके दुग्ध समान श्वेत सुनहरी जड़ाऊ कवच रखनेवाले बड़े वेगवान् उत्तमघोड़ोंसे और सुनहरी कक्षावाली ध्वजासे युक्तअपूर्व यंत्र और पताकासे युक्त बहुतसे शस्त्रों से पूर्ण अच्छे सारथीवाले उत्तम कर्णके रथकोभी ८७। ८८ वर्त्तमानकिया कर्णभी उसपर बैठकर शत्रुओंके सन्मुखगया यह जो २ आपनेपूछा वह सब आपसे वर्णनकिया ८९ फिरभी अपने अन्यायसे होनेवाले इस विनाशको सुनो कि भीमसेनने आपके इकत्तीस पुत्रमारे ९० सदैव कठिन युद्ध करनेवाले दुर्मुखको आदिलेकर सात्यकी और अर्जुनने हजारोंशूर वीरोंकोमारा ९१ हे भरतवंशी धृतराष्ट्र इसप्रकार आपकी कुमंत्रता में भीष्म और भगदत्त आदि करके यहविनाश वर्त्तमानहुआ ९२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिकर्णसात्यकीयुद्धे शतोपरिसप्तचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४७ ॥

एकसौअरतालीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तब मेरे और पांडवोंके शूरवीरोंकी उसदशा के होनेपर भीमसेन अर्जुन और सात्यकीने क्याकिया १ संजय बोले कि रथसे विहीन कर्णके वचनरूप भालोंसे पीड़ित क्रोधके वशीभूत भीमसेनने अर्जुनसे यह वचनकहा २ कि हे अर्जुन कर्ण

ने जो यह बचन आपके देखतेहुये मुझसे कहे कि हे बड़े भोजन करनेवाले बहुत उदर रखनेवाले अज्ञान अस्त्रों से अभिज्ञ युद्ध में नपुंसक बालक भीमसेन युद्ध मतकरो ३ यहबचन कर्णने बारंबारकहा ऐसेप्रकारसे कहनेवाला मेरे हाथसे मारनेके योग्यहै हे भरतवंशी मुझको उसने इसप्रकारसे कहाहै और ऐसाकहनेवाला मुझसे मारनेके योग्यहै४ हेमहाबाहु मैंने यहब्रत आपकेसाथकिया हेअर्जुन जैसा कि तेराब्रतहै उसीप्रकार निस्संदेह मेराभी ब्रतहै ५ हे नरोत्तम अर्जुन उसके मारनेके निमित्त इसमेरे बचनको स्मरण करो और वह जिसप्रकारसे सत्य होय उसीप्रकारसे करौ ६ उस बड़े पराक्रमी भीमसेनके उसबचनको सुनकर युद्धमें अर्जुन कुछ समीपजाकर कर्णसेबोले ७ हे अपनीप्रशंसा करनेवाले अधर्मबुद्धि निरर्थक दृष्टिवाले सूतपुत्र मेरे इन बचनोंको सुन ८ युद्धमें शूरोंके कर्म दोप्रकारकेहैं एक विजय और दूसरी पराजय युद्ध करनेवाले इन्द्रकेभी वहदोनों कर्मबिनाशवान्हैं ९ मृत्युकाचाहनेवाला इंद्रियों सेआकुल और विरथहोकर मुझसे मारनेके योग्य तुझको जानकर युद्धमें विजय करके तुमको जीवता छोड़दिया १० जो तुमने युद्धमें लड़नेवाले महाबली भीमसेनको किसी दशामें दैवयोग से विरथ करकेरूखे और अयोग्य बचनकहे ११ यह बड़ाअधर्महै और अच्छे लोगोंसे करनेके योग्यनहींहै शत्रुको विजय करके अपनी प्रशंसा नहीं करतेहैं और न कठोर बचन कहते हैं १२ नरोत्तम शूर और सन्तलोग किसीकी निन्दा नहीं करतेहैं हे सूतके पुत्रतुम प्राकृति बुद्धि रखनेवाले होकर ऐसे २ बचनोंको कहतेहो १३ युद्ध करने वाले पराक्रमी शूर और श्रेष्ठलोगोंके ब्रतमें प्रीति रखनेवाले भीमसेनको जो तुमने अत्यन्त निरर्थक सुननेके अयोग्य चपलतासे अनभ्यस्त अप्रिय बचन कहे वहतेरे बचन सत्यनहींहैं सब सेनाओं के और केशवजी समेत मेरेदेखते १५ युद्धमें तू बहुधा भीमसेन विरथ कियागयाहै पांडव भीमसेनने उस २ समयपर तुमको कभी कठोर बचननहींकहा १६ जोकि तुमने भीमसेनको ऐसेअयोग्य और रूखे

वचन सुनाये और अभिमन्यु मेरी अविद्यमानतामें तुम्हारे हाथसे मारागया १७ इसहेतुसे इस पापकर्म के फलको शीघ्रमावोगे हे दुर्बुद्धीतुमने अपने नाशके लिये उसकेधनुषकोकाटा १८ हे अज्ञानी इसहेतु से भृत्यपुत्र और बांधवों समेत मेरेहाथसे तूमारनेके योग्य है तुमसबकर्मोंको करो तेरे निमित्त बड़ाभय उत्पन्न होगा १९ युद्ध में तेरेदेखतेहुये वृषसेनको मारूंगा और जो दूसरे राजालोग भी भूलसे मेरेसन्मुख आवेंगे उन सबकोभी मारूंगा मैं सत्यतासेशस्त्रों की शपथ खाताहूं हे अज्ञानी निर्बुद्धी युद्धमें अपने को बुद्धिमान् माननेवाले तुझको २१गिराहुआ देख वह निर्बुद्धी दुर्य्योधन अत्यन्त दुःखीहोगा अर्जुनकी ओरसे कर्णके पुत्रके मारनेकी प्रतिज्ञा करने पर२२रथीलोगोंके बड़ेकठिन शब्दहुये उसबड़ेभयकारी कठिन युद्ध के वर्त्तमान होनेपर २३ मंद किरणोंका रखनेवाला सूर्य्य अस्ता-चलके पासगया हे राजा इसकेपीछे इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्ण जी युद्धके मुखपर नियत २४ प्रतिज्ञा पूरीकरनेवाले अर्जुनसे मिल कर यहवचन बोले हे विजयके अभ्यासी अर्जुन तुमने प्रारब्ध से अपनी बड़ी प्रतिज्ञाको पूर्णकिया २५ और प्रारब्धसे पापीवृद्धक्षेत्र अपने पुत्रसमेत मारागया हे भरतवंशी अर्जुन देवताओंकी सेनाभी दुर्योधनकी सेनाको पाकर २६ युद्धमें पीड़ाको पातीहै इसमेंबिचार न करनाचाहिये हे पुरुषोत्तम मैं विचार करता हुआ लोकोंमें कहीं उस पुरुषको नहीं देखताहूं २७ जो इस सेनासे युद्धकरे दुर्योधन के कारणसे इकट्ठे होनेवाले बड़ेप्रभाववाले अपनी समान और अपनेसेभी अधिक बहुतसे राजालोग तुम्हारे सन्मुखहुये क्रोधयुक्त कवचधारी वहसब शूरवीर तुझको युद्धमें पाकर सन्मुख वर्त्तमान नहीं रहे २८ कोई युद्धमें रुद्र इन्द्र और यमराजकी समानता रखने वाले तेरे इसप्रकारके बलपराक्रमके करनेको समर्थनहींहुये३०अब जिसप्रकारके पराक्रमको हे शत्रुसंतापी तुझ अकेलेने किया इसी प्रकार भाईआदि समेत दुरात्माकर्णके मारेजानेपर ३१ तुझविजय करनेवाले की जिसके कि शत्रुमारेगये फिर प्रशंसा करूंगा अर्जुनने

उनको उत्तरदिया कि हे माधवजी यहसब आपहीकी कृपासे हुआ और आगेभी सब पूराहोगा ३२ यहप्रतिज्ञा जो मैंनेपूरी कीहै इसको देवताभी कठिनतासे पूरी करसक्ते हैं उनलोगोंकी विजय आश्चर्य्य से रहितहै जिनलोगों के सहाय और साथमें हे केशव जी आप हो ३३ हे प्रभु श्रीकृष्ण जी राजा युधिष्ठिर आपकी कृपासे संपूर्ण पृथ्वीको पावेंगे यहआपकाही प्रभाव है और आपही की विजयहै ३४ हे मधुसूदनजी हमसदैव आपसे पोषणके योग्यहैं इसके पीछे ऐसे कहेहुये और धीरे २ घोड़ोंको चलातेहुये श्रीकृष्ण जीने ३५ वह बड़ीकठिन और भयकारी युद्धभूमि अर्जुनको दिखलाई ३६ श्रीकृष्णजीबोले कि युद्धमें विजयको और विख्यात उत्तम यशको चाहते शूरराजालोग तेरेबाणोंसे मरेहुये पृथ्वीपर सोतेहैं ३७ गिरे हुयेशस्त्र और भूषणवाले घोड़े रथ और हाथियोंसे जुदे टूटे चूर्णीभूत कवचवाले उनलोगोंने बड़ीव्याकुलताको पाया ३८ सजीव निर्जीव बड़े प्रकाशित रूपोंसे युक्तहैं निर्जीव राजालोग जीवतेसे दिखाई देतेहैं ३९ उन्होंके सुनहरी पुंखबाण और नानाप्रकार के तीक्ष्ण शस्त्र सवारी और धनुष आदिकों से व्याप्त पृथ्वी को देखो ४० कवच ढाल हार कुंडलधारी हस्त त्राण मुकुट माला चूड़ामणि व-स्त्र ४१ कण्ठसूत्र, बाजूबन्द, प्रकाशितनिष्क, और अन्य२जड़ाऊभूष-णोंसे पृथ्वी प्रकाशमान होरहीहै हे भरतवंशी ४२ अनुकर्ष, उपा-संग, पताका, ध्वजा, वस्त्र, अधिष्ठान, ईशादण्ड, कवंधुर ४३ चूर्णकियेहुये अपूर्व रथचक्र, अनेक प्रकारकेअक्ष, युग, योक्त्र, कलाप, धनुष, शायक, प्रस्तोम, कुथा, परिघ, अंकुश, शक्ति, भिंडिपाल, तूणीर, शूल, फरसे ४५ प्रास, तोमर, कुन्त, यष्टी, शतघ्नी, भुशुंडी, खड्ग ४६ मूशल, मुद्गल, गदा, कणप, सुवर्णजटितकक्षा ४७ और गजेन्द्रोंकेघंटे और नानाप्रकारके सामान, माला, अनेक प्रकार के भूषण, बहुमूल्यवस्त्र ४८ इनसबटूटेहुये पदार्थोंसेपृथ्वी ऐसी शोभाय-मान है जैसे कि शरदऋतुका आकाश ग्रहोंसेशोभायमान होताहै पृथ्वीपर पृथ्वीकेही अर्थ पृथ्वीके स्वामी मारेगये ४९ पृथ्वी को

अपने अंगोंसे ढककर ऐसेसोगये जैसेकिलोग अपनी प्यारी स्त्रियों को छिपाकर सोतेहैं शस्त्रोंके प्रहारोंसे उत्पन्न होनेवाले गुफा मुख घावोंसे बहुतसे रुधिरको श्रवतेहुये पर्व्वतोंके शिखर समान ऐरावतके समान इनहाथियोंको ऐसेदेखो जैसे कि गन्दरारूपी मुखोंके साथझिरनेवाले पहाड़होतेहैं ५०।५१ हे वीरबाणोंसे घायल पृथ्वी पर झागडालनेवाले इनहाथियोंकोदेखो और स्वर्णमयीसामानोंसे अलंकृत पड़ेहुये घोड़ोंको देखो ५२ हे तात अर्जुन गंधर्वनगर के रूप उनरथोंको जिनके कि स्वामी मारेगये ध्वजा पताका अक्ष रथ चक्रादिक टूटे और सारथी मारेगये ५३ वह कूबरयुग टूटेहुये ईशादण्ड कवन्धुरसे टूटेहुये विमानोंके समान दीखनेवालेपृथ्वीपर टूटेहुयेदेखो ५४ हे वीर सैकड़ों हजारों मृतकपतिलोग और रुधिर से लिप्तसोतेहुये धनुषधारी और ढालबन्दोंको देखो ५५ हे महाबाहु तेरेबाणोंसे घायल शरीर और सबअंगोंसे पृथ्वीको मिलकर सोतेहुये शूरवीरोंके बालोंको देखो ५६ हे नरोत्तम दुःखसे देखनेके योग्य पृथ्वीको देखो जो कि गिरायेहुये हाथीघोड़े और रथोंसे पूर्ण रुधिर मांसरूपी बड़ी कीच रखनेवाली और राक्षस श्वान भेड़िये और पिशाचोंको प्रसन्न करनेवालीहै ५७ हेप्रभु अर्जुन युद्धभूमि में यशका बढ़ानेवाला यह बड़ाकर्म तुझीमें शोभित होताहै इसप्रकार से बड़ेयुद्धमें दैत्य दानवोंके मारनेके अभिलाषी इन्द्रादिक देवताओं मेंभीश्रेष्ठ ५८ शत्रुओंके मारनेवाले और शीघ्रतासे शत्रुओंकोपृथ्वी अर्जुनकोदिखलातेहुये श्रीकृष्णजीने अजातशत्रुयुधिष्ठिरको मिलकर जयद्रथ को मृतकहुआ वर्णन किया ५९ चमर व्यजन छत्र ध्वजा घोड़े रथहाथी अनेकप्रकार प्रयक् घोड़ों के परिकर्षण ६० विचित्र कुथा बहुमूल्य सामानवाले रथ और वीरों से आच्छादित पृथ्वी को देखो मानो यह स्त्रीरूपा पृथ्वी अपूर्व वस्त्रोंसे अलंकृत है ६१ अलंकृत हाथियों से गिरे हुये बहुतेरे वीरों को हाथियों समेत ऐसे देखो जैसे कि वज्र से मरे हुये पर्व्वतों के शिखरों से गिरेहुये सिंह होतेहैं ६२ संजय बोले कि इसप्रकार अर्जुन को युद्धभूमि दिख-

लाते और अपने विजयी वीरों से संयुक्त श्रीकृष्णजी ने पांचजन्य को बजाया ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशततोपरिअष्टचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४८॥

एकसौउनचासका अध्याय॥

संजय बोले कि जयद्रथ के मारे जाने पर उन अत्यन्त प्रसन्न श्रीकृष्ण जीने धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिर से प्रणाम पूर्व्वक मिल कर यह बचन कहा १ हे राजेन्द्र नरोत्तम तुम मृतक शत्रुओं से वृद्धिको पातेहो और आपके छोटे भाई ने प्रारब्ध से प्रतिज्ञा को पूरा किया २ इसके पीछे श्रीकृष्णजी के इसप्रकार कहने पर वह प्रसन्न चित्त शत्रु के पुरको विजय करनेवाला राजा युधिष्ठिर रथ से उतरकर ३ आनन्द के अश्रुपातों से भीजा हुआ कमल केसमान प्रभावाले उज्ज्वल मुखको साफ करके दोनों कृष्णोंसेप्रीतिके साथ मिला ४ और बोला कि हे कमललोचन तुमसे इस प्रिय बात को सुनकर मैं प्रसन्नता के अन्तको ऐसे नहीं पाताहूं जैसे कि पार होने का अभिलाषी मनुष्य समुद्र के अन्तको नहीं पाता है ५ हे श्रीकृष्णजी बुद्धिमान् अर्जुनने यह अत्यन्त अपूर्व्व कर्म किया प्रारब्ध से युद्धमें भारसे रहित हुये दोनों महारथियों को देखता हूं ६ और प्रारब्धसेहीमनुष्योंमें नीच पापी जयद्रथ मारागया और दोनों कृष्णोंने भाग्य से मेरा बड़ा हर्ष उत्पन्न किया ७ हे गोविन्द जी आपसे रक्षित उस अर्जुन ने पापी जयद्रथ को मारकर मुझको बड़ाआनन्दित किया जिनके आप रक्षकहैं उन लोगोंका कर्मअत्यन्त अपूर्व्व नहींहै ८ हे मधुसूदनजी सब लोकके आपही नाथ और गुरूहो आपहीकी कृपासे हम शत्रुओंको विजय करेंगे ९ तुम सदैव सर्वात्मभावसे हमारे प्रिय और वृद्धिमें नियत हो हमने तुम्हारी शरण लेकर युद्ध प्रारंभ किया १० हे इन्द्र के छोटे भाई जैसे कि युद्धमें देवताओं के हाथसे असुरोंके मरनेमें इन्द्रको प्रसन्नता होतीहै उसीप्रकार आपकी कृपालुता से और अर्जुन की वीरतासे मुझको

प्रसन्नता प्राप्त हुई हे जनार्दन जी यह कर्म देवताओं से भी होना असंभव है ११ जो इस अर्जुनने आपके बुद्धि बल और पराक्रम के द्वारा इस कर्म्म को किया हे श्रीकृष्णजी मैंने बाल्यावस्था सेही आपके कर्मोंको सुना जो कि बुद्धि से बाहर दिव्य बड़े और बहुतहैं तभी मैंने शत्रुओं को मरा हुआ और सब पृथ्वीका प्राप्त होना जानलिया १३ हे इन्द्रियोंके स्वामी बीर श्रीकृष्णजी इन्द्रने आपकी कृपासे हजारों दैत्यों को मारकर देवताओं की ईश्वरता को पाया और स्थावर जंगम जगत् अपनी बुद्धिमें नियत जप और होमोंमें प्रवृत्तहै १४ पूर्वसमय में यह सब जगत् जलरूप और अन्धकार रूपथा हे महाबाहु पुरुषोत्तम फिर आपही की कृपासे यह संसार प्रकट हुआ १५ जो पुरुष सबलोकों के उत्पन्न करने वाले अविनाशी परमात्मा श्रीकृष्णजी को देखते हैं वह कभी मोह को नहीं पातेहैं १६ हे इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी जो भक्तजन आपहीको आदि अन्त रखनेवाला सब सृष्टिका स्वामी और अबिनाशी ईश्वर जानते हैं वह सब आपत्तियों से पार होते हैं १७जो प्रपंच से पृथक् पुररूप शरीर का अधिष्ठान परमात्मा और ब्रह्मादिक देवताओंका उत्पत्ति का कारण है उस पुरुषोत्तमके प्राप्तहोने वाले को बड़ा ऐश्वर्य्य प्राप्त होताहै १८ चारोंवेद जिसको गातेहैं और जो वेदोंमें गाया जाता है उस परमात्मा को प्राप्त होकर उत्तम ऐश्वर्य्यों को पाता है १९ हे परमेश्वर ईश्वरोंके भी ईश्वर तिर्य्यग्गामी आदि सब नरोंकेईश्वर निष्पाप श्रीकृष्णजी चिरंजीवि मार्कण्डेय ऋषि आपके चरित्रों के जाननेवाले हैं २० पूर्वसमय में असित देवल और महातपस्वी नारदमुनिने आपके माहात्म्य और अनुभाव को वर्णन किया और मेरे पितामह व्यासजीने भी तुमको श्रेष्ठतर कहा तुम्हीं तेजहो तुम्हीं परब्रह्म हो तुम्हीं सत्य तुम्हीं बड़े सत्य २१ तुम्हीं तेज तुम्हीं उत्तम तेज तुम्हीं जगत् के कारण तुम्हीं से यह सब जड़ चैतन्यात्मक सृष्टि उत्पन्न है २२ प्रलय के होने पर यह सब जगत् फिर तुम्हीं में लय होताहै हे जगत्पति वेदज्ञ

पुरुषों ने तुम्हीं को आदि अन्त से रहित देवता विश्वका ईश्वर २३ धाता, अजन्मा, अव्यक्त, (अर्थात् मायासे पृथक्कहाहै) देवता भी सब सजीव जीवोंके तुझ आत्मा अनन्त विश्वतोमुख २४ गुप्त प्रथम जगत्के स्वामी नारायण और परमदेवता और परमात्मा ईश्वर को नहीं जानते हैं २५ जोकि ज्ञानके उत्पत्ति स्थान हरि विष्णु मोक्षाभिलाषियों के परमस्थान सबसे परे प्राचीन पुरीरूप शरीरों में बास करनेवाले प्राचीनों सेभी परेहो २६ इसलोक और स्वर्गलोकके मध्य तीनोंकालोंमें प्रकट होनेवाले आपके इन अनेकप्रकारके गुण और कर्मों की संख्या का करनेवाला यहां वर्त्तमान नहीं है २७ हम सब ओरसे ऐसे रक्षाके योग्य हैं जैसे कि देवता इन्द्र से रक्षा के योग्य होतेहैं इन्हीं हेतुओं से सब गुणसम्पन्न तुम हमलोगों के शुभचिन्तक निश्चय कियेगये २८ इसरीति से धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजीकी स्तुति की तब जनार्दन श्रीकृष्णजी यह योग्य बचन बोले २९ आपके उग्रतप और उत्तम धर्म साधुतापूर्वक सरलपन से पापी जयद्रथको मारा ३० हे पुरुषोत्तम तेरीकृपासे संयुक्त होकर इसअर्जुन ने हजारों शूरबीरों को मारकर जयद्रथ को मारा ३१ कर्म भुज बल निर्भयता शीघ्रता और बुद्धि की दृढ़ता में अर्जुन के समान कोई नहीं है ३२ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ जो यह तेरा भाई अर्जुन है उसने युद्धमें सेना का नाश करके जयद्रथ के शिरको काटा ३३ हे राजा इसके पीछे प्रभु युधिष्ठिर ने अर्जुन से मिलकर और उसके मुखको साफकर बिश्वास दिया कि हे अर्जुन तुमने बहुत बड़ा कर्म किया है यह कर्म देवताओं समेत इन्द्रसे भी सहनेके योग्य नहीं है ३५ हे शत्रुहन्ता तुम प्रारब्ध से भाररहित मृतक शत्रुवाले हो और प्रारब्ध से पापी जयद्रथ को मारकर यह तुम्हारी प्रतिज्ञा सत्यहुई ३६ बड़े यशस्वी राजा युधिष्ठिर ने इसप्रकार कहकर पवित्र सुगन्धित हाथसे अर्जुन की पीठको स्पर्श किया ३७ इसरीतिसे कहेहुये वह दोनों महात्मा श्रीकृष्णजी और पांडव अर्जुन राजा युधिष्ठिरसे बोले ३८ पापी राजा जयद्रथ आपको

क्रोधाग्नि से भस्महुआ और युद्धमें दुर्य्योधनकी बड़ीसेना भी ३६ मरी और मारीजातीहै और मारीजायगी हे शत्रुकेविजयकरनेवाले भरतवंशी हे कौरव आपकेही क्रोधसे मारेगये ४० हे बीर दुर्बुद्धी दुर्य्योधननेत्रोंसेही नाशकर्त्तारूपतुमको क्रोधयुक्तकरके युद्धमें मित्र बांधवों समेत प्राणोंको त्याग करेगा ४१ पूर्व्वसमयमें देवताओंसे भी बड़ी कठिनतासे विजय होनेवाले कौरवोंके पितामह भीष्मजी आपकेक्रोधसे घायल शरशय्यापर वर्त्तमानहोकर शयनकरतेहैं ४२ युद्धमें उन शत्रुहन्ताका विजय करना बड़ा कठिनथा वहभी मृत्युके वशीभूतहुये हे बड़ाई देनेवाले पांडव तुम जिसपर क्रोधयुक्तहो ४३ उसका राज्य प्राण लक्ष्मी पुत्र और अनेकप्रकारके सुख यह सब विनाशको पावेंगे ४४ हे शत्रुसंतापी सदैव तुझ राजधर्ममें प्रवृत्तके क्रोधयुक्त होनेपर कौरवोंको पुत्र पशु और बांधवों समेत नाशहुआ मानताहूं ४५ उसके पीछे बाणोंसे घायल महाबाहु भीमसेन और महारथी सात्यकी बड़े गुरूको दंडवत् करके ४६ पांचाल देशियोंसे आवृत पृथ्वीपर खड़े हुये उन बड़े धनुषधारी प्रसन्न चित्त हाथ जोड़े हुये आगे नियत दोनों बीरोंको देखकर ४७ युधिष्ठिरने उन दोनों भीमसेन और सात्यकीको आशीर्वाददिये प्रारब्धसे उनदोनों शूरोंको सेनासागर से पारउतरे ४८ द्रोणाचार्य्यरूपी ग्राहसेदुर्गम्य कृतवर्मारूपी समुद्रसे उत्तीर्ण देखताहूं और प्रारब्धसे युद्धमें पृथ्वी पर सब राजालोग विजय किये ४९ प्रारब्धसे युद्धमें तुम दोनोंको भी विजयी देखताहूं प्रारब्धहीसे महाबली कृतवर्मा और द्रोणा-चार्य्यको युद्धमें विजय किया ५० प्रारब्धसेही युद्धमेंकर्णभी बाणोंसे पराजय कियागया हे पुरुषोत्तमो तुम दोनोंके हाथसे शल्यने भी युद्धसे मुखफेरा ५१ प्रारब्धसे रथियों में श्रेष्ठ युद्धमें कुशल तुम दोनों को कुशलपूर्व्वक युद्धसे लौटकर आनेवाला देखताहूं ५२ में प्रारब्धसेही अपने आज्ञाकारी अधिकार और प्रतिष्ठाके आधीन सेनासागरसे पारहोनेवाले दोनोंवीरोंको देखताहूं ५३ मैं प्रार-ब्धसेही युद्धमें प्रशंसनीय पराजय न पानेवाले अपने प्राणों से भी

प्यारे दोनों बीरोंको देखताहूं ५४ राजा युधिष्ठिर उन सात्यकी और भीमसेन दोनों पुरुषोत्तमों से यह कहकर मिला और बड़े आनन्दके अश्रुपातों को छोड़ा ५५ हे राजा इसके पीछे पांडवोंकी सबसेना अत्यन्त प्रसन्न होकर युद्धमें प्रवृत्त होगई और युद्धके निमित्त मन किया ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः १४९ ॥

एकसौपचासका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा जयद्रथके मरनेपर आपका पुत्र दुर्यो-धन अश्रुपातों से युक्त महादुःखी होकर शत्रुओंके विजय करने में अधैर्य पूर्वक असाहस हुआ १ दुर्मन टूटी डाढ़वाले सर्पकी समान श्वासलेनेवाले दुष्टरूप सबलोकके अपराधी आपके पुत्रने बड़ी पीड़ाको पाया २ युद्धमें अर्जुन भीमसेन और सात्यकी से कियेहुये अपनी सेनाके महाभयकारी नाशको देखकर ३ उसरूपान्तरवाले दुर्बल दुःखी अश्रुपातोंसे भरे नेत्र दुर्य्योधनने माना कि इस पृथ्वी पर अर्जुनकी समान कोई शूरबीर नहींहै ४ हे श्रेष्ठ उसने बिश्वास करलिया कि युद्धमें क्रोधयुक्त अर्जुनके सन्मुखहोनेको न द्रोणाचार्य न कर्ण न अश्वत्थामा और न कृपाचार्य्यजी समर्थ हैं ५ अर्जुन ने मेरे सब महारथियोंको विजय करके युद्धमें जयद्रथको मारा और युद्धमें किसीने भी नहींरोंका ६ यह कौरवों की बड़ी सेना सबओरसे नाशमानहै इसका रक्षक साक्षात् इन्द्रभी नहीं होसक्ता जिसके कि आश्रयको लेकर युद्धमें शस्त्र चलावें वह कर्णयुद्धमें विजयकिया गया और जयद्रथ मारागया ८ मैंने जिसके पराक्रमका आश्रय लेकर सन्धि चाहनेवाले श्रीकृष्णजीको भी तृणके समान जाना वह कर्ण भी युद्धमें पराजय हुआ ९ हे भरतवंशी राजाधृतराष्ट्र इस प्रकार दुखित चित्त और सबलोक का अपराधी आपका पुत्र दर्शन करने को द्रोणाचार्य्यके पास आया १० वहां आकर उसने कौरवों के उस संपूर्ण नाशको और डूबजानेवाले आपके पुत्रों का और वि-

जय करनेवाले शत्रुओंका भी सब वृत्तान्त वर्णन किया ११ दुर्य्योधनबोला कि हे महाराजोंके आचार्य्यजी मेरे पितामह भीष्मजीको आदि लेकर इस बड़े विनाशको देखो १२ यह लोभी अभीष्ट सिद्ध करनेवाला शिखण्डी उन भीष्मपितामह को मारकर सब पांचालों समेतसेनाके आगे वर्त्तमान है १३ और अर्जुनने सात अक्षौहिणी सेनाकोमारकर आपके दूसरेशिष्य कठिनता से पराजय होनेवाले जयद्रथ को मारा १४ मेरी विजय चाहनेवाले कर्म्म कर्त्तायमलोकमें पहुंचेहुये शुभचिन्तक लोगोंकी अऋणताको मैं कैसे पाऊंगा १५ जो राजा लोग इस पृथ्वी को मेरे निमित्त चाहते हैं वह संसारवाली पृथ्वीकेराज्योंकोछोड़कर पृथ्वीपरसोतेहैं १६ मैं महानपुंसक मित्रों के ऐसे विनाशको करके हजार अश्वमेध यज्ञोंके द्वारा भी अपने पवित्रहोनेको नहींउत्साह करताहूं १७ मुझलोभी पापी धर्म्मके गुप्त करनेवाले की विजयको पुरुषार्थसे चाहनेवाले क्षत्रियोंने यमलोकको पाया १८ राजसभामें पृथ्वी मुझ दुराचारी मित्रोंके दुखदाई और शत्रुको अपनेमें प्रवेशकरनेको क्यों न विवर रूप हुई १९ जो मैं राजाओंके मध्यमें रुधिरलिप्त शरीर युद्धभूमि में घायल और शयन करनेवाले भीष्मपितामह की रक्षा करनेको समर्थ नहीं हुआ २० वह परलोक के विजय करनेवाले कठिनता से पराजय होनेवालेभीष्मजी मुझ नीच पुरुष और मित्रसे शत्रुता करने वाले अधर्मी से मिलकर क्या कहेंगे २१ प्राणों को त्याग करके मेरेही निमित्त युद्धमें प्रवृत्त सात्यकीके हाथसे मारे हुये बड़े धनुषधारी महारथी जलसिन्धको देखो२२ काम्बोज, अलम्बुष, और अन्य बहुत शुभचिन्तकों को मृतक देखकर अब जीवन से मुझको क्याप्रयोजनहै अर्थात् मेरा जीवन वृथाहै २३ मेरे अर्थ जो जीवन से प्रीति रहित मुखोंके न फेरनेवाले और मेरे शत्रुओंके विजय करने को बड़े २ उपायोंसे उद्योग करनेवाले शूर मारेगये २४ हे शत्रुसन्तापी अब मैं बड़ी सामर्थ्यसे उनकी अऋणताको पाकर यमुनाजी में उनको जलसे तृप्त करूंगा २५ हे सब शस्त्रधारियोंमें

श्रेष्ठ गुरूजी में आपसे सत्य२ प्रतिज्ञा करताहूं और यज्ञादिक कर्म और वापिका आदि बनानेके धर्म्मोंके फल और पुत्रों को भी शपथ खाताहूं २६ कि मैं युद्धमें उन सब पांचालोंको पांडवों समेत मार करशान्तीको पाऊंगा अथवा युद्धमें उनकी सालोक्यताको पाऊंगा २७ सो मैं वहीं जाऊंगा जहांपर कि मेरे निमित्त युद्धमें अर्जुनसेलड़कर वह पुरुषोत्तम मारेगयेहैं २८ हे महाबाहु अब मेरे सहायक जिनको कि किसीप्रकारसे मैंने बिरोधी नहीं बनाया वह सब मेरा कल्याण नहींचाहते वहसब जैसा किपांडवोंको चाहतेहैं उस प्रकार मुझको नहीं मानते २९ राजा सत्यसिन्धने युद्धमें अपने आप अपनी मृत्युको उत्पन्नकिया और आप शिष्यतासे अर्जुनके मारनेके बिचार को त्यागकरतेहैं ३० इसहेतुसे कि जो बीर हमारी विजय चाहतेथे वह युद्धमें मारेगये अब कर्णको भी मैं अपनी विजय चाहनेवाला देखताहूं ३१ जो मन्दबुद्धी मित्रको मुख्यतासे न जानकर मित्रके प्रयोजन में संयुक्तहोताहै उसका प्रयोजन नाशको पाताहै ३२ बड़े शुभचिन्तकों ने मुझ लोभसे लोभी पापी कुटिल और धनके अभिलाषी का वहकर्म भी उसीरूपवाला किया ३३ पराक्रमी भूरिश्रवा, जयद्रथ, अभिषाह, शूरसेन, शिवय, और वशातय, मारेगये ३४ अब मैं वहां ही जाऊंगा जहांपर युद्धमें मेरे अर्थ अर्जुनसे लड़कर वह पुरुषोत्तम मारेगये३५उन पुरुषोत्तमोंके बिना मेरा भी जीवन निरर्थकहै हे पांडवोंके आचार्य्यजी आप हमको आज्ञादो ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिपंचशततमोऽध्याय: १५० ॥

एकसौइक्यावनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात युद्धमें अर्जुनके हाथसे राजासिन्धुके और भूरिश्रवाके मारेजाने पर तुम्हारा चित्तकैसाहुआ १ और कौरवों की सभामें दुर्य्योधनसे उसप्रकार के बचनों को सुनकर द्रोणाचार्य्यने उसके अर्थ कौनसा उत्तम बचन कहा हे संजय वह सब मुझसे कहो २ संजयबोले कि हे भरतबंशी जयद्रथ और भूरिश्रवा

को मरा हुआ देखकर आपकी सेनाके बड़ेशब्द हुये ३ उन्होंने आपके पुत्रकी सब सलाहों को बुरा कहा जिस सलाहसे सैकड़ों उत्तम क्षत्री मारेगये ४ फिर दुःखित चित्त अत्यन्त पीड़ामान द्रोणाचार्य आपके पुत्रके उस वचनको सुनकर एक मुहूर्त ध्यान करके बोले ५ कि हे दुर्योधन अर्जुन को युद्धमें सदैव अजेय कहनेवाले तू अपने ऐसे वचन बाणोंसे क्यों घायल करताहै ६ हे कौरव युद्ध में इतनीही बातसे अर्जुन का जाननासम्भवहै जो अर्जुन से रक्षित शिखण्डीने भीष्मजीको मारा ७ मैंनेयुद्धमें देव दानवोंसे भी अजेय वीरोंको मराहुआ देखकर तभी यह जानलिया था कि यह भरतवंशियों की सेना नहींहै ८ हम मानतेहैं कि जो तीनोंलोकों में सब मनुष्यों में सबका शूरहै उस शूरवीरके गिरने पर किसशेष बचेहुये शूरकी संख्या और विद्यमानता करें ९ हे तात कौरवीय सभामें जिन पाशोंको शकुनीलेताथा वह पाशे नहींथे किन्तु शत्रुओंके तपानेवाले बाणथे १० हे तात वही बाण अर्जुनसे चलायमानहोकर हमको मारतेहैं उससमय विदुरजीके जताने और समझानेपर भी तुमने उन बाणोंको नहीं जाना ११ शुभचिन्तकतासे तुम्हारी कुशल के निमित्त कहनेवाले महात्मा पंडित विदुरजीके जिन २ कल्याण रूप वचनोंको अपने द्यूतमें आसक्त होकर तुमने नहीं सुना १२ हे दुर्योधन तेरेही कारण उसवचन के अपमान से यह महाभयकारी नाश वर्त्तमान है १३ जो अज्ञानी पुरुष सत्यकर्मी शुभचिन्तकों के परिणाम कुशल रूप वचनोंको तिरस्कार करके अपने मतको करताहै वह शीघ्रही शोचके योग्य होताहै १४ जो कुलमें उत्पन्न और सब धर्मोंपर कर्म करनेवाली उस दशाके अयोग्य द्रौपदीको हमारे देखतेहुये उस सभामें बुलाकर अप्रतिष्ठा पूर्वक निरादर किया १५ हे गांधारीके पुत्र उस अधर्मका यह बड़ाफल प्रकटहुआहै जो ऐसा न होय तो परलोकमें तुम इससे भी अधिकपापोंको भोगो १६ जोउनपांडवोंको द्यूतमें अन्याय पूर्वक विजय करके उन मृगचर्मधारियों को बनवासदिया १७ अपनेको

ब्राह्मण कहनेवाला मुझसा दूसरा कौनसा मनुष्य उनसे शत्रुता करे जोकि पुत्रोंके समान सदैव धर्मके आचरण करने वालेहैं १८ तुमने शकुनी के साथ कौरवोंकी सभामें धृतराष्ट्रके मतसे पांडवोंके इस क्रोधको अपने सन्मुख नियत किया दुश्शासन से युक्त और कर्णसे मिले हुये कर्म करनेवाले तुमने बिदुरजीके बचन को तिरस्कार करके उसक्रोधको वारंबार दृढ़ किया १९।२० और तुमसब सावधानीसे कर्ममें प्रवृत्तहुये जिन्होंने जयद्रथ को आश्रय होकर अर्जुनको घेरलिया वह तुम्हारे मध्यमें से कैसे मारागया २१ कर्ण कृपाचार्य्य शल्य अश्वत्थामा और तेरेजीवतेजी राजा सिन्धुने कैसे मृत्युको पाया २२ जयद्रथ की रक्षा करनेको युद्ध करनेवाले सब राजालोग कठिन पराक्रमको करतेथे उस पर भी वह तुम्हारे बीचमेंसे कैसे मारागया २३ हे तात राजा जयद्रथ अर्जुनसे अपनी रक्षाको अधिकतर मुझमें और तुझमें अभिलाषा पूर्व्वक आशा रखता था २४ इसके पीछे अर्जुन से उसके रक्षित न होनेपर अपने जीवन का कोई स्थान नहीं देखताहूं २५ उस शिखण्डीसमेत पांचाल देशियोंके बिनामारे धृष्टद्युम्नके अपराधमें आपको मग्न हुये के समान देखता हूं २६ हेभरतबंशी सो तुम राजा जयद्रथकी रक्षामें असमर्थ होकर मुझ दुखीको बचन रूपी बाणोंसे क्यों घायल करतेहो २७ सुगम कर्मी सत्यप्रतिज्ञ भीमसेनके स्वर्णमयी कवचको युद्धमें देखताहुआ कैसे बिजयकी आशा करताहै २८ जिस स्थान पर महारथियोंके मध्यमें राजा जयद्रथ और भूरिश्रवा मारे गये वहां शेषबचेहुओंको क्या मानतेहो २९ हेराजा कठिनतासे पराजय होनेवाले जो कृपाचार्य्य जीवते हैं और राजा सिन्धुके मार्गको नहींगये मैं उनकी प्रशंसा करताहूं ३० हे कौरव इसस्थान पर तेरे छोटे भाई दुश्शासनके देखतेहुये कठिनकर्मी युद्धमें इन्द्र समेत देवताओं से अजेयके समान भीष्मजीको मृतकप्राय देखा तबमैंने यह चिन्ताकरी कि यह पृथ्वीतेरी नहींहै ३१। ३२ हेभरत बंशी अब पांडव और सृंजियोंकी यह सेना मुझकर एक साथही

चढ़ाई करतीहै ३३ हेधृतराष्ट्र के पुत्र मैं सब पांचालोंको बिनामारे हुये कवचको शरीर से नहीं उतारूंगा और युद्धमें तेरेप्रिय कर्मको करूंगा३४ हेराजा तुममेरेपुत्र अश्वत्थामासे कहौ कि युद्धमेंजीवन की रक्षा करने वाले सोमकक्षत्री उसको छोड़देने के योग्य नहीं हैं अर्थात् सबको मारे ३५ पिताकी जो आज्ञा होय उस वचन पर काम करो अर्थात् आज्ञाका प्रतिपालनकरो दया जितेन्द्रीपन सत्य और सत्यवक्तापने में नियतहो ३६ उस्से बारंबार कहदो कि धर्म अर्थकाममें सावधान और धर्मको उत्तम माननेवाला अश्वत्थामा धर्म अर्थ को पीड़ा न देताहुआ युद्ध कर्मोंकोकरे ३७ नेत्र मन और सामर्थ्य इनसब बातोंसे ब्राह्मण पूज्यहैं इनका अप्रियकभी नकरना चाहिये निश्चयकरके वह प्रज्वलित अग्निके समानहैं ३८ हेशत्रु-हन्ता राजादुर्य्योधन तेरे वचनरूपी बाणोंसे पीड़ामान होकर मैं बड़े युद्धकरनेके अर्थ सेनाओंमें प्रवेश करताहूं हे दुर्य्योधन जो तुम समर्थहोतो अबतुमइससेनाकी रक्षाकरो यहक्रोधयुक्तकौरव सृंजय रात्रिमें भी युद्धकरेंगे ३९ । ४० द्रोणाचार्य्य इसप्रकार से कहकर क्षत्रियोंके तेजों को आकर्षण करते पांडव और सृंजियोंपर ऐसेदौड़े जैसेकि चन्द्रमा नक्षत्रोंके तेजोंको आकर्षण करता दौड़ताहै ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिरात्रौयुद्धे एकपंचाशतमोऽध्यायः १५१ ॥

एकसौबावनका अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे द्रोणाचार्य्य की आज्ञानुसार क्रोध के वशीभूत राजा दुर्य्योधनने युद्धकेनिमित्त मनसेविचारकिया १ तब आपका पुत्र दुर्य्योधन कर्णसेबोला कि देखो श्रीकृष्णजीकोसाथमें रखनेवाले पांडव अर्जुनने गुरूजीके बनायेहुये उस व्यूहको जोकि देवताओंसेभी तोड़ना कठिनथातोड़कर तुम्ह उपाय करनेवाले और महात्मा द्रोणाचार्य्य २।३ और सेनाके बडे २ उत्तम धनुषधारियों के देखते हुये सिन्धुकेराजा जयद्रथको गिराया हेराधाके पुत्र कर्ण देखो युद्धमें अत्यन्त उत्तमराजा लोग पृथ्वीपर ४ अकेले अर्जुनके

हाथसे ऐसेमारेगये जैसे कि सिंहके हाथसे दूसरे हजारोंमृग महात्मा द्रोणाचार्य्यके और मेरे उपाय करनेपर ५ इन्द्रकेपुत्रअर्जुननेसेनाको बहुतही न्यून करदिया अर्थात् थोड़ेही शेष रहगयेहैं युद्धमें द्रोणाचार्य्य के उस अद्वितीय व्यूहको जोकि कठिनतासे तोड़नेकेयोग्यथा तोड़कर अर्जुनने जयद्रथको मारकर अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण किया ७ हे कर्ण युद्धमें अर्जुनके हाथसे मारेहुये और पृथ्वीपर गिराये हुये उन बहुत राजाओंको जोकि इंद्रके समान पराक्रमीथे सोतेहुये देखो ८ हेवीर पांडव अर्जुन इस उपाय करनेवाले और अपनी बिजय चाहनेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्यके कठिनतासेतोड़नेकेयोग्य व्यूहको कैसे तोड़सका ९ हे शत्रुहन्ता कर्ण यहपांडवअर्जुन महात्मा आचार्य्यका सदैवसे प्याराहै उसी हेतुसे बिना युद्धकियेही उसको द्वारदेदिया १० शत्रुसंतापी द्रोणाचार्य्यने जयद्रथ के अर्थ निर्भयता देकरअर्जुनके निमित्त द्वारकोदियामेरी दुर्भाग्यताको देखो ११ किजो प्रथमही मैंजयद्रथकोघरजानेकी आज्ञादेदेतातो यहमनुष्योंका नाश काहेको होता १२ हेमित्र द्रोणाचार्य्यसे निर्भयताको पाकर मुझअभागेने उसजीवन की इच्छा करनेवाले जयद्रथको घरजानेसेरोका १३ अब मेरेभाई चित्रसेन आदिक युद्धमें भीमसेनको पाकर हमसबदुरात्माओंके देखतेहुये उसके हाथसे नाश हुये १४ कर्णबोले कि आचार्य्यको निन्दामतकरो यह ब्राह्मण अपने जीवनको त्याग करके सामर्थ्य बलऔर उत्साहकेसमान युद्धकरता है १५ जोअर्जुन उनको उल्लंघनकरकेसेनामेंगयाइसमें आचार्य्यकाकिसीप्रकारकाभी दोषनहींहै महाकर्मी सावधान तरुण शूरवीर अस्त्रज्ञ तीक्ष्णसामर्थ्य और अभेद्य कवचसे अलंकृत शरीर पराक्रमी भुजाधनसे अहंकारी अर्जुन जोदिव्य अस्त्रोंसेयुक्त वानररूपध्वजाधारी उसरथपरजिसकेकि घोड़ोंको श्रीकृष्णजीने पकड़ाथासवार होकर औरअजरदिव्य गांडीव धनुषकोलेकरतीक्ष्ण बाणोंको बरसाता द्रोणाचार्य्यकेसमीपहीजाकर सन्मुखहुआ १८।१९ और हेराजा उसने यह बिचार किया कि आचार्य्यजी वृद्धहैं शीघ्रतासेनहीं चलसक्तेहैं औरभुजाके परिश्रम और

कर्मकरनेमें असमर्थहैं २० इसहेतुसे श्वेतघोड़े और श्रीकृष्णजी को सारथीरखनेवाला अर्जुन इस प्रकारसे उल्लंघनकरने वालाहुआइसमें उनद्रोणाचार्य्यका अपराधनहीं देखताहूं २१ युद्धमेंइनअस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्यसे पांडवोंको मैं अजेयमानता हूं उसी प्रकार अर्जुनने इनको उल्लंघन करके सेनामें प्रवेश किया २२ मैं मानताहूं कि दैवका उपदेश कियाहुआ कर्म कहीं भी बिपरीत नहीं वर्त्तमान होताहै हेसुयोधन इसीकारणसे बड़ीसामर्थ्यके साथ हमलोगोंके युद्धकरतेहुये भी युद्धमें जयद्रथ मारागया यहां युद्ध भूमिमें तेरेसाथ बड़े उपाय करनेवाले हमलोगोंका प्रारब्ध बड़ा कहागयाहै २४ वहदैव सदैवछल औरपराक्रमसे कर्मकरनेवाले हमलोगोंके उपायआदिकों को नाशकरके हमकोपीछे करताहै दैवसे घायल पुरुष किसीस्थान पर भी जो कुछ कर्म करताहै वहकियाहुआकर्म दैवसे न्यून हानिकारकहोताहै २६ निश्चय करनेवाले मनुष्यसे जोकर्म सदैव करनेके योग्यहै वह निस्सन्देह करना उचितहै उसकी सिद्धी दैवमें नियत है २७ हे भरतवंशी पांडव छलसे और विषके देनेसे भीठगे और लाखकेगृहमें भस्मकियेगये और द्यूतमें भी पराजयकिये २८ और राजनीतिको छोड़कर वनकोभेजे इन उपायोंसे कियाहुआ वह कर्म दैवसे निष्फलहुआ २६ दैवको निःप्रयोजनकरके उपायमें प्रवृत्त होकर युद्धकरो तेरे और उनके उपाय करतेहुये दैवमार्ग्गसे प्राप्त होगा ३० हे वीर दुर्य्योधन कहीं उन लोगोंका कर्म्म श्रेष्ठ बुद्धिके अनुसार और तेरा कर्म्म दुष्ट बुद्धीके विपरीत देखनेमें नहीं आता है ३१ सुकृत और दुष्कृत कर्मका प्रमाण दैवहै दृढ़ कर्मवाला दैव शयन करनेवालों के मध्यमें भी जागताहै ३२ आपकी सेना की संख्या और वीरोंकी संख्याअसंख्यथी इतनीपाण्डवोंकी न सेनाथी और न वीरथे इसरीतिसे युद्धजारीहुआ ३३ तुम्हारीओरके बहुतसे प्रहारकर्त्ता उनथोड़ेसे प्रहारकर्त्ताओं से नाशकियेगये मैं निस्सन्देह कहताहूं कि दैवीकर्महै जिससे उपाय और उद्योग सब नष्टहुये ३४ संजय बोले कि हे राजा इसरीतिके बहुतसे वचनोंको कहते पांडवों

को सेना युद्धमें दिखाईपड़ी ३५ हे राजा आपके कुविचार होनेपर आपके शूरबीरोंका युद्ध उन दूसरे शूरवीरोंके साथहुआ जो कि रथ और हाथियों से संयुक्तथे ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरि द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः १५२ ॥

एकसौतिरपनका अध्याय ॥

संजयबोले कि हे राजा आपकी वह बड़ीहाथियोंकी सेनापांडवी सेनाको उल्लंघनकर सब ओर से युद्धकरनेलगी १ यमलोक और बड़े परलोकके निमित्त दीक्षित पांचालदेशी और कौरव परस्परमें युद्धकरनेलगे २ शूरोंने शूरोंके साथ भिड़कर युद्धमें बाणतोमर और शक्तियोंसे घायलकिया और यमलोकमें पहुंचाया ३ परस्पर मारनेवाले रथियोंका बड़ायुद्ध जोकि रुधिरके गिरनेसे भयका उत्पन्न करनेवाला था रथियोंके साथजारीहुआ ४ हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त मतवाले हाथियोंने परस्पर सन्मुख होकरएकनेदूसरेको चीरडाला ५ और कठिन युद्धमें बड़े यशके चाहनेवाले अश्वसवारोंने प्रास शक्ति और फरसोंसे अश्वसवारों को घायल किया ६ हे महाबाहु राजाधृतराष्ट्र शस्त्रोंको धारणकियेहुये सदैव पराक्रममें उपाय करनेवाले सैकड़ों पतियोंने परस्पर पीड़ामानकिया ७ हेश्रेष्ठ हमने गोत्रनाम और कुलोंके सुननेसेही पांचाल और कौरवोंको जाना ८ युद्धमें निर्भयके समान घूमनेवाले उन शूरवीरोंने बाणशक्ति और फरसोंसेपरस्पर परलोकमेंभेजे ९ हेराजासूर्य्य केअस्तहोनेपर भी दशो दिशाओंमें उन्होंके छोड़ेहुये हजारोंबाण अच्छे प्रकारसे प्रकाशमान नहीं हुयेथे १० हे भरतवंशी राजाधृतराष्ट्र उसप्रकारसे पांडवों के युद्ध करनेसे दुर्य्योधनने उससेनाकोमझाया ११ जयद्रथ केमरनेसे अत्यन्तदुखी दुर्य्योधन चित्तसे मरना विचार करसेनामें प्रविष्टहुआ १२ रथके शब्दसे शब्दायमान पृथ्वीको कंपाता आपकापुत्र पांडवोंकी सेनाके सन्मुख वर्त्तमान हुआ १३ हे भरतवंशी उसकी और उन्होंकी वह कठिन चढ़ाई सबसेनाओंकी बड़ीनाश-

कारीहुई १४ जिसप्रकार किरणोंसे तपानेवाले सूर्य्यको दिनके मध्यमें नहीं देखसक्के उसीप्रकार पांडव भरतवंशियोंके युद्धमेंबाण-रूप किरणोंसे अत्यन्त तपानेवाले आपके पुत्रको सेनाके मध्यमें १५ देखनेको समर्थ नहींहुये उस महात्मासे घायल पांचालदेशी भागने में प्रवृत्तचित्त और शत्रुकेविजय करनेमें असाहसी १६ चारोंओर को दौड़े पांडवी सेनाके लोग आपके धनुषधारी पुत्रके सुनहरीपुंख वाले साफनोंकके बाणोंसे १७ पीड़ामान शीघ्र गिरपड़े आपकेशूरों ने युद्धमें ऐसेप्रकारके कर्मको नहींकिया १८ हेराजा जैसा किआप-के पुत्रने कर्मकिया युद्धमें वहसेना आपके पुत्रसे ऐसे मथीगई १९ जिसप्रकार प्रफुल्लित कमलरखनेवाली कमलिनी चारोंओर हाथी से विलोडनकी जाती है और जिसप्रकार पानीसे रहित कमलिनी सूर्य्यके कारणसे प्रभारहितहो २० उसीप्रकार आपके पुत्रके तेजसेपांडवी सेनाभी होगई हे भरतवंशी आपकेपुत्रके हाथसेपांड-वी सेनाको घायल और मरीहुई देखकर२१सबपांचालदेशी जिनमें मुख्य भीमसेनथा सन्मुखगये उसने भीमसेनको दशबाणोंसे नकुल और सहदेव को तीन२ बाणोंसे २२ विराट और द्रुपदको छःबाण सेशिखण्डीको सौबाणसे धृष्टद्युम्नको सत्तरबाणोंसेधर्मकेपुत्रयुधि-ष्ठिरको सातबाणसे २३ केकय और चन्देरी देशियोंको तीव्र धार वाले बहुत बाणोंसे सात्यकीको पांचबाणसे और द्रौपदीके पुत्रोंको तीन २ बाणोंसे घायलकरके २४ घटोत्कचको युद्धमें घायलकरता हुआ सिंहकेसमान गर्जना करी और बड़े युद्धमें दूसरे सैकड़ों शूर वीरोंको हाथियोंकेसाथ २५ उग्रबाणोंसे ऐसेकाटा जैसे कि क्रोध युक्त कालसृष्टिको संहार करताहै हे राजा उसआपके पुत्रके बाणों से घायल वह पांडवी सेना २६ युद्धसेभागी हेराजा बड़े युद्धमें सूर्य्यके समान तपानेवाले उस कौरवराज दुर्योधनके देखनेको २७ पाण्डवी सेनाके लोग देखने को भी समर्थ नहीं हुये हे राजाओं में श्रेष्ठ इसकेपीछे क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिर २८ आपके पुत्रकोमारने की इच्छासे कौरवपति दुर्योधनकेसन्मुख दौड़ा युद्धमें वह दोनों

शत्रु संतापी सन्मुख हुये २६ अर्थात् वह दोनों दुर्योधन और युधिष्ठिर अपने प्रयोजनोंके हेतुसे पराक्रम करनेवाले हुये इसके पीछे क्रोधयुक्त दुर्योधनने झुके पर्व्ववाले ३० दश बाणों से घायल किया और शीघ्रही एकबाणसे ध्वजाको भीकाटा और उसइन्द्रसेन को तीनबाण से ललाटपर घायल किया ३१ जोकि महात्मा युधिष्ठिरका पहला सारथी था महारथीने फिर दूसरे बाणसे उसके धनुष कोकाटा ३२ और चारबाणोंसे चारोंघोड़ों को घायलकिया इसकेपीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने एक निमिष मेंही दूसरे धनुषको लेकर ३३ वेगसे कौरवको रोका हे श्रेष्ठ बड़े पाण्डव युधिष्ठिरने शत्रुहन्ता उस दुर्योधनके स्वर्णपृष्ठी बड़े धनुषको ३४ दोभल्लों से तीन टुकड़े किया सूर्य्यकी किरणोंके समान अत्यन्त भयकारी दूर नहोनेवाले बाणको लेकर ३५ हायमाराहै ऐसा कह कर युधिष्ठिर ने बाणको छोड़ा कानतक खैंचकर उस छोड़हुये बाणसे घायल वह दुर्योधन ३६ अत्यन्त अचेतहो कर रथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा हे राजेन्द्र इसके पीछे पांचाल देशियोंकी प्रसन्नसेनाके शब्द चारोंओरसे हुये ३७ कि राजामारागया हे श्रेष्ठ वहां बाणों के महाभयकारीशब्द सुनेगये ३८ उसके पीछे द्रोणाचार्य्यजी भी उसयुद्धमें शीघ्रदिखाई पड़े और प्रसन्नचित्त दुर्योधन भी दृढ़ धनुष को लेकर ३९ तिष्ठतिष्ठ शब्द को बोलता राजायुधिष्ठिरके सन्मुख आया फिर बिजयाभिलाषी पांचाल देशी शूरबीर शीघ्रही उसके सन्मुख गये ४० कौरवों में श्रेष्ठ दुर्य्योधनको चाहते द्रोणाचार्य्यजीने उनको ऐसे रोका जैसेकि कठिन वायुसे उठाये हुये बादलोंकोसूर्य्य नाशकरताहै ४१ हे राजा इसके पीछे युद्धकीइच्छासे सन्मुखहोने वाले आपके और पांडवोंके शूरवीरोंका महाप्रबल परस्परमें मारने वाला कठिन युद्धहुआ ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरित्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः १५३॥

—✱—

एकसौ चौवनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जब क्रोध युक्त बल पराक्रमवाले आचार्य्यजी शास्त्रके उल्लंघन करनेवाले निर्बुद्धी मेरे पुत्र दुर्य्योधन को कहकर पांडवोंकी सेनामें प्रवेश करनेवाले हुये १ तब पांडवोंने उस रथपर नियत शूरवीर प्रवेशकरके घूमने वाले बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य जीको कैसे रोंका २ बड़े युद्धमें बहुतसे शत्रुओंके मारने वाले आचार्य्यजी के दक्षिणके चक्रको किन लोगोंने रक्षितकिया और उत्तरीय चक्रको किन पुरुषोंने रक्षित किया ३ कौनसे शूरवीर इनके पीछे हुये और कौनसे रथी शत्रु इन के आगे वर्त्तमान हुये ४ मैं मानताहूं कि ऋतुके विपरीत कठिन शीतने उनको स्पर्श किया और यह भी मानताहूं कि वह ऐसे प्रकारसे कांपते होंगे जैसे कि शिशिर ऋतुमें गौवें कांपतीहैं ५ जो वह बड़ा धनुषधारी अजेय सब शस्त्र धारियों में और रथियों में श्रेष्ठ उत्पातग्रह अथवा अग्नि के समान क्रोध-युक्त रथके मार्गोंमें नृत्यकरता सब पांचाल देशी सेनाओं को भस्म करता उन्हीं पांचाल देशी सेनाओं में प्रविष्टहुआ उसने कैसे मृत्यु कोपाया ६ । ७ संजयबोले कि बड़ा धनुष धारी सात्यकी और अर्जुन सायंकाल के समय जयद्रथ को मारकर राजासे मिल कर द्रोणाचार्य्यके सन्मुख दौड़े ८ उसीप्रकार उपाय करनेवाले पांडव युधिष्ठिर और भीमसेन पृथक् २ सेनाओं समेत द्रोणाचार्य्य के सन्मुखदौड़े ९ उसी स्थानपर बुद्धिमान और कठिनतासे विजयहोने वाला सहदेव और सेनासहित धृष्टद्युम्नकेकय के साथविराट १० मत्स्यदेशी और शाल्वदेशी सेनायुद्धमें द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गईं हे राजा धृष्टद्युम्नका पिता राजाद्रुपद भी पांचालदेशियोंसे रक्षित ११ द्रोणाचार्य्यकेही सन्मुख वर्त्तमान हुआ द्रौपदीके बड़े धनुष धारी पुत्र घटोत्कच राक्षस १२ यह सब सेनाओं समेत बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके सन्मुख हुये और प्रहार करने वाले पांचालदेशी छः हजार प्रभद्रक नाम १३ शिखण्डी को आगे करके द्रोणाचार्य्य के

सन्मुख बर्तमान हुये उसीप्रकार पांडवोंके अन्य२महारथी१४ एक साथही ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य के सन्मुख बर्तमान हुये हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ युद्धके निमित्त उन शूरबीरों के जाने पर वह रात्रि भयानक रूप भयभीतों के भयकी बढ़ाने वाली शूरबीरों की नाश कारिणी रुद्ररूप होकर मृत्युसेमिलाने वालीहुई १५।१६ और हाथी घोड़ों समेत मनुष्यों के प्राणों की नाशकारक हुई उस घोर रात्रि में सब दिशाओं से बोलने वाले शृगालोंने १७ अग्नि रूप ग्रास रखने वाले मुखों से घोर रुधिर को जारी किया फिर बड़ेभय के सूचक उलूक भी दिखाई पड़े १८ कौरवों की सेनामें अत्यन्त भयकारी उत्पात बहुतसे दिखाई दिये हेराजा इसके पीछे सेनाओं में बड़े शब्द हुये १९ भेरी मृदंगोंके बड़े शब्द हाथियों की चिग्घाड़घोड़ों काहिंस नन २० खुरोंके शब्द औरगिरनेसे सब ओरको कठिन शब्द हुये हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्य और सृंजियों का अत्यन्त भयकारी युद्ध सब ओरसे जारी हुआ और अन्धकार से सब संसार के ढक जानेके कारण कुछ नहीं जाना गया २१।२२ चारों ओर से सेनाओं की उठी हुई धूलसे मनुष्य घोड़े और हाथियों का रुधिर मिलगया२३ हमने आर्द्रतासे युक्त पृथ्वी की धूलको नहीं देखा जैसे कि पर्ब्बतके ऊपर जलनेवाले बांसों के बनका २४ चटचटा शब्द होता है उसी प्रकार रात्रि के समय गिरने वाले अस्त्रोंके शब्द हुये मृदंग, ढोल, झर्झरी पटा नाम बाजों से २५ फेत्कार और हेषितशब्दोंसे सब व्याकुल और शोभायमानहुये हेराजा अन्धकार के कारण अपने और पराये कोई नहीं जाने गये २६ रात्रिमें वह सब सेना उन्मत्तों के समान जानीगई हेराजा फिर पृथ्वीकी धूल रुधिरसे नष्टहुई २७ स्वर्णमयी कवच और नानाप्रकारकेभूषणोंसे अन्धकार दूरहुआ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे मणि सुवर्ण दिसे अलंकृत भरतबंशियोंकी सेना २८ रात्रिमेंनक्षत्र युक्त आकाशके समानहुई शृगालोंके समूहों से शब्दायमान शक्ति ध्वजाओंसे व्याकुल २९ हाथि-

यों के शब्दों से संयुक्त घोर रूप वीरों के गर्जनेके बड़े शब्द वाली हुई वहां पर सब दिशाओंको पूर्ण करता रोमहर्षण करने वाला महा इन्द्र वज्रकी समान बड़ा कठोर शब्द हुआ हे महाराज वह भरतवंशियोंकी सेना रात्रिके समय ३०। ३१ बाजूबन्द कुंडल निष्क और अस्त्रोंसे प्रकाशित दिखाई पड़ी और सुवर्ण से अलंकृत हाथी रथ ३२ रात्रिके समय बिजली समेत बादलोंके समानदृष्टि-गोचर हुये दुधारे, खड्ग, शक्ति, गदा, बाण, मूसल, प्रास और पट्टिश ३३ अग्निके समान प्रकाशित गिरते हुये दिखाई दिये जिस सेना में दुर्य्योधन मुख्यथा वह रथ हाथी बादल ३४ और बादलोंकीगर्जना समेत धनुष ध्वजारूप बिजली द्रोणाचार्य्य और पांडवरूप बादल खड्ग शक्तिगदा वज्र ३५ और बाणोंकी धारा उस कठिन शीतोष्ण-तासे पूर्णघोर आश्चर्यकारी उग्रनाश जीवनरूप आपत्ति रखनेवाली ३६ बड़े भयकारी सेनामें युद्धके चाहने वाले शूरवीर लोग प्रवृत्त हुये बड़ेशब्दसे शब्दायमान और घोररूपी उस रात्रिमें ३७ भय-भीतोंके भयका बढ़ाने वाला और शूरोंके आनन्दका बढ़ाने वाला घोर भयानक रात्रिके युद्ध जारीहोनेपर ३८ क्रोधयुक्त पांडव और संजय एकसाथही द्रोणाचार्य्य के सन्मुखगये हेराजा जो २ महारथी सन्मुख वर्तमान हुये ३९ उनसबके मुखोंकोफेरा और कितनोंही को यमलोकमें पहुंचाया उन हजारोंहाथी अयुतों रथ ४० और प्र-युतों अर्बुदों पदाती और घोड़ोंके समूहोंको रात्रिके समय अकेले द्रोणाचार्य्यने घायल किया और मारा ४१

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिरात्रियुद्धेशततोपरिचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः १५४॥

एकसौपचपनका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि सृञ्जियोंकी सेनामें उस निर्भय बड़े तेजस्वी असहनशील क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य के प्रवेश करने पर तुम्हारी कैसीबुद्धि हुई १ फिर जब बड़े बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्यजी शास्त्रको उल्लंघन करनेवाले मेरेपुत्र दुर्य्योधनको ऐसे कहकर सेनामें घुसे

तब अर्जुनने कौन कर्मकिया २ बीर जयद्रथ और भूरिश्रवाके मरने पर जबबड़े तेजस्वीअजेय द्रोणाचार्य्यजीपांचालोंके सन्मुख गये ३ उसनिर्भय शत्रुसंतापी द्रोणाचार्यके प्रवेशकरने पर अर्जुन और दुर्योधनने समयके अनुसार किस२ कर्मकोमाना ४ उन ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ बरदातावीर आचार्य्यके सन्मुख कौन२ गयेपीछे कौन २ बीर गये ५ और आगेकौन वर्त्तमानहुये मैं द्रोणाचार्य्य के बाणोंसे सबपांडवोंको ऐसे पीड़ामान मानताहूं ६ हे समर्थ जैसे कि शिशिर ऋतुमें कंपायमान और दुर्बलगौयें ७ उसबड़े धनुर्द्धर शत्रुविजयी पुरुषोत्तमद्रोणाचार्य्यनेपांचालोंकीसेनामें पहुंकरकैसेमृत्युकोपाया ८ रात्रिकेसमय सबशूरबीरोंके इकट्ठे होने औरमहारथियोंकेभिड़ने और सेनाके छिन्न भिन्न होनेपर तुमलोगोंमेंसे कौन बुद्धिसे बिचारकरने वालाहुआ ९ मेरेरथ सवारोंको युद्धमें मृतकयुद्धमेंप्रवृत्तचित्त पराजय बिरथ और मारेहुये कहतेहो १० तब पांडवोंसे छिन्नभिन्न होकर अचेत अथवा मोहमें डूबेहुये उन शूरबीरोंका कौन बिचारहुआ ११ यहांतुम पांडवोंको अत्यन्त प्रसन्न बुद्धिमान् और अभीष्ट सिद्धीवाले कहतेहो और मेरेपुत्रोंको अप्रसन्न औरनाशयुक्त बर्णनकरतेहो १२ हेसंजय तबवहां रात्रिके समय मुख न फेरनेवाले पांडवोंकाप्रकाश कौरवोंमें कैसेहुआ १३ संजयबोलेकि हेराजातब अत्यन्तभयकारी रात्रिके युद्ध जारीहोनेपर सब पांडवलोग सोमकों समेत द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गये १४ उसके पीछे द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्ण चलने वाले बाणोंसे केकयों समेत धृष्टद्युम्न के सब पुत्रों को यमलोकमें भेजा १५ हे भरतबंशीधृतराष्ट्र जोमहारथी उनके सन्मुख वर्त्तमान हुये उनसबको उन्होंने पितृलोकमें भेजा १६ हेराजा तब प्रतापवान् शिवी अत्यन्त क्रोधसे उनवीरोंके मथनेवाले महारथी द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया १७ उस पांडवके महारथोंको आताहुआ देखकर केवल लोहमयी दशबाणोंसे घायलकिया १८ शिवीने तीक्ष्णधारवाले तीस बाणोंसे उनको व्यथितकिया और मन्द मुसकान करते हुयेने अपने भल्लसे उनकेसारथीको गिराया १९ फिर द्रोणा-

चार्य्यने भी उस महात्माके सारथी समेत घोड़ोंको मारकर उसके शिरको देहसे जुदाकिया २० इसके पीछे दुर्योधनने शीघ्रही उनके दूसरे सारथीको आज्ञादी उस सारथीको लेकर वह द्रोणाचार्य्यजी फिर शत्रुओंके सन्मुखगये २१ पूर्व समयमें अपने पिताके मारने से क्रोधयुक्त राजा कलिंगका पुत्र कलिंग देशियोंकी सेनासे निकल युद्धमें भीमसेनके सन्मुखगया २२ उसने भीमसेन को पांचबाणों से पीड़ामान करके फिर सातबाणोंसे पीड़ितकिया विश्वकसारथी को तीनबाणसे औ रथ्वजाको एकबाणसे खंडित किया क्रोधयुक्त भीमसेन ने रथके द्वारा रथके समीप जाकर उस क्रोधयुक्त कलिंग देशियों के शूरकोमुष्टिकाओंसे घायलकिया२३।२४ युद्धभूमिमें पराक्रमी भीमसेनकीमुष्टिकाओंसे घायल उस राजकुमार की सब हड्डियांपृथक् २ होकर गिरपड़ीं २५ हे शत्रुसंतापी फिर कर्णके भाइयोंने उसको नहीं सहा और उन्होंने भीमसेनको विषधर सर्पके समान नाराचों से घायल किया२६ इसकेपीछे भीमसेन उसशत्रुके रथको छोड़कर ध्रुवरथके पास गया वहां जाकर बराबर बाण चलानेवाले ध्रुवको भी मुष्टिकाओंसे अच्छी रीतिसे मारा २७ पराक्रमी भीमसेनकेहाथ से माराहुआ वह ध्रुव पृथ्वीपर गिरपड़ा हेमहाराज महाबलीभीमसेन उसको मारकर २८ जयरातके रथको पाकर बारंबार सिंहके समानगर्जा और गर्जतेहुयेमें बायें हाथसे खैंच २९ कर्णके आगे वर्त्तमान होकर तमाचेसे नाशकिया फिर कर्णने सुनहरी शक्तिको भीमसेनके ऊपरछोड़ा ३० इसकेपीछे अजेय पांडुनन्दन भीमसेन ने उसशक्तिको पकड़ लिया और उसीको युद्धभूमिमें कर्णके ऊपर छोड़ा ३१ शकुनीने उस आतीहुई शक्तिको तैलपायनी नाम बाण सेकाटा वहपराक्रमी युद्धमें इसबड़ेकर्मको करके ३२ फिर शीघ्रही अपने रथपर सवार होकर आपकी सेनापर आटटा हे राजाबड़े बाणोंकी वर्षा से ढकतेहुये आपके महारथी पुत्रोंने उस मारनेके अभिलाषी कालके समान क्रोधयुक्त आतेहुये महाबाहु भीमसेनको रोका ३३। ३४ उसकेपीछे हंसतेहुये भीमसेनने युद्धमें बाणों से

दुर्मदके सारथी और घोड़ोंको यमलोकमें पहुंचाया ३५ तब दुर्मद दुष्कर्णके रथपर सवारहुआ वह शत्रुसंतापी एक रथपर सवारदोनों भाई ३६ युद्धके मुखपर भीमसेनके सन्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि वरुण और मित्र देवता दैत्योंमें श्रेष्ठ तारकके सन्मुख दौड़ेथे ३७ उसके पीछे दुर्मद और दुष्कर्णनाम आपकेपुत्रोंने एकरथपर सवार होकर बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया ३८ शत्रु विजयी भीमसेनने कर्ण अश्वत्थामा दुर्योधन कृपाचार्य्य सोमदत्त और बाहलीकके देखते हुये ३९ वीर दुर्मद और दुष्कर्णके उस रथको एकलात मारकर पृथ्वीपर गिरादिया ४० इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन आपके पराक्रमी और शूरवीर दुर्मद और दुष्कर्ण पुत्रोंको मुष्टिका से घायल और मर्द्दन करके गर्जा ४१ हेराजा उसके पीछे सेनाके हाहाकार करनेपर राजालोग भीमसेनको देखकर बोले कि यह रुद्रजी भीमसेनके रूपसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंमें लड़तेहैं ४२ हे भरत-वंशी सबराजालोग ऐसाकहकर अचेत होकर सवारियोंको चला-तेहुये भागे और दोभीसाथ होकर नहींदौड़े ४३ उसकेपीछे सायं-कालकेसमय सेनाके अत्यन्त उत्तम राजाओंसे पूजित फूले कमल के समान नेत्र रखनेवाले महाबली भीमसेनने राजा युधिष्ठिर को पूजा अर्थात्प्रशंसाकरी ४४ उसकेपीछे नकुल,सहदेव,द्रुपद,विराट केकयदेशी राजकुमार और युधिष्ठिरनेभी बड़ी प्रसन्नताको पाया और उनसबने भीमसेनको ऐसीअत्यन्त प्रशंसाकरी जैसेकिअन्धक के मरनेपर देवताओंने महादेवजीकी करीथी ४५ उससमय वरुण के पुत्रोंके समान क्रोधयुक्त युद्धाभिलाषी आपके पुत्रोंने महात्मा गुरूजीके साथ होकर रथपदाती और हाथियोंकेद्वारा भीमसेनको चारोंओरसेघेरलिया ४६ इसकेपीछे अन्धकार रूप बादलोंसे युक्त बड़ी भयकारी रात्रिमें महात्मा और उत्तम राजाओंका अपूर्व युद्ध भेड़िये काक और गृध्रोंका प्रसन्न करनेवाला भयकारी और भया-नक रूपवालाहुआ ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिरात्रियुद्धे भीमपराक्रमेशतोपरिपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः १५५ ॥

एकसौछप्पनका अध्याय ॥

संजय बोलेकि सात्यकीके हाथसे उस पुत्रके मरनेपर जो कि मरनेके निमित्त आसन पर बैठाथा अत्यन्त क्रोधयुक्त सोमदत्त ने सात्यकीसे यहवचन कहा १ किपूर्व्व समय में महात्मा देवताओं से जो क्षत्रीधर्म देखागया हेयादव उस धर्मको त्यागकर तुम चोरों के धर्ममें कैसे प्रीति करनेवालेहुये २ हेसात्यकी क्षत्रीधर्म में प्रीति करनेवाला बुद्धिमान् मनुष्ययुद्धमें मुखफेरनेवाले दुःखी औरशस्त्रोंके त्यागनेवाले वीरके ऊपर कैसेप्रहार करसक्ताहै ३ हे यादवयादवों में निश्चय करके तुम और महाबाहु प्रद्युम्न दोही महारथी युद्धमें विख्यातहो ४ तुमने किसहेतुसे अर्जुनके बाणसे कटीहुई भुजा वाले शरीर त्यागनेके अर्थ बैठहुये भूरिश्रवाके ऊपर उसप्रकारके निर्दय और पापकर्मको कियाहै ५ हेदुराचारी अवतूभी उसदुष्कर्म के फलकोयुद्धमेंप्राप्तकर हेअज्ञानी अवमैं पराक्रमकरके बाणोंसेतेरे शिरको काटूंगा ६ हेयादव मैं अपने दोनोंपुत्र और शुभकर्म की शपथ खाताहूं हे यादव कुलकलंकी जो सूर्योदयके पूर्व्व विजयके अभ्यासी अर्जुनसे अरक्षित और वीरों से स्तुतिमान मैं तुझको न मारूं तो घोर नरकमें पडूं ७। ८ अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी सोम-दत्तने इसप्रकार कहकर बड़े शब्दसे शंखको बजाकर सिंहनादको किया इसके पीछे कमलपत्रके समान नेत्र सिंहकी समान डाढ़रख-नेवाला कठिनतासे विजय होनेवाला अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी सोमदत्तसेबोला९।१० हे कौरव तेरेसाथ और दूसरोंके साथ मुझ युद्ध करनेवालेका कोई भय किसी दशामें भी मेरे हृदयमें वर्त्तमान नहींहै ११ हे कौरव जो तुम सब सेनासे रक्षित होकर भी मुझ से युद्ध करोगे तो भी तुमसे मुझको किसी प्रकारकी पीड़ा नहींहै१२ मैं युद्धसार वाक्योंसे औरअसत् लोगोंके सम्मतोंसे क्षत्रीधर्मवाला होकर तुझसे भयभीत होनेकेयोग्य नहींहूं १३ हेराजाजोअवतू मुझ से लड़नेकी इच्छाकरताहै तो तुम निर्दय होकर तीक्ष्णधारबाणोंसे

प्रहारकरो मैं तुमपर प्रहार करताहूं १४ हे महाराज आपका पुत्र भूरिश्रवामारागया और भाईके दुःखसे पीड़ित शल्यभी मारागया १५ और अब तुमको भी पुत्र बांधवों समेत मारूंगा अब युद्धमेंतुम उपाय करने वाले होकर नियत हो तुम महारथी कौरव हो १६ जिस युधिष्ठिर में सदैव दान जितेन्द्रियपन शान्ती पवित्रता जीवमात्रसे शत्रुता न करना लज्जा धैर्य्य और क्षमा यह सब अविनाशी हैं १७ पूर्वसमय में तुम उस मृदंगकेतु युधिष्ठिर के तेजसे मारे गये अबभी तुम कर्ण और शकुनी समेत युद्धमें नाशको पाओगे १८ मैं श्रीकृष्णके चरण यज्ञ और बापी आदि बनाने के फलोंकी शपथ खाताहूं जो क्रोधयुक्त किया हुआ मैं तुझ पापीको पुत्र समेत नहीं मारूं १९ जो युद्धको त्याग करके हट जायगा तो छूटेगा नहीं तो मारा जायगा फिर क्रोध से रक्त नेत्र दोनों पुरुषोत्तम परस्पर ऐसा कह कर शस्त्र चलानेको प्रवृत्तहुये उसके पीछे हजार रथ और दश हजार हाथियों समेत २०।२१ दुर्य्योधनने चारों ओर से सोमदत्तको मध्यवर्त्ती किया और आपका शाला महाबाहु वज्रके समान दृढ़ शरीर युवा सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अत्यन्त क्रोध युक्त शकुनि जो कि इन्द्रके समान पुत्र पौत्र और भाइयों से संयुक्तथा २२।२३ और जिस बुद्धिमान् के घोड़ोंकी संख्या एक लाख से ऊपरथी उसने भी बड़े धनुषधारी सोमदत्तको चारों ओर से रक्षित किया २४ पराक्रमियों से रक्षित सोमदत्त ने सात्यकी को बाणों से ढक दिया टेढ़े पर्व वाले बाणों से ढकेहुये उस सात्यकीको देखकर २५ क्रोध युक्त धृष्टद्युम्न बड़ी सेनाको लेकर सन्मुख आया बड़े कठिन वायुके वेगसे चलायमान समुद्रके जैसे शब्द होते हैं २६ उसी प्रकार प्रहार करने वाली सेनाओं के परस्पर घातोंके शब्द हुये सोमदत्त ने नवबाणों से सात्यकी को घायल किया २७ सात्यकीने भी उस कौरवों में श्रेष्ठ सोमदत्तको भी नवबाणों से व्यथित किया युद्धमें पराक्रमी दृढ़ धनुषधारी से घायल २८ और अचेत सोमदत्त रथके स्थिति स्थानको आश्रय लेकर अचेत हुआ सारथी उस महारथी

वीर सोमदत्त को अचेत जानकर बड़ी शीघ्रता से २६ युद्धसे दूर लेगया उसको अचेत और सात्यकी के बाण से पीड़ामान देखकर ३० द्रोणाचार्य्य यदुवीरके मारनेकी इच्छा से सन्मुखगये उस आते हुये को देखकर यादवों में श्रेष्ठ सात्यकीको चाहते और युधिष्ठिर को आगे करने वाले वीरोंने उन महात्मा आचार्य्यजी को घेरलिया इसके पीछे द्रोणाचार्य्य का और पांडवों का ऐसा युद्ध जारी हुआ ३१।३२ जैसे कि पूर्व समय में तीनों लोकों के विजयकी इच्छासे राजा बलिका युद्ध देवताओं के साथ हुआ था इसके पीछे बड़े तेजस्वी भरद्वाज द्रोणाचार्य्य ने बाणोंके जालों से पांडवीसे नाको ढकदिया और युधिष्ठिरको घायल किया दश बाणोंसे सात्यकी को बीस से धृष्टद्युम्न को ३३। ३४ नव बाणोंसे भीमसेन को पांचसे नकुल को आठसे सहदेव को सौबाणों से शिखंडी को ३५ और पांच२ बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रोंको ३६ तीन बाणसे युधामन्युको छः बाणोंसे उत्तमौजसको और अन्य २ सेनाके लोगोंको भीघायल करके युधिष्ठिर के सन्मुखगये ३७ हे राजेन्द्र द्रोणाचार्य्य के हाथसे घायल वह पांडवी सेनाके लोग जिनके कि शब्द पीड़ासे युक्तथे भयभीत होकर दशों दिशाओं को भागे ३८ द्रोणाचार्य्य के हाथसे इधर उधर होने वाली उस सेनाको देखकर कुछ क्रोधयुक्त पांडव अर्जुन गुरू के सन्मुख गया ३९ फिर द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें सन्मुख दौड़ने वाले अर्जुन को देखकर नियत हुये और फिर वह युधिष्ठिर की सेनाभी लौटी ४० इसके पीछे भरद्वाज द्रोणाचार्य्य का युद्ध पांडवोंके साथ फिर हुआ हेराजा सब ओरसे आपके पुत्रोंसे रक्षित द्रोणाचार्य्यने ४१ पांडवी सेनाको ऐसे भस्म किया जैसे कि रुईके तोदेको अग्नि भस्म कर देताहै हेराजा उस सूर्य्य के समानप्रकाश और प्रकाशित अग्नि के समान तेजस्वी बाण रूप ज्वाला रखने वालेसूर्य्यकेसमान तपानेवालेधनुषकोमंडलरूप करनेवाले४२।४३ शत्रुओंके कठिन भस्म करने वाले द्रोणाचार्य्य को देखकर सेनामें से किसीने नहीं रोका जो२ पुरुष द्रोणाचार्य्य के सन्मुख हुआ४४

उस उसके शिरको काट कर द्रोणाचार्य्य के बाण पृथ्वी परगये इस प्रकार से महात्माके हाथसे घायल वह पांडवी सेना ४५ जोकि भय से पूर्णथी अर्जुन के देखते ही फिर लौटी हेभरतवंशी रात्रिमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे इधर उधर होने और भागने वाली सेनाको देखकर ४६ अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोले कि द्रोणाचार्य्यके रथके पास चलिये उसके पीछे श्रीकृष्णजी ने रजत दुग्धगौ कुन्दके पुष्प और चन्द्रमाके समान प्रकाशित ४७ घोड़ों को द्रोणाचार्य्यजीके रथकी ओर चलाय मान किया भीमसेन भी द्रोणाचार्य्य की ओर जाते हुये उस अर्जुनको देखकर ४८ अपने सारथीसे बोले कि मुझको द्रोणाचार्य्यकी सेनामें ले चल उस बिश्वकने भी भीमसेनके बचन को सुनकर सत्य संकल्प अर्जुन की ओर पीछे से घोड़ों को चलाया हेभरतबंशियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र द्रोणाचार्य्य की सेनाकी ओर जानेवाले सावधान दोनों भाइयों को देखकर ४९।५० पांचाल, संजय, मत्स्य चंदेरी, कारुष्य, कौसिल और केकय देशी महारथी भी उसके पीछे चले ५१ हेराजा इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला भयकारी युद्ध जारी हुआ ५२ आपकी सेनाके दक्षिणीय भागको अर्जुनने और उत्तरीय भागको भीमसेनने रथके बड़े समूहों समेत घेरलिया ५३ हेराजा उन दोनों पुरुषोत्तम भीमसेन और अर्जुन को देखकर महाबली सात्यकी और धृष्टद्युम्न सन्मुख गये ५४ उस समय परस्पर प्रहार करने वाले सेनाके समूहोंके ऐसे शब्द हुये जैसे कि कठिन बायुसे चलाय मानसमुद्रोंके शब्द होतेहैं ५५ हे राजा भूरिश्रवा के मरनेसे क्रोधयुक्त मारनेके लिये निश्चय करने वाले अश्वत्थामा युद्धमें सात्यकी को देखकर सन्मुख दौड़े ५६ सात्यकी के रथपर आने वाले उस अश्वत्थामाको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने शत्रुको रोका ५७ कर्ण नाम लोहेका बना बड़े घोर रीछके चर्म सेमढ़े हुये छःसौ गज बिस्तृत बड़े रथमें ५८ यंत्र मंत्र और कवच से अलंकृत बहुत बादलों के समूहों के समान शब्दायमान हाथियों के तुल्य घोड़ोंसे युक्त जिनको न घोड़े कह सकें न हाथी ५९ कह

सर्के फैले हुयेपर और चरण बड़े नेत्र शब्द करनेवाले गृध्रराजके चिह्नवाली शोभायमान ध्वजासे युक्त जिसका दंडा उठा हुआ था ६० लोहित और आर्द्र पताका वाला अंतड़ियोंकी मालाओं सेअलंकृत आठ चक्ररखने वाले वहुत बड़े रथपर सवार होकर ६१ उस घोर रूप राक्षसोंकी अक्षौहिणी सेनासे जोकि शूल मुद्गल धारी पहाड़ और वृक्षोंको हाथोंमें लिये हुयेथी आवृत होकरसन्मुख आया६२ वड़े धनुषको ऊंचा करने वाले उस राक्षस को देखकर राजालोग ऐसेपीड़ामान हुये जैसे कि प्रलयके समय दंडधारीकाल कोदेखकर पीड़ित होतेहैं ६३ उसके पीछे उस पर्व्वतके शिखर के रूप भयानक भयकारी करालदाढ़ उग्रमुख शंखकेसमान कान वड़े नख रखनेवाले ६४ उन्नत केश भयानक नेत्रप्रकाशित मुख गंभीर उदर महावटके समान गलद्वार मुकुटसे गुप्तकेश ६५ सब जीवोंके डरानेवाले कालके समान खुलामुखतेजस्वी शत्रुको व्याकुल करने वाले६६वड़ेधनुषधारीराक्षसोंके इन्द्रआतेहुये उसघटोत्कचको देख करआपकेपुत्रकीसेनाकेलोग भयसेपीड़ित ऐसेमहाव्याकुलहुये६७ जिसप्रकार वायुसे चंचल भवँर उत्तरंग गंगाजी होतीहैं घटोत्कचके कियेहुये सिंहनादसे भयभीत ६८ हाथियोंने मूत्रको गिराया और मनुष्यभी अत्यन्त पीड़ामान हुये इसकेपीछे वहां चारोंओर से पाषाणोंकी कठिन वर्षाहुई ६९ सायंकालके समय अधिक वलवान् होनेवाले राक्षसोंके चलायेहुये लोहेके चक्र भुशुंडी प्रास तोमर७० शूलशक्ति और पट्टिश आदि शस्त्र वारंवार अधिक तासे पृथ्वी पर गिरतेथे उसउग्र वड़ेरौद्र युद्धको देखकर राजालोग ७१ आपके पुत्र और कर्णादिक शूरभी पीड़ामान होकर दिशाओं को भागे वहांपर अस्त्रोंके पराक्रममें प्रशंसनीय वड़े प्रतापी अकेले अश्वत्थामाही पीड़ामाननहींहुये ७२ उन्होंनेही घटोत्कचकीउत्पन्नकीहुई मायाको नाशकिया फिर मायाके नाशहोनेपर उसक्रोधयुक्त घटोत्कचने ७३ घोर वाणोंको छोड़ा वहवाण अश्वत्थामाके शरीरमें प्रवेश करगये जैसे कि क्रोधसे मूर्च्छामान सर्प तीव्रता से वामीमें घुसजातेहैं उसी

प्रकार वह बाण अश्वत्थामाजीको घायल करके रुधिर से लिप्त अंग ७४ सुनहरी पुंख तीक्ष्णधार शीघ्रचलने वाले पृथ्वीमें समा गये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त हस्तलाघवी प्रतापवान् अश्वत्थामाने अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कचको दशबाणोंसेछेदा ७५ अश्वत्थामा के हाथसे मर्म स्थलोंपर घायल कठिन पीड़ामान घटोत्कचने लाख आरा रखनेवाले ७६ छुराओंसे युक्त बालार्क के समान प्रकाशित मणि बज्रसे शोभित चक्रको हाथमें लियाफिर उस भीमसेनके पुत्र घटोत्कचने मारने की इच्छासे अश्वत्थामापर फेंका ७७ फिर अश्वत्थामाने अपने बाणोंसे उसको काटा अश्वत्थामाके बाणोंसे टूटा हुआ वहचक्र बड़ेवेगसे पृथ्वीपर जाकर ऐसे निष्फल गिरा जैसे कि अभागेका संकल्प निष्फल जाताहै ७८ इसके पीछे घटोत्कच ने गिराये हुये चक्रको देखकर शीघ्रही अश्वत्थामाको बाणोंसे ऐसे ढकदिया जैसेकि राहु सूर्य्यको ढकताहै ७९ घटोत्कच के पुत्र श्रीमान् भिन्नांजन समूहके समान अंजनपरवा नामने आतेहुये अश्वत्थामाको ऐसे रोका जिस प्रकार गिरिराजने प्रभंजनको रोकाथा उस भीमसेनके पौत्र अंजनपरवाके बाणोंसे रुकाहुआ अश्वत्थामा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे बादल की धाराओं से मेरु पर्ब्बत शोभायमान होताहै ८०।८१ भयसे उत्पन्न होनेवाली ब्याकुलतासे रहित रुद्र और विष्णुके समान पराक्रमी अश्वत्थामाने एकबाणसे अंजनपरवाकी ध्वजाको काटा ८२ दो बाण से उस के सारथीको तीन बाणसे त्रिवीणकको एक बाणसे उसके धनुषको काटकर चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको मारा ८३ उस रथसे विरथ हुयेके हाथसे उठायेहुये सुबर्ण बिन्दुओंसे जटित खड्गको अत्यन्ततीक्ष्णविशिख नामबाणसे दोखंड किया ८४ फिर हे राजा सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाली गदाघटोत्कचके पुत्रनेफेंकीवहभी अश्वत्थामाके बाणोंसे शीघ्रही गिरपड़ी ८५ उसकेपीछे कालमेघके समान गर्जते उस अंजनपरवाने अन्तरिक्षसे उछलकर आकाशसे वृक्षोंको वर्षाकरी ८६ इसकेपीछे अश्वत्थामाने घटोत्कच के पत्र मायाधारीको बाणोंसे

आकाशमें ऐसेछेदा जैसे कि सूर्य्यअपनी किरणोंसे बादलको छेदता है ८७ तबवह आकाशसे उतरकरअपने स्वर्णमयी रथमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि पृथ्वीपर वर्त्तमान बड़ाउग्र श्रीमान् अंजनका पर्वत होताहै ८८ फिरअश्वत्थामाने उसलोहेके कवचरखनेवाले अंजन-परवानाम भीमसेनके पोतेको ऐसेमारा जैसे कि महेश्वरने अन्धक को माराथा ८९ इसकेपीछे अश्वत्थामाके हाथसे मरेहुये अपने पुत्र अंजनपरवाको देखकर और अश्वत्थामाके पासआकर क्रोध से कंपित बाजूबन्द ९० भ्रान्तीसे रहित घटोत्कच उसउठीहुई अग्नि के समान पांडवीसेना के भस्म करनेवाले वीर अश्वत्थामा से बोला ९१ कि हेद्रोणाकेपुत्र खड़ाहो मेरेहाथसे जीवतानहीं जायगा अब तुझको ऐसेमारूंगा जैसेकि अग्निके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजी ने क्रौंच पर्वतको माराथा ९२ अश्वत्थामा बोले कि देवताके समान परा क्रमवाले पुत्र जावो दूसरोंके साथलड़ो हे हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच पुत्रसे पिताको पीड़ाहोना न्यायके अनुसार नहींहै ९३ निश्चय करके मेराक्रोध तुझपर नहींहै परन्तु यहबातहै कि क्रोध युक्तजीव अपनेको भी मारे ९४ संजय बोले कि यहबात सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्र पुत्रके शोक से व्याकुल घटोत्कच अश्वत्थामा से बोला ९५ हे द्रोणाचार्य्य के पुत्र क्यामैं युद्ध में साधारण मनुष्य के समान भयानकहूं जो तुममुझको बाणोंसे डरातेहो यह आपका वचन धन्यवादके योग्य है ९६ निश्चय करके कौरवों के वंशमें मैं भीमसेनसे उत्पन्न हुआ और युद्धमें मुखनफेरने वाले पांडव का पुत्र हूं ९७ मैं राक्षसोंका महाराजहूं बलपराक्रम में रावण के समान हूं हे द्रोणाचार्य्यके पुत्र खड़ाहो खड़ाहो मेरे हाथ से जीवता नहीं जायगा ९८ अबमें इस युद्धभूमिमें तेरी युद्धकी इच्छाको नाशकरूंगा क्रोधसे रक्तनेत्र वह राक्षस यह कहकर ९९ क्रोधमें पूर्ण अश्वत्थामा के सन्मुख ऐसेगया जैसे गजराजके सन्मुख केशरी सिंहजाताहै घटोत्कच रथके अक्षकी समान बाणों से १०० रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके पुत्रके ऊपर ऐसे वर्षा करनेलगा जैसे किजल

धाराओंसे बादल वर्षा करताहै अश्वत्थामाने उस बाण दृष्टि को मार्गमेंही नाशकरदिया १०१ उसकेपीछे अंतरिक्षमें बाणोंका मानों द्वितीय युद्धहुआ तबअस्त्रोंके मर्द्दनसे उत्पन्न पतंगोंसे १०२ रात्रिके समय आकाश ऐसाशोभायमानहुआ जैसेकि पटबीजनोंसे आच्छादित होकर शोभित होताहै युद्धका अभिमान रखने वाले अश्वत्थामा से दूरको हुई उस माया को देखकर १०३ अन्तर्द्धान होकर घटोत्कचने फिर मायाको उत्पन्न किया वह राक्षस वृक्षों से पूर्ण शिखरों समेत बड़ा पर्बत बनगया १०४ वह पहाड़ शूल प्रास खड्ग और मूसल रूपीबड़े झिरनोंका रखने वालाथा १०५ अश्वत्थामा उस अंजन पहाड़के समान पर्ब्बतको देखकर गिरने वाले अस्त्रोंके समूहोंसे पीड़ामाननहींहुआ १०६ इसकेपीछेहासते हुये अश्वत्थामाने बज्रअस्त्रको प्रकट किया उसअस्त्रसे बिदीर्ण वह गिरिराज शीघ्रही नाशहोगया १०७ इसकेपीछे उसराक्षसने युद्धमें आकाशके मध्यमें बज्र रखने वाला नीला बादल होकर बड़े उग्ररूपसे शस्त्रोंकीबर्षासे अश्वत्थामाको ढकदिया १०८ इसके अनन्तर अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाजीने बायुअस्त्रकोचढ़ाकर उसउठेहुयेनीले बादलको छिन्नभिन्न करदिया १०९ उसद्विपादोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाने बाणोंकेसमूहोंसे सबदिशाओंको ढककर एकलाखरथकेसवारों को मारा ११० रथकी सवारीसे आनेवाले बड़े धनुषधारी व्याकुलतारहितसिंह शार्दूल के समान मतवाले हाथीके समान पराक्रमी हाथीसवार रथसवारऔर भयानक १११।११२ मुखशिर और गला रखनेवाले पीछे चलनेवाले पुलस्त्यवंशी यातुधानवंशी तामसनाम वाले इन्द्रकी समान पराक्रमी ११३ नाना प्रकारके शस्त्र धारीवीर नानाप्रकारके कवचोंसे अलंकृत बड़े पराक्रमी भयकारी शब्द और क्रोधसे खुले हुये नेत्र ११४ युद्ध दुर्म्मद संग्राममें सन्मुख नियत अनेक राक्षसों से युक्तघटोत्कचको देखनेसे आकुल चित्त अश्वत्थामाजी आपके पुत्रको देखकर यह बचनबोले ११५ कि हेदुर्य्योधन अब तुमठहरो तुमको इनवीरभाई इन्द्रके समान पराक्रमी राजाओं

समेत भयसे उत्पन्नहोनेवाली व्याकुलता न करनी चाहिये ११६ मैं तेरे शत्रुओं को मारूंगा तेरी पराजय नहींहै यह तुझसे मैं सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं तुम सेनाकोविश्वास कराओ ११७ दुर्य्योधन बोले कि हे गौतमीनन्दन अश्वत्थामाजी मैं मानताहूं कि यह अपूर्व्वबात नहींहै जो यह आपका उदारचित्त और हम पर बड़ी प्रीतिहै ११८ संजय बोले कि अश्वत्थामासे ऐसा वचन कहकर दुर्य्योधन युद्धके शोभा देनेवाले एकहजार घोड़े और रथोंसे संयुक्तनियत होनेवाले शकुनी से बोला ११६ कि हे शकुनी तुम साठहजार रथियों समेत अर्जुनके सन्मुखजाओकर्ण, वृषसेन,कृपाचार्य्य,नील १२० उत्तरीय राजा,कृतवर्मा,पुरोमित्र,सुतापन,दुश्शासन,निकुंभ, पराक्रमी कुण्ड भेदी १२१ पुरंजय,दृढ़रथ,पताकी,हेमकंपन,शल्य, अरुणी, इन्द्रसेन संजय,विजय,जय १२२ कमलाक्ष, परक्राथी,जयवर्म्मा औरसुदर्शन यहसब और छः अयुत सेनाके अधिपति तुम्हारेपीछे चलेंगे १२३ हे मामाजी तुम भीमसेन नकुल सहदेव और धर्मराजको ऐसे मारो जैसे कि देवताओंका इन्द्र असुरोंको मारताहै मेरी आशा विजय होनेमें नियतहै १२४ हेमामाजी द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे छिन्न भिन्न और अत्यन्त घायल हुये कुन्तीके पुत्रोंको ऐसेमारो जैसेकि अग्नि के पुत्र स्वामिकार्त्तिकजीने असुरोंको माराथा १२५ हे राजा आपके पुत्रके इसवचनको सुनकर शकुनीआपके पुत्रोंको प्रसन्न करनेवाला पांडवों को भस्म करने का अभिलाषी उसकीआज्ञापातेही बड़ीशीघ्रतासे चला१२६ उसके पीछे रात्रिकेसमय युद्धभूमिमें अश्वत्थामा औरराक्षसकाऐसाकठिनयुद्ध जारीहुआ जैसेकिइन्द्रऔरप्रह्लादका युद्ध हुआथा १२७ इसके पीछे अत्यन्त क्रोध युक्त घटोत्कचने विष और अग्निकी सूरत दृढ़ दश बाणोंसे अश्वत्थामा को छातीपर घायल किया १२८ भीमसेनके पुत्रके हाथसे चलायमान उन बाणोंसे अत्यन्त घायल रथके मध्यमें वर्त्तमान अश्वत्थामाजी ऐसे कंपायमान हुये जैसे कि वायुसे वृक्ष कंपायमान होतेहैं १२६ फिर घटोत्कचने अंजलिकनाम बाण से अश्वत्थामा के हाथमेंवर्त्तमान महा-

प्रकाशितधनुषको शीघ्रकाटा १३० इसकेपीछे अश्वत्थामाजी ने दू-
सरे बाणों समेत धनुषको लेकर तीक्ष्णबाणोंकी ऐसी बर्षाकरी जैसे
कि जलधाराओंको बादल बर्षाताहै १३१ हे भरतबंशी इसके पीछे
अश्वत्थामाजीने सुनहरी पुंख शत्रुओंकेमारने वाले आकाशचारी
बाणोंको आकाशचारी घटोत्कचपर फेंका १३२ बड़ेवक्षस्स्थलवाले
राक्षसोंका वह समूह बाणोंसे पीड़ामान होकरऐसे शोभित हुआ
जैसे कि सिंहसे व्याकुल मतवाले हाथियोंका समूह होताहै १३३
घोड़े हाथी और सारथियोंके साथ रथियों समेत सबराक्षसोंको छिन्न
भिन्न करके ऐसे नाश करदिया जैसे कि प्रलयके समय भगवान्
अग्नि सब जीवमात्रों को भस्म करदेतेहैं १३४ हे राजा वह अश्व-
त्थामाजी बाणोंसे राक्षसोंकी अक्षौहिणी सेनाको भस्म करते ऐसे
शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्गमें त्रिपुरको भस्म करके महेश्वरजी
शोभायमान हुयेथे १३५ जैसे कि प्रलय कालकी अग्निजीवों का
नाश करके शोभित होतेहैं उसी प्रकार बिजय करने वालोंमें श्रेष्ठ
अश्वत्थामा आपके शत्रुओंको भस्म करकेशोभित हुआ १३६ इसके
पीछे क्रोध युक्त घटोत्कचनेभयकर्मी राक्षसोंके समूहोंको यह आज्ञा
करी कि अश्वत्थामाको मारो १३७ फिर वह राक्षस घटोत्कचकी
आज्ञाको अंगीकार करकेबड़े सिंहनादसे पृथ्वीको शब्दायमानकरते
अश्वत्थामाके मारने को दौड़े जोकि स्वच्छडाढ़ बड़े मुखोंसे युक्त
घोर रूप महा भयानक बिस्तृत मुख घोर जिह्वाक्रोधसे अत्यन्त
रक्त नेत्र इन नाना प्रकार के शस्त्रोंके धारण करने वाले थे शक्ति
शतघ्नी,परिघ,बज्र,शूल,पट्टिश १३८।१३९। १४० खड्ग,गदा,मूसल
फरसे,प्रास,भिंडिपाल,दुधाराखड्ग,तोमर,कणप,तेजकंपन १४१ स्थू
ल,भुशुंडी,अश्म,गदा,स्थूणजोकि कार्ष्णा नाम लोहेकेथे और युद्धमें
शत्रुओंके पराजय करने वाले घोर मुद्गरोंको १४२ अश्वत्थामाके
मस्तकपर मारा और उन भयानक पराक्रमी क्रोधसे रक्तनेत्र राक्ष-
सोंने हज़ारों शस्त्रोंको फेंका १४३ इसके पीछे वह सब शूरवीर अ-
श्वत्थामाके मस्तकपर पड़ी हुईउस बड़ीभारी शस्त्रोंकी बर्षाको देख-

कर पीड़ामान हुये १४४ फिर पराक्रमी अश्वत्थामाने उस घोर और ऊंचीशल्योंकी वड़ी वर्षाको देखकर वज्रकी समान तीक्ष्णधार वाले वाणोंसे नाशकिया १४५ इसकेपीछे वड़ेसाहसी अश्वत्थामा- जीने दिव्य अस्त्रसे अभिमन्त्रित सुनहरी पुंख दूसरे वाणोंसे शीघ्रही राक्षसोंको मारा १४६ वड़े वक्षस्स्थलवाले राक्षसोंका वह समूह वाणोंसे पीड़ितहोकर ऐसेशोभायमानहुआ जैसे कि सिंहोंसे भयभीत होनेवाला मतवाले हाथियोंका समूह व्याकुल होताहै १४७अश्व त्थामाके हाथसे घायल अत्यन्त क्रोध युक्त वड़े पराक्रमी वहराक्षस अश्वत्थामाके मारनेको दौड़े १४८ हेभरतवंशी वहां अश्वत्थामाने इस अपूर्व्व पराक्रमको दिखलाया जोकि सवजीवधारियों में अन्य पुरुषसे करना असंभवथा १४९ जो वड़ेअस्त्रज्ञ अकेले अश्वत्थामा ने राक्षसोंके राजाघटोत्कचके देखतेहुये प्रकाशित वाणोंसे राक्षसी सेनाको एकक्षणमात्रमेंही भस्मकरदिया १५० वह अश्वत्थामायुद्ध में राक्षसोंकी सेनाको मारकर ऐसे शोभायमानहुये जैसे किप्रलय कालमेंसवजीवोंको मारकरसंवर्त्तकनाम अग्नि शोभितहोताहै १५१ हे भरतवंशी युद्धमें उनहजारों राजाओं और पांडवोंके मध्यमें राक्ष- सों के राजा वीर घटोत्कचके सिवाय कोई वीर उस सर्पके समान वाणोंके चलानेवाले अश्वत्थामाजी के देखनेको भी समर्थ नहींहुये १५२ । १५३ इसके अनन्तर वह क्रोधसे चलायमान नेत्रघटोत्कच दसनों से दसनच्छदोंको काटकर १५४ क्रोध युक्त होकर अपने सारथीसे वोला कि मुझको अश्वत्थामाके पास लेचल यह कहकर वह शत्रुहन्ता अश्वत्थामाके साथ द्वैरथ युद्धको चाहता हुआ घोर रूप प्रकाशित पताका वाले रथकी सवारीसेचला १५५ उसभया नक पराक्रम राक्षसने सिंहके समान वड़े शब्दको गर्जकर युद्धमें आठ घंटे रखने वाले वड़े घोर देवताओंके वनायेहुये वज्रकोघुमा- कर अश्वत्थामा के ऊपर फेंका अश्वत्थामाने धनुष को रथपर रख रथसे उतरकर उस वज्रको पकड़लिया१५६।१५७औरउसको उसीके ऊपर छोड़ा वह रथसे उतरगया १५८ वह वड़ा प्रकाशित

कठिन भयका उत्पन्न करनेवाला बज्र घोड़े सारथी और ध्वजा समेत रथको भस्मकर पृथ्वीको चीरकर उसमें घुस गया १५६ सब जीवधारियोंने उस अश्वत्थामाके कर्मको देखकर उसकी स्तुति करी जो रथसे उतरकर शंकरजीकेबनायेहुये घोरबज्रको पकड़लिया १६० हे राजा इसके पीछे भीमसेनके पुत्र घटोत्कचने धृष्टद्युम्नके रथपर जाकर इन्द्रबज्र के समान बड़ेघोर धनुषको लेकर तीक्ष्णधार वाले बाणोंको फिर अश्वत्थामाकी बड़ी छातीपरछोड़ा १६१ फिर व्याकुलतासे रहित धृष्टद्युम्नने बिषैले सर्पके समान सुनहरी पुंख वाले बाणोंको अश्वत्थामाकी छाती पर छोड़ा १६२ इसके पीछे अश्वत्थामाने हजारों नाराचोंको छोड़ा और उनदोनों ने भी प्रज्व-लित अग्निके समान बाणोंसे उसके नाराचोंको काटा १६३ हे भरतर्षभ उन दोनों पुरुषोत्तम और अश्वत्थामा का बड़ा कठिन युद्ध शूरबीरोंके आनन्दका उत्पन्न करने वाला हुआ १६४ इसके पीछे भीमसेन हजार रथ तीनसौ हाथी और छःहजार घोड़ों समेत उस स्थान पर आये १६५ उस समय सुगम पराक्रमी धर्मात्मा अश्व-त्थामाने भीमसेन के पुत्र राक्षससे और छोटे भाई समेत धृष्टद्युम्न से युद्धकिया १६६ वहां अश्वत्थामाने अपूर्व्व पराक्रमको दिखाया हेभरतबंशी जोकि सब जीवमात्रों में दूसरे के करने के योग्य नहीं था १६७ भीमसेन घटोत्कच और धृष्टद्युम्नके देखते पलकमारने मेंही तीक्ष्ण बाणों से राक्षसोंकी अक्षौहिणी सेनाको घोड़े रथ सारथी और हाथियोंसमेत मारडाला १६८ नकुल सहदेव युधि-ष्ठिर अर्जुन और श्रीकृष्णजीके देखते हुये ऐसा कर्म किया सीधे चलने वाले नाराचोंसे अत्यन्त घायल १६९ हाथी शिखरधारी पर्व्वतोंके समान गिर पड़े हाथियोंकी कटी हुई जहां तहां सूंड़ोंसे १७० आच्छादित होकर पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसेकि चेष्टा करने वाले सर्पोंसे शोभित होतीहै और सुनहरी दंड वाले गिरे हुये राजछत्रोंसे भी पृथ्वी ऐसी शोभायमानहुई १७१ जैसे कि प्रलय-कालमें ग्रहोंसे युक्त उदय हुये चन्द्रमा और सूर्य्य वाला आकाश

शोभित होताहै जिसमें बड़ी ध्वजा मंडूक और फैली हुई भेरियां कछुये १७२ छत्र रूप हंसोंकी पंक्तियोंसे युक्त सुनहरी तोरणोंकीमाला रखने वाली जिनमें कंक औरगृध्रही बड़े ग्राह और बहुत शस्त्र रूप झखनाम मछलियों से पूर्ण रथों से चूर्ण कियाहुआ बड़ारेतथाऔर पताका रूप सुन्दर वृक्ष और बाण रूप भयानक प्रकार के मत्स्य प्रास शक्ति दुधारे खड्ग रूप डिंडिभ नामके सर्पथे मज्जा मांसही बड़ी कीच और धड़ रूपी नौका बाल रूप शैवलथा भयभीतोंके मूर्च्छा करने वाले गजराज घोड़े और शूरवीरोंके मृतक शरीरों से उत्पन्न होनेवाली रुधिर समूहोंसे बड़ी घोर नदीको अश्वत्थामाजी ने जारी किया १७६ जोकि शूरवीरों के कथित शब्दों से शब्दायमान रुधिरकी तरंगोंसे लहलहाती पद्मावियोंसे महा घोर यमलोक का महा समुद्रथा १७७ अश्वत्थामाने बाणोंसे राक्षसोंको मारकर घटोत्कचको पीड़ामान किया फिर अत्यन्त क्रोध युक्त महाबली समर्थ ने भीमसेन औरधृष्टद्युम्न समेत १७८ पांडवोंको नाराचोंके समूहों से घायल करके द्रुपद के पुत्र सुरथ नामको मारा १७६ फिर युद्धमें द्रौपदीके पुत्र शत्रुंजय बलानीक जयानीक और जयासू नामको मारा १८० अश्वत्थामाने राजा श्रुता हृवयको यमलोक में पहुंचाया सुन्दर पुंख तीक्ष्ण धार वाले दूसरे तीन बाणोंसे हेममाली १८१ पृषध्र और चन्द्रसेनको मारा हेश्रेष्ठ उसने दशबाणों से कुंतभोजके पुत्रोंको मारा १८२ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त अश्वत्थामाने उग्र सीधे चलनेवाले उत्तम यमदंडकेसमान घोर बाणको चढ़ाकर और शीघ्रही घटोत्कचको लक्षबनाकर कानतक खैंचे हुये धनुषसे छोड़ाहेराजा वह सुन्दर पुंखवाला बड़ा बाण उसराक्षसके हृदयको छेदकर शीघ्रही पृथ्वीमें घुसगया १८३ । १८४ हेराजेन्द्र महारथी धृष्टद्युम्नने उस घायल और गिरे हुये घटोत्कचको जानकर अश्वत्थामाके सन्मुखसे उत्तम रथकोहटालिया १८५ इसकेपीछे वहवीर अश्वत्थामा युधिष्ठिर की उससेनाको जिसका स्वामी मुख फेर गया युद्धमें विजय करके गर्जा जोकि सबजीवोंके मध्य में

आपके पुत्रोंसे प्रशंसनीयथा १८६ इसके पीछे सैकड़ोंबाणोंसे टूटे और चूर्ण हुये शरीर मृतक पड़ेहुये नाशवान् उन राक्षसोंसे पृथ्वी चारों ओर से अत्यन्त भयानक और दुर्गन्ध होगई १८७ सिद्ध गन्धर्व, पिशाचोंके समूह, नाग, गरुड़, पितृ, पक्षी, राक्षसोंके समूह, अप्सरा, देवता, और जीवधारियों के समूहोंने उन अश्वत्थामाजी की स्तुति करी १८८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषटपंचाशत्तमोऽध्यायः १५६॥

एकसौसत्तावनका अध्याय॥

संजय बोलेकि अश्वत्थामाके हाथ से मारे हुये द्रुपदके पुत्रकुंति भोजके पुत्र और हजारों राक्षसों को देखकर १ बड़े उपाय करने वाले युधिष्ठिर भीमसेन धृष्टद्युम्न और सात्यकीने युद्धकेही निमित्त चित्तकिया २ हे भरतबंशी फिर क्रोध युक्त सोमदत्तनेयुद्धमें सात्यकीको देखकर बड़ी बाणोंकी बर्षासे ढकदिया ३ उसके पीछे बिजयाभिलाषी आपके पुत्रका और दूसरों का घोर युद्ध महा कठिन और भयका बढ़ानेवाला हुआ ४ भीमसेन ने उस सन्मुखआते हुये सोमदत्त को देखकर सात्यकी के निमित्त सुनहरी पुंखवाले दश बाणोंसे उसको घायल किया ५ सोमदत्तने भी उस वीरको सौ बाणों से घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी ने पुत्रादिकों से युक्त ६ नहुषके पुत्र ययातिके समान वृद्ध वृद्धोंके गुणोंसे संपन्न सोमदत्त को वज्रकी समान गिरनेवाले तीक्ष्ण धार दश बाणों से घायल किया ७ शक्ति से उसको छेद कर फिर सात बाणोंसे घायल किया उसके पीछे सात्यकी के लियेभीमसेन ने नवीन बने हुये और दृढ़ ८ घोर परिघ को सोमदत्त के मस्तक पर छोड़ा फिर क्रोधयुक्त सात्यकी ने भी युद्धमें अग्नि के समान सुंदर पर वाले तीक्ष्ण धार उत्तम बाण को सोमदत्त की छाती पर छोड़ा वह घोर परिघ और बाण एक साथही उस वीरके ऊपर गिरे ९।१० फिर वह महारथी गिरपड़ा फिर पुत्रके अचेत होने

पर बाह्लीक ११ समय पर वर्षा करने वाले बादल के समान बाणों की वर्षाको करता उस सात्यकी के सन्मुख गया उसके पीछे युद्धके मुखपर सात्यकी के निमित्त महात्मा बाह्लीक को अत्यन्त पीड़ा देते हुये भीमसेनने नवबाण से १२ घायल किया फिर महाबाहु अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रातिपीय वंशी बाह्लीकने शक्तिको भीमसेन की छाती पर ऐसे मारा १३ जैसे कि इन्द्र वज्र को मारता है उस प्रकार से घायल हुआ वह भीमसेन कंपित होकर अचेत हुआ१४फिर पराक्रमीने सचेत होकर उस पर गदाको छोड़ा पांडव की चलाई हुई उस गदाने बाह्लीकके शिरको काटा १५ वहमृतक होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि वज्रसे घायलहोकर गिरिराज गिरताहै हे पुरुषोत्तम उस वीर बाह्लीकके मरने पर १६श्रीरामचन्द्रजी के समान दश पुत्रों ने भीमसेन को पीड़ामान किया उनके नाम नागदत्त, दृढ़रथ, वीरबाहु, अयोभुज १७ दृढ़, सुहस्त विरज, प्रमाथ, उग्रयायि, भीमसेन उनको देख कर क्रोधयुक्त हुआ और भार सहने वाले बाणोंको लिया १८ प्रत्येक को लक्ष बनाकर बाणों से आच्छादित किया वह दशों घायल और मृतक होकर रथों से ऐसे गिर पड़े १९ जैसे कि तीव्र वायुके वेगसे पर्व्वत के शिखरसे टूटे हुये वृक्ष गिरतेहैं भीमसेनने दश नाराचोंसे आपके उन पुत्रों को मार कर २० कर्णके प्यारे पुत्र वृषसेनको बाणों से ढक दिया उसके पीछे कर्णके भाई प्रसिद्ध वृकरथ नामने नाराचोंसे भीमसेनको घायल किया २१ वह पराक्रमी उसके भी सन्मुख गया हे भरतवंशी इसके पीछे वीर भीमसेन आपके शालोंके सात रथियोंको २२ मारकर नाराचोंसे सुतचन्द्रकोमारासुतचंद्रके मरनेको न सहनेवाले २३ शकुनीके वीर भाईगवाक्ष शरभ और विभुनामों ने सन्मुख जाकर तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन को घायल किया जैसे कि पर्व्वत वर्षाको तीव्रतासे घायल होताहै उसीप्रकार नाराचोंसे घायल उस पराक्रमी भीमसेन ने पांच बाणों से पांचों अतिरथियों को मारा २४ । २५ उन मृतक हुये वीरोंको देखकर श्रेष्ठ राजाभी

कंपायमान हुआ उसके पीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने आपकी सेना कोमारा २६ हे निष्पाप धृतराष्ट्र युद्धमें क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य और आपके पुत्रों के देखते हुये अम्बष्ठ, मालव, शूर, त्रिगर्त्त और सशिबीनों कोभी मारकर यमपुरकोभेजा २७ राजाने अभिषाह शूरसेन, बाह्लीक और बिशातकोंको मारकर रुधिर रूपकीचवाली पृथ्वी को किया २८ हे राजा युधिष्ठिरने बाणोंसे शूरवीर मालव और मद्रकोंके समूहोंके सिवाय अन्य२ शूरोंकोभी यमलोक में भेजा २९ मारो घेरो पकड़ो छेदो मारडालो यह कठिन शब्द युधिष्ठिरके रथके पासहुये ३० सेनाओंके भगानेवाले उस युधिष्ठिरको देखकर आपने पुत्रके कहनेसे द्रोणाचार्य्यने शायकोंसे युधिष्ठिरको ढक दिया ३१ फिरअत्यन्तक्रोधयुक्तद्रोणाचार्य्यनेबायुअस्त्रसेराजाकोघायल किया उसने भी उस दिब्य अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूर किया ३२ उस अस्त्रके निष्फल होनेपर पांडुनन्दनके मारनेको अत्यन्त क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्यने युधिष्ठिरकेऊपर बारुणयाम्य अग्नि और त्वाष्ट्र अस्त्रको चलाया ३३ निर्भय हुये धर्म पुत्रने द्रोणाचार्य्यके चलाये और चलेहुये उन अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे दूरकिया ३४ हे भरतबंशी फिर आपके पुत्रको वृद्धि में प्रवृत्त धर्मपुत्रके मारनेके इच्छावान् सत्यप्रतिज्ञा करनेकी इच्छासे द्रोणाचार्य्यने ऐन्द्र और प्राजापत्य अस्त्रको प्रकट किया ३५ कौरवोंके स्वामी हाथी और सिंहके समान चलने वाले बिशाल बक्षस्स्थल रक्त और दीर्घ नेत्र वाले बड़े तेजस्वी युधिष्ठिरने दूसरे महेन्द्र अस्त्रको जारी किया उसने उनके अस्त्रको दूर किया ३६ अस्त्रोंके निष्फल होनेपर युधिष्ठिरका मारना चाहने वाले क्रोधसे पूर्ण द्रोणाचार्य्यने ब्रह्मअस्त्रको प्रकट किया ३७ हे राजा इसके पीछे घोर अंधकारसे ढकजाने पर कुछ नहीं जानागया और सब जीवोंने बड़े भयको पाया ३८ हे राजेन्द्र कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरने प्रकटहोने वाले ब्रह्मास्त्रको देखकर ब्रह्मास्त्रसे ही उस अस्त्रकोभी रोकदिया ३९ उसके पीछे उन सेनाओंके स्वामियोंने उन बड़े धनुषधारी सब प्रकारके युद्धोंमें कुशल नरोत्तम

युधिष्ठिर और द्रोणाचार्य्यकी प्रशंसा करी ४० हे भरतवंशी तब क्रोध से रक्तनेत्र द्रोणाचार्य्य ने युधिष्ठिर को त्याग करके वायव्य अस्त्रसे द्रुपदकी सेनाको छिन्न भिन्न किया ४१ द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल वह पांचाल महात्मा अर्जुन और भीमसेन के देखते हुये भयभीत होकर भागे ४२ इसके पीछे अर्जुन और भीमसेन दो बड़े रथ समूहों समेत सेनाको चारों ओरसे नियत करके अकस्मात् लौटे ४३ अर्जुनने दाहिने पक्षको भीमसेनने उत्तरीय पक्षको रक्षित किया और वाणोंके बड़े समूहों से भारद्वाजके ऊपर वर्षा करने लगे ४४ हे महाराज बड़ेतेजस्वी केकय, संजय, पांचाल और मत्स्य देशी यादवों समेत पीछे चले ४५ तदनन्तर अर्जुनके हाथसे घायल वह भरतवंशियों की सेना लोग अन्धकार और निद्रासे फिर भी इधर उधरहुये ४६ हेराजेन्द्र तब द्रोणाचार्य्यसे और निज आपके पुत्रसे रोके हुये वह शूरवीर रुकनेको समर्थ नहीं हुये ४७

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः १५७ ॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय ॥

संजय बोले कि पांडवोंकी उस चढ़ाई करनेवाली बड़ी सेनाको देखकर उसको न सहनेके योग्य माननेवाले दुर्योधन ने कर्णसे कहा १ हे मित्रोंके प्यारे मित्रोंका यह वह समय वर्त्तमान हुआहै कि तुम युद्धमें उन सब महारथी शूरवीरोंकी रक्षाकरो २ जोकि सबओरको क्रोधयुक्त सर्पके समान श्वासलेने वाले पांचाल मत्स्य केकय देशी और महारथी पांडवों से घिरे हुयेहैं ३ विजय से शोभायमान इन्द्रके समान वह पांडव और पांचालदेशियों के बहुत से रथोंके समूह प्रसन्न चित्त होकर गर्जरहेहैं ४ कर्ण बोले कि जो इन्द्रभी यहां अर्जुनकी रक्षा करने को आवे तो प्रथम शीघ्रतासे उसको विजय करके पीछेसे पांडवोंको मारूंगा ५ हे भरतवंशी मैं तुमसे सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं मेरा विश्वासकर सन्मुख आयेहुये पांडव और पांचालों का मैं नाश करने वालाहूं ६ तुमको ऐसे

विजयदूंगा जैसे कि स्वामिकार्त्तिकजी ने इन्द्रकोदी थी हे राजातेरा अभीष्ट मुझको करना अवश्य योग्यहै मैं केवल इसी निमित्त जीवताहूं ७ सब पांडवों में अर्जुन अधिक पराक्रमीहै उसपर इन्द्रकी बनाई हुई अमोघ शक्तिको छोड़ूंगा हे बड़ाई देने वाले उस धनुषधारी के मरने पर उसके सब भाई तेरे आज्ञाकारी होंगे अथवा फिर बनकोजायँगे ८।६ हे कौरव मेरे जीवते हुये कभी व्याकुलताको मतकरो युद्धमें सब पांडवोंको एक साथही विजय करूंगा १० और सन्मुख आये हुये केकय पांचाल और यादवोंको भी बाणों के समूहोंसे खंड २ करके पृथ्वी तुझको दूंगा ११ संजय बोलेकि फिर हँसते हुये महा बाहु शारद्वत कृपाचार्य्यजी इस प्रकार से कहने वाले सूतके पुत्र कर्णसे यह बचन बोले १२ हे राधाके पुत्र धन्यहै धन्यहै तुझनाथके होने से राजा दुर्योधन स नाथहै जोकि बातोंही से सिद्ध होताहै हे कर्ण कौरवके सन्मुख ऐसी२ बातें बहुधा कहाकरतेहो परन्तु तेरा कोई बल पराक्रम देखनेमें नहीं आता१३। १४ तुमने बहुधा पांडवोंकेसाथ सन्मुखताकरी परन्तु हे सूतनन्दन तू सब स्थानों पर पांडवों से हाराहै १५ हे कर्ण गंधर्वोंके हाथसे दुर्योधन के पकड़े जाने पर सेनाके लोगोंने युद्ध किया तूही अकेला सेनाके आगे से भागा १६ और हे कर्ण बिराट नगरमें इकट्ठे सब कौरव और अपने छोटे भाई समेत तुमभी युद्धमें अर्जुनसे पराजय किये गये १७ तुम युद्धभूमिमें अर्जुनके सन्मुख होनेको भी समर्थ नहीं हो फिर श्रीकृष्णजी समेत सब पांडवोंके विजय करनेको कैसे उत्साह करतेहो १८ हे सूतके पुत्र कर्ण तुम बहुत कहते हो बिना कहे हुये युद्धकर यही सत्पुरुषों का व्रतहै १६ हे सूतपुत्र तुमशरद ऋतुके बादलके समान गर्जकर निष्फल और निरर्थक दिखाई पड़तेहो राजा तुम्हारी इस बातको नहीं जानता है २० हे राधाके पुत्र तभी तक गर्जना करलो जब तक कि अर्जुनका रूप नहीं देखतेहो अर्जुनको समीपसे देखकर तेरागर्जना कठिनहै २१ तुम अर्जुन के उन बाणोंको न पाकर अधिक गर्जतेहो अर्जुनके बाणोंसे घायल

होकर तुझवायलका गर्जना बड़ा कठिनहै २२ क्षत्रीभुजाओंसे शूरहैं ब्राह्मण वातोंमें गुरूहैं अर्जुन धनुषसे शूरहै और कर्ण मनोरथोंसेही शूरहै २३जिससे रुद्रजीभी प्रसन्न हुये उस अर्जुनकोकौन मारसक्ता है तब२४उन कृपाचार्य्यके वचनों से अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रहार करने वालोंमें श्रेष्ठ कर्ण कृपाचार्य्यसे यह वचन बोला शूरवीर सदैव ऐसे गर्जतेहैं जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल गर्जनाकरतेहैं २५ और शीघ्रही फलको ऐसे देतेहैं जैसेकि ऋतुमें बोया हुआबीज फलको देताहैइस युद्धके मुखपर शूरोंके दोषोंका नहीं देखताहूं २६ जोकि युद्धमेंउस२ वचनके कहनेवाले और भारके उठानेवालेहैं पुरुष चित्तसेही जिस भारके उठानेको निश्चय करता है २७ उसमें सहायता करने को दैव अवश्य उसके पास वर्त्तमान होताहै दृढ़ विचार की सहायता रखनेवाला मैं मनसे भारको उठाताहूं २८ युद्धभूमिमें श्रीकृष्ण और यादवों समेत पांडवोंको मारकर जो गर्जताहूं हे ब्राह्मण उसमें तुम्हारी क्या हानि होतीहै२९शूरवीर शरदऋतुके वादलोंके समान निरर्थकनहीं गर्जतेहैं पंडित प्रथम अपनी सामर्थ्यको जानकर फिर गर्जतेहैं ३० मैं अब युद्धमें साथ उपाय करनेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुनके विजय करनेको चित्तसे उत्साह करताहूं हे गौतम जी मैं इसकारणसे गर्जताहूं ३१ हे ब्राह्मण इसमेरे गर्जनेके फलकोदेखो कि युद्धभूमिमें श्रीकृष्णजीसमेत पांडवोंको मारकर इसनिष्कंटपृथ्वी को दुर्योधनके अर्थ दूंगा ३२ कृपाचार्य्यजी बोले किहे सूतके पुत्र कर्ण यह मनोरथोंकीवार्त्ता मुझको अंगीकार नहीं है निश्चय करके तुम सदैव श्रीकृष्ण अर्जुन और धर्मराज युधिष्ठिरकी निन्दा करते हो ३३ हे कर्ण निश्चय करके वहीं विजयहै जहांपर युद्धमें कुशल कवचधारी शस्त्रधारी देवता गन्धर्व यक्ष मनुष्य उरग और राक्षसों के समूहोंसेभी ३४ अजेयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं धर्मपुत्र युधिष्ठिर वेद ब्राह्मणोंका रक्षक सत्य वक्ता जितेन्द्री गुरूऔर देवताओं का पूजन करने वाला ३५ सदैव धर्म में प्रीतिमान् अधिकतर शास्त्रोंकाज्ञाता धैर्य्ययुक्त उपकारका नहीं भूलनेवालाहै ३६ और

उसके भाई बलवान् और अस्त्रोंमें परिश्रम करनेवाले गुरूमें भक्तिपूर्वक प्रीतिरखनेवाले बुद्धिमान् सदैवधर्मपर चलनेवाले और यशस्वी हैं ३७ और उनके नातेदारभी इन्द्रके समान पराक्रमी बड़े प्रीतिमान प्रहार करनेवाले धृष्टद्युम्न, शिखंडी, दुर्मुखी, जनमेजय, चन्द्रसेन, रुद्रसेन, कीर्त्ति, धर्मा, ध्रुव, धर, वसुचन्द्र, दामचन्द्र, सिंहचन्द्र, सुतेजन ३६ और इसीप्रकार द्रुपदकेपुत्र महा अस्त्रज्ञ द्रुपद और जिन्होंके निमित्त छोटे भाइयों समेत राजा विराट अच्छा उपाय करनेवालाहै ४० सतानीक, सूर्यदत्त, श्रुतानीक, श्रुतध्वज, वलानीक, जयानीक, जयाश्व, रथबाहन ४१ चन्द्रोदय, समर्थ, यहसब बिराटके उत्तमभाई नकुल, सहदेव, द्रौपदीकेपुत्र, औरघटोत्कचराक्षस ४२ जिन्होंके अर्थ लड़तेहैं उन्होंकी पराजयनहींहोसक्ती पांडवोंके यहसब और अन्य बहुतसे समूहहैं निश्चयकरके भीमसेन और अर्जुन देवता असुर मनुष्य यक्ष राक्षस भूत सर्प और हाथियों से समेत सब संसारको अस्त्रों के बलसे निर्मूल करसक्ते हैं और युधिष्ठिर अपनी घोरदृष्टि से भी सब पृथ्वीको भस्म करसक्ता है ४४।४५ वह अत्यन्त पराक्रमी श्रीकृष्णजी जिन्होंकेलिये कवच धारणकियेहैं हेकर्ण युद्धमें उनशत्रुओंके बिजय करनेको तू किसप्रकार उत्साहकरताहै ४६ हे सूतके पुत्र सदैव यहतेरा बड़ा अन्याय है जो युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुनसे लड़नेको उत्साह करताहै ४७ संजयबोले हे भरत बंशियोंमें श्रेष्ठ हंसते और इसप्रकार कहेहुये राधाके पुत्र कर्णने गुरू शारद्वत कृपाचार्य्य से कहा ४८ कि हे ब्राह्मण जोतुमने पांडवोंके विषयमेंबचनकहा सोसब सत्यहै निश्चय करके पांडवोंमें यहसब गुण और इनके सिवाय औरभी बहुतसे गुणहैं ४६ पांडव युद्धमें दैत्य यक्ष गन्धर्व पिशाच उरग राक्षस और इन्द्र ५० समेत सब देवताओंसेभी अजेय और अवध्य हैं तोभी इन्द्रकी दीहुई शक्ती से पांडवोंको विजय करूंगा हे ब्राह्मण निश्चय करके इन्द्रनेयह अमोघ शक्ति मुझकोदी है ५१ इसशक्ति से युद्धमें अर्जुनको मारूंगा फिर पांडव अर्जुन के मरनेपर उसके

सगेभाई ५२ अर्जुनसे रहित होकर किसी दशा में भी पृथ्वी के भोगनेको समर्थ नहींहोंगे हे गौतम जी उनसबके नाशहोनेपर यह ससागरा पृथ्वी ५३ बिनाही परिश्रमके दुर्य्योधनके आधीन होगी इसलोक में अच्छी नीतियों से सब प्रयोजन सिद्ध होतेहैं इसमें जराभी सन्देह नहीं है ५४ हे गौतम जी मैं इस ज्ञानको जानकर उस ज्ञानसे गर्जता हूं तुमवृद्ध ब्राह्मण और युद्धमें भी असमर्थ ५५ पांडवोंमें प्रीति करनेवाले होकर मोहसे मेरा अपमान करते हो हे ब्राह्मण जो तुम यहां इसरीतिसे फिर मेरे अप्रियको कहोगे ५६ तो हे दुर्बुद्धी खड्गसे तुम्हारी जिह्वाको काटूंगा हेदुर्बुद्धी विप्र जो तुमसब कौरवीय सेनाके मनुष्योंको भयभीत करते युद्धमें पांडवोंकी प्रशंसा करना चाहतेहो हे ब्राह्मण इस स्थानपर मेरे इस यथार्थ कहेहुये वचनको सुनो ५७ दुर्य्योधन, द्रोण, शकुनि, दुर्मुख, जय, दुश्शासन, वृषसेन, शल्य, और तुम ५८ सोमदत्त, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, विविंशत यह सब युद्धमें कुशल और कवचधारी जिससेना में नियतहोंय ६० तब इन्द्रके समान भी कौनसा शत्रु मनुष्य इनको विजय कर सक्ताहै यह शूरवीर अस्त्रज्ञ स्वर्ग के अभिलाषी ६१ धर्मज्ञ युद्धमें सावधान लड़ाईमें देवताओं कोभी मारसकेंगे पांडवों के मारनेके अभिलाषी दुर्य्योधनकी विजय चाहनेवाले कवचधारी यह लोग युद्धमें नियत होंय मैं बड़े पराक्रमी लोगों कोभी विजय को दैवके आधीन मानताहूं ६२। ६३ जिस स्थान पर महाबाहु भीष्म सैकड़ों बाणोंसे युक्तहोकर सोतेहैं और विकर्ण, चित्रसेन, बाह्लीक, जयद्रथ ६४ भूरिश्रवा, जय, जलसिन्धु, सुदक्षिण, रथियोंमेंश्रेष्ठ शल्य, पराक्रमी भगदत्त, ६५ यह और दूसरेराजा जोकि देवताओं से भी कठिनतासे विजय होनेवाले बड़े पराक्रमी शूरथे युद्धमें पांडवों के हाथसे मारेगये ६६ हे नीच पुरुष ब्राह्मण दैवसंयोगके विशेष दूसरीकौनबात मानतेहो जिससे कि दुर्य्योधन केशत्रुओंकी बारंबार प्रशंसा करतेहो ६७ उन्होंके भी सैकड़ों और हजारों शूर मारेगये और पांडवों समेत कौरवोंकी सबसेना विनाश

को पातीहैं ६८ यहांपर मैं किसीप्रकारसे भी पांडवों के प्रभाव को नहीं देखताहूं हे नीच ब्राह्मण जो तुम सदैव उन्हींको बलवान् पराक्रमी मानतेहो ६९ मैं दुर्य्योधन हितके निमित्त युद्धमें अपनी सामर्थ्यके अनुसार उनके साथ लड़ने को उपाय करूंगा बिजय दैव के आधीन है ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः १५८ ॥

एकसौउनसठका अध्याय ॥

संजयबोले कि अश्वत्थामा कर्णसे उसप्रकार कठोर वचन सुने हुये मामाको देखकर शीघ्रही खड्गकोउठाकर तीव्रतासे दौड़ा१इसके पीछे अत्यन्तक्रोधयुक्त अश्वत्थामा कौरवराज दुर्योधनके देखतेहुये कर्णकेसन्मुख ऐसेआया जैसे कि सिंहमतवाले हाथीके सन्मुखजाय २ अश्वत्थामाबोले हे नरोंमेंनीच अत्यन्त दुर्बुद्धी कर्ण जो तू अर्जुनके सत्य२गुणोंके कहनेवाले शूरमामाजीको शत्रुतासे घुड़कताहै ३अब शूरतासे अपनी प्रशंसा करनेवाला बड़े अहंकारमें फंसाहुआ तूसब लोकके धनुषधारीको युद्धमें कुछ न गिनता निन्दाको करताहै ४ तेरापराक्रमकहां और अस्त्र कहांरहे जिसतुझको गांडीवधनुषधारीने विजय करके तेरे देखते हुये जयद्रथको मारा ५ जिसने पूर्व्वसमय केबीच साक्षात् महादेवजीसे युद्धकिया हे सूतोंमेंनीच निरर्थकमनो-रथोंसे उस अर्जुनको विजय कियाचाहताहै६इन्द्रसमेत सुरासुरभी सब मिलकर जिस सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णकेसाथी लोक केएकबीर और अजेय अर्जुनको विजय करनेको समर्थनहींहैं हे दुर्बु-द्धीसूत फिर तुम युद्धमें इन सबराजाओंसमेत क्या समर्थहोगे७।८ हे नरोंमें नीच अत्यन्त दुर्बुद्धी कर्ण अब नियतहो मैं इसीसमय तेरे शिरको शरीरसे जुदा करताहूं९ संजयबोलेकि बड़ेतेजस्वी आपराजा दुर्योधन और द्विपादोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्यने उस युद्धकेलिये सन्नद्ध अश्वत्थामाको शीघ्रतासे रोका १० कर्णबोला हे कौरवोंमेंश्रेष्ठ दुर्यो-धन यह ब्राह्मणोंमें नीच दुर्बुद्धी शूर युद्धमें प्रशंसनीय मेरे पराक्रम

कोपावो हे दुर्योधन तुम इसको छोड़दो११ अश्वत्थामा बोले कि हे दुर्बुद्धी कर्ण हमलोगोंकी ओरसे यहतेरा अपराध क्षमा कियाजाताहै इसतेरे बड़े अहंकारको अर्जुन नाशकरेगा१२ दुर्योधनबोला हे बड़ाई देनेवाले अश्वत्थामाजी प्रसन्न होकर क्षमाकरनेकेयोग्य हो निश्चय करकेआपको किसीप्रकारसे कर्णकेऊपरक्रोध न करनाचाहिये १३ क्योंकि कर्ण कृपाचार्य्य द्रोणाचार्य्य शल्य शकुनि और आप इन छवोंकेऊपर बड़ाभार नियतहै हे ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ प्रसन्न हूजिये १४ हे ब्रह्मन् यह सब पांडव कर्णकेसाथ सन्मुखहोकर युद्धकरनेके अभिलाषीचारोंओरसे इसको बुलातेहुये आतेहैं१५ संजय बोले हे महाराज इसके पीछे क्रोधकी तीव्रतासेयुक्त बड़े साहसी राजासे प्रसन्न कियेहुयेअश्वत्थामाजी प्रसन्न हुये १६ हे राजेन्द्र फिर बड़ेसाहसी और शीघ्रही रुष्टहोनेवाले कृपाचार्य्यजीभी सौम्यभावसे यहबचन बोले१७कि हे अत्यन्त दुर्बुद्धीकर्ण यहतेराक्रोध हमारीओरसे क्षमा किया जाताहै अर्जुनही तेरे बड़ेभारी अहंकारको नाश करेगा १८ संजयबोले हे राजा इसके अनन्तर कर्णको चारोंओर से घुड़कते वह यशस्वी पांचाल और पांडव एकहीसाथ आपहुंचे १९ तब रथियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमीकर्णभी धनुषको उठाकर उत्तम कौरवोंसे ऐसा रक्षित हुआ जैसे कि देवताओंके समूहोंसे इन्द्र रक्षितहोताहै२०अपनेभुजबलमें आश्रित होकर कर्ण नियतहुआ फिर कर्णका युद्ध पांडवोंके साथ जारी हुआ २१ हे राजा वह युद्ध डरानेवाले सिंहनाद से शोभितथा तदनन्तर उन वीर पांडव और पांचालोंने २२ महाबाहु कर्णको देखकर उच्चस्वर से शब्दकिया और बोले कि यह कर्णहै कर्ण कहां है हे कर्ण इस बड़े युद्धमें नियतहो २३ हे पुरुषोंमें नीच दुर्बुद्धी हमारेसाथ युद्धकर और कोई२कर्णको देखकर क्रोध रक्तनेत्र करके यह वचन बोले २४ यह अहंकारी और निर्बुद्धी सूत का पुत्र सब उत्तम राजाओंकी ओरसे मारने के योग्यहै ऐसेमनुष्यके जीवने से हमारा कोई प्रयोजन नहीं है २५ यह दुर्योधन के मतमें नियत पापी पुरुष कर्ण सदैव से पांडवोंका शत्रु होकर उपद्रवों का

मूलहै २६ मारो२ यह वचन बोलते और बाणोंकी बड़ीबर्षासेढकते महारथी क्षत्री पाण्डवसे आज्ञादिये हुये कर्णके मारनेके निमित्त सन्मुख दौड़े कर्णने उन उसप्रकार दौड़तेहुये महारथियों को देखकर २७ । २८ पीड़ा और भयको नहीं पाया उस प्रलयकालके समान उठेहुये सेनासागरको देखकर २६ आपके पुत्रोंकी प्रसन्नता चाहनेवाले युद्धों में अजेय पराक्रमी शीघ्रता करनेवाले महाबली कर्णने बाणोंके समूहों से ३० उस सेनाको सब ओरसे रोका हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ उसके पीछे पांडवोंने बाणोंकी बर्षा करके उसको रोका ३१ वह हजारों बीर धनुषोंको खैंचते कर्णसे ऐसे युद्ध करनेलगे जैसे कि दैत्योंके समूह इन्द्रसे लड़तेहैं ३२ हे प्रभु कर्णने राजाओंकी वर्षा हुई बाणवृष्टिको अपने बाणोंकी बड़ी बर्षासे चारोंओर को हटाया ३३ युद्ध कर्म में उन युद्धाभिलाषियों का युद्ध ऐसा हुआ जैसे कि देवासुरोंके युद्धमें इन्द्रकायुद्ध दानवोंसे हुआथा ३४ वहांपर हमने कर्ण की अपूर्ब तीव्रताको देखा जो युद्धमें कुशल पराक्रमी उन शत्रुओंने उसको आधीन नहींकिया ३५ महारथीकर्णनेराजाओंकेबाणसमूहोंको रोककर युग ईशा छत्रध्वजा और घोड़ोंपर ३६ अपने नामसे चिह्नित बाणोंको चलाया इसके पीछे कर्णके हाथसे पीड़ामान ब्याकुल रूप वह राजालोग ३७ जहां तहां ऐसे घूमे जैसे कि शरदी से पीड़ामान गौवें घूमती हैं उन मृतक घोड़े हाथी औररथोंके समूहोंको जोकि कर्णके हाथसे घायल थे जहां तहां देखा उससमय मुख न फेरनेवाले शूरोंके पड़ेहुये शिर भुजाओंसे ३६ चारोंओरसे सब पृथ्वी आच्छादित होगई मरनेवाले और सबओरसे शब्दकरनेवाले बीरोंसे ४० युद्धभूमि यमराज की पुरीके समान महारुद्ररूप हुई उसके पीछे राजादुर्य्योधन ने कर्णके पराक्रमको देखकर ४१ और अश्वत्थमासे मिलकर यह वचनकहा कि कवचधारी कर्ण सब राजाओंके साथ युद्धभूमिमें लड़ताहै ४२ कर्णके बाणसे पीड़ित और भागीहुई इससेनाको ऐसे देखो जैसे कि स्वामिकार्त्तिक के हाथसे मारीहुई आसुरीसेना होती है ४३ युद्धमें

बुद्धिमान् कर्णके हाथसे मारीहुई उस सेनाको देखकर यह अर्जुन कर्णके मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुख आताहै सो जिसप्रकार अर्जुन हमारेदेखतेहुये युद्धमें महारथी कर्णको न मारसके उसीप्रकार की नीति कीजिये ४५ तब उसकेपीछे महारथी अश्वत्थामा कृपाचार्य्य शल्य कृतवर्मा यह सब कर्णकी रक्षाके निमित्त अर्जुनके सन्मुख गये४६ जैसे कि दैत्योंकी सेना इन्द्रको देखतीहै उसीप्रकार आते हुयेअर्जुनको देखकर सन्मुख हुये हे राजेन्द्र पांचालों से रक्षित अर्जुनभी कर्णके सन्मुख ऐसेगया जैसे वृत्रासुरकेसन्मुख इन्द्रजाता है ४७धृतराष्ट्र बोले हे सूत सूर्य्यके पुत्र कर्णने कालमृत्यु और यमराजके समान क्रोधयुक्त अर्जुनको देखकर किस उत्तर रूप दशाको पाया ४८ वह महारथी सदैव अर्जुन के साथ ईर्षा करताहै और युद्धमें बड़े भयकारी कर्मवाले अर्जुनके विजय करनेकी अभिलाषा करताहै ४९ हे सूत उस सूर्यपुत्र कर्णने उस सदैवके बड़ेभारी शत्रु रूप अकस्मात् सन्मुख आयेहुये अर्जुनको देखकर कौनसे प्रत्युत्तर को पाया ५० संजय बोले कि व्याकुलतासे रहित कर्ण उस सन्मुख आनेवाले पांडव अर्जुनको देखकर युद्धमें ऐसे सन्मुख हुआ जैसे कि हाथी हाथी के सन्मुख जाताहै ५१ अर्जुनने उस वेग से आते हुये कर्णको सीधे चलनेवाले बाणोंसे ढकदिया और कर्णनेभी अर्जुन को बाणोंसे ढका ५२ फिर अर्जुनने बाणजालों से कर्ण को ढक दिया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने तीनबाणों से छेदा ५३ महाबली अर्जुनने उसकी उस हस्तलाघवता को नहीं सहा फिर शत्रुके हटानेवाले अर्जुनने शिलापर घिसेहुये सीधेचलनेवाले ५४ तीनसौ बाणोंको उस कर्णके निमित्त चलाया और फिर उस हँसते हुये पराक्रमी बड़े बलीने एक बाणसे बायेंहाथके पंजेको छेदा बाण से घायल उस कर्णके हाथसे धनुष गिरपड़ा ५५ । ५६ महाबली और हस्तलाघवी कर्णनेआधेही निमिषमें उसधनुषको फिर लेकर बाणोंके समूहोंसे अर्जुनको ढकदिया ५७ हे भरत वंशी कर्ण के हाथसे उस छोड़ीहुई बाण वर्षाको मंद मुसकान करते अर्जुनने बाणों

की वर्षा से छिन्न भिन्न किया ५८ हे राजा युद्ध कर्म पर युद्ध कर्म करनेके अभिलाषी उनदोनों बड़े धनुषधारियों में परस्पर सन्मुख होकर बाणोंकी वर्षा से ढक दिया ५९ यह युद्धभूमि में कर्ण और अर्जुनका वह बड़ा अपूर्व्व युद्ध ऐसाहुआ जैसे कि हथिनीके ऊपर क्रोधयुक्त दो हाथियों का होताहै ६० इसके पीछे बड़े धनुषधारी शीघ्रतायुक्त अर्जुनने कर्णके पराक्रमको देखकर उसकेधनुषकोमुष्टिका के स्थानपर काटा ६१ फिर शत्रुओंके तपानेवालेने चारभल्लों से उसके चारों घोड़ोंको भी यमलोकमें पहुंचाया और एक भल्लसे सारथी के शिरको उसके शरीरसे जुदा किया ६२ इसकेपीछे पांडुनन्दन अर्जुन ने इसटूटेधनुष मरेघोड़े और नाश हुये सारथीवाले कर्णको चारशायकोंसे छेदा६३बाणोंसे पीड़ित नरोत्तम कर्ण मृतक घोड़ेवाले रथसेशीघ्र उतरकर कृपाचार्य्यके रथपर सवारहुआ ६४ अर्जुनके बाण समूहों से घायल शल्यक बृक्षके समान चितेहुये जीबनकी आशा करनेवाले कर्णने कृपाचार्य्य के रथपर सवारी करी ६५ हे भरतबंशी आपके शूरबीर लोग कर्णको पराजित देख कर अर्जुनकेबाणोंसे घायल होकर दशोंदिशाओं को भागे ६६ हे राजा तबराजा दुर्य्योधनने उन भागेहुओंको देखकर फिर लौटाया और इसबचनको कहा ६७ हे शूरलोगो भागना बन्दकरो हे श्रेष्ठ क्षत्रीलोगो ठहरो मैं आप युद्धमें अर्जुन के मारनेको जाताहूं ६८ मैं पांडव लोगोंको पांचालदेशी और सोमकों समेत मारूंगा अब पांडव गांडीव धनुषधारी समेत मुझ युद्ध करनेवाले के ६९ पराक्रमको ऐसे देखेंगे जैसे कि प्रलयकालीनकाल पुरुषके पराक्रमको देखतेहैं अब शूरबीर लोग मेरे छोड़ेहुये हजारों बाणजालोंको ७० युद्धमें ऐसे देखेंगे जैसे कि टीड़ियोंकी आधिक्यताको देखते हैं अब सेनाके लोग युद्धमें मुझ धनुष धारीके छोड़ेहुये बाण समूहोंको ७१ युद्धमें ऐसे देखेंगे जैसे कि बर्षाऋतुके आदिमें बादलकी वर्षाको देखतेहैं अब मैं युद्धमें टेढ़े बरवाले शायकोंसे अर्जुनको विजय करूंगा ७२ हे शूरबीरलोगो युद्धमेंनियत होकर अर्जुनसे भयकोत्याग

करो अर्जुन मेरे पराक्रम को पाकर ऐसे नहीं सहसकेगा जैसे कि मकरादिक जीवोंका आश्रय रूप समुद्र मर्य्यादा अथवा तटकोपाकर नहीं सहसक्ताहै अर्थात् उल्लंघन नहींकरसक्ताहै यह कहकर बड़ी सेना से संयुक्त अजेय क्रोधसे रक्तनेत्र राजा दुर्य्योधन अर्जुनके सन्मुख चला तब कृपाचार्य्यजीने जातेहुये उस महाबाहु दुर्योधन को देखकर ७५ और अश्वत्थामासे मिलकर इसवचनको कहा यह सहन न करनेवाला क्रोधसे मूर्च्छावान् महाबाहु राजा दुर्य्योधन ७६ पतंग के समान नियत होकर अर्जुनसे लड़नाचाहता है यह पुरुषोत्तम अर्जुनके साथ युद्ध करते हमारे देखते ७७ जबतक प्राणोंको त्याग नहीं करे तबतक इस कौरवकी रक्षाकरो अब जब तक वीर राजादुर्योधन अर्जुनके बाणोंकेलक्ष्योंको नहींपाता है ७८ तबतक युद्ध में रक्षाकरो जबतक कांचली से छुटे सर्प की समान घोर अर्जुन के बाणोंसे ७९ राजा भस्मनहीं कियाजाता है तबतक युद्धसे निषेध करो हे बड़ाई देनेवाले हमलोगों के विद्यमान होने पर इसबातको में अयोग्य जानताहूं ८० कि जो अकेलाही राजा आप अर्जुनसे लड़नेको उसके सन्मुख जाताहै मुकुटधारी अर्जुनके साथ युद्ध करनेवाले दुर्य्योधनके जीवनको मैं कठिनतासे प्राप्त होना ऐसा मानता हूं ८१ जैसे कि शार्दूलके साथ लड़नेवाले हाथी का जीवन कठिनतासे होसक्ताहै मामा से इसप्रकार आज्ञा किया हुआ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ८२ शीघ्रतासे दुर्योधन से यह वचन बोला कि हे गान्धारीके पुत्र मेरे जीवते जी तुम युद्ध करने को योग्य नहींहो ८३ हे अपने सदैव हित चाहने वाले कौरव मुझको तिरस्कार करके अर्जुनके विजयके लिये तुमको व्याकुलतान करना चाहिये ८४ मैं अर्जुन को रोकूंगा हे दुर्योधन तुम ठहरो ८५ दुर्य्योधन बोला कि निश्चय करके गुरूजी पांडवों को पुत्रों के समान रक्षा करते हैं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तुमभी सदैव उन पांडवों में उदासीनता करते हो ८६ अथवा मेरी अभाग्यतासे युद्धमें आपका पराक्रम थोड़ा है या धर्मराज और द्रौपदी के अर्थ

थोड़ाहै उसको हमनहीं जानते ८७ मुझलोभीको धिक्कारहै जिसके कारण सुखभोगनेके योग्य अजेय सब बान्धवलोग बड़े दुःखोंको पाते हैं ८८ शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ युद्धमें महेश्वरजी के समान समर्थ गौतमीके पुत्रके सिवाय कौन शत्रुओंको नाशकर सक्ताहै८९ हे अश्वत्थामा जी प्रसन्न होकर इन सावधान शत्रुओंको नाशकरो आपके अस्त्रोंके लक्ष्यमें नियतहोनेको देवता और असुरभी समर्थ नहीं हैं ९० हे महात्मा जी पांचाल और सोमकों को उनके पीछे चलनेवालों समेत मारो आपही से रक्षित होकर हमलोग शेष बचे हुये शत्रुओं को मारेंगे ९१ हेब्रह्मन् यह यशवान् सोमक और पांचाल अत्यन्त क्रोधयुक्त मेरीसेनाओं में दावानलनाम अग्नि के समान बिचरते हैं ९२ हे महाबाहु नरोत्तम उनको और केकयों को रोको अर्जुन से रक्षित होकर वह नाशको कररहे हैं ९३ हे शत्रु-बिजयी श्रेष्ठ पुरुष अश्वत्थामा जी शीघ्रता युक्तहोकर तुम चलो प्रारंभ में अथवा अन्तमें यह आपका कर्म है ९४ हे महाबाहु तुम पांचालों के मारने के निमित्त उत्पन्न हुयेहो निश्चय करके तुम सब जगत्को पांचलों से रहित करोगे ९५ इसके पीछे वह यही सिद्ध बचन बोले कि ऐसाहीहोगा हे पुरुषोत्तम तुम इसकारण से सब पांचालोंको उनके पीछे चलनेवालों समेत मारो ९६ इन्द्र समेत सब देवताभी तेरे अस्त्रोंके लक्ष्य पर नियत होनेको समर्थ नहींहैं फिर पांचालों समेत पांडवलोग क्या पदार्थहैं यह तुमसे मैंसत्य२ कहताहूं ९७ हे बीर युद्धमें सोमकों समेत सब पांडव पराक्रम से आपके साथ लड़ने को समर्थ नहीं हैं यहसत्य२कहताहूं९८हेमहा-राज चलो२ हमारा समय टल न जाय यह हमारी सेनापांडवों के हाथसे पीड़ित होकर भागतीहै ९९ हे बड़ाई देनेवाले महाबाहुतुम अपनेदिव्यतेजसेपांडवऔरपांचालोंकेविजयकरनेकोसमर्थहो१००॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनषष्टितमोऽध्यायः १५९॥

—※—

एकसौसाठका अध्याय ॥

संजय बोले कि दुर्योधन के इसरीति पर समझाने से युद्ध में दुर्मद अश्वत्थामा ने शत्रुओं के मारने में ऐसा उपाय किया जैसे कि इन्द्रने दैत्योंके मारनेमें उपाय किया था उस महाबाहुनेआपके पुत्रको यहउत्तरदिया १ कि हे महाबाहु कौरव जो तुम कहतेहौ वह सबसत्य है पांडवसदैव मेरे और मेरे पिताके प्यारेहैं२उसीप्रकार हमदोनोंभी उनकेप्यारेहैं परन्तुयुद्धमें नहीं हेतात हमप्राणोंकोत्यागकर निर्भयके समान अपनी सामर्थ्यसे लड़तेहैं ३ हे राजाओं में श्रेष्ठ मैं कर्ण शल्य कृपाचार्य्य और कृतवर्मा एक निमिष मेंही पांडवी सेनाका नाश करसक्तेहैं ४ और हे महाबाहु वह पांडव आधेही निमेषमें कौरवीसेनाको नाश करसक्तेहैं जब कि हमलोग युद्धमें न होंय ५ जो सामर्थ्यसे पांडवोंसे युद्ध करनेवाले हम और हमसे युद्धाभिलाषी वह लोगभी युद्धमें न होंय तो हे भरतवंशी तेज तेजसे मिलकर नाशको पाताहै ६ पांडवोंके जीवतेजी उनकी सेना शीघ्र विजय करनेके योग्य नहींहै यहमैं तुझसे सत्य कहताहूं ७ हे भरतवंशी अपने निमित्त युद्ध करनेवाले वह समर्थ पांडव आपकी सेनाको कैसे नहीं मारेंगे ८ हे राजा तुम बड़ेलोभी और छलीहो हे कौरव तुम बातोंके अहंकारी होकर सन्देह करनेवालेहो इसहेतुसे तुम हमपर सन्देह करतेहो ९ हे राजा मैं मानताहूं कि तुम नीच पापात्मा पापीरूपहो हे नीच तू पापकरनेवाला होकर हमारे मध्य में दूसरोंपरभी सन्देह करताहै १० हे कौरवनन्दन तेरे निमित्त जीवनका त्यागनेवाला मैं उपायमें प्रवृत्त होकर तेरेही कारण से युद्धमें जाताहूं ११ मैं शत्रुओंके साथलडूंगा और उत्तम २ शूरवीरों को मारूंगा पांचाल सोमक और केकयोंसे युद्धकरूंगा १२ हे शत्रुविजयी मैं तेरे निमित्त पांडवोंसेभी युद्ध करूंगा अब मेरे बाणोंसेटूटे हुये अंगवाले पांचाल और सोमक १३ सबओरसे ऐसेभागेंगे जैसे कि सिंहसे पीड़ित गौवें भागतीहैं अब धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर

मेरे पराक्रमको देखकर १४ सोमकोंसमेत लोकको अश्वत्थामा रूपमानेगा धर्मपुत्रयुधिष्ठिर युद्धमेंसोमकों समेत पांचालोंको मृतक हुआ देखकर वैराग्यको पावेगा युद्धमें जो मेरे सन्मुख होकर युद्ध करेंगे हे भरतवंशी मैं उनको मारूंगा १५।१६ वहवीर मेरीभुजाओं के मध्यमें वर्त्तमान होकर बचनहींसके महावाहु अश्वत्थामा आप के पुत्र दुर्योधनसे इसप्रकारके बचनकहकर १७ सब धनुषधारियों को भयभीत करता और जीवधारियोंमेंश्रेष्ठ आपके पुत्रोंके हितको करना चाहता युद्धके निमित्त सन्मुख बर्त्तमानहुआ १८ उसके पीछे वह गौतमीके पुत्र अश्वत्थामाजी पांचाल और केकयोंसेबोले कि हे महारथियो तुमसब इधरसे मेरे अंगोंपर प्रहारकरो१६ और अस्त्रों की तीव्रता दिखलाते नियत होकर तुम युद्धकरो हे महाराज ऐसे बचनसुनकर उनसबने अश्वत्थामाके ऊपर शस्त्रोंकीबर्षा ऐसेकरी२० जैसे कि जलकी वृष्टिको बादल करतेहैं अश्वत्थामाने उनबाणों को काटकर दशबीरोंको मारा २१ हे प्रभु वह दशों पांडवों समेत धृष्टद्युम्नकेसन्मुख नाशहुये युद्धमें घायल वह पांचाल और सृञ्जय २२ युद्धमें अश्वत्थामाको त्यागकरके दशोंदिशाओंको भागे हे महाराज उन भागतेहुये सोमकों समेत शूर पांचालोंको देखकर२३ धृष्टद्युम्न युद्धमें अश्वत्थामाके सन्मुखगया उसकेपीछे सुबर्णकेसामानसेअलंकृत जलभरे बादलके समान गर्जनेवाले २४ मुख न फेरनेवाले सैकड़ों शूर रथियोंसे युक्त राजाद्रुपदकापुत्र महारथीधृष्टद्युम्न २५ गिरायेहुये शूरवीरोंको देखकर अश्वत्थामासे यह वचन बोला हे आचार्य्यके पुत्र दुर्बुद्धी इन शूरवीरोंके मारनेसे तुझको क्या लाभ है २६ जो तू युद्धमें बड़ाशूर है वो मेरेसाथ युद्धकर मैं तुझको अवश्य मारूंगा अब मेरेआगे नियतहो २७ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसकेपीछे प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने मर्म्मस्थलोंके छेदनेवाले तीक्ष्ण बाणोंसे आचार्य्यके पुत्रको घायल किया२८ फिर वह सुनहरी पुंख साफनोक सब शरीरके चीरनेवाले पंक्तीरूप बाण अश्वत्थामा के शरीरमें ऐसे प्रवेशकरगये २६ जैसे कि स्वतन्त्र भ्रमर मधुकेलोभी

पुष्पित वृक्षपर वह अत्यन्त घायल चरण दबेहुये सर्पके समान अत्यन्तक्रोधयुक्त ३० भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित अहंकारी अश्वत्थामाजी हाथमें बाणकोलेकर यह वचनबोले कि हे धृष्टद्युम्न तूनियतहोकर एकमुहूर्त्ततक ठहरजा ३१ फिरतुझकोयमलोकमें भेजूंगा शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले अश्वत्थामा जीने इस प्रकारसे कहकर ३२ हस्तलाघवताके समान बाणोंके समूहोंसे धृष्टद्युम्नको चारोंओरसे ढकदिया संग्राम में अश्वत्थामा से पीड़ित युद्धमें दुर्मद ३३ उस द्रुपदके पुत्रने वचनोंहीसे अश्वत्थामा को घुड़का कि हे ब्राह्मण तुम मेरी प्रतिज्ञा और उत्पत्तिको नहीं जानतेहो ३४ हे अत्यन्त दुर्बुद्धी मैं निश्चयकरके द्रोणाचार्य्यको मारकर तुझकोमारूंगाइसीसेतूमुझसे अवध्यहै और द्रोणाचार्य्यके जीवतेहुये अभीतुझको नहींमारताहूं ३५ हे दुर्बुद्धी अब इसीरात्रिमें सूर्य्योदय से पूर्व्वही तेरे पिताको मारकर फिर युद्धमें तुझकोभी प्रेतलोक में पहुंचाऊंगा ३६ यह मेरेचित्तमें नियतहै इसहेतुसे कि जोतेरी शत्रुता पांडवोंमें और भक्तिकौरवोंमेंहै ३७ तोनियतहोकर उनकोदिखलावो वह मुझसे जीवतेनहीं बचसक्के जो ब्राह्मण अपने धर्मको त्यागकर क्षत्रीधर्ममेंप्रीतिरखनेवालाहै ३८वह सबलोकोंसेऐसेमारनेकेयोग्यहै जैसेकि पुरुषोंमें नीचतुम धृष्टद्युम्नसे ऐसे कठोर वचनोंको सुनकर ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाने ३९ कठिन क्रोधकिया और तिष्ठ तिष्ठ यहवचनभी कहा और दोनोंनेत्रोंसे भस्म करतेहुये उसनेधृष्टद्युम्न कोदेखा४० सर्पकीसमान श्वासलेते अश्वत्थामाने बाणोंसे ढकदिया हे राजाओंमेंश्रेष्ठ युद्धमें अश्वत्थामाके बाणोंसेढका४१ और पांचालदेशी सब सेनासे संयुक्त रथियोंमें श्रेष्ठ अपने पराक्रम में आश्रित महाबाहु धृष्टद्युम्न कंपायमान नहींहुआ ४२ और नानाप्रकारके शायकोंको अश्वत्थामा पर छोड़ा प्राणोंकाद्यूत और दांव रखने वाले युद्धमें परस्पर बाणोंके समूहोंसे पीड़ादेनेवाले क्रोधयुक्त चारोंओर से बाणोंकी वर्षा करनेवाले बड़े धनुषधारी वह दोनों फिर सन्मुख वर्त्तमानहुये ४३। ४४ सिद्ध चारण और वार्त्तिकोंने अ-

श्वत्थामा और धृष्टद्युम्नके उसघोररूप भयानक युद्धको देखकर बड़ी प्रशंसाकी ४५ बाणोंके समूहोंसे आकाश और दिशाओं को पूर्णकरतेहुये वह दोनोंबाणोंसे बड़े अन्धकारको उत्पन्नकरके दृष्टि से गुप्तहोकर युद्धकरनेलगे ४६ युद्धमें नाचते और धनुषको मण्डल रूपकरने और एकदूसरेके मारनेमें उपाय करनेवाले परस्पर मारनेके अभिलाषी ४७ युद्धमेंहजारो उत्तम शूरबीरोंसे स्तुतिमान दोनों महाबाहु अपूर्व्व मनोहर और श्रेष्ठ युद्धके करनेवालेहुये ४८ जैसे कि बनमें दोजंगली हाथीहोतेहैं उसीप्रकार युद्धमें कुशल उन दोनों को देखकर दोनों सेनावालोंको अत्यन्त आनन्दहुआ ४९ सिंहनादोंके शब्दहुये शंखोंको बजाया और हजारों बाजे भी बजे ५० भयभीतोंके भयके बढ़ानेवाले उसकठिन युद्धमेंवहयुद्ध एकमुहूर्त्ततक एकहीसाहुआ ५१ हे महाराज इसकेपीछे अश्वत्थामाजो महात्मा धृष्टद्युम्नकेभुजाधनुष और छत्रकोघायलकरकेपक्षकेरक्षकसमेत ५२ चारोंघोड़े और सारथीको मारकर युद्धमें सन्मुखदौड़े बड़े साहसीने झुके पर्ववाले बाणोंसे उन सबपांचालोंको ५३ जो कि सैकड़ों और हजारोंथे भगादिया हे भरतर्षभ इसकेपीछे पांडवीसेना पीड़ामान हुई ५४ युद्धमें अश्वत्थामाके इन्द्रके समान बड़े कर्मको देखकर सेनाने बड़ीपीड़ाको पाया महारथी अश्वत्थामाने सौबाणोंसे पांचालोंके सौही मनुष्योंको मारकर ५५ और तीक्ष्णधार तीन बाणोंसे तीनमहारथियों को मार धृष्टद्युम्न और अर्जुनके देखते ५६ उन बहुतसे पांचालोंका बिनाशकिया जो कि सन्मुख बर्त्तमानथे युद्धमें सृञ्जियों समेत घायलहुये पांचाल ५७ जिनकेरथ और ध्वजागिरपड़े थे वह अश्वत्थामाको छोड़कर चलेगये वहअश्वत्थामा युद्धमें शत्रुओंको बिजय करके ५८ बहुतबड़े शब्दसे ऐसेगर्जा जैसे कि बर्षाके प्रारम्भमें बादल गर्जताहै वह अश्वत्थामाजीबहुतसे शूरोंकोमारकर ऐसे शोभायमानहुयेजैसेकि प्रलयकालकी अग्नि बसजीवोंको भस्म करके शोभित होतीहै युद्धमें प्रशंसनीय प्रतापी अश्वत्थामा लड़ाई में हजारों शत्रुओं को बिजय करके ऐसे शोभायमान हुये जैसे

कि शत्रुओंके समूहोंको मारकर देवराज इन्द्र शोभित होताहै ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिषष्टितमोऽध्यायः १६० ॥

एकसौइकसठका अध्याय ॥

संजयबोले कि हेमहाराज पांडवयुधिष्ठिरभीमसेनने चारोंओरसे अश्वत्थामाको घेरलिया १ उसकेपीछेद्रोणाचार्य्यकोसाथलेकरराजा दुर्योधन युद्धमें पांडवोंके सन्मुखगया फिर वह युद्ध जारीहुआ २ हे महाराज जोकि घोररूप और भयभीतोंके भयका बढ़ानेवाला था क्रोधयुक्त भीमसेनने अम्बष्ठ,मालव, बंग, शिवी और त्रिगर्त्तदेशियों के ३ समूहोंकोभी यमपुरको भेजा इसके विशेष भीमसेनने अभि-षाह, और शूरसेन, नामक्षत्री जोकि युद्धमेंदुर्मदथे४ उनको मारकर पृथ्वीको रुधिररूपीकीचसे पूर्णकिया हे राजाअर्जुनने पहाड़ीमालव और माद्रिक शूरवीरोंकोभी ५ तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे मृत्युलोक में पहुंचाया सीधे चलनेवाले नाराचोंसे अत्यन्त कठिन घायल ६ हाथी दो शिखर रखनेवाले पर्वतोंके समानपृथ्वीपर गिरपड़े हाथि-योंकी कटीहुई और इधर उधर चेष्टा करनेवालीसूंड़ोंसे ७ आच्छा-दित पृथ्वीऐसी शोभायमानहुई जैसे कि चलायमान सर्पोंसे शोभित होती है ८ पड़ेहुये राजछत्रों से पृथ्वी ऐसी शोभित हुई जैसे कि प्रलयकाल में सूर्य चन्द्रमा आदिक ग्रहों से संयुक्त आकाशहोता है द्रोणाचार्य्य के रथके पास ऐसा कठोर शब्द हुआ कि हे वीर लोगो तुम निर्भयहोकर मारो प्रहार करो भेदो काट डालो ९ फिर बड़े क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें वायुअस्त्रसे ऐसे उनको छिन्न भिन्नकिया जैसे कि दुःखसे उल्लंघनके योग्य बड़ावायु बादलोंको तितिर बितिर कर देता है १० द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल वह पांचाल महात्मा अर्जुन और भीमसेनके देखतेहुये भयभीतहोकर भागे ११ उसके पीछे अर्जुन और भीमसेन बड़ेरथोंके समूहोंसमेत भारीसेना को रोककर अकस्मात् लौटे १२ अर्जुन ने दक्षिणीय पक्षको और भीमसेन ने उत्तरीय पक्षको रक्षित किया और बड़ी बाणों की वर्षा

द्रोणाचार्य्य पर करी १३ उसीप्रकार बड़ेतेजस्वी सृञ्जय पांचाल मत्स्य और सोमक लोग उन दोनोंके पीछे चले १४ हे राजा उसी प्रकर आपके पुत्रके बड़े रथी जो कि प्रहारों के करनेवालेथे बड़ी सेनाओं समेत द्रोणाचार्य्य के रथ के समीप गये १५ उसके पीछे अर्जुनके हाथ से घायल वह भरतबंशियोंकी सेना अंधेरे और निद्रा से फिर इधर उधर को हुये १६ हे महाराज तब आप द्रोणाचार्य्य और आपके पुत्रसे रोके हुये वह शूरबीर न रुकसके १७ अंधकारसे युक्त संसारके होनेपर पाण्डव अर्जुन के बाणों से इधरउधरहोजाने-वाली वह बड़ी सेना सबओरको मुख करके भागी १८ वहां कितने ही राजातो अपनी सैकड़ोंसवारियों कोभी छोड़कर भयभीत होकर चारोंओरसेभागे १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसंकुलयुद्धे शतोपरिएकषष्टितमोऽध्यायः १६१ ॥

एकसौबासठका अध्याय॥

संजय बोले कि फिर सात्यकी बड़े धनुष के चलाय मान करने वाले सोमदत्तको देखकर सारथी से बोला कि मुझको सोमदत्तके सन्मुख लेचल १ हे सूत मैं कौरवोंमें नीच अपने शत्रु वाह्लीकको बिना मारेहुये युद्धभूमिसे नहीं लौटूंगा यह मेरा सत्य २ कथनहै २ उसके पीछे सारथी ने मनके समान शीघ्रगामी और युद्धमें सब शस्त्रोंको उल्लंघन करके चलनेवाले शंखवर्ण सिन्धुदेशी घोड़ोंको युद्धभूमिमें पहुंचाया ३ हे राजा मन और वायुकेसमान शीघ्रगामी वह घोड़े सात्यकी को ऐसे लेचले जैसे कि पूर्व्वसमय में हरी-जातिकेघोड़े दैत्योंके मारनेमें सन्नद्ध इन्द्रको लेचलेथे ४ युद्धमें आते हुये उस बेगवान् यादवको देखकर महाबाहुसोमदत्तजी बिनाव्या-कुलता केलौटे ५ बादलके समान बाणोंकी वर्षाको करते सोमद-त्तने सात्यकीको ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल सूर्य्यको ढक देतेहैं हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ फिर व्याकुलता से रहित सात्यकीने भी कौरवोंमें श्रेष्ठ सोमदत्तको बाणोंके समूहों से युद्धमें चारोंओरसे ढक

दिया ७ फिर सोमदत्तने उस माधव सात्यकीको साठ बाणोंसे छाती पर घायलकिया हे राजा फिर सात्यकीने भी तीक्ष्णबाणोंसे उसको छेदा वह दोनोंपरस्पर बाणोंसेघायल ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि फूलोंकीऋतुमें सुन्दर फूल रखनेवाले फूले हुये किंशुकके वृक्ष होते हैं ६ रुधिरसेलिप्त सब देह और कौरव वा वृष्णियों का यश उत्पन्न करने वाले नेत्रोंसे भस्म करनेवाले उन दोनोंने परस्पर देखा १० रथमंडल मार्गोंमें घूमनेवाले वह दोनों शत्रुओंके मर्द्दन करनेवाले ऐसे घोररूप हुये जैसे कि वर्षा करनेवाले दो बादल होतेहैं ११ हे राजेन्द्र बाणों से टूटे अंग और सब ओरसे कटे हुये बाणोंसे घायल वह दोनों चमत्कारी अचंभेके समान विदित हुये १२ अर्थात् वह दोनों सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे छिदे हुये ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि वर्षाऋतुमें पटबीजनों से युक्त वनस्पति शोभित होती है शायकों से ज्वलित रूप सर्वाङ्ग और युद्धमें क्रोधयुक्त वह दोनों महारथी ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि उल्काओंसे ज्वलितरूप दो हाथी होतेहैं १४ हे महाराज इसके पीछे महारथी सोमदत्तने युद्धमें अर्द्ध-चन्द्रनाम बाणसे माधव के बड़े धनुष को काटा १५ और उसको भी बीस शायकों से घायल किया और शीघ्रता के समय तीव्रता करनेवालेने फिर दश बाणोंसे छेदा १६ इसके पीछे सात्यकीने दूसरे वेगवान् धनुषको लेकर पांचशायकोंसे सोमदत्तको छेदा १७ तदनन्तर हंसते हुये सात्यकी ने युद्धमें दूसरे भल्लसे बाह्लीक की सुनहरी ध्वजाको काटा १८ फिर व्याकुलतासेरहित सोमदत्तने गिराई हुई ध्वजाको देखकर पच्चीस शायकोंसे सात्यकीको घायल किया १६ युद्धमें क्रोधयुक्त यादव सात्यकीने भी धनुषधारी सोम-दत्तकी ध्वजाको क्षुरप्रनाम तीक्ष्णभल्लसे काटा २० हे राजा इसके पीछे टेढ़ेपर्व्व और सुनहरी पुंखवाले बाणोंके एक सैकड़ेसे उसको अनेकप्रकारसे ऐसे घायलकिया जैसे कि टूटी डाढ़वाले हाथीको घायल करते हैं २१ इसके पीछे महाबली महारथी सोमदत्तने दूसरे धनुषको लेकर बाणोंकी वर्षासे सात्यकी को ढकदिया २२

फिर क्रोधयुक्त सात्यकीने युद्धमें उस सोमदत्तको घायलकिया और सोमदत्तने भी सात्यकीको बाणोंके जालोंसे पीड़ितकिया २३ भीमसेनने यादव सात्यकीके निमित्त दश बाणोंसे बाह्लीक के पुत्रको घायल किया और ब्याकुलतासे रहित सोमदत्तने भी सौ बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया२४फिर उसकेपीछे भीमसेनने यादवकेनिमित्त नवीन और दृढ़ घोर परिघको सोमदत्तकी छातीपरछोड़ा २५ हंसते हुये कौरवने युद्धमें उस बेगसे आतीहुई घोर दर्शनवाली परिघको दो टुकड़े करदिया २६ वह बड़ी परिघ लोहेकी दो खंड होकर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि बज्र से टूटा पर्व्वत का बड़ा शिखर होताहै २७ हे राजा उसके पीछे सात्यकीने युद्धमें सोमदत्तके धनुष को भल्लसे और हस्त त्राणको पांच बाणोंसेकाटा २८ हे भरतवंशी उसके पीछे चार बाणोंसे उन उत्तम घोड़ोंको यमराजके पास पहुंचाया २९ हे नरोत्तम फिर हंसतेहुये सात्यकीने दृढ़ पर्व्ववालेभल्ल से सारथीके शिरकोशरीरसे पृथक् करदिया ३० हेराजा इसके अनन्तर यादव सात्यकीने अग्निके समान ज्वलित सुनहरीपुंख तीक्ष्णधार महाघोर बाणको छोड़ा ३१ पराक्रमी सात्यकीके हाथसे छोड़ा हुआ वह घोर उत्तम बाण शीघ्रतासे उसकी छाती परगिरा ३२ हे महाराज यादव के हाथसे अत्यन्त घायल महाबाहु महारथी सोमदत्त रथसे गिरा और मरगया ३३ महारथी लोग वहां उस मरे हुये सोमदत्तको देखकर बड़ी बाणोंकीबर्षा करते सात्यकीके सन्मुख गये ३४ हे महाराज बाणोंसे ढकेहुये सात्यकीको देखकर युधिष्ठिरादि सब पांडव और सब प्रभद्रक बड़ी सेनाको साथलिये द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर दौड़े ३५ उसकेपीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्यके देखतेहुये आपके पुत्रोंकी बड़ी सेनाको बाणोंसे भगाया ३६ सेनाओंके भगानेवाले युधिष्ठिरको देखकर क्रोधसे रक्तनेत्र द्रोणाचार्य्यजी बड़ेबेगसे सन्मुखगये ३७ इसके पीछे अत्यन्त तीक्ष्णधार सात बाणोंसे युधिष्ठिरको घायल किया फिर बड़े क्रोधयुक्त युधिष्ठिरनेभी पांच बाणोंसे घायल किया ३८ हे ठोंको चाटते

अत्यन्तघायल महाबाहु द्रोणाचार्य्यने युधिष्ठिरकी ध्वजा और धनुष
को काटा ३९ उस टूटे धनुष और रथसे रहित उत्तम राजाने शी-
घ्रताके समयपर युद्धमें दूसरे दृढ़ धनुषको वेगसे लिया ४० इसके
पीछे राजा युधिष्ठिरने हजार बाणोंसे घोड़े ध्वजा सारथी और रथ
समेत द्रोणाचार्य्यको घायल किया वह आश्चर्य्यसा हुआ ४१ हे
भरतवंशियों मेंश्रेष्ठ फिर बाणोंकी वर्षासे अत्यन्त पीड़ामान द्रो-
णाचार्य्य एक मुहूर्त तक रथके बैठनेके स्थानपर बैठगये ४२ इसके
पीछे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने एक मुहूर्त हीमें सचेत होकर
बड़े क्रोधमें पूरित होकर बायु अस्त्रको छोड़ा ४३ तब व्याकुलतासे
रहित पराक्रमी युधिष्ठिरने धनुष को खैंचकर उनके अस्त्रको अपने
अस्त्रसे रोकदिया ४४ और बड़ी शीघ्रतासे उनके धनुषको काटा
हे कौरव्य धृतराष्ट्र इसके पीछे क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले द्रोणा-
चार्य्यने उसके उस धनुषको भी तीक्ष्ण भल्लोंसे काटा ४५ फिर
बासुदेवजी कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे बोले हे महाबाहु युधिष्ठिर जो
मैं तुमसे कहताहूं उसको सुनो ४६ हे भरतर्षभ तुम द्रोणाचार्य्यके
युद्धसे हाथ खैंचो द्रोणाचार्य्य सदैव युद्धमें आपके पकड़ने को चाहते
हैं ४७ मैं उसके साथ आपका युद्ध अयोग्य मानताहूं सुनो जो
पुरुष उनके नाश करने को उत्पन्न हुआहै वही उनको मारेगा ४८
गुरूको त्याग करके अब तुम वहां जावो जहांपर राजादुर्योधन है
राजाको राजाहीके साथ युद्ध करना योग्यहै राजाको अन्य से युद्ध
करनेका अभिलाष नहीं होना चाहिये ४९ हे युधिष्ठिर तुम हाथी
घोड़े और रथोंसे संयुक्तहोकर तबतकवहींजावो जबतक कि मुझको
साथमें रखनेवाला अर्जुन ५० और रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन दोनों
कौरवोंके साथ युद्ध करतेहैं धर्मराज युधिष्ठिर बासुदेवजीके बचन
को सुनकर ५१ एकमुहूर्त चिन्ताकरके फिर शीघ्रही कठिनयुद्धमें
वहां गया जहांपर कि शत्रुओं का मारनेवाला भीमसेन नियत
था ५२ कालके समान मुखफाड़ेहुये आपकेशूरवीरोंकोमारते और
रथके बड़े शब्दसे पृथ्वीको शब्दायमान करते ५३ वर्षाऋतुकेबादल

केसमान दशोंदिशाओंको भी शब्दोंसेपूरित करते पांडवयुधिष्ठिरने शत्रुओंके मारनेवाले भीमसेनकेपार्श्ववर्त्तीपने के स्वीकार किया५४ फिर रात्रिके समय द्रोणाचार्य्यने भी पांडव और पांचालोंको छिन्न भिन्न किया ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिघोररात्रियुद्धेशतोपरिद्विषष्टितमोऽध्यायः १६२ ॥

एकसौतरेसठका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसप्रकार घोररूप भयकारी युद्धके वर्त्तमान होने अन्धकार समेत धूलसेलोक के भर जानेपर १ युद्धमें नियत हुये शूरबीरोंने एक दूसरे को नहींदेखा अनुमान और नामों के द्वारा वह बड़ाभारी युद्ध बढ़गया २ जोकि मनुष्य घोड़े औरहाथियोंके मथनेवाले और बड़े रोमहर्षण करनेवाले थे हे राजाओंमें श्रेष्ठ उन भीमसेन,धृष्टद्युम्न, सात्यकी और द्रोणाचार्य्य, कर्ण और कृपाचार्य्य इन सबबीरोंने३ परस्परब्याकुल किया उन महारथियों के हाथसे चारोंओर घायल हुई सेना ४ अंधेरे और धूलसे सब ओरको भागी सबओरसे भागने वाले अचेत युद्ध में दौड़नेवाले उन शूरबीरोंने प्रहार किये और हजारों महारथियोंने युद्धमें परस्पर एकने दूसरेको मारा ६ आपके पुत्रकी सलाहसे रात्रिके अपराधों और उपद्रवों में सब अज्ञान हुये हे भरतबंशी इसके पीछे उस युद्धमें अंधेरे से संयुक्तहोनेपर सब सेनाके मनुष्य और अप्सर लोग अत्यन्त मोहित हुये ७ धृतराष्ट्र बोले तब पांडवों से ब्याकुल और पराक्रमसे हीन कठिन अपराधोंमें डूबेहुये उनलोगों की कौन गति हुई ८ हे संजय इसप्रकार अंधेरे से संसारके ढकजाने परउन पांडवोंका और मेरी सेनाका प्रकाश कैसे हुआ ६ संजय बोले फिर उस सब सेनाने जो कि मरने से बाकी बचीथी सेनाके अप्सरों से कहकर फिर ब्यूह को रचा १० हे राजा द्रोणाचार्य्य आगे और शल्य अश्वत्थामा कृतबर्मा और शल पीछेके भागमें नियत हुये और आप राजा रात्रिके समय सब सेनाको घूमता हुआ देख ११

सब पदातियोंके समूहोंसे यह मधुरता से वचन बोलाकितुम सब उत्तम शस्त्रोंको छोड़कर हाथोंसे प्रकाशित मशालोंको पकड़ो १२ इसके पीछे राजा दुर्य्योधन की आज्ञानुसार प्रसन्नचित्त उन लोगोंने मशालोंको लिया और स्वर्गमें नियत प्रसन्नचित्त देव ऋषि गन्धर्व देवता ऋषियोंके समूह विद्याधर अप्सराओं के समूह १३ नाग यक्ष उरग और किन्नरोंनेभी मशालोंको हाथमें लिया सुगन्धित तेलोंसे पूर्ण मशालोंको देखकर वहांपर दिशाओंके देवता लोग आये अधिकतर कौरव पांडवोंके निमित्त नारद और पर्व्वत ऋषिके कहने से उन देवता आदिकोंने प्रकाश प्रकटकिया फिर वही विभागित सेना रात्रिमें अग्निके प्रकाशोंसे शोभायमान हुई १५ और गिरतेहुये वहुमूल्य दिव्य भूषणादि और प्रकाशित अस्त्रों से भी प्रकाशित हुये उस सेना में एक २ रथपर पांचमशाल और प्रत्येक हाथीके साथ तीन २ मशाल और घोड़े २ प्रति एक बड़ी मशाल पांडव और कौरवोंकी ओरसे जलाईगई वह सब मशाल एक क्षणमें ही प्रकाशित हुई और शीघ्रही आपकी सेनाको भी प्रकाशित किया १७ तेज और मशाल हाथमें रखनेवाले पदातियों के द्वारा अत्यन्त प्रकाशित और शोभायमान सेनारात्रिकेसमय ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि अन्तरिक्षमें विजलियोंसमेत वादल शोभित होतेहैं १८ इसके पीछे सेनाके प्रकाशित होनेपर अग्निकी समान स्वर्णमयी कवचधारी द्रोणाचार्य्य चारोंओर से शत्रुओंको तपाते हुये ऐसे शोभायमान हुये जैसे मध्याह्न के समय किरण समूह रखनेवाला सूर्य्य होताहै १९ इसके पीछे वहांपर सुवर्णके आभूषणादि शुद्ध निष्क धनुष और शस्त्रोंपर अग्निके प्रकाश से प्रकट होनेवाला प्रकाश उत्पन्नहुआ २० हैक्यमें रहनेवाली गदा उज्ज्वलपरिघ और रथोंमें आवागमन करनेवाली शक्तियांप्रतिविम्बित प्रकाशोंसे वारंवार दीपकों को उत्पन्न करतीथीं २१ हे राजा तव वहां शूरवीरोंके छत्र, वाण, व्यजन, खड्ग और प्रकाशमान वड़ी मशालें औरवहुत चंचल सुवर्णकी माला शोभायमान हुईं २२ उससमय वह सेना

शस्त्रोंके प्रकाश से शोभायमान दीपकों के तेजसे शोभित भूषणों के प्रकाशों से प्रकाशित अत्यन्त ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित हुई २३ वीरोंके छोड़े हुये विषसेभरे रुधिरसे आर्द्र शरीर के छेदने वाले शस्त्रोंने वहांपर बड़ेभारी प्रकाशको ऐसे उत्पन्नकिया जैसे कि वर्षाके प्रारम्भमें अन्तरिक्षमें चमकती हुई बिजली होतीहै २४ प्रहारोंकी तीव्रतासे अत्यन्त कंपित घायल और गिरतेहुये मनुष्यों के शिर ऐसे प्रकाशमान हुये जैसे कि वायुसे चालायमान बड़ेबादल २५ हे भरतबंशी जैसे कि लकड़ियोंसे पूर्ण जलतेहुये बड़े वन में सूर्य्यका प्रकाश भी नाशको पाताहै उसीप्रकारसे वह बड़ी भयकारी भयानकरूप सेना भी अत्यन्त प्रकाशमान हुई २६ तुम्हारी उस सेनाको अत्यन्त प्रकाशमान देखकर पांडवों ने शीघ्रही उसी प्रकारसे सब सेनाओंमें पदातियोंको आज्ञादी उन्होंने भी मशालों को प्रकाशित किया २७ हरएक हाथीके साथ सात २ मशालें और प्रत्येक रथके साथ दश २ मशालें और घोड़े २ के पीछे दो २ और दोनों पक्ष ध्वजा और पीछे के स्थानपर दूसरी मशालें प्रकाशित हुई २८ सब सेनाओंके मध्यमें पक्षोंमें आगे पीछे और चारोंओर उसी प्रकार सेनाके मध्यमें दूसरी मशालें हाथमें लेने वाले पदातियोंने पांडवी सेनाको प्रकाशित किया २९ इसप्रकार से दोनों सेनाओंके मध्यमें जलती हुई मशालें हाथमें लेकर मनुष्य घूमने लगे सब सेनाओंमें पदातियोंके समूह हाथी घोड़े औररथोंके समूहोंसे मिलगये ३० उनमशालोंने आपकी सेनाको और पांडवों की रक्षित सेनाको भी अत्यन्त प्रकाशित किया इसरीतिसे अत्यन्त प्रकाशित उस सेनासे आपकी सेना ऐसे अत्यन्त प्रकाशमान हुई ३१ जैसे कि प्रकाशमान सूर्य्य ग्रहोंसे प्रकाशित होताहै उन दोनों का प्रकाश पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओंको उल्लंघन करके वृद्धियुक्त हुआ ३२ हे राजा उन्होंकी और आपकी सेना उस प्रकाश से अत्यन्त प्रकाशित हुई आकाशमें पहुंचने वाले उस प्रकाश से देवतालोगों के समूह भी खबरदार हुये ३३ गन्धर्व यक्ष असुर और

सिद्धोंके समूहों समेत सब अप्सरा आपहुंचीं देवता गन्धर्व यक्ष असुरोंके राजा अप्सराओंके समूह ३४ और मरकर स्वर्गमें चढ़नेवाले शूरों से घिरीहुई वह युद्धभूमि दिव्य रूप हुई रथ हाथी और घोड़ोंके समूहोंको मशालोंसे बड़ी प्रकाशमान और क्रोधयुक्त वीर मृतक और भागे हुये घोड़े रखनेवाली ३५ बड़ी सेना जिसके रथ घोड़े और हाथी क्रमपूर्व्वक नियतथे देवासुरों के ब्यूहकी समान हुये शक्तियों के समूह रूप कठोर वायु बड़ेरथ रूप बादल रखने वाला हाथी घोड़ों से शब्दायमान ३६ शस्त्रोंके समूहरूप वर्षा रुधिररूप जल धारा रखनेवाला रथीरूप दुर्दिन विनाऋतुके वर्षा करनेवाला दिन रात्रिमें वर्त्तमान हुआ उसमें महाअग्निरूप ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महात्मा द्रोणाचार्य्य पांडवों को तपाते हुये ऐसे प्रकार के हुये हे राजेन्द्र जैसे कि वर्षाऋतुके अन्तपर मध्याह्न के समय अपनी किरणोंसे तपाता हुआ सूर्य्य होता है ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदीपोद्योतनेशततोपरित्रिषष्टितमोऽध्यायः १६३ ॥

एकसौचौंसठका अध्याय ॥

संजयबोले कि तब धूल और अन्धकारसे युक्त संसारके अप्रकाशित होने पर परस्पर मारनेके अभिलाषी शूरबीर सन्मुख हुये १ हे राजा शस्त्र प्रास खड्ग और तलवार धारण करनेवाले और परस्पर अपराधी उनलोगोंने युद्धमें सन्मुख होकर एकने दूसरे को देखा २ तब रत्नजटित सुनहरी दंड रखनेवाली सुगन्धित तेलों से सींची हुई देवता और गन्धर्वों के दीपकादिके प्रकाशादिसे अत्यन्त प्रकाशमान चारोंओर से चमकनेवाली हजारों मशालोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई हे भरतवंशी जैसे कि ग्रहोंसे आकाश शोभित होताहै ३ । ४ युद्धभूमि जलित अग्निरूप हजारों उल्काओं से ऐसी अत्यन्त शोभायमान हुई जैसे कि सृष्टिके प्रलय होनेके समय जलती हुई पृथ्वी होतीहै ५ सब दिशा चारों ओरसे उन प्रकाशोंसे ऐसे अत्यन्त प्रकाशित हुई जैसे कि वर्षाऋतुके प्रदोपकालमें पट-

बीजनोंसे संयुक्त वृक्षप्रकाशमान होतेहैं ६ इसके पीछे हरएक बीर दूसरेबीरोंसेजुदे २ होकर भिड़े हाथी हाथियोंकेसाथ घोड़े घोड़ोंके साथसन्मुखहुये ७ और बड़ी प्रसन्नतासे उत्तम रथी दूसरेरथियोंके सन्मुख हुये उस घोर रात्रिमें आपके पुत्रकी आज्ञासे ८चतुरंगिणी सेनाकी बहुतबड़ी चढ़ाईहुई हे महाराज इसके पीछे शीघ्रतासे युक्त सब राजाओंको प्रेरणाकरते अर्जुनने कौरवीय सेनाको तिर्रबिर्र किया ९।१०धृतराष्ट्रबोलेकिमेरेपुत्रकी उससेनामें उसक्रोधयुक्तअशान्त और अजेय अर्जुनके प्रवेश करनेपर तुम्हारा चित्त कैसाहुआ ११ शत्रुके पीड़ा देनेवाले अर्जुनके प्रवेशित होने पर सेनाके लोगोंने क्या किया और दुर्य्योधनने समयके अनुसार किस कर्मको माना अर्जुनके प्रवेश होनेपर कौनसा शत्रुबिजयी पुरुष उसबीरकेसन्मुख गया और कौन२से बीरोंने द्रोणाचार्य्यको श्रेष्ठ रीतिसे रक्षित किया १३ किन बीरोंने शत्रुहन्ता द्रोणाचार्य्यके दक्षिण पक्षकी रक्षा करी और कौन २ बायेंपक्ष और पृष्ठभाग पर रक्षा करनेवाले हुये१४युद्धमें शत्रु लोगोंको मारतेहुये कौन२ सेबीर आगेचले जो बड़े धनुषधारी अजेय द्रोणाचार्य्य पांचालों की सेनामें गये १५ रथमार्गों में नाचते जिस पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने बाणोंसे पांचालों के रथसमूहोंको भस्मीभूत किया १६ उस अग्निके समान क्रोधयुक्तने किसप्रकार से मृत्युको पाया तुम दूसरोंको व्याकुलता से पृथक् और अजेय कहतेहो १७ और युद्धमें बड़ी प्रसन्नताभी उन्हीं की कहतेहो हे सूत उसप्रकारसे मेरे पुत्रोंको नहीं कहतेहो किन्तु उनको मृतक घायल और छिन्न भिन्न होनेवाला कहते हो १८ मेरे रथियोंको युद्धमें रथसे रहित और मारेहुये वा मरेहुये कहते हो १९ संजय बोले कि हे महाराज दुर्य्योधनउसरात्रि में युद्धाभिलाषी द्रोणाचार्य्यके बिचार को जानकर अपने आज्ञाकारी इन भाइयोंसे बोला २० बिकर्ण, चित्रसेन, महाबाहु कौरव, दुर्द्धर्ष, दीर्घबाहु और जो२ उनके पीछे चलनेवालेथे २१ इनसे यह बचनकहा कि उपाय और पराक्रम करनेवाले तुमसब द्रोणाचार्य्य की पीछेसे

रक्षाकरो कृतवर्मा दक्षिणीय चक्रको और शल्य उत्तरचक्रको रक्षा करो २२ और त्रिगर्त्त देशियोंके जो शूर महारथी मरनेसे शेष रहेथे उन सबको आपके पुत्रने प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्य को आगेसे रक्षितकरो २३ आचार्य्यजी अत्यन्त उपाय करनेवालेहैं और पांडव भी अत्यन्तउपाय करनेवालेहैं सोतुम अच्छे उद्योगकरनेवाले होकर युद्धमेंशत्रुओंके मारनेवाले द्रोणाचार्य्यजीकी रक्षाकरो २४ पराक्रमी और प्रतापी द्रोणाचार्य्य युद्धमें बड़ेहस्तलाघवीहैं वह युद्धमें देवता-ओंकोभी विजय कर सक्तेहैं फिर सोमकों समेत पांडवोंका विजय करनाउनकोकितनी बातहै २५ सदैव उपाय करनेवाले तुम महारथी लोग एकसाथही पांचालदेशी महारथी धृष्टद्युम्नसे द्रोणाचार्य्य कीरक्षाकरो पांडवोंकी सेनामें धृष्टद्युम्नके सिवाय और किसी राजा को नहीं देखतेहैं जो युद्धमें द्रोणाचार्य्यके सन्मुख युद्ध करसके २६ इसहेतुसे सर्वात्म भावसे मैं द्रोणाचार्य्यकी रक्षाको मानताहूं अच्छे रक्षित होकर द्रोणाचार्य्यजी सृञ्जी और सोमकों समेत पांडवोंको मारेंगे २७ सेनाके मुखपर सबसृञ्जियों के मारेजाने पर अश्वत्था-मा युद्धमें अवश्य धृष्टद्युम्न को मारेगा इसमें सन्देह नहीं २८ और इसीप्रकार महारथी कर्णभी अर्जुनको मारेगा और युद्ध में दीक्षितहुआ मैंभी भीमसेनको विजय करूंगा २९ और मेरे शेष शूरवीर अपने पराक्रमसे बाकी बचेहुये पांडवोंको जबरदस्ती से मारेंगे प्रकट है कि यह मेरी विजय बहुत समयतकहोगी ३० इस-कारणसे युद्धमें महारथी द्रोणाचार्य्यही को रक्षाकरो हे भरतर्षभ आपके पुत्र दुर्योधनने यह कहकर ३१ उस महाकठिन अन्ध-कारमें अपनी सेनाको आज्ञादी और फिर रात्रिमें युद्धहोना जारी हुआ ३२ परस्पर विजय करनेकी इच्छासे दोनों सेनाओंका घोर संग्राम जारीहुआ अर्जुनने कौरवीयसेना को और कौरवोंने भी अर्जुनको ३३ नानाप्रकारके शस्त्रों के समूहोंसे परस्पर पीड़ामान किया अश्वत्थामाने राजा द्रुपदको द्रोणाचार्य्यने सृञ्जियोंको ३४ युद्धमें टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे ढकदिया हे भरतवंशी परस्पर मारने

वाले पांडवीय पांचालदेशी और कौरवोंकी ३५ सेनाओंके महाघोर शब्दहुये हमलोगोंने और आगेके वृद्धोंनेभी उसप्रकारकेयुद्ध को पूर्वमें कभी देखाथा न सुनाथा जैसा कि यह रौद्र भयानक युद्ध हुआथा ३६ । ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसंकुलयुद्धे शतोपरिचतुष्षष्टितमोऽध्यायः १६४ ॥

एकसौपैंसठका अध्याय ॥

संजयबोले कि हे राजा तब उस रुद्र और सब जीवों के नाश करनेवाले रात्रिके युद्ध वर्त्तमान होनेपर धर्मका पुत्र युधिष्ठिर १ मनुष्य रथ और हाथियोंके नाशकेअर्थ पांडव पांचाल और सोमकोंसे बोला २ अर्थात् राजायुधिष्ठिरने अपने शूरबीरोंसे कहा कि मारने की इच्छासे दौड़कर द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जावो ३ फिर वह पांचाल और सृञ्जय राजा के बचन से भयानक शब्दोंको करते और गर्जते द्रोणाचार्य्यके सन्मुख वर्त्तमान हुये ४ अर्थात् वह क्रोधयुक्त और सन्मुख गर्जनेवाले युद्धमें बल पराक्रम और साहस के अनुसार सन्मुखगये ५ जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सन्मुख जाताहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्य की ओर को आनेवाले युधिष्ठिरके सन्मुख हार्दिक्यका पुत्र कृतवर्मागया ६ हेराजा कौरव भूरियुद्धके मुखपर चारों ओर से बाणवृष्टी करनेवाले सात्यकी के सन्मुखगया ७ फिरसूर्य्यकेपुत्र कर्णने द्रोणाचार्य्यको सन्मुखचाहने वालेआतेहुये महारथी पांडव सहदेवको रोका ८ इसकेपीछे काल के समान फैलेमुख मृत्युरूप भीमसेनके सन्मुख आप राजादुर्य्योधनगया ९ हे राजा शीघ्रता करनेवाले सौबलके पुत्र शूरबीरों में श्रेष्ठ सबयुद्धोंमें कुशलनेनकुलकोरोका १० तदनन्तर शारद्वत कृपाचार्य्यने रथकी सवारीसे आतेहुये रथियोंमें श्रेष्ठ शिखंडी को युद्धमें रोका ११ हे महाराज फिर उपाय करनेवाले दुश्शासनने मोरवर्ण घोड़ोंकी सवारीसे आनेवाले उपाय करनेवाले प्रतिबिन्धको रोका १२ इसके पीछे अश्वत्थामाने सैकड़ों माया में कुशल आते

हुये घटोत्कच राक्षसको रोका १३ फिर वृषसेनने द्रोणाचार्य्य को चाहनेवाले महारथी द्रुपदको सेना और पीछे चलनेवालों समेत रोका१४हे भरतवंशी फिर अत्यन्तक्रोधयुक्त शल्यने द्रोणाचार्य्य के मारनेको शीघ्रआनेवाले बिराटकोरोका १५ चित्रसेन ने द्रोणाचार्य्य कीइच्छासेयुद्धमें वेगवान्आतेहुयेनकुलकेपुत्र सतानीकको बाणोंके द्वारा शीघ्रहीरोका१६हेमहाराज राक्षसोंकेराजाअलंबुषनेशूरबीरोंमें श्रेष्ठशीघ्रआतेहुये महारथीअर्जुनकोरोका१७इसीप्रकार पांचालदेशी धृष्टद्युम्नने शत्रुओंके मनुष्योंके मारनेवाले युद्धमें प्रसन्न मूर्त्ति बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्यको रोका १८ उसके पीछे आपके रथियों ने वेगसे पांडवोंके दूसरे महारथी सन्मुख आनेवालोंको रोका १९ हे राजा उस बड़ेयुद्धमें सैकड़ों और हजारों हाथीके सवारोंसे हाथियों समेत शीघ्र भिड़कर युद्धकर्त्ता और मर्द्दनकर्त्ता रात्रिकेसमय परस्पर घोड़ोंको भगाते वेगसे सपक्ष पर्व्वतोंके समान दिखाईदिये२१और प्रासशक्ति और दुधारा खड्ग हाथमें रखनेवाले गर्जना करते अश्वसवारों समेत पृथक् २ सन्मुखहुये २२ फिर वहां बहुत मनुष्य गदा मूसल और नानाप्रकार के शस्त्रोंसे युद्धमें परस्पर सन्मुखहुये२३ अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्मा हार्दिक्यके पुत्रने धर्मपुत्र युधिष्ठिरको ऐसेरोका जैसेकि उठेहुये समुद्रकोमर्यादारोकतीहै२४ फिर युधिष्ठिरने शीघ्रही पांचबाणोंसे कृतवर्माको घायलकिया फिर बीसबाणसे पीड़ित करके तिष्ठ तिष्ठ वचनकहा २५ हेराजा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्माने भल्लसे युधिष्ठिरके धनुषकोकाटा और सातबाणसे पीड़ामानकिया इसकेपीछे महारथी युधिष्ठिरने दूसरे धनुषको लेकर दशबाणोंसे कृतवर्माको भुजा और छातीपर घायल किया २७ हे श्रेष्ठ युद्धमें धर्मपुत्रके हाथसे घायल माधव कृतवर्मा क्रोधसे कंपायमानहुआ और सातबाणोंसे युधिष्ठिरको पीड़ामानकिया २८ युधिष्ठिरने उसके धनुषको तोड़ हस्त त्राणोंकोकाट कर तीक्ष्णधारवाले पांचबाणोंको चलाया २९ वह बाण उसके सुवर्णमय बहुमूल्य कवचको काटकर और छेदकरके पृथ्वीमें ऐसे

समागये जैसे कि बामीमें सर्प समाजाते हैं ३० उसने पलमात्र मेंही दूसरे धनुषको लेकर पांडवको छःबाणोंसे और सारथीको नौ बाणोंसे घायलकिया ३१ हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस बड़े साहसी युधिष्ठिरनेबड़ेधनुषकोरथपररखकर सर्पकेसमान शक्तिकोफेंका ३२ वह युधिष्ठिरकी भेजीहुई स्वर्णमय चिह्न रखनेवाली बड़ी शक्ति दाहिनी भुजाको छेदकर पृथ्वीमें समागई ३३ फिर उसीसमय युधिष्ठिरने धनुषको लेकर टेढ़े पर्ववाले बाणों से कृतवर्माको ढक दिया ३४ इसकेपीछे बड़े महारथी कृतवर्माने आधेहीपलमें युधिष्ठिरको घोड़े सारथी और रथसे विरथकिया ३५ तब बड़े पांडवने ढाल और तलवारको लिया फिर माधव कृतवर्माने उसकी उस ढाल तलवारकोभी तीक्ष्ण बाणोंसे टुकड़े २ किया ३६ इसके पीछे युधिष्ठिरने सुनहरी दंडवाले कठिनतासे सहनेकेयोग्य तोमर को लेकर युद्धमें शीघ्रहीकृतवर्माके ऊपर फेंका ३७ फिरमन्द मुसकान करते हस्तलाघवी कृतवर्माने धर्मराजकीभुजासे फेंकेहुये अकस्मात् आतेहुये उसतोमरके दोखण्डकिये ३८ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्तने युद्धभूमि में सौबाणोंसे युधिष्ठिरको ढकदिया और उसके कवचकोभी तीक्ष्णबाणोंसेतोड़ा ३९ हे राजायुद्ध में कृतवर्माकेबाणों सेटूटाहुआ बहुमूल्य कवच ऐसेगिरा जैसे कि आकाशसे ताराजाल गिरता है ४० वह टूटे धनुष रथसे रहित गिराहुआ कवच बाणोंसे पीड़ितधर्मकापुत्र युधिष्ठिर शीघ्रही युद्धसे हटगया ४१ फिर कृतवर्मा ने धर्मात्मा युधिष्ठिरको विजयकरके महात्मा द्रोणाचार्य्यकी सेना को रक्षित किया ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणियुधिष्ठिरापयानेनामशतोपरिपंचषष्टितमोऽध्यायः १६५ ॥

एकसौछांछठका अध्याय॥

संजयबोले फिर भूरिने युद्धमें रथियोंमें श्रेष्ठ आतेहुये सात्यकी को ऐसेरोका जैसे कि गर्त्तकेद्वारा हाथीकोरोकतेहैं १ उसके पीछे क्रोधयुक्त भूरिने शीघ्रही तीक्ष्णधारवाले पांचबाणों से सात्यकीको

हृदयपर घायलकिया तबउसका रुधिर बहुतसागिरा २ उसीप्रकार फिर उस कौरव भूरिने युद्धमें तीक्ष्ण धारवाले दशबाणोंसे दुर्मद सात्यकीको भुजाके मध्यमें छेदा ३ हे महाराज क्रोधसे रक्तनेत्र उन दोनोंने क्रोधसे धनुषोंको चलायमान करके बाणोंसे अत्यन्त घायलकिया ४ उनक्रोधयुक्त शायकोंके छोड़नेवाले यमराज और कालरूप दोनोंके शस्त्रोंकीवर्षा अत्यन्त भयकारी हुई ५ फिर वह दोनों परस्पर बाणों से ढकेहुये अच्छीरीति से नियतहुये और वह युद्ध एक मुहूर्त तक एकसाहुआ ६ इसके अनन्तर क्रोधयुक्तअत्यन्त हंसतेहुये सात्यकी ने युद्धमें महात्मा कौरव के धनुष को काटा ७ फिर इसटूटे धनुषवालेको तीक्ष्णधारके नौबाणोंसे शीघ्र हृदय पर छेदा और तिष्ठतिष्ठ बचनकहा ८ पराक्रमी शत्रुकेबाणोंसे अत्यन्त छिदेहुये उस शत्रुसंतापीने दूसरे धनुषको लेकर यादव सात्यकी को छेदा ९ हे राजा फिर उस हंसतेहुये भूरिने तीनबाणों से यादव को घायल करके अत्यन्त तीक्ष्णभल्लसे धनुषको काटा १० फिर उस टूटेधनुष क्रोधसे मूर्च्छामान सात्यकीने बड़ी वेगवान् शक्तिसे उसकी बड़ी छातीपर मारा ११ फिर शक्तिसे टूटेअंग भूरि अपने उत्तम रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि दैवइच्छासे प्रकाशमान किरण वाला मंगल नक्षत्र आकाशसे गिरताहै १२ महारथी अश्वत्थामा जी उस शूरको मराहुआ देखकर युद्धमें वेगसे सात्यकीके सन्मुख दौड़े १३ हेराजा अश्वत्थामाजी सात्यकीसे तिष्ठतिष्ठ बचन कहकर बाणोंकी ऐसीवर्षा करनेलगे जैसे कि बादल अपनी जलधाराओंसे पर्व्वतको ढकताहै १४ फिर महारथी घटोत्कच सात्यकी के रथपर आतेहुये उसक्रोधयुक्त अश्वत्थामाजीसेबोला १५ कि हेद्रोणाचार्य्य के पुत्र खड़ाहो खड़ाहो मेरेहाथ से बचकर न जायगा तुझको मैं ऐसेमारूंगा जैसे कि शरभभैंसेको मारताहै १६ और मैं युद्धभूमिमें तेरे युद्धकी श्रद्धा को नाश करूंगा क्रोधसे रक्तनेत्र शत्रुओंके वीरों का मारनेवाला राक्षस यह कहकर १७ अश्वत्थामाके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि क्रोधयुक्त केशरी गजराजके सन्मुख जाताहै घटोत्कच

अक्षरथके समान बाणोंसे रथियोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी के ऊपर ऐसेबर्षा करनेलगा १८ जैसे कि बादल जलधाराओं से वर्षाकरता है फिर मन्द मुसकान करते अश्वत्थामाने वेगसे युद्धमें विषैले सर्प की समान बाणोंसे उस प्रकट होनेवाली बाणोंकी बर्षाका नाश किया १६ इसकेपीछे मर्मभेदी शीघ्रगामी तीक्ष्ण सैकड़ोंबाणोंसे उस शत्रुबिजयी राक्षसोंके राजा घटोत्कचको ढकदिया २० हे महाराज उनके बाणोंसे छिदाहुआ वह राक्षस युद्धभूमिमें ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि श्वावित्‌शिलोंसे चिताहुआ होताहै २१ उसके पीछे क्रोधसे पूर्ण प्रतापवान् घटोत्कचने भयानक और रुद्रवज्रके समान बाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया २२ क्षुरप्र, अर्द्धचन्द्र, नाराच, शिलीमुख, बाराह, कर्णा, नालीक और विकर्णानाम बाणोंसे बर्षाकरनेलगा २३ पीड़ासे रहित सावधान रूप तेजस्वी अश्वत्थामा ने उस असंख्य वज्रऔर बिजलीकेसमान शब्दायमान ऊपर पड़ने वाली उस बाणवृष्टिको २४ बड़ेदुःख से सहनेके योग्य दिव्यअस्त्र के मंत्रोंसे अभिमंत्रित घोरबाणों से ऐसे इधर उधरकिया जैसे कि बायु बड़े बादलोंकी तिर्रबिर्र करताहै हे महाराज इसकेपीछे अन्तरिक्षमें दूसरा घोररूप युद्ध शूरबीरोंके आनन्दका बढ़ानेवाला हुआ २६ उससमय आकाश अस्त्रोंकी घिसावट से फुलिङ्गों समेत उत्पन्न होनेवाली अग्निसे रात्रिके समय चारोंओरसे पटबीजनों से संयुक्त के समान शोभायमानहुआ २७ उस अश्वत्थामाने सब ओरसे दिशाओंको बाणोंके समूहोंसे ढककर आपके पुत्रोंके हितार्थ राक्षसको अच्छा ढका २८ उसके पीछे गहन रात्रिके मध्य युद्धमें अश्वत्थामा और राक्षसका युद्ध ऐसे जारीहुआ जैसे कि इन्द्र और प्रहलादकाहुआ था २६ तब अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने युद्ध में कालाग्निके समान दशबाणोंसे अश्वत्थामाको छातीपर घायल किया ३० उस राक्षसके मारे हुये बाणोंसे घायल वह महाबली अश्वत्थामा युद्धमें ऐसे कंपायमान हुये जैसे कि बायुसे आघातित वृक्ष होताहै ३१ और अचेत होनेवाले अश्वत्थामा ध्वजाकी यष्टी

से आश्रित हुये ३२ हे राजा इसके पीछे आपकी सब सेना हाहा-कार करनेलगी और आपके सब शूरवीरोंने उसको मृतक रूप माना ३३ पांचाल और सृंजियोंनेयुद्धमें उसदशावाले अश्वत्थामा को देखकर सिंहनादकिये ३४ इसके पीछे शत्रुओंके बिजय करने वाले महाबली अश्वत्थामाने सचेततासे अपने वामहस्त से धनुष को दबाकर ३५ शीघ्रही घटोत्कचको लक्ष्य बनाकर कानतकखैंचे हुये उस धनुषसे घोर और श्रेष्ठ उसवाणको जोकि यमदण्डके समान था छोड़ा ३६ हे राजा वह सुन्दर पुंख भयकारी उत्तम बाण उस राक्षस के हृदय को छेदकर पृथ्वी में घुसगया ३७ उसके आघात से युद्ध में शोभा पानेवाले अश्वत्थामा के हाथसे अत्यन्त घायल वह बड़ा पराक्रमी राक्षसाधिप रथकी उपस्थपर बैठगया ३८ भयसे व्याकुल शीघ्रतायुक्त सारथी उस घटोत्कचको अश्वत्थामा के हाथसे अचेत देखकर युद्धभूमिसे दूर ले गया ३९ महारथी अश्व-त्थामा युद्धमें राक्षसाधिप घटोत्कचको इसप्रकार से घायल करके बहुत बड़े शब्दको गर्जा ४० हे भरतवंशी आपके पुत्र और सब शूरवीरों से स्तुतिमान वह अश्वत्थामा शरीरसे ऐसे अत्यन्त प्रका-शितहुआ जैसे कि मध्याह्नके समय सूर्य्य होताहै ४१ आप राजा दुर्योधनने द्रोणाचार्य्य के रथके पास युद्ध करनेवाले भीमसेन को तीक्ष्ण बाणोंसे छेदा ४२ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर भीमसेन ने उसको दश बाणोंसे छेदा दुर्योधन ने बीस बाणसे छेदा ४३ वह युद्धभूमि में शायकों से ढकेहुयेऐसे दिखाई पड़े जैसे कि आकाशमें मेघजा-लोंसे ढके हुये सूर्य्य और चन्द्रमा होतेहैं ४४ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उसके पीछे राजा दुर्योधनने भीमसेन को पांच बाणोंसे घा-यल करके तिष्ठ तिष्ठ वचन कहा ४५ भीमसेन ने दश बाणों से उसके धनुष और ध्वजाको काटकर टेढे पर्व्ववाले नब्बे बाणों से उस कौरवों के राजाको घायल किया ४६ इसके अनन्तर हे भरत-र्षभ क्रोधयुक्त दुर्योधनने दूसरे बड़े धनुष को लेकर युद्ध के शिर पर सब धनुषधारियों के देखते हुये भीमसेन को तीक्ष्णबाणों से

पीड़ितकिया ४७ भीमसेनने दुर्य्योधन के धनुषसे निकलेहुये उन बाणोंको काटकर कौरवको पच्चीस बाणों से घायलकिया ४८ हे श्रेष्ठ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधनने क्षुरप्रनाम बाणसे भीमसेन के धनुषको काटकर दशबाणोंसे छेदा ४६ फिर महाबली भीमसेन ने दूसरे धनुषको लेकर शीघ्रही तेज धारवाले सातबाणोंसे राजाको घायलकिया ५० हे महाराज हस्तलाघवी के समान दुर्योधनने शीघ्रही उसके उस धनुषको किन्तु हाथमें लिये हुये दूसर तीसरे चौथे और पांचवें धनुषकोभी काटा अर्थात् बिजयसे शोभापानेवाले मतवाले आपके पुत्रने भीमसेन के अनेक धनुषोंको काटा ५१। ५२ इसप्रकार बारंबार धनुषों के तोड़नेपर उस भीमसेन ने युद्धमें अत्यन्त लोहमयी उस शुभ शक्तिको दुर्योधनपर छोड़ा ५३ जो कि सदैव काल की समान प्रकाशित किरण और अग्नि के समान प्रकाशमान आकाश के सीमन्त को उत्पन्न करनेवाली थी ५४ कौरवने सबलोक और महात्मा भीमसेन के देखते उस शक्तिको बीचही में तीनटुकड़े किया ५५ हे महाराज इसकेपीछे भीमसेन ने बड़ी प्रकाशमान उस भारीगदाको वेगसे घुमाकर दुर्य्योधनके रथ पर फेंका ५६ हे भरतर्षभ उसकेपीछे उसभारी गदाने युद्धमें आपके पुत्रके घोड़े और सारथीको मर्दन किया ५७ हेराजेन्द्र फिर आपका पुत्र स्वर्णजटित रथसे उतरकर अकस्मात् महात्मा नन्दकके रथपर सवार हुआ ५८ तब रात्रिमें कौरवों को घुड़कते भीमसेनने आपके पुत्रमहारथीको मृतक हुआ मानकर बड़ा सिंहनाद किया ५६ और आपके सेनाके लोगोंने भी उस राजाको मृतक माना उसके पीछे वहसब चारोंओर से हायहाय पुकारे ६० हे राजा उन सब भयभीतोंके शब्दों को सुनकर और महात्मा भीमसेनके भी शब्द को सुनकर राजा युधिष्ठिर दुर्य्योधन को मराहुआ मानकर शीघ्रतासे वहां आकरवर्त्त मान हुये जहांपर कि पांडव भीमसेन था६२हे राजा पांचाल, केकय, मत्स्य,संजयदेशीशूरबीर सब उपायोंसमेत युद्धकी अभिलाषा से द्रोणाचार्य्यके सन्मुख हुये ६३ वहांपर द्रोणाचार्य्य

का महाभारी युद्ध दूसरे लोगोंसे हुआ और घोर अन्धकारमें डूबे हुये परस्पर मारनेवाले शूरवीरोंका भी युद्ध हुआ ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्षष्टितमोऽध्यायः १६६ ॥

एकसौसरसठका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरत वंशी राजा धृतराष्ट्र सूर्य्य के पुत्रने द्रोणाचार्य्यको युद्धमें चाहनेवाले सहदेवकोरोका १ फिर सहदेवने नौ बाणोंसे कर्णको छेदकर टेढे पर्ववाले विशिखोंसे पीड़ितकिया २ कर्णने टेढ़ेपर्ववाले सौ बाणोंसे उसको घायल किया और हस्त लाघवताके समान उसके धनुषको काटा ३ उसके पीछेप्रतापवान् सहदेवने दूसरे धनुषको लेकर कर्णको बीसबाणसे घायलकिया यह आश्चर्य्यसा हुआ ४ कर्णने टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे उसके घोड़ों कोमारकर उसकेसारथीकोभी शीघ्रही भल्लसे यमलोक पहुंचाया फिर रथसे रहित सहदेवने ढाल तलवार को हाथ में लिया हंसते हुये कर्णने उसकी उस ढाल तलवार को भी खंड २ कर दिया ६ उसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सहदेवने बड़ीघोर सुवर्ण जटित बड़ी भारीगदाको कर्णके रथपर फेंका ७ कर्णने सहदेवकी फेंकीहुई अकस्मात् आतीहुई गदाको बाणोंसे रोककर पृथ्वीपर गिराया ८ शीघ्रता युक्त सहदेवने गदाको निष्फल देखकर कर्णके लिये शक्ति को फेंका उसने उस शक्तिकोभी बाणसे काटा ९ हेमहाराज इसके पीछे सहदेवने व्याकुलता से युक्त शीघ्रही रथसे कूदकर कर्णको सन्मुख देख रथके चक्रको लेकर युद्धभूमि में कर्णके ऊपर छोड़ातब कालचक्रके समान उठाहुआ वह चक्र अकस्मात् आकरगिरा ११ सूतनन्दन कर्णने हजारों बाणोंसे उसको काटा महात्मा कर्णके हाथसे उस चक्रके टूटने पर १२ ईशादण्ड, पोक्तर और नानाप्रकार के युग हाथियों के अंग घोड़े और मृतक मनुष्योंको भी कर्णकोलक्ष्य बनाकर फेंका कर्णने बाणों सेही उनको हटाया उस सहदेवने अपनेको अशस्त्र जानकर विशिख नाम बाणोंसे रुकेहुयेने युद्धको

त्यागा हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ हंसते हुये कर्णने एकक्षणभरमें उसके सन्मुख जाकर १५ सहदेव से यह बचन कहा कि हे पराक्रमी युद्धमें उत्तम रथियों के साथ तू युद्ध मतकर १६ हे माद्री के पुत्र सदैव अपने बराबरवाले से युद्धकर मेरे बचनपर सन्देह मतकर और फिर धनुषकी नोकसे पीड़ित करता हुआ फिर यह बोला कि यह अर्जुन जो कौरवों के साथ लड़ताहै हे माद्रीके पुत्र शीघ्र वहां जावो अथवा घरकोजावो जो मुझको मानतेहो रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण उसको उसप्रकार से कहकर अपने रथके द्वारा १७ पांचाल और पांडवोंकी सेनाको भस्मकरता हुआ चला शत्रुके मारनेवाले कर्णने मारने के स्थानपर बर्त्तमानहुये सहदेवको नहींमारा १८ हे राजा सत्यप्रतिज्ञ बड़ेयशस्वी कर्णने कुन्तीके बचनको स्मरणकरके ऐसा किया इसकेपीछे उदासमन और बाणोंसे पीड़ित १९ और कर्णके बाणरूपी बचनों से दुःखी सहदेव जीवनसे युक्त हुआ और शीघ्रता समेत वह महारथी युद्धमें पांचालदेशी महात्मा जनमेजय के रथ पर सवार हुआ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिघोरयुद्धेशतोपरिसप्तषष्टितमोऽध्यायः १६७ ॥

एकसौ अरसठका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर मद्रके राजा शल्यने द्रोणाचार्य्यकी ओरसेना समेत शीघ्रतासे आनेवाले धनुषधारी बिराटको बाणोंके समूहसे ढकदिया १ उन दोनों दृढ़ धनुषधारियों का युद्ध युद्धभूमिमें ऐसा हुआ जैसा कि पूर्व्व समयमें जंभ और इन्द्रका हुआ था २ हे महा-राज शीघ्रता करनेवाले शल्यने शीघ्रही सौ बाणोंसे बाहिनीपति राजा बिराटको घायल किया ३ और तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणोंसे फिर उसको घायल किया फिर तीसरी बार तिहत्तर बाणोंसे इसके पीछे चौथीबार सौ बाणोंसे घायल किया तदनन्तर राजा शल्यने उसके चारों घोड़ोंको मारकर युद्धमें बाणोंसे सारथी और ध्वजाको गिराया ४।५ वह महारथी मृतक घोड़े वाले रथसे शीघ्रही उतरकर

धनुषको चलायमान करता और तेजबाणोंको छोड़ता नियत हुआ ६ इसके पीछे सतानीक भाईको विरथ देखकर सबलोकके देखतेशीघ्र रथकी सवारीसे सन्मुख आया ७ फिर शल्यने आतेहुये सतानीक को बड़े युद्धमें विशिख नाम बहुत बाणोंसे छेदकर यमलोकमेंपहुं-चाया ८ उस वीरके मरने पर रथियोंमें श्रेष्ठ विराट उस ध्वजाओंकी माला रखनेवाले रथपर शीघ्रही सवारहुआ ९ उसके पीछे क्रोधसे द्विगुणितबलवाले विराटने दोनों नेत्रोंको चलायमान करके शीघ्रही बाणोंसे शल्यके रथको बाणोंसे ढकदिया १० इसके पीछे क्रोधयुक्त राजा शल्यने टेढ़े पर्ववाले बाणसे वाहिनीपति राजा विराटको छातीपर कठिन घायल किया ११ फिर वह अत्यन्त घायल बिराट रथके पृष्ठ पर बैठगया और बड़ामूर्च्छित हुआ १२ युद्धमें विराटको कठिन घायल देखकर सारथी दूरहटालेगया हे भरतवंशी फिर वह बड़ीसेना रात्रिमें भागी १३ जो कि युद्धको शोभादेनेवाली शल्यके सैकड़ों बाणोंसे घायलथी हेराजेन्द्र फिर अर्जुन और बासुदेवजी उस भागीहुई सेनाको देखकर वहांगये जहां राजा शल्य नियत था १४ और राक्षसोंका राजा अलंबुष आठ चक्रवाले उत्तम रथपर सवार होकर उन दोनोंके सन्मुखगया १५ जो कि घोरदर्शन बिशाचरूप उत्तम घोड़ोंसे युक्त रक्तपताका रखनेवाला रक्तही मालाओंसे अलं-कृत१६ कार्ष्णा नाम लोहेकाबना घोररीछोंके चमड़ेसे मढ़ाहुआ और रौद्रअपूर्व्वपक्ष और बड़ेनेत्र शब्दकरनेवाले १७ गृद्धराजकीमूर्त्तिसे शोभायमान ऊंचे दण्डकी ध्वजावालाथा हे राजा वह राक्षस चूर्णा जन समूहके समान शोभायमानहुआ १८ अर्जुनके शिरपर सैकड़ों बाण समूहों को फैलातेहुये उसने आतेहुये अर्जुनको ऐसे रोका जैसे कि प्रभंजन को गिरिराजरोकताहै १९ हे भरतर्षभ तब वहां नर और राक्षसका अत्यन्त कठिन युद्ध सब देखनेवालोंको प्रसन्न-ता देनेवाला २० गृद्ध काकबलाक उलूक और शृगालोंका प्रसन्न करने वाला हुआ अर्जुनने सौ बाणोंसे उसको घायल किया २१ और नौ तीक्ष्ण बाणोंसे ध्वजाकोकाटा और तीन २ बाणसे सारथी

त्रिवेणुकको २२ एक बाणसे धनुष को काटकर चारबाणोंसे चारों घोड़ोंको मारा फिर उसने दूसरा धनुष सन्नद्धकिया उस धनुषकेभी दो खण्ड किये २३ हे भरतर्षभ इसके पीछे अर्जुनने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उस राक्षसाधिपको छेदा तब घायल और भयभीत होकर भागा २४ अर्जुन उसको शीघ्र बिजय करके मनुष्य हाथी और घोड़ोंपर बाणोंको फैलाता द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया २५ हे महाराज यशस्वी अर्जुनके हाथसे घायल सेना पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि वायुसे टूटेहुये वृक्ष गिरते हैं २६ महात्मा अर्जुनके हाथसे उन सेनाओंके नाशहोने पर आपके पुत्रोंको सब सेना भागी २७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिअष्टषष्टितमोऽध्यायः १६८॥

एकसौउनहत्तरका अध्याय॥

संजय बोले हे भरतवंशी आपके पुत्र चित्रसेनने आपकी सेना को बाणोंसे भस्म करनेवाले सतानीक को रोका १ और उस नकुलके पुत्र सतानीकने चित्रसेनको पांचबाणोंसे छेदकर उसको तीक्ष्ण धारवाले दशबाणोंसे फिर छेदा २ हे महाराज फिर चित्रसेनने युद्धमें सतानीकको तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणोंसे छातीपर छेदा ३ तब नकुलके पुत्रने टेढ़े पर्ववाले बिशिखोंसे उसके कवचको शरीर से गिराया वह आश्चर्य्यसाहुआ ४ हे राजाधृतराष्ट्र वह कवच से रहित आपका पुत्र ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि समय पाकर कांचली से छूटाहुआ सर्प होताहै ५ इसके पीछे नकुल के पुत्रने युद्धमें उपाय करनेवाले इस चित्रसेनको ध्वजा और धनुषको तीक्ष्णबाणों से काटा ६ हे महाराज युद्धमें उस टूटे धनुष कवच से रहित महारथीने शत्रुके मारनेवाले दूसरे धनुषको हाथमें लिया ७ इसके पीछे क्रोधयुक्त चित्रसेनने नकुलके पुत्रको नौ बाणोंसे शीघ्रही घायल किया ८ हे श्रेष्ठ फिर नरोत्तम सतानीकने चित्रसेनके सारथी समेत चारों घोड़ोंको मारा ९ बलवान् महारथी चित्रसेनने उस रथसे उतरकर नकुलके पुत्रकोपच्चीसबाणोंसे पीड़ितकिया १०

नकुलके पुत्रने उस कर्म के करनेवाले चित्रसेनके रत्नजटित धनुषको अर्द्धचन्द्र बाणसे काटा ११ वह टूटे धनुष विरथ मृतक सारथी समेत घोड़ेवाला चित्रसेन शीघ्रही महात्माकृतवर्माके रथपर सवार हुआ १२ तब सैकड़ों बाणोंसे ढकता हुआ वृषसेन शीघ्रही उस महारथी द्रुपदके सन्मुखगया जो कि सेनासमेत द्रोणाचार्य्य की सन्मुखता करनेका अभिलाषीथा १३ हे निष्पाप धृतराष्ट्र द्रुपदने कर्णके पुत्र महारथी को साठबाणोंसे छाती और भुजापरछेदा १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त रथपर चढ़ेहुये वृषसेनने द्रुपदको तीक्ष्ण शायकोंसे छातीपर घायल किया १५ हे महाराज बाणोंसे घायल अंग बाणरूप कांटोंसे संयुक्त वह दोनों युद्धमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि स्वाविध शल्लोंसे शोभित होताहै १६ वहदोनों बड़ेयुद्धमें सुनहरी पुंख साफनोकवाले बाणोंसे टूटे कवच शरीर रुधिर समूहसे आर्द्र देह महाशोभायमान हुये १७ अर्थात् वह दोनों युद्धभूमिमें सुवर्णरूप कल्पवृक्ष के समान फूलेहुये किंशुक वृक्षके सदृश शोभायमान हुये १८ हे राजा इसकेपीछे वृषसेनने द्रुपदको नौ बाणोंसे छेदकर फिर सत्तरबाणोंसे घायल किया इसके पीछेभी तीन२दूसरेबाणोंसे १९ इसीप्रकार वह कर्णकापुत्र वर्षा करनेवाले बादलकी समान हजारों बाणोंको छोड़ता शोभायमान हुआ २०तब क्रोधयुक्त द्रुपदने तीक्ष्णधार पीतरंगवाले भल्लसे वृषसेनकेधनुषके दोखंडकिये २१ उसने सुवर्ण जटित नवीन दृढ़ दूसरेधनुषको लेकर और तूणीरसे साफतीक्ष्ण दृढ़ पीतरंगवाले भल्लकोखैंच २२ धनुष में लगाकर और उस द्रुपदको देखकर सब सोमकोंको भयभीत करते हुये उस कानतक खैंचे हुये भल्लको छोड़ा २३ वह भल्ल उसके हृदय को छेदकर पृथ्वीमें गया वृषसेनके बाणसे घायल राजा द्रुपद मूर्च्छायुक्त हुआ २४ फिर सारथी अपने कर्म को स्मरण करता उसको दूर लेगया हे राजेन्द्र उस पांचालोंके महारथी द्रुपदके पराजय होनेपर २५ बाणोंसे टूटे कवचवाली द्रुपद की सेना उस भयानक रात्रिके होने में भागी २६ उससमय उन

जलती हुई चारों ओरसे प्रज्वलित मशालोंसे लोग ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बादलोंके बिना नक्षत्रोंसे आकाश शोभित होताहै २७ इस प्रकार से गिरेहुये रत्न जटित बाजूबन्दोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि वर्षाऋतुमें बिजलियों से आकाश शोभित होताहै २८ इसके पीछे कर्णके पुत्रसे भयभीत सोमक ऐसे भागे जैसे कि तारासंबंधी युद्धमें इन्द्रके भय से भयातुर दानव लोग भागते हैं २९ हे महाराज युद्धमें उसके हाथसे पीड़ामान भागते और मशालों से प्रकाशित वह सोमक शोभायमान हुये ३० हे भरतवंशी कर्णका पुत्रभी युद्धमें उनको विजय करके ऐसा शोभित हुआ जैसे कि मध्याह्नके समय वर्त्तमान उष्ण किरण वाला सूर्य्य शोभित होताहै ३१ आपके अन्य उन हज़ारों राजाओंके मध्यमें प्रतापवान् वृषसेन अकेलाही सबको तपाता हुआ नियत हुआ ३२ वह वृषसेन युद्धमें सोमकों के शूर महारथियोंको विजय करके शीघ्रही वहांगया जहांपर कि राजा युधिष्ठिरथे ३३ इसके पीछे आपकापुत्र महारथी दुश्शासन उस क्रोधयुक्त युद्धमें शत्रुओं के नाश करनेवाले प्रतिबिन्ध्यके सम्मुख गया ३४ हे राजा उन दोनों का वह समागम ऐसा आश्चर्य्यकारी हुआ जैसे कि बादलों से रहित आकाशमें बुध और सूर्य्यका संयोग होताहै ३५ दुश्शासन ने युद्धमें कठिन कर्म करनेवाले प्रतिबिन्ध्यको तीन बाणोंसे ललाटपर छेदा ३६ आपके अत्यन्त पराक्रमी धनुषधारी पुत्रके हाथ से अत्यन्त घायल महाबाहु प्रतिबिन्ध्य शिखरधारी पर्व्वतके समान शोभायमान हुआ ३७ महारथी प्रतिबिन्ध्यने युद्धमें दुश्शासनको नौ शायकोंसे छेदकर फिर सात बाणोंसे घायल किया ३८ हे भरतवंशी आपके पुत्रने वह कठिन कर्म किया कि प्रति बिन्ध्यके घोड़ोंको अपने उग्र बाणों से गिराकर ३९ उस धनुषधारीकी सारथी समेत ध्वजाको भी गिराया और रथको तिलोंके समान खंड २ किया ४० हे प्रभु इसके पीछे भी उस क्रोध युक्त ने टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे पताका, तूणीर, बागडोर और पोक्तरोंको तिलके समान खंड २ करके काटा ४१

फिर रथसे रहित धनुष हाथमें लिये धर्मात्मा हज़ारों बाणोंको फैलाता हुआ आपके पुत्रसे युद्ध करने लगा ४२ आपके पुत्रने क्षुरप्र नाम बाणसे उसके धनुषको काटकर उस टूटे धनुषवाले को दश बाणोंसे पीड़ामान किया ४३ फिर उसको रथसे रहित देखकर उसके महारथी भाई बड़े वेगसे उसके पीछे सेना समेत वर्त्तमान हुये ४४ हे महाराज उसके पीछे वह प्रतिविन्ध्य सुत सोमके प्रकाशमान रथ पर सवार हुआ और धनुषको लेकर आपके पुत्र को घायल किया ४५ उससमय बड़ी सेनासमेत आपके सब शूरवीर आपके पुत्रको मध्यवर्त्ती करके युद्धमें सन्मुख वर्त्तमान हुये तदनन्तर भयकारी रात्रिके समय आपके शूरवीरों से और पांडवों से वह युद्ध जारी हुआ जोकि यमराजके पुरकी वृद्धि करने वाला था ४६ । ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोररात्रियुद्धे शतोपरिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः १६९ ॥

एकसौसत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले कि क्रोधयुक्त शकुनी उस वेगवान् युद्धमें आपकी सेनाके मारनेवाले नकुलके सन्मुख गया और तिष्ठ तिष्ठ शब्दको उच्चारण किया १ शत्रुता करनेवाले परस्पर मारनेके अभिलाषी उन दोनों वीरोंने कानतक खैंचकर छोड़े हुये बाणोंसे परस्परमें घायल किया २ हे राजा जैसे कि नकुलने बाणोंकी वर्षाकरी उसी प्रकार शकुनीने भी गुरूकी शिक्षाको दिखलाया ३ हे महाराज तब युद्धमें बाण रूप कांटोंसे संयुक्त देह वह दोनों शूर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वाविध शल्लोंसे व्याप्त होकर शोभितहोतेहैं ४ अर्थात् सुनहरी पुंख और सीधे चलनेवाले बाणोंसे टूटे कवच रुधिर समूह से लिप्त वह दोनों बड़े युद्ध में शोभित हुये ५ सुवर्ण वर्ण और कल्पवृक्षके तुल्य प्रफुल्लित किंशुक वृक्षके समान युद्धभूमिमें प्रकाशमान हुये ६ हे महाराज बहुत बाणोंसे भिदे हुये वह दोनों शूर युद्धमेंऐसे शोभायमान हुये जैसे कि कांटोंसे युक्त शाल्मली वृक्ष

होताहै ७ तदनन्तर अत्यन्य कुटिल दृष्टि खुलेहुये बिस्तृत नेत्र क्रोध से अत्यन्त रक्तबर्ण परस्पर नाश करनेवाले दिखाईपड़े ८ अत्यन्त क्रोध युक्त हंसते हुये आपके सालेने अत्यन्त तीक्ष्णधार करणी नाम बाणसे माद्रीके पुत्र नकुल को हृदय पर छेदा ९ फिर आप के धनुष धारी सालेके हाथसे अत्यन्त घायल नकुल रथकी पृष्ठ पर बैठ गया और मूर्च्छित भी हुआ १० हे राजा शकुनी अत्यन्त शत्रुता करनेवाले शत्रुको उस दशावाला देखकर ऐसे गर्जा जैसे कि बर्षा के प्रारंभ में बादल गर्जता है ११ उसके पीछे पाण्डव-नन्दन नकुल सचेत होकर कालके समान मुखको चौड़ाकिये फिर शकुनीके सन्मुख गया १२ हे भरतर्षभ उस क्रोधयुक्त नकुलनेशकुनी को साठ बाणसे घायल किया फिर उसको नाराच नाम सौ बाणों से छाती पर छेदा १३ और उसके बाण समेत धनुषको मुष्टिका के स्थानपर काट शीघ्रही ध्वजाको काटकररथसे पृथ्वीपर गिराया १४ पांडव नन्दन नकुलने तीक्ष्ण तीव्रधार पीतरंगके बिशिख नाम एकबाणसे दोनों जंघाओं को छेदकर १५ उसको ऐसे गिरायाजैसे कि ब्याधाके हाथसे सपक्ष बाज पक्षी गिराया जाताहै हे महाराज तब अत्यन्त घायल वह शकुनी ध्वजाकी लाठीको पकड़कर रथके उपस्थपर ऐसे बैठ गया जैसे कि कामी मनुष्य स्त्रीको पकड़कर बैठता है १६ हे निष्पाप धृतराष्ट्र सारथी उसआपके सालेकोअचे-त और गिराहुआ देखकर शीघ्रही रथकी सवारीसे सेना मुख से दूरले गया १७ उसके पीछे नकुल और जो उसकेपीछेचलनेवाले थे धन्य धन्य शब्दको पुकारे शत्रु संतापी नकुल युद्धमें शत्रुको विजय करके क्रोधयुक्त होकर सारथी से बोला कि मुझको द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सन्मुख लेचल १८ हे राजा तब सारथी उस बुद्धिमान् नकुलके बचनको सुनकर उसस्थानको चलाजहांपर कि द्रोणाचार्य्य जी वर्त्तमान थे १९ तब वह उपाय करनेवाले शारद्वतद्रोणाचार्य्य वेग से युद्धमें अपने को चाहनेवाले शिखण्डी के सन्मुख गये २० हंसते हुये शिखण्डी ने द्रोणाचार्य्यकी सेना में आनेवाले शत्रु वि-

जयी कृपाचार्य्यको नौ भल्लों से छेदा २१ हे महाराज आपके पुत्रों का हित करनेवाले कृपाचार्य्यने उसको पांच बाणोंसे छेदकर फिर बीस बाणोंसे छेदा २२ फिर उन दोनोंका युद्ध घोररूप और ऐसा भयानक हुआ जैसे कि देवासुरोंके युद्धमें शंबर और देवराज का हुआथा २३ युद्धमेंदुर्मद वीर महारथीने आकाशको बाणजालों से ऐसा व्याप्तकिया जैसे कि वर्षाऋतुमेंदीबादल करतेहैं २४ फिर वह युद्ध स्वाभाविकही अत्यन्त घोररूप होगया युद्धमें शोभापाने वाले शूरवीरोंकी रात्रि कालरात्रिके समान घोर रूप और भयानक हुई २५ हे महाराज फिर शिखण्डीने गौतम कृपाचार्य्य के तैयार किये हुये बड़े धनुष को बिशिख नाम बाण समेत अर्द्धचन्द्रनाम बाणसे काटा २६ तब क्रोधयुक्त कृपाचार्य्यने भयानक औरसाफ नोक तीक्ष्णधार कारीगर से साफकी हुई शक्ति को उसके ऊपर फेंका २७ शिखण्डीने उस आती हुई शक्तीको बहुत बाणोंसे काटा फिर वह प्रकाशित और चमकदार शक्ति प्रकाश करतीहुई पृथ्वी पर गिरपड़ी २८ रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्णबाणों से शिखंडी को ढकदिया २९ उस यशस्वी कृपाचार्य्यके हाथसे युद्ध में ढकाहुआ वह रथियोंमें श्रेष्ठ शिखंडी रथकी उसस्थ पर बैठगया ३० हे भरतवंशी फिर शारद्वत कृपाचार्य्यने युद्धमें उसको पीड़ामान देखकर मारनेकी अभिलाषा करते हुये बहुत बाणोंसे घायलकिया ३१ पांचाल और सोमकोंने द्रुपद के पुत्र महारथीको युद्धमें मुख फेरनेवाला देखकर चारोंओरसे मध्यवर्त्तीकिया ३२ उसीप्रकार आपके पुत्रोंने बड़ीसेना समेत ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्यको मध्यवर्त्तीकिया इसकेपीछे युद्ध जारीहुआ ३३ हे राजा युद्धमें परस्पर सन्मुख लड़नेवाले रथियोंका कठिन शब्द ऐसाहुआ जैसे कि गर्जनेवाले बादलोंका शब्द होताहै ३४ परस्पर सन्मुख दौड़नेवाले अश्वसवार और हाथियोंकी संग्रामभूमि बड़ी कठिन दिखाईपड़ी ३५ और दौड़नेवाले पत्तियों के चरणाघात से पृथ्वी ऐसी कंपितहुई जैसेकि भयसे पीड़ामान स्त्री कंपायमान होती

है ३६ हे राजा रथ रथियोंको पाकर बड़े वेगसे दौड़े और बहुतोंने ऐसे पकड़लिया जैसे कि काक शलभानाम पक्षीको पकड़लेताहै ३७ हे भरतबंशी इसीप्रकार उस युद्धमें प्रवृत्त मदोन्मत्त बड़ेहाथियोंने भी बड़े २ मतवाले हाथियों को पकड़ लिया ३८ अश्वसवारने अश्व सवारको और पतीने पदातीको परस्पर पाकर क्रोध से एक को एकने जानेनहीं दिया ३९ उस रात्रिमें दौड़ते चलते और फिर लौटतेहुये सेनाओं के कठिन शब्दहुये ४० हे महाराज रथ हाथी और घोड़ोंके मध्यमें वह प्रकाशित मशालें ऐसीदिखाई पड़ीं जैसे कि आकाशसे गिरीहुई उल्का होतीहैं ४१ हे भरतबंशियोंमेंश्रेष्ठ राजा वह रात्रि युद्धके शिरपर मशालोंसे प्रकाशित दिनकेरूप होगई ४२ जैसे कि लोकका वर्त्तमान अन्धकार सूर्य्य को किरणों से नाशको पाताहै उसीप्रकार जहां तहां प्रकाशित मशालों से भी बहुत सा अन्धकार दूर होगया ४३ धूल और अन्धकार से पूरित आकाश पृथ्वीदिशा और विदिशा प्रकाशसे फिर प्रकाशित हुई ४४ अस्त्र कवच और बड़ी मणियोंके सब प्रकाश उन मशालों के प्रकाश से अन्तर्हित प्रभा होकर गुप्त होगये ४५ हे भरतवंशी रात्रिके समय उस युद्धके कोलाहल वर्त्तमान होनेपर किसीने अपनेकोभी यह न जाना कि मैं कौनहूं ४६ आशय यहहै कि उस युद्धमें मोहसे पिताने पुत्रको पुत्रने पिताको औरइसीप्रकार मित्रने मित्रकोभी मारा ४७ मामाने भानजेको भानजेने मामाको जमाईने श्वशुर श्वसुरनेजमाई और इतरने इतरको मारा ४८ रात्रि के समय वह युद्ध मर्य्यादासे रहित होकर भयभीतों के भयका उत्पन्न करनेवाला हुआ ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोररात्रिसंकुलयुद्धे शतोपरिसप्ततितमोऽध्यायः १७० ॥

एकसौइकहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज उस भयानक तुमुल युद्धके वर्त्तमान होनेपर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके सन्मुख वर्त्तमान हुआ १ उत्तम धनुषको चढ़ाता और बारंबार प्रत्यंचाको खैंचता हुआ द्रोणाचार्य्य

के उस रथकी ओर दौड़ा जो कि सुवर्णसे अलंकृत था २ हे महाराज इसके साथी पांडवों समेत पांचालोंने द्रोणाचार्य्य के नाश करने की अभिलाषा से जातेहुये धृष्टद्युम्न को मध्यवर्त्ती करके द्रोणाचार्य्यको घेरलिया ३ आचार्य्योंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको उसप्रकार से घिराहुआ देखकर सब ओरसे उपाय करनेवाले आपके पुत्रोंने युद्धमें द्रोणाचार्य्य को रक्षित किया ४ इसके पीछे वह दोनों सेनासागर रात्रिमें ऐसे भिड़गये जैसे कि वायुसे उठाये और व्याकुल जीववाले भयके उत्पन्न करनेवाले दो समुद्र होतेहैं ५ इसके अनन्तर धृष्टद्युम्न शीघ्रही पांचवाणों से द्रोणाचार्य्यको हृदय पर घायल करके सिंहनादको गर्जा ६ हे राजा फिर द्रोणाचार्य्यने युद्ध में उसको पच्चीस बाणोंसे छेदकर दूसरे भल्लसे उसके बड़ेशब्द वाले धनुषको काटा ७ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके हाथ से घायल धृष्टद्युम्नने दशनच्छदोंको काटकर शीघ्रही धनुषको त्याग किया ८ उससमय क्रोधयुक्त प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके नाश करनेकी इच्छा से दूसरे उत्तम धनुष को लिया ९ और शत्रुओंके वीरोंको मारनेवालेने अपने सुवर्णजटित धनुष को कानतक खैंचकर उसके द्वारा द्रोणाचार्य्य के नाशकरनेवाले घोर शायकको छोड़ा १० बड़े युद्धमें पराक्रमी के हाथसे छोड़हुये उस घोर बाणने उदयरूपी सूर्य्य के समान उससेनाको प्रकाशित किया ११ हे राजा फिर देवता गन्धर्व और मनुष्योंने उस घोरबाण को देखकर युद्धमें इसवचन को कहा कि द्रोणाचार्य्य का कल्याण हो १२ फिर कर्णने हस्तलाघवता के समान आचार्य्य जीके रथ पर आतेहुये उस शायकको दश टुकड़ेकिया १३ हे राजा धनुषधारी कर्णके हाथसे बहुत प्रकारसे कटाहुआ वह बाण शीघ्रता से ऐसे गिरपड़ा जैसे कि विनाविषवाला सर्प गिरताहै १४ इसकेपीछे कर्ण नेधृष्टद्युम्नको दशबाणों से अश्वत्थामाने पांचबाणों से और आप द्रोणाचार्य्यने सातबाणों से और उसीप्रकार दुश्शासनने तीन बाणोंसे घायलकिया १५ दुर्य्योधनने बीसबाणसे शकुनीने पांच

बाणसे तात्पर्य यहहै कि सब महारथियों ने शीघ्रता से धृष्टद्युम्न को छेदा १६ हे राजा बड़े युद्धमें द्रोणाचार्य्य के निमित्त सातघोर बाणोंसे घायल उस धृष्टद्युम्नने बड़ी असंभ्रमता अर्थात् सावधानी से सबको तीन २ बाणोंसे छेदा १७ अर्थात् द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा कर्ण और आपके पुत्र को घायल किया उस धनुषधारी के हाथ से घायल उन रथियोंमें श्रेष्ठ हरएकने युद्धमें धृष्टद्युम्नको पांच २ बाणोंसे घायल किया १८ हे राजा अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रुमसेनने एकबाणसे छेदकर शीघ्रही दूसरे तीन बाणों से भी छेदा और तिष्ठ २ शब्दभी किया फिर धृष्टद्युम्नने उसी युद्धमें सीधेचलनेवाले तीक्ष्ण १६ सुनहरी पुंख साफ प्राणोंके नाशक तीनबाणोंसे छेद-करबड़े पराक्रमीने दूसरे भल्लसे सुवर्ण के कुंडलधारी २० द्रुम सेनके शिरको शरीरसे काटा तब युद्धमें वह दोनों होठोंका काटने वाला शिर पृथ्वीमें ऐसे गिरा २१ जैसे कि बड़ेभारी बायुके वेगसे उखाड़ाहुआ तालवृक्षका पक्काफल गिरताहै फिर उसवीरने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उन शूरबीरोंको छेदकर २२ अपूर्व युद्ध करनेवाले कर्णकेधनुषको भल्लों से काटा कर्णने भी उसप्रकार धनुषके टूटने को ऐसे नहीं सहा जैसे कि श्री हनुमान् जीने लांगूल के अत्यन्त खंडित होनेको नहीं सहाथा क्रोधसे रक्तनेत्र श्वासलेता हुआ वह कर्ण दूसरे धनुषको लेकर २३। २४ बहुतसे बाणोंसमेत उसमहा-बली धृष्टद्युम्नके सन्मुखगया फिर उन रथियोंमें श्रेष्ठ छः शूरोंने कर्णको क्रोधयुक्त देखकर शीघ्रमारनेकी इच्छासे धृष्टद्युम्नको घेर-लिया २५ शूरोंमें बड़ेबीर आपके छःशूरबीरों के आगे कियेहुये उस धृष्टद्युम्नकोकालके मुखमें वर्त्तमानमाना २६ फिरउसीसमय यादव सात्यकी बाणोंको फैलाता पराक्रमी धृष्टद्युम्न के पास वर्त्तमान हुआ २७ उस बड़े धनुषधारी और युद्धमें दुर्मद आयेहुये सात्यकी को कर्णने सीधे चलनेवाले दशबाणोंसे छेदा २८ हे महाराज सात्य-कीने सबवीरोंके देखतेहुये उसको दशबाणोंसे छेदकर चलाजा मत खड़ारह यह शब्दभी कहा २६ हे राजा पराक्रमी सात्यकी और

महात्मा कर्णका ऐसा युद्धहुआ जैसे कि राजावलि और देवराज इन्द्रका हुआथा ३० रथके शब्दसे क्षत्रियों को भयभीत करने वाले क्षत्रियों में श्रेष्ठ सात्यकीने कमलके समान मुख रखनेवाले कर्णको बाणोंसे छेदा ३१ हे महाराज वह पराक्रमी कर्ण धनुष के शब्दोंसे पृथ्वीको कंपाताहुआ सात्यकीसे युद्ध करनेलगा ३२ कर्ण ने विपाट, करणी, नाराच, वत्सदन्त, क्षुरप्र और अन्य नाना-प्रकारके बाणोंसे भी सात्यकीको छेदा ३३ उसीप्रकार वृष्णियों में अत्यन्त श्रेष्ठ युद्धकरनेवाले सात्यकीने भी बाणोंसे कर्णकेऊपर वर्षाकरी वह दोनोंका युद्ध समानहुआ ३४ इसकेपीछे आप के पुत्रोंने और कवचधारी कर्णकेपुत्रने शीघ्रही चारोंओरसे तीक्ष्ण बाणोंकेद्वारा सात्यकीको छेदा ३५ हे समर्थ क्रोधयुक्त सात्यकी ने उन्होंके और कर्णके अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे रोककर वृषसेनको छातीपर घायल किया ३६ हे राजा उसबाणसे घायल पराक्रमी वृषसेन धनुषको डालकर अचेततासे रथपर गिरपड़ा ३७ इसके पीछे पुत्रके शोकसे दुःखी कर्णने महारथी वृषसेन को मृतक जान कर सात्यकीको पीड़ामान किया ३८ कर्णकेहाथसेपीड़ित शीघ्रता करनेवालेमहारथीसात्यकीने कर्णकोबहुतबाणोंसे बारंबारछेदा ३९ उस यादवने कर्णको दशबाणोंसे और वृषसेनको सातबाणोंसे छेद कर उनदोनोंकेधनुषोंको हस्त त्राण समेतकाटा ४० शत्रुकेभय को उत्पन्न करनेवाले उनदोनोंने दूसरेधनुषको तैयारकरके सात्यकी को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सबओरको छेदा ४१ हे राजाफिर उत्तमवीरोंके नाशकरनेवाले उसयुद्धके वर्त्तमान होनेपर गांडीव धनुषका बड़ा शब्द सुनागया ४२ हेराजाउसरथ के और गांडीव धनुषकेशब्दको सुनकर कर्ण दुर्योधनसे यहवचनबोला ४३ कि फिर बड़ाधनुषधारी अर्जुनसबसेनाको और उत्तमनरोत्तम पौरवोंकोमार-कर उत्तम धनुषको फटकारता हुआ ४४ विजय करता है क्योंकि गांडीव धनुष के बड़े शब्द और रथके शब्द ऐसे सुनेजाते हैं जिस प्रकार गर्जते हुये इन्द्रके शब्द होते हैं ४५ प्रत्यक्षमें अर्जुन अपने

योग्य कर्म को करताहै हे राजा यह भरत वंशियों की सेना अनेकप्रकार से छिन्न भिन्न की जातीहै ४६ बहुतसी छिन्न भिन्न सेना ऐसे नियत नहीं होतीहैं जैसे कि बायुसे कंपाया हुआ बादलों का जाल फटजाताहै और जिसप्रकार महासागरमें टूटीहुई नौका नहीं नियत होती उसीप्रकार अर्जुनकोपाकर ४७ भागतीहै और गांडीव धनुषके भेदेहुये सैकड़ों बड़े २ शूरबीरलोगोंके बृहत्शब्द सुने जाते हैं ४८ हे राजाओंमें श्रेष्ठ दुर्योधन रात्रि में अर्जुनके रथके पास हाहाकारकाशब्द सिंहनादऔरबहुतप्रकारकेशब्दोंकोसुनो ४९।५० और यह यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी हमारे मध्यमें नियतहै जो यह लक्ष्य माराजाता है अर्थात् सात्यकी स्वाधीन किया जाताहै तोभी सब शत्रुओंको बिजय करेंगे ५१ यह राजा द्रुपदका पुत्र सब ओर को रथियोंमें शूरबीरोंसे संवृत द्रोणाचार्य्यके साथ भिड़ाहुआहै ५२ जो हम सात्यकीको और पर्षतके पौत्र धृष्टद्युम्नके मारनेको समर्थ होंय तो हमारी अवश्य बिजयहोय ५३ हे महाराज इनदोनों वीर और महारथी वृष्णी और पर्षदवंशियों में श्रेष्ठको अभिमन्युके समान घेरकर मारनेका उपायकरें ५४ हे भरतबंशी वह अर्जुन सात्यकीको बहुतसे उत्तम कौरवोंकेसाथ भिड़ाहुआ जानकर द्रोणाचार्य्यके सन्मुख आताहै ५५ तबतक रथियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्तउत्तम २ शूरबीरलोग वहांजावो जबतक कि अर्जुन बहुत योद्धाओंसे घिरा हुआ सात्यकीकोनजाने ५६ औरयह शूरबीर अति शीघ्रतासेबाणों के छोड़ने में बिलम्बनकरें जिससे कि यहांयह माधवसात्यकी परलोकको जाय ५७ हे महाराज अच्छारीतिसे कीहुई श्रेष्ठनीतिको इसीप्रकारसेकरो तबआपकेपुत्रने कर्णकेमतमें एकमतहोकरशकुनी से ऐसेकहा ५८ हेराजाजैसेकि इन्द्रनेयुद्धमें यशवान् विष्णुसेकहा था इससेसुखनफेरनेवाले दशहजार हाथियोंसे ५९ औरदशहजार रथियोंसे संवृत होकर तुमबड़ी शीघ्रतासे अर्जुन के सन्मुखजावो दुश्शासन, दुर्विषह, सुबाहु, दुःप्रधर्षण ६० यहसबलोग बहुत से पतियोंसमेत आपकेपीछे जायंगे हे महाबाहुमामाजीआप श्रीकृष्ण

समेत अर्जुन और धर्मराजकोमारो और फिर इसीप्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेवको भी मारो ६१ मेरी विजयकी आशा तुम्हींमें ऐसे नियतहै जैसे कि देवताओंकोविजयकीआशा देवराज इन्द्रमें होतीहै ६२ हे मामाजी तुम कुन्तीके पुत्रोंको ऐसेमारो जैसे किस्वामिकात्तिकजीने असुरोंको माराथा आपके पुत्रके इसप्रकार कहने पर शकुनी पांडवोंके सन्मुखगया ६३ हे समर्थ वह शकुनी वड़ीसेना और आपके पुत्रोंकेसाथ आपके पुत्र दुर्य्योधनके हितार्थ पांडवोंके भस्मीभूत करनेका अभिलाषीहुआ६४ हेराजा इसकेपीछे पांडवोंकी सेनापर शकुनीके चढ़ाई करने में आपके शूरवीरोंकाऔर शत्रुओंका युद्धजारीहुआ६५वड़ीसेनासेयुक्त वहकर्ण युद्ध में हजारों बाणोंको छोड़ता शीघ्रही सात्यकीके सन्मुख गया ६६ और उसी प्रकार सबराजाओंने सात्यकीको संवृतकिया उसके पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नके रथपर जाकर ६७ चढ़ाईकरी हेभरतवंशी तब वीर धृष्टद्युम्न और पांचालों समेत द्रोणाचार्य्यका युद्ध वड़ा भारी हुआ ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिएकसप्ततितमोऽध्यायः १७१ ॥

एकसौबहत्तरका अध्याय ॥

संजयबोले कि तदनन्तर वह शीघ्रता करनेवाले युद्धमें दुर्मद अश्मी क्रोधयुक्तहोकर सब शूरवीर एकसाथही सात्यकीके रथपर दौड़े १ हे राजा उन्होंने चांदी और सुवर्णसे अलंकृत तैयारहुयेरथ अश्वसवार और हाथियोंकेद्वारा उसको चारोंओरसे घेरलिया २ फिर उन सब महारथियोंने उसको चारोंओरसे घेरकर सिंहनादों केसाथ सात्यकीको घुड़का ३ वह शीघ्रता करनेवाले माधवसात्यकीके मारनेके इच्छावान् वड़ेवीर अपने तीक्ष्णबाणोंसे सत्य पराक्रमी सात्यकीपरवर्षाकरनेलगे शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले महारथी सात्यकीने उनआतेहुओंको देखकर शीघ्रही उनको आड़ेहाथों

लया और बहुतबाणोंको छोड़ा ४।५ वहांपर बड़े धनुषधारी और युद्धमें दुर्मदबीर सात्यकीने उदग्र और टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे शिरों कोकाटा ६ माधवने क्षुरप्रनाम बाणोंसे आपके शस्त्रधारी शूरोंकी भुजा हाथियोंकी सूंड़ और घोड़ों की गर्दनोंको काटकर पृथ्वी को ढकदिया ७ हे भरतबंशी पड़ेहुये चामर और श्वेतछत्रोंसे हे प्रभु पृथ्वी ऐसी व्याप्तहुई जैसे कि नक्षत्रोंसे आकाश व्याप्त होता है ८ युद्धमें सात्यकीकेसाथ लड़नेवाले उनबीरोंके ऐसे कठिन शब्दहुये जैसे कि प्रेतोंके क्रन्दित शब्द होतेहैं ९ उस बड़े शब्दसे पृथ्वीपूर्णहुई और रात्रिभी कठिन भयंकर रूप भयकी उत्पन्न करनेवालीहुई १० रोमहर्षण करनेवाली रात्रिमें सात्यकीके बाणोंसेघायल और छिन्न भिन्न सेनाको देखकर और बड़ेशब्दको सुनकर ११ रथियोंमें श्रेष्ठ आपकापुत्र बारंबार सारथीसे कहनेलगा कि जहांपर यह शब्दहै वहांपर घोड़ोंको चलायमानकरो १२ उसकी आज्ञापाकर सारथी ने उन उत्तम घोड़ोंको सात्यकीके रथपर चलायमान किया १३ इसके पीछे क्रोधयुक्त दृढ़धनुषधारी हस्तलाघवी अपूर्व युद्धकरने वाला दुर्योधन सात्यकीके सन्मुखदौड़ा १४ तिसपीछे माधवसात्य-कीने खैंचकर छोड़ेहुये और रुधिरके भोजन करनेवाले बारह बाणोंसे दुर्योधनको छेदा १५ प्रथमही उसके बाणोंसे पीडावान् क्रोधयुक्त दुर्योधनने दशबाणोंसे सात्यकीको छेदा १६ हे भरतर्षभ इसके पीछे सबपांचालोंका और भरत बंशियोंका बहुत उत्तमसमान युद्धहुआ १७ युद्धमें क्रोधयुक्त सात्यकीने आपके पुत्र महारथीको अस्सीशायकों से छातीपर व्यथितकिया १८ और युद्धमें अपने बाणोंसे उसके घोड़ोंको यमलोकमें पहुंचाया और शीघ्रहीबाणोंसे सारथीकोभी रथसे गिराया १९ हे राजा मृतक घोड़ेवाले रथपर नियत आपके पुत्रने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको सात्यकीके रथपर छोड़ा २० तब सात्यकीने युद्धमें आपके पुत्रके फेंकेहुये उन पचास बाणोंको हस्तलाघवताके समानकाटा २१ फिर वेगवान् माधवने युद्धमें आपके पुत्रके बड़े धनुष को अपने भल्लसे मुष्टिका के स्थान

परकाटा २२ वह सब प्रजा का स्वामी प्रभुरथ धनुष से रहित हो-
कर शीघ्रही कृतवर्मा के रथपर सवार हुआ २३ फिर रात्रिके मध्य
में दुर्य्योधन के मुख फेरने पर सात्यकी ने विशिख नाम बाणों से
आपकी सेना को घायल किया २४ हे राजा शकुनी ने हजारों
रथ हाथी और हाजारों ही घोड़ों से अर्जुन को चारोंओर से घेर
कर नानाप्रकार के शस्त्रों से ढकदिया २५ उनकालके प्रेरित और
अर्जुन के ऊपर सब अस्त्रोंको छोड़नेवाले क्षत्रियों ने अर्जुन से युद्ध
किया २६ बड़े नाशकर्त्ता दुःखपानेवाले अर्जुन ने उन हजारों
रथ हाथी और घोड़ों को रोका २७ इसके पीछे सौवलके पुत्र हंसते
हुये शूर शकुनी ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से अर्जुन को छेदा २८
और सौबाण से उसके बड़े रथको रोका २९ हे भरतवंशी अर्जुनने
उसको बीस बाणोंसे छेदा और अन्य२ बड़े२धनुषधारियों को तीन
तीन बाणों से घायल किया ३० उससमय अर्जुन ने युद्धमें उन
बाणों के समूहों को हटाकर आपके शूरवीरों को ऐसे मारा जैसे
कि वज्रधारी इन्द्र असुरों को मारताहै ३१ फिर युद्धमें हाथी की
सूंड़ों के समान टूटीहुई भुजाओं से आच्छादित पृथ्वी ऐसी प्रका-
शित और शोभायमान हुई जैसे कि पांच मुख रखनेवाले सर्पोंसे
शोभित होतीहै ३२ मुकुट सुन्दरनाक सुन्दर कुंडल और घूरनेवाले
नेत्रयुक्त दोनों होठोंके काटनेवाले क्रोधयुक्त ३३ निष्क चूड़ामणि
धारी प्यारे वचन बोलनेवाले क्षत्रियों के शिरोंसेपृथ्वी ऐसीशोभित
हुई जैसे कि कमलों से पूर्ण पहाड़ों से शोभायमान होतीहै ३४
अर्जुन ने उस कठिन कर्म को करके फिर उग्र पराक्रम करनेवाले
शकुनी को पांच बाणों से छेदा ३५ और तीन बाणों से उलूक को
छेदा और छिदे हुये उलूक ने वासुदेवजी को व्यथित किया ३६
और पृथ्वी को शब्दायमान करता बड़े शब्दसे गर्जा अर्जुन ने युद्ध
में शकुनी के धनुषको शायकों से काटा ३७ और चारों घोड़ों को
यमलोक में पहुंचाया हे भरतर्षभ फिर शकुनीरथ से उतरकर शीघ्र
उलूक के रथपर सवार हुआ हे राजा वह दोनों महारथी पिता पुत्र

एक रथपर सवार हुये ३६ फिर अर्जुन को दोनों ने बाणों से ऐसा सींचा जैसे कि दोबादल जलों से पर्ब्बत को सींचते हैं हे महाराज तब पांडव अर्जुनने तीक्ष्णधार बाणोंसे उन दोनों को घायल करके ४० आपकी सेनाको भगादिया और बाणों से ऐसा छिन्न भिन्न किया जैसे कि हवासे बादल चारोंओर को तिर्रबिर्र हो जातेहैं ४१ हे राजा इसप्रकार से सेना इधर उधर हुई तब रात्रिके समय वह घायल सेना ४२ भयसे पीड़ित सब दिशाओं को देखती हुई भागी युद्धमें कोई तो सवारियों को छोड़कर कोई सवारियों को चलायमान करते ४३ उस कठिन अन्धकार में भयसे महा व्याकुल चारों ओरको दौड़े हेभरतर्षभ युद्धमें आपके शूरबीरोंको बिजय करके ४४ प्रसन्न चित्त अर्जुन और बासुदेवजी ने शंखोंको बजाया और धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्य को तीन बाणसे छेदकर ४५ शीघ्रही धनुषकी प्रत्यंचाको तीक्ष्ण बाण से काटा क्षत्रियों के मर्द्दन करनेवाले शूर द्रोणाचार्य्य ने उस धनुष को पृथ्वीपर रखकर ४६ वेगवान् बलवान् दूसरे धनुषको लिया हेराजा उसके पीछे द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको सात बाणोंसे छेदकर ४७ युद्धमें पांच बाणोंसे सारथीकोछेदा फिर महारथी धृष्टद्युम्न ने शीघ्रही रथियों के द्वारा इनको हटाकर ४८ कौरवीय सेनाको ऐसे बिजय किया जैसे कि आसुरी सेना कोइन्द्र बिजय करताहै हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र आपके पुत्रकी उस सेनाके घायल और मारे जाने पर ४९ घोर और रुधिर समूहसे लहराती हुई वह नदीजारीहुई जो कि दोनोंसेनाओंके मध्यमें मनुष्यघोड़े और हाथियोंकी बहाने वालीथी ५० जैसे कि यमराज के पुरमें बैतरणी नदीहै वैसीही वह भी नदी हुई फिर तेजस्वी प्रतापवान् धृष्टद्युम्न उस सेनाको भगाकर ५१ ऐसे सन्मुख दौड़ा जैसे कि इन्द्र देवता के समूहों में दौड़ता है इसके पीछे धृष्टद्युम्न और शिखण्डीने महा शंखोंको बजाया ५२ नकुल, सहदेव, सात्यकी, पांडव, भीमसेन इन महारथियों ने आपके हजारों रथों को बिजय करके ५३ बिजयसे शोभा पाने वाले युद्धमें मतवाले पांडवोंने आपके

पुत्रकर्णशूर द्रोणाचार्य और अश्वत्थामाके देखते सिंहनाद किये ५४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिद्विसप्ततितमोऽध्याय: १०२ ॥

एकसौतिहत्तरका अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा महात्माओं के हाथसे मारी हुई और भगी हुई अपनी सेनाको देखकर क्रोधसे पूर्ण आपका पुत्र १ अकस्मात् बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और कर्णके पास जाकर क्रोध के वशीभूत वार्त्ताओं का जाननेवाला इसवचन को बोला २ यहां युद्धमें अर्जुन के हाथसे जयद्रथ को मरा हुआ देखकर क्रोध युक्त आपके साथ लड़ाई जारी हुई ३ पांडवों की सेनासे मेरी सेना का नाश देखकर उस सेनाके विजयमें सामर्थ्यवान् होकर तुम सबलोग असामर्थों के समान दृष्टि गोचर हुये ४ जो मुझको आप त्यागनेके ही योग्य जानते थे तो हे बड़ाई देने वाले मैं इसबातके भी सुनने के योग्य न था कि हम दोनों युद्धमें पांडवों को विजय करेंगे ५ मैं तभी आप लोगोंसे स्वीकृत वचनों को सुनकर पांडवोंके साथमें इस शूर वीरोंकी नाशकारी शत्रुताको नहीं करता ६ हे श्रेष्ठ पराक्रमी पुरुषोत्तमो जोमें आपलोगों से त्यागने के योग्य नहींहूं तो अपनी योग्यता के पराक्रम से युद्धकरो ७ आपके पुत्रके वचन रूपी कोड़ेसे घायल सर्पोंके समान चलायमान उन दोनों वीरोंने युद्धको जारी किया ८ इस के पीछे रथियों में श्रेष्ठ लोक के धनुषधारी वह दोनों युद्धमें उन पांडवों के सन्मुख दौड़े जिनमें कि मुख्य सात्यकी था ९ उसीप्रकार सेनासे युक्त पांडव भी उन एकसाथ वारंवार गर्जने वाले दोनों वीरोंके सन्मुख वर्त्तमान हुये १० इसके पीछे बड़े धनुषधारी सब शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्तद्रोणाचार्य्य ने दशबाणों से शीघ्रतापूर्वक सात्यकीको घायल किया ११ कर्णने भी दशबाणों से आपके पुत्रने सात बाणसे वृषसेन ने दशबाणोंसे शकुनीनेसात बाणोंसे १२ इनसबने दुर्योधनके रोने पीटनेसे सात्यकीको चारों ओरसे घायल किया युद्धमें पांडवी सेनाके मारने वाले द्रोणाचार्य्य

को देखकर १३ सोमक लोग चारोंओर से बाणोंकी वर्षासे शीघ्र पीड़ामान हुये हेराजा वहां द्रोणाचार्य्यने क्षत्रियों के प्राणोंको ऐसे हरा १४ जैसे कि किरणों के द्वारा सूर्य्यदेवता चारोंओर के अन्धकारको हरतेहैं द्रोणाचार्य्य से घायल परस्पर पुकारने वाले पांचालों के १५ बड़े शब्द सुनेगये कोई पुत्रोंको कोई पिताओंको कोई भाई मामांको १६ भानजों को समान अवस्थावालों को नातेदार और बांधवों को छोड़२ कर जीवन के इच्छावान् होकर शीघ्रतासे जाते थे १७ बहुत से मोहसे अचेत होकर उनके सन्मुखगये और पांडवों के बहुतसे शूरबीर परलोक कोगये १८ हे राजा इस प्रकार महात्मा के हाथसे पीड़ामान पांडवी सेनाके लोग रात्रि के समय हज़ारों मशलों को छोड़कर १९ भीमसेन अर्जुन, श्रीकृष्ण, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर के देखते हुये भागे २० अन्धकार से लोकको व्याप्त होने पर कुछ नहीं जानागया कौरवों के प्रकाश से दूसरे कौरवदिखाई पड़तेथे२१हे राजाबहुत शायकोंको फैलाने वाले महारथी कर्ण और द्रोणाचार्य्यने उसभगी हुई सेनाको देख कर पीछे की ओर से मारा २२ पांचालों के छिन्न भिन्न होने और सब ओर से बिनाशवान् होनेपर प्रसन्न चित्त श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले २३ कि बड़े धनुषधारी कर्ण और द्रोणाचार्य्य ने एकसाथ इन धृष्टद्युम्न सात्यकी और पांचालों को शायकोंसे कठिन घायल किया २४ हे अर्जुन इन दोनोंके बाणों की वर्षासे हमारे महारथी लोग इधर उधर होगये और रोकने से भी यह सेना नहीं रुकती है २५ अर्जुन और केशवजी उस सेनाको भगीहुई देखकर बोलेकि हे पांडव तुम भयभीत होकर मतभागो भय को त्याग करो २६ अच्छे प्रकार शस्त्रों के उठाने वाली सब अलंकृत सेना समेत हम दोनों उन द्रोणाचार्य्य और कर्ण को और वह दोनों हमारे पीड़ा देने को प्रवृत्त हैं २७ यह दोनों पराक्रमी शूर अस्त्रज्ञ विजय से शोभा पानेवाले इस रात्रिमें आपकी सेना से अलग होकर नाश करेंगे २८ उन दोनों के इस प्रकार वार्तालाप करते भयकारी कर्म

करनेवाले महाबली उत्तमशूरवीर भीमसेनने शीघ्रही सेनाकोलौटा कर चढ़ाईकरी २६ हेराजा वह श्रीकृष्णजी आतेहुये भीमसेनको देखकर पांडव अर्जुनको प्रसन्न करतेहुये फिर बोले ३० कि युद्धमें प्रशंसनीय यह भीमसेन सोमक और पांडवोंको साथलिये बड़ेवेग से महारथी कर्ण और द्रोणाचार्य्यके सन्मुख वर्त्तमानहुआहै ३१हे पांडवनन्दन अर्जुन इस भीमसेन और महारथी पांचालों केसाथ तुमभी सब सेनाओंके विश्वासके निमित्त युद्धकरो ३२ उसके पीछे वहदोनों पुरुषोत्तम माधव और पांडव द्रोणाचार्य्य और कर्णको पाकर युद्धके शिरपर नियतहुये ३३ संजय बोले कि पीछेसे युधिष्ठिरकी वह बड़ी सेनाभी लौटआई फिर द्रोणाचार्य्य और कर्णने युद्धमें शत्रुओंको मर्दनकिया ३४ हेराजा रात्रिके समय वहबड़ाकठिन युद्ध ऐसाहुआ जैसे चन्द्रोदयके समय दो सागरोंका परस्पर संघट्टन होताहै ३५ उसकेपीछे आपकी सेनाकेलोग विक्षिप्तोंके समान हाथोंसे मशालोंको छोड़कर पृथक्२ पांडवोंसे युद्धकरने लगे ३६ धूल और अन्धकारसेयुक्त अत्यन्त भयानक लोकके होनेपर विजयके चाहनेवाले शूरवीर केवलनाम और गोत्रकेद्वारा युद्धकरने लगे ३७ हेमहाराज प्रहार करनेवाले राजाओंसे सुनायेहुये नाम युद्धमें ऐसेसुनेगये जैसेकि स्वयंवरमें सुनाये जातेहैं ३८ अकस्मात् सेनाको शब्दबन्द होगया फिर क्रोध युक्त युद्धकर्त्ता विजय वाले और पराजित लोगोंकेभी बड़ेशब्दहुये ३९ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ जहां जहांमशाले दिखाई पड़ीं वहांवहां शूरवीर लोग पतंगोंकेसमान गिरे ४० हेराजेन्द्र इसप्रकारसे युद्ध करनेवाले पांडव औरसब कौरवों की वह बड़ीरात्रि महादारुण हुई ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिगतोपरित्रिसप्ततितमोऽध्यायः १७३ ॥

एकसौचौहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसकेपीछे शत्रुओंकोमारनेवाले कर्णने धृष्टद्युम्नको युद्धमें देखकर मर्मभेदी दशबाणोंसे छातीपर घायलकिया १

हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर प्रसन्नचित्त धृष्टद्युम्नने भी शीघ्रही दशशायकों से उसको घायलकिया और विष्टतिष्ट वचन भीकहा २ उनदोनों महारथियोंने युद्ध में बाणोंसे परस्पर ढककर फिर कानतक खैंचेहुये शायकोंसे घोड़ेपरस्परछेदा ३इसके अनन्तर कर्णने युद्धमें शायकोंसे पांचालदेशियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न के सारथी और चारों घोड़ोंकोछेदा ४और तीक्ष्णबाणोंसे अत्यन्त श्रेष्ठ धनुषकोभी काटा और भल्लसे उसके सारथीको रथकी नीढ़से गिरादिया ५ रथसेर-हित मृतक घोड़ेऔर सारथी वाले धृष्टद्युम्नने घोरपरिघको लेकर कर्णके घोड़ोंको पीसडाला ६ इसकेपीछे बिषैलेसर्पके समान उसके बहुत बाणोंसे घायल पदाती होकर युधिष्ठिरकी सेनामेंचलागया ७ हे श्रेष्ठ वहांजाकर वह सहदेवके रथपरसवारहुआ और कर्णकीओ-रको जानेका अभिलाषी हुआ तब युधिष्ठिरने उसको वहां जानेसे रोका ८फिर बड़ेतेजस्वी कर्ण सिंहनादसे मिलेहुये धनुषके शब्दको करके बड़ेवेगसे शंखको बजाया ९युद्धमें धृष्टद्युम्नको पराजित देख कर वह महारथी पांचाल सोमकोंसमेत क्रोधयुक्त हुये१० वहसब कर्णके मारनेकेलिये शस्त्रोंको लेकर मृत्युकाभय त्याग कर्णसे युद्धा भिलाषी होकरचले ११ सारथीने कर्णके रथमें दूसरेघोड़ोंको जो-ड़ाजोकि शंखवर्ण महावेगवान और अच्छे लोगोंके सवार करनेके योग्य सिन्धुदेशीथे १२ घायल और लक्ष्यभेदी कर्णने पांचालोंके महारथियोंको बाणोंसे ऐसा पीड़ामानकिया जैसेकि बादल पर्वत कोकरताहै १३ तब पांचालोंकी वह बड़ीसेना कर्णकेहाथसे पीड़ित और अत्यन्त भयभीत होकरके ऐसेभागी जैसे कि सिंहसे पीड़ितऔर भयभीत मृग भागतेहैं १४ तब मनुष्य जहां तहां हाथी घोड़े और रथोंसे पृथ्वीपर पड़ेहुये शीघ्रतासे दिखाई पड़े १५ उस कर्णने बड़े युद्धमें क्षुरप्रनाम बाणोंसे दौड़ते हुये शूरवीरोंकी भुजा और कुंडल धारी शिरोंको काटा १६ हेश्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र और बहुतसे हाथीके सवार अश्वसवार और पदातियोंकी जंघाओंको काटा १७ युद्धमें दौड़तेहुये महारथियोंने अपनेअंग और सवारियोंका टूटनानहीं जा-

ना १८ युद्धमें घायल पांचालोंने सृंजियों समेत वनस्पतिके हिलनेसेभी कर्णकोमाना १९ और युद्धमें दौड़ते और अचेत अपने शूरवीरों कोभी कर्णहीमाना अर्थात् उससे भयभीत होकर वह भागे २० हे भरतवंशी कर्णबड़ी शीघ्रतासे उनबाणोंकोछोड़ता पृथक् और भागी हुई सेनाके पीछेदौड़ा २१ महात्मा कर्णसे पृथकहुये और परस्पर देखनेवाले अचेत होकर वहलोग खड़ेहोनेकोभी समर्थ नहींहुये २२ हे राजा कर्ण और द्रोणाचार्य्यके उत्तम बाणोंसे घायलपांचाललोग सब दिशाओंको भागे २३ उसकेपीछे राजा युधिष्ठिर अपनी सेना कोभगाहुआ देखकर और हटजानेका विचार करके अर्जुनसे यह वचन बोला २४ कि धनुषधारी रात्रिके समय सूर्य्यके समान तपाने वाले बड़े पराक्रमी कर्णकोदेखो २५ हे अर्जुनकर्णके शायकोंसेघायल अनाथोंके समान पुकारने वालेतेरे बान्धवोंके यहशब्द बारंबारसुने जातेहैं २६ हे अर्जुन जोकि बाणोंके चढ़ाते और छोड़तेहुये इसकर्णके अन्तरकोनहीं देखताहूं इससे निश्चय करकेयह हमारा बिनाशकरेगा २७जोयहां समयके अनुसार देरकरना देखतेहो हे अर्जुन अब कर्ण केविषयमेंजो करना उचितहै उसको अवश्यकरो २८हेमहाराज इस प्रकार युधिष्ठिरके वचनोंको सुनकर अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोलेकि अवराजा युधिष्ठिर कर्णके पराक्रमसे भयभीतहैं २९ ऐसी दशामें आप शीघ्रही समयके अनुसार कर्णकी सेनामें बारंबार निश्चयकरो अपनी सेनाभागी जातीहै ३० हे भरतवंशीद्रोणाचार्य्यकेशायकों से घायल और पृथक् होकरकर्णसे भयभीत सेनाके लोगोंकानियत होना वर्त्तमाननहींहै ३१ उसी प्रकार निर्भयके समान घूमते और घायल महारथियोंको तीक्ष्णधार बाणोंसे हटानेवाले कर्णकोदेखता हूं ३२ हे वृष्णियोंमें श्रेष्ठ प्रत्यक्षमें इस युद्धके मुख्यभागमेंघूमने वाले कर्णके सहने को मैं ऐसे समर्थ नहीं होताहूंजैसेकि चरण के स्पर्शसे सर्पके सहनेको समर्थ नहींहोसक्के ३३सो आपशीघ्रही वहांचलो जहां पर महारथी कर्णहै हे मधुसूदनजी मैं उस को मारूंगा अथवावही मुझको मारेगा ३४ श्रीवासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन मैं बुद्धिसेपरे

पराक्रमी नरोत्तम युद्धमें घूमनेवाले कर्णको देवराज इन्द्रकेसमान देखताहूं ३५ हे पुरुषोत्तम अर्जुनतेरे और साक्षात् घटोत्कचके सिवाय युद्धमें इससे सन्मुखता करनेवाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है ३६ हे निष्पाप महाबाहु मैं युद्धमें तबतक तेरी सन्मुखता कर्णके साथसमयके अनुसार नहीं मानताहूं ३७ जबतक कि बड़ी उल्काके समान प्रकाशमान इन्द्रकी शक्ती उसके पास नियतहै हे महाबाहु यह शक्ती तेरे निमित्त युद्धमें कर्णको ओर से ३८ रक्षितकी जातीहै और वह भयानक रूपको ध्यान करतीहै महाबली घटोत्कचहीकर्ण के सन्मुखजाय ३९ वह देवताके समान पराक्रमी महाबली भीमसेनसे उत्पन्न हुआहै उसके पास दिव्य राक्षस असुर अस्त्र हैं ४० वह घटोत्कच सदैवतुमपरप्रीतिकरनेवाला और भलाचाहनेवालाहै और युद्धमें वह निस्सन्देह कर्णको विजय करेगा ४१ इस प्रकार श्रीकृष्णजीके बचनोंको सुनकर महाबाहु कमललोचन अर्जुनने उस राक्षसको बुलाया और वह आगे आकर प्रकटहुआ ४२ हे राजा फिर वह कवचधारी बाण खड्ग और धनुषहाथ में रखने वाला घटोत्कच श्रीकृष्ण और पांडव अर्जुन को नमस्कार करके ४३ श्रीकृष्णजीसे बोलाकि हे मधुसूदनजी मैं घटोत्कचहूं मुझको आज्ञा दीजिये उसके पीछे हंसतेहुये श्री कृष्णजी उस प्रकाशित मुख और कुंडलधारी घटोत्कचसे बोले ४४ कि हे पुत्र घटोत्कच जो मैं तुझसे कहताहूं उसको तू समझ अबयह तेरेपराक्रम का समय आपहुंचाहै दूसरेका नहीं है ४५ सो तुमडूबतेहुये पांडवोंकी नौकाहो तेरे अस्त्र अनेक प्रकारकेहैं और तुझमें राक्षसी मायाहै ४६ हे हिडम्बाकेपुत्र युद्धके मुखपर कर्णके हाथसे पृथक् होनेवाली पांडवोंकी सेनाको ऐसे देखो जैसेकि ग्वालियों के हाथसे गौयें होतीहैं ४७ यह बड़ा धनुषधारी बुद्धिमान दृढ़ पराक्रमी कर्ण पांडवोंकीसेनाओंमें उत्तम२ क्षत्रियों को मारताहै ४८ उस दृढ़ धनुषधारीके बाणों की बड़ीवर्षा होरहीहै और बाणोंकी किरणोंसे पीड़ित शूरबीर उसके सन्मुखखड़े होनेको भी समर्थ नहीं होसक्तेहैं ४९ रात्रिके समय कर्णकेबाणोंसे

पीड़ामान वह पांचाल ऐसे भागतेहैं जैसे कि सिंहसे पीड़ामान मृग भागतेहैं ५० हे भयानक पराक्रमी तेरेसिवाय दूसरा शूरवीर युद्धमें इस अत्यन्त वृद्धि युक्त कर्णका रोकनेवाला कोई वर्त्तमाननहींहै ५१ हे महाबाहु पुरुषोत्तमसोतुम यहां मामा और पिताके तेजबल और अपनेयोग्य तेज और अस्त्रबलके समान कामकरो ५२ हे घटोत्कच मनुष्य इसी निमित्त पुत्रको चाहते हैं वह पुत्र क्यों नहीं दुःख से तारेगा इस हेतु से तुम दुःखसे पांडवोंको तारो ५३ हे घटोत्कच पितालोगअपने मनोरथ सिद्ध करने के निमित्त ऐसे अपने पुत्र को चाहते हैं जोकि प्रियकारी होकर इस लोकसे परलोक में तारते हैं ५४ हेभीमनन्दनतुम पराक्रम पूर्व्वक लड़नेवालेका अस्त्र बल बड़ाभयानकहै और तेरी मायाभी कठिनतासे तरनेके योग्यहै ५५ हे शत्रुओं के तपाने वाले रात्रिमें कर्णके शायकों से छिन्न भिन्न और धृतराष्ट्र के पुत्रोंमें डूबनेवाले पांडवों के तुमहीं पार पहुंचानेवाले हो ५६ और रात्रिमेंही राक्षसबड़ेपराक्रमी बलवान् अजेय शूर और सिंहके समान चढ़ाई करनेवाले होतेहैं ५७ रात्रिमें बड़े धनुषधारी कर्णकोअपनी मायासे मारो और पांडवलोग जिनमेंकि मुख्यधृष्टद्युम्नहै वहद्रोणाचार्य्यको मारेंगे संजयबोले किशत्रुविजयी वह कौरव अर्जुनभी केशवजीके बचनोंको सुनकरघटोत्कचराक्षससेबोला ५८ कि हे घटोत्कच तुम और लम्बीभुजा वाला सात्यकी और पांडव भीमसेन सब सेनाओंमें मुझसे प्रशंसनीय और अंगीकृतहैं ६० सो तुम कर्णके सन्मुखहोकर रात्रिमें द्वैरथ युद्धकरो महारथी सात्यकी तेरा पृष्ठरक्षक होगा ६१ सात्यकी कीसहायतासे तुमयुद्धमें कर्णको ऐसे मारो जैसे कि पूर्व्व समय में इन्द्रने स्वामकार्त्तिक जी की सहायता से युद्धभूमिमें तारकासुरको माराथा ६२ घटोत्कचबोलाकि हे भरतवंशी मैं अकेलाही कर्ण के मारने को समर्थहूं और द्रोणाचार्य्यके भी मारनेकोबहुतहूं औरअस्त्रज्ञ महात्माअन्य शूरवीरों केलियेभी बहुतहूं ६३ अब मैं रात्रिमें कर्णसे वहयुद्ध करूंगा जिस को मनुष्य तब तक बर्णनकरेंगे जबतककि पृथ्वी नियत रहैगी ६४

राक्षसी धर्ममें नियत होकर मैं इस युद्धमें किसी शूरवीरको नहीं छोड़ूंगा न भयभीतोंको न हाथ जोड़नेवालों को अर्थात् सबहीको बिनामारे नहींछोड़ूंगा ६५ संजय बोले कि शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला महाबाहु घटोत्कच इसप्रकारसे कहकर आपकी सेनाको भयभीत करता तुमुलयुद्धमें कर्णके सन्मुख गया ६६ हंसते हुये कर्णने उसअत्यन्त क्रोधयुक्त प्रकाशितमुख प्रकाशमानकेश रखने वाले आतेहुये घटोत्कचको रोका ६७ हे नरोत्तम युद्धमें गर्जनेवाले उनदोनों राक्षस और कर्णका युद्ध ऐसाहुआ जैसा कि इन्द्र और प्रह्लादका हुआथा ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिघतोपरिचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः १७४ ॥

एकसौपचहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसप्रकार योग्य और कर्ण के मारने के अभिलाषी कर्णके रथपर आतेहुये घटोत्कचको देखकर १ वहां आपका पुत्र दुर्य्योधन दुश्शासनसे यह बचन बोला कि यह राक्षस युद्धमें कर्णके पराक्रमको देखकर २ शीघ्रता से कर्ण के सन्मुख आताहै सो तुम शीघ्रही उस महारथीको रोको बड़ीसेनासे युक्त होकर वहांजावो जहांपर महाबली ३ सूर्य्यकापुत्र कर्ण राक्षस के साथ युद्ध करताहै हे बड़ाई देनेवाले युद्धमें कुशल सेना को साथ लेकर तुम कर्णकी रक्षाकरो ४ नहींतो भूलसे घोर राक्षस कर्णका बिनाश करेगा हे राजा इसीअन्तरमें जटासुरका बेटा पराक्रमी ५ प्रहार कर्त्ताओंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधन के पास आकर बोला कि हेदुर्य्योधन तेरी आज्ञापाकर मैं तेरे शत्रु पांडव जोकि प्रसिद्ध और युद्ध में दुर्मदहैं उनको उनके सब साथियों समेत मारना चाहताहूं पूर्व समयमें मेरा पिता जटासुर नाम राक्षस ६ । ७ राक्षसोंका मारने वाला कर्म प्रकट करके पांडवोंके बाणोंसे गिराया गया शत्रुओंके रुधिर और मांसकी पूजासे उसका बदला चाहताहूं हेराजेन्द्र मुझको आज्ञादेनेको योग्यहो ८ उसकेपीछे प्रसन्न और प्रीतिमानहोकर

राजा दुर्य्योधन वारंवारबोला कि मैं द्रोणाचार्य्य और कर्ण आदि के साथ शत्रुओंके मारने में पूराहूं ६ तुम मेरी आज्ञासे जाकर उस राक्षस और मनुष्यसे उत्पन्न होनेवाले निर्दयकर्मी घटोत्कच राक्षसको मारो १० सदैव पांडवोंके शुभचिन्तक हाथी घोड़े और रथोंके मारनेवाले और आकाश में वर्त्तमान राक्षस को युद्धमें यमलोकको पहुंचावो ११ उस वड़े शरीरवाले जटासुर के पुत्रने बहुत अच्छा कहकर भीमसेनके पुत्र घटोत्कच को बुलाकर नाना-प्रकारके शस्त्रोंसे ढकदिया १२ अकेले घटोत्कचने अलंबुष कर्ण और कठिनता से तरने के योग्य कौरवीसेनाको ऐसे मथडाला जैसे कि वड़ी वायु बादलों को मथतीहै १३ उसके पीछे अलंबुषने राक्षस की माया और बलको देखकर वड़े २ नानारूपवाले बाण समूहों से घटोत्कच को घायल किया १४ महाबली राक्षसने घ-टोत्कच को बहुत बाणोंसे छेदकर पांडवों की सेनाको बाणों की वर्षासे भगाया १५ हे भरतवंशी उसके पीछे उस राक्षस के हाथ से भगीहुई पांडवीसेना रात्रिमें ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे कि वायु से आघातित बादल इधर उधर होजातेहैं १६ हे राजा इसीप्रकार घटोत्कच के बाणोंसे घायल आपकीसेनाके लोग हजारों मशालों को छोड़कर रात्रिमें भागे १७ इसकेपीछे क्रोधयुक्त अलंबुषने घटो-त्कचको बड़े युद्धमें दश बाणोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि अंकुश से वड़े हाथीको घायल करतेहैं घटोत्कचने उसके रथ सारथीसमेत सब शस्त्रोंको तिलके समान तोड़ा और अत्यन्त भयानक शब्दों से गर्जा इसके पीछे बाणों के समूहों से कर्ण वा दूसरे हजारों कौरव और अलंबुषपर ऐसी वृष्टि करनेलगा जैसे कि मेरु पर्वत पर बादल बरसताहै २० तब वो उस राक्षसके हाथ से पीड़ामान कौरवीयसेना इधर उधर पृथक् होगई और परस्पर में पृथक् २ चतुरंगिणी सेनाका मर्दनकिया २१ हे महाराज युद्ध में क्रोधयुक्त रथ और सारथीसे रहित अलंबुषने घटोत्कच को मुष्टिकाओं से कठिन घायल किया २२ उसकी मुष्टिकाओं से घायल घटोत्कच

ऐसे कंपित हुआ जैसे भूकम्प होनेमें गुल्मोंके वृक्षोंका रखनेवाला पर्व्वत होता है २३ इसकेपीछे उस क्रोधयुक्त घटोत्कचने परिघ के समान शत्रुओंकी मारनेवाली भुजा की मुष्टिसे अलंबुषको अत्यन्त घायल २४ और मथन करके तीव्रतासे गिराया और इन्द्र ध्वजा के समान रूपवाली दोनों भुजाओं से पृथ्वीपर मर्द्दन किया २५ अलंबुषनेभी युद्धमें घटोत्कच राक्षस को उठाया और गेरकर क्रोध से पृथ्वीपर रगड़ा २६ उन बड़े शरीरवाले गर्जनेवाले घटोत्कच और अलंबुष का कठिनयुद्ध रोमहर्षण करनेवाला हुआ २७ परस्पर मारने के अभिलाषी मायाओं से पूर्ण बड़े पराक्रमी दोनों ऐसे युद्धकरनेलगे जैसे कि इन्द्र और बलिने कियाथा२८ अग्नि और जलके समूह होकर गरुड़ और तक्षकरूप होकर बादल और बड़ी वायुरूप होकर बज्र और पर्ब्बत होकर २६ हाथी और शार्दूल होकर फिर राहु और सूर्य्य होकर युद्ध करनेलगे इसप्रकार से सैकड़ों माया करनेवाले परस्पर मारनेके इच्छावान् ३० अलंबुष और घटोत्कच अत्यन्त युद्ध करनेवाले हुये परिघ गदाप्रास मुद्गर पट्टिश ३१ मूसल और पर्व्वतों के शिखरों से उन दोनोंने परस्पर घायल किया फिर पदाती रथ सवार बड़े मायावी राक्षसों में श्रेष्ठ वहदोनों घोड़े और हाथियोंके साथ युद्ध करनेलगे हे राजा इसके पीछे घटोत्कच अलंबुष के मारनेकी इच्छा से ३२ । ३३ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उछला और बाजपक्षी के समान गिरकर बड़े शरीरवाले राक्षसाधिप अलंबुष को पकड़कर ३४ कुछ ऊंचा उठाकर पृथ्वीपर ऐसा मारा जैसे कि विष्णुने युद्धमें मयदैत्यको मारा था इसके पीछे बड़ेपराक्रमी घटोत्कच ने अपूर्व्व दर्शन खड्ग को उठाकर उस फड़कते और युद्धमें गर्जते रौद्र राक्षस के शरीर से भयानक रूपवाले भयकारी शिरको ३५।३६ काटा हेमहाराज रुधिर लिप्त बालों समेत शत्रुके उस शिरको लेकर ३७ घटोत्कच शीघ्रही दुर्य्योधनके रथकेसमीप गया वहांमन्द मुसकान करता वह राक्षस पास जाकर ३८ भयानक मुख और बालोंसे युक्त शिरको उसके

रथपर डालकर भयानक शब्दों से ऐसे गर्जा जैसे कि वर्षाऋतु में बादल गर्जताहै ३९ और फिर दुर्य्योधन से यह बचन बोला कि यह तेरा बन्धु मरा और तुमने इसका पराक्रम देखा ४० अब तू कर्णकी और अपनी निष्ठाको देखेगा जो अपने धर्म अर्थ काम इन तीनोंको चाहताहै ४१ खाली हाथसे राजा स्त्री और ब्राह्मण को नहीं देखना योग्यहै तू तबतकही अत्यन्त प्रसन्न होकर नियत रहै जबतक कि मैं कर्णको मारूं ४२ हे राजा वह घटोत्कच इसप्रकार से कहकर तीक्ष्णबाणों के समूहोंको फैलाता और कर्णके शिरपर छोड़ता कर्णके सन्मुख गया ४३ हे महाराज फिर युद्धभूमि में उस नर और राक्षसका युद्ध घोररूप महाभयानक आश्चर्य्यकारी हुआ ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणि अलंबुपवधोनामशतोपरिपंचसप्ततितमोऽध्यायः १७५ ॥

एकसौछिहत्तरका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय सूर्य्यका पुत्र कर्ण और घटोत्कच राक्षस जो रात्रिमें भिड़े वह युद्ध कैसेप्रकार से हुआ १ उसराक्षस का कैसारूप हुआ और उसके घोड़े शस्त्र और रथ कैसे २ थे और उसके घोड़े रथ और ध्वजाओं का प्रमाण कितना २ था उसका कवच कैसाथा और आप कैसाथा हे संजय तुमसे मैं पूछताहूं तुम सावधानीसे उसको वर्णनकरो ३ संजय बोले कि वह घटोत्कच रक्त-नेत्र बड़ाशरीर लालमुख गम्भीर उदर खड़ेरोम शरीरकारंगपीत और पिंगलवर्ण हरितडाढ़ी मूंछ शंखके समान कान और बड़े२ नखरखने वालाथा ४ कानतकफटाहुआ मुख तीक्ष्ण डाढ़ जिसके प्रत्येकभाग महाभयकारीथेबहुतबड़ीलालजिह्वारक्तहोठलंबीभृकुटीमोटीनाक ५ नीलाशरीर रक्तग्रीवा पर्व्वतकेसमान शरीरवाला बड़ाशरीर शिर और भुजाओंका रखनेवाला महाबली ६ मैला और कठोर शरीर कास्पर्शविकट बद्धपिंडक स्थूलस्फिग गम्भीरनाभि अत्यन्तस्थूल ७ बड़ामायावी बाजूबन्दआदि हस्तभूषणवाला और जैसे कि पर्व्वत

अग्निमालाको धारण करताहै उसीप्रकार छातीपर निष्कको धारण करता ८ और उसका मुकुट स्वर्णमयी रत्नोंसे चित्रित अनेकरूपों से शोभित तोरणयुक्त नगरके वहिर्द्वार रूप उज्ज्वल मस्तकके ऊपर शोभायमानथा ९ बालसूर्यके समान प्रकाशित दोकुंडल स्वर्णमयीमाला बड़ा प्रकाशित कांस्य कवचको धारणकियेथा १० सैकड़ों क्षुद्रघंटिकाओं से शब्दायमान रक्तध्वजा पताकाओंसे शोभित ऋक्षचर्मसे मंडित और अलंकृत अंग और चारसौहाथलम्बा महा विस्तृत बड़ारथ ११ सबउत्तम शस्त्रोंसेयुक्त ध्वजाओंकी मालारखने वाला आठचक्रोंसे शोभित बादलके समान गम्भीर शब्दवाला रथ था १२ और मतवाले हाथीके समानलालनेत्र भयकारी पराक्रमीयथेच्छाचारी वर्ण और वेगसेयुक्त सौघोड़े १३ घोर राक्षसको सवार करते थकावटसे रहित बिपुलसटा नामकेशोंसे और स्कन्धोंसेयुक्त बारंबार हींसनेवालेथे उसके सारथीप्रकाशित कुंडलवाले बिरूपाक्ष नाम राक्षसने सूर्य्यकी किरणोंके समान रस्सियोंसे युद्धमें घोड़ोंको पकड़ा १४ । १५ वह उसके साथ ऐसा नियतहुआ जैसे कि अरुणके साथ सूर्य्य और बड़ा पर्वत बड़े बादलसे चिपटाहुआ होताहै १६ और रथपर सूर्य्यको स्पर्शकरनेवाली बड़ीध्वजा नियतथी रक्त और उत्तम अंगवाला कच्चामांस खानेवाला बड़ा भयानक गिद्ध उस ध्वजामेंनियतथा १७ इन्द्रकेवज्रकी समान शब्दायमान दृढ़प्रत्यंचा वाले और प्रत्यक्षमें बारहहाथलम्बे धनुषको चलायमानकरता १८ रथके अक्षके समान बाणोंसे सबदिशाओंको ढकता उस वीरोंकी नाशकरनेवाली रात्रिमें कर्णके सन्मुखगया उसरथमें नियत धनुषको चलायमान करनेवाले राक्षसके धनुषका शब्द ऐसा सुनागया जैसे कि वज्रका शब्द होताहै १९ । २० हे भरतवंशी उससे भयभीत आप की सबसेना ऐसी अत्यन्त कंपायमानहुई जैसे कि समुद्रकी बड़ी२ लहरें हिलती हैं २१ उस भयके करनेवाले भयानक नेत्र आतेहुये राक्षसको देखकर शीघ्रताकरतेहुये मन्दमुसकानवाले कर्णनेरोका २२ उसकेपीछे कर्णबाणोंको छोड़ता उसकेपास ऐसेगया जैसे कि यूथ

का यथप हाथी श्रेष्ठ हाथीके सन्मुख जाताहै २३ हेराजा उनदोनों कर्ण औरराक्षसका वह युद्ध ऐसाकठिनहुआ जैसे कि इन्द्र औरसम्बर दैत्यकाहुआथा बड़ेबाणोंसे घायल उनदोनोंने बड़े वेगवान् और भयानक शब्दवाले धनुषोंको लेकर परस्पर बाणोंसे ढकदिया २४।२५ इसकेपीछे कानतक खींचकर छोड़ेहुये टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे शरीर के कवचोंको काटकर परस्पररोका २६ जैसे कि दोशार्दूल नखोंसे और दोबड़े हाथीदांतोंसे घायल करतेहैं उसीप्रकार उन दोनोंने रथ शक्ति और विशिखनाम बाणोंसे परस्पर घायलकिया २७ अंगोंके काटनेवाले शायकोंसे छेदनेवाले और बाणरूपी उल्काओंसे भस्म करनेवाले वहदोनों कठिनतासे देखनेके योग्यहुये २८ सब घायल अंग रुधिरसेलिप्त वहदोनों ऐसे शोभितहुये जैसे कि धातुके रखने वाले और जलके छोड़नेवाले दोपर्व्वत होतेहैं २९ बाणोंकीनोकाओं से घायल अंगपरस्पर छेदनेवाले उपाय कर्त्ता बड़ेतेजस्वी उनदोनों ने परस्पर कंपायमान नहींकिया ३० हे राजा युद्धभूमिमें प्राणोंके जुआ खेलनेवाले कर्ण और राक्षसका वह जारीहुआ रात्रिका युद्ध बहुत विलम्बतक समानहुआ ३१ तब तीक्ष्णबाणोंको चढ़ाते और चढ़ेहुओंको छोड़ते उनदोनों के धनुषोंके शब्दोंसे अपने और दूसरे सबलोग भयभीतहुये ३२ हे महराज जब कर्ण घटोत्कचको नाश न करसका इसकेपीछे उस अस्त्रज्ञोंमेंश्रेष्ठ कर्णने दिव्यअस्त्रको प्रकट किया ३३ पांडवनन्दन घटोत्कचने कर्णके चढ़ायेहुये दिव्यअस्त्रको देखकर महामाया राक्षसीको प्रकटकिया ३४ अर्थात् शूल मुद्गरधारी और पर्व्वतवृक्षोंको हाथमें रखनेवाले बहुतसे घोररूप राक्षसों कीसेनासे संयुक्तहुआ ३५ वह राजालोग उसबड़े धनुषको उठाने वाले उग्र कालदण्डके धारण करनेवाले यमराजकी समान आनेवाले घटोत्कचको देखकर पीड़ामानहुये ३६ घटोत्कचके कियेहुये सिंहनादसे हाथियोंने मूत्रको छोड़ा और मनुष्य अत्यन्त पीड़ामान हुये इसकेपीछे चारोंओरसे महाभयकारी पाषाणोंकी वर्षाहुई ३७ अर्द्धरात्रिके समय अधिक बल पराक्रमी होनेवाले राक्षसोंकी सेना

से लोहेकेचक्र भुशुंडीशक्ति और तोमर छोड़गये और शूल शतघ्नी और पट्टिशोंके समूहभी गिरतेथे हे राजा उस उग्र और बड़े रुद्रयुद्ध को देखकर ३८।३६ आपकेपुत्र और शूरबीरलोग पीड़ामान होकर भागे वहांपर अस्त्रबलमें प्रशंसनीय महाअहंकारी एककर्णही पीड़ा-माननहींहुआ ४० फिर कर्णने घटोत्कचकी उत्पन्नकीहुई मायाको बाणोंकेद्वारा दूरकिया फिर मायाके नाशहोनेपर घटोत्कचने क्रोध से४१ घोर बाणोंको छोड़ा वह कर्णके शरीरमेंप्रवेश करगये अर्थात् उसबड़े युद्धमेंकर्णको छेदकर रुधिरसे भरेहुये वहबाण ४२ अत्यन्त क्रोधयुक्तसर्पोंके समानपृथ्वीमें घुसगये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्तहस्त-लाघवी प्रतापवान् कर्णने४३घटोत्कचको उल्लंघंकर दश बाणोंसे छेदा कर्णके हाथसे मर्मस्थलों पर अत्यन्त घायल ४४ बहुतपीड़ा-मान घटोत्कचने हजार आरा रखनेवाले बड़े दिव्यनेमी के ऊपर क्षुरोंसे जटित बालसूर्य्य के समान प्रकाशित मणिरत्नोंसे अलंकृत चक्रको हाथमेंलिया ४५ फिर क्रोधयुक्त भीमसेनके पुत्रने मारनेकी इच्छासे कर्णके ऊपरफेंका बड़वेगसे घुमाया और कर्णके शायकों से हटायाहुआ ४६ वह चक्र निष्फल होकर पृथ्वीपर ऐसेगिरा जैसे कि प्रारब्धहीनका मनका बिचार गिरताहै फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कचने चक्रको गिरायाहुआ देखकर ४७ कर्णको बाणोंसे ऐसे ढकदियाजैसेकि सूर्य्यको राहुढकलेताहै भयजन्य व्याकुलतासे रहित रुद्र इन्द्रऔर बिष्णुके समान पराक्रमी कर्णने ४८ शीघ्रहीघटोत्कच केरथको बाणोंसे ढकदिया तब क्रोधयुक्त घटोत्कचने स्वर्णमयीबाजू-बन्दवाली गदाको ४९ घुमाकरफेंका वह भीकर्णके बाणोंसे आघा-तितहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ी इसकेपीछे बड़ाशरीरधारी घटोत्कच कालमेघकेसमान गर्जता५० अन्तरिक्षको उछलकर आकाशसेवृक्षों की बर्षाकरनेलगा तबकर्णने उसमायावी भीमसेनके पुत्रकोआकाश केही मध्यमें ५१ बाणोंसे ऐसाछेदा जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से बादलको छेदताहै कर्ण उसके सब घोड़ोंकोमार रथके सौ खंड करके ५२ बर्षा करनेवाले बादलोंकी समान बाणोंकी बर्षा करने

लगा उसके शरीरमें बाणोंसे विना घायल दो अंगुलकाभी कोई स्थान बाकीनहीं रहा ५३ फिर वह एक मुहूर्त्त हीमें ऐसा दिखाई दिया जैसे कि शल्लों से चिताहुआ श्वावित होता है हमने बाणोंके समूहोंसे गुप्त युद्धमें उसके न घोड़ोंको न रथको न ध्वजा को और न घटोत्कचको देखा फिर कर्णके दिव्यअस्त्र को अपने अस्त्रसे काटता ५४।५५ वह मायावी राक्षस मायायुद्धकेद्वारा कर्णसे लड़ा अर्थात् अपनी मायाकी तीव्रतासे कर्णसे युद्ध करनेवाला हुआ ५६ आकाश में दिखाई न देनेवाले बाणोंके जालगिरे हे भरतवंशी वह बड़ीमायाका जाननेवाला ५७ बड़े शरीरवाला घटोत्कच मायासे मोहित करता भ्रमण करनेलगा उसने भयानक रूप और मुखोंको अशुभकरके ५८ मायासे कर्णके दिव्यअस्त्रों को ग्रसा फिरभी बड़ेशरीरवाला औरयुद्धमें अनेकप्रकारोंसे टूटेअंग ५९ बिना पराक्रम औरसाहसके आकाशसे गिराहुआ दिखाईपड़ा कौरवोंमें श्रेष्ठ लोग उसको मृतक मानकरगर्जे ६० फिर दूसरे नवीन शरीरोंसे सब दिशाओंमें दृष्टिगोचरहुआ तब भी महाबाहु बड़ा शरीर सौ शिर और सौही पेट रखनेवाला दिखाईदिया ६१ फिर मैनाक पर्व्वत के सामने दिखाईपड़ा तदनन्तर वह राक्षस मनुष्य के अंगुष्ठ के समान होकर ६२ समुद्रकीलहरों के समान उठाहुआ तिरछा और ऊंचा वर्त्तमानहुआ और पृथ्वीको फाड़कर फिर जलों में डूबगया ६३ इसके पीछे जलमें तैरताहुआ दूसरेस्थानमेंदिखाई पड़ा और जलसे निकलकर सुवर्णके दो रथोंपर नियतहुआ ६४ वहकवच और कुंडलधारी पृथ्वी आकाश और दिशाओंका मालासे प्राप्त होकर कर्णके रथकेपास जाके घूमनेलगा ६५ हे राजा फिर भयजन्य व्याकुलतासे रहित होकर कर्णसे यह वचन बोला हे सूतकेपुत्र नियतहो अब मेरे हाथसे जीवता कहांजायगा ६६ अब मैं युद्धभूमिमें तेरे युद्धके उत्साहको नाश करूंगा क्रोधसे रक्तनेत्र कठिन पराक्रमी राक्षस यह कहकर ६७ अन्तरिक्षमें उछलकर बड़े वेगसे हंसा और कर्णको ऐसे घायलकिया जैसे कि केशरी गजेन्द्र

कोकरताहै ६८ वह घटोत्कच रथकेअक्षके समान बाणोंसे रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णपर ऐसे वर्षा करनेलगा जैसे कि बादल धाराओंसे वर्षा करताहै ६९ कर्ण ने उस प्रकट होनेवाली बाणवृष्टी को दूरही से काटा हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसके अनन्तर कर्णसे पृथक् की हुई मायाको देखकर ७० अन्तर्द्धानहोनेवाले घटोत्कचने फिर मायाको उत्पन्न किया अर्थात् वह ऐसा ऊंचा औरवृक्षोंसे पूर्ण शिखररखने वाला पर्व्वत होगया ७१ जो कि शूल प्रास खड्ग और मूसल रूपी बड़ेजलके झिरनाओंका रखनेवालाथा वह कर्ण उस कज्जल समूहके समान और प्रहारों से भयानक शस्त्रोंके सहनेवाले पर्व्वत को देखकर व्याकुल नहीं हुआ इसके पीछे मन्दमुसकान करते कर्णने दिव्यअस्त्रको प्रकट किया ७२।७३ फिर अस्त्रसे घायल उस गिरिराजने नाशकोपाया फिर उस उग्ररूपने इन्द्रधनुष रखनेवाला नीलाबादल होकर ७४ पाषाण की वृष्टीसे कर्णको ढकदिया तब सूर्य्यके पुत्र अस्त्रज्ञ कर्णने वायुअस्त्रको धनुषपर चढ़ाकर ७५ उस कालमेघको छिन्नभिन्न किया हे महाराज उसकर्णने बाणजालों से सब दिशाओंको ढककर ७६ घटोत्कचके चलाये हुये अस्त्रको विनाश किया इसके पीछे भीमसेनके पुत्र महाबलीने युद्धमें अत्यन्त हंसकर ७७ महारथी कर्णके ऊपर बड़ी मायाको प्रकट किया उस रथियोंमें श्रेष्ठ व्याकुलतासे रहित रथकी सवारी से फिर आतेहुये घटोत्कचको जो कि सिंह और शार्दूलके समान मतवाले हाथीके समान पराक्रमी हाथीके सवार रथसवार अश्वसवार और नाना-प्रकारके शस्त्रधारी और अनेकभांति के भूषणधारी निर्दयी बहुतसे राक्षसोंसे ७८।७९।८० संयुक्तथा देखकर बड़े धनुषधारी कर्णने युद्धकिया ८१ इसके पीछे घटोत्कचने कर्णको पांचबाणोंसे घायल करके सब राजाओंको डराते और गर्जते हुये अंजलिक नामबाणोंसे बाण समूहों समेत कर्णके हाथमें नियत धनुषको काटा८२।८३ तब कर्णने दृढ़भार सहनेवाले इन्द्र धनुषके समान ऊंचे बड़े धनुषको लेकर बलसे खैंचा ८४ और उस सुनहरीपुंख शत्रुहन्ताआकाशचारी

शायकोंको राक्षसोंकेऊपर फेंका ८५ बड़े छातेवाले राक्षसोंका वह समूह बाणोंसे ऐसा पीड़ामान हुआ जैसे कि जंगली हाथियोंका समूह सिंहसे पीड़ित और व्याकुल होताहै ८६ उस समर्थने बाणों से राक्षसोंको घोड़े सारथी और हाथियों समेत ऐसे भस्म करदिया जैसे कि भगवान् अग्नि प्रलयकाल में जीवधारियोंको भस्म करते हैं ८७ फिर वह सूतनन्दन कर्ण राक्षसोंको मारकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें देवता महेश्वरजी त्रिपुरको भस्मी भूत करके स्वर्गमें शोभितहुयेथे ८८ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र उन हजारों राजा और पांडवोंके मध्यमें कोई भी इस कर्णके देखनेको समर्थ नहीं हुआ ८९ हे राजा महाबली भयानक और पराक्रम युक्त यमराजके समान क्रोधयुक्त राक्षसोंके राजा घटोत्कचके सिवाय कोई भी देखनेको समर्थ नहींहुआ ९० उससमय उस क्रोध युक्तके नेत्रोंसे ऐसे अग्नि उत्पन्नहुई जैसे कि बड़ीमशालोंसे ज्वलित रूप तेलकी बूंदें उत्पन्न होतीहैं हथेलीको हथेलीसे मसलकर दांतों की पंक्तिको काटकर ९१ हाथीके समान पिशाचों केसे मुख रखने वाले खच्चरों से युक्त मायासे रचेहुये रथपर सवार होकर ९२ क्रोधयुक्त घटोत्कच सारथीसे यह वचनबोला कि मुझको कर्णके सन्मुख लेचल उस रथियोंमें श्रेष्ठने घोररूप रथको सवारीसे ९३ कर्णके साथ फिर द्वैरथयुद्धको किया हे राजा फिर क्रोधयुक्त राक्षस ने उस महाअशनिनामको कर्णके ऊपर फेंका ९४ जोकि आठचक्र रखनेवाले शिवजीसे उत्पन्न दो योजन ऊंची और एकयोजनलम्बी चौड़ी ९५ लोहेकी बनी शूलोंसे ऐसी जटितथी जैसे कि केसरोंसे कदम्बकावृक्ष होताहै कर्णने बड़े धनुषको रख रथसेउतरकर अशनी को पकड़कर ९६ उलटाकर उसकेऊपर छोड़ा उसको उलटा आता देखकर वह राक्षस रथसे उतरगया तब वह बड़ी प्रकाशित अशनी घोड़े सारथी और ध्वजा समेत रथको धूलमें मिलाकर ९७ पृथ्वी को छेदकर प्रवेश करगई वहां देवताओंने बड़े आश्चर्य्यको पाया फिर सब जीवोंने शीघ्रतासे कर्णको पूजा ९८ जो रथसे उतरकर

देवताको रचीहुई महाअशनिको पकड़लिया कर्ण युद्धमें इसप्रकार के कर्मको करके फिर रथपर सवारहुआ ९९ हे बड़ाई देनेवाले फिर शत्रुसंतापी कर्णने नाराचोंको छोड़ा हे राजा कर्णने सब जीवधारियोंके मध्यमें दूसरे से असम्भव और करने के अयोग्य कर्मको १०० उस भयानक दर्शनवाले युद्धमें किया जैसे कि पर्व्वतधाराओंसे घायल होताहै उसीप्रकार बाणोंसे घायल १०१ गन्धर्व नगरकेरूप वह राक्षस फिर अन्तर्द्धान होगया इसप्रकार उसशत्रुके मारनेवाले राक्षसकीमायासेअस्त्रोंके नाशवान्होनेपर १०२।१०३ व्याकुलतासे रहित कर्ण उस राक्षससे युद्ध करनेलगा हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त महाबली १०४ महारथियों के मारनेवाले घटोत्कच ने अपनेको अनेक रूपवाला किया फिर दिशाओंसे सिंह व्याघ्र और तरक्षव रूपोंसे दौड़ा १०५ अग्निकी समान जिह्वा रखनेवालेसर्प और लोहेके मुखवाले पक्षीभी कर्णकेधनुषसे गिरेहुये विशिखोंकरके कीर्य्यमाण १०६ नागराजके समान कठिनता से देखनेके योग्य राक्षस उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगया राक्षस पिशाच यातुधान १०७ और भयानकमुख बहुतसे बन्दर शृगाल भेड़िये आदिक सबजीव कर्णकेमारनेके इच्छावान् सबओर से सन्मुख दौड़े १०८ तब भयानक बचन रुधिरसेतर घोररूप बहुतसे उठायेहुये शस्त्रोंसे भी उसको भयभीत किया १०९ कर्णने उन्होंके मध्यमें प्रत्येकको बहुतशायकोंसे घायलकिया फिर दिव्यअस्त्रसे उस राक्षसीमायाको दूरकरके ११० टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे उसके घोड़ोंको मारा शायकों सेघायल टूटेअंग पृष्ठवाले वह घोड़े १११ उस राक्षसके देखतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े तब नाशहुई मायावाला घटोत्कच सूर्य्यके पुत्र कर्णसे यह बात कहकर कि तेरी मृत्यु उत्पन्न करताहूं अन्तर्द्धान होगया ११२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्सप्ततितमोऽध्यायः १७६ ॥

एकसौसतहत्तरका अध्याय॥

संजय बोले कि इसप्रकार उस राक्षस और कर्णके युद्ध वर्त्तमान होनेपर अलायुध नाम महापराक्रमी राक्षसों का राजा १ भयङ्कर रूपवाले हजारों राक्षसोंसे युक्त बड़ी सेनासमेत आया २ नानाप्रकार के रूप धारण करनेवाले वीरों समेत पूर्वकी शत्रुता को याद करता हुआ दुर्योधन के पास आया उसकी जातिवाला पराक्रमी ब्राह्मणों का भोजन करनेवाला वक नाम राक्षस मारा गया ३ तब बड़ा तेजस्वी किर्मीर और हिडम्बभी मारागया सो बहुत काल से मनमें पुरानी शत्रुताको स्मरण करता ४ और इस रात्रिके युद्धको जानकर युद्धमें भीमसेन को मारने का अभिलाषी हाथीके समान मतवाला सर्पके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह राक्षस ५ युद्धोत्सुक होकर दुर्योधन से यह बचन बोलाकि हेमहाराजतुमको विदितहै कि जिसप्रकार भीमसेनके हाथसे हिडम्ब, बक और किर्मीर नाम तीनों मेरे बांधव राक्षस मारेगये और पूर्वसमयमें हिडम्बानाम कन्याको हरणकिया फिर६।७हमको और अन्य राक्षसोंको तिरस्कार करके दूसरीबात क्या कहैं हे राजा मैं आप उस हिडम्बाके पुत्र घटोत्कचको हाथी घोड़े रथ और मंत्रियों समेत मारने को आयाहूं अब मैं कुन्तीके सब पुत्र जिनमें अग्रगामी वासुदेवजीहैं८।६उनको मारकर उनके सबपीछे चलनेवालों को भी भक्षण करूंगा सब सेनाको रोक दो हम पांडवों से लड़ेंगे १० उसके इस बचनको सुनकर प्रसन्न चित्तभाइयों समेत दुर्योधन उसको अंगीकार करके यह वचन बोला ११ कि हम तुझको आगे करके सब सेना समेत शत्रुओंसे युद्ध करेंगे शत्रुताकी समाप्तीमें प्रवृत्त चित्त मेरे सेनाके लोग नियत नहीं होंगे १२ ऐसाही होय ऐसा राजासे कहकर वह राक्षसों में श्रेष्ठ अलायुध शीघ्रही मनुष्योंके भक्षण करनेवाले राक्षसों को साथ में लेकर घटोत्कच से लड़नेको १३ उसप्रकार के प्रकाशित अग्निके समान तेजस्वी

रथकी सवारी से घटोत्कच के सन्मुख गया हे राजा जैसी सवारी से कि घटोत्कच युद्धभूमि में वर्त्तमान था १४ वैसाही उसका भी बड़ारथ वड़े शब्दवाला बहुतसी तोरणोंसे चित्रित रीछके चर्मसे अलंकृत अंग और चारसौ हाथका लम्बाथा १५ उसके घोड़े भी शीघ्रगामी हाथीके समान शरीर गधेके समान शब्दवाले मांस रुधिरके भोजन करनेवाले बड़े शरीरोंसे युक्त संख्यामेंसौ रथमें वर्त्तमान थे १६ उसके रथका शब्दबड़ेबादलके समान और बड़ा धनुष दृढ़प्रत्यंचावाला सुवर्णसे जटित था १७ बाणभीउसके रथके अक्षकी समान सुनहरी पुंखयुक्त तीक्ष्णधार थे वह बीर सबप्रकार से उस बीर महाबाहु घटोत्कचकेही समान था १८ उसकी भी ध्वजा अग्नि सूर्य्यके समान शृगालोंके समूहों से रक्षितथी वह भी घटोत्कचके रूप से अधिक शोभायमान महाबिस्तृत प्रकाशमान मुखवाला था १९ प्रकाशमान बाजू मुकुट और मालाधारी वेष्टन युक्त खड्ग गदा भुशुंडी मूसल हल और धनुष का रखनेवाला होकरहाथीके समान शरीरवालाथा२० तबवह उसअग्नि के समान प्रकाशित अपने रथकी सवारीसे उस पांडवी सेना को भगातायुद्धमें वर्त्तमान होकर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे किबिजलियोंको माला रखनेवाला बादल अन्तरिक्षमें शोभित होताहै २१ हे राजा सब में अत्यन्त श्रेष्ठ महाबली कवचधारी ढाल बांधेहुये प्रसन्न चित्त वह शूरबीर भी सब ओरसे उसके साथ युद्ध करनेलगे २२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिसप्तसप्ततितमोऽध्यायः १७७॥

एकसौअठहतरका अध्याय॥

संजयबोले कि सब कौरवों ने उस भयानक कर्मी युद्ध में उस आते हुये राक्षसको देखकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्तकी १ इसीप्रकार दुर्योधन जिनमें मुख्य है वह आपके पुत्र नौकासे रहितके समान फिर नौकाको पाकर समुद्रको तरने के अभिलाषी हुये २ अपने को द्वितीय जन्म पानेवाला मानकर उन पुरुषोत्तमों ने राक्षसों के

राजा अलायुध को बड़ी श्लाघाओंके वचनों से पूजा ३ उस बड़े भयानक वुद्धिसे बाहर युद्धके वर्त्तमान होनेपर कर्ण और राक्षसके रात्रिके भयकारी युद्धको ४ आश्चर्य्यकरनेवाले पांचालोंने अन्यराजाओंसमेत देखा और इसीप्रकार आपके अश्वत्थामा द्रोणाचार्य्यकृपाचार्य्य आदिक शूरवीर भी युद्धभूमिमें उस घटोत्कचकेकर्म को देख कर पुकारे और भयसे महाव्याकुलहुये ५।६ हे महाराज आपकी सबसेनाके लोगव्याकुलहाहाकार रूप औरअचेतहोकरकर्णकेजीवन में निराशावानहुये ७फिर दुर्योधन बड़ी पीड़ा पानेवाले कर्णकोदेख कर राक्षसोंके राजा अलायुधको बुलाकर यह वचन बोला ८ कि यह सूर्य्यकापुत्रकर्ण हिडम्बाकेपुत्र घटोत्कचकेसाथ भिड़ाहुआ युद्धमें उस बड़े कर्मको करताहै जोकि इसके योग्यहै ९ घटोत्कचके हाथ से मारेहुये और नानाप्रकार के शस्त्रोंसे घायल शूर राजाओं को ऐसे देखा जैसे कि हाथीसे उखाड़ेहुये वृक्षोंको देखते हैं मैंने युद्धमें राजाओंके मध्यमें तेरे विचारसे तेराही भाग विचार किया है तुम पराक्रमकरके उसको मारो१०।११हेशत्रुविजयी अलायुध यहपापी घटोत्कच मायाके बलमें आश्रित होकर सूर्य्यके पुत्र कर्णको सब के आगे पराजित करताहै १२ राजाके इसवचनको सुनकर वह भयभीत पराक्रमी महाबाहु राक्षस उसके वचनको स्वीकारकरके घटोत्कचके सन्मुख गया १३ हे प्रभु उसके पीछे भीमसेनके पुत्र घटोत्कचने भी कर्णको छोड़कर सन्मुख आते हुये शत्रुको बाणों से मर्द्दन किया १४ फिर उन दोनों राक्षसाधिपों का ऐसा उत्तम भयकारी युद्ध हुआ जैसे कि हथिनीके लिये दो मतवाले हाथियों का युद्ध होताहै १५ राक्षस से छुटाहुआ रथियों में श्रेष्ठ कर्ण भी सूर्य्यके समान प्रकाशित रथकी सवारी से भीमसेन के सन्मुख गया १६ जैसे कि सिंह बैलको अपने वशीभूत करताहै उसीप्रकार अलायुधसे ग्रसे हुये घटोत्कच को देखकर उस आतेहुये कर्णको उल्लंघन करके १७ प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीमसेन सूर्य्यके समान प्रकाशित रथकी सवारी से बाण समूहोंको फेंकता अला-

युधके रथके समीप गया १८ हे प्रभु तब उस अलायुधने उस आतेहुये को देखके घटोत्कचको छोड़कर भीमसेनको बुलाया १६ फिर राक्षसों के नाश करनेवाले भीमसेन ने अकस्मात् सन्मुख जाकर उस राक्षसोंके राजा को उसके सब साथी और सेना समेत बाणोंकी वर्षासे ढकदिया २० हे शत्रुविजयी राजा उसीप्रकार अलायुध भी साफ और सीधे चलनेवाले बाणोंसे भीमसेन के ऊपर बारंबार वर्षा करनेलगा २१ उसीप्रकार नानाप्रकार के प्रहार करनेवाले भयानक रूप और आपके पुत्रोंकी विजय चाहने वाले वह सब राक्षसभी भीमसेन के सन्मुखगये २२ बहुत बाणों से घायल उस महाबली भीमसेन ने पांच २ तीक्ष्णबाणों से उन सब को छेदा २३ भीमसेन के हाथ से घायल वह निर्दय बुद्धी राक्षस कठिन शब्दोंसे गर्जना करतेहुये दशोंदिशाओंको भागे २४ भीमसेनसे भयभीत उस बड़ीसेनाको देखकर राक्षसने बड़ेवेग से सन्मुख जाकर बाणोंसे भीमसेनको ढकदिया २५ भीमसेनने फिर उसराक्षसको तीक्ष्ण नोकवाले बाणोंसे घायलकिया फिर अलायुध ने उन भीमसेनके चलायेहुये कितनेही विशिखोंको युद्धमेंकाटा २६ और युद्धमें बड़ी शीघ्रतासेही कितनोंहीको पकड़लिया भयानक परा-क्रमी भीमसेनने उस राक्षसोंके राजाको देखकर २७ वज्रके समान गिरनेवालीगदाको फेंका उसज्वालायुक्त वेगसेआतीहुईगदाकोउसने गदासेही घातितकिया और वहगदाभीमसेनकेही ओरगई उसकुन्ती केपुत्र भीमसेनने राक्षसाधिपको बाणोंकी वर्षासे ढकदिया २८।२६ राक्षसने तीक्ष्णबाणोंसे उसके उनबाणोंको भी निष्फलकिया रात्रिमें भयानकरूप सब राक्षसोंनेभी ३० अपनेराजाकी आज्ञासे रथ और हाथियोंको मारा राक्षसोंसे अत्यन्त पीड़ामान पांचाल सृंजी घोड़े और हाथियोंने ३१ वहां शान्तीको नहींपाया फिर उस महाघोर बड़ेभारी युद्धको देखकर ३२ कमललोचन श्रीकृष्णजी अर्जुन से यह बचन बोले कि राक्षसों के राजाके आधीन हुये भीमसेन को देखो ३३ हे पांडव अर्जुन तुमइसके पीछे चलो बिचार न करो धृष्ट-

१ म्न शिखंडी युधामन्यु उत्तमौजस ३४ और द्रौपदी के पुत्र सब महारथी यह सब साथ होकर कर्णके सन्मुखजावो पराक्रमी सात्यकी नकुल औरसहदेव ३५ तेरी आज्ञासे अन्य राक्षसोंको मारें और हे महाबाहु नरोत्तम अर्जुन तुमभी इससेना को जिनके कि अग्रगामी द्रोणाचार्य्य हैं हटावो ३६ बड़ाभय उत्पन्न हुआ इसप्रकार श्रीकृष्णजीके कहनेपर आज्ञापाये हुये महारथी ३७युद्धमें सूर्य्य के पुत्र कर्ण और उन राक्षसों के सन्मुख गये इसके पीछे प्रतापवान् राक्षसाधिपने कानतक खैंचेहुये और बिषैले सर्पकी समान बाणों से ३८ भीमसेन के धनुष को काटकर उसके सारथी समेत घोड़ों को भीमसेन के देखते हुये युद्धमें तीक्ष्ण बाणोंसे मारा ३९ फिर मृतक घोड़े और सारथीवाले भीमसेनने रथसे उतरकर ४० गर्जना करके महाभारी घोर गदाको उसके ऊपर छोड़ा उस भयकारी शब्द वाली आती हुई बड़ी गदाको ४१ उस घोर राक्षस ने गदाही से ताड़ित किया और गर्जना करी राक्षसाधिपके उस घोर और भयकारी कर्मको देखकर ४२ प्रसन्न चित्त भीमसेन ने शीघ्रही गदाको पकड़ा तब गदाके आघातों से पृथ्वी को अत्यन्त कंपानेवाले उन नर और राक्षस का महाघोर कठिन युद्ध हुआ फिर गदाको त्याग करनेवाले उन दोनों ने परस्पर सन्मुख होकर ४३ । ४४ बज्र के समान शब्दायमान घूंसों से परस्पर घायल किया इसके पीछे उन दोनोंने महा क्रोधित होकर इन आगे लिखी हुई रथचक्र,युग,अक्ष और अधिष्ठान आदि समीप बर्त्तमान वस्तुओंसे परस्पर सन्मुख होकर घायल किया फिर रुधिरको डालते हुये उन दोनोंने सन्मुख होकर ४६ मतवाले हाथियोंके समान बारंबार परस्पर खैंचा पांडवोंकी वृद्धिके चाहनेवाले इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजीने उसको देखा ४७ उन्होंने भीमसेन की रक्षाके निमित्त घटोत्कच को प्रेरणा करी ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिगतोपारिचष्टसप्ततितमोऽध्यायः १७८ ॥

—*—

एकसौउनासीका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा युद्धमें राक्षस से ग्रसेहुये भीमसेनको समीपसे देखकर श्रीकृष्णजी घटोत्कच से यह बचन बोले १ हे महाबाहु हे बड़े तेजस्वी सब सेनाके और अपने देखते युद्धमें राक्षससे ग्रसेहुये भीमसेनको देखो २ हे महाबाहु तुम कर्णको छोड़कर राक्षसों के राजा अलायुधको मारो इसके पीछे कर्णको मारोगे ३ वह पराक्रमी घटोत्कच बासुदेवजीके बचन को सुनकर कर्णको त्यागकर बकासुरकेभाई राक्षसाधिपसे युद्ध करनेलगा ४ हे भरतबंशी उन दोनों अलायुध और घटोत्कच राक्षसों का युद्ध रात्रिमें अत्यन्त कठिन हुआ ५ अलायुधके शूरबीर राक्षस जोकि भयानक दर्शनशूर धनुषधारी बेगसे आयेथे उनको ६ शस्त्रोंके उठानेवाले अत्यन्तक्रोधयुक्तमहारथी सात्यकी नकुल औरसहदेवनेतीक्ष्ण धारवाले बाणों से छेदा ७ और सबओरसे बाणोंको छोड़ते मुकुटधारी अर्जुनने सब उत्तम २ क्षत्रियोंको युद्धमेंसे हटाया ८ हे राजा कर्णने युद्धमें धृष्टद्युम्न और शिखण्डीआदिकपांचालोंके महारथियों को अन्य राजाओं समेत भगाया ९ भयानक पराक्रमी भीमसेन उन घायलोंको देखकर युद्धमें बिशिखनामबाणोंको छोड़ता शीघ्रही कर्ण के सन्मुख गया १० उसके पीछे वह महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी भी राक्षसोंको मारकर वहां आये जाहांपर कि कर्णथा ११ उन्होंने कर्णसे युद्धकिया और पांचालोंने द्रोणाचार्य्य से फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अलायुधने शत्रुबिजयी घटोत्कच को बहुत बड़ी परिघसे मस्तकपर घायलकिया १२ फिर उस पराक्रमी महाबली घटोत्कचने उसप्रहार से थोड़ी मूर्च्छा में होकर अपने शरीर को नियत किया १३ और प्रकाशित अग्निके समान सौ घंटे रखनेवाली सुबर्ण जटित अलंकृत गदाको युद्धमें उसके ऊपर फेंका १४ भयानककर्मी राक्षसके हाथसे छुटीहुई बड़े शब्द वाली उस गदाने बेगसे उसके रथ सारथी और घोड़ों को चूर्ण

किया १५ फिर वह राक्षसी मायामें नियत होकर उस मृतक सारथी घोड़े और टूटे अक्ष ध्वजा चक्रवाले रथसे शीघ्रही उछला १६ और मायामें प्रवृत्त होकर बहुत रुधिर बरसाया तब आकश बिजलीसे प्रकाशित और सघन बादलोंसे पूर्ण होगया १७ इसके अनन्तर बिजली समेत वज्र का गिरना और बिजलीके साथगर्जना उत्पन्न होना और बड़ा चट चटाकार शब्द हुआ १८ हिडम्बाके पुत्र घटोत्कचने उस राक्षसकी प्रबल मायाको देखकर पृथ्वी से आकाश में उछलकर उसमायाको मायाही से नाश किया १९ उसमायावी राक्षसने अपनी मायाको मायाही से नाशहुआ देखकर अत्यन्त कठोर पापाणोंकी वर्षाको घटोत्कचके ऊपर किया २० उस परा-क्रमीने उस घोर पापाण वर्षाको वर्षाही से नाश किया वह आश्च-र्य्यसाहुआ २१ इसके पीछे नानाप्रकारके शस्त्रोंसे एकने दूसरों पर वर्षाकरी लोहेकी परिघ, शूल, गदा, मूसल, मुद्गर २२ पिनाक, करवाल, तोमर, प्रास, कंपन, तीक्ष्णधार नाराच, भल्ल, चक्र, फरसे, अयोगुड़, भिंगिडपाल, गोशीर्ष, उलूखल २३ और उखाड़ेहुये बड़ी शाखावाले नानावृक्ष शमी, पीलु, कदंब, चम्पक २४ अंगुद, बदरी, कोविदार, फूलेहुये पलाश, आरमेद, प्लक्ष, न्यग्रोध, पिप्पल इन बड़े २ वृक्षों से भी युद्धमें परस्पर घायलकिया और नानाप्रकार की धातुओं से चितेहुये बड़े २ शिखरों से परस्पर घायल किया २५।२६ हे राजा उनके ऐसे महाशब्दहुये जैसेकि टूटनेवाले वज्रों के शब्द होतेहैं उसघटोत्कच और अलायुधका ऐसा घोरयुद्ध हुआ २७ जैसे कि पूर्वसमयमें वानरों के महाराजवालि और सुग्रीवका युद्ध हुआथा वह दोनों नानाप्रकार के घोरशस्त्र और विशिखों से युद्ध करके तीक्ष्ण खड्गोंको लेकर परस्पर सन्मुख हुये २८ उनबड़े ब-लवान् और बड़े शरीरवालोंने परस्परमें सन्मुख जाकर भुजाओंसे शिरकेबालोंको पकड़ा २९ हे राजा उन ऊष्मा भरे शरीर सेदोनोंने पसीना और रुधिरको ऐसे गिराया जैसे कि कठिन वर्षाकरने वाले दो बादल वर्षा करतेहैं ३० इसके पीछे घटोत्कच ने वेगसे गेरकर

उसराक्षसको अत्यन्त घुमाकर बलसे पृथ्वीपर पटककर उसके बड़े शिरको काटा ३१ तबवह बड़ा पराक्रमी कुंडलोंसे अलंकृत उसके शिरको लेकर कठिन शब्दको गर्जा ३२ पांचालदेशी और पांडव उस शत्रुविजयी घटोत्कचसे बकासुरके जातिवाले बडे शरीरवाले राक्षस को मराहुआ देखकर सिंहनादोंको गर्जे ३३ इसके पीछेयुद्ध में राक्षसके मरनेपर पांडवी शूरवीरोंने हजारों भेरी और अयुतो शंखोंको बजाया उन्होंको वह रात्रि चारोंओरसे दीपमाला रखने वाली अत्यन्त प्रकाशमान बिजयकी देनेवाली महा शोभायमानहु-ई३४।३५ फिर महाबली घटोत्कचने निर्जीवअलायुधके शिरकोदु-र्य्योधनके सन्मुख फेंका३६हे भरतबंशी राजा दुर्योधन अलायुधको मराहुआ देखकरसेनासमेत अत्यन्त ब्याकुलहुआ ३७ बड़ीशत्रुता को स्मरण करके उस राक्षस ने अपने आप आकर उसके साथ प्रतिज्ञाकरीथी कि मैं भीमसेन को मारूंगा ३८ और राजा दुर्य्यो-धन ने यह मानाथा कि इसके हाथसे अवश्य भीमसेन मारने के योग्य है और भाइयों के जीवनको भी बहुत कालतक माना ३९ उसने भीमसेनके पुत्रके हाथसे निश्चय मराहुआ देखकर भीमसेन की प्रतिज्ञाको पूर्णहोना माना ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिएकोनाशीतितमोऽध्यायः १७९ ॥

एकसौअस्सीका अध्याय ॥

संजय बोले कि अत्यन्त प्रसन्न मन घटोत्कच अलायुध राक्षस को मारकर आपकी सेनाके समक्षमें नानाप्रकार के शब्दोंको ग-र्जा १ हे महाराज उसके इस कठोर शब्दको जोकि हाथियोंको भी कंपायमान करनेवाला था सुनकर आपके शूरवीरों को बड़ा कठिन भय उत्पन्नहुआ २ महाबाहु कर्ण अलायुधसे भिड़हुये महाबली घटोत्कचको देखकर पांचालोंके सन्मुख गया ३ और दृढ़ टेढ़े पर्ववाले कानतक खैंचेहुये दशबाणोंसे धृष्टद्युम्न और शिखण्डी को छेदा ४ इसकेपीछे नाराचनाम उत्तमबाणोंसे महारथी सात्यकी युधामन्यु

और उत्तमौजसको कंपायमान किया ५ हे राजा युद्धमें उनसब धनुषधारियोंके दाहिने और बायें धनुषमंडल दिखाईदिये ६ रात्रिमें उन्होंकी प्रत्यंचा तल और रथनेमियोंके शब्द ऐसेकठोरहुये जैसे कि वर्षाऋतुमें बादलोंके शब्द होतेहैं ७ उससमय जीवाधनुष और रथकीनेमियोंके शब्दरूप गर्जनायुक्तबादल धनुषरूप विद्युन्मण्डल पताका रूप सुन्दर रंगवाला समूह बाणसमूहरूपी वर्षाका बरसने वाला युद्धरूपी बादल प्रकटहुआ ८ हे महाराज शत्रुओंके समूहोंके मर्द्दन करनेवाले बड़े पर्व्वतके समान पराक्रमी कर्णने उस अपूर्व्व पर्वतके समान अकंपित होकर वर्षाका नाशकिया ६ इसके पीछे आपके पुत्रकी वृद्धिमें प्रवृत्त महात्मा कर्णने युद्धमें वज्रपातकेसमान सुनहरी और अद्भुत पुंख रखनेवाले बड़े तीक्ष्ण बाणोंसे शत्रुओं को घायलकिया १० कर्णके हाथसे कितनेही टूटीध्वजा कितनेही बाणोंसे पीड़ित घायल शरीरवाले और कितनेही सारथी और घोड़ोंसे रहित होगये ११ इसकेपीछे युद्धमें कल्याणको न पानेवाले वहलोगयुधिष्ठिरकी सेनामें चलेगये घटोत्कचने उनको छिन्नभिन्न और मुखफेरने वाला देखकर अत्यन्त क्रोधकिया १२ अर्थात् उस सुवर्ण और रत्नोंसे जटित उत्तम रथपर सवार होकर सिंहके समान गर्जा और सूर्य्यके पुत्र कर्णको सन्मुख होकर वज्रकी समान बाणोंसे घायल किया १३ उन दोनोंने करणी, नाराच, शिलीमुख, नालीक, दंडासन, वत्सदन्त, वराहकर्ण, विपाट, शृंग और क्षुरप्रकी वर्षाओंसे आकाश को शब्दायमानकिया १४ बाणोंकी वर्षासेपूर्ण और तिरछे चलने वाले सुनहरी पुंख ज्वालारूप प्रकाशवाले अपूर्व्व फूल रखनेवाले बाणोंसे पूर्ण अन्तरिक्ष ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि सृष्टिकेजीवोंसे होताहै १५ उनदोनों सावधान और अनुपम प्रभाववालोंने उत्तम अस्त्रोंसे परस्पर घायलकिया उन दोनों उत्तम वीरोंकी मुख्यताको उसयुद्धमें किसीनेभी नहींदेखा १६ उनसूर्य्यके और भीमसेनके पुत्रों का युद्ध अत्यन्त अपूर्व्व अनुपम व्याकुलता पूर्व्वक शस्त्रों के गिरने का ऐसाहुआ जैसे कि स्वर्गमेंराहु और सूर्य्यकायुद्धकठिन गरमीसे

संयुक्तहोताहै १७ संजयबोले किहेराजा जब घटोत्कचको कर्णनहीं मारसका तबउसमहाअस्त्रज्ञने उग्रअस्त्रको प्रकटकिया १८ उसअस्त्रसे उसके रथसारथी और घोड़ोंको मारा रथसेरहित घटोत्कचभी शीघ्र अन्तर्द्धानहुआ १९ धृतराष्ट्रबोले हे संजय उसकठोरकर्मी शूर राक्षस के शीघ्र अन्तर्द्धान होनेपर मेरे शूरोंने जो २ बिचारकिये उनकोमुझ सेकहो २० संजय बोले कि सब कौरव और कर्ण अन्तर्द्धान होनेवाले राक्षसोंके राजाकोजानकर पुकारे कि यह कठिनशूरबीर राक्षस दृष्टि से गुप्त होकर युद्धमेंकैसे कर्णको नहींमारेगा २१ इसकेपीछे तीक्ष्ण और अद्भुत अस्त्रोंसेलड़नेवाले कर्णने बाणजालोंसे सब दिशाओंको ढकदिया शायकोंसे अन्तरिक्षके अन्धकाररूप होनेपर कोई जीव-मात्र दिखाई नहींपड़ा २२ बाणोंसे सब अन्तरिक्षको ढकता सूर्य्यका पुत्र कर्ण हस्तलाघवतासे बाणोंको लेता चढ़ाता और हाथोंके अग्र-भागसे तरकसोंको स्पर्शकरता हुआ दिखाई नहींपड़ा २३ इसकेपीछे हमने अन्तरिक्ष मेंराक्षसकी रचीहुई भयानक घोरकठिन और रक्त बादलकेरूपप्रकाशित ज्वलित अग्निके समानउग्रमायाको देखा २४ हे कौरवेन्द्रउसमें बिजलियां और ज्वलितउल्काभी दिखाईपड़ीं २५ इसके पीछे सुनहरी पुंखबाण, शक्ति, दुधारे खड्ग, प्रास, मूसल आदिशस्त्र और तेलसेसाफफरसे, खड्ग, प्रकाशितनोकके तोमर, और पट्टिश यहसब शस्त्र गिरे २६ प्रकाशित अथवा शोभायमान परिघ लोहेसे मढ़ीहुई गदा, अपूर्व्व तीक्ष्णधार शूल, सुवर्णवस्त्र से मढ़ीहुई भारीगदा और शतघ्नी चारोंओरसे प्रकटहुईं २७ जहांतहां बड़ी शिला और बिजलियां समेत हजारों वज्र और हजारोंछुरे रखने वाले चक्र जो कि अग्निके समान प्रकाशितथे प्रकटहुये २८ कर्ण अपने बाणोंके समूहोंसे उस शक्ति, पाषाण, फरसा, प्रास, खड्ग, वज्र, बिजली और मुद्गरोंकी गिरनेवाली वर्षाको जो कि ज्वलित रूप बहुतबड़ीथी नाशकरनेको समर्थ नहींहुआ २९ बाणोंसेघायल गिरतेहुये घोड़े वज्रसे घायल हाथी और शिलाओंसे घातित गिरते हुये रथोंके बड़े शब्दहुये ३० अत्यन्त भयानक और नानाप्रकार

के शस्त्रों के संघातसे दुर्योधन की वह सेना घटोत्कचके हाथसे चारोंओरको घायल हुई और महापीड़ित होकर चक्र के समान घूमती दिखाई पड़ी ३१ हाहाकार करनेवाले चारोंओरसे घूमनेवाले गुप्तहोनेवाले व्याकुलरूप हुये तब वह पुरुषों में बड़ेवीर अपनी प्रतिष्ठासे मुख फेरनेवाले नहींहुये ३२ उस भयानकरूप बड़ेघोर बड़े शस्त्रोंसे गिरनेवाली वर्षाको और सेनाके समूहोंको गिराया हुआ देखकर आपके पुत्रोंने बड़ा भयमाना ३३ राजा दुर्योधनके शूरवीर अग्निकेसमान प्रकाशित जिह्वा और भयानक शब्दवाले सैकड़ों शृगालोंको और गर्जनेवाले राक्षसोंके समूहोंकोभी देखकर पीड़ामान हुये ३४ और अग्निके समान प्रकाशित जिह्वा तीक्ष्ण धार भयकारी पर्व्वताकार शरीरवाले आकाशमें वर्त्तमान हाथमें शक्ति रखनेवाले राक्षसोंने ऐसे बाणोंकी वर्षाकरी जैसे कि बड़ी उग्र वर्षाको बादलकरताहै ३५ उन बाणशक्ति, शूल, उग्रगदा, प्रकाशित परिघ, बज्र, पिनाक, अशनिप्रहार शतघ्नी और चक्रोंसे मथेहुये वह लोग गिरपड़े ३६ उन शूल, भुशुंडी, अगुड, लोहेकीशतघ्नी, और चाद-रसे मढ़ेहुये बड़े शस्त्रोंने आपके पुत्रकीसेनाको ढकदिया उससे महा भयकारी मूर्च्छा जारीहुई ३७ वहां गिरीहुई आंत और टूटेअंगवाले शूर कटेहुये शिरों समेत सोगये घोड़े हाथी मारेगये और रथशिला-ओं से चूर्ण होगये ३८ वह भयानकरूप राक्षस इसप्रकार पृथ्वी पर शस्त्रोंकी बड़ी वर्षाकरनेवालेहुये वहां घटोत्कचकी उत्पन्नकीहुई मायाने न प्रार्थना करनेवालेको छोड़ा औरन भयभीतोंको छोड़ा ३९ कुरुवीरोंकी उस घोरपीड़ा और कालसे उत्कृष्ट क्षत्रियोंके विनाश में वह सब कौरव लोग पुकारतेहुये अकस्मात् छिन्न भिन्न होकर भागे ४० हे कौरव लोगो भागो यह घटोत्कच नहींहै यह इन्द्रसमेत देवता लोग पांडवोंके निमित्त हमको मारेडालतेहैं उस युद्धरूपीस-मुद्रमें इसरीतिसे डूबनेवाले उन भरतवंशियोंका आश्रयरूप द्वीप कर्ण हुआ ४१ उस कठिन रीने पीटनेके वर्त्तमान होने वा कौरवों की सेनाको छिन्न भिन्न होकर गुप्तहोने और सेनाओंके भाग प्रकट

होनेपर न कौरव जानेगये न दूसरे ४२ हे राजा वेमर्य्याद और घोर रूप सेनाके भागनेपर सबदिशाओंको खाली देखनेवालोंने उसबा णोंकी वर्षाके भझानेवाले केवल अकेले कर्णहीकोदेखा उसकेपीछे राक्षसकी दिव्यमायासे युद्धकरते लज्जावान् कर्णने बाणोंसे अ न्तरिक्षको ढकदिया और कठिनतासे करनेके योग्य उत्तम कर्मको करताहुआ सूतकापुत्रयुद्धमें मोहितनहींहुआ ४३।४४हे राजा उसके पीछे युद्धमें उस चैतन्यताकी प्रशंसाकरते और राक्षसकी बिजयको देखते भयभीतहुये सब वाह्लीकदेशी और सिंधुदेशियोंने कर्णको देखा उसकेछोड़े हुये चक्रसे संयुक्त शतघ्नीने एकसाथ चारोंघोड़े को मारा तबवह घोड़े दांत आंख और जिह्वासे रहित मृतक होकर घुटनोंके बलसे पृथ्वीपर गिरपड़े ४५।४६ उसकेपीछे मृतकघोड़ेवाले रथसे उतरकर भागनेवाले घोड़ोंमें जाकर नियत हुआ और मा यासे दिव्यअस्त्रके नाश होनेपर मोहित नहींहुआ कालको बर्त्तमा न हुआ जाना तदनन्तर सब कौरव घोर रूप माया को देखकर कर्णसे बोले कि हे कर्ण अब शीघ्रही उस शक्तीसे राक्षस को मारो नहीं तो यह कौरव और धृतराष्ट्र के पुत्र नाश हुये जातेहैं ४७।४८ भीमसेन और अर्जुन हमारा क्या करसक्ते हैं तुम इस तपानेवाले पापी को मारो हमलोगों में से जो मनुष्य घोररूप युद्धसे छूटेंगे वह हमारे बीचमें सेना रखनेवाले पांडवों से युद्ध करेंगे ४९ इस हेतुसे तुम उस इन्द्रकी घोरशक्तिके द्वारा इस राक्षस को मारो हे कर्ण इन्द्रके समान सब कौरव शूरवीरों समेत रात्रिके युद्धमेंविनाश को नपावें ५० रात्रिके समय राक्षस के न मरने पर सेनाको भय भीत देखके और कौरवोंके बड़े शब्दोंको सुनकर कर्णने शक्ति छोड़ने का बिचार किया ५१ उस क्रोधयुक्त सिंहके समान असह्यने युद्धमें अपने ऊपर प्रहारों को नहीं सहा और उसके मारने के अभिलाषी ने असह्य बैजयन्ती नाम उत्तम शक्तीको हाथमें लिया ५२ हे राजा जो वह प्रतिष्ठावान् शक्ती युद्धभूमि में अर्जुन के मारने के निमित्त बहुत बर्षों तक रक्खी और इन्द्रने कुंडलोंके लेनेके लिये जिस अ

शक्तिको कर्णकोदीथी ५३ कर्णने उस घाटनेवाली अत्यन्त प्रकाश-
मान पाशोंसे युक्त यमराजकी एकरात्रि और मृत्युके समान उल्का
के समान प्रकाशित शक्तीको राक्षस के लिये भेजा ५४ हे राजा
उस उत्तम और शत्रुके शरीर को नाश करनेवाली भुजापर नियत
ज्वलित रूप अग्निको देखकर भयसे पीड़ित राक्षस शरीर को
विन्ध्याचल पर्व्वत के समान बड़ा करके भागा ५५ हे महाराज
कर्णकी भुजाके मध्यमें शक्तिको देखकर अन्तरिक्षमें सब जीवों ने
शब्द किया कठिन बायुचली और परस्पर बायुके संघट्टनसे बिज-
ली भी पृथ्वीपर गिरी ५६ वह ज्वलित रूप शक्ति उस माया को
भस्म करके राक्षस के कठिन हृदय को बेधकर प्रकाश करती हुई
ऊपर को गई और रात्रिके समय नक्षत्रों के लोकोंमें पहुंची ५७
और वह राक्षस नानाप्रकार के दिव्य नाग मनुष्यों के अस्त्रों के
समूहोंसे बिदीर्ण नानाप्रकार के भयानक शब्दों को गर्जना करता
हुआ इन्द्र की शक्ती के द्वारा अपने प्यारे प्राणोंका त्यागने वाला
हुआ ५८ उसने शत्रुके नाशके लिये उस और दूसरे अपूर्ब अद्भुत
कर्मको किया उससमय पर शक्तिसे भिदे हुये मर्मस्थल पर्व्वत और
बादल की सूरत होकर वह राक्षस शोभायमान हुआ ५९ उसके
पीछे वह राक्षसाधिप घटोत्कच बड़े रूपमें नियत होकर औंधाशिर
खड़ा शरीर जिह्वा बिना निर्जीव और कटाशरीर होकर अन्तरिक्षसे
पृथ्वीपर गिरा ६० अर्थात् वह भयानककर्मी भीमसेन का पुत्र
उस रूप को भयानक रूप करके गिरा जिससे उस इसप्रकर के
मृतकने भी अपने शरीर से तेरी सेनाके एकस्थान को विनाश
किया ६१ शीघ्रबड़े लम्बे चौड़े अत्यन्त वर्द्धमान शरीर समेत गिरते
और पांडवों का हितकरते निर्जीव राक्षसने आपकी एक अक्षौहणी
सेनाको मारा ६२ इसके पीछे सिंहनादों समेत भेरी शंख मुर्जा और
ढोलोंके महान् शब्द हुये और मायाको भस्मकरके राक्षसको मृतक
हुआ देखकर बड़े प्रसन्न मन होकर कौरव लोग अत्यन्तगर्जे ६३
तदनन्तर कर्णको कौरवों ने ऐसा पूजा जैसे कि वृत्रासुरके मारने

में इन्द्रको देवताओंने पूजाथा आप के पुत्रके रथपर चढ़ा हुआ वह प्रसन्न मन कर्णभी आपकी उस सेनामें पहुंचा ६४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिइन्द्रदत्तकर्णशक्तिद्वाराघटोत्कचवधेशतोपरि अशीतितमोऽध्यायः १८०॥

एकसौइक्यासीका अध्याय॥

संजय बोले कि पर्वताकार गिरे और मरेहुये घटोत्कचको देखकर सब पांडव लोग शोकके अश्रुपातों से व्याकुल हुये १ फिर बड़ी प्रसन्नता पूर्वक बासुदेवजी सिंहनादकोगर्जे और अर्जुन को अपने हृदयसे लगाया २ वह श्रीकृष्णजी बड़े शब्दको गर्जकरऔर बागडोरोंको स्वाधीन करके प्रसन्नतासे पूर्ण ऐसे नृत्य करनेलगे जैसे कि बायुसे कंपायमान वृक्ष घूमताहै ३ इसके अनन्तर बुद्धिमान् और अजेय बासुदेवजी रथके स्थितिस्थानमें वर्त्तमानअर्जुनको अपने समक्ष करके बारंबार भुजाओंके शब्द करके गर्जे ४ हे राजा इसके पीछे महाबली अर्जुन जो कि अत्यन्त प्रसन्न चित्त नहीं था बासुदेव जी को अत्यन्त प्रसन्न जानकर बोला हे मधुसूदनजी घटोत्कचके मरनेसे शोकका स्थान बर्त्तमान होनेपर यह आपकी बड़ी प्रसन्नता अयोग्यहै ५।६ यहां घटोत्कच को मृतक देखकर आपकी ओर की सब सेना मुखफेररहीहै और हमसब लोगभी घटोत्कच के मारेजानेसे अत्यन्त व्याकुल हैं ७ हे जनार्दन जी इसका कारण मिथ्या नहीं बिदित होताहै सो हे सत्यवक्ताओं में श्रेष्ठ आप मेरे पूछनेपर सत्य २ कहौ ८ हे शत्रुंजयजी यह बात आपको गुप्तकरने के योग्यनहींहै तो इसको यथार्थतासे मुझसे कहने को योग्यहो हे मधुसूदनजी अब आपके धैर्यके रूपान्तर होने का कारण कहौ ९ हे जनार्दनजी जैसे कि समुद्र का सूखजाना और मेरुका चलायमान होना होताहै अब उसीप्रकारसे इसआपके कर्म को मैं मानताहूं१० श्री बासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन इस बड़ी प्रसन्नता प्राप्तहोने को कारण समेत मुझसेसुनो जोकि शीघ्रही चित्तकोस्वस्थ करनेवाला

और उत्तमहै ११ हे बड़े तेजस्वी अर्जुन घटोत्कचके द्वारा इसशक्तीको छोड़कर युद्धभूमिमें शीघ्रही कर्णको मरा हुआ जानो १२ लोकमें ऐसा कौन पुरुषहै जो कि युद्धमें इस कार्त्तकेयके समान शक्तिहाथमें लिये कर्णके सन्मुख नियत होसक्ताहै १३ यह कर्ण प्रारब्धही से कवच रहितहुआ प्रारब्धहीसे कुंडलों करके बिहीनहुआ प्रारब्धसे ही यह अमोघ शक्ती इस घटोत्कच पर छोड़ीगई १४ जो कदाचित् यह कर्ण अपने कवच और कुंडलों समेत होता तो अकेलाही देवताओं समेत तीनोंलोकोंको विजय करसक्ता था १५ इन्द्र, कुबेर राजावलि और यमराजभीयुद्धमें कर्णके सन्मुखहोनेको उत्साहनहीं करसक्ते १६ आप गांडीव धनुषको उठाकर और मैं सुदर्शनचक्रको लेकर उसप्रकार कवच कुंडलोंसे युक्त नरोत्तम कर्णकेबिजयकरनेको समर्थ नहीं थे इन्द्रने तेरी वृद्धिके लिये अपनीमायासे इस शत्रुओंके विजय करनेवाले कर्णको कवच और कुंडलोंसे रहित किया जिस हेतुसे कि कर्णनेअपने कवच औरनिर्मल कुंडलोंको उखाड़करइन्द्रके अर्थदिया उसीहेतुसेही यह कर्ण वैकर्त्तन नामसे बिख्यातहुआ १८ जो कर्ण बिषैलेसर्पकी समान क्रोधयुक्त और मन्त्रकेतेजसे जंभाई लेने वालाथा वह कर्ण अब मुझको शान्त अग्निके समान दिखाई देताहै २० हे महाबाहो जबसे कि महात्मा इन्द्रने कर्णके अर्थ इस शक्तिको जो कि घटोत्कचके ऊपर उसने फेंकी २१ दियाथा तभीसे दोनों कुंडल और दिव्य कवचसे ठगेहुये कर्णने उस शक्तिकोपाकर सबप्रकारसे युद्धमें तुमको मराहुआ मानाथा २२हे निष्पाप पुरुषोत्तम इस दशावालाभी कर्ण तेरे सिवाय और किसीसे मारनेकेयोग्य नहींहै२३वह वेदब्राह्मण और ईश्वरका भक्त सत्यवक्तातपस्वीब्रतकर्ता सावधान होकर शत्रुओंपर दयावान्है उसहेतु से कर्ण वृषनाम से बिख्यात हुआ २४ युद्धमें सावधान महाबाहु सदैव सन्नद्ध हुये धनुषोंके वनमें केशरीके समान गर्जता युद्धके शिरपर उत्तम रथियोंकेमदको ऐसे झाड़ताहै जैसे कि यूथप हाथियों के झुण्ड केमदों को झाड़ताहै जोकि दिवसके मध्याह्न कालीन सूर्य्यके समान २५।२६

तेरे महात्मा और उत्तम शूरवीरोंसे देखने के भी योग्य नहीं है वह बाणजालों से शरदऋतुके सहस्रांशु सूर्य्यके समान २७ वर्षाऋतुके बादल के समान अविच्छिन्न बाणधाराओं को छोड़ता दिव्यअस्त्रों से बादलकी समान वर्षा करनेवाला है २८ वह कर्ण चारोंओर से बाण वृष्टियोंके करनेवाले रुधिर मांसके जारी करनेवाले देवता-ओंसे भी विजय करने के योग्य नहीं है २९ हे पांडव अब कवच और दोनों कुंडलों से रहित वह कर्ण नरभाव को प्राप्त हुआ और इन्द्रकी दीहुई शक्तीने भी उसको त्यागा ३० इसके मारने के निमित्त एकही योग होगा उसी अवकाशमें तुम सावधानीसे इस अचेत और मोहित को समय पर मारो अर्थात् तुमप्रथम इसइगित को बिचारकर आपत्तिमें फंसेहुये और रथके चक्रके निकासने में प्रवृत्त होने वाले को मारना ३१ बलिका मारनेवाला एक वज्र धारी बीर भी उस अजेय और अस्त्र उठानेवाले कर्ण को नहीं मार सक्ताहै जरासन्ध महात्मा शिशुपाल और महाबाहु एकलब्यनाम निषाद यह सब जुदे २ योगोंसे तेरे हितकेलिये मैंने मारे फिरअन्य राक्षसाधिप जिनमें हिडम्ब किर्मीर और बक यह बड़ेश्रेष्ठथे उनको भी भीमसेन के द्वारा मारा और शत्रुकी सेनाकामारनेवाला अला-युध और उग्रकर्मी वेगवान् घटोत्कच मारागया ३२ । ३३॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकाशीति तमोऽध्यायः १८१ ॥

एकसौबयासीका अध्याय॥

अर्जुन बोले कि हे जनार्दनजी तुमने कौनसी इच्छाओंसे हमारी वृद्धिके लिये बड़े २ जरासन्धादिक संसारके राजाओंको मारा १ बासुदेवजी बोले कि जो जरासन्ध शिशुपाल और महाबली एक-लब्य प्रथमकाल में न मारेजाते तो महा भयकारी होते २ और दुर्योधन उन उत्तम रथियों को अवश्य बुलवाता और वह हमलोगों पर सदैव शत्रुता करनेवाले होकर कौरवों में संयुक्तहोते ३ वहबड़े धनुषधारी अस्त्रज्ञ और दृढ़ युद्ध करनेवाले वीर देवताओंकेसमान

दुर्योधनकी सब सेनाओंकी रक्षा करते ४ कर्ण जरासन्ध शिशुपाल और निषादके पुत्र यह सब दुर्योधन से संयुक्त होकर इस सबपृथ्वी को विजय करसक्ते थे ५ वह लोग जिन २ योगोंसे मारेगये हे अर्जुन उसकोभी सुनो कि वह युद्धमें बिना योगके देवताओंसे भी विजय करनेके योग्य न थे ६ हे अर्जुन उनमें प्रत्येक पृथक् २ युद्धमें देवताओं से रक्षित देवसेना से भी युद्ध करनेवाले थे ७ बलदेवजी से विजय कियेहुये क्रोधयुक्त जरासन्धने हमारे मारने के निमित्त नाश करने वाली उस कालगदाको फेंका ८ जोकि अग्निके समान प्रकाशित और आकाशको सीमन्तके समान करनेवाली थी वह गिरती हुई ऐसी दिखाईपड़ी जैसेकिइन्द्रका छोड़ाहुआ वज्रहोताहै ९ रोहिणी नन्दन बलदेवजीने उस आतीहुई गदाको देखकर उसके नाश के अर्थ स्थूनाकरण अस्त्रको छोड़ा १० अस्त्र के वेगसे घायल वहगदा पृथ्वी देवीको फाड़ती और पर्व्वतोंको कंपायमान करती हुई पृथ्वीपर गिरपड़ी ११ जब कि वह जरासन्ध अपनी दोमाता ओंसे आधा आधा अंग होकर उत्पन्न हुआ औरनिरर्थक जानकर उसको बाहर फेंक दियाथा उससमय वहां घोर पराक्रमी जरानाम राक्षसीने उस खंड २ उत्पन्न होने वाले शत्रु बिजयी जरासन्धको उठाकर १२ जोड़दिया तब सुन्दर रूपवाला होगया उस जराने जो सन्धि मिलाकर जोड़ा इसीसे इसका नाम जरासन्ध विख्यात हुआ १३ हे अर्जुन पृथ्वी पर वर्त्तमान वह राक्षसी अपने पुत्र बांधवों समेत उस गदा और स्थूणाकरण अस्त्र से मारी गई १४ गदासे रहित वह जरासन्ध युद्धभूमि में तेरे देखते हुये भीमसेन के हाथसे मारागया १५ जो प्रतापवान् जरासन्ध उस गदाको हाथ में रखनेवाला होता तो हे नरोत्तम इन्द्र समेत सब देवता भी युद्धमें उसके विजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते १६ द्रोणाचार्य्यने तेरी वृद्धिकेलिये आचार्य्य दक्षिणाका उपदेश करके कपट पूर्व्वक अंगूठसे सत्य पराक्रमी एकलव्य जुदाकिया १७ वह अंगलित्राण का धारण करनेवाला दृढ़ सत्य पराक्रमी बड़ा अहंकारी

एकलव्य दूसरे रामचन्द्रजीके समान बनचारीहोकर शोभायमान हुआ १८ हे अर्जुन देवता दानव राक्षस और उरगों समेत युद्धके मध्यमें किसीदशामें उस अंगुष्ठ रखनेवाले एकलव्यकेविजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते १६ वह दृढ़ मुष्टिक सदैवअहर्निश धनुष बाणोंका अभ्यासी मनुष्योंसे सन्मुख देखनेको भी कठिनथाउसको भी मैंने तेरी वृद्धिके अर्थ युद्धके शिरपर अपने हाथसे मारा और पराक्रमी शिशुपाल तेरे नेत्रोंके सन्मुखमारा२०।२१उसका भी युद्ध में सबदेवता और असुरोंसे मारनाअसंभवथा मैं उसके और अन्य २ बहुतसे असुरोंके मारनेको प्रकट हुआहूं २२ हेनरोत्तम तुझकोसाथ रखनेवाले मैंनेलोकोंकेअभ्युदयकी इच्छासे प्रकटहोकर उनहिडम्ब, बक, और किर्मीर नाम राक्षसोंको भीमसेनके हाथसे गिराया २३ जो कि रावणके समान बली और ब्रह्मयज्ञोंके नाश करनेवालेथे इसीप्रकार मायावी अलायुध भी घटोत्कचके हाथसे मारागया २४ और घटोत्कच भी उपाय के द्वाराकर्णकी शक्तीसे मारागया जो कदाचित् कर्ण उसको बड़ेयुद्ध में नहीं मारता २५ तो वह भीमसेनका पुत्र घटोत्कच मेरे हाथ से मारनेके योग्यहोता मैंने पूर्व्व समयमें तुम्हारे प्रियकरनेकी इच्छासे यहनहीं माराथा निश्चय करके यह राक्षस ब्राह्मण और यज्ञोंसे शत्रुताकरनेवाला धर्मका गुप्तकरनेवाला पापात्माथा इसीहेतुसे यह मारागया२६।२७हेनिष्पाप पाण्डव इन्द्र कीदीहुई शक्तिको भी मैंनेही उपायसे चलवाई जो धर्मके लोपकरने वालेहैं वह सब मुझसे बध्यहैं २८ मैंने धर्मकी स्थिरताके लियेही यह अबिनाशी प्रतिज्ञा करीहै कि वेदतप ब्राह्मण सत्यता इन्द्रियोंका जीतना वाह्याभ्यन्तरकी पवित्रता धर्म ह्री श्री धृति और क्षमा २६ यह सब जिसस्थानपरहैं वहां मैं सदैव रहताहूंमैंसत्य २ तेरी शपथ खाताहूं कि सूर्य्यके पुत्र कर्णके बिषयमें तुझको व्याकुलता नहीं करनी उचितहै ३० मैं तुझको उपाय पूर्वक बतलाताहूं जिसकेद्वारा तू उसको सहैगा भीमसेनभी युद्धमें दुर्योधनको मारेगा ३१ हेअर्जुन उसके भी मारनेका तुझसे कहताहूं यह शत्रुओंकी सेनामें कठोर

शब्दकी अधिकयता होरहीहै ३२ और तेरीसेनादूसरी दिशाओंको भागतीहैं लक्ष्यभेदी कौरवलोग तेरी सेनाको छिन्नभिन्न करतेहैं ३३ और यह प्रहार कर्त्ताओं में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य तेरी सेनाको भस्मकरे डालतेहैं ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअशीतीपरिद्रु यशीतितमोऽध्यायः १८२ ॥

एकसौतिरासीका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जब कर्णके पासऐसीशक्तिथी कि एकहीवीरके मारने में फिर निष्फलहोजायतो किसकारण उसनेसबको छोड़कर उस शक्तिको अर्जुनके ऊपर नहीं छोड़ा क्योंकि उसके मरनेपर सब सृञ्जयसमेत पांडवलोग मृतकरूप होजाते किसहेतुसे युद्धमेंएकही वीरके मारनेमें बिजयको नहीं प्राप्तकिया१।२क्योंकि अर्जुनकातोयह सत्यव्रतथा कि वुलायाहुआ कभी नहीं लौटसक्ताथा उसअर्जुन को कर्ण आप खोजकरलेता ३ इसके विशेष कर्णने द्वैरथ युद्धको प्राप्त करके किसनिमित्त से अर्जुनको इन्द्रकी दीहुई शक्तिसे नहींमारा हेसंजय यह मुझसे समझाकर कहो४निश्चयकरके मेरापुत्र बुद्धिसे और सहायतासे रहितहोकर पापीशत्रुओंसे ठगागया है वह कैसे शत्रुओंको विजय करसक्ताहै ५ जो उसकी उत्तम शक्ती महाबिजयका स्थानथी वह शक्ति वासुदेवजीने घटोत्कचके ऊपर छुड़वादी ६ जैसे कि निर्वलके हाथका वर्त्तमान फल वलवान् हरलेता है उसीप्रकार वह अमोघशक्ति घटोत्कचके ऊपर निष्फलहुई ७ मैं मानताहूं कि जिसप्रकार वराह और कुत्तेकेयुद्ध करतेहुये उनदोनोंके नाशहोने में चांडालका लाभहोता है हे विद्वान् उसीप्रकार कर्ण और घटोत्कचके युद्धमें वासुदेवजीका लाभहुआ ८ जो घटोत्कच कर्णकोही मारदेता तोभी पांडवोंका बड़ालाभथा अथवा कर्णनेभी जो उसको मारा तो भी शक्तीके नाश होजानेसे करनेके योग्य कियाहुआ कर्महोगया ६ पांडवोंके हितकारी और सदैव उनकी वृद्धि चाहनेवाले वासुदेव जीने बुद्धिसे उसको बिचारकर युद्धमें कर्णके हाथसे घटोत्कचको मर

वाया१० संजयबोले कि मधुसूदन जीने कर्णके उसकर्म करने की इच्छाको जानकर द्वैरथ युद्धमें राक्षसोंके राजा घटोत्कचको प्रवृत्त किया ११ हे राजा आपके दुर्मंत्र करनेपर बड़े बुद्धिमान् जनार्दन जीने अमोघशक्ती के नाशकेअर्थ बड़े पराक्रमी घटोत्कचको आज्ञा करी १२ हे कुरुद्वह हमलोग तभी कृतकार्य्य अर्थात् मनोरथ सिद्ध करनेवाले होसक्ते हैंजब कि श्रीकृष्ण उसपांडव अर्जुनको महारथी कर्णसे रक्षा नहीं करें १३ हे धृतराष्ट्र योगेश्वर प्रभु जनार्दनजी के न होनेपर वह अर्जुन युद्ध में घोड़े ध्वजा और सारथी समेतपृथ्वी पर गिरपड़े १४ श्रीकृष्णजीसेही अनेक प्रकारोंके उपायोंसे वह रक्षित कियाहुआ अर्जुन सन्मुख होकर शत्रुओंको बिजय करता है १५ वह श्रीकृष्णजी अमोघशक्ती सेभी अधिकहैं कि जिन्होंने पांडव अर्जुनको रक्षित किया नहींतो वह शक्ती अर्जुनको ऐसेशीघ्र मारडालती जैसे कि बिजली वृक्षको तत्क्षण मारतीहै १६ धृतराष्ट्र बोले मेरापुत्र बिरोधी कुमंत्री अप्राज्ञ अहंकारी और निर्बुद्धी है जिस का कि यह अर्जुनके मारनेका सिद्ध उपाय हाथसे निष्फल होकर गया १७ हे सूत उस बड़ेबुद्धिमान् सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कर्णने उस अमोघशक्ती को अर्जुनके ऊपर क्यों न छोड़ा १८ हे संजय यहबात तुझको भी किसहेतुसे स्मरण नहीं रही इस भूल जानेका क्याकारणथा जिससेकि तुमनेभी इसप्रयोजन को नहींसुझाया १९ संजयबोले कि सदैव हररात्रि को मेरी दुर्योधनकी शकुनीकी और दुश्शासन की यह सलाह होतीथी और सब मिलकर कर्णसेकहते थे कि हेकर्णकलतुम सबसेनाओं को छोड़कर अर्जुनको मारो उसके पीछेहमपांडव और पांचालोंको दासोंकेसमान करके उनकोअपना सेवकबनावेंगे२१।२०अथवा अर्जुनके मरनेपर जो श्रीकृष्णजीदूसरे पांडवको नियत करें इसकारणसे श्रीकृष्णहीकोमारो २२ श्रीकृष्ण जी पांडवोंके मूलहैं अर्जुन स्कन्धहैं और दूसरे पांडव डालियों के समानहैं और पांचाल पत्तोंके समान हैं सब पांडव श्रीकृष्णजीकेही आश्रित श्रीकृष्ण जी काही बल रखनेवाले और श्रीकृष्णही को

अपना स्वामी माननेवाले हैं श्रीकृष्णजी भी इनके ऐसे रक्षाश्रयहैं जैसे कि नक्षत्रोंकेचन्द्रमा रक्षाश्रयहैं २३।२४हेकर्ण इसकारणसे पत्र शाखा और स्कन्धको छोड़कर सर्वत्र सर्वदा श्रीकृष्णहीको पांडवों का मूलजानो २५ हे राजा जो कर्ण कहीं यादव नन्दन श्रीकृष्णजी को मारेतो संपूर्ण पृथ्वीतेरे आधीनहोजाय २६ जो वह यादववंशी पांडवोंके प्रसन्न करनेवाले महात्मा श्रीकृष्णजी मृतकहोकरपृथ्वी परसोवें तो हे महाराज अवश्यही यह पृथ्वी पर्व्वत समुद्रों समेत तेरे आधीन वर्त्तमान होजाय २७ जाग्रत अवस्था में देवेश्वर इन्द्रि यों के स्वामी अप्रमेय श्रीकृष्णजी के विषय में इसप्रकार की हुई उस बुद्धिने युद्धके समय मोहको पाया २८ केशवजी भी सदैव अर्जुनको कर्णसे रक्षा करतेथे और युद्धमेंभी उसको कर्णके सन्मुख नियत करना नहीं चाहा २९ हे प्रभु उस अविनाशीने यहशोचकर कि इस अमोघशक्तीको किसीप्रकारसे निष्फल करदूं इसनिमित्त दूसरेही महारथियोंको उसके सन्मुख नियतकिया ३० हे राजाजो बड़ेसाहसी श्रीकृष्णजी इसप्रकारसे अर्जुनकी रक्षाकरते हैं तो वह पुरुषोत्तम अपनी क्यों नहीं रक्षाकरेगा ३१ शत्रुविजयी चक्रधारी श्रीकृष्णजीकोमैं अच्छीरीतिसे बिचारकरदेखताहूं कि वह पुरुषतीनों लोकोंमेंभी नहींहै जो जनार्द्दनजीको विजयकरसके ३२ इसकेपीछे सत्य पराक्रमी रथियोंमें श्रेष्ठ महारथी सात्यकीने कर्णके विषयमें महाबाहु श्रीकृष्णजीसे पूछा ३३ कि हे अतुल पराक्रमी यह शक्ती कर्णकेपास बड़ी विश्वसितथी उसको कर्णने किसहेतुसे अर्जुन के ऊपर नहींछोड़ा ३४ श्रीवासुदेवजीने कहा दुश्शासन कर्ण शकुनि और जयद्रथने जिनमें मुख्य दुर्योधनथा बारंबार सलाहकरी ३५ कि हे बड़े धनुषधारी युद्धमें अमित पराक्रमी बिजयी पुरुषोंमें श्रेष्ठ कर्ण कुन्तीकेपुत्र महारथी अर्जुनकेसिवाय इसशक्तिको दूसरे किसीकेभी ऊपर छोड़ना योग्य नहीं है ३६ वही इन सब पांडवों में ऐसाबड़ा यशस्वीहै जैसे कि देवताओंमें इन्द्र अर्जुनके मरनेपर सब सृञ्जियों समेत पांडव ऐसे मनसे उदास होजांयगे जैसे कि अग्निसे रहित

देवता होतेहैं ३७ हे शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी कर्णने प्रतिज्ञा करी कि ऐसाहीहोगा और सदैव कर्णके हृदयमें अर्जुनका मारना बना रहताथा ३८ हे शूरवीरोंमें श्रेष्ठ मैं ही कर्णको अचेत और मोहित-करे रहताहूं इसीकारण से उसने पांडव अर्जुन पर उस शक्तीको नहीं छोड़ा ३९ हे शूरवीरोंमें श्रेष्ठ यहशोचतेहुयेकि वहशक्ती अर्जुन का कालहै मुझको न रात्रिमें निद्राआतीथी न दिनमें मनको प्रसन्नताथी४० हेशूरसात्यकी अवमैं उसशक्तिको घटोत्कचके ऊपरछोड़ी हुई देखकर अर्जुनको कालके मुखसे बचाहुआ देखताहूं ४१ मेरे माता पिता और तुमसब भाइयों समेत अपने प्राणभी वैसेमुझको नहींप्यारेहैं जैसेकि युद्धमें अर्जुन मुझको रक्षाकरनेके योग्यहै ४२ हे यादव तीनोंलोकों के राजासे भी जो कुछ पदार्थ अलभ्य और दुर्लभहै मैं पांडव अर्जुनके सिवाय उसकोभी नहीं चाहताहूं ४३ हे सात्यकी अवइसहेतुसे मरकर लौटेहुयेके समान पांडव अर्जुन को देखकर मुझको बड़ी प्रसन्नता हुईहै ४४ इसीहेतुसे युद्धमें मैंनेही उस राक्षसको कर्णके पासभेजाथा क्योंकि रात्रिके युद्धमें कोई अन्य पुरुष कर्णके पीड़ादेनेको समर्थनथा ४५ संजयबोले कि अर्जुनको युद्धमें प्रवृत्त उसके हितहोमें सदैव प्रीतिमान देवकी नन्दनजी ने सात्यकीसे यह कहा ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरित्र्यशीतितमोऽध्यायः १८३ ॥

एकसौचौरासीका अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हेतात कर्णदुर्य्योधनशकुनी और सौबलके पुत्रादि की बड़ीविद्या और अधिकतर तेरी १ जोतुम युद्धमें शक्तिको सदैव एकको मारनेवाली हटानेके अयोग्य और इन्द्रसमेत सबदेवताओं सेभी असह्य मानतेथे २ तोहेसंजय प्रथम युद्धजारी होनेपर कर्णने वहशक्ती किस निमित्त श्रीकृष्ण अथवा अर्जुनके ऊपरनहीं छोड़ी ३ संजयबोले हे कौरवकुलमें श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र सायंकालके समय युद्धसे लौटकर आनेवाले हमसबकी यहसलाहहुई४ किहे कर्ण कल

प्रातःकालके समय इसशक्ती को अर्जुनअथवा श्रीकृष्णजी के ऊपर छोड़ना अवश्य योग्यहै यह सदैव विचार होताथा ५ हेराजाइसके पीछे प्रातःकालकेसमय देवताओंके कारणसे कर्णकी और दूसरेशूर-वीरोंकी बुद्धि विनाशवान होतीथी ६ मैं दैवको उत्तममानताहूं जो कर्णने अपने हाथकी नियत शक्तीसे युद्धमें अर्जुनको अथवा देवकी नन्दन श्रीकृष्णजीको नहींमारा ७ कालरात्रिके समान उठाई हुई वहशक्ती उसके हाथमें नियतथी तबभीकर्णने दैवयोग से बुद्धिभ्रंश होनेसे उसको नहींछोड़ा ८ हे प्रभुदैवकी मायासे मोहित कर्णने उस इन्द्रकी शक्तीको मारने के निमित्त देवकी के पुत्र श्रीकृष्णजी पर अथवाइन्द्रके समानबली अर्जुनपर नहींछोड़ा ९ धृतराष्ट्रबोले कितुमदैव औरकेशवजीकी निजबुद्धिसे हतेहुयेहो और इन्द्रकीशक्ति तृणरूपघटोत्कचको मारकरचलीगई १० कर्ण वा मेरेपुत्र औरअन्य सब राजालोग उस कठिनता से जानने के योग्य श्रीकृष्णके कारण से यमलोकमें गये हुये विदित होतेहैं ११ अब उसको फिर मुझसे कहो जैसे घटोत्कच के मरने पर कौरव और पांडवों का युद्ध जारी हुआ १२ जो वह प्रहार करने वाली अलंकृत सेना संजय और पांचालों समेत द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गई उन्हों ने किस प्रकारसे युद्ध किया १३ पांडव और सृंजी लोग उन भूरिश्रवा और जयद्रथ को मारकर आनेवाले और जीवनको त्याग करके सेनाके भगाने वाले १४ व्याघ्रके समान जंभाई लेनेवाले कालकेसमान खुले मुख धनुष से बाणों के प्रहार करने वाले द्रोणाचार्य्य के सन्मुख कैसे गये १५ हे तात जिन अश्वत्थामा, कर्ण, और कृपाचार्य्य ने जिनमें कि मुख्य दुर्य्योधन, था द्रोणाचार्य्य को रक्षित किया उन्होंने युद्ध में कौनसा कर्म किया १६ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के मारनेके अभि-लाषी भीमसेन और अर्जुन ने युद्धमें मेरे वीरों को कैसे२ रोका हे संजय उस वृत्तान्त को मुझसे कहो १७ जयद्रथ और घटोत्कच के मरने से सहन न करनेवाले अत्यन्तक्रोध युक्त इन कौरव और पांड-वोंने रात्रिके समय में कैसे युद्ध किया १८ संजय बोले हे राजारात्रि

के समय कर्ण के हाथ से घटोत्कच के मरने और युद्धाभिलाषी प्रसन्न मन आप के शूरवीरों के गर्जने १६ सेना के मरने और वेगसे चढ़ाई करने पर घनघोर रात्रि में राजा युधिष्ठिर ने बड़े कष्टको पाकर २० और दुःखित चित्त होकर महाबाहु भीमसेन से यह बचनकहा कि हे महाबाहु भीमसेन दुर्य्योधन की सेना को रोको २१ घटोत्कच के मरने से मुझमें बड़ा मोह उत्पन्न होगया है इस प्रकार भीमसेन को आज्ञा देकर अपने रथपर सवार हुआ २२ अश्रुपातों से भरा मुख वारंवार श्वास लेताहुआ राजा युधिष्ठिर कर्ण के पराक्रम को देखकर घोर मोहमें प्रवृत्त हुआ २३ तब उस प्रकार से राजाको पीड़ित देख कर श्रीकृष्ण जी यह बचन बोले हे युधिष्ठिर शोक मतकरो यह व्याकुलता तुम को करना उचित नहींहै हे भरतबंशी व्यामोहता साधारण मनुष्यों में होती है आप में नहीं होनी चाहिये २४ हे समर्थ राजा युधिष्ठिर उठो युद्ध करो और भारी धुरको उठाओ आपके अधैर्य्य होने से बिजयमें सन्देह होगा धर्मराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णके बचन को सुनकर और हाथोंसे दोनों नेत्रोंको पोंछकर श्रीकृष्णजी से यह बचन बोले २६ कि हे माधवजी धर्मोंको परम गतिको मैं जानताहूं और जो उपकार को नहीं मानताहै उसकाफल ब्रह्महत्याहै २७ हे जनार्दन जो उस महात्मा पुत्र सत्पुरुष घटोत्कचने भी बनवासमें हम लोगों की सहायता करी २८ हे श्रीकृष्ण जी अस्त्रोंके निमित्त यात्रा करने वाले पांडव अर्जुनको जानकर यहबड़ा धनुषधारी घटोत्कच काम्यक बनमें मेरे पास आकर वर्त्तमान हुआ २६ जबतक अर्जुन नहीं आया तबतक हमारे ही साथमें निवास करतारहा और गन्धमादन पर्ब्बत की यात्रामें दुर्गम्य स्थानोंसे इसने हमको पारकिया ३० इस महात्मा ने थकी हुई द्रौपदी को अपनी पीठपर सवार कियाहे प्रभु उसने मेरे निमित्त युद्धोंको प्रारंभ किया और बड़े युद्धों में कठिन२ कर्मकिये ३१ हे जनार्दन जो जोमेरी प्रीति सहदेवमें है वही मेरी बड़ी प्रीति राक्षसोंके राजा घटोत्कच में थी ३२ वह महाबाहु

मेरा भक्त होकर मेरा प्यारा और मैं उसको प्याराथा हे श्रीकृष्ण जीमैं शोक से संतप्त होकर मच्छी को पाताहूं ३३ हे यादव जी कौरवों से भगाई हुई सेनाओं को देखो और अच्छे उपाय करने वाले महारथी द्रोणाचार्य्य और कर्णको देखो ३४ रात्रि के समय इन दोनोंसे मर्दनकीहुई पांडवी सेनाको ऐसेदेखे जैसे कि दो मतवाले हाथियों से कमलका वन मर्दित होताहै ३५ हे माधव जी कौरवों ने भीमसेन के भुज बलको और अर्जुनके अद्भुत अस्त्रोंको अना-दर करके अपना पराक्रम किया ३६ युद्धभूमि में यह द्रोणाचार्य्य कर्ण और राजा दुर्य्योधन युद्धमें घटोत्कच राक्षस को मारकर प्रस-न्नचित्त होकर गर्जते हैं ३७ हे जनार्दन जी हमारे और आपके जीते जी कर्णसे भिड़े हुये घटोत्कच ने कैसे मृत्युको पाया ३८ हे श्रीकृष्ण जी अर्जुनके देखते हुये हम सबको अनादर करके महा-बली भीमसेन के पुत्र राक्षस को मारा ३९ हे श्रीकृष्णजी जबधृत-राष्ट्र के दुरात्मा पुत्रोंने अभिमन्युको मारा तब उस युद्धमें महारथी अर्जुन नहीं था हम सब दुरात्मा जयद्रथ से रोके गये थे उस कर्म में अपने पुत्र समेत द्रोणाचार्य्य ही कारण रूप हुये ४१ आपगुरू जीने उसके मारने का उपाय कर्णको सिखाया और उस खड्गखेंच-ने वाले के खड्गको खड्गसे ही दो खंड किया ४२ कृतवर्माने निर्द-यता के समान उस आपत्तिमें वर्त्तमान अभिमन्यु के घोड़ोंको और आगे पीछे वाले सारथियों को अकस्मात मारा उसी प्रकार अन्य२ बड़े धनुषधारियोंने युद्धमें अभिमन्युको गिराया ४३ हे यादव वर श्रीकृष्णजी गांडीव धनुषधारीने छोटेसे कारणसे जयद्रथको मारा वह मेरा बड़ा प्रिय कर्म नहींहुआ ४४ जो पांडवोंकीओरसे शत्रुओं का मारना न्याय पूर्व्वक होय तो प्रथम युद्धमें कर्ण और द्रोणाचा-र्य्य काही मारनायोग्य है यह मेरा अभीष्टहै ४५ हे पुरुषोत्तम यह दोनों हमारे कष्टोंके मूलहैं दुर्य्योधन इन दोनोंको पाकर विश्वास युक्तहै ४६ इस स्थान पर द्रोणाचार्य्य और कर्ण पीछे चलनेवालों समेत मारने के योग्य थे वहां महा बाहु अर्जुनने दूरदेश निवासी

जयद्रथ को मारा अब मुझको कर्णका मारना अत्यन्त योग्यहै हे
बीर इस हेतुसे मैं आपही कर्णके मारने की इच्छासे जाऊंगा ४८
महाबाहु भीमसेन द्रोणाचार्य्य की सेना से भिड़ा हुआ है शीघ्रता
करने वाला युधिष्ठिर इस प्रकार से कह कर शीघ्रही चलदिया ४६
वह युधिष्ठिर बड़े धनुष को चलायमान करके भेरी शंखोंको बजाकर
सन्मुखहुआ उसके पीछे शिखण्डी हजार रथ और तीनसौ हाथीपांच
हजारघोड़े और पांचालों समेत प्रभद्रकोंसे युक्त होकरशीघ्रहीराजा
के पीछे चला ५१ इसके पीछे कवच धारी पांचालों समेतपांडवोंने
जिनमें अग्रगामी युधिष्ठिरथा भेरी और शंखोंको बजाया ५२ उस
समयमहाबाहु बासुदेवजी अर्जुनसे बोले ५३ कि यह क्रोधसे भरा
हुआ युधिष्ठिर कर्णके मारनेकी इच्छासे शीघ्रजाताहै इसकात्यागना
उचित नहींहै ५४ इन्द्रियोंके स्वामी श्री कृष्णजीने इसप्रकारसे कह
कर शीघ्र घोड़ोंको चलायमान किया और दूर पहुंचेहुये राजाकेपास
पहुंचे ५५ कर्णके मारनेकी इच्छासे अकस्मात जानेवाले शोकसे
बिदीर्ण और अग्निसे भस्म हुयेके समान धर्मके पुत्र युधिष्ठिरको दे-
खकर ५६ समीप में जाकर ब्यासजी यहबचन बोले ५७ कि अर्जुन
युद्धमें कर्णको सन्मुखपाकर प्रारब्धसेही जीवताहै अर्जुनके मारनेके
अभिलाषी कर्णने उस शक्तिको बड़ी रक्षा करीथी अर्जुनने प्रारब्धसे
उसके साथ द्वै रथ युद्धको नहीं प्राप्तकिया यहदोनोंईर्षा करनेवाले
सब दिव्य अस्त्रोंको छोड़ते ५६ हे युधिष्ठिर युद्धमें अस्त्रों के निष्फल
होनेपर पीड़ामान कर्ण अवश्य इन्द्रकी शक्तीको छोड़ता ६० हेभरत
बंशियोंमें श्रेष्ठ उससे तुमको बड़ा घोर दुःखहोता हे बड़ाई देनेवाले
प्रारब्धहीसे कर्णके हाथसे राक्षसमारागया ६१ यह इन्द्रकी शक्तीके
बहानेसे काल करकेही मारागया हे तात वह राक्षस युद्धमें तेरे
कारणसेही मारागया ६२ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ क्रोधको त्यागकर
शोकग्रस्थ चित्तको मतकर युधिष्ठिर इसलोकमें सब जीवधारियोंकी
यही दशाहै ६३ हे राजा युधिष्ठिर सब भाइयों और महात्मा रा-
जाओं समेत युद्धकरो ६४ हे पुत्र पांचवें दिन यह सब पृथ्वी तेरी

होगी हे पुरुषोत्तम तुम सदैव धर्महीको विचारो ६५ हे पांडव अत्यन्त प्रसन्नमन होकर तुम तप दान क्षमा और सत्यताकोही सेवन करो जिधर धर्महै उधरही विजयहै ६६ व्यासजी पांडवोंसे यहकहकर उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगये ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणियुधिष्ठिरप्रतिव्यासशिक्षावर्णनेशतोपरि
चतुरशीतितमोऽध्यायः १८४ ॥

एकसौपच्चासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरतर्षभ व्यासजी से इसप्रकार समझाया हुआ धर्मराजयुधिष्ठिर आप अपने से कर्णके मारने में निवृत्तहुआ १ उस रात्रिमें कर्णके हाथसे घटोत्कचके मारेजानेपर दुःख और क्रोध से वसीभूत होकर धर्मराज युधिष्ठिर २ भीमसेनसे हटाईहुई आपकी सेनाको देखकर धृष्टद्युम्नसे यह बचन बोले कि द्रोणाचार्य्य को हटाओ ३ हे शत्रुओंके संतप्त करनेवाले तुम द्रोणाचार्य्यकेही नाशके अर्थ वाण कवच खड्ग और धनुपसमेत अग्निसे उत्पन्नहुयेहो ४ युद्धमें प्रसन्नमन होकर सन्मुखदौड़ो तुझको किसीप्रकार भी भय नहींहोगा अत्यन्त प्रसन्नचित्त जन्मेजय, शिखण्डी, दौर्मुखि, यशोधर, ५ तुमसब चारोंओरसे द्रोणाचार्य्यके सन्मुखजाओ नकुल, सहदेव, द्रौपदीकेपुत्र, प्रभद्रक, ६ द्रुपद, विराट, अपनेपुत्र भाइयोंसे संयुक्त सात्यकी, केकय, और पांडव अर्जुन, ७ द्रोणाचार्य्यके मारने की इच्छासे बड़े वेगसे सन्मुखजाओ और उसीप्रकार सब रथी और जो कुछहाथी घोड़ेहैं ८ वह सब और पदाती लोग युद्धमें महारथी द्रोणाचार्य्यको गिराओ फिर उसमहात्मा युधिष्ठिरकी आज्ञापाकर वह सब ९ द्रोणाचार्य्यके मारनेकी इच्छासे वेगसे सन्मुख दौड़े शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उन आतेहुये पांडवोंको सब उपायोंसे युद्धमेंरोका १० इसके पीछे द्रोणाचार्य्यके जीवनको चाहता अत्यन्त क्रोध युक्त राजा दुर्य्योधन सब उपायोंसे पांडवोंके सन्मुख दौड़ा ११ तदनन्तर परस्पर गर्जनेवाले पांडव और कौरवोंका वह युद्ध जिस में सवारियां

समेत सेनाके लोग थकगयेथे जारीहुआ १२ हे महाराज उननींदों से उनींदे और युद्धमें थकेहुये महारथियोंने किसी चेष्टाकोनहीं पाया १३ यहतीन पहर रात्रि महाघोररूप भयानक प्राणोंकी लेने वाली हजार पहरके बराबर होगई १४ उन घायल और अत्यन्त नींदसे अन्धे शूरवीरोंकी आधीरात्रि व्यतीतहुई और सबक्षत्रीदुखी मन होकर उत्साहसे रहितहुये १५ आपके और दूसरोंके शूरवीर अस्त्र और बाणोंसे रहितहुये तबयुद्ध व्रतको समाप्त करनेवाले और अत्यन्त लज्जावान निजधर्मके देखनेवाले उनलोगोंने अपनीसेना को नहीं त्याग किया दूसरे मनुष्य नींदसे अंधे अस्त्रोंको छोड़कर सो गये १७ हे राजा कोई रथों पर कोई हाथियोंपर और कोई घोड़ोंहीपर सोगये नींदसे अन्धोंने किसीभी चेष्टाको नहींजाना १८ बहुतसे शूरोंने युद्धमें उनको यमलोकमें पहुंचाया और कितनेही अत्यन्त अचेत चित्तोंने सोतेहुये शत्रुओंकोभीमारा १९ युद्धमें कितनोहींने अपनाही अपघात किया और उसबड़े युद्धमें नानाप्रकार के बचनोंको कहते उन निद्रान्ध लोगोंने अपने शूरवीरों को और शत्रुओंको मारा २० हे महाराज हमारे बहुतसे मनुष्य यहसमझ करकि शत्रुओंकेसाथ अवश्य युद्धकरना उचितहै नियतहोकर नींद से लाल लालनेत्रवाले होकर २१ उस कठिन अन्धकार में चेष्टा करते थे और कुछ नींदसे अन्धे शूरवीरोंने युद्धमें अन्य शूरवीरोंको भी मारा २२ और निद्रा से अत्यन्त अचेत बहुत आदमियों ने युद्धमें शत्रुओंसे अपनेको घायल नहींजाना २३ पुरुषोत्तमअर्जुन उन्हों की ऐसी चेष्टा को जानकर बड़े उच्चस्वरसे दिशाओं को शब्दायमान करता यह बचन बोला २४ कि बहुत धूल और अन्धकारसे सेनाके प्रवृत्त होनेपर आप सब सवारियों समेत नींद से अंधे और श्रमित होगये २५ हे सेनाके लोगोजो तुममानो तो बिश्राम करो और यहां युद्ध भूमि में एक मुहूर्त पलकबन्दकरो २६ हे कौरव पांडवलोगो फिरतुम चन्द्रमाके उदयहोनेपर नींदसे रहित आनन्दयुक्त होकर तुम परस्पर युद्धकरोगे २७ हेराजा सबधर्मोंकी

जाननेवाली सेनाओंने उस धार्मिक अर्जुनके उसवचनको स्वीकार किया और उसी प्रकार परस्पर वार्त्तालापकरी २८ और पुकारे कि हे कर्ण हे कर्ण हे दुर्य्योधन यह कहकर पांडवोंकी सेना रथों से उतरकर युद्ध को त्यागनेवाली हुई २९ हेभरतवंशी उसीप्रकार जहां तहां अर्जुनके पुकारते पांडवों की और आपकी सेना ने युद्ध से हाथ को खेंचा ३० इस महात्माके उस बचनको देवताओं समेत ऋषियोंने और प्रसन्न चित्त सब सेनाओं के श्रेष्ठ लोगोंने प्रशंसा करी ३१ हेभरतवंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र थकेहुये सबसेना के मनुष्य उस दयासेयुक्त अर्जुनके उस वचनकी प्रशंसा करकेएक मुहूर्त्त तक सोये ३२ हे भरतवंशी फिर वह आपकी सेना विश्राम को पाकर सुखपानेवालीहुई और वीर अर्जुनकी सबने ऐसे प्रशंसा करी ३३ कि हे निष्पाप महाबाहु अर्जुन तुझमें वेदहैं अस्त्रहैं बुद्धहै पराक्रमहै तुझमें धर्महै और जीवोंपर तेरादयाहै ३४ हमसब आनंद पूर्व्वक विश्राम करनेवाले तेरेयश और कल्याणको चाहतेहैं हे अर्जुनतेरा कल्याणहोय हे श्रेष्ठवीरतू अपने चित्तके अभीष्टों को शीघ्र प्राप्तकर ३५ हेराजा व महारथी इसप्रकारसे उस नरोत्तम अर्जुन को प्रशंसाकरतेहुये निद्रासेयुक्त भूमिमें पड़ेहुये मौन होगये ३६ कोईघोड़ोंकी पीठपर कोईरथोंकी नोढ़पर कोईहाथियों के कन्धोंपर और कोई पृथ्वीपर सो गये ३७ कोईमनुष्य शस्त्र, बाजूबन्द, खड्ग फर्सा, प्रास और कवचसमेत पृथक् २ होगये ३८ निद्रासे अन्धे उन हाथियोंने सर्पकेफणोंकेरूप पृथ्वीको धूलसे लिप्तहुई अपनी सूंडोंसे पृथ्वीकोनाककी स्वासोंसे शीतलकिया ३९ वहां पृथ्वीतल पर स्वासा युक्त सोनेवाले लोगऐसे शोभायमानहुये जैसे स्वास लेनेवाले बड़े सर्पोंसे युक्त पर्व्वत होतेहैं ४० उनस्वर्णमयी योक्तर वाले घोड़ोंने बागोंपर चिपटेहुये युगसमेत खुरोंकीनोकोंसे समभूमि को विषमभूमि करदिया ४१ हे महाराज वहां सब प्रकारकी सवारियों पर नियत होकर सोगये अर्थात्इसप्रकार बड़ेकष्टसेयुक्तघोड़े हाथी और शूरवीर युद्धसे निवृत्त होकर सोगये ४२ इसी प्रकार

निद्रामें डूबीहुई वह सेना ऐसे अचेत होकरसोगई जैसे कि सावधान चित्रकारोंसे कपड़े पर काढ़ी हुई अपूर्व मूर्त्तियां होतीहैं ४३ वह कुंडलधारी शूरवीर परस्पर शायकोंसे घायल अंगवाले क्षत्री हाथियोंके कुंभोंसे चिपटे हुये ऐसे सोगये जैसे कि स्त्रियों के कुचोंसे चिपटे हुये कामी पुरुष सोतेहैं ४४ इसके पीछे कुमुदनाम कमलके स्वामी स्त्रियों के कपोलोंके समान पीतरंग नेत्रोंको आनंद करने वाले चन्द्रमा से पूर्व दिशा शोभित होकर अलंकृत हुई ४५ वहउदयाचलकेसिरी किरणों से पीत रंग तिमिररूपी हाथियों का बिनाश करनेवाला चन्द्रमा तारागणों समेत दिशारूपी कंदरा सेउदयहुआ ४६ नन्दीगणके शरीर के समान प्रकाशमान और काम देवके पूर्ण धनुषके समान प्रकाशित नबीन बधूके मन्द मुसकानके समान सुंदर मनोहर चन्द्रमा कुमुदिनियोंको प्रफुल्लित करता हुआ फैला ४७ इसके पीछे नक्षत्रोंके प्रकाशोंको मंद करते प्रभु भगवान चन्द्रमा ने एक मुहूर्त्त मेंही पूर्व दिशामें अरुणको दिखलाया ४८ वह चन्द्रमाकी किरणें अपने प्रकाशसे अन्धकारको हटाती हुई धीरे धीरे सब दिशाओं समेत आकाश और पृथ्वी पर फैलगई ५० तदनन्तर वह भवन एक मुहूर्त्त मेंही ज्योति रूप होगया और अन्धकार शीघ्रतासेही गुप्त होगया ५१ हे राजा चन्द्रमा के उदयमें लोकके प्रकाशित होने पर रात्रिमें घूमने वाले राक्षसादिक घूमने वालेहुये और नहीं भी हुये ५२ चन्द्रमाकी किरणोंसे सचेत और सावधानहोने वाली वह सब सेना ऐसे जागी जैसेकि सूर्य्यकी किरणोंसे कमलों का बन प्रफुल्लित होताहै ५३ जैसेकि उदय हुये चन्द्रमामें कंपायमान और व्याकुल समुद्र होताहै उसी प्रकार चन्द्रमाके उदयहोने से वह सेना रूपी समुद्र कंपायमान होकर चेष्टा करनेवाला होगया ५४ इसके पीछे हे राजा संसारके नाशके लिये परलोक चाहाने वालोंका वह युद्ध फिर जारी हुआ ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचाशीतितमोऽध्यायः १८५ ॥

एकसौछियासीका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर क्रोधके स्वाधीन वर्त्तमान दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्य के पास जाकर प्रसन्नता और पराक्रमको उत्पन्न करता हुआ यह वचन बोला १ कि युद्धमें अमर्ष पूरित चित्त और अधिकतर लक्ष्य भेदन करनेवाले थके और विश्रामपानेवाले शत्रु क्षमा करने के योग्य नहींहैं २ हमने आपके हितकी इच्छासे उसको सहलिया परन्तु वह विश्राम करने वाले पांडव अधिकतर पराक्रमी हैं ३ और हमलोग सब प्रकार से तेज और बलोंसे रहित हैं आपके पोषण और कृपासे वह लोग बारंबार वृद्धिको पातेहैं ४ जो ब्राह्म्य आदिक सब दिव्य अस्त्रहैं वह आपके पास अधिकतर नियतहैं ५ पांडव हम और अन्य सब धनुषधारी लोग आपकेसमान धनुषधारी और युद्ध करने वाले नहींहैं यहमैं आपसे सत्यसत्यही कहताहूं ६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ सबअस्त्रोंके ज्ञाता आप अपने दिव्य अस्त्रोंसे इन लोगोंको देवता असुर और गन्धर्वों समेत भी निस्सन्देह मारसक्तेहैं ७ सो आप शिष्यता अथवा मेरी अभाग्यताको आगे करके इनअपने से अधिक भयभीतोंके ऊपरक्षमा करतेहो ८ संजय बोले हे राजाइसप्रकार के आपके पुत्रके वचनों से अप्रसन्न और क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य बड़े क्रोधित होकर दुर्योधनसे यह वचनबोले ९ हे दुर्य्योधन मैं वृद्धहोकरभी युद्धमें बड़ी सामर्थ्य से उपाय करताहूं इसकेपीछे मुझ विजयाभिलाषीसे नीचकर्म करने के योग्यहै १० यहअस्त्रज्ञतासे रहित सब मनुष्योंका समूह मुझ अस्त्रज्ञसे मारनेके योग्यहै ११ जो आपभी मानतेहैं वह अच्छा होय वा बुरा हे कौरव मैंतेरे वचनसे उसकोभी करूंगा इसमेंविपरीतता नहींहोगी१२हेराजामैं युद्धमें पराक्रमकरके सब पांचालोंको मारकेही अपने कवचको उतारूंगा मैं सत्यतासे शस्त्रोंकी शपथ खाताहूं १३ हे महाबाहो जोतुम कुन्तीकेपुत्र अर्जुनको युद्धमें थकाहुआमानतेहो सोहेकौरव सत्यतापूर्व्वक उसके पराक्रमकोसुनो १४

उसक्रोध युक्त अर्जुनको युद्धमें देवता गन्धर्व यक्ष और राक्षसभी बिजय करनेको उत्साह नहींकरतेहैं १५ देवराज भगवान इन्द्रभी खांडवबन में जिसके साथ सन्मुखहुआ और बर्षा करताहुआ भी महात्माके बाणोंसे रोकागया १६ और जिस नरोत्तमने घोषयात्रा में गन्धर्वमारे और चित्रसेनादिक बिजयकिये वहभी तुझकोविदित है १७ और उनगन्धर्वोंसे हरण कियेहुये तुम उसदृढ़ धनुष धारी अर्जुनकेही द्वाराछूटे इसीप्रकार देवताओंके शत्रु निवात कवचभी १८ जोकि युद्धमें देवताओंसेभी अवध्यथे उनकोभी इसीवीरने बिजय कियाइसीपुरुषोत्तमने हिरण्यपुरबासी दानवोंकेहजारोंसमूहोंको १९ बिजयकिया वह मनुष्योंसे कैसे पराजय होनेके योग्यहै हे राजा सबतेरे नेत्रोंके प्रत्यक्षहै कि जिसप्रकार तेरीयह सेनाहमारे उपाय करतेहुयेभी अर्जुनके हाथसे मारीगई २० संजय बोले हे राजा तब आपकापुत्र क्रोधयुक्त दुर्योधन उसअर्जुनकी प्रशंसाकरनेवालेद्रोणा चार्य्यसे फिरयह बचन बोला २१ कि अब मैं दुश्शासन कर्ण और मेरामामाशकुनी आदिक सबमिलकर सेनाके दोभागकरके युद्धमें अर्जुनको मारेंगे २२ उसके उस बचनको सुनकर हंसतेहुये द्रोणा- चार्य्यने उसको अंगीकार किया और कहाकितेरा कल्याणहो २३ कौनसा क्षत्री उसतेजसे ज्वलितरूप क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ अविनाशी गां- डीव धनुषधारीका नाशकरसक्ताहै २४ उसशस्त्र धारीको कुवेर इन्द्र यमराज जलकास्वामी बरुण असुर सर्प और राक्षसभी विजयनहीं करसक्ते २५ और हे भरतवंशी तुमनेजो २ बातेंकहीं उनबातों को जो कोई कहतेहैं वह अज्ञानहैं युद्धमेंअर्जुनको सन्मुख पाकर कौन कुशलतासे घरको जासक्ताहै २६ इसके विशेषतू सबपर संदेहकरने वाला कठोरचित्त और पापका निश्चय करनेवालाहै और अपनी वृद्धि और कल्याणमें प्रवृत्त पुरुषोंको तू ऐसे २ कठोरवचनों कोकहा करताहै २७ अबतुम जाकर अपनेअर्थ अर्जुनकोमारो विलम्ब मत- करो तुमभी लड़ना चाहतेहो क्योंकि कुलीन क्षत्रीहो २८ इननिर- पराधी सब क्षत्रियों को क्यों बिनाश करवाता है तूही इस शत्रुता

कामूलहै इसकारण अब शीघ्रतासे अर्जुनके सन्मुख हो २६ हे गां-
धारी के पुत्र यह तेरा मामा बुद्धिमान क्षत्री धर्म्म पर चलने वाला
दुर्मति द्यूतकर्मीभी युद्धमें अर्जुनके सन्मुखजाय ३० यह पाशेकी
विद्यामें कुशल कुटिलप्रकृति ज्वारी छली शठ खिलाड़ी छलबुद्धी
शकुनी पांडवोंको विजय करेगा ३१ तुमने कर्णसमेत प्रसन्न चित्त
निर्बुद्धियोंके समान मोहसे धृतराष्ट्र के सुनतेहुये वारंवार यह बचन
कहा है ३२ कि हे पिता मैं औरकर्ण और मेराभाई दुश्शासनतीनों
साथ होकर युद्धमें पांडवोंको मारेंगे ३३ प्रत्येक सभा में तुझकहने
वालेका यही वचन वारंवार सुना गया उस प्रतिज्ञा में नियतहो
और उनके साथमें सत्यवक्ताहो ३४ यहतेराशत्रु पांडव निस्सन्देह
आगे नियतहै क्षत्री धर्मको विचारकर तेरा मरना विजय होने सेभी
अधिक प्रशंसा के योग्यहै ३५ दानकिया भोग किया जप किया
और यथेक्षित ऐश्वर्य्यको पाया सब ऋणोंसे निवृत्त अर्थात् देव
ऋषि और पितरोंके तीनोंऋणोंसे अऋणहै अब भय न कर पांडवों
से युद्धकर ३६ द्रोणाचार्य्य जी ऐसा कहकर युद्धमें उधरको लौटे
जिधरको कि शत्रुलोगथे इसकेअनन्तर सेना के दोविभागकरके अच्छे
प्रकारसे युद्धहुआ ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषडशीतिशततमोऽध्यायः १८६ ॥

एकसौसत्तासीका अध्याय ॥

संजयबोले हे राजा रात्रिका तीसराभाग शेष रहनेपर अत्यन्त
प्रसन्न चित्त कौरव और पांडवों का युद्ध जारी हुआ १ तदनन्तर
चन्द्रमा के प्रकाशको म्लान करते आकाशको रक्तवर्ण करते सूर्य्य
के अग्रगामी अरुणका उदय हुआ २ पूर्व्व दिशामें सूर्य्यके सारथी
अरुणसे आरक्त वर्णकियाहुआ सूर्य्य मंडल सुनहरी चक्रकेसमान
शोभाय मानहुआ ३ तब कौरव और पांडवोंके सबशूरवीर रथघोड़े
मनुष्य और सवारियोंको छोड़कर सूर्य्य के सन्मुख जपकरते संध्या
में प्रवृत्त होकर हाथोंको जोड़नेलगे ४ तदनन्तर सेना के दोभाग

करनेपर वह द्रोणाचार्य्य जिनका अग्रगामी दुर्य्योधनथा सोमक पांडव और पांचालोंके सन्मुख गये ५ माधवजी दोभाग कियेहुये कौरवेंको देखकर अर्जुनसे बोलेकि शत्रुओंको बाम करके इनको दाहिनेकरो ६ अर्जुन माधवजीसे यह कहकर कि करिये बड़े धनुष धारी द्रोणाचार्य्य और कर्णके बाईओर को वर्त्तमानहुआ ७ शत्रुओंके पुरोंका बिजय करनेवाला भीमसेन श्रीकृष्णजीके चित्तके बिचारको जानकर युद्धभूमि में अर्जुनसे बोला ८ कि हे अर्जुन मेरे बचनको सुन ईश्वरने क्षत्रियोंको जिस निमित्त उत्पन्नकियाहै उस का यहसमय आगयाहै ६ इस समय के वर्त्तमान होनेपर भी जो कल्याणको नहींपाओ तो तुम अपने अभीष्टोंको न प्राप्त होकरबड़े निर्द्दय कर्मको करोगे १० पराक्रम से सत्यता लक्ष्मी धर्म और यशकी अयोग्यताको पाओगे हे शूरबीरोंमें श्रेष्ठसेनाको तोड़ो और इनको दाहिने करो ११ संजय बोलेकि श्री कृष्णजी और भीमसेन की आज्ञा पाकर अर्जुननेकर्णऔर द्रोणाचार्य्यको उल्लंघनकरचारों ओरसे घेरा १२ इसके पीछे क्षत्रियों में श्रेष्ठ लोग उस युद्ध के शिरपर आनेवाले उत्तम क्षत्रियों के भस्म करनेवाले पराक्रम के द्वारा चढ़ाईकरनेवाले १३ अग्निके समान वृद्धियुक्त अर्जुनके रोकने को समर्थ नहींहुये फिर दुर्य्योधन कर्ण और सौबल का पुत्र शकुनी यहसब १४ बाण समूहोंसे कुन्ती के पुत्र अर्जुनपर बर्षा करनेलगे हे राजेन्द्र उस श्रेष्ठ अस्त्रज्ञों मेंभीबड़ेश्रेष्ठतम अर्जुनने उन्होंके सब अस्त्रोंको निष्फल करकेबाणोंकी बर्षासे आच्छादित करदिया १५ हस्त लाघवी जितेन्द्री अर्जुन नेअस्त्रोंसे अस्त्रोंको हटाकर सबको तीक्ष्ण धारवाले दशदश बाणोंसे छेदा १६ धूलकी अतिवर्षाहुई और बाणोंकी अति वृष्टिहुई उस समय घोरअन्धकार और महाशब्दहुआ उस दशामें न आकाशजानागया न दिशाओं समेत पृथ्वी जानीगई १७ हे राजा सेनाकी धूलसेसब संसार मूढ़ और अन्धेके समान हो गया उस समय उन्होंने और हमने परस्पर नहीं पहचाना राजालोग उस बार्त्तालापके द्वारा अच्छीरीतिसे लड़े १८ हे

राजा रथसवार रथसे रहित हो परस्पर सन्मुखपाकर शिरोंकेबाल कवचऔर भुजाओं पर चिपटगये १६ वह रथीजिनके घोड़े सारथी मारेगये वह चेष्टासे रहित होकर मारेगये और जीवतेहुये शूरवीर रुधिरसे पीड़ामान दिखाईपड़े २० इसरीतिसे घोड़े सवारों समेत पर्व्वतों के समान मृतक हाथियों से चिपटकर विना पराक्रम के समान दृष्टि गोचरहुये २१ उसकेपीछे द्रोणाचार्य्य संग्रामसे उत्तर दिशामें जाकर निर्धूम अग्निके समान प्रज्वलित रूप युद्धमें नियत हुये २२ हे राजा पांडवोंकी सेना उसयुद्धके शिरोभागसे एकान्तमें हटजाने वाले द्रोणाचार्य्यको देखकर अत्यन्त कंपायमानहुई २३ हे भरत वंशी दूसरी ओरवाले लोग उस प्रकाशमान शोभासेयुक्त तेज से ज्वलित रूप द्रोणाचार्य्यको देखकर भयभीतहुये और घूम२ कर मृतक प्राय होगये २४ शत्रुकी सेनाके बुलानेवाले मतवाले हाथीके समान इन द्रोणाचार्य्यके विजय करनेको ऐसे आशानहीं करी जैसे कि दानव लोगोंने इन्द्रके विजय करने की आशाको त्यागाथा २५ कितने ही उत्साह से रहितहुये कितनेही साहसी चित्तसे क्रोधयुक्त हुये कोई आश्चर्य्य युक्त और कोई असहनशील हुये२६ किसी२राजाओंनेहाथोंसेहाथोंकेअग्रभागको मर्द्दनकिया और कितने ही क्रोधसे मूर्च्छामानोंनेदांतोंसे ओठोंको काटा २७ बहुतोंने शस्त्रोंको फेंका अनेकोंने भुजाओंको मर्द्दनकिया शरीरसे प्रीतिकरने वाले बड़े साहसी कितनेहीलोग उग्र तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गिरे २८ हे राजेन्द्र फिर द्रोणाचार्य्यके शायकोंसे अधिकतर पीड़ा मान और युद्धमें अत्यन्तदुःखी पांचाललोग अच्छे प्रकारसेभिड़े२६ इसके पीछे राजाविराट द्रुपद युद्धमें उसप्रकार घूमनेवाले युद्धमें कठिनतासे विजय होनेवाले द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ३० और राजाद्रुपदके तीन पोते औरबड़े धनुषधारीचंदेरीदेशी द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ३१ द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णधारवाले तीनबाणोंसे उनतीनों द्रुपदके पोत्रोंके प्राणोंको हरा और वह मृतक होकर पृथ्वी परगिर पड़े३२फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने युद्धमें चंदेरी केकय सृञ्जयऔर

मत्स्य देशी सब महारथियोंको बिजय किया ३३ हे महाराज इसके पीछे राजाद्रुपद और बिराटने युद्धमें क्रोध करके द्रोणाचार्य्यके ऊपर बाणोंकी बर्षाकरी ३४ क्षत्रियोंके मर्द्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने उस बाणवृष्टीको काटकर उन दोनोंबिराट औरद्रुपद को बाणोंसे ढकदिया ३५ फिर युद्धमें द्रोणाचार्य्यसे ढकेहुये क्रोध युक्त महाक्रोधमें नियत उनदोनोंने द्रोणाचार्य्य को बाणोंसे घायल किया ३६ तब क्रोध और असहन शीलतासे युक्त द्रोणाचार्य्य ने अत्यन्त तीक्ष्ण दो भल्लोंसे उनदोनोंके धनुषोंको काटा ३७ फिर द्रोणाचार्य्यके मारनेकीइच्छासे क्रोधयुक्त बिराटने युद्धमें दशतोमर और दशबाणोंको छोड़ा ३८ और क्रोधसे पूर्ण द्रुपदने घोररूप सुबर्ण से शोभित सर्पराजके आकृतिवाली लोहेकीशक्ती को द्रोणाचार्य्य के रथपर फेंका ३९ फिर द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त तीक्ष्णधार भल्लोंसे उन दशतोमरों को काटकर सुबर्ण और वैडूर्य्यसे जटित शक्तीको भी शायकों से काटा ४० हे शत्रुमर्द्दन करनेवाले उसके पीछे द्रोणाचार्य्यने पीत रंगवाले दो भल्लोंसे द्रुपद और बिराटको यमपुर में भेजा ४१ बिराट द्रुपद और इसीप्रकार केकय चंदेरी मत्स्य और पांचाल देशियोंके नाशमानहोने ४२ और राजा द्रुपदके तीनोंबीर पौत्रोंके मरने पर द्रोणाचार्य्य के उस कर्मको देख कर क्रोध और दुःखसे युक्त ४३ बड़े साहसी धृष्टद्युम्नने रथियोंके मध्यमें शापदिया कि वहपुरुष यज्ञोंके फल और बापी आदि बनाने के पुण्य क्षत्री धर्म और वेद ब्राह्मणोंकी भक्तीसे रहित होजाय ४४ जो अपने शत्रु द्रोणाचार्य्य को अबजीताछोड़े अथवा उसको द्रोणाचार्य्यही पराजयकरें उन सब धनुष धारियोंके मध्यमें यह प्रतिज्ञा करके ४५ शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला धृष्टद्युम्न सेना समेत द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया और पांडवों समेत पांचालोंने एक ओर से द्रोणाचार्य्य को घायल किया ४६ दुर्य्योधन कर्ण सौबल कापुत्र शकुनी और दुर्योधनके मुख्य२ सगेभाइयोंने युद्धमें द्रोणाचार्य्यको रक्षित किया ४७ फिर उपाय करनेवाले पांचाल उस प्रकार बड़े२

उन महारथियों से रक्षित द्रोणाचार्य्यके देखनेको भी समर्थ नहीं हुये ४८ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वहां भीमसेन धृष्टद्युम्नके ऊपर क्रोध युक्त हुआ उस पुरुषोत्तमने उसको उग्र बचनोंसे घायल किया ४६ भीमसेन बोले कि द्रुपदके कुलमें उत्पन्न और अस्त्रोंमें अच्छे कुशल अपनेको क्षत्री माननेवाला कौन पुरुष सन्मुखनियतहुयेशत्रुको देख सक्ताहै ५० कौन पुरुष पिता और पुत्रोंके मरने को प्राप्त करके अधिकतर राज सभामें शपथकोखाकर भी फिर क्षमाकरे ५१ यह बाण और धनुष रूपी ईंधन रखनेवाला और अपने तेजसे अग्नि के समान वृद्ध पाने वाला द्रोणाचार्य्य तेजसे क्षत्रियोंके समूहोंको भस्मकरताहै ५२ आगेसे पांडवोंकी सेनाको नाशकरताहै तुम नियत होकर अब मेरे कर्मको देखो मैं द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जाताहूं ५३ क्रोध युक्त भीमसेन यह कहकर कान तक खेंचेहुये बाणों से आपकी सेनाको भगाता हुआ द्रोणाचार्य्यकी सेना में प्रविष्ट हुआ ५४ पांचाल देशी धृष्टद्युम्नने भी बड़ी सेनामें प्रवेश करके युद्धमें द्रोणाचार्य्यको सन्मुख पाया तब वहां बड़ा तुमुल युद्ध हुआ ५५ हमने वैसा युद्ध न देखाथा न कभी सुनाथा हे राजा जैसे कि सूर्य्य के उदय होने पर वह महाभयंकर युद्ध हुआ ५६ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र रथोंके समूह परस्पर भिड़े हुये दिखाई पड़े और शरीर धारियों के मृतक शरीर पड़े हुये दीखे ५७ दूसरे स्थानमें जानेवाले कोई शूर वीर मार्गमें अन्य शूरों से सन्मुखता कियेगये कोई पीठकीओरसे मुख फेरनेवाले और कोई इधर उधरसे घायलकिये गये ५८ इस प्रकार वह कठिन युद्ध अत्यन्त भयानकहुआ इसके पीछे एकक्षण भरमें ही सूर्य्य संध्यामें वर्त्तमान होताहुआ दिखाई दिया ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिगतोपरिसप्ताशीतितमोऽध्यायः १८७ ॥

एकसौअट्ठासीका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्ध भूमिमें उन कवच धारी वीरोंने संध्यामें वर्त्तमान हजारकिरणोंकेस्वामी सूर्य्यनारायणका उपस्थान

किया १ फिर संतप्तकिये हुये सुवर्णके समान प्रकाशमान सूर्य्यके उदय होने और संसारके प्रत्यक्ष होने पर फिर युद्ध जारी हुआ २ वहां सूर्य्योदय से पूर्व्वही जो द्वन्द्वयुद्ध जारी हुये हे भरतवंशी सूर्य्यके उदय होने पर भी वही अच्छीरीतिसे भिड़े ३ रथोंके साथ घोड़े घोड़ोंके साथ हाथी पदातियों के साथ भी हाथी घोड़ोंके साथ घोड़े और पदातियों के साथ पदाती युद्ध करनेलगे ४ भिड़े हुये और बिना भिड़े हुये शूरबीर युद्धमें दौड़े रात्रिमें युद्ध करनेवाले कर्म कर्त्ताथके और सूर्य्यके तेजसे ५ क्षुधा तृषासे युक्त शरीरवाले बहुत से मनुष्य अचेत होकर सो गये शंखभेरी मृदंगोंके गर्जनेवाले हाथियों के ६ और मंडल रूप खिंचे शब्दायमान धनुषोंके बड़ेशब्द स्वर्गको स्पर्शकरने वाले हुये ७ हे भरतर्षभ चलनेवाले पदाती और गिरने वाले शस्त्र हींसने वाले घोड़े लौटने वाले रथ ८ और पुकारते और गर्जते सेनाके लोगोंके बड़े कठोर शब्दहुये तब उस अत्यन्त वृद्धियुक्त कठोर शब्दनेस्वर्गको प्राप्तकिया ९ नानाप्रकारके शस्त्रोंसेटूटे अंग पृथ्वीपर चेष्टाकरने वालोंके महानशब्द कठिनदुःख से सुने गये तब गिरेहुयेगिरनेवाले पत्ति घोड़े रथ और हाथियोंका बड़ादुःख वर्त्तमानहुआ उनसब भिड़ीहुई सेनाओंके मध्यमें १०।११ अपनों ने अपनोंको दूसरोंने अपनोंको और अन्यों ने अन्यों को भीमारा बीरों की भुजा से शूर बीरों पर और हाथियों पर छोड़े हुये १२ खड्गों के समूह इस प्रकार दिखाई पड़े जैसे कि धोबियों के पास कपड़ों के ढेर होतेहैं बीरोंकी भुजाओं से उठाकर परस्पर मारे हुये खड्गों के १३ शब्दभी ऐसे प्रकारके हुये जैसे कि धुलते हुये बस्त्रोंके शब्द होतेहैं अर्द्धखड्ग, खड्ग, तोमर और फरसोंसे१४ समीपी युद्ध बड़ा कठिन और भयंकर हुआ वीरोंने हाथी घोड़ोंके शरीरों से और राजाओं से प्रवाहन युक्त १५ शस्त्र रूपी मछलियों से पूर्ण रुधिर मांस रूप कीच रखने वाली १६ पीड़ा के शब्दों से शब्दाय मान पताका शस्त्रोंसे फेन युक्त पर लोककी ओरको बहने वाली नदीको जारी किया १७ बाण शक्तियों से पीड़ित थके और

रात्रिमें अचेत निर्बुद्धी हाथी और घोड़े सब अंगोंको अचेष्ट करके नियत हुये १८ भुजा और चित्रित कवचों से शोभित सुन्दर कुंडल धारी शिर और युद्ध के अन्य २ सामानों से जहां तहां सुशोभित और प्रकाश मान हुये १६ वहां कच्चे मांसाहारी जीवें के समूहों से और मरे अधमरे शूर वीरों से आच्छादित सब युद्धभूमिमें रथों का मार्ग नहीं रहा २० वह बड़ेघोड़े रथ चक्रों के डूब जाने से थके कांपते बाणों से पीड़ामान पराक्रम में नियत होकर बड़े २ उपायों से रथोंको ले चले २१ जोकि श्रेष्ठ जातिके बल पराक्रम से युक्त हाथियों के समान थे हे भरतवंशी तब सब सेना द्रोणाचार्य्य और अर्जुन के सिवाय व्याकुल भ्रान्तीसे युक्त भयभीत और दुःखी हो गई और वह दोनों रक्षाश्रय पीड़ावान लोगोंके रक्षाके स्थान हुये २२ । २३ दूसरे शूर वीर उन दोनों को पाकर यमलोक को गये घोड़ों की सब बड़ी सेना महा व्याकुल हुई २४ और भिड़े हुये पांचालों की सेना भी व्याकुल हुई कुछ नहीं जाना गया पृथ्वीपर राजाओं का घोर नाश प्रकट होने पर वह युद्धभूमि यमराज के क्रीड़ा स्थान के समान भय भीतों के भयको बढ़ाने वाली होगई हे राजा वहां हमने सेनाकी धूलसे ढके और भिड़े हुये कर्णको नहीं देखा न द्रोणाचार्य्य को न अर्जुन को न युधिष्ठिर को २५।२६ नभीम-सेन नकुल सहदेव को न धृष्टद्युम्न सात्यकी दुश्शासन अश्वत्थामा को और न दुर्योधन समेत शकुनी को देखा २७ कृपाचार्य्य शल्य कृतवर्मा को न दूसरों को न अपने को न पृथ्वी को और न दिशाओं को देखा २८ धूल रूप बादलके उठने पर घोर और कठिन भ्रान्ती से २९ हम लोगोंने दूसरी रात्रि को ही वर्त्तमान जाना न कौरव न पांचाल और न पांडव लोग जाने गये ३० न दिशाआकाश पृथ्वी और न धरती की सम विषमता जानी गई तब हाथके स्पर्शोंसे ज्ञात होने वाले अपने वा दूसरों के शूर वीरों को ३१ क्रोधयुक्त इच्छावान मनुष्यों ने एक ने एक को गिराया धूलके कठिन उठने औररुधिर के छिड़कावसे ३२ अथवा वायुकी शीघ्र गामिता से पृथ्वीकी धूल

शान्त होगई वहां हाथी घोड़े और शूर बीर रथी पदाती ३३ रुधिर में लिप्त पारिजातक वृक्षोंके बनोंके समान शोभायमान हुयेउसके पीछे दुर्य्योधन कर्ण द्रोणाचार्य्य दुश्शासन३४ यहचारोंरथी चारों पांडवों के साथ भिड़े दुर्य्योधन अपने भाईसमेत नकुल औरसहदेव सेभिड़ा ३५ कर्ण भीमसेन के साथ और अर्जुन द्रोणाचार्य्यके साथ युद्ध करने लगा सब लोगोंने सब ओरसे उसघोर और बड़े भारी युद्धको देखा रथियोंमें श्रेष्ठ उन उग्र पुरुषों का युद्धदिव्य और बिचित्र रथोंसे व्या कुल रथके बिचित्र मार्गों समेत हुआ३६।३७ उपाय पूर्व्वक अपूर्व्व युद्ध करनेवाले परस्पर बिजयाभिलाषी रथियोंनेअपूर्व्व युद्ध कर्त्ता- ओंके उस अद्भुत और बिचित्रयुद्धको देखा ३८ सूर्य्य के समान रथों पर चढ़े हुये उन पुरुषोत्तमों ने बाणोंकी बर्षा से ऐसा ढकदिया जैसे कि बर्षा ऋतु में बादल आच्छादित कर देताहै ३९ हे महाराज फिर क्रोध और असहिष्णुतासे युक्त वहयुद्धकर्त्ता ऐसे शोभायमान हुये जैसेकि चलाय मान बिजली से युक्त शरद ऋतुके बादलहोते हैं ४० इसी प्रकार वहईर्षा करने वाले धनुषधारी और उपाय करनेवाले शूरबीर ऐसेपरस्परमें भिड़े जैसेकि मतवाले हाथीभिड़ते हैं ४१ हे राजा निश्चय करके समय आयेबिना शरीर त्यागनहीं होताहै जिस स्थानपर सब महारथी एक साथही शरीरों के छोड़ने वालेनहीं हुये ४२ अर्थात् कटेहुये भी जीव युक्तथे तब युद्ध भूमि कटेहुये भुज चरण कुंडलधारी शिर धनुष बिशिख फरसे खड्ग प्रास ४३ नालीक क्षुद्रनाराच नखर शक्ति तोमर और कारीगरोंके साफ कियेहुये नाना प्रकारके अन्य उत्तम शस्त्र ४४ नाना रूप के बिचित्र कवच टूटेबिचित्ररथ मरेहुये हाथी घोड़े ४५ और जिन के शूरबीर मारेगयेध्वजा टूटगईं उन पर्व्वतके समानरथ और मनुष्यों से रहित जहांतहां खैंचते भयानक घोड़ोंसे ४६ और जिन के वीर मारेगये उन बायु के समान बारंबार दौड़ने वाले अलंकृत घोड़े व्यजन कुंडल और गिरीध्वजा ४७ क्षत्र भूषण बस्त्र सुगंधितमाला हार किरीट मुकुट पगड़ी क्षुद्रघंटिकाओंके समूह ४८ और हृदय

पर विराज मान मणि माणिकादि से जटित चूड़ामणियों से ऐसी शोभाय मानहुई जैसे नक्षत्रों के समूहों से आकाश शोभित होता है ४९ इसकेपीछे क्रोधयुक्त असहनशील राजादुर्य्योधनकी सन्मुखता अक्षम नकुलके साथहुई ५० फिर सैकड़ों बाणोंको छोड़तेहुये नकुलने आपके पुत्रको दाहिना किया वहां बड़ेशब्दहुये ५१ अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धमें शत्रु से दाहिने किये हुये अपने को नहीं सहा और उसको भी इसने दाहिना किया ५२ हे महाराज आप के पुत्र दुर्य्योधनने शीघ्रतासेही ऐसा किया इस के अनन्तर बदला करनेके अभिलाषी आपके पुत्रको ५३ चित्रमार्गके ज्ञाता तेजस्वी नकुलने रोका फिर बाणजालोंसे पीड़ामान करते उस दुर्य्योधनने इस नकुलको सब ओरसे हटाकर ५४ मुखफेरनेवाला किया उस समयसेनाकेलोगोंने उसकी प्रशंसाकरी फिरनकुल पिछलेसबदुःखों को और आपकेकुमंत्रोंको स्मरणकरकेआपके पुत्रसे तिष्ठतिष्ठशब्दों को बोला ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टाशीतितमोऽध्यायः १८८ ॥

एकसौनवासीका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर क्रोध युक्त दुश्शासन रथकी कठिन तीव्रतासे पृथ्वीको कंपाय मान करता सहदेव के सन्मुख गया १ शत्रुओंके विजय करनेवाले सहदेवने शीघ्रही उस आते हुये दुश्शासनके सारथी के शिरको भल्ल से काटा २ दुश्शासन और अन्य किसी सेनाके मनुष्यों नेभी सहदेव के हाथ से इस सारथी के शिरकटनेको नहींजाना ३ फिर जब न पकड़नेसेघोड़े स्वेच्छाचारी चलने लगे तब दुश्शासन ने सारथीको मराहुआ जाना ४ वह घोड़ोंकी विद्या में कुशल रथियों में श्रेष्ठ दुश्शासन युद्ध भूमि में आपही घोड़ोंको पकड़कर युद्धकरने लगा वह युद्धभी बड़ी तीव्रता से अपूर्व और उत्तम हुआ अपने और दूसरों के शूरवीरोंने युद्धमें उसके उस कर्मकी भी प्रशंसा करी ५ जो कि सारथी से रहितरथ

को सवारी से निर्भय के समान युद्धभूमि में घूमा फिर सहदेव ने तीक्ष्णबाणोंसे उन घोड़ोंको ढकदिया ६ बाणोंसे पीड़ामान वहघोड़े शीघ्रही इधर उधरको भागे और उसनेबागडोरोंमें प्रवृत्तहोनेसे धनुष कोरखदिया और फिर धनुषसे कर्म करनेवालेने बागडोरोंको छोड़ा माद्रीनन्दनने इन२ अवकाशोंपर उसको बाणोंसे घायल किया ८ कर्णआपके पुत्रको चाहता उसस्थानपर आया उसके पीछे सावधान भीमसेनने कर्णको ६ कानतक खैंचेहुये तीनभल्लोंसे भुजाओं समेत छातीपर छेदा फिर कर्ण मलेहुये सर्पकी समान लौटा १० और तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनको रोका तब भीमसेन और कर्णका वह युद्धभी बड़ा कठिनहुआ ११ बैलोंके समान गर्जनेवाले खुलेनेत्र क्रोध युक्त वह दोनों बड़ी तीव्रतासे परस्पर सन्मुखदौड़े १२ वहां बाण जालके कटजानेसे उन युद्धमें कुशल भिड़ेहुये भीमसेन और कर्णका गदा युद्ध वर्त्तमानहुआ १३ हे राजा फिर भीमसेनने गदासे कर्णके रथ कूबरको सौ टुकड़े किया यह आश्चर्य्य साहुआ १४ इसकेपीछे पराक्रमी कर्णने भीमसेनकी गदाको घुमाकर भीमसेन ही के रथपर छोड़ा और गदासे गदाको तोड़ा १५ फिर भीमसेनने अपनी प्रिय गदाको कर्णके ऊपर फेंका कर्णने सुन्दर पुंख बड़े बेगवान् अन्य बहुत बाणोंसे उस गदाको फिर खंडित किया वह कर्णके बाणोंसे हटाई हुई मन्त्रसे कीलित सर्पोंके समान गदा फिर भीमसेनकेपास आई १६।१७ तदनन्तर उसके आघातसे भीमसेनकी बड़ी ध्वजा गिरपड़ी और गदासे घायल होकर इसका सारथी अचेतहुआ १८ उस क्रोधसे मूर्च्छावानने कर्णके ऊपर आठ शायकोंको छोड़ा हे भरत बंशी शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले हंसते हुये महारथी भीमसेनने उनतीक्ष्णधार तीक्ष्णबाणोंसे उसके ध्वजा धनुष औरतूणीरको काटा १९।२० इसपीछे राधाके पुत्र कर्णने भी सुबर्ण पृष्ठी कठिनतासे चढ़ानेके योग्य दूसरे धनुषको लेकरबाणोंसे उसके रीछवर्णघोड़ोंको और दोनों आगे पीछेवाले सारथियोंको मारा २१ वह रथसेरहित भीमसेन नकुल के रथपर ऐसे गया जैसे कि शत्रुओंके बिजयकरने

वाले हनुमानजी पर्वतकेशिखरको उल्लंघकर गयेथे २२ हेराजेन्द्र इसप्रकार युद्धमें प्रहारकरने वाले महारथी द्रोणाचार्य्य और अर्जुन दोनों गुरू और शिष्य ने भी अपूर्व युद्धकिया २३ तेजीसे बाणको धनुष पर चढ़ाना और रथोंका घुमाना इन दोनों कर्मोंसे मनुष्योंके नेत्र और चित्तोंको मोहित किया २४ हे भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ वहसव युद्ध करने वालेगुरू शिष्यके उस युद्धको जिसके समान पूर्वमेंकभी नहीं देखाथा देखकर युद्ध करनेसे वन्द होगये तव उनदोनों बीरोंने सेनाके मध्यमें सव्य अपसव्य रथोंके मार्गोंको करके परस्परदक्षिण करनाचाहा २५ अत्यन्त आश्चर्य्यित उन शूरवीरोंने उन दोनोंके पराक्रमको देखा उनदोनों द्रोणाचार्य्य और अर्जुनकायुद्ध ऐसावड़ा भारीहुआ २६ जैसे कि आकाशमेंमांसके निमित्तदो वाजपक्षियोंका होताहै फिर द्रोणाचार्य्यने अर्जुनको विजय करनेकी इच्छासे जो २ कर्मकिये २७ उन२ घातोंको हंसतेहुये अर्जुननेशीघ्रही निष्फलकिया जव द्रोणाचार्य्यजी अर्जुनके मारनेको समर्थ नहींहुये तव अस्त्रमार्गों में अति प्रवीणने अस्त्रको प्रकट किया २८ ऐन्द्र, पाशुपत, त्वाष्ट्र, और वायव्य, नाम अस्त्र जो द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छोड़गये उन छोड़े हुये अस्त्रोंको अर्जुननें निष्फल करदिया२९ जव पांडवने उनके अस्त्रों को अपने अस्त्रोंसे विधिके अनुसार दूरकिया तव द्रोणाचार्य्यने वड़े दिव्यअस्त्रोंसे अर्जुन कोढका ३० उन द्रोणाचार्य्यने विजय करने की इच्छासेजिस अस्त्रको अर्जुनके लिये प्रकट किया अर्जुनने उस अस्त्रके नाशके निमित्त उसीअस्त्र कोप्रकट किया ३१ विधिके अनुसार अर्जुनकी ओरसे दिव्य अस्त्रों के निष्फल होने से द्रोणाचार्य्यने मनसे अर्जुनकी प्रशंसाकरी ३२ हे भरतवंशी उसशत्रु संतापी शिष्यके साथ अपने को इस पृथ्वीके सव शस्त्रज्ञों के मध्यमें अधिकतर माना ३३ उन महात्माओंके मध्यमें अर्जुनसे हटायेहुये आश्चर्य्य युक्त उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने अर्जुनको प्रीतिपूर्वक रोका ३४ इसके पीछे अन्तरिक्षमें हजारों देव गन्धर्व ३५ ऋषि और सिद्धोंके समूह देखनेकी इच्छासे नियत हुये अप्सराओं

से पूर्ण यक्ष और गन्धर्वोंसे संकुलित ३६ वह आकाश फिरऐसे शोभायमान हुआ जैसेकि वादलोंसे युक्त होकर शोभित होताहै हे राजा वहां जो गुप्त वचन प्रकट हुये ३७ वह वचन द्रोणाचार्य्य और अर्जुनकी प्रशंसा से संयुक्त सुने गये अस्त्रोंके छोड़ने में दिशाओंको प्रज्वलित रूप किया ३८ वहां इकट्ठे होने वाले सिद्ध और ऋषि लोगोंने कहा कि यह युद्ध न मानुसी आसुरी और राक्षसी है ३९ न दैव गान्धर्व और ब्राहम्यहै निश्चय करके यह युद्ध अत्यन्त बिचित्र और अद्भुतहै ऐसा युद्ध हमनेदेखाहै नसुनाहै ४० आचार्य्य जी पांडव अर्जुनसे अधिकहैं और पांडव अर्जुन द्रोणाचार्य्यसे बहुत अधिकहैं इन दोनोंके अन्तर जाननेकोअन्यकिसीमनुष्यकी सामर्थ्य नहीं है ४१ जो शिवजी अपने दो रूप करके अपने साथ आपही युद्ध करें तब उनकी समानता करना संभव है उनके सिवाय इनकी समताका दूसरा कोई नहींहै ४२ आचार्य्यजीमें केवल एक ज्ञानही नियतहै पांडवमें ज्ञान योग दोनों नियतहैं आचार्य्यजीमें केवल एक शूरता नियतहै और पांडवमें पराक्रम शूरता दोनों वर्त्तमानहैं ४३ यह दोनों बड़े धनुष धारी युद्धमें शत्रुओंके हाथसे बिजय करने के योग्य नहीं यह दोनों जो इच्छाकरेंतो देवताओं समेत संसार का नाशकर डालें ४४ हे महाराज इन दोनों पुरुषोत्तमोंको देखकर गुप्तजीव धारी बातोंको कहते हुये अनेक प्रकारसे प्रकट हुये ४५ इसके पीछे युद्धमें पांडवको और गुप्तजीवोंको अच्छीरीति सेतपाते बड़े बुद्धिमान द्रोणाचार्य्यने ब्राहम्य अस्त्रको प्रकट किया ४६ तब वृक्ष पर्व्वतों समेत पृथ्वी कंपायमान हुई औरबड़ी कठोर वायुचली और समुद्र उथल पुथल हुये ४७ उस महात्माके अस्त्र प्रकट होने पर कौरवीय और पांडवीय सेनाओं समेत सवजीव मात्रोंको भय उत्पन्नहुआ ४८ हे राजेन्द्र इसके पीछे व्याकुलतासे रहित अर्जुन नेभी ब्रह्मअस्त्र के द्वारा उस अस्त्रको हटायाऔर उसीसे सब शान्त होगया ४९ जब उन दोनों ने एकके पारको नहीं पाया तब संकुल युद्धके द्वारा वह युद्ध महा व्याकुल रूप हुआ ५० इसके अनन्तर

फिर भी युद्ध भूमिमें द्रोणाचार्य्य और पांडव अर्जुन के कठिन युद्ध जारी होनेपर कुछ नहीं जानागया ५१ बादलोंके जालसे संयुक्तके समान बाणोंके जालोंसे आकाश के पूर्ण होने पर अन्त रिक्षचारी कोई जीव वहां नहीं आया ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्व णिगतोपरिएकोननवतितमोऽध्यायः १८६॥

एकसौनव्वेका अध्याय॥

संजय बोले हे महाराज इस प्रकारसे हाथी घोड़े और मनुष्यों केविनाश वर्त्तमान होने पर दुश्शासनने धृष्टद्युम्न से युद्धकिया १ स्वर्णमयी रथपर सवार और दुश्शासनके बाणोंसे पीड़ामान उस धृष्टद्युम्नने क्रोधसे आपके पुत्रके घोड़ोंको बाणोंसे ढकदिया २ हे महाराज उसका वह रथभी ध्वजा सारथी समेत एकक्षणहीमें धृष्ट-द्युम्नके बाणोंसे चिता हुआ दृष्टिसे गुप्त होगया ३ महात्मा धृष्टद्युम्न के बाणजालोंसे अत्यन्त पीड़ामान होकर आपका पुत्र उसकेसंमुख नियत होनेको समर्थनहींहुआ ४ फिरवह धृष्टद्युम्नबाणोंसे दुश्शासन कोविमुख करकेहजारोंबाणोंको फैलाता युद्धमें द्रोणाचार्य्यकेसन्मुख गया ५ उसीसमय हार्द्दिक्य का पुत्र कृतवर्मा अपने सगे तीन भाइयों समेतमिलकर सन्मुख हुआ उन्हों ने उस को रोका ६ वह दोनों पुरुषोत्तम नकुल सहदेव उस प्रज्वलित अग्निकेसमान द्रोणा-चार्य्यके सन्मुख जानेवाले धृष्टद्युम्नकेपीछेचले ७ उन सब महारथी क्रोध युक्त पराक्रमी शुद्ध अन्तः करण शुद्ध चलन स्वर्ग को आगे करनेवाले परस्पर विजयाभिलाषी श्रेष्ठ युद्ध करते महा रथियोंने उत्तम लोगों के समान युद्ध किया ८। ६ हे राजा पवित्र कुल कर्म वाले बुद्धिमान उत्तम गति के अभिलाषी उन लोगों ने धर्म युद्ध किया १० वहां अधर्म युद्ध से युक्त बिनाशस्त्र वाले नहीं हुये न कर्णी, नालीक, लिप्त, बस्तिक, ११ सूची, कपिश, गवास्थि, और गजास्थिक, नाम बाण और संश्लिष्ट पूति जिह्मग नाम बाण जोकि कंटकादि युक्तहोतेहैं वह कोई नहींथे १२ उत्तम सीधे युद्धसे ऊपरके

लोकों के और कीर्त्तिको चाहते हुये उन सब ने सीधे और शुद्ध शस्त्रोंको धारण किया १३ तब आपके चारों शूर वीरों का युद्धतीनों पांडवों के साथ कठिन और सब दोषों से रहित हुआ १४ हे राजा शीघ्र अस्त्र चलाने वाला धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव से रोके हुये उन रथियों में श्रेष्ठ बीरों को देखकर द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया १५ फिर रोके हुये वह चारों बीर उन दोनों पुरुषोत्तमों से ऐसे अच्छे भिड़े जैसेकि दो पर्व्वतोंके मध्य में वायु टक्करखाती हैं १६ रथियों में श्रेष्ठ नकुल और सहदेव दोदो रथियों के साथ भिड़े इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य के सन्मुख वर्त्तमानहुआ १७ द्रोणाचार्य्यकी ओर जाने वाले युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न को और नकुल सहदेव के साथ भिड़े हुये चारों रथियोंको देखकर १८ रुधिर पीने वाले बाणों को फैलाता हुआ दुर्य्योधन उस स्थान पर सन्मुख गया सात्यकी फिर भी शीघ्रता से उसके सन्मुख वर्त्तमान हुआ १९ वह दोनों नरोत्तम कौरव और माधव सन्मुख होकर निर्भयता से युद्ध करने लगे २० और प्रसन्न चित्त सब बाल्यावस्थाकी दशा के वृत्तान्तों को स्मरण करके बारंबार मुसकान करनेवाले और परस्पर देखने वाले हुये २१ इसके पीछे राजा दुर्य्योधन अपने चलनकी निन्दा करता बारंबार प्यारे मित्रसात्यकी को बोला २२ हेमित्र क्रोधको धिक्कार लोभको धिक्कार मोह और अमर्षता को धिक्कार क्षत्रियों के आचार को धिक्क़ार और बल पराक्रम को धिक्कार हो २३ हे शिनियों में श्रेष्ठ जिस स्थान पर तुम मुझको लक्ष्य करते हो और मैं तुम को करताहूं तुम सदैव सेमेरे प्राणों से भी प्रियतमथे और इसीप्रकार तुम्हारा मैंभीथा २४ मैं उन सब बाल्यावस्थाके वृत्तान्तोंको स्मरण करताहूं कि अब इस युद्धभूमि में हमारे वह सब ब्यवहार प्राचीन होगये २५ हे यादव क्रोध और लोभ से निकृष्ट दूसरी कौनसी बातहै अब युद्ध जारी है बड़े अस्त्रोंका जाननेवाला हंसता हुआ सात्यकी तीक्ष्ण बिशिखों को उठाकर उस प्रकार की बातें करने वाले दुर्य्योधन से बोला हे राज कुमार यह सभा नहीं

है न गुरुका स्थानहै २६ । २७ जहां पर कि इकट्ठे होने वाले हम लोगोंने क्रीड़ा करी थी २८ दुर्य्योधन बोला हे शिनियों में श्रेष्ठ बाल्या वस्थामें जो हमारी क्रीड़ाथी वह कहांगई और फिर यह युद्ध कहां समय कठिनता से उल्लंघन के योग्य है २६ धनकी इच्छा और धनसे हमारा कौनसा कर्म वर्त्तमानहै जहांकि धनके लोभसे इकट्ठे होने वाले हम सब लड़तेहैं ३० वहां माधव सात्यकी उस प्रकार की वार्त्ता करने वाले उसराजासे बोला क्षत्रियोंका वंशसदैव से ऐसेही चलन वालाहै इस लोकमें गुरुओं से भी लड़तेहैं ३१हे राजा जोमें तेरा प्याराहूं तो मुझको मारो विलम्ब मत करो हे भरतर्षभ तेरे कारण उत्तम कर्म से मिलने वाले लोकोंको पाऊं ३२ जो तेरी शक्ति और पराक्रमहै उसको शीघ्र मुझपरदिखलामैं दूसरों के उस बड़े दुःखको देखा नहीं चाहताहूं ३३ सात्यकी प्रत्यक्ष में इस प्रकार कह कर और उत्तर देकर सावधानी से शीघ्र सन्मुख गयाओरआत्मापर दया नहींकी ३४ हे राजा आपके पुत्रने उस आतेहुये महाबाहु सात्यकीको रोका औ रबाणोंसेढकदिया ३५इसके पीछे कौरव और माधावोंमेंश्रेष्ठ दुर्योधन और सात्यकीका युद्धऐसा जारीहुआ जैसेकि परस्पर क्रोध युक्त दो उत्तम हाथियों का घोरयुद्ध होताहै ३६ क्रोधयुक्त दुर्योधनने युद्धमें दुर्मद सात्यकीको कानतक खेंचकर छोड़े हुये दशबाणोंसे घायल किया ३७ उसीप्रकारसात्यकीने भी उसका युद्ध भूमिमेंप्रथम पचास बाणसे फिर तीससे और फिर दश बाणोंसे ढकदिया ३८ हे राजा हंसते हुये आपके पुत्रने युद्धमें कानतक खेंचे हुये तीक्ष्णधार तीसबाणों से सात्यकी को घायल किया ३६ इसके पीछे क्षुरप्र से इसके बाण समेत धनुष के दोखंडकरदिये तदनन्तर उसहस्तलाघवीसात्यकीने दूसरे दृढ़धनुष को लेकर ४० आपके पुत्र पर बाणधाराको छोड़ा मारनेकीइच्छा से उस अकस्मात आती हुई बाण धाराको ४१ राजा दुर्योधन ने बहुत प्रकार से काटा इसके पीछे मनुष्य पुकारे और वेगसेसात्यकी को ऐसे तिहत्तरबाण से पीड़ित किया ४२ जोकि सुनहरीपुंख साफ़

कान तक खींचकर शीघ्र छोड़े थे सात्यकीनेधनुषपर बाणोंके चढाने वाले उसदुर्योधनके बाण संयुक्त धनुषको काटा ४३ और शीघ्रही बाणोंसे भी घायल किया हे महाराज वह कठिन घायल दुखी सात्यकीके बाणोंसे पीड़ामान दुर्योधन रथके भीतर बैठ गया कुछ कालतक बिश्राम लेकर फिर आपका पुत्र सात्यकी के सन्मुख गया ४४ । ४५ और सात्यकी के रथपर बाण जालों को छोड़ता गया उसीप्रकार सात्यकी ने भी बाणों को दुर्योधन के रथ पर बारंबार फेंका और वह संकुल युद्ध बर्त्तमान हुआ ४६ वहां फेंके हुये और शरीरों पर गिरते हुये बाणोंसे ऐसे बड़ेशब्द हुये जैसे कि सूखे हुये महाबनमें अग्निके शब्द होतेहैं ४७ उनदोनोंके हजारों बाणोंसे पृथ्वी ढकगई और आकाश महादुर्गम्य रूपहुआ ४८ उस स्थान पर भी आपके पुत्रको चाहताहुआकर्ण रथियोंमेंश्रेष्ठ सात्यकी को अधिक जानकर शीघ्र सन्मुख आया ४९ फिर महाबली भीमसेनने उसको नहीं सहा और बहुत शीघ्र शायकों को छोड़कर कर्णके सन्मुख गया ५० हंसते हुये कर्णने उसके तीक्ष्ण बाणोंको काट कर बाणोंसेही उसके धनुष समेत बाणोंको काटकर सारथी को मार ५१ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त पांडवभीमसेनने गदाको लेकर युद्धमें शत्रुको ध्वजा धनुष और सारथीकोमर्द्दनकिया ५२ इस के सिवाय उस महाबलीने कर्णके रथके चक्रको तोड़ा पर्व्बत के समान कंपायमान कर्ण टूटे चक्रवाले रथपर नियतहुआ ५३ घोड़ों ने एक चक्र रखने वाले रथको बहुत बिलम्ब तक ऐसे चलाया जैसे सप्त ऋषि रूपी घोड़े सूर्य्यके एक चक्रवाले रथको लेचले थे ५४ फिर असह्य कर्ण युद्धमें नाना प्रकारके बाण जाल और बहुत प्रकार के शस्त्रोंके द्वारा भीमसेनसे युद्धकरने लगा ५५ भीमसेनने कर्णसे युद्ध किया इस प्रकार उस युद्धके वर्त्तमान होने पर क्रोध से पूर्ण युधिष्ठिर ५६ नरोत्तम पांचाल औरपुरुषोत्तम मत्स्य देशियों से बोला कि जो हमारे प्राण और शिरहैं और जो हमारे महा रथी शूरबीर हैं ५७ वह सब पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे भिड़े

हुयेहैं तुम सब अचेत और अज्ञानोंके समान क्यों नियतहो ५८ अब तुम वहां चलो जहां गतज्वर होकर मेरे यह सब रथी क्षत्री धर्मको आगे करके लड़ रहे हैं ५६ विजय करनेवाले और मरने वाले होकरतुम सब लोग अभीष्टगति को पाओगे अथवा विजय करके बड़ी दक्षिणावाले बहुत यज्ञों से पूजन करोगे ६० अथवा शरीर त्यागनेवाले तुम देव रूप होकर श्रेष्ठ लोकोंको पाओगे राजाकी आज्ञा पाकरवह युद्धाभि लाषी महारथी लोगभी ६१ क्षत्री धर्मकोआगे करके शीघ्रही द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये पांचालों ने एक ओर से द्रोणाचार्य्य को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से घायल किया ६२ और भीमसेन जिनमें मुख्यहै उन सब लोगोंने भी एक ओरसे घेरलिया पांडवोंके तीन महारथी सीधेचलनेवालेहुये६३ उन नकुल सहदेव और भीमसेनने अर्जुनको पुकारा कि हे अर्जुन शीघ्र दौड़ो कौरवोंकोद्रोणाचार्य्यसे पृथककरो ६४ तदनन्तर पांचालदेशी इन अरक्षित आचार्य्यजी को मारेंगे तब अर्जुन अकस्मात कौरवोंके सन्मुख दौड़ा ६५ हे भरतवंशी फिर द्रोणाचार्य्य उन पांचालों के जिनमें कि अग्रगामीधृष्टद्युम्न था सन्मुखहुये सबवीरोंने पांचवेंदिन द्रोणाचार्य्य को मर्दन किया ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिनवतितमोऽध्यायः १९० ॥

एकसौइक्यानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने पांचालोंकाऐसा विनाश किया जैसे कि पूर्व्व कालमें क्रोध युक्त इन्द्रने दानवों का नाश कि-याथा १ हे महाराज युद्धमें द्रोणाचार्य्य के अस्त्रसे घायल पराक्रमी महारथी भयभीत नहींहुये २ और लड़तेलड़ाते महारथीपांचालऔर संजय युद्धमें द्रोणाचार्य्य के ही सन्मुखगये ३ बाणों की वर्षा करके चारों ओरसे घायल और ढकेहुये उन पांचालोंके शब्दभयके उत्पन्न करनेवाले हुये ४ महात्मा द्रोणाचार्य्य का अस्त्र प्रकट होने और युद्धमें पांचालों के घायल और मरनेपर पांडवोंमें भय प्रवृत्तहुआ५

हे महाराज तब पांडवोंने युद्धमें घोड़े और मनुष्योंके बड़े विनाशको देखकर बिजय की आशाको त्यागकर ऐसा भयकिया ६ कि कहीं परम अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्य हम सबको ऐसे नाशनहीं करदें जैसे कि चैत्र और बैशाखके महीने में भिड़ाहुआ अग्नि सूखे बनको भस्म करदेताहै ७ युद्धमें युद्ध करना तो क्या उनके देखने को भी समर्थ नहीं और धर्म का जाननेवाला अर्जुन कभी इनके साथमें लड़ैगा नहीं ८ वृद्धिमें प्रवृत्त बुद्धिमान केशवजी द्रोणाचार्य्य के शायकों से पीड़ित और भयभीत पांडवोंको देखकर अर्जुनसे बोले ९ कि यह धनुष धारियोंमें श्रेष्ठसंग्रामभूमिमें धनुषका रखनेवाला किसीदशामें भी युद्धके द्वारा इन्द्र समेत देवताओं से भी बिजय करने के योग्य नहींहै १० युद्धमें शस्त्रोंके त्यागनेवाले ही होकर यह द्रोणाचार्य्य मनुष्यों से मारनेके योग्य होसक्तेहैं और शस्त्रोंसमेत इनके मारनेको किसी मनुष्य की सामर्थ्यनहींहै इसहेतुसे हे पांडवधर्म को छोड़कर बिजय में ऐसा उद्योगकरो ११ जिससे कि यह सुबर्णमयरथवाले द्रोणाचार्य्य युद्धमें सब को नहीं मारैं यह द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा के मरने पर युद्ध नहीं करेंगे यह मेरा संमतहै १२ कोई मनुष्य युद्धमें इस अश्वत्थामा का मरना द्रोणाचार्य्य से कहै यह सुनकर कुन्तीके पुत्र अर्जुनने इस बातको अंगीकार नहीं किया १३ परन्तु अन्य सब लोगोंने स्वीकार किया और युधिष्ठिरने भी बड़े दुःखसे स्वीकार किया हे राजा इस के पीछे महाबाहु भीमसेनने अपनी सेनामें शत्रुओं के मारने वाले घोर रूप अश्वत्थामा नाम मालव देशके राजा इन्द्रबर्म्माका हाथी था उसको गदासे मारा १४।१५ तब भीमसेनने लज्जा युक्त युद्धमें द्रोणाचार्य्य के पास जाकर उच्चस्वर से शब्द किया कि अश्वत्थामा मारागया १६ अर्थात् अश्वत्थामा नाम से प्रसिद्ध हाथी के मारे जाने के बहाने से भीमसेनने चित्तमें छलको करके उस बातको मिथ्या कहा १७ द्रोणाचार्य्य भीमसेन केउस अत्यन्त अप्रिय बचनको सुन कर चित्तसे ऐसे निरूपाय हुये जैसे कि जलमें बालू का किनारा निरूपाय होताहै १८

अपने पुत्र के पराक्रम जाननेवाले द्रोणाचार्य्य जी यह बात सत्यहै व असत्यहै इसको ध्यान करते हुये वह मरगया इस बात को सुनकर धैर्य्य से कंपायमान नहीं हुये १९ फिर वह द्रोणाचार्य्य एक क्षण मेंही सचेत होकर और पुत्रको शत्रुओं से न सहने के योग्य समझ कर विश्वास युक्त हुये २० उस मारने के अभिलाषी ने अपने काल रूप धृष्टद्युम्न को सन्मुख होकर एक हजार तीक्ष्ण बाणों से ढक दिया २१ फिर अंगिरा ऋषिके दिये हुये दूसरे दिव्य धनुष को और ब्रह्मदण्ड के समान बाणों को लेकर धृष्टद्युम्न से युद्धकिया २२ अर्थात् उसको बड़ी बाणों की वर्षासे ढक दिया और बड़े क्रोध युक्त होकर धृष्टद्युम्न को घायल किया २३ अर्थात् द्रोणाचार्य्यने शायकों से उसके बाणोंके सैकड़ों खण्ड करदिये और तीक्ष्ण धार बाणोंसे ध्वजा धनुष और सारथी को भीमारा २४ धृष्टद्युम्न ने हंस कर दूसरे धनुष को लेकर उनको तीक्ष्ण बाणोंसे छातीपर घायल किया युद्धमें व्याकुलता से रहित अत्यन्त घायल उस बड़े धनुष धारीने तीक्ष्ण भारभल्ल से फिर उसके धनुष को काटा २६ फिर अजेय द्रोणाचार्य्य ने सिवाय गदा और खड्गके धनुष समेत जो उसके बाणों के लक्ष्य हुये उन सबको काटा२७ हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र क्रोध युक्त महा उग्ररूपजीवन के नाश करने वाले द्रोणाचार्य्य ने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे घायल किया २८ ब्रह्मअस्त्रके मन्त्र को पढ़ने वाले बड़े साहसी महारथी धृष्टद्युम्नने उसके रथके घोड़ों को अपने रथके घोड़ोंसे मिलादिया २९ हे भरतर्षभ वेगवान और वायुके समान शीघ्रगामी वह कपोतवर्ण आरक्त घोड़े बहुत शोभाय मान हुये ३० जैसे कि वर्षा ऋतुमें बिजली समेत गर्जते बादल होतेहैं हे महाराज उसी प्रकार युद्धके शिर पर मिले हुये घोड़े भी शोभायमान हुये ३१ उस बड़े साहसी ब्राह्मण ने धृष्टद्युम्न के ईशाबन्ध रथबन्ध और चक्रबन्धकोविनाश किया ३२ उस टूटे धनुष ध्वजाऔर मृतक सारथी वाले वीर धृष्टद्युम्नने बड़ी आपत्ति को प्राप्त होकर गदा को हाथमेंलिया ३३ क्रोधयुक्त सत्य

पराक्रमी महारथी द्रोणाचार्य्यने बिशिख नाम तीक्ष्ण बाणोंसे उस- की फेंकी हुई उस गदाको तोड़डाला ३४ फिर नरोत्तम धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्य के बाणोंसे टूटी हुई उसगदाको देखकर निर्मल खड्ग को और सौचन्द्रमा रखनेवालीढालको हाथमेंलिया३५ उस दशावाले धृष्टद्युम्नने समय के वर्त्तमानहोनेपर आचार्य्योंमें श्रेष्ठ महात्मा द्रोणाचार्य्यके मारनेको निस्संदेह अच्छामाना ३६ तदन- न्तर अपनेरथकी नीढ़पर नियत धृष्टद्युम्न मारकोन्ने इच्छासे खड्ग को और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको उठाकरगया ३७ कठिनता से करने केयोग्य कर्मको करना चाहतेहुये महारथी धृष्टद्युम्नने युद्धमें भारद्वाज द्रोणाचार्य्यकी छातीको छेदनाचाहा ३८ और युग के मध्य युगके बन्धन और घोड़ोंकी जंघार्धके मध्यमें नियतहुआ उस समय सेनाके लोगोंने उसकी प्रशंसाकरी ३९ युगके कोट और रक्त घोड़ोंके ऊपर नियतहुये उस धृष्टद्युम्नका अवकाश द्रोणाचा- र्य्यने नहींदेखा वह आश्चर्य्य साहुआ ४० युद्धमें द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न कायुद्ध ऐसे प्रकारका हुआ जैसेकि मांसके अभिलाषी शीघ्र घूमनेवाले बाजका होताहै४१रक्त घोड़ोंको बचातेहुये द्रोणा- चार्य्यने रथशक्तोसे उसके उन सब प्रत्येक कपोतबर्ण घोड़ोंकोमारा ४२हेराजा धृष्टद्युम्नके वह मरेहुये घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े तबरक्त बर्ण घोड़े उस रथ बन्धनसे छूटे ४३ उस शूरबीरों में श्रेष्ठ द्रुपदके पुत्र महारथी धृष्टद्युम्नने उत्तम ब्राह्मणके हाथसेमारेहुये उनघोड़ों को देखकरक्षमानहींकी ४४हेराजावह खड्ग धारियोंमें श्रेष्ठ रथसे बिहीन खड्गकोलेकर द्रोणाचार्य्यके सन्मुख ऐसे आनकर टूट्याजैसे किसर्पके सन्मुखगरुड़ आनकर टूटताहै४५ हेराजा भारद्वाजकेमारने के अभिलाषी धृष्टद्युम्नका रूप ऐसा शोभाय मानहुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें हिरण्य कश्यपके मारनेमें नृसिंहअवतार विष्णु का रूपथा ४६ हेकौरव्य तब युद्धमें घूमतेहुये उस धृष्टद्युम्नने ना- नाप्रकार से अत्यन्त उत्तम इक्कीसमार्गोंको दिखलाया ४७ खड्ग और ढाल धारण करनेवाले उस धृष्टद्युम्नने भ्रांत, उद्भ्रान्त आविद्ध,

आप्लुत,प्रसृत,सृत,परिवृत्त,निवृत्त,संपात,समुदीर्ण,नाममार्गोंकोदि खलाया ४६ द्रोणाचार्य्यके नाशकी इच्छासे युद्धमें मार्गोंको दिख-लाताघूमा उसखड्गधारी धृष्टद्युम्न के उन विचित्र मार्गोंको घूमते हुये ५० आकाशमें इकट्ठे होनेवाले देवताओंने और युद्धमें शूरवीरोंने आश्चर्य्यमाना इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने हजार बाणोंसे ढाल और खड्गकोगिराया ५१ धृष्टद्युम्नके ढाल औरखड्गके टूटनेपर उसब्रा-ह्मणनेसमीपसे साधारण युद्धकरनेके योग्य वैतस्तिकनाम बाण ५२ जो कृपाचार्य्य,द्रोणाचार्य्य,अर्जुन,कर्ण, प्रद्युम्न,सात्यकी और अभि मन्यु के सिवाय दूसरों के पास नहींथे उस प्रकारके दृढ़ और बड़े बाणोंको लेकर धनुषपर चढ़ाया ५३।५४ और सन्मुख वर्तमानपुत्र-के समान धृष्टद्युम्नके मारनेके इच्छावान आचार्य्यने उस बाणको छोड़नाचाहा सात्यकीने दश तीक्ष्ण बाणोंसे उसको काटकर ५५ आप केपुत्र और महात्माओं के देखते आचार्य्योंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजीसे ग्रसेहुये धृष्टद्युम्नको छुड़ाया ५६ हे भरतवंशी द्रोणाचार्य्य कृ-पाचार्य्य और कर्णके मध्यमें वर्त्तमान और रथ मार्गोंमें घूमनेवाले सत्य पराक्रमी सात्यकीको ५७ महात्मा अर्जुन और श्रीकृष्णजीनेदे-खा और बहुतश्रेष्ठ धन्यहै धन्यहै ऐसाकहकर उनदोनोंनेउसदिव्य अस्त्रोंके दूरकरनेवाले अजेय सात्यकीको प्रशंसाकरी ५८ इसकेपीछे अर्जुन और श्रीकृष्णजीदोनों द्रोणाचार्य्यके पासगये और वहांपहुंच कर अर्जुनने श्रीकृष्णजीसे कहा हे केशवजी देखो कि गुरूजीके उ-त्तम रथोंके मध्यमेंक्रीड़ाकरता ६० शत्रुके वीरोंका मारनेवालामाधव सात्यकी मुझको फिर प्रसन्नकरता है माद्रीकेपुत्रनकुल सहदेवभीम सेन औरयुधिष्ठिरकोभी प्रसन्नकरताहै ६१ जो वृष्णियोंकीकीर्त्ति का बढ़ानेवाला युद्धकीशिक्षामेंपूर्ण महारथियोंकेपास क्रीड़ा करताहुआ घूमताहै ६२ उस सात्यकीको यह आश्चर्य्ययुक्तसिद्धऔर सेनाकेलोग युद्धमें अजेय देखकरधन्य २ शब्दों से उसको प्रसन्नकरतेहैं औरसब शूरवीरोंनेभी दोनोंओरसेकर्मोंके वर्णनद्वारावड़ीप्रशंसा करी ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिएकनवतितमोऽध्यायः १९१ ॥

एकसौबानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि क्रोधयुक्त दुर्योधनादिकने यादव सात्यकी के उस कर्मको देखकर सब ओरसे शीघ्रही सात्यकी को रोका १ हे श्रेष्ठ कृपाचार्य्य कर्ण और आपके पुत्रोंने युद्धमें शीघ्रतासे सात्यकी को सन्मुख जाकर तीक्ष्णधार बाणोंसे घायल किया २ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव और पराक्रमी भीमसेन ने सात्यकी को चारों ओरसे रक्षित किया ३ कर्ण महारथी कृपाचार्य्य और उन दुर्योधनादिकने बाणोंकी वर्षाकेद्वारा सात्यकी को चारों ओर से रोका ४ उन महारथियों से युद्ध करते सात्यकीने उस घोररूप उठी हुई बर्षाको अकस्मात् रोका ५ महात्माओं के चलाये हुये उन दिव्यअस्त्रों को बड़े युद्धमें बिधिके अनुसार अपने दिव्यअस्त्रों से रोका ६ उस राजाओंके युद्धमें वह संग्रामभूमि ऐसी कठिन बिदित हुई जैसे कि पूर्व्व समय में उन पशुओं के मारनेवाले क्रोध युक्त रुद्रदेवताकी भूमि कठिन होतीहै ७ हाथ शिर धनुष और धनुष से काटे हुये छत्रऔर चामरोंके समूहोंसे ८ और टूटे चक्रवाले रथ गिरी हुई बड़ी ध्वजा और मृतक शूरवीर सवारोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई ९ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ धृतराष्ट्र बाणोंके पातसे मरे हुये वह शूरबीर अपूर्व्व युद्धमें अनेक प्रकारकी चेष्टाओंको करते हुये दिखाई पड़े १० वहां इस प्रकार देवासुर संग्रामके समान घोर युद्धके वर्त्तमान होने पर धर्मराज युधिष्ठिर क्षत्रियों से बोले ११ हे सावधान महारथियो द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जावो यह वीर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके साथ भिड़ा हुआहै १२ और सामर्थ्यके अनुसार भारद्वाजके मारने में उपाय करताहै इसबड़े युद्धमें हमको ऐसे लक्षण दिखाई देतेहैं १३ कि अब क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न युद्धमें द्रोणाचार्य्यको मारेगा तुम और वह सबसाथहोकर द्रोणाचार्य्य से युद्ध करो १४ युधिष्ठिरकी आज्ञा पाकर सृंजयोंके सावधान महारथी द्रोणाचार्य्यके मारने की इच्छासे सन्मुखगये १५ मरणअवश्यहै

ऐसा निश्चय करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य्य वेगसे उन सबआने वाले महारथियोंके सन्मुख वर्त्तमान हुये १६ उससत्य प्रतिज्ञ के चढ़ाई करनेपर पृथ्वी कंपायमान हुई और सेनाको भयभीत करने वालीवायुनिर्घातों समेतचलीं १७ औरसूर्य्यसे निकलनेवाली बड़ी उल्का दोनों सेनाओंको प्रकाश करती महाभयों कोप्रकट करती गिरीं १८ हे श्रेष्ठधृतराष्ट्र द्रोणाचार्य्यके शस्त्र अग्निरूप हुये रथोंने अत्यन्तशब्द किये और घोड़ोंनेअश्रुपातोंकोछोड़ा १६ महारथीद्रोणाचार्य्य भी तेजसे रहित मुख हुये और उनके वाम नेत्र और भुजभी फड़के२० और धृष्टद्युम्नको युद्धमें आगेदेखकरउदासचित्तहुये और ब्रह्मवादीऋषियोंका स्वर्ग मिलनेके लिये २१ अच्छेयुद्धसे प्राणों को छोड़नाचाहा तदनन्तर द्रुपदकी सेनाओंसे चारोंओरको घिरेहुये २२ द्रोणाचार्य्य क्षत्रियोंकेसमूहोंकोभस्मकरतेयुद्धमेंघूमनेलगे उसशत्रुओं के मर्द्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने बीसहजार क्षत्रियोंकोमारकर २३ तीक्ष्ण विशिखों से एकलाख हाथियोंको मारा और बड़ी सावधानी से निर्धूम अग्निके समान युद्धमें नियत होकर २४ क्षत्रियोंके नाश के अर्थ परमअस्त्रके प्रयोग में प्रवृत्तहुये फिरपराक्रमी भीमसेन शीघ्रही उस विरथ और टूटे बड़े अस्त्रवाले अत्यन्त व्याकुल महात्मा धृष्टद्युम्न के पासगया उसके पीछे शत्रुमर्द्दन करनेवाला भीमसेन धृष्टद्युम्नकोअपनेरथपरसवारकरके२५।२६बाणप्रहारीद्रोणाचार्य्य को समीप देखकर बोला कि यहांतेरे सिवाय दूसरा महापुरुष आचार्य्यजी से लड़ने को उत्साह नहीं करताहै २७ इनके मारने में शीघ्रताकरो यह तुझपर भार रक्खा हुआहै इसप्रकारके वचन को सुनकर उस महाबाहुने सब भारके उठानेवाले २८ शस्त्रोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त दृढ़ धनुषको शीघ्र दौड़करलिया क्रोधयुक्त और युद्धमें दुःख से हटाने के योग्य द्रोणाचार्य्यके रोकनेके अभिलाषी बाणों को चलाते धृष्टद्युम्नने बाणों की वर्षा से ढकदिया उन श्रेष्ठ और युद्धको शोभादेनेवालेक्रोधयुक्त दोनोंने परस्पर रोका २६।३० औरब्राह्म्य आदिक नानाप्रकार के दिव्यअस्त्रों को प्रकटकिया हे महाराज

उसने युद्धमें बड़े अस्त्रों से द्रोणाचार्य्यको ढकदिया ३१ धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके सब अस्त्रों को दूरकरके बशाती शिवी वाह्लीक और कौरव ३२ इन सब रक्षकोंसमेत द्रोणाचार्य्यकोयुद्धमें घायलकिया हे राजा इसप्रकारसे वह अजेय धृष्टद्युम्न चारों ओर को बाणों के जालोंसे दिशाओं को ढकता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि किरणोंसे सूर्य्य शोभित होताहै द्रोणाचार्य्यने फिर उसके धनुषको काट शिलीमुख बाणों से उसको छेदकर ३३।३४ मर्मोंको घायल किया तब उसने बड़ी पीड़ाको पाया ३५ पांचालोंके वीसहजार नरोत्तमों ने उसरीतिसे युद्धमें घूमनेवाले द्रोणाचार्य्य को सब ओरसे बाणों करके ढका हमने उन बाणोंसे चितेहुये महारथी द्रोणाचार्य्यको ऐसे नहीं देखा ३६ जैसे कि बर्षाऋतुमें बादलोंसे ढकेहुये सूर्य्यको नहीं देखतेहैं इसके पीछे शत्रुसंतापी महारथी द्रोणाचार्य्य ने पांचालदेशियोंके उन बाण समूहों को इधर उधर करके उन पांचालदेशी शूरोंके मारनेके अर्थ ब्रह्मअस्त्रको प्रकटकिया ३७।३८ फिर द्रोणाचार्य्यजी सब सेनाके मनुष्यों को मारते शोभायमान हुये और उस बड़े युद्धमें पांचालों के भी बीरों को गिराया ३९ इसीप्रकार परिघाओं के रूप सुवर्णसे अलंकृत भुजाओं को गिराया युद्धमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारेहुये वह राजालोग ४० पृथ्वीपर ऐसेगिरे जैसे कि बायु से ताड़ित वृक्ष गिरतेहैं हे भरतवंशी गिरते हुये हाथी औरघोड़ोंसे ४१ पृथ्वीमहादुर्गममांस औररुधिरकी कीचरखनेवाली हुई पांचालदेशियों के बीसहजार रथसमूहों को मारकर ४२ निर्धूम अग्निकेसमान प्रकाशित द्रोणाचार्य्यजीयुद्धमें नियत हुये फिर उसी प्रकारक्रोधयुक्तप्रतापवान् द्रोणाचार्य्यने४३भल्लसेबसुदानके शिर को शरीर से जुदाकिया फिर पांचसौमत्स्यदेशियोंको और छःहजार संजियों को ४४ और दशहजार हाथियों को मारकर दशहजार घोड़ों को भी मारा क्षत्रियों के नाशके अर्थ द्रोणाचार्य्यको नियतदेख कर शीघ्रही वह ऋषिलोग पासआये जिनके अग्रगामी अग्निदेवता थे अर्थात् बिश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम ४५।४६ वशिष्ठ,

कश्यप, अत्रि यह सब ब्रह्मलोक में लेजानेके इच्छावान् सिकिता, पृश्नी, गर्ग कुलवाले और सूर्य्यकी किरणोंके पान करनेवाले बालखिल्य ऋषि ४७ भृगु और अंगिरावंशी ऋषि और जो अन्य २ पवित्रात्मा ऋषि और महर्षी हैं वह सब आकर इन युद्ध के शोभा देनेवाले द्रोणाचार्य्य से बोले ४८ कि तुमने अधर्म से युद्ध किया तुम्हारे मरण का समय है हे द्रोणाचार्य्य युद्ध में शस्त्रों को रखकर सन्मुख नियत हुये हमलोगों को देखो इससे आगे फिर निर्दय कर्म करने के योग्य नहीं हो मुख्य करके वेद और वेदाङ्गके जाननेवाले सच्चे धर्ममें प्रीति रखनेवाले ४९ । ५० तुझ ब्राह्मण का यह कर्म योग्य नहींहै हे सफल बाणवाले शस्त्रोंको त्यागकर सनातन मार्ग पर नियतहो ५१ अब नरलोक में तेरे रहने का समय समाप्त हुआ तुमने पृथ्वीपर अस्त्रों के न जाननेवाले मनुष्यों को ब्रह्मअस्त्रसे भस्मीभूत किया ५२ हे ब्राह्मण जो तुमने ऐसा कर्म किया वह अच्छा नहीं किया हे द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण युद्ध में शस्त्रको त्यागकरो विलम्ब न करो ५३ हे द्विजवर्य्य तुम फिर पापकर्मको नहीं करोगे वह द्रोणाचार्य्य उन ऋषियों के उस वचन को और भीमसेन के कहे हुये वचनको सुनकर ५४ युद्ध में धृष्टद्युम्नको देखकर उदास हुये फिर व्यथित और दह्यमान होकर द्रोणाचार्य्य ने कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर से ५५ अपनेपुत्रके जीवने और मरनेके वृत्तान्त को पूछा द्रोणाचार्य्य की बुद्धिमें यह दृढ़ विश्वासथा कि युधिष्ठिर ५६ किसी दशामें त्रिलोकी केभी राज्यके निमित्त मिथ्यानहीं बोलेगा इसीहेतु सेउस द्विजवर्य्यने उसीसे पूछा दूसरेसे नहीं पूछा ५७ बाल्यावस्थासे लेकर इससमय तक उस पांडव युधिष्ठिर में सत्य बोलनेकी आशा रही इसकेपीछे पृथ्वीसे पांडवोंको रहितकरनेके अभिलाषी शूरवीरों के स्वामी ५८ द्रोणाचार्य्य को पीड़ामानजानकर गोविन्दजी धर्मराजसे बोले कि जो क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य आधे दिन भी युद्ध करेगा तो मैं सत्य२ कहताहूं कि तेरी सबसेना नाश होजायगी सो आप हम सब लोगों को द्रोणाचार्य्य से रक्षित करो इस स्थानपर सत्य

से मिथ्या वचनही श्रेष्ठ है ५९। ६० जीवन के निमित्त मिथ्या बोलना मिथ्याके पापों से स्पर्श नहीं कियाजाता है स्त्रियोंमें विवा-होंमें और गौवोंके भोजनोंमें और ब्राह्मणों के प्रिय करनेमें मिथ्या कहनेका पातक नहीं है उन दोनोंके इसप्रकार वार्त्तालाप करनेपर भीमसेन महात्मा द्रोणाचार्य्य के मारने के उपाय को सुनकर इस वचन को बोले हे महाराज तेरी सेना के मथनेवाले मालवेन्द्र राजाका हाथी ६१।६२ जोकि ऐरावत के समान अश्वत्थामा नामसे प्रसिद्धथा वह युद्धमें पराक्रम करके मारागयाथा तब मैंने द्रोणाचार्य्य सेकहा था कि हे ब्राह्मणअश्वत्थामा मारागयाहै इससे तुमभी युद्धसे लौटो परन्तु उस पुरुषोत्तमने मेरेकहनेपर श्रद्धा और विश्वास नहीं किया ६३।६४ सोतुम विजयाभिलाषीहोकर गोविन्दजीके वचनोंको अंगीकारकरो हे राजा आप द्रोणाचार्य्यसे अश्वत्थामाको मराहुआ कहो ६५ वह उत्तम ब्राह्मण तुम्हारे इसबचनकेकहनेपर फिर कदापि युद्धनहींकरेंगे हे राजा आप इसलोक में सत्यवक्ता प्रसिद्धहो ६६ हे महाराज उसके उसबचनको सुनकर और श्रीकृष्णजीके बचनोंसे चलायमान होकर होतव्यताके वशीभूतहोकर कहना आरंभकिया ६७ मिथ्यापनेके वचनोंमें डूबे विजयमें प्रवृत्तचित्त युधिष्ठिर हाथीके शब्दको गुप्तकरके अश्वत्थामा हाथीमारागया यह शब्दबोला प्रथम उसका रथ पृथ्वीसे चारउंगल ऊंचारहताथा उस बचनके कहतेही उसके घोड़ोंने पृथ्वीको स्पर्शकिया ६८। ६९ महारथी द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिर के उसबचनको सुनकर पुत्रके शोकसे दुःखी जीवनसे नि-राशहुये ७० ऋषियोंके बचनोंसे अपनेको महात्मापाण्डवोंकाअपरा-धी मानतेहुये द्रोणाचार्य्य अपने पुत्रको मराहुआ सुनकर औरधृष्ट-द्युम्नको देखकर व्याकुल और अत्यन्त अचेतहोगये हे शत्रुविजयी राजा धृतराष्ट्र फिर पूर्व्वके समान युद्धनहीं करसके ७१।७२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिद्विनवतितमोऽध्यायः १९२॥

एकसौतिरानबेका अध्याय॥

संजयबोले कि राजा पांचालका पुत्र धृष्टद्युम्न उन द्रोणाचार्य्य को अत्यन्त व्याकुल और शोक से विदीर्ण चित्त देखकर दौड़ा १ जो कि राजा द्रुपदने बड़ेयज्ञ में पूजन करके द्रोणाचार्य्यकेनाशके निमित्त ज्वलितरूप अग्नि से प्राप्त कियाथा २ द्रोणाचार्य्यके मारनेके अभिलाषी बड़ी अग्निके समान प्रज्वलित उस धृष्टद्युम्नने बादल के समान शब्दायमान घोर और दृढ़ प्रत्यंचावाले अजर दिव्य और विजय करनेवाले धनुषको और विषैले सर्पकी समान अग्निरूप बाणको लेकर ३ उस धनुषपर चढ़ाया ४ धनुषके मंडल और प्रत्यंचा के मध्यमें उस बाणका रूप ऐसेप्रकारका हुआ जैसे कि मण्डल रखनेवाले प्रकाशमान सूर्य्यका रूप बादलों के मध्यमें होता है ५ सेनाके लोगोंने धृष्टद्युम्नके उठायेहुये उस ज्वलितरूप धनुषको देखकर समयका अन्त होनाजाना ६ प्रतापवान् भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने उसके चढ़ाये हुये उस बाणको देखकर शरीरके अन्त समय को जाना ७ हे राजेन्द्र इसके पीछे आचार्य्यजो उस बाणके हटानेके लिये बड़े उपाय में नियतहुये परन्तु इन महात्माजोकेअस्त्र प्रकट नहीं हुये ८ बाणों को छोड़ते हुये उनके चारदिन और एक रात्रि व्यतीत हुये और दिनके तीसरे पहरमें उनकेबाणों को नष्टता होगई ९ पुत्र के शोकसे पीड़ामान वह आचार्य्यजो बाणों की विनाशताको पाकर नानाप्रकारके दिव्यअस्त्रों की अप्रसन्नतासे १० और ऋषियों के वचनों की प्रेरणासेअस्त्रोंके त्यागने को उत्सुकहुये और पूर्वके समान क्रोधयुक्त होकर नहीं लड़े ११ हे राजा इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन द्रोणाचार्य्य के रथको पकड़कर धीरेपने से यह वचन बोले १२ कि प्रत्यक्ष है कि अपनेही कर्म में संतोष न करनेवाले शिक्षायुक्त ब्रह्मबन्धु आपजो युद्धनहीं करते तो क्षत्रियों के समूहोंका नाशनहीं होता १३ सबजीवोंके मध्यमेंकिसी को दुःख न देनाही धर्म कहाहै उसके मूलरूप ब्राह्मण हैं औरआप

तो ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ हैं १४ हेब्राह्मणके पुत्र और धनकी इच्छा से चांडाल और अज्ञानीके समान अपनी अज्ञानतासेम्लेच्छोंके समूह और अन्य २ प्रकार के क्षत्रिय समूहोंको मारकर १५ धर्म न जाननेवालेके समानदुष्टकर्म में प्रवृत्त होकर तुमएक पुत्रके निमित्त अपने कर्मपर नियत बहुत क्षत्रियों को मारकर क्यों नहीं लज्जायुक्त होतेहो १६ जिसके अर्थ अस्त्रों को लेकर औरजिसको निमित्त मानकर जीवतेहो अब पीछेकी ओरसे नहीं जानाहुआ वह आपका पुत्र पृथ्वीपर पड़ा सोता है धर्मराजका वह बचन मिथ्या और संदिग्ध मानने के योग्य नहीं है भीमसेनके इन बचनों को सुनकर धर्मात्मा द्रोणाचार्य्य उस धनुष को छोड़कर सब अस्त्रों के त्यागने की इच्छासे बोले हे बड़े धनुषधारी कर्ण कृपाचार्य्य दुर्य्योधन १९ युद्धमेंउपायकरोयही मैं बारंबारकहताहूं पांडवोंसे तुम्हारा कल्याण होय मैंअब शस्त्रोंको त्याग करताहूं २० हेमहाराज वहां अश्वत्थामा को भी पुकारा औरयुद्धमें शस्त्रोंको रथकेउपस्थपर रखकर २१ सब जीवमात्रको अभयतादी औरयोगमेंप्राप्तहुये उसकेपीछे प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने इनके उस अवकाशको जानकर २२ उस घोरधनुष को बाण समेत रथपररखकर खड्ग को ले अपने रथसे कूदकर अकस्मात् द्रोणाचार्य्य के पासगया २३ धृष्टद्युम्नके आधीनतामेंवर्त्तमान उसदशावाले द्रोणाचार्य्यको देखकर सब संसारके गुप्त और प्रकट जीव हाहाकार करने वाले हुये २४ उन्होंने बड़ाहाहा कार करके कहा कि आश्चर्य्य और धिक्कारहै कि द्रोणाचार्य्यभी शस्त्रोंको रखकर समुद्रसे प्रवाहमें प्रविष्ट हुये २५ बड़े तपस्वी ज्योतिरूप द्रोणाचार्य्यनेभी इसप्रकारकहकर औरयोगमें नियतहोकरप्राचीनपुरुषशरीररूपीपुरीमेंनिवासकरनेवालेपरब्रह्मकोमनसेप्राप्तकिया २६ मुखको कुछ ऊंचाकर छातीको आगेसे रोक नेत्रों को बन्दकर सतोगुण में नियत हृदय में धारणाको धारण करके २७ ज्योतिरूप महातपस्वी ओम् इस अविनाशी और श्रेष्ठतर एकाक्षर प्रभु देवताओंके ईश्वरको ध्यानकरके २८ वह आचार्य्यजी साक्षात्

सत्पुरुषोंसे दुष्प्राप्य स्वर्गको चढ़े उस दशावालेद्रोणाचार्य्यके होने पर हमारी बुद्धिमेंआया कि दो सूर्य्यहैं २६ प्रकाशोंसे पूर्ण आकाश एक से रूपका हुआ और भारद्वाजरूपी सूर्य्य उस सूर्य्यके प्रकाश में प्राप्त हुआ ३० फिर वह ज्योति पलमात्रमेंही गुप्त होगई तब अत्यन्त प्रसन्न मन देवताओंके किलकिला शब्द हुये ३१ ब्रह्मलोकमें द्रोणाचार्य्यके जाने और धृष्टद्युम्न के प्रसन्न होनेपर हम पांचमनुष्य योनियोंने ३२ उसपरमगतिपानेवाले योगीमहात्माको देखा मैं पांडव अर्जुन, भारद्वाज का पुत्र अश्वत्थामा, यादव वासुदेवजी, और धर्मपुत्र युधिष्ठिर इन पांचों के सिवाय अन्य सब लोगोंमें से किसीने भी उन बुद्धिमान् योगसे युक्त जाते हुये भारद्वाजजीकी महिमाको नहीं जाना वहब्रह्मलोक बड़ादिव्य देवताओं से भी गुप्त और सब से परेहैं ३५ परमगति प्राप्त करने वाले और उत्तम ऋषियों समेत योगमें नियत होकर ब्रह्मलोक को जाते उन शत्रुविजयी द्रोणाचार्य्य जी को अज्ञानीलोगोंने नहीं देखा फिर सब जीवों से धिक्कारो पाये हुये धृष्टद्युम्नने उस शस्त्र त्यागी और बाण समूहों से पीड़ित अंग रुधिर डालनेवाले द्रोणाचार्य्य के शरीर को ३६।३७ पकड़ लिया उस निर्जीव देह और कुछ न बोलनेवाले के शिरसमेत मस्तकको पकड़कर ३८ खड्गकेद्वारा शरीर से पृथक् किया भारद्वाज के गिराने पर बड़ी प्रसन्नता में युक्त ३६ खड्ग को घुमाते धृष्टद्युम्न ने सिंहनाद किया वह द्रोणाचार्य्यजी कानतक श्वेत बाल युक्त अवस्था में पिच्चासी वर्ष और प्रत्यक्षमें सोलह वर्ष के से विदित होते थे ४० हे राजा वह तेरेहीकारण से युद्धमें सोलह वर्ष की अवस्थावाले के समान युद्धमें घूमने वाले हुये उनके मारनेके समय महाबाहु कुन्तीका पुत्र अर्जुनबोला ४१ हे द्रुपदके पुत्र इस जीवते हुये आचार्य्य को मतमारो और सब सेनाके लोगभी पुकारे कि अवध्य हैं अवध्यहैं ४२ और दयावान् अर्जुन पुकार कर उसकी ओर को चला अर्जुन के और उन सब राजाओं के पुकारने पर ४३ धृष्टद्युम्न ने नरोत्तम द्रोणाचार्य्यको

रथ शय्यापर मारा फिररुधिर से भरे गात्र वह द्रोणाचार्य्य रथसे पृथ्वीपर गिर पड़े ४४ और फिर वह अजेय रक्त वर्णवाले सूर्य्यके समान वर्त्त मानहुये इसप्रकार सेनाके लोगोंने युद्ध में उस मृतक कोदेखा ४५ हे राजाफिर बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नने भारद्वाज के शिरको लेकर आपके पुत्रोंके सन्मुख फेंकदिया ४६ आपके शूरवीर भारद्वाजके शिरको देखकर भागनेमें प्रवृत्त चित्तहोकरसबदिशाओं को भागे ४७ हेराजा जब द्रोणाचार्य्य स्वर्गमें नियत होकर नक्षत्र मार्गमें प्रवेशकर गये तब मैंने द्रोणाचार्य्यको मराहुआ देखा ४८ सत्यवती के पुत्रव्यास ऋषिकी क्रिया से ज्वलितरूप निर्धूम अग्नि केसमान ४६ स्वर्गको प्राप्तकरके जानेवाले बड़ेतेजस्वी द्रोणाचार्य्य कोदेखा द्रोणाचार्य्यके मरनेपर उत्साहसे रहित कौरव पांडव और संजय ५० बड़ेवेगसेदौड़े तबसेनाछिन्नभिन्नहोगई जिनकेकि बहुतसे मनुष्य मारेगयेथे वह तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे नाशहुये ५१ और आपके शूरबीर द्रोणाचार्यके मरनेपर पराजय और परलोकके बड़े भारी भयको पाकर निर्जीवोंके समानहुये ५२ दोनोंलोकों सेरहित और भारद्वाजके शरीरको चाहते राजाओंने मनसेधैर्यको नहींपाया ५३ परन्तु असंख्य धड़ों से पूरित युद्धभूमिमें न जासके हेमहाराज फिर पांडवोंने विजय को पाकर और परलोकमें बड़े यशको प्राप्तकर के ५४ बाणशंखोंकेशब्दोंसमेत बड़ेसिंहनादोंकोकियाइसकेपीछे भीम सेन और धृष्टद्युम्न ५५ परस्पर मिलकर सेना में दिखाई पड़े तब भीमसेन शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न से बोलेकि ५६ हेपर्वतकेपौत्र युद्धमें पापीकर्ण और दुर्योधनके मरनेपर फिरमैं तुझविजयीसेमिलूंगा ५७ बड़ी प्रसन्नतासे युक्त पांडव भीमसेन ने इतना कह कर भुजाओं के शब्दोंसे पृथ्वीको कंपित किया ५८ युद्धमें उसके शब्द से भयभीत और भागने में प्रवृत्त चित्त आपके शूरबीर क्षत्री धर्म को छोड़ कर भागे ५६ हे राजा तब पांडव लोग विजय को पाकर प्रसन्न हुये और युद्धमें शत्रुओंका नाश करके बड़ा आनन्द पाया ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्रोणवधेशतोपरित्रिनवतितमोऽध्यायः १९३ ॥

एकसौचौरानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा द्रोणाचार्य्य के मरने पर कौरव लोग शस्त्रोंसे पीड़ामान और जिनके बड़े वीर मारे गये पृथ्वीपर पड़ेहुये शोकसे पूर्ण हुये १ और शत्रुओंको उदीर्ण अर्थात् उत्साह युक्त जान कर वारंवार कंपायमान अश्रुपातोंसे पूर्णनेत्र भयभीत होकर दुखी हुये २ फिर उत्साहसे रहित मूर्च्छासे म्लान लोगोंने बड़े पीड़ित शब्दके साथ आपके पुत्रको ऐसे मध्यवर्त्ती किया ३ जैसे कि पर्व्व समयमें हिरण्याक्षके मरनेपर कंपायमान रजस्वलादशोंदिशाओंको देखने वाली अश्रुपातोंसेपूर्ण दैत्योंकी स्त्रियोंने कियाथा ४ नीचमृग के समान भयभीत और उन लोगोंसे संयुक्तवह आपका पुत्र राजा दुर्योधन नियत होनेको समर्थ नहीं हुआ ५ हे भरतवंशी क्षुधातृषा से पीड़ित और म्लान चित्त वह आपके शूरवीर ऐसे उदास होगये जैसे कि सूर्य्यसे अत्यन्त तप्त हुये मनुष्य होतेहैं ६ जैसेकि सूर्य्यका गिरना समुद्र का सूखना मेरुपर्व्वत का चलायमान होना और इन्द्रका पराजय होना होय ७ उसी प्रकार भारद्वाज द्रोणाचार्य्यके उस असह्य मरकर गिरनेको देखकर अत्यन्त भयभीत कौरव लोग भयकरके भागे ८ भयसे पूर्ण गान्धारका राजा शकुनी स्वर्ण मयी रथवाले द्रोणाचार्य्य को मरा हुआ सुनकर भयभीत रथियों समेत भागा ९ सूतका पुत्र कर्णभी उस वेगवान् भागी हुई पताका धारी बड़ी सेनाकोसाथ लेकर भयसे हट गया १० मद्रदेशियों कास्वामी शल्य भी रथ हाथी और घोड़ोंसे पूर्ण अपनी सेनाको आगे करके देखता हुआ हट गया ११ और जिसके बहुतसे बड़ेबड़ेशूरवीर मारे गये उस सेनासे युक्त कृपाचार्य्यजी बड़ा खेदहै बड़ा खेदहै यह कहते हुये चले गये १२ हे राजा शेष बचेहुये भोजवंशी कलिङ्ग देशी आरट्ट देशी और वाल्हिकों की सेना से युक्तकृतवर्मा अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से चले गये १३ और पदातियों के समूहसे युक्त भय भीत और भयसे पीड़ितउलूक भी वहां गिराये

हुये द्रोणाचार्य्यको देखकर भागा १४ दर्शनीय तरुण अवस्था युव
राज पनेका चिन्ह रखने वाला दुश्शासन भी हाथियों समेत भागा
१५ वृषसेन गिराये हुये द्रोणाचार्य्यको देखकर दश हजार रथ
और तीन हजार हाथीको साथ लेकर शीघ्रतासे चला १६ हे महा
राज हाथी घोड़े और रथोंसे युक्त पदातियों से वेष्टित महारथी
दुर्य्योधन चल दिया १७ सुशर्मा गिराये हुये द्रोणाचार्य्यको देखकर
अर्जुनकेमारने से बाकी बचे हुये संसप्तकोंके समूहोंको लेकर भागा
१८ और सेनाके लोग स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्यको मृतक
हुआ देखकर हाथी और रथों पर सवारहोकर घोड़ोंको छोड़ २ कर
सब ओरसे भागे १६ उस समय कौरव लोगोंमें कोई पिता कोई
भाई मामा पुत्र और बराबर वालोंको शीघ्रगामी करते हुये भागे
२० उसीप्रकार कोई २ सेनाओंको भानजोंको और नातेदार आदिक
मनुष्योंको चलायमान करते दशोंदिशाओंको भागे २१ कोई बि-
खरे हुये केश गिरते पड़ते पृथक् २ साथ दौड़नेवाले औरयह सेना
नहीं है यह मानते उत्साह और पराक्रमों से रहित हुये २२ और
हे समर्थ बहुत से आपके शूरवीर कवचोंको भी त्याग २ कर भागे
और सबसेनाके लोगोंको परस्परमें पुकारा २३ किठहरोठहरोपरंतु
आप वहां नियत नहीं हुये किसी २ ने जिसका सारथी मारा गया
उस रथसे अच्छे २ अलंकृत घोड़ोंको खोलकर उनपर सवारहो
शीघ्रही घोड़ों को चलायमान किया २४ उस प्रकार भय भीत
रूप पराक्रम से रहित सेनाके भागजाने पर विरोधी ग्राहके समान
अश्वत्थामा शत्रुओं के सन्मुख गया २५ शिखंडी आदिक प्रभद्रक,
पांचाल चन्देरीदेशी, और केकयों के साथ उसका बड़ाभारी युद्ध
हुआ २६ और युद्ध में दुर्म्मद मतवाले हाथीके समान पराक्रमी
और कुछेक संकट से रहित अश्वत्थामा पांडवों की बहुत प्रकार की
सेनाओंको मार कर २७ भागने में प्रवृत्त दौड़ती गिरती हुई सेना
को देखकर दुर्योधन से यह बचन बोले २८ हेभरतबंशी यह सेना
भयभीतोंके समान क्यों भागतीहै हे राजेन्द्र इस भागने वाली

सेनाको युद्धमें नियत नहीं करते हो २६ और पूर्व्व के समान तुम अपने स्वभावमें भी नियत नहीं हो और हेराजा यह कर्ण आदिक भी नहीं भिड़तेहैं ३० कभी किसी पहले युद्धमें सेना नहीं भागी हे भरतवंशी महाबाहु क्या तेरी सेना की कुशल है ३१ हे कौरव राजा दुर्योधन किसके मरने पर आपके उत्तम रथियोंकी इससेना ने ऐसी दशाको पायाहै यह सब मुझसे कहो ३२ तबवह राजाओं में उत्तम दुर्योधन अश्वत्थामा के इन वचनों को सुनकर घोर और अप्रिय वृत्तान्तके कहने को समर्थ नहीं हुआ ३३ टूटी हुई नौका के समान शोक समुद्रमें डूवा हुआ अश्रुपातोंसे आर्द्र शरीर आपका पुत्ररथ पर चढ़ेहुये अश्वत्थामाको देखकर ३४ लज्जासे युक्तहोकर कृपाचार्य्य से यह वचन बोला कि आप का कल्याण होय आपही यहां के उस सब वृत्तान्तको कहिये जैसे कि यहसब सेना भागीहै ३५ हे राजा इसके पीछे वारम्बार पीड़ित होते हुये कृपाचार्य्यने अश्वत्थामासे वह सब वृत्तान्त कहा जैसेकि द्रोणाचार्य्य गिराये गयेथे ३६ कृपाचार्य्य बोले कि हमने पृथ्वी पर अत्यन्त उत्तम रथी द्रोणाचार्य्यको आगे करके केवल पांचालोंकेही साथमें युद्धकोजारी किया ३७ उसके पीछे जारी होने वाले युद्धमें कौरव और सोमक लोग मिल गये और परस्पर सन्मुख गर्जने वालोंने शस्त्रोंसे शरीरों को गिराया ३८ इस प्रकार युद्धके जारी होने और युद्धमें धृतराष्ट्र के पुत्रों के विनाशवान् होने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त तेरे पिताने अस्त्रको प्रकट किया ३९ फिर ब्रह्मअस्त्रके जारी करने वाले नरोत्तम द्रोणाचार्य्यने भल्लोंसे हजारों सेनाके लोगों को मारा ४० कालसे प्रेरित पांडव, केकय, मत्स्य, और पांचालोंकी सेना युद्धमें द्रोणाचार्य्यके रथको पाकर अधिक तम नाश युक्त हुई ४१ द्रोणाचार्य्यने ब्रह्मअस्त्रके योगसे हजारशूरवीर और दो हजार हाथियों को मृत्यु वश किया ४२ कानतक श्वेतबाल श्यामवर्ण अवस्था में पच्चासी वर्षके वृद्ध द्रोणाचार्य्यजी सोलहवर्ष वालेकी अवस्थाके समान युद्ध में घूमने लगे ४३ सेनाके पीड़ामान होने और राजाओंके मरने पर

क्रोधके बशीभूत पांचालोंने मुखोंको फेरा ४४ उनके कुछेकपृथक्२ होकर मुखोंके फेरने पर वह शत्रुओंके बिजय करनेवाले द्रोणाचार्य्य दिव्य अस्त्रोंको प्रकट करते उदय हुये सूर्य्यके समान होगये ४५ वह बाणरूपी किरण रखनेवाले आपके पिता प्रतापी द्रोणाचार्य्य पांडवों के मध्यको पाकर मध्यान्हके सूर्य्यके समान दुःखसे देखने के योग्य हुये ४६ सूर्य्यके समान शोभायमान द्रोणाचार्य्य से भस्म होतेहुये वहसब वीर पराक्रमसे हीन निरुत्साह और अचेत हुये ४७ पांडवों के बिजयाभिलाषी मधुसूदनजी द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ामान सब लोगोंको देखकर यह बचन बोले कि ४८ यह शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महारथी द्रोणाचार्य्य मनुष्यतो क्या किन्तु इन्द्रसे भी बिजय करने को योग्य नहींहै ४९ सो हे पांडव तुमधर्म को छोड़ कर बिजयकी रक्षा करो और वह उपाय करो जिससे कि यह स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्य तुम सबको युद्धमें न मारें ५० यह मेरी बुद्धिमें आताहै कि यह अश्वत्थामाके मरने पर कभी युद्ध नहीं करेंगे इस हेतुसे सेनाका कोई मनुष्य युद्धमें अश्वत्थामाके मरणको कहे ५१ कुन्तीके पुत्र अर्जुनने इस बातको अंगीकार नहीं किया अन्य सब लोगोंने इसको स्वीकार किया औरयुधिष्ठिर ने सब के कहने से बड़े कष्ट और खेदसे स्वीकार किया ५२ और भीमसेन लज्जा युक्त होकर आपके पितासे बोले कि अश्वत्थामा मारा गया तेरे पिताने उसका विश्वास नहीं किया ५३ उस बात को मिथ्या और अपने पुत्रको प्रियमानने वाले पिताने तेरे मरने और जीवने को युद्ध भूमिमें राजा युधिष्ठिर से पूछा ५४ मिथ्या के भयमें डूबे और बिजयमें प्रवृत्त चित्त युधिष्ठिरने भीमसेन के हाथसे युद्धभूमिमें मारे हुये उस अश्वत्थामा नाम बड़ेहाथीको ५५ जोकि पर्व्वत के समान शरीर मालवीय क्षत्रीका हाथी था देखकर उच्चस्वरसे उन द्रोणाचार्य्यसे यह कहा कि ५६ जिसके निमित्त हाथमें शस्त्रको लेतेहो और जिसको देखकर जीवते हो वह अश्वत्थामा सदैव प्यारा पुत्र युद्धमें गिराया गया ५७ और मरा हुआ

पृथ्वी पर ऐसे सोताहै जैसे कि वनमें सिंहकाबच्चा होताहै वह राजा मिथ्याके दोषोंको जानता हुआ भी अल्पक्षमें उनसे बोलाकि हाथी मारा गया ५८। ५९ वह द्रोणाचार्य्य युद्धमें तुझको मरा हुआ सुनकर दुखित और पीड़ित होकर दिव्य अस्त्रोंका चलाना बन्द करके पूर्व्वके समान नहीं लड़े ६० राजा द्रुपदका निर्दय कर्मा पुत्र उस अत्यन्त व्याकुल और शोकमें मग्न अचेत हुये द्रोणाचार्य्यको देखकर दौड़ा ६१ फिर सिद्धान्तमें सावधान वह द्रोणाचार्य्य लोकमें विहित और योग्य मृत्युको देखकर दिव्य अस्त्रोंको त्यागकर युद्धभूमिमें शरीरके त्यागने को बैठ गये ६२ इसके पीछे धृष्टद्युम्नने वाम हस्तसे उनके बालोंको पकड़कर सबवीरोंकेपुकारतेहुयेभी उनके शिरको काटा ६३ सब ओरसे वीरोंने कहा कि यह मारने के योग्य नहीं है और धर्मज्ञ अर्जुन भी रथसे उतर शीघ्रभुजा को उठाये हुये बारंबार यह बात कहता हुआ दौड़ा कि गुरूजीको मारना मत सजीव ले आओ ६४। ६५ हे नरोत्तम इसरीतिसे कौरवों के और अर्जुन के निषेध करने परभी उस निर्दयीने आपके पिताको मारा ६६ इसके पीछे भयसे पीड़ामान सब सेनाकेलोग भागे और हे निष्पाप हमभी तेरे पिताके मरनेपर उत्साहसे रहित हुये ६७संजयबोलेकि अश्वत्थामाने युद्धमें पिताके उसमरणको सुन कर चरणसे घायलसर्पकेसमान कठिनक्रोधकिया ६८ हे श्रेष्ठधृतराष्ट्र इस के पीछे क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ऐसे अत्यन्तक्रोध से पूर्ण हुआ जैसेकि बहुतसे इन्धनको पाकर अग्नि प्रज्वलित होतीहै ६९ तब हथेली से हथेली को और दांतों से दांतों कोघायल करके दबा या और सर्पके समानश्वास लेताहुआ रक्तवर्ण नेत्रोंसेयुक्तहुआ ७०

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विनवतीपरिचतुर्नवतितमोऽध्यायः १९४॥

एकसौपंचानबेका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय अधर्म से धृष्टद्युम्न के हाथसे मरे हुये वृद्धब्राह्मण पिताको देखकर अश्वत्थामाने क्या कहा १ जिसकेपास

वायव्य, वारुण, आग्नेय, पराक्रमी ब्राह्म्यस्त्र, ऐन्द्र और नाराय-
णास्त्र यह सब सदैव वर्त्तमान थे २ अधर्मसे युद्धमें धृष्टद्युम्न केहाथ
से मारेहुये उस धर्मके अभ्यासी आचार्य्य जी को सुनकर अश्व-
त्थामा ने क्या कहा ३ जिसने इस लोकमें महात्मापरशुरामजी
से धनुष और वेदको पाकर गुण ग्राहकने अपने दिव्यअस्त्रों को
पुत्रके अर्थ उपदेश किया ४ इस लोकमें मनुष्य एक अपनेही पुत्र
को अपनेसे अधिक गुणवान चाहते हैं और दूसरेको किसी दशामें
भी नहीं चाहते ५ महात्मा आचार्य्यों केपास गुप्त विद्या होती हैं
वह सब विद्या भी वह अपने पुत्रकेही निमित्त देतेहैं अथवा आज्ञा-
कारी शिष्यको देतेहैं ६ हे संजय वह शिष्य शूरबीर अश्वत्थामा उ-
स सब विद्याको मुख्य २ बातों समेत प्राप्त करके युद्धमें द्रोणाचा-
र्य्य के समान हुआ ७ शस्त्र विद्यामें परशुरामजी के समान युद्ध में
इन्द्रके तुल्य पराक्रममें सहस्त्राबाहु के समान बुद्धिमें बृहस्पति जी
के समतुल्य ८ बुद्धिकी स्थिरतामें पर्वत के समान तेजमें अग्निके
सदृश तरुणता पूर्वक गंभीरतामें समुद्रके समान और क्रोधमें वि
षधर सर्पके समानहै ९ वह इस संसारमें सबसे श्रेष्ठरथी दृढ़ धनुष
धारी श्रम से रहित युद्धमें घूमता हुआ बायुके समान शीघ्रगामी
और यमराजके समान क्रोधयुक्तहै १० जिस धनुषधारीने बाणोंकी
बर्षासे पृथ्वीको पीड़ित किया और सत्यपराक्रमी होकर युद्ध में
पीड़ाको नहींपाया ११ वेदव्रतसे स्नान किया हुआ धनुर्वेदका पा-
रगामी महासमुद्रके समान ऐसे व्याकुलता से रहितहै जैसे कि
दशरथ जीके पुत्र श्रीरामचन्द्र जीथे १२ अधर्मसे युद्धमें धृष्टद्युम्नके
हाथसे मारेहुये उस धर्माभ्यासी आचार्य्यको सुनकर अश्वत्थामाने
क्या कहा १३ जैसेकि धृष्टद्युम्नका कालरूप यज्ञसेनका सुतहुआ
उसी प्रकार द्रोणाचार्य्यका कालरूप द्रुपदका पुत्र धृष्टद्युम्न हुआ
१४ उस निर्दयपापी क्रूर अदीर्घदर्शी धृष्टद्युम्न के हाथसेमारे हुये
उन तेजस्वी आचार्य्यजीको सुनकर अश्वत्थामाने क्या कहा १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशतोपरिपंचनवतितमोऽध्यायः १९५ ॥

एकसौछियानवेका अध्याय॥

संजय बोलेकि वह नरोत्तम अश्वत्थामा छलसे पापकर्मी धृष्टद्युम्न के हाथसे मारे हुये पिताको सुनकर क्रोधसे और अश्रुपातों से पूर्ण मुखवाला हुआ १ हे राजेन्द्र उस क्रोधयुक्त का मुख ऐसा प्रकाशमान दिखाई पड़ा जैसेकि प्रलयके समय जीवधारियों केमारनेके अभिलाषी कालका मुख होताहै २ फिर अश्रुपातों सेयुक्तदोनों नेत्रोंको बारंबार पोंछ और साफ़ कर के क्रोधसे श्वासाओं को लेताहुआ दुर्योधनसे यहवचनबोला कि ३ जिस प्रकार से शस्त्रोंके त्यागनेवाले मेरेपिता नीचके हाथसे मारेगये और धर्मध्वजाधारी युधिष्ठिरने. जो पाप किया वह मेरा जाना हुआ है ४ मैं ने धर्म पुत्रके दुष्कर्म युक्त निर्दयताको सुना यद्यपि युद्धमें प्रवृत्त वीरों की विजय और पराजय दोनों अवश्य होतीहैं ५ हे राजाइन दोनों में से जो युद्धमें न्यायके अनुसार युद्ध कर्त्ताओंका मारनाहोताहै उसी को अधिक प्रशंसाकी जाती है वह दुखदायी नहीं जान पड़ता है जैसेकि उत्तम ब्राह्मणोंसे देखा गयाहै वह मेरा पिता निस्सन्देह वीरोंके लोकोंमें गया ७ हे पुरुषोत्तम वह शोचके योग्यनहीं समझा जाताहै जिसने कि धर्म से प्रवृत्त होकर विनाशको पाया और जो कि सब सेनाओंके देखतेहुये उनके केशों का पकड़ना हुआहै८ यह बात मेरे मर्मोंको भेदन कर रही है हायधिक्कार है मुझको जो मेरे जीवते हुये मेरे पिताके केश पकड़े गये ९ अब कौनसे संतान वाले लोग अपने पुत्रोंकी अभिलाषा करेंगे १० जोकामसे क्रोध से अविज्ञानसे दर्पसे लड़क पनसे धर्मके विपरीत बातोंको करते हैं वह पराजित होतेहैं सो इसस्थान पर धृष्टद्युम्नने यह अधर्म से कर्म कियाहै ११ उस निर्दयी धृष्टद्युम्न ने निश्चय करके मेरा अनादर करके ऐसा कर्म किया इसहेतुसे धृष्टद्युम्न उसके भयानक फलको देखेगा १२ औरमिथ्यावादी पांडव युधिष्ठिरने भी बहुतबुरानिन्दित कर्म किया जो आचार्यजी को शस्त्रों से रहित किया १३ अब उस

धर्म राजके रुधिरको पृथ्वी पान करेगी हे कौरव मैं सत्ययज्ञ और वापी आदिक के फलकी शपथ खाताहूं १४ मैं पांचालोंको बिना मारे हुये अपने जीवन को नहीं चाहता मैं सब उपायोंसे पांचालों के मारनेमें उद्योग करूंगा १५ और युद्धमें पाप कर्मी धृष्टद्युम्न को किसी कर्म करके अवश्य मारूंगा १६ जब पांचालोंको मार लूंगा तभीशान्तीकोपाऊंगा हेपुरुषोतम कौरव मनुष्य अपनेपुत्रको जिस निमित्त चाहतेहैं १७ वह बुद्धीसे प्राप्त होने वाले पुत्र इस लोक और परलोक में बड़े भयसे रक्षा करतेहै बांधवोंसे रहित के समान मेरे पिताने इस दशाको पाया १८ कि मुझ सरीके पर्व्वत के समान पुत्र और शिष्यके जीवते हुये युद्ध भूमिमें उस दशाको पाया मेरे दिव्य अस्त्रोंको धिक्कार भुजाओंको धिक्कार और पराक्रम को भी बहुत धिक्काहै १९ कि मुझ सरीके पुत्रको पाकर भी जिस केशाल पकड़े गये हे भरतर्षभमैं वैसाही कर्म करूंगा २० जिससे कि पर लोकगामी अपने पिताके ऋणसे उऋण हूंगा यद्यपि उत्तम पुरुषको अपनी प्रशंसा करनी योग्य नहींहै २१ तथापि अब मैं सत्य २ अपने पिताके मारनेको न सहकर अपने पुरुषार्थको दिखलाऊंगा और श्रीकृष्णजी समेत सब पांडव लोग मुझ सब सेनाओं के मर्द्दन करनेवाले और प्रलय करनेवाले के पराक्रम को देखेंगे अब देवता गन्धर्व असुर राक्षस २२।२३ और उत्तम मनुष्य भी युद्ध में मुझ रथसवारके बिजय करनेको समर्थ नहीं हैं इसलोक में मेरे और अर्जुनके सिवाय दूसरा अस्त्रज्ञकहीं नहीं है २४ सेनाके मध्य वर्ती होकर मैंही देवसृष्टो लोगोंसे प्रयोक्त अस्त्रोंका प्रकट करने वाला ऐसाहूं जैसे कि प्रकाशित ज्वलित अग्नियोंके मध्यमें सूर्य्य होताहै २५ अब इस बड़ेयुद्धमें धनुषसे वारंवार चलाये हुये बाण मेरे पराक्रमको दिखलाते हुये पांडवोंको मथन करेंगे २६ हे राजा आप इस युद्धभूमिमें मेरे तीक्ष्ण बाणोंसे पूर्ण सब दिशाओं को धाराओंसे संयुक्तके समान देखेंगे २७ सब ओरसे भयानक शब्द करने वाले बाणजालों को फैलाता शत्रुओंको ऐसे गिराऊंगा जैसे

कि बड़े २ वृक्षोंको वायु गिराताहै २८ हे कौरव जो यह अस्त्रवि-
धान संचार समेत मेरे पास है उस अस्त्रको न अर्जुन श्रीकृष्ण
भीमसेन नकुल सहदेव राजा युधिष्ठिर २९ शिखंडी सात्यकी
और न वह दुरात्मा धृष्टद्युम्न जानताहै ३० पूर्व्व समयमें सन्मु-
ख नियत होकर मेरे पिताने विधिके अनुसार ब्राह्मण रूप श्रीना-
रायण जीके अर्थ भेट निवेदन करी ३१ फिर उस भगवान्‌ने आप
उसभेट को अंगीकार करके वरप्रदान मांगने की आज्ञाकरी तब
मेरे पिताने नारायण नाम अस्त्रको मांगा ३२ हे राजा इसके पी-
छे वह देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् मेरे पितासे बोले कि युद्ध में
तेरे समान दूसरा कोई मनुष्य कहीं नहीं होगा ३३ हे ब्रह्मन् यह
अस्त्र बिना विचार के किसी दशामें भी छोड़ना न चाहिये यह अस्त्र
शत्रुको बिनामारे हुयेकभी लौटकर नहीं आताहै ३४ हे ब्रह्मन् यह
बात जानने के योग्य नहींहै कि कैसे मारना चाहिये निश्चय करके
यह अस्त्र न मारनेके योग्यको भी मार सक्ताहै इसहेतु से इस अ-
स्त्रका प्रयोग सहसा नहीं करे ३५ फिर युद्धमें रथ और शस्त्रों का
त्याग करना और प्रार्थना करके शत्रुओंका शरणमें होना ३६ यह
योग महा अस्त्रकी शान्तीमें संयुक्तहै हे शत्रुओं के तपाने वाले सब
रीतिसे चलाया हुआ यहअस्त्र युद्धमें पीड़ादेताहुआ अवध्यों कोभी
मारताहै ३७ मेरे पिताने उसअस्त्रकोलेलिया तब प्रभु नारायणजी
ने मेरे पितासे कहा कि तुम अनेक प्रकारकी सब शस्त्रों की वर्षा
को ३८ इसअस्त्रके द्वारा काटोगे और युद्धमें तेजसे प्रज्वलित अ-
ग्निके समान होगे ऐसा कहकर वह भगवान् प्रभु अपने स्वर्ग को
चले गये ३९ वह नारायण नाम अस्त्र नारायण जीसे मिला और
पिताको प्रसन्न रखने से उसको मैंनेपाया मैं उस अस्त्रसे पांडव पां-
चाल मत्स्यदेशी और केकय लोगों को युद्ध में ऐसे भगाऊंगा जैसे
कि शचीपति इन्द्रअसुरोंको भगाताहै मैं जैसे २ चाहूंगा वैसेही वैसे
प्रकार के मेरे बाण होकर४०।४१ पराक्रमी शत्रुओंपर गिरेंगे हे
भरत वंशी युद्धमें वर्त्तमान होकर मैं अपनी इच्छानुसार पाषाणोंकी

भी वर्षाको बरसाऊंगा ४२ मैं लोहेके मुखवाले बाणोंसे महारथियोंको भगाऊंगा और तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षाको बरसाऊंगा ४३ मैं शत्रुओंका तपानेवाला होकर पांडवों को अनादर करके महानारायण अस्त्रसे शत्रुओंको मारूंगा ४४ अब मित्र ब्राह्मण और गुरूसे शत्रुता करने वाला अज्ञानी दुष्ट पांचालोंमें नीच धृतद्युम्न मेरे हाथसे जीवता हुआ नहीं बचसक्ताहै ४५ अश्वत्थामा के उस बचनको सुनकर सेनाने चारों ओर से मध्य बर्त्ती किया फिर सब पुरुषोत्तमोंने महाशंखोंको बजाया ४६ और प्रसन्न चित्त होकर हजारों दुन्दुभी समेत भेरियोंको बजाया इसीप्रकार खुर औरनेमियों से अत्यन्त पीड़ामान पृथ्वी अत्यन्त शब्दाय मान हुई ४७ उस कठोर शब्दने आकाश स्वर्ग और पृथ्वीको शब्दायमान किया तब बादलोंके समान उस शब्दको सुनकर ४८ रथियों में श्रेष्ठ पांडवों ने मिलकर और इकट्ठे होके बिचार किया और अश्वत्थामा ने उस प्रकारकी बातोंकोकहके आचमनको करके ४६ उसदिव्य नारायण अस्त्र को प्रकट किया ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषण्णवतितमोऽध्यायः १६६ ॥

एकसौसत्तानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे प्रभु फिर उस नारायण अस्त्रके प्रकट होने पर पीछे की ओरसे बायुचली और बिनाही बादलोंके गर्जना हुई १ पृथ्वी कंपायमान हुई महा समुद्र व्याकुल हुआ और समुद्र में मिलनेवालेझिरनेनदी आदिक उलटे फिरनेलगे २ पर्व्वतोंके शिखर गिरपड़े और मृगोंने पांडवी सेनाको बाम किया ३ सेना अन्धकार से व्याप्त हुई सूर्य्य प्रकाश से रहित हुआ और कच्चे मांसखाने वाले जीव अत्यन्त प्रसन्न के समान आपहुंचे ४ हे राजा देवता दानव और गन्धर्व भी भयभीतहुये उस बड़ी व्याकुलताको देखकर परस्पर वार्त्तालापं हुई ५ सब राजा लोग अश्वत्थामाके उस घोर रूप भयानक अस्त्रको देखकर बड़े पीड़ामान और भयभीत हुये ६

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें शोकसे अत्यन्त दुखी और पिताके मरने को न सहने वाले अश्वत्थामाके साथ सेनाओंके लौटनेपर ७ आते हुये कौरवोंको देखकर पांडवोंके मध्यमें धृष्टद्युम्नकीरक्षाके निमित्त कौनसा विचारहुआ हे संजय उसको मुझे समझा कर कहो ८ युधिष्ठिरने अस्त्रके छोड़ने से पूर्वही धृष्टद्युम्नके पुत्रों को विथासे घायल देखकर और फिर कठोर शब्दको सुनकर अर्जुन से कहा कि ९ हे अर्जुन जैसे वज्रधारी इन्द्रके हाथ से वृत्रासुरमारा गयाथा उसी प्रकार युद्धमें धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्य्यके मरने पर युद्धमें विजय की आशान करने वाले दुखी चित्त कौरवलोग अपनी रक्षामें एक मतकरके युद्धसे भागे १० । ११ कोईकोई व्याकुल राजालोग उन रथोंसे जो कि घूमतेथे और जिनके पार्ष्णि यंत्र टूटे और सारथी मारे गयेव पताका ध्वजा छत्रोंसे रहित हुये और जिन के कूबर गिर-पड़े१२नीढ़ टूटे उनरथोंसे दूसरे रथोंपर चढ़कर कोई भयसेविह्वल पदाती और आपही रथोंको शीघ्र चलाते टूटे अक्ष युग रथ चक्र वाले रथोंके द्वारा चारों ओरसे खेंचे जातेथे १३ कोई टूटे रथोंको छोड़कर पैदलही भागे और कोई घोड़ोंकी पीठपर ऐसे सवारथे कि-जिनका आधा आसन लटक रहाथा खिंचे हुये चले जातेथे १४ हाथियों के कन्धोंपर चिपटेहुये नाराचोंसे चलायमान आसन कितनेही शूरवीर बाणोंसे पीड़ित भागे हुये हाथियों के कारण से दशों दिशाओंको शीघ्रतासे गये १५ औरकितनेही वीर शस्त्र वर्मोंसेरहित सवारियों से पृथ्वी पर पड़े हुये और कितनेही युद्धकर्त्ता टूटे नीवी वाले रथ घोड़े और हाथियों से मर्दन किये हुये १६ औरबहुतसे शूरवीर हे पिता हेपुत्र इस रीतिसे पुकारते हुये भयभीत होकर भागे १७ मूर्च्छासे नाशवान बलवाले योद्धाओंने परस्पर नहीं पह-चाना और कितनेही वीर अत्यन्त घायल हुये अपने पुत्र पिता मित्र और भाइयोंको सवारियों पर बैठाकर कवचों को उतार के जलसे धोतेथे १८ द्रोणाचार्य्यके मरने पर सेना ऐसी दशाको प्राप्त होकर भागी धृतराष्ट्र बोले हे संजय फिर वह सेना किस कारण से लौटी

इसको तुमजानतेहो तो मुझसेकहो १६ वहांहींसते घोड़े और चिंघा-
ड़ते बड़ेहाथियोंके शब्द रथकी नेमियोंके शब्दोंसे युक्त सुनेजातेहैं २०
यह अत्यन्त कठोर शब्द कौरव सागरमें बारंबार बर्तमान होकर
कियाजाताहै औरमेरेशूरवीरोंको भी कंपायमान करताहै २१ जो यह
महा कठोर रोमांचकोखड़ा करने वाला शब्द सुनाजाताहै वह इन्द्र
समेत तीनों लोकोंको भी पराजय करेगा यह मेरामतहै २२ मैं मान
ताहूं कि यह भय उत्पन्न करने वाला शब्द वज्रधारी इन्द्रकाही है
द्रोणाचार्य्य के मरने पर साक्षात् इन्द्रही कौरवों के अर्थ सन्मुख
आताहै २३ युधिष्ठिरने कहा हे अर्जुन गुरूको मृतक सुनकर उत्तम
रथी अत्यन्त खड़े हुये रोमकूप और व्याकुलहैं यह बड़ा भयकारी
शब्द होताहै कौरवों में अब कौनसा महारथी उन भागे और छिन्न
भिन्न कौरवोंको नियत करके युद्धके निमित्त ऐसे लौटा रहाहै जैसेकि
युद्धमें देवताओंकाइन्द्र अपनी भागीहुई सेनाको लौटाताहै २४।२५
अर्जुन बोले कि जिसके पराक्रमके आश्रित और पराक्रम में नियत
कौरव लोग उग्र कर्मके निमित्त आत्माको प्रवृत्त करके शंखोंको बजा
तेहैं २६ हे राजा तुमको जो यह सन्देहहै कि शस्त्र त्यागने वाले
गुरूजीके मरने पर यह कौन पुरुष धृतराष्ट्रके भागे हुये पुत्रों को
नियत करके गर्जना करताहै २७ उस लज्जावान महाबाहुमतवाले
हाथीके समान चलने वाले व्याघ्रसदृश मुख उग्र कर्मा कौरवों को
निर्भयता उत्पन्न करने वाले २८ को जिसके कि उत्पन्न होने पर
द्रोणाचार्य्यने एक हजार गौवें बड़े योग्य ब्राह्मणों के अर्थ दानकी
थीं वही अश्वत्थामा इस गर्जनाके करताहै २६ जिस वीरने उत्पन्न
होतेही उच्चैश्रवानाम घोड़ेकेसमान शब्द किया औरउस शब्दसे पृथ्वी
समेत तीनों लोक कंपायमान हुये ३० और उसी शब्दको सुनकर
गुप्त जीव धारियोंने उसका नाम अश्वत्थामा रक्खा हे पांडव धर्म-
राज अब वही शूरवीर गर्जरहाहै ३१ धृष्टद्युम्नने बड़े नीच कर्म को
करके बड़े पराक्रमसे जो द्रोणाचार्य्यको अनाथके समान माराहै सो
वह उसका नाथ सन्मुख नियतहै ३२ जो कि धृष्टद्युम्नने मेरेगुरूके

बालोंको पकड़ाहै इससे उसको वीरताको जानते हुये अश्वत्थामा जी कभी इसको नहींसहसकेंगे ३३ और आपने भी राज्यके निमित्त द्रोणाचार्य्य से मिथ्यावचन कहाहै यह आप सरीके धर्मज्ञ पुरुष से महाअधर्म हुआहै ३४ द्रोणाचार्य्यके गिरानेपरस्थावर जंगम जीवों समेत तीनों लोकोंमेंआपकी अपकीर्त्ति वहुत कालतक वैसीहीजारी होगी जैसीकि बालिकेमारनेसे श्रीरामचन्द्रजीकीअपकीर्त्ति विख्यात हुई उनद्रोणाचार्य्य ने आपके ऊपर ऐसा विश्वास कियाथा कि यह पांडवयुधिष्ठिरधर्मसेयुक्त मेराशिष्यहैकभी मिथ्यानहींबोलेगा ३५।३६ सोसत्य रूपी कवच धारण करनेवाले आपने गुरूजीसे मिथ्या कहा कि हाथी मारागया ३७ इसके पीछे वह शस्त्रोंको त्यागकर अपमान रहित ममता और चैतन्यता से रहित होकर ऐसे व्याकुल होगये जैसे कि उन समर्थको तुमने देखा ३८ फिर सनातन धर्म को छोड़कर उन शोकसे पूर्ण मुखके फेरने वाले और पुत्रको प्यारा जानने वाले गुरूजीको शस्त्रसे मारा ३९ आपने शस्त्र त्यागने वाले गुरूजीको अधर्मसे मारा अवजो आप समर्थहैं तो अपने मंत्रियों समेत नाशवान पितावाले क्रोध युक्त आचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामासे ग्रसे हुये धृष्टद्युम्न की रक्षाकरो ४० अव हम सब धृष्टद्युम्नको रक्षा करनेको समर्थ नहीं हैं जो उत्तम पुरुष सब जीवों पर बड़ी कृपा और प्रीति करताहै अव वह पिताको शिरके बालों का पकड़ना सुनकर युद्धमें हमको भस्म करेगा ४१ मुझ गुरू के चाहने वालेके अत्यन्त पुकारने परभी धर्मको त्यागकर अपने शिष्यके हाथसे गुरूजी मारेगये ४२ हमारी अवस्था वहुत व्यतीत होगई और वहुत थोड़ीबाकी रहीहै अव उस शेष अवस्थाका यह विकाररूप विपरीति भावहै जो आपने ऐसा अधर्म किया ४३ जो गुरूजी सदैव प्रीति करनेसे और धर्मसेभी पिताके समान थे वह थोड़ेदिन के राज्यके कारण से मरवाये ४४ हे राजा धृतराष्ट्र ने संपूर्ण पृथ्वीको राज्यमें प्रवृत्त चित्तवाले पुत्रों समेत भीष्म और द्रोणाचार्य्य के अर्थ अर्पण करी ४५ उस प्रकारकी आजीविका को

पाकर सदैव प्रतिष्ठा पानेवाले सबके पूज्य गुरूजीने सदैव मुझको अपने पुत्रसेभी अधिक माना ४६ वह शस्त्र त्यागने वाले गुरूजी तुम्हारे और मेरे देखते अथवा तुमको और तुझको देखते हुये युद्ध में मारेगये निश्चय करके इन युद्ध करने वाले गुरूजी को इन्द्र भी नहीं मार सक्ताथा ४७ राज्यके अर्थ लोभमें लिप्त बुद्धि हम नीच लोगोंने उन सदैव उपकार करने वाले वृद्ध आचार्य्य जीके साथ शत्रुताकरी ४८ बड़ेखेदकी बातहै कि हम लोगों ने वह महा भयानक पाप कर्म किया जो उन साधुरूप द्रोणाचार्य्य को राज्यके सुखके लोभसे मारा ४६ मेरे गुरूजी सदैव ऐसा जानते थे कियह इन्द्रका पुत्र मेरी प्रीतिसे पुत्र भाई पिता ताऊ आदि स्त्री समेत जीवन और सब सामान को भी त्यागकरसक्ता है ५० वह मारे जाने वाले गुरूजी मुझ राज्यके अभिलाषी करके त्याग कियेगये हे प्रभु राजा युधिष्ठिर इस कारणसे हम लोग औंधे शिर होकर नर्कमें पड़ेंगे ५१ अब राज्यके निमित्त शस्त्र के त्यागने वाले वृद्ध ब्राह्मण आचार्य्य महा मुनिको मारकर इस जीवने से मरजानाही अच्छाहै ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तनवतितमोऽध्यायः १६७ ॥

एकसौअट्ठानबेका अध्याय॥

संजयबोले हे महाराज वहां अर्जुनके बचनको सुनकर सबमहारथी अच्छी बुरी बातोंमें से कोईभी कुछनहीं बोले १ हे भरतर्षभ इसके पीछे क्रोधयुक्त महाबाहु भीमसेन पांडव अर्जुन की निन्दा करते बोले २ कि हे अर्जुन तुम धर्मसे संयुक्त ऐसे वचनों को कह हो जैसे कि बनमें वर्त्त मान सबधर्मों से निवृत्त चित्तमें निष्ठावान मुनि और ब्राह्मण लोग कहतेहैं ३ दुखियोंकी रक्षा करने वालाशत्रुओंके मारनेसे अपनी जीविका करनेवाला स्त्री और साधुओं में क्षमा करने वाला क्षत्री शीघ्रही पृथ्वी धर्म यश और लक्ष्मी को पाताहै ४ सो क्षत्रियोंके सबगुणोंसे युक्त और कुलीन होकर आप

अज्ञानोंके समान वचनों के कहते हुये शोभाको नहीं पातेहो ५ हे अर्जुन तेरा पराक्रम शचीपति इन्द्र के समानहै तुम धर्मको उल्लंघन कर ऐसे कर्म नहीं करतेहो जैसे कि महा समुद्र अपनी मर्यादाको नहीं उल्लंघन करताहै ६ अब तुम्हारी प्रशंसा कौन नहीं करेगा जो तेरह वर्षके अमर्ष कोभी त्यागकर धर्मकोही चाहतेहो ७ हे भाई अब तेरा चित्त प्रारब्धसे अपने धर्ममें नियतहै और हे अविनाशी तेरी बुद्धिमें सदैव दया रहतीहै ८ फिर जो धर्ममें प्रवृत्त युधिष्ठिर का राज्य अधर्मसे हरण किया और द्रौपदी को सभा में लाकर शत्रुओंने खेंचा ९ अत्यन्त मृगचर्म की पोशाक को धारण करने वाले हम लोगोंको जो कि उसदशाकेयोग्य नथे शत्रुओंने तेरह वर्षतक बनवासी किया १० हे निष्पाप मैंने इन सब क्रोधके स्थानोंमें क्षमा करके सहन किया और क्षत्री धर्म में प्रवृत्त होकर हम लोगोंने यह सब बनवासादिक व्यतीत किये ११ अबमैं उस दूर हटाये हुये अधर्म को स्मरण करके तेरी सहायता पाकर उन राज्य हरण करने वाले नीचोंको उनके साथियों समेत मारूंगा १२ प्रथम तुमने कहाथा कि युद्धके निमित्त सन्मुख होनेवाले हम सब लोग सामर्थ्य के अनुसार उपाय करेंगे सो तुमही अब हमारी निन्दा करतेहो १३ तुम धर्म को जाना चाहतेहो तेरा वचन मिथ्याहै भयसे पीड़ामान हम लोगों के मर्म नाम अंगोंको अपने बचनों से काटतेहो १४ हे शत्रुओं के विजय करने वाले तुम हम सब घायलों के घावपर निमक डालकर पीड़ा देतेहो तेरे वचन रूपी भालेसे पीड़ित होकर मेरा हृदय फटा जाताहै १५ हे भाई धर्मका अभ्यासी होकर भीतू उस बड़े अधर्मको नहीं जानताहै जो तू प्रशंसाके योग्य अपनी और हमारी प्रशंसा नहीं करताहै १६ और वासुदेव जीके नियत होनेपर उस अश्वत्थामा की प्रशंसा को करताहै जो कि हे अर्जुन तेरी सोलहवीं पूर्णकलाके भी योग्य नहींहै १७ आप अपने दोषों को कहते हुये क्यों नहीं लज्जा युक्तहोतेहो मैं क्रोधसे पृथ्वी को चीरडालूं और पर्वतों को गेरदूं १८ और इस भयानक

सुनहरी माला रखनेवाली भारीगदाको घुमाकर पर्व्वतों के समान वृक्षोंको ऐसे तोड़डालूं जैसे कि वायु तोड़ डालताहै १९ और सन्मुख आनेवाले इन्द्रके समेत देवता राक्षसगण असुर सर्प और मनुष्यों कोभी भगासक्ता हूं २० हे बड़ेपराक्रमी नरोत्तम सो मुझ भाई को इसप्रकार का जानने वाले होकर तुमअश्वत्थामा से भयकरने के योग्य नहींहो २१ हे अर्जुन तुमसब सगेभाइयों समेत कुतूहल देखो मैं अकेलाही हाथमें गदा लेकर युद्धमें इसको बिजय करूंगा २२ इसके पीछे द्रुपदका पुत्र धृष्टद्युम्न अर्जुनसे ऐसे बोला जैसे कि अत्यन्त क्रोधयुक्त और गर्जना करनेवाले नृसिंहजी से हिरण्यकश्यप दैत्य बोला था २३ धृष्टद्युम्नबोले कि हे अर्जुन बुद्धि मानोंके ब्रह्मकर्मोंको तुम जानतेहो यज्ञ कराना पढ़ाना दान देना यज्ञ करना दान लेना २४ छठा पढ़ना इन सब कर्मोंमें से किसीभी कर्म में नियत न थे इसीसे द्रोणाचार्य्य मेरे हाथसे मारेगये हे अर्जुन तुम मेरी निन्दा क्यों करते हो २५ अपने धर्मसे पृथक् क्षत्री धर्म में आश्रित नीचकर्म करनेवाले द्रोणाचार्य्यजी दिव्यअस्त्रों से हमलोगों को मारतेथे २६ और इसीप्रकार मायाको प्रकट करने वाले क्षमा शान्तीसे रहित नाममात्र अपने को ब्राह्मण कहने और मानने वाले द्रोणाचार्य्य को जो पुरुष मायासेही मारे उसमें हे अर्जुन कौनसी बातकी अयोग्यताहै २७ इसरीति करके मेरे हाथ से उनके मरने पर जो द्रोणाचार्य्य का पुत्र क्रोध से महाभयकारी शब्दोंको करताहै इससे मेरी क्या हानि होसक्तीहै २८ मैं इसको अपूर्व्व नहीं मानताहूं क्योंकि यह अश्वत्थामा युद्धके मिस करके कौरवों का बिध्वन्स करवावेगा २९ जो तुम धर्मके अभ्यासी होकर मुझको गुरूका मारनेवाला कहतेहो इसका यह वृत्तान्तहै कि मैं द्रुपदका पुत्र होकर उन्हींके मारने के अर्थ अग्निसे उत्पन्न हुआ हूं ३० हे अर्जुन युद्धमें जिस युद्ध करनेवाले का कार्य्याकार्य्य समान होय उसको कैसे ब्राह्मण वा क्षत्री कहना योग्यहै ३१ जो क्रोधसे मूर्च्छामान ब्रह्मास्त्रके द्वारा अस्त्र न जाननेवालोंकोमारे वहपुरुषो-

तुम किसप्रकार से सब उपायोंके द्वारामारने के योग्य नहीं है ३२ हे धर्म के मूल जाननेवाले अर्जुन उस विपरीत धर्मवाले और उन पूर्व्व धर्म जाननेवालों के विपके समान द्रोणाचार्य्यको जान बूझ कर मेरी निन्दा क्यों करताहै ३३ औरमैंने निरादरकरके उसनिर्दय रथी को गिराया है इसके वदलेमें हे अर्जुन मेरी प्रशंसा करके क्यों नहीं मुझको प्रसन्न करते हो ३४ हे अर्जुन मेरे हाथ से उसका-लाग्निके समान अथवा अग्नि सूर्य्य और विषके समतुल्य द्रोणा-चार्य्यके काटे हुये भयानक शिरको क्यों नहीं प्रशंसा करतेहो ३५ जिसने युद्धमें मेरे वांधवों को मारा दूसरे के वांधवों को नहीं मारा उसके मस्तक को काटकर मुझको भी विगतज्वर होना अवश्य योग्यहै इसी से मैं उसके ज्वर से रहित हुआ ३६ परन्तु एक वह वात मेरे मर्मस्थलोंको काटरही है अर्थात् पश्चात्ताप होरहाहै कि जो मैंने उनके शिरको निषाददेश में उसप्रकार से नहीं फेंका जैसे कि जयद्रथका शिर फेंका गयाथा ३७ हे अर्जुन जो शत्रुका मारना अधर्म सुना जाता है तो मारना अथवा मारा जाना यह क्षत्रियोंकेही धर्म हैं ३८ हे पांडव वह शत्रु धर्मसंयुक्त मेरे हाथसे युद्धमें ऐसे मारागया है जैसे कि पिताका मित्र शूरवीर भगदत्त तेरे हाथसे मारा गया है ३९ तुम भीष्मपितामह को मारकर युद्धमें अपना धर्म मानते हो और मेरे हाथसे पापी शत्रुके मारेजाने पर किसकारण से अधर्म मानतेहो ४० हे अर्जुन मैं नातेदारी से झुका हुआ हूं तुम मुझ झुके हुये नातेदार से इसप्रकार कहने के योग्य नहींहो जैसेकि अपने शरीर से सोपान वनानेवाले वैठेहुये व्याकुल हाथीसे कोई वात कहना अयोग्य है ४१ और मैं द्रौपदी और द्रौपदीके पुत्रों के कारण से तेरे सव विपरीतवचनों को सहताहूं ४२ मेरे कुलकी परम्परासे इन आचार्य्यजी के साथ मेरी शत्रुता चली आती थी औरप्रसिद्ध थी और संसार जानता है क्या तुम नहीं जानतेहो ४३ औरहे अर्जुन वड़ा पांडव भी मिथ्या वादी नहीं है और मैं भी अधर्म का करने वाला नहीं हूं शिष्योंका

पापी शत्रु मारागया युद्धकरो अब सबतरहसे तेरी विजय है ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टनवतितमोऽध्यायः १९८ ॥

एकसौनिन्नानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जिस बुद्धिमान् महात्मा ने अंगों समेत चारों वेदोंको न्याय के अनुसार पढ़ा और जिस लज्जावान् में साक्षात् धनुर्वेद नियतहै १ उसीप्रकार जिस महर्षीके पुत्र द्रोणाचार्य्य के पुकारने पर भी नीचबुद्धि निर्दयी क्षुद्रबुद्धी गुरुघाती धृष्टद्युम्न ने प्रहार किया २ जिस पुरुषोत्तमकी कृपासे युद्धमें उन दिव्यकर्मोंको करतेहैं जोकि देवताओं से भी होने कठिन हैं उस द्रोणाचार्य्य के पुकारने पर नेत्रोंके समक्ष पापकर्मी धृष्टद्युम्नने मारडाला ऐसेस्थान परक्रोध नहीं करना होताहै इसीसे इस क्षत्रीधर्मको और क्रोधको धिक्कारहै ३।४ सब पांडव वाराजालोग और पृथ्वीपर जो धनुषधारी हैं उन्होंने इसबातको सुनकर धृष्टद्युम्नसे क्या कहा हे संजय वह मुझसे कहो ५ संजय बोले हे राजा उस निर्दयकर्मी द्रुपदके पुत्र के उन बचनों को सुनकर सब राजालोग मौन होगये ६ फिरअर्जुन तिरछी आंखसे धृष्टद्युम्नको तिरछा देखकर अश्रुपातों समेत बड़ी श्वासाओंको लेकर धिक्कारहै धिक्कारहै ऐसा बचन बोला ७ हेराजा युधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव श्रीकृष्ण और अन्य २ लोग भी अत्यन्त लज्जायुक्त हुये तब सात्यकी यह बचन बोला ८ कि यहां कोई पुरुष नहीं है जो इस पापपुरुष नरोंमें नीच अकल्याण बचन कहनेवाले को शीघ्रमारे ९ यह सब पांडव उस पापकर्मके कारण से निन्दा पूर्व्वक तुझको ऐसा बुरा कहते हैं जैसे कि ब्राह्मणलोग चांडालको बुराकहतेहैं १० इस बड़े पापको करके शोभायमान सभामें प्राप्त सब साधुओंसे निन्दित होकर बात करने में किसी प्रकारसे भी लज्जाको प्राप्त नहीं होताहै ११ हे नीच क्यों नहीं तेरी जिह्वा सौटुकड़े होतीहै और मस्तक नहीं फटताहै जो पुकारतेहुये गुरूको अधर्म से रक्षा नहीं की १२ तू पांडव और सब

अन्धक वृष्णियों से कहने को योग्यहै जो पापकर्म को करके सब
जन समूहोंमें अपनी प्रशंसाको करताहै १३ इसप्रकारके अकार्य्य
कोकरके गुरूकी निन्दा करताहुआ तू मरनेके योग्यहै एकमुहूर्त्तभी
तेरे जीवनसे प्रयोजन नहींहै १४तेरे सिवाय कौनसा उत्तम अथवा
नीच पुरुषहोगा जोधर्मात्मा सत्पुरुष गुरूके शिरको पकड़कर मारने
को निश्चयकरे १५तेरेसातपुरुष आगेके और सातपीछेके तुझ कुल
कलंकीको पाकर अपकीर्त्ति के साथ नरकमें डूबे १६ और जो तैंने
नरोत्तम भीष्मजीके विषयमें अर्जुनसे कहा वह तेराकहना वृथाहै
क्योंकि उस महात्माने अपने आप अपना नाश नियतकियाथा१७
उसकाभी मारनेवाला वह तेराही सगाभाईहै जो बड़ापाप करनेवा-
लाहै राजा पांचालोंके पुत्रोंके सिवाय इस पृथ्वीपर दूसरा पाप
करनेवाला नहीं है १८ निश्चय करके भीष्मकाभी नाश करनेवाला
तेरेही पितासे उत्पन्नहुआहै जिसनिमित्तसे कि वह शिखण्डीरक्षित
कियाथा इसीसे वह उस महात्माका मृत्युरूपहुआ १९ सब साधु
ओंसे धिक्कार युक्त तुझको तेरे सगेभाइयों समेत पाकर मित्र और
गुरूसे शत्रुता करनेवाले नीच पांचाल धर्मसे रहितहुये २०फिरइस
प्रकारके वचनको जोमेरे सन्मुख कहैगा तोवज्रके समानगदासे तेरे
शिरकोतोडूंगा२१मनुष्य तुझ ब्रह्महत्या करनेवालेको देखकर सूर्य्य
कादर्शन करतेहैं हेपापी तेरी ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तके निमित्त है २२
हे अत्यन्त दुराचारी पांचाल मेरे आगे मेरे गुरूकी और गुरूके भी
गुरूजीकी निन्दा करताहुआ तूलज्जाको नहींप्राप्तहोताहै२३ ठहरो
ठहरो मेरीगदाके इस एकप्रहारकोसहो फिर मैंभी तेरीगदाके बहुत
प्रहारोंको सहूंगा २४ यादव सात्यकी के इसप्रकार कठोर अक्षर
और शब्दवाले वचनोंसे निन्दायुक्त होकर अत्यन्त क्रोधसे पूर्ण
हंसताहुआ धृष्टद्युम्न उस क्रोधभरे सात्यकीसे बोला २५ हेमाधव
हम सुनतेहैं और क्षमाभी करतेहैं सदैव अनार्य्य नीच पुरुषतू सा
धु पुरुषकी निन्दा किया चाहताहै २६ इस संसारमें क्षमा करनाही
उत्तम कहाजाताहै परन्तु पापी पुरुष क्षमा करनेके योग्यनहींहोता॥

पापात्मा पुरुष क्षमावान् पुरुषको ऐसा मानलेताहै कि मैंनेइसको विजय करलिया २७ सो नीचचलन नीचबुद्धि पापका निश्चय करनेवाला तू केशके अग्रभागसे नखके अग्रभागतक कहने के अयोग्य होनेपर कहनाचाहताहै २८जो खंडितध्वजा और शरीरके त्यागनेके अर्थ युद्धभूमिमें बैठाहुआ वह भूरिश्रवा तुझनिषेध कियेहुये के हाथ से मारागया उससे अधिक पापकौनसा होसक्ताहै २९ मैंने युद्धमें दिव्यअस्त्रसे मारनेवाले और उत्तम शस्त्रवाले द्रोणाचार्य्यजीको माराहै इसमें कौनसा पापकियाहै ३०हेसात्यकी जोपुरुष युद्धभूमिमेंन लड़नेवाले शरीर त्यागनेको आसनपर बैठेहुये शत्रुओंके हाथसे टूटी भुजावाले मुनिकोमारे वह कैसे वार्त्तालाप करसक्ताहै ३१ जब उस पराक्रमीने चरणोंसे पृथ्वीपर डालकरखैंचा तव बड़े पुरुषार्थी और पुरुषोत्तम होकर उसको क्योंनहींमारा३२जब पूर्व्वमें अर्जुननेविजय करलिया उसकेपीछे तुझनीचने उस प्रतापी शूरबीर भूरिश्रवाकोमारा ३३ और द्रोणाचार्य्यजो जहां२ पांडवीसेनाको भगातेथे वहां२ मैंभी हज़ारों बाणोंको फैलाता जाताथा ३४ सोतुम आप चांडाल के समान इसप्रकारके कर्मको करके और कहनेके अयोग्य होकर किसकारणसे कठोर बचनोंके कहनेको योग्यहो ३५ हे वृष्णियोंके कुलमें नीच तुम्हीं इसकर्मके करनेवालेहो और इस पृथ्वीपर पाप कर्मोंके उत्पत्तिस्थान होकर फिर कहो ३६ अथवा मौनरहो अबकभी तुमइस अयोग्य बिपरीत बातके कहनेको योग्यनहींहो ३७ जो फिर कभी अपनी निर्बुद्धितासे ऐसे कठोर बचन मुझसेकहोगे तो मैं बाणों सेतुझको यमलोकमें पहुंचाऊंगा ३८ हेमूर्खकेवल धर्महीसे विजय करना संभाव नहींहै अब उन्होंकाभी अधर्मसे कियाहुआ कर्म जैसे प्रकारहै उसकोभी सुनो ३९ हेसात्यकी प्रथम पांडव युधिष्ठिरको अधर्मसे ठगा और अधर्महीसे द्रौपदीको दुःखदिया ४० हे अज्ञानी उसीप्रकारसे द्रौपदी समेत सबपांडवोंको अधर्मसेही वनवासी किया और संपूर्ण धनको हरलिया ४१और दूसरेसे प्रेरणा कियाहुआ मद्रदेशका राजा शल्य अधर्मसेही अपनी ओरको बुलालिया और